

S/O
294.5926
62 197.4

ॐ

स्वस्तिश्रमिन्महारा
जाधिराजजम्बूकाशमीरति
व्यताद्यनेकदेशाधीशप्र
भुवररणवीरसिंहकारि
तधर्मशास्त्रमहानिवन्धे
प्रायश्चित्तभागः टी ० भा ०



॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ ८.

ऊँनमोविग्रहर्त्रे दोहरा मूकनकोवाचालता निर्धनकोआधार भक्तनकीरक्षा

१ प्रायश्चित्त विधानमें संस्कृत भेयो जुग्रंथ सर्वदेशमें मिलतहै कति
वूपत आज्ञाकरी विशेष अल्पबुद्धिकेहेतुमें भाषाकरोअशेष ३
प्रायश्चित्त पंडित प्रवीननके चित्तमध्य घनीहै पापके विनाशन
सें विधिनाहि बनीहै गणपत गौरीपत देवनके देवपत इनको
मनमें विचारकरे बारबार महागज जम्बुपत अच्छीवात गितीहै
ताहै नानेति अव इसीका अर्थ लिखतेहैं अथेति बड़े प्रताप क
तादिदेशोंकास्वामी तिनोकके आज्ञा कविगंगाराम धर्मशा
स्यादि जो पुराणसंबंधी बचनहैं तिनोकी प्रामाण्यतासें इसका ए

ऊँस्वस्तिश्रीगणेशायनमः नानायद्वतमाययाज
यत्सत्येनविवर्तनानमखिलंसत्यंमुहुर्ज्ञायते आनं
भांतमाहिम्नास्वतो नित्यंसर्वगतंसदाश्रुतिशिरोवेद्यं
अथमहानुभावजंबूभूपालाज्ञत कविगंगारामः २
शंमंगलचरोदित्यादिवचनप्रामाण्यात् तदभीष्टस्यध
न्धस्य सर्वत्र प्रचयसमाप्त्यर्थं सर्वनिधंतारं परमेश्वरमे
षेचनेनेत्यादिवचनान्नमस्करोति नानेति आदौ नानेत्यव
निर्देशेनच अव्ययलाभः कल्याणं चाभिप्रेतं तं सदा सदै
वेदने साधनांतराभावात् अतिशिरोवेद्यं वेदान

तिसको तैसाहि मंगल करणे योग्य है तदिति तिसको अभिलषित जो ४
तिसकी सब जगह प्रवृत्ति और समाप्ति तिसके लिये संपूर्णका प्रेरक जो १. २. ३.
आदमें नमस्कार करतेहैं प्रश्न और देवतोंको छोड़कर परमेश्वरको नमस्कार क्ये
परमेश्वरको नमस्कार करणसें सब देवतोंको नमस्कार होजातीहै यथातरोमूलनिषेच
जो बचन हैं तिनकी प्रामाण्यतासें नानेति आदमें नानाऽव्ययके निर्देश कर्के और मः
निर्देशकर्के दो २ लाभहोये एक तो अव्ययलाभ और कल्याणकी प्राप्ति होइ
परमेश्वरको सर्वदाकाल नमस्कार करे क्यो कि तिसके जाननेमें होरीर
अभावहोनेसें कैसेनू श्रुतियोंका शिर जो वेदांतशास्त्र तिस कर्के जो जानणे २



लिखते हैं थोड़ा कर्मोंके अनुष्ठान कर्के पवित्र हुये हैं अतः करण जिनके ऐसे
 ठाकने हैं (तिनोंको) और संतत निरंतर जैसे होवे तैसे तुमः क्या नमस्कार करते हैं
 तसकों जो निय है कालत्रयमें भी जो नष्ट नहि होनेवाला ऐसेकों इसमें यह
 प्राय है नियत्वकी इच्छा करनेवाले जो पुरुष हैं तिनोंकर्के जो सेवा करणेयोग्य है तिनोंकी
 भिलापके पूरण करनेवाला है यह ध्वनि है फेर कैसेकों सर्वगत मिति संपूर्ण देश
 ओर कालमें जो प्राप्त है ऐसेकों गम्यमानुका गति अर्थ होनेमें कर्तामें क प्रत्यय होता है संपू
 रणका पूर्णकता है यह ध्वनि है अथवा इसमें ओर विचार है जिस निमित्त कारण कर्के
 मोक्ष ने यह जगत् उत्पन्न कीदा है उस परमेश्वरकों बारंबार असी नमस्कार करते हैं इसीमें

सत्कर्मनुष्ठानेन शुद्धान्तःकरणानाममुक्षूणामिति ध्वनिः संततं निरंतरं यथा
 स्वात्तयानुमानमनंकुर्मः कथंभूतं नित्यं कालत्रयानपायिनं नित्यत्वाकांक्षि
 भिःसेव्यं तदभिलापापूरकमिति ध्वनिः सर्वगतं सर्वस्मिन्देशे काले च प्राप्तं
 गत्यर्थात् कर्तारिकः सर्ववांछापूरकमिति ध्वनिः यद्वा संतन्यते जगत् येन नि
 रेतकारणेन ब्रह्मादिभिरिति संततः परमेश्वरस्तं यद्वा संसमीचीनस्ततस्ता
 तः संततः त्वाममायास्तताभांक्षुरिति भागवतात् ब्रह्मादेरप्युत्पादकस्तं न
 तु शुद्धं नमस्कारानर्हत्वात् नमस्कारमृते तत्सेवाऽभावात् स्वप्तासिद्धये नम
 स्कुर्म एव वस्तुतो नित्यं सर्वगतं च तं कं यदृतेति येन शुद्धेन धृता सत्ता
 प्रदानमात्रेण न तु स्वेच्छया यद्वा येन धृता इवेत्यर्थः एवंभूता माया
 अव्ययघटनापटीयसी तथा यद्वा एकोहं बहुस्यां प्रजायंयतिवचनात्
 धृतया मायया इदं जगत् दृश्यमानवस्तुजातं नाना बहुप्रकारं

रणवीर है सम्यक् समीचीनस्ततोनाम पिता संततः इसीमें प्रमाण कहते हैं त्वाममायास्तता
 क्षुरिति इस कारणसे ब्रह्मादिकोंका भी जो उत्पन्न करनेवाला है तिसको
 र जो शुद्ध है तिनको नहि क्योंकि बोह नमस्कारके योग्य नहि है मायाशयलकों द्विनम
 रके योग्य होणें तिसमें ओर हेतु कहते हैं नमस्कारसे बिना तिस ईश्वरकी सेवाके अभाव हो
 न और अनी अपणें इष्टकी मिद्धि वास्ते नमस्कार करते हैं हां और वास्तवसे निय है और स
 त है तिस कितकों यदृतेति जिस शुद्ध स्वरूप ने धारण कीनी सत्ता प्रदानमात्र कर्के कोई
 रणी दृष्टा नहीं नहि इस प्रकारवाली जो माया कसी है अव्यय घटनाम

निपुण है तिस माया कर्के ईश्वर ने जगत् निर्माण करीदा है यद्वा इसीमें और भी विचार है कि ए क हि मै प्रजाके निर्माणवास्ते बहुत प्रकारका होवां इसतरांभी अपनी माया कर्के दृश्यमान जो जगत् सोभीवद्भुत प्रकारका होता है ॥ भित्तिमिति कुड्य जो आश्रय है तिससे विनाहि यह जगत् चित्र मानो मूर्तिदी न्याईं स्थापित करीदा भया तैसेही मेरे ग्रंथका ईश्वरने स्थापन करिये किंचेति जिस सत्यस्वरूपकर्के संपूर्ण जो जगत् विवृत्तमान क्या कि जो और विषे श्री की प्रतीति असत्य भी है परंतु सत्यकी न्याईं प्रतीत होता है इसमें दृष्टांत कहतेहैं जैसे रज्जुविषे सर्पकी प्रतीति होती है परंतु बारं बार बुद्धिमानोंने बोधित कियाहोया भी नेदंसत्य

भित्ति चित्राश्रयंविना चित्रितं चित्रमिव स्थापितमित्यर्थः ता.

यग्रंथस्थापनं क्रियेतेतिध्वनिः किंच यत्सत्येन यदीयसत्यस्वरूपेण

लं तत् रज्जौ सर्पवत् विवर्तमानं मुहुः सुज्ञैर्वोधितमपि नेदंसत्या.

त्यादिना सत्यमेव ज्ञायते तादृशमदीयग्रंथसत्यतापादनं क्रियेतेति

ध्वनिः पुनः कथंभूतं आनंदाब्धिं अत्राब्धिपदं स्वरूपे लाक्षणिकं

आनन्दस्वरूपमित्यर्थः अखंडबोधं सजातिविजातिस्वगतभेदशून्यज्ञा

नरूपं अमलं निरुपाधिं स्वतोमहिम्ना भातं नतु घटादिवत्प्रकाशमित्य

र्थः भातमिति कर्तरिशता यद्वा भातमिति कर्तरिक्तः यद्वा अयत्नज

गुणोदीप्तिरिति शब्दस्तोमः तथाच भा दीप्तौ भातं अयत्नजगुणाश्रयं

स्वतःसिद्धैश्वर्यवन्तमित्यर्थः अत्र हि नमनविषयं मायाशवलं तात्पर्यं

विषयं शुद्धं शुद्धिहेतुग्रंथं पूजयश्चाभिप्रेतः ॥

करके सत्य ही जानीदा है तैसा जो मेरा ग्रंथ है तिसकी सत्यताका प्रतिपादन का फेर कैसा ब्रह्म है आनन्दका मानो समुद्र है इसमें जो अब्धिपद है तिसके स्वरूपमें लाक्षणिक है फेर कैसा है अखंड क्या अपरिच्छिन्न है बोध जिसका सजाति और अपरजाति और स्वरूप इनका जो भेद उससे शून्य ज्ञानरूप है और उपाधिसं वाह्य है और अपनी महिमा कहे जो प्रकाशमान है घटादिवत् नहि है भातं इस स्थानमें कर्तामें शतप्रत्ययकी प्रतीती है यद्वा भा मितिपाठः इसमें कर्ताविषे कप्रत्यय होता है अथवाशब्दस्तोममेंलिखा है अयत्नजगुणोदीप्ति सर्वदाकाल ऐश्वर्यवाला है इसविषे जो नमनविषय है सोतो मायाशवल है और तात्पर्यका विषय शुद्ध है और शुद्धिहेतुग्रंथकी सभजगह प्रवृत्ति होणी अभिप्रेत है

अथ पंचविषय प्रतिरूपक ग्रंथ वनाणा है इस अभिप्रायमें पांचदेवताओं नमस्कारकर्के मंगलार्थ अनुकूल कर्मदा है जिसमें प्रथम श्रीरामचंद्रजीकों आश्रय करते हैं गर्भदति करण कारण जो श्रीरामचंद्र हैं सो हमने ग्रंथकी समाप्तिके लिये आश्रय करी दे हैं सो कैसे हैं जो श्रीरामचंद्र मत्ते हैं और अपरिच्छिन्न क्या त्रिलोकीके आधार भी हैं तथापि कौशल्याने गर्भमें पाये इस अर्थमें अपरिच्छिन्नका परिच्छिन्न होना विरोधाभास अलंकार है और जिसका पक्ष यह है क्या कृपाविशेष कर्के अपरिच्छिन्न भी परिच्छिन्न हुए ताते इसमें यह ध्वनि है जैसे अल्पबुद्धिवाली स्त्रीपर कृपा लु हुणये तैने मैंभी अल्पबुद्धिवां मेरे परभी कृपालु होवें ऐसे-
गामेभी जानण फेर कैसे हैं दीन वचनो वाला जो नीच गुह या तिसके ऊपर-
में

अस्यैवानुकरणश्लोकः यन्मायैकवशंवदं जगदिदं भित्तिं विनाचित्रितं य
त्सत्येन विवर्तमानमखिलं सत्यं मुहुर्जायते आनन्दाद्विमखण्डबोधममलं
भातं माहिम्ना स्वतो नित्यं सर्वगतं सदा श्रुतिशिरो वंद्यं नुमस्तन्महः ॥ १
गर्भेयः सुधृतः स्वयं सदपरिच्छिन्नोऽपि कौशल्यया नीचेनापि गुहेन दीनवच
सा शुद्धोऽपि मैत्रागतः ब्रह्मेन्द्रादिमुसेवितो हनुमता वन्येन वशीकृतः श्री
रामोऽल्पजनैः स्तुतोऽपि कृपया पाता सदा श्रीयते ॥ २ अस्यैवानुकरणश्लो
कः कौशल्योदरमध्युवासकिलयो ब्रह्माण्डकोट्याश्रयः दास्यश्च गुहं सु
निन्दितमपि प्रेम्णा समन्वग्रहीत् ब्रह्मेन्द्रादिभिरर्चितोऽप्यनिलजंयश्चा
लिलिङ्गेश्वरः श्रीरामोऽल्पजनान् स्तुतोऽपि कृपया पाता सदा श्रीयते ॥ २
त्रैलोक्ये यदि कालकूटदहनाददह्यमानं धृतं नित्यं स त्रिपुरोऽपि लोककुटि
लो निर्मूलमुत्पाटितः ध्वस्तोऽपि प्रतिपक्षभावमतितां दक्षस्य यज्ञोभूतः

कृपाकर्के आप शुद्ध भी थे तथापि उसके साथ मैत्रीकों करते भये फेर कैसे हैं ब्रह्मा और इन्द्र
इत्यादि जो देवता हैं तिनो कर्के सेवित कीते हुए भी वे पां तु वर्तन में रहनेवाला जो वानरस्वरूप
हनुमान् तियाने वश करी देहुये और जो अल्पबुद्धि वालों के स्तुत कीये हुं दरसा करते हैं सो श्रीराम
चंद्र अल्पबुद्धिवाला जां मेहां मेरे परभी स्तुत कीने हुये प्राज्ञों का अब तृतीयलोक कर्के शिव
जीकों आश्रय करते हैं त्रैलोक्यमिति सो श्रीगंगादेव हमने आश्रय कर्म दे हैं सो कैसे हैं जिनोने
कालकूट विष कर्के दग्ध हुं दी त्रिलोकी धारण करी दी हुई और जिनोने संपूर्णलोकोंको
केशदेवोंवाले त्रिपुर दैत्यकों मूलसे उखेड़ दिया और जिनोने शत्रुबुद्धिकर्के

दसप्रजापतिकायज्ञ नष्टकीयायां परंतु कृपाकरों फेर उसका समाधान करीदाभया फेर कैसेहैमहा देवप्रणन अर्थात् जो नम्र पुरुषहैं तिनकी संपूर्णपीडाको दूरकरेवालेहैं इसमेंभी यह ध्वनिहै कि संपूर्णके दुःखदूःकरणेवालेवांका जो स्मरणहैं सो मेरेग्रंथमें चितारूप जो दुः खहै तिसको दूर करेगा ३ अब गणपति जी की लीलाका स्मरणकरतेहैं कव्येति सो विघ्नेश्वर सर्वदाकाल हमारी- रक्षाको कया करतेहुये सहितआनंदके वनविषे फिरतेहोये इसमें कथा • करिणहै एक तिनकी बाललीला कहतेहैं एकदिन हस्ति और घांटे और पिपादे इत्यादिक क्रीडाके योग्य जो वस्तुहैं तिनको मिट्टीसेबनाकर माताको कहनेलगे हेमाता मेरी सेना बहुत

श्रीशंभुःप्रणतार्तिहाप्रतिपदंश्रीत्यासमाश्रीयताम् ३ अस्यैवानुकरणश्लोकः

॥ ३ ॥ त्रैलोक्यंगरलाग्निनाकवलितप्राययआर्द्रव्यधात् दग्धयेनपुरत्र यन्निमिषतादृष्ट्यैवभीतिप्रदम् ध्वस्तोपिप्रतिपक्षभावमातितादक्षाध्वरःपू रितः श्रीशंभुःप्रणतार्तिहाप्रतिपदंश्रीत्यासमाश्रीयताम् ॥ ३ ॥

कृत्वाक्रीडनकानिहास्तितुरगादीनिस्वमात्रेऽवदत् जातामातरियंनदीय महर्तसेनासमालोक्यताम् श्रुत्वाहर्षवतीत्वयाविहरतामेवंसजीवाऽभवन् सानंदंविपिनेध्रमन्वहुतयाविघ्नेश्वरम्रायताम् ४ अस्यैवानुकरणश्लोकः

कृत्वाक्रीडनकानिहास्तितुरगादीनिस्वमात्रेऽवदत् जातामातरियंममा तिमहर्तसेनासमालोक्यताम् ॥ श्रुत्वावाचमुवाचयंगिरिसुतासाकं त्वयाक्रीडतात् जीवन्तीमवलोक्यतक्षणमिमांश्रीतांगजास्योऽवतु ॥ ४ ॥

अच्छीवनीहै इससेवाको तूही भी अच्छीतरह देखो ऐसेहि सुनकर माता तात्काल ही देखनेसेबिना ही कहनेलगी हेपुत्र यह संपूर्णसेना तेरेसाथ विचरे ऐसावचनकहनेसे वो संपूर्ण मिट्टीकीवणीहोईवेना चेतन अर्थात् जीवित होकर तिस गणपतिके साथ क्रीडाकरते भई और संपूर्णमातक देखकर बहुत प्रसन्न होतेभये और तिसी सेनाको साथलेकर विहार करतेभये इसमेंभी यह आशयहै कि अचेतनवस्तुको सचेतन करेवाली लीलाके स्मरणसे मेरा प्रारब्धग्रंथ रचनाकीअयोग्यतासे अचेतनप्रायभीहै तथापि सचेतनतुल्य उनकी कृपासे होवेगा ४

१. अब पंचमः श्लोक कर्के सूर्य भगवान्की प्रार्थना करते हैं यदिति सो सूर्य भगवान् मेरेसे पूषमनोरथोंका विस्तारकरे जो सूर्य भगवान् अबकागमें मग्न अर्थात् डुबे हुये जगतको अतिशयकर्के चेतन करताहै इसकारणसे मेरा जो मग्नप्राय ग्रंथहै तिसकोभी सूर्यदेवता उद्धारणकरेगा और जिस सूर्यके उदयकालमें तोन १ नेत्रोंवाला जो महादेवहै सांवी अञ्जलीकों करताहै और जो उदयादि समयविषे ब्रह्मा और विष्णु और रुद्र अर्थात् महादेव इनतीनोंकी तुल्यता गङ्गीकोबांण करताहै उदयकालमें ब्रह्माके रूपकों धारण करताहै और मध्याह्नमें ईशके रूपको धारण करताहै और अस्तसमयमें विष्णु केरूपकों धारण करताहै यह सूर्यभगवान् देवत्रय ३ रूपीहै एक इसमें और वृत्तोंतहेके अधिकार दूरकरण अर्थसे अज्ञान दूरकरणकी संभावना कीदीहै ५ अब भगवतीजीकी प्रार्थना करतेहैं विन्तेति अम्बिकाकापद मेरीअतिशयकर्के जो ग्रंथनिर्माणविषेचिन्ताहै

यश्चेतयत्यतितरांजगदाध्यमग्नयस्योदयेऽजलिमसौकुरुतेत्रिनेत्रः ब्रह्मे
शविष्णुतनुतांसमयेविभर्ति ॥ सोयंरविर्यतनुतांसकलार्थासिद्धिम् ॥ ५ ॥
चिन्तामणिप्रथितपीठविरामकक्षं कल्पद्रुमोपवनपंक्तिविहारदक्षम्
सिद्धेश्वरादिनयनाब्जसहस्रलक्ष्यं चिन्तांहरत्वतितरांपदमाम्बिकाख्यम्
॥ ६ ॥ स्वतोमित्वातत्वंश्रुतिरपियदीयंभगवती गुहागूढं
प्रोचेसकलपरुषार्थाद्यइहयः विचारेस्वेसक्तान्विशदमतिदानेनसदयं
सधर्मोऽस्मान्दीनान्वहुलमनुगृह्णातुभगवान् ॥ ७ ॥

तिसको दूरकरे तिसीकें विशेषणहै कैसाहै देवीकापद चिन्तामणिकर्के युक्त और प्रसिद्ध जौ पादपीठ सोइहै विरामकक्षा विग्रामभूमि जिसकी फेर कैसाहै कल्पवृक्षां वाली वगीचीविषे विहारकरणमें चतुरहै फेर कैसाहै सिद्धेश्वर आदिकोंके जो हजारोंनेत्रहैं तिनका एक बशाना है इसमेंभी भगवतीके पदके विशेषणोंसे चिन्तामणिआदिकोंके स्मरणसे स्वाभ्युपसिद्धिकी संभावनाहै ॥ ६ ॥ अब धर्मजीकी प्रार्थना करतेहैं स्वन इति सो धर्म अर्थात् दीनोंपर क्या दुःखितोंपर बहुतगा अनुग्रहकरे सहितदयाके जैसे होवे तैसे) कैसेहां असी अपने विचारविषे उगेहुएँ किसकर्के विशदेति विशदमाते क्या विशालबुद्धितिनकेदेने कर्के कैसा धर्महै इसको कहतेहैं कि जिसके तत्वको धृति जोवेदहै सोभी आपसेते मानकर्के क्या अतिशयकर्के गुणकों कहिताहै कैसी धृतिहैसबोंकोछुट्टेऔर जोधर्म चागें पुरुषार्थोंकाआदहै ७

अब श्रीमहाराजकी प्रशंसा श्रीवीर स्तुतिकरनेहैं एकदिन श्रीमहाराजजम्बूकाशमीर ति
व्यतादि जो अनेकदेश तिनकेस्वामी संपन्न ऐश्वर्यकरके संपन्न विद्याविनोदधिपें रसिक निम २
शास्त्रविपें जो परिचय निमवाले विद्वज्जनोकीजोगोष्ठी अर्थात् सभा निसकके संभावित वया
तदासनायासित अंतः करणपालिदोंन अपनी २ बुद्धिकके परिकल्पित अर्थात् अध्ययनकीये जो
शास्त्रकारोंसे पूर्वपक्षादि तिसकेनिर्णयकरणवाले और तिनोकरकेकहेहुएजो नाकाकोटिरहस्य
तिनकेपरिचयकरके विकसित अर्थात् प्रकुलितहैं सर्वदाकुल मुखारविन्द जिनोका और
बहुतप्रकारके नैयायिकादिविषयोंमें पंडितजनोंतें करवाये जो निर्णय और विवादशांति

अथैकदास्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराज जम्बूकाशमीरतिव्यताद्यनेकदेशा
धिपति सकलैश्वर्यसंपन्नविद्याविनोदरसिकतत्तच्छास्त्रपरिचितविद्वज्जनगोष्ठी
संभावितान्तःकरण स्वस्वबुद्धिपरिकल्पितपूर्वपक्षादिनिर्णायक कथितना
नाकोटिरहस्यपरिचयविकसितवदनारविंद बहुविधनैयायिकादिनिर्णयका
रितविवादशांतिश्रवणगीयमाननानादेशीयराजसभ्यन्यायकौशल्यसर्व
मतादिसाधारणपाठशालापठनपाठनाभ्यासपाठवदर्शनोत्सुकमनोदीयमा
नयथायोग्यप्रसादधन कालान्तरजातकाचित्कशास्त्रवेकृत्याद्वारकान्यमहारा
जानुपलंभसंभावना तत्प्रचिन्युपचितगुणिजनसमुदायदेशदशान्तरलिख्य
मानमहानुभावपदवीकल्पलतापरिपालक समरतराजकमलवनोद्घाटन
दिनमणिविराजमानेहि श्रीरणवीरसिंहः

तिनोके श्रवणकरणेकरके गायनकरीदीहैं अनेकदेशोधिपे और राजसभाविपें न्यायकरणमेंचतुरांजि
नही और सभवातलेओंकोयां पाठशाला बनाकर तिन्होंमें पठनादिजो अभ्यास तिसमेचतुरलो
कोके देखनेमें उत्पन्न है जिनाकों उत्तीर्णहैं देखेहैं वयाविशेष प्रसादधन वगशीमांकों और काल
केपरायमें तिसकेभानमें आया जो शास्त्रविरोधादि तिनका परिहारऔर राजश्रीमें नहिदेख्यया तिस
से प्रवृत्तिहैं निमित्त पुष्ट पुत्रोर्गाजनोंके समुदाय तिन्होंकरके देशदेशान्तरमें जो लिखीदीहैं महानु
भावपदवी का पदवा तिसकेपां पाठक और सुभरांवाहैं नमलोंकावन तिसकेविकाशवास्ते
सुभरी न्याई प्रकाशमानहैं श्रीरणवीरसिंहगजा

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भाग:- टी ० भा ० ॥

९

तिनों तिनों देशोंमें आयेहुवे पंडितजनोकरके मंडित अर्थीत् भूषित और श्रीघुनाथजीके पूजनविषे तत्पर जो महागज तिनों कर्के परिष्कृत क्या सनाथ और जोगजे और मंडलेशहैं इस्यादिकों कर्के शोभायमान और विद्यारूपगंगाके तुल्य ऐसी जों सभा तिसविषेठे हुवेंसो महागज पंडितोका प्रणरूपी सत्कारकरतेभवे(प्रणः)धर्मसाधन दया है तिसका उत्तर सबपंडित विचारकरके धर्मशास्त्रकेविस्तारकों शब्दादि विषयके प्रतिनिविजानकर और श्रीसरकारकीउपमां गकी योग्यताकर्के एकधर्मशास्त्र नामहानिवंध बनायकर्के तिस ग्रंथकेपांचभाग रचतेभवे जिसमें प्रथमभाग आह्निक है ॥ १ ॥ और दूसरा प्रायश्चित्त है ॥ २ ॥ तीसरा संस्कार है ॥ ३ ॥

तत्तजनपदागतकविजनमंडितायां श्रीरघुनाथपूजनसमासक्तमहाराजपरिष्कृतायामन्यभूपतिमण्डलेशादिशोभमानायां विद्यांगंगानर्दाकल्पायां सभायां तावत्किंधर्मसाधनमिति विचार्यतामिति प्रणसत्कारंकृतयांस्ततश्चथामतिविद्वांसःकल्पनेस्म तत्राविद्वद्भिःप्रभुवराभिप्रायानुगुणतयाधर्मशास्त्रप्रपंचस्य शब्दस्पर्शरूपरसगंधविषयप्रतिरूपकतया महाराजोपमांगक्षमतयाचं आह्निकप्रायश्चित्तसंस्कारदानआद्यात्मकोऽयं श्रीनृपवररणवीरसिंहनिर्मापितधर्मशास्त्रप्रपंचाख्येमहांग्रंथोनिर्मितः तस्य प्रथमोविषयः आह्निकम् ॥ १ ॥ द्वितीयः प्रायश्चित्तम् ॥ २ ॥ तृतीयः संस्कारः ॥ ३ ॥ चतुर्थोदानम् ४ पंचमः आह्नम् ५ ॥ शब्दादिगुणानया कल्पना ॥ तत्रादौ संक्षेपतो महाराजध्वशयर्णनम् पृथ्वीयंवहुरत्नसंचयवतीयानिर्निताव्रज्जणा तस्यांश्रीरविपंशटद्विरमलारुचातगुणोऽसद्वृत्तेः

चतुर्थं दानहै ४ पांचमा आह्न ५ है इसग्रंथमें धर्मसाधन स्थापन करनेहुये और तिसका महाराजभी सत्कारकरणेपरि और उनी भागमें आइयेकेभवे इसग्रंथमें प्रपंचांगमें सनातनधर्म जो श्रीरघुनाथ है सो दृढहोवेगा और लोकमें धर्मकासंरक्षण और जिसमें प्रतिनिविजाने ॥ तत्र श्रीमहाराजजीकी संक्षेपमें वंश परंपरा जिकीदिहै पुनर्विषय पृथ्वीयंवहुरत्नोक्त कथा लीहै जिसकर्के ईश्वरनाम वसुन्तरीहै अनेही प्रतिसंस्कार विचारमें श्रीरघुनाथ वंशभी लखे जिस जिस वस्तु विषे जो जो एक उत्तमहै सो सो रत्न कीदाहै तिस वंश की वृद्धि अमलहै और सत्पुरुषोंकर्के धृति जो गुणहै तिन्होरुके रखात है.

तिसविषे गजसिंहनामकर्त्त राजाहोआ जेने क्षीरसमुद्रविषे चन्द्रमा हुंदाभया जिसराजाने गजासिंहनामकर्त्त पुरी बसाडे जो उत्तमजनोंकी वसनिहै १ तिसकापुत्र भुवदेवनामा हुदाहोआ जो महा राजेयां को मान और जिसकी निम्नलकीर्ति भुवा क्या स्थिरहै सो राजा मानो पृथ्वीमें दूसरा भुव प्रणीत होता भया ॥ २ ॥ तिसका पुत्र रूरतसिंहनाम सजा तेजोनिधि क्या बडातेजस्वी पूरीहीनहीं आ तिसकापुत्र जराउरीसिंह नामराजाहोआ सो बडाबलवान होआ किमकीनहीं जेनबडेहरियेके समुदायविषे सिंहहोये जैसे सिंह हस्तिथोका मर्दनकरताहै तैसे शत्रुथोका मर्दन करताहोआ यह अर्थहै ३ तिसकापुत्र किशोर सिंह नामकर्त्त राजाहोआ सो बाउ हृत्तिषे क्या बाललीलाविषे बडाबलीहोआ इसतेही तिस

जातस्तद्गजसिंहवर्षेष्टपतिःक्षीरोदयोचन्द्रमा येनाकारिपुरीप्रवीणयसति
यौवगजासिंहिता ॥ १ ॥ जातस्ततःश्रीभुवदेववर्म्ना श्रीमन्नहीपाल
गणाग्रगण्यः पुत्राहिकीर्तिर्विनलायदीया भुयोऽपरोभूनिगतःप्रतीतः ॥ २ ॥
तदात्मजःसूरतसिंहवीरस्तेयोनिधिःसूरज्यावतीशः जराउरीसिंहसुतस्त
दीयःसिंहोदयोन्मयगजेन्द्रनये ॥ ३ ॥ किशोरसिंहस्तनयस्तदीयामहाव
लोऽभूच्चकिशोरवृत्ते यःशत्रुभूषद्रुवनाशयाणामुत्पाटयामासमुबुद्धिद्वये ४
जातस्ततोभूषशिरःकिरीटनाराजितांघ्रिन्सुनरांजहोजाःजेतारिपूणांमतिमान्म
हीन्द्रःश्रीमन्नहाराजगुलावसिंहः ५ सूनुस्तदीयोजगतीप्रसिद्धा भूपाग्रणीः
श्रीरणवीरसिंहः श्रीरामचन्द्राहिनयप्रदुद्धौविद्योदयौमंथनकृत्सुरेशः ६

कानामकिशोरसिंह होताभया जो राजा शत्रुगजारूप जो वृक्ष तिनका जो बत तिसके जोआ
अथ तिनके उखेडेनेवाला किसवास्ते सुंदरमतिवाले जो पुरुष तिनहोकी वृद्धिवास्ते ॥ ४ ॥
तिसकिशोरसिंह यौवन्नगराज गुलावसिंह होताभया कैसाहै राजकोकेसरमें जो मुकुट
तिनकर्त्त अतिमलतीनका चरण तिनका किर कैता बडाबलवान और शत्रुथोकेजी
तोताथा श्रीरगजीहुइया आ और पृथ्वीविषे हुंदाकीनहीं तोताभया ५ सूनुनि तिसकापुत्र
श्रीरणवीरसिंहहोआ सो कैसाहै जगविषे प्रसिद्धहै और राजकोविषेजगणोंहो और नीतिकी
वृद्धिविषे औरतचंद्रकीनहीं है विचारूपी समुद्रके मंथनकरणे वाला मानो विष्णुहै ६ ॥

महीति इसश्लोककेभी तिसी की स्तुति किये हैं कैसा है श्रीरणवीरसिंह नामराजा
शुद्धी तरह प्रजाकी रक्षा करणी और दान यो है धर्मपतिता और दुष्टोंका नाशकरणा
और सज्जनोंका रक्षाकरणी फेरकैसाहै श्रीरामचन्द्रजीका जो अक्षय तिसरें उत्पन्नहुआ है
कल्याण .जिनको अमाहै ॥ ७ ॥ ७ तत्र प्रथमे प्रायश्चित्तविषय जो प्रकरणहैं
तिनकी अनुक्रमणिका लिखीहै प्रथमप्रकरण आदमें मंगलाचरणहै फेर इसीप्रकरण मे
मीमन्तद्वाराजवर्णनपूर्वकव्यंशवर्णनहै और इसीप्रकरणमें प्रायश्चित्तशब्दार्थ भी है १ उसके.
आगे दूसरा अधिकारी प्रकरणहै और उन्नीप्रकरणमें प्रायश्चित्तकी प्रयोगाभीहै २ तिसकेआगे
तीसरा पर्यद्दकरणहै अर्थात् समाका लक्षणहै और इसीप्रकरणमें सर्वप्रायश्चित्तकविधान
की विधिभी लिखीहै और दशविध तानकी विधि भी सम्यक् लिखी है ३ और इसकेआगे

महीपतिः श्रीरणवीरवन्मा सन्धक्त्वा रक्षणदानधन्ना दुष्टाक्रियासजन
धारकन्मा श्रीरामचन्द्रश्रुतिजातशन्ना ७ ७ तत्र प्रायश्चित्तविषयप्रकर
णानुक्रमणिकालिख्यते मंगलाचरणन्तावत्प्रायश्चित्तार्थवाचनम् १ ज्ञेयततोऽ
धिकारित्वं प्रायश्चित्तप्रशंसनम् २ पर्यदोलक्षणञ्चैव ३ ॥
तथाकर्म्मविपाककम् ४ कच्छूचाग्नाद्याणादीनां वर्णनंतदनंतरम् ५ समधारणं
६ ततः प्रोक्तं प्रायश्चित्तनिवन्धनं जातिभ्रंशकरञ्चैव ७ संकरीकरणं ८
न्ततः अपात्रीकरणं ९ तद्वन्धनिनीकरणं १० ततः प्रकीर्णकप्रसंगो
११ हिउपपातकनिर्णयः १२ महापातकसंज्ञा १३ हितस्संसर्गभवं १४ तथा

चतुर्थं कर्म्मविपाक प्रकरणहै जिसमें पूर्वकर्म्मोंके फलका वर्णनहै ४ और तिसकेआगे
पंचम व्रतप्रकरणहै जिसमें कच्छू प्राजापत्य चाग्नाद्याणादि व्रतोंका वर्णनहै और उसीप्रकरणमें
व्रतोंके प्रत्याग्राह भी हैं ॥ ५ ॥ और तिसकेआगे षष्ठसाधारणप्रकरणहै जिसका सर्वप्रयोगहै
६ और तिसकेआगे सप्तम जाति भ्रंश करतानक प्रकरणहै ७ और तदनंतरअष्टमसंकीकरणप्रक
रणहै ८ और तिसमें उपरान्त नवम अपात्रीकरण प्रकरणहै ९ तिसके आगे दशवा मलिनो.
करण प्रकरण हैं ॥ १० ॥ और तिसमें उपरान्त एकदश प्रकीर्णक प्रकरणहै ॥ ११
और तिसमें उपरान्त द्वादश उपपातक प्रकरणहै ॥ १२ ॥ और तिसके आगे त्रयो श
महापातक प्रकरणहै ॥ १३ ॥ और तिसके आगे चतुर्थ महापातकसंज्ञा प्रकरणहै ॥ १४

और तिसके आगे सामान्यसंसारि पंचदश प्रकरण है ॥ १५ ॥ और तिसके आगे षोडश महापातोंका सामान्य प्रायश्चित्तप्रकरण है ॥ १६ ॥ और तिसके आगे सप्तदश अनुपातक प्रकरण है ॥ १७ ॥ और तिसके उपरंत अष्टादश शुद्धिप्रकरण है जिसमें संपूर्णोंकी शुद्धि लिखी है ॥ १८ ॥ और तिसके आगे एकोनविंश रहस्यप्रकरण है ॥ १९ ॥ और तिसके आगे विंशति अथविद्वपुत्रकी विचारणा का प्रकरण है ॥ २० ॥ और तिसके आगे एकविंशति परिशिष्ट प्रकरण है ॥ २१ ॥ प्रायश्चित्तविधानमें यह एकविंशति प्रक्रिया हैं • अथ वर्णाश्रम के विभाग पूर्वक धर्मोंको कहकर प्रायश्चित्तभागका प्रारंभ करेदा है सो कैसे है विहिताकरणादि जो पाप अर्थात् जो वेदमै किहा है सन्ध्यावन्दनादि तिसका नहि करणा १

साधारणचसंसर्गि १५ महापातसमानक १६ महापातकसामान्यामित्यर्थः अनुपातकसन्धानं १७ वस्तुनां शुद्धिवेदनम् १८ प्रायश्चित्तरहस्यं १९ च अपविद्धवि २० चारणापुराणपरिशिष्टं २१ हिततः प्रकरणमतम् प्रायश्चित्तविधौ चैकविंशतिः प्रक्रिया इमाः • अथ वर्णाश्रमधर्मान्निरूप्य विहिताकरणादिजन्यपातित्यादिपरिहारोपायानिरूपणात्मकः प्रायश्चित्तभागः प्रारभ्यते भवति चास्य प्रकरणस्य वर्णाश्रमधर्मनिरूपणोत्तरं निरूपणे प्रसंगसंगतिः एतत्प्रकरणं निरूपणीय प्रायश्चित्तनाश्वपातकानां पूर्वप्रकरणप्रतिपाद्यवर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमे लब्धजन्यतया प्रसंगस्य संभवात् विहिताकरणादिजनितपातकाभावश्च द्वेया वर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमज्ञानेन संभावितेभ्यस्तथाविधधर्माननुष्ठानजन्यपापेभ्यो वर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमज्ञानेन निवृत्त्या

और जो निषिद्धकीते हैं लघुभक्षणदि तिनका त्यागकरणा ॥ २ ॥ और इन्द्रियोंका निग्रहकरणा ॥ ३ ॥ इनके उत्पन्न होउने पापतिपादिपाप तिनके परिहारोपायकानिरूपण है स्वरूप जिसका • अथ आन्धिक्यका पीछे प्रायश्चित्तभागके निरूपणविषे संगतिका विचारकीते हैं इस प्रकरणके वर्णाश्रमधर्मनिरूपणके पीछे प्रसंगकी संगति है किस्ते कि इसप्रकरणविषे कहऐजा है प्रायश्चित्त सो त्रिन्विंशति पापोंको दूरकी है सो पाप पूर्वक धर्मका जीउलेंपन अर्थात् त्याग तिसकेहि होपू है और पूर्वकी हेतुवत्की हेतु जो पाप तिनका अभाव दया नाश दोषका कहै एकवर्णाश्रमधर्मका जो स्वरूपज्ञान तिसके नोहोएकके १ और जाणें जोहि पाप तिनहा ते वर्णाश्रमधर्म स्वरूपके ज्ञान कर्के निवृत्ति सँ बचा हटणें सँ २

और जानकरें भी प्रमाद और आलस आदिकें कर्कें तिस तिस विधि कर्कें प्रतिपाद्य धर्मोंके अनाचरण कर्कें संभावित जो पाप निन्दोका प्रायश्चित्त कर्कें जो नाश तिसकर्कें तिनविधे जा पहला पापनाश है तिसका तथाविधधर्म तैसाहि धर्मस्वरूपका जो कम है तिस के ज्ञानको प्रमं रहणे की योग्यताकर्कें और दूसरको तैसाहि पाप नाशके हेतु तौ इस प्रायश्चित्त प्रकरणविधे प्रतिपादनको योग्यताकर्कें दोआं प्रकरणोंको पापनाशकी प्रयोजकता कर्कें एकहि कार्यके कारणसे यह दोए प्रकरण होए तांते एककार्यकारित्व यथा एकहि पातकाभावरूप

ज्ञात्वाऽपि च प्रमादालस्यादिना तत्तद्विधिप्रतिपाद्यधर्मानाचरणेन संभावितानां पापानां प्रायश्चित्तेन नाशेन च तत्राद्यस्य तथाविधधर्म स्वरूपक्रमज्ञानस्य पूर्वप्रकरणसंपादनीयतया द्वितीयस्य च तथाविधपापभावप्रयोजकहेतोरित्यप्रकरणप्रतिपाद्यतया द्वयोरपि प्रकरणयोः प्रदर्शितपातकाभावप्रयोजकत्वेनैककार्यकारितयाऽनयोरैककार्य कारित्वमपि संगतिः । यथा धर्मस्य श्रुतिरमृतीतिहासपुराणमूल कतया श्रुत्यादिषु च शतशो भिन्नाभिन्नशास्त्रानिचयविततेषु बहुत्र परस्परव्यन्तविरुद्धार्थकानां वचनानामुपलम्भेन कुत्र धर्मसमास्थितिः तथाहि श्रुतौ तावदेकत्र योऽग्निहोतारमवृथा इति पठदित्यादिना योऽग्नि होतारमित्यादिमंत्रपाठोविधीयते तत्र परत्र च यदब्रूयाद्योऽग्निहोतारमवृथाइ त्यग्निनोभयतोयजमानं परिगृणोयात्प्रमायुकः स्यादिति निन्दार्थवादपुर रस्सरं तस्मिन्नेव क्रतौ तन्मंत्रपाठः प्रतिषिध्यते

कार्यैकत्वरूप भी संगति होई (अथ) धर्म जो है तो वेद और स्मृति मिलते जातेशेवाले ऋषियोंके बनाए धर्म और इतिहास पुराणोंमें के कारणों वाले महाभाष्यनामिधर्म का प्रकरण भागवतादि १८ गांधेना इनके उपासनेमें हैं और उपनिषद्नामिधर्म जिस जिस प्रकार के हैं और परस्परविरोधि वचनभी देखींदें तिस जगह धर्मही मिलति जायएतौ विधि प्रमाण देद का दिखाईदाहै योऽग्निमिति इत्यमंत्रके पाठकी विधि एक जगह विधान कीजै और दूसरी जगह तिस मंत्रके पाठकी तिसी वरी विधि निषेध है

१४ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ टी.भा० ॥

एवमिते इतीरां आयोगत्र यज्ञविषे पोडशिका एक जगह ग्रहण है और दूसरी जगह निषेधे तितादोआवेचो इकदा ग्रहण कीतेहोएआं आवश्यकके विधि का लेघन अथवा निषेधका लेघन होताहै अर्थात् विधेके ग्रहणविषे निषेधका लेघनहै और निषेध के ग्रहण विषे विधिका लेघन होताहै इसी प्रकार एक वचन है उदितेति एककहताहै सूर्यके उदयहोएआं हवनकरना दूसरा कहताहै सूर्यके माउदयहोएआं हवनकरना और तीसराकहताहै अर्धसूर्यके उदय होएआं हवनकरना इनवेदक व व्यवहारे बहुतथोड़े कालकहे जो सायकर्म तिसको वेदकके कहे जो तीनकाल तिसविषे कर्म नूना समयहै एो प्रधान कर्मजो है हवनरूप तिसमे तीनकाल विधान कीहे तिताविषे अथवाकहे इकतालदे ग्रहण कीतेहोएआं और कालोंकी जो विधि तिस

एवमितिरावे पोडशिनं गृह्णाति नानिरात्रे पोडशिनं गृह्णातीति वाच्या भ्रानतिरात्रकरो पोडशि नो ग्रहणं विधीयते प्रतिपिध्यते च तत्रैकतरानुष्ठाने ऽवश्याविध्यल्लेघनं निषेधोल्लेघनं वा प्रसज्यते एवमुदिते जुहोति अनुदिते जुहोति सप्तयाश्रुपिने जुहोतीति श्रुतिवाक्यैरत्यल्पकालसाध्यस्य श्रुत्युदित कालत्रये कर्तुमशक्यस्य हवनरूपस्य प्रधानकर्मणः कालत्रयमभिधीयते तत्र ऽवरयमेककाले तदनुष्ठाने कालान्तरविध्युल्लेघनजन्यदुरितप्रसंगः ॥ एवं स्मृतिवचनेष्वपि अपुत्रघनं पञ्चभिर्नामीति वचनं सर्वेभ्यः प्रथमपत्न्या अपुत्रघनाधिकारं बोधयति अपुत्रघने भ्रातृगंभीति तु भ्रातुरधिकारव्रूते एवमादीनां परशतानां परस्परस्यैतद्विरुद्धार्थानां मुनिवचनानामुपलम्भे तत्रात्रैकतरानुष्ठाने कुत्रचिद् विध्युल्लेघनं कुत्रचिद् निषेधोल्लेघनं प्रसज्यत इति यापनी तभिः कुत्रतत्संवेदमित्यपेक्षुष्यत ॥ कुत्रचित्परस्परविरुद्धवचनानां

का जो नाहणः तिसके उपपन्नयोग जो पाप तिरका प्रांगहै ॥ इसीप्रकार स्मृतिवचनं विने किंजहै अपुत्रका जो घन सो पत्नीको प्राप्तहोताहै उत्पन्नवने सभनाने पहले पत्नी काहि अपुत्रघनका अधिकार कहाहै दूसरा कहताहै अपुत्रका जो घन सो भ्राताको प्राप्त होताहै इत्यादि जो सत्रो वचन परस्परविरोधि है तिसमुक्तिअर्थाते तिस तिस जगाएकके कारणे दूसरेका विषय अथवाकहे उचित हुंदाहै तां पापने भयभीत जो पुरुषहैं तिनहोंने तिस जगह स्थितहोताहै यह पूर्वपदा गुनकर कहंतहैं ॥ (उत्तर)जो विरोधिवचन किते किते जगहके गुणों सिद्ध हैं

जिनको शास्त्रभेदकर्म व्यवस्था जाननी और किसे किसे जगह कण्ठ दिने बहुत प्रयासदेखणो . तिस विधि का नहि करणा श्रीकी व्यवस्था है अथवा अभ्यानुष्ठान जो है नहि करणा तिसकी अपेक्षा करके भावानुष्ठानविषे बहुतप्रयास भी है परंतु फलविशेषके अनुमानकरके व्यवस्था है जैसे सूर्यग्रहणविषे वृत्तिकी संभावना हुंदी है और किसेजगह फलविशेषके व्यवस्था है और किसे जगह कालविशेषविधिमे प्रयत्न भिरुके व्यवस्था है और किसे जगह एकजैसे दोए पक्षहै तद उच्छादकके व्यवस्था है श्री किसे जगह यचनान्तरकर्मतेयादानुल जो तहै तिसकके व्यवस्था है इसकके तिनहांविधीवचनाकी

शास्त्रभेदेन परिग्रहस्य व्यवस्थया कुत्रचिच्च अभ्यानुष्ठानरूपद्वय भावानुष्ठानस्याऽधिकप्रयाससाध्यतया विध्यनुष्ठाने आदित्यग्रहणे वृष्टिरित्येकस्याप्यान्तरालिकफलविशेषस्याऽनुमानेन कुत्रचिच्च कालविशेषपरिग्रहादौ प्रथमारम्भपरिगृहीतकालादिनैयत्यव्यवस्थया कुत्रचिच्च यत्रान्यतरपक्षपरिग्रहे फलेविशेषः कथमपि न संभवति तत्रैच्छिकत्वस्य व्यवस्थया कुत्रचिच्च मान्तरसंज्ञादानुकूलतर्कादिना तेषां तेषां विरुद्धार्थकानां विषयविशेषविषयकत्वस्य व्यवस्थापनेन च सर्वेषां विरुद्धार्थप्रतिपादकानां वचनानां परस्परमविरोधे संभवति विरोधाभासशंकया तेषु तेषु धर्मेषु निश्चायन्तः पापभीरवो न कथमप्युपेक्षां कर्तुमर्हन्ति तस्माहि प्रथमं तावद् योभिर्होतारमित्यादि मंत्रपाठप्रतिषेधवचनस्य यजुर्वेदे पाठेन तद्वत्तत्रपाठो यजुःशाखिनां प्रतिषिद्धो विवेध्याश्वलायनसूत्रोक्ततया शाकल्यशास्त्रे रत्नसंज्ञपाठः करणीय इति शास्त्रभेदेन तन्मात्रपाठपाठयोर्व्यवस्थादानुवर्ततान्न तयोर्वैदिकवाक्ययोः परस्परविरोधः कायमन्त्रादिकस्य युक्तिः

विद्यन्यवस्था जाननी इसते समभवते ता अपि नहि है जो जिनका शास्त्रहै सो विरोधाभास हिंदे काइ यथा ये नहि इसते पापभीरवो यो पंडितलोक जिनवचनको उपेक्षा नहि करते तथहि जिसअरह विधिका परिहार हुंदाहै सो दितदिदाहै योजितोतापरिहारादि मंत्रपाठका जो निषेधवचनहै सो यजुर्वेदोक्तो है तिसकके यजुर्वेदवाक्याहो डि तिसवाक्योपहै और ॥ आश्वलायनसूत्रविषे इसकी विधि है इसकके तिनहां और आश्वलायनशास्त्रकेन तिस मंत्रका पाठकरणा उचित है यह शास्त्रभेदकर्म व्यवस्था तहै इसते तिसविका पाठकरणा और नाकरणा यह सुगम हि व्यवस्था है इसते वेदवाक्यका विरोध नहि होता

एवं षोडशग्रहणरूपस्य कर्तव्यः प्रयाससाध्यतया षोडशग्रहणाग्रहणयो
रुभयवाप्यनिरात्रक्रान्तिद्वयवि तदनुष्ठानेऽङ्गानुष्ठानजन्यमपि किमप्य
पूर्वमायिक कल्प्यते षोडशग्रहणे त्वतिरात्रक्रान्त्यनुष्ठानजन्यमात्रमपूर्वं
चजनानन्वेति न कथमपि विधिगतिष्वेवयोर्विरोधस्यावसरः उदितेजुहो
तीत्यादौ तु द्वाध्यानेतरमग्निहोत्रस्य प्रथमारम्भे येन यादृशः कालः पारे
गृहीतस्तेन यावज्जीवं प्रतिदिनं तस्मिन्नेव होतव्यमित्येपा व्यवस्था
एवं त्रीणिभिर्धर्मैरी यजेतैवत्रापि प्रथमदशपूर्णमासयोगे यां येन द्रव्येणे
पृथान्तरं तेनैवद्रव्येण प्रतीष्ट यजेतैतिव्यवस्थितोविकल्पः यत्र च व्यव
स्थिताविकल्पऽन्यत्रानुष्ठाने कलाविषये च न किमप्यनुकूलं तर्कोदिकमु
पलम्ब्य यथाऽभवत्तत्रैववाच्यंवारसंदेहवन्तीपिपाणि कुतादव्यव
हिरतिभिर्वा भूते कुता दिव्यन्यास्तत्रास्तद्वत्कवमेवान्यतरपाटस्य

[illegible]

और अपुत्रकाधन पत्नीको मिले इसविषे जो है यज्ञवल्क्य जीका वचन तिस कर्के विभागको कह कर्के फेर संसृष्टिक्र विभाग अगेकहणा अर्थात् जो सांज्ञा धन है तिसका विभाग कहणा है तिस विषे निर्णय होआ कि जो वक्वराहै और धनभी सांज्ञा नहि इस अपुत्रका धन स्त्रीको प्राप्तहोवे यह वचन इसपर है और अपुत्रका धन आताको प्राप्तहोवे यह वचन जो कठा आताहै तिसपर है ऐसी व्यवस्था होणेतें कोई परस्पर विरोध नहि आया एवमिति इसीतरह और जगा भी आपसमें विरोधि वचन प्रतीत होवे उस जगा विरोधका परिहार दखाएहोए प्रकारविषे जो युक्तिविशेष है उसी कर्के बुद्ध मानोने हटाणे योग्य है ॥ सो मनुजीने भी किहाहै श्रुतीति जिस जगह श्रुतिद्वैध होवे क्या दो वेदके वचन विरोधी होवें तिस जगादोनो धर्म कहेहैं क्या पूर्वोक्तव्यवस्थासे दोनो

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तथाऽपुत्रधनं भ्रातृगामीत्यत्र तु पत्नीदुहितरइतियाज्ञ वल्क्यवचनस्य विभागस्य पूर्वमुक्तत्वादग्रे संसृष्टिनामधिकारस्य वक्ष्यमाणत्वाच्च विभक्तासंसृष्टिविषयत्वे निर्णीते तद्वचनविसंवादादपुत्रधनं पत्न्यभिगामीत्यपि विभक्तासंसृष्टिपरं भ्रातृगामीति त्वविभक्तसंसृष्टिपरमिति व्यवस्थाया आस्थानान्न परस्परविरोधावसरः एवमन्यत्रापि परस्परविरुद्धत्वेन प्रतीयमानानां वचनानां विरोधपरिहारः प्रदर्शितान्तर्गतैकतरप्रकारेण युक्त्यन्तरेण वा सुधीभिः स्वयमुन्नेयः उक्तं च ॥ मनुना ॥ श्रुतिद्वैधतुयत्रस्यात्तत्र धर्मावुभावपि उदितानुदिते चैव समयाध्युपितेतथा सर्वथावर्तते यज्ञइतीयं वैदिकी श्रुतिरिति तथा तत्त्वे विप्रतिपन्नानां वाक्यानामिदं तरेतरम् विरोधपरिहारेण निर्णयस्तत्त्वदर्शनमिति ततश्च न कापि दुःस्थितिरित्येपादिक् ॥ तत्रादौ प्रायश्चित्तशब्दार्थः प्रदर्श्यते अत्रमाधवः प्रायश्चित्तशब्दश्च रूढ्या योगेन च पापनिवर्तनक्षधर्मविशेषमाचष्टे

स्थापन करणें सोई पूर्वोक्तवचन लिखकर व्यवस्था करतेहैं उदितेति सूर्यके उदयविषे और अनुदयविषे और अहे उदयविषे भी सर्वथा यज्ञ हुंदाहै यहि वेदकी आज्ञा है तैसेहि होर वचनहै तत्त्वइति जो कोई वाक्य तत्त्वविषे क्या यथार्थ अर्थविषे परस्परविरोधिहैं तिन्होके विरोधपरिहार कर्के जो निर्णयआयाहै तिसते यथार्थ अर्थ जानणा तिसते तिसंजग्याभी कठिनता नहि है यहि मार्ग सबको स्वीकार करणें योग्यहै ॥ तिसके आदविषे पहले प्रायश्चित्त शब्दका अर्थ लिखदेहैं इसमें माधवजीका अभिप्राय ऐसा है प्रायश्चित्तशब्द रूढिवृत्ति कर्के क्या समुदाय शक्तिकर्के और अवयवशक्तिरूपयोगकर्के पापके दूरकरणको समर्थ जो कोई धर्मविशेषहै

तिसको कहता है और संप्रदायके जानने वाले पंडित पापके नाशकरणमें समर्थ जो कोई नैमित्तिक कर्मविशेष है प्रायश्चित्तशब्द तिस विषे प्रसिद्ध है ऐसा कहते हैं ॥ इसअर्थका योग श्रीगिरा जीने दिखाया है प्रायइति प्रायनाम तपका है और चित्त नाम है निश्चयका सो तपनिश्चयकर्के मिलया होया प्रायश्चित्त किहा है १ और अर्थकहते हैं प्राय इति बाहुल्यतासे चित्तको समकर्के जो पाप खंडनके अर्थ देइदा है और सभाने जो करवाईदा है सो प्रायश्चित्त कहीदा है २ यहअर्थ युक्त है कि १२ वारावर्षके व्रत आदिकके करणसे अवश्य कर्के पाप दूर होता है इस विश्वासका नाम निश्चय है तिस कर्के युक्त

प्रायश्चित्तशब्दश्रायं पापक्षयार्थकर्मविशेषे नैमित्तिके रूढ इत्याहुः संप्रदायविदो निबन्धकारादयः * योगस्त्वंगिरसादर्शितः * प्रायोनामतपः प्रोक्तंचित्तनिश्चयउच्यते तपोनिश्चयसंयुक्तंप्रायश्चित्तंतदुच्यते १ प्रायश्चित्तसमंचित्तं चारयित्वा प्रदीयते पर्पदाकार्यते यत्तु प्रायश्चित्तमिति स्मृतमिति २ अनुष्ठितेन द्वादशवार्षिकादिनाऽवश्यं पापं निवर्तत इति विश्वासो निश्चयः तेन संयुक्तं व्रतानुष्ठानलक्षणं तपः प्रायश्चित्तं पापिनोऽनुतापिनश्चित्तं व्याकुलं सद्विषमं भवति तच्च परिपदादिष्टेन व्रतानुष्ठानेन प्रायश्चित्तोऽवश्यं समं कार्यते तद्व्रतं प्रायश्चित्तं चित्तसमीकरणोपपादनं चारयित्वा प्रदीयत इति व्रतं चारयित्वा चित्तवैषम्यनिमित्तं पापं प्रदीयते खंडयते विनाश्यत इत्यर्थः यद्वा परिपद्युपविष्टानां सर्वेषां चित्तं यथा समं भवति तथा चारयित्वैकसत्येन विचार्य प्रदीयते विधीयते कार्यतेऽनुष्ठाप्यत इत्यर्थः

व्रतका आरंभ करणा यहि प्रायश्चित्त शब्दका अर्थ होया इसीको प्रकट कर्के कहते हैं पापीका चित्त पापके चित्तन करणसे विषम क्या पहले व्याकुल हुंदा है सो विद्यावानोंकी सभाने व्रतके उपदेश कर्के सम करीदा है तिस व्रतका नाम प्रायश्चित्त है इसी अर्थको स्पष्ट कर्के कहते हैं चित्तो वि किं चित्तको समकर्के पापं प्रदीयते क्या खंडन करीदा है अर्थात् विनाश करीदा है और सा जानना यदेति अथवा ऐसा अर्थ है परिषद् जो सभा तिस विषे बैठे होए सब लोकोंका चित्त जिस तरह सम होवे क्या इसको इतना प्रायश्चित्त देना उचित है ऐसे सबका चित्त एक जैसा होवे तिसतर है विचार कर्के जो विधान करीदा है क्या जो कस्य करवाईदा है सो प्रायश्चित्त है

शूलपाणी जीने तो ऐसा किहा है कि प्रायो नाम इत्यादि अंगिराका वचन कहकर प्रयत्न होणेसे उपचित क्या प्रवृद्ध जो है अशुभ तिसको नाशकरे सो प्रायश्चित्त है यह हारीतजीका वचन अधिककल्पकर तिससे पापक्षयमात्रका साधन जो कर्म सो प्रायश्चित्त है ऐसा स्थापना किया है परन्तु इसजगा ऐसा विचार है कि तुलापुरुषदान और अश्वमेध यज्ञ इत्यादिकोंकी व्यावृत्तिके लिये मात्रशब्दका प्रयोग है क्या यह भी पापको दूर करनेवाले है परन्तु इनको प्रायश्चित्त नाहि कहते और नागेश जो है प्रायश्चित्त दु- ग्रंथकेकर्त्ता सो ऐसा विचार कर्ते हैं यथाविध ना अनुष्ठान करनेसे प्रवृद्ध होये पापोंका नाश करनेवाला जो कर्म सो प्रायश्चित्त है इसलक्षणकी अतिव्याप्ति तुलापुरुषदानादिविषे है तिसके हटावेवास्ते (एव) इसशब्द

✽ शूलपाणिना ✽ तु प्रायोनाम तपःप्रोक्तमित्यंगिरोवचनमभि धाय प्रयत्नत्वाद्दोषचित्तमशुभनाशयतीति प्रायश्चित्तमिति हारीतवचन मप्यधिकमुपन्यस्य तेन पापक्षयमात्रसाधनं कर्मप्रायश्चित्तमिति प्राय श्चित्तलक्षणं मात्रशब्दात्तुलापुरुषाश्वमेधादिव्यावृत्तिरित्युक्तं ✽ नागेशेन ✽ तु यद्यथाविध्यननुष्ठानाद्युपचिताशुभनाशकमेव तत्प्रायश्चित्तम् तुला पुरुषादावतिव्याप्तिवारणायैवेति नतु फलान्तरजनकमित्यर्थः पापनि वर्तनक्षमधर्मविशेषे योगरूढोऽयंशब्दइति तत्त्वम् संकेतविशेषस वन्धेन प्रायश्चित्तशब्दवत्त्वमेव प्रायश्चित्तत्वम् अतएव कृत्वाग्रेषप्राय श्चित्तेतद्व्यवहारइत्यन्येइत्यभिहितम् ✽ काश्यपेन ✽ तुलापुरुषस्यापि आत्मतुल्यं सुवर्णं वा दद्याद्वैविप्रतुष्टिकृदित्यनेन प्रायश्चित्तत्वमभ्यधायि- एवं यजेच्चवाश्वमेधेनेत्यादिनाऽश्वमेधस्यापि पाज्ञवल्क्येन प्रायश्चित्ततोक्ता

काप्रयोग है इसते होर कोई फलका करनेवाला नहि यह अर्थ है पापनिवृत्तिकरणेवाला कोई धर्म विशेष है तिसविषे योगरूढ है यहशब्द यहयथार्थ अर्थ है अथवा संकेतविशेषकर्के प्रायश्चित्तशब्द वाला जो है सो प्रायश्चित्त है इसी वास्ते यज्ञका अंगजहां विरुद्ध हो जावे तिसके प्रायश्चित्तविषे भी सो व्यवहार है ऐसा भी कई कहते हैं ऐसा नागेशने किहा है अब काश्यप जीका मत कहते हैं काश्यपेनेति काश्यपजीने आत्माके तुल्य सुवर्णदेवे कैसा सुवर्ण है जो ब्राह्मणकी प्रसन्नताकरणे वाला है इत्यादिविषे तुलापुरुषको भी प्रायश्चित्तत्व किहा है इसी तरह अश्व मेधकर्के अथवा यज्ञकरे इत्यादिवचनकर्के याज्ञवल्क्यजीने अश्वमेधको भी प्रायश्चित्तत्व किहा है

और संवर्त्तजीभी अनादिष्ट पापोंविषे प्रायश्चित्त कहते हैं दानों कर्के होमो कर्के और जपों कर्के और नित्य प्राणायामों कर्के और वेदाभ्यास कर्के द्विजोत्तम पातकोंसे छूटजाताहै इसमे संशयनहिहै १ सुवर्णदान और गोदान तैसेहि भूमिदान जो है यह सभ शीघ्रहि पापोंको दूर करतेहैं जो पाप और जन्मविषे कीते होएहैं इस जन्मकी क्या बात है २ जोको ई तिलधेनुका दान संयमवाले ब्राह्मणकेतांथी देताहै सोभी ब्रह्महत्यादिपापोंसे छूट जाताहै इस मे संशय कोई नाहिहै ३ अब और दानका प्रकार कहतेहैं मासइति महीनेके महीने यद पूर्णमासी आवे तिसविषे विशेष कर्के ब्राह्मणोंकेतांथी तिलदान यथाशक्तिसे देवे तदभी सभ पापोंसे मुक्त होजाताहै ४ इसमे और विशेष है पापी पुरुष कार्तिकमहीनेकी पूर्णमा

॥ संवर्त्तेनच ॥ अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तमथोच्यते दानैर्होमैर्जपैर्नित्यं प्राणायामैर्द्विजोत्तमः पातकेभ्यः प्रमुच्येतवेदाभ्यासान्नसंशयः १ सुवर्णदानंगोदानं भूमिदानंतथैवच नाशयन्त्याशुपापानि ह्यन्य जन्मकृतानिच २ तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ३ मासेमासेतुसंप्राप्तेषौर्णमास्यांविशेषतः ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्त्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ४ उपवासीनरोभूत्वाषौर्णमास्यांचकार्तिके हिरण्यवस्त्रमन्नंचदत्त्वामुच्येतदुष्कृतैः ५ अमावास्याद्वादशीचसंक्रांतिश्चविशेषतः एताः प्रशस्तास्तिथयोभानुवारस्तथैवच ६ तत्रस्नानंजपो होमोब्राह्मणानांचभोजनम् उपवासस्तथादानमेकैकंपावयेन्नरम् ७ स्नातः शुचिर्धौतवस्त्रःकृतकार्योहितात्माभिः उपपातकशुद्ध्यर्थसहस्रपरिसंख्यया ८

सोवाले दिन उपवासी क्या निराहार व्रतकर्के सुवर्ण और वस्त्र और अन्न देकर्के सभपापोंसे मुक्त होताहै ९ अब शुभ तिथि वारका योग कहतेहैं अमेति अमावास्या द्वादशी संक्रांति यहतिथिआं शुभहैं और सूर्यवार ६ इसयोगविषे स्नानकरणा तीर्थविषे और जप गायत्री का और हवन समस्त व्यस्त भावसे महाव्याहृतियोंका और ब्राह्मणोंको भोजन और उपवास क्या व्रत और दान इतनेपदार्थोंविषां कोईभीकरे तोभी सभ पापोंसे मुक्त होजाताहै अर्थात् यह सभ मनुष्यको पवित्र करतेहैं ॥ ७ ॥ अब जपका प्रकार कहतेहैं स्नात इति प्रथम स्नानकर्के पवित्रहोवे और वस्त्र प्रक्षालन करे और हितात्मा जोहैं उपदेष्टा तिन्हांते की तांहे कार्य जिसने ऐसा होकर उपपातककी शुद्धिकेवास्ते एक १००० हजार गायत्रीका जपकरे

श्रौर जेकर महापापी होवे तद लक्षभोजं कथा पूर्वोक्तीतिसें लक्ष ब्राह्मणकों भोजन देवे श्रौर गायत्रीका जपकरे तद शुद्ध होताहै ९ श्रौर जपका प्रकार कहतेहैं अभ्यसेदिति महापुण्य कथा अतिपवित्र श्रौर वेदकी माता जो गायत्री उतसवितुः इत्यादि सूर्यकी ऋचा इसका संपूर्णपापोंकी शुद्धिके वास्ते अभ्यासकरे परंतु वनविषे नदीके किनारे बैठकर १० इसीका होर प्रकार कहतेहैं स्नात्वेति तहांजाकर विधिसें स्नानकरके प्राणायामका अभ्यासकरे तिसकी विधि आगे आवेगी तीनों प्राणायामोंकरके पवित्र होकर गायत्रीका जप करे द्विजशब्दकरके पहले वर्णत्रय जानणे ११ गायत्री जपके आरंभकी विधि कहतेहैं अद्विजेति धोककरे सुकाया जो वस्त्र तिसको पहिरकर स्थलमै जपकरे जेकर जलमै जप करणा हो तद गिझाहि वस्त्र धारणकरे

महापातकसंयुक्तो लक्षभोजंसदा द्विजः मुच्यते सर्वपापेभ्यो गायत्र्या श्वैव जापनात् ९ अभ्यसेच्च महापुण्यां गायत्रीं वेदमातरं गत्वाऽरण्यं नदीतीरे सर्वपापविशुद्धये १० स्नात्वा च विधिवत् तत्र प्राणायाममथाभ्यसेत् प्राणायामैस्त्रिभिः पूतो गायत्रीं तु जपेद्द्विजः ११ अक्लिन्नवासाः स्थलगः शुचौ देशे समाहितः पवित्रपाणिराचांतो गायत्र्या जपमारभेत् १२ ऐहिकामुष्मिकं पापं पापं सर्वविशेषतः पंचरात्रेण गायत्रीं जपमानो व्यपोहति १३ गायत्र्यास्तु परं नास्ति शोधनं पापकर्मणाम् महाव्याहृति संयुक्तां प्राणायामेन संयुताम् १४

श्रौर जिसस्थानमै बैठाहै सो स्थान पवित्रहोवें श्रौर समाहित कथा स्थिरचित्तवाला श्रौर पवित्र हैं हाथविषे जिसके श्रौर आचांत कथा जो आचमन कर चुकाहै सो गायत्रीके जपका आरंभ करे १२ इसका विशेषकरके फल कहतेहैं ऐहिकेति ऐहिक कथा इसलोकविषे फल देणेवाले श्रौर परलोकविषे फल देणेवाले जो पापहैं श्रौर विशेषतः कथा दोनों लोकोंविषे फल देणेवाले जो पाप जैसे लोकनिन्दा १ नरकवास २ नरकवासते अनंतर दारिद्र्यादियोग ३ इनको पूर्वोक्त विधिसे पंच दिनरात्र गायत्रीके जप करणेवाला दूरकर्ताहै परंतु यह फल प्रकीर्णकादि पापोंविषे जानना १३ इसीको विशेषकरके कहतेहैं गायेति महाव्याहृतियोंके साथ और प्राणायामके सहित गायत्री जपके तुल्य और कोई भी पापको दूरकरणेवाला नहिहै १४ ॥

इसीका और विशेष कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्मचारी और मिताहार क्या थोड़ा भोजन करणेवाला और सभजीवाँपर दयावान् ऐसा होकर गायत्रीका लक्ष जप करे तद सभपापोंसं छूटजाताहै १५ और इसीका विशेषकहतेहैं अयाज्येति जिसको यज्ञ नहि कराणा तिसको यज्ञ करावे और निदितजो है पतिनादियोंका अन्न तिसको खावे तो आठ हजार गायत्रीके जपकरणेंसं शुद्ध होताहै १६ और भी विशेषहै अहेति प्रतिनि जो द्विजोत्तम एक महीनाभर गायत्री का जप करे तो पापोंसं मुक्त होजाताहै जैसे सपं अपनो कंचुकसे अलग होजाताहै यही द्विजोत्तम पदसे वणंत्रयका ग्रहण करणा ॥ १७ ॥ और गायत्रीको जो ब्राह्मणादि पवित्र होकर नित्य जपे सो परम स्थानविषे जाताहै वायुभूतः क्या वायुके वेगवाला

ब्रह्मचारीमिताहारःसर्वभूतहितेरतः गायत्र्यालक्षजप्येनसर्वपापैःप्रमुच्यते १५ अयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वाचान्नंविगर्हितम् गायत्र्यष्टसहस्रंतु जपंकृत्वाविमुच्यते १६ अहन्यहनियोऽधीतेगायत्रीवैद्विजोत्तमः मासे नमुच्यतेपापादुरगःकंचुकाद्यथा १७ गायत्रीयः सदाविप्रोजपते नियतःशुचिः सयातिपरमंस्थानं वायुभूतःखमूर्तिमान् ॥ १८ इत्यादिनौपंचितायमाशकत्वमुक्तं गोहिरण्यदानादीनाम् तत्रतुलापुरुषाश्च मेधादिषु पापनाशकत्वसाधर्म्येण प्रवर्तमानः प्रायश्चित्तशब्दोऽगौण एव न मुख्यइतिनागेशशूलपाण्योराशयः यद्वा यस्यकर्मणः पापनाश उत्पत्तिश्चिष्टस्तप्रायश्चित्तं यथा शिरःकपालीध्वजवान्भिक्षाशीकर्मवेदय न् ब्रह्महादादशाब्दानिमित्तभुक्शुद्धिनाप्नुयात् इतिबचनेन द्वादशवार्षिक ब्रह्मचर्यं ब्रह्मघातजनितपापनाशेन सहैव बोधितम्

खमूर्तिमान् क्या ब्रह्मग्वरूपी होया २ इत्यादिग्रंथो विषे गोहिरण्यादि दानोंको प्रवृद्ध पापोंका नाशकत्व किहा है १८ और तिन्हांविषे तुलापुरुष और अश्वमेधादियों विषे पापनाशकत्व समान धर्म कर्के वर्तमान जो प्रायश्चित्तशब्द है सो गौण है यह नागेश और शूलपाणि जीका अभिप्राय है अथवा इसमें हरेर अभिप्राय है यद्वेति जि स कर्मका पापनाश उत्पत्ति कर्के शेष रहे अर्थात् जिससे पाप नष्ट होवें सो प्रायश्चित्तहै जैसे शिरः कपाली इससेलेकर १२ वारां वर्षका व्रत ब्राह्मणके मारणीवालेवास्ते लिखाहै इस बचनकर्के वारांवर्षका ब्रह्मचर्य ब्राह्मणमारणोते होआ जो पाप तिसकेनाशके साध हि जनायाहै

ततश्च अपणो नाशकता कर्कं बोधन करणा और अपणे नाशकें इच्छाके अधीन जो इच्छाते सकाविषय होणा असेदोनोंकेसंबंधसे पापसंबंधहोणा यहि प्रायश्चित्तत्वहै इहां (स्व)पदसे पापका ग्रहणहै तिसते असा सिद्ध होआ कि स्वर्गादिओंके निमित्त किये जो अश्वमेधादियज्ञ तिनको पापनाश करणेकी योग्यता तो है परन्तु प्रायश्चित्तता नहि है क्योंकि पापनाशके उद्देशकके अवृत्ति हाणसे जिस जगा ब्रह्मवधते उत्पन्नहोये पापके नाशके उद्देशसे अश्वमेधादियों वषे प्रवृत्ति होवे तिसजगा याज्ञवल्क्य और काश्यपजीके वचनोविषे पापनाशक हाणसे तिनको भी प्रायश्चित्तत्व है यहि नागेश और शूलपाणि जीका अभिप्रायहै और जिसजगा संध्यावं

ततश्च स्वनाशकतया बोधितत्वस्वनाशेच्छाधीनेच्छाविषयत्वेभ्यसं बन्धेन पापविशिष्टत्वमेव प्रायश्चित्तत्वम् ततश्च स्वर्गाद्यर्थविधीय मानाश्वमेधादौ पापनाशं प्रति स्वरूपयोग्यत्वेऽपि नप्रायश्चित्तत्वम् तत्र पापनाशोद्देशेनाप्रवृत्तेः यत्रनु ब्रह्मवधजनितपापनाशोद्देशेनैवप्रवृत्तिरश्वमेधादेस्तत्र याज्ञवल्क्यकाश्यपवचनयोरुत्पत्तिशिष्टपापनाशवैशिष्ट्यात्तदुद्देशेन प्रवृत्तेश्च प्रायश्चित्तत्वमिष्टमेवेति नागेशशूलपाण्योराशयः यत्र च संध्यावन्दनाद्यर्थवादवाक्ये विधूतपापास्तेयान्तिब्रह्मलोकमना मयमित्यादिषु पापनाशोऽपिवोधितो ब्रह्मलोकप्राप्तिश्च तत्र संध्यावं दनादीनां मुख्यफलताया ब्रह्मलोकावाप्ताविव सत्त्वेन न प्रायश्चित्तत्वं केवलं तत्र पापनाशो यदन्हापापमकार्षे मनसा वाचा हस्ताभ्यानिति यदन्हाकुरुतेपापं तदन्हाप्रतिसुच्यताइतिमान्त्रवर्णिकत्वेनाऽऽनुषंगिकएव वस्तुतो विविधेषु कर्मसु प्रपत्तेमानं प्रायश्चित्तपदं नानार्थकमेव

दनादिओंके जो अर्थवाद वचन हैं विधूतेति तो संध्यावंदनवर्द्धहैं सो पापते रहितहोंकर अनामय ब्रह्मलोकमें जाते हैं सो वचनो विषे पापनाशभी किहा है और ब्रह्मलोककी प्राप्ति भी कहीहै जिसजगा संध्यावंदनादिकर्मोंका मुख्यफल ब्रह्मलोककी प्राप्ति है इसते उनको प्रायश्चित्तत्व नहिहै तिसके कयदन्हापापमकार्षेइत्यादि पापनाशकवचनोंकी प्रासंगिकता यहि किहाहै सिद्धांतकेद्वेहें वस्तुतः विचार कर्कें देखिए तो प्रायश्चित्तपदार्थ अनेकरूपोंविषे वर्तमान है इसते नानार्थहै है

कतु जौ : यही है तिसकी अंगवेगुण्यमै जौ प्रायश्चित्त है सो और है सोइ कहतेहैं प्रायइति प्राययहनाम अंगके विनाशका और चित्तनाम तिसके जोडनेका है इस वचनसे अंगवैकल्य कर्के स्वर्गादिरुकी उत्पत्तिविषे असमर्थ जो यज्ञादि है फेर उसकी तिसविषे सामर्थ्यबोधन कर्के पापनाशादि अर्थकी संभावनामात्रके भी नाहोनेसे एवंचेति इससे यह सिद्ध हुआ कि प्रायश्चित्तशब्दकी तुल्यताहै भी परंतु अर्थकी तुल्यता नहि है और संकेतविशेष संबंधक के प्रायश्चित्तपदवाला होना यहिअर्थ है असा नहि कहणेयोग्य तैसे संकेतको जनाएवा ला कोई प्रमाण नहि मिलता इससे और साडेसंकेतके संबंधको और कर्मोविषे ना होने कर्के

क्रत्वंगधेपादौ विधीयमाने कर्मविशेषे प्रवर्तमानः प्रायश्चित्तशब्दस्त्वन्य एव प्रायोविनाशपर्यायश्चित्तसंधानमुच्यतइति वचनेनां गवैकल्येन स्वर्गादिजननाक्षमस्य यज्ञादेः पुनस्तत्क्षमतामात्रबोधनेन तत्र पापनाशादेरुक्तिसंभवस्याप्यभावात् एवंच प्रायश्चित्तशब्दसाम्येऽपि न तत्रार्थसाम्यम् संकेतविशेषसंबन्धेन प्रायश्चित्तपदवत्त्वमेव तत्त्वमिति त्वयुक्तमेव तथाविधसंकेतग्राहकप्रमाणानुपलम्भात् अस्मदादिसंकेतस्यच संबंधतायाः कर्मान्तरेषु व्यभिचारेणविनिगमनाविरहेणचासिद्धेरितिदिक् ॥ अथ पापस्वरूपं तन्निमित्तं च निरूप्यते तत्रादौ किंनाम पापत्वम् न तावत्तज्जातिविशेषः तस्य जातित्वसाधकस्य प्रमाणत्वाऽभावात् नचनिषिद्धाचरणजन्यतावच्छेदकतया तत्सिद्धिः विहितानाचरणेनाऽपितदुत्पत्तेर्विहितस्याननुष्ठानादित्यनेनबोधनात्

और विनिगमक जो है एकका पक्षकरणेवाला तिसके ना होणेसे भी असिद्ध है यह मार्गदिसाधा है इतीपर चलो ॥ अथेति अथ पापकास्वरूप और तिसका निमित्त निरूपण करतेहैं तिसके आविषे क्या है पाप यह विचार होना चाहिए सो कोईजातिविशेष भी नहि है तिसके साधकके अभावहोणेसे(प्रत्य)निषिद्ध जो आचरण तिसकी जल्यताके अवच्छेदकर्के जाति की सिद्धि होवे अर्थात् जो वेदमै निषेध कीयाहे तिसके करणेसे पाप होताहै इससे पापत्वजाती की सिद्धि होवेगी (उत्तर) असा मत कइो विहित जौ है संध्यावंदनादि तिसके नाकरणे से भी तिसकी अर्थात् पापकी उत्पत्ति होणेसे इसका बंधक वचन है विहितस्येति

इसमें और विचार कर्ते हैं विहितेति विहितका नाकरणा और निषिद्धका करणा इन्हो दोनों विषे अनुगतरूपकर्के पापजनकताके कहणेको अशक्य होनेतें और इसमें पापजनकत्वरूप कर्के अनुगम होवेगा ऐसा कहने वालेको आत्माश्रय दोष आवता है इसते यह अर्थ भी उचित नहि अपणी उत्पत्ति जहां अपणेंते होवे सो आत्माश्रय है जैसे पापत्व क्या है कि पाप जनकत्व और इसमें और भी विचार है क्या विहितानाचरण है अभाव और निषिद्धाचरण है भाव इनदोनोंकी एकरूप कर्के कारणताके असंभवहोणेतें अर्थात् भाव अभावका एकरूप कदे भी नहि हुंदा अभावतेंभी भावरूप पापकी उत्पत्ति कहीजावे गो आगे (प्रश्न) दुःखजनकतावच्छेदक कोई धर्म विशेष है सोई पापत्व है (उत्तर) कुठारत्व जो है कुहाड़ेमें

विहितानाचरणनिषिद्धाचरणयोरनुमतरूपेण जनकताया दुर्वचस्त्वात् पापजनकत्वेनैवानुगमस्यात्माश्रयापत्याऽवाच्यत्वात् विहितानाचरणस्या भावरूपतयो भावाभावयोरैकरूपकारणताया असंभवाच्च अभावादपि भावरूपपापोत्पत्तिस्तूपपादयिष्यते (नच) दुःखजनकतावच्छेदकधर्म एवतत् कुठारत्वादावतिप्रसक्तेः अथ यस्यव्यापाराद्वारिका दुःखोत्पादकता तद्वृत्तिधर्म एवतत् कुठारादेस्त्वाघातादिद्वारिकैव तदुत्पादकतेति नाति प्रसक्तिः अतएव गोवधादिजन्येऽपूर्व एव पापत्वं न गोवधादौ तस्य पापद्वा रैवदुःखजनकत्वात् पापस्य तु न तथा पापस्यैवव्यापारतायास्तंत्रकारा भिप्रेतत्वाद्व्यापारे च व्यापारान्तरस्यानभ्युपगमात्

कोई धर्म इत्यादिविषे अतिव्याप्ति होवेगी इसते यह नहि मन्नना चाहिए (प्रश्न) जिसके व्यापारविना दुःख होवे तिसविषे रहणेवाला जो धर्म है सोई पापत्व है जेडे कुठारादि. कहेहैं सो घातरूप व्यापार द्वारा दुःखको पैदे कर्ते हैं तिसतें तिनकाविषे अतिव्याप्ति नहि आवेगी इसी कर्के गोवधादिसे होआ जो अपूर्व है उसीको पापत्व है कोई गोवधको नहि है क्योंकि तिस को पापद्वारा दुःखका जनक होणेतें और पापको तैसे नहि पापकीहि व्यापारताको तंत्रकार जो शास्त्रकारहैं तिनको अभिप्रेतहोणेतें अर्थात् शास्त्रकार पापकीहि दुःखजनकताको व्यापार मानते हैं और व्यापारविषे होर कोई. व्यापार नहि इसके स्वीकारते •

इसमें मतांतर क्या होरमत कहते हैं केषामिति कैत्रोंके मतविषे गोवधते आदिलेकर जो प्रहारादि हैं तिन्हां विषेहि पापपदका व्यवहार है सो जैसे घृतकों आयु कहते हैं तैसा उपचारमात्र है कोई यथार्थ नहि इसका खंडन करते हैं मेवं औसा मतकहो कि गोवध परंपरा से दुःखकोल्यावेगा परंतु आघातजो ताडना और चर्मका वेधनायह साक्षात् है दुःखके हेतु हैं इनविषे जो अतिव्याप्ति है तिसको कदा भी नहि दूरहोएते और जिस जगा प्रायश्चित्त कर्के पाप दूर होगया है उस जगा दुःख जनकताके ना होएते अव्याप्तिको कोन दूर करेगा इसते जो दुःखको उत्पन्न करे तिसी कानाम पाप है यहभी किसीका कहणा दूरहोआ जो पिच्छे किहा है चर्मभेदादिस्थल तिसविषे अतिव्याप्तिके ना दूरहोएते * इसविषे कोई विचारकर्के कहते हैं अत्रेति दुःखकर्के नाश होकर और दुःखजनकतावच्छेदक धर्मवत्त्व जो है सोई पापका लक्षण है कुठारा

केपांचिद्वोवधादावेवपापपदव्यवहारस्त्वायुर्वैधृतमितिवदौपचारिक एवेति चे न्मेवं एवमप्याघाते त्वग्भेदे वा साक्षादेवदुःखजनकतयाव्यभिचारतादवस्थया त् यत्रप्रायश्चित्तेन नष्टपापं तत्रदुःखजनकताया असत्त्वेनाव्याप्तेश्च एतेन दुःखजनकत्वयोग्यत्वमेव तत्त्वमित्यपिनिरस्तं उक्तस्थलेऽतिव्याप्तेरवारणात् अत्राहुः दुःखनाशयत्वे सतिदुःखजनकतावच्छेदकधर्मवत्त्वं पापलक्षणम् कुठारादौव्यभिचारवारणाय विशेषणम् इच्छादौव्यभिचारवारणाय विशेष्यं आत्माविशेषगुणानां स्वोत्तरोत्पन्नविशेषगुणनाशयत्वनियमात् प्रायश्चित्ताचरणेन नष्टत्वव्याप्तिवारणाय स्वनाशकदुःखं प्रति स्वरूपयोग्यत्वमिति वा परिष्कार्यम् यदितु प्रसिध्यति तादृशीच्छा यया दुःखं नि यतमुत्पद्यते यथा स्वमरणविषयिणी स्वैतमवस्त्वंन्तराशयिषयिणी वा तर्ह्ययोग्यत्वे सतीति विक्षेपणं देयं इच्छायाश्च प्रत्यक्षयोग्यत्वान्नदोषः

दिविषे दोषके दूरकरणवास्ते विशेषण है और इच्छादिविषे व्यभिचार दूरकरणवास्ते यह आत्माके विशेषगुणोंको उतरे उत्तर क्षणविषे उत्पन्न होए जो गुण हैं तिन्हांकर्के नाशयत्व क्या नाशहोए तिसका नियम होएते * और जो पाप वस्तुके करणें नष्ट होआ है तिसमें अव्याप्ति रूप दोषहटाए वास्ते अपणा नाशकरणेवाले सति स्वरूपयोग्यत्व पद देणें भी परिष्कार्य क्या दोषदूरकरणे योग्य है स्वरूपयोग्यत्व नाम है जो कारणतावच्छेदक धर्म होवे * अथान्तर इसमें क्या उदे हैं न यदीति जेकर यह बात है कि ऐसी भी इच्छा है जिसते नियत दुःख पैदे होवे जैसे किसीको अपणे मरणेकी है और दूसरी कोई इष्टतम वस्तुके वियोगकी श्रवणा इच्छा है तो अयोग्यत्वे सति यह दोषा इसते दोष दूर होवेगा इच्छाको प्रत्यक्षके योग्य होएते

कचिदिति और किते २ महा पापादिकी इच्छाका भी निषेध होणेत तिस बिषे पापत्व निश्चित हि है सो इसलक्षण कर्के संगृहीत नहि हो सका तिसका मानस प्रत्यक्ष होणेत उसमें नहि भ्रम करणा योग्य तिसविषे भी तैसी इच्छातें अपूर्व जो है पाप तिसकी उत्पत्ति को दृष्ट होणेत अन्यथा ऐसा नहि स्वीकारकरो तो इस इच्छातें होर देहविषे जो किसे दिन होनवाला है उसविषे दुःखोत्पत्तिका अयोग होवे जिसमें कारण जो है सो कायके पूर्वक्षणविषे हुंदा है इसका नियम होणेत ७ अथ लक्षण कहलें अनंतर पापके निमित्त कहते हैं इसविषे मनुजीका वचन है अकुर्वन्निति वेदाविहितको नहि करणा और वेदविषे जो निहित है तिसको करणा २ और इन्द्रियोंके विषयविषे प्राप्ती हांणा

कचिच्छाचिन्महापापादीच्छाया अपि निषेधात्तत्र पापव्यभिष्टं तद्धेतुल्लक्षणेन न संगृह्यते तस्या मानसप्रत्यक्षग्राह्यत्वादिति तु न भ्रमितव्यम् तत्रापि तादृशेच्छातोऽपूर्वोत्पत्तेरेवेष्टम्यत्वात् अन्यथा इदानींतनेच्छातः शरीरान्तरे विप्रकृतमकालभाविनि दुःखोत्पत्तेरयोगात् कारणस्य कार्याव्यवहितप्राक्क्षणस्थापित्वनियमात् ॥ तन्निमित्तं च किंकिमत्राह (मनुः) अकुर्वन्विहितं कर्म निदितंचसमाचरन् प्रसक्तश्चंद्रियार्थेषु प्रायश्चित्तीयतेनरइति विहितं कर्म निषं संध्योपासनादि नैमित्तिकं शय्यवर्षादौ स्नानादि तदकुर्वन् निषिद्धं हिंसादि तदनुविष्ठन् इन्द्रियार्थेषु कचन्दनादिष्वत्यन्तासक्तिं कुर्वन् नरो मनुष्यमात्रमिति कुक्कुभट्टः शूपाणिश्च नरउपनीतोऽनुपनीतो वेत्यपराकः

इन्हांक मनुष्य प्रायश्चित्तका अधिकारी हुंदाहै इसीके अर्थको प्रकटकर्के कहदे हैं विहित होते विहितहैं नित्यकर्म संध्योपासनादि और नैमित्तिकहैं मृत्युवर्षादिहोयां जायादि कर्म १ मुहदे के साथ छोकके फेर जान कर्णा तिरहको तो ना करणा और निषिद्ध कीशतें हिंसादि तिनको करणा और इन्द्रियोंके अर्थ जो सकृपुण्य जाया और चन्दनादि इन्हांक अत्यंत आसक्तिबचा प्रीति तिसको कदाहोआ नर कह्येतें कोउ मनुष्य होयें सरको प्रायश्चित्तका अधिकार है यह कुक्कुभट्ट और शूलपाणिजीका आशय है और नर कहलेंगे आपवीतवाला होवे अथवा तिस बिनाहोवे यह अपराकवादेवा मत है

प्रायश्चित्तोपते क्या तिस कर्के दूर करने योग्य जो पाप तिसका भागी हुंदा है सो याज्ञवल्क्यजी कहते हैं विहितस्येति स्पष्टार्थहै इन्हांते पुरुष पतित हुंदाहै
 * अव पापविशेष कर्के प्राप्त हुंदिआं योनिआंका जो विशेष क्या भेदहै तिसको कहतेहैं मनुजी शरीरजैरिति शरीरते पैदै होए कर्मोंके दोषोंकर्के पुरुष स्थाव-
 रताको प्राप्तहुंदाहै और वाणीकर्के होए २ पापोंकर्के पक्षियोंदीआं और मृगों कीआं योभियां विषे प्राप्तहुंदाहै और मानस जो हैं मनतें कीते होए पाप तिन्हों कर्के अत्यजाति जो है नीचजाति तिस विषे जन्मपांदाहै ॥ इसैमै विचार कर्देहैं कि यद्यपि

प्रायश्चित्तीयते तदपनोद्य पापभागभवति तथा याज्ञवल्क्यः * विहितस्या ननुष्ठानान्निदितस्यचसेवनात् अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणांनरः पतनमृच्छतीति पापविशेषेणयोनिविशेषमाह(मनुः)शरीरजैःकर्मदोषैर्यातिस्थावरतांनरः वाचिकैःपक्षिमृगतास्मानसैरन्त्यजातिताम् १ यद्यपि नराधर्ममधर्मचो भयमेवसेवते तथापिवाहुल्याभिप्रायणपापफलमुक्तम्किञ्चपापिष्ठानांशारिरवाचीकमानसिकान्येवत्रीणि पापानि संभवन्ति तथापि वाहुल्याभि प्रायेण इति व्याख्यातंवाहुल्येन शरीरकर्मजपापैर्युक्तः स्थावरत्वं मानुषः प्राप्नोति वाहुल्येनवाकृतैः पक्षित्वं मृगत्वं वा वाहुल्येन मनसाकृतैश्चांडालादित्वं प्राप्नोति १ तथाच इहदुश्चरितैः केचित्केचित्पूर्वकृतैस्तथा प्राप्नुवन्तिदुरात्मानोनरारूपविपर्ययम् २ केचिन्नरा ऐहिकैः पापैः केचित्तु पूर्वजन्मभवैः रूपविपर्ययं क्षयरोगादिकृतम्

पापियों के पूर्वोक्त प्रकार कर्के दोनः तहांके कर्महैं तथापि लोक बहुत अधर्म हि कर्हेहैं और पुण्य थोड़ा कर्दे हैं इसनै पापका हिफल दिखाया है ॥ इसमै ऐसा भी विचारहै कि पापियोंके पाप सभजगा त्रयप्रकारके हि हैं परंतु शारीरिक क्या देहवाले पाप बढ़ते होण तां स्थावरयोनि और वाणीवाले बहुतहोण तां पक्षिमृगादियोनि और मनके कीते होये बहुत होण तां चांडालादियोनि प्राप्त हुंदाहैं १ तैसेहि होर कहतेहैं इहेति ईहां कीते होए पापोंकर्के और पुण्य जन्ममें कीते होये पापों कर्के कै दुरात्मा पुरुष रूपविपर्यय क्या क्षयरोगादि कर्के रूपान्तरको पहुंचदे हैं इसीको स्पष्टकर्के लिखतेहैं केचिदिति

विष्णुपुराणके वचनको लिखदेहैं नरेति नरक जो फल इस को महर्षिलोक कर्मादे
लोपका अर्थात् पुण्यके नाशका कहतेहैं इसीमें यमजीका वाक्यहै सुरेति मदि
राधीसवाला १ और ब्राह्मण और गौके मारणे वाला २ और सुवर्णके चुराणेवाला ३
और पतितके साथ व्यवहारकरनेवाला ४ और कृतघ्न क्या जो कितेका उपकार नहि
जाणे ५ और गुरुकीस्त्रीको स्वीकार करणेवाला ७ एह सभ नरकोंविषे क्रमकके पेदेहैं
तिन्होविषे जो वेदविहित का नहि करणा इसको पापकी उत्पत्तिकरणे विषे विशेष माधव
जीने किहाहै तथाहीति (प्रण) निन्दितका सेवन है भाव तिसते भावरूप पापकी उत्पत्ति
जो कहीहै सो उचित है परंतु विहितका नहि करणा सो है अभाव इसते भावरूपकी उत्पत्ति

विष्णुपुराणम् • नरकं कर्मणां कोपात्फलमाहुर्महर्षयः • यमः • सुरापो
ब्रह्महा गोघ्नः सुवर्णस्तेयकृन्नरः पतितैस्संप्रयुक्तश्च कृतघ्नो गुरुतल्पगः एतेषु
तंतिसर्वेषु नरकेष्वनुपूर्वश इति तत्र विहितानुष्ठानाभावस्य पापोत्पादकत्वे
विशेषो माधवीये तथाहि (ननु) निन्दितसेवनाद्भावरूपादुरितोत्पत्ता
वपि विहिताकरणादभावात्कथं दुरितोत्पत्तिः न ह्यभावाद्भावोत्पद्यमानः
कचिद्दृष्टः अत्र केचिदाहुः संध्यावन्दनादिविहिताननुष्ठानमग्निहोत्राद्य
नधिकाररूपाशुचित्वद्योतकम् अयमेवार्थोऽकुर्वन् प्रत्यवैतीत्यनेनाभिधी
यते न त्वनुष्ठानाभावाद्भावरूपस्य दुरितस्योत्पत्तिरभिधीयते सचाऽनधि
कारः प्रायश्चित्तेन निवर्तत इति अपरे पुनराहुः अकुर्वन्निति लक्षणार्थे
शत्रुप्रत्ययः यदेतद्विहिताकरणं तदेतत्प्राग्भवीयनिषिद्धाचरणजन्यदुरि
बापूर्वसद्भावस्य लिंगम् तदेव दुरितं प्रायश्चित्तेन निवर्तत इति

क्यों होई किसे जगा भी अभावसे भावकी उत्पत्ति नहि देखी इसमें कोई ऐसा विचार कर्देहैं
संध्या वंदनादि जो हैं विहितकर्म इनका नहि करणा यह अग्निहोत्रादि शुभकर्मों विषे अनधि
काररूप अपवित्रताको द्योतन करवाहै एहि अर्थ अकुर्वन्प्रत्यवैति इसकर्के कहीदाहै और
अनुष्ठानके अभावसे भावरूपकी उत्पत्ति नहि है सोई अनधिकार प्रायश्चित्तकर्के दूर
हुंदाहै और विद्वान् ऐसा कहतेहैं अकुर्वन् इत्थं लक्षणविषे शत्रुप्रत्यय है तिसका ऐसा अर्थ है
जो यह विहितका नहि करणा सो एह पूर्वजन्मके निषिद्धाचरण ते होआ जो पाप तिस
के होणेका चिन्हहै सोई पाप प्रायश्चित्त कर्के दूर हुंदाहै

होर कोई ऐसा भी कहदें हैं अभावसे भाव नहि पैदे हुंदा यह कोई सांख्यिक वार्ता नहि किंतु न्यायमत विषे प्रागभाव सभका कारण है और मीमांसकोंने और भट्टजीने भी अभावसे भावकी उत्पत्ति कही है क्यों कि योग्यानुपलब्धि है स्वरूप जिसका ऐसा अभाव जो है प्रमाण तिसते घटादियोंके अभाव विषे विषय प्रमिति क्या विषयबोधरूप जो भाव तिसकी उत्पत्ति कहणते और प्रभाकर के मतवाले कहते हैं कि भावहि किसे कारणते अभाव किहा जाता है कोई अभाव पदार्थ वक्खवा नहि तिसते यह सिद्ध होआ कि विहिताऽकरण भी एक भाव हि है जेकर तिसते प्रत्यवाय उत्पन्न होवे तद तेरेको कौणसी हानी है ॥ अब इसमे अपना विचार कहते हैं (अथेति) प्रत्यवाय नाम पापरूप अपूर्वका है सो कृतिका साध्य हो करके कृतिका

अन्येप्येवं समादधते • अभावाद्भावो नोत्पद्यत इति नायमेकान्तः तार्किकमते प्रागभावस्य कारणत्वात् मीमांसकमते भट्टैस्तावदभावाद्भावोत्पत्तिरभ्युपगता योग्यानुपलब्धिलक्षणादभावात्प्रमाणाद् घटाद्यभावे विषयप्रमितेर्भावरूपाया जननात् प्राभाकरैश्च भाव एवाऽभ्युपगम्यते भावान्तरमभावो हिकयाचिच्च व्यपेक्षयेत्युदीरणात् तथाच सति विहिताकरणमपि भावान्तरमिति कृत्वा तस्मात्प्रत्यवाय उत्पद्यतां का तव हानिः • अथोच्यते • प्रत्यवायो नाम दुरितापूर्वं तच्च कृतिसाध्यत्वे सति कृत्युद्देश्यं तथाच विहिताकरणस्य कृतिरूपत्वाभावादपूर्वजनकत्वं नास्तीति नाऽयं दोषः तस्य लक्षणस्य विहितप्रतिषिद्धजन्या पूर्वविषयत्वेन संकोचनीयत्वात् अन्यथा उपेक्षालस्याभ्यामकृतिरूपाभ्यां दुरिता पूर्वानुत्पादप्रसंगात् उपेक्षाजन्यं च दुरितापूर्वं स्कंदपुराणे दर्शितम् नाभिरक्षतियेश का दीनं चातुरमाश्रितं आर्त्तन चानुकम्पते तेवैनिरयगामिन इति

उद्देश्य है अर्थात् किसके नामपर प्रयत्न करणेका विषय है और जो है विहितका नहिकरणा तिसको कृतिरूपत्वके ना होणते अपूर्वजनकत्व नहि है इसते यह दोष नहि है तिसलक्षणको विहित और निषिद्ध जो कर्म है तिसते पैदे होआ जो अपूर्व तिस विषयत्व कर्के संकोचकरणके योग्य होणते अर्थात् विहितनिषिद्धकों हि ओह लक्षणविषयकदा है कोई विहितके ना करणेमे नहि जेकर इसको नहि जानो तो उपेक्षाजाणके कर्म नहि करणा और आलस्य एहदोनोकृति रूपवाले जो नहि इनकर्के पापको उत्पत्ति हुंदा है परंतु नाहोणी चाहिए उपेक्षाकर्के पाप होता है सो स्कंदपुराणविषे लिखया है नाभीति जो पुरुष समर्थ होण और उनको दुःखी और दांद्रो जो आश्रित होआ है उसकी रक्षा नहिकरण और आतुरपर रूपा ना करण सो नरक कों जाते हैं

आलस्यकर्के जो पाप है सो मनुजीने किहाहै अनेति वेदोंका आलसते अभ्यास ना करणा और आचारका उल्लंघनकरणा आलसहोणेतें और अन्नदोषतें ब्राह्मणकों मृत्यु मारयाचांदाहै ॐ अब पुछदेहैं कि तिस जगाभी किसे तही कृति है इस बातको मनदे हो तो इत्ये भी विहितकी उल्लंघनरूप कृति है इसते यह सिद्ध होआ कि बहुतस्मृतिवचन ना करणाविषे प्रत्यवायपर हैं सो सभ सार्थक होजानगे ॥ मतांतरकहतेहैं ईश्वरेति ईश्वरवादी जो हैं आस्ति कलोक तिनके मतविषे विहितका नहि करणा यह परमेश्वरकी आज्ञाका उल्लंघनहै इसते इन कोभी कृतिरूपता स्पष्टहोई इसमे स्मृतिवचन भी है श्रुतीति ईश्वर कहतेहैं श्रुति आरे स्मृति यह

आलस्यजन्यं चाऽपमृत्युनिमित्तं दुरितापूर्वं मनुना ॥ अनभ्यासाच्चवेदाना
माचारस्यचलघनात् आलस्यादन्नदोषाच्चमृत्युर्विप्रान्जिघांसतीति ॥ अथ
कथंचित्तत्रकृतिः संपद्यते तर्ह्यत्रापि विहितोऽल्लघनलक्षणा कृतिरस्तु एवं
च सति वदूनिस्मृतिवचनान्यकरणे प्रत्यवायपराणि स्वारस्येनाऽर्थवंति
भविष्यन्ति ईश्वरवादिनां तु विहिताकरणस्याज्ञोऽल्लघनरूपत्वात्कृतिरू
पत्वं विस्पष्टम् अतएवं स्मर्यते श्रुतिस्मृतीममैवाज्ञेयस्तेऽल्लघ्यवर्तते
आज्ञाच्छेदीममद्वेषीनसभक्तो न वैष्णव इति सर्वथा विहितमकुर्वतः प्राय
श्चित्तनिमित्तं दुरितापूर्वमस्त्येव निन्दितसेवनेत्यऽविवादं दुरितापूर्वं(ननु)
अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणामिति पृथगुपादानमप्युक्तं विहिताकरणा निन्दितसे
वनाच्चान्यस्य तृतीयस्य दुरितहेतोरभावात् मैवम् अस्याभयात्मकत्वे
न तृती यत्वोपपत्तेः

दोनो मेरी आज्ञाहैं जो कोई इनका उल्लंघन कर्के बर्तंदाहै सो पुरुष मेरी आज्ञाका छेद
कर्दाहै और मेरा द्वेषहै क्या मेरा विरोधीहै और अभक्तहै और वैष्णव भी नहीं इति इसते क
हतेहैं कि सर्वप्रकारसे जो वेदविहित नहीं करे या उसको प्रायश्चित्तका निमित्त दुरितापूर्व क्या पाप
है और निन्दितसेवनविषे पापहोणै कोई भी विवाद नहि(प्रमाण) इंद्रियोंके नहि रोकणेतें पाप
हुंदाहै यह तीसरा हेतु जुद्धे कर्के क्यों किहाहै यह कहणा चाहिए(उत्तर) प्रसामत कहो इसके
दोनों स्वरूपहैं विहिताकरण और निन्दितसेवन इसकर्के तीसरा रूपहोणा योग्यहै सोई कहतेहैं

तथेति संभनाहि इन्द्रियोके अर्थविषे प्रसक्त ना होवे इस विषे इन्द्रियके विषयमें प्रीति की निंदा है सो शब्दसे कही है और स्नातक व्रतप्रकरणके मध्यविषे इसका पाठ है निसविषे इन्द्रियप्रसंगके निषेधका संकल्प विधेय है इस अर्थसे भी निषेध आया तिसते अनिग्रह तीसरा हेतु पापका है यहि विहिताकरणादि हेतुत्रय पापके पैवे करणे वाले प्रश्नोत्तर कर्के दृढ कीतेहैं मदनपारिजातविषे ॥ सो कहतेहैं (प्रश्न) अकुर्वन् विहितं इत्यादि जो किहाहै इस वचनकर्के पाप तो प्रायश्चित्तविषे निमित्त है और पाप विषे विहिताकरणादि हेतुत्रय हैं यह किहा है तैसे जो पुंश्चली व्पनिचारिणो स्त्री और वानर

तथाहि इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्येत कामतइति इन्द्रियप्रसक्तेर्निन्दि-
तत्वं शाब्दम् स्नातकव्रतप्रकरणमध्ये पाठात्प्रसक्तिप्रकरणनिषेधसंकल्प-
स्य तत्र विधेयत्वेनाऽवगमात् विहितत्वमार्थिकम् तथाचाऽनिग्रह-
स्योभयोऽल्लघनरूपत्वात्तृतीयनिमित्तत्वेन पृथगुपादानम् विहिताकर-
णादित्रितयस्यैव पापोत्पादकत्वमाक्षेपसमाधानाभ्यां पुनर्दृढीकृतं मद-
नपारिजाते तथाहि (ननु) अनेन वचनेन पापं प्रायश्चित्ते निमित्तं
पापे च विहिताकरणादित्रयमेव हेतु रित्युक्तम् तथाच पुंश्चलीवानर-
खरादिदृष्टस्य मिथ्याभिशप्तादेश्च विहिताकरणादिष्वन्यतमस्याऽपि हे-
तोरभावेन पापाभावात्कथं पुंश्चलीवानरखरैर्दृष्टः श्वोष्ठादिवायसैः
प्राणाभामंजलेकृत्वाघृतं प्राश्याविशुद्ध्यतीत्यादिभिर्याज्ञवल्क्यादिवाक्यैस्त्व-
स्य प्रायश्चित्तं विधीयते * उच्यते एतत्प्रायश्चित्तविधानात्पापे च
हेतुत्रयस्यैव कथनाज्जन्मांतराचरितनिन्दितसेवनादिजन्यं मिथ्याभिशपा-
दिलिंगाक्षेप्यमेतत्प्रायश्चित्तविनाशयं तस्य पापमस्तीति गम्यते तथाच
तत्क्षयार्थं प्रायश्चित्तविधानमिति युक्तमेव पापे हेतुत्रयकथनम्

और गधा इनका दंशहोणा और मिथ्या किसीको दूषण लगाणा इत्यादि जो पापहैं सो इन्हो-
लीनो हेतुआं विचों किते कर्के भी नहि होते तो किसकर्के उनके वास्ते प्रायश्चित्त किहाहै क्या
पुंश्चलीआदिकका जिनको दंशलगे सो प्राणायाम जलविषे कर्के घृतपीने से शुद्धहुंदाहै इत्यादि
याज्ञवल्क्यादि मुनियों ने सो प्रायश्चित्त नहि कहणा था (उत्तर) उच्यते इति इस प्रायश्चित्तके
विधान होणेत और पापविषे हेतुत्रयको हि दिखारैनि जन्मांतर विषे क्या और किसे जन्मविषे
कीते होए पापोंका प्रायश्चित्त उक्तविषयविषेमिथ्याभिशपादि निमित्त द्वारा किहाहै ऐसा
प्रतीत हुंदाहै तिसरों जन्मांतरके कीते होए पापके क्षयवास्ते प्रायश्चित्त करणाबाग्य है

श्रीर पापविषे तीन हेतु किहेहैं सोभी योग्य हैं ॥ श्रीर इसमे मनुजीभी पापद्वारा विहिताकरणादि त्रयकों हि प्रायश्चित्तका प्रयोजक कहतेहैं प्रयोजकनाम परंपरा कारणदा है सो वचन लिखादा है अकुर्वन्निति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहै तिसमें प्रायश्चित्त में पाप हि निमित्त है और पापविषे हेतु तीनहैं एह बात सिद्धहोई अव कहते हैं कि पाप तो सिद्ध होआ ० परंतु तिसकी संख्या कितनी है इसवास्ते प्रायश्चित्तक दंडादि जो ग्रंथहैं तिन्हांविषे कही जो पापकी गणना सो लिखाबीहै सो गणना पृष्ठाकोटि न्यायकर्के नहि होसकदी क्या जिसको पुच्छमाहोये तिसका थोडा बहुत कर्के सभका उत्तरकहणा इसकानाम पृष्ठाकोटिन्यायहै जैसे चोरीके दंडवास्ते पुच्छया

मनुरपि पापद्वारा विहिताकरणादित्रयस्यैव प्रायश्चित्तप्रयोजकत्व माह अकुर्वन्विहितं कर्मनिन्दितं च समाचरन् प्रसक्तश्चेन्द्रियार्थेषु प्रायश्चितीयतेनरइति तस्मात्प्रायश्चित्ते पापमेव निमित्तं पापेष्वहेतुत्रयमेवेति सिद्धम् ० अथ सिद्धे दुरिते का तत्संख्येति प्रायश्चित्तकदंडाद्युक्ता गणना लिख्यते सा च पृष्ठाकोटिन्यायेन वक्तुमशक्याऽपि स्थूलोपाधिविषयत्वेन शक्या यथा महापातकम् १ अतिपातकम् २ पातकम् ३ इदमेवाऽनुपातकम् ३ उपपातकम् ४ इमानि पातित्यहेतूनि तथा जातिभ्रंशकराणि ५ संकरीकरणानि ६ मलिनीकरणानि ७ अपात्रीकरणानि ८ प्रकीर्णकानि ९

होआ वस्त्र भूषण भाजन काष्ठकुदालादि गणना से कहणा होवे तो अनंतहै कह नहि सकीदा सो स्थूल २ उपाधि कर्के हि कहणेको शक्य है जैसे सुवर्णका चोर और होर किसे वस्तुका चोर इसरीतीसे गणना करीदाहै यथेति प्रथम महापातक १ और अतिपातक २ और पातक ३ इसीको अनुपातकभी कहते हैं उपपातक ४ यह चार पातित्यके हेतु हैं अर्थात् इन्हों पापोंके करणवाला पातित हुंदाहै पहिले त्रयपापके करणवाला एकबारी करणसे भी पातित होताहै और चतुर्थके करणवाला बहुतवार करणसे पातित हुंदाहै यह विचार आगे आवेगा जातीति यह अर्थ स्पष्ट है

प्रकीर्ण का नाम दूसरा (अवकीर्ण) है अथेति इनके उद्देश क्रमकर्के भेद दिस्वायी
वेहें ब्राह्मणकामारणा १ मदिराकापीणा २ ब्राह्मणके सुवर्णका १६ मासेतें अधिक
चुराणा ३ और गुरु स्त्रीको भोगणा ४ और इनके संसर्गबाला ५
यह पंच महापाप कहेहैं और माताविषे गमन करणा १ और कन्याविषे २ और
स्नुषा क्या नोआविषे ३ और भगिनीविषे गमन ४ यहचारे अतिपातक हैं तैसेहि यज्ञ विषे
स्थित क्षत्रियकावध १ और यज्ञविषे स्थित वैश्यका वध २ और रजस्वला स्त्रीका वध ३ और
गर्भवतीस्त्रीका ४ और समानगोत्रवाली स्त्रीका क्या अपनेगोत्रवाली स्त्रीका ५ और ब्राह्मणका
अविज्ञात जो गर्भ तिसका ६ और शरणागतका जो मारणहै ७ और गुरुओंका अनादर

अवकीर्णानीतिकचित् अथैपामुद्देशक्रमानुसारेण भेदाः ब्रह्महत्या १
सुरापानं २ स्तेयम् ३ गुर्वंगनागमः ४ एतत्संसर्गश्चेति ५
पंच महापातकानि मातृगमनं १ दुहितृगमनम् २ स्नुषागमनम् ३
भगिनीगमनंचेति ४ चत्वार्य्यतिपातकानि ॥ यागस्थक्षत्रियवधः १ या
गस्थवैश्यवधः २ रजस्वलायावधः ३ अन्तर्वत्न्याव ४ सगोत्राव- ५
ब्राह्मणस्याविज्ञातगर्भस्य ६ शरणागतस्यघातनम् ७ गुर्वधिक्षेपः सतु
वहुविधः गुरुप्रतिकूलता ८ गुरूपरोधः ९ गुरुणासहवाग्विरोधः १०
गुरुप्रत्यर्थिता ११ गुरुस्पृहालुता १२ गुरोरनृताभिज्ञंसनम् १३ वेदनिन्दा
१४ सुहृद्वधः १५ अधीतवेदविस्मरणं १६ विश्वस्तबिपदानं १७
ब्राह्मणश्वासरोधश्चेति १८ ब्रह्महत्यासमानि * निषिद्धभक्षणं १

कौटिल्यंराजविषये २ स्वोत्कर्षार्थंराजकुलादावनृतभाषणं ३

सो बहुत तरांकाहै एक गुरुओंकी प्रतिकूलता क्या बिरोधीहोणा ८ और दूसरा गुरुका रोकणा
जो बातसे अथवा वादार्थसे ९ और गुरुओंके साथ वाग्विरोध १० और गुरुकी प्रत्यर्थिता क्या
जीविकाका विघात ११ और गुरुओंके साथ स्पृहा क्या परोक्षनिन्दा १२ और गुरुके अर्थ झू
ठकहणा अथवा उनके साथ झूठ कहणा १३ और वेदकी निन्दा १४ मित्रका मारणा
१५ और पडेहोए वेदका विस्मरण १६ विश्वासपर रहणवाले को विपक्षी १७
और ब्राह्मणका श्वास रोकणा १८ यह पाप ब्रह्महत्याके तुल्यहैं * निषिद्ध जो लसुनादि ति
तका भक्षणकरणा १ राजा विषे कुटिलता करणी २ और अपनी बढयाईं वास्ते राजकुला
दि विषे झूठ कहणा ३

श्रीर रजस्वला स्त्री का मुख चुंबन करणा ४ और झूठी उगाही देणो ५ और मित्रका वध करणा ६ इनकी ब्राह्मणोंके तुल्य और सुरापानके तुल्य इन्हां दोआं विषों जो गणनाहै सो प्रायश्चित्तके विकल्प वास्ते है यह संपूर्ण पाप मदिरा पानके तुल्य हैं * घोड़ेका चुराणा १ और रत्नका चुराणा २ और मनुष्य का चुराणा ३ और स्त्रीका चुराणा ४ और पृथ्वीका चुराणा ५ और गौका चुराणा ६ और सभतहीकी ब्राह्मणकी छोड़ी होई अमानत नहिदेणो यह संपूर्ण सुवर्ण चुराणके तुल्य जानणे * मित्र की स्त्री और उत्तमवर्णकी कन्या और भयण और चांडाली और हीनजाति की स्त्री । और समान गोत्र की स्त्री और नुंह और माता की भयण और पिता की भयण और मामी और माता की साकण माताकी भयण और आचार्य की कन्या

रजस्वलामुखास्वादः ४ कौटसाक्ष्यं ५ सुहृद्वधः ६ उभयत्रगणना प्रायश्चित्तविकल्पार्था इतिसुरापानसमानि * अश्वहरणं १ रत्नहरणं २ मनुष्य हरणं ३ स्त्रीहरणम् ४ भूहरणम् ५ धेनुहरणम् ६ सर्वनिक्षेपहरणम् ७ तच्च ब्राह्मणसंबन्धि इतिसुवर्णस्तेयसमानि * मित्रभार्या उत्तमवर्णिकुमारी भगिनी चांडाली हीनजातिः समानगोत्रा स्नुषा मातृप्वसा पितृप्वसा मातुलानी मातृसपत्नी मातृभगिनी आचार्यतनया आचार्यपत्नी ऋत्विगुपाध्यायश्रोत्रियपत्नी रजस्वला निक्षिप्ता स्वसुता आसुगमनम् तथाश्वश्रूः पितृव्यपत्नी शिष्यपत्नी भगिनीसखी शरणागता राज्ञा प्रव्रजिता धात्री साध्वी वर्णोत्तमा आसुगमनम् गुरुतरूपसमानि ३०

इमान्यनुपातकानि *

श्रीर आचार्य की स्त्री और ऋत्विग् और गुरु और वेदपाठी इनों की स्त्री और रजस्वला स्त्री और निक्षिप्त कन्या कोई रक्षावास्ते छोड़ीगिआहै किसे स्त्रीको सो स्त्री और अपनी कन्या इनों विषे गमन करणेवाला तैसेहि श्वश्रू क्या अपनी स्त्रीकी माता और पितृव्यपत्नी क्या चाचेकी स्त्री और अपने शिष्यकी स्त्री और भगिनीकी सखी क्या सहेली और शरणागता क्या किसेके भयसे अपनी रक्षाके अर्थ आटे होई और राजाकी स्त्री और सैन्यस्त होई जो स्त्री और धात्री क्या उपमाता दुहापि आणे वाली और साध्वी क्या सच्चित्रा और वर्णोत्तमा क्या ब्राह्मणी इन्हांविषे जो गमनहै सो गुरुतरूप पापके तुल्यहै ३० यह अनुपातक किहेहैं ॥

३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ टी- भा० ॥

श्रीर गोवध क्या गौ का मारणा १ और ब्राह्मता क्या जो यज्ञोपवीतादि संस्कारहें
तिन्हते होमहोणा २ और स्तेय क्या ब्राह्मण के तोला सुवर्णते उरे सुवर्णकी और होर
सभवस्तुकी चोरी ३ और करज नामुकाणा ४ और जिसको अग्नि के स्थापन का
आधिकार है तिसने अग्नि का स्वीकार नहि करणा ५ और जो वस्तु नहि
वेचणे योग्य तिसका वेचणा ६ और परिवेदन क्या बड़ेको छोडकर छोटेको विआणा

गोवधः १ ब्राह्मता २ स्तेयम् ३ ऋणानपाकरणम् ४ अना
हिताग्निता ५ अपण्यविक्रयः ६ परिवेदनम् ७ भूनादध्ययनादानम् ८
भूतकाध्यापनम् ९ पारदार्यं १० पारिवित्यम् ११ बाहुष्यम् १२ छवण
क्रिया १३ स्त्रीवधः १४ शूद्रवधः १५ वैश्यवधः १६ क्षत्रवधः १७
निन्दितार्थापजीवनम् १८ नास्तिक्यम् १९ व्रतलोषः २० सुतविक्रयः
२१ धान्यस्तेयम् २२ कुप्यस्तेयम् २३ पशुस्तेयम् २४ अयाज्य
याजनम् २५ पितृत्यागः २६ भ्रातृत्यागः २७ सुतत्यागः २८
तडागविक्रयः २९ आरामविक्रयः ३० कन्यासंदूषणम् ३१ परिनि
दकयाजनम् ३२ परिनिदकस्यकन्याप्रदानम् ३३ कौटिल्यम् ३४
व्रतलोपनम् ३५ आत्मार्थेक्रियारंभः ३६ मद्यपस्त्रीनिषेवणम् ३७
स्वाध्यायत्यागः ३८ अग्नित्यागः ३९ सुतत्यागः ४० बांधवत्यागः ४१
इन्धनार्थद्रुमच्छेदः ४२ स्त्रियाजीवनम् ४३ हिंसयाजीवनम् ४४
औषध्याजीवनम् ४५ हिंस्रयंत्रविधानम् ४६ व्यसनानि ४७ आत्म
विक्रयः ४८ शूद्रप्रेष्यं ४९ हीनसख्यम् ५० हीनयोनिनिषेवणम् ५१
आश्रमेवासः ५२ परान्नपरिपुष्टता ५३ असच्छास्त्राधिगमनम् ५४
आग्नेयधिकारिता ५५ भार्याविक्रयः ५६ असत्यप्रतिग्रहः ५७ भार्या
त्यागः ५८ मिथ्याभिशंसनं ५९ निथ्यानिशस्त्रता ६० इत्युपपातकाणि •

एकः सुतत्यागांगृहान्निष्कासनम् अन्यत्रसुतत्य गःसंस्काराद्यकरणम्

७ और जूरी मन्त्रकर पढना ८ अथवा पढाना ९ और पारदार्य क्या परस्त्रीका
सेवनकरणा १० इत्यादि ६० सबउपपातक हैं जो मूलविषे स्मृत हैं ॥ इनकेअर्थ उपपातक
प्रकरणके आदिविषे लिखेहैं उसीजगते देखलेने इसगणनामे एकजगा सुतत्यागका अर्थ
यह है कि पुत्रत्यागदेना दूसरी जगा यह अर्थ है कि पुत्रका संस्कार नहि करणा

अैसेहि एकजगा व्रतलोपहै ब्रह्मचारिको स्त्रीसंभोग और दूसरीजमा व्रतलोपहै व्रतका तहिकरणा क्या एकादश्यादि व्रतका लोप ॥ अब होर पाप दिखाइंदेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मणको पीडाकरणी १ और दुर्गन्धि जो लसुनादि और मद्य तिसका आघ्राण क्या सिंघणा २ और कुटिलस्वभावहोणा ३ पुरुषके साथमैथुन ४ मुखआदिमे मैथुन ५ पशुके साथ मैथुन ६ एह छे जाति भ्रंशकरनामक पाप हैं ७ और गधा १ घोडा २ ऊठ ३ मृग ४ हाथी ५ छाग क्या बकरा ६ मेघ क्या भिड्ड ७ मछ ८ सर्प ९ महिष १० इनका एक एकका जो मारणाहै एहसंकराकरणपापहैं १० और निन्दित जो हैं स्लेच्छ पत्तिनादि तिन्हाते प्रतिग्रह क्या दानलेणा १ और वाणिज्य क्या निन्दित वस्तुका व्यापार करणा २ शूद्रसेवा द्विजातियोंने करणी ३ एहत्रय पाप अपात्रीकरण कहेहैं ४ और छोटेजोवोंकी हत्या १ और मोटेजोवोंकी हत्या २ और पक्षिओंकी हत्या ३ और मद्यककें मिलीहोई वस्तुका भोजन ४ और फलोंकी ५ और

एकत्रव्रतलोपो ब्रह्मचारिणः स्त्रीसंभोगः अन्यत्रव्रतलोपो व्रताऽकरणम् एकादश्याद्यननुष्ठानम् ॥ ब्राह्मणपीडाकरणम् १ दुर्गन्धैर्लसुनादेर्मद्यस्यचाघ्राणम् २ कुटिलत्वम् ३ पुंसिमैथुनम् ४ मुखादौमैथुनम् ५ पशुमैथुनम् ६ इमानि जातिभ्रंशकराणि ॥ गर्दभ १ तुरग २ उष्ट्र ३ मृग ४ हास्ति ५ छाग ६ मेघ ७ मत्स्य ८ सर्प ९ महिषाणांप्रत्येकंवधः १० इमानि संकरीकरणानि ॥ निन्दितेभ्यःप्रतिग्रहः १ वाणिज्यम् २ शूद्रसेवनम् ३ इमान्यपात्रीकरणानि ॥ क्षुद्रजंतुहत्या १ स्थूलजंतुहत्या २ पक्षिहत्या ३ मद्यसंस्पृष्टभोजनम् ४ फल ५ समिधा ६ कुसुमानांचौर्यम् ७ अल्पद्रव्यनाशेऽप्यत्यन्तवैकृत्यम् ८ इमानिमलिनीकरणानि ॥ राजाज्ञाप्रतीघातः १ राजाज्ञासकर्माऽकरणम् २ पुनःप्रदानम् ३ प्रकृतिसंभेदः ४ पाषंडिसंवंधेनवैदिकानांश्रेणीनांगणानां च धर्मविपर्ययाः ५ पितापुत्रविवादः ६ प्रायश्चित्तविपर्ययः ७ प्रतिग्रहविलोपः ८

समिधांकी ६ और पुष्पोंकीचोरी ७ और थोड़ीभी वस्तुकानाश देखकर व्याकुल होणा ८ एह अष्ट पाप मलिनीकरणनाम ककें किहेहैं १० अब प्रकीर्णकपापोंकी गणना करतेहैं राजाकी आज्ञाका भंगकरणा १ राजाकी आज्ञासे प्राप्त जो कार्य तिसका नाकरणा २ एक बेर दान कीतेका दूसरी बेर दान करणा ३ राजाके साथ प्रजाकाभेदकरणा ४ पाषंडियोंके संवंधककें वैदिक अर्थात् वेदपढ़नेवाले लोक और पंच और जातिसमूह इनांका धर्म विपरीत करणा ५ पिताकेसाथ पुत्रका संवादहोणा ६ और किहाहैं जो प्रायश्चित्त तिसमे होर प्रायश्चित्त करणा ७ दानलेकर मुकर जाणा ८

अश्रमीति आश्रमी जो ब्रह्मचारी आदिक हैं इनांको कोप कराणा ९ वंश
 संकरकादोष १० उत्तमपुरुषने वणसंकरोंकी वृत्तिधारणी ११ वणसंकरका नियम
 करणा १२ उष्ट्रयान क्या ऊठके ऊपर चडना १३ और खोतेके ऊपर चडके जाना
 १४ और तुंकार हुंकार कर्के गुरोंको जीतना १५ और वादकर्के ब्राह्मणोंकी
 पराजय करणी १६ और ब्राह्मणको वस्त्रकर्के बांधना १७ और ब्राह्मणके ताँई दंडका गूरणा
 १८ और दंडादिकर्के ब्राह्मणका रुधिर निकासना १९ और ब्राह्मणको मारमार अंदरल
 हु पादेणा २० और काष्ठर्धी आदिलेकर जो शस्त्रहैं तिनोँकर्के ब्राह्मणकी त्वचाका भेदनकर
 णा २१ और ब्राह्मणकी आस्थिका भेदनकरणा २२ और पापीकी सन्निधि क्या जलकी

आश्रमिणांकोपः ९ वणसंकरदोषः १० वणसंकरवृत्तिः ११ वणसंकरनियमः
 १२ उष्ट्रयानम् १३ खरयानम् १४ तुंकारहुंकाराभ्यांगुरुजयः १५ वादेन
 विप्रपराजयः १६ विप्रस्यवाससाबंधः १७ विप्रायदंडोद्गूरणम् १८
 दंडादिनाविप्रस्याऽसृक्पातनम् १९ तथाविप्रस्याऽभ्यंतरशोणता २०
 काष्ठादिनाविप्रत्वग्भेदनम् २१ विप्रास्थिभेदनंवा २२ जलसन्निधिविनामलम्
 त्रोत्सर्गः २३ जलेवाअग्नौमलमूत्रादित्यागः २४ वेदोदितंनित्यकर्मत्यागः
 २५ स्नातकव्रतलोपः २६ पंचमहायज्ञानऽकृत्वाभोजनम् २७ आहिताग्ने
 रग्न्युपस्थानाभावः २८ अन्वस्मैइंद्रचापदर्शनम् २९ वाअन्वस्मैपला
 शाग्निदर्शनम् ३० ब्राह्मणेननीलवस्त्रधारणम् ३१ क्षत्रियवैश्याभ्यां
 पर्वसुनीलीवस्त्रधारणम् ३२

समोपता विना विष्टा और मूत्रका त्याग २३ जलमें वा अग्निमें विष्टा मूत्रादिका त्याग २४
 और वेदकर्के कथन किया जो नित्यकर्म सन्ध्यावन्दनादि तिसका त्याग २५ और स्नातक
 व्रतका लोप २६ और पंचजो हैं महायज्ञ क्या पाठकरणा १ और हवनकरणा २ और अति
 थका पूजन ३ और तर्पण ४ और वलिवैश्व देव ५ इनके करणे विना भोजन करणा २७
 और साग्निकों अग्निकीसेवातें रहित होणा २८ और दूसरे मनुष्यके ताँई इन्द्रधनुषका दिखाणा
 २९ अथवा दूसरे मनुष्यके ताँई अकस्मात् लगा जो पत्रोंकोअग्नि तिसका दिखाणा ३०
 और ब्राह्मणने नीलकर्के रंगया जो कपडा तिसका धारणकरणा ३१ क्षत्री और वैश्य जो हैं
 तिनोँने पर्वमें नीले वस्त्रका धारणा ३२

द्विजस्येतिद्विज जो हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनोंने पलाशवृक्षके काष्ठकके वने जो हैं यान और शय्याऔर पादुकादि तिनमें स्थित होना ३३ और क्षत्रि जो हैं तिनकों रणते पराङ्मुखहोना ३४ फलके देनेवाले वृक्षका छेदन ३५ और दोब्राह्मण जो हैं तिनके मध्यविषे गमन ३६ और ब्राह्मण और अग्निके मध्यविषे गमन ३७ और स्त्रीपुरुष जो हैं तिनके मध्यविषे गमन ३८ और गौ और वृषभ इनके मध्यविषे गमन ३९ और होमके समयमें होमके करणे वाला जो है और अग्नि जो है तिनके मध्यविषे गमन ४० गौ और महिषीके दोहकाळमें मध्य विषे गमन ४१ और पठन पाठन समयमें मध्य विषे गमन ४२ और दार संग्रह क्या स्त्री संग्रह समयमें मध्यविषे गमन ४३ और नख. केश रुधिर इनका भक्षण ४४ और मूत्र वा विष्टा

द्विजस्यपलाशवृक्षयानशय्यापादुकादौस्थितिः ३३ क्षत्रियस्यरणत्पराङ्मुखत्वम् ३४ फलप्रदवृक्षच्छेदनम् ३५ ब्राह्मणद्वयोरन्तरेणगमनम् ३६ ब्राह्मणाऽग्न्योर्वा ३७ दंपत्योर्वा- ३८ गोवृषयोर्वा ३९ होमकालेऽन्तरेणगमनम् ४० दोहेऽन्तरेणगमनम् ४१ स्वाध्याये ४२ दारसंग्रहेऽन्तरेणगमनम् ४३ नखकेशरुधिरभक्षणम् ४४ कृते मूत्रेपुरीषे वा शौचविनास्नानकरणम् ४५ गर्भिणीपतेः समुद्रस्नानम् ४६ केशश्मश्रादिकर्तनं वा ४७ तथाश्राद्धभोजनम् ४८ शरणागतपरित्यागः ४९ वेदविल्वः ५० चांडालश्चोवावकाशेश्रुतिस्मृतिपाठः ५१ सर्पनकुलयोः ५२ तथाऽजमार्जारयोः ५३ मूषकोष्टयोः ५४ मंडूकयोःपितोः ५५ पुरुषैडकयोः ५६ अश्वशुनोः ५७ अश्वस्वरयोरन्तरागमनम् ५८ क्रोधात्स्वभार्यायाऽगम्येतिकथनम् ५९

त्यागके पीछे शौचके किये विना स्नान करणा ४९ और गर्भिणीके स्वामीको समुद्रस्नान ४६ अथवा गर्भिणीके पतिकों शिरकेवाल और श्मश्रुआदिका मुंडन ४७ और गर्भिणीपतिकों श्राद्धका भोजन ४८ और शरणागत का त्याग ४९ और वेदोंका विनाश करणा ५० और चांडालकेसुनतेहोयांवेद और स्मृतियोंका पडना ५१ सर्प और नकुलके मध्यमें गमन करणा ५२ और तैसंहि बकरे और बिल्लेके मध्यमें गमन ५३ चूहे और उष्ट्रके मध्यमें गमन ५४ और मंडूक क्या डड्डूँ और स्त्रीके मध्यमें गमन ५५ और पुरुष तथा भेडके मध्यमें गमन ५६ घोडे और कुत्तेके मध्यविषे गमन ५७ घोडे और खोतेके मध्यमें गमन ५८ और क्रोधते अपनी स्त्रीको अगम्या कथन क्या तू मेरी माताहैं वा भगिनीहैं ऐसा कथन ५९

अस्नानइति और स्नानकियेविना भोजनकरणा ६० पंक्तिजोहै भोजनकरणवालोंकी तिसमें वैपम्यपरिवेष कच्चा किसीको अस्नादिदेखा और किसीको नाहिदेखा वा किसीको बहुतदेखा किसीको' थोडादेखा ६१ और नदीके जलके उतरलेका जो मागेहै तिसको तोड़देखा ६२ और कन्या दानमें विघ्नकरणा ६३ और सममें बिषमहोणा ६४ और पतितादि जो है तिसके साथ वातो करणोया ६५ और पतितादिजो हैं तिनोवें अन्नधनादिका ग्रहणकरणा ६६ और स्त्रीके धनका विनाश ६७ और चौरादि जो हैं तिनको दंड नहि करणा ६८ और चौरादिपों' की पंक्तिमें भोजनकरणा ६९ और द्विजाति जो हैं ब्राह्मणादि तिनको नीलीविषे केशरंजन अथवा तिनको बसमा लाणा ७० और नीली काष्ठ कर्क द्विजका रुधिर निकालणा ७१ ॥

अस्नानेभोजनम् ६० पंक्तौवैपम्यपरिवेषणम् ६१ नदीजलावतरणमार्गभं
जनम् ६२ कन्यादानेविघ्नः ६३ समेवैपम्यम् ६४ पतितादिसंभाषणम्
६५ पतितादिभ्योऽन्नधनादिग्रहणम् ६६ भार्याधनविनाशः ६७ चौरादेर्द
डाभावः ६८ चौरादिपंक्तिभोजनम् ६९ द्विजातेर्नील्याकेशरंजनम् ७०
नीलीकाष्ठेनद्विजस्यरुधिरनिष्कासनम् ७१ दुःस्वप्नदर्शनम् ७२ सिंधुसौ
वीरादिदेशगमनम् ७३ सूर्याभिमुखंपुरीषाद्युत्सर्गः ७४ स्वर्कायपुरीषद
र्शनम् ७५ आहवनीयाद्यग्नौषादप्रतापनम् ७६ ब्राह्मणस्यक्षत्रियाद्यभि
वादनम् ७७ तथाक्षत्रियादेर्वैश्यादौ ७८ शय्यापादुकाद्यारूढस्याभिवाद
नम् ७९ अन्यत्रनिमंत्रितस्यान्यत्रगमनम् ८० समित्पुष्पादिहस्तस्याऽ
भिवादनम् एतच्चाभिवाद्याभिवादकयोः ८१

और माडे स्वप्नका दर्शन होणा ७२ और सिंधु, सौवीरादि जो देशहैं तिनमें गमन ७३ और
सूर्यादिसंमुख विष्टादिका त्याग करणा ७४ और अग्नी विष्टाका देखणा ७५ आहवनीय
आदि जो अग्निहै तिसमें पैरोंका तपाना ७६ ब्राह्मणने क्षत्रियादियोंको अभिवादन क्या प्रणाम
करणा ७७ किसीप्रकार क्षत्रीको वैश्यादि को अभिवादनमें है ७८ शय्या' और पादुकादिमें
आरूढ जो है तिसको प्रणामकरणा ७९ और स्थानमें जो निमंत्रितहै उसका दूसरे
स्थानमें गमन ८० और समिधा और पुष्प जिसके हाथमें हैं उसको प्रणामक
रणा एह पाप जिसको प्रणामकरणा उसको और जिसने प्रणामकीतीहै उसको भी तुल्य
प्रायश्चित्तहै ८१

उदकुंभेति जलका कलश हाथमें ठेकके प्रणामकरणी ८२ और तैसाहि अपवित्र होकके प्रणामकरणी ८३ जपकरतेहोआं प्रणामकरणी ८४ पितृकार्य जो है आद्यादि और देवकार्य जो है पूजनादि तिनके करतेहोआं प्रणामकरणी ८५ शयनकरतेहुवे मनुष्यने प्रणामकरणी ८६ और यज्ञोपवीतके विना विष्टा और मूत्रका त्याग करणा ८७ और तैसाहि यज्ञोपवीत विना भोजनकरणा ८८ ऊर्ध्वोच्छिष्ट क्या भोजनकरके आचमनकाअभाव ८९ और अधोच्छिष्ट क्या विष्टा और मूत्र त्याग करके शौचकाअभाव ९० और भोजनके आरंभ और समाप्तिमें आचमन नहिकरणा ९१ दश और पौर्णमास और नित्ययज्ञका नहि करणा ९२ यज्ञके प्रारंभकरते होआं

उदकुंभादिहस्तेनाभिवादनम् ८२ तथाऽशुचिनाअभि- ८३ जपताअ- ८४ पितृदेवकार्यकुर्वताअ- ८५ शयानेनअ- ८६ ब्रह्मसूत्रविनाविण्मूत्रोत्सर्गः ८७ भोजनंवा ८८ ऊर्ध्वोच्छिष्टता ८९ अधोच्छिष्टता ९० भोजनस्याऽऽदावंतेचाचमनाभावः ९१ दर्शपौर्णमासादिनित्ययज्ञाऽकरणम् ९२ प्रारब्धेयज्ञेहविलोपः ९३ संध्यादिलोपः ९४ पितृयज्ञलोपः ९५ यज्ञविनानवान्नप्राशनम् ९६ नैमित्तिककर्मलोपः ९७ ऋतौस्वपत्यगमनम् ९८ ऋतुस्नानांते पत्यौस्त्रियोऽपिगमनाभावः ९९ गृहिणोऽनापदिभिक्षाचरणम् १०० देवादीनामाभिमुख्येष्टीवनम् १०१ मंडपोद्यानदेवागारादिभजनम् १०२ स्वस्थानात्प्रतिमोत्थापनम् १०३

हवनद्रव्यका लोपहोणा ९३ और संध्यादिकर्मका लोप ९४ और पितृयज्ञ जो आद्य तिसका लोप ९५ यज्ञकिये विना नवनेन अन्नका भोजनकरणा ९६ और नैमित्तिक कर्मका लोप ९७ और ऋतुस्नानके पीछे अपणीस्त्रीमें गमन नहिकरणा ९८ ऋतुस्नानके पीछे स्वामी केपास स्त्रीको जाणेका अभाव अर्थात् नहि जाणा ९९ और गृहस्थोंको आपदाते विना भिक्षाका मांगणा १०० और देवताथी आदिलेकर जो श्रेष्ठ हैं उनके सन्मुख थूकणा १०१ मंडप और वाग और देवताके मंदिरादि जो हैं तिनका तोड़देणा १०२ और अपने स्थानते प्रतिमांका उठाणा १०३

पर्वेति पर्वामे स्त्री- तैल. मांसका सेवनकरणा १०४ द्विजाती जो हैं बाह्यस्य सत्रि वैश्य इनको वमन कर्के भोजनकरणा १०५ और भग्नभांड जो है भज्जा होआ पात्र तिसमें भोजन करणा १०६ और मांसादिकर्के वमनमें भोजनकरणा १०७ यज्ञोपवीतके नाश होआ भोजन करणा १०८ शयनमे सूर्यका उदय होणा १०९ और शयनमें हि सूर्यका अस्त हो जाणा ११० और वमनके होआ दिनमें शयन करणा १११ नग्नस्त्रीका दर्शन करणा ११२ और नग्न होकर शयन करणा ११३ और श्मशानमें पैरदेकर लंब जाणा ११४ और घोड़ेथी आदिलेकर जो वाहन हैं तिनके ऊपर चडकर्के पूज्य जो हैं गुरोथी आदिलेकर तिनका उछंवन करणा ११५ अजगरादि

पर्वसुस्त्रीतैलमांससेवनम् १०४ द्विजातीनांविच्छर्दनेभोजनम् १०५ भिन्नभांडभोजनम् १०६ मांसादिवमनेभोजनम् १०७ यज्ञोपवीतादिनाशे भोजनम् १०८ सुप्तेसूर्योदयः १०९ सुप्तेसूर्यास्तम् ११० वान्ति दिवाशयनम् १११ नग्नस्त्रीदर्शनम् ११२ नग्नस्वापः ११३ श्मशानाक्रमणम् ११४ हयादीनारुह्यपूज्यातिक्रमः ११५ अजगरादीनांवधः ११६ माणिवस्त्रगवादिप्रतिग्रहः ११७ अजीर्णेभोजनम् ११८ गर्भाधानादिसंस्काराभावः ११९ गर्भाधानाकरणम् १२० क्षुत्करणम् १२१ निषीवनम् १२२ अनृतभाषणम् १२३ पतितैस्सहभाषणम् १२४ वासःपरिधायाचमनाभावः १२५ संवत्सरंक्रियाहीनस्यदर्शनस्पर्शनसंभाषणानि १२६ स्त्रीकृत्यनिमंत्रणत्यागः १२७ निमंत्रिताऽनाव्हानम् १२८ वधफलकानृतभाषणम् १२९

जो हैं सपं तिनका मारणा ११६ मणि वस्त्र आदिक जो वस्तु हैं तिनका दानलेणा ११७ अजीर्णमें भोजनकरणा ११८ गर्भाधानादि जो स्त्रीके संस्कार हैं तिनका नहि करणा ११९ गर्भाधान जो है तिसका नहि करणा १२० छिक्का मारणा १२१ और थुक्का १२२ झूठ बोलणा १२३ पतित जो हैं तिनके साथ वातां करणियां १२४ वस्त्रधारकर्के आचमन का नहि करणा १२५ वर्षपर्यंत क्रियाहीन जो मनुष्य है तिसके साथ दर्शन और स्पर्श और संभाषण करणा १२६ और अंगीकार किया जो निमंत्रण भोजन करणैके निमित्त तिसका त्याग करणा १२७ निमंत्रणकर्के नहि बुला लेणा १२८ मरणाहै फल जिसका ऐसा झूठ बोलणा १२९

घण्टेति घण जो है घा तिसमें कोड्यों का पडना १३० दिनमें स्त्रीका संगम करणा १३१
और नम्र होयकर स्नानकरणा १३२ निषिद्ध काष्ठकर्के दंतधावन करणा १३३ ब्रह्म
चारीकों शौच और आचमनथी आदिलेकर जो धर्म हैं तिनका लोपकरणा १३४
ग्रहणकिया जो व्रत तिसका भंगकरणा १३५ और झूठी सुगंद खाणी १३६ और
अपणी वृत्तिकों छोडकर दूसरेकी वृत्ति कर्के धनकों पैदेकरणा १३७ शूद्रने ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य
जोहैं तिनका जो कर्महैं वेदाध्ययनदि तिसका करणा १३८ स्त्रीधनकर्के जीबिका करणा १३९
स्त्रीके मुखमे मैथुनकरणा १४० वृषभकर्के युक्त जो है गड्डा तिसमें स्थितहोकर मैथुन करणा
१४१ स्त्रीकों भगिन्यादिशब्दकर्के कथनकर्के फेर उसके साथ भोग करणा १४२

ब्रणमध्याक्रिमिपातः १३० दिवामैथुनम् १३१ नम्रस्नानम् १३२ निषि
द्धकाष्ठेनदंतधावनम् १३३ ब्रह्मचारिणःशौचाचमनादिधर्मलोपः १३४
गृहीतव्रतभंगः १३५ मिथ्याशपथः १३६ अन्यवृत्त्याधनार्जनम् १३७
शूद्रस्यद्विजकर्मकरणम् १३८ स्त्रीधनोपजीवनम् १३९ भार्यामुख
मैथुनम् १४० गोयुक्तयानस्थमैथुनम् १४१ भार्याभगिन्यादिशब्देनां
क्त्वापुनर्मैथुनम् १४२ वास्तिकर्मप्रच्छर्दनविरेचनानि १४३ देवागार
शिलादिनास्वगृहकरणम् १४४ वानप्रस्थयत्योर्व्रतभंगः १४५ दीक्षाभेदः
१४६ यमनियमातिक्रमः १४७ क्रोधाऽहंकारपिशुनानि १४८ जलेप्र
विर्विवदर्शनम् १४९ अशुचौमूत्रपुरीषादौचापलम् १५० वृथाचेष्टा १५१

वास्तिकर्म- प्रच्छर्दन विरेचन कर्मका, करणा वास्तिकर्म मूत्रवृद्धि १ प्रच्छर्दन उलटी
१ विरेचनदस्त १ ॥ १४३ देवताके मंदिरके पत्थर चूनेथी आदिलेकर जो वस्तु हैं
तिनोकरके अपने घरका बनाणा १४४ वानप्रस्थ और यतिके व्रतका भंगकरणा १४५ दीक्षामें
भेदकरणा १४६ नित्य और नैमित्तिकका त्याग करणा १४७ क्रोध और अहंकार और
चुगली इनका करणा १४८ जलमें अपने प्रतिविवकादेखणा १४९ अशुचि क्या अपवित्र
जो हैं मूत्र और विणतिसके त्यागमें चापल क्या वातां करणीआ और इधर उधरकी
झिझाकरणी १५० वृथा चेष्टाकरणी १५१

प्रतिज्ञेति प्रतिज्ञाकर्के झूठबोलणा १५२ मौनविना भोजनकरणा १५३ अर्धभुक्त भोजन पात्रमें जलपानकरणा १५४ केवल मुखकर्के जलका पीणा १५५ और जो अपने सापिंडी क्या समीप कुलके नाहिं हैं उनके साथ रोदन करणा १५६ प्रेतको अलंकरण क्या तिसको स्नानादिक करणा १५७ आत्मघातीका संस्कार करणा १५८ नहिअपणे वरावर और अपणेतें श्रेष्ठ जा तोका जो प्रेत तिसके साथ गनम् १५९ ब्राह्मणने शूद्रप्रेतके साथ दाह निमित्त जाणा १६० स्निग्ध क्या गिह्नी जो मनुष्यकी अस्थि है उसके साथ स्पर्श करणा १६१ क्षत्रीकों वैश्य और शूद्रजातिके प्रेतके साथ दाहनिमित्त जाणा १६२ रजस्वला होती जो कन्या तिसको

प्रतिज्ञायाऽनृतकथनम् १५२ मौनं विना भोजनम् १५३ अर्धभुक्ते भोजन पात्रे जलपानम् १५४ मुखेन जलपानम् १५५ असपिंडैः सह रोदनम् १५६ प्रेतालंकरणम् १५७ आत्मघातिनः संस्कारः १५८ असमानोत्कृष्टजाति प्रेतानुगमनम् १५९ ब्राह्मणेन शूद्रप्रेतानुगमनम् १६० स्निग्धमनुष्या स्थिस्पर्शः १६१ क्षत्रियस्य वैश्यशूद्रप्रेतानुगमनम् १६२ ऋतुमती कन्यारक्षणम् १६३ ब्राह्मणेन चैत्यवृक्षस्पर्शः १६४ इत्यादीनि प्रकीर्णकानि इमा न्युद्दिष्टपापानि * अनुद्दिष्टान्यपि * अस्थिमत्सहस्रवधः १ अनस्थिमदनो वधः २ पतितेन संस्पर्शः १ तेन संलापः २ तन्निःश्वासादानम् ३ तेन सहैक यानावस्थानम् ४ तेन सहैकासनावस्थानम् ५ तेन स्वस्य यागः ६ स्वयंतस्य यागोवा ७ ततोऽध्ययनम् ८ तस्याध्यापनंवा ९

नहि विवाह देणा १६३ और ब्राह्मणने चैत्यवृक्षके साथ स्पर्शकरणा १६४ इसर्थीआदिले- कर प्रकीर्ण पाप कहेहैं * यह उद्दिष्ट पाप हैं और अनुद्दिष्ट पाप भी हैं सो कहतेहैं ॥ अस्थियों वाले जो हड्डीरों जीव हैं तिनका मारणा १ और विना अस्थियोंतें जो जीव हैं तिनकर्के भरोहोएगड्डे कामारणा २ पतितके साथ स्पर्शकरणा १ और पतितके साथ बातें करणीआ २ और पति तके जो श्वासहैं तिनका लेणा ३ पतितके साथ एकयानमे बैठणा ४ पतितके साथ एक आस नमे बैठणा ५ पतितकर्के अपना यज्ञ करणा ६ अथवा आप पतितको यज्ञ करणा और पतिततें पढ़ना ८ और पतितको पढ़ाना ९

पतितके ताई कन्या देणा १० और पतितके कन्यादान लेणा ११ और पतितके साथ एकपंक्तिमें भोजन करणा १२ पतितका पकान खाणा १३ पतितक पात्रमें भोजन करणा १४ पतितका और अपना पका होया अन्न फिटा करणा अर्थात् रखाणा १५ पतितके पात्रकके अथवा पतितके पात्रमें जलपीणा १६ और पतितके धूमयंत्रकके धूमपान करणा १७ पतितने स्पृष्ट किया जो पकान तिसका भोजनकरणा १८ पतितके साथ एक मजेमें शयन करणा १९ पतितकी स्त्रीके साथ संभोग करणा २० पतितने धारया जो वस्त्र तिसका धारणा २१ पतितने अपना स्त्री क्या शुद्धपुरुषकी जो स्त्री है तिसके साथ भोगकरणा २२ पतितका जूठा अन्न भक्षणकरणा २३ और पतितके दानलेणा २४ इनोते लेकर अनेक

तस्मैकन्यादानम् १० ततोग्रहणंवा ११ तेनसहैकपंतयांभोजनम् १२ तदीयान्नभोजनम् १३ तद्वांडभोजनम् १४ तदीयस्वकीयपक्वान्नमिश्रणम् १५ तदीयभांडेन वा तद्वांडाद्वा जलपानम् १६ तदीयधूमयंत्रेणधूमपानम् १७ तत्स्पृष्टपक्वान्नभोजनम् १८ तेनसहैकशय्यायांशयनम् १९ तत्स्त्रीसंभोगः २० तत्परिहितवस्त्रपरिधानम् २१ तेनस्वकीयस्त्रीसंभोगः २२ तदुच्छिष्टान्नभोजनम् २३ तत्प्रतिग्रहः २४ इत्याद्यनेकविधं संसर्गजम् ॥ संसृज्यते इतिसंसर्ग इतिव्युत्पत्तेः ॥ प्रायश्चित्तंतुउत्तममध्यमाधमभेदेन नवधा विभज्य दर्शितम् तत्र यौनादयउत्कृष्टाः १ सहभोजनादयोमध्यमाः २ संलापादयोऽधमाःसंसर्गाः ३ परंपरास्पर्शेषि ४
● वृहद्विष्णुना तु सर्वाणि प्रायश्चित्तनिमित्तानि उत्तरोत्तरलघीयांसि

पृथक् २ संज्ञाभेदभिन्नानि गणितानि तद्यथा ब्रह्महत्या. सुरापानम्

प्रकारके संसर्गते उत्पन्नभये पाप हैं ७ संसर्ग शब्दका अर्थकहतेहैं समिति अच्छी प्रकार जो उत्पन्नकरेताहै एकत्र होयकके सो कहिये संसर्ग ७ अब प्रायश्चित्त उत्तम-मध्यम-अधम एह जो भेदहै इस कके नव १ प्रकारका विभागकके दिखायाहै तिसमें यौनादि जो संसर्ग हैं सो श्रेष्ठ हैं १ और साथ भोजनकरणा इत्यादिक मध्यमहैं २ और संलापादि जो हैं पतितोंके साथ वाता करणाआं सो अधमहैं ३ परंपरास्पर्शमें भीअधमजाचणा ४ ॥ अब वृहद्विष्णु जो कपि है तिसने संपूर्ण जो प्रायश्चित्तों के निमित्त हैं सो उत्तरोत्तर लघु क्या उसने अगला छोटा और उसने वो छोटा इसतरह भिन्न भिन्न संज्ञा भेदकके गिणेंहैं सो कहितेहैं ब्राह्मणकामारणा १ सरावकापोषा ४

घातेति ब्राह्मणता सुवर्णचुाणा ३ गुरोंकी स्त्रीसँ संग करणा ४ एह महापातक है
 और एह जो महापात होहें उनके साथ संयोगकरणा ओह वो उनके बराबर है ५ माताके साथ
 संयोगकरणा ६ कन्यामें संगकरणा ७ स्त्रुषा जो है पुत्रकी स्त्री तिसमें संगकरणा ८ एह अ
 तिपातक है ९ यज्ञमेंस्थित जो क्षत्री तिसका मारणा वैश्य और रजस्वला और गर्भिणी
 स्त्री और अपशो गोत्रकी स्त्री और अविज्ञातगर्भ जो है और शरणागत जो है इनके मार
 णेसे ब्रह्महत्याके बराबर पाप होताहै ॥ झूठा उगाई देणी और मित्रका मारणा एह दोनो सुरा
 पानक तुल्य हैं ॥ और ब्राह्मणकी भूमिका जो हरणाहै सो सुवर्णकी चोरीके तुल्यहै ॥ पिताके
 धाताकी जो स्त्री है और नानी जो है और मामी जो है और राजाकी स्त्री जो है इनमें जो

ब्राह्मणसुवर्णपहरणं गुरुदारगमनमिति महापातकानि तत्संयोगश्च • मातृग
 मनम् दुहितृगमनम् स्नुषाममनमित्यतिपातकानि • यागस्थक्षत्रियवधो वैश्य
 स्वच रजस्वलायाश्चान्तर्वत्न्याश्च सगोत्रायाश्चाऽविज्ञातस्य गर्भस्य शरणाग
 तस्यच घातनं ब्रह्महत्यासमानि ॥ कौटसाक्ष्यं मुहद्वध इत्येतौ सुरापानसमौ
 ब्राह्मणभूमिहरणं सुवर्णस्तेयसमम् • पितृव्य मातामह मातुल नृपपत्न्यभि
 गमनं गुरुदारगमनसमम् • पितृष्वसुर्भातृध्वसुर्गमनं श्रोत्रियत्विगुपाध्या
 यमित्रपत्न्यभिगमनं च स्वसुःसख्याः सगोत्राया उत्तमवर्णाया रजस्वला
 याः शरणागतायाः प्रव्रजिताया निक्षिप्तायाश्च गमनमित्येतान्यनुपातकानि
 • अनृतंचसमुत्कर्षे राजगामिचपैशुनम् गुरोश्चालीकनिर्वधो वेदानेदा

संयोगकरणा सो गुरोंकी स्त्रीके संगके बराबरहै ॥ और पिताकी जो भागिनी और
 माता की जो भागेनी और श्रोत्रिय जो है वेदपाठी तिसकी स्त्री और कात्तिक जो है यज्ञ
 कराणवाला तिसकी स्त्री और उपाध्याय जो है पढाएवाला तिसकी स्त्री और मित्रकी स्त्री इन
 स्त्रियों में जो संगम करणा और भागिनीकी जो सहेलीहै और सगोत्रा जो स्त्री और उत्तम व
 र्णकी जो स्त्री और रजस्वला जो स्त्री और अपनी शरणको प्राप्त जो स्त्री और संन्यास धा
 र्या है जिसमें सो जो स्त्री और निक्षिप्ता यया किसीने अमानवरी जो स्त्री इनमें जो गमनहै एह
 सब अनुपातक कहे हैं • अनृतमिति अपनी वडआई निमित्त जो झूठ बोलणा और राजाके
 कण्ठमें प्रातहोणे वालों जुगलीकरणी और गुरोंमें झूठा हठकरणा और वेदोंकी निंदा करणी

अधीति और पठनकिया जो शास्त्र तिसका त्याग और अग्नि-पिता-माता-पुत्र-स्त्री-इनका जो त्याग ॥ और अभोज्य जो हैं जिनका अन्न नहि भक्षण करना उनका अन्नभक्षण करना ॥ पराये धनका चुराणा । परस्त्री गमन करना । जिनको यज्ञका अधिकार नहि है तिनको यज्ञकराणा और वात्यता अर्थात् रातकालमें यज्ञोपवीतका नहि धारणा और मृत्युलेकर पठाणा । और मूल्यदेकके पठना । और सपूर्णस्वाणोंमें अधिकार होणा ॥ जीवमारणके निमित्त महायंत्रका प्रवर्तन करणा । वृक्ष-गुडे-बेलों-ओषधियां इनकी हिंसाकरके जायिका बरणा । अभिचार जो है हिंसाकरके और मूलकर्म जो है जादू तिसमें वर्तना । अपने निमित्त क्रिया का आरंभ करणा । अग्नि को नहि सेवणा । देवता-ऋषि-पितरों का जो क्रण तिसका नहि दूरकरणा । माडे

अधीतस्यत्यागोऽग्निपितृमातृसुतदाराणांच अभोज्यान्नभक्षणां परस्वा-
पहरणं परदाराभिगमनं अयाज्यानां चयाजनं वात्यता भृतकाध्यापनं
भृतादध्ययनादानं सर्वाकरेष्वधिकारो महायंत्रप्रवर्तनं द्रुमगुल्मलतौष-
धीनां हिंसाजीवनम् अभिचारमूलकर्मसुच प्रवृत्तिः आत्मार्थक्रियारं-
भोऽनाहिताग्निता देवर्षिपितृणामृणस्याऽनपक्रिया असच्छास्त्राभिगमनं
नास्तिकता कुशीलता मद्यपस्त्रीनिपेयणमित्युपपातकानि ॥ ब्राह्मणस्य रु-
जःकरणम् अग्रेयमययोर्घ्रातिः जैह्वयं पशुषु पुंसि च मैथुनाचरणमित्ये-
तानि जातिभ्रंशकराणि • ग्राम्याऽरण्यपशूनां हिंसनं संकरीकरणम् •
निन्दितेभ्यो धनादानम् वाणिज्यं कुक्षीदजीवनं असत्यभाषणं शूद्रसे-
वनमित्यपात्रीकरणानि • पक्षिणां जलचराणां जलजातानां च घातनं

शास्त्रमें अभिगमन करणा नास्तिक होणा । नाडे स्वभाव वाला होणा । और मद्य पान करने वाली स्त्रीका सेवन करणा । यह सभ उपपातक हैं • ब्राह्मणकों भोगका करणा और जो नहि सिंगणें योग्यवस्तु और सराव इनकों सिंगणा और कुटिल होणा पशुओं में और पुरुषमें मैथुनकरणा यह जातिभ्रंशकर पाप हैं • ग्राम्य और वनके पशुओंका जो मारणा है सो संकरीकरण पाप होता है • निन्दित जो हैं पुरुष तिनों तें धनका लेणा व्यापार करणा व्याजकरके जीविका करणा-शूद्र बो लणा शूद्रकी सेवा करणा यह अपात्रीकरण पाप हैं • पक्षी और जलचर और जलतें उत्पन्न भये जो जीव तिनका मारणा ॥

कर्मोति कीड़योका मारणा मद्य कर्के युक्त भोजन करणा एह मलावह पापहैं ॥ और जो नहिकब नकिया सो प्रकोर्णक पापहैं ॥ अथपापकी गणनाके प्रसंगतें पतित बी गिणादे हैं सकृदिति द्विज जो है ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य-सो एकवार अज्ञानतें सरावके पीषेकके सद्यःपतित होताहै इत्यादि कर्के ब्रह्महत्येति ब्रह्महत्या-सरावकापीणा-चोरी-गुरांकीस्त्रीके साथ संग करणा इनको महापातक कहते हैं और जो मनुष्य महापातकियोंके साथ वंचे इत्यादिश्लोक कर्के कथनकिये जो महापातक करणेवाले सो पतित होतेहैं और इसीप्रकार कन्यागामियोंते आदिलेकर अतिपापी जो हैं सो सद्यः वचा तात्कालिक पतित होतेहैं सोई (यम) कहिताहै माताकी भगिनी- और

कामिकीटघातनं मद्यानुगतभोजनमिति मलावहानि ॥ यदऽनुक्तं तत्प्रकीर्ण कमिति ॥ अथपापगणनाप्रसंगात्पतिता अपिगण्यन्ते सकृत्पीत्वासुरांमोहा त्सद्यःपततिवैद्विजइत्यादिना ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वगनागमः महा न्तिपातकान्याहुर्धृश्यतेःसहसंवसेदित्याद्युक्तमहत्पापकर्तारः पतिता इतिग म्यते एवंकन्यागाम्यादयोऽप्यतिपापिनःसद्यःपतिताभवन्ति तथाच । यमः । मातृष्वसा मातृसखी दुहिताच पितृष्वसा मातुलानी स्वसा श्वश्रूगत्वास यःपतेन्नरइति नरइत्यनेनद्विजेतराणामपिशूद्रप्रभृतीनां ग्रहणम् गौतमे नाऽन्येऽपि पतिताउक्ताः॥मातृपितृयोनिसंवंधागः स्तेन नास्तिक निन्दित कर्माभ्यासि पतितात्याग्यपतितत्यागिनःपतिताः पातकसंप्रयोजका श्रुति ॥ पातकेति मिथ्यापातकप्रयोगेणाऽन्यदूषकाः

माताकी सहेली, कन्या, पिताकी भगिनी, मामेकीस्त्री, भगिनी, सरस इनके साथ संग कर णेतें मनुष्य उसीसमय पतित होजाताहै नर इसपदके ग्रहण करनेसे जो ब्राह्मणोंतें भिक्ष भी- शूद्रप्रभृति हैं तिनका ग्रहणहोताहै ॥ और गौतमजीने औरभी पतित कहेहैं माता पिताकी योनि संवंधी स्त्री विने गमनकरणे वाला जो पाप, चोर, नास्तिक, और बहुतवार निन्दित कर्माकों करणेवाला और पतित जो हैं तिनकों नहीं त्यागणे वाला और अपतित जो हैं शुद्ध तिनकों त्यागने वाला इतने पतित होतेहैं और पातकोंके संप्रयोजक भी पतित होतेहैं अर्थात् जो मिथ्यापातक प्रयोगकर्के अन्यदूषक वचा औरकों दूषण लगाणे वाले हैं

एवमिति इसीप्रकार महापातकोंके बराबर जो पाप कहे हैं उनकीही पातकसंज्ञा है और उन्हीं छोटे जो पाप हैं सो उपपातक हैं इत्यादिकर्के और गुरुणामिति गुरु जो हैं त्रिनकां अत्यंत तिरस्कारकरणा और वेदोंकी निंदाकरणी सुहृद् जो मित्र हैं तिनकों मारणा और षडश्रा जो शास्त्र तिसकों भुलादेणा एह ब्रह्महत्याके बराबर पाप जाने योग्य हैं इत्यादि कर्के कहे जो पातकोंके करनेवाले सोवी पतित हैं और उपपातकी जो हैं सोवी कितनेक बहुतवार उपपातकके करण करके पतित हो जाते हैं ॥ इसमें कितनेक पंडित ऐसा विचारकर्ते हैं ॥ जिस अर्थवादमें प्रत्यवायका विशेष श्रवण करीदा है अथवा प्राय-

एवं महापातकतुल्यानिपापान्युक्तानियानितु तानिपातकसंज्ञानितन्यूनमुपपातकमित्यादिना गुरुणामध्यधिक्षेपो वेदानिंदा सुहृद्वधः ब्रह्महत्यासंज्ञेयमर्थातस्यचनाशनमित्यादिना चोक्ताः पातककर्तारोऽपि पतिताः उपपातकिनस्तु केचिदभ्यासेन पतिता भवन्ति अत्रोच्यते • यत्रार्थवादे प्रत्यवायविशेषः श्रूयते प्रायश्चित्तबहुत्वं वा तस्मिन्निन्दितकर्मणि यावत्प्रभ्यस्यमाने महापातकतुल्यत्वं भवति तावान् अभ्यासः पातित्यहेतुः एवंच सकृद्व्यादयस्तु पतिताभासा एव शास्त्रत आचारान्तु पतिताः अतएवोक्तं तन्यूनमुपपातकमिति दिवास्वप्नादौ तु सहस्रकृत्वोऽप्यभ्यस्यमानेपि न महापातकतुल्यत्वं भवतीति न पातित्यमतोयुक्तमुपपातकादेरभ्यासापेक्षया पतनहेतुत्वम् निन्दितकर्मभ्यासीति पूर्वोक्तगौतमोक्तेः

श्रित्तका बहुत्व श्रवण करीदा सो जो निन्दित कर्म है तिसके बहुतवार करणमें महापातककी तुल्यताको प्राप्तुंदा है इतना जो अभ्यास है सो पातित्यका कारण है इसीप्रकार एकवार गोहत्याके करनेवाले पतिताभास ही हैं शास्त्रकर्के और आचारतें पतित होते हैं इसीते किहा है महापातकोंते जो छोटा है सो उपपातक है और दिवाशयनादिमे हजार बार अभ्यास कर्के भी महापातकोंदि तुल्यताको नहिं प्राप्त होता और पतितभावको नहिं प्राप्त होता इसते उपपातकादि जो हैं उनके बहुतवार करणसे पतनहेतुत्व योग्य है ॥ निन्दितकर्मभ्यासी जो है सो पतित होता है एह पूर्वकिहा जो गौतमजीका बचन तिसते

तेनेति तिसकके ब्रह्महत्यादि अतिदिष्ट प्रायश्चित्ती क्या जिनोंने ब्रह्महत्या नहिं करी और गुरुद्रोहादि किया है उनका नाम है अतिदिष्ट प्रायश्चित्ती सो पापी हि हैं पतित नहिं हैं ॥ एह जो है गर्भ तिसका नहिं जाणआ एह आशस्तवीयवचनकी व्याख्यामें ॥ तिस ब्राह्मणका गर्भ स्त्री पुरुषभावकर्के नो नहिं जाणया तिसको मारकर्के ब्रह्महत्याके व्रतको करे इसप्रकारकी जो ब्रह्महत्या तिसमें व्रतका अतिवेश हि है पातित्यादिका अतिदेश नहिं है तिसकर्के अतिदिष्ट प्रायश्चित्तमें अपतितभावके होणेतें द्विजातिकर्म जो हैं संध्यावंदनादि तिनोकरके अधिकारी करिदाहि है ॥ पतितत्व जो है सो द्विजातिकर्मका अनहंत्वहै एह अपराकर्म स्पष्ट किया है ॥ और तिसीप्रकार

तेन ब्रह्महत्याद्यतिदिष्टप्रायश्चित्तिनः पापा एव न पतिताः एतच्च गर्भच तस्याऽविज्ञातमित्यापस्त्ववीयवचनव्याख्यायां तस्यब्राह्मणस्य गर्भ स्त्रीपुरुषभावेनाऽविज्ञातंहत्वा ब्रह्महव्रतंचरेदित्येवंरूपायां अत्र व्रतातिदेशएव न पातित्यातिदेशःतेनाऽतिदिष्टप्रायश्चित्तेऽपतितत्वाद्द्विजातिकर्मभिरधि क्रियतएव पातित्यंच द्विजातिकर्मनहंत्वमित्यपराकर्म स्पष्टीकृतम् ॥ तथाच जातिभ्रंशकरादिपंचपापकर्तारस्तत्राश्रैव व्यवहियंते न पतिता इतिवि वेकः द्विजातिकर्मणामपि अध्ययनेज्यादानाध्यापनयाजनप्रतिग्रहाणा मेवाऽनाधिकारो न स्नानसंध्यादीनाम् खट्वांगकपालपाणिर्द्वादशसंवत्सरा न्ब्रह्मचारीत्यादिसंवर्तस्मरणे ब्रह्मचारिपदस्य ब्रह्मचारिप्रकरणोक्तसन्ध्या वंदनादि वर्जयेन्मधुमांसत्यादि यावद्धर्मप्राप्त्यर्थावगमात्

जातिभ्रंशकरादि जो पंच पापहैं तिनके करणेवाले तिस तिस नाम कर्के व्यवहार करीदेहें पतित नहिं होते एह विवेक है और द्विजातिकर्म जो हैं पढ़ना पूजाकरणी, दानकरणी, पढ़ाउना धनकरणी, दानलैणा इनका हि उनको अधिकार नहिं है और स्नानसंध्यादिका निषेध नहिं है अर्थात् स्नानादिकरणी ॥ खट्वांगेति खट्वांग और कपाल हाथमें जिसके सो वारांवर्ष पर्यंत ब्रह्म चर्य धारकर्के वसे इत्यादि संवत्करूपिके स्मरणविषे जो ब्रह्मचारीपदहै तिसते ब्रह्मचारी प्रकरण में किहे जो संध्यावंदनादिकर्म तिनकोकरे और सराव, मांस, इत्यादि जो हैं तिनको त्यागे इसते आदिलेकके कहे जो संपूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म तिनकी प्रातिकी प्रतीति होणेतें अर्थात् प्राप्तहोणेतें

स्थान और आसन इनोकरके विहार करदा २ प्रातः १ संध्याः सायंकालमें स्नान करताहुआ शुद्ध होताहै एह गौतमस्मरणमें है अर्थात् गौतमस्मृतिमें है सवनेषूदकस्पर्शी इसपदकरके स्नान विधिकरके तदंगभूत जो संध्यावन्दनादि तिनकोभी उक्तहोणेतें किंचेति इसकरके इसीको फेर कहितेहैं पवित्र होयकरके कर्म करणे योग्यहै इसको। सर्वकर्मसाधारण होणेतें ब्रह्मचर्यांगभूत जो शौच तिसकी संपादिके निमित्त स्नानकीन्याई संध्योपासन भी करणेयोग्यहै तिसको शौचका जो संपादन तिस द्वारा सर्वकर्मोंके होणेतें अर्थात् सर्वकर्मोंका अंग होणेतें ॥ तथाचेति सोई दक्ष कहिताहै ॥ संध्याहीन जो है सो नित्य प्रति अपवित्र होताहै और संपूर्ण

स्थानासनाभ्यांविहरन्सवनेषूदकोपस्पर्शी शुध्येदिति गौतमस्मरणे सवने षूदकस्पर्शीत्यनेनस्नानविधिनातदंगभूतानां संध्यादीनामप्युक्तत्वात् किंच शुचिनाकर्मकर्तव्यमित्यस्य सर्वकर्मसाधारणत्वात् ब्रह्मचर्यांगभूतशौच संपत्त्यर्थं स्नानवत्संध्योपासनमपि कार्यं तस्याऽपिशौचापादनद्वारेण सर्व कर्मशेषत्वात् तथाच दक्षः संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु य त्किंचित्कुरुतेकर्मनतस्यफलभागभवेदिति नच द्विजातिकर्मभ्यांहानिःपतन मिति वचनात् संध्योपासनायाश्च द्विजातिकर्मत्वादप्राप्तिरिति शङ्कनीयम् यस्मात्पतितस्यैव व्रतचर्योपदेशात्तदंगतयैव संध्योपासनादिप्राप्तिरतोऽध्ययनादीनामेव द्विजातिकर्मणां हानिर्न सर्वेषां तावन्मात्रवाधेनाऽपि हानिवचनस्य चरितार्थत्वादिति विदांकुर्वन्तुविद्वांसः

कर्मोंमें अनर्ह क्या योग्य नहि होता. जिस २ कर्मोंका कर्ताहै तिस २ कर्मोंके फलका भागी नहि होता (प्रश्न) नचेति द्विजाति जो हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनके कर्मोंमें हानिका हि नाम पतनहै इसवचनतें संध्योपासन जो है तिसको द्विजातिकर्महोणेतें अप्राप्ति क्या संध्योपासनादिको नहि करणा (उत्तर) एह शंका नहि करणेयोग्य जिसमें पतितकोहि व्रतचर्योके उपदेशहोणेतें तिसका अंग हि संध्योपासनादिप्राप्ति है और इसीमें एह प्रतीत होआ कि वेदाध्ययनादि जो द्विजातिकर्महैं तिनकी हि द्विजातिपतितोंको हानि है कोई सभकी नहि क्योंकि तिनकी हानिकरके भी हानिवचनका चरितार्थहोणेतें इस बातको पंडितलोक जाणें

अत्रोते इसमें जो पुरुषोंको पतन निमित्त हैं स्त्रियोंको भी सोई जानसे योग्य हैं और याज्ञवल्क्यने इसमें विशेष भी कथन किया है नीचमें संगमकरणा गर्भका पातनकरणा भत्ताको मारणा एह स्त्रियोंको विशेष कर्क पतनीय हैं ब्राह्मणजातीते भिन्नजातीकी जो स्त्री है तिसको भी पतितकामारणा और ब्राह्मणजातीते भिन्न जो भत्ता है तिसका भी जो मारणा एह भर्तृहिंसन पदका अर्थ है एह तीन कृत्य हैं स्त्रियोंको असुधारण क्या विशेषपतनके निमित्त हैं इहां अपिशब्द कर्क महापातकाऽतिपातकाऽनुपातकभीहैं अपि बहुतवार किये जो उपपातक सो स्त्रियोंको निश्चित पतनके कारण हैं इह हि शौन रुजीनेकहेहैं ॥ और वसिष्ठजी कहतेहैं स्त्रीको तीनहि पातक लोकमें धर्मके जाणने वाले कहितेहैं स्वामीका मारणा १ दूसरेका गर्भ पातन २ और अपणे

अत्र यानि पुरुषाणां पतननिमित्तानि स्त्रीणामपि तानि ज्ञातव्यानि याज्ञवल्क्येन तु विशेषोप्यभिहितः नीचाभिगमनं गर्भपातनं भर्तृहिंसनम् विशेषपतनीयानि स्त्रीणामेतान्यपि ध्रुवम् १ अत्राह्मण्या अपि भर्तुः अत्राह्मणस्याऽपि हिंसनमित्येतानि त्रीणि स्त्रीणामसाधारणानि पतननिमित्तानि ॥ अपिशब्देन महापातकातिपातकानुपातकानि अभ्यस्तान्युपपातकान्यपि स्त्रीणां ध्रुवं निश्चितं पतनहेतूनि इमान्येव शौनकेनोक्तानि ॥ वसिष्ठेन तु ॥ त्रीणि स्त्रियाः पातकानिलोके धर्मविदो विदुः भर्तुर्वधो भ्रूणहत्या स्वस्य गर्भस्य पातनमिति इदमपि विशेषार्थं न तु पुरुषपतननिमित्तनिरासार्थम् किंच चतस्रस्तु परित्याज्याः शिष्यगा गुरुगा च या पतिघ्नी चा विशेषेण जुगितोपगता च या इत्येतास्तु पतितास्त्यागार्थं गणिताः

गर्भका पातन १ एह भी स्त्रियोंको विशेषार्थ है और पुरुषपतननिमित्त जो हैं तिनके दूरकरणके निमित्त नहिहैं अर्थात् पुरुषको जो पतननिमित्त हैं सोनी सभ और उनमें स्वामीका मारणा भ्रूणहत्याका करणा और अपणे गर्भका पातनकरणा ३ एह तीन कर्म विशेष पतनकारण हैं किंचेति इसकर्मभी पूर्वोक्त अभिप्रायको हि कहतेहैं चार स्त्रियां त्यागदेखे योग्यहैं ॥ अब तिनको कहितेहैं एकतो शिष्यके साथ संग करणेवाली १ और दूसरी गुरुके साथ संग करणेवाली २ और तीसरी स्वामीको मारणेवाली ३ और चौथी जुगित जो है प्रतिलोमज तिसके साथ संग करणेवाली ४ एह पतित स्त्रियां त्यागके निमित्त गणिता हैं

एह जेकर प्रायश्चित्तके करणेकी इच्छानहि करें तबइनका परित्याग करणे योग्य है और जो पतित स्त्रियाँ हैं तिनकी वस्त्र अन्न गृहमें वास देणा इत्यादि कर्के रक्षा करणी एह तात्पर्य है और प्रतिलोमज जो मनुष्य है तिसका नाम जुंगित है जैसे ब्राह्मणोंमें क्षत्रीतें जन्म जिसका इत्यादि नान्विति (प्रणः) पतिततें जन्म भया है जिसका तिसको पतित कहते हैं परंतु स्त्रीतें विना सो स्त्री पर गामिनी है केवल तिस स्त्रीको ग्रहण करे अरिक्थां क्या केवल वस्त्र मात्र कर्के युक्त को अर्थात् तिसको पतितके घरसे विवाह लेवे परंतु शुद्धज्ञान होइको अपना वस्त्र दे कर्के और धन उसका साथ न लेवे एह कहिता जो बसिष्ठ और हारीत तिनका क्या अभिप्राय है (उत्तर)

एतासां प्रायश्चित्तमनिच्छन्तीनां परित्यागो विधेयः अन्यथासां तु पतितानां चैलान्नगृहवासादिना रक्षणमेवेति तात्पर्यम् ॥ जुंगितः प्रतिलोमजः (ननु) पतितेनोत्पन्नः पतित इत्याहुः अन्यत्र स्त्रियाः साहिपरगामिनी तामरिक्था मुपादेयादिति वदतो वशिष्ठस्य हारीतस्य च कोऽभिप्रायः ॥ पतितोत्पन्न कन्यायाग्रहणं प्रायश्चित्तेन युक्तं चेत्तदा तत्पुत्रस्यापि संततित्वाविशेषात् कुतो न ग्रहणम् स्त्रीणामर्द्धप्रदातव्यमित्यादिवचनविशेषेण कन्यायाः स्वल्पेन प्रायश्चित्तेन पुत्रस्य त्वऽधिकेन शुभाचारिभिर्ग्राह्यता युक्तैव प्रतिभाति ब्राह्मणोत्पन्नवत् पतितोत्पन्नोऽपि प्रायश्चित्ताहो भवेत् ततश्च संस्कारानंतरं स्वस्ववर्णैर्व्यवहार्यो भवेत् नहि ब्राह्मणपतितयोर्गुणद्रव्ययोरिव वास्तवो भेदः

पतिततें जन्मी जो कन्या तिसका ग्रहण प्रायश्चित्त कर्के जद योग्य है तद पतितका जो पुत्र है तिसको भी संबन्धीका अविशेष होणेतें क्या कन्याके तुल्य होणेतें ग्रहण किसतें नहि होता स्त्रियोंको अर्धे प्रायश्चित्त देणे योग्य है इत्यादि वचन विशेष कर्के कन्याको थोड़े प्रायश्चित्त कर्के और पुत्रकी बहुत प्रायश्चित्त कर्के शुभाचारि जो हैं शुभके आचरण करणवाले तिनोनें ग्राह्यता कही है इहं वातं प्रतीत हुंदी है (प्रण) ब्राह्मणतें उत्पन्न भया जो है तिसकी न्यांइ पतितोत्पन्न की प्रायश्चित्त योग्य होवे तिसतें संस्कारों उपरंत अपने अपने वर्णों कर्के व्यवहार योग्य होना चाहिए (उत्तर) ब्राह्मण और पतितका गुणद्रव्यकी न्यांइ वास्तव भेद नहि है

किंतु धूम्र.रुण जो रंग हैं तिनको न्याई दोषतात्तम्यरत भेद है इसतें इहां एह अर्थहै पतित पुरुष कर्क उत्पन्न भया जो पुत्र सोवी पतित होता है अपणे पिताके पातित्यानुसारकर्कें सो प्रायश्चित्त. योग्यहै और कन्या पतिता नाहै इंदो॥अब इसीको वौधायन कर्पिकाहिताहै अशुचीति पति तके वीर्यमें जन्मे जो हैं और प्रायश्चित्तोंकी इच्छा कर्ते हैं तिनको पतितोंसे तीसरा हिस्सा प्रायश्चित्तहै और स्त्रियोंको तीसरे हेसेका तृतीयांश प्रायश्चित्त है इसका एह अर्थहै पतित जो पिता तिस के जो पतनीय कर्म हैं तिनके प्रायश्चित्तोंका तृतीयांश पतितोत्पन्न पुरुषोंको प्रायश्चित्तहै तिसका बी तृतीयांश प्रायश्चित्त पतितोत्पन्न स्त्रियोंकोहै तिसतें पतितोत्पन्न कन्या अथवा पतितोत्पन्न पुत्र

किंतु धूम्ररुणयोरिव दोषतारतम्यकृत एव भेदोऽस्ति अतश्चाऽयमत्रार्थः पतितेन पुरुषेणोत्पन्नः पुत्रोऽपि पतितः स्वजनकपातित्यानुसारेण प्रायश्चित्तार्हः कन्यातु न पतितेत्यर्थः • इदमेवाह वौधायनः • अशुचिशुक्रोत्पन्नानामिच्छतां प्रायश्चित्तानि पतनीयानां तृतीयांशः स्त्रीणामंशातृतीयः अयमर्थः जनकस्यपतितस्य यानि कर्माणि पतनीयानि तत्प्रायश्चित्तानां तृतीयांशः पतितोत्पन्नानां पुंसां प्रायश्चित्तं तस्यापि तृतीयभागः पतितोत्पन्नानां स्त्रीणामिति ततश्च पतितोत्पन्ना कन्या पुत्रो वा सदाचारिभिः प्रायश्चित्ततारतम्येन मेलनीयः • अथेदानींतनाः केचनजनाः • प्रागऽतीव बलवाद्भिर्भारतवर्षीयधर्माध्वविध्वंसनाय कृतावसा रैरिव म्लेच्छापसदैरकारणं बलादेव स्वकीयान्नभोजनेन स्वकन्या दिसंवन्धसंविधानेन चैवविधेनाऽभ्येनापि सद्यःपातित्यहेतुना स्वैसाकं शयनासनयानादिव्यवहारप्रवर्त्तनेनाऽवशतया स्वधर्मात्प्रच्यावितानां

होवे सो थैष्ठ आचार करणे वाल्योंने प्रायश्चित्त की तारतम्यता कर्के मेलने योग्य है • अथेति इसमें औरभी विचार है • इसकालविषे होणवाले जो कोईकलोक सो पिछले बहुत बलवाले और भारतवर्षके धर्मरूपनार्गके नाश करणेवास्ते किया है अवतार जितोंने ऐसे जो म्लेच्छाके समान हैं तिनोकरके कारणते बिना बलतेंही अपने अन्नके भोजनकराणे कर्के ओर अपनी कन्याकेदेनकरके भी उनकी अपने धर्ममें लेआउना इसप्रकारके होर कर्म कर्के भी केस कर्महैं शीघ्र हि पातित्यके हेतुहैं और आपणें साथ शयन और आसन और यानादि व्यवहारके वर्त्तनकराणे कर्के अवशतातेअपणे धर्मतें दूरहोए जो वर्णाश्रमो लोक

तदेति तिनांकों तिस कालविषं म्लेच्छोंको आज्ञादेहोआं होया तिस आज्ञादे ना पालनंतें सता बाई सखी बंशके नाशू निश्चयकर्के कालांतरविषं उचित जो प्रायश्चित्त तिसके आचरणकर्के बहुतपापको दूरकरणको संभावनाकर्के तथाविच जो वहु आपदा तिसके विषं प्राणोंको रक्षा कणो हि परम धर्म है एह जो मत्र रहेई और चिकाल तिनांकी वलीयता कर्के तिनांते आपणे आपनूं लुडाने बास्ते अवसरभूं ना प्राप्त होकर्के पुत्रपौत्रादि परंपराकर्के तैसेंही अथात् म्लेच्छ हि जो स्थितहैं उसीतें लेकर जो म्लेच्छीभूतहैं ब्रह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांक कुलदिपें ठपन्न होएथे और पीछे जेडे होएहैं म्लेच्छ और अपणो नारिकतानूं गंगवादि नरकका साधन जाणकर्के कोइकभी पूर्वजन्मका सुकृतलेश था तिसका जो परिपाकहै पक्षणा तिसके

तदात्वे तन्निदेशातिक्रमे सद्यएव सकलस्वान्वयनाशं निश्चित्य कालान्तं
रसमुचितप्रायश्चित्ताचरणेन गुरुतरदुरितनिष्कृतिसंभावनया तथाविधायां
गरीयस्यामापदि प्राणत्राणमेव परमं धर्मं मन्यमानानां चिरं तेषां वलीय
स्तया तेभ्यः स्वात्मानं मोचयितुमवकाशमलब्ध्वा पुत्रपौत्रादिपारम्पर्येण
सथैवावस्थितानां ततएव च म्लेच्छीभूतानां विप्रक्षत्रियाविटशूद्राणां कुले
पु प्रसूना म्लेच्छा वा स्वां नास्तिकत्वां विविधरौरवादि निरयं साधनत
या कुतश्चिदपि प्राग्भवीयसुकृतलेशपरिपाकोदितेन शिष्टवाक्यादिना
दृढमवधार्य भृशमनुशयानाश्चेत्प्राणिपातमात्रपरितुष्टेभ्यो दीनजनानुकम्प
या तदुद्धारार्थैव भगवता विधिना सृष्टेभ्यः स्वप्रार्थनांजलिशताकृष्टेभ्यः
शिष्टेभ्यः कथंचिदपि साध्यनुष्ठेन प्रायश्चित्तादिना नरकतरणे पापं स्वो
चितनिगमानुमतदेवतासमाराधनाद्युपदेशं च वारं वारंप्राणिपत्यप्रार्थयेरन्

उदय होणे कर्के और शिष्टपुरुषोंके वाक्यादिकर्के निश्चयसे जानकर अनिश्चयकर्के अनुशयानाः क्या नरकदुःखकेदूरकरणे बास्ते चिताग्रस्त होए २ जेकर नमस्कारमात्रते प्रसन्नहोणवाले और दीनपुरुषोपर दयाकरणवाले और दुखियोंके उद्धारवासे मानो ब्रह्माजीने रचे होएहैं और पापीको सहितअंजलिके प्रार्थना सुणकर दयादर्शि बवालहैं असं शिष्टपुरुषांते कदाचित् अच्छीतर्हा कीतेहोए प्रायश्चित्तते नरकतरणके उपाय को और आपणे योग्य शास्त्रानुसार देवताके आराधनादि उपदेशको वारं वार प्राणिपातकर्के क्या प्रणामकर्के प्रार्थना करें

तर्हि तः तद सो किसेक प्रकारसे नास्तिक्यवुद्धिते हटाएनुं अथवा सदाचारांके उपदेश करणेनुं वेग्य हैन अथवा नहि * पहले पक्षकोंलेकर कहतेहैं (प्रष्ण) जेकर उह ग्लेच्छभास भी उपदेश के योग्यहैं तदकहो कउन प्रायश्चित्त उनको देणा चाहिए कि जो जन्मतलेकर उनके अभिशित नास्तिक्य बुद्धिओं हरे और उनके योग्य कोनसे आचारहैं (उत्तर) इहिविचार अव करतेहैं तत्रोतिसविषे जिनोको अपना उचित संस्कार प्राप्त होगयाहै ऐसे चारोंवर्णों विचो जिस वर्णों अपणी इच्छा त अथवा ग्लेच्छोंके बलसे ग्लेच्छभाव प्राप्त होआहै और नास्तिक भाव हुआहै तिसको अपना समुचितसंस्कारहि करणा चाहिए जो बाह्यवल्क्यादिमुनिश्राने किहाहै परंतु पहिले प्रायश्चित्त कर्के पापकों हटाकर और पीछे संस्कार करणा तिसते अनंतर अपने वर्णके उचितधर्मकी प्राप्ति

तर्हिते कथंचिदपि नास्तिक्यतो मुक्तिं स्वोचिताचारांश्चोपदेष्टुमर्हा नवा *
अर्हाश्चेत् कीदृशं प्रायश्चित्तं जन्मतः प्रभृत्याश्रितनास्तिक्यदोषमोषकं
केच तदुचिता आचारा इति विमृश्यते तत्र येषां चातुर्वर्णिकानां प्राप्तस्वो-
चितसंस्काराणां बलात्स्वेच्छया वा ग्लेच्छादिहीनजातिभिः संसर्गो ना-
स्तिक्याद्याश्रयणं च तेषां मनुबाह्यवल्क्याद्युक्तप्रायश्चित्तैस्तत्संसर्गनास्ति-
क्यजपापविनाशेन पुनः स्वस्ववर्णोचितधर्मप्राप्तिस्तु स्पष्टैव अयं तु विज्ञेयः
तेषां संसर्गकालतारतम्यपर्यालोचनया लघु लघीयो गुरु गरीयः प्राय-
श्चित्तप्राप्तिः नास्तिक्यस्य तु वेदादिप्रामाण्याविश्वासरूपस्य नास्तिक्यं
व्रतलोपश्चेत्युपपातकप्रकरणे पाठेनोपपातकशुद्धिः स्यादेवं चान्द्रायणे
न वा पयसा वा ऽपि मासेन पराकेणाथवा पुनरित्युक्तेषु प्रायश्चित्तेष्व-
न्यतमेन पापानुरूपेणोपदिष्टेन निष्कृतिः

होवेगी एह बात स्पष्टहै इतना इसविषे विशेषहै कि जो वर्णश्रमी ग्लेच्छ होएदेहैं तिनके संसर्गकालके न्यूनाधिकभावके विचारकर्के कि इनका कितना चिर भोजनादिमें संसर्ग रिहा है इसविचारकर्के छोटेसे छोटा वैसे बड़ा प्रायश्चित्त आवेगा और जो उनको वेदादिविषे आविश्वासरूप नास्तिक्य भाव रिहाहै तिसपापके दूरकरणेवास्तो वेदादिविषे प्रामाण्यबुद्धि होणी अर्थात् वेदहि प्रमाणहै और विश्वासहोणा इसकर्के और (नास्तिक्यं व्रतलोपश्च) और उपपातकप्रकरणविषे पाठ है तिसका प्रायश्चित्तभी उसी जगाहै (उपपातकशुद्धिः स्यात्) इत्यादिवचनाविषे कहे जो प्रकारहैं तिन्हां विचो किसे एक कर्के शुद्धि होवेगी

येषामिति और जेडे अकृतसंस्कार हैं क्या जिनके यज्ञोपवीतादि संस्कार नहि होए और म्लेच्छादि संसर्ग उनको होआहे और नास्तिक भाव भी होआहे तिनकों आपत्तिकर्के संस्कारके लोप हेणते इतऊर्ध्वत्रयोप्येते इत्यादिवचनकर्के ब्राह्म्यताको कहकर पीछे ब्राह्म्यस्तोम यज्ञते बिना उनकी शुद्धि नहि होती असाकिहाहै तिसते ब्राह्मणादिचारवर्णकों क्रमकर्के १६। २२। २४ वर्षादे अंदर ब्राह्म्यतादोपके दूर करणेवाते ब्राह्म्यस्तोम यज्ञका विधानहै तिस प्रायश्चित्त कर्के नष्ट होएहैं पाप जिनादे तिनको भी यज्ञोपवीतादि संस्कारपूर्वक अपणे धर्मकी प्राप्ति हो वेगी तिसपूर्वोक्त वचनका अर्थ एह है त्रय वर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यथाकाल क्या जि

येषां त्वऽकृतसंस्काराणामेव तैः संसर्गो नास्ति कथाश्रयणं च तेषामापदाऽप्राप्तसंस्काराणामित ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः सावित्रीपतिता ब्राह्म्या भवन्त्याऽऽर्यविगर्हिता इति मनुक्तेरापद्यपि ब्राह्म्यत्वस्याऽपरिहार्यतयाऽत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः सावित्रीपतिता ब्राह्म्या ब्राह्म्यस्तोमादृते क्रतोरिति विप्रक्षत्रियविशां क्रमेण षोडशद्वाविंशतिचतुर्विंशतिसंवत्सराभ्यन्तरेऽनुपनीतानां ब्राह्म्यतायाः पर्युदासमुखेन ब्राह्म्यस्तोमरूपप्रायश्चित्ताऽपनोद्यत्वेऽक्तैः तेन नास्तिक्यप्रायश्चित्तेन च नष्टपापानामस्त्येवोपनयनपूर्वकं स्वस्वधर्मप्राप्तिः ॥ शूद्राणां तु सावित्रीप्राप्तेरेवाऽभावेन तदभावप्रयोज्यत्वस्यैव ब्राह्म्यत्वे प्रागुक्तवचनतोऽलाभाद्ब्राह्म्यत्वप्रयुक्तप्रायश्चित्ताऽप्राप्तावप्यव्यवहार्य म्लेच्छादि स्पृष्टान्न भोजनादिमात्रप्रयुक्तप्रायश्चित्तस्य दिनगणनया कल्पितावृत्त्या नास्ति

क्यस्य च चातुर्वर्णिकैः सर्वैरपि परिहार्यतया

स कालमें उनको संस्कार करणा था उस कालमें जेकर उपवीतादिसंस्कार ना होवे तद उनकी ब्राह्म्यसंज्ञा है सो ब्राह्म्य अष्टपुरुषोंमें विगर्हित है अर्थात् भले लोक उनके साथ वृत्तन नहि करदे ॥ शूद्रोंके अर्थ कहतेहैं शूद्राणामिति शूद्रोंको सावित्रीका विधान नहि तिस कर्के तिनको सावित्रीके नाहोणते ब्राह्म्यता नहि होती और तत्प्रयुक्त प्रायश्चित्तभी नहि होता किंतु नहि जिनके साथ व्यवहार करणा तिनो म्लेच्छोंके स्पर्श कीतिहोअे अन्नका जो भक्षण है तिसका हि प्रायश्चित्त है तिसविषे भी दिनोके गिणने कर्के कल्पित होई जो आवृत्ति तिस कर्के और तिनको जो रिहा नास्तिक्यभाव तिसका निषेध चार्णवर्णोंको है

तदिति इसमें शूद्रोंकोभी नास्तिक्यका प्रायश्चित्त करना चाहिए तिसके पीछे शूद्रोंको उचित जो धर्म है तिसकी प्राप्ति योग्य है ॐ और ब्राह्मणादिवर्णत्रयको १५ वर्षते पीछे गौणकाल है तिस तेभी पीछे संस्कार अनापदविषे क्या स्वस्थताविषे नहि होवे अथवा थोड़ा कालभी अनापदविषे संस्कार नहि होवे तद पतित इसमें आदिलेकर जो मिताक्षरामें वसिष्ठजीका वचन है तिसकके उद्दालक व्रत और ब्राह्म्यस्तोम अथवा तिनों विषे एक अथवा मनुप्रोक्त त्रैमासिक व्रत जो है तिसको जो कमकके करणवाले हैं तिनका यज्ञोपवीत होवे एह मिताक्षरामें स्पष्ट है ॥ और इस स्मृतिका अर्थ एह है कि जिसको सावित्री पतित हो जावे सो उद्दालकव्रत करे और दो २ महीने यावक क्या यवांके काढ़ेकके वर्ते और १ महीना दूधकके और १५ दिन आमिक्षा है

तदाश्रयणप्रयुक्तपापनाशक प्रायश्चित्तस्याचरणेन च स्वोचितधर्मप्राप्तिरुचितैव ॐ त्रैवर्णिकानां पंचदशवर्षाधिककालं गौणकालादूर्ध्वमनापद्यनुपनीतानां किंचित्कालमपि वाऽनापद्यनुपनीतानां ॥ पतितसावित्रीक उद्दालक व्रतंचरेद् द्वौ मासौ यावकेन वर्तयेत् मासं पयसा पक्षमामिक्षयाऽष्टरात्रं घृतेन पद्मरात्रं मयाचितेन त्रिरात्रमम्बक्षोऽहोरात्रमुपवसेदश्वमेधावभृत्य गच्छेद्ब्राह्म्यस्तोमेन वा यजेतेति मिताक्षराधृतवसिष्ठवचनेनोद्दालकव्रतब्राह्म्यस्तोमयोरन्यतरन्मनूक्तं त्रैमासिकं च क्रमेण कृतवतामुपनेयता मिताक्षरादौ स्पष्टैव ॥ येषां तु पिता पितृपितामहौ पितृपितामहप्रपितामहाश्चाऽनुपनीताः सवर्णास्वेव च ब्राह्म्यजासु पुत्रानुत्पादितवन्तस्ते भृजकण्टकादिसंज्ञकाः

जो दूधविषे दाहिंमिलाकर वणे तिसकके और ८ रातां घृतकके और दो २ रातां अयाचित कके और ३ रात्र जल भक्षणकके और दिनरात्र उपवास करे अथवा अश्वमेध जिस स्थानमें होता है वहां जावे अथवा ब्राह्म्यस्तोम करे इति ॥ और जिनका पिता अथवा जिनका पिता और पितामह दादा अथवा जिनका पिताभी और पितामह दादाभी और प्रपितामह पद्मरात्राजी अनुपनीत हैं क्या यज्ञोपवीतसे हीन है सो अपने वर्णकीयां श्रिया विषे अर्थात् ब्राह्मणरात्र्य ब्राह्मणीविषे और क्षत्रियब्राह्म्य क्षत्रियाणी विषे इत्यादि क्रमसे अथवा श्रियाभी ब्राह्म्यजा गोण तिनींविषे पुत्रोंको पैदे करदेहोए सो उत्पन्नहोए पुत्र भृज कण्टकादि नामवाले हुंयेहैं

नदिति सोई शूद्रकमलाकरग्रंथ विषे मनुजीने कहाहै ब्रात्येति ब्रात्य क्या संस्कारहीने ब्राह्मणते उत्पन्नहोआ जो पुत्र है सो पापात्माहै और भृज कण्टक तिसका नाम है और आवन्त्य और वाटधान और पुष्पशेखर एह सभ उसीके नामहैं एह ब्रात्यब्राह्मणते ब्राह्मणीविषे उत्पन्नहोएके नामहैं एह कैक कहतेहैं ॥ होर कोई ऐसा अर्थ करदेहैं कि ब्रात्यब्राह्मणते ब्राह्मणीविषे भृजकण्टक और तिसते ब्राह्मणीविषे आवन्त्य और तिसते ब्राह्मणी विषे वाटधान और तिसते ब्राह्मणीविषे पुष्पशेखर इति ऐसेहि ब्रात्यक्षत्रियते क्षत्रियां क्षीविषे ब्रह्म मल्ल विच्छिवि नट करण खस द्रविड इति और ब्रात्यवैश्यते वैश्याविषे सुधन्वा आचार्य का रूप विजन्मा मैत्र सात्वत इनानामांवाले उत्पन्न होतेहैं एह सभ शूद्रकमला

तदुक्तं (मनुना) ब्रात्यानुजायते विप्रात्पापात्मा भृजकण्टकः आवन्त्यवाट धानौच पुष्पशेखरएवच विप्रायांजायते ब्रात्यविप्रजोभृजकण्टकइति अत्र ग्रन्थवस्था आवन्त्याद्यास्तस्यैव संज्ञा इति मेधातिथिः अन्येतु भृजकण्टका द्विप्रायामावन्त्यः तस्मात्तस्यां वाटधानः तस्माच्च तस्यां पुष्पशेखर एव ब्रा त्यक्षत्रियात्क्षत्रियायां ब्रह्ममल्लश्वराजन्याद्ब्रात्याद्विच्छिविरैवच नटश्चक राणैवखसोद्रविडैरेवचेति ब्रह्मादयः ७ वैश्यानुजायते ब्रात्यां सुधन्वाऽऽचार्य एवच कारूपश्च विजन्माच मैत्रः सात्वत एवचेति सुधन्वादयो वैश्याना एव इदंच शूद्रकमलाकरे स्पष्टम् एषांच ब्रात्यत्वेऽपि विप्रत्वादिकं नही यते विप्रत्वादेर्जातिरूपतया विप्रजातीयपुरुषाद्विप्रजातीयकन्यायामुत्प न्नापत्यमात्रस्य विप्रत्वात्तत्र चादुष्टत्वस्याप्रयोजकत्वात् अतश्च तेषां विप्रत्वादे रनपगमात् ॥ अतिक्रान्ते तु सावित्र्याः काल ऋतुं

करग्रंथविषे स्पष्टहैं प्रयोजन एह है कि उनांको ब्रात्यत्वके होआभी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एह संज्ञा दूर नहि हुंदी क्यों कि विप्रत्वादिहैं जानि तिसते पुष्पभी विप्र और ब्रा तैसी तिनते जां होवैगा सो सभ निही जानिकारहे केवल उस जानिमे दृष्ट अदुष्टउतना हि विचारहै और ऐसा नहि कि दृष्ट कि होवे सोई जानिका प्रयोजक है अग्य विचार होणेतें ॥ अतएव उसी कारणसे तिसका विप्रत्वादि जानिकें नहि दृष्टावैगें मृत्तिकों प्रायश्चित्तके अर्थ लिखतेहैं अतिक्रान्तंति ॥ इसका अर्थ एहहैं कि सावित्रीका काल ऋतु लेव जावें अर्थात् जिससमय यज्ञोपवीत पापा या तिस समयके व्यतीतहोआँ दो महीने पर्यंत

त्रैविद्यक कथा जिसमें वेदत्रयका विचार होवे ऐसे ब्रह्मचर्यको करे तिसके अनंतर यज्ञोपवीत पावे और तदनंतर वर्षपर्यंत जलका उपस्पर्शनरूप एक कर्म है तिसको करे पीछे सावित्री पढ़ाणी चाहिए और जिनका पिता और पितामह अनुपनीत होण कथा पतितसावित्रीक होण सो ब्रह्महसंस्तुत हैं अर्थात् ब्राह्मणमारणवालेओंकी पंक्तिमें हैं उनके गमनको कथा संबंधको और भोजनको और विवाहको वर्जना चाहिए उह जेकर प्रायश्चित्तकी इच्छा करें तो पहले अतिक्रमविषे जो ऊपर विधान लिखयाहै सो कर्के पीछे यज्ञोपवीत तदनंतर उदकोपस्पर्शन कर्म करें तदनंतर जितने पुरुष अनुपनीत भिहैं तिनकी संख्याकके वर्षाविद्य (यावन्तोऽनुपनीताः) इत्यादि ऋचांकर्के और यज्ञपवित्र नामा यज्ञ कर्के और साम पवित्र नामकके आंगिरसेन कथा अंगिरा कर्के कहे

त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनं ततःसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनमऽथाध्याप्यो यस्य पिता पितामह इत्यनुपनीतौ स्यातां ते ब्रह्महसंस्तुताः तेषां गमनं भोजनं विवाहमिति वर्जयेत् तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तं यथा प्रथमेऽतिक्रम ऋतुरेवं संवत्सरोऽथोपनयनं तत उदकोपस्पर्शनं प्रतिपुरुषसंख्यया संवत्सरान् यावन्तोऽनुपनीताः स्युः सप्तभिः पावमानाभि र्यदन्ति यच्च दूरक इत्येताभिर्यज्ञपवित्रेण सामपवित्रेणांगिरसेनेत्यपि वा व्याहृतिभिरेव मथाध्याप्योऽथ यस्य प्रपितामहादीनां नानुस्मर्यत उपनयनं तेऽमशान संस्तुताः तेषामभ्यागमं भोजनं विवाहमिति वर्जयेत् तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तं द्वादशवर्षाणि त्रैविद्यं ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनं तत उदकोपस्पर्शनं पावमान्यादिभिरथ गृहमेधेनाऽध्यापनं ततोऽभिनिवर्तते तस्य यथा प्रथमेऽतिक्रमे तत ऊर्ध्वं प्रकृतिवदिति *

होए कर्के और व्याहृतिआं जो हैं ओं भूःइत्यादि तिनकके शुद्धहोआं गायत्रीका उपदेश ग्रहण करे और जिनके पड़दादेते आदलेकर यज्ञोपवीतको वात्ता भी नहि सुणी सो श्मशानसंस्तुत हैं कथा श्मशानकीन्याई अपवित्र हैं तिनके स्थानमें जाणा आउणा और तिनका भोजन और विवाह एह सभ वर्जितहैं जेकर उह प्रायश्चित्तकी इच्छाकरें तद १२ वर्ष त्रैविद्यनामक ब्रह्म चर्यको करें तिसमें अनंतर यज्ञोपवीत तदनंतर उदकोपस्पर्शन और पावमानोंमें आदि लेकर जो ऋचाई तिनकके गृहमेध करणते अनंतर अध्यापन कथा गायत्रीका उपदेश होवे और तिसमें अनंतर फेरभी कोई सावित्री त्यागे तद तिसको जैसे पहले अतिक्रमविषे प्रायश्चित्त किहाहै तैसाकरे और उसके आगे फेरभी पूर्ववत् अतिक्रमहोवे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त करे

प्रायश्चित्त एह पूर्वोक्तव्यवस्थापक प्रायश्चित्तमयूख और प्रायश्चित्तोद्घोत और प्रायश्चित्तमुक्तावली आदिक बहुत प्राचीनग्रंथोंविषे लिखेहोए आपस्तवजीके वचनके अनुसार प्रायश्चित्तकरणकर्के दू हो ए हैं पाप जिनके उनका उपनयनकर्के पीछे आपोआपण धर्मकी प्राप्तिहि है और शूद्रोंको जिस तहां अपण धर्मकी प्राप्ति हुंदीह सो पीछे कहनुके इनका ब्राह्म्यत्वदोष नहीं है इसीकके तिस के अर्थ कोई प्रायश्चित्त भी नहीं है और इसकेआगे जेकर बृद्धप्रपितामहको आभिकर्के अग के जनकोंका उपनयन नहि सुणया तद तिनकीया आपोआपण वंशकीया स्त्रियांविषे उत्पन्न होए जो पुरुष तिनको बहुत प्रायश्चित्त करण कर्के भी उपनयनादि संस्कारकी योग्यता नहि हैं

प्रायश्चित्तमयूख प्रायश्चित्तोद्घोत प्रायश्चित्त मुक्तावल्यादि बहुतर प्राची नगान्य निबन्धधृतापस्तम्बवचनामुसारि प्रायश्चित्ताचरणेन निर्णिकृता काना मुपनयनपूर्वक स्वस्ववर्णोचितधर्म प्राप्तिरित्येव शूद्राणां तु पूर्व बदेव तेषां ब्राह्म्यत्व प्रयुक्तस्य पापविशेषस्याऽभावात् अतः परं च बृद्धप्र पितामहमारभ्य येषां जनकानां मुपनयनाभावः तेषां सवर्णास्वेवोत्पादितापत्त्यानमपि न प्रायश्चित्तस्य गुरुतरस्याऽप्याचरणेनोपनयनप्रभृति वैदिक संस्कारयोग्यता आपस्तम्बेन चतुर्थ पुरुषावध्येव ब्राह्म्यत्वे प्रायश्चित्ताभिधानात् • नचाऽऽपस्तम्बेन यस्य प्रपितामहादीनां नाऽनुस्मर्यत उपनयनमित्युपक्रम्य प्रायश्चित्ताभिधानात् तत्र चादिग्रहणेन ततः प्राचामप्यनुपनीतत्वे प्रायश्चित्तेन ब्राह्म्यत्वनाशो युक्त एवेति वाच्यम् • उक्तवचनं व्याचक्षाणन भाष्यकृता हरदत्तेन प्रपितामहादि प्रपितामहादारभ्य प्रपितामहः पितामहः पिता स्वयं च यथाकालमिति ते तथाविधाः समाणवकाः

क्योंकि आपस्तवजीने चौथे पुरुष तक हि ब्राह्म्यत्वका प्रायश्चित्त विधान कीता है (प्रण) आपस्तव जीने यस्य प्रपितामहादीनां इत्यादिवचनकर्के आरंभ जद कीता और प्रायश्चित्तविधान कीता उसजगा चकारके ग्रहण करणें तिनते अगलयांकी भी ग्रहण हुंदाहें ठोभी जेकर अनुपनीत होण तौनी उनको प्रायश्चित्त करणा चाहिए (उत्तर) एह पीछेकिहा जो है आपस्तवजीका वचन इसकी व्याख्याकरणवाले जो हैं भाष्यकार हरदत्त तिनाने प्रपितामहादि इसका एह अर्थ कीता है कि प्रपितामह और पितामह और पिता एह सभ अनुपनीत होण तो बालकके सहित तथाविध है

इमेति और श्मशानतुल्य है इतनाहिं किहा है और जिसके प्रपितामहके पिताका उपनयन नहिं है वह तिसांवें प्रायश्चित्तका अर्थ नाहे किया तथापि तिनांकी एक बातों है कि श्रावोश्राव से बसोविषे उत्पन्न होखे कर्के पूर्वोक्त रीतिसँ विप्रवादिजातिकों म दूर होणेतें शूद्रकी अपेक्षातें उह श्रेष्ठ है ॥ कुण्ड होर कहते हैं किचेति अध्ययन जो हे वेदकापढ़ना तिसका अंग है उपनयन तिसकी प्रातिके नहिं होखी उपनीय गुरुः इत्यादि वचनकर्के शौचाचारों की शिक्षाको उपनयनके अंगिताकी सिद्धीतें तिसका अंग जो उपनयन तिसकी भी प्राप्ति होई सो उपनयन अपने समीप होणा इतीका आपक दया प्रातिके कणवालाहे कोई यथार्थ रूप

श्मशानतुल्या इत्यादि व्याख्याय यस्य तु प्रपितामहस्य पितुरारभ्य नाऽनु-
स्मर्यत उपनयने तत्र प्रायश्चित्तं नोक्तमित्युपसंहारात् परंत्यंतया सवर्णा-
जत्वेन प्रागुक्तरीत्या विप्रवाद्यनपायाच्छूद्राऽपेक्षयोत्कृष्टत्वमस्तीति
युक्तम् किंचैषामध्ययनांगोपनयनप्राप्त्यभावेऽपि उपनीय गुरुः शिष्यं
महाव्याहृतिपूर्वकम् वेदमध्यापयेच्चैनं शौचाचारंश्च शिक्षयेदितिवचनेन
शौचाचारशिक्षणस्याऽप्युपनयनांगितायाः सिद्धेस्तदंगोपनयनप्राप्तिरस्यै-
व तद्वत्त्वसमीप प्रापणमात्ररूपमिति बोध्यम् ७ नच निषेकादिः श्मशानान्तो-
मंत्रैर्यस्येदितोविधिः तस्य शास्त्रेऽधिकारीऽस्मिन् ज्ञेयोनान्यस्य कस्यचिदि-
ति मनुना समंत्रकश्मशानान्तविधिमतामेव शास्त्रोक्तानुष्ठानाधिकारी बोधि-
तः ब्राह्मजानां पुनः संकरजातीयप्रकरणमध्ये याथातत्समानधर्मत्वप्रति-
पादनेतात्पर्यावगमात्

की नहिं करदा एह बातों जानणे दीग्य है और इसवचनका अर्थ एह है कि गुरु शिष्यको
यज्ञोपवीत देकर महान्याहृतिपूर्वक वेदको पढाये और शौचाचारोंको निखावे (प्रण)
निषेकादीनि मनुजीका बचन है इसका एह अर्थ है कि जिस पुत्रकी निषेक जो
है गमाधान तिसके आदि लेकर श्मशानपर्यंत मंत्रोंके विधि कही है तिसका इस शास्त्रमे अ-
धिकारहे और कितेका नहिं है १ इसवचनते जिनांके संस्कार मंत्रोंके होएहैं तिनांकेहि शास्त्रो-
क्तविधिमे अधिकार है एह प्रतीत हुंदाहै और जो ब्राह्मोंके पुत्र हैं उनका संस्कारातिके
प्रकरणविषे पाठहोण तें तिसते जाणयाई कि तिनांसंस्कारोंके हि समाप्तहैं और तात्पर्यहोणेतें

और जो संकरजातिहैं सो सभ शूद्रोंके तुल्य हैं इतवचनसँ शूद्रोंकी तुल्यताका बोध होषेते और स्त्रीयोंको और शूद्रोंको अमंत्रक संस्कार है इसवचनककें तिनवायसंस्कारोंको मंत्रका अधिकारहि नहि है इसते कते उपनयनपूर्वक शौचोंका और सदाचारोंका शिक्षण होवे (उत्तर) ऐसा मत कहो कि मंत्रपदककें नाममंत्रका भी ग्रहण होषेते द्विजानामिति द्विज जो हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनके ११ सोलां संस्कारहैं शूद्रोंके १२ और संस्कारोंके ५ संस्कार कुलधर्मते हैं १ वेदव्रत उपनयन महानाम महाव्रत इनकेविना शूद्रोंके १२ संस्कार हैं परन्तु सभ नाममंत्रते हि हुंदेहें २ एइ शूद्रकमलाकर ग्रंथ विषे लिखा

तेषांच शूद्राणांचसधर्माणः सर्वेपध्वंसजाः स्मृता इत्यनेन शूद्रसधर्मत्वबोधनात् स्त्रीशूद्राणाममंत्रकमिति वचनेन तेषां मंत्राधिकाराभावबोधनात् कथमुपनयनपूर्वकशौचाचारशिक्षणप्राप्तिरिति वाच्यम् ॥ निषेकादिवाक्ये मंत्रपदेन नाममंत्रस्याऽपि ग्रहणात् द्विजानां षोडशेयस्यु शूद्रस्मृत्त्यादौ वैवहि पंचैवमिश्रजातीनां संस्काराः कुलधर्मतः वेदव्रतोपनयनमहानामस्त्रीमहाव्रतम् विना द्वादशशूद्राणां संस्कारानाममन्त्रत इति शूद्रकमलाकरधृतवचनेन तेषां नाममंत्राधिकारित्वबोधनात् अत्र चोपनयनशब्देनाऽध्ययनांगमेवोपनयनं विवक्षितं पूर्वोत्तरसाहचर्यात् अतएव महामहोपाध्यायगागाभट्ट कृतनिबन्धे ब्राह्म्यादीनां शौचाचारशिक्षणांगोपनयनप्राप्त्युक्तिः संगच्छते तत्र निषेकादिवचनेन शास्त्रोक्तसकलधर्माधिकारस्यैव नियमाच्च विप्रस्याप्यापत्तारतम्येन हीनजातिधर्माश्रयणास्याभिधानात् अतएव

जो वचनहै तिसककें नाममंत्रके अधिकारका बोध होषेते और स्त्रीयोंको उपनयन कहाहै सो भी अध्ययनका अंग है कोई यथार्थ नहिहै इसीककें महा महोपाध्याय गागाभट्ट जीने बना एहोए निबन्धविषे स्त्रीयोंको शौच और आचार की शिक्षाका अंग जो उपनयनहै तिसकी प्राप्तिका वचन संगत हुंदाहै और तिसस्मृतिविधि जो निषेकादि वचनहै तिसककें शास्त्रकेकहे होए सभधर्मके अधिकारका नियम होषेते और ब्राह्मणको भी आपत्तिके धौंड़े बहुतहीण ककें हीन जातिकें धर्म जो हैं कृष्यादि तिनके स्वीकार विप्र आज्ञा होणो इसते एहि प्रतीत होआ कि जो धर्म देश कालानुसारजिसको उचित होवे तिसकी आज्ञा होणी चाहिए इसीका श्लोकहै

६४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ टी० भा० ॥

देशों में मुजों देशों के धर्म और जानियों के और कुलों के सनातन धर्म और पापों के धर्म इस शास्त्र विषे कहते भये इसते एह बातों संग होई जेकर ऐसा नहि मानो तो पापों के मंत्रपूर्वक संस्कार के नाहो एक के ग्रंथ के आरंभ का विरोध स्पष्ट हि है जो एह वचन है कि स्त्रियों को और शूद्रों के संस्कार मंत्रों के बिना कहे हैं सो वैदिक मंत्र का निषेध है और का नहि इसते विरोध नहि आवेगा और किहा जो शास्त्र विषे अधिकार उत्तकर्मों शास्त्राध्ययन के हि अधिकार विषे विवक्षा हो गते दोष का लक्षण भी नहि आवेगा अतः इति इती का एते तिन के प्रपितामहते पहले जो अनुपनीत थे तिन का ब्राह्मत्व कदे भी

देशधर्मान् जातिधर्मान् कुलधर्माश्च शाश्वतान् पापएङ्गणधर्माश्च शास्त्रे स्मिन्नुक्तवान् मनुरिति संगच्छते अन्यथा पापएङ्गणानां मंत्रपूर्वकसंस्काराभावे नोपक्रमविरोधः स्पष्ट एव स्त्रीशूद्राणाममंत्रकमित्यस्य च वैदिकमंत्ररहितमित्यर्थेन विरोधाभावात् शास्त्रेऽधिकार इत्यनेन शास्त्राध्यापनाधिकारस्य विवक्षणे दोषलेशस्याप्यऽभावाच्च अतश्च तेषां प्रपितामहप्राक्कालप्रभृत्यनुपनीतानां ब्राह्मत्वानपगमेऽपि शूद्रसमानधर्मतया नास्तिक्यम्लेच्छसंसर्गपरिहारपूर्वकमुचित प्रायश्चित्तेन शूद्रानामस्ति प्रागुक्तद्वादशसंस्कारप्राप्तिः येषां पुनश्चातुर्वर्णिकजत्वनिश्चयोऽपि नास्ति चिरं म्लेच्छादिभिः संसर्गात् तेषामप्यस्ति पश्चात्तप्यमानानां नास्ति स्वपरिहारपूर्वकमास्तिक्याश्रयणेन भक्तिशास्त्राद्यधिकारोऽहिंसादि सामान्यधर्मप्राप्तिश्च

नहि दू होवेगा परंतु शूद्रों को समानधर्मता अर्थात् शूद्रतुल्यता के नास्तिक्यदोष और म्लेच्छ संसर्गदोष का परिहार पूर्वक किहे होए उचित प्रायश्चित्त कर्के शुद्धि और उक्त १२ संस्कारों की प्राप्ति होगी और जिन का चारवण विद्यां एह हैं ऐसा निश्चय नहि है क्योंकि चिरकालते म्लेच्छों के संसर्गते म्लेच्छ होए होए हैं और किसीक भाग्यसे सत्संग पाकर अनुताप को जो प्राप्ति होए तिन को भी नास्तिक्यपरिहार पूर्वक नास्तिक्यमत के आश्रय कर्के भक्तिशास्त्र का अधिकार है और अहिंसादि सामान्यधर्म की प्राप्ति हुंदी है।

तथेति सोई दिखाईदी है सूत्र कर्के (आनिन्द्ययोनोति) एह भक्ति सूत्रके दूसरे अध्याय विषे और दूसरे आह्निक विषे ७८ सूत्रहै इसका अर्थ भाष्यकार स्वप्नेश्वरजीने इस तर्ही कोताहै कि निन्दित चांडालादि योनिपर्यंत भक्तिका अधिकारहै क्यों कि संसारसागरमें जो दुःखहै तिसको सभकोई दूर कोयाचांदाहै इसविषे किसी भेदके नहि होणेतें ? प्रश्न ? वेदाध्यायनका जिनको नहि अधिकार तिनांको दिजाति भावसे बुरहों आंको किसकके भक्तिमें अधिकारहै ? उत्तर ? ऐसा मत कहों परंपराते इस मार्गका स्थापन होणेतें नोदनारूपधर्म शास्त्रयोनिहै क्या शास्त्रसे उत्पन्नहै इस न्यायते अलौकिक जो अर्थहै

तथाहि आनिन्द्ययोन्यधिक्रियते पारंपर्यात् सामान्यवदिति भक्तिसूत्रे द्वितीयाध्याये द्वितीयाह्निकेऽष्टसप्ततितमं सूत्रम् अस्यचार्थो भाष्यकृता स्वप्नेश्वरेणएवंविद्युतः निन्दितचाण्डालादियोनिपर्यन्तं भक्तावधिक्रियते संसार दुःखजिहासाया अविशेषात् अथ वेदाध्ययनानधिकारात् कथ मत्रैवर्णिकानां स इतिचेत्तत्राह पारंपर्यादिति चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः शास्त्रयोनित्वादितिन्यायादलौकिकोऽर्थः श्रुत्यैकसमधिगम्य इत्यत्र न विप्रतिपद्यामहे किंतु स्त्रीशूद्रादीनामितिहासपुराणादिद्वारा चाण्डाला दीनां च स्मृत्याचारवदुपदेशपारंपर्येण ज्ञानमपि श्रुतिमूलमेव भवति यथा तेषां सामान्याऽहिंसाधर्मादिज्ञानं अन्यथा तदसिद्धिप्रसंगादिति अनेनच सूत्रभाष्यसंदर्भेणस्पष्टएव मनुष्यमात्रस्य भक्तिशास्त्राधिकारःएवं प्रत्यभिज्ञाशास्त्रेऽपिजनस्येत्युक्त्या जन्ममरण प्रयुक्तकेशजिहासावतः

प्राणिमात्रस्य ग्रहणमित्युक्तेः तत्राप्यधिकारः

सो केवल श्रुतितोहि जाणीदाहै इसमें किसीके भी विप्रतिपत्ति क्या विरोध नहिहै किंतुस्त्रियों को और शूद्रोंको और जो इनके तुल्यहैं तिनको इतिहासपुराणादिद्वाराहै और चाण्डालादि योंको स्मृति और आचार वालोंके उपदेशकी परंपरासे जो है सो सभ श्रुतिमूल हिहै तिस तहां तिनको सामान्य अहिंसादि धर्मादिआंकांज्ञानहै जेकर ऐसा नहि स्वीकार होवे तद सभ कां उसधर्मकी असिद्धिका प्रसंगहोवेगा इससूत्रके भाष्यके संदर्भसे स्पष्टहि मनुष्यमात्रको भक्ति शास्त्रका अधिकार प्रतीतहोआ और इसीप्रकार प्रत्यभिज्ञाशास्त्र विषेभी जनस्यइसवचनसे जन्ममरण के केशको दूरकरके इच्छावाले प्राणिमात्रके ग्रहणते भक्तिका अधिकार सभको प्रतीत होआ

तथेति तैसेहि मंद २ क्रिया जो है वणांश्रमके योग्य तिसके लोपहोणते एह जो हैं क्षत्रियजातियां क्या राजकुलके लोक वृषलत्व को क्या शूद्रभावको लोक विषे प्राप्त होर हीआहैं और ब्राह्मणके ना मिलनेसेभी इनको शूद्रत्व होआ ॥ १ ॥ तिनकानाम कहतेहैं पौंड्रुति पौंड्रकनामा इक जातिहै १ और चौडू २ और द्रविड ३ और काम्बोज ४ और यवन ५ और शक ६ और पारद ७ और पल्हव ८ और चीन ९ और किरात और दरद १० और खश ११ ॥ २ ॥ मुखेति एह सभ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनांति हि उत्पन्न होएदे हैव और जो बाहर जातिहैं म्लेच्छोंकीयां वाणिआं और आर्य जो श्रेष्ठ हैं तिनकीयां वाणिआं बालेभी एह सभ दस्यु क्यां चोर नाम ककें व्यवहृतहैं ॥ ३ ॥ एह मनुजीने दस्यु शब्द ककें कहे

तथा शनकैस्तुक्रियालोपादिमाक्षत्रियजातयः वृषलत्वंगतालोके ब्राह्मणा दर्शनेनच १ पौण्ड्रकाश्चौण्ड्रद्रविडाःकाम्बोजायवनाःशकाः ॥ पारदाःपल्हवाश्चीनाः किरातादरदाःखशाः २ मुखवाहूरुपजानांयालोकेजातयोवहिः ॥ म्लेच्छवाचश्चार्यवाचःसर्वेतेदस्यव स्मृतः ३ इतिमनुना दस्युशब्देन व्यवहृतानां ब्राह्मक्षत्रियादीनां धर्मे व्यवस्थापनं कथं स्यादिति ॥ राजधर्मेपुपञ्चपटितमाध्याये ॥ यवनः किरातागांधाराश्चीनाःशबरबर्बराः शकास्तुषाराः ककाश्च पल्हवाश्चान्धमद्रकाः १ पौण्ड्राःपुलिन्दारमठाःकाम्बोजाश्चैवसर्वशः ब्रह्मक्षत्रप्रसूताश्च वैश्याः शूद्रारचमनवाः २ कथंधर्माश्चरिष्यन्तिसर्वेविषयवासिनः मद्विदेशकथंस्थाप्याः सर्वेवैदस्युजीविनः ३ एतदिच्छाम्यहंश्रातुंभगवं स्तद्व्रवीहिमे त्वंवंधुभूतोह्यस्माकं क्षत्रियाणां

सुरेश्वरेति ४ मांधातुरिन्द्रंप्रतिप्रणो

होए ब्राह्मक्षत्रियादियोंका धर्म विषे स्थापन किस तरी होवे इस ते प्रतीत हुंदाहै कि सभको धर्म विषे स्थापनकरणा चाहिए ॥ और राजधर्म विषे ६५ अध्यायविषे भी किहाहै यवन १ किरात २ गांधार ३ चीन ४ शबर ५ बर्बर ६ शक ७ तुषार ८ कंक ९ पल्हव १० श्रध ११ मद्र १२ ॥ १ ॥ पौंड्र १३ पुलिंद १४ रमठ १५ कंबोज १६ एह सभ चार वर्षकोहि पहलैयें ॥ २ ॥ एह अब किमतही धर्मको करण मे सभदेशोंकेवस्थाणे वाले और मेरे जैसे ककें किस तरी एह दस्युलोक धर्मविषे स्थापित होणगे ॥ ३ ॥ एतदिति एह मैं सुणनेदी इच्छा करनाहां भगवन् तुं कहो मेरे ताई तुं बंधुरूप हैं असाक्षत्रियोंका हे इन्द्र ॥ ४ ॥ एह राजे मांधाताका इन्द्रके प्रति (प्रण) होयां कहते हैं ॥

मांतेति मातापिताकी सेवा संपूर्ण पूर्वोक्त दसगुणोंने करणी चाहिए और आचार्यकी और गुरुकी सेवा और तैसंहि आश्रमवासियोंही १ और भूमि पति जो हैं राजा तिनकी सेवा करणी चाहिए और वेदके धर्मों की क्रिया जो अगले श्लोकमें है सो सभ इनका धर्महै २ पितरोंके यज्ञ और स्नान और वाउलीयां और शयन शय्या और दान यथाकाल वाह्यणके तांई सदा एह दस्युलोकदेण ३ और अहिंसा क्या किसे को मारणा नहि और सत्य कहणा और क्रोध नहि करणा और जीवका देणवालेकी रक्षा करणी और पुत्र और स्त्रियोंकी पालना करणी शौच क्या पवित्र रहणा और द्रोह नहि किसे साथ करणा ४ और यज्ञोंकी दक्षिणा दुआणी और आपदेणी ऐश्वर्यकी इच्छा वालन

मातापित्रोर्हि शुश्रूपाकर्तव्या सर्वदस्युभिः आचार्यगुरु शुश्रूपातथैवाश्रमवासिनाम् १ भूमिपानांच शुश्रूपाकर्तव्या सर्वदस्युभिः वेदधर्मक्रियाश्चैव तेषां धर्मो विधीयते २ पितृयज्ञास्तथा कूपाः प्रपाशचशयनानि च ॥ दानानि च यथाकालं द्विजेभ्यो विसृजेत्सदा ३ अहिंसा सत्यमक्रोधो दृष्टिदायानुपालनम् भरणं पुत्रदाराणां शौचमद्रोह एव च ४ दक्षिणा सर्वयज्ञानां दातव्या भूतिमिच्छता पाकयज्ञमहार्हाश्च दातव्याः सर्वदस्युभिः ५ एतान्येव प्रकाराणि विहितानि पुराऽनघ सर्वलोकस्य कर्मणिकर्तव्यानीह पार्थिवे ६ तीन्द्रस्यान्तरेण मातापितृशुश्रूपादेर्लिङ्गव्याख्यां विधानादिमेधर्मा इति स्पष्टमेव तत्र उपनीयतु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्बुधः सांगचसरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षत इति लक्षितस्य वेदाध्यापकस्याचार्यस्यासंभवेऽपि उपनयनपूर्वक शौचाचारशिक्षणकर्तव्याऽचार्यपदेनानिधीयते

और अनेक प्रकार के बहुत मूल्यवाले अकार्य संपूर्ण दसगुणोंने दुआणें चाहिए ५ एह इसप्रकार विधियां कहियां हैं हैं निष्पापजन्म सर्व लोकके एह साधारण कर्म हैं ६ एह (उत्तर) इंद्रका है मातापिताकी सेवा आदि लिङ्ग प्रत्यय कर्क और तथ्य प्रत्यय कर्क विधान होणें एह धर्म इना दस्युलोकके स्पष्ट प्रसूत हुं हैं ॥ तत्रेति निसर्गिषे आचार्यादिकोंकी सेवाकरे ऐसा मत किहा तद आकांक्षा होई किसको आचार्य कहते हैं तिसवास्ते स्मृति है उपेति जो शिष्यको यज्ञोपवीत देकर पीछें भड़ावे सांग वेदको तिसको आचार्य कहने हैं इस लक्षणवाला अध्यापक जेकर नहि मिले तथापि शौचआचारकी शिक्षाकरणवाला आचार्य जानणा ॥

एवमिति इसीतर्ही गुरुपद कर्के वी निषेकादि इस लक्षण कर्के किहा होआ गुरु न मिले इस स्मृतिका अर्थ एह है कि निषेकते आदलेकर यथा विधि- जो संस्कारकरे और अन्नकर्के चालना करे सो ब्राह्मणादि गुरु किहा है इस बिना कहते हैं गुशब्द इति गुशब्दकर्के अंधकार किहा है तिसका निरोधक क्या अंधकारका निरोध करणवाला जो है सो गुरु किहा है इस लक्षण वाला योग्यमंत्रादि दान कर्के नरकको निवृत्ति करणवाला गुरु इसजगा ग्रहण करना इनाको सेवा करणीदस्यु लोकोंका भस्म है एह पूर्व साथ संबंध करणा (ग्रहण) जो पिच्छे कहे हैं दस्यु आदिलोक तिनांकों किसेवी मंत्रका अधिकार नहि है किसतर्ही इनकों अधिकार कहते हो (उत्तर) अगस्त्य संहिता विषे लिखया है शुचीति पवित्रव्रत है अतिशय कर्के जिनांका ऐसे जो हैं शूद्र धार्मिक और ब्राह्मणोंके सेवक और पतिव्रता स्त्रियां और प्रतिलोमज और अनुलोमज संकरजाति

एवं गुरुपदेनापि निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधिसंभावयति चान्ने न स विप्रो गुरु रुच्यत इति पारिभाषिकस्य गुरोरऽसंभवेऽपि गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्गुशब्दस्तन्निरोधकः अंधकारविरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयत इतिलक्षितो योग्यमंत्रादिदानेन निरयरूपांधकारनिवर्तको गुरुरिह गृह्यते ॥ न चैषां कस्मिन्नपि मंत्रे नाधिकार इति वाच्यम् ॥ अगस्त्यसंहितायाम् शुचिव्रततमाः शूद्राधार्मिकाद्विजसेवकाः स्त्रियः पतिव्रताश्चान्ये प्रतिलोमानुलोमजाः लोकाश्चाण्डालपर्यन्तं सर्वेऽप्यत्राधिकारिण इत्यादिना राममंत्रे मनुष्यमात्रस्याधिकारबोधनात् तथा श्रुतिर्ब्रह्माह षड्वर्णस्मृतिर्वर्णद्वयात्मकम् षड्वर्णब्राह्मणादीनां त्रयाणां यद्विर्वर्णकम् १ तदन्ये षादैशिकेन वक्तव्यं तारकं परम्

और चांडाल पर्यंत जो लोक हैं सो सब इस भक्तिमै अधिकारी हैं इत्यादि कर्के श्रीराम जीके मंत्रविषे मनुष्यमात्रके अधिकारका बोध होणेत तथेति तैसेहि दिखाइंदा है श्रुति जो है वेद सो छे ६ अक्षरां वाले ब्रह्मको कहता है अर्थात् वक्ष्यमाण जो षडक्षर मंत्र है सोई ब्रह्म है ऐसा बोध कदां है और स्मृति जो है सो दो २ अक्षरके मंत्रको ॥ राम ॥ इसको ब्रह्म कहती है इसमें विवेक कहते हैं कि ६ अक्षरके मंत्रका अधिकार ब्राह्मणादि तीन वर्णोंको है और दो २ अक्षर वालेका अधिकार शूद्र और तिस्रांते होर जो हैं संकर जाति और म्लेच्छ तिन्हां को दैशिकने क्या गुरुने कहणा चाहिए कैसा इह मंत्र है परम तारक है क्या उद्धारकरणे वाला है इसी का अर्थ प्रगटकर्के कहते हैं

॥ ओंरामायनमः ॥ एहि षडक्षर मंत्र जानना पूर्व वाक्यके साथ एकवाक्यता होणेंते और होरणा सभना को रामनाम मंत्रके हि अधिकार की प्रतीति होणेंते एवमिति इसीप्रकार ब्रह्मोत्तरखण्डविषे शिवजीके पंचाक्षर का प्रसंग ल्याकर कहते होए कि महापातक रूप शुष्कवन है तिसविषे एह मंत्र आग्नि की न्याई है और बिना ओंका रके सो एह मंत्र पंचाक्षर बनया है इसके अधिकारियोंकों कहते हैं स्त्रियोंने १ शूद्रोंने २ संकरोंने ३ मुक्तिकी इच्छावालेयोंने धारिदाहैं इसकी कोई दीक्षा नहि और होम और संस्कार और तर्पण भी नहि २ कोई कालका नियम भी नहि एह सभनोंने जपणा चाहि

इत्यनेन त्रैवर्णिकानामोंरामायनमइति षड्वर्णे पूर्ववाक्यैकवाक्यतया तदन्येषां सर्वेषामपि मनुष्याणां रामनाममंत्रेऽधिकारावगमाच्च एवंब्रह्मोत्तरखण्डे शिवपंचाक्षरं प्रक्रम्य महापातकदावाग्निः सोऽयंमंत्रः षडक्षरः प्रणवेनविनामंत्रः सोऽयंपंचाक्षरोमतः १ स्त्रीभिः शूद्रैश्चसंकीर्णैर्धार्यतेमुक्तिकाक्षिभिः नास्यदीक्षानहोमश्च नसंस्कारोनतर्पणम् २ नकालनियमश्चात्र जप्यः सर्वैरयमनुः वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेच्छैरन्यैश्चमानवेरित्यनेन शिवपंचाक्षरमंत्रे म्लेच्छादीनामप्यधिकारस्य विस्पष्टमवगतेश्च वेदधर्मक्रियाइत्यनेन वेदमूलकस्मृत्याद्युक्त शिवविष्ण्वादिभक्तिसमाश्रयणमुच्यते मां हि पार्थव्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपियान्ति परांगतिमिति भगवद्गीतासु भगवता स्वसमाश्रयणाभिधानात्

ए वैश्य शूद्र म्लेच्छ और इनाते होर जो मनुष्य हैं भक्तिवाले इना सभनाने जपना चाहिए इसकके सभना म्लेच्छादियोंकों अधिकारकी स्पष्ट प्रतीति होणेंते और वेद धर्म क्रिया जो कहीहै इसकके वेदमूलक स्मृत्यादिविषे कही जो है शिव विष्ण्वादि भक्ति तिसका स्वाकार करणा चाहिए और भगवद्गीता विषे भी श्रीमहाराज कृष्णचन्द्रजीका वचनहै मामिति है अर्जुन मेरेकों आश्रय होकर जेहोयां पापयोनियाहैं अर्थात् जो नीचलोकहैं और स्त्रीयां वैश्य और शूद्र सोभी परम गतिकी प्रातहुंदेहैं इसते भी अंपणे आश्रयकाकथन होणेंते

अतइति इसी कर्के स्कंदपुराण विषेभीकिहाहै विष्णुकी भक्ति कर्के युक्तहोआ २ भामे मिथ्या चारीभी होवे और अनाश्रमी भी होवे तथापि उह सभ लोकोंको पवित्र कर्चाहै जैसे उदयको प्राप्तहोआ सहस्रांशु सूर्य होवे १ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अथवा इनते इतर होर संकरादि जेकर विष्णुकी भक्ति कर्के युक्त होवे तद सभसे उत्तमो विषे भी उत्तम जानना २ दुराचारी क्या हिसादि कर्मभी करणवाला होवे होर सभका अन्न खाएवाला होवे और छतघ होवे क्या किसेका कीताहोआ उपकार नहि जाणे और नास्तिक होवे पहले इसीसा भीहै प रन्तु जो पीछे आदिदेव नारायणजीको आश्रय करे श्रद्धाकर्के युक्तहोआ ३ तद उसको निर्दोष होएको जाण परमात्माके प्रभावते इसीसा उसजगा पडयाहै ॥ इसीतर्ही देवीपुरा ण विषे लिखयाहै ॥ वर्णाश्रमके विभागकर्के देवता स्थापन करणेचाहिए अन्यथा नहि और

अतएव स्कन्दपुराणेऽपि विष्णुभक्तिसमायुक्तो मिथ्याचारोऽप्यनाश्रमी पुनातिसकलान् लोकान् सहस्रांशुरिवोदितः १ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वायदिवेतरः विष्णुभक्तिसमायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः २ दुराचारोऽपि सर्वाशीकृतघ्नो नास्तिकः पुरा समाश्रयेदादिदेवं श्रद्धया शरणं हियः ३ निर्दोषं विद्वितं जन्तुं प्रभावात् परमात्मन इति पठ्यते एवं देवीपुराणे वर्णाश्रम विभागेन देवाः स्थाप्यास्तु नान्यथा ब्रह्मा तु ब्राह्मणैः स्थाप्यो गायत्री सहितः प्रभुः १ चतुर्वर्णैस्तथा विष्णुः प्रतिष्ठाप्यः सुखार्थिभिः भैरवोऽपि चतुर्वर्णै रन्त्यजानां तथा मत इति वचनेनान्यजादीनामपि भैरवप्रतिष्ठाधिकारः स्पष्टमुच्यते भगवद्भक्तेः सर्वमानुषेष्वनुमतत्वादेव च किरातहूणान्धपुलिन्द पुक्कसा आभीरकंकायवनाः स्वसादयः

ब्राह्मणोंने गायत्रीके साथ ब्रह्मा स्थापन करणा ॥ इसीमे कुछ होर कहतेहैं चतुरिति चारवर्णों ने विष्णु प्रतिष्ठापन करणे योग्यहै अर्थात् इन्होंने सुखकी इच्छावाले उने विष्णुकी सेवा करणी और भैरवजी भी चारवर्णों कर्के क्या ब्रह्म क्षत्रिय वैश्य शूद्र कर्के पूजने योग्यहै और तैसेहि अन्त्यज जो हैं स्लेच्छ नीचजाति तिन्होंने भी भैरवजीकी उपासना करणी इस वचन कर्के नीचोंकी भी भैरवजीकी प्रतिष्ठाका अधिकार स्पष्ट प्रतीत हुंदाहै और परमेश्वरकी भक्ति विषे सभ को अनुमती होखेतेहि भागवतके चउथे अध्यायविषे (श्लोक) किरातेति किरात १ हूण २ अन्ध ३ पुलिन्द ४ पुक्कस ५ आभीर ६ कंक ७ यवन ८ स्वस ९ एह सभ नीच जातीहैं

श्रीर इनतें भिन्नभी जो नीचहैं जिस परमेश्वरके भक्तोंके भी आश्रित होए तांभी शुद्ध हुंदेहैं तिस प्रभाववाले विष्णुके तांई नमस्कार होवे इस वचनते भी भगवत्की भक्ति कर्के शुद्धिका कहणा संगत हुंदाहै और राममंत्र और पंचाक्षर मंत्र विषे सबका अधिकारहै एह पीछे कह चुकेहैं पितृयज्ञ जो हैं आद्यादि तिन विषे भी नास्तिक्य और म्लेच्छ संसर्गके परिहार करसते पिछे किहे होए प्रायश्चित्तके अनुष्ठान कर्के शुद्धहोआं कों शूद्रकमलाकर ग्रंथके अनुसार वणजानगे तेषामिति तिन्हां कों शूद्रके तुल्य होसते एवं इसी तर्ही किहा जो संदर्भ क्या ग्रंथ तिस कर्के मूलते क्या पहलेतेहि जो म्लेच्छहैं कोई पीछेते नहि वषे तिन्हांकेभी अपणे नास्तिक्यादिके त्याग पूर्वक राममंत्रादि विषे अधिकार सिद्ध होया

येऽन्येषपापायदुपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्तितस्मै प्रभविष्णवे नम इति भागवते चतुर्थध्याये सर्वेषां भगवद्भक्त्या शुद्ध्यभिधानं संगच्छते राममंत्रपंचाक्षरं त्रयोः सर्वेषां अधिकारः प्राङ्निरूपित एव पितृयज्ञादयश्च नास्तिक्यम्लेच्छ संसर्गपरिहारपूर्वकमुचितप्रायश्चित्तानुष्ठानेन शुद्धानां शूद्रकमलाकरोक्तप्रयोगानुसारिणः प्राप्नुवन्ति तेषां शूद्रसधर्मत्वात् एवं चोपपादितसंदर्भेण मूलतो म्लेच्छादीनामपि स्वनास्तिक्यादित्यागपूर्वकराममंत्राद्याधिकारः सिद्ध्यति किं पुनर्वलान्म्लेच्छीकृतानाम् ॥ मा भून्नामचिरकालनास्तिक्यम्लेच्छसंसर्गादनिश्चीयमानस्वस्वजातिकानां प्रायश्चित्तादिभिः सद्य एव वर्णाश्रमान्तर्गतत्वं साक्षात्परंपरया वा मुक्तिसाधनतया सकलसंसारदावदाहशमकं भगवद्भक्त्याद्याश्रयणं तु कथं निवार्यताम् किंच श्रद्धाधानः शुभां विद्यामाददी तावदापि

किमिति और पहले म्लेच्छ नहिं थे किंतु तिन्हांके संबधते पिछे म्लेच्छ होए तिन्हांकी क्या वात्ता कहणी तिनकों इसी अर्थसे अधिकार सिद्ध होगया ॥ परंतु ऐसा मनहो कि चिर काल के नास्तिक और म्लेच्छ संसर्गते नहिं निश्चय करसकीदीहै अपणी जाति जिन्हांकी जो तत्कालहि प्रायश्चित्तादिते अपणी जातिमें आजाण ॥ तथापि साक्षात् अथवा परंपराते मुक्ति की साधनतासे और सारे संसारके दुःखोंके दूरकरणेवाली भगवत्की भक्तिका आश्रय करणा किसतर्ही दूरहोवे अर्थात् क्लृप्त कहें कि म्लेच्छादि भगवत्की भक्ति ना करण ॥ अब और मनुजोंका वचन कहतेहैं श्रद्धेति । श्रद्धावाला पुरुष शुभविद्याको अर्थात् लोकों पर उपकार करखे वाली गारुडादि विद्या को नीचतेभी ग्रहणकरे

और परम धर्म जो है जिसते किसेके प्राण बच रहण तिसको नीचते भी ग्रहण करे और स्त्रीरत्नको दुष्कुल जो है नीचकुल तिसते भी ग्रहण करे इसवचनको कहंदे होए मनुजीनें श्रेष्ठ धर्मका ग्रहण नीचते भी किहाहै इसीते दंडापूपन्यायते जैसे दंडके खिचनेते तिसके साथ लगेहोए पूडेकाभी खिचणा हुंदा है इसनीतिते श्रेष्ठ पुरुषते नीचोंको भी उचितधर्मकी प्राप्ति सिद्ध होई ॥ और मनुवचनहै ॥ गार्भे रिति गर्भके जो हवनादिहैं और जातकर्मदि संस्कारहैं इन्हांककें बीजणोवाले पिताका पाप और गार्भिक क्या माताके कीतेहोए जो पापहैं सो सभ ब्राह्मणदिकें दूर हुंदेहैं इसवचनककें

अन्त्यादपिपरंधर्मस्त्रीरत्नदुष्कुलादपि इतिवदतामनुना नीचादपिसमी चीनधर्मग्रहणमनुमतं तेन दण्डापूपिकनीत्यैवश्रेष्ठात्स्वाचितधर्मप्राप्तिर्नी चानामपिसिद्धयति गार्भेर्हामैर्जातकर्मचौलमौंजीनिबन्धनैः वैजिकंगा भिकंचैनोद्विजानामपमृज्यत इतिवचनेनाऽभक्ष्यभक्षणजनितत्वादिनिषि द्धकालगमनादिवत्प्रायश्चित्ततारतम्येन क्रमायातदोपाणामपि नाशस्योप लक्षणविधयाबोधनाच्च अतएव पातकविशेषेण पतितानामपि पुनः संस्का रविधानमुपपद्यते तेन पातकेन ब्राह्मणत्वादिर्नाशेहि संस्कारविध्युद्देश्यता वच्छेदकस्यैवाभावेन तद्विधानानुपपत्तिः किंच मलादिभिश्चिरंसंसृष्टस्यापि सुवर्णस्य संस्कारसंख्यातारतम्येन शुद्धितारतम्यदर्शनात्

अभक्ष्यभक्षणादि पाप और निषिद्धकाल विषे जो स्त्री गमनादि पापके दूर होणेकी न्या ई प्रायश्चित्तके थोडे बहुते के करणते कमककें आएहोए पापोंके भी नाशहोणेकी विधि का बोधहोणते ॥ अतइति इसी ककें पातकविशेष ककें जो पतित होएहैं तिन्हांको संस्का रका विधान करणा उचितहै तिसककें पातक करणते ब्राह्मणत्वजातिका नाशहोआं संस्कार विधि जिसते होणीथी सो नहि होई तो संस्कार भी नहि होणाचाहिए सो पूर्वोक्त युक्तिसेहि हुं दाहै ॥ इसमै और युक्ति कहतेहैं किचेति मलादिककें लित जो सुवर्णादि हैं तिनकी संस्कार केथोडे बहुते हांए ककें थोडी बहुती शुद्धि देखीदीहै

चापोति तैसेहि प्रायश्चित्तके थोड़े बहुते होणेकके पापिओंकी भी शुद्धि थोड़ी बहुती होणी मुकंदै तिसते ऐसा विचारहोआ कि उक्तविधि कर्के पापिओंकाशीघ्रहि पाप दूर होकर चार वर्षे विचों जों जिस वर्णमे जासके तिसकी प्राप्ति तो नहि हुंदी परंतु शुद्धिरूप सोपानकी परंपरा विषे जाणे का अधिकार सिद्ध होआ सो यथार्थहै इसी कर्के श्लोकहै गोमूत्रमिति गोमूत्र और गोमय गांया और दुग्ध और दहिं और घृत और कुशाका जल और एकरात्रका उपवास क्या निवाहार व्रत एह सत्तादिनांदा व्रतहै सो श्वपाक जो चांडालहै तिसकोभी शुद्ध करदाहै ओंकी क्या वात्ता कहणीहै एह हारीतजीका वचनहै यद्यपी ति यद्यपि एह जो पिच्छे किहा है प्रायश्चित्त सो स्वार्थ विषे तात्पर्य बाढा

पापिनामपिप्रायश्चित्ततारतम्येन शुद्धितारतम्यस्य यौक्तिकतया निर्दिष्टपापिनामपिसकलपापत्यागपूर्वकं चातुर्वर्णिकत्वादयसिद्धावपि शुद्धिसोपानारोहाधिकारो युक्तएव अतएव गोमूत्रंगोमयक्षीरंदधिसर्पिकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेदिति हारीतेनोक्तम् यद्यपि नेदं स्वार्थेतात्पर्ययदपिघटितत्वात् तथापिशुद्धिः सर्वेषामपि भवत्युचितप्रायश्चित्तरित्युपलक्षणविधया बोधयत्येव एतेन नहिशतशोध्मायमानोऽपिलोहः सुवर्णंभवति एवं म्लेच्छाभूतानां न कथमपि प्रायश्चित्तैःपापनाशइति प्रत्युक्तम् सद्यस्तदभावेऽपि क्रमेण चातुर्वर्णिकधर्मयोग्यतासंभवेनैव प्रकृतार्थसिद्धेः

नहि किंतु एह व्रतकी प्रशंसाहै कोई यथार्थ चांडालकी शुद्धि नहि करसकता अपिशब्दकके घटितहोएते क्या अपिशब्दका हि उक्त अर्थहै होर नहि तथापि सभकी शुद्धि प्रायश्चित्तके हुंदोहै आपो आपणे प्रायश्चित्तसे इस उपलक्षण विधि कर्के बोध करांदाहै ऐसा जानना इतने कर्के एहशंका दूर होई कि सैकडेवार धोता अथवा तपाया होया भीहै लोहा परंतु सुवर्ण नहि हुंदा इसी तर्ही अनेक प्रायश्चित्तों कर्के भी जेडे म्लेच्छ होगयेहैं ब्राह्मणादि सो मुडकर ब्राह्मणादि नहि हुंदे- इतनी शंकाका निरास समझणा इसमे उत्तर कहतेहैं कि शीघ्र पापदूर नहि हुंदा परंतु क्रम कर्के चारवर्णके धर्मकी योग्यता के होणे कर्के पाप नाश हुंदाहिहै पूर्वोक्त दृष्टांत इसमे तुर्य नहिहै जिसकके लोहा जन्मसेहि लोहा हि है

७४ ॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ टी ० भा ० ॥

म्लेच्छीति और एह पीछेले म्लेच्छ होएदेहैं इनांको म्लेच्छ होआं भी ब्राह्मणत्वादिकी प्राप्ति है एह पिच्छ कहआएहैं इसते दृष्टांत दार्ष्टान्तिक की विषमता जानणी ॥ इसी कर्के भविष्य पुराण विषे रहस्यके प्रसंग विषे किहाहैं ॥ तथेति तैसेहि विधान कर्के ब्राह्मण काई मधु और नृत्त देवे सो तारदाहैं समनानुं पिचले और अगलेआनुं और आपणे आपको भी तारदाहैं हे नराधिप हेराजन् एह दानरूप प्रायश्चित्त १ अब चर्म दान कहतेहैं गो भिरिति चारबैल कर्के युक्त और पृथ्वी कर्के युक्त जो है अजिन क्या हरिणका चर्म ति सके प्रतिग्रह उठाणेमे जो समर्थ होवे तिसके ताई और अमिहोत्र करण वालेके ताई देवे २ परंतु कतयाले महीनेकी पूर्णमासीको अथवा वैशाखकी पूर्णमासीको अथवा विशेष कर्के विषुव मेव संक्रांति और तुलसंक्रांति तैसेहि चन्द्र और सूर्यके ग्रहण विषे ३ एह दान

म्लेच्छाभूतानामपि ब्राह्मणत्वाद्यनपगमस्याधस्तादुपपादनेन दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोर्वैपम्याच्च ॥ अतएव भविष्ये रहस्यप्रसंगे ॥ तथादद्याद्विधानेन द्विजा यमधुसर्पिणी तारयत्यखिलान्पूर्वानात्मानंचनराधिप १ गोभिश्वतसृभिर्युक्तं तथाभूमिसमन्वितम् प्रतिग्रहसमर्थायविदुषेत्वाहिताग्नये २ दत्त्वाजिनं तुकार्तिक्यार्वैशाख्यांवाविशेषतः विपुवत्ययनेचैवग्रहणेचन्द्रसूर्ययोः ३ कृच्छ्रात्तुतमसोघोरांन्मुच्यतेसर्वतोभयात् अतीताम्सप्तपुरुषांस्तथाचान्या ननागतान् ४ उद्धृत्यसनरोयातिब्रह्मलोकंसनातनमित्यादिनाऽतीतसकल स्ववंशीयानामात्मनश्च तारणाभिधानं दृश्यते एवं एकादशगुणान्वापिरुद्रा नावार्धधर्मवित् महापापैरुपरुष्टोमुच्यतेनाऽत्रसंशय १ इत्यंगिरावचनम् एवं ॥ तीर्थप्रत्याम्नायं विष्णुपुराणम् ज्ञानतोऽज्ञानतोवापिभक्त्याभक्त्यापि वाकृतम् गंगास्नानंसर्वविधसर्वपापप्रणाशनम् १

करणे वाला बड़े घोर पापते और सब भयते भी मुक्त हुंदाहैं पिचले सत् पुरुष जो पतित होए हैं और सत् ७ अग्ने आउणे जो हैं तिनका उद्धार कर्के और साथ आपणे आपका उद्धार कर्के सनातन ब्रह्मलोक को जेदाहैं ४ इत्यादि वचनां कर्के पिचले अगले आपणे वंशके लोकोका और आपण आपका तारणा प्रतीत हुंदाहैं एवमिति इसी प्रकार ११ जारां रद्धोंका आवर्त्तनकरे अर्थात् जारांवार रद्धीका पाठ करे सो पुरुष महापाप कर्के मुक्तभीहैं तांभो मुक्त हुंदाहैं इसमे कुछ संशय नहि १ इस अंगिराके वचनते पाप नाशका निश्चयहै इसमे ऐसा विचारहै कि ११ पाठकानामरुद्धीहै इसका ११ बारआवर्त्तनमे १२१ होएगे ॥ एवमिति ॥ इसी प्रकार तीर्थप्रत्याम्नाय विषे विष्णुपुराणका लुचनहै ॥ श्रीगंगाजीका जो स्नानहै सो सब तर्ही कीवेहोए सभनां पापांनु दूर कर्दाहै १

इसीका होर वचनहै चान्द्रेति १००० हजारों चान्द्रायणों कर्के जो कोई देह शोधन करे और जो कोई श्रीगंगाजीका जल पान करे एह दो २ बराबर होण अथवा ना होण अर्थात् श्रीगंगा जलकी महिमा हजारों चान्द्रायणोंमें भी अधिकहै २ इसमें दृष्टांतहै जिसप्रकार ताक्ष्य जो गरुडहै तिसके दर्शनते सर्प निर्विष हुंदाहै क्या विषरहित हो जाईहै तैसे ही श्रीगंगाजीके देखणते मनुष्य सभ पापते मुक्त हुंदाहै ३ और पुण्यक्षेत्र विषे जो गमनहै सो सभ पापके दूर करणवालाहै और देवताका पूजन पुरुषोंके सभ पापको हरदाहै एह किहाहै ४ और भविष्यपुराण विषे भी किहाहै ॥ स्नानमात्रकर्के भी गंगा विषे ब्रह्म इत्यादि पाप दूर हुंदे हैं इस विषे जो संशय करे अथवा मुखसे जो किहे कि अने पाप गंगा के स्नानमात्रसे कित तही दूर होणगे ऐसे पुरुषका जो पाप है तिसको कहताहुं तिसको किरोड ब्राह्मण ने मारणका

चान्द्रायणसहस्रैस्तुयश्चरेत्कायशोधनम् पिवेद्यश्चापिगंगाम्भःसमौस्यातां नवासमौ २ भवन्तिनिर्विपाःसर्षायथाताक्ष्यस्यदर्शनात् गंगायादर्शनात् द्वत्सर्वपापैःप्रमुच्यते ३ पुण्यक्षेत्राभिगमनं सर्वपापप्रणाशनम् देवताभ्यर्चनं पुंसामशेषाघविनाशनमिति ४ भविष्येऽपि ॥ स्नानमात्रेणगंगायाःपापंब्रह्म बधोद्भवम् दुरांधर्षकथयातिचिन्तयेद्योवेदेदपि १ तस्याहंप्रवदेपापंब्रह्म कोटिवधोद्भवम् स्तुतिवादमिमंमत्वाकुम्भीपाकंपुजायते २ आकल्पंनरकंभु क्त्वाततो जायेतगर्दभ इत्यादिवचनैः श्रीगंगातीर्थस्नानादेः सकलपापना शकता सिध्यति ॥ एवं बृहन्नारदीये ॥ सर्वसाधारणप्रायश्चित्तानिप्रोक्तानि प्रायश्चित्तानियःकुर्यान्नारायणपरायणः तस्यपापानिनश्यन्तिअन्यथापति तोभवेत् १ यस्तुरागादिनिर्मुक्तश्चनुतापसमन्वितः सर्वभूतदयायुक्तोविष्णु स्मरणतत्परः २

पाप लगदाहै और जो कोई पूर्वोक्तादि वचनोंको स्तुतिवाद मनदेहें सो कुंभी पाक नरक विषे जाईहै २ और कल्प पर्यंत नरकभोग कर्के पिछे गर्दभ होतहैं इत्यादि वचनों कर्के श्री गंगास्नानादिते सभ पापका नाश कल्पना विषे आया सो यथाये जानणेयोग्यहै ॥ एवमिति ऐसेहि बृहन्नारद पुराणविषे सर्वसाधारण प्रायश्चित्त किहेहैं अब तिनका फल कहनेहैं ॥ प्राय इति जो मनुष्य नारायण की सेनामें तत्परहोया २ प्रायश्चित्त करदाहै तिसके सभ पाप दूर हुंदे हैं अन्यथा क्या प्रायश्चित्त ना करे तद पतित हुंदाहै १ और जो पुरुष रगादि क्या प्रीति और द्वेष इसते रहित है और पश्चात्ताप वालाहै और सभ जीवोंपर दया करणवालाहै और विष्णुकं स्मरण विषे तत्परहै २

७६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ टी० भा० ॥

सो पुरुष महापातक कर्मेयुक्तहोवे अथवा उपपातक जो हैं गोवधादि तिनकरके युक्त होवे तथापि सभनां तो श्रीगोविन्द मुक्त हुंदाहे जिस कारणते मन उसका विष्णुपरायण है ३ इत्यादिवचनो कर्के विष्णुके भक्तका जिस फित मनुष्य मात्रके सभ पापोंका नाश विधान कीताहै ॥ इसतैं एह सिद्धहोआ कि बहुत जगा प्रायश्चित्तके विधायक जो वाक्य हैं तिनो विषे नर एह सामान्य पदका ग्रहण होषेत कहेहोए वचनो कर्के म्लेच्छादियोंको भी परमेश्वरकी भक्तिका अधिकार सिद्धहोषेत सभको आपो आपणे अधिकारकी योग्यताके अनुसार वैदिक मार्गके उन्मुख होणा उचितहै एह सिद्धहोआ ॥ इत्यमिति इसप्रकार तिसां पुरुषोंक क्या त्रयपीडीतक निश्चित है समान वर्णकी उत्पत्ति जिनकी जैसे श्रमके

महापातकयुक्तोवायुक्तोवाप्युपपातकैः सर्वैः प्रमुच्येत सद्योयतो विष्णुरतं मनः

३ इत्यादिना विष्णुभक्तस्य नरमात्रस्य सकलपापनाशोऽभिहितः ॥ इत्थंच

बहुत्र प्रायश्चित्तविधायकवचनेषु नरइति सामान्यपदोपादानादुदा

हृतवचनैर्म्लेच्छादीनामपि भगवद्भक्त्यधिकारसिद्धेश्च सर्वेषामपि स्वाधिका

रस्वयोग्यतानुसारेण वैदिकमार्गेण्मुक्तत्वं निरावाधं सिध्यति ॥ इत्थंच त्रि

पुरुषावधि निश्चितसवर्णोत्पत्तिकानां कामतोऽकामतो वा म्लेच्छैः संसृष्टा

नां प्रायश्चित्ताचरणेन पुनः स्वस्ववर्णीतर्गतत्वपूर्वकधर्मप्राप्तिः तदन्येषा

मपि ब्राह्मणतमानां मूलतो म्लेच्छादीनां वा सत्यामिच्छायां नास्ति कथत्या

गेन भक्तिशास्त्र प्रत्यभिज्ञाशास्त्रराममंत्राद्युपदेश्यताधिकारः शूद्रकमला

करोक्तसंस्कारादिप्राप्तिश्च सिध्यतीत्यत्र न कस्यचित्कटाक्षावसरइति

ब्राह्मणका अथवा असुकशत्रीका प्रपात्र है एह म्लेच्छ इसतही निश्चयवालेयोंको कामतैं अथवा अकामतैं म्लेच्छों के साथ मिले होएकों प्रायश्चित्तके करणते फेर आपो आपणे वर्णके अंतर्गत होकर धर्म प्राप्ति हुंदी है ॥ तैसेहि होर जो ब्राह्मणतम क्यावडेब्राह्मण अर्थात् बहुत दिनोंके ब्राह्मणहोएके म्लेच्छ होएहैं तिनकोभी जेकर आपणे धर्म विषे जानेकी इच्छा होवे तां नास्ति कथत्या प्रथमतः कर्के भक्ति शास्त्रका क्या प्रत्यभिज्ञा शास्त्रका और रामचन्द्रजीके मंत्रोंका अधिकार सिद्ध होआ और शूद्रकमलाकर त्रयोक्तसंस्कारादि प्राप्ति भी सिद्धहोई इसजगा किसे कानी कटाक्ष नहि अर्थात् ओता कोई नहि कहसका कि एह पुरुष भक्तिका अधिकारी नहि ऐसे औरसो जानणे

॥ अब कहेहोए शास्त्रार्थका संक्षेप अर्थ कहते हैं सकलेति बहुत श्रुतियां और बहुत स्मृतियां और पुराण और इतिहास इनके विचारणे तें निकलया जो विमर्शहै सो पक्षपातको छोड़कर बुद्धिवाले जो लोकहैं तिनोंने चिचविषे धारणे योग्यहै इतिदिक् क्या एहविचारं इहमागंभूतहै कोई ऐसे नहि कि संपूर्ण इतनाहि विषय है क्योंकि होर भी विचार इसमै है सो आप करलेना चाहिए ॥ अब इसमै काम्य और नैमित्तिकका विचार कर्ते हैं इदमिति एहप्रायश्चित्त नैमित्तिक है और काम्य संज्ञा वालाभी है जिसकर्के पाप निमित्तकेहोयां करीदा है इसतें नैमित्तिक है और पापनाशको कामनातें करीदा है इसकर्के काम्य है सोई प्रायश्चित्त मयूखविषे किहाहै इसकर्के बृहस्पतिजीका वचनहै प्रायश्चित्त जो प्रायश्चित्त करीदा है सो नैमित्तिक जानना इसीमै जाबालजीका वचनहै इसीकारणते काम्य है और नैमित्तिक भी है प्राय

सकलश्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासपर्यालोचननिर्गलितो विमर्शो निष्पक्षपातधीभिः सुधीभिर्निपुणंविचारणीय इतिदिक् * इदं च प्रायश्चित्तं नैमित्तिकं काम्यं च निमित्ते विधानान्नैमित्तिकं पाप नाशकतया काम्यं चेति प्रायश्चित्तमयूखे ॥ अतएव बृहस्पतिः ॥ प्रायश्चित्तं यात्क्रियते तन्नैमित्तिकमुच्यते ॥ जाबालः ॥ अतःकाम्यं नैमित्तिकं प्रायश्चित्तमिति स्थितिरिति ॥ पापिनः प्रायश्चित्तं नित्यं नैमित्तिकं वेद्यतो विकलांगादपि पापस्यनाशः किंत्वल्पस्यैव नतुसमग्रस्य एवंच काम्यमप्येतत् एवंच प्रधान निष्पत्ता वपि नप्रधानावृत्तिरिति बोध्यमिति नागेशः नित्यत्वंचाऽकरणेदोषश्रवणात् तथाच स्मृतिः चरितव्यमतोनित्यं प्रायश्चित्तं विशुद्धये निन्दैर्हिलक्षणैर्युक्ताजायंतेऽनिष्कृतैर्नसइति

श्चित्त एह धर्मशास्त्रियोंको स्थिति है ॥ इसमें होर स्मृति कहते हैं पापिन इति पापीका प्रायश्चित्त नित्यहै और नैमित्तिक भी है और इस प्रायश्चित्ततें विकलांगते भी पापका नाश हुंदाहै परंतु थोड़े पापका नाश हुंदाहै सोरका नहि एवंचक्या पापनाश होणेतें काम्यभी एह होआ एवंचेति इसतेक्या सिद्ध होआ कि पापनाशके विषे इसको प्रधानता की सिद्धिहोई कोई प्रधान की आवृत्ति नहि सिद्ध होई ऐसा नागेशजीका मतहै ॥ और इसको नित्यता सिद्धहोई नाकरंतों दोषहै इसते जाणीदी है एहोनित्योंकालक्षणहै ॥ तैसेहि स्मृति भी इसमें है चगीति इसकारणतें एहप्रायश्चित्त विशुद्धिके अर्थ नित्यहि करणांचाहिए क्योंकि जो अनिष्कृतैर्नसहैं क्याप्रायश्चित्तहीन हैं सो निन्दित लक्षण जो हैं कुष्टादियोग तिनोकर्के युक्तहोए २ उत्पन्नहुंदहैं इसतें नाकरणमे दोषआया

एहि याज्ञवल्क्यजीका मत है सो कहतेहैं प्रायश्चित्त नहि करें और पापोंमें रत हो
ए और पीछे पश्चात्ताप भी ना करन सो पुरुष दारुण जो नरक हैं तिना विषे जांदे हैं ॥ इ
सोस्थान तिना नरकां का भी वर्णन करतेहैं तामिस्र इसते आदि लेकर कहे होए उसीग्रंथते
आज्ञाणे सो २१ हैं ॥ और ग्रंथो विषे भी किहाहै कि विहिताकरणादि निमित्तवाळे प्रति
प्रेरणा होएते नैमित्तिक है प्रायश्चित्त (प्रण) गौतमस्मृतिविषे उसको क्यों काम्यत्वकी प्रतीति
हुंदीहै फलका होणा और नाहोणा इसको कारण रखकर पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष करके तिसकी
काम्यताकानिर्णय होएते तिसका वचन एहहै उक्त इति ॥ वर्णधर्म जो हैं ब्राह्मणादिकोंके धर्म
और आश्रम धर्म जो हैं ब्रह्मचारीआदिकोंके धर्म सो सभ किहेहैं अथेति एहपुरुष

याज्ञवल्क्योपि प्रायश्चित्तमकुर्वाणाः पापेषु निरतानराः अपश्चात्तापिनः
कष्टान्नरकान्यांतिदारुणानिति नरकास्तु तामिस्रलोहशंकुचेत्यादिना तत
एव बोध्याः ग्रंथांतरेऽपि तदेवं विहिताकरणादिनिमित्तघंतं प्रति चोदनात्रैमि
तिकंप्रायश्चित्तम्(ननु)गौतमस्मृतावस्य काम्यत्वं प्रतीयते फलभावाभावा
वुपजीव्यपूर्वोत्तरपक्षाभ्यां तस्य कर्तव्यतानिर्णयात् तद्वचनं चोक्तोवर्णधर्म
आश्रमधर्मश्च अथ खल्वयं पुरुषोऽप्येन कर्मणालिप्यते यथैतदयाज्य
याजनमभक्ष्यभक्षणमवद्यवन्दनं शिष्टस्याक्रिया प्रतिषिद्धसेवनमिति ॥ तत्र
प्रायश्चित्तंकुर्यान्न कुर्यादिति मीमांसते न कुर्यादित्याहुः नाहिकर्मक्षीयत्वइ
ति कुर्यादित्यपरे

याज्यकर्म कर्के अर्थात् निदित कर्म कर्के लिखहुंदाहै ऐसा कहकर कहतेहैं कि जैसा
एह अयाज्ययाजन है अैसाहि अभक्ष्यभक्षण और अवद्यवन्दन और शिष्टोंकीक्रि
याका ना करणा और प्रतिषिद्ध जो हैं दूतादि तिनका सेवनकरणा एहसभ असत्कर्म हैं पू
र्वोक्तरीतिसे इत्येभी काम्यता और नैमित्तिकता जानणी(उत्तर) अर्थात् फलकेअर्थहोआं तो का
म्यहोआ और तिसविना नैमित्तिक होआ ॥ तत्रैबि तिस विषे प्रायश्चित्त करे अथवा नाकरे इसका
विचारकरहेहैं कैओंका मत एह है कि प्रायश्चित्त ना करे क्योंकि कर्म जो कीता है सो नष्ट नहि
हुंदा अर्थात् कीताहोआ पाप प्रायश्चित्त कर्के नहि दूर हुंदा ॥ और कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अब
क्षम करणा चाहिए

जिससे ऐसा बेदमै देखयाहै कि यज्ञविषे विघ्नहोआ फेर स्तोम यज्ञकर्के अर्थात् प्रायश्चित्त कर्के सवन क्या यज्ञ विषे आउंदेहें एह जाणीदा है अर्थात् जैसे प्रायश्चित्त कर्के यज्ञविघ्न दूर होआ ऐसे होर पाप भी दूर होवेगा ब्राह्मस्तोमकर्के पूजन कर्के सभ पापको तरजांदाहै ब्रह्महत्याको तरदाहै जो अश्वमेध यज्ञ करदाहै इतनी स्मृति है ॥ अब इसका अर्थ कहतेहें याप्यनाम निहित कर्मका अयाज्ययाजनादिका है तिसके कीतेहोए लेपको दूरकरणेनुं नहि शक्य होऐने तिसके हटाएवास्ते प्रायश्चित्त नहि करणा चाहिए जो कीता होआ कर्महै सो विनाभोगतेकदें बी नहि दूर हुंदा इसीबास्ते होर स्मृतिहै नेति नहि भोगिया होयाकर्म किरोडांकल्पादिं व्यतीतहोया

पुनः स्तोमेनेष्ट्वा पुनः सवनमायान्तीति विज्ञायते ब्राह्मस्तोमेनेष्ट्वातर तिसर्वपाप्मानं तरतिब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजतइति अयमर्थः याप्यं गृहितमयाज्ययाजनादि तत्कृतस्य लेपस्य निवर्तयितुमशक्यत्वात् तन्निवृत्तये प्रायश्चित्तं न कर्तव्यम् नहि कृतं कर्म भोगमन्तरेण क्षपयितुं शक्यते अतएव स्मृत्यन्तरम् नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि अवश्यमेवभोक्तव्यकृतंकर्मशुभाशुभमिति १ शंखोपि यथापृथिव्यांबीजानि अन्नान्योषधयोयथा एवमात्मनिकर्माणितिष्ठन्तिप्रभवन्तिचेति १ यद्यन्तरेणापिभोगं दुरितलेपः क्षीयते तदा सुकृतलेपोपि क्षीयेतेत्यतिप्रसंगः तस्मात्प्रायश्चित्तन्नकर्तव्यमितिपूर्वपक्षिणआहुः कुर्यादेवप्रायश्चित्तमिति ॥ प्रामाणिकानांदर्शनम् तेहिश्रुतिमुदाहरन्ति पुनः स्तोमेनेष्ट्वापुनः सवनमायान्तीति

वी नाशको प्राप्त नहि हुंदाहै जो कीताहै शुभअशुभ कर्म सो अवश्य भोगले योग्यहै १ शंखजी भी कहदेहें यथेति जैसे पृथिवीविषे बीजहै और अन्नहै ओपधिहें एह यद्यपि त्रये पर्यायआपसमैहै तथापि थोडाभेद लईकरो किहाहै एह जिसतही उत्पन्नहुंदेहें तैसेहि आत्मा विषे कर्म है जो बीज पृथिवीविषे पिआहै सो अवश्यकर्के फलानुदिंदाहै ऐसा जानना १ यदोति कहतेहें किजद कीतेहोए पाप भोगलेविना बी नष्ट होजाय तद पुण्यभी नष्टहोए निसकारणते प्रायश्चित्त नहीं करणा एह पूर्वपक्षहोआ ॥ अब जिनका मत प्रमाणहै सो कहतेहें कि प्रायश्चित्त अवश्यकर्के करणा एह श्रुतिका उदाहरण दिंदेहें पुनरिति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहै

एहि याज्ञवल्क्यजीका मत है सो कहतेहैं प्रायश्चित्त जो प्रायश्चित्त नहि करें और पापोंमें रत हो
ए और पीछे पश्चात्ताप भी ना करन सो पुरुष दारुण जो नरक हैं तिना विषे जांदि हैं ॥ इ
सीस्थान तिना नरकां का भी वर्णन करतेहैं तामिस्र इसते आदि लेकर कहे होए उसीग्रन्थते
आश्रमे सो २१ हैं ॥ और ग्रंथो विषे भी किहाहै कि विहिताकरणादि निमित्तवाळे प्रति
प्रेरणा होएते नैमित्तिक है प्रायश्चित्त (प्रण) गौतमस्मृतिविषे उसको क्यों काम्यत्वकी प्रतीति
हुंदीहै फलका होणा और नाहोणा इसको कारण रखकर पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष करके तिसकी
कबंन्यताकानिर्णय होएते तिसका बचन एहहै उक्त इति ॥ वर्णधर्म जो हैं ब्राह्मणादिकोंके धर्म
और आश्रम धर्म जो हैं ब्रह्मचारीआदिकोंके धर्म सो सभ किहेहैं श्रथेति एहपुरुष

याज्ञवल्क्योपि प्रायश्चित्तमकुर्वाणाः पापेषु निरतानराः अपश्चात्तापिनः
कष्टान्नरकान्यांति दारुणानिति नरकास्तु तामिस्रं लोहशंकुचेत्यादिना तत
एव बोध्याः ग्रंथांतरेऽपि तदेवं विहिताकरणादिनिमित्तघंतं प्रति चोदना नैमि
त्तिकं प्रायश्चित्तम् (ननु) गौतमस्मृतावस्य काम्यत्वं प्रतीयते फलभावाभावा
वुपजीव्यपूर्वोत्तरपक्षाभ्यां तस्य कर्तव्यतानिर्णयात् तद्वचनं चोक्तो वर्णधर्म
आश्रमधर्मश्च अथ खल्वयं पुरुषो याप्येन कर्मणालिप्यते यथैतदयाज्य
याजनमभक्ष्यभक्षणमव्यवन्दनं शिष्टस्याक्रिया प्रतिषिद्धसेवनमिति ॥ तत्र
प्रायश्चित्तं कुर्यान्न कुर्यादिति मीमांसते न कुर्यादित्याहुः नहिकर्मक्षीयद्वइ
ति कुर्यादित्यपरे

काम्यकर्म कर्के अर्थात् निहित कर्म कर्के हुंदाहै ऐसा कहकर कहतेहैं कि जैसा
एह अयाज्ययाजन है अैसाहि अभक्ष्यभक्षण और अव्यवन्दन और शिष्टोंकी क्रि
याका ना करणा और प्रतिषिद्ध जो हैं द्यूतादि तिनका सेवनकरणा एहसभ असत्कर्म हैं पु
र्वोक्तरीतिसे इत्येभी काम्यता और नैमित्तिकता जानणी (उत्तर) अर्थात् फलके अर्थ होआं तो का
म्यहोआ और तिसविना नैमित्तिक होआ ॥ तत्रोचि तिस विषे प्रायश्चित्त करे अथवा नाकरे इसका
विचारकईहैं कैओंका मत एह है कि प्रायश्चित्त ना करे क्योंकि कर्म जो कीता है सो नष्ट नहि
हुंदा अर्थात् कीताहोआ पाप प्रायश्चित्त कर्के नहि दूर हुंदा ॥ और कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अब
रूप करणा चाहिए

जिससे ऐसा बेदमै देखयाहै कि यज्ञविषे विघ्नहोआं फेर स्तोम यज्ञकर्के अर्थात् प्रायश्चित्त कर्के सवन क्या यज्ञ विषे आउंदेहें एह जाणीदा है अर्थात् जैसे प्रायश्चित्त कर्के यज्ञविघ्न दूर होआ तैसे होर पाप भी दूर होवेगा ब्राह्मस्तोमकर्के पूजन कर्के सभ पापको तरजांदाहै ब्रह्महत्याको तरदाहै जो अश्वमेध यज्ञ करदाहै इतनी स्मृति है ॥ अब इसका अर्थ कहतेहैं याप्यनाम निमित्त कर्मका अंयाज्ययाजनादिका है तिसके कीतेहोए लेपको दूरकरणेन नहि शक्य होएने तिसके डटाणेवास्ते प्रायश्चित्त नहि करणा चाहिए जो कीता होआ कर्महै सो विनाभोगतेकदे श्री नहि दूर हुंदा इसीबास्ते होर स्मृतिहै नेति नहि भोगिया होयाकर्म किराडांकल्पादिं प्यतातहोया

पुनः स्तोमेनेष्ट्वा पुनः सवनमायान्तीति विज्ञायते ब्राह्मस्तोमेनेष्ट्वातर तिसर्वपाप्मानं तरतिब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजतइति अयमर्थः याप्यं गार्हितमयाज्ययाजनादि तत्कृतस्य लेपस्य निवर्तयितुमशक्यत्वात् तन्निवृत्तये प्रायश्चित्तं न कर्तव्यम् नहि कृतं कर्म भोगमन्तरेण क्षपयितुं शक्यते अतएव स्मृत्यन्तरम् नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि अवश्यमेवभोक्तव्यकृतंकर्मशुभाशुभमिति १ शंखोपि यथापृथिव्यांवीजानि अन्नान्योषधयोयथा एवमात्मनिकर्माणितिष्ठन्तिप्रभवन्तिचेति १ यद्यन्तरेणापिभोगं दुरितलेपः क्षीयते तदा सुकृतलेपोपि क्षीयेतेत्यतिप्रसंगः तस्मात्प्रायश्चित्तन्नकर्तव्यमितिपूर्वपक्षिणआहुः कुर्यादेवप्रायश्चित्तमिति प्रामाणिकानांदर्शनम् तेहिश्रुतिमुदाहरन्ति पुनः स्तोमेनेष्ट्वापुनः सवनमायान्तीति

वी नाशको प्राप्त नहि हुंदाहै जो कीताहै शुभअशुभ कर्म सो अवश्य भोगले योग्यहै १ शंखजी भी कहंदेहें घयेति जैसे पृथिवीविषे बीजहै और अन्नहै ओषधिहैं एह यद्यपि त्रये पर्यायआपसमेंहै तथापि थोडाभैद लईकरो किहोहै एह जिसतही उत्पन्नहुंदेहें तेसेहि आत्मा विषे कर्म है जो बीज पृथिवीविषे पिआहै सो अवश्यकर्के फलानुदिंदाहै ऐसा जानना १ यदीति कहतेहै किजब कीतेहोए पाप भोगलेविना वी नष्ट होजाय तब पुण्यभी नष्टहोए निसकारणें प्रायश्चित्त नही करणा एह पूर्वपक्षहोआ ॥ अब जिनका मत प्रमाणहै सो कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अवश्यकर्के करणा एह श्रुतिका उदाहरण दिंदेहें पुनरिति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहै

अयाज्येति अयाज्य याजनादिरूप पापते नित्य कर्मदे अधिकारते अष्टहोए २ एक दिनसाध्य कर्म कर्केपूजा कर्के फेर उसी सवनसाध्य कर्मकों प्रात हुंदेहैं क्या तिसके अधिकारी हुंदेहैं इसते प्रतीत होआ कि प्रायश्चित्तसे पापदूर हुंदाहै और जोपिच्छेकिहाथा कि कीता होआ कर्म कदेवी नष्ट नहिहुंदा सो जिसने प्रायश्चित्त नहि कीता तिसपर है क्या बिना प्रायश्चित्तसे पाप नहि दूर हुंदा एह अर्थहै अथवा पुण्य कर्मपर है क्या भोगेविना पुण्य कदीवी दूर नहिहुंदा एहअर्थहै तैसेही और स्मृति विषे किहाहै कदेति एह सुकृतकर्मकदाचित् कूटस्थकी न्याई स्थित है संसारविषे जो डुवा होआहै उसको सभ दुःखते दूरकरदाहै इसतेजाणया कि सुकृत निश्चलहै यदीति जद नाऽभुक्तमि खादि शास्त्र निरंकुश होवे अर्थात् पूर्वोक्त व्यवस्थाकर्के नहि स्थापन कीता जावे तद पापके क्षयकों

अयाज्ययाजनादिभिर्नित्यकर्माधिकाराद्गृष्टाएकाहिकेनेष्ट्वा सवनं सवन साध्यं कर्म पुनः प्राप्नुवन्ति तत्राधिक्रियन्त इतियावत् नाऽभुक्तंक्षीयतइति अकृतप्रायश्चित्तदुरितविषयम् सुकृतविषयंच तथाच स्मृत्यन्तरम् कदाचि त्सुकृतकर्मकूटस्थमिवतिष्ठति मज्जमानस्यसंसारयावदुःखात्प्रमुच्यतइति यदि नाऽभुक्तमितिशास्त्रं निरंकुशं प्रवर्तेत तदा पापक्षयप्रतिपादकाः सर्वाःश्रुतयः स्मृतयश्च कुप्येरन् तस्मात्पापक्षयायप्रायश्चित्तं कर्तव्य मितिसिद्धान्ताभिधानात् प्रायश्चित्तं काम्यं नतु नैमित्तिकमिति नैषदोषः जातेष्टिदृष्टान्तेन दत्तोत्तरत्वात् अन्यथा पूर्वोदाहृतवृहस्पतिवचनाविरोधात् ननु नैमित्तिकत्वे ग्रहणस्नानस्येव प्रायश्चित्तस्याकरणे दुरितान्तरमुत्पद्ये तातस्त्वस्यापि प्रायश्चित्तान्तरन्तस्याप्यकरणे दुरितान्तरं ततः प्रायश्चित्तान्तरमित्येव मनवस्था स्यात्

कहस वालिआं श्रुतिआं और स्मृतीयां कुपित होणगीयौ तिसकारणते पापक्षयके वास्वे प्रायश्चित्त करणा चाहिए इस सिद्धान्तके कथनहोणते और इस स्मृतिमै जो होर अर्थया उसको कहकर प्रसंग विषे कहतेहैं । प्रायश्चित्त काम्यहै और नैमित्तिक नही ऐसे किसेके वचनको खंडित कर तेहें नेति एहदोष नहि कहणा जातेष्टिदृष्टान्तकर्के उसका उत्तरहोणते जैसे इष्टिकर्म नैमित्तिकहै तैसेहि प्रायश्चित्तभी नैमित्तिकहै अन्यथा इसको नामन्नो तो पिच्छे आया जो बृहस्पतिजीकावचन प्रायश्चित्तं यत्क्रियतेइत्यादि इसकेसाथ विरोधआवेगा(प्रश्न) इसको यद नैमित्तिक मन्त्रिये तद ग्रहणस्नानकी न्याई कोई प्रायश्चित्त नहि करेगा तद उसको होर पाष लगेगा और उस कामी प्रायश्चित्त जद नहि होआ तो होरपापलगा ऐसे लगदे २ अनवस्थाआवेगी

अत्रेति इसमे कोईऐसा विचारकरेहें कि प्रायश्चित्त केवल नैमित्तिक हि नही किंतु पापके नाशके अर्थ भी है इसीकरके आपस्तंबजीका वचन है प्रायश्चित्त प्रायश्चित्तोंको प्रसंगविषे ल्याकरके एह प्रायश्चित्त दोष विधातकहै अर्थ जिनांका ऐसेहैं और दोषते पिच्छे करणेयोग्यहैं एवंच इसते एह निश्चितहो आ कि प्रायश्चित्त जद नहि होआ तो इसकरके होणा जो दोषविधात सोभी नहि होआ तदपूर्वसिद्ध जो पापथा सोई रिहा होर दूसरा पाप नहि होया अथवा जैसेग्रहणका स्नान नहि कीता तदउस को दोषलगा तैसेहि प्रायश्चित्त नही कीता इसनिमित्तको लयकर होर प्रायश्चित्त करणा ऐसेविधा नका अदर्शनहोणेत किसेजगा ऐसा नहि लिखया कि प्रायश्चित्तको नाकरेगातो इकहोरप्रायश्चित्त

अत्रकेचिदाहुः ॥ प्रायश्चित्तानि न केवलं नैमित्तिकान्येव किंतु दुरितक्षयार्थान्यपि अतएवापस्तम्बः ॥ प्रायश्चित्तानिप्रक्रम्य एतानि दोषविधातार्थानि भवन्ति अनन्तरदोषात् कर्तव्यानीत्याह एवंचसति प्रायश्चित्ताकरणेदोषविधाताभावेन पूर्वसिद्धदोषस्तदवस्थ इत्येतावन्मात्रं नतु दोषान्तरमुत्पद्यतइति यद्वा ग्रहणस्नानाद्यकरणमिव प्रायश्चित्ताकरणं निमित्तीकृत्यप्रायश्चित्तान्तरविधानस्यादर्शनात् न तन्निमित्तं दुरितान्तरं कल्पयितुं शक्यं तस्मान्नैमित्तिकत्वेपि नाऽनवस्था ॥ ननु ॥ दोषविधातेनैकान्तिकः तथाहि द्विविधं पापं कामकृतमकामकृतंच ॥ तथाचवृहस्पतिः ॥ कामाकामकृतंतेषांमहापापं द्विधास्मृतमिति तयोरकामकृतस्य प्रायश्चित्तेन विधातेपि न कामकृतस्य सोऽस्ति ॥ तथाचमनुः ॥ इयं विशुद्धिरुदिता प्रमाप्या कामतो द्विजम् कामतो ब्राह्मणवधे निष्कृतिर्न विधीयतइति

सहोवे तो पूर्वोक्त अनवस्था दोष नहि लगेगा (प्रश्न) जो आप कहते हो कि प्रायश्चित्त दोष विधातकहै जैसे ॥ प्रायश्चित्तं कर्तव्यं दोष विधातकहवात् ॥ इसजगा हेतु नैकान्तिकहै सोई कहतेहैं द्विविधमिति कि दो प्रकारका पाप है कामकृत और अकामकृत सोई वृहस्पतिजी कहतेहैं कामेति जिनांका पाप कामाकामके भेदसे दो प्रकारका है इसकी उपपत्ती प्रकट करके कहतेहैं ॥ तयोरिति जिनां दो आंविधो अकामकृत पापका अर्थात् जो पाप कामनाते जिनां कीताहें तिसका प्रायश्चित्त करके विधातहै भी परंतु जो पाप कामनाते कीताहै तिसका विधात नहिहै इसकरके दोष विधात नैकान्तिकहै सोई मनुजी कहतेहैं इयमिति एह विशुद्धि कहीहै उसकी जिसने विना कामनाते ब्राह्मण मारयाहै और कामनाते ब्राह्मण मारणवालेकी निष्कृति क्या प्रायश्चित्त कोई नहिहै

वैधायनजीकाभीवचनहै ॥ अमेति ना जाणके ब्राह्मणको मारणवाला दुष्ट हुंदाहै धर्मते ऋषी उसकी निष्कृतिको कहतेहैं कि इसने अज्ञानसे मारयाहै और जो मतिपूर्व क्या ज्ञान कर्के मारणवाला होवे तद उसको कोई प्रायश्चित्त नहि इह दोष स्पष्टहोआ (उत्तर) एहदोष कदेभी नहि लगेगा उसकाअर्थ अन्यथाहोएते क्याजो १२ वर्षका प्रायश्चित्त कीयाहै तिसकर्के उहपाप दूर नही हुंदा ऐसाअर्थहोएते किंतु मरणादि जो दिखायेहैं प्रायश्चित्त तिन ऋके कामरुत पाप दूर हुंदाहै सोई अर्थ स्मृतीमें किहाहै जो पुरुष काम नाते महा पापकरे कदाचित् तिसकी निष्कृति भृग्वग्निपतनते विना नहिहै भृग्वग्नि जोहै हिमाल यमें स्थानविशेष बदरिकाश्रमके समीप एक जों गत्त और दूसरा कोई अग्निकुंडहै तिसविषे पत

वैधायनोऽपि ॥ अमत्याब्राह्मणंहत्वादुष्टोभवतिधर्मतः ऋपयोनिष्कृति न्तस्यवदन्त्यमतिपूर्वकम् १ मतिपूर्वहतेतस्मिन्निष्कृतिर्नोपलभ्यतइति ॥ नायंदोषः द्वादशाब्दादिना निष्कृत्यभावेऽपि भृगुपतनादिना तत्संभवात् तथाच स्मर्यते यः कामतो नरः कुर्यान्महापापकथंचन नतस्य निष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृतइति १ शातातपोपि ॥ अकामावाप्तौ प्रायश्चित्तं कामका रकृतेत्वात्मानमवसादयेदिति ॥ अतः प्रायश्चित्तेन दोषविघातो ना नैकान्तिकः तस्मान्निहतव्यदोषाख्यनिमित्तवानऽत्र प्रायश्चित्तेऽधिक्रियतइति सिद्धम् ॥ तेच दोषा अनेकविधाः तत्र विष्णुः ॥ अथ पुरुषस्य कामक्रोधलो भाख्यं रिपुत्रयं सुधारं भवतितेन समाक्रान्तोऽतिपातकमहापातका नुपातकोपपातकेषु प्रवर्त्तते

नहोणा अर्थात् उसजगा मरणा एही उसका प्रायश्चित्तहै ॥ शातातपभी कहतेहैं अकाम कर्के पाप होये तद प्रायश्चित्त करे और कामनाते करे तद आत्माको अवसादन करे अर्थात् पूर्वी कस्थान विषे मृत होवे तद शुद्ध हुंदाहै अतइति इसते जाणों कि प्रायश्चित्त ऋके दोषविघात नैकान्तिक नहि है तिसते एह निश्चयहोआ कि जिसने मरकर्के शुद्धहोणाहै सो उस प्रायश्चित्तका अधिकारिहै एह सिद्ध होआ जिनाका विघात किहाहै सो दोष अनेकतर्हीके हैं इसमें विष्णुजीका वचनहै अथेति पुरुषके काम क्रोध लोभ रूप बडे भवानक तीन शत्रु हैं तिन कर्के आक्रान्त क्या दवायाहोया अतिपातक १ महापातक २ अनुपातक ३ उपपातको ४ विषे प्रवृत्तिवाला हुंदाहै

और तैसेहि जातिभ्रंशकर जो पापहैं १ और संकरीकरण २ और अपात्रीकरण ३ और मलावह ४ और प्रकीर्णक ५ इनांविषे प्रवृत्तिवाला हुंदाहै इनांपापों के स्वरूप भेद पिछे कहेंहैं और लक्षण आगे आवणगे ॥ अवप्रकरणकी समाप्ति विषे ग्रंथकार श्लोक २ कहताहै श्रीमदिति काश्मीरादिदेशोंके स्वामी महाराज रणवीरसिंह जीकी आज्ञा लेकर एह विचार कीताहै कैसा महाराजहै प्रौढतर क्या सभसे बडा जो प्रताप तिसते त्रासकों प्राप्त होएहैं सभ शब्दोंकेगण जिसते और जम्बू काश्मीर और तिब्बत इत्यादि

जातिभ्रंशकरेषु संकरीकरणेषु अपात्रीकरणेषु मलावहेषु प्रकीर्ण
केषुचेति श्रीमत्प्रौढतरप्रतापतपनत्रस्ताखिलारिव्रजात् जम्बूपत्तनतिब्ब
तक्षितिपतेर्धर्मस्यसाक्षात्तनोः भूपालावलिभौल्लिलाल्यचरणात्काश्मीरदे
शेश्वरादाज्ञांश्रीरणवीरसिंहनृपतेः प्राप्यार्थिचिन्तामणोः १ पर्यालोचि
तधर्मशास्त्रनिवहैरेतत्सभासंगतैर्गंगारामकवीशमुख्यविवुधैर्यः संगृहीतः
श्रमात् प्रायश्चित्तविनिर्णयेप्रकरणंतस्मिन्बुधानन्ददे प्रायश्चित्तपदार्थव
र्णनमुखसिद्धिययावादिमम् २ इतिश्री० गंगारामसंगृहीते धर्मशास्त्र
महानिवन्धे प्रायश्चित्तभागप्रायश्चित्तार्थकथनं नाम प्रथमंप्रकरणम्

देशोंका जो अधिपतिहै और धर्मकी साक्षात् मूर्ति है फेर कैसाहै भूपाल जो राजा तिनकी
मस्तकमाणि कर्क नौराजित है चरण जिसका फेर कैसाहै कि जो गुणिजनोको चिन्ताम
णिके तुल्यहै १ जो धर्मशास्त्रका ग्रंथ पंडितगंगारामादिजने, अमसे संग्रह कीता कैसे
उह पंडितहैं पर्येति विचारेहैं बहुत धर्मशास्त्रके ग्रंथ जिनोने और शुभसभा जो है काशीकी
इसमें भी संगतिवालेहैं तिस बुद्धिमानोंकी आनंदके देशगले ग्रंथविषे जो प्रायश्चित्त
शब्दकाअर्थ तिसका निषेयरूप पहला प्रकरणसमाप्तहोया इतिश्रीभाषाटीकायांप्रथमंप्रकरणम्

॥ प्रथमप्रकरणम् ॥ १



॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥ ८५

स्वेति इसकी टीका पीछे लिखी है अथेति अब प्रायश्चित्तके अधिकारियोंको कहते हैं सोसंपूर्ण पापी हैं चपुनः तिनके भेद हैं विहित जो कर्म अथात् वेद करके कहे जो कर्म तिनको न करणा और निंदित कर्मोंको करणा इत्यादि मानवीयादि वचनोंसे दिखाये हैं सो प्रथम प्रकरणमें लिखे हैं तिनमें प्रायश्चित्तका देणा उक्त विषय और अनुक्त विषय और उक्ताऽनुक्त विषय हैं तिनमें पहिला उक्तविषय जो प्रायश्चित्त है सो कहते हैं लोहेति लोहा कांस्य इनके चुराणेमें बारादि न पर्यंत पृथ्वीमेंसे अत्रचुणकर भोजन करे इत्यादि कथन किया है अनुक्त विषयमें विष्णुजी कहते हैं नही कहा प्रायश्चित्त जिसका ऐसे जो पाप उनके दूर करणे वास्ते पापी पुरुषको शक्तिकों दे खकरके और पापकी न्यूनाधिक्यताकों देखकर प्रायश्चित्तकों देवे १ उनको प्रायश्चित्तका देणा साधा

श्रीरघुनाथोजयति ॥ स्वतोमित्रातत्त्वं श्रुतिरपि यदीयं भगवती गुहागूढं प्रोचे सकलपुरुषार्थाद्यद्वयः विचारेस्त्वेतत्तान् विशदमतिदानेन सदयं सधर्मोऽस्मान्दानान् बहुलमनुगृह्णानुभगवान् १ अथ प्रायश्चित्ताधिकारिणः ॥ ते च सर्वे पापाः तद्भेदाश्च अकुर्यन्विहितं कर्म निंदितं च समाचरन्नित्यादि मानवीयादि वचोभ्यः प्रदर्शिताः पूर्वप्रकरणे ॥ तत्र प्रायश्चित्तदानमुक्तविषय मनुक्तविषय मुक्तानुक्तविषयं च तत्राद्यं लोहकांस्यापहारे च द्वादशाहं कणान्नतेत्यादि अनुक्तविषये ॥ विष्णुः ॥ अनुक्तनिष्कृतीनां तु पापानामपनुत्तये शक्तिं चावेक्ष्य पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेदिति १ तत्प्रकल्पनं च साधारणप्रकरणादौ वक्ष्यते उक्तानुक्तविषयं च यत्रोक्तं यत्र वानोक्तमिह पातकनाशनम् प्राजापत्येन शुद्धयेदित्यादि तत्र प्रायश्चित्त तारतम्यार्थं बाल्यादि ॥ निर्णीतं ॥ नागेशेन ॥ यथा षोडशवर्षं न्यूनो बालः अशीतिवर्षाधिको वृद्धः पूर्णषोडशवर्षस्य पूर्णं प्रायश्चित्तम् ऊर्ध्वं कादशवर्षस्य पंचवर्षं दूर्ध्वं पादं प्रायश्चित्तम्

रण प्रकरणादिमें कहा जायेगा और उक्तानुक्त विषय प्रायश्चित्त कहते हैं यत्रेति जिस पापमें प्रायश्चित्त कहा है अथवा जिसमें नहीं कहा है तहां पापोंके नाश करणे वाला प्राजापत्य जो ब्रत बारादिनका है तिस करके शुद्धि होती है अब जिसमें प्रायश्चित्तकी तारतम्यताके निमित्त अथात् थोड़ा अथवा बहुत प्रायश्चित्त देणा इसके वास्ते बाल्यादि जो हैं बालक युवा वृद्ध इनका निर्णय नागेशने किया है यथेति जिस प्रकार सोला १६ वर्षसे छोटा बालक कहा है अस्सी ८० वर्षसे बड़ा वृद्ध कहा है बराबर १६ वर्षका जो मनुष्य है सो पूर्ण क्या बराबर प्रायश्चित्त करे और एकादश ११ वर्षसे छोटा पांच ५ वर्षसे बड़ा जो बालक है सो एक पाद क्या चतुर्थांश प्रायश्चित्त करे

८६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि ॥ टी० भा० ॥

और बागं १२ वर्ष से लेकर सोलां १६ वर्ष पर्यंत अर्ध प्रायश्चित्त करे सो प्रायश्चित्तभी तिस बालकके पित्रादिकोंने करणें योग्यहैं इस तरह जो अतिरोगीहै और जो अतिवृद्धहै तिसका प्रायश्चित्त पुत्रादिकोंने करणें योग्यहैं पांच ५ वर्षसे छोटे बालकको पाप नहीं होताहै अब वर्षोंके कमकर्के प्रायश्चित्त कहतेहैं शास्त्रेति शास्त्रोपादिष्ट पूर्ण प्रायश्चित्त ब्राह्मणको कथन कियाहै क्षत्री अर वैश्य शूद्र जो हैं तिनको पाद पाद होन कहाहै अर्थात् क्षत्रीको तीन १ पाद वैश्यको दो २ पाद शूद्रको एक १ पाद प्रायश्चित्त कहाहै और किसी जगामें विशेष जो प्रायश्चित्तहै तिसमें वचनहै तिसमें शूद्रको प्रायश्चित्त जप होमादिसं रहितहै और विनामंत्र प्राणायामकहाहै और यागादि अनुष्ठानशील जो हैं तिनको जपादिक प्रायश्चित्तहैं इतेति और जो यागादिक नहीं करसकते तिनको तपआदि क्या प्राजापत्य चांद्रायणादि प्रायश्चित्तहै

द्वादशादापोडशमर्द्धम् तदपि तत्पित्रादिभिः कार्यम् एवमतिरोग्यतिवृद्ध
योरपि पुत्रादिभिः कार्यम् पंचवर्षन्यूनस्य न पापम् ॥ अथवर्णतः शास्त्रोप
दिष्टं पूर्णप्रायश्चित्तं विप्रस्यैव क्षत्रिय विट् शूद्राणां तु पाद पाद हानिः
क्वचिद्विशेषस्तु वाचनिकः तत्र जपहोमादिरहितमेव शूद्रस्य अमंत्रक
प्राणायामश्च यागाद्यनुष्ठानशीलानां जपादिकम् इतरेषां तपआदि नाम
धारक मूर्ख निर्धनानां तपः अनधीतानांच ॥ अथाश्रमतः षोडशवर्षाधिक
ब्रह्मचारिणो द्विगुणम् वानप्रस्थस्य त्रिगुणं यतेश्चतुर्गुणम् स्वयमशक्तौ
प्रतिनिधिद्वारा प्रायश्चित्तं कार्यमिति ॥ इत्थमेव प्रायश्चित्तमयूखे अंगिराः
अशीतिर्यस्यवर्षाणि बालोवाप्यूनषोडशः प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति स्त्रियोरो
गिणएवचेति १

नामधारक अर्थात् नाममात्र जो ब्राह्मणादिहैं मूर्ख और धनरहित तिनकोभी पूर्वोक्त तपकहाहै नहीं पढे जो ब्राह्मणहैं तिनकोभी तपकरणाही प्रायश्चित्त कहाहै अब आश्रमियोंको प्रायश्चित्त कहतेहैं सोलां १६ वर्षसे बड़ा जो ब्रह्मचारीहै तिसको द्विगुण प्रायश्चित्त कहाहै और वानप्रस्थ को त्रिगुण संन्यासीको चतुर्गुण कहाहै जो आप प्रायश्चित्त करणेंको नहीं समर्थ होवे उसने प्रतिनिधिद्वारा प्रायश्चित्त करणें योग्यहै अर्थात् और किसीसे करवालेवे ॥ इत्थमेवेति इसी प्रकार प्रायश्चित्तमयूखमें अंगिराजी कहतेहैं अस्सी ८० वर्ष जिसकी अवस्थाहै सो वृद्ध होता है और सोलां १६ वर्षसे जो छोटाहै सो बालक होताहै सो एह वृद्ध और बालक अर स्त्रियो और रोगी मनुष्य आधे प्रायश्चित्तके योग्य होतेहैं १

महाभारतके आदिपर्वमें कहा है मनुष्यों को चौदां १४ वर्षकी आयुपा पर्वत पाप नहीं होता और चौदां वर्षसे उररंत जो पाप करते हैं तिनको दोष होता है ॥ १ ॥ अंगिराजीका वचन है अवेति वारं १२ वर्षसे उर अर अस्सी ८० वर्षसे उपरंत आधाही प्रायश्चित्त पुरुषोंको होता है और तिसमें चौथा हिस्सा स्त्रियोंको होता है इन दोनों वचनोंमें जो न्यूनाधिक भाव है सो शक्तिसँ जानने योग्य है जो विष्णुजी कहते हैं ॥ स्त्रीणामिति स्त्रियोंको आधा प्रायश्चित्त देणे योग्य है और तिसी प्रकार वृद्ध और रोगियोंको भी आधा प्रायश्चित्त देणे योग्य है और बालकोंको चतुर्थांश देणे योग्य है संपूर्ण पापोंमें इह विधि है १ एह जो प्रकार है सो यज्ञोपवीत पाउणेंसे उरें जानने योग्य है शंखका वचन है ऊनेति ग्यां ११ वर्षसे छोटा और पांच ५ वर्षसे बड़ा जो बालक पाप करे उसपापका प्रायश्चित्त बालकका भ्राता करे अथवा पिता अथवा और कोई संबंधी करे १ इससे

महाभारते आदिपर्वण्यपि आचतुर्दशकाद्वर्षान्नभविष्यतिपातकम् परतः कुर्वतामेव दोष एव भविष्यति १ ॥ अंगिरः । अर्वाकुद्वादशाद्वर्षादशीतेरूर्ध्वमेव वा अर्द्धमेव भवेत्पुंसां तुरीयंतत्रयोपितामिति १ अत्रोच्चावचावधि तारतम्यं शक्तितोज्ञेयम् ॥ यत्तुविष्णुः ॥ स्त्रीणामर्द्धप्रदातव्यं वृद्धानां रोगिणां तथा पादो बालेषु दातव्यः सर्वपापेष्वयं विधिः १ एतच्चोपनयनादवर्गाज्ञेयम् ॥ शंखः ॥ ऊनेकादशवर्षस्य पंचवर्षात्परस्य च प्रायश्चित्तं चरेद्भाता पिता वान्यः सुहज्जनः ॥ १ ॥ अतो बालतरस्यास्य नाऽपराधेन पातकम् राजदंडेन दातव्यः प्रायश्चित्तं न विद्यत इति २ ॥ कुमारः ॥ मद्यमूत्रपुरीषाणां भक्षणेनास्तिकश्च न दोषस्त्वापंचमाद्वर्षादूर्ध्वं पित्रोः सुहृद्गुरोरिति १ ॥ गौतमः ॥ प्रागुपनयनात्कामचार कामवाद कामभक्ष्या इति सुरापाननिषेधस्तु. जात्याश्रय इति स्थितिरिति कुमारवाक्यात्

असंत छोटा जो बालक है तिसको अपराध नहीं है और पातक भी नहीं है राजदंड भी उसको नहीं देणे योग्य है और प्रायश्चित्त भी उसको नहीं देणे योग्य है २ कुमारजीका वचन है ॥ मद्येति पांच ५ वर्षसे छोटे बालकको शराब और मूत्र बिठाके खाणेमें कोई दोष नहीं है और जो पांचवर्षसे उपरंत है तिसके मद्यदिकोंके पापका दोष मातापिताकों वा और संबंधियोंकों वा गुरुकों होता है १ इसीको गौतमजी भी कहते हैं प्रति यज्ञोपवीतसे प्रथम दाढक अपनी इच्छा करके विचरे और बातोंकरे और अपनी इच्छासे जलको पीवे वा भोजन करे तिसको दोष नहीं और मदिराका जो निषेध है सो जातिके आश्रय है यह कुमारजीके वाक्यसे जानना

८८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

अनुपेतइति नहीं भयाहै यज्ञोपवीत जिस बालकका वोह बालक अज्ञानसें जेकर मदिरापानकरे तब उस बालकका प्रायश्चित्त तीन ३ कृच्छ्र गुरु करे अथवा माता वा आता वा पिता करे इस स्मृति करके जिस बालकने यज्ञोपवीत नहीं धारण किया होवे उसको भी दोषहै ॥ विज्ञानेश्वरकावाक्यहै ॥ एतेति एहजो दो बचनहैं इनको पंचम वर्षकी प्रवृत्तिसे उपरंतभी लगाए से अर्थात् पंचम वर्षका प्रारंभही हुवाहै अभी व्यतीत नहीं भया तिसविषं सार्थक होएसे तहां अनुपेतकों दोषहै और चार वर्ष पर्यंत बालककों दोष नहीं एह योग्यहै ॥ एह स्मृत्यंतरमें कहतेहैं जानेति ॥ जबतक बालक आठ ८ वर्षका होताहै तबतक जातमात्रही होताहै सोनिश्चय करके गर्भके तुल्य जानने योग्यहै सो केवल स्वरूपमात्रहि दिखायाहै १ तिस बालकों आठ ८ वर्ष पर्यंत भक्ष्य अभक्ष्यमें और वाच्यावाच्यमें असत्य बोलनेमें जबतक उसका उपनयन नहीं किया तिसकाल पर्यंत उसकोदोषनहीं २ तन्मयेतर विषय मिति एह जो पूर्वलिखाहै कि आठ ८

अनुपेतस्तुयोबालो मद्यमोहात्पिवेद्यदि कृच्छ्रत्रयंगुरुःकुर्यान्माताभ्राता पितातथेतिस्मृतेऽनुपेतस्यदोषोस्त्येवेति ॥ विज्ञानेश्वरः ॥ एतद्वचन द्वयस्य पंचवर्षप्रवृत्त्युत्तरपरतयाप्युपपत्तेस्तत्राऽनुपेतस्यदोषः वर्षचतुष्टयपर्यंतं न दोषइतिननुक्तम् ॥ स्मृत्यंतरे ॥ जातमात्रः शिशुस्तावथा वदष्टौसमावयः सहिगर्भसमाज्ञेयो व्यक्तिमात्रं दर्शितः १ भक्ष्याभक्ष्येतथा ज्ञेयोवाच्यावाच्येतथाऽनृते तस्मिन्कालेनदोषः स्यात्सयावन्नोपनीयतइति २ तन्मयेतरविषयम् ॥ इदंचार्द्धपादादि परिमाणमुद्दिष्टमौलिकद्वादशाब्दिका येवाऽऽदायप्रवर्तते नतुक्षत्रियादिनैमित्तिक द्वैगुण्यापेक्षया ब्रह्मचारित्वादि निमित्तकं द्वैगुण्याद्यप्येवं अर्धपादद्वैगुण्य त्रैगुण्यादि विधीना मुपजीव्योपजीवकभावाभावेन परस्परालोचनया मौलिकविधिमात्रालोचनेनैवप्रवृत्तेः

वर्ष पर्यंत बालककों दोषनहीं सो मदिरासेंविना और भक्ष्याभक्ष्यादिका विषयहै ॥ अब इसीमें और विशेष कहतेहैं एहजो अर्द्धपादादिपरिमाण कहाहै सो मूलकाजो द्वादश वर्षादिहै तिसीमें वत्तमानहै क्षत्रियादि नैमित्तिक द्वैगुण्यादि अपेक्षा करके नहीं ग्रहण करणा और ब्रह्मचारित्वादि निमित्तक द्वैगुण्यादि भी इसी प्रकारहै अर्धपाद द्वैगुण्य त्रैगुण्यादि जो विधियाहैं तिनकों कार्य्य कारणके भावकों जो अभाव तिसके विचार करके मौलिक जो विधिहै द्वादशाब्द ब्रत उसीके विचार करके प्रवृत्त होएमें अर्थात् १२ वर्षका ब्रतहै तिससें १ पाद बालकको कहणा सो बालक क्षत्रियका होवे तो सो ब्रत पादोनकया १ वर्षकाहै तो कहो इस बालकको जो पादोन देणाहै सो १२ का वा १ का इतमे सिद्धातकियाहै कि मौलिक ब्रतहै १२ दिनका इसीका पाददेणा इसी प्रकार सर्वत्र जानो

अथेति अव कामाकाम कर्के कियेहुये पापविषे प्रायश्चित्तको व्यवस्था कहतेहैं तिसमें मनुजी कहते हैं श्रकामेति श्रकाम कर्के कियाजो पाप तिसमें बुद्धिमान् पंडित लोक प्रायश्चित्त कहतेहैं और कामना कर्के किया जो पाप उसमें वो एकापि श्रुतिके उदाहरणसे कहेंहैं १ और कामनासे विना कियाजो पाप सो वेदाभ्यास कर्के शुद्ध होताहै और कामनासे और मोहसे किया जो पाप सो पृथक् विध जो नानाविध प्रायश्चित्तहै तिनो कर्के शुद्ध होताहै २ एह इन दोनों श्लोकोंका अर्थ कहाहै अनयोरिति . और श्रुतिके देखेणसे कामकृत पापविषे भी प्रायश्चित्त कहाहै एह जो कथनकियाहै सो प्रायश्चित्तको गौरवताके निमित्तहै ॥ सो श्रुति लिखतेहैं इंद्र इति इंद्र संन्यासियोंको श्रमनी इच्छा कर्के वृत्तियों के तांई देताभया लोक उसकी

अथ कामाकामकृतप्रायश्चित्तव्यवस्था ॥ श्रकामतः कृते पापे प्रायश्चित्तं विदुर्बुधाः ॥ कामकारकृतेऽप्याहुरेके श्रुतिनिदर्शनात् १ श्रकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुध्यति कामतस्तु कृतं मोहात् प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः २ अनयोरर्थः श्रकामतोऽनिच्छातः कृते पापे प्रायश्चित्तं भवतीति पण्डिताः कामतः कृतेऽपि भवतीत्येके अत्र हेतुः श्रुतिनिदर्शनात् एतच्च प्रायश्चित्तगौरवार्थम् श्रुतिश्च इंद्रो यतीन् सालावृकेभ्यः प्रायच्छत् तमश्लीलावागे व्यावदत् स तु प्रजापतिमुपाधावत्तमुपहव्य प्रायच्छदिति अस्या अर्थः इंद्रो यतीन् बुद्धिपूर्वकं श्रव्योदत्तवान् ततो लोकास्तमनिंदस्ततः स प्रायश्चित्तार्थं प्रजापतिसमीपमगत्य तस्मै प्रजापतिरुपहव्याख्यं कर्म प्रायच्छत् दत्तवान् अतः कामतः कृतेऽप्यस्ति प्रायश्चित्तम् तत्प्रायश्चित्तमपि दर्शयति उपहव्यहि प्रायश्चित्तार्थं कर्म तच्चापस्तंबो यत्र ह्यहप्रकरणे ज्ञेयम् श्रकामत इति अनिच्छातः कृते वेदाभ्यासेन प्रतिदिनं क्रियमाणेनापि पापी पुरुषः शुध्यति एतच्च कामकृतपापेऽगुह्यतरप्रायश्चित्तपेक्षयाऽल्पतरविधानार्थम् ॥

निदाकस्तेभ्ये पुनः सो इंद्र प्रायश्चित्तके निमित्त ब्रह्माके समीप जाताभया तिस इंद्रके तांई ब्रह्मा उपहव्याख्यजो कर्महै सो देताभया उपहव्य नाम प्रायश्चित्तकाहै इसर्थे काम कर्के किया जो पाप तिसमें भी प्रायश्चित्तहै तिस प्रायश्चित्तको भी दिखतेहैं उपहव्य जोहै सो प्रायश्चित्तके निमित्त कर्महै सो आपस्तंबजीके कहेहुवे ब्रह्महत्या प्रकरणमें जानने योग्यहै श्रकाम इति अनिच्छासे कियाजो पाप तिस निमित्त दिन दिन विषे कियाजो वेदाभ्यास तिस कर्के पापी पुरुष शुद्ध होताहै एह वेदाभ्यासरूप प्रायश्चित्त काम कर्के कियाजो पाप तिस में असंत बहुत प्रायश्चित्तकी अपेक्षा कर्के असंत भोले प्रायश्चित्तके विधानके निमित्तहै ॥

९० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

अत्रेति तिसमें मोहादि व्यामूढता कर्के किया जो पाप तिसमें अनेक प्रकारका विद्या और चन और तपस्वरूप गुरुतरहि प्रायश्चित्त कहा है और इसमें शंका निवृत्तिके वास्ते कहते हैं अक्राम पापमें लघु प्रायश्चित्तका अधिकारी होता है और सकाम पापमें बड़े प्रायश्चित्तका अधिकारी होता है इससे अधिकारी प्रकरणमें प्रायश्चित्तका कहना अयोग्य है इह शंका नहीं करे योग्य क्योंकि अधिकार विना अधिकारी नहीं कह सकते हैं अतएवेति अब इसी कारणसे बृहस्पतिजी कहते हैं कामेति इसी प्रकार पातक दोषकारका कहा है एक कामकृत पातक है और दूसरा अकामकृत है और पाप करके वाले पुरुषको अपेक्षा करके उसमें प्रायश्चित्तबी दो प्रकारका ही कहा है १ अब कामना करके किया जो पाप तिसमें अंगिराकृषि प्रायश्चित्तकी आधिक्यता कहते हैं विहितमिति अक्राम पापोंको विहित जो प्रायश्चित्त है सो कामना करके पा

तत्र हिमोहादिव्यामूढतयाकृते नानाविधं विद्याधनतपःस्वरूपं गुरुतरमेव प्रायश्चित्तमुक्तम् अक्रामेलघुप्रायश्चिताधिकारी सकामे गुरुप्रायश्चिताधिकारीत्वधिकारि प्रकरणे प्रायश्चित्तकथनमयुक्तमिति नाशं कनीयं अतएव बृहस्पतिः कामाकामकृतं त्वेव पातकं द्विविधं स्मृतम् पुरुषापेक्षया चैव निष्कृतिर्द्विविधा स्मृतेति १ कामकृते प्रायश्चित्ताधिक्यमाहांगिराः ॥ विहितं यदकामानां कामात्तद्विगुणं भवेदिति कामकृते महापापे तु मरणमेव प्रायश्चित्तमुक्तं तेनैव यः कामतो महापापं नरः कुर्व्यात्कथंचन न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृते १ इति यत्तु इयं विशुद्धिरुदिता प्रमाप्या कामतो द्विजम् कामतो ब्राह्मणवधे निष्कृतिर्न विधीयते इति मानवीयं तदियमेति सर्वनाम परामृष्टद्वादशवार्षिक व्रतमेव निषेधति न प्रायश्चित्तमात्रं पूर्वोक्तांगिरोवचनात्

प्रकरणसे द्विगुण होता है और कामना करके किया जो महापाप ब्रह्महत्यादि तिस पापों मरण ही प्रायश्चित्त कहा है तिसी अंगिराजीने यह इति जो मनुष्य कदाचित् कामना करके महापापों करे तिस मनुष्यकी निष्कृति क्या प्रायश्चित्त पर्वतसे गिड़ करके मरणके विना और अग्नि में पड़ करके मरणे विना नहीं देखा १ इसीमें और विचार कर्के है यत्त्विति एह प्रायश्चित्त कामनासे विना ब्राह्मणको मार करके कहा है और कामना कर्के ब्राह्मणके मारणेमें प्रायश्चित्त विधान नहीं कहा है एह जो मानवीय क्या मनुजीका वचन है सो सर्वनाम होण्ये परामर्श किया जो द्वादशवार्षिक व्रत तिसको निषेध करता है प्रायश्चित्तमात्रको नहीं निषेध करता पूर्व कहा जो अंगिराजीका वचन तिसमें जानणा

अब इसमें और कहते हैं अथेति जान करके किया है ब्रह्महत्यादि जिसने सो पुरुष शास्त्रविहित जो प्रायश्चित्त है तिससे द्विगुण प्रायश्चित्तके करण करके इस लोकमें व्यवहारको प्राप्त होता है अथवा नहीं, ऐसे संदेहके होयां कितन्योंका मत बिधिकोटी है अर्थात् कितने कहते हैं कि व्यवहारको प्राप्त होता है और कितन्योंका मत निषेधकोटी है अर्थात् कितने कहते हैं कि नहीं प्राप्त होता इसमें अपना मत पहिले मतके साथ है प्रथम पक्षमें कहते हैं प्रायश्चित्त अज्ञान करके किया जो पाप सो प्रायश्चित्त करके दूर होता है और जान करके किया जो पाप तिसमें वचनसे व्यवहार्य होता है याज्ञवल्क्यके इसवचन करके जानकरके किया जो ब्रह्मवधतिसविषे प्रायश्चित्तकरके व्यवहार्यतामात्र होती है अर्थात् लोक विषे वर्तमान होता है और पापकानाश नहीं होता (प्रण) जेकर पापका नाश नहीं होता

अथबुद्धिपूर्वकतब्रह्मवधादिर्यथाशास्त्रं द्विगुणप्रायश्चित्ताचरणेनेहव्यवहार्यतामापद्यते नवेति विप्रतिपत्तौ केषांचिद्विधिकोटीः केषांचिच्चप्रतिषेधकोटीः तत्रप्रथमे प्रायश्चित्तैरपैत्येनोपदज्ञानकृतं भवेत् कामतो व्यवहार्यस्तुवचनादिहजायत इति याज्ञवल्क्यवचनेन बुद्धिपूर्वं ब्रह्मवधे प्रायश्चित्तेन व्यवहार्यतामात्रं नत्वेनसोऽपगमः ॥ नचैनसोऽनपगमेव्यवहार्यतापिन संभवतीतिवाच्यम् ॥ वचनादेवतादृशपातकिसंसर्गस्य दोषप्रयोजकत्वाऽभावकल्पनात् किंकिंविचनंनक्रुष्यात् नहिवचनस्यातिभारइतिन्यायात् स्पष्टंचैतन्मिताक्षराप्रभृतिनिबन्धेष्वित्याहुः अन्येतुप्रदर्शितवचनेऽव्यवहार्य इतिच्छेदः कामतइत्यस्य कामतः कृतमपीत्यर्थः तथाचकामतोब्राह्मणवधे प्रायश्चित्ताचरणेन नरकनिवृत्तावपि इहलोकेऽव्यवहार्योजायत

इतिपर्यवसितोर्थः वचनंत्वत्रमानवम्

अब व्यवहार्यता अर्थात् वर्तनभी नहीं होना चादिये (उत्तर) एहशंका मतकर क्योंकि वचनसे ही तैसेपातकीके संसर्गको दोषके प्रयोजकका अभाव कल्पनसे क्या क्या वचन नहीं करता अर्थात् वचन सबकुछ करता है क्योंकि वचनको कोई अतिभार नहीं इस न्यायसे स्पष्ट है एह मिताक्षरादि ग्रंथोंमें कहा है ॥ अब दूसरा मत कहते हैं और कामतो व्यवहार्यः इस वचनमें अव्यवहार्यः एह पदच्छेद करते हैं और कामतः इस पदका कामसेवी किया जो है एह अर्थ करते हैं तिस प्रकार कामसे जो ब्रह्महत्या है तिसविषे प्रायश्चित्तके करण करके नरककी निवृत्तिके होयां भी इस लोक विषे अव्यवहार्यता होती है अर्थात् नरकप्राप्तिका अभावभी होवे तदभी इस लोक विषे वर्तमान नहीं होता एह सिद्धांत अर्थ है इस विषे मनुजीका वचन है

९२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

सो कहतेहैं बालेनि बालकोंको मारणे वाले और कृतघ्न जो धर्मसे विशुद्धभीहैं कथांतु कृत प्रायश्चित्तभीहैं और जो शरणागत होवे तिसकों और स्त्रीयों मारें तिन्होंके साथ व्यवहार नहीं करना इति वहिद्व्यादि सूत्रोंमें भी ब्रह्ममीमांसा भाष्यादि बिस्वें भी अव्यवहार्यता आरूढहै और मिताक्षराकी व्याख्या इहां युक्त नहीं तिसके मतबिषे कामसे किया जो पाप सो नहीं दूहोता इस अर्थ करके तिसमें नष्टके आध्याहारका जो स्वीकार तिसकी आवश्यक ॥ करके गौरवापत्ति ॥ और कहतेहैं क्या हमारे व्याख्यानमें वचनादिहजायतेइति इसस्थानमें अव्यवहारके विषे अव्यवहारके कहणे वाले बालकों बालवान् इत्यादि मनुका वचन प्राप्तहोताहै और मिताक्षराव्याख्याके अनुसार व्यवहार

बालघ्नंश्चकृतघ्नंश्चविशुद्धानपिधर्मतःशरणागतहन्तृश्चस्त्रीहन्तृश्चनसंवसेदिति वहिस्तुभयथापिस्मृतेराचाराच्चेत्यधिकरणस्थब्रह्ममीमांसाभाष्यवाचस्पत्याचारूढंचाव्यवहार्यत्वम् मिताक्षराव्याख्यातुनाऽध्युक्तातन्मते कामतइत्यस्य कामतः कृतं नापैतीत्यर्थकतया तत्रनञोऽध्याहारस्वीकाररयावश्यकतया गौरवापत्तेः । किंचास्मदीयव्याख्याने वचनादिहजायतइत्यत्राव्यवहारसंवादिबालघ्नंश्चेत्यादिमनुबचनमुपलभ्यते नतुमिताक्षराव्याख्यानानुसारिव्यवहार्यत्वे किमपिवचनमुपलभ्यते ॥ किंचप्रायश्चित्तेरपैत्येनइत्यतः पूर्वस्मिन्महापातकजैर्घोरैरुपपातकजैस्तथा अश्वितायांत्यचारितप्रायश्चित्तानराधमाइति वचनेनाऽनाचरितप्रायश्चित्तानामेव नरकप्राप्तिर्वोध्यते यदिचकामकृतमहापातकस्य प्रायश्चित्ताचरणेऽपि नरकप्राप्तिः स्यात्तर्हि तद्विरोधः स्पष्टएव तस्मादशाहोर्ध्वस्नानमात्रमित्याशौचप्रकरणस्थमिताक्षरोक्तेर्माधवविरोधादुपेक्षावत् ॥

सो कोईभी वचन नहीं मिलसकता ॥ इसमें और भी कहतेहैं क्या (प्रायश्चित्तेरपैत्येनः) इस वाक्यसे पूर्वविषे जो वचनहै क्या महति घोर जो महापातक और उपपातक तिनोसे उत्पन्न जो पाप तिन करके युक्त जो पुत्रहैं और नहीं किया प्रायश्चित्त जिन्होंने सो मनुष्योंमें अव्यवहार्य हैं और नरकको प्राप्तहोतेहैं इति इसवचन करके नहीं किया प्रायश्चित्त जिन्होंने तिन्होंको नरकको प्राप्ति जाननी चाहिय इसमें औरभी वचनहै क्या कामधे किया जो महापातक तिसके प्रायश्चित्त करणे करके भी जेकर नरक प्राप्तिहोवे तंद तिसका विरोध बनाही रहा तिस कारणसे दशाद्व्यादि जो अशौचप्रकरणमें मिताक्षराका वचनहै सो माधवके विरोधसे उपेक्षाके तुल्यहै अर्थात् तिसप्रकार जिस जगत् माधव विरोधसे मिताक्षराकी उपेक्षाकीहै तैसेहीइस स्थानमें भीहै

पुराणेत्यादि वचनके विरोधसे प्रकृतभी व्याख्यान भिताक्षरकों त्यागणे योग्य है इसी कारणसे इसमें वाक्य कहते हैं यदिति जो पुरुष कामसे कदाचित् महापापको करे तिसकी निष्कृति अर्थात् प्रायश्चित्त पर्वतसे गिडकरके मरणसे वा अग्निमें पठकरके मरणसे बिना नहीं देखी इस वचन करके कामादिति इस वचनका तुल्य फल है जेकर दोनों वचनोंका तुल्य फल न मानिये तब दोष आवता है क्या (यः कामतः) इस वाक्यको परलोककी शुद्धिबोधकता है अर्थात् इस वचन करके परलोककी शुद्धि जानी जाती है और इस लोकमें व्यवहार नहीं होता और (कामात्) इस वचन करके इस लोककी शुद्धि जानी जाती है एह भिन्न अर्थ दोष है नेति (त्रीहिभिर्यजेत) इत्यादि वचनोंमें भिन्नफल नहीं देखा तिसकारणसे अव्यवहारही

पुराणप्रथित साक्षाद्भगवदवतार श्रीमदाचार्यभाष्यवाचस्पत्यादिविरोधात् प्रकृतमपि व्याख्यानमुपेक्षामेवार्हति अतएव यः कामतमहापापं नरः कुर्यात्कथंचन नतस्य निष्कृतिर्दृष्टाभृग्वग्निपतनादृते इति वचनेन कामात्तद्विगुणं भवेदिति वचनस्य समानफलकता भवति अन्यथा तस्य पारलौकिकशुद्धिबोधकत्वमस्य त्वैहिकशुद्धिबोधकत्वमिति वैरूप्यं स्यात् नहि त्रीहिभिर्यजेतयवैर्वेत्यादौ विभिन्नफलकत्वं दृष्टं तस्मादव्यवहार्यतैव विचारसहा नेतरेतिसंगिरन्ते ॥ अत्र ब्रूमः कृतद्विगुणप्रायश्चित्तानां महापातकिनां पातकनाशभावकल्पनमेव युक्तियुक्तं सतिहितनाशे तत्सं सर्गस्य पापजनकतायाः कथमपि वक्तुमशक्यत्वात् तथाहि चेतनविशेष गुणसामान्यस्य स्वसमभिव्याहृतचेतनान्तरसंक्रामित्वं तावदौत्सर्गिकं नियतम् प्रसिद्धमत्रान्वयव्यतिरेकानुविधानम्

विचारकों सहारता है और इतर जो है व्यवहार सो नहीं युक्तिको सहारता अर्थात् इस लोक में वचन नहीं होता एह कहते हैं ॥ इसमें श्रथकर्ता कथन करता है कृतेति किया है द्विगुण प्रायश्चित्तजिन महापापियोंने तिनके पापके नाशकी अभावकल्पना युक्ति करके युक्त है अर्थात् तिनके पापका नाश नहीं होता जेकर तिनके पापका नाश होवे तद तिनके संसर्गको कैसे पाप जनकता होवे अर्थात् तिनके संग करके पाप न होना चाहिये सो दिखाते हैं चेतनेति कोई चेतनभेद है तिसके गुणोंकी सामान्यता व्यवहार करणे करके और चेतनमें चली जाती है एह स्वभाव करके ही नियत है इस लोकमें प्रसिद्ध है यह अन्वय क्या मिलना और व्यतिरेक क्या पृथक् होजाणा इनका विधान

१४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

येति इच्छित वस्तुका वियोग और अनिच्छित वस्तुकी प्राप्ति तिसते उत्पन्न जो दुःख तिस करके बहुत लोकोंके रुदन करते होयों तादृश दुःखसे रहित वो कोई पुरुष तिस स्थानमें प्राप्तहुवा है सो तिनके साथही रुदन करता है और कोई खिन्नचित्तवाला भी अर्थात् शोककरके युक्तभी पुरुषज्ञानी पुरुषोंके साथस्थित हुवा हुवा सुखको प्राप्त होता है उदेति कोई पुरुषविषय भेदमें उदासीनभी है सो कामियोंके मंडलके साथ विचरता हुवा तिस विषय भेदकी अतिशय करके इच्छा करता है क्या है बहुत कथन करणे करके और कहते हैं जडबी जो शरीरादि हैं तिन विषे भी संसृष्ट क्या संगकरके शरीरके अंतर विचरण वाले रोग विशेषोंका संक्रमन क्या एकजगासे दूसरीजगा जाणा देखनेमें आवता है इस प्रकार गुणविशेष जो अधर्म तिसको अधिकारके संसर्गकों लोकसे

यद्वहुष्विष्टविशेषवियोगानिष्टविशेषप्राप्तिहेतुकदुःखेन रुदत्सु तादृश दुःख हेतुशून्योपि तत्रोपगतस्तैः सहैव रोदिति उद्वग्नमना अपि शांतैर्धीरैः सहासीनः सुखमुपलभते उदासीनोपि विषयविशेषे तत्कामुकमण्डली सहचरितस्तमेव विषयविशेषं निर्भरेण कामयते किं बहुना जडेष्वापि शरीरादिषु संसृष्टशरीरान्तरसंचारिरोगविशेषाणां संक्रमोदृश्यते इत्थंच संसर्गस्य लोकतः प्रसिद्धमेव विशेषगुणसंक्रांतिहेतुत्वं गुणविशेषमधर्ममाधिकृत्य संसर्गश्चापितैः सहेति प्रभृतिवचनजातेनावयुत्यानूद्यत इत्येव लाघवात् कल्पयितुं युक्तम् कृतप्रायश्चित्तापापसंसर्गोपि पापजनकत्वस्य विनैव पापसंक्रांतिं स्वातंत्र्येण पापजनकत्वस्य च तत्तद्वचनाभिप्रायविषयत्वकल्पनायां प्रसिद्धकार्यकारणभावाननुगृहीत पूर्वार्थं प्रतिपादकत्वप्रयुक्तं महदेव गौरवम् अतएव पतितैः संप्रयुक्तानामिमांशृणुतानिष्कृतिं योयेन पतितेनैषां संसर्गयातिमानवः १

असिद्धही है विशेष गुणकी प्राप्तिका कारण होना और संसर्गश्चापि इत्यादि वचनके समूह करके लोक प्रसिद्धका अनुवाद करीदा है लाघवर्थ एही कल्पना करणेको युक्त है ॥ और कथन करते हैं कृतेति किया है प्रायश्चित्त जिसने ऐसा जो अपापी तिसके संगके विषे वो पापके उत्पन्न करणे वाला जो संग तिसको पापसंक्रमसे विना और पाप जनकता स्वातंत्र्यता करके मानोगे और तिस २ वचनके अनिप्राय विषयकी कल्पना विषे प्रसिद्ध जो कार्य कारण भाव तिसका नहीं ग्रहण विषे जो नवीन अर्थ तिसके प्रतिपादन करणे विषे बहुत गौरव है इति ॥ इस कारणसे ही मनुजीने कहा है कि पापियोंके साथ संगकरणे वालोंके इस प्रायश्चित्तको श्रवण करो क्या इन संसर्गियोंके मध्यमें जो पुरुष जिसपापी करके संगको करता है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥ ९५

सूत्राति सो संगकरणेवाला पुरुष तिस संसर्गकी शुद्धीके वांस्ते तिस पापीके ही व्रतकों करे इति और कथन करतेहैं कि जिसके साथ संगकरे सोसंसर्गी तिसकेही व्रतकों करे एह जावालजीने तिस २ पापका प्रायश्चित्तही तिस २ संसर्गीकों कहाहै सो सभहमारे कहेहुवे अर्थसेही संगत होताहै (प्रश्न ? नन्विति कियाहै प्रायश्चित्त जिसपुरुषने तिसके संगकोंवी पापसंक्रांतिकी प्राप्ति क्यों न होवे अर्थात् उसकेभी संग करणे करके पापहोना चाहिये क्योंकि तुम्हारे मत विषे पापके सद्भावयें क्या उस जगा पापके विद्यमानहोणेंसं ? उत्तर ? रसायन भेदके उपयोगको रोग भेदकी संक्रांतिके प्रतिबंधककी न्यांई और ज्ञानादिकोंको दुःखादि संक्रांतिके प्रतिबंधककी न्यांई प्रायश्चित्ताचरणको पापसंक्रांतिके प्रति प्रति बंधकत्वकी कल्पनासं अर्थात् सो प्रायश्चित्त पापको दूसरे स्थानमे नहीं जानेदेता ऐसी कल्पना हो

सतस्यैवव्रतंकुर्व्यात्तत्संसर्गविशुद्धयेइतिमनुना ॥ संसर्गीयेनसंसर्गकुर्व्यात्तद्व्रतमाचरेदितिजाबालेनचतत्पापप्रायश्चित्तमेव तत्तत्संसर्गिणउक्तंसंछते। ननु। कृतप्रायश्चित्तसंसर्गस्यापि पापसंक्रान्त्युपधायकत्वं कस्मान्न स्यात् भवन्नयेपापस्यसंज्ञावादितिचेन्न ॥ रसायनविशेषोपयोगस्य रोगविशेषसंक्रांतिप्रतिबंधकत्ववदतिशयितविवेकवत्त्वादेर्दुःखादिसंक्रांतिप्रतिबन्धकत्ववच्च प्रायश्चित्ताचरणस्य पापसंक्रांतिप्रतिप्रतिबंधकत्वकल्पनात् ननु तत्तत्संक्रांतिप्रतितस्यतस्यविवेकादरनुगतानतिप्रसक्तस्यप्रतिबन्धकता वच्छेदकस्यासंभवेनप्रातिस्विकरूपेणैवप्रतिबंधकत्ववक्तव्यं ततश्च प्रकृतदुरितसंक्रांतिप्रायश्चित्ताचरणयोस्तादृशप्रतिबध्यप्रतिबंधकभावावच्छेदकानाक्रांततयाऽपूर्वैवप्रतिबध्यप्रतिबंधकभावोवचनबलादेवकल्पनीयस्तत्किंगौरवम् कृतप्रायश्चित्ताचरणस्यनिष्पापस्यापितस्यसंसर्गोपापजनकत्वकल्पनायामितिचेन्न ॥

सकवीहै नेति ॥ प्रश्न ॥ तिस २ संक्रांतिके प्रति तिस २ ज्ञानादिका अनुगतक्या सर्ववही एक जैसी गतिवाला और अनतिप्रसक्तक्या दोपरहित जोप्रतिबंधकतावच्छेदक तिसके अभावकरके अर्थात् तिसके न होनेसे एक २ केप्रति एक २ प्रतिबंधक कथन करणे योग्यहै तिस कारणसे प्रसंगमें प्राप्तहुया जो पाप तिसका संक्रमण और प्रायश्चित्तका आचरण तिनदोनों काजो तैसाहि प्रतिबध्य प्रतिबंधकभाव तिसके धर्म विशेष करके अनाक्रांतता करके अर्थात् तैसे अवच्छेदकके नहीणे करके नवीनही एक प्रतिबध्य प्रतिबंधकभाव वचनके बलसेही कल्पना करणे योग्यहै और कियाहै प्रायश्चित्तका आचरण जिसपुरुषने सो तिसकारणसे हो पापसे रहितहै तिसके संगविषे जो पापकी उत्पत्ति तिसकी कल्पना विषे क्या गौरवता है ॥ उत्तर ॥ जेकर ऐसे कथन करो तब मतकहो

१६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

भवेति क्योंकि तुम्हारे मतमें तैसा जो प्रायश्चित्तका आचरण तिसको पाप नाशकता और तैसा जो प्रायश्चित्तका आचरण तिस करके मिला हुआ जो नाश तिसके संसर्गविषे पापकी उत्पत्ति एहदो कल्पना आती है अस्मेति और हमारे मतमें तैसे प्रायश्चित्त आचरणका एकही संक्रांतिका प्रतिबंधक है इसलाघवको सुंदर कथन करणसे ॥ और औरभी कुछ कथन करते हैं किया है दिगुण प्रायश्चित्त जिसने इसकारणसे पाप रहित है तिसके संसर्गको तुमने क्या प्रायश्चित्त कल्पन करना है जेकर कथन करो कि जैसा प्रायश्चित्त पापीने किया है तैसा तिस ब्रह्मवधादि पापका प्रायश्चित्त तिस संसर्गको तीव्र पाद करणा उचित है एभी न बणसकेगा क्योंकि तैसे पाप करके युक्त जो पापी है अर्थात् ब्रह्मवधादि पाप करके युक्त जो पुरुष है तिसके देहमें संगकरण के समयमें पापके अभाव करके तैसे प्रायश्चित्तकी अप्राप्तिसँ अर्थात् संसर्ग समेमें वोह पुरुष

भवन्मते तादृश प्रायश्चित्त आचरणस्य पापनाशकत्वं तादृश प्रायश्चित्त आचरणविशिष्ट नाशस्य च संसर्गि पापजनकत्वमिति कल्पनाद्वयम् अस्माकं तु संक्रांतिप्रतिबंधकत्वमेकमेव तादृश प्रायश्चित्त आचरणस्येति लाघवस्य सुबुद्धव्यत्वात् किंच ॥ कृतद्विगुण प्रायश्चित्तानि पापसंसर्गिण किं प्रायश्चित्तं भवद्भिः कल्प्यतां तावद्यादृश पापानोदकं प्रायश्चित्तं तेनाचरितं तस्य ब्रह्मवधादेः पापस्यो न तु रीयांशम् तादृश पापवैशिष्ट्यस्य तस्याव्यक्तो संसर्गकालावच्छेदेनासत्त्वेन तादृश प्रायश्चित्तप्राप्तेः तत्पापोपलक्षितत्वस्य तादृश प्रायश्चित्तप्रयोजकतावच्छेदकत्वे भूत भविष्यत्कालवृत्तिनोऽमतिपूर्वकस्यापि पापस्य तत्प्रयोजकतावच्छेदकत्वापत्तेः ॥ भवन्नयेतदानीं तस्मिन् पुरुषे पापाभावेन पतितत्वस्य कथमपि वक्तुमशक्यतया यो येन पतितेनैषामित्यादि शास्त्रीय प्रायश्चित्तविधेरदृश्यतावच्छेदकाक्रांतत्वस्य तत्संसर्गिण कथमपि वक्तुमशक्यत्वात् ॥

शुद्धता तव तिस पापी के किये हुवे पापका पादोन प्रायश्चित्त कैसे आवेगा जेकर कथन करो कि तिस ब्रह्मवधादि पाप करके उपलक्षितत्वका तादृश प्रायश्चित्तकी प्रयोजकताके अवच्छेदकको स्वीकार करेंगे ऐसा मत कहो व्यतीत हुवा और आगेको होनेवाला बुद्धिकरके किया जो पाप तिसको भी तिस संसर्गो पुन्यको प्रयोजकताके अवच्छेदकको प्राप्तिसे अर्थात् भूत भविष्यत्पाप भी तिस प्रायश्चित्तमें प्रयोजक होणे चाहिये ॥ भवेति तुम्हारे मतमें तव तिस पुरुषमें पापके अभाव करके और पापको बहुत कष्ट करके भी न कथन करणे योग्यता करके और यो येन पतितेनैष इत्यादि शास्त्रमें होने वाली जो प्रायश्चित्त विधी है तिसका जो उद्देश्यतावच्छेदकत्व तिसकी आकांक्षेको तिस संसर्गके विषे बहुत कष्ट करके भी कथन करणेका न समर्थ होनासे अर्थात् पाप करणे वालेमें जब पाप न हुवा तो तिसके संसर्गमें कैसे कथन किया जावेगा

तदेतदितिस कारणे नयाहि प्रायश्चित्त अनुक्तन्यायकर्केक्या नहोकथनकियाजो न्याय तिसकरके
अर्थात् किसी नवीन रीतकरके कोई कल्पना करणयोग्यहै तब लौकिक और शास्त्रीयव्यवहार
काबहुत विरोध आवेगा(प्रश्न)हमकहतेहैं कि प्रायश्चित्त करके पापका नाश नहो अर्थात् पापरहै
तदभी तुम्हारे मतमे प्रायश्चित्ताचरणको और पुरुषकी संक्रांतिके प्रतिबंधककीन्याई अर्थात् और
पुरुषके प्रति जो पापसंक्रमण है तिसके प्रति प्रायश्चित्ताचरण प्रतिबंधकहै तिस तरां हमनें नरक
का प्रतिबंधक कल्पित करीदाहै और तिस पापका संक्रम क्या प्राप्ति और संसर्गो पुरुषमें
श्रंगीकार करीदाहै एह संपूर्ण दोषसे रहितहै (उत्तर) चेदिति हेवादिन् तिसका संसर्ग क्यों
वर्जने योग्यहै जेकर कहैं कि पाप कारण करके वर्जने योग्यहै तब कहतेहैं कि पापको किस

ततश्चापूर्वमेव प्रायश्चित्तमनुक्तन्यायेन किमपिकल्प्यम् तथाच महान्
लौकिक शास्त्रीयव्यवहारव्याकोपः। ननुअस्तुप्रायश्चित्तेनपापनाशाभाव
स्तथापिभवन्नयेप्रायश्चित्ताचरणस्यपुरुषांतरसंक्रांतिप्रतिबन्धकत्ववदस्मा
भिर्नरकंप्रत्येवप्रतिबन्धकत्वंकल्प्यते स्वीक्रियतेच तस्यसंसर्गाणिपुरुषांतरे
संक्रमइतिसर्वमवदातामिति चेत् हन्तभोस्तत्संसर्गस्यकिमिति वर्जनीयत्वं
स्यात् पापहेतुत्वेनेतिचेत् पापस्यापिकेनहेतुनावर्जनीयत्वं यतस्तदनर्थं
प्रसोप्यतीतिचेन्नहि मूलैव प्रायश्चित्ताचरणेनपण्डापूर्वतांप्राप्तस्य
तस्यान्यत्रापि तादृशस्यैवसंक्रांतस्य नरकोत्पादकतायाअसंभवात् अ
तोऽन्यदेवस्वतंत्रंकिमपिदुरितमुत्पद्यतइतिवक्तव्यम् ततश्चपुनरायातः प्र
दर्शितदूषणगणग्रासइतिनाकिंचिदेतत्॥अपिच यः कामतोमहापापं नरः
कुर्व्यात्कथंचन नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टाभृग्वग्निपतनादृते इत्यनेन कामतः
कृतस्यमहापापस्य निष्कृतिः प्राणांतप्रायश्चित्तेतरेणप्रायश्चित्तेननसं

भवतीतिस्पष्टप्रतिपाद्यते ॥

हेतुसें वर्जनीयताहै यदि ? यतस्तदनर्थंप्रसोप्यति ? सोपाप अनर्थको करताहै इस वाक्य कर-
के वर्जने योग्यहै तद मत कहो क्योंकि मूलमेंही कहाहै प्रायश्चित्तके करणे करके बुद्धिरूप
अपूर्वताको प्राप्तहोकरहा जो पाप तिसको और स्थानमें जाणेको भी तैसेही रहणा संभावित-
है तिसमें नरक प्रांतिका असंभव होणेंइसमें एह कहो औरही कोई स्वतंत्र पाप उत्पन्न हो-
वेगा तब पूर्व दिखायाजो दूषण समूहथा सो प्राप्तहुवा यह अच्छानहीं ॐ अब और कुछ कथन
करतेहैं यइति जोपुरुष कर्मना करके महापाप करे तिसकी निष्कृति क्या शुद्धि भृग्वग्निप-
तनसें बिना क्या हिमालय समीप विषे मरणके अर्थ गिडनेके बिना नहींदेखी अर्थात् मरणांत
प्रायश्चित्त करके ही तिसकी शुद्धिहै और प्रायश्चित्त करके नहीं होती एह प्रकट प्रतिपादन कियाहै

१८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

निष्कृतिरिति निष्कृति पदकरके इस स्थानमें पापकानाश ग्रहण कणा क्योंकि औरके असंभव होनेयें तिसका एव द्विगुण प्रायश्चित्तकों तिसके नाशविषे कल्पनमें (नतस्येत्यादि) जो विरोध सो प्रकटही बना रहा है जेकर ऐसे कथन करो कि (भृग्वग्निपतन) इस पद करके द्विगुण प्रायश्चित्तभी लक्षित होता है तब तिस पापके नाशकर्के संभावना करीदे जो संपूर्ण प्रायश्चित्त है सो भी तुल्य न्यायसे उपलक्षण किये जायेंगे तब फेर तिसमें त्यागणे योग्य क्या शेषरहा अर्थात् त्यागणे वाला कोई प्रायश्चित्तका अंश न रहा जिस अंश करके (नतस्येत्यादि) पदकी सार्थक्यता होवे तुम्हारे मतमें भी विरोध बनाही रहता है इसमें कहतेहां क्या हमारे मतमें द्विगुण जो प्रायश्चित्ताचरण है सो प्रसंगमें पापके संक्रमका जो नाश तिसका प्रयोजक है अर्थात् पापके संक्रमको दूर करता है क्या दूसरीजगा संसर्गसे पापको नहीं जाणवेता और पापके नाशका प्रयो.

निष्कृतिश्चात्रनाशः अन्यस्यासंभवात् ततश्च द्विगुणप्रायश्चित्तस्य तन्नाशकत्वकल्पनेन तस्येत्यादिविरोधः स्पष्ट एव • अथोच्येत भृग्वग्निपतनपदेन द्विगुणप्रायश्चित्तमप्युपलक्ष्यत इति तर्हितपापनाशकत्वेन संभाव्यमाना निसर्वा एव तुल्यन्यायादुपलक्षणीयानि स्युरिति किमवशिष्यते तत्रव्युदसनीयं येन नतस्येत्यादेः सार्थक्यं स्यात् अस्माकं द्विगुणप्रायश्चित्ताचरणं प्रकृते पापसंक्रमाभावमात्रप्रयोजकं न तु पापनाशप्रयोजकमिति न तद्विरोधगंधोपि ॥ एतेनाव्यवहार्य इतिच्छेदे वचनादिहेत्यत्रवचनं बालघ्नांश्चेत्यादि मानवमुपलभ्यते व्यवहार्य इतिच्छेदे तु न किमपीति परास्तं व्यवहार्यतायां विहितं यदकामानां कामात्तद्विगुणं भवेदित्यस्यैव वचनस्य सद्भावात् । ननु इदं पापसामान्यविषयकं न तु महापापान्यत्र प्रातिस्विकरूपेण निर्दिश्यते इति चेद्बालघ्नांश्चेत्यत्रापि क्व निर्दिश्यते प्रत्युताऽत्र सामान्यधर्मपुरस्कारेण निर्देशाद्वाच्यवृत्तैव तानि प्रतिपाद्यते

एक नहीं इस कारणमें तिसमें विरोधका गंधभी नहीं अर्थात् विरोधका नाश भी नहीं इस करके (अव्यवहार्यः) ऐसे पदच्छेदमें (वचनादिह) इसमें वचन ? बालघ्नांश्चेति ? इत्यादि मनुका वचन देखीदा है और व्यवहार्यः ऐसे पदच्छेदमें से कुछ भी नहीं एह कहने वालोंका मत परास्त हुवा क्या अनाहत हुवा और ? व्यवहार्यता ? इस पदमें ! विहितं यदकामानां इस वचनके सद्भावहोनेसे अर्थात् व्यवहार्यतामें एह वचन प्रमाण है ; प्रश्न ! क्या विहितं यदकामानां एहजो वाक्य है सो संपूर्ण पापोंके प्रति है कोई इस वचनमें एक २ करके महापाप नहीं दिखाईदे जेकर एह कहो तो हम कहतेहां कि ! बालघ्नान् ? इस विषे भी महापाप कित्थे दिखाए है सगो विहितं यदकामानां इस वचनमें सामान्यधर्मको मुख्य जाण करके दिखाणेसे अक्षरार्थ करकेही सो महापाप प्रतिपादन करीदे हैं

एतेति अर बालघ्नान् इस वचनमें बी किसीके भी महापापके न दिखाने करके किसीक प्रकारसे उपलक्षण भाव कर्के महापापपर ल्याओगे तो परम जघन्य वृत्तिकर्के क्या गौणीवृत्तिकर्के क्या अत्यंत न्यूनवृत्तिकर्के तुम्हारे मतमें एह वाक्य विप्रकृष्ट है अर्थात् एह वचन अत्यंत दूर है अर कामतोद्विगुणप्रोक्तं पूर्वेपुचयदुच्यते एह केशव वैजयंती नाम ग्रंथमें नंदपंडितने लिखा है जो व्यासजीका वचन तिसकरके महापाप परायण पूर्वपद लब्धोदाह है इसका अर्थ एह है कि कामसे दूणा प्रायश्चित्त है जो पहिले पापोंधिप कहा है सो इनका अभिप्राय है कि प्रथम इसस्थानमें महापाप है इससे विहितं यदकामानां एह वचन महापापपर हुवा किंचिद्वि कुल श्रीरभी कहतेहैं स्मृति घटक जो एह वचन है इस जगा वचनात् इसका अर्थ वेदवचनात् एही है कोई स्मृति वचनात् ऐसा नहीं क्योंकि स्मृतियोंको वेदमूलकत्व कर्के ही

बालघ्नांश्चेत्यत्रनुकस्थापिमहापापस्यानिर्देशेन कथंचिदुपलक्षणभावेन परमजघन्ययानृत्येत्यतीवविप्रकृष्टवचनमिदं भवन्नये कामतोद्विगुणं प्रोक्तं पूर्वेपुचयदुच्यते इतिकेशववैजयंत्यां नंदपंडितधृतव्यासवचनेन महापापपरं पूर्वपदमपलभ्यतेपि किंच स्मृतिघटकस्यास्य वचनादित्यस्य वेदवचनादित्येवार्थो न तु स्मृतिवचनादिति स्मृतीनां वेदमूलकत्वेनैव प्रामाण्यात् ततश्च वचनोपलंभोपि नातीवात्रोपयुज्यते ॥ वस्तुतस्तु ॥ बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्चेत्यादिवचनमकामतः कामतोवाकृतैतच्चतुष्टयान्यतमपापकेन सहसंसर्गं प्रतिषेधतीत्येव युक्तम् कामत इत्यनुपक्रमात् एनस्विभिरनिर्णयैर्नार्थिकंचित्सहाचरेत् कृतनिर्णयजनांश्चेवन जुगुप्सेत कर्हिंचिदिति पापिसामान्यस्यैवोपक्रमात्

प्रामाण्यहोषेसे तिसथे ऐसा प्रतीत हुवा कि इस वचनका भी लब्धना कोई बहुत उपयोगी क्या 'बडा' सहायक नहीं है विचार करके देखिये तो बालघ्नांश्च इत्यादि जो वचन है सो अकामसे अथवा कामसे किसे हुवे जो एह चार पाप अर्थात् बालघ्न १ कृतघ्न २ स्त्रीघ्न ३ सुहृद्घ्न ४ इनमेंसे कोई एक पापीके साथ भी संसर्गको निषेध करता है इसका एही अर्थ यथार्थ है कामत इसका प्रकरण नहीं होषेसे किंतु एनस्विभिरिति जिनोंने प्रायश्चित्त न किया तिनो पापियोंके साथ कुछ भी अर्थ न करे अर्थात् कोई व्यवहार भी न करे और कृतनिर्णयजकान् क्या जिनोंने प्रायश्चित्त किया है तिनके साथ न जुगुप्सेत क्या चित्तमें कभी भी ग्लानि न करे एह जो पापीका सामान्य संसर्ग है इसीके निषेधका प्रकरण होषेसे

१०० ॥ श्रीरणवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

विष्णुस्मृति विष्णुस्मृतिके भाष्यविषे और केशव वैजयंती नाम ग्रंथविषे भी पूर्वोक्त चार पापियोंके विषयमें ही इस कर्के वाचनिक संसर्गका प्रतिषेध है एही व्यवस्था कण्ठसे एह जानने योग्य है यदिति जो कथन करीदा है कि मित्राक्षरके व्याख्यानविषे कामत इसस्थानमें नत्र जो निषेध वाचक अव्यय है तिसके अध्याहारकरके किया हुआ गौरव है इसमें हम कहते हैं कि इसमें नत्र के अध्याहारकी शंका भी नहीं है (तथाहि) सो दिखाते हैं जो निषेध हैं सो अपनी सफलताके वास्ते निषेधके प्राप्तिकी इच्छा करते हैं सो प्राप्ति धर्माधर्मकी है तिनको अलौकिक होनेसे प्रसंग विषे केवल शास्त्र ही तिसके जनाने वाला है अर्थात् शास्त्रको ही तिसके जीवनकी

विष्णुस्मृतिभाष्ये केशववैजयंत्यामपि पापचतुष्टयमात्रविषयकोयंवाचनिकः संसर्गप्रतिषेधइत्येवव्यवस्थापनाच्चेतिवोध्यम् ॥ यदुच्यते मिताक्षराकारव्याख्याने ॥ कामतइत्यत्र नत्रध्याहारप्रयुक्तं गौरवमिति तत्प्रत्युच्यते नात्रनत्रोऽध्याहारस्य शंकापिसंभवमर्हति तथाहि प्रतिषेधाहिस्वसाफल्यायावश्यंप्रतिषेध्यप्राप्तिमपेक्षते प्राप्तिश्च धर्माधर्मयोरलौकिकत्वात्प्रकृते शास्त्रैकप्राणिता वाच्या शास्त्रतु प्रायश्चित्तैरपैत्येनइतिश्लोकार्धमज्ञानकृतत्वेनैव दुरितं विषयीकरोति न ज्ञानकृतम् इत्थंच प्रकृतप्रतिषेध्यस्य प्रापकप्रमाणेद्देश्यतावच्छेदकस्पर्शस्याप्यसंभवे न केन हेतुना भावत्क गौरवोद्भावनमात्रप्रयोजनकं नत्रध्याहारं मिताक्षराकारउररीकुर्यात् प्रत्युत भवद्भिरेव कामतइति कामतःकृतमपीत्यर्थकतया व्याचक्षाणैरपिशब्दस्याध्याहारः पूर्ववाक्यघटकस्य प्रायश्चित्तैरपैत्येनइत्यस्याध्याहारविशेषात्माऽनुपगः

कारणता है और सो शास्त्र प्रायश्चित्तैः इत्यादि अर्थश्लोक है सो अज्ञान करके किये हुवे पापको विषय करता है ज्ञानमें किये हुवेकों नहीं इस प्रकार प्रसंग विषे प्रतिषेध्यके योग्यकी प्राप्ति करण वाले प्रमाणका स्पर्श भी नहीं है तो किस हेतु कर्के जिसको तुमलोक गौरव तर्कमात्र प्रयोजन वाले नत्रके अध्याहारको कहते हो तिसको मिताक्षराकार अंगीकारकरे सगों तुसने कामतः इस जगा ? कामतः कृतमपि ? इस अर्थके कारण वालोंने अपिशब्दका अध्याहार किया है और जब कृतमपि ऐसा कहा तब पूर्व वाक्य जो है प्रायश्चित्तैरपैत्येन इत्यादि इसका भी अध्याहार विशेष होवेगा ॥

॥ श्रीरक्षवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥ १०१

सो मितक्षराकारका व्याख्यानयह है (प्रायश्चित्तचेर्वक्ष्यमाणैरज्ञानाद्यदेनः पापं कृतं तदपैति गच्छति न कामाः कृतम् किंतु तत्र प्रायश्चित्त विधानाय कवचनवलादिह लोके व्यवहार्यो जायते) पूर्वति और पाहिले वाक्यमें उद्देश्यतावच्छेदक अर्थात् प्रथम स्वीकृत की इच्छा का विषय अज्ञान कृतत्व तिसकी अपेक्षा कर्के कामतः कृतत्वका असंत विरोधी होणे कर्के अर्थात् कामतः कृतत्व कर्के उद्देश्यताके भेदसे विधेयका भेद १ और वाक्यभेद ४ और व्यवहार्य इस जगानत्रका प्रश्लेष ५ इत्यादि मितक्षराके अनुसारियोंने उठाया जो तुम्हारे व्याख्यान विषे गौरवका गण सो किस प्रकार प्रयाख्यात होवे अर्थात् हटाया जावेगा इसमें कुछ और भी कहते हैं जेकर कामकृत पापका भी प्रायश्चित्त करके नाश होता है तद योगीश्वरजीने यद ज्ञानकृतं भवेत् इसको न कहकर सामान्यसेही दोनों प्रकारका क्या कामकृत और अकामकृतका संग्रह करणया सो किसवास्ते मुनियज्ञवल्क्यजी दोपक्ष करके निर्देश करते भये ऐसे पूछेहुवे क्या कहोंगे

पूर्ववाक्यायोद्देश्यतावच्छेदका ज्ञानकृतत्वापेक्षया कामतः कृतत्वस्यात्यंत विरुद्धत्वेन तदवच्छिन्नोद्देश्यताभेदाद्विधेयभेदो अथच वाक्यभेदो व्यवहार्य इत्यत्र नञः प्रश्लेष इत्यादि मितक्षरानुसारिभिरुद्भाव्यमानो भवद्व्याख्याने गौरवगणः कथं प्रत्याख्यायताम् कामतः कृतस्यापि प्रायश्चित्तेन नाशे योगीश्वरेण यदज्ञानकृतं भवेदित्यनुक्तैव सामान्यरूपेणैवोभयसंग्राह्यमासीत् किमर्थं मुनिः कोटिद्वयपुरस्कारेण निरदिशदिति पर्यनुयुक्तैश्च किमुच्यताम् अस्माभिस्तु न तस्य निष्कृतिरित्याद्युदाहृतवचनानुरोधेन प्रकृतवचनमज्ञानकृतस्य पापस्य नाशः प्रायश्चित्ताचरणेन जीवच्छरीरा विरोधेन भवति कामतः कृते तु इह व्यवहार्यतावचनाद्भवतीति व्याख्यायत इतिसकलमकलंकम् यदपि महापातकजैर्घोरैरित्यादि पूर्ववचनेनानाचरित प्रायश्चित्तानामेव नरकप्राप्तिर्बोध्यते कामकृते कृतप्रायश्चित्तस्यापि

नरक स्वीकारे तद्विरोधः स्पष्ट एवेति ॥

असाविचारकरणा चाहिये ॐ अब अपना मत कहते हैं अस्माभिरिति हमने (नतरस्य निष्कृतिरित्यादि) कथित वचने की अनुसारतासे प्रकृत वचनक्या प्रायश्चित्तः इत्यादि जो वचन है सो अज्ञानकृत पापका नाश प्रायश्चित्तके करणे करके जीवते शरीरके अवरोधकरके होता है अर्थात् प्रायश्चित्तके कियेहोये सुख पूर्वक बोह रहे और कामकृत पापके होया प्रायश्चित्तकर्के लोकोंके साथ व्यवहार मात्रही वचनसे होता है कोई पापनाश नहीं होता ऐसा ध्याख्यान करीदा है इसमें सभं कलंकहीन है ॥ अब और विचार कर्ते हैं यदपि (महापातकजैर्घोरैरित्यादि प्राप्यदारुणान्) इत्यादि वचन करके नहीं किया प्रायश्चित्त जिनोंने तिनकोही नरक प्राप्तिही है और कामकृत पापविषे कृत प्रायश्चित्तकोभी अर्थात् जिसने प्रायश्चित्त किया भी है तिसको नरक स्वीकार कीते होया तिसके साथ विरोध स्पष्टही होवेगा

१०२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

तत्रेति तिसमें एह विचार है कि जो पापी हैं और प्रायश्चित्त नहीं कर चुके सो नरक को जाते हैं और प्रायश्चित्त करनेवाले नहीं जाते इस जगत् प्रायश्चित्त पदक के जो कोई जिस किस प्रायश्चित्त को करे तदनुशुद्ध होता है ऐसा नहीं कह सकते हैं कि इसके स्वीकार कीये होया ब्राह्मण मारणवाले को पलांडुभक्षणका प्रायश्चित्त करणसे भी नरक न होना चाहिये किंतु क्या है कि जैसा पाप नाशकत्व करके जो प्रायश्चित्त कहा है तिसका आचरण न होवे तब तिस पापसे प्रेरित हुआ नरक होता है ऐसा व्याख्या करणी चाहिये इस पापका नाशक क्या नाशकरणे वाला भृग्वग्निपतन क्या बदरिकाश्रमके समीप हिमालय विषे गिडना और तिसी स्थान अग्निविषे गिडना एह मरणान्त प्रायश्चित्त है सो (नतस्य निष्कृतिः) इस वचन करके जसाया है तांते तिसके नाशकत्व करके नहीं किया केवल इस जगत् मे व्यवहारमात्रका सहायक जो दूणा प्रायश्चित्त तिसके होया नरक प्रातिकी व्यवस्था में कौणसा विरोध है अर्थात् कोई नहीं जिस करके तादृश प्रायश्चित्त ओह नहीं है प्रत्युतेति सगो तिसपापका नहीं नाशक जो द्विगुण प्रायश्चित्त

तत्रेदं विचार्यताम् दुरितैरन्विता अकृत प्रायश्चित्तानरकं यान्तीत्यत्र प्रायश्चित्तपदेन यत् किमपि प्रायश्चित्तं विवक्षितुमशक्यम् तथा सति ब्रह्मघ्नः कृतपलांडुभक्षणप्रायश्चित्तस्य नरकबोधकत्वानुपपत्तेः किंतु यादृशपापनाशकत्वेन यत्प्रायश्चित्तं विहितं तदाचरणकर्तृत्वाभाववतस्तत्पापप्रयोज्यो नरको भवतीति व्याख्येयम् प्रकृत पापस्य तु भृग्वग्निपतनमेव नाशकमिति न तस्य निष्कृतिरित्यादिना बोधितमिति तन्नाशकत्वेनाविहिते केवलमैहिक व्यवहारमात्रोपयोगिनि द्विगुणप्रायश्चित्ते कृतेपि नरकप्राप्तौ व्यवस्थाप्यमानायां कस्तद्विरोधः प्रत्युत तत्पापानाशकद्विगुणप्रायश्चित्तमाचरितवतो नरकाभावं कल्पयतां भवतामेतद्विरोधः किंचेदं वाक्यं कृतदुस्मिन्नाकृतप्रायश्चित्तानुद्दिश्य नरकप्राप्तिविधत्ते तत्रोद्दिश्यतावच्छेदकावच्छेदेन विधेयान्वयस्वीकारेपि तादृशोद्दिश्यवृत्तिर्विधेयभूतनरकप्राप्त्यभावएव व्युदसनीयोनतूद्दिश्यतावच्छेदकाभावसमानाधिकरणविधेयमापि तस्य वाच्यमर्थादयाऽलाभात्

स तिसके करणवाले को जो नरक नहीं है ऐसा कल्पना करण वाले तुमको ही तिसके साथ विरोध प्राप्त भया ॐ अब और विचार है किंचेति (महापातकजैवैरैः) एह वाक्य किया है पाप जिन्होंने और पीछे प्रायश्चित्त नहीं किया तिनका उद्देश करके अर्थात् तिनके नाम पर नरक प्रातिकी कहता है सो तिसविषे उद्देश्यता जो कृतदुस्मिन् अकृत प्रायश्चित्तत्व है तिसके अवच्छेदक करके क्या जिस २ स्थान एह पूर्वोक्त होवेगा उसी स्थान नरक भी होवेगा इस अन्वयके स्वीकार कीते होया भी सो जो है कृतपाप अकृत प्रायश्चित्त तिस विषे नरक प्रातिकी अभाव दूर करण है अर्थात् नरकस्थापन करण है और उद्देश्यतावच्छेदक है कृतपाप अकृत प्रायश्चित्तत्व सो जिस जगत् नहीं है अर्थात् कृतपाप कृत प्रायश्चित्तत्व है तिस जगत् विधेय क्या नरक नहीं है ऐसा कहना उचित नहीं क्योंकि तिस अर्थका वाच्यमर्थादाकर्के नहीं लाभ होनेसे

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥ १०३

किंतु मर्गों (नतस्य निष्कृति) इत्यादि वचनके साथ विरोध आवेगा इसमें तुल्यफलका बाधाही है।
एह एक २ पदमें कहचुकेहैं अकामकृत पापकी जगा प्रायश्चित्तसे पापकियां पूर्वोक्त दोनों शक्तियां दूरहोतीयाहैं और कामकृतके स्थलविषे तैसे द्विगुण प्रायश्चित्तसे एकही दूरहोती है बुल्य फल कैसेहोवे ॥ विषयांतर दिखाकरके खंडन करतेहैं यत्त्विति जोव्यवहार्य अर्थविषे ब्रह्ममीमांसा भाष्यका विरोध कैयोंने दिखायाहै सो बहुतशीघ्रतासेहै अर्थात् यथार्थ नहीं सो कथन करीदा है इत्थं हि असाहै वहिस्तू इत्यादि सूत्रविषे श्रीमदाचार्यजीका भाष्य तिस भाष्यको कहतेहैं यदीति जद ऊर्ध्वरेताओंकी अर्थात् संन्यासियोंकी अपणे आश्रमसे प्रच्युति होवे वा उपपातक होवे तद दोनों प्रकारसे शिष्टोंने सो बाहर करणे चाहिये (श्लोक अरूढइति) नैष्ठिक धर्मजो संन्यासहै तिसको आरूढ होकर फेर तिससे जो हटजावे तिसके प्रायश्चित्तको मैं नहीं देखता जिसकरके सो शुद्ध होवे अर्थात् तिसका कोई प्रायश्चित्त नहीं एह स्मृतिकारकथन कर

प्रत्युत नतस्य निष्कृतिरित्यादिविरोधाद्वाधितमेवेत्यनुपदमेवोपपादितम् यच्च ॥ व्यवहार्यत्वे ब्रह्ममीमांसाभाष्य विरोधोद्भावनं तद्रभसात् इत्थं हि वहिस्तूभयथापि स्मृते राक्षराच्चेति सूत्रे श्री ६ मदाचार्यभाष्यम् यद्यर्ध्वरेतसां स्वाश्रमेभ्यः प्रच्यवनं महापातकं यदिवोपपातकमुभयथापि शिष्टैस्तेवहिष्कृतेष्व्याः आरूढो नैष्ठिकधर्मं यस्तु प्रच्यवते पुनः प्रायश्चित्तं न पश्यामि येन शुद्धेत्स आत्महा इति १ आरूढपतितं विप्रं मंडलाच्च विनिःसृतं उद्वहकृमिदं च स्पृष्ट्वा चांद्रायणं चरेदिति च २ एवमादिनिंदातिशयस्मृतिभ्यः शिष्टाचाराच्च न हि यज्ञाध्ययनविवाहादीनि तैः सहाचरंति शिष्टा इति अत्र ते तैरित्याभ्यामूर्ध्वरेतस एव प्रतिपाद्यंते इति स्पष्टमेव उपक्रमाच्च इत्थंचैतत्संदर्भगतभाष्यग्रंथीयेन केनाप्यंशेन सार्धं मिताक्षराग्रंथस्य न विरोध गंधसंभावनापीति केयं विभीषिका पुराणप्रथितसाक्षाद्भगवदवतारश्रीमदाचार्यभाष्यविरोधारोपरूपा

नहि (और स्मृतिवचनहै) आरूढेति आरूढ होकर पतित हुआ जो ब्राह्मणहै और मंडलसे क्या अपणे जातिके समूहसे जो निकला होवे अथवा मंडल नाम १०० योजन देशकाहै तिस से किसे दूषणये निकला होवे और फांसी लगा होवे और कीड़े करके दष्ट होवे इसको स्पर्श करके चांद्रायण व्रतकरे इत्यादि निंदा करण वालियां स्मृतियोंसे और शिष्टाचारसे भी तिन पूर्वोक्तोंके साथ यज्ञाध्ययन विवाहादि सत्पुरुष नहीं करते इस भाष्यविषे (ते तैः) इन दोनों पदों करके ऊर्ध्वरेता पूर्वोक्त संन्यासीही कहीदेहैं एह बात स्पष्टहै और प्रकरणभी संन्यासियोंका हीहै इससे यह प्रतीत हुआ कि इस पूर्वोक्त भाष्यविषे एही दो (ते तैः) ग्रंथीहैं सो उनमेंसे किसे अंशके साथ भी मिताक्षराका विरोध नहीं क्योंकि एह संन्यासि परहै और वोह कामकृत महापापी कोई होवे उस परहै सो मिताक्षरा साथ विरोध गंधकी संभावना भी नहीं इस करके कौन भयहै जो पुराणों विषे प्रसिद्ध साक्षात् भगवान्का अवतार श्रीमदाचार्यतिनके साथ विरोध रूप होवे

१०४ ॥ श्रीरणवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

और तैसें शाब्दबोध बिषे तिस वाक्यकी व्युत्पत्तिके अभावहोणेसे और प्रकृत वाक्य जो है काम तो व्यवहार्यस्तु। इसके अर्थके बनानेवाला जो अर्थ तिसकी शत्रुरूपता कर्के जिहोनिं प्रायश्चित्तके या है तिनहो बिषे नरकके अभावका आक्षेपक्या नरकहोणा किसी बाधकके नहोणेसे पाक्षिक है क्या किसी स्थानमें है और किसी स्थानमें नहिं है सो प्रसंग बिषे बाधकके होयां किस प्रकार अवकाशकों प्राप्त होवे अर्थात् इसमें विकल्प नहीं? दृष्टान्त? नहींति जैसे अपक आम्रफल खड़ाही होता है इस वचनके कथनकीतेयां होयां और पक्काहुवा खटानहीं है अतानहीं कहा जाता है सो और जगा प्रायश्चित्तवाला नरक नहीं जाता और कामनाके स्थान मरणान्त प्रायश्चित्तके विना नरकको प्राप्त होता है ॥ अब और विचार करते हैं यद्यपि भृग्वग्नि विषे पड़ना और द्विगुण प्रायश्चित्त करणाइनदोनोंका अव्यवहार्यरूप एकही फल है इसके अनुरोधसे व्यवस्था करणेको इच्छा करो तो सोभी

तादृश बोधेन वाक्यस्य व्युत्पत्तिविरहाच्च प्रकृतवाक्यार्थघटकार्थप्रतिद्वंद्विभावे न कृतप्रायश्चित्तपुनरकाभावाक्षेपोऽपि बाधकविरहापेक्षत्वात् पाक्षिक इति प्रकृतसति बाधके कथमवकाशं लभेत न ह्यपकोरसालोऽम्लो भवत्येवेत्युक्ते पक्वोऽम्लो नैव भवतीति शक्यते प्रतिपत्नुमिति यदपि भृग्वग्निपतनाद्विगुणप्रायश्चित्तयोः समानफलकत्वानुरोधेनाव्यवहार्यत्वव्यवस्थापयितुमिष्यते तदपि न समं चीनं ब्रीहिभिर्यवैर्वेत्यादौ हि विभिन्नफलकत्वकल्पने ब्रीहियागेन स्वर्गभावयेद्यवयागेन प्रजाभावयेदित्यादिशाब्दबोधे सकृत् श्रुतनयजत्युत्तरलिङ्गा तादृशभावनाद्वयबोधानुपपत्त्या वाक्यभेदापत्तिरितिसमानफलकत्वमावश्यकम् परं यत्र हवनीयद्रव्यप्रतिपादकानि नानैव वाक्यानि तत्र विभिन्नफलकत्वे कादोषः समानफलकत्वे कावा वाचोयुक्तिः यथा दध्नेन्द्रियकामस्य आज्येन जुहुयात्तेजस्कामस्येत्यादौ इत्थंच प्रकृते तयोः प्रायश्चित्तयोः समानवाक्यप्रतिपादितत्वाभावेन समानफलकत्वं नावश्यकम् ॥

अच्छीनहीं ब्रीहीति ब्रीहि करके क्या धान्योंकरके अथवा यवों करके यज्ञकरे इस वाक्यमें पृथक् २ फल कल्पना होवे ब्रीहि याग कर्के स्वर्गकी भावना और यवयाग कर्के पुत्रकी भावनाकरे इस शाब्दबोध बिषे एक वार श्रवण कराया जो है यज धातुके उत्तर लिङ् लकार तिस कर्के तैसी भावना दोनके बोधकी अनुपपत्ति कर्के वाक्य भेद दोष होवेगा इससे समान फलकत्व क्या एकही फलकी कल्पना अवश्य कर्के हुई परंतु जिस जगा हवनीय द्रव्यके कहने वाले बहुत वाक्य होवें उस जगा भिन्न २ फल माननेमें कौन दोष है और समानफलकत्व बिषे कौनसी वाणीकी युक्ति है जैसे दधी कर्के इंद्रिय कामना वालेका और आज्य करके तेजकी कामना वाले का हवन होवे इत्यादि स्थल बिषे अब कहते हैं कि इसी तरां प्रकृत बिषे क्या कामाकाम कृत पाप के प्रायश्चित्त बिषे तिन दोनों प्रायश्चित्तोंको तुल्य वाक्य कर्के प्रति पादनके नहोणेसे एकही फल नहीं होसकता

(प्रश्न) अयेति वाचस्पति और कल्पतरु के विरोधसे मिताक्षराको अप्रामाण्य आवेगा जिससे मिताक्षरामें अर्थ है कि कामकृत पाप नहीं निवृत्त होता व्यवहार्यताहि होती है और इनके मत विषे कामकृत भी पाप प्रायश्चित्तसे दूर होता है ? उत्तर ! अब इसमें हम कहते हैं कि मिताक्षराके विरोधसे वाचस्पति और कल्पतरुको अप्रामाण्य क्यों नहीं होवे तुल्य युक्ति है और इनकी अप्रामाण्यताविषे भी एक युक्ति है कि एहदोनो ब्रह्मविचारके लिये प्रवृत्त हुवेये सो तिस अंशमें क्या ब्रह्मके निरूपणमें उनका उत्कर्ष हो परंतु जिसमें मिताक्षराकार प्रवृत्त होएँ सो धर्मशास्त्र है और एही प्रस्तुत है क्या प्रसंगमै है इसमें मिताक्षराकारको प्रामाण्य और तिनको अप्रामाण्य ठचित है धर्म निरूपणके उद्देशकरके प्रवृत्तको प्राप्ततमहोसे कया उनसे श्रेष्ठ होएँगे इसमें भी

अथ वाचस्पतिकल्पतरु विरोधान्मिताक्षरायाश्चेदप्रामाण्यं तर्हि मिताक्षरा विरोधाद्वाचस्पतिकल्पतर्वोरेवाऽप्रामाण्यं कस्मान्न स्यात् युक्तं तु तयोरेवाऽप्रामाण्यम् तयोर्ब्रह्मविचारार्थं प्रवृत्तयोस्तदंशे प्राप्ततमत्वेऽपि प्रकृतविषये तद् ग्रंथस्य प्रासंगिकत्वान्मिताक्षराकारस्य तु धर्मविचारमात्रोद्देशेन प्रवृत्तस्यैवा प्राप्ततमत्वात् यत्परः शब्दः स शब्दार्थ इति न्यायात् * अथ मिताक्षराग्रंथ एक स्तौ तु द्वाविति संख्याधिक्यप्रयुक्तं प्राबल्यमिति चेद्धेतुविधया युक्तत्वव्यवस्थापने संख्याधिक्येन प्रकारेणोपयुज्यताम् संख्याधिक्ये एव चेत्परितोपस्तर्हि दृश्यं तां नृसिंहप्रसादमदनरत्नादयः परमप्राचीनानि बंधाः ॥

युक्ति कहते हैं यदिति जिसपर शब्द है वोही शब्दका अर्थ है इस न्यायसे इहां धर्मपर शब्द है ब्रह्मपर नहि सो धर्मही इसका अर्थ है ? प्रश्न ? मिताक्षरा ग्रंथ एक है और वोह दो हैं अधिक संख्या वाला प्रबल होणा चाहिये ? उत्तर ; ऐसा कहो तो कहते हैं जो हेतु विधिकरके व्यवस्थामे आवे सोई बलवान् है हेतुविना चाहें कितने बहुत भी हों सो संपूर्ण निबल हैं सो संख्याधिक्य किसत रह बल देवेगा * अब उनके पक्षकों स्वीकारकर्के तिनके पक्षकों हटाते हैं जेकर आपका संख्याधिक्य ही अभिमत है तब तुम देखो नृसिंहप्रसाद और मदनरत्न आदि बड़े प्राचीन ग्रंथ एहसभ इस जग मिताक्षराके ही मतवाले हैं

१०६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥

अब इसीमें कहतेहैं कि माधवाचार्यजीके मत विषेभी व्यवहार्यहै और नरक नहीदूरा होता इसीमें निश्चय प्रतीत होताहै जिसकारणसे तिनका मत जैसे युक्तियों करके विशद कया प्रकट कर्के प्रतिपादन कियाहै तैसेहीहै (नापरं केचित्) इससे आरंभ करके प्रतिपादन जो है सोउनकी अनिच्छाका चिन्ह नहीं किंतु उसमेंभी उनकी इच्छाहै क्योंकि केचित् इतना कहकर जनायाहै कि एह सिद्धांतभी बहुत निबंधोंमें देखाहै इसर्थे और मतांतरों को कहकर वस्तुत इत्यादि करके जो विषय कहाहै तिसी विषे कैयोंके मतको कहके विषे अनभिमत कया अनिच्छाविषयके देखणेसे और प्रसंग विषे (अपरे) ऐसा कह कर

माधवाचार्याणामपि व्यवहार्यत्वएव निर्भरोलक्ष्यते यतस्तन्मतं यथोपपत्तिभिर्विशदं प्रतिपादितं तैस्तथानापरं केचिदित्युपक्रम्य प्रतिपादनं तु नानभिमतत्वेऽलिंगम् केचिदित्यादिनापि सिद्धांत प्रतिपादनस्य बहुशो निबंधेषु दृष्टत्वात् मतांतरस्य वस्तुतस्तु सिद्धांतस्त्वित्यादिना प्रतिपादनएव केचित्त्वित्यादिना प्रतिपादिते अनभिमतत्वदर्शनात् प्रकृतेचापरेत्वित्यादिना मतांतरस्य प्रदर्शनेन तत्र निर्भरस्यानुमातुमशक्यत्वादित्यलमनया निस्सारचर्चया ॥ तस्मात्कामकृतब्रह्मवर्धोप्यत्यंतपश्चात्तापादिरूपां प्रायश्चित्तार्हतांसम्यग्विभाव्य रागद्वेषौविहायात्यंतिककायक्लेशकरचतुर्विंशत्यब्दप्रत्याम्नायोपदेशेन चेदनुगृह्येत

मतांतर दिखाणे करके तिस विषे तिनका अभिप्रायहै इसके कहणेको अशक्य होऐये अब कहतेहैं अलंहे इस असार चर्चाको इसको जितना बधाओ उतनी बढसकतोहै तिस कारणसे कामना कर्केभी किसीने ब्राह्मणका बधाकियाहै और पीछे अत्यंत पश्चात्ताप कर्के प्रायश्चित्तकी योग्यताको बनाकर और रागद्वेषको छोड़ कर तिसमें प्रवृत्त हुवा २ अत्यंत देहके क्लेशकों करणवाला जो द्विगुण प्रायश्चित्त २४ वर्षकाहै तिसको जो नहीं सहार सके तिसकेताई प्रत्याम्नायके उपदेश करके लेकर अनुग्रह वाला होवे अर्थात् अनुग्रह करे

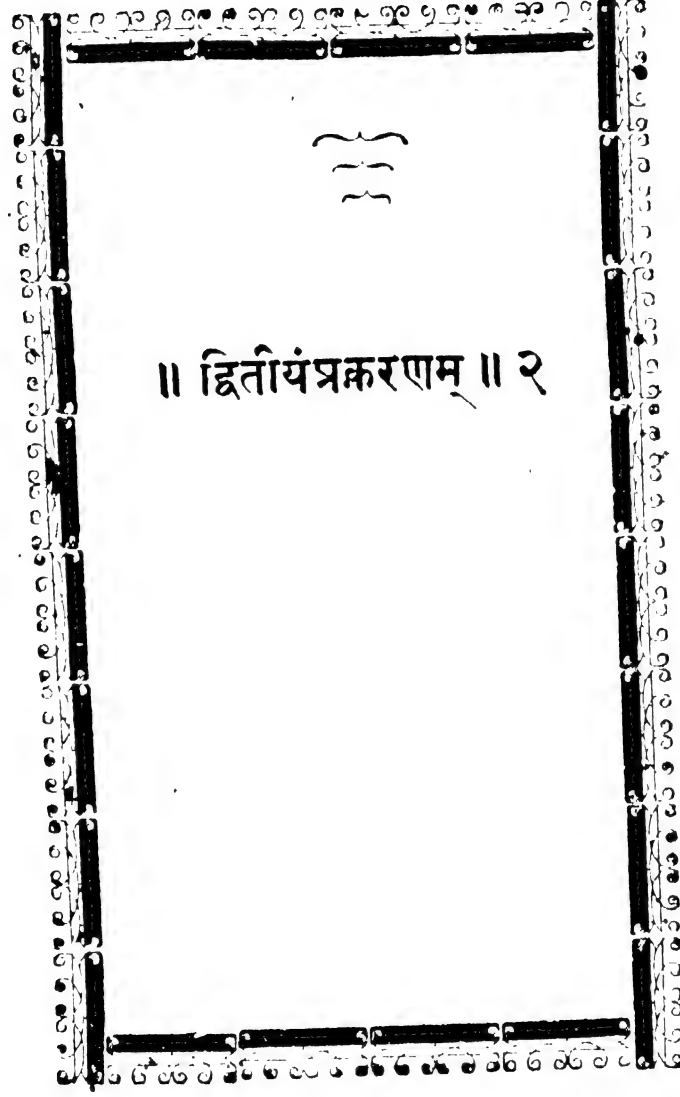
॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० द्वि० ॥ टी० भा० ॥ १०७

तब जैसा उपदेश शास्त्रकारोंका है तैसे उसको कहे और वोह तैसेही अनुतिष्ठत क्या अनुष्ठान करे तब तिसका पापनाश नहीं भी है तदभी इस लोकका व्यवहार उसका सिद्ध होवेगा एह इतने शास्त्रार्थसे सिद्ध हुआ इस कारण थे कामरुत पापके स्थलविषे भी प्रायश्चित्तकरणा चाहिये

● अब दो श्लोक करके राज प्रशंसा पूर्वक प्रकरण की समाप्तिको कहते हैं श्रीमदिति जो ग्रंथ धर्मशास्त्रका कवियों विषे श्रेष्ठ गंगाराम है मुख्यजिनोविषे ऐसे पांडितोने परिश्रमसे संग्रह किया है तिस विषे एह दूसरा प्रकरण सिद्धि संप्राप्तात् क्या पूर्ण होता हुआ कैसा एह प्रकरण है कि जो शुद्ध है फेर कैसा है कि बुद्धिमानोंको आनंद देने वाला जो प्रायश्चित्तका निर्णय तिसका संबंध है फेर कैसा है अधिकारिका वर्णन है पहले जिसके क्या कर्के श्रीरणवीर सिंह महाराजकी आज्ञाको लेकर

सचयथोपदिष्टतद्वर्तमाननुतिष्ठेत्तर्हि स पापनाशभावेऽप्येहिकव्यवहारार्हः
संपद्येतैव इति सिद्धम् ॥ श्रीमत्प्रौढतरप्रतापतपनत्रस्ताखिलारिब्रजज्
जम्बूपत्तनतिव्वतक्षितिपते धर्मस्य साक्षात्तनोः भूपालावल्लिमौलिलाल्यचर
णात्काशमीरदेशेश्वरा दाज्ञां श्रीरणवीरसिंहनृपतेः प्राप्यार्थिचिंतामणेः १
पथ्यालोचितधर्मशास्त्रनिबन्धे रेतस्सभासंगते गंगारामकवीशमुख्यविवुधे
र्यस्संगृहीतः श्रमात् प्रायश्चित्तविनिर्णये प्रकरणं तस्मिन्बुधानन्ददे संप्राप्ता
दधिकारिवर्णनमुखं सिद्धिद्वितीयं शुभम् इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बू
काशमीरतिव्वतायनेकदेशार्धाश प्रभुवररणवीरसिंहाज्ञासकविगंगारामसं
गृहीते धर्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागेऽधिकारिप्रकरणं द्वितीयम् २

रके कैसा महाराज है श्रीमदिति श्रीकरके युक्त जो अतिप्रताप सो भयासूय तिस करके
त्रासको प्राप्त किया है शत्रुसमूह जिसने फिर कैसा है जंघ्विति जम्बूसे लेकर तिव्वत देश
पर्यंत पृथ्वीका पति है और साक्षाद्धर्मकी मूर्ति है और राजेयोंकी पंक्ति की मालि कर्के
क्या मस्तक मणिकर्के लालित है चरण कमल जिसके और काशमीरदेशका ईश्वर है और
चिंतामणिके तुल्य है १ और कैसे हैं कविगंगाराम प्रभृति पथ्येति विचारित किये हैं शास्त्रके समूह
जिन्होंने फेर कैसा है कि एतदिति इस राजाको सभा विषे संगत हैं ॥ ३ ॥ इति श्री प्रायश्चित्तभागे
भाषाटीकायामधिकारिप्रकरणद्वितीयम् २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥



॥ द्वितीयप्रकरणम् ॥ २

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १०९

प्रकरणके आदिविषे मंगलाचरण करतेहैं स्वेति इसका अर्थपिच्छेहोचुंकाहै तिस विषेकर्तव्यकी प्रतिज्ञाकरतेहैं अथेति अधिकारी प्रकरण कहणेते अनंतर अधिकारिकों करणे योग्यजो प्रायश्चित्ततिसके करणेकी इच्छाविषे सभाप्रकरण लिखीदाहै ॥ तो तिसप्रकरणके आदिविषे इसलोकके और परलोकके कल्याणका द्वेषीजो महापातकादि तिसके नाशकरणे योग्यप्रायश्चित्त के उपदेशके निमित्त तिसका माहात्म्य वर्णन करतेहैं ॥ तिसविषे अंगिराऋषिका वचनहै उद्येति जैसे उदयको प्राप्तहोताही सूर्य संपूर्ण अंधकारको दूरकरताहै तैसेहि प्रायश्चित्तको करताहुअ

॥ श्रीरघुनाथोजयति स्वतोमित्वातत्वंश्रुतिरपि यदीयं भगवती गुहारूढं प्रो
चे सकलपुरुषार्थाद्यइहयः विचारेस्वे सक्तान् बिशदमतिदानेन सदयम् सध
र्मोस्मान्दीनान् बहुलमनुगृह्णातु भगवान् १ अथाधिकारिकर्तव्यताकां
क्षायां परिपत्रकरणं लिख्यते ॥ तत्रादावौहिकामुष्मिक भद्रप्रतिद्वंद्विमहा
पातकादिनाशकप्रायश्चित्तोपदेशाय तन्माहात्म्यं वर्ण्यते ॥ अंगिराः ॥ उद्य
च्छन्यद्वदादित्यस्तमः सर्वव्यपोहति तद्वत्कल्याणमातिष्ठन् सर्वपापं व्यपोहति
१ पापंचेत्युरूपः कृत्वा कल्याणमभिपद्यते ॥ मुच्यते पातकैः सर्वैर्महाभैरिव चं
द्रमाः २ कल्याणं प्रायश्चित्तं तस्यावश्यकर्तव्यत्वमाह ॥ यमः ॥ तपसांते वि
शुद्ध्यंतिकर्मणांच परिक्षयात् तस्मात्कर्तव्यमेतैस्तु प्रायश्चित्तं विशुद्ध्ये १ कर्म
णां भोगेन परिक्षयादित्यर्थः

संपूर्ण पापोंको दूरकरताहै १ पापमिति जेकरपुरुष पापकों करके प्रायश्चित्तकोंकरे तो संपूर्णपापों से रहितहोताहै और निर्मलहोकर शोभताहै जैसेमहामेघोंसे रहितहुवा २ चंद्रमा शुद्ध प्रकाशताहै एह अभिप्रायहै चंद्रमावत् शुद्धहोताहै २ कल्याणनाम प्रायश्चित्तकाहै तस्येति तिसकी अवश्य कर्तव्यता कों कहतेहैं यमजीतपेति तप्रकर्के अंतविषे शुद्धहोतेहैं तप कर्के क्या प्रायश्चित्त कर्के दुष्कृत कर्मोंके नाशहोणेसे अर्थात् प्रायश्चित्त करणसे उपरंत पुरुष शुद्धिकों प्राप्तहोतेहैं तिसकारणसे प्रायश्चित्त करणयोग्यहै निष्पापहोणेके लिये इसीका अर्थ कहते हैं भोगकर्म कर्मोंका क्षय होणेथेएह अर्थहै १

११० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

इसीको दृष्टांत कर्के कहते हैं यथेति जैसे पाषाणविषे स्थितजो जलसो वायुकर्के और सूर्यके तेज कर्के सूखता है तैसे सभाविषे स्थितजो बुद्धिमान् तिनहोंकी आज्ञासँ पुछणवाले पापिका पाप नष्ट होता है २ इसीका अर्थस्पष्टकर्के कहते हैं नैवेति सो पाप पापकरणे वालेको नहीं प्राप्त होता और न सभाको प्राप्त होता है वोह पाप वायुसूर्यके संयोगसे जलकी न्याई नष्ट होता है ३ इसीको चतुर्विंशतिके मतविषे कहते हैं जैसे सूर्यके तेजहोयां २ पृथ्वीमें जल सूखता है तैसे सभाकर्के कर्णोंके द्वारा श्रवण कियाहुवा पापोंका पाप नष्ट होता है १ इसीको प्रणोत्तरकर्के कहते हैं ? प्रश्न ? प्रायश्चित्तके कीर्तयां होयां ब्राह्मणको निष्पापहोएसे तबमै संपूर्णको पूछताहुं सो पाप स्वरूपकर्के कहाँ रहता है ? उत्तर ? नैवेति पाप नहीं कर्ताको

यथाश्मनिस्थितंतोयं मारुतार्केण शुष्यति एवं परिषदादेशान्नाशयेत्तत्र दुष्कृतम् २ नैव गच्छति कर्तारं नैव गच्छति परिषदं मारुतार्कादिसंयोगात्पापं नश्यति तोयवदिति ३ चतुर्विंशतिमते ॥ यथा भूमिगतंतोयं घर्मपाते विनश्यति एवं हि परिषददृष्टं नश्यत्येतस्य दुष्कृतमिति १ एतदेव प्रणोत्तराभ्यां विशदीकरोति प्रेति प्रायश्चित्ते यदा चीर्णे ब्राह्मणे दग्धकिल्बिषे सर्वेष्टच्छामितत्वेन तत्पापं कृन्तुतिष्ठति २ नैव गच्छति कर्तारं नैव गच्छति परिषदम् मारुतार्कसमायोगात् जलवत्संप्रलीयते ३ यथाश्मनिस्थितंतोयं नाशयेत्तेऽर्कमारुतौ तद्वत्कर्तारितत्पापनाशयेत्परिषद्विधिः ४ तेषां नेत्राग्निदग्धंतत्पापंतस्य तु र्धामतः नश्यते नात्र संदेहः सूर्यदृष्टं हि मयथेति ५ प्रायश्चित्तानंतरं पुनः पापरतिर्न स्यादित्याह मनुः ॥ अज्ञानाद्यादिवाज्ञानात्कृत्वा कर्मविगर्हितम् ॥ तस्माद्विमुक्तिम

न्विच्छन् द्वितीयं न समाचरेदिति

प्राप्त होता और न सभाको प्राप्त होता है वायु और सूर्यके तेजकर्के जलकी न्याई नष्ट होता है १ पूर्वअर्थकोही स्पष्टकर्के कहते हैं यथेति जैसे पाषाण विषे स्थितजो जल है तिसको सूर्य और वायु नाश करते हैं तिसी प्रकार कर्ताविषे स्थित पापको सभाकी कहीहुई विधी दूर करती है ४ तेषामिति तिन सभास्थित बुद्धिमानोंके नेत्रोंकी अग्निकर्के दग्धहुवा २ तिसबुद्धिमानका सो पाप दूर होता है इसविषे संशय नहीं तिसविषे दृष्टांत है सूर्यकरके देखाहुई बर्फ जैसे नष्ट होती है ५ इत्ये पापिको बुद्धिमान् इसककर्के किहा है कि पापके हटाणे वास्ते उसने यत्न कीता है प्रायश्चित्तकरणेसे पीछे पाप करणे विषे रुचि न करे ऐसे मनुजी कहते हैं अज्ञानेति अज्ञानर्थ वा ज्ञानसँ पापकर्मको करके पीछे तिस पापके दूरकरणेकी इच्छा वाला जो पुरुष है सो फेर दूसरी बार पापको न करे इति

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १११

प्रायश्चित्तके करणको इच्छावाले जो पुरुष हैं तिन्हकों सभाविये प्राप्त होना इसको अंगिराजी कहते हैं अत इति इसमें उपरंत उपस्थानके लक्षणको कहते हैं न्याय कर्के कथानम्रता नमस्कारा दि करके उपस्थितकया सभाविये प्राप्त हुवा हुवा व्रतके ग्रहण कर्णके योग्य होता है १ सद्यः क्या शीघ्रही पापका संशय दूर करणा चाहिये संशयसे रहित पापके होयां २ अनुपस्थितकया सभाविये पाप कहनेके विना तात्काल न भक्षण करे जेकर भक्षण करे तां पापको अधिक कतां है क्या अधिक पापको प्राप्त होता है और जेकर सभा उहां न होवे तद विना उपस्थितके भी भोजन करे उपस्थिति अर्थात् सभाको श्रवण कराणा २ सभा विषे असत्यको कहंता हुवा पापको बधाता है एह पाठ विद्वन्मनोहरा विषे कहा है ॥ संशोति पापके संशय होयां २ पापनिश्चय करणसे विना नहीं भक्षण करण योग्य और जैसे निःसंशय पाप विषे

प्रायश्चित्तकामानां परिपदुपसर्पणमाहांगिराः ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि उपस्थानस्य लक्षणं उपस्थितो हि न्यायेन व्रतादेः स्नानमर्हति १ सद्यो निःसंशये पापेन भुंजीतानुपस्थितः भुंजानो वर्धयेत्पापं पर्पद्यत्र न विद्यते २ असत्यं पर्पदि ब्रुवन्निति विद्वन्मनोहरास्थः पाठः ॥ संशये तु न भोक्तव्यं यावत्कार्यविनिश्चयः प्रसादश्च न कर्तव्यो यथैवासंशये तथा ३ कृत्वा पापं न गूहेत गूह्यमानं विवर्धते स्वल्पं वाथ प्रभूतं वा धर्मविज्ञो निवेदयेत् ४ अयमर्थः यत्पापं प्रकाशकृतं तत्साकल्येनैव सभायां प्रकाशनीयं न तु किंचिदपि ततो गोपनीयं यत्तु कर्तव्यतिरिक्तेन केनाप्यदृष्टं रहस्यं पापं रहस्यं प्रायश्चित्तार्हं तस्या प्रकाशनेऽपि न दोषः तेहि पापकृतो वैद्याहं तारं चैव पाप्मनां व्याधितस्य यथा वैद्या बुद्धिमंतो रुजापहाः १ प्रायश्चित्तसमुत्पन्ने धीमान्सत्य

परायणः

दया करण योग्य नहीं तैसे संशय युक्त विषे भी दया नहीं करण योग्य ३ पापकों करके गुप्त न करे क्यों कि छपाया हुवा पाप, वृद्ध होता है थोड़ा वा बहुत जो पाप किया है सो धर्मवेत्ताओंके ताई कथन करे ४ इसका अर्थ विस्तार करके कहते हैं जो पाप प्रकट करके कीता है सो संपूर्ण सभाविये प्रकट कथन करे किंचित् भी तिस पापकों न छपावे ४ और जो पाप करणवाले से विना किसी नहीं देखया गुप्त होया है तिसका प्रायश्चित्त गुप्त करण योग्य है तिसके न प्रकट करण विषे दोष नहीं इति अव सभास्थित विद्वानोंकी प्रशंसा करते हैं त इति जो पुरुष पापोंके नाशकरण वाले हैं सोही पापकरण वालोंके वैद्य कहें जैसे रोगके दूर करण वाले बुद्धिमान् रोगियोंके वैद्य हैं १ अव तिस पापोंको जैसा उचित है तैसा कहते हैं प्राय इति पापके होयां २ बुद्धिमान् सदा सत्य कहण वाला

११२ ॥ श्रीरुणबीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

मृदिति नम्र और निछलहुवा २ शुद्धिकीयाचनाकरेपुरुष २ और मौनकौधारकरवस्त्रोंके सहितरुद्र नकरके आर्द्रवस्त्रोंके साथ अर्थात् गिलेवस्त्रोंकेसाथ भलेप्रकारस्थितहोवे क्षत्री अथवा वैश्यतिसंभे अनंतरसभाकोप्राप्तहोवे १ सर्वेति सबही ब्राह्मण धर्मके निश्चय करणवाले और रक्षाकरणे वाले द्विजश्रेष्ठमेरेदेहकी शुद्धीकोकरें ४ मयेतिमेने जानकके वा नजानकके महापाप कियाहै सोमेरे पर कृपाकरो और शुभजो शुद्धिकीआज्ञाहै सोदेवो ५ पूजने योग्यजो तुमहोआपके अनुग्रहसे मै पवित्रकियाहुवाहोयां इसप्रकारसभाकोप्राप्तहोकर ऐसाकहुकर पीछे शीघ्रही पापके भय कर्के पीडितहुवा २ पृथ्वीपरसंपूर्ण अंगोंको लगाकर ६ और सिरकर्केनमस्कारकरेवाणीकरकेउच्चारण

मृदुतार्जवसंपन्नः शुद्धियाचेतमानवः २ सचैलंवाग्यतःस्नात्वाक्लिन्नवासाः समाहितः क्षत्रियोवाथवैश्योवाततःपर्पदमाव्रजेत् ३ सर्वधर्मविवेक्तारो गोप्तास्सकलाद्विजाः ममदेहस्यसंशुद्धिकुर्वतुद्विजसत्तमाः ४ मयाकृतंमहा घोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषं प्रसादःक्रियतांमह्यं शुभानुज्ञांप्रयच्छथ ५ पूज्यैः कृतःपवित्रोहंभवेयंद्विजसत्तमैः उपस्थायततःशीघ्रमार्तिमान्धर णींव्रजेत् ६ गात्रैश्चशिरसाचैव नचकिंचिदुदाहरेदिति क्षत्रियवैश्यग्रहणं प्रायश्चित्ताधिकारिमात्रोपलक्षणम् वक्ष्यमाणलक्षणरहितानांपरिपद्योग्य त्वाभावबोधनाय ते ब्राह्मणाःकैश्चिद्विशेषणैर्विशेष्यन्तेपराशरेण ॥ वेदवेदां गविदुषांधर्मशास्त्रंविजानताम् ॥स्वकर्मरतविप्राणांस्वकंपापंनिवेदयेदिति ॥

कुछ न करे इति ॥ इसमै क्षत्रिय वैश्यकाग्रहण इसकर्केहै कि ब्राह्मणलोक पठन पाठनके व्यवहारकरके प्रायश्चित्ती थोड़ेहैं और शूद्रोंको प्रायश्चित्तही थोड़ाहै बहुधा क्षत्रिय वैश्य विषे प्रायश्चित्तका प्रयोगहै अथवा इसविषे क्षत्रिय वैश्यका ग्रहण कियाहै सो प्रायश्चित्तके अधिकारिमात्रके कथनकेलियेहै ॥ वक्ष्यमाणेति आगेजोकथनकरतेहैं लक्षण तिन्होंसँ रहितजोहैं तिन्होंकोसभाविषे अयोग्यता जनानेवास्ते कुछक विशेषणां करके ब्राह्मणोंको कहतेहैं पराशरजी वेदेति वेदांगके जाननेवाले और धर्मशास्त्रके और अपने कर्मोंविषे युक्तजो ब्राह्मणहैं तिन्होंके आगे अपने पापको कथन करे इति

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०तृ० ॥ टी० भा० ॥ ११३

यद्यपीति यद्यपि मन्वादिकों करके कहे जो धर्मशास्त्र तिन्होंके जानने मात्रकर्के ब्राह्मण प्राय-
श्चित्तके करवाणेको समर्थहैं तथापि श्वानकर्के उच्छिष्ट हविः जैसे त्यागीदीहैं इस न्यायसे त-
से नहि अध्ययन किया बेद जिनोंने और अपने धर्म कर्मके करणसैं जो रहितहैं तिन्होंने क-
हा जो प्रायश्चित्त सो पापके दूर करणविषैं नहीं समर्थहोता तिसकारणसैं धर्म कर्मके करण विषैं जो
युक्तहैं और वेदके पारको जो प्राप्त हुवेहैं तिनके समीप प्राप्तहोकर करण योग्य जो प्रायश्चित्त ति-
सका निमित्त जो पाप तिसकों संपूर्णता कर्के निवेदन करे सो एह सभाविसैं प्राप्तहोणेकी वि-
धीहैं ऐसे माधव और नंद पंडितोंने कहाहैं॥ परिपदिति सभाके योग्यजोहैं तिन्होंके परिशेष क,
रण वास्ते अथात् योसभाकेयोग्यहै तिनस्वीकारके अर्थ सभाके अयोग्यजोब्राह्मणहै
तिनको पराशरजी कहतेहैं सेति श्रीसूर्य नारायणका मंत्रजो गायत्रीहै और संध्याका

यद्यपि मन्वादिधर्मशास्त्रज्ञानमात्रेण ब्राह्मणाः प्रायश्चित्तं विधातुं समर्था
स्तथापि शुनालीढं हविर्यथेति न्यायेनाऽनधीतवेदैः स्वधर्मानुष्ठानरहितै
र्निर्दिष्टं प्रायश्चित्तं न पापापमोदनक्षमं तस्माद्धर्मनिष्ठान्वेदपारंगतानुपेत्य
तेषामग्रेचिकीर्षितप्रायश्चित्तनिमित्तं पापमशेषेण निवेदयेत् सेयंपरिपदु
पसत्तिरिति माधवनंदपंडितौ परिपद्योग्यानांपरिशेषयितुंपरिपदयो
ग्यानाह पराशरः सावित्र्याश्चापि गायत्र्यास्संध्योपास्त्याग्निकार्ययोः अ
ज्ञानात्कृषिकर्तारो ब्राह्मणानामधारका इति १ सवितुः सूर्यस्येयं सावित्री
वरेण्यमित्यत्र एकारवकारविश्लेषेण चतुर्विंशत्यक्षरत्वाद्गायत्री चतुर्वि
ंशत्यक्षरागायत्रीति श्रुतेरिति माधवः नंदपंडितास्तु पुनरुपनयने उप
देश्या तत्सवितुर्वृणीमहे इति सावित्रीविवक्षिता ॥

उपासन और अग्निहोत्र कर्म इनके न जाननेसैं और खेतीके करणवाले जो ब्राह्मणहैं सो केवल
नाम कर्केहैं कोई यथार्थब्राह्मणनहि १ इसीका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं सवितुरिति सविता-
जो सूर्यहै तिसकी जो होवे सो सावित्री कहीहै सूर्यसावित्री विषैं वरेण्य जो पदहै तिस विषैं ए-
कार और यकारकों भिन्नगिणने कर्के चौबी २४ अक्षर होणसैं तिसका नाम गायत्री कहाहै
श्रुति विषेभी कहाहै चौबीहैं अक्षर जिस विषे सो गायत्री कथन कीहै असे माधवजी कहतेहैं
और जो नंदपंडितहैं सो दूसरी बार उपनयन विषे सावित्री उपदेश करण योग्यहै
तिस सावित्रीका स्वरूप (तत्सवितुर्वृणीमहे) इति इह सावित्री कथनकीहै ॥

११४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

तदिति और तत्सवितुर्वरेण्यं एह गायत्री कही है भेद कर्के उपन्यास होणें ऐसे कहते हैं प्रथम उपनयन विषे भी क्षत्रियादिकों त्रिभुभादिसावित्रीकों पक्षभेदकर्के विधान होणें तिनके ग्रहणके वास्ते सावित्रीका भिन्न ग्रहण है एह भी जाणलेणा परंतु ए भी ध्यान रखो कि (तत्सवि तुर्वरेण्यमहे) (तत्सवितुर्वरेण्यं) एह दोनो प्रतीक है कोई सारामंत्र नहि अगले के साथ-सारा जवना ॥ ॐ ॥ गायत्रीति जो ब्राह्मण गायत्री आदिकों नहि जाणते सो केवल नाम कर्के ब्राह्मण हैं क्या सो अमुख्य हैं अतइति इसकारणसे तिनको जो बिकावासे कृपिकर्म है यज्ञ किसेकों करणा इत्यादिकर्ममे न समर्थ होणें से यथेति जैसे काष्ठका हस्ती चर्मका मृग विद्यासे रहित ब्राह्मण एह वयही केवल नाममात्र कर्के हैं १ यथेति जैसे स्त्रियों

तत्सवितुर्वरेण्यमिति च गायत्रीविक्षिता भेदेनोपन्यासादित्याहुः प्रथमोप नयनेपि क्षत्रियादेस्त्रिभुभादिसावित्र्याः पक्षभेदेन विधानात्तत्संग्रहाय सावि त्र्याः पृथगुपादानमित्यपि बोध्यम् गायत्र्यादीनामज्ञानात्ते ब्राह्मणानामधा रका अमुख्या इत्यर्थः अतस्तेषां याजनादेरसंभवाज्जीवनार्थकृपिकर्तृत्व मिति यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ब्राह्मणस्त्वनर्धयानस्रयस्तेना मधारकाः १ यथा पंडोऽफलः स्त्रीपुत्रयथा गौरूपराऽफला ॥ यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः २ ग्रामस्थानं यथा शून्यं यथा कूपस्तु निर्जलः यथा हुतमनश्च अमंत्रो ब्राह्मणस्तथा ३ व्यासः ॥ ब्रह्मबीजसमुत्पन्नो ब्रह्मसं स्कारवर्जितः जातिमात्रोपजीवीयः स भवेन्नामधारकः १ ब्राह्मणब्रुवसंज्ञा चतुर्विंशतिमते ॥ गर्भाधानादिसंस्कारैर्वेदोपनयनैर्युतः नाध्यापयति नाधीते स भवेद्ब्राह्मणब्रुव इति इमे न परिपद्योग्या इत्याह पराशरः

विषे नपुंसक और कल्लरवाली पृथ्वी और अज्ञकों तथा मूखकों दान देणा एह जैसे निष्फल है तैसे वेदसे रहित ब्राह्मण भी निष्फल है २ ग्रामेति जैसे ग्रामस्थान धर्मसे शून्य है और जलसे रहित सूखा अग्निसे बिना हवन निष्फल है तैसे मंत्रसे रहित ब्राह्मण अफल कहा है ३ इसमे व्यासजीका वचन है ब्रह्मेति जो ब्रह्म बीजसे उत्पन्न हुवा है और ब्रह्म संस्कारसे रहित है सो केवल जातिमात्र कर्के उप जीविका कर्ता है सो नामधारक कहा है १ ब्राह्मणब्रुवसंज्ञा चतुर्विंशतिके मतविषे कही है गर्भेति गर्भाधानादि संस्कारों करके वेद और उपनयन कर्के जो युक्त है और न किसीकों विद्या पढ़ाता है और न आप पढ़ता है सो ब्राह्मणब्रुव कही दा है एह सभाके योग्य नहि हैं ऐसे पराशरजी कहते हैं

अब्रतेति प्राजापत्यादि व्रतोंसे हीन और वेदसंभी रहित केवल ब्राह्मणजातिकके उपजीविका करने वाले जो हजारोंभी एकत्र होण तथापि तिनको धर्मसभा बिषे अधिकार नहीं कहा १ अध्ययनादिसं रहित पुरुषोंकीन्याई नास्तिकोंकोभी सभाधिकार नहीं ॥ तैसे चतुर्विंशतिमता बिषे कहा है वेदतिवेदपठनसे रहित और जो धर्मशास्त्रसंभी रहित हैं तिनको सभाका अधिकार नहीं कहा और नास्तिकोंको विशेषकें नहीं १ अनाहितेति अग्निहोत्रसे रहित और अज्ञानीकेवल वेदपाठके जानने वाले और पीछे निंदा करनेवाले और क्रूरकर्मोंके करनेवाले जो हैं तिनको परिपत् का अधिकार नहीं कहा २ अब और सभाके अनधिकारियोंको कहते हैं शास्त्रेति शास्त्रके जाननेवाले भी हैं परंतु दुष्टकर्मोंके करने वाले और प्रतिकूल क्या उलटे स्वभाववाले और असूयक क्या निंदक और हेतुक

अब्रतानाममंत्राणां जातिमात्रोपजीविनां सहस्रशः समेतानां परिपत्त्वं न विद्यते इति १ अब्रताः प्राजापत्यादि व्रतहीना अमंत्रा वेदरहिताः अध्ययनादिहीन वन्नास्तिकादीनामपि परिपत्त्वं नास्ति ॥ तथा चतुर्विंशतिमते ॥ वेदपारमर्ती ताये धर्मशास्त्रविवर्जिताः परिपत्त्वं न ते पांस्यान्नास्तिकानां विशेषतः १ अनाहिताग्नयोऽज्ञानाः केवलवेदपारगाः ॥ पिशुनाः क्रूरकर्माणः परिपत्त्वं न विद्यते २ शास्त्रज्ञा दुष्टकर्माणः प्रतिकूलास्त्वसूयकाः ॥ हेतुकाभिन्नमर्यादास्ते च परिपद्विवर्जिता इति ३ हेतुका हेतुवादेन सद्धर्मनिंदकाः ॥ पाराशरोपि ॥ शत्रवो दुष्टकर्माणः प्रतिकूलाः सदैव तु हिंसाकाभिन्नमर्यादास्ते वै पर्षद्विवर्जिता इति १ एवं पूर्वोक्तानां प्रायश्चित्तकथने दोषमाह । पराशरः । यद्वदंतितमो मूढामूर्खा धर्ममतद्विदः तत्पापं शतधा भूत्वा तद्वक्तृद्वनधिगच्छति १ अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तं ददाति यः प्रायश्चित्तीभवेत्पूतः किल्बिषं परिपद्भजे दिति २

क्या हेतुओंकरके शास्त्रकी निंदा करने वाले और धर्ममर्यादाके दूरकरण वाले जो हैं सो सभासे वर्जित कहें इति ३ इसी अर्थको पाराशरजी स्पष्ट करके कहते हैं शत्रव इति हिंसा करनेवाले ऐसे योंने जो प्रायश्चित्त कथन करण हैं तिसविषे दोषकों पराशरजी कहते हैं यदि तिनको कहते हैं अज्ञानी मूर्ख धर्मको और आपकैसे हैं अतद्विदः क्या धर्मको नहीं जानते किंतु अधर्म जानने वाले हैं सो पाप शतप्रकारका होकर ऐसे कथन करनेवाले अज्ञानियोंको प्राप्त होता है १ अज्ञात्वेति धर्मशास्त्रोंको न जान करके जो प्रायश्चित्तको देता है तिसतेभी प्रायश्चित्तसी शुद्ध होता है और सभा पापको प्राप्त होती है इति २

११६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

अनेति इन वचनोंके अर्थको माधवजी कहतेहैं सतीति हैभी धर्मशास्त्रके पाठका और तिसके अर्थकाज्ञान तथापितिसकीन्यायकर्के निणय विषे चातुष्यताके अभावकर्के प्रसंगविषे प्राप्तहुवाजो सूक्ष्म प्रायश्चित्तविशेष तिसका नजानणा एह एकवचनहै और धर्मशास्त्रके परिज्ञानके होयां १ धर्मशास्त्रका भलीप्रकार न विचारणा एह दूसरा वचनहै तत्रेति तिनदोनोंमेंसे एकभी जिसजगा जो प्रायश्चित्त उपदेशकरीदाहै तदसो पाप सौप्रकारका होकर प्रायश्चित्तकेकहणे वालोंको प्राप्नहोताहै ॥ अब इसमें और विचारकरतेहैं तत्रेति तहां पूर्व कहाजो आपका अज्ञान तिसके हो यां २ पापीभी विधि पूर्वक प्रायश्चित्तके नकरणेसे नहींशुद्धहोता इसपक्षमें दोनोंको दोषहै दूसरे अज्ञान विषे पापीने यथाविधि प्रायश्चित्तके विधान करणेसे शुद्धहोवादीहै और कहनेवाला दो

अनयोश्च वचनयोरेवमर्थमाह माधवः सत्यपि धर्मशास्त्रपाठेन्यायनिर्णये कौशलाभावेन प्रकृतस्य सूक्ष्मस्य प्रायश्चित्तविशेषस्याज्ञानमेकं सत्यपि परिज्ञानेधर्मशास्त्रापरिशीलनमपरं तत्रान्यतरवतापि यत्र प्रायश्चित्तमुपदिश्यते तत्र तत्पापं शतधाभूत्वावकृतेनैव प्राप्नोति तन्नायज्ञाने किल विषिणोऽपि यथाविधि प्रायश्चित्ताननुष्ठानात्सनपूयते परत्राज्ञाने च किल विषिणायथाविधि प्रायश्चित्तविधानात्पूयते वक्ता तु दुष्यति पाठपूर्वकज्ञाने सति तदुपदेशस्यैव पापनाशकत्वेन स्मरणात् ऋषिवक्त्रोद्गतान् धर्मान् गायन्तो वेदवित्तमादिति वचः पूर्वमुदाहार्यं यथोक्तं धर्मवक्तृभिः पश्चात्कार्यानुसारेण शक्ताः कुर्युरनुग्रहमिति च १ विद्वन्मनोहरायां तु पूर्वोक्तद्विविधाज्ञानवताप्युपदिष्टेन प्रायश्चित्तेन किल विषी न पूयते यदि न धर्मशास्त्रेण प्रायश्चित्तविधीयते नैव शुद्धिमाप्नोति प्रायश्चित्तकृतेऽपि स इति २ वृद्धशातातपस्मरणात्

पकों प्राप्तहोताहै इतना भेदहै अब इसमें हेतु कहतेहां पाठेति पाठपूर्वक ज्ञानके होयां २ तिस प्रायश्चित्तके उपदेशकों हि पापनाशकता कर्के स्मरणहोणेसे तिनवचनोंको कहतेहैं ऋषीति ऋषियोंके मुखसे उच्चारणहुवें जो धर्म तिनको गायन कर्तेहुवे वेदवेत्ता एक एह वचनहै और ऐसे वचनपूर्वक कथनकरे जैसे धर्मवेत्ताओंने कहाहै और पीछे कर्मानुसार कर्के समर्थहैं प्रायश्चित्त करवाणेको एह और वचनहै १ ॥ विद्वन्मनोहरा ग्रंथविषे इनवचनोंको ऐसेलगायाहै पूर्व कहा जो दोप्रकारका अज्ञान तिसवालेकर्के उपदिष्ट हुवा जो प्रायश्चित्त तिसकर्के पापीनहीं शुद्धिको प्राप्तहोता इसमें हेतुदिखातेहैं यदिति जो धर्मशास्त्रसे बिना प्रायश्चित्त विधान करीदा है सो पुरुष प्रायश्चित्तके कीतेहोयांभी शुद्धिको नहीं प्राप्तहोता २ इसवृद्धशातातपजीके स्मरणसे

अन्विति अनुवादककोंक्या प्रायश्चित्तकेसुनाणे वालेकोंपाठपूर्वकज्ञानआवश्यकहै एह प्रयोजन अज्ञात्वाधर्मशास्त्राणि)इत्यादिश्लोकककेकहाहै क्याधर्मशास्त्रकों न जानकर जो प्रायश्चित्तकहता है सो पाप कहनेवालेकोप्राप्तहोताहै और पापशुद्धहोताहै धर्मशास्त्र पाठ और न्यायकके निर्णय एहदोनों सभाविवे स्थित होनेवालोंको उचितहै एह प्रयोजन पहिले कहेहुवे श्लोककके अर्थात् यद्दन्तीत्यादिश्लोकककेग्रहणकीताहै एहनिर्णयहै ॥अब विचारांतरकहतेहैं धर्मोतिधर्मशास्त्रके ज्ञान होयां २ और न्यायनिर्णयक्या चतुराईके भी होयां २ ननिश्चयहोणइत्यादिक चित्तविषे प्राप्तहुई जो दोषकी आशंका तिसके दूर करणेवास्ते अपने तुल्यजो चार बुद्धिमान्हैं तिनके साथ संवाद

अनुवादकस्यापि पाठपूर्वकज्ञानवत्त्वमावश्यकमितित्वज्ञात्वाधर्मशास्त्राणी
तिवचनेनाभिधीयते पाठन्यायनिर्णयोभयवत्त्वंचपर्षदः पूर्वश्लोकनैवसंगृ
ह्यतेइत्युक्तं धर्मशास्त्रपरिज्ञानस्य न्यायनिर्णयकौशलस्य सद्भावेप्यन
वधानादिचित्तदोषाशंकाव्युदासायस्वसमानैश्चतुरैःसहसंवादोऽपेक्षित इ
त्याहपाराशरः ॥ चत्वारोवात्रयोवापियंब्रूयुर्वेदपारगाःसधमेइतिविज्ञेयोने
तैरेस्तुसहस्रशइति १ सत्यपि त्रिचतुराणांपरस्परसंवादेविप्रकीर्णेष्वनेके
षु धर्मशास्त्रेषुकापिकस्यचिद्विशेषस्य संभवात्प्रायश्चित्तनिर्देशवेलायांपुनः
शास्त्राणिपर्य्यालोच्यैव निर्देष्टव्यमित्याह पाराशरः प्रमाणमार्गमार्गतो
यधर्मप्रवदंतिवै तेषामुद्विजतेपापंसद्भूतगुणवादिनामिति २

करणे योग्यहै ऐसेहीपाराशरजी कहतेहैं चत्वार इति चार वा तीन वेदकेजानने वाले मिलक
के जिसधर्मको कहें सोही धर्म जानने योग्यहै इससे इतर हजार भी मिलकके कहें सो नहीं
धर्म जानणा १ सतीति सभाविवेहोणेवालेजो तीन वा चारहैं तिनकेआपसविषे संवादके हो
यां २ भी विवादवाले जो अनेकधर्मशास्त्र तिनोंमें से किसे स्थानविषे किसीप्रायश्चित्तविशेषकके
तिस पापके दूर करणे वास्ते विद्यमान होणेंसं प्रायश्चित्तके कथनसमयविषे फेर शास्त्रोंको विचा
रककेदिखाने योग्यहै इसको पाराशरजी कहतेहैं प्रमेति पापको निवृत्तकरनेवाला जो प्रायश्चित्त
ऐसेप्रमाण मार्गको ढूँढतेहुवे जो धर्मकोंकहतेहैं तिन अष्टगुणवादियोंका पाप दूर होताहै इति २

११८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

विद्वन्मनोहराविषं तु पुनः प्रायश्चित्तकं विधानं करणे वाले जो शास्त्र तिनकरके सभाविषं निर्णीत हुवा जो अर्थ तिसविषं विवाद कैसे करणे योग्य है इहप्रमाणमार्गमित्यादिआकांक्षा वाक्य करके दूरहुई एह कहागया ॥ अब कथन करनेवालोंको उत्साहदेते हैं उक्तेति कहा है लक्षण जिनका ऐसे जो सभा विषं रहनेवाले तिनकरके कथन किया जो प्रायश्चित्ततिस करके पाप दूर होता है फेर सभाको नहीं प्राप्त होता ऐसे पराशरजी कहते हैं यथेति जैसे पृथ्वी विषं जल सूर्यकी किरणोंसे शुद्ध होता है अर्थात् नष्ट होता है इसजगा शुद्धि अभावका नाम है तिसप्रकार पुरुषका पाप सभाके देखनेसे नष्ट होता है १ नेतिसोपाप न कर्त्ताको और न सभाका प्राप्त होता है वायु और सूर्यकी किरणोंके संयोगकरके जलकी न्याई नष्ट होता है २ अब प्रायश्चित्त कहणे वालोंको भी प्रायश्चित्त कहते हैं आत्मेति तिसमें उपरंत आत्मकृच्छ्रकों करे

विद्वन्मनोहरायां तु विधायकैरपि पर्षन्निर्णीतेऽर्थे संवादः कथं कार्य इत्याकांक्षाऽनेन शाम्यत इत्युक्तं उक्तलक्षणैः सभ्यैरुपदिष्टेन प्रायश्चित्तेन पापं नश्यत्येव न पुनः सभ्यादान् प्रति संक्रामतीत्याह पराशरः ॥ यथा भूमिगतं तोयमर्कपातेन शुध्यति एवं हि परिपट्टं नश्यत्येतस्य दुष्कृतम् १ नैव गच्छति कर्त्तारं नैव गच्छति पर्षदं मारुतार्कादिसंयोगात्पापं नश्यति तोयवदिति २ आत्मकृच्छ्रं ततः कुर्यात् जपेद्वा वेदमातरमिति पर्षत्प्रायश्चित्तविधानं तु प्रायश्चित्तोपदे शनिमित्तकपापांतरनाशयेति न तेनाऽस्य विरोधः ॥ कार्य्यतारतम्येन पर्षदो मुख्यानुकल्पभेदानाहा पराशरः चत्वारो वा त्रयो वापि वेदवंतोऽग्निहोत्रिणः ब्राह्मणानां समर्था ये परिपत्सा विधीयते १ अनाहिताग्नेयोऽन्ये वेदवेदांग पारगाः पंचत्रयो बाधर्मज्ञाः परिपत्सा प्रकीर्तिता २ मुनीनामात्मविद्यानां द्विजानां यज्ञयाजिनाम् ॥ वेदव्रते पुस्नातानामेकोपि परिपद्भवेत् ३

अथवा गायत्रीकों जपे इति पर्षत्कों जो प्रायश्चित्तका विधान है सो प्रायश्चित्तके उपदेशके निमित्तकरके हुवा जो पापांतर तिसके नाशवास्ते कहा है तिसकरके प्रायश्चित्त विधानका (नैव गच्छति पर्षदं) इसके साथ कोई विरोध नहीं है ॥ १ ॥ अब कार्य्यकी न्यूनता औ० अधिकता होने करके पर्षत्के मुख्य और अनुकल्प भेदोंको पराशरजी कहते हैं चत्वार इति चार वा तीन वेदके जानने वाले अग्निहोत्री हों तिनोंकरके परिपत् कहा है परंतु इसमें ऐसा विचार है कि जो तीन कहे हैं सो कर्म कांड करके युक्त हों तद पर्षत् के योग्य होते हैं १ अनेति और जो निरग्नि वेदवेदांगके जाननेवाले पंच वा त्रय धर्मज्ञ हैं तिनोंकरके भी सभाकथन की है २ मुनीति मुनी जो आत्मविद्याविषं और यज्ञके करणे वाले ब्राह्मण वेदव्रत विषं संपन्न तिनमेंसे एकभी परिपत् होता है क्या सभाके योग्य होता है ३

अथेति पूर्वमैने पंच कथनकियेहैं और पांचोंकेअभावविषे तीनकहेहैं जो भेष्टजीविका कर्केयुक्तहैं
अैसे तीनकर्केभी सभाकहीहै ४ (स्ववृत्तिपरितुष्टाये) एह विद्वन्मनोहराविषे पाठकहीहै
इसका अर्थ एह है ॥ किजो अपनी वृत्ति जिसको विहितहै तिसकर्केपरितुष्टहैं ॥ और
पूर्वोक्तकाहि अर्थ कहतेहैं ग्रामेति जो ग्रामादिकों विषे वेदविद्यादिक गुणोंकके
युक्त हैं ब्राह्मण तिनोंविषेभी अस्यंत जो समर्थहैं अैसे चारभी होवेंतो तिनों कर्के
भी सभाकहीहै चारके अभाव विषे तीनही परिपत् कहीहै एह पक्ष दो २ साम्प्रिकके विषे
कहेहैं साम्प्रिकोंके अभाव विषे निराम्प्रिक ब्राह्मणोंकी सभाग्रहण करणो निराम्प्रिकोंविषे पंच ग्रहण
करणेएह मुख्यपक्षहै और तीनभी जानने इनदोनोंपक्षोंके अभावविषे मुनियोंके विषे एककोभी

पंचपूर्वमयाप्रोक्तास्तेपांचाऽसंभवेत्रयः सुवृत्तिपरिपुष्टायेपरिपत्साप्रकी
र्तिता ४ अत्रस्ववृत्तिपरितुष्टाये इति विद्वन्मनोहराधृतःपाठः ग्रामादौवे
दविद्यादिगुणसंपन्नायेब्राह्मणास्तत्रापि येऽत्यंतंसमर्थास्ते चत्वारो मु
ख्या परिपत् तदभावे त्रयोवा परिपत् पक्षद्वयमेतदाहिताग्निष्वभिहितं
तदसंभवेऽनाहिताग्नयोवा ग्राह्याः तत्रापि पंचेतिमुख्यः कल्पः त्रयइत्यनु
कल्पः एतत्पक्षद्वयासंभवे एकस्यापिपरिपत्त्वंमुनीनामित्यादिनोक्तम् आ
त्मनि ब्रह्मणि विद्यानुभवोयेषां तेआत्मविद्याः यज्ञैरिष्टवंतोयज्ञयाजिनः
वेदानामृगादीनां चतुर्णामध्ययनादावनुष्ठितानि वेदव्रतानि तद्व्रतसहितेषु
वेदेषु समाप्तेषु यथाविधिस्नाताः यद्वा शिरोव्रतेषु स्नातानामितिपाठः ॥
आथर्वणिकानां हि वेदव्रतेषु शिरोव्रतमेव मुख्यं व्रतं तथाचाथर्वणिका आम
नन्ति ॥ क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः

सभाका अधिकार इसकर्केकहागया ॥ आत्माविषेक्या ब्रह्मविषे अनुभवहै जिनोंकोसो आत्मविद्य
कहेहैं औरयज्ञोंकके जो पूजितेहुवे सो यज्ञयाजीहैं औरऋग्वेदमें आदलेके जो चार वेदहैं तिनके
अध्ययन करणविषे अनुष्ठान करण योग्य जो व्रत तिनव्रतोंके साथ वेदोंके समाप्त होयां विधिपू
र्वक कियाहै स्नान जिनोंने यद्वा(शिरोव्रतेषुस्नातानां)एहपाठ जानना शिरोव्रतेष्विति शिरोव्रतविषे
कियाहै स्नानजिनोंने और अथर्ववेदके जानने वाले जो ऋषीहैं तिनको वेदव्रतों विषे शिरोव्रत
ही मुख्यव्रतहै तैसेही अथर्ववेदके जानने वाले शिरोव्रतकों मानतेहैं औरकर्मोंके करण वाले
और श्रोत्रियक्या वेदविद्याके जानने वाले और ब्रह्मविषेहैथुतिस्मृतिके अनुसार स्थितिजिनोंकी

१२० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तु ० ॥ टी० भा० ॥

स्वेति आपही अनेजो एकऋषिनामश्रिकों श्रद्धयन्तः क्या श्रद्धाकर्तेहुवे हवनकर्तेहैं तिनकेताई इस ब्रह्मविद्याको कहे जिनोने विधिपूर्वक शिरोव्रत कियाहै औरोंको नहीं कहणा इति पूर्व जैसे कहेहैं संपूर्णगुण तिनकर्के युक्त जो ब्राह्मणहैं तिनब्राह्मणोंमेंसे एकभीहोवे तो सभाके योग्यहै ऐसे चपुनः पंचपक्षकहेहैं दो दो पक्ष साग्नि और निरग्नियां विषे जानणे और एकपक्ष अध्यात्म विद्याविषे जो युक्तहै तिसविषेजानणाइसप्रकार पंचपक्ष जानणे एनां संपूर्णोंके अभाव विषे जो कोई अपनीजीविकाकर्केसंतोपीहैं और विपत् कालविषे भीनिषिद्धजीविकाकेनाग्रहणकरणे कर्के

स्वयं जुह्वंत एकऋषिं श्रद्धयंतस्तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत शिरोव्रतं विधिवैद्यैस्तु चीर्णमेति यथोक्तगुणसंपन्नब्राह्मणेष्वेकोपि परिपद्भवति एवं च पंचपक्षाः प्रोक्ताः साग्न्यनग्निकानां द्वौ द्वौ अध्यात्मविदस्त्वेकइति एषां सर्वेषामभावे ये वा के वा स्ववृत्तिपरितुष्टा आपत्कालेप्यापहृत्यनाश्रयेन यथाकथंचिद्विहितप्रतिग्रहादिभिरेव कृतनिर्वाहास्ते त्रयोऽपि पर्षत्संज्ञालभन्ते । वृहस्पतिरपि । लोकवेदांगतत्त्वज्ञाः सप्तपंचत्रयोपि वा यत्रोपविष्टा विप्रास्स्युः सायज्ञसदृशी सभेति अंगिरसाप्यत्र प्रदर्शिता विकल्पाः ॥ चत्वारो वा त्रयो वापि वेदवन्तोऽग्निहोत्रिणः ॥ हेतौ सम्यक्श्रिता विप्राः कार्य्या कार्य्यं विनिश्चिताः १ प्रायश्चित्तप्रणेतारः सप्ततेच प्रकीर्तिताः एकविंशतिभिश्चान्यैः परिपत्वं समागतैः २

जैसे कैसे श्रेष्ठप्रतिग्रहकर्केकीता है निर्वाहजिनोंने अग्यसे त्रयभी सभाकीयोग्यताकों प्राप्तहोतेहैं वृहस्पतिजीका भीवचनहै लोकंति लोकमर्यादा और वेद और वेदांगकों जो यथार्थजानतेहैं सप्त वापंचवा त्रय जिस सभा विषेहोंण सो सभा यज्ञकेतुल्य जानणी ॥ अंगिराऋषिनेंभी इस विषे विकल्पदित्वायाहै चेति चार वात्रयकहेहैं जो वेदविद्या और अग्निहोत्र विषे युक्त सो पापकेदूरकरणे वाले कारण विष भली प्रकार युक्तहैं और कार्य अकार्यके निर्णयकरणे वाले १ अग्यसे प्रायश्चित्त केकहनवाले सप्तकहेहैं इनां लक्षणांति अन्य जो ब्राह्मणहैं तिनां इकीयां २१ कर्के सभाकहीहै २

सेतिकेवल सावित्रीके जानणे वाले और कीताहैवेदव्रतजिनोंने अयसे इकीयां २१ ब्राह्मणोंके सभाहोतीहै एहपिचले श्लोककेसाथ जानना और वति और अग्न्यविद्यक्यामीमांसाकेपढहोए और वेदकेपढानेवाले और आत्माके पूजनेवाले १ और शिरोव्रतोंकेकीता हैज्ञान जिनाने तिनानेके मध्यविषे एककके भी सभा होतीहै एहसभा लघुकार्यविषे जानणी और मध्यमकार्यविषे मध्यमजानणी और महापातकाके चितनकरणेविषे बहुतयाके मिलनेकके सभाहोतीहै सां भी बहुतवार करणी चाहिए ४ अवमनुजीका वाक्यहै त्रैविद्यइति वेदत्रयके संबंधि जो शाखात्रय तिनाने जानणे वाले तीन १ और हेतुक क्या मीमांसाके जानणेवाले ४ और नैयायिक ५ और यास्कादि कर्करचयाजोशास्त्र तिसके पाठक

सावित्रीमात्रसारैस्तुचीर्णवेदव्रतैर्द्विजैः यतीनामग्न्यविद्यानांध्यायिनामात्म याजिनाम् ३ शिरोव्रतैश्चस्नातानामेकेपिपरिषद्भवेत् एपालाघवकार्येषु मध्यमेपुनमध्यमा महापातकचिंतासु शतशोभूयएवचेतिशतशःपूर्वोक्ताब्रा ह्मणाःपर्षत् तत्रापि भूयःपर्षदनंतरंपर्षदित्यर्थः ४ मनुःत्रैविद्योहेतुकस्तर्की नैरुक्तोधर्मपाठकः। त्रयश्चाश्रमिणःपूर्वे पर्षदेषादशावरा १ त्रैविद्यइतिवेद त्रयसंबंधिशाखात्रयाध्येतारः३ हेतुकोमीमांसकः४तर्की ५ नैरुक्तोयास्कादि प्रणीतशास्त्रपाठी ६ धर्मपाठकोमानवादिधर्मशास्त्रवेदी ७त्रयश्चाश्रमिणो ब्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थाः१ ० अंगिरःपराशरौ चातुर्विद्योविकल्पीच अग विद्धर्मपाठकः ॥ त्रयश्चाश्रमिणोवृद्धाःपर्षदेषादशावरा १ अंगिराः ॥ एकविं शतिसंख्यातैर्मीमांसान्यायपारगैः वेदांतकुशलेरेवपर्षत्वंतुप्रकल्पयेत् १ यमः ॥ एकाद्वैवात्रयोवापियद्वयुर्धर्मपाठकाः सधर्मइतिविज्ञेयेनेतरेषांसह स्रशइति १ इतरेषांधर्मपाठहानानांसहस्रशःसमेतानामपिकथनान्नध र्मसिद्धिरित्यर्थः

रणेवाले ६ और मनुआदिकोकके कहेजोधर्मशास्त्र तिनाने जानणेवाले ७ चपुनः त्रय आश्रमी एक ब्रह्मचारी और दूसरा गृहस्थ और तीसरावानप्रस्थ इनांकी सभादस्ता १० कीहोई इसी कके अवंसक्याछोटीहै १ अवअंगिरा और पराशरजी कहतेहैं चावेदकेजानणेवाला और नैयायिक और वेदांगके जानणेवाला और धर्मशास्त्रकापाठक और त्रय आश्रमी एहदस्ता १० की पपेत् कहिहै १ अवअंगिरसकपिकहतेहैं मीमांसा न्यायके जानणे वाले और वेदांतशास्त्र विषे चतुर अयसे इकीयां कके सभाकोकल्पनकर एह बडेकार्यविषे जानणी १ यमजीकावचनहै एक १ वा दो २ वात्रय धर्मशास्त्र के जानणेवाले जो कहण सोधर्म जानणेयोग्यहै इनांते इतर हजार भी एकत्र होकरकहण तदभी सोधर्म नहिजानणा १

१२२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

मनुजीने स्ववरा क्या तीन तक भी सभाकहीहै धर्म संशयके निरण्यकरण विषेभी दिखाइंदोहै इस जगा आयशब्द कर्के चार पांच आदिभी सभा होतीहै ऋगिति ऋग्वेदके जानणे वाला और यजुर्वेद और सामवेदके जानणे वाला इनां कर्के स्ववरानाम सभाजानणे योग्य है १ अब होर छोटा पक्ष कहतेहैं एक इाते एक भी वेदके जानणेवाला उत्तमब्राह्मण जिस धर्मनू निश्चयकरे सोहि परमधर्म जानणे योग्य है अज्ञ क्या मूर्ख हजारोंभी होण तिनांकर्के कहेहोयेको यथार्थ नहि जानणा २ अव्रततिजोव्रत और मंत्रतेरहित केवल जातिमात्रकर्के उपजीविकाकेकरणेवाले हजारोंभी एकत्र होण तथापि ति नांकी सभानहिकही ३ धर्मविवृतिग्रंथविषेकहाहै पातकविषेसो १०० कर्के और महापापविषे

अथवराद्यापिपर्षन्मनुनाप्रोक्ता ऋग्वेदविद्यजुर्विष्णुसामवेदविदेवच अथ
रापरिषद्ज्ञेयाधर्मसंशयनिर्णये १ एकोपिवेदविद्वर्भयव्यवस्येद्विजोत्तमः
सविज्ञेयःपरोधर्मोनाज्ञानामुदितोयुतैः २ अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रो
पजीविनाम् सहस्रशःसमेतानांपरिषत्वंमविद्यते ३ धर्मविवृतौ ॥ पातके
पुशतंपर्षतूहस्रमहदादिषु ॥ उपपापेषुपंचाशस्त्वल्पेस्त्वल्पातथाभवेत् १
क्षत्रियवैश्ययोः प्रायश्चित्तिव्येविशेषमाहांगिराः ॥ पर्षद्याब्राह्मणानांतुसारा
ज्ञांद्विगुणामता वैश्यानांत्रिगुणाप्रोक्तापर्षद्ब्रतस्मृतम् १ ब्राह्मणो ब्रा
ह्मणानांतु क्षत्रियाणांपुरोहितः वैश्यानांयाजकश्चैवतएवब्रतदाःस्मृताः २
अगुरुः क्षत्रियाणांचवैश्यानांचाप्ययाजकः प्रायश्चित्तंसमादिश्य तप्त
कृच्छ्रंसमाचरेदिति ३

सहस्र१०००कर्के और उपपातकविषे पचास कर्के और अल्पपापविषेअल्पकर्केसभाकहीहै १
क्षत्री औरवैश्यकेताई प्रायश्चित्तकहनेविषेविशेषकोअगिरसऋषिकहताहै पर्षतिजो सभाब्राह्मणों
केताई प्रायश्चित्तकहनेविषेकहीहै सो क्षत्रियोंकेताई दूणोजानणा और वैश्यांकेताई त्रीणीकहीहै
और सभाको न्याई ब्रतभी कहाहै १ ब्राह्मणांताई प्रायश्चित्तको ब्राह्मण कहे और क्षत्रियांकेताई
पुरोहित और वैश्यांकेताई याजक ब्रतको कहण २ अग्विति क्षत्रियोंका नहि जो पुरोहित और
वैश्यांकाजो अयाजकहै क्यानहियज्ञकरवाणेवाला सो प्रायश्चित्तकोकथनकरेतातप्तकृच्छ्रब्रतकोकरे ३

भविष्यपुण्य विषे कहा है चेति शूद्रांके तांइ महात्माऋषियानि चतुर्गुणसभाकही है और व्रतभी पापकर्मांकी शुद्धि वास्ते चतुर्गुण कहा है १ इसमें व्यवस्थाकर्त्त हैं एह द्विगुणआदिक व्रतकाविधान उत्तमजातिकी हस्याविषे जानना इतरजातिविषे व्रतकों थोडा कहणे तें तैसे चतुर्विंशतिके मत विषे दिखाया है प्रेति जो प्रायश्चित्त ऋषियानि ब्राह्मणकों कथनकीता है अत्रा तिसके त्रयपादकरे और बैश्य दो पाद और शूद्र एकपाद करे संपूर्णपापविषे इति १ चतुर्विंशति मतविषे सभाकालक्षण कहा है श्रौतेति श्रुति प्रोक्त अग्निहे धारणवाले और वेदके पठनविषे युक्त और पंचयज्ञोंके करण वाले असे ब्राह्मणसभाके योग्यकहे हैं १ स्वेति और अपने संबंधियांविषे और दूसरे

भविष्ये चतुर्गुणातु शूद्राणां पर्पत्प्रोक्तमहात्मभिः पर्पद्वचनं प्रोक्तं शुद्धये पापकर्मणामिति १ इयंच व्रतवृद्धिरुत्तमजातिहनने द्रष्टव्या इतरवधे व्रतह्रासस्य विधानात् तथा च चतुर्विंशतिमते दार्शितम् प्रायश्चित्तं यदाम्नातं ब्राह्मणस्य महर्षिभिः ॥ पादोनक्षेत्रियः कुर्यादध्वं वैश्यः समाचरेत् १ शूद्रः समाचरेत् पादमशेषेष्वपि पाप्मास्त्विति श्रौताग्निधारका विप्राः श्रुताध्ययनशालिनः पंचयज्ञपराये च पार्षदास्ते प्रकीर्त्तिताः १ स्वजने परजने वापि समाः सर्वेषु जंतुषु शत्रुष्वपि समाये च तेषु पर्पत्प्रशस्यते २ वेदपूर्णमुखा विप्रार्धमशास्त्रसमन्विताः ज्ञानिनः कृतकर्माणस्तेषां पर्पत्प्रशस्यते ३ गायत्रीसारमात्रार्धमशास्त्रबहुश्रुताः मुनिमार्गानुयातारो ज्ञानिनो याज्ञिकास्तथा ४ वेदव्रतेषु ये स्नाता धर्मशास्त्रानुयायिनः गां ब्राह्मणहिताये च तेषां पर्पत्प्रशस्यते ५

विषे जो सम हैं और संपूर्ण जीवांविषे और शत्रुओंविषे भी जो सम हैं तिनकी सभा श्रेष्ठकही है २ वेदेति वेदकर्त्त पूर्ण हैं मुखजिनांका और धर्मशास्त्रके जाननेवाले और ज्ञानी और शुभ कर्मोंके करणवाले जो हैं तिनकी सभा श्रेष्ठकही है ३ गायेति और गायत्री सारके जानने वाले और बहुत श्रवणकीता है धर्मशास्त्रजिनोंने और मुनियोंकी न्याई धर्मके करण वाले और ज्ञानी और यज्ञके करवाणवाले ४ वेदेति वेदव्रतां विषे स्नात और धर्मशास्त्रके अनुसार व्रतनवाले और गौयो और ब्राह्मणोंके हितकरणे विषे युक्त जो ब्राह्मण हैं तिनकी सभा श्रेष्ठ कही है ५

१२४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ल० ॥ टी० भा० ॥

पंचेति पंचपक्षमैने पूर्व कहेहैं और जो अन्यपक्षहैं वा अपरहैं अर्थात् तिन पांचोंमें से जो और मतकहेहैं तिनसभनांमेंसे जोपुरुष नहीं प्रवृत्ति विषे युक्त क्या सर्व वस्तुके त्यागकरके ही प्रसन्नहैं सा सभावेषैं कथन करने चाहिये अथवा पंचपक्षप्रोक्तगुणसे हीन यो होरहैं सो जेकर निवृत्तिपर होण तांउनकीभी सभा जासणी १ क्षत्रियादिकों सभाका अधिकारनहींहै एह कहा है धर्मविवृतिविषैं क्षत्रेति क्षत्रिय और वैश्य और शूद्र कदाचित् भी प्रायश्चित्तके विधानकों न करे अर्थात् ब्राह्मण विना उपदेष्टा नहोवे असा बुद्धिमान् कहतेहैं १ अकतेति जो पुरुष व्रतांसे रहितहैं और मंत्रसे रहितहैं और जातिमात्र कर्के उपजीविका करेसे वालेहैं ऐसे हजारोंभी एकत्र होवें तिनको सभाका अधिकार नहींकहा अवतानां इत्यादिकों विषे ब्राह्मण पदका अध्याहार करलेना २ शूद्रकों निषेध चतुर्विंशतिमतविषैंभी कहाहै श्वेति जैसे श्वानचर्मस्थित दु

पंचपूर्वमथाप्रोक्तायेचान्येवापेरपरे निवृत्तिपरितुष्टायेपार्षदास्तेप्रकीर्तिताः
६ क्षत्रियादीनांपरिषत्त्वंनास्तीत्युक्तंधर्मविवृतौ क्षत्रियोह्यथवैश्योवा शू
द्रोवानकथंचन प्रायश्चित्तविधानंहिकुर्वीतेतिवितुर्बुधाः १ अव्रतानाममंत्रा
णांजातिमात्रोपजीविनां सहस्रशःसमेतानां परिषत्त्वंनविद्यतइति २
अव्रतानामित्यादिषु ब्राह्मणानामितिशेषः ॥ शूद्रस्यनिषेधश्चतुर्विंशतिमते
पि श्वचर्मणियथाक्षीरमपेयंब्राह्मणादिभिः तद्वत्शूद्रमुखाद्वाक्यं नश्रोत
व्यंकथंचन १ पंडितस्यापिशूद्रस्य ज्ञास्त्रज्ञानरत्नस्यच वचनंतस्यनग्राह्यं
शुनोच्छिष्टंहविर्यथा २ शूद्रोज्ञानावलेपेन ब्राह्मणान्भाषतेयदि सयाति
नरकंधोरं यावदाभूतसंल्लवमिति ३ पाराशरेणापि दुःशीलोऽपिद्विजः
पूज्येनतुशूद्रोजितेन्द्रियः ॥ कःपरित्यज्यगांधुष्टांदुहेच्छीलवतींखरी मिति १

श्वहोवे सो ब्राह्मणादिकोंको पानकरने योग्यनहीं तिसी प्रकार शूद्रके मुखसे वाक्य कदाचित्भी
श्रवणकरणयोग्य नहीं अर्थात् धर्मका उपदेश शूद्रसे नहीं श्रवण करना चाहिये १ पंडितेति
पंडितभी होवे और ज्ञास्त्र ज्ञान विषेभी युक्तहोवे तोभी तिस शूद्रका वचन नहींग्रहणकरणयोग्य
जैसे श्वानका उच्छिष्ट हवि ग्रहण करणे योग्य नहीं २ शूद्रेतिजो शूद्र ज्ञानके मदकर्के ब्राह्मणों
कोंवचनकरहे सोप्रलपपर्यंतधोस्नःकोंप्राप्तहोताहै इति ३ पाराशरजीनेभीकहाहै दुःशीलेति ब्राह्म
णदुष्टस्वभाव वालाभीपूजने योग्यहै और शूद्र जितेन्द्रियभी अपूज्यहै इसमें दृष्टांत कहतेहैं कइ
ति कौण पुष्प दुष्ट गोकुल त्यागकर उचम शीलवाली गंधीकों दोहदाहै इति १

॥ श्रीरणबीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १२५

इमेति एह ब्राह्मण प्रायश्चित्तके अर्थवाले ने पूजने योग्यहैं उपस्थानके अर्थ ब्राह्मणोंको वस्त्रादि
कों करके प्रसन्नकरे इसप्रकार प्रायश्चित्तकरणे योग्यहै और महापापों विषे राजाभी पूजनेयोग्यहै
तैसेही देवलजीका वाक्यहै स्वयमिति अल्पदोष विषे ब्रह्मणोंने आपही प्रायश्चित्त कहणा और
महापापोंविषे राजाने ब्राह्मणोंकेसाथ परीक्षाकरके तिनों पापोंविषे कच्छव्रत करवाणे योग्यहै इसी
मेपराशरजीकावचनहै पापमितिपापीपुरुष गौ और वृषकोंदेकरपापकोंकथनकरे १ इदमिति एह
गौ और वृषभकादान प्राजापत्यव्रतसे अधिक प्रायश्चित्तविषे जानणा प्राजापत्य व्रततक प्रायश्चित्त
विषे दानकों विष्णुजीकहतेहैं पादेति पादव्रतविषेबस्त्रदान और कच्छकेदोपाद व्रत विषे तिल
और स्वर्णदान और तनिपाद व्रतविषे एक गोदान और संपूर्ण कच्छव्रतविषे गौ और बैल

इमेहि प्रायश्चित्तार्थिनोपस्थेयाः उपस्थानंचब्राह्मणान् वस्त्रादिनासंतोष्य
कर्तव्यम् महापापेषु राजाप्युपस्थेयः तथाचदेवलः स्वयंवाब्राह्मणैःकच्छ
मल्पदोषेविधीयते ॥ राजाचब्राह्मणैश्चैवमहत्सुसुपरीक्ष्यचेति १ कच्छंतत्त
त्पापेषुक्रियमाणंव्रतांपराशरः ॥ पापंप्रख्यापयेत्पापी दत्त्वाधेनुंतथावृषमिति
इदंगोवृषदानं प्राजापत्याधिकप्रायश्चित्तविषयम् प्राजापत्यपर्यंतं ॥ विष्णु
राह ॥ पादव्रतेवस्त्रदानंकच्छार्धेतिलकांचनं पादहीनेतुगामेकां कच्छेगौ
मिथुनंस्मृतमिति १ इदंगोवृषदानमुपपातकविषयम् महापाषादिष्वधि
कंकल्प्यमितिमिताक्षरायां अल्पपापेष्वपितत्रैव तस्माद्विजः प्रत्यवायी
प्रायःसंकल्प्यवारिणा विख्याप्यपापंवक्तृभ्यः किंचिद्वत्वाव्रतंचरेत् १ किंचि
द्वत्वापापंविख्याप्यव्रतंचरेदित्यन्वयः एतत्प्रकीर्णकविषयमिति मदनरत्ने
ज्ञात्वाप्रायश्चित्ताकथने दोषआप्तानामित्यादिना प्रथमप्रकरणांते प्रोक्तः

दान कहतेहैं इति १ एह गौ और बैलका दान उपपातकके प्रायश्चित्त विषे जानना और महा
पापों विषे अधिकदान करणे योग्यहै एह मिताक्षराविषेकहाहै और अल्पपापों विषे जो व्रतका
प्रकारहै सो मिताक्षराविषेहीकहाहै तस्मेति तिसकारणसे पापके करणेवाला प्रायश्चित्तकेकहणे वा
लोंको कुछदेकर पापकों प्रकटकरे और जलसाथ संकल्प करके देवे पीछे व्रतको करे एह
प्रकीर्णक प्रायश्चित्त विषे जानना ऐसे मदन रत्नविषे कहाहै जो धर्मशास्त्रको जाणकर प्रायश्चित्त
के पूछणेको आयेहुवे दुखीको प्रायश्चित्तकों न कहें तिनको दोषहै सो प्रथम प्रकर
णकेअंतविषेकहाहै

१२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

प्रायश्चित्तेति प्रायश्चित्तके उपदेशकी विधिकों अंगिरस ऋषिकहतेहैं वचइति धर्मवेत्ताओंने प्रथम प्रायश्चित्तका धर्मशास्त्रोक्त वचन कहनेयोग्यहै पीछेसमर्थताकों देखकर पापकी न्यूनता अधिकताके अनुसार अनुग्रहकों करें क्या प्रायश्चित्तकी न्यूनताकों करें १ और सभाका वचन सभको प्रमाण करणा चाहिये एह कहतेहैं नहीति तिन महात्माओंके वचनोंको उल्लेखन करके अतिशय करके है एहज्ञान जिनको ऐसेविद्वानोंनेभी और कथनकरणा उचित नहीं २ फिर अंगिरस ऋषिका वचनहै ततइति तिसकारणसे सो महात्मा! वृद्ध आगे नमस्कारकरके और हाथ जोड़कर मन्त्रता पूर्वक बैठेहुवे कों पूछतेहैं हमारे साथ तेरा क्या प्रयोजनहै ३ कहां क्यों

प्रायश्चित्तोपदेशविधिमाहांगिराः वचःपूर्वमुदाहार्यं यथोक्तं धर्मवक्तृभिः
पश्चात्कार्यानुसारेण शक्त्याकुर्युरनुग्रहम् १ वचःप्रायश्चित्तविधायकं अनुग्रहः प्रायश्चित्तन्यूनता नहितेषामतिक्रम्यवचनानिमहात्मनां प्रज्ञानैरपिविद्वद्भिः शक्यमन्यत्प्रभाषितुमिति २ पुनःसएव ॥ ततस्तेप्रणिपातेनदृष्ट्वातंसमुपस्थितम् वृद्धाःपृच्छन्ति किंकार्यमुपविश्याग्रतःस्थितम् ३ किंतेकार्यं वदास्माभिः किंवाप्तुमशक्यं तत्त्वतो ब्रूहितत्सर्वसत्यंहिगतिरात्मनः ४ सत्येन द्योतते राजा सत्येन द्योतते रविः सत्येन द्योतते वसुहिः सर्वसत्ये प्रतिष्ठितम् ५ भूर्भुवःस्वस्त्रयो लोकास्तेपि सत्ये प्रतिष्ठिताः अस्माकंचैव सर्वेषां सत्यमेव परंबलम् ६ यदि चेद्दृश्यसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे शुभम् यद्यागतोस्य सत्येन न त्वं शुद्ध्यसि किं हि चित् ७ एवैतैः समनुज्ञातः सर्वं ब्रूयादशेषत इति ८ उपदेशस्तु परिषदं तर्गते नैकेनैव कार्यः

ब्राह्मणोंको डूडताहैं यथार्थता करके संपूर्ण सत्य करके कहीं सत्यही आत्माका स्वरूपहै ४ सत्यकके चंद्रमा और सूर्य और अग्नि प्रकाशते हैं सभकुल सत्यविषे स्थितहै ५ भूर्भुवेति पृथ्वी लोक और आकाश और स्वर्ग एह तीन लोकभी सत्यकके ही स्थितहैं हमारे संपूर्णका भी उत्कृष्टबल सत्यहीहै ६ जद तू सत्यकहेंगा तो निश्चय करके शुभको प्राप्त होवेंगा जेकर असत्यका अंगीकार करके आयाहैं तबतू कदाचित्भी शुद्धीको न प्राप्त होवेंगा ७ इस प्रकार तिन ब्राह्मणोंकी आज्ञाओं प्राप्तहुवा २ सभाविषे संपूर्ण सत्यही कहे ८ अब कहतेहैं कि चाहे सभामें कितने होण परंतु एक ब्राह्मणने ही प्रायश्चित्तका उपदेश कथन करणे योग्यहै

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १२७

इस विषे अंगिरस ऋषिकावचनहै आहूयेति जो ब्राह्मण प्रायश्चित्त उपदेशके कथनवास्तेसमाने नियत कियाहै सो ब्राह्मण प्रायश्चित्तियों बुलाकर कथन करे क्या है ब्राह्मण श्रवण कर जो व्रत मैनेतेरेको कथन करीदाहै सो तैने यत्न करके करणेयोग्यहै जेकर न करेंगा तो तेरा सभकृत्य वृथाहै २ अब असमर्थविषे देवलजीकावाक्यहै प्रति शास्त्रानुसार किहा जो प्रायश्चित्त तिसके करणे विषे असमर्थ होवे तो तिसकी सामर्थ्यके अनुसार अनुग्रह करे क्योंकि तिसने किया जो पूजा इत्यादि तिसको अनुग्रहका कारण होणेतै १ प्रायश्चित्त देशकालादिक देखकर देणेयोग्यहै तैसेही बौधायन ऋषि भी कहतैहैं शरीरमिति शरीरकी रुशता स्थूलतादि और रुशता आदिविषेभी बल निबलकों और वय जो बाल्यादिअवस्था तिसविषे भी सोलां वर्षी तक बाल कहाहै सोकितने वर्षीका है ऐसे कहकर निणय करे और काल शीतादि और क्या कर्म कर

अंगिराः ॥ आहूय श्रावयेदेकः पर्षदायोनियोजितः शृणुष्वभो इदं विप्रयच्च आदिश्यते व्रतम् १ तत्तद्यत्नेन कर्तव्यमन्यथा ते वृथा भवेदिति २ देवलः ॥ प्रायश्चित्तं यथा हि षष्ठमशक्त्या तद्वशात्पुनः इष्यते नुग्रहश्चापि पूजानुग्रहकारणात् १ प्रायश्चित्तं देशकालादिपूर्वकं दातव्यम् तथाह ॥ बौधायनः ॥ शरीरं बलमायुश्च वयः कालचकर्मच समीक्ष्य धर्मविद्वद्भ्यां प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेदिति १ इदं चार्चितैर्ब्राह्मणैर्देयमित्याह स एव अनर्चितैरनाहूतैरष्टैश्चैव संसदि प्रायश्चित्तं न वक्तव्यं जानद्भिरपि च द्विजैः २ न्यायतो मार्गमाणस्य क्षत्रियादेः प्रणामिनः अंतरा ब्राह्मणं कृत्वा व्रतमेतत्समादिशेत् ३ हारीतः ॥ यथावयौ यथाकालं यथा प्राणं च ब्राह्मणे ॥ प्रायश्चित्तं प्रदातव्यं ब्राह्मणैर्वेदपाठकैः १ वयो बाल्यादि कालः शीतादिः प्राणः कार्श्यमांसलत्वादिर्बोध्यः तदनति

क्रमेण दातव्यमित्यर्थः

ताहै इस संपूर्णको धर्म वेत्ता बुद्धिपूर्वक विचार कर प्रायश्चित्तको कथनकरे १ पूजाको प्रातहुवे जो ब्राह्मण तिनोने इह प्रायश्चित्तदेणे योग्यहै इसको बौधायनजी कहतैहैं अनर्चितेति प्रायश्चित्तको जाणते जो ब्राह्मण सो सभाविषे नहीं पूज और बुलायेभी नहीं और पूछेभीनाहितिनी ने प्रायश्चित्त नहीं कहने योग्य २ अब क्षत्रियादि विषे कहतैहैं न्यायेति तिस कारणसे नीति पूर्वक पापके दूर करणे लिये दूँडत और नमस्कारकरते जो क्षत्रियादि तिनको मध्यविषे ब्राह्मण बठाकर प्रायश्चित्त कथन करे अर्थात् क्षत्रियादि ब्राह्मणको साथ लेकर व्रतको पूछे और तैसे ही करे ३ अवहारीत ऋषिका वचनहै यथेति वेदपाठी ब्राह्मणोंने ब्राह्मणके ताँडे प्रायश्चित्त वय बाल्यादिअवस्था काल शीतादि प्राण रुशस्थूलादि एह सब देखकरदेणे योग्यहै १

१२८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

तस्मेति तिसकारण्ये सामर्थ्यको देखकर कृच्छ्रका अर्ध वा पाद क्या कृच्छ्रका चतुर्थांश विधिसे बलनिबलकों और शीतादि कालकों जानकर प्रायश्चित्तकों कथनकरे २ असमर्थ पुरुष विषे अनुग्रहको पराशरजी कहते हैं दुर्बलेति निबलपुरुषविषे तैसे बाल और वृद्धविषे अनुग्रहकरणे योग्य है इन्होंने अन्यविषे अनुग्रहकरे तो दोष होता है तिसकारणसे और विषे अनुग्रहक्या प्रायश्चित्तकी न्यून तानकरे १ सोई कहते हैं वृद्धेति वृद्धादिकों विषे अर्ध प्रायश्चित्त कहा है जो अरसी ८० वर्ष का है सो वृद्ध जानना और बाल सोलां १६ वर्ष से न्यून जानना और स्त्रियां और रोगी इनको अर्द्ध प्रायश्चित्त कहा है २ अब प्रायश्चित्तके देशकों पराशरजी कहते हैं प्रति सर्वदा ही देवताके मंदिरके सन्मुख प्रायश्चित्तको देव देवतायतन कहणे करके पवित्रक्षेत्र और तीर्थोंदिकोंका भी ग्रहणकरणा प्रायश्चित्तदा

तस्मात्कृच्छ्रमथाप्यर्द्धपादं वापि विधानतः ज्ञात्वा बलाबलं कालं प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत् २ अशक्ता वनुग्रहमाह पराशरः ॥ दुर्बलेऽनुग्रहः कार्यस्तथैवाशिशु वृद्धयोः अतोऽन्यथा भवेदोषस्तस्मान्नानुग्रही भवेत् १ वृद्धादौ त्वर्धं प्रायश्चित्तं अशीतिर्यस्य वर्षाणि बालो वाप्यून षोडशः प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति स्त्रियो रोगिण एव च २ प्रायश्चित्तदेशमुपदिशति पराशरः । प्रायश्चित्तं सदा दद्याद्देवतायतनाग्रतः ॥ इदं पुण्यक्षेत्रतीर्थादेरुपलक्षणम् प्रायश्चित्तदानोत्तरं प्रायश्चित्तनिर्देशदृष्ट्या जप्यमाह हारीतः ॥ प्रायश्चित्तं तु निर्दिश्य कथं पापात् प्रमुच्यते यत्पवित्रं विजानीयाज्जपेद्वा वेदमातरम् १ वेदमाता गायत्री अनुग्राहकस्वरूपमाहांगिराः ॥ कृत्वा पूर्वमुदाहारं यथोक्तं धर्मकर्तृभिः पश्चात्कार्यानुसारेण शक्त्या कुर्युः अनुग्रहम् १ प्रायश्चित्तं यथोदिष्टमशक्यं दुर्बलादिभिः इष्यते

नुग्रहस्तेषां लोकसंग्रहकारणात् २

नसें पीछे प्रायश्चित्तके कहनेवालोंको जो जपने योग्य है तिसको हारीत ऋषि कहते हैं प्रति प्रायश्चित्तकों कहकर आप कैसे पापसे रहित होता है सो कथन करते हैं जिसको पवित्रजाने तिसको जपे वा वेदमाता जो गायत्री तिसको जपे १ अनुग्रहकरणे योग्य जो है तिसके अर्थ अंगिरस ऋषि कहते हैं कृत्वेति धर्मकरणवाले अथवा धर्म कहनेवाले ऋषियोंने जैसे पापके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्त चांद्रायणादि कहा है तिसको प्रायश्चित्तकी को पूर्व कहकर पीछे पापके अनुसार तिसको सामर्थ्यको देखकर अनुग्रहको करें (धर्मवर्तुभिः) और साथी किसे पुस्तकमें पाठ है १ निबल पुरुषोंने यथोक्त प्रायश्चित्तकरणे को अशक्य है तो तिनोपर अनुग्रह करणे योग्य है जिस प्रकार लोक प्रायश्चित्तकों करें भय का कि त्याग न करें इसी कारणसे २

एकइति और अनुग्रह करणे को एकब्राह्मण योग्यनहीं है चाहें सहित अंगोंके वेदके जाननेवाला भी होवे धर्मके जाननेवाले बहुत ब्राह्मण इकठे होकर अनुग्रह करणे को योग्य हैं १ जिस स्थानमें अनुग्रह कहा है तिस जगसँ विना जो अनुग्रह करते हैं तिनके वास्ते पराशरजी दोष कहते हैं स्नेहति प्रीतिसें लोभसें और भयसें और अज्ञानसें प्रायश्चित्तके ऊपर जो अनुग्रह करते हैं तिस पापीका पाप अनुग्रह करणे वालों विषे प्राप्त होता है १ जैसे समर्थके ऊपर अनुग्रह किये होयां दोष है इसी प्रकार असमर्थके ऊपर नहीं अनुग्रहमे दोष होता है एह वाक्य पराशरजी कहते हैं शरीरस्वेति शरीरका नाश प्राप्त होयां २ असमर्थको जो नियम कहते हैं और समर्थके बड़े पापविषे जो नियम नहीं कहते सो तिनोके पापके भागी होते हैं २ अथेति प्रायश्चित्त करणेको समर्थ जो पुरु

एकोनार्हतितत्कर्तुमनूचानोप्यनुग्रहम् धर्मज्ञावहवोविप्राः कर्तुमर्हत्यनुग्रहमिति ३ उक्तातिरेकेणानुग्रहे प्रत्यवायं विशदयति ॥ पराशरः ॥ स्नेहा द्वायदिवालोभाद्भयादज्ञानतोपिवा कुर्वत्यनुग्रहं येतु तत्पापं तेषु गच्छति १ यथा समर्थानुग्रहे प्रत्यवायस्तथा दुर्बलाननुग्रहेऽपीत्याह ॥ पराशरः ॥ शरीरस्यात्यये प्राप्ते वदंति नियमंतु ये महाकार्योपरोधे च न स्वस्थस्य कदाचनेति २ पतंति नरके शुचौ इत्यनेन संबन्धः अथ प्रायश्चित्ताचरणक्षमस्य प्रतिनिधिर्नकारयितव्य इत्याह ॥ पराशरः ॥ स्वस्थस्य मूढाः कुर्वन्ति वदंति नियमं च ये ॥ ते तस्य विघ्नकर्तारः पतंति नरकेऽशुचौ ३ प्रतिनिधिनियामकं शास्त्ररहस्यमजानंतो ये स्वस्थस्यापि प्रतिनिधिकुर्वन्ति यश्च प्रतिनिधयेन प्रायश्चित्तं करोति सर्वेपि ते तस्य निमित्ततः पापनिवृत्तौ विघ्नकुर्वन्तीत्यशुचौ नरके पतन्तीत्यर्थः ३

प तिसका प्रतिनिधि अर्थात् प्रायश्चित्त करणे वास्ते दूसरा पुरुष नहीं स्वीकार करणा एह पराशर जीका वाक्य है स्वस्थस्येति स्वस्थकया समर्थ पुरुषके प्रायश्चित्तके वास्ते प्रतिनिधिको जो मूढ अर्थात् शास्त्ररहित पुरुष करते हैं और असमर्थको नियमही कहते हैं अर्थात् प्रतिनिधि को नहीं करते सो तिसके विघ्न कर्त्ता हैं और अतिशोक युक्त हुवे २ नरकमे पड़ते हैं ३ प्रतिनिधीति इसीका अर्थमूलमें स्पष्ट करके कहा है जो पुरुष समर्थ पुरुषके प्रायश्चित्तके वास्ते प्रतिनिधिको स्वीकार करते हैं सो प्रतिनिधिके नियमकरणे मूला जो शास्त्रकारहस्य तिसको नहीं जानते हैं और जो प्रतिनिधि करके प्रायश्चित्त करता है सो सब अर्थात् दो २ निमित्तसें पाप निवृत्तिके विषे विघ्न करते हैं और अशुचि नरकके विषे पड़ते हैं ३

१३० ॥ श्रीरणवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

अथेति अब प्रायश्चित्त करने वालेको जो योग्यहै सो विष्णु ऋषिकहताहै सर्वेति प्रायश्चित्त करनेकी इच्छा होवे तो संपूर्ण पापोंके निमित्त संपूर्णव्रतोंका विधिपूर्वक ग्रहणकरणा तिसको कथनकरताहूँ १ दिनेतिकया दिनांते अर्थात् सायंकाल विषे नखरोमोंको कटवा करके स्नान करे भस्म गोमय मृत्तिका और जल और पंचगव्य इनोंकरके मलको दूरकरे शरीरको शुद्धिवास्ते २ दंतधावनेति दंतधावनकरके और पंचगव्य पान करके सायंकालविषे तार्योंका दर्शन करके व्रत ग्रहण करेयोग्यहै ३ आचम्येति आचमनकरके मौन धारकर अपने पापका चिंतनकरे और मनके संताप करने वाला जो शोक तिसकोंकरे अंतःकरणसे ४ रोमेति रोमशब्दकरके श्मश्रु अर्थात् दाढ़ीका ग्रहणहै और आदिशब्दकरके केशोंका ग्रहण करणा बाह्यशौच अर्थात् पाप

अथेतिकर्तव्यतामाहविष्णुः ॥ सर्वपापेषुसर्वेषांव्रतानांविधिपूर्वकम् ग्रहणं प्रवक्ष्यामिप्रायश्चित्तोचिकीर्षिते १ दिनांतैनखरोमादीन् प्रवाप्यस्नानमाचरेत् भस्मगोमयमृद्धारि पंचगव्यादिकल्पितैः ॥ मलापकर्षणकार्यं बाह्यशौचविद्वद्भ्ये २ दंतधावनपूर्वेणपंचगव्येनसंयुतम् व्रतंनिशामुखेग्राह्यं वहिस्तारकदर्शने ३ आचम्यातःपरंमौनीध्यायन्हुष्कृतमात्मनः मनःसंतापनंतीव्रमुद्वेहच्छोकमंततइति ४ रोम श्मश्रु आदिना केशग्रहणं बाह्यशौचं पापनिर्हरणं ॥ व्रतं होमशेषरूपमिति महर्षिर्वै व्रतंनामप्रायश्चित्तसंकल्पः ॥ इतिमाधवः ४ मनुरप्याह ॥ ख्यापनेनाऽनुतापेनतपसाऽध्ययनेनच पापकृन्मुच्यतेपापात्तथादानेनचापदि १ अध्ययनंश्रवणोपलक्षणं आपदीत्यनेनाऽध्ययनतपसोर्दानमनुकल्पमित्युक्तं हिंसातिरिक्तविषयकमिदम्

का दूरकरणा और व्रतशब्दकरके हवनकरणा एह महाण्व ग्रंथका मतहै और व्रतनाम प्रायश्चित्तका संकल्प करणा एह माधवजीका मतहै ४ और मनुजीभी इसी मतको पुष्ट करतेहैं ख्यापनेति पापकरने वाला जो पुरुष सो महात्माओंके पास तिस पापको कथनकरके और अनुताप और तप और वेदके पढने करके पापसे रहित होताहै और अपितु कालविषे दान करके पापसे रहित होताहै १ और अध्ययनशब्दकरके श्रवणकाभी ग्रहणहै और आपदकालविषे अध्ययन और तपका संभव नहीं होताहै इसवास्ते तिनकी जगा दानकरे एहअनुकल्प अर्थात् लघुपक्षहै और सोदान हिंसासे अतिरिक्त विषयक करण विषे लघुपक्षहोताहै

॥ श्रीरघवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १३१

और हिंसा स्वरूप पापकी निवृत्तिके वास्ते दानही मुख्यपक्षहै सो कहाहै भविष्य पुसण वि
ये हिंसेति हिंसात्मक अर्थात् हिंसास्वरूप सभप्रायश्चित्तोंके समूहजो ऋषिओंने कहेहैं तिनांके
दूर करणे वास्ते दान करणा प्रथम कल्पहै अर्थात् मुख्य कहीदाहै १ तैसे ही मनुजीने कहाहै
बधमिति सर्पादिकोंके बधसे उत्पन्नहुवा जो पाप तिसको दानकरके दूरकरणेको असमर्थहोवे
जो द्विज सो पापकी निवृत्तिके वास्ते एक २ बधके प्रति एक २ कच्छकरे अर्थात् जितने सर्पा
दि मारे होन उतनेही कच्छ करे १ और इस श्लोककी व्याख्या क्या अर्थ उपपातक प्रकरण
विषे करदियाहै और संवर्तजाने कहा जो सामान्य प्रायश्चित्त तिसमें जैसे कहाहै सो कहतेहैं
हिरण्येति हिरण्यदान अर्थात् सुवर्णदान और गोदान भूमिदान एह जो दानहैं सो सामान्य पापों
को और महापातकीकेसंसर्गसे उत्पन्न हुवे जो पाप तिनकोभी दूरकरतेहैं १ और यमजीभी इसी

हिंसायांतुदानं मुख्यं तदुक्तं भविष्ये हिंसात्मकानां सर्वेषां कीर्तितानां मनीषि
भिः प्रायश्चित्तकदंबानां दानं प्रथम उच्यते १ तथा च मनुः ॥ बधदानेन निर्णे
क्तुं सर्पादीनामशक्नुवन् एकैकशश्चरेत्कच्छं द्विजः पापापनुत्तये १ व्याख्या
तोऽयं श्लोक उपपातक प्रकरणे ॥ संवर्तप्रोक्ते सामान्य प्रायश्चित्ते यथा ॥ हिर
ण्यदानं गोदानं भूमिदानं तथैव च नाशयत्याशु पापानि महापातकं जान्यपि १
यमोपि ॥ शोषणेन शरीरस्य तपसाध्ययनेन च पापकृन्मुच्यते पापाद्दानेन च
दमेन च १ तथा च मनुः ॥ कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते ॥ नैतत्कु
र्व्या पुनरिति निवृत्त्या पूयते तु सः १ विष्णुपुराणे ॥ प्रायश्चित्तान्यशेषाणितपः
कर्मात्मकानि वै ॥ यानितेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणं परम् १

पक्षको घुष्टकरतेहैं शोषणेति पापके करणे बाला जो पुरुष सोशरीरके सुकाणे करके अर्थात् व्रत
करणेकरके और तपकरणे करके और वेदपढ़ने करके और दानकरणसे और दमन करके अर्थात्
तु इंद्रियोंके जीतने करके पापोंसे रहित होताहै १ और मनुजीभी इसीपक्षको दृढ़करतेहैं कृत्वा
ति जो पुरुष पापकों करके फेरमनमें बहुतसताप करे तो पापसे रहित होताहै फेरमें ऐसा पाप
नहीं करूंगा इसनिवृत्तिमें बाह पुरुष पवित्र होजाताहै १ और विष्णुपुराण विषे पाप निवृत्तिक
वास्ते और प्रकार कहाहै प्रायश्चित्तानेति संपूर्ण पापोंकी निवृत्तिके वास्ते जो सभ तपस्वरूप और
कर्मस्वरूप प्रायश्चित्तहैं तिनके मध्यविषे विष्णुका स्मरणरूप प्रायश्चित्त पर है अर्थात् अष्टह १
इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके कहाहै . .

१२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

यानीति और इसके अर्थका बिस्तार साधारण प्रकरणविषे जान लेना और एइ साधारण प्रकरणविषे कहेजो प्रायश्चित्त सो अनादेश विषे अर्थात् जिस पापके वास्ते प्रायश्चित्त नहीं कहा उ सपापकी लाघवता और गौरवताकी तारतम्यताको देख करके अर्थात् वोह पाप थोडा होवे वा बडाहोवे इसवातको देखकर कहने योग्यहैं जैसे अल्प पाप होवे तो कुछ थोडाजैसा सुवर्ण दानकरवाणा उससे अधिकहोवे तो गोदान करे ॥ फेर यहीप्रकार विष्णुपुराणविषे भी कहा है एवमिति हेपुत्र ऐसेही विषय भेदसे संपूर्ण छोटे बडे जो प्रायश्चित्तहैं तिनोंकी व्यवस्था क्या स्थिति करवाणीयोग्यहै सो कहतेहैं थोडे पापके वास्ते थोडा प्रायश्चित्त कथनकरणा और बडे पापके वास्ते बडाप्रायश्चित्तकथनकरणा १ जेकर हे महाबाहो ऐसा नकरे तो थोडे पाप केवास्ते जो बडे पापका करणाहै सो निष्फलताको प्राप्तहोताहै २ विषयेति और जिस

यानि तपःप्रभृतीनि प्रायश्चित्तानि तेषांसर्वेषामध्येविष्णुस्मरणं श्रेष्ठमित्यर्थः
विस्तरस्तुसाधारणप्रकरणेबोध्यः एतान्यनादेशविषय एनसो लाघवगौरवतारतम्यपर्यालोचनयाविकल्पेन योज्यानि तत्रैव एवंविषयभेदाद्वैव्यवस्थाप्यानिपुत्रक प्रायश्चित्तानिसर्वाणिगुरुणिचलघूनिच १ अन्यथाहि महाबाहोलघूनामुपदेशतः ॥ गुरुणामुपदेशोहिनिष्प्रयोजनतां ब्रजेदिति २ विषयविवेकाभावेसाधारणं प्रायश्चित्तं प्रयोज्यं ॥ महाभारते ॥ यद्यकार्यशतं कृत्वा कृतंगंगाभिषेचनम् सर्वदहति गंगां भस्तूलराशिमिवानलः १ तथा शुद्धिकराणि व्रतानि विश्वामित्रप्रोक्तानि विषयव्यवस्थावै साधारणप्रकरणतोऽवगंतव्यानि ॥ जावालिः ॥ आरंभे सर्वकृच्छ्राणां समाप्तौ च विशेषतः आग्नेनैव हि शालाग्रौ जुहुयाद्वाहतीः पृथक् १ विष्णुः ॥ श्राद्धं कुर्याद्ब्रतांते च गाहिरण्यादिदक्षिणामिति

पापका विषय ज्ञान नहींहै उस पापके वास्तेसाधारण प्रायश्चित्त कहणायोग्यहै ॥ महाभारत विषेभी पापकी निवृत्ति वास्ते और प्रकार कहाहै यबोबि जो पुरुष सेकडे पाप करके फेर गंगा जीका स्नान करे सो गंगाजीका जल उसके संपूर्ण पापोंको दग्धकरताहै जैसे रूके समूहको अग्नि दग्धकरताहै १ तयेति तैसेही शुद्धीके करणे वाले व्रत जो विश्वामित्रजीने कहेहै सो विषय व्यवस्थाके वास्ते साधारण प्रकरणसे जानने योग्यहैं ॥ अब जावालि ऋषि प्रायश्चित्तके प्रारंभका प्रकार कहतेहैं आरंभेति संपूर्ण व्रतोंके आरंभमे और समाप्तिमें विशेषतासे धृतकरके अग्निशालाविषे व्याहृतियोंके अधिष्ठाता जो देवताहैं तिनोंकेवास्तेभिध २ हवन करे १ विष्णुजी कहतेहैं श्रेति श्राद्ध और व्रतकेअंतमें गौ और सुवर्णसेश्रादलेकर आचार्यकेताई दक्षिणादेवे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०तृ० ॥ टी० भा० ॥ १३३

और इसी धाक्यका अर्थ मूलमें स्पष्ट कर्के कहा है आदिना इति आदिशब्दकर्के दशदानों का ग्रहण करणा और चकार पठनसे क्या जानते हैं कि व्रतके आदिविषे भी आदिका ग्रहण है ॥ विष्णुजीने ऐसे कहा है वीति अपनी कामनाकर्के संकल्पविधो कर्के वैष्णव आदिकरे और पि एडदान नकरे यह स्वरूप वैष्णव आदिका है और कैयोंके मतविषे सपिंडभी एह आदिक है फेर ब्राह्मणोंके ताई गोदान देवे और यथाशक्तिसं दक्षिणाभी देवे १ और संकल्प आदिविषे कितनेक पदार्थ त्यागे हैं जो आदचंद्रिका विषे कहे हैं सां तिसी आदचंद्रिकासें जानलेने ॥ और वपन विषे अर्थात् मुंडनविषे वसिष्ठजीने विशेष कहा है कृच्छ्राणामिति और व्रतरूप जो प्रायश्चित्त तिनके वास्ते श्मश्रुक्या दाढी और केश तिनको कटावे परंतु नेत्रोंके रोम और शिखाको वर्जक

आदिना दशदानानि ग्राह्याणि चकाराद्भूतादावपि आदं विष्णुदेवताकंकार्यमित्याह । विष्णुः । विधाय वैष्णवं आदं सांकल्प्य निजकाम्यया धेनुदद्याद्विजेभ्योऽपि दक्षिणां च स्वशक्तित इति १ सांकल्प्य आदिकेचित्पदार्थास्त्यक्ताः आदचंद्रिकायां तत एव बोध्याः वपने विशेषो वसिष्ठेनोक्तः । कृच्छ्राणां व्रतरूपाणां श्मश्रुकेशादिवापयेत् आक्षिरोमशिखावर्जमिति स्मृत्यंतरमपि १ उपपक्षश्मश्रुकेशान्वापयेत् क्रमात्सदा ॥ शिखाप्रकोष्ठभूपस्थान्वर्जयित्वा द्विजोत्तम इति २ कृच्छ्राणां प्रायश्चित्तरूपाणां प्रारंभे वपनं विधेयं पुण्यार्थं करणेतु न विधेयमिति भावः अत एव गोवधे पराशरः ॥ प्राजापत्यं चरेत् कृच्छ्रं गोघाती व्रतमुत्तमम् सशिखं वपनं कुर्यात् त्रिसंध्यमवगाहनमिति १

रके और इसी पक्षको पुष्टकरणे वाली और भी स्मृति है सो कहते हैं १ उपपक्षेति ब्राह्मण उपपक्ष क्या शिरके दोनों पाश्वोंके रोम श्मश्रुक्या दाढी और केश तिनको क्रमसे सदा कटवावे शिखा और प्रकोष्ठ क्या हाथका उपरिभाग अर्थात् बांहों और भ्रुक्या नेत्रोंके भ्रुवदे उपस्थ क्या लिंग तिनोंके रोमोंको वर्जकरके अर्थात् इनके रोम मुंडन विषे न कटवावे २ कृच्छ्राणामिति और प्रायश्चित्तरूप जो व्रत तिनके प्रारंभमें वपन अर्थात् मुंडन करणायोग्य है और पुण्यवास्ते जो व्रत करण है तिस विषे मुंडन न करवावे ३ इसी कारणसे गोवधमें पराशरजीने कहा है प्राजापत्यमिति घारादिना प्राजापत्य जो अत्युत्तम व्रत है तिस व्रतको गोघाती अर्थात् गोहत्या करण वाला जो पुरुष सो करे और सहित शिखाके मुंडन करवावे और तीन काल स्नानकरे १

१३४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

श्रीर संवत्तजीके स्मरण विषे विशेष कहाहै पादइति श्रीर पादविषे अर्थात् तीन दिनके व्रतविषे अंगोके रोमही कटवावे श्रीर किसी जगसे न कटवावे श्रीर किसी जगमें पाँद करके चार दिनका व्रतभी कहाहै श्रीर द्विपाद विषे अर्थात् छे दिनके व्रत विषे श्मश्रु अर्थात् दाढ़ी भी कटवावे श्रीर त्रिपादव्रत विषे शिखाको वर्ज करके मुंडन करवावे श्रीर निपात विषे अर्थात् संपूर्ण व्रतविषे साशिख मुंडनकरवावे अर्थात् सहित शिखाके १ श्रीर इसजग कच्छग्रहण करणे करके बारादिनोंकरके साध्यजो व्रत तिसके अधिकारी जो पुरुष तिनको वपन क्या सारा मुंडन कहाहै श्रीर बारा दिनसे न्यून होवें तो संपूर्ण मुंडन न करवावे २ श्रीर हारीतजीने केशोंके न वपन करवावे विषे विशेष कहाहै राजेति राजा श्रीर राजाका पुत्र श्रीर बहुतशास्त्रोंको पढाहुवा जो ब्राह्मण एह सब केशोंका वपन करवा करके फेर व्रत करण १ श्रीर जबकेश रहनेदेनेहोवें तो केशोंकी रक्षा वास्ते द्विगुण व्रत अर्थात् चौबी दिनका

संवत्तस्मरणविशेषः ॥ पादंगरोमवपनं द्विपादेश्मश्रुणोपिच त्रिपादेतु शिखावर्जसशिखंतुनिपातन इति ॥ १ ॥ अत्र कच्छग्रहणाद् द्वादशा हसाध्यप्रायश्चित्ताधिकारिणां वपनं भवति न तन्न्यूने ॥ २ ॥ हारीतः राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवाबहुश्रुतः ॥ केशानां वपनं कृत्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥ १ ॥ केशानां रक्षणार्थं तु द्विगुणं व्रतमाचरेत् द्विगुणं व्रत आर्चीर्णे दक्षिणादिगुणा भवेत् २ अत्र राजादय उपलक्षणार्थाः यत्र राजा दीनामप्येवमन्येषां किमुक्तव्यमिति कैमुतिकन्यायात् ३ एतच्च ॥ द्विगुणव्रतादिकं महापातक्यादिव्यतिरिक्तस्थले वपनानिच्छोः ॥ विद्वद्विप्रान् पत्नीणामप्येते केशवापनम् ऋते महापातकिनो निहंतुश्चावकीर्णिन इति विशेषस्मरणात् ॥ १ ॥

व्रत करण श्रीर द्विगुण व्रतको करके फेर आचार्यकों दक्षिणाभी द्विगुण देणी चाहिये इसमें राजपुत्र कर्के राजा की अविवाहित स्त्रीका पुत्र जानणा २ अत्रेति इस जग राजादिक सब के उपलक्षणहैं कैसेकि जिस पाप विषे राजादिकोंको भी मुंडन कहाहै तो औरोंकी क्या वा तहै एह कैमुतिकन्यायहै कैमुतिक न्याय उसकों कहतेहैं जहां बड़ोंकों कहाहोवे उहां सबनोंकों जान लेना एतच्चेनि एह द्विगुण जो व्रतहै सो नहीं मुंडन करणेकी इच्छा जिसको उस पुरुष को महापातकके विना कहाहै श्रीर महापातकविषे तो अवश्य करके मुंडन करवावे ३ विद्वद्विप्रेति श्रीर विद्वद्विप्र अर्थात् विद्वान् जो ब्राह्मण श्रीर राजा श्रीर स्त्रीइनको मुंडन नहीं कहाहै (ऋते महापातकिनः) अर्थात् महापातकियोंसे विना जेकर महापातकी होवे तो मुंडन अवश्य करणा (निहंतुः) क्या गवादिवधकरण वाला जो पुरुष तिसको श्रीर (अवकीर्णिनः) क्या बहचारी होकर स्त्रीसंग करण वाला जो पुरुष तिनको मुंडन करवाणा उचितहै १

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १३५

एहविशेषबाध्य प्रायश्चित्त मुक्तावली कारोंकाहै ॥ और विज्ञानेश्वर इसवात विषे विशेषकहतेहैं
महेति महापातकीसे विना एहजो महाराजादिहैं तिनकोमुण्डनहीं कहाहै और महापातकोविषे
तो तिनको अश्वयहीकहाहै और तिनकोनहीं मुंडनकीइच्छाविषे द्विगुणदक्षिणा सहित द्विगुण
व्रतकहाहै १ अन्येति और ऋषि ऐसाकहतेहैं कि महापातकादिकोंविषे राजादियोंकोनित्य
वपनक्या मुण्डनकिहाहै और अन्यत्रक्या उपपातकादिकोंविषे मुण्डनको न इच्छाविषे पूर्ववत्
दूणोदक्षिणा सहित दूणाव्रत करण उचितहै ऐसाकिहाहै १ विद्वन्मनोहरेति और विद्वन् मनो
हरा वणाने वाले आदिककाभी एही पक्ष स्वीकारहै इयंचेति एह वपनादिकोंकी इतिकर्तव्यता
सो प्राजापत्यसेलेकर जो व्रततिनके विषे होतीहै और उससे उरें होऐवाले जो व्रत तिनकेवि

इतिप्रायश्चित्तमुक्तावलीकाराः ॥ विज्ञानेश्वरस्तु महापातकादिव्यति
रिक्ते राजादीनां वपनं नास्त्येव महापातकादौतु तेषांवपनानिच्छायां
द्विगुणदक्षिणासहितं व्रतद्वैगुण्यमिति ॥ १ ॥ अन्येतु महापातका
दौ नित्यं राजादेरपिवपनमवान्यत्र तु वपनानिच्छायांव्रतद्वैगुण्यवि
धिरित्याहुः ॥ १ ॥ विद्वन्मनोहराकारादीनामप्येतदेवानुमतम् ॥
इयंचवपनादेरितिकर्तव्यता प्राजापत्यप्रभृतिष्वेवभवति न ततोल्प
इत्युक्तमेव । तथाचपैठानसिः ॥ द्वादशाहेसंपूर्णवपनमिति ॥ वपनग्रहणंचे
तिकर्तव्यतांतरस्याप्युपलक्षणं तथाच । याज्ञवल्क्यः । कुर्यात्त्रिषवणस्त्रा
मीकृच्छ्रं चांद्रायणंतथा पवित्राणि जपेत्पिंडांगायत्र्याचाभिमंत्रयेदिति १

पे नहि होतीहै और महापातकसे अल्प अर्थात् कम जो पाप तिसके व्रतविषे एह इति कर्त
व्यता नहिजाननी एहपिच्छे कहचुक्कहें १ तथाचेति इसी तरह पैठानसी ऋषिकहतेहैं द्वादश
ति पूर्णवागंदिनके व्रतविषे एहवपनउचितहै और वपन ग्रहण इसइतिकर्तव्यतासे और दूसरी
कर्तव्यताकाभी उपलक्षणहै अर्थात् बोधकहै सोयाज्ञवल्क्यजीकहतेहैं कुर्यादिति तीनकालमें
स्नानकरणेवालाजो, पुरुष सो कृच्छ्र और चांद्रायणव्रतकरे और तथातेसेहैपवित्रजो सहस्रशीर्षा
से आदलेकर मूक तिनको जपे और भोजनकालमें जितने ग्रास कहैहैं तिनकोगायत्रीके मंत्र
करके अभिमंत्रणकरे अर्थात् एक एक मंत्रको पढ़करके एकएकग्रास वनाघे फेरतिनका भक्षण
करे अथवा एकएक ग्रासके प्रति एकएक मंत्र पड़ताहूआ एक एक ग्रासको भक्षण करे
ऐसाभी कहतेहैं १

१३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०तु० ॥ टी० भा० ॥

और जिसजगामें मुण्डनकी निवृत्तिविषे दूषाव्रतकिहाहै उसजगामुण्डनकीसहचर्याकरके पंचगव्या, दिक्काकीभीनिवृत्ति जाननी इसीकारणसे न्यूनविषे अर्थात् पादोनविषे और पादविषे वस्त्रमात्रदानकिहाहै और कुच्छ नहीं किहा और सौभाग्यवालियां जो स्त्रियां तिनको वशिष्टजीने विशेष किहाहै केशानामिति स्त्रियोंको व्रतविषे और यज्ञ विषे केशोकावपन नहि किहाहै और गोवधादिक जो पाप तिनके विषे दोअंगुलीमात्र अग्र भागसे केशोकावपन करणा उचितहै १ सधवानामिति और सौभाग्यवालियां जो स्त्रियां तिनको सदाही अलंकारकेवास्ते प्रायश्चित्तके विषेभी ऋषियोंने केशधारण कहेहै २ अंगुलित्रयमिति अंगुलित्रयं एसाभीपाठ किसीजगामेंहै उसका अर्थस्पष्टहै अत्रेति और इस जगामे सधवास्त्रो कहनेकरके विधवास्त्रियोंको व्रतविषे सारा मुण्डन उचितहै ॥ और पराशरजीभी इसीपक्षको पुष्टकरतेहैं वपनमिति स्त्रियोंकोमुण्डन और अनुव्रज्या क्या गौके पिच्छे पिच्छे विचरणा अर्थात् जिस तर्फको गौ जाए उसीतर्फको जाना

साहचर्यात् पंचगव्यादिरपिनिवृत्तिः ॥ अतएव न्यूनपादव्रतेवस्त्रमिति वस्त्रादिमात्रदानोक्तिः सधवानां ॥ विशेषमाह वसिष्ठः ॥ केशानानास्ति वपनं नारीणां व्रतयज्ञयोः ॥ गोवधादिपुसर्वेषुच्छेदयेदंगुलिद्वयम् १ ॥ सधवानांतुनारीणामलंकारायसर्वदा ॥ केशसंधारणंप्रोक्तंप्रायश्चित्तेद्विजो त्मैरितिअंगुलित्रयमितिक्वचित्पाठः अत्र सधवापदाद्विधवानांसर्ववपनम् पराशरोपि ॥ वपनंनैवनारीणानानुव्रज्याजपादिकं नगोष्ठेशयनंतासां नव सौरनृगवाजिनम् १ सर्वान्केशान्समुद्धृत्यच्छेदयेदंगुलिद्वयम् सर्वत्रैवहिनारीणां शिरसोमुण्डनंस्मृतम् २ नदीषुसंगमेचैवशरण्येषुविशेषतः ॥ नस्त्रीणामजिनंवासोव्रतमेवंसमाचरेत् ३ त्रिसंध्यं स्नानमित्युक्तं सुराणां मर्चनंतथा बंधुमध्येव्रतंतासांकृच्छ्रंचांद्रायणादिकम् ४ गृहेषुसंततंतिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् वाशिष्ठ आदिपदं प्रायश्चित्तांतरपरम् ॥

उसकोरोकनानहि और जपादिक और गोष्ठ क्या गोशालाविषेशयन और गवाजिनका अर्थात् गोचर्मकाधारणा एह सभ उचित नहिहै १ सर्वानिति इसवास्तेक्याकरणाचाहिये किसभनांकेशों कोहाथसे पकडकरके अग्रभागसे दो अंगुलीछेदनकरणे उचितहै २ नदी प्विति और नदिओं विषे और संगम विषे और वनविषे क्या वनसंबंधितार्थविषे जानानहि किहा और चर्मकाधारणा नहि किहाहै स्त्रियां इसतरहको विधि करके करण ३ और स्त्रियोंकी जो कर्तव्यताव्रतविषेहै सो कहतेहैं त्रिसंध्यमिति तीनकालका स्नान करणा किहाहै और देवतयोंका पूजन किहाहै और बंधुओंके बीचमे रह करके तिनको व्रत करणे कहेहै ४ गृहेष्विति और गृहमें सर्वदा काल निरंतर स्थित रहे और शुची रहे नियम जो व्रतादिक तिमको करे ॥ और वशिष्ट जीके कह होवे धर्मशास्त्र विषे किहाहै कि इसजगामें आदिपद और प्रायश्चित्तका भी बोधक है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १३७

तेनेति तिसकारणसे प्रयागादिको विषे (मुण्डनंचोपवासश्च) इत्यादि देवलके वचनते प्रयागादिको विषे सारे शिरका मुण्डन करणाचाहिए वेण्यामिति और वेणीनदीविषे (वेण्यांवेणीप्रदानेन) इस वचनकरके वेणीकाहि प्रदानकरणाचाहिए इसलिंगसे अर्थात् प्रमाणसे और आचारसे क्या जानतेहैं कि तीर्थांतर विषे क्या होरणे तीर्थे विषे एहविधि नहिहै तिस कारणसे एहहोरही कि सीकामतहै ५ ॥ अपरांक विषे जो मुंडनका प्रकारहै सो कहतेहैं उदङ्मुखइति बुद्धिमान् जो पुरुष सो उचरमुख होकरके अथवा पूर्वमुखहोकरके मुण्डनकरवावे और केश श्मश्रुक्या दांडा और लोम क्या बाहोकेवाल नख तिनको जलसे गिलेकरके कटवावे १ दक्षिणमिति सर्पिडनादि कर्म विषे दक्षिण कण्ठे आरंभ कर्के शिखा विना शिरका मुंडनहै और

तेनप्रयागादौ मुण्डनंचोपवासश्चसर्वतीर्थेष्वयंविधिरिति देवलाद्युक्तेः सर्वमुण्डनमेव वेण्यांवेणीप्रदानेनेति लिंगादाचाराच्च तीर्थांतरेनभवतीत्यन्यदेतत् ५ अपरांके उदङ्मुखः पूर्वमुखोवा वपनंकारयेद्बुधः केशश्मश्रुलोमनसान्युदकसंस्थानिवापयेत् १ दक्षिणंकर्णमारभ्यकर्मार्थपापसंचये शिखाद्यंनवसंस्कारे शिखाद्यंतंशिरोवपेत् २ पापसंचयेतन्निमित्ते प्रायश्चित्ते शिखाद्यं सशिखं शिखाद्यंतं शिखायामादावन्तेचेत्यर्थः तैत्तिरीयके ब्राह्मणे प्रथमकांडे पंचमप्रपाठके चातुर्मास्यप्रकरणे देवायै यद्यक्षोऽकुर्वत तदसुरा अकुर्वत तेसुरा ऊर्ध्वं पृष्ठेभ्यो नापश्यन्

पापसंचयके विषे अर्थात् पाप संचयके, निमित्त जो प्रायश्चित्तहै तिसके विषे सज्जेकणसे लेकर— शिखाद्यक्या शिखासहित मुंडन किहाहै और नवीन संस्कार विषे शिखाद्यंत मुण्डन करवावे अर्थात् शिखाके आद और अन्तसे करवावे २ एहि अर्थ मूलमे स्पष्टकरके किहाहै पाप इति॥ और तैत्तिरीयसंज्ञावाला जो ब्राह्मण तिसके प्रथम कांड विषे जो पंचम प्रपाठक तिस विषे भी जो चातुर्मास्य प्रकरणहै तिसविषे ऐसाकिहाहै इसका अर्थभाष्यमे स्पष्टहै कुछ लिखादाभीहै देवाइति देवता जो यज्ञमे करतेभये सो असुर भी करते भये सो असुर पृष्ठे ऊर्ध्वभागको नहि देखतेभये

१३८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

सो पहले केशोंको उतारतेभये तिसके अनन्तर दाढीको तिसके अनन्तर उपपक्षोंको तिसके अनन्तर अर्वाच होतेभये क्या नीमे मुखवाले होतेभये अधिकारसें घटहुंदे होए और पराभवन् दूसरेते अनाहत होतेभये जोकोई ऐसामुण्डनकरेगा सोभी ऐसाही होवेगा इसके अनन्तर देवता पृष्ठते ऊर्ध्व भागको देखतेभये सो पहले उपपक्षोंका मुण्डन करतेभये फेर दाढीका फेर केशोंका तिसके अनन्तर सुखोहोतेभये और स्वर्गलोकको प्राप्त होतेभये जो ऐसे करवातेहैन सो स्वर्गलोकमें प्राप्तहोतेहैन तिसके अनन्तर मनुजी मुण्डनके विषे मिथुनको देखतेभये और दाढीका मुण्डनपहले करवातेभये फेर उपपक्षोंका फेर केशोंका तिसके अनन्तर प्रजा और पशु-

ते केशानग्रेवपंत अथ श्मश्रूणि अथोपपक्षौ ततस्तेऽर्वाच आयन् पराभवन् ॥ अधोपतन् स्वाधिकाराद्गृष्टाश्रभवन् ॥ यस्यैवं पति अवाडेति (अथः पतति) अथोपरैवभवति अथदेवा ऊर्ध्वेष्टेभ्यो पश्यन् तउपपक्षावग्रे वपंत अथ श्मश्रूणि अथ केशान् ततस्तेभवन् सुवर्गलोकमायन् यस्यै वंपति भवत्यात्मना अथो सुवर्गलोकमेति अथैतन्मनुर्वपत्रे मिथुनमपश्यत् स श्मश्रूण्यग्रेवपत अथोपपक्षौ अथ केशान् ततो वै स प्राजायत प्रजया पशुभिः यस्यैवं पति स प्रजया पशुभिर्मिथुनैर्जायत इति तैत्तिरीयके आसुरं षप मर्निदित्वा दैवे क्रम उक्तः मनुनापि तत्रैव मनुष्यं प्रक्रम्य श्मश्रूण्यग्रेवपंत अथोपपक्षावथ केशानिति अत्राधानेष्टिसोमेषु दैवं तत्र तस्य विधानात् ॥

औं करके युक्त होतेभये जो ऐसकरवातेहैन सो पशु और मिथुन करके युक्तहोतेहैन ऐसे तैत्तिरीयशाखा विषे आसुरीयं मुण्डनको निदकरके दैवमुण्डनविषे क्रम किहाहै और मनुजनिंभी तिस रथानविषे किहाहै मनुष्य प्रसंगकोलेकरक्या कि मनुष्यकर्म विषे पहले दाढीका मुण्डनकरतेहैन तिसके अनन्तर उपपक्ष अर्थात् शिरके दोनों कनारि वाम और दक्षिण तिसके अनन्तर केश अत्रेति अत्रिके आधान विषे और दृष्टियोंविषे और सोमयज्ञविषे दैव मुण्डनकाहि शौच्यताहै तिसकेविषे दैवमुण्डनका विधान होएत

॥ श्रीरण्वोर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १३९

प्रायश्चित्त और प्रायश्चित्तविषे तो दैवही मुंडन उचित है और मनुष्य निमित्त जो मुण्डन तिसके विषे विकल्प करके योग्यता है तिसविषे भी विशेष कहते हैं तत्रेति उदक संस्था नाम को है यज्ञ है तिसके अर्थ पहिले दक्षिण श्मश्रु और उपपक्ष पीछे वाम श्मश्रु और वाम उपपक्ष इनका हि मुंडन है इसी का अर्थ प्रकट करके कहते हैं अत्रेति इसमें एह जानने योग्य है कि पहले केशों का मुण्डन करते हैं तिसके अनन्तर दाढ़ी तिसके अनन्तर उपपक्ष क्या शिर के दोनों पार्श्व ० एह असुर संवधि मुण्डन है अब उपपक्षादि शब्दों का अर्थ कहते हैं तत्रेति उपपक्ष क्या शिर के दोनों पार्श्व वाम और दक्षिण ० केश क्या शिर का मध्य भाग श्मश्रु क्या दाढ़ी ॥ अब वपन का समय विशेष कहते हैं इदमिति एह जो वपन है सो निषिद्ध काल विषे भी अर्थात् मुहूर्त के बिना भी करणे योग्य है इस विषे स्मृतिकहते हैं क्षौरमिति नेमित्तक जो क्षौर सो निषिद्ध दिन विषे भी करणा चाहिए पित्रा

प्रायश्चित्ते तु दैवं मानुषे विकल्पेन तत्राप्युदक संस्था यै दक्षिण श्मश्रु उपपक्षानु
स्त्वा वामाविति अत्रेदं बोध्यम् अत्रेकेशान् वपते ततः श्मश्रुणितत उपपक्षावि
त्यामुं वपनं तत्रोपपक्षौ शिरस उभय पार्श्ववर्तिनौ केशाः शिर मध्य भागाः श्म
श्रु प्रासिद्धम् इदं वपनं निषिद्ध काले पिकार्यम् ॥ क्षौरं नेमित्तकं कार्यं निषेधे सत्य
पि ध्रुवम् पित्रादि मृतिया आसु प्रायश्चित्ते च तार्थिक इति स्मृतेः १ क्षौर निषे
धांश्चाह वृद्धगार्ग्यः ॥ रव्यार सौरिवारिषु रात्रौ पाते व्रते हनि श्राद्धाह प्रतिप
द्रिक्ता भद्राः क्षौरेषु वर्जयेत् १ भद्रा द्वितीयाद्या न विष्टिकरणं तिथिसाहचर्यात्
व्यासः ॥ नक्षत्रे तु न कुर्वीत यस्मिन् जातो भवेन्नरः ॥

दिकों के मरण काल में और तिनके उद्धार करणे बास्ति जो यात्रा तिसविषे और प्रायश्चित्तविषे और तीर्थविषे इस स्मृति में १ सो क्षौर के निषेध कौनमें है न इस विषे वृद्धगार्ग्य जी कहते हैं रव्यारति रविवार और आरक्यामंगल और शौक्या शनि इनां वारां विषे और रात्रि व्यतीपात और व्रत दिन अर्थात् एकादश्यादि इनां विषे भी क्षौर नहि करावे और श्राद्ध दिन और प्रतिपदा और रिका और भद्रा इनां सवनां क्षौर विषे पुरुष त्याग १ अथवा इस श्लोक के पूर्वाद्ध में सप्तमीयां जो है न सो द्वितीया के अर्थ में है न भद्रा क्या ॥ १० ॥ १२ ॥ इह तिथि आं और भद्रा कर्के विष्टि करण का ग्रहण नहि करणा क्योंकि तिथियों की सहचर्यता होयते ॥ और व्यास देवर्जा नक्षत्र द्वारा क्षौर के निषेध कहते हैं नक्षत्रे ति कि जिस नक्षत्र विषे पुरुष उत्पन्न हो आ है तिसविषे भी क्षौर न करावे

१४० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

और पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा और कृत्तिका इनमें भी नकरणा चाहिए १ और दारुण संज्ञावाले जो सब नक्षत्र और दुष्टतारा पहली १ पंचमी ५ सप्तमी ७ इह दुष्टतारा है इसमें वर्जकरके और दारुणसंज्ञावाले नक्षत्रोंको कहते हैं मूल इति मूला और ज्येष्ठा और आर्द्रा और श्लेषा और शनिवार इनकी तीक्ष्ण संज्ञा भी है इनके विषे भी क्षौरको त्यागे २ और व्यासदेवजी इसविषे विशेष कहते हैं सिंहेति जब सिंह ५ और धन ९ और मीन १२ राशियोंविषे सूर्य स्थित होवे तां पुरुष यात्रा और विवाह और गृहारंभ और क्षौर इनको त्यागे १ सप्ततुरंगम न असूर्यका है ॥ अब इसविषे और भी विशेष व्यासदेवजी कहते हैं वीति विवाहके पिच्छे एक वर्ष यज्ञोपवीतके पीछे छे महीने और मुंडनके पिच्छे तीन महीने मुण्डन नहिकरणा उचित है और

नश्रोष्ठपदयोः कार्यं नैवाग्नेयेतु भारत १ दारुणेषु तु सर्वेषु दुष्टतारांस्तु वर्जयेत् मूलैर्द्राद्राहिभंशैरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकमित्युक्तेषु दारुणेष्वित्यर्थः २ वादरायणः ॥ सिंहे धनुषि मीने च स्थिते सप्ततुरंगमे यात्रोद्वाह गृहारंभ क्षौर कार्य्या णिवर्जयेत् १ सप्ततुरंगमः सूर्यः ॥ व्यासः ॥ विवाह मीं जी चूडा सुवर्ष मर्दतद्वर्द्धकं अन्तर्वल्यांच जायायां निष्यते केशवापनमित्याद्यनेक निषेधाः समयमयूखे उक्ताः १ तथार्जीवत्पितृकेनापि न कार्य्यम् मुण्डनं पिंडदानं च प्रेतकर्म च सर्वशः ॥ न जीवत्पितृकः कुर्याद्गुर्विणीपतिरेव चेति १ अथ स्त्री शूद्रोपयोमिकिंचिदुच्यते ॥ स्त्रीणां होमो न कर्त्तव्यः पंचगव्यं तथैव चेति जावालेन स्त्रीणां होमः पंचगव्यं च निषिध्यते

जिसकी स्त्री गर्भवती होवे तदभि नहिकरणा उचित है परंतु गर्भ विषे सप्तमते लेकर तीन महीनेका हि निषेध है इत्यादिक अनेक निषेध समय मयूख ग्रन्थ विषे कहें हैं १ और तैसंहि जीवत्पितृक जो पुरुष तिसने भी मुण्डन नहि करणा चाहिए इस विषे वचन कहते हैं मुण्डनमिति मुण्डन और पिंडदान और प्रेतकर्म तिनानू जीवत्पितृक अर्थात् जिसका पिता जीता है और गुर्विणीपति अर्थात् गर्भवती स्त्रीका पति न करे १ अब इसके अनन्तर स्त्री शूद्रोंकी कर्त्तव्यताविषे कुछ कहते हैं स्त्रीणामिति स्त्रियोंको हबेन और पंचगव्यका पान नहिकरणे योग्य है और जावालक पिजी इसी पक्षको पुष्ट करते हैं जावालेनेति

॥ श्रीरुणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १४१

अयमिति यह जो होमकानिषेध है सो आग्नेनैव इत्यादिपूर्वोक्तवचनसे अग्निशालाविषेहिं जानना होरथे नहि तिसकारणसे लौकिक अग्निविषे ब्राह्मणद्वारा हवन होता है ऐसा कैकहते हैं अग्निशाला वा है जिसमे नित्य हवन होता है और लौकिक अग्निवो है जिसमे कदाचित् हवन होता है मदन रत्न विषे ऐसी व्यवस्था कही है ॥ और प्रायश्चित्तमयूखकार इसको कैयों ऋषियों के मतको मानता है अब इसीमे और कहते हैं स्त्रीणामिति स्त्रीषोंको कृताकृतद्रव्यका अर्थात् तंडुलोंका हवन उचित है कृताकृत शब्दका अर्थ ग्रंथांतर मे लिखा है (कृतमोदन सकृत्वादि तंडुलादि कृताकृतं ब्रीह्यादित्वकृतं ज्ञेयं) इसका अर्थ स्पष्ट है इस कहणेसे तंडुलोका हवन करणा सिद्ध भया और हवनके करणेवास्ते आचार्यका वरण करके तिसके द्वारा करणा उचित है यह विचार प्रायश्चित्तेंदुःशेखरमे कहा है ॥ और शूलपाणिजीसे आदिलेकर बहुते ग्रंथकार पिछेदिखाया जो है ? स्त्रीणां

अयंच होमनिषेध आग्नेनैव हि शालाग्नौ जुहुयाद्वाहृतीः पृथगित्युपक्रमाच्छालाग्नावेव तेन लौकिकाग्नौ ब्राह्मणद्वारा भवतीति कैचिदाहुरिति मदन रत्ने ॥ मयूखकारोपीदं केषांचिन्मतमेवानुमन्यते स्त्रीणां होमः कृताकृतः करणपक्षे आचार्यं तदर्थं ॥ कृत्वा तद्द्वारा कर्तव्य इति प्रायश्चित्तेंदुःशेखरे शूलपाणिप्रभृतयो वहवो निबंधकाराः प्रदर्शितजावालवचनस्याधिकार्यतरस्य प्रक्रमेणोपक्रमस्य विच्छेदाद्विशेषपरतामनभ्युपगच्छंतः स्त्रीणां होम नैवेच्छतीति बहुसंभवात्तदेव युक्तम् । यत्तु पराशरेण । उपवासो ब्रतं होमतीर्थस्नानजपादिकम् विप्रैस्संपादितं तस्य संपन्नं तस्य तत्फलमिति १ विप्रद्वारोपवासब्रतहोमादिकमुक्तम् तस्याविधिप्राप्तेषु जपहोमादिषु विप्ररूपप्रतिनिधिनि यामकत्वेन पुनर्विप्रद्वारा होमस्य विधायकत्वम्

होमो न कर्तव्य इत्यादि जावालजीका वचन इसको दूसरे अधिकारिकों स्थापन करणे करके पहले अधिकारिकों हटाणेसे अर्थविशेषको नहि स्वीकार करते होये अर्थात् इस वचनमें विशेष नहि ऐसा जानदे होए स्त्रीणां को होम नहि करणे योग्य इसी बात को बहु संमत जाण कर होमके निषेधको हि स्थापन करदे होए एहि अर्थ उचित है ॥ और जो पराशरजीने किहा है उपेति उपवास है निराहार ब्रत और ब्रत क्या नक्कादि और होम और तीर्थस्नान और जपादि जो हैं सो ब्राह्मणद्वारा जिसमनुष्यके कराए जाण तिस करवाणे वालों तिसका फल होता है इस वचनकरके ब्राह्मणद्वारा उपवासब्रतादिकरणे कहे हैं तिस वचनको विधिकरके प्राप्त होए जो जपहोमादि निनां विषे ब्राह्मणप्रतिनिधि द्वारा कस्वाणोंके अर्थ नियामकत्व है अर्थात् इस नियम वास्ते एह वचन है कोई ऐसा नहि कि ब्राह्मण द्वारा बथेष्ट हवन करणका विधान होवे ।

१४२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

एवमिति मंत्र हीन शूद्रके जपादि ब्राह्मणके मंत्र करके ग्रहण करने एह वराहजीकावचन भी किसी प्रमाणकरके प्राप्त होया जो शूद्रको पौराणिक मंत्रादि जप तिसविषे ब्राह्मण प्रतिनिधि द्वारा करवाणके अर्थहै कोई यथेष्टाचरण मंत्र जपादिकके अर्थ नहि है इस कहणे करके क्या जानतेहैं कि इन दोनों वचनोंकरके स्त्रीशूद्रादिकोंको प्रायश्चित्तविषे ब्राह्मण द्वारा होमकी प्राप्ति कों कहें होये परास्तहोये अर्थात् अनादृतभये अब स्त्रियों को पंचगव्य प्राशन विषे वचन कहतेहैं स्त्रीणामिति स्त्रियोंको और शूद्रोंको हवनकरणा और पंचगव्यकापानकरणा उचित महिहै तिस कारणते स्त्री और शूद्र शुद्धीके वास्ते प्राजापत्य व्रत करण इह एहवचनहै १ पंचगव्यमिति स्त्री और शूद्र पंचगव्यको वणावें और तिसके स्नान और पान करके शुद्धहों एह दूसरा वचनहै २

एवममंत्रस्य तु शूद्रस्य विप्रमंत्रेण गृह्यते ॥ इति वराहवचनमपि मानप्राप्तमंत्र जपादौ विप्ररूपकरणविधायकमेव एतेनैतद्वचनाभ्यां स्त्रीशूद्रादेर्विप्रद्वारा प्रायश्चित्ते होमप्राप्तिवदंतः परास्ताः ॥ स्त्रीणां पंचगव्यप्राशने ॥ स्त्रीणां होमो न कर्तव्यः पंचगव्यंतथैव च । स्त्रीशूद्रश्च विशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं समाचरेत् पंचगव्यं तु कुर्वीत स्नात्वा पीत्वा शुचिर्भवेत् १ इति देवलपराशरवचनाभ्यां विहित प्रतिषिद्धत्वाद्विकल्पः शूद्रस्य तु कपिलातिरिक्तायाः पंचगव्यप्राशनमस्त्येव यत्तु पंचगव्यं पिवन् शूद्रो ब्राह्मणस्तु सुरां पिवन् उभौ तौ तुल्यकर्माणौ पूयास्थेनरके वसेदित्यत्रिवचनं ॥ तत्प्रायश्चित्तानंगपंचगव्यप्राशनविषयम् स्पष्टं चेदं मदनरत्नप्रायश्चित्तेन्दुशूलपाण्यादिनिबंधेषु

एह देवल पराशरजीके दोनों वचनहैं एक हवसका निषेध करताहै और दूसरा विधान करता है इन दोनोंको प्रमाण होणें विकल्प सिद्ध भया और शूद्र को कपिला गौके अतिरिक्त जो गौ तिसके पंचगव्यका विधानहै और जो किहोहै कि पंच गव्य नू शूद्र पीवे और ब्राह्मण मदिगानू पीवे सो दोनों एक जैसे हैं और पूयास्थ नाम नरक विषे निवास करते हैं एह अत्रिजीकावचन प्रायश्चित्तसे विना जो पंचगव्य प्राशन तिसका निषेध करताहै एहवात स्पष्टहै मदनरत्न और प्रायश्चित्तेन्दुशेखर और शूलपाणिसें आदलेकर जो ग्रन्थोंके करता हैं तिनके निबंधोंविषे भी स्पष्टहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १२३

अथेति अथ इतरे अनन्तर स्नानविधि कहतेहैं सो बहुत प्रकारकीहै जोकहीहै प्रायश्चित्त मयूख विषे तिसजगा भस्म स्नानके निमित्त इतिकर्तव्यताकहीहै लिंगपुराणविषे ईशेति ईशानेनेत्यादि मंत्र करके अथवा ईशानायनमः इतने करकेही प्रतीपुरुष शिरमेंभस्म लगाए और तत्पुरुषेनेत्यादि मंत्रकरके मुखमें और अधोरेणेत्यादि मंत्रकरके हृदयमें और वामेनेत्यादि मंत्र करके गुह्यमें लगाए १ और सद्येनेत्यादिमंत्र करकेपैरोंमें लगाए और ओंकारायनमः इसमंत्र करके सभनां अंगानू भस्मकरके शुद्धकरे इहविशेषहै ॥ इसमें व्यवस्था कहतेहैं तत्रेति तिसविषे ईशान पदकरके ईशानः सर्वविद्यानां इत्यादिक जो मंत्र तिनका ग्रहणकरणा सो मंत्र यजुर्वेदकी शाखाविषे प्रसिद्ध हैं कैआंकेमतमें ईशानायनमः ऐसंहिमंत्रका प्रयोगहै तिसते अनन्तर गोमय

अथ स्नानविधिः प्रायश्चित्तमयूखे ॥ तत्रभस्मस्नाने इतिकर्तव्यता । लिंगपुराणे ईशानेन शिरोदेशं मुखंतत्पुरुषेणतु हृदोदेशमधोरेण गुह्यं वामेनसुब्रतः १ सद्येनपादौसर्वांगं प्रणवेनतुशोधयेदिति विशेषः ॥ तत्रेशानपदेन ईशानः सर्वविद्यानामित्यादयोमंत्राग्राह्याः तेच यजुः शाखायांप्रसिद्धाः केचित्तु ईशानायनमइतिप्रयोज्यमितिब्रुवते । ततो गोमयस्नानम् । तस्यविधिमाह विष्णुः । अग्रमग्रमितिस्मृत्वा मानस्तोकेतिवापुनः ॥ गोमयेर्लेपयेत्प्राज्ञः सौदकैर्भानुदर्शितैरिति १ कूर्मपुराणे गोमयस्यप्रमाणंतुयेनांगंलेपयेत्तत इति * अथमृत्स्नानविधिः शिवपुराणे अश्वक्रांतइतिस्मृत्वामंत्रेणामंत्र्यमृत्तिकां उद्धरेदुद्धृतासीति मंत्रेणसुसमाहितः १ नमोमित्रस्येतिऋचा दर्शयित्वा चभानवे आरुह्यममगात्राणि समालभ्यद्विराचमेत् २

कके स्नानकरणा तिसकीविधि विष्णुजी कहतेहैं अग्रमिति अग्रमग्रमित्यादिमंत्रका अथवा मानस्तोके इत्यादि मंत्रका स्मरणकरकेगोमय जो है जलकेसहित और सूर्य करके दखाया होया तिस करके लेपनकरे बुद्धिमान् पुरुष १ कूर्मपुराणविषे गोमयकाप्रमाण किहाहै कि जितने गोबर करके अंगोंमें लेपण होजावे उतना हिलैणा ॥ अथ मृत्तिका स्नानकीविधि कहतेहैं जो शिवपुराणविषे कहीहै ॥ अश्वक्रान्तेत्यादिमंत्रका स्मरणकरके आमंत्रणकरके क्या मंत्रसुणा करके और उद्धरेत् ॥ उद्धृतासीत्यदि मंत्रकरके । मृत्तिकादाग्रहणकरे सावधान होयाहोया १ नमोमित्रस्येत्यादिऋचा करके मृत्तिकाको सूर्यकेतार्ई दखाकरके (आरुह्यममगात्राणि) ऐसंपडकरके पुरुष अंगोंमें मृत्तिका लगाए फेर दो आचमनकरे २

१४४ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

याज्ञवल्क्यजी अनुलेपनके निमित्त और मंत्रकहतेहैं अलाभ इति जेकर पूर्वोक्तमंत्र न मिलें तौ संपूर्णअंगोंमे इदं बिष्णुः इत्यादि ऋचापडकके मृत्तिका लगावे १ और जमदग्निजी भी इसी पक्षकोपुष्करतेहैं अश्वक्रान्तेइत्यादिऋचाको पडकके हौली हौली शुद्ध मृत्तिका को उठावे १ और नमोमित्रस्येत्यादि ऋचाको पड कके दोनों हाथोंमें लगावे फेर बोढ़ानों हाथ सूखको दिखावे और गंधद्वारामित्यादि मंत्रको पड कके खानि जोहैन नेत्रोंसे आदलेकर इंद्रिय तिनमें लगावे और अंग जो हैन फेरोंसे आदलेकर तिनमें भी लगावे २ और मृत्तिकादा परिमाण कूर्म पुराण विषे किहाहै मृत्तिकेति ॥ मृत्तिका गिछेआमलेके परिमाण कहीहै और मृत्तिकाके

अनुलेपनेमंत्रांतरमाह योगी० अलाभेतुमृदांगानि इदंविष्णुरितिऋचा १
जमदग्निरपि अश्वक्रान्तेतिवैशुदांमृत्तिकामाहेरच्छनैः १ नमोमित्रस्येत्या
दित्यायदर्शयेत्समृद्धौकरौ गंधद्वारामितिजप्त्वाखान्यंगान्यनुलेपयेत् २
खानिनेत्रादीनींद्रियाणि अंगानिपादादीनि मृत्तिकापरिमाणं कूर्मपुराणे ।
मृत्तिकाचसमुद्दिष्टात्वाद्रीमलकमात्रिकेति ॥ क्रमउक्तोब्राह्मे आयुष्कामः
शिरालेपंमृदाकुर्म्याद्विजःपुरा श्रीकामःपादयोःशौचंमृदापूर्वसमाचरेत्
॥ १ ॥ पारस्करः ॥ एकयातुशिरःक्षाल्यद्वाभ्यांनाभेस्तथोपरि मृद्धि
अतसृभिःकार्यंपट्टभिःपायुंतथैवच १ कटिवस्त्यूरुजंघाश्चपादौचातिसृभिः
स्ततः तथाहस्तौपरिक्षाल्यद्विराचामेत्समाहितः २

अनुलेपनमें क्रम ब्रह्मपुराणविषेकिहाहै आयुष्कामइति आयुष्काम जो द्विज अर्थात् बहुत आ
युकी कामनावाला सो मृत्तिकाकके पहले शिरमें अनुलेपनकरे पीछेपादपर्यन्तसवनां अंगाका
अनुलेपनकरे और श्रीकाम जो द्विज अर्थात् श्रीकीकामनावाला सो मृत्तिकाकके पहले चरणों
में फेर शिरपर्यन्तसवनां अंगोंमे अनुलेपनकरे १ पारस्करजी इस विषे विशेष कहतेहैं एकयो
नि एक मृत्तिका कके शिरको धोवे अर्थात् एकवार लगा कके और नाभी को दोवार लगाकके
धावे और नाभिके उपरिभागकोचारवेर लगाककेधोवे और गुदाकोछेवार लगाकके धोवे १ और
कटिकयालक और वस्तिव्या मूत्राशय और ऊरु जंघा पाद इनको चार चार वेर लगाकके शोद्धि
और तैसंहि हाथोंको भी चारवेर लगाकके शोद्धि और सावधान होया होयादोवारआचमनकरे २

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १४५

श्रीर इसविषे योगी याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं मृद्विरिति पुरुष निर्विकार विष्णुकास्मरणकरनाहोया क्रमकरकेशिस आदलेकर नाभिपर्यंत सवनां अंगानूं मृत्तिका करके और अङ्गिः क्या जलों करके शोद्धे १ इसीकोकहतेहैं कटीति कटि और वस्ति क्या मूत्राशय ऊरु जंघा और चरण तिनानुं तीनवार मृत्तिका लगाकरके धोवे तैसेही हाथोंकोभी तीनवार लगाकरके धोवे फेर आचमन करके जलकों नमस्कारकरे २ फेर यत्किंचेदमित्यादि मंत्र पढ़करके दूसरी बार नमस्कार करे ॥ इस जगामें पारस्करजीने जो कहेहैं मृत्तिका संख्यादि वाक्य और योगी याज्ञवल्क्यजीने जो कहेहैं तिनके विराधे दूर करणोंकेवास्ते शाखोंके उपरव्यवस्था समझनी अर्थात् शाखा के अनुसार व्यवस्थालगानी एह हेमाद्रिने किहाहै ॥ एह मृत्स्नानविधि होचुकी ॥ और तिसके अनंतर चौथास्नान जलकाकिहाहै तिसकाप्रकारब्रह्माण्डपुराण विषे है आपइति पुरुष आपो

योगी० मृद्विरङ्गिश्चगात्राणिक्रमशस्त्वनेजयेत् शीर्षाद्यानाभिसर्वाणिस्मर
न्विष्णुमनामयम् १ कटिवस्त्यूरुजंघेचचरणौचत्रिभिस्त्रिभिः ॥ तथैवहस्तावा
चम्यनमस्कृत्यजलंततः २ यत्किंचेदमितिमंत्रेणनमस्येत्प्रयतांजलिः अत्रवि
रुद्धानांमृत्संख्यादिवाक्यानां यथाशाखं । व्यवस्थेतिहेमाद्रिः ॥ इतिमृत्स्नान
विधिः ॥ अनंतरंचतुर्थवारिस्नानम् तत्प्रकारश्चब्रह्माण्डपुराणे ॥ आपोअस्मा
नितिह्यक्त्वाभास्कराभिमुखःस्थितःइदंविष्णुर्जपित्वाच प्रतिस्त्रोतोनिमज्ज
ति १ महार्णवेतु वैकल्पिकौद्वौमंत्रावुक्तौ इदमापः प्रवहेतिऋक् आपोहि
ष्ठेतिऋचवेति ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेअनंतरं पंचगव्यस्नानान्युक्तानि तत्र
तद्ग्रहणमंत्रामात्स्ये ॥ सावित्र्यादायगोमूत्रंगंधद्वारेतिगोमयम् आप्याय
स्वतिचक्षोरं दधिक्राव्णेतिवैदधि १ तेजोसीतिघृतंतद्वद्देवस्यत्वेतिचौदकम्

कुशमिश्रक्षिपेद्विद्वान्पंचगव्यंभवेत्तुतदिति २ ॥

ऽस्मानित्यादि मंत्रको पढ़करके सूर्यके सन्मुख स्थित हूया २ इदं विष्णुरित्यादि मंत्रको पढ़
करके प्रतिस्त्रोतमें निमज्जित होवे अर्थात्प्रवाहके सन्मुखहोकरके गोतालगावे और निमज्ज
ति जो प्रयोगहै सो लेट लकारका जानना १ और महार्णव ग्रन्थमें निमज्जनके वास्ते वि
कल्प करके दोमंत्र कहेहैं एक इदमापः प्रवहेत्यादि ऋचाहै और दूसरी आपोहिष्ठेत्यादिऋ
चाहै एह जलका स्नान होचुका ॥ तिसके अनंतर प्रायश्चित्तेन्दु शेखर विषे पंच गव्यके स्नान
कहेहैं और तिसके ग्रहण करणे वाले मंत्र मत्स्य पुराणमें कहे हैं सो कहेतेहैं सेति सावित्र्यादि
मंत्र करके गोमूत्रलेणा और गंधद्वारेत्यादि मंत्रकरके गोमयलेणा आप्यायस्वेत्यादिमंत्रकरके
दूधलेणा दधिक्राव्णेत्यादिमंत्रकरके दाहि लेणा १ तेजोसीत्यादिमंत्रकरके घृत लेणा देवस्यत्वे
त्यादि मंत्रकरके कुशाकाजल कुशाके साथहि पाणा तद् पंचगव्य होताहै २

१४६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

और पराशरप्रोक्तधर्म शास्त्रमें तेजोसिशुक्रमसीत्यादि मंत्रकरके घृत लेना और देवस्यत्वेत्यादि मंत्र करके कुशाकाजलपाणा ऐसा जो ऋचाकरके पवित्र होयाहोया पंचगव्य तिसको पुरुष अग्निके समीप स्थापनकरे एह पराशरका दूसरा श्लोकहै अर्थात् पिछे मत्स्यपुराणकेकहे जो दो श्लोक तिनका पहला श्लोक इसकेवराबरहै और दूसरेने विशेषहै और देवस्यत्वेत्यादिमंत्र पडकरके तिसके अनन्तर (जल मभिषिचामि) ऐसै पडकरके सारा वाक्य पूरा करना एह निबन्ध कारोंका मत है इसमें ग्रन्थान्तरकामत दिखाकरके समाधान करतेहैं ॥ यद्यपीति यद्यपि मत्स्यपुराण विषे देवप्रतिष्ठाके निमित्त देवस्नानके वास्ते पंचगव्यके ग्रहणमें मंत्र कहे हैं और पराशर जीने ब्रह्मकूर्चव्रतके प्रकरणमें एहीमंत्र कहेहैं तिस वास्ते दोनों जगामें कुशोदक सहित जो गोमूत्रादि ६ तिनका ग्रहणहै एह बात प्रमाण जाननी सोभी पंचगव्य पिवेत्तत इसजगा पंचगव्य शब्दकरके छे जो हैं गोमूत्रादि तिनका ग्रहणहै और (पंचगव्यमृचापूत

पाराशर्येतु ॥ तेजोसिशुक्रमित्याज्यदेवस्यत्वाकुशोदकम् पंचगव्यमृचापूतं स्थापयेदग्निसन्निधाविति द्वितीयश्लोकउक्तः देवस्यत्वेत्यनन्तरमभिषिचामीतिवाक्यशेषंपूरणीयमितिनिबन्धकाराः ॥ यद्यपिमात्स्ये देवप्रतिष्ठायां देवस्नानार्थं पञ्चगव्यग्रहणे मंत्राउक्ताः पराशरेणच ब्रह्मकूर्चप्रकरणे तथा प्युभयत्रापि कुशोदकसहितानांषणांगोमूत्रादीनां पंचगव्यंपिवेत्तत इति पंचगव्यमृचापूतमिति पंचगव्यमितिपरिभाषितगम्यते तस्माच्च प्रकरणेन नियमाभावाद्यत्र पंचगव्यमिति प्रयोगस्तत्रैतदेवमंत्राद्यवगंतव्यम् अन्यथागव्यमिति तद्धितस्य गव्यशृंगतक्रादिसाधारणेन तेनापिस्नानं स्यात् केचिन्नु मलापकर्षणकार्यं बाह्यशौचोपसिद्धये इति बाह्यशरीरमल शोधनमात्रार्थत्वादमंत्रकाण्येवतानीत्याहुः

उसजगामें भी छेयांका ६ ग्रहणहै इसवास्ते पंचगव्य जो शब्दहै सो परिभाषा शब्द जानना एह व्युत्पत्ति शब्द नहिहै तिसकारणतें प्रकरण करके नियमके अभाव होणेतें जहां पंचगव्य शब्दका प्रयोगहै उस जगा इन छेयांकाहि ग्रहण करणा कोई ऐसा भ्रम मत करे कि देवप्रतिष्ठामेहि पंचगव्यकाग्रहण मंत्रों करके छेकाहै और जगामेंनहि क्योंकि ब्रह्मकूर्चमें विधानहोणेतें प्रायश्चित्तोंमे भी इन मंत्रोंकाउपयोगहै तिसतेंपंचगव्य एह परिभाषाशब्दसिद्ध भया ॥ अन्यथे नि जेकर ऐसा नहि मानोंती गौका जो विकार होवे तिसको गव्यकहिये इस तद्धितप्रयोग कर के शृंगतक्रादि जो हैं तिन करके भी स्नानहोणा चाहिए ॥ इसमें होरमतकहतेहैं केचिदिति मलका अपकर्षण करणा चाहिए अर्थात् मल उतारणा चाहिए बाह्य शरीरकी शुद्धिके वास्ते उमवचनको बाह्यशरीरका मलशोधनमात्रहि प्रयोजन होणेतें मंत्रोंके बिनाहि स्नानादिकरणे चाहिए के ऐसा कहतेहैं

इसमें जमदग्निजी भी कहते हैं हिरण्येति हिरण्यं शृंगं वरुणं मित्यादि मंत्र करके पुरुष जलमें प्राप्त होवे सुमित्रा इत्यादि मंत्र करके जलोंका स्पर्श करे दुर्मित्रासु इत्यादि मंत्र करके जलनूँ बाहर फेंके क्या करके यदपांकूट मित्यादि मंत्र करके तीनवार जलका हाथसे आलोडन करके अर्थात् बीचमें हाथको अंगुल फेर करके १ अथ प्रायश्चित्तपर्यंत जितने धर्म करे योग्य हैं सो शंखजी कहते हैं ॥ प्रायश्चित्तमिति प्रायश्चित्त करणेवाला जो पुरुष सो मौनी होया २ तीनवार जलका उपस्पर्श करे अर्थात् स्नान करे एक वस्त्र धारे अथवा अध्वं वस्त्र धारे और कीता है थोड़ा भोजन जिसने ऐसा होया २ पृथिवीमें शयन करे १ और रात्रि में स्थित रहे और दिनमें वीरासनी होवे और मौनी रहे मुँजकी तडागी धारे और दंड कमंडलूका धारण करे और भिक्षा करके निर्वाह करे और अग्निहोत्र करे फेर कूष्मांडादि मंत्रों करके घृतका हवन करे २ इत्थं उपस्पर्श शब्द करके स्नानका ग्रहण है यह अपराकर्म कहा है ॥ और दिनमें अतिथि क्या अभ्यागतोंकी वृत्ति धारणवाला होकर

जमदग्निः हिरण्यशृंगवरुणमित्यापोभिप्रपद्यते सुमित्रा इत्यपः स्पृष्ट्वा दुर्मित्रासुवहिः क्षिपेत् यदपांकूटमित्यापस्त्रिरालोडयतु पाणिना १ प्रायश्चित्ताचरणपर्यंत धर्म्मानाह शंखः ॥ प्रायश्चित्तमुपासनीयाग्यतास्त्रिरुपस्पृशेत् एकवासा द्वे वासावा लघ्वाशीस्थंडिलेशयः १ स्थानं वीरासनी मौनी मौंजी दंड कमंडलुः भैक्षचर्याग्निकार्यं च कूष्माण्डैर्जुहुयाद्यूतम् २ उपस्पर्शः स्नानमित्यपराकर्म दिवा तिथीरात्रौ चोपवेशनं वीरासनमिति विज्ञानेश्वरः ॥ कुड्याद्यनाश्रयेणाऽहोरात्रमुपवेशनमेवेति शूलपाणिः ॥ कूष्माण्डैर्यद्देवादेव हेडनमित्याद्यैः । मनुः । स्थानासनाभ्यां विहरं दशकौऽधः शयीत वा ॥ वसिष्ठः ॥ महाव्याहृतिभिर्होमः सावित्र्या चान्वहं स्वयम् कर्तव्यः

पावनः सम्यक् सर्पिषा च तिलैस्तथा १

रके रहे फेर रात्रिमें बैठारहे यह वीरासन शब्दका अर्थ विज्ञानेश्वर जीने कहा है ॥ और शूलपाणिजी तिसका और अर्थ कहते हैं ॥ कुड्येति ॥ दिनरात कुड्यादि जो आधार हैं अर्थात् कंदसे लेकर जो आश्रय हैं तिनके बिना बैठारहे अर्थात् तिनके आश्रयमें न बैठे और कूष्माण्ड शब्द करके यद्देवदिवहेडनमित्यादि मंत्रोंका ग्रहण है । और इसीमें मनुजी भी कहते हैं स्थानेति कि स्थानासन करके व्यवहार करे अर्थात् दिनमें खडारहे और रात्रिमें बैठारहे जेकर इसमें अशक्त होवे तां भूमि शयन करे ॥ और वसिष्ठजी इसमें विशेष कहते हैं महति कि महाव्याहृतियों करके घृत और तिलों करके पवित्र हवन दिन २ प्रति करे परंतु सावित्री और महाव्याहृति मंत्र करके हवन करे सो महाव्याहृतियां ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः यह हैं और तत्सवितुः से लेकर प्रचोदयात् इहां तक सावित्री है

१४८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

अत्रेति इसजगा घृत और तिलोंका व्याहृतियोंका और गायत्रीका विकल्प जानना विकल्प क्या घृतकरके अथवा तिलोंकरके हवन करे गायत्री मंत्र करके अथवा महाव्याहृति यों करके करे एह अपराकर्ममें कहा है मत्स्यपुराणविषे विशेष कहा है ॥ आपदति आपोहिष्ठा इत्यादि जो सूक्त और शुद्धवतियां जो ऋचा हैन फेर तिनके आगे जो अधमर्षण है और शंक् तिश्रां और स्वास्तिमतियां और पावमानियां जो ऋचा हैन और तिनके आगे जो अधमर्षण है तिनान्सवनानूं रुच्छादिको विषे जोडे और पुरुष रुच्छादिकानूं करे १ वैशंपायन भी एहिबातक हतेहैं ऋषभमिति ऋषभ जो सूक्त और विरज जो सूक्त और शुद्ध वतियां जो ऋचां और तिनकेआगे जो अधमर्षण और अतिपवित्रवेदोंकीमाता जो गायत्रीतिनां सवनानूं पुरुषजपे ॥ और गायत्रीके जपनेकी संख्या कहतेहैं एकसठ १०० अथवा आठ सठ ८०० अथवा एकहजार १००० अथवा अधिकभी जपे १ और वैशंपायनजीने और भी कहा है स्नात्वेति स्नान करके सूर्यके सन्मुख खड़ा होवे और सूर्यके उपस्थानके जो मंत्र तिनो करके हाथजोडे

अत्रद्रव्याणांव्याहृतिगायत्र्योश्चविकल्पइत्यपराकर्म तत्रैव पुराणे आपो हिष्ठेति सूक्तं शुद्धवत्योऽधमर्षणं शंवत्यःस्वास्तिमत्यश्च पावमान्योऽधमर्षणं सर्वत्रैवप्रयुंजीतकृच्छादिव्रतमाचरेत् १ वैशंपायनः । ऋषभं विरजं चैव शुद्धवत्योऽधमर्षणम् गायत्रीं वा जपेद्देवीं पवित्रां वेदमातरम् शतमष्टशतं वापि सहस्रमथवापरम् १ स एव । स्नात्वा पतिष्ठेदादित्यं सौराग्निं स्तुकृतांजलिः गौतमः । रौरव्यौ धाजयेन्नित्यं प्रयुंजीत रौरव्यौ धाजये सामनी । षट्त्रिंशन्मते । जपहोमादियत्किंचित्कृच्छ्राक्तं संभवे जपेत् सर्वव्याहृतिभिः कुर्वाद्यायत्र्याप्रणवेन वा १ हारीतः ॥ सूर्याय देवताभ्यो वै निवेद्य व्रतमाचरेत् निवेदनमग्रे व्रतमित्यादि मंत्रेणेत्यपराकर्म । पराशरः । प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु कुर्वाद्याह्राणभोजनम् शक्त्या वित्तानुसारेण प्रायश्चित्तानुरूपतः १

और गौतम जो विशेष कहतेहैं रौरवू और यौधा जयनूं पुरुष नित्यप्रति जोडे अर्थात् जपकरे और रौरव और यौधाजय एह दोनो सामवेदके मंत्रहैं ॥ और षट्त्रिंशतूके मतमें विशेष कहा है ॥ जपेति जपहोमादिक जितने कृच्छ्रमें कहा है तिनानूपुरुष जपे जेकर सब नामिले तो जो संभव होवे अर्थात् जो मिले तिसनूं जपे और मंत्रकोई न मिलतो व्याहृतियां अथवा गायत्री अथवा ओंकार करके करे ॥ १ ॥ हारीतजीभी विशेष कहतेहैं सूर्येति सूर्यके ताई और देवतयोंके ताई निवेदन करके व्रतको करे और निवेदन अग्रे व्रतमित्यादि मंत्र करके करे एह अपराकर्ममें कहा है इसमें पराशरजी भी कहतेहैं ॥ प्रायश्चित्तेति सबनो प्रायश्चित्तोंके विषे प्रायश्चित्तके अनुरूपते अर्थात् जैसा प्रायश्चित्त होवे तिसके अनुसार ब्याप्य करके और वित्तानुसारता करके ब्राह्मण भोजन करे १

आसहेति श्रीवृद्धनाथप्रभूनि एकहजारपर्यंत १००० अथवा दशपर्यंत १०० अथवा दशमात्रपर्यंत
तथापि श्रीरङ्गदेवतासहित अथवा श्रीरङ्गदेवतासहित अथवा श्रीरङ्गदेवतासहित अथवा श्रीरङ्गदेवतासहित १०००
गणेशाय नमः १ श्रीरङ्गदेवतासहित अथवा श्रीरङ्गदेवतासहित अथवा श्रीरङ्गदेवतासहित अथवा श्रीरङ्गदेवतासहित १०००
वात प्रायश्चित्त विधिपूर्वक कही है ॥ ब्रह्मपुराणके वचनविषये कहते हैं रोगीति रोगी पुरुष और बृद्ध
और पौमंड कथा आदिबर्णसे उपरान्त दश वर्ष पर्यन्त एहजो हैन सो दूसरे पासों सदा प्रायश्चित्त
न करवाए और इसी पक्षको पराशरजीभी पुष्ट करते हैं ॥ व्याधीति ॥ व्याधि क्या रोग और
स्पर्शन क्या जूया और मद्यपान और विश्रान्त क्या उपद्रव और दुर्भिक्ष और डामर क्या एक
तजाकेउपर दूसरे राजानेचढ़करके श्रावणा एहवातां जद होषा तां निराहार व्रत होम निवर्तन
आदिबर्णसे करवाए होए शुद्धि करणेवाले हुन्दे हैं १ अब व्रतकेअन्तमें जो कर्तव्यता है सो परा

आसहस्रादाशताद्वादशांतमथवाजपेत् ॐकाराद्यंतथान्यद्वागायत्रीमथ
सायुतं १ अशक्तौ ॥ प्रायश्चित्तमन्यद्वारापिकार्यमिति प्रायश्चित्तविवेके
ब्राह्मे । रोगीच्छुद्धस्तुपौगंडः कुर्यादन्यैर्व्रतंसदेति । पराशरः । व्याधिव्यसन
विह्वलंते दुर्भिक्षेडामरेतथा उपवासोव्रतंहोमोद्विजसंपादितानिवै १ शुद्धि
शानीतिशेषः । डामरंपरचक्रादि व्रतांतिकर्तव्यतामाह पराशरः । पंचगव्यं
पिवेच्छूद्रोब्रह्मकूर्चंपिवेद्द्विजः एकद्वित्रिचतुर्गावोदद्याद्विप्राद्यनुक्रमात्
ब्रह्मकूर्चप्रकारोव्रतप्रकरणे वक्ष्यते ॥ शिष्टास्तुपूर्वमेव ब्रह्मकूर्चं कुर्वी
यमः ॥ प्रायश्चित्तेव्यवसितेकर्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासाविह्वलां
परत्रचेति १ अंगिराअपि ॥ यदर्थमाचरेद्धर्ममप्राप्यधेयतेव्रतम् सत
त्पुण्यफलंप्रेत्यप्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् १ ॥

शरजो कहते हैं ॥ पंचगव्यमिति कि व्रतके अंतमें शूद्र पंचगव्यनू पीवे और द्विज क्या ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य ब्रह्म कूर्चनू पानकरे और क्रममें एक १ दो २ तीन ३ चार ४ गौआं दान व रण अर्थात् ब्राह्मण एकगौ दान करे और क्षत्री दो करे और वैश्य तीनकरे और शूद्र चारगं आदान करे १ और ब्रह्म कूर्चके बनानेका प्रकार दत्तप्रकरण विषे कहेंगे ॥ और उत्तम पुरु जो हैन सो ब्रह्म कूर्चनू व्रतके पहले हि करते हैं ॥ अब धर्म राजजी प्रकारांतर कहते हैं ५ ॥ अन्न इति प्रायश्चित्तके प्रारंभके कृति यां द्वायां करणे वाला जेकर मरजावे तां उसी रोज इसी लोक विषे और परलोक विषे शुद्ध होजाता है १ और एहीवात अंगिरसजी कह वदिति ॥ जिसके वास्ते पुरुष धर्मनू करे और व्रतकी समाप्तिके पहिले ही मरजाए तां १ करके तिसं व्रतके पुरखनू प्राप्त होजाता है एहमनुजीने कहा है १

१५० ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भाष्य ॥ अ० तृ० ॥ टी० भा० ॥

अबछागलेय ऋषिजी और प्रकारकहतेहैं पूर्वमिति जो पुरुष पहले व्रतनू अर्थात् करके फेर काम करकेमोहितहोया २ नाकरे सो जीन्दाहीचाण्डाल होजायाहै और मरकरकेकुत्ते की यूनमें प्राप्त होताहै १ और एहि प्रकारवायुपुराणविषेभी कहाहै लोभादिति लोभते और मोहते और प्रमादसे जेकर व्रतकाभंग होजाये तां पुरुष तीन १ निराहार व्रत करे और केशोंका मुण्डन करवावे १ प्रति ऐसा प्रायश्चित्त करके फेर उसीव्रतकोधारे और इसजगा बाह्यद्वे जोहि सो समुच्चय बो धकहै अर्थात् तीनव्रतकरणे और साधहि मुंडनकरवाणा और जुदानहि करवाणा एहि समुच्चय किहाहै ॥ अब सबनों पापोंके प्रायश्चित्तका विधानकहतेहैं ॥ इस विषे अब पूर्वोक्त हि विधि वाक्यसारे प्रयोगकी सुगमता कर्के अनुष्ठा नकेवास्ते दिखाई दे हैं ॥ उरसेति छातिकरके और शिर और दृष्टि और मन और स्तुति कर्म और पाद और हाथ और जानु इनां सवनां करके

छागलेयः ॥ पूर्वव्रतंगृहीत्वातुनाचरेत्काममोहितः जीवन्भवतिचांडालोमृतः
श्वाचाभिजायते १ वायवीये ॥ लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि उप
वासत्रयंकुर्वाद्वाकेशमुंडनंतथा १ प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् वा
शब्दःसमुच्चयइति ॥ अथसर्वप्रायश्चित्तविधानं ॥ अत्रपूर्वोक्तानिसकलानिवि
धिवाक्यानिसकलप्रयोगस्यसौकर्याद्यनुष्ठानप्रकारायप्रदर्श्यते उरसा शि
रसादध्यामनसास्तुतिकर्मणा । पद्भ्यांकराभ्यांजानुभ्यांप्रणामेष्टांगउच्यते १
ततःसभ्यैर्वाच्यं । विप्राःपृच्छन्तिकिकार्यमुपविश्याग्रतःस्थितं कितेकार्यवदा
स्माभिःकिंवाप्तुमशक्यं १ तत्त्वतोब्रूहितत्सर्वसत्यंहिगतिरात्मनः ॥
सत्येनद्योततेराजासत्येनद्योततेरविः २ सत्येनद्योततेवान्हिः सर्वसत्येप्रतिष्ठा
तम् ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयोलोकास्तेपिसत्येप्रतिष्ठिताः ३ अस्माकंचैवसर्वेषांसत्य
मेवपरंवलम् यदिचेद्वक्ष्यसेसत्यंनियतंप्राप्त्यसैशुभम् ४ यद्यागतोस्यऽसत्ये
ननत्वंशुद्वयसिकर्हिचित् ब्राह्मणवचनंश्रुत्वा वद्वांजलिपुटश्चाग्नभूमावेवो
पविश्योपायनस्यसंकल्पंकुर्वात्

सभामें ब्राह्मणोंकेताई नमस्कारकरेइसकेंअष्टांग प्रणाम कहतेहैं १ तिसरें अनन्तरसभावालयनि
ऐसे कहना चाहिए आगे स्थित होये २ नू ॥ ब्राह्मणपूछदे हैं कि भोपुरुष क्याकार्यहै तुमारा
असां द्वारा अथवा क्यापुतेहो १ ब्राह्मणोंसे सब सबकरकेकहो सत्यआत्माकी गतिहै अर्थात्
सत्यकरके आत्माप्राप्तहोताहै और सत्यकरकेराजा और सूर्य और अग्नि सहस्रवप्रकाशतेहैं और
सारासंसार और भूर्भुवःस्वः इह तीनों लोक एह सब सत्यकरके हि स्थितहैं ३ अस्मेति असां
सबनोंको सत्यही परम बलहै और जेकर तुमसत्य कहोगे तां शुभको प्राप्त हाजावोगे ४ और
जेकर झूठ कहनेकेनिमित्त आप ही तब तुम शुद्ध न होवोगे ऐसा जो ब्राह्मणोंकावाक्य तिसनू
सुनकरके वद्वांजलि होया २ भूमिमें बैठकरके ब्राह्मणोंके वास्ते भेदाका संकल्पकरे १

॥ श्रीरघुवीर कारित आश्रित भागः ॥ अ० ८० ॥ टी० भा० ॥ १५१

गोमिथुनस्येति किएकगौ और एकवैल अथवा तिनकामुहसंकल्पकरे सो मुहकहतेहैं वसीसपैसेगो
कामुहहे और सोलापैसेवैलका और पराशरजीकहतेहैं पापमिति और पापीजोपुरुषहे सोपापनू गो
दान और वैलकेदानकरकेदूरकरे अथवा तिनकेमुहकादानकरकेपापानू दूरकरेमात्रचित्तमे प्रवृत्तहोने
करें पपीकों सुधीकिहाहै १ और कें ६४ ठाए गौका मुहकहतेहैं और वैलका तिसमें अष्टा और
तिसके अनन्तर आचमन और प्राणायाम करके तिल और कुशाकोंजिलके सहित हाथमें लये
और संकल्प पड़े उतस्सदयब्रह्मणोद्वितीयपराहें श्रीरघुवत वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविं
शतमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जंबू द्वीपे भारतखंडे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तदेशे कुमार
काक्षेत्रे वर्तमान संवत्सरे अमुकायनेऽमुकर्त्ता अमुकराशिगते सूर्येऽमुकराशिगते चंद्रे अमुक
मासे अमुकपक्षे अमुक नक्षत्र योग करण मुहूर्त्तयुक्तायां तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नाऽ

गोमिथुनस्यच द्वात्रिंशत्पणिकागावोवृषभस्तुतदर्दकः ॥ पराशरः ॥ पापं प्र
क्षालयेत्पापीदत्त्वाधिनुंतथावृषम् ॥ तन्मूल्यं वानिधायाथ पापं प्रक्षालयेत्सु
धीः १ निष्क्रयढब्बुकाः ६४ इतिकेचित् आचम्य प्राणानायम्य ततस्तिल
कुशान्गृहीत्वा ओमद्येत्यादिशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं प्रायश्चित्तग्रहणनिमित्तं
इदं प्राजापत्यं गोमिथुनं वार्हस्पत्ये वाससी वारुणं कमंडलुं अगिरोदैवते
उपानहौ कुंडलमुद्रिकाप्रत्याम्नायमाग्नेयं हिरण्यम् अथवा तन्निष्क्रयं यथा
शक्तिपरिमितं द्रव्यं सभोपविष्टब्राह्मणेभ्योऽहंसंप्रददे ॥ तेन पापापहा श्री
भगवान् विष्णुः प्रीयताम् ॥ किंचित्पापं न गूहेत कृत्वा स्वल्पमपि द्विजः त
स्मात्साधुसमारूपेयं तेन तत्समं यदि जेतिवचनानुसारेणैषदपि पापमगोपयन्
फलं गृहीत्वा कृतांजलिर्भूत्वा आब्रह्मस्तंबपर्यन्तं भवद्वशमिदं जगत् यक्ष
रक्षः पिशाचादिसदेवामुरमानुषम् १ ॥

मुक शर्माहं शास्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थं मित्यादि पठित्वा सभोपविष्ट ब्राह्मणेभ्योऽहंसंप्रददे ऐसे
संकल्प करे तेनेति तिस संकल्पकरणे करके पापोंके दूरकरणे वाला जो भगवान् विष्णु सो
प्रसन्न होवे ॥ अब पराशरजी और प्रकार कहतेहैं किंचिदिति पुरुष थोडा भी पाप करके
किंचित् मात्र भी गुप्त न रहे तिस कारण तें साधु जैसे होवे तैसें तिसी कालमें कहदेव
इसवाक्य के अनुसार थोडाभी पाप होवे सोभी गुप्त न रहे अर्थात् पापनू सभाकेआगे प्रकट करे
और हाथमें कोई फल लय करके और हाथ जोड करके ऐसे कहे । आब्रह्मति कि हेब्राह्मणो
ब्रह्मासे लेकर स्तंब पर्यन्त जितना संसार है सो सब तुमारे अधीन है और यक्ष और राक्षस
पिशाचादि सब और देवताअसुर मनुष्य एभीतुमारे अधीनहैन १ बहुत छोटि जो किहाहै १

१५२ ॥ श्रीस्वामी कारित प्रवचनित भाषा ॥ अ० ल० ॥ टी० भा० ॥

संस्कृति और सर्वधर्मविवेकज्ञानवाले जो तुम ब्राह्मण हो और सन्यासमाजी स्तंभकारके बाले सो पुत्रिणी मेरे देहकी शुद्धि करो २ पुराकृतमिति और पूर्वकालविषे जो घोरपाप जानकरके अपने आप को मेरे कीर्ति है जन्मसे लेकर आज दिन पर्यंत तिस पापसे है ब्राह्मणों मेरे की पवित्र करो १ और पूजनीय जो ब्राह्मणों मेरे करके पवित्र होया २ में पापसे रहित हो जायामा और मेरे करके अपने कृपाको और मेरे करके शुभ आशा करो (प्रयच्छथ) एह प्रयोग लेटका है ३ ऐसे कहकरके फेर ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा करके फेर नमस्कार करे तिसमें अनन्तर संकल्प करे ओमद्येत्यादि समझति मेरे जन्मसे आज दिन पर्यंत मन वाणी देह करके बुद्धिपूर्वक अधमा न बुद्धिपूर्वक कीते होये जो पाप अपनी इच्छा करके अथवा किसीके प्रेरणा होया अथवा अनुमन्ताहं करके अर्थात् अपनी वृत्त्यादि करके और सलाह देकरके कीते जो कत्ता भेदसे भिन्न महापातक अतिपातक उपपा

सर्वधर्मविवेकारोगोत्तारः सकलाद्विजाः ॥ मम देहस्वसंशुद्धिं कुर्वन्तु विज
सत्तमाः २ पुराकृतमया घोरं ज्ञातमज्ञातकिलिषं जन्मतोद्यदिनं यावत् ।
तस्मात्पापात्पुनंतु माम् ३ पूज्यैः कृतपवित्रो ह्यभविष्य मनघस्तथा प्रसादः
क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छथ ४ इत्युच्चार्य प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कारं
कृत्वा ॥ ओमद्यपुण्ये काले देशे च मम जन्मनोद्यदिनं यावत् वाङ्मनः काय
कृतानां बुद्धिपूर्वकाणामबुद्धिपूर्वकाणां सकृदभ्यासविषयाणां स्वतंत्रप्रया
जकानुमंतृनिमित्तकर्तृभेदभिन्नानां महापातकातिपातकोपपातक तत्
मरहस्यसंज्ञितानां गुरुलघुपापानां शोधनार्थं तथा शय्यास्थित भक्ष्यपा
नादिरसोपधा कंदमूलादि निषिद्धवस्तु प्राशनादि पापविशुद्धयर्थं तथा मं
ता पितृ गुर्वीजालंघनाऽसकृत्स्नानसंध्योपासनतर्पण सुरार्चन वैश्वदे
वादिकर्मराहित्य कुत्सितान्न भोजन म्लेच्छसेवा इतरजाति चांडालादिसं
सर्ग संभाषणगमन प्रेतक्रिया एकादशाहे तथा सीमंतोदने जातश्राद्धे

तक और तत्सम और रहस्य एह संज्ञा बाले जो पाप और गुरु लघु जो पाप तिसकी शुद्धि
के वास्ते और तैसही शय्याके उत्पर बैठ करके जो भक्ष्याभक्ष आय पान इत्यादि
करके उत्पन्न होया जो पाप तिसकी शुद्धि के वास्ते और तैसही माता और पिता और गुरु
इतकी नहि आज्ञामाननेसे उत्पन्न होया जो पाप और बारंवार स्नान संध्या तर्पण सुरार्चन
वैश्वदेवादि कर्म इनसे रहित होणा और कुत्सित अन्नका भक्षणकरण और म्लेच्छ सेवा और
इतर जाति चांडालादिकोंके साथ संबंध क्या स्पर्श और संभाषण और गमन इनसे
उत्पन्न होया जो पाप और प्रेतक्रिया एकादश दिनमे प्रेतके निमित्त अन्न भक्षण करणे करके
उत्पन्न होया जो पाप और तैसही सीमंत जो गर्भसे लेकर अष्टम मास तिस विषे और उ
न श्राद्ध विषे अर्थात् बालादिक जन्मकालमे नाडुलेदनके पहले जो श्राद्ध तिस विषे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १५३

नवेति और नव श्राद्ध विषे नवश्राद्ध क्या प्रथममासकसे लेकर तीन वर्ष पर्यंत और प्रेत श्राद्ध विषे प्रेतश्राद्ध क्या मरणदिनसे लेकर एकादश दिनपर्यंत तिनकेविषे भोजन करनेसे उत्पन्न होए जो पाप और एकादशीसे आद लेकर जो व्रतदिन तिनके विषे भोजनकरनेसे उत्पन्न होये जो पाप और अगम्यागमन और व्रतभंग और अनृतभाषण अर्थात् झूठकथन और कूट-साक्षिप्रदानचंचुत्व अर्थात् झूठी उगाहि देणे विषे चातुर्थ्यता और मत्कुण और यूका और कीट और पतंगादि और अंडज और जरायुज और उद्भिज्ज, क्या वृक्षादि एह जो सभ प्राणी तिनकी हिंसासे उत्पन्न होये जो पाप और अभक्ष्य भक्षण और अस्पृश्य स्पर्शन और अपेय पान क्या मदिरादिककापान और पिशुनता क्या चुगली और गोविक्रय और कन्याविक्रय और अश्वविक्रय इनसे उत्पन्न होये जो पाप और रजक और चर्मकार इनसे आदलेकर और नीच जाति तिनोका प्रतिग्रह क्या दानलेना और धान्यादिकोंका चुगणा और दूसरेकेधमादिकका

नवश्राद्धे प्रेतश्राद्धादिषु भोजनोत्पन्नोपपातकानां एकादश्यादिव्रततिथौ भोजनादुत्पन्नानां अगम्यागमन व्रतभंगानृतभाषण कूटसाक्षिप्रदानचंचुत्वमत्कुणयूकाकीटपतंगअंडजजरायुजोद्भिजादिसमस्तप्राणिहिंसोत्पन्नपातकानां अभक्ष्यभक्षणास्पृश्यस्पर्शनापेयपानपैशुन्यगोविक्रयकन्याविक्रय हयविक्रय रजकचर्मकारादि प्रतिग्रह धान्यादिहरण परद्रव्यादिहरण देवद्रव्यब्राह्मणानाथविधवादीनां छलाद्द्रव्यहरण श्वमार्जारकुक्कुटादिव्रणस्पर्शादि परविघ्नकरण कटुवचन सुवर्ण रूप्य ताम्र कांस्य पित्तल सीस लोहादि हरण दुग्ध दधि मधु घृत तैल विद्या पुस्तक मूर्ति वस्त्र पटोर्णा सूत्र प्रवाल मौक्तिक मणि चामर रत्नादि हरण मित्र भार्या गमन रजस्वलादि गमन संभाषणायोनिगमन पशुयोन्यादि गमन अंगुल्यायोनिपिधानकरणाद्वीर्योत्पादन नग्नस्त्र्यवलोकन स्वप्नविषयक परस्त्रीगमन ऋतुस्नातस्वभार्यागमन

चुराणा और देवता और ब्राह्मण और अनाथ और विधवा इनोका छलकरके धन चुराणाइन कर्मोंसे उत्पन्न होये जो पाप और श्वे क्या कुत्ता और मार्जार क्या बिडाल और कुक्कुट इनका बड्डणा और इनकेसाथ स्पर्शादि होणा और दूसरेके कार्यमें विघ्नकरणा और कुत्सित वाक्य कहणा इन सबनोसे उत्पन्नहोये जो पाप और सुवर्ण और चांदी और ताम्र और कांस्य और पित्तल और सिक्का और लोहा और दूध और दधि और मधु और घृत और तैल और विद्या पुस्तक और मूर्ति वस्त्र-पट ऊर्ण और सूत्र और प्रवाल क्या मुंगा और मोती मणि चोरी रत्न इन वस्तुओंका चुगणा और मित्रकी स्त्रीकेसाधगमन और रजस्वलादिगमन और संभाषण और अयोनिगमन क्या गुदामं गमन और पशुयोन्यादिगमन और अंगुलि करके योनिभिधान करनेसे वीर्योत्पादन और नग्नस्त्रीका देखणा और परस्त्रीका स्पर्शे विषे आलिंगन करणा और ऋतु विषे स्नात होई २ स्त्रीकेसाथ प्रमादसे मैथुन नहि करणा

१५४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

निषिद्धेति और निषिद्धतिथिवारनक्षत्र योगादिकोंमें मैथुनकरणा और दूसरेके विवाहमें भंगकरणा और तृपानुर धेनु और पशु तिनको न जलपल्याकके आप जलपोलयणा और तीर्थ यात्रा विषे विघ्नकरणा और पंच महायज्ञका त्यागकरणा पंच महायज्ञ क्या पाठ १ होम २ अतिथिपूजन ३ तर्पण ४ बलिदान ५ एहहैन और पंच महापापियोंके साथ संभाषण और स्पर्शन और तिनसे दानलयणा पंच महापातकी क्या ब्रह्महत्या १ सुरापान २ गुरु की स्त्रीके साथ गमन ३ सुवर्ष चुगणा ४ पंचमा इनके साथ संसर्ग करनेवाला ५ एह पंच महापातकी हैं और चांडालादिकोंका गीत सुनना इनसभनोंकर्मोंसे उत्पन्नहोये जो पाप और काम क्रोध लोभसे उत्पन्न होए जो पाप तिनके दूर करनेकेवास्ते इसलोकविषे श्रुति स्मृतिकरके प्रतिपाद्य जो धर्माधिकार तिनके नष्टहोयां २ अतितीव्र पीडाकरके युक्त जो कुम्भीपाकादि नरकतिनका भय दूर करने वास्ते शर्णादिमुद्रिकाद्वारा अथवा यथाशक्ति करके में प्रायश्चित्तकीयाचना करताहुं और आप रूपाकरके

निषिद्धतिथिवारनक्षत्रयोगादिगमन कृतपरविवाहभंजनतृपार्तधेनुपशुवि स्मृतिपूर्वकोदपानतीर्थयात्राविघ्नानुकरण पंचमहायज्ञाकरण पंचमहापात किसंभाषणस्पर्शप्रतिग्रह । चांडालादिगीतश्रवणादि। एतेपां तथामदनमत्स रमोहाद्यनेकपापानां परिहारार्थं इहलोकेश्रौतस्मार्त धर्माधिकारलोपेषु अतितीव्रवेदनादिमत्कुम्भीपाकादिनरकभयनिवृत्त्यर्थं निष्कादिद्वारावा यथाशक्त्याप्रायश्चित्तमहंयाचे तदनुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशंतु भवंत इति त्रिर्वाच्यम् पर्पदग्रं तूष्णीं तिष्ठेत् ॥ अथ सभ्यपादप्रक्षालनम् अत्र चंदना दिनापूजा सभानुज्ञातस्य किंचित्ततोऽपसर्पणम् निर्णयपर्यालोचिते सति सभायामाकारितस्य तत्र तथोपवेशनम् वद्धांजलिना सभावाक्यश्रवणम् आलोकितं प्रायश्चित्तं तेवक्ष्याम इति सम्यैरुक्तं महान् प्रसाद इत्युक्त्वा याव दनुग्रहं कुर्याति तावच्छिरोजलिना स्थयम्

प्रायश्चित्तनू उपदेश करा ऐसे में तीनवार कहणा चाहिये तिसरें अनन्तर सभाके आगे मौन होकरके खड़ा रहे ॥ अथेति अब और प्रकार कहते हैं कि सभावालोंके पादोंको धोवे और चन्दनादिकों करके पूजन करे तिसरें अनन्तर सभा करके आज्ञात होए २ को यत्किंचित् पिछड़े हटना चाहिये और तिसरें अनन्तर पापके निर्णय कीतयां होयां फेर सभाविषे बुलाएहोएको उसी जगामें बढाता चाहिये और वद्धांजलिहोकरके तिसीने सभावालोंका वाक्य श्रवणकरणा चाहिये तिसरें अनन्तर सभावाले ऐसे कहन कि असांने प्रायश्चित्तविचारया है सो तेरेप्रति कहेंगे तूं सावधान हो करके सुन ऐसे कहेयां होयां फेर प्रायश्चित्तो कहे कि आपने बड़ी रूपा कीती है ऐसे कहकरके जितना काल अनुग्रह करते रहण अर्थात् शास्त्रका कथन करते रहण उतना काल शिर के साथ हाथ जोड़करके स्थितहोणा चाहिये

श्रीरघवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०तृ० ॥ टी० भा० ॥ १५५

तद्वदिति और तिसरें अनन्तर सभा वाल्योंने तीनवार ऐसा कहना चाहिए कि ब्रह्महत्यादि जो बहुत अनेकप्रकारके और जो साधारणपाप हैं तिनानू करके पुरुष वारांवर्ष व्रतकरे १ जन्मेति और पुरुष जन्मसे लेकर ब्रह्महत्यासे उरें २ बहुत अनेक प्रकारके पापोंको करके छे वर्षका व्रत करे २ जन्मेति और पुरुष जन्मकालसे लेकर पातक और उपपातक जो पाप महापापसे विना हैं तिनानू करके छे वरसके व्रतकरके शुद्ध हुंदा है ३ उपपातकेति और उपपातक पाप करके युक्तभी पुरुष है जेकर फेर प्रकीर्ण पापनू करे तां वरस भरके व्रतकरके शुद्ध हुंदा है ऐसेस्वा यंभुव मनुजी कहते भये ४ यद्यपीति जेकर आपही बहुतवार बुद्धि करके कीता है बड़ा पाप जि सपुरुषनें सो तीन वरसके व्रतकरके शुद्ध हुंदा है परंतु महापापसे विना महापापवाला तीनवरस के व्रतकरके शुद्ध नहि हुंदा ५ अज्ञात्वेति और जिस पुरुषनें ना जानकरके कामनाते विनाही पापकीता है सो अज्ञा प्रायश्चित्त करे और जेकर कामनाते कीता होवे तां समग्र प्रायश्चित्त करे और

ततः सभ्यैस्त्रिर्वाच्यम् ब्रह्महत्यादिपापानिवहूनिविविधानि च कृत्वा नरोऽन्य
पापानि द्वादशाब्दं चरेद्व्रतम् १ जन्मप्रभृतिपापानिवहूनिविविधानि च कृत्वा
वाग्ब्रह्महत्यायाः पडब्दं कृच्छ्रमाचरेत् २ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पातकंचोप
पातकम् पडब्देनैव शुद्ध्येत महतः पातकादृते ३ उपपातकयुक्तोऽपि प्रकीर्णपा
पमाचरेत् अर्धेनैव तु शुद्ध्येत मनुः स्वायंभुवोऽब्रवीत् ४ यद्यपि स्वयमभ्यस्तं
बुद्धिपूर्वमधममहत् तच्छुद्धं त्र्यब्दकृच्छ्रेण महतः पातकादृते ५ अज्ञात्वा द्वैप्रकु
र्वीत प्रायश्चित्तमकामतः संपूर्णकामतः कुर्याच्छ्रद्धालुद्विगुणं भवेत् ६ पति
व्रताचरोगी च वृद्धश्चैव विशेषतः अकामतश्च कर्तारः प्रायश्चित्तार्धकारिणः ७
कृच्छ्रशब्देन प्राजापत्यमुच्यते अतिकृच्छ्रोद्विगुणं प्रायश्चित्तं शक्त्यनुसारेण
पापानुसारेण वा एकाब्दं द्व्यब्दं त्र्यब्दं पडब्दं द्वादशाब्दकं पर्षदोऽनुमतं वा १
प्राजापत्यप्रत्याम्नायाः संहितापारायणम् गायत्र्ययुतजपः तिलहोमसहस्रम्
द्वादशब्राह्मणभोजनम् शतद्रव्यघृतहोमः होमोऽत्र गायत्र्या व्याहृतिभिर्वा

छलते पाप कीता होवे तां दूना प्रायश्चित्त करे तो शुद्ध हुंदा है ६ पतिव्रतेति और पतिव्रता स्त्री और रोगी और वृद्ध कामनाते विना हि जेकर पापके करणे वाले होण तां अज्ञा प्रायश्चित्त करण ७ और कृच्छ्र शब्द करके प्राजापत्यका ग्रहण है और अतिकृच्छ्र शब्द करके दो प्राजापत्यका ग्रहण है और और प्रायश्चित्त शक्तिके अनुसार करके पापके अनुसार ते एकवरस अथवा दो वरस अथवा तीनवरस अथवा छेवरस अथवा वारां वरस व्रतकरणा अथवा जो सभा वाल्योंकी आज्ञा होवे सो करणा और प्राजापत्यकी बदली विषे जो हैं तिनको कहते हैं संहितेति संहिता का पारायण करणा और दश १०००० हजार गायत्री का जपकरणा और तिलोंका एक हजार १००० हवनकरणा और वारां १२ ब्राह्मणोंको भोजन देणा और दोसठें २०० घृतका होम करणा परंतु इसमें होम गायत्री करके अथवा व्याहृतियोंकरके करणा

१५६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

रुद्रेति और रुद्रीकेजारांपाठकरणे और समुद्रमेजानेवालीजोनदीहै तिसमेंस्नानकरणा और चार कोसपर जो तीर्थ तिसकी यात्राकरणो और एकगौकादान करणा सुवर्णेति सुवर्णक्या एकमोहर अथवा एकरूपैया अथवा आठआना अथवा चारआना गौका मुछ दानकरके देणा और वारां स्नान करणे परंतु एकस्नानकरके केश सुकाल्यणे फेर दूसरा स्नानकरणा इसीतरह तीसेसेलेकर वारांस्नान करणे और चौब्बीसीधे कछे अन्नके संकल्पकरणे एह सभ एक प्राजापत्यके वरावर हैंन इसवास्ते जो प्राजापत्यको न करसके सो इनांविच्चों इककों करे इनमे मुख्य सुवर्ण दानहै और सुवर्णदेनेकी सामर्थ्य न होवे तां चांदीकादान करे इसवास्ते इनां प्रकारां विच्चों एक प्रकार नु कर ऐसा सभावालयांका वचन सुनकरके अपनी शक्ति कहदेवे और तिसते अनन्तर अपनेकोस्वीकृत और सभा वालयोंकरके आज्ञत कीताहोया जो पक्ष तिसनूं अंगोकार करके ऐसे कहे कि आपकी आज्ञा मुजको प्रमाणहै तिसते अनन्तर शिरकेसाथ हाथ जोडकरके मास

रुद्रैकादशिनी समुद्रगनदीस्नानं योजनतीर्थयात्रा एकगोदानम् सुवर्णरूप्यनिष्कतद्वतदर्द्धानां गोमूल्यानां दानं शुष्ककेशस्य द्वादश स्नानानि द्विगुणद्वादशामान्नदानंचैकप्राजापत्यसममिति मुख्यं सुवर्णम् तदशक्तौ रजतं एतेषांमध्ये एकंप्रकारंकुरु इतिसभ्यानां वचनं श्रुत्वा स्वशक्तिं निवेदयेत् ततः स्वाभिमतं परिपदनुज्ञातं पक्षमंगीकृत्यादेशः प्रमाणमित्युक्त्वा वद्वांजलिं शिरसि कृत्वा कर्ता मासपक्षाद्युच्चार्य करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन निबन्धपूजामनुवादकपूजांच करिष्येइतिसंकल्प्य चन्दनादिना संपूज्य निबन्धपूजात्वेन यथाशक्तिद्रव्यं संकल्प्यानुवादकाय पापानुसारेण दक्षिणां भृतिरूपां दद्यात् ॥ ततः सभ्याः पुस्तकवाचनपूर्वकमनुवादकस्याग्रेकथयेयुः अनुवादकश्च कर्तारं वदेत् तद्यथा सभ्यैरुपदिष्टोऽनुवादकोऽमुकस्य ते जन्मप्रभृतिअद्य यावत्

पक्षादिकोंका उच्चारणकरके करणे योग्य जो प्रायश्चित्त तिसके अंगकरके निबन्धक्या पुस्तक तिसकी पूजा और अनुवादकक्या उपदेश करणे बाला जो पण्डित तिसकी पूजा में करताहूं ऐसे संकल्प करके चन्दनादिकों करके पूजन करके तिसके अनन्तर निबन्ध पूजाङ्गत्वकरके यथाशक्तिके अनुसार द्रव्यका संकल्प करके अनुवादकके ताई पापकी अनुसरता करके भृतिरूपा जो दक्षिणा अर्थात् पंडितकी पीरधर्मके योग्य जो दक्षिणा सो देवे और तिसके अनन्तर सभावाले जो हैंन सो पुस्तक वाचन पूर्वक अनुवादककों ऐसे कहदेण और तिसके अनन्तर अनुवादक प्रायश्चित्त करणे वाले नूकहे और सो अनुवादक सभा वालयों करके आज्ञतहोया २ ऐसे कहे कि अमुक शर्मा जो आपहो तुमारे जन्म कालसे लेकर आज पर्यन्त

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १५७

ज्ञातेति ज्ञात और अज्ञात पाप जो हैं और कामना करके अथवा नाकामना कर्के कीतेहोए जो हैं एकवार अथवा वार वार और देह करके अथवा वाणी करके अथवा मन करके अथवा पापियोंके संबंध करके अथवा स्पर्शाऽस्पर्शी करके क्या नीचके साथस्पर्श और गुरुचरणोंके साथअस्पर्श इत्यादि कर्के अथवा भक्ष्याभक्ष्य क्या लसुनादिके भक्षण कर्के और नैवेद्यादिके अभक्षण कर्के और पीताऽपीत क्या मदिरादिके पानकर्के और चरणोदकादिके अपान कर्के और संभूषण जो पातक और उपपातक और लघु पातक और संकराकरण और मलनीकरण और अपात्रीकरण और जाति भ्रंशकर इत्यादिक जो पाप हैं तिनके मध्यविषे कीते होए जो पाप तिनकी निवृत्तिके वास्ते सभा वाल्यों करके कथन कीता हुआ जो प्रायश्चित्त अमुक प्रत्याम्नायद्वारा अर्थात् बदलीकरके प्राचीन मत

ज्ञाताज्ञात कामाकामसकृदभ्यासकृतकायिकवाचिकमानसिकसांसार्गिक
स्पृष्टास्पृष्ट भुक्ताभुक्तापीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातक लघुपात
कसंकराकरणमलनीकरणाऽपात्रीकरणजातिभ्रंशकरेत्यादिमध्येसंभावि
तपापानां निरासार्थपर्षदुपदिष्टं प्रायश्चित्तममुकप्रत्याम्नायद्वारा प्राच्यो
दीच्यांगसहितं त्वयाचरितव्यं तेन तेशुद्धिर्भविष्यतित्वं कृतार्थोभविष्यसि
इतित्रिरुपदिशेत् कर्ताऽमिदमुक्त्वाप्रणम्यपर्षदंविसृजेत् ततोरिक्तायां
सायाहने देशकालौसंकीर्त्यामुकशर्मणोमम जन्मप्रभृतिअद्ययावत् ज्ञाता
ज्ञातादिमध्येसंभावितानांपापानां निरासार्थं पर्षदुपदिष्टं प्राच्योदीच्यांग
सहितममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्य इतिसंकल्पइतिप्रायश्चित्तेन्दुशेखर
प्रायश्चित्तमुक्तावल्यादौ ॥

और नवीनमतकर्के सहित तैने करणा चाहिए तिस कर्के तेरी शुद्धि होवेगी तिसके अनन्तर अ
नुवादक तीनवार ऐसे कहेक्या तूकृतार्थहोवेगा और प्रायश्चित्त करणेवाला अंगीकार करके फेर
नमस्कार करे फेर सभाकोत्यागदेवे तिसते अनन्तर चतुर्थ्यादि ४ । १।१४। एह जो रिक्ता तिथि
आ हैं तिनोमें सायंकालविषे देशकालादिकोंका उच्चारण करके ऐसाकहे अमुकशर्मणोम
म जन्म प्रभृति अद्य यावत् ज्ञाता ज्ञात जो पाप तिनके मध्यमें मेरे करके कीते होये जो पा
प तिनकी निवृत्तिके वास्ते सभावालों करके दिखाया होया जो प्रायश्चित्त प्राचीन और नवी
न मत के सहित इस प्रत्याम्नाय करके अर्थात् बदली करके मैं कर्ताहुं ऐसे संकल्पकरे एह वात
प्रायश्चित्तेन्दुशेखरमें और प्रायश्चित्तमुक्तावलीआदिकमें कहीहै ॥

१५८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

यानोति और तिसके अनन्तर ऐसे कहे क्या जितने कपाप हैं थोड़े बहुत और ब्रह्महत्याके सम
सो सब केशोंके आश्रय होकरके स्थित रहते हैं इसवास्ते मैं केशों का मुण्डन करवाता हूँ एहसे
कल्पकरे ॥ अब विशेष कहते हैं सभर्तृकाणामिति कि सहित भर्तृके जो स्त्रीयां हैं और राज्यके
ऐश्वर्य्य करके युक्त जो पुरुष तिनको मुण्डन करवाणा योग्य नहि है तिसवास्ते केशोंके अग्रभागसे
दो अंगुली प्रमाण कटवाये १ और दण्ड जो है सो दूणा देणा चाहिए एह अंगिरसजीका वचन है
कक्षेति कच्छ और लिंगके रोमोंको बर्जकरके नख और रोमानु कटवाये ॥ अब पापोंकी आ
धिक्यताविषे और प्रकार कहते हैं कक्षेति कि कच्छ और गुह्यस्थान और शिर इनके रोम
और दाढ़ि और भ्रुवद्वयोंके रोम और हाथ पैरोंके नख और रोम तिनको कट वाय करके
पुरुष शुचि क्या पवित्र हुंदा है १ एवमिति इसप्रकार मुण्डनकरणसे पाँछे बारां चुलियां करे

यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच केशानाश्रित्यतिष्ठन्तितस्मात्के
शान्वपाम्यहमितिसंकल्प्य सभर्तृकाणां स्त्रीणां च राज्ञ्यैश्वर्य्ययुतस्य च वप
ननैव कर्त्तव्यं द्व्यंगुलं छेदयेत्ततः १ दंडस्तु द्विगुणो दाप्य इत्यंगिरो वचनम्
कक्षोपस्थवर्जितनखरोमाणि वापयेत् ॥ कक्षाकुक्षिशिरःश्मश्रुभ्रूलोमपरिकृ
तनं प्रहृत्य पाणिपादानां नखलोमततः शुचिः १ एवं वपनकरणानन्तरं
द्वादशगंडूषान् कृत्वा ॥ आयुर्वलयशोवर्चः प्रजापशुवसूनिच ब्रह्मप्रज्ञां
च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते इति मंत्रेणाऽभिमंत्रितेन द्वादशांगुलप्रमाणे
नापामार्गादिदन्तकाष्ठेन प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा । मुखदुर्गधिना शायदंतानां
च विशुद्धये पीवनाय च गात्राणां कुर्वेदन्तधावनमिति मंत्रेण दन्तान् धावयि
त्वा काष्ठान्तरेण जिह्वामुल्लिख्य अप्सु निमज्ज्य भस्मादिस्नानानि कुर्यात्

आयुरिति आयु और वल यश वर्च क्या ओज और प्रजा क्या पुत्रादि और पशु और
संपूर्ण वस्तु और ब्रह्म और प्रज्ञा क्या तीक्ष्ण बुद्धि और मेधा क्या सामान्य बुद्धि तिन
सब नानुं हे वनस्पते तु देह इस मंत्र करके बारां अंगुली प्रमाण करके युक्त जो अपामार्ग
क्या पुडकंडा तिससे लेकर काष्ठकी जो दन्तधावन तिस करके पूर्वाभिमुख होया २ अथवा
उत्तराभिमुख होया २ मुखकी दुर्गधी दूर करणके वास्ते और दन्तोंकी शुद्धिके वास्ते और
गात्र क्या इंद्रियोंके स्थान तिनका जो पीवन क्या मल दूर करणके वास्ते दन्तधावन में
कसां हूँ इस मंत्र काके देदानु धोकरके और दूसरे काष्ठकरके जिह्वाका शोधन करके
और तिस दन्त धावनको जलमें डोवकरके फेर भस्मादि स्नान करे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० तु ०॥ टी० भा० १५९

जिसप्रकार प्रायश्चित्तका अङ्ग है तिस कर्के भस्म स्नानकों करांगा ऐसे संकल्प कर्के इससे उपरंत भस्मकों ग्रहण करे फेर (ईशानः सर्वविद्यानां) इस मंत्र कर्के शिरविषे भस्म लगावे (अथवा) ईशानायनमः) इसी करके शिरमें लगावे ॥ तत्पुरुषायनमः ॥ इस कर्के भस्मकों मुखमें लगावे ॥ अघोरायनमः (इस कर्के हृदयमें लगावे) वामदेवायनमः) इस कर्के गुह्यमें लगावे (सद्योजातायनमः) इस कर्के पादोंमें लगावे ॥ ओंकारकर्के संपूर्ण अंगोंमें लगावे तिससे उपरंत जलकर्के स्नान करे इसप्रकार भस्म स्नान कहा है ॥ अथेति इससे उपरंत गोमय कर्के स्नानकों करांगा ऐसेही संकल्प करे गोमय कों ग्रहण कर्के (ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः इस

तच्चैत्थंप्रायश्चित्तांगं भस्मस्नानं करिष्ये इति संकल्प्य भस्मगृहीत्वा ॥ ईशानः सर्वविद्यानामित्यादिमंत्रैरथवा ईशानायनमइति शिरसि तत्पुरुषायनमोमुखे । अघोरायनमोहृदये । वामदेवायनमोगुह्ये । सद्योजातायनमः पादयोः प्रणवेनसर्वांगे ततो जलस्नानम् इति भस्मस्नानम् अथ गोमयस्नानं करिष्ये इति संकल्प्य गोमयमादाय व्याहृत्या त्रिधा विभज्यादित्यायप्रदर्श्य अग्रभयं चरतीनामोषधीनां वने वने तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् तन्मे रोगांश्च शोकांश्च नुदंगोमयसर्वदेति मंत्रेण गंधद्वारामिति मंत्रेण च सर्वांगे विलिप्य उदकस्नानं कुर्यात् ॥ अथ मृदास्नानं ॥ वलिस्थापर्वतानां क्षुद्रं विभर्षि पृथ्वीप्रजाभूमीः प्रवृण्वती महनाजिनोपिमहिनी इति भूमिं प्रार्थ्य

महा व्याहृति कर्के गोमयके तीन ३ भाग कर्के सूर्यके ताई दिखा कर्के मंत्र पडे मंत्रको दिखाते हैं ? अग्रमिति ? आगे आगे बनविषे औषधियोंको भक्षण करदी आं जो बेलकीयां स्त्रीयां हैं तिनका जो पवित्र गोमय है सो शरीरके शोधनमें योग्य है तिसकारणसे हे गोमय मेरे रोगोंको और शोकांको दूर कर ? गंधद्वारां ; इसमंत्रकर्के संपूर्ण अंगोंमें लेप कर्के पाँले जलकर्के स्नान करे अथ मृत्तिकादास्नान कहते हैं तिसमें पहले पृथिवीकी प्रार्थना करते हैं वलिस्थिति, इसमंत्रका अर्थ लिखते हैं हे पृथिवि तू वलिस्था है अर्थात् वलियोंमें प्रधान है और पर्वतोंको तू क्षुद्र जान कर्के धारती है और प्यारे जो निवासस्थान हैं तिनको तू पुष्ट करती है और दिनकर्के पुण्या को उत्पन्न करती है और पूजनेके योग्य है ऐसे पृथिवीकी प्रार्थना कर्के

१५८ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

यानीति और तिसके अनन्तर ऐसे कहे क्या जितने कपाप हैं थोड़े बहुत और ब्रह्महत्याके सम
सो सब केशोंके आश्रय होकरके स्थित रहते हैं इसवास्ते में केशों का मुण्डन करवाता हूँ एहसे
कल्पकरे ॐ अब विशेष कहते हैं सभर्तृकाणामिति कि सहित भर्त्ताके जो स्त्रीयां हैं और राज्यके
ऐश्वर्य्य करके युक्त जो पुरुष तिनको मुण्डन करवाणा योग्य नहि है तिसवास्ते केशोंके अग्रभागसे
दो अंगुली प्रमाण कटवाये १ और दण्ड जो है सो दूणा देणा चाहिए एह अंगिरसजी का वचन है
कक्षेति कच्छ और लिंगके रोमोंको बर्जकरके नख और रोमानुं कटवाये ॥ अब पापोंकी आ
धिक्यताविषे और प्रकार कहते हैं कक्षेति कि कच्छ और गुह्यस्थान और शिर इनके रोम
और दाढ़ि और भ्रूवहियोंके रोम और हाथ पैरोंके नख और रोम तिनको कट वाय करके
पुरुष शुचि क्या पवित्र हुंदा है १ एवमिति इसप्रकार मुण्डनकरणसे पीछे बारां चुलिआं करें

यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच केशानाश्रित्यतिष्ठन्तितस्मात्के
शान्वपाम्यहमितिसंकल्प्य सभर्तृकाणां स्त्रीणां च राज्ञ्यैश्वर्य्ययुतस्य च वप
ननैवकर्त्तव्यं द्वांगुलं छेदयेत्ततः १ दंडस्तु द्विगुणो दाप्य इत्यंगिरो वचनम्
कक्षोपस्थवर्जितनखरोमाणि वापयेत् ॥ कक्षाकुह्यशिरःश्मश्रुभूलोमपरिकृ
तनं प्रहृत्य पाणिपादानां नखलोमततः शुचिः १ एवं वपनकरणान्तरं
द्वादशगंडूषान् कृत्वा ॥ आयुर्वलयशोवर्चः प्रजापशुवसूनिच ब्रह्मप्रज्ञां
च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते इति मंत्रेणाऽभिमन्त्रितेन द्वादशांगुलप्रमाणे
नापामार्गादिदन्तकाष्ठेन प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा । मुखदुर्गंधिना शायदंतानां
च विशुद्धये पीवनाय च गात्राणां कुर्वेदन्तधावनमिति मंत्रेण दन्तान् धावयि
त्वा काष्ठान्तरेण जिह्वामुल्लिख्य अप्सु निमज्ज्य भस्मादिस्नानानि कुर्यात्

आयुरिति आयु और बल यश वर्च क्या ओज और प्रजा क्या पुत्रादि और पशु और
संपूर्ण वस्तु और ब्रह्म और प्रज्ञा क्या तीक्ष्ण बुद्धि और मेधा क्या सामान्य बुद्धि तिन
सब नानुं हे वनस्पते तु देह इस मंत्र करके बारां अंगुली प्रमाण करके युक्त जो अपामार्ग
क्या पुडकंडा तिससे लेकर काष्ठकी जो दन्तधावन तिस करके पूर्वाभिमुख होया २ अथवा
उत्तराभिमुख होया २ मुखकी दुर्गंधी दूर करणके वास्ते और दन्तोंकी शुद्धिके वास्ते और
गात्र क्या देवियोंके स्थान तिनका जो पीवन क्या मल दूर करणके वास्ते दन्तधावन में
कहा है इस मंत्र काके दंतानु धोकरके और दूसरे काष्ठकरके जिह्वाका शोधन करके
और तिस दन्त धावनको जलमें डोवकरके फेर भस्मादि स्नान करे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० तु ०॥ टी० भा० १५९

जिसप्रकार प्रायश्चित्तका अङ्ग है तिस कर्के भस्म स्नानकों करांगा ऐसे संकल्प कर्के इससे उपरंत भस्मकों ग्रहण करे फेर (ईशानः सर्वविद्यानां) इस मंत्र कर्के शिरविषे भस्म लगावे (अथवा) ईशानायनमः (इसी करके शिरमें लगावे ॥ तत्पुरुषायनमः ॥ इस कर्के भस्मकों मुखमें लगावे ॥ अघोरायनमः (इस कर्के हृदयमें लगावे) वामदेवायनमः (इस कर्के गुह्यमें लगावे (सद्योजातायनमः) इस कर्के पादोंमें लगावे ॥ ओंकारकर्के संपूर्ण अंगोंमें लगावे तिससे उपरंत जलकर्के स्नान करे इसप्रकार भस्म स्नान कहा है ॥ अथेति इससे उपरंत गोमय कर्के स्नानकों करांगा ऐसे ही संकल्प करे गोमय कों ग्रहण कर्के (ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः इस

तच्चैत्थंप्रायश्चित्तांगं भस्मस्नानं करिष्ये इति संकल्प्य भस्मगृहीत्वा ॥ ईशानः सर्वविद्यानामित्यादिमंत्रैरथवा ईशानायनमइति शिरसि तत्पुरुषायनमोमुखे । अघोरायनमोहृदये । वामदेवायनमोगुह्ये । सद्योजातायनमः पादयोः प्रणवेनसर्वांगे ततो जलस्नानम् इति भस्मस्नानम् अथ गोमयस्नानं करिष्ये इति संकल्प्य गोमयमादाय व्याहृत्या त्रिधा विभज्यादित्यायप्रदर्श्य अग्रभयं चरतीनामोषधीनां वने वने तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् तन्मे रोगांश्च शोकांश्च नुद गोमयसर्वदेति मंत्रेण गंधद्वारामिति मंत्रेण च सर्वांगे विलिप्य उदकस्नानं कुर्यात् ॥ अथ मृदास्नानं ॥ वलिस्थापर्वतानां क्षुद्रं विभर्षि पृथ्वीप्रजाभूमीः प्रवृण्वती महनाजिनोपि महिनी इति भूमिं प्रार्थ्य

महा व्याहृति कर्के गोमयको तीन ३ भाग कर्के सूर्यके ताई दिखा कर्के मंत्र पडे मंत्रको दिखाते हैं ? अग्रमिति ? आगे आगे बनविषे औषधियोंको भक्षण करदी आं जो बैलकीयां स्त्रीयां हैं तिनका जो पवित्र गोमय है सो शरीरके शोधनमें योग्य है तिसकारणसे हे गोमय मेरे रोगोंको और शोकांको दूर कर ? गंधद्वारां ; इसमंत्रकर्के संपूर्ण अंगोंमें लेप कर्के पाँले जलकर्के स्नान करे अथ मृदु तिकादास्नान कहते हैं तिसमें पहले पृथिवीकी प्रार्थना करते हैं वलिस्थिति, इसमंत्रका अर्थ लिखते हैं हे पृथिवि तू वलिस्था है अर्थात् वलियोंमें प्रधान है और पर्वतोंको तू क्षुद्र जान कर्के धारती है और प्यारे जो निवासस्थान हैं तिनको तू पुष्ट करती है और दिनकर्के पुण्या कों उत्पन्न करती है और पूजनेके योग्य है ऐसे पृथिवीकी प्रार्थना कर्के

१६० ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

(मावोरिषत्) इत्यादिमंत्रकरके पृथिवीकों पुष्टे इहपुष्टनका मंत्रहै स्योनापृथिवी नोभवा इत्यादिमंत्रकरके पृथिवीकों अभिमंत्रण करे अथवा अश्वेति हेपृथिवी जो मैंने पूर्वजन्ममें पापकीयाहै तिसको तू दूरकर कैसी तूहें घोंडेकरके आक्रांतहैं और रथां करके वी आक्रांतहैं और विष्णु करके आक्रान्तहैं १ और शूकर स्वरूप होकरके कृष्णजीने पाताळसे उद्धारण कीतीहैं और ब्रह्मा करके दित्ती होई काश्यप ऋषिजीने अभिमंत्रित कीतीहैं २ इसका रणसे हेमृत्तिके मेरेताई पुष्टि कां देह हे पृथिवी तैने मेरे पापके दूर कीतियां होयां परम

मावोरिषत् वनितोतिखनित्वा २ स्योनापृथिवीनोभवेति अश्वक्रान्तेरथ क्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुन्धरे मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयापूर्वसंचितम् १ उद्धृता सिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना मृत्तिकेब्रह्मदत्तासिकाश्यपेनाभिमंत्रिता २ मृत्तिकेदेहिमेपुष्टित्वायिसर्वप्रतिष्ठितं ॥ त्वयाहतेनपापेनगच्छामिपरमां गतिम् ३ इतिमंत्रैरभिमंत्र्य आयनेतेपरायणेदूर्बामे इतिदूर्वामादाय मृदं गृहीत्वा त्रातारमितिमंत्रेण पूर्वस्याम् यमायमधुमत्तमितिदक्षिणस्याम् तत्त्वायामीतिपश्चिमायाम् वयंसोमइत्युत्तरस्याम् तत्सूर्यरोदसीत्यूर्ध्वाया मधःपश्यसीत्यधरायांदिशिमृदंनिक्षिप्य ततः सहस्रशीर्षेतिशिरसि अक्षि भ्यांतेनासिकाभ्यांकर्णाभ्यांचिवुकादधि शीर्षेण्यपक्षममस्तिष्काजिह्वाया विवृहामितेइतिमुखे

गतिकों मैं प्राप्त होवांगा ३ इना तिन्ना मंत्रां करके पृथ्वी का पूजन करे ॥ फेर आयनेति इस मंत्र करके दूर्वाओं लेकरके और मृत्तिकाकोले करके त्रातार इसमंत्रकरके पूर्वदिशामें मृत्तिकाकों फेंके यमायेति इस मंत्रकरके दक्षिण दिशामें तत्त्वायामीति इस मंत्र करके पश्चिम दिशामें ? वयंसोमेति इसमंत्रकरके उत्तर दिशामें ? तत्सूर्यरोदसीति इसमंत्रकरके मृत्तिकाको आकाशविषे फेंके अधः पश्यसीति ! इसमंत्रकरके पातालविषे फेंककरके तिससे उपरंत सहस्रशीर्षेति इसमंत्र करके शिरसे लगावे अक्षिभ्यामिति ? इसमंत्रकरके मृत्तिकाकों मुखसे लगावे

ग्रीवाभ्य इति इतमंत्रकर्के ग्रीवाविषे मृत्तिकाकों लगावे (अग्निभ्यइति) इसमंत्रकर्के हृदयमें ल
गावे (नाभ्यानाभोति) इसमंत्रकर्के नाभिस्थानमें लगावे (स्वमिद्र सजोषेति) इसमंत्रकर्के बाहूमें
लगावे (सोमानं स्वर्णज) इति इसमंत्रकर्के कक्षामें अर्थात् कछुमे लगावे (यःकुक्षिः सोमया
तमइति) इसमंत्रकर्के कुक्षिमें लगावे अर्थात् वक्षामे लगावे (वन्हीनांपितातइति) इस
मंत्रकर्के पृष्ठमें लगावे (ऊरूभ्यांते) इति इसमंत्रकर्के मटीकों ऊर्वोमें अर्थात् पट्टोमे लगावे (मेह
नाइनं करणा लोमेति)इसमंत्रकर्के जानूमें अर्थात् गोट्यामें लगावे(अमावाजस्येति इसमंत्रकर्के

ग्रीवाभ्यस्तउष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यात् ॥ यक्ष्मंदोषण्या मंसा
भ्यां बाहुभ्यां विवृहामिते इति ग्रीवायां ॥ आत्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वावनिष्ठो
हृदयादधि ॥ यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्रः छाशिभ्यो विवृहामिते इति हृदये
नाभ्यानाभिन्नआददे चक्षुश्चित्सूर्ये सचा ॥ कवेरपत्यमाशुदुहे इति नाभौ
त्वमिन्द्रसजोषसमर्कं विभर्षिं वाहोर्वज्रं शिशान उजसा इति वाहोः
सोमानं स्वर्णैज इति कक्षयोः ॥ यः कुक्षिः सोमयातमः समुद्रइवपिन्वते
उर्वीरायोनकाकुदः इति कुक्षयोः बर्हीनां पिता त-इति पृष्ठे ॥ ऊरूभ्यां ते
अर्ष्ठीवज्यां पार्णिभ्यां प्रपदाभ्यां यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासं साद्रससो विवृहा
मिते इत्यूर्वोः मेहनाद्धनं करणालोमभ्यस्तेन खेभ्यः यक्ष्मं सर्वस्मादात्मन
स्तमिदं विवृहामिते इति जान्वोः ॥ आमावाजस्येति पादयोः । यस्मिन्वि
श्वानि हस्तयोरुर्चुर्वसूनि निहिता विरस्य पृतनावहः इति हस्तयोः अंगा
दंगालोमो लोमो जातं पर्वणि पर्वणि यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि
वृहामिते इत्यनेन पुरुषसूक्तेन च सर्वांगोद्वर्तनम् इदं विष्णुरिति मृदं शिर
सिनिधाय अशक्तौ तु अश्वक्रान्ते इत्यादि मंत्रैर्मृदं सर्वांगे विलिप्य मृत्तिकास्थ-

लंप्रक्षालय मृत्तिकेहरमेपापमित्यादिमंत्रेण स्नायात् इतिमृत्तिकास्नानम्

पादोमें लगावे ? यस्मिन्विश्वानि हस्तयोरिति ? इसमंत्रकके हाथोंमें लगावे ! अगादंगाछोस्रोलो
 म्र इति इसमंत्रकके संपूर्ण अंगोमें मृत्तिकाको उदत्तन करे अर्थात् मले ? इदंविष्णुरिति इस
 मंत्रकके मृत्तिकाको शिरमें स्थापनकके असमर्थहोवेता ? अश्वक्रान्त इति ॥ इससे आदलेकर जो
 मंत्र हैं तिनामंत्रांकके संपूर्णअंगोमें लेपकके फेर मृत्तिकाके स्थलका प्रक्षालन कर्के ? अर्थात्
 जिसजगाते मृत्तिकालइहै उसजगाको धुंयांकके मृत्तिके इति इसमंत्रकके मृत्तिकासे स्नानकरे

१६२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

तत इति तिससे उपरंत जलकास्नानहैं इमंमे गंगे इति इसमंत्रककें जलकामथमकरे ऋतंचेति? इसमंत्रको जमाहोया अथमर्पणकोकरे आपोहिष्ठेति इसमंत्रककें अथवा इदमाप इसककें उदकनाल स्नानकरे तिसते अनंतर आचमनकरे अपेति इससें उपरंत पंचगव्यकास्नानहै और तिसके आदमें गोमूत्रककें स्नानकोकरांगा ऐसैही संकल्पककें गायत्री मंत्रकोपडकर गोमूत्रनाल स्नान कर्कें पुनः गोमूत्रका आचमन कर्कें गंधद्वारामिति इसमंत्रककें गोमयनाल स्नानकरे पुनः आचमनकरे आप्यायस्वेति इसमंत्र कर्कें दुग्धनाल स्नान करे पुनः आचमन करे दधिकाव्णेति इसमंत्र कर्कें दधिनाल स्नान करे पुनः आचमनकरे (घृतमिमिक्षिरे) इसमंत्रककें अथवा? तेजोसि! इसमंत्रककें घृतनाल स्नानकरे

तत उदकस्नानम् ॥ इमंमे गंगे यमुने सरस्वति शतद्रु स्तोमंसचतापरु ण्या असिक्रया मरुद्वधे वितस्तयार्जिकीये शृणुह्याशिषामया इत्युदक मालोडय ऋतंचेति ऋतंजपन्नथमर्पणकुर्यात् ॥ तत्रमंत्राः आपोहिष्ठा मयोभुवः ॥ इदमापः प्रवहत० इत्युदकस्नानम् तत आचमनम् अथपंचग व्यस्नानम् तत्रादौ गोमूत्रस्नानं करिष्ये इतिसंकल्प्य गायत्र्या गोमूत्रेण स्ना त्वाऽऽचम्य गन्धद्वारामिति गोमयेन स्नात्वाऽऽचम्य आप्यायस्वेति क्षीरेण स्नात्वाऽऽचम्य दधिकाव्णेति दध्या स्नात्वाऽऽचम्य घृतमिमिक्षिरे तेजोसीति वा घृतेन स्नात्वाऽऽचम्य देवस्य त्वासवितुः प्रसवे श्विनोर्वाहुभ्यां पूष्णो ह स्ताभ्यामग्नेस्तेजसा सूर्यस्य वर्षसन्द्रेणाभिषिंचामीति कुशोदकेन यद्वा एता निदशाप्यमंत्रकाण्येव स्नानानि कार्याणि अथपयः स्नानम् । कपिलायाः क्षी रमाप्यायस्वेत्यादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य आप्यायस्वेति मंत्रेण वा सोमाय नमः इति पयः स्नानम् ततो जलस्नानम् तत आचमनम् ॥ अथ दधिस्नानम् दधिकाव्णे इत्यनेन दधि आदाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य दधिकाव्णे इति मंत्रेण

वा वायवेनमः इति दधिस्नानम्

पुनः आचमन करे ! देवस्यत्वेति इसमंत्र कर्कें कुशाके जलसाथ स्नान करे इसमें और विचारहै एहजा दश १० स्नानहैं सो मंत्रासे रहित भीहोतेहैं इससें उपरंत दुग्धस्नानहै कपिलागाँके दुग्धको आप्यायस्वेति? इस मंत्रकोपडककें लेकर ओंकारककें पात्रमे पाककें आप्यायस्वेति इसमंत्र कर्कें वा० सोमाय नमः इसककें दुग्धनाल स्नानकरे तिसते उपरंत जलस्नानकरे पुनः आचमनकरे इससें उपरंत दधिका स्नानहै दधिकाव्णेति इसमंत्र कर्कें दधिकाँ ग्रहण कर्कें ओंकार कर्कें पात्रमें पायककें दधिकाव्णे इसमंत्र कर्कें अथवा वायवे नमः इस मंत्रककें दधिनाल स्नानकरे

तिससें उपरंत शुद्धस्नान है फेर आचमन करे तिससें उपरंत घृतस्नान है ! तेजोसीति ! इसमंत्र कर्के घृतकों ग्रहण कर्के प्रणव कर्के पात्रमें पाय कर्के ! तेजोसीति ! इसमंत्र कर्के वा ! रवयेनमः ! इस कर्के घृतनाल स्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे पुनः आचमन करे तिससें उपरंत मधुस्नान है ! मधु वातेति ! इसमंत्र कर्के मखीर नाल स्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे तिससें उपरंत संपूर्ण ओषधी कर्के स्नान है ! ओषधीरिति ! इस मंत्र कर्के संपूर्ण ओषधीयांकों अभिमंत्रण करे या ओषधीरिति इस मंत्र कर्के संपूर्ण ओषधीयांकों ग्रहण कर्के और प्रणव कर्के पात्रमें पाय कर्के वा या ओषधीरिति इस मंत्र कर्के वा ओषधीभ्योनमः इसमंत्र कर्के संपूर्ण ओषधीयां नाल स्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे ॥ मुरा १ शिलाजित २ वच ३ कुठ ४ मुसक कपूर ५ दोनो हरिद्रा ७

ततः शुद्धस्नानम् ततश्चाचमनम् ततो घृतस्नानम् तेजोसीत्यनेन घृतमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य तेजोसीत्यनेनैव मंत्रेण वा रवयेनमः इति घृतस्नानम् ततः शुद्धस्नानम् आचमनम् ततो मधुस्नानम् मधुवाता ऋतायते ततः सर्वौषधीस्नानम् ओषधीः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्थिताम् दूर्वांसर्पपसंयुक्तां सर्वौषध्यः पुनस्तुमामित्यभिमंत्र्य या ओषधीरिति मंत्रेणैव ओषधीमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य या ओषधीरिति मंत्रेण वा ओषधीभ्योनमः इति सर्वौषधीस्नानम् ततः शुद्धस्नानम् अथ सप्तधान्यस्नानम् धान्यौषधीन्नुप्याणां जीवनं परमं स्मृतम् तेन स्नातोऽस्मि देवेश मम पापं त्वयि हस्तु इत्यभिमंत्र्य धान्यमसीत्यनेना धान्यमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य धान्यमसीति मंत्रेण वा सर्वधान्येभ्योनमः इति सप्तधान्यस्नानम् ततः शुद्धस्नानम् ततश्चाचम्य अथ कुशोदकस्नानम् देवस्य त्वेति कुशोदकमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य देवस्य त्वाभिषिचामी

ति मंत्रेण स्नानम् ततः शुद्धस्नानम्

कचूर ८ चवा ९ मुग्धा १० इनींदस्तां वस्तुयोका नाम सर्वौषधि है ॥ इसमें उपरंत सप्त ७ अन्नसें स्नान है ॥ धान्यौषधीति इस मंत्र कर्के सप्त ७ अन्नकों अभिमंत्रण करे (धान्यमसीति) इस मंत्र कर्के अन्नकों ग्रहण कर्के उंकार कर्के पात्रमें पाय कर्के ॥ धान्यमसीति इस मंत्र कर्के वा । सर्वधान्येभ्योनमः । इसमंत्र कर्के सप्त प्रकारके अन्नके साथ स्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे तिससें उपरंत आचमन करे अथेति इससें उपरंत कुशाके जल साथ स्नान है देवस्य त्वेति इस मंत्र कर्के कुशावाले जलकों ग्रहण कर्के प्रणव कर्के पात्रमें पाय कर्के ॥ देवस्य त्वेति ॥ इस मंत्र कर्के स्नान करे तिससें उपरंत शुद्धस्नान करे

१६४ ॥ श्रीरघुवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

स्त्रोति इसमें विशेष कहते हैं स्त्री और शूद्रकों विष्णुका स्मरण है वा पौराणिक मंत्रोंका उच्चारण है अथर्वीथोंके आवाहनपूर्वक स्नानविधि कर्के स्नान है इस प्रकार कर्के दश १० प्रकारके स्नानों कों कर्के आचमन करे उपरंत प्राणायामकों कर्के स्नानका अंग जो तर्पण है तिसकों करे फेर आचमन कर्के नवीन वस्त्रकों धारण करे फेर तिलकों कर्के मध्यान्ह समयमें संध्यावंदन करे फेर सूर्यका उपस्थान करे नमस्कार करे तिसते उपरंत सभाकों प्राप्त होवे आचार्य और ऋत्विग् इनकों वरण करे क्या वरणी देवे तिसते उपरंत षोडश १६ उपचारों कर्के विष्णुका पूजन है अष्टदलके मध्यमें इन्द्रसे आदलेकर दिक्पालांका और रुक्मिणी और सत्यभामासे आदलेकर जो हैं तिनका स्थापन करे सो इह प्रकार जानना पूर्व दलमें इन्द्र १ अग्निमें अग्नि २ दक्षिणमें यम ३ नैऋतमें निऋति ४ पश्चिममें वरुण ५ वायव में वायु ६ उत्तरमें

स्त्रीशूद्रयोश्च विष्णुस्मरणम् पौराणिकमंत्रोच्चारणं वा अथर्वीथैर्दकेन स्नान विधिना स्नानम् एवं दशविधस्नानानि कृत्वा आचमनम् प्राणायामं कृत्वा स्नानांगतर्पणम् आचम्य अहतवस्त्रपरिधानम् तिलकं कृत्वा मध्यान्हसं ध्यावंदनम् सूर्योपस्थानम् नमस्कारः ततः सभागच्छेत् आचार्यऋ त्विग्वरणम् ततः षोडशोपचारैर्विष्णुपूजनम् अष्टदलमध्ये इन्द्रादि दिक्पालान् रुक्मिणीं सत्यभामां जांबवतीं नागजितीं मित्रविदां कालिंदीं भद्रां लक्ष्मणां च स्थापयेत् ॥ तत्र प्रथमं कलशस्थापनम् तत्र विष्णोः सत्यमूर्तिं सौवर्णमयीं स्थापयेत् अग्न्युत्तारणम् समुद्रस्येत्यादिभिर्मंत्रैः । ततः प्रायश्चित्तार्थं सत्येशपूजनम् सत्येशाय गोमिथुनदानम् ओमद्येत्यादि सत्येशस्य षोडशोपचारैः पूजनमहं करिष्ये इति संकल्प्य

कुबेर ७ ईशानमें शिव ८ तैसोहि पूर्वमें रुक्मिणी १ अग्निमें सत्यभामा २ दक्षिणमें जांबवती ३ नैऋत में नागजिती ४ पश्चिममें मित्रविदा ५ वायवमें कालिंदी ६ उत्तरमें भद्रा ७ ईशा नमें लक्ष्मणा ८ इनका स्थापन करे तिसके आदमें कलशका स्थापन है तिस कलशमें सुवर्णमयी विष्णुकी मूर्तिका स्थापन करे तिसते उपरंत अग्निका उत्तारण करे अर्थात् घटन समयमें जो उस में अग्नि है तिसको मंत्रों कर्के उतारे सो मंत्रादिखाई देहें (समुद्रस्येति) इत्यादि मंत्रों कर्के ॥ तिसते उप रंत प्रायश्चित्त के अर्थ नारायणका पूजन है सत्यनारायणके निमित्त गौवां दो २ दान कर्के फेर संकल्प करे (ओमद्येत्यादिमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे ॥ इस संकल्प कर्के नारायण के पूजनको १६ षोडशोपचारों कर्के में करांवा

॥ श्रीरणवीर कारितप्रायश्चित्त भागः॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १६५

तिनके आदमें अंगन्यासांकोंकें सोलां १६ मंत्रोंकेंतिसते उपरंत देवन्यासकोंकें फेर पूजा
कों करे नारायणके अंगोंका पूजन करे हस्तोंमें अर पादोंमें अर जानूमें कटिमें अर नाभिमें
गलमें हृदयमें बाहोंमें मुखमें अक्षिमें शिरमें ॥ सहस्रशीर्षेति ॥ इसमंत्र कर्के आवाहन करे १
पुरुषेति इसकर्के आसनदेवे २ एतावानिति? इसकर्के पाद्यदेवे ३ इसक्रमकर्के अर्घ ४ आचम
नीय ५ स्नान ६ वस्त्र ७ यज्ञोपवीत ८ गंध ९ पुष्प १० इन संपूर्णोंकों नारायणकेनाई देवे मंत्रोंकीआं प्रती
कां गूलमेंहैं तिनां तिनां मंत्रोंकें इनां वस्तुओंको देवे और ब्राह्मणोस्येत्यादिमंत्रकें धूप देणा
११ और चंद्रमा मनसोजात इत्यादिमंत्रकें दीप देणा १२ और नाभ्याआसीदित्यादि मंत्र

तत्र प्रथमं अंगन्यासंकृत्वा षोडशभिर्मंत्रैः ततोदेवन्यासं कृत्वा पूजांकुर्यात्
वामदक्षिणयोः पाण्योः पादयोः जान्वोः कटिद्वये नाभौ गले हृदि बाह्वोः
मुखे चक्षुषि शिरसि वा सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् १ पुरुषेत्यासनम् २ एता
वानितिपाद्यम् ३ त्रिपादूर्ध्व इत्यर्घम् ४ ततोविराडित्याचमनीयम् ५ तस्मा
द्यज्ञादितिस्नानम् ६ तस्माद्यज्ञात्सर्वेतिवस्त्रम् ७ तस्मादश्वान् इति यज्ञोपवी
तम् ८ तंयज्ञमिति गंधम् ९ यत्पुरुषमिति पुष्पम् १० ब्राह्मणोस्येतिधूपम् ११
चंद्रमामनसोजातइतिदीपः १२ नाभ्याआसीदिति नैवेद्यम् १३ यत्पुरुषमि
तितांबूलम् १४ सप्तास्यासन्निति नमस्कारम् १५ यज्ञेनेतिस्तुतिं प्रदक्षिणाम् १६
ततःषोडशभिर्मंत्रैर्दद्यात्पुष्पाणिषोडश ततःपुरुषसूक्तेनस्तुतिः अनेन यथा
शक्तिकृतेन पूजनाख्येन कर्मणा पापापहा विष्णुः प्रीयताम् नमोऽस्त्वनं
ताय मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वर भगवंस्त्वत्प्रसादेनपरिपूर्णंनमो
स्तुते १ सत्येशस्य पूजनकर्मणा सर्वपरिपूर्णम् ततोवैष्णवश्राद्धम् ॥

कर्के नैवेद्य देणा १३ और यत्पुरुषम् इसमंत्रकर्केतांबूल क्या पानपत्र देणा १४ और सप्तास्या
सन्नित्यादि मंत्र कर्के नमस्कार करणी १५ यज्ञेनेत्यादि मंत्र कर्के स्तुति और प्रदक्षिणा करणी
यां १६ तिसके अनन्तर १६ सोलांमंत्रोंकें १६ सोलां पुष्पदेवे तिसके अनन्तर पुरुष सूक्त
कर्के स्तुति करे एह जो यथाशक्ति कर्क कीताहै पूजनाख्यकर्म तिस कर्के पापों के दूर करणे
वाला जो विष्णु सो प्रसन्नहोवे ऐसाकहकर और नमोस्त्वनंताय इसमंत्रको पड़े और मंत्रहीन
मित्यादि मंत्रको पड़े और सत्येशके पूजनाख्यं कर्म कर्के सब परिपूर्ण होंगे ॥ तिसके अनन्तर
वैष्णव श्राद्धकरे

१३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

तिसके अनन्तर त्रिष्णुके उद्देश कर्के अर्थात् विष्णुके निमित्त तीनोंसे अधिक जो ब्राह्मण तिनानु में भोजनकर्के तृप्तकरताहुं ऐसे संकल्प करे और अभोजनपक्षमें तिनके ताँड़ सुवर्ण देणयोग्यहैं तिसके अनन्तर पूर्वाङ्गगोदानका संकल्प करे अब गोदानका मंत्र कहतेहैं गवामिति जिसकारणतें गौआंके अंगोंमें चौदा १४ भुवन स्थित रहतें हैं तिसीकारणतें मेरे ताँड़ कल्याण होवे इसलोक और परलोकविषे इसमें १४ भुवनकीस्थितिइसप्रकारहै कि गव्यघृत कर्के यज्ञहोताहै और यज्ञमें १४ भुवनपुष्टहोतेहैं ऐसे पडकगर्भरूप सहित दक्षिणाके गोदानकरे १ तिसमें ऐसा प्रकारहै प्रत्यक्षगोदान करे अथवा गौका मुल्ल देवे तिसके अनन्तर घृतकरके अग्नि विषे व्याहृतीयां द्वारा अष्टोत्तरशत अर्थात् एकसौ आठ १०८ आहुतिआदेवे तिसके अनन्तर पंचगव्यका हवनकरे । अब पंचगव्यकेहवनकाप्रकार कहतेहैं कि कपिला गौका मूत्र एक पल

विष्णुद्देशेन त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् अहं तर्पयिष्ये इतिसंकल्प्य अभो जनपक्षे तेषांहिरण्यंदातव्यम् ततःपूर्वाङ्गगोदानसंकल्पंकुर्व्यात् गोदानमंत्रः गवामंगेपुतिष्ठतिभुवनानिचतुर्दश यस्मात्तस्मच्छिवमस्यादिहलोकेपरत्रच इतिगोदानं सदक्षिणं प्रत्यक्षं वा मूल्यंदद्यात् ततश्चाज्येनाग्नौव्याहृतिभिः अष्टोत्तरशतमाज्याहुतीर्हुत्वा ततःपंचगव्यंजुहुयात् ॥ तत्रपंचगव्यहो मप्रकारः । कपिलायागोमूत्रं पलमितं गायत्र्यादाय प्रणवेन ताम्रपात्रेनि क्षिप्य ततो गोमयं पलद्वयमितं गन्धद्वारामित्यनेनादाय यस्मिन्पात्रे गोमू त्रंनिहितं तस्मिन्नेवपात्रे प्रणवेन निक्षिपेत् ॥ ततःक्षीरं सप्तपलपरिमितमा प्यायस्वेत्यादाय प्रणवेन तत्रनिक्षिपेत् ॥ ततोदधि सप्तपलं दशपलं वा दधिक्रावण इत्यनेनादाय प्रणवेन पूर्वोक्तपात्रे निक्षिपेत् ॥ ततोघृतमेकपल मितं तेजोसीत्यनेनादाय प्रणवेन तत्रैवनिक्षिपेत् तदनन्तरं कुशोदकं एकपलमितं देवस्यत्वाऽभिषिंचामोत्यादाय

क्या चौसठ मांस ६४ गायत्रीकर्के लए और ओंकारकर्के ताम्रपात्रविषे पावे तिसके अनन्तर दोपल गोबर गंधद्वारामित्यादिमंत्रकर्के जिसपात्र विषे गोमूत्र पायाथा उसीपात्रविषे ओंकार कर्के पावे तिसके अनन्तर सातपल दूध आप्यायस्वेत्यादि मंत्रकर्के लेकर उसीपात्रविषे ओंकार कर्के पावे तिसके अनन्तर दधिसात ७ पल अथवा दश १० पल दधिक्रावण इस मंत्रकर्के ले कर्के प्रणव कर्के उसी पात्रविषे पावे तिसके अनन्तर एकपल घृत तेजोसीत्यादि मंत्र कर्के उसीपात्र विषे ओंकारकर्के पावे तिसके अनन्तर एकपल कुशाका जल देवस्यत्वाऽभिषिंचा मोत्यादिमंत्र कर्के लेणा

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥ १६७

और ओंकार कर्के हाथसे आलोडन करणा तिसके अनन्तर अग्नि और वायु और सूर्य और प्रजापति इनको क्रमकर्के अठाई घृतकीआं आहुतीआं देवे फेर ओंकारका उच्चारण कर्के और यज्ञिय काष्ठ जो खंवल तिसकर्के छोले और ओंकार कर्के अभिमंत्रण कर्के और कुशाके सहित जो हरितंग वाले सात ७ पत्तेहैं तिनकर्के पंचगव्यकों उठावे इरावत्यादि मंत्रोंकर्के दशआहुतियां देवे और इस जगामें स्त्रवके स्थान हरित कुशाका ग्रहणहै अब इराव त्यादि मंत्र कहतेहैं इरावती १ इदंविष्णुः २ मानस्तोके ३ शन्नइन्द्राग्नी ४ अग्नये ५ सोमाय ६ तत्सवितुः ७ प्रणवश्च ८ ओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा ९ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा १० एहदशआहुतीयांका हवन कर्के हुन शेष जो है पंचगव्य तिसनू ओंकारका उच्चारण करके हाथकर्के अर्थात् तिसमे

प्रणवमुच्चार्य हस्तेनाऽऽलोडय अग्निवायुसूर्यप्रजापतिक्रमेण अष्टाविंशति मितमाज्येन होमंकुर्यात् पुनः प्रणवमुच्चार्य यज्ञिय काष्ठेन निर्मथ्य प्रण वेनैवाभिमंत्र्य सप्तपत्रैर्हरितैः कुशैः पंचगव्यमुद्धृत्य इरावत्यादिमंत्रैर्दशा हुतीर्जुह्यात् अत्र स्त्रवस्थाने हरितः कुशा एव इरावती १ इदंविष्णुः २ मान स्तोके ३ शन्नइन्द्राग्नी ४ अग्नये ५ सोमाय ६ तत्सवितुः ७ प्रणवश्च ८ ओंभूर्भुवःस्वः स्वाहा ९ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा १० इति दशाहुतीर्हुत्वा हुतशेषं पंचगव्यं प्रणवमुच्चार्य हस्तेनाऽऽलोडय प्रणवेन निर्मथ्य प्रणवेनैव पिवेत् हुतशेषं सर्वं पेयम् नोच्छेपणीयम् ॥ मौनीभूत्वाऽऽत्मनो दुष्कृतं मनसा चिंतयन् आचमनम् प्राणायामं च कुर्यात् ओमद्येत्यादि प्रयोगमुच्चार्य एवं गुण विशिष्टे पुण्यकाले देशे च मम जन्म प्रभृतीत्यादि पूर्वोक्तमुच्चार्य ॥ नरकभीति निवृत्त्यर्थं व्यवहारमुत्तये मम देहविशुद्धिं हि ददध्वं हि जसत्तमाः ॥ १ ॥

हाथ फेरें और ओंकारकर्के छोले और ओंकारकर्के ही पान करें और हुत शेष क्या हवनका शेष संपूर्ण पान करणा योग्य है वचाना ना चाहिए और तिसमें अनन्तर मौन धार कर्के और अपने कर्के कीता जो पाप तिसनू मम कर्के चिन्तन करता हुआ आचमन और प्राणायाम करे तिसके अनन्तर ओमद्येत्यादि प्रयोगका उच्चारण कर्के ऐसे गुणक के युक्त जो पुण्य काल और देश मम जन्म प्रभृतीत्यादि संकल्प को पढ़ कर्के एह प्रार्थनाका श्लोक पड़े नरकैति कि हे ब्राह्मणों नरकभयकी निवृत्तिके वास्ते और लोक व्यवहारकी सिद्धि के वास्ते मेरे देहकी शुद्धि नू देवो १

१६८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

येचेति और जिना पुरुषांदा पापही आचारहै ऐसे जो अशुद्ध और पापोंके करण वाले तिनांका प्रायश्चित्त करणें विना धर्ममें अधिकार नहिहै २ उपस्थितेति और प्रायश्चित्त के प्राप्त होयां २ जेडे थोड़ी बुद्धिवाले प्रायश्चित्त नहि करदे जैसे विभूति विषे हवन कीता होया निष्फल हुंदाहै तैसैं तिन्हांका सभ द्रव्य प्रायश्चित्तके विना निष्फल हुंदाहै ३ और जेकर गौ न मिले तो तिसके अर्थ जो रजतादि दान करणा तिस पक्ष विषे पंचगव्य प्राशन के अन्त्यमें एह जो डूढ वसादिकों के विषे अमुकाऽमुक संख्या वाले जो कच्छू तिनके स्थान विषे एक एक कच्छूके निमित्त सामर्थ्य पुरुषके वास्ते एक रुपैया और असामर्थ्यके वास्ते आठ आने और अतिअसामर्थ्यके वास्ते चार आने इन्हां विषे एक रजत द्रव्य नानानामोवाले और नानागोत्रों वाले जो ब्राह्मण तिन्हांके

येचपापसमाचारा अशुद्धाःपापकारिणः नचधर्मोऽधिकारोऽस्तिप्रायश्चित्ता दृतेतुवै २ उपस्थितेप्रायश्चित्तेनकुर्वन्त्यल्पचेतसः ॥ तेषांतुतादृशंसर्वयथाभ स्महुतंहविः ३ गोनिष्क्रयरजतादिदानपक्षे पंचगव्यप्राशनान्ते इदंसारधा वदादिष्वमुकामुकसंख्याककच्छूप्रत्याम्नायभूतं प्रतिकच्छूनिष्कतदर्धतद धान्यतमाणां रजतद्रव्यं नानानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योदातुमहमुत्सृजे इति द्रव्यदानसंकल्पंकृत्वा तदैव द्रव्यविभज्य दत्त्वाच उत्तरांगानि कुर्यात् अद्येत्यादि मम हननस्तेनपानगमन तत्संसर्गादि सर्वपापक्षयार्थं ॥ श्रीगुरूपदिष्ट कृतप्रायश्चित्तस्य साद्गुण्यार्थं उत्तरांगानिकरिष्यइति कुरुष्वेत्यनुज्ञातः ततश्चीर्णप्रायश्चित्तानिमित्तंहोमः ॥ उक्तंच आरंभेसर्व कृच्छ्राणांसमाप्तौचविशेषतः आज्येनैवतुशालाग्नौजुहुयाद्वाहतीःपृथक् १

तांई में देताहूं ऐसैं रजत द्रव्यका संकल्प करके उसी द्रव्यों वांट कर्के देवे तिसके अनन्तर जो उत्तरांगकीकृत्यहै तिसकों करे उत्तरांगपूजन उसकों कहतेहैं कि जिसतरां आदिविषे पूजनहै उसीतरांकर्मके अन्तविषे भी स्थापितदेवताका पूजनहुंदाहै ? पहलें तिस का संकल्प करे अद्यतत्सत् इत्यादिकोंका उच्चारणकरे और मेरे कर्के कीर्ती होई जो हिंसा और चोरी और मदिरापान और अगम्यागमन और तिनके संबंधकर्के उत्पन्नहोये जो सबपाप तिनके दूर करणके वास्ते श्रीगुरुजीने उपदेशकीता जो प्रायश्चित्त तिसकी संपूर्णताके वास्ते उत्तरांगपूजन में करुंगा और आचार्य कहे कि तू कर ऐसे आज्ञत होया २ करे तिसके अनन्तर कीता जो प्रायश्चित्त तिसकेनिमित्त हवनकरे सो कहाहै आरंभेति कि सबनां व्रतांकेआरंभ विषे और समाप्तिमें घृतकर्के अग्निशाला विषे हवन करे ॥ १ ॥

तिसके अनन्तर व्याहृतीयोंकके अष्टोत्तरशतघृतकीयांआहुतीयांकाहवनकरेएहअर्थहै और हवनके
अभावपक्षमें ब्राह्मणरूपी आग्निविषे व्याहृतियों द्वारा एकसठेआठ १०८आहुतीयां परिमित घृत
ताम्रपात्रविषे प्राकरके आचार्यके तांडे देवे तिसके अनन्तर वैष्णव श्राद्ध करे और श्राद्धवि
षे निमंत्रित जो ब्राह्मण तिन्हांके तांडे सुवर्ण देवे फेर गोदान करे गोदानके मंत्र कहतेहैं
गवामिति इसका अर्थ कहचुकेहैं १ ऐसेअंतविषे गोदान कर्के तिसके अनन्तर आचार्य क्या उ
पदेश करेवाला और ऋत्विक् क्या आचार्यकके कृत्यविषे प्रेरे होए जो हैन तिनांके तांडे
व्रतके अंतविषे गौ और सुवर्णादि दक्षिणा यथाशक्ति कर्के देवे और आचार्यके

ततोव्याहृतिभिरष्टोत्तरशतमाज्याहुतीर्जुहुयात् अथवाअहोमपक्षे ब्राह्मणा
औ व्याहृतिभिराज्यमष्टोत्तरशताहुतिपरिमितताम्रपात्रेकृत्वाऽऽचार्यायनि
वेदयेत् ततोवैष्णवश्राद्धम् श्राद्धविप्राणांचसुवर्णदेयम् पुनर्गोदानं तत्रमंत्रः
गवामंगेषुतिष्ठन्ति भुवनानिचसर्वशः यस्मात्तस्माच्छिवमेस्यादिहलोकेपर
त्रच १ एवमन्ते गोदानंकृत्वा ततआचार्यऋत्विग्भ्यश्चव्रतान्तेतु गोहि
रयादिदक्षिणा यथाशक्त्या देयाः ॥ आचार्यायवरदानम् एवंवरदानादि
नागुरुंसंतोष्य तस्मिन्नेवावसरे भूतशुद्धिं विधाय प्राणप्रतिष्ठांकुर्यात् प्राय
श्चित्तप्रकर्तव्यंचतुर्वर्गफलायवै तस्मात्त्वत्प्रसादाच्च कृताशुद्धिर्मयाविभो १
नमोनमस्तेविप्रेन्द्रभूदेवपंक्तिपावन तारितोऽस्मिमहादेव पापसंसारसा
गरात् २ ॥

तांडे वरदानभी देवे ऐसे वरदानादिके द्वारा गुरुजीको प्रसन्न करके उसी काल विषे
भूतशुद्धिको क्या देहशुद्धिको करके प्राणप्रतिष्ठा करे क्या प्राणायाम करे फेर प्राथना
करे प्रति हैविभो प्रायश्चित्त करणा योग्यहै धर्म और अर्थ और काम और मोक्ष इ
नके वास्ते तिस कारणसे मैंने तुसादी रुपाते देह शुद्धि कीतीहै १ नम इति और हेविप्रेन्द्र
क्या ब्राह्मणोंविषे इन्द्ररूप हेभूदेव क्या पृथ्वीके देवता हेपंक्ति पावन क्या ब्राह्मणोंको पंक्ति
कों पवित्र करणे वाले हेमहादेव तुसाने मेरेको पापरूपी संसार सागरसे तारयाहै २

१७० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

नमस्तुभ्यमिति कि हेविप्रेन्द्र आपके तांई बांवार नमस्कार होवे और आपकीछपातें मेरीनिर्मं लगुद्धेहोईहै १ ऐसैं गुरुजी नू नमस्कारकर्के और विदयाकरणके बास्ते साथ जाकरके विसर्जन क्या विदया करे । एवमिति ऐसैं जो ब्राह्मण भलो प्रकार कर्के प्रायश्चित्तकरे सो इसलोक और परलोक विषे पवित्रदेहवाला होजाताहै १ एवमिति और जो ब्राह्मण ऐसैं प्रायश्चित्तकरे सो संपूर्ण

नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनमः त्वत्प्रसादाच्चविप्रेन्द्रमम
जाताऽमलामतिः ३ एवं कृत्वा गुरुं न त्वा किंचिदनुब्रज्य विसर्जयेत् एवं करोति
यः सम्यक् प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमः सर्वैर्भवति पूतात्मा इह लोके परत्र च १ एवं
करोति यः सम्यक् प्रायश्चित्तं नरोत्तमः सर्वधर्माधिकारी स्यात्कृतार्थो हि भवे
च्च सः २ इति बहुग्रंथावलोकनपूर्वसाधारणप्रायश्चित्तम् श्रीमत्पौढतरप्रता
पतपनत्रस्ताखिलारिव्रजात् जंबूपत्तनतिव्वताक्षितिपतेर्धर्मस्य साक्षात्तनोः
भूपालावलिमौलिलाल्यचरणात् काश्मीरदेशेश्वरादाज्ञां श्रीरणवीरसिंहं नृ
पतेः प्राप्यार्थिचिन्तामणैः ॥ १ ॥ पर्यालोचितधर्मशास्त्रनिर्वहरे तत्स
भापंडितै र्गंगारामकवीशमुख्यविबुधैर्यः संगृहीतः श्रमात् प्रायश्चित्तवि
निर्णये प्रकरणं तस्मिन्बुधानन्ददे ॥ परिपलक्षणवर्णनादिरुचिरं सिद्धित्
तीयययौ ॥ २ ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशा
धीशप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्त देविकोपकंठवासिपण्डितवरदेवीदत्तमुत्
कविगंगारामादिसंगृहीते पंचविषयात्मकप्रतिरूपके धर्मशास्त्रमहानि
बन्ध प्रायश्चित्तभागे परिपलक्षणं प्रकरणं तृतीयम् ३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

धर्मांका अधिकारी और कृतार्थ होजाताहै २ एह बहुत ग्रंथोंका अवलोकनकर्के साधारण प्राय
श्चित्त कहेंहैं ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधिपति प्रभुवर रणवीरसिंहजी
की आज्ञा कर्के कविगंगारामने संग्रहकीता जो धर्मशास्त्रविषे प्रायश्चित्तभाग तिसके तीसरे
१ प्रकरणकोभाषाटीका संपूर्ण होई ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकाणिकृतानितत्पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते ।

पृ० पं० प्रतीक

१४३ २ ईशानः०

ईशानःसर्वविद्यानां ईश्वरःसर्वभूतानांब्रह्मा
धिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेस्तुसदाशि
वः१ यजुःतैत्तिरीयशाखायांरुद्रपाठे १

१४३। २। तत्पुरुषाय०

ओंतत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधामहि तन्नो
रुद्रःप्रचोदयात् ॥२॥ यजुः तै० शा० रु-१

१४३ ॥ २ ॥ अघोरेति०

ओंअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः
सर्वतः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेस्तुरुद्ररूपेभ्यः
॥ ३ ॥ यजुः तै० शा० रु- १

१४३ ॥ २ ॥ वामिति०

ओंवामदेवायनमोज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमः
रुद्रायनमः कालायनमः कलविकरणाय
नमोवलविकरणायनमोवलप्रमथनायन
मःसर्वभूतदमनायनमोमन्मथायनमः ४

१४३ ॥ ३ ॥ सद्योजातम् ०

ओंसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमः
भवेभवेमातिभवेभजस्वमांभवोद्भवःभवोद्भ
वायनमः ॥ ५ ॥ यजुःतै-शा.रु. १

१४३ ॥ ८ ॥ अश्वक्रान्ते.

अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुंधरे
मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ ६

१४३ ॥ ९ ॥ उद्धृतासि-

ओंउद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना दंष्ट्राये
लीलयादेवि यज्ञार्थंप्रणमाम्यहम् ॥

१४४ ॥ १ ॥ इदंविष्णुः-

ओंइदंविष्णुर्विवचक्रमेत्रेधामनिदधेपदंसमूढ
मस्यपाशंसुरेस्वाहा ॥ ८ ॥ यजुः सं ॥५॥

१७२ ॥ श्रीरघवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

तृतीयप्रकरणे यत्र यत्र मंत्रप्रतीकाणि कृतानि तत्पूर्त्यर्थं मंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं- प्रतीक

१४४ ॥ २ ॥ नमोमित्रस्य- ओं नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महादेवाय त
दृतलंसपर्व्यतदूरे दृशे देवजाताथ केतवे दिवस्पु
त्रायसूर्याय शलंसत ॥ ९ ॥ यजुः सं. ४

१४४ ॥ ३ ॥ गंधद्वाराम्- ओं गन्धद्वारांदुराधर्षानित्यपुष्टांकरीषिणीम्
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपवहये श्रियम् १०
ऋग्वेदसं.

१४५ ॥ ३ ॥ यत्किंचेदम्- ओं यत्किंचेदं पतपतियत्किंचेदं सरीसृपं यत्किं
चपर्व्वता इमे ध्रुवो राजा विशमयम् ११ अथर्व-सं-

१४५ ॥ ५ ॥ आपोऽस्मान्- ओं आपोऽस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृ
तश्वः पुनन्तु ॥ त्विश्वलंहिरिप्प्रवहन्ति देवीरु
र्दादाभ्यः शुचिरापूतऽरामि । दीक्षातपसोस्त
नूरसितान्त्वा शिवलंशग्मां परिदधे भद्रम्
एणम्पुष्पन् १२ यजुः सं. ४

१४५।७ । इदमापः प्रवह०- ओं इदमापः प्रवहता वद्यंचमलंचयत् यच्चाभिदुद्रोहा
नृतं यच्च शोपेऽअभीरुणम् । आपो मातस्मादेनसः
पवमानश्चमुचतु १३ यजुः सं. ६

१४५ ॥ ७ ॥ आपो हिष्ठा- ओं आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधात न महेरणा
यचक्षसे यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः उश
त्रीरिव मातरः तस्मात्त्ररंगमामवोयस्य क्षयाय जिन्विथ
आपो जनयथा च नः ईशाना वर्याणां क्षयन्तीं श्रणीनां
अपो याचामि भेषजम् ॥ १४ यजुः सं. ११

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितःपूर्वार्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं- प्रतीक

- १४५ ९ तत्सवितुः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचो-
दयात् १५ यजुः सं- अ- ३
- १४५ ९ आप्यायस्व ओं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृण्यम्भवा
व्वाजस्य सङ्गथे १६ यजुः सं- अ- १२
- १४५ १० दधिक्रावणः दधिक्रावणोऽत्रकारिपंजिणोरश्वस्य व्वाजिनः सुर-
भिन्नो मुखाकरतप्राण आयुः पितारिपत १७
यजुः सं- अ- २३
- १४५ १० तेजासि ओं तेजोसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि प्रियं देवा
नामना धृष्टं देवयजनमसि १८ यजुः सं- अ- २२
- १४५। १० देवस्य त्वा ओं देवस्य त्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्वाहुभ्यां पूष्णो ह
स्ताभ्यां १९ यजुः सं- अ- १ सुमित्रियानऽत्रापऽ
श्रोषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽश्रस्मान् द्वे
ष्टियं च व्वधं द्विष्मः २० यजुः । सं- अ- ६
- १४७।१ हिरण्यशृंगवरुणम् ओं हिरण्यशृंगवरुणम् प्रपद्ये तीर्थमे देहिया च तं यन्म
या भुक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः यन्मया मनसा
वाचा कर्मणा दुष्कृतं तन्न इन्द्रो वरुणो वृहस्पतिस्स-
विता वापुनातु पुनः पुनः २१ ऋग्वेद- सं- अ- १९
केचित्तु हिरण्यशृंगो योऽस्य पादामनोजवा अवर इन्द्रऽ
आसीत् देव इदस्य हविरद्यमायन्न्योऽश्रर्वन्तम् प्र
थमोऽश्रद्व्यतिष्ठत् २२ यजुः सं- अ- २९
- १४७।२। यदपांकूटम् ओं यदांकूतात्समसुस्त्रो हृदो वा मनसो वा संभृतं चक्षुषो
वांतदं नुप्तेत सुकृता मुलोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथ-
मजाः पुराणाः २३ यजुः सं- अ- १८

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतिकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

१४७ ५ कूष्माण्ड ओंयदंवादेवहेडनंदेवासश्चकृमाव्वयम् ॥ अग्निर्मा
तस्मादेनसोविश्वान्मुञ्चत्वल्लहसः २४ यदिदिवाय
दिनक्तमेनाल्लसिचकृमाव्वयम् ॥ वायुर्मातस्मादे
नसोविश्वान्मुञ्चत्वल्लहसः २५ यजुःसं-अ-२०
ओंयादिजाग्रद्यादिस्वप्नऽएनाल्लसिचकृमाव्वयम् ॥
सूर्योमातस्मादेनसोविश्वान्मुञ्चत्वल्लहसः २६
यद्ग्रामेयदरण्येयत्सभायांयादिन्द्रियेयच्छूद्रेयदर्धेयदे
नश्चकृमाव्वयम् यदेकस्याधिधर्माणितस्यावयजन
मासि २७ यदापोऽअग्न्याऽइतिवरुणेतिशपामहेततो
वरुणोमुञ्च अवभृथनिचुम्पुणानिचेरुरासिनिचुम्पु
णाः अवदेवैर्देवकृतमेनोयक्ष्यवमैर्त्यर्म्मर्त्यकृतम्पु
रुरावोणादेवरिषस्पाहि २८ समुद्रेतेहृदयमप्स्वन्तः
सन्त्वाविशन्त्वोषधीरुतापः सुमित्रियानऽआपउष
धयः संतुदुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्च
व्वयंद्विष्मः २९ इदंवायुसूक्तंयजुः सं० अ- २०

१४७।९ महाव्याहतिःसावित्रीच ॥ ओंभूःओंभुवःओंस्वःओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा
तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात्स्वाहा ३० यजुःसं

१४८।२ शुद्धवती. ओंशुद्धवालःसर्वशुद्धवालोमणिवालस्ताऽआश्विनाःशश्येतः
शश्येताक्षोरणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्णयामाऽअव
लिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्जन्याः ३१ यजुः. सं

१४८।२ अघमर्षणम् ओंऋतंचसत्यंचाभीक्षातपसाध्यजायत ततोरात्र्यजा
यत ततःसमुद्रोअर्णवः समुद्रादर्णवादाधिसंवत्सरो
ऽजायतअहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिपतोवशो सूर्या
चंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचान्त
रिक्षमथोस्वः ३२ ऋग्वेदसं ८ अष्टके

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं- प्रतीक

- ८ २ शंवती. ओंशंवतीपारयंत्येतेतपृच्छतिवचोयुजा अभ्यारन्तं-
यमाकेतुंयऽएवेदमितिब्रवत् ४१ ऋग्वेदसं. अष्टमाष्टके
- १४८ २ स्वास्तिमती. ओंस्वास्तिनइंद्रोवृद्धश्रवाः स्वास्तिनःपूपाविश्ववेदाः
स्वास्तिनस्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनोवृहस्पतिर्द
धातुपयःपृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः पयस्वतीःप्रादिशःसन्तुमह्यम्० शांतिरोधिसु
शांतिर्भवतु एतदन्तं पठनीयम् यजुःपडंगपाठेऽयम् ३४
- १४८ २ पावमान्यः. ओंस्वादिष्टयामदिष्टयायवस्वसोमधारया इंद्राययात
वेसुतः रक्षोहाविश्वचर्षाणिरभियोनिमपोहतम् द्रुणा
सधस्थमासदत् वरिवोत्तमोभवमंहिष्ठोवृत्रहंतमःपर्षि
राधोमघोनाम् अभ्यर्षमहानांदेवानांवीतिमंधसा अ
भिवाजमुतश्रवःत्वामच्छाचरामसितदिदर्थंदिवेदिवेइं
द्रोत्वेनआशसः १ पुनातितेपरिश्रुतंसोमं सूर्यस्यदुहि
तावारेणशश्वतातना तमीमएवीःसमर्यआगृह्णन्ति
पोषणोदश स्वसारःपार्थ्येदिवित्वमीहिन्वंत्यग्रवोध
मंतिवाकुरंदृतिम् त्रिधातुवारणंमधु अभीइममघ्न्या
उतश्रीणंतिधेनवःशिशुम् सोममिंद्रायपातवे अस्ये
दिद्रामं देष्वाविश्वावृत्राणिजिघ्रते शूरोमघाचमंहते२
पवस्वदेववीरतिपवित्रंसोमरंह्या इंद्रमिंद्रोवृषाचिश
आवच्यस्वमहिप्सरोवृषेदोद्युम्नवत्तमः आयोनिंधर्ण
सिःसदः अधुक्षतप्रिबंमधुधारासुतस्यवेधसः आपो
वसिष्ठसुक्रतुः महातंत्वामहीरन्वायोअर्पितिसिंधवः
यद्गोभिर्वासयिष्यसेसमुद्रोऽप्सुमामृजे विष्टभोधरु
णोदिवः सोमःपवित्रेऽस्मयुः३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्वार्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

१४८ २ पावमान्यः अचिक्रदद्वृपाहरिर्महान्मित्रोनदर्शतःसंसूर्येणरोच-
ते गिरस्तदंडोजसामर्मृज्येतअपस्पुवः याभिर्म
दायशुभसे तंत्वामदायघृष्वपउलोककृत्नुमीमहे
तवप्रशस्तयोमहीः
अस्मभ्यामिदंविद्रयुर्मध्वः पवस्वधारया ॥ पर्जन्योवृष्टिमांइव ॥ गोषाइन्दोनृपाअस्यश्वसावाज
साउत आत्मायज्ञस्यपूर्व्यः ४ एषदेवोऽमर्त्यः पर्ण
वीरिवदीयति ॥ अभिद्रोणान्यासदम् ॥ एषदेवोवि
पाकृतोतिवहरांमिधावति ॥ पवमानोऽअदाभ्यः ॥
एषदेवोविपन्युभिःपवमानऋतायुभिः । हरिर्वाजा
यमृज्यते ॥ एषविश्वानिवार्याशूरोयानिवसत्वाभिः ।
पवमानःसिषासति ॥ एषदेवोरथर्यतिपवमानोदश
स्पति ॥ आविष्कृणोतिवग्वनु ५ एषविप्रैरभिष्टुतोपो
देवोविगाहते ॥ दधद्रत्नानिदाशुपे एषदिवंविधावति
तिरोरजांसिधारया ॥ पवमानःकनिक्रदत् ॥ एषदि
वंव्यासरतिरोरजांस्यस्पृत्तः ॥ पवमानःसध्वरः । एष
प्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यः सुतःहरिः पवित्रेअर्पति ॥
एषउस्यपुरुव्रतोज्ञानोजनयनिपः ॥ धारयापवते
सुतः ६ सनाचसोमजेपिचपवमानमाहिश्रवः । अथा
नोवस्यसस्कृधि ॥ सनाज्योतिःसनास्व १ विश्वाचसो
मसौभगा ॥ अथानो० सनादक्षमुतक्रतुमपसोममृधो
जहि । अथा० परीतारःपुनीतनसोममिन्द्रायपातवे
अथानो० त्वंसूर्येनआभज तवक्रत्वातबोतिभिः ॥
अथानो० ७ तवक्रत्वातबोतिभिर्ज्यौक्पश्येमसूर्यम्०

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितः पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं- प्रतीक

१४८ २ पावनान्यः अथा० अभ्यर्पस्वायुधसोमद्विहर्षसंरयिं ॥ अथा०
अभ्य १ पानपच्युतोरयिसुमत्सुसासहिः अथानो-
त्वायज्ञैरवीवृधन्पवमानविधर्मणि ॥ अथानो० ॥
रयिनश्चित्रमश्विनमिन्दोविश्वायुमाभर अथानो० ८
समिद्धं विश्वतरुपतिः पवमानो विराजति प्रीणन्वृषा
कनिकदत् तनून्यात्पवमानः शृंगेशिशानोऽर्पति
अंतरक्षेणरारजन् । ईदैन्यः पवमानोरयिर्विराजतिद्यु
मान् मधोर्धाराभिरोजसा वर्हिः प्राचीनमोजसापव
मानः स्तृणन्हरिः देवेषु देवईयते उदात्तैर्जिहते वृहद्वारो
देवोर्हिरण्ययीः पवमानेन सुष्टुताः ९ सुशिल्पे वृहती
मही पवमानो वृषण्यति नक्तोपासानदर्शते उभा देवा
वृचक्षसा होतारा दैव्या हवये पचमान इन्द्रो वृषा भार
तीर्पवमानस्य सरस्वतीळामही इमं नो यज्ञभागमंति
स्त्री देवीः सुपशसः त्वष्टारमग्रजांगोपांपुरोयावान
माहुवे इंदुरिन्द्रो वृषा हरिः पवमानः प्रजापतिः वनस्प
तिपवमानमध्यासमग्निधारया सहस्रबलं शहरितं आ
जमानं हिरिण्ययं विश्वे देवाः स्वाहा कृतिपवमानस्याग
त वायुर्वृहस्पतिः सूर्योऽग्निरिन्द्रः सजोपसः १० मंत्र
या सोमधारया वृषापवस्वदेवयुः अयो वारेष्वस्मयुः
अभित्यं मघं नदमिंदविन्द्र इति क्षरा । अभिवाजिनोऽर्च
तः अभित्यं पूर्यर्थमदंसुवानी अर्धपवित्रं ॥ अवाजमु
त श्रवः अनुद्रप्सास इंदव आपोन प्रवतासरन्

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

पावमान्यः० पुनानां इंद्रमाशत यमत्यामेववाजिनं मृजंति पोषणं
दश वने क्रीळत मत्यविं ११ तंगेभिर्दृष्टं पणं रसं मदा
यंदववीतये सुतं भरापसंसृज देवो देवाय धारयेद्राय
पवते सुतः पयो यदस्य पीपयत् आत्मा ब्रह्मस्य रं ह्यासु-
प्याणः पवते सुतः

प्रत्नं निपातिकाव्यं एवा पुनानां इंद्रयुर्मदं मदिष्ठवीतये
गुहाधिदधिष्ठे गिरः १२ ऋग्वे-सं- अ- ७ पष्ठाष्टके

१४८ २ ऋपभम्

ऋपभं मासमानानां सपत्नानां विपासाहिं हंतारं शत्रू
णां कृधिविराजं गोपतिं गवाम् ॥ अहमस्मि सप-
त्नहेन्द्र इवारिष्ठो अक्षतः अधः सपत्नां पदोरिमे स-
र्वे अभिष्ठिताः अत्रैव वोपि न ह्याम्युभे आर्त्ता इव ज्य-
या वाचस्पते निषेधमान्यथा मदधरं वदान् अभिभूरह-
मागभं विश्वकर्मेण धाम्ना आवश्चित्तमावो व्रतमावो
हंसमिति ददे योगक्षेमं वज्रादायाहं भूया समुत्तम आ-
वो मूर्ध्नि नमः कर्मा अधस्पदान्म उद्वदत्तं मंदूका इवोदं-
कान्मं डूका उदकादिव ऋपभसूक्तमिदं ऋग्वेदस-
हितायां ८ अष्टके

१४८ ४ विरजम्

प्रतद्विष्णुस्तवते वार्येण मृगानभीमः कुचरो गिरिष्ठाः
यस्योरुपुत्रिपुत्रिकर्मणेष्वाधिक्षियंति भुवनानि
विश्वं यजुः- सं- अ० ५ वेजोसितेजोम-
यिधेहि वीर्यमसि वीर्यमयिधेहि वलमसि वलं मयि
धेहो ज्योस्यो ज्योमयिधेहि मन्थुरसि मन्थुमयिधेहि
सहोसि सहोमयिधेहि १ एकोनविंशतितमे यजुर्वेद-
संहितायां विरजसूक्तम्

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितःपूर्वार्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं- प्रतीक

१४८ ५ सौरर्चः उदुत्यजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवः दृशे विश्वायसूर्यम्
पङ्गेचतुर्थाध्यायमंत्रः ॥ उद्वयन्तमसस्परिस्विः पश्य
न्तउत्तरम् देवेदेवत्रासूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् २
यजुःसंहिता अ. ३५ चित्रंदेवानामुदगाद
नीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्यः आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ३ यजुः
सं. अ. ७ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमु
च्चरत् पश्येमशरदः शतं जीवेमशरदः शतं शृणुयाम
शरदः शतं प्रव्रवामशरदः शतमदीनाः स्वामशरदः
शतं भूयश्चशरदः शतात् ४ पङ्गेऽष्टमाध्यायमंत्रः ८

१४८ ॥ ६ रौरव ॥ रौरवरुहतीसोमः ०
२ २ २ १ ५ १ २ २ २
पुनानः सोमा ३ धारा २३४ या आपो वसा नो
२ २ २ ३ २
अर्षस्या रत्नधा योनिमृतस्यसार इद सा ३
१ २ २ १ २ २ २ १ २
उ हा ३ उवा उत्सो देवो हिरा २३ हा ३ उ हा ३
२ १ २ ४ ५ ४
उवा एष याऊ ३ हो वाहो ५ इडा ५ सामवेद
वेजगायन अ- १४

१४८ ॥ ६ ॥ यौधाजयं युधाजयवृहतीसोमः ० पु ना ३१ ना ३ः सो म धा
३ ५ १ २ १ ३ २ ३
रा २३४ या आपो ३ वसा २ न आ ३४५ । षा
५ २ २ १ २ १ २ १ ३ २
२३४ सी आ रा त्नधा । यो । निमृता २ । स्यसा

१८० ॥ श्रीरण्वारकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० तृ० ॥ टी० भा० ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

३ ५ २ १ ३'
३४५ इादा २३४ सी॥ उत्सारः ॥ २। दा इ वो २हि
२ ५
रा ३४५ एया २३४ याः ॥ ६ सामवेदवेजगायनः ॥ १४
१४८ ९ अग्नेव्रतम् अग्नेव्रतं शुक्रियसामान्युच्यते ० अग्निर्गायत्र्यग्निः
२र २ ३र २र ३र र २ र
हा उ२ हा उ । आ जा उ वा । ३। अग्निर्मू
र १ २ र
द्वा दी ३ वाः का १ कूरत् । पतिः पृथिवी ३
१ २ २ र र र
या आ १ यारमा अ पा ठ- रे ता ठ-सी ३
१ २ र १३र २र ३
जा इन्वा १ ती २३हा उ २ हा उ । आ जा उ
र र २ ४ २र १
वा । २ । आ जा इउ ५ वा ६ ५६। ए वि श्व
२ १ २र १र ३ । १ । १ । १ ।
स्य जगतो ज्यो ती २ ३ ४ ५ ॥ ७ ॥ सामवे
आरण्य गायन ॥ अ० ५ ।

१५६ । १ रुद्रैकादशिनी ॥ नमस्ते रुद्रमन्यव इत्यादि एकादशपाठाः ८ ॥

१६० । १ मावोरिपत् मावोरिपत्स्वनितायस्मै चाहं स्वनामिवः द्विपाञ्चतु
ष्पादस्माकं सर्वमस्त्वनतुरम् १ यजुः सं. अ. १२

१६० । १ स्योना पृथिविनो स्योना पृथिविनो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छानः
शर्मसप्रथाः १० यजुः सं. अ. ३६

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितःपूर्वार्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

ए- पं- प्रतीक

१६० ५ आयनेते आयनेतेपरायणेदूर्वाशेहतुपुष्पणी उत्सोवातत्रजा
यतांहदोवापुंडरीकवान् ११ । अथर्वणवेदसंहिता
यां पष्काण्डे. अ. ११ ॥

१६० ६ त्रातारमिन्द्रम् त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवेसुहवंशूरमिन्द्रं
हवधामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रंस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः
१२ ॥ यजुः ० सं- अ- २०

१६० ६ यमायमधु . ओंयमायत्वामस्वायत्वामूर्ध्वस्यत्वा तपसेंदवस्त्वा
सवितामह्द्वानक्तुष्टिर्व्याःसंस्पृशस्पाहिअ
ध्विरसिशोचिरसितपोसि १३ यजुः सं- अ- ३७

१६० ७ तत्त्वायामाति ओंतत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमा
नोहविर्भिःअहेडमानोव्वरुणेहवोद्वयुरुशंसमान
ऽआयुःप्रमोषीः १४ यजुः सं- अ- २१

१६० ७ वयंसोमव्रते ओंवयंसोमव्रतेतवमनस्तनूपुविब्रतःप्रजावन्तः
सचेमहि १५ पङ्गपाठे. अ- ६

१६० ७ तत्सूर्यम् ओंतत्सूर्यस्यदेवत्वंतन्महित्वम्मद्वयाकर्तोर्वितत
संज्ञजभार यदेदयुक्तहरितःसधस्थादाह्रात्रिवा
सस्तनुतेसिमस्मै १६ यजुः सं- अ- ३३

१६० ८ अधःपश्येति ओंअधःपश्यस्वमोपरिसंतरांपादकौहर मत्तेकशल्लकौ
दृशन्स्त्राहिब्रह्मावभूविथ १७ ऋग्वे ० सं-
पष्ठाष्टके अ- ३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

१६० ८ सहस्रशीर्षेति सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् सभूमि
ॐसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम् १८ रुद्रपाठे अ- २

१६१ ६ सोमान्स्वरणम् ओंसोमान्स्वरणङ्कणुहिव्रह्मणस्पतंकक्षी
वंतय्यऽओशिजः १९ यजुः० सं० अ० ३

१६१ ६ यःकुक्षिः यःकुक्षिःसोमपातमः ॥ समुद्रइवपिन्वते उर्वी
रापोनकाकुदः एवाह्यस्यसूनुता विरप्शीगोमती
महीपक्काशाखानदाशुपे २० ऋग्वेदसंहितायाम्.
अ- १ ॥

१६१ ७ वह्न्वीनांपिता वह्न्वीनांपितावहुरस्यपुत्रश्चश्चाकृणोति सम
नावगत्यइपुधिः सङ्काष्टतनाश्चसर्वाः पृष्ठेनि
नद्रोजयतिप्प्रसूतः २१ ॥ यजुः. सं- अ. १९

१६१ १० आमाव्वाजस्येति आमाव्वाजस्यप्प्रसवोजगम्पादेमेद्यावापृथि
वीविश्वरूपे आमागन्तांपितरामातरांचामासोमोऽ
अमृतत्वेनगम्भ्यात् व्वाजिनोव्वाजजितोव्वाजं
ससृवाळंसोवृहस्पतेव्भागमवजिघ्रतनिमृजानाः
२२ यजुः - सं- अ. ९ ॥

१६१ १४ अश्वक्रांति अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेदिष्णुक्रान्तेवसुन्धरे ॥ मृत्तिके
हरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् २३

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं- प्रतीक

१६३। ३ मधुवाताइति- ओमधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवःमाध्वीर्नः
संवोषधीःमधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवशूरजः म
धुद्यौरस्तुनःपितामधुमान्नोवनरूपतिर्ममधुमाऽअस्तु
सूर्यःमाध्वीर्गावोभवन्तुनः २४ यजुः० सं-अ- १३

१६३ । ५ याओषधीरिति उंयाओषधीःपूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरामनैनुव
भूणामहठ.शतन्धामानिसप्तच २५यजुः-सं-अ-१२

१६३।९ धान्यमसीति ॐ धान्न्यमसिधिनुहि देवान् प्राणायत्त्वोदानायत्त्वाव्या
नायत्त्वादीर्घामनुप्प्रसिति मायुपेधान् देवोवः सविता
हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेष्पाणिनाचक्षु
पेत्यामहीनाम्पयोसि २६ यजुः ० सं- अ० १

१६४ । ८ समुद्रस्येत्यादिमंत्राः समुद्रस्यत्वावकपाग्नेपरिव्ययामसि पावकोऽ
 अस्मभ्यंशिवोभव ॥ २७ ॥ हिमुस्यत्वाजरा
 युणाग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यं
 शिवोभव ॥ २८ उपज्जमन्नुपवेतसेवतरन्नदीप्त्वा
 अग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिताभिरागहिसेमन्वोय
 ज्ञम्पावकवर्णंशिवङ्कृधि । २९ ॥
 अपामिदन्ययनं समुद्रस्यनिवेशनम् ॥
 अन्नं योस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्यं
 शिवोभव ३० अग्नेपावक रोचिपामन्द्रयादेवाजि
 ष्वहयां आदिवान्वक्षियाक्षिच ३१ सनः पावकदीदि
 वोग्नेदेवां २ ॥ इहावह ॥ उपयज्ञं हविश्च न
 ३२ ॥ पावकयायाश्चिचतयन्त्याकृपाक्षामन्त्रुरुच
 ऽउषसो नभानुना तूर्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयो
 वृणेनतुत्तृषाणोऽअजरः ॥ ३३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्वार्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

१६४ । ८ समुद्र-

नमस्ते हरसेशोचिपे नमस्तेऽत्रस्त्वर्चिपे अन्न्यां
स्तेऽत्रस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽत्रस्मब्भ्यंशिवोभव ३४ नृपदेवेडप्सुपदेवेड्डपनसेदेवेडस्व
र्विदेवेड् ३५ येदेवादेवानांयज्ञियायज्ञियाना
ं संवत्सरीणमुपभागमासते अहुतादोहविषोयज्ञे
अस्मिन्स्वयम्पिबन्तुमधुनोघृतस्य ३६ येदेवादेवे
प्सुपदेवेदेवत्वमायन्त्यव्रह्मणःपुरऽएतारोऽत्रस्येय
ब्भ्योऽनऽऋतेपवतेधामकिंचननतेदिवोनष्टथिव्या
ऽअधिस्त्रुपु ३७ प्राणदाऽअपानदाव्यानदावर्चो
दावरिवोदाः अन्न्यांस्तेऽत्रस्मत्तपन्तुहेतयःपाव
कोऽत्रस्मब्भ्यंशिवोभव ३८ यजुः-सं० अ० १७

१६५ । ३ सहस्रशीर्षेति सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् सभूमिं
सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् इत्यावाहनम् ३९

१६५ । ३ एतावानिति एतावानस्यमहिमातो ज्यायांश्चपूरुषःपादोस्यविश्वा
भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि इतिपाद्यम् ४०

१६५ । ३ पुरुषऽएवेति पुरुषऽएवेदं सर्वं यद्वृत्तं यच्च भाव्यम् उतामृतत्वस्ये
शानोयदन्नेनातिरोहति इत्यासनम् ४१

१६५ । ४ त्रिपादूर्ध्वेति त्रिपादूर्ध्वेऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो
विष्वङ् व्यक्रमत्साशनानशनेऽअभि इत्यर्घम् ४२

१६५ । ४ ततोविराडिति ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः सजातोऽअ
त्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः इत्याचमनीयम् ४३

तृतीयप्रकरणयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ- पं- प्रतीक

१६५।४ तस्माद्यज्ञादिति तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसम्भृतमष्टपदाज्यम् पशूस्तां
श्रुक्वेवायव्यानारण्याग्राम्याश्रये इतिस्नानम् ४४

१६५।५ तस्माद्यज्ञात् तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःऋचःसामानिजज्ञिरे छन्दांसि
जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत इतिवस्त्रम् ४५

१६५।५ तस्मादश्वाइति तस्मादश्वाऽअजायन्तंयकेचोभयादतः गावोहयज्ञिरे
तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः इतियज्ञोपवीतम् ४६

१६५।६ तंयज्ञमिति तंयज्ञम्वहिषिप्रौक्षन्पुरुषंजातमग्रतः ॥ तेनदेवा
ऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्चये ॥ इतिगंधम् ॥ ४७

१६५।६ यत्पुरुषमिति यत्पुरुषम्वयदधुःकतिधाव्यकल्पयन् मुखङ्किमस्या
सीत्किम्वाहूकिमूरूपादाऽ उच्येते इतिपुष्पम् ४८

१६५।६ ब्राह्मणोस्येति ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्वाहूराजन्यःकृतःऊरूतदस्य
यद्वैश्यःपद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ इतिधूपम् ॥ ४९

१६५।७ चंद्रमामनसोजातःचंद्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्योऽअजायतश्रोत्राद्वायु
श्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत इतिदीपः ॥ ५०

१६५।७ नाभ्याऽआसीत् नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षंशीर्णोद्यौःसमवर्तत पद्भ्या
म्भूमिर्दिशःश्रोत्रात्तथालोकां२॥ ऽअकल्पयन् इति
नैवेद्यम् ॥ ५१ ॥

१६५।७ यत्पुरुषेणेति यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥ वसन्तोस्यासी
दाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्विः इतिताम्बूलम् ॥ ५२

१६५।८ सप्तास्यासन् सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः देवायद्य
ज्ञन्तन्वानाऽअवध्नन्पुरुषम्पशुम् इतिनमस्कारः५३

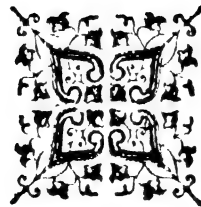
तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थमंत्रसंग्रहोल्लिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

१६५। ८ यज्ञेनयज्ञम् यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्या
सन् तेहनाकम्माहिमानःसचन्तयत्रपूर्वेसाध्याःस
न्तिदेवाःइतिस्तुतिःप्रदक्षिणाच ५४

१६५। १० नमोस्त्वनंतायेति नमोस्त्वनंतायसस्त्रहमूर्तयेसहस्रपादाक्षिशिरोरुवा
हवे सहस्रनाम्नेपुरुषायशाश्वतेसहस्रकोटीयुगधारि
णेनमः नमःकमलनाभायनमस्तेजलशायिने नम
स्तेकेशवानंतवासुदेवनमोस्तुते ५५

१६७। ४ इरावती इरावतीधेनुमतीहिभूतंसूयवसिनीमनेवेदशस्यव्य
स्कब्ध्नारोदसीविष्णवेतेदाधर्त्थं पृथिवीमभितोमयू
खैःस्वाहा ५६ यजुः- सं- अ- ५

१६७। ५ शन्नऽइन्द्राग्नी अहानिशम्भवन्तुनःशंर्रात्रीःप्रतिधीयतां शन्नऽइ-
न्द्राव्वरुणारातहव्याशन्नऽइन्द्रापूपणाव्वाजसातौ
शमिन्द्रासोमासुवितायशंस्योः ५७ यजुः-सं-अ- ३६
अस्तुसतामुदेमंत्रसंग्रहोयम्



॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ १

॥ स्वतोमीति इसका अर्थ पिछेहोचुकाहै मैं कविगंगागमने श्रीमहाराजाधिराज श्री-
रणवीरसिंह जीकी आज्ञासे एह कर्मविपाक क्या कर्माकाहै फल जिस विषे ऐसा प्रकरण
प्रारंभकरीदाहै कैसाएहप्रकरणहै जिसके विचारणविषे गुणपुरुषांको दोष क्या पापविषे
प्रवृत्ति नहि होनी और पापांविषे जो प्रीतियुक्तहै तिसके हृदयविषे अतिशयकर्के कंप
होताहै और दुष्टजनकावेप क्या काणत्व वधिरत्वादि जिससे प्रतीतहुंदाहै १ और तिसके
आदिविषे कर्मविपाकशब्दका अर्थ कहीदाहै कर्मति शुभ और अशुभ कर्मांकाविपाक क्या फल
पणिणामिकाल सो कर्म विपाक कहीदाहै इसव्युत्पत्तिसे यद्यपि शुभकर्मका फल विद्वत्ता
आदि और पापकर्मकाफल क्षयरोगादि इनांविषे कर्मविपाक शब्दकी प्रवृत्ति कहीहै
तथापि प्रसंगसे पापीपुरुषांके मनविषे पश्चात्तापके कारण वाला होनेसे अशुभकर्मांका

ओंश्रीगणेशायनमः ॥ स्वतोमित्वातत्त्वमित्यादि० यस्मिन्विमृष्टेगुणिनां
दोषः पापाभिसक्तस्यहृदिप्रदोषः प्रजायतेदुष्टजनस्यवेपःप्राग्भ्यंतकर्म
विपाकएषः १ तत्रादौकर्मविपाकशब्दार्थः कर्मणांशुभाशुभानांविपाकः
फलदानकालः सइतिव्युत्पत्त्या विद्वत्ता क्षयरोगादौ कर्मविपाकशब्दप्रवृ
त्तिः तथापि प्रकृतत्वात्पापिजनमनोऽनुतापापादकत्वाच्च दुष्कर्मजनित
एवकर्मविपाकःप्रस्तूयते । अत्रमाधवः पतंजलिसूत्रानुमत्या विशेषेणपचनं
विपाकः सच जन्मायुर्भोगभेदात्त्रिविधः तन्मूलं अविद्याऽस्मितारागद्वेषा
भिनिवेशाःपंचक्लेशाः । अविद्या ममता अस्मिताअहंता रागद्वेषोप्रसिद्धौ अ
भिनिवेशस्तयोर्दार्ढ्य एभिरेवज्ञानोपलब्धियावत् कर्माणिजायंते तानि
चाऽत्र जन्मादिरूपेणविपच्यंते ॥ पतितंयाजयित्वातुकृमियोनौप्रजायतइ
त्यादिना जन्म १ तत्रजीवतिवर्षाणिदशपंचचवद्विजंत्यादिना आयुः २

परिणाम है जिसविषे ऐसा कर्मविपाक प्रसंगसे ल्याइंदाहै इसविषे माधवजीका वाक्यहै
पतंजलि सूत्रके अनुमतिकर्के विशेषकर्के जो पचनक्रियाहै सो विपाक कहाहै सो विपाक
जन्म १ और आयु २ और भोग ३ इसभेदसे त्रयप्रकारकाहै तिसकामूल अविद्या क्या
ममता १ और अहंकारता २ और राग ३ और द्वेष ४ और रागद्वेषद्वन्द्वता ५ एनांकर्के ज्ञान
कीप्राप्तिके पर्यंत छे कर्म संपूर्ण जन्मादिरूपकर्के फलदेणवालेहोतहै सो कहीनेहा पतितमिति
पतितकों यज्ञकरवाणे कर्के कृमिजन्मकों प्राप्तहोताहै इत्यादिकर्के जन्मकहाहै १ और तिसमे
पदशवर्ष जीवताहै इसकर्के आयु २

२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

यमेति सो पापी यमलोकविषे बहुत पीडा को प्राप्त होते हैं इस कर्क भोग कहा है स्मृतिकर्क प्रसिद्ध ३ एह माधवजी कहते भये इसमें होर विचार करते हैं त्रय प्रकार का भी विपाक कहा है प्रेतत्वगति और नारकायदेहत्वगति और अथमयोनित्वगति और कीटादियोनित्व इन तीनों भेदों में बहुत प्रकार का है (प्रण) प्रायश्चित्त के प्रसंग विषे इसको क्यों कहते हो (उत्तर) प्रेति इस पाप युक्त पुरुष विषे पाप के विधान करणों और पाप फल के दूर करणों असमर्थ के होयां होयां भी अर्थवाद कर्क प्रायश्चित्त की उपयोगिता कर्मविपाक को जानणी सो दिखाया जावेगा अब अर्थवाद का अर्थ कहते हैं विहित कर्म विषे प्रवर्त्तक होणें और निषिद्ध कर्म से निवर्त्तक होणें विधि और प्रतिषेध विषे एह अर्थवाद एक वाक्यता को अंगीकार करते हैं ऐसे न्यायवेत्ता के वचनते ॥ तथाच क्लेशकर्क होणवाला जो प्राजापत्य आदि व्रत तिसके अनुष्ठान

यमलोकेतुतेधोरांलभंतेपरियातनामित्यादिना भागः स्मृतिसिद्ध ३ इत्याद्य भिदधे त्रिविधोऽपि प्रेतत्वनारकायदेहत्वाधर्मयोनित्वकीटादियोनित्वादिभेदाद्वहुविधः प्रायश्चित्तोपयोगित्वंचास्यविधातुं प्रतिषेधुमशक्यत्वेऽपि अर्थवादत्वेन बोध्यम् अर्थवादास्तु विहिते प्रवर्त्तकत्वेन प्रतिषिद्धान्निवर्त्तकत्वेन च विधिप्रतिषेधैकवाक्यतां भजंत इति न्यायविदुक्तेः तथाच क्लेशात्मक प्राजापत्याद्यनुष्ठाने प्ररोचनां विना प्रवृत्त्यभावात्तदर्थं काचित्प्ररोचना विधेया सा च यागादावनुकूलफलश्रवणेन क्षयरोगादिहेतुश्रवणादुद्वेजनद्वारा प्राजापत्यादौ तन्निवृत्तिहेतुत्वेन च जायते उद्वेजनं तु इयं ब्रह्महत्याऽवश्यमहं क्षयरोगदास्यतीति निश्चयहेतुकम् ततश्चेदं प्राजापत्याद्यनुष्ठानं तन्निवृत्तिहेतुश्रतोऽवश्यमनुष्ठेयमिति प्ररोचना तत्तद्विपाकजन्येत्यवश्यं कर्मविपाकप्रस्तावना प्रायश्चित्तादौ वक्तव्या

विषे रुचिने विना प्रवृत्तिके अभाव होणें तिसकारणें रुचिकी प्रवृत्ति वास्ते कर्मविपाक कहा है तिसके अर्थ कोईक प्ररोचना विधान करण योग्य है सो प्ररोचना कही दोहें यागेति यज्ञादिकां विषे अनुकूल फल के श्रवण कर्क और क्षयरोग आदिकां के हेतु जो पाप तिनके श्रवणें होया जो हृदय कंप तिसद्वारा प्राजापत्यादि व्रत विषे पाप के निवृत्ति हेतु होणे कर्क प्ररोचना उत्पन्न होती है ॥ उद्वेजन का अर्थ कहते हैं एह ब्रह्महत्या अवश्यहि मेरे ताई क्षयरोग आदिकां को देवेगी एह निश्चय जानणा तिसकारणें एह प्राजापत्यादि व्रत का अनुष्ठान अवश्यहि करण योग्य है तिस क्षयरोग की निवृत्ति हेतु ऐसें प्ररोचना तिस तिस विपाक फलें उत्पन्न होती है तां कर्मविपाक की प्रस्तावना प्रायश्चित्त के आदि विषे अवश्यहि कहणे योग्य है

॥ श्रीरणवीर कारितप्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ३

सेति फेर सो कर्मविपाक सामान्य और विशेष भेदें दो प्रकारका है सामान्यतें जो कर्म विपाक कारूप है सो शिवधर्मोत्तर विषे कहा है अथेति इसतें अनंतर पतित पुरुषांको अधर्म कहा है पापशब्दका अर्थ कहते हैं नरेति महाघोर नरकादि विषे पातन करणें पाप कहा है १ विष्णुधर्मोत्तरविषे भी कहा है हे भार्गव पुरुषांको मृत्युके प्राप्त होयां होयां आतिवाहिक संज्ञाकर्के देह होता है सो केवल मनुष्योंका ही है होरकानहि १ तिसका अर्थ कहते हैं वाहमिति पापके करण वाले देहको छोडकर्के जो होवे सो कहिए आतिवाहक सोई यमपीडाके भोगका हेतु है याम्यैरिति हे भृगूत्तम मनुष्योंका आतिवाहक देह यममार्गकर्के यमदूताने लै जाईदा है हे द्विज अन्यजीवांका नहि २ तैसेहि और स्मृति विषे कहा है । मनुष्या इति ॥ एह जो मनुष्य हैं

सपुनः सामान्यविशेषभेदाद्विविधः ॥ सामान्यतः कर्मविपाकः शिवधर्मोत्तरे ॥
अथातः पततां पुंसामधर्मः परिकीर्तितः नरकादौ महाघोरपातनात् पापमु
च्यते १ विष्णुधर्मोत्तरेऽपि ॥ आतिवाहकसंज्ञस्तु देहो भवति भार्गव केवलं
तन्मनुष्याणां मृत्युकाल उपस्थिते १ वाहं पापोपार्जकं देहमतिक्रम्य जायते
आतिवाहको यमयातनाभोगहेतुः ॥ याम्यैर्नरैर्मनुष्याणां तच्छरीरं भृगूत्तम
नीयते याम्यमार्गेण नान्येषां प्राणिनां द्विज २ तथा मनुष्याः प्रतिपद्यन्ते स्वर्गं
नरकमेव वा नैवान्ये प्राणिनः केचित्सर्वेते फलभोगिनः १ शुभानामशुभानां च
कर्मणां भृगुनन्दन संचयः क्रियते लोके मनुष्यैरेव केवलम् २ तस्मान्मनु
ष्यश्च मृतो यमलोकं प्रपद्यते नान्यः प्राणी महाभाग फलयोनौ व्यवस्थितः ३

सोई स्वर्ग और नरक में जाते हैं और जो पशु पक्षी आदिक प्राणी हैं तिनको स्वर्ग दिगति नहि है किंतु पूर्वजन्ममें मनुष्य देह करके कीते होए जो कर्म तिनके फल को भोगते हैं इस जन्मके कर्मोंका फल उदको आगे नहि होता १ इसीको स्पष्ट करके कहते हैं शुभेति हे भृगुनन्दन शुभ और अशुभ जो कर्म तिनका संचय इस लोकविषे केवल मनुष्योंने करोदा है औरोंने नहि २ तस्मेति तिस कारणसे मृत होया २ मनुष्य यमलोकको जाता है और प्राणी नहि जाता हे महाभाग जिस करके होर पशु पक्षी आदि प्राणी फलयोनिविषे व्यवस्थित है इसका अर्थ स्पष्ट पिछे होचुका ॥ ३ ॥

४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

याम्येति यमलोकको प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों राजा धर्म नरकादियोनिमे पापके अनुसार प्राप्त करताहै ४ ब्रह्मपुराणविषे कहाहै कर्मेति कर्म कर्के और मनकर्के और वाणी कर्के जो पुरुष धर्मते रहितहैं सो यमलोक विषे बहुत पीडाकों प्राप्तहोतेहैं १ इहेति इसदेहविषे पुरुष अल्पभी अशुभकर्म करे तां यमलोकविषे जो नरक तिसविषे जो घोरपीडा तिसकों प्राप्तहोताहै २ विष्णुपुराणविषे भी किहाहै पापेति जो पापके करणेवाला पुरुष, जेकर प्रायश्चित्तसे पराङ्मुखहोवे अर्थात् प्रायश्चित्तकों न करे तां नरकों प्राप्तहोताहै और पापोंके दूरकरणेवास्ते जो जैसे प्रायश्चित्तहैं तैसे तैसे स्मरण कर्के परमऋषियोंने कहेहैं १ तैसेभविष्योत्तरपुराणविषे कहाहै देवेति । देवता और तिर्यङ् जो पशुआदि और जो मनुष्य अधर्मविषे निरंतरयुक्तहैं तिनांकोघोर

याम्यलोकंप्रपन्नस्यपुरुषस्यतथायमः ॥ योनीश्चनरकांश्चैवनिरूपयति कर्मणेति ॥ ४ ॥ ब्रह्मपुराणे कर्मणामनसावाचायेधर्मविमुखानराः यमलोकेतुतेघोरांलभंतेपरियातनाम् ॥ १ ॥ इहाल्पमपिकृत्वातुनरः ॥ कर्माशुभात्मकं प्राप्नोतिनरकेघोरांयमलोकेषुयातनाम् २ विष्णुपुराणे ऽपि ॥ पापकृत्यातिनरकान् प्रायश्चित्तपराङ्मुखः पापानामनुरूपाणि प्रायश्चित्तानियद्यथा १ तथातथैवसंस्मृत्यप्रोक्तानिपरमर्षिभिरितितथा भविष्योत्तरे ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याणामधर्मनिरतात्मनाम् ॥ धर्मराजः स्मृतःशास्तासुघोरैर्विविधैर्वधैः १ नियमाचारसक्तानांप्रमादात्स्खलि तात्मनाम् प्रायश्चित्तैर्गुरुःशास्तानतुतैरिष्यतेयमः २ पारदारिकचोराणा मन्यायव्यवहारिणाम् नृपतिःशासकःप्रोक्तःप्रच्छन्नानांचधर्मराट् । ३ तस्मात्कृतस्यपापस्यप्रायश्चित्तंसमाचरेदिति ब्रह्मपुराणे ततश्चयातनादे हंक्लेशेनप्रतिपद्यते तत्कर्मजयातनार्थममातापितृसंभवम् १

विविधवधांके धर्मराजहि शिक्षादेणेवालाकिहाहै १ नियमेति जो नियम और आचरविषे युक्त हैं और प्रमादते नियम और आचारतेरहितहोयेहैं तिनोंकों प्रायश्चित्तोंकर्के शिक्षादेणेवाला गुरु किहाहै और यम नहि तिनांकोदंडदेणेवालाकहा २ पारेति जो पुरुष परस्त्रीकों चुरातेहैं और नीतिसे बिना जो व्यवहारकर्तेहैं तिनोंका शास्ता क्या शिक्षादेणेवालागजाकहाहै और गुप्तपाप केकरणेवालेजो पुरुष तिनांकाशास्ता धर्मराज कहाहै ३ तस्मादिति तिसकारणतेकीताजो पाप तिसके प्रायश्चित्तकोंकरे ॥ और ब्रह्मपुराणविषेकहाहै ततश्चेति तिसकारणते यातनादेहकों क्लेशकों प्राप्तहोताहै सो अतिबाहकदेह पीडाके वास्ते माता पितातेबिना कर्माति उत्पन्न होयाहै १

पुरुष पूर्व जो आकृति और आयु और अवस्थासंस्थान क्या वाल्यादिस्थिति इनाकर्के युक्त और सौंदर्याकर्के युक्त बहुत यत्नकर्के रक्षित जो प्राचीन पांच भौतिकदेह तिसकोंत्यागके २ और जो अपणे कर्माते उत्पन्नहोया पीडाकेंवासे तन्मात्रगुणांर्केयुक्त नानास्वरूपकर्माते शरीर तिसकोंग्रहण कर्ताहै ३ पापांके करणेवालासुखदुखांके भोगणेवास्ते दृढशरीरकों प्राप्तहोताहै अतिशयकर्के तिसदेहकर्केस्वकर्मांकेफलकोंभोगताहै और धर्मापुरुषयमलोकसेस्वर्गमें जाकर सुखकोभोगताहै ४ किंचेति इसमै होर विचारहै कि कर्मांका फल कर्म विपाक है इसजगा कर्म केवल देहव्यापारते उत्पन्नहोये विपे नहि जानणे किंतु देह और वाणी और मनके व्यापारसे उत्पन्न होयेहोयेजानणे सो मनुजी कहतेहैं शुभेति शुभ और अशुभहै फल जिसका ऐसाजो कर्म उसकोमन औरवाणी और देहसे उत्पन्नहोयाहोया जानणा और कर्मांकी

तत्प्रमाणवदोऽवस्थासंस्थानैः प्राक्तनं तथा विहाय सुमहद्गुणं शरीरं पांचभौ-
तिकम् २ सुमहद्गुणं सौंदर्यापादनपूर्वकं महता प्रयासे न राक्षितम् ॥
अन्यच्छरीरमादत्ते यातनार्थं स्वकर्मजम् तन्मात्रगुणसंपन्नं नानात्मीयं स्वक-
र्मजम् ३ दृढं शरीरमाप्नोति सुखदुःखोपभुक्तये तेन भुक्त्वा स्वकर्माणि
पापकर्तानि रोभृशम् सुखानि धार्मिको दृष्टस्तदानीं तोयमक्षयादिति ४ किंच
कर्मणां विपाक इत्यत्र कर्माणि न केवलं कायव्यापारमात्रपराणि किंतु का-
यवाङ्मनोव्यापारपराणि तदाह मनुः । शुभाशुभफलं कर्ममनोवाग्देहसंभ-
वम् कर्मजागतयोऽदृष्टा मुत्तमाधममध्यमाः १ उत्तमाधममध्यमागतयो हि
देवमनुष्यतिर्यगादिरूपा जन्मांतरप्राप्तयो मानसवाचिककायिककर्मभिः
प्रत्येकं योज्याः एपां यागादिविषयत्वे उत्तमाः स्तेयादिनिवृत्तिविषयत्वे मध्य-
माः स्तेयादिविषयत्वेऽधमाः ॥ प्रकृतत्वान्निकृष्टकर्मणो दशविधत्वकथन
पूर्वकं मनसस्तन्नियंतृत्वमाह तस्येह त्रिविधस्यापि त्र्यधिष्ठानस्य देहिनः
दशलक्षणयुक्तस्य मनोविद्यात्प्रवर्तकम् १

यांगतियां पुरुषांकों उत्तम मध्यम अधमर्कहोयाहैं १ सो उत्तम मध्यम अधमगातियां देवता और मनुष्य और तिर्यगादि क्या पशुपक्ष्यादिरूप जानणीयां और इसजगा उत्तमाधममध्यमा एहलें दकर्केहै और वास्तवपाठ उत्तममध्यमाधमा एहहै और अन्यजन्मकों प्राप्तकरणे वालियां जानणीयां एक एक क्रमकर्केमानस वाचिक कायिककर्मांके कहीयाहैं और इनाकर्मांकों यागादि विषयमे उत्तम और स्तेयादिकांकी निवृत्तिविषयमे मध्यम स्तेयादिजो चोरीआदिकहै उसके करणे विषे अधमजानणीयां ॥ अब मंदकर्मांकों प्रसंगविषेहोएसे वशप्रकारके कथनपूर्वकमनके नियंतृत्वकों कहतेहैं ॥ तस्येति तीनगुणहैं अधिष्ठानांजिसके ऐसा जो दशलक्षणकर्के युक्त देहिमेंबंधीकमेंहै तिसका प्रवर्तकमनकोंजाने १

६ ॥ श्रीरणवीर कारितप्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

जो दस लक्षण रहे हैं सो तीन श्लोक कर्के दखाते हैं परद्रव्येति पराए धनोविषे चार और सैं खोटा ध्यान करणा अर्थात् किसिके बन स्त्री आदि विषे अभिलाषा करणी और मन कर्के दुष्ट कामोका कयामे इसके घगविषे कुल विघ्न कराऐसा चिंतन करणा और झूठा हठ करणा कया परलोक नहि देह हि आत्मा है ऐसा कहणा यह त्रय प्रकार का मानस कर्म कहा है १ पारुष्यमिति कठोर वाक्य और असत्य वाक्य कहना और सर्वथा चुगली करणी और परोक्ष विषे दूसरे के दोष कहणे एह चार प्रकार का वाङ्मय कर्म है अर्थात् एह कर्म वाणीसे होता है २ और स्वामिकर्के नहि दिते जो द्रव्य तिनो का ग्रहण करणा और अशास्त्र विधिके पशु आदिकां के हिंसा करणी और परस्त्रियों के साथ विषय भोगणा यह त्रय प्रकार का आरौरिक कर्म किहा है ३ अब इसमें कुछ और विशेष है कि जिस मन आदिकर्के पाप डकठा कर्ते हैं

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ठ चिंतनम् ॥ वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म
मानसम् १ पारुष्यमनृतं चैवैषे शुन्यं चापि सर्वशः असंवद्वप्रलापश्च वाङ्मयं
यस्याश्चतुर्विधम् २ अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च
शारीरं त्रिविधं स्मृतम् ३ अभिनिवेशः परलोको नास्ति देह एवात्मा एवमित्या
द्य सदाग्रहः त्रिविधं त्रिप्रकारं मानसमशुभमित्यर्थः एवमग्रेपि असंवद्वप्रलापः
परोक्षे परदूषणकथनम् अदत्तानां स्वामिनाऽदत्तानामपि द्रव्यादीनां ग्रहणम्
अविधानतः अशास्त्रविधिना पश्वादि हिंसनम् येनोपाज्यते तेनैवोपभोग्यं
दर्शयति । मानसं मनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम् वाचावाचाकृतं कर्म कायेनै
वतुकायैकम् १ मनसाऽऽध्याश्रयेण मानसं मनःकृतं पापमुपभुंक्ते एवम
न्यदपि बोध्यम् । इदं च त्रिविधस्यैव समत्वे तत्तद्भागपरम् एकैकस्य प्राधान्येना
ह ॥ शरीरजैः कर्मदोषैर्यातिस्थावरतानरः

तिसी मन आदियों कर्के हि भोग भूँ दिखाते हैं मानसमिति मन कर्के कीते जो पाप उनकों मन कर्के ही पुरुष भोगता है और वाणी कर्के कीते जो पाप तिनानू वाणी कर्के ही भोगता है और देह कर्के कीते जो पाप तिनकों देह कर्के ही भोगता है १ इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं मन सेति आधिका आश्रय जो मन तिस कर्के कीते जो पाप तिनकों मन कर्के ही पुरुष भोगता है आधि; मानसी पीड़ा है परंतु एह जो पाप है तिसको तीनो पापों के बराबर होने से तिन पापों के भोगोंको भोगता है और तीनो पापों के मध्यमे एक पाप कर्म की प्राधान्यता होवे तो तिनो के फल को पृथक् पृथक् कर्के कहते हैं शरीरजैरिति शरीर कर्के कीते जो पाप तिनो कर्के पुरुष वृक्षयोनिकों प्राप्त होता है

श्रीरणवीर कारित प्राक्श्रित भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ७

और वाणीकर्के कीते जो पाप तिनोंकर्के पक्षियोनिकों और मृगयोनिकों प्राप्तहोताहै और मन कर्के कीते जो पाप तिनोंकर्के चांडालजातिकों प्राप्तहोताहै १ इसका अभिप्राय कहतेहैं शरीरकर्के कीते जो पापतिनाके बहुतहोने कर्के वृक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै ऐसे होरभी जाणो इस विषयमे विशेषकर्के अर्थकथनकरणे वास्ते और स्मृति कथन करतेहैं सामान्येति सामान्य और विशेष भेदकर्के कर्मोंकाफल दोप्रकारकाभीहै तथापि शरीरकर्के और वाणीकर्के और मनकर्के तीन प्रकारकाकर्मोंकाफल है अब आत्माको ईश्वररूपप्रतिपादनकर्के याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं यद्येवमिति हेव्रह्मन् यववो ईश्वरऐसाहै तब कैसे पापयोनिओं विषे उत्पन्न होताहै और फेर खोटे जो भाव स्त्रीसंयोगादि उनोके साथकैसेयुक्तहोताहै १ करणैरिति फेर वो ईश्वर इंद्रियोंकर्केयुक्तभीहै परंतु पूर्वज्ञानकों क्योंनहि जानताहै औरवो

वाचिकैःपक्षिमृगतांमानसैरन्त्यजातिताम् १ शारीरिकपापवाहुल्येन स्थावरत्वं प्राप्नोतीति अत्रैवविशेषाभिधानार्थंस्मृत्यन्तरमुपन्यस्यते सामान्यविशेषभेदेनद्विविधोऽपिकायिकवाचिकमानसभेदात्त्रिविधः कर्मविपाकः आत्मनईश्वरस्वरूपत्वंप्रतिपाद्याहयाज्ञवल्क्यः ॥ यद्येवंसकथं ब्रह्मन्पापयोनिपुजायते ईश्वरःसकथंभावैरनिष्टैःसंप्रयुज्यते १ करणैरन्वितस्यापिपूर्वज्ञानंकथंचन वेत्तिसर्वगतांस्मात्सर्वगोपिनवेदनाम् २ अन्त्यपक्षिस्थावरतांमनोवाक्कायकर्मजैः दोषैःप्रयातिजीवोऽयं भवयोनिशतेषुच ३ अनन्ताश्चतथाभावाः शरीरेषुशरीरिणाम् रूपाण्यपितथैवेहसर्वयोनिपुदेहिनाम् ४ विपाकःकर्मणांप्रेत्यकेपांचिदिहजायते इहवामुत्रवैकेपांभवस्तत्रप्रयोजनम् ५

ईश्वर संपूर्ण लोकोंके हृदयविषे स्थितभीहै परंतु संपूर्ण पुरुषोंकीपीडाकों क्योंनहि जानताहै २ अत्येति और मन कर्के कीते जो पापकर्म, उनोंके फलकर्के संसारविषे जतजातियोंके मध्यविषे एह जीव चांडाल जातिकों प्राप्तहोताहै और इसीप्रकार वाणीकर्के कीते जो पापकर्म तिनों कर्के पक्षियोनिकों प्राप्तहोताहै और शरीरकर्के कीते जो पापकर्म तिनों कर्के स्थावर कया वृक्षादियोनिकों प्राप्तहोताहै ३ अनन्ताइति ऐसेहि बहुततरोके जन्मादिकं शरीरोंबिपंगरी रियोंकोंहोते और इसी प्रकार संपूर्ण योनियोंविषे देहियोंके स्वरूपभी बहुतप्रकारके होतेहैं ४ विपाकइति और कैयों कर्मोंकाफल इसलोकमे और कैयोंका मरकर्के परलोकमे प्राप्तहोताहै इसलोक, विषे अथवा परलोकविषे कैयोंजीवोंका उत्पन्नहोना एही केवल प्रयोजनहै ५

८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०च० ॥ टी० भा० ॥

इसीकास्पष्टार्थहै परद्रव्याणीति और जो पुरुष परपुरुषोंके धनको लैणेवार्ते ध्यानकरताहै और दुःखहेतुका चिंतनकरताहै और जो झूठकहकर उसीको सत्यप्रतिपादनकरताहै सो पुरुष चांडालयोनियोंको प्राप्तहोताहै ६ पुरुष इति जोपुरुष झूठबोलताहै और चुगलीकरताहै और अनुचितवार्ताकाकथनकरताहै सो मरकके पक्षियोंकीयोनियोंकोप्राप्तहोताहै ७ अदत्तादानेति आपहि किसीको वस्तुके उठालेणविषे प्रीतिवाला और परस्त्रीयोंमें संगकरणे वाला और विधिकेविना हिंसाकरणे वाला जोपुरुषहै सो मरकके वृक्षयोनियोंको प्राप्तहोताहै ८ और सत्व और रज और तम यह तीनोंगुणजवविशेषहोवेंतो तिनोका जोफल सोपृथक् पृथक्कके याज्ञवल्क्यजी कथन करतेहैं आत्मज्ञइतिआत्माके जानणेवाला और पवित्ररहिणेवाला और मनकेरोकणेवाला और तप क्या चान्द्रायणादि व्रत तिसकेकरणेवाला बाह्येन्द्रियके रोकणे वाला और धर्म करणे वाला और वेदकेजानने वाला ऐसा जो सत्वगुण विशिष्ट पुरुष सो मरककेदेवयोनियोंकोप्राप्तहोताहै ९

परद्रव्याण्यभिध्यायंस्तथानिष्ठानिचिंतयन् वितथाभिनिवेशीचजायतेत्या सुयोन्यिषु ६ पुरुषोऽनृतवादीचपिशुनःपुरुषस्तथा अतिवद्वप्रलापीचमृतः पक्षिपुजायते ७ अदत्तादाननिरतःपरदारोपसेवकःहिंसकश्चाविधानेनस्था वरेष्वभिजायते ८ सत्वादिगुणविशेषेणविपाकविशेषंसएवाह । आत्मज्ञः शौचवान्दान्तस्तपस्वीनिर्जितेन्द्रियः धर्मकृद्वेदविद्यातिसात्विकोदेवयोनि ताम् १ असत्कार्यरतोऽधीरआरम्भीविषयाचयः सराजसोमनुष्येषुमृतोज न्माधिगच्छति २ निद्रालुःक्रूरकृलुब्धो नास्तिकोयाचकस्तथा प्रमादवान् भिन्नवृत्तोभवेत्तियक्षुतामसः ३ रजसातमसाचैवसमाविष्टोभ्रमन्निह भावैर निष्टैःसंयुक्तःसंसारंप्रतिपद्यते ४ मनुरपि सत्त्वरजस्तमश्चेतित्रीन्वि द्यादात्मनोगुणान् योव्याप्येतान्स्थितोभावान्महान्सर्वानशेषतः ९

असत्कार्येति जोअसत्कार्योंकेकरणेवालाहै औरधैर्यतासे रहितहै और कार्योकेआरंभविषे युक्त है और विषयोंकभोगनेवालाहै ऐसा जो रजोगुणकके युक्त पुरुषहै सो मरककेमनुष्योंविषे जन्म को प्राप्तहोताहै २ निद्रालुरिति निद्राहै प्यार्गजिसको और क्रूरकर्मोंके करणेवाला और जी वोंके फगडने वाला और ईश्वरकी निंदाकरणेवाला और याचनाकरणेवाला और प्रमादकके युक्त और दुष्टस्वभाव वाला ऐसा जो तमोगुणकके युक्त पुरुष सो मरकके तिर्यग्योनियोंविषे उत्पन्न होताहै ३ रजसेति रजोगुणकके और तमोगुणकके वद्धाहुया जो पुरुष सो इस संसार विषे भ्रमताहुया और खांटेभावोंकके युक्त हुया हुया अर्थात् रोगादि विपत्तिककेयुक्त होया होया फेर संसारकोही प्राप्तहोताहै ४ मनुजीभोकहतेहैं सत्वमिति सत्व और रज और तम यह तीनगुण आत्माकेहैं जो महान् आत्मा इनाभावां विषे संपूर्णता कके स्थितहै ९

॥ श्रीरणवीर कारितप्रायाश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ९

यदिति तिसके देहाविषे जो गुण सत्व अथवा रज अथवा तम अधिकहोजावे तद तिस देहीकों पूर्वोक्तव्यवस्थाकर्के तिसीसात्त्विकादि नामवालेकोंकताहे २ इसीको कहतेहैं सत्वमिति सत्वगुण ज्ञानकोंकहतेहे और तमोगुणअज्ञानकोकहतेहैं राग और द्वेष रजोगुणकोंकहतेहैं और इनातीनां गुणोंका जो वपु सो संपूर्ण भूतोंका अर्थात् पृथिव्यादियांकाआश्रयहै ३ तत्रेति जो चित्तवृत्त प्रीति कर्के युक्तहै और आत्माके कुछक शांतिवालाहै और शुद्ध शोभा वल्लाहै उसकों सत्वगुण जान ४ यत्त्विति जो दुःखकर्के युक्त और आत्माको अप्रसन्न करनेवालाहै उसकों रजो गुण जान जो रजोगुण निरंतर क्रियाकों करवाताहै और देहि योंकों उद्यमदेताहै ५ यत्त्विति जो मोहकर्के संयुक्त और अव्यक्त विषयों कर्के युक्तहै और

योयदेपांगुणोदेहेसाकलेयनातिरिच्यते सतदातद्रुणप्रायंतं करोति शरीरि
णम् २ सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजः स्मृतम् एतद्व्यापितदेतेपांसर्व
भूताश्रितं वपुः ३ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनिलक्षयेत् प्रशांतमिव शुद्धा
भंसत्त्वं तदुपधारयेत् ४ यत्तु दुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः तद्रजोऽप्रति
घं विद्यात्सततो द्वातिदेहिनाम् ५ यत्तु स्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तविषयात्मकम्
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत् ६ त्रयाणामपि चैतेपांगुणान्नायः फलो
दयः अग्नौ यजन् यजघ्न्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः ७ वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं
शौचमिन्द्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्त्विकं गुणलक्षणम् ८ आरम्भ
रुचिताऽधैर्यमसत्कार्यपरिग्रहः विषयोपसेवाचाजस्रं राजसंगुणलक्षणम् ९

तर्कसे रहितहै और पदार्थोंके जाननेमें असमर्थहै तिसकों तमोगुण जान ६ त्रयाणामिति सत्व और रज और तम यह जो तीन गुणहैं इनोंका जो फल उत्तम और मध्यम और अधम है उसकों विशेषकर्के कहतेहैं ७ वेदाभ्यामिति वेदका अभ्यास करणा और पूर्वोक्तपकरण और ज्ञान और पवित्रता और इंद्रियोंका रोकना और धर्मोंका करणा और आत्मविचार करणी ८ यह सत्वगुणका फलहै ९ आरम्भेति कार्योंके आरम्भविधे रुचिकरणी और धैर्यता नहोणी और चोरीआदि खोटकार्योंका करणा और निरंतर विषयोंकीसेवाकरणी यह रजो गुणकेफलहै ९

१० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

लोभइति बहुतलोभकरणा और सौणा और धैर्यतासे रहित होणा और क्रूताकरणी और ईश्वरकी निंदाकरणी और अपनी जीवका लोड कर दूसरे की जीवका कर्के जीविका करणी और बहुत याचना करणी और प्रमाद करणा एह पुरुषाकों तमोगुणके लक्षण हैं १० अवइनकी स्थितिमें व्यवस्था कहते हैं येति यह जो पीछे तीन गुण कहें हैं सो तीनोमें हि-स्थित हैं अर्थात् जिस जगा एक है उस जगा दो भी हैं और यह जो तीनोके लक्षण कहें हैं सो भी क्रम कर्के एकमें हि होणवालि हैं कभी सात्विक कभी राजसादि ११ अब जिस जगा दोनो गुणोंको दवाकर एक बढ गया है उसका लक्षण कहते हैं यत्कर्मति जिस कर्मको कर्के अथवा कर्ता हुआ और करणे की इच्छावाला हुआ हुआ लज्जाको नहि प्राप्त होता है सो विद्वानने संपूर्ण तमोगुणके लक्षण जानने १२ येनेति जिस कर्म कर्के पुरुष इसलोक विषे दृढतर प्रतिबद्धी की इच्छा करता है और असंपत्तिके विषे शोक कर्ता है सो रजोगुणका लक्षण जान

लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्येनास्ति कथं भिन्नवृत्तिता । याचिष्णुता प्रमादश्च तामसंगुणलक्षणम् १० त्रयाणामपि चैते पांगुणानां त्रिपुतिष्ठताम् इदं सामासिकं ज्ञेयं क्रमशोगुणलक्षणम् ११ यत्कर्म कृत्वा कुर्वन्श्च करिष्यंश्च न लज्जते तदज्ञेयं विदुषां सर्वतामसंगुणलक्षणम् १२ येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्यातिमिच्छति पुष्कलाम् यस्तु शोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयं तुराजसम् १३ यत्सर्वेण च्छति ज्ञातुं यत्र लज्जति वाचरन् येन तुष्यति चास्यात्मा तत्सत्त्वगुणलक्षणम् १४ तमसो लक्षणं कानोरजसस्त्वर्थ उच्यते सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः श्रेष्ठमेपां यथाक्रमम् १५ येन यांस्तु गुणे नैपां संसारान् प्रतिपद्यते तत्समासेन वक्ष्यामि सर्वस्यास्य यथाक्रमम् १६ देवत्वं सात्विकायान्ति मनुष्यत्वं च राजसाः निर्यत्कं तामसानित्यामित्येपां त्रिविधा गतिः १७

११ यत्सोते जो पुरुष संपूर्ण पदार्थोंके जानने की इच्छा कर्ता है और आचरण करता हुआ लज्जाको प्राप्त होता है और जिस कर्के इसका आत्मा प्रसन्न होता है सो सत्त्वगुणका लक्षण है १४ तमोगुणका लक्षण एह है क्या काम बहुत होणा और रजोगुणका एह लक्षण है क्या अर्थमें इच्छा होणी और सत्त्वगुणका एह लक्षण है क्या धर्म होणा और इनो गुणोंका एह यथाक्रम श्रेष्ठ कथन कि आ है अर्थात् तमोगुणसे रजोगुण और रजोगुणसे सत्त्वगुण आ है १५ येनेति इनो गुणा विषे जिस गुण कर्के जो २ जन्म प्राप्त होता है सो संक्षेप कर्के संपूर्ण को यथाक्रम कर्के कहता हूं १६ देवत्वमिति सत्त्वगुणवाले पुरुष देव योनिको प्राप्त होते हैं और रजोगुणवाले पुरुष मनुष्य योनिको प्राप्त होते हैं और तमोगुणवाले पुरुष तिर्यङ् योनिको प्राप्त होते हैं इह तीन प्रकारकी तिनोकी गति है १७

त्रिविधेति इनोतेनोगुणोकी तीन तीनप्रकारकी कर्मविद्याविशेष कर्के गौणगतिहै एक अधम और दूसरीमध्यम और तीनरीउत्तम १८ स्थावराइति वृक्ष और क्रिमि और कीट और मत्स्य और सर्प और कच्छप और पशु और गिद्ध इह तमोगुणकी अधमगतिहै अर्थात् तमोगुणवाले इनजन्मों को प्राप्त होतेहैं १९ हास्तिनइति हस्ती और तुरंग कवा घोडेऔरशूद्र और म्लेच्छ जो निदित और सिंह व्याघ्र और शूकर इह तमोगुणकीमध्यमगतिहै २० चारणाइति चारण और पक्षि और दंभकेरुणेवा ले पुरुष और राक्षस और पिशाच इह तमोगुणकीउत्तमगतिहै २१ झळाइति झलजाति और पहल वान और नट और शस्त्रकर्के जीविकाकरणे वालेपुरुष और जूआखेलनेवाले और मदिगपानकर णेवाले इह अधम रजोगुणकीगतिहै इस जगा प्रथम शब्द श्लोकके क्रमकर्के अधम अर्थका

त्रिविधात्रिविधेषांतुविज्ञेयागौणिकीगतिः अधमामध्यमाग्याचकर्मविद्यावि
शेषतः १८ स्थावराः क्रिमिकीटाश्चमत्स्याःसर्पाःसकच्छपाः पशवश्च
सृगालाश्चजघन्यातामसीगतिः १९ हास्तिनश्चतुरङ्गाश्चशूद्राम्लेच्छाश्चग
हिताः सिंहव्याघ्रवराहाश्चमध्यमातामसीगतिः २० चारणाश्चसुपर्णाश्च
पुरुपाश्चैवदाम्भिकाःरक्षांसिचपिशाचाश्चतामसीपूतमागतिः २१ झळा
मल्लानटाश्चैवपुरुपाःशस्त्रवृत्तयःद्यूतपानप्रसक्ताश्चप्रथमाराजसीगतिः २२
राजानः क्षत्रियाश्चैवराजाश्चैवपुरोहिताः वादयुद्धप्रसक्ताश्चमध्यमाराजसी
गतिः २३ गंधर्वागुह्यकायक्षाविदुधानुचराश्चये तथैवाप्सरसःसर्वाराजसी
पूतमागतिः २४ तापसायतयोविप्रायेचवैमानिकागणाः नक्षत्राणिचदेवा
श्चप्रथमासात्विकीगतिः २५ यज्वानऋषयोदेवावेदाज्योतीपिवत्सराः
पितरश्चैवसाध्याश्चमध्यमासात्विकीगतिः २६ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मोमहा
नव्यक्तमेवच उत्तमांसात्विकीमेतांगतिमाहुर्भनीपिणः २७ ॥

वाचीहै ऐसे अगेभी जाणा २२ राजानइति राजा और क्षत्री और राजोंकेपुरोहित और वाद
कर्केयुद्धकरनेवाले इहमध्यमरजो गुणकीगतिहै २३ गंधर्वाइति गंधर्वऔरगुह्यक और यक्ष और
देवताकेअनुचर और संपूर्णअप्सरोंइतरजोगुणकीउत्तमगतिहै २४ तापसाइति तपको करनेवाले
और यतिकया जितेंद्रियो और ब्राह्मण और विमानके उपगमिनहोकरविचरणेवाले जो देवतयों
केगण और नक्षत्र एह अधम सत्वगुणकी गति है २५ यज्वानइति यज्ञक करनेवाले
और ऋषि और देवता और वेद और ब्रह्मण और वरसोंके देवता और पितर औरसाध्य एह
मध्यम सत्वगुणकीगतिहै २६ ब्रह्मेति ब्रह्माऔर जो दक्षसे आद लेकर विश्वकेगचने वाले
प्रजापति और धर्म और महत्त्व और माया इह उत्तम सत्वगुणकीगतिकोंमनीपीकहतेहैं २७

१२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

एष इति तीनहैं प्रकार जिसके ऐसा जो कर्म उसका संपूर्णता कर्के तीन प्रकारका सार्वभौतिक संसार कथन कियोहै २८ तैसैं हारीतजी कहतेहैं सर्वेति संपूर्ण जो लशुनादि अभक्ष्यचीजांउनी कामक्षणकरणा और जो नहिभाजनके योग्य चांडालस्पृष्टलोलआदि उनकाभोजनकरणा और जोगमनकेयोग्य नहिहैं गुरुपत्नीआदिक उनोकेसाथ गमन करणा और जो नहि यज्ञ करणके योग्य शूद्रादि उनकायज्ञकरवाणा और अतत्पुरुषोंसैं दानलेणा और परस्त्रीकेसाथगमन करणा और अप्रण संवधियोंके और परपुरुषोंके धनका हरणा और प्राणियोंकी हिंसाकरणी इह शरीरकृत कर्महैं और कठोरहोणा और झूठकहिना और विवाद करणा और वेदनिंदा करणी इह बाणीकृतकर्महैं और दूसरेको दुःखदेणा और दूसरेके साथ द्रोहकरणा और क्रोधकरणा और लोभकरणा और मोहकरणा और अहंकारकरणा इहमानसकर्महैं इहअठारां कर्म

एष सर्वः समुद्दिष्टस्त्रिप्रकारस्य कर्मणः त्रिविधस्त्रिविधः कृत्स्नः संसारः सार्वभौतिकः २८ तथाच हारीतः । सर्वाभक्ष्यभक्षणमभोज्यभोजनमगम्यागमनमयज्ययाजनमसत्प्रतिग्रहणम् परदाराभिगमनम् स्वपरद्रव्यापहरणम् प्राणिहिंसाचेति शरीराणि । पारुष्यमनृतं विवादः श्रुतिनिंदाचेति वाचिकानि । परोपतापनम् पराभिद्रोहः क्रौधोलोभोमोहोऽहंकारश्चेति मानसानि । तदेतान्यष्टादश नैरयाणिकर्माणि यस्मिन्यस्मिन्करोति यः स तस्मिन्स्तस्मिन्वयसि शरीरवाचिकमानसंप्राप्नोति तथाच स एव यस्यां यस्यामवस्थायां यत्करोति शुभाशुभम् तस्यांतस्यामवस्थायांतत्फलमवाप्नुयात् १ शरीरेणैव शरीरवाङ्मयेन तु वाचिकम् मानसे मनसैवायमुपभुंक्तेशुभाशुभम् २ अथविशेषतः कर्मविपाकस्तत्र प्रेतत्वहेतुकोविष्णुधर्मोत्तरे ॥ असहिष्णुतयाऽन्यस्य भुण्णानां कारणे विना महत्पापं स पुत्रं तदस्य प्रेतकारणम् १ प्रेतकारणभावात् प्रधानत्वात् प्रेतत्वकारणमित्यर्थः ॥

पुरुषोंमें नरककेदेषेवालेहैं । यस्मिन्निति । जिस जिस अवस्था विषे पुरुष शरीरकके और बाणीकके और मन कके कर्माओं कर्ताहै उसीउसी अवस्थाविषे शरीर और वाचिक और मानसकर्मके फलकों प्राप्तहोताहै ॥ तैसेहि हारीतजी कहतेहैं यस्यामिति इस श्लोककी टीका पूर्वकहीहै १ शरीरेति शरीरकके कीते जो शुभ और अशुभ कर्म उनाकों शरीर कके भोगताहै और बाणी कके कीते जो शुभ और अशुभ कर्म उनाकों बाणी कके भोगताहै और मन कके कीते जो शुभ और अशुभकर्म उनाकों मनकके भोगताहै २ ॥ अवपुरुषोंको प्रेतयोनियोंविषे प्राप्तकरोवाला जो कर्मफल सोभीकयनकियाहै विष्णुधर्मोत्तरपुण्यविषे अमेति कारणकेविना जो दूसरेके गुणोंको न नहारणा क्या निंदाकरणा उसकके उत्पन्नहोया जो महापाप सो पुरुषोंको प्रेतयोनिमें प्राप्तकरोहै १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ १३

ब्रह्मस्वेति जो पापी पुरुष ब्राह्मणके धनकों हड़लेतेहैं सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्त होतेहैं तैसेहि पर स्त्रियोंवेरे रत और अपनेस्वामीके साथ द्रोहकरणेवाले २ और मित्रोंके साथ द्रोहकरणेवाले और अपने कर्मसें पतित अर्थात् विमुख जो पुरुषहैं सो निर्जलदेशविषे प्रेतयोनिकों प्राप्त होतेहैं ३ सो कहाहै अभिपुत्राणविषे मातरमिति ॥ माता और पिता और वृद्ध और अपनेकुटुंबी और साधु इनां कों लोभकरके जो पुरुषत्यागसाहै सो प्रेतयोनिकों प्राप्त होताहै १ कुज्योतिरिति कुत्सितज्योतिषी और कुत्सितवैद्य और कुत्सितज्ञानी और कुत्सितदेशमे रहिषे वाला अर्थात् जिसमें वेदाचार नहि उसजगा रहिषे वाला अथवा कुबुद्धिदेणे वाले कानामकुदेशकहै और शूद्रोंके उपररुपाकरणे वाला इसमें एहअभिप्रायहै कि शूद्रपररुपाकरणेका कोई दोष नहि परंतु सज्जनके समीप उसको त्याग कर शूद्रपर अनुग्रह करे तब दोषहै इह संपूर्ण प्रेतयोनिकों प्राप्त होतेहैं २

ब्रह्मस्वहारिणश्चैते पापाः प्रेतत्वमागताः परदाररताः केचित्स्वामिद्रोहरताः परे २ मित्रद्रोहरताः केचिद्देशेऽस्मिन्भृशदारुणे स्वकर्मविच्युताः सर्वे जायंते प्रेतयोनिषु ३ अभिपुत्राणे मातरं पितरं वृद्धं जातिसाधुजनं तथा लोभात्पुत्रं जतियस्त्वतानुसंभ्रतो जायते नरः १ कुज्योतिः कुत्सितवैद्यः कुज्ञानी च कुदेशिकः शूद्रानुग्रहकर्ता च संप्रेतो- २ निंदको द्विजदेवानां गीतवाद्यरतः सदा वृद्धं बालं गुहं विप्रान् यो वमन्यभुनक्ति वै कन्यां ददाति शुल्केन स- ३ न्यासापहर्ता मित्रं धुकपरपाकरतः सदा निर्दोषांसुहृदां भार्यामृतुकालेन यानियः न वहेत यदा ते पांसु संप्रेतो- ४ हस्त्यश्वरथयानानि मृतशय्यासनानि च मृगाजिनं तु गृह्णाति अनापदितु यो द्विजः ५

निंदकइति जो पुरुष ब्राह्मण और देवताकी निंदा कर्ताहै और गीतोंके गानेमें और वाजियोंके वजानेमें सदा युक्तहै और वृद्ध और बालक और गुरु और ब्राह्मण इनका अवमानकरके अर्थात् इनकों न देखकर भोजन कर्ताहै और मोल लेकरके कन्याको देताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्त होताहै ३ न्यासेति जो पुरुष अमानको हर्ताहै और मित्रोंके साथ द्रोह कर्ताहै और जो सर्वदाकाल परपाकविषे युक्तहै अर्थात् दूसरेकी पकीहुई गेटीकों खाताहै और दो पंतरहित जो सुंदर अपनी स्त्रीउमकों जो ऋतुकाल विषे नहि प्राप्त होताहै जो यह पृथीकचारहैं लेकर उनका पालनपोषणादि नकरे तोभी प्रेतयोनिकों प्राप्त होताहै ४ हरतीति हरती और चोडा और रथ और जो वाहनहै और मृतपुरुषकी शय्या और आसन और मृगचर्म इनाकों आप दाके बिना जो ब्राह्मण लेताहै ५

१४ ॥ श्रीरणवीर कारितप्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०च० ॥ टी० भा० ॥

नयेति तैसंहि अद्वावलावाहरनिकसेआहै जिसका ऐसीगौकों और सहितवनपवंतोंके पृथिवीकों लेताहै और कुरुक्षेत्रविषे और चांडालसें और पतितपुरुषसेंदानलेताहै ६ और मासिकश्राद्धविषे और नवश्राद्धविषे भोजनकर्ताहै सो प्रेतहोताहै और भूमि पृथ्वी और कन्या और अन्न इनको जोहरताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ७ अब पिशाच योनिमे प्राप्तकरणेवाला जो कर्म सो पार्वती और शिवजीके संवादकरकेकहतेहैं अपहृत्येति और जो पुरुष किसीकेसंपूर्णधनकों और तैसंहि देवतयोंके धनकों हरलेताहै और तैसंहि दानकों देकर हरलेताहै और फेरदेताहै सोभी पिशाचयोनिकों प्राप्तहोताहै १ योनीति हेदेवि जो पुरुष जिसजगाकन्या नहि देणे योग्य उसजगा कन्या दानकों करवाताहै और अपने स्वामीके साथ द्रोहकर्ताहै सो

तथोभयमुखीदोग्ध्रीसशैलामेदिनीद्विज कुरुक्षेत्रेचयद्दानंचांडालात्पतिता
तथाद् मासिकेपिनवश्राद्धेभुजन्प्रेतोनरोभृशम् भूमिकन्यान्नहर्ताचसप्रेतो
जायतेभृशम् ७ पिशाचयोनिहेतुकमुमामहेश्वरसंवादे * अपहृत्यचसर्वस्वं
देवस्वंचतथापरम् दत्तापहारदानाच्चपेशाच्यंयातिवैनरः १ योनिकार्यचयो
देविअहितेनतृकारयेत् सोऽपियातिपिशाचत्वंस्वामिद्रोहेणमानवः २ यो
निकार्यं कन्यादानादि योऽवृत्तीश्वरःअहितेन स्वाम्यनिष्ठनकारयेदित्यर्थः ॥
स्वामिद्रव्यंगृहीत्वातुनचयोऽन्नं ददातिच आत्मनःपोषकोमृदःपिशाचत्वंस
गच्छति ३ ब्रह्मराक्षसत्वहेतुर्कंगारुडादौ * माठाधिपत्यंयोदेविकुरुतेमदमो
हितः विनाशयेन्मठद्रव्यंनिर्मालयंयश्चभक्षति १ परस्ययोपितंहत्वाब्रह्म
स्वमपहृत्यच अरण्यनिर्जलेदेशेभवतिब्रह्मराक्षसः २ ॥

भी पिशाचयोनिकों प्राप्तहोताहै २ स्वामीति जो पुरुष अपने स्वामीसें धर्मार्थके वास्ते धनलेकर अभ्यागतोंको अन्न नहिदेताहै और अपने आपकोहिपालताहै सोभी पिशाच योनिकों प्राप्तहोताहै ३ अब ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तकरणेवाला जो कर्म गरुडपुराण आदिविषे कहाहै सोकहतेहैं भाटेति * जोपुरुष मदकरे मोहकोंप्राप्तहुआहुआ देवताके मंदिरकी महंती शोकार कर्ताहै और तिस देवताके धनका नाशकर्ताहै और तिसीका नैवेद्य आपहि भक्षण कर्ताहै १ परस्येति और परस्त्री और ब्राह्मणके धनकों चुरालेताहै सो वनविषे जलसेरहित जो देशउस विषे ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें यहव्यवस्थाहै कि इनपाँचोंदापोंसें एक दोपवाला अथवा दो अथवा तीनवालाहै तोभी ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तहोताहै २

अधर्ममिति जो पुरुष मोहकर्के युक्त हुएहुए अधर्मकों धर्म कहते हैं और परस्त्रियोंकों चौरिकर्के अथवा बलकर्के हरलेते हैं सो भी वनविषे जलसे रहित जो देश उसविषे ब्रह्मराक्षस योनिकों प्राप्त होते हैं ३ और कहते हैं मनुजी संयोगमिति और जो पुरुष पतिन पुरुषोंके साथ संयोग कर्ते हैं और परस्त्री कों हरलेते हैं और ब्राह्मणके धनको हरलेते हैं सो भी ब्रह्मराक्षस योनिकों प्राप्त होते हैं १ गुरुमिति जो पुरुष गुरुओंकों तुंरुर्के और हुंकरके बोलते हैं और विवादकर्के ब्राह्मणकों जीतते हैं सो भी वनविषे जल से रहित जो देश उसविषे ब्रह्मराक्षस होते हैं २ आचार्यमिति आचार्य और ऋत्विक् और तपस्वी और मुनि इनोका जो पुरुष अवमान कर्ते हैं सो भी राक्षस योनिकों प्राप्त होते हैं जो संस्कार कावे सो आचार्य और जो यजमानके अर्थ हवन करे सो ऋत्विक् है ३ अवनरकविषे होनेवाला जो देह

अधर्मधर्ममित्याहुर्येतु मोहवशंगताः हर्तारः परदाराणां चौर्येण बलतोपि वा ३
अरण्ये निर्जले देशे भवन्ति ब्रह्मराक्षसा इति मनुः संयोगपतितैः कृत्वा परस्यैव
च योपितम् अपहत्य च विप्रस्वभवंति ब्रह्मराक्षसाः १ गुरुं तु कृत्य हुं कृत्य वि
प्रनिर्जित्य वा दत्तः अरण्ये निर्जले देशे भवन्ति- २ आचार्यमृत्विजश्चैव गुरुं चै
व तपस्विनम् मुनीनप्यवमन्यंते तैर्भवन्तीहराक्षसाः ३ तारकीयदेहहेतुकं
ब्रह्मपुराणे । कृतघ्नस्तु मृतो विप्रो यमस्य विषयंगतः यमस्य विनयैः क्रूरेर्वधं प्रा
प्नोति दारुणम् १ यातनाः प्राप्य तत्र स्थास्ततो बह्वीशसद्विजः ततो गतः कृत
घ्नश्च संसारं प्रतिपद्यते २ अथाधमयोनित्वहेतुकं वामनपुराणे । बुभुक्षितेषु देवै
षु य एकोऽश्नाति मानवः श्वयोनिससमासाद्य चंडालो जायते नरः १ वेदोक्तं यः
परित्यज्य धर्ममन्यं समाचरेत् दशवर्षसहस्राणि श्वयोनौ जायते ध्रुवम् २

उसको प्राप्त करनेवाला जो कर्म है सो ब्रह्मपुराणविषे कहा है कृतघ्न इति जो ब्राह्मण कृतघ्न है सो म कर्के यमके मंदिरकों प्राप्त होता है फेर सो यमके जो दूत बड़े भयके दण्डवाले उनो कर्के दारुण जो वध उनको प्राप्त होता है विनयनाम् सेवक का भी है १ येति फेर उस जगविषे बहुत जो यातना उनको भोगता है फेर उस जगसि गिडक के इस संसारविषे उत्पन्न होता है २ अब अधम योनियोंकों प्राप्त करनेवाला जो कर्म वामनपुराणविषे है सो कहते हैं ॥ बुभुक्षित जो पुरुष देवताको अन्न अर्पणना कर्के आपणव लाहि भक्षण कर्ता है सो प्रथम श्वान योनिकों भोग करे फेर चंडाल योनिकों प्राप्त होता है १ वेदोक्तमिति जो पुरुष वेदोक्त धर्मकों त्याग कर विरुद्ध धर्मकों कर्ता है सो दश हजार वर्ष कुतेकी योनिकों प्राप्त होता है २

१६ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

वेदेति जो पुरुष वेदोंको और ब्राह्मणोंकी निंदाकर्तहैं सो इसजन्ममें शूद्रहोतेहैं और मरकरके श्वानयोनिहोप्राप्तहोतेहैं ३ पद्मपुराणविषे कहाहै लभेद्विगे हेराजर जो ब्राह्मण द्रव्यलेकर मंदिरको पूजाकर्ताहै सोचांडाल संज्ञकयोनिको प्राप्तहोताहै और जो मुण्डोप पुरुषोंके एकादश दिनविषे भोजनकर्ताहै सोभी श्वानयोनिको प्राप्तहोताहै १ यदीति जो गुरु पुत्रके तुल्य जो शिष्य उसको कारणके बिना अपनी इच्छाकरके त्यागताहै सोभी हिंस्रअर्थात् व्याघ्रादियोनिको प्राप्तहोताहै २ पितरमिति जो पुत्र पिता और माताका अपमानकर्ताहै सो मरकरके पहिले गर्दभयोनिको प्राप्तहोताहै उसको भोगकर फेर मनुष्ययोनिको प्राप्त होताहै इत्ये मनुष्ययोनिभो नीचादिजानणी ३ ज्येष्ठमिति जो पुरुष ज्येष्ठभ्राताको पिताके समाननहि मानताहै भेदमे लिखाहै (ज्येष्ठभ्रातापितृसमइति) सो मरकरके कौचयोनिको

वेदार्थनिंदकायेचयेचब्राह्मणनिंदकाः इहजन्मनिशूद्रास्तेमृताःश्वानोभवं तिहीति ३ ब्रह्मपुराणे लभेदेवलकोराजनूयोनिचांडालसंज्ञिताम् मृत स्यैकादशहितुभुंजनश्वानोभिजायते १ यदिपुत्रसमंशिष्यंगुरुर्जह्यादकारणम् आत्मनःकामचारेणसोऽपिहिंस्रःप्रजायते हिंस्रोत्तकादिः २ पितरं मातरंचैवयस्तुपुत्रोऽवमन्यते ॥ सोऽपिविप्रोमृतोजंतुःपूर्वजायेतगर्दभः गर्दभत्वंतुसंप्राप्यततांजायेतमानवः ३ ज्येष्ठपितृसमंवापभ्रातरंयोऽवमन्यते सोऽपिमृत्युवशंप्राप्यकौचयोनांप्रजायते ४ पद्मपुराणे ॥ अथाज्ययाजकश्चैवयाज्यानांचविवर्जकः विरक्तोविष्णुविद्यासुसंप्रेतोजायतेनरः १ ॥ विष्णुविद्या भगवद्गीताभागवताद्याः ॥ सामान्यदक्षिणांलब्ध्वा गृह्णत्यायेकोविमोहितः नास्तिक्यभावनिरतःसंप्रेतोजायतेनरः ॥ २ ॥ स्कान्दीयचमत्कारखण्डे योभवेन्मानवःक्षुद्रस्तथापैशुन्यकारकः ब्राह्मणान्वयसंभूतोऽप्यप्राणिनांहिंसकोनित्यं संप्रेतोजायतेनरः १

प्राप्तहोताहै ४ और पद्मपुराणविषे कहाहै अथान्येति जो नहि यज्ञकराणेकेलायक उनको यज्ञ करनेवाले वाला और जो यज्ञके अधिकारीहैं उनकोत्यागकरणेवाला और जो विष्णुविद्या विषे अथवा भगवद्गीतादम विरक्तहैं सो पुरुषप्रेतयोनिको प्राप्तहोताहै १ सामान्येति जो ब्राह्मण मोहकाग्र रह्या २ संभूको साक्षी दक्षिणाकोएकल्याहि गृहण करताहै अर्थात् ओंको नहिदेता और जो नास्तिकहै अर्थात् ईश्वरकी निंदाकर्ताहै सोभी प्रेतयोनिको प्राप्तहोताहै २ और कहाहै स्कंदपुराणचमत्कार खण्डविषे यदीति जो पुरुष खोटे काम क्याचोरीआदिकर्ताहै और सुगलो कर्ताहै और ब्राह्मणोंकेदशविषे उत्पन्नहोकरकेव्याहिकया देवताकेनिमित्तनहि अपने स्वादवास्ते भोगकरेभक्षणकर्ताहै और गिर्याहि प्राणियोंकी हिंसाकर्ताहै सोभी प्रेतयोनिको प्राप्तहोताहै १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ १७

अनुत्वेति और देवकार्य जो बलिवैश्वविधि उसकों और तैसैंहि पितरोंका जो तर्पण उसकों गति करके और अरण्य संबंधि और नौकरोंको नहि देकर जो पुरुष भोजनकर्ता है सोभी प्रेतयोनिहों प्राप्त होता है २ पसेति जो पुरुष पगखियोंविधि प्रीतिकर्ता है और दूसरेके धनको हार लेता है और दूसरे की निंदा करके प्रसन्न होता है सोभी प्रेतयोनिहों प्राप्त होता है ३ कन्यापति जो पुरुष धनके लोभ करके बृद्धकों और नीचकों और खोटा है रूप वित्तका और खोटा है स्वभाव जिसका उसकों कन्या देता है सोभी प्रेतयोनिहों प्राप्त होता है ४ देवेति जो पुरुष देवता और स्त्री और गुरु उजोके धनकों और ग्राहणों विषे जो श्रेष्ठ उनके धनको लेकर नहि देता है सोभी प्रेतयोनिहों प्राप्त होता है

लुप्यति वृत्तनामभ्यर्चनं प्रितानागतं मांसाशी) अक्रियते सत्प्रायश्चित्तथाचपितृ तर्पणम् योऽक्षतिभृत्यवर्गस्योऽदत्त्वाप्रितः सजायते २ परदाररतश्चैव पर वित्तापहारकः पशुपवादसंतुष्टसंप्रतो- ३ कन्यायच्छतिवृद्धायनीचायधन लिप्सया कुरुपायकुशीलाय संप्रतो- ४ देवस्त्रीगुरुवित्तानि गृहीत्वा यानय च्छति विशेषाद्वाह्येन्द्राणां संप्रतो- ५ शास्त्रकृत्यग्रन्थकर्ता वयं पितृव्यत्वं गवित् कुलदेशोचितं कर्म यस्त्यक्त्वान्यत्समाचरेत् कामाद्वयदिवा मोहात् संप्रतो- ६ उच्छिष्टस्य विशेषणभोजनं च करोति यः अंतरिक्षे मृतो यस्तु संप्रतो- ७ विनाग्निजलमृन्मूत्रां तथा चैवान्मयातिनाम् प्रेतत्वं जायते तेन स त्वमेव न संशय इति ८

ता है ५ शास्त्रवि जो पुराण पात्रोंके कारण वाचा है और ग्रंथोंके कारण वाचा है और पदंगवेदके जानणे वाचा भी है परंतु कामकर्ते अथवा मोहकर्ते कुल और देवके उचित कर्मकों त्यागकर्ते औरों कार्योंको कर्ता है सोभी प्रेतयोनिहों प्राप्त होता है ६ उच्छिष्टेति उच्छिष्ट पदार्थकों जो पुरुष विनापकरके भक्षण कर्ता है और जो लुप्तके ऊपर मृत्पुष्टों प्राप्त होता है सोभी प्रेतयोनिहों प्राप्त होता है ७ विषेति और जो पुरुष विषकर्ते मरता है और जो आग्निविष मरता है और जो जलविषे डूबकर मरता है और जो अपने आपका हि घात कर्ता है सोभी प्रेतयोनिहों प्राप्त होता है इसमें संशय नहि है ८

१८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

और कहा है गरुडपुराणविषे चंद्रार्कति चंद्र और सूर्यके ग्रहणविषे जो पुरुष भोजन करता है सो हाथीकी योनिकों प्राप्त होता है इसमें एहप्रामेय है कि ग्रहण विषे गजच्छायाका योग है इ. सने तैसाहि फलहोआ १ और जो ब्राह्मण नित्य पंचमहायज्ञोंको नाकरके अन्नकों भक्षणकरता है सो ग्राम शूकरकी योनिकों प्राप्त होता है और कश्चेमांसके भक्षणकरणेवाले व्याघ्रयोनिकों प्राप्त होता है २ और किहा है वायु संहिताविषे खरइति और बहुत यज्ञकराणेंसे अर्थात् विचारके बिना यज्ञकराणेंसे खरयोनिकों प्राप्त होता है और बिना निमंत्रणके भोजनकरनेवाला ब्राह्मण काक योनिकों प्राप्त होता है और जो पुरुष बिनापरीक्षाकी भोजनकरता है सो निर्जन वनविषे वानरयो निकों प्राप्त होता है १ अविद्यामिति और जो अविद्यापढाता है अर्थात् जिसके पड़ेसे पुरुष विष

गरुडपुराणे चंद्रार्कग्रहणेभोक्ताजायतेकुंजरोनरः विप्रः पंचमहायज्ञानकृत्वा योऽन्नमश्नुते विड्वराहोभवेन्नित्यं क्रव्याशीव्याघ्रएव च २ वायुसंहितायाम् खरोवैवहुयाजित्वात्काकोनिर्मत्रभोजनात् अपरीक्षितभोजी स्यात् वानरो विजनेवने १ अविद्यायः प्रयच्छेत् वलीवर्दी भवेत्तु सः २ उमामहेश्वरसंवादे । अग्निहोत्रं भवेद्यस्य न कुर्यात्तस्य रक्षणम् पठ्वातिक्रमकारी तु मृगत्वं याति ब्राह्मणः १ वेदोपजीविकाः पापाः स्त्रीलोलास्स सततंच ये भवन्ति चेहकाकाः स्युश्चिरं विड्भुजएव च २ पायसंकुसरंचैव हवींषि मधुराणि च अदत्त्वा चाग्निविप्रेभ्यः प्राशनाद्भुजगी भवेत् ३

योंमें सक होवे सो वलीवर्द अर्थात् बैल वनता है १ अब और कर्मविपाक कहते हैं जो किहा है पार्श्वती और शिवजीके संवाद विषे अग्निहोत्रमिति जिस ब्राह्मणके गृहविषे अग्निहोत्र होता है उस अग्निकी रक्षा न करे और पर्वोविषे न हवनकरे सो ब्राह्मण मृगयोनिकों प्राप्त होता है १ वेदोति और जो वेदकर्के जीविका करणे वाले पापी हैं और जो निरंतर स्त्रियोंविषे आसक्त हैं सो इस संसारविषे चिरकाल विष्टा भक्षणकरणे वाली काकयोनिकों प्राप्त होते हैं २ पायसमिति और जो तर्मे और खिचड़ी और हवनवस्तु घृतादि और मिठा इनांका भक्षण ब्राह्मण और अग्निकों को देकर करता है सो सर्प योनिकों प्राप्त होता है ३

नेति श्रीर जो पुरुष स्वामीके कार्यनुं नहि करतेहैं और खोटेहैं चित्तजिनके और जो वेतन अर्थात् तलवलैतेहैं सो पृथिवीके उपरविचरणे वालियां जो लता अर्थात् जो वृक्षोंपर नहि चढसकदीयां उनकीयोनिकों प्राप्तहोतेहैं अथवा भूलता नाम वृक्षविशेषकाहै ४ ॥ अव और कम विपाक कहतेहैं जो किहाहै वृद्धगौतमजीने मौल्यादिति जो पुरुष वेदको मूलकरकेवेचताहै सो व्याघ्रयोनिकों प्राप्तहोताहै और जो पुरुष विनापढे वंद पढाताहै सो गिद्धयोनिकों प्राप्तहोताहै १ और जो पुरुष शूद्रतेंवियापडताहै सो चांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमै असा अभिप्रायहै किजिसस्थानविषे ब्राह्मण वा क्षत्रीपाठकहोवे उसजगाशूद्रसे नहि पडना

नसाधयंतिकार्याणिप्रभूणांयेविचेतसःभृत्यावेतनभोक्तारोजायन्तेभूलताहि तेइति ४ अथवृद्धगौतमः । मौल्याद्वेदोपदेष्टाचव्याघ्रोभवतिमानवः जंबुको जायतेजन्तुरननुज्ञातपाठकः १ शूद्रात्पठतिचांडालोब्रह्मद्रव्योपजीविकः अथकीटादियोनेहेतुकोवामनपुराणे ॥ चांडालादंत्यजाद्वापिप्रतिगृह्णातिदक्षिणाम् याचकोयाजमानस्तुसःस्याद्दुःस्थलकीटकः ॥ १ ॥

चाहिए तिनो विनाशूद्रसेभी पढनेका दोषनाहि और जो ब्राह्मणोंके द्रव्यकरके (अर्थात् तिसके पुछेविना) जीविकाकरताहै सोभीचांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै ॥ अवकोटयोनिमें प्राप्तकरणे बालाजोकर्मविपाकसो कहतेहैं जो कहहै वामनपुराणविषे चांडालादिति जो पुरुष चांडालसे और म्लेच्छसे दक्षिणाको लेताहै और जो तिनसे द्विजहोकर याचनाकरताहै उसजगा याचना नाम दानयाचनाकाहै किमे और निमित्त क्या उपकारार्थ स्थानादिवनानेमें तिनसे भी लेणेका दोष नहि और जो तिनसे यज्ञकरवाताहै सो खोटेस्थलकेविषे अर्थात् मलविषे कीट योनिकों प्राप्तहोताहै १

२० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

और किहा है ब्रह्मपुराणविषे आशेति जो पुरुष किसेकी लगी होई आशा को दूर करता है सो कृमि योनिकों प्राप्त होता है और जो पुरुष विश्वासहता है क्या मै केवल तुम्हागहिहां ऐसा कहकर जो किसीका धन लेलेता है सो दुर्मति मीन क्या मछलयोनिकों प्राप्त होता है इस मै ऐसा अभिप्राय है कि जैसे विश्वासकर्के उसने परधन को ग्रहण कीता है तैसे हितिसकों विश्वास देकर मत्स्यवेधी मारेगा १ उपेति और जो पुरुष विवाहके विषे और यज्ञके विषे और दानके विषे और उत्सवोंके विषे मोह करके विघ्नकों करता है सो मृतहुया २ को ड्योंकी योनिकों प्राप्त होता है २ और किहा है गरुड पुराणविषे कूटति जो पुरुष झूठी उगाही देनेवाले पापे हैं सो और विष्टाके कीड़े होकर फेर संपं होते हैं फेर उसको पिच्छे पिशाच योनिकों प्राप्त होते हैं १ और जो पुरुष गुरुओंके साथ और मित्रोंके साथ

ब्रह्मपुराणे आशापहर्तानुत्तरः कृमियोनी प्रजायते विश्वासहर्तानुत्तरं मीनो जायत दुर्मतिः १ उपस्थिते विवाहे तु यज्ञदाने महोत्सवे मोहात्करोति यो विघ्नं ममृता जायते कृमिः २ गरुडपुराणे । कूटसाक्ष्यप्रदाः पापात्रमेध्यकृमयश्चिरं भूत्वा भवन्ति सर्पास्ते पिशाचास्तदनंतरम् १ गुरुभिर्ब्रुहपापावे च स्वाभिर्ब्रुहजनाः द्विजशिष्यद्रुहश्चैव कृतघ्नानास्तिकास्तथा २ त्यागिनो वा धनतानां च त्यागिनः शरणार्थिनाम् अमेध्यकृमयः सर्वे नृगव्याधा भवन्ति च ३ द्विजस्ते कदाचानां दक्षिणया जायते नृगः मत्सरीपि टूळमिश्चैव अवज्ञाका र्थ्यथ कृमिरिति ४

हकरते हैं और अपने स्वामीके साथ और ब्राह्मणोंके साथ और शिष्योंके साथ द्रोह करते हैं और कतिहोए उपकारकों नहि जानते हैं और ईश्वरकी निंदा करते हैं २ त्यागिन इति और जो बान्धवों का त्याग करते हैं और जो शरण आगन होए दोए पुरुषों का त्यागते हैं सो अमेध्य क्या विष्टाविषे कृमि होते हैं फेर मृगोंके मारनेवाले व्याध होते हैं अथवा जो मृगोंके मारनेवाले हैं सो विष्टाके कीड़े होते हैं १ द्विज इति और जो ब्राह्मण और क्षत्रीयो ड्योंकों बेचता है सो मृगयोनिकों प्राप्त होता है और जो पुरुष किसेके ऐश्वर्यको देखकर मनमें क्रोध करता है सो विष्टाका कीड़ा होता है और जो पुरुष अवज्ञा क्या भले पुरुषका अपराध करता है सो सामान्यकी जा होता है ४

अब जो और कर्मविपाक गौतमजीने किहा है तिसकों कहते हैं अनृतेति और जो पुरुष झूठ कहने वाला है सो उल्वण क्या खोटे रूप वाला होता है फेर संलग्न वाक् होता है अर्थात् थथला होता है ॥ और स्त्रियों का त्यागने वाला जलोदर रोग कर्केयुक्त होता है ॥ इसमें एह अभिप्राय है कि दुष्ट स्त्रियों के त्याग का दोष नहि जेकर निर्दोष को त्यागे उसका एह कर्मविपाक है ॥ और झूठी रोगाही देने वाला पाद रोग कर्केयुक्त होता है इसी का अर्थ कहते हैं उच्छेति शिथिल हैं जंघा और चरण जिसके ऐसा होता है ॥ और जो पुरुष विवाह विषे विघ्न करता है सो कटे गए हैं ओठ जिसके ऐसा होता है इसमें एह अभिप्राय है कि विवाह में उपहास करते हैं और छिन्नोष्ठ को उपहास कीहानि है ॥ और जो पुरुष गुरुआदिकों में मुष्टिकर्के प्रहार की इच्छा करता है अर्थात् मुकामारणों को उद्यत होता है सो कटे गये हैं

कर्मविपाकविशेषो गौतमीये यथा ॥ अनृतवागुल्वणो मुहुर्महुः संलग्नवाक् ॥
दारत्यागी जलोदरी ॥ कूटसाक्षी श्लीपदीः ० उच्छून जंघा चरणः ॥ विवाहवि
घ्नकर्ता छिन्नोष्ठः ० अवगूरणः छिन्नहस्तः ० अनृतवाक् पुरुषः उल्वणो विकृत
रूपः मुहुरितिसर्गलजिह्वश्च भवतीति फलद्वयनिर्देशः ॥ श्लीपदं पाद
शोफस्तद्वान् कूटसाक्षी भवति उच्छूनेति शिथिलजंघादिकश्चेत्यपि फलद्व
यम् अवगूरणः गुर्वादिभ्यो मुष्मादिप्रहाराय समुद्यत इत्यर्थः ॥ मातृघ्नाऽन्धः ०
स्तुपागामी वालवृक्णः ० क्वचित्तु वातवृक्ण इति पाठः तत्र वातेन वृक्णं लिं
गं यस्य स इत्यर्थः अंतपदलोपी समासः यद्वा वलवृक्णः वलं वृक्णं यस्य स इत्यर्थः

हाथ जिसके ऐसा होता है ॥ पूर्वोक्त काहि अर्थ मूलविषे स्पष्ट कीता है अनृतेति उहां पाप निर्देश एक है और फल निर्देश दो हैं और तैसैहि कूटसाक्षी के स्थानविषे जानना अब गूरण का अर्थ कहते हैं गुर्वेति और जो पुरुष माता को हत करता है सो अन्ध होता है उहां माताने पुत्र का प्रकाश कीया सो तिसके मारने वाला प्रकाश हीन हो आ एह अभिप्राय है और पुत्र की स्त्री के साथ भोगकर्ता है सो वालवृक्ण क्या छिन्न लिङ्ग होता है और किसे जगा वातवृक्ण ऐसा पाठ है तिस जगा वात कर्के कट्यागया है लिङ्ग जिसका एह अर्थ है इहां अंतपदलोपी समास है अथवा वलवृक्ण ऐसा पाठ है कट्यागया है वल जिसका ऐसा होता है क्या नपुंसक होता है

२२ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

चेति और जो पुरुष चुरस्तेमें धिष्ट और मूत्रसुटताहै सो मूत्रकृच्छ्रीक्या दखौतरेरोगकर्के युक्तहोताहै ॥ और जो कन्याके साथभोगकर्ताहै सो व्यंङ्क्या छिन्नवृषणहोताहै ॥ और जो दूसरे पुरुष की ईर्ष्या कया देषकर्ताहै सो मल्लहोताहै ॥ और जो मातापिताके साथ विवादकरताहै सो मिरगी रोगकर्के युक्तहोताहै ॥ और जो अमानतको चुगताहै सो संततिसे रहित होताहै ॥ और जो रत्नोंको चुगताहै सो अत्यंत दरिद्रहोताहै ॥ और जो विद्याको विचताहै सो मूर्खहोताहै ॥ और जो वेदको विचताहै सो गैडाक्यामृगविशेषहोताहै इसमें एह अभिप्रायहै कि जैसे बेदोके अंगोको तिसने आपयागियाहै तैसे तिसके अंगोको अवश्यकरके लोक त्यागकरावेंगे और जो बहुत मांगनेवालाहै सो जलपिपेंगणेवाला पक्षीहोताहै ॥ और जो यज्ञकरवाणेके योग्यनहिहै उसको यज्ञकगताहै सो मृकहोताहै ॥ और जो पुरुष बिनाकहनेसे भोजनखानेको चलाजाताहै सो काकहोताहै ॥ एह

चतुष्पथे विष्णुमूत्रविसर्जने मूत्रकृच्छ्री ० कन्यादूषको व्यण्डः ० ईर्ष्यालुर्मेशकः ०
पित्रोर्विवदमानोऽपन्मारी ० न्यासापहार्यनपत्यः ० रत्नापहार्यत्यन्त
दरिद्रः ० विद्याविक्रयी पुरुषमृगः पुरुषाकारो मृगः मूढ इत्यर्थः ॥ वेदाविक्र
यी द्वीपी ० बहुयांचको जललुवः ० अयाज्ययाजको वराहः ० अनिमंत्रित
भोजी वायसः ० मिष्टैकभोजी वानरः ० यतस्ततोऽश्नन् मार्जारः ० कक्षवन
दहनात् खद्योतः ० दारकाचार्यो मुखविगंधिः ० दारकाचार्यः कन्यापाठकः
पर्युपितभोजी क्रिमिः ० अदत्तादायी वलीवर्दः ० मत्सरी भ्रमरः ०

नागदपुगणका वाक्यहै और पीछे जो कहचुकेहैं सो वायु संहिताका वचनथा इसवास्ते पुनरु
क्तिनहि जाननी ॥ और जो पुरुष मिष्टान्न इकलाहि भक्षणकरताहै सो वानर होताहै ॥ और जो
सभजगामें भोजनकरताहै सो रिद्धाहोताहै ॥ और जो पुरुष कक्षवनको जालणेवालाहै सो टिट्टाणा
होताहै ॥ और जो कन्याको अथवा बालकोंको विद्यासखालताहै सो दुर्गाधियुक्तमुखवालाहोताहै ॥
इसमें एह अभिप्रायहै कि परमायुवृद्धिमें बालकोंको न भटवै तददोषहै अन्यथानहि और
जो पुरुष गैडाभोजनकरताहै सो जन्मान्तरविषे कीडाहोताहै ॥ और जो बिनादिते बलादिकरके
वस्त्रको उटालताहै सो जन्मान्तरविषे बैलहोताहै ॥ और जो दूसरेकी उत्कृष्टताको नहि सहारता
सा भ्रमरहोताहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ २३

अप्रोति और हवनकी अग्निकाजो पुरुष नाशकरताहै सो मंडलकुटी क्या सारे शरीरमे कुटवाला होताहै मंडलकुट उसको कहतेहैं कि जिसकरके मंडलकार चिन्ह देहाविषे रक्के होजाए ॥ और जो शूद्र हों संस्कार कराताहै सो नीच होताहै ॥ और गौके चुराणेवाला सर्प होताहै ॥ और घृत और तैलके चुराणेवाला क्षयीगेगकरके युक्त होताहै ॥ और अन्नके चुराणेवाला अजीर्णरोगक के युक्त होताहै और ज्ञानकथा पुस्तकतिसके चुराणेवाला मूर्ख होताहै और चांडालकी और पुष्कसी स्त्रीके साथ गमन करनेवाला अजगर क्या बडा सपे होताहै ॥ और संन्यासीकी स्त्रीके साथ गमन करनेवाला मरु क्या निर्जल देशमे पिशाच होताहै ॥ और शूद्रकी साथ गमन करनेवाला बडालंवाकीडा होताहै ॥ और अपणी जानिकी स्त्रीके साथ गमन करनेवाला दग्ध्री होताहै और राजाकी स्त्रीके साथ गमन करनेवाला नपुंसक होताहै और गौके साथ गमन करनेवाला दुर्ग होताहै और जलके चुराणेवाला मत्स्य होताहै ॥ और दूधके चुराणेवाला वगुला होताहै ॥ और

अग्न्युत्सादी मंडलकुटी० शूद्राचार्यः श्वपाकः० गोहर्ता सर्पः० स्नेहापहा रीक्षयी० अन्नापहार्य जीर्णी० ज्ञानापहारी मूर्खः । ज्ञानपदेन पुस्तकं गृह्यते चांडाली पुष्कसी गमनेऽजगरः० प्रव्रजिता गमने मरु पिशाचः० शूद्रा गमने दीर्घकीटः० सवर्णी भिगामी दरिद्रः० राजमहिषी गामी नपुंसकः० गोगामी मंडूकः० जलहारी मत्स्यः० क्षीरहारी वलाकः० वार्धुपिकोऽगहीनः० अविक्रेय विक्रेया गृध्रः० राजा क्रोशको गर्दभः० अनध्यायाध्येता सृगालः० परद्रव्यापहारी परप्रेष्यः० मत्स्यबंधगर्भवासी० इत्येतेऽनूर्ध्वग मना इति अनूर्ध्वगमना अस्वर्गगामिनः ॥ देवद्रव्योपजीवी हद्रोगी०

प्रतिज्ञाय ब्राह्मणस्या दाना अल्पायुः०

व्याजलेकर जीविका करनेवाला अगहीन होताहै उनमे दोष है नैकडेपर जो क्या कहें नि सते अधिकलेणेमे दोष है ॥ और जो नाहि बेचने योग्य गौमे आदलेकर उनको बेचनेवाला गृध्र क्या इलबोनिको प्राप्त होताहै और राजाकी निंदा करनेवाला गधा होताहै और अनध्यायमे पडनेवाला गिदड होताहै और परधन हरणेवाला जन्मान्तरे नाकर होताहै अथो तू दूसरेकी सेवा करनेवाला होताहै ॥ और मत्स्यके मागनेवाला गर्भमे जनवान कर णेवाला होताहै इसमे एह अभिप्राय है कि जन्मपाकर शीघ्र हिमृगुको प्राप्त होताहै एह समस्वर्ग में नाहि प्राप्त होतेहैं ॥ इसविषे वृद्ध गौत्तमजी कहतेहैं देवद्रव्येति जो देवताके द्रव्यकरके जीविका करताहै सो हृदयविषे रोगवाला होताहै और जो ब्राह्मणके साथ दानको प्रतिज्ञा करके नाहि देताहै सो थोडा आयुवाला होताहै

२२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

पत्नीति और बहुतस्त्रियोंकेहोयाहोया जो एकस्त्रीके साथ प्रतिकरताहै सो नपुंसकहोताहै ॥ और स्वामीकके धर्मविपे जोडयाहोया जोतिसधर्मविपेअसक्तहै अर्थात् तिसको नहिहकतीहै सोजलो दर रोगकके युक्तहोताहै ॥ और दुर्वलदेमारणेमें अर्थात् दूसरे पुरुषदे मारदयाहोया जो पासोव लवालेसहायतानहिकरतेहैं सोजन्मांतरमें अंगहीन होतेहैं ॥ और जोव्यवहारमें पक्षपातकरताहै सो जिह्वामे रोगवाला होताहै अर्थात्जल्लाहोताहै ॥ और जो अपने कके स्थापनकीते धर्मके अनुष्ठानको छेदनकताहै सो जन्मांतरमें प्रात इष्टकावियोगीहोताहै ॥ जो आपहि पहिले भोजन करताहै अर्थात् वालवृद्धादिको ना देकके खाताहै सो शूलरोगवालाहो ताहै ॥ और संपदासे रहित जो मित्र और वंधु और स्वामी और अपणी भार्या इनका

(पत्नीवहुत्वेसत्येकारामःकृतिः ॥ स्वामिनाधर्मनियुक्तःतदननुष्ठानासक्तोज लोदरी ० दुर्वलबाधेवलवतामुपेक्षायामंगहीनता ० व्यवहारपक्षपाती जिह्वारोगी-स्वयंप्रवर्तितधर्मानुष्ठानच्छेदकःप्रतिपन्नेष्टवियोगी-स्वयमग्र भुक् शूलरोगी-परिक्षीणमित्रबंधुस्वामिस्वजायावमंता परवृत्तिः- अतिथिं पश्यन्नश्रुतः कपालपट्टिका ॥ कपालपट्टिकारोगविशेषः ॥ सूर्याप्रकाशेप्रति श्रयादानादिष्टवियोगी- सूर्याप्रकाशोरात्रिः तत्रातिथयेप्रतिश्रयस्याश्रय स्याप्रदानादित्यर्थः ॥ छद्मनागुरुस्वामिमित्रमुपचरतः प्राप्तार्थपरिभ्रंशः विस्रंभापहारीसर्वदुःखाश्रयी- दुःखकारीगोनायकोनिर्दयश्चिपिटनासः चिपिटनासोविकृतनासः ॥

जो अपमानकरताहै सो पगवृत्ति अर्थात् पगधीनहोताहै ॥ और जो अतिथिकों देखकर आपहि भोजनकरताहै अर्थात् तिसकोनहिदेता उसको कपालपट्टिकारोग होताहै और जो रात्रिविपे किसीको रहणेकेवास्ते जगा नहिदेता सो इष्टवियोगीहोताहै ॥ और जोलल करके गुरुअस्वामी अर मित्रको पूजाकरताहै उसका प्रातहोयाहोयाअर्थ नष्ट होताहै ॥ और जो विश्वासदेकर दण्डे वालाहै सो सम्पूर्णदुःखोका आश्रयहोताहै ॥ और दुःखकरणेवाला गोयोकाचग्वाल्होताहै और जो दयासेरहितहै सो क्रमेणनक्वालाहोताहै इसमें एहअभिप्रायहै किनसिकादृष्टकजुहीहोताहै जिसकरके अंतानहिहोया

शिष्टेति जो शिष्टाचरण धर्मक्या महात्माकरके स्थापित होया जो धर्म तिसको निन्दा करके
 बाला है सो कांचरा होता है । और जो साधुपुरुषके साथ और वृषस्वी अरदेवता अरवाह्य अर गुरु अर
 ज्ञान अर योग । इन सबनोंके साथ द्वेषकरणेवाला है सो नक्रा होता है अर्थात् मछाकार मुखवाला
 होता है । और ताल और वगीचेके नाशकरणेवाला नेत्रसे अर आसे हीन होता है अथवा नेत्ररूप
 जो अंग है तिसते हीन क्या एकनेत्र कर्के हीन होता है और जो कर्के हीन सो संपूर्ण आरंभोंमें वि
 फल होता है क्या उसका कीता होया आरंभ कोई नहि सिद्ध होता है ॥ और पर धनकी अभिलाषा
 करने वाला क्षयरोगकरके युक्त होता है ॥ व्यवहारेवि और जो पुरुष व्यवहारके मध्यमें स्थित होया २

श्लो
 शिष्टाचरणधर्मदूषकः केकराक्षः ० साधुजनतपास्वि दैवद्विजगुरुज्ञानयोगी
 द्वेष्टा नक्रास्यः ० तटाकारामभिता नेत्रांगहीनः ० कृतघ्नः सर्वारंभविकलः ०
 परस्वाभिलाषीक्षणीस्यात् ० व्यवहारेषु मध्यस्थश्चौरवृत्तिपरस्तुयः वा
 णिज्यलाभोनोतस्य देशांतरगतस्य च व्याधिः स्यात् प्राणसंदेहो मृतिस्त
 त्रैवपापिन इति १ । अथमाधवीय उमामहेश्वरसंवादादावन्यो विशेषो यथा ।
 श्वपाकपुष्कसादीनां कुत्सितानामचेतसाम् कुलेषु ते हि जायन्ते गुरुवृद्धावमा
 नितः १ गुरुणा ह्यननुज्ञातो मोवेदाभ्यासमाचरेत् स प्रजातिविहीनेषु जायते
 भुवि मानवः २ प्रजातिः प्रकृष्टजातिर्ब्राह्मणत्वादिका तद्दीनेषु नीचेष्वित्यर्थः

चौरी कर्मविषे तत्पर है उसको जन्मांतरविषे व्यापारसे लाभ नहि होता जेकर वो पापी देशांतरमें
 जावे तौभी व्यापारसे लाभ नहि होता और तिसको जिससे प्राणोंका संदेह होता है ऐसी व्याधि हो
 ती है और मरण भी ऊहां होता है १ अथमाधवजीके वनाए होए ग्रन्थविषे शिव और पार्वतीजीके
 संवादमें और प्रकारका कर्मविपाका किहा है श्वपाकेति और जो पुरुष गुरुका और वृद्धका
 अपमान करते हैं सो चांडाल और पुष्कस और खोटे जो जड़जंतु तिनके कुलोंमें जन्म पाते हैं १
 गुरुणेति और जो पुरुष गुरुकरके अनाजत होया २ वेदको पढ़ता है अर्थात् ब्राह्मणसे विना
 पढ़ता है सो जन्मांतरमें इस संसारविषे ब्राह्मणोंसे हीन जो जाति तिनके विषे जन्म पाता है ३

२६ ॥ श्रीरणवीर कारित ध्यत भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अधर्ममिति और जो पुरुष मोहवशते स्वर्गमें नू धर्म कहते हैं सो कालकृत योगसे अथात् मरणे सँपोछे इसमनुष्यलोकमें जन्मपाते हैं १ परंतु हवन और देवतानिमित्त जो वषट्कार तिसरें रहि त होते हैं ॥ स्कन्दपुराणके नागरखंडमें भी किहा है । प्राप्नुवतीति जो पुरुष हेतुवादक क्या उत्सोसर हेतुप्रणसे सतमतका खंडनकरे । सो कुत्सितदेशके विषे जन्मको पाते हैं ॥ और जो अपने स्वामी के साथ द्रोहकरते हैं सो कुत्सित कुलविषे अथात् कुष्टादियुक्तकुलविषे जन्मपाते हैं १ अदत्वेति और जो पुरुष पितर और देवता और ब्राह्मणोंका ना देकरके भोजन करते हैं सो सदाहै दुर्भिक्ष और पीडा आपसमें जिसविषे ऐसा जो कुत्सितदेश तिसविषे जन्मपाते हैं २ और जो पुरुष स्त्री

अधर्ममित्याहुयें तु मोहवशंगताः ते च कालकृताद्योगात्संभवन्तीह मानुषे
 ३ निर्होमानिर्वपट्कारास्ते भवन्ति नराधमा इति ॥ स्कान्देनागरखंडे ॥
 प्राप्नुवन्तिकुदेशे च जन्मये हेतुवादकाः स्वामिद्रोहरताये च कुकुले जन्मचाप्नुयुः
 १ अदत्त्वाये तथा भ्रान्तिपितृदेवद्विजातिषु दुर्भिक्षे जनतापे च कुदेशे जन्मचा
 पुयुः २ यत्र दुर्भिक्षं जनतापो वास्ति तत्र कुदेश इत्यर्थः ॥ ये तु कुर्वन्ति दंपत्यो
 विवादं सानुरागयोः विरूपाभ्रममाणश्च सर्वलोकविवर्जिताः ३ दरिद्रा
 जायया भ्रष्टा भवन्ति विगतायुषः कन्यादाने च विघ्नं यो विक्रयं यः करोति वा ४
 सकन्यां केवलां सूतेन पुत्रं केवलं क्वचित् जायते ताश्च बन्धक्यो विधवा दुर्भगाः
 क्वचित् ५

और भत्ता सहित अनुरागके हैं अथात् प्रीतिकरके युक्त हैं तिनका आपसमें विवाद क्या वियोग करवाते हैं सो खोटे रूपवाले क्या जल्ले मिलडे कुधे अथात् इनांतिनां रूपाकरके युक्त हुएहुए और सवनां लोकांकरके वज्जे होएक्या तिरस्कृत कीते होए भ्रमते हैं १ इसीका और फल कहते हैं ॥ दरिद्रा इति सो पुरुष दरिद्रो होते हैं और स्त्रीकरके हीन होते हैं और पीडी आधुषावाले होते हैं ॥ अब और कर्म वि पाक कहते हैं ॥ जो पुरुष कन्या दानविषे विघ्न करता है अथवा कन्याको बेचता है सो जन्मांतरविषे कन्याहिकों उत्पन्न करता है अरतिसके गृहमें पुत्र नहि होता ४ और सो कन्या बन्धकीयां अथात् न्यभि स्त्रारिणि यां अर विधवा अर दुर्भगा अथात् ऐश्वर्यसंहीन होतीया हैं ५ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ २७

अब और प्रकारका कर्मविपाक किहा है प्रभास खंडविषे यैरिति जिनों पुरुषोंने किंचित्मात्रभी कृष्णार्पण नहिदिता है उनका दरिद्रताहिचिन्ह होता है और सो रोगी होते हैं मूर्ख होते हैं और हिंसा करणेवाले और कुब्ध होते हैं और वामन होते हैं १ अपुत्रा इति परस्त्रीको सेवनेवाले और कलहक्या लडाइके करणेवाले पुत्रसे रहित होते हैं और जो पुरुष महाराजक क्या उपदेवता तिनके कर्माक्रो करतें हैं अर्थात् तिनका मंत्रसिद्ध करतें हैं सो कुत्सित वस्त्रोंवाले और कुत्सित रूपवाले होते हैं २ और इसी पदका दूसरा अर्थ है महाराजक नाम है राज्योंकारोंकणा उसविषे है कर्म जिनका वो भी ऐसे होते हैं २ किति जो पुरुष और खोटे दंभके करणेवाले और फलके विषे लुब्ध और मूर्ख

प्रभासखण्डे । यैर्न दत्तं नरैः किंचित्तेषां चिन्हं दरिद्रता जायंते रोगिणो रौद्रा हिं
स्त्राः कुब्जाश्च वामनाः १ अपुत्राः कलहाक्रान्ताः परदारोपसेवकाः महाराज
ककर्ममाणः कुचैलाः कुशरीरिणः २ महाराजका उपदेवविशेषास्तत्कर्मणा
स्तन्मंत्रसाधकाः कुशरीरिणः कुरूप भवन्ति यद्वा महाराजकं महाराजनिरो
धस्तत्र कर्मयेषां ते २ कुदंभाश्च फले लुब्धामूर्खानिष्ठुरभाषिणः दानहीना भ
वन्त्येते देवब्रह्मस्वभक्षकाः ३ रेवाखंडे । पितामातागुरुभ्राता अन्योवा विकलं
द्रियः भवन्त्यनादृता ये स्तुते भवन्ति नराधमाः १ इह मानुषलोके हिंसा
धास्ते भवन्ति वै येत्यजन्ति स्वकां भार्यामूढाः पंडितमानिनः २ तेषां तिनरकं
घोरं तामिस्रं नात्र संशयः तत्र वर्षशतस्यंते इह मानुषतांगताः ३

और खोटे वचनोंके भाषण करणे वाले और ब्राह्मणके धनको भक्षण करते हैं सो दान कर्के
हीन होते हैं १ और प्रकारका कर्मविपाक किहा है रेवाखंडविषे ॥ पितेति पिता और माता और
गुरु और भ्राता और शिथिल हैं इंद्रियां क्या गुणहीन जिसकीयां ऐसा जो है उनका जो पुरुष
अनादर करते हैं सो अधम होते हैं १ इहेति और इसमानुष लोकविषे दीन और अधे होते हैं
जो मूढ अपने आपको विनापढ़े पंडित माननेवाले हैं और अपनी स्त्रीको त्याग देते हैं
२ तइति सो पुरुष तामिस्र नाम घोर नरकविषे प्राप्त होते हैं इसमें संशय नहि है और उसविषे
शतवर्ष १०० पर्यंत पीडाको भोग करे इसलोकविषे मनुष्य होते हैं ३

२८ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

दुश्चर्मोति और जो पुरुष परस्त्रीकेसेबसेवालाहै सोदुष्टचर्मवाला और विद्यासंरहित और धनसे रहित और गृध्र क्या अंडवृद्धिरोग तिसककेयुक्तहोताहै और पूंखं जो परभार्यापसेवक पद आया है सोप्रभासखंडकामतहै औरइहांजो आयाहै सोरेवाखंडकामतहै इसवास्तेपुनरुक्तिनहिजासखी ४ गददइति और अनृतवादीक्या झूठकहणेवालापुरुषथथलाहोताहै और गौयोंकेअर्थ झूठकहणेवा ला क्या कोई पुरुष गौयोंकी सेवाकरणे वास्ते आयाहै और किसीने कहादियाकि इहां कोई गौ नहिहै ऐसा कहणेवाला मूक होताहै और जो बिहा अन्नग्राहणकों देताहै सो विकृतकंठवाला होताहै अर्थात् उसका कंठ किसीको अच्छा नहि लगता ५ मेति और जो किसीके ऐश्वर्यको नहिसहायसकताहै सोजातिकरके अन्वाहोताहै अर्थात् जिनजीवजातियोंमें नेत्रांसहीनहोतेहैं उन जातियोंमेंजन्मपाताहै जैसे विसकलादिकहैं और जोपुरुषदेपकरणेवालाहै सो बधिरहोताहै और

दुश्चर्मोदुर्भगश्चैवदरिद्रः संप्रजायते जायतेगृध्रसंयुक्तः परभार्यापसेवकः ४
गददोऽनृतवादीस्यान्मूकश्चैवगवानृते अन्नपर्युषितेविप्रेददद्वैकंठतां व्रजेत् ५
मात्सर्यादपिजात्यन्याद्वेपातुवधिरोभवेत् श्रद्धत्वाभक्ष्यमश्नातिह्यनपत्यो
भवेच्चसइति ६ भक्ष्यमत्रापूपादि दोषबाहुल्यात् । गरुडपुराणे । अवमत्यच
येयांतिभगवत्कीर्तनंनराः वार्धिक्यमुपयांत्याशु तेयैजन्मनिजन्मनि १ पश्य
न्तोभगवद्द्वारंतामसास्तत्परिच्छदम् श्रद्धत्वातत्प्रणामादियेयांतिपुरुषाध
माः जात्यन्यास्तेभिजायंतेप्यंगहीनपरिग्रहाः २ अंगहीनः परिग्रहः स्त्रीयेपा
ते ॥ पंगवः पादहीनाश्चकुष्ठिनोभुवियेनराः विष्णुच्छायाध्रुवंतेस्तुलंधिता
स्यान्नसंशयः ३ विष्णुच्छायाविष्णुप्रतिमाप्रतिविंबः ॥

जो इकलाहिमभुभोजनकरताहै अगरकिसीकोनहिदेता सो संवतिमेंरहितहोताहै परंतुइसजगा भक्षकरके पूछेआदिभोजनजानना दोषबहुतहोएंगे ६ अव और प्रकारका कर्मविपाक किहाहै गरुडपुराणविषं ० अवमत्योति जो पुरुष ईश्वरके कीर्तनकोत्यागकर पराङ्मुख होतेहैं सो जन्मजन्माके विषं तात्कालहि वृद्धभावको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् अल्पआयुपावालेहोतेहैं १ पश्यन्ति जो तमोजुणी अधमपुरुष हैं और ईश्वरके द्वार और सामग्रीकोदेखकर नमस्कारके बिनाहि चलेजातेहैं सो पूर्वोक्तजाति करके अन्वेहोतेहैं और अंगहीनस्त्रियोंके पतिहोतेहैं २ पंगवजने और जिनोपुंखंति विष्णुकीभूर्तिकीछायाकाउलंघनकीताहै सोपंगु क्या शिथिलजंघा वाले और पादहीन और कुछी होहैं इसविषेसंशयनहिं जानना ३

वथेति और तैसहीजो पुरुष ईश्वरके मंदिरको छायाको अर्थात् मंदिरके कुलपाकी छायाको उलंघन करनाहै सो वनविषे पसु होताहै और रोगके फेडित होताहै इसजगामंगुशब्दके वनवत्सीकेइ अतिविशेषहै कोई ऐसेभी कहतेहैं ४ अथ और सूत्रकाकर्म विष्णुभस्ममूर्तमें किहा है मिशुन इति सो पुरुष पिशुन क्या दूसरेका केवल दोष प्रकाश करेताहै सो खोटोगंधी ककेमुक्तहै नाभजिसकीसां ऐसा होताहै और जो पुरुष सूत्रकया दूसरेपुरुषके गुणमिश्रितदोषों काप्रकाश करताहै सोदुर्गंधी विविध सुखवाला होताहै और दूसरेके गुणको देखकर जो

तथाचभगवद्वामच्छायायांक्रमतेतुयः अरण्येजायतेपंगुः सवैरोगादिपीडित इति ॥ ४ ॥ विष्णुभस्ममूर्तरे ॥ पिशुनः प्रतिपत्तसस्मृतसूत्रकः प्रतिपत्तकः स्ववादेमत्सहीमामत्तापितोत्तेदनिन्दकः ॥ पिशुनः केवलं दोषप्रकाशकः सूत्रकोमुष्मिश्रितदोषप्रकाशकः यद्वा मिशुनेभस्मपार्श्वेदोषप्रकाशकः सूत्रकोन्यदित्यर्थः ॥ भूषणसम्पत्तिवत्तत्तस्त्विक्तं किञ्चित् घाणिकस्ते लिकथेवअन्धोभजतिमानवः २ वसिष्ठोनीचजातिविशेषः प्रतिकूलगुरो मस्तुसोऽपस्मरीचजायते यस्तुगुरोः प्रतिकूलकार्यमकरोतिइत्यर्थः

प्रायश्चित्तभाष्यः प्रश्नः १ ॥ अध्यायः १ ॥ २९

अध्यायः १ ॥ अध्यायः १ ॥

नहि सहारता सो गंजाहोताहै और वेदकी निंदाकरणे वाला ग्रामकानाई होताहै १ मूलमें पिशुनशब्दका अर्थ स्पष्टकर्के किहाहै पिशुन इति भूयदिति फेर मरणसे पीछे ब्राह्मण जन्म आकर्के नास्तिक भावकों प्राप्त होताहै फेर अधाणिक नाम कर्के नीच होताहै और फेर तेला होताहै फेर पीछेसे बोहि अंधाहोताहै २ घाणिक क्या नीच जाति कर्को जो प्रसिद्धहै और जो पुरुष गुरुओंके अनुकूल नहि रहताहै सो मिरगीरोगकर्के युक्त होताहै जो जिसको अच्छा नहिहै उसको प्रतिकूल कहतेहैं

३० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

और हेमहाभाग जो पुरुष इकछाही मयुर वस्तुको भक्षण करता है सो वातगुल्मरोग कर्कें युक्त होता है अर्थात् वातके गोलै कर्कें युक्त होता है १ भगेंति और जो कुंडामार्गियोंके साथ भोजन करता है सो भगभक्षनामक कीड़ा होता है और जो दूसरे पुरुषकों पीडा देता है सो चिरस्थायिज्वरादिरोग कर्कें युक्त होता है गुरु और स्वामि और वेदकी निंदाकों सुनकरके ४ जन्मांतरमें दुर्बुद्धि और बेला और पुरुषोंमें अधम होता है और देवताके अप्पण कीया जो दीपक तिसक कें जो दुर्बुद्धि पुरुष गृहका कार्य करता है ५ सो जन्मांतरमें दुर्बुद्धि अर्थात् बाहर निकस गया है नेत्र जिसका ऐसा होता है और नेत्ररोग कर्कें भी युक्त होता है और तिस पापकर्म कर्कें दीनरूप वाला

मिष्टाशयेको महाभाग वातगुल्मी प्रजायते ३ भगभक्षस्तु कुंडाशी दीर्घरोगी च पीडकः गुरुस्वामिद्विजाक्रोशवेदमिदांतथैव च ४ श्रुत्वा भवति दुर्बुद्धिर्विधिरोमानवाधमः देवदत्तेन क्षीपेन कृत्वा कर्मसु दुर्मतिः ५ जायते वै बुद्धिदाक्षो नेत्ररोगगतोऽपि वा तथैव दीनरूपश्च तेन पापेन कर्मणा ६ बुद्धिदाक्षोऽयं हि निस्मृताक्षिगोलकः ॥ हीनवर्णस्तदालोके भवत्यस्यंत दुर्मतिः विरूपी एव भवति तथाऽविक्रेयविक्रयी ७ विनाऽपराधेन तथा कृत्वा पत्न्या धिवेदनम् सराजामयमाप्नोति व्यवहारितथैव च ८ पत्न्या धिवेदनं पत्न्यंतरग्रहणम् राजामयो राजयक्ष्मा

अर्थात् कनकालमिरूप जैसा रूप उसका होता है ६ हीनेति और लोकमें हीनवर्णक्या शूद्र होता है और अतिशय कर्कें दुर्बुद्धिवाला होता है और तैसँहि नहिं बेचने लायक जो वस्तु उसके बेचनेवाला खोटे रूप वाला अर्थात् कुरूपी होता है ७ विनेति और जो पुरुष अपराधके बिना अपनी स्त्रीकों त्याग कर्कें और स्त्रीकों ग्रहण करता है सो राजयक्ष्मरोग कर्कें युक्त होता है तैसेही व्यवहार विषे भी जिस पुरुषके साथ व्यवहार करता है उसकों अपराधके बिना छोड़ कर्कें जो दूसरेके साथ व्यवहार करता है सो भी राजयक्ष्मकों प्राप्त होता है ८ इसीका अर्थ स्पष्ट कर्कें मूलमें कहा है पत्न्येति

मूलेति श्रीर जो पुरुष वशीकरणके कारण श्रीषधी अर मन्त्रादिकों कर्के पुरुषकों मारदेताहै सो जगत्में द्वेषकरणके योग्यहोताहै इसमें संशय नहिजासना १ अथाप्येति श्रीर जो पुरुष यज्ञके अधिकारीनहिहैं तिनको जो यज्ञकरवाताहै सो वर्णसंकरहोताहै श्रीर जो पुरुष वेदको बेचताहै सो मूर्ख श्रीर धूर्तहोताहै धूर्तउसको कहतेहैं कि जो बिना विचारे कार्यको कर्ताहै १० नास्ति कइति जो नास्तिकहै अर्थात् ईश्वरको जगन् कर्ता नहि मानता सो दरिद्री होताहै श्रीर स पूर्णधर्मोंसे रहितहोताहै श्रीर जो अन्निमान विषे प्रवृत्तहै कया अपनेको बढामानताहै श्रीर दूसरे को तुल्यमानताहै सो खोटे कुलविषे उत्पन्नहोताहै ११ श्वपाकेति श्रीर जो पुरुषगुर्योंका श्रीर

मूलकर्म तथा कृत्वा वशीकरणकारणात् द्वेष्यो भवति लोकेऽस्मिन् जगतो नाऽ
असंशयः १० मूलकर्मोऽपि ध्यादिना मारणं वशीकरणाय प्रवृत्तोऽपि मारितवा
मयदीत्यर्थः अथाप्ययजिं कश्चैव जायते वर्णसंकरः वेदविक्रयको मूर्खः कित
वश्चैव जीयते ११ नास्तिकस्तु दारिद्र्यस्य यात् सर्वधर्मविवर्जितः आत्मान
प्रवृत्तस्तु जायते कुलसिते कुले १२ श्वपाकपुष्कसादीनां कुत्सितानामचेतसाम्
कुलेषु तेभिर्जायतेषु कुरुवृद्धापवादकाः १३ श्वघेतुमरणलोके विषैः स्थावरजं
गमैः दंष्ट्रिभ्यश्च नखिभ्यश्च चांडालाद्वा ह्यणात् तथा १३ गृहाधः पतनाच्चैव दु
माधः पतनात् तथा गोभ्यश्च मरणलोके विज्ञेयं पापकर्मणाम् १४

बूढ़ोंका अपमानकसेहैं सो चांडाल श्रीर पुष्कस श्रीर खोटे श्रीर जड़ोंको कुलमें जन्मपातेहैं
१२ जन्मलक्षण कर्म विपाक कहकरके, अथ मरणलक्षण कर्म विपाक कहतेहैं श्वघइति
जो पुरुष लोकाविषे टोंपमें गिड कर्के मरताहै श्रीर स्थावरजंगमविषकर्के मरताहै स्थावर
कया संखियेसे आदलेकरहै श्रीर जंगम कया सर्पादिकोंसे लेकरहै श्रीर दंष्ट्री कया श्वान अर
ग्याप्रादिकोंसे लेकर अर नखवालोंको कर्के अर्थात् पिडादिकों कर्के मर्ताहै श्रीर चांडाल
से श्रीर ब्राह्मणसे १३ गृहेति गृहसे कया घरमें गिडकर श्रीर दुमकया वृक्षसे गिडकर श्रीर गोयों
से जो मरताहै सो मरण पापकर्मवालोंका जानना १४

३२ श्रीरघुवीर कवित्व प्राप्तशिव भक्तमार्ग कवित्व दीप्तिमान् ॥

ताडितलिंगो पुरुष किसीकी ताड़ना करता है सो आपभी जन्ममंतरमें ताड़नाकों प्राप्त होता है जो किसीके धनादिकों हरता है सो आपभी धनादिकों हरया जाता है और दूसरेको मारके आपत्तिकों प्राप्त होता है अर्थात् आपभी मारया जाता है इसमें विचार मही करे योग्य है १५ सोई कहते हैं पद्यदिति जो पुरुष दूसरेको सुख अथवा दुःख देता है सो सो उसको जन्ममंतरमें प्राप्त होता है और अपने को भी होए कामकर्त्त वूसरा पुरुष जैसी पीडाई प्राप्त होता है १६ तस्येति तिसको भी तैसीहि पीडा जन्मजन्ममें होती है तिसकारणसे पुरुष संपूर्ण अनर्क पर पीडाकों त्यागे १७ अथ और प्रकारका कर्मविपाक किहाई महाभारतमें ॥ पद्यदिति जो

ताडिताताडितलिंगो केहा रिसा ह्यर्थतेजसः कृत्वा ७५ पदसंवासेति नात्र कार्यो विचारणः १५ सद्यत्पर स्वात्परतितितिरुको जन्मको ७५ सोई यद्विशीचिधुं कर्मणा स्वकृतेनयः १६ तस्यापित्तादृशीतावाज्ञेसज्जितमनिजसति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनमस्याधांविषंजीवेदिति १७ महाभारते ॥ भैरवस्तितसतिस्त्रिंशयाश्वगुरुशोस्त्रातिलंघितः ॥ अधर्मजागतात्कारास्तेभवंतिमत्तायुषः १ कुशोलाभिन्नमय्यादामित्यसंकीर्णमैधुताः २ अथप्रायुषोभवंतीहिनरुतिरयतामिनः २

पुरुष नास्तिक हैं अर्थात् ईश्वरको जगत्का कर्त्ता नहि मानते हैं और जो निष्क्रिय हैं अर्थात् संव्योपासनादिते रहित हैं और गुरु और आसक्त उलंघनकर्त्त बर्त्ते हैं और जो धर्म को नहि जानते हैं और नष्ट होगया है आचार जितका ऐसे जो हैं सो अल्पआयुषा वाले होते हैं १ कुशोति और जो पुरुष खोटे स्वभाववाले हैं अर्थात् वृथा वात्तालापमे झूठ और परकी निंदा करते हैं और जो भिन्नमर्यादावाले हैं क्या किसे मतपर भी नही चलते और जो संकीर्णनैयुती हैं अर्थात् संपूर्णवर्णोंकी स्त्रियोंके साथ मैथुन करते हैं सो पुरुष थोड़ी आयुषावाले होते हैं और नरकगामी होते हैं २

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ३३

लोष्टेति और जो पुरुष मृत्तिकादोटीमकौं हाथसे धारंवार भोर देता है और तैसेहि जो तृणकां छेदन कर ता है और जो नखोंको खाता है अर्थात् नखोंको मुखमें पाता है और जो नित्य कर्मों त्यागता है और जो चुणली करता है सो इसलोकमें बड़ी आयुषाफो नहि प्राप्त होला है अर्थात् अल्प आयुषा वाला होता है १ प्रज्ञामिति और जो पुरुष उच्छिष्ट होया २ दासां कर्त्ता है और ईश्वरजीके मंदिरांमें जूठा हिचला जाता है उसकी बुद्धिको देवता हर लेता है और आयुषाका भोनष्ट करता है ४ यश्चेति जो ब्राह्मण मोहवशसे अनध्यायकालमें पढ़ता है और जो सूर्यके और अग्निके और गौके और ब्राह्मणके सन्मुख होकरके विष्टा करते हैं सो अल्प आयुषा वाले होते हैं ५ और शिवधर्म्मोत्तरविषंभी

लोष्टमर्दीतृणच्छेदीनखखादीचयोनरः नित्योच्छेदीसूचकश्चनेहायुर्विंदते महत् ३ प्रज्ञामस्माददेदेवो ह्यायुरस्य निकृताति उच्छिष्टश्च प्रवदति वाधि गच्छति मंदिरे ४ अस्यायुर्देवो निकृताति खंडयति तथा प्रज्ञामाददे । यश्चान ध्यायकालेपि मोहादभ्यसते द्विजः प्रत्यादित्यं प्रत्यनलं प्रतिगां च प्रतिद्विजम् येमेह्यं सिचनरास्ते भवंति गतायुष इति ५ शिवधर्म्मोत्तरे ॥ देवद्रव्योपजी वीच सर्वदेवचवार्द्धकः देवद्रव्यं स्वयं येन भुक्तं सहिसदा भवेत् १ रसा ज्ञो व धिरः कुंठः कंडू सर्वा गदुःखितः देवस्पर्शं नरः कृत्वा परप्रत्ययकारणात् २ मिथ्याचारं चरेत् पश्चाद्वुदस्थो वने चरः देवदासो वनं भुक्त्वा तृहदुल्मीचवै क्रमात् ३ अर्बुदः पर्वतविशेषः

किहा है देवेति जो पुरुष सर्वदा काल देवताके द्रव्य करके भया सामग्री करके जीविका करता है और जो रुबैयोंका व्याज लेकर जीविका करता है और जिसने देवताका द्रव्य आपही भक्षण कीता है १ सो सदा रस विष अज्ञ होता है अर्थात् तिसको जिह्वा रसकोंनहि जान सकती और बोला होता है और कुंठ होता है अर्थात् दुष्ट स्वभाव वाला होता है और तिसके संपूर्ण अंग कंडू करके दुःखित होते हैं और जो पुरुष दूसरेकी प्रतीति वास्ते अर्थात् निश्चय करते देवताकी शपथ करता है २ और पीछेसे मिथ्याचार क्या कपट करता है सो पक्षमें रहने वाला वनचर होता है फेर वनको भोग कर मुख होता है फेर बड़े गुल्म रोग करके क्या बरत गोलें करके युक्त होता है अर्बुद नाम किसे पर्वत का है ३

३४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

सर्वांगेति और जो पुरुष पापकर्ता है सो संपूर्ण अंगोंमें कुष्ठरोगवाला होता है और तिमिरी होता है अर्थात् नेत्र उसके अंधकारकके युक्त होते हैं तिसको नरहाता रोग कहते हैं और पापकके इहां गोवधादि पाप जाटना क्योंकि दोष बहुत होते हैं और जो देवताके मंदिरसे दीपकको उठाकरके घरका काम करता है सो जन्मांतरमें पंगु और नेत्रोंसे हीन होता है और पीछे जो देवताके दीपक उठानेका दोष किहा है सो विष्णुधर्मोत्तरकामत है अर इहां जो किहा है सो शिवधर्मोत्तरकामत है इसवास्ते पुनरुक्तिनहि जाननी ४ मूर्छेति और देवतयोंके साथ हंसकरणेवाला मूर्छा क्या मिरगीरोगकके युक्त होता है और भ्रमी क्या सुदाई होता है अथवा मूर्छाकके है भ्रमण क्या भीषा जिसमें ऐसा होता है और न्यायमें पक्षपातकरणेवाला ज्वररोगकके युक्त होता है और देवताके तिरस्कारकरणे वाला

सर्वांगकुष्ठातिमिरीनरो भवति पापतः दीपदेवगृहाद्वत्पापंगुश्रांधो भवेन्नरः
पापमत्रगोवधादि दोषवाहुल्यात् ४ मूर्छाभ्रमीसुरद्वेष्टापक्षपातीज्वरी
भवेत् देवायमंताभवतिसर्वदामैथुनेरतः ५ सदापहतसर्वस्वः कुत्सितः का
ममोहितः मुखकृष्णव्रणीश्वित्रीगरदामसको भवेत् जिह्वावहुव्रणीहान्यदुः
खकारी भवेन्नरः ६ अपकारंतुयः कुर्व्यादुपकर्तुर्भवेन्नरः श्वासकासीज्वरी
सर्वगात्ररोगीमृतप्रजाः ७

और सदाहि स्त्रीभोगमें प्रीति वाला ५ सदाहि हरयागया है धन जिसका ऐसा होता है और कुटिल होता है और कामकके मोहित होता है मुखइति और जो मदान्धपुरुष दूसरेको विष देता है सो मुखमें कृष्णव्रणी होता है अर्थात् उसके मुखमें काले २ छिद्र होते हैं और श्वित्री क्या श्वतकुष्ठकरके युक्त होता है और अन्यदुःखकारी जो पुरुष अर्थात् भले पुरुषोंको दुर्वाक्य कहनेवाला सो जिह्वामें बहुव्रणी होता है अर्थात् उसकी जिह्वामें बहुत छिद्र होते हैं ६ अपकारमिति जो पुरुष उपकारकरणे वाले पर अपकार करता है अर्थात् भलीकरणेवाले साथ माडीकता है सो श्वासकास क्या दम रोग तिसकरके युक्त होता है और ज्वरकरके युक्त होता है और सवनां अंगोंमें रोगवाला होता है और मृतप्रजा क्या तिसको पुत्र उत्पन्न होकरके मरजाते हैं ७

मृतपुत्रइति जो पुरुष दूसरेकी संतती के साथ द्वेष करता है सो पुत्रसे हीन होता है अंधवा, अंधा हो
ता है और जो दूसरेका नाश करता है सो विसर्पवान् होता है अर्थात् रक्त विकार जो रोग
तिस करके युक्त होता है ८ अकारणेति और जो पुरुष कारणसे विना अपनी स्त्रीका त्याग क
रता है सो जलोदरी क्या जलोदर रोग करके युक्त होता है अर्थात् उसका पेट रोग करके फुल जाता है
और जो अधम पुरुष वेश्यातू अपनी स्त्री बणा करके बर्तता है ९ सो जन्मान्तरमें भक्तखाणेनू
असमर्थ होता है और पिछपान करके जीवन करता है और दूसरेके चित्तको छेद देता है

मृतपुत्रो धवांधः स्यात् यो द्वेष्टि परसंततिम् परस्य तु विनाशयः करोति स वि
सर्पवान् ॥ ८ ॥ विसर्पे रक्तविकृतिको रोगविशेषः अकारणाद्धर्मप
त्नीत्यागी स्याच्च जलोदरी वेश्याकुलवधूकृत्वा वर्तते यो नराधमः ९ भक्तं भो
क्तुमशक्तश्च मंडपानेन जीवति ॥ परेषां चेतसः छेदकारी भवति मानवः १०
क्षयीज्वरी प्रमेही च गुल्मी दाही भगंदरी रजस्वलायाः संपर्कात् चांडालपति
तैः सह ॥ ११ ॥ व्यवहारी पुष्पवत्या भुक्त्वा कुटीज्वरी भवेत् अनपत्यो
दरिद्रश्च विश्वस्तस्य विषप्रदः ॥ १२ ॥

ला १० क्षय रोग करके युक्त होता है और ज्वर करके और प्रमेह रोग करके और गुल्म रोग करके
और दाह रोग करके और भगंदर रोग करके युक्त होता है परंतु चांडाल और पतित के साथ गलक के
रजस्वला स्त्री का संबन्ध होणेंते ११ इसीका अर्थ विशेष कर्के कहते हैं व्यवहारी रजस्वला के साथ
व्यवहार करने वाला जो पुरुष अर्थात् क्रीडा करने वाला सो विना संचैल स्नानसे भोजन करे
तो ज्वर रोग वाला होता है और कुटी होता है और जो विश्वस्त पुरुषको विष देता है सो
विश्वासघाती पुत्रसे रहित होता है और दरिद्री होता है १२

३४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

सर्वांगेति और जो पुरुष पापकर्ता है सो संपूर्ण अंगोंमें कुष्ठरोगवाला होता है और तिमिरी होता है अर्थात् नेत्र उसके अंधकारकके युक्त होते हैं तिसको नरहन्ता रोग कहते हैं और पापकके इहां गोवधादि पाप जाटना क्योंकि दोष बहुत होने लें और जो देवताके मंदिरसे दीपकको उठाकरके घरका कामकर्ता है सो जन्मांतर्गमें पंगु और नेत्रोंसेहीन होता है और पीछे जो देवताके दीपक उठानेका दोष किहा है सो विष्णुधर्मोत्तरकामत है अर इहां जो किहा है सो शिवधर्मोत्तरकामत है इस वास्ते पुनरुक्तिनहि जाननी ४ मूर्च्छेति और देवतयोंके साथ द्वेषकरणेवाला मूर्च्छा क्या मिरगीरोगकके युक्त होता है और भ्रमी क्या सुदाई होता है अथवा मूर्च्छाकके है भ्रमण क्या भौणा जिसमें ऐसा होता है और न्यायमें पक्षपातकरणेवाला ज्वररोगकके युक्त होता है और देवताके तिरस्कारकरणे वाला

सर्वांगकुष्ठीतिमिरीनरो भवति पापतः दीपदेवगृहादृत्वापंगुश्रांधो भवेन्नरः
पापमत्र गोवधादि दोषवाहुल्यात् ४ मूर्च्छाभ्रमी सुरद्वेष्टापक्षपाती ज्वरी
भवेत् देवायमंता भवति सर्वदामैथुनेरतः ५ सदापहत सर्वस्वः कुत्सितः का
ममोहितः मुखकृष्णव्रणी श्वित्रीगरदामसको भवेत् जिह्वा बहुव्रणी हान्यदुः
खकारी भवेन्नरः ६ अपकारंतु यः कुप्यादुपकर्तुर्भवेन्नरः श्वासकासी ज्वरी
सर्वगात्ररोगी मृतप्रजाः ७

और सदाहि स्त्रीभोगमें प्रीति वाला ५ सदाहि हरयागया है धन जिसका ऐसा होता है और कुटिल होता है और कामकके मोहित होता है मुखइति और जो मदान्धपुरुष दूसरेको बिष देता है सो मुखमें कृष्णव्रणी होता है अर्थात् उसके मुखमें काले २ छिद्र होते हैं और श्वित्री क्या श्वेतकुष्ठकरके युक्त होता है और अन्यदुःखकारी जो पुरुष अर्थात् भले पुरुषोंको दुर्वाक्य कहनेवाला सो जिह्वामें बहुव्रणी होता है अर्थात् उसकी जिह्वामें बहुत छिद्र होते हैं ६ अपकारमिति जो पुरुष उपकारकरणे वाले पर अपकार करता है अर्थात् भलीकरनेवाले साथ माडोकरता है सो श्वासकास क्या दम रोग तिसकरके युक्त होता है और ज्वरकरके युक्त होता है और सवनां अंगामें रोगवाला होता है और मृतप्रजा क्या तिसको पुत्र उत्पन्न होकरके मरजाते हैं ७

मृतपुत्रइति जो पुरुष दूसरेकी संततीके साथ द्वेष करता है सो पुत्रसे हीन होता है अथवा अंधा हो
ता है और जो दूसरेका नाश करता है सो विसर्पघात होता है अर्थात् रक्त विकार जो रोग
तिस करके युक्त होता है ८ अकारणेति और जो पुरुष कारणसे विना अपनी स्त्रीका त्याग क
रता है सो जलोदरी क्या जलोदररोगकरके युक्त होता है अर्थात् उसका पेट रोगकरके फुट जाता है
और जो अधम पुरुष वैश्यान् अपनी स्त्री बनाकरके बसंदा है ९ सो जन्मान्तरमें भक्तस्वाणन्
असमर्थ होता है और पिछपान करके जीवन करता है और दूसरेके चित्तको क्लेश देता है

मृतपुत्रो धर्वाधः स्यात् यो द्वेष्टि परसंततिम् परस्य तु विनाशायः करोति स वि
सर्पवान् ॥ ८ ॥ विसर्पै रक्तविकृतिको रोगविशेषः अकारणाद्धर्मप
त्नीत्यागी स्याच्च जलोदरी वैश्यांकुलवधूकृत्वा वर्तते यो नराधमः ९ भक्तं भो
क्तुमशक्तश्च मंडपानेन जीवति ॥ परेषां चेतसः क्लेशकारी भवति मानवः १०
क्षयीज्वरी प्रमेही च गुल्मी दाही भगंदरी रजस्वलायाः संपर्कात् चांडालपति
तैः सह ॥ ११ ॥ व्यवहारी पुष्पवत्या भुक्त्वा कुष्ठीज्वरी भवेत् अनपत्या
दरिद्रश्च विश्वस्तस्य विषप्रदः ॥ १२ ॥

ला १० क्षय रोगकरके युक्त होता है और ज्वरकरके और प्रमेह रोगकरके और गुल्म रोगकरके
और दाह रोगकरके और भगंदर रोगकरके युक्त होता है परंतु चांडाल और पतितके साथ गलकके
रजस्वला स्त्रीका संबन्ध होणेंते ११ इसीका अर्थ विशेष कर्के कहते हैं य्यवेति रजस्वलाके साथ
व्यवहार करने वाला जो पुरुष अर्थात् क्रीडा करने वाला सो विना संचैल स्नानसे भोजन करे
तो ज्वर रोग वाला होता है और कुष्ठी होता है और जो विश्वस्त पुरुषको विष देता है सो
विश्वासघाती पुत्रसे रहित होता है और दरिद्री होता है १२

३६ ॥ श्रीरणवीर कास्ति प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

निषिद्धेति और जो पुरुषनिषिद्धवस्तु क्या चांडालकके स्पर्शित जो भोजनातिसके खुलाणकके अथवा परोपदिष्ट ज्ञान क्या कि मेरेकोंकिसेवडे महारमासिद्धसे प्राप्तहोया २ हैउपदेश कि मदिरासे पूजनकरणावहुतअच्छाहै और मक्षिरापानकरणाभीअच्छाहै इसज्ञानकके जोदूसरयांपुरुषांतू मोहले ताहै अर्थात् भुलादेताहै सोउन्मत्तकक्या सुदाई होताहै ॥ १३ ॥ ऋणमिति और जो पुरुषदूसरे कों ऋणवेकके अधिकवृद्धिग्रहणकरताहै अर्थात् व्याजके समेत फेर नवीनखत लिखा कके उसके पासोरूपेये लेताहै सो धनवार्मोंके कुलमें जन्मपाकके देशान्तरमें चलाजाताहै १४ ॥ बाणिगिति देशान्तरमेंभी उसकों व्यापारकालाभ नहि होताहै और जो पुरुष गुरुशिष्यदेवैठवांहोयां गुरुको छोडकके शिष्यकासन्मानकर्ताहै सोज्वरकके अरुवासकास क्या दम तिसकके युक्तहोताहै १५

निषिद्धवस्तुभोगेनमोहयेद्यः परान्पुमान् परोपदिष्टज्ञानेनभवेदुन्मत्तको पिवा ॥ १३ ॥ ऋणं दत्त्वापिकां वृद्धिं यो गृह्णातीहं मानवः स भूत्वा धनिनां वंशे ब्रजे देशान्तरतः ॥ १४ ॥ बाणिज्यकाभस्तत्रैव नस्ति तस्य नरस्यैव अमुरुषे मुरुषकारीयः स ज्वरीश्वासकासवान् १५ सर्वांगरोगी पापी न द्वेष्टा मृतसमांगभागिति ॥ उमासहेश्वरसंवादे ॥ अकृत्वा खलु यज्ञं तु यस्तु धान्यं प्रवेशयेत् मरुदेशे भवेद्दृक्षः फलपुष्पविवर्जितः १ दिव्यं वर्षसहस्रं तु दुरात्मा कर्षितो भवेत् तस्यांतिमानुषो भूत्वा कदाचित् कल्पपर्ययात् दरिद्रो ब्याधितो मूर्खो ह्यकुलीनस्तु जायते २ ॥

सर्वांगेति और जो पुरुष अन्नकेसाध द्वेषकरताहै अर्थात् अन्नकोवृथाहि मुटदेताहै सो पापीमृतपुरुषकी न्याईहै अंगजिसके ऐसाहोताहै अर्थात् अतिकच्छ्रां अरोगीहोताहै ॥ अन्न और मक्षारका कर्म विपाककहाहै उमासहेश्वरसंवादमें अकृत्वेति जो पुरुष नवान्नेष्टियज्ञकों न करके नवीन अन्नका अपसे घरमें प्रवेशकरताहै सो निजेलदेशमें फलपुष्पसे रहित वृक्ष होताहै १ दिव्यमिति और दिव्यहजार वर्ष सोदुरात्माजन्मजन्मविषे कर्षित क्या रोगीहोताहै और तिसकेपीछे कल्प केव्यत्ययहोसंत मनुष्यहोकके दरिद्रीहोताहै फेरव्याधिकके युक्तहोताहै फेर मूर्ख होताहै फेर खोदे कुलमें जन्मपाताहै २

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ३७

यस्त्विति जो पुरुष सुदृढभावकर्के अर्थात् खोटस्वभावकर्के प्रीतिवाले पुरुषके साथ भेद क्या कपट करता है सो जन्मान्तरमें संतति कौनहि प्राप्त होता है तिस पापके कारणसे ३ नशृएवंतीति जेडे पुरुष गुरुके और वेदके वाक्य कौनहि भ्रवण करते हैं और संपूर्णमतोंके मध्यमें नास्तिक मतको स्वीकार करते हैं सो जन्मान्तरमें तिस पापकर्के मूढभावको प्राप्त होते हैं ४ प्रार्थयति और जो पुरुष दूधवाली और सबत्सा क्यावच्छेवाली जोमौ तिसकी प्रार्थना कर्के अर्थात् किसी जमानसे मांगकके फेर उसका दूध आपही पान करता है और किसी कौनहि देता अथवा प्रार्थना कर्के क्याकि गौके आगे कुच्छ खाने वाली वस्तुको रख कर्के फेरवच्छा छोड़ता है तिसके पिछे उस दूधको आपही पान करता है अरवच्छेकों

यस्तुक्षुद्रेशभावेन स्नेहवद्भेदकारकः सोनपत्यत्वमाप्नोति तस्य पापस्य कारणात् ३ नशृएवंति गुरोर्वाक्यं वेदवाक्यं च येनराः सर्वेषां चैव नास्ति क्यं तेन ते यांति मूढतां ४ प्रार्थयित्वा तु योगां वै सवत्सां क्षीरसंयुतां आत्मना पिवते क्षीरं ते नासौ याति चाधत्तां ५ प्रसवं धीवनं बहूनीकृत्वा सर्वांगदा हरुक् उदरे शूलसंयुक्तो जायते मनुजाधम इति ६ मिष्टान्नेन य आत्मानं पोषयति नराधमाः वाला नां वीक्षमाणानामदत्त्वाऽदन्ति निःस्पृहम् ७ नहुतं न तपस्तप्तं न दत्तं किंचित् ब्राह्मणे आत्मैव पोषितो ये स्तुतत्पापं कथयामि ते ८

भो नहि पीने देता ऐसा काम करने वाला अर्थात् होता है ५ प्रेति अग्निमेलन शुशंका कर्के और धुक् कर्के पुरुष सर्वांगदा हरुक् होता है अर्थात् सवना अंगामें दाहरोग कर्के युक्त होता है और उदरविषं शूलरोग कर्के युक्त होता है और सवना पुरुषां विषं अधम होता है ६ मिष्टान्नेनेति और जेडे अधम पुरुष मिष्टान्न कर्के अपने देहको पुष्ट करते हैं और देख रहे पासमें जो बालक तिनको न देकर दयासे विना आपही भक्षण करते हैं ७ नेति और नहि कीता है हवनजिनोंने और नहि कीता है तपजिनोंने और नहि दित्ता है दान ब्राह्मणके ताई जिनोंने और जिनोंने आत्माहि पुष्ट किया है तिन पुरुषां दे पापका कर्म विपाक हेराजन् मैं तेरे ताई कथन करता हूँ ८

३८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

यत्रेति जिस देशमें वर्षा नहिं होनी और जिसदेशविषे बायुकी उत्पत्तिहै तिस देशमें क्षुधा कर्के पीडित होए होए तिसपापकर्मकर्के उत्पन्नहोतेहैं ९, अस्त्विति जो ब्राह्मण अपनी जातिका त्याग कर्के क्षत्रीके धर्म को सेवन करताहै सो ब्राह्मण जातिसँ भ्रष्ट होया होया जन्मांतरमें क्षत्रियोनिमें उत्पन्नहोताहै इसमें ऐसाविचारहै कि संपत्तिमें ब्राह्मणने क्षत्रियधर्म नहिं सेवनकरणा परंतु विपत्तिमें दोषनहिं १०, वैश्येति जो ब्राह्मण लोभ और मोह कर्के युक्तहोया होया वैश्यके कर्माको करताहै सो द्विज जन्मांतरमें वैश्य जातिको प्राप्तहोताहै ११ स्वधर्मेति जो ब्राह्मण अपने धर्मसे रहित होचाहोया शूद्रके कर्म को करताहै सो जन्मांतरमें शूद्रताको प्राप्तहोताहै तैसेहि शूद्रवंशी जो क्षत्र्यहै और वैश्यहै सोभी अपने धर्मको छोडकर वर्ते तद शूद्रत्वको

यत्रदेशे त्वनावृष्टिर्यत्र वायुसमुद्रवः तस्मिन्देशे क्षुधा तर्च जायंते पापकर्म
णा ९ यस्तु विप्रत्वमुत्सृज्य क्षत्रधर्मे निषेवते ब्राह्मण्यात् सपरिभ्रष्टः क्षत्र
योनौ प्रजायते १० वैश्यकर्माचयो विप्रो लोभमोहव्यपाश्रयः स द्विजो वैश्य
तामेति शूद्रकर्म करोति यः ११ स्वधर्मप्रच्युतो विप्रः सहि शूद्रत्वमाप्नुयात्
क्षत्रियो वामहावाहुर्वैश्यो वा धर्मचारिणि १२ स्वानि कर्माण्यपाकृत्य शूद्र
कर्म निषेवते स्वस्थानाच्च परिभ्रष्टो जायते वर्णसंकरः १३ ब्राह्मणः क्षत्रि
यो वैश्यः शूद्रत्वं याति तादृशः शूद्रान्नेनोदरस्थेन म्रियते गिरिपुत्रिके १४
ब्राह्मणः शूद्रतामेति नास्ति तत्र विचारणेति १५

प्राप्तहोताहै महेश्वरजी कहतेहैं है धर्मचारिणि है देवि १२ इसीको स्पष्टकर्के कहतेहैं स्वानीति
अपनेयां कर्मको त्यागकर्के शूद्रके कर्मको करताहै सो अपने स्थानसे भ्रष्ट होया होया क्षत्री
वा वैश्य जन्मांतरमें वर्ण संकरहोताहै १३ फेर स्पष्टके अर्थ कहतेहैं ब्राह्मणइति अथवा एह
अष्टाश्लोक अधिकहै ब्राह्मणइति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य तादृश होवे अथात् आपो
अपने कर्मको त्याग करके वर्ते सो सो शूद्रताको प्राप्तहोताहै और महेश्वरजी कहतेहैं है गिरि
पुत्रिके है पार्वति १४ जेकर उदरस्थ शूद्रके अन्न कर्के ब्राह्मण मरजावे तो जन्मांतरमें
शूद्रताको प्राप्त होताहै इसमें विचार नहिं करणा १५

अथ और प्रकार का कर्म विपाक किहा है मार्कण्डेय पुराणमें ० ब्राह्मण इति जो ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय अथवा वैश्य अपणो गोत्र की कन्या का पाणिग्रहण करे अर्थात् उसको विवाह लए अथवा अन्यजा क्या जारसे उत्पन्न होई २ जो कन्या उसको विवाह लए तो ऐसा विवाह करणसे वो जातिसे पतित होतेहैं १ यश्चेति और जो पुरुष हीनजाति की कन्या का पाणिग्रहण करता है कैसा चोपाणिग्रहण है जिसकरके वर्ण क्या जातिका संयोग होना है अर्थात् ऐसी कन्या विवाहनेवाला जो वर्ण कन्या का है उसी वर्णको प्राप्त होता है २ अत्रेति और इस संसारमें निषिद्ध वस्तु का जो आचरण करणा क्या सेवना जैसे मांस भक्षणादिकर्म और विहिताऽकरण

मार्कण्डेय पुराणे ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः स्ववर्णपाणिसंग्रहं कृत्वा च ह्यन्यजापाणेः पतन्ति नृपसंग्रहात् १ अन्यजा जारजा. ॥ यश्च यस्यास्तु हीनायाः कुरुते पाणिसंग्रहम् कृत्वा च वर्णसंयोगं सोऽपि तद्वर्णभाग्भवेत् २ ॥ अत्र निषिद्धाचरणविहिताकरणेन्द्रियाऽनिग्रहरूपं हेतुत्रयं पापस्योक्तं तत्र निषिद्धाचरणविपाकविशेषो मानवे धान्यं हत्वा भवत्याखुः कांस्यं हंसो जलं लवः मधुदंशः पयः काकोरसं श्वानकुलो घृतम् १ लवः जलपक्षिविशेषः दंशो वनमक्षिका रसं इक्ष्वादि तच्च गुडव्यतिरिक्तं बोध्यम् कांस्यं हत्वा हंसः मधुहत्वा दंश एवं सर्वत्र संबंधः

क्या शास्त्राविहित कर्म संघ्या और यज्ञादि तिसका त्याग करणा और इंद्रियों का नहि होकरणा एहती नही पापके कारण हैं तिनके मध्यमें निषिद्धाचरणसे उत्पन्न होया जा पाप तिसका कर्म विपाक विशेष कर्के किहा है मनुके ग्रंथमें ॥ धान्यमिति धान्यकों हरके अर्थात् चुराके पुरुष आखु क्या चूआ होता है और कांस्यकों चुराके हंस होता है और जलनूं चुराके लव होता है क्या जल का पक्षी होता है और मखारके चुरा करके दंश होता है अर्थात् मच्छर होता है और जलकों हरके वा रु होता है और रस क्या गुडको छोड़करके गन्धोंकों और सोंफादिककों चुरा करके श्वान क्या कुचा होता है और घृतकों हरके नकुल होता है अर्थात् नौल होता है १

४० श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

मांसमिति मांसकोंचुगककें पुरुष गृध्र क्या डल होता है और वपा क्या मित्रजतिसकोंचुराककें मद्रुहोता है अर्थात् जलचरपक्षीवगुलेकाभेदहोता है और तेलकोंचुराककें तेलपायकनामककें पक्षीहोता है और लवणकों चुगककें चींगीवाक् क्या बिडानाम ककें पक्षी होता है और दहिकों चुगककें वगुलाहोता है ॥ २ ॥ कौशेयमिति और पुरुष रेशमीवस्त्र चुराककें तित्तिरहोता है और क्षौमकों क्या अलसीवस्त्रकों चुराककें डड्डुहोता है और कर्पासकावस्त्र चुराककें कूज नामा पक्षीहोता है और अग्निकों चुराककें गोधा क्या घोनामककें तिर्यक्जीवहोता है और गुड

मांसंगृध्रावपांमद्रुःतैलतैलपकःखगः चींगीवाकस्तुलवणं वलाकःशकुनिर्दधि २ वपां हत्वामद्रुनामाजलचरो भवति तैलहत्वा तैलपायकाख्यः पक्षीलवणं हत्वा उच्चैःस्वरः कीटः । अन्यत्सुगमम् ॥ कौशेयं तित्तिरिहत्वा क्षौमं हत्वा तु ददुरः कर्पासतांतवं क्रौंचो गोधाग्निवाग्गुदो गुडम् ३ कीटकोशनिर्मितं वस्त्रं हत्वा तित्तिरिनामा पक्षी स्यात् क्षौमं हत्वा मंडूकः अग्निहत्वा गोधा भवति गुडं हत्वा वाग्गुदनामा शकुनिर्भवति ॥ लुच्छुंदरिः शुभान्गन्धान्पत्रशाकं तु वह्निः श्वावित् हत्वा तु सिद्धान्नमकृतान्नं तु शल्यकः ४ सुगंधिद्रव्याणि हत्वा लुच्छुंदरिर्भवति वास्तुकादिपत्रशाकं हत्वा वह्निः सिद्धान्नमोदनादिकं हत्वा शशकः अकृतान्नं व्रीहियवादिकं हत्वा शल्यको भवति

चुगककें वाग्गुदक्या खड्कनामा पक्षीहोता है १ लुच्छुंदरिरेति सुगंधिवाले द्रव्योंकोंचुराककें लुच्छुंदरि क्या घीसनामा जीवहोता है और पत्रशाक क्या बाथुसँआदलेकर पत्रांवाला शाकतिसके चुराणे ककें मोरहोता है और सिद्धान्नक्या पकाया हुया अन्न भत्तसँ आदलेकर तिसके चुराणे वाला श्वावित् होता है अर्थात् सिहाहोता है और अकृतान्न क्या जो नहि सिद्धकोता हुया क्या धान्ययवादिक तिसके चुराणे वाला शल्यकहोता है अर्थात् बकलें वाला सिहा होता है २ इसीको मूलमें रण्टककें किहा है सुगंधीति ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० टी० भा० ॥ ४१

वृक इति और पुरुष अग्निकों चुराकरके वृक क्या वगुला होता है और पीछे जो किहा है कि अग्निकों चुराके गोधा होता है इसवास्ते विकल्प सिद्धहुया अर्थात् अग्निकेचुराणेंकरके यह दोनों योनियां पुरुषकोहोतीयां हैं इसकारणतें पुनरुक्ति नहिजानणी और उपरकर क्या गृहकेउपयोगि जो बहारिआदक हैं तिनकें चुराणे वाला गृहकारी कीटहोता है अर्थात् भडारण होता है और रक्तवस्त्र क्या कुसुंभकेसाथ रंगेहोए तिनकों चुरा करके जीवजीवक होता है अर्थात् चुकोरनाम करके पक्षी होता है ५ वृक इति और पुरुष मृगनुं क्या हरणादिकानुं और हाथीनुं चुराकरके वृक क्या भगहाड होता है और घोडेनुंचुराके चित्रा होता है और फलमूलनुं चुराकरके मकंठ क्या

वकोभवतिइत्वाग्निगृहकारीह्युपस्करं रक्तानिहत्वावासांसिजायतेजीवजी वकः ५ अग्निहत्वावकास्यः पक्षीजायते गृहोपयोगि मार्जन्यादिकंहत्वागृह कारीकीटः ॥ कुसुंभादिरक्तवस्त्राणि हत्वाचकोरास्यः पक्षीजायते । वृकोमृगे भव्याघ्रोश्चफलमूलंतुमर्कटः स्त्रीमृक्षःस्तोककोवारिपानान्युष्टुःपशूनजः ६ मृगंवाहस्तिनंहत्वावृकास्योहिंस्त्रपशुर्भवति अश्वादिकंहत्वा व्याघ्रोभवति फलमूलंहत्वामर्कटः स्त्रीहत्वाश्वक्षः स्तोककःचातकास्यःपक्षी अजःछागः यद्वातद्वापरद्रव्यमपहत्यवलान्नरः अवश्यंयातितिर्यक्त्वंजग्ध्वाचैवाहुतंह विः ७ नरोवलात् यत्किंच परद्रव्यादिकमपहत्य अग्नौपुरोडाशादिकंह विरहुतंभुक्त्वाचतिर्यक्त्वंयाति

वानर होता है और स्त्रीकों चुराकरके ऋक्ष क्या ऋच्छ होता है और जलकों चुराकरके स्तोककक्या बबीया होता है और पानानि क्या सर्वतादिक तिनकों चुराकरके उष्ट्र क्या उट होता है और पशु योंकों चुराकरके वक्त्रा होता है ६ यदेति और पुरुष जिस किसीकाधनु चुमकरके तिर्यग् योनि जो पशु पक्षीसे आदलेकरहैं तिनकों प्राप्तकोहोता है और पुरोडाशादिक जो है ऋषिः अग्निभाग तिसकों चुराकरके भी तिर्यग् योनिको प्राप्त होता है ७ इसमें एह अभि प्राय है कि प्रथम अग्नि विषे पाकरके पीछे शेष भोजन करणें योग्यंथा ऐसा तिसने नहि किया

४२ ॥ श्रीरणवीर करित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र ० च ० टी० भा ० ॥

स्त्रियइति और स्त्रियांभी पूर्वकहा जो प्रकार तिसी कर्के धान्यादिकानूं चुराणें वालीयां धान्यादिकानूं चुराणे वाले जो पुरुष जेडे चुपसैं आदलेकर कहेंहैं तिनं जीवादोयां स्त्रीयां होतीयाहैं जैसे धान्यकों चुराकर्के पुरुष चूआ होताहै इसी प्रकार धान्यकों चुराकर्के स्त्री चु ई होतीहै इसीप्रकार आगेभी जाणलेणा ॥ एवमिति निषिद्धाचरणक्या मांसभक्षणादि तिनका कर्मविपाक कहकर्के अब विहिताकरणक्या शास्त्रविहितकर्माकात्याग तिस पापका कर्मविपाक कहतेहैं ८ स्वेभ्यइति और आपदकालसैं विना अपणें २ धर्मसैं वणें पतित होजाण तां ऐसे पापी संसारानूं क्या जन्मानूं प्राप्त होकरके शत्रूयांके दासहोतेहैं अथात् शत्रूयांकी सेवाकरणे

स्त्रियोप्येतेन कल्पेन इत्वादोपमवाप्नुयुः एतेपामेव जंतूनां भार्यात्वमुपयांति ताः ८ स्त्रियोपि एतेन पूर्वोक्तप्रकारेण पूर्वोक्तधान्यादिकमपहत्य पूर्वोक्तानां आरूवादिजंतूनां भार्यात्वं प्राप्नुवंति ताः स्त्रियः ॥ एवं निषिद्धाचरणफलान्यभिधायाऽधुनाविहिताकरणफलविपाकमाह । स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु कर्मभ्यश्च्युता वर्णाविनापदम् पापास्संसृत्य संसारान् दासतां यांति शत्रुषु ९ ब्राह्मणादयो वर्णा आपदं विना स्वस्वपंचयज्ञादिकर्माणित्यक्त्वा पापिनः कुत्सितयोनीः संप्राप्य पुनर्जन्मांतरे शत्रुषु दासतां यांति । वांताश्चुल्कामुखः प्रेतो विप्रो धर्मात्स्वकाच्च्युतः अमैध्यकुणपाशी च क्षत्रियः कटपूतनः १० विप्रः स्वधर्मात्च्युतः छर्दितभुक् ज्वालामुखः प्रेतविशेषो जायते एवं क्षत्रियः कटपूतनारूपः प्रेतः ॥

बाले होतेहैं ९ ब्राह्मणादय इति और ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य और शूद्र इह चारोवर्ण-आपणेंयां आपणेंयां पंचयज्ञानूं आपदसे विनाहि त्यागदेश तां सो पापी खोटीयांयोनीयांनूप्राप्त होकरके जन्मान्तरमें शत्रूयांदी सेवाकरणेवाले होतेहैं ॥ वांतेति और जो ब्राह्मण अपणे धर्मसैं पतित होताहै सोभी वांताशी प्रेत होताहै अथात् उदमनके भक्षण करणे वाला प्रेतहोताहै और उल्कामुखहोताहै अथात् अग्निकी तरह उसका मुख होताहै और इसीतरह जो क्षत्रिय अपणे धर्मसैं पतित होताहै सो जन्मांतरमें कटपूतन नाम करके प्रेतहोताहै अथात् दुर्गंधि विशिष्ट प्रेतहोताहै १०

॥ श्रीरघवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०च० ॥ टी० भा० ॥ ४३

अब जो मार्कण्डेयपुराणविषे विशेषकिहाहै सो कहतेहैं न्यासेति जो पुरुष न्यास क्या अमानत तिसके चुगणे वाला नरकमें प्राप्तहोताहै फेर नरकको भोगकर क्रिमि क्या कीटयोनिकों प्राप्तहोताहै और धान्यक्या व्रीह्यादि और यव और तिल और माष और कुलत्थ और सरयां और चणे १ सस्येति और सस्यक्या खेतियोंमें होणेवाले के तरहांके अन्न तिनं सवनांको चुरा करके बड़ा जंतु क्या जीव चैतन्यतासे रहित अर्थात् थोड़ी चैतन्यता वाला और बड़ाहै मुखजिसका और वज्रकी न्याई कठोर चूया होताहै २ भोजनमिति और जो पुरुष भोजनको चुराताहै सो मक्षिकाहोताहै और दूधको चुराकरके नरकमें प्राप्तहोताहै फेर नरकभोगकरके विद्धाहोताहै ३ ॥ ति

अथमार्कण्डेयपुराणविशेषः न्यासापहर्तानरकाद्विमुक्तोजायतेक्रिमिः धान्यंयवांस्तिलान्माषान्कुलत्थान्सर्पपांश्वणान् १ सस्यान्यन्यानिवाहत्वा महाजंतुरचेतनः संजायतेमहावक्रोमूषकोवज्रसन्निभः २ भोजनंचोरयित्वातुमक्षिकाजायतेनरः इत्वादुग्धंतुमार्जारोजायतेनरकाच्च्युतः ३ तिलपिण्याकसंमिश्रमन्नंइत्वातुमूषकः घृतंइत्वातुनकुलः काकोमद्गुरजा मिषं ४ श्येनोमार्गामिषंइत्वाचीरीलवणहारकः चोरयित्वापयश्चापिवला कासंप्रजायते ५

लेति और तिलोंकीपिण्याक क्या खलकरकेयुक्त जो अन्न तिसनुंचुराके पुरुष चूआ होताहै और घृतको चुराकरके नकुल होताहै और पिछे जोकिहाहै कि घृतके चुगणे वाला नकुलहोताहै सोमनुजीका मतहै और इसजगामें मार्कण्डेयजीका मतहै इसवास्ते पुनश्चके नहि जानणी और मद्गुरक्या जलचरपक्षी तिसकेकच्चे मांसको चुराकरके पुरुष काक होताहै ४ श्येनइति और मृगक्या हरणादिक तिसकाकच्चाभांस चुगणे वाला वाजहोताहै और लवणके चुगणे वाला चीरीहोताहै अर्थात् विडानामक एक जीवहोताहै और दूधको चुराकरके बलाकाहोताहै बलाका क्या बगुलेदाभेद एकपक्षी होताहै ५ . . .

४४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० च० टी॥ भा० ॥

यस्त्विति और जो पुरुष तैलकों चुराता है सो तैलपायीनामकर्के पक्षी होता है और मखीरकों चुराणेवाला दंश क्या मच्छर होता है और घृतकों चुराकर्के पिपीलिका क्या कीड़ी होता है इस जगा स्त्री लिंग विवक्षित नहि क्योंकि पुरुषका कर्म विपाक है ६ घृतमिति घृतकर्के इसजगामें बहुत सुगंधिकर्के युक्त और बहुत स्नेहकर्के युक्त द्रव्य लेणा क्योंकि गव्यघृतपीछे कह चुके हैं इसकारणतें • चोरयित्वेति • और पुरुष निष्पाव क्या सैण और मटर तितकों चुराकर्के गलगंडुक क्या गिछड़वाला होता है और आसनकों चुराकर्के तित्तिर होता है ७ अपइति और पुरुष जलकों चुराकर्के काक होता है और कांस्यकों चुराकर्के हारीत नामक पक्षी होता है और पीछे कह चुके हैं कि कांस्यकों चुराणेवाला हंस होता है सो मनुजीकामत

यस्तुचोरयतेतैलंतैलपायीसजायते मधुहत्वानरोदंशोघृतं हत्वापिपीलिका
६ घृतमत्रगंधबहुलस्नेहपरम् गव्यादिघृतस्यपूर्वमुक्तत्वात् ॥ चोरयित्वा तु
निष्पावान्जायतेगलगंडुकः आसनंचोरयित्वा तु तित्तिरित्वमवाप्नुयात् ७
अपाहत्वा तु पापात्मा वायसः संप्रजायते हतेकांस्ये च हारीतः कपोतो रौप्यजं
हते ८ जीवजीवकतां याति रक्तवस्त्रापहन्नरः छुच्छुंदरिः शुभान्गंधान्
सस्यं हत्वा शशो भवेत् ९ पंडः पालालहारीणः काष्ठद्विधुणकीटकः पुष्पापह
दरिद्रश्चपंगुर्यानापहारकः १०

है • इसजगामें मार्कंडेयजीकामत है इसवास्ते पुनराकि नहि जानणी और चांदीके पात्र चुरा
णेमें कपोत क्या कवूतर होता है ८ जीवेति और रक्तवस्त्र क्या कुसुमे कर्के रंगे होए वस्त्रके
चुराणे वाला पुरुष जीवजीवकताकों प्राप्त होता है अर्थात् चकोर होता है इसजगाभी विरोध
पूर्वोक्त रीतिसें दूर होता है • और सुंदर गंधवाले द्रव्यके चुराणेवाला छुच्छुंदरि क्या घस होता
है और सस्य क्या पक्षी ढोई खेतीतिसके चुराणेवाला शश होता है अर्थात् सेहा होता है ९ पंडइति
और पालाल क्या पराली तिसके चुराणे वाला पंड होता है • अर्थात् नपुंसक होता है और का
एके चुराणे वाला कुणामकर्के काष्ठका कीड़ा होता है • और पुष्पोंके चुराणेवाला दरिद्र
होता है और यान क्या पालकी तिसके चुराणेवाला पंगु होता है अर्थात् लूछा होता है १०

॥ श्रीरघवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ४५

शाकेति और शाक चुराणेवाला हारीतनामकके पक्षीहोताहै और जलके चुराणेवाला बबीया पक्षी होताहै • और भू क्या पृथिवी तिसको चुराणेवाला रौरवसे आदलेकर जो नरक बडेभया नक तिनानु प्राप्तहोताहै ११ तृणेति फेर तृणयोनिको प्राप्तहोताहै फेर गुल्महोताहै गुल्म उसको कहतेहैं कि जो शाखा और बेलसे रहित पृथिवीसे उत्पन्नहुया २ होवे फेर लताहोताहै लता क्या पुष्पों कर्के युक्त और फलसे रहित जैसे खनटालुआदिक और फेर बल्ली होताहै बल्ली उसको कहतेहैं कि जो फल पुष्पों कर्के युक्त होतीहै फेर त्वक्सारहोताहै अर्थात् बंज होताहै • फेर सामान्य वृक्ष होताहै १२ अव शंख और लिखित जी और प्रकारकाकर्म विपाककहतेहैं- वेश्मापहारीति कि दूसरेदे घरकेहरणेवाला पुरुष अद्रि होताहै - अर्थात् पर्वतोंमे रहणेवाला इक स्थूल जीव होताहै- और जलके चुराणेवाला शिशुमारनामकके एक जलचर जीवहोताहै

शाकहर्ताचहारीतस्तोयहर्ताचचातकः भूहर्तानरकान्नगत्वारौरवादीन्सुदारुणान् ११ तृणगुल्मलतावल्लीत्वक्सारतरुतांगतइति १२ शंख लिखितौ वेश्मापहारीअद्रिः • परजलापहारी शिशुमारः • सस्यापहारीकपोतः- क्रव्यापहारीवायसः - ताम्बापहारीबल्गुलः • अपूपहारीं प्रेतः - शास्त्रापहारीजडः-छत्रापहारी कारंडः, गंधापहारीपतंगः-ध्वजापहारीकृकलासः शाकापहारीपशुः ॥ छागविडालाखूनामन्यतमइत्यर्थः ॥ शय्यापहार्य

शयनः- पुष्पापहारीदुर्गंधी •

और सुस्यक्या पक्षीहोई खेतीके चुराणेवाला कवूतर होताहै • और मांसके चुराणेवाला काक होताहै और त्राम्मेके चुराणेवाला बल्गुलक्या तैल पायी नामकके पक्षी होताहै • और अपूप क्या पूडे तिनके चुराणेवाला प्रेत होताहै • और शास्त्रके चुराणेवाला जड क्या मूर्ख होताहै • और छत्रक्या छतडी तिसके चुराणेवाला कारंड क्या बगुलेकाभेद होताहै • और सुगंधिविशिष्ट द्रव्यके चुराणेवाला पतंग होताहै और ध्वजाके चुराणेवाला किरला होताहै और शाकदे चुराणे वाला पशुहोताहै पशुकर्के इसजगामे बक्या और बिल्ला और चूया इनतीन्मेकाग्रहणहै अर्थात् इनांविचो एकहोताहै और शय्याकेचुराणे वाला अशयनहोताहै अर्थात् निद्रासेरहित होताहै • और पुष्पोंके चुराणेवाला दुर्गंधिविशिष्ट जीवहोताहै

फलेति और फलके चुराणे वाला अफलीहोताहै अर्थात् संततिते रहितहोताहै और दीपकके चुराणे वाला कौशिकहोताहै अर्थात् उझ होताहै • और भूर्माके चुराणे वाला नकुल होताहै • यदेति और दूसरेका जो कुछ थोडा अथवा बहुत चुराकरके उसी उसी योनिको प्राप्त होताहै भोगानुरूपते अर्थात् जो जो उनकाभोगहै उसी २ भोगकी सादृश्यतासे १ और जो वैश्य अपने धर्मसे पतित होताहै सो पाकनू भक्षण करणे वाला मैत्राक्षज्योतिक नामकरके प्रेतहोताहै और जो शूद्र अपने धर्मसे पतित होताहै सो चैलाशक नामकरके प्रेतहोताहै २ और इसीका अर्थ मूलमें स्पष्टकरके किहाहै वैश्य इत्यादि • इसके आगे विहिता

फलापहार्यफला-दीपापहारीकौशिकः-भूम्यपहारीनकुलः यद्वातद्वापिपार कथंस्वलंपवायदिवावहु इत्वावैयोनिमाप्नोतितत्तद्भोगानुरूपतइति १ मैत्राक्ष ज्योतिकः प्रेतोवैश्योभवतिपूयभुक् • चैलाशकश्चभवतिशूद्रोधर्मात्स्वका चच्युतः २ वैश्यः स्वकर्मभ्रष्टश्चेताहैमैत्राक्षज्योतिकनामापूयभक्षः प्रेतो भवतिशूद्रश्चैलाशकः प्रेतोभवति एषोदरादित्वाज्ज्योतिपष्पकारलोपः • अर्थेद्रियानिग्रहहेतुकः कर्मविपाकः । यथायथानिषेवंतेविषयान्विषयात्मिकाः तथातथाऽकुशलतातेषांतेषूपजायते १ तेषुविषयेषु अकुशलता उपजायतेऽभ्यत्सुगमम् ॥ तेऽभ्यासात्कर्मणांतेषांपापानामल्पबुद्धयः संप्राप्नुवंतिदुःखानितासुतास्विहयोनिषु २ तेऽल्पबुद्धयः पापानांकर्मणामभ्यासात् तास्विति तामिस्रादिनारकीयासु दुःखानुभवं संप्राप्नुवंति

करण और निषिद्धाचरण जो दोनों पाप तिनको कहकर अब जो इंद्रियोंके तारोकरण करके जो पाप उत्पन्न होताहै तिसका कर्मविपाक कहवें • यथेति विषयोंमें आसक्त है आत्मा जिनोका ऐसे जो पुरुष अतिशयकरके विषयोंकोसेवतेहैं तिनो को तिनो विषयों त्रिषो अकुशलता क्या दुर्बुद्धि प्राप्तहोतीहै अर्थात् कल्याणनू नहिं प्राप्तहोतेहैं १ तइति और सोई पुरुष अल्पबुद्धि योवाले तिनो पापकर्मोंके अभ्यासकरणसे अर्थात् बारंबार करणेसे तिनोतिनो नारकीययोनियों विषे प्राप्तहोएहोए दुःखानुभवनू क्या दुःखके साक्षात्कारनू प्राप्तहोतेहैं ॥ २ ॥

तामिस्रादिष्विति और वो जो पूर्वोक्तपुरुषहैं सो तामिस्रादिनरकोंविषे निवर्त्तननूं प्राप्तहोतेहैं अर्थात्
अतिशयकरके स्थितिनूं प्राप्तहोतेहैं और असिपत्रवनसे आदलेकर जो नरक तिनकेविषेभी बन्धन
पूर्वच्छेदनकों प्राप्तहोतेहैं ३ विविधाइति और वोइंपुरुष नानाप्रकारकीयां जो पीडा तिनकों प्राप्त
होतेहैं और काक और उल्लूयों करके भक्षणनूं प्राप्तहोतेहैं कुत्सित जो जल और बालुका क्या
रेत तिनमेंबंधि जो तापक्या दुःखतिनानूं प्राप्तहोतेहैं और दारुणजो दुःभीपाकादिनरकतिनानूं प्राप्त
होतेहैं ४ संभवांश्चेति और सोई पुरुष नित्यप्रतिहैं बहुतदुःखजिनाविषे ऐसीयां जो तिर्यग्योनियां
तिनकेविषे जो नानाप्रकारके जन्म तिनकों प्राप्तहोतेहैं और शीतकरके और धुप्पकरके जो

तामिस्रादिषुचोग्रेपुनरकेषुनिवर्त्तनम् असिपत्रवनादौचबंधनच्छेदनानिच
३ तामिस्रादिषु असिपत्रवनादौच नितरांस्थितिं बंधनच्छेदनादीनिच प्रा
प्नुवतीत्यर्थः विविधाश्चैवसंपीडाःकाकोलूकैश्चभक्षणं कदंभवालुकातापान्
कुंभीपाकांश्चदारुणान् ४ काकाद्यैःभक्षणंकुत्सितमंभोवालुकाचतत्संबंधि
तापांश्च प्राप्नुवन्ति ॥ संभवांश्चवियोनीषुदुःखप्रायासुनित्यशः शीतातपा
भिघातांश्च विविधानाभियांतिच ५ नित्यंदुःखबहुलासुतिर्यगादिजातिषु
नानाविधान्संभवान् जन्मानि अभियांतिप्राप्नुवन्ति ॥ असकृद्गर्भवासेषु
वासंजन्मचदारुणं बन्धनानिचकष्टानि परप्रेष्यत्वमेवच ६ गर्भस्थानेषु
पुनर्वासं जन्म दारुणं चसंप्राप्नुवन्तीत्यर्थः ॥ वंधुप्रियवियोगांश्च संवासंचै
वदुर्जनैः द्रव्यार्जनंचनाशंच मित्रामित्रस्यचार्जनम् ७ ॥

नानाप्रकारके अभिघात क्यायाधातिनानूं प्राप्तहोतेहैं ५ असकृदिति और बारंवार गर्भ विषे निवास
करतेहैं और दारुण क्या भयानकजन्मकों प्राप्तहोतेहैं और बन्धनकों प्राप्तहोतेहैं और परप्रेष्यताकों
प्राप्तहोतेहैं अर्थात् दूसरेके दूतहोतेहैं ६ बंध्विति फेर अपने संबंधि और जो प्यारे तिनके
वियोगकों प्राप्तहोतेहैं फेर खोटे पुरुषोंके साथ निवासनूं प्राप्तहोतेहैं फेर जो द्रव्य जोडयाहै
तिसीका नाश होताहै फेर तैसहि मित्र और अमित्रका अर्जन होताहै अर्थात् जो
मित्रहै सोभी अमित्र होजाताहै ७ . . .

४८ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

जरामिति फेर नहिहै हटानेमे उपाय जिसका ऐसी जराकों और व्याधियों कर्के पीडाकों प्राप्त होनाहै फेर अनेक प्रकारके क्लेशांतु प्राप्तहोताहै फेर दुर्निवार जो मृत्यु उसको प्राप्तहोताहै ८ अथ और प्रकारका कर्मोंका फलकहतेहैं जो किहाहै ब्रह्मांडपुराणविषे ॐ धर्मेति जो पुरुष धर्म शास्त्रकों नहि जानता और लोकोंको प्रायश्चित्त दसताहै सो राजयक्ष्मरोग करके और बड़ी पीडाकरके युक्त होताहै १ और किहाहै चतुर्वर्गचिंतामणौविषे अर्थात् हेमाद्रिरुतग्रंथविषे शूलेनेति जो पुरुष शूल करके पुरुषोंको मारताहै सो शूलरोग वाला होताहै और जो गोगामीहै क्या

जरांचैवाप्रतीकारांव्याधिभिश्चोपपीडनम् क्लेशांश्चविविधांस्तांस्तान्मृत्युमेवचदुर्जयम् ८ अप्रतिकारांश्चविद्यमानतदूरीकरणप्रकारांप्राप्नुवंति ॥ दुर्निवारंमृत्युंच ॥ ॐ ॥ अथान्यप्रकारेणकर्मविपाकउच्यते ब्रह्माण्डपुराणे ॥ धर्मशास्त्राप्यविज्ञायप्रायश्चित्तंददातियः राजयक्ष्माभवे तस्यरोगपीडातिदारुणा ॥ १ ॥ चतुर्वर्गचिंतामणौ ॥ शूलेनशूलीभवति मनुष्याणांचहिंसकं गोगामीकटिशूलीस्यात् जन्मजन्मनिमानवः १ ॥ वृद्धशातातपः ॥ शूद्रस्यैवतुभुक्त्वान्नं अत्रतस्यद्विजस्यच शूलव्याधिर्भवेन्नित्यमजीर्णान्निनपीडितः १ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ विश्वस्तविषदाताच स्त्रीहवानूजायतेनरः चशब्दाच्छूलीच ॥

गौकेसाथ गननकरताहै सो जन्मजन्मविषे कटिशूल कर्के युक्तहोताहै १ और वृद्धशातातप जीभी कहतेहैं शूद्रस्येति जो पुरुष शूद्रके अन्नको भक्षण करताहै व्रतसे क्या यज्ञोपवीतसे रहित जो द्विज उसके अन्नको भक्षण करताहै सो शूल व्याधि वाला होताहै और अजीर्ण अन्नकरके पीडित होताहै अर्थात् उसको भक्षण कीता हुंया अन्न पचता नहिहै १ और किहाहै कर्मविपाक संग्रह विषे ॥ विश्वस्तेति जो पुरुष विश्वास देकर विषदेताहै सो लिप्फ और शूलरोग वाला होताहै और चकारसे क्या जानतेहैं कि शूल रोगवालाभी होताहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ४९

अब और प्रकारका कर्म विपाक कहते हैं जो किहा है कर्म विपाक संग्रह में. भुतेति जो ब्राह्मण वेदाध्ययन कर्के युक्त है और निर्धन है और याचना कर रहा है ऐसे ब्राह्मण नू दान के वास्ते बुला कर्के जो पुरुष फेर दान नहि देता है १ सइति सो उदरविषे शूलरोग कर्के युक्त होता है और तैसे ही उन्मादी क्या भूतावेशवाला भी होता है २ मैथुनमिति और जो पुरुष माता पिता के मैथुन का भ्रवण करता है सो कानों में शूल रोग कर्के युक्त होता है और वधिर क्या बोला होता है और कपाल विषे किंचित् असह्यशब्दवान् होता है अर्थात् थोड़ा शब्द सुन सें भी उसके कपाल में बड़ी पीड़ा होती है ३ नम्रामिति और सूर्य के अस्तकाल में और उदयकाल में नग्न स्त्री को देख कर्के पुरुष नेत्र शूली- होता है अर्थात् उसके नेत्र शूलरोग कर्के युक्त होता है और दृष्टिकर्के देषणें भी समर्थ नहि

कर्मविपाकसंग्रहे ॥ श्रुताध्ययनसंपन्नयाचितारमकिंचनम् ब्राह्मणं दातुमा
हूय दानार्थे न ददाति यः १ संभवे जठरे शूलितथोन्मादी च किंचित् २ मैथु
नं शृणुयात्पित्रोः कर्णशूली भवेन्नरः स्याच्चैव वधिरः किंचित् कपालेऽसह्यशब्द
वान् ३ नम्रां परस्त्रियं दृष्ट्वा सूर्यस्यास्तमयोदये नेत्रशूली भवेत्सोऽपि नेक्षि
तुं क्षमते दृशा ४ कर्म० ॥ मंगले पुचकार्येषु सततं कोपयान्नरः उष्णज्वराभि
भूतः स्यात् दारहीनश्च जायते १ उमामहेश्वरसंवादे- ॥ कृतघ्नो जायते मर्त्यः
कफवान्श्वासकासवान् उष्णज्वरी च नित्यं हि पित्तरोगसमन्वितः १

होता है ४ अब और प्रकारका कर्म विपाक कहते हैं ५ मंगलेष्विति जो पुरुष मंगल कार्यों विषे
क्या विवाहादि विषे निरंतर विघ्न करता है सो उष्ण रोग कर्के अर्थात् गरमी के रोग कर्के युक्त हो
ता है और स्त्री से हीन होता है १ अब और प्रकारका कर्म विपाक कहते हैं जो किहा है उमामहेश्व
र के संवाद में ॥ कृतघ्नइति जो कृतघ्न पुरुष है अर्थात् दूसरे के उपकार को नहि जानता है सो कफ
और दम और गरमी का ज्वर और पित्तरोग इनां कर्के नित्यहि युक्त होता है इसमें एह विचार
है कि उपकार करणे वाले को जो जानता है तिसका हृदय शीतल है दिक्पट होणे कर्के और
जो ऐसा नहि है उसको हृदय में ताप है अथवा उपकार वाले का हृदय उसने तपाया है इस कर्के
पित्तज्वर होणा उसको उचित है १

५० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब और प्रकारका कर्म विपाक कहते हैं जो किहा है कर्म संग्रह विषे. कुरुक्षेत्रेति. जो पुरुष कुरुक्षेत्र देश विषे और ग्रहण काल विषे अर्थात् ग्रहण के लगे हुये महादान लेता है अर्थात् हाथी और घोड़े और सुवर्ण इत्यादि लेता है अथवा निषिद्ध वस्तु लेता है १ अपात्रेति जो आप दान का पात्र नहि है और निषिद्ध दाता से दान लेता है सो पापी श्वास का स रोग कर्क और वसि विषे स्थित जो कीड़े उन्को कर्क पीडा को प्राप्त होता है फेर कंठू से आदले कर्क जो रोग उन्को कर्क पीडा को प्राप्त होता है. २ अवज्ञा को फेर कहते हैं जो किहा है पद्मपुराण विषे ॥ श्वासेति जो अपराध से विना किसी को कैद करणे से पुरुष श्वास का स रोग वाला होता है. और इसी का अर्थ स्पष्ट करके मूल में लिखा है ॐ वंद्यामिति अब और कर्म विपाक कहते हैं अत्राविति. पर्वत विषे और पुण्य जग विषे और रस्ते विषे और,

कर्म-॥ कुरुक्षेत्रादिदेशेषु कालेषु ग्रहणादिषु महादानं निगृह्णीयां निषिद्धान्यथवा स्वयम् १ अपात्रभूतो दातृभ्यो निषिद्धेभ्यश्च मानवः स पापः श्वास का सैश्च कुक्षिरुथं क्रिमिभिस्तथा २ पीडयते बहुशो रोगैः कंठू स्याच्चैश्च पीडितः पद्मपुराणे-॥ श्वास का स युतो मर्त्यो वंदिग्रहणतो भवेत् वंद्यां कारासांकस्य चिदपराधहीनस्य पातनात् भवेदित्यर्थः ॥ कर्म-॥ अद्रौ मार्गे नदीतीरे छायायां पुलिने नरः मूत्रपुरीषं वल्मीके यः प्रमुचे जले पित्वा १ श्वयथुव्याधिमाप्नोतीत्येवमाह सदाशिवः ॥ छायायामिति वृक्षदेवालयच्छायायां मूत्रपुरीषग्रहणं पृथिव्यादेरुपलक्षणम्. अद्यादिग्रहणं च पुण्यस्थानोपलक्षणार्थम् ॥ तत्र वृद्धबोधायनः ॥ विघ्नकर्ता च भोक्तृणां शोफी भवति मानवः

नदी के तीर विषे और वृक्ष और देवता के मंदिर की छाया विषे और तडाग के किनारे और वगैरे विषे. और जल विषे जो पुरुष मूत्र और विष्ठा करता है सो श्वयथुव्याधि को प्राप्त होता है अर्थात् उसको सोजा रोग होता है एह शिव जी कहते हैं और इसी का अर्थ स्पष्ट करके मूल में लिखा है. छायायामिति. ॥ १ और कर्मों का फल वृद्ध बोधायन जी कहते हैं. विघ्नेति. जो पुरुष भोजन कर्तव्यों में विघ्न कर ता है सो सोजे रोग वाला होता है. उसमें भी योग्यता विचार ऐसा है कि मूत्रपुरीष के परित्याग से और दूसरे के भोजन के विघ्न करने से अपने भोजन को सिद्धि से पहचाने की संभावना होई. तिस पाप का फल सो जारोग होना उचित है जिस कर्क उह देह की पुष्टि स्वरूप है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ५१

अब और प्रकार कहते हैं जो किहा है कर्मविपाक संग्रहमें • देवेति देवता और ब्राह्मण तिनके द्रव्य चुरायेवाला पांडुरोगकर्के युक्त होता है ॥ सोई किहा है शौनक जीने । • अन्यजेति- कि अन्यजा क्या चांडालकी स्त्री तिसके साथ गमन करणे वाला पांडु रोगकर्के युक्त होता है • ॥ इसीमें बृद्धशातातपजी कहते हैं ॥ तरक्षेति कि तरखदे मारयां होयां भी पुरुष पांडुरोगकर्के युक्त होता है • ॥ अब ब्रह्माजी और प्रकार कहते हैं यज्ञेति यज्ञविषे विघ्न करखेवाला पुरुष अंडवृद्धिरोग कर्के युक्त होता है • ॥ अब और प्रकार कहते हैं शातातपजी ॥ जात्युत्तमेति कि जो पुरुष उत्तम-जातिकी स्त्रीके साथ गमन करता है सो मस्तकव्रणी होता है अर्थात् उसके मस्तकविषे छिद्र होते हैं और श्रोत्रिय जो वेदपाठी विसकी स्त्रीके साथ गमन करणे कर्के पुरुष नासिका व्रणी

कर्म ॥ देवद्विजद्रव्यहारी पांडुरोगी भवेन्नरः ॥ तत्र शौनकः- अन्यजगमने मे-
र्यः पांडुरोगी प्रजायते ॥ अथ शातातपोक्तम् ॥ तरक्षेति हते चैव । पांडुरोगी
प्रजायते ॥ ब्रह्मणोक्तम् ॥ यज्ञविघ्नकरो नित्यं जायते चांडवृद्धिमान् ॥ तत्र शा-
तातपोक्तम् ॥ जात्युत्तमस्त्रीगमना जायते मस्तकव्रणी श्रोत्रियस्त्रीप्रसंगेन-
जायते नासिकाव्रणी १ कर्म ॥ कर्मकलिकुकुटचखरादीन्वाय ईक्षते सनासि-
काव्रणी च स्यादाद्र्नेत्रश्च जायते १ शातातपोक्तम् ॥ पितृस्वसाभिगमने द-
क्षिणांगव्रणी भवेत् मातृस्वसाभिगमने वामांगोत्थव्रणी भवेत् १

होता है अर्थात् उसकी नासिकामें छिद्र होता है • १ सोई किहा है कर्मविपाक संग्रहविषे • कर्मेति-
जो पुरुष कर्मकाल विषे अर्थात् संध्योपासनादिक जो कर्म तिनके प्रारंभ समय विषे कुकुट और
गघेसे आदलेकर और जो खोटे जीव तिनको देखता है सो नासिका व्रणी होता है और आद्र-
नेत्र होता है अर्थात् उसके नेत्रोंसे सदाहि जल बगता है १ अब शातातपजी और प्रकार कहते हैं
पितृस्वसेति जो पुरुष पिताकी भगिनीके साथ गमन करता है सो दक्षिणांगव्रणी होता है
अर्थात् उसके सजे अंगमें छिद्र होते हैं और माताकी भगिनीके साथ गमन करणे वाला
पुरुष वामे अंगमें हैं छिद्र जिसके ऐसा होता है १

५२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

इसोका प्रकार कहते हैं शातातपजी स्वगोत्रेति कि पुरुष अपने गोत्रकी स्त्रीके साथ गमनकरण कर्क भगंदरी होता है क्या भगंदर रोगकर्क युक्त होता है ॥ अब और किहा है कर्म विपाक संग्रहविषे अतिमानादिति ॥ जो पुरुष अतिमानसे क्या बड़े मानसे और बड़े क्रोधसे और बड़े स्नेहसे और बड़े भयसे धर्मके निश्चयको जान दाहुया भी अन्यथा करता है अर्थात् धर्मको त्याग देता है सो पूय और शोणितकर्क युक्त ब्रणी क्या छिद्रोंवाला होता है इह वातनिश्चित है १ अध्यापेति जो गुरु शिष्योंको कुटिलताकर्क भडाता है और जो शिष्य गुरुको ठगकर्क पडता है तिसगुरुको और शिष्यको जन्मांतरमें गंडमालारुयनाम रोग होता है अर्थात् हजोरांतिनको होती या है इसमें संशय नहि है २ अभक्षेति जो पुरुष अभक्ष्य अर्थात् नहि जो खाणे योग्य तिसको भक्षण करता है और जो पापी है इह दोनों जन्मांतरमें हजोरां रोगकर्क युक्त होते हैं अब और प्रकार किहा है

शातातपे स्वगोत्रस्त्रीप्रसंगेन जायते च भगंदरी । कर्म । अतिमानादतिक्रोधादतिस्नेहाद्वयादपि यो धर्मनिश्चयं जानन्नन्यथा कुरुते नरः स पूयशोणितवह ब्रणी जायेत निश्चितम् १ अध्यापयति शिष्यांस्तु यः प्रतार्य गुरुस्तथा शिष्यो गुरुं वंचयित्वा योऽधीते तस्य तस्य च जायते गंडमालारुयोरोगस्त्वत्र न संशयः २ तथा अभक्ष्यभक्षः पापी वा गंडमाली भवेन्नरः ॥ कर्मसं- ॥ चांडालकृतवापीपुतडागे कूपकादिषु स्नात्वा पीत्वा च सर्वांगे दाहवान् हस्तपादयोः स्फोटयुक्तस्तु स भवेदित्यपि प्रतिजन्मनि १ अनिर्देशायागोः पीत्वा पयः स्फोटकवान् भवेत् २ ॥ कर्मसं- ॥ देवानां ब्राह्मणानां च घनापहरणात् तथा स्वामिद्रोहाद्वा त रोगी पुरुषः स ततं भवेत् ३ ॥ कर्मसं- ॥ मोहयित्वा परान्यस्तु यं स्वभुंक्ते विगर्हितम् सोन्मादयात् युक्तः स्यात् त्रीणि जन्मानि मानवः ॥ ४ ॥

कर्मसंग्रहविषे चांडालेति चांडालने कीर्तियां जो दाउलीयां और कूप और तडागादि इनो विषे स्नानकर्क और इनो का जलपानकर्क पुरुष जन्मांतरमें संपूर्ण अंगो विषे दाहवाला होता है और तिसके हाथो और पादोमें फोडे होते हैं और किहा है कर्मसंग्रहविषे १ अनिर्देशेति अनिर्देशा अर्थात् दश १० दिनके अंतरहि गोकादुग्धपानकर्क पुरुष जन्मांतरविषे स्फोटक रोग वाला होता है २ और किहा है कर्मसंग्रहविषे देवानामिति तैसही देवता और ब्राह्मणके घनचुराणसे भी स्फोटक रोग वाला होता है और स्वामीके साथ द्रोहकरणसे पुरुष निरंतर वात रोगकर्क युक्त होता है ॥ ३ ॥ अब और प्रकार किहा है कर्मसंग्रहविषे मोहेति जो पुरुष होरदानूं मोहकर्क आप विगर्हित क्या निर्दितवस्तुको भक्षण करता है सो तीन जन्म तक उन्माद और वात रोगकर्क युक्त होता है ४

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ५३

अनिच्छतीमिति० नहि है भोगकी इच्छा जिसको ऐसी जो नवीन परस्त्री अर्थात् जिसने पतिके साथभी गमन नहिकीता उसके साथ जो पुरुष बलसे गमन करता है सो संपूर्ण जोड़ो विषे बढीपीडाको प्राप्त होता है० फेर रुचिसे रहित होता है अर्थात् जन्मांतर विषे भोगकी इच्छासे रहित होता है० फेर वात रोगवाला और ज्वर वाला भी होता है ५ यदिति० और जो ब्राह्मण स्नानके बिना संध्या और जप और हवनको मदसे करता है सो नित्यही हिडकी रोगवाला होता है० ६ रंकेति और जो रक्त वस्त्र और मुंगोंको चुराता है सो रक्त वात वाला होता है० और इसी को वृद्धवौधायनजी कहते हैं० सवर्णेति० जो अपनी जातीकी स्त्रीके साथ गमन करता है सो वात पित्त वाला और रक्त वाला भी होता है इस जगत्सवर्णाकर्के सजाति स्त्रीलयणी सो भी आधुनिक जातिविषे जाननी जैसे अवस्थी ब्राह्मणने अवस्थी स्त्रीविषे गमन करणा पाप है और

अनिच्छतीमिक्षतां य उपभुंक्ते परस्त्रियं वलादाक्रम्यसनरः सर्वसंधिपुवेदनाम्
५ तीव्रामाप्नोत्यरुचिमान् पुनर्वातयुतो भवेत् ॥ ज्वरीच० ॥ योऽकृत्वा ब्राह्म
णः स्नानं संध्या होमजपादिकं कुरुते च मदान्नित्यं सहिकारोगवान् भवेत् ६
रक्तवस्त्रप्रवालानां हारी स्याद्रक्तवातवान् ॥ वृद्धवौधायनः ॥ सवर्णागमने
वातरक्तवान् जायते नरः ॥ सवर्णागमने वातपित्तवान् पिजायते १ कर्म- ॥
लशुनं गृज्जनं तालफलं चाश्नाति यो द्विजः स वातपित्त रोगी च भवेज्जन्मत्रयं
नरः १ औषधार्थं भक्षणे तु न दोषः ॥ कर्मसं- ॥ वैद्यशास्त्रमदाद्यस्तु कृत्वौ
षधमथान्यथा प्रयोजयन्नरः सोऽयं रक्तपित्तयुतो भवेत् ॥ १ ॥

ऐसा अर्थ नहि कि ब्राह्मण ब्राह्मणी विषे गमन ना करे किंतु सो उचित है १ और इसीका फल कहते हैं जो कि हा है कर्मसंग्रह विषे० लगुनमिति० जो द्विज लसुन क्या थोम और गाजरा और तालफल इनाका भक्षण करता है सो तीनों जन्मों विषे वात पित्त रोगवाला होता है इसमे कोई गृज्जनशब्दका अर्थ गाजराको नहि कहते किंतु थोमके भेदको अथवा विषवाले वाण कर्के मारे हो एमृगके मांसको कहते हैं १ और इनको औषधीके निमित्त भक्षणकर तो दोष नहि है० और इसी फलको कहते हैं ० वैद्यति ॥ जो पुरुष वैद्यशास्त्रके मदने कीनी हाडि औषधको अन्यथा प्रयोजन कहता है अर्थात् एह दिवादे कुछ नहि है ऐसे कहता है सो रक्त पित्त रोगवाला होता है १ ॥

५४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब और प्रकार यमजी कहते हैं नित्येति जो पुरुष नित्य अनुष्ठान कया संध्या वंदनादि तिनाकों नहि करता सो जन्मांतरमें कफरोगवाला होता है और निरादरकों प्राप्त होता है इह भगवान् यमजीने किहा है १ और किहा है कर्मसंग्रहविषे गुरुमिति जो पुरुष बादोंसें गुरुकों जीतकरके प्रतिकूलताको करता है अर्थात् गुरुके साथ द्वेष करता है सो नित्यही दुःखकरके व्याकुल मनवाला होया २ मिरगी रोगवाला होता है १ इसविषे बौधायनजी कहते हैं ब्राह्मेति जो ब्राह्मणके श्वासांको रोकता है सो जन्मांतर विषे मिरगी रोगकरके युक्त होता है और जो हाथीके चुराखेवाला है सो शीर्षरोगी होता है अर्थात् शिर विषे रोगवाला होता है १ सोई किहा है कर्मसंग्रहविषे गुरुमिति जो पुरुष गुरुकों रोकनेवाला है सो शिर विषे रोगवाला होता है • इसी फलवाला होर कर्म कहते हैं प्रेति बहुत यज्ञा

यमः ॥ नित्यानुष्ठानरहितः कफरोगी भवेन्नरः पराभवं समाप्नोति चेत्याह भगवान्यमः १ कर्म- ॥ गुरुविजित्यवादैस्तु प्रतिकूलं समाचरेत् सोऽपस्मारी भवेन्नित्यं दुःखव्याकुलमानसः १ तत्र बौधायनः ॥ ब्राह्मणश्चासंरोधेन ह्यपस्मारी भवेन्नरः ॥ नागहारी च सततं पुरुषः शीर्षरोगवान् १ ॥ कर्म- ॥ गुरुपरोधी शिरसि रोगवान् जायते नरः ॥ अन्यच्च ॥ प्रायोपवेशनादीनां व्रतानां त्यागकारणात् ॥ शिरोरोगयुतो भूयात् यावत्तत्कर्मयोग्यता १ ॥ नारदः ॥ ब्रह्मचारी यदा श्रियाद्वित्रपात्रे विशेषतः । एकांशेन शिरोरोगी भवतीत्याह नारदः १ पद्मपुराणे ॥ ब्राह्मणद्विट् शिरोरोगी भवेज्जन्मत्रयं नरः ॥

दियों विषे जो दोषादि व्रत तिनांके त्यागकरणेसें शिरविषे रोगकरके युक्त होता है जितना काल तिस कर्मकी योग्यता है १ सोई नारदजी कहते हैं ब्रह्मेति जो ब्रह्मचारी भन्ने होये पात्रमे भोजन करता है सो आधे शिर विषे रोगकरके युक्त होता है अर्थात् अर्धशिरपीडा उसको मदा होती है १ और किहा है पद्मपुराणविषे जो पुरुष ब्राह्मणके साथ द्वेष करता है सो तीन जन्माविषे शिर रोगवाला होता है • इसमें द्वेष करके धर्म द्वेष और जीवकाका द्वेष जानना जैसे कि ब्राह्मणोंका धर्म वेद पाठादि कुछ अच्छा नहि क्योंकि पीछे याचना करणे पड़ती है इसादि कहकर इसकी प्रवृत्ति दूर करणी एह बहुत पाप है वास्तव एह कर्म सर्वोत्तमत है

अब और किहाहै कर्मसंग्रह विषे परवाचामिति जो पुरुष पर पुरुषोंकियो वातां विषे विघ्नहरताहै सो मुखरोगी होताहै अर्थात् मुख उसका पक्क जाताहै परवाची विषेविघ्न इसतही जानना किसभामे दूसरेकी वात सतीहो अथवा असतीहो उसकी खंडन येनकेन उपायकरे करणा और दूसरयां पुरुषोंकेमर्मस्थान जो हैं जोड़ तिन विषे मारणें अथवा दूसरेके दोषप्रकट करणें मुखरोगी होताहै १ ॥ अब और किहाहै शातातपजीने ॥ श्वेति जो पुरुष श्वान और विछीयोंसे लेकर जो कुत्सिबजीव तिनका स्पर्शकोत्ता होया अन्नभक्षणकरताहै सो दुर्गंधवान् होताहै अर्थात् उसके पासों दुर्गंधिआवतीहै • और किहाहै कर्म संग्रह विषे कि झूठी उगाई देणवाला मुखरोगी होताहै और शोणितपित्तवान् होताहै अर्थात् उसको रधिर करके युक्त पित्त रोगहोताहै • इसीको बोधायनजीकहतेहैं ॥ कि

॥ कर्म. सं. ॥ परवाचांविघ्नकर्ता मुखरोगीभवेन्नरः मर्मोद्घाटनतोऽन्येषां मुखरोगीप्रजायते १ शातातपप्रोक्ते- श्वमार्जारादिभिःस्पृष्टंभुक्त्वादुर्गंधवान्भवेत् ॥ कर्मसं. ॥ कूटसाक्षीभवेद्वक्त्ररोगीशोणितपित्तवान् ॥ बोधायनः वाग्विरोधंगुरोःकृत्वामुखरोगीभवेन्नरः ॥ शातातपप्रोक्ते- ॥ मूकोन्नहरणेनैवजिह्वारोगःप्रजायते ॥ कर्मसं. ॥ परेषांदुःखकरणात्सर्वदानृतभाषणात् जिह्वाच्छेदात्तथान्येषां पक्षपाताच्चसंसदि १ ॥ जिह्वारोगीभवेदास्ये व्रणीचैवाभिजायते. ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ विषप्रदशूलिर्द्विरोगीभवेजन्मनि जन्मनि २ ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ आमाम्नहरणेनैवदंतपीडाप्रजायते, ॥

गुरुके साथ वाक् विरोध करके अर्थात् गुरुको खोटे वाक्य कह करके पुरुष मुखरोगी होताहै सोई किहाहै ॥ शातातपजीने ॥ कि अन्न, चुगणें करके पुरुष मूक क्या जल्हा होताहै और उसको जिह्वा विषे रोग होताहै ॥ इसीको कर्मसंग्रह विषे किहाहै ॥ कि दूसरेको दुःखदेणें और सदाही झूठकहनेसे और दूसरेकी जिह्वा काटनेसे और सभामें पक्षपात करणेंसे पुरुष जिह्वाविषे रोग वाला होताहै और मुख विषे छिद्रों वाला होताहै १ ॥ अब और किहाहै शातातपजीने ॥ कि विषदेणे वाला पुरुष जन्मजन्मविषे छर्दी रोग क्या बमव्याधि करके युक्त होताहै ॥ २ ॥ और किहाहै शातातपजीने ॥ कि आमाम्न क्या आटा निसके, चुराणे करके पुरुष दन्तों विषे पांडों वाला होताहै ॥

अब और प्रकार कहते हैं जो किहा है कर्मसंग्रहविषे वेदमिति कि जो ब्राह्मण वेदको और धर्म शास्त्रको वेचता है अर्थात् धनलेकरके पढ़नेका फल दे देता है तिसके जन्मांतर विषे तिसकी जिह्वाका स्खलन होता है अर्थात् तिसकी जिह्वा गिड़ जाती है १ अपरीति और अपरिस्फुटवक्ता जो पुरुष अर्थात् राजाके तांडे व्यंगदारवाक्य कहने वाला सो जिह्वाविषे छिद्रोंवाला होता है ॥ अब और किहा है शातातपजीने कुकुटेति कुकुटके मारयां होयां पुरुष वक्रनासः क्या टेडीमें नासे वाला होता है ॥ और जो पुरुष विद्यापुस्तकहारी है अर्थात् ज्ञानवाले जो पंचरत्नादिक पुस्तक तिनके चुगने वाला अनेडमूक होता है अर्थात् जल्ला और बोला होता है ॥ असंदि तोते और मेना के मारणें पुरुष थथला होता है १ और प्रकार किहा है कर्मसंग्रहविषे

कर्मसं-॥ वेदं वा धर्मशास्त्रं वा विक्रीणीयाद्वियो नरः पुनर्जन्मनितेनास्या जिह्वा याः स्खलनं भवेत् ॥ अपरिस्फुटवक्ता वा जिह्वायां व्रणवानपि- ॥ १ ॥ शातातपप्रोक्ते- ॥ कुकुटे निहते चैव वक्रनासः प्रजायते विद्यापुस्तकहारी चानेडमूकः प्रजायते ॥ शुकशरिकयोः घातान्नरः स्खलितवाग्भवेत् १ कर्मसं- ॥ लवणस्यापहर्त्ता च शीर्णघ्राणां घ्रिपाणिकः घुर्घुरस्वरवांश्चैव जायते भुवि मानवः १ परदृष्टिविघातेन भिषक् मिथ्याचरेण च कामात्परस्त्रियंगत्वानेत्रो रोगी भवेन्नरः २ दंपतीभ्यां प्रवृत्तं तु मैथुनं यो निरीक्षते स नेत्रपूययुक्तः स्यात्स्त्रवद्रक्तश्च जायते ३ ॥

लवणमिति कि लवणके चुगणे वाला जो पुरुष टूटगए हैं अंग्रिक्या पाद और घ्राणक्या नासिका और पाणि क्या हाथजिसके ऐसा पृथिवीविषे होता है और घुर घुर स्वर वाला होता है अर्थात् उसका स्वर किसीको अच्छा नहि लगता १ परेति दूसरेकी दृष्टिविषे चोट लगाणे कर्के और वेद्यके मिथ्याचरणकरणे कर्के और अपनी इच्छासे पत्नीके साथ गमन कर्के पुरुष नेत्रगेमी होता है २ और किहा है दंपतीभ्यामिति कि जो पुरुष स्त्रीके साथ पतिके मैथुनको देखता है सो नेत्र पूय युक्त होता है अर्थात् तिसके नेत्र पाककरके युक्त होते हैं और स्त्रवद्रक्तभी होता है अर्थात् नेत्रोंसे रुधिरभी चलता है इससे ऐसा अभिप्राय है कि अपनी स्त्रीके साथ गमन कर्केका नहि देखना और पत्नी साथ गमन कर्के हाँ देखवास्ते देखनेका दोष नहि

श्रीर शातातपूजी कहते हैं घृतेति जो पुरुष घृत कौ चुराता है सो नेत्रों के रोगवाला होता है और पिता के मारणवाला चेतना से हीन होता है और माता के मारणवाला अंधा होता है १ शाकेति और शाक के चुराणवाला नीले नेत्रों वाला होता है और पित्रल के चुराण वाला कापिलीएं अक्षिण वाला होता है और तरामे के चुराणवाला रक्तविकारवाला होता है २ और किहा है कर्मसंग्रह विषे उच्छिष्ट इति जो पुरुष उच्छिष्ट इति मुख शुद्धि के विना उदय होते सूर्यकों और मध्याह्न विषे प्राप्त होएकों अथवा सायंकाल विषे प्राप्त होएकों देखता है तैसे ही नक्षत्रों को और चंद्रमा को देखता है सोमददृष्टि वाला होता है इसमें एह अभिप्राय है कि घृतनेत्रादि विषे चेतना करता है सो तिसके चोर को अंधा होणा योग्य है और जो पुरुष देवता के गृह विषे और ब्राह्म

शातातपः । घृतचौरस्तु पुरुषो जायते नेत्ररोगवान् पितृहा चेतनाहीनो मातृ
हांधः प्रजायते १ शाकहारी च पुरुषो जायते नीललोचनः रीतिहा कापलाक्षः
स्यात्ताम्रहारी च रक्तकः २ ॥ कर्मसं- ॥ उच्छिष्टः सन्य आदित्यं पश्येदुद्यंतं
वरे ॥ मध्यं गतमथाप्यस्तं मायांतं मुच्छिष्ट एव सन् १ नक्षत्राण्यथवा चंद्रं सभ
वेन्मंददृष्टियुक् देवद्विजग्रहे तीर्थेषु पुण्यस्थानेषु संस्थितम् २ प्रदीपं भजयित्वा
तुतिमिरव्याधिमान् भवेत् ३ पद्मपुराणे ॥ परेषामाक्षेरो धेनवावते अक्षिरोग
वान् ब्राह्मे ॥ नक्तांध्यं जायते तस्य योगवां नयनद्वये करोति वालुकाक्षेपं प्रक्षेपं
तृणभस्मनोः कर्म- ॥ मातापितृगुरूणां हि देवब्राह्मणयोस्तथा शृणोति निर्दां
बुद्ध्या यः कर्णाभ्यां तस्य शोणितम् १ पूयं च प्रस्रवति तरां वधिरत्वगतिस्तथा २

एकें गृह विषे और पुण्यस्थान विषे और तीर्थ विषे स्थित जो दीपक तिसको भनता है सो नेत्रों विषे है तिमरे जिसको ऐसा होता है ॥ १ ॥ सो किहा है पद्मपुराण विषे परेषामिति जो पुरुष किसकी अक्षियों में रोध करता है सो अक्षियों के रोगवाला होता है ॥ सोई ब्रह्मपुराण विषे कहा है वक्तमिति जो पुरुष गौयो के अक्षियों ऊपर लेतर अथवा कक्ष और भस्म सुटता है सो रात्रि में अंधा होता है ॥ अब और प्रकार कर्म संग्रह विषे किहा है 'मातेति जो पुरुष माता और पिता और गुरु और देवता और ब्राह्मणों की निर्दान बुद्धि कर्के क्या जाण कर्के श्रवण करता है सो कपाल एगो गवाला होता है क्या उसके कक्षाते रक्त और पाक चलती रहती है ॥ १ ॥ और बोला भी होता है ॥ २ ॥

५८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब और प्रकारका कर्म विपाक कहते हैं जो कि हा है ब्रह्मांड पुराण विषे. अभक्ष्येति. किजो नहि भक्षण करणे के योग्य चांडाल स्पृष्ट अन्नादि चीज उसके भक्षण करणे से कंठ रोगी होता है अर्थात् उसके कंठ विषे रोग होता है ॥ अब और प्रकारका कर्म विपाक कहते हैं जो कि हा है शातातपजीने ॥ स्वास्ति ॥ किजो पुरुष भगिनीकों मारता है सो नरकों भोग कर फेर जन्मान्तर विषे वधिर होता है ॥ अर्थात् बोला होता है इसमें (दयापा भगिनी मूर्तिः) इस वचन ते भगिनी है दया की मूर्ति तिसके प्रिय वचन ने के त्याग से उसका अवनेन्द्रिय दूर हाणा उचित है ॥ और वगुले कों मारणें दाला लंबे गलवाला होता है और लंबे मुखवाला भी होता है १ ॥ उष्ट्र इति ॥ ऊंट के मारयां होयां पुरुष विकृत स्वरवाला होवा है अर्थात् अप्रिय स्वरवाला होता है ॥ और कबूतर के मारयां होयां पीले हथेला होता है २ ॥ और कंदमूल के चुराणे से पुरुष छोटे हथेला होता है ॥ और दुग्ध के चुराणे वाला पुरुष खिन्न हथे वाला होता है ॥ अर्थात् हाथ उसके परसीने वाले होते हैं ३ ॥ श्री

ब्रह्मांड पुराणे ॥ अभक्ष्य भक्षदोषाच्च कंठ रोगी प्रजायते ॥ शातातप प्रोक्ते ॥ स्वसृषाती च वधिरेन नरकांते प्रजायते वकघाती दीर्घगलो भवेद्देमुख दीर्घकः १ उष्ट्रे विनिहते चैव जायते विकृतस्वरः पारावते च निहते पीतपाणिः प्रजायते २ कंदमूलस्य हरणाद्भूस्वपाणिः प्रजायते ॥ क्षीरहारी च पुरुषः खिन्नपाणिः प्रजायते ३ अगम्यागमनाच्चैव भुजस्तंभः प्रजायते ॥ कुनखी नरकस्यांते जायते विप्रहेम हत् ४ उदक्या वीक्षितं भुक्त्वा जायते क्रिमिलोचनः ॥ अभक्ष्य भक्षणाच्चैव जायते क्रिमयो हृदि ५ ॥

किजो नहि गमन करने के योग्य स्त्री अधम जातिकी अथवा अपनी जातिकी उसके साथ गमन करणें से पुरुष भुजस्तंभ होता है अर्थात् उसकीयां भुजा कां बंध विषे अशक्त होतीयां हैं और किजो पुरुष ब्राह्मण के सुवर्ण कों चुराता है ॥ सो नरकों भोग कर के फेर खोंटे नखोंवाला होता है ४ और जो पुरुष रजस्वला स्त्री करके देखया हुया अन्न भक्षण करता है सो क्रिमिलोचन होता है ॥ अर्थात् उसके नेत्रों विषे क्रिमि क्या कीड़े होते हैं ॥ और किजो नहि भक्षण करणें के योग्य वस्तु उस के भक्षण करणें से हृदे विषे क्रिमि होते हैं ॥ पिच्छे जो कि हा है कि अभक्ष्य के भक्षण की तयां होयां कंठ रोगी होता है और इस जग कि हा है कि अभक्ष्य भक्षण ते हृदे विषे कीड़े योंवाला होता है इस वास्ते दोनो फल होते हैं कोई कहते हैं कि एह अभक्ष्य भक्षण का दूसरा फल उसी पुराण विषे कि हा है और कोई कहते हैं कि एह वचन होर किरा है जेकर ब्रह्मांड पुराण का हुंदा तद पहले वचन के साथ हि हुंदा ॥ ५ ॥

इसीकाप्रकार किहाहै कर्म संग्रहविषे ॥ गजइतिकि हाथी और घोड़ेके मारयां होंयां पुरुष कुक्षिविषे कीडयों कर्के युक्तहोताहै० ॥ और शातातपजीकहतेहैं ॥ गन्योंका जो विकार क्या गुडादिक तिसके चुराणें वाला गुल्मवान् होताहै अर्थात् उसके उदरमें गोला रोगहोताहै १ गुर्विति औरजो पुरुष गुरुका प्रत्यर्थीहोताहै अर्थात् गुरुकेसाथ शत्रुभावकरताहै सो गुल्मवान् होताहै अर्थात् उसके उदरमेंभीगोलारोगहोताहै ॥ और प्रकारकिहाहै कर्मसंग्रहविषे ॥ भृत्येति जीवाह्मण नौकरी द्वारा भडाताहै तिसदोषते और कन्याकेदूषणकरणेते अर्थात् कुमारी कन्याके साथ भोगकरणेते सो एकजन्म स्त्रीहवान् होताहै अर्थात् लिप्फ रोगकर्के युक्त होताहै इसमें नौकरी उहजान्नी कि जिसको भडाणाहै उसीसेनियत द्रव्या को लेना जाँसकि

कर्मविपाकसंग्रहे- ॥ गजेविनिहतेचाश्वेक्रिमिकुक्षिः प्रजायते- ॥ शातातपः ॥ इक्षोर्विकारहारीचभवेदुदरगुल्मवान्- १ गुरुप्रत्यर्थितायातोगुल्मवान् जाय तेनरः- ॥ कर्मसं- ॥ भृतकाध्यापकोयेस्तुकन्यायादूषणान्नरः स्त्रीहवान्सभ धं द्विप्रः जन्मकंतस्यदूषणात् १ योब्रह्मविष्णुरुद्राणांभेदंमोहमदावृतः ॥ साधयेदुदरव्याधियुक्तोभवतिमानवः २ राज्ञावातनियुक्तेननियुक्तो धर्म निश्चये पुरोहितः प्राड्विवाकः सचिवोवान्यथाचरेत् जलोदरं संप्राप्नोति पापो जन्मत्रयं पुनः ॥ ३ ॥

५००) रुपयसे सारस्वतको भडामोगा ऐसे संकेतसे दोषहै और योग्यादेशालाके भडाणे वास्ते राजादियोंने नियुक्तकीतेहैं तिनको दोषनहि १ यइतिकि ब्रह्मा और विष्णु और शिव इह तीनो एकमूर्तिहैं तिनोका जो पुरुष मोह और मद कर्के युक्तया २ भेदकरताहैं अर्थात् तिनको भिन्न २ कहताहै सो उदरकी व्याधि कर्के युक्तहोताहै २ राज्ञेति और राजाकर्के और राजाके नौकरों कर्के धर्मके निश्चयविषे जोडगा होया जोपुरुष अथवा पुरोहित और प्राड्विवाक क्या व्यवहारका द्रष्टा न्यायकरणे वाला अथवा वजीर जे कर अन्यथा करे अर्थात् जो करणे योग्यहै तिसकोनकरे तां सो पापी तीनजन्म जलोदर रोगको प्राप्तहोताहै ३

६० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

सोई किहाहै पद्मपुराणविषे जो पुरुष गुरुकी स्त्रीकेसाथगमनकरताहै सो जन्मांतरमें उदरव्याधि कर्के युक्त होताहै उदरव्याधिका जलादर रोगकर्के युक्त होताहै ॥ अब और प्रकारका कर्म विपाकशातातपजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष द्रव्यकेहोयांहोयां निंदित अन्नको भक्षणकरताहै अथवा माडे अन्नकोदेताहै सो जन्मांतरमें मंदाग्नि वाला होताहै अर्थात् तिसको खादा होया अन्नपच तानहि ॥ सोई वृद्धपराशरजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष गौके मांसकोभक्षणकरताहै सो जन्मांतरविषे मंद होगयाहै जठराग्नि जिसका ऐसाहोताहै इसजगा मंदाग्नि पद सभनां उदर व्याधियांका उप लक्षणहै दोषके अधिकहोणेतें ॥ सोई कर्म संग्रह विषेहै ॥ जो पुरुष कारणसे विना हिंविपदे कर्के फेर तिसकोप्रसन्नकरताहै सो जन्मांतरविषे मंदाग्निहोताहै और अरुणमृत्यु क्वा थोडेकालमें मृत्युको प्राप्तहोताहै १ सोई वौधायनजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष त्रेता अग्निको नष्ट करताहै

पद्मपुराणे ॥ उदरव्याधियुक्तस्तु भवेद्दुर्वगनागमे ॥ उदरव्याधिर्जलादरव्या धिरित्यर्थः ० शातातपः ० नरो भवति मंदाग्निः सति द्रव्ये कदन्नभुङ्क्ते ॥ कदन्नदः इत्यपि पाठः । वृद्धपराशरः । गोमांसखादको मंदजठराग्निर्भवेन्नरः । कर्मसं-
 अकारणं गरंदत्वा प्रसादयति यः पुनः समंदाग्निर्भवेदेव मल्पमृत्युश्च जायते ।
 वौधायनः । अग्नेर्मांसं भवेत्तस्य यस्त्रेताग्निर्विनाशकः । शातातपः । गुरुजाया भिगमनान्मूत्रकृच्छ्रः प्रजायते पशुयोनी च गमनान्मूत्रकृच्छ्रः प्रजायते । १ ॥
 वायुपुराणे ॥ सुरापो मूत्रकृच्छ्री स्यादश्मरी रोगवांश्च वा । शातातपः ॥ मानुः
 सपत्नी गमने जायते चाश्मरी गदः ॥

अर्थात् दक्षिणाग्नि और गाईस्पत्याग्नि और आहवनीय अग्नि इनको नष्ट करताहै तिसको जन्मांतर विषे अग्निकी मंदता होतीहै ॥ अब और प्रकारका कर्मविपाक कहतेहैं शातातपजी ॥ गुरुकी स्त्रीकेसाथ गमनकरणेमें जन्मांतरविषे मूत्र कृच्छ्र रोगकर्के युक्त होताहै और पशुयोनिविषे गमन करणसेमो मूत्रकृच्छ्र रोगकर्के युक्त होताहै इसजगा दोवार जो मूत्रकृच्छ्र पद आयाहै इसतें जन्मणाके मूत्रकृच्छ्र रोग दो प्रकारकाहै इकमधुमेहहै और दूसरा जलमेहनामकर्केहै ॥ १ ॥ सोई वायुपुराणमें कहाहै ॥ मदिराके पानकरणेवाला मूत्र कृच्छ्र रोगकर्के युक्त होताहै और पथरी रोगवा ग होताहै ॥ इसको शातातपजीभी कहतेहैं माताकीसाकणके साथ गमन कीतयांहोयां पथरी रोगवाला होताहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०च० टी० भा ॥ ६१

दुग्धकें चुराणे वालापुरुष बहुतमूत्रणे वालाहोताहै ॥ सोई कहाहै कर्मसंग्रहविषे ॥ सौंदर्ये ति ॥ किजोपुरुष एहसुंदरस्त्रीहै इसअभिलाषावालाहै सो बहुते मूत्रणैवालाहोताहै और चांडा लीकेसाथ गमनकरणेतें प्रमेहव्याधि वालाहोताहै १ और जो तिर्यग्गामीहै अर्थात् पशुयोनिके साथ गमनकरताहै सो मूल और प्रमेह रोगककें युक्तहोताहै ॥ पर्वणीति कि जो पुरुष पर्वणि पेंगमनकरताहै और कन्याके साथगमनकरताहै सो वातप्रमेहरोगककें युक्त होताहै तिज्ञाज न्मोंविषे ॥ २ मध्विति कि जोमाताकेसाथ गमनकरताहै सो निरंतर मधुमेही रोगवालाहोताहै और जो माताकी साकनके साथ गमनकरताहै सोअधमनर अर्थात् खोटा पुरुष जलमेही रोग वाला होता है ॥ ३ ॥ और जो पुरुष नित्यहि भगिनोकें साथ गमनकरताहै अर्थात् भयनके साथ सो पुरुष इक्षु मेही रोगवाला होताहै इक्षु मेहककें मूत्रगन्नेके रसके बराबरहोताहै ॥

दुग्धचौरस्तुपुरुषोजायतेवहुमूत्रवान् ० कर्म सं ० सौंदर्यगामिनेरो
गोजायतेवहुमूत्रता ० इयंसुंदरीइयंसुंदरीत्यभिलाषीसौंदर्यगामी यद्वा
सौंदर्यगामीतिपाठः ० चांडालीगमनात्सर्वप्रमेहव्याधिमान्भवेत् १ तिर्य
ग्गामीसशूलनप्रमेहेनयुतोभवेत् ० पर्वणियायीचमनुजः कन्यागामी
तथैवच वातप्रमेहयुक्तः स्यात्त्रीणिजन्मानिमानवः २ मधुमेहीमातृगामी
सततंजायतेनरः ॥ पितृभार्यादिगामीच जलमेहीनराधमः ३ योगच्छेद्र
गिनीनित्यमिक्षुमेहीतिनिश्चयः ० पितृभार्यासपत्नीजननीत्यभिधीयते ४
वायुपुराणे ० ब्राह्मणस्वर्णहारीच प्रमेही जायतेनरः ० शातातपः ०
मातृगामीभवेद्यस्तु तस्यलिंगंविनश्यति ० चांडालीगमनेचैव हीनहर्षः
प्रजायते १ दुष्टवीर्यस्तुपंडः स्यात् व्रणीगुह्यांडकेसदा २ ॥

४ ॥ इसीका प्रकार वायुपुराणविषे कहाहै ॥ ब्राह्मणंति ॥ कि जो ब्राह्मणोंके सुवर्ण को चुराताहै सो प्रमेह रोग वालाहोताहै ॥ अब और प्रकारका कर्म विपाक शाता तपजी कहतेहैं ॥ मात्रिति ॥ कि जो माताके साथ गमनकरताहै उसपुरुषका लिंगनष्ट होताहै और जो चांडालीके साथगमनकरताहै, सो हर्षसेहीन होताहै १ और खोटे वीर्यवाला होताहै अर्थात् उसका वीर्य पुत्रके उत्पन्नकरणमें समर्थ नहीं होताहै पंडः अर्थात् नपुंसक होताहै फेरगुदा और वृषण उसके छिद्रोवाले होतेहैं ० इसजगा चांडाली गमनके फल ४ है और कोइ कहतेहैं कि दुष्टवीर्य जो पुरुषहै अर्थात् जिसनेकिसका वीर्य औपध्यादि ककें दुष्टकीताहै सो पुरुषनपुंसकहोताहै इत्यादिअभि २

६२ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब और प्रकारका कर्मविपाक किहाहै कर्मसंग्रहविषे ॥ नृपइति किजो राजा भृत्यादिकोंके हाथोंसे आदलेकर जो संग्रह हैं तिनको अपगधके बिनाही कट देता है तिसका मुख जन्मान्तरविषे अग्नीकर्म दग्धकीति होएकीन्याई होता है १ ॥ अब और कहते हैं शातातपजी सुगलयइति कि जो पुरुष देवताके मंदरमें और जलमें और मार्ग क्या स्तने में बिष्टा करता है तिसको दारुणक्या बड़ा कठन पापरूप एक गुदामें रोग होता है १ सोई किहाहै कर्मसंग्रहविषे ॥ विमूत्रेति जो पुरुष बिष्टा और मूत्रकोंकरके और शौचके बिनाही भोजन करता है सो जन्मान्तरविषे प्रस्रवद्बुद होता है अर्थात् उसकी गुदामदाही बगदोर होती है १ और उसको जन्मान्तरविषे केशते भी अतिकेशदेणे वाली जीपीडा सो होती है इस अद्भ्युतश्लोकका संबन्ध पिछले श्लोकके साथ जानना ॥ दत्वेति और

कर्मसं- ॥ नृपो भृत्यादिहस्तादीनि पराधं विनैव यः छेदयेत्तस्य लपनं भवेत् दग्धमिवाग्निना १ शातातपः ॥ सुरालये जले वापि मार्गे विष्टां करोति यः गुदरोगो भवेत्तस्य पापरूपः सुदारुणः १ कर्मसं- ॥ विमूत्रेति सर्जनं कृत्वा योऽकृत्वा शौचं कर्मेतत् भुंक्ते जन्मान्तरे भर्त्यः भवेत्स प्रस्रवद्बुदः १ भवेच्च दारुणपीडा तत्र कृच्छ्राति कृच्छ्रादा दत्वा यो वेतनं धीयादादायापि च वेतनम् २ ॥ अध्यापयेच्च जुहुयांजपेच्चाशौयुतो भवेत् ॥ स्मार्त्ताग्निं शमयेद्यस्तु सोऽतीसारयुतो भवेत् ३ पद्मपुराणे ॥ अतीसारी च भवति यस्त्रेताग्निविनाशकः ॥ शातातपः ॥ स्त्रीहंता चातिसारी स्यात् दारनाशयुतोऽपि वा दावाग्निदायकश्चे वरक्तातीसारवान् भवेत् ॥ १

जो मुल देकरके पडता है २ और जो मुल लेकरके भडाता है और जो मुल लेकरके हवण करता है और जप करता है सो आर्शस् करके युक्त होता है अर्थात् बवासीर करके युक्त होता है ॥ और जो स्मार्त्ताग्निकों बुझाता है सो अतीसार करके युक्त होता है १ इसीका प्रकार किहाहै पद्मपुराणविषे ॥ अतीति कि जो घेता अग्निके नष्ट करणें वाला अर्थात् दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि और आहवनीयाग्नि इन तीनों के नष्ट करणें वाला है सो अतीसार रोग करके युक्त होता है ॥ इसीका प्रकारांतर शातातपजी कहते हैं ॥ स्त्रीहंतेति कि जो पुरुष स्त्रीको मारता है सो अतीसार करके युक्त होता है फेर जन्मान्तर विषे स्त्री उसकी नष्ट हो जाती है और दावाग्निदायक अर्थात् जो पुरुष वनको अग्निलगाएँ वाला सो खदिरकर्के युक्त जो अतीसार रोग तिसकर्के युक्त होता है १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ६३

आपसे पुत्रकीस्त्रीके साथ गमनकीतेहोयां जन्मांतरविषे पुरुषकृष्ण कुष्टीहोताहै अर्थात् तिसको कृष्णकुष्ट क्या कालाकुष्टहोताहै जिससे कालेकाल दाघसारेदेहविषे हुंदेहैं ॥ पितृष्येति कि चाचे कीस्त्रीके साथ गमनकरणेते पुरुष जन्मांतरविषे कटिकुष्टी क्या लक विषे कुष्टवालाहोताहै २ ॥ मातुलान्याइति और मामिके साथ गमन करणेते पुरुष जन्मांतर विषे दृष्टीकुष्टवालाहोता है अर्थात् तिसके नेत्रों विषे कुष्टहोताहै ॥ और कर्म विपाक संग्रहका वचनहै ॥ मात्रेति जो पुरुष शास्त्रके निर्णे विषे माताके साथ और गुरुयोंके साथ क्या पिताके साथ सपदां करके प्रातहोताहै अर्थात् तिनके मतपर नहि चलना सो जन्मांतर विषे प्रदर व्याधि क्या गुदा विषे व्याधि वाल्य होताहै १ ज्येष्ठेति ज्येष्ठभ्राता क्या बडेभ्राताके नविवा

स्ववधूगमनेचैवकृष्णकुष्टीप्रजायते । स्ववधूःस्वपुत्रभार्या । पितृव्यपत्नीगमनात्कटिकुष्टीप्रजायते २ मातुलान्यास्तुगमनात्दृष्टिकुष्टीप्रजायते । कर्म । मात्रावागुरुणावापियोनरःशास्त्रनिर्णये स्पर्धयासौप्रजायेत प्रदरव्याधिमान्भुवि १ प्रदराऽत्रगुदव्याधिः । ज्येष्ठभ्रातर्यनूढतुयेनुजोद्वहतिस्वयम्समवेन्मृतपत्नीकउष्णज्वरसमन्वितः २ संधिरार्षः । शातातपः ॥ मित्रभार्याभिगामीचमृतभार्याप्रजायते ॥ विप्ररत्नापहारीयःसोनपत्यःप्रजायते १

इकीत्यां होयां जो कनिष्ठ भ्राता अर्थात् छोटाभाई आपहीविवाहकरलेताहै सो जन्मांतरमें मृत स्त्रीवालाहोताहै क्या उसकीस्त्री मरजातिहै और उष्णतापकर्के युक्तहोताहै २ सोडे कर्मविपाक शातातप जो कहतेहै मित्रभार्येति कि जो पुरुष मित्रकीस्त्रीके साथ गमनकरणेवाला सो जन्मांतरविषे मृतस्त्रीवालाहोताहै अर्थात् उसकीस्त्रीमरजातिहै विप्ररत्नेति जो पुरुष ब्राह्मणोंकेरत्नोंको चुराताहै सो जन्मांतरविषे संतानले रहित होताहै इसमेंऐसाअभिप्रायहै कि तन्नाथ मणिआदि हीरकादिकाहै और संततिकोभो रत्नके तुल्यहि कहतेहैं सो तिसके चुराणेमें ऐसाफलहोणा उचितहै एक पहलेभी आयाहै परंतु स्त्रीमरणप्रसंगसे संततिमरणकाप्रसंगफेर'किहाहै १ ॥

६४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

और इसी प्रकार किहाई कमसंग्रहविषे अनन्येति किजोपुरुष अनन्वगामि भाग्या नूं अर्थात् पतिव्रता भायांतूं फेर दुष्टभावमें रहित जोहै तिसनूं कारणके विनाहीं त्याग देताहै सो संग्रहणरोग वाला होताहै १ अतीति जोपुरुष पूर्वजन्मविषे होरनों लोकोंके विशयानूं अर्थात् देशानूं नष्टकरताहै सोदूसरे जन्मविषे पामारोगवाला होताहै अर्थात् तिसको सुकी खुरक हो तोहै और सहितपाकके तिसकोरुधिर भी वगंताहै २ और इसीकाप्रकार शातातपजी कहतेहैं तैलेति कि तैलके चुराणें कर्के पुरुष कण्डू रोगवाला होताहै ० और वस्त्रों केचुराणें वाला शीर्षांगी होताहै अर्थात् कट्टे गएहैं अंगजिसके ऐसाहोताहै और दूसरे जन्मविषे नश्व होताहै

कर्म. ॥ अनन्यगतिकांभाय्यामदुष्टांकारणविना परित्यजतियः सोथग्रहणी रोगवान्भवेत् १ अतिलुम्पतियोन्येपांविषयान्पूर्वजन्मनि अन्यजन्मनि पामावान्सपूयंस्त्रवतिशोणितम् २ शातातपः । तैलचौद्येणभवतिनरः कंडूतिरोगवान् वस्त्रहारीचशीर्षांगीभवेन्नान्यजन्मनि १ स्वाम्यांगनाभिगमनेजायतेदं दुमंडलम् सौगंधिकस्यहरणादुर्गंधांगः प्रजायते २ कुटीगोवधकारीचनरकांतेभवेन्नरः ॥ स्वसुतागमनेनैवरक्तकुंठप्रजायते ३ भ्रातृजायाभिगमनेगुल्मकुटीप्रजायते ॥ शिवगीतायां ॥ यस्तुहन्तिवहूनजंतून्कुष्ठरोगीभवेत्तुसः ॥

१ स्वाम्यांगेति और म्यामीकीस्त्रीके साथ गमन कीत्तयां होयां पुरुषसारेदेह विषे ददुवालाहोताहै ० और सुगंधि विशिष्टजो द्रव्य तिसके चुराणेंतें दुर्गंधि विशिष्ट अंगो वाला होताहै २ और गोवधकरणें वाला नरकभोगकरकुटी होताहै ० और आपणी कन्याके साथ गमन करणें कर्के पुरुष जन्मांतरमें रक्तकुष्ठरोग वाला होताहै ३ और भ्राता की स्त्रीके साथ गमनकीत्तयां होयां पुरुष गुल्मकुटी होताहै ० अर्थात् तिसको फोडया वाला कुष्ठ होताहै ० सोई किहाहै शिवगीता विषे ॥ यस्त्विति जो पुरुष बहोतयां जीवांतूं मारताहै सोकुष्ठरोगकर्के युक्तहोताहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ६५

अब और प्रकारका कर्मविपाक कहते हैं श्रुतिरिति कि श्रुति और स्मृति तिनके विरुद्ध जो अजा क्या बकरी और अश्व क्या घोड़ा और महिषी इनसे आदलेकर जो खोदे दान तिनका प्रतिग्रह उठाएँते अर्थात् इस दान को लेनेंते १ और निषिद्धस्त्री क्या चांडालादिकों की स्त्री तिसके साथ गमन करणेंते और उत्तम ब्राह्मण के नाश करणेंते और वेद की परीक्षा के कीर्तियां होयां और चोर और व्याघ्रादिकों के मृत्यु होणेंते २ और द्वन्द्वयुद्ध विषे मरणेंते और गुरु के धिक्कार से अर्थात् तिसकार से और तडागादिकों के नष्ट करणेंते और वाह्यशास्त्र के जीविका करणेंते अर्थात् नास्तिकों के शास्त्र के जीविका करणेंते ३ और ब्राह्मण का धन चुगणेंते पुरुष सब नाश्रमां विषे बड़ी पीड़ा के युक्त होता है और तप्तज्वर वाला भी होता है ४ सर्वदातुः स्वचित्तः स्यात्परचित्तविनाशकः ॥ और जो पुरुष दूसरे देविचिन्तन के शादिंदा है सो आपसदातुः स्वचित्तः युक्तचित्त वाला होता है अर्थात् तिसके मन विषे पुत्रस्त्री आदि सभ तर्ही की पीड़ा रहती है एह अर्थ (परचित्तविनाशकः) इसका है ॥ और (परचित्तवित्तशकः)

कर्मसं० श्रुतिस्मृतिविरुद्धानियानिदानानिसंतिवै अजाश्वमहिषादीनांतत् प्रतिग्रहकारणात् १ निषिद्धयोपि द्गमनाद् द्विजाग्र्यस्य वधादपि वेदस्य च परीक्षायां दस्युव्याघ्रादिभिर्मृतौ २ द्वन्द्वयुद्धादिनरणात् करणाद्गुरुधिकृतेः तडागादेश्च भंगाच्च वाह्यशास्त्रोपजीवनात् ३ ब्राह्मणस्वापहरणात्सर्वीगेऽपुत्रजायते वेदनादारुणा तप्तज्वरश्चैव भवेत्सदा ४ सर्वदातुः स्वचित्तः स्यात्परचित्तविनाशकः ॥ भयभीतान्नरक्षेद्यः क्षुत्पिपासातुरान्स्वयम् शक्तः सन्न सर्वदा जंतून् कस्यनोवधवृत्तिकः ५ निषिद्धवृत्तिर्जीवी च जातः अपि श्रीमतां कुले दंशाद्दे शांतरं याति क्लेशयुक्तो भवेत्सदा ६

जिस जगा ऐसा पाठ है तिस जाग दूसरा अर्थ करणा ॥ भयभीतानिति ॥ और भय के डरयां होयां जीवोंनू और क्षुधातृपाक के आतुर होयां होयांनू जो पुरुष समर्थवान् है भी परंतु नहि रखदा है सो जन्मांतर विषे कंपित होता है अर्थात् उसका देह कमदा है और जो पुरुष जीवोंको मारकर जीविका करता है सो भी कंपतरोग के युक्त होता है इसमें ऐसा अभिप्राय है कि जो धनादि नाशभावना के भयभीत अथवा क्षुधातुर अथवा शस्त्र धारी के आगे स्थित होया होया है सो कंपमान होता है जिस समर्थने तिसकी रक्षानदिकी तो मोभी तैसा होणा योग्य है ५ निषिद्धंति और जो पुरुष निषिद्धवृत्तिक के जीविका करता है सो धनवाले कुल विषे जन्म पाता है फेर आपणें देखते देशांतर को अर्थात् अन्य देश को जाना है और सदा भी क्लेश करके युक्त होता है ६

६६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब शातातपजी और प्रकार कहते हैं प्रतिमाया इति कि प्रतिमा जो ईश्वरकी मूर्ति तिसके नष्टकरणे वाला पुरुष अप्रतिष्ठन होता है अर्थात् प्रतिष्ठामें रहित होता है और जो विशु और शिव और देवता और अतिथि और पुत्रादिक तिनको नैवेद्य खाए संविना क्याड़नको ना ख्याए कर्के आप भोजन करता है सो अधर होता है ० अर्थात् दरिद्री होता है १ और जो जपका नष्ट करता है सो सबना कार्यविषे असिद्धार्थ होता है अर्थात् तिसके सर्वकार्य नष्ट होते हैं जप इसजगा सकाम अथवा अकाम हो तथापि कार्य सिद्धिके अर्थ है सकाम त्रिवर्गके अर्थ है और निष्काम मोक्षार्थ है तिसके दूष्करणे बालेको असफल होना समुचित है और जो दानविषे विघ्नक करता है सो दरिद्री होता है २ और जो पुरुष होरणां जीवान् पापाण

शातातपः ॥ प्रतिमायाभंगकारीन्वप्रतिष्ठः प्रजायते अनिवेद्यसुरादिभ्यो भुंजानो जायतेऽधरः १ ॥ सुरादिभ्यो हरिहरादिभ्यो वैश्वदेवताभ्यश्च आदि शब्दादतिथिपुत्रादिभ्यश्च ॥ अधरः निकृष्टो दरिद्र इति यावत् ॥ सर्वकार्ये असिद्धार्थो जपघाती भवेन्नरः ॥ दरिद्रो जायते मर्त्यो दानाविघ्नं करोति यः २ ॥ उत्पादयति यो न्येषां पापाणेन प्रहारदः तलप्रहारकृन्नेव जातोऽपि धनिनां कुले ३ धनेन रहित प्रायेदिशान्तरगतो भवेत् ॥ महाक्लेशी च हृद्रोगी उदावर्ती भवेन्नरः ॥ ४ ॥ रजस्वला गामिनं च तदुच्छिष्टस्य भोजनं प्रजाग्रहः प्रगृह्णाति ततस्सज्वरवान् भवेत् ॥ ५ ॥

कर्के मारता है और हाथ कर्के प्रहार करण वाला जो है क्या पीडा देणैवाला है सो धनवाले या के कुलविषे जन्म पाता है ३ फेरधनसे हीन होता है फेरदेशान्तरविषे चले जाता है और बड़े क्लेश कर्के युक्त होता है और हृदयविषे रोगवाला होता है फेर उदासी कर्के युक्त होता है अर्थात् तिसका चित्त स्थिर नहि रहता ० इहां उदावर्त्त नाम उलटीका भी है ४ रजस्वलेति और रजस्वला स्त्रीके साथ गमनकरणे वाले पुरुषनू और तिसीका उच्छिष्टभोजन करण वाले पुरुषनू प्रजाग्रह नाम कर्के जाग्रह होता है सो ग्रहण करता है ० इसी कारणते ज्वर रोगवाला होता है इसमें भी ऐसे योग्यता जानणी कि काम रूप ज्वरके दूर कर्णैवाले जिसने रजस्वला गमनकीता है तिसको ज्वर होना योग्य है ५

और अतीसार रोगकर्के युक्त होता है और कुष्ठी होता है और सबनां अंगाविषं वातरोगकर्के युक्त होता है और स्त्रीजेकर ऐसा काम करे अर्थात् अपना धर्म छुपाकर पुरुषकों प्रलोभन करती हुई तिसके साथमे तां तिसके गर्भकानाश होता है और प्रदर रोगकर्के युक्त होती है अर्थात् पैतरगे गकर्के युक्त होती है ६ रजस्वलेति और जो पुरुष रजस्वलास्त्रीनं अथवा चांडाल की स्त्रीनं गमन करता है तिसपुरुषनं ज्वर नामाग्रह ग्रहण करलेता है तिसी कारणसे संताप कर्के युक्त होता है फेर ज्वररोगकर्के युक्त होजाता है • तस्करइति और जो पुरुष चोर और दयासे रहित होया २ वृथाही जीवोंको मारता है और जो आचारसे रहित है और अधर्मकी निंदाकरणे वाला है ८ और अधर्म क्या पाप तिसविषे प्रतीतीयाला है तिनंसवनानुं ज्वरनामकरके जो ग्रह

अतीसारीचकुष्ठीचगात्रेसर्वत्रवातवान् स्त्रीचिद्वर्गस्यनाशः स्यात् प्रदरश्च प्र जायते ६ रजस्वलांवाचांडालींयोगच्छेत्तनरंज्वरः गृह्णाति तेन संतापीज्व रीभवति मानवः ७ तस्करो यो वृथा प्राणिहिंसको निर्दयश्च यः आचाररहि तोयश्च परधर्मस्य निंदकः ८ अधर्मनिरतो यश्च तानेतां ज्वरसंज्ञकः ग्रहो गृ ह्णाति तन्मात्रादेक रात्रिज्वरी भवेत् ९ द्विरात्रेण त्रिरात्रेण च तूरात्रज्वरेण च शीतज्वरेण सततं ज्वरेणोष्णज्वरेण च १० युतो भवति ॥ अशुचिर्यः स्पृश द्वेव ब्राह्मणं बुद्धिपूर्वकम् तं गृह्णाति प्रचंडारूपो ज्वरस्तद्ग्रहणात्ततः ११ अप्रक्षालितपात्रेयः अप्रक्षालितपद्मगः भुंक्ते पराह्णे तं कालग्रहो गृह्णा ति मानवम् १२

सो ग्रहण करता है तिसके स्पर्शहोषेनें एक रात्रि ज्वरी होता है अर्थात् प्रतिदिन उसको ज्वर आवता है ९ और जेकर जादे पाप हेवेतां दो रात्रि अथवा तीन रात्रि अथवा चार रात्रि के ज्वरकर्के युक्त होता है ऐद्विरात्रादिज्वरदीर्घ कालकर्के जात्रे है और शीत ज्वर कर्के और सात रात्रि ज्वरकर्के अथवा उष्णज्वर कर्के युक्त होता है १० अशुचिरिति • कि जो पुरुष अशुचि पात्र अपवित्र हुआ हुआ भवताकों और ब्राह्मणों बुद्धिपूर्वक रूपसे करता है तिसपुरुषक नाम तिसका ज्वरग्रहण करता है तिसके ग्रहण करणेसे पूर्वकी फल होता है ११ अप्रक्षालितेति कि जो द्विजपुरुष अनमांजे पात्र विषे और पयसोंकी पात्रों कर्के और साधुका साथ भोजन करता है उसको कालनामाग्रह है सो ग्रहण करता है • १२

६८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

तिसके ग्रहण करनेसे अनंतर फल कहते हैं अतर्गिति किसो पुरुष अंतर्दाहवाला होता है और पीतनेत्र वाला भी होता है अर्थात् नेत्र उसके पीले होते हैं इसी कर्के पीली है बिछा और मूत्र जिसका ऐसा होता है १३ आदित्यादीति कि जो पुरुष सूर्यसे आदलेक के अष्टमस्थान विषे स्थित जो ग्रह उन्को ग्रहयज्ञ नहि करता है उसको काल नायक नामा ग्रह ग्रहण करता है १४ और उस विषे एहचिन्ह होते हैं क्या बारंवार मुख मुकना और बडेभय के दंष्ट्रवाला ज्वर होना १५ परस्यति कि जो पुरुष मृषा कहता हुआ अर्थात् झूठ कथन करता हुआ पर पुरुषों के मन को संतापन करता है सो पितृग्रह के गृहीत होता है अर्थात् उसको पितृग्रह ग्रहण करता है और तिसको जो चिह्न है सो भरे तें श्रवण कर १६ सो पुरुष प्राणों का है संदेह जिस विषे ऐसी व्याधि क्या रोग उसको प

अंतर्दाही पीतनेत्रः पीतविष्मूत्रको भवेत् १३ आदित्यादिग्रहेष्वष्टमादि स्थानस्थितेषु यः न कुर्व्याद्ग्रहयज्ञं तं कालनायकसंज्ञकः १४ ग्रहो गृह्णाति चिह्नानि तत्रे मानि भवन्ति च मुहुर्मुहुर्वक्रशोषो ज्वरो भवति दारुणः १५ परस्य मनसस्तापं कुर्व्याद्व्यवहरन्मृषा पितृग्रहगृहीतः स्यात्तस्य चिह्नानि रोगेषु १६ व्याधिना परिभूतस्स्यात्प्राणसंदेहकारिणा दारिद्र्यं भवेत्तस्य यावज्जीवनं संशयः १७ पुण्यं शिलांतरुदेवालयं वारुह्यमूत्रति मूत्रं पुरीषमापि वा तं गृह्णाति ग्रहोपि वै १८ लोकायताभिधस्तत्र चिह्नानि स्युरमून्यथ ॥ अतिमूत्रपुरीषी स्याद्रक्तनेत्रस्तथा पुनः १९ पित्तोद्विक्ती च वदन्ने देहैव व्रणी भवेत् २०

रिभूत होता है अर्थात् युक्त होता है फेर उसको दंष्ट्र होता है जितना पर्यंत जीवता है इस विषे संशय नहि है १७ पुण्यमिति कि जो पुरुष पुण्यशिला और पुण्यवृक्ष और देवता का मंदिर इनोके ऊपर आरुह्य क्या चटक के मूत्र और पुरीष क्या बिछा करता है उस पुरुष नुं लोकायत है नाम जिसका ऐसा ग्रह ग्रहण करता है १८ और तिस विषे एहचिह्न होते हैं बडोतमूत्र और बिछेवाला होता है अर्थात् उनको मूत्र और बिछा बडोत आती है फेर रक्तनेत्र होता है अर्थात् नेत्र उसके रुधिरवाले होते हैं १९ और मुख उसके ऊपर पित्तकी अधिकता होती है और देह विषे व्रणी होता है अर्थात् उसके देह विषे छिद्र होते हैं २०

॥ श्रीरणवीर कारिते प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ६९

अनहं इति किजोआप अनहं है क्या प्रथमभोजन के योग्यनहिहै और गर्वते अग्रभाजनकोग्रह करताहै अथात् पंकीविषे सभनोंके प्रथमवयठाताहै और पंकीविषे विशेषभोजीहै अथात् औरनांसे पादय पायसादि कोखाताहै तिसपुरुषको आपस्तंभकहै नामजिसका २१ ऐसा ग्रह ग्रहण करताहै और तिसके स्पर्शमात्रसे सुकगयाहै हृदय और उदरजिसका ऐसाहोताहै इसविषे संदेहनहिहै एहबोवार्थनकावचनहै २२ अवकास्यायनजी और प्रकारका कर्मविपाक कहतेहै अंत्यजेति ॥ चांडालीके साथ गमनकरणेवालेनूं और परस्त्री गमनकरणे वालेपुरुषनूं कुर्मिकग्रह ग्रहणकरताहै और तिसीकालविषे ज्वरवालाहोताहै १ और असृग्बद्ध प्रलापीहोताहै अर्थात् रुधिरका वमन और रोदन करणवाला होताहै फेर खांसी और दम रोग बाला होताहै ॥ २

अनहः सन्स्वयंगर्वा दादायत्वग्रभाजनम् पंक्तौविशेषभोजीय स्तमापस्तंभसंज्ञकः ॥ २१ ॥ ग्रहो गृह्णाति तन्मात्राद्दृढोदरशोषयान् जायतेनाप्रसं देहो वीधायनवचोयथा ॥ २२ ॥ कात्यायनः ॥ अंत्यजागामिनंचैव परस्त्रीगामिनंग्रहः कुर्मिकारुयः प्रगृह्णाति ततस्तुज्वरवान्भवेत् ॥ १ असृग्बद्धप्रलापीच श्वासकासश्चजायते ॥ २ ॥ ब्रह्मांडपुराणत्वन्येन प्रकारेण कर्मविपाकउक्तः ॥ स्त्रीवातीगर्भघातीच पुलिंदो जायतेभुवि ॥ स्त्रीति ॥ दुष्टायाश्चापिस्त्रियो निस्सारणेव विहितं ननुघात इतिभावः अरण्यवासीनीचजातिविशेषः पुलिंदः स्त्रियोधर्मार्थकामसाधकत्वात्पुलिं दानांतत्त्रितयशून्यत्वात्

ब्रह्मांडपुराणविषे और प्रकार करके कर्मोंका विपाक कहाहै ॥ स्त्रीति कि जो पुरुष स्त्री घाती और गर्भघातीहै अर्थात् स्त्रीको मारताहै और गर्भको घातकरताहै सो पृथ्वी विषे पुलिंद होताहै सो पुलिंदवनविषे रहनेवाली नीचजातियोंकहतेहैं स्त्री घातके पापका तात्पर्यकहतेहैं स्त्रीति जेकरस्त्रीदुष्टभीहोवे तबभी उसकोवरसे निकालदेणा एहि कथन कोताहै और मारणा नहि अवधानकीताहै इसकरके स्त्रीघात पाप बडाहै अतइसफलकी योग्यतादत्तातेहै सिद्धति ॥ स्त्रीकेमारणे वाला पुलिंद क्यों होताहै कि स्त्रीको धर्म और अर्थ और काम का साधन होनेते और पुलिंद को धर्म और अर्थ और काम इनसे शून्यहोनेसे अर्थात् रहित होणसे एह कर्म फल यथार्थहै

७० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

गुर्विति, जो पुरुष अन्यजात क्या कुंड और गोलकादि इनको गुरुधारता है सो जन्मान्तरतिषे कुसा दी योनिविषे उत्पन्न होता है १ क्योंकि ब्राह्मणसे विना गुरु धारणका निषेध होनेसे संपूर्ण वर्णोंको ब्राह्मण ही गुरु कथन कीता है इसवचनसे इहां गुरुलको निंदित जातिका सेवक होणेंते और श्वानको निंदित वस्तु का भक्षण करनेसे फलविषे योग्यता है ॥ १ ॥ अतः और कहते हैं ॥ मांसेति किमांसके चुरा एवाला ब्राह्मण जन्मान्तरविषे गिहड होता है और वेदके वेचनेवाला ब्राह्मण शूद्रयोनि को प्राप्त होता है २ पतित जो ब्राह्मण है तिनको भी मांस और मद्यविषे अधिकार नहीं है इस बात का विचार

गुरुलोप्यन्यजातेषु जायते श्वानयोनिषु १ योजनोऽन्यजातेषु कुंडगोलकादिषु गुरुलोगुरुधारकः ब्राह्मणादिशुद्धवंश्यातिरिक्तगुरुधारणनिषेधात् सर्वेषामेव वर्णानां ब्राह्मणो हि गुरुः स्मृतः ॥ इति वचनादिति भावः ॥ गुरुलस्य निन्दसेवकत्वात् शुनश्च निन्द्यभोजकत्वात् ॥ १ ॥ मांसहारी भवेद्विप्रः शृगालो जायते ध्रुवं ब्राह्मणो वेदविक्रेता शूद्रयोनिषु जायते २ मांसेति ब्राह्मणानां पतितानामपि मद्ये मांसे च नाधिकार इति निजगात्रासृगुक्षितमित्यत्र नागोजी भट्टटीका ॥ मांसाशी विप्रः शृगालो जायते शृगालस्य पश्यादिभक्षकत्वात् ॥ वेदविक्रेता द्रव्यं गृहीत्वा वेदफलं ददाति स शूद्रो भवति शूद्रस्य वेदानधिकारित्वात् ॥

रनिजगात्रासृगुक्षितं इस श्लोकमें नागोजी भट्टकृत जो चंडी की टीका तिसमें लिखा है ॥ और गिहडकों पश्यादिकों का भक्षण करनेसे फलविषे योग्यता है ॥ और वेदविक्रेता उसको कहते हैं कि जो ब्राह्मण किसीसे द्रव्यको लेकर वेद पढ़ने का फल दे देवे सो शूद्र होता है क्योंकि शूद्रको वेद का नहीं अधिकार होणेंते ॥ इस प्रकार फलविषे योग्यता है ॥ इसमें किसे जगा मांसाहारी ऐसा पाठ है तिसका अर्थ मांस भक्षण करनेवाला ब्राह्मण ऐसा अर्थ करणा इसका तात्पर्य कहते हैं मांसेति

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ७१

अब और कहतेहैं विश्वासेति कि जो पुरुष विश्वासद्वैकके मित्रको मारताहै अथवा विश्वासद्वैकके मारणे वाला जो है और मित्रको मारण वाला सो जन्मांतर विषे पाप योनि यांजोहैं गर्दभादिक् तिनमें उत्पन्नहोताहै क्योंकि गर्दभादिको सहायता शून्य होणेंते अर्थात् जैसे मित्रके मारनाहोयां सहायवाकरणे वाला कोई नहि रहता इसी प्रकार गर्दभादिकोंमें सहायताका अभावहै ॥ और जो पुरुष प्रश्नद्वारा गर्भवती स्त्रीको जानकर फेर मैथुनकर ताहै सो पाण्डु रोग कर्के युक्त होताहै और मूक और जलेहोए किन्याई उसका मुखहोताहै

विश्वासमित्रघातीच पापयोनिपुजायते ॥ भावित्वागर्भिणीनारीं संव्री
डयतियोनरः ॥ ३ ॥ पांडुरोगीभवेन्मूको ज्वलदास्यःसदाचसः ॥ विश्वा
सेति ॥ विश्वासदत्त्वामित्रहंता यद्वा विश्वासहंता मित्रहंताचेत्यर्थः सपा
पयोनिपुगर्दभादिषु तेषांसहायशून्यत्वात् ॥ योगर्भिणीभावित्वा प्रश्ने
नगर्भनिश्चित्य मैथुनं करोतिसपांडुरोगादिमानूभवति ज्वलदास्यःमुखदा
हरोगीतत्रापिसदेतिसार्धान्वयः सगर्भस्त्रीमुखचुंबकत्वात् ॥ ३ ॥ कन्या
घातीमहापापीशवेरपुप्रजायते ॥ ४ ॥ कन्याहंतामहापापीनरकभोगाव
साने बहुपुजन्मसुशवेरपुनाचयोनिष्वेवजायते ॥ तस्मिन्पापेक्षयंयाते
पुनर्जन्मांतरेभवेत् पूर्वजन्मप्रभावेनदरिद्रश्चकुरूपधृक् ॥ ५ ॥ तस्यैव
कन्याघातिनःदुःफलांतरमाह ॥ तस्मिन्निति ॥ पापेपापदेहेक्षयंयातिसति
कुरूपधृक्केकरकुण्यादिरूपः ५ ॥

और मुखमें दाहरोगवालाभी सदाहोताहै क्योंकि गर्भवालीस्त्रीका मुखचुंबनेमें ३ इसजगामेंडेठ
श्लोकका अन्वय जाग्रणा और इसीकाअर्थमूलमेंस्पष्टकरकेलिखाहै ॥ विश्वासदत्त्वेति कन्याघा
तीति और कन्याकेमारणेवाला महापापी पुरुषनरकको भोगकरवहोतवार शवेरयोनिमें क्यातो
चयोनियांतिनमें उत्पन्नहोताहै ४ इसीकाअर्थ मूलमें स्पष्ट करके लिखाहै कन्याहंताति ॥ और
तिसपापके नष्टहोयां २ फेरजन्मांतरमें पूर्वजन्मके पापद्वारा दरिद्रीहोताहै, और खोटे रूपवाला
होताहै इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके लिखाहै ॥ तस्यैवेति ५

७० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

गुर्विति, जो पुरुष अन्यजात क्या कुंड और गोलकादि इनको गुरुधारता है सो जन्मान्तरतिषे कुसा दी योनिविषे उत्पन्न होता है १ क्योंकि ब्राह्मणसे विना गुरु धारणका निषेध होनेसे संपूर्ण वर्णोंको ब्राह्मण ही गुरु कथन कीता है इसवचनसे इहां गुरुलको निंदित जातिका सेवक होणेंते और भवानको निंदित वस्तु का भक्षण करनेसे फलविषे योग्यता है ॥ १ ॥ अतः और कहते हैं ॥ मांसेति किमांसके चुरा णेवाला ब्राह्मण जन्मान्तरविषे गिहड होता है और वेदके वेचनेवाला ब्राह्मण शूद्रयोनि को प्राप्त होता है २ पतित जो ब्राह्मण है तिनको भी मांस और मद्यविषे अधिकार नहीं है इस बात का विचार

गुरुलोप्यन्यजातेषु जायतेश्वानयोनिषु १ योजनोऽन्यजातेषु कुंडगोलका दिषु गुरुलोगुरुधारकः ब्राह्मणादिशुद्धवंश्यातिरिक्तगुरुधारणनिषेधात् सर्वेषामेव वर्णानां ब्राह्मणो हि गुरुः स्मृतः ॥ इति वचनादिति भावः ॥ गुरुलस्य निन्दसेवकत्वात् शुनश्च निन्द्यभोजकत्वात् ॥ १ ॥ मांसहारी भवेद्विप्रः शृगालो जायते ध्रुवं ब्राह्मणो वेदविक्रेता शूद्रयोनिषु जायते २ मांसेति ब्राह्मणानां पतितानामपि मद्ये मांसे च नाधिकार इति निजगात्रासृगुक्षितमित्यत्र नागोर्जाभट्टटीका ॥ मांसाशी विप्रः शृगालो जायते शृगालस्य पश्वादिभक्षकत्वात् ॥ वेदविक्रेता द्रव्यं गृहीत्वा वेदफलं ददाति स शूद्रो भवति शूद्रस्य वेदानधिकारित्वात् ॥

रनिजगात्रासृगुक्षितं इस श्लोकमें नागों जी भट्टरुत जो चंडी की टीका तिसमें लिखा है ॥ और गिहडकों पश्वादिकों का भक्षण करनेसे फलविषे योग्यता है ॥ और वेदविक्रेता उसको कहते हैं कि जो ब्राह्मण किसीसे द्रव्यको लेकर वेद पढ़ने का फल दे देवे सो शूद्र होता है क्योंकि शूद्रको वेद का नहीं अधिकार होणेंते ॥ इस प्रकार फलविषे योग्यता है ॥ इसमें किसे जगा मांसाहारी ऐसा पाठ है तिसका अर्थ मांस भक्षण करनेवाला ब्राह्मण ऐसा अर्थ करणा इसका तात्पर्य कहते हैं मांसेति

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ७१

अब और कहतेहैं विश्वासेति कि जो पुरुष विश्वासदेकके मित्रको मारताहै अथवा विश्वासदेकके मारणे वाला जो है और मित्रको मारण वाला सो जन्मांतर विषे पाप योनि यांजोहैं गर्दभादिक् तिनमें उत्पन्नहोताहै क्योंकि गर्दभादिको सहायता शून्य होणेंते अर्थात् जैसे मित्रके मारवाहोयां सहायवाकरणे वाला कोई नहि रहता इसी प्रकार गर्दभादिकोंमें सहायताका अभावहै ॥ और जो पुरुष प्रश्नद्वारा गर्भवती स्त्रीको जानकर फेर मैथुनकर ताहै सो पाण्डु रोग कर्के युक्त होताहै और मूक और जलेहोए किन्याई उसका मुखहोताहै

विश्वासमित्रघातीच पापयोनिपुजायते ॥ भावित्वागर्भिणीनारीं संक्री
डयतियोनरः ॥ ३ ॥ पांडुरोगीभवेन्मूको ज्वलदास्यःसदाचसः ॥ विश्वा
सेति ॥ विश्वासदत्त्वाभिन्नहंता यद्वा विश्वासहंता मित्रहंताचेत्यर्थः सपा
पयोनिपुगर्दभादिषु तेषांसहायशून्यत्वात् ॥ योगर्भिणीभावित्वा प्रश्ने
नगर्भनिश्चित्य मैथुनकरोतिसपांडुरोगादिमान्भवति ज्वलदास्यःमुखदा
हरोगीतत्रापिसदेतिसार्द्धान्वयः सगर्भस्त्रीमुखचुंबकत्वात् ॥ ३ ॥ कन्या
घातीमहापापीशवरेषुप्रजायते ॥ ४ ॥ कन्याहंतामहापापीनरकभोगाव
साने बहुपुजन्मसुशवरेषुनाचयानिष्वेवजायते ॥ तस्मिन्पापेक्षयंयाते
पुनर्जन्मांतरेभवेत् पूर्वजन्मप्रभावेनदरिद्रश्चकुरूपधृक् ॥ ५ ॥ तस्यैव
कन्याघातिनःदुःफलांतरमाह ॥ तस्मिन्निति ॥ पापेपापदेहेक्षयंयातिसति
कुरूपधृक्केकरकुण्यादिरूपः ५ ॥

और मुखमें दाहरोगवालाभी सदाहोताहै क्योंकि गर्भवालीस्त्रीका मुखचुंबनेतें ३ इसजगामेंडेठ श्लोकका अन्वय जाग्रणा और इसीकाअर्थमूलमेंस्पष्टकर्केलिखाहै ॥ विश्वासदत्त्वेति कन्याघा तीति और कन्याकेमारणेवाला महापापी पुरुषनरकको भोगकरवहोतवार शवरेषुनियों कन्यानी चयोनियोंतिनमें उत्पन्नहोताहै ४ इसीकाअर्थ मूलमें स्पष्ट कर्के लिखाहै कन्याहंतिति ॥ और तिसपापके नष्टहोयां २ फेरजन्मांतरमें पूर्वजन्मके पापद्वारा दरिद्रीहोताहै, और खोटे रूपवाला होताहै इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके लिखाहै ॥ तस्यैवेति ५

अब कन्याके मारण वाले पुरुषको और खोटाफलकहतेहैं सदेति किकन्याके मारण वाला पुरुष वटक नामकके पक्षीहोताहै और चकारसे क्या जानतेहैं कि जन्मांतर में श्वासकासरोगकके युक्तभी होताहै और पापकी बाहुलता द्योतनकरणे केवास्ते ध्रुवं यहप दकिहै और आम्रक्या अंबव और श्रीफल क्या नरेलादि के फल तिससे आदलेकरजोफलहैं तिनके चुगणे वालेका जन्म कहतेहैं फलेति किफलके चुगणे वाला जोपुरुष जिसफलको चुगताहै तिसी फलका कीडाहोताहै इस श्लोकका अर्थमूलमें भीस्पष्ट करके लिखाहै चकारा दिति ६ ॥ अब वृक्षछेदन करण वाले पुरुषकाकर्मविपाककहतेहैं वृक्षेवि किवृक्षछेदनकरणेवाला महापापी कृमियोनिविषे प्रातहोकर वारंवार मृत्युको प्रातहोताहै क्योंकिवृक्षको नाना जीवों

कन्याघातीचपुरुषः वटकोजायतेध्रुवम् फलहारीचदुष्टात्मा फलेतस्मिन्भवे कृमिः ॥ ६ ॥ कन्याघातिनएवदुःफलान्तरमाह सदेति चकाराज्जन्मान्तरे श्वासकासरोगी पापातिशयद्योतनाय ध्रुवमिति ॥ सएवजन्मान्तरेवटकः पक्षीभवति आम्रश्रीफलादिचौरस्य फलमाह फलेति यस्यफलस्यचौरः तस्मिन्नेवफलेकृमिर्भवति ६ ॥ वृक्षच्छेदेभवेन्मृत्युः कृमियोनिपुजायते शास्त्राचारैः परद्वेपीरजकोजायतेभुवि ॥ ७ ॥ स्वामिघातीमहापापः पापाणेकीटकोभवेत् धनहर्त्तान्धवधिरः श्मशानेगृध्रकोभवेत् ॥ ८ ॥ फलवतधनछाया दिवत् वृक्षच्छेदिनोजन्माह वृक्षेति कृमियोनिपुगतस्यशीघ्रमेवमृत्युर्जायतेवारंवारमितिभावः ॥ वृक्षस्यनानाजीवाश्रयत्वात् शास्त्राचारैरल्पज्ञो हमेवमहाशास्त्रीतिभावनया बहुज्ञयोद्वेष्टि स रजको मलनिर्णैजकः समलान्तःकरणत्वादितिभावः । स्वामीति पापाणकीटस्यसर्वभोगशून्यत्वात् धनेति रूपादिलोभेन धनहर्त्तरूपादि भोगहीनान्धादियोनिर्युक्ता ॥

का आश्रय होणेत और कृमियोनिको बहोतहोणे कर्के योग्यता होईहैं और जोपुरुष शास्त्र केआचारों कर्के अल्पज्ञहै अर्थात् शास्त्राचारों कोथोडाही जानताहै और कहताहै किमेही बराशास्त्रिहूं इसभावनाकर्के विद्वानके साथ द्वेषकरताहै सोजन्मांतरमें रजकक्या धुवाहोताहै अर्थात् मलके दूरकर्णे वाला होताहै क्योंकि मलवाला अंतःकरण होणेत और इसश्लोक का अर्थ मूलमें स्पष्टकर्के लिखाहै कृमोति ७ ॥ अब स्वामी घातकाफलकहतेहैं स्वामीति किस्वा मीक मारण वाला पापाणका कीडाहोताहै सबनाभोगांसें रहित होणेत फलविषे योग्यताहोई है और रूपादिकोंके लोभते धनचुराणे वाला जोपुरुष सोअंधाहोताहै और वधिरहोताहै फेर जन्मांतरमें शाशानविषगिदडहोताहै ८ ॥ इसश्लोकका अर्थभीमूलमें स्पष्टकर्केलिखाहै पापाणेनि

अब धनके चुराणे वाले पुरुषको और योनि कहते हैं ॥ वधादिति कि धनके चुराणेवाला गृध्र क्या इच्छा योनिमें प्राप्त होता है फेर किसीके वधकरणेते मरकरके और गृध्रयोनिमें त्याग करके विलेकी योनिमें प्राप्त होता है ॥ इसका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके लिखा है ॥ कस्यचिदिति ॥ और प्रजाको पीडादेणेवाला राजा कुकुट योनिमें पाता है ॥ प्रजाको पीडादेणेवाला क्या प्रजासे अनोतिकरके धनहरणेवाला इहां कुकुटयोनिषु इस बहुवचन करके काकादिक योनियां भी होती हैं ॥ और इहजो कुकुटादिकहैं सोसहित मलके योतृणादिक तिनके शोधने वाले हैं इस वास्ते प्रजाको पीडादेणे वाले राजाको एह योनि होणी योग्य है ॥ ९ ॥ सूत्रेति जो पुरुष सूत्रको चुराता है अर्थात् कर्पासादि निर्मितंतुको चुरादा है सो पृथ्वीके

वधान्मृत्युवशेयातिमार्जारोजायतेपुनः ॥ प्रजापीडनको राजा भवेत्कुकुटयोनिषु ९ धनहर्तुरेव योन्यंतरमाह ॥ वधादिति कस्यचिद्वधान्मृत्वा गृध्रयोनिं त्यक्त्वामार्जारोजायते प्रजापीडको राजा अन्यायोपार्जितद्रव्यः कुकुटयोनिषु बहुवचनेन काकादिपरिग्रहः इमे तु समलक्षणादिशोधकाः ९ सूत्रहारी महीं मध्ये कीटो भवति पीडितः ॥ कीटः रोमपक्षादिहीनः ॥ कर्पासशणहारी च ब्रह्मवस्तुहरश्च यः उपानहोश्च यश्चैरः समत्स्यो जायते जले १० कर्पासेति उपानहोरितिकर्पासादेः शीतनिवारकत्वात् मत्स्यस्य जलमध्ये सदा शीतलत्वादिति भावः १० घृतहारी भवेत्कुष्ठे तस्माद्भ्रष्टः कृमिर्भवेत् ॥ घृतस्य सर्वशरीरपोषकत्वात् कुष्ठस्य च सर्वशरीरदाहकत्वात् ११ ॥

मध्यविषे रोमपक्षादि हीन कीट विशेष हुंदा है ॥ कर्पासेति और कर्पास क्या कपाह और शण और ब्राह्मणों कीयां वस्तु तिनके चुराणेवाला और उपानह क्या जोड़ा तिसके चुराणे वाला पुरुष जलविषे मत्स्य योनिमें प्राप्त होता है ॥ क्योंकि कर्पासादिकां शीतक वारण करणेंते और मत्स्यको सदा ही जलविषे शीतलताको प्राप्त होनेते तिसको मत्स्ययोनि होणी योग्य है और इसका अर्थ मूलमें भी स्पष्ट करके लिखा है १० ॥ घृतहारीति और घृतके चुराणेवाला कुष्ठ होता है फेर कुष्ठको भोगकर कृमि होता है क्योंकि घृत को सारे शरीरकी पुष्टी करणेंते और कुष्ठको सारे शरीरमें दाहकरणेते फलविषे योग्यता है ॥ ११ ॥

७४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब और कहते हैं मांसेति कि मांसके चुराणे वाला पुरुष पिशाच होता है क्योंकि पिशाचादिकाँ कच्चा मांस खाए कर्के मांसके स्वादका अभाव होने से इसवास्ते पिशाच योनि होनी योग्य है और अन्नक्या गोधूमादिक तिसके चुराणे वाला सूचिवक्र होता है अर्थात् तिसके मुखमे मांसरूपी अथवा अस्थिरूपी एकसूई होती है और तिसके नदिनिवारण होने से बेसदा दुखी रहता है इसमे ऐसा भाव है कि अन्नके स्वादवास्ते अन्नचुराणे कर्के जन्मान्तरमे सूचिवक्र होने से अन्नका स्वाद नहि लगता है तिसको एह फल होना योग्य है ॥ और तेलके चुराणे वाला तेली होता है अथवा तेलके पी डनेविषे जोड़या होया जो बैल सो होता है ॥ क्योंकि तेल चुराणे करके एह फल होना योग्य है ॥ और मधु क्या मखीर अथवा मय तिसके चुराणे वाला गर्दभ योनिको प्राप्त होता है और इसलोकका

मांसहारी पिशाचः स्यात् सूचिवक्रोऽन्नहारकः तैलहारी भवेत् तैली मधुहारी तु गर्दभः १२ मांसेति मांसहारी मांसचौरः पिशाचः पिशाचानामाममांस भक्षकत्वेन मांसास्वादहीनत्वात् ० सूचीति अन्नस्य गोधूमादेशचौरः सूची मांसमयी वा स्थिमयी मुखेयस्य सः तस्या अनिर्वाच्यत्वात् सदा दुःखीत्यर्थः तैलेति तैलचौरः तैलोत्पादकः तैलनिष्पीडने प्रयुक्तस्तैली वृषभो मनुष्यो वा मध्विति मधुचौरः मदांधसदृशो गर्दभः १२ गंधपुष्पादिहारी च दुर्गंधो जायते मुखे दुग्धहारी तु कूर्मः स्याज्जलवासी जितेंद्रियाः १३ गंधेति गंधादिचौरः मुखे दुर्गंधः गंधादिनावशी कृतलोकस्य दुर्गंधेन लोकतस्त्या जनं दुग्धचौरः उष्णताकामः जलवासीति स्थलवासि व्यावृत्त्यर्थं जलस्योष्णप्रतिकूलत्वात् हेजितेंद्रियाः ऐहिकसर्ववस्तुतो व्यावृत्तमनस्काः १३

अर्थमूलमे स्पष्ट लिखा है मध्विति १२ गंधेति सुगंधिविशिष्ट जोद्रव्य पुष्पादिक तिनके चुराणे वाला जो पुरुष सो मुखमे दुर्गंधिवाला होता है और दूधके चुराणे वाला जल वासी कछोपड होता है क्योंकि गंधादि कों करके लोक वश होते हैं और दुर्गन्धि करके लोकाँ से त्याग होता है और दुग्धचौर गर्माँडकी कामनावाला होता है इसीवास्ते जन्मान्तरमे जलवासी कछोपड होता है इहां जलवासी कहणें कर्के स्थलवासीकी व्यावृत्ति जाननी इसमे न चकेता का कृपियो प्रतिसंवाधन है हेजितेंद्रियाः इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं कि इस लोक में होने वालीयाँ जो सब वस्तु तिनसे तुसाँ व्यावृत्त मन वाले हो १३

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ७५

प्रच्छन्नेति किजोपुरुष गुप्तहिपाप करताहै सो सतजन्मोंविषे अधाहोताहै फेर उसपापदेहतें
अष्टद्वया २ अर्थात् उसपापदेहकों त्यागकर जन्मांतरविषे लोमशहोताहै अर्थात् वणमानु
क्या वनमनुष्यहोताहै ॥ और इसीकाअर्थ स्पष्टकरके मूलमेंलिखाहै ॥ प्रच्छन्नेति ॥ १४ ॥ नित्य
मिति ॥ किजोपुरुष कारणाकेबिनाहि कठोरवचन कहताहै और दूसरेके मतमय विक्षेपकरताहै
सासर्पोंके भक्षणकरणेवाला नकुलहोताहै अर्थात् नीलहोताहै ॥ और किजोपुरुष परद्वेपीहै
अर्थात् परपुरुषोंकी दुखदेताहै आपणे अधीनहोयाहियां भी परक्रोधीहै सो चिरकाल
और जन्मांतरों विषे जलौका होताहै अर्थात् जुक होताहै इसमें योग्यता कहवें क्रोधी
रक्तसुकाने वाले सुभाववाला होताहै और जुकरुधिरकों भक्षण करणे वाली होतीहै
इसकारणसे फल विषे तुल्यताहै ॥ और जलौका शब्द इहां आकारांत समझणा और
इसीका अर्थ स्पष्ट करके मूलमें लिखाहै ॥ नित्यमिति ॥ १५ ॥ अकृत्वेति कि जो

प्रच्छन्नपापकर्तुस्तुसतजन्मांधताभवेत् ततःपापात्परिभ्रष्टोलोमशोजायते
नरः १४ प्रच्छन्नेति गुप्तपापिनोंधता भोगगोपनायेति ततःपापात्पापदे
हात्परिभ्रष्टोजन्मांतरेलोमशः सकलशरीरलोमा वनमनुष्योजायते १४
नित्यंक्रूरोविकारीयोनकुलोजायतेनरः परद्वेपीपरक्रोधीजलौकाजायते
चिरम् ॥ १५ ॥ नित्यमिति क्रूरःअकारणपिकटुभाषी विकारीविक्षेपकारी
नकुलःसर्पादिभक्षकः अनुकूलेपिपरस्मिन्योद्वेष्टिअतएवक्रोधी रक्तशो
पकस्वभावा जलौकारक्तपाचिरम् बहुपुजन्मसुजायते ॥ १५ ॥ अकृत्वा
वैश्वदेवंतु भुजतेयेद्विजातयः तेवृथाभोजिनः पापाजायंतेपापयोनिषु १६
अकृत्वेति वैश्वदेवलोपिनोद्विजास्त्रयोवर्णाः देवांशभोक्तृत्वान्तेमलभोक्तृत्वा
दियोनिपुजायंते १६ ॥ पश्चात्तापकरोदानेकोकिलोजायतेवने

द्विजसे आदलेकरके तीनों वर्ण अर्थात् ब्राह्मण और क्षत्रि और वैश्य बलवैश्वदेव विधि
कों नाकरके भोजनकरतेहैं सो तिनो पापीओंका भोजन करणावृथाहै फेर सो पापयोनि
यां विषे प्राप्तहोतेहैं अर्थात् मलके भक्षणकरणे वालीयां जो कुत्तेसे आदले करके योनियाहैं उनां
कों प्राप्त होतेहै क्योंकितिनांको देवांश भक्षणकरणेते फलविषे योग्यताआईहै और इसीका
अर्थ स्पष्टकरके मूलमें लिखाहै अकृत्वेति १६ ॥ अब और प्रकार कहतेहैं पश्चादिति कि जो
पुरुष दानके अंतमें पश्चात्तापकरताहै सो वनके विषे कोकिला नामकरके पक्षी होताहै क्योंकि
पुरुष दानकरके फेर किसीसे न कथनकरे इस वचनमें और बोहि पश्चात्तापकरण करके उधे
स्वर वाला होताहै और पूर्व जन्म विषे दाता होणेतें मधुरस्वर वाला होताहै

७६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० व० ॥ टी० भा० ॥

और पिता और माता और सुहृद् इत्यादिकों के साथ द्वेषकरणे वाला पुरुष जन्मान्तरमें आकाश विषे विचरणे वाला वगुला नामकके पक्षी होताहै क्योंकि कुटिल अन्तःकरण होणेतें और इसवास्ते उसको वक्योनि होणी योग्यहै और इसका अर्थमूलमें स्पष्टकके लिखाहै १७ य इति और जो पुरुष शिवस्वोपजीवीहै अर्थात् शिवजीकेताई अपेक्षा कीता हुआ जो द्रव्य तिसकके आपसी जीविकाकरताहै सो धनमें ससक क्या सि हाना नामकके मृग होताहै और शिवांश भक्षण करणेतें उसकोभी लुब्धक क्या छकार खेलणे वाले पुरुष यत्नों द्वारा मारदेहै ॥ और देवता और ब्राह्मण तिनके द्रव्यकों चुराणों वाला पुरुष जन्मान्तरमें वनविषे कालासपं होताहै और वो पवनसे इतर जो भोग तिससे रहित होताहै और इसका अर्थ मूलमें स्पष्ट कके लिखाहै देवेति ॥ १८ ॥ ताम्रेति और जो पुरुष

पितृमातृसुहृद्द्रोहाद्वकोभवतिखेचरः ॥ १७ ॥ पश्चादिति ॥ दानान्ते पश्चात्तापकरः नदत्वापरिकीर्तयेदितिनिषेधात् ॥ कोकिलः पश्चात्ता पेनाच्चैर्भाषी दातृत्वान्मधुरस्वरः ॥ पित्रिति ॥ पित्रादिद्रोहिणोन्तः कुटिलत्वात्तादृशीवक्योनिः खेचरइति भूचरव्यावृत्त्यर्थम् १७ यः शिवस्वोपजीवीस्यात्सभवेत्ससकोवने देवब्रह्मस्वहारीचकृष्णसर्पोभवेद्वने १८ यइति शिवस्वशिवायार्पितद्रव्यंतद्रोजी ससकः मृगविशेषः सतुलुब्धकैः प्रयत्नेनापिमारायित्वाभक्ष्यते । देवब्राह्मणद्रव्यचौरः कृष्णसर्पः पवनेतरभोगरहितः । १८ । ताम्रकांस्यापहारीचमेषयोनिपुजायते फलहारीच विंध्याद्रौकुंजरोजायतेवने ॥ १९ ॥ ताम्रादिहारीमेषः दृढतरशिरस्कः परस्परकलहेन ताम्रादिशब्दकारी पक्कापक्कभेदेनफलानांद्वैविध्यात्तद्वरणापापफलस्यापिद्वैविध्यंदर्शयति फलहारीति पूर्वपक्कफलहारीइहत्वपक्क फलहारीतिभेदः विंध्याद्रौसिंहयदुलेतत्रहिसिंहाः फलवद्वस्तिशिरस्त्रोटयं तीतिभावः ॥ १९ ॥

ताम्रकों और कांस्यकों चुराताहै सो जन्मान्तरमें मेषयोनिकों अर्थात् भिड़ुंकी योनिको प्राप्त होताहै और तिसपापद्वारा बड़े दृढ़कके युक्त जो शिर तिसवाला होताहै और आपसमय कलहकके ताम्रकों न्याई शब्द करणे वाला होताहै इसमें एभी विचारहै फलांकों कच्चे और पक्के भेदकके यह दोप्रकार होणेतें तिनके चुराणेदा जो पाप सोभी दो प्रकारकाहै छोड़ कहतहैं पूर्वमिति कि पहलें जो किहाहै सो पक्के होए फलकाकर्म विपाक किहाहै और इस जगामें कच्चे फलका कर्म विपाक कहतहैं कि कच्चे फलके चुराणें वाला विंध्याद्रि नाम पर्वत विषे कुंजरकीयोनिको प्राप्तहोताहै अर्थात् हाथीहोताहै और एहि अर्थ मूलमें स्पष्टककेलिखाहै विंध्येति तिसजगावहुत सिंहरहतहैं सोइस्तिपाके शिरकों फलकीन्याईतोडदेहैं एहभावहै १९ ॥

अब और प्रकार कहते हैं घंटेति कि जो पुरुष घंटकों और बाजयों को चुराता है सो घंठकेवना से वाला ठठिआर होता है अथवा घंटकी न्याई शब्द करण वाला पक्षी होता है और शास्त्रके चुराएवाला पुरुष कुत्तोंकी योनिमें प्राप्त होता है क्योंकि शास्त्रकों उत्तमभोगसाधन होनेतें और कुत्तोंको निर्दिष्ट भोजन करणें एह गति होणी योग्य है और इसका अर्थ मूलमें स्पष्टकें लिखा है २० ॥ पादेनेति और जो पुरुष पादकों ब्राह्मणों और अग्निकों स्पर्श करता है सो तीनजन्म पंगु क्या लूला होता है और जो ब्राह्मण होकरके सुरापान करता है अथवा मद्यपान करता है सो श्वानयोनि को प्राप्त होता है क्योंकि ब्राह्मणकों मदिरापान मलभोजनके तुल्य है और श्वानको मलभोजन नियत है इसवास्ते तिसको श्वानयोनि योग्य है और इसका अर्थ मूलमें स्पष्टकें लिखा

घंटावादित्रहारी च घंटा घंटोपि जायते शास्त्रचौरोनरोनित्यं शुनां योनिपुजा यते २० घंटादिवादित्रचौरः घंटां घटत इत्येवंशीलो घंटा घंटः घंटा घटकः घंटा वच्छब्दनः पक्षिविशेषो वा शास्त्रेति शास्त्रस्योत्तमभोगसाधनत्वात् शुनां च निन्द्य भोजित्वात् २० पादेनाग्निद्विजस्पर्शी पंगुर्जन्मत्रयं भवेत् सुरापान करो विप्रः श्वयोनिं समवाप्नुयात् २१ पादेनेति अग्निद्विजं वायः पादनं स्पृशति स तु जन्मत्रयपर्यंतं पंगुः पादहीनो भवति सुरेति यो विप्रो भूत्वा सुरां मद्यं पिबति स श्वयोनिं गच्छति विप्रस्य सुरायामलतुल्यत्वात् शुनश्च मलभाजित्वात् २१ परवस्तुहरये च सर्वभक्ष्याश्च येनराः शृगालयोनिं गत्वाथ काकयोनिं व्रजंति ते २२ परेति यत्किंचित्परवस्तुहरणशीला ये ये च भक्ष्याभक्ष्यविचारशून्या यस्य कस्यचिदपि कुलालरजकादेर्दत्तमन्नमशनं तितेतादृशीं परमारितप्रश्वादिग्राहकां शृगालयोनिं भक्ष्याभक्ष्यविचारहीनां काकयोनिं च गच्छंति योग्यत्वात् २२ मंत्रदीक्षाविहीना ये दीक्षां दद्याद्विजोत्तमाः तेन दोषेण विप्रास्ते मार्जारत्वं व्रजंति हि २३ ॥

है पादेनेत्यादि ॥ २१ ॥ परंवि और जो पुरुष दूसरेको वस्तुकी चुराते हैं और जो सर्वभक्षी हैं सो शृगालयोनि को प्राप्त होते हैं अथवा गिहड़ योनि को प्राप्त होकरके तिसके अन्तर काकयोनि को प्राप्त होते हैं शृगालादिकां भक्ष्याभक्ष्य विचारतें रहित होणें और परवस्तु के चुराएवाले को भी भक्ष्याभक्ष्य विचारतें हीन होणें गिहड़ादिक योनि की योग्यता है २२ ॥ अब और कहते हैं मंत्रेति कि जेडे ब्राह्मण आप मंत्र और दीक्षासे रहित हैं और दूसर्यां पुरुषों को धन और प्रतिष्ठाके लोभी होए २ दीक्षाका उपदेश करते हैं ॥ दीक्षानाम धर्म विशेषको बोध करणे वाला जो चिह्नक्या चक्राकारादिक मिलक सोई हैं पूर्वजिसके ऐसी जो उपासना क्या शैवी और वैष्णवी इत्यादिक तिनका स्वीकार करण तिसको कहते हैं तिस दोष कर्के

सो मार्जारक्या विष्टेकी योनिको प्राप्त होतेहैं अर्थात् चूहेके घरमे आसकहै चित्त जिनका ऐसे होनेहैं क्योंकि शिष्यादिकोके ग्रहणकी जो चिता तिसकी योग्यता होषेते विष्टेकी योनिहोशी तिनकोयोग्यहै और इसीका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै २३ अब और कहतेहैं छेदयेदिति कि जो पुरुष रस्तेके बीचमे बणी छायाकर्के युक्त जो वडावृक्ष वटआदि और जीवोके उपर उपकार करण वाला पुष्पितहोया २ अथवा फलयाहोया तिसकोकंठताहै सो वृक्षके आश्रय रहणे वाला वनकाचूहा होताहै अर्थात् गाछडचूहा नामकर्के होताहै फेर तिसके अनन्तर सुगंधिका प्रति कूल नोदुर्गन्धि तिसका शोधन करणे वाला कुक्कुटहोवाहै

मंत्रेति ॥ धर्मविशेषबोधकचिह्नपूर्वमुपासनाविशेषग्रहणं दीक्षा स्वयं तद्विहीनाएवान्येभ्योघनप्रतिष्ठादिलोभिनोद्विजादीक्षांददति ते मार्जाराः मूपकग्रहचित्तासकाभवंति ॥ शिष्यादिग्रहणचिंतायोग्यत्वात् २३ ॥ छेदयेद्योमहावृक्षंपुष्पितंफलितंतथा सजाहकोभवेत्सम्यक् पश्चाद्भवति कुक्कुटः ॥ २४ ॥ छेदयेदिति ॥ महावृक्षं ॥ मार्गमध्ये घनच्छायं वटादि कं पुष्पितंफलितं यं कंचिद्वा प्राण्युपकारकं छेदयेत् सजाहकः वनमूपको वृक्षाश्रितपक्ष्यादिभक्षःजन्मान्तरेच सुगंधप्रतिकूलदुर्गन्धशोधकः कुक्कुटो भवति २४ स्वगोत्रघातिनेयेचस्वगोत्रीपुचलंपटाः ऋक्षयोनिषुजायंते यावच्चंद्रदिवाकरो २५ स्वगोत्रेति ॥ स्ववंशनाशकः स्वगोत्रीभोगीच तादृशीमृक्षयोनिकल्पपर्यंतयाति २५ दानेपुदीयमानेपुतत्रविघ्नकरोति यः अन्यकूपेभवेत्सर्पेनेत्रहीनोनसंशयः २६ दानेष्विति दानेविघ्नकरो दानुःख्यातत्वात्तत्प्रतिकूलेऽन्धकूपेऽन्धोऽहिर्भवति २६ चक्रवाकोभवेत्सोपिस्नेहच्छेदं करोति यः मातृपितृगुरुद्वेषीधर्मशास्त्रस्यनिंदकः २७ चक्रेति यःस्नेहभंजकः सतुस्नेहदुःखदांचक्रवाकयोनियाति चक्रवाकाहिः नदीपार्श्वेवसंति रात्रौच स्त्रीवियुक्ताभवंतीतिभावः ॥

और इसका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै महावृक्षमिति २४ और कहतेहैं स्वगोत्रेति कि जो पुरुष अपनेवंशका नाशकरताहै और अपने गोत्रकीस्त्रीके साथ मैथुनकरताहै सो कल्पपर्यंत तैसीही ऋक्षयोनिको प्राप्तहोवाहै २५ अब और कर्मफल कहतेहैं दानेष्विति कि जो पुरुष दानमे विघ्नकरताहै सो दाताके प्रतिकूल जो अन्धकूपहै तिसमें अन्धासम्पंदहोता है २६ चक्रवाकइति और जो पुरुष दूसरेको प्रतिकूलछेदनक्या नाशकरताहै सो स्नेहकर्के दुःख देने वाली जोचक्रवाकयोनि तिसमें प्राप्त होतीहै और चक्रवाकतिनको कहतेहैं जो रात्रिसमय स्त्रीकर्के विभोगीहोए २ नदीके तीरमें पक्षी रहतेहैं २७

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥ ७९

मात्रिति और जो माता और पिता और गुरु तिनके साथ द्वेष करणेवाला और जो परस्त्रीगम नादिकोंके करणवाले धर्म शास्त्रको निन्दाकरणेवाला यह सभ हजाजन्म पर्यन्त गर्भमें नाशकोप्राप्तहोतेहैं यह दूसरे अद्देशलोकके साथ अन्वयजानणा २७ अब मात्रादिद्वेषोंका अभिप्राय कहतेहैं कि गर्भमें लेकर बाल्यादिक जो दुःखतिनके सहारणे वाले और सुख देणेवाले जो मात्रादिक तिनके साथ जो द्वेषकरताहै और पहले जो कहचुकेहैं सो मात्रादिकोंका द्रोहीकिहाहै द्रोही उसको कहतेहैं जो केवल अन्तःकरणमें कुटिलतावाला होवे और द्वेषी इसको कहतेहैं जो बाह्य और अन्तःकरणमें कुटिलता वाला होवे इसवास्ते पुनरुक्ती नहि जान्नाणी ॥ एकाकीति और जो पुरुष इकल्लाही परिवार जो बालवृद्धादिक तिनको नादेकर मिष्टान्न भक्षण करताहै सो निर्जलदंशविषे जो सुका होयावृक्ष सहित छिद्रके अर्थात् सहित पुगारके तिसविषे जलकी

मात्रिति गर्भबाल्यादिदुःखसहनपूर्वसुखदातृमात्रादिद्वेषी पूर्वतुमात्रादि द्रोहीप्रेक्तः तयोरन्तःकौटिल्यद्रोहः बाह्यान्तःकौटिल्यद्वेषइतिभेदः धर्म शास्त्रस्यपरस्त्रीगमनादिवारकस्यनिन्दकः एतेसर्वेऽपि जन्मसहस्रयावद्गर्भ एवविनश्यन्ति इतिसार्धान्वयः ॥ २७ ॥ एतेगर्भविनश्यन्तियावज्जन्मसह स्रकम् एकाकीमिष्टमश्नातिपरिवारंविनातुयः ॥ २८ ॥ परिवारंवाल वृद्धादिकंविना स्वयं मिष्टभोगी सतु मरुदेशे निर्जलदेशे तत्रापि शुष्कवृ क्षेयत्कांटरंसछिद्रस्थानं तत्रसर्पोजलाभिलापीतिभावः ॥ २८ ॥ नाराधि तंचयैःशैवंलिङ्गंविष्णुस्तथात्मभूः २९ शिवादिपूजाहीनान्निंदति ॥ नाराधि तमिति आत्मभूःब्रह्मा तत्पूजनंमानसं नतु विष्णवादिवत्तद्वातत्पूजनं ब्राह्मणपूजनम् २९ नपूजितातथादुर्गानतीर्थगमनंकृतम् नहुतंनैयजस्तंच नदत्तंब्राह्मणेगुरौ ३० दुर्गानवरात्रादावपिनपूजिता तेषामालस्यवश्यानां नरकेपतनंध्रुवम् तेषामिति आलस्येनत्यक्तकर्मणांनरके एव पतनम् ३०

अभिलाषावाला संप्रदोताहै २८ इहां फल भेदहोणें मिष्टान्नभोगीका कर्मविपाक बहुतबारकिहाहै पुनरुक्ती नहिजान्नाणी अब शिवादिकोंकी पूजासे हीन जो पुरुष तिनका कर्मविपाक कहतेहैं नाराधितमिति कि जिनोंने शिवलिङ्ग नहि पूजयाहै और विष्णु और ब्रह्मा नहि पूजयाहै परंतु इसजगा ब्रह्माका पूजन मानसी जान्नाणी कोई विष्णु और शिव जीकी न्यर्द्ध नहि जान्नाणी अथवा ब्रह्माके पूजनकरके ब्राह्मणोंके पूजनकाग्रहणहै २९ और जिनोंने दुर्गा भगवती नहि पूजाहै और तीर्थयात्राभी नहिकीतीहै और हवन और जप और ब्राह्मण और गुरुकेताई दान यहसब शुभकाम जिनोंने नहिकीतेहैं और दुर्गापूजन नवरात्रांमेंभी नहि कीताहै ऐसे जो आलसकरके शुभकर्म त्यागने वाले पुरुष तिनासवनाका नरकमें गमन होताहै ३०

दुष्कर्मों का फल कह कर्के श्रव शुभकर्मोंका फल भी संक्षेपते दिखातेहैं ॥ देवेति किजो पुरुष देवतयोंके पूजनाविषे और तीर्थोंके स्नान विषे युक्त हैं और सत्यकथा यथार्थ कथनकरणा जो है तिसधर्मविषे युक्त हैं अर्थात् दूसरेको नहिभी जो प्यारा उसकोभी सत्यहिक यत्नकरतेहैं और शूवीरहैं अर्थात् क्षत्रियादिहोकर युद्धविषे मरतेहैं और तपकरणा और इंद्रि योंकारोकना तिसकर्के युक्तहैं सो अनेकजन्मोंविषे देवतयोंके मंदिरविषे क्रीडाकरतेहैं ३१ और इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें लिखाहै सत्येति ॥ • श्रव महापापियोंका कर्मविपाक कहतेहैं मनुजी • सुवर्णोति • सुवर्णके चुराणे वाला खोट नखोंवाला होताहै और मदिरापानकरणे वाला काले दंताको प्राप्तहोताहै अर्थात् दंदटसके काले होतेहैं और ब्राह्मणके मारणेवाला पुरुष क्षयरोगको प्राप्तहोताहै और गुरुकी शय्याविषे शयन करणेवाला दुश्चर्मनाको प्राप्तहोताहै अर्थात् उसका चर्म खोटाहोताहै परंतु इसमै ऐसा समझना कि वहीत काल नरक

देवार्चनरतायेच तीर्थस्नानपराश्रये सत्यधर्मरताः शूराः तपःसंयमसंयुताः
ते तु जन्मान्यनेकानि क्रीडंत्यमरमंदिरे ३१ शुभकर्मणां तु स्वर्गो गमनमि
त्याह देवेति सत्येति सत्यं यथार्थभाषणं तद्धर्मरताः अप्रियमपि सत्य
मेव भाषंत इत्यर्थः तादृशां त्रमरमंदिरे क्रीडन्ति ३१ अथ महापापिनां
कर्मविपाकः ॥ मनुः ॥ सुवर्णचौरः कौनूर्यं सुरापः श्यावदंततां ब्रह्महाक्ष
यरोगित्वंदौशचर्म्यगुरुतल्पगः १ ॥ यमः ॥ पतितः संप्रयुक्तश्च कृतघ्नो गुरुत
ल्पगः एते पतन्ति सर्वे पुनरकेष्वनुपूर्वशः महापातकसंयुक्ता युगं तिष्ठन्त्यधो
मुखाः १ मनुः ॥ श्वसूकरखरोट्टाणां गोजा विमृगपक्षिणां चांडालपुष्कसा
नांच ब्रह्महायो निमृच्छति १ ॥

भोगके अंतविषे एह महापापी ऐसे फल को प्राप्तहोतेहैं कोई तत्काल हि नहि १ और कहतेहैं यमजी • पतितइति • कि जो पुरुष पतितहै और जो पतितका संपर्कीहै अर्थात् उसके साथ मिलाहुयाहै और जो कृतघ्नहै और जो गुरुकी शय्या विषे शयन करणे वालाहै इह सभ संपूर्ण बरकोंको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् क्रमकर्के सभनां नरकोंको भोगतेहैं और महापातककर्के युक्त हुयेहुये युगपर्यंत अधोमुख होकर स्थित होतेहैं इहां केवल नरकभोगमात्रकिहाहै इसका जो भाविकर्म फलहै सो पूर्वोक्त मनुवचनसेहि जान एना १ और मनुजी कहतेहैं • श्वेति • श्वान और सूकर और गधा और ऊट और गौ और बकरी और भिड़ुं और मृग और पक्षी और चांडाल और पुष्कस क्या वनविषे रहिणे वाले नीच इनां योनियोंको ब्राह्मणके मारणे वाला प्राप्त होताहै १

कृमीति० कि जो ब्राह्मण मदिरापानकर्ता है सो कृमि और कीट और पतंग और बिड्भुज अर्थात् सूकरादि और पक्षी जो हैं काकादि और जीवोंके मारणेवाले जो जीव हैं व्याघ्रादि इनकी योनि नियाँकों प्राप्त होता है २ लूतेति० कि जो सुवर्णको चुराता है सो पुरुष लूता अर्थात् उर्णनाभिजीव और किरला और तरेडे चलने वाले और जलविषे विचरणेवाले और हिंसा करनेवाले जो जीव और पिशाच इनकी योनीकों हजारवार प्राप्त होता है ३ तृणोति० कि जो गुरुतल्पग है अर्थात् गुरुकी शय्याके ऊपर शयन करता है सो तृण क्या घास और गुल्म क्या विनाटा षोते वृक्ष और लता क्या बेल और क्रव्याद अर्थात् राक्षस और दाड़ों वाले और क्रूरकर्मोंके करने वाले जो जीव उनोकी योनीकों सौवार प्राप्त होता है ४ एहफल ज्ञानकर्के करने वाले महापापियोंको कहा है और अज्ञानतें इसीका प्रकार याज्ञवल्क्यजी कहते हैं ॥ महेति० कि अज्ञानकर्के पूर्वोक्त पापोंके

कृमिकीटपतंगानां विड्भुजांचैव पक्षिणाम् हिंसाणांचैव सत्त्वानां सुरापानां ब्राह्मणो ब्रजेत् २ लूता हि सरदानां च तिरश्चां चावुचारिणां हिंसाणां च पिशाचानां स्तेनो विप्रः सहस्रशः ३ स्तेनः स्वर्णस्तेनो महापापप्रसंगात् लूतोऽर्णनाभिः सरटः कृकलासः । तृणगुल्मलतानां च क्रव्याददंष्ट्रिणामपि क्रूरकर्मकृतांचैव शतशो गुरुतल्पग इति ४ एतत् ज्ञानिनः अज्ञानकृते तु याज्ञवल्क्यः ॥ महापातकजानू घोरान्नरकान् प्राप्य दारुणान् कर्मक्षयात् प्रजायन्ते महापातकिनस्त्विह १ मृगश्वसूकरोष्ट्राणां ब्रह्महायोनिमृच्छति । खरपुष्कसवेनानां सुरापानाऽत्र संशयः २ कृमिकीटपतंगत्वं स्वर्णहारीसमाप्नुयात् तृणगुल्मलतात्वं च क्रमशो गुरुतल्पगः ३ यो येन संवसत्येपांसतल्लिंगोभिजायते ४ एतेषां ब्रह्महादीनां मध्ये येन पतितेन यः पुरुषः संवसति सतल्लिंगोऽभिजायते

कीतेयाँ होंयाँ महापातकसे प्राप्त होनेवाले जो वडेघोर और दारुण नरक उनको प्राप्त होकरके और कर्मक्षयसे पीछे सो पापी इस संसारि त्रिषे उत्पन्न होते हैं १ मृगोति० ब्राह्मणके मारणे वाला मृग और कुत्ता और सूकर और उष्ट्र इनोकी योनिको प्राप्त होता है ॥ और खर क्या खोता और पुष्कस क्या चाँडाल और वेनक्या नीचविशेष इनोकी योनीकों मदिरा पान करने वाला प्राप्त होता है इसमें संशय नहि है २ कृमीति० कृमि और कीट और पतंग इनोकी योनिको सुवर्णके चुराणेवाला प्राप्त होता है और गुरुतल्पग जो पापी है सो तृण और लता और गुल्म इनोको क्रमकर्के प्राप्त होता है ३ यइति कि जो पुरुष जिस पतितके साथ निवास करता है सो तिसके लिंगको हि प्राप्त होता है अर्थात् ब्रह्महादिको जैसा फल है तैसे फलको प्राप्त होता है इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें लिखा है ॥ एतेषामिति ४

८२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब शंखजीनेविशेष किहाहै ब्रह्महेति किजो पुरुष ब्राह्मणको मारताहै सोकुष्टीहोताहै और तैजस क्या सुवर्ण तिसके चुराणेवाला मंडलीहोताहै अर्थात् उसके देहमे दद्रुके चिन्ह होतेहैं और गुरुके मारणे वाला अपस्मारी होताहै अर्थात् मिरगीरोगवाला होताहै ॥ अब सूर्यारुण कर्मविपाकमें और कहतेहैं गोस्त्रीति गौ और स्त्री और पुत्र तिनके मारणेवाले जो पापीहैं सो जन्मान्तरमें पुत्र नाशवाले होतेहैं एह ब्रह्महत्याका पुत्रनाशरूप फल प्रसिद्धहै और ब्रह्महत्याके कारण बहुतसारे सूर्यारुणमेंहैं सो उसीजगा जानने यहति जोकोई ज्ञानकरके रहित पूर्वजन्म विषे ब्राह्मणको मारताहै सो इसीजन्ममें कुष्ठरोगकरके युक्तहोताहै १ अब प्रसंगतें ब्रह्महत्याके सम राजाके मारणेका जो पापतिसका कर्मविपाक कहतेहैं ॥ इसमें शातातपुजीका वचन है राजहेति कि राजाके मारणे वाला राजयक्ष्मरोग करके युक्तहोताहै ॥ अब वैश्यके मारणे वाले

शंखेनविशेषोदशितः ॥ ब्रह्महाकुष्टी तैजसापहारीमंडली गुरुप्रतिहंताऽप
स्मारी । सूर्यारुणकर्मविपाके । गोस्त्रीपुत्रवधाः पापाः पुत्रनाशकरामताइति ।
ब्रह्महत्यायाः पुत्रनाशरूपफलाभिव्यक्तिता ॥ विशेषान्तरंसूर्यारुणे । यः
कश्चिद्घातयेत्पूर्वब्राह्मणंज्ञानवर्जितः । कुष्ठरोगान्वितः सोपिजायतेऽत्रैवज
न्मनि १ अथप्रसंगात् ब्रह्महत्यासमनृषवधकर्मविपाकः ॥ तत्रशातातपः ॥
राजहाराजयक्ष्मास्यादिति ॥ वैश्यहंतुरपिब्रह्महत्यामहापातकसमतया
तत्कर्मविपाकः । कर्मविपाकसमुच्चये ॥ छिन्नान्यंगानिजायंतेवैश्यहंतुस्ततः
परम् ज्वरोशीतोष्णकौदाहश्रयानस्तन्निवृत्तये १ वैश्योऽत्रयागस्थोबोध्यः
सूर्यारुणकर्मविपाकेतु अन्यथोक्तं यथा । यामोहाद्घातयेद्वैश्यमन्यजन्मनि
मानवः सोऽत्रजन्मनिविज्ञेयोरक्तावुदसमन्वितः १ इति शरणागतवधेकेव
लंनरकस्थितिः निन्दतिर्यग्योनिश्चसर्वमुनिमतेन ॥

को ब्रह्महत्यातें उत्पन्नभयाजो पाप तिसके समहोणें करके तिसवैश्यहन्ताका कर्मविपाककहतेहैं सो किहाहै कर्मविपाक समुच्चय विषे छिन्नानीति ॥ किंवैश्यके मारणे वाला जन्मान्तरमें कट्टेहोए श्रंगों वाला होताहै और उसको शीतज्वर और उष्ण और दाह इहोरोग भी होतेहैं और तिनके दूरकरणे विषे श्रयान क्या असमर्थहोताहै और वैश्यकरके इहांयज्ञमें स्थितजो वैश्य तिसकाग्रह एहै १ सूर्यारुणमें और किहाहै सो कहतेहैं जैसे ॥ यहति जो पुरुषमोहतें पूर्वजन्मविषे वैश्यकोमार ताहै सो रक्तावुदरोगकरकेयुक्तहोताहै अर्थात् रक्तावुदनामकके जो कुष्ठहै तिसवालाहोताहै १ अब प्रसंगसे शरणागतवधपापकाफलदिखातेहैं शरणागतकेमारयांहोयां केवल अर्थात् बहुतबालनरकमें स्थितिहोतीहै और निन्दित जो तिर्यक्क्यापश्वादियोनि सो भी पीछे सवनाकृषियांकमतकरकेहोतीहै

अब गर्भघातीको ब्रह्महत्याके समहोणे करके तिसका कर्मविपाक कहतेहैं सो किहाहै सूर्यारुण विषे ॥ पुरेति कि जो पुरुष ज्ञानरहित पूर्वजन्ममें गर्भघात करताहै सो इसजन्ममें निरन्तरही जलोदररोग क्या उदर वृद्धि रोग तिस करके पीडितहोताहै ॥ १ ॥ और सुहृद्वधको भी ब्रह्महत्याके समहोणेके तिसका कर्म विपाक कहतेहैं सूर्यारुण विषे ॥ पूर्वेति पूर्वजन्म विषे जो पुरुष अज्ञानतें पुत्रकों और मित्रकों मारताहै सो इसी जन्ममें वायुरोगकके पीडितहोताहै १ और विश्वस्त क्या अपणाकके जाननेवाला तिसको विषदान करणेके पापको ब्रह्महत्याके समहोणेकके तिसका कर्मविपाक कर्मविपाकसमुच्चयतें कहतेहैं ॥ विश्वस्तेति कि जो पुरुष विश्वस्तपुरुष कों विष देताहै सो छीह क्या लिप्फरोगवाला होताहै और चशब्द कके शूल रोग वालाभी होताहै ॥ और तिसीकर्मविपाकसमुच्चयविषे नास्तिकता कके संध्यादित्यागकोभी

गर्भघातस्यापिब्रह्महत्यासमतया तत्कर्मविपाकः सूर्यारुणे ॥ पुरागर्भतु यःकश्चिद्घातयेद्ज्ञानवर्जितः जलोदरेणसततंरोगेणात्रप्रपीडयते १ ॥ सुहृद्वधस्यापितत्समत्वात्तत्कर्मविपाकः । सूर्यारुणे । पूर्वजन्मनियोऽज्ञानात् नरोवेघातयेत्सुतं मित्रंवावायुरोगेणपीडयतेसोऽत्रजन्मनि १ इति विश्वस्त विपदानस्यापि ब्रह्महत्यासमतया तत्कर्मविपाकः ॥ कर्मविपाकसमुच्चये विश्वस्तविपदाताचछीहवान् जायतेनरः चशब्दाच्छूलाच । तत्रैव । नास्ति क्यात्संध्यादित्यागस्यापितत्समत्वात्तत्कर्मविपाकः ॥ पूर्वजन्मनिनास्ति क्यात्संध्यादिरहिताद्विजः हस्तशूलाच भवति इति ॥ गुरुप्रातिकूल्यस्यापि तत्समत्वात्तत्कर्म विपाकः तत्रैव ॥ गुरौनिर्वधतोयस्तु प्रातिकूल्यंसमा चरेत् सोऽपस्मारी भवेत्तत्रेति । गुरुपरोधस्यापि तत्समतया कर्मविपाकः तत्रैव । गुरुपरोधीशिरसिरोगवान्जायतेनरः एतत्साम्येन गुरुणावाग्विरो धस्यकर्मविपाकमाह । वौधायनः । वाग्विरोधं गुरोः कृत्वामुस्वरोगीभवेन्नरः १

ब्रह्महत्याके समहोणेकके तिसका कर्मविपाक कहतेहैं ॥ पूर्वेति कि नास्तिकता कके पूर्वजन्मविषे जो पुरुष संध्यादिकोंसे रहितहै सोहार्थमे शूलरोगवालाहोताहै और गुरुके साथ जो प्रतिकूलता तिसकोभी ब्रह्महत्याके समहोणेकके तिसका कर्मविपाक कहतेहैं ॥ गुर्विति कि जो पुरुष हठ कके गुरुके साथ प्रतिकूलरहताहै अर्थात् शत्रुभावकरताहै सो अपस्मारी क्या मिरंगी तिस कके युक्त होताहै ॥ और गुरुको हरकिसीकामसे हठकर रोकणा तिसकोभी ब्रह्महत्याके समहोणे कके तिसका कर्म विपाक कहतेहैं कि जो पुरुष हठ कके गुरुओंको सबनां कर्मासे रोकताहै सो शिरविषं रोगवाला होताहै ॥ और इसी पापकी साम्यता कके गुरुके साथ वाणी कके विरोध करणे वाला जो पुरुष तिसका कर्म विपाक कहतेहैं ॥ वाग्विरोधमिति कि जो पुरुष गुरुओंके साथ वाणी कके भी विरोध करताहै सो मुखरोगी होताहै अर्थात् थथला होताहै १

८४ ॥ भीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० च० ॥ टी० भा० ॥

अब गुरुद्वेषकोंभीस्पर्धाके समहोणेतें तिसके करणेवालेकाकर्मविपाक कहतेहैं ॥ गुर्विति गुरुद्वेषीजैसेहै तैसेहि अपरक्या स्पर्धाकरणेवालाजान्नासोई इस वाक्यके अनन्तरकिहाहै दुरिति किंगुरुद्वेषीनरक भोगकर दूसरे जन्ममें दुर्मन क्या खोटे मनवालाहोताहै फेर मृतपुत्र होताहै फेर चर्मकील व्याधि कर्कें युक्त होताहै अर्थात् उसके मुखमें एकचर्मदाकिछा होताहै १ और वेदसंवहिर्भूतजो शास्त्र तिसके पढ़नेकोभी गुरुद्वेषके समहोणेतें तिसकाकर्मविपाक कहतेहैं दंष्ट्रीति कि दंष्ट्री जो सर्पा दिक और पशु तिनसें गुरुनिंदा कर्कें और वाह्यशास्त्रके पढ़ने कर्कें मृत्युको प्राप्त होताहै सोई निजलदेशमें वनविषे ब्रह्मराक्षस होताहै अर्थात् मरणेतें पछे ब्रह्मराक्षस भावको प्राप्तहोताहै १

गुरुद्वेषस्याप्येतत्समत्वात्कर्तुः कर्मविपाकः तत्रैव ॥ गुरुद्वेषीतथापरइतिक थनानंतरं। दुर्मननाश्चैवजायेत नरकतिन्यजन्मनि मृतपुत्रश्चर्मकीलव्याधि युकोभवेच्चसः २ वेदवाह्यशास्त्राध्ययनस्येतत्समत्वात्तत्कर्मविपाकोऽपितत्रैव यथा ॥ दंष्ट्रिभ्यश्चपशुभ्यश्चमरणंगुरुनिंदया वेदेभ्योवाह्यशास्त्रस्यपठनाद पिजायते अरण्येनिर्जलेदेशेजायतेब्रह्मराक्षसः ३ मरणानंतरंब्रह्मराक्षस त्वावाप्तिरित्यर्थः। गर्वेणगुर्ववज्ञाकर्तुरपितत्समतयातत्कर्मविपाकः। माता पित्रोर्देवतायागुरोरपिचगर्वतः अवज्ञांकुरुतेयस्तुशिवपादाभिधोग्रहः ४ गृह्णातितत्क्षणान्मूर्ध्निजठरेरोगवान्भवेत् पाददाहीज्वरीचैवजायतेनात्रसं शयः ५ अत्रैवप्रकारान्तरम्। देवब्राह्मणगुर्वार्ययोगेशाद्यवमानिनाम् शिशु ग्रहःसंक्रमतेततोज्वरयुतोभवेत् अतीसारीचाथशोफीहस्तपादप्रकंपवान् १

और गर्वक्या अहंकार तिसकरके जो गुरुयोंकी अवज्ञा करताहै तिसकोभी पूर्वोक्त पापके समहो णेकरके तिसकाकर्मविपाक कहतेहैं ॥ मातेति किजो माता और पिता और देवता तिनोंकीगर्वकर्कें अवज्ञाकरताहै तिसकों शिवपादनामाग्रहमस्तकविषेग्रहणकरताहै ४ और वो पुरुष उदरविषे रोग वाला और पादोंमें दाहरोगवाला और ज्वरवालाभी होताहै इसमें संशय नहिहै ५ इसमें और प्रकारकहतेहैं देवेति जो देवता और ब्राह्मण और गुरु और आर्य्य क्या श्रेष्ठ और योगेशादिक क्या योगाभ्यासके वेत्ता तिनका तिरस्कारकरणेवालेहैं तिनकों शिशुग्रह रोग होताहै तिसकें अनन्तर ज्वर और अतीसार और मुखमें और पादोंमें कंपन यह रोगहोतेहैं १

अथ पुरुषका कर्म विपाक कहकरके स्त्रीका कर्म विपाक कहते हैं जो किहा है ॥ कर्मविपाक संग्रहविषे भवति कि जो नारी पतिके सुखकरके सौख्य युक्त नहि होती है सो स्त्री तीन वर्ष अथवा पांचवर्ष जन्मान्तरमें इयेनी होती है अर्थात् वाजकी स्त्री होती है इसजगा पुस्तकांतरमें (प्राणि जन्मानि पंचच) एहपाठ है इसका अर्थ स्पष्ट है ॥ इसते योग्यता एह है कि वाजकी स्त्री पतिके साथ स्नेह बहुत है और वियोग भी बहुत है इसमें ऐसा अभिप्राय है कि जिसमें स्नेह अधिक है उसके वियोगमें भी दुःख अधिक है १ वाचेति और जो स्त्री बडा कठोर शब्द करणे वाली वाणीद्वारा पतिनूँ रोककर अकार्य क्या खोटा काम कराती है सो नारी बडा पापण जन्मान्तरमें बल्गुली होती है अर्थात्

अथ स्त्रीकर्मविपाकः ॥ भर्तृसौख्येन यानारी सौख्ययुक्तान जायते सा श्येनी जायते राजन्त्रीणि वर्षाणि पंचच १ वाचाचाक्रौशकामातुसं निरुध्य पतिं हिया अकार्यकारयेत्पापासानारी बल्गुली भवेत् २ भर्तुरर्थे हिया वित्तं विद्यमानं नयच्छति जीवितं वा वरारोहे विष्टा यां जायते क्रिमिः ॥ क्रिमियोनि विनिमुक्ता काष्ठीका भवेत्तुसा ३ ॥

किरली होती है इसमें एह योग्यता है कि वाणीसे दुर्बचन कहनवालीको बल्गुली की योनि वाणी के विलासका सुख दूर करणे वाली उचित है २ भर्तुरिति और जो नारी विद्यमान जो वित्त क्या धन जीवनरूप तिसको पतिके अर्थवास्ते नहि देती है सो जन्मान्तरमें विष्टाविषे क्रिमियोनिको प्राप्त होती है ३ क्रिमिरिति और क्रिमियोनिकों भोगकर फेर काष्ठविषे की डी होती है जिसकरके पति का हिंसा है तिसको पतिके अर्थ लगाणा अच्छा है परंतु जिस दुष्टाने नहि दित्ता तिसको ऐसी निंदित योनि धनके भोगसे हीन होणी योग्य है ३

८६ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ब० १० टी० प० ॥

और कर्म संग्रहविषे किहा है ॥ अवमत्येति कि जो स्त्रीपतिका अपमानकके जारकों आलिंगन कके विसीके साथ क्रीडा करती है और तिसीको स्वीकार करती है १ तस्या इति फेर जन्मान्तरमे तिसके कुचोमें शोधक्या सो जा उत्पन्न होता है फेर तिसकी भगसे जन्म २ मे रक्त क्या रुधिर वगवा हैं २ मृत इति और जो नारी पतिके मरणसे पीछे नीलवस्त्र धारती है सो मरकर नरकको प्राप्त हो ती है फेर नरक भोगकर मनुष्यशरीरमे प्राप्त हो कके किमिकुक्षि होती है अर्थात् तिसकी कुक्षिमें कीड़े उत्पन्न होते हैं ३ इसीका और प्रकार शिवगीतामें किहा है ॥ क्षुदिति कि जो नारी क्षुधातृषाकके आतुर होए २ पतिका अपमानकके निशानकों आपही भक्षण करती है सो जन्मान्तरमे गर्भसे रहित

कर्मसंग्रहे ॥ अवमत्यचभर्तारं जारमालिंग्यतेन च सार्धं क्रीडतियानारी तमेवानुसरत्यपि ॥ १ ॥ तस्यास्तुस्तनयोः शोथोजायते जन्मान्तरे भगं रक्तं च स्रवति नित्यं जन्मनि जन्मनि ॥ २ ॥ मृते भर्तारियानारी नीलवस्त्रं प्रधारयेत् सामृतानरकं यातिकुमिकुक्षिस्ततः परम् ॥ ३ ॥ ततः परं नरकभोगानं तस्मानुष्यशरीरमासाद्येत्यर्थः ॥ ३ ॥ शिवगीतियाम् ॥ क्षुत्पिपासातुरं नारी भर्तारमं वमत्स्वया मिष्टान्नं स्वयमश्नाति न सा पुष्पवती भवेत् ॥ १ ॥ वृद्धगौतमः ॥ स्त्रवद्रर्भा भवेत्सा तु बालकं हंतिया विषैः ॥ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ क्षीरं मुष्णाति यानारी पूर्वजन्मनि सुव्रता जन्मान्तरे तु तस्या वैक्षीरं न क्षरते स्तनात् १ ब्रह्मांडपुराणे ॥ नित्यं सकलहानारी जायते वनमक्षिका भर्तारं वंचयेद्या तु जलौका जायते वधूः १ नित्यमिति कलहकर्त्री स्त्री सशब्दा व नमक्षिका भवति भर्तृवंचिका तु जलौका पुरुषसंगसुखरहिता निव्यरुधिरा दिभोक्त्री ॥ १ ॥

होती है १ और इसीका कर्मांतर वृद्धगौतमजी कहते हैं ॥ स्त्रवद्रर्भेति जो नारी विषदेकरके बालकको मारती है सो जन्मान्तरमे स्त्रवद्रर्भा होती है अर्थात् तिसका गर्भ गिड़जाता है १ अव और किहा है कर्मविपाकसंग्रह विषे क्षीरमिति जो नारी पूर्वजन्मविषे दुग्धको चुराती है तिसके स्तनोंसे जन्मान्तरमें दुग्ध नहि उत्पन्न होता है १ ब्रह्मांडपुराणविषे और प्रकार किहा है ॥ नित्यमिति जो नारी नित्यदिसकलहानक्या लड़ाई करणेवाली है सो शब्दकरणवाली वनमें मक्षी होती है ॥ और जीपति को वंचन करती है अर्थात् पतिको ठगती है सो जन्मान्तरमें पतिसंगसुखसे रहित और निव्यरुधिरादिकोका भक्षण करणेवाली जलौका क्या जुक होती है १

और स्त्रीयांकोभी ब्रह्महत्याफल क्षयरोग प्राप्तिहोतीहै सोई किहाहै सूर्यारुण कर्म विपाक विषे ॥ येति जो नारी निश्चयकरके अपनी इच्छासे पूर्वजन्मविषे ब्रह्महत्याको करतीहै सो इसजन्ममें क्षयरोग वाली होतीहै १ नेति हेपक्षिसत्तम तिसके पापका शमन क्या शान्ति मैंने नहि कही और मेहापापसे उत्पन्न हुया जो रोग तिसकरके मृत्युको प्राप्तहोतीहै इसमें संशय नहि जानना २ पूर्वति और जो पूर्वजन्ममें ब्राह्मणको और पुत्रको मारतीहै अथवा ब्राह्मणकेपुत्रको मारतीहै सो जन्मांतरविषे और जिस अवस्थामे ब्राह्मणपुत्र मारयाहै तिसी अवस्थामे कुष्ठरोगकर्के युक्तहोतीहै ३ इसीका और फलकहतेहैं ॥ जायतइवि फेर जन्मधारकर गलत्कुष्टकरकेही अर्थात् जो सदाहि वगसा रहेवाहै ऐसे कुष्ठ कर्के मृत्युको प्राप्त होतीहै मैंने यह ज्ञानरुत पापका

स्त्रीणामपि ब्रह्महत्याफलं क्षयरोगावाप्तिः ॥ सूर्यारुणकर्मविपाके ॥ याया
पिदाचरेत्कामात्पूर्वजन्मनिशिचयात् ॥ ब्रह्महत्यामथात्रैवसाज्ञेयाक्षयरु
ग्युता १ नतस्याःपापशमनंमयोक्तंपक्षिसत्तम महापापकृताद्रोगान्मृ
त्युरेवनसंशयः २ पापालपतयास्वलपरोगवत्त्वम् ॥ पूर्वजन्मनियाकाचित्
घातयेद्ब्राह्मणंसुतं सान्यजन्मभिकुष्टेनतस्मिन्वयसिपीडिता ३ जायतेमि
यतेषापिगलत्कुष्टेनचांडज पापाद्ज्ञानकृतात्पूर्वान्नचोक्ततन्मतंमया ४ ग
र्भघातिन्बानार्थ्याअपि तत्रैव ॥ यानारीघातयेत्काचित्परगर्भतुकाशयपे ज
लोदरेणरोगेणपीडयतेसाऽन्यजन्मनि ५ श्रीमदिति ॥ पर्यालोचितेति ॥
पूर्वोक्तमनुसंधेयम् *

फल नहि कहा किंतु अज्ञानरुत पापका कहाहै यह मेरामतहै और ज्ञान कर्के जो कदाचित्
ऐसा पापकरे तद अधिक दोष जानना ४ येति जो कोई नारी दूसरेके गर्भका घात करतीहै
सो जलोदर रोग कर्के दूसरे जन्ममे पीडाको प्राप्तहोतीहै ॥ ५ इसजगा गर्भघातयेत् ऐसाहि
कहनाथा पांतु परगर्भ कर्के इस जगाजारजगर्भजांनना क्योंकि तिनकीभी रक्षाकरणो उचितहै
और पातिके गर्भको कोई स्त्रीघात नहि करती इसकर्के परगर्भ ऐसा किहाहै ५ श्रीति एह
दोनोंश्लोकपिछे प्रकरणके अंतविषे आए हैं इस जगा सो स्मरणकरलेखे श्रीमदिति पर्या
लोचनेति इनकी अर्थ पीछे कहदियाहै

इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाशमीरायनेकदे
शाधी शप्रभुवरश्रीरणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपं
डितोपनामदेवीदत्तसुत कविगंगारा
मसंगृहीतेधर्मशास्त्रमहानिवंधे
प्रायश्चित्तभागे कर्मविपोक
नामकंचतुर्थप्रकरणम्

इतिभाषाटीकाचतुर्थ
प्रकरणम्

शुभं भवतुसर्वत्र

पृ- पं		पृ- पं	
१ १	मंगलाचरणम्	२२ ८	प्रायश्चित्तेनागेशशूलपा ण्योराशयनिरूपणम्
८ २	ग्रन्थनिर्माणप्रारम्भः	२३ ५	तत्रैवयाज्ञवल्क्यकाश्य पयोर्वचननिरूपणम्
९ १०	संक्षेपेणमहाराजवंश वर्णनम्	२३ ६	तयोर्वचनेनागेशशूलपा ण्योराशयवर्णनम्
११ २	प्रकरणानुक्रमणिकाक थनम्	२४ ८	पापस्वरूपतान्निमि तयोर्वर्णनम्
१२ ४	वर्णाश्रमधर्मनिरूपण पूर्वकप्रायश्चित्तभागक थनम्	२६ ५	अत्राहुरित्यनेनम तांतरकथनम्
१२ ६	अथैतत्प्रकरणनिरूप णेप्रसंगसंगतिः	२७ ६	पापत्रैविध्यकथने मनुवचनम्
१३ ६	धर्मस्यस्थितोर्विप्र, तिपत्तिकथनम्	२८ १	तत्रैवयाज्ञवल्क्यवचनम्
१४ ११	अस्योत्तरप्रारंभः	२८ ३	विहितस्येतिनिरूपणम्
१६ ७	एवंब्रीहिभिर्यवैर्वैत्यस्य समाधानम्	२९ १	अत्रैवमनुवचनं
१७ ११	तत्रादौप्रायश्चित्तश ब्दार्थनिरूपणेमाधव वचनम्	२९ १	नरककर्मणामिति वि ष्णुपुराणवचननिरूपणम्
१९ १	एतच्छूलपाणिनाप्यु क्तम्	२९ १	तत्रैवयमवचननिरूपणम्
१९ ४	अत्रैवनागेशवचनम्	३० १	अन्येप्येवंसमाधानंकुर्वति
१९ ९	अत्रैवकाश्यपवचनम्	३० २	विहिताकरणस्यमतभे देननिरूपणम्
२० १	अनादिष्ठादिपाषेसंवर्तव चनेनदानेनपापनाशक थनम्	३० ७	प्रत्यवायउच्यते
		३० ११	दुरितपूर्वस्कन्दपुराणेद र्शितंनाभिरक्षंतीति
		३१ १	मनुनोक्तं अनभ्यासाच्चेति
		३१ ३	अथकथंचित्तत्रकृतेःसम्पा दनम्

पृ	पं		पृ	पं	
३३	५	प्रायश्चित्तकदंबाद्यु क्तपापगणना	७७	३	नैमित्तिकादिप्रायश्चित्तं
३४	१	उद्देश्यक्रमानुसारेणपा पभेदाः	७८	१	प्रायश्चित्तंकुर्यान्नवाकुर्यात्
४८	२	पतितगणना	८१	१	प्रथमप्रकरणसूचीपत्रं समाप्तम्
५२	५	महापातकातिपातकानु पातकानांनिरूपणम्			अथद्वितीयप्रकरणसूची-
५४	८	अथेदानींतनाःकेचिज्ज नाःकर्मणियोग्यानवा	८५	३	अथप्रायश्चित्ताधिका रिणांनिरूपणम्
५६	२	अथप्रायश्चित्तंकीदृशंतेषां	८९	१	अथकामाकामकृतप्राय श्चित्तव्यवस्थानिरूपणं
५६	३	येषांचातुर्वर्णिकानांम्ले च्छादिभिःसंसर्गइत्यादि	९३	७	कृतद्विगुणप्रायश्चित्तानां पातकनाशाभावकल्प नमेवेतियुक्तियुक्तम्
६५	४	वेदाध्ययनानधिकारात् पारंपर्यात्धर्मः	९६	९	भवन्नयेतदानीतस्मिन्पु रुषेपापाभावइतिनिरू पणम्
६६	२	अथपौंड्रकादयः			अथचवाक्यभेदोव्यव हार्यः
६६	११	मांधातुरिन्द्रमप्रतिप्रणः	१०१	२	व्यवहार्यत्वेब्रह्ममीमां. साभाष्यविरोधोद्भावन निरूपणम्
६७	१०	आचार्यलक्षणम्	१०३	२	अथवाचस्पतिकल्पतरु विरोधान्मिताक्षराया अप्रामाण्यनिरूपणम्
६८	५	अगस्त्यसंहितावचनम्	१०५	१	द्वितीयप्रकरणसूचीस माप्ता
६९	१	मंत्रनिरूपणं			अथमंगलाचरणम्
७०	१	स्कंदपुराणेविष्णुभक्तिः	१०७	९	
७०	५	देवीपुराणेवर्णाश्रमवि भागेनदेवस्थापनम्			
७२	६	पातकविशेषेणपुनःसं स्कारः			
७४	१०	तीर्थप्रत्याम्नायः			
७५	८	वृहन्नारदीयेनारायण प्रशंसा			

पृ-	पं		पृ.	पं	तृतीयप्रकरणसूचिपत्रम्
१०९	३	अथाधिकारिकर्तव्यताकां-	१२०	६	तृहस्पतिरपि
		क्षायांपरिषत्प्रकरणम्	१२१	९	तत्रैवांगिराः
१०९	५	अथतन्माहात्म्यमाहांगिराः।	१२१	११	यमोऽपि
१०९	८	प्रायश्चित्तकर्तव्यत्वमाहयमः	१२२	४	धर्मविरुद्धौ
११०	३	चतुर्विंशतिमतेऽपि	१२२	६	प्रायश्चित्तत्वेविशेषमाह-
११०	९	प्रायश्चित्तानन्तरंपुनःपाप-			अंगिराः
		रतिर्नस्यादित्याहमनुः	१२३	१	भविष्येऽपि
१११	१	परिषदुपसर्पणमाहांगिराः	१२३	३	तथाचचतुर्विंशतिमतेदर्श-
११३	५	परिषद्योग्यानांपरिशेषयि-			तम्
		तुंपरिषदयोग्यानाहपराश-	१२४	२	क्षत्रियादीनांपरिषत्वंना-
		रः			स्तीतिधर्मविरुद्धौ
११४	८	तत्रैवव्यासवचनम्	१२४	९	पाराशरेणापि
११४	९	ब्राह्मणब्रुवसंज्ञाचतुर्विंशति-	१२५	२	तथाचदेवलः
		मते	१२५	४	पराशरः
११४	११	इमेनपरिषद्योग्याइत्याह	१२५	५	विष्णुराह
		पराशरः	१२६	१	प्रायश्चित्तोपदेशविधिमा-
११५	३	तथाचतुर्विंशतिमते			हांगिराः
११५	९	पूर्वोक्तानांप्रायश्चित्तकथ-	१२७	१	पुनरंगिराः
		नेदोषमाहपराशरः	१२७	२	देवलः
११६	१	अनयोश्चवचनयोरर्थमाह	१२७	४	वोप्रायनः
		माधवः	१२७	५	इदंचार्चितैर्ब्राह्मणैर्देयमि-
११७	८	निर्देष्टव्यमाह पराशरः			त्याहसएव
११८	१	विद्वन्मनोहरायांतु	१२७	८	हारीतः
११८	३	नपुनःसभ्यादीन्प्रविश-	१२८	२	अशक्तावनुग्रहमाहपरा-
		तिपापमित्याहपराशरः			शरः
११८	७	कार्यतारतम्येनपर्यदोमु	१२८	५	प्रायश्चित्तदेशमुपदिश-
		स्यानुकल्पभेदानाहपरा-			तिपराशरः
		शरः	१२८	७	जप्यमाहहारीतः

पृ	पं		पृ	पं	
१२८	८	अनुग्राहकस्वरूपमाहां- गिराः	१३५	३	अन्येतु
१२९	२	उक्तातिरेकेणानुग्रहेप्रत्य वायमाहपराशरः	१३५	५	विद्वन्मनोहरायामप्येवं
१२९	४	पराशरः	१३५	७	तथाचपैठीनासिः
१२९	६	अथप्रायश्चित्ताचरण- क्षमस्यप्रतिनिधिर्नकार यितव्यइत्याहपराशरः	१३५	८	तथाचयाज्ञवल्क्यः
१३०	१	अथेतिकर्तव्यतामाहविष्णुः	१३६	२	विशेषमाहवसिष्ठः
१३०	८	इतिमाधवःमनुरप्याह	१३६	६	पराशरोऽपि
१३१	१	तदुक्तंभविष्ये-	१३७	३	अपरार्के
१३१	२	तथाचमनुः	१३८	७	तैत्तिरीयकेआमुरंवपनं- निदित्वाद्वैवक्रमउक्तोम- नुनापि
१३१	३	व्याख्यातोयंश्लोकउप पातकप्रकरणेसंवर्तप्राक्ते	१३९	५	क्षौरनिषेधांश्चाहवृद्धगा र्यः
१३१	६	यमोपि	१४०	२	वादरायणः
१३१	७	तथाचमनुः	१४०	४	व्यासः
१३१	८	विष्णुपुराणे	१४०	७	अथस्त्रीशूद्रोपयोगिकिं चिदुच्यते
१३२	६	महाभारते.	१४१	२	मदनरत्ने
१३२	९	जावालिः	१४१	७	यत्तुपराशरेणापि
१३२	१०	विष्णुः	१४२	१	वराहवचनमपि
१३३	७	कृच्छाणांप्रायश्चित्तरूपा णांप्रारंभेवपनंकार्यपु ण्यार्थनाऽतएवगोवधेप राशरः	१४३	१	अथस्नानविधिःप्रायश्चि तमयूखे
१३४	४	हारीतः	१४३	५	ततोऽगामयस्नानेविधिवि
१३५	६	इतिप्रायश्चित्तमुक्तावली कारा विज्ञानेश्वरस्तु.	१४३	८	ष्णुःअथमृतस्नानविधिः शिवपुराणे
			१४४	५	क्रमउक्तोब्रह्मे
			१४४	७	पारस्करः
			१४५	१	योगी

पृ	पं		पृ	पं	
१४५	५	अनंतरंचतुर्थवारिस्नानम्	१६९	१	अथवाऽहोमपक्षे
१४९	२	अशक्तौप्रायश्चित्तमन्य द्वारापिकार्यप्रायश्चित्त विवेकेब्राह्मे	१६९	५	ततश्चाचार्येभ्योदक्षिणा
			१६९	६	आचार्यायवरदानम्
१४९	५	व्रतांतैकर्तव्यतामाहपरा शरः	इति प्रायश्चित्ततृतीयप्रकरणसूचिपत्रम्		
१४९	८	व्रतकर्तृमृतौयमः	१	३	तत्रादौकर्मविपाकशब्दा र्थनिरूपणम्
१४९	९	अंगिराअपि	१	६	तस्मिन्विषयेमाधववच- नम्
१५०	१	आगलेयः	३	३	विष्णुधर्मोत्तरवचनम्
१५०	२	वायवीये	४	२	ब्रह्मपुराणवचनं कर्म- णामित्यादि
१५०	४	अथसर्वप्रायश्चित्तविधा. न	४	४	विष्णुपुराणवचनंपाप कृदित्यादि
१५१	५	पराशरः	१२	९	अथावशेषतःकर्मविपाक स्तत्र
१५१	४	संकल्पादि			प्रेतत्वहेतुविष्णुधर्मोत्तर- वचनम्
१५४	७	अथसभ्यपादप्रक्षालना दि	१४	३	अपहत्यचसर्वस्वमिति-
१५५	१	अथसभ्यैर्वाच्यम्.	१४	८	ब्रह्मराक्षसत्वहेतुकंग- रुडादौ
१५७	६	अथकर्ताडौ	१५	८	अधमयोनित्वहेतु- वामनपुराणवचनम्
१५९	१	भस्मादिस्नानम्	१८	१	गरुडपुराणवचन चंद्रार्केति-
१५९	८	अथमृदास्नानम्	१९	२	रुद्धगौतमवचनं मौल्यादिति
१६२	१	उदकस्नानम्	२१	१	कर्मविपाकविशेषो यथागौतमीये
१६२	५	पंचगव्यस्नानम्			
१६३	७	अथसप्तधान्यस्नानम्			
१६४	५	ततोविष्णुपूजनम्-			
१६४	७	तत्रप्रथमंकलशस्थापनम्			
१६६	२	ततःपूर्वागगोदानसंक. ल्पः			
१६६	५	पंचगव्यहोमप्रकारादि			

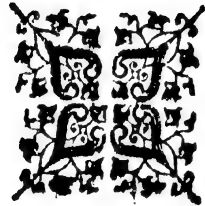
पृ	पं		पृ	पं	
२१	२	विवाहादिविघ्नकर्तृणां	५०	५	पुनरन्यप्रकारेणकर्म.
२६	२	रोगविशिष्टानांगणना	५०	९	विपाकः
३२	४	स्कांदेनागरखंडेस्वा.	५१	१	कर्मविपाकेवृद्धवौधाय
३७	२	मिद्रोहइति	५१	४	नवचनम् विघ्नेति
४२	३	महाभारतेनास्तिकानां	५१	६	पुनरन्यप्रकारे
४३	१	निरूपणम्	५२	१	ए
४८	३	ब्राह्मणानांपीडाकरण	५२	५	तत्रैवशातातपोक्तिर्जा.
४९	१	मित्यादीनिपापानिजा	५२	८	त्युतमेति
४९	३	तिभ्रंशकरादीनि	५२	९	पुनरन्यप्रकारेण
४९	५	एवंनिपिद्धाचरणफला	५२	१	तत्रापिशातातपःपितृ
४९	६	न्यभिधायविहिताकर	५२	३	स्वसेति
५०	१	णफलविपाक	५२	४	प्रकारांतरम् अतिमा
५०	४	माह.	५२	५	नादिति
५०	४	मार्कंडेयपुराणेवि.	५२	७	कर्मसंग्रहेचांडालेति
५०	४	शेषउक्तः	५२	१	कर्मसं० देवानामिति
५०	४	प्रकारांतरेणकर्मविपा-	५२	२	कर्मसंग्रहे० मोहयित्वेति
५०	४	कोक्तिः	५२	३	तत्रैववृद्धवौधायनः स
५०	४	कर्मसंग्रहेपठिताय	५२	४	वर्णेति
५०	४	दानाभावफलम्-	५२	५	कर्मसं० लशुनमिति
५०	४	पितृमैथुनश्रवणफलं-	५२	६	कर्मसं० वैद्यशास्त्रमिति
५०	४	नग्नपरस्त्रीदर्शनदोषः	५२	७	तत्रैवयमःनित्येति
५०	४	मंगलक्रीधोत्पादनदो	५२	८	कर्मसं० गुरुमिति
५०	४	षः	५२	९	तत्रवौधायनःब्राह्मण
५०	४	उमामहेश्वरसंवादेकृत	५२	१०	श्वासेति
५०	४	घ्नदोषः	५२	११	कर्मसंग्रहे० गुरूपरो
५०	४	पुनरन्यप्रकारेणकर्म	५२	१२	धीति
५०	४	विपाकः	५२	१३	गुरूपरोधनकर्मविपा
५०	४	तत्रैवपद्मपुरा-	५२	१४	केनारदवचनम्
५०	४	णवचनम्	५२	१५	

पृ	प	पृ	प
५४	८ तत्रैवपद्मपुराणवर्धनब्रह्मद्विडिति	७	मध्यपानदोषोवायुपुराणोक्तः
५३	१ परपुरुषवाङ्मिरोधनकर्मविपा	७	मातुःसपत्नीगमनशातातपवा
	कः		कथम्
५५	२ शातातपोक्तध्वमाजीरादिस्पृष्टा	६१	१ सौन्दर्यहेतुनापरस्त्रीगमनदोषः
	न्नकर्मविपाकः	४	कन्यागमनदोषः
५५	३ कूटसाक्षिकर्मविपाकः	६	मातृगमनदोषः
५५	५ परदुःखकरणकर्मफलम्	९	चांडालीगमनकर्मविपाकः
५५	७ विषप्रदकर्मविपाकेशातातपः	६२	१ अपराधविमैवभृत्यादीनांदंडदा
५५	८ आमन्नहरणदोषः		तुर्दोषः
५६	१ शास्त्रविक्रयदोषः	३	विष्मत्रोत्सर्गकृत्वाऽशुद्धएवयी
	३ कुकुटमारणेदोषःशातातपोक्ते		न्नेभुक्तेतस्यदोषः
	४ लवणहरणकर्म	८	स्त्रीहननकर्मविपाकःशातातपो
५७	१ घृतचौर्येदोषःशातातपवाक्यम्		क्तः
	३ उच्छिष्टपुरुषस्यादित्यद्वयेनदोषः	६३	१ पुत्रस्त्रीपितृव्यस्त्रीगमनकर्मविपा
	६ मातापित्रादिनिवाश्रवणदोषः		कः
५८	३ अभक्ष्यभक्षणेदोषस्तत्रैवशातात	६३	२ मातुलानीगमनकर्म-
	५ पवाक्यम्		४ ज्येष्ठपरित्यज्यपूर्वस्वयमुद्धोदुः
५९	१ अगम्यागमनकलम्		कनिष्ठस्यकर्म-
	३ गजादिमारणकर्मविपाकः	६४	६ मित्रभार्यागमनेकर्म-
	मल्येनाध्यापनकर्म		१ निर्दोषभार्यात्यागकर्म-
	ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभेदकल्पनेदोषः	३	तैलचौर्यकर्म
	पा	६	भ्रातृस्त्रीगमन
६०	१ गुरुभार्यागमनदोषःपद्मपुराणे	७	वहुजीवहननकर्म
	क्तः	६५	१ श्रुतिस्मृतिविरुद्धदानांगीकारक-
	३ गीमांसखादनेकृद्धशातातपवा		र्मफलम्
	कथम्	४	ब्राह्मणधनहरणकर्म-
	४ प्रकारणविषदानेकर्म		

पृ.	पं.	पृ.	पं.
६५	७	१	१
६६	१	७५	१
७	७	४	४
६७	३	७	७
८	८	१०	१०
६८	१	१	१
६	६	७६	७६
६९	१	७	७
६	६	८	८
७०	१	१	१
४	४	७७	७७
५	५	१०	१०
७१	१	४	४
४	४	७८	७८
७	७	११	११
७२	१	१३	१३
६	६	५	५
९	९	७९	७९
७३	१	४	४
५	५	८०	८०
६	६	८१	८१
८	८	१	१
७४	१	८२	८२

॥ श्रीरत्नावलीसूत्रसमाप्तम् ॥

८	१	यागस्थवैश्वदेवकर्मविपाकः	८५	१	अथस्त्रीकर्मविपाकः
८३	१	गर्भघातिनःकर्मविपाकः	८६	३	भर्तृरिमृतेनीलवस्त्रधारिण्याःक
९		गुरुप्रातिकूल्याचरणस्मकर्मवि	८७	१	र्मविपाकः
		पाकः			
८४	७	गुरुद्रोहिणःशिवपादाभि	८८	१	सूर्यारुणकर्मविपाकेस्त्रीकर्मवि
		धग्रहावेशकथनम्			पाकः
					इतिचतुर्थप्रकरणसूचीसमाप्ता



पृ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१३	८	टी० धम्म	धम्म
१३	१	म० सताक्षिधि	सताक्षिधि
१७	१२	मू० क्षमधम्म	क्षमधम्म
१७	३	टी० वक्खरा	वक्खरा
२१	२	टी० गयत्री	गायत्री
२८	५	मू० प्रायेण	प्रायेण
२८	६	मू० रिरवाचीक	रीरवाचिक
५०	९	मू० राग्वह	राग्वह
५७	२	टी० गार्हित	गार्हित
५८	६	टी० ब्रह्म	ब्राह्म
६०	६	मू० णागि	णांगि
६२	८	मू० मन	मान

द्वितीयप्रकरणम्

पृ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
९३	५	मू०	
९३	१	टी० क्षरका	क्षराका
९९	१	म० कस्वापि	कस्यापि
१०१	२	टी० विधानायक	विधायक
१०४	१	मू० कादोषः	कोदोषः

॥ ओंश्रीः ॥

श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाशर्मरितिव्वताय
नेकदेशाधाश्री श्रीयुत श्री १०८ महाराजरण
वीरसिंह वहादुर जी की आज्ञानुसार यह
धर्मशास्त्र महानिवंधसर्वलोकोपकारके वास्ते
मुद्रित हो रहा है इसके दो भाग मुद्रित हो
चुके हैं वो दोनों भाग सुज्ञ पुरुषों के पास भेजे
जाते हैं उनको उचित है कि इस पुस्तक को
देखें और विचारें और आगे के भाग मुद्रित
हो जावेंगे तो वो भी उनको भेजे जावेंगे पर
न्तु जिसके पास यह पुस्तक पहुंचे उसको
चाहिए कि अपना नाम लिख कर भेज देवे उ
सका नाम प्राति दैनिक पुस्तकमें लिखा जावेगा



अथ पांचमा व्रत प्रकरण कहीदाहै इसका उपयोग सारे ग्रंथमे है और पूर्वोक्त (स्वतोमित्रा) इत्यादि श्लोकका स्मरण करलेणा और भी मंगलायं श्लोक कहीदाहै स्मृतीति मै जो गंगारामशर्मा हां सो मन और वाणी और देह इनां कर्के गुरांके चरणानू नमस्कार कर्के राजापत्य कृच्छादि जो व्रत तिनांके समूह नू कहताहां पापांके दूरकरणे बास्ते ॥ कैसा व्रतांका समूहहै जानपाहै पुण्यका सत्त्व क्या प्रकाश साधन जिनांते तिनां कर्के जो निरंतर श्रमिकार करीदाहै ॥ फेर कैसाहै स्मृतियां जो संपूर्ण तिनांके रचनेकी जो प्रक्रिया तिसविषे जो शिरोमणिहै अर्थात् राजाहै फेर कैसाहै दोषनै रहितहै ॥ १ ॥ तिस व्रत प्रकरणविषे पहिले व्रत शब्दका अर्थ भिन्न कर्के कहीदाहै इत विषे जो व्रत शब्द है सो करणे योग्य विषय कर्के युक्त और काल क्या समयकर्के संकुचित क्या इतमा काल व्रत है अिसा नियम करणा सो

उ०स्वस्तिश्रीगणेशायनमः स्मृतिसकलनिबन्धप्रक्रियासार्वभौमं विदित
सुकृतसत्त्वैः सेव्यमानं नितान्तम् निचयममलमंहःक्षालनायाभिधास्ये गुरु
पदमभिवंद्य ब्रह्मकृच्छादिकानाम् १ तत्र तावद्व्रतशब्दार्थो विविच्यते व्र
तं चात्र करणीयविषयतयानुबद्धः कालविशेषावच्छिन्नश्च नियमविशेषएव
सचरामनवमीश्रीकृष्णजन्माष्टमी प्रभृतिनियमेषु यद्यप्यस्ति तथापि कृ
च्छ्रचान्द्रायणादिनियमविशेषएव प्रायश्चित्तप्रणेतृभिः प्रयुज्यतेऽतः स एवा
त्रानुसंधेयः ॥ एतदपि व्यवहारनिरोधकनरकानुकूलपापशक्तिद्वयनिरासा
भिप्रायेणैव बोध्यम् नियमांतराणां पापनाशकत्वमात्रएव प्रयोगान्न तत्र
मुख्ययावत्त्या व्रतशब्दप्रवृत्तिः ॥ तथाच ॥ प्रायश्चित्तापरपठ्याये

कृच्छ्रचान्द्रायणादिवैवायंरूढः

जैसे है तैसे करणेडां जैसे रामनवमीका व्रत और श्रीकृष्णजन्माष्टमीका व्रत इत्यादि नियम विषे भी यद्यपिहै तदभी प्रायश्चित्तके कहन वालयां ऋषियानें कृच्छ्र चान्द्रायणादिनियम विशेष विषे ग्रहणकीयाहै इसकारणतें सोई इसप्रकारणविषे जानणेयोग्यहै ॥ एभी व्यवहार निरोध क्या सबकार्यते संबंधियानें बाहर कदेणा और नरक विषे प्राप्त करणा एह दो २ पापकियां शक्तियांके दूर करणे तें व्रत शब्द कृच्छ्रादि विषे जानणा और जो रामनवमी आदिक व्रतहैं सो एकपापशक्तिकां दूरकरतेहैं व्यवहारनिरोधको नहि दूर करते ॥ जिसकर्के रामनवमी आदि जो नियम तिनांको पापांके नाशविषे हि योजना होणेंतें नहि तिस विषे मुख्यवृत्तिकर्के व्रतशब्दकी प्रवृत्तिः हुंदीहै तांते प्रायश्चित्त भी कृच्छ्र चान्द्रायणादिशब्दकाहि दूसरा नामांतरहै

२ * ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

श्रीर व्रतशब्द नियमविषे कहा है एह अमरका वचन उपवासादिपुण्यक सामान्य व्रतके अर्थ विषे जानणा योग्य है इसीकारणतें पंडिताने मानया जो व्रतका प्रसिद्धविषय सो संकल्पविशेषहि ग्रहण कीता है ऐसे व्रतकी व्याख्या व्रतार्कविषे कथन करी है ॥ श्रीरभी अपनेविषे करणे योग्य काय विशेष जो संकल्प विशेष है सो व्रत किहा है सो ऐसे व्रतकी व्याख्या देह और वाणी और मन इनांके व्यापार विषे न युक्त होणेतें नहि अंगीकार कीती क्योंकि मन कर्के जो कर्म किया है सो संकल्प कहीदा है ऐसे कहणेतें ॥ इसविषे असांने व्रत ग्रहण किया है जो देह और वाणी और मन इनां कर्के होवे ॥ सो कहतेहां अत्रेति इस विषे व्रत जो है रात्रिके मुख क्या संध्या-समय विषे ग्रहण करणे योग्य है बाहर आकाश विषे नक्षत्रके दर्शन कां करके इस कहणेतें देहका व्यापार सिद्ध हुया नक्षत्रांकादर्शन देहकर्के हि सिद्ध होता है इस अभिप्रायसे ॥ और

नियमो व्रतमस्त्रीतच्चोपवासादिपुण्यकमित्यमरवचनंतु सामान्यव्रताभ प्रायेण बोध्यम् ॥ अतएवाभियुक्तव्रतप्रसिद्धविषयः संकल्पविशेष एव व्रतमिति व्रतार्केभिहितम् ॥ यत्तु ॥ स्वकर्तव्यविषयकसंकल्पविशेषो व्रतमिति तत्कायवाङ्मनोव्यापारेऽशक्तत्वादुपेक्षितम् ॥ संकल्पः कर्ममान समित्यभिधानात् ॥ अत्रहि व्रतं निशामुखे ग्राह्यं वहिस्तारकदर्शनइत्यादिना कायव्यापारस्य रौरवयोधाजपेन्नित्यमित्यनेन च वाग्व्यापारस्याप्यपेक्षितत्वेन प्रायश्चित्तार्थकथनप्रस्तावे तेषां नित्यस्थापनेन नियमस्तु स यत्कर्मनित्यमार्गंतुसाधनमित्यनेन तत्र शक्तत्वाभ्युपगमात् ॥ मनुस्तु यैरभ्युपायैरेनां सिमानवो व्यपकर्षति तान्वोभ्युपायान्वक्ष्यामि देवर्षिपितृसेवितानित्यनेन देवर्षिपितृसेवितत्वे सति पापापायजनककर्मविशेषत्वं व्रतत्वमितिलक्षणमित्यभिप्रायात् ॥

श्रीर वयोधा एह ओ ऋचा तिनांको नित्य पठन करे इस कहणेतें वाणीके व्यापार को भी सिद्ध होणेतें प्रायश्चित्तके अर्थके कथन करणेके प्रसंग विषे तिनां देहआदि व्यवहारांको नित्य ग्रहण करणे कर्के ॥ नियम सो कहीदा है जो कर्म नित्य होवे और प्राप्त होणा जो पुण्य फल निसका साधन होवे इस कहणे कर्के तिसविषे योग्य होणेतें ॥ इसीमे मनुजीका वचन है यैरिति जिनां उपायों कर्के पापांको मनुष्य दूरकर्ता है तिनांको कथन करताहां जो देवताऋषि और पितर कर्के सेवित हैं इस कथन करणेतें एह लक्षण व्रतका हुआ कि देवताऋषि और पितर इनां कर्के अंगीकारके होयां होयां पापके दूर करणे विषे जो कर्म विशेष है सो व्रत कहीदा है इस अभिप्रायसे ॥

तानीति प्राजापत्य और सांतपन और पराक चांद्रायण और ब्रह्मकूच इतनेहि है होरजो व्रतहैं सो तिनां प्राजापत्यादिके अंतर्गत क्या मध्य विषे हिहोणेंते ॥ इत्थे जो कृच्छ्र शब्दहै सो द्विजादिशब्द कीन्याई है जैसे एक द्विज शब्द ब्राह्मणवर्णविषे है और ब्राह्मणक्षत्रि वैश्य तिनावर्णविषे भी व्रतताहै तैसेहि कृच्छ्रशब्द सामान्यकर्केव्रत मात्रविषे किहाहै और विशेषकर्के प्राजापत्यविषे कहा है ॥ और शूलपाणिका ऐसा बचनहै जो दूसरे पदतें रहित केवलकृच्छ्रहै सो प्राजापत्यका हि नामहै जो दूसरे शब्दके साथ है जैसे पर्णकृच्छ्र आदि सो तिस तिस व्रतका वाचकहै इसके लक्षण और भेद अगे कहांगे ॥ किंचेति कुलक होर कहाहै कविसंप्रदायविषे जैसे हथकोया अंगुलीयां पंच हैं और पंच महाकाव्य और पंच व्रत और पंच पांडुके पुत्र और पंच इंद्रि य इत्यादिक पंचादि की गिणती बिषे कथन करणे वाले प्रसंग बिषे गिणतीतें पंच हि व्रत हैं

तानितु ॥ प्राजापत्य सांतपन पराकचांद्रायण ब्रह्मकूर्चाख्यानि व्रतांतराणा
मेतदंतः पातित्वात् कृच्छ्रशब्दोहिद्विजादिशब्दवत्सामान्यविशेषवचनः ॥
शूलपाणिस्तु निरुपपदः कृच्छ्रः प्राजापत्यापरपर्यायः । सोपपदस्तु तत्तद्वा
चक इत्याह एतल्लक्षणानि भेदाश्चवक्ष्यंते किंच कविसंप्रदाये करांगुलि
महाकाव्यव्रतपांडुमुर्तेन्द्रियमित्यादिपंचसंख्याबोधकप्रस्तावे गणनात्पं
चैव व्रतानिभवंति तानि एकभक्तनक्तायाचितोपवासनिषेधपालनरूपा
णिज्ञेयानि सर्वेषां तदंतर्गतत्वात् * अथादौकृच्छ्रादिव्रतप्रत्यास्नायाद्युप
योगितया मानपरिभाषालिख्यते । तथाचयाज्ञवल्क्यः । जालसूर्यमरीचि
स्थंत्रसरेणुरजः स्मृतम् तेऽष्टौलिक्षास्तुतास्तिस्त्रोराजसर्पपउच्यते १

सो दिन विषे एक वार भोजन करणा १ और नक्त भोजन २ और अयाचित भोजन ३
और उपवास ४ क्या कुलना भक्षण करणा और निषेध का पालना ५ जैसे आवण मा
सविषे शाककों त्यागे ऐसे जानणे ॥ होरसंपूर्ण व्रतांको तिनांकेहि मध्यविषे प्राप्तहोणेंते ॥ अथे
ति इततें उपरंत आदविषे कृच्छ्र आदिव्रतंकेहि पुण्य फलके देण बाला होर उपायादि तिसके
उपकारी होणेंते मान परिभाषा लिखीदी है ॥ तंतें याज्ञवल्क्यजी का बचनहै शरोखके रस्ते
जो सूर्यकीआं किरणा विषे धूळिकां किणका प्रतीतहै तिसका नाम व्रसरेणु कहीदाहै और
व्रसरेणु अठ ८ होण तिसका नाम लिखाहै लिखा व्र होण तो राज सर्पप कहीदाहै तिनां
की गणना करीदी है १

४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी०भा० ॥

राज संपेप त्रय होण तिसका नाम गौर संपेप है गौर छे होण तिसका नाम यव है सो त्रय होण तां तिसका नाम कृष्णल होता है क्या रत्ती कहीदा है सो पंच होण तिसका नाम मासा है सो सालां होण तां तिसका नाम सुवर्ण है सो चार होण वा पंच होण तिसका नाम पल क्या छटा क हाता है २ जो यवमध्य कहीदा है सो छोटा और बड़ा जो यव तिसके दूर करण वास्ते कहीदा है अव होर मतकर्के कहते हैं स्मृत्यंतरविषे नौ मासे १ परिमाण है जिसका ऐसा जो स्वर्ण तिसका नाम वराह है अमेभी जानणा ॥ दो वराह होण तिसका नाम निष्क है ॥ मार्किंडेय ऐसे कहता है झरोखे के रस्त सूयकायां किरणों विषे जो पर ब्रह्मस्वरूप वायु कर्के प्रतीत होता है तिसका नाम

गौरस्तुतेत्रयः पट्टेयवोमध्यस्तुतेत्रयः कृष्णलः पंचतेमापस्तेसुवर्णश्चषो
डश २ पलसुवर्णाश्चत्वारः पंचवापिप्रकीर्तितम् यवोमध्यइतिलघुष्टहय
वनिरासार्धम् ॥ नवमापमितंस्वर्णवराहइतिकीर्तितइतिस्मृत्यंतरे । द्विवरा
हस्तुनिष्कः स्यादित्यापिवोध्यम् मार्किंडेयस्तु गवाक्षांतर्गतोयत्रवायुनासं
प्रदृश्यते परब्रह्मस्वरूपंयत्त्रसरेणुउदाहृतं १ त्रसरेणवष्टकंलिक्षातत्त्रयंय
वउच्यते तत्त्रयंगुंजमात्रंस्याद्रक्तंवाश्वेतमेववा २ पंचगुंजात्मकोमापोरूप
कंतदुदाहृतम् रूपकाणांनवानांतुवराहइतिगद्यते स्वर्णकृच्छ्रवराहः स्याद्ब्र
ह्महत्यादिपावनमित्याह ॥ शब्दकल्पद्रुमराजवल्लभः यवपरिमाणमाह
यवःपरिमाणविशेषः सतु चतुर्थान्यमानरूपइति ॥ शुभंकरः षट्सर्षपप
रिमाणात्मकश्च

त्रसरेणु कहा है ॥ १ ॥ त्रसरेणु अठ होण तिसका नाम लिक्षा है सो त्रय होण तो यव कहीदा है
सो त्रय होण तिसका नाम गुंजा क्या रत्ती है रक्त वाश्वेत तुल्य है ॥ २ ॥ पंच रत्तीयांका नाम
मासा तिसका नाम रूतक भी कहीदा है नवा १ रूपकांका नाम वराह कहीदा है ॥ अव
इसको फल परतासे कहते हैं स्वर्णमिति स्वर्ण दान और कृच्छ्र व्रत और वराह परिमाण
स्वर्णका दान करणा प्रह तीन ब्रह्महत्यादिपापके नाशकरणे वाले है ३ शब्दकल्पद्रुम विषे
राजवल्लभजी का वचन है यवपरिमाण विशेष चार धान्यका तोल रूप है ॥ अव शुभंकर का वचन है
छे ६ सारोंका तोल जो है तिसका नाम यवपरिमाण कहा है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी०भा० ॥ ५

जैसे झगोखे कर्के अंदर प्राप्त होई जो सूर्य की किरण तिस विषे देखीदी जो धूलि तिस की अणु संज्ञा है ॥ चार अणु होण तिसका नाम लिख्या है लिख्या छे ३ करके एक १ स पंप होता है ॥ छे ६ सर्प करके एक यव होता है ॥ तीन यव होण तिसका नाम रत्ती है १ ॥ पुनवाच्य शब्द चंद्रिका विषे किहा है इस विषे जो परिमाण भेद है सो समर्थ और अस मथे मनुष्यों देख कर जोडना ॥ एह स्वर्णका उन्मान किहा है ॥ अब रजतके उन्मान को कहता हूं ॥ दो रत्तीका नाम रूप्य माप है यह सोलां १६ होण तिसका नाम धरण है और दश धरण होण तिसको पल कहते हैं ॥ १ ॥ और चार सुवर्ण होण तिसका नाम निष्क है

यथा जालांतर्गतेभानौयच्चाणुदृश्यते रजः तैश्चतुर्भिर्भवेद्वलिख्यालिख्याप
द्विभिश्चसर्पपः पट्सर्पपैर्यवस्त्वेको गुंजैका तुयवैस्त्रिभिः १ इति शब्दचंद्रिका
अत्र परिमाणभेदा हि शक्ताशक्तादिव्यवस्थया योज्यः ॥ इति स्वर्णोन्मानम्
अथ रजतोन्मानम् ॥ द्वे कृष्णले रूप्यमापो धरणं षोडशैव ते शतमानं तु दश
भिर्द्वरणैः पलमेव तु ॥ १ ॥ निष्कं सुवर्णाश्चत्वारः कार्ष्णिकस्ताम्रिकः पणः २
शतमानपलशब्दौ पर्यायौ ॥ निष्कं सुवर्णाश्चत्वार इति अस्यार्थमाह विज्ञा
नेश्वरः पूर्वोक्ताश्चत्वारः सुवर्णारौप्यनिष्क इति तथा च सुवर्णचतुष्टय
समानं रजतनिष्कमित्यर्थः ॥ ज्योतिःशास्त्रे प्रकारांतरेण निष्कमुक्तम् वरा
टकानां दशकद्वयत्साकाकिनीताश्च पणश्चतस्रः तेषां दशद्रुम इहा वग
म्यो द्रुमैस्तथा षोडशभिश्च निष्क इति ॥ १ ॥

और तांबेका जो पण है सो कार्ष्णिक कहोदा है ॥ २ ॥ और पलका दूसरा नाम शतमान भी कहोदा है ॥ निष्कामिति इसके अर्थनु विज्ञानेश्वर कहता है पूर्व कहे जो चार सुवर्ण तिस चार सुवर्णके परिमाण जो रजत है तिसका नाम रौप्यनिष्क कहोदा है ॥ ज्योतिःशास्त्रविषे प्रकारांतर करके निष्क किहा है वराटेति वराटकाके जो दश दो हैं क्या बीस २० वराटका होण तिसका नाम काकिनी है चार काकिनी होण तिसका नाम पण है सोलां १६ पणका नाम द्रुम है और सोलां द्रुम होण तिसका नाम निष्क किहा है और वराटिका नाम कउडीका है ॥ १

६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी०भा० ॥

धेनुका मूल शूलपाणि छतग्रंथविषे संग्रह कीता जो षट्त्रिंशन्मत तिसविषे किहाहै ॥ जो पुरुषधन वाले हैं तिनांको धेनुका मूल पंचकाषांपण किहाहै जो मध्यम पुरुष हैं तिनांको त्रय पुराणक किहाहै और पवित्र पुरुषांको एक कार्पापण कहाहै ॥ १ ॥ किसे स्थानविषे पवित्राणां इस जगा दरिद्राणां ऐसा भी पाठहै ॥ पुराणमिति बंसी स्तोत्रांके तुल्य जो तोल होवे चांदी तिसका नाम पुराणक किहाहै और दो स्तोत्रोंके सम जो तोल है तिसका नाम रूप्य मासा किहाहै ऐसे सोलां मासे होण तिसका नाम धरण किहाहै २ जी पुराणक किहाहै सो रूप्ये विषे जानणा एहे विज्ञानेश्वरजिके ग्रंथ विषे और स्मृति वचन विषे है ॥ वंसी स्तोत्रां करके जो सम तोल रूप्यहै तिसका नाम कार्पापण किहाहै । अब भट्ट सोमेश्वरका वचन है ॥ पू

धेनुमूल्यमानंशूलपाणी षट्त्रिंशन्मते । धेनुः पंचभिराढयानांमध्यानांत्रि
पुराणिका कार्पापणैकमूल्याहिपवित्राणांप्रकीर्तितेति १ दरिद्राणामि
त्यपिक्वचित्पाठः ॥ पुराणं नाम द्वात्रिंशत्कृष्णलसमतोलिरूप्यम् ॥ द्वेकृष्ण
लेसमधृतेविज्ञेयोरूप्यमापकः । तेषोडशस्याद्वरणंपुराणंचैवराजतामिति
विज्ञानेश्वरपरधृतस्मृतेः कार्पापणो नाम द्वात्रिंशत्कृष्णलपरिमितंराजतमि
ति भट्टसोमेश्वरः ॥ कर्षकृत आपणो व्यवहारः कार्पापणः अन्येषामपीति
दीर्घतायां कार्पापणः कर्षः षोडशमापकः ॥ तेषोडशस्याकर्षइतिकांशात्
तथाच धरणपुराणकार्पापणशब्दादन्योन्यपर्यायाभासंते यत्तु हेमाद्या
दिलिखितनारदवचनम् ॥ कार्पापणोदक्षिणस्यादिशिरोप्यः प्रवर्तते पणै
र्निबद्धः पूर्वस्यां षोडशैवपणाः सत्विति १ तत्राप्येतावेदवराजतं बोध्यम् ॥

बे किहा जो कर्ष तिस करके कीया जो व्यवहार है तिसका नाम कार्पापण किहाहै ॥ अन्ये
षामपि इस सूत्र करके दीर्घके होयां होयां कर्ष किहाहै सोलां मापका नाम कोश विषे
कर्ष है इस वचनते ॥ तांते धरण और पुराण और कार्पापण यह जो शब्द तोल वाचक हैं
सो आपस विषे पर्याय क्या एक रूप हैं जो फेर हेमाद्यादि लिखित नारद वचन है सो
कहते हां दक्षिण दिशा विषे कार्पापण व्यवहार रूप्यके व्यवहार विषे है और पूर्व दिशा विषे
पणां कर्के व्यवहार विषे जानणा सो फेर पण सोलां जानणें ॥ १ ॥ तिस वचन विषे भी
इतनाहिपरिमाणक (राजत) है क्या पूर्वोक्त रजतका भी इतनाहि परिमाण है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी०भा० ॥ ७

अब प्रायश्चित्तदुशेखर विषे कहते हैं गुंजेति गुंजा क्या रत्तीके प्रमाण है कृष्णल और पंच कृष्णल क्या पंच रत्ती प्रमाण स्वर्णका मासा जानणा इस जगा ८ चावलके परिमाणकी रत्ती जानणी ॥ और अक्षशब्द कर्के सुवर्ण शब्द कर्के और कर्ष शब्द कर्के और निष्क शब्द कर्के एक हि अर्थ कहाहै क्या सोला १६ मासयांका हि नाम है ॥ और चार ४ सुवर्ण का नाम पल है और दश १० पल का नाम धरण किहाहै ॥ अब मनुस्मृति विषे कहतेहैं निष्क जो शब्द है सो एकसौ अठ १०८ जो सुवर्ण तोल कर्के है तिस विषे और छातीके भूषण विषे और छातीके विषे और मोहरविषे किहाहै एह अमका वाक्य है । और राजत जो पुराणहै तिसीका नाम धरण कहीदा है और दश १० धरणका नाम राजतहै और इसीका

प्रायश्चित्तदुशेखरे। गुंजापरिमितकृष्णलपंचकंस्वर्णमापः। षोडशमापा अक्षशब्देन सुवर्णशब्देन कर्षशब्देन निष्कशब्देन प्रोच्यंते सुवर्णाश्चत्वारः पलम् दशपलानिधरणमिति। मनुस्मृतौ। साष्टशतेसुवर्णानां हेमन्युराभूषणेपलेदीनारेपिचनिष्कोऽस्त्रीत्यमरः राजतःपुराणोधरणइत्युच्यते। दशभिर्धरणैराजतशतमानमित्युच्यते तदेवराजतंपलमप्युच्यते इति पलशतं तुला तुलाविंशतिकंभारश्चाचितोदशभाराः स एव शाकट इत्युच्यते। मूल्याध्यायेकात्यायनः ॥ द्वात्रिंशत्पणिकागावश्चतुःकार्षापणोऽवरः। वृषेपट्का र्षापणका अष्टावनडुहिस्मृताः दशकार्षापणाधेनुरश्वपंचदशैवत्विति १ ॥

दूसरा नाम शतमान भी है सोड राजत पलभी कहीदाहै ॥ और पल १००होवें तिलका नाम तुला है और बीस २० तुलाका भार होताहै और दस १० भागका आचित होता है तिसी का नाम शाकट भी जानणा ॥ अब मूल्याध्यायविषे कात्यायनजीका वचन है जिसमें गोदानका प्रत्याग्राय दिखाया है बीस ३२ पणिकके दान कर्के एक गोदान होताहै और इसीतरां छोटे वच्छेके स्थान चार ४ कार्षापण दान किहा है और बलद विषे छे ६ कार्षापण दान किहा है और गाढीवाले बलद विषे अठ ८ कार्षापण दान किहा है और वच्छेके साथ जो गौ है तिस विषे दश १० कार्षापण दान कहा है और घोड़े विषे पंदरां १५ कार्षापण दान कहा है १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

एह जो मूल्यविषे भेदहैं तिनांकी मर्यादा समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देशकर्के कहणी ॥ अथ
व्रतार्कविषे अन्नका मान भविष्य पुगणके वचनसे कहतेहां पलेति दो २ छटांकका नाम प्रसृतहै
और दो २ प्रसृतका कुडव होता है और चार ४ कुडव का प्रस्थ होता है और चार ४
प्रस्थका आढक होताहै ॥ १ ॥ और चार ४ आढकका बुद्धिमानोंने द्रोण किहाहै
और दो २ द्रोणका कुंभ किहा है और इसी का दूसरा नाम सूर्प भी है ॥ २ ॥ पल
और कुडव और प्रस्थ आढक और द्रोण एह संज्ञा धान्यमान विषे क्रम कर्के चार चार ४
गुणां अधिक जानणी ॥ ३ ॥ और सोलां १६ द्रोणकी खारी कही है और बीस २० खारीका
कुंभ होता है और दश १० कुंभ का वाह होताहै और धान्यकी संख्या कथन कीतीहै ॥ ४ ॥

एतेपांचमूल्यपक्षाणांशक्ताशक्तभेदेनव्यवस्था । अथव्रतार्के धान्यमानं । भ
विष्ये पलद्वयंतुप्रसृतद्विगुणंकुडवंस्मृतं चतुर्भिःकुडवैःप्रस्थःप्रस्थाश्चत्वार-
आढकाः १ आढकैस्तैश्चतुर्भिश्चद्रोणस्तुकथितोबुधैः कुंभोद्रोणद्वयंसूर्पः
खारीद्रोणास्तुषोडश २ द्रोणद्वयस्यैव सूर्पइतिसंज्ञा । पलंचकुडवःप्रस्थ
आढकाद्रोणएवच धान्यमानेपुनोद्वयःक्रमशांसीचतुर्गुणाः ३ द्रोणैःषोड
शभिःखारीविंशत्याकुंभउच्यते कुंभैस्तुदशभिर्वाहोधान्यसंख्याप्रकीर्तिता
४ विंशत्यत्रापिद्रोणैरितिसंवध्यते तथाच कुंभोद्रोणद्वयमितिपक्षद्विंश
तिद्रोणमितः कुंभशतिपक्षातरम् एतेपान्यूननाधिकपक्षयोः परिमानांतरमु
क्तंपराशरेण । पुस्तकांतरतुश्लोकद्वयमुपलभ्यते पादोनगद्यानकतुल्यटकै
र्द्विसप्त ७२ तुल्यैःकथितोऽत्रसेरः । मणभिधानंस्वयुगे ४० असेरैर्धान्या
दितौल्यपुनुरुष्कसंज्ञा १ द्वयंकंदु ११२ संख्यैर्धटकैश्चसेरस्तैःपंचभिःस्या
द्वटिकाचताभिः मणोऽष्टभिस्त्वालमगीरशाहकृतात्रसंज्ञानिजराज्यपूर्पु २

इस विषे विंशति द्रोणकर्के कुंभ संख्या ग्रहण कीती है तिसते (कुंभोद्रोणद्वयं) इस पक्षमें बीस
२० द्रोण कर्के कुंभ किहा है एह दूसरा भेद जानणा ॥ इनांविषे न्यून और अधिक जो पक्षहैं
तिनांविषे परिमाणका भेद पराशरने किहाहै ॥ इसमें औरभी दो २ श्लोक देखीदेहैं पादोन
जो गद्यानक क्या १६ रत्तीयां इनके तुल्य जो टंक क्या परिमाण विशेष तिनां ७२ वहत्तरां
कर्के १ सेर होता है और ४० चाली सेर मण होता है एह धान्यादितोल विषे तुरकोंकी
कीतीहोई संज्ञाहै ॥ १ ॥ अथ और मत कहते हैं धटक नाम ४२ रत्तीयां का है और ११२
एकसठ वानवं धटका कर्के १ सेर होता है और पांच ५ सेरकी १ वट्टी होती है और
८ अठ वट्टी का १ मण होता है एह आलम गीरशाहकी मान परिभाषा अपने राज्य मे
नगरोके लिए बनाई होई जानणी ॥ २ ॥

पराशरजीने वेद और वेदांगोंके जानणेवाले और धर्म शास्त्रके पालक जो ब्राह्मण तिनोंने वाङ्
 २२ प्रथका द्रोण किहाहै दो२ प्रथहाण तिसका नाम आढक किहाहै ॥ १ ॥ यह जो पूर्वोक्त
 न्यून और अधिकपक्षहे तिनांका ग्रहण पुरुषांकी शक्ति और हिमालयादि देश और वसंत ऋतु
 आदि समयको देख करके किहाहै ॥ विष्णु धर्मोत्तगविषेभी किहाहै कि किस जगा मान करके
 व्यवहार और किसे जगा उन्मान करके व्यवहार किसे जगा परिमाण करके किसे जगा संस्था
 करके किसे जगा समनाकरके व्यवहारहोताहै ॥ १ ॥ इसको स्पष्टकरके कहतेहैं ॥ अंगुलाद्यमिति
 २ ॥ अब शब्दकल्प द्रुमविषे कहतेहैं अठमुष्टि असहोवे तिसका नाम कुंचिहै अठ कुंचि होण
 तिसका नाम पुष्कलहै इति ॥ और कोई २ ॥ मुष्टि मानकरके जो असह है तिसको अन्नमात्र कह

पराशरमतेन वेदवेदांगविद्विप्रैर्धर्मशास्त्रानुपालकैः प्रस्थाद्वाविंशतिद्रोणः
 स्मृतोद्विप्रस्थआढकः । १ । इत्येपांच न्यूनाधिकपक्षाणां शक्तिदेशकालाद्य
 पेक्षया व्यवस्थाज्ञेया । विष्णुधर्मोत्तरे । क्वचित्संख्याक्वचिन्मानमुन्मान
 परिमाणकम् ॥ समाहारः क्वचिच्चेष्टोव्यवहारायताद्विदाम् ॥ १ ॥ अंगुलाद्यं
 स्मृतं मानमुन्मानंतुतुलास्मृता परिमाणपात्रमानंसंख्यैषाद्यादिसंज्ञिका २ ।
 शब्दकल्पद्रुमेतु ॥ अष्टमुष्टिर्भवेत्कुंचिःकुंचयोष्टौचपुष्कलइति ॥ सार्धमुष्टि
 द्वयमितमन्नमन्नमात्रमुच्यते इतिकेचित् । अथ मानवीयप्राजापत्यलक्षणो
 पयोगितयादौ याज्ञवल्क्यीयपादकृच्छ्रमुच्यते ॥ एकभक्तेननक्तेनतथैवाया
 चितेनच उपवासेनचैवायं पादकृच्छ्रः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥ अत्रच ग्राससंख्या
 नियमः पराशरेण दर्शितः । सायंतुद्वादशग्रासाः प्रातर्द्वाविंशतिः स्मृताः
 चतुर्विंशतिरायाच्याः परंनिरशनं स्मृतम् ॥ १ ॥

तेहै ॥ इसमें उपरंतमानवीय जो प्राजापत्यलक्षण तिसका उपकारी होणेतें आदविषे याज्ञवल्क्य
 प्रोक्त जो पाद कृच्छ्र सो कहिदा है चार दिनका जो व्रत सो पाद कृच्छ्र किहा है सो कहताहुं
 एक दिन दिन विषे एक बार भोजन खाणा दूसरे दिन रात्रि विषे भोजन खाणा और तीसरे
 दिन याचनातें विना भोजन खाणा । और चौथे दिन उपवास करणा क्या कृत्तनहिखाणा ऐसे
 पाद कृच्छ्र किहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ग्रासांकी संख्याका नियम पराशरजीने दखायाहै । संध्या का
 लविषे वारां १२ ग्रास भक्षण करे और प्रातःकालविषे वत्ती३२ ग्रास भक्षण करे और चौथी२४
 ग्रास याचनातें विना भोजनमें भक्षण करे तिसंत परे चौथे दिनविषे कुछ न भक्षण करे ॥ १ ॥

१० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अब ग्रासका प्रमाण कहताहूँ कुकुडके अंडेके प्रमाण क्या इतनाहि स्थूलग्रास कहाहै अथवा जो ग्रास सुख करके मुख विषे भक्षणको प्राप्त होवे इनां दोहां २ प्रमाणोंका सामर्थ्यादि देख कर भेद है ॥ अब ग्रास संख्या का दूसरा भेद चतुर्विंशति २४ मतविषे किहाहै ॥ प्रातःकाल विषे १२ वारां ग्रास और संध्या कालविषे पंदरां १५ ग्रास और अयाचितविषे सोलां १६ ग्रासभक्षण को तिसरें आगे वायु भक्षण करे अर्थात् निराहारव्रत करे । १ । यह प्रकार अतिसमर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ अब आपस्तंब ने ॥ प्राजापत्य प्रायश्चित्तनू चार प्रकारका विभाग करके चार पाद कृच्छ्रांको दखा कर ब्राह्मणादि वर्णोंकी योग्यता करके मर्यादा दखाई है ॥ त्र्यहमिति त्रय दिन

कुकुटांडप्रमाणस्तु यथा वास्यं विशेषेः सुखमिति तयोश्च कल्पयोः शक्ताद्यपेक्षया विकल्पः ॥ ग्राससंख्यायाः प्रकारान्तरं चतुर्विंशतिमते ॥ प्रातस्तु द्वादश ग्रासाः सायं पंचदशैव तु अयाचिते च द्वावष्टौ परं वै मारुताशन इत्यतिशक्तविषयमेतत् । आपस्तंबेन तु । प्राजापत्यप्रायश्चित्तं चतुर्धा विभज्य चतुरः पादकृच्छ्रान्कृत्वा वर्णानुरूपेण व्यवस्थादर्शिता ॥ त्र्यहं निरशनं पादः पादश्चायाचितं त्र्यहम् सायं त्र्यहं तथा पादः पादः प्रातस्तथा त्र्यहम् ॥ १ ॥ प्रातः पादं चैरेच्छद्रः सायं वैश्यस्य दापयेत् अयाचितं तुराजन्ये निरन्नं ब्राह्मणे स्मृतमिति ॥ २ ॥

कुल न खावे एक पाद कहा है और त्रय दिन मंगलिते विना भोजन करणा एभी पादहै और त्रयदिन संध्या काल में भोजन करणा एक एभी पादहै और त्रयदिन प्रातःकाल विषे भोजन करणा इह चार प्रकारके पाद कहें हैं ॥ १ ॥ अब इनको वर्णोंको क्रम करके कहतेहैं शूद्रवर्ण प्रातः काल के पादको करे और वैश्य संध्या कालके पादको करे और क्षत्री अयाचित पाद को करे ॥ और ब्राह्मण निराहार पादको करे क्या कुकुड न भक्षण करे ॥ २ ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ११

यदेति जेकर तु पुनः मंगलेतें विना त्रय दिन भोजन करे और त्रय दिन उपवास करे तां अर्द्ध कच्छू ब्रत होता है ॥ और सायं कालके दिन त्रय तें विना अगले त्रय त्रय दिनां विषे जो अनुष्ठान करणा तिसका नाम पादोन कच्छू जानणा । इसमें वचन कहते हैं सायमिति एह तिसी आप स्तव ऋषि कर्क कथन होणें । और अर्द्ध कच्छूका दूसरा भेदभो आपस्तंबने दखाया है एक दिन संध्या काल विषे भोजन करे और एक दिन प्रातः काल विषे और दो दिन अयाचित क्या कहणें विना कोई पुरुष भोजन ले आवे तां भक्षण करे और दो दिन कुछ न भक्षण करे सो दूसरा भेदवाला कच्छूाद्ध कहा है १ अवकुक्कुटांडप्रमाण ग्रासविषे शंका है (प्रपञ्च)

यदात्वयाचितोपवासात्मकस्यहद्वयानुष्ठानं तदार्द्धकच्छूः सायंव्यतिरिक्ताप
रस्यहानुष्ठानंतुपादोनमिति विज्ञेयम् । सायंप्रातर्विनार्द्धस्यात्पादोनं नक्तवर्जि
तमितितेनोक्तत्वात् । अर्द्धकच्छूस्यप्रकारांतरमपि तेनैव दर्शितम् । सायंप्रा
तस्तथैकैकं दिनद्वयमयाचितम् दिनद्वयंचनाश्रियात्कच्छूार्द्धतद्विधीयते १
नन्वाद्रीमलकाघफलादीनां ग्रासोपमानतासंभवे किमर्थं मुनिभिः कुक्कुट
मयूरांडीयवीभत्सोपमानं ग्रासस्य स्वीकृतमिति चेदेवं प्रतिभाति क्रमशः
प्रवर्द्धमानानां फलानामुत्पत्तिसमकालग्रासाकारभाक्कुक्कुटांडाद्यपेक्षयोपमा
नता न युक्ता ॥

हरे जो आंवले और अंवर्षी लेकर फल हैं, तिनांको ग्रासकी उपमा देणे योग्यथी किस कारण वास्ते मुनियोंने कुक्कुड और मोरके आंडेकी निदित उपमा दित्ती है ग्रासके ग्रहण करण विषे (उत्तर) तांते ऐसे जाणीदा है कि फल जो हैं सो कम कर्क वृद्धिको प्राप्त होते हैं और कुक्कुडके आंडेको उत्पत्तिके समकालहि स्थूल होणें ग्रासकी उपमा वण सकती है फलांको बड़ा छोटा होणें उपमा विषे योग्यता नहि है एह तद्रूपमें होवेगा आगे विचार बुद्धि मान करे ॥

१२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

किंतु भक्ष्यत्व करके गिणे जो वनके कुकुड और मोर तिनांके आँड़ियोंकी न्याईं ग्रासकी उ
पमाहै सो ग्लानिकों नहि प्राप्त करती ॥ जैसे भगिनी शब्द और भगवती शब्द और शिवालिंग
ग आदि शब्द और गोधूम आदि शब्द लज्जादिके देणेवाले भी हैं तथापि जगत्त्रै प्रसिद्ध
होणे कर्के लज्जाकों नहि देते जैसे भगिनी उसको कहते हैं कि जिसको भग क्या योनिहो
वे इस अर्थसे लज्जा आउतीहै परंतु कोई नहि करता तैसे कुकुटांडादिकी तुल्यता दिखाने
वीभत्सा नहि करणेयोग्य ॥ अब प्राजापत्य व्रत मनुजीनेभी कहाहै अयमिति त्रयदिन प्रातःकाल
विषे भोजन खावे और त्रय दिन सायंकाल और त्रयदिन मांगणेतें विना क्या कोई पुरुष अन्न

किंतु भक्ष्यत्वेन गणितानां वनकुकुटमयूरादीनामंडस्य ग्रासोपमानता भगि
नी भगवती शिवालिंगादिगोधूमादिशब्दवन्नाश्लीलतामावहतीति सर्वमनव
द्यम् ॥ अथ प्राजापत्यं । मनौ । अहं प्रातस्त्रयहं सायं त्रयहमद्यादयाचितम्
त्रयहं परंचनाष्णीयात् प्राजापत्यं चरेद्द्विजः १ याज्ञवल्क्यः ॥ यथा कथंचित्
त्रिगुणः प्राजापत्याय मुच्यते ॥ देवलः ॥ त्रिदिनं च दिवाष्णीयात् त्रिदिनं रा
त्रिभोजनम् अयाचितं स्यात् त्रिदिनं निराहारो दिनत्रयम् १ कच्छमेतद्विजा
नीयाद्वादानं गव्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामेतत्कृच्छ्रं विशोधनम् २ ॥

देजावे तां भक्षण करे और त्रय दिन कुछ न भक्षण करे ऐसा जो प्राजापत्य तिसकों ब्राह्मणा
दि वणें करें ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीका वचन है जिसकिसे उपाय कर्के लघु कृच्छ्र जेकर
त्रिगुण होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्र किहाई ॥ अब देवलजीका वचन है त्रीति त्रयदिन दिन विषे
अन्न भक्षण करे और त्रय दिन रात्रि विषे भोजन करे और त्रय दिन अयाचित भोजन करे
और त्रय दिन निराहार करे ॥ १ ॥ तो इसकों कृच्छ्र जाने और पोछे पंचगव्य भक्षण कर्के
गोदान करे एह ब्रह्महत्यादि पापोंके दूर करणे वाला कृच्छ्र है ॥ २ ॥

इस विषे जो निवृत्तिवास्ते ब्रह्महत्या शब्द कहा है सो आतिदेशिक ब्रह्महत्याके दूरकरणे वास्ते है आतिदेशिक हत्या क्या है जैसे ब्राह्मणकी निंदा और अधीत विद्याका विसारदेणा एह ब्रह्म हत्याके तुल्य है और पारिभाषिक हत्या क्या है जैसे गुगं विषे द्रोह करण वालेको ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त देणा और रहस्यानुष्ठानहत्या रहस्याऽनुष्ठान प्रकरण विषे कही है तिस हत्याकी नि वृत्ति विषे प्राजापत्यका विधान है क्योंकि यथार्थहत्या विषे प्रायश्चित्त कों अधिकहोणेतें ॥ और निराहार जो कहा है सो उपवास जानणा केवल भोजनका निषेध नहि है निसका स्वरूप दिखातेहैं उपेति दोषांते रहितकों और गुणांककें युक्त होककें संपूर्ण विषयभोगतें वर्जितहोणका नाम उपवासकहा है ॥ एह होरस्मृतिविषे लक्षणवाला जानणा ॥ १ ॥ और जैसे कैसे इत्यादिवचन की व्याख्या ऋषियोंने कही है सो कहतेहैं अयमिति एही पादकृच्छ्र जिसांकिसे उपायककें दंडका

अत्र ब्रह्महत्याऽऽतिदेशिकपारिभाषिकरहस्यानुष्ठानादिविषया बोध्या । ता त्विकायां प्रायश्चित्ताधिक्यश्रवणात् । निराहारोऽत्रोपवासएव ननु भोजन निवृत्तिमात्रम् । सच उपारतस्यदोषेभ्योयस्तुवासोगुणैः सह उपवासः सवि ज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितइति स्मृत्यन्तरलक्षणोबोधः १ यथाकथंचिदित्या दिव्याख्यातमभियुक्तैः ॥ अयमेवपादकृच्छ्रोयथाकथंचिदंडकालितवदावृ त्था स्वस्थानविद्व्यावाज्ञेयः ॥ अत्राप्यानुलोम्येन प्रातिलोम्येन वा तथा वक्ष्यमाणजपादियुक्तं तद्रहितंवात्रिरभ्यस्तः प्राजापत्यंविधीयते ॥ तत्र दंडकालितवदावृत्तिपक्षोवशिष्टेनदर्शितः । अहः प्रातरहर्नक्तमहरेकम याचितम् अहः पराकंतत्रैकमेवंचतुरहौपरौ १ अनुग्रहार्थंविप्राणामनुर्ध मभृतांवरः वालवृद्धातुरेष्वेवं शिशुकृच्छ्रमुवाचहेति २ ॥

लितकी न्याई आवृत्तिककें अथवा स्वस्थानकी विवृद्धिककें जानणा ॥ इसविषे भी रात्रि और दिन ऐसे अनुलोम और प्रतिलोमककें जानणा ॥ और तांते आगे कहणें जो जप आदिक तिनांककें युक्त वा रहित त्रयवार अभ्यासकिया जा लघु कृच्छ्रव्रत सो प्राजापत्यकहा है एह अर्थ है तत्रेति तिसविषे दंडकालितवत् जो आवृत्तिपक्ष है सो वशिष्टजीने दर्शाया है एकदिनप्रातःकाल और एक दिन संध्याकाल विषे और एकदिन अयाचित और एकदिन पराक एह चारदिन एक वार होए ऐसोंहे दोस्वार चारदिन फेर करण ॥ १ ॥ जैसे दंडेककें इकठियां गौयांलेजाइंदीयां हैं और लेआवीदीयां हैं इसतरां एह ब्राह्मणोंके उपर अनुग्रह करणवास्ते धर्मधारणवालायां विषे श्रेष्ठ जो मनुजी हैं सो बालक और वृद्ध और आतुर एनां विषे शिशुकृच्छ्र व्रतकों कहतेभये २

अनुलोम क्रम कर्के स्वस्थान वृद्धिका अर्थ जैसे त्रय दिन प्रातः काल विषे अन्न भक्षण करणा इत्यादि मनुने दिखाया है सो पूर्व कह दिया है ॥ प्रातिलोम्या वृत्ति भी वशिष्ट जीने दिखाई है प्रातीति चांद्रायण पीछे जो कच्छ है सो प्रातिलोम्य है तिसत्रनों ब्राह्मण करे और कच्छ है पहले जिसके ऐसा चांद्रायण अनुलोम क्रम कर्के होता है ॥ जद चांद्रायण है पीछे जिसके ऐसा कच्छ होवे तां प्रतिलोम कर्के जानणा एह अर्थ है ॥ जप आदि कर्तते गृहित जो पक्ष है सो स्त्री शूद्र आदियों विषे अंगिरा ऋषिनें दिखाई तस्मादिति तिसका रणते सदाहि धर्ममांगविषे स्थित जो शूद्र तिसकों प्रात होकर जप होमादिते गृहित प्रायश्चित्त देणे योग्य है १ और जपादियों कर्के युक्त जो पक्ष है सो शूद्रते भिन्न ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य इन्हां

आनुलोम्येन स्वस्थानवृद्धिपक्षस्तु मनुना दर्शितः ॥ सतु प्रागभिहितः । प्रातिलोम्या वृत्तिरपि वशिष्ठेन दर्शिता ॥ प्रातिलोम्यं चरं द्विप्रः कच्छं चांद्रायणोत्तरमिति कच्छोत्तरं चांद्रायणमानुलोम्येन भवति ॥ यदा तु चांद्रायणोत्तरं कच्छं क्रियते तदा प्रातिलोम्येन ज्ञेयमित्यर्थः ॥ जपादिरहितपक्षस्तु स्त्री शूद्रादिविषये गिरसा दर्शितः तस्माच्छूद्रं समासाद्य सदा धर्मपदे स्थितम् प्रायश्चित्तं प्रदातव्यं जपहोमादिवर्जितमिति ॥ १ ॥ जपादियुक्तपक्षस्तु परिशेषाद् योग्यतया च त्रैवर्णिकविषयः स च गौतमादिभिर्दर्शितः ॥ तथा च गौतमः ॥ हविष्यान् प्रातराशान् भुक्त्वा तिस्रो रात्रिर्नाशनीयादथापरम् त्र्यहं नक्तं भुज्जीत अपरं त्र्यहमुपवसं स्तिष्ठेदहनिरात्रावासीत क्षिप्रं कामः सत्यं वदेद नार्थैः सह न भाषेत रौरवयोधाजये नित्यं प्रयुंजीतानुसवनमुदकोपस्पर्शनमापोहिषेति तिसृभिः पवित्रवतीभिर्मार्जयेत ॥

तिन्ना वर्णा विषे योग्यता कर्के गौतमादि ऋषिणां दिखाया है ॥ तैसें गौतमजी का बचन है ॥ प्रातः काल विषे हविष्य अन्न कणक चावल मुंगी आदि त्रय दिन भक्षण करे फेर त्रय रात्रि विषे (नाशनीयात्) क्या भोजन न करे त्रय दिन रात्रि मे खावे दिने नहि खावे और तिसके आगे किसेते याचना न करे याचना बिना मिले तां भक्षण करे और त्रय दिन कुल न भक्षण करे और दिन विषे खलोवे रात्रि विषे बैठा रहे क्षिप्र कामना वाला हुआ २ और सत्य वचन कहे और दुष्टांके साथ संभाषण न करे और रौरव योधाजय जो साम हैं तिनां कों नित्य जपे और त्रय काल स्नान करे और आबसन करे और आपोहिषाते लेकर त्रय जो ऋचा हैं पवित्र तिनां कर्के पुरुष मार्जन करे तो तिसका पाप शीघ्र ही दूर होता है ॥

और हिरण्य वर्णा इसर्थी आद लेके अठां पवित्रवतियां ऋचां कर्के माज्जन करे ॥ अथेति इस तें उपरंत जलकर्के तर्पण करे तर्पण के मंत्रोंको कहतेहैं नमोहमाय इत्यादि और इहां हि मंत्रोंकर्के सूर्य भगवान् जीका उपस्थान भी करतेहैं इस मंत्रका अर्थ बहुत है तथापि तिसका कोई उपयोग नहि इसकर्के कुछक दिखाइंदा हैं (अहमाय) क्या अहंकारके अभिमानी क्या प्रवर्त्तक जो शिवजी तिनके ताई नमस्कार होवे कैसे शिवजी हैं (मोहमाय) मोहके स्थापक हैं अथवा नाशक हैं फेर कैसे है मंहमाय कामकेनाशक हैं

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका इत्यष्टाभिः । अथोदकतर्पणम् नमोहमायमोह
मायमंहमायधन्वने तापनाय पुनर्वसवेनमो मौज्याय और्म्याय वसुविंदाय
सर्ववर्णविंदाय नमः पाराय महापाराय पारदाय पारयिष्णवे नमोरुद्राय
पशुपतये महते देवाय त्र्यम्बकायैकचरायाधिपतये हराय शर्वाय ईशानाय
उग्राय वज्रिणे घृणिने कपर्दिने नमः सूर्यायादित्याय नमो नीलग्रीवाय शिति
कंठाय नमः कृष्णाय पिङ्गलाय नमः ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय वृद्धायैन्द्रियाय हरिकेशाय
ऊर्ध्वरेतसे नमः सत्याय पावकाय पावकवर्णायैकवर्णाय कामाय कामरूपिणे न
मो दीप्ताय दीप्तरूपिणे नमः तीक्ष्णाय तीक्ष्णरूपिणे नमः सौम्याय पुरुषाय म
हापुरुषाय नमो मध्यमपुरुषाय नमो उत्तमपुरुषाय नमो ब्रह्मचारिणे नमः
चंद्रललाटाय नमः कृत्तिवाससे नम इति एतदेवादित्योपस्थानमेता एवा
ज्याहुतयोद्वादशरात्रस्यांति चरुं श्रपयित्वा एताभ्यो देवताभ्यो जुहुयात्
अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा अग्नीषोमाभ्यां इंद्राग्नीभ्यां इंद्राय विश्वेभ्यो
देवेभ्यो ब्रह्मणे प्रजापतये अग्नयेऽस्विष्टकृते इति

फेर कैसेहैं कि (धन्वने) त्रिपुर दैत्यके विनाश वास्ते तैसे बड़े विलक्षण धनुषके धारणवाले
हैं और जो तापनाय क्या तापक हैं और जो पुनर्वसु हैं इनके ताई नमस्कार होवे इत्यादि
नमोहमाय इसर्थी आदलेके एनां कर्के सूर्यका उपस्थान करणा और इतनीयां हि घृतकी
यां आहुतियां करणीयां और वागं दितांके अंत विषे चरुको पका कर इनां देवताओंके ताई
आहुतियां देवे (उं अग्नये स्वाहा इतैं आदलेके अग्नयेऽस्विष्टकृते इस तक) नउ १ आहुतियां
देवे १

और अंत विषे ब्राह्मणोंके ताई भोजनदेवे ॥ कुछ और कहतेहैं तत्रेति जो पुरुष मन कर्के कोया जो पाप तिमके शीघ्रहि एक कृच्छ्र कर्के दूर करणेकी इच्छा करे तिसका नाम क्षिप्रकाम है सो क्षिप्रकामना वाला पुरुष दिन विषे खलोवे और रात्रि विषे बैठा रहे ॥ एही अर्थ विशद कर्के कहीदाहै सो एह पुरुष दिन विषे कर्माके नहि जो विगोधि काल क्या खलोवे कर्के कार्य दूर न होवे तिस विषे स्थित होवे क्या खलोवे और रात्रि विषे बैठे इसी प्रकार रौरव और योधा जय नाम कर्के जो २ सामवेदकीयां ऋचा तिनांका जप करे नमोहमाय इत्यादिकां कर्के तर्पण और सूर्यका उपस्थान और चरुका पकाणा आदि

अन्ते ब्राह्मण भोजनम् । तत्र तिष्ठेद्दहनि रात्रावासी तक्षिप्रकाम इति अस्यार्थः
यस्तु मनसोऽप्येन सः क्षिप्रमेकेनैव कृच्छ्रेण मुच्येयमित्येवं कामयते स क्षिप्रका
मः असावहनि कर्माविरुद्धपुकालेषु तिष्ठेद्द्रात्रावासीत एवं रौरवयोधाजया
स्य सामजपं नमोहमायेत्यादिभिस्तर्पणादित्योपस्थानादिकं च रुश्रपणा
दिकं च योगीश्वराद्यनुक्तमपि क्षिप्रकामः कुर्वीत अतश्च योगीश्वराद्युक्तप्रा
जापत्यद्वयस्थाने गौतमीयमनेकेतिकर्तव्यतासहितमेकमेव प्राजापत्यं द्र
ष्टव्यम् ॥ एवमन्यान्यपि स्मृत्यन्तरोक्तानि व्रतविशेषणान्यन्वेपणीयानि
॥ मार्कण्डेयः एकभक्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन च उपवासेन चैकेन गोदानं ग
व्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषां विशोधनम् १ ॥

जो कृत्य इसनू योगीश्वर आदिकर्के न कहें होयेनू भो शीघ्रकामना वाला करे ॥ इसकारणतें यो
गीश्वर कर्के पापके दूर करणे वास्ते कहे जो प्राजापत्य दो २ हैं तिनां दोनोंके स्थान विषे
गौतम ऋषि ने अनेक असी कर्तव्यताके साथ एकहि प्राजापत्य दखायाहै ॥ एवमिति
अत्रेहि द्वार भो स्मृतियां कर्के कहे जो विशेष व्रत सो देखणे योग्यहैं ॥ अब मार्कण्डेयजीकाव
चनहै एक दिन एक बार भोजन करणा और दूसरे दिन संध्याकाल विषे और बीसरे दिन
विषे मांगणें विना और चौथे दिन विषे उपवास करणा और पोछे पंचगव्यको भक्षण क
रके गोदान करणा एह व्रत संपूर्ण जो ब्रह्महत्यादिक पापहैं तिनांके दूर करणे वालाहै १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्राकश्चित भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ १७

अब गौतमजीका वचन है एह जो प्राजापत्य कृच्छ्र से संपूर्ण पापोंको दूर करने वाला है तिसको स्वरूप एह है कि त्रय दिन दिनविषे और त्रय दिन रात्रि विषे अन्न खाणा ॥ १ ॥ और त्रय दिन याचनाते विना और त्रय दिन वायुभक्षण करणा और पीछे पंचगव्यको क्या दुग्धादिकों भक्षण करके गोदान करे तो अनुत्तमशुद्धि क्या जिससे उत्तम और कोई शुद्धि नहि तिसको प्राप्त हो साहे ॥ २ ॥ अब आपस्तंब ऋषिका वचन है त्रय दिन न भोज्या कालविषे भक्षण करणा अर्थात् दिनविषे भक्षण करणा और त्रयदिन रात्रि विषे और त्रयदिन मांगणे तें विना भोजन करणा और त्रय दिन कुछ न भक्षण करणा इति ॥ १ ॥ अब इसीविषे जावालि ऋषिका वचन है प्रति

गौतमः । प्राजापत्यं कृच्छ्रमिदं सर्वपापप्रणाशनम् त्रिदिनं स्याद्विवाभुक्तिश्चि
दिनं रात्रिभोजनम् १ अयाचितं च त्रिदिनं त्रिदिनं वायुभक्षणम् गोदानं पंच
गव्यांते शुद्धिमाप्नोत्यनुत्तमाम् २ आपस्तंबः । अहमनाक्तशनं अहं रात्रि
भोजनम् अहमयाचितव्रतस्य अहं नाश्नाति किंचनेति १ जावालिः ॥ प्रजाप
तिरिदं साक्षात्सृष्टवान् देवसन्निधौ सर्वलोकोपकाराय सर्वपापानुत्तये १ ॥
दिनत्रयं दिवाभुक्ते तथा रात्र्यां दिनत्रयम् अयाचितं स्यात् त्रिदिनं निराहारं दि
नत्रयम् २ पंचगव्यंततः पश्चाद्द्वैरेकावविशोधने एवं कुर्याद्द्विजोयस्तु सर्व
पापविमुक्तिमान् ३ कृच्छ्राणां नामान्याह मार्कण्डेयः ॥ यवमध्यं च मंदं स्याद्य
तिशिशोर्महद्व्रतम् महाचान्द्रमिति प्रोक्तं पंचधा परिकीर्तितम् ॥ १ ॥

प्रजापति जो ब्रह्मा सो साक्षात् विष्णु के समीपविषे इस प्राजापत्य व्रतको सबलोकोंके उपकार
वास्ते और सबपापोंके दूर करनेवाले रचिताभया सो कहनेहां १ ॥ त्रय दिन दिनविषे अन्नको
भक्षण करे और त्रय दिन रात्रि विषे और त्रय दिन याचनाते विना और त्रय दिन निराहार रहे
१ ॥ और पीछे पंचगव्यको भक्षण करके एक गोदान करे शुद्धिवास्ते इस प्रकार जो द्विजव्रत करता
है सो संपूर्ण पापोंसे रहित होता है ॥ २ ॥ अब कृच्छ्रांके नामोंको मार्कण्डेयजी कहते हैं एक यव
मध्य १ और मंद क्या पिपीलिका मध्य २ और यति महद्व्रत ३ और शिशुमहद्व्रत ४ और
महाचान्द्र ५ एह पंच प्रकारका चान्द्रायण व्रत कहा है ॥ १ ॥

१८ ॥ श्रीरणवीर कास्ति प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

और तेरां १३ प्रकारका कच्छू व्रत कहा है सो कहतेहां ॥ प्राजापत्य १ और तप्त कच्छू २ और पराक ३ और यावक ४ और सांतपन कच्छू ५ और महासांतपन ६ और औदुम्बर ७ और पण कच्छू ८ और फलकच्छू ९ और माहेश्वर कच्छू १० और ब्रह्म कच्छू ११ और धान्य कच्छू १२ और स्वर्णमय कच्छू १३ एह तेरां प्रकारका कच्छू कहा है ॥ ३ ॥ अथेति अथक्या इतें अनंतर याज्ञवल्क्यजी कर्के कही जो कच्छू चांद्रायण की साधारण इति कचं श्रुता क्या सामान्य विधि करणेकी योग्यता एहहि है ॥ इस विषे कोईक पदार्थ पाछे दूसरे और तीसरे प्रकरण विषे कहेहें फेर इहां प्रसंगतें कहीदेहें । तिस विषे भी पूरे कहा जो पाठ तिसतें भिन्न होगे ग्रंथका है सो बाहुस्यता कर्के जिनां पाठां विषे लोकांकी भ्रद्धा है तिनके बधाणे वास्ते स्थापन कीता है इसतें नवीन कृत्य विषे वैकल्य दोषकी संभा

प्राजापत्यंतत कच्छूपराकं यावकं तथा । ततः सांतपनं कच्छू महासांतपनं तथा २ औदुम्बरं च पणं च फलकच्छू मतः परं कच्छू नाहेश्वरं चैव ब्रह्म कच्छू नथैव च धान्यं स्वर्णमय कच्छू दशत्रेधा प्रकीर्तितम् ३ दशत्रेधा त्रयोदशधा इत्यर्थः अथ याज्ञवल्क्योक्तं कच्छू चांद्रायण साधारणीति कर्तव्यता अत्र कानिचित्पदार्थानि प्रागद्वितीयतृतीयप्रकरणयोरभिहितान्यपि पुनरत्र प्रसंगादुच्यते तत्रापि ग्रंथांतरीय एवात्र पाठः प्रायेण प्रचरितश्च धानार्थं स्थापित इति न नवीकरणवैकल्यसंभावनाविधेया । कुर्यात्त्रिषवणस्नाथी कच्छू चांद्रायणं तथा पवित्राणि जपेत्पिंडान् गायत्र्या चाभिमंत्रयेत् १ एतच्च तप्त कच्छू व्यतिरेकेण । तप्त कच्छू स्नार्या समाहित इति मनुना विशेषाभिधानात् । यनु । पुनः स्मृत्यन्तरे । तप्त कच्छूषु अहोरात्रं त्रिषवणस्नानमभिहितम् । त्रिरग्नित्रिनिशायां तप्तवासाजलमाविशदिति तदतिशयोक्तिविषयम् ॥ यन्पुनर्वशं पायनेन द्वेकालिकं स्नानमुक्तम् स्नानं द्विकालमेव स्यात् । त्रिकालं वा द्विजन्मन इति

बना नहि करणे योग्य है ॥ कुपोदिनि त्रयकाल स्नान करता हुवा कच्छू चांद्रायण व्रतको फेर और पवित्र जो मंत्र हैं जिनांको पडे और पिंड जो ग्रासहें तिनको गायत्री कर्के अभिमंत्रण करे ॥ १ ॥ एह विधि तप्त कच्छूतें भिन्न कर्के जानणी तिस विषे एक बार स्नान ईशियांको रोक कर्के स्थित होया २ करे एह मनुजी कर्के विशेष कहएतें ॥ यत्त्विति जो फेर और स्मृति विषे तप्त कच्छू व्रत विषे दिन विषे त्रय स्नान और रात्रि विषे भी त्रय स्नान कहेहें सो स्मृति दिखाई है ॥ विगिति त्रय स्नान दिनविषे और त्रय स्नान रात्रिविषे सहित वस्त्रादि जल विषे करे सो बहुत समर्थ पुरुषकेविषे जानणी । फेर जो वशंपायन ऋषिनें दिनविषे दो काल हि स्नान कहा है स्नानमिति ब्राह्मण आदिवर्णका स्नान दोकाल अथवा त्रय कालकरणा चाहिए

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ १९

एह विधि तिस पुरुषकों कहीहै जो दिन रात्र त्रय कालके स्नान विषे सामर्थ्यमें रहित है ऐसे जानणे योग्यहै ॥ जो फेर गार्ग्यजीने कहाहै कि एक वस्त्र धार कर्के स्नान करे और वस्त्रका निपीडन न करे क्या निजोडोये वस्त्र कर्के युक्त होया होया भिक्षाकों मागे और थोडाखावे और धृष्टि दीपे शयन करे एह एक वस्त्रना जो कहीहै सो शंखजीने एक पक्ष विष कहेंते अर्थात् शंखने विकल्पकर्के एक वस्त्र धारण किहाहै तिसी के मतकर्के इसनेभी किहाहै एभी सामर्थ्य विषे जानणे योग्यहै ॥ स्नान विषे हारीत ऋषि नें विशेष किहाहै त्रय स्नानमें पीछे शुद्धवी ऋचा कर्के स्नान कर्के जल विषे स्थित हो पाहोया अघमर्षणों जपे और पीछे शुद्ध वस्त्रकों धारके सामवेदके विषे सोमहै देवता जिसका

तत्त्रिषवणस्नानाशक्तस्य वेदितव्यम् ॥ यत्पुनर्गार्ग्येण ॥ एकवासा
श्वरेद्वैक्ष्यस्नात्वावासोनपीडयेत् ॥ तदपिशक्तस्यैव ॥ एकवासाऽर्द्र
वासा लघ्वाशी स्थडिलेशयः ॥ इत्थेकवस्त्रताया अपि शंखेन पाक्षिकत्वा
भियानात् । स्नानेचहारीतेनावेशेन उक्तः ॥ अथरंशुद्धवतीभिः स्नात्वाऽघमर्ष
णमनर्जले जपित्वा धौतमहुतं रासः परिधाय साध्नासौम्येनादित्यमुपतिष्ठे
दिति ॥ अथरंविभ्यः परमित्यर्थः ॥ स्नानानंतरं पवित्राणि जपेत् ।
पवित्राणि च अघमर्षणं देवकृतः शुद्धवत्यस्तरत्समाइत्यादिवाशिणादिप्रति-
पादितानामन्यतनामर्थाभिहक्षेषु कालेषु जपेत् सावित्रीं वा ॥ सावित्रीं
वाजपेन्नित्यं पवित्राणि च शक्तिरिति मनुरमरणात् ॥

तिस मंत्र कर्के सूर्यके उत्तरायणकों करे अथरं जपेता अथे करोहें कि अथने आगे जो है सो अथर किहाहै चार बार स्नान करे एह अर्थ है ॥ स्नानमें पीछे पवित्र मंत्रों जपे सो कहतेहैं ॥ अघमर्षण मंत्र आरंभदेवता और शुद्धवत्यः और तरत्समा इराते आद लेके वसिष्ठआदिकोंने कथन कीते जो मंत्र तिनकों पढे ॥ और कर्मके नाहि दूर करणे वाला जो समा तिस विषे जपे अर्थात् जिस जिस काल विषे प्रातः संध्यादिके विषे जपने योग्य जो मंत्र है तिस विषे हि जपे अथवा सावित्रीको जपे ॥ सो मनुजी कहतेहैं गायत्री कों जपे नित्य वा कर्म करणेके बेलमें पवित्र जो मंत्र तिनकों जपे ॥

२० ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

जो फेर गोतपजने कहा है रौवयोधा जय ऋचा को जपविषे नित्यहि ग्रहण करे सो पवित्राष्टि इस कहणें कर्के हिकथा किया गया कोइ फेर नियमके वास्ते नहि किहा तैसें होयों होयों श्रुति मूलकी कल्पनाका प्रसंग होणें क्या ऐसी कोइ श्रुति नहि जिस विषे नियम कहा है होर श्रुतिहों मूल विषे कल्पना करणी चाहिये तां कल्पना दोषका प्रसंग होवेगा ॥ इसी कारणतें नही पठनकाया सामवेद जिसने तिस पुरुषों गायत्री आदिक हि जपने योग्य है और जो नमो हमाय मोहमाय एह पठन करे घृत किया आहुतियां देवे ऐसे कहा है एमो नियम नहि जानणा क्या अवश्य करणे योग्य नहि है किंतु महाव्याहृतियां कर्के ब्राह्मणश्री वैश्यने तिलांका हवन करणे योग्य है एह मनुने महा व्याहृतियां कर्के भी हवनका विधान कहणें ॥ इसविषे घृतकर्के हवन और दूसरे स्थान विषे तिलां कर्के हवन इन दोनों

यत्तु गौतमेनोक्तम् रौरवयोधाजयेनित्यं प्रयुज्यते तदपि पवित्रादेवोक्तम् न पुनर्भियमाय तथासति श्रुत्यंतरमूलत्वकल्पनाप्रसंगात् अतो नधीतसाम वेदेन गायत्र्यादिकमेव जप्तव्यम् ॥ यदपि नमोहमाय मोहमाय इत्यादिषु ठित्वा एता एवाज्याहुतय इत्युक्तं तदपि न नैयमिकं किंतु महाव्याहृतिभिर्हीमास्तेलैः कार्योद्विजन्मनेति मनुना महाव्याहृतिभिर्हीमविधानात् ॥ तथापि द्विंशतिमतेऽप्युक्तम् ॥ जपहोमादियत्किंचित्कृच्छ्रोक्तं संभवोनचेत् सर्वव्याहृतिभिः कुर्याद् गायत्र्याप्रणवेनचेति १ आदिग्रहणादुदकतर्पणादित्योपरि स्थानादेशेऽप्युक्तम् ॥ अतएव वैशंपायनः ॥ स्नात्वा उपतिष्ठेदादित्यं सौरर्गिभस्तु कृतांजलिरिति एवमन्येष्वपि पदार्थविरोधिषु विकल्प आश्रयणीयः ॥

पक्षोंते जाणोदा है कि नियम नहि किंतु विकल्प है ॥ तैसें हि पञ्चविंशति मतविषे भी कहा है ॥ जो कृच्छ्र व्रत विषे कहा है जप होमादि तिसके करणका संभव न होवे तां संपूर्ण व्याहृतियां कर्के करे अथवा गायत्री कर्के वा ओंकारकर्के करे १ इस श्लोक विषे जो आदिग्रहण कीता है तिसने जलतर्पण और सूर्यके उपस्थानादिका ग्रहण होता है इसी कारणते वैशंपायन ऋषिका यचन है स्नानकरणते पोंछे हथ जोड कर्के सूर्ये जोके मंत्रां कर्के सूर्यका उपस्थान करे इति ॥ इसी प्रकार होर जो पदार्थ विरोधि हैं जैसे कहा है व्याहृतियां कर्के वा गायत्री वा ओंकारकर्के करे तिनो पदार्थ विरोधियां विषे विकल्प है भावें जिस किस कर्के कीता होया आश्रय करणे योग्य है

और जो नहि विगोधी तिनाविषे संपूर्ण करणे योग्य है 'शाखान्तराधिकरण' न्याय कर्के ॥ कर्मको संपूर्ण स्मृतियां कर्के प्रतीत होणें ॥ न्यायनाम युक्तिका है तिसको दिखाते हैं न्यायइति जो अपणी शाखाविषे नहि कहा सो दूसरी शाखासे लेलेणा और वो अपणी शाखाका विगो धि नहि हो इत्यादिक कहाहूया जानणे योग्य है ॥ जपकी संख्या विषे विशेष तिसी वैशंपायनने हि दिखाया है ऋषभ मंत्र और विरजमंत्र और अघमर्पणमंत्र एनांको जपे अथवा गायत्री जो पवित्रवेदांको मातातिसको जपे १ ॥ एकशत १०० वा अष्टसौ ८०० अथवा अष्टांते अधिक सौ १०८ वा एकहजार १००० जपकरे वा अधिककरे और उपांशुक्या मंत्रको अप्रकट उच्चारणकरे और मनकर्के पितरोंका और देवतोंको और मनुष्य जो सनकादि और भूतोंका तर्पणकरे तिसते उपरंत शिरकर्के नमस्कारकरे ॥ २ ॥ एह जो कृच्छ्रादि व्रत हैं जद पापांके दूर करणें वास्ते अनुष्ठान

अविरोधिषुसमुच्चयः शाखान्तराधिकरणन्यायेन ॥ कर्मणः सर्वस्मृतिप्रत्य यत्वात् ॥ न्यायस्तु यन्नाम्नातंस्वशाखायां पारक्यमविरोधियदित्या युक्तो बोध्यः ॥ जपसंख्यायांचविशेषस्तेनैव दर्शितः ॥ ऋषभं विरजं चैव त था चैवाघमर्पणं गायत्रीं वा जपेद्देवीं पवित्रां वेदमातरम् ॥ १ ॥ शतमष्टश तं वापि सहस्रमथवापरं उपांशुमनसा चापितर्पयेत्पितृदेवताः ॥ मनुष्यांश्च वभूतानि प्रणम्य शिरसा तत इति ॥ २ ॥ एतानि च कृच्छ्रादि व्रतानि यदा प्रायश्चित्तार्थमनुष्ठीयन्ते तदा केशादिवपनपूर्वकं परिगृहीतव्यानि । वपनाच्च व्रतंचरेदिति गौतमस्मरणात् ॥ अभ्युदयार्थे तु नैव वपनम् । वशिष्ठेनाप्यत्र विशेष उक्तः । कृच्छ्राणां व्रतरूपाणां श्मश्रुकेशादिवापयेत् अक्षिरोमशिखा वर्जमिति कृच्छ्राणां व्रतरूपाणां व्रतरूपाणि वपनादीन्यंगानिवक्ष्यंत इति ॥ शेषः ॥ अक्षिरोमेत्यादि कक्षोपस्थरोमोपलक्षणम् ॥ पर्पदुपदिष्टव्र तग्रहाणामुंडनादिकंच व्रतानुष्ठानदिवसात् पूर्वद्युःसायाह्निकार्थम् ॥

करणे हेतु तां केशादिकांके मुंडनको करवाकर ग्रहण करणे योग्य है (वपनाच्च व्रतंचरेत्) इस गौत मजीके स्मरणतें ॥ और ऐश्वर्य आदिकां वृद्धिके निमित्त प्रायश्चित्तविषे मुंडन नहि कहा ॥ वशिष्ठ जीनेभी इस विषे विशेष कहा है । कृच्छ्र जो व्रतरूप हैं तिनांके ग्रहण विषे दाडी और केश आदिका मुंडन करे परंतु अक्षिरोम और शिखांत विना इति ॥ इसको स्पष्ट करते हैं कृच्छ्रेति कृच्छ्र जो व्रत रूप हैं तिनांके व्रतरूप जो मुंडन करवाणे योग्य जो अंग है सो कहेंगे इतना इसजगा लगा लेणा कि अक्षिरोम इत्यादि कहणकरके कच्छके और लिगके रोमोंका भी मुंडन न करवाये ॥ इसमें और विशेष है पर्पदिति पर्पद क्या सभा कर्के उपदेश कीया जो व्रतका ग्रहण और मुंडनादि व्रतके ग्रहण करण वा १६ दिनतें पहले दिन संध्या काल विषे करणे योग्य है

जैसे वशिष्ठजी कहते हैं सर्वेति संपूर्ण पापाविषे संपूर्ण व्रतांके ग्रहणको विधिपूर्वक कहता हूं प्रायश्चित्तके करणकी इच्छा होना होया ॥ १ ॥ दिनके अंतविषे नख और रोमादिकोंका कटाकर स्नान करे और जो स्नान कहा है सो इसप्रकार जानना कि प्रथम मुखकी शुद्धि वास्ते दातन करे पीछे भस्मकर्के और गौके गोहे कर्के और मृत्तिका कर्के और जल कर्के और पंचगव्यादिक जो रचे होये हैं तिनो कर्के स्नानकरे ॥ २ ॥ अभिप्राय कहते हैं मलेति बाह्यदेहकी शुद्धि वास्ते देहकी मल दूर करणे योग्य है और पंचगव्यकर्केयुक्त व्रत करे एह व्रतका विशेषण है ३ ॥ अतः स्नानते पीछे पंचगव्यको पीकके संध्याकालविषे नगरमें बाहर नक्षत्रांके दर्शन होया २ व्रत ग्रहणकरणे योग्य है और पीछे आचमनको करके मीनधारण करे अपने पापका अंतःकरण विषे ध्यानकरता हांआ मनको केशदेणेवाला बड़ा जो शोक है तिसको संपूर्णता कर्के करे ४ ॥

यथाहवसिष्ठः ॥ सर्वपापेषु सर्वपात्रतानां विधिपूर्वकम् ग्रहणं संप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तेचिकीर्षिते ॥ १ ॥ दिनांतेनखरोमादीन् प्रवाप्य स्नानमाचरेत् ॥ भस्मगोमयमृद्वारिपंचगव्यादिकलिपतैः ॥ २ ॥ मलापकर्पणं कार्यं बाह्य शौचोपसिद्धये दंतधावनपूर्वणपंचगव्येन संयुतम् ॥ ३ ॥ व्रतं निशामुखे ग्राह्यं बहिस्तारकदर्शने आचम्यांतः परं मौनीध्यायन्दुष्कृतमात्मनः मनस्संतापनं तीव्रमुद्वेगं चोक्तमंतत इति ॥ ४ ॥ वहिरिति ग्राह्यं हि निर्दिष्टं ॥ स्त्रिया अप्येवमेव परिग्रहः कार्यः ॥ केशश्मश्रुलोमनखवपनंतु नास्ति चांद्रायणादिषु ॥ एतदेव स्त्रियाः ॥ श्मश्रुकेशवपनवर्जमिति बौधायनस्मरणात् ॥ एतदेवेति मलापकर्पणायैव न तु केशवपनादित्यर्थः ॥ वपनादिष्वत्र हारितेन विशेष उक्तः ॥ राजा वाराजपुत्रो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः केशानां वपनं कृत्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत् १ ॥ केशानां रक्षणार्थं हि द्विगुणं व्रतमाचरेत्

अब स्त्रियोंके व्रत विषे कुछक विलक्षणता कहते हैं स्त्रिया इति स्त्रीनेंभी ऐसेहि व्रत ग्रहण करणे योग्य है ॥ और चांद्रायणादि व्रत विषे केश और श्मश्रु और रोम और नख एनांका कटाणा नहि कहा ॥ वचन कहते हैं एतदिति एतदेव इस कहने कर्के एह जानना क्या श्मश्रु केशादिके मुंडनेते विना जो व्रतविधि पुरुषोंको कही है सोई स्त्रीको भी कराणी चाहिए एह बौधायनजीके कथनते ॥ इसीका अर्थ स्पष्टकर्के दिखाते हैं एतदेवेति ॥ मुंडनादिकां विषे इहां हारितने विशेष कहा है ॥ राजेति राजा अथवा राजाका पुत्र राजपुत्र इस जगा और जातिकी स्त्री विषे राजामे उत्पन्न होआ जानना अथवा ब्राह्मण विद्वान् एह सब केशांके मुंडनको कर्वाके प्रायश्चित्तको करे ॥ १ ॥ और केशांकी रक्षा वास्ते दूणे व्रतको करे ॥ एह विचार पिच्छे भी हो चुका है प्रसंगते फेर इस जगा किहा है

दूणो व्रतके कीतयां होयां दक्षिणाभी दूणी कहीहै ॥ २ ॥ राजा आदिक जेकर प्रायश्चित्त कर्णों उद्यतहोवे तां मुंडनकों करवा कर प्रायश्चित्तकों करे अन्यथा न करे ॥ एह मुंडनादि विधि महापात रुआदि दोषके होयां होयां गजा आदिकों विषे कहीहै ॥ होरणां दांयां विषे पंडित और ब्राह्मण और राजा और स्त्री एनांकों केशाका मुंडन नहि कहा और जेकर एह विद्वान् विप्र आदिकं महापापोंहोवें और गोहत्याग होवे और ब्रह्मचारीका वीर्य स्खलित होवे तिनकों प्रायश्चित्तके करण विषे मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ ऐसे मनुजोंके स्मरणते ॥ (प्रण) नन्विति गौकीहत्या करणे वाला उत्तम जो प्राजापत्य कच्छू व्रत तिसकों करे और पहले सहित शिखाके मुंडनकों करे और त्रयकाल स्नान करे इत्यादिक पगशर आदिकों के वचनां विषे सहित शिखाके मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ और दूसरे स्थान विषे कहाहै कि सदा

द्विगुणेतुव्रतेर्चाणेदक्षिणाद्विगुणाभवेदिति ॥ २ ॥ राजादिर्यदाप्रायश्चित्तं कर्तुमुद्यतो भवेत्तदा वपनं कृत्वैव समाचरेत् नान्यथेत्यर्थः ॥ एतच्च महापातकादिदोषविशेषाभिप्रायेण द्रष्टव्यम् ॥ विद्वद्विप्रनृपस्त्रीणानेप्पतेके शवापनम् ॥ ऋतेमहापातकिनोगोहंतुश्चावकीर्णनइतिमनुस्मरणात् ॥ ननु) प्राजापत्यंचरेत्कच्छूगोघातीव्रतमुत्तमम् सशिखंपवनंकुर्ध्यात्तुविसंध्यमवगाहनमित्यादिपराशरादिवचने सशिखंपवनं विहितम् ॥ सदापर्वीतिनाभाव्यं सदावद्वशिखेनहीत्यादिना निषिद्धंतदिति चेदेवंनिर्णयः ॥ अस्यनैमित्तिकत्वेन बलवत्वान्नविरोधः संभाव्यः । अत्रविशेषोद्वितीयप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ जावालेनाप्यत्रविशेषउक्तः ॥ आरंभेसर्वकच्छूणांसमाप्तौचविशेषतः ॥ आज्यंनैवहिशालाग्नौजुहुयाद्वाहृतीःपृथक् ॥ श्राद्धंकुर्ध्याद्रतांतेतुगोगोहिरण्यादिदक्षिणाइति ॥ श्राद्धमत्रवैष्णवंबोधयम् ॥

हि यज्ञोपवीत धारे सदाहि शिखाकों वन कर्के रहे इस जगा मुंडनका निषेध कहाहै कैसे करणा चाहिए (उत्तर) इस विषे ऐसे निर्णय है ॥ इसपूर्वोक्त पराशरादि वचनकों नैमित्तिक होणेकरके बल वाला होणेत विरोधकी संभावना नहि करणी अर्थात् जिसमे सदा शिखा धारणी कहीहै सो नित्यहै और नित्यसे नैमित्तिक बलवान् है ॥ इसविषे विशेष दूसरे प्रकरण विषे देवण योग्यहै ॥ जावालकपिनेंभी इसविषे विशेष कहाहै ॥ संपूर्ण कच्छूव्रतांके आरंभविषे और समाप्ति विषे शालाग्नविषे क्या जिस अग्निमे सदाहि हवनहोताहताहै तिसमे अथवा शाल वृक्षकियां समिधांकरके जो अग्नि तिसविषे भिन्नभिन्नव्याहृतीनूं पठनकरके घृतकरके हवनकरे । श्राद्धमिति व्रत के अंतविषे श्राद्धकों करे और गौ सुवर्ण आदिक दक्षिणा देवे और श्राद्ध ईहां वैष्णव जानणा

विधा येति ॥ विष्णु निमित्त श्राद्धकों विधान कर्क प्रायश्चित्त करे इम वाक्य कहणे करके वैष्णव श्राद्धको हि व्रत के अंग कर्क विधान होखेंतें ॥ यमनेभी इसविषे विशेष कहाहै पश्चात्ताप कर्क पापों हटहरणा और स्नान करणा इह व्रतके अंग कहैहैं और निमित्तिक जो पाप हैं तिनो संपूर्णों कथन करदयां रहणाएभी अंगहै इति ॥ १ ॥ अब निषेधकों कहतेहैं अंगोंविषे बुटनामलणा और शिरघोणा और तांबूल भक्षण करणा और सुगंधि वालें तिलक आदिक जो हे चपुनःहारवल क्या पुष्टिके देणे वाली वस्तु और प्रातिके देणेवालि वस्तु इस संपूर्णको व्रत विषे स्थित जो पुरुषहैं सो त्यागे । १ । इसतें आदलके जो कर्चव्यताक्या कर्म सो और हिस्मृ तितेंदेखणे योग्यहैं ॥ निमित्तिकानामिति इसका अर्थ प्रायश्चित्तके निमित्त जो पापतिनांको दूर करणे वास्ते उच्चारण करता रहे एहहैं इति इसप्रकार इसविधि कर्क व्रतको ग्रहण करके अवश्य

विधायैष्णवंश्राद्धमित्यादिना वैष्णवश्राद्धस्यैव व्रतांगत्वेन विधानात्। यमे नाप्यत्रविशेषउक्तः। पश्चात्तापान्नितृप्तिश्चस्नानंचांगतयोदितं निमित्तिकानां सर्वेषांतथाचैवानुकीर्तनमिति १ तथा गात्राभ्यंगंशिरोभ्यंगंतांबूलमनुलेप नम् व्रतस्थोवर्जयेत्सर्वेयच्चान्यद्वलरागकृदिति १ ॥ एवमादिकर्तव्यताजा तंस्मृत्यंतराद्द्रष्टव्यम्। निमित्तिकानांप्रायश्चित्तनिमित्तानांपापानामित्यर्थः एवमनेनविधिनाव्रतंगृहीत्वावश्यंपरिसमापनीयम् ॥ अन्यथातु प्रत्यवायः पूर्वव्रतंगृहीत्वातुनाचरेत्काममोहितः जीवन्भवतिचांडालोमृतः श्वाचैवजा यते इति छागंलयस्मरणात् ॥ प्रारब्धेप्रायश्चत्तादिव्रतेऽसमाप्तेपिमृतेफल माह यमः प्रायश्चित्तमयूखे ॥ प्रायश्चित्तव्यवसितकर्त्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासविहलंकेपरत्रचेति ॥ १ ॥ अगिराअपि ॥ यदर्थमाचरे धर्ममप्राप्यम्रियेतयदि ॥ सतत्पुण्यफलंप्रेत्यप्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ त्यक्तस्यपुनर्ग्रहणार्थंप्रायश्चित्तम् ॥

समाप्त करणे याग्यहै नकरे तांदोषहैं ॥ पूर्वमिति ॥ पहले व्रतको ग्रहणकर्क फेर अपणी डच्छातें हि न ग्रहण करे क्या व्रतकों न करे तां जीवता हि चांडालहै और मृतहोकरके कुत्तेके जन्मको प्राप्तहोता है ॥ १ ॥ एह छागलेय ऋषिके स्मरणतें कहाहै ॥ प्रारंभ जिसका कीता ऐसा जो प्रा यश्चित्तादि व्रत तिसके असमाप्त होयां होयां मृत्युकों प्राप्तहोवे तिसके फलको धर्मराज प्रायश्चित्त मयूष विषे कहाहै ॥ प्रायश्चित्तके करदयां होयां करणे वाला जेकर मृत होवे तां तिस दिनविषेहि शुद्धहोजाताहै इस लाकविषे और परलोक विषेभी १ ॥ अब अगिरस ऋषिका वचनहै जिसवास्ते धर्मको कर्ता है तिस धर्मके पूर्ण करणने पहले मृत्युकों प्राप्त होवे सो पुरुष परलोक विषे तिस धर्मके संपूर्ण फलको प्राप्त होताहै एहमनु कहता भया ॥ १ ॥ और जेकर व्रतको ग्रहण कर्क त्यागया जो व्रत तिसके फेर ग्रहण वास्ते प्रायश्चित्त है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी०भा० ॥ २५

सोई प्रायश्चित्त वायुपुराणविषे कहाहै लोभादिति लोभतें वा मोहतें वा प्रमादतें व्रतका भंग होवे कथा व्रत जेकर पूर्ण न होवे तां त्रय उपवास करे अथवा केशोंका मुंडन करे इस प्रायश्चित्तको करके फेर व्रतकों धारणकरे तां शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब कच्छ व्रतां कर्केदूर होणे वाले और न दूर होणे वाले पापों कां देवल जी कहतेहैं ब्रह्मते ब्राह्मणके माया वाला और मदिराके पीणे वाला और सुवर्णके चुगणेवाला और गुणोंकी स्त्रीविष गमन करणे वाला और इनां चारोंका संगोगी एह पंच महापापी कहेहैं इन पांचोंका प्रायश्चित्त मरण है अत जिसके असा कहाहै और इनां के दूर करणे विषे कच्छादिव्रत नहि कहे ॥ १ ॥ और

वायवीये लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्याद्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् १ कच्छाणांसाध्यासाध्यानिपापान्याह देवलः ॥ ब्रह्महत्यामुरापानंस्तेयंगुर्वगनागमः तत्संयोगीचपंचैते महापातकिनस्त्वमे १ एतेपापंचानां मरणान्तं प्रायश्चित्तं न कच्छादिकम् ॥ गोवधोगुर्वधिक्षेपोभृतकाध्यापनादिकम् कच्छांचाद्रायणायैस्तुपरिशुद्धप्रकीर्तितम् २ तिलानांधान्यराशीनांविक्रयस्त्वन्यदस्तुनः एतत्संस्कारकरणं कच्छसाध्यंवदंतिहि ॥ ३ ॥ कन्यापहरणंचैवधेनुभूहरणादिकम् मलिनीकरणंत्वेतत्कच्छसाध्यंप्रयत्नतः ॥ ४ ॥ चाडालीगमनादीनि अपात्रीकरणानिच ॥ कच्छैर्विशोधनीयानिविप्रैर्दोषपराङ्मुखैः ५ ॥

जो पुरुष गौकावध करणे वाला और गुणोंका निरादर करणे वाला और मजुरी लेके वियाधियोंको पढाणे वाला है इनकी शुद्धि कच्छांचाद्रायणादिव्रतों कर्के कहाहै ॥ १ ॥ और तिलाके बेचणे वाला और धान्य राशिके ब्या मंजीआदिके बेचणेवाला और रस आदिके बेचणे वाला है इनांके जो पापहैं सो संस्कारकरण नाम कर्के कहाहै तिसकी कच्छ व्रत कर्के शुद्धि कहाहै ॥ २ ॥ कन्याका हरणा और गौ और पृथ्वीआदि का हरणा एह मलिनी करण पाप हैं इहोंका भी कच्छव्रतकर्के बडे यत्नसें शुद्धि कहाहै ॥ ४ ॥ चाडाली गमनआदिक जो अपात्री करण पाप हैं सो दोनतें रहित जो ब्राह्मण तिनाने कच्छ व्रतोंकर्के शुद्ध करणे योग्यहैं ॥ ५ ॥

२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

दुरिति और निदित अन्न क्या मसर आदिका भक्षण करना और दुष्टपुरुषके अन्नका भक्षण करना और जिसे अन्नविषे ऐसी शंका होवे कि एह अन्न पातकी पुरुषकर्के छोतादाहे तिसका भक्षण करना प्रह जाति से अष्ट करणे वाला बडा पाप कहाहै एह भी कच्छ व्रत कर्के शुद्ध होताहै ६ ॥ और पंचक आदि दोष कर्के जो मृत होवे तिसकी दुर्गतिके दूर करणे वास्ते एह प्रकीर्ण पाप पुत्रोने कच्छ व्रत कर्के दूर करणे योग्यहै ॥ और गर्भाधानादिकके अभाव होया होयां ब्राह्मणादि दोष होताहै तिसके दूरकरणे वास्ते कच्छ व्रत करणे योग्यहै ॥ और तुला आदिक प्रेतग्रहके लणे वाले जो पुरुष हैं तिनका ब्रह्मराक्षस जो गति है तिसका कच्छ व्रतां कर्के किसे स्थान विषे निवारण कहा है ॥ पूर्वोक्तफलासे औरभी संपूर्ण कच्छोंके फल हैं सोई व्यासजी कहतेहैं श्रीति जो पुरुष लक्ष्मीको इच्छा वाला और देहको

दुरन्नभोजनंचैव दुष्टभक्षणमेव च दुष्टशंकादिकंचैव जातिभ्रंशकरं महत् ६ ॥

एतदपि कच्छसाध्यम् ॥ दुर्मरणादिकंप्रकीर्णं कच्छसाध्यम् ॥ गर्भाधाना

दिकर्मणां तत्कालातिक्रमे ब्राह्मणादिकं कच्छैः साध्यम् ॥ तुलादिप्रतिगृ

हीहणां ब्रह्मराक्षसत्वस्य कच्छैः कुत्रचिन्निवारणम् ॥ सर्वेषां कच्छाणां

फलार्थत्वमप्याह । व्यासः । श्रीकामः पुष्टिकामश्च स्वर्गकामस्तथैव च देवता

राधेन परस्तथा कच्छं समाचरेत् ॥ १ ॥ रसायनानि मंत्राश्च तथा चैवौषधा

नि च तस्य सर्वाणि सिध्यंतियोनरः कच्छकृद्भवेत् ॥ २ ॥ वैदिकानि च सर्वाणि

यानि काम्यानि कानिचित् सिध्यंतिसर्वदानानि कच्छकर्तुर्न संशय इति ३ ॥

याज्ञवल्क्यः ॥ कच्छकृद्दर्मकामस्तु महर्ता श्रियमाप्नुयात् तथा गुरुक्रतुफलमा

प्नोति सुसमाहितः ॥ १ ॥ अत्र मिताक्षरा ॥ यस्त्वभ्युदयकामः प्राजापत्या

दिकच्छाननुतिष्ठति स महर्ता राज्यादिलक्षणां श्रियमनुभवति ॥

पुष्टिकी कामनावाला और स्वर्गकी कामनावाला और तैसे जो देवताके पूजन विषे युक्त पुरुषहै सो कच्छ व्रतको करे ॥ १ ॥ और रसायन सब और मंत्र और औषधीयां एह सब तिसके सिद्धहोतेहैं जो कच्छ व्रतको करताहै ॥ २ ॥ और वेदकर्के कथनकीये जो संपूर्ण कर्म और जो काम्य कर्म और संपूर्णदान एह सब कच्छ व्रतके करणे वालेको सिद्धहोतेहैं इसविषे संशय नहि है ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यजीकावचनहै कच्छेति धर्मकी इच्छा वाला जो पुरुष है सो समाधानहुआ २ कच्छ व्रतको करे तो बडीश्रीको प्राप्त होताहै तैसे बडे यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इस विषे मिताक्षराका वचन है जो पुरुष ऐश्वर्यकी इच्छाकर्के प्राजापत्य आदि कच्छोंको करताहै सो महाराज्य आदि लक्षण वाली लक्ष्मीको प्राप्त होताहै ॥

अथेति जैसेवहे जो यहहैं राजसूय आदितिनंके कणेशाला तिनायज्ञांका जो फलहै स्वाराज्य आदि क्या स्वगंराज्यादिलक्षण महाफल तिसको प्राप्तहोताहै तसे एह पुरुषभी इंद्रियांको रोक के संपूर्ण अंगके ब्या विधिके साथ रुच्छ्र व्रतको करताहोया राज्य आदि लक्षण महाफलको प्राप्त होताहै ॥ अथेति इसते उपरंत प्राजापत्य रुच्छ्र व्रतके प्रत्याम्नाय कहतेहां प्रत्याम्नाय क्या बदलार्जसे प्राजापत्य व्रतकी सामध्ये न होवे तिस प्राजापत्य फलकी प्राप्ति भारते बदला धेनुदानादि कहाहै तिस विषे देवलजीकहतेहैं ॥ धेनुगिति एक धेनु क्या नवी प्रसूतहुई गौ और महानदी क्या जो समुद्रमे गमन करणें वालाहै अथवा गंगाआदि तिस विषे स्नान और वारां ब्राह्मणांका पूजन और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम

यथा गुरुकृतानां राजसूयादीनां कर्ता तत्फलं स्वाराज्यादिलक्षणं महत्फलं लभते तथायमपि समाहितः सकलांगकलापमविकलमनुतिष्ठन्निति ॥ अथ प्राजापत्यरुच्छ्रप्रत्याम्नायाः ॥ तत्राह देवलः धेनुर्महानदीस्नानंद्वादशब्राह्मणार्चनम् संहितामात्रपठनं द्विशतं वायुरोधनम् ॥ १ ॥ तिलहोमस हस्त्रस्यादयुतं जप उच्यते इति ॥ द्विशतं वायुरोधनं प्राणायामशतद्वयम् ॥ लिङ्गपुराणे ईश्वरः ॥ प्राजापत्येतुर्गौरिकाद्वादशब्राह्मणार्चनम् समुद्रगमनं दीस्नानं संहितापाठ उच्यते प्राणायामश्च द्विशतमयुतं जप उच्यते ॥ १ ॥ पराशरः ॥ अकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुध्यति कामतस्तु कृते पापे प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ १ ॥

गायत्री मंत्र कर्के करणा और हजार आहुति तिलांकी व्याहृति कर्के और दशहजार १०००० गायत्रीका जप करणा एह प्राजापत्यके फलदेणवालेहैं ॥ १ ॥ इसीको प्रत्याम्नाय कहतेहैं । अब लिङ्गपुराणविषे शिवांका वचनहै प्रेति प्राजापत्य रुच्छ्रविषे एक गौ दान करणी और वारांब्राह्मणांकी पूजा करणी और समुद्र विषे प्राप्त होणें वाली नदी विषे स्नान करणा और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम करणा गायत्री मंत्र कर्के और दश हजार १०००० जप करणा गायत्रीका एह प्राजापत्य रुच्छ्र व्रत विषे प्रत्याम्नायहै १ ॥ अब पराशरजी कहतेहैं अकामतइति इच्छातें विना कीया जो पाप सो संहिताके पाठ करणे करके दूरहोताहै और जो इच्छासैं कीयाहै पाप सो प्राजापत्य व्रतकर्के दूर होताहै ॥ १ ॥

अब इसके प्रत्याम्नायकों क्या बदली करणों की विधियों देवलक्षि कहता है विप्रडति ब्राह्मण मध्याह्न पड़लेनटी विषे स्नान करे वा होगी उत्तम जलाशय विषे करे अथवा और किसे जल विषे करे पोछु शुद्ध वस्त्रों धारके विपुंड्रक तिलककों करे फेर नित्यकर्म जो संध्या वंदनादि तिसकों समाप्त करे ॥ ३ ॥ फेर देवताकी उपासना आदि कर्म कों करे अर्थात् ध्यान करे और उपासनातें पीछे देवताका पूजन हच्छो तरहसे करे तिसतें उपरंत चार ब्राह्मणोंक साथ स्वस्त्ययनको वाचे २ ॥ और संकल्प डमरुह करे कि जिसदेश और काल विषे प्रत्याम्नायको करता है तिस देश कालका उच्चारण कर्के अपणे नामका भी उच्चारण करे कि जो पाप मैंने इच्छातें बिना कीता है तिसकी शुद्धि वास्ते ॥ ३ ॥ मैं प्राजापत्य कच्छुक करण विषे सामर्थ्यते रहित ही

प्रत्याम्नायसमाचरणमाह देवलः ॥ विप्रः स्नात्वा तु पूर्वाह्ने नद्यां वा न्यत्र वा जले वस्त्रादिपुंड्रं कृत्वा नित्यकर्म समापयेत् ॥ १ ॥ उपासनादिकं कृत्वा ततो देवार्चनं परम् चतुर्भिर्ब्राह्मणैः साकं पुण्याहं वाचयेत्ततः ॥ २ ॥ देशकालौ च संकीर्त्य स्वनामाप्यनुसंवदेत् एतत्पापविशुद्ध्यर्थं मया कृतमकामतः ॥ ३ ॥ प्राजापत्यस्य कच्छुस्य साक्षात्कर्तुं न शक्नुवन् प्रत्याम्नायमहंकुर्या भवतः क्षंतुमर्हथ ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वा गांसवत्सांच सुशीलांच पयस्विनीं पूजयित्वा विधानेन ब्राह्मणंच यथार्थतः ॥ ५ ॥ हे हे गौः सर्वलोकानां त्वं माता परिकीर्तिता अतस्त्वां पूजयिष्यामि सर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ इति सर्वप्रत्याम्नायकच्छुगोदानेपुपूजामंत्रः ॥ वेदाध्यायिन्सदा पूज्यो दानेष्वेतेषु पावन अतस्त्वां पूजयिष्यामि सर्वपापापनुत्तये । १ । इति विप्रपूजामंत्रः ।

इस कारण मैं प्राजापत्यके बदलेकों कर्त्ता हूं हे ऋषियां हो तुमों क्षमा करे ॥ ४ ॥ ऐसे कहके सहित वच्छेके जो गौ है चंगे स्वभाव वाली और दुग्ध देण वाली तिसकों विधि कर्ते तैने पूजे फेर ब्राह्मण के ताई देवे ॥ ५ ॥ अब पूजनके मंत्र कहते हैं हेइति हे गौ तूं संपूर्ण लोकोंकी माता कहो हैं इस कारण मैं संपूर्ण पापोंके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजता हूं ॥ ६ ॥ एह मंत्र संपूर्ण प्रत्याम्नाय और कच्छु व्रत और गोदान विषे गौकी पूजा विधि पढ़नेपाय है अब उपदेश करण वाले ब्राह्मणकी प्रार्थनाकों कहते हैं वेदति हे वेदके पढ़ने विषे पुक ह पयिव एनां दानां विषे तूं सदाहि पूजने योग्य है इस कारण मैं संपूर्ण पापोंके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजता हूं एह ब्राह्मणकी पूजा का मंत्र कहहि ॥ १ ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ २९

गवामिति गौयांके अंगों विषे चौदां भुवन स्थित हैं जिसकारणों तिस कारण तें मेरेकों कल्याण होवे और इसकारण तें मेरे ताई शांतिकों देवों ॥ २ ॥ यज्ञेति और जो यज्ञका साधन रूप और जगत् के पाप दूर करणे वाली है ताते इस गौ कर्के मेरे उपर विश्वरूपके धारण वाला देवता प्रसन्नहोवे ॥ ३ ॥ एह मंत्र संपूर्ण गोदान विषे और प्रत्याम्नाय गोदानों विषे पढ़ने योग्यहैं ॥ अब और कहतेहैं तत्रेति तिसविषयी दक्षिणादेणेयोग्यहै जैसे धनहोवे तिसके अनुसारतें करे इस प्रकार प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायकों भली प्रकार करणे करके प्राजापत्यका जो संपूर्ण फल है तिसकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ और प्राजापत्यकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय दद्या वदलेकर्के क ही जो गौहै तिसके अभाव विषे तिसके मुँहकों देवल आपि कहता है गवामिति गौयांके

गवामंगेषुतिष्ठतिभुवनानिचतुर्दश यस्मात्तस्माच्छिवमेस्यादतःशांतिप्रयच्छमे ॥ २ ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याघप्रणाशिनी विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनयागवा ॥ ३ ॥ इतिसर्वगोदाने प्रत्याम्नायगोदानेषुचमंत्रौ ॥ तत्रापिदक्षिणादियायथावित्तानुसारतः एवंकृत्वानरःसम्यक् प्रत्याम्नायमनुत्तमम् । संपूर्णफलमाप्नोतिप्राजापत्यस्यकृच्छृतः । १ । प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायत्वेन गौरभावे तन्मूल्यमाह देवलः ॥ गवामभावेनिष्कस्यातदर्द्धपादमेववा दारिद्र्यकुरुतेपादंधनिकः पूर्णमाचरेत् अन्यथातत्फलनास्तिप्राजापत्यंनसिध्यति ॥ १ ॥ निष्कशब्दोद्विराहस्तदर्द्धमेकवराहपक्षामध्यः वराहार्द्धपक्षः कनीयान् तत्त्रयमप्यंगीकृतमस्माभिः ॥

अभाव विषे क्या गौ न होवे तिस एक गौका पुत्र एक निष्क देवे वा निष्कका अर्द्ध देवे वा तिसका अर्द्ध पाद अर्थात् चौथा हिस्सा देवे पंतु धनतें रहित जो पुत्रहै सो निष्कका चौथा हिस्सा देवे और धनवाला होवे तां संपूर्ण निष्कदेवे जेकर ऐसे न करे तिसको फल नहि होता और प्राजापत्यभी सिद्ध नहि होता ॥ १ ॥ और इस जगत् निष्क नाम दो वराहका है और एक वराहका नाम जो निष्कहै सो मध्यम पक्ष कहाहै और वराहका अर्द्ध जो निष्क कहाहै सो कनीयान् पक्ष है क्या लघुपक्षहै अतानें ब्रह्म पक्ष अंगों कार कीतेहैं इसमें शक्ति के अनुसार व्यवस्था जानणी और वराह शब्दका अर्थ मान परिभाषा से जानणा ॥

३० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० मा० ॥

सोई कहताहै मार्कंडेय त्रपि त्रेति प्रभुआंको अर्थात् जो घन बर्के युक्त हैं तिनांको निष्क सुवर्णका दान करण योग्यहै एह उत्तम पक्ष कहाहै निष्कका अर्द्ध जो एक वराह रूप है सो सामर्थ्य वालेको नहि बर्चोकि उत्तम पुरुषको मध्यम दानका फल नहि होता ॥ १ ॥ मध्यमेति ॥ मध्यम जो पुरुष हैं तिनांको सर्वदा काल मध्यम पक्ष निष्कका अर्द्ध वराह पारिमाण दान करणा श्रेष्ठहै तां मध्यम पुरुष मध्यम पक्षको करे उत्तम पक्षको त्यागके जेकर मध्यम पक्षको करे तिसको भी फल नहि होता और इस कर्के उत्तम जो घनि पुरुष है सो मध्यम जो वराह परिमाण तिसका दान न करे ॥ २ ॥ और कनीयान् जो वराहका अर्द्धहै सो पक्ष निर्धन

तदाह मार्कंडेयः ॥ प्रभूणां पूर्वपक्षः स्यादुत्तमः परिकीर्तितः ॥ मध्यमाचरणं नास्ति प्रभूणां तत्फलं न वा ॥ १ ॥ मध्यमानां वराहः स्यात्पक्षः सर्वत्र शोभनः ॥ उत्तमं यः परित्यज्य मध्यमं चेदुपाश्रितः ॥ न दानफलमस्यास्ति नोत्तमो मध्यमं चरेत् ॥ २ ॥ कनीयांस्तु वराहार्द्धमुत्तमं संप्रकीर्तितं ततस्य मध्यमं नास्ति न तत्कृच्छ्रफलं लभेत् ॥ ३ ॥ अकिंचनानां सर्वेषां धरणं गौरुदाहता अतोहीनं न कर्तव्यं गोमूलेष्विह सर्वदा एवं कुर्युर्हितदानं चोत्तमाधममध्यमाः ॥ ४ ॥ किंचिद्वनाढ्योपि कनीयां संकुर्व्यात् ॥ अकिंचनस्य कनीयान्पक्ष एवात्तमः ॥

को उत्तम कहाहै निर्धनको मध्यम पक्ष नहि कहा जेकर करे तिसको कृच्छ्रका फल नहि होता अथवा तिसको उत्तम पक्ष किहा है तिसने मध्यम नहि करणा एह अर्थ है ॥ १ ॥ अकिंचेति ॥ निर्धन जो सर्वहैं तिनांको धरण परिमाण सुवर्णका दान गोदान कहा है इस कारणसे गौयांके मुखादिमें थोडा दान न करे ॥ ४ ॥ इसप्रकार अपने २ अधिकारकर्के उत्तम और मध्यम और अधम पुरुष दानको करे एहि दास्यकी आज्ञा है एहि अर्थ स्पष्ट कर्के किहा है ॥ कुछक घनकर्के युक्त जो पुरुष है सोभी अल्पदानको करे और निर्धन पुरुष उत्तम दानको न करे तिसको कनीयान् पक्ष हि उत्तम है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्राकश्चित भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ ३१

अतः इति इस कारणात् अपणो सामर्थ्यं कर्के पुरुष प्राजापत्यके प्रत्याम्नायकों करे जेकर सामर्थ्य
कों लंघ कर्के करे तां तिसकों फल नहि होता ॥ एवमिति असे महापापाविषे भी कहा है कि
महापापके करणे वाला पुरुष वारां वर्षके व्रतकों करे कि वारां दिनां कर्के साध्य जो प्राजा
पत्य व्रत सो व्रत सौ सठ १६० करणे योग्य हैं तदिति और जेकर तिनां व्रतांके करणविषे
सामर्थ्य न होवे तां व्रत सौ १६० सहित व्रतोंके गौयां देवे ॥ और गौयांका भी अभावहोवे
तां व्रत सौ सठ १६० मोहर देखे योग्य हैं ॥ तैसे होरीस्मृतिका वाक्य है प्राजापत्यव्रतके करणे
विषे सामर्थ्य न होवे तां बुद्धिमान् पुरुष प्रसून होइं जो गौ तिसका दान करे और गौ दानकी
भी सामर्थ्य न होवे तां तिसके तुल्य मुछकोंदेवे इसमे संशयनहि है ॥ १ ॥ मुछकी व्यवस्था करते हैं

अतः स्वशक्तिपुरःसरतया प्रत्याम्नायं कुर्यादन्यथा निष्फलत्वमवाप्नोती
त्यर्थः ॥ एवंमहापातकेऽपि द्वादशवार्षिकव्रतस्य द्वादशदिनसाध्यतया
प्राजापत्यानि ॥ ३६० ॥ पञ्चविकशतत्रयं कल्पयित्वा कार्याणि ॥ तद्
शक्तौच तावत्योवा धेनवोदातव्याः । तदसंभवे निष्काणां पञ्चाधिकशतत्रयं
दातव्यम् ॥ तथास्मृत्यन्तरम् ॥ प्राजापत्यक्रियाऽशक्तौ धेनुदद्याद्विचक्षणः
धेनोरभावे दातव्यमूल्यं तुल्यमसंशयम् १ निष्कंदा तदर्थं पादं वा शक्त्यपे
क्षयादातव्यम् ॥ गवामभावे निष्कंस्यात्तदर्थं पादमेव चेति स्मरणात् ॥ मूल्य
दानस्याप्यशक्तौ तावतो योपयासाः कर्तव्याः ॥ कृच्छ्र उपवासाऽऽहोरात्र
नितिमहाणीये

निष्कमिति अपणो सामर्थ्यकरके निष्कदानकरे या तिसका अर्द्धदान करे या तिसका चौथा हि
स्तादान करे ॥ गवामेति गौयांके दानकी सामर्थ्य न होवे तां निष्कका दान करे या अर्द्धकरे
या चौथा हिस्ता करे इसवाक्यते ॥ और मुछदेणकी भी समर्थ्य न होवे तां तिसपापां जितने
कृच्छ्र व्रत करणें योग्य हैं तित संख्या कर्के उपवास व्रतांको करवावे पंतु इसमें और अशिप्रा
य है कि निरंतर उपवास नहि होसके एक उपवास कर्के दूरे दिन भोजन करे और फिर उप
वास करे इस रीतिसे जो दिन रात्र उपवास व्रत करण है तिसका नाम कृच्छ्र है एह महापाप
विषे कहा है ।

३२ ॥ श्रीरत्नदीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

तत्रेति तिस्रय सो सठ ३६० उपवास व्रत विषे भी जो सामर्थ्यतें रहित है तिस पुरुषने छत्ती लक्ष ३६००००० गिणती कर्कें गायत्रीका जप करणे योग्य है एह प्रयाम्नाय कहा है इसमें वचन कहते हैं छच्छ्रुति छच्छ्रव्रत और गायत्रीका दश हजार १०००० जप और उपवास व्रत और ब्राह्मण के तांडे प्रसूत होइं होइं गौका दान देणा एह चारें सम हैं इनां उपायां विषे पापके दूर करणे वास्ते किते उपायकों करे इस पराशरजीके वचनतें १ ॥ फेर जो चतुर्विंशतिके मत विषे कहा है जो पुरुष गायत्रीका एक कोड जप १००००००० कर्ता है सो ब्रह्महत्या पापों रहित क्या शुद्धिकों प्राप्त होता है और अस्सी लक्ष ८०००००० गायत्रीके जपकों कर्ता है सो पुरा मदिरा पाणना जो पाप है तिसतें शुद्ध होता है ॥ १ ॥ और सत्तर लक्ष ७०००००० जो गायत्रीका जप है सो सुवर्ण के चुराणे वालेकों शुद्ध कर्ता है और गुरांकी स्त्री साथ जो गम

तत्राप्यशक्तौ गायत्रीजपः पट्त्रिंशलक्षसंख्याकः कार्यः ॥ कृच्छ्रीयुतं तु गायत्र्या उपवासस्तथेय च ॥ धेनुप्रदानं विप्राय सममेतच्च तुष्टयमिति पराशरस्मरणात् । यनुचतुर्विंशतिमतेभिहितम् ॥ गायत्र्यास्तु जपन्कोटिं ब्रह्महत्यां व्यपोहति लक्षाशीतिजपेद्यस्तु सुरापानाद्विमुच्यते ॥ १ ॥ पुनर्नातिहेमहर्तारं गायत्र्या लक्षसततिः गायत्र्याः षष्टिकैर्लक्षैर्मुच्यते गुरुतल्पगइति २ । तद्द्वादशवार्षिकतुल्यविधानतयोक्तं न पुनरुक्तविषयमिति न विरोधः । कृच्छ्रं देवयुतं चैव प्राणायामशतद्वयम् ॥ तिलहोमसहस्रं तु वेदपारायणं तैद्ययादयः प्रत्याम्नायाश्चतुर्विंशति मन्वादिशास्त्रेऽभिहिताः पष्ठधिकशतत्रयगुणिता महापातकेषु बोद्धव्याः ॥

न करणे वाला है सो पुरुष गायत्रीके सठ लक्ष ६०००००० जपकर्कें शुद्ध होता है ॥ २ ॥ एह वाक्य बागं वपंका जो व्रत है तिसके तुल्य फलकों प्रतिपादन कर्ता है प्राजापत्यको प्रायाम्नाय विधि विषे नहि जानणा तां कहा जो विषय प्रयाम्नाय तिसतें भिन्न होंते एह कोई विरोधी वाक्य नहि है ॥ और वाक्य कहते हैं छच्छ्रुति छच्छ्रव्रत और देवी गायत्रीका दश हजार १०००० जप और दो सो २०० प्राणायाम गायत्रीकर्कें और एक हजार १००० तिलांका हवन श्रुत्युग्रय मंत्र कर्कें वी वाहति कर्कें और सानी संहिताको पाठ एह छच्छ्रव्रतके प्रयाम्नाय क्या एक एव के श्रभाव विषे दूसरा दूसरा दारणा ॥ सो चतुर्विंशति और मनु आदि कर्कें कथा बोले होए एक सो सठ १६० संख्या कर्कें महापातक पापों विषे जानने योग्य है ॥

अतीति अतिपातक पापों विषे प्राजापत्य व्रतां की संख्या दो सौ सत्तर २७० कही है सो करणे योग्य है वा तिसका प्रत्याम्नाय दोसौ सत्तर २७० धेनुदान तें लेकर होर भी जानें ॥ पातके प्विति पातक जो पाप हैं तिनां विषे एकसौ अस्सी १८० प्राजापत्य व्रत कहे हैं तिस विषे प्रत्याम्नाय प्रसू तहोई गौयांते आदिलेके एक सौ अस्सी संख्याहि कही है ॥ तैसे चतुर्विंशतिके मतविषे कहा है जन्मेति जन्म तें लके ब्रह्महत्या तें बिना जो बहुत अनेक तरांके पाप कीते हैं तिनांके दूर करणे वास्ते छे ६ वर्ष के प्राजापत्य व्रत को करे और ब्रह्महत्या पापके दूर करणे विषे वारां वर्ष का व्रतहि कहा है ॥ १ ॥ तिस छे वर्ष के प्रत्याम्नाय विषे धनवाले पुरुषकों एक सौ अस्सी गौ

अतिपातकेपु सतत्यधिकशतद्वयं प्राजापत्यानां कर्तव्यतावन्तोवाधेन्वादयः प्रत्याम्नायाः ॥ पातकेपु साशीतिशतं प्राजापत्याः प्रत्याम्नायाधिन्वादयः स्तावन्त एव वा ॥ तथा चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् । जन्मप्रभृतिपापानिवहूनि विविधानि च कृत्वा र्वाग्ब्रह्महत्यायाः षड्वद्वन्व्रतमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रत्याम्नाये गवां देयं साशीति यनिनां शतम् ॥ तथा षाडशलक्षाणि गायत्र्या वा जपेद्बुध इति ॥ २ ॥ इदमेव च द्वादशवार्षिकं व्रते द्वादशद्वादशदिनैरेकैः कप्राजापत्यकल्पनायां लिङ्गम् ॥ एवमुपपातकेपु त्रैवार्षिक प्रायश्चित्त विषयभूतेषु नवतिः प्राजापत्यास्तावन्त एव प्रत्याम्नायाः ॥

यांकादान करणे योग्य है तिसकी सामर्थ्य न होवे तां बुद्धिमान् पुरुष अठारालक्ष १८००००० गायत्री का जप करे ॥ २ ॥ एहजो पूर्व कथन कीता है प्रायश्चित्त सो वारां वर्ष के व्रत विषे वारां वारां दिनां कर्के एक एक प्राजापत्यकी कल्पना विषे चिन्ह जानणा ॥ जैसे पूर्व कहा है इसी प्रकार उपपातक जो पाप हैं त्रय ३ वर्षके प्रायश्चित्त व्रत कर्के दूर होणे वाले तिनां विषे नव्वे ९० प्राजापत्य व्रत कहे हैं वारां दिनां कर्के एक प्राजापत्य प्रत होता है तांते त्रय ३ वर्षों विषे नव्वे ९० होते हैं जेकर उपपातक पापोंके दूर करणे वाले जो नव्वे ९० प्राजापत्य व्रत तिनांके करणे विषे सामर्थ्य न होवे तां तिसकों प्रत्याम्नाय नव्वे ९० कहें ।

३४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

त्रैमासिकेति त्रय १ महीने कर्के हुंदा जो प्रायश्चित्त तिसविषे साडे सत्त ७॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसके प्रत्याम्नाय जप और गौ और उपवास व्रत आदि साडे सत्त ७॥ हि कहेहैं परंतु इसजगा अर्द्धके स्थानमुक्त देवे जो गौका कहाहै तिसते अर्द्ध व्रत हो जावेगा ॥ मासिकेति महीनेके व्रत विषे ढाड़ २॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसको असामर्थ्य विषे प्रत्याम्नाय भी ढाड़ २॥ कहेहैं चांद्रायणेति और एक चांद्रायण व्रत कर्के दूर होनेवाले जो उपपातक पाप तिनांके दूर करणे वास्ते प्राजापत्य व्रत त्रय ३ कहेहैं ॥ तिस प्राजापत्य त्रय ३ के करणे विषे जो असमर्थ पुरुष है तिसको प्रत्याम्नाय भी तावान् कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नायके करण विषे अठ धेनु ८ का दान कहाहै सो एह धन वाले पुरुष विषे पिपीलिका मध्यादि नाम चांद्रायण व्रत के प्रत्याम्नाय क्या बदले विषे जानणा ॥

त्रैमासिकविषये पुनः सार्द्धं सप्त प्राजापत्याः प्रत्याम्नायाश्च धेनूपवासादयस्तावन्तएव ॥ मासिकव्रतविषये तु सार्द्धं प्राजापत्यद्वयम् ॥ तावानेव प्रत्याम्नायः ॥ चांद्रायणविषयभूतेषु पुनरुपपातकेषु प्राजापत्यत्रयम् ॥ तदशक्तस्य प्रत्याम्नायस्तावानेव ॥ यत्पुनश्चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ अष्टौ चांद्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौ सदेति अष्टौ धेनव इत्यर्थः तदपि धनिनः पिपीलिकामध्यादिचांद्रायणप्रत्याम्नायविषयम् ॥ एतच्चैकैकं ग्रासमश्नीयादित्यामलकपरिमितैकैकग्रासपक्षे वेदितव्यम् ॥ पाणिपूरान्नपक्षे तु पुनर्धेनुद्वयमेव । प्राजापत्यस्य षडुपवासतुल्यत्वात् । द्विगुणत्वाच्चातिकृच्छस्य

एतदिति एह जों पूर्वोक्त विधि है सो (एकैकं) इत्यादि वचनकर्के कही जो प्रतिदिन एक एक ग्रास के भक्षण वाली चांद्रायण विधि तिस विषे जानणे योग्य है और इस विधि विषे ग्रास भी आमलके तुल्य है इसकके कठिन चांद्रायण है और तिसका प्रायश्चित्त भी अधिक है ॥ और जिसपक्ष विषे पाणि पूरान्न भोजन किहा है क्या जितने अन्न कर्के एक हत्थ पूरण होवे तितना अन्न प्रतिदिन भक्षण करे इसपक्षविषे कष्ट थोड़ा है इसकके दोर धेनु प्रत्याम्नाय है ॥ अब फेर पूर्वोक्त मै अभिप्राय कहतेहैं कि प्राजापत्यको १ छे उपवासकी तुल्यता है ॥ और अति कृच्छ्र को इससे द्विगुण होनेतें अर्थात् अति कृच्छ्र इससे दूण है

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी०भा० ॥ ३५

अब और विचार कर्ते हैं यद्यपीति जो पाणि पुराण भोजन किहा है सो १ नौ दिनमे हि हुंदा है वारां १२ दिनमे नहि तथापि निरंतर जो १२ वारां दिनका व्रत करणा सो बहुत केशदेणे वाला है इसकके ६ छे उपवासके तुल्य जो प्राजापत्य दो २ तिसकी तुल्यता पाणि पुराण वाले व्रतको है ॥ अब प्राजापत्यको जिसतही ६ छे उपवासकी तुल्यता है सो कहते हैं तथाहीति पहले त्रय दिनविषे सायं कालके भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होआ और दूसरे त्रय दिनविषे प्रातः काल भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होर होया ॥ और अगले दिन त्रय विषे अयाचित व्रत विषे भी सायं कालके भोजन की निवृत्ति करणें एक उपवास हुंदा है इसरीतिसें नो १ दिनोकरके ३ त्रय उपवास होए ॥ और इसते

॥ यद्यपि नवसु दिवसेषु पाणिपुराणभोजनम् तथापि नैरंतर्य्येण द्वाद
शदिवसानुष्ठाने क्लेशातिशयेन षडहोपवाससमानप्राजापत्यद्वयतुल्य
त्वमेव ॥ प्राजापत्यस्य षडुपवासतुल्यत्वं युक्तमेव ॥ तथाहि प्रथमेऽत्र्यहेसा
यंतनभोजनत्रयनिवृत्तावेकोपवासस्य संपत्तिः । द्वितीयेऽत्र्यहेप्रातः कालभो
जन त्रयवर्जनेऽपरस्य तथाऽयाचित त्र्यहेपि सायंतनभोजनवर्जनेऽ
न्यस्यैवं तवाभिर्दिनैरुपवासत्रयम् ॥ ततश्चांत्यत्र्यहोपवासत्रयमितियुक्तं
षडुपवासतुल्यत्वम् ॥ ऋषभैकादशगोदानसहितत्रिरात्रोपवासात्मक
गोव्रते तु सार्द्धैकादशप्राजापत्यास्तावत्संख्याकाश्चोपवासादयः प्रत्याम्ना
याः मासपयोव्रते तु सार्द्धं प्राजापत्यद्वयम् ॥ पराकात्मकेतूपपातकव्रते प्रा
जापत्यत्रयम् ।

आगे त्रय उपवास करणें ते ६ उपवासकी तुल्यता प्राजापत्य को उचित है ऋषभेति
बैल है याखां जिनां विषे ऐसीयां दृश्यं १० गौयांके दानके साथ जो त्रय १ उपवास
व्रत है ऐसे गोव्रतविषे प्रत्याम्नाय कहते हैं ॥ सार्द्धे इति साठे वारां प्राजापत्य व्रत अथवा साठे
वार ११ ॥ उपवास अर्थात् साठे वारां दिन ११ ॥ निगहार स्थित रहणा इत्यादि जानणे ॥
मासेति एक मास तक जो दुग्धका व्रत तिस विषे प्रत्याम्नाय दाई २ ॥ प्राजापत्य कहें ॥
पराक व्रत कर्के दूर होता जो उपपातक पाप तिस व्रत विषे प्राजापत्य त्रय ३ करण चाहिए
इह प्रत्याम्नाय है ॥

३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

और कहते हैं पराकेति और पराकव्रत और तप्तकच्छ और अतिकच्छ इनां विषे एक एक की जगा त्रय ३ प्राजापत्य व्रत करे और ३ प्राजापत्य व्रतां विषे जो असमर्थ है सो सांतपन व्रत के श्रद्धा नू करे ऐसे षड्विंशत्युक्त विषे कथन करणें ॥ चांद्रायणेति चांद्रायण और पराक कच्छ और अतिकच्छ एह व्रत एक एक त्रय ३ प्राजापत्य व्रतांके तुल्य है ताते वारावर्षके व्रत विषे एक सौ बीस १२० अनुष्ठान करणे योग्य हैं ॥ तदिति और तिनां चांद्रायणादि व्रतांके प्रत्याम्नाय धेनु आदिक अथात् धेनु उपवास और गायत्रीका १०००० जप एह सब त्रय गुणां अधिक जानणे ताते प्राजापत्य व्रत त्रय सौ सठ ३६० कहने तिस विषे चांद्रायण एक सौ बीस १२० तिस एक सौ बीस विषे धेनु आदिक त्रय सौ सठ ३६० कहने ॥ अतीति अतिपातक पापविषे नवे १० संख्याकर्के चांद्रायण आदि कहने ॥ और अति पातक पापांके तुल्य जो पातक संज्ञाकर्के पाप हैं तिनां विषे सठ ६० चांद्रायणादि कहने ॥ और त्रय

पराकतप्तातिकच्छस्थाने कच्छत्रयचरेत् सांतपनस्य तच्चाहमशक्तौ व्रतमाचरेदिति षड्विंशत्युक्तं अभिधानात् ॥ चांद्रायण पराककच्छातिकच्छास्तु प्राजापत्यत्रयात्मका द्वादशवर्षिकव्रतस्थाने विंशत्युत्तरं शतसंख्या अनुष्ठेयाः तत्प्रत्याम्नायास्तु धेनुवादयास्त्रिगुणाः । अतिपातके नवतिसंख्याकाश्चांद्रायणादयः । तत्संमेषु पुनः पातकपदाभिधेयेषु षष्टिसंख्याः । उपपातकेषु त्रैवर्षिकविषयेषु त्रिंशत्संख्याः । त्रैमासिकेषु व्रतस्थानेषु गोमूत्रस्नानादीतिकर्तव्यताबाहुल्यमाश्चांद्रायणादित्रयम् । मासिकव्रतेषु योगीश्वरोक्तमेकमेव चांद्रायणम् धेनुपवासादिप्रत्याम्नायस्तु सर्वत्र त्रिगुण एव । प्रकीर्णकेषु पुनः प्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तानुसारेण प्राजापत्यं पादादिकं वा योजनीयम् । आवृत्तौ पुनश्चांद्रायणादिकमिति । एतद्दिगवलम्बनेनान्यत्रापि कल्पनाकार्या ॥

वर्षांके प्राजापत्यकर्के दूर दोशें वाले जो उपपातक पाप तिनां विषे चांद्रायणादि तीस ३० कहने ॥ त्रैमासिकेष्विति त्रय ३ महीनेके व्रतां विषे गोमूत्र स्नान आदि कर्मकी बाहुल्यतासें करणा कठिन है इस कर्के यथायोग्यताको जान कर्के चांद्रायण आदि व्रत त्रय ३ कहने ॥ और एक महीनेके व्रतां विषे योगीश्वरनें एकहि चांद्रायण कहा है सो करणा ॥ और धेनु और उपवास और जप इत्यादि प्रत्याम्नाय संमूले चांद्रायणादि स्थानविषे त्रय गुणां जानणा । प्रकीर्णति प्रकीर्ण नाम कर्के जो पाप तिनां विषे एक एक पापके दूर करणे वास्ते प्रायश्चित्तके अनुसार कर्के प्राजापत्यव्रत करणा वा पादादिक जानणा ॥ और प्राजापत्यकी आवृत्ति विषे अथात् जिस जगा बहुत प्राजापत्य करणे होण तिस जगा चांद्रायण आदि कहा है इस रस्तेके अनुसार कर्के होर स्थानविषे भी व्यवस्था जानणी ॥

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ ३७

जो फेर बृहस्पतिने कहा है ॥ जन्मते लेकर जो कुछ पातक वा उपपातक है तिनके दूर करणे विषे संख्या कर्के एकते लेके १ ॥ ६० ॥ ताई प्राजापत्य करणा ॥ १ ॥ सो परस्त्रीके संभोगके पाप विषे दो वर्षके व्रत करे एह गौतम जीके कहेहोए वचनते दो वर्षके व्रतकी तुल्य ताको विषय करता है ॥ तैसेहि १ व्रत महीनेके जो उपपातकके व्रत तिनकी आवृत्तिको क्या बहुत बार करणको विषय करता है जो परस्त्रीका अभ्यास तिस विषे जानणा वा और फेर पातक नाम कर्के जो चांडालादि स्त्रीके विषे दो २ बार अभ्यास करणा तिसविषे जानणा वचन कहतेहैं तत्रेति इच्छा कर्के संभोग करे तां तिस पुरुषको पापके दूर करणे वास्ते ९

यत्पुनर्बृहस्पतिनोक्तम् जन्मप्रभृतियत्किंचित्पातकंचोपपातकम् तावदावर्तयेत्कृच्छ्रं यावत्पष्टिगुणं भवेत् ॥ १ ॥ तद्वेपरदारइति गौतमोक्तद्वेवार्थिकसमानविषयम् ॥ तथा त्रैमासिकादिविषयभूतोपपातकावृत्तिविषयं वा पातकपदाभिधेयेचांडालादिस्त्रीगमे द्विरभ्यासविषयंच ॥ तत्र ज्ञानात् कृच्छ्राब्दमुद्दिष्टमज्ञानादैन्दवद्वयमिति सकृद्बुद्धिपूर्वगमे कृच्छ्राब्दविधानात् ॥ तदभ्यासे द्विवर्षतुल्यपष्टिकृच्छ्रविधानं युक्तमेव । यत्तु सुमंतुनोक्तम् ॥ यदप्यसकृदभ्यस्तंबुद्धिपूर्वमघं महत् तच्छुद्ध्यत्यब्दकृच्छ्रणमहतः पातकावृत्तइति ॥ १ ॥ तदप्युपपातकावृत्तिविषयम् ॥

क वर्षका प्राजापत्य व्रत कहा है और इच्छाते विना परस्त्री विषे संभोगका अभ्यास होवे तिस पापके दूर करणे वास्ते दो चांद्रायण व्रत कहेंहैं इति ॥ इसका तात्पर्य कहतेहैं सकृदिति एकवार इच्छा कर्के चांडालादि स्त्रीके संभोग विषे पापके दूर करणे वास्ते एक वर्षके प्राजापत्य कृच्छ्रके विधान होणें ॥ और बहुत बार अभ्यास विषे दो वर्षके तुल्य सटां प्राजापत्य व्रतोंका विधान युक्त है ॥ जो फेर सुमंतुनोक्तमें कहा है कि जो बारबार इच्छा कर्के बहुत पाप को याहे सो एक वर्षके प्राजापत्य व्रत कर्के दूर होता है परंतु महापातकते विना ॥ १ ॥ सोभी उपपातक आदिके अभ्यास विषे जानणा ॥

३८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

येति तैसे अज्ञानतें चांडाली गमनरूप पापकों करे तां को चांद्रायण व्रत करे एह धर्मराजन
कहे जो चांद्रायण व्रत दो २ तिनां कर्के दूरकरी दे जो पातकतिनकी आवृत्ति विषे
अथवा जानणा ॥ यइति जो पुरुष तप करणेविषे सामर्थ्यते रहित है और अन्नकर्के समृद्ध है
सो कच्छ आदि व्रतानु उत्तम ब्राह्मणों ताई भोजनदानसे संपादन करे अर्थात् भोजनकों देवे ॥
तैसे होरी स्मृतिका वाक्य है इस भोजनके प्रकार विषे कच्छइति प्राजापत्य कच्छ व्रत जो
बारों दिनाका है तिसके एक एक दिनविषे पंच पंच विद्वान् ब्राह्मणोंके ताई भोजनदेवे तिस
पुरुषकों प्राजापत्य व्रतका फल होताहै तैसे अति कच्छके अर्थ एक एक दिन विषे पदगं १५
ब्राह्मणोंके ताई भोजन देवे और तृतीय जो कच्छाति कच्छ है तिस तिषे तीस ३० ब्राह्मण और तप्त

तथाऽज्ञानादैन्दवद्वयमिति यमोक्तेन्दवद्वयविषयभूतपातकावृत्तिविषयं वा
यस्तु तपस्यसमर्थो धान्यसमृद्धश्च सकृच्छादिब्रतानि द्विजाग्न्येभ्योभोजन
दानेन संपादयेत् । तथास्मृत्यंतरम् । कच्छेपंचातिकृच्छेत्रिगुणमहरहस्त्रिंश
देवतृतीये चत्वारिंशच्चतस्रेत्रिगुणितगुणिताविंशतिः स्यात्पराके कृच्छेसांता
पनारुयेभवतिपडाधिकाविंशतिः सैवहीना द्वाभ्यांचांद्रायणेस्यात्तपसिकृश
बलोभोजयेद्विप्रमुख्यानि ॥ १ ॥ अहरहरिति सर्वत्र संबंधनीयम् ॥ तृती
यः कृच्छातिकृच्छः *त्रिगुणितेन एकेन गुणिताविंशतिः पष्टिः ॥ अत्र प्राजा
पत्यदिवसकल्पनया पष्टिविद्वद्विप्राणां भोजनं भवति ॥ यत्तु चतुर्विंशतिम
तेऽभिहितम् विप्राद्वादशवाभोज्यापावकेष्टिस्तथैवच अन्यावापावनीका
चित्समान्याहुर्मनीषिण इति ॥ १ ॥

कच्छ विषे चाली ४० और पराक कच्छ विषे सठ ६० ब्राह्मण और सांतपन कच्छ व्रत
विषे छठवी २६ ब्राह्मण और चांद्रायण व्रत विषे वाई २२ ब्राह्मण इस विधि कर्के तप करणे
विषे जेकर असमर्थ होवे तां भोजन देवे इति ॥ १ ॥ दिन दिन इस पदका संपूर्ण स्थानविषे
संबंध करलेणा ॥ इस विषे प्राजापत्य व्रतके दिनांको कल्पना कर्के सठां बुद्धिमानां ब्राह्मणा
ताई भोजन कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि बारों ब्राह्मणोंके ताई भोजन
देणा तैसे पावकेष्टि यज्ञकरणा अथवा को इक पावनीइष्टि करणी इनांको बुद्धिमान् सम
कहतेहैं इति अर्थात् इहां सभनोंका तुल्यहि फलहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ ३९

एह जो प्राजापत्य व्रतके स्यान् प्रत्याम्नाय वारां ब्राह्मणांको भोजन कहाहै सो निधेन पुरुषके विषे जानणा ॥ और जो चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नाय कर्के कहाहै कि चांद्रायण और मृगारेष्टिः और पावनेष्टि और मित्रविंदा और पशुवाग और मास त्रय कच्छू व्रत ॥ १ ॥ और नित्य कर्म और नैमित्तिक और काम्य कर्म और पशु बंध इष्टि इनांके अभाव विषे क्या करणे विषे असांमर्थ्यके होयां होयां इनां विषे जिस प्रत्याम्नाय करणे विषे सामर्थ्य हीवे सोहि अनुष्ठाने करणे योग्यहै ॥ २ ॥ एहि अर्थ स्पष्ट कर्के किहाहै एतदिति ॥ सोभी चांद्रायण व्रत करणे विषे जो असमर्थ है तिसपुरुषने मृगारेष्टि आदि विषों एक करणा चाहिये ॥ अब चतुर्थ पादका अर्थ कहतेहैं कच्छूमिति इसका एह अर्थ है कि त्रय ३ प्राजापत्य

प्राजापत्यस्थाने द्वादश विप्राणां भोजनमुक्तं तन्निर्धनविषयम् ॥ यच्चांद्रायणस्यापि तत्रैव प्रत्याम्नायेनोक्तम् ॥ चांद्रायणमृगारेष्टिः पावनेष्टिस्तथैवच ॥ मित्रविंदापशुश्चैव कच्छूमासत्रयंतथा १ ॥ नित्यनैमित्तिकानांच काम्यानांचैव कर्मणां इष्टीनां पशुबंधानामभावे च वरः स्मृत इति ॥ २ ॥ एतदभावे कर्तुं शक्ये वरोऽभीष्टः प्रत्याम्नायः कर्तुं शक्य एवानुष्ठेय इत्यर्थः तदपि चांद्रायणाशक्तस्य कच्छूमासत्रयं एकैकस्मिन्मासे एकैककच्छूमित्यर्थः ॥ यत्तु कच्छूमासत्रयंतथेति कच्छूमासत्रयं प्रत्याम्नातं तदतिजरठमूर्खविषयम् ॥ चांद्रायणं त्रिभिः कच्छूैरिति दर्शितत्वादलमतिप्रसंगेन । अपराकं । अथातोऽनुग्रहान्वक्ष्ये दुर्बलस्यात्मशालिनः ॥ यत्कृत्यामुच्यते पापादुरगः कंचुकाद्यथा ॥ १ ॥

कच्छू व्रत तीन महीनयां विषे एक एक महीने विषे एक एक व्रत करणा ॥ जो फेर किसेका मतहै कि कच्छूमासत्रयं इसका अर्थ प्राजापत्य व्रत त्रयमास तक जानणा तां तिनां तीन महीनयां विषे साडे सप्त ७॥ प्राजापत्यहै सो अतिशय कर्के वृद्ध और मूर्ख पुरुषको कहतेहैं अर्थात् ऐसा कहण वाला मूर्ख है अर्थको नाह जानदा क्योंकि तीन प्राजापत्यव्रतके करणे करके चांद्रायण व्रतका फल प्राप्त होताहै ऐसं दखाणेने ॥ इसमें बहुत प्रसंग करणे कर्के प्रयोजन नहि और मूलमें जो ८ कच्छू कहेहैं सोइ महीनेतें ६ दिन अधिककी संभावनाते ॥ अब अपराकं विषे कहतेहैं अथेति वदते रहित जो पुरुष और अपनी शुद्धिकी इच्छा वाला तिसको उपाय कहताहां जिनां उपायांके करणे करके पुरुष पापाते रहित होताहै जैसे सर्प सर्पकुंजते रहित होताहै ॥ १ ॥

४० ॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

तिस विषे पराशरजी कहतेहैं कृच्छ्र इति कृच्छ्र प्राजापत्य और दश हजार १०००० गायत्रीका जप और भोजन विना जलविषे दिन रात्र स्थित रहणा और ब्राह्मणके ताँई नर्थीन प्रसूत होई होई गौकादान देणा एह चारे सम हैं अर्थात् इनमेंसे कोईभी उपाय करे ताँभी शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ समिधा ओम् घृत और हविः और धान्य और तिल इनांमेसें किसे वस्तुकर्के गायत्री मंत्रासे एक हजार वारां अधिक १०१२ आहुतियां देवे और उपवास व्रतको करे तां प्राजापत्य कृच्छ्रके फलको प्रातहोताहै वारांते अधिक जो सहस्र सो कहिये द्वादश सहस्र ॥ २ ॥ पराशर जी कहतेहैं ॥ कृच्छ्र इति प्राजापत्य और गायत्रीका दश हजार १०००० जप और दो सौ २००

पराशरः ॥ कृच्छ्रोयुतंतुगायत्त्र्या उपवासस्तथैव च ॥ धेनुप्रदानं विप्राय सममेतच्चतुष्टयम् ॥ १ ॥ समिद्धृतं हविर्धान्यं तिलान्वामरुताशनः द्रुत्वा द्वादशसाहस्रं गायत्त्र्या कृच्छ्रमाप्नुयात् २ ॥ द्वादशभिरधिकं साहस्रं द्वादशसाहस्रम् ॥ पराशरः ॥ कृच्छ्रं दिव्ययुतं चैव प्राणायामशतद्वयम् पुण्यतीर्थे नार्द्रशिरःस्नानं द्वादशसंख्यया ॥ १ ॥ यत्परांके ॥ द्वादशैव सहस्राणि जपेद्देवीमुपोषितः जलांते विधिवन्मौनी प्राजापत्यो यमुच्यते इति ॥ १ ॥ जलांते जलसमीपे ॥ तथा तत्रैव चतुर्विंशतिमते अतिकृच्छ्रे परांके चाशक्तः प्राजापत्यत्रयं कुर्यात् कृच्छ्रे गोमिथुनामिति ॥

प्राणायाम और पुण्य तीर्थ विषे वारां वार १२ सहित शिरके स्नान करणा अर्थात् जलमे निमग्न होकर स्नान करणा एह चारभी प्राजापत्य के सम हैं १ ॥ जो अपरांके विषे कहाहै ॥ वारां हजार १२००० गायत्रीके जपको उपवास व्रत कर्के जलके समीप विधि कर्के मौन व्रतको धारके कर तां प्राजापत्य कहतेहैं ॥ १ ॥ तैमहि प्रसंग विषे चतुर्विंशति मत विषे कहाहै अति कृच्छ्र व्रत विषे अति पाक विषे जेकर असमर्थ होवे तां तिसका बदला त्रय प्राजापत्यव्रत करे और कृच्छ्र व्रतविषे भी असमर्थ होवे तां तिसका बदला एक बलदके सहित एक गौका दान करे ॥

अत्रेति इस विषेह वारां हजार १२००० गायत्रीके जप विषे बदला एक गौ और एक बलद दानकरे एह गातम आदिक ऋषियां कर्के कहा जो प्राजापत्य व्रत तिसविषे जानणा ॥ अथवा समर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ तिसी स्थानमे एह वाक्यह अत्रेति सुवर्णके साथ अन्नदेकके शुद्ध जो वेदपाठी वारां ब्राह्मण तिनांको तृत करे और आप निराहारव्रत करे सो ऐसा व्रत प्राजापत्य कच्छू कहा है ॥ १ ॥ और भी कहा है कि उपवासव्रत कर्के पीछे श्रद्धा कर्के एक होयाहोया धर्म वारां १२ वेदपाठी ब्राह्मणोंके ताई तिलांके पात्रदेवे सो प्राजापत्यव्रतके सम फलको प्राप्तहोता है ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तदुःशेखरविषे विशेष कहा है प्राजापत्यकच्छूके स्थानविषे दश हजार १०००० गायत्रीका जप प्रत्याम्नाय कहा है अथवा समिदाघृत और हविः और धान्य एनां वि

अत्र द्वादशसहस्रगायत्रीजपे गोमिथुनंच गौतमाद्युक्तप्राजापत्यविषयं शक्तविषयं वा । तत्रैव । अत्रंदत्त्वाहिरण्येन द्वादशब्राह्मणान् शुचीन् । तर्पयेन्मा रुताशीचश्रोत्रियान् कच्छू उच्यते १ उपोष्य श्रद्धया युक्तस्तिलपात्राणि धर्मतः द्वादशब्रह्मवादिभ्यः प्राजापत्येन तत्समम् ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तदुःशेखरे विशेषः गायत्र्यपुतजपो वा प्राजापत्यकच्छूस्थाने प्रत्याम्नायः ॥ गायत्र्या द्वादशा धिकसहस्रसंख्याकः समिदघृतहविर्धान्यानामन्यतमस्य होमो वा । तिलहो मस्तु साहस्र एवेति केचित् । घृताहुतिशतद्वयं वा वेदसंहितापारायणं वा प्राणायामशतद्वयं वा एकोपवासपूर्वकद्वादशतिलपात्रदानं वा तीर्थोद्देशेन योजनं गमनं वा शिरःशोषणपूर्वकं द्वादशसांगस्नानानि वा प्राजापत्यमेव कच्छूम् ॥

चौकिसे वस्तुका हवन करे गायत्रीके मंत्र कर्के एक हजार और वारां अधिक १०१२ गिण सी कर्के । केक ऋषि कहते हैं एक हजार १००० तिलांका हवन करे व्याहृतियां कर्के ॥ अथवा घृतकीयां दो सौ २०० आहुतियां देवे अथवा सारी वेदसंहिताका पारायणवाचे । अथवा दो सौ २०० प्राणायाम करे गायत्रीमंत्र कर्के । अथवा एक उपवास व्रत कर्के वारां १२ तिलांके पात्रांका दान करे ॥ अथवा तीर्थयात्राके निमित्त चारकोश अरण्ये चरणां कर्के यात्राकरे ॥ शिरके साथ स्नान करे और फेर शिरको सुकाके फेर शिरके साथ स्नान करे ऐसे वारां स्नान करे जो प्राजापत्य व्रत होता है ॥

४६ ॥ श्रीरणवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अथ तिलाके पात्रका परिमाण कूर्म पुगण विषे कहाहे तिलेति तिलाके पात्रका परिमाण त्रयतरांका है एक कनिष्ठ दूसरा उत्तम तीसरा मध्यम तिसकों दिखाते हैं तांमेति तांमेका पात्र दश १० छटांकका कनिष्ठ कहाहे और २० छटांकका मध्यम कहाहे और तीस ३० छटांकका उत्तम कहाहे इति ॥ १ ॥ कृच्छ्रका भेद कहते हैं गोमूत्रेणेति गोमूत्रा व के भिजे होये यवांको पीवे एह एकदिनका कृच्छ्र व्रत आप अंगिरस कपिने दखायाहै । १ । तिसी प्रकार उपवासव्रतको रखके घातके वारा १२ भागोंको आप शिरकके चुकलेआवे और गांयां केताई देवे परंतु सो गोवां बहुत होण तां कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्तहोताहै इसविषे संशय नाहि है

तिलपात्रपरिमाणंतु कूर्मपुराणेउक्तम् । तिलपात्रांविधाप्रोक्तकानिष्ठोत्तममध्यमम् ताम्रपात्रं दशपलं जघन्यं परिकीर्तितम् ॥ १ ॥ द्विगुणं मध्यमं प्रोक्तं त्रिगुणं चोत्तमं स्मृतमिति ॥ गोमूत्रेण समायुक्तं यावत्कंचोपयोजयेत् कृच्छ्रमैकाहिकं त्रोक्तं दृष्टमंगिरसास्वयम् १ ॥ तथा ॥ स्वयमाहत्ययोमूर्ध्ना तृणभारानुपोषितः दद्याद्गोमण्डलं कृच्छ्रं द्वादशैव न संशयः २ ॥ प्राणायामशतं कृत्वा द्वात्रिंशीत्तरमार्तिपु अहोरात्रोपितस्तिष्ठेत्प्राक्मुखः कृच्छ्र उच्यते ॥ ३ ॥ नमस्कारसहस्राणि द्वादशैव दृढव्रतः ॥ गोविप्रपितृदेवपुर्कुर्यात्कृच्छ्रव्रतं भवेत् ४ ॥ वशिष्ठः ॥ अपि चेच्चरितं कर्तुं दिवसं मारुताशनः । रात्रौ स्थित्वा जले व्युष्टः प्राजापत्यं न तत्सममिति ॥ १ ॥

१ ॥ प्राणेति रोग आदि कर्के पीडाके होयां १ एक सो वसी १ २ प्राणायामको कर्के दिनरात्र उपवास व्रतको करे और पूवे मुख कर्के स्थित होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्रका फल होताहै ॥ १ ॥ नमस्कारेति ॥ व्रतमेव दृढ व्रत होकर जो पुरुष गौ और ब्राह्मण और पितर और देवता इनांको वांछा हजार नमस्कार करे तां त्रय कृच्छ्र व्रतोंका फल तिसकों होताहै ॥ ४ ॥ अथ वशिष्ठजी कहतेहैं ॥ निश्चय कर्के जेकर व्रत करण में स्थित होवे तां दिन वागु भक्षण करे और रात्रिविषे जल विषे स्थितहोवे और व्युष्टः क्या प्रातः कालविषे बाहर होवे ऐसे एक दिनका व्रत प्राजापत्य व्रतके तुल्य होताहै ॥ १ ॥

॥ श्रीएवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ ४३

इसमें उपरत प्राजापत्य कच्छ का समुद्र विषे प्राप्त होने वालीयां नदीयां विषे जो स्नान करणा है सो प्रत्याम्नाय कहा है ॥ इसविषे देवलकृषिका वचन है एह समुद्र विषे जाणे वालीयां नदीयां हैं भागीरथी गंगा १ यमुना २ नर्मदा ३ सरस्वती ४ गोदावरी ५ कृष्णवेणी ६ तुंगभद्रा ७ पिनाकिनी ८ (१) वलापहारी ९ भीमरथी १० वंजुला ११ भवनाशिनी १२ अखंडा १३ कावेरी १४ ताम्रपर्णी १५ महानदी १६ (२) धनुःकोटी १७ प्रयाग १८ गंगासागरसंगम १९ एह पुण्य नदीयां हैं जिनके दर्शन से मनुष्योंके पाप नाशकों प्राप्त होते हैं और स्पर्श करणें मोक्षकों देतीयां हैं और स्नान करणें ते मुक्ति कां देतीयां हैं ॥ १ ॥ और जो सदावोस २० योजनतक

अथ प्राजापत्य कच्छस्य समुद्रगनदीस्नानं प्रत्याम्नायः ॥ देवलः । समुद्र गनद्यः ॥ भागीरथीचयमुनानर्मदाचसरस्वती गोदावरी कृष्णवेणी तुंगभद्रापिनाकिनी ॥ १ ॥ वलापहारीभीमरथी वंजुलाभवनाशिनी अखंडाचैवकावेरीताम्रपर्णीमहानदी ॥ २ ॥ धनुःकोटिः प्रयागंचगंगासागरसंगमः ताएताः पुण्यनद्यस्तुदर्शनात्पापनाशनाः ॥ स्पर्शनान्मोक्षदान्दृष्ट्वास्नाना मुक्तिप्रदायिकः ॥ ३ ॥ सदाविंशद्योजनगामहानदी समुद्रगात्रा एता सुस्नानमात्रेण मनुजः पूतोभवति प्राजापत्यकच्छाचरणेऽसमर्थस्य तत्प्रत्याम्नायेगोदानाचरणेचाशक्तस्य नदीस्नानरूपमेव कलौयुगसमीचीनम् । अतो नदीस्नानमेववयं ब्रूमः ॥ गंगायांमोशलंस्नानंप्राजापत्यसंभविदुरेतिभविष्योत्तरोक्तत्वात् गंगास्नानं विशुद्धिमिति ॥

गंगादी है अथवा समुद्र विषे प्राप्त होती है सो महानदी कही है इन विषे स्नान करणे कर्के मनुष्य पवित्र होता है एही अर्थ विशद कर्के कहीदा है ॥ प्राजापत्य कच्छ के करणें विषे असमर्थ सो पुरुष है तिसकां गौका दान करणा एह प्रत्याम्नाय है तिसके करणें विषे भा जो असमर्थ है तिसको कलि युगविषे नदीका स्नान रूपहि प्रत्याम्नाय युक्त है इस कारणते नदी स्नानको हि असी कहतेहां गंगाविषे मुसलक्री न्याई जो स्नान है तिसका प्राजापत्यके तुल्य कहते हैं ॥ एह भविष्योत्तर पुराण विषे कह्यो ॥ और गंगा स्नान शुद्धिके देश वाला है एही वचन है ॥

४४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

पंच प्रकारकी गंगा स्कंदपुराण विषे कहीहै भागीरथी भागीरथी और गौतमी और कृष्णवैशी और पिनाकिनी और अखंडा कावेरी एह पंच गंगा कहीयां हैं होर जो समुद्र विषे प्राप्तहोण वालीयां नदीयां सो पुरुषांके पापांके दूर करणे वालीयां कहीयां हैं ॥ १ ॥ जो पुरुष इनांविषे स्नानवास्ते यात्रा करतेहैं तिनांके पाप निश्चयकके दूर होतेहैं ॥ और तिनां नदीयांको जां यात्रा करतेहैं तिनां विषे भिन्न फलको गौतम ऋषि कहताहै स्वग्रामेति अपने ग्रामके समीप जो नदीहै जो होर योजनमात्र विषे क्या चोंहकोंहां विषे नदी है तिस विषे स्नान करणे वास्ते अथवा दर्शन वास्ते जो प्राप्त होताहै तिस पुरुषको इतना फल होताहै जितनयां योजनांकी यात्रा होवे अर्थात् दर्शनते स्नानका स्वल्प फल और स्नानते जितने योजन दूर होण तितने

पंचविधागंगास्कंदपुराणे । भागीरथीगौतमीचकृष्णवैशीपिनाकिनी अखंडाचैवकावेरीपंचगंगाःप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥ अन्याः समुद्रगानद्योनृणांपापहारिण्यः ॥ एतासु महानदीपुयाट्टणा मवश्यं पापनाशोभवति । एताः प्रतियाट्टणांपृथक्फलमाहगौतमः ॥ स्वग्रामस्यचयासिंधुर्यान्यायोजनमात्रगा तामुद्दिश्ययदागंतुःस्नानार्थंदर्शनायवा ॥ यावंतियोजनानीह फलंतावल्लभेतुसः ॥ १ ॥ परार्थयोऽनुगच्छेद्वास्नानमात्रंफलंलभेत् मूल्यं गृहीत्वायोगच्छेन्नतस्योभयमस्तिहि ॥ २ ॥ विष्णुपादोद्भवागंगादशकृच्छ्रफलप्रदा यमुनाचतथान्दणामष्टकृच्छ्रफलप्रदा ॥ ३ ॥

कृच्छ्रोंका फल होताहै तांते एकयोजन पर जाणे वालेको एककृच्छ्रका फलहोवेगा ॥ १ ॥ पर पुरुषके अर्थ वास्ते जो पुरुष स्नान करणे जाताहै तिसको स्नान मात्रका फल प्राप्त होताहै अर्थात् यात्राका फल जो प्रतियोजन वृद्धिसे प्राजापत्यकी तुल्य ताकोदेणे वालाहै सो तिसीको हुंदाहै जिसने उसको भेजयाथा और अल्प फल जाणेवाले को भीहै और मुक्तको ग्रहणकरके जाताहै तिसको न जाणेका फल न स्नानका फल प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ विधिब्रति विष्णुके चरणोंते उत्पन्न होई जो गंगा सो स्नानकरणें दश १० कृच्छ्रव्रतके फलको देतीहै तिसी प्रकार यमुना स्नानते पुरुषांको अष्ट ८ कृच्छ्र व्रतके फल को देतीहै ॥ ३ ॥

श्रीर गौतमी और कृष्णवेणी स्नान करणें नों १ कृच्छ्र व्रतके फलकों देतोहै और दाक्षायणी और कावेरी अष्ट ८ कृच्छ्र व्रतके फलकों देणे वालीहै ॥ ४ ॥ और तुंगभद्रा भीमरथी पुरुषांकों सप्त ७ कृच्छ्र फलके देणैवालीयां हैं और वंजुला भवनाशी स्नानतें छे ६ जो कृच्छ्र व्रत तिनके फलकों देणे वालीयां हैं ॥ ५ ॥ और फाल्गुणी और ताम्रपर्णी पंचकृच्छ्र फलके देणेवालीहैं चापाग्र जी धनुःकोटीहै तिनविषे स्नानमात्र कर्के अष्टां ८ कृच्छ्रांका फल प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ श्रीशैलविषे और संगमविषे अर्थात् श्रीशैलमेजो पूर्वोक्त नदीयांका संगमहै तिस विषे और गंगासागरके संगमविषे स्नान करे बीस २० कृच्छ्र व्रतके फलकों प्राप्त होताहै इस कारणतें नदीयां बड़ीयां पवित्रहैं ॥ ७ ॥ प्राजापत्य कृच्छ्रका

गौतमीकृष्णवेणीचनवकृच्छ्रफलप्रदा दाक्षायणीचकावेरीह्यष्टकृच्छ्रफल प्रदा ॥ ४ ॥ तुंगभद्राभीमरथीसप्तकृच्छ्रफलप्रदा वंजुलाभवनाशीचषट् कृच्छ्रफलप्रदा ॥ ५ ॥ फाल्गुणीताम्रपर्णीचपंचकृच्छ्रफलप्रदा चापाग्रस्नान मात्रेणह्यष्टकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ ६ ॥ श्रीशैलसंगमेचैवगंगासागरसंगमे विंश कृच्छ्रफलंस्नानमतोनद्यश्चपावनाः ॥ ७ ॥ प्राजापत्याम्नायनदीस्नानप्रकार माह सएव पूर्ववत्पुण्याहवाचनसंकल्पादिकमृत्विजश्चकृत्वा नदीस्नाना भिमुखोभूयात् नदींगत्वा कर्ता पूर्ववत्स्नात्वागंधपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य मयापरिपत्संनिधौसंकल्पितस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यसमग्रफलावाप्त्यर्थं परिपत्निर्णीतंप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतमब्दादिसंख्यया अहं ब्राह्मणैर्वा महानदी स्नानरूपमाचरिष्ये इतिसंकल्प्य ब्राह्मणान्प्रेषयेत् ॥

प्रत्याम्नाय जो नदीस्नान तिस का प्रकार गौतमहो कहताहै पूर्वकीन्याई पवित्र दिनविषे संकल्प को करके कृत्विजांकों साथ लेकर नदीविषे स्नानके वास्ते प्राप्तहोयें नदीकों प्राप्तहोकर पूर्वकी न्याई स्नानकरके गंध और पुष्प और अक्षतोंकरके कृत्विजांकों पूजक संकल्प करे कि मैंने सभा के समीप विषे संकल्प कीयाजो पूर्ण प्रायश्चित्त तिसके संपूर्ण फलकी प्राप्तिवाग्यो सभा विषे निश्चय कीयाजो प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नायरूप वर्षादिकी संख्यादिकी तिसके अर्थमें महानदी विषे स्नानकों करताहंअथवा ब्राह्मणा द्वारा कर्ताहं ऐसेसंकल्पकरके ब्राह्मणांकोंमेंजे।

४६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

और ऋत्विज जो हैं यजमानके गोत्र और नक्षत्र और राशि और शाखा और नामका उच्चारण करके इस यजमानने अमुक गोत्रने अमुक राशिविषे उत्पन्न होये होयेने अमुक शाखा ध्यायी ने अमुक नाम वालेने सभाके समीप विषे संकल्प कीया जो संपूर्ण प्रायश्चित्त तिसको सभा विषे निर्णीत जो कीजाहूश प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जो महा नदीयां विषे स्नान तिनां नूं मुशलकीन्याई सहित शिरके असीं करतेहां ऐसे ऋत्विज संकल्प कर के महा नदी विषे नदी बल मुख कर्के मंत्राति रहित मूसलेकी न्याई सहित शिरके स्नान को करके फेर तटको प्राप्त होके दो बार आचमन करे और शुद्ध वस्त्रको धार कर्के शुद्ध वस्त्रके न होयां होयां तिसी वस्त्रको बां वार छंडके धारे और दो बार आच

ऋत्विजस्तु यजमानगोत्रनक्षत्रराशिशाखानामधेयानि समुच्चार्य एतेन यजमानेनामुकगोत्रेणामुकराशौजातेनामुकशाखाध्यायिनामुकनामधेयेन परिपत्संनिधौ संकल्पितस्य सर्वप्रायश्चित्तस्य परिपत्तिर्णीतस्य प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायपरिकल्पितानि महानदीस्नानानि मौशल्यवदाचरिष्यामः ॥ इति संकल्प्य महानद्यां नदीमुखा स्तन्मंत्रवर्जमौशलमज्जनवत्स्नानं कृत्वा तटमागत्य पुनर्द्विराचम्य धौतवस्त्रं परिधाय तदभावेद्वादशसंख्या या वस्त्रावधूतनंकृत्वा परिधाय द्विराचम्य पूर्ववत् स्नायुः । एवं संकल्पिताब्दादिसंख्या भवति तदा यजमानः स्नातृभ्य ऋत्विग्भ्यो निष्कंवा तदर्थं वापादं स्नानफलस्वीकारार्थं दद्यात् निष्कशब्दो देवमानेन वराहद्वयम् ऋषिमानेन तदर्द्धम् मानुषमानेनापिते देवग्राह्यम् प्रभूणामुत्तमप्रकारमेव समर्थस्य मध्यममार्के च नस्य तदर्द्धं सुवर्णप्रमाणम् ।

मम करे फेर पूर्वकी न्याई स्नानकरे ऐसे संकल्प कीया जो व्रतके अर्थ वर्षादि काल तिसकी संख्या होता है अर्थात् जितने वर्षाका ब्रह्म तितने दिनांके स्नान पूरे करणे हैं तिसवास्ते एक एक दिन विषे बहुत स्नान कीते चाहिए अपनी शक्तिकी अनुसार रोज रोज १० वा २० आदि कर्के संख्या पूरी होगी ॥ तद यजमान जो है स्नान करणे वाले जो ऋत्विज तिनां तां स्नानके फलकी प्राप्ति वास्ते निष्क देवे निष्कका अर्द्ध देवे वा औथाहिस्ता देवे निष्क शब्द देवमान कर्के दो २ वराहका अर्थात् १८ मासे स्वर्णका है ॥ ऋषियोंके मान कर्के अर्द्ध कहा है मानुषके मान कर्के सोही वराह ग्रहण करणा व्यवस्था कहते हैं प्रति राजा लोकोको उत्तम प्रकार है और समर्थ क्या धनवालेको मध्यम प्रमाण सुवर्णका निष्क कहा है और इससे अर्द्धनिर्धनको कहा है

गौतम जी का वाक्य है ॥ गंगा विषं मूमलेकी न्यंइं जो सहित गिरके स्नानहे तिसको प्राजापत्य व्रत के सम कहतेहैं एह वाक्य पंजप्रकारकी गंगाके स्नानविषं जानणा इतनेति ॥ इतर जो समुद्रविषं प्राप्त होए वालियां नदियां तिनांविषं स्नानका संकल्प भिन्न भिन्न करणा और कूड़ां विषं और तलाय विषं और पुष्करिणी क्या तलाईआं इनां विषं भिन्न संकल्प करणा ॥ और खंडानुवाक ऋचांका पठन करणा और सूर्यके सममुख स्थित होकर शुद्धि तें पीछे प्राप्तहोके शुद्ध वस्त्रको धारके और एक सौ अठ १०८ वार गायत्रीके जप करणे करके प्राजापत्य रूप व्रत होताहे ॥ अत्रेति ॥ इसी प्रसंग विषे स्मृति संग्रह और स्मृत्य धेतार आदि शास्त्र विषे कहा जो प्रकार तिसके अनुसार प्रकार दखाईदाहै ब्रह्महत्याको प्रसंग

गौतमः ॥ गंगायांमौसलंस्नानंप्राजापत्यसमंविदुः एतत्पंचगंगास्नानविषयम् ॥ इतरासु समुद्रगनदीषु प्रतिस्नानं संकल्पः कुल्यायां तटाकपुष्करिण्यादिषु च पृथक्संकल्पः खंडानुवाकपठनंच । सूर्याभिमुखः समार्जनानंतरं गत्वा धौतवस्त्रादिकं धृत्वाष्टोत्तरशतं गायत्रीं जप्त्वा कृच्छ्रात्मकं भवति ॥ अत्र स्मृतिसंग्रहस्मृत्यर्थसाराद्युक्तप्रकारानुसारीप्रकारः प्रदर्शयते ब्रह्महत्यामुपक्रम्य भविष्यत्पुराणे ॥ विंध्यादुत्तरतोयस्य निवासः परिकीर्तितः पराशरमतंतस्य सेतुबंधनिर्देशनमिति विंध्यात्तरवर्तिनमुत्तयातत्रैव चतुर्विधोपपन्नस्तुविधिवद्ब्रह्मयातके समुद्रसेतुगमनं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ स्मृत्यर्थसारे तत्र संकल्पपूर्वकं पद्भ्यां पष्ठियोजनागतस्य भागोरथ्यां स्नानं षडब्दकृच्छ्रसमम् ॥

विषे ल्याके । भविष्यत्पुराणविषे कहाहै विंध्येति विंध्याचल पर्वतते उत्तर पासे निवास करणेवाला जो पुरुषहै तिसको पराशर जीके मतके अनुसार कर्के ब्रह्महत्या पाप के दूर करणे निमित्त सेतुबंध रामेश्वरका दर्शन कहाहै ॥ १ ॥ ऐसे विंध्याचलके उत्तर वर्ति पुरुषके प्रायश्चित्तको कथन करके तिसीविषे वाक्यहै चार विंध्याविरे युक्त जो पुरुषहै सो ब्राह्मणक वधकरण वाले विषे विंधि कर्के समुद्र सेतुके दर्शन वास्ते यात्राको कहे एहि पापके दूरकरणके निमित्त प्रायश्चित्तहै ॥ १ ॥ और स्मृत्यर्थ सागविषे कहाहै कि पूर्वसंकल्प को कर्के चरणों करके कूड़ां ६० योजनां की यात्रा कर्के गंगा विषं जो स्नानहै सो छे वर्षके ६ प्राजापत्य कृच्छ्र के तुल्य है

४८ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

अत्रेति इहां यात्राविषे जैसे योजनाकी वृद्धि है योजन चारकोशका नाम है तैसे हि कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणें योग्य है ॥ और एक योजनकी यात्राको लेके नदीके स्नान वास्ते आयाजो पुरुष तिसको स्नो विषे पर्वतादिका व्यवधान होवे तां त्रय ३ कृच्छ्र व्रतां का फल प्राप्त होता है और तीसरा हिस्सा अधिक एक कोशकी यात्राको करके भागीरथी गंगा विषे विधि कर्के स्नान करे तां एक कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होता है । और सठ ६० योजनकी यात्राको करके प्रयाग विषे क्या तीर्थ गज विषे विधि कर्के जो स्नान कर्तो है सो पुरुष वागं वर्ष पर्यंत जो कृच्छ्र व्रत करणा है तिसके तुल्य फलको प्राप्त होता है । ऐसे गंगाद्वार जो हरिद्वार है तिस विषे और गंगासागर संगम विषे जानणा । और गंगाके स्नान वास्ते सठ योजनते जो आया है तिसको

अत्र यात्रायां योजनवृद्धौ कृच्छ्रवृद्धिः परिकल्पनीया ॥ एकयोजनागतस्य मध्यं पर्वतादिव्यवधाने कृच्छ्रत्रयम् ॥ तृतीयांशाधिकक्रोशादागतस्य भागीरथ्यां विध्युक्तस्नानमेककृच्छ्रः ॥ पठियोजनादागतस्य प्रयागस्नानं द्वादशाब्दकृच्छ्रसमम् ॥ गंगाद्वारे गंगासागरसंगमे चैवम् ॥ गंगास्नानार्थं पठियोजनादागतस्य षडब्दत्वादशयोजनागतस्याब्दप्रायश्चित्तं भवतीत्यादिकमृद्नीयम् ॥ वाराणस्यामगणितं फलं यतो वाराणस्यां पातकं न प्रविशति विंशतियोजनागतस्य यमुनेस्नानं द्व्यब्दकृच्छ्रतुल्यम् ॥ तदेवमथुरायां द्विगुणम् ॥ चत्वारिंशद्योजनागतस्य सरस्वतीमज्जनं चतुरब्दकृच्छ्रतुल्यम् ॥ प्रभासे द्वारवत्यां च द्विगुणम् । यमुनासरस्वत्योर्यात्रा योजनवृद्धौ पादकृच्छ्रवृद्धिः परिकल्पनीया

छे ६ वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होता है इसी हिसाबसे जो गंगाके स्नान वास्ते दश योजनते आया है तिसको एक वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होता है इत्यादिक जानलेना ॥ और काशी विषे अगणित फल है क्योंकि तिसविषे पापका प्रवेश नहि होता ॥ और बीस २० योजनते जो यमुनाको प्राप्त होता है स्नानवास्ते तिसको दो वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल होता है । और यमुनाते मथुरा विषे दूना फल जानणा । और सरस्वतीविषे स्नान वास्ते चाली ४० योजनते जो आया है तिसको चार वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होता है ॥ और प्रभासविषे यात्रा द्वारकाविषे सरस्वतीते दूना फल जानणा । और यमुनाते सरस्वतीके स्नान विषे जैसे जैसे यात्रा विषे योजन अधिक होते तैसे तैसे पाद कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणी ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ४९

दृषेति दृषद्वती और शतद्रु और विपाशा वितस्ता शरावती मरुदधा असिक्री मधुमती पयस्विनी घृतवती आदिक देवनदीयां विषे त्रिंशत् १० योजनाकी यात्रा कर्के जो स्नानहै सो वर्षके कच्छ व्रतके तुल्यहै ॥ और पंदरां १५ योजनाकी यात्रा कर्के जो स्नानहै सो पंदरां १५ प्राजापत्यके तुल्यहै । चंद्रभागेति चंद्रभागा वेत्रवती सरयू गोमती देविका कौशिकी नित्य जला मंदाकिनी सहस्रका पौनः पुन्या पूर्णपुण्या वाहुदा गंडकी वारुणी आदिक देवनदी यां विषे वारां १२ योजनोकी यात्रा कर्के जो स्नानहै सो सोलां १६ कच्छके तुल्यहै और पंदरां योजनाकी यात्रा कर्के इनां महानदीयांके आपस विषे संगम विषे जो स्नानहै सो पूर्वतें त्रय गुणा अधिक फलहै और होर जो समुद्र विषे प्राप्त होणे वालीयां नदीयां हैं तिनां विषे वारां १२ योजनकी यात्रा कर्के जो स्नान कर्ताहै तिसको छे ६ प्राजापत्यका फल होताहै ॥ और

दृषद्वतीशतद्रुविपाशावितस्ताशरावतीमरुदधाअसिक्रीमधुमतीपयस्विनी घृतवत्यादि देवनदीषु स्नानं त्रिंशद्योजनागतस्याब्दकच्छसमम् ॥ पंचदशयोजनागतस्य मज्जनं पंचदशकच्छसमम् ॥ चंद्रभागावेत्रवतीसरयू गोमती देविका कौशिकी नित्यजला मंदाकिनी सहस्रका पौनःपुन्या पूर्णपुण्या वाहुदा गंडकी वारुण्यादि देवनदीषु द्वादशयोजनागतस्य स्नानं षोडशकच्छसमम् ॥ पंचदशयोजनागतस्य एतासु महानदीष्वन्योन्यसंगमे त्रिगुणम् ॥ अन्यासु समुद्रगासु द्वादशयोजनागतस्य कच्छपट्टकतुल्यम् अनुक्तस्थलेषु यात्रायोजनसंख्यया कच्छसंख्या ज्ञेया नदेषु नद्यर्द्धं महानदेषु महानद्यर्द्धं फलं विज्ञेयम् शोणारुयमहानदे गंगार्द्धफलम् पुष्करेप्रयागसमम्

अनुक्तेति नहि कहै जो तीर्थ और क्षेत्र आदिस्थान तिनांकी यात्रा विषे योजनाकी संख्या कर्के प्राजापत्यकच्छ व्रतांकी संख्या जानणी और नदीविषे स्नानका फल नदीसे अद्वा जानणा और महानदां विषे स्नानका फल महानदी के स्नानतें अद्वा जानणा ॥ और शोण नाम कर्के जो महानद तिस विषे स्नानका फल गंगार्जके स्नानतें अद्वा जानणा और पुष्कर विषे स्नानका जो फल है सो प्रयागके तुल्य जानणा

५० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

चतुरिति चव्वी २४ योजनकी यात्रा कर्के नर्मदा विषे जो स्नानहै तिसका फल चव्वी २४ कच्छके तुल्य जानणा और पूर्णा नदी विषे स्नानका फल अर्द्ध योजनकी यात्रा विषे एक कच्छ होता है और कृष्णवेणी और तुंगभद्रा विषे एक योजनकी यात्रा विषे कच्छ व्रतका फल जानणा और पंपासरो वर विषे स्नान करऐतें एकयो जनकी यात्रा विषे दो २ कच्छांका फल जानणा और हरिहर तीर्थ विषे स्नानका फल एक एकयोजनके प्रति तीन ३ कच्छांका फल जानणा और कुब्जिकासंगम विषे योजन प्रति दो २ कच्छ जानणे और शुक्लतीर्थ विषे एकयोजन प्रति चार ४ कच्छांका फल जानणा और तापीविषे दश योजनयात्रासँ स्नानका फल दश १० कच्छके तुल्य जानणा और पयो ष्ठीविषे स्नानका फल अठ ८ योजनकी यात्रा विषे अठ कच्छ जानणे तिस तिस संगमविषे

चतुर्विंशतियोजनागतस्य नर्मदावगहनं चतुर्विंशतिकृच्छृतुल्यम् पूर्णायां यो जनार्द्धे कृच्छ्रः कृष्णवेणीतुंगभद्रयोः प्रतियोजनं कृच्छ्रसमम् पंपायां त्रिगुणम् हरिहरे त्रिगुणम् कुब्जिकासंगमे त्रिगुणम् शुक्लतीर्थे चतुर्गुणम् ताप्यां दशयोजनागतस्य दशकृच्छ्रसमम् पयोण्यामष्टयोजनागतस्याष्टकृच्छ्र समम् तत्रतत्रसंगमे त्रिगुणम् गोदावर्य्यां पष्टियोजनागतस्य अष्टकृच्छ्रसमम् त्रिंशद्योजनागतस्यैकावृद्धम् ॥ सुतीर्थेषु प्रतिलोमानुलोमस्नानं पष्टिकृच्छ्र समम् वंजरासंगमे प्रयागोद्वेगुणम् सप्तगोदावरीभौमेश्वरे त्रिगुणम् कुश तर्पणे वंजरायां द्वादशयोजनागतस्य द्वादशकृच्छ्रसमम् गोदावर्य्यां वि श्लेषे समुद्रांतपट्टगुणम् ॥ प्रणीतायां चतुः कृच्छ्रसमम्

ब्रीणा फल जानणा और गोदावरीविषे सठ ६० योजनकी यात्रा विषे तीन ३ वर्षके प्राजापरप का फल होता है और तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के एक वर्षके कच्छका फल होता है और सुतीर्थी विषे यात्रा कर्के और यात्राकी निवृत्तिकर्के अर्थात् जांड़ीवार और आउंदीवार मध्यती र्थके स्नान विषे स्नानका फल सठ ६० कच्छांके तुल्य जानणा और वंजरासंगम प्रयाग विषे दूणा फल जानणा और सप्तगोदावरी भौमेश्वर विषे स्नानका त्रिगुणां फल अधिक जानणा और कुशनपण वंजराविषे बारां १२ योजनकी यात्रा कर्के स्नानका फल बारां १२ कच्छके तुल्य जानणा और गोदावरी विश्लेष विषे समुद्रपर्यंत स्नानविषे योजन प्रति छे ६ गुणा फल जानणा और प्रणीताविषे एक योजनकी यात्रा विषे चार ४ कच्छका फल जानणा

तुंगेति और तुंगभद्राविषे बीस २० योजनकी यात्रा कर्के स्नानका फल बीस २० कच्छके तुल्य होता है और मलापहारिणी विषे अठ ८ योजनकी यात्राका फल अठ ८ प्राजापत्य कच्छके तुल्य है और निवृत्ति विषे छे ६ योजनकी यात्रा कर्के छे ६ कच्छका फल होता है और गोदावरी विषे एक एक योजनकी वृद्धि विषे पादकच्छ जानना और सिंहराशि विषे सूर्यके स्थित होयां होयां संपूर्ण तीर्थविषे स्नानका फल गंगा स्नानके तुल्य जानणे योग्य है कन्या राशिविषे बृहस्पतिके स्थित होयां हांयां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगमविषे जो स्नानका फल है सो सदा गंगा स्नानतें अर्द्ध जानना ॥ और तुलराशिविषे सूर्यके स्थित होयां होयां तुंगभद्रा विषे स्नानका फल गंगाके स्नानतें अर्द्ध जानना ॥ और कर्क राशिविषे सूर्यके स्थित होयां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगम विषे त्रिसे प्रयागविषे तीस ३० योजनकी यात्राकर्के

तुंगभद्रायांविंशतियोजनागतस्य विंशतिकच्छसमम् मलापहारिण्याम ष्टयोजनागतस्याष्टकच्छसमम् निवृत्त्यां षड् योजनागतस्य षट्कच्छसमम् गोदावर्ध्या यात्रायोजनवृद्धौयोजनेपादकच्छः सिंहस्थेरवौसर्वत्रजान्हवी समम् कन्यास्थेगुरौ कृष्णवेण्यांमलापहारिणीसंगमे सर्वत्र जाह्नव्यर्द्धम् ॥ तुंगभद्रायां तुलास्थेरवौजान्हव्यर्द्धम् ॥ कर्कटे कृष्णवेलायांमलापहारिणी संगमप्रयागे त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कच्छसमम् ब्रह्मेश्वरेपंचगुणम् भीमरथ्याःसंगमे प्रयागे द्विगुणम् ॥ निवृत्तिसंगमे चतुर्गुणम् ॥ पाताल गंगायां मल्लिकार्जुनेचपडगुणम् ॥ ततः पूर्वे षट्कच्छसमम् ॥ लिंगालये द्विगुणम् ॥ समुद्रगमनेचैवम् ॥ अत्र सर्वत्र त्रिंशद्योजनागतस्येतिसंबंधः ॥ दशयोजनागतस्य कावेर्ध्यां महानद्यां पंचदशकच्छसमम् ॥

प्रात हाया जो पुरुष तिसको स्नानका फल तीस ३० कच्छके तुल्य जानना ॥ भीमेति और भीमरथीके संगम रूप प्रयागविषे एक एक योजनप्रति दूणा फल जानना ॥ और निवृत्ति संगम विषे पूर्वोक्त चार ४ गुणां फल जानना ॥ और ब्रह्मेश्वर विषे पंच ५ गुणां अधिकपूर्वोक्त फल एक एक योजनविषे जानना ॥ और पाताल गंगाविषे और मल्लिकार्जुनविषे योजनप्रति छे ६ गुणां अधिक फल जानना तिस पूर्वोक्ते विषे सठां ६० कच्छांके तुल्य जानना ॥ और लिंगालय तीर्थ विषे दो २ गुणां अधिक कच्छ जानना ॥ और समुद्रयात्राविषे भी दूणा फल जानना इहां संपूर्ण स्थानांविषे तीस ३० योजनकी यात्राका संबंध कर लेना ॥ और कावेरी महानदीविषे दश १० योजनकी यात्राकर्के प्रात होया जो पुरुष तिसको पदरां १५ कच्छके तुल्य स्नानका फल होता है

५२ ॥ श्रीरण्वीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

तात्रेति ताम्रपर्णी और कृतमाला और पयस्विनी इनांविषे वारां १२ योजनकी यात्रा कर्के प्राप्त होया जो पुरुष तिसको स्नानकर्के वारां १२ प्राजापत्य कृच्छ्रके तुल्य फल होता है ॥ और सह्यपर्वतके पादांतें उत्पन्न होइयां जो नदीयां और वैकटपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सो अपणी अपणी दीर्घताके अनुसारकर्के यात्राविषे योजनांकी वृद्धि कर्के एक १ दो ३ त्रय ३ कृच्छ्रव्रतांके फलकोदेणे बालीयां हैं और विंध्यपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सो पूर्वोक्तसह्यपादजातनदीयांसं त्रयगुणां अधिक फलको देणेवालीयां हैं और पिच्छे सह्यपाद वैकटाद्रिते उत्पन्न होइयां नदीयांके पुण्यका विवेककरते हैं स्मृताविति स्मृतिविषे और पुराणविषे जैसे कैसे नहि कथन कोयां जो कूलां सो त्रयरात्र निवास कर्के कृच्छ्र आदि फलके देणेवालीयां हैं और अल्पनदीयां एक कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं ॥ और नदीयां दो २ कृच्छ्र फलके देणे वालीयां हैं और महानदीयां त्रय कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं

ताम्रपर्णी कृतमाला पयस्विनीषु द्वादशयोजने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥
सह्यपादोद्भूतावैकटाद्रिपादोद्भूताश्च नद्यः स्वस्वदैर्घ्यानुसारेणैकद्वित्रि
कृच्छ्रफलप्रदाः ॥ विंध्यशैलोद्भवादिगुणाः ॥ हिमोद्भूतास्त्रिगुणाः ॥ स्मृतौ
पुराणेच यथाकथंचिदनुक्ताः कुल्यास्त्रिरात्रिफलदाः ॥ अल्पनद्यः कृच्छ्रशः ॥
नद्योद्विगुणकृच्छ्रशः महानद्यस्त्रिकृच्छ्रशः । सर्वत्र यात्रानुक्तौ कृच्छ्रसंख्या
योजनसंख्यया स्यात् ॥ एकयोजननादिषड्योजनान्ताः स्रवंत्यः कुल्याः
ततोद्वादशयोजनगा अल्पनद्यः । चतुर्विंशतियोजनगानद्यः चतुर्विंशतियो
जनाधिकानि वत्मानियासांताश्च महानद्यः ॥ उपवाससहितं नदीस्नानं । यो
जनादर्यागपि । कृच्छ्रसमम्

जिसजगा यात्रा नहि करी तिस संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्र व्रतांकी संख्या योजनकी संख्या कर्के जानणी ॥ अब कूलाका लक्षण कहते हैं एकेति एक योजनतें लेके छे ६ योजन पर्यंत जो बगतीयां हैं तिनांका नाम कुल्या है ॥ और वारां योजन पर्यंत जो पर्वह वाली हैं सो अल्पनदीयां कहीयां हैं और चव्वी २४ योजन तक पर्वह वालीयां हैं तिनका नाम नदी है और चव्वी २४ योजनतें अधिक है मार्ग जिनांका सो महानदीयां कहीयां हैं और एक उपवास व्रतको कर्के जो नदी विषे स्नान है सो कृच्छ्र व्रतके तुल्य है ॥ योजनतें न्यून भी यात्रा होवे तदभी उपवास कर्के जो स्नान है सो कृच्छ्र व्रतके तुल्य कहा है ॥

शुनीति जिसनदीके प्रवाहते ऊपर और अधोभागके दोनों कनारयां विषे निवास करते हैं था क्या कुचे ऐसी नदीका नाम शुनीकहा है तिसकी स्लैन्ड देशविषे संभावना करते हैं कि कोई होवेगी ऐसे गर्दभी आदिक जानणी गधयां कर्के सेव्यमान नदी गर्दभी और चांडालां कर्के सेव्यमान नदी चांडाली और शूद्रां कर्के सेव्यमान नदी शूद्री है कृष्णप्रवाह कर्के जो चलती बां हैं अर्थात् अल्प है जल जिनां विषे ऐसी जो नदी बां हैं और कर्मनाश और करतोया और गंडकी तें आद लेके जो हैं एह सभ पापनदीयां हैं सो कहते हैं स्मृत्यंतर विषे कर्मति कर्मनाशके जल स्पर्श करणे कर्के धर्मका क्षय होता है और करतोया नदीके लंघणे कर्के और गंडकी नदीविषे भुजा कर्के तरफे तें और जो शुभ कर्म आपकी ता है सो अन्य पुरुष कें तां ई कहणें नष्ट होता है ॥ १ ॥ पपानद्यः एह कथन भी पूर्व संबंधी है ऐसा कैयोंका मत है सर्वत्र समुद्र विषे स्नान

शुनी गर्दभी चांडाली शूद्री कष्टगानद्यः पापनद्यश्च वर्जनीयाः । शुनीश्वभिः सेव्या यस्या ऊर्ध्वाधोभागीयो भयतटवासिनः श्वानः सा शुनीत्यर्थः । एवंभूता पियावनादिदेशे काचित्संभाव्यते । एवं गर्दभैश्चांडालैः शूद्रैस्सेव्या सा साभिधेया कष्टेन कार्श्यभावाद्गच्छतीति कष्टगा अल्पजलेत्यर्थः पापनद्यः कर्मनाशकरतोया गंडकी प्रभृतयः ॥ कर्मनाशा जलस्पर्शात् करतोया विलंघनात् गंडकी वाहुतरणाद्धर्मः क्षरति कीर्त्तनादिति स्मृत्यंतरवचनात् इदमपि पूर्वसंबंधीति केचित् ॥ सर्वत्र समुद्रस्नानं दर्शकार्यम् । देवता समीपे द्विगुणम् तत्र स्नात्वा तद्देवता दर्शने त्रिगुणं सेतौ गमनं त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कच्छसमम् ॥ तत्र स्नात्वा रामेश्वर दर्शने षष्टिकच्छसमम् विंध्यदेशीयानां रामेश्वर सेतु दर्शने जाह्नव्यां च त्रिगुणफलम् । जाह्नवीकेदारयोश्च तथैव ।

अमावस्यामे कहा है ॥ और समुद्रके समीप देवताका स्थान होवे तां तिसविषे तीस ३० योजन तें प्राप्त होया जो पुरुष तिसको स्नान करणें तें दूष्ठा क्या ६० कच्छका फल प्राप्त होता है तिस समुद्रविषे स्नान कर्के देवताका क्या जगन्नाथ आदिका दर्शन करे तां त्रय गुणां अधिक फल क्या नब्बे १० कच्छका फल प्राप्त होता है और तीस ३० योजन की यात्रा कर्के सेतु वंशकों प्राप्त होणें तीस ३० कच्छके तुल्य फल प्राप्त होता है ॥ तिस सेतु वंश विषे स्नान कर्के रामेश्वरके दर्शन विषे सत्ता ६० कच्छांका फल प्राप्त होता है और विंध्य देशविषे निवास करवाले जो पुरुष तिनांको रामेश्वर सेतुके दर्शन विषे और गंगाके स्नान विषे पूर्वोक्त त्रय गुणां अधिक कच्छका फल प्राप्त होता है गंगा और केदारेश्वर विषे भी त्रय गुणां अधिक फल होता है

दक्षीति दक्षिणदेश निवासी गंगो गंगाविषे योजनयात्रातेछे ६ गुणां अधिक फल होता है और गंगा देश निवासीयांका यात्रा योजनते सेतुरामेश्वरके दर्शनते छे ६ गुणां अधिक फल होता है और तीस १० योजनकी यात्राते स्वामिकार्तिकके दर्शनविषे तीस २० कृच्छ्रके तुल्य फल होता है ॥ जिस स्थान विषे गंगा संज्ञा है तिसी स्थान विषे श्रीरंग और पद्मनाभ और पुरुषोत्तम और चक्रकोट इनांका दर्शन आवे और लोणारस्थान विषे तीस १० योजनकी यात्राकके दर्शनके निमित्त प्राप्त होया जो पुरुष तिसको तीस ३० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होता है और केदार विषे तीस १० योजनकी यात्राकके नब्बे ९० कृच्छ्रका फल प्राप्त होता है और संपूर्ण जो वैष्णव स्थान और माहेश्वर स्थान और सूर्यजीके स्थान और शक्तिआदिक जो स्थान इनांकांकांके दर्शन कर्के तीस १० योजनकी यात्रा विषे पंदरा १५ कृच्छ्रका फल प्राप्त होता है और प्रख्यात

दक्षिणदेशीयानांचजाह्नव्यांपड्गुणम् गंगादेशीयानांचसेतुरामेश्वरेपड्गु
णं स्कंददर्शनेत्रिंशद्योजनागतस्यविंशतिकृच्छ्रम् यत्रगंगासंज्ञास्ति तत्रैव
श्रीरंगपद्मनाभपुरुषोत्तमचक्रकोटदर्शनेलोणारस्थाने त्रिंशद्योजनागतस्य
त्रिंशत्कृच्छ्रम् केदारेत्रिगुणम् । सर्ववैष्णवमाहेश्वरसौरशक्त्यादिपीठदर्शने
पंचदशकृच्छ्रम् प्रख्यातद्विगुणम् अहोविलेपितथा श्रीशैलप्रदाक्षिणंपष्टि
कृच्छ्रम् श्रीशैलेष्यैकैकशृंगदर्शने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥ अन्येषुप्रख्यातती
र्थदेवदर्शनेषु षट्कृच्छ्रसमम् सिद्धक्षेत्रेऽन्यक्षेत्रेचस्वयंविभुदर्शने त्रिंशत्कृ
च्छ्रसमम् । त्रिंशद्योजनागतस्य सर्वत्र कृच्छ्रसंख्या योजनसंख्याया ज्ञेया

पीठ विषे तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होता है और अहोवल पीठ विषे भा सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होता है तैसे श्रीशैल पर्वतकी प्रदाक्षिणाका फल तीस १० योजनकी यात्रा कर्के सठ ६० कृच्छ्रके तुल्य होता है और श्रीशैलविषे भी एक एक शृंगके दर्शन करणकर्के वारां १२ कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होता है होर जो प्रकट तीर्थहैं और देवता इनांके दर्शनविषे तीस १० योजनकी यात्राकके छे ६ कृच्छ्रके तुल्य फल प्राप्त होता है और सिद्ध क्षेत्र विषे और अन्य क्षेत्र विषे और अपण्डे अपण्डे दृष्ट देवताके दर्शनविषे तीस १० योजनकी यात्रा कर्के तीस १० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होता है तीस योजनकी यात्रा कर्के इहां संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्रव्रतांकी संख्या योजन संख्या कर्के जानणे योग्य है

अब देवलजी कहते हैं अतीति तीर्थोंको प्राप्त होके और जो पवित्र स्थान तिनांको प्राप्त होके और ब्राह्मण जो तपस्वी तिनांके स्थानको प्राप्त होके जो पुरुष कर्मोंका करता है सो पापमें राहित होता है ॥ १ ॥ समुद्रविषे प्राप्त होके बालिषां सब नदिषां पुण्यके देणवालिषां और संपूर्ण जो उत्तम पर्वत हैं सोभी पुण्यके देण वाले कहे हैं और संपूर्ण उत्तम स्थान पवित्र है अर्थात् इनां सभ जगा मुनियोंके निवास है और जो बनके आश्रय जो जलस्था हैं सो संपूर्ण पवित्र कहे हैं २ अब जामदग्न्यका वचन है ॥ तीर्थविषे स्नान करणें पादकृच्छ्रके फलको प्राप्त होता है और नदी विषे स्नानमें अर्द्ध कृच्छ्रके फलको प्राप्त होता है और महानदीविषे स्नानमें दूष फलको प्राप्त हो

देवलः । अतिगम्यचतीर्थानिपुण्यान्यायतनानिच नरःपापात्प्रमुच्येतब्राह्म
णानांतपास्विनाम् १ सर्वास्समुद्रगाः पुण्याः सर्वेपुण्यानगोत्तमाः सर्वमाय
तनंपुण्यंसर्वेपुण्यावनाश्रयाइति २ ॥ जामदग्न्यः ॥ तीर्थेतुपादकृच्छ्रस्यात्र
द्यात्वंद्विफलंभवेत् द्विगुणंतुमहानद्यांसंगमेत्रिगुणंभवेदिति ॥ १ ॥ अथपरार्थं
तीर्थगमनेफलम् परार्थगंता तीर्थे षोडशांशफलं लभते प्रसंगेनगंतार्द्ध
फलंलभते अन्योद्देशेनकृतकर्मणान्यस्यसिद्धिरूपोऽवांतरकार्यनिर्वाहः प्र
संगः ॥ अनुपंगेण तीर्थे प्राप्य स्नानेस्नानफलमेव ॥ अन्योद्देशेनप्रवृत्तौतत्
क्रियानांतरीयकतयान्यस्यसिद्धिरनुपंगः ॥

ता है और संगम विषे स्नानमें त्रिगुण अधिक फलको प्राप्त होता है इति ॥ १ ॥ इसमें उपरंत हो
री पुरुष वास्ते जो तीर्थको जाता है तिसके फलको कहते हैं ॥ परपुरुषके वास्ते जो तीर्थ
को जाता है सो पुरुष पुण्यके सोलहें हिस्सेको प्राप्त होता है जो किसेके प्रसंग अर्थात् अन्य पुरु
षके निमित्त कर्के यात्रा करणी और उसकी यात्रा विषे अपनी यात्राके निर्वाहको कर्के जा
ता है सो अर्द्ध फलको लभता है और जो किसेके संग कर्के अर्थात् अन्य पुरुषके निमित्त क
र्के जो स्नानको जाता है अंतरीय कर्के नहि जाता तिसको तीर्थ विषे प्राप्त होके यात्रा फ
लमें बिना स्नान का हि फल होता है

५६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

मातेति मातामह क्या नाना और मतेर आताका मातामह क्या नाना और पिताका आता और माताका आता और श्वशुर क्या अपनी स्त्रीका पिता इनांके वास्ते जो स्नान करता है और गुरु और आचार्य जो कर्माके करवाणे वाला और शास्त्रके पढाणे वाला इनांके वास्ते जो स्नान है और इनां कियों स्त्रियोंवास्ते जो स्नान कर्ता है और पिताकी भयण और माताकी भयण इनांवास्ते जो स्नान कर्ता है सो आप अठवें ८ हिस्से फलकों प्राप्त होता है ॥ और माता पिताके वास्ते पुत्र स्नान करे तां चौथे हिस्से फलकों प्राप्त होता है स्त्री और भर्ता और सपत्नीक्या साकणा इहसव आपसविषे स्नान करें तां अर्द्ध फलकों प्राप्त होते हैं ॥ और धनको लेंके जो पुरुष तीर्थ कों जाता है तिसको अल्प फल है ॥ अब और विशेष कहते हैं कर्केति श्रावण और भाद्रो इनां

मातामह भ्रातृमातामह पितृव्यमातुलश्वशुरेशपकार्यम् ॥ गुर्वाचार्यो पाध्यायार्थं तत्पत्न्यर्थं पितृष्वसृमातृष्वस्रर्थं च स्नात्वा स्वयमष्टमांशलभते पित्रोरर्थं कुर्वन्पुत्रश्चतुर्थीशम् । दम्पती च सपत्न्यश्च लभन्ते द्वैमिथः फलम् अर्थिनां च तत्फलहासः ॥ कर्कादिमासद्वये रजस्वलानद्य स्तास्वपि गोमती चंद्रभागा सिंधुर्नर्मदा सरयूश्च त्रिरात्रं वापीकूपतडागादिषु स्थितपुराणोदके पुत्रिरात्रम् ॥ सरस्वती गंगायमुना गयादयो न कदापि रजस्वलाः ॥ इति प्राजापत्यकृच्छ्रस्य नदीस्नानप्रत्याम्नायः ॥ प्राजापत्यस्य ब्राह्मणभोजनरूपप्रत्याम्नायमाह देवलः ॥ प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायममुं शृणु यत्कृत्वामुच्यते पापैर्महद्भिरपिनारद ॥ १ ॥ पूर्ववत्संकल्पादिकं कृत्वा द्वादश ब्राह्मणान्निमंत्रयेत् ॥

दोनो महीनयां विषे नदियां रजस्वला होतीयां हैं तिनां संपूर्णा नदियां विषे गोमती नदी और चंद्रभागा और सिंधु और नर्मदा और सरयू एह त्रय रातीं अशुद्ध होतीयां हैं और जिनां विषे चिर काल जल रहता है तिनां बाउलियां और कूप क्या खूह और तला विषे त्रय रात्र अशुद्धि कही है । सरस्वती और गंगा और यमुना और गयाते आद लेंके जो नदियां हैं सो कदीभी रजस्वला नहि होतीयां एह प्राजापत्यकृच्छ्रके स्थान बदला नदियां विषे स्नान कहा है ॥ अब प्राजापत्य कृच्छ्रके विषे जो प्रत्याम्नाय है ब्राह्मणोंके तांई भोजन देणा तिसकों देवलऋषि कह ता है प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नाय क्या बदलेकों हेनारद श्रावण कर जिसके करणसे पापी महा पापोंसे रहित होता है ॥ १ ॥ पूर्वकी न्यांई संकल्पकों करके बारां ब्राह्मणोंको निमंत्रण करें

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ५७

अब पराशरजी कहते हैं प्राजापत्य कृच्छ्र के प्रत्याम्नायविषे ब्राह्मणों का पूजन कहा है जिसके करण कर्के पापी पुरुष पापों से शुद्धि को प्राप्त होता है और प्राजापत्य के फल को प्राप्त होता है ॥ १ ॥ पूजन की विधि कहते हैं ब्राह्मणों को निमंत्रण कर के ब्राह्मण हैं जो मन कर्के शांत और सहित स्त्रियों के और वेद के पढ़ने विषे युक्त और शुभ कर्मों के करण कर्के शुद्ध हैं अथवा ब्राह्मणों को कृच्छ्र करने के फल की प्राप्ति वास्ते पूजे ॥ २ ॥ अब आपस्तम्ब ऋषि का वचन है वोति ब्राह्मण मंत्रों कर्के युक्त और देश में और काल में और शौच में और शुभ दान ग्रहण करने में जो शुद्ध हैं तिनको संपूर्ण कृत्यविषे जोड़े ॥ १ ॥ ऐसे ब्राह्मणों को निमंत्रण कर्के बहुत विस्तार वाले या अन्ना कर्के भोजन खवाये और तिनके तांडे अपने धन के अनुसार दक्षिणा देणे योग्य है २ ॥ इस तरह जो भली प्रकार कर्ता है सो प्राजापत्य के फल को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ अब प्राजापत्य के

पराशरः ॥ प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायं द्विजार्चनं कृत्वा शुद्धि मवाप्नोति प्राजापत्यफलं लभेत् १ विप्रान् शांतान् सपत्नीकान् वेदशीलान् परिष्कृतान् सदाचारशुचीन् त्रित्यं कृच्छ्रार्थं तान्नियोजयेत् २ आपस्तम्बोऽपि विप्रान् शुचीन् मन्त्रवतः सर्वकृत्येषु योजयेत् देशतः कालतः शौचात् सम्यक् प्रतिगृहीतः १ ॥ एवं विप्रान् निमंत्र्याथ भोजयेद् बहुविस्तरैः तेभ्यश्च दक्षिणा देया यथा वित्तानुसारतः २ ॥ एवं यः कुरुते सम्यक् प्राजापत्यफलं लभेत् ३ ॥ अथ प्राजापत्यस्य प्रत्याम्नायं वेदपारायणमाह देवलः ॥ प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य वेदपारायणं महत् प्रत्याम्नायं प्रशंसन्ति शाखामात्रं प्रहारणम् ॥ १ ॥ पारायणेन भगवान् कृत्यो भवेत्तदा फलं संपूर्णं कृच्छ्रस्य प्रददाति न संशयः ॥ २ ॥ प्रातः काले शुचिर्भूत्वा स्नात्वा नित्यं समाप्य च ॥ स्वगृहे देवतागारे नद्यां वा देवता लये ॥ ३ ॥ प्राङ्मुखो दङ्मुखो वापि संकल्पं पूर्ववच्चरेत् ॥

वदले विषे संहिता के पाठ को देवल ऋषि कहता है प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्र विषे संपूर्ण संहिता का उच्चारण करण तिसको श्रेष्ठ कहते हैं ॥ शाखामात्र ऋषि अपनी अपनी एक शाखा का हि पारायण करण सारे वेद का नहि सो पारायण (प्रहारण) है क्या सर्व पाप नाशक है १ ॥ इस पारायण कर्के भगवान् कृत्य हुंदा है अर्थात् प्रसन्न हुंदा है और कृच्छ्र के संपूर्ण फलों तिस ताई देता है इस विषे संशय नहि है ॥ २ ॥ और प्रातः काल विषे शुद्ध हो के स्नान करे और संध्या वेद नादि नित्य कर्म को कर्के अपने गृह विषे वा देवता के मंदिर विषे वा नदी विषे वा देवता के स्थान विषे जाये और इसमें एह अभिप्राय है कि जिस जगह देवता पहले था सो देवतागार किहा है और जिस जगह देवता विद्यमान नहि है सो देवता लय जानना ॥ ३ ॥ पूर्वपासे मुख कर्के वा उच्चर पासे मुख कर्के फेर संकल्प को पूर्व की न्याई करे

५८ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी० भा० ॥

पारायण करणविषे एह विधिहै कि आदविषे उँकारको पढके पारायणका पाठ करे ॥ ४ ॥ और पूर्वादि दिशा पासे न देखे और पापियां पुरुषाँके साथ संभाषण त्यागे और मौन व्रतक्या पाठने बिनाहोर कुल न कहे मौनको धारके हौली हौली वेदको पडे ॥ ५ ॥ अब पारायणविषे दोष कहतेहैं शीघ्रति जो शीघ्र पाठ करणेवाला और पाठ करदयां शिरको हलाणेवाला और आपही लिखके पडणेवाला गद्गद क्या जिसकीवाणी स्पष्ट न होवे ऐसा जो है और स्वरतेहीन पठने वाला ॥ एह पंज पाठ करणे वालयाँविषे अधम कहेहैं ॥ ६ ॥ इस कारणाते हौली हौली विद्याका अभ्यासकरे क्या पाठकरे आत्माकी शुद्धिवास्ते सो पारायणकी समाप्तिके होयां होयां

पारायणेनुप्रणयंकृत्वापारायणंपठेत् ॥ ४ ॥ दिशस्त्वनलोक्यैव ह्यसंभा
दैवपापिनः मौनव्रतंसमागम्यपठेद्वेदं शनैः शनैः ॥ ५ ॥ शीघ्रपाठीशिरः
कंपीस्वयं लिखितपाठकः । गद्गदस्त्वरहीनश्चपंचैते पाठकाधमाः ॥ ६ ॥
अतः शनैः शनैर्विद्यामभ्यसेदात्मशुद्धये यावत्समाप्तिर्भवति तावत्कृच्छ्रफलं ल
भेत् ॥ ७ ॥ स्वयमेव पठेद्वेदमुत्तमं परिकीर्तितम् प्रमामापो मध्यमः स्याद्भूत
केनिष्फलं भवेत् ॥ ८ ॥ प्रमया यथार्थज्ञानेन मापयति अहं यथार्थपाठीति
बोधयतीति प्रमामापः प्रयोजकः । स तु प्रयोजकस्य फलं दातुं प्रवृत्त
त्वान् मध्यमः यद्वा प्रमां प्रकृष्टलक्ष्मीं मापयति तुभ्यं बहु धनं दास्यामी
ति विश्वासयति प्रमामापः प्रयोजकः ॥ भूतके अनध्याये इति

कृच्छ्र के फलको प्राप्त होता है ॥ ७ ॥ अब और रीतिसे पाठकको उत्तमादि व्यवस्था कहतेहैं स्वयमेवेति आप वेदको पडे ताँ उत्तम कहाई प्रमामापजो है ॥ यथार्थ ज्ञानकर्के जो अन्य पुरुष ताँई बोधन करवाए क्या में यथार्थ पाठ करताहों . ऐसै अन्यपुरुषके ताँई फलके देसोंनूँ जो पाठ करताहै सो मध्यम पाठक कहाई । यद्वा दूसरा अर्थहै बहुत धनको जो बोधन करवाताहै क्या में नेरेताँई बहुत धन देवांगा ऐसै प्रेरणा कर्ताहै ऐसा पाठ वेदका करवाणे वाला मध्यम फल भागी कहाई और अनध्याय विषे पाठ करे ताँ निष्फल होताहै ॥ ८ ॥

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ५९

अथ क्या इस पुराण प्रयाम्नायकों कहकरें अब प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्यस्नायविषे गायत्रीके जप की विधि कही है अयुतमिति वेदकी माता जो गायत्री तिसके दश हजार १०००० जप के करणेंतें पुरुष संपूर्ण पापांतें रहित होता है अब जप करनेकी विधि कहतें हैं प्रातरिति जप करना ऐसा करे कि पहले प्रातःकालविषे यथा चार क्या जिस २ वण कों जो विधान है जैसे ब्राह्मणकों १३ तैरा क्षत्रियकों १२ वैश्यकों ११ शूद्रकों १० स्त्री कों ८ अंगुलकी दातन कही है इत्यादि विधि करे दातन छोकरे, फेर स्नान करे ॥ १ ॥ और अग्नि होत्र वाले स्थान विषे स्थित होके अथवा देवताके मंदिर विषे वा नदीके कनारे विषे वा गौवाके स्थान विषे वा वृंदावन देश विषे इनां मेंसे भावें किसे स्थान विषे जपे १०००० ॥ २ ॥ अब जप माला को दस्त्राते है पर्वभिरिति हृत्थके पर्वीकरे बा जपकी माला करे वा

अथ प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायेगायत्रीजपविधिः ॥ अयुतं वेदमातुश्च सर्वपापैः प्रमुच्यते प्रातःस्नात्वा यथाचारं दंतधावनपूर्वकम् ॥ १ ॥ अग्निहोत्रालये देवगृहे वापि नदी तटे गोष्ठे वृंदावने देशे जपे दयुत संख्यया ॥ २ ॥ पर्वभिर्जपमालाभिः कुशग्रंथिभिरेव च स्वयं मौनमुपस्थाय दिशश्चानवलोकयन् ॥ ३ ॥ जपेन्महापापजालहननार्थं दिने दिने अव्यग्रचित्तः प्रजपेदन्यथा दोषमश्रुतं ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ संदिग्धस्तु हतो मंत्रो व्यग्रचित्तो हतो जपः अत्राह्मण्यहंतं क्षातं वमनाचारं हतं कुलम् ॥ १ ॥

कुशाकियां गंडां करे आप मौनकों धारके परंतु और किसे दिशा विषे भी दृष्टि न करे क्या एकाग्र चित्त करे ॥ ३ ॥ महा पापके समूहके नाश वास्ते दिन दिन विषे सावधान होकर जपे दश हजार संख्यातक और ऐसे न जपे तां दोषकों प्राप्त होता है ॥ ४ ॥ अब जपविषे मार्कंडेय जी कहतें हैं संदिग्ध इति संशय वाला मंत्र हत है क्या नहि सिद्धिके देखे वाला है और एकाग्र चित्ततें विना जपभी हत है क्या नहि सिद्धिके देखे वाला और जो सत्री ब्राह्मणकों नहि मानता सो क्षत्रीभी नष्ट है और आचारं ते हीन कुलभी नष्ट है ॥ १ ॥ इसमें एह अभिप्राय है कि किसे पुस्तकमें सात्रकी जगा (शास्त्र) एह पाठ है तिसका अर्थ एह है कि जिस शास्त्रमें ब्राह्मणकी निंदा है सो शास्त्र हत है ॥

६० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

इस कारणतें मन विषे जप करणे योग्यहै मन कर्के जो जप कीताहै सो क्रोड १००००००० गुणां अधिक फलके देणें वालाहै और दश हजार जप करे तां पूर्ण प्राजापत्य कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ कुछ और कहतेहैं अंगुलीति जो जप अंगुलीयांके अग्रकर्के जप याहै और जो मेरुके मणकेको लंघकर्के जपयाहै और दो प्रकारके चित्तकर्के जपयाहै कथा एका य चित्तकर्के नहि सो संपूर्ण निष्फल होताहै ३ पराशरजीकावचनहै हथघोयां पंजां अंगुली यां विषे अंगुष्ठतें जो चौथी अंगुलिहै तिस कर्के विसकारले पवंतें लेके दोपवं हथवाले पास यां लेके ग्रहण करे और अंगुष्ठने पंजवी अंगुलि जो कनिष्ठिकाहै तिसके त्रय पवं हथवाले पास यां लेके अग्रतक क्रमसँ लये ॥ १ ॥ फेर चौथी अंगुली और तीसरी तिनां दोनोंके अंगलयां

अतोमनसिजप्तव्यंमानसंकोटिरुच्यते अयुतंचजपेत्पूर्णप्राजापत्यफलंलभे
त् ॥ २ ॥ अंगुल्यग्रेणयजस्तंयजस्तंमेरुलंघने द्विधाचित्तेनयजस्तंतत्सर्वं
निष्फलंभवेत् ॥ ३ ॥ पराशरः ॥ हस्तस्यानामिकामध्यपर्वीदारभ्यय
त्नतः तद्द्वितीयंकनिष्ठायाःपर्वत्रयमनुक्रमात् ॥ १ ॥ अनामिकोर्ध्वपर्वीदे
र्मध्यमाद्यस्तुतर्जनी पर्वत्रयंतदाकृत्वातदेवाक्रम्यपूर्ववत् ॥ २ ॥ मेरीयावदं
गुष्ठं तस्यनातिक्रमंचरेत् पर्वभिर्गणयेत्सोपिगायत्त्रामन्यमेववा ॥ ३ ॥
एकैकस्यशतंप्रोक्तंगणनंमुनिभिस्सदा अयुतेनजपेनाशुजप्तातत्फलंलभेत्
॥ ४ ॥ गौतमः ॥ कृपितोनास्तिदुर्भिक्षंजपतोनास्तिपातकं मौनेनकल
होनास्तिनास्तिजागरतोभयम् ॥ १ ॥

पर्वीकों ग्रहण करे फेर अंगुष्ठतें दूसरी अंगुली जो तर्जनी है तिरुके तीन पवं ग्रहण करे क्रमतें ॥ २ ॥ और मेरुके स्थान विषे जो अंगुष्ठहै तिसकों न उलेंगे इसतें एक आवृत्ति को दश १० संख्या हाजाती है इसप्रकार पर्वी कर्के जप करे गायत्रीका अथवा होर किमे मंत्रका ॥ ३ ॥ एक एक आवृत्तिके अंगुलिके जपतें मुनियाने सो गुणां अधिक फल कहाहै इसी कर्के दश हजार १०००० जप करणेंतें तत्काल कृच्छ्रके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ इसमे गौतमजी कहतेहैं खेती कर्मके करणेंतें काल नहि होना और जपकरणेंतें पाप नहि होना और मंत्रधारणेंतें लडाई नहि होती और जागरण करणेंतें भय नहि होना ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ६१

जपते पाप नाशकों प्राप्त होता है इस कहणेतें कृच्छ्र व्रतका प्रत्याम्नाय गायत्री कहै है ॥ इससे उरंत प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय तिलांका होम कहा है होम इति कीडयंति रहित जो तिल घृत कर्के युक्त तिनां कर्के जो होम है मृत्युंजय मंत्र कर्के अंगन्यास और ध्यानकों पूर्व करके सो पापों के नाश कर्ण वाला कहा है ॥ १ ॥ इसमें और विधि कहते हैं संव्रस्त इति भय कर्के संयुक्त होया होया अग्नि विषे हवन न करे अर्थात् सावधान होकर के करे और ओं हौं जूं सः ओं भूर्भुवः स्वः इनां बीजां कर्के तिलांका हवन करे संपूर्ण होम करके कर्के तिसी क्षणमें पवित्र होता है २ इसमें कुछ होर कहते हैं कि आप हवन करे वा ब्राह्मणां पासो करवाये तिलांकी हजार

जपतो नास्ति पातकमिति स्मरणादयं प्रत्याम्नायः ॥ अथ प्राजापत्य कृच्छ्र प्रत्याम्नाये तिल होम विधिः ॥ होमस्ति लैर कीटैश्च घृतैः पाप प्रणाशकृत् मृत्युंजयेन मंत्रेण न्यास ध्यान पुरःसरः ॥ १ ॥ संव्रस्तो न हुनेद्वहा वा हुती बीज पूरणैः सहोमं सकलं कृत्वा पूतो भवति तत्क्षणात् ॥ २ ॥ संव्रस्तो न हुनेत्किंतु समाहित एव जुहुयादित्यर्थः । तत्रापि बीज पूरणैः ओं हौं जूं सः ओं भूर्भुवः स्वरिति बीज पूरण युक्तैः । स्वयं वा ऋत्विजो वा तिल होम सहस्रकम् कुर्यान्मासेन मेधावी प्राजापत्यफलं लभेत् ॥ ३ ॥ अथ प्राजापत्य कृच्छ्रस्य शत द्वय प्राणायाम रूप प्रत्याम्नायमाह देवलः प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायो महत्तरः धर्मशास्त्रां क्रमार्गेण प्राणायाम शत द्वयम् ॥ १ ॥ जप संकल्प होमेषु संध्या वेदन कर्मसु प्राणायामांश्चरेद्विप्रस्तदानं त्याग कल्प्यते ॥ २ ॥

ऐसे दिन दिन विषे आहुति एक मास के ब्राह्मण के बुद्धि मान प्राजापत्य के फल को प्राप्त होता है २ अब प्राजापत्य कृच्छ्रका और प्रत्याम्नाय है क्या दो सौ २०० प्राणायाम तिसकों देवल कृपि कहता है प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय एह बड़ा भेद कहा है क्या धर्मशास्त्र कर्के कही जा विधि है तिस विधिकर्के प्राणायाम दो सौ २०० बार करे गायत्री के मंत्र कर्के ॥ १ ॥ जपेति जप और संकल्प और हवन इनां के प्रारंभ विषे और संध्या वेदनादि कर्म विषे जो ब्राह्मण प्राणायामां कर्ता है सो अनंत फल को प्राप्त होता है इसका सो पुण्य अक्षय कल्पना करिदा है ॥ २ ॥

६२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

इस विषे मार्कंडेयजी कहतेहैं वामेति वाम क्या खवेपासेको नासिकाकर्के वायुकों पूर्णकरे पूर्णकरणें तें तिसका नाम पूरक कहाहै और सजेपासेको नासिकाकर्के वायुकों त्यागे वायुकों त्यागणेंतें तिसका नाम रेचक कहाहै ॥ १ ॥ और वायुकों रोके दोनों नासिकां कर्के तिसका नाम कुंभक है और गायत्रीके स्वरूपका मनकर्के ध्यान करे और पूरकविषे कुंभक विषे रेचक विषे त्रवार जपे २ इसप्रकार त्रवार जपेहोई संख्याके अभावमें होतीहैं अर्थात् अमंत फलके देणे वाली होतीहै १ अवपराशरजीकहतेहैं वामेति खब्बी नासिकाकर्के वायुकों ग्रहणकरे मन कर्के उच्चारण गायत्रीका कर्ताहोया जलकर्के पूर्णहोए कुंभकीन्याई ब्रह्मविषे ध्यानलगाके स्थित होवे वायुकोंरोककर्केगायत्रीका मनकर्के उच्चारण कर्ता होआ ॥ १ ॥ ऐसे पूरक और कुंभककों

मार्कंडेयः ॥ वामेन पूरयेद्वायुं पूरणात् पूरकः स्मृतः सव्येन रेचयेद्वायुं रेचनाद्रेचकः स्मृतः ॥ १ ॥ वायुना पूरयेद्रंध्रान् गायत्रीमनसा स्मरन् पूरणे कुंभके चैव रेचने तां जपेत् त्रिधा ॥ २ ॥ एवं त्रिवारं याजता संख्याभावे भवे दियम् ॥ ३ ॥ पराशरः । वामेन वायुना पूर्य गायत्रीमनसा स्मरन् संपूर्ण कुंभवतिष्ठेत् पुनस्तामनुवर्तयन् ॥ १ ॥ रेचयन् सत्तरंध्रेण पुनस्तामेव संस्मरन् ॥ एवं पूरक कुंभाभ्यां रेचकेन सहामुना यो वर्तयेत् त्रिधा ब्रह्म प्राणायाम इतीरितः ॥ २ ॥ श्राद्धे जपे च होमे च संध्या कर्म मु सर्वदा यो वर्तते प्रतिदिनं प रं ब्रह्म तदुच्यते ३ एवं शतद्वयं कृत्वा पूर्वोक्तविधिना द्विजः प्राजापत्यस्य कृच्छस्य प्रत्याम्नायोनि गद्यते सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति परमं पदम् ॥ ४ ॥

कर्के रेचककोंकें गायत्रीका स्मरणकर्ता होया वायुकों सत्तारंध्राके रस्ते त्यागे सत्तरंध्र नाम दक्षभा गका है अथवा दक्षंध्रेण अस्ताहि पाठ है ॥ २ ॥ ऐसे हैं ब्रह्मन् पूरक और कुंभक और रेचक इसविधिकर्के जो त्रवार गायत्रीका उच्चारण करणाहै तिसका नाम प्राणायाम कहाहै २ श्राद्धे नि श्राद्धविषे और जपविषे और हवन विषे और संध्या वंदनादि कर्म विषे जो प्राणायाम कर्ताहै सो परंब्रह्म स्वरूप कहाहै ॥ ३ ॥ ऐसे पूर्व विधि कर्के जो ब्राह्मण दोसौ २०० प्राणायाम कर्ताहै तिसका प्राजापत्यके तुल्यफल देणे वाला वदला कहाहै तिसकेकरणेंतें संपूर्ण पापांतें रहित होके परम पद वैकुण्ठकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

अब सांतपन कृच्छ्र व्रतकों मनुजी कहतेहैं गविति गौका मूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशाके पत्रां कर्के मिलाया होयाजल एह मिला कर्के एक दिनपीवे और दूसरे दिन उपवास व्रत करे तिस व्रतका नाम कृच्छ्र सांतपन कहाहै ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्य जी का बचनहै गौकामूत्र और गुवा और दुग्ध और दधि और गौकाघृत और कुशाकाजल इनां कों एक दिन खाकर दूसरे दिन उपवास व्रत करे एह कृच्छ्र सांतपन कहतेहैं एह दो दिनका व्रत है कृच्छ्र सांतपन १ अब सांतपनके लक्षणकों देवल ऋषि कहताहै कृच्छ्र सांतपनका लक्षण जोहै सोसं

अथ सांतपनकृच्छ्रमाह मनुः ॥ गोमूत्रगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकं एक रात्रोपवासश्चकृच्छ्रं सांतपनं स्मृतम् ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गोमूत्रगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् जग्ध्वापरैद्युरपवसेत्कृच्छ्रं सांतपनं स्मृतमिति ॥ द्वैरात्रः सांतपनकृच्छ्रः । तल्लक्षणमाह देवलः कृच्छ्रसांतपनस्यास्य लक्षणं सर्वपापहम् श्रीशैलं १ काशिकाक्षेत्रं २ गयाक्षेत्रं महत्तरं ३ प्रयागं ४ यमुनां ५ सिंधुं ६ गंगासागरसंगमम् ७ कृष्णवेणीं ८ तुंगभद्रां ९ हेमकूपं १० त्रिलोचनम् ११ मार्कण्डेयं १२ सिंहगिरिं १३ ततो धर्मपुरीश्वरं १४ द्राक्षारामं १५ जपावाटीं १६ मल्लिकार्जुनमेव च १७ अहोबलं १८ नृसिंहं च १९ तथैव भवनाशिनीम् २०

पूणपापांके नाश करणे वालाहै श्रीशैलमिति श्रीशैल १ और काशिका क्षेत्र २ और गयाक्षेत्र बहुत श्रेष्ठहै ३ और प्रयाग ४ और यमुना ५ और सिंधु ६ और गंगासागरका संगम ७ और कृष्णवेणी ८ तुंगभद्रा ९ और हेमकूप १० और त्रिलोचन ११ और मार्कण्डेय १२ और सिंहगिरि १३ और धर्मपुरीश्वर १४ और द्राक्षाराम १५ और जपावाटी १६ और मल्लिकार्जुन १७ और अहोबल ॥ १८ ॥ और नृसिंह ॥ १९ ॥ और तैसे भवनाशिनी २०

६४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

और पिनाकिनी नदीके तीरविषे वैद्यनाथहरि नामकर्के प्रसिद्ध जो स्थान है २१ तैसे और बेंकटाद्रि २२ और स्वर्णमुखी २३ और कालहस्तीश्वर २४ और तैसे साक्षात् वरद राजहैं जो स्वयंभू वज्राकाबरस्वरूप हैं २५ और तैसे एकाम्रनामकर्के लिंग संपूर्णतीर्थी विषे श्रेष्ठ २६ और मध्यार्जुनेश पापांके नाश करने वाला २७ और कुम्भकोण वडाआश्रय २८ और श्रीरंग महाक्षेत्र २९ और इसमें परे जंबू नाममहाक्षेत्र ३० और कावेरी पापांके नाश करने वाली ३१ अब मथुरा विषयविषे जो तीर्थहैं तिनकों भ्रवणकर ॥ सुंदरेश १ और सुंदरेशकी पत्नीका स्थान २ और तैसे उग्रवती नदी ३ और तिसीस्थान आशिकोण विषे गंधमादनपर्वत ४ और रामलिंग ५ और धनुःकोटी संपूर्ण तीर्थीकर्के युक्त ६ और तैसे दर्भशमन ७ और तिसीस्था

पिनाकिनीनदी तीरेवैद्यनाथहरितथा २१ बेंकटाद्रि २२ स्वर्णमुखी २३ कालहस्तीश्वरं तथा २४ साक्षाद्वरदराजचवरभूतस्वयंभुवः २५ एकाम्रचतथालिंगं सर्वतीर्थमहत्तरम् २६ मध्यार्जुनेशपापघ्नं २७ कुम्भकोणतदद्भुतम् २८ श्रीरंगं वामहाक्षेत्रं २९ जंबूनामह्यतःपरम् ३० कावेरीपापजालघ्नी ३१ मथुराविषये शृणु । सुंदरेशच १ तत्पत्नीं २ तथैवोग्रवतीनदीम् ३ तत्राग्नेयदिग्भागेपर्वतो गंधमादनः ४ रामलिंगं ५ धनुःकोटीं सर्वतीर्थपरिष्कृतां ६ तथैवदर्भशमनं ७ तत्रपंपामहत्सरः ८ ताम्रपर्णीमहाक्षेत्रं ९ तत्रत्याविष्णुदेवता १० अनंता रुयंरामक्षेत्रं ११ कौडिन्योयत्रभाग्यवान् जनार्दनमहाक्षेत्रं १२ गोकर्णपापनाशनम् १३ तथाहरिहरक्षेत्रं सुब्रह्मण्यमहत्तरम् १४ एता निपुण्यक्षेत्राणिदृष्ट्वापापहराणिच नीरोगीमुखजोयस्तु एतेषामेकमेववा नस्त्रायाद्वानपश्येद्वाकौन्यस्तस्मादचेतनः ॥

न पंपामहासर ८ और ताम्रपर्णी महाक्षेत्र ९ और तिसी स्थान विषे विष्णुमूर्ति १० और अनंतहैं नाम जिसका और गमक्षेत्र ११ जिसस्थान विषे कौडिन्यऋषि भाग्यकों प्राप्त होता भया और जनार्दन महाक्षेत्र १२ और गोकर्णतीर्थहैं पापांके नाशकरने वाला १३ और तैसे हरिहरक्षेत्र जो अनिशय कर्के ब्रह्मण्यहैं बहुत श्रेष्ठ १४ एह जो पुण्यक्षेत्रहैं सो दृष्टि विषये प्राप्त होणेंनहि पापांके नाश करने वाले हैं जो ब्राह्मण गंगतें रहितहैं और इनां तीर्थी और क्षेत्रके मध्य विषे एक तीर्थ विषे गोस्थान गहि कसी और दृश्यन नहि कतां तिस तें परे कोण अचेतनहैं अर्थात् सोई ब्राह्मण परथरके तुल्य है

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ६५

धर्मेति धर्मते रहित जो पुरुषहै और कर्मते हीन जो पापीपुरुषहै तिसका जन्म अजा क्या वकरीके गलविषे जो स्तन तिसकी न्याईव्यर्थहै ॥ १ ॥ जो पुरुष जन्म दिनते लेके सठ ६० वर्षकी आयुपर्यंत वर्तताहै और तिनां वर्षाके मध्य विषे श्रीशैल कहणे कर्के श्रीशैल और चापाग्र और वैकटाचल और वदरी और श्रीरंगनाथ ते आद लेके जो हैं इनांका ग्रहण करणा इनांका जो नास्तिकता कर्के दर्शन नहि कर्ता सो पुरुष संपूर्ण पापांको भोगके पीछे गर्दभ योनिकों प्राप्त होताहै एह वाक्य वामन पुराण विषे कहा है ॥ २ ॥ तिसीको मरीचिकृषि कहताहै ॥ श्रीति श्रीशैल और वैकटाद्रि और कांची और

स्मृत्यंतरे । धर्महीनस्य मर्त्यस्य कर्महीनस्य पापिनः अजागलस्तनमिव तस्य जन्मनिरर्थकम् ॥ १ ॥ यो मर्त्यो जन्मादिवसात्षाष्टिवर्षाणिवर्तते न पश्येद्यदि श्रीशैलतन्मध्ये स तु गर्दभः ॥ २ ॥ जन्मेति स्वजन्मादिवसादारभ्य षष्टिवर्षमध्ये श्रीशैलचापाग्रवैकटाचलवरदराजश्रीरंगनाथादिकं नास्तिकतया न पश्येत् न दर्शनार्थं तिष्ठेत्सर्वपापभोगानन्तरं गर्दभो भवेदिति वामनपुराणेश्रवणात् तदाह मरीचिः ॥ श्रीशैलवैकटाद्रिचकांचीं श्रीरंगनायकम् रामेशचधनुःकोटिस्वभावात्षष्टिवर्षगः ॥ १ ॥ न पश्येन्नास्तिकतया गर्दभो भुवि जायते तस्यैव निष्कृतिर्नास्तिकच्छात्सांतपनादृते ॥ २ ॥ बृहस्पतिः ॥ पुण्यालया न्पुण्यनदीर्न पश्येत्षष्टिवर्षगः महांतं नरकं गत्वा पश्चाद्वासभतां व्रजेत् ॥ १ ॥

श्रीरंगनायक रामेश और धनुःकोटि इनांका जो पुरुष अपने जन्मते लेके सठ ६० वर्ष की आयु तक नहि दर्शन कर्ता नास्तिक स्वभाव कर्के सो भोगते अनंतर पृथ्वी विषे गर्दभ जन्मकों प्राप्त होताहै तिसके पापकों निवृत्ति रुच्छ सांतपन व्रतते विना नहि होती क्या रुच्छ सांतपन व्रत कर्के पापते शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ अब बृहस्पतिजीका वचनहै ॥ पुण्येति दर्शन करणे कर्के पापांके दूर करणे वाले जो पुण्य देवतांके स्थान और पवित्र जो नदीयां तिनांकों जन्मते लेकर सठ ६० वर्षाकी आयु तक न देखे सो पुरुष बड़े नरकों भोगकर पीछे गधेके जन्मकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

६४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

और पिनाकिनी नदीके तीरविषे वैद्यनाथहरि नामकर्के प्रसिद्ध जो स्थान है २१ तैसे और बेंकटाद्रि २२ और स्वर्णमुखी २३ और कालहस्तीश्वर २४ और तैसे साक्षात् वरद राजहैं जो स्वयंभू ब्रह्माका वरस्वरूप हैं २५ और तैसे एकाम्रनामकर्के लिंग संपूर्णतीर्थी विषे श्रेष्ठ २६ और मध्यार्जुनेश पापांके नाश करने वाला २७ और कुम्भकोण वडाआश्रय २८ और श्रीरंग महाक्षेत्र २९ और इसी परे जंबू नाममहाक्षेत्र ३० और कावेरी पापांके नाश करने वाली ३१ अब मथुरा विषयविषे जो तीर्थहैं तिनकों भ्रवणकर ॥ सुंदरेश १ और सुंदरेशकी पत्नीका स्थान २ और तैसे उग्रवती नदी ३ और तिसीस्थान आशिकोण विषे गंधमादनपर्वत ४ और रामलिंग ५ और धनुःकोटी संपूर्ण तीर्थीकर्के युक्त ६ और तैसे दर्भशमन ७ और तिसीस्था

पिनाकिनीनदी तीरेवैद्यनाथहरितथा २१ वेंकटाद्रि २२ स्वर्णमुखी २३ कालहस्तीश्वरं तथा २४ साक्षाद्वरदराजचवरभूतस्वयंभुवः २५ एकाम्रचतथालिंगं सर्वतीर्थमहत्तरम् २६ मध्यार्जुनेशपापघ्नं २७ कुम्भकोणतदद्भुतम् २८ श्रीरंगं वामहाक्षेत्रं २९ जंबूनामह्यतःपरम् ३० कावेरीपापजालघ्नी ३१ मथुराविषये शृणु । सुंदरेशच १ तत्पत्नीं २ तथैवोग्रवतीनदीम् ३ तत्राग्नेयदिग्भागेपर्वतो गंधमादनः ४ रामलिंगं ५ धनुःकोटीं सर्वतीर्थदरिष्कृतां ६ तथैवदर्भशमनं ७ तत्रपंपामहत्सरः ८ ताम्रपर्णीमहाक्षेत्रं ९ तत्रत्याविष्णुदेवता १० अनंताख्यंरामक्षेत्रं ११ कौडिन्योयत्रभाग्यवान् जनार्दनंमहाक्षेत्रं १२ गोकर्णपापनाशनम् १३ तथाहरिहरक्षेत्रं सुब्रह्मण्यंमहत्तरम् १४ एता निपुन्यक्षेत्राणिदृष्ट्वापापहराणिच नरीरंगीमुखजोयस्तु एतेषामेकमेववा नस्त्रायाद्धानपश्येद्वाकौन्यस्तस्मादचेतनः ॥

न पंपामहासर ८ और ताम्रपर्णी महाक्षेत्र ९ और तिसी स्थान विषे विष्णुमूर्ति १० और अनंतहैं नाम जिसका श्रेष्ठ गणक्षेत्र ११ जिसस्थान विषे कौडिन्यऋषि भाग्यकों प्राप्त होता भया और जनार्दन महाक्षेत्र १२ और गोकर्णतीर्थहैं पापांके नाशकरने वाला १३ और तैसे हरिहरक्षेत्र जो अतिशय कर्के ब्रह्मण्यहैं बहुत श्रेष्ठ १४ एह जो पुण्यक्षेत्रहैं सो दृष्टि विषये प्राप्त होणेंनहि पापांके नाश करने वाले हैं जो ब्राह्मण गंगतें रहितहैं और इनां तीर्थी और क्षेत्रांके मध्य विषे एक तीर्थ विषे भीस्नान नहि कर्ता और दर्शन नहि कर्ता तिस से परे कोण अचेतनहैं अर्थात् सोई ब्राह्मण पर्यटके तुल्य हैं

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ६५

धर्मेति धर्मते रहित जो पुरुषहै और कर्मते हीन जो पापपुरुषहै तिसका जन्म अजा क्या वक्र
रीके गलविषे जो स्तन तिसकी न्याईव्यर्थहै ॥ १ ॥ जो पुरुष जन्म दिनते लेके सठ ६० वर्षकी
आयुपर्यंत वर्तताहै और तिनां वर्षीके मध्य विषे श्रीशैल कहणे कर्के श्री
शैल और चापाग्र और वेंकटाचल और वदरी और श्रीरंगनाथ ते आद लेके जो हैं इ
नांका ग्रहण करणा इनांका जो नास्तिकता कर्के दर्शन नहि कर्ता सो पुरुष संपूर्ण
पापांको भोगके पीछे गर्दभ योनिकों प्राप्त होताहै एह वाक्य वामन पुराण विषे कहा
है ॥ २ ॥ तिसीको मरीचिकृषि कहताहै ॥ श्रीति श्रीशैल और वेंकटाद्रि और कांची और

स्मृत्यंतरे । धर्महीनस्य मर्त्यस्य कर्महीनस्य पापिनः अजागलस्तनमिव तस्य
जन्मनिरर्थकम् ॥ १ ॥ यो मर्त्यो जन्मदिवसात्षाष्टिवर्षाणिवर्तते न पश्येद्यदि
श्रीशैलतन्मध्ये स तु गर्दभः ॥ २ ॥ जन्मेति स्वजन्मदिवसादारभ्य षष्टिवर्षमध्ये
श्रीशैलचापाग्रवेंकटाचलवरदराजश्रीरंगनाथादिकं नास्तिकतया न पश्येत्
न दर्शनार्थं तिष्ठेत्सर्वपापभोगानन्तरं गर्दभो भवेदिति वामनपुराणेश्रवणा
त् तदाह मरीचिः ॥ श्रीशैलवेंकटाद्रिचकांचीं श्रीरंगनायकम् रामेशचधनुः
कोटिस्वभावात्षष्टिवर्षगः ॥ १ ॥ न पश्येन्नास्तिकतया गर्दभो भुवि जायते त
स्यैव निष्कृतिर्नास्तिकच्छात्सांतपनादृते ॥ २ ॥ बृहस्पतिः ॥ पुण्यालया
न्पुण्यनदीर्न पश्येत्षष्टिवर्षगः महातनरकंगत्वापश्चाद्रासभतां व्रजेत् ॥ १ ॥

श्रीरंगनायक रामेश और धनुःकोटि इनांका जो पुरुष अपने जन्मते लेके सठ ६० वर्ष
की आयु तक नहि दर्शन कर्ता नास्तिक स्वभाव कर्के सो भोगते अनंतर पृथ्वी विषे
गर्दभ जन्मकों प्राप्त होताहै तिसके पापकी निवृत्ति कच्छ सांतपन व्रतते विना नहि होता क्या
कच्छ सांतपन व्रत कर्के पापते शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ अब बृहस्पतिजीका वचनहै ॥ पुण्येति दर्शन
करणे कर्के पापांके दूर करणे वाले जो पुण्य देवतांके स्थान और पवित्र जो नदीयां तिनांकों
जन्मते लेकर सठ ६० वर्षीकी आयु तक न देखे सो पुरुष बड़े नरकों भोगकर पीछे गधेके
जन्मकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

६६ ॥ श्रीरणवैर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

तस्येति तिस्रोपके दूरकरणे वास्ते कृच्छ्र सांतपन व्रतकों करे पाँछे पंचगव्यकों पीवे तो इस दोषने रहित होता है ॥ २ ॥ तिसके विधानकों देवल ऋषि कहता है ॥ दिन दिन प्रति माहकादाणा जिसविच छपजावे इतने दुग्धकों वारां १२ दिनतक पीवे तां योगियांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि है तिसकों प्राप्त होता है ॥ १ ॥ प्रजापतिका वचन है ॥ पूर्वेति पूर्वकी न्याई प्रातःकाल तें लेके स्नानकों कर्के और संकल्पकों कर्के नित्यकर्म जाणकर पूवं कहा जो विभूत्यादि है तिसका मनकर्के स्मरण करे ॥ १ ॥ और जिसकाल सूर्यका तेज मंदहोवे तिस समयविषे आदर वश भक्ति कर्के विष्णुके ताँडे नैवेद्यदे कर्के माहकादाणा जिस विषे डूवे एतने मात्र दूधकोंव्रती

तस्यदोषोपशांत्यर्थकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् पंचगव्यंपिवेत्पश्चाद्दोषादस्मात्प्रमुच्यते ॥ २ ॥ तद्विधानमाहदेवलः ॥ प्रत्यहंमापमग्नंचद्वादशाहंपयःपिवेत् शुद्धिमाप्नोति राजेन्द्रयोगिनामपि दुर्लभाम् ॥ १ ॥ प्रजापतिः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यस्नानं संकल्पमेव च नित्यं कर्म तया कृत्वा पूर्वोक्तं मनसा स्मरन् ॥ १ ॥ विभूत्यादिकमित्यर्थः ॥ यावन्मंदायते भानुस्तावद्यो दुग्धमादरात् विष्णवे तन्निवेद्याथ मापमग्नं पिवेद्व्रती २ स्वपेदेव समीपेतुं गंधतां वृलवर्जितः ततः प्रभातवेलायामेकं कृत्वामहद्व्रतम् ॥ ३ ॥ द्वादशाहोभिरेतैश्च शुद्धो भवति पूर्वजः पंचगव्यंपिवेत्पश्चात्सांतपनं मुनिसंमतम् ॥ ४ ॥ अथ सांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह देवलः ॥ प्रत्याम्नायं प्रवक्ष्यामि कृच्छ्रस्यैतस्य पापहम् सर्वपापोपशमनं सर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥

पुरुष पीवे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे और सुगंधी और तांबूलका ग्रहण न करे तिस कारणतें प्रभात समय विषे वारां दिना कर्के होणेवाला जो वडा पवित्रव्रत तिस एकहि व्रतके करणे करके ब्राह्मण शुद्ध होता है और पाँछे पंचगव्यकों पीवे एह सांतपन व्रत मुनियां विषे संमत है ॥ ४ ॥ इसतें अनंतर सांतपन कृच्छ्र व्रतके स्थान जो बदला तिसकों देवल ऋषि कहता है ॥ इस कृच्छ्र व्रतके बदलेको कहता हों कैसा बदला है पापके दूरकरणे वाला और सब पापोंके नाश करणे वाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतोंके फल देणेवाला ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ६७

और फेर कैसाहै महापापांके नाश करणे वाला और धर्म कामअर्थकी सिद्धि देणे वाला और एह कच्छ सांतपनका प्रत्याम्नाय बडाहै तेजजिनांका ऐसे जो व्यास तिनाने पूर्व कृष्ण देवकेताई कहाहै ॥ २ ॥ जो पुरुष पर धनके चुराणे वाले और परस्त्री वां विषे प्रीति करणे वाले और जो मदिराके पीणे वाले और जो नहि भोगणे योग्य भगिनी आदि स्त्री तिनाने विषे गमन करणे वाले ॥ ३ ॥ और जो पुरुष नास्तिक शास्त्र विषे प्रीति वाले और दुष्ट दानके ग्रहण करणे वाले और असत्यवाणी कहणे वाले और मित्रांका आपस विषे विरोध पाणेवाले ॥ ४ ॥ और दीपके बुझाणे वाले और शीशेके तोड़न वाले अथवा व्यत्यय करण वाले क्या एकको उठायके दूसरे को बहाण वाले जो

महापापप्रशमनधर्मकामार्थसिद्धिदं व्यासेनकथितंपूर्वकृष्णायामिततेजसा २ परस्वहारिणोयेचपरदाररताश्रये मद्यपानरतायेच अगम्यागमनाश्रये ३ असच्छास्त्ररतायेचयेचदुष्टप्रतिग्रहाः मिथ्याभिभाषिणोयेचयेचमित्रविभेदिनः ॥ ४ ॥ दीपनिर्वापिनोयेचयेचमंडलभेदकाः मंडलेतिआदर्शभंजकाः स्थानव्यत्ययकारकार्षेय्यर्थः ॥ दिवाकपित्थछायासुरात्रौचलदलेपुच ॥ ५ ॥ तमालवृक्षछायासुरात्रौवायदिवादिवा गच्छतांपापनाशायप्रत्याम्नायोमहत्तरः ॥ ६ ॥ सदानिष्टुरवक्तारः सदायाज्ञचापरायणाः परात्रनिरतायेच नित्यकर्मविरोधिनः ७ एषांचैवंविशुद्धिः स्यात्प्रत्याम्नायः परात्परः ॥ गौतमः ॥ सांतपनस्यैवकच्छस्यप्रत्याम्नायोमहत्तरः सर्वालंकारसंयुक्तोगवां दशमहोन्नतइति ॥ १ महोन्नतअतिपुष्टोमोदशकगणः

पुरुष दिनविषे कपित्थ वृक्षकी छाया विषे और रात्रि विषे पिप्पलकी छाया विषे जानेवाले ॥ ५ ॥ और रात्रि विषे अथवा दिन विषे तमाल वृक्षकी छाया विषे प्राप्त होनेवाले जो पुरुष तिनाने पाप दूर करणे वास्ते बहुतश्रेष्ठ प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ ६ ॥ और जो पुरुष सदा कठोर वाणीके कहण वालेहैं और सदा याचना विषे युक्तहैं और जो सदा पराने अपनेके भक्षण करणे विषे युक्तहैं और जो नित्य कर्म जो संध्या वेदनादि निसके त्यागको करेहैं उनको इस प्रकार प्रत्याम्नाय कर्के शुद्धि होतीहै एह प्रत्याम्नाय श्रेष्ठभी श्रेष्ठ कहाहै ॥ ७ ॥ गौतम जीका वाक्यहै सांतपन कच्छ वनका प्रत्याम्नाय श्रेष्ठ कहाहै और अतिशय कर्के पुष्ट और संपूर्ण भूषणों कर्के युक्त संख्या कर्के दश १० गोवा वाहणाके तांडे देवे इति ॥ १ ॥

६८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र • ५ ॥ टी • भा • ॥

अथेति इसते अनंतर महासांतपनव्रतकों याज्ञवल्क्यऋषि कहताहै पृथगिति पंचगव्य और कुशा काजलएह जो छे ६ द्रव्यहैं गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृत और कुशोदक इनां कों क्रमककें छे ६ दिनभक्षणकरे और अंतविषे उपवासव्रतकरे तां सचां ७ दिनांककें महासांतपन कृच्छ्रव्रतकहाहै १ और यमजीने पंदरां १५ दिनांककें करणयोग्य महासांतपनकहाहै सो दखाईं दाहै अथमिति त्रय दिन गोमूत्र पीवे और त्रय दिन गोमयपीवे और त्रय दिन दधि पीवे और त्रय दिन दुग्ध पीवे और त्रय दिन घृत पीवे इहां कुशोदक नहीं कहा इस करणे ककें शुद्ध होताहै

● अथमहासांतपनारूयव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः पृथक्सांतपनंद्रव्यैः षडहः सोपवासकः सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयंमहासांतपनः स्मृतः ॥ १ ॥ द्रव्यैः पंचगव्यकुशोदकैः पृथक्प्रतिदिनंसेवितैः महासांतपनं भवति अस्यदिवसमर्यादांदर्शयतिसोपवासकः षडहइतिसप्ताहसाध्यइत्यर्थः ॥ १ ॥ यमेनतुपंचदशाहसाध्योमहासांतपनोऽभिहितः ॥ अहंपिवेतुगोमूत्रंअहंवैगोमयंपिवेत् अहंदधिर्यहंक्षीरंअहंसर्पिस्ततःशुचिः महासांतपनं ह्येतत्सर्वपापप्रणाशनमिति जावालिनतु एकविंशतिरात्रनिर्वर्त्यैः महासांतपनउक्तः षण्णामेकैकमेतेषां त्रिरात्रमुपयोजयेत् अहंचोपवसेदंत्यंमहासांतपनंविदुरिति ॥ १ ॥ यदातु षण्णांसांतपनद्रव्याणामेकैकस्यद्वयमुपयोगस्तदाऽतिसांतपनम् ॥

एह महासांतपन संपूर्ण पापोंके नाशकरणे वालाहै इति १ जावालऋषिनें इकीस २१ दिनककें महा सांतपन कहाहै छे ६ जो द्रव्यहैं गोमूत्रनें आदलेके तिनां विचों एक एक द्रव्यकों त्रय त्रय दिन भक्षण करे और अंत विषे त्रय दिन उपवास व्रत करे इसकों महासांतपन कहतेहैं इति ॥ १ ॥ जद फेर छे ६ जो महासांतपन विषे द्रव्य कहेहैं गोमूत्रने आदलेके कुशोदकतक तिनां विषे एक एक द्रव्यको दो दो दिन भक्षण करे ता अतिसांतपन व्रत होताहै ॥

जैसे बमराजजी कहते हैं एह जो गोमूत्रयी आदलेके पंचगव्यके द्रव्य हैं तिनां विषे एक एकको दो दो दिन पीवे तिस व्रतका नाम अतिसांतपन कहा है पाप कर्के चांडालके तुल्य भी जो पुरुष है तिसको भी शुद्ध करता है ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचन है महासांतपन नाम कर्के जो कच्छू व्रत है सो संपूर्ण फलके देणे वाला है इस विषे प्रसंग है पूर्व आप इंद्र गौतमजीकी स्त्रीको प्राप्त होता भया ॥ १ ॥ तिस महापापकर्के सो दोषको प्राप्त होया होया वृक्षके मूल क्या मुंडपास बड़ी भावना कर्के स्थित होया अर्थात् बड़ी चिंता कर्के युक्त हुआ अथवा वृद्धभाव नाम वृद्धावस्थाका है पाप कर्के बुढ़ा हो गया एह अर्थ है ॥ २ ॥ तद वरके देणे वाले गरुडके ऊपर असवार होए होए भक्ताके प्यारे विष्णु इंद्रको देखकर दया

यथाहयमः। एतान्येव यथापेयादेकैकंतुद्वहंद्वहं अतिसांतपनं नाम श्वपाकम
पिशोधयेदिति ॥ १ ॥ देवलः । महासांतपनं नाम कच्छू सर्वफलप्रदं पुरा पु
रंदरः साक्षाद्गौतमस्य सर्ती व्रजन् ॥ १ ॥ तेन पापेन महता सपापफलदूषितः
वृक्षमूलमुपागम्य वृद्धभावमुपाश्रितः ॥ २ ॥ तदा प्रसन्नो वरदश्चक्रपाणिः स
वाहनः दृष्ट्वा पुरंदरं प्राह दयया भक्तवत्सलः ॥ ३ ॥ एतत्पापविशुद्ध्यर्थं महासां
तपनं चरु गुरुदाराभिगामी च चंडाली गमनं चरन् ॥ ४ ॥ स्वसारंतु समाग
म्य भगिनीयः प्रधर्षयन् ॥ ४ ॥ स्वसृभगिन्योस्स्वोदरभिन्नोदरत्वेन भेदइ
त्यर्थः प्रधर्षयन्निति कामुकत्वेन वलादभिगच्छन्नित्यर्थः । चरेद्वारजकी गामी
ग्रामचंडालदारगः ॥ विप्रश्चांडालदारे पुचरेत्तास्मिन् द्विजाधमः ॥ ५ ॥

कर्के कहते भये ॥ १ ॥ हे इंद्र इस पापको शुद्धि वास्ते महा सांतपन व्रतको तूकर जो पुरुष
गुरांकी स्त्रीके साथ गमन कर्ता है और चांडाली साथ गमन कर्ता है ॥ ४ ॥ और भगिनोके साथ
गमन कर्ता है और अपनी दूसरी माताकी कन्याके साथ गमन कर्ता है (प्रधर्षयन्) इसका
अर्थ एह है कि कामनातें बलकर्के जो भोगता है ॥ वा छीवेकी स्त्रीके साथ गमन करे
और ग्राम विषे रहने वाला जो चंडाल तिसकी स्त्रीके साथ जो गमन करता है
और ब्राह्मण होकर चंडालकी स्त्री विषे जो गमन कर्ता है असा पापी भी तिस महा
सांतपन व्रत कर्के शुद्ध होता है ॥ ५ ॥

७० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

और इनां पापांको शुद्धि करणे वाला महासांतपन ब्रतहि है हेराम एह देवलजी का वचन है और असत्यवाणी कहणे विषे जो पाप है और पापी पुरुषके साथ बोलणे विषे जो पाप है ॥ ६ ॥ और किसे पुरुष कर्के दिन्नी होई कोइ वस्तु तिसके खोलयणें विषे जो पाप और आप ही देणी आपही लय लेणी तिस विषे और जो रुधिरके पीण वाला है रुधिरपान इसजगा मंत्रसाधनादि विषे जानणा और जो सदा औषधोके करणे वाला है अर्थात् द्रव्यके लोभ कर्के नोरोगकोंभी औषधिकर्के रोग बाला कर देता है ॥ ७ ॥ और सदाहि प्रातःकालविषे और संध्याकालविषे और तैसे देवताके पूजने विषे जो पाखंडहि कर्ता है अैसेहि जो ब्राह्मण है और तुलादानकों लेके जिसने प्रायश्चित्त नहि कीता ॥ ८ ॥ अैसे को कर्म काल विषे स्मरण न करे और नादेखे पतितजाण कर्के अथवा और

तस्मिन्सांतपनेचरेत्प्रवर्त्ततइत्यर्थः एतेषां निष्कृतीराममहासांतपनं परमं असत्यभाषणे पापमसत्यानां च भाषणे ॥ ६ ॥ परदत्तापहारे च स्वदत्तापहरे तथा ॥ असृक्पानरते चैव सदा भैषज्यवर्त्तिनि ॥ ७ ॥ प्रातःकाले सांध्यकाले तथा देवार्चने यदि पाखंडयति तं ब्राह्मणं तुलास्वकृतनिष्कृतिम् ॥ ८ ॥ न स्मरेत्कर्मकालेषु न पश्ये द्वैकदा च न एतेषां पापराशीनां महासांतपनं परम् ॥ ९ ॥ तुलास्वकृतनिष्कृतिम् तुलादानं गृहीत्वा ऽकृतप्रायश्चित्तमित्यर्थः । गालवः ॥ द्विदिनं समुपोष्यैव द्विदिनं पूर्ववत्पथः पूर्ववन्नियमं कृत्वा द्वादशाहेन शुद्ध्यति ॥ १ ॥ पराशरः । मापमग्नं पिवेत्क्षीरं द्विदिनं समुपोष्येत् एवं कुर्याद्द्वादशाहं पूर्ववन्नियमाश्रितः ॥ १ ॥

शुभ कर्मके करणे योग्यकाल विषे विष्णुकों जो नहि स्मरण करदा और कदोभी देव मूर्तियों नहि देखता अैसे जो महापापी हैं तिनं पापांके समूहकों दूरकरणे वाला महासांतपन ब्रतहि कहा है । १ ॥ अब गालव ऋषिका वचन है द्वीति दो २ दिन उपवास ब्रत करे और दो २ दिन दुग्धपीवे पूर्ववत् कथा गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत इनांको दोदोदिन पीवे पीलेकी न्याई नियमकरे इस प्रकार वारा १२ दिनांके ब्रत कर्के शुद्ध होना है ॥ १ ॥ अब पराशर जीका वचन है माषेति मांहाका दाणा जिस विषे छपे अैसे दुग्धको दो २ दिन पीवे पूर्वकी न्याई गोमूत्र आदिक पीकर दोदिन उपवासब्रत करे सो पूर्वकी न्याई नियमकों आश्रयकर्ता होया वारा १२ दिनांके ब्रतकों करे ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ ७१

श्रव मनुजीका वचनहै पूर्वति पूर्वकी न्याईं प्रातः कालतें लेके स्नान आदि नियमकों करे और सो द्विज जद सूर्यकीयां किरणां मंदतेजवालीयां होण तिसकाल विषे नियमकों त्यागता हुया ॥ १ ॥ दो २ दो दिनके कमकके गोमूत्र आदिकों पीदा होया माषमग्न दुग्धकों विष्णुके ताई नैवेद्य लाकके दोदिन पोवे और दो दिन उपवास व्रत करे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे इस प्रकार वारां १२ दिनांके व्रत कके शुद्धिकों प्राप्त होताहै दो दिन है उपवास जिस विषे और दो दिन है दुग्ध पान जिस विषे ऐसा महासांतपन व्रत है ॥ ३ ॥ इसतें उपरंत महासांतपन कच्छव्रतके प्रत्याम्नायकों देवलऋषि कहताहै महासांतपन कच्छके प्र

मनुः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यद्विजोनियमपूर्वकम् यदामंदायतेभानुस्तदानि यममुत्सृजन् ॥ १ ॥ माषमग्नपिवेत्क्षीरंविष्णवेतुनिवेदितम् दिनद्वयंपयः पीत्वाद्विदिनंसमुपोषयेत् ॥ २ ॥ स्वपेच्चपूर्ववदेवसमीपेव्रतमाचरन् एवंद्वादशरात्रंचकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥ दिनद्वयमुपोषणंदिनद्वयंपयो भक्षः एवंक्रमेणद्वादशाहसाध्यंमहासांतपनम् ॥ अथ महासांतपनकच्छ प्रत्याम्नायमाहदेवलः । महासांतपनकच्छस्यप्रत्याम्नायंशृणुष्वमे यदा चरणमात्रेणविप्रःपापात्प्रमुच्यते ॥ १ ॥ महाराजविजये । महासांतप नस्यास्यप्रत्याम्नायोमहानयम् कच्छस्यैतस्यविहितंकर्तुंसर्वमशक्तिमान् ॥ १ ॥ मानवोऽयंप्रकुर्वीत सर्वकच्छफलाप्तये गावोदेयाःप्रयत्नेन विप्रे भ्यःषोडशामलाः ॥ २ ॥ अलंकृताःसुपुष्पाद्यैर्वस्त्राभरणभूषिताः सुशो लाश्चपयास्विन्यःसवत्साःपापहारिणीः ॥ ३ ॥

त्याम्नायकों मेरेथीं श्रवणकर जिसके करणेंहैं ब्राह्मणपापतें रहित होताहै ॥ १ ॥ महाराज विजय ग्रंथ विषे कहाहै महासांतपनका प्रत्याम्नाय एह महाफलके देणे वालाहै इस कच्छके करणे विषे सामर्थ्यते रहित जो पुरुष है सो संपूर्ण कच्छ व्रतके फलकी प्राप्ति वास्ते सोलां १६ गां वां यत्नकके ब्राह्मणकेताई देवे ॥ २ ॥ कैसीयां गौयां जो पुष्पांके और वस्त्रांके और भूषणां कके युक्त हैं और सुशीलाहैं और सहित वस्त्रांके हैं और दुग्ध देणे वालीयां हैं और पापांके नाश करणे वालीयांहैं ॥ ३ ॥

७२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

पराशरजीका वचन है मनेति बुद्धिमान् जो ऋषि हैं सो महासांतपन व्रतके रथान तुल्य फलके देणे वाले प्रत्याम्नायकों कहते हैं सोलां १६ गौयां वस्त्रां कर्के श्रीर भूराणां कर्के युक्त दुग्धदेणे वालीयां सहित वृक्षयांके साधु स्वभाववालीयां उत्कृष्ट सुखकी प्राप्ति वास्ते ब्राह्मणांके ताई देवे एह प्रत्याम्नाय तुल्य फलके देणे वाला कहा है ॥ २ ॥ इसते उपरंत अतिरुच्छ्रवतकों मनुजी कहते हैं एकैकमिति एक एक ग्रासकों पूर्वकीन्यांइं त्र्यहानि त्रीणि क्या नौ १ दिन खावे और अंत्य विषे त्रय दिन उपवास करे ऐसे दिज अतिरुच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचन है अतोति अतिरुच्छ्रवतकों कहताहां कैसा व्रत है संपूर्णपापांके दूरकरणे

पराशरः । महासांतपनस्यास्यप्रत्याम्नायंविदुर्बुधाः गावःषोडशविप्रेभ्यो देयाः सम्यक् सुखासये ॥ १ ॥ अलंकृताश्चवस्त्राद्यैः पयस्विन्यः पृथक्पृथक् ॥ सवत्साःसाधुशीलिन्यः प्रत्याम्नायउदीरितः ॥ २ ॥ अथातिरुच्छ्रमाह मनुः ॥ एकैकं ग्रासमश्नीयात्त्र्यहाणि त्रीणि पूर्ववत् ॥ त्र्यहं चोपवसेदंत्यमतिरुच्छ्रं चरन्विजः ॥ १ ॥ देवलः ॥ अतिरुच्छ्रं प्रवक्ष्यामि सर्वपापोपशांतिदम् सर्वरुच्छ्रप्रदं दृष्ट्वांशुराजन्प्रयत्नतः ॥ १ ॥ अतिरुच्छ्रस्यमाहात्म्यं वर्णितुं केन शक्यते पुराहिकौशिको नाम ऋषिर्धर्मपरायणः २ ॥ वसिष्ठात्मजघाती स्यात्तस्मात्कारणतः प्रभो तेषां हत्या विनाशार्थं रुच्छ्रमाह प्रजापतिः ॥ ३ ॥ ब्रह्महत्या गुरोर्हत्या भ्रूणहत्या महत्तरा कन्याहत्या शिशोर्हत्या तथा तेषां महत्यपि ॥ ४ ॥ वीरहत्या धेनुहत्या गजाश्वमहिषीवधः ॥

वाला और पुरुषांकों संपूर्ण रुच्छ्र फलके देसे वाला है हेराजन् इसकों यत्नतें श्रवणकर ॥ १ ॥ अतिरुच्छ्रमाहात्म्यके कहणेकों कौण समर्थ होता है इस विषे प्रसंग है पूर्व धर्मात्मा विश्वामित्र नाम ऋषि वाशिष्ठके पुत्रांकों मारताभया तिस कारणतें हे प्रभो तिनां बालकांकी हत्याके दूरकरणे वास्ते तिनकों प्रजापति ब्रह्मा अतिरुच्छ्र व्रत कहता भया ३ ॥ ब्रह्महत्याका पाप और गुरांकी हत्या और गर्भकी हत्या जो बड़ी है और कन्याकी हत्या और बालककी हत्या तिनांकी जो बड़ी हत्या ॥ ४ ॥ और वीरकी हत्या क्या शूरेमकी हत्या और प्रसूत होई होई गौकी हत्या और हाथी और घोडा और महिषी इनांका मारणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ७३

बास और काष्ठ और वृक्षांका कटणा और खेती और वाग इनांका कटणा ५ और तला मूआ और जलके स्थान तिनांका और वेदशालाका नाशकरणा और गृहका दाहकरणा और ब्राह्मणके क्षेत्रविषे किसे शूकरादिको मारणा ऐसा जो पाप तिसको वधाणा ६ और अन्नके स्थानांका दाहकरणा और महिषी और गौ इनांका दाहकरणा और शृंगका भक्षण और पुच्छका कटणा तैसे तिनांको विमर्दन कंया स्वस्तीकरणा ७ और तोता और विर्वीया और सर्प और मच्छ और हंस और कुत्ता और कुकुड और काक तिनांका मारणा और वनके मृगांका मारणा ८ और गृहके दरवाजेको भक्षण और पात्थरांका भक्षण और वनके पत्रांका साडना जो गिछे पत्र हैं हेराजन्

तृणकाष्ठद्रुमच्छेदः सस्यारामादिच्छेदनम् ॥ ५ ॥ तटाककूपकासारभेद
नैवेदयेशमनाम् गृहदाहोद्विजक्षेत्रमारणं पापवर्द्धनम् ॥ ६ ॥ धान्यारामा
दिदहनं दाहनं महिषीगवाम् शृंगलांगूलविच्छेदस्तथा तेषां विमर्दनम् ॥ ७
शुकचापभुजंगानां मीनहंसशुनामपि कुक्कुटानां च काकानां हिंसनं मृगमार
णम् ८ ॥ दारुच्छेदः कपाटस्य पात्राणानां विभेदनम् दाहनं वनपर्णानामाद्रा
णामिह भूमिषु ॥ ९ ॥ सर्वासामेव हिंसनामतिकृच्छ्रं विशोधनं सर्वकृच्छ्रप्र
दं चैव सर्वोपद्रवनाशनम् ॥ १० ॥ गालवः ॥ अतिकृच्छ्रस्य महतः प्रकार
मिह चोच्यते व्रतमात्रेयवान् शुभ्रान् श्यामाकारं तंडुलानपि १ एकद्रव्यं स
मादाय व्रतादौ पूर्ववच्चरेत् भागत्रयं तदा कृत्वा तंडुलान् पूर्वमानतः ॥ २ ॥

॥ १ ॥ संपूर्ण हिंसाके जो पाप हैं तिनांके शुद्धिके देणें वाला अतिकृच्छ्र व्रत कहा है और एही
संपूर्ण कृच्छ्र व्रतके फलको देणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाश करण वाला है ॥ १० ॥
अब गालव ऋषिका वचन है ॥ अतीति अतिकृच्छ्र जो बडा व्रत तिसका प्रकार दहां कहा है व्रत
मात्रविषे कहे जो यत्र सो श्वेत जानणे अथवा श्यामा की क्या सांख अन्नविशेष है तंडुलसो प्रसिद्ध
है १ इनां विषे एकद्रव्यको ग्रहण करे व्रतके आदि विषे पूर्व की न्यायें स्नान संध्यादि और ब्रह्म
चर्य करे और पीछे कथन कीया जो प्रमाण तिसी प्रमाण कर्के तंडुलादिकों ग्रहण करे
और तिसके तीन १ भाग करे ॥ १ ॥

७४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र • ५ ॥ टी • भा • ॥

एक भागकों व्रतके आद विषे और दूसरे भागकों व्रतके मध्य दिनां विषे और तीसरे भागको व्रतके अंत विषे ग्रहण करे आद मध्य अंत विषे त्रय त्रय दिन जानणे तां प्रथम भाग के तीन आस करेतां आदके तीन ३ दिन एक एक आस भक्षण करे पूर्वरातिसे और स्नान आदि व्रतके नियमपूर्वकी न्याई करे ॥ ३ ॥ और संपूर्ण दिनांके चतुर्थ कालविषे हस्तपादोंको शुद्धकर्के अंगांको जलसे स्पशेकर और नारायण विषे मनको लगाकर देवताके समीप शयन करे ॥ ४ ॥ और प्रातः कालविषे पूर्वकी न्याई निर्मलहोकर संध्यादिकर्म करे इसीतरां तीन ३ दिनांके पीछे त्रय दिन निराहार रहे ॥ ५ ॥ जैसे छे ६ दिन व्रतका आद कहाहै इसीतरां छे ६ दिन मध्यके और छे दिन व्रतके अंतके तां अठारां १८ दिन व्रतके सिद्ध होये १ और व्रतके अंतविषे एक गौब्राह्म

व्रतादौ मध्यदिवसे व्रतान्ते च दिनत्रयम् व्रतादौ भक्षयेद्ग्रासं पूर्ववद्ब्रतमाचरे
तत् ३ ॥ चतुर्थकाल आयाते प्रक्षाल्यांगानि पूर्ववत् स्वपेदेव समीपे तु नारायणप
रायणः ४ ॥ ततः प्रभाते विमलः संध्यादीन् पूर्ववच्चरेत् निराहारस्तथा भूत्वा
यावत् प्राप्तं दिनत्रयम् ॥ ५ ॥ तत्रैव भक्षयेद्ग्रासं द्वितीयादौ विचक्षणः तत्रा
पि पूर्ववत् कृत्वा द्वादशे दिवसे शुभम् ॥ ६ ॥ तृतीये तथैव भुक्त्वा गौरेका विप्र
सात्कृता ब्रह्मकूर्चं ततः पश्चात् शुद्धिमाप्नोति पूर्वजः ॥ ७ ॥ अतिकृच्छ्रमि
दं सवेमुक्तं मुनिभिरादरात् एतस्याचरणे नैव सर्वदोषात् प्रमुच्यते ॥ ८ ॥ अत्रा
यमभिप्रायः ॥ पूर्वमानत एकैकं ग्रासमण्णीयादित्युक्तमानतो भागत्रयम्
५८ त्रयं कुर्यात् ततश्चाष्टादशदिनसाध्यता जाता

एके तांई देवे इसको मूलकार फेर प्रकट कर कहतेहैं टीकाकारने इहांई स्पष्ट कह दियाहै और पीछे ब्रह्म कूर्च करे तां ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ एह अतिकृच्छ्र संपूर्ण मुनियोंने आदित्त कहाहै इसके करणें पुरुष संपूर्ण दोषांतें रहित होताहै ॥ ८ ॥ इस विषे एह अभिप्राय है पूर्वन्याते (एक एक ग्रासकों भक्षण करे त्रय दिन तक और चौथे दिन उपवास करे इस रीतिसे तीन आवृत्ति करणे कर्के १२ दिन साध्यता व्रतकों होईथी और इस विषे ग्रासका मान आमलके बराबरहै एह पीछे किहाहै ॥ इस उक्त मानतें ओ भागत्रयहै चार दिनां कर्के सो छे दिनेके करे तां इसका नियम अठारां दिनां कर्के सिद्ध होया ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ७५

तिसका प्रकार व्रतादौ इत्यादि कर्के कहाहै पूर्व त्रय दिन विषे त्रय ग्रास भक्षण करे । और त्रय दिन उपवास करे फेर । ऐसेहि त्रय दिन विषे त्रय ग्रास भक्षण करे और त्रय दिन उपवास करे ऐसे समाप्ति तक करे इस विषे अतिकष्ट होंएते महा अतिकृच्छ्र नाम इसका है और अगले श्लोकसे जाणीदाहै कि सर्वाति कृच्छ्र भी इसकानाम होवैगा द्वितीया द्वे दूसरे छकेविषे तृतीये क्या तीसरेछके विषे तृतीयेत्य इस विषेसंधि आपहै क्या ऋषिके मुखसे इस वचनका उद्गम है सो सर्वज्ञ ये इसकर्के एह निर्दाषहै जो याज्ञवल्क्यजीका वचनहै एहहि राजा पत्य कृच्छ्र एक भक्त क्या दूसरे पहर विषे २२ ग्रास भक्षण करणे और दूसरे दिन नक्त व्रत विषे १२ वारां ग्रास भक्षण करणे और तीसरे दिन अयाचित दिनके २४ ग्रास

तत्प्रकारोव्रतादावित्यादिना पूर्वं त्रिदिनं ग्रासत्रयंभुक्त्वा त्रिदिनमुपवासः पुनरेवंयावत्समार्तीत्यतिकष्टदायित्वान्महातिकृच्छ्रसंज्ञा । द्वितीयाद्वेद्वि तीयषट्के तृतीयेतृतीयषट्केइत्यर्थः ॥ तृतीयेत्यमित्यत्रसंधिरार्पः ॥ यत्तु याज्ञवल्क्यः अयमेवातिकृच्छ्रः स्यात्पाणिपूरान्नभोजनइति अयमेवप्रा जापत्यकृच्छ्रएकभक्तनक्तायाचितदिवसेषु पाणिपूरान्नभोजनयुक्तोऽतिकृ च्छइत्यर्थः तदेतदशक्तविषयम् पाणिपूरान्नस्यग्रासान्नापेक्षयाधिकत्वात् ॥
● अथातिकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः अतिकृच्छ्रस्यसर्वस्यप्रत्याम्नायोमनी पिभिः प्रोक्तःसर्वहितार्थायसर्वपापप्रणाशनः ॥ १ ॥ संकलीकरणानां चकन्याधेन्वादिविक्रये तिलतंडुलधान्यानांफलानांरसविक्रये महापा तकभीतानांशोधनंपापनाशनम् ॥ २ ॥

भक्षण करणे इनांकी जगा एक हत्यका प्रसूति, परिमाण अन्न जो भक्षण करणाहै अतिकृच्छ्र व्रत कहाहै एह असमर्थ विषे जानणा क्योंकि पाणिपूरान्न भोजनको ग्रासते अधिकहोएते ● इसने अनंतर अतिकृच्छ्रके प्रत्याम्नायको देवलऋषि कहाहै अतिकृच्छ्र संपूर्ण व्रतका प्रत्याम्नाय बुद्धि मानाने कहाहै संपूर्ण पुष्टपाकेहितवास्वे जो बदला संपूर्ण पापके नाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ संकली करणपाप और कन्या धेनुआदिके बेचणेविषे जो पाप और तिल और चावल और अन्न और फल और रस इनांके बेचणें विषे जो पाप है तिनां पापोंके नाशकरणे वालाहै और महापापते जो भयकर्के युक्त हैं तिनांके भयको दूर करणे वालाहै ॥ २ ॥

७६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अब मार्कण्डेयजीका वचन है हेराजन्तुं श्रवणकर इस प्रत्याम्नायकों मैं कहता हूँ जिस प्रत्याम्नायकों करण कर्कें अतिकृच्छ्र व्रतके फलकों पुरुष प्राप्त होता है ॥ १ ॥ वस्त्रां कर्कें अलंकृत दश १० गौयां ब्राह्मणां के ताँई भिन्न भिन्न कर्कें देण योग्य हैं कैसी गौयाँ हैं जो सुशाल स्वभाव वालीयाँ और दुग्ध देण वालीयाँ ॥ २ ॥ अब इसीतिनि मनुजीका वचन है अतिकृच्छ्र व्रतका प्रत्येक दिन के बटलेकों मेरेतें श्रवणकर ब्राह्मणां के ताँई दश १० गौयाँ देण योग्य हैं सहित वछयां के पूर्वकी न्याँइ पूजावा प्राप्त होयीं होयीं ॥ १ ॥ सुवर्ण दृंगां कर्कें युक्त और भली प्रकार शोभा कर्कें युक्त तिसविषे भी आपशुद्ध हो कर्कें भिन्न भिन्न देण योग्य हैं वेदोंके जानणे वालयाने ऐसे कही जो विधि है तिस कर्कें अतिकृच्छ्र व्रतके फल नूँ प्राप्त होता है ॥ २ ॥ * अब इसतें उपरंत कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत

मार्कण्डेयः ॥ प्रत्याम्नायमिमं राजन्वक्ष्यामि शृणु पार्थिव यदा चरणमात्रेण अतिकृच्छ्रफलं लभेत् ॥ १ ॥ दशगावः प्रदातव्या वस्त्राद्यैः समलंकृताः ॥ साधु वृताः पयस्विन्यो विप्रेभ्यश्च पृथक् पृथक् ॥ २ ॥ मनुः । अतिकृच्छ्रस्य महतः प्रत्याम्नायं शृणुष्व मे विप्रेभ्यो दशगावत्साः पूर्ववत् पूजिताः अमूः वत्सा वत्सवत्ये इत्यर्थः । १ । स्वर्णदृंगादिभिः सम्यग्भूषयित्वा पृथक् पृथक् शुचिभिस्तु प्रदातव्या विप्रेभ्यो वेदवित्तमैः इत्यमुक्तेन मार्गेण कृत्वा कृच्छ्रफलं लभेत् ॥ २ ॥ * अथ कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतमाह याज्ञवल्क्यः ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रः पयसा दिवसानेकविंशतिम् गौतमेन तु द्वादशाहमुदकेन वर्तमं कृच्छ्रातिकृच्छ्र इत्युक्तम् अतश्च शतघपेक्षया तयोर्व्यवस्था । तयोरेकविंशत्यहद्वादशाहयोः ॥ अथ तप्तकृच्छ्रमाह मनुः ॥ तप्तकृच्छ्रं चरन्विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् प्रति ग्रहं पिवेदुष्णान्सकृत्स्नायी समाहितः ॥ १ ॥ अयमपि द्वादशदिनसाध्यः

नूँ याज्ञवल्क्य ऋषि कहता है कृच्छ्रेति दुग्ध कर्कें इकी २१ दिनका जो व्रत है तिसकों कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहते हैं गौतम ऋषिने कहा है कि जल कर्कें बारां दिन वर्तन करणा अर्थात् जल पान बिना होर कुछ नाहीं भक्षण करणा सो कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहा है इसकारणतें समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देखकर तिनं इकीस दिन २१ और बारां दिन २१ के बारांकी व्यवस्था जानणी ॥ * इसतें अनंतर तप्तकृच्छ्र व्रतनूँ मनुजी कहते हैं तप्तेति त्रयदिन गरम जल पान करे त्रयदिन गरम दुग्ध पान कर और त्रयदिन गरम घृतपान कर और त्रय दिन गरम वायु कया हवा लेवे असे एक काल स्नान को कर्कें और निश्चल मन कर्कें तप्तकृच्छ्र व्रतके कर्णतें शुद्ध होता है ॥ १ ॥ एभी १२ । दकर्कें हिसाब है

॥ श्रीरघवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ७७

अथ याज्ञवल्क्य जी का वचन है तप्तेति तप्तदुग्ध और तप्तघृत और तप्तजल इनांको कम कर्के एक एक दिन पानकरे और एक दिन उपवास व्रत करे तां तप्त कृच्छ्र व्रत कहाँ १ एइहि व्रत चार दिनका चार गुणां होवे क्या दुग्ध और घृत और लज और उपवास इनांको कम कर्के चार चार दिन पानकरे तां महातप्त कृच्छ्र व्रत सोलां १६ दिनांका होता है ॥ एभिरिति इनां तप्तक्षीर आदि संपूर्णका एक दिन पान करे और एक दिन उपवास करे अन्ते दो २ रात्रां कर्के सांतपनको न्यांइ तप्तकृच्छ्र भी द्विरात्रनाम व्रत होता है ॥ मनु जीने तप्तकृच्छ्र चरमित्यादि कर्के पूरे कहा जो श्लोक तिसकर्के वारां दिनांका व्रत हुंदाई

याज्ञवल्क्यः तप्तक्षीरघृतांबूनामैकैकंप्रत्यहंपिवेत् एकरात्रोपवासश्चतप्तकृच्छ्र उदाहृतः ॥ १ ॥ एष एव प्रत्येकं दिवसचतुष्टयसंपाद्यो महातप्तकृच्छ्रः तथा चायं षोडशदिनसाध्य एभिरेव समस्तैः सोपवासैर्द्विरात्रसंपाद्यः सांतपनवतप्तकृच्छ्रः मनुना तु पूर्वोक्तश्लोकेन द्वादशाहनिर्वर्त्योभिहितः क्षीरादिपरिमाणं तु पराशरेणोक्तम् । अषापिवेत्तु त्रिपलं द्विपलं तु पयःपिवेत् पलमेकं पिवेत् सर्पिस्त्रिरात्रं चोष्णमारुतमिति ॥ १ ॥ विरात्रं चोष्णमारुतमिति त्रिरात्रस्य पूर्णउष्णोदकवाष्पं पिवेदित्यर्थः ॥ प्रकारान्तरेण तप्तकृच्छ्रस्वरूपं पुनरेवाह पराशरः ॥ पट्पलं तु पिवेदंभस्त्रिपलं तु पयःपिवेत् पलमेकं पिवेत् सर्पिस्तप्तकृच्छ्रो विधीयते इति । १ ॥ अत्र जलादिकमुष्णमेव ग्राह्यम् । यदा तु शीतं क्षीरादिकं पीयते तदा शीतकृच्छ्रः

तिसविधे दुग्धादिकांका परिमाण पराशरने कहाँ है त्रय १ छटांक जलपीवे और दो छटांक दुग्ध पीवे और एक छटांक घृत पीवे और त्रय रात्रांके अंत विषे गरम जलकी हवाडको भक्षण करे ॥ १ ॥ अथ हांसी प्रकार कर्के तप्तकृच्छ्र व्रत के स्वरूपको फेर पराशरजी कहंत हैं छे ६ पल परिमाण गरम जल पीवे और त्रय पलकं परिमाण गरम दुग्ध पीवे और एक पल परिमाण गरम घृत पीवे तिसका नाम तप्त कृच्छ्र कहाँ है इहाँ पल कर्के छटांक लैणी इसमे जलादिक सभगमं हि ग्रहण करणे ॥ १ ॥ पूर्वोक्त और जड़ जल आदिक शीत वस्तु शीत क्या ठंडीयां होण और तिनांको पीवे तां तिसका नाम शीत कृच्छ्र कहाँ है

७८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

सो दिखाईं दाहै इयह मिति त्रय १ दिन शीत जल पीवे और त्रय दिन शीतल दुग्ध पीवे और त्रयदिन शीतलघृतपीवे और त्रयदिन वायु भक्षण करे इस कहेंगे २ अब देवलऋषिका वचनहै त्रय दिन तक गर्म कीताजो जल तिस विषे वायुको हवाड लये और त्रयदिन तक गरम जल और त्रयदिन गरम घृत इनको पीणे कर्के ब्राह्मण शुद्धिको प्राप्त होता है इसके मतमे नौ दिनका एह व्रत है १ अब इसी विषे मार्कण्डेयजीका वचन है त्रयदिन वायु गरम और त्रयदिन दुग्ध गरम और त्रयदिन घृत गरम तिनको पीणे कर्के ब्रह्महत्याभी शुद्धि को प्राप्त होता है द्विजर्षभ क्या ब्राह्मणां विषे श्रेष्ठ होता है ॥ १ ॥ अब इसी विषे गौतमजीका व

अहंशीतंपिवेतोयं अहंशीतंपयः पिवेत् ॥ अहंशीतंघृतं पीत्वा वायुभक्ष्यः
परं अहमिति स्मरणात् ॥ २ ॥ देवलः ॥ वायुष्णं त्रिदिनं विप्रः पयः उष्णं दिनत्रयम्
त्रिदिनं घृतमुष्णं च पीत्वा शुद्धिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ मार्कण्डेयः ॥ वायु
मुष्णं पयस्तप्तं घृतमुष्णं दिनत्रयम् पीत्वा शुद्धिमवाप्नोति ब्रह्महापि द्विजर्षभः
१ गौतमः । उष्णं पयः पयस्तप्तमुष्णं घृतमनंतरम् चतुर्णामपि पापानां पाव
नं मुनिभिः स्मृतम् । १ । अत्र चतुःसंख्यास्थापनार्थमनंतरं अहमुष्णं वायुपानं
बोध्यम् ॥ आपस्तम्बः ॥ अहमुष्णं पिवेद् द्वारि अहमुष्णं पिवेत् पयः अहमु
ष्णं पिवेत् सर्पिर्वायुभक्ष्यो दिनत्रयम् ॥ १ ॥ ग्रंथांतरे अहमुष्णं पिवेद् द्वारि
अहमुष्णं पिवेत् पयः अहमुष्णं पिवेत् सर्पिर्वायुभक्ष्यो दिनत्रयम् ॥ १ ॥

चतहै गरम जल और गरम दुग्ध और गरम घृत और अनंतर कर्के गरम वायु जानना इसप्र
कार चारोंको ४ त्रयत्रय दिन पीवे तां संपूर्ण पापोंके दूरकरणेवाला मुनियोंने एह व्रत कहा है १ ॥
अब इसी विषे आपस्तम्ब ऋषिका वचन है त्रयदिन गरम जल पीवे और त्रय दिन गरम दुग्ध
पीवे और त्रय दिन गरम घृत पीवे और त्रयदिन गरम पवनका आहार करे तां तप्त कृच्छ्रव्रत कहा है
एह वारां दिन कर्के साध्य जानना । १ । होंगे ग्रंथविषे असा कहा है त्रय दिन गरम जल और त्रय
दिन गरम दुग्ध और त्रय दिन गरम घृत पीवे और त्रयदिन गरम वायु पान करे ॥ १ ॥

और वायुका भक्षण गरम रात्रि विषे करे और जेकर शीतल वायु पान करे तां दिन विषे को और एह त्रय दिन वायुभक्षणभी वारादिनांके पूरणकरणे वास्ते कहाहै इसमे अभिप्राय कहतेहैं रात्रेति ॥ जिस जिस स्थान विषे मुनियाने रुच्छ्र व्रत कहाहै तिस तिस श्लोक विषे वारां दिनांका जानणे योग्यहै ॥ सो बृहस्पतिजी कहतेहैं हेद्विजर्षभ मुनियाने ओं शास्त्रां विषे रुच्छ्रव्रत कहाहै सो वा । दिनांकर्कोहि साध्य है और देहकोशुद्धिके देने वालाहै ॥ १ ॥ और जिस विषे प्रवृद्ध क्या वर्षदिनका रुच्छ्रव्रतांविषे कहाहै सो वर्षविषे वारां वारां दिनांके हिसाबमें तीस ३० जानणे सो बृहस्पतिजी कहतेहैं प्रति प्राजापत्य जो रुच्छ्रव्रत कहेहैं तिनांविषे बुद्धिमानोंने जो वर्ष देन कहाहै तिसही गिनी करे तीस ३० व्रत जानणे एह प्राजापत्य रुच्छ्रकाहि लक्षणहै हारी

वायुभक्षणंतु उष्णमनक्तं वा द्वादशदिनपरिपूर्यर्थं कर्तव्यम् ॥ यत्र यत्र कृच्छ्रं मुनिभिरुपदिष्टं तत्र तत्र द्वादशदिनं वेदितव्यम् तदाह बृहस्पतिः मुनिभिः कृच्छ्रमित्युक्तं शास्त्रेषु चाद्विजर्षभ तत्कृच्छ्रं द्वादशाहोभिः साध्यं देहविशुद्धिदम् १ यत्रावृद्धमित्युक्तं कृच्छ्रेषु तत्त्रिंशत्संख्याकं तदेवाह प्राजापत्येषु कृच्छ्रेषु अवृद्धमित्युच्यते बुधैः त्रिंशत्संख्यां विजानीयात् प्राजापत्यस्य लक्षणम् १ प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्यैव नान्यस्य । विष्णुः । सर्वेषामेव पापानां तप्तकृच्छ्रं विशोधनम् ततः परममित्युक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः १ तप्तकृच्छ्रमधिकृत्याह हारीतः एककृच्छ्रो द्विरभ्यस्तः पातकेभ्यः प्रमोचयेत् त्रिरभ्यस्तो यथान्यायं शूद्रहत्यां व्यपोहति ॥ १ ॥ कृच्छ्रसामान्याविधिमाह विष्णुः ॥ कृच्छ्राण्येतानि सर्वाणिकुर्वीत कृतवापनः नित्यं त्रिषवणस्नानी चाधः शयीजितेन्द्रियः ॥ १ ॥

व्रतका नहि ॥ अब विष्णुजीका वचनहै संपूर्ण पापोंके दूरकरणे वास्ते यथार्थ देखणवाले मुनियें परम हितजाणकर्के तप्तकृच्छ्र व्रत शुद्धिकरणवाला कहाहै १ अब तप्तकृच्छ्रकों अंगीकारक हारीतऋषिका वचनहै एह तप्त रुच्छ्र व्रत दो बार कीता होया पापांतें शुद्धिकों करताहै और त्रयवार कीता होया यथा योग्य शूद्र हत्यांके पापको दूरकृताहै १ ॥ अब रुच्छ्र व्रतकी सामान्य विधिको विष्णुजी कहतेहैं ईनां संपूर्ण रुच्छ्र व्रतांको पुरुष करे तिनां विषे एह विधिहै मुंडन करवाये और नित्य त्रयकाल स्नान करे और पृथ्वी पर शयन करे और इंद्रियांको विषयोंसे रोककर राखे ॥ १ ॥

और स्त्रियां और गूढ़ और पापेणुनांके साथ संभाषणयागे और पवित्र जो मंडा तिनांकोनित्य जपे और अपनी समर्थां हवन करे ॥ २ ॥ इसमें उपरंत तप्त कृच्छ्र व्रतके स्थान प्रत्याम्नाय जो बदलाहै जिस बदलेके कीर्तयां होयां तप्त कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै तिसको देवल ऋषिजी कहतेहैं तमेति तप्त कृच्छ्र संयुणं व्रतका प्रत्याम्नाय मनुने कहाहै जो पुरुष तप्त कृच्छ्र व्रतके कारण विषे समर्था वाले नहि हैं तिनां उपर कृपा कर्के पुरा क्या पिच्छे हे अनघ हे पापां रहित तप्त कृच्छ्रका बदला कहाहै तिसको अब मैं कहताहूँ श्रवणकरो हे ब्राह्मणां विषे श्रेष्ठांदो ॥ १ ॥ कालि युग विषे विशेष कर्के अन्नके त्यागमें पुरुष मृत्युजों प्राप्त होताहै तिसविषे पराशर जीका वचनहै कृतइति सत्ययुग विषे प्राणांकी स्थिति देहके चर्म विषे रहतीहै और त्रेतायुग विषे प्रा

स्त्रीशूद्रपातितानांचवर्जयेदभिभाषणम् पवित्राणिजपेन्नित्यं जुहुयाच्चापिश
क्तिः ॥ २ ॥ अथतप्तकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह ॥ देवलः ॥ तप्तकृच्छ्रस्यसर्व
स्यप्रत्याम्नायोमनोःकृतः अशक्तानांचकृपयाकर्तुमुक्तः पुरानघ ॥ तमे
वाहं ब्रवीम्यद्यशृण्वंतु द्विजसत्तमाः ॥ १ ॥ कलौयुगेविशेषेण ह्यन्नत्यागान्मृत्युं
गच्छति ॥ पराशरः ॥ कृतेचर्माश्रितः प्राणः त्रेतायांकीकसाश्रयः द्वापररेक्त
माश्रित्यकलावन्नंसमाश्रितइति ॥ १ ॥ कलौयुगेद्वादशरात्रसाध्यकृच्छ्राणां
कर्तुमशक्तान् निरीक्ष्य ऋषयः प्रत्याम्नायमुक्तवंतस्तमेवाहात्रैव गौतमः
महतस्तप्तकृच्छ्रस्य ब्रह्महत्यानिवारिणः तुलाप्रतिग्रहीत्दृष्ट्वा शोधकः स्या
न्महामुने ॥ १ ॥ प्रत्याम्नायस्तदाप्रोक्तो यदाचसुसमागमः ॥ स्वयंभूः कृप
यान्दृष्ट्वांगवांविंशतिमादरात् सवत्सावहुदुग्धाश्रसाधुशीलाद्विजातये २ ॥

द्विजातिभ्य इति वक्तव्ये जातावेकवचनम्

जाती स्थिति अस्थियां विषे रहतीहै और द्वापरयुगविषे रुधिरके आश्रय प्राणस्थितिहै और कालि
युगविषे अन्नके आश्रय प्राणांकी स्थितिहै १ इसकागणमें कालियुगविषे वारां १२ दिनां कर्के व्रत करणें
विषे पुरुषसामर्था वाले नहि एंसेविचार कर ऋषि प्रत्याम्नायकों कहते भये तां तिस तप्तकृच्छ्रकों गौ
तम ऋषि कहताहै हेमहामुने तुला दानके प्रति ग्रहकों लयणें वाले जों पुरा हैं तिनांके पा
पांकों दूर करणें बाला बटा जों तप्तकृच्छ्र व्रत सों कहाहै कैसा व्रत है जो ब्रह्महत्याके भो दू
र करणें वालाहै १ प्रत्याम्नाय तद कहाहै जद महात्माका संगमहोवे तो ब्रह्मा पुरुषां उपर कृपाकरके
कइताहूया गोयांसहितबल्ल्यांके दुग्ध देणें वालीयां और भले स्वभाववालीयां वसि २०
अगर कर्के ब्रह्मणांकेताई देणें योग्यहैं द्विजातये एह जाति विषे एक वचनहै । २ ।

अब इसीविषे मरीचिक्रपिका वचनहैं पापोंके नाश करणे वाला जो तप्तकृच्छ्रहै बड़ा ब्रह्मरूप तिसका बदला एहहै बीस १० गौवां आदर कर्के ब्रह्मणांके ताईं देवे ॥ १ ॥ अब पराशरजी कावचनहै बड़ा जो तप्तकृच्छ्र तिसका बदला वस्त्र और भूषणांके साथ सहित बछयांके ॥ २० ॥ गौवां आत्मज्ञानके विचार कर्के युक्त जो ब्राह्मण तिनांके ताईं देता हुवा ॥ १ ॥ शुद्धिकों प्राप्त होताहै हेराजेंद्र और तप्त कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै तिस कारणतें तिन्नावस्थां विष्यों जो तप्तकृच्छ्र व्रतके करणे विषे नहि समर्थावाले तिनां प्रत्याम्नाय करणे योग्यहैं और पीछे पंचगव्यका पान करणा ऐसा किहाहै ॥ २ ॥ और तुला आदिक दानके ग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनांकों तिस प्रतिग्रहदोषके दूरकरणे वाले प्रायश्चित्त करण विषे एहि

मरीचिः पापनाशककृच्छ्रस्तप्तस्यब्रह्मरूपिणः दद्याद्द्विजातयेसभ्यग्ग वांविंशतिमादरात् १ पराशरः॥ महतस्तप्तकृच्छ्रस्याविप्रायाध्यात्मवेदिने सालंकारांसवत्सांचधेनुर्विंशतिकांददन् ॥ १ ॥ शुद्धिमाप्नोतिराजेंद्रतप्तकृच्छ्रफलंलभेत् ततोद्विजातिभिःकार्य्यास्त्वशक्तैस्तप्तरूपिणः पंचगव्यपिवे त्पश्चात्प्रत्याम्नायइतीरितः ॥ २ ॥ तुलादिप्रतिग्रहीत्दणामपीयमेवगति स्तत्प्रायश्चित्तकरणविषये ॥ अपराकै ॥ अतिकृच्छ्रेपराकेचतप्तकृच्छ्रेतथै वच प्राजापत्यत्रयंकुर्यात् कृच्छ्रेगोमिथुनंभवेत् ॥ १ ॥ स्मृत्यर्थसारे । मासो पवासस्थाने पंचदशप्राजापत्याइति चतुर्विंशतिमते धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाः कदाचित्पापमागताः जपहोमादिकंतेभ्योविशेषेणाभिधीयते ॥ १ ॥

तप्तकृच्छ्रव्रत कहाहै ॥ अब अपराकं विषे कहाहै क्या अतिकृच्छ्रव्रत विषे और पराक व्रत विषे और तप्त कृच्छ्र व्रत विषे तिस प्रकार प्राजापत्यत्रय करे और कृच्छ्रव्रतविषे एक गौ और बलद दानकरे ॥ १ ॥ अब स्मृत्यर्थसारविषे कहाहै जो एक मासका उपवास व्रत कहाहै तिसका बदला पंदरां १५ प्राजापत्यव्रत कहनें इसमे एह अभिप्रायहै कि प्राजापत्य ६ उपवासके तुल्य है ऐसा अगेस्थापनहोणाहै तिसकेहिसावसे ५ पंच प्राजापत्यमासोपवासकी जगा आउतेहैं परंतु इसको अति कष्टदायी जाणकर इसकी जगा १५ पंदराकहेहैं ॥ और चतुर्विंशति मत विषे कहाहै धर्मेति जो पुरुषधर्म विषे युक्त हैं और वष विषे युक्तहैं कदाचित् पापकों प्राप्तहोवें अर्थात् पापकरें तो तिनां ताईं विशेषकर्के जप और हवन आदिक कहाहै ॥ १ ॥

८२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

और जो पुरुष केवल नाम करकेहि ब्राह्मणहैं संस्कारतें रहित और मुख और धर्मतें रहितहैं तिनां ताई विशेष कर्के कच्छु चांद्रायणादि व्रत देणे योग्य हैं ॥ २ ॥ और धन कर्के युक्त जो पुरुष तिसनें पूर्वोक्त धेनु विशतिकादिरूप दक्षिणा देणे योग्यहै जो दक्षिणा यत्न कर्के विधान कीतोहै इस प्रकार नर विशेषकर्के क्या जिसकों जैसा उचितहोवे तैसा मनुष्यों विशेष कर्के प्रायश्चित्तकों पापके दूर करणेवास्ते देवे ॥ ३ ॥ * इसते अनंतर पर्ण कच्छु कों याज्ञवल्क्य कहताहै पर्णाविति ॥ १ ॥ इसकाअर्थ अपरार्क विषे कहाहै पर्णा दीति पलाह और गूलर और कमल औरविल्व और कुशा इनांके भिन्न भिन्न पत्रांकोलेंकर

नामधारकविप्रायेमूर्खाधर्मविवर्जिताः कच्छुचांद्रायणादीनितेभ्योदद्याद्विशेषतः ॥ २ ॥ धनिनादक्षिणादेयाप्रयत्नविहितातुया एवंनरविशेषेणप्रायश्चित्तानिदास्येदिति ॥ ३ ॥ * अथपर्णकच्छुमाह याज्ञवल्क्यः ॥ पर्णोदुम्बरराजीवविल्वपत्रकुशोदकैः प्रत्येकंप्रत्यहंपीतैःपर्णकच्छुउदाहृतः ॥ १ ॥ अत्रापरार्कः ॥ पर्णादिपत्रान्तानांकुशानां चैकैकस्यकाथोदकमेकैकस्मिन्नहनिपीयते इत्येवंपंचरात्रसाध्यःपर्णकच्छुः । अत्रापि प्राशनमाहारांतरनिवर्त्तकम् ॥ पर्णः पलाशःराजीवंपद्मंप्रसिद्धमन्बत्विष्णुस्तुपर्णकच्छुमन्यथाह कुशपलाशोदुम्बरपद्मशंखपुष्पीवटब्रह्मसुवर्चलापत्रैः ७ कथितस्याभसःप्रत्यहंपानेपर्णकच्छु इति

काथकरे और तिसकाथके जलकों दिन दिन विषे क्रम कर्के पानकरे तांते एहपर्ण कच्छु व्रत पंजां दिनां कर्के सिद्धहोताहै १ इसविषे प्राशन कहणे कर्के अन्य वस्तुके भक्षण कानिषेधहै ॥ विष्णुजी पर्ण कच्छुकों और ही प्रकार कर्के कहतेहैं कुशा और पलाह और उदुंबर क्या गूलर और पद्म और शंख पुष्पी वूटी और बोंड और ब्रह्मसुवर्चला वूटी इनांसत्तां ७के पत्रांकर्के जलको भिन्न भिन्न काहडे और तिनांके काथके जलको दिन दिन विषे क्रमकर्के पानकरे बां पर्ण कच्छु होताहै इति

जावालकृषि औरही प्रकार कर्के कहताहै ॥ पलाह और विल्व और पद्म इनांके पत्र
और गूलरके पत्र और पिप्पलके पत्र इनांपत्रांको दिन दिन विषे क्रम कर्के पीवे ॥ १
और पीछे दिन रात्र उपवास करे एह उपवास सहित छे ६ दिनका व्रतहै पूर्वजन्मके पापको
और इस जन्मके पापोंको दूरकरणे वालाहै इति २ ॥ शंख और लिखितजीभी इसमें कहतेहैं
पद्म और विल्व और पलाह और गूलर और कुशोदक इनांको भिन्न भिन्न क्रमकर्के भक्षण करे
तां पणकूच्छ होताहै ॥ और इनां संपूर्णोंको त्रयदिन भक्षणकरे तांभी पणकूच्छहोताहै ॥ पहला
पांच दिनका दूसरा तीन दिनका ॥ अवयमजीकावचनहै पलेति पलाह और विल्वके पत्र और
कुशाऔर पद्म इनांके पृथक् पृथक् पत्रांको ग्रहण करे और एक एक वृक्षके पत्रांको त्रय त्रय

॥ जावालस्वन्यथाह ॥ पलाशविल्वपद्मानांपत्राण्यौदुम्बराणिच अश्वत्थ
स्यचपत्राणिअक्षेच्चैकैकशस्तथा ॥ १ ॥ अहोरात्रोपवासश्चपर्णकूच्छःप्रकी
र्तितः अन्यजन्मकृतंचैवपापंनाशयतेतुस इति ॥ २ ॥ शंखलिखितौ पद्म
विल्वपलाशोदुम्बरकुशोदकान्येकैकमभ्यस्तानि पर्णकूच्छः ॥ समस्तान्ये
तानित्रिरात्रेणोपभुक्तानि वापर्णकूच्छः । यमः । पलाशविल्वपर्णानिकुशा
न्पद्मानिवान्यतःएकैकंत्रयहमश्रीयात्पर्णकूच्छोविधीयतइति १ अन्यतइ
ति पृथगित्यर्थः । अत्र द्विजानांमध्यमानिपत्राणि शूद्रस्येतराणीतिबोध्यमि
ति यदातु पर्णादीनामेकीकृतानांकाथ स्त्रिरात्रोपवासांते पीयतेतदापर्णकू
चः ॥ यथाहयमः ॥ एतान्येवसमस्तानित्रिरात्रोपोषितःशुचिः काथ
यित्वापिवेदग्निःपर्णकूर्चोभिधीयतइति ॥ १ ॥

दिन भक्षण करे एह वारां १२दिनाकर्के पणकूच्छ कहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ब्राह्मण आदि तीनव
र्णोंको पलाहके मध्यम पत्रे कहने अर्थात् ब्राह्मणपलाशके विचले पत्र ग्रहणकरे और
शूद्र इतर क्या आसपासके पत्रों ग्रहणकरे और जानणा इति यदेति मद फेर
पलाह और गूलर और कमल और विल्व इनांके पत्रांको एकत्र कर्के कुशाके
जलकर्के काहडे और त्रय दिन उपवासको कर्के पीछे पीवे तां पणकूच कहाहै जैसे
यमजी कहतेहैं त्रय रात्रके उपवास व्रत कर्के शुद्ध होया होया इनां पलाह और गूलर और
कमल और विल्वके पत्रांको जलके साथ काथकर्के पीवे तां पणकूच कहीदाहै इति १

८४ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

यदेतिजद फेर विल्व आदि फल जलककें काहडे होये दिनीदिनीवेष क्रमककें पीवे एक मास पर्यंत तां फल कृच्छ्रतें आदलेके नामकों प्राप्त होतेहैं ॥ जैसे मार्कंडेयजी कहते हैं फलांके काथकों एकमास पर्यंत पीवे तां बुद्धिमानोंने फलकृच्छ्र कहाहै ॥ और श्रीफल क्या विल्वफल इनांके काथकों एक मास पर्यंतपीवे तां तिसका नाम श्रीकृच्छ्र कहाहै ॥ तैसे पद्मांकेकाथकों एक मास पर्यंत पीवे तिसका नाम पद्मकृच्छ्र कहा है ॥ १ ॥ ऐसे एक मास पर्यंत आमलेके काथकों पीवे तां एह दूसरा श्रीकृच्छ्र कहाहै ॥ और विशेष कहतेहैं पत्रैरिति पत्रांके काथ क्यां काह डेकों पीवे तां पत्रकृच्छ्र हुंदाहै ॥ और पुष्पां ककें पुष्पकृच्छ्र होताहै ॥ २ ॥ और मूल ककें मूल कृच्छ्र और केवल जलके काथकों पीवे तां तोय कृच्छ्र कहा है ॥ २ ॥ इसमें एह विचारहै कि

यदातुविल्वादिफलानि प्रत्येकं कथितानि मासंपीयन्ते तदा फलकृच्छ्रादि व्यपदेशंलभन्ते । यथाहमार्कण्डेयः ॥ फलैर्मासेनकथितःफलकृच्छ्रोमनीषिभिः श्रीकृच्छ्रःश्रीफलैःप्रोक्तःपद्मारूपैरपरस्तथा ॥ १ ॥ मासेनामलकैरेवंश्रीकृच्छ्रमपरंस्मृतम् पत्रैर्मतःपत्रकृच्छ्रःपुष्पैस्तत्कृच्छ्रउच्यते ॥ २ ॥ मलकृच्छ्रःस्मृतोमूलैस्तोयकृच्छ्रो जलेनत्विति ॥ पत्रकृच्छ्रोत्रउदुम्बरपद्मविल्वपत्रभेदात्त्रिधा । तोयकृच्छ्रोपिकेवलजलकुशोदकभेदाद्द्विधा ॥ इत्येवमेकादशधापूर्णकृच्छ्रइतिमिताक्षराशयः पुष्पकृच्छ्रस्तुपद्मपुष्पजोबोध्यः । मासशब्देनात्रसावनोमासोग्राह्यः तदुक्तंकालनिर्णये ॥ आयुर्दायविभागश्चप्रायश्चित्तक्रियातथा सावनेनैवकर्तव्याशत्रूणांवाप्युपासनेति १

अष्टप्रकारके कृच्छ्र जों दिखाएहैं तिनांविचों पत्रकृच्छ्र त्रय तरहांकाहै ॥ और जल कृच्छ्र दो प्रकारकाहै इसतें ११ प्रकार कृच्छ्रके होए एह मिताक्षरा ग्रंथका आशयहै और मूलमें अर्थ स्पष्टहै ॥ और विशेषकतेहैं मासेति मासशब्दके कथन करणे ककें तीस ३० दिनांका महीना इसजगा ग्रहण करणे योग्यहै और चांद्रमास नहि जानणा इसका निर्णय कहा है कालनिर्णय ज्योतिश्शास्त्र बिषे ग्रहांके अनुसार कहा जो आयुर्दाय विभाग सो तीस ३० दिनके मासते जानणा तैसे प्रायश्चित्तका करणा और शत्रुयांकी उपासना कैदी आदिक अथवा तिनांकी हानि वास्ते अनुष्ठानादि भी तीस दिनके मास ककें जानणे योग्यहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ८५

अब देवलऋषिका वचन है हे ब्राह्मण विषे श्रेष्ठां हो पर्णकृच्छ्र नाम कर्के जो व्रत है तिसको अवण करो जो अतिशय कर्के श्रेष्ठ है और संपूर्ण पापों के दूर करणे वाला और संपूर्ण दोषों के नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ अब दोषों कर्के युक्त जो पाप हैं अर्थात् जिना पाप देभोगते पीछे क्षयादि रोग हुं दे है तिनको कहते हैं तिनको हि पर्णकृच्छ्र व्रत दूर कर्ता है ब्रह्महेति ब्राह्मण के मारणे वाला पुरुष क्षय जो श्वासकास रोग तिस कर्के युक्त हो ता है और मदिरा के पीसे वाला जो है तिसके काले दांत होते हैं और जो सुवर्ण की चोरी कर्ता है तिसके कुनख क्या निदित नख होते हैं और गुां की स्त्री साथ जो विषय भोगता है सो कुटी होता है ॥ २ ॥ अन्नेति और अन्न को चुराणे वाला उदर विषे रोग युक्त होता है ॥ और शाक के चुराणे वाला दंठुर क्या डड्डूं होता है और धान्य क्या घाड़यां चुराणे वालों को हे ब्राह्मण खुरक रोग होता है ॥ ३ ॥ ताम्रेति तांवे के

देवलः ॥ पर्णकृच्छ्रं द्विजश्रेष्ठाः शृण्वन्तु परमं शुभम् ॥ सर्वपापप्रशमनं सर्वदोषोपशान्तिदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महाक्षय रोगी स्यात्सुरापः श्यावदंतकः स्वर्णस्तेयी च कुनखी दुश्चर्मामुरुतल्पगः ॥ २ ॥ अन्नहर्ता भवेद्गुल्मी शाकस्तेयी नुददुरः स्तेयिनां धान्यहारीणां कंडूतिः संततं द्विजाः ॥ ३ ॥ ताम्रस्तेयी दीर्घवृषणः प्रमेही पर्वमैथुनी शिरोव्रणी स्नानहीनः पित्तवांस्त्रपु सीसहा ॥ ४ ॥ गजचर्मानागहन्ता अश्वहन्ता महाव्रणी कंठभूषणहारी स्याद्गंडमाली भवेद्गुवि ॥ ५ ॥ रक्तप्रमेही मनुजो पुष्पवत्यंगनागमः भगि नीगमनो भूमौ मधुमेही भवेन्नरः ॥ ६ ॥ मातुः सपत्नी भगिनी जभेत्कामातु रानरः सपापमनुभूयाशुरोगी भूयाद्गंदरी ॥ ७ ॥

चुराणे वाले के पतालू लंवे होते हैं और संक्रांति आदिक पर्व विषे जो मैथुन कर्ता है सो प्रमेहरोग कर्के युक्त होता है ॥ और स्नान नें रहित जो है सो शिर विषे व्रण वाला होता है और लाख और सिक्के चुराणे वाला पित्त रोग युक्त होता है ॥ ४ ॥ गजेति हाथी के वध करणे कर्के हाथों की न्याई चर्म वाला होता है ॥ और घोड़े के वध करणे वाला देह विषे बहुत व्रण युक्त होता है ॥ और कंठ के भूषण हरण वाले को हजोगोग होता है ॥ ५ ॥ रक्तेति ऋतुमती स्त्री के साथ जो गमन कर्ता है सो रक्तप्रमेहरोग कर्के युक्त होता है ॥ और जो भगिनी विषे गमन कर्ता है सो मधुप्रमेहरोग कर्के युक्त होता है ॥ ६ ॥ मातुरिति दूसरी माता के साथ और माता की भैणक के साथ जो गमन कर्ता है सो तात्काल भगंदरोग कर्के युक्त होता है ॥ ७ ॥

स्वसारमिति जो पुरुष भैषज्यविषे गमन कर्ता है सो मूत्र कृच्छ्र रोगकर्के युक्त होता है । और गौंके मारणेवाला महापापी पुरुष सदा पृथ्वीविषे रोगी होता है ॥ ८ ॥ गविति गौंके वच्छेके मारणेतें गुदाविषे ममेसी रोगकर्के युक्त होता है । और शिवजीके निर्माल्यकों जो भक्षण कर्ता है सो कफ रोगकर्के युक्त होता है ॥ ९ ॥ अजीति जो पुरुषां विषे कठोरताकों अथवा छलकों कर्ता है सो उदर विषे अजीर्ण रोगी होता है शठ ऋतु इस जग (छलकृत्) ऐसा भी पाठ है और गृहकों दाहकरणे वाला शूलरोग युक्त होता है और यदि ग्रहणजदोषसँ अर्थात् जो बिना अपराध किसीकों कैद कर्ता है सो श्वासकासरोगवाला होता है १० ॥ जो स्त्री विषाकर्के वाल ककों मारती है तिसका गर्भ सदाहि स्रव जाता है ॥ और जो स्त्री अन्यपुरुषके साथगमन कर्ता है सो स्तनीविषे फोड़ेवाली होती है ११ क्षीरमिति जस्त्री दुग्धकों चुगती है सो दूसरे जन्मविषे स्तनां

स्वसारं यः पुमान् गच्छेज्जायते मूत्रकृच्छ्रवान् धेनुहस्ता महापापी सदारोगी भवेद्भुवि ८ गोवत्सहननात्मर्त्यः स भूयादर्शवान् भुवि शिवनिर्माल्यभुक् पापी जायते कफवान्नरः ॥ ९ ॥ अजीर्णरोगी शठकृद्गृहदाही च शूलवान् वंदिग्रहणजादोषा जायते श्वासकासवान् ॥ १० ॥ स्रवद्गर्भा भवेत्सा तुवाल कंहन्ति या विपैः अन्यमालिंगतेनारी सा वैस्फोटस्तनी भवेत् ॥ ११ ॥ क्षीरमुष्णा म्रियानारीस्तन्यहीनान्यजन्मनि पतिव्रतापहारी च वृषणव्रणरोगवान् १२ विधवासंगजादोषाच्छिश्नदेशव्रणी भवेत् पुष्पस्तेयीव क्रनासः कोशस्तेयी तुपेटवान् ॥ १३ ॥ गन्धस्तेयी च दुर्गन्धः क्रमुके सततं ज्वरी विवाहविघ्न कृन्मर्त्यो जायते हीनदारवान् ॥ १४ ॥ मयूरहननात्मर्त्यो जायते कृष्णविं दुकः तडागारामविच्छेदी सदा दुःखी भवेन्नरः ॥ १५ ॥ इत्येवमादयो दोषा महानरकदानृणाम् एतेषां शोधनार्थाय पर्णकृच्छ्रं समाचरेत् ॥ १६ ॥

मे दुग्ध रहित होते हैं और जो पुरुष पतिव्रतास्त्रियों को हरता है सो पतालूयां विषे छिद्रवाला होता है १२ ॥ विधवेति विधवास्त्रीविषे संग करणेतें लिंगविषे छिद्रकर्के युक्त होता है । और पुष्पांके चुगणे वाला फोना होता है और खजाने चुगणेशाला जलोदर रोगवाला होता है १३ गुंधेति सुगंधि वाली वस्तुके चुगणे वाला बगल गंधवाला होता है और सुपुर्णके हरणेवाला सदाज्वर रोगयुक्त होता है और क्रिमेके विवाह विषे जो विघ्न कर्ता है सो स्त्रीतें रहित होता है १४ मयूरेति मोरके मारणे वाला जो है तिसके देह विषे कालीपां विंदु होतीयां हैं और तला और बाग इनके नाश करणेतें सदा दुःखी होता है १५ इसतें आदलेके जो दोष हैं सो पुरुषांकों महानरकके दोषे वाले कहें हैं इन दोषोंके दूर करणे वास्ते पर्ण कृच्छ्र व्रत को करे ॥ १६ ॥

अवमार्कडेयजीका वचनहै ॥ महेति महापापांके जो समूहहैं और लघु जो पापहैं पृथ्वाविषे आद्रं कया इच्छा कर्के जो पापकीतेहैं और इच्छातें विनाकोतेहैं अथवा आद्रं कया बत्कालके कितेहोए पाप और शुष्क कया चिरकालके कीते होय पाप एह अर्थहै तिनानां संपूर्णकों शुद्ध करणे वाला पर्ण कच्छु व्रत कहाहै ॥ १ ॥ अब पराशरजीका वचनहै ॥ पर्णैति ब्राह्मण पर्ण कच्छुके करण विषे मध्यम पत्र ग्रहण करे वारं दिन पर्यंत नित्यशुद्धहोकर तिलककों धारसकर्के ॥ १ ॥ पूर्वकी न्याइं गंध पुष्प आदिकां कर्के विष्णुकों पूजे जद सूर्य अस्त होबे तां पलाहके तीन पत्रांकर्के तीन डूनेवनावे ॥ २ ॥ और वेदके पठनकरणविषे युक्त जो ब्राह्मण तिनाने तीन गृहांविषे जाकर तीन डूनेवांविषे भिक्षात्रयकों ग्रहणकरे ॥ ३ ॥ एक भिक्षाका डूना विष्णुकेतांइं अर्पणकरे और एक

॥ मार्कण्डेयः ॥ महापातकजालानां लघूनां भुवि जन्मनाम् आर्द्राणि चैव शुष्काणां पर्णकच्छुं विशोधनम् ॥ १ ॥ पराशरः ॥ पर्णकच्छुस्य पर्णानि मध्यमानि द्विजोत्तमः द्वादशाहानि पर्यन्तं नित्यं शुचिरलंकृतः ॥ १ ॥ पूर्ववद्विष्णुमभ्यर्च्य रविरस्तंगतो यदा त्रिभिः पत्रैर्ब्रह्मभूतैः कृत्वा चैव पुटत्रयम् ॥ २ ॥ त्रीणि वेश्मानि विप्राणां विदाध्वयनशीलिनाम् भिक्षात्रयं समानीय त्रिपुपत्रपुटेऽपि ह ॥ ३ ॥ एकं पुटं तु देवाय विप्रायैकं समर्पयेत् अवशिष्टं तदा श्रीयद्वारिनाम परायणः ॥ ४ ॥ स्वपेदे वसमपितु संचितं मनसा स्मरन् ततः प्रभातवेलायां पूर्ववत् सकलं चरेत् ॥ संचितं पापमित्यर्थः ॥ ५ ॥ विप्राय देया गौरेका पंचगव्यं पिवेत्ततः पर्णकच्छुमिदं भूपशोधनं पापकर्मणाम्यस्याचरणमात्रेण चान्द्रायणफलं लभेत् ॥ ६ ॥

भिक्षाका डूना ब्राह्मण तांइं अर्पणकरे और तीसरे डूनेको आप भक्षण करे और विष्णुके नामका उच्चारण करे ॥ ४ ॥ और विष्णुकी मूर्तिके समोपशयनकरे संचित जो पापहै तिसका मनकर्के स्मरणकरे मने एह पापकीताहै ॥ ५ ॥ ऐसे वारां दिनके व्रततें अनंतर प्रातः समयविषे पूर्वकी न्याइं नित्य कर्मकों कर्के ब्राह्मणके तांइं एक गौ. देवे और तिसतें अनंतर पंचगव्यका पानकरे एह पर्ण कच्छु होराजन् पापकर्माके शुद्ध करणे वालाहै जिसके करण कर्के पुरुष चान्द्रायणके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥

इसमें उपरंत पंचकृच्छ्र व्रतका बदला देबलकृषि कहता है पणोंति हेराजर्षे तेरे ताई पण कृच्छ्र व्रतके बदले नू कहताहां कैसा बदला है संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाशकरणे वाला है ॥ १ ॥ और मनुष्योंको संपूर्ण कामना फलकें देनेवाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतोंके फल देने वाला सो कहतेहां पांच ५ गौयां पंजां ब्राह्मणांके ताई भिन्न भिन्न देवे कैसीयां गौयां हैं वस्त्र आदि शोभाकर्कें युक्त और वज्रपांके सहित हैं ॥ २ ॥ और सुवर्णके हैं शृंगजिनां के और हथ्येके खुरां कर्कें युक्त और दोहनकरणेके लिये कांसपात्रकर्कें युक्त और मुशौला और जुवाण ऐसीयां विप्रांको देखे योग्य हैं एह प्रत्याम्नाय पंचकृच्छ्रका बहुत श्रेष्ठ कहा है ३ • इसमें उपरंत

अथ पणकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह देवलः ॥ पणकृच्छ्रस्य राजर्षे प्रत्याम्नायं वदामि
ते सर्वपापस्य शमने सर्वोपद्रवनाशनम् । १ । सर्वकामप्रदं नृणां सर्वकृच्छ्रं
फलप्रदम् पंचगावः प्रदातव्याः सालंकाराः सवत्सकाः ॥ २ ॥ हेमशृं
ग्यो रौप्यखुराः कांस्यदोहनसंयुताः ॥ साधुशोलायुवत्यश्च विप्रेभ्यश्च
पृथक् पृथक् ॥ पणकृच्छ्रस्य विप्रर्षे प्रत्याम्नायो महत्तरः ॥ ३ ॥ • अथ फल
कृच्छ्रलक्षणम् । तत्र देवलः ॥ फलकृच्छ्रस्य देवर्षे लक्षणं कथ्यते मया शृणु
ब्रह्ममुने चित्रं सर्वपापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ ये मातृघातिनो लोके तथैव पितृ
घातकाः ये वास्युर्ग्रीवहंतास्ते पामेषा विनेष्कृतिः ॥ २ ॥ ये वा गर्भविभे
त्तारो ये वास्युर्गर्गदायिनः ये वा ग्रामविभेत्तारो ये वा कुलजभेदिनः ॥ ३ ॥
ये पीहपिशुना लोके ये वास्युः स्तेयिनः सदा ये वा बालविभेत्तारस्ते पामेषा वि
नेष्कृतिः ॥ ४ ॥

फलकृच्छ्रके लक्षण नू कहतेहां तिसविषे देवलजीका वचन है फलेति हे देवर्षे फलकृच्छ्रका लक्षण
मैने कथन करीदा है हे ब्रह्ममुने तू श्रवण कर बड़ा आश्चर्य है और संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला है १ ॥
इसकर्कें दूर होनेवाले पापोंको कहतेहां यइति जो पुरुषमाताका और पिताका और आताका
बधकर्ते हैं तिनोकी शुद्धिकर्ता है ॥ २ ॥ और जो गर्भपात करते हैं और विषदेते हैं और नगरांको
लूटते हैं और कुलविषे संवधायांका नाशकरते हैं ॥ ३ ॥ और जो लोकविषे चुगली करते हैं और
सदा चोरीकरते हैं और बालकांको मारते हैं तिनो संपूर्णकी शुद्धि देखेवाला एह व्रत है ॥ ४ ॥

॥ श्रारणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ८९

याइति जो स्त्रीयां भर्ताकों त्यागके अन्य पुरुषां विषे गमन करतीयां हैं तिनां स्त्रीयांकी शुद्धि वास्ते पूर्व ब्रह्मार्जने फल कच्छु ब्रत रचीदाहोया ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वेति ब्राह्मणांके धर्मकों जो नाशक रितेहैं अथवा होरीपासों नाशकरवातेहैं और जोलोकविषे खेतीयांकोंचुरातेहैं तिनांकी फल कच्छु ब्रत कर्के शुद्धि कहीहै ॥ ६ ॥ उच्छिष्टेति जो पुरुष किसेके जूठे अन्नकोंभक्षणकरतेहैं और झूठा वाद करतेहैं और मुडदेकों उठाकर हरतेहैं इसमे शवका हरणा मंत्रसिद्धि वास्ते अथवा चिकि त्साके जानणे वास्तेहै तिनांकी कच्छुब्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ ७ ॥ मद्येति जो मदिराके पीनेविषे नित्ययुक्तहै और नित्यकर्म जो संध्यावंदनादि तिनांका नाशकरतेहैं और पितरांके निमिच जो श्राद्ध

याश्चनार्थः पतित्यत्कारमन्तेऽन्यान्नरान्यदि तासामपिविशुद्ध्यर्थेपुरासृष्टं स्वयंभुवा ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वघातिनोनित्यं ब्रह्मस्वानांचघातकाः क्षत्राणांहारि णोलोकेतेषामेतद्विनिष्कृतिः ॥ ६ ॥ उच्छिष्टभोजनायेष्वयेचमिथ्यापवादिनः येवैकुण्ठपहर्तारस्तेषामेतद्विनिष्कृतिः ॥ ७ ॥ मद्यपानरतानित्यं नित्यकर्म विभेदिनः पितृश्राद्धविभेत्तारस्तेषामेतद्विनिष्कृतिः ॥ ८ ॥ महापातकयु क्तोवायुक्तोवासर्वपातकैः कृच्छ्रैतेनमहतासर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ९ ॥ महान्तः पापकर्माणोमहापापहताः सदा एतेन कृच्छ्राजेन पुनंतिसततं द्विजाः फल कृच्छ्रं महापापहारिसंपत्प्रवर्धनम् ॥ १० ॥ दिनेदिने मुनींद्राश्च कृत्वेतच्छु द्विमाप्नुयुः ॥ ११ ॥

निसका खंडन करतेहैं तिनां पुरुषांकी फल कच्छु ब्रत कर्के शुद्धि कहीहै ॥ ८ ॥ मद्येति जो महापापकर्के युक्तहै वा संपूर्ण होरना पापांके युक्तहै इस बड़े फल कच्छु ब्रतके करणोंकर्के शुद्ध होताहैं ॥ ९ ॥ महान्तइति जो ब्राह्मण आदि वर्ण हैं महापापांके करण वाले हैं और महापापां कर्के हन हो ये होये इस कच्छु राज कर्के पवित्र होतेहैं एह फल कच्छु ब्रत महापापांके नाशकरणे वालाहै और संपदाके वधाणे वालाहै ॥ १० ॥ इसमे संप्रदाय कहतेहैं दिन इति दिन दिनविषे मुनींद्र इसफल कच्छुके करणे करके शुद्ध होते होये । ११ ।

कायेति एह फलकच्छ देहको शुद्धकर्ता है और संपूर्ण कच्छ फलांको देता है और संपूर्ण पापांका नाशकर्ता है एह फलकच्छ बड़ा श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ प्रातरिति प्रातः कालविषे स्नानकर्के देहकी शुद्धिवाते पूर्वकीन्यांई मृत्तिकादिसे स्नानकर्के शुद्ध होया गायत्रीका जप सूर्यके अस्तताई सारादिन करे ॥ १३ ॥ तावदिति तां व्रती पुरुष मनको स्थिरकर्के वित्यकर्मको समाप्तकरे विधि कहनेहैं कि कलेका एक फल विष्णुकेताई अर्पण करे ॥ १४ ॥ और तिस फलकों पूर्व भक्षणकरे मौनको धारके व्रत विषे स्थित होया होया वीर्यसंपूर्ण अर्थात् पकेहोये फल भक्षण करे जो शुष्क न होण और कच्चे और चिरकालके वृद्धित न होण ऐसे त्रय फल भक्षणकरे ॥ १५ ॥ और

कायशुद्धिप्रदं कच्छं सर्वकच्छफलप्रदम् सर्वपापहरं चेदं फलकच्छं महत्तरम् ॥ १२ ॥ प्रातः स्नात्वा शुचिर्भूत्वा पूर्ववच्छुद्धिहेतवे तावज्जपन्सदा तिष्ठेद्यावदस्तंगतीरविः ॥ १३ ॥ तावद्ब्रती स्थिरमन नित्यकर्म समापयेत् कदलीफलमेकं च विष्णवे तन्निवेदयेत् ॥ १४ ॥ तदेव भक्षयेत् पूर्वव्रतस्थो मौनपूर्वकम् एकैकवार्यसंपूर्णं भक्षयित्वा फलत्रयम् ॥ १५ ॥ एतच्च वनफलैर्विना ॥ एवं द्वादशरात्राणि स्वपेन्नारायणग्रतः गौर्देया विप्रवर्याय ब्रह्मकूर्चं पिवेत्ततः ॥ १६ ॥ फलकच्छमिदं सर्वकथितं ब्रह्मणोदितम् ॥ कच्छस्यैतस्य माहात्म्यान्न श्यत्येव महद्भयम् ॥ १७ ॥ अथ फलकच्छप्रत्याम्नायः ॥ देवलः कच्छस्यैतस्य मुनयः प्रत्याम्नायं महोन्नतम् शृण्वं तु सर्वपापघ्नं सर्वश्रेयः प्रदं नृणाम् ॥ १ ॥

वनके फलाको न ग्रहणकरे इसप्रकार वारांदिन १२ व्रतकरे और नारायणके समीप शयनकरे और श्रेष्ठ ब्राह्मणके तांई एक गौ देणे योग्य है तिसते पीछे ब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १६ ॥ एह फलकच्छ व्रत ब्रह्माजी कर्के कथित क्या किहा होयाथा सो मैने तुमको कहा है इस कच्छके माहात्म्यते महामय नष्ट होता है ॥ १७ ॥ इसते उपरंत फल कच्छका प्रत्याम्नाय है तिसके बदले विषे देवलजीका वाक्य है कच्छेति हे मुनीद्राहो इस कच्छके उत्तम बदलेको श्रवण करो जो पुरुषांके संपूर्ण पापांके दूरकरणे वाला और संपूर्ण कल्याणांके देनेवाला है ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ९७

पुरेति पूर्व गालवनाम ऋषि ब्रह्महत्याके भय कर्के युक्त होया होया संपूर्ण लोकांके हितकी इच्छावाले जो विष्णु तिनांकी शरणको प्राप्त होता भया ॥ २ ॥ हे भगवन् लोकांके हित की इच्छावाला जो तूहें तेरे कर्के मैं अनुग्रह करणे योग्यहां हे देवतयांके देव है इंद्र आदिकांके स्वामी तुसांके चरणोंकी शरण को प्राप्त होया जो मैं मेरी रक्षा करो ॥ ३ ॥ कैसे होंतुसी जो पुरुष तुसांके नामको स्मरण कर्ता है तिसके जो ब्रह्महत्या आदि पाप हैं तिनांके नाश करनेवाले हो इसकारणतें हे पुरुषोत्तम मैंने तुसांके चरण देखे हैं ॥ ४ ॥ ब्राह्मणकी हत्या जो बड़ी मेरे देह विषे हे प्रभो स्थित है सो तू दूर कर मेरे देहको जलाती है जैसे शुष्क लकड़ीको अग्नि शीघ्रता

पुराहि गालवो नाम ब्रह्महत्याभयातुरः विष्णुं शरणमापेदे सर्वलोकहितैषिणम् ॥ २ ॥ अनुग्राहोऽस्मि भगवंस्त्वया लोकहितैषिणा रक्षमां देवदेवेश त्वदंघ्रि शरणागतम् ॥ ३ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानां स्मरणान्नाशहेतुकम् अतस्त्वत्पादयुगलं दृष्टं मे पुरुषोत्तम ॥ ४ ॥ विप्रहत्यामहत्यासीन्मयितां नुद हे प्रभो जरयत्याशु सादेहं वह्निः शुष्के धनं यथा ॥ ५ ॥ नास्ति निंदा समं पापं नास्ति क्रोध समो रिपुः नास्ति मोह समः पाशो न देवं केशवात्परम् ॥ ६ ॥ विष्णुः ॥ नास्ति क्रोध समो मृत्युर्नास्त्यकीर्तिसमाक्षतिः नास्ति कीर्तिसमो धर्मस्तपो नाऽनशनात्परम् ॥ ७ ॥ प्रत्यहं त्रिपवणं स्नानं कृत्वामामनसि स्मरन् फलकृच्छ्रं पुरा कृत्वा ह्यशको यदि गालव ॥ २ ॥

से जला देती है ५ सभ देवतां से अधिकता विष्णुजीको है एह कहते हैं नास्तीति निंदाके तुल्य होर कोई पूर्ण फलदाता पाप नहि है और क्रोधके सम शत्रु नहि और मोहके तुल्य फाई नहि और विष्णुतें परे देवता नहि ६ विष्णुजीका वचन है नेति क्रोधके तुल्य होर कोई मृत्यु नहि किसे जगा (क्रोधके तुल्य होर कोई शत्रु नहि ऐसा पाठ है) और अयशतें और कोई हानि नहि कही क्या अयशहि हानि है और यशके तुल्य होर धर्म नहि और निराहारतें परे तप नहि ७ अब फेर प्रसेग को कहते हैं प्रति दिन दिन विषे त्रय काल स्नान करें मेरे को स्मरण कर्ता होया ऐसे फल कृच्छ्रको करके पुरुष शुद्ध होता है एह अग्रे साथ संबंध है और हे गालव जो पुरुष फलकृच्छ्रके कारणे विषे सामर्थ्यतें रहित है सो जिसकी अग्ने करणा है तिसको करे एह अर्थ है

१२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र • ५ ॥ टी • भा • ॥

सोपुरुष इसप्रत्याम्नायनं करणैककें पापतें शुद्धहोताहै और गौकीपूजा भली प्रकारकरे धूप दीप कनैवेद्यककें युक्त ॥ १ ॥ और पूजनतें पीछे प्रदक्षिणाककें और नमस्कारककें श्रेष्ठ ब्राह्मण तांड़ गौदेवे कैसीगौ है जो सहित बछेके है और दुग्धदेसे वाली और फलकृच्छ्रके बदलेककें फलके देणेवालीहै ॥ ४ ॥ ऐसे दानककें फलकृच्छ्रके संपूर्णफलकों प्राप्तहोताहै तां हे ब्राह्मण विषे श्रेष्ठ ऐसे व्रतनं कर तिसीक्षणमें तूं पवित्रहोवेंगा ५ ऐसेविष्णुककें आज्ञाकों प्राप्तहोयाहो या और प्रत्याम्नायनं करताहोया योगीयांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि है तिसनूं प्राप्तहोया ॥ ६ ॥
● अवपराक कृच्छ्रकहीदाहै तिसविषे मनुजीका वाक्यहै यतेति मनकों रोकके और प्रमादतें रहित

प्रत्याम्नायमिमंकृत्वा शुद्धो भवति पातकात् गोपूजासाधुसंयुक्ताधूपदीपनिवेदनैः । ३ ॥ परिक्रम्य नमस्कृत्य सवत्सांपयसावृताम् योदद्याद्विप्रवर्याय प्रत्याम्नायफलप्रदाम् ॥ ४ ॥ सम्पूर्णफलकृच्छ्रस्य ह्यखंडं लभते नरः एवं कुरुष्व विप्रर्षेपूतो भवसितक्षणात् ॥ ५ ॥ इत्याज्ञप्तस्तदा तेन प्रत्याम्नायं तदा चरन् सिद्धिमापाति महती योगिनामपि दुर्लभाम् ॥ ६ ॥ ● अथ पराक कृच्छ्रम् तत्र मनुः ॥ यतात्मनोऽप्रमत्तस्य द्वादशाहमभोजनम् पराकोनाम कृच्छ्रोऽयं सर्वपापप्रणोदनः ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ द्वादशाहोपवासेन पराकः परिकीर्तितः । देवलः । अथ वक्ष्यामि कृच्छ्रस्य पराकस्य महात्मनः सर्वदोषनिवृत्तिः स्यात्सर्वशास्त्रानुवर्तिनः ॥ १ ॥ पराकः कृच्छ्र इत्युक्तो विष्णुना प्रभाविष्णुना यदाचरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २ ॥

होके जोवारां १२ दिन भोजनका त्याग करणा एह संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला पराकनाम ककें कृच्छ्र कहा है ॥ १ ॥ तिसविषे याज्ञवल्क्य जिकावचन है द्वेतिवारां १२ दिनांके उपवास ब्रतककें पराक कृच्छ्र कहा है ॥ अब देवलजीका वाक्य है इसतें उपरंत पराक कृच्छ्रकों कहताहां संपूर्ण शास्त्रोंककें वर्तनवाला जो पुरुष है तिसके संपूर्ण पापांकी निवृत्ति होती है पराक व्रतककें १ ॥ ऐसेविष्णु जो प्रभाविष्णु है तिनानें पराक कृच्छ्र कहा है जिसके करणैकरके संपूर्ण पापांतें रहित होता है ॥ २ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी० भा० ॥ ९३

तेडेपाप डमकके दूर हुंदेहैं तिनको कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्महत्यापाप और मदिराके पीणे का पाप और सुवर्णके चुगणेका पाप और गुणोंकी स्त्री विषे गमन करणेका पाप और तिनांका संसर्ग और तिनांके तुल्यपाप ॥ ३ ॥ और संकलीकरणपाप और मलिनी करण और उपपातक एह नौ ९ प्रकारकापाप कहाहै ॥ ४ ॥ तुलेति तुलादान और हिरण्यगर्भ और ब्रह्मांड और घटदान और पंचलांगलक और पृथ्वीदान ॥ ५ ॥ और विश्वचक्र और कल्पलता और सप्तसागर और चर्म धेनु महती और महाभूतघट तैसे हि एह दान ॥ ६ ॥ और कालचक्र और राशिचक्र और इसतें अनंतर विश्वचक्र और लक्षकोड तिलांकके हवन करणा

ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः तत्संसर्गोपिधंचैतेह्यनुपातकनामकम्
३ संकलीकरणंचैवमलिनीकरणंतथा उपपातकमित्येतन्नवधापरिकीर्तितम्
४ तुलाहिरण्यगर्भश्चब्रह्माण्डोयंघटस्तथा पंचलांगलकंचैवधरादानमतःपरम्
५ विश्वचक्रंकल्पलतासप्तसागरमेवच चर्मधेनुश्चमहतीमहाभूतघटस्तथा
६ कालचक्रंराशिचक्रंविश्वचक्रमनन्तरम् कौटिलक्षतिलैर्होमोद्विमुखीसुर
भिस्तथा ७ आर्द्रकृष्णाजिनंचैववैकटपर्वसंगमे छागादिपंचकंचैवतथैवदश
धेनवः ८ । तथादशमहादानान्यचलाःसप्तनामकाःरहस्यकृतपापानिब्रह्म
हत्यादिकानिच ९ ॥ पापानांनवविधानामितरेषांमुनीश्वराः तुलादिसंग्रहा
वृणांपराकःकृच्छ्रनामकः ॥ १० ॥ सर्वपापहरोन्दृणांदेवानांचप्रियंकरः
सर्वेष्वेतेपुकृच्छ्रेषुमहान्प्रोक्तःस्वयंभुवा ॥ ११ ॥

और प्रसूत समयविषे गौका दान ॥ ७ ॥ और छप्पहरिणका आर्द्र चर्म और वैकट तीर्थविषे पर्वके होयां १ वरुते आदिलेकके पंच अर्थात् वकरा १ भेडा २ गौ ३ महिषी ४ घोडा ५ इनका दान और दश धेनु दान ॥ ८ ॥ और सप्त ७ पर्वतदान और गुप्तपाप और ब्रह्महत्यादि पाप ॥ ९ ॥ तुलाआदि दानांको जो ग्रहण कर्तेहैं तिनांके पापनू और नौ प्रकारके जो पापहै इसतें इतर जो पापहैं तिनां संपूर्णाकीं शुद्ध करणेवाला पराक कृच्छ्र नामकके ब्रतहै ॥ १० ॥ और पुरुषांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और देवतयांकी प्रीति करणे वाला ब्रह्मार्जिनें संपूर्ण कृच्छ्र ब्रताविषे एह पराककृच्छ्र ब्रत श्रेष्ठ कहाहै ॥ ११ ॥

९४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अथ गौचमजीका वाक्य है प्रत्यहमिति वारां १२ दिनपर्यंत दिन दिनविषे एक छटांकपरिमाण गौके घृतमात्रकों पीनेकके ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होबाहै एह पराक नामक व्रतसंपूर्ण पापोंके नाश करने वाला प्रसिद्ध है ॥ १ ॥ और संपूर्ण पापोंके और उषद्रवोंके नाश करने वाला और संपूर्ण स्वर्गादि लोकगतिके देणें वालाहै एह निश्चयकके विश्वोंके धारणें वाले हरि जो भगवान् सो आप कहते भये ॥ २ ॥ और स्मृतिविषेभी कहाहै दिन दिनविषे वारां १२ दिन पर्यंत एक १ छटांकी परिमाण गोघृतके पीनेकके ब्राह्मण संपूर्ण पापोंतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै हें द्विज इसतें बिना शुद्धि नहि ॥ ३ ॥ लौगाक्षिऋषिनेंभी कहाहै द्वेति वारां १२ दिन एक छटांकी गौकेघृतकों आपने तपाकर पीवे तां पुरुषसंपूर्ण पापोंतें रहितहोताहै और शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ अथ

गौतमः । प्रत्यहंघृतमात्रं च द्वादशाहंगवोद्भवम् पीत्वा पलं द्विजः शुध्येत् पराक इति विश्रुतः १ ॥ सर्वपापप्रशमनः सर्वोपद्रवनाशनः सर्वलोकप्रदो ह्यहं भगवान् हरि विश्वधृक् ॥ २ ॥ स्मृत्यन्तरे ॥ प्रत्यहं गोघृतं विप्रो द्वादशाहं पलमुदा पीत्वा शुद्धिं वाप्नोति पापेभ्यो नान्यथा द्विज इति ॥ ३ ॥ लौगाक्षिणाप्युक्तम् । द्वादशाहं घृतं तप्तं पलमात्रं गवामिव पीत्वा शुद्धिं वाप्नोति सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥ अत्रेव शब्द एवकारार्थः अयमेव पराकः ॥ अथ पराककृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ देवलः ॥ प्रत्याम्नायं पराकस्य वक्ष्याम्यहं मनुजमम् सर्वपापोपशमनं सर्वपापनिर्मुक्तनम् ॥ १ ॥ व्यासः ॥ पराकं नाम यत्कृच्छ्रं तत्कर्तुं मनुजोत्तमः अशक्तस्तस्य कृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायं समाचरेत् ॥ १ ॥ यस्माच्चरणमात्रेण पराकस्य फलं लभेत् प्रत्याम्नायंगवांदद्यादशपंचसवत्सकम् सर्वपापविनिर्मुक्तः प्रयाति परमंपदम् ॥ २ ॥

पराककृच्छ्रका वदलाहै तिसविषे देवलऋषिका वाक्यहै प्रेति पराककृच्छ्रके उत्तमप्रत्याम्नायकों कह तां कैंसा प्रत्याम्नाय जो संपूर्णपापोंके नाश करने वाला और संपूर्ण पापोंके छेदन करने वालाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि लघुपापोंका नाश और महापापोंका एक कर्के घाटा होताहै और बहुतयोंकके सभका नाश होजावेगा ॥ १ ॥ अथ व्यासजीकावचनहै पराकमिति पराक नाम कर्के जो कृच्छ्र है तिसके करणविषे पुरुष असमर्थ होवे तां तिसके प्रत्याम्नायनूँ करे जिसके करण कर्के पराक कृच्छ्रके फलनूँ प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ सो कहतेहां ॥ प्रत्याम्नायमिति पंदरा १५ और्या सहित बछियोंके दान करे इस वदले कर्के संपूर्ण पापोंतें रहित होबाहै और परम पदकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ १५

क्या करें महापापां संहारों तैसे उपपातकों शीघ्रहि नाशकरें शुद्धि करें देता है जैसे अग्नि
रुईके समूहकों दाह करता है ॥ ३ ॥ अब मरीचिजीका वाक्य है प्रेति पराकव्रतका जो बदला है
पंदरां १५ गौयां तिनांका ब्राह्मण आदि वर्ण दान करे संपूर्ण पापांकी शुद्धि वास्ते और संपूर्ण
कल्याणकी प्राप्तिवास्ते ॥ १ ॥ हेराजन् महापापांकरें युक्तभी जो पुरुष है सो पराकके बदले
करें पापां रहित होता है ॥ २ ॥ और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतोंके फलकों प्राप्त होके परम पद जा
ब्रिण्णुका लोक तिसन् प्राप्त होता है एह तेरेताई मैंने पराक व्रतकी विधि कही है ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तहि
अर्थको स्पष्ट करते हैं पराकेति पराककृच्छ्रव्रतके कर्ण विषे जो असमर्थ है तिस पुरुषके पाप
दूरकरणे वास्ते प्रत्याम्नाय कहा है ब्राह्मणोंके ताई भिन्न २ पंदरां १५ गौयांके देणेंकरें शुद्धि
कों प्राप्त होता है एहि अर्थ है ॥ अपराकविषे चतुर्विंशति मतविषे कहा है प्रेति पराककृच्छ्रव्रत और

महापातकजालानिह्युपपातकमेव च तत्सर्वनाशयित्वा शुतूलराशिमिवानलः

३ मरीचिः प्रत्याम्नायं पराकस्य दशपंचगवां द्विजः दद्यात्पापविशुद्धय
र्थं सर्वश्रेयोभितृद्वये १ महापातकयुक्तोऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते प्रत्याम्ना
येन कृच्छ्रस्य पराकस्य जनाधिप २ सर्वकृच्छ्रफलं लब्ध्वा प्रयाति परमं पदम्
इति ते हि समाख्यातः पराको विधिरुत्तमः ३ पराककृच्छ्राचरणा समर्थस्य
प्रत्याम्नायं पंचदशगवां विप्रेभ्यः पृथग्दत्त्वा शुद्ध्यतीति वाक्यार्थः ॥ अपराकं
चतुर्विंशतिमते ॥ पराकतप्ताति कृच्छ्रस्थाने कृच्छ्रत्रयं चरेत् सांतपनस्य वा
द्यर्द्धमशक्तौ व्रतमाचरेत् १ स्मृत्यर्थसारितु तप्तकृच्छ्रे पट् पराके पंचेति । अ
सौ प्रत्याम्नायो महत्तप्तकृच्छ्रे । तप्तकृच्छ्रे तु अपराकं मार्कण्डेयः प्राजापत्यस्य
माधेनुस्तद्वयं हि पराकके । विशेषमाह स एव पराके तु सुवर्णस्याद्धेमशृंगीत
थैव चेति ॥ हेमशृंगी ग्रहणेन कांस्यदोहाद्युपस्करवती धेनुं लक्षयति ॥

तप्तकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र इन विषे एक एक व्रतका त्रयत्रय प्राजापत्य व्रत बदला कहा है जिसके
इनांतीनों विषे भी असमर्थ होवे तां सांतपन व्रतका जो आदका अद्ध है तिसकों करे ॥ १ जो
स्मृत्यर्थसारविषे फेर कहा है कि तप्तकृच्छ्र व्रतविषे छे ६ प्राजापत्यव्रत बदला करे और पराकव्रतविषे
पंच ५ प्राजापत्य बदला करे सो एह प्रत्याम्नाय महातप्तकृच्छ्र विषे जानना ॥ तप्तकृच्छ्रविषे अप
राकविषे मार्कण्डेयजीका वचन है प्राजापत्यके तुल्य फल देणवाली प्रभूता गौ १ कही है सो धेनु
पराक व्रत विषे दोकहीयां हैं ॥ इस विषे मार्कण्डेयहि विशेष कहता है पराकव्रत विषे सुवर्ण
दानकरे तैसे सुवर्णके शृंग और रूप्यके खुर और कांस्यपात्रते आदलेके समग्रोंकरें युक्त धेनु
का दान करे ॥

९६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

इसमें अनंतर मासोपवास कृच्छ्रकों जावाल ऋषि कहताहै अनेति एकमासपर्यंत उपवास व्रत महापापांके नाशकरणेवाला कहाहै ॥ अब इसकाप्रत्याम्नायकहतेहां वारां १२ दिनके उपवासकर्के युक्त पगक व्रतहै अथवा दिन दिन प्रति सठ ६० ब्राह्मणकहणे तिसकारणें मासकेउपवास व्रत विषे भी फलकी प्राप्तिवास्ते वदला सठ ६० ब्राह्मणहि कहने एह षष्ठ ऐश्वर्य युक्तपुरुष विषे जानणा ॥ और निधनपुरुष तोस १० ब्राह्मणांके ताई भोजन देवे दिनविषे ॥ इसमें उपरंत यावककृच्छ्र व्रतकहाहै तिसविषे शंखजीकावाक्यहै गविति गौकेगोयेतें यवांको जुगके एक मासपर्यं जो भक्षणहै सो संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्ते यावककृच्छ्र किहाहै १ देवलजीका वाक्यहै

अथ मासोपवासकृच्छ्रम् ॥ जावालः । अनशनं मासमेकं तु महापातकनाशन मिति अस्य प्रत्याम्नायोद्वादशाहोपवासरूपपराकः षष्टिमितब्राह्मणभोजनं प्रतिदिनं वा विहितम् ॥ तथात्रापि षष्टि ६० मितब्राह्मणामासं यावत् प्रतिदिनं मासोपवासफलकामनया भोज्याः इदं च धान्यसमृद्धिपरमितरस्यार्द्धादि व्यवस्थया योज्यम् ॥ अथ यावककृच्छ्रम् तत्र शंखः । गोपुरीपाद्यवानश्रन्मासमेकं समाहितः व्रतंतु यावकंकुर्व्यात्सर्वपापापनुत्तये १ देवलः । अथातः संप्रवक्ष्यामि कृच्छ्रं यावकंसंज्ञकम् यस्याचरणमात्रेण मुच्यते ब्रह्महत्यया १ ॥ शृणुध्वं मुनयः सर्वे यावकंकृच्छ्रमरितम् विपदाने च यत्पापं यत्पापं गृहदाहके २ शस्त्रधारेण यत्पापं यत्पापं विप्रनाशनात् विधवा व्रतलोपे च याति संन्यासि नारपि ३ गृहस्थस्य सदाचारत्यागे यत्पापमुच्यते प्रकृतेनापि यत्पापं तेषां विस्मयतस्तथा ॥ ४ ॥

अर्थेति यावकनामकर्के जो कृच्छ्रव्रतहै तिसनूं कहतेहां जिसके कर्णकर्के पुरुष ब्रह्महत्यापापते रहित होताहै ॥ १ ॥ अवमरीचिका वचनहै अिति हे संपूर्णमुनीश्वरो श्रवणकरो मैंने यावककृच्छ्र नामव्रतकहीदाहै विषकेदेणकर्के जोपापहै और गृहविषे अग्निलाणैकर्के जोपापहै ॥ २ ॥ और शस्त्रके धारणें जो पापहै और ब्राह्मणके मार्गणें जो पापहै और विधवा स्त्री विषे गमन करणे का जो पापहै और ब्रह्मचारीके और संन्यासीके व्रतके दूरकरणेविषे जोपापहै ॥ ३ ॥ और गृहस्थोंको कर्मके त्यागविषे जो पापहै और स्वभावकर्के जो पापहै और तिनां विधवा स्त्री आदिकांको भय देनेका जो पापहै ॥ ४ ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र. ५ ॥ टी. ० भा. ॥ ९७

और अपणेमानवान्ने ब्राह्मणताई दानदेकर जो कहणाहै मैंनेदानकीया तिसकहणेंतें ओर ब्राह्मण के अबमानतें जोपाप और ब्राह्मणकी निंदाकरणे विषे और माताका निरादरकरणेंतें जो पाप ॥ ५ ॥ और धेनुकी निंदाविषे औरशिवांकी निंदाविषे और विष्णुकी निंदाविषे और यज्ञांकी निंदाविषे जो पाप ॥ ६ ॥ और विना बुलाय पग्गृहभोजनविषे और अनध्याय दिनांविषे पड नेका जो पाप है और दुष्टपुरुषके साथ संगतिकरणेंतें जो पाप है और धनके मदतें जो पाप है ७ ॥ और दुग्धकर्के स्नानकरणेंतें जो पापहै और स्त्रीके निरपराध त्यागणें कर्के जो पापहै यज्ञके त्यागविषे और भांडयांके बेचणेविषे जो पापहै ॥ ८ ॥ और विधवानें जो केशातें रहितस्नानक

दानस्यकीर्तनात्पापंयथाविप्रावमानतः यत्पापंविप्रानिंदायांयत्पापंमातृभ
र्त्सनात् ॥ ५ ॥ यत्पापंधेनुनिंदायांयत्पापंशिवभर्त्सने यत्पापंविष्णुनिंदा
यांयत्पापंक्रतुकुत्सने ॥ ६ ॥ अमानभोजनेपापमनध्यायेपुपाठने दुःसंगते
श्रयत्पापंयत्पापंधनगर्वतः ॥ ७ ॥ यत्पापंपयसास्त्रानेयत्पापंदारमोचने
यत्पापंक्रतुसत्यागेयत्पापंभांडविक्रये ॥ ८ ॥ सकेशस्नानरहिता विधवा
कांस्यभोजना पुनर्भुक्तासताम्बूलासदानिन्दापरायणा ॥ ९ ॥ सदाभ्रमति
यानारीपतिद्वेषपरायणा पुत्रःपितृणांविद्वेपीसदाविप्रापराधकृत् ॥ १० ॥
कुचैलः सर्वदातिष्ठन्यथातत्क्षालनाद्विसः वह्वाशीनिष्टुरंवक्ताविप्रदाने
पुविघ्नकृत् ॥ ११ ॥

रणाहै और तिसकों जो काम्यपात्रविषे भोजन करणेका पापहै और विधवाकों दूसरी बार भो
जन करणे विषे और तांबूलके भक्षण करणे विषे जो पापहै और जो स्त्री सदानिंदाविषे मुक्तहै
तिसकों जो पापहै ॥ १ ॥ और जो सदाघरघरविषे भ्रमतीहै और पतिविषे द्वेषकर्के मुक्तहै तिसकों
जो पाप और पुत्रकों पिताके साथविरोध करणेका जो पापहै और ब्राह्मणविषे अपराधकरणे
काजोपापहै ॥ १० ॥ और सर्वदामलिन वस्त्रधारणका जो पाप और हच्छीतगृहवत्त्वके अप्रक्षाल
णेका जो पाप और वहन जगा भोजन खाणेविषे जो पाप और जो कठोरवचनकों कहताहै
तिसका जो पाप और ब्राह्मणांके ताई दान देणे विषे विघ्न करणे वालोंकों जो पापहै ॥ ११ ॥

९८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

इनमें संपूर्ण पापों के दूर करने वास्ते यावक कृच्छ्रव्रतकों करे ॥ पराशरजीका वचन है सर्वेति संपूर्ण पापों के दूर करने वास्ते यावक कृच्छ्रव्रत कहा है तिसके कणों कर्क ब्रह्मण शुद्धिकों प्राप्त होता है ॥ १ ॥ इसकी विधि कहते हैं अवेति जिनां के भक्षण करणें व्रत न दूर होवे असयां यवांकों अथात् गोमयतें निकालके यवांकों आप ग्रहण कीतीहोंई जो अग्नि तिस विषे छे गुणा अधिक जल कर्क पकाके ब्रती जो पुरुष है शुद्धिकों स्नान पूर्वक करे तिस पके होये यवागूकों पलाशपत्रांके डूने विषे रक्षकर ॥ २ ॥ और यव न हों तां ब्रीहि ग्रहण करे वा श्यामाक क्या सवांके ग्रहण करे इसके मानतें दिन दिन विषे प्रथम ब्राह्मणके तांडे देकर विष्णुतांडे सो अन्नअपेण करे ॥ ३ ॥ और नित्यकर्मकों कर्कसूर्यके अस्त

एतेपांपावनार्थाय यावकं कृच्छ्रमाचरेत् ॥ पराशरः ॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थं यावकं कृच्छ्रमीरितम् तदाचरणमात्रेण विप्रो भवति शुद्धिमान् ॥ १ ॥

अव्रतघ्नयवान्पत्कास्वगृह्याग्नीव्रतीशुचिः तद्यवागूं समाधाय ब्रह्मपत्रपुटे वशी ॥ २ ॥ यवाभावे ब्रीहयो वा श्यामाका ह्यस्य मानतः ॥ तदन्नं प्र

त्यहं दत्वा यवागूं विष्णवेऽर्पयेत् ॥ नित्यकर्मदिकं कृत्वा यावन्मंदाय ते रविः ॥ ३ ॥ तावत्पर्यंतं पूर्वविभूतिं विश्वरूपादिकं पठन् स्थित्वा

नारायणमनुस्मरन् यवागूं पिबेत् ॥ तदाह गौतमः ॥ ब्रह्मपत्रपुटे राजन्ध्रत्वासाय मतं द्रितः तावता मनसा विष्णुं स्मरन् मंदाय ते रविः ॥ १ ॥ यवागूं

विष्णवे दत्वा पश्चात्पीत्वा स्वयं मुदा पूर्ववत्क्षालनं कृत्वा पादपाण्योर्यथाक्रमम् ॥ २ ॥ हिराचम्य शुचिर्भूत्वा स्वपेन्नारायणाग्रतः अजस्रधारयेदग्निं यावत्कृच्छ्रं समाप्यते ॥ ३ ॥ परेद्युरेवं कुर्वीत द्वादशाहोभिरीरितम् तदंते गौः

प्रदातव्या पंचगव्यं पिबेत्तदा ४ ॥ एवं कृत्वा द्विजो यस्तु सद्यः पापात्प्रमुच्यते

पर्यंत विभूति विश्वरूपादिका पाठ करे और नारायणका स्मरण करे पीछे तिसयवागूका पान करे ॥ तिसी नूं गौतम ऋषि कहता है हेराजन् आलसतें रहित होके सायं काल विषे भक्षण करे यो यव जो यवागू तिसकों पलाशपत्रांके डूने विषे रक्षके मन कर्क विष्णुका स्मरण करे सूर्यके अस्त तक १ ॥ फिर विष्णुतांडे देके आप पान करे हर्षकके पीछे पूर्वकी न्यांई हत्य और पैरोंको क्रमसे शुद्ध कर्के २ ॥ दो बार आचमन करे और नारायणके आगे शयन करे और निरंतर अग्निका धारण करे जिन नार्पयत कृच्छ्रव्रत नहि समाप्त होवे ॥ ३ ॥ तिनना काल करतार हैं ऐसे संपूर्ण विधि दूमेरे दिनसे लेके बागं दिन तक कर्के अतविषे पंचगव्यकों पीवे और गौ दान करे ऐसे करणे तें तात्काल द्विजपापनें रहित होता है ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ ९९

इसमें उपरंत यावक कृच्छ्रका वदलाहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै कृच्छ्रस्येति इसयावककृच्छ्रके प्रयाम्नायन् श्रवणकर जिसके एकवार करणकरके ब्राह्मणादि तात्कालहिपापते रहितहोताहै । १ । योगीश्वरका वाक्यहै प्रेति यावककृच्छ्रके वदलेनू कहतेहां जों वदला संपूर्णपापांके नाश करण वाला और पुरुषांको संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै ॥ १ ॥ यावक कृच्छ्रकावदलेमें दश १० गौयांसहित वल्लवांके दुग्धदेणे वालीयां और हल्ले स्वभाववालीयां वस्त्रभूषणांकरके संयुक्त ॥ २ ॥ भिन्न भिन्न ब्राह्मणांके तांई देणें योग्यहै जो ब्राह्मण जीविकासे रहितहैं ॥ पीछे देहकी शुद्धि वास्ते पंचगव्यको पीवे एह वदला यावक कृच्छ्रके फल देणें वाला सेवणे योग्यहै

अथयावककृच्छ्रप्रत्याम्नायः॥ तत्रदेवलः ॥ कृच्छ्रस्ययावकस्यास्यप्रत्याम्ना यमिमंशृणु सकृत्कृत्वाद्विजोयस्तुसद्यः पापात्प्रमुच्यते १ योगीश्वरः प्रत्या म्नायंप्रवक्ष्यामियावकस्यमहात्मनः सर्वपापप्रशमनं सर्वकृच्छ्रफलंनृणाम् १ ॥ गावोदशप्रदातव्याः प्रत्याम्नायेप्रकल्पिताः सवत्सादुग्धसंयुक्ताः सुशीलारसमलंकृताः २ विप्रेभ्यःप्रतिदातव्या अरुतिभ्यःपृथक्पृथक् पंचगव्यंततःपश्चात्पिवेहेहविशुद्ध्ये ३ एतत्कृच्छ्रस्यफलदंयावकस्यसुखा त्तये ॥ गौतमः ॥ यावकस्यमहापापहारिणःफलदायकम् सर्वपापोपशमं नमहत्पुण्यप्रदायकम् ॥ १ ॥ सम्पूर्णवस्त्राभरणस्वुरशंगोपशोभिताः स वत्सायुवतीःसाध्वीर्गवांसंख्यादशस्मृताः ॥ २ ॥ पयस्विनीर्द्विजार्ग्येभ्यः प्रदातव्याःफलात्तये पंचगव्यंपिवेत्पश्चाच्छुद्धोभवतिमानवः ॥ ३ ॥

मुखकी प्रातिवास्ते ॥ १ ॥ गौतमजी कावाक्य है येति यावककृच्छ्र जों व्रतमहापापांके नाश करणे वाला तिसका वदला फलके देणे वाला और संपूर्ण पापांके नाश करण वाला और महत्पुण्यकेदेणे वालाहै ॥ १ ॥ तिसमें संपूर्ण वस्त्र और भूषण और रूपके स्वर और सुवर्णके शृंगतिनां करके शोभायमान सहित वल्लवांके और जुवाण सुशीला दश गौया १० देणे वास्ते कथनकीसयांहै ॥ २ ॥ दुग्धदेणेंवालीयां फलकी प्राति वास्ते श्रेष्ठ ब्राह्मणांकेतांई देवे और पीछे पंचगव्यका पानकरे तां मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥

१०० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

जो पुरुष इस प्रकार करता है सो यावक व्रत के फलकों प्राप्त होके सुद्ध होता है ॥ २ ॥ अब सौम्यकृच्छ्र कहने हैं तिस विषे याज्ञवल्क्य का बचन है पितृयति प्रथम दिन विषे तिलांकों कुटकर भक्षण करे और दूसरे दिन चायलांकी पिछका पान करे और तीसरे दिन तक कया छाहका पान करे और चौथे दिन केवल जलका पान करे और पांचमे ५ दिन यवांके सक्तुयांका पान करे और एक रात्रका उपवास करे एह छे दिनका सौम्यकृच्छ्र व्रत कहा है । १ । इहां द्रव्यका परिमाण प्राणां के निर्वाह मात्रा जानना ॥ जावालकृषिमें तो चार दिनांका सौम्यकृच्छ्र कहा है एक दिन विषे तिलांकों कुटकर भक्षण करे और दूसरे दिन सक्तु पान करे और तीसरे दिन छाहका पान करे

एवं कृतेन रोयस्तु यावकस्य स्वरूपिणीम् गवांसंख्यां द्विजाग्र्याय दत्त्वा फलमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ अथ सौम्यकृच्छ्रम् ॥ तत्र याज्ञवल्क्यः ॥ पितृयाका चामतक्राम्बुसक्तूनां प्रतिवासरम् एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रः सौम्योऽयमुच्यते १ ॥ द्रव्यपरिमाणं तु प्राणयात्रा मात्रा नियन्धनमधिगंतव्यम् ॥ जावालेन तु चतुरहर्व्यापी सौम्यकृच्छ्र उक्तः । पितृयाकं सक्तवस्तक्रंचतुर्थे हन्यभोजनम् वा सो वै दक्षिणां दद्यात्सौम्योऽयंकृच्छ्र उच्यते ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे ॥ वारणकृच्छ्र उक्तः ॥ मासपरिमितसक्तदकपाने वारणकृच्छ्रः ॥ श्रीकृच्छ्रस्तु ॥ त्र्यहं पिवतु गोमूत्रं त्र्यहं वै गोमये पिवतु त्र्यहं यावकमेव श्रीकृच्छ्रः मरमपावनः ॥ १ ॥ अथ यावककृच्छ्रः ॥ यवानां पयःसाधितानां सप्तरात्रं पक्षमासं वा प्राशने यावककृच्छ्रः ॥

और चौथे दिन विषे उपवास करे और वस्त्र दक्षिणा देवे एह सौम्यकृच्छ्र कहा है ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखर विषे वारण कृच्छ्र व्रत कहा है एक मास पर्यंत जलककें युक्त जो सक्तु तिनांके पान करण विषे वारण कृच्छ्र व्रत होता है । अब श्रीकृच्छ्र कहीदा है त्र्यहमिति त्रय दिन गोमूत्र पीवे और त्रय दिन गौका गोया पान करे और त्रय दिन जवांका काडा पीवे एह श्रीकृच्छ्र व्रत कहा है ॥ १ ॥ अब यावककृच्छ्र कहीदा है जलककें सिद्ध कीते जो यव तिनांका सप्त दिन पान करे वा पंदरां दिन वा एक मास भक्षण करण विषे यावककृच्छ्र कहा है ॥ एह पूर्वोक्त यावक कृच्छ्रमें विलक्षण होणे कर्के सुमने भिन्न है

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी० भा० ॥ १०१

अथ जलकृच्छ्रः ॥ भोजनको त्यागके जल विषे स्थितहोवे दिन गरा तां जलकृच्छ्र होताहै ॥
अथ वज्रकृच्छ्रः ॥ गोमूत्र कर्के युक्त जो पत्र तिनांको एक दिन भक्षण करे तां वज्रकृच्छ्र
व्रत होताहै इसजगामो कालकानियम अहोरात्रहि जानणा और पापपुरुषको वज्रकी न्याईहै
इस कर्के वज्रकृच्छ्रनामहै * अथ तुला पुरुष नाम कर्के कृच्छ्रकहीदाहै तिस विषे याज्ञवल्क्यजी
का वचन है एषामिति तिल कुट्टे होये और चावलांकी पिछ और छाह और जल और
सबुयांको क्रमकर्के एक एकको त्रय त्रय दिन भक्षण करे तां पंदरा १५दिनांकर्के तुलापुरुषनाम
कृच्छ्रव्रत होताहै ॥ १ ॥ इसतुलापुरुषका पंदरा दिनांकर्के विधान होणेतें उपवासनहि कहा ॥
यमजीनें इकोयां दिनांका तुलापुरुष व्रत कहाहै अचाममिति चावलांकी पिछ और तिलकुट्टेहोये

अनाशनेजलस्थोहोरात्रंक्षिपेदितिजलकृच्छ्रः ॥ वज्रकृच्छ्रस्तु गोमूत्रयाव
कपानेएकोवज्राख्यःकृच्छ्रः*अथतुलापुरुषाख्यकृच्छ्रः ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥
एषांत्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्ययथाक्रममृतुलापुरुषइत्येपज्ञेयःपंचदशाहकः
१ ॥ एषांपिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनामित्यर्थः ॥ १ ॥ अत्रपंचदशाहकत्व
विधानादुपवासस्यनिवृत्तिः । यमनत्वेकविंशतिरात्रिकस्तुलापुरुषउक्तः ॥
आचाममथपिण्याकंतक्रंचोदकसक्तुकान् अहंअहंप्रयुंजानोवायुभक्ष्यस्य
हृदयम् एकविंशतिरात्रस्तुलापुरुषउच्यते ॥ १ ॥ * अथकायकृच्छ्रम्
॥ तत्रदेवलः ॥ प्राजापत्यंतत्कृच्छ्रंपराकंयावकंतथा ततःसांतपनंकृच्छ्रं
महासांतपनंतथा ॥ १ ॥ कायकृच्छ्रंतथाप्रोक्तमतिकृच्छ्रंविशुद्धिदम् ॥
औदुम्बरंचपर्णंचफलकृच्छ्रमतःपरम् ॥ २ ॥

और छाह और जल और सनु इनांको क्रम कर्के त्रय त्रय दिन भक्षण करे और छ ६
दिन वायु भक्षण करे ऐसे इकोस २१ दिनांका तुलापुरुष कहा है उसका नामना
तुलापुरुषदानके तुल्यफल देणे कर्के है तिसके तुल्यहै ॥ १ ॥ * इसतें उपसन कायकृच्छ्रहै
तिस विषे देवल जीका वाक्यहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्र १ और तत कृच्छ्र २ पाककृच्छ्र
३ यावककृच्छ्र ४ सांतपनकृच्छ्र ५ महासांतपन ६ कायकृच्छ्र ७ अतिशुद्धि विशेष कर्के
शुद्धिके देणे वालाहै और ८ औदुम्बरकृच्छ्र ९ पर्णकृच्छ्र १० और इसके अगे
फलकृच्छ्र ॥ ११ ॥ २

१०२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

माहेश्वरकृच्छ्र १२ ब्रह्मकृच्छ्र १३ धान्यकृच्छ्र १४ स्वर्णमयकृच्छ्र १५ पिच्छे कृच्छ्र व्रत
तेरा १३ कथन कीतेहैं अब लिङ्गपुराण विषे कथन कीते जो अतिकृच्छ्र और काय कृच्छ्र
तिनां कर्के पंद्रां कृच्छ्र होतेहैं संपूर्णलोकांके उपकारवास्ते लिखेहैं ॥ कायकृच्छ्र और अतिकृ
च्छ्र का लक्षण जो लिङ्गपुराण विषे कहाहै तिरुनूं कहतेहां कायेति कायकृच्छ्रनूं कहतेहां
जा महापापांको शुद्धकरणे वास्ते और उपपातकांकी शुद्धिकरणे वास्ते मुनियानं कथन
कोताहै १ ॥ अब जो पाप कायकृच्छ्र कर्के दूर होतेहैं तिनको लिखतेहैं भविष्यत्पुराण विषे ॥
कायकृच्छ्रकर्के दूरहोणवाले पाप कहेहैं तुलेति एक हजारका जो दान कर्ताहै और ६ ॥

एवंमाहेश्वरंचैवब्रह्मकृच्छ्रतथैवच धान्यंस्वर्णमयंचैवदशपंचैवकीर्तितम् ३
पूर्वत्रयोदशकृच्छ्राणीत्युक्तम् । इदानींलिङ्गपुराणोक्तत्वादतिकृच्छ्रकायकृच्छ्रा
भ्यांसहपंचदशभवंतिसर्वेषामुपकारकत्वाल्लिखितम् ॥ कायकृच्छ्रातिकृच्छ्र
लक्षणंलिङ्गपुराणोक्तंविशिनष्टि ॥ कायकृच्छ्रप्रवक्ष्यामिमहापातकशुद्ध्ये
उपपातकशुद्ध्यर्थमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥ १ ॥ भविष्यत्पुराणे ॥ तुलाधे
नुसहस्राणिअष्टाब्दानिद्विजोत्तम दाताप्रतिग्रहीताचअन्योन्येनावलोक
येत् ॥ १ ॥ तुलाधेनुसहस्रदानानंतरमष्टवर्षपर्यन्तं दातृप्रतिग्रहीत्रोरव
लोकनादिनिषिद्धमित्यर्थः ॥ यदिदेवादनुप्राप्तंतीर्थेषुचमहोत्सवे तदातदो
पशांस्यर्थंकायकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ २ ॥ द्वितीयोजपकृत्पूतःसहस्रविधिपूर्व
कम् द्वितीयःप्रतिग्रहीता उभयोर्दानयोराराजातथाब्रह्मसदस्ययोः ॥ ३ ॥
चत्वार्येवहविर्पाणितन्मुखनावलोकयेत् ।

धेनुका जो दान कर्ताहै और तिनदानांको जो ग्रहण कर्ताहै इसमे दाता और
प्रति ग्रहीताको अष्ट वर्ष ८ पर्यंत आपसमें देखणका निषेध है क्या आपस
विषे दर्शन न करें ॥ १ ॥ जकर तीर्थी विषे फेर महोत्सव विषे देवकर्के उनां
पूजाका मिलाप होवे तां तिसदोषकी शान्तिवास्ते काय कृच्छ्र व्रतको करे दाताको एह प्राय
श्चित्तहै ॥ २ ॥ और दानके ग्रहण करणे वाला विधि पूर्वक एक हजार १००० गायत्रीके
जप कर्के शुद्ध होताहै तुलादान हजार और धेनुदान हजार इत दोतां दानों विषे राजा ब्रह्मा
और सदस्यके मुखको चारवर्ष पर्यंत न देखे ॥ ३ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ १०३

ब्रह्म और सदस्यका अर्थ शब्द कल्प द्रुम विषे कहा है एकइति एक कर्मविषे नियुक्त होता है और दूसरा कर्मका धारक होता है और तीसरा प्रणको कर्ता है और चौथा पुरुष कर्मको कर्ता है ॥ १ ॥ जो कर्मविषे निरंतर युक्त है तिसका नाम आचार्य और सोहि पुरुष ब्रह्मांग जो होम कर्म है तिस विषे युक्त होवे सो ब्रह्मा कही दा है और सोहि ब्रह्मा आप हवन करे तिसका नाम होता है और जो (विधिके दखाणे वाला है तिसका नाम सदस्य कहा है इस अरमकोशके वाक्यते) कदाचित् राजा ब्रह्म सदस्यके मुखको देखे तां तिसको पापदूरकरणवास्त कायकृच्छ्रवत है ब्रह्मा और सदस्य को एक हजार १००० गायत्रीका जप शुद्धिवास्ते कहा है ॥ ऐसे न करे तां दोषनू बृहस्पति जी

ब्रह्मसदस्ययोः संज्ञा शब्दकल्पद्रुमे एकः कर्मनियुक्तः स्याद् द्वितीयस्तत्र धारकः तृतीयः प्रणकं कुर्व्यात्ततः कर्मसमाचरेत् १ कर्मनियुक्त आचार्यः सच ब्रह्मांगके होमकर्मणि ब्रह्मा स्वयं होम करोहा तापीत्यादि सदस्याविधि दर्शिन इत्यमरात् सदस्यो विधिदर्शी बोध्यस्तत्परिहाराय दातुः कायकृच्छ्रमि तरयो ब्रह्मसदस्ययोश्च सहस्रगायत्रीजपः । अन्यथा दोषमाह बृहस्पतिः । दातुः प्रतिग्रहीतुश्च कायकृच्छ्रजपो महान् अन्योन्यालोकनेनाचेत्तदानं निष्फलं भवेत् १ महासचसहस्रावच्छिन्नो नोचेत् तन्निष्क्रियमकृत्वा चेदित्यर्थः ॥ सर्वमहादानप्रतिग्रहे पुदातु प्रतिग्रहीत्रो ब्रह्मसदस्ययोश्चैव मुक्तं प्रायश्चित्तं सर्वत्र वेदितव्यम् लांगलपंचसंज्ञे च विश्वचक्रमहत्तरे सप्ताब्दं चत थाराजातन्मुखं नावलोकयेत् ॥ २ ॥

कहते हैं ॥ दातुरिति दाता और प्रतिग्रहीता आपसविषे देखे तो दाता कायकृच्छ्रवत न करे और प्रतिग्रहीता महान् क्या एक हजार गायत्रीका जप न करे तां सो दान निष्फल होता है १ तिसकी शुद्धिकों जेकर न करे संपूर्ण महादान प्रतिग्रहा विषे दाता और प्रतिग्रहीताको और ब्रह्मा और सदस्यको प्रायश्चित्त जैसे कहा है सो संपूर्ण स्थानाविषे जानणे योग्य है ॥ और पंच लांगल दान विषे और विश्वचक्र महा दानविषे राजा तिन दानांके ग्रहण करण वालयां पुरुषांके मुखनू सच ७ वर्ष न देखे २ ॥

१०४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

सप्तेति सप्तसागर दानां विषे और चर्मधेनुके प्रतिग्रह विषे और महाभूत घट दान विषे और तुला दानविषे कहे जो सप्त प्रतिग्रह तिनो दानां विषे आचार्य और ब्रह्मा क्याहोता और विधि के दखाणे वाला इनांके मुखकों राजा नदेखे कदाचित् देखेता पूर्वकी न्यांई कायकृच्छ्र आ, दिकों करे तांशुद्धहोताहै ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भ दानविषे और ब्रह्मांड दानविषे दाता जेकर आपसविषे मुखदेखे तां दानके फलको नहि प्राप्तहोता इसजगामी प्रायश्चित आचार्य और ब्रह्मासदस्यको पूर्वकी न्यांईहै ॥ ४ ॥ और सम्यक् कल्पवृक्षके दानविषे और तैसे कल्पलतादान विषे राजा छे ६ वर्षतक ब्राह्मणके मुखको नदेखे और ब्राह्मण राजाकों नदेखे १ कदाचित् आपसविषे देखें तां कायकृच्छ्र और गायत्रीका जपकरें तिसविषे संख्या क्रमकर्के जानणे योग्यहै

सप्तसागरदानेषुचर्मधेनोःप्रतिग्रहे महाभूतघटैवतुलायांनावलोकयेत्
३ ॥ उक्तेषुसप्तप्रतिग्रहेषु तदाचार्यब्रह्मसदस्यानां प्राग्वत्कायकृच्छ्रादिकं
वेदितव्यम् ॥ हिरण्यगर्भब्रह्माण्डेदातायदिहिपूर्ववत् अन्योन्यालो
केनेराजन्नदानफलमश्नुते ॥ ४ ॥ आचार्यब्रह्मसदस्यानांपूर्ववत् ॥ सं
कल्पपादपादानेतथाकल्पलताग्रहे ॥ षडब्दंतन्मुखंराजाविप्रोवांनावलो
कयेत् ॥ ५ ॥ कायकृच्छ्रेगायत्रीजपंच तत्रसंख्याक्रमेणवेदितव्यम् ॥ हि
रण्यधेनुदानेचहिरण्याश्वप्रतिग्रहे ॥ पूर्ववत्सप्तसंख्याब्दमन्योन्यंनावलो
कयेत् ॥ ६ ॥ कृच्छ्रादिकंपूर्ववत् ॥ हिरण्याश्वेरथेचैवहेमहस्तिरथेतथा
धरादानेकालपुरुषेकालचक्रेतथैवच ॥ ७ ॥ तिलधेनौराशिचक्रेपंचाब्दंना
वलोकयेत् यदिदेवात्समालोकोह्यतिकृच्छ्रचरेद्भती ॥ ८ ॥

॥ ५ ॥ अर्थः राजाकायकृच्छ्रकरे और ब्राह्मणजप करे और सुवर्ण धेनुके दान विषे और सुवर्णके अश्व दानविषे पूर्वकी न्यांई सप्त ७ वर्षतक आपस विषे न देखें इसमेभी जेकर देखे तो कृच्छ्रादि ब्राह्मणकी न्यांई जानणा ॥ ६ ॥ सुवर्णके अश्व चक्रे युक्त जो रथ है तिस विषे और सुवर्णके हस्ति कर्के युक्त जो रथ है तिस दान विषे और पृथ्वी दान विषे और काल पुरुष दान विषे और कालचक्र दान विषे ॥ ७ ॥ तैसे और तिल धेनु दानविषे और राशि चक्र दानविषे दाता और प्रतिग्रहीता आपस विषे पंच वर्ष पर्यंत नदेखें जेकर देवकर्के आपस विषे देखणतां दाता अतिकृच्छ्रव्रतको करे ॥ ८ ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र. ५ ॥ टी. ० भा. ॥ १०५

पुनरिति ब्राह्मणपटगर्भं विधानते फेर संस्कारके करणेतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ऐसेन करेतां दोषकों प्राप्तहोताहै और दाताका दान निष्फलहोताहै १ और कहतेहैं कोटीति कोटि होमविषे और लक्ष होमविषे और पाप पुरुषके प्रतिग्रहविषे दाता आचार्यके मुखको न देखे १० जेकर देवतें दर्शनकरे तिसविषेभो दाताकों अतिरुच्छ्रवतकहाहै और इतर क्या आचार्यआदिकांकों फेर संस्कार शुद्धिके निमित्त कहाहै इसमें वाशब्दसें पूर्वोक्त ५ वर्ष तक निषेध जानणा ॥ श्वेत्त अश्व दानकों जो ग्रहण कर्ताहै और मृतपुरुषके निमित्त जो शय्या दान तिसको जो ग्रहण कर्ताहै और हाथि दानको जो ग्रहण कर्ताहै तिसके मुखकों त्रय ३ वर्ष पर्यंत दाता न देखे ॥ ११ ॥ और जेकर देवतें तीर्थआदिविषे देखे तां दाता अति रुच्छ्रवतकरे और ब्राह्मण पटगर्भं विधितें संस्कार करणेतें शुद्धिको प्राप्तहोताहै ॥ १२ ॥ और

पुनरसंस्कारभृद्विप्रःपटगर्भविधानतः अन्यथादोषमाप्नोतिदाताविफलमभ्युते ॥ ९ ॥ कोटिहोमेलक्षहोमेपापपुरुषप्रतिग्रहे आचार्यस्यमुखंदातादैवादानावलोकयेत् ॥ १० ॥ तत्राप्यतिकृच्छंदातुरितरेषांपुनःसंस्कारः श्वेताश्वमृतशय्यायांगजदानप्रतिग्रहे अश्वदंहितन्मुखंदातादैवादानावलोकयेत् ॥ ११ ॥ अतिकृच्छीचदातास्याब्राह्मणःपटगर्भतः १२ आर्द्रकृष्णाजिनेचैवसप्तशैलप्रतिग्रहे द्वित्र्यब्दंतन्मुखंदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १३ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंचरेदाताइतरेपटगर्भतः शुद्ध्यंतिसततंविप्राःशातातपवचो यथा ॥ १४ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंप्राजापत्यमित्यर्थः ॥ कपिलाद्विमुखीदानेदासीगृहपरिग्रहे अश्वदमेकंदिजंदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १५ ॥ द्विमुखीउभयमुखीत्यर्थः ॥ पर्णकृच्छ्रंततःप्रोक्तमितरेषां हि पूर्ववत् तुलादिसप्तदानेषु ऋत्विजोहोतृकानपि द्वारस्थान्नावलोकेद्वाफलकृच्छ्रमुदाहृतम् १६ मासत्रयमित्यर्थः

कृष्ण मृगके आर्द्र क्या गिल्लेचर्मके दानविषे दो वर्ष और सप्तउपवंत दानके ग्रहणविषे त्रयवर्ष पर्यंत दाता दानके ग्रहण करणवालेके मुखकों न देखे १३ जेकर देवतें देखे तां दाता प्राजापत्यकृच्छ्र व्रतकों करे और इतर जो आचार्यआदि सो पटगर्भ विधितें शुद्धहोतेहैं एह शातातपका वचनसत्यहै १४ और कपिलागौके दानविषे और उभयमुखी गौके दानविषे और दासी और गृहदानविषे दाता एकवर्षपर्यंत दानग्रहीताके मुखको पूर्वकीन्याई न देखे १५ जेकर देवतें देखे तां दाता पर्णकृच्छ्र व्रतकों करे और आचार्य आदिकांकी शुद्धि पूर्वकी न्याई पटगर्भ विधानतें होतीहै और तुला आदिसप्तदानां विषे दाता द्वारविषे स्थित जो ऋचांकों पठनवाले तिनांकों न देखे त्रयमास ३ पर्यंत जेकर देखे तां फल कृच्छ्र कर्के शुद्ध होताहै ॥ १६ ॥

१०६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी ७ भा० ॥

सर्वेषामिति संपूर्ण ऋत्विजजोहैं तिनांकेदर्शनविषे दाता आदरकर्के गायत्रीका एक हजारज पकरे और आज्य और भूषण और धेनुइनांके दानविषे और बलद आदिके दानविषे १७ ॥ और महिषी और वकरी और भेड इनांके दान विषे एकमासपर्यंत निरंतरदर्शन न करे जेकर करे तां ऋत्विजांको एकशत १०० गायत्रीकाजपकहाहै और जोदानकरणे वालाहै सो तिसदोष केदूर करणे वास्ते धेनुदान करे १८ अव इसमे विशेषकहतेहैं सात्त्विकेति सात्त्विक क्या चवी यां २४ अवतारांकीयांमूर्तियांके दान ग्रहण करणेवाला जो पुरुष है तिसके दर्शनकरणेमे दोष नहिजानणा ॥ अव इसीविषे गालवजीकावचनहै हेव्राह्मणांके प्यारे चवीयां अवतारांकीयांमूर्त्ति आदिकके दानविषे और दशां १० अवतारांके मूर्तिदानविषे और हैप्रभो लक्ष्मीनारायण प्रतिमा आदि दानविषे दाता और दानके ग्रहण करणवालेकों परस्परमुखके देखणेविषे दोषनहि १ ॥ और अर्द्धनारीश्वर शब्दका अर्थ कहतेहैं क्या पार्वती शिवांकी प्रतिमादिकके दान विषे और

सर्वेषामृत्विजांप्रोक्तंसहस्रजपमादरात् आन्यालंकारधेनूनामनड्वाहा
दिसंग्रहे ॥ १७ ॥ महिषीछागवस्तानांमासमेकंनिरंतरम् ऋत्विजां
शतगायत्रीदाताधेनुसमाचरेत् ॥ १८ ॥ सात्त्विकदानेषुचतुर्विंशति
मूर्त्यादिदानावलोकने न दोषः ॥ गालवः चतुर्विंशतिमूर्त्यादिदानेषुद्वि
जवल्लभ दशावतारदानेषु अर्द्धनार्यादिपुप्रभो मुखावलोकनंदातृग्रहीत्रो
नतुदोषभाक् ॥ १ ॥ अर्द्धनारीश्वरं लक्ष्मीनारायणप्रतिमा ॥ उमामहेश्व
रप्रतिमादानेषु कृष्णाजिनतिलविरहितेषु दातृप्रतिग्रहीत्रेर्मुखावलोकनं
न दोषहेतुः ॥

कृष्ण हरिणका चर्म और तिल इनांते रहित जो दानहैं तिनांविषे दाता और ग्रहीताकों परस्पर देखणेमे पूर्वोक्तदोष नहि ॥ जेढीयां २४ मूर्तियां दानवास्ते बनाईआजातीयांहैं सो पांचतांत्रविषे लिखतेहैं सशक्तिकाय केशवायनमः १ नारायणायनमः २ माधवायनमः ३ गौविदायनमः ४ विष्णवेनमः ५ मधुसूदनायनमः ६ त्रिविक्रमायनमः ७ वामनायनमः ८ श्रीधराय नमः ९ हर्षिकेशायनमः १० पद्मनाभायनमः ११ दामोदरायनमः १२ इत्यादिमंत्रोंकर्के जो वारां मूर्ति हैं सो शक्तिके साथ गिणनेतैं २४ जाणनीयां और दशावतारोंके दानमे मत्स्य १ कूर्म २ वराह ३ नरसिंह ४ वामन ५ रामचंद्र ६ पशुराम ७ बलदेव ८ बुद्ध ९ कल्की १० इसनामकीयां स्वर्णादिमयमूर्तियां जाणनीयां ॥ और जो पिछे पटगर्भ विधि कहीहै सो वस्त्रका गर्भ बनाके तिसकीयोनिसे निकालना एह संस्कार विशेष गोमुखप्रसवकी न्याई जानणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ १०७

कृष्णेतिश्रौर काले हरिणका चर्म और तिल इनांतें रहित श्रेष्ठ प्रतिमाआदिदानके ग्रहणकरणों विषे विशेष जाबालिक्रपिकहताहै दशोति इनांदस्सां १० अवतारांके दानके योगांविषे तिल चर्मादिदानांविषे चाहे पूर्वोक्तमूर्तिभी साथहोवे तांभी तिसजगाभोजनकरणों वाले ब्राह्मणकों दाता छेदमहीने तक न देखे ॥ १ ॥ उत्क्रांतिरिति मरणसमयविषे आतुरदानकों और बैतरिणी दान कों और पुनलादाह विषे जो ब्राह्मण दानकों ग्रहण कर्ताहै और प्रेतके निमित्त जो दान है तिसकों जो ग्रहण कर्ताहैं और प्राणिके मरणेत्तें यारमें ११ दिन विषे जो तिसको गृहविषे अन्नकों भक्षण कर्ताहै ॥ २ ॥ उग्रशान्तियां क्या वालकांके जन्म विषे अभुक्तमूलादि

कृष्णाजिनतिलरहितेप्रधानप्रतिमाप्रतिग्रहे विशेषमाह जाबालिः ॥ दश स्वेतेपुयोगेपुभुक्तयत्सुद्विजोत्तमान् तिलाजिनप्रधानेपुपण्मासंनाऽवलोकयेत् १ उत्क्रांतिवैतरण्योश्चतथाप्रतिकृतौनृप अन्नप्रतिग्रहेतातएकाहभोजनेतथा २ । उग्रशान्तिपुसर्वत्रतथामाहिपसंग्रहे कर्तानालोकयेद्विप्रकायकृच्छ्रमथाचरेत् ३ ॥ उत्क्रांतिर्मरणोपयोगिसमयः । प्रतिकृतिः पूर्णशरादाहसमयः ॥ अन्नप्रतिग्रहः प्रेतान्नग्रहः ॥ एकाहभोजनं एकादशाहभोजनम् ॥ उग्रशान्तयः शिशूनांजनने अभुक्तमूलादयःस्पष्टमन्यत् । * कायकृच्छ्रंलक्षयतिमरीचिः ॥ चत्वार्यहानिग्रासाःस्युरेकैकंप्रत्यहंप्रति निराहारस्तथातेपुचतुर्षासायभोजनम् ॥ १ ॥ तदंतेव्रतिभिर्देयागौरेकाचान्द्रभूषणा कायकृच्छ्रमिदंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २ ॥ चतुर्पुदिवसेपुप्रत्यहमेकैकग्रासभोजनम् ततश्चतुर्पुपवासः ततश्चतुर्पुसायंभोजनमिति द्वादशाहनिर्वर्त्येयं कायकृच्छ्र इत्यर्थः ॥

तिनांविषे जो दानकों ग्रहण कर्ताहै और तैसे माहिषदानको जो ब्राह्मण ग्रहण कर्ताहै तिसकों विधिके करणों वाला न देखे जेकर देखे तां कायकृच्छ्रव्रतकों शुद्धिवास्ते करे ३ * अवकायकृच्छ्र व्रतकों मरीचि ऋषिजीदखातेहैं चेति चारदिन पर्यंत दिन दिनविषे एक एक ग्रास भक्षणकरे और तिसतें पीछे चार दिन कुछ न भक्षणकरे और तिसतें पीछे चार दिन रात्रि विषे भोजनकरे त्रैसे वारां दिनांकके कायकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ १ ॥ और व्रतकी समाप्तिविषे व्रतिपुरुषांनै रजत भूषण युक्त एक गौ देणयोग्यहै एह काय कृच्छ्र व्रत यथार्थधर्मके देखणवाल्यां मुनियानें कहाहै ॥ २ ॥

१०८ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अवप्रजापतिका वचनहै चार ४ दिनां विषे चारहि ग्रास दिनविषे भक्षणकरे और चारदिन कुछ न भक्षण करे और चार ४ दिन रात्रिविषे भक्षणकरे एह वारादिनांका परम श्रेष्ठ कायकच्छनाम ब्रतहोताहै १ विधिवास्ते मरीचिऋषिकावाक्यहै प्रातःकालतैलेके संध्याकालपर्यंत जैसेविधिहै तैसे ब्राह्मण स्नानकों करे गंधपुष्पआदिकर्के विष्णुकः पूजनकरे जद सूर्यअस्तहोवे तांबुद्धिमान् १ विष्णुताई निवेद्य देकके ग्रासका भक्षणकरे और पोछे हथपादशुद्धकर्के दोआचमनकरे और नारायणकों स्मरणकर्ता होया समीपहि शयनकरे फेर दूसरे दिन प्रातःसमय उठके पूर्वकीन्याई नियमकरे ३ तिस दिनविषेभी ग्रासभक्षणकरे ऐसे चारदिन ग्रास भक्षण कर्के तिसते परे चार दिन

प्रजापतिः । चतुर्ष्वहस्सुग्रासाःस्युर्निराहारस्तथापुनः चतुर्ष्वासायभक्ष्यः
स्थात्कायकच्छमिदंपरम् १ तद्विधिमाह मरीचिः। आसायंप्रातरारभ्यस्ना
त्वाविप्रोयथाविधि अभ्यर्च्यगन्धपुष्पाद्यैरविरस्तंगतोयदा १ तदाग्रासंस
मश्रीयाद्विष्णवार्पितममुंसुधीःप्रक्षाल्यपूर्ववत्सर्वद्विराचम्यशुचिस्तथा २
स्वपेद्देवसमीपेतुनारायणमनुस्मरन् पुनःप्रातःसमुत्थायकृत्वानियमपू
कम् ॥ ३ ॥ तत्रापिभक्षयेद्ग्रासमेवचतुरहंप्रति ततःपरंनिराहारस्तथा
चतुर्ष्वभोजनम् ॥ ४ ॥ अभोजनमेकाहारइत्यर्थः॥ गोदानंव्रतपूर्त्यर्थं पंचग
व्यंपिवेत्ततः कायकच्छमिदंदेवाद्विजानांपावनंस्मृतम् ॥ ५ ॥ अथकायक
च्छप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुरामप्रवक्ष्यामिकायकच्छस्यधीमतः
प्रत्याम्नायंमहापुण्यंशृण्वतांपापनाशनम् ॥ १ ॥ दशगावःप्रदातव्याः
सवत्सामूषिताअपि पयास्विन्यःसुशीलाश्चस्वर्णशृंग्योमहत्तराः ॥ २ ॥

उपवासकरे तैसे चार दिनां विषे रात्रिविषे एक आहारकरे ४ और ब्रतकेपूर्णफलकी प्राप्तिवास्ते गोदानकरे और पंचगव्यका पानकरे एहकायकच्छ ब्राह्मण आदि वर्णकों पवित्रकरेसेवाला क हाहै ५ ॥ अबकायकच्छका प्रत्याम्नायहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै हेराम कायकच्छके बुद्धि के देणें वाले बदलेनू श्रवणकर कैसा बदलाहै महापुण्यहै क्या बहुतपवित्रहै और जो श्रवण कर्तेहैं तिनांके पापकों दूरकरणे वालाहै १ दश १० गौवां सहित वच्छयांके दुग्धकर्केयुक्त सुशीला स्वर्णके शृंगांकर्के युक्त और पूजित देशे योग्यहैं बदले विषे ॥ २ ॥

॥ श्रीरणवीरः कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ १०९

इसी विषयमे गालवजीका वचन है सर्वेति संपूर्ण पापांके दूर करने वाला जो कायकृच्छ्र व्रत है हेराजन् तिसका प्रत्याम्नाय एह है कि सहित बच्छयांके दश १० गौयां ति नांके दानकरणे करके साधुस्वभाववाला पुरुष कायकृच्छ्र व्रतके फल को प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अब कएवऋषिका वचन है कायेति संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कायकृच्छ्र जो संपूर्ण व्रत है तिसका बदलाराजयांके संपूर्ण पापांके नाश करने वाला और महा दानके ग्रहणकरणे वाले जो पुरुष है तिनांके संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कहा है अथवा राजयांते प्रति ग्रहउठाणे वालयांके पापको दूर कहा है ॥ १ ॥ स्नात्वेति पुण्यदिन विषे ब्राह्मण पूर्वकी न्याई संकल्पकों करके तिलक और पुष्प आदिकांकरके दशां ब्राह्मणांको

॥ गालवः ॥ सर्वपापहरस्यास्यकायकृच्छ्रस्यैवैतत्प्रत्याम्नायोदशगवांस वत्साः साधुवृत्तिमान् एतदाचरणेनैवकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ कएवः ॥ कायकृच्छ्रस्यसर्वस्यसर्वपापहरस्यच राज्ञांप्रतिग्रहीत्वणां सर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ स्नात्वापुण्यदिनेविप्रः सुसंकल्प्यैवपूर्ववत् विप्रानभ्यर्च्यगन्धाद्यैर्दशधेनूःपृथक्पृथक् ॥ २ ॥ दद्यात्प्रत्याम्नायभूताः सर्वपापापनुत्तये एतस्याचरणेपूर्णेकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ३ ॥ अथौदुम्बरकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ औदुम्बरस्यकृच्छ्रस्यलक्षणंविचिमतत्त्वतः कृच्छ्रं महतरंभूपसर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ पितृमातृपरित्यागःस्वदाराणांह्यनाग साम् भगिनीभागिनेयार्थिगर्भियातुरकन्यकाः ॥ २ ॥ वालश्चकुलवृद्धश्च अतिथिश्चागतःप्रभो सामर्थ्यसतिवन्धूनांत्यागेदोषोमहतरः ॥ ३ ॥ ब्रह्म हत्यामवाप्नोतियदुपेक्षापरायणः ॥

१० पूजके भिन्न भिन्न एक एकको प्रसूतहोई गौदेवे ऐसे दश १० गौवां दानकरे ॥ २ ॥ एह प्रत्याम्नाय संपूर्णपापांके नाशकरणवास्ते कहा है इसके करणेकरके कायकृच्छ्रके फलनू प्राप्तहोता है ॥ ३ ॥ * इसने उपरंत औदुम्बरकृच्छ्र है तिसविष देवलजीका वाक्य है आविति औदुम्बरकृच्छ्रके लक्षणनू यथार्थकरके कहतांहां एह कृच्छ्र बहुत श्रेष्ठ है हेराजन् संपूर्ण पापांकेनाशकरणे वाला है ॥ १ ॥ अब इसकरके दूरहोनेवाले पापोंको कहतेहां पीति पिता और माता और अपगधने बिना स्त्रियांइनांका जो त्याग है और भैण और भनेवां और अर्थी और गर्भिणी और रोगी और कन्या ॥ २ ॥ और वालक और कुलमे वृद्ध और अतिथि इनांमबंधियांके कदाचित् त्याग विषे सामर्थ्यके होयां २ महा दोष है ॥ ३ ॥ इनांको सर्वदा त्यागने वाला पुरुष ब्रह्महत्या पापको प्राप्त होता है ॥

११० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

भेति भेण और दूसरीमाताकोकन्या और संबंधितेरहितजो स्त्री है और जिसकाभर्ता विदेशगियाहै और अनाथ जो कन्या है और विधवास्त्री इनांको जो पुरुषकारणसे विनात्यागताहै । १ । और पिताकी भेण और माताकी भेण और विदेश गयाभर्ता जिसका ऐसी पुत्रतें रहित जो स्त्री है और पूजने योग्य जो स्त्री अर्थात् गुरुआदिकीस्त्री तिनांको त्यागणे कर्के पुरुषनरकों प्राप्तहोताहै अथवा(अधनीया)अधनतें रहितजो स्त्रीहै ॥ २ ॥ और महाभारतविषेभी एहविषयकहाहै पितृति कौमार अवस्थाविषे पितारक्षाकरे और भर्ताजुयानी अवस्थाविषे रक्षाकरे और पुत्रवृद्ध अवस्थाविषे रक्षाकरे स्त्री अपने अधीन कदाचित् होणेको योग्यनहिहै ॥ १ ॥ और उन्मत्त और पतित और नपुंसक और काण और बधिर ऐसे पिताकी पुत्र आदिअन्न वस्त्र आदिकांकर्के रक्षाकरे ॥ २ ॥ अवगोत्तमजीकावाक्यहै अरक्षेति रक्षणेयोग्यजोस्त्री नहि तिसकीरक्षाकरनाहै और जो रक्षणेयोग्यहै

भगिनीचस्वसारंह्यनाथांगतभर्तृकाम् पुत्रीमनाथांविधवांयस्त्यजेत्कारणं विना ॥ १ ॥ पितृभगिनीमातृभगिनीमपुत्रांगतभर्तृकाम् अर्चनीयांपरित्यज्यसैव नरकमश्नुते यद्वाअधनीयामियमधनाइत्येवंज्ञाताम् २ महाभारते पितारक्षतिकौमारभर्तारक्षतियौवने पुत्रस्तुस्थविरेभावेनस्त्रीस्वातंत्र्यमहंति ॥ १ ॥ उन्मत्तपतितक्लीबकाणवधिरमेवच पुत्रादिर्यत्नतोरक्षेदन्नवस्त्रादिभिःशनैः ॥ २ ॥ गौत्तमः ॥ अरक्षणीयांयोरक्षेद्रक्षणीयांपरित्यजेत् सवै नरकमाप्नोतितिर्यग्योनिपुज्यते ॥ १ ॥ किंचवेश्यादासीतध्मातरस्तत्पुत्राःकुण्डगोलकनटविट्गायकचार्वाकास्त्वरक्षणीयाः ॥ अनाथगतभर्तृकानिष्पुत्रास्त्रियः पितृव्यज्येष्ठभ्रात्रादयोनिष्पुत्रानिर्धनिनः काणकुब्जादयो यत्नतोरक्ष्याः एतेषांपरित्यागेदोषः ॥

तिसकी रक्षा नहि करता सो पुरुषनरकों प्राप्तहोताहै और पशुआदिकजन्मको प्राप्तहोताहै १ । और विशेषकहेतेहै वैश्यति वेश्या और दासी और तिनांकीयांमाता और तिनांकेपुत्र और भर्ताके जीवतयांजो जागें जन्मयाहै ऐसा कुंडपुत्र भर्ताके मृतहोयां होयां जो जारेंतजन्मयाहै गोलकपुत्र और नट और विट क्या व्यभिचारी पुरुषका नौकर और गायक और चार्वाक क्या नाम्तिक एह रक्षाकरणे योग्यनहिहैं ॥ और विशेषकहेतेहै अनेति संबंधियात्रे रहित और जिसका भर्ता विदेश गयाहै और पुत्रतें रहित जो स्त्री है और पिताका भ्राता और पुत्रतें रहित अपना बड़ा भ्राता धनतें रहित भी पूर्वाक और काणा अक्षि कर्के और कुवतें आदलेके जो पुरुष वा स्त्रीहोवे सो एह यत्नतें रक्षाकरणे योग्यहै इनाके त्यागविषे दोषहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ६ ॥ टी ० भा ० ॥ १११

तदिति तिस दोषके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्तकों मार्कण्डेयऋषि कहताहै सामर्थ्यके होयां २ जो पुरुष इनां अपणे संश्रधियांकों त्यागताहै सोकाकजन्मकों प्राप्तहोकर बारंबारदुःखी होताहै १ ॥ एकमास पर्यंत जो त्यागताहै सो पंचगव्यके पीणेकके शुद्ध होताहै और जोर पुरुष छे ६ मास पर्यंत संबंधीयांकों त्यागताहै सो स्वर्णकृच्छ्रव्रतकके शुद्ध होताहै और वर्ष पर्यंत संबंधीयांके त्यागविषे औदुम्बर कृच्छ्र कहाहै और वर्षते अधिक त्यागविषे चांद्रायण व्रतकहाहै ॥ २ ॥ अवपराशरजीकावचनहै आबिति औदुम्बर व्रतविषे चावलांकों वासांकीकों जैसे विधिहै कि वारां १२

तत्प्रायश्चित्तमाहमार्कण्डेयः ॥ सतिसामर्थ्येत्यजेद्यस्तु एतान्वन्धुजनान्स्व
कान् सकाकयोनिमासाद्यदुःखीभूयात्पुनःपुनः १ ॥ मासंत्यक्तापंचगव्यं
पणमासान्स्वर्णकृच्छ्रकृत् वत्सरऔदुम्बरंप्रोक्तमर्वाकूचान्द्रायणंपरम्
२ ॥ पराशरः औदुम्बरेतंडुलानांश्यामाकान्वायथाविधि दशद्वेधाविभ
ज्यैवप्रत्यहंपाचयेद्वती ॥ १ ॥ दशद्वेधाद्वादशधेत्यर्थः ॥ औदुम्बरैःशुष्क
पणैःपाचयेन्नान्यदारुभिः औदुम्बरैश्चपणैश्चाद्रैःपात्रमुदाहृतम् ॥ २ ॥
तत्रनिक्षिप्यतंग्रासंविष्णवेपूर्वमादिशेत् चतुर्थकालायातेपूर्ववन्नियमंच
रेत् ॥ ३ ॥ ग्रासवचननियमादिकमित्यर्थः ॥ एवंग्रासाद्वादशस्युर्द्वादशाहा
निभक्षयेत् अत्रापिगौःप्रदातव्यापंचगव्यंपिवेत्ततः ॥ ४ ॥

विभागकके दिन दिनविषे वारां दिन पर्यंतव्रतीपकावे दशद्वेधा क्या वारां १२ हिस्से करे ॥ १ ॥
गूलरवृक्षके शुष्कपत्रां कके पकावे होरी काष्ठ कके न पकावे और गूलरपत्रां कके मिश्रित जो
पलाहके पत्रा तिनं कके पात्र बनावे ॥ २ ॥ तिस पात्रविषे तिसग्रासकों रक्षकेविष्णु तांडे पह
ले अपणे कर और पीछे चौथे पहर विषे पूर्वकी न्याई नियम करें क्या भक्षण करें नियम कके
ग्रासादिके भक्षणका विधान जानणा ॥ ३ ॥ इस प्रकार वारां ग्रासहै वारां १२ दिन वास्ते
और इस विषे भी पंचगव्यका पान करे और एक गौदान करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

११२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

एवमिति एह उदुम्बर नाम कच्छू व्रतकहाहै सो विशेषकर्के करणे योग्यहै मीनव्रतविषेयुक्तहोके उत्तमग्रासका भक्षण करे ॥ ५ ॥ और हत्था पादांकोंधोके दोवार आचमन करे विधिकर्के फेर सायंकालविषे कमंकों करे तिसतें पीछे नारायणके आगे शयन करे ॥ ६ ॥ फेर प्रातःकालविषे निमलहोकर दूसरे दिनकीकृत्यकों पूर्वकीन्याईकर ऐसै शास्त्रकर्के कहीजे विधि तिसकेकरणेकर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ इसतें उपरंत उदुम्बरकच्छूका प्रत्याम्नायकहाहै तिसविषे देवलजी का वचनहै उदुम्बरोति उदुम्बर कच्छूका प्रत्याम्नायपुरुषांकों श्रेष्ठकहाहै तिसके करणेकर्के संपूर्ण फलकोंप्राप्तहोताहै । १ । अब मार्कंडेयजीकावाक्यहै प्रत्येति हेरामपूर्व उदुम्बरकच्छूकाप्रत्याम्नाय

एवमौदुम्बरंकच्छूकर्त्तव्यंचविशेषतः भक्षयेदुत्तमं ग्रासं मौनव्रतपरायणः ५ ॥
पादौ प्रक्षाल्य पाणी च द्विराचम्य विधानतः सायाह्निकंततः कृत्वा स्वपेन्ना
रायणाग्रतः ॥ ६ ॥ पुनः प्रभाते विमलोद्वितीयं पूर्ववच्चरेत् एवं शास्त्रोक्तवि
धिना कृत्वा शुद्धिमाप्नुयात् ॥ ७ ॥ अथौदुम्बरकच्छूप्रत्याम्नायः ॥ तत्र देव
लः ॥ उदुम्बरस्य कच्छूस्य प्रत्याम्नायः परं नृणाम् तस्याचरणमात्रेण संपू
र्णफलमश्नुते ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायः पुरारामजामदग्न्येन भाषितः
मातृहत्याविशुद्ध्यर्थं किमुतान्यस्य पापिनः ॥ १ ॥ राजविजये ॥ कच्छूस्यौ
दुम्बरस्यास्य प्रत्याम्नायो महानयम् सर्वपापविशुद्ध्यर्थं सृष्टवान्पद्मभूः पुरा
१ ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ औदुम्बरस्य कच्छूस्य प्रत्याम्नायस्य लक्षणम् श्रेष्ठ
गावः प्रदातव्याः सालंकाराः सुलक्षणाः १ ॥ हेमशृंग्योरौप्यखुराः कांस्यदो
हनसंयुताः सर्वपापविनिर्मुक्तः संपूर्णफलमाप्नुयात् ॥ २ ॥

मातृहत्याकीशुद्धिवास्ते परशुगमनेकथनकीताहै अन्यपापीकाक्या कहणाहै । १ । राजविजयग्रंथ
विषे कहाहै कच्छूति इस उदुम्बरकच्छूका एह प्रत्याम्नाय श्रेष्ठहै संपूर्णपापोंकी शुद्धि वास्ते इसकों
पूर्वब्रह्मा उत्पन्न करताभया ॥ १ ॥ चतुर्विंशति मतविषे कहाहै उदुम्बरकच्छूके प्रत्याम्नायके लक्षण
कों कहनेहैं अठ ८ गौयां देणे योग्यहैं कैसीयां गौयां जो शोभाकर्के युक्तहैं और श्रेष्ठ लक्षणा
वालियाहैं ॥ १ ॥ और सुवर्णके शृंगों कर्के युक्त और रजत खुरां कर्के युक्त कांस्यके दोहन पात्र
कर्के युक्त तिनो गौयांके देणे कर्के संपूर्ण फलकों प्राप्त होता है ॥ २ ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र. ५ ॥ टी. ०. भा. ० ॥ १.१३

इमते उपान्त माहेश्वरकृच्छ्रका लक्षण कहा है कृच्छ्रमिति माहेश्वरनामकर्के जो कृच्छ्रवत है सो संपूर्ण पापोंके नाश करनेवाला है इसमें गाथा कहते हैं पूर्वाशिवजीको धर्कके कामदेवकों यद दाह करते भये तां शिवजीमें बड़ा दोष होता भया ॥ १ ॥ तिस दोषके दूर करनेवास्ते ब्रह्माकों पुछता भया हे देव कामके दाह करनेतें मेरे विषे बहुत दोष स्थित है तिस दोषके दूर करनेवास्ते उपाय कहो । २ । ब्रह्माजी कहते भये सर्वेति संपूर्ण दोषोंके दूर करने वाला और संपूर्ण उपद्रवोंके नाश करनेवाला और पुरुषोंको संपूर्ण पुण्यके देनेवाला और संपूर्ण स्नानका फल देने वाला और बहुत श्रेष्ठ है ॥ ३ ॥ प्रातरिति प्रातः काल विषे दंतधावनकों कर्के स्नानको करे और जैसे योग्य है तैसे संध्या वंदन आदिक

* अथ माहेश्वरकृच्छ्रलक्षणम् ॥ कृच्छ्रं माहेश्वरं नाम सर्वपापप्रणाशनम् पुरा कंदर्पदहने महान् दोषो भवेद्यदा ॥ १ ॥ तद्विषपरिहारार्थं ब्रह्माणं पर्य्य पृच्छत पंचवाणस्य दहनान् महान् दोषो मयि स्थितः ॥ २ ॥ तद्विषपरिहारार्थं निष्कृतिर्देवकथ्यताम् ॥ ब्रह्मा ॥ सर्वदोषप्रशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् सर्वपुण्यप्रदं नृणां सर्वस्नानफलं महत् ॥ ३ ॥ प्रातः स्नात्वा यथाचारं दंतधावनपूर्वकम् तावन्नारायणं स्मृत्वा पूर्ववत्पापमोचनम् ॥ ४ ॥ यदा मंदायते भानुस्तदा कापालमुद्वहन् श्रोत्रियाणां च विप्राणां गृहे पुत्रिपुंसस्य या ॥ ५ ॥ शाकं भक्ष्यं फलं वापि यथासंभवमादरात् आनयित्वा थदेवाय समर्प्य विधिपूर्वकम् ॥ ६ ॥ भक्षयेतानि सर्वाणि वाग्यतोन्नमकुत्सयन् हस्तौ पादौ तु प्रक्षाल्य द्विराचम्य शुचिः स्ततः ॥ ७ ॥ सायंकाले स्वपेन्नाथसमीपे नियतावसेत् ततः प्रातः समुत्थाय पूर्ववत्सर्वमाचरेत् ॥ ८ ॥

कर्मोंको करे तां फेर पापोंके नाश करने वालेजों विष्णु तिनको पूर्वकी न्याई स्मरण करे ४ ॥ और यद सूर्यका तेज मंद होवे तद कापालको ग्रहण कर्के वेदपाठी जो ब्राह्मण तिनको तीन गृहों विषे संस्था कर्के ॥ ५ ॥ भक्षण करनेके योग्य जो शाकवायु आदिक और फलकदली आदिक है जैसे प्राप्त होवे भिक्षा तिसको आदरतें त्यागे और विधि पूर्वक विष्णुके ताई अर्पण कर्के ॥ ६ ॥ भक्षण करे संपूर्णान् मौनधारके अन्न निदा न करे हत्य और पादोंको शुद्ध कर्के दोवार आचमन करे ऐसे शुद्ध होके ॥ ७ ॥ रात्रिविषे विष्णुके समीप शयन करे इंद्रियांको रोकके तिसते उपरंत दूसरे दिन विषे प्रातः काल उठके पूर्वकी न्याई संपूर्ण नियम करे ॥ ८ ॥

११४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥

गौरिति एकगौ श्रेष्ठब्राह्मणकेताई देवे कर्मके फलकी प्राप्तिवास्ते पाँछे पंचगव्यनू पीबे एह माहेश्वर कृच्छ्रकहाहै । ९ । हेभगवन् इसव्रतकों कर संपूर्णदोषांकी शांतिवास्ते और संपूर्ण पापांके दूरकर एवास्ते और संपूर्णकल्याणांकी प्राप्तिवास्ते । १० । ऐसे अवणकर्के महादेव व्रतकों करता भया इसी कर्के इसका नाम माहेश्वर व्रत है महेश्वर जीने प्रकाशित कीताहै और इस माहेश्वर कृच्छ्रके कर्णकर्के ब्राह्मण आवि वण पापतें रहितहोताहै । ११ ॥ अब माहेश्वरकृच्छ्रकाप्रत्या स्नायहै तिसविष देवलजीका वाक्यहै मेति माहेश्वर नामकर्के जो कृच्छ्रव्रत तिसके बदलेनू श्रवण कर कैसा बदलाहै संपूर्ण पापांके दूर करण वाला और संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै १ ॥

गौरेकाद्विजवर्यायदेयाकर्मफलप्राप्तये पंचगव्यं पिबेत्पश्चात्कृच्छ्रमाहेश्वरं
विदम् ॥ ९ ॥ कुरुष्वचैनंभगवन्सर्वदोषोपशान्तये सर्वपापविनिर्मुक्तैद्यस
वंश्रेयोभितृहये ॥ १० ॥ एवंकृत्वातदादेवोमहेशानस्तथाकरोतु एतस्याचर
णेनैवद्विजः पापात्प्रमुच्यते ॥ ११ ॥ ॥ अथमाहेश्वरकृच्छ्रप्रत्यास्नायः ॥
तत्रदेवलः ॥ माहेश्वराख्यकृच्छ्रस्यप्रत्यास्नायमिमंशृणु सर्वपापंपशम
नसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महत्यादिशमनंसर्वघ्नहनिवारणम् तुलाप्र
तिग्रहीत्दण्डापापनाशनहेतुकम् ॥ २ ॥ संध्यादिनित्यकर्मणिपरित्यक्ता
निसूरिभिः तेषांविशोधनेदक्षसर्वपापहरंनृणाम् ॥ ३ ॥ गावेदियाद्विजा
तिभ्योह्यांबितावस्त्रभूषणैः ह्येसघंटादिभिः शुभ्रैरलंकारैरलंकृताः ॥ ४ ॥
स्वर्णशृंगयोरौप्यखुराःकांस्यदोहनसंयुताः रुद्रसंख्याःसवत्साश्चपयस्त्रि
न्यःपृथक् पृथक् ॥ ५ ॥

और ब्रह्महत्यादि पापके दूर करणेवाला और संपूर्ण ग्रह बलके दूर करणेवाला और तुलादान
केग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनके पापके नाशका हेतुहै ॥ २ ॥ और जिनो बुद्धिमानोंने
संध्यावंदनादि कर्मस्यागेहैं तिनके शुद्धकरणेविषे दक्षहै और पुरुषांके संपूर्णपापांका नाशकहै सो
प्रयाप्ता कहतेहां ॥ ३ ॥ मेति गोगा यान ११ देशे योग्यहैं ब्राह्मणांकेताई भिक्षुभिन्न कैसीयां
गाया वस्त्र भूषणां कर्के युक्त और सुवर्णके घंटे आदि जो श्रेष्ठ अलंकार तिनो कर्के युक्त
४ ॥ और सुवर्णके शृंग और रूपके खुर और कांस्यका दोहनपात्र तिनो कर्के युक्तसहित बछियां
के और दुग्ध दण्डे वालीयां ॥ ५ ॥

अति प्रत्याम्नाय विधिविषे गौयां ११ बहुत अष्टहैं रुद्रसंज्ञाक्यारुद्रहैं देवता जिनांकात्रैसयांहैं कि सवास्तेरुद्रकृच्छ्रके फलकी प्राप्तिवास्ते और संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्तेहैं ६ एवमिति अैसें जो द्विज प्रत्याम्नायनूं यथाविधिकर्के कर्त्ताहैं तिसकों संपूर्णकृच्छ्रका फलप्राप्तहोताहैं जो फलमुनियानें कहाहैं ॥ ७ ॥ अब ब्रह्मकृच्छ्रका लक्षणहैं तिसविषे देवलजीका वाक्यहैं हेसंपूर्णमुनीश्वरो श्रवण करो ब्रह्मकृच्छ्रके लक्षणनूं निदित अन्नके भक्षण करणे विषे जो पापहैं और दुष्ट दानके ग्रहण करणेविषे जो पापहैं ॥ १ ॥ और नहिपोणेयोग्य जो विनावच्छेके गौकादूधआदिवस्तु तिसके पोणेविषे जो पापहैं और पूर्वकहि जो उग्रजाति तिसविषे जो अन्न और शूद्रका अन्न ॥ २ ॥ और मठका स्वामी जो संन्यासी तिसका अन्न और छीबेका अन्न और वृषलीक्याशुद्रोकावनापडोया अन्न और ऋतुमतीस्त्रीकावनायाहोया अन्न । ३ ॥ और विधवास्त्रीकके पक्काअन्न और

प्रत्याम्नायविधौशस्तारुद्रसंज्ञामहत्तराः रुद्रकृच्छ्रफलप्राप्तेयसर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ एवंकृत्वाद्विजोयस्तु प्रत्याम्नायंयथार्हतः तस्यसम्पूर्णकृच्छ्रस्यफलमुनिभिरीरितम् ॥ ७ ॥ • अथब्रह्मकृच्छ्रलक्षणम् ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुध्वंमुनयस्सर्वेब्रह्मकृच्छ्रस्यलक्षणम् दुरन्तेनैवयत्पापंपापंदुष्टप्रतिग्रहे ॥ १ ॥ अपेयपानेयत्पापंयत्पापंदुष्टभोजने शान्त्यन्नेषुचयत्पापंयत्पापंशूद्रभोजने ॥ २ ॥ संन्यासिनोमठपतेर्भोजनेयद्भवेन्नृणाम् यत्पापंरजकरुयान्नेयत्पापंवृषलीकृते ॥ ३ ॥ यत्पापंपुष्पवत्यन्नेयत्पापंविधवाकृते अमंत्रकेपैतृकान्नेयदनारायणीकृते ॥ ४ ॥ चौलेचपैतृकेचैवदीक्षितस्यैवभोजने सूतकद्वितयेचैवतथादुःपंक्तिभोजने ॥ ५ ॥ तथैवदुष्टसंघान्नेतथाक्रोतान्नभोजने पापंपर्युपितचान्नेतथातद्रसकस्यच ॥ ६ ॥ यत्पापमनृते प्रोक्तमौपासनविवर्जिते एवमादीनिपापानिलघूनिचमहांतिच सर्वेषांहिविनाशायब्रह्मकृच्छ्रविकात्थितम् ॥ ७ ॥ शान्त्यन्नमत्रपूर्वाक्तोग्रशान्तिभवंबोध्यम् यदनारायणीकृते नारायणाग्रेऽनिवेदितइत्यर्थः

मंत्रें रहितपितराका अन्न और नारायणकेताई जो नहिअर्पणकीता अन्न । ४ । और चौलक मंका अन्न और पितरांके निमित्त जो पहलाक्रियातिसका अन्न और यज्ञकी दीक्षा विषे युक्तका अन्न और सूतक मृतसूतकका अन्न और दुष्टपुरुषांकी पंक्ति विषे भोजन कीताजो अन्न ५ बाह्यण और दुष्टांके समूहका अन्न और अन्नके बेचण वालेका अन्न और वासी अन्न और रसंक बेचण वालेंका अन्न ॥ ६ ॥ इनां संपूर्णके सिद्धहोये होये अन्नकों भक्षण करणे विषे जो पाप हैं और जो असत्यबाणी विषे पाप हैं और जो पाप देवताकी उपासनाते रहित पुरुष विषे कहाहैं इसते आदिके जो पापहैं थोड़े वा बहुत तिनां पापांके दूर करणे वास्ते ब्रह्मकृच्छ्र मत कहाहैं ॥ ७ ॥

११६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अत्र मार्कण्डेयजीका वचनहै गविति गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशा का जल इनाकों पूर्वमानकरके एकत्र करे शुद्धि कों करके सो शुद्धि इस जगा पंचगव्यके मंत्रां करके जानणो इसीरीतिसें दिनदिनविषे पानकरे ॥ १ ॥ अैसे पूर्वकीन्याई स्नानादिको कर्ताहुआ बागं दिनां १२ का कृच्छ्र व्रत करे तिसी विधिको कहतेहैं प्रातरिति प्रातः काल विषे स्नानको करके जैसे समाहैं तैसे नित्यकर्मकों समाप्तकरके ॥ २ ॥ देवताके मंदिर विषे तैसे गीयांके स्थान विषे व्रती पंचगव्यका पान करे इसका परिमाण कहतेहैं गविति अठ ८ मासे गोमूत्र और सोलां १६ मासे गोमय ॥ ३ ॥ और अठ ८ मासे दुग्ध और त्रय ३ मासे दधि और त्रय ३ मासे घृत और कुशाका जल ॥ ४ ॥ तिस तिस मंत्र करके

मार्कण्डेयः। गोमूत्रंगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् संपाद्यपूर्वमानेनप्रत्य हंशुचिपूर्वकम् ॥ १ ॥ द्वादशाहंचरेत्कृच्छ्रपूर्ववत्स्नानमादितः प्रातःस्नात्वा यथाकालंनित्यकर्मसमाप्यच ॥ २ ॥ देवागरेतथागोष्ठेपंचगव्यंपिवेद्व्रती गोमूत्रमापकान्यष्टौगोमयस्यनुषोडश ३ ॥ क्षीरंमाषाष्टकंज्ञेयंदधिमापत्रयं तथा घृतमापत्रयंप्रोक्तंतथैवचकुशोदकम् ४ तत्तन्मंत्रेणसंयोज्यंतत्तन्मंत्रेणहावयेत् होमशेषंपिवेत्पश्चाद्रवौमध्याह्नेसति ५ आसायंमनसाविष्णुं स्मरन्सर्वेश्वरंप्रभुम् स्वपेदेवसमीपेतुगन्धताम्बूलवार्जितः ६ ततःप्रातःसमुत्थायपूर्ववद्व्रतमाचरेत् एवंद्वादशरात्राणिचरेद्व्रतमनुत्तमम् ७ महापापंचापपापमद्यपानसमंतथा तत्सर्वविलययातिहरिनाम्नोऽसुरायथा ॥ ८ ॥

तिनांकों इकठयां करे और तिस तिस पंचगव्यके मंत्रांकरके हवनकरे और हवनशेषकों पीवे सूर्य के मध्याह्नहोयां २ ॥ ५ ॥ और सायंकालपर्यंत सर्वेश्वर जो विष्णु तिनांकों स्मरणकरे और देवताके समीपविषे शयनकरे और सुगंधि वस्तु और तांबूल इनांकोत्यागे ॥ ६ ॥ तिसतें उपरंत प्रातः काल विषे उठ करके पूर्वकी न्याई व्रत नू करे अैसे उत्तम व्रतकों बारां दिनकरे ॥ ७ ॥ और महापाप और उपपाप और मदिराके पीने के पापके तुल्य जो पाप एह संपूर्ण पाप ब्रह्मकृच्छ्र व्रत करकेनष्ट होतेहैं जैसे हरिके नामतें दैत्य दूर होतेहैं ॥ ८ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी० भा० ॥ ११७

इसमें उपरंत ब्रह्म कृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिस विषे देवल जीका वाक्य है हेब्रह्मनुते तू ब्रह्मकृच्छ्रके आश्रय प्रत्याम्नायनू श्रवणकर जिसके करणे कर्के महापापां तें और उपपातकांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ ब्रह्म कृच्छ्रहै नाम जिसका सो महा पापांके दूर करणे वाला है तिसको करे तिस विषे असमर्थ होवे तां फलकी प्राप्ति वास्ते प्रत्याम्नायनू करे ॥ २ ॥ प्रत्याम्नाय विषे भी पुरुष महाकृच्छ्रकेफलनू प्राप्तहोताहै अठ ८ गौयां देणयो ग्यहैं पूर्वकी न्याई स्वर्णके शृंगादिकर्के अलंकृत ॥ ३ ॥ वेदके पठनकरणविषे युक्त जो ब्राह्मण

* अथब्रह्मकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुब्रह्ममुनंचित्रंप्रत्याम्नायं प्रजापतेः यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महाद्विरुपपातकैः १ । प्रजापतेर्ब्रह्मकृच्छ्रस्य आचरेद्ब्रह्मकृच्छ्राख्यंमहापातकशोधनम् असमर्थःप्रकुर्वीतप्रत्याम्नायंफलाप्तये ॥ २ ॥ प्रत्याम्नायेमहाकृच्छ्रफलंप्राप्नोतिमानवः अष्टौगावःप्रदातव्या पूर्ववत्स्वर्णभूषिताः ॥ ३ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चपृथक्पृथगलंकृताःपयस्विन्यःशीलवत्यःसर्वदोषविमुक्तये ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायंतदाकुर्याद्यशक्तःप्रजापतेः अष्टौगावःप्रदातव्याःस्वर्णशृंग्यःपयोमुचः ॥ १ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चसर्वकृच्छ्रफलाप्तये एवंकृत्वाद्विजःसम्यक्फलमाप्नोति कृत्स्नशः ॥ २ ॥

तिनांके ताई भिन्न भिन्न शोभाकर्के युक्त और दुग्धदेणे वालियां और शीलस्वभाव वालियां संपूर्ण दोषांके दूर करणे वास्ते ॥ ४ ॥ अब मार्कंडेयजी का वचनहै प्रति प्रत्याम्नायनू तां करे जेकर ब्रह्मकृच्छ्रके करणे विषे असमर्थ होवे स्वर्णके शृंगांके युक्त दुग्ध देण वालियां अठ ८ गौयां देणे योग्यहैं ॥ १ ॥ वेदके जानणे वाले जो ब्राह्मण तिनांके ताई संपूर्ण कृच्छ्र व्रत के फलकी प्राप्ति वास्ते ऐसे करणे कर्के ब्राह्मणआदि वर्ण संपूर्ण फलको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

११८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० ० भा० ॥

अथेति इसते अनंतरधान्यकृच्छ्रका लक्षणहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै धान्येति तुसांताई धान्य कृच्छ्रका स्वरूप और लक्षण कहताहैं संपूर्णकृच्छ्र व्रताके कर्णविषे जो असमर्थहै सो पुरुष धान्यकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ १ ॥ इसविषे मार्कण्डेयकावचनहै-तप्तेति तप्त कृच्छ्रव्रतते आदि लेके जो संपूर्ण कृच्छ्र व्रत हैं तिनाने करणेकी इच्छावाला जेकर कोई धनवाला होवे वा राजाहोवे तां धान्य कृच्छ्रव्रतकों करे जोजो मैनें कृच्छ्रव्रत कहाहै तिनाने संपूर्णके करणेकी इच्छावाला जेकर हावेतां ॥ १ ॥ खारिगति खारी परिमित जो महाधान्यहै तिसके पांचमें १ हिस्सेको ग्रहण करे जो सारेका एक भी भाग है तिसका नाम कृच्छ्र धान्य कहाहै । २ । तिसधान्यको हिस्सेकके देवे

अथ धान्यकृच्छ्रलक्षणम् ॥ तत्र देवलः ॥ धान्यकृच्छ्रस्वरूपं च लक्षणं प्रवदामिवः सर्वेषामेव कृच्छ्रणामशक्तो धान्यमाचरेत् ॥ १ ॥ मार्कण्डेयः ॥ तत्तादिसर्वकृच्छ्राणां कर्तुं यदि महान् प्रभुः धान्यकृच्छ्रं तदा कुर्याद्यद्यत्कृच्छ्रं मयोदितम् ॥ १ ॥ यद्यद्यत्कृच्छ्रं मया कथितं तेषां सर्वेषां स्थाने इदमेव कुर्यादित्यर्थः ॥ कश्चिन्महान् धनी वा प्रभुराजा कर्तुमिच्छेच्च तदा धान्यकृच्छ्रं कुर्यादित्यर्थः । खारी धान्यस्य महतः पंचधा भागमाहरेत् कृत्स्नस्यैकस्तु यो भागः स कृच्छ्रं धान्यमीरितम् ॥ २ ॥ तद्धान्यं भागशो दद्यात्तत्कृच्छ्रं मुनिभिः स्मृतं तत्कृच्छ्रमाचरेद्विप्रः संपूर्णं फलमश्नुते धान्यवृद्धेर्महाराज्ञः कृच्छ्रं पापापनुत्तये ॥ ३ ॥ मरीचिः ॥ खारी धान्यस्य पंचांशो धान्यकृच्छ्रमुदाहृतम् अतो न्यूनं न कर्तव्यमन्यथा दानमीरितम् ॥ १ ॥

सो मुनियोंने कृच्छ्र व्रत कहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि पंचभागकर्के क्रमसे दान करणा जद समग्र दान हो जावेगा तद कृच्छ्रभी पूरा होवेगा अथवा एक खारीके पंच कृच्छ्र होतेहैं तिस कृच्छ्र धान्यनूं ब्राह्मण करे तां संपूर्ण फलकों प्राप्त होताहै धान्यको वृद्धि कर्के युक्त जो महाराजाहै तिसको पापांके दूर करणे वास्ते एह धान्य कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ ३ ॥ अब निर्धन पुरुष वास्ते मरीचिकृच्छ्रिका वचनहै खारिगति खारी परिमाण धान्यका पांचमां हिस्सा धान्य कृच्छ्र कहाहै इनमें न्यून क्या घट नहि करणे योग्य जेकर घट होवे तिसका नाम दान कहाहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ ११९

अब इसीमें लोमाक्षिऋषिकावचनहै पंचेति खारी प्रमाण महाधान्यका पंचमां हिस्सा धान्य कृच्छ्र कहा है इसप्रमाणतें घटहोवे तां धान्यदान कहा है सो पुण्यके देणेवाला है और कृच्छ्र धान्यके फल वाला नहि होता ॥ १ ॥ और इसीका स्पष्टार्थ है संपूर्ण धान्य कृच्छ्रका पंचमां हिस्सा नहि करणा चाहिए जेकर तिस धान्यतें हीन होवे तां कृच्छ्रका फल नहि होता ॥ २ ॥ इसमें ऐसा अर्थ है कि राजादिकों सारी खारीके देखेसे धान्यकृच्छ्र हुंदा है और निर्धनको तिसके पांचमे हिस्सेके देणेसे एह होता अब कहते हैं कि राजा खारीसे न्यून न करे और दूसरा पांचमांसे थोड़ा न देवे हे ब्राह्मणाविषे श्रेष्ठ इस धान्य कृच्छ्रका वदला नहि कहा स्वर्णकृच्छ्र व्रत और धान्य कृच्छ्र व्रत एह

लौगाक्षिः ॥ पंचमांशो धान्यकृच्छ्रं खारी धान्यस्य भूयसः अन्यथा धान्यदानं स्यात्कृच्छ्रशब्दो न पुण्यभाक् ॥ १ ॥ संपूर्ण धान्यकृच्छ्रस्य पंचमांशो न विद्यते तेन हीनं धान्यदानं न कृच्छ्रफलमश्नुते ॥ २ ॥ कृच्छ्रस्यैतस्य विप्रर्षे प्रत्याम्नायो न विद्यते स्वर्णकृच्छ्रस्य धान्यस्य समर्थस्य महात्मनः ॥ ३ ॥ प्रत्याम्नायो न गदितो मुनिभिर्धर्मवत्सलैः धान्यशब्दो ब्रीहा एव कृच्छ्राणां न धान्यांतरम् । केचिच्छयामाक धान्यमिति वदन्ति ॥ मनुः ॥ नीवारं ब्रीहयो धान्यं शयामाकाः कृच्छ्रसाधनम् न धान्यांतरमस्तीह प्रभूतकृच्छ्रसाधनमिति १ ॥ • अथ सुवर्णकृच्छ्रम् ॥ तत्र देवलः ॥ ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषां मुनीश्वराः तुलादिष्विह दानेषु ग्रहीतृणां विशोधनम् ॥ १ ॥

दो व्रत समर्थ पुरुषकों कहने । ३ । इनां का धर्म वत्सल जो मुनि तिनाने वदला नहि कहा धान्य शब्द कर्के ब्रीहि कहने कृच्छ्र विषे होर धान्य नहि कहे कै एक ऋषि शयामाक धान्यकों कहते हैं कि धान्य कृच्छ्रमे सामर्थ्य न होवे तां शयामाक उसकी जगादेणे इसी विषे मनुजीका वाक्य है नीति सवांक और चावल और सांको एह कृच्छ्र व्रत विषे कहे हैं होर धान्य कृच्छ्रके सिद्ध करणे विषे नहि कहे ॥ १ ॥ • इसतें अनंतर सुवर्ण कृच्छ्र कहा है तिस विषे देवल जीका वाक्य है ब्रह्मेति ब्रह्महत्या आदिक जो पाप हैं और इतर जो पाप हैं और तुला आदि दानोंको जो ग्रहण करण वाले हैं तिनो संपूर्णोंको शुद्ध करण वाला एह स्वर्ण कृच्छ्र कहा है १ ॥

१२० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

महेति महाप्रभुकों वराहपरिमाणमुवर्णकहाहै और मध्यमपुरुषकों वराह परिमाणतें अद्धा सुवर्ण दे
णाकहाहै और जोनिधनहैं तिनाकों वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साकहाहै तिसतेंन्यून न करे २ ॥
क्योंकि तिसतें जो न्यूनहै सो सुवर्ण दानकहाहै तिसकेदेणेवालेकों सुवर्णकृच्छ्रकाफलनाहिहोता
३ । इसमे मरीचिकपिकावचनहै वेति राजाधनीनिधनकों इसव्यवस्थासे वराहपरिमाणमुवर्णहोंवे
तां सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै और तिसतें अद्धभी सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साभी
कृच्छ्र है तिसते न्यून होवे तां सुवर्णदान कहाहै उसमे कृच्छ्रशब्दनहि कहा इहां वराहशब्दका
अर्थ मानपरिभाषा विषे देखलेना ॥ १ ॥ और धनी पुरुष वराह परिमाणतें अद्धे सुवर्ण का
कृच्छ्र करे जो असमर्थ इसके प्रत्याम्नायकी इच्छा करे तिस वास्ते कहतेहैं प्रयेति इसकाप्रत्या

महाप्रभोर्वराहः स्यात्तदर्धमध्यमस्यहि तदर्धमितरेपाचततो न्यूनंनकारयेत्
२ ॥ ततो न्यूनं सुवर्णदानमात्रं न कृच्छ्रशब्दः । मरीचिः । वराहस्यतदर्धचतद
र्द्धकृच्छ्रमीरितम् ततो न्यूनं दानमात्रं कृच्छ्रशब्दो न गद्यते ॥ १ ॥ वराहशब्दा
र्थो मानपरिभाषायां द्रष्टव्यः ॥ प्रभुमात्रे तदर्धस्यात्प्रत्याम्नायो न विद्यते मर
णांत प्रायश्चित्तानां ब्रह्महंत्वाणामकृतनिष्कृतीनामितरेषां रहस्यकृतपापानां
मकृतनिष्कृतीनां तुलादिसंग्रहीत्वाणां यागादिकरहितानां चतुर्भागव्यया
द्यकृतानां कालपुरुषादिप्रतिग्रहीत्वाणां तत्तदुक्तसुवर्णकृच्छ्राचरणेन तत्पाप
क्षयो भवति ॥ राजविजये ॥ प्रमादाद्ब्रह्महंत्वाणामितरेषां प्रभूयसा प्रायश्चित्त
त्तेन हीनानां सुवर्णकृच्छ्रमीरितम् ॥ १ ॥

स्नाय नहि मरण पर्यंतहै प्रायश्चित्त जिनांका ऐसे जो ब्राह्मणके मारणवाले और इतर जो पा
पहैं नहि कीती शुद्धि जिननं ऐसे जो गुप्त पापके करण वाले और तुलाआदि
दानके ग्रहण करण वाले और पंचयज्ञ आदि कर्मतें जो रहित हैं और दानकों ग्रहणकर्के
जो चतुर्थांश ब्राह्मणके ताई नहि देते और काल पुरुष आदि दानांके जो ग्रहण करण वाले
तिनां संपूर्णका पाप दूर होताहै सुवर्ण कृच्छ्र व्रतके करणकर्के ॥ अब राज विजय ग्रंथ विषे
कहाहै प्रेति प्रमादतें जो पुरुष ब्राह्मणका वध कर्तेहैं और इतर जो पापी है और जो
बड़े प्रायश्चित्त कर्के रहित हैं तिनांकी स्वर्ण कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ १ ॥

तुलेति तुलाआदिदानांके ग्रहणकरणवाले जो पुरुष हैं और दानके चतुर्थांश देणेकके ओ शुद्धि है तिसते रहित हैं तिनांकी शुद्धिवास्ते ब्रह्माने स्वर्णकृच्छ्र प्रायश्चित्त रचया है ॥ २ ॥ सुवर्णकी प्रशंसा करते हैं स्वर्णमिति सुवर्ण ब्रह्मस्वरूपकके ब्रह्माजीने रचयाहोया है पुरुषोंके स्वर्णकृच्छ्र व्रतके करणे कर्के कौशलपाप है जो नहि दूरहोता अर्थात् संपूर्णपाप दूरहोते हैं ॥ ३ ॥ अब गौतमजीका वाक्य है रहेति एकांतविषे ब्रह्महत्याके करणवाले जो पुरुष हैं हेराजन् श्रवणकर तिनांकी दशहजार १०००० स्वर्णकृच्छ्र दानकर्के शुद्धिहोती है ॥ १ ॥ और प्रत्यक्ष जो ब्रह्महत्याके करण वाले हैं तिनकी शुद्धि मरणपर्यंत प्रायश्चित्तकर्के होती है परंतु इसजगा अयुतभी चार ४ गुणा जानणा अगले वचनते सो ४०००० चाली हजार होवेगा एह स्वर्णकृच्छ्र राजाके योग्य है होंरकोंडे नाह

तुलादिसंग्रहीतृणारहितानांविशुद्धिभिः प्रायश्चित्तमिदंकृच्छ्रं ब्रह्मणापरिकल्पितम् २ ॥ स्वर्णब्रह्ममयं प्रोक्तं ब्रह्मणानिर्मितं पुरा सुवर्णकृच्छ्राचरणे किमसाध्यं शरीरिणाम् ३ ॥ गौतमः । रहस्यकृतविप्रस्य हत्यायां शृणु पार्थिव अयुतस्वर्णकृच्छ्राणां दानेशुद्धिरवाप्यते ॥ १ ॥ रहस्यकृतपापस्य पापिभिः परमार्थतः अयुतं पूर्ववज्ज्ञेयमन्यथामरणान्तिकम् २ ॥ प्रकाशकृतब्रह्महत्यानां मरणान्तिकं प्रायश्चित्तम् ॥ तद्रहितानां चतुर्भिरयुतकृच्छैर्विशुद्धिरिति ॥ तदा हमनुः । प्रकाशविप्रहंतृणां चतुष्कं पापनाशनम् निमित्ताकृतशुद्धिनां जपयागाभिषेचनैः ॥ १ ॥ निमित्तैः प्रायश्चित्तेरकृता शुद्धिर्येषां ते तेषां चतुष्कं चतुर्गुणमयुतमित्यर्थः स्मृत्यन्तरम् ॥ तुला प्रतिग्रहीतृविषये ॥ नदीस्नानादिनाराजंश्चतुर्भागव्ययेन वा ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थं चत्वार्ययुतमाचरेत् १ ॥ चत्वार्ययुतकृच्छ्राणीत्यर्थः ॥

करसकां इसके रुपैए पूर्वोक्त वराहपरिमाणवाले स्वर्णके मुद्द ४८०००० के हुं देहे मरण तक प्रायश्चित्तको जो नहि कर्ते सो राजादि चाली हजार ४०००० स्वर्णकृच्छ्र कर्के शुद्ध होते है २ । तैसे मनुजी कहते हैं प्रतिप्रकाश्य क्या नहि प्रत्यक्ष जो ब्रह्मणके वधकों कर्ते हैं और गायत्री जपादि प्रायश्चित्तां कर्के नहि होई शुद्धिजिनांकी तिनांके पापनाश वास्ते चाली हजार पूर्वोक्त स्वर्णकृच्छ्र किहा है ॥ १ ॥ और ही स्मृति विषे तुला दानके ग्रहण करणे विषे एह वाक्य है नदीनि हेराजन् नदीविषे स्नानादिकके और दानके चौथे हिस्सेके देणेकके वा दोष दूर करे अथवा ब्रह्मराक्षसगतिके दूरकरणे वास्ते चाली हजार ४०००० कृच्छ्र व्रतकों करे परंतु एह अनेक तुलाग्रहणविषे जानना प्रायश्चित्तको बहुत होणेतें ॥ १ ॥

प्रेति प्रभुकों उत्तमप्रकारकहाहै और मध्यमकों मध्यम और कनीयसकोंक्या छोटेकों पादप्रमाण कहाहै और नहि कीताउक्तप्रायश्चित्त जिनानेंतिनांकी शुद्धिस्वर्णकृच्छ्रव्रतांके करणैककेंहोतीहै और उपपातकांके मध्यविषे जिस जिसपातकके दूकरणेवास्ते जो जो कृच्छ्रव्रत कहेहैं तिनांके करण विषे सामर्थ्य न होवे तां तितनेस्वर्णकृच्छ्रव्रतांके शुद्धिहोतीहै । अवयाज्ञवल्क्यजीकाबचनहै उपेति उपपातकांकेसमूहके दूकरणेवास्तेमुनियानें जो जो प्रायश्चित्तकहाहै तिसकेकरणविषे समर्थ नहि होवेतां तितनेहि स्वर्ण कृच्छ्रव्रतकरे ॥ १ ॥ अब मरीचिकावाक्यहै समिति संकली करण पाप

प्रभोरुत्तमप्रकारोमध्यमस्यमध्यमप्रकारःकनीयसःपादप्रमाणतः । कृच्छ्राणि कृत्वात्वकृतप्रायश्चित्तानांशुद्धिर्भवति । उपपातकानांयस्ययस्यचपातकस्य यानियानिकृच्छ्राणि प्रतिपदोक्तानि तेषामाचरणाशक्ततया तावद्भिः सुवर्णकृच्छ्रैःकृतैःशुद्धोभवति । याज्ञवल्क्यः । उपपातकजालानांमुनिभिर्यद्युदीरितम् तदाचरणाशक्ततावत्कृच्छ्रं समाचरेत् ॥ १ ॥ मरीचिः संकलीकरणेराजनूयस्ययस्ययथोदितम् तदाचरणशक्तस्तुफलमानंत्यमश्नुते ॥ १ ॥ अशक्तस्यद्विजस्यार्थसुवर्णकृच्छ्रमीरितम् ॥ २ ॥ यद्यत्पापस्ययत्कृच्छ्रंमुनिभिःपरिभाषितम् तदाचरणाशक्तानां तावन्तिहिरण्यकृच्छ्राणि प्रभुत्वदारिद्र्यतारतम्येन कृत्वाशुद्धिमाप्नुवन्तीत्यर्थः ॥ एवंचाण्डालादिगमनेषु कृच्छ्रसंख्यया हिरण्यकृच्छ्राचरणैस्तत्प्रतिपदोक्तैः पूर्वोक्तैः शुद्धोभवति ॥

विषे हेराजन जिस जिस पापका जो जो प्रायश्चित्त कहाहै तिसके करण विषे जो युक्तहै सों अनंत फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ और जो ब्राह्मणादि असमर्थ है तिसकों सुवर्ण कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ २ ॥ इसी अर्थकों स्पष्टकर्के कहतेहै यदिति और धनी पुरुष और निर्धन पुरुष सुवर्ण कृच्छ्र विषे अधिक और न्यून परिमाण कर्के शुद्धिकों प्राप्त होतेहैं ॥ ३ ॥ इसी प्रकार चांडाल आदिकीयां स्त्रीयांके गमनकरणे विषे शुद्धिके निमित्त कृच्छ्रव्रतांकी संख्याकर्के कहे जो व्रत तिनांके प्रत्याग्राय वास्ते उतनेहि स्वर्ण कृच्छ्र व्रतांके शुद्ध होताहै ॥

एवमिति इसी प्रकार निन्दित अन्नके भक्षण विषे और उद्वन्धन और मरणादिकके होयां २ उपनयनादि कर्मोंके मुख्यकालके त्याग विषे जो प्रायश्चित्त निरूपण कीताहै तिसके बदले विषे तावत्संख्या कर्के स्वर्ण कृच्छ्र व्रतके करण कर्के शुद्ध होताहै ऐसे संपूर्ण स्थान विषे जानणे योग्यहै ॥ तुला आदिक दानांके ग्रहण करण वाल्यां पुरुषांको विशेष पैठानसि कहताहै तुलेति तुलादान विषे जो धनको ग्रहण कर्ताहै और तिस दानके चौथेहि स्तेको जो ब्राह्मणकेताई नहि देता और लोकविषे निंदाके भयकर्के अभिषेक और जपभी नहि कर्ता तिसको ब्रह्मराक्षसगतिहोणीहै ब्रह्मराक्षस उसको कहतेहैं जो ब्राह्मणोके मारण वाला राक्षस होवे इसमें एह अर्थ है कि राक्षसभावमे भी ब्राह्मणको मारेगा तो तिसहत्या

एवं दुरन्नभक्षणोद्वन्धनमरणादिपूपनयनकर्मणां मुख्यकालातिक्रमे प्रायश्चित्तंयन्निरूपितम् तावन्ति हिरण्यकृच्छ्राणि कृत्वा शुद्धाभवतीति सर्व प्रयोजनीयम् । तुलादिप्रतिग्रहीदृष्टांविशेषमाह पैठानसिः । तुलायांधन संधातायागंभागचतुष्टयम् अभिषेकंजपंवापिह्यकृत्वालोकनिंदया ॥ १ ॥ ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थकृच्छ्राण्येतानिसर्वशः चतुरयुतंप्रकुर्वीतधर्मशास्त्रोक्तमार्गतः ॥ २ ॥ पिशाचत्वविमुक्तिःस्यादिहलोकेपरत्रच सुवर्णकृच्छ्ररूपेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥ हिरण्यगर्भसंधानेयोधर्मनिष्कृतिंविना चत्वारि कृच्छ्रसाहस्रंकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

कर्के बहुत काल राक्षस हिरहेगा ॥ १ ॥ तिसके दूर करणे वास्ते इतनेहि कृच्छ्र व्रत कहने संपूर्णताकर्के और धर्मशास्त्रकर्के कथनते, चालीहजार ४००० सुवर्ण कृच्छ्रव्रतकरे २ ॥ तां पिशाच गति दूर होतीहै इसलोकविषे और परलोक विषे सुवर्ण कृच्छ्रके करणकर्के संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भके प्रतिग्रहविषे जिसने शुद्धिका उपाय नहि कीता सो चारहजार कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै । ४ । इसमें ऐसा अर्थहै कि जिसका लिया हुआ तुलादान थोडे मुलकाहोवे तां ४००० हजार स्वर्ण कृच्छ्र किसतरह करे गा तो ऐसा करणा चाहिए कि लक्षसे अधिक जिसने तुलादान लियाहोवे उसको इतना प्रायश्चित्तहै और थोडे दान वालेको लयेहोए दानके चौथे हिस्से अनुसार करणा चाहिए ऐसे आगेभी जानण

१२४ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

ब्रैति जो पुरुष ब्रह्मांड कुंभकों ग्रहणकर्त्ता है और तिसकी शुद्धिनिमित्त प्रायश्चित्तों रहित है सो त्रय १००० हजार कृच्छ्रव्रत करे तां पूर्वकीन्याईं शुद्धिकों प्राप्त होता है ॥ ५ ॥ और कल्पवृक्षके दानकों ग्रहण करे तिस दोषकी शुद्धिकों न करे तां पंजा ५०००० हजार स्वर्ण कृच्छ्र व्रतां कर्के शुद्ध होता है ॥ ६ ॥ और सुवर्णकी धेनुके दानकों जो ग्रहणकर्त्ता है और शास्त्रकी विधिकर्के जिसने अपनी शुद्धि नहि कीती सो भी पंजा हजार कृच्छ्र व्रतां कर्के पूर्वकीन्याईं शुद्ध होता है ७ ॥ और सुवर्णके अश्व दानकों जो ग्रहण कर्त्ता है और पूर्व नहि कीती शुद्धिजिसने सो पंज सउ ५०० सुवर्णकृच्छ्रव्रतकर्के पूर्वकीन्याईं शुद्ध होता है ॥ ८ ॥ और सुवर्णके घोडेकर्के युक्त जो रथतिसनूं ग्रहणकर्त्ता है और रथके ग्रहणकरणसे अशुद्ध जो पुरुष है सो छे सउ ६०० सुवर्ण

ब्रह्मांडकुंभसंधाता तन्निष्कृतिपराङ्मुखः त्रिसहस्रचरेत्कृच्छ्रं शुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥ ५ ॥ कल्पवृक्षस्य संधानेत्यजन्तं निष्कृतिं पुरा पंचायुतैश्च कृच्छ्रैश्च सुवर्णास्यैर्विशुध्यति ॥ ६ ॥ हिरण्यधेनुसंधाता शास्त्रैरकृतनिष्कृतिः पंचायुतैश्च कृच्छ्रैश्च शुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥ ७ ॥ हिरण्याश्वस्य संग्राही पुरा त्वकृतशुद्धिमान् पंचशतैः स्वर्णकृच्छ्रैः शुद्धिमाप्नोति पूर्ववत् ८ ॥ हिरण्याश्वरथाराजन्नशुचीरथसंग्रहात् षट्शतैः स्वर्णकृच्छ्रैश्च शुद्धो भवति पूर्ववत् ॥ ९ ॥ हेमहस्तिरथं विप्रः प्रतिगृह्य धनानुरः अकृत्वानिष्कृतिं शास्त्रमार्गेणाज्ञानपूरितः ॥ १० ॥ षट्शतैर्हेमकृच्छ्रैश्च शुद्धिमानुभयोर्द्विजः पंचलांगलसंग्राही ह्यकृत्वा धर्मनिष्कृतिम् ॥ ११ ॥ अयुतैस्स्वर्णकृच्छ्रैश्च शुद्धो भवति पूर्वजः अन्यथानिष्कृतिर्नास्ति ब्रह्मराक्षसशंकयेति ॥ १२ ॥

कृच्छ्र व्रतकर्के पूर्वकीन्याईं शुद्ध होता है ॥ ९ ॥ और सुवर्णके हाथी और रथनूं ग्रहणकर्के और शास्त्रके द्वारा तिसकी शुद्धिकों न कर्के धनके ग्रहण करण विषे युक्त है अज्ञान कर्के पूरित होया २ दोषकर्के युक्त सो ब्राह्मण ॥ १० ॥ छे सउ ६०० स्वर्ण कृच्छ्रव्रत कर्के दोनों दोषोंसे रहित होता है अथवा सुवर्ण के हाथीआं कर्के युक्त सुवर्णका जो रथ है तिसको ग्रहण कर्के ऐसा अर्थ करण और (उभयोः) क्या इस लोक विषे और परलोक विषे शुद्ध होता है ॥ और पंचलांगल दानकों जो ग्रहणकर्त्ता है और तिसकी शुद्धिकों नहि कर्त्ता ११ ॥ सो दश हजार १०००० स्वर्ण कृच्छ्र कर्के ब्राह्मण शुद्ध होता है ब्राह्मणकी शुद्धि अन्यथा नहि कही एह ब्रह्मराक्षसगतिके दोषेवाले प्रति ग्रह है ॥ १२ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी० भा० ॥ १२५

अथेति इससे अनंतर अधमर्षण कृच्छ्रव्रतमाधवने कहा है तिसविषे विष्णुजीका वाक्य है अब कृच्छ्र व्रत है त्रयस्त्रिंशदिन उपवास करे और दिन दिन विषे त्रयस्त्रिंशकाल स्नान करे और जल विषे दुग्धो लाके त्रयवार अधमर्षण मंत्रका उच्चारण करे ॥ और दिन विषे खलोवे रात्रि विषे स्थित होवे और कर्मके अंतर्विषे दुग्ध देण वाली गीका दान करे एह अधमर्षण कृच्छ्र है ॥ अब शंखरूपि श्रीगहि प्रकारं कर्के अधमर्षणकृच्छ्रनूं कहता है अहमिति त्रयस्त्रिंशदिन त्रयस्त्रिंशकाल स्नानको कर्के मुनि मनकर्के जलविषे त्रयवार अधमर्षणमंत्रको जपे और त्रयस्त्रिंशदिन कुछ न भक्षण करे एह अब

अथाऽधमर्षणकृच्छ्रं माधवेनोक्तम् ॥ तत्रविष्णुः ॥ अथकृच्छ्राणिभवन्ति अहंनाणीयात् प्रत्यहंचत्रिपवणंस्नानमाचरेत् जलेमग्न्यास्त्रिधमर्षणं जपेत् दिवातिष्ठेद्रात्रावासीत कर्मणोन्तं पयस्विनीगांदद्यादित्यधमर्षणम् शंखस्तु ॥ प्रकारान्तरेणाधमर्षणकृच्छ्रमाह ॥ अहंचत्रिपवणंस्नायामुनि स्नात्वाधमर्षणम् मनसात्रिःपठेदप्सुनभुंजीतदिनत्रयम् अधमर्षणमित्येद्वतंसर्वाधसूदनमिति ॥ १ ॥ अथयज्ञकृच्छ्रः । तत्रागिराः ॥ युक्तस्त्रिपवणं स्नायिसंयतोमौनमास्थितः प्रातःस्नानसमारंभंकुर्याज्जप्यंचनित्यशः । १ । सावित्रीव्याहृतिंचैवजपेदष्टसहस्रकम् ओंकारमादितः कृत्वारूपे रूपे तथा ततः । २ । भूमौवीरासनेयुक्तः कुर्याज्जप्यंसुसंयतः आसीनश्चस्थितोवापि पिवेद्द्रव्यंपयःसकृत् ॥ ३ ॥

मर्षण कृच्छ्र संपूर्ण पापोंके नाश करने वाला कहा है ॥ १ ॥ ७ इससे अनंतर यज्ञकृच्छ्र है तिसविषे अगिगर्भापिकावचन है युक्त इति मौन विषे स्थित होके इंद्रियोंको गेककर विषयोंसे निवृत्त होवे त्रय दिन त्रय काल स्नान करे और प्रातःकाल विषे स्नानके समय प्रातःदिन जलविषे अधमर्षणको जपे । १ । और ओंकारका आदिविषे उच्चारण करके सहित व्याहृतियोंके गायत्रीका अठ ८००० हजार जप करे २ पृथ्वी विषे वीरासन विषे स्थित होके और इंद्रियोंको गेककर जपकर बैठकरके वा उठ करके और गीके दुग्धका एकवार पान करे ॥ ३ ॥

१२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी०भा० ॥

मेति दुग्धप्राप्तनहोवे तां गौका दधिपानकरे और दधिकेअभावविषे छाहपोवे और छाहकेअभाव विषे यवांकेकाडेकापीवे ४ ॥ इनांविषे जो२ प्राप्तहोवे तिसकापानकरे दवांकापान गोमूत्रकके युक्तकरे ॥ ५ ॥ अंगिराजीनें एकदिनकेकच्छकके संपूर्णपापांके नाशकरणेवालायज्ञनामकके व्रत बहुतप्रेष्टकहाहै ॥ ६ ॥ एह यज्ञकच्छव्रत जो पुरुष पातककके युक्तहैं और उपपातकाकके युक्त और महापापां कके युक्त हैं तिनांके शुद्धकरणे वालाहै ॥ ७ ॥ अब देवकृत कच्छव्रतनूं यमक हनाहै यति छे ६ गुणा अधिक जल कके पके जो यव तिनांको और शाकको और दुग्धको और दधिको और घृतको त्रय त्रय दिनभक्षणकरे और तिसते परे त्रयदिन वायु भक्षणकरे १ ॥

गव्यस्यपयसोऽलाभेगव्यमेवभवेदधि दध्नाभावेभवेत्तक्रंतक्राभावेतुयाव कम् ॥ ४ ॥ एषामन्यतमंयद्यदुपपद्येततत्पिबेत् गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकं चोपयोजयेत् ५ ॥ एकाहेनतुकच्छेणउक्तस्त्वांगिरसास्वयम् सर्वपापहरो दिव्यानाम्नायज्ञइतिस्मृतः॥ ६ ॥ एतत्पातकयुक्तानांतथाचाप्युपपातकैः महद्भिश्चापियुक्तानांप्रायश्चित्तमिदंशुभमिति ॥ ७ ॥ देवकृतकच्छदर्शयति यमः॥ यवागूयावकंशाकंक्षीरंदधिघृतंतथा त्र्यहंत्र्यहंतुप्राशनीयाद्वायुभक्ष्यः परंत्र्यहम् १ ॥ कच्छदेवकृतंनामसर्वकल्मषनाशनम् मरुद्भिर्वसुभीरुद्वैरा दित्यैश्चरितंव्रतम् व्रतस्यास्यप्रभावेनविरजस्काहितेभवन्निति २ ॥ अथ प्रसृतयावकम् ॥ तत्रहारीतः ॥ अयमात्मकृतैःकर्मकृतैर्गुरुमात्मानंपश्येत् आत्मार्थं प्रसृतयावकंश्रपयेत् ॥

एह देवकृत नामकके कच्छ व्रत संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाकहाहै मरुदेवता और वसुदेवना और रुद्र और आदित्य इनां पिच्छे एह व्रत करीदा भया सो इस व्रतके करणे कके शुद्धहोतेभये ॥ २ ॥ अथेति अब प्रसृतयावक व्रत अर्थात् एकहाथके परमाणके अन्न खा एका व्रत कहाहै तिसविषे हारीत ऋषिकावचन है अयमिति एह व्रत करणे वाला पुरुष ब्राह्मणां कके कहा जो कर्म तिनांको आपकरे और तिनां आपकीते होये कर्मा कके आपणे आपका गुरु क्या पूज्यदेखे अर्थात् शुद्धदेखे और आपणे व्रतवास्ते एकमुष्टिप्रमाणदब पकावे

और निसर्ग अनंतर हवन करे और तिसीकके वैश्व देव घालिके और पके होये यवों को अभिमंत्रण करे वक्ष्यमाण मंत्रों कके पूर्वोक्तहि अर्थ स्पष्टकके किहाहै अयमिति यवोसि इत्यादि हेयव तूयवहै क्या पापांके नाश करणें वालाहै और अन्नांका राजा है वरुण तुजका देवताहै मधुकके युक्त होया २ संपूर्ण पापांके दूर करणें वालाहै और संपूर्ण ऋषियांकके तूं पवित्र कहाहै ॥ १ ॥ घृतमिति हेयवातुसीं घृतहो और तुसींहि मधुहो और आपोहिष्ठा क्या परमशुद्धकरणे वाले हो और अमृत हो मेरेसंपूर्ण पापकों दूरकरो जो मेनें दुष्कृतकीयाहै ॥ २ ॥ और वाणी और कर्म और मनकके दुर्विचिंतन कीयाहै और अलक्ष्मीकों और काल

ततोऽग्नौ जुहुयात् तदेव वलिकर्म शृतं वा अभिमंत्रयेत् (अयं पुरुषः आत्म कृतैः स्वयं संपादितैः कर्मकृतैः कर्मणा प्रयोजकद्वारा कृतैः कर्मभिरिति शेषः आत्मानं गुरुं पूज्यं पश्येदित्यर्थः) यवोसि धान्यराजो वा वारुणो मधुसंयुतः ॥ निर्नोदः सर्वपापानां पवित्रमृषिभिः स्मृतम् ॥ १ ॥ घृतं यवामधुयवा आपो हिष्ठा मृतं यवाः सर्वपुनंतु मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ २ ॥ वाचा कृतं कर्म कृतं मनसा दुर्विचिंतितम् अलक्ष्मीं कालकर्णीं च सर्वपुनीतमेयवाः ॥ ३ ॥ मातापित्रोरशुश्रूषां यौवने कारितं तथा श्वशूक रावलीढं च उच्छिष्टे पहतं च यत् ॥ ४ ॥ सुवर्णस्तेयं ब्राह्मणत्वं बालत्वादात्मजं तथा ब्राह्मणानां परीवादं सर्वपुनीतमेयवाः ॥ ५ ॥ वक्ष्यमाणां रक्षां कुर्यात् ॥

कर्णोंकों जो मृत्युदाराक्षसीहै इससंपूर्णोंको यवपवित्र करे ॥ ३ ॥ और मातापिताकी अशुश्रूषा रूपपाप और युवावस्थाकके जो व्यभिचारादिरूप पाप और कुचे कके और शूकर कके जो उच्छिष्ट भक्षण का पाप और उच्छिष्ट कके युक्त के भक्षण का जो पाप ४ ॥ और सुवर्णस्तेयकापाप और संस्काररहित होणका जो पाप और बाल्यावस्थाकके और ब्राह्मणकी निंदा कके उत्पन्न जो पाप तिनं संपूर्णों को दूरकरो ॥ ५ ॥ और आगे कथन करणी जो रक्षा तिसकों करे

१२८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

नमोरुद्राय इत्यादि मंत्रांकर्के पात्रविषे स्थापनकरे ॥ और यद्देवा इत्यादि मंत्रांकर्के अपसे विषे हवनकरे क्या पानकरे अन्य पुरुषांके अर्थवास्ते त्रय रात्रां पीवे और जिसने पाप कीता है सो छे १ रात्र पीवे तां शुद्ध होताहै और महापापी सत्तरात्रपर्यंतपीवे और वारां १२ रात्रपर्यंत पीणे कर्के संपूर्ण पापदूर होताहै ॥ और गोमयते क्या गोहेतें निकाले जो यव हैं तिनांको इक्की दिन पर्यंत पीणे कर्के गणांको देखताहै और गणाधिपतिका दर्शन करताहै और विद्याकों देखताहै और विद्याके पतिकों देखताहै और स्मृति कहतेहैं पूर्णायामिति जो पुरुष गोमूत्र विषे पकेहोये यवांकों वा गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृतइनांकों पान कर्ताहै सो

नमोरुद्रायभूनाधिपतयेद्यौःसावित्रीमानस्तोकेति पात्रेनिपिच्ययद्देवानमो यातामनोजवाः सुदक्षोदहंपितरस्तेनःपांतुतेनोबंतुतेभ्योनमस्तेभ्यः स्वाहे त्यात्मनिजुहुयात् । त्रिरात्रमेवार्थीपापकृत् पट्त्रात्रपीत्वापूतोभवतिसत्तरात्र महापातकीद्वादशरात्रपीत्वासर्वम्पुरुषकृतंपापानिर्दहति निःसृतानांयवाना मेकविंशतिरात्रपीत्वागणान्पश्यति गणाधिपतिंपश्यति विद्यांपश्यतिवि द्याधिपतिंपश्यति । पूर्णायामावकंपक्कंगोमूत्रंवासकृदधिक्षीरंसर्पिःप्रगेभु क्कामुच्यतेसोहसःक्षणादित्याह भगवान् मैत्रावरुणिरिति । अर्थलौकि ककार्यसाधकःत्रिरात्रमेवभिवेत् ॥ पापकृत्पट्त्रात्रमितिसंवन्धः ॥ ३ ॥ अथब्रह्मकूर्चव्रतमाहजावालः ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापौर्णमास्यांविशेष तः ॥ पंचगव्यंपिबेत्प्रातर्ब्रह्मकूर्चविधिःस्मृतः ॥ १ ॥ यथाह पराशरः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् ॥ निर्दिष्टंपंचगव्यंतुप्रत्येकंकाय शोधनम् । १

रात्रते हिपापने रहित होताहै ऐसे भगवान् मैत्रा वराणि कहते भये एह अर्थ स्पष्ट कर्के किहाहै अर्थानि लौकेककार्ये करणे वालेंकानाम अर्थीहै ॥ ३ ॥ इसते अनंतर ब्रह्मकूर्च व्रतकों जावालकृपि कहताहै एक दिन रात्र उपवास करे चाहे किसे दिनहोवे परंतु पूर्णमासी विषे विशेष कर्के कहाहै प्रातःकाल विषे पंचगव्य पानकरे एहब्रह्म कूर्चकी विधि कहीहै १ ॥ जैसे पराशर कहता भया गविति गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत कुशोदक एह पंच गव्य कहाहै एक एकगोमूत्र आदि देहके शुद्धकरणे वाले कहेहैं ॥ १ ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र. ५ ॥ टी. ० भा. ॥ १२९

इसमें विशेष कहतेहैं गविति तावे की न्याई है वणं जिसका ऐसी गौका गोमूत्र ग्रहण करे और श्वेत वणं वाली गौका गोमय ग्रहण करे और सुवणं की न्याई वणंवाली गौका दुग्ध और नीलवणं गौका दधि ॥ २ ॥ और कृष्णवर्ण गौका घृत जेकर पूर्वाक्त रंग वालीयां गौयां न प्राप्तहोवें तां कपिलागौका हि संपूर्ण ग्रहण करे पंचगव्यविषे एहविधिहै ॥ ३ ॥ अब पंचगव्यका परिमाणहै गविति गोहेतें दूणा गोमूत्र और चारगुणा घृत और अठगुणा दुग्ध और नैसे अठगुणा दधि पंचगव्यविषे एहपरिमाणहै ॥ ४ ॥ इस जगह एह प्राचीनोंका मत किहाहै ॥ अब नवीनोंका मत दिखाइंदा है गविति गोमूत्र

गोमूत्रं ताम्रवर्णायाः श्वेतायाश्चापि गोमयम् पयःकांचनवर्णाया नीला
याश्च तथा दधि ॥ २ ॥ घृतं च कृष्णवर्णायाः सर्वकापिलमेव वा अला
भेर्मयवर्णानां पंचगव्येष्वयं विधिः ॥ ३ ॥ पंचगव्यपरिमाणं तु ॥ गो
शकृद्द्विगुणं सूतं घृतं विद्याध्वतुर्गुणम् क्षीरमष्टगुणं प्रोक्तं पंचगव्यं तथा दधि
॥ ४ ॥ तथा अठगुणमिति प्राञ्चः ॥ गोमूत्रे मापकास्त्वष्टौ गोमयस्य तु षोडश
क्षीरस्य द्वादश प्राक्ता दध्नस्तु दश कीर्तिताः ॥ ५ ॥ गोमूत्रवदघृतस्याष्टौ तद
र्द्धं तु कुशोदकम् अर्वाचीनैश्च ऋषिभिः परिमाणमुदाहृतम् ॥ ६ ॥
गायत्र्यादाय गोमूत्रं गन्धद्वोरिति गोमयम् आप्यायस्वेति चक्षुरिन्द्राधिक्रा
वणनिवेदधि ॥ ७ ॥

बिसे अष्ट ८ मासि परिमाण और गोडा सेना माप परिमाण और दुग्धवारां १२ मासे परिमाण
और दधि दश १० मासे परिमाण ॥ ५ ॥ और गोमूत्रकी न्याई घृतका भी अठ ८ मासे परि
माण और जिसमें अद्ध क्या चार ४ मासे कुशाका जल इहां माप कहणे कर्के मासयांका ग्रहणहै
॥ ६ ॥ अब इनके मंत्रोंका कहते हैं गायत्री गायत्री मंत्र कर्के गोमूत्रको ग्रहणकरे और गंध
द्वारा इस मंत्र कर्के गोमयको ग्रहणकरे और आप्यायस्व इस मंत्र कर्के दुग्धको ग्रहण करे
और दधि कावण इस मंत्र कर्के दधिको ग्रहण करे ॥ ७ ॥

१३० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

नयिते और तेजोसिशुक इस मंत्र कर्के घृतकों ग्रहण करे और देवस्यत्वा इस मंत्र कर्के कुशाके जलनू ग्रहण करे इस रीतिसँ ऋचां कर्के पवित्र जो पंचगव्य है तिसका अग्नि विषे हवन करे ॥ ८ ॥ सप्तहँ पत्र जिनांके और नहि छेदया है अग्र जिनां का और तोतेकी न्यांईहै वर्ण जिनांका असायां कुशा कर्के जैसे विधिहै तेसे पंचगव्यका हवन करे ॥ ९ ॥ और इरावती इदं विष्णु मीनस्तोकेतिशंवती एनां चार ऋचां कर्के हवनकरणे योग्यहै और हवनकेशपनू पिच्छों ब्राह्मण पेषे ॥ १० ॥ और ओंकारकर्के पंचगव्यविषे अंगुष्ठ और अनामिकाकाँ फेरे और ओंकारकों पदककर्के शुद्धकरे और ओंकार मंत्र के उच्चारण कर्के

तेजोसिशुकमित्याज्यंदेवस्यत्वाकुशोदकम् पंचगव्यमृचापृतंहोमयेदग्नि
मन्निधौ ॥ ८ ॥ सप्तपत्राश्रयेदर्भाश्चिच्छिन्नाग्राःशुकत्विषः एतैरुद्धृ
त्यहोतव्यंपंचगव्ययथाविधि ॥ ९ ॥ इरावतीइदंविष्णुर्मानस्तोकेतिशंव
ती एताभिरेवहोतव्यंहुतशेषंपिवेद्विजः ॥ १० ॥ प्रणवेनसमालोडयप्रण
वेनाभिर्भ्रंश्च प्रणवेनसमुद्धृत्यपिवेत्तत्प्रणवेननु ॥ ११ ॥ मध्यमेनप
लाशस्यपद्मपत्रेणवापिवेत् स्वर्णपात्रेणताम्रेणब्रह्मतीर्थेनवापुनः ॥ १२ ॥
यत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिषट्तिमामकम् ब्रह्मकूर्चोपवासस्तुदहत्याग्निरिवेन्ध
नमिति ॥ १३ ॥ इदंपंचगव्यपरिमाणादिद्वितीयतृतीयप्रकरणयोस्तुक्तम्
पिप्रसंगादत्राप्युक्तमिति न पौनरुक्त्यम्

अंगुष्ठ और तर्जनीके साथ त्रयवार ऊर्द्धत्यागे कथा उपग्रले पास सहे और ओंकार कर्के पावे
११ ॥ पलाहके मध्यम पत्रकर्के वा कमलपत्रकर्के वा सुवर्णके पात्रकर्के अथवा तांबेके पात्र
कर्के वा ब्रह्मतीर्थकर्के पंचगव्यको पावे ॥ १२ ॥ अथ धार्यनाकरतेहैं यदिति जो पाप मर्गाया
अस्थियाविषे स्थितहै और देहविषे स्थितहै तिसको एह ब्रह्म कूर्च उपवास व्रत दाह करे जैसे
अग्निछाएकों दाहकर्ताहै १३ ॥ एह पंचगव्य परिमाणदूसरे तीसरे प्रकरणविषे कहाहोयाभीष्ट
तथापि इस स्थान प्रसंगते कहाहै पुनराकि दोष नहि जानना ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ १३१

यदेति जद फेर एह पंचगव्य मिला होया त्रय रात्रां विषे पीवे तां तिस ऋषिने व्रत का नाम यतिसांतपन कहा है इस शंख जीके स्मरणते है ॥ जावालनेतो फेर सतां ७ दिनांका सांतपन व्रत कहा है गविति गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदक इनांमेसे दिन दिन विषे क्रम कर्के एक एकका पान कर्के दिन रात्र उपवास करे तां इसका नाम कच्छ सांतपन कहा है एह संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ इनां गुरु लघुकच्छ व्रतोंकी व्यवस्था सामर्थ्यको देखके जानणे योग्य है । ऐसे आगेभी व्यवस्था

यदा त्वेते देवपंचगव्यमिश्रितं त्रिरात्रमभ्यस्यते तदा यतिसांतपनसंज्ञां लभते एते देवस्य हाभ्यस्तं यतिसांतपनं स्मृतमिति शंखस्मरणात् ॥ जावाले नतु सप्ताहसाध्यं सांतपनमुक्तम् गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम् एकैकं प्रत्यहं पीत्वा त्वहोरात्रमभोजनम् कृच्छं सांतपनं नाम सर्वपापप्रणाशनमिति १ ॥ एषांच गुरुलघुकच्छाणां शक्त्याद्यपेक्षया व्यवस्था विज्ञेया एवमुतरत्रापि व्यवस्था बोद्धव्येति ॥ * अथ चाद्रायणं वक्तुं तावत्तस्य कार्यं विशेषोपयोगिता प्रदर्श्यते तत्र याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषु पापेषु शुद्धिश्चां द्रायणेन तु धर्मार्थयश्चरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकतामिति ॥ १ ॥ तथा च पट् त्रिंशन्मतेऽभिहितम् यानिकानि च पापानि गुरोर्गुरुतराणि च कृच्छ्राति कृच्छ्रचांद्रैस्तु शोधयन्ते मनुरब्रवीदिति ॥ १ ॥

जानसे योग्य है * इससे अनंतर चांद्रायण व्रत कथन करणे ता आदविषे तिस चांद्रायणके कार्य विषे उपयोगिता दखाई दी है तिस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचन है अनेति अनादिष्ट पापांके होयां २ चांद्रायण व्रत कर्के शुद्धि कही है जो धर्मके वास्ते चांद्रायणको करता है सो चंद्रमाके लोकको प्राप्त होता है ॥ १ ॥ तैसे पट् त्रिंशन्मत विषे कहा है येति जो कुछक पाप हैं वडे तां वडे सो कच्छ और चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होते हैं एह मनुजी कहते भये ॥ १ ॥

अत्रेति इहांकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण इन तीन व्रतोंकाहि करणा कहाहै और शुक्रजी नंदोनोंका समुच्चय कहाहै तिसको कहतेहैं दुरिति दुरित जो उपपात कहै और दुरिष्ट जो पात कहैं इनके और महापापोंके और चपुनःसंपूर्ण पापोंके नाश करणशाले कृच्छ्र चांद्रायण व्रत कहैं १ गौतमजीने कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र एह दोनों व्रत चांद्रायणके तुल्य हैं ऐसा किहाहै संपूर्ण प्रायश्चित्त के संक्षेप कर्के करणोंविषे कृच्छ्रानिकृच्छ्र व्रतके करणोंविषे चांद्रायण व्रतकी निरपेक्षताहै क्या कुछ इच्छानाहै सूचनकीहै ॥ अथवा इतिशब्द कर्के तीनोंकाहि समुच्चय जानणा (वा समुच्चय इतिको धः द्विः आदीनां राशौ परस्पर निरपेक्षाणामेकस्मिन्नाक्रियादा वन्वयः यथा देवदत्तो यज्ञदत्तश्च

अत्र त्रयाणां समुच्चयः प्रतिपादितः उशनसा च द्वयोः समुच्चय उक्तः ॥ दुरि
तानां दुरिष्ठानां पापानां महतामपि कृच्छ्रं चान्द्रायणं चैव सर्वपापप्रणाशनमि
ति १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टं पातकम् ॥ गौतमेन तु ॥ कृच्छ्रानिकृ
च्छ्रौ चान्द्रायणमिति सर्वप्रायश्चित्तसमासकरणेनैव निरपेक्षता कृच्छ्रानि
कृच्छ्रयोः सूचिता ॥ चान्द्रायणस्य तन्निरपेक्षता ॥ इतिशब्देन त्रयाणां स
मुच्चयो वा केवलप्राजापत्यस्य तु नैरपेक्ष्यं चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ लघु
दोषे त्वनादिष्टे प्राजापत्यं समाचरेदिति ॥ गौतमेनापि प्राजापत्यनैरपेक्ष्यमु
क्तम् प्रथमं चरित्वा शुचिः पूतः कर्मण्या भवति द्वितीयं चरित्वा यदन्यन्महा
पातकेभ्यः पापं कुरुते तस्मान्मुच्यते तृतीयं चरित्वा सर्वस्मादेन सो मुच्य
त इति महापातकादपीत्यभिप्रेतम् ॥

नच्छतीति) जैसे देवदत्त और यज्ञदत्तका आपसविषे निरपेक्षता कर्के एक गमन विषे
अन्वयहै तैसेहि तीनोंकी आपसविषे निरपेक्षता कर्के पापके दूकणों विषे अन्वयहै ॥ केवल
प्राजापत्यको दूसरेकी नैरपेक्षता चतुर्विंशति मतविषे कहीहै सो कहतेहां लघ्विति जिसका थो
डा दोषहै ऐसा जो अनादिष्टपापहै तिसविषे प्राजापत्यको करे ॥ गौतमजीनेभी प्राजापत्य नैरपे
क्ष्य कहाहै ॥ एक प्राजापत्य करण कर्के देह और अंतस्करणकी शुद्धि और कर्म करणकी योग्य
ता वाला होताहै ॥ और दूसरी बार करण कर्के महापापों जो अन्यपापहैं तिनको शुद्ध हो
ताहै ॥ और तीसरेके करण कर्के संपूर्ण पापों रहित होताहै महापापतेभी एह अभिप्रायहै

मनुंभी कहाहै पेति पराकनाम कर्के जो एह कच्छहै सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला कहै ॥ हारीतकविनेंभी कहाहै चांद्रेति चांद्रायणव्रत और पराकव्रत और तुलापुरुष दान और गौयांको घास चुगाणा वनविषे पीछे जाणा एह चार संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले कहै १ ॥ तैने गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदकइनांको भक्षणकर्के उपवास व्रतको करे एह व्रत पापकर्के चांडाल तुल्यको भी शुद्ध कर्चाहै २ ॥ * इसते अनंतर चांद्रायण व्रतका प्रकारहै ॥ तिसविषे मनुजीका वाक्यहै अथिति एक एक ग्रासनूं कृष्णपक्षविषे घटावे और शुक्लपक्ष विषे वधावे कृष्णपक्षकी एकमते लेके शुक्लपक्षकी पूर्णमासी तक व्रत करे और त्रयकालस्नान करे एह चांद्रायणव्रतकी विधिहै ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीकावचनहै

मनुनाप्युक्तम् ॥ पराकोनामकृच्छ्रायंसर्वपापप्रणोदनइति ॥ हारीतेनाप्युक्तम् ॥ चान्द्रायणंपराकश्चतुलापुरुषएववा गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्रणाशनम् १ ॥ तथा गोमूत्रंगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेत् २ • अथचान्द्रायणव्रतप्रकारः ॥ तत्रमनुः ॥ एकैकह्रासयेत्पिंडकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् उपरुष्टंस्त्रिपवणमेतच्चान्द्रायणं मृतम् १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ तिथिरुद्ध्याचरेत्पिंडान्शुक्लेशिख्यंडसंमितान् एकैकह्रासयेत्कृष्णेपिंडंचान्द्रायणंचरन् ॥ १ ॥ वशिष्ठः ॥ एकैकंवर्द्धयेत्पिंडंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् इन्दुक्षयेनभुंजीतएपचान्द्रायणविधिरिति ॥ १ ॥ चन्द्रस्यायनमिवायनंचरणंयस्मिन्कर्मणिह्रासवृद्धिभ्यां तच्चान्द्रायणं संज्ञायां दीर्घः । यमः वर्द्धयेत्पिंडमेकैकंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् एतच्चान्द्रायणं नामयवमध्यंप्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

तिथिति शुक्लपक्षविषे जैसे एकम और द्वितीयार्ते आदलेके तिथीयांकी वृद्धि होतीहै तैसे मोरके आंड़े प्रमाण ग्रासोंकी वृद्धि करे और कृष्णपक्ष विषे ग्रासोंको घटावे और अमावस्या विषे उपवासकरे चांद्रायण व्रतको कर्त्ताहोया १ ॥ वसिष्ठजीके वाक्यकाभी एहि अर्थहै ॥ चांद्रायण शब्दका अर्थ कहतेहां कि चंद्रमा जैसे शुक्लपक्षविषे किरणों कर्के वृद्ध होताहै और कृष्ण पक्ष विषे किरणोंके कम होने कर्के कम होताहै ऐसे ग्रासों कर्के वधाणा और घटाणा तिस विषे चांद्रायण कहाहै संज्ञा होणें कर्के चकारको दीर्घ होया यमनं ॥ १ ॥ इसीका नाम यवमध्यंचान्द्रायण कहाहै एहि कहतेहैं वर्द्धयेदिति ॥ १ ॥

अब पराशरजीकावाक्यहै यवेति यवमध्यकृच्छ्रके स्वरूपकों कहतेहां जिसके करणेकके पापोंपुरुष
संबूणं यापातें रहित होताहै इसविषे संशयनहिहै ॥ १ ॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदातें लेके व्रतकरणे व
लापुरुष नियमकरे प्रातःकल उठकर दातनकोंकके जैसेआचारहै तैसें स्नानकरे ॥ २ ॥ और दो शुद्ध
स्त्रधाःणकरे और नित्यकर्मकोंसमाप्तकके सूर्यकेअस्ततकमौनधारके गायत्रीकाजपकरे । ३ । और
निमी समय गंध पुष्प आदिकां कके विष्णुकी पूजा करे और मयूरके आड़े परिमाण ग्रासक
कके । ४ । विष्णुगांड़े नैवेद्यदेकके भक्षणकरे एकवार भक्षण करणाविष असमर्थहोवेतां दो भाग

पराशरः। यवमध्यस्यकृच्छ्रस्यस्वरूपं प्रवदाम्यहम् यत्कृत्वासर्वपापेभ्योमु
च्यतेनात्रसंशयः ॥ १ ॥ शुक्लप्रतिपदारभ्यव्रतीनियमपूर्वकम् प्रातःस्नात्वा
यथाचारंदंतधावनपूर्वकम् ॥ २ ॥ तथावस्त्रेपरीधायनित्यकर्मसमाप्यच
जपेत्तावन्महामौनीयावन्मंदायतेरविः ॥ ३ ॥ तदाहरिसमाराध्यगन्धपु
ष्पादिभिःशनैः मयूराण्डप्रमाणेनग्रासंकृत्वाकृतीतथा ॥ ४ ॥ विष्णवेत
न्निवेद्याशुतंग्रासंभक्षयेत्ततः एकवारमशक्तत्वाद्द्विधाकृत्वैवभक्षयेत् ॥ ५ ॥
उत्तरापोशानंकृत्वावार्हिर्जग्त्वाथवाश्यतः प्रक्षाल्यपाणीतीयेनगंडूपैर्द्वाद
शात्मकैः ॥ ६ ॥ पादौप्रक्षाल्यचाचम्यपुनर्गत्वास्वमालयम् स्वयमेवपुनः
कृत्वाशुद्धंगोमयवारीभिः ॥ ७ ॥ पुनःप्रक्षाल्यतंपाणिंदेवंनत्वाथसंविशेत्
पापंदादीन्नपश्येत्तनसंभाषित्कदाचन ॥ ८ ॥ सायंसन्ध्यामुपासीतत्वासा
यंहोमभाचरेत् ॥

कके भक्षणकरे ॥ ५ ॥ देवस्थानतें बाहरजाकर अमृतीपस्तरणमासे इसकके आचमनकरके ग्रासको
भक्षणकके अपृतोपधानमासे इसकके आचमनकरे और मौनधारकरहथांको शुद्धकके जलकके
मुखही शुद्धिवास्ते वागं १३ चुलीयांकरे ॥ ६ ॥ फेर पादोंको जलकके शुद्धकरे और आचमन करे
पीछे अपने स्थानको प्राप्तहोक गोमय और जलकके स्थानको शुद्धकरे ॥ ७ ॥ फेर हथांकोथोवे
देवताको नमस्कार करे पापंडियांको न देखे और तिनके साथ संभाषणकदीभी ॥ न करे ८ ॥
और सायंकाल संध्या उपासे और पीछे सायंकाल तक होम करे ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी० भा० ॥ १३५

नियतकर्केहै व्रत जिसका सो पुरुष देवताके समीप स्थंडिलमें शयन करे ॥ ९ ॥ फिर प्रातः समय दूसरे दिन उठके स्नानकरे और पूर्वकी न्यांई नियमकों कर्के आसकों भक्षण करे एक एक आस वधायके ॥ १० ॥ बुद्धिमान् दिन दिन विषे एक एक आसकी वृद्धिकरे पूर्णमासी तक दिव्य जो आसहैं अर्थात् मंशककर्के शुद्धहैं ॥ ११ ॥ और पूर्णमासीविषे पंदरा १५ आस भक्षण करे और क्रमते कृष्ण पक्षविषे एक एक आसको घटावे हर्षकर्के ॥ १२ ॥ पूर्वकीन्यांई एक मास पर्यंत स्थित होवे तां मासके अंत विषे एक आसकों भक्षण करे परमेश्वरके ध्यान विषे युक्त

स्वपेच्चस्थंडिलेदेवसमीपेनियतव्रती ॥ ९ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायपरेद्युःस्नानमादिशेत् पूर्ववन्नियमंकृत्वाभक्षयेदेकवृद्धितः ॥ १० ॥ एकोत्तरतयाराजन्वृद्ध्याप्रतिदिनंबुधः भक्षयेत्कवलान्दिव्यान्यावतापौर्णिमादिनम् ॥ ११ ॥ दशपंचैवकवलान्भुक्त्वातत्रव्रतेक्रमात् एकैकंह्रासयेद्ग्रासंकृष्णपक्षेव्रतीमुदा ॥ १२ ॥ पूर्ववन्नियमंकृत्वामासंयावत्प्रवर्तते तत्रापि भक्षयेदेकंहरिध्यानपरायणः ॥ १३ ॥ व्रतांतैर्गौःप्रदातव्याव्रतस्यप्ररिपूर्तये पंचगव्यंपिवेत्पश्चाद्यवमध्यमुदाहृतम् ॥ १४ ॥ एतदाचरणेनैवब्रह्महत्यांव्यपोहति इतराणिचपापानिनश्यंतीतिकिमद्भुतम् १५ ॥ देवलः ॥ अन्नमात्रतृतीयांशैस्तण्डुलैःपाचयेद्भुविः तावदन्नमयूराण्डमितिसन्तोषदंतिहि ॥ १ ॥ अन्नमात्रंसार्द्धमुष्टिद्वयमितंततृतीयांशैरित्यर्थः

होया होया १३ और व्रतके अंत विषे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते एक गौका दान करे और पोछे पंचगव्यकों पानकरे एह यव मध्य चांद्रायण व्रत कहाहै ॥ १४ ॥ इसके करणे करकेहि ब्रह्महत्यादिपापकों दूरकर्ताहै इतरपापोंके दूरकरणविषे क्या आश्चर्यहै ॥ १५ ॥ देवलजीकावाक्य है अन्नेति ढाई २॥ मुष्ट चावलका जो तीसरा भागहै तिस कर्के युक्त दुग्धकों पकावे तितने प्रमाण अन्नकों मोरके आंठिके तुल्य बुद्धिमान् कहतेहैं १ ॥

१३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

इतीति ऐसे यवमध्य पवित्रचांद्रायण व्रतकों करके पुरुष तिसी क्षणतें ब्रह्महत्यादि पापतें रहित होता है ॥ २ ॥ इस यवमध्य चांद्रायणव्रतकरणों जो प्रारंभकर्ता है तिसकी पापनष्ट होते हैं और जो कोई इसव्रतको कर चुका है उसकी क्या बात कहणी है । ३ । विष्णुकी प्रीतिके करणे वाला है और स्त्रीयां और विधवा और यती और ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥ और गृहस्थोंइनांके महापापांके नाश करणवाला विशेषकरके एहकहा है चंद्रमाकी वृद्धि और क्षय किरणांकरके जैसे होता है तिसकी न्या ई वृद्धि और क्षय चांद्रायणव्रतको आसोंकरके जानणा जदशुक्ल पक्षसे प्रारंभ होवे तां यवमध्य है एहअर्थ है चंद्रमाकी न्या ई वृद्धिक्षयहोणेतें इस यवकृच्छ्रका नाम यवमध्य चांद्रायण कहा है धर्मरा

इतिचांद्रायणंकृत्वायवमध्यं सुपावनम् ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुक्तो भवति त-
क्षणात् ॥ २ ॥ यवमध्यामिदंचान्द्रं कर्तुं यस्तदुपक्रमेत् ॥ तस्य पापा
निनश्यन्ति किं पुनर्व्रतचारिणः ॥ ३ ॥ विष्णुप्रियकरं चैव सर्वपापप्रणाश
नम् नारीणां विधवानां च यतीनां ब्रह्मचारिणाम् ४ गृहस्थानां विशेषे
ण महापातकनाशकम् वृद्धिः क्षयश्च चन्द्रस्य वर्तते तद्वदिदमपि एतद्व्रतना
मधेयचांद्रस्य शुक्लपक्षे वृद्धिः कृष्णपक्षे क्षयस्तन्नामधेय एष यवकृच्छ्रः एत
च्च यववत्प्रांतयोरणीयः मध्ये स्थवीय इति यवमध्यमिति कथ्यते एतदेव व्रतं
यदा कृष्णपक्षप्रतिपदि प्रक्रम्य पूर्वोक्तक्रमेणानुष्ठीयते तदापि पीलिकामध्य
मिति कथ्यते ॥ यमः ॥ एकैकं हासयेत्पिण्डं कृष्णेशुक्ले च वर्द्धयेत् एतत्पि
पीलिकामध्यंचान्द्रायणमुदाहृतम् ॥ १ ॥

जका बाक्य है अयिति कृष्णपक्षविषे पूर्वग्रामांकों घटावे और पीछे शुक्लपक्षविषे वृद्धिकरे इसका नाम पिपीलिका मध्य चांद्रायण कहा है १ जैसे कोटीका मध्य सूक्ष्म होता है तैसेहि इसव्रतका भी मध्य सूक्ष्म है क्या अमावास्याके दिन कुछ भोजन नहि सो व्रतका मध्य दिन है और जैसे यवमध्य विषे स्थूल है दोनों पासयां विषे सूक्ष्म है इसप्रकार मध्यविषे स्थूल होणेतें तिसका नाम यवमध्य चांद्रायण है अर्थात् पूर्णिमाके दिन १५ पंद्रहासका भोजन है सो व्रतका मध्य है एहि व्रत कृष्णपक्षकी १ एकमते ग्रहण करिये तां तिसका नाम पिपीलिकामध्य है १ ॥

श्रीरघवीर कारित आयुध भागः ॥ प्र. ५ ॥ टी. ० भा. ॥ १३७

इसोवि तैसे पूर्वकहा जो क्रम तिसकके कृष्णपक्षकी प्रतिपदाविषे चौदां १४ ग्रासांको भक्षणकरे
 एक ग्रासघटावे चतुर्दशीतक तां चतुर्दशीविषे एक ग्रास रिहा तिसको भक्षणकरे और अमा
 तस्याविषे उपवास करे और शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे एकहि ग्रास भक्षण करे तिसते पीछे
 एक एक ग्रासको वधाये पक्षके अंतविषे जो दिन है पूर्णमासी तिसविषे पंदरा १५ ग्रास भक्षणकरे
 ऐसे पिपीलिकामध्य युक्त है ॥ अब वशिष्ठजीकावचन है मेति मासविषे कृष्णपक्षके आदविषे चौ
 द्दा १४ ग्रासांको भक्षणकरे आगे दिनदिनविषे घटावे और पक्षके अंतविषे उपवासकरे ॥ १ ॥

तथाहि पूर्वोक्तक्रमेण कृष्णपक्षप्रतिपदि चतुर्दश ग्रासान्भुक्त्वा एकैक
 ग्रासापचयेनचतुर्दशीयावद्भुंजीत ततश्चतुर्दश्यामेकंग्रासंग्रासित्वा अमा
 वास्यायामुपोष्यशुक्लप्रतिपदि एकमेव ग्रासंग्राशीयात् तत एकोपचयभोज
 नेन पक्षशेषे निर्वर्त्यमाने पूर्णमास्यां पंचदश ग्रासाः संपाद्यंत इति युक्तैव पि
 पीलिकामध्यता । वशिष्ठः मासस्य कृष्णपक्षादौ ग्रासानद्याच्चतुर्दश ग्रासा
 ऽपचयभोजी सन् पक्षशेषं समापयेत् ॥ १ ॥ तथैव शुक्लपक्षादौ ग्रासं भुंजी
 तचापरम् ग्रासोपचयभोजी सन् पक्षशेषं समापयेत् ॥ २ ॥ यदात्वेकस्मिन्प
 क्षेतिथिवृद्धिहासवशाद्दिनानि षोडश भवन्ति चतुर्दश वा तदा ग्रासानाम
 पिवृद्धिहासौज्ञातव्यौ तिथिवृद्ध्यापि षांश्चरेदिति नियमात् ॥ चान्द्रायणा
 न्तरमाह याज्ञवल्क्यः ॥ यथाकथंचिपि षांश्चत्वारिंशच्छतद्वयम् मासेनै
 वोपभुंजीत चान्द्रायणमथापरम् ॥ १ ॥

तैसे शुक्लपक्षके आदविषे एक ग्रासको भक्षणकरे आगे दिनदिन विषे ग्रासको वधाये ऐसे समाप्त
 करे ॥ २ ॥ जदपक्षविषे सोलां १६ तिथियां होण वा चौदां १४ होण तां ग्रासांकोभी वधाये
 घटावे इसमे वचन कहा है तिथिके वृद्धि क्रमकके ग्रासांको भक्षणकरे इसनियमते जानणा ॥
 और भीचांद्रायणका भेद है तिसको याज्ञवल्क्य कहता है यथेति जिसकिसे तरह अर्थात् मध्यान्ह
 कालविषे नित्य आठ ८ ग्रास भक्षण करे अथवा चार ग्रास दिन विषे और चार रात्रिविषे
 भक्षणकरे और एक मासकके दोसउचाली १४० ग्रास भक्षणकरे एहचांद्रायणका भेद कहा है १

१३८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अथैति एक दिनविषे चारग्रासांकों और दूसरे दिनवारां १२ ग्रासांकों भक्षणकरे तैसें एक रात्र उपवासकरे और दूसरे दिन सोलां ग्रास भक्षणकरे इत्यादि प्रकारांविषे किसे प्रकारकर्के अपणी सामर्थ्यतेकरे एह पूर्व कथनकीते जो दो चांद्रायण तिसते एह भिन्नचांद्रायणकहाहै ॥ इसकारणते इनदोनों विषे ग्रासांकी संख्याका दोसउ चाली २४० एहनियमनहि क्यांनियमहै दो सउ पंजी २२५ ग्रासहैं सो कहतेहै शुक्लेति शुक्ल प्रतिपदाते लेकर पूर्णिमा पर्यंत एक एक वृद्धि कर्के एक सो बीस १२० ग्रासहैं कृष्णपक्षकी प्रतिपदासे लेकर चतुर्दशतिक एक एक ग्रासके ह्रासकर्के

पिंडानांचत्वारिंशदधिकंशतद्वयंमासेनभुंजीत ॥ यथाकथंचित्प्रतिदिनंम
ध्याह्नेष्टौग्रासानूयथानक्तंदिनयोश्चतुरश्वतुरोवा ॥ अथैकस्मिंश्चतुरोऽपर
स्मिन्द्वादशतथैकरात्रमुपोष्यापरस्मिन्षोडशवेत्यादिप्रकाराणामन्यतमेम
शतयाद्यपेक्षयाभुंजीतेत्येतत्पूर्वोक्तचान्द्रायणद्वयादपरंचान्द्रायणम् अत
स्तयोर्नायग्राससंख्यानियमः किंतुपंचविंशत्यधिकशतद्वयसंख्यैव ॥ तद्यथा
शुक्लप्रीतिपदमारभ्यपूर्णिमापर्यन्तमेकैकवृद्ध्या १२० ग्रासाः ॥ कृष्ण
प्रतिपदमारभ्यचतुर्दशी १४ प्रभृत्येकैकग्रासह्रासेन १०५ ग्रासाभवंती
त्यनयारीत्या २२५ मनुरप्याह ॥ अष्टावष्टौसमश्रीयात्पिंडान्मध्य
दिनोस्थिते नियतात्माहविष्याशीयतिचान्द्रायणंपरम् ॥ १ ॥ यतिचान्द्रा
यणमिति संज्ञामात्रम् ॥ तेन न यतिमात्रस्यैवाधिकारः किन्तुसर्वेषाम् ॥

एक सउपांचग्रास १०५ हुए इसरीति कर्के दो सौ पंचीस २२५ ग्रासहैं ॥ मनुजीभी कहतेहैं
अष्टाविति मध्याह्नदिन विषे अठ अठ ग्रासभक्षणकरे मनकों एकाग्र करे परंतु हविष्यकों भक्षण
करे एह वडा श्रेष्ठ यति चांद्रायणहै ॥ १ ॥ परन्तु यति चांद्रायण केवल इसका नामहिहै ति
सकों यतिचांद्रायणनाम होणे कर्के केवल यतिकों हि नहि अधिकार किंतु संपूर्णकोहि अधिकारहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ६ ॥ टी० भा० ॥ १३९

तैसेहि कहतेहैं चेति चार ४ ग्रासां नूं प्रातः कहणे कर्के दिनविषे भक्षणकरे इंद्रियांकों विषयांतें रोककें स्थितरहे ब्राह्मण श्रीर चारग्रास रात्रिविषे भक्षणकरे एक मासतक ऐसे नियमकरे तिसका नाम शिशुचांद्रायणहै ॥ १ ॥ इस व्रत विषे भी संपूर्णका अधिकारहै केवल बालकों नहि इसीको स्पष्ट कर्के कहतेहैं यथेति जिसाकिसे तरह हविष्य अन्न के दोसउचाली २४० ग्रास भक्षण करे एक मासपर्यंत तां चंद्रके लोककों प्राप्तहो ताहै २ ॥ तैसे दोसउचाली २४० ग्रासतें घट ग्रासांकेभक्षण करणे विषे श्रीरहि चांद्रायणकहाहै ॥ अवकाषिचांद्रायणको कहतेहैं तिसविषे यमजीका वाक्यहै त्रीनिति दृढ है व्रत जिसका

तथाच चतुरःप्रातरश्रीयार्पिण्डान्विप्रःसमाहितः चतुरोस्तमयेसूय्येशिशु चान्द्रायणचरन् ॥ १ ॥ अत्रापिचसर्वेषामधिकारोऽन शिशुमात्रस्य ॥ यथाकथंचित्पिण्डानांतिस्त्रोशीतीःसमाहितः मासेनाश्वन्हविष्यान्नचन्द्रस्यै तिसलोकताम् ॥ २ ॥ तथाच चत्वारिंशच्छतद्वयन्यूनसंख्याग्राससंपा दस्यापिसंग्रहार्थमपरग्रहणम् • अथऋषिचान्द्रायणम् ॥ तत्रयमः ॥ त्रीं स्त्रोन्पिण्डान्समश्रीयान्नियतात्मादृढव्रतः हविष्यान्नस्यैवैमासमृषिचान्द्राय णंस्मृतमिति ॥ १ ॥ एषुच यतिचान्द्रायणप्रभृतिषु न चन्द्रगत्यनुसरणमपे क्षितम् ॥ अतस्त्रिंशदिनात्मकं साधारणेन मासेन नैरंतर्येण चान्द्रायणानु ष्ठाने यदि कथंचित्तिथिवृद्धिहासवशात् पंचम्यादिष्वारंभोभवति तथापि न दोषः ॥

श्रीर निश्चलहै मन जिसका सो पुरुष हवि । त्रयग्रास रात्रि विषे भक्षण करे एकमास पर्यंत तां तिसका नाम ऋषिचांद्रायणकहाहै ॥ १ ॥ एह जो यतिचांद्रायणतें आदि लेके व्रत हैं तिनां विषे चंद्रमाकी गति कर्के शुक्ल कृष्ण पक्षका नियम नहि इसकहणेतें त्रीहां १० दिनांका ग्रहणहै साधारण एक मास निरंतर चांद्रायणविषे जानणा ॥ जेकर कदी एकम आदि ति थितें पोछें वा आगे पंचमी आदि तिथि उहि है इस विषे प्रारंभ करे तद करणेका भी नहिदोष त्रीह दिन १० का सावन नाम कर्के मास पूर्णकरे ॥

१४९ ॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ अ • ५ ॥ टी • भा • ॥

इसमें अनंतर चांद्रायण व्रतकी विधिसे कृच्छ्र व्रत विषे मुंडनको करवाके व्रतको करे दूसरे दिन पूर्णमासी विषे उपवास करे और आप्यायस्वसंते पयांसि नमो नम इति इनां मंत्रों को तर्पण और आन्य होम और हविकों अभिमंत्रण करणा और चंद्रमाका उपस्थान करणा इन मंत्रोंको तर्पणादि कार्योंमे प्रत्येक विषे पढे सबको पढकर तर्पणकरे और सबको पढकर होम करे एह अर्थ आगे स्पष्ट होणाहै यद्देवा देव हेडन मिति चारों मंत्रों कर्के आप्या होम करे (देवकृतस्व इस कर्के अंत विषे समिधाकर्के हवनकरे और उँभूः इसमें आदि लेकर

● अथ चान्द्रायणव्रतविधिः ॥ कृच्छ्रेवपनव्रतंचरेत् श्वोभूतांपौर्णमासीमुप वसेत् आप्यायस्वसंतेपयांसिनमोनमइति चैताभिस्तर्पणमाज्यहोमोहवि षश्चानुमंत्रणम् ॥ उपस्थानंचन्द्रमसः ॥ यद्देवादेवहेडनमिति चतसृ भिराज्यंजुहुयाद्देवकृतस्येतिचांतेसमिद्धिः ॥ उँभूः उँभुवः उँस्वः उँमहः उँजनः उँतपः उँसह्यम् उँयशः उँश्रीः उँऊर्कः उँईट् उँत्रोजः उँ तेजः उँपुरुषः उँधर्मः १५ शिव इत्येतैर्ग्रासानुमंत्रणम् ॥ प्रतिमंत्रं नमःस्वाहेति वा सर्वानेतैरेवग्रासान्भुंजीत ॥ चरुभैक्ष्यसत्तुकणयावक शाकपयोदधिघृतमूलफलोदकानि हवींषि उत्तरोत्तरप्रशस्तानि पौर्णमा स्यांपंचदशग्रासान्भुक्ता एकैकापचयेनअपरपक्षमश्रीयात् अमावस्या मुपोष्यैकैकोपचयेन पूर्वपक्षंविपरीतमेकेषामेषचान्द्रायणोमासइति

शिवः तकइनां कर्के ग्रासांको अभिमंत्रणकरे और मंत्रा मंत्र प्रतिमनकर्के नमःस्वाहा उच्चारणकरे अथवा संपूर्णग्रासानूं इनां कर्केहि भक्षणकरे । और कुछ कहतेहैं चर्विति चरुभैक्ष्य क्या भिक्षास सत्तु शिलाअन्न और जवांका पाक और शाक दुग्ध दधि घृत और मूल शकरकंदी और फ ल आम्नादि और जल एह हवींषि जानणे एह सत्र उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं पूर्णमासीविषे पंदरां १५ ग्रासानूं भक्षण कर्के एकैकह्रासकर्के दूसरे पक्षविषे भक्षणकरे । अमावस्या विषे उपवास कर्के एक एक की वृद्धि कर्के पूर्व पक्ष विषे करे और कोइ इसमें विपरीत चांद्रायण कहतेहैं १

॥ श्रीरघुवीर कारित ग्रामश्रित भाग ॥ अ० ५ ॥ टी० भा० ॥ १४९

अत्रेह इत विषे ग्रासका परिमाण असे जानणा जो मुख विषे सुख कर्के प्रविष्ट होवे एह कहाहे सो बालकाविषे जानणा ॥ हेतुकहतेहें शिखीति मयूरश्रंडके परिमाण पंचग्राम भोजन करणविषे सामर्थ्य नहि होणेतें ॥ इसमें एभी विचार जानणा कि दुग्धादिक ग्रास कैसे होण गे तिसबास्ते ग्रासोंको कल्पना करलेणी क्षीरादि द्रवहविकें ग्रास जो मयूर श्रंडका प्रमाण सो बूनेकर्के बनाकरजानणा ॥ और विशेषकहतेहें तथेति कुक्कुड श्रंडकेप्रमाण और गिछेआंरलेके प्रमाण ग्रास समर्थताकों देखकर अन्य स्मृतियां कर्के कहे होये शक्ति विशेषको देखकर जानणे मयूर श्रंडप्रमाणें तिनाकों लघु होणेतें । अथ चांद्रायण व्रतके प्रसंगविषे पराशरजीका वचनहै

अत्रग्रासप्रमाणमास्याविकारेणेति यदुक्तंतद्वालाभिप्रायम् शिख्यएडपरिमितपंचग्रामभोजनाशक्तेः क्षीरादिद्रवहविषां ग्रासाःकल्पनीयाः शिख्यएडपरिमितत्वंतु पर्णपुटकादिनासंपादनीयम् ॥ तथा कुक्कुटाएडाद्रामलकादिपरिमितानिकवलानि स्मृत्यंतरोक्तानिशक्तिविशेषविषयाणि । शिख्यएडपरिमाणाल्लघुत्वात्तेषां ॥ चान्द्रायणप्रकरणे पराशरस्तु ॥ कुक्कुटाएडप्रमाणंतुग्रासंवैपरिकल्पयेत् ॥ शंखस्तु ॥ आद्रामलकमात्रास्तुग्रासाइन्दुव्रतेस्मृताइति ॥ एतेषांपरिमाणानांविकल्पोबोध्यः ॥* अथव्रतांतरसंपातेनिर्णयः ॥ एकादश्यादौनित्यप्राप्तउपवासस्तावच्चान्द्रायणविधिनावाध्यते एतस्यचचरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकतामिति काम्यत्वात्

किति कुक्कुड श्रंडके प्रमाण ग्रासकी कल्पनाकरे । शंखजीकानो एह वचनहै जो गिछाआंरलाहै तिसप्रमाण ग्रासचांद्रायण व्रतविषेकहेहें इहांपरिमाणोंका यथाशक्तिसें विकल्पजानलेणा * इसतें अनंतर व्रतांतर संपात विषे निर्णयहै अथान् चांद्रायणके बीच कोई और व्रत आजावे तिसका निर्णयहै एकादशी आदिक विषे नियम कर्के जो उपवासहै सो चांद्रायण विधि कर्के बाधया जावेगा क्योंकि जो चांद्रायणकोंकरताहै सो चंद्रलोककों प्राप्तहोताहै इसफलके सुणनेसे काम्य होणेतें ॥

१४२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

लैति और लसुनके भक्षण आदिक निमित्तके होयां होयां विधान करणकरके चांद्रायणकों ग्राह्यताहै और निमित्तविषेभों ग्राह्यताहै इस कारणते एह सिद्ध होया कि निमित्तते नैमित्तिक बलवान् है कांम्य इति और कांम्य जो चांद्रायणहै और एकादशोव्रत जो कांम्यहै सो अन्य पुरुष द्वारा क रवाणा होरी कर्के कीतयां होयांभो फलकी प्राप्ति होतीहै ऐसे कात्यायनादि ऋषियां कर्के कथन करणते और एह एकादशी व्रतके बाधका अभाव अर्थात् एकादशीके व्रतका बाधा कदे भी नहि होता किंतु और व्रत तिस विषे आवे तां एकादशी कर्के तिसकाहि बाधा हुंदाहै सो चांद्रायणों भिन्न व्रतां विषे हि जानणा क्योंकि तिस विषे दिन दिन प्रति आस ग्रहण विषे

लशुनभक्षणादिनिमित्ते विहितत्वेन नैमित्तिकत्वाच्च कांम्यत्वेकादश्या
द्युपवासोऽन्यद्वाराकरणीयः प्रातिनिधिना कृतेपि फलप्राप्तेः कात्या
यनादिभिरुक्तत्वात् ॥ अथैकादश्युपवासबाधाभावः सामान्यश्चांद्रा
यणभिन्नेष्वेव तत्र प्रतिदिनं ग्रासग्रहणेनियमाभावात् ॥ यत्पुनरुक्तं श्वोभूतां
पौर्णमासीमुपवसेदित्यत्र चतुर्दश्यामुपवासमभिधाय पौर्णमास्यां पंचदश
ग्रसान्भुक्तेवेत्यादिना द्वात्रिंशदहरात्मकं चांद्रायणमुक्तंतत्पक्षान्तरप्र
दर्शनार्थं न सार्वत्रिकम् योगीश्वरवचनानुरोधेन त्रिंशदहरात्मकस्यैव दार्शि
तत्वात् ॥ यद्येतत्सार्वत्रिकं स्यात्तदा नैरंतर्य्येण संवत्सरे चांद्रायणानुष्ठाना
नुपपत्तिश्चन्द्रगत्यनुवर्तनानुपपत्तिश्च स्यात् ॥

नियमका अभाव होताहै ॥ जो होर कहाहै कि अगलेदिनहै पूर्णमासी जिसके औसी चतुर्दशी
कों उपवास करे और पूर्णमासी विषे पंद्रह १५ ग्राम भक्षण करे इस कर्के वत्ती १२ दिनका
चांद्रायण कहा सो अन्य पक्षके दखाणे वास्ते जानणा संपूर्ण स्थान विषे नहि योगीश्वरवच
नके अनुसार कर्के वीहां ३० दिनाकोंहि दखाणेंते । जेकर एह संपूर्ण स्थान विषे होवे तां नि
रंतर कर्के वर्षके चांद्रायण ही सिद्धि नहि होती और चंद्रमाकी गतिके अनुसार वर्तनेकी भी
सिद्धि नहि होती

॥ ७ ॥ अथेति इसते अनंतर विशेषता - कर्के चांद्रायण कल्पका ग्यास्यान कर्तेहां शुक्ल पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवास व्रत करे वा कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवासकरे केश और श्मश्रु और नख और लोम इनांको मुंडन करवाके वा श्मश्रुकाही मुंडन करवाके व्रत करे अब यमजीकावचनहैं अथेति लोहेका पात्र और तैजस क्या सुवर्ण पात्र और घट शराव क्या प्याला आदि पात्रांको त्यागे एह पात्र असुरांको कहेहैं और देवपात्र अचक्रक है ॥ १ ॥ यमजीकहतेहैं अंगुलीयांके अग्र विषे स्थित जो ग्रास तिसका सावित्रीकर्के मंत्रण करे इस विषे ग्रासों कर्के ग्रासरूप जो अग्नि तिस विषे हवन करे ॥ ऐसे बौधायन ऋषि कहता है प्रथम ग्रासको

● अथातोविशेषतयाचान्द्रायणकल्पंव्याख्यास्यामः ॥ शुक्लचतुर्दशीमुपवसेत्कृष्णचतुर्दशीवाकेशश्मश्रुनखलोमानि वापयित्वा श्मश्रुणिवेत्यादि यमः ॥ आयसंतैजसंपात्रंचक्रोत्पन्नविवर्जयेत् असुराणांहितपात्रंदेवपात्रमचक्रकम् १ चक्रोत्पन्नघटशरावादि सएव ॥ अंगुल्यग्रस्थितंग्रासंसावित्र्याचमिमंत्रयेत् अत्रग्रासैरेवप्राणाग्निहोत्रमाह ॥ बौधायनः ॥ अश्रीयात्प्राणायितिग्रासंप्रथमम् १ अपानायितिद्वितीयम् २ व्यानायेतितृतीयम् ३ उदानायेतिचतुर्थम् ४ समानायेतिपंचमम् ५ यदाचत्वारस्तदाद्वाभ्यांग्रासंपूर्वम् यत्रत्रयस्तदाद्वाभ्यांद्वाभ्यांपूर्वम् यदाद्वौतदात्रिभिःपूर्वद्वाभ्यामेवोत्तरम् एकंतुसर्वैरिति ग्रासद्वयपक्षे प्रथममाद्यैस्त्रिभिरंतद्वाभ्यामेकपक्षेसर्वैरेकमित्यर्थः

प्राणाय स्वाहा इस कर्के भक्षण करे १ और अपानाय स्वाहा इसकर्के दूसरे ग्रासनू २ और व्यानाय स्वाहा इस कर्के तीसरे ३ और उदानाय स्वाहा इस कर्के चौथे ४ और समानाय स्वाहा इस कर्के पंचम ५ ग्रासनू भक्षणकरे जेकर चार ग्रास होणतां दोनों मंत्रां कर्के प्रथम ग्रासको भक्षण करे और जां त्रय ग्रासहोण ता दुंह दुंह मंत्रांकर्के प्रथम दो २ ग्रास भक्षण करे । और जद दो २ ग्रास होण तांतोन मंत्रां कर्के प्रथम एक ग्रासको भक्षण करे और अंतके ग्रासको दोनो मंत्रां कर्के भक्षण करे और जां एक द्विग्रास होय तां पांचो मंत्रां कर्के एव ग्रासका भक्षण करे दुंह मंत्रां कर्के दूसरेग्रासका भक्षण करे

१४४ ॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भाग ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा ० ॥

अथ स्पष्ट कर्के प्रयोग कहतेहां चतुर्वंशीविषे कीताहै नित्यकर्म जिसने पूर्वाह्नकालविषे प्राणाया मकों कर्के उमद्य मासपक्षआदिका उच्चारण कर्के अमुक पापके दूर करणे वास्ते श्रीकी कामना देवताकी प्रीतिकी इच्छाकर्के वारसा यनादिके सिद्धिकी कामना कर्के इस चांद्रायण व्रत की कर्ताहां त्रैसे संकल्पकरे ॥ ओं अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामि इत्यादि मंत्रां कर्के व्रतनूं मुख्येक ताई अर्पण कर्के ॥ केश और श्मश्रुकाहि मुंडन करवाके अथवा केवल श्मश्रुका हि मुंडन करवाके तिस दिन विषे उपवासकर्के और तिसी दिन विषे जकर अभावस्था होवे तां तिस विषे भी उपवास कर्के और जेकर पूर्णमासी होवे

● अथ स्पष्टप्रयोगः ॥ चतुर्दश्यांकृतनित्यक्रियः पूर्वाह्ने प्राणानायम्य मास पक्षागुल्लिरुयामुकपापक्षयकामः श्रीकामोदेवताप्रीतिकामोरसायनादि सिद्धिकामोवा अमुकचान्द्रायणंकरिष्य इतिसंकल्पः ॥ ओं अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामीत्यादिमंत्रैर्व्रतमादित्यायनिवेद्य केशश्मश्रुलोमनखानिश्म श्रएवेव वा वापयित्वातद्दिनमुपोष्य तद्दिनेऽमाचेत्तत्राप्युपोष्य पौर्णिमाचे त्पंचदशग्रासान्भुजीत ॥ तत अमोत्तरपक्षे उपचयः ॥ पौर्णिमोत्तरपक्षेऽपचयोग्रासानाम ॥ प्रतिदिनमुदितेचन्द्रे आप्यायस्वसोमंतर्पयामि संते पयांसि सोमंतर्पयामि नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामीतितर्पयित्वा आज्येनै तैरेवमंत्रैर्लौकिकेभ्योहुत्वैतैरेवपात्रस्थंहविरनुमंत्र्यैतैरेवचन्द्रमुपस्थाय ॥ य देवादेवहेडनमितिचतसृभिश्चप्रत्यूचमाज्यंजहुयात् ॥ सर्वत्राग्नये नममे तित्यागः

तां पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और अभावस्थाते उचर शुक्लपक्ष विषे ग्रहण करे तांक्रम कर्के ग्रासां को वधाये और पूर्णमासीते पीछे कृष्ण पक्ष विषे ग्रासांको घटावे ॥ और दिन दिन विषे चंद्रमाके उदयहोयां होयां आप्यायस्व सोमंतर्पयामि ॥ संते-नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामि इनां मंत्रां कर्के तर्पणकरे और इनांमंत्रांकर्केहि लौकिक अग्निविषे घृत्तका हवन करे और एनांहि मंत्रां कर्के पात्र विषे हविका अनुमंत्रण करे और इनां मंत्रां कर्के चंद्रमाकी पूजा करे ॥ और य देवादेवहेडन मितिचार ऋचां कर्के ऋचा ऋचा प्रबिधृतका हवन करे और सभजगा न मम असा कह कर्के अग्निमे त्याग करे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ १४५

यत इति तिसरें उपरंत देवकृतस्य इनतीन ऋचांकर्कें त्रायसमिधांका हवनकरे ओंभूः १ ओंभुवः २ ओंस्वः ३ ओंमहः ४ ओंजनः ५ ओंतपः ६ ओंसत्यं ७ ओंयशः ८ ओंश्रीः ९ ओंऊर्क १० ओंईट् ११ ओंतेजः १२ ओंपुरुषः १३ ओंधर्मः १४ ओंशिवः इनांपंदरां १५ मंत्रां कर्के पात्रमे स्थित एकए क ग्रासका एकएक मंत्र कर्के अनुमंत्रण करे मनकर्के (नमःस्वाहा) त्रैसे मंत्रके अत विषे कह कर संपूर्ण ग्रासांका अनुमंत्रण कर्के और अंगुलीयांसाथ एकएक ग्रासनूं ग्रहण कर्के गायत्री मंत्रां पढकर भक्षण करे ॥ तां प्रथमदिन के ग्रासके भक्षण विषे प्राणायस्वाहा इत्यादिक पूर्व क्रम कर्के पंचमंत्रां कर्के पंचग्रास भोजन करे पंजाते अधिक जेकर ग्रास होण तां तूष्णीं होके

ततोदेवकृतस्येति त्रिभिः समित्रयं हुत्वा ओंभूः १ ओंभुवः २ ओंस्वः ३ ओंमहः ४ ओंजनः ५ ओंतपः ६ ओंसत्यम् ७ ओंयशः ८ ओंश्रीः ९ ओंऊर्क १० ओंईट् ११ ओंतेजः १२ ओंपुरुषः १३ ओंधर्मः १४ ओंशिवः १५ इत्येतैः पंचदशभिरेकैकं क्रमेण पात्रस्थं ग्रासमनुमंत्र्य मनसानमः स्वाहा इत्युक्त्वा सर्वाननुमंत्र्यैकैकमंगुल्यग्रैर्गृहीत्वा सावित्र्याऽनुमंत्र्य भक्षयेत् ॥ तत्र प्रथम दिन एक ग्रास भक्षणे प्राणायस्वाहा इत्यादयः पूर्वोक्तप्रकारेण पंचापिमं त्रायोज्याः ॥ पंचभ्योऽधिका ग्रासास्तूष्णीमेव भक्षणीयाः ॥ समाप्तौ त्र्यव रान् विप्रान् भोजयित्वा गां दक्षिणां दद्यात् ॥ आसमाप्तिप्रत्यहं त्रिषवण स्नानम् सौरमंत्रैः कृतांजलेरादित्योपस्थानम् गायत्र्या व्याहृतिभिः कूष्माण्डैर्वाज्यहोमः ॥ दिवास्थितिः ॥ रात्रावुपवेशनम् ॥ अशकौश यनं यथाशक्ति ॥ आपोहिष्ठेति सूक्तम् ॥ यतो त्विन्द्रः ऋचंचेति

क्या मौनधार कर भक्षण करणे योग्यहैं ॥ और समाप्ति विषे तीनतें अधिक ब्राह्मणांके तांई भोजन देकर एक गौदक्षिणा देवे ॥ और व्रतकी समाप्तिपर्यंत त्रिकाल स्नान करे और सूर्यके मंत्रां कर्के हाथ जोडकर सूर्यके उपस्थानकों करे और गायत्री कर्के व्याहृतियांकर्के अथवा कूष्माण्ड मंत्रां कर्के घृत कर्के हवन करे ॥ और दिन विषे खलोतारहे और रात्रि विषे पित होवे और जेकरसामर्थ्य न होवे तां जैसे शक्ति है तैसे शयन करे आपोहिष्ठा इति सूक्तं यतो त्विन्द्रः ऋचंचेति इनकोजपे

१४४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भाग ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

अथ स्पष्ट कर्के प्रयोग कहतेहां चतुर्दशीविषे कीताहै नित्यकर्म जिसने पूर्वाह्न कालविषे प्राणाया मकों कर्के उमद्य मासपक्षआदिका उच्चारण कर्के अमुक पापके दूर करणे वास्ते श्रीकी कामना देवताकी प्रीतिकी इच्छाकर्के वारसा यनादिके सिद्धिकी कामना कर्के इस चांद्रायण व्रत की कर्ताहां ऐसे संकल्पकरे ॥ ओं अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामि इत्यादि मंत्रां कर्के व्रतनूं मुख्येक ताई अर्पण कर्के ॥ केश और श्मश्रुकाहि मुंडन करवाके अथवा केवल श्मश्रुका हि मुंडन करवाके तिस दिन विषे उपवासकर्के और तिसी दिन विषे जकर अभावस्या होवे तां तिस विषे भी उपवास कर्के और जेकर पूर्णमासी होवे

● अथ स्पष्टप्रयोगः ॥ चतुर्दश्यांकृतनित्यक्रियः पूर्वाह्ने प्राणानायम्य मास पक्षागुल्लिरूयामुकपापक्षयकामः श्रीकामोदेवताप्रीतिकामोरसायनादि सिद्धिकामोवा अमुकचांद्रायणंकरिष्य इतिसंकल्पः ॥ ओं अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामीत्यादिमंत्रैर्व्रतमादित्यायनिवेद्य केशश्मश्रुलोमनखानिश्म श्रएवेव वा वापयित्वातद्दिनमुपोष्य तद्दिनेऽमाचेत्तत्राप्युपोष्य पौर्णिमाचे त्पंचदशग्रासान्भुजीत ॥ तत अमोत्तरपक्षे उपचयः ॥ पौर्णिमोत्तरपक्षेऽपचयोग्रासानाम ॥ प्रतिदिनमुदितेचन्द्रे आप्यायस्वसोमंतर्पयामि संते पयांसि सोमंतर्पयामि नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामीतितर्पयित्वा आज्येनै तैरेवमंत्रैर्लौकिकेग्नौहुत्वैतैरेवपात्रस्थंहविरनुमंत्र्यैतैरेवचन्द्रमुपस्थाय ॥ य देवादेवहेडनमितिचतसृभिश्चप्रत्यूचमाज्यंजहुयात् ॥ सर्वत्राग्नये नममे तित्यागः

तां पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और अभावस्याते उचर शुक्लपक्ष विषे ग्रहण करे तांक्रम कर्के ग्रासां को वधाये और पूर्णमासीते पीछे कृष्ण पक्ष विषे ग्रासांको घटावे ॥ और दिन दिन विषे चंद्रमाके उदयहोयां होयां आप्यायस्व सोमंतर्पयामि ॥ संते-नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामि इनां मंत्रां कर्के तर्पणकरे और इनांमंत्रांकर्केहि लौकिक अग्निविषे घृत्रका हवन करे और एनांहि मंत्रां कर्के पात्र विषे हविका अनुमंत्रण करे और इनां मंत्रां कर्के चंद्रमाकी पूजा करे ॥ और य देवादेवहेडन मितिचार ऋचां कर्के ऋचा ऋचा प्रबिधृतका हवन करे और सभजगा न मम असा कह कर्के अग्निमे त्याग करे

॥ श्रीरणवीर करित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

१४५

कृतइति तिसरें उपरंत देवकृतस्य इनतीन ऋचांककें ज्ञायसमिधांका हवनकरे ओंभूः १ ओंभुवः २ ओंस्वः ३ ओंमहः ४ ओंजनः ५ ओंतपः ६ ओंसत्यं ७ ओंयशः ८ ओंभ्रीः ९ ओंऊर्क १० ओंईट् ११ ओंतेजः १२ ओंपुरुषः १३ ओंधर्मः १४ ओंशिवः इनांपंदरां १५ मंत्रां कर्के पात्रामे स्थितएकएक ग्रासका एकएक मंत्र कर्के अनुमंत्रण करे मनकर्के (नमःस्वाहा) ऐसे मंत्रकें अत विषे कह कर संपूर्ण ग्रासांका अनुमंत्रण कर्के और अंगुलीयांसाथ एकएक ग्रासनूं ग्रहण कर्के गायत्री मंत्रां पढकर भक्षण करे ॥ तां प्रथमदिन के ग्रासके भक्षण विषे प्राणायस्वाहा इत्यादिक पूर्व क्रम कर्के पंचमंत्रां कर्के पंचग्रास भोजन करे पंजांति अधिक जेकर ग्रास होण तां तूष्णी होके

ततोदेवकृतस्येतित्रिभिःसमित्रयंहुत्वा ओंभूः १ ओंभुवः २ ओंस्वः ३ ओंमहः ४ ओंजनः ५ ओंतपः ६ ओंसत्यम् ७ ओंयशः ८ ओंश्रीः ९ ओंऊर्क १० ओंईट् ११ ओंतेजः १२ ओंपुरुषः १३ ओंधर्मः १४ ओंशिवः १५ इत्येतैः पंचदशभिरेकैकंक्रमेणपात्रस्थंग्रासमनुमंत्र्य मनसानमः स्वाहा इत्युक्त्वा सर्वाननुमंत्र्यैकैकमंगुल्यग्रेर्गृहीत्वा सावित्र्याऽनुमंत्र्यभक्षयेत् ॥ तत्रप्रथम दिन एकग्रासभक्षणे प्राणायस्वाहा इत्यादयः पूर्वोक्तप्रकारेण पंचापिमंत्रां योज्याः ॥ पंचभ्योऽधिकाग्रासास्तूष्णीमेवभक्षणीयाः ॥ समाप्तौत्र्यवरान्निविप्रान्भोजयित्वागांदक्षिणांदद्यात् ॥ आसमाप्तिप्रत्यहं त्रिषवणस्नानम् सौरमंत्रैः कृतांजलेरादित्योपस्थानम् गायत्र्याव्याहृतिभिः कूष्माण्डैर्वाज्यहोमः ॥ दिवास्थितिः ॥ रात्रावुपवेशनम् ॥ अशक्तौशयनंयथाशक्ति ॥ आपोहिष्ठेति सूक्तम् ॥ यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति

क्या मौनधार कर भक्षण करणे योग्यहैं ॥ और समाप्ति विषे तीनतें अधिक ब्राह्मणांके तांई भोजन देकर एक गौदक्षिणा देवे ॥ और व्रतकी समाप्तिपर्यंत त्रिकाल स्नान करे और सूर्यके मंत्रां कर्के हाथ जोड़कर सूर्यके उपस्थानकों करे और गायत्री कर्के व्याहृतियां कर्के अथवा कूष्माण्ड मंत्रां कर्के घृत कर्के हवन करे ॥ और दिन विषे खलोतारहे और रात्रि विषे शयित होवे और जेकरसामर्थ्य न होवे तां जैसे शक्तिहै तैसे शयन करे आपोहिष्ठा इति सूक्तं यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति इनकोजपे

१४६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

ऋषभान इन्द्राग्नीस्वस्तिनामिति इनको जपे और पुनंतुमादेवजनाः इनकी ॥ और ऋषभ विरजं रौग्वयोधाजये सामोको जपन क्या इनांऊचांको जपे इनांके अभाव विषे गायत्रीको जपे और व्याहृतियांको जपे वा ओंकारको ८ जपे ॥ एह किहाहै इसजगा परन्तु ब्राह्मण भी जन और दक्षिणादान आदि और जप एह संपूर्ण प्राजापत्यआदि व्रतांविषेभी जानणे ॥ इसलै अनंतर सोमायन व्रतका बखान है तिसविषे मार्कण्डेयजी का वचन है गविति सप्त रात्र ७ पर्यंत गौके चार ४ स्तनांते दुग्धपीवे और सप्तरात्र ७ तीन ३ स्तनांते दुग्धपीवे और सप्तरात्र ७ दुह ३ स्तनांका दुग्धपीवे ॥ १ ॥ और छे ६ रात्र गौके एक स्तनका दुग्ध पीवे और त्रय ३ रात्रां कुछ

ऋवंशत्रइन्द्राग्नी स्वस्तिनामिति ॥ पुनंतुमादेवजनाः ॥ ऋषभं विरजं रौरवयोधाजयेसामनीचजपन् एतेषामसंभवेगायत्रीव्याहृतिंप्रणवं वा जपेत् एतच्चविप्रभोजनदक्षिणादानादिजपांतं सर्वेष्वपि प्राजापत्यादिव्रतेषु कल्प्यम् ॥ * अथसोमायन व्रतवर्णनम् ॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ गोक्षीरंसप्त रात्रंतुपीवेत्स्तनचतुष्टयात् स्तनत्रयात्सप्तरात्रंसप्तरात्रंस्तनद्वयात् ॥ १ स्तनेनैकेनपट्टात्रिरात्रंवायुभुग्भवेत् एतत्सोमायनंनाममहाकल्मषनाशनमात २ ॥ अत्रेदंवोध्यम् ॥ यस्यागोःस्तनचतुष्टयेनव्रतानुष्ठातुस्तृप्तिःस्यात्साविडभोजनादिदोषशून्याऽत्रार्थेप्रयोज्येति ॥ स्मृत्यंतरे सप्ताहंचेत्पिबेद्गोस्तनमखिलमथत्रीन्स्तनान्द्वैतथैकं कुर्यात्त्रिंशोपवासान्यदि भवतिउदामासिसोमायनंतत् ॥ १ ॥ एतदपिचान्द्रायणधर्मकमेव

नभक्षण करे एह व्रीह १० दिनका सोमायन नामककें व्रत कहाहै महापापांके नाशकरणेवाला है ॥ २ ॥ इस विषे एह जानणा कि जिस गौके चार स्तनांके दुग्धककें व्रत करण वालेकी तृप्ति होवे सो गौ बिट भोजन आदि दोषतें रहित होवे तां तिसका दुग्ध ग्रहण करणा ॥ होरी स्मृति विषे भी कहाहै सप्तेति जेकर सप्त दिन गौके चारस्तनांतें संपूर्ण दुग्धपीवे और सप्त दिन दुहस्तनांतें और सप्तदिन दुहस्तनांतें और छे ६ दिन एक स्तनतें पीवे और त्रय दिन उपवासकरे तां महीने ककें सोमायन व्रत होताहै ॥ १ ॥ एह सोमायन व्रतभी चान्द्रायण रूपहि है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रार्थनित भागप्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ १४७

क्यों कि हारीत ऋषिने इससे आगे चांद्रायणको कहतेहैं इस कर्के सहित कर्तव्यताके चांद्रायणव्रतको कहके पीछे अने सोमायनभी जानणा इक कर्के सोमायनको भी कहणेतें ॥ जो फेर तिसने कृष्ण चतुर्थीतें लेके शुक्ल द्वादशी पर्यंत सोमायन व्रत कहाहै सो कहतेहैं चतुर्थीतें लेके त्रयदिन चार स्तनांके दुग्धको पीवे और तिसने पीछे त्रयदिन तीन स्तनांके दुग्धको पीवे और त्रयदिन दुंह स्तनांके दुग्धको पीवे और त्रय दिन एक स्तनके दुग्धको पीवे ऐसे वारां १२ दिन कर्के फेर त्रयदिन एक स्तनके दुग्धको पीवे और त्रयदिन दुंहस्तनां के और त्रयदिन त्रयस्तनां

हारीतेन अथातश्चांद्रायणमनुक्रमिष्यामइत्यादिना सेतिकर्तव्यताकंचा
न्द्रायणमभिधायैवं सोमायनमित्यतिदेशाभिधानात् ॥ यत्पुनस्तेन कृ
ष्णचतुर्थीमारभ्य शुक्लद्वादशीपर्यंतसोमायनमुक्तम् ॥ चतुर्थीप्रभृतिचतुःस्त
नेन त्रिरात्रम् ॥ ततस्त्रिस्तनेन त्रिरात्रम् ॥ द्विस्तनेन त्रिरात्रम् एकस्त
नेन त्रिरात्रम् १२ एवमेकस्तनप्रभृतिपुनश्चतुःस्तनान्तम् ॥ १२ ॥
याते सोमचतुर्थीतनूस्तयानः पाहितस्यैनमः स्वाहा ॥ याते सोम पंचमी
पष्ठीत्येवं यथार्थास्तिथिहोमाः एकमासं एनोभ्यः पूतश्चन्द्रमसः समानतां
सलोकतां सायुज्यंच गच्छतीति ॥ चतुर्विंशतिदिनात्मकसोमायनमु
क्तम् ॥ तदशक्तविषयम् ॥ * अथ यतिचांद्रायणमाह गौतमः ॥ मास
स्यादौ यतिर्विप्रो व्रतंकुर्ध्याद्यथाशृणु कृत्वामूत्रपुरीषेतुशौचंकुर्ध्याद्यथावि
धि ॥ १ ॥ दन्तान्संशोध्य यत्नेन ह्यपामार्गस्य शाखया स्नानंकृत्वानदीतो
येतडागेवाहूदेपिवा ॥ २ ॥

के और त्रयदिन चौहस्तनांके दुग्धको पीवे ऐसे चव्वी २४ दिनका सोमायन व्रत क
हाहै इस विषे (याते सोमचतुर्थी) इति (याते सोम पंचमी) इति और एक मास एनोभ्यः इत्यादि
ऋचांका पाठ करे एह चौवी २४ दिनका व्रत असामर्थ्य विषे जानणा ॥ * इससे अनंतर
यति चांद्रायणनू गौतम ऋषि कहताहै मासेति मासके आदिविषे यति ब्राह्मण जैसे व्रतनू कर्ताहै
तैसे श्रवण कर मूत्र पुरीषके त्यागको कर्के जैसे विधिहै तैसे शौचको करे ॥ १ ॥ पीछे पुटकं डेकी
बीड़ी कर्के यत्न कर्के दंतांको शुद्धकरे फेर स्नानकरे नदी विषे वा तलाय विषे वा हूद विषे २ ॥

१४८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

धृत्वेति शुद्धदुहवस्त्रांको धारके नित्यकर्मोंको समाप्त करे ३ पीछे उपासनाको कयान्यासादिकोंको देवताका पूजनकरे और मंत्रों स्मरण कर्के संकल्प करे और फेर विष्णुका ध्यानकरे हृत्पदांकी शुद्धिपर्यंत ४ हृत्पदाद शुद्ध कर्के दोवार आचमनकरे ऐसे शुद्ध होकर संध्या काल विषे संध्या उपासे और नारायणकी मूर्ति आगेशयनकरे ५ तिसरें अनंतर प्रातःकालविषे उठकर पूर्वदिनकी न्याईं संपूर्णकर्मकरे और उपवासव्रतकोकरे शुक्लपक्षकी अष्टमीतक ६ और तिस शुक्लाष्टमीविषे पूर्वकी न्याईं पंचग्रासभक्षणकरे और तैसे पूर्णमासी और कृष्णाष्टमी और अमावस्या जैसे क्रमहै ७ पंच पंच ग्रास भक्षण करे और भक्तियुक्त होवे पृथ्वी विषे नित्य शयन करे और सुगंधितांबू

धृत्वाचोद्गमनीयंतु नित्यकर्म समापयेत् ॥ औपासनादिकं कृत्वा देवपूजा मथाचरेत् ॥ ३ ॥ उद्गमनीयं धौतवस्त्रद्वयमित्यर्थः ॥ संकल्पमेवं कुर्वीत पूर्वमंत्रमनुस्मरन् तावद्व्यायेन्महाविष्णुं यावन्नक्षालयेत् करौ ४ ॥ पादौ चक्षालयेत्पश्चाद्द्विराचम्य शुचिर्भवेत् सायं संध्यामुपासीत स्वपेन्नारायणाग्रतः ॥ ५ ॥ ततः प्रातः समुत्थाय सर्वपूर्ववदाचरेत् तावदुपोषणं कृत्वा यावच्छुद्धाष्टमी भवेत् ॥ ६ ॥ तत्रैव पूर्ववत् पिंडान् भक्षयेत्पंच संख्यया पूर्णायां वहुलाष्टम्यांतदमायां यथाक्रमम् ७ ॥ भक्षयेत्पंचपंचैव कवलान् भक्तिपूर्वतः अधः शायी भवेन्नित्यं गन्धताम्बूलवर्जितः ॥ ८ ॥ मासान्ते गौः प्रदातव्या व्रतस्य परिपूर्तये पंचगव्यं पिबेत्पश्चाद्यतिचांद्रायणं चरेत् ॥ ९ ॥ अनेन विधिना यस्तु यतिचांद्रायणं परम् कृत्वा पापविशुद्धात्मा प्राप्नुयात्परमां गतिम् ॥ १० ॥ विधवा वा यतिर्वा पित्रती वा पापनाशनम् गृहे वा कुरुते सम्यक् सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ११ ॥ ॥ अथ शिशुचांद्रायणलक्षणांतरमाह देवलः ॥ शृणुराम महाबाहो सर्वपापहरं परम् शिशुचांद्रायणं नाम सुरर्षिगणसेवितम् ॥ १ ॥

लकों त्यागे ॥ ८ ॥ मासके अंब विषे व्रतके पूर्णफलकी प्राप्ति वास्ते गौदान करे पीछे पंच गव्यका पान करे ऐसे यति चांद्रायण व्रतको करे ९ इस विधिकर्के जो यतिचांद्रायणव्रत को कर्ता है सो संपूर्ण पापोंतें शुद्ध होकर परमगतिकों प्राप्त होता है १० इस पापोंके नाशकरण वाले व्रतको विधवास्त्री वा यति वा व्रती वनविषे वा गृहविषे करे संपूर्ण पापोंतें रहित होता है ११ ॥ अथ शिशुचांद्रायणके लक्षणनूं देवलऋषि कहता है श्रुति है परशुराम हे महाबाहो शिशु चांद्रायणनाम कर्के संपूर्ण पापके नाशकरण वाले व्रतनूं श्रवणकर जो सुरर्षियोंके गणा कर्के सम्पमान है १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥ १४९

पूर्व कालमें उद्दालक नाम कर्के ऋषि जद माताके गर्भमें जन्मकों धारताहोया
बद अंजलि विषे नाभि नालून प्रहण कर्के पृथ्वीमें भ्रमताभया नाभिनाल इसपदकर्केजलाया
कि जन्मकालतेहि उठकर्केचलागिया नालुछेद तक भीनहिरिहा एह ऋषि लोकोका प्रभावहै
२ ॥ और गर्भमें अष्टमवर्ष के होया होया उद्दालक ऋषि गोत्र नाम कर्के अर्थात् शिशु नाम
कर्के व्रतनू कर्ता भया यद्वा गोत्रेण कथा कुलकी स्थिति वास्ते व्रत कर्ताभया ॥
इस कारणते शिश्वर्थक्रियमाण होणेंते अर्थात् बालकके अर्थ होणेंते शिशुचांद्रायण नाम
व्रत है अथवा गोत्र व्रतकर्के संततिव्रत जानणा अथवा गोत्रशब्द छत्रका वाचीहै अर्थात् छत्र

पुरातूद्दालकोनाममातृगर्भाद्विनिर्गतः नाभिनालमुपादायस्वांजलौपय्य
टन्महीम् ॥ २ ॥ गर्भाष्टमेसमायातेसगोत्रेणव्रतंचरेत् ॥ गर्भेति ॥ गर्भा
धानादष्टमेऽब्देसउद्दालकोगोत्रेण नाम्ना अर्थात् शिशुनाम्नाव्रतं चरेदचर
दित्यर्थः ॥ यद्वा गोत्रेण कुलेन हेतुनाकुलस्थित्यर्थं व्रतमकरोदित्यर्थः ॥
अतएवाशिश्वर्थक्रियमाणत्वाच्छिशुचान्द्रायणं नाम ॥ यद्वा गोत्रेणेति ना
मार्थेतृतीया गोत्रव्रतंसंततिव्रतामित्यर्थः ॥ अथवा गोत्रशब्दोऽत्रछत्रवा
ची ॥ छत्रव्रतंछत्राकारंव्रतम् सर्वोत्तममित्यर्थः ॥ तदाप्रभृत्यसौयो
गीसायान्हेभैक्ष्यमाचरन् ॥ ३ ॥ श्रोत्रियाणां द्विजातीनां त्रिषुवेशमसुसंच
रन् कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुचिभिर्जलैः ॥ ४ ॥ भागत्रयंतदाकृत्वा
भागमेकंहरेर्ददौ द्वितीयमग्नौ निक्षिप्यतृतीयंचात्मानिन्यसेत् ॥ ५ ॥
रात्रौस्वपेत्स्थंडिलेपुगन्धपुष्पादिवर्जितः ॥ एवंवैप्रत्यहंकुर्वन् यावत्पुत्र
समागमः ६ ॥ नासिकेतोत्पत्तिपर्यन्तामित्यर्थः तदाप्रभृतिलोकेस्मिन्नाशि
शुचान्द्रायणंस्मृतम् कलौयुगेविशेषेणमहापातकनाशनम् ॥ ७ ॥

आकार व्रत संपूर्ण व्रतांविषे उत्तमहै एह अर्थहै तिसदिनते लेके योगीसायंकालविषे भिक्षाकों
जाताभया ॥ ३ ॥ और वेदपाठियांब्राह्मणांके तीन घरांसे भिक्षाकोंलयके तीन ग्रासांकों शुद्धज
लसाथ धोकर ॥ ४ ॥ त्रयभागकर्के एकभागविष्णुकेताई अर्पणकर्ताभया औरदूसराभागअग्निवि
षे हवनकर्के औरतीसरा आपभक्षणकर्ताभया ॥ ५ ॥ रात्रिविषे गंधपुष्पआदिकों त्यागकरस्थंडि
लविषे शयनकर फेर प्रातःकाल उठकर इसी विधि मै प्रवृत्त हुंदा होया इसप्रकार उद्दालकऋषि
नासकेतुपुत्रकी उत्पत्ति पर्यंत दिनदिनविषे विधिकर्ताभया ॥ ६ ॥ तिसदिन तेल के लोक
विषे शिशुचांद्रायणनाम व्रत प्रसिद्ध होया कलियुगविषे विशेष कर्के महापापांके नाशकरणे
वाला कहाहै ७ ॥

१५० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

इस उत्तम व्रतके करणे कर्के महापापीभी शुद्ध होताभया ॥ अब गौतमजीका वचनहै शीति
शिशुचांद्रायण जो व्रतहै तिसविषे प्रतिदिन एकहि आस भक्षण करणेयोग्यहै तिसकोकर्के महापा
पियांके मध्यविषे वत्तमानभीहोवे तथापि तिस महापापते शुद्धहोतहै ॥ १ ॥ अब जावालिङ्ग
षिका वचनहै शीति जो ब्राह्मणपापां के दूरकरणेवास्ते शिशुचांद्रायण व्रतकोकर्तहै सो तात्काल
पापतेशुद्धिको प्राप्तहोकर परमगतिको प्राप्तहोताहै १ तिसशिशुचांद्रायणके प्रकारको देवलऋषि
कहताहै मेति मासके आद विषे प्रतिपदिनाविषे पूर्वकीन्याई स्नानकरे पूर्व दंतधावनकोकर्के धौ
तवस्त्र को धारके और त्रयकाल संध्याबंदनादि कर्मको करके १ ॥ चौथे पहर पत्रांके डूणेविषे

महापापीविशुद्धोभूत्कृत्वैतद्व्रतमुत्तममिति ॥ गौतमः ॥ शिशुचान्द्रायणं
सम्यग्ग्रासमेकंनिरंतरम् कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिमहापातकिनामपि
॥ १ ॥ महापातकिनामध्येवत्तमानोपियःकश्चिदेतत्कृत्वाशुद्धिमाप्नो
तीत्यर्थः ॥ जावालिः ॥ शिशुचान्द्रायणंकृत्वाद्विजोयःपापमुक्तयेससद्यः
पापनिर्मुक्तःप्रपदेपरमांगतिम् ॥ १ ॥ अवश्यंभाविनिभूतवन्निर्दे
शात्प्रपदेप्रपत्स्यतइत्यर्थः ॥ तत्प्रकारमाहदेवलः ॥ मासादौप्रति
पदिवसेपूर्ववत्स्नानमाचरेत् दंतधावनधौतवस्त्रत्रिसन्ध्यावन्दनादि
कम् ॥ १ ॥ चतुर्थयामेपर्णपुटेह्यपश्यन्पापिनःखलान् श्रोत्रियाणां
द्विजातीनांत्रिषुवेश्मसुसंचरेत् २ कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुचिभिर्जैलः
भागत्रयंतथाकृत्वाभागमेकंहरीक्षिपेत् ३ प्रक्षाल्यपूर्ववद्धस्तौद्विराचम्यशु
चिर्भवेत् रात्रौस्वपेद्वरेरग्रेस्थंडिलेगन्धवर्जितः ॥ ४ ॥ पुनःपरे द्युरेवंहि

कुर्यात्पापविशुद्धये

वेदपाठी ब्राह्मणोंके गृहांविषे भ्रमे और नीच और जो पापी हैं तिनको न देखे ॥ २ ॥ और
ग्रास को लयावे पवित्र जलकर्के शुद्ध करे और त्रयभागकर्के एकभाग विष्णुके तांड
अर्पणकरे ॥ ३ ॥ एकग्रासका अग्निविषे हवनकरे और एक ग्रास भक्षण करे और पूर्वकी न्याई
इत्युपाद शुद्ध कर्के दोवार आचमन करे तांशुद्ध होताहै और रात्रिविषे विष्णुके आगे
स्थंडिल विषे शयन करे गंधपुष्प आदिको सागे ॥ ४ ॥ फेर दूसरे दिन ऐसेहि वि
धिको करे पापेकदुरकरणे वास्ते

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० ५ ॥ टी ० भा ० ॥ १५१

ऐसे एक मासके व्रतकोंकके अंतविषे ब्राह्मणकेताई गौदेशयोग्यहै ५ पीछे पंचगव्यकापानकरे ऐसे जो पुरुष कर्त्ताहै सो संपूर्णपापांतरहितहोताहै ६ * अथमहाचांद्रायणकहीदाहैतिसविषेदेवलजीका बाक्यहै हेराम हेमहामुजांकके युक्तमहाचांद्रायणव्रतकों तूं श्रवणकरजो श्रेष्ठ औरहै ब्रह्महत्यादिपापों के दूरकरणेवाला और संपूर्ण मंगलरूपहै १ इसकके दूरहोणवाले पापाकों कहतेहैं गुर्विति गुरोंके द्रोहविषे जो पाप है और जो पाप पापीयांकी संगतिविषे और चांडालीकेगमनविषे और विधवा स्त्रीके संग विषे २ और श्रेष्ठ स्त्रीके संगम विषे और परश्रवणके भक्षण विषे और नीचस्त्रीके संगमविषे और भर्ताके जीवतयां जो जारते उत्पन्न होयाहै और भर्ताके मृतहोयांहोंयां जो जारते

एवंमासव्रतंकृत्वामासांतेगौर्यथार्थवत् ५ देयाविप्रायसहसापंचगव्यंपि वेततः एवंकृत्वानरोयस्तुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ६ ॥ * अथमहाचान्द्रायणम् ॥ तत्रदेवलः । शृणुराममहावाहोमहाचान्द्रायणंपरम् ब्रह्महत्यादि पापानांशोधनंसर्वमंगलम् १ गुरुद्रोहेचयत्पापंयत्पापंपापिसंगमे चाण्डालीगमनेपापंयत्पापंविधवागमे २ परस्त्रीपुचयत्पापंयत्पापंपरभोजने यत्पापंवृषलीसंगेयत्पापंकुण्डगोलयोः ३ शूद्रवृत्त्याश्रयत्पापंयत्पापंपरसविक्रये पुरोहितस्ययत्पापंयत्पापंपरदारगे ४ यत्पापंसर्वसंगेचयत्पापंधेनुविक्रये यत्पापंपरजकीसंगेयत्पापंपतिनिन्दया ५ यत्पापंविप्रनिंदायांकन्यासंदूयणेपिच एवमादीनिपापानिगुरूणिचलघूनिच ६ आर्द्राणि चाथशुष्कानियानिपापान्यनेकशः तेषांनाशकरंचेदंमहाचान्द्रायणंव्रतम्यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्गुरुभिर्लघुभिस्तथा ॥ ७ ॥

जन्मयाहै तिनांके संबंधविषे जो पापहै ३ और शूद्रकीजीविकाविषे जो पाप और रसांकेवेचने विषे और पुरोहितकों और परस्त्रीके संगमकरणे वाले पुरुषके साथ संबंधविषे जो पापहै ४ और संपूर्णकी संगतिविषे अर्थात्सर्वजीवणनविषे और धेनु क्या सूईहोई गौकेवेचनेविषे और धो वणके संगम विषे और भर्ताकी निंदाविषे ५ और ब्राह्मणकी निंदाविषे और कन्याके दूषणविषे जो पापहै इसमें आदलेके जो बड़े और छोटेंपापहैं ॥ ६ ॥ और उच्छा कर्के और जो नहि इच्छा कर्के कीते होए अनेक पाप हैं तिनांसंपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला महाचांद्रायण व्रत कहाहै जिसकेकरणेकके बडयांछोटयांपापांते रहित होताहै ॥ ७ ॥

१५२ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र. ५ ॥ टी. ० भा. ॥

तिसके प्रकारको गौतम ऋषि कहताहै शुक्लेति शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे शुद्धजलकके स्नानको और पूर्वकी न्याईं संध्या वंदन आदि नियमको कर्के चौथे पहर विषे ॥ १ ॥ विष्णुकी पूजाको करता होया पहले संकल्प करे और पूर्वकी न्याईं मंत्रका उच्चारण करे और उपवास कर्के शयनको करे ॥ २ ॥ तिसते उपरंत प्रातःकालविषे उठकर स्नान करे और जैसे विधि है तैसे आचमन करे और पूर्वकी न्याईं नित्यकर्माको समाप्तकरे ॥ ३ ॥ और चौथे पहरविषे देवताकी पूजाकरे तिसते उपरंत सो पूर्वकीन्याईं इंद्रियाको रोकके शयनकरे ४ और दिनदिन विषे करणें योग्यहैं और जितना कालव्रतविषे स्थितहै और पक्षके अंत विषे पूर्णमासीके दिन पूर्वकी न्याईं नित्यकर्माको कर्के समाहित क्या निश्चल मत होयाहोया दशग्रा

तत्प्रकारमाह गौतमः । शुक्लप्रतिपदिस्नात्वापूर्ववच्छुद्धतोयतः पूर्ववन्नियमं कृत्वाचतुर्थेकालागते ॥ १ ॥ विष्णुपूजापरोभूत्वापूर्वसंकल्पमाचरेत् पूर्ववन्मंत्रमुच्चार्यनिराहारःस्वपेत्तदा ॥ २ ॥ ततःप्रभातउत्थायस्नात्वाचम्ययथाविधि पूर्ववन्नित्यकर्माणिसमाप्यविधिपूर्वकम् ॥ ३ ॥ चतुर्थकालागतेपूर्ववद्देवमर्चयेत् ततोप्येपयथापूर्वपूर्ववन्नियतःस्वपेत् ॥ ४ ॥ एवंप्रतिदिनंकार्यंयावत्तत्रप्रवर्तते तत्रापिपूर्ववत्कृतानित्यकर्माणिसर्वशः ५ तत्रैवभक्षयेत्पश्चादशग्रासान्समाहितः तत्रापिहरिसांनिध्येस्वपेद्गन्धादिवार्जितः ६ उपोषणंप्रकर्तव्यममायावत्प्रवर्तते तत्रापिभक्षयेत् पिंडान् पूर्ववत्पूर्वसंख्यया ७ शुद्धप्रतिपदिस्नात्वागौर्दियाव्रतपूर्तये ॥ शुद्धप्रतिपदिशुक्लप्रतिपदि ॥

स भक्षणकरे तिस दिनविषेभी विष्णुके समीप शयनकरे पुष्पादि सुगंधिकों त्यागकर्के ५ और अमावास्या तक उपवासव्रतकरे तिसअमावास्याके दिन पूर्वकीन्याईं संख्याकर्के दशग्रासभक्षण करे ६ और व्रतके अंतविषे शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे स्नान कर्के गोदानकरे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते ७ एहव्रत शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाते लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा तक कहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि पहली अमावास्याके दिन दशग्रास खाकर्के शुक्ल प्रतिपदाके दिन व्रतका आरंभकरे

पोछे पंचगव्यका पान करे तां महा चांद्रायणव्रत होता है ॥८॥ एह व्रत संपूर्ण लोकां कर्के अशक्य क्या नहि होसकता 'क्योंकि अन्नके त्याग विषे बहुत केशहै ॥ सो कहतेहां कृतइति सत्ययुग विषे प्राण चर्म विषे स्थितथे और त्रेतायुगविषे अस्थियां विषे स्थित और द्वापर विषे रक्त विषे स्थित रहे और कलियुग विषे अन्नविषे स्थित हैं ॥ १ ॥ चांद्रायण व्रतकी महि मांनेहै अनघ क्या निष्पाप कहीहै जिसके करणे कर्के महापातकतें और उपपातकातें रहित होताहै १० ॥ इसते अनंतर पंचप्रकारके चांद्रायणांके बदलेनू देवल ऋषि कहताहै अथेति इसतें अनंतर हेरा जेन्द्र चांद्रायण व्रतका जो प्रत्याम्नाय महापापांके नाश करणे वाला और विष्णुलोक केदेणे

पंचगव्यं पिवेत्पश्चान्महाचान्द्रायणं भवेत् ॥८॥ अशक्यं सर्वलोकानामन्नत्यागो महतरः ॥ कृते चर्माश्रिताः प्राणाश्चेतायामस्थि संश्रयाः द्वापरे रक्तमाश्रित्य कलावन्नगताः सदा ॥९॥ महाचान्द्रस्य महिमा कथितोऽयं मयाऽनघ यत्कृत्वामुच्यते पापैर्महद्विरुपपातकैः १० ॥ अथ पंचविधानां चान्द्रायणानां प्रत्याम्नायमाह देवलः ॥ अथ वक्ष्यामिराजेन्द्र महापातकनाशनम् ॥ प्रत्याम्नायं हि चान्द्रस्य विष्णुलोकप्रदायकम् ॥ १ ॥ अशक्तत्वा दुर्बलत्वादायुर्नाशस्य हेतुतः भक्तिश्रद्धाविहीनत्वादा लस्यान्नास्तिकादपि ॥ २ ॥ चान्द्रायणेऽप्यशक्तश्चेत्प्रत्याम्नायं कुरुष्व तत् शुक्लप्रतिपदि स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य च ॥ ३ ॥

वाला है ॥१॥ असामर्थ्यते और बलते रहित होणेतें और जेकर हठकर्के करे तो आयु नाश होताहै इसहेतुतें और भक्तिश्रद्धाते रहित होणेतें और आलसते और नास्तिकतातें नास्तिक शब्द इसजगा अवर्त्मपर समझणा इसते और शक्ति कर्के मनका उत्साह १ बल कर्के देहपुष्टि २ इनके ना होनेते आलस कर्के इन्द्रिय शैथिल्य ॥ २ ॥ चांद्रायण व्रतके करण विषे असमर्थ होवे तां तिसके बदलेको करे सो कहतेहां ॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे स्नान कों कर्के और नित्यकर्मको समाप्त करे ॥ ३ ॥

१५४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

समिति पूर्वकीन्याई संकल्पकोंकें कहे मै उत्तम व्रतकों कर्ताहै ऐसेविधिपूर्वकपूर्वकी न्याई संकल्पकोमनकर्के करे ॥४॥ स्वर्णके शृंगां कर्के युक्त गौयां पंजाह ५० सहितवस्त्रांके दुग्धके देणे वालीयां ब्राह्मणांकेताई देणे योग्यहैं ऐसे शास्त्रकी विधि कर्के चांद्रायण व्रतका बदलाद खायाहै ॥ ५ ॥ अब गौतमजीका वाक्यहै चामिति एह ब्राह्मण चांद्रायणव्रतके प्रत्याम्नायनूं करेगंध पुष्पादि कर्के पूजायाहोइयां और सुवर्ण भूषणां कर्के भूषितकीतियांहोइयां ॥ १ ॥ गौयांयत्न कर्के पंजां ५० ब्राह्मणांके ताई देणे योग्यहैं इस प्रत्याम्नायकर्के हरि साक्षात् प्रसन्न होताहै इस

संकल्पपूर्ववत्कृत्वा करिष्येव्रतमुत्तमम् इतिसंकल्प्यमनसापूर्ववद्विधिपूर्वकम् ॥ ४ ॥ गावोदेयाः प्रयत्नेन पंचाशत्स्वर्णभूषिताः सवत्सावहुक्षीरिण्योविप्रेभ्योजलपूर्वकम् ॥ ५ ॥ अनेनकृतवांश्चान्द्रं शास्त्रमार्गेणदार्शितम् ॥ गौतमः । चान्द्रायणस्यविप्रोसौप्रत्याम्नायंसमाचरेत् अर्चितागन्धपुष्पाद्यैर्भूषिताः स्वर्णभूषणैः १ पंचाशद्गाः प्रयत्नेन विप्रेभ्यश्च पृथक् पृथक् प्रत्याम्नायैर्हरिः साक्षात्सतुष्टोभून्नसंशयः ॥ २ ॥ अशक्तश्चान्द्रविषयेप्रत्याम्नायंतदाचरेत् एतेनशुद्धिमाप्नोतिचान्द्रायणफलंलभेत् ॥ ३ ॥ पिपीलिकायवमध्यचान्द्रायणविषयेऽतिधानिनः ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ अष्टौ चान्द्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौसदेति ॥ धेनवइतिशेषः ॥ अल्पधनविषयकमिदम् ॥ निधनविषयेतूक्तंप्राक् ॥

विषे संशय नहि । २ । जेकर चांद्रायणव्रतकरणे विषे असमर्थ होवे तां प्रत्याम्नाय कों करेऐसे करणेकर्के शुद्धिको प्राप्तहोताहै और चांद्रायणके फलको प्राप्त होताहै ३ । और पिपीलिकामध्य और यवमध्य चांद्रायणके विषे अति धनवाले को हए प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ अब चतुर्विंशति मत विषे कहतेहां चांद्रायण के प्रत्याम्नाय विषेअठ ८ प्रसून होइयां होयां गौयां देणेयोग्यहैं परंतु एहप्रत्याम्नाय जिसके पास धन थोडाहै तिसके योग्यहै और जिसके पास कुछभी धननहि तिसके अर्थ प्रत्याम्नाय पछि प्राजापत्य व्रत त्रयरूप कियाहै सो १ जानणः ॥

यतिचांद्रायण व्रत विषे बृहद्विष्णुका वाक्यहै चामिति जो पुरुष यतिचांद्रायणव्रतकों अशक्ति आदि हेतुतेनहि कर्ते सों तिसका वदला चार प्राजापत्यरुच्छकरे १ ऋषि चांद्रायण विषयविषे भी बृहद्विष्णु काहि वाक्यहै चामिति चांद्रायण और पराककर्के प्रायश्चित्तके करणविषे असमर्थ होवे तो अपणी शुद्धि वास्ते पच प्राजापत्य व्रत करे १ अव शिशु चांद्रायण के अर्थमदनरत्नग्रंथविषे संगृहीत स्मृतिविषे कहाहै प्रेति प्राजापत्य विषे एक गौदान करे और अतिरुच्छ विषे दोगौयां दान करे और चांद्रायण और पराक विषे व्रत गौयांदानकरे १ ॥ इसते अनंतर व्रतके अंग भूतयम और नियम

यतिचान्द्रायणविषये बृहद्विष्णुः ॥ चान्द्रायणमकुर्वाणाः कुर्युः कृच्छ्रचतुष्टयमिति । ऋषिचान्द्रायणविषये स एवाह चान्द्रायणपराकाभ्यां निष्कृतिर्योनः शक्रुयात् सकरोत्यात्मशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यस्य पंचकमिति १ शिशुचान्द्रायणविषये मदनरत्ने स्मृतौ ॥ प्राजापत्येतु गामे कामति कृच्छ्रे द्वयं स्मृतम् चान्द्रायणे पराके च तिस्रो गादक्षिणास्तथेति १ ॥ अथ व्रतांगभूतव्रतायमानियमाश्च याज्ञवल्क्ये । ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं सत्यमकल्कता अहिंसास्तेयमाधुर्यं दमश्च तियमाः स्मृताः ॥ १ ॥ स्नानं मौनोपवासे ज्यास्वाध्यायोपस्थनिग्रहाः विधिवद्गुरुशुश्रूषा शौचक्रोधाप्रमादता ॥ २ ॥ इति दशनियमाः ॥ १० ॥

याज्ञवल्क्यविषे कहेहैं प्रेति ब्रह्मचर्य और दया और क्षान्ति क्या सहिष्णुता और अभयदान और वाणीकर्के सत्यकहना और क्रोधका त्यागणा और हिंसाते रहितहोणा और चौराका त्याग और माधुर्य क्या सौम्यवाक्य और विषयते इंद्रियांको रोकणा एह १० यमकहेहैं १ अव नियमक तेहां स्नानमिति स्नान और मौनता क्या वृथावाक्यसे निवृत्ति और मानकर्के अन्नको भक्षणकरणा और यज्ञ और वेद पाठ करणा और जितेंद्रियहोणा और गुरांकी सेवा और शौचता और क्रोधका त्याग और प्रमादते रहित होणा क्या सत्कर्म विषे नाहे भुल्लणा एह दश १० नियम कहेहैं २

१५६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ५ ॥ टी० भा० ॥

इसमें ब्रह्मचर्य्यहै संपूर्ण इंद्रियांकारोकणा उपस्थनिग्रह क्या लिंगमात्रका रोकणा इतनाभेदहै
अब इसीमें मनुजीका वाक्यहै अहिंसेति किसेजीवकी हिंसा न करे और सत्यकहे और क्रोधकों त्यागे
और कुटिलताकों त्यागे त्रय वार दिनविषे और त्रय वार रात्रिविषे सहित वस्त्रांके स्नान करे १ ॥
स्त्रीति स्त्री और शूद्र और पतित इनांके साथसंभाषण कदीभी न करे और स्थान आसनकों ना
त्यागे असमर्थ होवें तां और जेकर समर्थ होवे तां भिक्षाटनादिके लिये दूरभी जावे और पृथ्वी
विषे शयन करे ॥ २ ॥ व्रती पुरुष ब्रह्मचर्य्यकों धारके गुरु और देवता और ब्राह्मणांका पूजन
करे और गायत्रीका नित्य जप करे और पवित्र ऋचा जो सहस्रशोषादि आशुशिशानइत्या

अत्र ब्रह्मचर्य्यसर्वेन्द्रियनिग्रहः उपस्थनिग्रहोर्लिंगमात्रनिरोधइतिभेदः ॥

मनुः ॥ अहिंसासत्यमक्रोधमार्जवंचसमाचरेत् त्रिरह्नित्रिर्निशायांचस
वासाजलमावसेत् १ स्त्रीशूद्रपतितांश्चैवनाभिभापेतर्हिचित् स्थानास
नाभ्यांविहरेदशक्तोऽशयतिवा २ ब्रह्मचारीव्रतीचस्याद्गुरुदेवद्विजार्चकः
सावित्रीचजपेन्नित्यंपवित्राणिचशक्तिः ३ सर्वेष्वेवव्रतेष्वेवंप्रायश्चित्तार्थ
माहृतइति ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकशमीरायनेकदेशाधीशप्र
भुवररणवीरसिंहाज्ञतश्रिसारस्वतपाण्डितोपनामदेवादिस्तुतपाण्डितगंगा
राम संगृहीते धर्मशास्त्रमहानिवन्धे प्रायश्चित्तभागे व्रतप्रकरणंपंचमम्

॥ ५ ॥ ●●●●●●●●

दि तिनांकों पढे जैसे सामर्थ्याहै ॥ ३ ॥ संपूर्ण व्रतां विषे ऐसे प्रायश्चित्तके वास्ते आदर कर्के
कहाहै ॥ इसप्रकार श्रीकर्केयुक्त जो महाराजयांके अधिराज और जम्बू काश्मीर आदि
अनेक देशके स्वामी प्रभुवर रणवीरसिंह जीतिनाकर्के आज्ञत पांडित गंगाराम कर्के संगृहीत जो
धर्मशास्त्रका महानिबन्ध तिसके प्रायश्चित्त भागविषे व्रत प्रकरण पंचम समाप्तहोया ॥ ५ ॥ एह
व्रतप्रकरण सभ तर्हाँके प्रायश्चित्तके उपयोगी व्रतांकर्के संपूर्णहै और इसमें अपने अपने वि
षयमें जोजो पाप दूरहोण वालेहै सोलिखेहैं और प्रकरणांतरमें भी इसका उपयोगहै ॥ व्रत
विधान मनु आदका जानो धर्मनिधान सर्वपाप नसजातहै जो इसपढे सुजान ॥ १ ॥

स्वतइति इसकाअर्थ पीछेसे जानलेणा अथेति विशेष प्रायश्चित्त कथनते उपरंत अब छेवें प्रकरणमें संपूर्ण पापोंका सांझा प्रायश्चित्त कथन करते हैं तिसके विषे पहलें मनुका वाक्य है यतात्मनइति रोक लिखा है चित्त जिसने और साबधान है तिसको वारां १२ दिनका उपवास करणा लिखा है एहि पराक नाम करके कच्छू संपूर्ण पापों के नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ विगतेति इसमें पूर्व श्लोककाहि अर्थ है सकृदिति इसका एह तात्पर्य है कि जेकर बहुत पाप होवे तां एह पराक कच्छू एक वार संपूर्ण करणा जेकर पाप थोडा होवे तां एक पाद न्यून नौ९दिन करणा जेकर इसते भी पाप न्यून होवे तां अर्द्धक्याछे६दिनकरणा जेकर इसते भी पाप न्यून होवे तां एक पाद तीन३दिन करणा १ ॥ अब वेद पाठ पंच यज्ञ इनांका फल कथन करते हैं वेदाभ्यास इति दिन दिन प्रति वेद पाठ करणा १ शक्तिकरके पाठ होम अभ्यागतका पूजन तर्पण वैश्वदेव बलि एह पंच महा

ओंनमः स्वतोमित्रातत्त्वमित्यादि अथसर्वपापसाधारणप्रायश्चित्तम् तत्र मनुः यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् पराकोनामकृच्छोयंसर्व पापापनोदनः ॥ १ ॥ विगतानवधानस्यसंयतेन्द्रियस्य द्वादशाहमभोजन मेव पराकाख्यःकृच्छूः सकृदावृत्तितारतम्येनगुरुलघुसमफलपापनाशकः ॥ तथा वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा नाशयन्त्याशुपापा निमहापातकजान्यपि ॥ १ ॥ क्षमाअपराधसहिष्णुता साचाकस्मिकसद् वृत्तापराधे नतु चौराद्युपद्रवीये यथैधांस्तेजसावन्हिःप्राप्तान्निर्दहतिक्षणात् तथाज्ञानकृतंपापंविप्रोदहतिवेदवित् ॥ १ ॥ अत्र बन्हिदृष्टान्तेन ज्ञानकृतमज्ञानकृतं च पापंवेदविद्विप्रोदहतीत्यर्थः

यज्ञ २ कीते होए अर क्षमा ३ एभी ब्रह्महत्यादि महापापका नाश करदेते है ॥ १ ॥ अब क्षमा पदका अर्थ करतेहैं क्षमेति परकरके कीते होए अपराधका सहारणा इसका नाम क्षमाहै अर सो क्षमा एक वार स्वाभाविक महात्मा करके होआ जो अपराधहै तिसके विषे युक्तहै अर चौरादिकां करके कीताहोआ जो अपराधहै तिस विषयमे क्षमा युक्त नहि अब वेद पाठका विशेष फल कथन करतेहैं यथेति जिस प्रकार प्रात होआं काष्ठानूं तेज कर्के क्षणमात्रते अग्नि दग्ध कर देताहै तिस प्रकार वेदके जानने वाला ब्राह्मण अज्ञान क रके कीते होए पापको दग्ध करदेताहै ॥ १ ॥ इसमे बन्हि दृष्टांत करके अग्नि क्या लेणा जिस प्रकार अग्नि स्वाभाविक लग पवे तां भी दग्ध कर देताहै अर जेकर कोई लादेवे तांभी दग्ध कर देताहै तिस प्रकार ज्ञान करके और अज्ञान कर्के कीते होए पापको वेदके जानने वाला ब्राह्मण दग्ध कर देता है ॥१

अब प्राणायाम करके पापकी शुद्धि कथन करतेहैं सव्याहतीति ओंभूः
 ओंभुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओंतपः ओंसत्यं तत्सावितुर्वरेण्यभर्गोदेव
 स्यर्धामहिधियोयोनः प्रचोदयात् ओंआपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरो इह जो सप्त
 व्याहतिआ अर गायत्री अर ओंकार इनां के सहित जो सोलां १६ प्राणायाम हैं सो दि
 न दिन प्रति मास पर्यंत कीते होए गर्भके हत करण वालेनूं भी पवित्र करदेतेहैं । २। इसश्लो
 कमें व्याहति अर प्रणव तिनो दोनो करके गायत्री अर शिरस् एभि जानलैने क्योकि गायत्री
 शिरसा सार्द्ध इत्यादि जो आगे संवर्तका वाक्यहै तिसमें अन्वहं एह जो पूर्व पद कथन की
 ता है तिस कर्के भी मास पर्यंत लैणा ॥ अब संवर्त ऋषिका वाक्य कथन करतेहैं अनादि
 ष्टेष्वाति अज्ञान करके कीते होए जो पाप हैं तिनके विषे प्रायश्चित्त कथन करते हैं दानों कर

सव्याहतिप्रणवकाः प्राणायामास्तुषोडश अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यह
 रहःकृताः ॥ २ ॥ अत्रव्याहतिप्रणवौगायत्रीशिरसोरुपलक्षकौ गा
 यत्रीशिरसासार्द्धमित्यादिवक्ष्यमाणसंवर्तवाक्यात् अन्वहमित्यत्रापिका
 लाकांक्षायांमासादित्यन्वेति ॥ संवर्तः ॥ अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तमथोच्य
 ते दानैर्होमैर्जपैर्नित्यंप्राणायामैर्द्विजोत्तमः पातकैर्भ्यः प्रमुच्येतवेदाभ्यासा
 न्नसंशयः ॥ १ ॥ सुवर्णदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापा
 निहान्यजन्मकृतान्यपि । २। तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजन्मने ब्रह्महत्या
 दिभिःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ३ ॥ संयतायजितात्मने द्विजन्मनेविप्राय

के १ अर होमों कर्के २ अर जपों करके ३ अर नित्य प्राणायाम करणे करके ४ अर वेद पा
 ठ करणे करके ५ अष्ट ब्राह्मण पापांतें रहित होजाताहै इसमें संदेहनहिहै ॥ १ ॥ अब सुवर्णादि
 दान करके पाप की शुद्धि कथन करतेहैं सुवर्णेति स्वर्णदान १ अर गोदान २ अर पृ
 थ्वी दान ३ एह पूर्व जन्म के विषे कीते होए जो पापहैं तिनका भी नाश करदेतेहैं ॥ २ ॥ अब
 तिल दान करके पापांकी शुद्धि कथन करतेहैं तिलधेनुमिति तिलांकी गौकों रचकर जो जि
 तेंद्रिय ब्राह्मण के ताई देताहै सो ब्रह्महत्यादि पापांतें रहित हो जाता है इसमें संदेहनहिहै ३ ॥ ति
 ल धेनु का प्रकार लिखतेहैं पद्मपुराणमें क्या सोलां १६ आठककी धेनु बनानी अर चार ४
 आठक का बछा अर इक्षुओंके पाद अर पुष्पोंके दांत अर नासां चंदनकीआं अर जिह्वा
 गुडकी अर आसन काले हरिणके चर्मका अर वस्त्र रत्न एनां कर्केयुक्त इसप्रकारकी धेनु बनावे

॥ श्रीरणवार कारत प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ६ ॥ टी० भा ॥ १५९

अब पौर्णमासी के विषे तिलदानका विशेष फल कथन करतेहैं ॥ मासइति मास मासके विषे पौर्णमासीके दिन उपवास को रखकर ब्राह्मणके ताई तिलांकों देकरके पापांते रहित होजाताहै ॥ ४ ॥ अब कार्तिक मासकी पौर्णमासीका अधिक फल कथन करते हैं ॥ उपवासीति उपवासको रखकर कार्तिक मासकी पौर्णमासीके दिन स्वर्ण १ अरवस्त्र २ अर अन्न ३ इनांके दान करके संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ५ ॥ अब दानके विषे श्रेष्ठ तिथिआंकों कथन करते हैं ॥ अमावास्या १ अर द्वादशी २ अर विशेष करके सूर्य संक्रांति ३ एह तिथिआं श्रेष्ठ कथन कीतिआं हैं अर तिस प्रकार आदित्यवार भी

मासेमासेचसंप्राप्तेपौर्णमास्यामुपोषितः ॥ ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्त्वासर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ४ ॥ उपवासीनरोभूत्वापौर्णमास्यांचकार्तिके हिरण्यं वस्त्रं मन्त्रं वा दत्त्वा मुच्येत दुष्कृतैः ॥ ५ ॥ अमावास्याद्वादशीचसंक्रान्तिश्च विशेषतः एताः प्रशस्तास्तिथयो भानुवारस्तथैव च ॥ ६ ॥ तत्र स्नानं जपो होमो ब्राह्मणानांच भोजनं उपवासस्तथा दानमेकैकं पावेन्नरम् ॥ ७ ॥ स्नातः शुचिर्धौतवासाः शुद्धात्मा विजितेन्द्रियः सात्त्विकं भावमाश्रित्य दानं दद्याद्विचक्षणः ॥ ८ ॥ सप्तव्याहृतिभिर्होमो द्विजैः कार्यो हितात्मभिः उपपातकशुद्ध्यर्थं सहस्रपरिसंख्यया ॥ ९ ॥

श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इनांके विषे स्नान १ अर जप २ अर होम ३ अर ब्राह्मणांको भोजन खुआणा ४ अर उपवास ५ अर दान ६ इनांके विचों एकभी कीताहोआ मनुष्यों पवित्र करदेताहै ७ अब दानका प्रकार कथन करते हैं ॥ स्नातइति कीताहै स्नान जिसने अर पवित्र है अर धोतेहैं वस्त्र जिसने अर शुद्ध है अतः करण जिसका अर जीतेहैं इंद्रिय जिसने सो बुद्धिमान् सतो गुणकेआश्रय होकर दानको देवे ॥ ८ ॥ अब होमका फल कहतेहैं सप्तति हितकी इच्छा वाले जो ब्राह्मण और वैश्य तिनोंने पापकी शुद्धिके वास्ते ओंभूः ओंभुवः इत्यादि सप्त व्याहृतिआं करके हजार १००० संख्या करके होम करणा चाहिए अर्थात् हजार आहुति करणी चाहिए ॥ ९ ॥

अब ब्राह्मणों को भोजन खुलाणेका फल कथन करतेहैं ॥ महापातकइति ब्रह्म हत्यादि पाप करके संयुक्त भी ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य होवे जीवन पर्यंत मास मासके विषे अथवा वर्ष वर्षके विषे लक्ष १००००० ब्राह्मणों को भोजन खुलाकर ब्रह्महत्यादि जो संपूर्ण पाप हैं तिनांते रहित होजाताहै अर तिसप्रकार गायत्रीके जपकरणे वाला भी ब्रह्महत्यादि संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ १० ॥ अब गायत्रीके जपका विशेष फलकहतेहैं अभ्यसेदिति वनको जाकर नदीके कनारे उपर संपूर्ण पापांकी शुद्धिके वास्ते अतिशय कर्के पवित्र और वेदांके उत्पन्न करणेवाली जो गायत्रीहै तिसनूं जपे ॥ ११ ॥ अब गायत्रीके जपका प्रकार कथन करतेहैं ॥ स्नात्वेति ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य नदीके विषे विधिसँ स्नानको करके प्राणात्माकों पवित्रकरे अर्थात् तीन ३ प्राणायाम करे फेर तीन ३ प्राणायाम करके शुद्ध

महापातकसंयुक्तोलक्षभोजंसदाद्विजः मुच्यतेसर्वपापेभ्योगायत्र्याश्चैव जापवान् ॥ १० ॥ अभ्यसेच्चमहापुण्यांगायत्रींविदमातरं ॥ गत्वारण्यंन दीतीरेसर्वपापविशुद्ध्ये ॥ ११ ॥ स्नात्वाचविधिवत्तत्रप्राणात्मानमपावयत् प्राणायामैस्त्रिभिःपूतोगायत्रींतुजपेद्द्विजः १२ अक्लिन्नवासाःस्थलगःशुचौ देशेसमाहितः पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमारभेत् १३ ऐहिकामुष्मिकं पापंपापंसर्वविशेषतःपंचरात्रेणगायत्रींजपमानोव्यपोहति ऐहिकामुष्मिकं ऐहिकफलकमामुष्मिकफलक मित्यर्थः ॥ १४ ॥ गायत्र्यास्तुपरं नास्तिशोधनंपापकर्मणाम् महाव्याहृतिसंयुक्तांप्राणायामेनसंयुताम् ॥ १५ ॥

होआ होआ गायत्रीको जपे ॥ १२ ॥ अक्लिन्नवासा इति सुके हैं वस्त्र जिसके अर्थात् और शुद्ध वस्त्रोंको लयकर नदीके कनारेको प्राप्तहोआ होआ शुद्ध देशविषे स्थित होकर रोकलयेहैं इंद्रियजिसने अर पवित्रहस्तवाला और कीताहै आचमन जिसने ऐसाहोकर गायत्रीके जपका आरंभ करे ॥ १३ ॥ ऐहिकेति इसलोक विषे फल देणवाले जो पापहैं अर परलोक विषे फल देणवाले जो संपूर्ण पापहैं तिनांको भी गायत्रीके जपकरणे वाला पंच ५ रात्रि करके नष्टकर देताहै १४ ॥ अब गायत्रीकी संपूर्णते अष्टकथनकरतेहैं गायत्र्याइति गायत्रीते परे औरको ई दूसरा पापकर्मके नाशकरणे वाला नहि अर्थात् गायत्रीहि संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली है । और ओंभूः ओंभुवः इत्यादि सप्त महाव्याहृतिआं कर्के युक्त और प्राणायाम करके जो संयुक्तहै ऐसी गायत्रीको जपने वाला पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ १५ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ६ ॥ टी० भा० १६१

अब और प्रकार कथन करते हैं ब्रह्मचारीति ॥ ब्रह्म आचार वाला जो है अर्थात् अष्ट प्रकार के मैथुनतें रहित है और थोड़े भोजन के खाने वाला और संपूर्ण जीवों के हित की इच्छा करता है ऐसा पुरुष गायत्री के लक्ष १०००० जप करके संपूर्ण पापोंतें रहित हो जाता है ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करते हैं ॥ अयाज्येति पतितादिकों यज्ञ करवा कर और चंडालादिके अब नूं खाकर गायत्री के अष्ट हजार ८००० जप करके संपूर्ण पापोंतें रहित हो जाता है २ अब और प्रकार कथन करते हैं अइनीति दिन दिन प्रति निश्चय करके ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांके मध्यमें श्रेष्ठ जो गायत्री नूं पढ़ता है अर्थात् जो जप करता है सो पुरुष एक मास करके संपूर्ण पापोंतें रहित हो जाता है इसमें दृष्टांत है क्या कि जिस प्रकार सर्प कुं जतें रहित हो जाता है इस दृष्टांत करके क्या लेना कि जिस प्रकार सर्प सुखसे कुंजकों

ब्रह्मचारीमिताहारः सर्वभूतहिते रतः गायत्र्या लक्षजप्येन सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥ अयाज्ययाजनं कृत्वा भुक्त्वा चान्नां विगर्हितं गायत्र्यष्टसहस्रं तु जाप्यं कृत्वा विमुच्यते ॥ २ ॥ अहन्यहं नियोऽर्धाति गायत्री वैद्विजोत्तमः मासेन मुच्यते पापादुरगः कंचुकाद्यथा ३ ॥ गायत्रीं यः सदा विप्रो जपते नियतः शुचिः स याति परमं स्थानं वायुभूतः खमूर्तिमान् ४ ॥ प्रणवेन तु संयुक्ता व्याहृतीस्सप्तानित्यशः गायत्रीं शिरसा सार्द्धं मनसा त्रिः पठेद्द्विजः निगृह्य चात्मनः प्राणान् प्राणायामो विधीयते ॥ ५ ॥

उतार देता है तिस प्रकार गायत्री के जप करके सुखसे हि पापोंतें रहित हो जाता है ॥ ३ ॥ अब गायत्री के जप करके मोक्ष कथन करते हैं गायत्रीमिति नियम वाला और शुद्ध जो ब्राह्मण स वेदा काल गायत्री नूं जपता है सो वायुस्वरूप होकर आकाश के स्वरूप वाला अर्थात् सर्वव्यापी होआ होआ वैकुण्ठको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥ अब प्राणायामका स्वरूप कथन करते हैं प्रणवेनेति अपणेत्रां प्राणानूं रोक कर ओंकारके सहित सत व्याहृतिआं नूं और शिरके साथ गायत्री नूं मन करके तीन ३ बार पड़े अर्थात् ओंभूः ओंभुवः ओंम्वः ओंमहः ओंजनः ओं तपः ओंसत्यं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओं आपो ज्योतीर सोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो इह तीन ३ बार मनविषे पड़े इसका नाम प्राणायाम है ॥ ५ ॥

१६२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ६ ॥ टी भा० ॥

अब उसीका प्रकार कथन करतेहैं प्राणायामेति दिन दिन प्रति समाधि लगा कर पुरुष पूरक कुंभक रेचक करके तीन ३ वार प्राणायाम करे ॥ अब प्राणायामका फल कथन करतेहैं मानसमिति तीन ३ वार प्राणायामके करणे करके मन करके कीता जो पाप और वाणी करके कीता जो पाप और देहकरके कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप नष्ट होजातेहैं ॥ ६ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं ऋग्वेदमिति जो ऋग्वेद नूं और यजुर्वेदकी शाखाकों पड़ताहै और सहित रहस्यके सामवेदकों जो पड़ताहै सो पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ७ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं पावमानीमिति पावमानी ऋचानूं और कौत्ससंज्ञिक मंत्रां कों जप कर और सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादि २२ मंत्रां कों जप कर संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै और पितृभ्यः स्वधा इत्यादि ५० मंत्रां नूं जप कर संपूर्ण पापांते रहित

प्राणायामत्रयंकुर्यान्नित्यमेवसमाहितः मानसंवाचिकंपापंकायेनैवतुयत्कृतं तत्सर्वेनश्यतेतूर्णंप्राणायामत्रयेकृते॥ ६ ॥ ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तुयजुःशाखामथापिवा सामानिसरहस्यानिसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ७ ॥ पावमानीतथाकौत्सपौरुषंसूक्तमेवच जप्त्वापापैः प्रमुच्येतपित्र्यंचमधुच्छांदसम् ॥ ८ ॥ मंडलं ब्राह्मणं रुद्रसूतोक्ताश्च वृहत्सामजप्त्वापापैः प्रमुच्यते ॥ ९ ॥ चांद्रायणंतु सर्वेषां पापानां पावनं परं कृत्वा शुद्धिमवाप्नोति परमं स्थानमेव चेति ॥ १० ॥

त होताहै और मधुवाताकृतायतेमधुक्षरं तिसिंधवः माध्वीनः संत्वोषधीः मधुनक्तमुतोपसो मधुमन् पाथिवं रजः मधुयोरस्तुनः पितामधुमान्नोवनस्पतिमधुमानस्तुसूर्यो माध्वीर्गावो भवंतुनः मधुमधुमधु इति इस मंत्रनूं भी जप कर संपूर्ण पापां तें रहित होताहै ॥ ८ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं मंडलमिति यदेतन्मण्डलंतपति इत्यादि जो ब्राह्मण मंडलके २२ मंत्र हैं और उंनमस्ते रुद्रमन्यवेइत्यादि जो रुद्रसूक्तके ६६ मंत्रहैं और सूतप्रोक्तकथा और ब्राह्मण जो है और वामदेव्य संज्ञिक जो मंत्र १ है और वृहत्साम संज्ञिक जो मंत्र हैं इनां मंत्रांके जपकरणे करके भी संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ९ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं चांद्रायणमिति संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला जो चांद्रायण व्रतहै तिसके करणे वाला जो पुरुष है सो भी पापांते रहित होजाताहै और स्वर्गादि स्थान को प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

॥ श्रीरणावीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ६ टी० भा० ॥ १६३

अब इसी विषय में माधवीय ग्रंथके विषे कथन कीता जो यम ऋषि का वाक्य सों कथन करतेहैं सहस्रेति हजार १००० जप गायत्री का उत्तम कथन कीता है और सउ १०० जप मध्यमहै और दश १० वार जप न्यून कथन कीता है अर्थात् ब्रह्महत्यादि पापों के नाश करण वाली गायत्री कों हजार १००० और शत १०० और दश १० वार जो जपता है सो संपूर्ण पापांते रहित होता है १ अब और प्रकार कथन करतेहैं विरुजमिति विरुजसंज्ञिक मंत्रों कों दो २ वार जप कर्के तिस दिनमें हि शुद्ध होता है और वाम देव्य संज्ञिक पूर्व लिखा जो मंत्र है इसकों भी दो २ वार जप कर्के तिस दिनमें हि शुद्ध होता है ॥ २ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं पौरुषमिति और सहस्र शीर्षा कों एक १ वार जप कर संपूर्ण पापांते रहित होता है ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं वृषभमिति वृषभसंज्ञिक मंत्रों नूँ सौ १०० वार पड कर तिस दिनमें हि शुद्ध होजाता है ॥ ३ ॥

माधवीयेयमः सहस्रपरमादेर्वीशत्तमध्यां दशावराम् गायत्रीं संजपेन्नित्यं
महापातकनाशिनीम् ॥ १ ॥ विरुजं द्विगुणं जप्त्वा तदहैव विशुध्यति
वामदेव्यं द्विरावर्त्य तदहैव विशुध्यति ॥ २ ॥ पौरुषं सूक्तमावर्त्य मुच्यते
सर्वकिल्बिषात् वृषभं शतशो जप्त्वा तदहैव विशुध्यति ॥ ३ ॥ वेदमे
कगुणं कृत्वा तदहैव विशुध्यति रुद्रैकादशकं जप्त्वा तदहैव विशुध्यति ४ ॥
आथर्वणाश्रये केचिन्मंत्राः कामविवर्जिताः ते सर्वे पापहंतारो याज्ञवल्क्य
वचो यथा ॥ ५ ॥ ब्राह्मणानि च कल्पांश्च पटंगानि तथैव च आख्यानानि
तथान्यानि जप्त्वा पापैः प्रमुच्यते ॥ ६ ॥ इति हासपुराणानि देवतास्तवना
नि च जप्त्वा पापैः प्रमुच्यन्ते धर्मस्थानैस्तथा षौरैरिति ॥ ७ ॥

और वेद नूँ एक १ वार जप कर तिस दिनमें हि शुद्ध होजाता है ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं रुद्रैकादशकमिति रुद्रियके यारां ११ अध्यायां नूँ जप कर तिस दिनमें हि शुद्ध हो जाता है ४ ॥ अब और प्रकार कथन करते हैं आथर्वणादिति, अथर्वणवेदके जेडे मंत्र निष्काम हैं अर्थात् मारण मोहन स्तंभन इत्यादि कामनातें रहित हैं सो संपूर्ण पापोंके नाश करण वालेहैं एह याज्ञवल्क्य ऋषिका वचन सत्य है । ५ । अब और प्रकार कथन करतेहैं ब्राह्मणानीति ब्राह्मण मंत्र औपनिषदः और शिक्षादि जो वेदके अंग हैं और जो ऋषियों के वाक्य हैं इनां नूँ जप कर संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ६ ॥ अब और प्रकार कथन करते हैं इतिहासेति महा भारतादि जो इतिहास हैं और भागवतादि जो पुराण हैं और जो देवताके स्तोत्र हैं और मनुस्मृत्यादि जो हैं इहनां के पाठ करणें कर्के भी संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ७ ॥

१६४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायाश्चित्त भागः प्र-६ टी. भा- ॥

इसी विषयमें बौधायन जीका वाक्यहै विधिनेति शास्त्र कर्के देखी जो विधि तिस विधि कर्के दिन दिन प्रति मासपर्यंत प्राणायाम नूं करे लिंग कर्के कीता जो पाप और चरणों कर्के और बाहुं आं कर्के और मन कर्के और वाणी कर्के और कर्णों कर्के और त्वचा कर्के और नासां कर्के और नेत्रों कर्के कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप प्राणायाम के करणें कर्के शीघ्रहि नष्ट हो जतिहैं ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिका वाक्यहै मृगारेष्टिरिति मृगारेष्टि और पवित्रेष्टि और त्रिर्हा वि और पावमानी एह संपूर्ण इष्टिआं वैश्वानर इष्टि कर्के युक्त होइयां होइयां पापांके नाश क

बौधायनः ॥ विधिनाशास्त्रदृष्टेनप्राणायामान्समाचरेत् यदुपस्थकृतं पापं पद्भ्यां वायत्कृतं भवेत् ॥ बाहुभ्यां मनसा वाचा श्रोत्रत्वग्घ्राणचक्षुषेति ॥ १ ॥ प्राणायामाः मासपर्यन्तं प्रतिदिनम् ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ मृगारेष्टिः पवित्रेष्टिस्त्रिर्हविः पावमान्यपि इष्टयः पापनाशिन्यो वैश्वानर्या समान्विताः १ कौ में ॥ जपस्तपस्तर्थासेवादेव ब्राह्मणपूजनम् ग्रहणादिपुकालेषु महापात कशोधनम् ॥ १ ॥ पुण्यक्षेत्राभिगमनं सर्वपापप्रणाशनम् देवताभ्यर्चनं पुं सामशेषाघविनाशनम् ॥ २ ॥ अमावास्यां तिथिं प्राप्य मासमाराधयेद्भवम् ब्राह्मणान्भोजयित्वा तु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥

रणे वाली आं हैं ॥ १ ॥ कूर्म पुराणमें भी लिखया है जपइति जप और तप और तीर्थ सेवन और देवताका पूजन और ब्राह्मणोंका पूजन एह संपूर्ण ग्रहणादि काल विषे कीते होए ब्रह्महत्यादि पापों के नाश करणे वालें हैं १ और पवित्र स्थान का सेवन भी संपूर्ण पापांका नाश कर देता है और देवताका जो पूजन है सो पुरुषों के संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला है ॥ २ ॥ अब और प्रकार कथन करते हैं अमेति अमावास्या तिथि लेकर एक म्भस पर्यंत शिवजी का पूजन करे पीछे ब्राह्मणा नूं भोजन देकर संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ३ ॥

अब और प्रकार कथन करतेहैं कृष्णोति कृष्णपक्षकी अष्टमीके विषे तिसप्रकार कृष्णपक्षकी चतुर्दशी के विषे शिवजीकों पूजककें और बहुतिआं ब्राह्मणान् पूज कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ ४ ॥ ब्राह्मणान् इसस्थानमें सुज्ञान् एभी पाठ होताहै ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं त्रयोदश्यामिति तिसप्रकार त्रयोदशीकेदिन रात्रिके पहले पहरके विषे सहित भेटादे शिवजीनूं पूजककें संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ ५ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं एकादश्यामिति शुक्लपक्षकी एकादशीके विषे उपवासव्रत रक्खकर द्वादशीकेदिन विष्णुको पूज कर्के संपूर्ण पापांतें रहितहोताहै । ६ । अब और प्रकार कथनकरतेहैं उपोषितइति कृष्णपक्षकी

कृष्णाष्टम्यामहादेवंतथाकृष्णचतुर्दशीं संपूज्यब्राह्मणान्सर्वान्सर्वपापैः प्रमुच्यते ४ ब्राह्मणान्सुज्ञानितिपाठः सर्वान्वहूनित्यर्थोवा ॥ त्रयोदश्यांतथारात्रौसोपहारंत्रिलोचनं इष्टेशप्रथमेयामेमुच्यतेसर्वपातकैः ५ एकादश्यां निराहारः समभ्यर्च्यजनार्दनम् द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यसर्वपापैः प्रमुच्यते ६ उपोषितश्चतुर्दश्यांकृष्णपक्षसमाहितः यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकाय च ७ वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयाय च प्रत्येकंतिलसंयुक्तान्दद्यात्सप्तोदकांजलीन् ८ स्नात्वा नद्यांतुपूर्वाहणेमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ तत्रैव नान्यत्पश्यामिजंतूनामुक्तावाराणसीपुरीं सर्वपापप्रशमनंप्रायश्चित्तंकलयुगे ॥ १ ॥

चतुर्दशीके दिन उपवास व्रत रक्खकर दिनके प्रथमपहरमें नदीके विषे स्नान कर्के और इंद्रियां कों रोककर्के यम धर्मराज मृत्यु अंतक वैवस्वत काल सर्वभूतक्षय एहजो धर्मराजके सत्तनामहें इनांसत्तांकेताई भिन्न भिन्न तिलांकर्के संयुक्त सप्त जलकीअंजलियांदेवें तद संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ८ कूर्मपुराणमेंहि किसे ऋषिका किसेके प्रति वाक्य है नान्यदिति काशीपुरीको त्याग कर्के कलियुगमें पुरुषोंके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले और प्रायश्चित्तनूं नहि देखताहुं अर्थात् कलियुगमें संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली काशीहै ॥ १ ॥

यमजीका वाक्यहै जप्येदिति इस बामदेवकी वामीय ऋचानूपडे और पावमानीऋचानूं पड कर्के और कुंताढ्य ऋचानूं पड कर्के और वालखिल्यजो ऋचा हैं तिनानूं पड कर्के और निवृत्तैषा ऋचानूं पड कर्के और वृषाकपिन् पड कर्के और होता यक्षत इत्यादि जो ऋचा हैं तिनानूं पड कर्के और नमस्तेरुद्रमन्यवे इत्यादि जो ऋचा हैं तिनानूं एकवार जप कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ मनुजीकाभी वाक्यहै एनसामिति बहुत और थोडे जो पाप हैं तिनके नाशकी इच्छावाला अवतेहेलो वरुण नमोभिरित्यादि जो अवेत्यृक् ऋचाहै इसनूं और यत्किंचेदमित्यादि ऋचानूं एक वर्ष जपे और जपके मध्यमे होर काय्यं न करे

यमः ॥ जप्येद्वाप्यस्यवामीयं पावमानीरथापि वा कुंताढ्यं वालखिल्यांश्च निवृत्तैषां वृषाकपिम् होत्स्नरुद्रान्सकृज्जप्त्वा मुच्यते सर्वपातकैः १ मनुः । एन सांस्थूलसूक्ष्माणामिचिकीर्षन्नपनोदनं अवेत्यृचं जपेदब्दं यत्किंचेदमितीति च १ अवेत्यृक् अवतेहेलो वरुण नमोभिरित्यादिका । जपस्त्वर्थांतरा विरुद्धे काले ॥ प्रायश्चित्तमयूस्त्रे हिरण्यदानं गोदानं भूमिदानं तथैव च नाशयंत्याशुपापा निमहापातकजान्यपि १ गौतमः ॥ संवत्सरः पणमासाश्च त्वारोमासास्त्रयो द्वावेकश्चतुर्विंशत्यहो द्वादशाहः पडहस्त्र्यहोऽहोरात्र इति कालाः एतान्यना देशे विकल्पेन क्रियेरन् एतानि पूर्वोक्तकालपरिच्छिन्नानि गायत्र्याद्यनुष्ठानानि एनसिगुरुणिगुरूणिलघुनिलघूनि कृच्छ्रां द्रायणादीनि ॥

॥ १ ॥ प्रायश्चित्तमयूस्त्रमें भी लिखाहै ॥ हिरण्येति स्वर्णदान और गोदान और तिस प्रकार पथिवी दान एह ब्रह्महत्यादितें उत्पन्नहोएजो पापहैं तिनानूंभी तात्काल नष्ट करदेतेहैं ॥ १ ॥ गौतमजीका वाक्यहै संवत्सरइति एक वर्ष और छे ६ मास और चार ४ मास और तीन ३ मास दो २ मास और एक १ मास और चौबी २४ दिन और वारां १२ दिन छे ६ दिन और तीन ३ दिन और एक १ दिन एह काल जपके कथन कीतेहैं ॥ जिस स्थानमें जपका काल नहि लिखा तिसस्थानमें पापकों देख कर्के काल कथन करणा ॥ और बहुते पापमें बहुत और थोड़े पापमें थोड़े करणे कृच्छ्र और चांद्रायणादि प्रायश्चित्त करणे

चतुर्विंशतिका मत है अथेति इसते अनंतर संपूर्ण यत्न कर्के संपूर्ण पापांके विषे ब्रह्महत्यादि पापोंके नाशकरणे वाले जप होमादिकों करे आदिशब्दते चांद्रायणादि व्रत ग्रहण करणे १ ॥ जपेति इस लोककेविषे फलदेने वाला जो पाप है और परलोकविषे फलदेने वाला जो पाप है तिनांका जप और होमां कर्के नाश करे जप और होम कर्के हि मोक्षकों प्राप्त होता है एहगर्गजीका वचन यथार्थ है ॥ २ ॥ इहां जप होमकर्के हजार १००० गायत्रीके मंत्रकर्के ग्रहण करणें जितने पर्यंत शरीर भी हच्छारहे इसपूर्वोक्तयमजीके वचनतें क्षत्रिय इति क्षत्री अपनी भुजा दे बल कर्के आपद तरे । वैश्य और शूद्र धन कर्के तरें और ब्राह्मण जप और होमां कर्के तरें ३ ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें भी लिखा है सायमिति सायं कालके विषे और तिस प्रकार प्रभात

चतुर्विंशतिमते । अथवासर्वयत्नेन सर्वेष्वपि च पाप्मसु जपहोमादिकं कुर्याद्ब्रह्महत्यादिनाशनम् १ जपहोमैर्दहेत्पापमैहिकामुष्मिकं च यत् ताभ्यां परमवाप्नोति गर्गस्य वचनं यथा २ जपहोमौ चाऽत्र सहस्रावच्छिन्न गायत्री मंत्रेण यावच्छरीरस्वास्थ्यमिति पूर्वोक्तयमवाक्यात् ताभ्यां जपहोमाभ्यां परमोक्षमवाप्नोतीति ॥ क्षत्रियो बाहुर्वीर्येण तरेदापदमात्मनः धनेन वैश्यशूद्रौ तु जपहोमैर्द्विजोत्तमः ३ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ सायं प्रातस्तथा कृत्वा वासुदेवस्य कीर्तनम् सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते १ प्रभासखंडे श्रीभगवद्वाक्यम् ॥ नाम्नां मुख्यतरं नाम कृष्णारूपं हे परंतप ॥ प्रायश्चित्तमशेषाणां पापानां मोक्षकं परम् १ वाराहे ॥ वासुदेवस्य संकीर्त्या सुरापो व्याधितोऽपि वा मुक्तो जायेत नियतं महाविष्णुः प्रसीदति ॥ १ ॥

कालके विषे विष्णुके कीर्तनकर्के संपूर्ण पापाने रहित होकर स्वर्गके विषे पूजादा है ॥ १ ॥ प्रभासखंडके विषे भी श्रीभगवान् जी का किसेके प्रति वाक्य है नाम्नामिति हे परंतप मेरे नामांके मध्यमे मुख्य कृष्ण एह जो नाम है सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला है और प्रायश्चित्त रूप है और पवित्र है ॥ १ ॥ वाराह पुराणमें भी लिखा है वासुदेवेति विष्णुके कीर्तन कर्के मदिराके पीने वाला और रोगी भी निश्चय कर्के पापांतें रहित होता है और विष्णुवादि संपूर्ण अवतारांका मूल रूप जो महाविष्णु है सो भी तिस पुरुषके उपर प्रसन्न होता है अर्थात् मोक्षकों देता है ॥ १ ॥

व्याधित इस पद कर्के पूर्वजन्म के विषे भी मदिरा आदि पान करण वाला ग्रहण करणा ॥ गो विंदेति भक्ति कर्के संयुक्त जो पुरुष हैं अथवा भक्तितें रहित जो पुरुष हैं तिनां कर्के हे गोविंदसे कथन कीता होआ संपूर्ण पापांको भस्म करदेताहै जिस प्रकार ब्रलय कालके विषे उठिआ होआ अग्निजगतनूं भस्म करदेताहै । २ । विश्वामित्रजीका वाक्यहै कृच्छ्रेति कृच्छ्र और चांद्रायण आदि जो प्रायश्चित्त हैं सो सब शुद्धि और मुक्तिके कारणहैं प्रत्यक्ष जो पाप कीता है और एकांत विषे जो पाप कीता है और जिस पापका प्रायश्चित्त नहि और जिस पाप मे संदेहहै और नि

व्याधितः पूर्वजन्मन्यपि सुरादिपानकर्ता विष्णवाद्यवतारमूलभूतोमहाविष्णुः ॥ गोविन्देति तथा प्रोक्तं भक्त्या वा भक्तिवर्जितैः हहते सर्वपापानियुगांताग्निरिवोत्थितः ॥ २ ॥ विश्वामित्रः ॥ कृच्छ्रचांद्रायणादीनि शुद्ध्यभ्युदयकारणं प्रकाशे च रहस्ये च अनुक्ते संशये स्फुटे ॥ १ ॥ प्राजापत्यः सांतपनः शिशुकृच्छ्रः पराककः अतिकृच्छ्रः पर्णकृच्छ्रः सौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः ॥ २ ॥ महासांतपनः सिद्धयै तप्तकृच्छ्रस्तु पावकः जपोपवासकृच्छ्रास्तु ब्रह्मकूर्चस्तु शोधकः ॥ ३ ॥ एते व्यस्ताः समस्ता वा प्रत्येकं ह्येकशोपि वा पातकादिषु सर्वेषु उपवासेषु यत्नतः ॥ ४ ॥

श्चित्त कीता जो पाप है इनां संपूर्ण पापांको शुद्धिके कारण कृच्छ्र चांद्रायणादि हैं ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं प्राजापत्य इति प्राजापत्य १ और सांतपन २ और शिशुकृच्छ्र ३ और पराकक ४ और अतिकृच्छ्र ५ और पर्णकृच्छ्र ६ सौम्यकृच्छ्र ७ अतिकृच्छ्रक ८ महासांतपन ९ और पवित्र जो तप्त कृच्छ्र १० और जप ११ और उपवास १२ और कृच्छ्र १३ और शुद्ध जो ब्रह्म कूर्च ॥ १४ ॥ एह संपूर्ण मिले होए अथवा भिन्न भिन्न अथवा एक एक भी संपूर्ण पापोंके विषे और उपवासों के विषे शुद्धिके वास्ते यत्न कर्के करणे चाहिदेहैं ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ६ ॥ टी० भा ॥ १६९

कार्यादिति प्राजापत्यादि संपूर्ण प्रायश्चित्त चांद्रायणों कर्के संयुक्त अथवा भिन्न भिन्न पापकी शुद्धि वास्ते करणे चाई देहैं ॥ अब चांद्रायण व्रतके भेद कथन करते हैं ॥ शिश्विति एक शिशु चांद्रायण एक' यतिचांद्रायण ॥ ५ ॥ एक यवमध्यचांद्रायण और एक पैपीलिकाकृति चांद्रायण कथन कीताहै इनके स्वरूप व्रत प्रकरणमें देखलैने ॥ तीन ३ दिनका उपवास १ और मास उपवास २ और पंद्रा १५ दिनका उपवास ३ और आठ ८ दिनका उपवास ॥ ६ ॥ और छे ६ दिनका और वारां १२ दिनका उपवास पापांकी शुद्धि दी इच्छा करदा जो पुरुषहै तिसने करणे चाईदेहैं उपपातकां कर्के युक्त जो पुरुष हैं तिनां नें अनादिष्ट

कार्याश्चांद्रायणैर्युक्ताः केवलावापिशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तं यतिचां
द्रायणंतथै ॥ ५ ॥ यवमध्यतथाप्रोक्तं तथापैपीलिकाकृति ॥ उपवास
स्त्रिरात्रं वामासः पक्षस्तदर्द्धकम् ॥ ६ ॥ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यं शुद्धिफला
र्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टेषु चैव हि ॥ ७ ॥ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाश्च
भिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वानुसकृद्द्विःकृतं तथा ॥ ८ ॥
अनुबंधादिकंदृष्ट्वा सर्वकार्य्यं यथाक्रमम् ॥ अनुबंधः प्रकृतस्यानिवर्त्तनम् ॥
प्रकाशउक्तं यत्किंचिद्विंशभागोरहस्यके त्रिंशद्भागः षष्टिभागः कल्प्योजा
त्याद्यपेक्षया ॥ ९ ॥

पापां के विषे चांद्रायणादि व्रत करणे चाईदेहैं ॥ ७ ॥ प्रकाशइति प्रकट पापके विषे और गुप्त पापके विषे प्रायश्चित्तीकी प्रतिज्ञा आदिकी अपेक्षा कर्के जाति और शक्ति और गुण इनां नूं देख कर्के और तिस प्रकार एक बार कीते होए पाप कां और दो बार कीते होए पाप को भी देखकर्के ॥ ८ ॥ और प्रायश्चित्ती के हठकों भी देखकर्के संपूर्ण प्रायश्चित्त क्रमसे करणा चाई दाहै ॥ प्रकट पापके विषे जितना प्रायश्चित्त कथन कीताहै तिसतें बीवां २० हिस्सा गुप्त पाप के विषे ब्राह्मण कां कथन कीताहै और क्षत्रीको बीवां ३० हिस्सा कथन कीताहै और वैश्य को सठवां ६० हिस्सा कथन कीताहै ॥ ९ ॥

याज्ञवल्क्यजी का वाक्य है ॥ अनादीति अनादिष्ट पापां की चांद्रायण व्रत कर्के हि शुद्धि है और धर्मके अर्थ भी चांद्रायण व्रत कों करे सो चांद्रायण व्रतका कर्ता चंद्रमाके लोककों प्राप्त होता है ॥ १ ॥ षड्विंशत्के मतमें रुच्छ और आतरुच्छ और चांद्रायण इन तीनों ३ का समुदाय कथन किया है ॥ यानोति जो कोई पाप ब्रह्महत्यादितें बड़े हैं सो रुच्छ और अतिरुच्छ और चांद्रायण कर्के नष्ट होजाते हैं एह मनु कथन करता भया ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिके मतमें केवल प्राजापत्य हि पापांको नष्ट करता है ॥ लघ्वि ति थोड़े अनादिष्ट पापके विषे प्राजापत्यकों हिकरे इति ॥ शुक्र जी रुच्छ और चांद्रायण

॥ याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषु पापेषु शुद्धिश्चांद्रायणेन च धर्म्मार्थयश्चरे देतच्चन्द्रस्यैतिसलोकताम् ॥ १ ॥ षड्विंशन्मते त्रयाणां समुच्चयः प्रति पादितः ॥ यानिकानि च पापानि गुरोर्गुरुतराणि च ॥ रुच्छातिरुच्छां द्वैस्तु शोधयते मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ निरपेक्षो हि प्राजापत्यश्चतुर्विंशतिमते ॥ लघुदोषे त्वनादिष्टे प्राजापत्यं समाचरेदिति ॥ द्वयोः समुच्चयमाहोशनाः ॥ दुरितानां दुरिष्टानां पापानां महतामपि रुच्छं चांद्रायणैव सर्वपापप्रणाशनमिति ॥ १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टं पातकम् ॥ रुच्छानुवृत्तौ गौतमः ॥ प्रथमं चरित्वा शुचिः कर्मण्यः पूतो भवति द्वितीयं चरित्वा यदन्यन्महापातकेभ्यः पापं कुरुते तस्मात्प्रमुच्यते तृतीयं चरित्वा सर्वस्मादेन सो मुच्यते इति ॥ प्रथमादिपदैः रुच्छोऽतिरुच्छः रुच्छातिरुच्छश्चोच्यते ॥

कर्के हि पापांके नाशकों कथन करते भये ॥ दुरितानामिति बड़े जो उपपातक पाप हैं और बड़े जो पातक पाप हैं इनां संपूर्णोंके नाश करणे वाले रुच्छ और चांद्रायण हि हैं इति ॥ १ ॥ गौतमजी बारंवार रुच्छके हि करणे करके पापका नाश कथन करते हैं ॥ प्रथममिति रुच्छ कों कर्के कर्म करणे वाला शुद्ध होता है अतिरुच्छकों कर्के ब्रह्महत्यादि महापातकर्ते और जिस पाप कों करता है तिसतें रहित हो जाता है रुच्छातिरुच्छकों कर्के संपूर्ण पापातें रहित होजाता है ॥ इनां तीनों ३ का स्वरूप रहस्य प्रकरण मे देख लैषा ॥

हारीतजीका वाक्यहै चांद्रायणमिति चांद्रायण व्रत और पराकव्रत और तुला दान और गौआंके पीछे चलना एह संपूर्ण पापोंके नाश करणें वालेहैं ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं तथेति तिसप्रकार गोमूत्र और गौका गुहा और गौकादुग्ध और दधि और घृत और कुशाका जल और एक १ रात्रका उपवास एह संपूर्ण चंडालतुल्यपुरुषकोंभी शुद्धकरदेतेहैं ॥ २ ॥ इनांसंपूर्णोंकी व्यवस्था विष्णु पुराणमें कथन कीतीहै पापइति ॥ मैत्रेयके प्रति किसे ऋषिका वाक्यहै हैं मै त्रेय प्रायश्चित्तोंके जानणें वाले मन्वादि बड़े पापकेविषे बड़े प्रायश्चित्तकों करे और थोड़ेपापके विषे थोड़े प्रायश्चित्तकों करे एह कथन करते भए ॥ १ ॥ भविष्य पुराणमें भी लिखाहै एवमिति पुत्रके प्रति किसेका वाक्यहै हे पुत्र इसतरह पापके भेदकर्के बड़े और थोड़े संपूर्ण प्रायश्चित्त करणे

हारीतः चांद्रायणपराकंचतुलापुरुषएवच गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्रणाश
नमिति ॥ १ ॥ तथा गोमूत्रंगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवास
श्चश्वपाकमपिशोधयेत् ॥ २ ॥ एतेषांसर्वेषांव्यवस्थोक्ताविष्णुपुराणे पापेगुरु
णिगुरुणिस्वल्पान्यल्पेचतद्विदः प्रायश्चित्तानिमैत्रेयजगुस्स्वायंभुवादयः
१ । भविष्ये ॥ एवंविषयभेदेनव्यवस्थाप्यानिपुत्रक प्रायश्चित्तानिसर्वाणि
गुरुणिचलघूनिच ॥ १ ॥ अन्यथाहिमहाबाहोलघूनामुपदेशतःगुरुणामुप
देशोहिनिष्प्रयोजनतां व्रजेत् ॥ २ ॥ गौतमः ॥ एनसिगुरुणिगुरुणिलघु
निलघूनि ॥ हविष्यान्प्रातराशान्भुक्कातिस्त्रोरात्रीर्नाश्नीयात् अथापरं
अहंनक्तंभुंजीत अथापरंअहं न कंचन याचेत अथापरं अहमुपवसेत्

योग्यहैं अर्थात् बड़े पापके विषे बड़ा प्रायश्चित्त करणा और थोड़े पापके विषे थोड़ा प्राय
श्चित्त करणा ॥ १ ॥ हे महाबाहो इसते जब व्यत्यय करे तो थोड़े प्रायश्चित्तके कहनेसे बड़े जो
प्रायश्चित्तहैं सो निष्फलहि होवेंगे ॥ २ ॥ गौतम जीका वाक्य है एनसीति बड़े पापमें बड़ा
प्रायश्चित्त करे और थोड़े पापमें थोड़ा प्रायश्चित्त करे इति ॥ हविष्यानिति प्रातःकाल तीन
दिन ३ घृत और तिल और यव इत्यादि जो हविष्य हैं तिनांका भक्षण करे और रात्रिके विषे
कुछ न भक्षण करे इसतें उपरंत तीन ३ दिन रात्रिके विषे भक्षण करे इसते उपरंत तीन
३ दिन किसेसें नहि मांगे जेकर कोई देजावे तब भक्षण कर लेवे इसतें उपरंत तीन ३
दिन उपवास करे इस व्रतके दिन दिनकी कस्य कहतेहैं

तिष्ठेदिति शीघ्राहि फलकी कामना वाला दिनविषे खड़ा रहे और रात्रि विषे बैठा रहे और सत्य कथन करे और नीचों के साथवातां न करे और रौरवयोधा संज्ञिक और जयसंज्ञिक मंत्रांकानित्य पठन करे और तीन ३ दिन त्रिकाल स्नान करे और ओंआपोहिष्ठा मयो भुवः १ ओं तानऊर्जे दधात नर ओमहेरणाय चक्षसे ३ एह पवित्र जो तीन ऋचा हैं इनों कर्के मार्जन करे और हिरण्य वर्णाः शुचयः पावका इत्यादि अष्ट ८ ऋचां कर्के भी मार्जन करे इसतं उपरंत ओं नमो हमा यइत्यादि मंत्रों कर्के जलके विषे तर्पण करे और ओं अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिर नुष्टुप् छंदः भावभृतं दैवतं अश्वमेधावभृथेविनियोगः ओं ऋतंच सत्यं चाभीद्धा तपसोऽध्य जायत ततो रात्रिरजायत ततः समुद्रो ऽर्णवः समुद्रादर्णवाद्दधिसंवत्सरोऽजायत अहोरात्राणि

तिष्ठेदहनिरात्रावासीताक्षिप्रकामः सत्यं वदेदनायैर्न संभाषेत रौरवयो धाजयेन्नित्यं प्रयुंजीतानुसुबनमुदकोपस्पर्शनम् आपोहिष्ठेति तिसृभिः पवित्रवतीभिश्च मार्जयेत् हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका इत्यष्टभिः ॥ अथोद कतर्पणम् ओं नमो हमायेत्यंतर्जले वा घमर्षणं त्रिरावर्त्तयन् सर्वपापेभ्यो मुच्यते इति ॥ बृहन्नारदीये ॥ प्रायश्चित्तानियः कुर्यान्नारायणपरायणः तस्य पापानि नश्यन्ति अन्यथा पतितो भवेत् ॥ १ ॥ यस्तुरागादिनिर्मुक्तश्चानु तापसमन्वितः सर्वभूतदयायुक्तो विष्णुस्मरणतत्परः ॥ २ ॥

विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी सूर्याचंद्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवं च पृथि वीचांतरिक्ष मथो स्वः इति इस मंत्रको तीन ३ बार पाठ करे तो संपूर्ण पापांतें रहित होता है इति ॥ बृहन्नारदीय पुराणमें भी लिखा है प्रायश्चित्तानीति जो प्रायश्चित्तां नू करता होआ ईश्वरपरायण है अर्थात् ईश्वरका स्मरण करता है तिसके संपूर्ण पाप नष्ट होते हैं जेकर इसते व्यत्यय करे तव पापी होता है ॥ १ ॥ यइति जो पुरुष राग द्वेषादितें रहित है और पश्चात्ताप कर्के युक्त है और संपूर्ण जीवांके उपर दया करने वाला और विष्णुके स्मरण विषे तत्पर है ॥ २ ॥

॥ श्रीरणावीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ६ टी० भा० ॥ १७३

महेति ब्रह्महत्यादिपापांकर्के अथवा होरना संपूर्ण पापांकर्के युक्त होवे तदभी संपूर्णपापांते तात्काल रहित होता है जिस कारणते तिसका चित्त विष्णुके विषे स्थित है ॥३॥ नारायणमिति आद और अतते रहित और जगत्स्वरूप और अवीनाशी असा जो विष्णु है तिसका जो पुरुष निस स्मरण करता है सो संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ४ ॥ विष्णुके विस्मरणविषे दोष कहते हैं विष्ण्वति विष्णुका स्मरण न करणा पाप है अर उसका स्मरण पापांके छेदन करणे वाला है इसमे दृष्टांत है कि जिस प्रकार बड़े दीपकदे जगां नेसे गुफाके मध्यमें जो अंधकार है तिसके बलका नाश होजाता है ॥५॥ और प्रकार कहते हैं स्मृतइति स्मरणकीता होआ अर पूजन कीता होआ अर चितन कीता होआ अर नमस्कार विषय कीता होआ जो सनातन विष्णु

महापातकयुक्तो वा युक्तो वा सर्वपातकैः सर्वैः प्रमुच्यते सद्यो यतो विष्णुपरमनः

३ नारायणमनाद्यं तां विश्वाकारमनामयम् यस्तु संस्मरते नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ४ विष्णुविस्मरणं पापं स्मरणं पापकृतं नम् गुहांतर्ध्वांत बलभिन्महा दीपो दयो यथा ५ स्मृतो वा पूजितो वा पिध्यातो वा नमितोऽपि वा नाशयत्येव पापा निविष्णुरेव सनातनः ६ संपर्काद्यदि वामो हाद्यस्तु पूजयते हरिम् सर्वपापविनिर्मुक्तः प्रयाति परमं पदम् ७ सकृत्संस्मरणाद्विष्णोर्नृश्यति क्लेशसंचयः स्वर्गादिभोगप्राप्तिस्तु सुलभा परिकीर्तिता ८ तस्मात्तडिल्लता लोलं मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम् हरिं संपूजयेद्भक्त्या सर्वपापविमोचकम् ९ सर्वेन्तरायानशयंति मनः शुद्धिश्च जायते परमोक्षं लभेच्चैव पूज्यमाने जनार्दने ॥ १०

है सो निश्चयकके पापांकानाश करदेता है ॥६॥ संपर्केति किसेदे संगते अथवा मोहते जो पुरुष विष्णुनूपूजता है सो संपूर्ण पापां ते रहित होकर विष्णुके लोकनूप्राप्त होता है ॥ ७ ॥ सकृदि ति विष्णुके एकवार स्मरण करपेतें दुःखांके समूहका नाश होजाता है अर स्वर्गादि भोगां की प्राप्ति सुखाली प्राप्त होती है ॥८॥ तस्मादिति तिस कारणते विजलीकी न्याई चंचल अर दुर्लभ मनुष्यजन्मकों प्राप्त होकरके संपूर्णपापांके नाश करणेवाले विष्णुकों भक्तिकके पूजे ॥९॥ इसका फल कहते हैं सर्वइति तद संपूर्ण बिघ्न नष्ट होजाते हैं अर चित्तकी शुद्धि होती है अर विष्णुके पजया होआ निश्चयकके मुक्तिकों भी प्राप्त होता है ॥ १० ॥

१७४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ६ ॥ टी भा० ॥

धर्मेति धर्मं अर अर्थ और काम और मुक्ति एह सब पुरुषोंके अर्थ विष्णुकी पूजाकरण वालियोंके निश्चयकर्के सिद्धहोतेहैं इसमें संदेह नाहि है ॥ ११ ॥ अग्निपुराणमें औरभी अग्निपुष्करसंवादके विषे एक विष्णुजीका स्तोत्र सर्वपापहर लिखाहै परेति परस्त्री और परधन और परका मारणा इत्यादिओं विषे जद पुरुषोंका मन प्रवृत्त होवे तब विष्णुकी स्तुति प्रायश्चित्तहै ॥ १ ॥ विष्णुकी स्तुति कथन करतेहैं विष्णवइति विष्णुके ताई वारंवार ४ नित्य नमस्करहोवे मनकेविषे स्थित अर अहंकारकास्थान जो विष्णुहै तिसनूंमै नमस्कार करताहां २ ॥ चित्तस्थमिति जो विष्णुमन केविषे स्थितहै अर एकहै अर नहिप्रकटहै अर नहि नाश जिसका अर नहि किसेकर्के जितयाजांदा

धर्मार्थकाममोक्षारूपाः पुरुषार्थाः सनातनाः हरिपूजापराणां तु सिद्ध्यन्तेऽत्र न संशयः ११ ॥ अग्निपुराणे अग्निपुष्करसंवादे परदारपरद्रव्यपरहिंसादिके यदा प्रवर्द्धते नृणां चित्तं प्रायश्चित्तं स्तुतिस्तदा १ विष्णवे विष्णवे नित्यं विष्णवे विष्णवे नमः नमामि विष्णुं चित्तस्थमहंकारगतं हरिम् २ ॥ चित्तस्थमेकमव्यक्तमच्युतं ह्यपराजितम् विष्णुमीशमशेषेण अनादिनिधनं विभुम् ३ ॥ विष्णुं चित्तगतं जानन् विष्णुं बुद्धिगतं च यः यश्चाहंकारगां विष्णुं सविष्णवार्पितसंस्थितिः ४ करोति कर्तृभूतो सौ स्यात्वरस्य चरस्य च तत्पापं नाशमायाति तस्मिन्नेव तु चिंतिते ५ ॥ ध्यातो हरतियः पापं स्वप्ने दृष्टु भावतः तमुपेन्द्रमहं विष्णुं प्रणतार्तिहरं हरिम् ॥ ६ ॥

अर संपूर्णोंका स्वामी अर जन्म मरणतें रहित अर सबव्यापी ऐसा जो विष्णुहै तिसनूंमै नमस्कार करताहां १ ॥ विष्णुमिति जो पुरुष मनके विषे अर बुद्धिके विषे अर अहंकारके विषे प्राप्त होए होए विष्णुनूं जानताहै सो विष्णुकेविषेहि स्थित है ॥ ४ ॥ करोतीति जेडा एह विष्णु कर्तारूपहोकर पर्वतादि अर मनुष्यादिआनूं करताहै तिस विष्णुके स्मरण कीतिआं होआं तिस पुरुषकापाप निश्चयकर्के नाशकों प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ ध्यातइति जेडा विष्णु भक्तिकर्के चिंतितकी ता होआ अर स्वप्नेके विषे देखिआ होआ पापका नाश करदेताहै तिस शरणागतकी पीडाहरण वाले विष्णु नूंमै नमस्कार करताहैं ॥ ६ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ६ ॥ टी० भा० १७५

जगतीति ॥ आश्रयते रहिब जो एह जगत् है इसके नरकके विषे हिठा पौंदिआं होआं हस्त का आश्रयदेणवाला और परतें भी परे जो विष्णुहै तिस नू मै नमस्कार करता हं ॥ ७ ॥ सर्वेति हेस पूणोंके ईश्वर हेसर्वव्यापक हेपरमात्मन् हे अधोक्षज हे इंद्रियोंके ईशर हेरुष्ण वर्ण केशा वाले तेरे तांई नमस्कार होवे ॥ ८ ॥ नृसिंहति हेनृसिंह हेअंतर्ते रहित हेगोंआंके पालन करे वाले हेजीवांके उत्पन्न करणे वाले हे सुंदरकेशां वाले मुझका खोटा कथन और कर्म और चितन और मानस दुःख का नाशकर अर्थात् वाणी कर्के और शरीर कर्के और मन कर्के कीता जो पापहै तिसको दूरकर तुझको नमस्कार होवे ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्येति हे ब्राह्मणोंके पूजने वाले हेगोविंद हेपरात्पर हेपरायस हे जगत्के ईश्वर हे जगत्के पालन करण वाले हे अच्युत मुझके पापका

जगत्यस्मिन्निराधारेमज्यमानेतमस्यधः हस्तावलंबनंविष्णुंप्रणमामिपरात्परम् ॥ ७ ॥ सर्वेश्वरेश्वरविभोपरमात्मन्नधोक्षज हृषीकेशहृषीकेशकृष्णकेशनमोस्तुते ॥ ८ ॥ नृसिंहानंतगोविंदभूतभावनकेशव दुरुक्तंदुष्कृतंध्यातंशमयाधिनमोस्तुते ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्यदेवगोविंदपरात्परपरायण जगन्नाथजगद्धातःपापंप्रशमयाच्युत ॥ १० ॥ यच्चापराहणेसायाहणेमध्याहणेचतथानिशिकायेनमनसावाचाकृतंपापमजानता ॥ ११ ॥ जानताचहृषीकेशपुंडरीकाक्षमाधव पापंप्रशमयाद्यत्वंवाक्कृतंमममाधव ॥ १२ ॥ यदश्रनूयत्स्वपंस्तिष्ठन्यद्रच्छन्स्वेच्छयास्थितः कृतवान्पापमद्याहंकायेनमनसापिवा ॥ १३ ॥ यत्सूक्ष्ममपियत्स्थूलंकुयोनिनरकावहम् तद्यातुप्रलयंसर्वंवासुदेवादिकीर्तनात् ॥ १४ ॥

नाशकर ॥ १० ॥ यच्चेति प्रातः काल और सायंकाल और मध्याह्नकाल और रात्रि इनो विषे शरीर कर्के और मन कर्के और वाणी कर्के और अज्ञान कर्के ॥ ११ ॥ और ज्ञान कर्के मैने कीतो जो पाप है तिसका हेहृषीकेश हे पुंडरीकाक्ष हेमाधवतूं नाशकर ॥ १२ ॥ यदिति भक्षण करदा होआ और शयन करदा होआ और खड़ा हुंदा होआ और गमनकरदा होआ और अपनी इच्छा से स्थित हुंदा होआ मैं शरीर कर्के और मन कर्के आदिशब्दने वाणीकर्केभी जो पाप कर्ता भया है माधव तिस कातूं नाशकर ॥ १३ ॥ यदिति खोटीयोनि और जोगर्धभादिकी है नरकों प्रातकरणे वाला थोड़ा और बहुत जो मुझका पापहै सो संपूर्ण वासुदेवादि नामके कथन करणे तें नाशकोप्राप्त होवे एह मेरी प्रार्थना आपकोस्वीकृतहोवे ॥ १४ ॥

परमिति परमब्रह्म और परम तेजरूप और परमपवित्र ऐसा जो विष्णुहै तिसके कीर्तन कीर्तिश्री होश्री संपूर्ण पापनाशकों प्राप्तहोवे ॥ १५ ॥ यदिति बुद्धिमान्पुरुष जिस स्थानकों प्राप्तहोकरके फेर जन्मकों नहि प्राप्त हुंदे और गंध स्पर्शादि विषय सुखतें रहित और अपूर्वक जो विष्णुका स्थानहै सो मेरे पापका नाश करे ! १६ । इस स्तोत्रका फल कथन करतेहैं पापेति पापकेनाशकरणे वाले इस स्तोत्रका जो पाठकरताहै और जो सुणताहै सो पुरुष शरीरकके और चित्तकके और वाणी कके कीर्ते होए जो पापहै तिनांते रहित होजाताहै १७ सर्वेति और संपूर्ण पापोंसूर्यादि ग्रहांसे मुक्तहोताहै अर्थात् सूर्यादिपापग्रह उसकों पीडा नहि देतें और विष्णुके परमपदकों प्राप्तहोताहै तिस कारणते पापदेकीर्तिश्री होश्री संपूर्ण पापोंके नाशकरणे वाला एह स्तोत्रजपना चाहिए १८ प्रायश्चित्त

परंब्रह्मपरंधामपवित्रपरमंतुयत् तस्मिन्प्रकीर्तितेविष्णोपापंसर्वप्रणश्यतु
१५ यत्प्राप्यननिवर्तन्तेगंधस्पर्शादिवर्जितम् सूरयस्तत्पदंविष्णोस्त्वपूर्वं
शमयत्वघम् १६ पापप्रशमनंस्तोत्रंयःपठेच्छृणुथादपि शरीरैर्मानसैः
कायैःकृतैःपापैःप्रमुच्यते १७ सर्वपापग्रहादिभ्योयातिविष्णोःपरंपदम्
तस्मात्पापेकृतेजप्यंस्तोत्रंसर्वाघमर्दनम् १८ प्रायश्चित्तमघौघानांस्तोत्रं
व्रतकृतेवरम् प्रायश्चित्तैःस्तोत्रजापैर्व्रतैर्नश्यतिपातकम् १९ प्रायश्चित्तंदु
शेखरेपि * तत्रमहापातकादर्वाचीनेषु बहुविधेष्वज्ञानकृतेषुप्रतिनिमित्तक
र्तुमशक्तौसर्वप्रायश्चित्तपडब्दम् ॥ अत्यंतगुणवतोविरक्तस्याऽभ्यासेद्वि
गुणम् ॥ मत्यात्रिगुणम् ॥ मत्याऽभ्यासेचतुर्गुणम् ॥ अत्यंताभ्यासेनिरंतरा
भ्यासे वा पंचगुणम् ॥

मिति व्रतांकीकृतकेविषे एह स्तोत्र पापांके समूहोंका श्रेष्ठ प्रायश्चित्तहै प्रायश्चित्तोंकके और स्तोत्रों ककेजपों कके और व्रतां कके पाप दूर होताहै १९ ॥ *प्रायश्चित्तंदुशेखर में भी लिखाहै तत्रेति पा पोंके मध्यमें ब्रह्महत्यातें विना बहुत प्रकारके अज्ञान कके कीर्ते होए जो पापहैं तिनोंके विषे कहा जो प्रायश्चित्तहै तिसके करणविषे जद सामर्थ्य न होवे तद छे ६ वर्षका संपूर्ण प्रायश्चित्त कर णा चाहिए ॥ अतिशयतकके गुणवाला और विरक्तहोवे तिसके पापके अभ्यासमें वारां १२ वर्ष का प्रायश्चित्त लिखाहै और बुद्धिककेकीर्ते होए पापके विषे चौबीस वर्षका व्रत और अतिशय कके अभ्यासके विषे अथवा सर्वदाकाल पापांके अभ्यासमें पंचगुणकयातीस ३० वर्षका व्रत करणाचा हिए प्रतिदिन बहुवारकरणेमे अत्यंताभ्यासहै और विच्छेदसे प्रतिदिन करणेमे निरंतराभ्यास कहीदाहै

॥ श्रीरण्वरि कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ६ टी० भा० ॥ १७७

अर इसमेभीबहुतकालके अभ्यासमें छत्तीस ६ वर्षकाप्रायश्चित्तलिखाहै और गोहत्यादितैलेकरके उरेहोणेवाले अज्ञानकर्केकीवेहोएजो जातिभंशादि पापहैं तिनमे कथन कीता जो प्रायश्चित्तहै ति सकेकरणेमे जव सामर्थ्यनहोवेतवदोस वर्षकाप्रायश्चित्तलिखाहै । अभ्यासादिओंमें पूर्वकीन्याईकरणा जैसेगुणवालेविरक्तके अभ्यासमेंचार ४ वर्षका अरबुद्धिकर्के कीते होएमें छे ६ वर्षकाअर बुद्धि के अभ्यासमें आठ ८ वर्षका अर अतिशय और निरंतरअभ्यासमे दश १०वर्षका अर बहुतकाल के अभ्यासमे वारां १२ वर्षका प्रायश्चित्त लिखाहै और तिओजोए प्रकीर्णक जोपापहैं तिनकेविषे उक्त प्रायश्चित्तकरणे असमर्थहोवे तद एक १ वर्षका प्रायश्चित्तकरे और गुणवाले विरक्तकों दो २ वर्षकाअर बुद्धिकर्के कीतेमेंतीन ३ वर्षकालिखाहै औरसबपूर्वकीन्याई जानलैने । क्षुद्रेति अर थोडे

बहुकालाभ्यासेषड्गुणम् उपपातकमारभ्यावाचीनेषु पापेष्वज्ञानकृतेषु प्रतिनिमित्तकर्तुमशक्तौघ्रब्दंप्रायश्चित्तम् अभ्यासादौप्राग्वत् प्रकीर्णकेषु तादृशेषुतादृशस्यैकाब्दम् अभ्यासादौप्राग्वत् क्षुद्रपापेषु तादृशेषु तादृशस्य कृच्छातिकृच्छचांद्रायणानि तत्स्थाने द्वादश कायानिवा अभ्यासादौप्राग्वत् चतुष्टयमिदं चोत्तमस्य मध्यमस्यद्विगुणम् उत्तममध्यमादिविषये द्विगुणादिव्यवस्थातु वर्णाश्रमसाधारणीबोद्ध्या यथोत्तमब्राह्मणस्योक्तमेव मध्यमब्राह्मणस्यद्विगुणमेवमग्रेपि अधमस्यत्रिगुणम्

जो पापहैं तिनके विषे लिखा जो प्रायश्चित्तहै तिसके विषे जव सामर्थ्य न होवे तव कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायणकों करे अथवा वारां १२ प्राजापत्य करे ॥ अभ्यासादिओंमें पूर्वकीन्याई जानलैना एह चारे ४ प्रायश्चित्त महापातकांके उरले १ और उपपातकांके उरले २ और प्रकीर्णक ३ और अनस्थिजीववध और अस्थिवाले कहेहोए ते विलक्षण जो जीवतिनांकावध ४ एह सभ व्यवस्था जैसी वर्णोंमेंहै तैसी आश्रमोमे भीजानणी उत्तम ब्राह्मणकों एक बार करणे चाहिए अर गुणांकरके मध्यमजो ब्राह्मणहै तिसकों दो २ बार करणा चाहिए और नीच ब्राह्मणकों तीन ३ बार करणा चाहिए

अर इसतेभी जो नीच ब्राह्मणहै तिसको चवीस २४ वर्षका करणा चाहिए इस प्रकार क्षत्री और वैश्य और शूद्र इनकों भी क्रम कर्के प्रायश्चित्त जान लेना ब्रह्म हत्यादि जो संपूर्ण पापहैं तिनोंका एह प्रायश्चित्तहै अर जिनो पापोंका प्रायश्चित्त नहि लिखा तिनके विषे प्रायश्चित्तकी सामर्थ्य देख कर्के एकठे अथवा भिन्न भिन्न कृच्छ्र और चांद्रायणादि व्रत दसने चाहिए अर थोड़िओं पापोंके विषे एक दिनका उपवास और तीन ३ रात्र उपवास और प्राजापत्य योग्यता कर्के दसने चाहिए और बहुत थोड़े जो पापहैं तिनके विषे वारां १२ अथवा ७ ६ अथवा तिस ३० प्राणा ग्राम करणे चाहिए ॥ स्त्रीश्रां को और शूद्रांको मंत्रांत बिना प्राणायाम करणे चाहिए अथवा जितने अन्नसें एक पुरुष तृप्त होजावे अथवा गिआसन

ततोप्यधमस्यद्वादशाब्दद्विगुणं महापातकावधिसकलपापप्रायश्चित्तमिति सर्वत्रानुक्तनिष्कृतौ कृच्छ्रचांद्रायणादीनि समस्तव्यस्तरूपेण योग्यतया योज्यानि ॥ क्षुद्रेषु पापेषु उपवासत्रिरात्रप्राजापत्यानि अतिक्षुद्रेषु द्वादशषट् त्रिंशद्वा प्राणायामाः कार्य्याः स्त्रीशूद्राणाममंत्रकास्ते पुरुषाहारहंतकाराग्रदानानिवा मौनलोपे विष्णुस्मरणम् ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजजंम्बूकाश्मिराद्यनेकदेशार्धाश प्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतश्रीदेविकोपकण्ठवासिदेवीदत्तसुतपण्डितगंगारामसंगृहीते पंचविषयात्मप्रतिरूपके धर्मशास्त्रमहानिवन्धप्रायश्चित्तभागिसाधारणप्रकरणं षष्ठम् ॥ ६ ॥ * *

इत्यादि अन्न दानकरणा चाहिए और मौनव्रतके लोपके विषे विष्णुका स्मरण करणा (इति) एह पद प्रकरण की समाप्तिके विषे जानणा लक्ष्मीकर्के युक्त जो बड़े राजेहैं तिनोंका भी राजा अर जंबू और काश्मीर आदि पद कर्के गिलगितादि जो अनेक देशहैं तिनोका स्वामी श्रेष्ठ जो राजा रणवीर सिंह तिस कर्के आज्ञप्त कीते होए सारस्वत ब्राह्मण संज्ञा वाले और श्रीदेविका जीके कनारे पर रहण वाले और पंडित देवी दत्तके पुत्रपंडित गंगा रामजी तीनों कर्के संग्रह कीतेहोए धर्मशास्त्र महानिवंधके प्रायश्चित्त भागमे छेमां साधारण प्रकरण समाप्त होया ॥ ६ ॥ ●

साधारणप्रकरणतें उपरंत अब विधान कीता जौकर्म तिसका नकरणा १ अर वर्जित कर्मका करणा २ अर इन्द्रियों का रोकणा एह जो कारण तीन ३ हैं इनातें उत्पन्न हुए जो जातिभ्रंशकरतें आदलेकर नौ ९ प्रकारके पापहैं सो ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त प्रकरणमें कथन करेहैं ॥ तिनां नवांके मध्यमे जातिभ्रंशकर पापां कों मनुजी कहतेहैं ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणकों दंडादि करके दुःस्वदेणा १ और अति शय करके दुर्गंध वाला जो थोम अर विष्टादिहैं इसका अर मदिराका सिघणा २ ॥

॥ ओंश्रीगणेशायनमः ॥ अथविहिताकरणादिहेतुत्रयोत्पन्नजातिभ्रंशकरादिनवविधानि पापानि ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणेउक्तानि तत्र जातिभ्रंशकराण्याह मनुः । ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वाघ्रातिरघ्रेयमद्यथोः जैह्म्यंच मैथुनंपुंसिजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्यदंडादिनापीडाकरणं १ अतिशयदुर्गंधियल्लशुनपुरीपादि तस्य मद्यस्यचघ्रातिराघ्राणं २ जैह्म्यमित्रे ३ पुंसिमुखादौचमैथुनं ४ प्रत्येकंजातिभ्रंशकरंनतु समस्तम् याज्ञवल्क्येनात्र पशुमैथुनमप्युक्तम् ॥ इमान्येव प्रायश्चित्तप्रकरण प्रायश्चित्तरत्न प्रायश्चित्तमुक्तावली प्रायश्चित्तशेखर प्रायश्चित्तमयूख प्रायश्चित्तकदंबादौ प्रोक्तानि २

और मित्रके साथ द्रोह करणा ३ और पुरुषके साथ अर स्त्रीके मुखमें मैथुन करणा ४ एह एकभीपाप कीता होआ जातितें भ्रष्ट करदेताहै ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इस्यादि पदों करके इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ अर याज्ञवल्क्यजीने पशुके साथ जो मैथुनहै सोभी जातितें पतित करण वाला कथनकीताहै अर प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तरत्न अर प्रायश्चित्तमुक्तावली अर प्रायश्चित्तशेखर अर प्रायश्चित्तमयूख अर प्रायश्चित्त कदंब इत्यादि ग्रंथोंमें भी एही चार ४ , पाप जातितें गिडा देणवाले लिखे है ॥

तिनांके मध्यमें जातिभ्रंशकर पापके प्रायश्चित्तकों मनुजी कहते हैं जातीति ब्राह्मणस्यरुज इसमें आदलेकर जो जातिभ्रंशकर कर्म कथन कीतेहैं तिनके मध्यमें इच्छासे किसी कर्मनूं करके सत्त ७ दिनका जो सांतपन कच्छू ब्रतहै तिसकों करे जेकर जातिभ्रंशकरादिकर्म इच्छासे न करे तद प्राजापत्य ब्रत करे इसमें एह (प्रण) है कि जो पाप इच्छासे होताहै तिसका प्रायश्चित्त बहुतहै और जो विनाइच्छा से कीताहो आ पापहै तिसका थोडा प्रायश्चित्त होणा चाहिए और इस जगा विपरीतक्योंहै सांतपन ७ दिनका और प्राजापत्य १२ दिनकाहै (उच्चर) इसजगा सांतपनशब्द कर्के महासांतपन जानणा सो २१ दिन कर्के होताहै इसमें विरोध नहि अथवा अर्थ से विपरीत कर लेणा इच्छामें प्राजापत्य और अनिच्छामें सांतपन तदभी विरोध नहि आउंदा ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इत्यादि

तत्रजातिभ्रंशकरपापप्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ जातिभ्रंशकरंकर्मकृत्वान्य तममिच्छया चरेत्सांतपनंकच्छूप्राजापत्यमनिच्छया ॥ १ ॥ ब्राह्मण स्यरुजइत्याद्युक्तजातिभ्रंशकरकर्मोक्तं तन्मध्यादन्यतममपि कर्म कृत्वा सांतपनंसप्ताहसाध्यंकच्छूब्रतंचरेत् इदमिच्छयाकामेन अनिच्छया तु प्राजापत्यंकुर्यात् केचित् इच्छयैतत्कर्मकृत्वा प्राजापत्यमनिच्छया तु सांतपनंचरेदित्याहुः बृहस्पतिनात्रविशेषउक्तोयथा ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वा रासभादिप्रमाणम् निंदितेभ्यो धनादानंकच्छूब्रतमाचरेदिति ॥ १ ॥ इदमेवप्रायश्चित्तंप्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानं तदशक्तौ चूर्णीदानं यथाशक्तिदक्षिणा ॥

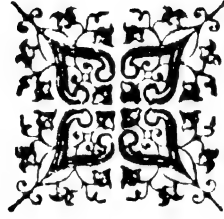
पद करके इसी श्लोककाहि अर्थ दिखायाहै ॥ बृहस्पतिजीनें इसमें विशेष कहाहै ॥ ब्राह्मेति ॥ ब्राह्मणकों दंडादि करके दुःख देकरके और गर्दभादिओंकों मार करके और निषिद्ध पुरुषोंते धनका ग्रहण करके अद्धा कच्छू ब्रत करे ॥ १ ॥ एही प्रायश्चित्त प्रायश्चित्तेन्दुशेखरमेंभी लिखाहै प्रायेति ॥ जब कच्छूादि ब्रत करणमें सामर्थ्य ना होवे तब प्रसूतहुइ गौका दान करे अर जब गौके दानमें भी सामर्थ्य ना होवे तब चूर्णीदानकरे अर्थात् एक सौ १०० कौडीदानकरे अर जैसी सामर्थ्य होवे तैसी दक्षिणा देवे (प्रण) जिसने १०० कपर्दिका मात्र दान कीता उसकी शक्तितो प्रतीत होगई फेर यथाशक्ति क्योकिहा (उत्तर) चूर्णीदान इसजगा गोदानकी जगाहै तिसके पीछे यथाशक्ति मुद्रिकादि दक्षिणा देवे एह अभिप्रायहै ॥ अैसे आगेभी जानणा ॥

जेकर ब्राह्मणकों इच्छा करके पीडा देवे तद सांतपन व्रतकों करे ॥ अर जब व्रत करणे में शक्ति न होवे तव गोदानकरे जब गौदानकी भी समर्था न होवे तव षट्कार्षापणदेवे अर्थात् सत्त हजार ७००० अर आठ ८०० सौ अर अस्सी ८० कौडिआंका दानकरे अर यथा शक्ति दक्षिणा देवे ॥ इसप्रकार जब थोमादि अर विष्टा और मदिरा इनांकों इच्छासे न सिंधे तव प्राजापत्य व्रतकरे । जब व्रतकरणमें सामर्थ्य नहोवें तव एक प्रसूत गौकादानकरे जब गौ दानमेंभी सामर्थ्य ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे जदमित्रके विषे इच्छा करके द्रोहकरे तव प्राजापत्य व्रतकरे ॥ जद व्रतकरणकी समर्था ना होवे तदगो दानकरे ॥ जद गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे ब्राह्मणकों पाषाणादि के उग्रणमें अर्थात् प्रहार करणेकी इच्छा विषे प्राजापत्य व्रतकरे जद व्रतकरणकी समर्था ना होवे तद एक गौदानकरे गौदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे और

ब्राह्मणपीडाकरणेकामतः सान्तपनंतदभावेधेनुदानं तदभावेष्टकार्षापणाः यथाशक्तिदक्षिणा एवंलशुनादिमद्ययोरघ्राणेऽकामतः प्राजापत्यम् तदशक्तौ १ धेनुःतदभावेकार्षापणाः ३ मित्रकौटिल्येसाभ्यासेचैवम् ॥ ब्राह्मणबगूरणेप्राजापत्यंतदशक्तौधेनुः १ तदभावेत्रयःकार्षापणाःपुंसिमैथुने ब्राह्मणेदंडादिपातनेच अतिकृच्छ्रम् तद. धेनुः तद. कार्षा- ३ यथाशक्तिदक्षिणा ॥ ब्राह्मणशोणितोत्पादनेकृच्छ्रातिकृच्छ्रंतद. ५ धेनवःतद. १० कार्षापणाःयथाश- ब्राह्मणांगच्छेदनेष्वेवम् ॥ अत्यंताभ्यासेचान्द्रम् दशगोदानंच ॥ तद. ७ धेनवःतदभावे २१ यथाशक्तिदक्षिणा ॥

जद पुरुषके साथ मैथुनकरे अर ब्राह्मणकों दंडादिओं करके पीडादेवे तद अति कृच्छ्र व्रतकरे जद व्रतमें समर्था ना होवे तदगोदान करे गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणादेवे अर जब ब्राह्मणकों रुधिर वगादेवे तवकृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतकरे अर व्रतकरणमें समर्था नाहोवे तद पांच ५ गौकादानकरे जबतिसमेंभी सामर्था नाहोवे तव दश १० कार्षापणदानकरे अर यथाशक्तिसे दक्षिणादेवे ॥ अर जब ब्राह्मणका अंग कट देवे तदभी इसीप्रकार व्रतादिकरे जब इसमें बहुत अभ्यास होवे तव चांद्रयणव्रत करे ॥ जदइसमें सामर्था नाहोवे तद दस १० गौकादान करे इसमेंभी सामर्था ना होवे तद नवीन सूईआं हाईआं सच ७ गौआंका दानकरे इसमेंभी सामर्था ना होवे तव २१ कार्षापण का दानकरे अर यथाशक्तिसेदक्षिणादेवे ॥ एह जातिभंश करपापसमाप्तभये ॥ ॥

इतिजातिभ्रंशकराणि



॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र-८ टी. भा- ॥ १८२

अथेति जातिभंशकरां पापांते उपरंत संकरीकरण संज्ञिक पापांकों कहतेहैं ॥ तिन कि विषे मनुजी का वाक्य है खरेति गधा और घोडा और ऊट और हरिण और हस्ती और बकरा भिड्डू और मच्छी और सर्प और महिषी इनांमेसैं एकका भी मारणा संकरी करण पाप जानना चाहिए ॥ १ ॥ गर्दभइत्यादि पदों कर्के इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै याज्ञवल्क्य जीनें इसमें भेद कथन कीताहै ॥ ग्राम्येति ग्रामके और वनके पशुआंका मारणा हि संकरीकरण कथन कीताहै तिस विषे देवताके निमित्त मारिया जो पशुहै तिसका पाप नहिहै ॥ प्रायश्चित्त प्रकरण आदि उंमें मनुने कहा जो संकरी करण है सोई लिखाहै अर

उंश्रीगणेशायनमः ॥ अथसंकरीकरणानि ॥ तत्रमनुः ॥ खराश्वोष्टमृगेभा नामजाविकवधस्तथा संकरीकरणं ज्ञेयं मीनाहिमहिषस्य च ॥ १ ॥ अस्या र्थः खरेति गर्दभतुरगोष्टमृगहस्तिछागमेषमत्स्यसर्पमाहिषाणां प्रत्येकं वधः संकरीकरणं ज्ञेयम् १ याज्ञवल्क्येन तु ग्राम्यारण्यपशूनां हिंसनमेव संकरीकरणमुक्तम् तत्र देवतोद्देशेन वधे कृते न दोषः ॥ प्रायश्चित्तप्रकरणे प्रायश्चित्तरत्ने प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्तमयूरे प्रायश्चित्तकदंबादौ मनुक्तमेव संकरीकरणम् संकरीकरणा पात्रीकरणमालिनी करणीयेषु पापेषु प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ संकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमैन्दवम् मालिनीकरणयेषु तप्तः स्याद्यावकैस्त्यहम् ॥ १ ॥ खराश्वोष्टेत्यादिना संकरीकरणान्युक्तानि तेषां मध्यादन्यतममिच्छातः कृत्वा चांद्रायणं मासं शुद्धै कुर्यात्

याज्ञवल्क्य वाला नहि लिखा ॥ संकरीकरण अपात्रीकरण अर मालिनीकरण एह जो पाप हैं इनके विषे प्रायश्चित्त नू मनुजी कहतेहैं ॥ संकरेति संकरीकरण और अपात्रीकरण एह जो पाप हैं इनके करण विषे एक १ मास तक चांद्रायण व्रत करे अर मालिनी करण जो पाप हैं इनांमें जवां कर्के तीन ३ दिन तप्तकच्छ्र व्रत करे १ एहि अर्थ प्रकट कर्के कहतेहैं खरेति खराश्वोष्ट इत्यादि कर्के जो संकरीकरण पाप कहेहै तिनके मध्यमें इच्छासैं एक पापकों कर्के शुद्धिके वास्ते एक मास पर्यंत चांद्रायण व्रत कों करे ॥ इन व्रतोंका स्वरूप व्रत प्रकरणमे देख लैणा ॥ १ ॥

१८३ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ८ ॥ टी भा० ॥

तिस प्रकार प्रायश्चित्तमयूखमें भी विष्णुजी का वाक्य है ॥ संकृति संकरीकरण पाप नूँ करके एक मास पर्यंत जवां का भक्षण करे अथवा कृच्छ्रातिकृच्छ्र प्रायश्चित्त नूँ करे ॥ १ ॥ इस विषयमें अज्ञानतः कीता जो संकरीकरण पाप है तिसके अनुष्ठानमें एक मास पर्यंत जवां का भक्षण करे और जब ज्ञान करके संकरीकरण पाप नूँ करे तब कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और अज्ञानाभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे और ज्ञानाभ्यासमें दो २ चांद्रायण व्रत करे और याज्ञवल्क्यजीने भी इसमें कुछ कहा है गजके हत कीतियां होयां पांच ५ नीलवृष देंगे और खर वकरा

तथाच प्रायश्चित्तमयूखेविष्णुः ॥ संकरीकरणांकृत्वामासमभ्रीतयावकम् कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवाप्रायश्चित्ततुकारयेदिति ॥ १ ॥ अत्राज्ञानात्संकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ज्ञानात्कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् अज्ञानाभ्यासेतु चान्द्रायणम् ज्ञानाभ्यासेतु चान्द्रायणद्वयंकल्प्यम् ॥ याज्ञवल्क्येनतु गजेनीलवृषाः पंचखराजमेषेषुवृषोदेयः हयेंशुकम् उरगेऽत्रायसोदंडः ॥ उष्ट्रेगुञ्जाः अक्रव्यान्मृगे वस्तिका जलचरे गौः ॥ यमेनार्पादमेवोक्तम् ॥ प्रायश्चित्तदुशेखरे अज्ञानतः संकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ॥ ज्ञानतः कृच्छ्रातिकृच्छ्रः अज्ञानतोऽभ्यासेचांद्रम् ज्ञानतस्तथात्वे चान्द्रायणद्वयम् प्रायश्चित्ताशकौ धेनुदानम्

भेडा इनके हत कीतियां होयां एक १ वृषदान करना और घोड़ेके वधमें वस्त्र और सपके वधमें लोह दंड और ऊटके वधमें गुंजाफलभूषण और अमांसाशी मृगके वधमें वस्तिका कचा वस्त्र विशेष और जलचरके वधमें गोदान करे ॥ यमजीने भी एहि कहा है अर प्रायश्चित्त दुशेखरमें भी लिखा है अज्ञेति जान करके नहि कीता जो संकरीकरण पाप तिसके अनुष्ठानमें एक मास जवां का भक्षण करे और ज्ञान करके कीता जो है तिसके विषे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे अज्ञानते अभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे ज्ञानते अभ्यासमें दो २ चांद्रायण व्रत करे ॥ और जद प्रायश्चित्त करणकी ना समर्थी होवे तद धेनु दान करे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ८ टी० भा० ॥ १८४

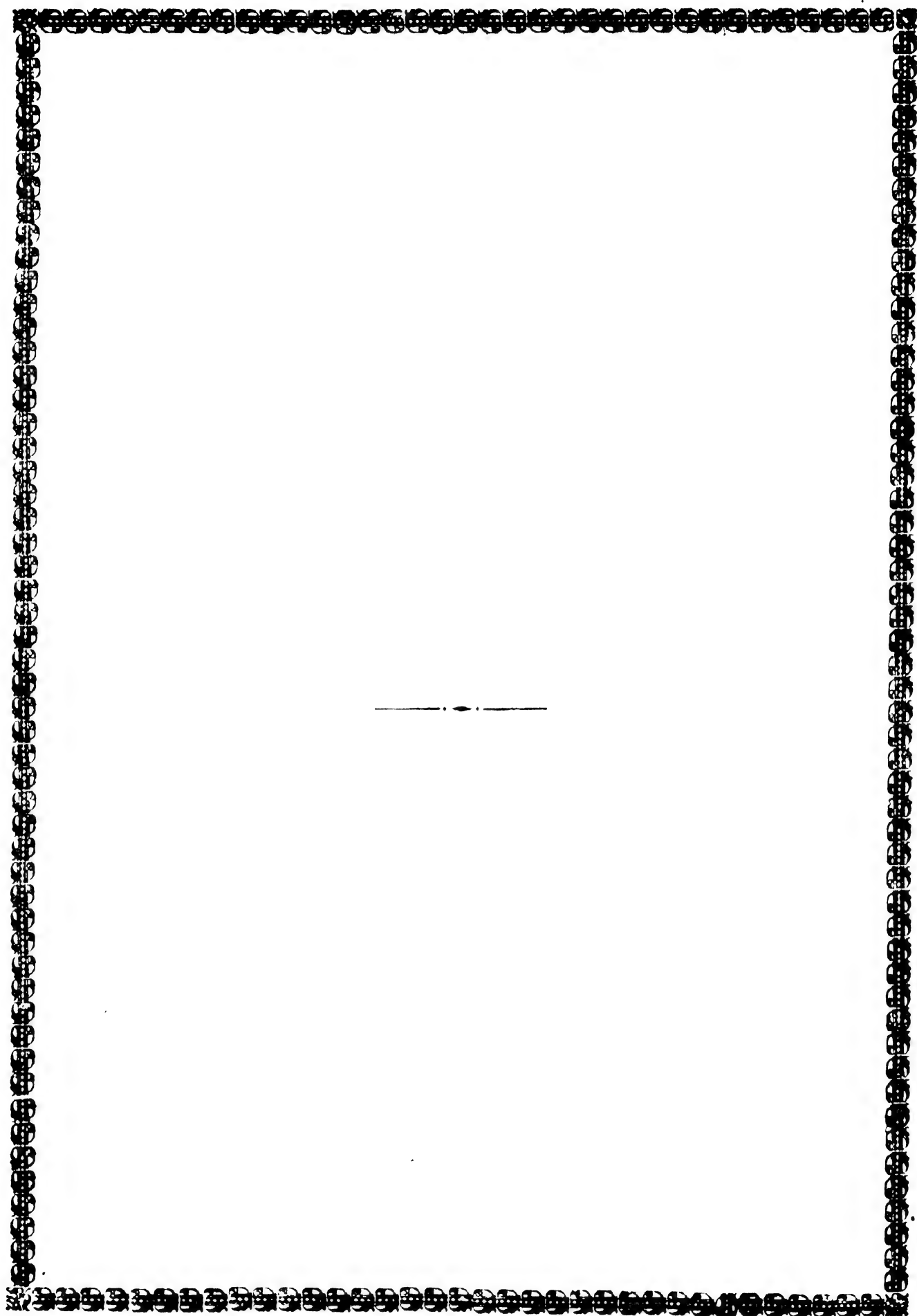
तिसमें भी ना शक्तिहोवे तद सौ १०० कौडीका दान करे और यथाशक्तिदक्षिणा देवे गधा और घोडा और ऊठ और हरिण और हस्ती और बकरा और भिडु और मछ और सप और म हिष इनके मध्यमें एककोंभी एक बार मारकरे एक मास जवांकापान करे जद इसमेंना सामर्था होवे तद दो २ धेनु दानकरे और तिसमें भी ना सामर्था होवे तव छे ६ कार्पापण दान करे और शक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे और अभ्यासमें रुच्छातिरुच्छ व्रत करे इसमें ना सामर्था होवे

तदशक्तौचूर्णीदानम् कपर्दिकाशतं १०० चूर्णी दक्षिणायथाशक्ति
खराश्वोष्टमृगहास्तिच्छागमेषमीनाहिमहिषाणांवधरूपेपुसकृत्करणेमासं
यावकपानम् तदशक्तौद्वेधेनू ० तदभावे षट्कार्पापणाः यथाशक्ति
दक्षिणा अभ्यासिकृच्छातिरुच्छम् तदशक्तौ पंचधेनवः तदभाविपंचदश
कार्पापणाः दक्षिणायथाशक्ति अत्यन्ताभ्यासे चान्द्रायणम् तदशक्तौसा
र्द्धसप्तधेनवः तदभाविसार्द्धद्वाविंशतिकार्षापणाः दक्षिणायथाशक्ति ॥

इतिसंकरीकरणानि ॥ २ ॥ ❀ ❀

तव पंच ५ धेनु दानकरे तिसमें भी ना सामर्था होवे तव पंदरां १५ कार्पापण दानकरे और शक्ति
सें दक्षिणा देवे और अतिशय कर्के अभ्यासमें चान्द्रायण व्रतकरे तिसमें ना सामर्था होवे तव सा
डिआं सत्त ७ धेनु दानकरे इसमें भी ना सामर्था होवे तव साडेवाइंस २२ कार्पापण दान
करे और शक्तिसें दक्षिणा देवे धेनुका अर्द्ध पूर्वोक्त मुल कर्के हिजानणा एह संकरी करण

॥ पाप समाप्त भया ॥ ❀ ❀



अथेति संकरीकरणे उपरंत अपात्री करणपाप कहतेहैं ॥ इसकोविषे मनुजीकावाक्यहैं ॥ निंदि
तेति शूद्र और पापी इत्यादिउतें दानलैणा और शूद्रका कर्म करणा और शूद्रकी सेवा करणी
और झूठ बोलना एह एक भी कर्म कीता होआ अपात्री करण पाप होताहै ॥ अप्रति इत्या
दिपदोंकके इसी श्लोककाहि अर्थ कीताहै ॥ १ ॥ और याज्ञवल्क्यजीनें इसमें भेद कहाहै
॥ निंदीति ॥ निंदितादिउतें दान लैणा और शूद्रका कर्म करणा और व्याज कर्के जीवि
का करणी और झूठ बोलना और शूद्रकी सेवाकरणी एह अपात्री करण पाप कहेइयन
और इसमें पूर्वोक्तसे वृद्धि जीवन अधिकहै प्रायश्चित्त रत्नादिग्रंथोंमें मनु वालाहि अपात्री

अथापात्रीकरणम् तत्रमनुः ॥ निंदितेभ्योधनादानं वाणिज्यं शूद्रसेवनम्
अपात्रीकरणं ज्ञेयमसत्यस्य च भाषणम् । १ । अस्यार्थः अप्रतिग्राह्यधनेभ्यः
प्रतिग्रहो वाणिज्यं शूद्रस्य परिचर्या अनृताभिधानं इत्येतत्प्रत्येकमपात्री
करणं ज्ञेयम् ॥ याज्ञवल्क्येन तु निंदितेभ्योधनादानं वाणिज्यं कुसीदजीवन
मसत्यभाषणं शूद्रसेवनमित्यपात्रीकरणान्युक्तानि प्रायश्चित्त रत्नादौ मनु
क्रमेण अपात्रीकरणलक्षणम् ॥ विष्णुस्मृतौ तु याज्ञवल्क्यसमानम् ॥ अपा
त्रीकरणपापाय प्रायश्चित्तमाह मनुः । संकरापात्रकृत्या सुमासंशोधनमैन्द
वमिति ॥ निन्दितेभ्योधनादानमित्यादिना चापात्रीकरणान्युक्तानि तेषां म
ध्यादन्यतममिच्छातः कृत्वा चान्द्रायणमासं शुद्धये कुर्यादिति ॥ प्रायश्चित्त
मयूखे विष्णुः अपात्रीकरणं कृत्वा तप्तकृच्छ्रेण शुद्धयति

करण कथन कीताहै और विष्णुस्मृतिमें याज्ञवल्क्य वाला अपात्री करण कहाहै । अपात्रीकरण
पापके दूर करण वास्ते प्रायश्चित्तको मनुजी कहतेहैं संकरेति संकरी करण और अपात्री करण
पापों के विषे एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रत करे तदशुद्धिहोतीहै इसीके अभिप्रायको कहतेहैं निन्दि
तेभ्य इति निंदितेभ्य इत्यादि कर्के कहे जो अपात्री करण पापहै तिनके मध्यमे एक किसीने
इच्छानालकीताहोवे तां तिसकी शुद्धि वास्ते एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रतको करे ॥ प्रायश्चित्त
मयूख-विषे विष्णुजीने कहाहै ॥ अपेति अपात्री करणपापनू करनवाला तप्तकृच्छ्रनालशुद्ध होताहै

१८६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ९ ॥ टी० भा०

और शीतकृच्छ्र कर्के अथवा वारंवार महासांतपन व्रत करणेकर्के शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अज्ञानतः अपात्री करण पापके विषे तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्र करे ॥ ज्ञानके विषे पूर्व की न्याई महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत नू करे ॥ प्रायश्चित्त मयूखमें कहा है कि आपदाके विषे श्रेष्ठ शूद्रकी सेवादे कीतिआं भी प्रायश्चित्तके योग्य नहि होता ॥ एह भेद दिखाया है और प्रायश्चित्त दुशेखरमें भी लिखा है ॥ अज्ञेति ॥ अज्ञानतः अपात्री करण पापके विषे तप्तकृच्छ्र अथवा शीतकृच्छ्र नू करे ॥ जब जानकरके करे तब महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत पूर्वकी न्याई करे जब व्रतों मे ना सामर्थी होवे तब नवीन सूई होई गौकादान करे इसमें भी ना सामर्थी होवे तब सौ १०० कौडीका दानकरे और शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ और कहते हैं निंदितेभ्य इति पतितादिउतें दान लेणा और शूद्रका कर्म करणा और शूद्रकी

शीतकृच्छ्रेणवाभूयोमहासांतपनेनवा १ अज्ञानादपात्रीकरणेतप्तकृच्छ्रम
शीतकृच्छ्रंवा ज्ञानतोमहासांतपनं चांद्रायणंवापूर्ववत् । प्रायश्चित्तमयूखे
वापदिसच्छ्रद्रस्यकृतेऽपिसेवने प्रायश्चित्ताधिकारी न भवतीतिभेदोदार्श
तः । प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानादपात्रीकरणे तप्तकृच्छ्रम् शीतकृच्छ्रंवा ॥
ज्ञानतोमहासांतपनंचान्द्रपूर्ववत् तदशक्तौधेनुदानम् तदशक्तौचूर्णीदानं
दक्षिणायथाशक्ति ॥ निंदितेभ्योऽथनादानेवाणिज्येशूद्रेसेवने असत्यभाष
णेच सकृत्करणे चतुरहःसाध्यंतप्तकृच्छ्रंशीतकृच्छ्रं वा तदशक्तौसपाद
धेनुः तदभावेएकोनचत्वारिंशत्कार्पापणाः अभ्यासेमहासांतपनम् तदश
क्तौषड्धेनवः तदभावे अष्टादशकार्पापणाः यथाशक्तिदक्षिणा अत्य
न्ताभ्यासेचान्द्रायणम् तदशक्तौसार्द्धसप्तधेनवः तदभावेसार्द्धद्वाविंशति
कार्पापणाः । यथाशक्तिदक्षिणा ॥ इत्यपात्रीकरणानि ॥ ३ ॥ •

सेवाकरणी और झूठ बोलना इनके एक वार करणे में चार ४ दिनका तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्र करे इसमें ना सामर्थी होवे तब एक धेनुका चौथाईमुल्लऔर एक धेनुका दान करे इसमेंभी ना सामर्थी होवे तब उनताली ३९ कार्पापण दानदेवे अभ्यासके विषे महासांतपन व्रत करे इसमें ना सामर्थी होवे तब छे ६ धेनु दानकरे ॥ एभी ना होसके तब अठारं १८ कार्पापणदानकरे और शक्तिनाल दक्षिणा देवे ॥ और अत्यंतअभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे ॥ एभी ना होसके तब एक धेनु का आधा मुल्ल और सप्त ७ धेनु दान करे और एभी ना होसके तब साडे बाईस २२ कर्पापण दान करे और सामर्थी नाल दक्षिणा दान देवे एह अपात्री करण पाप समाप्त भये ॥ ३ ॥ • •

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० १० ॥ टी० भा० १८७

क्रम कर्के प्राप्त होआ जो मलावह पाप तिसकों मनुजी कहतेहैं ॥ कृमीति कीडिआं और कीडे और पक्षी इनांका मारणा और जो मदिराके साथ लिआंदा शाकादिहैं तिसका भक्षण करणा और फल और लकडीआं और पुष्प इनां का चुराणा और थोड़ी जहि हानि दे होआं होआं बहुत व्याकुलता होणी एह एक भी कर्म मलिनी करण पाप है ॥ १ ॥ कृमि पद कर्के छोटे कीडे ग्रहण करणे ॥ तिनांते कुछक वडे जोहयन सो कीट पद करके ग्रहण करणे(वयः) इसपद करके पक्षिग्रहणकरणे इनांका मारणा अर एहि अर्थ स्पष्ट

क्रमप्राप्तमलावहमाहमनुः ॥ कृमिकीटवयोहत्यामद्यानुगतभोजनम् फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्यैचमलावहम् ॥ १ ॥ कृमयःक्षुद्रजंतवःतेभ्यईपत्स्थूलाःकीटाः । वयांसिपक्षिणःतेषांहत्यावधःमद्यानुगतं शाकाद्येकत्रपिष्कादौकृत्वामद्येनसहानीतंयद्भोज्यंतस्यभोजनम् केचित्तु मद्यानुगतंमद्यसंस्पृष्टमित्याहुः प्रायश्चित्तसगौरवात्तदुपेक्ष्यम् ॥ फलकाष्ठपुष्पाणांचौर्यं देवतार्थपुष्पचौर्येनदोषः ॥ अल्पेऽपचयेप्यत्यंतवैकृत्यं एतत्प्रत्येकंमलिनीकरणम् याज्ञवल्क्येनतु जलचरपक्षिघातनमपिमलावहमुक्तम् इदमेवप्रायश्चित्तप्रकरणप्रायश्चित्तकदंवादौ वर्तते विष्णुस्मृत्यांच ॥

करो दाहै मद्येति मद्यानुगतं इस पद करके क्या लयणा कि मदिराके साथ एक टोकरे विआंदाजो शाकादि भक्ष्यहैं तिसका भक्षण करणा ॥ कैइक मद्यानुगतं इसपद कर्के मदिरा करके स्पर्श कीते होए कों ग्रहण करते हैं सो यथार्थ नहि क्योंकि उसमे प्रायश्चित्त बहुतहै ॥ इसमे इतनाभी अर्थ प्रकरणांतरका किहा होआ जानणा कि देवताके अर्थ पुष्प चुराणे का दोष नहि ॥ अर याज्ञवल्क्यजीने जल चर पक्षिका भी मारणा मलिनी करण पाप कहाहै ॥ एहि प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तकदंवा अर विष्णु स्मृति इत्यादिउमें भी लिखाहै ॥

मलावह पाप के प्रायश्चित्तको मनुजी कथन करते हैं ॥ मलिनीति मलिनी करण पापों के विषे जवां के काडे करके तीन ३ दिन तप्त रुच्छू करे इति ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं रुमीति रुमिकीट वयोहत्या इत्यादि कर्के कथन कीते जो मलिनी करण पाप हैं तिनके मध्यमें इच्छा नाल एक कौं भी कर्के तीन ३ दिन जवांके कोटेकों काहड कर्के भक्षण करे ॥ प्रायश्चित्त मयूख अर विष्णु स्मृति इनमें भी विष्णु जीका वाक्य है ॥ मलिनीति मलिनी करण पापोंके दूरकरणे वास्ते तप्त रुच्छू व्रत है अथवा रुच्छातिरुच्छू प्रायश्चित्त पापका शोधन वाला है ॥ १ ॥ इसमें अज्ञानते मलि

मलावह प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ मलिनी करणीयेषु तप्तः स्याद्यावकैस्त्र्यहम् ॥ रुमिकीटवयोहत्यादिनामलिनीकरणान्युक्तानि तन्मध्यादेकमपीच्छातः कृत्वा त्रिरात्रं यवागूकथितामश्नीयात् ॥ प्रायश्चित्तमयूखे विष्णुस्मृत्यांच विष्णुः ॥ मलिनी करणीयेषु तप्तकृच्छ्रविशोधनम् कृच्छातिकृच्छ्रमथवा प्रायश्चित्तविशोधनम् १ अत्राज्ञानाद्व्यहंयावकम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रं अज्ञानतोऽभ्यासे कृच्छातिकृच्छ्रम् ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानतो मलिनीकरणानुष्ठाने त्र्यहंतप्तयावकपानम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रः महासांतपनंवा अज्ञानतोऽभ्यासे कृच्छातिकृच्छ्रः ज्ञानतोऽभ्यासे द्विगुणम् ॥

नी करण विषे तीन ३ दिन जवां को भक्षण करे । जब जान कर्के पाप करे तब तप्त रुच्छू करे ॥ अर अज्ञानते अभ्यासमें रुच्छातिरुच्छू व्रत करे ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरमें भी लिखा है ॥ अज्ञानेति ॥ अज्ञानते कीता जो मलिनी करण है तिसके प्रायश्चित्ताऽनुष्ठानके विषे तीन ३ दिन जवांको काहड करके पान करे ॥ अर ज्ञानके विषे में तप्त रुच्छू अथवा महा सांतपन व्रत करे ॥ अर अज्ञानते अभ्यासके विषेमें रुच्छाति रुच्छू व्रत करे ॥ अर ज्ञानते अभ्यासके विषेमें दो २ रुच्छातिरुच्छू करणे चाहिए ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १० टी० भा० ॥ १८९

अर जब व्रत करणमें ना सामर्था होवे तब नवप्रसूता गौका दान करे ॥ इस्में भी ना सा
मर्था होवे तद सौ १०० कौडीका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ कृमि
और कीड़े और पक्षि इनके एक वार मारणेमें तीन ३ दिन जवांका जल भक्षण करे अर
मद्यानुगत द्रव्यके भोजनमे अर्थात् जिसवस्तुके साथ मदिराकापात्र ल्यांदाहै तिसवस्तुके भोज
नमे अर फल और काष्ठ और पुष्प इनके चुराणके अभ्यासमें तप्तकृच्छ्र व्रत करे ॥ इस्में
ना सामर्था होवे तब चार ४ नव प्रसूता गौआंका दानकरे इस्में भी ना शक्ति होवे तद बारां

प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम् तदशक्तौ चूर्णीदानम् यथाशक्ति दक्षिणा ॥ कृ
मिकीटपक्षिणां हनने सकृदाचरणे त्र्यहंयावकम् मद्यानुगतद्रव्यभोजने फ
लकाष्ठपुष्पाणां स्तेयेऽभ्यासे तप्तकृच्छ्रम् तदशक्तौ च तस्रो धेनवः तदभावे
द्वादशकार्पापणाः ॥ अधैर्येऽत्यंताभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् तदशक्तौ पंच
धेनवः तदभावे पंचदशकार्पापणाः यथाशक्ति दक्षिणा ॥ एतच्चतुष्ट
ये प्रायश्चित्तानुक्तौ तारतम्यं स्वयमूह्यम् ॥ इति मलावहानि ॥ ४ ॥ *



१२ कार्पापण दानकरे अर अधैर्यता जो पीछे कहीं है तिसके अत्यंताभ्यासमे क्या बहुवार करणे
मे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे ॥ अर व्रतमें ना शक्ति होवे तब पांच ५ धेनुका दान करे ॥
अर एभी ना कर सके तब पंदरां १५ कार्पापणका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षि
णा देवे ॥ इन चारों पापोंमें जहां प्रायश्चित्त नहि कहा तिस स्थानमें पापकी न्यूनता
अधिकता देख करके प्रायश्चित्त करणा ॥ एहमलावहनाम वाले पापोंका प्रायश्चित्त किहाहो
आ समाप्तहोया ॥ ४ ॥ * ॥

१९० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

अथेति मलिनीकरण पापते उपरंत क्रम करके प्राप्त होए जो प्रकीर्णक पापोंके प्रायश्चित्त हैं तिनको कहते हैं तिनके विषे मनुजी का वाक्य है अन्येति पूर्व कथन कीते जो पाप हैं तिन ते भिन्न संपूर्ण प्रकीर्णक पाप हैं तिसनू कथन करते हैं ॥ सो कहा है प्रायश्चित्त मुक्तावली के विषे नारदजीने राज्ञामिति राजओं की आज्ञाका अर तिस प्रकार तिनके कथित कर्म का न करणा और एकवार संकल्प कीती होई वस्तु का फेर संकल्प करणा और स्वामी और वजीर और मित्र और तोशे खाना और राज्य और किला और सेना और पुरके लोकोंकी आं पंक्तिआं इन की बुद्धिकी विपरीत ता होणी अर्थात् स्वोचित धर्म का परित्याग १ और वेदके प्रमाणनूना मन्नन वाला और नास्तिक और तरखाण अर लुहारादि दश संस्कार रहित ४ इनके संगते अधर्म

अथ क्रमोपस्थितानि प्रकीर्णकपापप्रायश्चित्तानि तत्रमनुः अन्यत्सर्वप्रकीर्णकमिति पूर्वभ्योऽन्यत् तत्तुवक्ष्यते तदुक्तं प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां नारदेन राज्ञामाज्ञाप्रतीघातस्तत्कर्मकरणंतथा पुनः प्रदानं संभेदः प्रकृतीनांतथैव च ॥ १ ॥ पापेऽपि नैगमश्रेणिगणधर्मविपर्ययाः पितापुत्रविवादश्च प्रायश्चित्तावपर्ययः ॥ २ ॥ प्रतिग्रहविलोपश्चकोपश्चाश्रमिणामपि वर्णसंकरदोषश्च तद्वृत्तिनियमस्तथा नदृष्ट्यत्तु पूर्वेषु सर्वतस्यात्प्रकीर्णकम् ॥ ३ ॥ पुनः प्रदानं दत्तस्यैव दानम् संभेदो वैमत्थ्यम् प्रकृतीनामित्यर्थः पापेऽपि नैवेदस्य प्रामाण्यमेव न मन्यमानाः सौगतादयः नैगमवेदस्यान्यप्रणीतत्वेनाप्रामाण्यवादिनः श्रेण्येकाशिल्पोपजीविनः गणो ब्राह्मणः एषां संबंधाद्धर्मविपर्ययोऽधर्मः ॥

होणा और पिता पुत्रका झगडा और प्रायश्चित्त का विपर्यय करणा अर्थात् चांद्रायण व्र के विषे छूछू करणा अर छूछूके विषे तप्त छूछू करणा इत्यादि विपर्यय करणा है । २। और दाननू चुककर फेर उसको लपालैणा और ब्रह्मचारी १ और गृहस्थी २ और बानप्रस्थी ३ और संन्यासी ४ इनके उपरवृथा क्रोध करणा और वर्ण संकर दोष और ब्राह्मणने क्षत्रियादिओंके कर्म करके उपजीविका करणी और बड़ोंके विषे नही देखिआ जो कर्म है तिसका करणा एह संपूर्ण प्रकीर्णक पाप कहा है ॥ ३ ॥ पुनः प्रदानं इत्यादि पदों करके इनो श्लोकोंका हि अर्थ स्पष्ट कीता है इन संपूर्णोंका प्रायश्चित्त साधारण प्रकरणमें देखलैणा ॥ और जो इसमें विशेष आवेगा सो किहा जायेगा ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ११ टी० भा० ॥ १९१

और प्रकार कथन करते हैं ॥ तिसके विषे याज्ञवल्क्य जीका वाक्य है ॥ प्राणेति गर्दभ
१ और ऊट २ इन करके युक्त जो बग्गी आदिक है तिसके उपर चढ़ करके जो
पुरुष जाता है और तंगा जो स्नान करता है और धोती ना लाकर जो पुरुष अन्न
खांदा है और दिने अपना स्त्रीके साथ मैथुन करता है सो पुरुष तला और नदी आदि
उंकेविषे स्नान नूँ करके पश्चात् प्राणायामकों करे तो शुद्ध होता है ॥ १ ॥ एह इच्छाके विषयमें
जानना इसी विषयमें मनुजी का वाक्य है उष्टेति ऊट और गर्दभ करके युक्त जो असवारी है
तिस उपर इच्छा से जो आरूढ होता है सो पुरुष सहित बस्त्रोंके जलविषे स्नान करके पश्चात्

प्रायश्चित्तविपर्ययो व्यत्ययेन चांद्रेरुच्छकरणं कृच्छ्रे तप्तकृच्छ्रमित्यादि
प्रतिग्रहविलोपोऽगृहीतप्रतिग्रहसंगोपनम् तद्वृत्तिनियमो वर्णसंकरवृत्तिः
क्षत्रियादिवृत्तिस्तयानापद्यपि जीवनम् ॥ एषां प्रायश्चित्तं साधारणप्रकरणे
द्रष्टव्यम् विशेषस्तूच्यते) * तत्र याज्ञवल्क्यः प्राणायामीजलेस्नात्वा खर
यानोऽष्टयानगः नग्नः स्नात्वा च भुत्काच गत्वा चैवादिवास्त्रियम् १ ॥ अस्यार्थः
खरयुक्तं यानं खरयानम् उष्ट्रयुक्तं यानमुष्ट्रयानम् रथगंयादि तेनाध्यगम
नं कृत्वा दिगंवरः स्नात्वाऽभ्यवहत्यवा वासेरच निजांगनासंभोगं कृत्वा च
तडागत रंगिण्यादाववगाह्यकृतप्राणायामः शुद्ध्यति ॥ इदं च कामकारविषय
म् उष्ट्रयानं समारुह्य खरयानं तु कामतः सवासाजलमाप्नुत्य प्राणायामेन शु
द्ध्यतीति मनुस्मरणात् अकामतः स्नानमात्रं कल्प्यम् साक्षात् खरारोहणे
तु द्विगुणावृत्तिः कल्पनीया तस्य गुरुत्वात् ॥ १ ॥ विष्णुरपि ॥ उष्ट्रेण वाग
त्वानग्नः स्नात्वा भुत्काच प्राणायामं कुर्यादिति ॥ साक्षात् खरोऽष्टारोहणे यमः
खरयानमुष्ट्रयानं वा धिरोहेद् द्विजोत्तमः अपोवा प्रविशेन्नग्नस्त्रिरात्रं क्षप
णं स्मृतमिति प्रायश्चित्तमयूखः ॥ १ ॥

प्राणायामके करणे करके शुद्ध होता है और अकामके विषयमें केवल स्नाना है कहा है साक्षात् गर्द
भ उपर आरूढ होनेमें दो २ बार स्नान और प्राणायाम करणा चाहिए क्यों कि इसको बड़ा पाप
होणेतें ॥ १ ॥ विष्णु जीका भी कथन है ऊटके उपर चढ़कर और नग्न होकर स्नान करके
और नग्न होकर अन्न खा करके प्राणायाम नूँ करे इति ॥ साक्षात् ऊट और गर्दभके विषे
प्रायश्चित्त मयूखमें यमजीने कहा है खरेति गर्दभ और ऊट इन करके युक्त जो असवारी है तिस
उपर अथवा साक्षात् गर्दभ और ऊट उपर जो आरूढ होता है और नग्न जो स्नान करता है
तिस पुरुषकी शुद्धिके वास्ते तीन रात्रि उपवास लिखा है ॥ १ ॥

१९२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा ॥

गुरुमिति पिता और ताउ और चाचू इत्यादिआं कों झिडक करके अर्थात् तूहि कैंदाथा अर तैनेहि एह कीता इस प्रकार एक वचन उच्चारण करणे करके झिडक कर के और ब्राह्मण और बडाभाता और छोटाभाता इनानुंभी क्रोधसे झिडक करके अर्थात् तू चुप करके बैठ मत बोल इसप्रकार झिडक करके और झगडे से अथवा हासेसे ब्राह्मणनूं जित करके अर वस्त्र करके थोडा जिआभी गलकें विषे बांधे तब उसके चरणानूं पकडकर क्रोधनूं त्यागकरा करके एकदिन उपवासकरे १ । गुरुं जनकादिकं इत्यादि पदोंमे इस काहि अर्थहै ॥ जो यमजीनेकहाहै वादेनेति ब्राह्मणनूं झगडेसे जित करके प्रायश्चित्तकी इच्छा

गुरुं हुंकृत्य तु कृत्यविप्रं निर्जित्य वा दत्तः वद्ध्वा वा वाससाक्षिप्रं प्रसाद्योपवसेद्वि नम् ॥ १ ॥ गुरुं जनकादिकं तु कृत्यत्वमेवमात्थ त्वयैव कृतमित्येकवचनांतयुष्म च्छब्दोच्चारणेन निर्भर्त्स्य विप्रं वा ज्यायांसं समंकनीयांसं वा सक्रोधं हुंतूष्णीं मास्व हुं मावहुवादीरित्येवमाक्षिप्य जल्पवितंढाभ्यां जयफलाभ्यां विप्रं निर्जित्य कंठे वाससा मृदुस्पर्शनापि वद्ध्वा क्षिप्रं पादप्रणिपातादिना प्रसाद्य क्रोधं त्याज्यित्वा दिनमुपवसेत् अनश्नन्कृत्स्नं वासरं नयेत् । यत्तु यमेनोक्तम् वादेन ब्राह्मणं जित्वा प्रायश्चित्तविधित्सया त्रिरात्रोपोषितः स्नात्वा प्रणिपत्य प्रसादयेदिति ॥ १ ॥ तदभ्यासविषमः मनुः ॥ हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारं च गरीयसः स्नात्वा नश्नन्नहःशेषमभिवाद्य प्रसादयेत् १ ताडयित्वा तृणेनापि कण्ठे चावध्यवाससा विवादे वा विनिर्जित्य प्रणिपत्य प्रसादयेत् २ अर्थः हुंतूष्णीं स्थायतामित्याक्षेपं ब्राह्मणस्य कृत्वा विद्यादिनाधिकस्य त्वंकारं चोक्त्वा अभिवादनकालादारभ्याहःशेषं यावत्स्नात्वा भोजनानिवृत्तः पादोपग्रहणेनापगतकोपं कुर्यादिति ॥

करके तीन १ रात्रि उपवास रखकर स्नान करके ब्राह्मणके चरणानूं पगड करके प्रसन्नकरे १ ॥ एह अभ्यासका विषयहै अर्थात् बहुतवार पाप करणेमे प्रायश्चित्तहै ॥ मनुजीका भी वाक्यहै हुमिति तूं चुप करके बैठ इसप्रकार ब्राह्मणकों झिडककर कहे अर तूहि कैंदाहैं तैनेहि कीताहै इसप्रकार विद्या करके अधिकनूं झिडक करके अर नमस्कार और स्नान इनानुं करके तिससे लैकर रैंदा जेडा दिनहै तिसके विषे ब्राह्मणके चरणोंकों पगड करके प्रसन्नकरे । १ । अर जब तृणभी ब्राह्मणको मारे अर गल विषे वस्त्रपाए अर झगडे करके जिते तौभी चरणों पगड करके प्रसन्नकरे अर्थः इत्यादि पदोंसे इसीका अर्थ स्पष्टकीताहै ॥ २ ॥

॥ कुशक और कहतेहैं ॥ विप्रैति ॥ ब्राह्मणकों मारणदी इच्छा करके सोटा उग्रणे में कृच्छ्र व्रत और डंडा मारणमें अति कृच्छ्र और रुधिर निकालनेमें कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ और मारणे करके अंदर रुधिर पाएमें भी कृच्छ्र व्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ विप्रजिघांसया इस्यादि पदोंमें इसीश्लोककाहि अर्थहै ॥ बृहस्पतिजीने इसमें विशेष कहाहै ॥ काष्ठेति काष्ठादिके मारण करके त्वचा छेदन करे तब कृच्छ्र व्रतनू शुद्धिके वास्ते करे और जब पाषाणादि मार करके हड्डी भस्म देवे तब अतिकृच्छ्र व्रतनू करे और अंग छेदनमें पराकव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ यमजीकाकथनहै ॥ पादेनेति चरणकरके ब्राह्मणनू स्पर्शकरे तब प्रायश्चित्तके विधानकी इच्छा करके दिनके विषे उपवास करे और स्नान करे ब्राह्मणनू चरणतें पकड़ कर प्रसन्नकरे ॥ १ ॥ एह सानुबंध विषयमेंहै अर्थात् अनुबंध साधजो

किंच विप्रदंडोद्यमेकृच्छ्रस्त्वतिकृच्छ्रोनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृकपाते कृच्छ्रोभ्यंतरशोणितइति १ विप्रजिघांसयादंडोद्यमेकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः निपातनेताडनेअतिकृच्छ्रः रुधिरस्त्रवणेकृच्छ्रातिकृच्छ्रः ताडनादिनाअभ्यंतरशोणितेपिकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः ॥ बृहस्पतिनाप्यत्रविशेषउक्तः ॥ काष्ठादिना ताडयित्वात्वग्भेदेकृच्छ्रमाचरेत् अस्थिभेदेऽतिकृच्छ्रःस्यात्पराकस्त्वंगकर्त्तने १ यमः ॥ पादेनब्राह्मणंस्पृष्टाप्रायश्चित्तविधित्सया दिवसोपोषितः स्नात्वाप्रणिपत्यप्रसादयेत् १ सानुबंधेएतत्अनुबंधश्चवाचाधर्षणम् इच्छा पूर्वकदोषकरणमनुबंधइतिशब्दार्थचिंतामणिः ॥ तथा ॥ अवाच्यंब्राह्मणस्योक्ताप्रायश्चित्तंविधीयते कृच्छ्रातिकृच्छ्रकृत्वातुप्रणिपत्यप्रसादयेत् १ ॥ एतत्तुपीडातिशयऽनुबंधातिशयेच आक्रोशमनृतंहिसामनुबंधसमाचरेत् एकरात्रत्रिरात्रवापट्त्रात्रवाविधीयते ॥ २ ॥

पाद स्पर्शहै तिस विषे जानणा अनुबंध क्या धाणी करके जो निरादर करणा तिसका नामहै इच्छा सें जो दोष करणाहै तिसका नाम अनुबंधहै एह शब्दार्थ चिंतामणिमें लिखा है ॥ तिस प्रकार औरभी कहतेहैं अवेति ब्राह्मणकों खोटा वचन कहके प्रायश्चित्तनू करे क्या कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रतनू करके चरणोंतें पकड़ कर ब्राह्मणकों प्रसन्न करे ॥ १ ॥ एहअतिशयकरके पीडा और अतिशय कर्के अनुबंधके विषे जानणा ॥ अब और कथन करतेहैं आक्रोश मिति ब्राह्मण और गुरु और वृद्ध और सिद्ध इनको झूठी चोरी लगाणी और झूठा कथन करणा और हिंसा और इच्छा सें व्यभिचारादि अपराध करणा इनानू आचरण करके एकरात्र अथवा तनि ३ रात्र अथवा छे ६ रात्र उपवासकरे ॥ २

मनुजीका वाक्यहै ॥ विनेति जलतें बिना अथवा जलके मध्यमें जो पुरुष मूत्र और विष्ठा नूं करता है सो ग्रामतें बाहर जाकर सहित वस्त्रों के नद्यादिमें स्नान करके पीछे से गौन स्पर्श करके शुद्ध होता है १ ॥ एह बिना कामना से जो पाप है तिसका विषय है । असन्निहित इत्यादि पदों में इस श्लोक का हि अर्थ है अब कामना के विषय में कहते हैं आपेति आपदा के विषे जो पुरुष जलतें बिना मूत्र और पुरीष कों करदा है अर्थात् जलतें बिना पिशाव और दिशा बैठदा है सो एक दिन उपवास नूं कर्के पश्चात् समेत वस्त्रादे जल विषे स्नान करे एह यमजीका कथन जानना ॥ १ ॥ अनापदा के विषे इसतें दूणा करे ॥ जो सुमंतुजीका वाक्य है कि जला के मध्यमें और अग्नि के विषे मूत्र और पुरीष कों जो पुरुष त्यागता है तिसको तत्कच्छ्र व्रत करणा चाहिए ॥ एह सुख वाले पुरुषका और अभ्यासका विषय है । अनभ्यास के विषे शंख और लिखित जो कहते हैं रेत इति

मनुः ॥ विनाङ्गिरप्सुवाप्यन्तः शरीरं सन्निषेव्यतु सचैलो वहिरालुत्यगामा लभ्य विशुध्यति १ असन्निहित जल जल मध्ये वा शरीरं मूत्र पुरीषादिकं कृत्वा सवासा वहिर्ग्रामाद् नद्यादौ स्नात्वा गां च स्पृष्ट्वा शुध्यति । इदम कामतः कामतस्तु आपद्गतो विना तोयं शरीरं यो निषेवते एकाहं क्षपणं कृत्वा सचैलो जलमाविशेदिति यमोक्तं वेदितव्यम् अनापदितु द्विगुणम् यत्तु सुमंतुवचन म् अप्सवशौ वामे हतस्तत्कच्छ्रमिति तदनार्त्तविषयमभ्यासविषयं वा अनेभ्यासेतु शंखलिखितौ रेतो मूत्र पुरीषाण्युदके कृत्वा त्रिरात्रोपोषित इदमापः प्रवहतेत्युचं जपेत् यमः अटव्यामटमानस्य ब्राह्मणस्य विशेषतः प्रणष्टसलिले देशे कथं शुद्धिर्विधीयते ॥ १ ॥ अपो हृष्टवैव विप्रस्तु कुर्याच्छौचं सचैलकम् ॥ गायत्र्यष्टशतं जप्य स्नानमेतत्परं भवेत् ॥ २ ॥ देशं कालं समासाद्यानावस्था मात्मनस्तथा धर्मशौचं संतिष्ठेन्न कुर्यान्वेगधारणम् ॥ ३ ॥ वेगो मलवेगः

जो पुरुष वीर्य और मूत्र और पुरीष इनानु जलके विषे त्यागता है सो पुरुष तानि १ रात्र उपवास नूं रक्ष कर इदमाप प्रवहत इस ऋचा कों एकवार अथवा १० वार जपे यमजीका वाक्य है (प्रण) अटव्यामिति वनके विषे गमन करदा होत्रा सुचेत होणेकी इच्छावाला जो ब्राह्मण है जलतें रहित देशके विषे तिसकी किस प्रकार शुद्धि विधान कीति है ॥ १ ॥ (उत्तर) तिसकी शुद्धि कहते हैं ॥ अपडतिसो ब्राह्मण जल नूं देख कर्के सहित वस्त्रादे शुद्धि नूं करे पश्चात् एक सौ आठ १०८ वार गायत्रीको जपे एह ऋम स्नान होता है ॥ २ ॥ देशमिति देश और काल और अपनी अनवस्था कों प्राप्त होकरके धर्म और शुद्धि नूं जैसा देखे तैसा कर लेवे और मलके वेग नूं कदेभी ना धारण करे क्यों कि मलका वेग सहारणे से रोगकी उत्पत्ति हो जाती है ॥ ३

नित्यकर्मके नाशके विषे मनु जी प्रायश्चित्त कथन करते हैं ॥ वेदविति वेदके विषे विधान कीते जो संध्यावन्दन अग्नि हवनादि नित्य कर्म हैं तिनके और मनुस्मृतिके चौथे ४ अध्यायमें कथन कीते जो स्नातक व्रत हैं तिनके नाशहोत्रां होत्रां एक १ उपवास व्रत कोंकरे ॥१॥ वेद विहित इत्यादि पदों के इसी श्लोक का हि अर्थ स्पष्ट कीता है ॥ इसी विषे में बृहस्पति जी का भी वाक्य है ॥ अनीति पाठ १ और होम २ अतिथि पूजन ३ और तर्पण ४ और वैश्वदेववालि ५ इना पंचमहायज्ञांको न कर्के रोगादिते रहित होत्रा होत्रा और धनके भी होत्रा होत्रा जो गृहस्थी पुरुष अन्नका भक्षण करदा है सो आषे छच्छ व्रत कर्के शुद्ध होता है ॥१॥ आहितेति अग्नि होत्री जो पुरुष अष्टमी १ और द्वादशी २ और अमावास्या ३ और पौर्णमासी ४ और सूर्य संक्रांति ५ इन पंचपर्वोंके विषे होम नूँ नहि करदा

नित्यकर्मलोपेतुमनुः ॥ वेदादितानां नित्यानां कर्मणां समातिक्रमे स्नातक व्रतलोपे च प्रायश्चित्तमभोजनम् ॥१॥ वेदविहितकर्मणामग्निहोत्रादीनामनुपदिष्टप्रायश्चित्तविशेषाणां च परिलोपे मनुचतुर्थ्याध्यायोक्तानां स्नातकव्रतानां च लोप जाते एकाहोपवासं व्रतं कुर्यात् ॥ बृहस्पतिः ॥ अनिर्वर्त्यमहायज्ञान्यो भुंक्ते प्रत्यहं गृही अनातुरः सति धने कृच्छाद्धेनसशुद्ध्यति ॥१॥ आहितेति अग्निहोत्रादीनां न कुर्याद्यस्तुपर्वणि ऋतौ न गच्छेद्वायः सोपि कृच्छाद्धेनमाचरेदिति ॥२॥ स्नातकव्रतमधिकृत्य क्रतुनाप्युक्तम् ॥ एतेषामाचाराणामेकैकस्य व्यतिक्रमे गायत्र्यष्टशतं जप्त्वा पूतो भवति ॥ अत्र विशेषोऽग्रे बोध्यः । ऋष्यशृंगः ॥ इन्द्रचापं पलाशाग्निं यद्यन्यस्य प्रदर्शयेत् प्रायश्चित्तमहोरात्रं धनुर्दंडश्च दक्षिणेति ॥१॥ इन्द्रचापं मेघांतरीयः अकस्मात्पलाशे पुपत्रे पुजातो योऽग्निः स पलाशाग्निः इन्द्रचापप्रदर्शने धनुर्दक्षिणा पलाशाग्निप्रदर्शने दंड इति

और जो पुरुष ऋतुकालके विषे अपनी स्त्रीमें गमन नहि करदा सो भी अद्वंद्व व्रत नूँ करे ॥ २ स्नातक व्रतकों अधिकार करके ऋतुजीने भी कहा है ॥ एतद्विति इनां कर्मों के मध्यमें एकके भी व्यतिक्रमके विषय अर्थात् नाशदे होत्रां होत्रां गायत्रीको एकसौ आठ बार १०८ जप करके पवित्र होता है ॥ इसके विषय अधिक कहना है सो आगे जाणलैणा ऋष्यशृंग जी का वाक्य है मेघ वर्षणतें पीछे जो आकाशके विषे इन्द्रका धनुष पडता है तिसकों और पत्रोंके विचस्वभावक उत्पन्न होत्रा जो अग्नि है तिसकों जद औरी पुरुषकों दखावे तब एक दिन रात्र उपवास करे और धनुष और दंड एह दक्षिणा देवे अर्थात् इन्द्रचाप दखाणेमें धनुष दक्षिणा और पलाश अग्नि दखाणेमें दंडा दक्षिणा ॥ १ ॥

१ ९६ ॥ श्रीरणी कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

शंखऋषिका वचनहै अध्येति ॥ पलाशवृक्षकी खट्ट और गाडी और पौये और दातन इनाकों प्राप्तहोकरके ब्राह्मण और क्षत्रि और वैश्य तीन ३ रात्र उपवास व्रतकरे । १ । अब क्षत्रीकों युद्ध के विषय नसनेका दोष कहतेहैं क्षत्रोति क्षत्रीजो युद्धके विषय मृत्युतें डरता होआ नरसआवे और फलवाले वृक्षकों जो काटताहै सो पुरुष एक वर्षपर्यंत व्रतकोंकरे इसमें यावक व्रतग्रहण करणा अर्थात् यव भक्षणकरणे पूर्वोक्त शंखजीके वाक्यतें । २ । दो ब्राह्मणाआदिके वाचलंघने का दोष कहतेहैं ॥ द्वाविति दो ब्राह्मण १ ब्राह्मण और अग्नि २ और स्त्री और पति ३ और गौ और बैल ४ इनके मध्यमे जबपुरुष लंघे तब सांतपन कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ इसी विषयमें जो अंगिरा ऋषिका वाक्यहै ॥ दंपती स्त्री और भर्ता और दो ब्राह्मण

शंखः ॥ अध्यास्यशयनंयानंपादुकादन्तधावनम् द्विजःपलाशवृक्षस्यत्रि रात्रंतुव्रतीभवेत् । १ । क्षत्रियस्तुरणेष्टुदत्वाप्राणपरायणः । संवत्सरंव्रतंकुर्व्या च्छित्त्वावृक्षफलप्रदम् । २ । व्रतमत्रयावकंशंखोक्तत्वात् । ॥ । द्वौविप्रौब्राह्मणा ग्रीचदंपतीगोवृषौतथा अन्तरेणयदागच्छेत्कृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ ३ ॥ यत्वं गिराः दंपत्योर्विप्रयोरग्न्योर्विप्राग्न्योर्व्याद्विजातिषु अंतरंयोऽवगच्छेत्तुद्विजश्चान्द्रायणंचरेदित्येतत्कामकारविषयमभ्यासविषयंच ॥ होमकालेतथादोहे स्वाध्यायेदारसंग्रहे । अन्तरेणयदागच्छेद्द्विजश्चान्द्रायणंचरेत् । २ । एतच्च मार्गान्तरसंभवेसतिद्रष्टव्यम् दोहे सान्नाय्यांगभूते ॥

२ दो अग्निआ ३ और ब्राह्मण और अग्नि ४ इनकेमध्यमे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य जो लंघता है सो पुरुष शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकोंकरे । १ । एहकाम और अभ्यास का विषयहै ॥ अब और कथन करतेहैं । होमेति होम कालके विषय तिसप्रकार गौके दोहन समयमें और अध्ययन समयमें और विवाह समयमें ब्राह्मण और क्षत्रि अथवा वैश्य जद मध्यमें लंघताहै सो शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकोंकरे एहदोष दूसरे मार्गके होआहोआ जानणा जेकर और मार्ग नहोवे तब इसका दोषनहि जानणा इसजगा जो दोहनहै सो सान्नाय्यांग रूपजो यज्ञ कर्म तिसके अर्थवाले दोहनमे जानणा ॥ २ ॥

॥ श्रीरूपवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र-११ टी. भा- ॥ १९७

जलते विना मूत्र और पुरीष करणमें सुमंतुका भी वाक्य है अनुदेति जलते विना मूत्र और पुरीष इनके त्यागनेके विषय और नख और बाल और रुधिर इनके भक्षण करणमें तात्काल स्नान करे और घृत और कुशा और स्वर्ण इनका जल पानकरे इसमें घृतादि पानकों प्रायश्चित्तके अर्थ हो ऐतें भोजन भक्षण न करणा किंतु उसीको भोजनके ध्यानसमझना यत्त्विति जो मूत्र और पुरीष इनके कीर्तिश्रां जड़ जल न होवे तब जलको प्राप्त हो करके सहित वस्त्रादि स्नान करके पी छेते शुद्ध होता है इह वाक्य है ॥ १ ॥ और जो शातातपका वाक्य है अनुदेति जलते विना मूत्र और पुरीष करणमें सहित वस्त्रांके स्नानकरे और सप्त महाव्याहृतिश्रां करके हवन करे एह

अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सुमंतुरपि अनुदकमूत्रपुरीषकरणेनखकेशरुधिरप्राशने सद्यःस्नानं घृतकुशहिरण्योदकपानंचेति अत्र घृतादिपानस्य प्रायश्चित्तार्थत्वाद्भोजननिषेधः यत्तु कृते मूत्रे पुरीषे वा यदानैवोदकं भवेत् स्नात्वा लब्धोदकं पश्चात्सचैलस्तु विशुद्धयतीति १ यच्च शातातपः अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सचैलं स्नानं महाव्याहृति होमश्चेति तदकामतः तथा नोदन्वतो भसिस्त्रायान्नचक्ष्मश्चादिकर्तयेत् अतर्वत्न्याः पतिः कुर्वन्नप्रजो भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥ अयंच निषेधः सप्तममासादूर्ध्वम् तथाच त्रिस्थली सेतौ वचनम् वपनं मैथुनं तीर्थं वज्रयेद्गुर्विणी पतिः श्राद्धं च सप्तमान्मासादूर्ध्वनाऽन्यत्र वेदा विदिति ॥ १

वाक्य अकामके विषयमे जानने ॥ तिस प्रकार गर्भवाली स्त्रीके पतिको समुद्र स्नानादिका निषेध करते हैं नविति गर्भवाली स्त्रीका पति समुद्रके जलविषय स्नान न करे और दाडी आदिके बालानु भी न कटावे जो कदाचित् एह काम करे तब निश्चय करके संतानतें रहित होता है एह निषेध सप्तम मासते उपरंत जानना सप्तम मासतें उर इनका दोष नहि जानना १ ॥ तिस प्रकार त्रिस्थली सेतुमें भी किसेका वचन लिखा है वपनमिति गर्भवाली स्त्रीका पति वेदके जानने वाला सप्तम मासतें उपरंत मुंडन और मैथुन और तीर्थयात्रा और श्राद्धका भोजन इनानु नसेवे १

इस विषय साधारण प्रायश्चित्त जोड़ने योग्य है तैसें देखाते हैं ॥ प्राणेति इसजगा में सा अर्थ करणाकि उपपातक जिनोतें उत्पन्न होतेहैं जैसे अवगूणादिते गोवध रूप उपापतक उत्पन्न होताहै ऐसे सभपापांके दूरकरणे वास्ते और अनादिष्टजोपाप हैं (नोदन्वर्तोभ सिक्तायात्) इत्यादिश्लोकांकके कहेहोए तिन सवना पापांके दूरकरणे वास्ते १०० प्राणा यामकिहाहै सर्व शब्दका अन्यइस रीतिसें लगाणा यथा भुत नहि लगाणा क्योंकि १०० प्राणायामसे सारे पाप नहि दूरहो सके ॥१॥ याज्ञवल्क्यजीका वाक्य कथनकरतेहैं देशमिति देश

श्राद्धश्राद्धभोजनमित्यर्थः अत्र सामान्यप्रायश्चित्तं योज्यम् तद्यथा प्राणायामशतं कार्यं सर्वपापापनुत्तये उपपातकजातानामनादिष्टस्य चैव हीति ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः देशकालं वयः शक्तिं पापंचावेक्ष्य यत्नतः प्रायश्चित्तं प्रकल्प्य स्याद्यस्य चोक्तानि निष्कृतिरिति १ ॥ मनुः ॥ शरणागतं परित्यज्य वेदं विस्त्राज्य च द्विजः संवत्सरं यवाहारस्तत्पापमपसेधति ॥ १ ॥ अर्थः ॥ परित्राणार्थमुपगतं शरणागतं शक्तः सन्नुपेक्षते यो द्विजः अनध्याप्य वेदमध्याप्य एतज्जनितं पापं संवत्सरं निरंतरं यवाहारोऽपनुदति उपपातकानि गोवधादीनि जातानि भ्योऽवगूणादिभ्यस्तानि तेषां च पुनरनादिष्टस्य नोदन्वर्तोभसि स्त्रायादित्यादिना कथितं सर्वपापापनुत्तये प्राणायामशतं कार्यमित्यर्थः

और काल और आयुषा और बल और पाप इनानू देखकरके यत्ननाल प्रायश्चित्त कल्पना करना चाहिए अरजिसपापका प्रायश्चित्त नहिकहा तिसका भी यथा योग्य प्रायश्चित्त कल्पना करना चाहिए ॥ १ ॥ आगे मनुजीका वाक्यहै ॥ शरेति रक्षाके अर्थ वास्ते शरणी आनपडा जो पुरुषहै तिसनू जो समर्थ होआ पुरुष त्याग देताहै और वेदनू आप ना पड करके जो पुरुष दूसरे नू भडाताहै सो पुरुष एक १ वर्ष पर्यंत यवानू भक्षण करदा होआ तिस पापनू दूर करताहै अर्थः इत्यादि पदों कर्के इसी लोक का हि अर्थ कीताहै ॥ १ ॥

षट्त्रिंशत्के मतविषय यमजीका वाक्य है ॥ चांडालेति वेद और मन्वादिस्मृति इनके पाठ नूं चांडाल श्रवण कर लेवे तब पाठ करनेवाला पुरुष एकरात्र उपवास व्रत करे ॥ बसिष्ठजी कहते हैं ॥ पतितेति ॥ पापी और चंडाल और धूर्त इनके समीप जानकरके जो वेद पठे तब तीन ३ रात्र उपवास करें वाणनिर्गोक करके स्थित होण भोजन नूं न भक्षण कर दे होए स्थित होण अथवा जितनाक पाठ चांडालादियोंने श्रवण कीता है तितने पाठ नूं हजार १००० बार जपें तद पवित्र होते हैं ॥ शठश्रावणं इत्यादिपदोंमें एहि अर्थ है ॥ सर्पदि के मध्यमें गमन करणोंमें यमजी

षट्त्रिंशन्मते ॥ यमः ॥ चांडालश्रोत्रावकाशे श्रुतिस्मृतिपाठे एकरात्रमभौ जनमिति बुद्धिकृते तु वसिष्ठः ॥ पतितचांडालशठश्रावणे त्रिरात्रम् वा ग्यता अनश्रंत आसरिन् सहस्रपरंवा तदभस्यन्तः पूता भवन्तीति विज्ञायते शठश्रावणं शठसन्निधावध्ययनम् सहस्रपरमितियावान्भागश्चांडालादिभिः श्रुतस्तावंतं भागं सहस्रकृत्वोजपेदित्यर्थः ॥ सर्पादेरंतरागमने तु यमः आह ॥ सर्पस्य नकुलस्याथ अजमार्जारयोस्तथा मूषकस्य तथा ष्टस्य मंडूकस्य च योषितः १ पुरुषस्यैडकस्यापिशुनोऽश्वस्य खरस्य च अन्तरागमने सद्यः प्रायश्चित्तमिदं शृणु त्रिरात्रं ह्युपवासश्चात्रिरहश्चाभिषेचनामिति २

किसेके प्रति कहते हैं ॥ सर्पेति सर्प और नेउल ॥ और वकरा और विट्ठा ॥ और तिसी प्रकार चूह और तिसी प्रकार ऊठ ॥ और डिड्डू और स्त्री ॥ १ ॥ और पुरुष और भिड्डू और कुत्ता और घोडा अथवा गधा इनके मध्यमें लंघनके विषय तात्काल प्रायश्चित्त नूं श्रवण कर क्यकि तीन रात्र उपवास अर तीन दिन तिन्नां कालांके विषय स्नान करणा २ ॥ इस विषयमें भी दोष और किसी मार्गके विद्यमान होआं जानना जेकर और मार्ग न होवे तां इनके मध्यमें लंघने का दोष नहि ॥

२०० ॥ श्रीरत्नावीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

प्रकीर्णैति प्रकीर्णक प्रायश्चित्त करणमे जद समर्थ न होवे तद नवीन सूई होई एक गौका दानकरे जब इसमें भी समर्थ न होवे तब एक सौ १०० कौडी दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे ॥ अपणी स्त्रीको मिथ्यादोषारोपणके विषय यम जीका वाक्यहै स्वभायांमिति तूं नहि नैथुन करणेके योग्य ऐसे जद पुरुष अपणी स्त्रीको क्रोधतें कथन करे तद ब्राह्मण प्राजापत्य व्रत को करे अर क्षत्री नौ १ दिन व्रत करे अर वैश्य छे ६ रात्र व्रत करे अर शूद्र तीन ३ रात्र व्रत करे ॥ १ ॥ स्नानतें विना भोजनादिके विषय हारीतजी कथन

एतदपिमार्गीतेरसंभवेसतिज्ञेयम्) प्रकीर्णकप्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम् ॥ तदशक्तौचूर्णीदानम् ॥ कपर्दिकाशतंचूर्णी यथाशक्ति दक्षिणा स्वभार्याभिशंसनेतुयमः ॥ स्वभार्यातुयदाक्रोधादगम्येतिनरोवदेत् प्राजापत्यंचरेद्विप्रःक्षत्रियोदिवसान्नव षड्रात्रंतुचरेद्वैश्यस्त्रिरात्रंशूद्रश्चाचरेत् ॥ १ ॥ अस्नातेभोजनादौ हारीतआह ॥ वहन्कमंडलुं रिक्तमस्नातोऽभ्रंश्चभोजनम् अहोरात्रेणशुद्धःस्याद्दिनजप्येनचैवहीति ॥ १ ॥ एतच्चा रोगिस्नाने क्लेशदायिस्थानविशेषादिस्नानव्यतिरिक्तेद्रष्टव्यम् एकपंक्त्युपविष्टानांस्नेहादिना वैपम्येण दानादौ यमआह ॥

करतेहैं वहेति ॥ सरखणे लोटे नू धारदाहोआ और स्नानतें विना जो पुरुष भोजन भक्षण करदाहै सो एक दिनरात्र उपवास करणे करके अर दिनके विषय जपे करणे करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त अरोगि स्नान विषे और कष्टदे देणे वालाजो पर्वतादिहै तिसतें विनाग्रहण करणा अर्थात् रोगी पुरुषको और वरफादि करके युक्तजो स्थानहै उसके विषय दोष नहि ॥ एक पंक्तिके विषे बैठे होए जो पुरुष हैं तिनको न्यून अधिक घृतादि देणके विषय यमजी दोष कहतेहै ॥

नेति एकपत्तिके विषे भेदकरके न देवे अर न मांगे अर नकिसीको दुबाए क्यो कि मांगने वाला अर दुबाएवाला अर देणे वाला एह स्वर्गको नहि प्राप्तहोते अर्थात् नरकको प्राप्त होते हैं और प्राजापत्य अथवा कच्छ व्रतको करके तिसकर्मते शुद्धहोतेहैं ॥१॥ इसस्थानमें विषम क्या न्यूनताअधिकता भोजनखानवालिआंकी इच्छादे होआं होआं जाननी अर्थात् भोजन खाण वालेकी इच्छाहोवे अर वो न देवे तद दोषहै जेकर तृप्त होएहोण एक न तृप्त होवे तदभी दोष नहि इसीविषयमें शाखजीका वाक्यहै एकेति एकपत्तिकेविषे भोजन करदे जो पुरुषहैं तिनाको जो भेद से देताहै अर्थात् एकको बहुत एकको थोडा देताहै और जो भेदकरके मांगता है सो पुरुष ब्रह्महत्यारेके व्रत नूँ एकपक्ष १५ पर्यंत करे ॥ १ ॥ यमजीका वाक्य है ॥ नदीति

नपत्तयाविषमंदद्यान्नयाचेतनदापयेत् याचकोदापकोदातानवैस्वर्गस्य गामिनः प्राजापत्येनकृच्छ्रेणमुच्यंतेकर्मणस्ततः १ विषममत्रसहोप विष्टभोजकांतराकांक्षानिरासे सति बोध्यम् ॥ शाखः ॥ एकपत्तधुपविष्टा नाविषमंयःप्रयच्छति यश्चयाचत्यसौपक्षंकुर्याद्ब्रह्महणिव्रतम् १ याचति याचते ॥ यमः ॥ नदीसंक्रमहंतुश्चकन्याविघ्नकरस्यच समेविषमकर्तुश्च निष्कृतिर्नोपपद्यते ॥ १ ॥ त्रयाणामपिचैतेपांप्रत्यापत्तितुमार्गताम् भैक्ष्यल धेनवान्नेनद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति ॥ २ ॥ संक्रम उदकावरणमार्गः समे पूजादौ ॥ पतितादिसंभाषणे तु गौत्तमआह ॥ नम्लेच्छाशुद्धाधार्मिकैः सहसंभाषेत संभाष्यपुण्यकृतोमनसाध्यायेद्ब्राह्मणेन वासहसंभाषेत

नदीके घाटको जो ठादेताहै अर कन्याके विवाहादिके विषय विघ्नको कर दा है अर पूजादिके विषयमें विषमता करदा है इनकी शुद्धि नहि होती ॥ १ ॥ इनतीनोंकीशु द्विदेखणी चाहिए किभिक्षादे अन्नकरके ब्राह्मण अर क्षत्रि अथवा वैश्य चांद्रायणव्रतनूँकरे । २ संक्रमइत्यादिपदोंमें इसीका अर्थस्पष्टकीताहै और पतितादिके संभाषणके विषय गौत्तमजीका वाक्यहै नेति म्लेच्छ और अशुद्ध औरअधार्मिक इनके साथ धार्मिक पुरुष संभाषण न करे जेकर संभाषण करेतापुण्यदेकरण वालिआं पुरुषानूँ राजा नल और युधिष्ठिरादिकाको मनकर के स्मरणकरे अथवा ब्राह्मणके साथ संभाषण करे तो शुद्ध होताहै

म्लेच्छ नाम उसकाहै जो गौका मांसभक्षण करणवाला यवनजाति विशेष होवे और अशुद्ध उसका नामहै जो रजस्वलागमनादिवालाहोवे शय्या और धनके लाभके विघ्न विषय भिन्न भिन्न वर्षाकों कहतेहैं ॥ इसी स्मृति का अर्थ लिखतेहैं भार्य्येति स्त्री अन्न अन्न धन एह किसीकों प्राप्त होने लगें तिस विषय जो विघ्न करणहै तिसके विषयमें एक एक वर्ष सामान्य ब्रह्मचर्य लिखाहै अर्थात् इस ब्रह्मचर्यमें स्त्री संभोगते विना और कोई विधान नहि चौरादिके दंड त्यागके विषय वसिष्ठजी का वाक्यहै दंडाविति राजा चौरादिको जब दंड न देवे तब एक रात्र उपवासकरे और राजाका पुरोहित तीन १ रात्र उपवासकरे और दंडके योग्य नहि जो पुरुष तिसको जब राजा दंडदेवे तब पुरोहित कृच्छ्र व्रत करे और राजा तीन ३ रात्र उपवासकरे ॥ कुनेति कुनखी क्या खोटे नखां वाला और स्वभाव

म्लेच्छा गोमांसभक्षका यवनविशेषाः अशुद्धाउदक्यादिगामिनः तल्पान्न धनलाभवधे पृथग्वर्षाणीति ॥ भार्यान्नधनानांलाभस्यवधे विघ्नकरणेप्रत्ये कंसंवत्सरंप्राकृतंब्रह्मचर्यमित्यर्थः प्राकृतंसामान्य मष्टविधस्त्रीसंभोग त्यागरूपं नतु सविधानम् ॥ चौराद्युत्सर्गादौवसिष्ठः ॥ दंडोत्सर्गेराजैकरात्र मुपवसेत्रिरात्रंपुरोहितः कृच्छ्रमदंडयदंडे पुरोहितास्त्रिरात्रंराजा कुनखी श्यावदंतश्च कृच्छ्रं द्वादशरात्रंचारित्वोद्धरेयातामिति ॥ दंतान्नखांश्चेत्य भिप्रेतम् ॥ स्तेनपतितादिपंक्तिभोजनेतु मार्कण्डेयः ॥ अपांक्तेयस्ययःक शिचत्पंक्तौभुंक्तेद्विजोत्तमः ॥ अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति १

तैंहि कालिआं दंदां वाला एह दोनों वारां १२ दिन कृच्छ्र व्रत कों करके खोटिआं नखां की और दंतांकी कृष्णता कों त्यागदेते हैं अर्थात् तिसरोगतें रहित होतेहैं क्योंकि लिखाहै कि स्वर्णके चुराणे वाला कुनखी होताहै और मदिराके पान करणे वाला श्यावदंतक होबाहै इस वास्ते तिनकों प्रायश्चित्त करणा चाहिए ॥ चोर और स्वधर्म त्यागी इत्यादियों की पंक्तिके भोजन विषयमें मार्कण्डेयजीका वचनहै ॥ अपामिति पंक्तिके अधिकारतें रहित जो चोरादि हैं तिनके साथ एक पंक्तिके विषय बैठ करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनके मध्यमें श्रेष्ठ जो पुरुष भोजन करताहै सो एक १ दिन रात्र उपवास रक्ष कर पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

भविष्य पुराणमें नीलका दोष लिखा है ॥ नीलीति नीलके क्षेत्रके बिच्चों जद अज्ञानतें कदाचित् ब्राह्मण लंघजावे तद एक दिन रात्र उपवासकों करके शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अब नीलकी दातनका दोष कहते हैं ॥ कुर्येति जो पुरुष अज्ञानतें नीलके काष्ठकी दातन करता है तद सो पुरुष एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होता है ॥ २ ॥ नीलीरसकें अंदर जानेमें आप स्तंबजो दोष कहते हैं रोमेति जब तीनो वर्णों मेंसे किसी पुरुष के रोमकूपोंमें नीलीका रस चला जावे तो सामान्य से तत्कच्छ्र व्रत प्रायश्चित्त कहा है ॥ १ ॥ और ब्राह्मणका पाप तीन कच्छ्रों कर्के शुद्ध होता है और नीलीकी दातनादिकरनेसे ब्राह्मणके

भविष्ये नीलीमध्येयदागच्छेत्प्रमादाद्ब्राह्मणः क्वचित् अहोरात्रोषितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ १ ॥ कुर्यादज्ञानतोयस्तु नीलीजदंतधावनम् एक रात्रोषितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ २ ॥ आपस्तंबः ॥ रोमकूपेयदागच्छेद्रसो नील्यास्तुकस्यचित् त्रिवर्णेषु च सामान्यं तत्कच्छ्रं विशोधनम् ॥ १ ॥ पातनं च भवेद्विप्रेत्रिभिः कच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ नीलीदारुयदभिद्याद्ब्राह्मणस्य शरीरतः शोणितं दृश्यते यत्र द्विजश्चांद्रायणं चरेत् ॥ २ ॥ नीलीरक्तं यदा वस्त्रं ब्राह्मणो गेपुधारयेत् अहोरात्रोषितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ ३ ॥ भृगुः स्त्रीधृताशयने नीली ब्राह्मणस्य न दुष्यति नृपस्य वृद्धवैश्यस्य पर्ववर्जविधारणम् ॥ १ ॥ विधिना धारणं विधारणं न साक्षात् तदपि पर्वसु संक्रांत्यादिषु न धार्यमित्यर्थः ॥

शरीरतें जब रुधिर निकले तब द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एह चांद्रायणव्रतकों करे तो शुद्ध होता है ॥ २ ॥ नीलीति जद नील करके रंगे होए वस्त्रकों ब्राह्मण शरीरके विषय धारण करे तब एक १ दिन रात्र उपवास व्रत कों करके पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होता है ॥ ३ ॥ इसीमें भृगुजीका भी वचन है ॥ स्त्रीति स्त्रीने धारिआ होआ जो नीला वस्त्र है स्त्रीकी क्रीडा समयके विषय ब्राह्मणकों तिसका दोष नहि क्षत्री अर वृद्धवैश्य इनकों पंच पर्वतें विना विधिकरके नीले वस्त्रका धारणा लिखा है अर्थात् संक्रांति अर अष्टमी और द्वादशी और अमावस्या और पौर्णमासी इन पंचपर्वोंमें विधि करके भी नहि धारणा लिखा ॥

वस्त्रके भेद करके इसका दोष नहि सो दखातेहैं ॥ कंवेति कंवलके विषय और पट्टके वस्त्रके विषे नीलके रंगका दोष नहि अर्थात् नीली लोई और नीला पट्टका वस्त्र इनके धारणेका दोष नहि ॥ भविष्य पुराणके विषये और भेद कहाहै ॥ शृणुष्वेति किसे ऋषिका किसे राजाके प्रति कथनहै ॥ हे बडीआं भुजांवाले हेगणांके मध्यमे श्रेष्ठ संपूर्णतासे कथन करदा जो मै हां ऐसे मेरेतें नीले वस्त्रके धारणेतें दोषकों श्रवण कर ॥ १ ॥ पालेति नीलका पालना और नील करके उपजीविका करणी इनांकरमां करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य पतितहोताहै और तीन ३ वर्षां कर्के अर्थात् तीनवर्षतक कच्छ व्रतकरणे कर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और प्रकार कथन करतेहैं नीलेति नीले वस्त्रकों धार कर्के जिस कर्म को

वस्त्रविशेषकृतोपिकचित्प्रतिप्रसवो यथा ॥ कंवलेपट्टसूत्रेचनीलीरागो नदुष्यतीति ॥ भविष्येऽपरोविशेषः ॥ शृणुष्वेतिमहावाहोनीलरक्त स्थधारणात् वाससोगणशार्दूलगदतोममकृत्स्नशः ॥ १ ॥ पालना द्विक्रयाच्चैवतद्वृत्तेरुपजीवनात् पतितस्तुभवेद्विप्रस्त्रिभिर्वर्षैर्विशुद्ध्यति २ ॥ नीलरक्तेनवस्त्रेण यत्कर्मकुरुतेद्विनःस्नानंदानंतपोहोमःस्वाध्यायः पितृ तर्पणम् ॥ ३ ॥ वृथातस्यमहायज्ञोनीलवस्त्रस्यधारणात् नीलरक्तंयदाव स्त्रंकश्चिद्विप्रस्तुधारयेत् अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ४ ॥ एवमेव केशानिर्मितवस्त्रपरिधारणेचोपवासः पंगचव्यंहिरण्योदकंचाधि कमिति केशाश्चात्राणांव्यतिरिक्ताः स्थूलावोद्धाः ॥ स्त्रीणांक्रीडार्थसंभा गेशयनीयेनदुष्यतीति ॥

करताहै और स्नान और दान और तप और होम और पाठ और पितृतर्पण ॥ ३ ॥ और पंच पूवं लिखे जो पंच महायज्ञ एह संपूर्ण नीलवस्त्रके धारणेतें तिस पुरुषके वृथाहि होतेहैं और प्रकार कहतेहैं नीलेति नीलेवस्त्रकों जदकोई ब्राह्मण धारदाहै तद एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्यकेपीने करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ इसी प्रकारवालांका जो वस्त्र तिसके धारणेमे उपवास और पंच गव्य और स्वर्णका जल इनकरके शुद्धि होतीहै ॥ केश पद करके इहां उन्नके वस्त्रतें विना बकरे आदिके केश ग्रहण करणे स्त्रीयोंकी क्रीडाके अर्थ शय्याके विषय नीले वस्त्रका दोष नहि ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०११ ॥ टी० भा०॥ २०५

सहित छेकके सूर्य और चंद्रादि और अशुभ शिवारुतादि इनके दर्शनके विषय शंख जीका वा कथ है ॥ दुरिति खोटास्वप्न और उत्पात इनके दर्शनादिके विषय घृत और स्नान करे यमजीका वचन है प्रत्येति सूर्यके सम्मुख होकर लघी न करे कथा न मूत्रे अर दिशा वै ठाहोआ अपने विष्टेनू न देखे जब देखे तद पश्चात् सूर्य और ब्राह्मण अथवा गौ इनका दर्शन करे । १ । शंखजीका वाक्य है ॥ पादेति अग्निके विषय पयरांनू सेक करके अर पयर से अग्नि नू हिठां दवाकरके अर कुशानाल पयरां नू पूजकरके एक दिन उपवास व्रत करे ॥ १ वृद्धपराशरका भी एही कथन है ॥ क्षत्रियादिकों नमस्कारकरणके विषय हारीतजीका वचन है क्षत्रीति क्षत्रीकों जद ब्राह्मण नमस्कार करे तब एक दिन रात्र उपवास करे अर वैश्यकों नमस्कार करे तद

सच्छिद्रादित्याद्यरिष्टदर्शनादौ शंखः दुःस्वप्नारिष्टदर्शनादौ घृतं हिरण्यं च दद्यादिति ॥ यमः ॥ प्रत्यादित्यं न मे हेतन पश्येदात्मनः शकृत् दृष्ट्वा सूर्यं निरीक्षेत ब्राह्मणं गामथापि वा ॥ १ ॥ शंखः ॥ पादप्रतपनं कृत्वा कृत्वा वह्निं मधस्तथा कुशैः प्रमृज्य पादौ तु दिनमेकं व्रती भवेदिति ॥ १ ॥ वृद्धपराशर उक्तिरपीयम् ॥ क्षत्रियाद्यभिवादाने हारीतः ॥ क्षत्रियाभिवादाने ऽहोरात्रमुपवसेत् ॥ वैश्यस्याभिवादाने द्वौ शूद्रस्याभिवादाने त्रिरात्रमुपवासः ॥ तथा ॥ शय्यारूढपादुकोपानदारोपितपादोच्छिष्टांधकारस्थश्राद्धकृज्जपे देवपूजादिरताभिवादाने त्रिरात्रमुपवासः स्यादन्यत्र निमंत्रितेनान्यत्र भोजनेऽपि त्रिरात्रमिति ॥

दो २ दिन उपवास करे अर शूद्रकों नमस्कार करे तब तीन ३ रात्र उपवास करे तिस प्रकार शय्यादिओंके ऊपर आरूढ पुरुषकों नमस्कार करणेका दोष कथन करत हैं शय्याते खट्ट ऊपर जो स्थित होआ होआ है और पौए और जोड़ा एह जिसने पयरो मैलाए होए हैं और जूठा जो है और अंधकारविषे जो स्थित है और श्राद्ध नू जो करता है और जप और देव वाको पूजा इत्यादियोंमें जो लगाहुआ है इनके नमस्कार करणेमें तीन ३ रात्र उपवास लिखा है और निमंत्रण कीता होआ और स्थानमें भी जो भोजन करता है अर्थात् एक स्थानमें भोजन करके और स्थानमें भी जो खाता है तिसकों भी नमस्कार करणेमें तीन ३ रात्रहि उपवास लिखा है

समीति समिधां और पुष्प इत्यादि जिसके हाथमें हैं तिसको भी नमस्कार करणमें तीन ३ रात्रि उपवास लिखा है ॥ आपस्तंबस्मृतिमें भी एही लिखा है ॥ समीति समिधां और पुष्प और कुशा और घृत और जल और मृत्तिका और अन्न और अक्षत एह हैं हाथमें जिसके और जप और होम नूं करदा जो ब्रह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य है तिसनूं नमस्कार न करे ॥ १ ॥ जेकर जप आदिकां नूं करदा होआ जो पुरुष नमस्कार नूं करदा है तिस पुरुष कों भी एहि प्रायश्चित्त करणा लिखा है ॥ जिस प्रकार शंखजी कहते हैं ॥ नोदेति जलका कुंभ है हाथमें जिसके और मलोत्सर्गादिके अशुद्ध जो है जप और देवताकार्य और पितृकार्य इनानूं करता होआ और खट्ट उपर आरूढ होआ होआ नमस्कारको न करे ॥ यज्ञोपवीतते विना विष्टा और मूत्रके त्याग आदिकांके विषय किसे स्मृतिमें प्रायश्चित्त कहा है ॥ जैसे ॥ विनेति यज्ञोप

समित्पुष्पादिहस्तस्याभिवादानेऽप्येतदेव समित्पुष्पकुशाज्यांबुमृदन्नाक्ष
तपाणिकम् जपहोमचकुर्वाणनाभिवादेतवैद्विजमित्यापस्तंबीये ॥ जपा
दिभिः समभिव्याहारादभिवादकस्यापीदमेव प्रायश्चित्तम् ॥ यथाह शंखः
नोदकुंभहस्तोऽभिवादयेन्नाशुचिर्न जपन्न देवपितृकार्यैर्कुर्वन्न शयान इति
ब्रह्मसूत्रं विना विष्मूत्रोत्सर्गादौ स्मृत्यंतरे प्रायश्चित्तमुक्तम् । यथा । विनाय
ज्ञोपवीतेन यद्युच्छिष्टो भवेद्द्विजः प्रायश्चित्तमहोरात्रं गायत्री यष्टशतंतुवा १ ।
तत्र ऊर्ध्वोच्छिष्टे उपवास अधोच्छिष्टेऽन्नभक्षण उदकपाने च गायत्री जप इति
व्यवस्था । भोजनेनोर्ध्वोच्छिष्टे विष्मूत्रोत्सर्गेणाधोच्छिष्टो भवतीत्यर्थः ।
अकामतस्तु ॥ पिवतो मेहतश्चैव भुंजतोऽनुपवीतिनः प्राणायामत्रिकं षट्कं
नक्तंच त्रितयं क्रमादिति स्मृत्यंतरे ॥

वीतते रहित ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट जद होवे अर्थात् भजिनादि कर्के अपवित्र होवे तद एक १ दिन रात्र उपवास अथवा एक १ सौ १०० अठ ८ वार गायत्री नूं जपे ॥ १ तिसके विषय एह व्यवस्था है कि जब भोजन कर्के उच्छिष्ट होवे तब एक दिन रात्र उपवास करे और जब विष्टा और मूत्रकों त्याग कर और विनाशांचते अन्न भक्षण और जलका पान करे तब गायत्री का जप करे इति ॥ भोजन खाकर ऊर्ध्वोच्छिष्ट होता है और विष्टा और मूत्रकों त्याग कर अधोच्छिष्ट होता है ॥ जब इच्छा से न करे तिस विषय कहते हैं ॥ पिवेति यज्ञोपवीते रहित जो जलादिका पान करदा है तिसको तीन ३ प्राणायाम करणे लिखे हैं और विष्टा और मूत्र नूं जो त्याग ता है तिसको छे ६ प्राणायाम लिखे हैं और भोजन नूं जो करदा है तिसको नक्त व्रत त्रय लिखे हैं एह भी किसी स्मृतिमें कहा है ॥ १ ॥

जो बृद्धपराशर जीने कहाहै सो इच्छा सें कीता जो अभ्यास तिसविषयमें है क्योंकि यज्ञोपेति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य यज्ञोपवीततें विना भोजन करताहै अथवा मूत्र और पुरीष और वीर्य इनानूं त्यागताहै ॥ १ ॥ तब ब्राह्मण तीन ३ रात्र उपवास करे और क्षत्री छच्छ्र व्रत का एक १ पाद करे अथांत चौथाहिस्सा छच्छ्रव्रतका करे और वैश्य एक १ दिनरात्र उपवासकरे इहशुद्धि सनातनीहै सो एहकामनातेवहुवारकरणेमेहै ॥ २ ॥ अन्नखाकरके शुद्धिके वास्ते आचमननूं नकरके उठणके विषय पराशरजीहि कहतेहैं यदिति जइभोजननूं खाकर और आचमन नूं नकरके जोपुरुष आसनतें उठबैदाहै तिसतें उपरंत सो पुरुष शुद्धिके अर्थ तात्काल स्नाननूं करे जेकर स्नान न करे तद प्रायश्चित्ती होताहै ३ ॥ नित्ययज्ञादिके न करणमें आचारमाधवीषमें प्रजापतिने

यत्तु बृद्धपराशरः। यज्ञोपवीतेन विना भोजनं कुरुते द्विजः अथ मूत्रपुरीषे वारेतः सेचनमेव वा १ ॥ त्रिरात्रोपोषितो विप्रः पादकृच्छ्रं तु भूमिपः अहोरात्रोपितो वैश्यः शुद्धिरे पासनातनीति । २ । तत्कामतभ्यासे ॥ भुक्ता शौचार्थाचमनम कृत्वोत्थानेतु स एव ॥ यद्युत्तिष्ठेदनाचांतो भुक्तवानासनात्ततः सद्यः स्नानं प्रकुर्वीत सोऽन्यथा प्रयती भवेदिति । ३ प्रयती प्रायश्चित्ती । नित्ययज्ञाद्यकर णेतु आचारमाधवीये प्रजापतिः ॥ दर्शचपौर्णमासंचलुप्त्वाथोभयमेव च एकस्मिन्कृच्छ्रपादेन द्वयोरर्द्धेन शोधनम् १ ॥ हविर्यज्ञेऽप्यशक्तस्य लुप्तमप्येकमादितः प्राजापत्येन शुद्धयेत पाकसंस्थासु चैव हि २ विधानपारिजाति ए कविंशतिसंस्थागणनायां अष्टकापार्वणश्राद्धश्रावण्याग्रहायणी प्रौष्ठपदी चैत्र्याश्वयुजीतिसप्तपाकयज्ञसंस्थाः अग्न्याधेयाग्निहोत्रदर्शपौर्णमासाग्र यणचातुर्मास्यनिरूढपशुबंधसौत्रामणीति सप्त हविर्यज्ञसंस्थाः ॥ अग्निष्टो मात्यग्निष्टोमोऽथ षोडशीवाजपेयातिरात्राप्तोर्यामेति सप्त सोमसंस्थाः ।

कहाहै दर्शमिति दर्श अथवा पौर्णमास यज्ञ नूं जो नहि करदा तिसकों कृच्छ्रव्रतका एक पाद करणा लिखाहै जो पुरुष दोनों कों नहि करदा तिसको आधा कृच्छ्र करणा लिखाहै ॥ १ ॥ जो पुरुष हविर्यज्ञके विषय असमर्थहै और आदतें लेकर एकभी हविर्यज्ञ जिसका लोपहोगिआहै सो पुरुष प्राजापत्य व्रतकरके शुद्ध होताहै इसी प्रकार पाक संस्थाके विषय जान लेणा ॥ २ ॥ इसमें विधानपारिजातका वचनहै विषेति अग्न्याधेय १ और अग्निहोत्र २ और दर्शपौर्णमास ३ और आग्रयण ४ और चातुर्मास्य ५ और निरूढपशुबंध ६ और सौत्रामणी ७ एह सप्त हविर्यज्ञसंज्ञिकहैं पाकसंस्था क्याहै कि अष्टकाश्राद्ध १ और पार्वण श्राद्ध २ और श्रावणी ३ और आग्रहायणी ४ और प्रौष्ठपदी ५ और चैत्री ६ और आश्वयुजी ७ एह सप्तपाकयज्ञसंस्थाहैं

२०८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० ॥

संध्येति संध्योपासन और नित्यस्नान और होम और नित्यकर्म इनके भी नाश होआं होआं शुद्धि के वास्ते अठहजार ८००० गायत्रीका जप करे ॥ ३ ॥ सेति आग्निष्टोम १ और अस्याग्निष्टोम २ और उक्थ ३ षोडशी ४ और वाजपेय ५ और अतिरात्र ६ और आप्तोर्याम ७ एहसप्त यज्ञ सोमसंस्था हैं वर्षके अंतमे सोमयज्ञांके नाशदे होआं होआं चांद्रायण व्रत नूं करे और अधिकारहोणेते इन यज्ञांके मध्यमे एक कि सी नूं भी न कर्के उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै पाकसंस्थाके विषय भी इसी प्रकार जा ला लेणा ॥ ४ ॥ कात्यायनजीका वचनहै पितृति पितृ यज्ञके नाशके विषय अर्थात् पितृतपणके नकीतिआं होआं और वैश्वदेव बलिके नकीतिआं होआं और नवें अन्नके भक्षण समयके विषय नवयज्ञ कर्के नपूजन कर्के और तिसी प्रकार पतितके अन्न का भक्षण कर्के शुद्धिके वास्ते चातुर्वैश्वानरी इष्टि नूं करे ॥ १ ॥ बोधायनजीका वाक्यहै यस्येति जिस पुरुषके

संध्योपासनहानौतुनित्यस्नानप्रलोप्यच होमचनैत्यकंशुद्धैर्गायत्र्यष्टसहस्र कम् ३ समांतिसोमयज्ञानां हानौचान्द्रायणंचरेत् अकृत्वान्यतमं यज्ञं यज्ञानामधिकारतः उपवासेन शुद्धे तपाकसंस्थासु चैव हीति ४ कात्यायनः । पितृयज्ञात्यये चैव वैश्वदेवात्ययेऽपि च अनिष्ट्वानवयज्ञेन नवान्नप्राशने तथा भोजने पतितान्नस्य चातुर्वैश्वानरो भवेत् १ चातुर्वैश्वानरीमिष्टिकुर्यादित्यर्थः ॥ बोधायनः ॥ यस्य नित्यान्विलुप्तानि तथैवागंतुकानि च विपद्यपि न सस्वर्गं गच्छताऽपतितो हि सः १ तस्मात्कंदैः फलैर्मूलैर्मधुनाज्यरसेन वा नित्यं नित्यानि कुर्वीत न च नित्यानि लोपयेदिति २ ऋतौ स्वपत्न्यगमने तु विष्णुः । पर्वाऽनारोग्यवर्जं ऋतावगच्छन्पत्नीं त्रिरात्रमुपवसेदिति अत्र पर्वपदं ब्रह्मचर्यादिलोपोपलक्षकम् ऋतूरजःस्नानदिनादारभ्य द्वादशदिनानि

आपदा काल विषय भी नित्यकर्म अर्थात् पंचयज्ञ और आगंतुककर्म नष्ट होगयेहैं सो पुरुष स्वर्ग नूं नहि प्राप्त होता किंतु चारे और तें पतित होताहै ॥ १ ॥ तिस कारणते कंद और फल और मूल और मधु और घृत और रस इनों कर्के दिन दिन प्रति अवश्यनित्यकर्मा नूं करे कंदे भी नित्यकर्माका नाश न करे ॥ २ ॥ ऋतुसमयके विषय अपणी स्त्रीके अगमनके विषय विष्णुजी का वचनहै पर्वेति संक्रांत्यादि पंच पर्व और रोग इना नूं वर्जित कर्के ऋतुसमयके विषय जो पुरुष अपणी स्त्रीके साथ मैथुन नहि करदा सो तीन ३ रात्र उपवास करे अर्थात् पंचपर्व और रोग इनके विषय ऋतुकालमें भी न गमन करे इस स्थानमे पर्व पद कर्के ब्रह्मचर्य और व्रतादि इनाके लोपका भी ग्रहण करणा अर ऋतुपद कर्के क्या लेणा कि स्नानदिनते आद लेकर वारां १२ दिनपर्यंत ग्रहण करणा ॥

जो सर्वज्ञाने कहा है सो अकामके विषयमे है अर्थात् उसकों कामना थी परंतु किसे कार्यवशये गमन नहि दया इसवास्ते षोडा प्रायश्चित्त कहा है ऋताविति जो पुरुष ऋतुकालके विषय व्रतके आचरण कर्षणवाली अपणी स्त्रीमे गमन नहिकरदा नियमके अतिक्रमके भयते तिस पुरुषकों एकसौ १०० प्राणायाम कथनकीता है । १ । एह वाक्य निकट देशके विषय रहणे वालेपर ग्रहण करणा अरु दूर देशके विषय स्थित होवे तब दोष नहि क्योंकि मिताक्षरामें कहा है ऋतिविति समीपके विषये निवास करदा होआ जो पुरुष ऋतु स्नात अपणी स्त्रीमे गमन नहि करदा सो पितरांके सहित बड़ी जो गर्भकी हत्या है अर्थात् गर्भ हत्या वाला जो नरक है तिसमें डूवता है । २ । इसवचनते स्त्रीकोंभी ऋतुकालके विषयमें भर्ताके समीप न प्राप्त होणका एहि प्राय

यत्तु संवत्तः । ऋतौ नोपैतियौ भार्या नियतां व्रतचारिणीं नियमातिक्रमात्तस्य प्राणायामशतं स्मृतमिति तदकामतः १ ॥ एतच्च समानदेशविषयम् ॥ ऋतुस्नानान्तं यौ भार्या सन्निधौ नोपगच्छति घोरयाभ्रूणहत्यायां पितृभिः सह मज्जन्तानि मिताक्षरावचनात् २ ऋतौ भर्तुरनुपसर्पणे स्त्रिय अपि एतदेव प्रायश्चित्तम् ॥ तस्या अपि नारदीये दोषश्रवणात् ॥ आहूताया तु वैभर्त्रा नोपयाति त्वगान्विता सा ध्वांक्षी जायते पुत्रदशवर्षाणि पंचचेति ॥ १ ॥ तासु तु स्त्रीत्वाद्वैभर्त्रा ॥ अंगिराः ॥ अनापदि चरेद्यस्तु सिद्धां भिक्षां गृहे वसन् दशरात्रं पिवेद्वज्रमापत्काले त्र्यहं द्विजः ॥ १ ॥ वज्रं वज्रकृच्छ्रसं वधिद्रव्यमित्यर्थः देवार्दानामाभिमुख्ये निषावनादौ सुमंतुः ॥

श्चित्त लिखा है १ तिसकोंभी नारदीयपुराणके विषय दोषके श्रवण करणते सो कहते हैं आहूतेति ऋतुकालके विषय भर्ता करके बुलाई होई जो स्त्री शीघ्र नहि प्राप्त होनी हे पुत्र सो स्त्री पंदरा १५ वर्ष तक का कर्षणनिम प्राप्त होती है । १ । परंतु स्त्रीभाव होणते तिनके विषय अर्द्धा प्रायश्चित्त लिखा है अंगिराजीका वाक्य है अनेति आपदाकालते विना गृहके विषय निवास करदा होआ जो पुरुष सिद्ध भिक्षाका आचरण करदा है सो दश १० रात्र वज्रकृच्छ्र व्रतके विषय लिखीजा वस्तु है तिसका पानकरे जब आपदाकालके विषय ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य भिक्षाका आचरण करे तब तीन ३ दिन पीवे १ । देवादियोंके सन्मुख धुक्णादिआंके विषयमें सुमंतुजीका वचन है

देवेति देवता और ऋषि और गो और ब्राह्मण और गुरु और माता और पिता और राजा इनके सम्मुख जो थुके और झूठ कहे सो अभिकर्क जिह्वानुं साउ देवे और स्वर्णदान करे परंतु तिनना जिह्वानुं से क देवे जितने करके जीवतारहे एह जानलेणा । जनांका निवास स्थान और वाग और देवताका मंदिर इत्यादिके ठाणके विषयमें काश्यपजीका वचन है वापीति वावली और खूआ और वाग और पुल और वेल और तला और नदी आदिकोंका कनारा और देवताका स्थान इनके ठाणके विषयमें ब्राह्मणोंके तांई प्रायश्चित्त दस करके अर्थात् तिनाने पुछकके पश्चात्चार ४ घृतकीआं आहुतीआंका हवन करे आहुतीआं दखावतेहैं इदमिति (इदं विष्णु) इसमंत्र करके पहली आहुति करे (मानस्तोक) इसकरके दूसरी आहुति करणी अर (विष्णोः कर्माणि) इस कर

देवर्षिगोब्राह्मणाचार्यमातृपितृनरेंद्राणां प्रतिष्ठावने आक्रोशने च जिह्वांदहेद्विरण्यंदद्यादिति ॥ दाहो जीवनाविरोधेन ॥ मंडपोद्यानदेवतागारादिभेदे ॥ काश्यपः ॥ वापीकूपारामसेतुलतातडागवप्रदेवतायतनभेदने प्रायश्चित्तं ब्राह्मणेभ्यो निवेद्य ततश्च तस्त्र आज्याहुतीर्जुहुयात् इदं विष्णुरिति प्रथमाम् मानस्तोक इति द्वितीयाम् पादोस्यात्यामिति चतुर्थीम् ॥ देवतामुच्छेदयति तस्यै देवतायै ब्राह्मणान्भोजयेदिति ॥ एतच्चाल्पोपघाते ॥ महत्युपघातेऽभ्यासे च प्राजापत्यादि कल्पनीयम् देवताचात्रमृण्मयी पूजिताऽपूजिता वा ग्राह्या प्रायश्चित्तस्य चाल्पत्वात् अन्यत्र तु दंडगौरवदर्शनेन प्रायश्चित्तं कल्प्यम्

के तीसरी अर (पादोस्यात्यां) इस करके चौथी आहुति करणी जो पुरुष देवताकी मूर्तिकों छेद ता है सो तिस देवताके वास्ते ब्राह्मणानुं भोजन खुवाए एह प्रायश्चित्त थोड़े नाशके विषय जानना अर जब बहुत छेदन करे अर तिसीमें बहुत अभ्यास करे तब प्राजापत्यादि व्रतकों करे। इस स्थानमें देवता मृत्तिकाकी पूजा होई अथवा न पूजा होई ग्रहण करणी प्रायश्चित्तकों थोड़ा होणेतें और जगां दंडको बड़ा देखणे करके प्रायश्चित्त बड़ा कल्पना करणा क्योंकि दंडकी न्याई प्रायश्चित्त होता है इस वचनतें अर्थात् थोड़ा पाप होवेता थोड़ा प्रायश्चित्त अर बहुत पाप होवेतां बहुत प्रायश्चित्त दस्सणा ॥

तिसप्रकार इसके विषय दंडकी गौरवताकों कात्यायनजी कहते हैं हरेदिति जो देवताकी प्रतिमाकों जेद चुरालये अर खंडित करदेवे अर दग्धकरदेवे अर देवताके स्थानका भेदन करदेवे तद सो पुरुष उत्तम दंड कों प्राप्तहोवे ॥ १ तीन ३ प्रकारका दंड याज्ञवल्क्यजीने लिखा है उत्तमदंड १ और मध्यमदंड २ और अधमदंड ३ जो एक हजार १००० और अरस्त्री ८० पैसे चढा है सो उत्तमदंड है अर इसते आधा मध्यमदंड है अर इसते भी आधा अधम दंड है ॥ इति ॥ विष्णुजीका वाक्य है अभेति थोमादि और नहि वेचने योग्य जो वस्तु इनके वेचने वाला और

दंडवत्प्रायश्चित्तं भवतीति वचनात्) तथाऽत्र दंडगौरवमाह कात्यायनः हरे
छिंद्याद्देहापि देवानां प्रतिमां यदि तद्गृहं चैव यो भिंद्यात्प्राप्नुयात्पूर्वसाहसम् १
विष्णुरपि ॥ अभक्ष्यस्याविक्रेयस्य च विक्रयी प्रतिमाभेदकश्चोत्तमसाहसंदं
डनीयः ॥ शंखलिखितौ ॥ प्रतिमारामसंक्रमध्वजसेतुनिपातनभंगेषु तत्समु
त्थापनं प्रतिसंस्कारोऽष्टशतंचेति कूपादिसमीपेऽल्पजलाशयोनिपातनम्
यद्वा प्रतिमादीनां निपातने भंगे च सति ॥ निपातने तत्समुत्थापनं भंगे प्रतिसं
स्कार इत्यर्थः ॥ मनुः ॥ संक्रमध्वजयष्टीनां प्रतिमानां च भेदकः ॥ प्रति
कुर्याच्च तत्सर्वे पंचदद्याच्छतानि च ॥ १ ॥

देवताकी मूर्तिके छेदने वाला एहदोनों उत्तम दंडके योग्य हैं इसी विषयमें शंख और लिखि
तका भी वचन है प्रतीति देवताकी मूर्ति और वाग नदी तला आदिक पत्तन और पुल और कूप
दिके समीप थोटा जिआ जलका स्थान इनके भेदन करणे वाला तिनानू फेर नवीन बणावे
अथवा पांचसौ ५०० पयसा दान करे ॥ इसी वाक्यमें मनुजीने भी लिखा है ॥ संक्रेति
जलका घाट और धजा और लाठी और देवताकी छोटी जैसी मूर्तिकादि मूर्ति इनके छेदन क
रणे वाला इनां संपूर्ण नू नवीन बणावे अथवा पांचसौ ५०० पण दान करे ॥ १ ॥

२१२ ॥ श्रीरणवीर करित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

सामितिसंक्रम इत्यादि पदोंमें इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै इसस्थानमें प्रतिमाके छोटे बड़े भेद करकेअर प्रतिमाके छोटे बड़े छेदनके भेद करके दंड और प्रायश्चित्तकाभी भेद जानना अर्थात् छोडा छेदन करे तां छोडा दंड अथवा प्रायश्चित्तकरे जेकर बहुत छेदनकरे तां बहुत दंड अथवा प्रायश्चित्त करे एह व्यवस्थाहै ॥ दारिद्र्यादिकरके भर्ताके निरादरके विषय आपस्तंबजीका वाक्यहै भर्तु रिति निर्धनता और क्रोध और चुगली इत्यादि करके भर्ताका जवस्त्री निरादर करे तब कृच्छ्र व्रत करे इति ॥ पर्वके विषय मैथुन करणेका दोष विष्णु पुराणमें लिखाहै ॥ किसे ऋषिका किसे राजाके प्रतिबचनहै हे राजन् चतुर्दशी १ और अष्टमी २ और अमाव

संक्रमोजलोपरिगमनार्थकाष्ठशिलादिरूपः ध्वजश्चिह्नं राजद्वारादौ यष्टिः पुष्करिण्यादौ प्रतिमाश्च क्षुद्रासृग्मय्यादयः एतद्भेदकः पुनर्नवं कुर्यात् पणानां पंचशतानि च दद्यात् ॥ अत्र च प्रतिमातारतम्येन तद्भेदतारतम्येन दंडप्रायश्चित्तयोर्व्यवस्था ॥ दारिद्र्यादिना भर्तुरतिक्रमे आपस्तंबः भर्तुरतिक्रमे कृच्छ्र इति ॥ अतिक्रमो दारिद्र्यक्रोधमात्सर्यादिनाऽवमाननम् पर्वणि मैथुने विष्णुपुराणे चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या पूर्णिमा पर्वण्येता निराजेन्द्ररवेः संक्रांतिरेव च १ स्त्री तैलमांससंभोगी पर्वस्वेतेषु षोडशः विष्णुमूत्रभोजननाम प्रयाति नरकं मृतः २ अस्य प्रतिप्रसवः ॥ शनिपष्ट्यां स्मृतं तैलमहाष्टम्यां पलाशनम् तीर्थे क्षौरं चतुर्दश्यां दीपावल्यां च मैथुनम् ॥ १ ॥ महाष्टमी आश्विनशुक्लाष्टमी ॥

रथा ३ और पूर्णिमासी ४ और सूर्यकी संक्रांति ५ एह पंच पर्वहै ॥ १ ॥ इनके विषय जो पुरुष स्त्री और तेल और मांस इनानू भोगताहै सो मरकरके विष्टा और मूत्रहै भोजन जिसके विषय ऐसे नरकको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ इसका भिन्न भिन्न दोष निवारण कहतेहैं शनीति ॥ शनिवार पष्टीके विषय तेल मले अर आश्विनके शुक्ल पक्षकी अष्टमीके विषय मांस भक्षणकरे अर तीर्थके विषय चतुर्दशांके दिन क्षौर कराए अर दिवालीके विषय मैथुन करे तीनों इसी नरकको प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र-११ टी ० भा० ॥ २१३

और किसे स्मृतिकाभी वाक्य है अष्टेति अष्टमी ८ और चतुर्दशी १४ और दिन और पर्व इनके विषय मैथुन कों करके सहित वस्त्रांके स्नान नूं करके पश्चात् वरुण है देवता जिनां का तिनां मंत्रों करके मार्जन करे ॥ १ ॥ उलटोके विषय शातातप जीका वाक्य है विच्छेति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनकी उलटोके विषय और भजे होए पात्रक विषय भोजन करणेके विषय पंच गव्य करके शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ मांसादिके वमनके विषय यमजी विशेष कहतेहैं ॥ मसूरेति जो ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य मसर और मांह और मांसको भक्षण करके उलटी करतहै तिसकों तीन ३ रात्र उपवास प्रायश्चित्त करणा लिखाहै और स्नान करके और तीन ३ प्राणायामों करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ यज्ञोपवीतादियोंके नाशके विषय भी यम

स्मृत्यंतरे अष्टम्यांचचतुर्दश्यांदिवापर्वणिमैथुनं कृत्वासचैलंस्नात्वाचवारुणी भिक्षुमार्जयेदिति १ वारुणीभिर्वरुणदेवताकैर्ऋग्भिर्भारित्यर्थः। वमनेशातातपः विच्छर्दनेद्विजातीनांभिन्नभांडेचभोजने पंचगव्येनशुद्धिःस्यादितिशातातपोऽब्रवीत् १ मांसादिवमनेतुविशेषमाह यमः ॥ मसूरमाषमांसानिभुक्तवावावमतिद्विजः त्रिरात्रमुपवासोऽस्यप्रायश्चित्तंविधीयतेप्राणायामैस्त्रिभिः स्नात्वा घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति १ यज्ञोपवीतादिनाशेपि सएव मेखलादंडाजिनयज्ञोपवीतावपातेषु मनोव्रतवतीभिःसप्तआज्याहुतीर्जुहुयात्पुनर्यथार्थप्रतीयात् असकृद्भक्ष्यभोजनेऽभ्युदितेऽभिनिर्मुक्तेवांतेदिवास्वप्नेनग्नस्त्रीदर्शनेनग्नस्वापे श्मशानमाक्रम्यहयादींश्चारुह्यपूज्यातिक्रमेचैताभिरेवजुहुयादग्निसामिधने

जिनेहि प्रायश्चित्त लिखाहै ॥ मेखेति तडागी और दंड और चर्म और यज्ञोपवीत इनके नाशके विषय मनोव्रतवती इत्यादि मंत्रों करके घृतकीआं सप्त ७ आहुतीआं करके पश्चात् मेखलो दिकों धारणकरे और अनेकवार भिक्षाकों भोजन करणा और जिसके सुतिआं होआं सूर्य उदय होताहै और जिसके सुतिआं होआं अस्त होताहै उलटी होणी और दिनके विषय सौना और नग्नस्त्रीकों देखणा और नग्न सौणा और श्मशान भूमिके विघ्नो लंघना और घोंडे आदि कोंके उपर चडकर और महात्माकों उलंघन करणा अर्थात् तिनकी आज्ञाकों नहि म न्नणा अथवा बिना नमस्कारके चलेजाणा इन संपूर्णोंके विषयमें बलदी अग्निके विषय मनो व्रतवती इत्यादि सप्त मंत्रों करके आहुतीआं करे ॥ ॥

स्थेति वृक्षादि और महिष्यादिकी हिंसाकरणेकेविषे (यद्देवादेवहेडनं) इत्यादि जो कूष्मांड संज्ञिकमंत्रहैं इनांकरके घृतका होमकरे ॥ मणि और वस्त्र और गौ और स्वर्ण इत्यादियोंका दानलेकरके गायत्रीका अठ हजार ८००० जपकरे इति ॥ अर्थः (मनोजूतिर्जुषतां) इत्यादि मंत्रों करके अर (त्वमग्नेव्रतपाञ्चसि) इत्यादिमंत्रोंकरके होमकरे अर यथार्थक्या उपनयन विधि करके सहितमंत्रोंके यज्ञोपवीतका ग्रहणकरे ॥ अभ्युदितदिके स्वरूप नू यमजी कथन करतेहैं ॥ सूर्येति जो पुरुष सूर्यके उदयहोआं होआं सुत्तारहिताहै तिसको अभ्युदित कहतेहैं अर जोपुरुष सूर्यके अस्त होआं होआं सुत्ता रहिताहै तिसको निर्मुक्त कहतेहैं ॥ १ ॥ अभ्युदितके विषय प्रायश्चित्त नू भी यमजी कहतेहैं ॥ अजीति अन्नका नपचना और अभ्यु

स्थावरसरीसृपादीनांबधे यद्देवादेवहेडनमितिकूष्मांडीभिस्त्रिरात्रमाज्यं जु ह्यान्मणिवासोगवादीनांचप्रतिग्रहे गायत्र्यष्टसहस्रं जपेदिति मनोजूतिर्जुषतामिति मनो लिंगाभिः त्वमग्नेव्रतपाञ्चसि त्रितल्लिंगाभिश्च यथार्थमुप नयनोक्तेन विधिना समंत्रकं प्रतीयाद्गृह्णोयात् । अभ्युदितदिस्वरूपमा हयमः । सूर्योदये तु यश्शेते ससूर्योदित उच्यते अस्तंगते तु यः शेते सूर्यो निर्मुक्त एव सः १ अभ्युदिते प्रायश्चित्तमाह स एव अजीर्णेऽभ्युदिते वां तेश्मश्रु कर्मणि मैथुने दुःस्वप्ने दुर्जनस्पर्शे स्नानमात्रं विधीयते ॥ २ ॥ अत्रैव कामतो गौतमः सूर्याभ्युदिते ब्रह्मचारीतिष्ठदहन्यभुजानोऽस्तमिते रात्रौ सावित्रीं जपेत् । अभ्यासे त्वावृत्तिरूह्या । गर्भाधानादिसंस्कारातिपत्तौ तु आश्वलायनः । आर भ्याधानमाचौलात्कालातीति तु कर्मणाम् व्याहृत्याज्यंसुसंस्कृत्य हुत्वा कर्म यथाक्रमम् ॥ १ ॥ एतेष्वेकैकलोपेपि पादकृच्छ्रं समाचरेत् ॥

दित और उद्गमन और घोडा क्षौर कर्म और मैथुनकरणा और खोटास्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ स्पर्शकरणा इनकेविषयस्नानहि विधानकीताहै ॥ २ ॥ इसकेविषयहि कामनाकेविषयमें गौतमजी कावाक्यहै सूर्येति अभ्युदितके विषय दिनके विषय अन्नकों न भक्षण करदाहोआ अष्टांगमैथुन तैरहितहोकर स्थितहोवे सूर्यकेअस्तहोआंहोआं रात्रिके विषय गायत्री नू जपे इसांके अभ्यास केविषयमें एहीप्रायश्चित्त दोवारकरे इति ॥ गर्भाधानादिसंस्कारके नाशके विषय आश्वलायनजीका वाक्यहै आरेति गर्भाधान कर्मतें लेकर चौलकर्म पर्यंत कर्मोंका कथनकीता जो काल है तिसके वीतिआंहोआं व्याहृतीआं करके हठी तरां संस्कारकों करके क्रमसें घृत करके होमनू करे १ इनकर्मोंके मध्यमे एककर्मकेभी नाश होआं होआं एक पाद कृच्छ्र व्रतको करे ॥

॥ श्रीरत्नावीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥ २१५

चूडेति चूडा कर्मके नाशके विषय आधा कृच्छ्रव्रतकरे आपदासमय में भी एहि करणा अर जब आपदा न होवे अर संस्कार कर्मका नाश हो जावे तब संपूर्णस्थानके विषय दूणा प्रायश्चित्त करे ॥ २ ॥ इसीमें कात्यायन जी भी कहते हैं ॥ लुप्त इति संस्कार कर्मके नाशके विषय संपूर्णस्थानके विषय प्रायश्चित्त करे अर प्रायश्चित्तके कीर्ति आहो आं पाँछेसें नाश होए कर्म नू करे ॥ १ ॥ त्वन्न इति (त्वन्नः सत्वन्न) इनां मंत्रां करके और तिस प्रकार (इमंमे) इस मंत्र करके आहुती आं नू करे अर (येने शतमयाश्चाभ्यामुदुत्तममृचा) इत्यादि कृचा करके होम नू करे २ ॥ हुत्वेति भिन्न भिन्न हवन नू करे पश्चात् कृच्छ्रव्रत का एकपाद करे अर चौल कर्मके विषय आधो कृच्छ्रव्रतकरे स्त्री आं कां भी इसी प्रकार मंत्रां करके जातादि कर्म करणा ॥ ३ ॥ गर्भाधान कर्मके न करणे के विषय

चूडाया अर्द्धकृच्छ्रः स्यादापदीत्येवमीरितम् ॥ अनापदितुल्यते तु सर्वत्र द्विगुणं चरेत् २ ॥ कात्यायनोऽपि ॥ लुप्ते कर्मणि सर्वत्र प्रायश्चित्तं विधीयते । प्रायश्चित्ते कृते पश्चात्पुंसकर्म समाचरेत् ॥ १ ॥ त्वन्नः सत्वन्न इत्याभ्यां इमंमे तु तथा हुतीः येने शतमयाश्चाभ्यामुदुत्तममृचा हुतीः ॥ २ ॥ हुत्वा पृथक् पृथक् पादमर्द्धचौले समाचरेत् स्त्रीणामप्येवमेव स्याज्जाताद्यामंत्रिका क्रियेति ॥ ३ ॥ गर्भाधानाकरण आश्वलायनः ॥ गर्भाधानस्याकरणे तस्यां जातस्तु दुप्यति अकृत्वा गां ततो दत्त्वा कुर्यात्पुंसवनं पतिरिति ॥ १ ॥ क्षुतादौ वृद्धपराशरः विप्रः क्षुत्कृत्य निष्ठीव्य कृत्वा चानृतभाषणम् वचनं पतितैः कृत्वा दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत् प्रेक्षणं शशिनोऽर्कस्य ब्रह्मेशहरि संस्मृतिः ॥ १ ॥ एतच्च जलाभावे कर्म णिव्यापृते वा अतएव वृद्धशातातपः ॥

आश्वलायन जी का वाक्य है । गर्भेति ॥ जिस स्त्री का गर्भाधान संस्कार नहि की आ तिस के विचों उत्पन्न हो आ बालक दुष्ट होता है अर गर्भाधान संस्कार नू न करके तिसते उपरंत गोदान करके पश्चात् भर्ता पुंसवन संस्कारकों करे । १ । छिन्त्यादिकां के विषय वृद्धपराशर जी का वचन है विप्र इति छिन्न और शुक्ल और ब्रूह वचन और पतितां के साथ वार्ता इनां नू करके ब्राह्मण सजे कांन नू हाथ लगावे और चंद्रमा अर सूर्य का दर्शन करे और ब्रह्मा और शिव जी और विष्णु इनका स्मरण करे । १ । एह वार्ता कब करे जब पास जल न होवे अथवा किसी काममे लगा हो आ होवे ॥ इसी कारणते वृद्धशातातपने कहा है ॥ ॥

२१६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

क्षुत्वेतिष्ठिकमार करके और थूक करके और वस्त्र कों पहिर कर बुद्धिमान् पुरुष आचमन करे अथवा ब्राह्मणकों स्पर्श करे अथवा गौकी पिठका दर्शन करे ॥ १ ॥ यथेति जिस प्रकार एह कथन कीते हैं तिस प्रकार प्रथमके अभावमें अगले कों ग्रहण करे प्रथमके नाशमें दूसरेकी प्राप्ति इच्छित है अर्थात् जलके अभावमें ब्राह्मण कों स्पर्श करे अर ब्राह्मणके अभावमें गौका दर्शन करे ॥ २ ॥ संवत्सर कर्मके नाशके विषय विष्णु पुराणमें किसे ऋषिने किसीके प्रति कहा है । संवेति एक वर्ष पर्यंत जिस पुरुष के कर्मका नाश हो आहै अर्थात् जिस पुरुष ने एक वर्ष नित्य कर्म नहि कीता तिसके दर्शन करणें श्रेष्ठ पुरुषोंने सर्वदा काल सूर्यका दर्शन करणा योग्य है ॥ १ ॥ हे महामते तिसके स्पर्शमें सहित वस्त्रां के स्नान करणा एही

क्षुत्वा निष्ठीव्यवासस्तु परिधाया च मेदुधः कुर्याद्वा ब्राह्मणस्पर्शं गोपृष्ठस्य च दर्शनम् ॥ १ ॥ यथा विभवतो ह्येतत्पूर्वाभावे ततः परम् अविद्यमाने पूर्वोक्ते उत्तरप्राप्तिरिष्यत इति ॥ २ ॥ संवत्सरक्रियातिपाते विष्णुपुराणे ॥ संवत्सरं क्रियाहानिर्यस्य पुंसः प्रजायते तस्यावलोकनात्सूर्यो निरीक्ष्यः साधुभिः सदा ॥ १ ॥ स्पृष्टे स्नानं सचैलंतु शुद्धिहेतुर्महामते पुंसो भवति तस्योक्तानशुद्धिः पापकर्मण इति ॥ २ ॥ अत्र च प्रायश्चित्तविशेषा श्रवणादेकाहान्तिक्रमे चैकाहमभोजनेन तस्योक्तत्वात्तदनुसरिण च षष्ठ्यधिकशतत्रयदिनापचारै तावदुपवासकरणाशक्तेस्तत्प्रत्याम्नायत्वेन षडुपवासैरेकैकप्राजापत्यकल्पनया योज्यम् ॥ निमंत्रणत्यागे तु यमः

शुद्धिका कारण है अर जिसके दर्शनादिने एह सूर्य निरीक्षणादि प्रायश्चित्त है तिस पापी पुरुषकी शुद्धि नहि कथन कीती ॥ २ ॥ इसके विषय प्रायश्चित्तके बहुत भेदके देखणें क्योंकि एक दिन कर्मके न करणें एक उपवास तिसका कथन कीता है तिसके अनुसार करके अर्थात् तिस हसाब करके तीन सौ अर साठ २६० दिन के वीति आं हो आं तिस उपवास करणके विषय समर्थके न होणें तब तिस प्रायश्चित्तके बदले करके छि आं ६ उपवास करके एक एक प्राजापत्य व्रत की कल्पना करके जोडने योग्य है निमंत्रण कों ग्रहण करके तिस के त्यागके विषय यमजीका वचन है ॥

॥ श्रीरणवीर कश्चित् प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० २१७

केतेति जो ब्राह्मण श्राद्धादिके निमंत्रण कों करवाके अर्थात् भोजनकों मान करके पश्चात् नहि खांदा सो ब्राह्महत्याके पाप कों प्राप्त होताहै अर मर करके शूद्र योनिकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इस पापके प्राप्त होआं होआं ब्राह्मण नियम कों धार करके यति चांद्रायण व्रत कों करके तिस पापतें रहित होताहै ॥ २ ॥ निमंत्रित कीते होए ब्राह्मण के न बुलाणेमें भी एही प्रायश्चित्त जानना ॥ एह वाक्य कामके अभ्यासमेहै ॥ झूठे वचना दिके विषयमें शंख और लिखितका वाक्य है आक्रोशेति तुमने स्वण चुराआहै इस मिथ्याका नाम आक्रोश है आक्रोशनऔरझूठ कथन करणा इनके विषयमें एक १ रात्र अथवा तीन ३ रात्र उपवास करणा इति अर कामतें अभ्यासके विषयमें असत्यभाषण

केतनंकारयित्वातुयेनिपातयतिद्विजः ब्रह्महत्यामवाप्नोतिशूद्रयोनीच जायते ॥ १ ॥ एतस्मिन्नेनसिप्राप्तिब्राह्मणोनियतव्रतः यतिचांद्रायणंचीत्वा ततःपापात्प्रमुच्यते इति २ श्राद्धादौनिमंत्रणंकेतनम् ॥ निमंत्रितस्याऽना ह्वानेप्येतदेव एतच्चकामाभ्यासे ॥ अनृतवचनादौ शंखलिखितौ ॥ आक्रोशनानृतवादे एकरात्रंत्रिरात्रं चोपवास इति ॥ कामतोभ्यासेतु असत्यभाषणं शूद्रसेवनम् इत्यपात्रीकरणंकृत्वा तप्तकृच्छ्रंकृत्वा शुद्ध्यती ति विष्णुक्तंज्ञेयम् ॥ वधफलकेऽनृते तुव्यसनप्रायश्चित्तप्रसंगेनोपपातके षूक्तं द्रष्टव्यम् ॥ ब्रह्ममध्ये कृमिपाते गरुडपुण्ड्रे ॥ जायंतेयस्यशिरसि कृमयोविनतत्मज कृच्छ्रंतदाचरेत्प्राज्ञःशुद्ध्येकश्यपात्मज इति १ य तुच्यवनः ॥ कृमिदर्शने सांतपनम् ॥ दृषभोदक्षिणेति ॥

और शूद्रसेवन इस अपात्री करण संज्ञिकपापकों करके तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै एह विष्णुजीका कहाहोया वचन जानना हिंसा है फल जिसका ऐसा जो झू ठ है तिसके विषय प्रायश्चित्त व्यसन प्रायश्चित्तके प्रसंग करके उपपातकाके मध्यमें कथन की ताहै सो तिस स्थानमें देख लेणा इति जखमके मध्यमें कीटों के पौणेमें गरुड पुराणमें कहा है ॥ जायमिति । हे गरुड जिस पुरुषके शिरके विषये कीड़े उत्पन्न होतेहैं हे कश्य पके पुत्र सो बुद्धिमान् पुरुष शुद्धिके वास्ते कृच्छ्र व्रतकों आचरण करे ॥ १ ॥ जो च्यवनजीने कहाहै कि कृमिओंके पौणेमें सांतपन व्रत करे और एक बैल दक्षिणा देवे

एह वाक्यं जब एक समयके विषय अनेकों जखमोंके विषय तीक्ष्णकी डेउत्पन्न होवें तिस विषय विषे जानना इस स्थानमें क्षत्री आदिओंको एह प्रायश्चित्त एक एक पाद न्यून जानना अर्थात् क्षत्रीको तीन ३ पाद सांतपन व्रत और वैश्यको आधा और शूद्रको एक पाद जानना ॥ दिनमें मैथुनादिके विषयमें शंखजीने कहाहैं दिवेति दिनके विषय मैथुननूं कर्के और तिसी प्रकार जलके विषय नग्न होकर स्नान करके और नंगी बगानी स्नान देखके एक दिन भोजन न करे इति ॥ १ ॥ नग्न शब्दका अर्थ दिखातेहैं नग्न इति एक वस्त्र वाला पुरुष नग्न होताहै इस वचनमें दो २ वस्त्र लय करके अर्थात् धोती और एक ठपरणा

तद्युगपदनेकव्रणेषु खरकृम्युत्पत्तौ ज्ञेयम् ॥ अत्र क्षत्रियादीनां पादपाद न्यूनम् ॥ दिवामैथुनादौ तु शंखः ॥ दिवा च मैथुनं कृत्वा नग्नः स्नात्वा तथांभसि नग्नां परस्त्रियं दृष्ट्वा दिनमेकमभोजनमिति ॥ १ ॥ नग्नस्त्वेकवासाः स्यादिति वचनाद्वस्त्रद्वयवान् स्नायादित्यर्थः अत्र नग्नस्नानादावेकरात्र त्रिरात्रयोरभ्यासाद्यपेक्षया व्यवस्था द्रष्टव्या निषिद्धकाष्ठदंतधावने वृद्धपाराशरः प्राह ॥ पलाशशिशपाकाष्ठदंतधावनकृन्नरः दिवा कीर्तिसमस्तावद्यावद्गानैव पश्यतीति ॥ १ ॥ एतच्च निषिद्धकाष्ठांतराणामप्युपलक्षणम् ॥

इनानुं धार करके स्नान करे ॥ इस स्थानमें नग्न स्नानादियोंके विषय एक रात्र और तीन ३ रात्र इनकी व्यवस्था अभ्यासादियोंकी इच्छा करके जाननी अर्थात् काममें अभ्यासके विषय तीन ३ रात्र उपवास जानना ॥ निषिद्ध काष्ठकी दातनके विषय वृद्धपाराशरजी कहतेहैं पलेति पलाह और टाली इनके काष्ठांकी दातन करणे वाला पुरुष तितना पर्यंत नाइंके तुल्य होताहै जितना पर्यंत गीकों न देखे ॥ १ ॥ पलाशशिशपा इस पद करके खजूर और केउडा और नारकेल इत्यादि जौं निषिद्ध काष्ठ हि इनकाभी ग्रहण करणा

ब्रह्मचारीके धर्मके नाशके विषय वौधायनजीका वाक्यहै शौचेति शौच और आचमन और संध्यावंदन और कुशा और भिक्षा और होम इनका त्याग और शूद्रादिके साथ स्पर्श और कौपीन और कटिसूत्र और यज्ञोपवीत और तडागी और दंड और मृगाण इनका त्याग और दिने सौणा और छत्रडोका धारणा और पीये पाणे और पुष्पादि मालाका धारण करणा और बुटना मलना और चंदनादि सुगंधि वाले द्रव्यका मलना और सुरमा पाणा और जलकीड़ा और जूवाखेलणा और नृत्य और गायन और वाजा इनके विषय प्रीति करणी और पापंडी और चंडाल इत्यादियोंके साथ संभाषण करणा

ब्रह्मचारिधर्मलोपेवौधायनः॥ शौचाचमनसंध्यावंदन दर्भभिक्षाग्निकार्यराहिं त्यशूद्रादिस्पर्शन कौपीनकटिसूत्रयज्ञोपवीतमेखलादंडाजिनवर्जन दिवा स्वाप छत्रधारण पादुकाध्यारोहण मालाधारणोद्धर्तनानुलेपनांजनजळक्रीडाद्युत्तनृत्यगीतवाद्याद्यभिरति पापंडिचंडालादिसंभाषण पर्युषितभोजनादि ब्रह्मचारिव्रतलोपसकलनिर्हारार्थं ब्रह्मचारी कृच्छ्रत्रयंचरेत् महाव्याहृतिहोमं चकुर्यात् प्रथमं व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्च तस्त्राज्याहुतीर्हुत्वा ॥ ओंभूरग्नयेष्टुथिव्यै महतेचस्वाहा ओंभुवोवायवे चांतरिक्षायमहतेचस्वाहा ओंस्वश्चादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहा ओंभूर्भुवःस्वश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चमहतेचस्वाहा ओंपाहिनोअग्नएनसेस्वाहा

और वेहे अन्नका भक्षण करणा इन संपूर्णोंके विषय और ब्रह्मचर्य व्रतके नाशके विषय संपूर्णपापके त्यागणके अर्थ ब्रह्मचारी तीन ३ कृच्छ्र व्रत करे और महाव्याहृतिआं करके हवन करे और प्रथम एक एक महाव्याहृति करके तीन ३ आहुतिआं करे पश्चात् सभना महाव्याहृतिआं करके क्या ओंभूः स्वाहा १ ओंभुवःस्वाहा २ ओंस्वःस्वाहा ३ ओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा ४ इसरीतिसे तीनके पीछे एक आहुति करे इस प्रकार व्याहृति आं करके चार घृतकीआं आहुतिआं करके पश्चात् ओंपाहिनो अग्न एनसेस्वाहा इत्यादि करके हवन करे सो मूलमेंहि स्पष्टकीता होआहे ॥

२२० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा०

ऐसे नउ १ आहुति कर्के पुनरेति फेर महाभ्याहृतिआंकर्के हवनकरे इति एह प्रायश्चित्त थोडे धर्मके नाशके विषय करणा ॥ अर बहुते धर्मके नाशके विषय अधिक प्रायश्चित्तनू ऋग् विधान ग्रंथ विषय शौनकजी कहतेहैं तमिति श्मशानके शिवालयके विषय बैठकरके (तंवोधिया) इत्यादि मंत्रका एक लक्ष १००००० जपकरे ब्रह्मचारिका धर्म शून्यभी होवे तदभी इसजपकरके पूर्ण हो ताहै इति ॥ ग्रहण कीता होआ जो व्रत तिलके भंगके विषय बायुपुराणमें लिखाहै लोभेति लोभ और मोह और प्रमाद इनसे कदाचित् व्रतभंग होवे तब तीन १ उपवास व्रत करे अथवा

ओंपाहिनोऽग्नेविश्ववेदसेस्वाहा ॥ ओंयज्ञपाहिविभावसोस्वाहा ॥ ओंसर्व पाहिशतक्रतोस्वाहा ॥ ओंपुनरूर्जानिवर्तस्वपुनरग्रदवायुपा पुनर्नःपाह्यं हसः सहरय्यानिवर्तस्वाग्नेपिवस्वधारयाविश्वशियाविश्वतस्परिस्वाहा पुनर्व्याहृतिभिर्जुहुयादिति ॥ एतदल्पधर्मलोपे ॥ बाहुल्ये तु प्रायश्चित्तवि शेषमाह ऋग्विधानेशौनकः ॥ तंवोधियाजपेन्मंत्रलक्षप्रेत्यशिवालये ब्रह्म चारिणोहिधर्मशून्यचेत्पूर्णमेवहीति प्रेतानांयोग्यस्थानंप्रेत्यंश्मशानमित्य र्थः ॥ गृहीतव्रतभंगेवायुपुराणे ॥ लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोयदाभवेत् उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्याद्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् अत्र वाशब्दः ॥ समुच्चयेमिथ्याशपथे यमः ॥ विप्रस्यवधसंयुक्तंकृत्वातुशप थंमृषा ब्रह्महायावकान्निनव्रतंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ ॥ एतच्चशपथांतर स्याप्युपलक्षकम् ॥

केशांकामुंडनकरावे ॥ इस प्रायश्चित्तनू करके पश्चात् व्रतकाधारणकरे १ झूठी सुगंदके विषय यमजी का वचनहै विप्रेति ॥ मैंने ब्रह्महत्याकीतीहै जेकर एह कामकीताहै ऐसे ब्राह्मणकी झूठी सुगंद चु कके ब्रह्मघाती होताहै सो यवांके अन्नकरके चांद्रायण व्रतनू करे ॥ १ ॥ और सुगंदकाभी एही प्रायश्चित्त जानना अर्थात् और तरहांसेभी जेकर कोई शपथकरेगा कि मेरेकोंगीकी शपथ है जैमे वेश्या द्वारपरभीगयाहोयाइत्यादि तौभी यावकान्न कर्के चान्द्रायण व्रत करे ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०११ ॥ टी० भा०॥ २२१

सुक्रतमिवि जेडे पुरुष संपूर्ण आयुषाके विषय कीते होए पुण्य नू किसेके ताई देदेतेहैं सो धर्मराज जीकी आज्ञासे शिलाकर्के पेषणकरीदेहैं जिस प्रकारतैसे पापी पुरुष पेषण करीदेहैं १ एहमार्कण्डेयपुराणकेवाक्यते जानना ॥ ऐसे स्थानों विषेप्रायश्चित्तकी व्यवस्था करदेहैं यत्रेति जिस स्थानमें प्रायश्चित्त कथन कीताहै अथवा जिस स्थानमें नहि कथन कीताहै इस उशनसजीके वाक्यते तिस स्थानके विषय प्राजापत्य व्रत कल्पन करणा ॥ ब्राह्मणकों क्षत्रियादि वृत्ति करके धनके संचयकरणमें प्रचेतसजीने कहाहै ॥ ब्राह्मणेति पिता और माता और बहु भृत्य इनके नाशके विषय आपदसमयमें क्षत्रीके धर्मनू ब्राह्मण जब श्रंगीकार करेअर तिसके विषय एक वर्ष

सुक्रतंयेप्रयच्छंति यावज्जीवकृतंनराः तंपिप्यंतेशिलापेषैर्यथैतेपापकारिण इतिमार्कण्डेयपुराणवाक्यात् यत्रोक्तंयत्रवानोक्तमित्यौशनसवाक्यात्तत्र प्राजापत्यः ॥ कल्पनीयःब्राह्मणस्यक्षत्रियादिवृत्त्याधनार्जने प्रचेताः । ब्राह्मणस्यापत्कालेपितृमातृवहुभृत्यस्यानंतरंक्षत्रोपनिवेशःआपत्कालमेवदर्शयति पित्रिति पित्राद्यभावेक्षत्रोपनिवेशः क्षत्रधर्मस्वीकारश्चेतदा तत्रेत्यादि तत्रसंवत्सरमर्थप्राप्तौ ॥ चांद्रायणंचेरदिति वैश्ववृत्तिजीवने तत्र वर्षाभ्यंतरे मासादौचांद्रायणभागहारःकल्पनीयः संवत्सरादूर्ध्वद्वैगुण्यत्रैगुण्यादिकल्पनीयम् शूद्रवृत्त्याधनार्जने मनुः ॥ नकथंचनकूर्वीतब्राह्मणः कर्मवर्षलम् बृषलःकर्मवाब्राह्मपतनीयेहितेतयोः ॥ १ ॥ वार्षलंकर्म सेवा

व्यतीतहोजावे तब चांद्रायणव्रतकरे । अर जब वैश्यवृत्ति करके उपजीविकाकरे अर तिसस्थान के विषय वर्षके मध्यमेंहि मासादिके व्यतीतहोनेमें चंद्रायणव्रतके तीन ३ भाग अर्थात् तीनपाद कल्पन करणे योग्यहैं अर जेकदाचित् वर्षते उपरंतहोजाए तब कालके अनुसारदूणा अथवा त्रिणाहत्यादि चांद्रायणव्रत कल्पना करणे योग्यहै ॥ शूद्रवृत्ति करके धनके एकव्रकरणमें मनुजीने कहाहै नेति ब्राह्मण शूद्रके कर्म नू कदाचित् भी न करे अर्थात् सेवा न करे अर शूद्र ब्राह्मणके कर्मनू न करे क्योंकि ब्राह्मण और शूद्र इनोको परस्पर कीतेहोये कर्म पतित कर देते हैं ॥ १ ॥

२२२ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

इसप्रकार उपक्रम कर्के फेर उपनयन कर्मके साथ कृच्छ्रादि व्रतकी पश्चात् प्रवृत्तिके विषय मनु जीकावाक्यहै प्रेति परकर्मके विषये स्थित होकर जेडे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य प्रायश्चित्त नुं करतेहैं और अपणी जातितें भ्रष्ट होए होएजो ब्राह्मणहैं तिनांकोभी एही प्रायश्चित्त कथन करे १ ॥ शूद्रकोभी ब्राह्मण औरक्षत्री अथवा वैश्यके कर्मकरणके विषय एहि प्रायश्चित्तहै क्योंकि शूद्रको भी पर कर्म होनेसे अर्थात् निदित कर्म होनेसे परंतुपरवृत्तिकर्के एकत्र कीता होआ जो धनहै तिस त्यागके सहित एह प्रायश्चित्त है क्योंकि जिस कारणतें निदित कर्म केधन नुं संचितकरतेहैं सो तिसधनके त्यागणेंते पीछे प्रायश्चित्त से शुद्ध होतेहैं इस मनुके वचनतें जानना ॥ स्त्रीके धन कर्के उपजीविका करणमे कहते हैं चांद्रेति एक चांद्रायण व्रत कर्के संपूर्ण पापांका नाश होताहै सोधन स्त्रीके तांई दे करके चांद्रा

एवमुपक्रम्य पुनरुपनयनसहितकृच्छ्राद्यनुवृत्तौ सएव ॥ प्रायश्चित्तंप्रकुर्वं
तिविकर्मस्थास्तुयोद्विजाःब्राह्मण्याच्चपरित्यक्तास्तेषामप्येतमादिशेत् १ ॥
शूद्रस्यापिद्विजकर्मकरणेऽप्येतदेव ॥तस्यापि तद्विकर्मत्वात् अर्जितधनत्या
गपूर्वकंचैतत् ॥ यद्वर्हितेनार्जयंतीति मनूक्तेः ॥ स्त्रीधनोपजीवनेतु सएव
चांद्रायणेनचैकेन सर्वपापक्षयोभवेत् ॥ चान्द्रायणंस्त्रियैतद्धनदंत्वाकार्य
म् ॥ भार्यायामुखमैथुनेतृशनाः ॥ यस्तुब्राह्मणोधर्मपत्नीमुखमैथुनंसेवेतस
दुष्यतीति वैवस्वतः ॥ प्राजापत्येनशुद्ध्यतीति ॥ गोयुक्तयानस्थस्यमैथु
नेयमः ॥ यदिगोभिःसमायुक्तंयानमारुह्यवैद्विजः मैथुनंसेवेतचैवमनुःस्वा
यंभुवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥ त्रिरात्रंक्षपणंकृत्वासचैलस्नानमाचरेत् गोभ्योऽथवस
कंदद्याद्घृतंप्राशयविशुद्ध्यतीति ॥ २ ॥ यत्तु स्मरणम्

यण व्रत करणा स्त्री धन इस जगाओहै जो विवाह विषे पिवांदियोने दिताया और
श्वशुरके घर पाद वंदनके समय दिताहै ॥ स्त्रीके मुखके विषय मैथुन करणमें उशनसका
वचन है यइति जो ब्राह्मण अपणी धर्म पत्नीके अर्थात् विवाहिता स्त्रीके मुखमे मैथुन
करताहै सो पतित होताहै अर्थात् पापी होताहै इसका प्रायश्चित्त वैवस्वत मनुजीने
कहाहै कि प्राजापत्य व्रत कर्के सो शुद्ध होताहै इति ॥ वैल कर्के युक्त जो गाडी तिसके वि
षय स्थित पुरुषके मैथुनमें यमजीका वचनहै यदीति जद ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य वै
ल कर्के युक्त जो गाडी किसके विषय स्थित होकर्के मैथुन करताहै इसमे स्वायं भुव मनुजी
कहते भये ॥ १ ॥ तीन ३ रात्र उपवास को कर्के सहित वस्त्रां दे स्नान करे अर वैलांके ताई
घासदेदेवे अर्थात् वैलांनु चारे पश्चात् घृतका भक्षणकरे तो शुद्धहोताहै ॥ २ ॥ जो कथनेहै

मैथुनमिति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य वैलां कर्के संयुक्त जो गाडी तिसके विषयस्थित होकरके स्त्रीके अथवा पुरुषके साथ दिनमे मैथुनको करताहै सो सहित वस्त्रांके स्नानकरे । १ । एह अकामते एक वारकरणके विषय जानना ॥ अर काम कर्के पुरुषके साथ मैथुन करणका प्रायश्चित्त जाति भ्रंशादिके विषय कहाहै । तू मेरीमाताके समानहै ऐसे जो पुरुष क्रोधते अपनी स्त्रीको कह कर्के फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै तिसके विषय पराशरजीने कहाहै यइति जो पुरुष क्रुद्धहो कर्के अपनी स्त्रीको मैथुनके अयोग्यनू कहाहै अर्थात् तू मेरी माताहैं ऐसे वचन कहाहै अर फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै सो पुरुष ब्राह्मणांके मध्यमें अपने प्रायश्चित्त को कथन करवाए । १ । इसीमें औरवचन है आर्तइति आर्त क्या दुःखी अथवा क्रोध अथवा अज्ञान अथवा क्षुधाअथवा तृषा अथवा भय इनां कर्के पीडित होआ होआ

मैथुनंतुसमासाद्य पुंसियोपितिवाह्विजः गायानेपुदिवाचैवंसवासाःस्नानमा चरंत १ तदकामतः सकृत्करणेज्ञेयम् क्रोधाद्धार्यात्वंमेमात्रासदृशीत्युक्त्वा पुनःसंभोगेपराशरः । यस्तुक्रुद्धःपुमान्ब्रूयाज्जायायास्तुअगम्यताम् पुनरिच्छतिभर्याचविप्रमध्येतुवाचयेत् १ आर्तःक्रुद्धस्तमोंधोवाक्षुत्पिपासामयर्दितःदानंपुण्यमकृत्वावा प्रायश्चित्तंदिनत्रयम् २ उपस्पृशेत्त्रिपवणंमहानद्युपसंगमे स्नानांतैचैवगांदद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्वशेति ३ वाचयेत्स्वस्यप्रायश्चित्तस्योपदेशंकारयेत् पुण्ययागादिसंकल्पितंदानयागाद्यकृत्वेत्यर्थः वस्तिकर्मणियमः । वस्तिकर्मणिरुद्धैश्चप्रच्छर्दनविरेचनैः शिशुकृच्छ्रेणशुद्धयेततस्मात्पापान्नसंशयः १ प्रच्छर्दनविरेचनयोरभ्यासएवशिशुकृच्छ्रःअन्यत्रतुस्नानमात्रम्

दान और यज्ञादि नून कर्के तिसस्त्रीनू गमन करे तां प्रायश्चित्त तीन ३ दिन करे । २ । और जेकर दानादि होण तो व्रतका प्रयोजन नहि तिसके विना कहतेहैं उपेति अर तीन काल महानदीके संगमके विषय स्नान करे और स्नानके अंतमें गौसंकल्प करे और दश १० ब्राह्मणा नून भोजन गुलावे ॥ ३ ॥ वस्तिकर्मके विषय यमजीका वचनहै वस्तीति मूत्राशयकी चिकित्साकानाम वस्तिकर्महै मूत्राशयके शोधन करणके वास्ते उलटी अथवा जिलाव करवाए तिस पातें पुरुष शिशु कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्ध होताहै इसमें संदेह नहि । १ उलटी और जलावके अभ्यासके विषय शिशुकृच्छ्र व्रत नू करे जेकरकदाचित् करवाए तद स्नान कर्के हि शुद्ध होजाताहै और वस्तिकर्मका स्वरूपदेखणा होवे तब भाव प्रकाशमें देखलेणा

२२४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

तिस प्रकार अजीर्णदिकेविषयभी यमजीका कथनहै । अजीति अन्नकान पचना और पूर्वकहा जो अभ्युदित और उदमन और क्षौर कर्म और मैथुन और खोटा स्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ स्पर्श इनके विषयमें स्नान मात्र अर्थात् केवल स्नानहि कहाहै । २ । देवताके मंदिरके शिलादि करके अपने गृहके बनानेमेयमजी निंदाकरतेंहैं इष्टेति देवताके मंदिरमे लगिआहोआं जो पाकि आ इटां और काष्ठ और लोहा और पापाण इनानूं ब्या करके लोभतें अपने गृहके विषय जो पुरुष जोडतें हैं अर्थात् इनां करके अपने गृहनूं बनातेहैं । १ । सो एकले और भयभीत और क्षुधातृषा करके दुःखी होए होए जितना पर्यंत पापका नाश नहि होता तितना पर्यंत बंधनमे

तथाच सएव ॥ अजीर्णेऽभ्युदितेवान्तेऽश्वश्रुकर्मणिमैथुने दुःस्वप्नेदुर्जनस्प
शैस्नानमात्रंविधीयते ॥ २ ॥ देवागारशिलादिना स्वगृहकरणंनिंदति यमः
इष्टकाकाष्ठलाहाश्मदेवालयसमन्वितम् गृहीत्वात्मगृहेचैवलोभाद्वैयोजयं
तिये १ ॥ एकाकिनस्तथोद्दिग्धाः क्षुत्तृपापरिपीडिताः बंधनेतेतुतिष्ठंतियाव
त्पापस्यसंक्षयः २ ॥ अत्र प्राजापत्यचान्द्रायणादिकल्प्यम् ॥ वानप्रस्थय
त्योव्रतभंगे सएव वानप्रस्थोदीक्षाभेदेकृच्छ्रंद्वादशरात्रं चरित्वामहाकक्षं व
र्द्धयेत् ॥ भिक्षुर्वानप्रस्थवत्सोमवृद्धिवर्जस्वशास्त्रसंस्कारंचेति दीक्षाभे
दोयमनियमातिक्रमः महाकक्षमौषधवनप्रदेशमुदकसेचनादिना वर्द्धयेत्
सोमशब्देनौषधिसामान्यंलक्ष्यते ॥ तद्वृद्धिः परंभिक्षोर्निवर्तते परंतु स
ममित्यर्थः स्वशास्त्रसंस्कारः प्राणायामाभ्यासः ॥

अर्थात् नरकमें स्थित होतेहैं ॥ २ ॥ इसके विषय प्रायश्चित्त प्राजापत्य और चांद्रायणादिव्रत कल्पन करणा ॥ वानप्रस्थ और यति के व्रत भंगमेंभी यमजीका वचनहै ॥ वानेति वानप्रस्थी जब यम और नियम कर्माका उल्लंघन करे तब द्वादश १२ रात्रके कृच्छ्र व्रत नूं कर्के पश्चात् औषधिके वन नूं जलके संचन करणे कर्के वधावे ॥ और संन्यासी भी जब यम और नियमादि कर्माका उल्लंघन करे तब औषधिकी वृद्धितें विना अपने शास्त्रके संस्कारनूं करे अर्थात् प्राणायामके अभ्यास नूं करे और औषधियोंकी वृद्धिका संन्यासीको निषेधकितहै (दीक्षा भेदोयमनियमातिक्रमः) इत्यादि पदों कर्के पूबले वाक्यका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥

हारीतजीका वाक्यहै झूठ और चुगली इनके वचनमें अर्थात् झूठ और चुगली कथन कर्के संन्यासी तप्त कृच्छ्र व्रत नू करे ॥ क्रोध और अहंकार और चुगली इनके विषय छा गलेय जीका कथनहै व्रतेति संन्यासियोंके जो व्रत अर तिसी प्रकार जो उपव्रत हैं इनां मेंसे एक एकके भी उलंघनके विषय प्रायश्चित्त विधानकरीदाहै कि एक १ दिन रात्र उपवासनूरक्षकके पश्चात् कृच्छ्र व्रतके सहित चांद्रायण व्रत नू करे ॥ १ ॥ व्रत और उपव्रतां नू वौधायनजी कह तेहैं आदिके विषय मौनिके व्रतानू कहतेहैं ॥ अहिंसेति जीवोंको न मारणा और सत्य कहणा और चोरी न करणी और मैथुन नकरणा एह संन्यासीके व्रत कहे हैं ॥ इसमें उपरंत उपव्रतानू कहतेहैं अक्रोध इति क्रोध न करणा और गुरुकी शुभ्रूषा करणी और सर्वदा काल प्रसन्न

हारीतः अनृतपिशुनवचने भिक्षूणांतप्तकृच्छ्रः ॥ क्रोधाहंकारपिशुनेषु च छागलेयः ॥ व्रतानियानिभिक्षूणांतथैवोपव्रतानिच एकैकातिक्रमेतेषांप्रा यश्चित्तंविधीयते अहोरात्रोपिबोभूत्वाकृच्छ्रचांद्रायणचरेत् १ । कृच्छ्रपदं चांद्रायणविशेषणम् व्रतोपव्रतान्याह वौधायनः अथ मौनिव्रतानि । अहिंसा सत्यवचनमस्तेयंमैथुनस्यचवर्जनम् ॥ अथोपव्रतानि ॥ अक्रोधोगुरुशुश्रू षाप्रसादशौचमाहारशुद्धिश्चेति जलप्रतिविंदर्शनादौयाज्ञवल्क्यः ॥ म यितेजइतिच्छायांस्वांष्टृवांनुनिवैजपेत् सावित्रीमशुचौष्टृचापलेचानृते पिच ॥ १ मयितेज इतिमंत्रोवाजसनेयिप्रसिद्धः

रहणा और शौच करणी और शुद्ध भोजन करणा एह उपव्रत कथन कीते हैं ॥ जलके विषय छायाके दर्शनादिमें अर्थात् जलमें अपना स्वरूपदेखनेमें याज्ञवल्क्यजीने कहाहै मयिति जल के विषय अपनी छायां देखकरके (मयितेजः) इत्यादि वाजसनेयिके मंत्र नू जपे और अशु द्धवस्तुके दर्शनमें अर चित्तकीअनवस्थिति और झूठवचन इनके विषयमें सावित्रीनू जपे अर्थात् गायत्रीका जप करे ॥ १ ॥ इसजगा मयितेज इसमंत्रका और गायत्रीका जप एकवारहि करणा चाहिए और जेकर बहुतवार प्रतिविंवादि दर्शनहोवे तों बहुवार करणा

अशुचिस्थान और मूत्र और पुरीषादि और अनवस्थिति और निरर्थक शरीरकी क्रिया और अंगीकार करके पश्चात् झूठ कथन करणा इनके विषय हारीतजीका वाक्य है ॥ प्रतीति जो पुरुष प्रथम अंगीकार करके पश्चात् झूठ अथवा मिथ्याकों सत्य कथन करे सो तप्तकृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतकों करे ॥ १ ॥ एह वाक्य गुरुकों प्रथम कथन कीता जो है क्योंकि मैं तुसाडा एह काम करांगा अथवामैं तुसानूं एह वस्तु दिआंगा इतना वचन कहकर पश्चात् न करणा तिसके विषय जानना क्योंकि प्रायश्चित्तकों बड़ा होणेतें । भोजन कालके विषय जो मौनव्रत है तिसके नाशके विषय पराशरजीका वचन है मौनेति मौन व्रतकों अंगीकार करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा शूद्र स्थित होआ होआ न कथन करे अर्थात् भोजनतें पहले बोल एाथा तिस विषय न बोले अर भोजन भक्षण करदा होआ जो बोले सो पुरुष शेष अन्नतूं त्यागदेवे क्या बोलणेतें पीछे भोजन न करे ॥ १ ॥ केवल मुखकके

अशुचौ मूत्रपुरीषादौ चापले वृथा चेष्टायां प्रतिश्रुत्या नृतोक्तौ हारतिः ॥ प्रति श्रुत्या नृतं व्रूयान् मिथ्या सत्यमथापि वा सतप्तकृच्छ्रसहितं च रेच्यन् चांद्रायणव्रतमिति ॥ १ ॥ गुरुवस्तु विषयक प्रतिश्रुता करण परमेतत् प्रायश्चित्तस्य गुरुत्वात् भोजनकालीन मौनव्रतलोपे पराशरः मौनव्रतं समाश्रित्य आसीनो न वदेद् द्विजः भुजानो हि वदेद्यस्तु तदन्नं परिवर्जयेत् ॥ १ ॥ केवलमुखेन जलपानेन एव । विद्यमाने पुहस्ते पुब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः तोयं पिवति वक्रेण श्वयो नौ जायते ध्रुवम् । २ । असपिंडैः सहरोदने पारस्करः । मृतस्य बांधवैः सार्द्धं कृत्वा तु पारिदेवनम् वर्जयेत्तदहोरात्रं दानं श्राद्धादिकर्म चेत्यनेनैकाहः ॥ १ ॥ एतच्च कामतः अकामतस्तु स्नानमेव ॥ प्रेतालंकरणं शंखः ॥ कृच्छ्रपादः सपिंडस्य प्रेतालंकरणे कृते अज्ञानादुपवासः स्यादशक्तौ स्नानमिष्यत इति ॥ १ ॥ कामतो द्विगुणम्

जल पीणेके विषय भी पराशरनेहि कहा है विद्येति हत्थाके हुंदिआं जो ज्ञानदुर्बल अर्थात् मुख ब्राह्मण जलकों केवल मुख करके पीवता है अर्थात् लम्मा पैकर मुखके साथ पान करता है सो निश्चय करके कुत्तेकी योनिकों प्राप्त होता है ॥ २ ॥ असपिंडांके साथ रुदन करणके विषय पारस्करजीका कथन है मृतेति मृत होआ जो कोई असंबंधी पुहप है तिसके संबंधिआंके साथ रुदनतूं करके तिस दिन रात्रके विषय दान और श्राद्ध अर आदिपद करके तर्पणादि इनानूं न करे क्योंकि तिसते वोह अशुद्ध है १ सो एह इच्छा करके जब करे तब एक दिन व्रजन करे अर जब इच्छासे न करे तब स्नान करकेहि शुद्ध होता है ॥ १ ॥ प्रेतके भूषण करणे विषय शंखजीका वचन है कृच्छ्रेति भिन्न पिंड वाला जो प्रेत है तिसके भूषण करणेमें अर्थात् स्नानादि करणेमें कृच्छ्र व्रतका एक पाद करे अर जब अज्ञानतें करवाए तब एक दिन उपवास करे अर जब इसमें शक्ति न होवे तब स्नानमात्रहि इच्छित है ॥ १ ॥ अर कामके विषयमें दूणा प्रायश्चित्त करे ॥

जो तप्त कृच्छ्रकी प्रवृत्तिके विषय अंगिराजी का वाक्य है कि आत्मत्याग करणवाले प्रेताके संस्कार करणके विषय अर्थात् शवाके स्नानादि करवायेमें पातकी होता है अर्थात् तब कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है सो एह वाक्य अभ्यासके विषयमें जानना ॥ सजाति और भिन्न जाति के शवके पीछे गमनके विषयमें मनुजीका वचन है अन्विता सजाति और भिन्नजाति वाला जो शव है तिसके पीछे इच्छासे जो पुरुष जाता है अर्थात् मुरदेके दाह करण वास्ते जो साथ जाता है सो सहित वस्त्राके स्नान करके और अग्निनूँ स्पर्श करके अर घृतका भक्षण करे तो शुद्ध होता है ॥ १ ॥ इस स्थानमें इच्छया इस पदके ग्रहण करणसे एह कामके विषयमें जानना ॥ अर अकामके विषयमें केवल स्नानहि कथन कीता है ॥ फेर याज्ञवल्क्यने जो कहा है कि ब्राह्मेति भिन्न पिंड वाले ब्राह्मणने ब्राह्मण और क्षत्री

यत्तु तप्तकृच्छ्रानुवृत्तौ अंगिराः ॥ आत्मत्यागिनांच संस्कृतौ तदस्तुपा
तककारीचेति तदभ्यासे ॥ समानेतरजातिप्रेतानुगमने मनुः । अनुगम्येच्छ
याप्रेतं जातिमज्ञातिमेव च स्नात्वासचैलः स्पृष्ट्वाग्निघृतं प्राश्य विशुद्ध्यतीति १
अत्रेच्छयेति ग्रहणादेतत्कामतः अकामतस्तु स्नानमेव यत्तु याज्ञवल्क्यः
ब्राह्मणेनानुगंतव्येन शूद्रो न द्विजः क्वचित् अनुगम्यां भसि स्नात्वा स्पृष्ट्वाग्निं
घृतमुक्छुचिः ॥ १ ॥ ब्राह्मणेनासपिंडेन द्विजो विप्रादिः ॥ अस्य च घृतप्राशन
स्य भोजनकार्यविधाने प्रमाणाभावान्न भोजननिवृत्तिरिति मिताक्षरायाम्
तन्मानवसमानविषयम् ॥ वस्तुतो घृतस्य प्रायश्चित्तार्थत्वादभोजनमेव यु
क्तम् अतएव वसिष्ठेन मनुष्यास्थिस्निग्धं स्पृष्ट्वा त्रिशत्रुमस्निग्धेत्वहोरात्रं
शवानुगमने चैवमिति ॥

और वैश्य अथवा शूद्र इनके मृत होयां पीछे गमन नहि करण योग्य जे कदाचित् जाएभी तब जलके विषय स्नान करके अर अग्निनूँ स्पर्श करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होवा है ॥ १ ॥ इस घृतभक्षणकों भोजन कार्यकी विधिके विषयमें अप्रमाणा होणेतें और भोजन की निवृत्ति नहि जाननी एह मिताक्षरामें लिखा है सो मनुजीके वचनके तुल्यहि जानना वास्तवतें घृत भक्षणकों प्रायश्चित्तके अर्थ होणेतें भोजन नहि भक्षण करण योग्य ॥ इसी कारणसे वसिष्ठजीने कहा है मनुष्येति पुरुषकी नवीन हड्डीका स्पर्श करके तीन ३ रात्र उपवास करे अर पुराणी हड्डीका स्पर्श करके एक १ दिन रात्र उपवास करे इसी प्रकार शवके पीछे गमनके विषय जानना चाहिए ॥

२२८ ॥ श्रीरणवीर कौरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा०

विप्रेति ब्राह्मण प्रेतके पीछे गमनके विषय एक दिन कथन करनेमें क्षत्री प्रेत और वैश्य प्रेत के पीछे गमनके विषय कुछक अधिक प्रायश्चित्त कल्पन करना चाहिए ॥ ब्राह्मणको शूद्रके पीछे गमनके विषय पराशरजीका वाक्य है । प्रेतीति लेजाईदे होए शूद्र शवके पीछे जो मूर्ख ब्राह्मण जाता है सो तीन १ रात्र व्रत करके शुद्ध होता है ॥ १ ॥ तीन रात्र व्रतके कीर्तिआं होआं पश्चात् समुद्रमें प्रवेश करण वाला जो नदी है तिसको प्राप्त हो करके अर्थात् बड़ी नदीके विषय स्नान करके अर पश्चात् सो १०० प्राणायाम को करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होता है ॥ २ ॥ इस स्थानमें घृत भक्षणको शुद्धिके अर्थ कथन करनेमें भोजनका निषेध नहि एह वाक्य कामका विषय है ॥ अकामके विषयमें इसमें आधा प्रायश्चित्त करना ॥ इसी प्रकार क्षत्रीको वैश्य और शूद्रप्रेतके पीछे गमनमें अर वैश्यको शूद्र प्रेतके पीछे गमन करनेमें प्रायश्चित्त कल्पन करना ॥ अग्निहोत्रादि कर्म और वा

विप्रानुगमने एकाहस्योक्तत्वात् क्षत्रियवैश्यानुगमने त्वधिकं कल्प्यम् ब्राह्मणस्य शूद्रानुगमने पराशरः ॥ प्रेतीभूतंतुयःशूद्रं ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः अनुगच्छेन्नयमानं सत्रिरात्रेण शुद्ध्यति १ त्रिरात्रेतु ततश्चार्णेन दीगत्वासमुद्र गाम् प्राणायामशतं कृत्वा घृतं प्राश्य विशुद्ध्यतीति २ अत्र घृतप्राशनस्य शुद्ध्यर्थाभिधानात् भोजननिवृत्तिः ॥ एतच्च कामतः अकामतस्त्वर्द्धम् ॥ एवं क्षत्रियस्य वैश्यशूद्रानुगमने वैश्यस्य शूद्रानुगमने कल्प्यम् ॥ इष्टापूर्तशुभा शुभमहाकर्मस्वनुपहतानामपि ऋत्विगाचार्यादीनां त्रीणि कृच्छ्राणि चांद्रायणाख्यं सर्वप्रायश्चित्तमाह प्रयोगपारिजाते आचार्यः ॥ स एवरजस्वलाकन्यारक्षणे प्रायश्चित्तमाह ॥ कन्यामृतुमतीं शुद्धां कृत्वानिष्कृतिमात्मवानूतथा तु कारयित्वा तामुद्धेतानृशंसधीः १ दद्यात्तदृतुसंख्यागाः शक्तः कन्यापिता यदि दातव्यैकापि निःस्वेन दाने तस्यायथाविधि ॥ २ ॥ तस्यागोर्दानेयथाविधि ऋतुसंख्याकविधि यथास्यात्तथाऽचरणीयमित्यर्थः

पी कूपादि और शुभ और अशुभ एह जो महाकर्म हैं इनके विषयमें चतुर भी हैं ऋत्विक् और आचार्यादि इनको भी त्रय कृच्छ्र और चांद्रायण संपूर्ण प्रायश्चित्तको प्रयोग पारिजातमें आचार्यजी कथन करते भये ॥ सोई आचार्यजी रजस्वला कन्याके रक्षणमें प्रायश्चित्त को कहते हैं । कन्यामिति ज्ञानवाला और नहि निंदाके योग्य बुद्धि जिसकी ऐसा पुरुष प्रथम प्रायश्चित्तको करके अर कन्याको भी प्रायश्चित्त करवाके पश्चात् ऋतुवाली कन्याको विवाह लये ॥ १ ॥ दद्येति अर कन्याका पिता जद समर्थ होवे तब कन्याकी ऋतुके समान गौआं देवे अर्थात् जितनीयां ऋतु लंघीयां होण विवाहतक तितनीयां गौयांका दान करे एह अर्थ है अर कन्याके विधि पूर्वक दानके विषय निर्धनने भी एक गौ देणी योग्य है परंतु तिस गौके दान विषय ऋतु संख्याके नाम करके संकल्प करना ॥ २ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० २२९

सो गौआं जामाता को देणियां अथवा ब्राह्मणको इसका उत्तर कहतेहैं ॥ गा इति
अर कन्याका पिता धनी होवे तब ब्राह्मणोंको गौआं देवे अर जब निर्धन होवे तब दक्षिणा
मात्रदेवे तिस कारणतें ऋतुकी संख्याके समान ब्राह्मणोंको गौआं देवे अथवा कन्या पासों
दुवाए ॥ ३ ॥ उपोष्येति अर कन्या तीन ३ दिन उपवास रखकर पश्चात् रात्रिके विषय
गौआंके दुग्धको पीवे जब ऋतुतें रहित कन्या होवे तिस कालके विषय कन्याके नां
ई भूषण देवे और तिस कन्याको विवाहन वाला वर भी कूष्मांड संज्ञिक मंत्रों करके -
घृतका हवन करे ॥ ४ ॥ श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातन करणके विषय विष्णु रहस्यमें लि
खाहै । श्राद्धविति श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातनको करके गायत्रीके सौ १००
मंत्र करके पवित्र होआ जो जलहै तिसका आचमन करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और

गादद्याद्ब्राह्मणेष्वेवानिःस्वोनिःस्वस्तुदक्षिणाम् तस्मात्तदृतुसंख्येषुब्राह्म
णेषुप्रदापयेत् ॥ ३ ॥ उपोष्यत्रिदिनंकन्यारात्रौपीत्वागवांपयः अट्टष्टरज
सेदद्यात्कन्यायैतन्नभूपणम् तामुद्वहन्वरश्चापिकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतमिति ४
श्राद्धोपवासदिने दंतधावने विष्णुरहस्ये ॥ श्राद्धोपवासदिवसेखादित्वादं
तधावनम् गायत्र्याः शतसंपूतमंबुप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ १ ॥ अन्यान्यपिप्र
कीर्णकान्यपरार्कं शंसः ॥ प्रेतस्यप्रेतकार्याणिअकृत्वाधनहारकः वर्णा
नायद्वधेप्रोक्तंतदधैप्रयतश्चरेत् ॥ १ ॥ अतिमानादतिक्रोधाद्भयादज्ञानतोपि
वा उद्वधीयात्स्त्रीपुमान्वापिगतिरेपांनविद्यते ॥ २ ॥ पूयशोणितसंपूर्णत
मस्यधेसुदारुणे पष्टिवर्षसहस्राणिनरकेयदुपासते ॥ ३ ॥ गोभिर्हतं
तथोद्वदंब्राह्मणेनचघातितम् संस्पृशंतेतुयेविप्रागरदाश्चाग्निदाश्चये ॥ ४

भी प्रकीर्णक प्रायश्चित्त अपरार्कमें शंखजीने कथन कीते है ॥ प्रेतति ॥ प्रेतके धन को
ग्रहण करणे वाला जब प्रेतके कर्मको न करे तब वर्णोंके हत करणके विषय जो प्रा
यश्चित्त कहाहै तिसतें आधा प्रायश्चित्त इंद्रियोंकोरोककरकरे १ अर और कहतेहैं अतीति बहु
त मान और बहुत क्रोध और भय अथवा अज्ञान इनतें स्त्री अथवा पुरुष किसीको
फांसी दे देवे तिनकी गति नहि होती । २ । तिनकी व्यवस्था कहतेहैं पूयेनि पाक और रुबिर
करके पूर्ण होआ होआ और अंधकार करके युक्त और भयानक जो नरक है तिसके
विषय सठ हजार ६०००० वर्ष रहतेहैं ॥ ३ ॥ और कथन करतेहैं ॥ गोभिरिनि गौआंने
जो मारिआ है और तिस प्रकार फांसी ले करके जो मृत होआ है और ब्राह्मणने जो
मारिआ है इनको जेडे ब्राह्मण स्पर्श करते हैं और जेडे विषके देणे वाले हैं और जेडे
आमिके देणे वालेहैं ॥ ४ ॥

२३० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा०

अन्विति और जेंडे फाँसी कर्के मृतहोयेके पीछे जातेहैं और जेडे पाशके छेदने वाले हैं सो संपूर्ण पापकर्के संयुक्तहोतेहैं तिनांकी शुद्धि नूं मैं कहताहूं । ५ । तमेति सो सब तप्तकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोतेहैं और ब्राह्मणांको भोजन खुलावें और ब्राह्मणकेताई वैलकेसहित गौ दक्षिणादेवें ६ ॥ इहां एकवचन बहुवचनके स्थानजानना इसी विषयमें संवर्त्तजोका बाक्यहै गविति गौअनि जो ब्राह्मणने हतकीताहैं और आप पाशादिकर्के मृतहोआहै कल्याणकी इच्छा करदे जो सत्पुरुषहैं तिनांनैं इनके विषय रोदन न. करणा चाहिए । १ । और कथन करतेहैं एषामिति इनांके मध्यमें एक किसी प्रेतनूं जो पुरुष आच्छादनकरताहै अथवा चुकताहै अथवाकटोदक क्रियानूं करताहै

अनुयातारोऽपियेचान्येयेचान्येपाशछेदकाः सर्वेतेपापसंयुक्तास्तेषांवक्ष्यामिनिष्कृतिम् ॥ ५ ॥ तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यंतिकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् अनदुत्सहितां गांचदद्याद्विप्रायदक्षिणाम् ॥ ६ ॥ संवर्त्तः ॥ गोभिर्हतेतथाविप्रेतथाचैवात्मघातिनि नैवाश्रुपातनंकार्यं सद्भिः श्रयोऽभिकांक्षिभिः ॥ १ ॥ एषामन्यतमंप्रेतं योवसेतवहेतवा कटोदकक्रियांकृत्वातप्तकृच्छ्रं समाचरेत् ॥ २ ॥ तच्छ्रवणं केवलं स्पृष्टमश्रुवापातितं यदि पूर्वोक्तानामकर्त्ता चेदेकरात्रमभोजनम् ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तानांकटोदकक्रियादीनामकर्त्ता केवलं तच्छ्रवणं स्पर्शाश्रुपातकर्त्ता चेत्तदेदमल्पप्रायश्चित्तमिति ॥ तथा ॥ यश्चात्मत्यागिनः कुर्यात्स्नेहात्प्रेतक्रियां नरः स तप्तकृच्छ्रसहितं चरेच्चांद्रायणव्रतम् ॥ १ ॥ बुद्धिपूर्वक एतत् ॥

अर्थात् उठाणे वास्ते किड़ा बनाकर लेजाताहै और जल देताहै सो पुरुष तप्त कृच्छ्र नूं करे । २ । और कहतेहैं तदिति और जिसने केवल शवकेसाथस्पर्श कीताहै अथवा रोदन कीताहै और कटोदकादि क्रिया जिसने नहिंकीती तिसको एक रात्र उपवास कहाहै ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तानांइत्यादि पदों कर्के इसी श्लोकका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ तिस प्रकार औरभी कहतेहैं यदिति जो पुरुष आत्मत्यागीहै अर्थात् पाशादि कर्के जो आप मृत होआहै तिसकी प्रेतक्रिया नूं जो पुरुष स्नेहतें करताहै सो तप्त कृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतनूं करे ॥ १ ॥ एह ज्ञानके विषयमें जानना

इसी विषयमें यमजीका वाक्यहै नेति ब्राह्मणांके बंड कर्के हतहोए जो पुरुषहैं तिनके अशौच और उदक और रोदन और निदा और दया और तखतेका चुकणा इनां नूं नकरे । १। ब्रह्म दंड नाम शापकाहै परंतु किसे तर्ही ब्राह्मणांतें मृतहोवे सो सभ ब्रह्मदंडहत जानणा और कहतहैं ॥ स्नेहाति स्नेह और अपना कोई कार्य तिसकी सिद्धि वास्ते और भय इत्यादितें जो पुरुष आत्मत्यागीके अशौचादि नूं करतहै सो गौआंके मूत्रकर्के यवांके आहार नूं करदा होआ तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै । २। एतानि इत्यादि पदोंमेंइसी श्लोककाहि अर्थस्पष्टकीताहै और कथन करतेहैं रुत्वेति आत्मात्यागीको अग्नि और उदक और स्नान करवाणा और स्पर्श

यमः ॥ नाशौचंनोदकंचाश्रुनापवादानुकंपने ब्रह्मदंडहतानांतुनकार्यकटधारणम् ॥ १ ॥ स्नेहकार्यभयादिभ्योयस्त्वेतानिसमाचरेत् गोमूत्रयावकाहारेः सप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति ॥ २ ॥ एतानिआत्मत्याग्याद्यशौचादीनि कटःशवखट्वा कृत्वाग्निमुदकंस्नानंस्पर्शवहनमेवच रज्जुच्छेदाश्रुपातेच तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ एतत्समुदितानां कर्मणां मतिपूर्वके संवर्त्तः वोढृक्कृणामग्निदाहट्टणांसंविधानविधायिनाम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् १ संविधानविधायिनःप्रेतालंकारकारिणः एतदपिसमुदितकरणे

और चुकणा और पाशका छेदन और रोदन इनां नूं जो पुरुष करदाहै सो तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ कथन कीते जो आत्मत्यागीके कर्महैं सभना इनको ज्ञान कर्के जब करे तब एह प्रायश्चित्त जानना ॥ संवर्त्तजीका भी इसी विषयमें वाक्यहै वोढृक्कृणामिति चुकणे वाले और अग्निके देने वाले और प्रेतको भूषण करने वाले इन संपूर्णोंकी दो २ तप्त कृच्छ्रतें शुद्धि होतीहै अर पीछे जान बाल्यांकी एक तप्त कृच्छ्र कर्के शुद्धि होतीहै ॥ १ संविधान इस पदका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै कथन कीते जो कर्महैं इनकेविषय भी एभी जानना इति

उशनसजीका वचनहै प्रायेति ॥ अतिशयकरके लंघनलेणे और शस्त्र और अग्नि और विष और पाश और पर्वतके शृंग उपरों गिड़ कर और जल और काष्ठादि इनो करके जो पुरुष अपने आपनू हत करताहै और राजा और ब्राह्मण और बड़े बड़े संप ॥ १ ॥ और शृंगावाले और दाडांवाले और नखांवाले और संप विजली इनो करके जो हत होअ है और तिसी प्रकार संकर जातिमें उत्पन्नजो होअहै इनको अशौच और जल और अग्नि इह न देवे २ ॥ तिनके स्पर्श अथवा रोदन इनके विषयमें एक १ दिन उपवास करे अर अज्ञानमें उद्वहनादिके विषयमें अर्थात् शवादिके उठाणे विषे सांतपन कृच्छ्रव्रतका आचरण करे ३ अर जान करककरे तेवगौके मूत्रके सहित यबानूं भक्षणकरदा होअ कृच्छ्रव्रत करे अथवा तप्तकृच्छ्रव्रत करे व्रतमें शक्ति न होवे तव एक मास भिक्षा अन्न खावे । ४। कृत्वेति आपेमृत होयेके चुक

उशनाः ॥ प्रायानशनशस्त्राग्निविषोद्वंधभृगूदकैः काष्ठाद्यैश्चात्मनोहंतुर्नृपव्रह्मसरीसृपैः ॥ १ ॥ शृंगिदंष्ट्रिनखिव्यालविद्युताभिहतस्यच तथासंकरजातस्यनाशौचोदकवह्नयः ॥ २ ॥ तत्स्पर्शयदिवाक्रौंशेदिनमेकमभोजनम् अज्ञानोद्वहनादौतुकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ ३ ॥ बुद्धिपूर्वेपुनस्तस्मिन्कृच्छ्रोगोमूत्रयावकः तप्तकृच्छ्रोप्यशक्तौतुमासंभिक्षाशनोपिवा ॥ ४ ॥ कृत्वातुवाहनादीनिप्रायश्चित्तमकुर्वताम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् ॥ ५ ॥ यस्त्वशेषाः क्रियाः कुर्यात्स्नेहान्मूत्रेणवापुनः । भवेत्तस्यपुनस्तप्तकृच्छ्रचांद्रायणोत्तमः ॥ ६ ॥ बृहस्पतिः । विषोद्वंधनशस्त्रेणयस्त्वात्मानं प्रमापयेत् मृतोमेध्येनलितोयोनान्यंसंस्कारमर्हति १ ॥ पाशंछित्त्वातुयस्तस्ययोढावह्निप्रदस्तथा सोपिकृच्छ्रेणशुद्ध्येतघातकोपिनराधमः २ ॥

णादि कर्म नूं करके जेडे पुरुष प्रायश्चित्त नूं नहि करदे तिनकी शुद्धि हो २ तप्तकृच्छ्रसे होतीहै अर साथजान वाल्यांकी शुद्धि एक तप्तकृच्छ्रसे होतीहै ॥ ५ ॥ यइति स्नेहने अथवा मजुरी करके जेडा पुरुष आत्मघातीकी संपूर्ण क्रिया कों करताहै तिसकी शुद्धिके वास्ते तप्तकृच्छ्र और चांद्रायण श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इसी विषयमें बृहस्पतिजीने कहाहै ॥ विषेति विष और पाश और शस्त्र इनो करके जो पुरुष अपने आपनूं हत करता है अर अपवित्र वस्तु करके लिप्त होअ होअ जो मृत होअहै सोपुरुष और संस्कारके योग्य नहि अर्थात् मरणानंतर दाहादिसंस्कार उसका नहि करणा किंतुइसीतर्हा जलविषे प्रवाहदेणा १। पाशमिति तिसके पाश का छेदन करके जो पुरुष तिसनू चुकणे वाला और अग्निके देणे वालाहै सोभी कृच्छ्रव्रत कर्के शुद्ध होताहै अर तिसके मारणे वाला भी नराके मध्यमे नाच कृच्छ्रव्रत करके शुद्धहोवाहै २

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २३३

दक्षजीकावाक्यहै ॥ आरूढेति संन्यास मार्गकों प्रथम धारण करके पश्चात् विषयांकी अभिलाषा करके तिसरें पतित होआ जाओ वाह्य है और चंडालांके दोष करके अपनी जातिमें बाहर कीतानो पुरुष है और पाशकरके जो पुरुष मृत होआहै इनानूं स्पर्श करके चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ १ ॥ इसी का अर्थ स्पष्ट कीता है चांडालैरिति चांडालोंने पकड कर जेडा बंधनमें जोडया है सोचांडाल विनिःसृत है अथवा चांडालांके साथ रहकर जो आया है तिसका एह नाम है ॥ और स्मृतिमें इसकी जगा मंडलतें जो बाहर होया ऐसा अर्थ कीता है सुमंतु जीने कहाहै उद्वेति अपरा धी कों फांसी देणा

दक्षः ॥ आरूढपतितं विप्रं चांडालाच्च विनिःसृतम् उद्वेधनमृतं चैव स्पृष्ट्वा चांद्रायणं चरेत् १। चांडालैर्गृहीत्वोद्वेधने योजितं चांडालैः सहोपित्वा परावृत्तं वा स्मृत्यंतरे तु मंडलाच्च विनिःसृतमिति पाठः तत्र सजातीयसमूहेन दूषयित्वा वहिष्कृतमित्यर्थः सुमंतुः । उद्वेधनपाशच्छेदनवहनेषु मासं भैक्षभक्षणं त्रिषवणं च स्नायात् । च्यवनः ॥ आत्मघातकस्य स्पर्शने वहने तप्तकृच्छ्रं चरेत् ॥ विशतिर्गावो दक्षिणा ब्राह्मणेषु दद्यात् ॥ तथा ॥ शृंगिदंष्ट्रिनस्त्रिव्यालविषवह्निमहाजलैः सदूरात् परिहर्तव्यः कुर्वन् क्रीडां मृतस्तुयः ॥ १ ॥ नागानां विप्रियं कुर्वन् दग्धश्चाप्यथ विद्युता निगृहीताश्च ये राज्ञा चौरदोषेण कूत्रचित् ॥ २ ॥

और पाशका छेदनकरणा और तिसकों चुकणा इस विषयमें एक १ मास तक भिक्षाका अन्न भक्षण करे और तीन ३ काल स्नान करे ॥ च्यवन जीका वाक्य है आत्मेति आत्मघातीके स्पर्श और चुकणोंके विषयमें तप्तकृच्छ्र व्रत का आचरण करे और बीस २० गौआं ब्राह्मणों कों दक्षिणादेवे तैसे और कहतेहैं शृंगीति शृंगां बालें अर्थात् गोमाहिष्यादि और सिंहादि और नखां वाले और सर्प और अग्नि और बडाजल इनोंककें और क्रीडा करवा होआ जो पुरुष मृत होआहै सो दूरतें हि त्यग करणे योग्यहै ॥ १ ॥ नागेति और सर्पानू पगडदा होआ जो पुरुष मृत होआहै अथवा विजलीने जो दग्ध कीता है और चोरोंके दोषकरके राजाने जेडे पुरुष पकड़ें हैं ॥ २ ॥

२३४ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

परेति परस्त्रीके हरणवाले और क्रोधते तिनो स्त्रीआंके पतिआनें जो हत कीतेहैं और भिन्न जातिवालोंनें और संकीर्णजातिवालोंनें और चांडालादियोंनें हत कीते जो पुरुष हैं ३ ॥ चौरैति चोर और अग्नि और विषइनके देणे वाले जोहैं और पाषंडो और खोटिआंवुद्धिआं वालेजो पुरुषहैं और क्रोधते अतिशयकरके विषऔर अग्नि और शस्त्र और पाश और जल ४ ॥ और पर्वत और वृक्ष इनांके गिडानेवाले नरांके मध्यमें नीच जेडेपुरुष तिनो कर्मानू करदेहैं अर्थात् विषआदि करके जेडेपुरुष मृतहोबेहैं वा मारतेहैं और जेडे निदित चित्राकारि करके उपजीविका करतेहैं और जेडे स्थानांको भूषण करतेहैं अर्थात् स्थान भूषण करणे करके उपजीविका करतेहैं ॥ ५ ॥ मुखइति जेडे कोईक पुरुष मुखे भग हैं अर्थात् जिनांके मुखसें दुर्गंध आवतीहै और जेडे नमदेहैं और जेडे नपुंसकहैं अर्थात् जिनांका कीताहोआ कार्य नहि सिद्धहुंदा ऐसे जो हैं

परदाराह्रंतश्चरोपात्तत्पतिभिर्हताः असमानैस्तुसंकीर्णैश्चांडाल्य
यैस्तथाहताः ॥ ३ ॥ चौराग्निविषदाश्चैवपाषण्डाःक्रूरवुद्धयः
क्रोधात्प्रायोविषंवह्निशस्त्रमुद्वंधनंजलम् ॥ ४ ॥ गिरिवृक्षप्रपातांश्च
येकुर्वन्तिनराधमाः कुशिल्यजीविनोयेचस्थानालंकारकारिणः ॥ ५ ॥
मुखेभगास्तुयेकेचित्छीवप्रायानपुंसकाः ब्रह्मदंडहनायेचयेचवाब्राह्मणै
र्हताः ॥ ६ ॥ महापातकिनोयेचपतितास्तेप्रकीर्त्तिताः पतितानांनदा
हःस्यान्नांत्येष्टिर्नास्थिसंचयः ॥ ७ ॥ नचास्रुपातःपिंडोवाकार्यश्चाद्धादिकं
कचित् एतानिपतितानांतुयःकरोतिविमोहितः तप्तकृच्छ्रद्वयेनैवतस्यशुद्धि
र्नचान्यथा ॥ ८ ॥ पराशरः ॥ चांडालेनश्वपाकेनगोभिर्विप्रैर्हतोयदा
आहिताग्निर्मृतोविप्रोविपेणात्महतोपिवा लोकाग्निनाप्रदग्धव्योमंत्रसं
स्कारवर्जितः ॥ ९ ॥

और जेडे ब्राह्मणांके शापकरके हतहोएहैं और जेडे ब्राह्मणाने हतकीतेहैं ॥ ६ ॥ महेति और जेडे महापातकीहैं एह संपूर्णपतितकथन कीतेहैं और इनांपतितांका दाह और अंत्येष्टिकर्म और अस्थिआंका चुणना ७ ॥ और रोदन और पिंडदान और आद्धादिकर्म इनांनूनकरके पतितांके इना कर्माको जो पुरुष मोहित होया होया करताहै तिसकी शुद्धि दो २ तप्त कृच्छ्रवनकरके होतीहै और प्रकार करके नहि होती ॥ पराशरजीका वाक्यहै ॥ ८ ॥ चंडेति चंडाल और श्वपाक अर्थात् चंडाल भेद और गो और ब्राह्मण इनांने जो हतकीताहै और विषकरके मृत होआजो अग्निहोत्रो ब्राह्मणहै और आपजो हत होआहै अर्थात् आप पाशादि ले करकेजो हतहोआ है मंत्रांकरके संस्कारते रहित लोककी अग्निकरके इनका दाह करणा हवन बालीअग्नि करके नहिकरणा १

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ११ ॥ टी० भा० २३५

स्पृष्टेति सजातियोंके मध्यमें इसकों जो स्पर्श करणें वाला और चुकणे वाला है सो प्राजापत्य व्रतनूंकरे अर पश्चात् ब्राह्मणांकी शिक्षानू ग्रहण करे अर्थात् ब्राह्मण जो आज्ञा करें तिसनूंकरे ॥ २ ॥ दग्ध्वेति दाहकरके तिसकी अस्थिआनू ग्रहण करके पश्चात् बुद्धिमान् पुरुष तिसको दुग्धकरके धोदेवे अर पश्चात् हवनवाला अग्नि कर्के अपणें मंत्रकों पडकर भिन्न २ दाहकरे ॥ ३ ॥ वशिष्ठजीका वचनहै जीवेति जो पुरुष पाश और विष आदिकरके मृत होनेलगे अर मृत नहि होआ जीवतारहौहै सो वारां १२ रात्रकृच्छ्रव्रतनूंकरे और तीन ३ रात्र उपवास करे और नित्य हि गिल्ले वस्त्रनूंकरे धारणकरके ॥ १ ॥ अर प्राणानूंकरे आत्माके विषय रोक करके तीन ३ बार अधमर्पण मंत्रका पठनकरे इसमें उपरंत तिसीविधिकरके गायत्रीकों जपे २

स्पृष्टादग्धाचवोढाचसपिंडेषुचसर्वशः ॥ प्राजापत्यंचरेत्पश्चाद्विप्राणा
मनुशासनम् ॥ २ ॥ दग्ध्वास्थीनिपुनर्गृह्यक्षीरेणक्षालयेद्बुधः ॥ स्वि
नाग्निनापुनर्दाहःस्वमंत्रेणपृथक्पृथक् ॥ ३ ॥ वसिष्ठः ॥ जीवन्ना
त्मपरित्यागात्कृच्छ्रंद्वादशरात्रकम् ॥ चरेत्त्रिरात्रंचोपवसेन्नित्यंक्लिन्ने
नवाससा ॥ १ ॥ प्राणानात्मानिचायम्यत्रिःपठेदधमर्पणम् अथवैते
नकल्पेनगायत्रींपरिवर्त्तयेत् ॥ २ ॥ अपिवाग्निसमाधायकूष्माण्डैर्जुहुया
द्घृतम् यदन्यन्महापातकेभ्यस्सर्वमेतेनपूयते ॥ ३ ॥ अथवाचामेत्
अग्निश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यःपापेभ्यो रक्षतांयदह्मापापम्
कार्षमनसावाचाहस्ताभ्यांपद्भ्यामुदरेण शिशनाअहस्तदवलुम्पतुयत्किंचि
दुरितंमर्यादमहमापोऽमृतयोनौसत्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहेति ॥ विष्णुः ॥
उद्धंधनमृतस्ययःपाशंछिद्यात्सप्तरात्रेणकृच्छ्रेण शुद्ध्यति तप्तकृच्छ्रेणशु

द्ध्यतीति पाठांतरम्

अथवाअग्निनूंकरे समाधानकरके कूष्माण्ड संज्ञिक मंत्रोंकरके घृतका हवनकरे अर औरभी महापात कर्के जो पाप होआहै सोभी संपूर्ण इसअनुष्ठान करके नष्टहोताहै ३ । अथवा आचमनकरके अग्निश्चमेति इस मंत्रकरके होमकरे इति ॥ इसमंत्रका अर्थ संध्याके व्याख्यानमें स्पष्टकरके लिखाहै सो उसीजगहसे देखलेना । पापानेंगंक्षाहोणी तिसमें प्रार्थनाहै इसमंत्रमें । विष्णुजीकावचन हैउद्धंधन करके अर्थात् फांसी लेकरके जोमृतहोआहै तिसके पाशकों जोपुरुष छेदताहै सो सप्तरात्रके कृच्छ्रव्रत करके शुद्ध होताहै । १ । और किसेजगा तप्त कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदाहै ऐसा लिखाहै

२३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

आत्मेति पाशादिकरके जेडेदेहकों त्यागतेहैं अर्थात् फांसी और विष इत्यादिकरके जो मृत होएहैं तिनाकों स्नानादि पूर्वकभूषण करणे वाला और तिनाके निमित्तरोदनकरणे वाला और संपूर्ण प्रेतके बांधवांके साथरोदन करणे वाला स्नान करके शुद्धहोताहै और प्रेतकेबांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करके साहितवस्त्रांके स्नानकरे तो शुद्धहोताहै जो ब्राह्मणक्षत्री अथवा वैश्य शूद्र शवकेसाथ जावे तब नदीकों प्राप्त होकरके आठ से अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करे (अर्थ) केवल ब्राह्मण शवके साथ जावे तब आठ से अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करे अर शूद्र किसे शवके साथ गमन करके स्नानकों करे ॥ अर प्रेतके संबन्धिआंके साथ रोदन कों करके भी स्नान करके शुद्ध होताहै अर प्रेतके बांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करे तब समेत वस्त्रांके स्नानकों करके शुद्ध होताहै ॥ अथेति इसतें उपरंत अनाशका दि जो व्रत कुरुक्षेत्रादि विषे धारण कीते होए तिनासैं यो हट जाण

आत्मत्यागिनांच संस्कर्ता तदश्रुपातकारीच सर्वस्यैवप्रेतस्य तद्वान्धवैःसहा
श्रुपातंकृत्वास्नानेवाकृतेऽस्थिसंचयने सचैलस्नानाद्धिजःशूद्रःप्रेतानुगम
नंकृत्वास्त्रवन्तीमासाद्यगायत्र्यष्टसहस्रंजपेत्। द्विजःप्रेतानुगमनेष्टाधिकस
हस्रम् शूद्रःप्रेतानुगमनंकृत्वास्नानमाचरेत् । तद्वांधवैःसहाश्रुपातंकृत्वास्ना
नेनशुद्ध्यति । तद्वांधवैःसहास्थिसंचयने कृते सचै लस्नानाच्छुद्ध्यतीत्यन्वयः
* अथानाशकादिप्रच्युतप्रायश्चित्तानि ॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ येप्रत्यवसिता
विप्राः प्रव्रज्यादिजलाग्निः अनाशकान्नितृत्तायेवांछंतिगृहमेधिताम् १ ॥
तांश्चारयित्वात्रीन्कृच्छ्रांस्त्रीणिचान्द्रायणानिवा जातकर्मादिसंस्कारैः
संस्कृताः शुद्धिभाजनाः ॥ २ ॥ पराशरः ॥ अनाशनान्नितृत्तस्तुचातुर्वर्णे
व्यवस्थितः चांडालस्सतुविज्ञेयोर्वर्जनीयःप्रयत्नतः ॥ १ ॥

तिनके प्रायश्चित्तांकों कहतेहैं । तिनांके विषय प्रथम मार्कण्डेयजीका वाक्यहै । यइति जो ब्राह्मण संन्यासकर्म और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्ते प्रथम उद्यत होए हैं अर फेर हट गये हैं और जिनांने इच्छा सें अन्नका त्याग कीता है तिसतें जेडे हट गये है अर फेर गृहस्थ की इच्छा करतेहैं ॥ १ ॥ तानिति तिनां कों तीन ३ कृच्छ्र व्रत अथवा ती न ३ चांद्रायण व्रत करवाके पश्चात् जात कर्मतें आद लेकर संस्कारां करके संस्कृ त कीते होए शुद्ध होतेहैं ॥ २ ॥ पराशर जीका वाक्यहै अनेति अनाशक नैं जो हटिआ है और ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य अथवा शूद्र जलादिके विषय मरणके वास्ते प्रथम निश्चय करके फेर जो हट गयाहै सो पुरुष चंडाल कथन कीताहै अर सो यत्न कर के दूरतें हि त्यागना चाहिए ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र-११ टी ०भा० ॥ २३७

एह उनको कथन कीताहै जेडे पुरुष चिर काल पिछे प्रायश्चित्तकों करतेहैं अर जेडे तात्काल प्रायश्चित्तकों करतेहैं तिनको फेर संस्कार नहि करवाणा ॥ पूर्वोक्त हि अर्थ स्पष्ट कर्के किहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि मरणवास्ते पिछले कहेहोए हेतुयोंकर्के प्रवृत्ति कहीहै सो जेकरधर्म के वास्ते होवे तां पूर्वोक्त दोष जानणा सो किहाहै कि गंगा प्रवाहलैणे कर्के जो मृत होएहैं और कुरुक्षेत्रादिविषे अनशन कर्के और बदरिकाश्रमादिस्थानके समीपजो स्थान तिसमे पर्व तपर आरूढ होकर ढिगणेकर्के और उसी स्थानविषे कोई स्थानहै जिसमे उद्धनकी बिधिहै तिस कर्के और उसी स्थानविषेकोई अग्निकास्थानहै तिस कर्के जो मरणहै सो सुगतिहाहेतुहै इस प्रासिदिसैं ॥ और जेकर क्रोध आदिकर्के मरण वास्ते प्रवृत्ति होवे तदतिसते हटणैहै दोष नहि जानना

चिरकालंप्रायश्चित्तमकुर्वतोऽवस्थानेएतत् ॥ जलेऽग्न्यादौ वा मरणायनि
श्चित्यप्रवृत्तः प्रत्यवसितः इयंच पूर्वोक्तहेतुभिर्मरणाय प्रवृत्तिर्धर्मायचेत्तदो
क्तं बोध्यम् ॥ गंगाप्रवाहस्वीकारेण कुरुक्षेत्रादावनशनेन बदरिकाश्रमा
दिसामीप्यभृगुपातेन तत्रैव स्थानविशेषेणोद्धनेन तत्रैवस्थानविशेषे
णाग्निना मरणं सुगतिहेतुकमिति प्रासिद्धेः। क्रोधादिना प्रवृत्तिश्चेत्तदानदोषः
आपस्तम्बः। चित्तिभ्रष्टा तु यानारीमोहाद्विचलिता ततः प्राजापत्येन शुद्धे तु त
स्माद्विपापकर्मणः ॥ १ ॥ भविष्यत्पुराणम् ॥ आरूढेनैष्ठिकंधर्मं प्रत्यावृ
त्तिं व्रजेत्तु यः चांद्रायणंचरेन्मासमिति विद्विष्वगाधिप ॥ १ ॥ मानस्यां प्रत्या
पत्तावेतत् ॥ * अथ स्पर्श प्रायश्चित्तानि दक्षः ॥ पाने मैथुन संसर्गे तथा मूत्रपुरी
षयोः। संस्पर्श यदि गच्छेत्तु शवोदक्यांत्यजैस्सह ॥ १ ॥

आपस्तम्बजीका वचन है चितीति चिखा उपर चंड करके जो स्त्री पीछेसें मोहतें हट गईहै
सो तिस पापकर्मतें प्राजापत्यव्रत कर्के शुद्ध होतीहै ॥ १ ॥ विष्णुजीने भविष्यत्पुराणमें
गरुडजीके प्रति कहाहै आरूढइति जो पुरुष संन्यास मार्गके विषय स्थित हो करके पीछेसें
गृहस्थ धर्मकों प्राप्तहुआहै सो एक मास पर्यंत चांद्रायण व्रतकोंकरे हे गरुड ऐसेतूं जान । १ ।
एह प्रायश्चित्त तब जानना जब मन करके निवृत्त होवे । * अथेति इसतें उपरंतदक्षजी स्पर्शके
प्रायश्चित्तानूं कथन करते हैं पानइति जलाविका पान और मैथुन और मूत्र और पुरीष इनके
करकेतें पिछे जइ मनुष्य शव और रजस्वला स्त्री और चंडाल इनके साथ स्पर्शानूं करे १ ॥

२३८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०११ टी० भा० ॥

संवर्त्त जीने कहा है संन्येति जो खोटी बुद्धि वाला पुरुष संन्यासकों प्रथम धार कर के पश्चात् निवृत्त होता है सो श्रमते रहित होकर श्रयात् श्रमकों न मानकर छे ६ मास निरंतर रुच्छु व्रतकों करे ॥ १ ॥ पराशरजीका वचन है जलेति जल और अग्नि इनके पतनके विषय और संन्यास और अन्न जलके त्याग व्रतके विषय मरणके वास्ते निश्चयन कर्के पश्चात् निवृत्त होए जो पुरुष हैं तिनकी शुद्धि किस प्रकार होवे ॥ १ ॥ तिनकी शुद्धि नु आपहि पराशरजी कहते हैं ब्राह्मेति ब्राह्मणोंकी प्रसन्नता कर्के और तीर्थोंके सेवन करणे कर्के और सैकडे गौश्राके दान कर्के तीनों ३ वर्ण शुद्ध होते हैं ॥ २ ॥ इसीमें यमजीक हते हैं जलेति जल और अग्नि और पाश और संन्यास और अनाशक अर्थात् अन्न जल

संवर्त्तः ॥ संन्यस्य दुर्मतिः कश्चित्प्रत्यापत्तिं भजेत्तु यः सकुर्यात्कृच्छ्रमश्रान्तः षण्मासान्प्रत्यनंतरम् ॥ १ ॥ अश्रान्तः श्रममन्यमानो निरालसो वा प्रत्यनंतरं कृच्छ्रोत्तरकृच्छ्रं यथा ॥ पराशरः ॥ जलाग्निपतने चैव प्रव्रज्या न शने तथा अध्यवस्य निवृत्तानां प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ १ ॥ ब्राह्मणानां प्रसादेन तीर्थानुगमनेन च गवां च शतदानेन वर्णाः शुद्ध्यति वैत्रयः ॥ २ ॥ यमः ॥ जलाग्न्युद्ध्वनभ्रष्टाः प्रव्रज्यानाशकच्युताः विषप्रपतनप्रायशस्त्रघाताच्च ये च्युताः ॥ १ ॥ सर्वे ते प्रत्यवसिताः सर्वलोकविगर्हिताः चान्द्रायणेन शुद्ध्यन्त्युस्तप्तकृच्छ्रद्वयेन वा ॥ २ ॥ असमर्थविषयमेतत् । अंगिराः । यः प्रत्यवसितो विप्रः प्रव्रज्याग्निजलादितः अनाशननिवृत्तस्तु गृहस्थत्वं चिकीर्षति ॥ १ ॥ चारयेत्रीणि कृच्छ्राणि त्रीणि चांद्रायणानि तु जातकर्मादिभिः

प्रोक्तं पुनः संस्कारमर्हति ॥ २ ॥

का त्याग और विषमक्षण और पर्वतादिते पतन और शस्त्र इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय कर्के फेर तिनाने निवृत्त होए हैं ॥ १ ॥ एह संपूर्ण प्रत्यवसित हैं और संपूर्ण लोकके विषय निदित हैं और चांद्रायणव्रत अथवा दोरतप्त रुच्छु व्रत करके शुद्ध होते हैं ॥ २ ॥ एह असमर्थताका विषय है २ इसी विषयमें अंगिराजीका भी वचन है यदिति संन्यास और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय करके फेर जो ब्राह्मण निवृत्त होआ है और अनाशनव्रतते जो निवृत्त होआ है अरतिनाते हट कर फेर गृहस्थकी इच्छा करता है ॥ १ ॥ तिस पुरुषकों तीन ३ रुच्छु अथवा तीन ३ चांद्रायण कर वाके फेर जातकर्मादि संस्कार कर्मकरवाणे योग्य है ॥ २ ॥

मूत्रेति तव मूत्रकरणेति अनंतर स्पर्शके विषयमें एक १ दिन उपवास करे और पुरीषके विषयमें दो २ दिन और मैथुनके विषयमें तीन ३ दिन और पानके विषयमें चार ४ दिन उपवास करे ॥ २ ॥ चंडालके छी वनादिके स्पर्शके विषय तात्काल स्नान नूं आपस्तंबजी कथन करेंगे ॥ भुक्तेति भक्षण करके उच्छिष्ट होआ होआ आचमन नूं न करके प्रमादते जद चंडाल अथवा श्वपचके साथ स्पर्श नूं करे तब तात्काल स्नान नूं करे ॥ ३ ॥ पश्चात् गायत्रीका आठस आधिक हजार १०८ तितप्रकार रुपदादि वडत्यादि मंत्रोंका एकसौ १०० जप करे और तीन ३ रात्र उपवास नूं रक्ष कर पीछेसे पंचगव्यके पीने करके शुद्ध होता है ॥ ४ ॥ शातातपने भी कहा है उच्छिष्ट इति उच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण जद

दिनमेकं चरेन्मूत्रे पुरीषे तु दिनद्वयम् दिनत्रयं मैथुने स्यात्पाने तु स्याच्चतुष्टयम् ॥ २ ॥ चांडालघीवनादिस्पर्शे सद्यः स्नानं वक्ष्यत्यापस्तंबः भुक्तोच्छिष्टस्त्व नाचांतश्चांडालैः श्वपचेन वा प्रमादात्स्पर्शनं गच्छेत्तत्र कुर्याद्विशोधनम् ॥ ३ ॥ गायत्र्यष्टसहस्रं तु रुपदानां शतं तथा ॥ त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा पंचगव्येन शु द्ध्यति ॥ ४ ॥ शातातपः ॥ उच्छिष्टस्तु स्पृशेद्दिप्रश्चांडालं चेत्कथंचन ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टस्तु संस्पृश्येद्दिजस्सांतपनं चरेत् ॥ अधोच्छिष्टस्त्रिरात्रांते पंचग व्येन शुध्यति ॥ १ ॥ भुक्तोच्छिष्ट ऊर्ध्वोच्छिष्टः उत्सृष्टमूत्रपुरीषः अध उ च्छिष्टः ॥ उशनाः ॥ चांडालश्वपचैः स्पृष्टो विमूत्रे कुरुते दिजः त्रिरात्रेण वि शुद्ध्येत्तु भुक्तोच्छिष्टः षडाचरेत् ॥ १ ॥

कदाचित् चंडाल नूं स्पर्श करे ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण चंडाल नूं स्पर्श करे तब सांत पन व्रतका आचरण करे और जब अधोच्छिष्ट होकर चंडाल नूं स्पर्श करे तब पंचगव्यके पान करके और तीन ३ आचमन करे तो शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अन्न नूं भक्षण करके ऊर्ध्वोच्छिष्ट होता है और मूत्र और पुरीष नूं त्याग करके अध उच्छिष्ट होता है एह इनका भेद है । उशनसजी का वचन है चांडेति चांडाल और श्वपच इनकरके स्पर्श कीता होआ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य जब विष्टा और मूत्रकों त्यागता है तब तीन ३ रात्र करके शुद्ध होता है और भुक्तो च्छिष्ट क्या भोजनके पीछे जेकर इनके साथ स्पर्श करे तां छे ६ रात्र करके शुद्ध होता है ॥ १ ॥

२४० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा०

व्याघ्रजीका वाक्य है चंडेति जो पुरुष चंडालके जल करके स्पर्श करता है सो स्नान क रके शुद्ध होता है उच्छिष्ट जब चंडालके जलकरके स्पर्शवाला होवे तब तीन रात्र व्रत करके शुद्ध होता है ॥ कश्यपजीने कहा है श्वेति कुत्ता और सूर और निंदित और चंडाल और मदिराका भांडा और ऋतुवाली स्त्री इनांकों जब उच्छिष्ट होआ होआ स्पर्श करे तब कच्छूसांतपनव्रत न करे ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त कामते अभ्यासके विषयमे जानना क्योंकि अकामके विषयमें थोड़ा प्रायश्चित्त कथन करेंते ॥ तिस प्रकार वृद्धशातातपजीने कहा है उच्छिष्टति ॥ ३ ॥ उच्छिष्ट होआ ब्राह्मण मदिरा और शूद्र और कुत्ता और जो अपवित्रवस्तु हैं इनांनू

व्याघ्रः॥ चंडालोदकसंस्पृष्टः स्नानेन सविशुद्ध्यति उच्छिष्टस्तेन संस्पृष्टास्त्रि रात्रेण विशुद्ध्यति १ कश्यपः श्वसूकरांत्यचंडालमद्यभांडरजस्वलाः वयुच्छिष्टः स्पर्शोत्तष्टकच्छसांतपनंचरेत् १ एतत्कामतोभ्यासि मद्यंसुराश्रन्यत्राल्पप्रायश्चित्तस्योक्तत्वात् तथा वृद्धशातातपः ॥ उच्छिष्टः संस्पृशेद्विप्रो मद्यं शूद्रं शुनोऽशुचीन् अहोरात्रेऽपि तोभूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति १ आपस्तम्बः ॥ भुक्तोच्छिष्टात्येजैः स्पृष्टः प्राजापत्यं समाचरेत् अधोच्छिष्टे स्मृतः पादः पादश्चाचमनेत या १ अधोच्छिष्टो वर्तमानभोजनः भोजनसमये आचमनसमये वा यदाऽधोच्छिष्टो भवेत्तदेदं प्रा एकवृक्षे समारूढौ चंडालब्राह्मणौ यदि फलं भक्षयतस्तत्र प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ २ ॥

जब स्पर्श करे तब एक दिन रात्र उपवास को रखकरके पश्चात् पंचगव्य के पीनेसे शुद्ध होता है ॥ १ ॥ आपस्तम्बका वाक्य है भुक्त्विति अन्नं भक्षणकरके उच्छिष्ट होआ चंडालां के साथ स्पर्श करे तब प्राजापत्यव्रतनू करे और भोजनकालविषय और आचमन काल विषय जब अधोच्छिष्ट होवे तब प्राजापत्यव्रतका एक १ पाद करे अर्थात् चौथा हि रसा करे ॥ १ ॥ और कथन करते हैं (प्रण) एकेति एक वृक्षके विषय स्थित होए होए चंडाल और ब्राह्मण जब फल को भक्षण करें तब तिसकी शुद्धि किस प्रकार होवे २ (उत्तर) इसकी शुद्धि नू आपहि आपस्तं बजी कहते हैं

ब्राह्मेति अपने पापनू ब्राह्मणानू द सकरके सहित वस्त्रांके स्नान करे और एक दिन रात्र उपवासनू करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ इसमें व्यवधान करके अर्थात् दूरकरके और अव्यवधानकरके क्यासमीपकरके त्रयरात्र अर एक रात्रका व्रतग्रहण करणा बुद्धिकेविषयमें एह प्रायश्चित्त जानना ॥ अर अज्ञानके विषयमें ब्रह्म पुराणमें कहाहै विप्रइति ब्राह्मण चंडालके सहित एक जिस वृक्षके विषय अज्ञानतें फल नू भक्षण करे तब अधमर्षण नूजपे १ ॥ सो जप पूर्वोक्त वचनसे तीनवार जलविषे निमग्न होकर करणाचाहिए ॥ एकेति जद ब्राह्मण चंडालके साथ वृक्षकी एक शाखाके विषे स्थित होआ होआ फलानू भक्षणकरे तब तीन १ रात्र प्रायश्चित्तहै अर पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै इसमें समीपताके

ब्राह्मणान्समनुज्ञाप्यसवासाःस्नानमाचरेत् अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्ये न शुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अत्राग्निमश्लोकेच व्यवधानसंनिधानाभ्यामेकरात्र त्रिरात्रे ॥ मतिपूर्वैतत् अमतिपूर्वतु ब्रह्मपुराणे विप्रश्चांडालसहितोयत्र कस्मिन्वनस्पतौ ॥ अज्ञानात्तुफलंभुक्तेचैरत्तत्राधमर्षणम् ॥ १ ॥ एकशा खांसमारूढःफलान्यश्नात्यसौयदि प्रायश्चित्तंत्रिरात्रंस्यात्पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ २ ॥ चांडालेन गृहीतं यस्त्वज्ञानादुदकं पिबेत् तत्र शुद्धिं विजानीयात् प्राजापत्येन नित्यशः ॥ ३ ॥ भुक्तेच्छिष्टस्वनाचांतो ह्यमेध्यं यदि संस्पृशेत् अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ ४ ॥ बृहस्पतिः ॥ उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टः शुनाशूद्रेण वा द्विजः कृत्वोपवासं न कंच पंचगव्येन शुद्ध्यति १ ॥

विषय तीन १ रात्र प्रायश्चित्त जानना ॥ २ ॥ और कहतेहैं चांडेति जो पुरुष चंडाल करके ग्रहण कीते होए जलनू अज्ञानसे पानकरे तिसकी शुद्धि प्राजापत्य व्रत करके जाननी चाहिए । ३ । भुक्तेति भुक्तेच्छिष्ट अथवा अनाचांत अर्थात् आचमन नू न करके अपवित्र वस्तुनू जद स्पर्शकरे तब एक दिन रात्र उपवासनू रक्ष करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ बृहस्पतिजीने कहा है । उच्छिष्टेति ॥ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट करके उच्छिष्ट स्पर्शकीताहोआ अर्थात् जूठे करके जूठाछोताहोया पश्चात् कुत्ता अथवाशूद्र इनके साथ स्पर्श न करे तब उपवास अथवा नक्त व्रत नू करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होता है ॥ १ ॥

२४२ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

एहप्रायश्चित्त इच्छाके विषयमें है ॥ अकामके विषयमें छागलेयजीने कहा है ॥ उच्छिष्टाति उच्छिष्टकर्के उच्छिष्ट स्पर्शकीता होआ स्नान नू करे अर जव स्नान कर रहे अर फेर उच्छिष्ट करके स्पर्श करे तव प्राजापत्य व्रत नू करे ॥ १ ॥ संवर्त्त जीका वाक्य है ॥ रुतेति त्यागया है मूत्र और पुरीष जिसने अर्थात् अध उच्छिष्ट अथवा भुक्तेच्छिष्ट ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य जद कुत्ता और चंडाल इन करके स्पर्श करे तव प्रथम स्नान करके देवीका एक हजार १००० जप करे अर्थात् गायत्रीका जप करे १ कर्मेति लुहार और धोवा और घुमार और सोबर और नट इनां करके उच्छिष्ट जद स्पर्श करे तव एक रात्र जल पान करे अर जव लुहारादि उ

कामकारविषयमेतत् ॥ अकामतस्तु छागलेयोदितम् । उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टं स्नानं येषु विधीयते तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टः प्राजापत्यं समाचरेत् १ संवर्त्तः कृतमत्र पुरीषो वा भुक्तेच्छिष्टोऽथवा द्विजः श्वादिस्पर्शजपे देव्याः सहस्रं स्नानपूर्वकमिति १ तेन स्नातेन पुनरुच्छिष्टः संस्पृष्टश्चेत्तदा प्राजापत्यामित्यर्थः कर्मरं रजकं वेनं धीवरं नटमेव च एभिः स्पृष्टस्तथोच्छिष्ट एकरात्रं पयः पिवेत् १ ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायां जातो म्वष्टः ब्राह्मण्यां विशो जातो वैदेहकः वैदेहकादम्वष्टायां जातो वेनः संकरजातीयः ॥ तैरुच्छिष्टैस्त्रिरात्रं स्याद्घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ १ ॥ भुंजानेन तु विप्रेण स्पृष्टायदिरजस्वला ॥ शिशुकृच्छ्रेण शुद्धे तु प्राणायामशतेन च ॥ २ ॥ आपस्तंबः ॥ उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टो विशोचंस्तु द्विजोत्तमः ॥ उपोष्य रजनीमेकां पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ १ ॥ चांडालादिविषयमेतत् ॥

च्छिष्टहेन तिन करके स्पर्श करे तब तीन रात्र जल पान करे पश्चात् घृत नू भक्षण करके शुद्ध होता है १ भुंजेति ॥ भोजन करदे होए ब्राह्मणने रजस्वला स्त्री जद स्पर्श करी तब शिशुकृच्छ्र व्रत अथवा सौ १० प्राणायाम करके शुद्ध होता है ॥ २ ॥ आपस्तंब जीका वचन है ॥ उच्छिष्ट इति विशोचन कया विशेष कर्के शोक कर्ता होया ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनके मध्यमें श्रेष्ठ उच्छिष्ट चंडालने जद स्पर्श करिए तब एक १ रात्र उपवास रक्ष कर्के पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होता है १ चंडालादिका एह विषय है

॥ श्रीरत्नावीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी०भा० ॥ २४३

हारीत जीका वाक्यहै ॥ महेति ब्रह्महत्यादि पाप नू करण वालेके साथ स्पर्श होवे तब स्नानमात्र करे जब चंडालादिके साथ स्पर्श कीता होआ फेर चंडालादिके साथस्पर्श करे तब ब्रह्मकूर्च करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और कहते हैं त्रीति तीन १ रात्र अथवा एक १ रात्र जो पुरुष अन्न नू न भक्षण करदा होआ अर पंच गव्य नू भक्षण करदा होआ हच्छीतरां उंकार नू जपे सो भी शुद्धि नू प्राप्तहोताहै अर्थात् शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ कृतेति मूत्र अथवा पुरीष इनके त्यागयां होआं अथवा भुकोच्छिष्ट ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य जब कुत्ता और चंडाल इत्यादि कर्के स्पर्श करे तब स्नान नू करके पश्चात् हजार गायत्री काजपकरे ॥ १ ॥ आपस्तंबजीनेकहाहै विप्रइति जब उच्छिष्ट ब्राह्मणकेसाथ कदाचित् ब्राह्मण स्पर्श करे तब आचमनकर्के शुद्ध होताहै एह आंगिरसजीने कहाहै ॥ १ ॥ और कथन करतेहैं

हारीतः महापातकिसंस्पर्शेस्नानमेवविधीयते संस्पृष्टस्तुयदास्पृष्टोब्रह्मकूर्चैर्नशुद्ध्यति१ स्पर्शानंतरंपुनः स्पृष्टइत्यर्थः त्रिरात्रमेकरात्रंवायोनश्चपंच गव्यभुक् जपेच्चप्रणवंसम्यगेवंशुद्धिमवाप्नुयात् २ कृतमूत्रपुरीषोवाभुकोच्छिष्टोथवाद्विजः श्वादिस्पृष्टोजपेद्देव्याः सहस्रंस्नानपूर्वकम् ३ देव्यागायत्र्याः आपस्तंबः विप्रोविप्रेणसंस्पृष्टउच्छिष्टेनकथंचन आचम्यवैतुशुद्धःस्यादित्यांगिरसभाषितम् १ उदक्यास्पृष्टउच्छिष्टेविड्वराहश्वकुक्कुटैःकाकमार्जारकव्याद्विरुपवासेनशुद्ध्यति २ येनकेनचिदुच्छिष्टोह्यमेध्ययदिसंस्पृशेत् अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ३ छागलेयः ॥ उच्छिष्टःसंस्पृशेद्दिप्रोमद्यशूद्रशुनोशुचीन् अहोरात्रोपितःस्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १ उच्छिष्टःस्पृष्टआचामेदुच्छिष्टेनस्वजातिना नक्तेनचोपवासेनक्षत्रविट् स्पर्शनेक्रमात् ॥ २ ॥

उदेति रजस्वलास्त्री और वैश्य और ग्राह्य सूकर और कुत्ता और कुक्कुड और काक और विष्ठा और गिरजादि इनकरके जब उच्छिष्ट स्पर्श करे तब एक १ उपवासकर्के शुद्ध होताहै २ ॥ येनेति जिस किसे वस्तु करके उच्छिष्ट होआ पुरुष अपवित्र वस्तु नू जब स्पर्श करे तब एक १ दिन रात्र उपवास रक्षकर्के पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ छागलेयजीकावाक्यहै उच्छिष्टइति उच्छिष्ट ब्राह्मण मदिरा और शूद्र और कुत्ताऔर अपवित्र वस्तु इनानू जब स्पर्श करे तब एक दिनरात्र उपवास नूरक्षकर्के पश्चात् स्नान करे फेर पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ उच्छिष्टइति उच्छिष्ट सजातिकरके उच्छिष्ट पुरुष जब स्पर्श करिए तब आचमन कर्के शुद्ध होताहै अर जब उच्छिष्ट क्षत्री कर्के ब्राह्मण स्पर्श करे तब नक्षत्रकर्के शुद्ध होताहै अर जब उच्छिष्ट वैश्य कर्के ब्राह्मण स्पर्श करे तब उपवास करके शुद्ध होताहै ॥ २ ॥

इसोमे शातातपजीका वाक्यहै जो ब्राह्मण जेकर चांडालकी छाया विषे आजावे तद तिसकी शुद्धिवास्तेस्नान और घृतप्राशन किहाहै । १ । और जब ब्राह्मण चांडालादिने हृत्पलए काष्ठ कक अथवा वस्त्रकके स्पृष्ट क्या लाता होवे तद अंगानु धो कर्के आचमनकरे और जेकर उह जूठा भीथा तद रात्रि भोजनका त्यागभी करे । २ । औपकायन ऋषिका वाक्यहै अस्पृश्य जो चांडालादि तिनांके साथ व्यवधानसें वेडी आदिकके तरणेकी इच्छावाला होया होया जावेतद हृत्थ और पाद जलविचित्रपारक्षे परंतु साक्षात् स्पर्श नकरे तां उसको दोष नहि ॥ १ ॥ शातातपजी का वचनहै कापालिक जो हैं पापंडी तिनके साथ जब ब्राह्मणादि स्पर्श करे तद विधि पूर्वक स्नानकर्के १०० इकसउ प्राणायामकरे और तप्तघृतकापानकरे तां शुद्ध हुंदाहै । १ । षट्त्रिंशन्मत

शातातपः । यस्तुछायांश्वपाकस्यब्राह्मणोप्यधिगच्छति तत्रस्नानंतुतस्यैवघृत
तप्राशश्चशोधनम् ॥ १ ॥ अंत्यजैर्हस्तकषेनवाससास्पृष्टएवच प्रक्षाल्यां
गतदाचामेदुच्छिष्टस्तुनिशांक्षिपेत् ॥ २ ॥ औपकायनः । अस्पृश्येनसहैकां
तेतरन्नौसंक्रमादिभिः निदध्यादप्सुपाण्यादीन्नदुष्येत्तेनचास्पृशन् ॥ १ ॥
शातातपः ॥ कापालिकानांसंस्पर्शेस्नानं कृत्वायथाविधि प्राणायामशतंकृ
त्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ षट्त्रिंशन्मते ॥ वैद्वान्पाशुपतांश्चैवलो
कायतिकनास्तिकान् विकर्मस्थान्द्विजान्स्पृष्ट्वासचैलोजलमाविशेत्
॥ १ ॥ मनुः ॥ दिवाकीर्त्तिमुदक्यांचपतितंसूतिकांतथा शवंतत्स्पर्शिनंचैव
स्पृष्ट्वास्नानंसमाचरेत् ॥ १ ॥ दिवाकीर्त्तिश्चाण्डालः ॥ एतदकामतः
तथाचवृहस्पतिः ॥ दिवाकीर्त्तिचितियूपपतितंचरजस्वलां स्पृष्ट्वाप्रमाद
तोविप्रः स्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥ १ ॥

जो ३६ छत्री ऋषियों ने कहे होंकके बनायाहै तिसमै लिखयाहै । वाविति वेद नास्तिक लोक और पाशुपत पशुपतिजीकेमतवाले और लोकायतिकएभी तिन्हांकेमतमैमिलेतेहैं और नास्तिक और विरुद्ध कर्मवाले जो त्रयवर्ण इनको स्पर्शकर्के सहित वस्त्रांके जलमे प्रवेशकरे । १ । मनु जी कहतेहैं दिवाकीर्त्ति इसजगा चांडालजानणा और रजस्वलास्त्री और पतित और सूतिकाक्या प्रसूतास्त्री और शव क्या मृतदेह और तिसके स्पर्श करण वाला इनका स्पर्शकर्के स्नानकरे १ ॥ एह प्रायश्चित्त अकामते कीते होए पापविषे जानणा । सोई वृहस्पति जी कहतेहैं दिवेति चांडाल और चिता शवस्वत्वा और यूप जिसस्तंभके साथ पशुको बांध कर्के मारतेहैं और पतित और रजस्वला इनांको जेकर प्रमादसे ब्राह्मण स्पर्श करे तां स्नान कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० ११ ॥ टी०भा० २४५

और कामनाकर्के इसकोजो कर्ताहै तिसवास्तेभी बृहस्पतिजी कहतेहैं पतीति पतित और सूति का और नीच और शव इनका कामनाते दर्शनकरे तां स्नानकर्के और पवित्रवस्तुस्पर्शते अनंतर घृतको प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ और शव इसजगा मृत मनुष्यका जानणा जेकर कुत्ते आदि मृत होए के साथ स्पर्शादि होवे तां अधिककल्पना करणी अर्थात् गायत्रीका जपभी साथ करणा और मृत चांडालके स्पर्शविषे आगे प्रायश्चित्त आवेगा ॥ और मोल लेकर मुडवा उठाणे वाले जो पुरुषहैं तिनांको प्राजापत्य कराणा परंतु तिसके स्पर्श विषे गायत्रीका जपभीकराणा ॥ आगेकहणा जो वाक्य तिसतेइहबहुतवार करणेमें जानना ॥ और एकवारकरणेमें मार्कण्डेयपुराण विषे वचनहै अभोज्येति अभोज्य और सूतिका और खंडक्या नपुंसक और मा

कामतोपिसएव पतितंसूतिकामंत्यंशवंस्पृष्ट्वातुकामतःस्नात्वाचैवशुभंस्पृष्ट्वा घृतंप्राश्याविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ शवेति मृतमनुष्यशवस्पर्शे मृतश्वादि स्पर्शेत्त्वधिकंकल्प्यम् मृतचांडालस्पर्शेवक्ष्यते मूल्येनशवहारकाणां प्राजापत्यं । तत्स्पर्शेगायत्रीजपोपिवक्ष्यमाणवाक्यात् ॥ एतच्चाभ्यासेसकृद्विषये मार्कण्डेयपुराणे अभोज्यसूतिकाखण्डुमार्जारोखुश्वकुक्कुटान् पतितापविद्धचांडालमृतहारांश्चधर्मवित् संस्पृश्यशुद्ध्यति स्नानादुदक्या ग्रामसूकरौ ॥ १ ॥ कापालिकानांस्वरूपं यथा नरास्थिमालाकृतभूरिभूषणः श्मशानवासीनृकपालभोजनः पश्यामियोंगांजनशुद्धदर्शनोजगन्मिथोभिन्नमभिन्नमीश्वरादिति॥१॥ अभोज्यारजकादयः अपविद्धोवाहिष्कृतः मृतहारोमूल्येनशवहारकः मार्जारोवनमार्जारःस्नानेविशेषमाहगार्ग्यः

जोर क्या विला और चूहा औरकुत्ता औरकुक्कुट और पतित और अपविद्ध और चांडाल और मृत के उठाणेवाला और रजस्वला औरग्रामशकरइनांके साथधर्मवेत्तापुरुष स्पर्शकरतां स्नानते शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ कापालिकादियोंका स्वरूपकहतेहैं नरेति मनुष्यकी हड्डिओंकीमालाकर्के जो भूषित होवे और श्मशानवासी और नृकपाल जो मनुष्यके मस्तककी हड्डी तिसविषे भोजन करे और कहे किजगत् ईश्वरसे भिन्नहै और अभिन्नभी है ऐसे में देखताहुं ऐसे योगरूपी अंजन कर्के शुद्धहै दर्शन जिसका ऐसे का नाम कापालिकहै ॥ १ ॥ अभोज्यनाम रजकादि का है अपविद्ध नाम उसका है जो लोकसे बाहरनिकालयाहै और मृतहार बोहे जो मोल लेके मुडदेको उठाताहै और मार्जार इसजगा बनका विला ग्रहण करणा ॥ स्नानमे विशेष गार्ग्यजी कहतेहैं ॥

२४६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

क्रव्येति कञ्चे मांसनू भक्षणो वाला जीव अर्थात् गिरध काकादि घोडा और गधा और ऊट इनके साथ जद व्यवधान करके स्पर्श करे तब वस्त्राति रहित अथवा वस्त्रांके सहित स्नाननू करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ जब जानके स्पर्श करे तबसहित वस्त्रांके स्नानकरे और जब जानके न करे तब वस्त्रातिरहित स्नान करे ॥ और कथन करते हैं । शूद्रमिति शूद्र और म लाह इनानू स्पर्श करके ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य आचमनहि करके शुद्ध होजाताहै और सूर्यका दर्शन अथवा स्नान अथवा प्राणायाम अथवा तपका बल अथवा गायत्र्यादिका जप इनकरके भी सो प्रायश्चित्तहो जाताहै ॥ २ ॥ जो पुरुष स्नानमें अशक्त है तिसको शूद्रके स्पर्शमें आचमनही कहाहै और समर्थको स्नानहि कहाहै इस कारणते और किसे स्मृतिकाभी वावचहै ॥ एडेति ग्रामका सूर और कुकड और काक और कुत्ता और शूद्र और चांडालइनानू

क्रव्यादश्चखरोष्ठैश्चस्पर्शेव्यवहितेद्विजः ॥ अर्चैलंवासर्चैलंवास्नानंकृत्वावि शुद्ध्यति । १ । सर्चैलंमतिपूर्वेऽन्यत्रार्चैलम् शूद्रंस्पृष्टवानिपादंचशुद्धेदाचम नाद्विजः तद्वानिदर्शनस्नानप्राणायामतपोवलात् । २ । तत्प्रायश्चित्तं हि इनस्यसूर्यस्यदर्शनेनस्नानेनप्राणायामेनतपोवलेन गायत्र्यादिनावा भवति स्नानासमर्थस्यशूद्रस्पर्शनेआचमनम् समर्थस्यतु स्नानमेव अतए वस्मृत्यन्तरम् । एडकंकुकुटंकाकंश्चशूद्रांत्यावसायिनःदृष्टवैतान्नाचरेत्कर्म स्पृष्टवैतान्स्नानमाचरेदिति १ एतान्दृष्ट्वाकर्मनाचरेत्किंतुआचम्याचरे दित्यर्थः ॥ यद्वा दृष्टवैतानाचमेत्प्राज्ञइतिपाठान्तरम् यद्वा सच्छूद्रस्पर्शेआ चमनमसच्छूद्रस्पर्शेस्नानम् ॥ एडकोग्राम्यशूकरः ॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यः ॥ चांडा लपुस्कसम्लेच्छभिल्लकापालिपारदान् उपपाताकिनश्चैवस्पृष्ट्वास्नानंसमा चरेत् ॥ संवर्तः ॥ कैवर्तमृगयुव्याधसौरशाकुनकानपिरजकंचतथास्पृष्ट् वास्नात्त्वैवाशनमाचरेत् ॥ १ ॥

देख करके कर्मनू न करे क्या करे आचमन नू करके कर्मनू करे और इनानू स्पर्श करके स्नाननू करे ॥ १ ॥ एतान् इत्यादि पद करके इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै और भीहै क्या श्रेष्ठशू द्रके स्पर्शमें आचमन करे असत् शूद्रके स्पर्शमें स्नान करे इति ॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यजीने कहा है ॥ चांडेति । चंडाल और चांडाल भेद और म्लेच्छ और भील और सर्वगी और परस्त्रांके गमन करणे वाला पुरुष (पारदान्) इसजगा (रा) कालोपसमझणा अथवा पारलघाणे वाला और गोवधादि पापके करणवाला पुरुष इनानू स्पर्श करके स्नाननू करे ॥ १ ॥ संवर्त जीका वचनहै । कैवेति झीवर और मृगोंके मारण वाला पुरुष और फंधक और वावुरीआ और पक्षिहंता अर्थात् माछी और घोवा इनानू स्पर्शकरके पश्चात्स्नानकरके भोजनकरे १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २४७

वृद्धशातातपजी विशेषकहतेहैं चांडालमिति चांडाल और पतित और व्यंगक्या काणादि और उन्मत्त मदिरापानादि कर्के औरशव और अंत्यज और प्रसव करवाणे वाली और प्रसूता स्त्री और रजस्वला ॥ १ ॥ और कुत्ते आदलेके जो पशु हैं इनांको जेकर कोई स्पर्शकरे तां बस्त्राके साथ शिर तक स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ २ ॥ जेडो प्रसूतियों करावे सोभी सूतिका कहीदो है ॥ जेकर अशुद्धांको आपभी अशुद्ध होकर स्पर्श करे तद एक उपवास कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर भोजनते उपरंत स्पर्श करे तांत्रिरात्र व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ ३ ॥ हारीतजीके मतमें विशेषहै चांडालोंके साथ संयोगके होया २ प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्ध होताहै परंतु क्या कर्के १०

वृद्धशातातपः ॥ चांडालंपतितंव्यंगमुन्मत्तंशवमंत्यजम् ॥ सूतिकांसूतिकां नारीं रजसाचपरिप्लुताम् १ श्वकुक्कुटवराहांश्चग्राम्यान्संस्पृश्यमानवःसचै लः सशिरःस्नात्वातदानीमेवशुध्यति २ प्रसवयाकारयतिसासूतिका ॥ अशुद्धान्स्वयमप्येतानशुद्धश्चयदिस्पृशेत् विशुद्ध्यत्युपवासेनत्रिरात्रेणोत्तरे णतु उत्तरेणभुक्तोच्छिष्टेनेत्यर्थः हारीतः ॥ चांडालैःसहसंयोगेप्राजापत्येन शुद्ध्यति विप्रान्दशवरान् कृत्वातिरनुज्ञाप्यशासनात् दशविप्रान् वरान्स भ्पान्कृत्वा शासनात्शास्त्रादेतोःतैर्दशभिरनुज्ञाप्यआत्मानमनु शास्येत्य र्थःअथवा आढकस्यप्रमाणंतु कुर्याद्गोमयकर्मम् तत्रास्थित्वात्वहोरात्रं वायुभक्षःसमाहितः ॥ १ ॥ वालकृच्छंततः कुर्याद्गोपेवसतुसर्वथा सकेश वपनं कुर्यात्परमां शुद्धिमृच्छतीत्येववालकृच्छम् ॥ २ ॥

दस्तां ब्राह्मणांको सभामें ल्याकर्के औरशासन जो शास्त्रतिसते तिनार्कके बोधकरवा कर्के १ ॥ अथवा प्राजापत्य विषे समर्था न होवे तां आढक जो द्रोणका चौथा हिस्सा तितने प्रमाणके गोमयका क्यागोएका कर्म चिक्रड करे तिस विषे एकदिनरात्र स्थित होकर्के परंतु वायुके वि ना और कुछ भक्षण नकरे और समाहित क्यासमाधानहोकर रहे ॥ १ ॥ इस व्रतका नामवाल कृच्छ्रहै । इसको करे और सर्वथा गोष्ठी विषे क्या गोआंके स्थानविषे बसे और सहित केशांके मुंडन करावे अर्थात् सारे देहके वाल दूर करे जोपरम शुद्धिको इच्छा करदाहै । एह वाल कृच्छ्र काभी स्वरूप बिस्वायाहै ॥ २ ॥

२४८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

और जो बृद्धहारीत जीने किहा है कि चांडालादि के साथ यद संबंध होवे तद एक दिन रात्र अथवा २ दोरात्रां अथवा तीनरात्र अथवा ६ छेदिनका व्रत करे ॥ १ ॥ और ना जाणया होआ चांडाल सत्तरोजतक जब किसे ब्राह्मणादिके घरमे रहे तां तिस चांडालादि संसर्गि पर जिसका वृत्तांत अच्छीतरहसे जाणचुकेहैं सो ब्राह्मण धर्मशास्त्री अनुग्रह करें ॥ २ ॥ दधिक्षीर घृत कर्के युक्त गोमूत्रविषे पकाहोआ जवांदा काहडा तिसको सहित सेवकादि के एक महीना निरंतर भक्षण करवा रहे विनातृप्तिसे जिसकर्के एह व्रतहैं ॥ ३ ॥ सो एह वचन जिसका बहुत संबंधहो चुकाहै तिसपरजानणा ॥ इसीमे पराशरजीका वचन है । रजकीआदिकया

यत्तु बृद्धहारीतः ॥ चंडालश्चपचानांचसंकरेसमुपस्थिते अहोरात्रंद्विरात्रंवा त्रिरात्रंपडहंस्मृतम् ॥ १ ॥ अविज्ञातस्तुचंडालःसप्ताहंनिवसेद्यदि तस्य ज्ञानोपपन्नस्यविप्राःकुर्य्युरनुग्रहम् ॥ २ ॥ दधिक्षीरघृतैर्युक्तैःकृच्छ्रगोमूत्र यावकं प्राशयेत्सहभृत्यैस्तुमासमेकंनिरंतरमिति ॥ ३ ॥ तस्यचांडाल संसर्गिणोद्विजस्य ज्ञानोपपन्नस्य ज्ञाततत्संसर्गस्य तदतिसंकरेज्ञेयम् ॥ पराशरः । रजकीचर्मकारीचलुब्धकीवेणुर्जीविनी चतुर्वर्णस्यगहेतुअज्ञाता ह्यधितिष्ठति । १ । ज्ञात्वातुनिष्कृतिकुर्यात्पूर्वोक्तस्यार्द्धमेवतु गृहदाहंनकु र्वीतिशेषंसर्वसमाचरेदिति । २ । अत्रयादृशसंसर्गेयादृशप्रायश्चित्तमुक्तं तदर्थमित्यर्थःस्नात्वैवभुंजीतेत्यर्थः । एवंचयद्रजकादिस्पर्शेष्वचमनं तद्व्या धितादिविषयेद्रष्टव्यम् ॥ षट्त्रिंशन्मते ॥ चांडालशवसंस्पर्शनेकृच्छ्रं कुर्यात् यानशय्यासनेपुचत्रिरात्रेण चांडालंशवस्पर्शनइति ॥ चांडालस्यश वत्वमापन्नस्यस्पर्शने इत्यर्थः ॥

धोवण आदिस्त्री चारवणके घरविषे नजाणीहोइंरहे ॥ १ ॥ तां जबप्रतीतहोवे तब तिस दोषके दूर करणे वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका अर्द्ध करे और घर दाह नहि करणा होर सभकृत्य करणी २ ॥ परंतु इसमे ऐसा अभिप्रायहै किजैसा जैसा पिच्छ संसर्गकाप्रायश्चित्त किहाहै तिसीका अर्द्ध करणा एह अर्थहै । स्नान कर्के भोजनकरे एह अर्थहै । एवमिति इसीतर्हीजो रजकादियोंका स्पर्शकरे सो आचमनकरे एह वचन व्याधिकर्के ग्रसे होए पर जानणा और षट्त्रिंशन्मत विषे कहाहै मृतहोए चांडालके स्पर्शविषे कृच्छ्र करे अर्थात् प्राजापत्यकरे और यान क्या इकठ्ठे चांडालसाथ घोडे आदिपर चढना और शय्याविषे और आसनविषे तिससाथ इकठ्ठा होवेतां त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥

मृत चांडाल विषे कहकर जीवित चांडाल विषे कहतेहैं कि जीवते चांडालके साथ स्पर्श करे यानादि विषे तां त्रिरात्र व्रतकरकेहि शुद्ध हुंदाहै तथेति तैसें हि ब्रणक्या किसे कारणते देहविषे शस्त्र लगाणा चांडाल ब्राह्मणादिकों लगावे वा ब्राह्मणादि चांडालकोंलगावे एह अर्थ आगेभी जानणा और बंधन करणा और तैलादिका मलना और विस्त्रावण क्या दस्तां आदिका कराणा और रुधिरोत्पादन क्या रोग निवृत्ति वास्ते लहू छुडाणा इनां ५ पंजांके होयां होयां १२ वारां रात्रिका प्रायश्चित्त कराणा इसांमें आपस्तवजी कहतेहैं येनेतिजिस किसे कर्के तैलादिके मर्दन कर्के स्पृष्ट होया चांडाल द्विजातिकों स्पर्शकरे और तैलादि कर्के संस्कृत द्विजादि चांडालकों स्पर्श करे तां १ उपवास कर्के और पंचगव्य कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ तैलकों मलायाहै जिसने सो और वमन जिसको होयासो और दाडों स्पर्श करणवाला और मैथुन

जीवताचांडालेन सह यानादिपुत्रिरात्रमिति ॥ तथा ब्रणबंधना भ्यंजनाविस्त्रावणरुधिरोत्पादनेषुकच्छुंद्वादशरात्रंचरेत् ॥ ब्रणबंधना दीनांचंडालंप्रतिकरणेचंडालेनात्मानिकरणेएतत् ॥ आपस्तम्बः ॥ येन केनचिदभ्यक्तश्चंडालोयदिसंस्पृशेत् उपवासेनचैकेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ येनकेनेति तैलोद्वर्तनादिनाऽभ्यक्तः कृतमर्दनइत्यर्थः ॥ तैलाभ्यक्तस्तथावातःश्मश्रुकर्मणिमैथुने मूत्रोच्चारंयदाकुर्यादहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ २ ॥ प्रचेताः ॥ स्वकायेचंडालकायादिस्पर्शनेद्विरात्राभोजनाच्छुद्धिः ॥ इदंपरिष्वंगविषयम् ॥ चंडालोयदिकायस्यरक्तमुत्पादयेत्कचित् त्रिरात्रेणविशुद्धिःस्यादेकह्रासेनचोत्तरे ॥ १ ॥ उत्तरेक्षत्रियादौत्रिरात्रादेकैकस्याहोरात्रस्यह्रासः ॥ क्रतुः ॥ चंडालस्योच्छिष्टदानेचंडालनृत्यदर्शने गीतवादित्रश्रवणे भैषज्यक्रियायांच त्रिरात्राभोजनेन शुद्धिः ॥

करणवाला जब स्नानादि शुद्धि विना मूत्रऔर विष्टेकोत्यागेतां अहोरात्र कर्के क्या दिनरातकेव्रत कर्के शुद्धहुंदाहै । २ । प्रचेताजीकावचनहै अपणे देहविषे चांडालके देहका स्पर्शहोवे तां दोरात्र तक भोजनकी निवृत्ति कर्के शुद्ध हुंदाहै परंतु एह स्पर्श गलविषे बाहुलगाकर होवे तां द्विरात्र व्रत जानणा ॥ और कहतेहैं कि चांडाल किसे ब्राह्मणके देहते रक्त निकाले तां तिसकी शुद्धि तिन्ना रातांके व्रत कर्के हुंदाहै और क्षत्रियादिके देहते निकाले तां एक एक रात्रके घटाणे कर्के जानणा ॥ जैसे क्षत्रियके देह विषे रक्तनिकाले तां दोर रात्र और वैश्यके देहते निकाले तां एक रात्र और शूद्रके देहते निकाले तां स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ क्रतुजीकहते हैं चांडाल तांई उच्छिष्ट देणविषे और चांडालकी नृत्य देखणे विषे और तिसके गीतवादित्रके सुणने विषे और तिसकी औषध करणे विषे तिन्नांरात्रांके भोजनके त्याग कर्के शुद्धि हुंदाहै

२५० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा०

और कहते हैं कि अशुचिकों क्या चांडालको देखकरके सूर्यको देखकर और पंदरां १५ प्राणायाम करके शुद्ध हुंदा है। अब पराशरजी कथन करते हैं श्वेति चूड़ा डूम चंडाल इनांके साथ संभाषण करके तद ब्राह्मणोंके साथ संभाषण करके अथवा गायत्रीका एकवार जप करके शुद्ध होता है। १। और चांडालके साथ शयन करके त्रय ३ रात्रि व्रत करके शुद्ध होता है और चंडालैकमयीको प्राप्त होकरके गायत्रीके स्मरणसे शुद्ध होता है। २। अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं यत्रेति जिस सभाविषे अथवा पंक्तिविषे चंडालहि एककथाकेवल होवे सो चंडालैकमयीकही है एह सभाका नाम है अथवा चंडाल है एक प्रधान जिस विषे एह अर्थ है अब और प्रकार प्रचेताजी कथन करते हैं चंडालेति जो चंडालके घरमे प्रवेश करणे विषे और चंडालके साथ घर विषे अथवा

अशुचिदृष्ट्वा आदित्यमीक्षेत प्राणायामं कृत्वा पंचदशमात्रकम् अशुचिश्चां डालादिः। पराशरः। श्वपाकडोम्बचंडालान्मिथः संभाषते यदि द्विजसंभाष णं कुर्यात् सावित्रीं वा सकृज्जपेत् १ चंडालेन समं सुप्त्वा त्रिरात्रेण विशुद्ध्यति चंडालैकमयीं गत्वा सावित्रीं स्मरणाच्छुचिः ॥ २ ॥ यत्र सभायां पंक्तौ वा एकेकेवलाश्चंडालाः सा चंडालैकमयी चंडाल एकः प्रधानं यत्रेति वेत्यर्थः प्रचेताः। चंडालगृहप्रवेशने चंडालेनैव गृहे वृक्षच्छायायां वा सहावस्थाने चंडाल एव स्यात् ब्राह्मणानुदिष्टं पाण्डिप्रायश्चित्तं कृच्छ्रं वा ब्राह्मणस्य चतुस्त्रिंश्वेकमासाः शेषाणाम्। शेषाः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रः कैवर्त्तादिश्च एषां यथा संख्यं चतुस्त्रिंश्वेकमासाः कृच्छ्राः

वृक्षच्छाया विषे साध्यस्थित होणेंतें चंडालहि होजाता है इस विषे ब्राह्मणोंको दिखाया है कि छे ६ महीने का व्रत अथवा छे ६ महीने तक कृच्छ्र करे परंतु एह व्रत वो है कि जो ब्राह्मणोंको उद्दिष्ट न होवे अर्थात् उपवास न होवे किंतु एकभक्तादिविचो होवे सो छे महीने तक करणा किहा है ॥ और शेषोंको चार ४ त्रय ३ दोर एक १ महीनेका पूर्वोक्त व्रत क्रम करके करें शेष शब्दका अर्थ कहते हैं शेष जो हैं क्षत्री वैश्य शूद्र क्षीवरादि अर्थात् शूद्रोंकी अधम जाति एह संपूर्ण क्रम करके चार ४ त्रय ३ दोर एक १ महीने का कृच्छ्र व्रत करें ॥ क्षत्री चार ४ महीनेका वैश्य त्रय ३ महीनेका शूद्र दोर २ महीनेका क्षीवरादि एक १ महीनेका व्रत करें तो शुद्ध होते हैं ॥

उशनाजी कहतेहैं अनिष्टगंध जो विष्टादिकी है तिसके आघ्राण विषे क्या सिंघस विषे और अनिष्ट शब्द जो किसेका किहाहोआ विष्टा मूत्रादिका शब्द तिसके श्रवण विषे और अनिष्टरूप जो गंदभादिका स्वरूप तिसके दर्शन विषे और अनिष्टवाक्य जो तूँबि षादि भक्षण कर ऐसा वाक्य इसकें उदाहरणदेणे विषे सूर्यजीके दर्शनते शुद्धि होतीहै देवलजीका वचनहै चांडालके उपदेश लैणवाला पुरुष प्राजापत्य करे तद शुद्ध हुंदाहै और चांडालों कर्के बनाया होआ और चांडालों कर्के सेव्यमान जो कूपहै तिसके सेव नवें द्विजादि त्रिरात्र व्रत करे १ और कहतेहैं दृष्ट्वेति चांडालकों और पतितकों देख कर्के संध्या काल विषे संध्या वंदनते अनंतर सूर्यजीका दर्शन करे तां शुद्ध हुंदाहै नैसेहि रजस्वला कों देखकर्के और विष्टा मूत्रादिकी देख कर्केभी सूर्यका दर्शन करे । २ । इसमे मनुजीकहतेहैं

उशनाः अनिष्टगंधाद्युपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणे आदित्यदर्शनाच्छौच
म् अनिष्टानां गंधशब्दरूपवाक्यानामुपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणेष्वदि
त्यदर्शनाच्छुद्धिरित्यर्थः देवलः । चंडालधर्मसंयोगे प्राजापत्यसमाचरेत् चरे
त्रिरात्रचंडालकूपतीर्थनिषेवणात् १ धर्मस्यसंयोगउपदेशः दृष्ट्वा चंडालपति
तौ संध्याकालउपस्थिते ईक्षेतादित्यमुद्यंतंतथोदक्यामलानि च २ उदक्यां
रजस्वलां मलानि विष्मूत्रादीनि दृष्ट्वा प्यादित्यमीक्षेतित्यर्थः मनुः । आचम्य
प्रयतो नित्यं जपेदशुचिदर्शने सौरान्मंत्रान्यथोत्साहं पावमानीश्च शक्तिः
१ अशुचीनां चंडालश्च पचविष्मूत्रादीनां दर्शने आचमनानंतरमाकृष्णेत्या
दिसूर्यमंत्रान् जपेत् ॥ पराशरः अविज्ञातस्तु चांडालो निवसेद्यस्य वेशमनि
विज्ञाते तूपसन्नस्य द्विजाः कुर्युरनुग्रहम् १ उपसन्नस्येति विज्ञाते सत्युपसन्न
स्य परिपदुपासत्तां विधाय स्थितस्योपरि द्विजाः परिपदुपसन्ना अनुग्रहं वक्ष्य
माणश्लोकोक्तरीत्या कुर्युरित्यर्थः ॥

आचम्येति जेकर अशुचि वस्तु जो है पूर्वाक तिसके दर्शन विषे इंद्रियोंको रोकता होआ आच
मन कर्के नित्यहि सूर्यजीके मंत्रांको पढे और पावमानीजी ऋग्वेदके मंत्रांतिनांकोभी यथाशक्तिसे
जपे; ऐहि अर्थ स्पष्टकर्के कहीदाहै अशुचीनामिति अशुचि जोहै चांडाल और श्वपच तिसीका
भेद और विष्टामूत्रादि इनांके दर्शन होआं होआं आचमनकरे पीछे (आकृष्णेन रजसा) इस्या
दि मंत्रांका जपकरे और (उदयंतमसस्परिस्वः) इस्यादि उपस्थानके मंत्रांका जपकरे इसमे
पराशरजी कहते हैं अवीति अविज्ञात चांडाल क्या नहि जाणयायाकि एह चांडालहै सो जिस
के घरविषे रहे और जद जाणयाजावे कि एह चांडालहि साडेघरमो रहैदाया तद उस ऊपर
धर्मशास्त्री ब्राह्मण अनुग्रह करें ॥ १ ॥

(उपसन्नस्य) इसका अर्थ कहते हैं ज्ञानते पीछे सभाकी सेवा कर्के जेडा स्थित होरिहा है तिसपर प्रायश्चित्तका उपदेशकरे वक्ष्यमाण रीतिसे * (प्रश्न) सभजगा पापके होआं होआं सभामे जाणा वणदा है इसजगा वक्खरा कर्के क्यो लिखा है (उत्तर) रहस्य प्रायश्चित्त विषे सभाकी आज्ञा नहि इसकर्के किहा है कि इसजगा रहस्यभी करणा होवे तांभी प्रकाश करणा इस अभिप्रायसे लिखा है उपसन्नस्येति उपदेश का प्रकार कहते हैं ऋषेति सो धर्मशास्त्रके पाठक ब्राह्मण ऋषियोंके मुखते निकले होए धर्मोंको गायन करदे होए तिस पतितका उद्धार करे शास्त्रकर्के कहे होए कर्म कर्के ॥ २ ॥ दही कर्के और घृतकर्के और दुग्ध कर्के गोमूत्र विच्छो निकालकर यवांके काडेको भक्षणकरे जितने घरके लोक हैं सेवकादि तिनके साथ और त्रयकाल स्नानकरे ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तकीहि व्यवस्था

अत्र परिपदुपसत्त्यर्थमुपसन्नस्येत्युक्तम् यद्यपि सर्वत्र पापे परिपदु पसत्तिरभिहिता तथापि रहस्ये परिपदुपसत्तेरननुज्ञानादत्र रहस्य मपि प्रकाशनीयमित्येतदर्थमिदमिति ॥ ऋषिवक्त्रच्युतान्धर्मान्गायंतो धर्म पाठकाः पतंतमुद्धरेयुस्तं शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥ २ ॥ दध्राघृतनक्षिरे णकृच्छ्रगोमूत्रयावकं भुंजीत सहितो भृत्यैस्त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ ३ ॥ त्र्यहंतुदध्राभुंजीत सर्पिपातु त्र्यहंततः क्षीरेण त्र्यहं भोज्यमेकैकेन पुनस्त्य हम् । ४ भावदुष्टं न भुंजीत भोक्तव्यं गोरसप्लुतं तिष्ठेद्दिनानियावंति तावंत्ये वसमाचरेत् ५ त्रिपलंतुदधि क्षीरं पलमेकं तु सर्पिषः आकरेतु भवेच्छुद्धिरार कूटेसकांस्यके ६ आकर उत्पत्तिस्थानं सजातिसमूहो मह्यां खननं वा आर कूटेरीतिकम्

कई हैं त्र्यहमिति तिनदिन दहीके साथ गोमूत्र यावकका भोजनकरे और त्रयदिन घृतकर्के खावे और त्रयदिन दुग्धकर्के खावे और इसी प्रकार पीछे इनां हि वस्तुओंके साथ एक २ दिन खावे तो एभी द्वादश दिनका व्रत होआ । ४ । और भावदुष्ट जो वस्तु है जैसे तक्रपाकर्म पतले दस्तरी भावना है तिसको न भोजनकरे और गोरस जो दही तिसकर्के मिले होएका हि भोजन करे प रंतु जितने दिन सो चांडाल घरविषे रहा है तितने दिन इसवतकों करे ॥ ५ ॥ तिनका परिमाण कहते हैं त्रीति तिन ३ पा दही और दुग्ध और १ एकपा घृत इसमर्घ्यादासें लए और उसघरमे जितने भांडे हैं पित्तलके और कांस्यके तिनको शुद्धि आकरमे रक्षणे कर्के जानणी ६ । आकरनाम उत्पत्ति स्थानका है तिसविषे अथवा सजातिकासमूह तिसविषे स्थापन करणा अथ बापृथ्वीविषे दब्बदेणा और आरकूटनाम पित्तलका है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २५३

अगिराजी कहते हैं ॥ कांस्यके भांडेविच चुली नहि करणी और पैर नहि धोणे जेकर ऐसा करे तां पृथ्वी विच छे ६ महीने तिस कांस्यभाजनकों रक्षकर पीछे बहुते भांडे विच रक्षे तां शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ वस्त्रजेडे उस घर विषे हैं सो जल कर्के शुद्धकरणे और जे डे मृत्तिकादे भांडेहैं सो सभस्यांगदेणे और कुसुंभा १ गुड २ कपाह ३ लून ४ मधु ५ घृत ६ इनाकों दरवाजेविच ल्या रक्षणा वायुकर्के शुद्ध होणगे इसी तर्ही धान्यभी शुद्ध करणे और घर विषे अग्नि लगाणी तिसके सेक लगणे कर्के घर पवित्र हुंदाहै एह मनुजीका वाक्यहै ॥ ३ ॥ और सहित पुत्रके और सहित सेवकांके ब्राह्मणांकों भोजनदेवे और २० गौश्रां और १ बैल दक्षिणा देवे ॥ ४ ॥ पीछे लेपन और किसेजगा खातकरणे कर्के और होम और जप

अगिराः ॥ गंडूषंपादशौचंतुनकुर्यात्कांस्यभाजने भूमौनिक्षिप्यषण्मासा
नपुनराकरमादिशेदिति ॥ १ ॥ जलशौचेनवस्त्राणिपरित्यागे
नमृण्मयम् कुसुंभगुडकर्पासलवणंमधुसर्पिषी ॥ २ ॥ द्वारिकुर्वी
तधान्यानिदद्याद्विश्वानिपावकम् हुताशज्वालासंस्पृष्टंशुचितन्मनुरब्रवी
त् ॥ ३ ॥ सपुत्रःसहभृत्यैश्चकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं गोविंशतिंघृषैकंदद्या
द्विप्रेषुदक्षिणाम् ४ पुनर्लेपनखातेनहोमजप्येनचैवाहि अवधारणेनविप्रा
णांतत्रदोषोनविद्यते ॥ ५ ॥ स्वल्पकालसंपर्केतत् संवर्तः ॥ अंत्यजः
पतितोवापिनिगूढोयत्रातिष्ठति सम्यग्ज्ञात्वातुकालेनततःकुर्याद्विशोधनम्
॥ १ ॥ चांद्रायणंपराकोवाद्विजातीनांविशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणां
शेषाणामिदमुच्यते ॥ २ ॥ यैस्तत्रभुक्तंपक्वान्नंतंपामुक्तोविधिक्रमः ॥
प्राजापत्यइत्यर्थः ॥ तेषामपिचयैर्भुक्तंकृच्छ्रपादोविधीयते ३ ॥

कर्के ब्राह्मणां के अनुग्रह कर्के तिसविषे दोष नाहि ॥ ५ ॥ परंतु एह प्रायश्चित्त थोडे संबंध विषे है तिसचांडालका संबंध उसमे बहुतहोवे तां तिस वास्ते प्रायश्चित्त होर है ॥ संवर्तजी कहते हैं ॥ अंत्यज क्या चांडाल अथवा पतित जिसके घर छपकर्के रहे और पिच्छे जद मलूम होवे तां इसतर्ही शुद्धि करे १ । चांद्रायण अथवा पराककर्के ब्राह्मणादिकी शुद्धि और शूद्रांकी शुद्धि प्राजापत्य करके है और इनांतेंजो होर हैं आश्रमी लोक तिनके अर्थ भी एहहै ॥ २ ॥ जेडे होर दूसरे घरवाले हैं तिनांकोंभी कहते हैं कि जिनाने तिस घर विषे पका न भक्षण कीताहै तिनां वास्ते प्राजापत्य किहाहै और जिनाने इनके घर अर्थात् चांडालवाले घर खाण वालेके घर खादाहै तिनकी शुद्धि पादकृच्छ्र कर्केहै ॥ ३ ॥

२५४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

और कहते हैं कूपैकेति जेडे एक खूएकें जल पान कर्के दोष वाले हैं अर्थात् जिस खूए विषे चांडाल पींदे हैं तिसी खूये विषे जलपान करण वाले । और संसर्ग जो परंपरा संसर्ग है तिसकके दोष वाले जो हैं इनसभनांकों उपवास कर्के और पिच्छे पंचगव्य के पान कर्के शुद्ध करे ॥ ४ ॥ जिस स्त्रीका बालक छोटा होवे और रोगी और गर्भिणी और वृद्ध इनांकों नक्त क्या नक्त देणा चाहिए और बालकांकों २ पहरका व्रतदेणा चाहिए ॥ ५ ॥ अथवा जिनांकों व्रतकरणेसे पीडा बहुत होवे तिनांकों थोडा व्रतदेणा उचित है जिसते व्रतिकी मृत्यु न होवे ॥ ६ ॥

कूपैकपानदुष्टायेतथासंसर्गदूषिताः सर्वानेवोपवासेनपंचगव्येनशोधयेत् ॥ ४ ॥ बालापत्यातथारोगीगर्भिणीवृद्धएववा तेषानक्तंप्रदातव्यंबालानांप्रहरद्वयम् ॥ ५ ॥ अथवाक्रियमाणेषुयेपामार्तिःप्रदृश्यते ॥ शेषंसंपादयेत्तेषांविपत्तिर्नभवेद्यथा ॥ ६ ॥ अंत्यजोऽत्रचंडालः ॥ वसिष्ठः ॥ चंडालोनिवसेद्यत्रगृहेत्वज्ञातएवतु तस्यान्नंतुद्विजोभुत्काप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥ अकामतःसकृद्भुत्काकुर्व्यदितद्विजोत्तमः कामाच्छुद्धिः परकिणमहासांतपनेनवा ॥ २ ॥ चांद्रायणंपराकोवाद्विजातीनां विशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणांशेषाणामिदमुच्यते ॥ ३ ॥ योन्योपिभुंक्तेपक्वान्नंरुच्छंस्यात्तस्यशोधनम् शुष्कान्नभोजनेपादमित्याहभगवान्मनुः ॥ ४ ॥

अंत्यज नाम इसजगा चंडालका है ॥ इसमे वसिष्ठजी कहते हैं ॥ चांडाल जिसके घर अज्ञात हो या २ वसे तिसका अन्न द्विजक्या ब्राह्मणादि जेकर खावे तां प्राजापत्य व्रतकरे ॥ १ ॥ परंतु अकामते एक बार खाणेमें एह प्रायश्चित्त है क्यसनाते खावे तां पराक कर्के शुद्ध हुंदा है अथवा महासांतपन कर्के ॥ २ ॥ चांद्रायण अथवा पराक द्विजातियोंका शोधक है और प्राजापत्य शूद्रोंका शोधक है और जो दूसरे घरवाले हैं तिनांवास्ते कहते हैं ॥ ३ ॥ जो होर तिस घरविषे पक्वान्न खावे तिसके शोधन करणे वाला रुच्छ है और जो सुका अन्न खावे तिसके वास्ते लघुरुच्छ है एह भगवान् मनुजी कहते हैं ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २५५

तैसेहि जेकर तिनां चांडालघरवालयेंने स्पर्श कीतेहोए अन्नको जद भोजनकरे और विधिबाले स्नानतें विना जो भोजन करदाहै तां भोजनमे कृच्छ्र किहाहै और पानविषें तिसका चौथा हि रसाकिहाहै ॥ ५ ॥ और चांडालकर्के जद संस्पृष्टहोवें कांसका भांडा अथवा मृत्तिकाका और अज्ञानतें जो कांस्यके भांडेमें भोजन करता है और मृत्तिकाके भांडेमें जलपान करताहै तिनांमें कांस्यभोजीकृच्छ्र व्रतकरे और जलपानवाला कृच्छ्रका पादव्रतकरे ६ कांस्यभाजन इसजगा भज्जा दा समझणा । ६ । अव च्यवन ऋषिजी और प्रकार कहतेहैं चंडाल घरविषे प्रवेश करे तो घर को फूक देवे संपूर्ण मृत्तिकाके भांडे भन्न देवे और लकड़ीको छिला देवे और शंखसिंघा सो

तथा ॥ तैःस्पृष्टो यदिभुंक्ते भक्ष्यमस्नात्वा विधिवज्जले विहितां भोजने कृच्छ्रं पाने स्यात्पाद एव तु ॥ ५ ॥ चंडालेन तु संस्पृष्टं कांस्यभांडं समृणमयं ॥ अज्ञानात् कांस्यभोजी तु मृणमये जलपानकृत् कांस्यभुक्त्वा चरेत्कृच्छ्रं जलपाने तु कृच्छ्रकम् ६ ॥ कृच्छ्रकः कृच्छ्रपादः ॥ च्यवनः ॥ चंडालसंकरे स्वभवनदहनं सर्वमृद्भांडभेदनं दारवाणां तु तक्षणां शंखशुक्तिसुवर्णरजतवैदलानां मद्भिः क्षालनं कांस्यताम्राणामाकरेशुद्धिः ॥ आकरशब्दार्थस्तूक्तः पूर्वम् ॥ सौवीरपयोदधितक्राणापरित्यागः ॥ सौवीरं वदरं ॥ गोमूत्रयावकाहारो मासं क्षिपेत् वालवृद्धस्त्रीणामर्द्धप्रायश्चित्तम् ॥ आपोऽष्टाद्वालः अशीत्यूर्ध्वतु वृद्धः चीर्णे प्रायश्चित्ते ब्राह्मणभोजनं गोशतं दद्यात्तदभावे सर्वस्वम् ॥

ना चांदी वंश इनके जो पात्र हैं तिनां पर जल सिंचन करे और कांस ताम्रकी आकर विषे शुद्धि कहीहै आकर शब्दका अर्थ पिचले कहाहै ॥ और वैर दुग्ध दधि छाह इनांको त्याग देवे और गोमूत्र युक्त यवोंका भक्षण करदा होया महीना रोज व्यतीत करे और वालक वृद्ध स्त्री इनको अर्द्ध प्रायश्चित्त देणा अर्थात् पंद्रह १५ दिन । और सोलां १६ वर्षतें उरें वालक होता है और अस्सी ८० वर्ष तें उपरंत वृद्ध होताहै और प्रायश्चित्तके कीते होयां ब्राह्मणोंको भोजन देवे और सौ १०० गौ देवे जेकर एह न मिलेतां सर्वस्व दे देवे ॥

२५६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र-११ टी ० भा० ॥

अब वौधायन जी और विशेष कहते हैं चंडालके देखें विषे तास्योंका दर्शन करे तो शुद्ध होता है और चंडालके साथ संभाषण क्या बोले तो ब्राह्मणके साथ संभाषण करे और स्पर्श करे तो स्नान कर्के शुद्ध होता है और जूठा होकर चंडालका दर्शन करे तो एक रात्र उपवास घत करे और संभाषण करे तो दो २ रात्र उपवास करे और स्पर्श करे तो त्रय रात्रि उपवास करे और जूठे चंडालके दर्शन संभाषण स्पर्श करणे में भी एही व्रत करणे ॥ और चंडालके साथ मार्ग चले तो सवस्त्र स्नान करे ॥ अब प्रायश्चित्त मयूख विषे कहते हैं द्रव्येति द्रव्य है हत्थ विषे जिसके सो जूठेका स्पर्श करे तिसमे मनुका वचन है द्रव्यहस्तवाला होया २ जूठेके साथ स्पर्श करे तो तिस द्रव्यको हत्थमें हि रख कर आचमन करे तो शुद्ध होता है

वौधायनः। चंडालदर्शनेज्योतिषादर्शनं संभाषणेब्राह्मणसंभाषणम् स्पर्शनेस्नानम् उच्छिष्टदर्शनं एकरात्रमुपवसेत् संभाषणेद्विरात्रं स्पर्शने त्रिरात्रम् चंडालिनसहाध्वगमनेसर्चैलस्नानम्। प्रायश्चित्तमयूखे द्रव्यहस्तस्योच्छिष्टस्पर्शः। मनुः। उच्छिष्टेनसमंस्पृष्टवाद्रव्यहस्तः कथंचन अनिधायैव तद्द्रव्यमाचांतः शुचितामियात् १ एतच्चामात्रविषयम्। भोज्यविषयेतु वसिष्ठः। प्रचरन्नन्नपानेषुयदुच्छिष्टमुपस्पृशेत् भूमौनिधायतद्द्रव्यमाचांतः प्रचरेत्ततः ॥ १ ॥ तद्द्रव्यस्यह्यभ्युक्षणं कार्थ्यमित्याहतुः शंखलिखितौ॥ द्रव्यहस्तोच्छिष्टेनिधायभ्युक्षयेद्द्रव्यमिति उच्छिष्टउच्छिष्टस्पृष्टः। एतच्चानुच्छिष्टहस्तादिनास्पर्शः ॥ साक्षादुच्छिष्टहस्तादिस्पर्शत्वभोज्यमेव

एह कचे अन्नके विषयमें जानणा । १ । और भोज्यअन्नके विषयमे वसिष्ठजीकहतेहैं प्रेति प्रचर न्कया अन्न वरतांदा होया जूठेका स्पर्श करे तो तिसद्रव्यको भूमि पर स्थापन करके आचमन करे फेर तिस अन्न नूं वरतावे । १ । परंतु तिसद्रव्यको सेचन करणा एह किहा है शंख और लिखितजी ने द्रव्येति अपूपादि भक्ष्य द्रव्य जिसके हाथ मे है और जूठेके साथ स्पर्श वाला होवे तां उस वस्तु को हेठ रक्षकर जल साथ सिंचे पीछे ग्रहण कर्के वचां देवे तां दोष नहि परंतु एहप्रायश्चित्त जेडा हत्थ नहि जूठा तिसके स्पर्शदिषे जानणा जेकर साक्षात् जूठे हत्थनाल स्पर्श होवे तां नहि भोजन करणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी०भा० . २५७

सोई वसिष्ठजी कहतेहैं उच्छिष्टमिति गुरुका उच्छिष्ट होवे तां भोजन करलेणा और किसेका होवे तां नहि भोजन करणा और अपनां जूठा और जूठेके साथ जेडा मिलया होअहै तिसका भी भोजन नहि करणा ॥ जेकर भोजन करे तां स्नानतें पीछे १०० प्राणायाम करे एह जान लेणा ॥ जूठे मनुष्यको सूर्यादिका दर्शन करेणमे मार्कंडेयपुराणमे दोष कहाहै सूर्यद्विति सूर्य और चंद्रमा और तारे जिसजूठे ने दिखे होण कदाचित् तिहां पुरुषांदे अक्षिपर आग्निको रक्षकर यमदूतांने फूकां लगाइंदीअहैं ॥ १ ॥ उच्छिष्टने पलांडुआ दिके स्पर्शविषे बृहस्पतिजीका वचनहै सुगेति मदिश १ गंडा २ लस्सन ३ इनांके कामनाकर्के

यथाहवसिष्ठः उच्छिष्टमगुरोरभोज्यं स्वमुच्छिष्टेऽपहतं चेति उच्छिष्टस्य सूर्यादिदर्शने दोष उक्तो मार्कंडेयपुराणे ॥ सूर्ये दुतारकादृष्टयैरुच्छिष्टैः कदाचन तेषां याम्येनैरैरक्षिन्यस्तो वह्निः समिध्यते ॥ १ ॥ उच्छिष्टस्य पलांड्वादिस्पर्शे बृहस्पतिः ॥ सुरापलांडुलशुनस्पर्शे कामकृते द्विजः अहंपिवेत्कुशजलं सावित्राच जपेत्तथा ॥ १ ॥ इदमूर्ध्वोच्छिष्टस्येति शूलपाणिः ॥ यनु स एव पलांडुलशुनस्पर्शे स्नात्वा नक्तं समाचरेत् कृतोच्चारस्त्वहोरात्रमुच्छिष्टेऽद्यहमाचरेदिति १ तदधोच्छिष्टविषयमूर्ध्वोच्छिष्टेऽकामविषयं वा नक्तं शूद्रोच्छिष्टविषयं ब्रह्ममूर्ध्वोच्छिष्टद्विजविषयमिति केचित् ॥

स्पर्श कीतिआं होआं द्विजक्यो ब्राह्मणादि त्रयदिन कुशाकाजलपीवे और गायत्रीको १० दशा दिकीसंख्यासेंजपे ॥ १ ॥ परंतुएह ऊर्ध्वोच्छिष्टजोपुरुषहै तिसपर जानणा एह शूलपाणिजी कहतेहैं । और जो सोईशूल पाणि कहतेहैं पलेति पलांडुक्या और लशुन इनके स्पर्शविषे स्नानतें पीछे नक्त व्रत करे क्या एकाहारकरे और कृतोच्चार क्या जिसने दिशा होकर दिनरात्र तक शौच नहि कीता और भोजन करचुकाहै सो दो २ दिन उपवासकरे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सो एहअधोच्छिष्टका विषयहै अथवा ऊर्ध्वोच्छिष्टमे अकामका विषयहै और कोई कहतेहैं किनक्त व्रत शूद्रोंके लियेहै और दो दिनका व्रत ऊर्ध्वोच्छिष्ट ब्राह्मणादिको विषयकरताहै ॥

२५८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी०भा० ॥

एह पूर्वोक्त व्रत त्रय अकामके विषयहै और सावित्रीके जपसाथ तीन रात्र कुश जलको पानकी अशक्ति होयां २४ चौवी पण मुलवाला सुवर्ण देणा चाहिए । और जो उच्छिष्ट नहि है और लशुनादिको स्पर्श करे तिसको स्नानमात्रहि किहाहै ॥ और शूलपाणि जाके बनाएहोए ग्रंथमै वृद्धशातातपजीका वचनहै ॥ उच्छिष्ट होआ होआ विप्र मदिराको और कुत्तेको लशुनादिको स्पर्शकरे सो दिनरात्रके व्रत कर्के पीछे पंचगव्यके पीणे कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सोएह ऊर्ध्वोच्छिष्टके काम कर्के कीते होये स्पर्श विषे जानणा ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं मद्यमिति मद्य क्या सुरातें पृथक् जानणा क्यों कि सुराके स्पर्शमे अधिक प्रायश्चित्त होणेते और शूद्रक्या शूद्रकाजूठा अशुचि क्या लस्सनादि

तथात्रयमिदमकामतः सावित्रीजपान्वितत्रिरात्रकुशवारिपानाशक्तौ चतुर्विंशतिपणलभ्यं कांचनंदेयम् अनुच्छिष्टस्पर्शकेवलस्नानमेव ॥ शूलपाणौ वृद्धशातातपः ॥ उच्छिष्टः संस्पृशेद्विप्रो मद्यं शूद्रं शुनोऽशुचीन् अहोरात्रोपि तोभूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति १ एतदूर्ध्वोच्छिष्टस्य कामतः ॥ मद्यं सुरेतरं शूद्रं शूद्रोच्छिष्टं अशुचीन् लशुनादीन् ॥ सुरानुवृत्तौ यमः ॥ दर्शनात् स्पर्शनाद् घ्राणात् प्रायश्चित्तं विधीयते प्राणायामैस्त्रिभिः स्नात्वा घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति १ दर्शने कामतः स्पर्शनेऽकामतः घ्राणे वा कामतः कामतो जातिभ्रंशकरत्वं तथा ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ आघ्रायरसगंधं च सुरागंधं च सोमपाः स्नात्वाऽपः स्पृश्य कृत्वा त्रीन् प्राणायामान्विशुद्ध्यति १ ॥

सुराकी अनुवृत्ति विषे यमजी कहतेहै देति सुराके दर्शनतें स्पर्शतें सिंघणतें प्रायश्चित्त होताहै कि तीन ३ प्राणायाम करके स्नानकरे और घृतका भक्षणकरे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इसमे ऐसी व्यवस्थाहै कि देखणेंमें इच्छा विषे जानणा और न इच्छातें स्पर्श विषे और सिंघण विषे इच्छातें जानणा ॥ और इच्छातें करणें विषे जातिभ्रंशकर पाप होताहै ॥ तैसेहि इसीमें याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं आघ्रायेति रसगंध क्या विष्टा दि और सुरागंध क्या मदिरादि इनानूं सोमपा पुरुष सिंघे तो स्नान कर्के जलका स्पर्श करे और त्रय ३ प्राणायाम करे तो शुद्ध होताहै १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ११ ॥ टी० भा० २५९

जो सुमंतुजीने किहाहै सो कहतेहैं मयेति मदिराके साथ स्पर्श करणेमें ऋषभ मंत्रका जप करे और मदिराके सिंघण विषे प्राणायाम करे सो एह न इच्छाते करण विषे जानणा और इच्छाते करणेमें विष्णुजी कहतेहैं सुरामिति सोमपा पुरुष मदिराका गंध सिंघकर्के जल विषे डुब्बा होया त्रय ३ अघमर्षण जपे फेर घृत प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै ॥ अब जूठे पुरुषको नरादिकी विष्टा स्पर्श विषे लघुहारोतजीकहतेहैं श्वेति कुत्तेकी विष्टा और काक विष्टा और कंक गिरज पक्षिकी विष्टा और पुरुषकी विष्टाका और अधोच्छिष्टका स्पर्श करे तो सबस्र जलमें स्नान करे ॥ १ ॥ और जूठे पुरुषको स्पर्श करणेमें एह प्रायश्चित्त करे कि एकरात्रि उपवासकर्के पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै २ इस जगा अधोच्छिष्ट क्या विष्टाके

यत्सुमंतुनोक्तम् मयसंकरेऋषभंजपेत् सुराघ्राणेप्राणायामइति तदकामतः ॥ कामतस्तु विष्णुः ॥ सुरामाघ्रायगंधंसोमपउदकेमज्जमानस्त्रिरघमर्षणंजप्त्वाघृतप्राशनमाचरेदिति अधोच्छिष्टस्यनरादिपुरीषस्पर्शेलघुहारीतः । श्वविष्टांकाकविष्टांवाकंकगृध्रनरस्यच अधोच्छिष्टंतुसंस्पृश्यसचैलोजलमाविशेत् ॥ १ ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टंतुसंस्पृश्यप्रायश्चित्तमिदंचरेत् उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ अत्राधोच्छिष्टस्यपुरीषस्यस्पर्शस्नानम् ऊर्ध्वोच्छिष्टस्यतूपवासःपंचगव्यंचपेयम् । अथानुच्छिष्टस्यमलस्यस्पर्शे तत्रांगिराः ॥ ऊर्ध्वनाभेःकरौमुक्तवायदंगमुपहन्यते तत्र स्नानमधस्तातुक्षालनेनैवशुद्ध्यति ॥ १ ॥

स्पर्श विषे स्नान करे तो शुद्ध होताहै एह अर्थ है इस जगा प्रायश्चित्त बहुत होणेते जानणा कि उच्छिष्टहि जद उच्छिष्टको स्पर्श करे तां त्रैसा करे एह अभिप्रायहै और जेडा आप जूठा होवे और जूठेको अथवा मनुष्यादिमलको छोए सो उपवास कर्के पंचगव्यको पीवे । अब जो जूठा नहि तिसको मलके स्पर्शविषे अंगिगजी कहतेहैं ऊर्ध्वमिति इत्यादि विना नाभिते उपर जेकर कोई अंग मलादि कर्के (उपहन्यते) क्या स्पृष्ट होवे तां तिस विषे स्नान करणा किहाहै और उसके हेठ स्पर्शहोवे तां तिस जगाके षोणिकर्के हि शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥

२६० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

एह प्रायश्चित्त विष्टादि स्पर्श विषे है तिसमें भी गाढा अंगमै जद लगे तां है इसी मै शंखजी कहतेहैं ॥ रथ्येति गली कूचेके जल कर्के और थुक कर्के श्लेष्मादि कर्के नाभिते उपर पुरुष स्पृष्ट होवे तां शीघ्र स्नान कर्के शुद्धहुंदाहै ॥ १ ॥ और अंगिराजीने किहा कि धोणा जो है नाभिके हेठले अंगका सो मृत्तिका करके और जल करके करणा विष्णुजीभीकहतेहैं नाभेरिति नाभिके हेठले अंगाविषे देहदीमलकर्के और सुराकर्के मद्यकर्के जो युक्त होवे सो निरालस होआ होआ मृत्तिका और जलकर्के धोवे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ जेकर और जगा अर्थात् नाभिते उपर मलादि कर्के युक्त होवे तां मृत्तिका जल कर्के तिस

अमेध्यादिस्पर्शविषयमिदम् निविडांगादिस्पर्शविषयमपि ॥ तथाहशंखः
रथ्याकर्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवापुनःनाभेरूर्ध्वनरःस्पृष्टःसद्यःस्नानेनशुध्य
ति १ अंगिरसोक्तंक्षालनंमृदंभसाकार्यमित्यत्र विष्णुः ॥ नाभेरधसूतात्प्र
वाहेपुचकायिभिर्मलैः सुराभिर्मद्यैर्वोपहतोमृत्तोयैस्तदंगप्रक्षाल्यातंद्रितः
शुद्ध्येत् अन्यत्रोपहतोमृत्तोयैस्तदंगं प्रक्षाल्य स्नानेन चक्षुष्युपहत उपोष्य
पंचगव्येनदशनच्छदोपहतः प्रवाहेषु करयोः ॥ अत्रमृत्तोयपदमुपलक्षणं
अन्यदपिगंधलेपक्षयकरंज्ञेयम् ॥ तथाचदेवलः ॥ प्रलेपगंधस्नेहाणामशुद्धौ
व्यपकर्षणम् शौचलक्षणमित्याहुर्मृदंभागेमयादिभिः ॥ १ ॥ लेपन
स्नेहगंधेषुव्यपकृष्टेषुदूरतः पश्चादाचमनंवापिशौचार्थवक्ष्यतेबुधैः २

अंगनु धो कर्के और पिच्छे स्नान कर्के और नेत्रां विषे मलादि कर्के युक्त होवे तां उपवास
ते पिच्छे पंचगव्य पान कर्के और जेकर ओठां विषे युक्त होवे और कपोलादिविषे हत्थां
विषे युक्त होवे तांभी स्नानादि कर्के हि शुद्ध हुंदाहै परंतु सभनांके पिच्छे पंचगव्यका
पान हि करणा ॥ सोई देवलजी कहतेहैं प्रलेपेति प्रलेप गंध स्नेह इनांकी अशुद्धि विषे
मृत्तिका जल गोमयादि करके इनांका दूरकरणा हि शुद्धिका लक्षण कहाहै इस जगा आ
दिशब्द कर्के आटा तोआंका ग्रहण करणा १ और लेप स्नेह गंध इनांको दूरतेहि हटा देवे
पीछेतें आचमन करे एहि बुद्धिमानों ने शुद्धि कहीहै ॥ २ ॥

जो फेर व्यासजीने कहाहै सो कहते हैं मांसमिति वानर विला गधा ऊट कुत्ता इनांका मांस और शूकरोंकी मिंज इनांका स्पर्श करके सबस्र स्नान करे ॥ १ ॥ सो एह भो न जूठे को नाभि तें उपर लेपके दूर करणे के विषय में जानणा अर्थात् जो झूठा नहि होवे तिसको प्रायश्चित्त थोडाहै ॥ अथवा लघुहारीत का किहा होया अधोच्छिष्ट के विषय में जानणा । इसी वास्ते आपस्तंबजी कहतेहैं यदिति जो काक उर वगुले करके वेष्टित वस्तु और मिंज करके लिप्त शरीर होवें और मुख कर्ण विषे लगीहोई न शुके तिस जगाहै और स्नेह करके लेप दूरकरणकी शुद्धि पूर्वोक्त गोमयादि करके हि जानणी ॥ १ ॥ अब इसीका अर्थ मूल में स्पष्ट करके किहाहै

यत्पुनर्व्यासेनोक्तम् । मांसवानरमार्जारखरोष्ट्राणांशुनांतथा सूकराणाममे
ध्यैवैस्पृष्ट्वास्त्रायात्सचैलकमिति १ तदप्यनुच्छिष्टस्यनाभ्यूर्ध्वलेपोपहत
विषयम् लघुहारीतोक्ताधउच्छिष्टविषयंवा अतएवाहापस्तंबः यद्वेष्टितंका
कवलाकिकाभ्याममेध्यलिप्तंचभवेच्छरीरं श्रोत्रेमुखेनप्रतिशेतसम्यक्स्नेहे
नलेपोपहतस्यशुद्धिः ॥ १ अमेध्यादिलिप्तंशरीरंमुखेश्रोत्रेवानप्रतिशेतन
शुष्कंभवेदित्यर्थः ॥ मलमाहमनुः वसाशुक्रमसृङ्मज्जामूत्रविट्कर्णवि
एनखाः श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणांमलाः १ अमेध्यमाहदेवलः ॥
मानुपास्थिशवोविष्टारितोमूत्रार्तवंवसा ॥ स्वेदोश्रुदूषिकाश्लेष्मामलंवामे
ध्यमुच्यते १ एषादेहात्प्रच्युतानामेवामेध्यत्वम् ॥ देहाच्चैवच्युतामला
इतिमनुवचनात् ॥

अमेध्येति ॥ अब मनुजी मलां कों कहतेहैं वसेति मिंज १ वीर्य २ रुधिर ३ मज्जा ४
मूत्र ५ विष्टा ६ कर्ण मल ७ नख ८ श्लेष्म ९ अश्रु १०
नेत्र मल ११ परसीना १२ एह वारां पुरुषको मल होतेहैं ॥ १ ॥ अमेध्य को दे
वल जी कहते हैं मानुषेति मनुष्यकी हड्डी शव विष्टा वीर्य मूत्र ऋतुकाल मे स्त्री का रुधि
र मिंज परसीना अश्रु नेत्रमल श्लेष्म मल एह अमेध्य कहादे हैं परंतु इनांकों देहते बगकर
वाहर होयां कों हि अमेध्यत्व किहाहै देहादिति देहते जो बगे सो मल कहाहै इसमनुजी के
वचन तें ॥

२६२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

अब ऋष्य शृंगजी कहतेहैं मयेति मदिरा विष्टा मूत्रके किणके करके मुख जिसका स्पर्शवाला होवे सो मृत्तिका और गोए करके लेपकरे फेर पंचगव्यपानकरके शुद्ध होता है । १ । इसको स्पष्ट कर्क कहतेहैं स्नात्वेति स्नानकरके उपवास करे फेर पंचगव्यपान करके शुद्ध होता है इसपूर्वोक्त विष्णुके वचनते । इस विषय देवलजी विशेष कहतेहैं मनुष्यकीयां हड्डीयां चरवी विष्टा और रजस्व लाका रुधिर मूत्र वीर्य मिज रुधिर एह संपूर्ण जेकर दूसरेके होवें इनांका स्पर्श करे । १ । तां स्नान करके लेपादियोंको दूर करके आचमन करे तो शुद्ध होता है सो एह अपने होवें तद इनांका स्पर्श करे तो मार्जन करणे करके शुद्ध होता है । २ । और इसीका तात्पर्य

ऋष्यशृंगः ॥ मद्यविण्मूत्रविप्रुड्भिः संस्पृष्टं मुखमण्डलं मृत्तिकागोम
यैर्लेपात्पंचगव्येन शुद्ध्यति १ स्नात्वापोष्यपंचगव्येन शुद्ध्यतीत्यर्थः पूर्वो
क्तविष्णुवचनात् ॥ अत्रविशेषमाह देवलः ॥ मानुषास्थिवसां विष्टामा
र्त्तवमूत्ररतसी मज्जानं शोणितं वापि परस्य यदि संस्पृशेत् १ स्नात्वापमृ
ज्यलेपादीनाचम्यसशुचिर्भवेत् तान्येव स्वानि संस्पृश्य पूतः स्यात्परि
मार्जनात् ॥ २ ॥ अतः परमलस्पर्शे स्नानमात्ममलस्पर्शे प्रक्षाल
नमाचमनंच ॥ सुमंतुः ॥ चंडालपतितं वापि तथानारीं रजस्वलां उच्छि
ष्टस्तु द्विजः स्पृष्ट्वा प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ १ ॥ एतत्कामतः ॥ यत्वाप
स्तंवः ॥ भुक्तोच्छिष्टोत्थजैः स्पृष्टः प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ अर्द्धोच्छि
ष्टे स्मृतः पादः पाद आस्याशने तथा ॥ १ ॥

कहतेहैं इसते दूसरेकी मल स्पर्श विषे स्नानमात्र है और अपनी मल क्या विष्टादिके स्पर्श विषे सिंचन और आचमन करणा । अब सुमंतु जी कहते हैं चंडालमिति चंडाल और पतित तैसंहि रजस्वला को जूठा होया २ ब्राह्मणादि स्पर्श करे तो प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होता है ॥ १ ॥ सो एह इच्छाते करण में जानणा । जो आपस्तंब जीने कहा है सो कहतेहैं भिवति भक्षणकरके जूठेको हि चंडाल स्पर्श करे तो सो ब्राह्मणादि प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होता है और अर्द्धोच्छिष्टविषे एह पाद व्रत कहा है और एक पाद मुख स्पर्श मात्रविषे जानणा । १ ।

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०११ ॥ टी० भा० ॥ २६३

इस विषे अर्धोच्छिष्ट मुख विषे ग्रास पाणे मात्रमें जानणा निगलने में नहि है । और न इच्छातें करण में सोई आपस्तंव जी कहतेहैं ॥ भोजन करके जूठा होया २ आचमनतें रहित हि प्रमादतें चंडाल अथवा नीच करके स्पर्श वाला होबे ॥ १ ॥ तिसकी शुद्धि इस तर्ही करे गायत्रीका आठ सें अधिक १००८ हजार जप और सौ १०० (द्रुपदादिव) इसमंत्रका जप करे और त्रय ३ रात्रि उपवास करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै । २ । जो सोई आपस्तंव जी कहतेहैं चमिति चंडाल करके स्पर्श वाला ब्राह्मण विशेष कर्के शोककरताहुआ शुद्धिकों करे क्या एक रात्रि उपवासव्रत करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै । ३ । सो एह आपत्ति विषे इच्छातें विना करण विषे जानणा लघुहारीतस्मृति मे लिखाहै ॥ जूठा मनुष्य जेकर स्पर्श करे नटुएकों ललारीकों

अत्रार्धोच्छिष्टो मुखेग्रासप्रक्षेपमात्रिकृते नतु निगीर्णे आस्याशनेमुख स्पर्शमात्रे अकामतः सएव भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतः चांडालैः श्वपचेनवाप्र मादात्स्पर्शनंगच्छत्तत्रकुर्याद्विशोधनम् १ गायत्र्यष्टसहस्रंतुद्रुपदानांशतंत या त्रिरात्रोपोपितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ यत्तुसएव ॥ चंडालेनतुसं स्पृष्टोविशोचंस्तुद्विजोत्तमः उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ३ तदापद्यकामतः । लघुहारीतः । उच्छिष्टः संस्पृष्टेश्वस्तुनटरंजकमोचकान् अधोच्छिष्टोयदासस्यादेकरात्रमभोजनम् १ ऊर्ध्वोच्छिष्टोयदासस्यात्प्राय श्वित्तंभवेदिदम् उपवासस्त्रिरात्रंस्याद् घृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति २ अतश्चऊ र्ध्वोच्छिष्टस्यतैरुच्छिष्टैः स्पर्शंपट्टात्रम् एवमेव यत्रोर्ध्वोच्छिष्टस्यचांडालादि स्पर्शंपट्टात्रम् तत्राधोच्छिष्टस्यतदूर्ध्वत्रिरात्रम् कालिकापुराणे स्पृष्ट्वारुद्रस्य निर्माल्यं सबासाप्राप्तः शुचिरिति मलादिदूषितकूपादिजलपाने संवर्त्तः

चंडालभांडसंस्पृष्टंपिवेत्कूपगतंजलम् गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति १

मोचकों सो जेकर दिशा फिरकर आयाहै, इसतर्हीका जूठा होबे तां एकरात्र भोजन न करे ॥ १ ॥ और जेकर भोजन करणें पिच्छे इनांकोछोवें तां इस प्रायश्चित्तनुं करे किंवीनरातां उपवासकरकेपिच्छे घृतपानकरे तोशुद्धहुंदाहै ॥ २ ॥ इसीकारणें और जिनांके साथ स्पर्श होयाहै जेकर सोभी जूठेहोण तां ६ छेरात्रका व्रत करे इसी तर्ही जित्थे ऊर्ध्वोच्छिष्टका चांडालादिके स्पर्श विषे छे ६ रात्रिका व्रतहै तिस जगा अधोच्छिष्टका तिसी के स्पर्शमें तीन ३ रात्रिका व्रत जानणा ॥ और विशेष कालिका पुराणविषे किहा है । शिवके निर्माल्यकों स्पर्श कर्के सहित वस्त्रांके स्नानकरे तां शुद्ध हुंदा है ॥ मलमूत्रादि जि सखुएमे पड़े होण तिसके जलपानविषे संवर्त्तजी कहतेहैं चांडालके भांडे कर्के स्पर्श वाला जो खयाहै तिसके जलको पीवेसो गोमूत्रयावकके आहारकर्के तीन ३ रात्र व्यतीतकरेतो शुद्ध हुंदाहै १

और कहते हैं अत्यजैरिति चांडालों कर्क सेवितजो तडागक्यातला और नदिआं तिस विषे जलपके अकामनाते पंचगव्य पीणे कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ २ ॥ मदिरा वाला घडा और धर्मंगा लाका जल और पनालेका जल इनको पीके दिनरात्रका उपवास रक्षकर पंचगव्य पीवे तां दिजक्याब्राह्मणादि शुद्ध हुंदा है ॥ ३ ॥ जेकर खुया विष्टामूत्र कर्के युक्त होवे तिस विष्टों ब्राह्मणादि जलपान करे तां तीनरात्रके व्रत कर्के शुद्ध हुंदा है और जेकर ऐसा घडाहि होवे क्या विष्टा मूत्र वाला होवे और तिसके जलको पीवेतांसांतपनव्रतकरे ॥ ४ ॥ और वाउली १ खूया २ तलाउ ३ एह जेकर दूषितहोण तां इनकी शुद्धि इसतही जानणी जलका १०० सउघडा

अत्यजैःस्वीकृतेष्वेवतडागेपुनर्दीपुच शुद्ध्यतेपंचगव्येनपीत्वातीयमकामतः
२ सुराघटप्रपातोयंपीत्वाकाशजलंतथा अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्यंपि
वेद्विजः ३ कूपेविष्टमूत्रसंस्पृष्टप्राश्यचापोद्विजातयः त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यं
तिकुंभेसांतपनंस्मृतम् ४ वार्पिकूपतडागानांदूषितानांविशोधनम् अपांघ
टशतोद्धारःपंचगव्यंचनिःक्षिपेत् ५ प्रसंगाज्जलशुद्धिरप्युच्यते तत्रपरा
शरमाधवः वार्पिकूपतडागेषुदूषितेषुकथंचन उद्धृत्यैवघटशतंपंचगव्ये
नशुद्ध्यतीति १ कूपादिदूषणाद्विधा श्वमार्जारादीनांतत्रपततंमरणात् मृ
तशरीराणांतत्रैव चिरंजरणाच्च तत्र मरणविषयमिदंविशोधनम्

निकाल कर पंचगव्य उसमे पावे तां शुद्धहुंदा है ॥ ५ ॥ प्रसंगतें जलशुद्धिभी कहिदीहै तिसमे पराशर माधवजीका वचनहै वाउली १ खूया २ तलाउ कदाचित् दूषितहो जाण तां जलका सउ १०० घटा कडा कर पंचगव्य तिस विचपाणा तिसकर्के शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ पिछलाहि अर्थहैकूपादियोंका सो दूषण दोतहीकहै कुत्ते बिले आदिका तिनमैपै कर्के मरणा और मृतहो यांका चिरकाल कर्के जीर्ण होणा इनमेसैं पहलेकी क्या जो मृतहोआ और जिसते शीघ्रनि काललिआ तिसकी एह सउ १०० घडे वाली शुद्धिहै

॥ श्रीरणावीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥ २६५

इसी को हारीत जी भी कहते हैं वाउली खूआ तला एह किसे कर्के दूषित होवें तो इनांकी शुद्धि करे क्यासौ १०० घडा जल कडा कर्के पंचगव्य तिसमे पादेवे । १ । संवर्त्त जी भी इसी मे कहते हैं वापीति वाउली खूआ तलाओ एह कदाचित् मलादि कर्के दूषित होवें इनांकी शुद्धि वास्ते जलका सौ १०० घडा निकाल कर्के पंचगव्य तिसमें पादेवे । १ । एही शुद्धि जोडे आदिके दूषण बिषे भी देखणे योग्य है । सोई आपस्तव जी कहते हैं उपेति जोडा और पुराणे जो डेका एक भाग छिप्य किहा है और विष्टा मूत्र स्त्रीका रज मदिरा इनांके पाने कर्के दूषित जी खूआ तिसमें सौ १०० घडा जलका निकाल देवे । १ । अब इसीमे और विचार कर्ते हैं उच्छीति (प्रण) नूठा और अपवित्र और जो विष्टा कर्के लिप्त होवे एह संपूर्ण जल कर्के शुद्ध होते

एतदेवहारीतोप्याह वापीकूपतडागेषुदूषितेषुविशोधनम् घटानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंक्षिपेत्ततइति १ संवर्त्तोपि वापीकूपतडागानांदूषितानांचशुद्धये अपाघटशतोद्धारः पंचगव्यंचशोधनमिति १ इयमेवशुद्धिरूपानहादिदूषणेपिद्रष्टव्या तदाहापस्तंवः उपानच्छिप्यविमत्रस्त्रीरजोमद्यमेवच पतितेदूषितेकूपेकुंभानांशतमुद्धरेदिति ॥ १ ॥ पुरातनोपानदेकभागश्छिप्यम् । उच्छिष्टमशुचित्वंचयच्चविष्टानुलेपनम् सर्वशुद्ध्यतितोयेनतत्तोयंकेन शुद्ध्यति ॥ २ ॥ सूर्यराशिमनिपातेनमारुतस्पर्शनेनच गवामूत्रपुरीषेणतत्तोयंतेनशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अस्थिचर्मादियुक्तंतुखरश्वानोपदूषितं उद्धरेत्तुदकंसर्वशोधनंपरिमार्जनम् ॥ ४ ॥ कूपोमूत्रपुरीषेणयवनेनापिदूषितः श्वसृगालखरोष्ट्रैश्चक्रव्यादैश्चजुगुप्सितः ॥ ५ ॥

हैं और सो जल किस कर्के शुद्ध होता है २ (उत्तर) सूर्यकी किरणों के डिगणें कर्के और वायुके स्पर्श करणें कर्के सो जल शुद्ध होता है और गौआंके मूत्र कर्के और गोए कर्के सो जल शुद्ध हुंदा है । ३ । अब छोटे जलाशयके वास्ते कहते हैं अस्थीति हड्डीआं कर्के और चर्म कर्के आदि शब्दते मलमूत्र कर्के युक्त होवे और गधा कुत्ता इन कर्के दूषित होवे तां तिस जलाशयते-साराजल निकाल कर उसके तलको पूंज देवे तां शुद्ध होवेगा ॥ ४ ॥ खूआ मूत्र पुरीष कर्के और यवन तो नीचजाति तिस कर्के दूषित होवे अथवा कुबेकर्के गिहडकर्के गधे कर्के ऊट कर्के व्याघ्रादि कर्के दोषवाला होवे ॥ ५ ॥

२६६ ॥ श्रीरणवीर कौरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र. ११ टी. भा० ॥

तां तिसके सारे जलको निकाल कर्के सत्त टोकरिआं मितीकिआं काढे और ऋचा कर्के पवित्र होआ २ पंचगव्य उस खूये विषे पावे ॥ ६ ॥ इसीमे विशेष कहतेहैं कि जिस खूएका जल शुक्ल न सके तिस विचों १०० सउघडाजलदा निकालके पंचगव्य पावे एह पिछलाहि अर्थहै ॥ ७ ॥ अब प्रासंगिकको कहतेहैं यच्चेति जेडा ब्राह्मण दुष्ट खूए का जल पीवे खूया कैसाहैं कि मुडदे कर्के दोषवालाहै तां किसतही तिसकी शुद्धि होतीहै एह मेरेको संशयहै ८ (उत्तर)जेकर मुडदातिसविषे गलया नहि औरदुष्टा नहि केवल दूषण मात्र हि होआहै तां तिसके जल पीणे कर्के जो दोषहै सो पंचगव्य कर्के दूरहुंदाहै ९ और जेकर जल विषे मुडदा गल गया होवे तो तिस जल को पान करण वाला चांद्रायण अथवा तप्त रु

उद्धृत्यैवचततोयंसप्तपिंडान्समुद्धरेत् पंचगव्यमृचापूतंकूपेतच्छोधनंस्मृतम् ६ वापीकूपतडागानांदूषितानांचशोधनम् कुंभानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंततःक्षिपेत् ॥ ७ यच्चकूपात्पिवेतोयंब्राह्मणःशवदूषितात् कथंतत्रविशुद्धिः स्यादितिमेसंशयोभवेत् ८ ॥ अक्लिन्नेनाप्यभिन्नेनकेवलंदूषिताच्चहि पीत्वा कूपादहोरात्रंपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ९ ॥ क्लिन्नेभिन्नेशंवच्चैवतत्रस्थयदितत्पिवेत् शुद्धिश्चांद्रायणंतस्यतप्तकृच्छ्रमथापिवा ॥ १० ॥ अत्रकामतश्चांद्रायणमकामतस्तप्तकृच्छ्रमिति व्यवस्थाऽपरार्के ॥ पराशरः ॥ कूपेतुपतितंदूष्ट्वाश्वसृगालंचमर्कटं अस्थिचर्मादिपतनात्पीत्वामेध्याह्नपोद्भिजः १ नारंतुकुणपंकाकंवैड्वराहंखरोष्टयोः गावयंसौप्रतीकंचवाभ्रवंत्वाखुजंतथा ॥ २ ॥ वैयाघ्रमार्गसैहंवाकूपेयद्यस्थिमज्जति तडागस्यैवदुष्टस्यपीतंस्यादुदकंयदि ॥ ३ ॥ प्रायश्चित्तंभवेत्तस्यक्रमेणैतेनसर्वशः ॥ ४ ॥

चलू व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ १० ॥ इस विषे इच्छातें करणे में चांद्रायण और न इच्छातें करणे विषे तप्त रुच्छलू व्रतकरे एह व्यवस्था अपरार्कमें कहीहै अब पराशर जी कहतेहैं कूपेति कुत्ता गिद्ध वानर इनांनु खूए विषे डिगे होआं नूं देख कर्के औरहड्डी चर्मादिके डिगणे तें अपवित्र जो जल तिसनूं ब्राह्मण पान कर्के ॥ १ ॥ और पुरुषका मुडदा काक बिट् भक्षक शूकर गधा ऊट गोइंद हस्ती नौल चूआ ॥ २ ॥ व्याघ्र मृग शेर इनका मुडदा खूए विषे डि गया होवे और हड्डी डिगे खूए विषे अथवा तलाओ विषे इनका जेकर जल पान करे ३ तो इसका प्रायश्चित्त संपूर्ण इस क्रम कर्के करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०११ ॥ टी० भा० ॥ २६७

विप्र इति ब्राह्मण त्रय १ रात्रि करके और क्षत्रि दो २ दिनतें वैश्य एक दिन करके शूद्र उपवास करके शुद्ध होता है ॥ ५ ॥ एह तलाओंके जल पानमें जानणा ॥ और खूएके जल पान में अधिक प्रायश्चित्त कल्पना करणा । मृत शरीर जिस विषे गल गया होवे तिस जल के पान में विष्णु जी कहतेहैं मृतेति मृत होए पंचनख जिस खूएमें डिगें तैसें मुडदा जिसमें गल जावे तो तिस संपूर्ण जलकों निकाल देवे वाकी दे जल को शास्त्र करके शुद्ध करे ॥ १ ॥ और अग्नि जगा करके पीछे पक्का वणाजो खूआ तिस विषे पंचगव्य पा देवे फेर नवीन जल उत्पन्न होवे तो जानणा शुद्ध भया ॥ २ ॥ और कुष्ठ्यादि मनुष्यके श

विप्रः शुद्धयेत्रिरात्रेण क्षत्रियश्चदिनद्वयात् ॥ एकाहेनचवैश्यस्तु शूद्रो नक्तेनशुद्ध्यति ॥ ५ ॥ सुप्रतीकोगजःतस्येदंसौप्रतीकम् ॥ तडागोदको पयोगविषयमेतत् कूपोदकोपयोगेत्वधिकंकल्प्यम् ॥ मृतशरीरजरणकृता यामत्यंतोपहतौ विष्णुराह मृतपंचनखात्कूपादत्यंतोपहतात्तथा ॥ अपस्तदुद्धरेत्सर्वाः शेषंशास्त्रेणशोधयेत् १ वह्निप्रज्वालनंकृत्वाकूपेपक्वेष्टि काचिते पंचगव्यंन्यसेत्तत्रनवतोयसमुद्भव इति ॥ २ ॥ कुष्ठ्यादिम नुष्यशरीरजरणेप्येवैवशुद्धिः ॥ तदाहहारीतः ॥ वापीकूपतडागेषु मानुषं शीर्यतेयदि अस्थिचर्मविनिर्मुक्तैर्दूषितंश्चखरादिभिः उद्धृत्यतज्जलंसर्वशो धनंपरिमार्जनम् १ ॥ मानुषंशवम् ॥ अत्रसर्वजलोद्धारप्रकारोजलोद्धारक यंत्रविशेषेण वा तावन्मृदापूर्य्यपश्चात्सर्वमृदुद्धरणेनभवतीतियौक्तिकोऽर्थः

रीर गलने में भी एही शुद्धि जानणी । सोई हारीत जी भी कहतेहैं वापीति वाडली खूआ तलाओ इनां विषे जेकर पुरुषका मुडदा अर्थात् किसें कुष्ठी आदिका मुडदा गल जावे और हड्डी चर्म इन करके रहित कुत्ता गधादि करके दूषित जो जल तिस सारे जलकों हि निकाल देवे और परिमार्जन करके क्या थछा सोत देवे तां शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अत्रेति इस विषे संपूर्ण जल निकालनेका प्रकार एहहै जलोद्धारक यंत्र विशेष करके निकाल देवे अथवा जितनी जल होवे तितनी मृत्तिका पाकर पूर्ण कर देवे पीछेतें संपूर्ण मृत्तिका निकालने करके शुद्ध होता है एह युक्ति सिद्ध अर्थहै वचन करके नाहैं है ॥

२६८ ॥ श्रीरणवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

और बड़े तला आदिविषे दोष नहीं है सो विष्णुजी कहते हैं जलेति छोटे जो जलस्थान और बड़े जो पृथ्वी विषे जल स्थान जेडे स्थावर हैं क्या बगदे नहि तिनांकी शुद्धि खूए की न्या ई कही है और बड़े जल स्थानों में दोष नहि है । १ । इसी में देवलजी भी कहते हैं बड़े जो जल स्थान हैं तिनांमें दोष नहीं है और जिनां में सें जल बगता है तिनांमें भी दोष नहीं है और छोटे की जल निकालनें सें शुद्धि कही है क्योंकि जिस करके मल विषे हि दोष हो ताहै । १ । अल्प जल स्थानों विषे भी पूर्व कथन कीता होया जो दोष तिसते अल्प दोष वि षे विष्णु जी कहते हैं अव्याप्तमिति अपवित्र वस्तु थोड़ी जगामें जिस जल में पड़ी हो और तैसैं हि जिस में पत्थर लगे हों तिनकी शुद्धि चंद्रमा सूर्यकी किरणां करके और वायु

प्रौढेषु तडागादिपुनास्ति दोषस्तदाह विष्णुः ॥ जलाशयेषु स्वल्पेषु स्थाव रेपु महीतले कूपवत्कथिता शुद्धिर्महत्सु च न दूषणमिति ॥ १ ॥ देवलोपि अक्षुद्राणामपां नास्ति प्रसृतानां च दूषणम् ॥ स्तोकाणामुद्धतानां च कश्मले दू षणं भवेदिति १ अल्पोदकेष्वपि पूर्वोदाहृता दोषादल्पे दोषे विष्णुराह अव्या प्तं चेदमेभ्येन तद्देवशिलागतम् सोमसूर्याशुपातेन मारुतस्पर्शेन न च गवां मूत्रपुरीषेण शुद्ध्यंत्यापइति स्मृता इति ॥ जानुदघ्नाधिकजले कूपेऽत्यजैस्स हजलोद्धरणे न दोषस्ततोऽल्पेतु दोष एव । तथा चापराकैऽत्रिः ॥ म्लेच्छादी नां जलं पीत्वा पुष्कराणां हृदेऽपि वा जानुदघ्नं शुचिज्ञेयमधस्तादशुचि स्मृतम् ॥ १ ॥ म्लेच्छादीनां संबंधिनां पुष्कराणां तडागादिजलाशयानां वा ह देतादृशहृदे जलं पीत्वा तृप्तस्य शुद्ध्यर्थं जानुदघ्नं शुचि ततोऽल्पमशुचीत्यर्थः

स्पर्श कर्के और गौआं के मूत्र पुरीष करके होती है एह स्मृतिकार कहते हैं अव इसीमें और विशेष कहते हैं जान्विति जानुतक अथां गोडे तक जिस खूएमें जल होवे और उसीसे ब्राह्मणादि और नीचादि जल पीते होण तां ब्राह्मणादिको कोई दोष नहि और जेका इससे जल बहुत होवे तां क्या कहणा और जेकर गोडे सें थोड़ा जल होवे तां पूर्वोक्ते दोषहि है एह अर्थ अपराकं विषे अत्रिजीने किहो है म्लेच्छेति म्लेच्छादिषां के संबंधि जो तडागादि वा हृद ति नांका जल पीके तृप्त होया जो बिजादि तिसको जानुके बराबर जल पवित्र है हंठ होवे तां अपवि त्र है ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २६९

तिस जलको जेडा ब्राह्मण कामनातें अथवा अकामते पीवे तां अकामके पान विषे नक्तभोजी होवे क्या रात्रिमे भोजन करे और कामनाते पीवे तां दिनरात्रके व्रतकर्के शुद्धहुंदा है ॥ २ ॥ और शातातपजी कहते है चांडेति चांडालके जलपात्रतें तृपानुर पुरुष जलपीवे तां तत्क्षणाहि उसको त्यागकर प्राजापत्यसे शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ जेकर सो जल तिसके उदर विषेहि जीण होजावे तां शुद्धिवास्ते प्राजापत्य और सांतपनभीकरे ॥ २ ॥ इसीमे और विशेषकहते हैं कि जूठे आदिवस्तुका संयोग जिसजलमे नहि और गौओंके पीणेतें क्षय नहि होआ ऐसा जो पृथ्वीविषे स्थित जलहै सोई शुद्धहै और तिसतें थोडा होवे तां शुद्ध नहि सोई देवलजी कहतेहैं अवीनि दुर्गंधिसे जो रहित और रसवाले क्या स्वादु और निर्मल

ततोयंयः पिवेद्विप्रः कामतोऽकामतोपिवा अकामान्नक्तभोजीस्या दहोरात्रंतुकामतः ॥ २ ॥ शातातपः ॥ चंडालोदकभांडेषुयः पिवे तपितोजलम् ॥ तत्क्षणात्क्षिपतेतच्चप्राजापत्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ यदिनक्षि पतेतोयंचिरैणैवास्यजीर्यते प्राजापत्यंतुकर्तव्यंकूच्छंसांतपनंचरेत् ॥ २ ॥ उच्छिष्टाद्युपघाताभावेपि गवांपानाद्यदुदकंनक्षीयतेतदेवशुद्धंनतुततोल्पम् तदाहदेवलः अविगंधारसोपेतानिर्मलाः पृथिवीगताः अक्षीणाश्चैवगोपा नादापः शुद्धिकराः स्मृताइति १ मनुरपि ॥ आपः शुद्धाभूमिगतावैतृण्यं यासुगोर्भवेत् अव्याप्ताश्चेदमेध्येनगंधवर्णरसान्विताइति १ नवोदकेकाला च्छुद्धिमाहयमः अजागावामहिष्यश्चनार्य्यश्चैवप्रसूतिकाः दशरात्रेणशुद्ध्यति भूमिष्ठंचनवोदकमिति १ उद्धृतोदकंप्रतिदेवलआह । उद्धृताश्चापिशुद्ध्यति शुद्धैः पात्रैः समूद्धताः एकरात्रापिताश्चापस्त्याज्याः शुद्धाश्चपिस्वयमिति १

और पृथिवीविषे स्थित और गौओंके पीणेतें नष्ट नहिहोए सोजल शुद्धिके करणवाले है । १ । म नुजीभीकहतेहैं ॥ जो जल पृथ्वीविषे स्थितहैं जिनां विषे गौ तृप्तहोजावे और विष्टा आदि कर्के युक्त नहि और अपना गुण जो है मधुर रसादि तिसकर्के युक्त हैं सो जल शुद्धजाने । १ । नवीन जलविषे कालते शुद्धि यमजीकहते हैं ॥ अजाइति वकरी १ गौ २ महिषी ३ स्त्री ४ एह प्रसूत होइआं होइआं १० दस्तां दिनां कर्के शुद्ध हुंदीआंहैं और पृथ्वीविषे नवीनजो जल है सोभी १० रात्रकर्केहि शुद्धहुंदाहै । १ । और जोजल खूए आदिते निकालयाहोवे सोजल जेकर शुद्धपात्रसाथ निकालयाहोवे तां शुद्धहै एहदेवलजी कहते हैं जेकर सो निकालयाहोआ जल एक १ रात्र उसपात्रमे रहे तां अशुद्धहुंदाहै उसको त्यागदेणा चाहिए चाहे प्रथमशुद्धभीथा । १ ।

२७० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र-११ टी ० भा० ॥

इसमे यमजी कहतेहैं अपइति जलको रात्रिमै नहिभरणा अर्थात् खूएआदिसे नहिनिकालना जेकर किसेकार्यवशतें निकाले तां अग्निउपररक्खे और धाम्ना धाम्न इसमंत्रका उच्चारणकरे तां शुद्ध होतेहैं ॥ १ ॥ अव रजस्वला स्त्रियोंके आपसमे स्पर्श विषे प्रायश्चित्तमयूखविषे किहाहै तिस विषे सपत्नी आंजेडीआं रजस्वलाहैं और एक कुलदीआंहैं तिनके आपसमे स्पर्शविषे वसिष्ठजी कहते हैं स्पृष्ट इति कदाचित् दोए रजस्वला एक कुलदीआं एक पति वालियां आपसमे जाण कर्के अथवा नजाणकर्के छोणतां शीघ्रहि स्नान करणे कर्के शुद्ध हुंदिआंहै । १ । और जेकर भिन्न पति वालिआं और इक कुल दिआंहोण तां मार्कंडेयजी कहतेहैं उदक्षेति ॥ इककुलदिआं रजस्वला साथ जेकर तैसी दूसरी स्पर्श करे तां तिसीदिनाविषे स्नानकर्के शुद्ध

यमोपि अपोनिशिनगृहणीयाद्गृहणीतापिकदाचन निधायाग्निमुप्रयां
सांधाम्नोधाम्नइतीरयन् ॥ १ ॥ ततश्चशुद्धाभवेयुरित्यर्थः ॥ ॥ अथ
रजस्वलायास्स्पृश्यस्पर्शे प्रायश्चित्तमयूखे तत्ररजस्वलयोः सपत्न्योरिक
गोत्रयोः स्पर्शेवसिष्ठः स्पृष्टेरजस्वलेन्योन्यंसगोत्रित्वेकभर्तृके कामादका
मतोवापिसद्यःस्नानेनशुध्यतः १ असपत्न्योस्तुसवर्णयोर्मार्कण्डेयः उदक्या
तुसवर्णयास्पृष्टाचेत्स्यादुदक्यया तस्मिन्नेवाहनिस्नाताशुद्धिमाप्नोत्यसं
शयः १ इदंचाकामतः ॥ कामतस्तु काश्यपः । रजस्वलातुसंस्पृष्टाब्राह्म
ण्याब्राह्मणीयदि एकरात्रानिराहारापंचगव्येनशुध्यति १ यत्तुपराशरः ॥ स्पृ
ष्टवारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीब्राह्मणीतथा तावत्तिष्ठेन्निगहारत्रिरत्रिणैव
शुध्यतीति १ तत्कामतोभ्यासे सहशयनादिचिरस्पर्शेवा ॥ असवर्णास्पर्शे
पुनः सएव ! रजस्वलातुसंस्पृष्टाराजन्याब्राह्मणीचया त्रिरात्रेणविशु
द्धिःस्यादव्याग्रन्यवचनंयथा १

हुंदाहै इसमै संशयनहिहै ॥ १ ॥ एह अकामरुत स्पर्शमे है जेकर कामरुतमे होवें
तां काश्यप जीकहतेहैं रजइतिरजस्वलाब्राह्मणीजेकर रजस्वला ब्राह्मणीके साथ छोजावे तां
एकरात्र निराहार रहकर पंच गव्य कर्के शुद्ध होतीहै । १ । और जो पराशर जीने किहाहै कि आ
पसमे ब्राह्मणीआं रजस्वला स्पर्श करें तां तिन रात्र तक निराहार स्थित रहें तां शुद्ध हुं
दीआंहैं एह प्रायश्चित्त कामनाते बहुत बारकरणे मैहै अथवा एकठ्ठीआंदि शयनादि स्पर्श
विषे है ॥ जो एक वर्णकीआं नहि तिनाके आपसमे छोणे विषे सोई पराशरजी कहतेहैं
जेकर ब्राह्मणी रजस्वला क्षत्रियाणी रजस्वलाके साथ स्पर्शवाली होवे तां तिनारात्रांकर्के शुद्ध
हुं दीहै एह व्याघ्रजीका वचनहै ॥ १

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ॥ ११ टी० भा० ॥ २७१

और रजस्वला ब्राह्मणी वैश्या रजस्वला कर्के स्पर्श वाली होवे तां पंज रातां निराहार रहकर पीछे पंचगव्यके पान कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ २ ॥ और रजस्वला ब्राह्मणी शूद्रा रजस्वला कर्के स्पर्शवाली होवे तां छे ६ रात्र कर्के शुद्ध हुंदीहै एह सभकामनाके स्पर्शविषे है ॥ ३ ॥ अकाम ते स्पर्श विषे ब्राह्मणी सभजाति विषे अर्द्ध प्रायश्चित्त करे ॥ ४ ॥ इसमै ऐसा जानणा कि जि सतहीब्राह्मणीआं रजस्वला आपसमै स्पर्श वालिआं होण तां तिनांको उपवास और पंचगव्यपान किहाहै तिसतही होरणांको समान कुल वालि आंके स्पर्श विषे भी उपवास

रजस्वलातुसंस्पृष्टवैश्याब्राह्मणीचया पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्धयति ॥ २ ॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशूद्रयाब्राह्मणीचया षड्रात्रेणविशुद्धिः स्याद्ब्राह्मण्याः कामकारतः ॥ ३ ॥ अज्ञानतश्चरेदर्धंब्राह्मणी सर्वजातिषु ॥ ४ ॥ अत्र यथा ब्राह्मणी रजस्वलयोःस्पर्शोपवासः पंचगव्याशनंच तथाऽन्यासामपि सर्वणरजस्वलास्पर्शोपि तदेव ॥ असवर्णे तु यथाब्राह्मण्याःक्षत्रियास्पर्शोत्रिरात्रम् ॥ तथाक्षत्रियायावैश्यास्पर्शः ॥ वैश्यायाःशूद्रास्पर्शोपि तदेव ॥ तथाचभवदेवनिबंधेस्मृतिः ॥ रजस्वलातुयानारि अन्योन्यसुभयंस्पृशेत् सवर्णेपंचगव्येनत्रिरात्रमसवर्णके ॥ १ ॥ पंचगव्येन उपवाससहितेनेतिभवदेवः ॥ तथाशातातपः रजस्वले उभेनार्यावन्योन्यंस्पृशतोयदि सवर्णेपंचगव्येनब्रह्मकूर्चमतःपरमिति १ ब्रह्मकूर्चप्रकारोव्रतप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥

और पंचगव्यपानहै और असमानवर्णविषे जैसे ब्राह्मणीको क्षत्रियाणीके स्पर्शविषे त्रिरात्रहै इतनाहि क्षत्रियाणीको वैश्याकेस्पर्शविषेहै और वैश्याको शूद्राके स्पर्श विषेभी सोई है तेसे हि भवदेवके निबंधमें स्मृतिहै रजइति रजस्वलाजां स्त्रीहै सो दो आपसमै स्पर्शकरे अपने वर्णमै तां उपवाससहित पंचगव्यकर्के और भिन्नवर्ण विषे त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्धहुंदीआंहीं । १ । तेसे हि शातातपजी कहतेहैं दोस्त्रीयां रजस्वला आपसमै स्पर्शकरें तां सवर्णविषे पंचगव्यके पीछे ब्रह्मकूर्च करने कर्के शुद्ध हुंदीआंहीं ॥ १ ॥ सो ब्रह्मकूर्चका प्रकार व्रतप्रकरणमें देखलेना

२७२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी०भा० ॥

जो वृद्ध वसिष्ठजीने किहाहै स्पृष्टेति ब्राह्मणी और शूद्रा एह दोनो रजस्वलाहोवें और आपसमें स्पर्श करें तां ब्राह्मणी प्राजापत्य कर्के और शूद्रा गोदान कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ और ब्राह्मणी वैश्या एह दोनो रजस्वलाहोण और परस्पर-स्पर्श करें तां पूर्वा क्या ब्राह्मणी पा दोन प्राजापत्य करे क्या १ दिनका व्रत करे और उत्तरा क्या वैश्या निसका इकपाद व्रत करे ॥ २ ॥ और ब्राह्मणी तथा क्षत्रियाणी एह आपसमें रजस्वला होकर स्पर्श करें तां पहली अदे कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदीहै और दूसरी लघु कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ ३ ॥ और क्षत्रि

यत्तुवृद्धवसिष्ठः ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीशूद्रजापिवा कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीवैश्यजापिवा पादहीनंचरेत्पूर्वाकृच्छ्रपादंतथोत्तरा ॥ २ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीक्षत्रियातथा कृच्छ्रार्धात् शुद्ध्यतेपूर्वाइतरातुतदध्वतः ॥ ३ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियाशूद्रजापिवा उपवासैस्त्रिभिःपूर्वात्वहोरात्रेणचोत्तरा ॥ ४ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियावैश्यजापिवा त्रिरात्राच्छुद्ध्यतेपूर्वात्वहोरात्रेणचोत्तरा ॥ ५ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंवैश्याशूद्रातथैवच त्रिरात्राच्छुद्ध्यतेपूर्वा उत्तरातुदिनद्वयात् ॥ ६ ॥ वर्णानां कामतःस्पर्शशुद्धिरेपासनातनीति

याणी तथा शूद्रा एह रजस्वला होयां होयां आपसमें स्पर्श करें तां पहली क्या क्षत्रियाणीतिज्ञां उपवासां कर्के शुद्ध हुंदीहै और दूसरीक्याशूद्रा अहोरात्रके अर्थात् दिनरात्रके व्रत कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ ४ ॥ और क्षत्रियाणी तथा वैश्या एह रजस्वलाहोइयांदीआं आपसमें स्पर्श करें तां तिज्ञारातां कर्के क्षत्रिया और दिनरातके व्रत कर्के वैश्या शुद्ध हुंदीहै ॥ ५ ॥ और वैश्या और शूद्रा एह दोनो रजवालिआं होकर स्पर्श करें तां तिज्ञारातां कर्के वैश्या और दोदिन कर्के शूद्रा शुद्ध हुंदीहै ॥ ६ ॥ एह वर्णकी कामरुत स्पर्श विषे शुद्धि कहींहै सो सनातनीहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २७३

एह व्रत कामनासें बहुतवार करणेमें जानणा दान कर्के पादकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय विषे और पतित चांडालादिके स्पर्श विषे वृद्धवसिष्ठ और वृद्धवृहस्पतिजीका वचन है ॥ पतीति पतित १ अंत्यक्याडूम २ श्वपाक चांडाल ३ इनांकर्के कदाचित् रजस्वला स्त्री स्पर्श वाली होवे तां तिनां दिनानं लंघकर्के प्रायश्चित्त करे ॥ १ ॥ पहले दिनहि पतिता दिके साथ स्पर्श होवे तां तिन ३ रातां व्रत करे परंतु स्नान दिनते पोछे इसीतर्हीदूसरे दिन स्पर्श होवे तां दो २ दिन और तीसरे दिन दिनरात्रका व्रतकरे और चौथे दिन स्पर्श करे तां नत्त करे तां शुद्धहुंदीहै ॥ २ ॥ और जूठीशूद्रा कर्के और कुचे कर्के स्पर्श वाली रजस्वला होवे तां भी दो २ दिनका हि व्रतकरे इस स्मृतिका अर्थ

एतच्चकामतोऽभ्यासे ॥ दानेनपादकृच्छ्रप्रत्याम्नाये ॥ पतितचांडालादिस्पर्शे वृद्धवसिष्ठवृद्धवृहस्पती ॥ पतितांत्यश्वपाकेन संस्पृष्टाचेद्रजस्वला तान्यहानिव्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रथमेहितित्रिरात्रस्याद्द्वितीयेद्यहमेवतु अहोरात्रंतृतीयेहितिचतुर्थेनक्तमेवच ॥ २ ॥ शूद्रयोच्छिष्टास्पृष्टाशुनावाद्यहमाचरेदिति चत्वारिदिनान्यस्पृश्यानि रजस्वलायायस्मिन्दिनेस्पर्शजातस्तदाग्निमाणिदिनानि व्यतिक्रम्यानाशकेन नत्वेत्यर्थः ॥ अत्रसर्वत्रपंचगव्यप्राशनमपिकर्तव्यमिति चतुर्थेनक्तमिति विशुद्धिस्नानात्पूर्वम् ॥ तथाचविष्णुः ॥ रजस्वलाचतुर्थेहस्नान्वाशुद्धयेत् ॥ त्रिरात्राशक्तौ पणचतुर्विंशतिलभ्यंकांचनंदेयम् उपवासद्वये पुराणैकमूल्यं कांचनं देयम्

स्पृष्ट कर्के कहीदा है ॥ चार दिन रजस्वला स्त्रीके है जिनोमें स्पर्श नहि करणा तिनां विच्छों जिस दिन स्पर्श होवे तिसके अगले दिन व्यतीत कर्के क्या निराहार कर्के लंघकर एह अर्थ है परंतु इसजगा पंचगव्यका पान अंत्यमें अवश्य कर्के है और जो चौथे दिनमें नत्त किहा है सो स्नानते पहले स्पर्श होवे तां जानणा । सोई विष्णुजी कहते हैं रजइति रजस्वला चौथे दिन विषे शुद्ध हुंदीहै और जो पिच्छे त्रिरात्र व्रत किहा है तिस विषे सामर्थ्य न होवे तां २४ चौवी पैसके मुष्का सुवर्ण दान करे और जो दो २ उपवास किहेहैं तिनाविषे सामर्थ्य न होवे तां इक पुराणके मुष्का सुवर्ण दानकरे ॥ और पुससादिम्नन व्रत प्रकरणविषे कहीहोई मानपरिभाषासें जानेना

२७४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

इसमे भवदेव जी का वचन है रजइति जेकर रजस्वला चांडाल १ गर्दभादि २ काक ३ इनां कर्के लोजावे तां तिनने दिन निराहार रहे जितने दिनां कर्के सो शुद्ध होवे एह वौधायन जीका वचन असमर्थ रजस्वला विषे और अकाम स्पर्शविषे जानणा ॥ १ ॥ और कामना विषे वृद्ध शातातप जी कहते हैं रजइति रजस्वला स्त्री जद चांडाल १ अथ्यक्या नीच २ कुत्ता ३ काक ४ इनां कर्के स्पर्श वाली होवे तितना काल निराहार रहे जितने काल कर्के स्नानसे शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ इसका अर्थ कहते हैं रजस्वला स्त्री चांडालादि स्पर्श वाली जिसकालमे होवे तिस कालते लेकर जितने दिनां कर्के शुद्धि होवे

भवदेवः । रजस्वला तु संस्पृष्टा चांडालाऽपशुवायसैः तावत्तिष्ठेन्निराहारायावत्कालेन शुद्ध्यतीति ॥ १ ॥ वौधायनीयमशक्ताया मकभिवाबोधयम् ॥ अपशवोगर्दभादयः ॥ यावत्कालेन रजस्वलीयास्पृश्यदिनावच्छिन्नेन ॥ कामतस्तु वृद्धशातातपः ॥ रजस्वला यदास्पृष्टा चांडालां त्यश्ववायसैः तावत्तिष्ठेन्निराहारा स्नात्वा कालेन शुद्ध्यति ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ रजस्वला चांडालस्पर्शकालादूर्ध्वं यावद्दिनैः शुद्ध्यति तावत्संख्यं दिनं चतुर्थदिने विशुद्धिस्नानं कृत्वा पंचमदिनात्प्रभृति निहारातिष्ठेदिति ॥ यत्तु ॥ शातातपः ॥ उदक्यासूतिकावापिशवांगं संस्पृशेद्यदि त्रिरात्रेणैव शुद्ध्येत इति शातातपोव्रवीत् ॥ १ ॥ तथा चांडालैः श्वपचैर्वापि त्रिर्यास्पृशते यदि त्रिरात्रोपोषिता भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ १ ॥ तथा काश्यपः ॥ चांडालेन तु संस्पृष्टा कदाचित् स्त्री रजस्वला तान्यहानिव्यतिक्रम्य प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥ १ ॥

तितने दिनोंकी संख्या कर्के चौथे दिन शुद्ध स्नान कर्के पंचम दिनते लेकर निराहार रहे ॥ जो शातातपजी कहते हैं उदेति रजस्वला और प्रसूति वाली स्त्री शवांगक्या मुडददेअगको जद स्पर्श करे तां तिसारातां कर्के शुद्ध होता है एह शातातपजीका वचन है ॥ १ ॥ तैसेहि अरेखनन है चांडाले रिति चांडालोंके साथ और श्वपचांके साथ जो तिनके तुल्य है त्रिर्यो क्य रजस्वला जद स्पर्श करेतां त्रिरात्र उपवासके अनंतर पंचगव्य पान कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ तैसेहि काश्यपजीका वाक्य है चांडालके साथ कदाचित् रजस्वला स्त्री स्पर्श वाली होवे तां तिहादिनानुलंघ कर प्रायश्चित्त करे ॥ १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी०भा० ॥ २७५

त्रिरात्रउपवासकर्के पंचगव्यपानकर्के शुद्धहुंदी है और तिन्हाराताको व्यतीत करके वकरी से अपणे देह को सिंहण देवे ॥ २ ॥ एह पहले दिन के स्पर्शमे है एह कैक कहते हैं और शूलपाणिजी ने कश्यपजी के वचनमे प्रथम दिन की व्यवस्था नहि है किंतु वृद्धशातातपजी के वचन ते कामना के स्पर्शको विषय करता है एह कहा है ॥ और पहले दिन के विषय करणवाला (प्रथमे ह्नि त्रिरात्रं स्यात्) इत्यादि वृहस्पतिजी का वचन है एहियुक्त है ॥ उपवासमे असमर्थ जो स्त्री निसमे अंगिराजी कहते हैं चंडाल इति ॥ चंडाल और श्वपच जेकर रजस्वला को स्पर्श करें ता अपकृष्टकों सो स्त्री खावे तितने दिन और स्नानते पीछे पंचगव्यका पान करेता शुद्ध होती है ॥ १ ॥ अपकेति जो वस्तु अग्नि

त्रिरात्रमुपवासः स्यात् पंचगव्येन शोधनम् तानि शास्तु व्यतिक्रम्य अजाघ्राणं तु कारयेत् २ इत्येतत् प्रथम दिन विषय मितिकेचित् शूलपाणिस्तु काश्यपवाक्ये प्रथम दिन व्यवस्थानास्ति त्रिरात्रेणैवेति वृद्धशातातपवचनात् कामविषयमेवैतदित्याह प्रथम दिन विषयं तु प्रथमेऽह्नि त्रिरात्रं स्यादित्यादि वार्हस्पत्यमेव न्याय्यम् ॥ उपवासासमर्थानां त्वंगिराः । चंडालः श्वपचो वापि यद्यात्रेयीं स्पृशेत्तदा अपकृष्टं वर्त्तेत पंचगव्येन शुद्ध्यति १ पंचगव्यपानं स्नानानंतरं कार्यम् । अपकृष्टमग्निपक्वहलकृष्टोत्पन्नव्यतिरिक्तम् चंडालेन सहैकवृक्षादियारोहणे पराशरः ॥ एकवृक्षसमारूढौ चंडालोथरजस्वला अहोरात्रोपिता भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति १ ॥ एकशब्द एकावयव्युपलक्षण एतच्च विशुद्धिस्नानानंतरमित्यापस्तंबीयमग्रे श्वादिसर्पशे विशेषमाह यमः ॥ रजस्वला तु संस्पृष्टा शूनाजं वुकवायसैः निराहारा भवेत्तावद्यावत्कालेन शुद्ध्यति ॥ १ ॥

कर्के नहिपको और हलकर्के नहि पै देहोई तिसका नाम है । और चंडाल के साथ एक वृक्ष पर आरोह रजस्वला विषे पराशरजी कहते हैं एकेति एक वृक्षमे आरोह होण चंडाल और रजस्वला तां सो स्त्री दिन रात के व्रत पीछे पंचगव्य कर्के शुद्ध हुंदी है । १ । इस जगा एक शब्द एक अवयविका वाचक है एह विशुद्धि स्नान ते पीछे पीणा असा वचन आगे आवेगा । कुत्ते आदिके स्पर्शमे यमजी विशेष कहते हैं रज इति रजस्वला जद कुत्ता १ गिद्ध २ काक ३ इनां कर्के स्पर्शवाली होवेतां तितने दिन निराहार रहे जितने काल कर्के शुद्ध हुंदी है ॥ १ ॥

२७६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी०भा० ॥

एह विना कामनाते स्पर्शविषे जानणा और कामनाकर्के स्पर्शविषे रजस्वलापदकी अनुवृत्ति विषे बृहस्पति जीका वचनहै शुनोति कुत्तेकर्के और जूठीस्त्री कर्के और शूद्राकर्के स्पर्शवालीहो वे तां दोरात्रकाव्रतरक्षे परंतुजदतीसरेदिनस्पर्शहोवेतां एकदिनरात्रकाव्रतकरे और चउथेदिनस्पर्श करे तां नक्तकरे । १ । और पहलेदूसरेदिनके स्पर्शविषे दोदिनकाव्रतजानणा और इसजगाभीसो दिनव्यतीतकर्के श्रैसाअर्थकरलेना ॥ जोवौधायनजी कहतेहैं रजइति रजवालीस्त्री ग्राम्यकुक्कुट और काक कुत्ता इनांकर्के स्पर्शवाली होवे तां जवतकचंद्रदर्शन नहि होयाहै तांतक निराहाररहे अर्थात् नक्तव्रतकरे ॥ १ ॥ एह चौथे दिनके स्पर्शविषे अशक्त स्त्री विषे जानणा ॥

एतदकामतः॥ कामतस्तुरजस्वलानुवृत्तौ बृहस्पतिः। शुनावोच्छिष्टयाशूद्रासं स्पृष्टाद्वयहमाचरेत् अहोरात्रंतृतीयेहिपरतो नक्तमाचरेत् १ प्रथमद्वितीयदि नेश्वादिस्पर्शेद्वयहम् परतश्चतुर्थे अत्रापितान्यहानिव्यतिक्रम्येतियोज्यम् य न्तुवौधायनः। रजस्वलातुसंस्पृष्टाग्राम्यकुक्कुटवायसैःश्वभिःस्नात्वापिवेत्तावद्या वच्चन्द्रस्यदर्शनमिति १ चंद्रदर्शनंनक्तमित्यर्थः एतदशक्तायाश्चतुर्थदिनविष यम्। रजकादिस्पर्शेतु चंडालस्पर्शसमानमेव तयोः समानत्वादिति शूलपा णिः ॥ यत्तुप्रचेताः ॥ रजस्वलातुसंस्यष्टाशुनांचंडालरासभैः पंचरात्रंनि राहारापंचगव्येनशुद्ध्यति १ तत्कामतोभ्यासे ॥ भोजनकालंश्वांत्यजादिस्पर् शेत् १ वौधायनः । रजस्वलांतुभुंजानांश्वांत्यजोयदिसंस्पृशेत् गोमूत्र यावकाहारापडूरात्रेणविशुद्ध्यति ॥ अशक्तौकांचनंदद्याद्विप्रेभ्योवापिभोज नमिति ॥ १ ॥

और धोवे आदि के स्पर्शमें तुपुनः चंडाल स्पर्शके समान है तिना दोआंको तुल्य होणेतें एह शूलपाणिने किहा है ॥ जो तुपुनः प्रचेताने किहाहै कि कुत्ता और चंडाल और गर्दभ इनां कर्के स्पर्श होइहोइ रजस्वला स्त्री पंच दिन निराहार व्रतकरणेकर्के पीछेतें पंच गव्यपानक कें शुद्ध हुंदी है ॥ १ ॥ एह इच्छा तें अभ्यास विषे जानणा ॥ और भोजन समय विषे कुते चांडाल आदिके स्पर्शमें वौधायन जी कहते हैं भोजनकों कर्दी होइ रजस्वलाकों जेकर कु ता और चंडाल स्पर्शकरे तां छे ६ दिन गोमूत्र कर्के यावक भक्षण करणेतें शुद्ध हुंदीहै और न समर्थाहोवे तां सुवर्ण वा भोजन ब्राह्मणांके तांई देवे ॥ १ ॥

जेकर दोए रजस्वला जूठीआं होण तां तिना उच्छिष्टोंमे स्पर्श विषे तुपुनः अत्रिजीका वाक्यहै ॥ कदाचित् रजस्वला स्त्री जूठी होवे और दूसरी जूठी रजस्वलाके साथ स्पर्श वाली होवे तां पूर्वा कथाब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या एह प्राजापत्य कर्के और शूद्रा दानकर्के और उपवासकर्के शुद्ध हुंदीहै १ परंतु एकहि जातिकीआं दोए होण तिनाविषे एह है जेकर भिन्नजातिकियां होण तां ब्राह्मणी क्षत्रियाणीके स्पर्श मे २ दो प्राजापत्य और वैश्या रजस्वलाके स्पर्शमें ३ त्रय इत्यादि जानणा । और शूद्राआं रजस्वलाके परस्पर स्पर्शमें २ दो उपवास सहित प्राजापत्यके प्रत्याम्नाय दानकर्के शुद्धिहुंदीहै एहकामनाते करणेमेहै अकामकृतमे अद्वा है शूलपाणि जी ने इसतही पाठ लिखाहै जूठे कर्के कदाचित् रजस्वला स्त्रीछोजावे तां

उच्छिष्टयोः परस्परं स्पर्शं त्वत्रिः । उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टा कदाचित् स्त्रीरजस्वला कृच्छ्रेण शुद्ध्यते पूर्वाशूद्रादानैरुपोषितेति १ अत्रपूर्वाशब्देन ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यस्त्रियोभिधीयन्ते ॥ तेन रजस्वल्योऽसमानजातीययोरुच्छिष्टयोः ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानां परस्परस्पर्शप्राजापत्यम् ॥ स्वस्वानंतरस्पर्शं त्वेकैकवृद्धिरुहनीया ॥ तादृशशूद्रयोः स्पर्शपरस्परंतूपवाससहितप्राजापत्यप्रत्याम्नायदानेन शुद्धिः । एतच्च कामतः । अकामतस्तदर्थम् ॥ शूलपाणिस्तु उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टा कदाचित् स्त्रीरजस्वला कृच्छ्रेण शुद्ध्यते पूर्वाशूद्रादानेन शुद्ध्यतीति पपाठ १ तत्रोच्छिष्टेन चांडालादिना । दानेन कृच्छ्रप्रत्याम्नायेन एव रजस्वलात्वमेव निमित्तमतो न क्षत्रियवैश्ययोर्ब्राह्मण्यादिभ्यो विशेष इत्याह । उच्छिष्टद्विजसंस्पर्शेतु मार्कण्डेयः ॥ द्विजान्कथंचिदुच्छिष्टान् रजःस्त्रीयदिसंस्पृशेत् अधोच्छिष्टे त्वहोरात्रमूर्ध्वोच्छिष्टे त्र्यहं क्षिपेदिति १

पूर्वा कथा ब्राह्मणी आदि प्राजापत्य कर्के शुद्ध हुंदीहै और शूद्रा दान कर्के १ इस जगा उच्छिष्ट चांडाल समझणा और दान कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जानणा । और इसमे रजस्वलात्व धर्म हि उक्त प्रायश्चित्तका निमित्त है कोई ब्राह्मणत्वादि जाति नहि इस कर्के सभना वर्णा कीआं स्त्रीयां का तुल्यहि प्रायश्चित्त है किसेमे विशेष नहि ऐसा किहाहै ॥ जूठे द्विजके कथा ब्राह्मणादिके स्पर्शविषे मार्कण्डेय जी कहते हैं ॥ द्विजानिति कदाचित् ब्राह्मणादिकी जूठआं को रजस्वला स्त्री स्पर्श करे जेकर अधोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां दिनरात्रव्रत करे और ऊर्ध्वोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां त्रय दिन व्रत करे ॥ १ ॥

२७८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ११ ॥ टी० भा०

इस विषे यद्यपि विशेष नहिसुणीदाहै तथापि ब्राह्मणादिकी अपेक्षा कर्के उच्छिष्टक्षत्रियादि स्पर्श विषे ब्राह्मणीको अधिक कल्पना करणी । इसी तर्ही हीनजाति की रजस्वला ते अधिकजातिवालीके स्पर्श विषेहै जैसे क्षत्रियाणीकों ब्राह्मणी के स्पर्श विषे कुछ न्यून क्या थोड़ा कल्पना करणा ॥ भोजनकालमें रजस्वला दूसरी रजस्वलाकों देखे तां तिसमे आप स्तंबजी कहते हैं उदेति । जेकर रजस्वला भोजन करदी होई दूसरी रजस्वला कों देखे तां स्नान के दिन तक भोजन न खावे और पीछे ब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १ ॥ एह कामनाके दर्शन विषे जानना । और चांडालादि के दर्शनमें अत्रिजी कहतेहैं रजस्वलेति भोजन कों करदीहोई रजस्वलास्त्रीचांडालकों देखे तां त्रय उपवास व्रत करे और इच्छातें देखे तां

अत्रयद्यपि नविशेषः श्रूयते तथापि ब्राह्मण्यपेक्षया उच्छिष्टक्षत्रियादिस्पर्शे ब्राह्मण्या अधिकं कल्प्यम् । एवं हीनाया उच्छिष्टस्पर्शे न्यूनम् । भोजनकाले रजस्वलांतरं दृष्ट्वा पुनर्भोजने त्वापस्तंबः उदक्यायदिवाभुंक्ते दृष्ट्वा न्यांतुरजस्वलाम् । आस्नानकालं नाश्रीयद्ब्रह्मकूर्चं ततः पिवेत् १ एतच्च कामतः चांडालादिदर्शने त्वात्रिः रजस्वला तु भुंजानां चांडालं यदि पश्यति उपवासत्रयं कुर्यात्प्राजापत्यं तु कामत इति १ रजस्वलायाः श्वादिदंशने व्यासः रजस्वलायदादष्टाशुना जंबुकरासभैः पंचरात्रं निराहारा पंचगव्येन शुद्ध्यतीति ॥ रजस्वलाया आशौचिस्पर्शेशातातपः ॥ आर्त्तवाभिषुतानारी स्पृशेच्च शवसूतकम् ऊर्ध्वं त्रिरात्रं स्नातां तां त्रिरात्रमुपवासयेत् १ स्पृष्ट्वा भोजनादौ त्वात्रिः आर्त्तवाभिषुतानारी मृतसूतकयोः स्पृशेत् भुत्कापीत्वा चैरत्कृच्छं स्पृष्ट्वा तु त्र्यहमेव च १

प्राजापत्यकरे ॥ १ ॥ रजस्वलाकोंकुत्ते आदिके डंगनमें व्यासजी कहतेहैं कुत्ता और गिहड और गर्दभ रजस्वलाकों दंश करें क्या बडण तां पांच दिन निराहार व्रतकर्के पंच गव्यकापानकरे तां शुद्धहोतीहै ॥ १ रजस्वलाकों सूतकीके स्पर्शमें शातातपजीकावचनहै ॥ ऋतुकर्के युक्तस्त्री मरणके सूतकी पुरुषकों स्पर्श करे और त्रयदिनतें उपरंत स्नातहोवेतां त्रयदिन उपवास व्रतकरे । १ । स्पर्शकर्के भोजनके खाणेमें अत्रिजीका वाक्यहै रजस्वला स्त्री जन्म सूतक और मृतसूत कियोंके साथ स्पर्शकरे और पीछे अन्न जलकों भक्षणकरे तां रुच्छ व्रतकों करे और केवल स्पर्शमें त्रयदिन व्रतकरे १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २७९

सूतकी के साथ स्पर्श में स्नानतें पूर्व ऋतुके देखें ऐंमें मार्कण्डेयजी का वाक्य है मृत सूतक के स्पर्श होयां होयां जेकर स्त्री ऋतुकों देखे तां वचा करे सो कहते हां चारदिन पर्यंत न भक्षण करे जेकर भक्षण करे तां चांद्रायणव्रतकों करे ॥ १ ॥ मदन रत्नमें स्मृत्यंतरविषे कहा है मृत सूतकके होयां होयां जेकर रजस्वला होवेतां अभिषेक कर्के शुद्धि हो ती है और तात्काल स्नान कर्के भोजन कर्के एह असमर्थ स्त्रीमें जानणावा वालक संतानवालीमें जान णा । १ । इनतें अन्य स्त्रीकों त्रयदिन उपवास किहा है । संबंधीके मरण आदिके सुणने विषे व्यास

स्पर्शानंतरं भोजनादौ कृच्छ्रं केवलं स्पर्शे तु त्र्यहम् आशौचि स्पर्शे स्नानात्प्राग्न जो दर्शने मार्कण्डेयः ॥ मृतसूतकसंस्पर्शं ऋतुं दृष्ट्वा कथं भवेत् नास्नानकालमश्रियाद्भुत्काचांद्रायणं चरेदिति १ आस्नानकालपर्यंतं चतुर्थदिनपर्यंतम् मदनरत्ने स्मृत्यंतरे ॥ अप्रायत्ये समुत्पन्ने मलवद्वाससी यदि अभिषेकेण शुद्धिः स्यात्सद्यः स्नानेन भोजनम् १ इदमशक्तायावालापत्या विषयं वा ॥ अन्यस्यास्तु त्रिरात्रोपवासः अप्रायत्यं मृतसूतकम् । मलवद्वाससी रजस्वला शुद्धिः स्पर्शयोग्यता ॥ बंधुमरणश्रवणादौ व्यासः ॥ मलवद्वसनायास्तु अप्रायत्यं भवेद्यदि अभिषेकेण शुद्धिः स्यान्नाशनं वा दिनत्रयमिति १ अत्रापि पूर्ववद्व्यवस्थादिनत्रयमित्यवशिष्टकालोपलक्षणम् ॥ अप्रायत्यं बंधुमरणादिना स एव आर्तवाभिषुतानारीनावगहित्कदाचन उद्धृतेन जलेनैव स्नात्वा शेषं समापयेत् २ सिक्तगात्रा भवेदग्निः सांगोपांगमलैर्युता नवस्त्रपीडनं कुर्यान्ना न्यवासा भवेत्पुनरिति ३ तत्र पराशरः ॥ स्नानेनैमित्तिके प्राप्ते नारी यदि रजस्वला पात्रांतरिततोयेन स्नानं कृत्वा व्रतं चरेत् ॥ १ ॥

जीका वाक्य है ऋतुके होयां होयां मरण सूतक होवे तां अभिषेक कर्के शुद्धि कही है आगे पूर्वकी न्याई अर्थ जानणा ॥ १ ॥ सोई व्यासजी कहते हैं ऋतुयुक्त स्त्री तला आदिमें स्नान करे जल को बाहर निकास कर स्नान करे शेष कर्म सो है जिसका आरंभ कीता हो आहि बिसकों पूरा करे । २ पक्षांतर कहते हैं सिक्तेति अथवा जल कर्के अंगों को सिंचन करावे और सांगोपांगमल कर्के युक्त रहे और वस्त्रकों निष्पीडन करे और दूसरे वस्त्रकों नधारण करे । ३ । तिसमें पराशरजीका वाक्य है रजस्वला स्त्री नैमित्तिक स्नानके प्राप्त होयां होयां पात्रके जल कर्के स्नान करे और व्रत करे १

● अथ परंपरा स्पर्श विषे तिसविषे भी अचेतन दंडादि व्यवधान विषे याज्ञवल्क्यजी कहते हैं उदेति रजस्वला अशुचि पतितादि तिनांकर्के स्पर्श वाला पुरुष स्नान करे और आपः पुनर्वित्यादि मंत्र और गायत्रीका एकवार मनकर्के जपकरे और जेडा रजस्वला दिकर्के स्पर्श वाला है तिसकर्के जिसको स्पर्श होवे सो आचमन कर्के शुद्ध हुंदा है क्योंकि इसको साक्षात् स्पर्श नहि किंतु परंपरा स्पर्श है १ ॥ और चेतनके व्यवधान विषे मनुजी कावचन है ॥ मुडदेका और तिसके स्पर्शवालेका तृणादि व्यवधान कर्के जो स्पर्श वाला है सो स्नान कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ पहलेश्लोकमेजो (अशुचिभिः) एहपद है सो कुत्तेआदिका वाचक है ॥ परंपराकेहि स्पर्श मै शांतातपजीका वचन है जेडा अशुचिजो मलमूत्रादि तिसको

● अथ परंपरास्पर्शे तत्राप्यचेतनदंडादिव्यवधानेयाज्ञवल्क्यः उदक्याशुचिभिः स्नायात्संस्पृष्टस्तैरुपस्पृशेत् अबिलगानिजपेच्चैव गायत्रीमनसा सकृदिति १ तैरुदक्याशुचिसंस्पृष्टैः संस्पृष्ट उपस्पृशेदाचामेदित्यर्थः अशुचिरत्र शुनकादिः चेतनव्यवधानेतु मानवं शवंतत्स्पर्शिनं चैव स्पृष्ट्वा स्नानेन शुद्ध्यतीति ॥ स्पृष्टस्पर्शने तु शांतातपः । अशुचिसंस्पृशेद्यस्तु एक एव सदुप्यति तं स्पृष्ट्वान्योन दुप्यत सर्वद्रव्येष्वयं विधिरिति ॥ १ तथा संहतानां तु पात्राणां यद्येकमुपहन्यते तस्य तच्छोधनं प्रोक्तं न तु तत्स्पर्शिनामपि २ कचिदचेतनव्यवधानेपि वचनात् प्रायश्चित्ताधिक्यम् यथाहापस्तंबः ॥ एकशाखासमारूढश्चांडालादिर्यदा भवेत् ब्राह्मणस्तत्र निवसन् स्नानेन शुचितामियात् १ ॥ आदिशब्दादुदक्यादीनां ग्रहणम् ॥ शाखाग्रहणमवयव्युपलक्षणमिति

स्पर्शकरे सोई अपवित्र हुंदा है और इसके साथ जो दूसरा स्पर्शकरे उसको दोष नहि समना वस्तुओं विषे एहि विधि जानणी १ । तैमेहि जेडे पात्र इकट्ठे हैं तिनां विचों एक पात्र मलादि कर्के दूषित होवे तां तिसीकी शुद्धि करणी होर सभ पवित्र हैं २ । और किसे जगा अचेतनके व्यवधान विषे भी वचनते प्रायश्चित्त बहुत है जैसे आपस्तंबजी कहते हैं एक शाखामे क्या वृक्षमें चंडाल आदि जद स्थित होवे और तिसमे ब्राह्मण भी स्थित होवे तां स्नानकर्के शुद्ध हुंदा है १ । इस जगा आदि शब्दते रजस्वला पतितादिका ग्रहण है और शाखाग्रहणते समना अंगोंवाले वस्त्रादियोंका ग्रहण है ॥

इसमे परंपरास्पर्शमे स्पर्शशब्दगौण है तिसमे वचनते प्रायश्चित्त है इसमे अपवादकों पराशरजी कहते हैं ॥ गलीका चिकड और जल और वेडी और मार्ग और तृणघास और पकीयां इटांकी कंध एह स्पर्शते दोष वालियां नाहि १ स्पर्श प्रायश्चित्तके अपवादकों वृहस्पतिजी कहते हैं तीर्थ और विवाह और यात्रा और युद्ध और भाजड और नगर ग्राम आदिका दाहतिन्होंमें स्पर्शास्पर्शि दोष नाहि अर्थात् परंपरास्पर्शका दोष नाहि है १ ॥ ऐसेहि होर वाक्य भी हैं और ब्राह्मणकों चैत्यवृक्ष आदिके स्पर्शमें पराशरजी कहते हैं चैत्यवृक्ष क्या मार्गादि विषे साधारण वृक्ष साधारण पुरुषां कर्के जो नमस्कार करीदा है और श्मशानकाष्ठ और पशुयांके मारणे वास्ते जो बंधने वाला काष्ठ

अत्र परंपरास्पर्शेऽपि स्पर्शशब्दगौणस्तत्र वचनात् प्रायश्चित्तम् अत्रापवादमाह पराशरः ॥ रथ्या कर्दमतो यानि नावः पंथास्तृणानि वा स्पर्शनान्नप्रदुष्येत पक्वेष्टकचितानि च १ स्पर्शप्रायश्चित्तापवादमाह वृहस्पतिः ॥ तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविह्वले नगरग्रामदाहे पुरं पृष्ठास्पृष्टिर्न दुष्यति एवमन्यान्यप्यपवादवचनानि व्यवस्थापनीयानि ॥ ब्राह्मणस्य चैत्यवृक्षादिस्पर्शे पराशरः ॥ चैत्यवृक्षश्चित्तिर्यपश्चंडालः सोमविक्रयी एतांस्तु ब्राह्मणः स्पृष्ट्वा सवासाजलमावसेदिति १ क्षत्रियादीनां न्यूनं कल्पनीयम् चैत्यवृक्षो ग्रामादौ साधारणजनबन्धः चित्तिः श्मशानकाष्ठम् । यूपः पशुमारणार्थवन्धनकाष्ठम् उपरिभागस्पर्शेशंखः ॥ रथ्या कर्दमतो येन णीवनाद्येन वा त्वथ नाभेरूर्ध्वेन रः स्पृष्टः सद्यः स्नानेन शुध्यतीति १ अधोभागस्पर्शे यमः सकर्दमतु वर्षासु प्रविश्य ग्रामसंकरमजंघयोर्मृत्तिका स्तिस्रः पादयोः पण्मृदः स्मृता इति इत्यस्पृश्यस्पर्शप्रायश्चित्तानि ॥

और चांडाल और सोमविक्रयी इनांके साथ ब्राह्मण स्पर्श करे तो सहित वस्त्रांके जलमें स्नान करे १ क्षत्रियां दिकों थोडा किहा है ऊपर भागमें स्पर्शविषे शंखजीका वाक्य है गलीका चिकड और थुक इनां कर्के नाभितें ऊर्ध्व स्पर्शमे तात्काल स्नान कर्के शुद्ध होता है १ और नाभितें अधो भाग स्पर्शमें यमजी कहते हैं वर्षा में नगरके कूडेके साथ जो चिकड जंघा में स्पर्श होवे तां त्रय बार मृत्तिका लगाणे कर्के और पैरां विषे ६ बार लगाणे कर्के शुद्धि होती है ॥ १ ॥ एह जिनका स्पर्श नाहि करणा तिनका स्पर्शका प्रायश्चित्त समाप्त हुआ ॥ ॥

२८२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र-११ टी ०भा० ॥

अब कुत्ते आदिके डंगमें मनुजी कहतेहैं श्वेति कुत्ता और गिदड और खोता और जोमांसके भक्षणकरनेवाले नगरमें जीवहैं और घोडा और ऊट और सूकर इनांकर्के वड या होया जो पुरुष है सो प्राणायामकर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ प्राणायाममें विशेषघृतभक्षणको याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं ॥ पुंश्चली और वानर और खोता और ऊट आदिक और काक इ नांकर्के वडया होया पुरुष जलमें प्राणायाम कर्के और घृतभक्षण कर्के शुद्धहुंदाहै २ एहना भिते हिठां थोडे वडणेमें जानणा ॥ जोतुपुनः सुमंतुने किहाहै ॥ कुत्ता और गिदड और मृ ग और महिष और बकरा और भेड और खोता और करभक्याऊट और नेवल और

अथश्वादिदंशे मनुः ॥ श्वसृगालखरैर्दंष्ट्रोग्राम्यैः क्रव्याद्विरवच ॥ नराश्वो
पृवरहैश्चप्राणायामेनशुध्यतीति १ प्राणायामेविशेषघृतप्राशनंचाह या
ज्ञवल्क्यः ॥ पुंश्चलीवनरखरैर्दंष्टश्चाष्टादिवायसैः प्राणायामंजलेकृत्वाघृ
तंप्राशयविशुध्यति २ एतच्चनाभेरधस्तादीपदष्टस्य । यत्तुसुमंतुः ॥ श्वसृगाल
मृगाज महिपाजाविखरकरभनकुलमार्जारमूपकालवकाकपुरुषदंष्टाना
मापोहिष्ठीयाभिः स्नानंप्राणायामत्रयंचेति ॥ एतच्चपादयोः किंचिदधिकदंशे
नाभिरूर्ध्वदंशेतु वौधायनः ॥ शुनादष्टस्तुयोविप्रानदींगत्वासमुद्रगां प्राणा
यामशतंकृत्वाघृतंप्राशयविशुध्यतीति १ नाभेरधस्तादतिगाढदंशविषयं ॥
एतस्मिन्नवविषयेदेवलः ॥ श्वदष्टः सागरगायांनद्यांस्नातो निराहारः प्राणा
यामशतमावर्त्तयंस्त्रिरात्रादपगतपाप्माभवति ॥ तत्राभिरूर्ध्व गाढदंशे ॥

विल्लाऔर चूहा और डड्डू और काक और पुरुष इनांकर्के डंगेहोये जोपुरुषहैं सो आपोहि
ष्टा आदिक ऋचाकर्के स्नानकरे और त्रय ३ प्राणायामकरे एह पादोंमें बहुत डंगणेमें प्रायश्चित्तहै
नाभितें उपर डंगणेमें वौधापनजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगया होया ब्राह्मण समुद्रमें प्राप्त होण
वालीनदीको प्राप्त होकर सउ १०० प्राणायामकर्के और घृतभक्षणकर्के शुद्धहुंदाहै १ ॥ एहनाभि
तें अधःक्याहेठवहुत डंगणेमें जानणा ॥ इसीविषयमे देवलजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडया
होया पुरुष समुद्रमें जाणेवाली नदीमें स्नानकोकरे और निराहारव्रतकरे सउ १०० प्रा
णायामकरे त्रयदिनतें उपरंत शुद्ध हुंदाहै एह नाभितें उपरवहुते डंगमें जानणा ॥

इसीमें शंखजीकावाक्यहै वसमेंकेकाष्ठकर्के क्षतहोयाहोया और तैसेकुत्तेकर्के डंगयाहोया और व्यभिचारिणीस्त्रीके दंदांकर्के डंगयाहोयात्रयदिनके व्रतकर्के शुद्धहुंदाहै १ इसीवाक्यकोयमजीकहते हैं ॥ गिदड और सूर और खोता और ऊठ और कुत्ता और वानर और हाथी इनांकर्के डंग याहोया ब्राह्मणदिनमें त्रयआचमनकरे तांशुद्धहुंदाहै और पंजवासत्त ब्राह्मणकेतांई हविष्यभोजन देवे १ ब्रह्मचारीमें हारीतजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगयाहोयादिनमें एकवारभोजनकरे और समुद्रप र्थत नदीमें प्राप्तहोकर सौप्राणायामकरे और घृतभक्षणकरे तां शुद्धहुंदाहै ॥ इसीप्रकार गिदड और विह्ला और नेवल और चूहा इनांकर्के डंगयां होयांको भोजानणा ॥ अब ब्रह्मचारीके अधिकारमें पैठीनसीजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडेहोयेको त्रयदिनउपवासव्रत और ब्राह्मणकेगृहमेंनि

अत्रैवशंखः । नीलीकाष्ठक्षतोविप्रः शुनादष्टस्तथैवच त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्यात्पुं
श्रुलीदशनक्षतइति १ यमोपि सृगालसूकरखरोष्ट्रश्ववानरकुंजरैः एतैस्तुब्रा
ह्मणोदष्टस्त्रिरहःसमुपस्पृशेत् १ हविष्यंभोजयेदन्नंब्राह्मणान्सप्तपंचचेति १
ब्रह्मचार्यधिकारेहारीतः ॥ शुनादष्टस्त्वहन्येकाहारः समुद्रगांनदींगत्वाप्राणा
यामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यततःशुचिरेवंगोमायुमार्जारनकुलमूपकैर्दृष्टानाम् ॥
ब्रह्मचार्यधिकारे पैठीनसिः शुनादष्टस्यत्रिरात्रमुपवासोविप्रगृहेवासश्च ॥
यत्तुशातातपः ॥ गवांशृंगोदकस्नातः शुनादष्टस्तुब्राह्मणः समुद्रदर्श
नाद्वापिशुनादष्टःशुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ अत्रसमुद्रेत्यादिसाक्षाद्वेतुप्रदर्शनेनपू
र्ववाक्यवैलक्षण्यात्पुनःशुनादष्टइत्युपात्तम् ॥ १ ॥ वेदविद्याव्रतस्नातः
शुनादष्टस्तुब्राह्मणः हिरण्योदकमिश्रंचघृतंप्राश्यविशुध्यति ॥ २ ॥ तन्ना
भेरधस्तादीपदष्टविषयम् वचनाद्विशिष्टब्राह्मणमात्रविषयं वा समुद्रदर्श
नंतुत्तीरवासिनाम् ॥ व्रतस्थस्यविशेषमाह वौधायनः । व्रतस्थस्तुशुनाद
ष्टस्त्रिरात्रमुपवासयेत् सघृतंयावकंपीत्वाव्रतशेषंसमापयेत् ॥ १ ॥ यत्तु
शातातपः ॥ अत्रतःसत्रतोवापिशुनादष्टोभवेद्विजः ॥

वासशुद्धिकेदेणैवालाकिहाहै जोतुपुनःशातातपनेंकिहाहै कुत्तेकर्के डंगयाहोया गौयांके शृंगांके जलकर्के स्नानकीतयां होयां शुद्धहोताहै और समुद्रके दर्शनकर्केभी शुद्ध होताहै १ वेदविद्याव्र तमें जिसने स्नानकीताहै अर्थात् वेदविद्यामें चतुरहै तिसको जेकर कुत्तावडे तां सुवर्णके ज लकर्के रलयाहोया जोघृत तिसको भक्षणकर्के शुद्ध हुंदाहै २ सोनाभिकेहेठां थोडे डंगमेंजानणा इसवचनतें अधवाविशिष्टगोत्री ब्राह्मणके विषय जानणा और समुद्रदेखणा तिसके कनारेंमें रहणवालायांविषे जानणा ॥ जो व्रतमें स्थितहै तिसकोविशेष वौधायनजीकहतेहैं व्रतमेंस्थित पुरुषको कुत्ताडंगें तां त्रयदिनउपवासव्रतकरे सहितघृतके यावककोपीकरशेषव्रतको समाप्तकरे १ जोतुपुनःशातातपनें किहाहै अत्रतइति व्रतमें रहितहोवे वा युक्तहोवें कुत्तेकर्के डंगयाहोवे

सो सुवर्णके जलकके मिश्रितजोधृत तिसकों पीकर शुद्धहुंदा है १ सो अति असमर्थमें जानणा
ब्राह्मणांते रहित ग्राममें पराशरजी कहते हैं ब्राह्मणांते रहित ग्राममें कुत्ते कर्के डंगया होया
पुरुष वैलकी प्रदक्षिणा और शीघ्राहि स्नानकके शुद्धहुंदा है ॥ १ ॥ स्त्रियांको विशेष पराशरजीक
हते हैं ॥ ब्राह्मणी को जेकर कुत्ता वा गिदड वा विगहाड वडे तां उदय होये ग्रहनक्षत्रकों देख
कर तात्काल शुद्धहुंदा है १ वैधायनजी कहते हैं ब्राह्मणी कुत्ते कर्के डंगीहोवे तां चंद्रमाके दे
खणे कर्के वानक्षत्रांके देखणे कर्के शुद्धहुंदा है १ जेकर कृष्णपक्षमें चंद्रमानदिसे तद जिसदिशामें
चंद्रमा स्थित है तिसदिशा पासे देखे २ अंगिरस ऋषिने पंचगव्यका भी भक्षण किहा है ब्राह्मणीति इ
सका अर्थ पूर्वकही दत्ता है कुछ विशेष कहते हैं १ सोममार्गकके क्या तिसके देखणे कर्के पवित्र
होई २ पंचगव्यकके शुद्धहुंदा है २ ब्राह्मणीका ग्रहण उपलक्षणमात्र है ॥ व्रतमें स्थित जो स्त्री तिसवि

हिरण्योदकमिश्रतुघृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ १ ॥ तदत्यंताशक्तविषयम्
ब्राह्मणरहितग्रामेतु पराशरः ॥ असद्ब्राह्मणके ग्रामेशुनादष्टोद्विजोत्तमः वृषं
प्रदक्षिणीकृत्य सद्यः स्नात्वा शुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ स्त्रीणां विशेषमाह पराशरः ॥
ब्राह्मणीतु शुनादष्टाजंबुकेण वृकेण वा उदितं ग्रहनक्षत्रं दृष्ट्वा सद्यः शुचिर्भवे
त् १ वैधायनोपि ॥ ब्राह्मणीतु शुनादष्टासेमे दृष्टिनिपातयेत् नक्षत्रदर्शना
द्वापिशुनादष्टाशुचिर्भवेत् १ कृष्णपक्षे यदा सोमो न दृश्येत कदाचन यांदिशं
व्रजते सोमस्तांदिशं त्ववलोकयेदिति २ अंगिरसा त्वत्र पंचगव्यप्राशन
मप्युक्तम् ब्राह्मणीतु शुनादष्टासेमे दृष्टिनिपातयेत् यदा न दृश्यते सोमः प्रा
यश्चित्तं कथं भवेत् १ यांदिशं तु गतः सोमस्तांदिशं चावलोकयेत् सोममार्गेण
सापूता पंचगव्येन शुद्ध्यतीति २ ब्राह्मणीग्रहणमुपलक्षणम् व्रतस्थस्त्रीवि
षये पराशरः ॥ त्रिरात्रमेवोपवसेच्छुनादष्टातु सव्रता सघृतं यावकं भुक्त्वा व्रत
शेषं समापयेत् १ रजस्वलाया विशेषमाह पुलस्त्यः रजस्वला यदा दष्टाशु
नाजंबुकरासभैः पंचरात्रं निराहारा पंचगव्येन शुद्ध्यति १ ऊर्ध्वं तु द्विगुणं ना
भवेत् क्रतुत्रिगुणं तथा चतुर्गुणं स्मृतं मूर्ध्नि दष्टेन्यत्राशुचिर्भवेत् ॥ २ ॥

अन्यत्र रजस्वलावस्थाया इति शेषः

य पराशरजी कहते हैं व्रतकर्के युक्त जो स्त्री तिसकों कुत्ता वडे तां त्रयदिन उपवासव्रतकों करे और
सहितघृतके यावककों भक्षण कर्के व्रतकी न्यूनताकों पूर्णकरे १ रजस्वला स्त्रीमें विशेष पुलस्त्य
जी कहते हैं रजस्वलाकों कुत्ता गिदड खोत्ता जेकर वडे तां पंच ५ दिन निराहार व्रतकों करे
पीछे पंचगव्य कर्के शुद्ध हुंदा है १ नाभितें ऊपर डंग होवे तां दूणा व्रत किहा है और मुखमें त्री
णाव्रत किहा है शिरमें चारगुणा अधिक किहा है ॥ २ ॥ और जो रजस्वला नहि है तिसको व्रत
नहि किहा है किंतु अशुद्धि कही है सो पूर्वोक्त प्रकार कर्के हि दूर होवेगी ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥ २८५

कुत्तके सिधणे आदिमे शातातपजी कहतेहैं जिस पुरुषको कुत्तेने सिधयाहै वा चटयाहै वा नखा कर्क विलुद्रया है तिसकी शुद्धि जल कर्क घाणेने और अग्नि कर्क तपाणेने हुंदाहै ॥ १ ॥ और ब्रह्ममे काढेकी उत्पत्तिमें वौधायनजी कहतेहैं (ब्रह्मण) जिस ब्राह्मण के फटमें पाक और लक्ष्मि के होयाहोया कौडे उत्पन्न होण तिसका प्रायश्चित्त कैसे हुंदा है ॥ १ ॥ (उत्तर) गोमूत्र गो मय और दुध दाधि घृत कुशाका जल इनां द्वाग त्रय दिन स्नान करके और पान कर्क कृमि दष्ट होया होया शुद्ध हुंदाहै ॥ २ ॥ एह नाभिते हिठां जानणा ॥ मनुजीभां कहतेहैं ब्राह्मणयेतेह

शुनाघ्रातादिषुशातातपः ॥ शुनाघ्रातावलीढस्यनखैर्विदालितस्यच अग्निः प्रक्षालनंशौचमग्निनाचोपचूलनमिति १ उपचूलनंतापनम् ॥ ब्रह्मेकम्यु त्पत्तातु वौधायनः ॥ ब्राह्मणस्यब्रह्मद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेय स्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ ॥ गोमूत्रंगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहं स्नात्वाचर्पात्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेदिति २ एतच्चनाभेरधस्तादज्ञेयम् । मनु रपि ॥ ब्राह्मणस्यब्रह्मद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तं कथंभवेत् ॥ १ ॥ गवांमूत्रपुरीषेणत्रिसंध्यंस्नानमाचरेत् त्रिरात्रंपंचगव्या शीत्वधोनाभ्याविशुद्ध्यति ॥ २ ॥ नाभिकंठांतरोद्भूतेब्रह्मेचोत्पद्यतेकृमिः षड्रात्रंतुतदाप्रोक्तंप्राजापत्यंशिरोब्रह्मशति ॥ ३ ॥ यत्तुशातातपः । ब्राह्मण स्यब्रह्मद्वारेयदासंपद्यतेकृमिः प्रायश्चित्तंतदाकार्यमितिशातातपोब्रवी त् १ गोमूत्रंगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहंस्नात्वाचर्पात्वाचकृमि दष्टःशुचिर्भवेदिति ॥ २ ॥ तदीषद्वष्टविषयम् ॥

सके पूर्व श्लोकका उही अर्थ कथन कीताहै ॥ १ ॥ और गोवांके गोहै और गुत्र कर्क त्रय काल स्नान कर त्रयदिन पंच गव्य भक्षण कर नाभिते हिठां कृमि डंगणेसे शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और नाभि कंठके मध्यमे फट विषे कौडयाकी उत्पत्ति होवे तां छे १ दिनका व्रत किहाहै और शिरके फटमें कृमि होण तां प्राजापत्य किहाहै ॥ ३ ॥ जो तुपुनः शातातपजीने किहाहै सो वौधायन जीके वाक्यके तुल्य अर्थ जानणा परंतु एकदिन करणा ॥ १ ॥ एह कौडे दंश में जानणा ॥ २ ॥

२८६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी०भा० ॥

वर्णभेद कर्के तिसीने क्या मनु जीने प्रायश्चित्त कहा है ब्राह्मणस्येति ब्राह्मणके व्रणमे क्या फट विषे रक्त पाक वाले विषे कृमि उत्पन्न होण तां तिसका प्रायश्चित्त किस तर्ही होवे ॥ १ ॥ इस प्रश्नका उत्तर ॥ गौआके मूत्रादि पंचगव्य कर्के स्नान करे ५ दिन और पीवेतां कृमिदष्ट पवि ब्रह्मवेगा ॥ २ ॥ और ऐसा जेकर क्षत्री होवेतां पंजमासे सोना दान करे और वैश्य जेकर औसा होवे तां उपवासके पीछे गोदान करे ३ ॥ और शूद्र जेकर ऐसा होवे तां गोदान हि केवल करे उपवास न करे तां शुद्ध होता है ॥ एभि नाभिते हेठ कृमि होण तां जानणा ॥ तिस

वर्णभेदेन प्रायश्चित्तविशेष उक्तस्तेनैव ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे पूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यते यस्य प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ १ गवांमूत्रपुरीषेण दधिक्षीरेण सर्पिषा त्र्यहंस्नात्वा च पित्वा च कृमिदष्टः शुचिर्भवेत् २ क्षत्रियोऽपि सुवर्णस्य पंचमाषान् प्रदापयेत् गोदक्षिणा तु वैश्यस्याप्युपवासं विनिर्दिशेत् ३ शूद्राणां नोपवासः स्याच्छूद्रोदानेन शुद्ध्यतीति स्नानं पानं च पंचगव्येनैव दानं गोदानम् ॥ एतदपि नाभिरधस्तात् क्रिम्युत्पत्तौ ज्ञेयम् नाभिरुपरि विशेष उक्तो भविष्यत्पुराणे ॥ ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे पूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यते यस्य निष्कृतिं तस्य वच्मि तु १ गवांमूत्रपुरीषेण त्रिसंध्यं स्नानमाचरेत् दधिक्षीरं घृतं प्राश्य पंचगव्येन शुद्ध्यतीति २ ॥ अधो नाभिः प्रदष्टस्य आपादाद्विनतात्मज एतद्विनिर्दिशेत् प्राज्ञः प्रायश्चित्तं यथा भवेत् ३ नाभिकंठांतरे वीरयदा चोत्पद्यते कृमिः षड्रात्रं तु तदा प्राक्तं प्रायश्चित्तं मनीषिभिरिति ॥ ४ ॥

जगार्ते उपर जेकर होण तां तिस विषे विशेष किहा है भविष्यत्पुराणमे ब्राह्मणि ब्राह्मणके व्रण विषे कृमि होजाण तां तिसकी निष्कृतिकों क्या प्रायश्चित्तकों कहता है ॥ १ ॥ गौआके मूत्र कर्के और गांहे कर्के त्रय काल स्नान करे और दाहिं १ दुध २ घृत ३ इनकों खा करके पी छे पंचगव्य पान करके शुद्ध हुंदा है एह विधि त्रय दिन तक है ॥ २ ॥ नाभिके हेठ पैरां तक जेकर दशवाल होण हेविनताके पुत्र इस प्रायश्चित्तकों बुद्धिमान् कहे ॥ ३ और नाभि और कंठके मध्यमे कृमि होण तां छे ६ रात्रिक परिमाणवाला वत मुनिपोंने शुद्धि बास्ते किहा है ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥ २८७

आपस्तंब जी कहते हैं वलादिति बलते क्या जोरावरीते जो दास बना लये है स्ल
छोने क्या मुसलमानोने और चांडालोने दस्यु जो नीच जाति तिनीने और अशुभ कर्म गो
वधादि जिनाते कराया है १ तिनांका जूठा उठाणा और जूठाहि खाणा और गधा १ उठ
ग्राम्य बराह १ इनका मांस भक्षण करणा ॥ २ ॥ और तिनांकिआं स्त्रीआंका संग और
तिनां स्त्रीयां साथ भोजन करणा जेकर महीना रोज द्विजाति ऐसा करे तां तिसका
शोधन प्राजापत्यसे हुंदा है ॥ ३ ॥ और अग्निहोत्री जेकर ऐसा कर्म करे तां चांद्रायण
कर्के अथवा पराक कर्के शुद्ध होवे और जो आहिताग्नि नहि है परंतु वर्ष रोज तक
तिनके साथ रिहा होवे सो जैसा कैसा हो चांद्रायण वा पराक करे ॥ ४ ॥ और जेकर
शूद्र वर्ष रोज रहे तां अदा महीना यावक पीवे और जेकर महीना रोज पूर्वोक्त व्यवस्था

आपस्तंबः । वलादासीकृतायेतुम्लेच्छचंडालदस्युभिः अशुभंकारि
ताःकर्मगवादिप्राणिर्हिसनम् ॥ १ ॥ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथातस्यैवभोजन
म् खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिषस्यचभक्षणम् ॥ २ ॥ तत्स्त्रीणांचतथासं
गस्ताभिश्चसहभोजनम् मासोषितेद्विजातौतुप्राजापत्यंविशोधनम्
॥ ३ ॥ चांद्रायणंत्वाहिताग्नेः पराकस्त्वथवाभवेत् चांद्रायणंपरा
कंचचरेत्संवत्सरोषितः ॥ ४ ॥ संवत्सरोषितःशूद्रोमासाद्वियावकंपिवेत्
मासमात्रोषितःशूद्रः कृच्छपादेनशुद्ध्यति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वसंवत्सरात्कल्प्यं
प्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः त्रिभिःसंवत्सरैश्चापितद्वावमनुगच्छतीति ॥ ६ ॥
हीनवर्णस्तुयःकश्चिदंत्यजैःसहसंवसेत् सशिखंवपनंकृत्वामासमेकं
यवान्पिवेत् ॥ ७ ॥ सर्वाण्येतानि प्रायश्चित्तानि यथाशक्तियथानुबंध
प्रत्ययाभ्यासापेक्षया व्यवस्थापनीयानीत्यपरार्के ॥ इदंचमहापातकिसं
सर्गिप्रायश्चित्तानंतरं देवलस्मरणेनाप्युद्घाटितं तत्र द्रष्टव्यम् ॥

से तिनां साथ रहे तां लघु रुच्छ कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ ५ ॥ वर्षते उपरंत तिनांके साथ रहे
तां प्रायश्चित्त विद्वानोंने कल्पना करणे योग्य है और त्रय वर्ष पर्यंत तिनांके साथ रहणे
कर्के तिनांके हि स्वरूपको प्राप्त हुंदा है ॥ ६ ॥ जो कोई हीनवर्णदा नीचांदा साथ
वासकरे तां सहित शिखादे मुंडन करावे और महीना रोज जवान् पींदा रहे अर्थात्
जवान् बनाकर खांदा होया महीना व्यतीत करे ॥ ७ ॥ संयुक्त एह प्रायश्चित्त यथाश
क्तिसे और पाप करणे में दृढतासे और एक वार बहुवार के ज्ञान से जोड़ लेने एह
अपराक में लिखया है ॥ और एह म्लेच्छ संसर्ग प्रायश्चित्त महापातकि संसर्ग प्रकरणमें
देवल स्मृति के दिखाने कर्के प्रकट कीता है सो तिस जगाहि देखलेना इस जगा प्रसंग
में किहा है और उपपातक प्रकरण विषे भी किहा है प्रसंग वशसे

५८८ ॥ भीरुवीर कारित प्रायश्चित्त मणि ॥ प्र० ११ टी० मा० ॥

● अब जो लोक कैद रह कर पीछे अपराधर आते हैं तिनके अर्थ प्रायश्चित्त कहाँ है जेडे मनुष्य राजाने अपराध जाण कर जोरसे दास बनाए है और तिनार्ते स्नानादि नित्य कर्ममें छुड़ाया है सो उसजगाते छुटेहोए वर्षादि कालके उचित जो चांद्रायणादि तिनका संकोच कर्के प्राजापत्य कर्के शुद्धकर लेने उसमें भी तिनके निवासकी अल्पता और बाहुल्यताको देख कर द्विकृच्छ्र लघु कृच्छ्रादि व्यवस्था कर लेणी ॥ धर्म शास्त्रके योग्य जेडा न्यायाधिकारी राजा है तिसने वंदीघरविषे जोडे है सो लोक सो केवल नित्य कर्मके लोप करण नहि है तिनका प्रायश्चित्त केवल नित्यकर्म लोपनिमित्त हि कहणा ॥ सो कहतेहै

● अथ वंदीगृहनिवासपरावृत्तप्रायश्चित्तम् येतुराज्ञाऽपराधपूर्ववलादासी कृताश्रमकारिताश्रतन्मुक्तास्ते पूर्वोक्तसंवत्सरोचितचान्द्रायणादिह्रासा पेक्षया प्राजापत्यं कुर्यु स्तत्रापि वासतारतम्येन द्विकृच्छ्रलघुकृच्छ्रादि व्यवस्थोह्या ॥ येतु धर्मशास्त्रोचितन्यायाधिकारिणा क्षत्रियादिराज्ञावं दीगृहेनियुक्तानित्यकर्ममात्रलोपिनस्तेषां नित्यकर्महानिनिमित्तम् ॥ संध्योपासनहानौतु नित्यस्नानं प्रलोप्य च होमचैत्यकं शुद्धे गायत्र्यष्टसहस्रकमित्यादि पूर्वोक्तप्रायश्चित्तज्ञेयम् स्वयं परेण वा कारयेत् ॥ अन्यत्रवानुक्तविषये देशकालौचित्यं संभावनीयम् ॥

संध्योपेति संध्योपासन की हानि होया क्या किसे कारण ते लोप होया चपुना नित्य स्नानको लोप कर्के और नित्य करीदा जो हवन है तिसका लोप कर्के शुद्धिवास्ते आठसै अधिक हजार १००८ गायत्री जपे एह पीछे कहा होआ जानणा १ सो जप आपकर अथवा दूसरेते कराधे ॥ इस जगा वा और जगा जो विषय कहणै नहि आया जैसे जिना कोडयाते पट्टकी उत्पत्ति है तिनके मारणका प्रायश्चित्त जुदे नहि लिखया तां इत्यादियोंमे देशकालौचितकी भावना करणी तां इनका प्रायश्चित्त (किंचित्सारिष्यवधे यंप्राणायामस्त्वनरिषिके) इत्यादि वचनते एकके वधमे १ प्राणायाम है तिनका बहुतयाके वधमे तिस व्रव्यका दशांशदान कल्पना मे आवेगा ॥

॥ श्रीरघुवीर कविरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥ २८९

होई पाहवल्क्य जीने किहाहै । देशमिति देश १ काल २ और अवस्था ३ शक्ति ४ पाप ५ इनाकों यत्नतें देख कर प्रायश्चित्तकी कल्पना करे ॥ जिस जगा प्रायश्चित्त इस पापका एहहै ऐसा नहि किहा १ इसका अर्थ कहतेहैं जद निमित्त क्या पाप बहुत होवे तां तिसका नैमित्तिक प्रायश्चित्त बहुत हि होणा चाहिए जैसे वस्त्रांके भांडेआंके घुरा षोका प्रायश्चित्त एक एकका बक्खरा कर्के नहि हो सका इसवास्ते व्यवस्था करदे हैं कि जित्ने प्रायश्चित्तका उपदेश करणाहै उस जगा देशादिको देख कर कहे जैसे करण वाले का प्राणवियोग न होवे तिस तर्ही करे जैसे प्रायश्चित्तहै ॥ वाय्विति वायु भक्षण करदा होया दिने खलोता रहे और रात्रिमै जलोमै वास करे और सूर्यके सामणे दृष्टि रक्खे रात्रिमै सूर्य

तथाचयाज्ञवल्क्यः । देशकालवयःशक्तिपापंचावेक्ष्ययत्नतः प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यंस्याद्यत्रचोक्ताननिष्कृतिः १ अर्थः । निमित्तबाहुल्येन प्रतिव्यक्तिनैमित्तिकस्यवक्तुमशक्यत्वादुक्तानुक्ताविषये व्यवस्थोच्यते । यत्रप्रायश्चित्तमादिश्यते तद्देशादिकमपेक्ष्य यथाकर्तुः प्राणवियोगोनस्यात् तथा विषयविशेषोविधेयः ॥ तथा वायुभक्षोदिवातिष्ठे द्वात्रिंशत्वाप्सुसूर्यदृष्टेति तत्रयदिहिमवद्गिरिनिकटवार्तिनामुदकवासउपादिश्यतेअतिशीताकुलितवाशिशिरादिकालेतदाप्राणवियोगोभवेदितितद्देशकालपरिहारेणोदवासः कल्पनीयः तथावयोविशेषादपि यदि नवतिवार्षिकादेरपरिपूर्णद्वादशवार्षिकस्यबाद्वादशाब्दिकं प्रायश्चित्तमुपदिश्यते तदाप्राणाविषयेरन्ततो वयोविशेषादपि अन्यवयस्केतत्प्रायश्चित्तंकल्प्यम् ॥ अतएवस्मृत्यन्तरे कचिदर्द्धकचित्पादइति वृद्धादिषु प्रायश्चित्तस्य ह्रासोदर्शितः तच्च प्राक् प्रपंचितम् ॥

न देखण मे आवे तां तिस की दिशाको देखतारहे ॥ एह प्रायश्चित्त जद हिमालय वासियोंको अथवा पौषमाघमै दित्ता जावे तां प्राणवियोगकी भावना होवंगी तां तिसके परिहार करके उसके जल वासकी कल्पना करणी तैसेहि अवस्थाके देखणेतेहै । जैसे ९० नवे वर्ष की आयु वालेको अथवा १२ वारां वर्षकी आयु वालेको जेकर वारां वर्षका प्रायश्चित्त किहाजावे तां तिसके प्राण दूर हो जाणगे इस करके उनको ऐसा नहि कहणा किंतु जुयानको देखकर कहणा इसी कर्के और स्मृतिमै किहाहै । कि किस जगा अदा और किसे जगा चौथा हिस्सा प्रायश्चित्त वाल वृद्धादि विषे कहणा इसका प्रपंच पिच्छ भी होचुकाहै

३९० ॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

एव मिति इसीप्रकार निर्धन पुरुषविषे गजदानकी आज्ञा और आतुर जो रोगादि कर्के पीडित है तिसमे वारादिनके उपवासवाले पराक व्रतकी आज्ञा और स्त्री शूद्रादिके विषय गायत्री जपा दिकी आज्ञा और वालादिविषय समग्रकी आज्ञा नहि होणी चाहिए किंतु कच्छकी जगा लघु कच्छादि हि उपदेशकरणें ॥ इसतें एह वार्ता सिद्ध होई कि प्रायश्चित्तदेणके समयमें सारे धर्म शास्त्रके देखणेका आवश्यक है । इसी कर्के पहले १ दूसरे २ तीसरे ३ प्रकरणोंमें कामाकामादि एकबार बहुवारादिका निर्णय विस्तरसे किहा है ॥ इसजगा मिताक्षराकी व्यवस्था और

एवंनिर्धने गजदानादि आतुरादौ पराकादि स्त्रीशूद्रादौ जपादिकं वालादौ समग्रं नोपदिश्यते किंतु कच्छोपवासपादाद्येवोपदिश्यते एवंच प्रायश्चित्तदाने सकलधर्मशास्त्रावलोकनमपेक्षितं भवति अतएव प्रथमद्वितीय तृतीयप्रकरणेषु कामाकामसकृदभ्यासादिनिमित्तता प्रपंचिता अत्रमिताक्षरा तथा महापापोपपापाभ्यां योभिः शंसेन्मृषापरम् अभक्षोमासमासीतेत्युक्तम् तत्रमहापापोपपापयोस्तुल्यप्रायश्चित्तस्याप्युक्तत्वात्पापापेक्षयोपपातके मासिकव्रतस्य ह्रासः कल्पनीयः तत्रच हसितजृम्भितास्फोटनानि नाकस्मात्कुटुर्यात् तथा नोदन्वर्तोभसिस्त्रायान्नचश्मश्र्वादिकर्तयेत् अतर्वर्त्याः पतिः कुर्वन्नप्रजो भवति ध्रुवमित्यादौ प्रायश्चित्तं नोपादिष्टम् ।

सीहे महेति महापापकर्के और उपपाप कर्के जो झूठा दोष किसेको लगावे सो महीना रोज जल पानमात्र कदा होआ व्यतीतकरे एह महापाप और उपपापाक तुल्यक प्रायश्चित्त किहा है परंतु पूर्वोक्त वचनते उपपातकमे पूरा महीना नहि कहणा किंतु १० दिन कहणा चाहिए ॥ हसि तेति और हसणा १ उवासी लयणी २ बाहु ठोकणी ३ इनको कारणते बिना नकरे तैसेहि समुद्रके जलविषे स्नान १ और दाढीका कटाणा गर्भिणीका पति नकरे जेकर करे तां सतानसे रहित होताह १ इस्यादि स्थानों में प्रायश्चित्त नहि किहा ॥

॥ श्रीरणवीर कारिते प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी०भा० ॥ २९१

तिसजगर्भा देशादिकी अपेक्षाकर्के प्रायश्चित्त कल्पनाकरणी (प्रण) जितने निमित्त क्या पाप मनुजीके कहे होएहैं सो सभ प्रायश्चित्त कर्के युक्तहिहैं जैसे (प्राणेति) १०० सउप्राणा याम करणा चाहिए सभना पापांकेदूर करणे बास्ते उपपातकांदे समूहां वास्ते और अनादिष्ठ क्या जिनका प्रायश्चित्त विशेषकर्के नहि किहा तिनां वास्ते इसकर्के सभका प्रायश्चित्त होचुका है किसकर्के कहतेहोकि आप कल्प लयना ॥ और गौतमजीने भीकिहाहै कि एहि एकाहादि व्रतरूप प्रायश्चित्त आदेश विना जो स्थानहैं तिसजगा विकल्प कर्के कीजेजाण (उत्तर) यद्यपि सभजगा प्रायश्चित्तोपदेश है परंतु सामान्यकर्केहै विशेष कर्के नहि तिसवास्ते देशकालादिकी

तत्रापिदेशाद्यपेक्षया प्रायश्चित्तकल्प्यम् ननु किंचिदपि निमित्तजातं मनूक्तं निष्कृतिकमुपलभ्यते प्राणायामशतं कार्यं सर्वपापपनुत्तये उपपातकजाता नामनादिष्ठस्य चैव हीत्यनुक्तनिष्कृतिष्वपि प्रायश्चित्तस्य विद्यमानत्वात् गौ तमेनाप्येतान्येवानादेशो विकल्पेन क्रियेरान्नित्येकाहादयः प्रतिपादिताः उच्यते । सत्यमस्त्येव सामान्यतः प्रायश्चित्तोपदेशस्तथापि सर्वदेशकाला दीनामपेक्षितत्वादस्त्येव कल्पनावसरः न च हसितादिषु सर्वत्र प्राणायामशतं युक्तं निमित्तस्य लघुत्वादतः पापपेक्षया ह्रासः कल्पनीयः प्रायश्चित्तांतरं वा ॥ ननु कथं पापस्य लघुत्वं येन प्रायश्चित्तस्य ह्रासस्य वा कल्प नास्यात् न च प्रायश्चित्ताल्पत्वादिति वाच्यम् अनुक्तनिष्कृतित्वादिति चेत्

अपेक्षाहोणेते कल्पनाकरणी आवश्यक है एहिअर्थ स्पष्टकरीदाहै नचेति जेठे पिच्छे इसितादिपाप कहेहैं तिनां सभनांविषे १०० प्राणायाम उचित नहि क्योंकि निमित्तको लघुहोणेतें इसकार णते पापकी अपेक्षाकर्के १०० सउप्राणायामको थोडा करणा होगा अथवा कोई और प्रायश्चित्त कल्पनाकरणा होगा (प्रण) किसतही पाप छोटा जानणा जिसकर्के १०० सउका और प्रायश्चित्त का ह्रास क्या अल्पत्वकी कल्पना होवे जेकर कहो कि थोडा प्रायश्चित्त देखेककर्के मलूमहुंदाहै ऐसा मत कहणा कि इसजगा प्रायश्चित्तका नहि कथनहोणेते ॥ जिसजगा प्रायश्चित्तका उपदे श हि नहि उसजगा किसतही जाणोगे ॥

२९२ ॥ श्रीरणवीर करित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

सत्यमिति (उत्तर) एह आपने सच्च किहा है तथापि कुछक अर्थवाद क्या प्रशंसाके पहले कहणेते पीछे जाणकर करना और नजाण कर करना और हठकर करणा और बिना हठसे करना इत्यादि विचारसे पापका थोडा बहुत होनेका ज्ञान सुखालाहि है और तद्वा सेभी थोडे बहुतेका ज्ञान हुंदा है इसको कहैते तथैति जिसजगा राजदंडका प्रसंग है तिस तेभी एह प्रतीत होवेगा सो दंड विधान विधि विषे देख लेना जैसे ब्राह्मणको दुर्वचन पूर्वक दंड उठाणे आदि अपराध विषे अपणी जाति विषे प्राजापत्यादिक कहेहैं तिसमें जद आनु लोम्य कर्के क्या ब्राह्मणादिसे क्षत्रियाणी आदिसे उत्पन्न होयां विषे तिस ब्राह्मणावगूरणादि पापका पूर्वोक्तसे थोडा देखणेते और मूर्खावसिकादियोंने ब्राह्मणां विषे पूर्वोक्त अपराध

सत्यं किंचिदर्थवादसंकीर्तनाद्बुद्धिपूर्वाबुद्धिपूर्वानुबंधाद्यपेक्षया चसुबोधएव
दोषस्यगुरुलघुभावः तथादंडहासवृत्त्यपेक्षयाच प्रायश्चित्तस्यगुरुलघुभावः
सतु दण्डप्रणयनविधौद्रष्टव्यइति यथा ब्राह्मणावगूरणादौ सजातिवि
षयेप्राजापत्यादिकमुक्तम् तत्र यदानुलोम्येनप्रातिलोम्येन वाऽवगूरणा
दिक्रियते यदावामूर्खावसिकादिभिस्तदादंडस्यतारतम्यदर्शनाहोपाल्पत्व
महत्वावगमात् प्रायश्चित्तस्यापि गुरुलघुभावः कल्पनीयः । दर्शितश्चद
ण्डस्यगुरुलघुभावः प्रातिलोम्यापवादेषुद्विगुणस्त्रिगुणोदमइत्यादिनेति ॥
अथप्रायश्चित्तविवेके ॥ प्रायश्चित्तीयतेनर इत्यत्र नरपदोपादानात्सर्वेषां
चांडालादीनामपि तद्धर्मप्रदर्शनपूर्वं प्रायश्चित्तं प्रदर्शितम् ॥

विषे बहुत दंड है इसीसे प्रायश्चित्तमेंभी ऐसा देखणेते विचार सुगम है सो तिसजगा दिखायाहि है (प्रातिलोम्यापवादेषु) इत्यादि श्लोकों कर्के शूद्रादिसे क्षत्रियाणी आदि विषे उत्पन्न होए अपणेते उच्चजाति वाले विषे अपराधकरैं तां तिनको दूणादंड करणा एह अर्थ है । अब प्रायश्चित्त विवेक ग्रंथमें और विचार लिखा है सो कहीदा है विहितके नकरणेसे १ और निदितके सेवनेसे २ इन्द्रियोंके नरोकणेसे ३ नर प्रायश्चित्तीहुंदा है इसजगा (नर) अस्मा किहा है ॥ द्विज ॥ अस्मा नहि किहा इसते प्रतीत होया कि चांडालादिकोभी कोई अपना धर्म है और तिसके त्यागणेते तिनकोभी प्रायश्चित्त है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ११ ॥ टी० भा० २९३

सो देवलजीने किहाहै कि अपणी जातिका पोषण करणा १ और सभको प्रणाम करणी २ शीतोष्णादिका सहारणा ३ व्यवहारशुद्ध रक्षण ४ और किसेका अनादर नहि करना ५ और अपणे सेवकको पालना ६ प्रधानकर्मपरिवर्जन क्या उत्तम जातिके योग्य जो कर्म तिसका त्यागणा ७ एह चांडालोंके धर्मकी हानिहोयां मनुजी प्रायश्चित्त कहतेहैं बाह्य णके अर्थ और गौआंके अर्थ जो देह त्यागहै और जेकर चांडाल किसेकी स्त्रीको बावाल कको मारे तां शस्त्रादिके विना अर्थात् अनशनादि कर्के देह त्यागहै एह बाह्य क्या जो वर्णां अमते हीन तिनांकी शुद्धिका हेतुहै परंतु इसमे एभी अर्थहै कि जद थोडा अपराधहै तां गो ब्राह्मणके अर्थ देह त्याग करणा क्या देहको समर्पण करणा तिनांकी सेवा वास्ते जद सेवा

तद्यथा देवलः॥ स्वजातिपोषणं सर्वप्रणामस्ति तिक्षा व्यवहारशुद्धिरपरानवमाननं स्वभृत्यपोषणं प्रधानकर्मपरिवर्जनमिति चांडालधर्मः एतदादिधर्मप्रच्युतौ स्वजातिवैमुख्ये प्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा देहत्यागोऽनुपस्कृतः स्त्रीवालाभ्युपपत्तौ च बाह्यानां शुद्धिकारणम् ॥ १ ॥ चाण्डालादिकर्तृकस्त्रीवालादिविपत्तौ जायमानायामनुपस्कृतः शस्त्रादिसंभारशून्यो देहत्यागो गोब्राह्मणरक्षार्थं बाह्यानां वर्णाश्रमहीनानां शुद्धिहेतुः ॥ अत्राल्पेऽपराधे गोब्राह्मणकार्यार्थं देहत्यागो देहसमर्पणम् तत्प्रोक्तौ सत्यां तच्छुद्धिरित्यर्थो वसेयः ॥ स्त्रीवालैति पदं गवादिर्हि सोपलक्षणपरम् ॥ अत्र साधारणप्रकरणोक्ततीर्थसेवापि पापतारतम्येन योज्या प्रायश्चित्तानंतरं सजातिभोजनमपि ॥ इति वर्णाश्रमबाह्यशुद्धिहेतुप्रायश्चित्तम् ॥ * किंतु कालमवेक्ष्य प्रायश्चित्तं दातव्यमित्यत्रेदमपि चिन्तनीयम् पूर्वोक्तसंसर्गादिप्रायश्चित्तं प्रायोयुगान्तरयोग्यमेव तस्याधुना कलौ संकोचः कर्तव्यः ॥

कर्के सो प्रसन्न होणगे तां शुद्ध होवेगा ऐसा जानणा १ और स्त्रीवाल पद गवादिके मारणेका उपलक्षणहै अर्थात् तिनांके मारणेमेभी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा इसजगा साधारण प्रकरणमे किहा जो तीर्थ सेवनादि सोभी पापकी न्यूनता वा अधिकता देखकर जोडने और जद प्रायश्चित्त हो जावे तां पीछे सजातियोंको भोजन देणा एह वर्णाश्रमते हीन जो लोकहैं तिनांकी शुद्धि करने वाला प्रायश्चित्त पूराहोआ * अब और विचार करतेहैं किचेति कालको देखकर प्रायश्चित्तदेणा इसमे एभीविचार है कि जेडा पिच्छे छोणे का और परंपरा छोणेका प्रायश्चित्त किहाहै सोसभ और युगोंमेहै कलियुगमे नहि

२९४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ ॥ टी० भा० ॥

क्योंकि जिनके साथ छोकर प्रायश्चित्त करना है सोई कलियुगमें राजा हैं किसप्रकार
अथवा कितने वार एकवृक्षकी छाया बिषे बैठ कर अथवा लकड़ी पर किसे शाखापर
एकफरसवाली सभामें और संभाषण करणा क्या तिनके साथ वातां करणीयां तिसमें
संबंधवालाहोकर प्रायश्चित्तकरे इसते प्रैसा करणा चाहिए कि साथभोजनमें जलपीणेमें
तिनकी स्त्रीके भोगमें और तिनको पढाणेमें और तिनसे पढनेमेंहि प्रायश्चित्त कल्प
नाकरना और इनसे हेरनां छोटे पापोंमें सूर्यादि दर्शन और मध्यममें १०० सउ
गायत्रीका जप और उससे जो बडेहैं तिनमें नच और स्नान रूप प्रायश्चित्त किहाहै
सो महापातकिके संसर्गि प्रकरणमें देखलेना क्योंकि इससमयविषे तिसतहीके संसर्गकों अव
श्यहोणे तें तैसे प्रायश्चित्तकों कदेभी नहि होणेंतें देशकालके देखणेसे और अनुग्रह

यैःसंसृज्यप्रायश्चित्तीयते तएव यत्र राजानः कथंकतिवारान्वातत्रैकवृक्ष
छायादौ एकशाखादावेकवस्त्रास्तृतसभादौ संभाषणादिप्रवृत्तौ संसर्गी
भूत्वा प्रायश्चित्तंकूर्यादतस्तत्र सहभोजनपानयौनादौ सत्येव प्रायश्चि
त्तंकल्प्यम् एतदातिरिक्तसंसर्गैर्लघौ सूर्यादिदर्शनंमध्यमे शतंगायत्रीजपः
१००उत्तमेनक्तं स्नानं चेति महापातकिसंसर्गिप्रकरणेपि द्रष्टव्यम् ॥ सा
म्प्रतंतेषांतथाविधस्यन्यूनस्यापिसंसर्गस्यनाप्राप्तत्वात् तथाविधप्रायश्चि
त्तस्यकर्तुमशक्यतयादेशकालावेक्षणेनानुग्रहस्यशास्त्रानुमतत्वेनाल्पतर
प्रायश्चित्तोपदेशस्ययुक्तत्वादेवंचांडालादिधूमयंत्रेण ॥ द्विजात्यादिना धू
मपाने उच्छिष्टभक्षणादौसाक्षात्तच्छब्दानुपादानात्तदुपलक्षणेनैवतत्प्राय
श्चित्तोपलभोभवति यथा अत्यानांभुक्तशेषंतुभक्षयित्वाद्विजातयःचान्द्रं कृ
च्छृतदह्वंचव्रह्मक्षत्राविशांविधिरित्यापस्तंबीयेभुक्तशेषंधूमयंत्रोपभुक्तिशेषो
पलक्षणम् अत्रक्षत्रियविशोःकृच्छृतदर्धविधानंतदापदिवलात्कारादन्नेतर
ताम्बूलाद्युच्छिष्टपरमितिप्रायश्चित्तकदंबः अत्रादिनातदुच्छिष्टधूमोगृह्यते

करणेसैं शास्त्रकी संमतिसैं प्रायश्चित्तोपदेशकों युक्तहोणेंतें ॥ इसी प्रकार चांडालादिके धूमयंत्र
कर्के द्विजात्यादिके धूमपानविषे अर्थात् तमाकूके पीणे विषे उच्छिष्ट भक्षणादि विषे साक्षात्
कोईतिसका वाचकपद नहि लभदा तथापि उपलक्षण विधानसेक्या चांडालादिका जूठाजा
णकरके प्रायश्चित्त देणा चाहिए ॥ जैसे नीचांके भुक्तशेष कों क्या जूठेकों द्विजाति खाकर वा
ह्यण चांद्रायण करे क्षत्री प्राजापत्यकरे वैश्य अद्वाकृच्छ्रकरेतां शुद्ध हुंदाहै एहआपस्तंबजीका
वचनहै भुक्तशेषपद झारी नरेले आदिका बोधकहै अत्रेति इसजगा क्षत्रिय वैश्यकों कृच्छ्रका
और तिसके अर्द्धका जो विधानहै सो आपत्ति विषेक्या किसेकेशविषे अथवा वलत्कारतो
अन्नने बिना तांबूलादि जूठेके भक्षणके विधान विषे जानणा एह प्रायश्चित्तकदंबविषेलिख
याहै इसमें आदिशब्दतें जूठे धूमकाभी ग्रहण करना

और जगान कहते एह कामनामे है विना कामनाते अज्ञानना सोई अगिराजीने किहा है चांडाल पतिनादिओं के जूठे खाणे विषे ब्राह्मण चांद्रायण करे और क्षत्रीसांतपन करे और वैश्य को १ रात्र का और शूद्र को निन्ना ३ रातांका व्रत किहा है १ इसमे सांतपन कर्के महासांतपन समझना बहुत पाप होणेतै इहां भी अन्नपद धूमका उपलक्षण है भोजन भी जो उदरमें चला जावे सो जानना मुखप्रवेश मात्र नहि जानना तिस विषे भी बहुतवार करणेमे जानना एकवार करणेमे लघुकृच्छ्र की विधि है यत्रोक्तं) इस उशनाजीके वचनसे १ इसका अर्थ पीछे हो चुका है इसमे कुछ और पराशरजी कहते हैं भांडेति नीचांके भांडे विषे जो जल १ दही २ दुध ३ है इसको ब्राह्मण क्षत्री वैश्य

अन्यत्रानुक्तत्वादिदं कामतः अकामतस्त्वर्द्धम् तथा गिरा अपि चांडालपति तादीनामुच्छिष्टान्नस्य भोजने चांद्रायणं चरेद्विप्रः क्षत्रः सांतपनं चरेत् षड्रात्रं च त्रिरात्रं च वर्णयोरनुपूर्वश इति १ सांतपनमत्र महासांतपनं द्रष्टव्यम् अत्राप्यन्न पदं धूमोपलक्षणम् भोजनं च गलाधो देशसंयोगानुकूलव्यापार एव इदमभ्यासविषयम् सरुद्विषये तु लघुकृच्छ्रं यत्रोक्तं यत्र वानोक्तमिह पातकनाशनम् प्राजापत्येन शुद्धये तेत्युशनस्सामान्यप्रायश्चित्तस्मरणात् किंच पराशरः भांडस्थमंत्यजानांतु जलं दधिपयः पिवेत् ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैव प्रमादतः १ ब्रह्मकूर्चोपवासेन द्विजातीनांतु निष्कृतिः शूद्रस्य चोपवासेन तथा दानेन शक्तिः २ इत्यत्रापि भांडपदं धूमयंत्रोपलक्षणम् ॥ जलं धूमोपलक्षणं वोध्यम् ॥ प्रायश्चित्तस्योचितत्वाद न्यत्रानुक्तत्वाच्च ॥ किंच साधारणप्रकरणे विश्वामित्रः कृच्छ्रचान्द्रायणादीनि शुच्यभ्युदयकारणम् प्रकाशे च रहस्ये च अनुक्ते संशये स्फुटे १

शूद्र भुलकरपीवे १ तांतिनावणीको ब्रह्मकूर्चके साथ उपवास कर्के शुद्धि हुंदी है और शूद्र को दानके साथ उपवास कर्के हुंदी है ॥ २ ॥ इस जगा भी भांडपद धूमयंत्रका उपलक्षण है और जल धूमका उपलक्षण क्या बोधक है क्योंकि प्रायश्चित्तको उचित होणेतै और दूसरी जगा नहि कथनतै ॥ कुछ और कहते हैं किंचेति साधारण प्रकरणमे विश्वामित्रजीका वचन है कृच्छ्र चांद्रायणते लेकर जो व्रत है सो सब पवित्रताके और अभ्युदयके क्या वृद्धिके कारण हैं प्रकाशविषे क्या जो सबको विदित होवे तिसके प्रायश्चित्त विषे और रहस्य विषे और अनुक्त प्रायश्चित्तविषे और जिसमे संशय है तिसमे और स्फुटक्या जिस पापका निणय हो चुका है ॥ १

१९६ ॥ श्रीरणवीर काशित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० ११ टी० भा० ॥

तिसमै प्राजापत्य इत्यादि १२ वारां व्रतहैं एहसभ इकठे अथवा जुदे जुदे इकपापमै • इकपा • अथवा दो तिस आदिपापमै एकपा • सवनां पातकां विषे और उपपापां विषे ॥ ४ ॥ चांद्रायणकर्के युक्त हो एहोए करने योग्यहैं अथवा विना चांद्रायणके करणे योग्यहैं चांद्रायणके भेद कहतेहैं शिशुचां. १ यति. २ यव. ३ पिपीलिका. ४ और उपवासादि ७ एहसभ शुद्धि फलकी इच्छावालेने करने चाहिए उपपातकादि सभना पापांके दरकरणेकी इच्छावालोंने ७ प्रकाशविषे अप्रकाशविषे पापिके आभिप्रायको जाणकरके और जाति शक्ति गुणानुं देखकरके एकवार दोवारको जाण करके ॥ ८ ॥ और अनुबंधादिको देखकरके सभएह प्रायश्चित्त यथाक्रम करके करे ॥

प्राजापत्यः सांतपनः शिशुकृच्छ्रः पराककः अतिकृच्छ्रः पर्णकृच्छ्रः सौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः २ महासांतपनः सिद्धैतत्तकृच्छ्रस्तु यावकः जपो पवासकृच्छ्रस्तु ब्रह्मकूर्चस्तु शोधकः ३ एते व्यस्ताः समस्ता वा प्रत्येक द्वे कशोऽपि वा पातकादिषु सर्वेषु उपवासेषु यत्नतः ॥ ४ ॥ कार्याश्चान्द्रायणैर्युक्ताः केवलावाविशुद्धये शिशुचान्द्रायणं प्रोक्तं यतिचान्द्रायणं तथा ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथा प्रोक्तं तथापि पीलिकाकृतिः उपवासस्त्रिरात्रं वामासः पक्षस्तदर्द्धकम् ६ पडहोद्वादशाहानि कार्य्यशुद्धिफलार्थिना उपपातक युक्तानामनादिषु चैव हि ७ प्रकाशे वाऽप्रकाशे वा अभिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वा असकृद्द्विः कृतं तथा ८ अनुबंधादिकं दृष्ट्वा सर्वकार्य्यं यथाक्रममिति एषु पक्षेषु जातिशक्तिगुणावस्थाद्यपेक्षया विषयविभागो वसेयः ॥ इति चंडालाद्युच्छिष्टधूमपानप्रायश्चित्तम् * क्षुद्रजन्तुवधप्रा- उपपातकप्रकरणे हिंसाप्रसंगेऽवगंतव्यम् ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजजन्मवृक्षाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपंडितदेवीदत्तसुतपंडितगंगारामसंगृहीते पञ्चविषयात्मकप्रतिरूपके धर्मशास्त्रमहानिवन्धे प्रायश्चित्तभागे जातिभ्रंशकर. संकरीकरण. अपात्रीकरण * मलिनीकरण. प्रकीर्णकानि पंचप्रकरणानि ७ ८ ९ १० ११ ॥ * ॥

एह चांडालादिकर्के जूटा धूआं तिसके पीणेका प्रायश्चित्त पूरा होया * । होर निके जीवांके मारणेका प्रा० उपपातक प्रकरणमै हिंसाके प्रसंगविषे देखलेना ॥ * ॥ एह श्रीराजाधिराज रणवीर सिंह जीकी आज्ञासे पंडितवरसारस्वत देवीदत्तजीके पुत्र पंडित गंगारामने संग्रहकी तेहो एधर्मशास्त्रके ग्रंथके प्रायश्चित्त भागविषे जातिभ्रंशादि ४ और प्रकीर्णक प्रकरण पूरा होया ॥ ४ ॥ शुभं भूयात् ॥ ७ । ८ । ९ । १० ११ ॥

पृ०	पं०	
१	१	मंगलाचरणम्
१	३	व्रतशब्दार्थः
२	९	अत्रैवमनुवाक्यम्
३	४	व्रतानिपंचेवतिकथनम्
३	७	अथमानपरिभाषा
५	३	इतिस्वर्णोन्मानम्
६	१	धेनुमूल्यमानंषट्त्रिंशन्मते
७	१	प्रायश्चित्तेन्दुशेखरोक्तमानपरिभाषा
८	१	अथव्रतार्कधान्यमानम्
८	८	परिमाणांतरमुक्तंपराशरेण
९	६	शब्दकल्पद्रुमेमानपरिभाषा
९	८	आदौपाज्ञवल्लभायपादकृच्छ्रम्
९	९	ग्राससंख्यानियमः
१०	२	ग्राससंख्यायाः प्रकारांतरम्
१०	५	चतुरःपादकृच्छ्रान्कृत्वावर्णानुरूपेणव्यवस्थादर्शिता ॥
११	३	अष्टकृच्छ्रस्यप्रकारांतरम्
१२	३	अथप्राजापत्यम्
१३	८	दंडकालितवदावृत्तिपक्षोवसिष्टेनदर्शितः
१४	८	गौत्तमवाक्यम्
१५	१	अथादकतर्पणम्
१५	१०	एतदेवादित्योपस्थानम्
१६	७	एवमन्यान्यपिस्मृत्यन्तरोक्तानिव्रतविशेषणानि
१७	१	प्राजापत्यस्वरूपमाह
१७	४	अत्रैवजावालिवाक्यम्
१७	८	कृच्छ्राणामान्याहमार्कंडेयः
१८	१०	तत्तकृच्छ्रविषयेस्मृत्यन्तरम्

पृ०	पं०	
१९	४	स्नानेचहारीतेनविशेषउक्तः
२०	१	अत्रैवगौतमवचनम्
२०	६	तथाषड्विंशतिमतेप्युक्तम्
२१	३	जपसंख्यायांविशेषस्तेनैवदर्शितः
२१	८	वशिष्टेनाप्यत्रविशेषउक्तः
२२	१०	वपनादिष्वत्रहारीतेनविशेषउक्तः
२३	९	जावलिनाप्यत्रविशेषउक्तः
२४	८	प्रारब्धेप्रायश्चित्तादित्रतेऽसमाप्तेपिमृतेफलमाह
२५	२	कृच्छ्राणांसाध्यासाध्यानिपापान्याह
२६	४	सर्वेषांकृच्छ्राणांफलार्थत्वमप्याह
२६	१०	अत्रमिताक्षरा
२७	३	अथप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायाः
२८	१	प्रत्याम्नायसमाचरणमाह
२८	१०	विप्रपूजामंत्रः
२९	३	प्रत्याम्नायगोदानेषुचमंत्रौ
२९	६	गोरभावेतन्मूल्यमाह
३०	१	तदाहमार्कंडेयः
३१	५	अत्रैवस्मृत्यंतरम्
३२	३	यत्तुचतुर्विंशतिमतेऽभिहितम्
३३	२	पातकेषुसाशीतिशतंप्रत्याम्नायः
३४	४	यत्पुनश्चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम्
३५	१	नवमुदिवसेषुपाणिपूरान्नभोजनम्
३६	४	अतिपातकेमवतिसंख्याकाश्चांद्रायणादयः
३७	१	यत्पुनर्दृहस्पतिनोक्तम्
३८	३	तथास्मृत्यंतरम्
३९	१	यच्चांद्रायणस्यापितत्रैवप्रत्याम्नायेनोक्तम्

पृ०	पं०	
३९	९	दुर्वलस्योपायमाह अपरार्कः
४०	१	अत्रैवपराशरवाक्यम्
४१	४	प्रायश्चित्तैन्दुशेषरेविशेषः
४२	१	तिलपात्रपारेमाणं कूर्मपुराणे उक्तम्
४३	१	अथप्राजापत्यकृच्छ्रस्यसमुद्रगनदीस्नानप्रत्याम्नायः
४४	१	पंचविधागंगास्कंदपुराणे ॥
४५	५	प्राजापत्यप्रत्याम्नायनदीस्नानप्रकारमाह
४६	९	निष्कशब्दार्थः
४७	५	अत्रस्मृतिसंग्रहस्मृत्यर्थसाराद्युक्तप्रकारानुसारीप्रका रःप्रदर्श्यते
४८	६	वाराणस्यामगणितफलम्
४९	१	दृषद्वत्यादिनदीस्नानिकृच्छ्रफलम्
५०	९	समुद्रांतस्नानफलम्
५१	७	पातालगंगास्नानफलम्
५२	५	अल्पनद्यादिप्रमाणम्
५३	१	नदीनां चांडालादिसंज्ञा
५३	७	देवतासमीपेतीर्थस्नानेफलाधिक्यम्
५४	४	वैष्णवादिक्षेत्रदर्शनेपृथक्फलम्
५५	१	तीर्थादिगमनेपापहानिः
५५	२	अत्रैवजामदश्रयवाक्यम्
५५	९	परार्थतीर्थगमनेफलम्
५६	१	गुर्वाचार्यादितत्पत्न्यर्थतीर्थगमनेफलम्
५६	४	श्रावणादिमासद्वयेनदीनारजस्वलात्वम्
५६	६	गंगागयादीनांसर्वदाशुद्धिः
५६	८	प्राजापत्यस्यप्रत्याम्नायः
५७	१	अत्रैवपराशरवाक्यम्

पृ०	पं०	
६७	६	प्राजापत्यस्यप्रत्याम्नायंवेदपारायणमाह
६९	१	प्राजापत्यप्रत्याम्नायेगायत्त्रीजपाविधिः
६०	३	अत्रैवपराशरवचनम्
६१	१	प्राजापत्यप्रत्याम्नायेतिलहोमविधिः
६१	७	प्राजापत्यस्यशतद्वयप्राणायामरूपप्रत्याम्नायमाह
६२	१	अत्रैवमार्कंडेयः
६३	१	अथसांतपनकृच्छ्रमाह मनुः
६४	१	पुण्यक्षेत्राण्याह सएव
६५	१	अत्रैवस्मृत्यन्तरम्
६६	८	सांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह देवलः
६७	९	अत्रैवगौतमवाक्यम्
६८	१	महासांतपनव्रतमाह
६९	१	अत्रैवयमवचनम्
७०	७	गालववचनम्
७१	५	महासांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह
७२	१	अत्रैवपराशरवचनम्
७३	७	अतिकृच्छ्रस्यप्रकारमाहगालवः
७५	७	अतिकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः
७६	७	अथकृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः
७७	७	प्रकारांतरेणतप्तकृच्छ्रमाहपराशरः
७८	२	अत्रैवदेवलवचनम्
७९	९	कृच्छ्रसामान्यविधिमाहविष्णुः
८०	२	अथतप्तकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह
८१	२	अत्रैवपराशरवाक्यम्
८२	३	अथपर्णकृच्छ्रमाहयाज्ञवल्क्यः
८३	१	अत्रैवजावालस्त्वन्यथाह

पृ०	पं०	
८४	२	यथाहमार्कण्डेयः
८५	१	अत्रैवदेवलवचनम्
८७	१	अत्रैवमार्कण्डेयः
८८	१	अथपर्णकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥
८९	१	फलकृच्छ्रव्रतस्तुतिः
९०	२	फलकृच्छ्रविधिः
९०	८	फलकृच्छ्रप्रत्याम्नायः
९२	५	अथपराककृच्छ्रम्
९३	१	पराककृच्छ्रस्तुतिः
९४	१	पराककृच्छ्रविधिः
९४	७	पराकप्रत्याम्नायः
९६	१	अथमासोपवासकृच्छ्रम्
९६	५	अथयावककृच्छ्रम्
९७	१	यावककृच्छ्रस्तुतिः
९८	३	यावककृच्छ्रविधिः
९९	१	यावककृच्छ्रप्रत्याम्नायः
१००	२	अवसौम्यकृच्छ्रम्
१००	९	अथयावककृच्छ्रः
१०१	१	जलकृच्छ्रः
१०१	१	वज्रकृच्छ्रः
१०१	२	तुलापुरुषकृच्छ्रः
१०१	७	कायकृच्छ्रम्
१०१	८	पंचदशविधकृच्छ्रकथनम्
१०२	५	तुलादिदातुस्तत्प्रतिग्रहीतुश्चपरस्परावलोकननिषेधः
१०२	८	दैवात्तयोः परस्परावलोकनेप्रायश्चित्तविधानम्
१०३	१	ब्रह्मसदस्ययोस्संज्ञा

पृ०	पं०	
१०३	९	लांगलादिदातुस्तत्प्रतिग्रहीतुश्चपरस्परावलोकननिषेधः ॥
१०६	३	सात्त्विकदानेचतुर्विंशतिमूर्त्यादिदानावलोकनेदोषाभावः ॥
१०७	८	कायकृच्छ्रलक्षणम्
१०८	२	कायकृच्छ्रविधिः
१०८	८	कायकृच्छ्रप्रत्याम्नायः
१०९	६	उदुम्बरकृच्छ्रम्
१०९	८	सामर्थ्येसतिबंधुत्यागेदोषोक्तिः
१११	१	बंधुत्यागेप्रायश्चित्तकथनम्
११२	४	उदुम्बरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः
११३	१	माहेश्वरकृच्छ्रलक्षणम्
११४	४	माहेश्वरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः
११५	३	ब्रह्मकृच्छ्रलक्षणम्
११७	१	ब्रह्मकृच्छ्रप्रत्याम्नायः
११८	१	धान्यकृच्छ्रलक्षणम्
११९	८	अथसुवर्णकृच्छ्रम्
१२१	३	अत्रैवगौत्तमवचनम्
१२२	५	अस्मिन्नेवावषेयमरोचवाक्यम्
१२३	३	तुलादिप्रतिग्रहीतृणांविशेषमाह
१२५	१	अथाघमर्षणकृच्छ्रमाधवेनोक्तम्
१२५	६	अथयज्ञकृच्छ्रः
१२६	५	देवकृतकृच्छ्रदर्शयति यमः
१२८	९	अथब्रह्मकूर्चव्रतमाह
१२९	३	पंचगव्यपरिमाणम्
१३१	६	अथचांद्रायणंवक्तुंतावत्तस्यकार्यविशेषोपयोगिताप्रदर्श्यते

पृ०	पं०	
१३३	४	अथचांद्रायणव्रतप्रकारः
१३४	१	अत्रैवपराशरवाक्यम्
१३६	९	अस्मिन्नेवविषयेयम्
१३७	९	चांद्रायणान्तरमाह
१३९	५	अथऋषिचांद्रायणम्
१४०	१	अथचांद्रायणव्रतविधिः
१४१	५	चांद्रायणप्रकरणेपराशरः
१४३	१	अथातोविशेषतयाचांद्रायणकल्पंव्याख्यास्यामः
१४४	१	अथस्पष्टप्रयोगः
१४६	५	अथसोमायनव्रतवर्णनम्
१४७	९	अथयातिषांचांद्रायणम्
१४८	१२	अथशिशुचांद्रायणलक्षणांतरमाह
१५०	१	अत्रैवगौतमवचनम्
१५०	६	शिशुचांद्रायणप्रकारमाह
१५१	२	अथमहाचांद्रायणम्
१५२	१	तत्प्रकारमाहगौतमः
१५३	४	अथपंचविधानांचांद्रायणानांप्रत्याम्नायमाह
१५४	४	अत्रैवगौतमवचनम्
१५५	१	यतिचांद्रायणविषयेऽहद्विष्णुः
१५५	५	अथप्रतांगभूतव्रतायमानियमाश्चयाज्ञवल्क्ये
१५६	२	अत्रैवमनुवाक्यम्
		इतिपंचम प्रकरणसूचीपत्रंसमाप्तम्

पृ०	पं०	
१५७	२	पराकव्रतमाहात्म्यम्
	५	वेदाभ्यासफलम्
१५८	१	मासपर्यन्तं षोडशप्राणायाममाहात्म्यम्
	६	सुवर्णदानादिफलम्
१५९	१	तिलदानमाहात्म्यम्
	७	सप्तव्याहतिहोममाहात्म्यम्
१६०	१	गायत्रीजपमाहात्म्यम्
१६१	१	लक्षादिभेदेन गायत्रीजपमाहात्म्यम्
१६२	१	प्राणायामऋग्वेदाभ्यासफलम्
	३	पावमान्यादिमाहात्म्यम्
१६३	७	ब्राह्मणकल्पादिमाहात्म्यम्
	८	इतिहासादिपाठफलम्
१६४	१	मतभेदेन प्राणायाममाहात्म्यम्
	३	मृगारेष्ट्यादिमाहात्म्यम्
१६५	१	महादेवपूजामाहात्म्यम्
	५	तिलांजलिमाहात्म्यम्
१६६	६	अनादेशे संवत्सरादिकालभेदेनानुष्ठानप्रकारमाह
१६७	२	जपहोमफलंचतुर्विंशतिमतेन
	९	विष्णुनाममाहात्म्यम्
१६८	३	कृच्छ्रचंद्रायणादिमाहात्म्यम्
१६९	३	उपवासादिमाहात्म्यम्
१७०	३	कृच्छ्रातिकृच्छ्रचंद्रायणसमुच्चयमाहात्म्यम्
१७१	१	तुलापुरुषगोसेवामाहात्म्यम्
	५	पापानांगुरुलघुभेदेन प्रायश्चित्तस्य गुरुतादि
१७२	१	रौरवयोधाजयादिमाहात्म्यम्
	३	जलतर्पणमंत्रः

॥ साधारणप्रकरणसूचीपत्रम् ॥

९

पृ०	पं०	
१७३	२	विष्णुस्मरणमाहात्म्यम्
१७४	२	अग्निपुराणिसर्वपापहरस्तोत्रम्
१७६	७	महापातकादर्वाचीनेप्रायश्चित्तम्
१७७	१	उपपातकादिप्रायश्चित्तम्
१७८	३	क्षुद्रपापविषयेउपवासादिप्रा०
	५	इतिसाधारणप्रकरणम् ६ *
१७९	३	अथजातिभ्रंशकराणि
१८०	२	जातिभ्रंशकरप्रा०
१८१	२	कृच्छ्रप्रत्याम्नायः *
१८२	१	अथसंकरीकरणानिरूपणानंतरंप्रा०
१८४	७	इतिसंकरीकरणानि *
१८५	१	अथापात्रीकरणानितत्प्रायश्चित्तानिच
१८६	११	इत्यपात्रीकरणानि *
१८७	१	अथमलावहपापानिरूपणानंतरंतत्प्रायश्चित्तम्
१८९	६	इतिमलावहानि
१९०	१	अथप्रकीर्णकप्रायश्चित्तानि
१९१	४	उष्टयानप्रा०
१९२	१	गुरौतुंशब्दप्रयोगप्रा०
१९३	१	ब्राह्मणायदंडावगूणणादिप्रा०
१९४	१	जलविनावाहिभूमौगमनादौप्रा०
१९५	१	नित्यकर्मलोपप्रा०
	५	महायज्ञाकरणेप्रा०
१९७	१	अनुदकमूत्रपुरीषकरणेषुमंतरप्याह
	६	सप्तममासादूर्ध्वगुर्वणीपतिनिषेधवाक्यम्
१९८	४	शरणागतपारित्यागेप्रा०
१९९	१	चांडालश्रवणेश्रुतिस्मृतिपाठेप्रा०

पृ०	पं०	
	१	सर्पादेरंतरागमनेप्रा०
२००	५	अस्नानेभोजनेप्रा०
२०१	५	पंक्त्यांविषमदानेप्रा०
	८	म्लेच्छादिभिःसहसंभाषणेप्रा०
२०२	४	दंडयोग्यानामदंडेप्रा०
	७	अपांक्तेयपंक्तिभोजनेप्रा०
२०३	१	नीलीमध्येगमनेनीलीदंतधावनेप्रा०
२०४	१	कंवलादौनोलीधारणेनदोषः
२०५	१	सच्छिद्रसूर्यादिदर्शनेप्रा०
		अग्नौपादप्रतापनेब्राह्मणेनक्षत्रियाद्यभि
	३	वादनेचप्राय०
२०६	१	समित्पुष्पादिहस्ताभिवादानेप्रा०
	८	उपवीतंविनाभोजनादौप्रा०
२०७	४	आचमनंविनाभुक्तेत्यानेप्रा०
	६	नित्ययज्ञाद्यकरणेप्रा०
२०८	८	ऋतौभाय्यामगच्छतःप्रा०
२०९	५	भर्तारमगच्छत्याःस्त्रियोपिदोषः
	७	अनापदिभिक्षाधारणेप्रा०
२१०	१	देवर्षिगोब्राह्मणादिप्रतिष्ठावनेप्रा०
	३	वाप्यादिभंदनेप्रा०
२११	२	देवताप्रतिमाभंजनेप्रा०
२१२	६	पर्वणिमैथुनेदोषः
२१३	३	उद्धमनेद्विजतिर्दोषः
	६	यज्ञोपवीतनाशिसंस्कारविधिः
२१४	१	स्थावरसरीसूपादीनांवधेप्रा०
	६	अजीर्णादिमतःप्रा०

पृ०	पं०	
२१५	६	गर्भाधानादिसंस्काराकरणेप्रा०
	८	क्षुन्निष्ठिवनादिकरणेप्रा०
२१६	३	संवत्सरंक्रियालोपेप्रा०
२१७	५	अक्राशनानृतवादेप्रा०
	८	व्रणमध्येकृमिपातेप्रा०
२१८	२	दिवामैथुनेप्रा०
	३	नग्नशब्दार्थः निषिद्धकाष्ठदंतधावनेप्रा०
२१९	१	ब्रह्मचारिधर्मलोपेप्रा०
२२०	७	गृहीतव्रतभंगेप्रा०
	१०	शपथकरणेप्रा०
२२१	६	ब्राह्मणानां वैश्यवृत्त्याजीवनेप्रा०
२२२	३	शूद्रस्य द्विजकर्मकरणेप्रा०
२२३	१	पुंसिमैथुने गोयानादौ मैथुने च प्रा०
	३	भार्याया अगम्यत्वमुक्तामैथुनेप्रा०
	९	प्रच्छेदनविरेचनयोः प्रा०
२२४	२	देवागारशिलादिनागृहकरणेप्रा०
	५	वानप्रस्थयत्यो ब्रितगंगेप्रा०
२२५	१	भिक्षूणामनृतपिशुनवचनेप्रा०
	४	अथ मौनव्रतानि
	५	अथोपव्रतानि
२२६	१	अशुचौ मूत्रपुरीषादौ चापलेप्रा०
	४	भोजने मौनलोपेप्रा०
	७	असपिंडैः सहरोदनेप्रा०
	९	प्रेतालंकरणेप्रा०
२२७	१	आत्मत्यागिसंस्कारेप्रा०
	९	स्निग्धमनुष्यास्थिस्पर्शेप्रा०

पृ०	पं०	
२२८	२	शूद्रप्रेतानुगमनेब्राह्मणस्यप्रा०
	८	रजस्वलाकन्यारक्षणेप्रा०
२२९	४	श्राद्धदिनेदंतधावनेप्रा०
	६	धनहर्तुःप्रेतकार्याकरणेप्रा०
	९	उद्धंघनमृतानांपाशच्छेदादौप्रा०
२३०	४	अपमृत्युमृतानांक्रियाकरणेप्रा०
२३१	१	ब्रह्मदंडहतानांक्रियाकरणेप्रा०
२३२	२	मृतसंकरजातीनामशौचादिनिषेधः
	८	विषोद्धंघादिमृतस्यसंस्कारनिषेधः
२३३	५	आत्मघातिस्पर्शप्रा०
२३४	६	पतितानांदाहादिनिषेधः
२३५	२	आहिनाग्निरात्मघातिनःपुनर्दाहविधिः
२३६	६	धर्मार्थमरणायप्रवृत्ताःपुनर्निवृत्तास्तेपांप्रा०
२३७	६	चितिभ्रष्टनाय्याःप्रा०
	७	सन्यासभ्रष्टेप्रा०
	९	अथस्पर्शप्रायश्चित्तानि
२३८	७	प्रत्यवासितशब्दार्थः
	९	अनशननिवृत्तानांप्रा०
२३९	२	चांडालटीवनादिस्पर्शप्रा०
	५	उच्छिष्टस्यचांडालस्पर्शप्रा०
२४०	१	चांडालोदकस्पर्शप्रा०
	२	उच्छिष्टानांश्वादिस्पर्शप्रा०
	५	भुक्तोच्छिष्टानामंत्यजैःसहस्पर्शप्रा०
२४१	३	चांडालेनसहैकवृक्षारोहणेप्रा०
	६	चांडालोदकपानेप्रा०
२४२	३	मूत्रपुरीषानंतरंश्वादिस्पर्शप्रा०

पृ०	पं०	
	८	भोजनानंतरं रजस्वलास्पर्शप्रा०
२४३	४	कृतमूत्रपुरीषानंतरं श्वादिस्पर्शगायत्रिजपः
	९	उच्छिष्टस्य मद्यादिस्पर्शप्रा०
२४४	१	चांडालछायास्थितौ ब्राह्मणस्य प्रा०
	६	वौद्धादिस्पर्शप्रा०
२४५	१	कामतः श्वादिस्पर्शप्रा०
	३	मौल्येन शवहाराणां प्रा०
	७	कापालिकस्वरूपम्
२४६	६	एडककुक्कुटादिस्पर्शप्रा०
	११	केवर्त्तादिस्पर्शप्रा०
२४७	१	चांडालादिस्पर्शवृद्धशातातपः
	९	बालकृच्छ्रस्वरूपम्
२४८	२	अविज्ञातचांडालस्य गृहवासिप्रा०
	६	चतुर्वर्णगृहे रजक्यादिनिवासिप्रा०
२४९	२	व्रणबंधनादौ चांडालादिकृते प्रा०
	७	स्वकाये चांडालादिपरिष्वंगस्पर्शप्रा०
	१०	चांडालादिगीतादिश्रवणे प्रा०
२५०	६	चांडालेन सह वृक्षछायावस्थाने प्रा०
२५१	१	अनिष्टगंधाद्याघ्राणे प्रा०
	२	रजस्वलादिदर्शने प्रा०
	९	पुनरविज्ञातचांडालगृहवासिप्रा०
२५२	९	एतद्विषये पात्रशुद्धिः
२५३	१	कांस्यभाजने गंडूयादिनिषेधः
	४	धान्यशुद्धिरपि पूर्वविषये
	८	छलेन पतितस्य गृहवासिप्रा०
२५४	२	बालवृद्धयोर्नक्तदेयम्

पृ०	पं०	
२५५	१	येषां गृहे चांडालस्तत्स्पर्शे प्रा०
२५६	१	चण्डालदर्शनादेः प्रा०
	६	परिवेषणसमये उच्छिष्टस्पर्शे प्रा०
२५७	१	गुरोरन्यत्रोच्छिष्टभोजने प्रा०
	४	पलांडुलशुनादिस्पर्शे प्रा०
२५८	३	उच्छिष्टस्य मद्यादिस्पर्शे प्रा०
२५९	३	उच्छिष्टस्य पुरीषादिस्पर्शे प्रा०
२६०	२	नाभेरूर्ध्वं शीवनादिस्पर्शे प्रा०
२६१	५	अमेध्यादिलिप्तशरीरे प्रा०
	७	शरीरे १२ द्वादशमला भवन्ति
२६२	३	मनुष्यास्थ्यादिस्पर्शे प्रा०
	९	भोजनानंतरं नाभस्पर्शे प्रा०
२६३	२	भुक्तीच्छिष्टस्य चांडालादिस्पर्शे प्रा०
	११	मलादिदूषितकूपादिजलपाने प्रा०
२६४	५	प्रसंगाज्जलशुद्धिरप्युच्यते
२६५	४	उपानहादिदूषणघटशतोद्धाररूपशुद्धिः
२६६	१	विण्मूत्रादियुक्तकूपात्सकलजलोद्धारकथनम्
	३	शवादिदूषितकूपाज्जलपाने प्रायश्चित्तम्
२६७	४	मृतपंचनखात्कूपात्सर्वजलोद्धारकथनम्
	६	कुष्मादिमनुष्यशरीरजरणेशुद्धिप्रकारः
	१०	सर्वजलोद्धारप्रकारः
२६८	१	प्रौढादिपुनडागादिपुटोपाभावकथनम्
	८	जानुदघ्नजलेदोपाभावकथनम्
२६९	२	चांडालोदकभाण्डजलपाने प्रा०
	९	प्रसूतानामजादीनां पयोदशरात्रानंतरं शुद्धिमितिकथनं
२७०	२	अथ रजस्वलाया अस्पृश्यस्पर्शे प्रा०

पृ०	पं०	
२७१	६	वैश्यायाःशूद्रास्पर्शेप्रा०
२७२	१	बाह्मणीशूद्रयोरजस्वलयोःपरस्परस्पर्शेप्रा०
२७३	२	रजस्वलायाःपतितादिस्पर्शेप्रा०
	९	त्रिरात्रव्रताशक्तौकांचनदानम्
२७४	८	रजस्वलासूतिकयोःशवादिस्पर्शेप्रा०
२७५	१	रजस्वलाया पंचगव्यपानानंतरमजाघ्राणकार्यम्
	७	चांडालेनसहैकवृक्षारोहणेप्रा०
२७६	६	रजस्वलायारजकादिस्पर्शेप्रा०
२७७	१०	उच्छिष्टद्विजस्पर्शेरजस्वलायाःप्रा०
२७८	१	उच्छिष्टक्षत्रियादिस्पर्शेब्राह्मण्याःप्रा०
२७९	४	मृतसूतकिस्पर्शेतस्याःप्रा०
	१०	रजस्वलायानद्यादिस्ताननिषेधः
२८०	१	अथपरंपरास्पर्शेप्रा०
	९	चांडालेनएकशाखासमारूढायारजस्वलायाःप्रा०
२८१	२	रथ्याकर्दमतोयादिस्पर्शेदोषाभावः
	६	ब्राह्मणस्यचेत्यवृक्षस्पर्शेप्रा०
२८२	१	अथश्वादिस्पर्शेमनुः
२८३	१	नीलीकाष्टक्षतेविप्रस्यप्रा०
२८४	३	शुनादष्टब्राह्मण्याःप्रा०
	१२	श्वगर्दभादिस्पर्शेरजस्वलायाःप्रा०
२८५	१	शुनाघ्रातादिपुशातातपः
	२	ब्रणेकृम्युत्पत्तौप्रा०
२८६	६	नाभेरुपरिब्रणेप्रा०
२८७	६	चांडालादिभिर्बलाद्दासीकृतेप्रा०
२८८	१	अथवंदीगृहानिवासपरावृत्तप्रा०

पृ०	पं०	
२८९	१	देशकालाद्यवेक्षणेनप्रायश्चित्तव्यवस्था
२९०	१	पूर्वोक्तमेवप्रवृत्तम्
२९१	८	पापलघुत्वेप्रणः
२९२	१	अस्योत्तरम्
२९३	१	चांडालधर्ममकथनम्
	१०	इतिवर्णाश्रमवाह्यशुद्धिहेतुप्रा०
२९४	१	कालादिविचारेणप्रायश्चित्तव्यवस्था
	८	चांडालादिधूमयंत्रपानविचारः
२९५	९	चांडालादिधूमयंत्रपानप्रा०
२९६	१२	एकादशप्रकरणसूचीसमाप्तिः

षष्ठप्रकरणशुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	मू०५	स्तार्थे	स्तार्थ
१६४	टी०५	त्रिर्हावि	त्रिर्हावि
१६७	मू०१	ष्वपि	ष्वपि
१६८	मू०२	हहते	दहते
१७०	टी०३	आति	आति
१७२	मू०३	तिष्ठद	तिष्ठेद

पृ०	प	अशुद्ध	शुद्ध
१७३	मू०६	नृश्यति	नश्यति
१७३	मू०७	ण्णोर्न	ण्णोर्न
१७३	टी०७	पजया	पूजया
१७४	टी०२	मनकं	मनके
१७४	टी०५	नमस्कर	नमस्कार
१७५	टी०५	अदिशब्दने	अपिशब्दते
१७५	मू०१	निमज्य	निमज्ज्य
१७६	टी०७	वर्ष	वर्ष
१७६	टी०८	औरविच्छेद	औरविनाविच्छेदसे
१७७	टी०६	तियोजोए	तियोजेए
१७८	टी०७	तसि	तीस
१७८	टी०५	तीनों	तिनों
१७८	म०५	जम्बू	जम्बू
१८४	टी०१	देर्वे	देवे
१९०	टी०१	ब्रके	व्रतके
१९०	टी०७	वेगा	वेगासो
१९२	मू०८	विषम्	विषयम्
१९७	मू०१	कशे	कश
१९९	मू०२	आः	आह
२००	मू०१	तेर	तर
२१०	मू०५	तीयामग्रेत्रुटी०	विण्णोःकर्माणीतितृतीयां
२१४	मू०८	तिष्ठ	तिष्ठे
२१७	मू०९	तत्मज	तात्मज
२१७	टी०२	ब्राह्म	ब्रह्म
२२०	मू०१०	ततर	तरे
२३३	मू०८	कूत्र	कुत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	मू १	विशत्त	श्चित्त
२५६	मू ४	रुष्टृवा	रुष्टृवा

॥ व्रतादिप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते ॥

पृ ० पं ० प्रतीक

१५ १ हिरण्येति हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासुयातः सवितायास्वग्निया
अग्निगर्भदधिरे सुवर्णास्तान्नापः संस्योनाभवंतु ॥ १ ॥

१९ ७ देवकृतस्येति देवकृतस्यैनसोवयजनमसिमनुष्यकृतस्यै नसोवयजन
मसिपितृकृतस्यैनसोवयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोवयजन
मस्येनसऽएनसोवयजनमसि यच्चाहमेनेविद्वांश्चकारय
च्चाविद्वांस्तस्यसर्वस्यैनसोवयजनमसि य ० सं० अ०८

१९ ७ तरत्समिति तरत्समदीधावतिधारासुतस्यांधसः तरत्समंदाधावांत

६१ २ त्र्यवकइति त्र्यवकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बधनान्मृ
त्योर्मुक्षोय मामृतात् ॥

१३० ३ मानस्तोकेति मानस्तोकेतनयमानऽ आयुपिमानो गोष्ठमानोऽअश्व
पुरीरिपः मानो वीरानूरुद्रभामिनो वर्धाहो वेष्मंतः सद
मित्राहवामहे ॥

॥ व्रतादि प्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थमंत्रसंग्रहोलिरुयते ॥१९॥

१४० २ संतेपयांसि संतेपयांसिसमुयंतुवाजाःसंवृष्टान्यभिमातिपाहः आ
प्यायमानोऽमृतायसोमादिविश्रवांस्युत्तमानिधिष्व

१४५ ११ यतइति यतऽइंद्रभयामहेततोऽनोऽभयंकृधि मघवांछगधितवतन्न
कुतिभि विद्विधोविमृधोजहि ॥

१४६ १ शन्नइति शन्नइद्राग्नीभवतामवोभिःशन्नइद्रावरुणारातहव्या शमिं
द्रासोमासुवितायसंयोःशन्नइद्रापूषणावाजसातौ ॥

१४६ १ पुनंतुमामिति पुनंतुमादेवजनाःपुनंतुमनसाधियः पुनंतुव्विश्वाभूता
निजातवेदःपुनाहिमां

१६६ ४ अवतइति अवतेहेडोवरुणनमोभिरवयज्ञेभिरीमहेहविभिःक्षयंनस्म
भ्यमसुरप्रचेताराजेननांसिशिश्रथःकृतानि

२१० ५ विष्णोरिति विष्णोःकर्मणिपश्यतयतोव्रतानिपश्यशे इंद्रस्ययुज्यः
सखा ॥

२१५ ३ इमंमैति इमंमेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय त्वामस्युराचके ॥

३ उदुत्तममिति उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधवं विमध्यमश्रयाथायत्रधावय
मादित्यव्रतेतवानागसोवयमदितयेस्याम ॥

२७० २ धाम्नोधाम्नइति धाम्नोधाम्नोराजंनितोवरुणमुंचनयथास्मते विरो
दतोभितप्तमिवानति

॥ दोहा ॥

रामचंद्रकरुणानिधिभक्तलोकउरधार
महाराजरणवीरके सभकारजसुधधार
॥ १ महाराजरणवीरसिंहदूसरोहै हर
नाम इसवलसे शोधनकरे जुपंडत गं
गाराम ॥ २ ॥



॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १

स्वत इत्यादि श्लोक पिच्छे आगिआहै इसको स्मरण करलेणा ॥ अब औरमंगला चरणकर्केहें नत्वेति मै कवि गंगाराम शर्माने प्रायश्चित्त शब्दार्थ कथन १ और तिसकी प्रशंसा २ और सभाका विधान ३ और कर्मविपाक ४ और व्रतविधि ५ और तिसके आगे जाति भंशकरा दिछे प्रकरण कहकर इसके अनंतर पापोंके विषे जो उपपातक पाप हैं तिनांकी संख्या क्या गणना और तिनके दूर करणें वास्ते प्रायश्चित्त कहीदा है क्या कर्के लक्ष्मी कर्के युक्त जो रामचंद्र तिनांके चरण कमल नूं नमस्कार कर्के कैसे चरणकमल हैं भी क्या संपत्ति और सिद्धि और सबंत्र प्रसरणशीलाबुद्धि तिसके देखे वाले हैं और जम्बूद्वीपकी न्याई प्रसिद्ध जो जम्बूराजधानी तिसके बहुत प्रताप युक्त श्री स्वामी रणवीरसिंह नृपति जीकी प्रकट आज्ञाकां ले कर्के ॥ चपुनः क्या कर्के उपपातकांके और तिनके प्रायश्चित्तोंके अधिकारकां संग्रह कर्के अर्थात् तिसके प्रतिपादक अनेक ग्रंथोंको देख कर्के ॥ कैसी उह संख्याहै मनुसं ले कर्के जो धम्मशास्त्री तिनांके अंगीकार कीतीहै १ अब आगे महापातक प्रकरण विषे कहणी जो है पाप गणना तिसविषे जाति भंशकरसं आदलेकर छेमे स्थानविषे आएहोए उपपातककेकथन

ओंश्रीगणेशायनमः स्वतोमित्वातत्त्वमित्यादि० नत्वा श्रीरघुनाथपादवनजं श्रीसिद्धिबुद्धिप्रदं जम्बूनाथमहानुभावनृपतेराज्ञानिधायस्फुटाम् पापा नामुपपापभेदगणनामन्वादिभिः स्वीकृतां प्रायश्चित्तमथोवदामि नितरां संगृह्यतत्प्रक्रियाः १ अथवक्ष्यमाणजातिभंशकरादिपापगणनयापष्टमुपपातकमभिधास्यमानेन प्रथमंतद्गणनोच्यते ॥ तत्रमनुः ॥ गोवधोऽयाज्यमं याज्यपारदार्यात्मविक्रयाः गुरुमातृपितृत्यागः स्वाध्यायाग्नयोः सुतस्य च १

करणें वास्ते प्रथम तिसकी गणना कहीदीहै तिसविषे मनुजीका वाक्यहै गोवध इत्यादि ॥ १ ॥ का अर्थ भिन्न २ कर्के किहाजावेगा अब क्रमकर्के इनकानामार्थकहतेहां ॥ गोवध नाम उसकाहै कि जो गौके देहका वध क्या शस्त्रादि कर्के नाश करणा अर्थात् पाषाणादि प्रहार मात्रका नाम गोवध नहीं जानणा १ और नहीं यज्ञ करवाणे योग्य जो जाति कर्के दुष्ट और कर्मोंकर्के दुष्ट शूद्र और ब्राह्मणका संस्कारतें रहित इनांते लेकर जो हैं तिनांको यज्ञ करवाणा अर्थात् शूद्रादितें समंत्रश्राद्ध सोम यागादि करवाणे परंतु इसमें इस बातका विचार रक्षणा कि शूद्र भी दो प्रकारका होताहै इक सच्छूद्र और दूसरा असच्छूद्र तिसमें सच्छूद्रसं याग करणेका दोष नहिहै एह विचार आगे तिनके निरूपण विषे आवेगा २ और पारदार्य क्या परस्त्रीका संभोग एह जो परस्त्रीका संभोगहै सो गुरुकी स्त्रीतें और तिसके तुल्य पापतें भिन्न जानणा गुरुस्त्रीके संभोगको महापातक कहीदाहै और तिसके तुल्य पापको अनुपातक कहीदाहै ३

२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

आत्मविक्रयः क्या पहला धनको लेकर पीछे तिसका दास्य कर्म करना अर्थात् तिसके दास हो करके रहना परन्तु एह आत्मविक्रय किसे दूतादि व्यसन पूर्वक होवे तद दोष है इस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचन है व्यसनेति ४ और गुरु और माता और पिता इनांका त्याग अर्थात् सेवा न करणी अथवा पापते रहित भी हैं तथापि तिनांको अपणें घरते बाहर कर देना ॥ इस जग याज्ञवल्क्यजीने पितृमातृसुतत्याग ऐसा पाठ किहा है सो इसमें सुतत्याग अधिक है और गुरुका बोध पितृपदसे हि जाणया है इस करके एह तीन उपपातक हैं ७ स्वाध्यायेति स्वाध्याय क्या पड़े होए वेदका किसे कारण ते कुटुंबादिके पालनादि करके व्याकुल होणें

परिवित्तिताऽनुजेनूढेपरिवेदनमेवच तयोर्दानंचकन्यायास्तयोरेवचयाज नम् २ कन्यायादूपणंचैव वार्द्धुप्यंत्रतलोपनम् तडागारामदाराणामप त्यस्यचविक्रयः ३ ब्रात्यतावांधवत्यागोभृत्याध्यापनमेवच भृताच्चाध्य यनादानमपण्यानांचविक्रयः ४ सर्वाकरेष्वधीकारोमहायंत्रप्रवर्तनम् हिंसोपधीनांस्त्र्याजीवोऽभिचारोमूलकर्मच ५ इन्धनार्थमशुष्काणांद्रुमा णामवपातनम् आत्मार्थचक्रियारंभोनिदितान्नादनंतथा ६ अनाहिताग्नि तास्तेयमृणानामनपक्रिया असच्छास्त्राधिगमनंकौशीलव्यस्यचक्रिया ७ धान्यकुप्यपशुस्तेयमद्यपस्त्रीनिपेवणम् स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधोनास्तिक्यंचोप पातकम् ८ अर्थः गोवधोगोपिण्डव्यापादनम् ९ अयाज्यानांजातिदुष्ट कर्मदुष्टानां शूद्रब्रात्यादीनां संयाज्ययाजनम् २ पारदार्यपरस्त्रीसंभोगः इदंचगुरुतल्पतत्समव्यतिरेकेणबोध्यम् ३ आत्मविक्रयोद्रव्यग्रहणेनपर दास्याचरणम् अयंचव्यसनान्यात्मविक्रयइत्यादियाज्ञवल्क्योक्तव्यसनपू र्वकांबोध्यः ४ गुरुमातृपितृणांत्यागःशुश्रूपाद्यकरणं वाऽपतितानांतेपांगृ हान्निष्कासनम् याज्ञवल्क्यस्मरणेतु पितृमातृसुतत्यागइतिपाठः ७ स्वा ध्यायाग्न्योःसुतस्यचत्यागः॥सर्वदाब्रह्मयज्ञत्यागो नवेदविस्मरणं ब्रह्मोज्झ तेत्यनेनोक्तत्वात् ८ अग्नीनांश्रौतस्मार्त्तानांत्यागःअग्नेः स्मार्त्तस्य त्यागोन श्रौतस्य अग्निहोत्र्यपविद्धाग्नीनित्यादिनोक्तत्वादिति व्याख्याता ॥ ९ ॥ सुतत्यागस्संस्कारभरणाद्यकरणम् १०

अथवा मच्छास्त्र जो हैं व्याकरणादि तिनके परिचयते त्याग करना ॥ और जो अनुपातकोंको गणनामें वेदका त्याग है सो भी स्वाध्यायत्याग है पणु सो असच्छास्त्रके परिचय निमित्त करके जानना अधिक दोष होणें ८ अग्नीनामिति अग्नि जो श्रौत क्या गार्हपत्य आहवनीय दक्षिणाग्नि और स्मार्त्त जो आवसथ्यादि तिनांका त्याग करना इसमें कुलूकभट्टजी कहते हैं कि स्मार्त्ताग्निका पापत्याग उपपातक है और श्रौताग्नि जानहि सो अनुपातक है ९ और सुतत्याग क्या जो दश संस्कार जातकर्मदि और भरण क्या पालनादि तिनांका न करना १०

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ३

कनीति और छोटे आताका बड़े आताके विवाहमें पहिले विवाह होवे तो बड़े आताकी परिवृत्ति संज्ञा कहीहै ११ और छोटेका नाम परिवृत्ताहै १२ और सो जो हैं दोनों तिनांको कन्या देणी १३ और तिनांदोआंको विवाह होमादि कर्म विषे आर्त्विज्य करणा अथात् तिनांते विवाहादि करवाणे १५ और कन्याकी योनि विषे मैथुन के विना अंगुली कर्के दूषण करणा एह अर्थ इस कर्के कीताहै कि मैथुन कर्के जो कन्या दूषणहै तिसका महापातकमें गणनाहै सो मैथुनभी (रेतःसेकः) इत्यादि वचन तें वीर्यपात पर्यंत जाअणा अव कन्यादूषणका और निमित्त कहतेहैं । कि तूं नहि कन्या तूं मैथुन करणे योग्यहैं ऐसे वचनकर्के भी कन्या दूषण होताहै एह पापभी सोम विक्रय और कृतघ्नतादि काभी उपलक्षण है सो प्रायश्चित्त निरूपण विषे कहेंगे १६ बाहुष्य क्या प्रतिषिद्ध वृद्धि कर्के

कनीयसआदौविवाहेज्येष्ठस्यपरिवृत्तित्वंभवति ॥ ११ ॥ कनिष्ठस्यप

रिवृत्तित्वंभवति ॥ १२ ॥ तयोः परिवृत्तिपरिवेत्रोः कन्यायादानम् ॥

१४ तयोरेवविवाहहोमादियागेप्यार्त्विज्यम् १५ कन्यायामैथुनंविनांगु

ल्यादिनादूषणं रेतःसेकपर्यंतं मैथुनेपुरेतःसेकःकुमारीपुस्वयानिष्वित्या

दिनामहापातकेपुगणनात् त्वंनकन्याकितुमैथुनार्हेत्युक्तिर्याइदंचसोमविक्र

यकृतघ्नताद्युपलक्षणं तच्चतत्प्रायश्चित्तनिरूपणावसरेनिरूपयिष्यते १६

बाहुष्यंप्रतिषिद्धवृद्धिजीवनम् मुद्रिकाशतर्णदानेसबंधकाबंधकविभागशः

सपादमुद्रिकाधिकंद्विकाधिकंवाप्रतिषिद्धवृद्धिः १७ व्रतलोपनम् ॥ ब्रह्मचा

रिणःस्त्रीसंगः १८ तडागोद्यानभार्यापत्यानांविक्रयः २२ यथाकाल

मनुपनयनंवात्यता तथाचोक्तम् ॥ अत ऊर्ध्वं त्रयोप्येते यथाकालमसंस्कृता

इति व्रात्यता असोमयाजित्वमित्यपिकेचित् २३

जीविका करणी प्रतिषिद्ध वृद्धि उसको कहतेहैं कि जो गहणा रक्षणें वालेहैं १।) सवा रुपैया

सैकडेहैं अधिक होवें और विना गहणेंहैं २) दोरुपैण सैकडेहैं अविक होवे । जेकर इतनी

होवे तद दोष नहिहै १७ वनेति व्रत लोपन उसको कहतेहैं कि ब्रह्मचागीने स्त्रीसंग

करणा १८ और तलाओ और वाग और स्त्री और पुत्र इनांका वेचणा २२ यथाकाल

क्या ब्राह्मणको गर्भस्थितिहैं अष्टमें ८ वर्षतें लेके सोलमें १६ वर्ष तक और क्षत्रीकोग

र्भमें बारमें ११ वर्ष तें वाईस २२ वर्ष तक और वैश्यको गर्भस्थितिहैं बारमें १२ वर्षतें लय

के चौबी २४ वर्ष पर्यंत यज्ञोपवीतका धारण कहाहै । एनां समयां विषे जो ना धारणकरे उस

को व्रात्यता कहीहै कि उना समयां तो पीछे ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य तीनांवणें संस्कार

रहितव्रात्यकहेहैं और कोईककृपिकहतेहैं किजो सोमयज्ञ नहिंकरणा तिसकानामव्रात्यताहै २३

४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

वान्धवेति वान्धवत्याग क्या पिताका भ्राता और माता का भ्राता इनांते लेकरके जो संबंधि. यांका त्याग करणा धनके होयां२ भी ना रखणा २४ भृत्येति भृत्याध्यापन क्या मजूरी ले करके नौकर होकर शिष्यको पढाणा २५ और पंडितको नौकर रखके पढना इसमें एहवि चारहै कि पढन वाला ऐसा अपने चित्तमें जानताहै कि मैं मजूरी देके पढताहूं और पंडित जानताहै कि मैं मजूरी लेके पढाताहूं इनां दोआं के पठनमें कोई परमार्थ बुद्धि नहि इसक के दोषहै २६ अपेति और अपश्य क्या नहिंवेचणेके योग्य लूण और तिलांते लेकर अन्न वा रस तिनांका वेचणा परंतु इसमें यथायोग्यता कर्के दोष है जैसे ब्राह्मणको रसविक्रय है ऐसे और भी जानणे २७ सर्वेति सुवर्णते आदलेके जो धातु तिनांकीयां जा खाणा उत्प त्तिस्थान तिनां विपे राजा की आज्ञा लेके जो अधिकार होणा २८ महेति महायंत्र जो हैं इ

वान्धवत्यागःवान्धवानांपितृव्यमातुलादीनांत्यागःसतिविभवेऽपरिरक्षणम्

२४ भृत्या- प्रतिनियतवेतनग्रहणपूर्वकमध्यापनम् २५ प्रतिनियतवेतन

दानपूर्वकमध्ययनम् २६ अपण्यानांलवणतिलादीनांविक्रयः २७ सर्वा

करंपुसुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानेपुराजाज्ञयाअधिकारःस्वामित्वं २८ महेतिमहतां

यंत्राणांतिलक्षुपीडाकराणांप्रवर्तनं हिंस्रयंत्रप्रवर्तनमितियाज्ञवल्क्यीयपा

ठःप्रवाहप्रतिबन्धहेतूनांसेतुबंधादीनांप्रवर्तनम् २९ उपधीनांजातिमात्रा

दीनांहिसाहिसनंज्ञानपूर्वकाभ्यासविषयमेतत्प्रायश्चित्तगौरवात्। यत्तूत्कृ

ष्टजानामोपधीनामित्यादिनायक्ष्यतितत्सकृद्विसायांवेदितव्यं प्रायश्चित्त

लाभवात् ३० स्त्रीतिभाय्यादिस्त्रीणांवेश्यात्वंकृत्वातल्लब्धधनेनोपजीवनम्।

स्त्रीधनेनोपजीवनंवा ३१

धुयंत्र और तिलकं इनां आदलेकपीडाके स्थान तिनांका अध्यापन करणा ॥ इसी कर्के याज्ञ वल्क्य जीने (हिंस्रयंत्र प्रवर्तनं) ऐसा पाठ किहाहै इसमें भी जोहि अर्थहै २९ उपधीनामि ति जो जातिमात्र उपधिअहै क्या जो अपने स्थानपर स्थित हैं तिनांका मूलतों लयके पुष्ट णा परंतु जानकर्के और बहुतवार कर्के एह इनांका प्रायश्चित्तहै क्योंकि बड़ा होणें तें ॥ और उपधा प्रायश्चित्त आगेभी आवेगा सो थोडाहै उह एकवार हिंसा करणमें जानणा ॥ इस वि पे याज्ञवल्क्य जीने (स्त्रीहिसौपधिजीवनं) ऐसापाठकिहाहै इसका अर्थ एहहै कि स्त्रीकर्के और हिंसाकर्के और उपधिकर्के क्या वशीकरण कर्के जीवनहै सो उपपातक जानणा ३० स्त्रीति अपणी स्त्रीको वेश्या बनायके जो धनका ग्रहणकरणा तिसकर्के जीविका करणी वा स्त्रीके धन कर्के जीविका करणी ३१

अभीति और वाजके यज्ञकर्के अपराधते विनामारणा ११ मूलेति मंत्र वा औपधी कर्के वश करणा ११ इन्धनेति गिल्यां वृक्षांका छेदणा तिसकाप्रयोजन कहतेहैं पाकेति भोजन का जो पकाणा एहहीहै प्रयोजन जिसका प्रयोजन दो प्रकारका है दृष्ट और श्रुत केवल देहके ही सुख वास्ते जो प्रयोजनहै सो दृष्टहै जोपरलोकके सुख वास्तेहै सोश्रुतहै १४ आत्मेति देव ता पितरांके निमित्तों विना जो आपषं वास्तेही अन्नासिद्ध करणा १५ निन्दीति निन्दित जो अन्नहै वा थोम इसते आद लेकके इनांका एकवार इच्छाते विना भक्षण करणा सो उपपात कमें किहाहै जो इच्छाकर्के इनांका बहुतवार भक्षण करणाहै सो (गार्हितान्नाद्ययोजगधिः) इसवचनते सुरापानके बराबरहोणें कर्के अनुपातकमें किहाहै इसमेंविशेष कहतेहैं कि जो यो गोश्वरने किहाहै (निन्दिताथोपजीवनमिति) इसका अर्थ एहहै राजाकर्के दूरकीती जो उपजी

अभीति श्येनयज्ञेनानपराद्धस्यमारणम् ३२ मूलेतिमंत्रौपधिनावशीकरणम् ३३ इन्धेति अशुष्काणामार्द्राणांवृक्षाणांपाकादिदृष्टप्रयोजनार्थमात्रमवपा तनछेदनम् ३४ आत्मेति स्वस्थस्यदेवपित्राद्युद्देशेविना पाकाद्यनुष्ठानम् ३५ निन्दितेति निन्दितान्नस्यलशुनादेःसकृदनिच्छयाभक्षणम् इच्छापूर्वका भ्यासभक्षेणतुगर्हितान्नाद्ययोजगधिरित्यादिनासुरापानसमीयम् निन्दिता थोपजीवनमितियोगीश्वरोक्तेऽराजस्थापितार्थोपजीवनमित्यर्थः ३६ अनेति सत्यधिकारेअग्न्यनाधानम् । अत्रमिताक्षरा ननुज्योतिष्टोमादिकामश्रुतयः स्वांगभूताग्निनिष्पत्यर्थमाधानं प्रयुजतइतिमीमांसकप्रसिद्धिः अतश्चयस्या शिभिःप्रयोजनंतस्यतदुपायभूताधानेप्रवृत्तिर्वीह्यार्थिनइवधनार्जने यस्यपु नराग्निभिःप्रयोजनंतास्ति तस्याप्रवृत्तिरितिकथमनाहिताग्नितादोषउच्यते

विका तिसीकर्के जो उपजीविकाकरताहै सो निन्दितधनोपजीवीहै जैसे राजाने हटाया जो जूआ और तिसते ही जो उपजीविकाकरताहै सो उपपातकीहै ३६ अनेति अग्निके अधिकार के होयां होयां जो अग्निका ना स्थापन करणा इस विषे मिताक्षराका वाक्यहै (प्रण) नन्विनि ज्योतिष्टोमादियज्ञके विधान करणे वालीयां जो कामश्रुतियां हैं सो अपने अधिकार युक्त अग्निकी सिद्धिवास्ते अग्निके आधाननू कहतीयांहैं एह मीमांसकांके मतविषे प्रसिद्धहै इसकार णों जिसको अग्नियां कर्के प्रयोजनहै तिसको तियां अग्नियांके उपायभूत स्थापनविषे प्रवृत्ति कहीहै जैसे चावलके इकठेकरणे वालेको धनके इकठे करण विषे प्रयोजनहै और जिसको अग्नियां कर्के प्रयोजन कुछ नहीं तिसकी अग्निके आधानविषे प्रवृत्ति नहिहै एहप्रसिद्ध लोकवाणीभी है कैसे अनाहिताग्नि दोष किहाहै(उत्तर)

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२॥ टी० भा०

अस्मिन् इति वचनं तं अग्निस्थापनको आवश्यक प्रतीतहंदाहै क्योंकि निम्न कर्मकीयां कर्हण वालियाजो भुतियां सो प्रयोजन कोलयेके स्थितहैन विशेषते रहित अग्नि आधानकीयां प्रयो जकहैन एहस्मृतिकारोंका अभिप्रायहै इसककें अनाहिताग्नि उपपातकयथार्थहै ॥ इसमै वचन भीहै(वसंतेअग्निनाधोत) इस वाक्य ककें सब पुरुष अग्निकाआधान करण असिआज्ञाहै १७ स्तेयमिति सुवर्णतेंविना होर सारधनका चुराणा उपपातकहै असारधनका चुराणा अग्ने कहांगंधान्यकुप्यइत्यादिककें १८ ऋणैति देवता औरपितर और ऋषिइनांके त्रय जो ऋणहैं तिनांककें ऋणवालापुरुषहै तिनां ऋणोंका ना दूरकरणा उपपातकहै चपुनःग्रहणकीतेहोए सुवर्णा दीका नादेणा उपपातकहै ऋणदूरकरणे वास्ते भुतिप्रमाणदेतेहैं ऋणैस्त्रिभिरिति ३९ असदिति भुति स्मृतितें विरुद्धशास्त्र जो आधुनिक रचेहोए विरुद्धमतवालयोंकेशास्त्र तिनोकापडना अथवा खोटा शास्त्र जो चार्वाकादि क्या प्रत्यक्ष प्रमाणादिवोधक तिसका पडना ४० कौशीति नृत्य

अस्मादेवाधानस्यावश्यकत्ववचनान्नित्यश्रुतयोपिसाधिकाराश्वविशेषादा धानस्यप्रयोजकाइतिस्मृतिकारणामभिप्रायोलक्ष्यतइत्यदोषः ३७ स्ते यम् सुवर्णादन्यस्यसारद्रव्यस्यापहरणम् असारापहरणंवक्ष्यते ३८ ऋणानामिति ऋणैस्त्रिभिर्ऋणवान्नरोजायतेतदनपकरणम् गृहीतस्यसु वर्णादेरप्रदानंच ३९ असदिति श्रुतिस्मृतिविरुद्धशास्त्रशिक्षणम्असच्छा स्त्रस्यचार्वाकादेरधिगमोवा ४० कौशीति नृत्यगीतवादित्रादेरुपसेवनम् याज्ञवल्क्येतुव्यसनान्यात्मविक्रयइत्यनेनकौशीलव्यंसंगृहीतम् ४१ धा न्येति धान्यव्रीह्यादिकुप्यमसारंत्रपुसीसादिपशवोगवादयःतेषामपहरण म् ४२ मद्येतिद्विजातानांपीतमद्याःस्त्रियागमनम् ४५ स्त्रीतिस्त्रीशूद्रवै श्यक्षत्रियहननम् ४९ नास्तीतिअदृष्टार्थकस्माभावबुद्धिः नास्तिपरलोक इत्याद्यभिनिवेशोवा ५० इमानिमनूक्तानियोगीश्वरेणत्विमनिस्वीकृत्यषड धिकान्यापिपठितानियथाशूद्रप्रेष्यंहीनसख्यंहीनयोनिनिषेवणम् तथैवाना श्रमेवासःपरान्नपरिपुष्टता ॥ शूद्रसेवनम् १ हीनेपुमैत्रीकरणम् २ अनूढ सवर्णदारस्यकेवलंहीनवर्णदारोपसेवनम् साधारणस्त्रीसंभोगश्चेति ॥ ३

और गीत और वादित्रआदिकोंका ग्रहण करणा जो वीणादि और मुरजादि और वंशादि और कांस्यतालादिहैं इनांका इकठा नाम वादित्रहै ॥ याज्ञवल्क्यजीने(व्यसनान्यात्मविक्रयः) इस ककें कौशीलव्यकाग्रहणकीताहै ४१ धान्येति व्रीह्यादि और कुप्य क्या असारवस्तुलाषसिका आदि पशु गौआदि इनांकाचुगणा ४२ मद्येति ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यइनांनेजिसने मदिरा पीताहो आहै तिसस्त्रीकेसाथ मैथुन करणा ४५ और स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्रीका मारणा ४९ नास्तीति क र्मांका जो फल परलोक विषे होणा तिसविषे अभावबुद्धि क्या कोई फल नहि एहबुद्धि वास्त्र र्गादि कोई नहि एह निश्चय होणा ५० एह पंजाहउपपातक मनुजीने कहेहैं योगीश्वरनें इ नांको अंगीकार ककें लेअधिककहेहैं शूद्रप्रेष्यमित्यादि इनांकाअर्थ किहा जाताहै शूद्रकीसे वाकरणी १ हीनजाति विषे मैत्री कर्णी २ अपने तुल्य जाति वाली स्त्रियों विना केवल ही नजाति वाली स्त्रीके साथ विवाह करणा चपुनः साधारण स्त्रीविषे संभोग करणा १

सत्येति अधिकारके होयां २ गृहस्थादि आश्रमका ना ग्रहण करणा अथवा ब्रह्मचारि गृहस्थादि क्रम कर्के आश्रमका नहिग्रहणकरणा ४ परेति दूसरेके पकाए होए अन्न विषे प्रीति करणी इ समे एह अभिप्रायहै कि जो कोई अन्न पकावे तिसका विना विवेकके भोजन करणा ५ व्रतेति व्रतलोपभी इसविषे अधिकहै इसके समाधानमें तिसजगा दूसरे वार जो व्रतलोपका ग्रहणहै उसमें मिताक्षराकारजी ऐसा कहतेहैं कि किसेने ऐसी प्रतिज्ञा कीती कि ठाकुरजी के दर्शनविना मै भोजन नहिं करांगा एह भी इक व्रत होया सो जद नहिं कीता तद व्रतलोप होया इसके अर्थ दूसरा व्रतलोपहै ६ इनां कर्के छपुंजा ५६ उपपातकांकेभेद दखाएहैं और

सत्यधिकारेऽगृहीताश्रमत्वम् ४ परपाकरतित्वम् ५ व्रतलोपोऽप्यन्यो
धिकस्तत्र मिताक्षरा पुनर्व्रतलोपग्रहणमशिष्टाप्रतिपिद्वेष्वपि श्रीहरिचर
णकमलप्रेक्षणात्प्राक्तांबूलादिकं न भक्षयामात्येवंरूपेपुप्राप्त्यर्थेनतुस्नातक
व्रतप्राप्त्यर्थम् तत्रस्नातकव्रतलोपे प्रायश्चित्तंचाभोजनमिति मनुना लघु
प्रायश्चित्तत्वस्यप्रतिपादितत्वात् ६ एभिः षट्पंचाशद्भेदाउपपातकाना
मितिप्रदर्शितंभवति । प्रायश्चित्तेंदुशेखरे । भार्यात्यागःअसत्प्रतिग्रहोपि
पठितोऽत्र शूलपाणिनाऽयाज्यसंयाज्येत्यनेनवासत्प्रतिग्रहाध्यापने उ
पलक्षणविधया संगृहीते सुतस्यचेत्यत्र चकाराद्भार्यात्यागोपिसंगृहीतः
किञ्च याज्ञवल्क्येन मिथ्याभिशांसी मिथ्याभिशास्तथ प्रायश्चित्तेन शो
धितौततश्चमतांतरे पष्टिभेदात्प्रवर्गंतव्याः ६० अथैषांक्रमेणप्रायश्चित्तानि
तत्रादौगोवधप्रायश्चित्तम् । मनुः । उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोमासंयवान्पिवेत्
कृतवापोवसेद्गोष्ठेचर्मणातेनसंवृतः १ चतुर्थकालमशनीयादक्षारलवणमि
तम् गोमूत्रेणचरेत्स्नानंद्वौमासौनियतेंद्रियः २ दिवानुगच्छेद्वास्तास्तुति
ष्ठनूर्ध्वरजःपिवेत् शुश्रूपित्वानमस्कृत्यरात्रौवीरासनंवसेत् ३ तिष्ठंतीष्वनु
तिष्ठेत्तुव्रजंतीष्वप्यनुव्रजेत् आसीनासुतथासीनोनियतोवीतमत्सरः ४

प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषे भार्यात्याग और असत्प्रतिग्रहभी किहाहै और शूलपाणिजीने अयाज्य संयाज्यविषे उपलक्षणविधिकर्के असत्प्रतिग्रह और असत्कोक्या शूद्रादिकों पडानाभीसंग्रह की ताहै और सुतस्यच इस चकारते भार्यात्यागभी संग्रहकीताहै किञ्चेति याज्ञवल्क्यजीने मिथ्या भिशंसी क्या तैने मेरी वस्तु चुराई है ऐसे झूठ कहने वाला उसकोभीप्रायश्चित्तहै और जिसको किहाहै उसकोभी जन्मांतरके दोषकी संभावना तें प्रायश्चित्त दखायाहै ॥ इस कर्के इनां दोआ कोमिलाकर सठ ६० भेद उपपातकां दे निर्णय होएहैं ॥

७ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

पीछे कहे जो उपपातक अब उनोंका क्रमकके प्रायश्चित्त कथन करतेहैं तिसके पहिले गोवधका प्रायश्चित्तहे इसमें मूलकी व्याख्याकीहि व्याख्याहै श्लोकोंकीनहि तिस विषे मनुजीका बाक्यहै ॥ उपेति इसश्लोकते लेकर अष्टां ८ श्लोकांतक कुलकहै अनेन विधिना इसश्लोकपर्यंत उपपातक एह पद संज्ञाके दस्वाणे वास्तेहै जिसने गो घात कीताहै सो पुरुर शिथिल क्या पतला जो यवांदा काडा तिसको प्रथम एक मास क्या महीनापीवे इसमें गोघ्न शब्दका अर्थ शूलपाणिजैने दखायाहै (प्रण) गोघाती पदसे उपपातकीपदका अर्थ लिद्धहै फेर (उपपातक संयुक्तः) अैसा क्यों किहा(उत्तर)जो यज्ञविषे स्थितगोहै तिसके वधकरणे वाला उपपातकी नहिहै किंतु अनुपातकीहै इसकके उपपातकपद किहाहै एहि स्पष्टकके मूलमें लिखाहै ॥ अैसा गोघाती दाडी और शिरको मुनायके तिसगौके

आतुरामभिशस्तांवाचौरव्याघ्रादिभिर्भयैःपतितांपंकलग्नांवासर्वापायैर्विमो
चयेत् ५ उष्णेवर्षतिशीतेवामास्तेवातिवाभृशम् नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगोरकृ
त्वातुशक्तिः ६ आत्मनोयदिवान्येपांगृहेक्षेत्रथवाखलं भक्षयंतीनकथयेत्पि
वंतंचैववत्सकम् ७ अनेनविधिनायस्तुगोघ्नोगामनुगच्छति सगोहत्याकृतं
पापंत्रिभिर्मासैर्व्यपोहति ८ उपेत्यष्टभिःकुलकम् । अनेनविधिनायस्त्वितिया
वत् । गोघ्नोगोघातीशिथिलयवागूरूपेण प्रथममासं यवान्पिबेत् उपपातके
तिसंज्ञाप्रदर्शनार्थम् उपपातकसंयुक्तोगोघ्नानतुयागादिविहितगोवधकर्ता
पीतिशूलपाणिः । कृतवापःसशिखंमुंडितशिराःलूनश्मश्रुःतेनहतगोचर्मणा
छादितदेहोमासत्रयंयावद्दोषेवसेत् १ किंच । नियतंद्रियः सन्गोमूत्रेणस्नान
माचरेत् अक्षारलवणंकृत्रिमलवणवर्जितं हविष्यान्नंचतुर्थकालं एकाहंभुक्
त्वाद्वितीयेह्निसायंद्वितीयतृतीयमासंयावदश्रीयात् २ दिवाप्रातस्तागाअ
नुगच्छेत् खुरप्रहारादूर्ध्वमुत्थितंरजस्तिष्ठन्सन्नास्वादयेत् शुश्रूपित्वाकंडूय
नादिना तागाःपरिचर्य्यप्रणम्यच रात्रौभित्त्यादिकमनुवेष्ट्यउपविष्ट आसी
त् अह्नितिष्ठेद्वात्रावासीतेतिस्मृत्यंतरात् । उत्थितस्तुदिवातिष्ठेदुपविष्टस्त
थानिशि एतद्वीरासनंनामसर्वकल्मषनाशनमिति १

चर्मकों ऊपर लयके त्रय ३ महीनें तकगौवांकीशालाविषे निवासकरे १ किंचेति इन्द्रियांकों रोकके स्थितरहे औरगौके मूत्रकके स्नानकरे और कृत्रिम लूणतें रहित हविष्यान्नकों चौधे पहर एकदिन भक्षणकरे और दूसरे दिन संध्याकाल विषे भक्षणकरे इसीतया दूसरा तीसरा महीना व्यतीत करे २ दिवेति दिने प्रातः काल विषे गौवांको चारदा होया पीछे जावे और खुरां कके उठी जो धुड़ तिमकों स्थित होके स्वाद लेवे और गौवांके खुरका पूजन करे और नमस्कारकरे और रात्रि विषे गौवांकी शालाविषे भित्तको चढाकर स्थित होवे ॥ दिनत्रिषे खडारहे और रात्रिविषे बैठ कर निवास करे एह और स्मृतिविषे किहाहै ॥ उत्थितइति उठकर दिने स्थित होवे रात्रिविषे बैठ जावे इसका नाम वीरासनहै जो संपूर्ण पापों के नाश करणेवालाहै १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ९

तथेति गौवांके उठयां होयां पीछे उठे और जदवनविषे फिरे तां पीछे पीछे वनविषेफिरे तिनां गौवांके बैठयां होयां पीछेआप बैठे और इन्द्रियोंको जितकके स्थित होवे इसमेभी छलते रहते और क्रोधते रहित होया होया ४ किंचेति और जो रोग कर्के युक्त गौ है अथवा चौर कर्के और व्याघ्रादिभयकर्के युक्त है और जो डिगोहै और जो चिकड विषे खुब्बी है तिनां दुःखां तेंगौवांकी जैसे समर्थाहोवे तैसें हि उपायकर्के रक्षा करे ५ और गौवांकीसेवाका प्रकार कहतेहैं तथेति तिस प्रकार सूर्य के ततहोयां होयां और वर्षा विषे और शीतविषे और अतिशयकर्के चलती जो वायुहै तिस विषे प्रथम गौवांकी रक्षा कर्के पीछे अपनी रक्षा करे ६ तैसेंहि अप्सो तें होरणांके घरविषे वा क्षेत्रविषे वा खलवाडे विषे क्षेत्र आदिकों भक्षणकरतीकों किसे ताई

तथा उत्थितासुगोषुपश्चादुत्तिष्ठेत् वनादौपरिभ्रमंतीषुपंश्चात्परिभ्रमेत् तासूपविष्टासूपविशेत् नियतो जितेन्द्रियः वीतमत्सरोविगतक्रोधः ४ किंच आतुरां व्याधितां वा चौरव्याघ्रादिभयहेतुभिरभिशस्तामाक्रांतां पतितां कर्दम मग्नां वा यथाशक्तिसर्वोपायैर्विमोचयेत् ५ तथा उष्णे सूर्ये तपति मेघे च वर्षति वाशीते जाते सति वाऽत्यर्थं वा यौ वा तिसति यथाशक्ति गोरक्षामकृत्वा त्मरक्षान् कुर्यात् ६ तथा आत्मनोऽन्येषां वा गृहे क्षेत्रे खले सस्यादिभक्षयन्तान् कथयेत् क्षीरं पिवंतं वत्सकंच अनेन विधिना पूर्वोक्तप्रकारेण यो गोघ्नो गाः परि चरति स गोहत्याकृतं पापं त्रिभिर्मार्गैर्व्यपोहति अपनुदति ७।८ ब्रह्मांतरद्वयमाह स एव वृषभैकादशकागाश्च दद्यात्सुचरितव्रतः अविद्यमाने सर्वस्वं वेदविद्भयो निवेदयेत् ९ वृषभैकादशो यासां तागाः सुचरितव्रतः सम्यक्कृत पूर्वमासोक्तप्रायश्चित्तोदयादिति द्वितीयम्

न कहे और दुग्ध पींदा जो बच्छाहै तांभी किसेको न कहे और न आप हटाए ७ इस विधि कर्के पिछले प्रकार कर्के गौवांकी सेवा करता होया सो बुरूप गोहत्याकरणसें प्राप्त होया जो पाप तिस को तीन ३ महीने कर्के दूर कर्ताहै ८ एह गोघ्न इत्यादि कर्के कहे होए श्लोकांकाहीअथ कीताहै अब मनुजी और दो व्रत कहतेहैं वृषेति सो उपपातकी वृषहै यारवां ११ जिनां विषे ऐसीयां दश १० गौवां को दान करे कैसा है उपपातकी भलीप्रकार प्रथमकीताहै पूर्वमासोक्त प्रायश्चित्त जिसनै एह दूसरा व्रत किहाहै ॥ १॥

१० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब होर व्रत कहते हैं तावेति तितने धन के ना होयां होयां जितना अपने पास धन है सो सं पूर्ण वेद के जानणे वाले जो ब्राह्मण हैं तिनके ताई दे देवे इस विषे भी पूर्वमासोक्त व्रतको पहिले कर लेवे असा जानना एह तीसरा व्रत किहा है १ एह जो त्रय व्रत कहें हैं सो याज्ञवल्क्य कर्के कहे होए जो व्रत मास प्राजापत्य १ और मास पंचगव्याशन २ और वृष है यारवां जिनां विषे ऐसीयां दस्तां गौवांका दान और साथ त्रिरात्रोपवास रूप व्रत त्रय १ इनां कर्के बराबर है एह मिताक्षराकार का वाक्य है जिसका एह व्याख्यान है तिसको अब कथन कर्ते हैं पंचेति जो पुरुष गोइत्या कर लेवाला है सो एक महीना इंद्रियांको राकके स्थित होवे

तावति धनेऽविद्यमाने वेदविज्ञः सर्वस्वं दद्यादिति तृतीयम् अत्रापि पूर्वमासोक्त व्रतानुवृत्तिः ३ एतच्च व्रतत्रितयं याज्ञवल्क्यो यमास प्राजापत्यमास पंचगव्याशनं ऋषभैकादशगोदानयुक्तत्रिरात्रोपवास रूप व्रतत्रितयेन समानमिति मिताक्षरा तद्यथा पंचगव्यं पिवेद्गोघ्नो मासमासीत संयतः गोष्ठेशयो गोनुगामी गोप्रदानेन शुद्ध्यति १ कृच्छ्रं चैवाति कृच्छ्रं चरेद्वापि समाहितः दद्यात् त्रिरात्रं चोपोष्य ऋषभैकादशास्तुगाः २ गां हंतीति गोघ्नः असौ समाहित आसीत किं कुर्वन् पंचतानि गव्यानि गोमूत्र गोमय क्षीर दाधिघृतानि यथाविधि मिलितानि मिश्रितानि पिवन् आहारांतरपरित्यागेन भोजनकार्ये तस्य विधानात् तथा गोष्ठेशयः प्राप्तशयनानुवादेन गोष्ठविधानेन दिने शयननिषेधाद्वात्रो गोघ्नो गोशालायां शयानः गोनुगामी गवानुगमनव्रती व्रतेणिनिः अत्रयासांगवांस त्रिधौ गोष्ठेशेते वनमनुगच्छतीः प्रातस्तप्ता एवानुगच्छेत् अनुगमनवचनात्

और गो मूत्र और गोमय क्या गोआ और दुग्ध और दधि और घृत एह जो पंचगव्य है इसका विधिके साथ रलाकर पीवे और कुछ ना भक्षण करे इसतरां एक महीना स्थित रहे जद और तिसी प्रकार गोष्ठेशयः इस वाक्य कर्के एह अभिप्राय है कि दिनविषे शयन का निषेध होणेत गत्रिको गोशाला विषे शयन करे और गोनुगामी क्या गोआंके पीछे वन विषे जावे व्रत कर्के युक्त होया इसमे भी असा जानना कि जिनां गौवांके समीप विषे शयन करे सो गोआं वन विषे जाण तां प्रातः काल विषे पीछे जावे जो किहा है अनुगच्छेत् इस वाक्य कर्के

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ११

असी प्रसीति होइहै कि गौआं आपणी इच्छा कर्के वनकों जाण तां पीछे जावे जद गौआं स्थित होण तां आपवी स्थित होवें क्योंकि तिसमें अनुगमनका संभव नहिहै १ और जद सायं काल विषे गौआं शयन करण वाले स्थान कों प्राप्त होण तां आपभी प्राप्त होवे और जेकर पीछे गौशाला विषे प्राप्त होणकी सामर्थ्य न होवे तां बाहर स्थित होवे दरवाजे को बंदकर्के एह भी इसमें अभिप्राय जानणा ऐसैं हो महोने पर्यन्त करे और महोने के पीछे एक गोदानकरे ऐसैं अनुष्ठान करणे कर्के गौ हत्या पापतें शुद्धिको प्राप्त होताहै इह इक्क व्रत किहाहै यद्वा एक महीना गौशाला विषे शयनकों करता होया और गौआं के पीछे वनविषे फिरता

यदातागच्छतितदाऽनुगच्छेत् यदात्वनुतिष्ठत्यासतेवा तदास्वयमपि तिष्ठेदासीतवातत्रानुगमनस्याशक्यत्वादित्यर्थः १ तस्मादिवयदासायंगोष्ठेप्रविशेयुस्तदा ताभिः सह स्वयमपितदनुप्रविशेदित्यपि ज्ञायते मासांते गोप्रदानेन एकांगादत्वाऽनुष्ठानेन गोहत्यायाः शुद्ध्यतीत्येकं व्रतम् मासंगोष्ठेशयोगोऽनुगामीति पदत्रयमनुवर्त्य यद्वा मासंगोष्ठेशयोगोऽनुगामीसन् कृच्छ्रप्राजापत्यं निरंतरं समाहितमनो वृत्तिश्चरेदित्यपरम् * जावालैनापि मासंप्राजापत्यस्य पृथक् प्रायश्चित्तत्वमुक्तम् यथा प्राजापत्यं चरेन्मासंगोहं ताचेदकामतः गोहितोऽनुगामी स्याद्गोप्रदानेन शुद्ध्यतीद्वितीयम् एवमेवातिकृच्छ्रं चरेदिति तृतीयम् अथवा त्रिरात्रमुपोष्य

होया और मनकीयां वासनाकों जित कर्के कृच्छ्र नाम जो प्राजापत्य व्रत है तिसकों निरंतरकरे एह और प्रायश्चित्त किहाहै मतांतरदिखातेहैं जावालि ऋषिनें भी एक महीना प्राजापत्यकों करे एह पृथक् प्रायश्चित्त किहाहै तिसका वचन दिखाईदाहै यथेति एक महीना प्राजापत्यकों करे जेकर इच्छातें विना गौको मारे और गौआं की सेवाकों करदा होया और गौआं के अनुसार पीछे वन विषे जांदा होया नित्य काल ऐसैं ही स्थित होकर गौका दानकरे तां गौ हत्या पापतें शुद्धिकों प्राप्त होताहै एहदूसरा व्रत किहाहै और इसी प्रकार अतिकृच्छ्र व्रतकों करे एह तीसरा व्रत है अथवा त्रय दिनरात्र उपवास व्रतकों करके

१२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

वृषहे यागवां जिनाविषेऐसीयां गोश्रांको देवे अथात् दश गोश्रां एक बैल माथदान करे एह चौथा व्रत किहाहै ४ इसविषे जो चौथा व्रत किहाहै सो मनु जीके वाक्य कर्के किहा जो पीछे सर्वस्वदान अथात् संपूर्ण धनकादंष्ट्रा तिसके तुल्य है तिसका विषय दिखातेहैं अकामेति जो जातिमात्र ब्राह्मण है संध्यावन्दनादि कर्म तौ रहित तिसकी जो सौशील्यादि गुणोते रहित गो तिसके इच्छाते विना वध विषे एह प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै और जो ब्राह्मण संध्यावन्दनादिकर्मों कर्के युक्त है तिसकी जो गुणों कर्के युक्त गो तिसके वध विषे द्विगुण क्या दूषा प्रायश्चित्त किहाहै और क्षत्रिय संवन्धी जो गुणों कर्के युक्त गो है तिसके वध विषे पाप के दूरकरणवास्ते महीना पर्यंत पंचगव्यकों भक्षण करे इस मनुजीके वाक्य कर्के किहा होअ्रा जो द्वितीय प्रायश्चित्त तिसके समहै और वैश्यसंबंधी जो गुणों कर्के युक्त गो है तिसके मारणे विषे एक महीना अतिरुच्छ्र व्रतके करणे से शुद्ध होताहै

वृषभएकादशोयासांतागादद्यादितिचतुर्थम् अत्रचतुर्थमानवीयसर्वस्व
दानात्मकतुल्यम् अकामकृतेज्ञातिमात्रब्राह्मणस्वामिकगोमात्रवधेद्रष्टव्यं
विशिष्टस्वामिकायाविशिष्टगुणवत्याश्ववधेद्विगुणंकल्प्यम् क्षत्रियसंव
धिन्यास्तादृशायागोर्वधेमासपंचगव्याशित्वरूपं मानवीयद्वितीयसमम्
वैश्यसंवधिन्यास्तुतादृग्वधेव्यापादने मासातिकृच्छ्रंकुर्यात् शूद्रस्वामिक
गोहत्यायांमासप्राजापत्यरूपंमानवीयप्रथमसमम् अत्रपूर्वपूर्वतउत्तरोत्त
रस्यलघीयस्त्वंप्रत्याम्नायविधया विज्ञानेश्वरेणोक्तं ततएवावधार्यम् ब्रा
ह्मणसंवन्धिद्रव्यस्यगुरुत्वम् देवब्राह्मणराज्ञांतुविज्ञेयंद्रव्यमुत्तममिति
नारदोक्तवचनाद्वोध्यम् एतदेवव्रतचतुष्टयम् साक्षात्कर्त्रनुग्राहकप्रयोज
कानुमंतृपुगुरुलघुभावतारतम्यापेक्षयापूर्वविषयेप्रयोजनीयम्

और शूद्रकी गौके मारणे विषे एकमहीना प्राजापत्य व्रत को करे एह मनुजीने किहा जो प्रथम व्रत तिसके तुल्यहै इस विषे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांको प्रायश्चित्त क्रम कर्के थोडा थोडा किहाहै एह निर्णय पीछे भी आयाहै फेर प्रसंगते किहा है प्रत्याम्नाय क्या परंपरासंप्रदायविधि कर्के अथवा विज्ञानेश्वरजीने कहा है इसकाविशेष उसी जगते धारणे योग्यहै इसमे बीज एह है कि ब्राह्मण संवंधि वस्तु सवते श्रेष्ठ कहीहै सो नारदजीके वाक्य कर्के जानणे योग्य है तिसवचनकोदिखातेहैं देवेति क्या देवता ब्राह्मण राजा एनांका द्रव्य जो है सो उत्तम किहाहै परंतु एह जो गोवधके चार व्रतहं सो जो साक्षात् वधकरणेवालाहै और जो वधकर्के आया पुरुष तिसका रक्षाकरणवाला और जो प्रेरणाकरणवाला और जो वधकरणे विषे युक्तहै तिसको प्रेरणेवा ला इनांको गुरुलघुभावकर्के प्रायश्चित्त देणे योग्यहै पहिले को संपूर्ण दूसरे को पाद तीसरेको आधा चौथेको एकपाद इस क्रम कर्के जानणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १३

इसविषे धर्मराज जपणे योग्य जो गोमती विद्या तिसको कहता है गोमतीमिति जोमें धर्मराज गोमती विद्याको कहताहां तिसको मेरेतें श्रवण करो हेवाहणो मनको एकाग्र कर्के १ गौआं नित्य सुरभिगां हैं अर्थात् यशवालियां हैं और गुग्गुल धूपकी गंधवालियां हैं अर्थात् तिनके दुग्धादिसें देवताकें प्रसन्न करणे वाला गुग्गुलगन्धके तुल्य गंधआउता है और जीवांकी प्रतिष्ठारूप हैं क्याजिसके घर गौआं होण उसकी अभ्यागतादिके सत्कारसे लोक प्रतिष्ठा कर तेहें इसीकर्के स्वस्त्ययनरूप क्या स्वस्त्ययनसे प्रारब्धकार्योंकीयां सहायकहैं २ और देवतयांका उत्तमहवि अन्नरूपभी गौआंदि हयण और सबजीवां को पवित्रकरण वालीयां और रक्षाकरण वालीयां और दुग्धको देणवालीयां और वस्तुओंके पुचाणवालिआं हैं ३ और मंत्रांके पवि

अत्रजप्यांगोमतीविद्यायमत्राह गोमतीकीर्तयिष्यामिसर्वपापप्रणाशिनी तांतुमेवदतोविप्राः शृणुध्वमुसमाहिताः १ गावःसुरभयो नित्यंगावोगुग्गुल गंधिकाः गावःप्रतिष्ठाभूतानां गावःस्वस्त्ययनं महत् २ अन्नमेवपरंगावोदेवानां हविरुत्तमम् पावनं सर्वभूतानां रक्षति च बहंति च ३ हविषामंत्रपूतेन तर्पयंत्यमरान् दिवि ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमप्रयोजिकाः ४ सर्वेपामेव भूतानां गावःशरणमुत्तमम् गावःपवित्रं परमं गावो मंगलमुत्तमम् ५ गावःस्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम इति ६ अपरा कर्के बहु कर्तृके तुह नने संवर्त्तापस्तंवी विशेषमाहुः

व जो हवि तिसकर्के देवतयांकी स्वर्ग विषे तृप्तिकरण वालीयां और ऋषियां को अग्निहोत्र विषे होमकी प्रवृत्ति करण वालीयां हैं ४ और संपूर्ण जीवांकी शरण क्या रक्षारूपहैं और परम पवित्र हयण और मंगलरूप हयण अर्थात् दर्शनसेभी पुण्यजनकहैं ५ और स्वर्गकी पीढी रूप हयण सो ऐसीयां गौआं धन्य हयण और सनातनहैं तिनां गौआं ताई नमस्कार होवे जो शोभा कर्के युक्तहैं और सुरभीकीयां कन्याहैं तिनां ताई नमस्कार होवे और जो ब्रह्माकीयां कन्यासर्व या पवित्रहैं तिनां ताई नमस्कार होवे नमस्कार होवे एह अधिक आदरविषे पुनराक्तिहै ६ अपरा कर्के विषे जो किहाहै बहुतयां कर्के गौके मृत होयां होयां तिसविषे संवर्त्त और आपस्तंबकपि विशेष कहतेहैं

१४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

एकेति जिसतरां कर्के गोहत्या होई है जिसके अनुसार जो व्रत कहा है जेकर बहुत पुरुष एक गौ को मारण तां तिस व्रत के एक एक पाद को सब भिन्न २ करण १ परन्तु ऐसा भी विचार है कि चार व्रतों विचों जिसको जो व्रत व्यवस्था से आवे तिसीका पाद जानना एकेति एह जो पद है सो और के दखाने मात्र है इस कारण ते बहुतया पुरुषों कर्के एक गौ वा दो गौआं वा बहुत गौआं मृत होण तां इक इक पुरुष ने त्रय त्रय पाद अथवा दो दो पाद गोहत्या पाप के दूर करणे वास्ते व्रत करणे योग्य है १ अथ इसीका प्रतिद्वंद्वि अर्थ कहते हैं एकेनेति जद इक पुरुष से बंधनादि कर्के अथवा रोकणे कर्के बहुत गौआं मृत होण तिस विषे संवत्सर अपि

एकाचेद्वहुभिः काचिद्वैवाद्यापादिता कचित् पादं पादं तु हत्यायाश्च रेयुस्ते पृथक् पृथगिति १ यादृग्विध गोहत्यायां यद्व्रतमुपदिष्टं प्रत्येकं तत्पादं पादं कुर्युः एकाचेदित्युपलक्षणम् अतो बहुभिर्द्वयोर्वहूनां च व्यापादने प्रातिपुरुषं पादद्वयं पादो न वा कल्पनीयम् यदा तु एकेनैव रोधनादिव्यापारेण बहवो गावो व्यापादितास्तत्र संवर्तापस्तं वै विशेषमाह तुः व्यापन्नानां वहूनां तुरोधने बंधने पि वा भिषङ्मिथ्योपचारे च द्विगुणं गोव्रतं चरेत् १ बहुष्वपि व्यापन्नासु न प्रतिनिमित्त नैमित्तकानुष्ठानं नापि तत्रेण किंतु वचनाद् द्विगुणमेवेत्यर्थः यत्तु पराशरवचनम् ग्रामघातेशरौघेण वेश्मभंगनिपातने अतिवृष्टिहतानां च प्रायश्चित्तं न विद्यते १

और आपस्तंब अपि विशेष कहते हैं व्यापन्नानामिति रोकणे कर्के वन्नणे कर्के और औषधिआं के मिथ्या प्रचार कर्के क्या देणी थी होर औषधी और होर दितो जावे अथवा और विधिसे देणी थी और होर विधिसे दितो गइ तिस कर्के जद बहुत गौआं मृत होण तो दूणा गोव्रत करे १ इसमें ऐसा विचार है कि बहुतियां गौयां के मारयां होयां एक एक के निमित्त ते बहुतहि व्रत करणे चाहिए अथवा सब के निमित्त एकहि व्रत करणा चाहिए एह दोनो पक्ष नहि स्वीकार करणे किंतु दूणा व्रत करणे योग्य है क्योंकि वचन के बलसे एह विचार दूसरे प्रकरणा विषे भी आचुका है १ पहलें तो विशय कहते हैं यत्त्वाते जो पराशरजीका वचन है ग्राम के नष्ट होयां २ और वाण के समूह कर्के और घात डिंगयां होयां जकर और बडो वपां दे होयां बहुत गौआं मृत होण तां तिस विषे प्रायश्चित्त नहि करणा १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १५

कूपइति और किसे धर्मके अर्थ कर्के बनाए होए खूये विषे और गृहके दाह विषे और ग्रामके दाह विषे और किसेस्थानके दाहके होयां २ गौ मृत होवे तां प्रायश्चित्त नहि करणा २ एह वाक्य जिस पशुको बन्धन नहि है तिसविषे जानने योग्य है जिसको बंधन है तिसके अर्थ आपस्तंबजीने भिन्नकर्के किहा है ॥ कांतारैष्विति कांतार क्या बनादि और गृह क्या घर तिनके दाहविषे और खलवाडेके दाहविषे जेकर गौ मृत होवे तां एकपाद व्रतकरणसे शुद्ध होजाता है १ और विशेषवास्ते बृहस्पति का वचन है गर्भाति गर्भवाली और कपिला और दुग्धदेणे वाली और होमधेनु और सुंदर स्वभाव वाली गौ इनांको मोहआदि कर्के मारे तां दूणा व्रत करे १ इसमें भी विशेष कहते हैं यदीति और जेकर दंडके मारणे कर्के गौ जीवती रहे और

कूपेखातेचधर्मार्थगृहदाहेचयामृताः ग्रामदाहेतथागारेप्रायश्चित्तंनवि
द्यतइति २ इदंतुबंधनरहितेपशौबोध्यम् इतरथातुआपस्तंबेनोक्तम् कान्ता
रेष्वथसर्वेषुगृहदाहेखलेषुच यदितत्रविपत्तिःस्यात्पादएकोविधीयतइति १
बृहस्पतिः गर्भिणीकपिलांदोग्ध्रीहोमधेनुंचसुव्रताम् मोहादिनाघातयित्वा
द्विगुणंगोव्रतंचरेत् १ यदिलगुडादिघातेनगौर्जीवतिगर्भमात्रघातोभवति
तदाविशेषमाहयमः पादमापन्नमात्रेतुद्वौपादौगात्रसंमिते पादोनंव्रतमाचष्टेह
त्वागर्भमचेतनम् १ चेतनगर्भघातेतु कृत्स्नमेवप्रायश्चित्तमितिकेचित् पराशरस्तु
निष्पन्नसर्वगात्रस्तुदृश्यतेवासचेतनः श्रंगप्रत्यंगसंपूर्णोद्विगुणंगोव्रतंचरेत् १
पादंगरोमवपनंद्विपादेशमश्रुणोपिच त्रिपादेतुशिखावर्जसशिखंतुनिपातने २

गर्भ छणजावे तिसविषे धर्मराज कहता है पादमिति श्रंगांतें रहित गर्भके पातविषे एकपाद व्रतकरे और श्रंगउत्पत्तिके होयां २ गर्भके पातविषे दोपाद व्रतकरे और अचेतन गर्भके पातविषे तीनपाद व्रतकरे १ और सचेतन गर्भके पातविषे संपूर्ण प्रायश्चित्त करे एह कैकहते हैं पराशरजी और कहते हैं निष्पन्नेति जेकरगर्भ निष्पन्नगात्रहोवे क्यासब श्रंगां वाला होवे और सचेतन प्रतीत होवे क्याजिसबेले बाहरहोवे उसबेले थोडा चिर जीवित रहकर मृतहोवे और श्रंगोकेसाथ प्रत्यंगश्रंगु ल्यादिभी स्पष्टकर्के होण ऐसी गौ के हतहोयां २ गौबंधका प्रायश्चित्त करे १ इसमें मुंडनकी विधि कहते हैं पादइति एकपाद व्रतविषे श्रंगां उप्पर जो रोम तिनांका मुण्डन करावे और दोपाद व्रतमे श्मश्रु क्या दाडीकाभासाथ मुंडन करावे और त्रिपाद व्रत विषे शिखातें विना मुण्डन करावे और संपूर्ण प्रायश्चित्त विषे सहित शिखाके मुण्डन करावे २

१६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसमें दानविशेष भी कहते हैं पाद इति और पाद व्रत विषे दो वस्त्र देवे और दो पाद व्रत विषे कांस्यपात्र देवे और त्रिपादव्रतविषे एक गौ और वृषदेवे और संपूर्ण व्रतविषे दो गौ आंदा न करे तदशुद्ध होता है १ अब वृहस्पतिजी का वचन है नेकर पुरुष बहुत वृद्ध गौ और बहुबलिस्ती और बहुत छोटी और रोगवाली ऐसी आंगौयां को मारे तां पूर्व विधिकके अर्द्ध व्रत को करे १ इसका तात्पर्य कहते हैं नीति जितना प्रायश्चित्त नीरोग गौ का है एह प्रायश्चित्त साक्षात् गौवधके विषे कहा है साक्षात् गौवधके प्रकार आपस्तंब ऋषिने दखाए हयण पाषाणैरिति पत्थर कर्के और दंड कर्के और शस्त्र कर्के वा और किसे साधन कर्के वा बलते मोहते गौ को जो पुरुष मारते हयण तिनां को

पादेवस्त्रयुगंचैव द्विपादेकांस्यभाजनम् त्रिपादेगोवृषदघाच्चतुर्थेगोद्वयं स्मृतम्
३ वृहस्पतिः अतिवृद्धामतिकृशामतिबालांचरोगिणीम् हत्वा पूर्वविधानेन चरेद
र्द्धव्रतं नरः नीरोगादिवधेयत् प्रोक्तं तस्यार्द्धम् एतत् प्रायश्चित्तं साक्षाद्गौवधविषयम्
साक्षाद्गौवधप्रकारास्त्वापस्तम्बेन दर्शिताः पाषाणैर्लघुर्द्वैर्वापिशस्त्रेणान्येन वा
बलात् निपातयंतियेमोहात्तेषां सर्वविधीयते १ वृहत्प्रचेतसाप्यत्र विशेष उक्तः
एकवर्षे हते वत्से कृच्छ्रपादो विधीयते अबुद्धिपूर्वपुंसः स्याद् द्विपादस्तु द्विहायने
त्रिहायने त्रिपादः स्यात् प्राजापत्यमतः परमिति १ वैध्यादिद्वेपेण कामकृतगो
वधे निमित्तविशेषे प्रायश्चित्तमाह वृहत्पराशरः काष्ठलोष्टकपापाणैः शस्त्रे
णैवाद्धता बलात् व्यापादयतियोगांतु तस्य शुद्धिं विनिर्दिशेत् १ चरेत्सांतप
नं काष्ठे प्राजापत्यं तु लोष्टके तप्तकृच्छ्रं तु पापाणेशस्त्रेणैवातिकृच्छ्रकमिति २

संपूर्ण व्रत किहा है १ इस विषे वृहत्प्रचेतस ऋषिने विशेष किहा है एकेति न जान कर्के एक वर्ष के वच्छे को मृत होयां २ कृच्छ्र व्रत के पाद को करे और दो वर्ष के वच्छे के मृत होयां २ दो पाद व्रत करे और त्रय वर्ष के वच्छे के मृत होयां २ त्रय पाद व्रत करे इससे उपरंत होवे तां प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होता है १ और बैर कर्के डच्छा पूर्वक गौ के वध विषे प्रायश्चित्त को वृहत्पराशरजी कहते हैं काष्ठेति काष्ठ कर्के मृत होवे तां सांतपन व्रत करे लोष्ट कर्के मृत होवे तां प्राजापत्य व्रत करे पत्थर कर्के मृत होवे तां तप्तकृच्छ्र व्रत को करे शस्त्र कर्के मृत होवे तां अति कृच्छ्र व्रत को करे तां शुद्ध होता है २

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १७

मुष्टीति और मुक्तीके मारणे कर्के और किले कर्के और शृंगादिके पुष्टणे कर्के और दंडके मारण कर्के जिस पुरुषसे गौ मृत होवे तिसको गोवध कहे और तिसकोभी अतिरुच्छका निर्दे श है ॥ ३ ॥ इसीकाविशेष कहतेहैं हलइति हल विषे और गड्डे विषे जो पुरुष निवल वेलको जोड ताहे सो पुरुष तिसप्रयवायके होयां होयां गोवध पापको प्राप्त होता है तिसकोनी पूर्वोक्तप्रायश्चित्त है ॥ ४ ॥ इसमें और विशेषवास्ते नारदजोका वचन है दमनइति खस्सी करणे कर्के और किसे पा सोंकरवाणे कर्के और रोकणे कर्के और बलवालाआं गौयांके साथ निवल गौयां के जुटणे कर्के स्तंभके साथ संगल पाणे कर्के और फाही कर्के गौके मृत होयां होयां त्रयपाद व्रतको कर्के शुद्ध होता है १ अतिदाहेति अतिशयकर्के आग्निके दाह कर्के और बहुत वाहणे कर्के और नासि का विषे रस्सी पाणे कर्के और नदीपर्वतविषे रोकणे कर्के गौ मृत होवे तां त्रिपाद व्रतकरे २

मुष्टिघातेन कोलिन तथा शृंगादि मोटनैः लघुडादिप्रहारेण गोवधस्तस्य निर्दिशे त् ३ तस्याप्यतिरुच्छकं प्रायश्चित्तं निर्दिशेदित्यर्थः हले च शकटे चैव दुर्वलयोभि योजयेत् प्रत्यवाये समुत्पन्ने तत्र प्राप्नोति गोवधम् ४ अत्रापि पूर्वोक्तमेव प्राय श्रितम् विशेषमाह नारदः दमने दामने चैव रोधे संघातयोजने स्तंभशृङ्खलपा शैश्च मृते पादोनमाचरेत् १ बलवतीभिः सह निर्वलाया योजनं संघातयोजनम् अतिदाहातिवाहाभ्यां नासिकाच्छेदने तथा नदीपर्वतसंरोधे मृते पादोनमाचरेत् २ दीर्घरज्वाकृते चैव प्रग्रहे युग्मयोजिते लग्नयुग्ममृते चैव द्विपादं तत्र निर्दिशेत् ॥ ३

इसमे भी विशेष कहतेहैं दीर्घेति बड़ीरस्सी कर्के गौके ग्रहण विषे इसमे एह अभिप्राय है कि लम्बी रस्सी कर्के किसे जगा घासके अर्थ गौ बड़ी और पीछे व्याघ्रादिने मारी तद एह अद्धा व्रत है और एक वाहको दूसरेके साथ वाहणे कर्के सो वाह इसजगा दो प्रकारका है एक पंजा की पाणे कर्के और दूसरा लादे कर्के दोनों विषे एह विचार जानना कि इसमें जुंगलेका लगा लगणे पिछे कीडे आदिक रोगकी मृत्यु विषे एह है और किसे जगा लग्नयुग्ममृते ऐसा भी पा ठ है तिसजगा दोरस्से दी गंड कर्के अथवा दो गंडी कर्के मृत होवे ऐसा अर्थ है और जुंगले के जुटणे कर्के मृत्यु विषे दोपाद व्रत करे १

१८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

घंटेति और घंटा भूषण के दोष कर्के गौकी मृत्यु होवे तां अर्द्ध व्रतकोकरे क्योंकि सो घंटा भूषण वास्ते पायाहै इस कारणतें अर्द्ध व्रत किहाहै ४ अव पराशरजीका वचन कुछ पूर्वोक्तसे विलक्षण दखाईंदाहै अतीति बहुत दाह विषे और बहुत बाहणे विषे और नासिकाके छिद्र करणे विषे और नदी और पर्वत के उपपर रोकण कर्के गौकी मृत्यु होवे तां प्रायश्चित्त कों करे अर्थात् उपकारके अर्थभी एह अतिदाहादि होण तथापि प्रायश्चित्त करणा चाहिए एहअभि प्रायहै परंतु इसमें भी पूरा प्रायश्चित्त करणा चाहिए ॥ १ ॥ इसकाविवेक पराशरजी कहवेंहैं अतीति बहुत अग्निके दाह कर्के मृत्यु होवेतां एक पाद व्रत करे और बहुत बाहणे विषे मृत्यु होवे तां दोपाद व्रत करे और नासिका के छिद्र करणे विषे त्रयपाद व्रत करे इसजगा नासिका पद कर्के नासिकाका छेदन जानणा अंतपदलोपी समास होणेतें ॥ और नदी और पर्वत विषे डिगे तां

घंटाभरणदोषेणविपत्तिर्यत्रगोर्भवेत् गोघ्नोर्द्धेतुचरेत्तत्रभूषणार्थहितस्मृतम् ४
पराशरःअतिदाहेतिवाहेचनासिकाभेदनेतथा नदीपर्वतसंचारेप्रायश्चित्तंवि
निर्दिशेत् १ अतिदाहेचरेत्पादद्वौपादौबंधनेचरेत् नासिकापादहीनस्याच्चरे
त्सर्वनिपातने २ काष्ठलोष्टाश्मभिर्गावःशस्त्रैर्वानिहतायदि प्रायश्चित्तंकथं
त्रशास्त्रेणात्रविधीयते ३ काष्ठेसांतपनंकुर्यात्प्राजापत्यंतुलोष्टके तप्तकृच्छ्रं
तुपापाणेशस्त्रेवाप्यतिकृच्छ्रकम् ४ प्रत्याम्नायोपितेनैवदार्शितः पंचसांत
पनेगावःप्राजापत्येतथात्रयः तप्तकृच्छ्रेभवंत्यष्टावतिकृच्छ्रेत्रयोदश ५ ॥

संपूर्ण व्रत करे इसमें ऐसा जानणा कि आप धक्का देकर गौको गिड़ावें तद एह प्रायश्चित्त है ॥ २ ॥ काष्ठेति और काष्ठ और मृत्तिका की जिल और पत्थर और शस्त्र इनां कर्के जद गौकी मृत होवे तां शास्त्रकी विधि कर्के प्रायश्चित्त कों करे तद शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त निमित्त विषे कहतेहैं काष्ठेति काष्ठ कर्के गौ मृत होवे तां सांतपन व्रत करे और लोष्ट कर्के मृत होवे तां प्राजापत्य करे और पत्थर कर्के मृत्युहोवेतां तप्त कृच्छ्र व्रतकों करे और शस्त्र कर्के मृत होवे तां अति कृच्छ्रव्रतकों करे ॥ ४ ॥ इसी विषे पराशरजीने प्रत्याम्नाय दिखायाहै प्रत्याम्नाय नाम उसकाहै कि उक्त विधिके करणे को असमर्थ देखकर तिसके तुल्य दूसरी विधि करणी जिस पुरुषसे सांतपन व्रत नहोवे तां पञ्च गौआं दान करे और प्राजापत्य विषे त्रय गौआं दान करे और तप्त कृच्छ्र विषे अष्ट ८ गौआं और अतिकृच्छ्र विषे तेरा १३ गौआं देवे ॥ ५ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १९

अव और विशेष कहते हैं प्रमेति प्राणधारी और जीवांकी हिंसा विषे जिसका उह प्राणी होवे तिसके ताई मारेहोए जीवके तुल्य वस्तुदेवे अथवा तिसका मुछ देवे और पिच्छे प्रायश्चित्त करे अथवा तिसके तुल्यदानकरे तद शुद्ध होता है ॥ ६ ॥ अस्थीति और गौआं की हड्डीको भस्मे वा पुछ को कटे वा कणं वा शृंगकोकटतो अर्द्धमहीनाजवांको पीवे तां शुद्ध होता है ॥ ७ ॥ भवदेवजीके व नाये होए ग्रंथविषे किहा है किगौके स्वामोके ताई जो गौ मृत्यु होइ है तिसीके तुल्यगो देकरके एह प्रायश्चित्त करे अव इसमें और स्मृतिके वचनसे गोघात प्रायश्चित्तका विशेष अर्थ कहते हैं

प्रमापणे प्राणभृतां दद्यात् तत्प्रतिरूपकम् तस्यानुरूपं मूल्यं वा दद्यादित्यब्रवी
न्मनुरिति ६ अस्थिभंगं गवांकृत्वा लांगूलस्य च भेदनम् पाटने कर्णशृंगाणां
मासाद्धेतुयवान्पिबेत् ७ भवदेवीये । इदं च प्रायश्चित्तं गोस्वामिने व्यापन्नस
दृशी गां दत्त्वेव कार्यम् । पाषाणेनैव दंडेन गावां येनाभिघातिताः शृंगभंगे चरे
त्पादद्वौ पादौ नैत्रघातने १ लांगूले पादकृच्छ्रं तु द्वौ पादावस्थिभंजने त्रिपा
दं चैव कर्णे तु चरेत्सर्वनिपातने २ शृंगभंगे स्थिभंगे च कटिभंगे तथैव च यदि जी
वति पणमासान् प्रायश्चित्तं न विद्यते ३

पाषाणेनेति पत्थर कर्के और दंडकके गोआंको जिसने मारया है सो पुरुष शृंगके भज्यां
होयां पाद व्रत करे और नेत्रके घात होयां होयां दो पाद व्रत करे ॥ १ ॥ और
पूछल के दूर होयां २ पाद व्रत करे और अस्थि के भज्यां होयां दो पाद व्रत करे और कर्णोंके
दूर होयां त्रिपाद व्रत करे और मृत्युके होयां २ संपूर्ण व्रत करे ॥ २ ॥ अव इसमें और विशेष
कहते हैं शृंगेति शृंगके भंगविषे और अस्थिके कया हड्डीके भंगविषे और कटिके भंगविषे अर्था
त् मध्यभागके भंगविषे जेकर गौ छे ६ महीने जीवती रहे फेर मृत होजावे तां पीछे प्रायश्चित्त
नहिं करणा परन्तु शृंगादि भंग करणे वाला गौयांकी सेवापरायण रहे तद दोष नहिं है ॥ ३ ॥

२० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसीवात को कथन करतेहैं ब्रणोति ब्रण भंग उसको कहतेहैं जो शृंगादिकांदि भंग कीत्ते होयां अधिक ब्रण हो जावे तिसके होयां होयां अपण हत्थ कर्के घृत आदि मले और घासभक्षणकरवाए जितनापर्यंत गौवलसंयुक्त न होवे इसमें कोईक (अंग भंगेचकर्तव्यः) ऐसा पाठभी कहतेहैं ॥ ४ ॥ यावदिति जितना पर्यंत संपूर्ण अंगां कर्के वल संयुक्त नहि होवे तितना काल पर्यंत तितकी पालना करे फेर गौका रूप सुवर्ण वा चांदीदावणाकर ब्राह्मणको नमस्कार कर्के देवे इतना प्रायश्चित्तभीकरे ॥ ५ ॥ यदीति जेकर गौकी चिकित्साकर्के संपूर्ण अंग न होण तद तिसका नाम हीनदेहहै तां सो अंगभंग करणे वाला गोहत्याका जो अर्द्ध प्रायश्चित्तहै तिसकोकरे

ब्रणभंगेचकर्तव्यःस्त्रेहाभ्यंगस्तुपाणिना यवसश्चापहर्तव्योयावद्दृढवलो भवेत् ४ यावत्संपूर्णसर्वांगस्तावत्तपोपयेन्नरः गोरूपं ब्राह्मणस्याग्नेनमस्कृत्वाविसर्जयेत् ५ यद्यसंपूर्णसर्वांगोहीनदेहोभवेत्तदा गोघातकस्यतस्यार्द्धं प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ६ इतिपराशरकथनात् । तथाचमनुः । योयस्याहिंस्याद् व्याणिज्ञानतोऽज्ञानतोपिवा सतस्योत्पादयेत्तुष्टिराज्ञेदद्याच्चतत्सममिति १ एतच्च प्रायश्चित्तं ब्राह्मणस्यैवहन्तुर्वेदितव्यम् । क्षत्रियादेस्तुहंतुर्विशेषमाह बृहद्विष्णुः ॥ विप्रेतुसकलंदेयंपादोनक्षत्रियेस्मृतम् वैश्येर्द्विपाद एकस्तुशूद्रजातिपुशस्यतइति ॥ १ ॥

इस पराशरजीके कथनतें ६ तथेति तैसैहि मनुजीकहतेहैं यइति जो पुरुष जिसके पशु आदि पदार्थका जाण कर्के वा नजानकर्के नाशकरे सो जिसका द्रव्य नाश कीत्ताहै तिसकी प्रसन्नताकरे और तिसोके तुल्य धन राजाकेताई देवे तदशुद्धहोताहै ॥ १ ॥ एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त गोहत्याकरण वाले ब्राह्मणको किहाहै और क्षत्रियादि मारण वाला होवेतां तिस विषे बृहद्विष्णुजी कहतेहैं विप्रइति ब्राह्मण विषे संपूर्ण प्रायश्चित्त देवे और क्षत्री विषे त्रिपाद देवे और वैश्यविषे दो पाद व्रतदेवे और शूद्रविषे एकपाद व्रत किहाहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २१

और स्मृतियों में भी किहा है प्रायश्चित्त जो प्रायश्चित्त ऋषियों ने ब्राह्मणों किहा है तिस प्रायश्चित्त चकों क्षत्री पादऊन करे और वैश्य दोपाद करे और शूद्र एकपाद करे संपूर्ण पापों विषे एही विधि है परंतु एह प्रायश्चित्त प्रातिलोम्बानुष्ठितसाहसते भिन्न जानना अर्थात् शूद्र तिन्नां १ वर्णों का अपराध करे और वैश्य दो २ का और क्षत्री एक १ ब्राह्मण का अपराध करे तद प्रातिलोम्बा पराव है इसविषे ऐसी व्यवस्था है कि ब्राह्मण को क्षत्रियादिके अपराध विषे जितना दंड है तिसते दूणा क्षत्री को ब्राह्मण के तिसी अपराध विषे जानना ऐसे और भी जानो १ अब चार प्रकार का साहस कहते हैं मनुष्येति मनुष्य का मारना और वस्तु का चुराणा और परस्त्री का सेवना और दो प्रकार का पारुष्य है एक कठोर वचन और दूसरा दंड मारना एह चार प्रकार का साहस है २ अब

स्मृत्यंतरे तु प्रायश्चित्तं यदा स्नातं ब्राह्मणस्य महर्षिभिः । पादोनं क्षत्रियः कुर्यादर्द्धवैश्यः समाचरेत् शूद्रः समाचरेत् पादमशेषेष्वपि पाप्मस्त्विति ॥ १ ॥ इदं च प्रातिलोम्बानुष्ठितचतुर्विधसाहसव्यतिरिक्तविषयम् मनुष्यमारणं चौर्यं परदाराभिर्मर्शनम् पारुष्यमुभयंचेति साहसं स्याच्चतुर्विधम् २ स्त्रीणां विशेषमाह पराशरः ॥ प्रायश्चित्तं हि नारीणां न प्रव्रज्याजपादिकम् न गोष्ठेशयनं तासां न वसीरन्गवाजिनम् १ सर्वान्केशान्समुद्धृत्य च्छेदयेदंगुलिद्वयम् सर्वत्रैवं हि नारीणां शिरसो मुंडनं स्मृतमिति २ पुरुषेषु विशेषः संवर्त्तनदर्शितः । पादंगरो मवपनं द्विपादेशमश्रुणोपि च त्रिपादे तु शिखावर्जं शिखं तु निपातन इति १ ॥

स्त्रीयां को पराशरः अपि विशेष कहते हैं प्रेति स्त्रीयां को ऐसा प्रायश्चित्त है संन्यास नहि लयना और जप आदि नहि करणे और गौशाला विषे शयन नहि करणा और गोचर्म उपर नहि लेना १ सर्वातिनि स्त्रीयां को दो अंगुली प्रमाण शिर के बाल कटाणे योग्य हैं संपूर्ण केशों के उठाणे पूर्वक साग के एही स्त्रीयां को संपूर्ण शास्त्रां विषे मुंडन किहा है २ और मुंडन का पुरुषों विषे विशेष संवर्त्तन ऋषि ने दखाया है पाद इति एक पाद व्रत विषे शरीर के ही बालों नुं मुनावे और दो पाद व्रत विषे दाढी को मुनावे और त्रिपाद व्रत विषे शिखाते विना मुंडन करावे और संपूर्ण व्रतों विषे सहित शिखा के मुंडन किहा है ॥ १ ॥

२२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

प्रायश्चित्त विवेक विषे गोआंका न पालना इति निमित्तकर्के जो गोवध है तिसके प्रायश्चित्तको परा शरज कहते हैं शीतेति शीत और अग्नि कर्के और वनछे कर्के मृत होवे और जिसगृहविषे मनुष्य कोई नहि होवे तिसविषे गौको त्यागकर उपेक्षा कीतियां होयां मृत होवे तो प्राजापत्यव्रत को करे तो शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अपेति पीछे गौके न रक्षा करणें तृणको चुगती होई मृत होवे अथवा जल विषे डूब कर्के अथवा सर्पके लडने कर्के अथवा विजली कर्के मृत होवे ॥ २ ॥ अथ वा डुंगे स्थानविषे डिगणे कर्के अथवा व्याघ्रादिके भक्षण करणें कर्के गौ मृत होवे तां गौका स्वामी न रक्षा करण वाला उत्तम जो कछु प्राजापत्य व्रत तिसको करे तदशुद्ध होता है इसमें एह अभिप्राय है कि सर्प दंशमें और विद्युत्पातमें यद्यपि स्वामीका दोष नहि है तथापि सपेदं

प्रायश्चित्तविवेके अपालननिमित्तगोवधप्रायश्चित्तम् । शीतानलहताचैव उ
द्वंधनमृतापि वा शून्यागाराद्युपेक्षायां प्राजापत्यं विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ अपाल
नात्प्रणश्येत्तु गौश्चरंती कथंचन जलो घपटले मग्नानां गविद्युद्धतापि वा ॥ २ ॥
श्वधेवापतिताऽकस्माच्छ्वापदैर्वापि भक्षिता प्राजापत्यं चरेत्कच्छुंगोस्वामी
व्रतमुत्तमम् ॥ ३ ॥ सशिखं वपनं कार्यं त्रिसंध्यं मवगाहनम् शृंगैर्वापि खुरैर्युक्तं
लांगूलश्रवणादिभिः ॥ ४ ॥ आर्द्रमेव हितच्चर्म परिधाय सगां व्रजेत् तासां
ध्येव सेद्रात्रौ दिवा ताभिः समं व्रजेत् ॥ ५ ॥ ब्राह्मणस्य विशेषेण तथाराजम्यवे
श्ययोः प्रायश्चित्ते ततश्चोर्णं कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ६ ॥

शते उपरंत औषधी कण्ठीयो और विद्युत्पातकी संभावनामें तिसको अपणें पासे खिचणवालि
यां लोहशलाकादि वस्तु गौआंके समीप रखणीयो एह गोस्वामीने नहि कीता इसवास्ते
तिसको दोष जानणा ॥ ३ ॥ सेति और सहित शिखाके मुंडन करवाके त्रिकाल स्नानको करे शृं
ग और खुर और पूछल और कण्ठ ॥ ४ ॥ एनांके साथ गिलाहि जोगोचर्म तिसको उपर लेके
गौआंके पीछे वनविषे जावे और रात्रिमें तिहनांके मध्यविषे निवास करे और दिनमें तिनांके
साथ जावे ॥ ५ ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणको विशेष कर्के प्रायश्चित्त कहा है और तिसी प्रकार क्षत्री
और वैश्य प्रायश्चित्त कर्के ब्राह्मणोंके ताई भोजन देवे ॥ ६ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २३

श्रीर बैलके साथ गौ दक्षिणा देवे ब्राह्मणके ताँई इसमें (ब्राह्मणस्य विशेषेण) इस वचनमें ब्राह्मणकों विशेष कर्के प्रायश्चित्त कहा है क्या गौआँके पीछे वन विषे जाणा मुख्य है इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं एतेनेति इस कहणे कर्के एह सिद्ध होया क्या गौआँकी पालनाते विना मृत्यु होवे तद प्राजापत्य व्रत करणे योग्य है और ना समर्थ होवे ताँ एक गौ ब्राह्मणके ताँई देवे और बैलके साथ गौ दक्षिणा देणे योग्य है ॥ यदेति ॥ पालनके होयाँ होयाँ गत आदि कर्के मृत्यु होवे तो तिस विषे प्रायश्चित्तकों विष्णु जी कहते हैं पल्वलेति पल्वलौघ क्या छपडीयाँ और भगयाड और चित्रा और श्वापद क्या हिंसक शृंगिविशेष और गत और बंधन और सप्पं

अनदुत्सहितांगां च दद्याद्विप्राय दक्षिणाम् । ब्राह्मणस्य विशेषेणेति । ब्राह्मणस्य गवानुगमनं मुख्यमित्युक्तम् ॥ एतेनापालनादिकृतगोवधे प्राजापत्यं करणीयम् अशक्तौ धेनुरेकादातव्या वृषभसहिता गौर्दक्षिणा देया इत्यादि बोध्यं वक्ष्यमाणवचनात् । यदा तु सत्येव पालने श्वभ्रादिपातादेर्मरणं स्यात्तदा प्रायश्चित्तमाह विष्णुः ॥ पल्वलौघवृकव्याघ्रश्वापदादिनिपातनात् श्वभ्रोद्धनसर्पाद्यैर्मृतेपादोनमाचरेत् अपालने तु कृच्छ्रस्याच्छून्यागाराद्युपेक्षया ॥ १ ॥ अत्र पादोनं प्राजापत्यस्यैव उत्तरवचने कृच्छ्रश्रवणात् । तथा पादश्चाऽप्राप्तके देयो वत्सस्वामिन्यपेक्षिते ॥ अप्राप्तकेऽप्राप्तदृश्यावस्थेऽस्मिन् श्वभ्रपातादिना मृते वत्सस्वामिना प्राजापत्यपादः करणीय इत्यर्थः

इन्हां निमित्तां कर्के मृत्यु होयाँ होयाँ विपाद व्रतकों करे और नापालनके होयाँ होयाँ अर्थान् मनुष्याते रहित जो शून्यगृह तिसविषे ना रक्षा करणेतें मृत्यु होवे ताँ कृच्छ्र व्रतकों करे । १ । इसका स्पष्टार्थ एह है कि इस विषे पादऊन प्राजापत्यका हि जानणा क्यों कि पिछले वचन विषे कृच्छ्र व्रतका श्रवण होणेतें और वचन है तथेति तैसेही वच्छेके स्वामिने बच्छा ठूँडया है परंतु तिसका प्राप्त नहि होआ और ठूँडणेतें उपरंत गच्छ आदि कर्के मृत्यु हो गया है तद वच्छेके स्वामिने प्राजापत्य व्रतका एक पाद व्रत करणे योग्य है एह अर्थ है ॥

२४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब गोवध प्रायश्चित्तका अपवाद क्या किसे जगा प्रायश्चित्त नहि करणा तिसमें पराशरजी कहतेहैं * धुर्य्येप्सिवाति गड्डे आदिमें जुगडे होए जो वैल तिनां विषे दंड कर्के ताडना कीतयां होयां और काष्ठ कर्के वा लोष्टकर्के क्या ढीम कर्के वा कोरडेकर्के वा पत्थर कर्के मारयां होयां ॥ १ ॥ मूर्छाको प्राप्तहोजावे वा डिगजावे वा शतावी मृत होजावे इसप्रकार मृतहोए जो वैल तिनांको विधिकोंकहताहां । २ । पूर्वोक्तनिमित्तते मूर्छावालाहोया होया फेर उठकर्के जेकर पंच ५ वा सप्त ७ वा दश १० पैर चले और ग्रासभी ग्रहण करे और जलभी आपपीवे ॥ ३ ॥ और पीछे पूर्वव्याधि कर्के मृत होए जो बलद तिनांका प्रायश्चित्त नाहि कहाहै ॥ ४ ॥ इसी अर्थ

अथगोवधापवादः * अत्रपराशरः ॥ धुर्य्येषुवहमानेषुदंडेनाभिहतेषुच ॥ काष्ठलोष्टेनग्रावणाऽपिपापेनापिताडितः ॥ १ ॥ मूर्छितःपतितश्चैवमृतोवासद्यएवच ॥ एवंगतानांधुर्याणांप्रवक्ष्यामियथाविधि ॥ २ ॥ उत्थितस्तुयदा गच्छेत्पंचसप्तदशापिवा । ग्रासंवायदिगृह्णाति तोयंवापिवतिस्वयम् ३ । पूर्वव्याधिविनष्टानां प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ४ ॥ यदिव्याधियुक्तानां वृषभाणां हलयोजनमात्रेण दंडादिघातेन वा मूर्छया पतनं भवति तदा गमन ग्रासग्रहणतोयपानकरणेन तदानींतनमरणहेत्वभावं निश्चित्य पूर्व व्याधिनष्टत्वम् अतःप्रायश्चित्ताभावः ॥ सद्योमरणेतु प्रायश्चित्तमस्त्येव । दंडप्रमाणमाह पराशरः ॥ अंगुष्ठमात्रस्थूलस्तु बाहुमात्रःप्रमाणतः आर्द्रस्तुमपलाशश्चदंडइत्यभिधीयतइति ॥ यदिच पूर्वव्याधिरहितएव प्रहारजनितव्याधिना पश्चान् म्रियते तदा प्रायश्चित्तमस्त्येव ॥

कों स्पष्टकर्के मूलमें लिखाहै यदीति ॥ एह इसकालके दंडादिनिमित्तते मृत नहि होया किंतु इसकों कोई पिच्छे व्याधिथी तिसकर्के मृत होयाहै इसकारणते उसका प्रायश्चित्त नहिहै और शतावी मृत होवे तां प्रायश्चित्तहै ॥ अबदंडका प्रमाण पराशरजीकहतेहैं ॥ अंगुष्ठमात्र मोटा होवे और बाहु जितना लंबाहोवे और गिलाहोवे और पत्रावाला होवे सो दंडकहाहै इसके यथायुक्तिलगाए कर्के दोषनहि और इसते भिन्न होवे तां प्रायश्चित्तहै जेकर प्रथमपीडासे रहित होवे और दंडादि प्रहारते उत्पन्न जो व्याधि तिस कर्के मृत होवे जो गौ तिसविषे प्रायश्चित्तहै सो प्रायश्चित्त ॥ व्रणभंगके प्रसंगविषे पिच्छे आगिआहै उसीसे जानलेणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २५

लकुटेति और सोटे आदिके मारणें विषे इसीवास्ते प्रायश्चित्त पराशर जी कहतेहैं ॥ दंडादिति दंडमारणेतें उपरंत तिसी प्रहारतें जद गौ मृत होवे वा मरणेंके योग्य होवे तिसविषे दूणा गंधातका व्रतकरे तां शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अथ इसीका अपवाद संवर्त्त ऋषि कहतेहैं ॥ यंत्रणइति गौको चिकित्सावास्ते अच्छीतरह वंधन कीते होयां तिसविषे और मृत जो गर्भ तिमका निकालनातिसविषे यत्नकीते होयां जद गौ मृतहोवे तां प्रायश्चित्तनहिंकरणा ॥ १ ॥ और दाह क्या रोग निवृत्तिवास्ते किसे अंगकों गुल देणा अथवा रुधिर निकालना इनांयत्नांककें जो द्विज गौआंके हितवास्ते उपकार करें तिनांको प्रायश्चित्त नहिंहै अथवा द्विजां किए गौ आंके उपकार करण वालेयांको प्रायश्चित्त नहिं एह अर्थ है ॥ २ ॥ एह वाक्य शास्त्र कर्के कही जो औषधि तिसकर्के मृत होवे तिसमें जानणे योग्यहै । और इसतें भिन्न करे तां प्रायश्चि

लकुटादिपातनेऽतएवप्रायश्चित्तमाह ॥ पराशरः ॥ दंडादूर्ध्वयदन्येन प्रहाराद्यदिपातयेत् ॥ प्रायश्चित्तं तदाप्रोक्तं द्विगुणं गोव्रतंचरेत् ॥ १ ॥ पातयेन्मारयेत् ॥ मरणयोग्यां वा कुर्यादित्यर्थः ॥ संवर्त्तः ॥ यंत्रणे गोश्चिकित्सार्थं गूढगर्भविमोचने यत्ने कृते विपत्तिः स्यात् प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १ ॥ दाहं च्छेदशिराभेदप्रयोगैरुपकुर्वताम् ॥ द्विजानां गोहितार्थाय प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ २ ॥ द्विजानां गोवाहितार्थमित्यर्थः गूढगर्भो मृतगर्भः ॥ एतद्यथा बहुपचारे वेदितव्यम् ॥ न पुनः सन्निपाताभिभूतस्योदकपानादिनेव ॥ अतएव चिकित्सतांच सर्वेषां मिथ्याप्रहरतांदमइति मनुनोक्तम् ॥ मिथ्याचिकित्सतां मिथ्याप्रहरतांच दमोदंडइत्यर्थः ॥ एतएव काश्यपोप्यत्र प्रायश्चित्तमाह ॥ औषधं लवणं चैव स्नेहं पितृयाकमेव च आतिरिक्तं न दातव्यं कालस्वल्पं तु दापयेत् ॥ १ ॥ अतिरिक्ते विपन्नानां कृच्छ्रपादो विधीयते ॥ औषधेतु न दोषास्ति स्वच्छया पिवते यदि अन्यथा दीयमानं तु प्रायश्चित्तं न संशयः ॥ २ ॥

तहै जैमें सन्निपातादि कर्के युक्त जो कोई होवे तिसको जलपानादि करवाणा । तिस कर्के मृत होयां तिसविषे प्रायश्चित्त करणे योग्यहै ॥ इसीवास्ते मिथ्याचिकित्सा कर रहे जो पुरुष और मिथ्या प्रहारकर्त्ता जो पुरुष तिनको दंड मनुजीनें पीछे कहाहै ॥ इसीवास्ते काश्यप जी इस विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं ॥ औषधमिति औषधी और लूण और स्नेह क्या नैलादि और खल एह उपाय करणेंके समय विषे अधिक नहिं देवे किन्तु प्रथम थोडे देणे योग्यहैं ॥ १ ॥ अधिक दिते होयां जद गौ मृत होवे तां तिसविषे कृच्छ्र व्रतका एक पादव्रत करे और औषधि देणेविषे दोष नहिंहै जेकर गौ अपनी इच्छा कर्के पीव और जेकर जागवरी देवे तां तिसविषे प्रायश्चित्तहैं इसमें संशय नहिं करणा ॥ २ ॥

२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब अंगिराजी विशेष कहते हैं । शृंगेति शृंगका भक्षण और अस्थिका भक्षण और चर्मका उखेडना इनके विषे दशरात्र वज्र पानकरे जेकर स्वस्थ गौ होजावे ॥ १ ॥ अब वज्रका लक्षण कहते हैं गोमूत्रेति गोमूत्र कर्के युक्त जो यवोंका काडा तिसनू पीवे एह एक दिनका कृच्छ्र व्रत अंगिरानें आप किहा है संपूर्ण पापोंको दूर कर्ता है और दिव्य है और नाम कर्के वज्र किहा है ॥ २ ॥ इसमें और विशेष कहते हैं अन्यत्रेति अन्यत्र क्या औरके मत विषे अंकन और लक्ष्म और वाहन और मोचन इनां विषे दोष नहि है और सायं काल विषे बंधन बास्ते जो रोकणा और वक्षण इनां विषे भी दोष नहि है क्योंकि दूसरेके क्षेत्रमे न पडणे बास्ते बंधन किहा है ॥ ३ ॥ इसविषे जो सायं पढ़ है सो दूसरेके क्षेत्र विषे गौका जाणा तिसका उपलक्षण जानणा । अब श्लोकका अर्थ

अंगिराः ॥ शृंगभंगेस्थिभंगेवाचर्मनिर्मोचनेपिवा दशरात्रं पिवेद्वज्रं स्वस्थासा यदि गौर्भवेत् ॥ १ ॥ गोमूत्रेण समायुक्तं यावकंचोपयोजयेत् एकाहेनैव कृच्छ्रो यमुक्तश्चांगिरसा स्वयम् सर्वपापहरो दिव्यो नाम्ना वज्र इति स्मृतः ॥ २ ॥ अन्यत्रांकनलक्ष्मभ्यां वाहने मोचनेपिवा सायंसंगोपनार्थं तु न दुष्येद्रोधबंधयोः ३ ॥ अत्र सायमिति परकीय क्षेत्रपाताद्युपलक्षणार्थम् । वृषार्थमंककरणे चिन्हकरणे च वाहनादिना चर्मनिर्मोचने च सायं रक्षार्थं रोधबंधनयोः शृंगभंगादि न दुष्येत् शृंगभंगादौ न दोष इत्यर्थः । अंकनंतत्तत्रिशूलादेर्लक्ष्म कुंकुमादेरित्यपिकेचित् । तथा च माधवः ॥ अंकनंतत्तलोहादिना स्थिरचिन्हकरणं लक्ष्म गोमयादिना तात्कालिकचिन्हम् अत्र वाहनमोचनयोः शास्त्रविहितत्वात् सांकलक्ष्मयोर्वाहने मोचने तु दोष एव शास्त्रनिषिद्धत्वादिति

स्पष्ट कर्के कहते हैं वृषेति वृषबास्ते अंक करणे विषे और चिन्ह करणे विषे वाहनादिकर्के चर्म उखेडने विषे और सायं काल रक्षा बास्ते जो रोकणा और वक्षण इनां विषे शृंगभंगहोव तां दोष नहि है ॥ अब मतांतर कहते हैं अंकनामिति अंकन क्या ताये होए त्रिशूलादियोंका लगाणा एह कैयोंका मत है इसीमें माधवजी कहते हैं अथवा अंकन नाम है ताये होए त्रिशूलादि कर्के स्थिर चिन्ह बनाणा और लक्ष्म है गोमयादिकर्के तात्कालिकचिह्नकरणा इहनां वाले बैलाने होरनां बैलां विषे वाहन विषे और मोचन क्या भावस्थापन विषे दोष नहि क्योंकि तिनके बाइनादि विषे शास्त्रका निषेध नहि और अंकनचिन्ह वाले आं विषे वाहनादि वष शास्त्रका निषेध है इसीका स्पष्ट अर्थ है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २७

यदीति जेकर कहे जो प्रयोजनइनांतें विना बंधनादिकरणातिसतें अकाल मृत्युहोवे तां दोषहै तिस विषे दशरात्र वज्रव्रतकरे । परंतु इसविषे एहविचारहै जो तीसादिनका वज्रव्रतहै तिसविषे स्मृतियोंनें १२ वारां धेनु दानका प्रत्याम्नाय किहाहै सो व्रतप्रकरणमें देखणे योग्यहै इसकारणतें तिस व्रत विषे द्वादश १२ धेनुकर्के मिलित जो महीनेका गोमूत्रयावकव्रत तिसका तीसरा भाग होणेत चार ४ धेनुदेवें ॥ अब घातको चारप्रकारकर्के पराशरजीकहतेहैं ॥ रोधेति रोकणा और वन्नणा और योक्र और घात एह चारप्रकारका वधका निमित्तहै इनके लक्षण अग्गे कहेंगे एकेति रोकणविषे एकपादव्रत करे और वन्नणविषे द्विपादव्रत करे और योक्र विषे त्रिपाद व्रत करे और घातविषे

यदितूक्तप्रयोजननिरपेक्षबंधनादिकारितोऽकालिकोमृत्युर्भवति तदा दोषोभवत्येव दशरात्रवज्रव्रते धेनुद्वादशसंकलितमासगोमूत्रयावकव्रततृतीयभागत्वाद्धेनुचतुष्टयंदेयमिति ॥ घातस्यचातुर्विध्यमाहपराशरः ॥ रोधबंधनयोक्त्राणिघातश्चेतिचतुर्विधम् वधनिमित्तमितिशेषः । एकपादंचरेद्रोधेद्वौ पादौबंधनेचरेत् योक्त्रेपुचत्रिपादंस्याच्चरेत्सर्वानिघातने ॥ १ ॥ अब्रैकपादादिव्यवस्था पराशरांगिरःसंवर्त्तापस्तवोक्तानांप्राजापत्यमासद्वयकृच्छ्रपक्षकृच्छ्रशोडशदिनसाध्यकृच्छ्रादीनां निर्गुणवनस्थगुणवन्नांगोर्वालवत्सायाश्रविपयत्वेन माधेवनोक्ता ज्ञेया ॥

संपूर्ण व्रतकरे । १ । इसविषे माधवजीकी वनाई होई व्यवस्था इसतरां जानणी पराशरजीनेकहाहै कि निर्गुण पुरुषकी गौ मृतहोवे इसविषे प्राजापत्यव्रतके ही एकपादादि जानणें और अंगिरा जीने किहाहै कि वनाविषे स्थितहोणवाले जो ऋषि तिनकी गौ मृतहोवे उसमें मासद्वयकृच्छ्र व्रत के एकपादादिजानणें और संवर्त्तजीने कहाहै कि गुणवाले पुरुषकी गौ मृत होवे तां पक्षकृच्छ्र व्रतकेपादादि जानणे और आपस्तम्बजीने कहाहै कि वालहै वच्छा जिसका ऐसी गौ मृत होवे उसमें १६ सोलां दिनां कर्के साध्य जो कृच्छ्र तिसके पादादि जानणे ॥ अब रोधा दिचारोंका अर्थ कहतेहैं ॥

२८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

गाविति गौआंके वाडेविषे वा गृहविषे वा किलेविषे और उच्ची नीमी जगाविषे और नदी विषे और समुद्र विषे और किसे सोपद्रव स्थान विषे और नदी मुख विषे और दग्ध देश विषे अर्थात् जिसमें तृणादि न होण उसजगा विषे रोकणें कर्के जद गौआं मृत होवें उसकों रोध नामघात कहतेहैं ॥ १ ॥ योक्केति योक्क और दामक और डोर एहस्सीआंके भेदहैं इनांकर्के वा कंठके जो भूषण इनांकर्केगृहविषे वा वनविषे वन्नीहोई गौ जदमृतहांवे उसकोंवंधन नाम घात कहतेहैं तिसकों इच्छाकर्के करे वा ना इच्छाकर्केकरे एह दोप्रकारकाबंधनहै ॥ २ ॥ अब योक्का दिशब्दका अर्थ कहतेहैं पाशइति योक्क नाम फाईकाहै और गड्डेके युगविषे जो छिद्र तिसमें संवद्ध जो रज्जुहै उसकों दाम कहतेहैं । और डोर रज्जुमात्रकोंकहतेहैं ॥ अब योक्क वध दिखाईदाहै

गोवाटेवागृहेवापिदुर्गेष्वप्यसमस्थले नदीप्वथसमुद्रेपुत्वन्येपुचनदीमुखे दग्धदेशेमृतागावःस्तंभनाद्रोधउच्यते । १ । योक्कदामकडोरैश्चकंठाभरण भूपणैःगृहेवापिवनेवापिवद्वास्याद्गौर्मृतायदि तदेवबंधनंविद्यात्कामाकामकृतंचयत् । २ । योक्कंपाशःशकटयुगच्छिद्रसंवद्धारज्जुर्दामकं डोरकंरज्जुमात्रम् ॥ हलेवाशकटपंक्तौपृष्ठवापीडितानरैः गोपतिर्मृत्युमाप्नोतियोक्कोभवति तद्वधः ॥ ३ ॥ पंक्तिर्गलेमेढीबंधनम् ॥ मत्तःप्रमत्तउन्मत्तश्चेतनोवाप्यचेतनः कामाकामकृतक्रोधादंडैर्हन्यादथोपलैः प्रहतांवामृतांवापितद्धिहेतुर्निपातने । ४ ॥ मत्तोधनादिनादृप्तः प्रमत्तोमद्यपानादिना परवशः ॥ उन्मत्तोव्याध्यादिना विभ्रांतः अचेतनोमुग्धः माराधिष्यामीतिबुद्धिःकामः ॥

हलइति हलविषे वा गड्डेविषे वा पंक्ति विषे वा पृष्ठविषे पुरुषोंकर्के ताडया होया बेल मृतहोवे तां तिसवधका नामयोक्कहै ३ ॥ जो गलविषे मेढ वस्त्रणा उसका नाम पंक्तिहै ॥ मत्तइति मत्त और प्रमत्त और उन्मत्त और चेतन वा अचेतन इच्छाकर्के वा ना इच्छाकर्के कियाहै क्रोध जिसने ऐसे पुरुषने दंडकर्के वा पत्थर कर्के ताडया होया बेल मृत होवे सो निपातन विषे हेतु है अर्थात् इस वधका नामघात है ॥ ४ ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ मत्त इति मत्त उसकों कहतेहैं जो धन कर्के अभिमानी होवे और प्रमत्त उसकों कहतेहैं जो मदिरापानादि कर्के परवश होवे और उन्मत्त उसकों कहतेहैं जो व्याधिकर्के भ्रमित होवे और अचेतन नाम मुग्धकाहै अर्थात् मूर्खकों अचेतन कहतेहैं ॥ मै मारां गा एह जो बुद्धि इसको काम कहतेहैं ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २९

व्यर्थ जो चेष्टाका धारणा इसको अकाम कहतेहैं इनांदोआं कर्के उत्पन्न होयाहै क्रोध जिसको सोकामाकामरुतक्रोधहै होर अर्थसुगमहै ४ ॥ अवकुलविशेषदखातेहैं दहनादिति जो जोडया होया बैल दाह होषेतें मृत होवे तिस विषे पराशरजीने कहाहै कि एकपाद व्रतकरे यथाविधि कर्के परंतुइसजगाकोई (वहनात्) औसापाठकहतेहैं क्योंकि जुगडेहोए बैलको दाहकासंभव नहि होषेतें और वहनकाअर्थ भारउठाणा एह होसकाहै और पादव्रत भी इहां मासत्रयका अथ वा मासद्वयका जानणा प्राजापत्यका नहिपापके अधिकहोषेतें । १ । अव और मतकर्के वधके निमित्त कहतेहैं रोधनमिति रोकणा औरवन्नणा और भारदेणा और प्रहारकरणा और दुर्ग में फेंकणा और जोषणा एह छे निमित्त वधकेहैण ॥ २ ॥ पूर्वोक्त सैं और विशेष कहतेहैं ॥ बंधेति ॥ बंध और पासकर्के युक्तहैं अंग जिसके ऐसा गोपशु जिसके गृह विषे मृतहोवे सो

व्यर्थचेष्टाधारणमकामः ताभ्यामुत्पादितःक्रोधोयस्यासौतथा) दहनात्तुवि पद्येतअनङ्वान्योक्रयंत्रितः उक्तंपराशरेणैवह्येकपादंयथाविधि ॥ १ ॥ रो धनंवंधनंचैवभारःप्रहरणंतथा दुर्गप्रेरणयोक्रंचनिमित्तानिवधस्यपट् ॥ २ ॥ वंधपाशमुयुक्तांगोम्रियतेयदिगोपशुः भुवनेयस्यपापीस्यात्प्रायश्चित्ताद्धम र्हाति ॥ ३ ॥ ननारिकेलैर्नचशाणवालैर्नचापिमौजैर्नचवल्कशृंखलैः एतैस्तु गावोननिबंधनीयावध्यातुतिष्ठेत्परशुं गृहीत्वा ॥ ४ ॥ कुशैःकाशैश्चवध्रीयाद्गो पशुं दक्षिणामुखम् पाशलग्नाग्निदग्धेषुप्रायश्चित्तंनविद्यते । ५ । यदितत्रभवे त्काष्ठंप्रायश्चित्तंकथंभवेत् जपित्वापावर्नीदेवीमुच्यतेतत्रकिल्विपात् ॥ ६ ॥

पुरुष पापीहै तिसको प्राजापत्यादिका अद्धं प्रायश्चित्त करणे योग्यहै । १ । अवगोआंकेबंधनका प्रकार कहतेहैं ॥ नेति ॥ नरगेलदे रस्सेकर्के वा शणदे रस्से कर्के वा मुंजकर्के वावलूंगडदे जो रस्से और संगुलजोहै इनांकर्के गौआंको न बंधन करे जेकर बंधन करे तां कुहाडा लेकर पासस्थि तरहे जद गौकों कष्ट वणे तां रस्सेनूं कटदेवे । ४ । जिनांकर्के बंधनेमे दोष नहि तिनको कहतेहैं ॥ कुशैरिति कुशा और काई इनां कर्के गौकों दक्षिण पासे मुख कर्के वन्न देवे इसमे जेकर रस्से विषे लगी जो अग्नि तिसकर्के दग्ध होवे तां उसमे प्रायश्चित्त नहिहै ॥ ५ ॥ जेकर तिसविषे काष्ठहोवे तां प्रायश्चित्त कैसे होवेगा तिसकोकहतेहैं कि तिसविषे पवित्रजो गायत्री तिनका जप करणेतें पापते शुद्धहोताहै ॥ ६ ॥

३० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

श्रीर विशेष कहतेहैं ॥ प्रेति खूआ श्रीर बाउली इनां विषे गौनू प्रेरणा करे ॥ श्रीर जिसज गाविषे वृक्षांको कटदेहोण तिसके हेठ गौनू लेजावे श्रीर कसाईके पास बेचणे कर्के पुरुष गोवध पापको प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ अब पिछले श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं ॥ पाशेति कुशादिके जो रस्से इनाको शीघ्र भस्म होणेंतें एकवेही दुःखको प्राप्त होताहै श्रीर मृत नहि होताहै इसकारणतें तिसविषे प्रायश्चित्त नहिहै । यदीति गलविषे प्राप्त जो पाश तिसके दग्धहोयां जेकर कुशमूलादिका कुच्छककाष्ठ तिस रस्सेविषे स्थित होवे तां तिस चुआलीके स्पर्शतें थोडाघम दाह होवे तिसविषे गायत्री जप कर्केहि शुद्ध होताहै (पावनीयं) इस पाठ विषे इसी सूक्तका जप करे

प्रेरयन्कूपवापीपुच्छच्छेदेषुपातयन् गवाशनेषुविक्रीणंस्ततःप्राप्नोतिगो
वधम् ७ पाशेति कुशादिमयपाशानांशीघ्रंभस्मीभावात्सकृत्संपातमात्रं
संपद्यतेनतुप्राणांतिकउपद्रवः अतो नतत्प्रत्यवायः । यदीति गलगतेपाशद
ह्यमानेयादिकुशमूलादिरूपंकिंचित्काष्ठं तस्मिन्पाशेऽवतिष्ठेत् तदा तदुल्मुक
संस्पर्शादीपत्त्वग्दाहोभवेत् तत्र गायत्रीजपेनैवशुद्धिः पावनीयमितिपाठेसू
क्तंजपित्वेतिव्याख्येयम् । प्रेरयन्निति यत्रचारणप्रदेशेजीर्णकूपादयः यत्रच
प्रौढावृक्षाःछिद्यंतेतत्रप्रेरयन्पातयन् गवाशनेषु गोमांसभक्षकेषु विक्रीण
न् गोवधप्रायश्चित्तंप्राप्नोतीतिमाधवः । आराधितस्तुयःकश्चिद्विन्नकक्षीयदा
भवेत् श्रवणं हृदयंभिन्नंमग्नौवाकूपसंकटे ॥ ८ ॥ कूपादुत्क्रमणेचैवमग्नौवा
ग्रीवपादयोः सएवम्व्रियतेतत्रत्रीन्पादांस्तुसमाचरेत् ॥ ९ ॥ उद्धृषभयज्ञा
दा उपघातेपादत्रयंप्रायश्चित्तमाह ॥

ऐसा व्याख्यान कियाहै । प्रेरयन्निति जहां चारणे वाले देशविषे पुराणे कूपादि होण जहां बड़े वृक्ष कटे होण तहां गौआंको प्रेरणा करे श्रीर कसाई के पास गौको बेचेतद गोवधप्रायश्चित्तको प्राप्त होताहै एह माधवजीने किहाहै । आरेति आराधित होया जो बैल जेकर उसकी बकरवी भेदी जावे वा कर्षी वा हृदय भेद्या जावे वा बड़े कूपविषे डुबजावे । ८ । श्रीर कूपतें निकालदे होयां ग्रीवा वापादटुट जावे वा तिसविषे मृतहोजावे तां तिस विषे त्रिपादव्रत करणे योग्यहै ॥ ९ ॥ अब इसश्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ उद्धृषभेति उद्धृषभ नाम जो यज्ञहै तिस विषे हिंसा करे तिसविषे त्रिपाद व्रत कहतेहैं माधवजी ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ३१

आराधितइति उद्धृषभनाम जो यज्ञ है तिसविषे बैलनू आराधन कर्के दुडातेहें तिसविषे आति वेग कर्के दौडता जो बैल तिसकी कदाचित् कक्ष भेदी जावे वा कण वा हृदय भेदया जावे तिसविषे एह जानणे योग्यहै ॥ और विशेषहै जद तृषा कर्के युक्त गौ आपही कूपा दिमें प्रवेश कर्के मृत होजावे और कूपका स्वामी एह बात नहि जानता है इसतें तिसमें कूपके स्वामीको दोष नहि है पंतु गौआके स्वामी को दोष है ऐसे और भी जाणो ॥ इस कर्के एह श्लोक कहतेहैं कूपेति कूपखात विषे और तटाबंध विषे और नदीबंध विषे और जल विषे जद पशुमृत होजावे तिसमें प्रायश्चित्त नहि कहाहै ॥ १० ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं बहुतडूंगा जो आ तिसको कूपखात कहतेहैं । कनारे जिसमें बन्हेजावें सो तडाबंध क्या तलाओ कहिये । नदीबंध नामपुलकाहै पत्थर कर्के बणाई जो पौड़ी सो प्रपा कहीदीहै और कूपादि

आराधितइति उद्धृषभयज्ञेहिवलीवर्द्धमाराध्यधावयंति तत्रातित्वरया धावतः कदाचित्कक्षोमिद्यते तदेदंबोध्यम् । कूपखातेतटाबंधेनदीबंधेप्रपासुच पानीयेपुविपन्नानांप्रायश्चित्तंनविद्यते । १० । अगाधःकूपःकूपखातः । तटेन तीरेणआवध्यतइति तटाबंधस्तटाकः ॥ नदीबंधःसेतुः । पापाणादिद्रोण्यःप्रपाःकूपखातेतटाखातेदीर्घखातेतथैवच स्वल्पपुधर्मखातेपुप्रायश्चित्तंनविद्यते । ११ । कूपादिनिर्मातुर्गवादिमरणोद्देश्यकप्रवृत्त्यभावान्नप्रायश्चित्तमितिभावः ॥ वेश्मद्वारेनिवासेपुयोनरःखातमिच्छति स्वकायगृहखातेपुप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ १२ ॥

निर्माण करण बाला जो पुरुष तिसको प्रायश्चित्त क्यों नहिहै इसआशंका कर्के एहश्लोक कहतेहैं कूपखातइति कूपका जो गत और तटाखात और वाउलीयां और जो धर्मवास्ते खातहैं इनांविषे पशु आपहि मृत होजावे तां जिस पुरुषने कूपादि बणाएहें तिसको दोष नहिहै क्योंकि तिस खूए आदिक धर्मवास्ते बणायेहैं गौआके मरणवास्ते नहि बणाये इस वास्ते तिसको प्रायश्चित्त भी नहि है और कूपखातादिकी न्याई गृह विषे जो खात तिसमें मृत होवे तां दोष है क्योंकि सो धर्मार्थ नहि है ॥ ११ ॥ इसवास्ते एह श्लोक कहतेहैं ॥ वेश्मेति घरका जो दरवाजा और गौआके स्थान इनोमे जो पुरुष गत करताहै और अपने कार्य वास्ते जो घरमे गत करणा इनोमे जो पशु मृत होवे इसमें उस पुरुषको पूर्वोक्त त्रिपाद व्रत करणे योग्यहै ॥ १२ ॥

३२ ॥ श्रीरंणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

वेश्मेत्यादि खात जो हैं सो धम्मंवास्ते नाहिहैं इसकारणतें तिनां विषे पशु मृत होजावे तां प्रायश्चित्तहै (प्रण) गृहखातादिकी न्याई गृहविषे सर्पादि कर्के मृत होवे तिसमें भी प्रायश्चित्त होणा चाहिये इसको इत श्लोक कर्के दूर कर्तेहैं ॥ निशोति रात्रिविषे रक्षाकरण वास्ते बंधन कर्के रोकियां जो गौआं सो सर्पव्याघ्रादिकर्के जद मृत होजावें तद स्वामीको दोष नाहि है और अग्निकर्के वा विजलीकर्के मृत होजावें तां प्रायश्चित्त नाहि है ॥ १३ ॥ विद्युत् के दाह की न्याई ग्रामघातादि कर्के मृत होवें तां दोष नाहि है इस अभिप्राय कर्के एह श्लोक कहतेहैं ॥ ग्रामेति ग्रामके घात विषे और वाणोंके समूहकर्के अथवा वाणोंके समूह कर्के ग्रामके घात होयां वा घरके डिगयां होयां और बड़ीवर्षाहोवे इनां निमित्तां कर्के गौयां मृत होवें तांप्रायश्चित्त नाहिहै इसमें एह अभिप्रायहै कि किसैराजादिके परस्पर विरोधकर्के एकने दूसरेके ग्रामका घात

वेश्मेत्यादि खातानां धर्मार्थत्वाभावात्तत्र पाते भवत्येव प्रायश्चित्तम् ॥ निशि वंयनिरुद्धे पुसर्पव्याघ्रहतेषु च अग्निविद्युद्विपन्नानां प्रायश्चित्तं न विद्यते १३ । ग्रामघाते शरौघेण वेश्मभंगनिपातने ॥ अतिवृष्टिहतानां च प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १४ ॥ संग्रामे प्रहतानां च ये दग्धा वेश्मकेषु च ॥ दावाग्निग्रामघातेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १५ ॥ यंत्रिता गौश्चिकित्सार्थं गूढगर्भविमोचने ॥ यत्ने कृते विपद्येत प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १६ ॥ व्यापन्नानां वहूनां च रोधने बंधने पिवा भिषङ्मिथ्योपचारेण प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥ अथ शास्त्रचिकित्सनं भिषङ्मिथ्योपचारः ॥ गोवृषाणां विपत्तौ च यावंतः प्रेक्षका जनाः अनिवारयतां तेषां सर्वेषां पातकं भवेत् ॥ १८ ॥

कीता तद उसग्राममें मृत होइ आंगौआंके स्वामिआंको दोष नाहि क्योंकि उह उनकी रक्षामें समर्थ नाहिहैं ॥ १४ ॥ और लड़ाई विषे मृत होवे वा घरमें दग्ध होजावे वा दावाग्निकर्के ग्रामके घातविषे गौमृत होवे तां प्रायश्चित्त नाहि है ॥ १५ ॥ और चिकित्सा वास्ते गौ बांधी जावे तिसमें वा मृतगर्भके निकालनेमें यत्नके कीत्ते होयां जेकर गौ मृत होवे तां प्रायश्चित्त नाहि है १६ ॥ इसमें भी कुछ विशेष कहतेहैं व्यापेति रोकणें विषे वा बंधन करणें विषे बहुत पुरुषोंकर्के जेकरगो मृत होवे वा शास्त्ररहित चिकित्सा कर्के मृत होवे तिसमें प्रायश्चित्त करणें योग्य है ॥ १७ ॥ अब गो घातको देखणे वालेको भी दोष कहतेहैं गोवृषाणामिति गौआं और वृष इनांको विपत्तिके होयां जितने देखणवाले पुरुष हैं और तिस विपत्तिको दूर नाहि करते हैं तिन संपूर्णोंको पाप प्राप्त होताहै ॥ १८ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ३३

शकाविति समथंदे होयां उपेक्षा करण वालें पुरुषकों भी दोषहै केवल कत्ताकों ही नहिइस अभिप्राय कर्के प्रेक्षका एह किया है ॥ एह हंता और मंता और उपदेष्टा इत्यादि जो पापी दूसरे प्रकरणमें कहेहैं उनका भी उपलक्षण जानणा ॥ अवबहुकर्तृक घात विषे कहतेहैं एकेति बहुत पुरुषोंन एक पशु मारयाहै और जिस पुरुषके प्रहारतें मृतहोयाहै सो नहि जानयाजाता तिनां बहुत पुरुषां विषो दिव्य क्या सुगंदकर्के प्रतीत होवे सो राजाके नौकरोंन पृथक् करण योग्य है ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यस्येति जिसने गोवृषादि मारयाहै सो हंताकिहाहै इहां कर्ता में क प्रत्यय है ॥ यदेति अथवा जिसपुरुषके मारणें सो वृषादि मृतहोगयाहै सो पुरुष नहि जानया जाता एह अर्थहै मारणें उपरंत मारण वाले जो बहुतहैं उनंके मध्य विषे नहि जाणया तहांसुगंदी देणकर्के राजाके जो नौकरहैं तिनोंने निवर्तनीय क्या

शक्तौ सत्यामुपेक्षकस्यापि प्रत्यवायो न केवलं कर्तुरेवेत्यभिप्रेत्योक्तं प्रेक्षका इत्यादि इदं च हंता मंतोपदेष्टेत्यादि द्वितीय प्रकरणोक्तोपलक्षणम् ॥ एको हतो यैर्वहुभिः समेतैर्न ज्ञायते यस्य हतोभिघातात् ॥ दिव्येन ते पामुपलभ्य हंतानि वर्तनीयानृपसन्नियुक्तैः ॥ १९ ॥ यस्य गोवृषादिर्हतः को र्थो हंता कर्तृरिक्तः यद्वा यस्य पुरुषस्याभिघातात् स वृषादिर्हतः स पुरुषो न ज्ञायते इत्यर्थः अभिघातादनंतरं मारकवाहुल्यांतः पातित्वेन चेन्मारको न ज्ञायते तदा दिव्यक्रिययानृपसन्नियुक्तैराजभृत्यैर्निवर्तनीयः पृथक् करणीय इत्यर्थः ॥ इदं च गोघ्नप्रायश्चित्तार्थम् ॥ तदितरप्रायश्चित्तार्थमुच्यते । एका चेद्बहुभिः काचिद्देवाद्यापादिता क्वचित् ॥ पादं पादं तु हत्यायाश्च रेयुस्ते पृथक् पृथक् २० ॥ हतेतुरुधिरं दृश्यं व्याधिग्रस्तः कृशभवेत् लाला भवति देष्टु एव मन्वपणं भवेत् ॥ २१ ॥ यत्र । बहुषु निमित्तेषु संदेहस्तत्र वंधानिमित्तं कथं ज्ञायेतेत्येतदर्थमिदम् ॥

तिनां बहुत पुरुषांके मध्यतें जुदा करण योग्य है एह अर्थ है १९ ॥ एह जो प्रायश्चित्त है सो गो मारण वाले पुरुषकों जानणा तिसतें और प्रहार वालेंकों प्रायश्चित्त कहांदा है ॥ एकेति एक गो बहुत पुरुषों नें मारी होवे तिसमें संपूर्ण पुरुष गोहत्याका जो व्रत पीछे कियाहै तिसका एक एक पाद पृथक् पृथक् करें ॥ २० ॥ जहां बहुत निमित्तों कर्के संदेह होवे तहां किस तरहां वध निमित्त जानणा इस आशंकाके होयां चिन्ह विशेष कर्के तिनां चिन्हां को दिखाते हैं हतइति जहां रुधिर होवे तहां प्रहार निमित्त जानणा और जो कृश होवे सो व्याधि युक्त जानणा और जहां लाला होवे उसके विषे सर्पका दंश जानणा एह तीन प्रकारके मृत्युके चिन्ह जानणे योग्यहैं अर्थात् मृत्यु मै तीनोंचिह्न होतेहैं ॥ २१ ॥

३४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यत्रेति जिसके मृतहोआं रुधिर देखणेमें आवे उसमें वध निमित्त पत्थर आदिका प्रहारजानणा और छशके उपलभ विषे क्या लिसयाई देखणे विषे मृत्युकी हेतु व्याधि जानणी और लालाके देखणेविषे सर्पदंश निमित्त जानणा इत्यादि कहे जो चिन्ह इनों कर्के निमित्तकास्वरूप निश्चय करणे योग्यहै ॥ बाहरले अंगके चिन्होंको कह कर्के अब अंतरवाले अंगके चिन्होंको कथन कर्तेहैं आसेति आस वास्ते प्रेरित जो गौ सो आस न भक्षण करे औरमार्ग में भी न चले तिस विषे एक जो मनु संपूर्ण शास्त्रके जानण वाला ॥ २१ ॥ तिसने किया है गौ मारण वाला पुरुष चांद्रायण व्रत करे तां शुद्ध होताहै ॥ केशार्के

यत्र हते रुधिरं दृश्यते तत्र वधनिमित्तं पाषाणादिप्रहारः काशर्योपलंभे मृतिहेतुर्व्याधिर्ज्ञेयः लालादर्शने सर्पदंशो निमित्तमित्याद्युचितैर्लिङ्गैर्निमित्तस्वरूपं निश्चेतव्यम् वाह्यावयवभंगचिन्हमभिधायाभ्यन्तरावयवभंगचिन्हमाह आसेति आसार्थचोदितावापि अर्ध्यानैव गच्छति मनुना चैव मेके न सर्वशास्त्राणि जानता ॥ २१ ॥ प्रायश्चित्तं तु तेनोक्तं गोघ्नश्चांद्रायणं चरेत् केशानां रक्षणार्थाय द्विगुणं व्रतमाचरेत् ॥ २२ ॥ द्विगुणं व्रतं आदिष्टे दक्षिणा द्विगुणा भवेत् ॥ २३ ॥ यस्य न द्विगुणं दानं केशाश्च परिरक्षिताः तत्पापं तस्य तिष्ठेत्त्यक्त्वा च नरकं व्रजेत् ॥ २४ ॥ स्त्रीणामपि गोवधादौ कर्तव्यतामाह ॥ यत्किंचित्क्रियते पापं सर्वकेशेषु तिष्ठति सर्वान् केशान्समुद्धृत्य छेदयेदंगुलिद्वयम् ॥ १ ॥

रक्षणवास्ते दूणा व्रतकरें २२ और दूणेव्रतके कीतयां होयां दक्षिणा भी दूणी देणे योग्यहै २३ ॥ यस्येति जिस पुरुषने दूणी दक्षिणा नहीं दित्ती और केशोंकी रक्षा करी है तिस पुरुषका पाप स्थिर रहताहै और पीछे देहको त्यागकर्के नरकों प्राप्त होताहै ॥ २४ ॥ अब स्त्रीयांकोभी गोवधादि पाप विषे कर्तव्यता कहतेहैं यदिति जो कुछ पाप स्त्रीकर्तीहै सो संपूर्ण केशोंविषे स्थित रहताहै उन स्त्रीयांको चाहिए कि संपूर्ण केशोंको रखकरके दो २ अंगुलि प्रमाण केश कटावेण परंतु एह विधि सधवाको है और विधवाको अधिक कटावेमे भी दोष नहीं है १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ३५

इस प्रकार स्त्रियां और कुमारीयांको शिरका मुंडन किहाहै और स्त्रियां को केश कटाणे योग्य नहिहै और नापतितें दूरविषें शयन करणा २ और रात्रीमे गौ शाला विषें वास नहिं करणा और दिनमे गौआंके पीछे नहिं जाणा और नदीविषें वा संगमविषें वा वनविषें नहिं जाणा ॥ ३ ॥ स्त्रीयांको चर्म का वस्त्र नहिं लेणा इसप्रकार व्रतकों स्त्री करेअर्थात् एह संपूर्ण वार्त्ता नहिं करे जो करणा है तिसको कहतेहैं त्रीति त्रिकाल स्नानकों करे और देवतयांका पूजन करे ४ और कच्छू चांद्रायणादि जो व्रत तिसको स्त्री बंधुओं के मध्यविषें हि करे और घरविषें सदाहि स्थित रहे पवित्र हो कर्के व्रत नू करे ५ अब पापछपाणे वालेकी निंदाकरतेहैं इहेति इससंसार विषें जो पुरुष गोवधकर्के पीछे उसपाप हो छपातेहैं सो पुरुष घोर नरकविषे प्राप्तहोतेहैं कैसा

एवंनारीकुमारीणां शिरसोमुंडनंस्मृतम् नस्त्रियाःकेशवपननदूरेशयनासनम् २ ॥ नचगोष्ठेवसेद्रात्रौनदिवागाश्रनुव्रजेत् नदीपुसंगमेचैवशरण्येषुविशेषतः ३ नस्त्रीणामजिनंवासोव्रतमेवंसमाचरेत् त्रिसंध्यंस्नानमित्युक्तंसुराणामर्चनंतथा ॥ ४ ॥ बंधुमध्येव्रतंतासांकच्छूचांद्रायणादिकम् गृहेषुसततं तिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् ॥ ५ ॥ इहयोगोवधंकृत्वाप्रच्छादयितुमिच्छति सयातिनरकंघोरं कालसूत्रमसंशयम् ॥ ६ ॥ विमुक्तोनरकात्तस्मान्मर्त्यलोकेप्रजायते क्लीबोदुःखीचकुटीचसप्तजन्मानिवैनरः ७ तस्मात्प्रकाशयेत्पापंस्वधर्मसततंचरेत् स्त्रीवालभृत्यविप्रेषुश्रतिकोपंविवर्जयेत् ८ ॥ इत्युपपातकप्रायश्चित्तेषुगोवधप्रायश्चित्तं प्रथमम् । १ । ॥ अथायाज्ययाजने प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ ब्रात्यानांयाजनंकृत्वापरेपामंत्यकर्मच अभिचारमही नंचत्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ १ ॥

बरकहै कालसूत्र है नाम जिसका ६ तिस नरकते विमुक्त होकर मनुष्यलोक विषे उत्पन्न होताहै तिसविषे भी नपुंसक और कुष्टी और दुःखी सप्त जन्मपर्यंत सो पुरुष रहताहै ७ तिस कारणते पुरुष अपने पापकों प्रकट कर देवे अपने धर्मकों सदा करता रहे स्त्री और वालक और नौकर और ब्राह्मण इनांविषें बहुत कोप न करे । ८ ॥ एह उपपातक प्रायश्चित्त विषें गोवधका प्रायश्चित्त प्रथम किहाहै ॥ १ ॥ अब नहिं जो यज्ञका अधिकारी तिसको यज्ञकरवाणे विषें मनुजी प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्रात्येति संस्कारते हीन जो पुरुष इनकों यज्ञ कराणा और बंधुआतें भिन्न औरोंका अत्यकर्म करणा और अहीन जो अभिचार इनके विषे जो दोषहै सो तिन कृच्छ्रवर्त्ता कर्के दूर होताहै ॥ १ ॥

३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

परेषामंत्यकर्म एह अत्यंत अभ्यासका विषय है अर्थात् बहुत बार करणेका विषय है वा शूद्रके अत्यकर्मकरणेका विषय है प्रायश्चित्त बहुत होणेतें अहीन क्या यज्ञविशेष दो रात्रीतें लेकर वारां १२ दिन तक जो दूसरेके मारणका उपाय करणा सो अभिचार किया है ॥ इसमें एह अभिप्राय है कि एह अभिचार गुरुआदिका करे तो दोष है होरकाकरे तो दोष नहि है इसमें वचन है (अभिचारोऽनभिचारणीयस्येति) और वो अभिचार भी दोतीनदिनआदिकके साध्य जानना एह दिनसाध्य नहि जानना इसमें भ्रुतिप्रमाण है (अहीनेति) याज्ञवल्क्य जो कहते हैं त्रीनिति संस्कार रहित पुरुषको यज्ञ करवाणवाला और अभिचारी तीन कृच्छ्र व्रत करे और वेदभुलाणे वाला वर्ष पर्यंत यवभक्षण करे किसे शरणागतको त्यागे तौभी यवभक्षणकरे तां शुद्ध होता है १ इसका तात्पर्य एह है कि प्राजापत्यप्रभृति जो तीनकृच्छ्र हैं तिनांको गुरु लघु भाव है क्या इनमें कोई गुरु है और कोई लघु है तिसी तरह इनांको त्रित्वनिमित्तकं गुरु लघु भाव कर्के कल्पना

परेषामंत्यकर्मैत्यत्यंताभ्यासविषयम् शूद्रांत्यकर्मविषयं वा प्रायश्चित्तस्य गुरुत्वात् अहीनाद्विरात्रादिद्वादशाहपर्यंतोहर्गणः। अयमभिचारोऽभिचारा नर्हस्य गुर्वादेः कृतो दोषावहो नान्यस्य अभिचारोऽनभिचारणीयस्येति वचनात् सोऽप्यहीनो द्विविरात्रादिसाध्यः न त्वेकदिनीय इत्यर्थः अहीनयजनम शुचिकरमिति श्रुतेः। याज्ञवल्क्यः। त्रीन्कृच्छ्रानाचरेद्वात्ययाजकोभिचरन्नपि वेदप्लावीयवा इत्यब्दं त्यक्त्वा च शरणागतम् १ त्रीन्कृच्छ्रान्प्राजापत्यप्रभृतान् तेषांच गुरुलघुभूतानां त्रित्वं निमित्तगुरुलघुभावेन कल्पनीयम् किंच उपपातकशुद्धिः स्यादेवं चांद्रायणेन तु पयसा वापि मासेन पराकेणाथ वा पुनः २ एवं गोवधोक्तव्रतप्रकारेण मासं पंचगव्याशनादिना अन्येषां व्रात्यतादीनामुपपातकानां शुद्धिर्भवेत् वा वक्ष्यमाणलक्षणेन चांद्रायणेन मासं पयोव्रते न वा पराकेण वा शुद्धिर्भवेत् ॥

क एो योग्य है अर्थात् निमित्त अधिक होवे तद इनांको गुरु करणा जेकर निमित्त लघु होवे तां लघु करदेणा जेकर निमित्त मध्यम होवे तां एक लघु दूसरा गुरु करणे योग्य है १ कुछक और कहते हैं उपेति एवं क्या गोवधोक्त प्रकार कर्के और चांद्रायण व्रत कर्के उपपातककी शुद्धि होती है वा महीने पर्यंत जलपान करणे कर्के अथवा पराक व्रत कर्के शुद्धि होती है २ इसी अर्थको स्पष्ट कर्ते हैं एवमिति इसतरां गोवध विषे कहा जो व्रतप्रकार मास पंचगव्याशनादि तिस कर्के और व्रात्यतादि उपपातकोको शुद्धि कही है वा आगे कहणा है लक्षण जिसका ऐसे चान्द्रायण कर्के वा महीनेका जो पयोव्रत तिस कर्के वा पराक व्रत कर्के शुद्धि कही है एह चार व्रत दिखाए हैं ॥

॥ श्रारणवोर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ३७

परंतु इसी विषे अन्यत्र सिद्धका अन्यत्र समर्थनरूप जो अतिदेशवाक्य तिसरे गोचर्म का वस्त्र और गोसेवादिक गोवध विषे कितनेक असाधारण धर्महैं तिन्हीं कर्के कुछक न्यूनता जानणे योग्यहै ॥ अर्थात् गोचर्मधारणादि इसमें नहि करणे योग्य ॥ एह व्रत चतुष्टय कामनाके विना कर्णे वाला जो पुरुष तिस विषे शक्तिकी अपेक्षा कर्के विकल्पकरणे योग्यहै अर्थात् जैसी शक्ति होवे तैसा करणे योग्यहैं और कामना कर्के करणे वाला जो पुरुष तिसविषे कहतेहैं ॥ एतदिति ॥ उपपातकी जो द्विज हैं सो अवकीर्णिकों त्याग कर्के अपणी आदि वास्ते चांद्रायण व्रतकों कोईसकों स्पष्टकर्तेहैंकि जिसका स्वप्रादिविषे बीर्घ्यादि स्खलन आवे उसका नाम अवकीर्णीहै एह जो मनुका कथनकिया होया तीनमहोनेका व्रत एहि देखे योग्यहै ॥ इसी वचनते एह प्रायश्चित्तका अतिदेश है सो सब उपपातक गणों विषे पठित जो पाप हैं सो कैसेहैं कि कियाहै प्रायश्चित्त जिनांकावा नहि कियाहै प्रायश्चित्त जिनांका

अत्रातिदेशसामर्थ्याद्गोचर्मवसनगोपरिचर्यादिभिर्गोवधासाधारणैः कतिपयैर्न्यूनत्वमवगम्यते एतच्च व्रतचतुष्टयमकामकारेशक्त्यपेक्षयाविकल्पितं द्रष्टव्यम् ॥ कामकारेतु ॥ एतदेव व्रतं कुर्युरुपपातकिना द्विजाः अवकीर्णिवर्जं शुद्धयर्थं चांद्रायणमथापिवेति मनुक्तं त्रैमासिकं द्रष्टव्यम् अतएव वचनादयं प्रायश्चित्तादेशः सर्वेषामुपपातकगणपठितानामुक्तप्रायश्चित्तानामनुक्तप्रायश्चित्तानां चावकीर्णिवर्जितानामविशेषेण वेदितव्यः अवकीर्णिनस्तु प्रतिपदोक्तमेव अतो ब्राह्म्यतादिषु अस्मिन् शास्त्रे शास्त्रांतरे वा दृष्टैः प्रायश्चित्तैः सहोपपातकशुद्धिः स्यादेवमित्यादिना प्रतिपादितव्रतचतुष्टयस्य समविषमताकल्पनेन विकल्पो विषयविभागो वा श्रयणीय इति मिताक्षरा ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेपीत्यमेव व्याख्यातम् । तद्यथा अयाज्ययाजको ब्राह्म्ययाजको ब्राह्म्योपनेता ब्राह्म्याध्यापकः ॥

और अवकीर्ण कर्के रहित जेहें तिनांका अविशेष कर्के जानणे योग्यहै अर्थात् एह प्रायश्चित्त समना उपपातकोंदा साक्षाहै २ और अवकीर्ण का पृथक् प्रायश्चित्त किया है इस कारण तें ब्राह्म्यतादियोंको इस शास्त्र विषे वा शास्त्रांतर विषे देखे होए जो प्रायश्चित्त तिनांके साथहि- (उपपातकशुद्धिः स्यात्) इत्यादि वचन कर्के प्रतिपादन कीवे जो चाग्रव्रत तिनांको सम और विषमताके कल्पना करणे कर्के विकल्प वा विषयविभाग आश्रय करणे योग्यहै एह मिताक्षरामें कहाहै और प्रायश्चित्तेन्दु शेखरविषेभी इसी प्रकार व्याख्यान कियाहै सो जैसे हेतुसैं कथन करतेहैं अयाज्येति नहि जिसको यज्ञका अधिकार तिसको यज्ञ करवाणवाला १ और संस्कारमें हीन जो पुरुष तिसको यज्ञ करवाण वाला २ और ब्राह्म्यपुरुषको यज्ञोपवीत करवाण वाला ३ और ब्राह्म्य कौपदाणवाला ४

३८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और अपवित्र पुरुषको यज्ञ करवाण वाला ५ और शूद्रका जो कर्म क्रियादि करवाणवाला ६ और वेद भुलाण वाला ७ और चौरते विना जो शरणागत पुरुष तिसको त्यागण वाला ८ और जो पुरुष चोरकी रक्षा करण वाला ९ और वशीकरण उच्चाटनादि कर्के जो अभिचार कर्ता है १० एह संपूर्ण न जाणकर्के करें तां रुच्छ और सांतपन और अतिरुच्छ इनांको यथा योग्य करें परंतु एह व्यवस्था है कि कितेक तीन इकठे करणे कितेक इक करणा अर्थात् जैसा पाप होवे तैसाही व्रतकरणा ॥ अब प्रायश्चित्तविवेकविषे मनुजी कहतेहैं असदिति खांटे दानको लयणेवाला उभयमुखीगौ और तिलधेनु आदिदानका जो प्रतिग्रहीता सोहै असत्प्रति ग्रहीताहै और नहिं यज्ञका जो अधिकारी तिसको यज्ञ करवाणवाला और नक्षत्रोंकर्के जीवकाकरण

अहीनयाजकः शूद्रांत्येष्टिकर्मयाजको वेदविष्ठावी तस्करेतरशरणागत त्यागी तस्कररक्षकः वशीकरणोच्चाटनादिरूपाभिचारकर्ताचाऽमत्या कृच्छ्रसांतपनातिकृच्छ्रेषु त्रिषु यथायोग्यं कचित्समुदितं कचिदेकंकुर्यादिति प्रायश्चित्तविवेके मनुः । असत्प्रतिग्रहीतारस्तथैवायाज्ययाजकाः नक्षत्रैर्जीवते यश्च सौंधकारं प्रपद्यते वसिष्ठः ॥ श्रद्धधानस्य भोक्तव्यं चौरस्यापि विशेषतः न त्वेव बहुयाज्यस्य यश्चोपनयते बहून् १ प्रायश्चित्ते त्रिविधायनः । बहुप्रतिग्राह्यस्य वा प्रतिगृह्य अयाज्याभ्याजयित्वा अप्रतिग्राह्यस्य वा प्रतिगृह्य अनाशयस्य वा अन्नमशित्वा तरत्समं दीयं जपेत् इत्ययाज्ययाजकप्रायश्चित्तं द्वितीयम् ॥ २ ॥ ❀

वाला पुरुष एह सभ अधिकार नरकविषे प्राप्तहोतेहैं १ अब वसिष्ठजी कहतेहैं अदिति श्रद्धावाला चोरभी होवे तिसका अन्न भक्षण करलैणा और बहुत यज्ञ करवाणवाले पुरुषका और बहुतयो कोयज्ञोपवीत करवाण वालेका अन्न भक्षण नहिं करणा ॥ इस प्रायश्चित्तविषे विधायनजी कहतेहैं ॥ बहुत दान लयण वाले पुरुषका दान लयणा । और अयाज्यपुरुषको यज्ञकरवाणा और जिसका अन्न नहिं खाणा होवे तिसका भी खाई लयणा इनां सभनां विषे तरत्समं दीय नाम जो ऋचा तिसका जप करणे योग्यहै ॥ एह नहिं यज्ञका जो अधिकारी तिसको यज्ञ करवाण वाले पुरुषका प्रायश्चित्त कियाहै एह उपपातक गणनामें दूसरा है ॥ २ ॥ ❀

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ३९

अब पत्नी गमनका प्रायश्चित्त कहतेहैं पारदार्यमिति इसविषे जो पारदार्यपापहै सो गुरुतल्प और तत्सम और तदतिदेशिक इनां भिन्न विषयजानणा तिनाविषे उपपातकका जो सामान्य प्रायश्चित्तहै तिसका गुरुदारादिविषे अपवाद पिच्छे कियाहै तैसें अपवादान्तर गौतमजी कहतेहैं शार्षिकमिति वर्ष ब्रह्मचर्यके प्रसंगमें कियाहै कि ऐसैं एक वर्षहि ब्रह्मचर्य उपपातक विषे जानणा दोवर्ष परस्त्रीगमनविषे ब्रह्मचर्यजानणा और त्रयवर्ष ब्रह्मचर्यवेदपाठीकी स्त्रीविषे जानणा इसविषे इसप्रकार व्यवस्था कहतेहैं ॥ ऋत्विति ऋतुकालविषे कामना कर्के जातिमात्र ब्राह्मणकी गमन विषे दोवर्ष ब्रह्मचर्य धारणातिसीविषे वेदपाठीकी स्त्रीविषे गमनकरे तां तीनवर्ष ब्रह्मचर्य धारणकरे

● अथपारदार्यम् पारदार्यंचात्र गुरुतल्पतत्समतदातिदेशिकव्यतिरिक्तविषयम् तत्रोपपातकसामान्यप्रायश्चित्तस्य गुरुदारादावपवादोक्तएव । तथाअपवादान्तरमाह गौतमः । वार्षिकंब्रह्मचर्यप्रस्तुत्योपपातकेषुचैवमिति द्वेपरदारे त्रीणिश्रोत्रियस्येति अत्रेत्यव्यवस्थामाहुः । ऋतुकाले कामतोजातिमात्रब्राह्मणीगमने वार्षिकं ब्रह्मचर्यम् तस्मिन्नेवकाले कर्मशालित्वादिगुणयोगिन्या ब्राह्मण्यागमने द्वे वर्षे तत्रैव श्रोत्रियभार्यागमने त्रैवार्षिकमिति यद्वा ब्राह्मणीक्षत्रियावैश्यापरत्वेन त्रैवार्षिकद्वैवार्षिकैकवार्षिकाणां व्यवस्थेति ऋतुकालादन्यत्रगमनेतूपपातकेष्वौत्सर्गिकतयोक्तंबोध्यमितिदिक् ॥ अत्रोशनाः ॥ गमनेतुव्रतंयत्स्याद्गर्भेतद्द्विगुणंचरेत् ॥ १ ॥

इसी विषे और पक्ष कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी और क्षत्रियाणी और वैश्यकी स्त्री इनांकां गमन काविषय रक्ष कर्के तीनवर्ष वा दो वर्ष वा एकवर्ष इनकी व्यवस्था जानणी अर्थात् ब्राह्मणी विषे गमन करणें तीनवर्ष ब्रह्मचर्य करणा और क्षत्रियाणी विषे गमन करणें दो वर्ष ब्रह्मचर्य धारणा और वैश्यकी स्त्री विषे गमन करणें एकवर्ष ब्रह्मचर्य धारणा ऐसी व्यवस्थाहै और ऋतुकालमें अन्यत्र गमन विषे उपपातक विषे उपपातकशुद्धिः स्यादित्यादि वाक्य कर्के जो सामान्य प्रायश्चित्त कियाहै सो जानणे योग्यहै ॥ इसीविषे शुक्रजी कहतेहैं गमनइति गमन विषे जो व्रत कियाहै जेकर गमनकरणें गर्भ होवे तां दुणा व्रत करे १ ॥

४० ॥ श्रीरण्वार कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

संवर्त जी कहतेहैं कथमिति क्षत्री वा वैश्य ब्राह्मणीविषे गमनकरे तद कृच्छ्र वा सांतपन व्रतकों पापकी शुद्धि वास्ते करे १ और शूद्र कामके वश होया होया ब्राह्मणी विषे गमन करे तद गोमूत्र युक्त जो यव तिनांको पापकी शुद्धि वास्ते एक महीना भक्षण करे २ परंतु एह प्रायश्चित्त अत्यंत व्यभिचारिणी ब्राह्मणीके गमन विषे जानणा ॥ होरनां विषे कहतेहैं प्रातिलोम्येति प्राति लोम्यविषे पुरुषका वध करणा वा नासा कर्णादिका कट देणा अर्थात् शूद्र वैश्यादि स्त्री मेंगमन करे वैश्य क्षत्रियादिस्त्री विषे गमन करे क्षत्री ब्राह्मणी विषे गमन करे तद इसमें ऐसी व्यवस्था है परंतु इसका ऐसा अभि प्राय है कि (प्रातिलोम्ये) इत्यादि वचन दंडपारुष्यके दंडविषे है तिस जगादंडवहुत श्रवण कर्णैकके प्रायश्चित्तभी बहुत जानणा ॥ अब नीचजातिकी स्त्रीविषे आप स्तंवजी कहतेहैं म्लेच्छाति म्लेच्छकी स्त्री अर्थात् मुसलमानकी स्त्री म्लेच्छ शब्दका अर्थआगे

संवर्तः कथंचिद्ब्राह्मणीं गच्छेत्क्षत्रियो वैश्य एव च कृच्छ्रं सांतपनं वा स्यात् प्रायश्चित्तं विशुद्धये १ शूद्रस्तु ब्राह्मणीं गच्छेत्कथंचित्काममोहितः गोमूत्रयावका हारो मासेनैकेन शुद्ध्यति २ इदं चात्यंत व्यभिचारित ब्राह्मणी गमन विषयम् अन्यत्र तु । प्रातिलोम्ये वधः पुंसो नासा कर्णादिकर्त्तनमिति दंडगौरवस्मरणा त्प्रायश्चित्तमपि गुरुतरं कल्प्यम् आपस्तंबः । म्लेच्छी नटी चर्मकारी रजकी व रटी तथा एतासु गमनं कृत्वा च रेचान्द्रायणद्वयमिति १ रजकश्चर्मकारश्च नटो वरट एव च कैवर्त्तमेदभिल्लाश्च सप्तैते ह्यंत्यजाः स्मृताः २ एतासां चांत्य जस्त्रीणां मध्ये यदेकस्याव्यवाये प्रायश्चित्तमभिहितं तत्सर्वासु भवति सर्वासां सदृशत्वात् ॥ तथा होशनाः ॥ बहूनामेकधर्म्माणामेकस्यापि यदुच्यते सर्वे पातद्रवेत्कार्थमेकरूपहिते स्मृता इति १ ॥

आवेगा जो गोमांसका भक्षक है और सदा चाग्नेहीन इत्यादि और नटुए की स्त्री और चमयागी और धांवण और डूमणी इनां विषे गमनकर्के दो चांद्रायण व्रत करे तां शुद्ध होता है १ चर्मकार पदमें और कामी स्मरण आया है इसकर्के तिनकी गणना करतेहैं रजक इति धोवी और चम यार और नटुआ और डूम और मलाह और मेद इनका हि भेद है जिनको दंडई कहतेहैं और भिड बेलदार अथवा वनमें रहण वाले किरातलोक एह सत्त अत्यजजाति कही है २ एह जो अत्यज इनांकी स्त्रियांके मध्यविषे जो इकके गमनविषे प्रायश्चित्त है सो सभनां विषे जानणा क्योंकि सभनांको तुल्य होंगें ॥ तैसेहि शुक्रजी कहतेहैं बहूनामिति एकधर्मवाले जो बहुत होण तिनविषे एकका जो कार्य कहीदा है सो कार्य सभनांको होता है जिसकर्के सो सम्पूर्ण एक रूप कहेहैं ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ४१

वृहत्संवर्तनेभी एही किया है ॥ रजकेंति रजककी स्त्री और फंदकीकी स्त्री और नटुए की स्त्री और वंज वा चम्म इनां कर्के जो उपजीविका करण वाले तिनांकी जो स्त्री इनांविषे ब्राह्मणादि गमनकरे तां दो चान्द्रायण व्रत करणें कर्के शुद्ध होता है १ ॥ शुक्रजी कहते हैं चांडाल्यामिति चांडालोविषे गर्भको स्थापनकरे तां गुरुतल्प व्रत करे अर्थात् गुरुतल्प तुल्य पाप होता है ॥ जो आपस्तंबजीका वचन है कि अंत्यजायामिति पीछे कथन कीते जो अंत्यज तिनांकी स्त्री विषे जद ब्राह्मणादिकी प्रसूति होवे तां तिसविषे प्रायश्चित्त नहि होता है तिसपुरुषको विदेशमें निकाल देणा इसमें संशय नहि करणा एह इच्छा कर्के करण वाले पुरुष विषे जानणा ॥ १ ॥ इसका स्पष्टार्थ कहते हैं ॥ इसका एह अर्थ है अंत्यजाके साथ गमन करण वाला कृतागस्य क्या किया है अपराध जिसमें कृतांक

वृहत्संवर्तः ॥ रजकव्याधशैलूपवेणुचर्मोपजीविनीः एतास्तुब्राह्मणोगत्वा चरेच्चांद्रायणद्वयम् ॥ १ ॥ उशनाः ॥ चांडाल्यांगर्भमारोप्य गुरुतल्पव्रतंचरेत् यत्वापस्तंबवचनम् । अंत्यजायांप्रसूतस्य निष्कृतिर्न विधीयते निर्वासनं कृतागस्य तस्य कार्यमसंशयमिति १ तत्कामकारविषयमिति अंत्यजायांप्रसूतस्य अंत्यजागामिनः कृतागस्य कृतापराधस्य कृतांकस्येति वा पाठः अत्र सर्वत्र मत्याभ्यासे प्रतिनिमित्तनैमित्तिकानुवृत्तौ प्रसक्तायां विशेषमाह लौगाक्षिः । अभ्यासेऽहर्गुणावृद्धिर्मासादर्वाग्विधीयते ततो मासगुणावृद्धिर्यवत्संवत्सरं भवेत् १ अमतिपूर्वावृत्तौ विशेषमाह । सकृत्कृते पुन्यत्प्रोक्तं त्रिगुणं तत् त्रिभिर्दिनैः मासात्पंचगुणं प्रोक्तं पणमासाद्विंशतिमासाद्दशगुणं भवेत् २ संवत्सरात्पंचदशगुणं त्रिंशद्दशगुणं भवेत्

स्य इस पाठमें एह अर्थ है क्या कीता है अंक क्या चिन्ह भगका अथवा लिंगका जिसको ऐसा कर्के निकाल देणा ॥ इन्हां सभना विषे जाण कर्के बहुत अभ्यास दे होयां २ जितने निमित्त होवें उतने ही नैमित्तिक होने चाहिए अर्थात् जितने पाप होवें उतने ही प्रायश्चित्त होने चाहिए इस न्यायके प्रसंग के होयां विशेष कहते हैं लौगाक्षिजी अभ्यास इति महीनेके उरें अभ्यास दे होयां एक दिन प्रायश्चित्त की वृद्धि करणी जैसे अठ दिनके प्रायश्चित्तमें नव १ दिन होण और वर्ष तक अभ्यास दे होयां महीनेकी वृद्धि करणी १ अज्ञान पूर्वक अभ्यास विषे विशेष कहते हैं सकृदिति एकवेर पापविषे जो प्रायश्चित्त किया है सो प्रायश्चित्त तीन दिन पाप करणेंमें त्रिगुण करणा और महीने तक पाप करणेंमें पंचगुणा करणा और छे ६ महीने तक पाप करणेंमें दश गुणा करणा और वर्ष तक पाप करणें में पंद्रां १५ गुणा करणा दो वर्ष पाप करणें में बीस गुणा करणा

४२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

इसप्रकार कल्पना करणे योग्यहै और इसके आगे होवे तां अपनी कल्पना करणी चाहिए जैसे एकवार करणमें जो कियाहै सो दोवर्षउप्पर जद तीनदिन होए तां बीस गुणांकर्के पीछे एकवारकरणे वालेको त्रिगुणकरणा इसके आगे मासदिविषे ऐसेहि कल्पनाकरलयणी चारवर्ष तक तिसके आगे छेवर्ष तक फेर ऐसेहि जाणो इसमें कोई ऐसा अर्थकरतेहै कि दोवर्षतें आगे तीसरेवर्षविषे पंचगुणा वृद्धिके हसावसें २५ गुणाकरणे चाहिए परंतु इसमें एहवातध्यान करणी चाहिए कि दोवर्षतें जद एकमहीनाअधिकहै वा ४ अथवा १०तांभी पंजहिवर्षोंगे और चौथे वर्ष विषे १० व्रत पांचमे १५ ऐसेहि जाणो यह शातातपजीका वचनयथार्थहै १ अव दूसरे व्रतकी व्यवस्थाकहतेहैं विधेरिति एहजो पहलीविधिहै इसते दूसरी विधिविषे दूणा करणा एहजो आवृत्ति विधानहै सो महापातकके विषयमे जानणे योग्यहै अव औरकहतेहैं पुषेति किसेपुरुषके

अतोप्येवंप्रकल्प्यंस्याच्छातातपवचोयथा ३ यत्तु विधेःप्राथमिकादस्माद् द्वितीयेद्विगुणंभवेत् इत्यावृत्तिविधानम् तत्तुमहापातकविषयमितिदिगिति पुरुषांतराव्यभिचारितां जातिमात्रविप्रामृतौ विप्रोगत्वापूर्वोक्तवार्षिकं ब्रह्मचर्यव्रतम् धर्मादिकर्मशीलत्वादिगुणशालिनीं तादृशींगंतुर्विप्रस्यद्वि वार्षिकंप्रायश्चित्तम् श्रोत्रियपत्न्यांतादृश्यांत्रिवार्षिकंतत् ताभिर्यदिद्रव्य दत्तंभवेत्तर्हितत्संत्यज्यप्रायश्चित्तम् द्वित्रिचतुर्वारगमने क्रमेण द्वित्रिचतुर्गुणम् अग्रेचपातित्यम् एवंद्वितीयतृतीयादिगमनेपि

साथजिसने व्यभिचार नाहै किया ऐसी जो जातिमात्र ब्राह्मणोंतिसके साथ ऋतुकालविषे ब्राह्मण गमनकरे तां विषे पूर्वोक्तवर्षतक ब्रह्मचर्य व्रतकरे तदशुद्धहोताहै और धर्मादि कर्म और शीलत्वादिगुणों कर्के युक्त ब्राह्मणो गमन करण वाले ब्राह्मणको दोवर्षका प्रायश्चित्तहै और ॥ वेदपाठोको धर्मादि कर्के युक्तस्त्रीविषे गमन करे तां तीन वर्ष प्रायश्चित्तकरणा तिनां स्त्रियांने जो कुछ द्रव्य दित्ताहै तिसको त्याग कर्के प्रायश्चित्तकरणा परंतु दोषार अथवा तीनवार अथवा चारवार उत्तीर्णविषे गमन करणमें दूणा त्रीणा चौगुणा व्रत करणा चाहिए और इसतें अधिक गमन करे तां पतितहोताहै अर्थात् तिसका प्रायश्चित्त नहिहै एह किसेका मतहै ॥ और कालियुगमें पतितकाभी प्रायश्चित्तहै एह आगे महापातक प्रकरणविषे आवेगा एवमिति इसी तरह दो त्रय और चार स्त्री विषे गमनकरणमें प्रायश्चित्त जानणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ४३

और इससे विलक्षण शूलपाणि मिताक्षरादिकारोंने किया है ॥ एकेति एकस्त्री विषे दो त्रय बार गमनदे होयां पूर्वोक्त ही द्वि त्रि चतुर्गुण व्रतका एकपादन्यून करणा और क्षत्रियादि अपणे वर्णकीस्त्रीविषे गमन करे तां पूर्वोक्त व्रतका एक पाद ऊन व्रत करेऔर ब्राह्मणको गुणवाली जो क्षत्रियादियोंकी स्त्री तिसाविषे गमन करणेंतें दो वर्ष इकवर्ष छे ६ महीने तक कमते व्रत करणा चाहिएअर्थात् क्षत्रीकी स्त्री विषे दो वर्ष और वैश्यकी स्त्रीमें एक वर्ष शूद्रकी स्त्रीमें छे महीने इस तरांन्यवस्थाजानणी पराई जो गुणवालीहै शूद्रो तिसाविषे शूद्र गमन करे तां छे ६ महीनेका व्रत करे इसमें अज्ञान कर्के करे तां सबजगा अर्द्ध व्रत जानणा अपणे भर्ता से अतिरिक्त समान वर्णके एक पुरुष साथ गमन करण वाली स्त्री के साथ गमन करण वालेकों पूर्वोक्तहि व्रत क्या हेपरदारे इसीका इक पाद न्यून व्रत करणा उचित है ॥ दो पुरुष साथ गमन करण

शूलपाणिमिताक्षराकारादयस्तु एकस्यामेवद्वित्रिवारगमने पूर्वोक्तमेवपाद हान्येतिप्रोचुः । क्षत्रियादीनांच स्वस्ववर्णासु गमनेपादहानिः विप्रस्यगुण वर्तापुक्षत्रियादिस्त्रीषु द्विवार्षिकैकवार्षिकपण्मासिकानीति शूद्रस्यपरकी यायांगुणवत्यांशूद्रयांगंतुः पाण्मासिकम् अकामतःसर्वत्रैतदधेम् । स्वभ तृव्यतिरिक्तसवर्णैकपुरुषगामिन्यां गंतुः पूर्वोक्तमेव पादहान्याकार्यम् पुरु पद्वयगामिन्यां द्विपादहानिः पुरुषत्रयगामिन्यां त्रिपादहानिः पुरुषचतुष्ट यगामिन्यां स्वैरिणिसंज्ञायां विप्रायां गंतुस्त्रयहोपवासपूर्वकं घृतपात्रदानम् तादृश्यां क्षत्रियायामुपवासपूर्वकमाढकयवदानम् ॥ वैश्यायांगंताचतु र्थकालाहारोविप्रान्भोजयेदिति शूद्रायांगंतुः सचैलस्नानपूर्वकमुदकुंभदा नम् । पंचमादिगामिन्यांवंधकीसंज्ञायां अष्टमुष्टियवदानम् तादृश्यांशूद्रायां

विप्रस्योदकुंभदानम्

वाली के साथ गमन करण वालेकों दो पाद न्यून व्रत करणा त्रय पुरुष साथ गमन करण वालीके साथ गमन करण वाले कों त्रय पाद न्यून व्रत करणा ॥ चार पुरुषके साथ गमन करण वालीकी स्त्रैरिणी संज्ञाहै ऐसी ब्राह्मणी विषे गमन करण वाला त्रय उपवास पूर्वक घृतपात्र दान करे ॥ तैसीहि क्षत्रियाणी विषे गमन करणेंतें उपवासपूर्वक एक आढकयवदान करे ॥ तैसेहि वैश्यकीस्त्रीके साथ गमन करण वाला चौथे काल भोजन करे और ब्राह्मणांकों भोजन देवे ॥ तैसी शूद्रो विषे गमन करण वाला सचैल स्नान पूर्वक जलपूणेघटका दान करे ॥ पंचमादि पुरुष साथ गमन करण वाली की वंधकी संज्ञाहै इस विषे गमन करण वालेकों अष्ट मुठो यवदान करणा योग्यहै वंधकी संज्ञावाली शूद्रोविषे गमन कर णेंतें ब्राह्मणको जलपूरितघटका दान देणा उचितहै

४४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

क्षत्रीति वंधकीक्षत्रियाणीविषे गमनकरणेत् गोदानकरणां और वैश्याविषे गमन करणेत् वस्त्र दानकरणा ॥ जेकर बहुत वेर गमन करे तां प्रायश्चित्त भी बहुत वेर करे । इससे विशेष वंधकी गमन विषे षड्त्रिंशन्मतमें भी कियाहै ब्राह्मणीमिति वंधकी ब्राह्मणी विषे गमन करे तां अष्ट मुष्टि अन्न ब्राह्मणके ताई देवे और वंधकी राजाकी स्त्री विषे गमन करे तां धनुष देवे परंतु राजा इसजगा जातिमात्र जानणा पृथिवीपति नहि पृथ्वीपतिकी स्त्रीको ऐसाहोणा संभावना विषे नहि आउताहै और वैश्याविषे गमन करे तां वस्त्र दान करे १ शूद्री विषे गमन करे तां जलका घट ब्राह्मणके ताई देवे वा एक दिन उपवास करे और ब्राह्मणको भोजन देवे २ किंचित् नाम अष्टमुष्टि धान्यका है ॥ अब प्रचेताजी और प्रायश्चित्त कहतेहैं शूद्री वंधकीके साथ गमनदेहोषां आचमन करे प्राणायाम करे ॥ ब्राह्मण वंधकी साथ गमन करे तां गडवी दान करे

क्षत्रियायांधेनुदानम् वैश्यायांवस्त्रदानम् । अभ्यासेप्रायश्चित्तावृत्तिः वंधकी गमनेषड्त्रिंशन्मतेपि । ब्राह्मणीबंधकीगत्वाकिंचिद्व्याद्विजातये राजन्यां चधनुर्दद्याद्वैश्यांगत्वातुचैलकम् १ शूद्रांगत्वातुवैविप्रउदकुंभद्विजातये दिवसोपापितोवास्याद्व्याद्विप्रायभोजनमिति २ किंचिदष्टमुष्ट्यात्मकंधान्यम् प्रायश्चित्तांतरमाह प्रचेताः । वंधकीगमने उपस्पृश्य प्राणायामं । ब्राह्मण वंधकीगत्वाकमंडलुंदद्यात् क्षत्रियबंधकीमायुधम् वैश्यबंधकीप्रतोदमिति अत्र त्रिषु वर्णत्रयोपादानात्प्रथमंशूद्रबंधकीपरम् स्वैरिणीबंधक्योर्लक्षणं स्मृत्यंतरे । चतुर्थेस्वैरिणीप्रोक्तापंचमेबंधकीमतेति १ गौडास्तु ॥ विप्रादेः क्षत्रियादिगमनस्यैवार्धाधादिहानिमाहुः ॥

क्षत्रिय वंधकी विषे गमन करे तां धनुष दान करे ॥ और वैश्यबंधकी विषे गमन करे तां प्रतोद नाम कोरडा दान करे परंतु इसके विषे तिस्रां वर्णोंके ग्रहण होएतें पहिला जो है सो शूद्रबंधकी पर लगाणा ॥ अब स्वैरिणी और वंधकीकालक्षण और स्मृतिसें कहतेहैं ॥ चतुर्थ इति चारपुरुषमाथ गमनकरणे वाली स्वैरिणी कही है ॥ पंच पुरुषोंके साथ गमन करण वाली वंधकी कहीहै १ अब गौडों का मत कहतेहैं विप्रेति विप्रादियों को क्षत्रियादि गमन विषे अर्द्ध अर्द्ध प्रायश्चित्त क्याहै अर्थात् विप्रको क्षत्रियाणीके गमनविषे जो ब्राह्मणी के गमनमें प्रायश्चित्तकिहाहै तिसका अर्द्ध करणा और वैश्याणी विषे जो क्षत्रियाणी में प्रायश्चित्तहै तिसका अर्द्ध करणा और शूद्री विषे जो वैश्याणी में प्रायश्चित्त है तिसका अर्द्ध करणा ॥ एसे ही क्षत्री को क्षत्रियाणी में जो प्रायश्चित्तहै तिसका अर्द्ध वैश्याणी विषे करणा एसेअग्रे भी जानणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ४५

अनृताविति ऋतुं विना जातिमात्र ब्राह्मणी विषे ब्राह्मण गमन करे तां मनुने कहा जो तीन महीनेका व्रत सो करे ॥ ऐसैहि क्षत्रियादि स्त्रियां विषे गमन करणेंतं क्रम कर्के दो महीने वा चांद्रायण वा महीना व्रत करे अथांत क्षत्रियाणीमें दो महीने और वैश्यामें चांद्रायण और शूद्रांमें एक महीना व्रत करे तां शुद्धहुंदाहै और क्षत्रियादि अपने अपने वर्णकी स्त्रीविषे ऋतुं विना गमन करेंतां दो महीनेका व्रत करें और इनांविषे जेकर गर्भ होवे तां तिस तिस विषयमें सभ जगा व्यभिचारी पुरुष दूणा व्रत करें शूद्राविषे गर्भ होवे तां त्रय वर्ष पर्यंत चौथे काल एक बेर भोजन करे तद शुद्धहोताहै जेकर ब्राह्मण नहिं इच्छाकरती जो विप्रादि योंकी स्त्री तिसविषे गमन करे तां क्रमकर्के गोघ्नको अथांत गोघातकों किहा जो प्रायश्चित्त

अनृतौ जातिमात्रविप्राविप्रोगत्वामानवं त्रैमासिकं कुर्यात् ईदृशक्षत्रियादि स्त्रीपुक्रमेण द्वैमासिकचांद्रायणमासिकानि क्षत्रियादीनांस्वस्ववर्णास्वनृतौग मनेद्वैमासिकान्येव आसुगर्भोत्पत्तौतु तत्तद्विषये सर्वत्रोक्तमेवाद्विगुणंकार्यम् शूद्रायांगर्भोत्पत्तौतु त्रीणिवर्षाणि चतुर्थकालेनक्तंभुंजीत । विप्रस्यानिच्छन्ती पुविप्रादिस्त्रीपुगंतुरनुक्रमेणगोघ्नत्रैमासिकद्वैमासिकचांद्रायणानि । अत्रवासि षंस्मरणम् । शूद्रश्चब्राह्मणीमभिगच्छेद्वीरुद्विवैष्टयित्वेत्यादिरूपंगुरुतल्पप्रक रणेद्रष्टव्यम् ॥ प्रायश्चित्तमयूखेचतुर्विंशतिनताद्यदभिहितम् ॥ वृषल्यामभि जातस्तु त्रीणिवर्षाणिचतुर्थकालसमये नक्तंभुंजीतेति एतच्च कामतोऽत्यंताभ्या सेन गर्भोत्पत्तौवेदितव्यम् । अभिजातइत्याहितगर्भः यतुहारीतः ॥ ब्राह्मणो वृषलीगत्वात्र्यहंभवतिसूतकी अथास्यगर्भमाधत्तेब्राह्मण्यादेवहीयत इति १

त्रय महीने का वा दो महीनेका वा चांद्रायण व्रत तिसको करे ॥ इसमें वसिष्ठ जीकी स्मृति है शूद्रइति जेकर शूद्र ब्राह्मणोंके साथ गमन करे तां तिस शूद्रकों घाससँ लपेट कर्के फूक देवे इत्यादि रूप गुरुतल्प प्रकरण विषे देखणें योग्यहै ॥ प्रायश्चित्त मयूख विषे चतुर्विंशति मतसँ कहतेहैं वृषल्यामिति । वृषलोविषे जद गर्भ धारण करे तां तीन वर्ष तक चतुर्थकाल विषे एक बेर भोजन करे । सो एह कामनातें बहुत अम्यासकर्के गर्भकी उत्पत्तिविषे जानणा और जो हारीत जीने कियाहै सो कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण वृषलो विषे गमन करे तां त्रय दिन सूतक वाला रहता है जेकर वृषली विषे गर्भ करे तां ब्राह्मण्यतें अथांत ब्राह्मणजातिसँ दूरहुंदाहै ॥ १ ॥

४६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

तैसेहि और कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण वृषली विषे गमन कर्के शीघ्रहि अधोगतिकों प्राप्तहो ताहै जेकर इसीविषे गर्भ करे तां पतित होताहै इसमें संशयनहि करणा २ सो एह सभ वचन पापके गौरवपर व्याख्यानकीतेहैं ॥ अब कएवऋषिजी कहतेहैं प्रसूतइति जो ब्राह्मण वैश्याविषे जन्मे क्या वैश्याणी विषे गर्भ धारण करे सो भिक्षा कर्के अन्न खावे और इन्द्रियाकों रोकरखे एक लक्ष गायत्रीजपकरे तो शुद्ध होताहै १ इसीविषे मलाह की स्त्री और धोवीकी स्त्री और वैश्यकी स्त्री इनां विषे पुरुष गमन करे तां प्राजापत्य व्रत कों करे तां शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ इस शाततपके वाक्यविषे वैश्यापदके साथ कथन कएणें कर्के कैवर्त्यादियोंके गर्भोत्पादन विषे भी एह प्रायश्चित्त करणा वैश्याविषे गमनका हीनयोनि सेवना के प्रसंग विषे प्रायश्चित्त कहांगे

तथा ब्राह्मणोऽपलीगत्वासयोगच्छेदधोगतिम् अथास्यगर्भमाधत्ते पतत्या शुनसंशय इति २ तान्येतानिपापगौरवव्याख्यानपराणि कण्वः । प्रसूतोय स्तुवैश्यायांभैक्षभुङ्नियतेन्द्रियः शतंसहस्रमभ्यस्यगायत्रीमेतिशुद्धतामिति १ शतंसहस्रलक्षमित्यर्थः लक्षगायत्रीजपपर्यन्तंभैक्षभुक्स्यादितिया वत् अत्रकैवर्त्तोरजकींचैववैश्यांवापिगतोनरः प्राजापत्यविधानेन कृच्छेणै केनशुद्ध्यतीति २ शातातपवाक्ये वैश्यासममितिव्याहृतकैवर्त्यादिषु गर्भोत्पादनेपीदमेवप्रायश्चित्तमिति वारस्त्रागमनेहीनयोनिनिषेवणप्रसंगे प्रायश्चित्तंवक्ष्यते ॥ किंच । याज्ञवल्क्यः अनियुक्तोभ्रातृजायांगच्छंश्चांद्रायणं चरेत् त्रिरात्रातिघृतंप्राश्यगत्वोदक्यांविशुद्ध्यति १ ॥ शास्त्रीयविनियोगंवि नायोज्येष्ठस्यकनिष्ठस्यवाभ्रातुर्जायांकामुकतयागच्छति सचांद्रायणकु र्यात् सकृदमतिपूर्वविषयमेतत्

कुच्छ और भी याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं अनियुक्तइति किसे कर्के नाहि प्रेरयाहोया भरजाईके साथ गमन करे तां चांद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै और रजस्वलाविषे गमन करे तां त्रयरात्रि घृतप्राशन कर्के शुद्ध होताहै १ शास्त्रकी विधि तें विना जो पुरुष ज्येष्ठकी वा कनिष्ठभा ताकी स्त्री विषे इच्छा कर्के गमन करे तां सो पुरुष चांद्रायण व्रतकरेतां शुद्ध होताहै ॥ एहअ ज्ञान कर्के एकवेरकरणे विषे जानणे योग्यहै इसमे एहअभिप्रायहै कि देवर्ते पुत्रकी उत्पत्ति शास्त्रमें कहाहै तिसविषे जेकर आज्ञाहै तदभरजाई विषे गमनका दोष नहि और तिसवि ... नादोषहै इसकर्केकिहाहै कि (अनियुक्तः) इसमेभी ऐसा जानणा कि उहपुरुष कामुकहै परंतु भरजाईको नहि जानदा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ४७

इच्छा कर्के करणे विषे शंख ऋषिजी कहतेहैं परिविचिरिति बडे भ्राताके विना छोटेका विवाह होब सो परिवेत्ता है और बडेका नाम परिवित्तिहै सो दोनो प्रायश्चित्तके अधिकारी हैं सो अपने पापके दूर करणे वास्ते एकवर्ष ब्राह्मणके गृह से भिक्षाका अन्न लेकर भोजन करते रहें और ज्येष्ठ भ्राताकी भार्याविषे नहि किसेकर्के प्रेरयाहोया गमन करे तां उसमे जो प्रायश्चित्तहै सोही छोटे भ्राताकी भार्याके गमन विषे करे ॥ इसमेभी जाणकर्के किया जो अभ्यास तिसके विषे गुरुतल्पका अतिदेश जानणा अर्थात् गुरुतल्प मे जो प्रायश्चित्तहै सोकरणा ॥ रजस्वलाके गमन विषे त्रयगात्रि उपवासतें पीछे घृतका भक्षण शुद्धि का कारण है परंतु रजस्वला इसविषे अपनी स्त्री जानणी और गमन अज्ञान पूर्वक एकवार कीत्ता होवेसो जानणा ॥ शातातप जी भी कहतेहैं अनुदकेति जलके विना मूत्र और विष्टाके

कामतः प्रवृत्तौ ॥ शंखः ॥ परिवित्तिः परिवेत्ता च संवत्सरं ब्राह्मणगृहे भिक्षं च रेयातां ज्येष्ठभार्यामनियुक्तो गच्छस्तदेव कनिष्ठभार्याचेति मतिपूर्वक साभ्यासे गुरुतल्पातिदेशः ॥ रजस्वला गमने त्रिरात्रोपवासानंतरं घृतप्राशनं शुद्धिहेतुः ॥ रजस्वला त्रस्वभार्या गमनममतिपूर्वकं सकृत्कृतम् ॥ शातातपोपि अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सचैलस्नानं महाव्याहृतिभिर्होमश्च रजस्वला भिगमने चैतदेव । तत्रैवाभ्यासे रजस्वला गमने सप्तरात्रमिति । गोवर्ज्जममा नुपीपुपरदारैः पुरजस्वला सुचमतिपूर्वकं सकृद्गमने वसिष्ठः । रजस्वला व्यवाये कृष्णवृषभंदद्याच्छुच्छीलिंगमिति लिंगलांछनं यतुमनुः । अमानुपीपुपुरुषउदक्यायामयोनिपु रेतःसिक्त्वा जलं चैव कृच्छ्रं सांतपनं चरेदिति १ तन्मतिपूर्व के साभ्यासे परस्त्री गमने द्रष्टव्यमिति

करणविषे सचैलस्नान करे और महाव्याहृतियां जो (उँभूः उँभुवः उँस्वः) इनां कर्के हवनकरे और रजस्वलाके गमनविषे भी एही जानणा ॥ जिकर रजस्वला गमन मे अभ्यास होवे तां सत्तगात्रि उपवास करणा ॥ और गौतें विना पशुयोनि विषे और परस्त्री विषे और रजस्वला विषे जाणकर्के एकवार गमन कीत्ता होवे उसमे वसिष्ठजी कहते हैं रजस्वलेति रजस्वला गमनविषे काला वैल दान करे कैसा उह वैलहै कि श्वेत है चिन्ह जिसको इसमे जो मनुजाने कथन कियाहै सो कहतेहैं अमानुपीपुविति पशुयोनि विषे और रजस्वला विषे और अयोनि क्या बालकविषे पुरुष वार्यायागे वा जलविषे तां तिसको कृच्छ्र सांतपन व्रत कर्णे योग्यहै ॥ १॥ सो एह जाण कर्के अभ्यास वाले परस्त्री गमनविषे देखणे योग्यहै सर्वत्र नहि प्रायश्चित्तके अधिक होणेतें और पशुयोनि क्योंकि विषे भी एही जानणा

४८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

इसी विषे नहि इच्छा वाली स्त्री विषे गमन करणे वाले प्रति बृहत्संवत्तजी कहतेहैं रजस्वला मिति जो पुरुष रजस्वला विषे गमन करे वा गर्भिणीविषे वा पतितस्त्रीविषे तिस पापकी शुद्धि वासेन अतिरुच्छ्रु व्रत करे १ शंख लिखितजीकी स्मृतिमें विशेष कहाहै रजइति रजस्वला और खोटी स्त्री विषे गमन करे तो तीन रात्रि उपवासव्रत और घृत भक्षण करे अवधूतानाम बन्धकी काहौतिमके गमनका पृथक् निमित्तहै एह अपराकमें कियाहै और इच्छा कर्के बहुत अभ्यासविषे घेदपाठीकीस्त्रीके गर्भ तक वारां १२ वर्ष व्रत के प्रसंगकों लयकर शंखजी कहतेहैं ॥ पादमिति शूद्रहत्या विषे रजस्वला गमन विषे एक पादव्रत करे अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शूद्रहत्या और रजस्वला गमन इनां निमित्तां विषे वारां १२ वर्षव्रत का पाद करणा अर्थात् त्रय वर्ष व्रत करणा चाहिए ॥ इसमें भी अब और विशेष कहतेहैं श्रोत्रियोति जेकर श्रो

अत्रैवानिच्छंतींगच्छंतंप्रति। बृहत्संवर्तः। रजस्वलांतुयोगच्छेद्गर्भिणीपतितां तथा तस्यपापविशुद्ध्यर्थमतिकृच्छ्रविशोधनम् १ शंखलिखितौ रजस्वलाऽवधूताभिगमनेत्रिरात्रमुपवासः घृतप्राशनंचेति अवधूता बन्धकी तद्वमनं चपृथङ्निमित्तमित्यपराकः ॥ कामतोऽत्यंताभ्यासे॥ श्रोत्रियभार्यायागर्भं पर्यंतंद्वादशवार्पिकंप्रकृत्य । शंखः पादंतुशूद्रहत्यायामुदकयागमनेतथेति शूद्रहत्यायामुदकयागमनेचनिमित्तेद्वादशवार्पिकस्यपादः त्रैवार्पिकमित्यर्थः श्रोत्रियपत्नीत्वाभावेगर्भाभावेच । बृहस्पतिः अकामात्पुलकसींगत्वाकामाद्दत्वारजस्वलाम् शिष्यभार्यांनरोगत्वापराकेणविशुद्ध्यतीति १। अत्रपरभार्यानिमित्त मुदकयागमननिमित्तं च प्रायश्चित्तंपृथक्कार्यम् द्वयोरपिनिमित्तयोरन्योन्यनिरपेक्षत्वात्

त्रियपत्नीके अभावमें वा गर्भके नाहिं होणेंमें गमन करे तिसमें बृहस्पति जी कहतेहैं अकामादिति विना इच्छातें नीचजातिकी स्त्री विषे गमन करे और इच्छा सें रजस्वला विषे गमन करे और शिष्यकी स्त्री विषे पुरुष गमन करे तां पराक व्रत जो वारां दिन का उपवासहै तिसके करणें कर्के शुद्ध होताहै १ । इस विषे परस्त्री निमित्त और रजस्वला गमन निमित्त का प्रायश्चित्त पृथक् करणा क्योंकि दोआं निमित्तांकों परस्परमें न अपेक्षा होणेंवें अर्थात् परस्त्री गमन निमित्त प्रायश्चित्त विना रजस्वला गमनतेंभी हुंदाहै और रजस्वला निमित्त प्रायश्चित्त ति सके विना क्या अपनी स्त्रीविषेभी हुंदाहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ४९ .

जिसके विषे एक निमित्त और निमित्त बिना न होवे तिसके विषे एकही निमित्तका प्रायश्चित्त है जैसे गुरु दाराका गमन परदारा बिना नहि है तिसके विषे गुरुतल्पगमनका प्रायश्चित्त पृथक् नहि करणा ॥ कुछक औरभी कहतेहैं ॥ चतुर्विंशति मत विषे । आतुरिति छोटे आताकी स्त्री विषे जो पुरुष इच्छा कर्के गमन करताहै सो सांतपन व्रत करे वा दो कच्छ व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ मातुरिति माताकी जो भएण तिसकी कन्याविषे गमन करे तैसेहि चाचेकी कन्या विषे गमन करे तां तप्तकच्छ व्रत कर्के शुद्धहोताहै और मासीकी कन्या और चाचेकी कन्याकी कन्या विषे गमन करे तां छे ६ रात्रि व्रत करणा योग्यहै २ गुरोरिति गुरुकी कन्या विषे जो गमन करे तां पराक जो वारां १२ दिनका व्रतहै सो करणा भनेई विषे जेकर द्विज क्या ब्राह्मणादि गमन करे तां चांद्रायण व्रत करणें कर्के तिसका पाप दूर होताहै ३ मातुलस्येति मामेकी कन्या विषे गमन करे तैसे ही पिता की भयणकी कन्या विषे गमन करे तां प्राजापत्य व्रत करे

यत्रनिमित्तं निमित्तांतराविनाभूतं तत्रैकमेवानिमित्तकंप्रायश्चित्तम् यथा गुरुदारगमनंपारदार्याविनाभावि नहि तत्र गुरुतल्पगमनं पृथगिति किंचचतुर्विंशतिमते ॥ आतुश्चैवकनिष्ठस्यभार्यागत्वातुकामतः सांतपनं प्रकुर्वीतकच्छद्वयमथापिवा ॥ १ ॥ मातुश्चस्वस्त्रियांगत्वापितृव्यतनयांतथा तप्तकच्छप्रकुर्वीतषड्रात्रव्रतत्सुतामुच ॥ २ ॥ गुरोर्दुहितरंगत्वापराकंतुसमाचरेत् भागिनेयीद्विजोगत्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् ॥ ३ ॥ मातुलस्यसुतांगत्वापितृश्चस्वस्त्रियांतथा प्राजापत्यंप्रकुर्वीतहारीतवचनंतथा ४ मातुश्चस्वस्त्रियांचैवभार्यागत्वातुकामतः पितृव्यतनयस्यैवसपादंकच्छमाचरेत् ५ दौहित्रीपुत्रतनयांचरेच्चांद्रायणव्रतम् तत्सुतांचस्नुपांगत्वापराकंतुसमाचरेत् ६ चरेच्चांद्रायणंविप्रोगत्वोपाध्याययोपिताम् आचार्यस्यपराकंतुवौधायनवचोयथा ७ संवन्धिनःस्त्रियंगत्वासपादंकच्छमाचरेत् विधवागमनेकच्छमहोरात्रसमन्वितम् ८

एह हारीतकावचनहै ४ मातुगिति और माताकी जो भयणतिसकी कन्या और चाचेके पुत्रकी स्त्रीविषे इच्छा कर्के गमन करेतां एक पाद सहित कच्छव्रतकरे तां शुद्ध होताहै ५ दौत्री और पुत्रकी स्त्रीकी कन्या अर्थात् पोत्री तिस विषे गमन करे तां चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोताहै और दौहित्रीकी कन्या और पुत्रकी कन्याकी कन्याविषे गमन करे तां पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै ६ चरेदिति और गुरुकी स्त्री विषे ब्राह्मण गमन करे तां चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै और आचार्यकी स्त्री विषे गमन करे तां पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै एह वौधायन जी का वचनहै ७ समिति और संवन्धि जो हैं मामेके पुत्रादि तिसकी स्त्री विषे गमनकरे तां एक पाद सहित कच्छ व्रत करणें कर्के शुद्ध होताहै विधवा स्त्री साथ गमन करे तां दिनरात्र युक्त जो कच्छ व्रत तिसकी करे तो शुद्धहोताहै ८

५० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

ब्रतेति और ब्रतमें स्थित जो स्त्री तिसविषे गमनकरे तां एक पाद सहित कृच्छ्र ब्रतकरे और मित्र की स्त्री वा अपणी जाति की स्त्री वा संबंधीकी स्त्री विषे गमन करे तां पूर्वला जो कृच्छ्र ब्रत तिसकोंककें फेर एक पाद ब्रत करे और कुमारी गमन विषे ब्राह्मण चांद्रायण ब्रत करे और पतित स्त्री विषे द्विज गमनकरे तां भी चांद्रायण ब्रतककें शुद्ध होताहै १० इहां कथन कीते होए जो सं पूर्ण ब्रत इनां विषे गौरव लाघवकी परीक्षा ककें यथार्थ अथार्थ बुद्धि पूर्व अभ्यासादिकेविषय ककें जोडने योग्यहैं ब्रेति ब्राह्मण नहि इच्छावाली जो ब्राह्मणी तिस विषे इच्छाककें गमनकरे तां कृच्छ्र और चांद्रायण ब्रत करे जेकर प्रमादतें करे तां अर्द्ध ब्रत करे इच्छावाली स्त्री विषे करे तां भी अर्द्ध ब्रत करणा एक बार जाणककें करे तां तत्कृच्छ्र करे और नृपादियोंकी स्त्रीविषे वा ब्राह्मणकी स्त्री विषे गमन करे तां अर्द्धब्रत करे १२ एतदिति और वेदपाठीकी स्त्री विषे गमन करे

ब्रतस्थागमनेकृच्छ्रसपादंतुसमाचरेत् सखिभाय्यासमारुह्यज्ञातित्वजन योपिताम् ॥ ९ ॥ सकृत्वाप्राकृतंकृच्छ्रपादंकुर्यात्ततःपुनः कुमारीगमनंवि प्रश्चरेच्चांद्रायणब्रतम् पतितांतुद्विजांगत्वातदेवब्रतमाचरेदिति १० अत्र प्रोक्तिपुसर्वेषुब्रतेषुगौरवलाघवे परीक्ष्य यथायथं बुद्धिपूर्वाभ्यासादिविषय त्वंयोजनीयम् ॥ ब्राह्मणोब्राह्मणीगच्छेदकामांयदिकामतः कृच्छ्रंचांद्रायणं कुर्यादर्द्धमेवप्रमादतः ११ अर्द्धमेवसकामायांतत्कृच्छ्रंसकृन्मतौ अर्धमर्धं नृपादीनांदारेषुब्राह्मणेषुच १२ एतद्व्रतंचरेत्सार्द्धंश्रात्रियस्यपरिग्रहे अश्रो त्रियश्चेत्त्रिगुणमगुतामर्द्धमेवचेति १३ कण्वोपि शूद्रदारान्गतोविप्रोअतिकृ च्छ्रंसमाचरेत् चांद्रायणंविशोराज्ञःसमंचब्राह्मणब्रतमिति १ विशदितिवैश्य दारान्गत्वाचांद्रायणं राज्ञोदारान् गत्वा ब्राह्मणब्रतंसमंकृच्छ्रंचांद्रायणस्व रूपंसमाचरेदित्यर्थः यदिब्राह्मणेनैवचातुर्वर्ण्यंप्रसतासुक्रमेणनिविष्टं तदा नोब्राह्मणस्यब्राह्मणीगमने यदुक्तं तदेव पादहीन क्षत्रियादिगमनेद्रष्टव्यम्

व्याघ्रवचनात्

तां एही ब्रत अर्द्ध सहित एक अर्थात् डेढ ब्रत करे जेकर सो ब्राह्मण आप वेदपाठी न होवे तिसमे दूणा ब्रत करणा और अगुणाविषे अर्थात् जो स्त्री पतिककें रक्षित नहि तिसविषे गमन करे तां अर्द्ध ब्रत करणा १३ अब इसी विषयमें कण्वजी कहतैंहैं शूद्रेति शूद्रकीस्त्रीविषे ब्राह्मण गमन करे तां अतिकृच्छ्र ब्रतककें शुद्ध होताहै और वैश्यकी स्त्री विषे गमन करे तां चांद्रायण ब्रत करणा और राजाकी स्त्री विषे ब्राह्मण गमन तां कृच्छ्र चांद्रायण स्वरूप ब्रतकरे १ जेकर ब्राह्मणन चार वर्षकी प्रसूता विषे क्रम ककें प्रवेश कीता होवे तां तिस काल विषे ब्राह्मण को ब्राह्मणी गमन विषे जो ब्रत कयाहै तिसीका एक पाद हीन क्षत्रियादि गमन विषे देखणें योग्यहै व्याघ्र जोके वचन सैं

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ५१

सौवचन कहते हैं विप्रेति ब्राह्मणों हे चारवर्णकी प्रसूतीविषे गमन कीजाहोवे तां सो ब्राह्मण तिसमें क्रमकर्के एक एक पाद हीन व्रत करे १ विधवा गमन विषे चतुर्विंशतिके मतसे कहते हैं विधवे तिविधवागमन विषे दिनरात्र युक्त जो कृच्छ्र व्रत तिसका करे और व्रतविषे स्थित जो स्त्री तिस विषे जेकर गमन करे तां एकपादसहित कृच्छ्र व्रत करे तां शुद्ध होता है १ अब मुख मैथुन विषे उशना जीने जो कया है सो कहते हैं यस्त्विति जेकर ब्राह्मण अपनी स्त्री विषे मुख मैथुन करे तां प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होता है और जेकर परस्त्री होवे तां द्विगुण करे एह अर्थसे हि प्रतीत हुंदा है और पश्वादि गमनका पितृदारात् उरें होणें कर्के तिस विषे थोडा प्रायश्चित्त करेण उचित है तिसको कहते हैं पश्विति पशु और वैश्यादि गमन विषे और महिषी ऊटणी और वान

विप्रेणैव निविष्टाश्चैव तुर्वर्ण्यप्रसूतयः क्रमेण पादशोहीनं व्रतं तासु गतश्चरेत्
॥ १ ॥ विधवा गमने चतुर्विंशतिमते विधवा गमने कृच्छ्रमहोरात्रसमान्वि
तम् व्रतस्था गमने कृच्छ्रं सपादं तु समाचरेदिति ॥ १ ॥ मुखमैथुने तूशन
सोक्तम् यस्तु पुनर्ब्राह्मणो धर्मपत्नीमुखमैथुनं सेवेत सदुप्याति प्राजापत्ये
न शुद्ध्यतीति पश्वादि गमने पितृदारादर्वाचीनत्वेन तत्रालपं प्रायश्चित्तम्
पशुवैश्यादि गमने महिष्युट्टी कर्पीस्तथा खरीचसूकरी गत्वा प्राजापत्यं स
माचरेदिति स्मृत्यन्तरात् ॥ गर्भेतुक एव आह प्रसूतो यस्तु वैश्यायां भिक्षुभुङ्गति
यतन्द्रियः शतं सहस्रमभ्यस्य सावित्रीमेति शुद्धतामिति १ गोसंयुक्तशकटा
दिवाहनेऽवस्थायस्त्रियं भुञ्जानस्य यम आह यदि गोभिः समायुक्तं यानमारु
ह्ययो द्विजः मैथुनं सेवते तत्र मनुः स्वायं भुवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥

रैते सैंही गधी सूरणी इनां विषे गमन कर्के प्राजापत्य व्रत करे इसमें कोई ऐमा विचार कर्ते हैं कि उट्टी खरी आदिमे पुरुषका गमन नाहि होसका है इस कर्के उट्टी प्रभृति किसे स्त्रीकी संज्ञा है किसे अपलक्षणते अथवा नादृश्य स्वरूपत असो संज्ञा है तिस विषे गमनका एह प्रायश्चित्त होणा है एह और स्मृति में कया है ॥ जेकर गर्भ होवे तां तिसमें कएवजी कहते हैं प्रसूत इति इस श्लोक का अर्थ पीछे कया है । गोसंयुक्त जो गड़डा दिवाहन तिस विषे स्थित हो कर्के स्त्रीकों भोगण वा ला जो पुरुष तिसका प्रायश्चित्त यमजी कहते हैं यदीति जेकर बैलों कर्के युक्त जो यान का स्थ तिसमे जो द्विज आरूढ हो कर्के मैथुन करता है तिसके विषे मनु जो स्वायं भुजी सो कहने हैं १

५२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

त्रैति त्रय रात्रि उपवास कर्के सहित वस्त्रों के स्नान करे पीछे गौआंके ताँई यवोंका आढकदे कर्के घृतका भक्षण करे तां शुद्ध होताहै अठ मुठ्ठी का कौच होता है और अठ कौच का एक आढक कयाहै २ इसमे मनु जी भी कहते हैं मैथुनमिति पुरुष विषे वा स्त्रीविषे जौद्विज मैथुन करे परंतु गोरथविषे वा जल विषे वा दिन विषे गमन करे तां वस्त्रोंके सहित स्नान करे तो शुद्धहोताहै १ ॥ अब कहतेहैं कि पीछे महिष्यादि गमन विषे जो प्राजापत्य कयाहै सो बहुत अभ्यास विषे जानणा एकवार गमन विषे अब कहतेहैं महिषीति महिषी और उष्ट्रीऔर गधी इनांविषे गमन करणवाला पुरुष एक उपवासकर्के शुद्धहोताहै १ पिताकी भैणकी कन्या दि विवाह विषे प्रायश्चित्त सुमंतु नाम ऋषिजी कहतेहैं पितृति पिताके भैणकी कन्या और

त्रिरात्रंक्षपणंकृत्वासचैलस्नानमाचरेत् गोभ्योयवाढकंदत्वाघृतंप्राश्यवि शुद्ध्यतीति ॥ २ ॥ मनुरपि ॥ मैथुनंतुसमारोप्यपुंसियोपितिवाद्विजः गो यानेपुदिवाचैवसवासाःस्नानमाचरेदिति १ ॥ पूर्वमहिष्यादिगमनेयत्प्रा जापत्यमुक्तं तदभ्यासविषयम् सकृद्गमनेत्विदानीमाह ॥ महिष्युष्ट्रीखरी गामीत्वहोरात्रेणशुद्ध्यतीति १ महिषीचउष्ट्रीचखरीचतागच्छतीतिमहि ष्युष्ट्रीखरीगामी स एकोपवासेन शुद्ध्यतीति ॥ पितृष्वसृसुताविवाहे प्राय श्चित्तमाह सुमन्तुः ॥ पितृष्वसृसुतां मातुलस्यसुतां मातृसगोत्रां समा नार्पयीं विवाह्य चांद्रायणंचरेत् परित्यज्यैनांविभृयात् ॥

मामेंकी कन्या और माताकेगोत्रवाली कन्या और समानप्रवरवाली कन्या इनांको विवाह कर्के चांद्रायण व्रत करे तां शुद्धहोताहै और व्रतके पीछे भोगकर्ममें इनांको त्याग कर्के पालनारहे इसजगा मातृसगोत्रापद जातिपरहै जैसे पंडितजातिवालेने पंडितजातीकी स्त्री विवाही तांदोषहै क्योंकि गोत्रनामवंशकाहै सो अर्थ इसमै आवेगा और यद्यपि वसिष्ठ गो त्रापुरुषने वसिष्ठगोत्री स्त्रीके विवाहमेभी एह अर्थ आवताहै तथापि वसिष्ठगोत्रादिव्यवहार व्यापकहै और पंडितजात्यादि व्यवहार व्याप्यहै सो व्यापकर्ते व्याप्यबलवान्है एह किसे विद्वा न्ते निश्चय करलेणा तद एह अर्थ साधु प्रतीत होवेगा ॥

शानातपजीभी कहतेहैं परीति समानगोत्र वालीकों और समान प्रवर वाली स्त्रीकों विवाहकर्के अतिरुच्छव्रत करे परंतु पहिले मैथुनादितें तिसकोंत्याग देवे और पीछेव्रत करे १ मातुलस्येति श्रीर मामेकी कन्या नूं तैसैहि माताके गोत्र वाली नूं और समान प्रवर वाली नूं द्विज विवाह कर्के चांद्रायण व्रत करे २ अथ स्त्रियां के व्यभिचारका प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं वीति व्यभिचारिणी स्त्री नूं भर्ता एक गृह विषे रोक कर्के जो पुरुष नूं परस्त्री विषे व्रत कियाहै सो करवावे १ अथ इसीका अर्थ स्पष्ट कक कहतेहैं परीति परस्त्री गमन विषे पुरुषको जो वासि छादियों ने प्रायश्चित्त कियाहै सो इसव्यभिचारिणों नूं स्त्रीकाय्यें दूर कर्के घर विषे रोकक कर्के करवावे एह वाचनिक क्या वचनका अतिदेश होणेंतें एक पाद ऊन करणा एह

शातातपोपि । परिणीयसगोत्रांतुसमानप्रवरांतथा कृत्वातस्याःसमुत्सर्गम तिरुच्छंसमाचरेत् १ मातुलस्यसुतामूढामातृगोत्रांतथैवच समानप्रवरांचैव द्विजश्रांद्रायणंचरेदिति२ अथ स्त्रीणांव्यभिचारे प्रायश्चित्तम् । मनुः ॥ वि प्रदुष्टांस्त्रियंभर्तानिरुंध्यादेकवेशमनि यत्पुंसःपरदारेपुतच्चैनांकारयेद्व्रतम् १ परस्त्रीगमने पुंसःपुरुषस्य यद्वसिष्ठादिभिः प्रायश्चित्तमुक्तं तत् एनां विप्र दुष्टां विशेषेण प्रदुष्टां व्यभिचारिणीं स्त्रीकाय्येभ्यो निवृत्य गृहेनिरुध्य कारयेत् एतच्च वाचनिकातिदेशात्पादोनमितिकेचित् पूर्णमेवेतिनीलकंठः । यत्पुंससिष्ठादिभिः ॥ स्त्रीणामर्द्धप्रदातव्यमित्युक्तंतदनिच्छयाव्यभिचारे द्रष्टव्यम् । मिताक्षरायाम् ब्राह्मण्याः प्रातिलोभ्येनाद्विजातिव्यवाये संवर्तो कं प्रायश्चितांतरमप्युक्तम् ब्राह्मण्यकामागच्छेत्क्षत्रियवैश्यमेववा गोमूत्रयावकैर्मासात्तदर्द्धाच्चविशुध्यतीति १ एतदेवकामतोद्विगुणम् ॥ कामतो

द्विगुणंचरेदित्यादिवचसः

किसीका मत है अथवा संपूर्ण हि कणा एह नीलकंठजीका मत है और जो वासिछा दियोंने स्त्रियां कों अर्द्ध प्रायश्चित्त देणा एह कियाहै सो इच्छा विना जो व्यभिचार तिसके विषे देखणें योग्यहै । मिताक्षराविषे कहतेहैं ब्राह्मण्याइति ब्राह्मणीको प्रातिलोभ्य कर्के क्षत्रिय और वैश्यके गमन विषे संवर्तजीका कियाहोया प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी इच्छाते विना क्षत्रियविषे वा वैश्यविषे गमन करे तां गोमूत्रकर्के युक्त जो यव तिनको महीना पर्यंत भक्षण करे अथवा अर्द्ध महीना करे अर्थात् क्षत्रिय गमनविषे अर्द्ध महीना भक्षण करणेंतें शुद्ध होतीहै और वैश्यके गमनविषे महीना भक्षण करणेंतें शुद्धहोतीहै इसमें क्रम विवक्षा नहिहै १ जेकर सोस्त्री इच्छातें गमन करे तां एहीव्रत दूणाकरे एह कामतो द्विगुणं चरेत् इत्यादिवचनते जानणा

५४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

षट्त्रिंशत् के मत विषे भी कहते हैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी क्षत्रीके साथ गमन करे तां अतिच्छ्रुत ब्रत करे और वैश्यके साथ गमन करे तां रुच्छ्रातिच्छ्रुत ब्रत करे और क्षत्रीकी स्त्री ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनके साथ गमन करे तां दिनरात्र वा त्रयरात्र वा रुच्छ्र ब्रत का श्रद्धं करे एह क्रम कर्के जानणा जैसे ब्राह्मणमें दिनरात्र ब्रत करणा इत्यादि और भी जानलेणे परंतु एह नहिं इच्छा वाली स्त्रीमे वा अपणे पतिकी भ्रांतिकर्के जद गमनकीताहोवे उसमें जानणा शूद्र सेवाविषेविशेष वृहत्प्रचेताजीकहते हैं विप्रेति ब्राह्मणी शूद्रकेसाथ गमनकरे जेकर तिसते प्रसूति न होवे तिसका प्रायश्चित्त कयाहैकि एक रुच्छ्र और त्रय चान्द्रायण ब्रत करे तां शुद्धहोतीहै १ ॥

षट्त्रिंशन्मतेपि । ब्राह्मणीक्षत्रियवैश्यसेवायामतिकृच्छ्रंरुच्छ्रातिकृच्छ्रौचरे
क्षत्रिययोपिता ब्राह्मणराजन्यवैश्यसेवायांत्वहोरात्रत्रिरात्ररुच्छ्राद्विमिति
एतदनिच्छ्रत्यांस्वपतिभ्रांत्यावागमनेवेदितव्यम् ॥ शूद्रसेवायांतु विशेषो
वृहत्प्रचेतसोक्तः विप्राशूद्रेणसंपृक्तानचेतस्मात्प्रसूयते प्रायश्चित्तंस्मृतं
तस्याः कृच्छ्रंचान्द्रायणत्रयम् ॥ १ ॥ चान्द्रायणेद्वेकृच्छ्रंचविप्रायवैश्य
सेवने कृच्छ्रंचान्द्रायणेस्यातांतस्याःक्षत्रियसंगमे ॥ २ ॥ क्षत्रियाशूद्रसंपर्के
कृच्छ्रंचान्द्रायणद्वयम् चान्द्रायणंसकृच्छ्रतुचरेद्वैश्येनसंगता ३ शूद्रंगत्वा
चरेद्वैश्याकृच्छ्रंचान्द्रायणोत्तरम् आनुलोम्येप्रकुर्वीतकृच्छ्रपादावरोपितामि
ति ४ पादावरोपणंपादच्छासः प्रजातायास्तुचतुर्विंशतिमतेविशेषउक्तः

आद्वेति और ब्राह्मणीको वैश्यके साथ गमन करणे तें दो चान्द्रायण और रुच्छ्र ब्रत करणेयोग्य हैं और ब्राह्मणीकों क्षत्री साथ गमन करणेंतें रुच्छ्र और चान्द्रायण ब्रत करणे योग्यहैं २ और क्षत्रियाणी शूद्र साथ गमन करे तां रुच्छ्र और दो चान्द्रायण ब्रत करे और वैश्यसाथ गमन करे तां सहित रुच्छ्रके चान्द्रायण ब्रत करे ३ शूद्रामिति और शूद्रसाथ वैश्यकी स्त्री गमन करे तां रुच्छ्र और चान्द्रायण ब्रत करे और आनुलोम्य कया अपणें तें छोटी जाति विषे गमन करणें तें पादऊन एहि रुच्छ्र ब्रत करणे योग्यहै ४ प्रसूति होवे जिस स्त्रीको तिसको चतुर्विंशति मत विषे विशेष कयाहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ५५

विप्रेति ब्राह्मणका गर्भ होवे किसे स्त्रीको तां पराक व्रत करे एह चारवर्णकी साधारण व्यवस्था है असे हि आगे भी जानणा और कोई कहतेहैं कि ब्राह्मणके अनुलोम और शूद्रके प्रतिलोम और क्षत्रियवैश्यके दोनोमें एह व्यवस्थाहै और क्षत्रीका गर्भ होवे तो चांद्रायण व्रत करे नहिं इच्छातैवैश्यके साथ गमन करणें तें गर्भ होवे तां चांद्रायण और पराक व्रतकरे १ शूद्रेति और शूद्रसें गर्भके होयां त्याग करणा चाहिए जिस कारणतें सो चांडाल होतहै और धातुदोषकके गर्भ पात होवे तां त्रय चांद्रायण करणें तें स्त्री शुद्ध होतीहै २ ॥ अब अर्थको स्पष्टकरतेहैं (अकामेतिः) अकामकारतइस विशेषणके ग्रहण हांणेतें इच्छा कर्के करणेंविषे फेर पराकादि व्रत द्विगुणकरणें जेकर गर्भ दस महीने स्थित होकर्केभी प्रतीतनाहोवे तां प्रायश्चित्त नहिं करणा सोई कहतेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनांकीस्त्री शूद्रके साथगमनकरें और जेकर

विप्रगर्भेपराकः स्यात्क्षत्रियस्य तथैन्दवम् ऐन्दवश्च पराकश्च वैश्यस्याकाम कारतः ॥ १ ॥ शूद्रगर्भे भवेत्यागश्चांडालो जायते यतः गर्भस्त्रावैधातुदापै श्वेरच्चांद्रायणत्रयमिति ॥ २ ॥ अकामकारतइति विशेषणोपादानात् कामकारे पुनः पराकादिकं द्विगुणं कुर्यात् यदा त्वानिःसृतगर्भैव दशममासं स्थित्वा प्रजायते तदा प्रायश्चित्ताभावः ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशांभार्याः शूद्रेण संगताः अप्रजाता विशुद्ध्यन्ति प्रायश्चित्तेन तेनरा इति ॥ ३ ॥ अयमर्थः शूद्रादिना संगता ब्राह्मण्यादिका यदा गर्भशंकास्पदा जाता तदा दशमासप्रतीक्षानंतरमनिःसृतगर्भैव प्रजायते प्रतीता तदा प्रायश्चित्तं विनैव शुद्धा भवति तावतैव प्रायश्चित्तोपपत्तेः तेनराव्यभिचारिणस्तु प्रायश्चित्तेनैव शुद्ध्यन्तीति विसिष्टस्मरणात् यदा त्वाहितगर्भैव पश्चाच्छूद्रादिभिर्द्व्यभिचरति तदा गर्भपातशंकया प्रसवोत्तरकालमेव प्रायश्चित्तं कुर्यात्

प्रसूतिना होवे तां सो स्त्री शुद्धहै और सो पुरुष प्रायश्चित्तकर्के शुद्धहोतेहैं ३ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शूद्रेति शूद्रादिके साथ ब्राह्मण्यादि स्त्री गमन करे जेकर गर्भशंकावाली होवे तद दसमहीनेतें उपरंत नहिं होया गर्भकासंभव किंतु व्यभिचारमात्रहि प्रतीतहोयाहै जिसकों तां प्रायश्चित्त विनाहि शुद्धहोतीहै क्योंकि तितनैं कर्केही तिसका प्रायश्चित्त होणेतें अर्थात् उसके गर्भकी शंकाकर्के उतनाकाल बाहर निकालदिया सो उसका कष्ट बहुत होया बांहि उसका प्रायश्चित्त जानणा और सो व्यभिचारी पुरुष प्रायश्चित्त कर्के हि शुद्धहोतेहैं एह विसिष्टजीकी स्मृतिसंकिहाहै अब इसीमें और विशेष कहतेहैं यदेति जेकर प्रथमगर्भ पतिकाहि स्थितहोवे और पीछे शूद्रादि के साथ व्यभिचारकरे तद उसस्त्रीको गर्भपातकी शंकाकर्के प्रसूतितें अनंतरहि प्रायश्चित्त करणे योग्यहै

५६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा ॥

सोई स्मृतिमें कियाहै अन्तर्वत्नीति गर्भवती जो स्त्री सो कामीपुरुष कर्के बलने प्रेरित होई गमन करे तांप्रायश्चित्त नहिं करणा परंतु जितना काल गर्भ नहिं निकले १ जातइति गर्भदे निकले होयां पश्चात् व्रतकरे कया महीना पध्यत यवोंका काढा पीवे तद गर्भ दोष तिसकों नहिं है और जो जन्मबाहै तिसका यथाविधि संस्कार करे २ और स्मृतिमें कहतेहैं यदेति जेकर सो व्यभिचारिणीस्त्री उन्मा दत प्रायश्चित्त नून करे तां उसका कर्णादि कटदेखा एह देखणे योग्यहै ॥ अब नोचके साथ गमन करणें विषें स्त्रियांको और स्मृति विषे प्रायश्चित्त दखायाहै रजकेति धोवा और फंवक नटु आ और वंजां कर्के और चर्म कर्के उपजीविका करण वाला इनां विषे इच्छातें विना ब्राह्मणी गमन करे तां त्रय चांद्रायण व्रत करे १ तैसेहि चांडालादि नोचके साथ गमन विषे भी

अन्तर्वत्नीतुयानारीसमिताक्रम्यकाभिना प्रायश्चित्तं न कुर्यात्सायावद्गर्भो न निःसृतः १ जाते गर्भे व्रतं पश्चात् कुर्यान्मासंतु यावकं न गर्भदोषस्तस्यास्तिसं स्कार्यः स यथाविधीति २ स्मृत्यंतरे दर्शनात् ॥ यदा त्वौद्धत्यात् प्रायश्चित्तं न करोति तदानार्याः कर्णादिकर्तनमिति द्रष्टव्यम् । अत्यजगमनेपि स्त्रीणां स्मृत्यंतरे प्रायश्चित्तं दर्शितम् रजकव्याधशैलूपवेणुचर्मोपजीविनः ब्राह्मण्येतान् यदा गच्छेदकामादैर्दवत्रयमिति १ तथा चांडालाद्यंत्यजगमनेपि । चांडालं पुलकसं म्लेच्छं श्वपाकं पतितं तथा ब्राह्मण्यकामतो गत्वा चांद्रायणचतुष्टयम् १ अकामतइति वचनात्कामतो द्विगुणं कल्प्यम् तथा चांडालेन तु संपर्कं यदि गच्छेत्कथंचन सशिखं वपनं कुर्याद्भुंजीयाद्यावकौदनम् ॥ १ ॥ त्रिरात्रमुपवासः स्यादेकरात्रं जले वसेत् आत्मना संमिते कूपे गोमयोदककदर्दमे ॥ २ ॥ तत्र स्थित्वानिराहारा सा त्रिरात्रं ततः क्षिपेत् शंखपुष्पीलतामूलपत्रं वा कुसुमं फलम् ॥ ३ ॥

कहतेहैं चांडालमिति चांडाल पुलकस म्लेच्छ श्वपाक एह चार चांडालकेहि भेदहैं और जाति तें जो बाहरहैं इनां विषे ब्राह्मणी इच्छातें विना गमन करे तां चार चांद्रायण व्रत करे अकामतः इस वचन तें जेकर इच्छातें करे तो दूणा व्रत करणें योग्यहै १ तैसेही और कहतेहैं चांडालके साथ जेकर स्त्री गमन करे तां सहित शिखाके मुंडन करावे और यवोंका काढा पीवे १ त्रीति और त्रयरात्रि उपवास व्रत करे और एकरात्रि जल विषे वास करे और अपणें वरावर खूआ घणावे तिसको गोआ जल चिकड इनां कर्के भरे २ तत्रेति तिसके विषे स्थित हो कर्के निराहार सो स्त्री त्रयरात्रि व्यतीत करे और शंखपुष्पीकी बेलका मूल वा पत्र वा पुष्प वा फल ३ ॥ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ५७

क्षीरइति इनको दुग्धमें पावे और सुवर्ण पावे इनांका काथ कर्के पानकरे और पश्चात् एक वखत भोजन खावे जितना काल रजस्वला न होवे ४ बितना काल बाहर स्थित होवे जितने तक गर्भ न निकले १ और दो गौआं दक्षिणा देके तां शुद्ध होवोहै एह मनुजीने कयाहै एह भी नहीं इच्छावै गमन विषे जानणा (यदिगच्छत्कथंचन) इसवचनते अव पिच्छे किहा जो दूसरा श्लोक तिसका अर्थ कहतेहैं आत्मनेति चांडाल साथ गमन वाली स्त्री अपने देहके बराबर बनाया गोमययुक्तजलकर्के पूरित जो कूपतिसविषे एह अर्थहै ऋष्यशृंगीजीनेभी नीचके साथ गमनविषे और प्रायश्चित्तकयाहै समिति जो स्त्री नीचके साथ गमन करे सो एकवर्ष छच्छ्रवतकरे परंतु एह इच्छाकर्के एकवार गमनविषे जानणा जेकर पहिले स्थितहै

क्षीरेसुवर्णसंमिश्रकाथयित्वा ततः पिवेत् एकभुक्तं चरेत्पश्चाद्वा वत्पुष्पवती भवेत् ॥ ४ ॥ वहिस्तावच्च निवसेद्यावच्चरति तद्व्रतम् प्रायश्चित्तं ततश्चीरैकुर्याद्वा ह्यणभोजनम् ॥ ५ ॥ गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धये तस्वायं भुवोऽब्रवीदिति ॥ एतदप्यकामविषयमेव यदि गच्छत्कथंचनेति वचनात् आत्मना संमिते चांडालगादेहमात्रे गोमययुक्तजलपूरिते कूप इत्यर्थः ॥ ऋष्यशृंगेणाप्यंत्यजध्यवाये प्रायश्चित्तांतरमुक्तम् संपृक्ता स्यादथांत्यैर्यासा कृच्छ्राब्दं समाचरेदिति कामतः सकृद्गमने इदम् यदा त्वाहितगर्भाया एव वरचां चांडालादिव्यवायस्तदा तेनैव विशेष उक्तः । अंतर्वत्नीतुयुवतिः संपृक्ता चांत्ययोनिना प्रायश्चित्तं न सा कुर्याद्वा वद्वर्भोननिःसृतः १ न प्रचारं गृहे कुर्यान्न चांगेषु प्रसाधनं न शयीत समं भर्त्रानवाभुंजीत वांधवैः २ प्रायश्चित्तं गते गर्भे विधिकृच्छ्राब्दिकं चरेत् हिरण्यमथ वा धनं दद्याद्विप्राय दक्षिणामिति ३ यदा तु कामतोऽत्यंतसंपर्कं करोति तदा ॥ अंत्यजेन तु संपर्कं भोजनं मैथुने कृते प्रविशेत्संप्रदातेऽग्नौ मृत्युना सा विशुद्ध्यतीत्युशनसोक्तं द्रष्टव्यमिति ॥

गर्भे जिसको सो स्त्री पश्चात् चांडालादिके साथ गमनकरे तिसमेंभी ऋष्यशृंगीजीने विशेष कयाहै अंतरेति गर्भवाली स्त्री नीचके साथ गमन कर्के प्रायश्चित्त न करे जितने तक गर्भ नहीं निकले १ और गृहविषे प्रचार न करे और अंगकी शुद्धि न करे और भर्ताके साथ शयन न करे और बंधुओंके साथ भोजन न करे २ और गर्भक निकले होआं प्रायश्चित्त विषि जो छच्छ्रवत वर्षका है तिसनूं करे और सुवर्ण वा गौको ब्राह्मणके तांड दक्षिणा देवे ॥ १ - जेकर इच्छाते बहुत संसर्ग करे तिसमे कहतेहैं ॥ अंत्यजेनेति द्विजकी स्त्री नीचके साथ गमन करे वा भोजन करे वा मैथुन करे तां अच्छीतरह प्रज्वलित जो अग्नि तिसविषे प्रवेश करे सो मृत्युके साथहि शुद्ध होतीहै एह उशनसाजीका कया होया प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै ॥

५८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

यदेति जेकर कथनकीते होए प्रायश्चित्तकौनकरे तद तिसस्त्रीके मस्तकविषे लोहेको तपाकरे पु
केलिंगकरे चिन्हलगावे वा मारदेवे । इसमे वचन कहतेहैं हीनेति हीनवर्णकरे भोगीहोवे जो स्त्री
सो चिन्हकरणे अथवामारणयोग्यहै एहव्यासस्मृतिमेकबाहै १-पूर्वमिति पिच्छेसमानवर्णवालोस्त्रीके
अनुलोमक्या अपणेत छोटो जातिकेगमनविषे स्त्रीवा पुरुषको स्वभावते समान प्रायश्चित्त कयाहै
तिनका कितेक अपवादहै तेसेहि संवत्तजो कहतेहैं बलादिति बलनें खिचकरे भोगी होवे का
मकरे पीडित होया जोविच तिसकरे तद तिसका परमपवित्र करेवाला प्राजापत्य व्रतहै तिस
करे शुद्धहोतीहै १ इसमे पराशरजीभाकहतेहैं सरुदिति नहि इच्छाकरतीस्त्री पापीपुरुषोने एक
वार भोगी होवे तां प्राजापत्यकरे शुद्धहोतीहै वा रुधिरके निकालनेकरे अर्थात् ऋतुके आवणे
करे शुद्धहोतीहै १ बृहस्पतिजीकहतेहैं अनीति नहि इच्छा वाली स्त्री भोगी जावे तां तिसनूं गुप्त

यदातूक्तंप्रायश्चित्तं न करोति तदा पुल्लिंगेनांकनीया वध्या वा भवेत् । हीन
वर्णोपभुक्तायासांक्यावध्याथवाभवेदिति पाराशर्यस्मरणात् । पूर्वसवर्णानु
लोमव्यवाये स्त्रीपुंसयोरौत्सर्गिकंप्रायश्चित्तंतुल्यमुक्तं तस्य क्वचिदपवाद
स्तथाचसंवर्तः । बलात्प्रमथ्यभुक्ताचेदर्थमानेनचेतसा प्राजापत्येनशुद्धास्या
त्तत्तस्याःपावनंपरमिति १ पराशरोऽपि । सत्कृद्भुक्तातुयानारीनेच्छतीपापक
र्मभिः प्राजापत्येनशुद्धयेतश्रसृक्प्रस्त्रावणेनवेति १ बृहस्पतिरपि । अनि
च्छंतीतुयाभुक्तागुप्तांतांकारयेद्गृहे मलिनांगीमधःशय्यापिंडमात्रोपजी
विनी १ कारयेन्निकृतिंकृच्छ्रंपराकंवासमंगतां हीनवर्णोपभुक्तायात्याज्या
वध्यापिवाभवेदिति २ समंसमानजातीयम् ॥ अत्रसकृदुपगमेकृच्छ्रम्
द्विरभ्यासेपराकः ॥ अभ्यासेतुचांद्रायणम् । तदाहोशनाः । व्यभिचारिणी
भाय्या कुचैलां पिंडगुप्तां निवृत्ताधिकारां चांद्रायणं पराकं प्राजापत्यं वा
कारयेदिति

घरविषे रखे और उहस्त्री मलीन अंगों वाली पृथ्वीविषे शयन करे और तिसको अन्न मात्र
खाएको देवे २ पीछे तिसका शुद्धि करावे जेकरतिसने समानजातिके साथ गमनकीताहोवे तां
कृच्छ्रऔर पराक व्रत करे और हीन वर्ण करे भोगी होवे तां सो त्यागणे और मारणे योग्य है
इसमे व्यवस्थाकर्तेहैं अत्रेति इहां एकवार गमन विषे कृच्छ्र व्रत जानणा और दोवार गमन वि
षे पगक व्रत जानणा और बहुत बार गमन विषे चांद्रायण व्रत जानणा । तिसीको उशन ऋ
षि जो कहतेहैं व्यभिचारिणीमिति व्यभिचारिणी जो स्त्री कैसी है मलीनहैं वस्त्र जिसके और
अन्नमात्र भक्षण करण वाली और घरके कार्यते दूर कीती होई है तिसको चांद्रायण वा
पराक वा प्राजापत्य व्रत करवावे

अब इसमें मनु जो कहते हैं ॥ सेति सो स्त्री फेर दोषवाली होवे क्या तुल्यकर्के प्रेरित कीती होई तिसके साथ कीड़ाकरे तां इसके पापकों दूर करणवाला रुच्छ और चांद्रायणव्रत है १ परंतु एह प्रायश्चित्त इच्छातें विना कीता है व्यभिचार जिसने तिसमें जानणा और जो इच्छा तें कीता है तिसमें दूणा व्रत करण योग्य है अव कहते हैं कि जो ऋष्य शृंगीजीने क्या है तिसको कहते हैं बलेति बल कर्के तुल्य जातिवालेने स्त्री साथ गमन कीता होवे अर्थात् ब्राह्मणने ब्राह्मणी साथ और क्षत्रीने क्षत्रियाणीसाथ तां तिसस्त्रीकी शुद्धिवास्ते त्रय रात्रिका प्रायश्चित्त कथन करे १ सो एह वीर्यं स्वलिततें प्रथम निवृत्तिविषे देखणें योग्य है ॥ पराशरजीभी कहते हैं वंदीति कैद कर्के वा ताडना कर्के वा वन्न कर्के वा बलतें वा भयतें स्त्रीकों भोगे तां सांतपन व्रत कर्के सो स्त्री शुद्ध होती है १ एह पाराशर जीने क्या है इच्छाकर्के प्रवृत्ति विषे तिसी स्त्री

मनुः। साचेत्पुनः प्रदुष्येतु सटशेनोपयंत्रिता कच्छं चांद्रायणं चैव तदा स्याः पापशोधनमिति १ इदं चाकामतः कामतस्तु द्विगुणम् यत्तु ऋष्यशृंगः। बलेन कामितानारीसवर्णेन कथंचन प्रायश्चित्तं त्रिरात्रं वै तस्याः शुद्ध्यर्थमादिशेदिति १ तद्व्रतः सेकात्प्राङ्निवृत्तौ द्रष्टव्यम् पाराशरोपि। वंदीग्राहेण वा भुक्ता हत्वा वा ध्वावला द्रयात् कृत्वा सांतपनं कच्छं गुह्यं त्पाराशरो ब्रवीत् १ इच्छया प्रवृत्तौ तु तस्याः पुनस्तुल्यमेव प्रायश्चित्तम् तदा हतुः शंखलिखितौ। इच्छया व्यभिचारिणी परदारेषु पुंसां विहिततां कारयेदिति अंगिराः। व्रतं यच्चेदितं पुंसां पतित स्त्रीनिषेवणात् तच्चापिकारयेन्मूढां पतिता सेवनात्स्त्रियमिति आसेवनादिति पदच्छेदः तच्च कामतः अकामतस्त्वाह संवर्तः ॥ ब्राह्मण्यकामाद्वच्छेत्क्षत्रियं वैश्यमेव वा गोमूत्रयावकैर्मासात्तद्वर्द्धाच्च विशुद्ध्यति १ ब्राह्मण्याशूद्रसंपर्के कथंचित्समुपागते चांद्रायणेन शुद्धिः स्यात्तत्तस्याः पावनं स्मृतमिति २

कों पुरुष तुल्यही प्रायश्चित्त है ॥ तिसीको शंख और लिखित कहते हैं इच्छेति इच्छा कर्के जो व्यभिचारिणी स्त्री है निमनूं और परस्त्रीविषे पुरुषको जो प्रायश्चित्त है सो करवावे ॥ अंगिरा जो कहते हैं व्रतमिति पुरुषोंको पतित स्त्रीके सेवणें जो व्रत कयाइ सो पतित पुरुष नूं सेवनवाली स्त्रीनूं करवावे आसेवनात् एह पदच्छेद करणा सो एह इच्छा कर्के करणें विषे जानणा १ नहीं इच्छा तें करणें विषे संवर्त जो कहते हैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी इच्छातें विना क्षत्री वा वैश्य साथ गमन करे तां गोमूत्र कर्के युक्त जो यव उनांको महीना वा अर्ध महीना भक्षण करणें शुद्ध होती है ॥ क्षत्री विषे अर्ध महीना और वैश्यमें महीना इसमें कम विवक्षा नहीं है १ एह पूर्वोक्ति ब्राह्मणीका कदाचित् शूद्र साथ गमन होवे तां तिसकी चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धि होती है जिस कारणसे वो परमपावित्र कहा है २

६० ॥ श्रीरण्वार कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और शूलपाणिजी कहते हैं कि एह नहि इच्छावाली स्त्रीके विषयविषे जानणा और संबन्धजीके बाक्यविषे मासात् इसक कैं वैश्य जानणा और क्षत्रीविषे अद्वैतजानणा एहपूर्वोक्ति अर्थहै और हीनवर्णक कैं भोगी जो स्त्रीसो त्यागणयोग्यहै एहपौछे कथाहै तिसविषे वसिष्ठऋषिजीविशेष कहते हैं चतस्र इति चार स्त्रियां त्यागण योग्य हैं एक शिष्य साथ गमन करण वाली और दूसरी गुरु साथ गमन करण वाली और तीसरी पतिमागण वाली और बिशेष कैं जुगित साथ गमन करण वाली १ अत्र जुगितशब्दका अर्थदिखातेहै जुगितइति शूद्रके घरमें वैश्या क्षत्रियाणी वा ब्राह्मणी रहै और वैश्यके घरमें क्षत्रियाणी वा ब्राह्मणी रहै और क्षत्रीके घरमें ब्राह्मणी रहै इन छे ६ तें जो उत्पन्न होवें सो जुगितहै तिस साथ गमन करणवाली एहि चार त्यागणयोग्य हैं होर नहि इसक विषे विशेष विधानते परित्याग क्या घरते निकाल देण हि जानणा औरके विषे अतिशयक कैं

शूलपाणिस्तु अनिच्छतीति विषयमेतदिति मासादिति वैश्ये क्षत्रिये त्वर्धमि
ति पूर्वहीनवर्णोपभुक्ता त्याज्येत्युक्तं तत्र विशेषमाह वसिष्ठः । चतस्रस्तु परि
त्याज्याः शिष्यगुरुगात्रया पतिघ्नी च विशेषेण जुगितोपगता च येति १ ॥
जुगितः प्रतिलोमजः अत्र च विशेषविधानात् परित्यागो गृहान्निर्वासनमेव
अन्यत्र तु विप्रदुष्टांस्त्रियंभर्तानिरुध्यादेकवेदमनीति मनूको निरोधः ॥ या
ज्ञवल्क्योपि । हताधिकारां मलिनां पिंडमात्रोपजीविनीं परिभूतामधःशय्यां
वासयेद्व्यभिचारिणीमिति ॥ १ ॥ अत्र वासनं वैराग्यजननार्थमेव यत्तु चतु
र्विंशतिमते । स्त्रीणां नास्ति परित्यागो ब्रह्महत्यादिभिर्विना तत्रापि गृहमध्ये तु
प्रायश्चित्तानि कारयेत् ॥ १ परित्यक्ताचेरत्पापं बह्वल्पं वापि किंचन तत्पा
पं शतधा भूत्वा वांधवानपि गच्छतीति ॥ २ ॥ तद्गर्भानुत्पत्तिपरम्

दोष वाली स्त्री नूं पति एक घरमें रोक कैं प्रायश्चित्त करवावे एह मनुका कथाहोया निरोधहै और याज्ञवल्क्य जी भी कहते हैं हतेति दूरहै अधिकार जिसका और मलीन वस्त्र वाली और अन्न मात्रा तें जाविका करण वाली और तिरस्कृतकीती होई और पृथ्वीमें शयन करण वाली ऐसी व्यभिचारिणी स्त्री नूं वासनमात्र करवावे १ परंतु इसके विषे वासन विरक्तताके उत्पन्न करण वास्तं जानणा ॥ अत्र इससे कुछ विलक्षण दखाते हैं यत्त्विति जो चतुर्विंशतिमते विषे कथा है कि स्त्रीणामिति ब्रह्महत्यादितें विना स्त्रीयांका परित्याग नहि है तिसके विषे भी घरके मध्य विषे प्रायश्चित्त नूं करवाव १ क्योंकि त्यागी होई स्त्री थोडा वा बहुत पापकरे तां सो पाप सो १०० प्रकारका हो कैं वंधुआंको प्राप्त होबाहै २ सो एह चतुर्विंशतिका मत गर्भ के न उत्पन्न होणमें जानण योग्यहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ६१

तदिति सो व्यभिचारिणी गर्भकर्के युक्त होवे तां तिसकात्यागपराशरजी कहतेहैं ॥ जारेणेति जेकर स्त्री जार कर्के गर्भकों उत्पन्न करे पतिके मृत होआं अथवा पतिके व्यक्त वया प्रकट पास होयां अथवा पतिके गयां होआं तां तिस स्त्री कों दूसरे देश विषे त्याग देवे कैसी है सो स्त्री पतितहै और पाप करण वाली है ॥ अर्थको स्पष्ट कर्के कहतेहैं कि अपरेराष्ट्रे इसके कयां होआं घरते निकाल देणा जानीदा है इसी कारणतें चतुर्विंशति मत विषे कहतेहैं चतस्रइति पतिन होआं भी चार स्त्रियां त्यागणे योग्यहैं चांडालके साथ गमन करण वाली और पतिके मारणवाली और यति साथ क्यासंन्यासी साथवा पुत्रसाथगमन करण वाली १ इसके विषे शिष्यादिसाथ गमन करण वालीयांका त्याग गर्भ विषय विषे जानणा ॥ इसीमे और वचनहै व्यभिचारादिति व्यभिचारतें ऋतुविषे शुद्धि होतीहै और गर्भ विषे

तद्युक्तायास्तुपरित्यागमाह ॥ पराशरः ॥ जारेणजनयेद्गर्भमृतेव्यक्तेगते पतौ तां त्यजेदपरेराष्ट्रेपतितांपापकारिणीमिति ॥ १ ॥ अपरेराष्ट्रेइत्युक्ते गृहान्निष्कासनंगम्यते अतएवचतुर्विंशतिमते ॥ चतस्रएवसंत्याज्याःपतने सत्यपिस्त्रियः श्वपाकोपहतायातुभर्तृघ्नीयतिपुत्रमेति ॥ १ ॥ अत्रशिष्य गादीनांत्यागो गर्भविषयएव ॥ व्यभिचारादृतौशुद्धिर्गर्भेत्यागोविधीयते गर्भभर्तृवधादौचतथामहतिपातकइति याज्ञवल्क्योक्तेः । गर्भः शूद्रादिकृतः ब्राह्मणक्षत्रियविशांभार्याःशूद्रेणसंगताः अप्रजाताविशुद्ध्यंति प्रायश्चित्ते नतनरा इति वसिष्ठस्मरणात् शूद्रग्रहणंप्रतिलोमजोपलक्षणार्थम् नतुत्रैव णिकव्यावृत्त्यर्थम् ॥ तेनशिष्यगागुरुगयोरपित्रैवार्णिक प्रवेशेनत्यागःअयं चत्यागोनगर्भमात्रोकिंतुप्रसवमात्र इतिप्रामाणिकाः ॥ अयमेवाभिप्रायो

माधवाचार्याणाम्

त्याग विधान कियाहै गर्भ विषे और पतिके वधादि विषे तैसें हि वडें पापके विषे त्यागहै १ इस याज्ञवल्क्यको उक्तिते त्यागका अर्थ किहाहै परंतु जिसगर्भके दोषकर्के त्यागीहै सोगर्भ शूद्रादिका कीजा होआ जानणा इसमें वचन कहीदाहै ब्राह्मण इति इसतें लेकर वसिष्ठस्मरणात् इस तक अर्थ पीछे लिखयाहैइस विषे शूद्रग्रहण प्रतिलोमज जो पिले कयाह तिसके उपलक्षण वास्ते है और त्रय वर्णकी व्यावृत्तिवास्तेनाहिहै तिस कर्के एहवात सिद्ध होई कि शिष्य साथ गमन करण वाली और गुरु साथगमन करण वाली स्त्रीकी त्रय वर्ण विषे हि स्थिति होणेतें त्याग कयाहै तथापि एह त्यागगर्भमात्राविषेनाहिहै किंतु प्रसूतिमात्रविषे है एह प्रामाणिकोंका मतहै एही अभिप्राय माधवाचार्यांका है

६२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

व्यवेति और त्याग शब्द कर्के व्यवहार तिसस्त्री साथ नहि करणा एही कया है कोई घरतें निकालनेका नाम त्याग नहि एह मिताक्षरा में कया है ॥ अब स्त्रीको मनके पापका और वाणीके पापका प्रायश्चित्त वासिष्ठस्मृतिसैं कहतेहैं मानसेति मनकर्के पतिकें मारणे विषे ज्ञायरात्रि यवोंका काडा और क्षीरोदनका भोजन करे और पृथ्वी विषे शयन करे और ज्ञायरात्रितें उपरंत जल विषे डुब्ब कर्के गायत्रीकी चारमालाका शिर विषे हवन करे तां पवित्र होती है एह जाणोदाहै परंतु जिसकर्के हवन करणाहै सो द्रव्य नहि लिखया सो इसप्रकरणसैं जलहि प्रतीतहुंदाहै अथवा घृत कर्के हवन करे और चार माला तक श्वासरोध नहि हुंदा इस कर्के जाणोदाहै कि श्वास संचार रक्षकर निमग्न होवे और हवनादि दूसरेसे करावे आपजलमे निमग्न रहे इतनाभी विचारकरणा ॥ अभिचार नाम मारणकाहै वाणीके पाप

व्यवहारनिरोधएवत्यागशब्देनोक्तो नतु गृहान्निर्वासनमपीतिमिताक्षरा ॥ मानसवाचिकयोः प्रायश्चित्तं वसिष्ठस्मरणे। मनसाभर्तुरभिचारे त्रिरात्रं यावकं क्षीरोदनं वा भुंजानाश्रधः शयीत ऊर्ध्वं त्रिरात्रादप्सु निमग्नायाः सावित्र्या चतुर्भिरष्टशतैः शिरोभिर्जुहुयात्पूता भवतीति विज्ञायते अभिचारो हिंसा वाक्सं वंधे एतदेव मासं चरित्वा ऊर्ध्वमासादप्सु मग्नायाः सावित्र्या चतुर्भिरष्टशतैः शिरोभिर्जुहुयादिति ॥ अष्टाधिकं शतमष्टशतं तैश्चतुर्भिः शिरोभिः शिरसीत्यर्थः ॥ इदं च मानसिकव्यवहारे प्रायश्चित्तं रजोदर्शनादर्वाग्व्यवहार्यत्वं सिद्धये ॥ रजोदर्शने तु सति तेनैव शुद्धिः। तथा च ननुः। मृत्तैः शोधयते शोध्यं नदीवेगेन शुद्ध्यति ॥ रजसास्त्री मनोदुष्टा संन्यासेन द्विजोत्तम इति १ ॥

इति स्त्रीव्यभिचारे प्रायश्चित्तम् ॥ ❀❀ ॥

विषे इसी व्रतको महीना रोज करे महीनेतें उपरंत जलविषे गायत्रीकी चारमाला कर्के शिर विषे हवन करावे अष्टां तें अधिक सौ १०० नूं अष्टशत कहतेहैं तिनां चऊं कर्के शिरविषे हवन करे एह मनके व्यभिचार विषे प्रायश्चित्तहै परंतु रज देखणेंतें उरे व्यवहार्यत्वकी सिद्धि वास्तेहै ॥ और रजदेखणें विषे तिसी रजकर्के शुद्धि होतीहै ॥ तैसेही मनुजी कहतेहैं मृदिति .. शोधने योग्य जो वस्तु सो मृत्तिका और जलकर्के शुद्ध होतीहै और नदी वेगकर्के शुद्ध होतीहै और दुष्टहै मन जिसका ऐसी स्त्री रजकर्के शुद्ध होतीहै और द्विज संन्यास कर्के शुद्ध होताहै १ एह स्त्रीयोंके व्यभिचारका प्रायश्चित्त कया है ॥ ❀❀ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ६३

अव पशु गमन विषे शंख और लिखित कहतेहैं तिर्यंगिति गौके विना और पशुयोनिविषे गमन करे तां सचैल स्नानकर्के घासकाभार गौआंको देवे तां शुद्धहोताहै ॥ एहि पराशरजी कहतेहैं महिषीति महिषी ऊटणीगधी इनके साथ गमनकरे तां दिनरात्रके व्रतकर्के शुद्ध होताहै परंतु एह नहिं कामना कर्के कीताहोवे तिसमे जानणा ॥ और कामनाकर्के करण वालेविषे जावाली जी कहतेहैं इतरेषामिति और पशुयोनविषे गमनकरे तां रुच्छ्रव्रतकाएकपाद व्रतकरे ॥ इसीमे कामनाकर्के बहुत अभ्यास विषे संवर्त्तजी कहतेहैं पश्विति पशु और वेश्याके गमनविषे प्राजापत्य व्रतकरे ॥ कुत्तीके साथ गमन करणं विषे विशेष चतुर्विंशति मत विषे कहतेहैं शुनीमिति कुत्तीके साथ द्विज गमन करे तां अतिरुच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोताहै ॥ अव जो गौतमजीने कयाहै सो कहतेहैं अमानुषीष्विति

अथपशुगमनेशंखलिखितौ ॥ तिर्यग्योनिपुगोवर्जसचैलस्नातोयवसभारंद
द्यात् ॥ पराशरः ॥ महिष्युष्टीखरीगामीत्वहोरात्रेणशुद्ध्यति इदमकामतः
कामतस्तु ॥ जावालः ॥ इतरेषांपशूनांतुरुच्छ्रपादोविशोधनमिति कामतो
ऽभ्यासे संवर्त्तः ॥ पशुवेश्याभिगमनेप्राजापत्यंविधीयतइति ॥ शुनीगमने
विशेषचतुर्विंशतिमते ॥ शुनीचैवद्विजोगत्वाअतिरुच्छ्रसमाचरेदिति ॥ यत्तु
गौतमः ॥ अमानुषीषुगोवर्जस्त्रीषुगमने कूष्मांडैर्घृतहोमइति तदकाम
कामसकृदभ्यासेष्वष्टाविंशत्यष्टोत्तरसहस्रादिसंख्ययायोज्यम् ॥ अथगो
गमने ॥ पराशरः ॥ गोगामीचत्रिरात्रेणगामेकांब्रह्मणेदद्यात् इदमका
मतः सकृद्गमने कामतोविष्णुः ॥ गोव्रतंगोगमनेच ॥ कामतोऽभ्यासेतुशं
खलिखितौ ॥ गोष्ववकीर्णःसंवत्सरं प्राजापत्यंचरेदिति ॥

गौके विना पशुयोनिकी स्त्रीविषे गमन कीते होयां कूष्मांड मंत्रो कर्के घृतका हवनकरे सो एह नहिं इच्छाते करणंविषे अष्टाविंशति संख्याकर्के जोडनेयोग्यहै ॥ इच्छाकर्के करणंविषे अष्टोत्तर सहस्र संख्या कर्के जोडना ॥ एकवार गमन विषे अष्टा विंशति जोडना ॥ और बहुत अभ्यास विषे अष्टोत्तर सहस्र जोड कर्के हवन करणा ॥ अव गौके साथ गमन करणं विषे प्रायश्चित्त पराशरजी कहतेहैं गविति गौके साथ गमन करण वाला त्रय रात्रि व्रतकर्के एक गौ ब्राह्मणके ताई देवे तथापि एह नहिं इच्छाते एकवार गमनविषे जानणा ॥ इच्छाते करणं विषे विष्णुजी कहतेहैं गोव्रतमिति गौके गमनविषे भी जोगो घातकाव्रतहै सो करे अवइसमे बहुवार इच्छाते करणं विषे शंख और लिखित जी कहतेहैं गोष्विति गौ विषे गमन करणं वर्ष पर्यंत प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होताहै

६४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

जोगोत्तमजीने क्या है सो कहते हैं गवीति गौके गमनविषे गुरु तल्पके तुल्यप्रायश्चित्त करणा सो एह ज्ञानने जन्मसे लेकर बहुत अभ्यास विषे जानणा एह परस्त्री व्यभिचारका प्रायश्चित्त पूरा होया ॐ इमत् उपरंत आत्मविक्रयके प्रायश्चित्त कहते हैं तत्रेति तिस विषे सामान्य प्रायश्चित्त जो याज्ञवल्क्यने (उपपातकशुद्धिः स्यादेवं चांद्रायणेन तु) इत्यादि पीछे कथन कीते होए चार हैं अथवा तिनांके तुल्य मनुजीने कहे होए हैं सो यथा प्रकार जोड़ने योग्य हैं अर्थात् जैसा पाप होवे तैसाही व्रत जोड़ने योग्य है ॥ सो अयाज्य संयाज्य प्रकरण विषे कहे हैं ॥ कुल्लुक और कहते हैं कि याज्ञवल्क्यकी उपपातक गणना विषे व्यसनते उपरंत आत्मविक्रय प्रतिपादन कीता है तिसका प्रायश्चित्त स्कंदपुराणके पातालखण्डसे कहते हैं पानमिति मदिरा पान करणा १ और

यत्तु गौतमः गविगुरुतल्पसम इति तद्ज्ञानादाजन्माभ्यासे इति पारदा
र्यम् ३ ॐ एतदनंतरमात्मविक्रयः ॥ तत्र सामान्यप्रायश्चित्तानि याज्ञव
ल्क्योक्तानि चत्वारि ॥ तत्समानि मानवीयानि वा यथायथं याज्यानि
तानि चायाज्यसंयाज्यप्रकरणे प्रोक्तानि किंच याज्ञवल्क्योपपातकगण
नायां व्यसनान्यात्मविक्रय इति व्यसनोत्तरमात्मविक्रयः प्रतिपादितः ।
तत्प्रायश्चित्तं स्कंदपुराणे पातालखण्डे ॥ पानमक्षः स्त्रियश्चैव मृगया चोग्र
दंडनम् अतीव परुषं वाक्यं सर्वस्वदानमेव च १ एतानि सप्त व्यसनानि ॥
अथापराणि सप्त व्यसनानि अनृतं गंधपुष्पाणां सेवनं दोषचारिणाम् ऋणं
कृत्वा घृतं पीत्वा प्रत्यहं भोजने स्पृहा स्वं किंचन पणं कृत्वा ऋणं कृत्वा व्रतं चरेत् १

जूआ खेलना २ और परस्त्रीका सेवना ३ और मृगया क्या बहुत शिकार खेलना ४ और थोड़े
पापमें बहुत दंड देणा ५ और बहुत कठोर वचन बोलणा ६ और कुटुंबदे होआं २ संपूर्ण धनका
दानकरणा ७ एह सत्त व्यसन कहे हैं ॥ १ ॥ अब और सत्त व्यसन कहते हैं अनृतमिति झूठ बोलणा १
गंधपुष्पोंका सेवना २ और दोष वाले पुरुषका अर्थात् मदिरापानी वेश्यागामी आदि पुरुषका
सेवना ३ और ऋण उठाय कर्के घृत पीणा ४ और नियं प्रति नवीन पदार्थ खाणेकी इच्छा
करणी ५ और मेरेको इतना धन देओ में आपका व्रत करूंगा ऐसा व्यवहार करणा ६
और ऋण कर्के व्रत करणा अर्थात् व्रतके उद्यापनादि विषे बहुत धन लगाणा ७ एह
सत्त व्यसन हैं ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ६५

एष्विति इनां व्यसनांके भोगमें आसक्त होआ अपणें आपनू वेचकरे वर्त्तेगा ॥ आत्माके वेचणे का प्रकार कहतेहैं वर्षमिति एक वर्ष वा छे महीने भगवान्का आराधन करोंगा ऐसैं संविद नू करे जेकर पापबुद्धि वाला पुरुष वर्त्तन करे ॥ १ ॥ तद् नित्यकर्म जो संध्या वंदनादि और काम्यकर्म जो यज्ञादि एह संपूर्ण तिसाके होतेहैं जिसते धन लेकर वनावे आप निष्फल होताहै ॥ २ ॥ अब दूतकी निदाकरतेहैं अग्नाविति अग्निविषे दग्ध होवे वा जलविषे डुब जावे जो पृथ्वीविषे डिग पड़े सो संपूर्ण वस्तु परलोक वास्ते होतीहै और जूए विषे जो धन जावे सो नष्ट होताहै अर्थात् फेर कदाचित् प्राप्त नहीं हुंदाहै ॥ ३ ॥ सो पापो

एषुभोगासक्तः स्वात्मानं विक्रयित्वा वर्त्तयेत् ॥ वर्षं वाथ तदर्द्धं वा भगवदाराधनं चरे इतीव संविदं कृत्वा वर्त्तयेद्यदि पापधीः १ नित्यकर्माणि काम्यानि इष्टापूर्तादिकानि च सर्वतत्रैव भवति स्वयं वै निष्फलो भवेत् २ अग्नौ दग्धं जले मग्नं भूमौ निपतितं च यत् तत्सर्वं परलोकाद्यदूतेन घृष्टं विनश्यति ३ पतितः स भवेत् पापी भ्रंशाद्यैर्नित्यकर्मणाम् नरके नियतं वासः पापकारी भवेद्यतः ४ तस्य वै निष्कृतिर्दृष्टामुनिभिर्धर्मकोविदैरिति ५ हिरण्यगर्भप्रतिग्रहप्रायश्चित्तवत्सर्वं कुर्यात् तत्तु प्रायश्चित्तं तुलादानादिप्रतिग्रहप्रायश्चित्तप्रकरणे द्रष्टव्यम् इत्यात्मविक्रयप्रायश्चित्तम् ४ ॥ ॥ अथ गुरुमातृपितृत्यागे प्रायश्चित्तम्

पुरुष नित्यकर्माका जो नाहिं करणा तिसकरे पतित होताहै और तिस पाप करण वाले पुरुषका नियम करे नरक विषे वास होताहै क्योंकि जिसकारणते उह पापकारीहै ४ परंतु तिस पुरुषकोभी धर्मके जानण वाले मुनियोंने पापके दूर करणेका उपाय देखयाहै ॥ ५ ॥ सो दिखार्इदाहै हिरण्येति हिरण्यगर्भके दानके प्रतिग्रहकी न्याई प्रायश्चित्त इसका संपूर्ण करे सो प्रायश्चित्त तुलादानादि प्रतिग्रहके प्रायश्चित्त प्रकरण विषे देखणे योग्यहै ॥ एह संपूर्ण आत्मविक्रयका प्रायश्चित्त कया है ॥ ॥ अब गुरु और माता और पिताके त्याग विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं

६६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

एतदिति इनांके त्याग करणवालेको पंक्तिरहित पुरुषोंविषे पढ कर्के मनुजी कहतेहैं षष्ठेति षष्ठ काल विषे महीना पर्यंत भोजन करे क्या छेमे कालविषे भोजनकरे इसका अर्थ आगे आवेगा और संहिताका जप करे और नित्य शाकलमंत्रोंका हवन करे एह अपांक्त्य पुरुषोंके शुद्धकरणे वास्ते क्याहै ॥ इसी श्लोकका अर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं अपांक्त्य जो पतितहैं (स्तेनक्रीवा) इत्यादि श्लोक कर्के कहे होए सो और विशेषते नहि दिखायाहै प्रायश्चित्त जिनांको तिनांको महीना पर्यंत त्रयदिन जलपान कर्के तीसरे दिनविषे सायं काल भोजन करे और वेदसंहिता का जप करे ॥ हवनके मंत्रदखाईदेहैं देवेति (देवकृतस्यैनसो अवयजनमसी) इत्यादि अठ

एतच्चापांक्त्यमध्येपठित्वाप्राहमनुः षष्ठान्नकालतामासंसंहिताजपएवहि ॥
होमश्चशाकलो नित्यमपांक्त्यानांविशोधनमितिअस्यार्थः अपांक्त्यायेपतिताः
स्तेनपतितक्रीवाइत्यादिनोक्तास्तेपांविशेषतोऽनुपदिष्टप्रायश्चित्तानांमासं अ
हमपोभुक्तातृतीयेहनिसायंभोजनं वेदसंहिताजपोदेवकृतस्यैनसो अवयज
नमसीत्यादिनाउद्गात्राऽष्टभिर्मन्त्रैर्होमःप्रत्येकंकार्यः एतत्समुद्दिष्टपापशोधन
म् षष्ठान्नकालतायामयमभिप्रायः । सायंप्रातर्द्विजार्तीनामशनंमुनिनोदितम्
याममध्येनभोक्तव्यं यामयुग्मंनलंघयेदित्युक्तप्रतिदिनभोजनद्वयनियमेन
तृतीयदिनोत्तरार्द्धभोजनकालः ॥ जलपानंतुप्रातिदिनकमेवेतिबोध्यम् ॥

मंत्रोंकर्के उद्गाता एक एक का हवन करे एह पापशोधनका प्रकार कियाहै और षष्ठान्नकालता इसविषे एह अभिप्रायहै कि द्विजातियोंको सायंकाल प्रातःकाल मुनियोंने भोजन क्या है एक प्रहरके मध्य विषे भोजन न करे और दोप्रहर न लंघनकरे अर्थात् दो प्रहरके अंदर ही भोजन करे ॥ ऐसा कहा जो नित्यंप्रति दो बार भोजनका नियम तिस कर्के तीसरे दिनके उत्तरार्द्ध विषे भोजनका काल आवता है इसीको षष्ठान्नकालता कहतेहैं और जलपान जो है सो प्रतिदिन करणा एह जानणे योग्यहै ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ६७

अपांकेयाइति अपांकेयभी तिसीविषे जानणेंयोग्यहैं । जेडेब्राह्मण चोर और पतित और नपुंसक और नास्तिक हैं तिनां ब्राह्मणांका देवकर्म पितृकर्म विषे अधिकार नाहिं है एह मनुजीनें कयाहै इसकाउपक्रमकर्के क्या आरंभकर्केकहतेहैं कारणें विनाही माता पिता और गुरु के त्यागणे वाला जो ब्राह्मणादिहै सोभी हव्य कव्यते वाहर है अर्थात् पूर्वोक्त प्रायश्चित्त इसते कराणा चाहिए और एहि प्रायश्चित्त भाग्याके त्याग विषेभी जानणा और माता जो है सो संपूर्णदोषों वालीभी होवे तांभी नाहिं त्यागणी सो सदैव रक्षा करणें योग्यहै एह नागेशका वाक्यहै एह मातापिता गुरुके त्यागविषे प्रायश्चित्त समाप्तहोयाहै ॐ अब स्वाध्यायआग्निपुत्रके त्यागका प्रायश्चित्तकहतेहैं(प्रश्न) वेदकाविस्मरणतो ब्रह्महत्याके तुल्यकिहाहै सोउसका प्रायश्चित्त

अपांकेयाअपितत्रैव । येस्तेनपतितस्त्रीवायेचनास्तिकवृत्तयः तान्हव्यक व्ययोर्विप्राननर्हान्मनुरब्रवीदित्युपक्रम्य अकारणपरित्यक्तामातापित्रो गुरोस्तथेत्यादिना भार्यात्यागेप्येवम् मातुस्तुसर्वदोषेप्यत्याज्यतैव सर्वथा रक्षणीयत्वादितिनागेशः इतिगुरुमातृपितृत्यागप्रा ॐ ७ अथस्वाध्यायाग्नि सुतत्यागप्रायश्चित्तम् ॥ अधीतस्यचनाशनमितिब्रह्महत्यासमत्वेनकथनं तुव्यसनासक्त्यात्यागेवोध्यम् शास्त्रश्रवणव्याकुलतयात्यागेतु त्रैमासिका द्युपपातकप्रायश्चित्तानिशक्त्याद्यपेक्षयायोज्यानि ॥ यत्तुवसिष्ठस्मरणं ॥ ब्रह्मोऽज्ञिता कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा पुनरुपयुंजीत वेदमाचार्यादिति तदत्यंतापद्विषयमितिमिताक्षरा ॥

अनुपातकमें आवेगा इसमेक्योंलिखयाहै इसकाउत्तरकहतेहैं अधीतस्येति पढे होए वेद का भुलाणा एह पिच्छे ब्रह्महत्याके तुल्य कहाहै सो भुलाणा व्यसनकी आसक्ति कर्के होवे तां तिसविषे जानणा सो एह अनुपातकों में गिणयाहै और शास्त्रके श्रवण कर्के जोव्यकुलताक्या न्यायादि शास्त्रके अभ्यासमें जो खचितहोणा सो उपपातकहै तिस विषे त्रैमासिकादि उपपातकका प्रायश्चित्त कियाहै सोइं तिनांनू शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के जोडना ॥ और इससे विलक्षण जो वसिष्ठ स्मृतिमें कहाहै सो कहतेहैं ब्रह्मेति वेदनूं भुलाणवाला वारां १२ रात्रि का कृच्छ्र व्रत कर्के फेर आचार्य तें वेद नूं पढे सो एह अत्यंत आपत्तिविषे जानणा एह मिता क्षरामें कयाहै

६८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब अग्नित्याग रूप उपपातकका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसमे मनुजीका वचनहैं अग्नीति इच्छाकर्के पापकरण वाला जो ब्राह्मण सो अग्निहोत्रविषे अग्नियांका एक महीना त्यागकरे तां चांद्रायणव्रत कर्के शुद्ध होताहै पापकास्वरूपकहतेहैंकि सो अग्नित्यागरूपपाप यजमानहत्याके तुल्य होताहै १ तैसेही श्रुतिमें कहाहै जो पुरुष अग्निकात्याग करताहै सो देवतयांको यजमान हत्याके तुल्य प्रतीत हुंदाहै परंतु एह इच्छातें करण वाले विषे जानणा ॥ और जोहारीतजीनेकयाहै सोकहतेहैं संवत्सरइति जेकर अग्निहोत्री अग्निहोत्र नूं वर्ष रोज त्यागे तां चांद्रायण व्रत कर्के फेरअग्नि स्थापन करे और दोवर्ष त्यागेतां सोमायनऔर चांद्रायण व्रतकोंकरे सोमायन औरचांद्रायणकाभेद व्रतप्रकरण विषे देखणा और त्रयवर्ष त्यागे तां वर्ष पर्यंत कृच्छ्र व्रत कर्के फेर अग्नि स्थापन करेतांशुद्धहुंदाहै

अग्नित्यागेमनुः । अग्निहोत्रेऽपविद्व्याग्नीन् ब्राह्मणःकामकारकः चांद्रायणं चरेन्मासंवीरहत्यासमंहितत् । १ । अपविद्व्य त्वक्त्वा वीरोयजमानःमास मपविद्व्येत्यन्वयः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ वीरहावाएपदेवानांभवतियोऽग्निमुद्वास यते इति इदंचकामतः । यतुहारीतः । संवत्सरोत्सन्नेऽग्निहोत्रेचांद्रायणंकृत्वा पुनरादध्यात् द्विवर्षोत्सन्ने सोमायनचांद्रायणेकुर्यात् त्रिवर्षोत्सन्ने संवत्सरंकृच्छ्रमभ्यस्यपुनरादध्यादिति तदकामतोज्ञेयम् ॥ शंखस्तु वर्षोत्सादे गोदानमप्यधिकमाह । अग्न्युत्सादी संवत्सरंप्राजापत्यंचरेद्वांचदद्यादिति विष्णुरपि वेदाग्न्युत्सादीत्रिपवणस्त्राय्यधःशार्यासंवत्सरंभैक्षेणवर्तयेदिति कामतस्त्वेतान्येवस्वस्वविषयेद्विगुणानि ॥

परंतु सोएह नाहै इच्छातें करणें विषे जानणा शंखजी कुछ पूर्वोक्तसे विलक्षण कहतेहैं वर्षेति वर्ष रोज त्यागणें विषे चांद्रायण कर्के गोदान अधिक करे अर्थात् अग्निके त्यागण वाला पुरुष एक वर्षका प्राजापत्य व्रत कर्के पीछे गोदान करे ॥ विष्णुजी कहतेहैं वेदेति वेद और अग्नि के त्यागण वाला पुरुष त्रयकाल स्नान करे और पृथ्वी में शयन करे और वर्ष पर्यंत भिक्षाके अन्न कर्के उपजीविका करे तदशुद्धहुंदाहै परंतु एभी इसमेजाननाकिइनांनूंइच्छातें जेकर त्याग देवें तां अपणें अपणें विषय विषे द्विगुण व्रत करणें योग्यहै ॥ जैसे एकवर्ष अग्निके त्यागण वालेको दो वर्षका प्राजापत्य और दो गौका दानकरणा उचितहै अैसे औरभी जानलेणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ६९

जो वसिष्ठ जीने कया है सो कहतेहैं यइति जो पुरुष अग्निघां नूं त्यागें सो वारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत कर्कें फेर अग्नि स्थापन करे किन्हाअग्निघांके त्यागविषे एहप्रायश्चित्तहै तिनको जना तेहैं अग्नीनिति अग्निघां जो दक्षिणाग्नि और गार्हपत्य आहवनीय अवसथ्य और सभ्य इनांपं आं नूं त्याग देवे तां पूर्वोक्त व्रतकरे इसमे द्वादशरात्रग्रहण उत्तमकालादिकी अपेक्षा कर्कें प्राजा पत्यादि जो गुरु लघु कृच्छ्र इनांकी प्राप्ति वास्तेहै इसजगा उत्तम काल नाम एक ऋतुका और तिसते अधिककाहै तिसविषें दो महीनें त्यागे तां प्राजापत्य व्रत करे और चार महीनें त्यागे तां अतिकृच्छ्र व्रत करे और छे ६ महीनें त्यागे तां पराक व्रत करे ॥ और ६ महीनें उपरंत योगीश्वरोंने कहे होए जो उपपातकमें सामान्य प्रायश्चित्त सो कालादियोंकी अपेक्षा कर्कें जोडनें योग्यहैं एहमिताक्षरामें कयाहै परंतु एह नास्तिक बुद्धितें त्यागणें विषें जानणा तैसेंहि

यत्तुवसिष्ठः । योऽग्नीनपविद्येत्सकृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा पुनराधानं कारयेदिति अग्नीनदक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयावसथ्यसभ्यान् अपविद्येत्परित्यजेत् द्वादशरात्रग्रहणमुत्तमकालापेक्षया प्राजापत्यादिगुरुलघुकृच्छ्राणां प्राप्य र्थं तत्रमासद्वये प्राजापत्यं मासचतुष्टयेऽतिकृच्छ्रः पण्णमासोत्सन्ने पराकः पण्णमासादूर्ध्वयोगीश्वरोक्तान्युपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानि कालाद्यपेक्षया योज्यानीतिमिताक्षरा एतच्च नास्तिक्यात्त्यागे ज्ञेयम् तथा च व्याघ्रः ॥ मासद्वयंतु यो वान्हित्यजेदेवं समाचरेत् नास्तिक्यात्कृच्छ्रं कंतु होमद्रव्यं ददाति च १ होमद्रव्यं यावत्कालं होमो न कृतस्तावद्धोमपर्याप्तम् तथा भरद्वाजगृह्य ॥ यावत्कालमहोमी स्यात्तावद्धव्यमशेषतः तद्दानं चैव विप्रेभ्यो यथा होमस्तथैव चेति १ जातूकर्ण्योऽपि अतीतकालं जुहुयादग्नौ विप्राय वा स्वयम् दद्याद्वेदविदेऽसभ्यकृत्वाधानं पुनर्द्विजइति १ इदं च होमद्रव्यदानं स्मार्ताग्नित्यागविषयमिति माधवः

व्याघ्र ऋषि जी कहतेहैं मासद्वयमिति दो महीना जो पुरुष अग्निको त्याग देवे नास्तिकबुद्धितें तां एक कृच्छ्रव्रत करे और होमद्रव्यका दान करे १ अब होम द्रव्यका परिमाण कहतेहैं कि जितना काल होम न कीता होयें तितना हि होम परिपूर्ण जानणा जैसे दोमहीने होम जद नहि कीता तां जितना घृतादि उसमें लगाणाथा उतना घृतादि ब्राह्मणके तांई देकर प्रायश्चित्तकरे तां शुद्ध होताहै तैसेंहि भरद्वाजका बणाया जो गृह्यसूत्र तिसमें कहतेहैं यावदिति जितना काल हवन न करे तितना हि संपूर्ण द्रव्य ब्राह्मणको देदेवें जैसा होमहै तैसा हि दानहै १ जातूकर्ण्य जीभी कहतेहैं अतीति अतीत काल में अग्निविषें हवन करे वा वेदके जानणे वाले ब्राह्मणतांई होम द्रव्य देदेवे फेर दिज अग्नि स्थापनकरे परंतु एह होमद्रव्यका दान स्मार्त अग्निके त्याग विषें जानणा एह माधवजीने कया है

७० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

उभेति श्रौत और स्मार्तअग्निकेत्यागविषेभी एहयुक्त है एहअर्थयथायोग्य प्रतीत हुंदाहै एहभीकिसे कामतहै और अपणाभी मतहै । अब और इसमें विशेषहै मासेति चार महीनें आग्निके त्यागविषे माधवजीकहतेहैं ॥ चेति संपूर्ण चारमहीनें आग्निके त्यागविषे अतिरुच्छ्र व्रत करे तां तिस पाप ते रहित होताहै १ जेकर छे ६ महीनेत्याग करे तां पराकव्रतकर्के शुद्ध होताहै इसते उपरंत त्यागकर्के रहे तां वर्ष पर्यंत पयोव्रत करे अर्थात् वर्षपर्यंत परिमित दूधपान करतारहे ॥ जैसा उशनाजी कहतेहैं पडिति छे ६ महीनेजौ अग्नि त्याग करे सो पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै और छे महीनें ते उपरंत त्याग कर रहे तां सावधान होकर एक महीना एक वर्ष पर्यंत पयो व्रत करे ॥ कीतेहैं व्रत जिनोंने ऐसे मुनियोंने एह कयाहै ॥ १ ॥ छे ६

उभयत्यागेऽपियुक्तमितितुप्रतिभाति मासचतुष्टयत्यागेतुसएव- चतुष्टये तुसपूर्णमासानांतुहुताशनं त्यक्त्वातिकृच्छ्रं कुर्वीत ततः पापात्प्रमुच्यते १ एमासत्यागेपराकः ॥ अत ऊर्ध्वमब्दपर्यंतं पयोव्रतम् ॥ यथाहोशनाः एमासांस्त्यजतेयोवैपराकंतुसमाचरेत् ॥ ऊर्ध्वपयोव्रतं कुर्यान्मासमेकं समाहितः ॥ वर्षपर्यंतमेवाहुर्मुनयः शंसितव्रताः ॥ १ ॥ मासपट्कादूर्ध्वं संवत्सरं यावत् याज्ञवल्क्योक्तान्युपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानि जातिशक्ति गुणाद्यपेक्षया योजनीयानि संवत्सरादूर्ध्वं संवत्सरानंतरमपित्यागेमनूक्ते द्वैमासिकत्रैमासिके कालाल्पत्वमहत्वापेक्षया योज्ये ॥ एतदपि नास्ति क्व त्यागविषयम् ॥ प्रमादत्यागेभारद्वाजगृह्योक्तो विशेषः ॥

महीने तें उपरंत एक वर्ष तक याज्ञवल्क्य जीने कहे होए जो उपपातक में सामान्य प्रायश्चित्त सो जाति शक्ति गुणादिकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् जातिमें ब्राह्मणको पूर्णव्रत देणा क्षत्रीको एक पाद ऊन देणा वैश्यको आधा देणा शूद्रको एक पाद देणा वा जैसी शक्ति होवे तैसाहि प्रायश्चित्त करणा और गुणवान् कों पूर्ण व्रत देवे निर्गुणकों आधा देवे और वर्षतें उपरंत अग्नि त्याग रहे तां मनुके कथन कीते होए जो दो २ महीने त्रय महीनेके व्रत सो थोडे काल वा बहुत कालकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् थोडे कालमें थोडा दो महीनेका व्रत बहुत कालमें बहुत त्रय महीनेका व्रत करणा परंतु एह भी नास्तिक बुद्धि तें त्याग विषे जानणा ॥ प्रमादतें त्याग विषे भारद्वाजका वणाया जो गृह्यसूत्र तिसमें विशेष कयाहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ७१

प्रति त्रय रात्रि त्यागणे विषे एक सौ १०० प्राणायाम करे और वीस २० रात्रि त्यागणे विषे उपवासकरे इसते उपरंत सठ ६० रात्रि-तक त्यागणे विषे त्रय रात्रि उपवास व्रत करे इसते उपरंत एक वर्ष त्यागणे विषे प्राजापत्य व्रत करे इसते उपरंत बहुत काल विषे दोष बहुत है अर्थात् बहुत काल मे एहीव्रत बहुत कर्णा ॥ एही इच्छाते गृह्य अग्निके त्याग विषे जानणा एह अपाक मे क्याहै ॥ इसी विषयमे स्कंदपुराण विषे कहतेहें हुताशन मिति हे प्रभो जो ब्राह्मण प्रमाद ते अग्नि को त्याग देवे सो ब्राह्मण एक सौ १०० प्राणायाम और उपवास व्रत करे तां शुद्ध होताहै १ इच्छाते अग्निके त्याग विषे भी स्कंद पुराण विषे वचन है द्वादशेति वारां दिन त्यागे तां त्रय ३ दिन उपवास व्रत करे और

प्राणायामशतमात्रिरात्रात् ॥ उपवासःस्यादाविंशतिरात्रात् अत ऊर्ध्वनापष्टिरात्रातिस्त्रोरात्रीरुपवसेत् अतऊर्ध्वमासंवत्सरात्प्राजापत्यं चरेत् अतऊर्ध्वकालवहुत्वेदोषवहुत्वमिति इदमेवकामतो गृह्याग्नित्यागइत्य परार्के अत्रैवविषयेस्कांदे ॥ हुताशनंतुयोविप्रः प्रमादात्त्यजतिप्रभो प्राणायामशतंकुर्यादुपवासमथापिवेति १ कामतस्त्यागेतुतत्रैव । द्वादशाहातिक्रमे त्र्यहमुपवासः मासातिक्रमे द्वादशाहमुपवासः संवत्सरातिक्रमे मासोपवासः पयोभक्षणं वा कूप्मांडीभिर्होमः क्रमेणोभयंवेति उपवासाशक्तौ मासं पयोभक्षणम् संवत्सरानंतरमधिककालाभिक्रमउभयमिति मदनपारिजाते । इदमेवचालस्येनश्रौताग्नित्यागेष्विति तथास्मृत्यंतरे आलस्येनयदा वह्निं द्वादशाहेत्यजेत्प्रभो त्रिरात्रमुपवासंचचरेत्पापविशुद्ध्य इति १ इत्यग्नित्यागे प्रायश्चित्तम् ॥ ९ ॥

र एक महीना त्याग करे ता वारां १२ दिनका उपवास व्रत करे और एक वर्ष त्याग करे तां एक महीना उपवास व्रत करे वा जल भक्षण करे और यद्देवा देवहेडनमित्यादयः कूप्मां मंत्राः इनां मंत्रां कर्के हवन करे अथवा क्रम कर्के दोनों करे ॥ जेकर उपवास करणे की सामर्थ्य न होवे तां महीनारोज जलभक्षण करे ॥ एक वर्षते उपरंत जो जो अधिक कालका प्रथम क्रम ति स विषे एह दोषो जानणे ॥ मदन पारिजात विषे कहतेहें इदमिति जो क्याहै सो एह आलस कर्के और अग्निके त्याग विषे जानणा ॥ तैसे हि और स्मृति मे कहतेहें आलस्येनेति जेकर आलस कर्के अग्निका वारां दिन त्याग करे तां अपणे पापकी शुद्धि वास्ते त्रय ३ रात्रि उपवास व्रत करे ॥ एह अग्निके त्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया ॥ ९ ॥

७२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अथेति अग्नियागते अनंतर सुत त्यागका प्रायश्चित्त कहतेहैं अत्रेति इसविषे उपपातकशुद्धिः स्यात् इत्यादि सामान्य उपपातक का प्रायश्चित्त कल्पनाके योग्य है ॥ तैसें हिनागेश जी कहतेहैं संस्कारेति संस्कारादियोंका न करणा वा ऐश्वर्य के होयां रक्षा नहि करणी ऐसा जो सुत त्याग तिस विषे पूर्वोक्त चांद्रादिका एक व्रत करणा ॥ और एभी कियोहै कि सुत त्याग विषे और वंधु त्याग विषे त्रय महीने का गोवध व्रत करे तथापि एह इच्छा तें करण वाले विषे जानणा जेकर इच्छातें न करे तां तिसविषे योगीश्वरजीके कहे होए चार व्रत सो शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के जो उने योग्यहैं एह मिताक्षरामे कयाहै एह पुत्रत्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया १० ॥ अब परिवर्तिता और परिवेदनादि के प्रायश्चित्त विषे वासिष्ठ का कया होया विशेष कहतेहैं परीति

अथसुतत्यागप्रायश्चित्तम् अत्रोपपातकशुद्धिः स्यादित्यादिसामान्योपपातकप्रायश्चित्तकल्प्यम् तथाचनागेशः । संस्काराद्यकरणरूपेविभवेसत्य रक्षणरूपेचसुतत्यागेचांद्रादिष्वेकमिति ॥ सुतत्यागेवंधुत्यागेचत्रैमासिकं गोवधव्रतंकामतएतत् अकामतस्तुयोगीश्वरोक्तंव्रतचतुष्टयंशक्त्याद्यपेक्षया योज्यमितिमिताक्षरा इतिसुतत्यागेप्रायश्चित्तम् १० ॥ अथपरिवर्तितापरिवेदनादिप्रायश्चित्तेवासिष्ठाभिहितोविशेषः परिविविदानःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौ चरित्वातांतस्मैदत्वापुनर्निविशेत्तांचैवोपयच्छेतेति ॥ परिविविदानःपरिवेत्तोच्यते तत्स्वरूपंपरिगतानायांप्रागुक्तमेव असौकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वा तस्मैज्येष्ठाय तां स्वाढांदत्वा ब्रह्मचर्याहतमैक्ष्यवद्गुरुपरिभवपरिहारा र्थंनिवेद्यपुनरुद्वहेदिति

परिविविदान कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत कर्के तिस स्त्री कों बडे भ्राता कों दे कर फेर विवाह करे वा विवाह ते पहले भ्राताकी आज्ञा ले कर्के तिसो नूं विवाहे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं परिविविदान नाम परिवेत्ता का है तिसका स्वरूप परिगणना विषे पिच्छे कया ॥ है एह कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतकर्के बडे भ्राताके तांई तिस विवाहितास्त्रीकों देकर्के फेर विवाह करे इसमे दृष्टांत है जैसे ब्रह्मचर्यमे इकठा कीता होया जो भिक्षाका अन्न तिसको गुरुके अनादर के दूर करण वास्ते निवेदन करे गुरु आज्ञा देवे तां अन्न खावे न आज्ञा देवे तां नहिं खावे तिसकी न्यांई एह जानणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ७३

कामिति किसनूं विवाहे इस अपेक्षाविषे कहतेहैं तामेवोपयच्छेत ज्येष्ठभ्राताके ताई निवेदनकी होई स्त्री जोहै तिसीविवाहिता नूं भ्राताकी आज्ञा लेकरके विवाह लेवे ॥ अपराकके आरंभविषे तो एह वसिष्ठजाका कथन है ॥ परिवित्तिरिति परिवित्ति जो है बडाभ्राता सो वारां १२ रात्रिका कच्छ व्रत कर्के विवाह करे ॥ नाहिं की ताहै विवाह जिसनें ऐसा जो बडा भ्राता सो प्रथम कीवा है विवाह जिसने ऐसे छोटे भ्राताकर्के उल्लंघित हुंदाहै सो परिवित्ति कयाहै ॥ सो जेडी छोटे भ्रातानें प्रथम विवाही होवे तिसनूं तिस कर्के दितो होई नूं स्वीकार करे इसकर्के बडे भाईके पास दो २ स्त्री होई इसमे इतना विचार मनमे रक्षणा चाहिए कि बडेकों जो प्रायश्चित्त दित्ताहै सो इसने छोटेके विवाह समे तिसके हटाणेमे यत्न नहिं कीता एहि अपराधहै

कामित्यपेक्षायामुक्तं तामेवोपयच्छेतेति तामेवस्वोढांज्येष्ठायनिवेदितां ते नचानुज्ञातामुद्वहेत्। अपराकैतूपक्रमेवासिष्ठमिदम्। परिवित्तिःकृच्छ्रद्वादश रात्रंचरित्वानिर्विशेततांचैवोपयच्छेत अकृतविवाहोऽगूजोऽनुजेनप्रागात्म नोविवाहंकुर्वताऽतिक्रांतःसपरिवित्तिः सच कृच्छ्रद्वादशरात्रंप्राजापत्यंचरित्वा निर्विशेतोद्वहेत तांच कनीयसापूर्वपरिणीतांतेनदत्तामुपयच्छेत स्वीकुर्यादितियावत् तस्यैव सा भार्या नानुजस्याशास्त्रीयत्वात्तद्विवाहस्य भार्यात्वंच शास्त्रीयविवाहजन्यत्वमिति यद्वहारीतेनोक्तम् ज्येष्ठेनिर्विष्टकनीयान् निर्विशमानः परिवेत्ता भवति परिवित्तिर्ज्येष्ठः परिवेदनीकन्या परिदायीदाता परियष्टायाजकः तेसर्वपतिताःसंवत्सरंप्राजापत्येनकृच्छ्रेणपा वयेयुरिति

और जेकर यत्न कीताहै परंतु तिसको औरने नहिं मन्नाया तद ज्येष्ठकों वचनते थोडाहि प्रायश्चित्त होणाचाहिए एह निश्चित अर्थ है ॥ सो स्त्री तिसीकी है छोटे भ्राताकी नाहिं है तिसके विवाहकों शास्त्र रहित होणेंतें ॥ भार्यात्व क्या है जो शास्त्रीय विवाहमें उत्पन्न होवे इससें कुछविलक्षण जो हारीत जी नें कया है सो कहतेहैं ज्येष्ठ इति बडे भ्राता के स्थित होयां छोटा भ्राता विवाह कर लेवे तां सो परिवेत्ता कया है १ और परिवित्ति नाम बडे भ्राताका है २ और परिवेदनी नाम कन्याका है ३ और परिदायी नाम दाताका है ४ और परियष्टा नाम विवाह करवाणे वालेका है ५ एह संपूर्ण पतितहैं इनकी शुद्धि एक वर्षके प्राजापत्य व्रत कर्के होतीहै

७४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अत्रेति जेकर वर्षरोज प्राजापत्यव्रत न करसके तां बीस ३० धेनुकादानकरे एहइसका प्रत्याम्नायहै परंतु एह प्रायश्चित्त ज्येष्ठभ्राताके उद्देशकके कन्या त्यागते अनंतर जानणा अर्थात् ज्येष्ठभ्राताके ताई तिसकन्याकोदेके प्रायश्चित्तकरणा एह प्रायश्चित्तकदंवमें कयाहै ॥ इसते विलक्षण जो शंखने कयाहै सो कहतेहैं ॥ परिवित्तिरिति और परिवेत्ता एक वर्ष ब्राह्मणके घग्विष भिक्षा करें हारीत और शंखके वचन दोनो भी इच्छा कर्के कन्या के पित्रादिको आज्ञा विना कीता जो विवाह तिसविषे जानणा क्योंकि प्रायश्चित्तको बहुत होणेतें ॥ जेकर गुणवाले ज्येष्ठभ्राता कर्के बारंवार हटाया होय कनिष्ठभ्राता विवाह करे तिसविषे जानणा एह अपराकमें कयाहै अब इसीमे और दूसरामतकहतेहैं कन्येति कन्याके पित्रादिके नहिं जाणतेहोयां और इसीकर्के पित्रादियोने नहिं दितोहोईनूं वालात्कारादिकर्के इच्छाते जाण कर्के विवाह करे तां विवाह

अत्रत्रिंशद्देनवःप्रत्याम्नायः।इदंतुज्येष्ठमुद्दिश्यकन्यात्यागानंतरमितिप्रायश्चित्तकदंवे यदपिशंखेनोक्तम् । परिवित्तिः परिवेत्ताचसंवत्सरंब्राह्मणगृहेषुभैक्ष्यं चरेयातामिति तदुभयमपिकामकारेण कन्यापित्राद्यननुज्ञातोद्वाहविषयम् प्रायश्चित्तस्यगुरुत्वात् ॥ यदागुणवताज्येष्ठेनवार्य्यमाणःकनिष्ठःकरोति तद्विषयमित्यपराकः ॥ कन्यापित्राद्यपरिज्ञानेतत्पित्रादिभिरदत्तां वलात्कारादिनाकामतोज्ञात्वाचोद्वादुरब्दंप्राजापत्यपूर्वकंपूर्वोक्तमितिनागेशः । यदापुनःकामतःकन्यांपित्रादिदत्तामेवपरिणयति तदा मानवंत्रैमासिकम् पूर्वोक्तोक्कच्छातिकृच्छ्रौ याज्ञवल्क्यीयव्रतचतुष्टयंचाज्ञातविषयम् ॥ यमेनाप्यत्रविशेषोक्तः ॥ कृच्छ्रौद्वयोःपारिवेद्येकन्यायाःकृच्छ्रएवच ॥ अतिकृच्छ्रचरेदाता होताचांद्रायणंचरेदिति ॥ १ ॥ एतच्च पर्याहिताग्न्यादीनामपिसमानम् ।

एकयोगनिर्देशात् ॥

करणबाला वर्ष रोजके प्राजापत्य पूर्वक पूर्वोक्त व्रत करे एह नागेशका मतहै ॥ जेकर फेर इच्छाते पित्रादियोने दितोहोई कन्या नूं विवाहे तां मनुजीका कथन कीता होया त्रैमासिक व्रत करे और पिच्छले कहे होए जो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत और याज्ञवल्क्यके कहे होए चार व्रतसो एह नहिं जाण कर्के विवाह करणे विषे जानणे ॥ यमजीनेभी इस विषे विशेषकयाहै कृच्छ्राविति परिवित्ति और परिवेत्ता दोए कृच्छ्र व्रत करें कम कर्के और कन्या एक कृच्छ्र व्रत करे और दाता अतिकृच्छ्र व्रतकरे और होताचांद्रायण व्रत करे १ एह अग्निहोत्रादियोके विषे भी तुल्य जानणा अर्थात् बडे भ्राता विना छोटा भ्राता प्रथम अग्न्याधान करे इसमेंभी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा एकयोगका निर्देश होणेतें

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ७५

गौतम जी कहतेहैं परीति परिविति परिवेत्ता और पर्याहित और पर्याधाता अग्नेदिधिषू वडी भगिनीके न विवाहित होयां छोटीजो विवाहित है तिसका पति और वडीका पति एह संपूर्ण तीनसौ ३६० सठ दिनका जो वर्ष तिसतक ब्रह्मचर्य धारण करें पर्याहित नाम उसकाहै जिस ज्येष्ठने पीछेते अग्न्याधान कीता है और पर्याधाता नाम उसकाहै कि जिसकानिष्ठने पहले अग्न्याधान कीता है इसी कारणतें वसिष्ठ जीनें अग्नेदीधिषूकेपत्यादियों विषे एहि प्रायश्चित्त कया है अग्नेदिधिषूका पति वारां १२ रात्रीका कृच्छ्र व्रत कर्के फेर विवाह करे चपुनः तिसीनूं विवाह लेवे और दिधिषूका पति कृच्छ्र और अति कृच्छ्र व्रत कर्के और छोटी भगिनीके पतिके ताई तिसस्त्रानूं देकरके फेर अपना विवाह करे अग्नेदिधिषूका लक्षण और स्मृतिसें कहतेहैं ज्येष्ठायामिति जेकर वडी कन्या विवाहित न

यथाहगौतमः। परिवितिपरिवेत्तृपर्याहितपर्याधात्रग्नेदिधिषूदिधिषूपतीनां संवत्सरंप्राकृतं ब्रह्मचर्यमिति पर्याहितः येन ज्येष्ठेन पश्चादग्न्याधानं कृतं पर्याधातायेन कनिष्ठेन प्रथममग्न्याधानं कृतं सः अतएव वसिष्ठेनाग्नेदिधिषूपत्यादाविदमेव प्रायश्चित्तमुक्तम् अग्नेदिधिषूपतिः कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वानिर्विशेत्तांचैवोपयच्छेत् दिधिषूपतिः कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ चरित्वा तस्मै दत्त्वा पुनर्निर्विशेतेति अग्नेदिधिषूवादेर्लक्षणं स्मृत्यंतरेऽभिहितम् ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामूह्यते नुजायासाग्नेदिधिषूर्जेया पूर्वा तु दिधिषूः स्मृतेति ॥ १ तत्राग्नेदिधिषूपतिः प्राजापत्यं कृत्वा तामेव ज्येष्ठां पश्चादन्येनोढामुद्वहेत् दिधिषूपतिस्तु कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ कृत्वा स्त्रोढां ज्येष्ठां कनीयस्याः पूर्वविवोद्वेदत्वान्यामुद्वहेदिति अत्रापरार्कः ॥ यत्तु शंखेनोक्तम् परिवितिः परिवेत्ताययाचपरिविद्यतं व्रतं संवत्सरंकुर्युर्दातृयाजकपंचमादिति तत्पंचानामिथः कृतसंकेतानां सम्मत्यापरिणये सति द्रष्टव्यम् ॥

होवे और छोटीका प्रथम विवाह होवे सो अग्नेदिधिषू कहीदीहै और वडी कन्याका नाम दिधिषू है ॥ १ ॥ अवसंज्ञादिखाकर पूर्वोक्त वसिष्ठ स्मृतिका अर्थ कहतेहैं ब्रतेति तिसके विषे अग्नेदिधिषू का पति प्राजापत्य व्रत कर्के दूसरे कर्के विवाही होई जो वडी कन्या तिसीनूं फेर विवाहे और दिधिषूका पति कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत कर्के विवाही होई जो ज्येष्ठा तिसनूं छोटी कन्याको जो प्रथम विवाहण वालाहै तिसके ताई देकरके और कन्या नूं विवाहे इसविषे अपरार्क में जो शंख जी ने कयाहै सो कहतेहैं परीति परिविति और परिवेत्ता और जिसकर्के परिविति दोष होयाहै और दाता और विवाह करणे वाला और याजक एह संपूर्ण एकवर्ष का व्रत करें परंतु एह आपसमें कीताहै संकेत जिनीने ऐसे पञ्चोंके विवाह विषे देखणे योग्यहै

७६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

जो सुमंतुजीनेकयाहे सो कहतेहैं परिवित्ति और परिवेत्ता और कन्या और दाता और याजक एह संपूर्ण वारा १२ रात्रि सत्तु पानकरें और ब्राह्मणोंकी तृप्ति करवावें तद शुद्धहोतेहैं और तिसकन्या नू पुनर्भू कहतेहैं फेर इसनू विवाह लेवे एह क्षत्रियादियोंके असमर्थ वालक विषे जानणा क्यों कि थोडाप्रायश्चित्त होणेतें ॥ अब इसतें अधिक प्रायश्चित्त प्रचेताजीकहतेहैं परिवित्तिपरिवित्ति परिवेत्ता और पर्याहित पर्याधाता अग्नेदिधिपूपति दिधिपूपति एह संपूर्ण प्राकृत वर्ष तकब्रह्मचर्य धारण करें और ब्रह्महत्याका व्रत करें प्राकृत नाम सठ ६० उपर त्रय सौ ३० दिनकरें युक्त और स्वाधीनहैं आरंभ जिसका ऐसे वर्षकाहै और स्वाधीनारंभ उसकोकहतेहैं कि जिसदिन जिसकी इच्छा होवे उसी दिनसे प्रारंभकरणा और विशेषकहतेहैं कि दत्तकादिपुत्रोंको एह परिवित्ति परिवेत्तादोष नहिं है इसमेंवचनहै भीति मात्रयांका पुत्र और दत्तपुत्र और पितृव्यतनय इनांको दार

यत्सुमंतुनोक्तम् । परिवित्तिपरिवेत्तकन्यादातृयाजकानांद्वादशरात्रंसत्तुपा नं ब्राह्मणतर्पणंच तांपुनर्भुवमित्याचक्षतेभूयश्चैनामभिगच्छेदिति तत्क्षत्रि याद्यसमर्थवालकविषयम् ॥ प्रचेताः ॥ परिवित्तिपरिवेत्तपर्याहितपर्याधात्र ग्रेदिधिपूदिधिपूपतीनां प्राकृतंसंवत्सरंब्रह्मचर्यंब्रह्महव्रतम् । प्राकृतंपशुत रशतत्रयदिनमितंस्वाधीनारंभकंवत्सरमित्यर्थः । दत्तकादीनांतुनायंदोषः ॥ भिन्नोदरेचदत्तचपितृव्यतनयतथा दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषः परिवेदने इतिगौतमस्मरणात् । भिन्नोदरइतिसापत्नभ्रातृविषयम् दत्तेचेति लेज्येष्ठभ्रातृसत्त्वेनदत्तकस्यविवाहादौपरिवेत्तत्वं नापिज्येष्ठस्य परिवित्तिमित्यर्थः पितृव्यतनयइति देवरेणोत्पादितस्यभ्रातुःक्षेत्रजपुत्रस्य देवरपुत्रादेः परिवेत्तत्वादिकेनेत्यर्थः ॥ अत्रपराशरः ॥

क्या स्त्री और अग्निभयोगविषे परिवित्ति परिवेत्तादोषनहिंहे ॥ १ ॥ एह गौतमर दत्तक आदि पुत्रोंकेलक्षण ग्रंथांतरसें जानणें इसमेभी भिन्नोदर एह सापत्न और सापत्नभ्राता उसको कहतेहैं कि जिनकापिता एकहै और माता दोहैं दत्तकादोष आउता है इसका उद्घाटन करके दूर कर्तेहैं दत्तेचेति एह पिता भ्राताके होयां दत्तक पुत्रको विवाहादि विषे परिवेत्तत्व नहिं है और ज्येष्ठ भ्राताको परिवित्ति नहिंहे पितृव्यतनय इति देवर कर्के उत्पन्न जो भ्राताका क्षेत्रज पुत्र विषे देवरपुत्रादियोंको परिवेत्तत्वादि दोष नहिं है एह अर्थ भया है इसजगा के पुत्रकानाम नहिं इसीवास्ते इसशब्दका अर्थ कीताहै इसी विषे पराशर ऋषि जी कहतेहैं

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ७७

परिवित्तिरिति परिवित्ति और परिवेत्ता और जिसकके परिवित्ति दोषहोयाहै अर्थात् कन्या और दाता दानकरणेवाला और यज्ञकरवाणेवाला एह पञ्चजनम्ककों प्राप्तहोतेहैं १ एक कृच्छ्रव्रत परिवेत्ता करे और एककृच्छ्र परिवित्ति करे और एक कृच्छ्र कन्याकरे कृच्छ्र और अतिकृच्छ्रव्रत दाता करे और हवनकग्वाणेवालेको चांद्रायणव्रतकरणेयोग्यहै २ इसमे विशेषकहतेहैं कि कुब्ज और बामना और नपुंसक और स्वालितवाणीवाला और जडजन्मांध बोला मूक इनांको परिवित्ति परिवेत्ता दोष नाहिं है ३ पितृव्येति पितृव्यपुत्र जो पिच्छे किहाहै और मात्रयांका पुत्र और परस्त्री का सुत इनांको दारसंयोगमे वा अग्निहोत्र विषे परिवित्ति परिवेत्ता दोष नाहिं है ४ जेकर ज्येष्ठ भ्राता स्थितहोवे तां अग्न्याधान न करे वा आज्ञालेकके करलेवे तां दोषनाहिं है एह शंख जी का

परिवित्तिः परिवेत्ता यथाचपरिविद्यते सर्वेतेनरकंयांतिदातृयाजकपंचमाः

१ द्वौकृच्छ्रौपरिवेत्त्रोस्तुकन्यायाःकृच्छ्रएवच कृच्छ्रातिकृच्छ्रौदातुस्तुहोता चांद्रायणंचरत् २ कुब्जवामनपंडेपुगद्देपुजडेपुच जात्यंधेवधिरमूकेनदोषःपरिविंदत ३ पितृव्यपुत्रःसापत्नःपरनारीसुतस्तथा ॥ दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषः परिवेदने ४ ज्येष्ठोभ्रातायदातिष्ठेदाधानंनैवकारयेत् अनुज्ञातस्तुकुर्वीतशंखस्यवचनंयथा ५ अत्रेदमपिविचार्यम् परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठेइत्यत्र ज्येष्ठपदं स्वजन्मतःपूर्वजन्मपरं नतुप्रथमोत्पन्नपरमतेनभ्रातृत्रये प्रथमोत्पन्ने कृतविवाहे मध्यमेऽकृतविवाहेतत्कनिष्ठेन विवाहे कर्तव्ये परिवेदनंभवति पूर्वजन्मनोऽकृतविवाहत्वात् यदातुप्रथमोत्पन्नोऽकृतविवाहोमध्यमस्तुकृतविवाहस्तदापितत्कनिष्ठेन विवाहे कर्तव्येत्रयाणांदोषः एवंभ्रातृचतुष्टयादावपिज्ञेयम् इतिपरिवेदनादिप्रायश्चित्तम् ॥

वाक्यहै ५ इसविषे एहभी विचारणेयोग्यहै कि(परिवेत्ताऽनुजोऽनूढेज्येष्ठे दारपग्निहोत्र) इस श्लोक विषे ज्येष्ठ पद अपणे जन्मते पूर्वजन्मपरजानणा प्रथमकी उत्पत्ति पर नाहिं जानणा ॥ तिसकके त्रय भ्राताविषे प्रथमोत्पन्नने विवाह कीताहै और मध्यम भ्राताने विवाह नाहिं कीता और तिसके छोटे भ्राताके विवाह करणे विषे परिवित्ति परिवेत्ता दोषहै किसते बडे भ्राताको विवाह नाहिं करणेतें जेकर प्रथमोत्पन्नने विवाह नाहिं कीता है और मध्यम भ्राताने विवाह कीता है तां भी तिसके छोटे भ्राताके विवाह करणेविषे तिनं भ्रातांको दोषहै इसी प्रकार चार भ्रातादिके विषे भी जानणे योग्य है एह परिवेदनआदि प्रायश्चित्त समाप्तहोया ॥

७८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब कन्या दूषण विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं तदिति तिसका स्वरूप पिछे उपपातकोंकी गणना विषे कहाहै तिसमें शंखजी कहतेहैं कन्येति कन्या दूषण करण वाला और अमृतवल्लीका रस वेचनवाला वर्ष रोजका कृच्छ्र व्रत करे परंतु तिसविषे समान वर्णकी कन्या दूषणमें चांद्रायण वा त्रय महीनेका व्रतकरे और आनुलोम्यकर्के असवर्ण कन्याके दूषणमें अर्थात् ब्राह्मणक्षत्रियादिकी कन्या दूषणमें और क्षत्रियादिक वैश्यादिकी कन्यादूषणमें और वैश्य शूद्रादिकी कन्या दूषणमें महीनारोज जल पान करे वा प्राजापत्य करे और क्षत्राको ब्राह्मणकी कन्या दूषणमें वैश्यको ब्राह्मणक्षत्रीकी कन्या दूषणमें वर्ष रोज कृच्छ्र व्रत करणा चाहिए अबइसीमें अपने धर्म शास्त्रके

अथकन्यादूषणेप्रायश्चित्तम् तत्स्वरूपमुपपातकपरिगणनायामभिहितम्
तत्रशंखः ॥ कन्यादूषीसोमविक्रयीचकृच्छ्रमब्दचरेयातामिति तत्रसवर्ण
कन्यादूषणे चांद्रं त्रैमासिकं वा आनुलोम्येनासवर्णकन्यादूषणे मासंपयः
पानं कायंवा ॥ प्रातिलोम्येतुक्षत्रियवैश्ययोःकृच्छ्राब्दम् ॥ हारीतोपि ॥ क
न्यादूषीत्याद्युपक्रम्य एते ग्रीष्मवर्षाहेमंतेषु क्रमेण पंचतपोऽभ्रावकाशजल
शयनपूर्वकमासंगोमूत्रयावकपानंकुर्युः शूद्रस्यतु विप्रादिकन्यादूषणे वध
एव अत्यंताभ्यासे सवर्णस्यापिकृच्छ्राब्दम् सोमविक्रयी ॥ वृषलीपतिः
कौमारदारत्यागी शूद्रयाजकः ॥

हाराहारीतजीभीकहतेहैं कन्यादूषी इसते प्रारंभ कर्के वचनहै एह कन्यादूषण करणवालेतें आदि कर्के जो लोकहैं सो संपूर्ण ग्रीष्म वर्षा हेमंत ऋतुविषे क्रमकर्के पंचतप अभ्रावकाश जलशयन पूर्वक महीनारोज गोमूत्र युक्त जवोंका पानकरें अर्थात् ग्रीष्ममें पंचाग्नि तपें वर्षाऋतुमें नग्नहोके वर्षामें स्थित रहें और हेमंत में जलशय्या करें तद शुद्धहोतेहैं शूद्रको विप्रादिकी कन्या दूषण में मारदेणाहि योग्यहै और बहुत अभ्यास विषे समानवर्णवालेकोंभी वर्ष रोजका कृच्छ्र व्रत करणा उचितहै और अमृतवल्लीका रस वेचण वाला और वृषलीकापति और कौमार अवस्थामे स्त्री त्यागण वाला और शूद्रकों यज्ञ करवाण वाला ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ७९

गुरोरिति और गुरुके मारण वाला और पेष्टी मदिराते भिन्न मदिराका पान करण वाला और ब्राह्मण वृत्तिके दूर करणवाला झूठा व्यवहार करणवाला मित्रसे द्रोहकरणवाला और शरणागत पुरुषको मारणवाला और बहु रूपिया एह संपूर्ण अज्ञानतें प्रवृत्त होण तां त्रय महीनेका व्रतकरें ॥ और जेकर जाण कर्के करें तां छे ६ महीनेका व्रतकरें ॥ बहुत अभ्यासविषे वषे रोज का कृच्छ्रव्रत करें तद शुद्ध होतेहैं ॥ अवहारीति स्मृतिमें कहतेहैं कन्येति कन्याकोदूषण करण वाला अमृतवल्लीका रस बेचण वाला वृषलीकापति और कौमार अवस्थामे स्त्री त्यागण वाला पेष्टी मदिराते भिन्न मदिराका पान करण वाला शूद्रको यज्ञ करवाणवाला गुरुको मारण वाला नास्तिकवृत्तिवाला कीते होए उपकारकों दूरकरण वाला झूठा व्यवहार करण वाला मित्र

गुरोःप्रतिहंतासुराभिन्नमद्यपोब्राह्मणवृत्तिघ्नः कूटव्यवहारी मित्रधुक् शरणागतघाती प्रतिरूपवृत्तिश्चैतेऽमत्या प्रवृत्तास्त्रैमासिकं व्रतं कुर्युः मत्यापाण्मासिकम् अभ्यासे कृच्छ्राब्दम् ॥ हारीतस्मृतिश्च ॥ कन्यादूषी सोमविक्रयी वृषलीपतिः कौमारदारत्यागी सुराभिन्नमद्यपः शूद्रयाजको गुरोःप्रतिहंतानास्तिकवृत्तिः कृतघ्नः कूटव्यवहारी मित्रधुक् शरणागतघाती प्रतिरूपकवृत्तिरित्येते पंचतपोभ्रावकाश्च जलशयनान्यनुतिष्ठेयुर्ग्रीष्मवर्षाहेमन्तेषु मासंगोमूत्रयावकमश्रीयुरिति ॥ प्रतिरूपकवृत्तिः ॥ अन्यरूपानुकरणेन जीविकासंपादकः ॥

साथ द्रोह करण वाला शरणागत पुरुषको मारण वाला प्रतिरूपक वृत्ति वाला एह संपूर्ण पंचवष अभ्रावकाश्च जलशयन करे अर्थात् ग्रीष्मवर्षा हेमन्तऋतुमें महीनारोज गोमूत्रयुक्त जलोंका भक्षण करे ग्रीष्मऋतुमें पंचाग्नितपे वर्षाऋतुमें नग्नहोके वर्षामे स्थित रहे हेमन्तमे जलशय्याकरें ॥ प्रतिरूपकवृत्ति नाम और रूपकर्के जीविकाकरणवालेका है इसको भाषामे बहुरूपिया कहतेहैं सो अनेकरूपोंको बनाकर लोकोको प्रसन्न करके जीविकाकरदा है अथवा जो सुंदर स्वरूपवाली स्त्रीको देखकर तिसमें वर्त्ते सोभी प्रतिरूपकवृत्ति कहिदा है इसका प्रायश्चित्त पारदाय्यमे हिहीवेगा

८० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

एह शंख हारीत कीयां जो पीछे दो स्मृतियां हैं सो क्षत्रिय वैश्यके प्रातिलोभ्य कर्के जो दूषण तिसविषे जोडनेयोग्यहैं एह मिताक्षरामेंकयाहै । एह कन्या दूषणादिका प्रायश्चित्तसमाप्त होया १६ *
अथ वार्द्धुष्य और लवण क्रियाका प्रायश्चित्त कहतेहैं इसकाविवरण पीछे उपपातकोंकी गणना विषे होचुकाहै तिस विषे (उपपातकशुद्धिः स्यादेवंचांद्रायणेनतु) इत्यादि याज्ञवल्क्यके कथन कीत्त होए जो वृषभैकादशकागाथ ॥ वा० एतदेवव्रतं कुर्यात्स्यादि दो श्लोककर्के मनुजीने कथन कीत्ता होया जो व्रत महीनेका व्रत है तिसको करे एह जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहै अतिदेशवाक्यतें ॥ और जगा कहे होएकों दूसरी जगामें कथन करणाओ अतिदेश किटाहै ॥ तिसविषे लवणक्रिया क्या लवणके उत्पत्तिकरणकी रीति जानणी तिसविषे भी एहि प्रायश्चित्त विधि जानणी ॥ मिताक्षराकार तो कुछ इस विषे विलक्षण कहतेहैं वार्द्धुष्येति वार्द्धुष्य और लवण क्रिया विषे मनु और याज्ञवल्क्यके कथन कीत्ते होए जो सामान्य उपपातक

शंखहारीतस्मरणद्वयंक्षत्रियवैश्ययोःप्रातिलोभ्येन दूषणे योज्यमिति मिताक्षरा इतिकन्यादूषणादिप्रायश्चित्तम् * १६ अथवार्द्धुष्यलवणक्रिया प्रायश्चित्तम् तद्योपपातकगणनायांविद्युतंप्राक् तत्रचांद्रादिष्वेकं त्रैमासिकं वा जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यम् अतिदेशवाक्यात् लवणक्रिया लवणोत्पादनं तत्राप्येवं ध्येयम् मिताक्षरायांतु वार्द्धुष्यलवणक्रिययोर्मनु योगोश्चरोक्तसामान्योपपातकप्रायश्चित्तानि जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यानीति इतिवार्द्धुष्यादिप्रायश्चित्तम् १७ * अथब्रह्मचारिणोव्रतलोपेप्रायश्चित्तम् ॥ तत्रमनुः अवकीर्णीतुकाणेनगर्दभेनचतुष्पथे पाकयज्ञविधाने नयजेतनिर्ऋतिंनिशि १

के प्रायश्चित्तसे जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अथान् जैसी जानने और जैसी शक्ति और जैसा गुण होवे तिनांको तैसाही प्रायश्चित्त करवाणा योग्य है जै से ब्राह्मण को अधिक क्षात्रेयादिको न्यून और समर्थको अधिक असमर्थको न्यून गुणवान्को आवक निर्गुणहों न्यून सोभी प्राजापत्यसे चांद्रायण अधिक और चांद्रायणसे पराक इसा दिजाण लेणे एह व्याजले कर्के और लूण बनाकरजीविका करणी इनका प्रायश्चित्त पूराहोया * ॥ १७ ॥ इसमे एभी जानणे योग्य है कि लवण क्रिया मनुजीके मतमें नहि किंतु याज्ञवल्क्य के मतमें है ॥ अथ ब्रह्म चारिके व्रत लोप विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषे मनुजीका वाक्यहै अवकीर्णीति अवकीर्णी पुरुष काणे गंधे कर्के चुरस्ते विषे पाकयज्ञके विधान कर्के रात्रि विषे निर्ऋति देवताका पूजन करे ॥ १ ॥

अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं अग्रे कहणाहै लक्षण जिसका ऐसा जो अवकीर्णी ब्रह्म चारी सो रात्रिको चुरस्ते विषे पाकयज्ञ तंत्रा कर्के निर्रुति नाम देवताका यज्ञ करे और पशु के अभावविषे चरु कर्के यज्ञ करे अथवा निर्रुतिनू वणाकर्के चरुसे पूज्ये फेर तिसका हवनकरे इनां नामां कर्के कामायस्वाहा कामकामायस्वाहा निर्रुत्यैस्वाहा रक्षोदेवताभ्यःस्वाहा एह वसिष्ठस्मृतिमें कहाहै परंतु एह अशक्त विषयविषे जानणा और समर्थ पुरुषको ऐसाकरणाचाहिए कि अवकीर्णी गर्दभ कर्के निर्रुतिका चुरस्ते विषे यज्ञ करे तिस गर्दभका चर्म सहित वालोंके धारण करे फेर लाहेके पात्रविषे सनां • घरांते भिक्षा करे कर्म नू कथन करता होया कि मैं अवकीर्णी हां ऐसाकथन करता होया भ्रमे तद वर्ष कर्के शुद्धहोताहै ॥ एह पूर्वोक्त गौतम जी

अवकीर्णीवक्ष्यमाणोब्रह्मचारी रात्रौ चतुष्पथे पाकयज्ञेन तंत्रेणनिर्रुतिसंज्ञितादेवतांयजेत पशोरभावेचरुणायष्टव्यम् निर्रुतिवाचसंनिर्वपेत् तस्य जुहुयात् कामायस्वाहा कामकामायस्वाहा निर्रुत्यैस्वाहा रक्षोदेवताभ्यःस्वाहेतिवसिष्ठस्मरणात् एतच्चाशक्तविषयम् । शक्तस्यतुगर्दभेनावकीर्णीनिर्रुतिचतुष्पथेयजेत् तस्याजिनमूर्ध्ववालंपरिधायलांहितपात्रेसप्तगृहान् भैक्ष्यं चरेत्कर्माचक्षाणः संवत्सरेणशुद्ध्यतीतिगौतमोक्तोवार्धिकतपः समुचितः पशुयागश्चरुर्वाद्रष्टव्यः । अपराकै ॥ रात्रिपदेनकालः सचाभावास्यायाः । उक्तंहितैत्तिरीयके । योब्रह्मचार्य्यवाकिरेभावास्यायांरात्र्यामग्निंप्रणीयोपसमाधायेत्यादि ब्रह्मचार्य्यत्रोपकुर्वाणैर्नैष्ठिकश्चसचयोपितंगत्वाऽवकीर्णीभवति । तथाचयाज्ञवल्क्यः । अवकीर्णीभवेद्ब्रह्मचारीतुयोपितम् गर्दभंपशुमालभ्यनैर्ऋतंसविशुद्ध्यतीति अत्रत्याव्याख्या चरमधातोर्विसर्गोऽवकीर्णम् तद्यस्यास्तीतिसोऽवकीर्णी सनिर्रुतिदेवत्येन गर्दभपशुना यागंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥

का कथन कीताहोया वर्ष रोजका तपके उचित पशुयाग क्याहै वा चरु देखणें योग्यहै ॥ अ पगर्कमें क्याहै कि रात्रि पदकर्के काल जानणा सो अभावास्याका है इसमें सम्मति देतेहैं तैत्तिरीयकइति सोई तैत्तिरीय उपनिषद्में कहाहै कि जो ब्रह्मचारी अष्टहोजावे सो अभावास्याकी रात्रिविषे अग्निमें हवनकरे इत्यादि जानणा ॥ परंतु ब्रह्मचारी चारप्रकारकेहैं सो इसविषे उपकुर्वाण और नैष्ठिकका ग्रहणहै सो एह स्त्री साथगमनकरे तां अवकीर्णी होतेहैं ॥ तैसंहि याज्ञवल्क्य जीनें क्याहै ॥ अवकीर्णीति ब्रह्मचारी स्त्री साथ गमन करे तां अवकीर्णी होताहै और निर्रुतिहै देवता जिसका ऐसे गर्दभ पशुका आलंभन करे तां शुद्ध होताहै अर्थात् निर्रुतिदेवता के निमित्त गर्दभ पशूनूं मार कर्के शुद्ध होता है इस विषे इसकी एह व्याख्या है कि अत्र धातुके त्यागणेंको अवकीर्ण क्याहै सो विद्यमान है जिसविषे सो अवकीर्णीहै सो निर्रुति देवताके निमित्त गर्दभ पशु कर्के यज्ञ करे तां शुद्धहोताहै ॥

८२ ॥ श्रीरणवीर कारित श्रावश्चित्त नागः ॥ ५० १२ ॥ टा० भा० ॥

अब इसमें शास्त्रार्थ करते हैं गर्हभेति कि गर्हभको पशुत्वके सिद्ध होयांभी अर्थात् गर्हभको आलभ करे इस वचनमें भी पशुका अर्थ प्रतीत होता है फेर पशु ग्रहण जो किया है सो अथपशु कल्प इत्यादि आश्वलायन के कहे होये गृह्य सूत्रमें जो पशु धर्म तिसकी प्राप्ति वास्ते है सो पदगं सूत्र उसी जगते देखे योग्य हैं अवकीर्णिकालक्षणमनुजीनें भी क्या है कामत इति व्रत विषे स्थित जो ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मचरी तिसका इच्छाते वीर्यं स्वालित होवे तां व्रतका उल्लंघन क्या है धर्म के जानणें वाले ब्राह्मवादियोंनें १ ब्रह्मचर्यका अतिक्रम अवकीर्ण रूप हि जानणा इसमें हवनका विधान भी मनु जी नें क्या है हुत्वाति (अतत और समेति) इस ऋचा कर्के वि धिते होमा नू अग्निविषे हवन करे और वात इंद्र गुरु वह्नि इनांको घृत कर्के आहुतियां देणें योग्य हैं । १ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं तिसमें अनंतर निरुति देवताके तांई गर्हभ

गर्हभस्य पशुत्वेसिद्धेपिपुनः पशुग्रहणमथपशुकल्पइत्याश्वलायनादिगृह्यो क्तपशुधर्मप्राप्त्यर्थम् तत्रोत्तरतोऽग्नेरित्यादिपूर्वेणसहपंचदशसूत्रीततएवा नुंसंधेया। अवकीर्णिलक्षणमनुनापिदर्शितम् कामतोरेतसःसंकं व्रतस्थस्यद्वि जन्मनः अतिक्रमंव्रतस्याहुर्धर्मज्ञाब्रह्मवादिनइति व्रतस्यब्रह्मचर्यस्याति क्रममवकीर्णरूपम् हवनविधानमापितेनैवोक्तम् हुत्वाग्नीविधिवद्धोमानंतत श्चसमेत्यृचा वातेंद्रमरुवह्नीनांजुहुयात्सर्पिपाहुतीः १ अस्यार्थः ततोनि र्ऋत्यै गर्हभवपादिहोमानूयथावच्चतुष्पथे कृत्वा तदंतसमासिंचंतुमरुतइत्ये तयाऋचा मारुतेंद्रवृहस्पत्यग्नीनांघृतेनाहुतीर्जुहुयादिति ॥ एतद्धोमहे तुमाहसएव मारुतंपुरुहूतंचगुरुंपावकमेवच चतुरोव्रतिनोऽभ्येतिब्राह्म तेजोऽवकीर्णिनः ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ व्रतचारिणोवेदाध्ययननियमानुष्ठा नजंतजः तदवकीर्णिनःसतो मरुदिंद्रवृहस्पतिपावकांश्चतुरः संक्रामति अतस्तेभ्यआहुतीर्जुहुयादितित्याज्याहुतेरयमनुवादः अत्रत्रिपवणस्नानमे ककालभोजनमपियावद्व्रतसमाप्ति

की निज का हवन चुरस्ते विषे विधिते कर्के तिसमें उपगत समासिंचंतुमरुत इस ऋचाकके वायु और इंद्र और वृहस्पति और अग्नि इनांका घृतकी आहुतीनें अच्छी तरह हवनकरणें योग्य है इनी हवनविषे मनुजी हेतु कहते हैं मरुतइति वायु इन्द्र वृहस्पति अग्नि एह जोचार हैं इनांको व्रति अवकीर्णिका जो ब्राह्म तेज है सो प्राप्त होता है १ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं व्रतचारि पुरुषका वेदका पडना और नियम और अनुष्ठान इनांते उत्पन्न होया जो तेज सो अवकीर्णिका मरुत इंद्र वृहस्पति अग्नि इनां चारों को प्राप्त होता है इस कारणते तिनांके तांई आहुतियां देवे एह त्याज्य आहुतीका अर्थात् देणे योग्य जो आहुतियां हैं तिनका अनुवाद है इसविषे त्रयकाल स्नान करे और एक काल भोजन करे जबतक व्रत की समाप्ति नहि है

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ८३

तैसैहि मनुजी कहतेहैं एतस्मिन्निति इस अवकीर्णरूप पापके प्राप्तहोयां गर्हभके चर्म को उपर लयककें सत्तां ७ घरांते भिक्षाकरे अपने कर्म नूं कथन करदा होया अर्थात् में अवकीर्णी हां इसतरां कथन करे १ तिनां घरां ते प्राप्त होया जो भिक्षाकाअन्न तिस कर्के एककाल भोजन करे और त्रय काल स्नान करना रहे इसी प्रकार एक वर्ष करदा रहे तां शुद्ध होताहै २ एह जो वर्षका व्रतहै सो वेदपाठ रहित ब्रह्मणकी स्त्री विपे अवकीर्णी होवे और वेदपाठीकी बैरया विपे अवकीर्णी होवे तिस विपे जानणा जेकर सो दोए वेदपाठीकीयां स्त्रीयां होण अथवा ब्राह्मणी और क्षत्रियाणी आपही गुणवालीयां होण तिनाविपे अवकीर्णीहोवे तां त्रयवर्ष और दोवर्षका व्रत क्रमकर्के करे अर्थात् ब्राह्मणी मे त्रयवर्ष का व्रत क्षत्रियाणीमे दोवर्षका व्रत

तथाचमनुः ॥ एतस्मिन्नेनसिप्राप्तेवसित्वागर्हभाजिनं सप्तागारांश्चरेद्वैक्ष्यं स्वकर्मपरिकीर्त्तयन् ॥ १ ॥ तेभ्योलब्धेनभैक्ष्येणवर्त्तयन्नेककालिकम् ॥ उपस्पृशंस्त्रिपवणंत्वबूदेनसविशुद्ध्यति २ एतस्मिन्नवकीर्णरूपे एनासि पाषे वार्षिकव्रतमिदमश्रोत्रियब्राह्मणपत्न्यां श्रोत्रियपत्न्यांवैश्यायांचज्ञेयम् यदातु तेश्रोत्रियपत्न्यौब्राह्मणक्षत्रियेस्वयमापिगुणवत्यौ तत्रावकीर्णींचतदा द्विवार्षिकत्रिवार्षिकेक्रमेणद्रष्टव्ये । इदमेवाहतुःशंखलिखितौ । गुप्तायांवैश्यायामवकीर्णःसंवत्सरं त्रिपवणमनुतिष्ठेत् क्षत्रियायांदेवर्षेब्राह्मण्यांत्रीणिवर्षाणीति । अवकीर्णनिमित्तंतुब्रह्महत्याव्रतंचरेत् चौरवासास्तुपणमासांस्तथा मुच्येतकिल्विपादित्यंगिरोवचनमकामतोऽवकीर्णे ईपद्यभिचारिएयामवकीर्णेवाद्रष्टव्यम् अत्रसार्द्धसप्तधेनवःप्रत्याम्नाय इति शूलपाणिःएतद्विषय

एवाभ्यासेशातातपवचः ॥

कण्ठा और इसीको शंख लिखितजी अपनीस्मृतिमें कहतेहैं गुप्तायामिति तीसरे वर्णकी वैश्या विपे अवकीर्णीहोवे तां एकवर्ष पर्यंत त्रिकाल स्नान कर्के अनुष्ठान करे और क्षत्रियाणी विपे दो वर्षका व्रतकरे और ब्राह्मणी विपे त्रय वर्षका व्रत करे तां शुद्ध होताहै ॥ अब और कहतेहैं अवेति अवकीर्णके प्रायश्चित्त करणवाला ब्रह्महत्याका व्रतकरे । ताडपत्रेद वस्त्र लगा कर छे ६ महीने का व्रतकरे तां पापने मुक्त होताहै १ एह अंगिरा जीका जो वचनहै सो नहिं इच्छातें अवकीर्णविपे वा थोडीव्यभिचारिणी स्त्री विपे अवकीर्णी होवे तिसविपे जानणा जेकर एह व्रत न होसके तां साढियां सत्त गौयां दान करे अर्थात् तिनांका मुलदे देवे एह शूलपाणि ने कयाहै इसी विषयमें बहुत अभ्यासहोवे तां तिसविपे शातातपजीकावचनहै सो तिसीस्मृतिमें जानणा

८४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब और मतकर्के भी इसविषयको कहते हैं अथेति इससे उपरंत अबकीर्णिका प्रायश्चित्त कहते हैं ब्रह्मचारी जेकर अबकीर्णी होवे तां चौथेपहर अठवसे तक भिक्षाका अन्न खावे इसप्रकार करे तां पवित्र होता है तैसे ही पैठीनमिजी कहते हैं अबकीर्णी गर्दभके चर्मका धारण करे और वर्ष तक प्राजापत्य व्रत करे तिसके प्रायश्चित्तविषे उंकार पूर्वक महाव्याहृतियों कर्के अर्थात् उंभूः उंभुवः उंस्वः इनां कर्के हवन करे १ अथवा वर्ष तक एककाल भिक्षाका अन्न खावे २ वा चतुर्थकाल नियत कर्के भी जन करे और गायत्रीका जप करे ३ गायत्री जप भी वर्षराज तक करणा विशेष कहते हैं स्वरिणीति स्वरिणी जो वृषल्यादि स्त्री तिसविषे अबकीर्णी होवे तां सचैल स्नान कर्के जलदा घट ब्राह्मणके ताई देवे और वैश्याविषे अबकीर्णी होवे तां चौथे काल भोजन करे और ब्राह्मणको भोजन देवे और घासका भार गौआके ताई देवे और क्षत्रियाणीविषे अबकीर्णी होवे तां त्रिगत्रि

अथातोऽवकीर्णिप्रायश्चित्तं व्याख्यास्यामः । ब्रह्मचारीयदाऽवकीर्येत चतुर्थकालमष्टसंवत्सरान्भैक्ष्यंचरेदेवंपूतो भवतीति तथा पैठीनसिरपि - अबकीर्णी गर्दभाजिनं संवसेत्संवत्सरं प्राजापत्यंचरेदिति तत्र प्रायश्चित्तम् महाव्याहृतिभिर्जुहुयादौ पूर्वकाभिः संवत्सरं वानक्तं भैक्ष्यंचरेच्चतुर्थकाले नियतभुग्गायत्री वाजपेदिति गायत्रीजपेपि संवत्सरमिति संवन्धः ॥ स्वरिणी वृषल्यादाववकीर्णश्चेत्तदा सचैल स्नानमुदकुम्भं दद्याद्ब्राह्मणाय वैश्यायां चतुर्थकालाहारो ब्राह्मणान्भोजयेत् यवसभारं च गोभ्यो दद्यात् क्षत्रियायां त्रिरात्रमुपोपितो घृतपात्रं दद्यात् ॥ ब्राह्मण्यां षड्रात्रमुपोपितो गांच दद्यात् गोष्ववकीर्णः प्राजापत्यंचरेत् षंडायामवकीर्णः पलालभारं सीसमापकंच दद्यादिति शंखलिखितोदितं कुर्यात् षंडावंध्या । वंध्या तु वृषलीज्ञया वृषलीतुमृतप्रजा अपरावृषलीज्ञया कुमारीयारजस्वलेति ॥ उशनाः ॥ एतच्चावकीर्णिप्रायश्चित्तं वैवर्णिकस्यापि ब्रह्मचारिणः ॥ समानम् ॥ अबकीर्णी द्विजो राजा वैश्यश्चापि स्वरेण तु इच्छाभैक्ष्याशिनो नित्यं शुद्धयंत्यब्दात्समाहिता इति शांडिल्यस्मरणात्

उपवास व्रत कर्के घृत पात्रका दान करे तां शुद्ध होता है ॥ ब्राह्मणीविषे अबकीर्णी होवे तां छे ६ रात्रि उपवास कर्के फेर गौ दान करे तद शुद्ध होता है । और गौआविषे अबकीर्णी होवे तां प्राजापत्यव्रत करे ॥ और षंडा विषे अबकीर्णी होवे तां परालीका भार और एक मासासिका दान करे तां शुद्ध होता है एह शंख लिखित स्मृतिमें क्या होया प्रायश्चित्तकरणे योग्य है ॥ षंडा नाम वंध्या स्त्री का है इसको स्पष्ट करते हैं वंध्या नाम वृषलीका है और जिसकी संतान मृत होजावे उसका नाम वृषली है जो कुमारी हि रजस्वला होवे उसका नाम भी वृषली है उशना ने क्या है और व्यवस्था कहते हैं एह अबकीर्णिका प्रायश्चित्त त्रयवर्षके ब्रह्मचारिके तुल्य है अबकीर्णी द्विजक्या ब्राह्मण और राजा और वैश्य होवे तद गर्भभू कर्के यज्ञ करे और भिक्षाका अन्न नित्य खावे तद वर्ष कर्के शुद्ध होता है एह शांडिल्य जीका स्मरण है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ ८५

यदेति जदस्त्री संभोगके विना ब्रह्मचारी अपनी इच्छाते वीर्य स्वलितकरे और दिनविषे वा स्वप्न विषे करे तां तिसविषे नैऋत यज्ञमात्र देखणे योग्यहै ॥ इसीको कहतेहैं कि वीर्यका प्रयत्नते त्याग दिन विषे वा स्वप्नविषे होवे तां नैऋत यागमात्रकरे इसवासिष्ठकर्के यज्ञ मात्रका अतिदेशहोनेतें अतिदेश कियाहै ब्रह्मचर्यका जिनां विषे ऐसे जो कच्छ चांद्रायणादि व्रतांतर तिनां विषे भोजेकर अवकीर्णहोवे तिसविषे पूर्वोक्तहि यज्ञमात्रकरणा अर्थात् गर्दभका आलंभननहि करणा इसमे वचन कहतेहैं व्रतेति व्रतांतरों विषे भी एही करणा एहतिसी वसिष्ठकर्के अतिदेश होणेतें अव स्वप्न विषे वीर्य स्वलितहोने मे मनुजी कहतेहैं ॥ स्वप्न इति द्विज ब्रह्मचारी वीर्यकों इच्छाते विना स्वप्न विषे स्वलित करे तां स्नान कर्के सूर्यका पूजन करे और त्रयवार पुनर्मा)

यदा स्त्रीसंभोगमंतरेण कामतश्चरमधातुंविसृजति दिवाचस्वप्नेवाविसृजति तदानैऋतयागमात्रंद्रष्टव्यम् ॥ एतदेवरेतसः प्रयत्नोत्सर्गे दिवास्वप्नेचेति वसिष्ठेन यागमात्रस्यातिदिष्टत्वात् ॥ व्रतांतरेषु च कच्छ चांद्रायणादिष्वतिदिष्टब्रह्मचर्येषु च स्कंदने सत्येतदेव यागमात्रम् ॥ व्रतांतरेषु चैवमितितेनैवातिदिष्टत्वात् ॥ स्वप्नस्कंदने तु मनुः ॥ स्वप्ने सिकृत्वा ब्रह्मचारी द्विजः शुक्रमकामतः स्नात्वा कर्मचर्यित्वा त्रिः पुनर्माभित्यृचं जपेदिति १ यमोपि ॥ प्रकीर्यरेतः स्वप्ने तु ब्रह्मचार्यप्यकामतः स्नात्वा कर्मक्षयप्रयतो गायत्र्यष्टशतं जपेत् १ तथा ब्रह्मचारी तु योगच्छेत्स्त्रियं कामप्रपीडितः प्राजापत्यं चरेत्कच्छमब्दमेकं सुयंत्रितः १ भूयोऽभ्यासविषयमेतत् ॥ वानप्रस्थादीनां चंदमेव ब्रह्मचर्यखंडने अवकीर्णव्रतं कच्छत्रयाधिकं भवति ॥ वानप्रस्थायतिश्चैव स्कंदने सति कामतः पराकत्रयसंयुक्तमवकीर्णव्रतं चरेदिति शांडिल्यस्मरणेन ॥ यस्तु संन्यासी भूत्वा गार्हस्थमिच्छति चेत्तत्र संवर्त्तोक्तं प्रायश्चित्तम्

इस ऋचाका जपकरे १ ॥ यम भी कहताहै प्रकीर्येति ब्रह्मचारी इच्छाते विना स्वप्नविषे वीर्य स्वलित कर्के सूर्यकों देखे फेर प्रयत्नते अष्टोत्तर शत गायत्रीका जपकरे १ तैसं हि और कहतेहैं ब्रह्मचारीति जो ब्रह्मचारी कामकर्के पीडितहोया २ स्त्री साथगमन करे तां समाधानहोकरके वर्षरोजका कच्छ प्राजापत्य व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ एहवहुत अभ्यास विषय विषे जानणा वानप्रस्थादियोंको एही ब्रह्मचर्यखंडनविषे कच्छत्रय हैं अधिक जिसविषे ऐसा अवकीर्णका व्रत करणा उचितहै वचन कहतेहैं वेति और वानप्रस्थ और यतिइनांको इच्छाते वीर्यदेखलित होया त्रयपराकव्रतकर्के युक्तजो अवकीर्णका व्रतहै सो करणा उचितहै एह शांडिल्यस्मृतिमें क्याहै १ जो संन्यासीहोकरके फेर गृहस्थकी इच्छा करे तिसविषे संवर्त्तजीका क्या होआ प्रायश्चित्त कहतेहैं ॥

८६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

संन्यस्येति कोईक दुर्मतिपुरुष संन्यासी हो कर्के जेकर गृहस्थाश्रम स्वीकार करे सो अश्रांत होया २ छे ६ महीने का कच्छू व्रतकरे १ इसीमें वासिष्ठजी कहतेहैं यस्त्विति जो संन्यासीहोकरके फेर मैथुन करे सो सठ ६०००० हजार वर्ष विष्टाविषे कीडा होताहै १ पराशरजी भी कहतेहैं य इति जो प्रत्यवसित होया ब्राह्मण संन्यासते दूर हो जावे और अनाशक होकरके फेर दृष्टजा वे फेर गृहस्थकी इच्छाकरे १ सो पुरुष त्रयकच्छू और त्रय चांद्रायण व्रत करे और संपूर्ण जा त कर्मादि संस्कारोंकरके शुद्धिको प्राप्त होताहै २ अब पिच्छले इलोकका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं य इति जो प्रत्यवसित क्या संन्यासादि धर्म वाला होया और जो अनाशक क्या महीने आदि की अवधिककरके अर्थात् महीनापर्यंत अन्न नहिखाणा ऐसी प्रतिज्ञाकरके फेर तिसनूं न करे एह अर्थहै ॥ तिसविषे ब्राह्मण को छे ६ महीनेका कच्छूहै फेर संन्यास लयणा उचितहै ॥ और

संन्यस्यदुर्मतिः कश्चित्प्रत्यापत्तिंचरेद्यदि सकुर्यात्कच्छूमश्रांतः पणमासा
नप्रत्यनंतरमिति १ प्रत्यापत्तिर्गृहस्थाश्रमस्वीकारः ॥ अतएववासिष्ठः ॥ य
स्तुप्रव्रजितोभूत्वापुनःसेवेतमैथुनम पष्टिवर्षसहस्राणिविष्टायांजायतेकृमि
रिति १ पराशरोपि यः प्रत्यवसितोविप्रोप्रव्रज्यातोविनिर्गतः अनाशकोनि
वृत्तश्चगार्हस्थंचेच्चिकीर्षति १ सचरेत्त्रीणिकच्छूाणित्रीणिचांद्रायणानिच
जातकमोदिभिः सर्वैः संस्कृतः शुद्धिमाप्नुयात् २ यः प्रत्यवसितः स्वीकृतसंन्या
सादिव्रतइत्यर्थः । यश्चाऽनाशकोभूत्वामासाद्यवधिकृत्वाऽनशनीभूत्वापुन
निवृत्त इत्यर्थः ॥ तत्रब्राह्मणस्यपाणमासिकः कच्छूः पुनः संन्यासः ॥ क्षत्रि
यस्यचांद्रायणव्रतम् ॥ वैश्यस्यकच्छूव्रतमिति व्यवस्था ॥ वाविप्रस्यैवश
क्तिसकृदभ्यासाद्यपेक्षया व्यवस्थितं प्रायश्चित्तत्रयंद्रष्टव्यम् तथानुरसं
न्यासिनामपि ॥ यमेनापि ॥ प्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ जलाग्न्युद्धंधनभ्रष्टाः
प्रव्रज्यानाशकच्युताः विप्रप्रपतनप्रायः शस्त्रघातच्युताश्चये १

क्षत्रीको त्रय चांद्रायण हैं ॥ और वैश्य को त्रय कच्छू हैं ॥ इसमें ऐसी व्यवस्था जानणी
अथवा ब्राह्मणको हि शक्ति और सकृत् क्या एकवार परावृत्ति और अभ्यासादिकी अपक्षा
करके व्यवस्थित जो पिच्छले त्रय प्रायश्चित्तहैं सो देखणें योग्यहैं ॥ शक्ति में छे ६ महीनेका कच्छू
व्रतकरणा ॥ और सकृत्में त्रयकच्छू व्रत करणें ॥ और अभ्यासमें क्या बहुतवारमें त्रय चांद्रायण
व्रत करणें ॥ तैसेही जिसने आतुर समयमें संन्यास लेआ फेर राजीहोकर गृहस्थी होगया तिस
विषे यमनेभी प्रायश्चित्तकराहै ॥ जलेति प्रायश्चित्तवास्ते जलविषे पड़े वा अग्निविषे वा फाह लय
णा इनांते भ्रष्ट होजावे और प्रायश्चित्तके अर्थ संन्यास लयणा और अनाशक क्या इतने दिन
अन्न नहि खाणा ऐसा कह कर व्रती होवे और पीछे इनांते भ्रष्ट होवे वा प्रायश्चित्तके अर्थ
विष पान करणा वा किसे जगाते डिगणा और शस्त्र से मरणा इनांते भ्रष्ट होवे १

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ८७

नेति एह संपूर्णं प्रत्यवसितनहिहै अर्थात् संन्यासादि व्रतोंसँरहितहै और संपूर्ण लोकोतें बाहरहै चांद्रायणकर्केवा दो २ तत्तच्छ्रवतकर्केशुद्धहोतेहै २ इसमें असाजानना कि जो एह चांद्रायण व्रतच्छ्रात्मक दो प्रायश्चित्तहै सो शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के व्यवस्थित जानणेंयोग्यहै ॥ अब इसीमें विशेष कहतेहै ॥ जीवन्निति प्रायश्चित्तके अर्थ अपने आपनू त्यागे फेर जीउंदा होजावे तिसमें वारां रात्रिका छच्छ्र व्रत करे और त्रय रात्रि उपवास व्रत करे एह वसिष्ठकाकया होया जोवचनहै सो स्वीकार कीता जो शास्त्रीय मरण जिसने तिसके मुड़ने विषे जानणा ॥ इसमें व्यवस्थाकरतेहै ॥ तादिति जिसने व्रतके उद्यममें संकल्पकीताहै सो तिसकेहटणविषे त्रयरात्रि व्रत करे ॥ और प्रवृत्तितेउपरंत हटणविषे वारां १२ रात्रिका व्रतकरे एह व्यवस्था जानणा ॥ इसमें ऐसा विचारहै गुरुकी स्त्री साथ गमनकरणा और तिसके तुल्य जो अगम्यागमनहै तिस विषे प्रायश्चित्तको बहुत होणेतें एह जो अब कीर्णिका व्रत है सो इनंतें पृथक् स्त्रियां में अबकीर्णी

नैवैतेप्रत्यवसिताःसर्वलोकवहिष्कृताः चांद्रायणेनशुद्धयंतितत्तच्छ्रवद्वयेनचे
ति २ इदंचचांद्रायणतत्तच्छ्रवद्वयात्मकं प्रायश्चित्तद्वयं शक्त्याद्यपेक्षयाव्यव
स्थितंविज्ञेयम् जीवन्नात्मत्यागीकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरेत्त्रिरात्रंचोपवसेदितिवा
सिष्ठंतु स्वीकृतशास्त्रीयमरणस्यप्रत्यावृत्तौबोध्यम् । तदुद्योगसंकल्पमात्रात्प
रावृत्तौत्रिरात्रम् प्रवृत्त्यनंतरपरावृत्तौद्वादशरात्रमितिव्यवस्था ॥ गुरुदार
तत्समागम्यागमनेप्रायश्चित्तस्य गुरुतरत्वादिदमवकीर्णिव्रतंतद्व्यतिरिक्ताव
कीर्णैद्रष्टव्यम् ॥ नचलघुनाऽवकीर्णिव्रतेन गुरुदारादिगमनमहापातकोचि
तप्रायश्चित्तबाधोविशेषविधानादितिवाच्यम् ॥ ब्रह्महननप्रकरणे ब्रह्मचा
र्यादीनांद्वैगुण्यादेर्विधानात् ॥ अत्रागम्यागमननिमित्तंप्रायश्चित्तंनपृथक्का
र्यंस्त्रियांब्रह्मचारिणोब्रह्मस्खलनस्यागम्यागमनेनांतरीयकत्वात् ॥ यत्र
निमित्तेनिमित्तांतरंसमं न्यूनंवाऽवश्यंभावि तत्रनपृथङ्नैमित्तिकंप्रयुज्यते ॥

होवे तिसमें जानणा(प्रश्न)करतेहैं नचेति छोटा जो अबकीर्णिका व्रत है तिसने गुरुदागदि गमनका जो महापातको के उचित प्रायश्चित्त सो बाधयाहै क्योंकि विशेषविधान होणेतें (उत्तर) ऐसा मत कहो किसने ब्रह्महत्याके प्रकरण विषे ब्रह्मचार्यादियोंको द्विगुण प्रायश्चित्तके विधान होणेतें ॥ अर्थात् ब्रह्मचारीको हि अबकीर्ण व्रत है और इसीको महापातकोमें दूणा व्रत है इसमें प्रतीत होया कि महापातको वाला व्रत जुदाचाहिए ॥ अब इसीमें और विचार करतेहैं इसमें अगम्यागमनका प्रायश्चित्त भी होणा चाहिए इसवास्ते कहतेहैं ॥ अत्रेति इस विषे अगम्यागमन निमित्तप्रायश्चित्त पृथक् नहि करणा स्त्रीविषे ब्रह्मचारिके ब्रह्मस्खलन को अगम्यागमन कर्के अंतर्गीयक होणेतें अर्थात् अबकीर्ण व्रत विषे हि अगम्यागमनकाभी व्रतहै जिस निमित्त विषे और निमित्त बराबर वा थोडा अवश्य होवेगा तिसके विषे पृथक् नैमित्तिक नहि होताहै

८८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसीमें दृष्टान्त कहते हैं यथेति जैसे गौकेताई लाठीगूरे तां छच्छ्रव्रत करे और लाठी आदिके प्रहारविषे अति छच्छ्रव्रत करे और रुधिर निकालनेविषे छच्छ्रातिछच्छ्र व्रत करे और जिसप्रहार में अंदररुधिर होजावे तिसमें छच्छ्रव्रत करे १ ऐसीआज्ञाहै तथापि इसरुधिर निकालने निमित्त विषे गूणादि जो निमित्त हैं सो अंतर स्थित हैं परंतु छच्छ्र और अतिछच्छ्र पृथक् नहि करी दें किन्तु छच्छ्रातिछच्छ्रहि करीदा है ऐसैं हि और जगा भी जाबणा ॥ जिसविषे अंतर्भाव का नियम नहि है जैसा पर्वकालमें रजस्वला जो परस्त्री तिससाथ गमन करे इसमें असाअभि प्रायहै कि एह नियम नहिहै कि पर्व कालमें रजस्वलाहोतीहै किंतु तिसविनाभी हुंदीहै और परस्त्री विना भी पर्वमें गमन हुंदाहै तिसमें तद वडा दोषहै इत्यादियोंविषे निमित्त पृथक् जो

यथा अवगूर्यचरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रं निपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृक्पातेकृच्छ्रो भ्यंतरशोणितइत्यत्र शोणितोत्पादननिमित्तेऽवगूरणादिनिमित्तद्वयमवश्य मंतःस्थितं परन्तु कृच्छ्रमतिकृच्छ्रं च न पृथक् क्रियते अन्यत्राप्येवमेवोह्य म् यत्रांतर्भावनियमो नास्ति पर्वणि परस्त्रीरजस्वलांगच्छतीत्यादौ तत्र निमित्तानि पृथक् प्रयुज्यन्ते अत्र पूर्वपक्षसिद्धांतौ मिताक्षरायां द्रष्टव्यौ व्रतां तरलोपेप्यवकीर्णव्रतमतिदिशति मनुः अकृत्वा भैक्ष्यचरणमसमिध्य च पा वकम् अनातुरः सप्तरात्रमवकीर्णव्रतं चरेदिति ॥ १ अथ ब्रह्मचारिव्रतलो पप्रायश्चित्तप्रसंगादन्यदनुपपातकपापस्याऽपि प्रायश्चित्तमाह याज्ञव ल्क्यः भैक्ष्याग्निकार्येत्यक्त्वा तु सप्तरात्रमनातुरः कामावकीर्ण इत्याभ्यां जु हुयादाहुतिद्वयम् ॥ १ ॥

डो दे हयण अर्थात् त्रयप्रायश्चित्त पृथक् २ करणे ॥ इस विषे पूर्व पक्ष और सिद्धांत मि ताक्षरा विषे देखणे योग्य हैं ॥ अब और व्रतके लोपविषे अवकीर्णका व्रत दिखाईदा है ॥ इस में मनु जी कहते हैं ॥ अकृत्वेति अग्नि होत्र करण वाला पुरुष अनातुर क्या स्वस्थ चित्त वाला होया २ भिक्षा न करे और अग्नि नू न जगावे तां तिस को सत्त ७ रात्रि पर्यन्त अवकी र्णिका व्रत करणे योग्य है १ अब ब्रह्मचारिके व्रत लोपके प्रायश्चित्तप्रसंगत और अनुपपातक पापकाभी प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्यजी कहते हैं । भैक्षेति भिक्षा और अग्नि कार्य जेकर सप्तरा त्रि स्थगें तां (कामावकीर्ण) इनमेंत्रों कर्कें दो २ आहुतियांका हवन करे ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ ८९

अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यास्त्विति जो ब्रह्मचारी सावधान होया २ निरंतर सत्तरात्रि भिक्षाअथवा अग्निकार्य त्याग देवे तां ॥ कामावकीर्णोऽस्यवकीर्णोऽस्मिकामकामाय स्वाहा ॥ इस मंत्र कर्के एक आहुती देवे और कामावपन्नोऽस्यवपन्नोऽस्मि कामकामायस्वाहा इसमंत्रकर्के दूसरी आहुतीदेवे तां शुद्ध होताहै इस तें उपरंत फेर समासिंचतुमरुतः समिद्रः संवृहस्पतिः संमायमग्निः सिंचतांयशसाब्रह्मवर्चसेन इसमंत्रकर्के अग्निका उपस्थानकरे क्याउठकर्के इसमंत्रके अर्थका स्मरणकरे सो अर्थऐसाहै कि मरुतःक्या ४९, देवता और इंद्रऔर वृहस्पति और यम अग्नि एह सभ यशकर्के और ब्रह्म तेज कर्के मेरेविषे सिंचनकरण अर्थात् जो मेरा यश और ब्रह्म तेज नष्ट होगयाथा उसको पुनः स्थापन करण ॥ इसको स्पष्ट कर्के कहतेहैं कि भिक्षाकर्के गुरु सेवा होनीथी सो नहिहोई इसतें गुरुजीका अपराध होणेतें प्रायश्चित्त दिखाया है परंतु एह गुरु सेवादि जो कोई गृह निर्माणादि बड़ा कार्य तिस विषे खचित होणे कर्के भि

अस्यार्थः यस्त्वनातुरएव ब्रह्मचारी निरंतरंसत्तरात्रंभैक्ष्यमग्निकार्येवात्यजतिअसौकामावकीर्णोऽस्यवकीर्णोऽस्मिकामकामायस्वाहा कामावपन्नोऽस्यवपन्नोऽस्मिकामकामायस्वाहा इत्येताभ्यामंत्राभ्यामाहुतीर्हुत्वा समासिंचतुमरुतः समिद्रः संवृहस्पतिः संमायमग्निः सिंचतांयशसाब्रह्मवर्चसेनेत्यनेन मंत्रेणाग्निमुपतिष्ठेत् इदंचगुरुपरिचर्यादिगुरुतरकार्यव्यग्रतयाअकरणेद्रष्टव्यम् ॥ यदात्वव्यग्रएवभैक्ष्याग्निकार्ये त्यजति तदा अकृत्वाभैक्ष्यचरणमसमिध्य चपावकम् अनातुरः सत्तरात्रमवकीर्णैर्व्रतंचरोदितिमानवद्रष्टव्यम् अत्रैववृहस्पतिः संध्यामुपास्योपस्थितः सावित्र्याः सहस्रेणादित्यमुपतिष्ठेत् उत्क्रमाग्निकार्येव्रतपत्याहुत्यातीतंसंपाद्योपस्थितंकुर्यात् ॥ यज्ञोपवीतादिनाशंतु हारीतेनप्रयश्चित्तमुक्तम् मनोव्रतपतीभिश्चतस्त्रआज्याहुतीर्हुत्वापुनर्यथार्थंप्रतीयात् असकृद्भैक्ष्यभोजनेभ्युदितेऽभिनिर्मुक्तेवांते

क्षादिके न करणे विषे देखणे योग्य है ॥ जेकर तिसमे नहिं खचित होवे और भिक्षा और अग्नि कार्य त्याग देवे तां एह मनुजीका कथन कीता होया प्रायश्चित्त देखणे योग्य है । इस श्लोक का अर्थ पिछे कहा है इसी विषे वृहस्पति जी कहते हैं संध्यामिति प्रातःकालकी संध्या कर्के फेर उठ कर्के एक हजार गायत्री कर्के सूर्यकी स्तुति करे और उलंघन होया जो अग्नि कार्य तिसनूं ॥ व्रतपति ॥ इस मंत्र कर्के पिछलीया आहुतियां दे कर्के फेर उपस्थान करे और यज्ञोपवीता दिके नाश विषे हारीतजीनें प्रायश्चित्त क्या है मन इति (मनोव्रतपतीभिः) इस मंत्र कर्के चार आहुतियां घृतकीयां दे कर्के फेर यथार्थ कर्के यज्ञोपवीत पावे भिक्षासं प्राप्त होया जो अन्न तिसके बहुत वार भक्षण विषे प्रायश्चित्तहै और सुत्ते होयां सूर्य उदय होवे वा अस्त होवे और वमन होवे तांभी प्रायश्चित्त करे

९० श्रीरणवीर करित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

दिवेति दिनविषे शयनकरे और नग्नस्त्रीके देखेंविषे और नग्न होकर शयन करे और श्मशानकों उलंघन कर्के घोडे उप्पर चड कर चले और पूज्य जो हैं गुर्वादि उनको प्रणामादि न करे एह जो संपूर्ण पूर्वोक्तहैं इनां विषे इनांहि पूर्वोक्त मंत्रां कर्के घृतकीयां आहुतियां देवे ॥ और अग्निके प्रज्वलित कर्दे होयां वृक्ष वा सर्पादियोंके मारणे विषे (यद्देवादेवहेडनम्) इत्यादि जो कूष्मांड मंत्र हैं इनांकर्के त्रयरात्रि घृतकर्के हवन करे ॥ मणि और वस्त्र और गवादि इनांके दान लैणें में अष्ट सैंअधिक १००० हजार गायत्रीका जपकरे इतनीहिस्मृति हारोतजीकी है ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं (मनोव्रतपतीभिः) मनोज्योतिः इत्यादिजो मंत्रा हैं मनहै चिन्ह जिनांका और ; त्वमग्ने व्रतपात्रसि ! व्रतहै चिन्ह जिसविषे इनांकर्के हवनकरे ॥ यथार्थ प्रती

दिवास्वप्ने नग्नस्त्रीदर्शने नग्नस्वापे श्मशानमाक्रम्य हयादीनारुह्य पूज्याति क्रमेचैताभिरेवाज्याहुतिभिर्जुहुयात् । अग्निसमिधनेस्थावरसरीसृपादीनांवधे यद्देवादेवहेडनमितिकूष्मांडीभिस्त्रिरात्रमाज्यंजुहुयात् मणिवासोगवादीनां प्रतिग्रहेसावित्र्यष्टसहस्रंजपेदितिमनोव्रतपतीभिरिति मनोज्योतिरित्यादि ॥ मनोलिंगाभिस्त्वमग्नेव्रतपात्रसीत्यादिव्रतलिंगाभिरित्यर्थः यथार्थप्रतीयादिति उपनयनोक्तमार्गेणसमंत्रकंगृहणीयदित्यर्थः । अपराकंपैठीनसिः नष्टेदंडकाष्ठेभैक्ष्यंदत्वाब्राह्मणायतदहरेवोपवसेत्कमंडलावप्येदमेव नष्टायांमेखलायांद्वेऋचावुद्धरेत् । इयंदुरुक्तेति । संवर्तः । भिक्षाटनमकृत्वायः स्वस्थएकोन्नमश्रुते अस्नात्वाचैवयोभुंक्तेगायत्र्यष्टशतंजपेत् १ उपासीतनचेत्संध्यामग्निकार्यंनचेत्कृतम् स्नात्वासूर्यसमभ्यर्च्यप्राणायामेनशुध्यति २

यात् इसकाअर्थ कहतेहैं यज्ञोपवीतमें कहा जो मार्ग तिसकर्के समंशक ग्रहणकरे ॥ अपराकंमे पैठीनसिजी कहतेहैं नष्टइति ब्रह्मचारी दंड काष्ठके नाशहोयां भिक्षाकाअन्न ब्राह्मणांको देदेवे और उसदिन उपवासकरे और कमंडलुके नाशमेंभी ऐसंहि करे ॥ ब्रह्मचारी तडागी के नाश होयां दो २ ऋचा का पाठ करे इयंदुरुक्ता इत्यादि ॥ संवर्त जी कहतेहैं भिक्षेति स्वस्थचित्त होया २ जो ब्रह्मचारी भिक्षाटन कर्के इकछाहि अन्न खावे और स्नान तें विना जो भोजन करताहैं सो अष्टसे अधिक १०८ सौ गायत्री का जपकरे तां शुद्धहोताहै १ जो संध्या नकरे और अग्नि कार्य न करे तां स्नान कर्के सूर्यका पूजन कर्के और प्राणायाम करणेंतें शुद्ध होताहै २

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ९१

दिवेति स्वस्थ चित्तवाला ब्रह्मचारी जेकर दिनविषे शयन करे तद स्नानकर्के सूर्यका पूजन करे और गायत्रीका अठसे अधिक सौ जप करे तदशुद्ध होताहै ३ जिस पुरुषने यज्ञोपवीत विना संध्याकी तीहैसो ब्रह्मचारी स्नान कर्के समाधान होया २ अठसे अधिक हजार १००८ गायत्री का जप करे तदशुद्ध होताहै ४ जो पुरुष यज्ञोपवीत विना भोजन करदाहै सो अठसे अधिक १०० सौ गायत्रीका जप करे और एक प्राणायाम करे तद शुद्ध होताहै ५ यम जी कहतेहैं सूर्य इति जो पुरुष सूर्यके उदय तक शयन करदाहै उसका नाम सूर्येदितहै और जो सूर्यके अस्ततक शयन करदाहै उसका नाम सूर्यनिर्मुक्तहै १ सो दोए ब्रह्मस्तेन कहेहैं अर्थात् वेदके चुराणे वालेहैं दिन रात्रिके उपवास करणेतें शुद्ध होतेहैं दशतें अधिक गायत्रीका पृथक् २ जपकरें २ अवइसीका अर्थ

दिवास्वपितिचेत्स्वस्थो ब्रह्मचारी कथंचन स्नात्वा सूर्यसमभ्यर्च्य गायत्र्यष्टश तं जपेत् ३ ब्रह्मसूत्रं विना येन सन्ध्योपास्तिर्यदा कृता गायत्र्यष्टसहस्रं तु जपेत् स्नात्वा समाहितः ४ ब्रह्मसूत्रं विना यस्तु भोजनं कुरुते जनः गायत्र्यष्टशतेनैव प्राणायामेन शुद्ध्यति ५ यमः । सूर्योदये तु यः शेत सः सूर्योदित उच्यते अस्तंगते तु यः शेत सूर्यनिर्मुक्त एव सः १ ब्रह्मस्तेनानुभौ सम्यगहोरात्रोपितौ शुची गायत्र्या दशसाहस्रं कुर्यात्तमाह्निकं पृथक् २ सूर्योदितो हरुपोपितः सूर्यनिर्मुक्तो रात्रिमुपोपितः एवमुभावहोरात्रोपितौ गायत्र्या दशाधिकं सहस्रजपमहानि कुर्याताम् वसिष्ठः । सूर्याभ्युदितः सन्नहस्तिष्ठेत्सावित्रीं जपेत् ॥ एवं सूर्याभिनिर्मुक्तो रात्रावासीत । विष्णुः । सूर्याभ्युदितो निर्मुक्तः सचैलस्नातः सावित्र्यष्टशतमावर्तयेत् ॥ संध्याधिकारे बौधायनः ॥ तत्र सायमतिक्रमे रात्र्युपवासः

प्रातरुपक्रमे हरुपवासः ॥

स्पष्टकर्के कहतेहैं सूर्येति-सूर्योदित पुरुष दिनमें उपवास करे और सूर्यनिर्मुक्त पुरुष रात्रिमें उपवास करे इसप्रकार दोनों दिनरात्रिके उपवास वाले गायत्रीका दश १० तें अधिक हजार जपदिन विषेकरें ॥ वसिष्ठ जी कहतेहैं ॥ सूर्येति सूर्योदित पुरुष दिनविषे स्थित होकरके गायत्रीका जपकरे ॥ ऐसही सूर्यनिर्मुक्त पुरुष रात्रिमें स्थित होकरके रहपरंतु दिनविषे जप करे विष्णुजी कहतेहैं सूर्येति सूर्योदित वा सूर्यनिर्मुक्त पुरुष सचैल स्नान कर्के गायत्रीका अठ से अधिक १०० सौ जपकरे अब संध्याके अधिकारमें बौधायनजी कहतेहैं तत्रेति जेकर सायंकालकी संध्या न करे तद रात्रि उपवास करणा और प्रातःकालकी संध्या न करणेमे एकदिनका उपवास करणे योग्यहै

९२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

आपस्तंबजी कहते हैं स्वपन्निति जिसको सुते होयां सूर्य अस्त होवे सो भोजन न करे और वाणी रोकर कखे रात्रि में स्थित रहे और दूसरे दिन जलका स्पर्श करके वाणी नूं खोल देवे और जेकर सुते होयां सूर्य उदय हो जावे तदभी भोजन न करे और वाणी नूं रोकर कखे और दिन में स्थित रहे और नम्र होया २ प्राणायाम करे एह कि सीका मत है । आतिमितः ! इस पाठ विषे अस्त पर्यंत स्थित रहे एह अर्थ है ॥ कुछक और कहते हैं मध्विति ब्रह्मचारीको मखीर मांस के भक्षण विषे कृच्छ्रव्रत करणे योग्य है फेर शेष व्रतानूं करे ब्रह्मचारीनें मखीर भक्षण विषे और शिष्ट पुरुषों के भोजन योग्य जो मांसति सकें भक्षण विषे प्राजापत्यव्रत करणे योग्य है ॥ तिसते उपरंत प्रारंभ कीता होया जो ब्रह्मचर्य वा वेद व्रत इनां विषों शेष रिहा जो व्रत सो करे ॥ तिसते उपरंत अग्रेकरणे जो व्रत तिनानूं समाप्त करे

आपस्तंबः स्वपन्नभिनिर्मुक्तो नश्नन्वाग्यतो रात्रिमासीति । श्वोभूते उदकमुप स्पृश्य वाचं विसृजेत् । स्वपन्नभ्युदितो नश्नन्वाग्यतो हस्तिष्ठेदान्मितिः प्राणा न्नियच्छेदित्येके ॥ अनश्नन्नभुंजानः किंच मधुमांसांशने कार्यः कृच्छ्रः शेषो व्रतानि च ब्रह्मचारिणामधुभक्षणे शिष्टभोजनीयमांसभक्षणे च प्राजापत्यं कार्यम् ॥ तदनंतरमुपक्रांतस्य ब्रह्मचर्यस्य वेदव्रतानां वान्यतमस्य शेषः कार्यः तदनंतरं क्रियमाणानि व्रतानि समापनीयानि मधुमांसाशने कार्यः कृच्छ्रः शेषव्रतानि च प्रतिकूलं गुणैः कृत्वा प्रसाद्यैव विशुध्यतीति मिताक्षरास्थः पाठः न पुनर्ब्रह्मचर्यारम्भशंका निवृत्त्यर्थं विधिः तदाशंकायां च पुनरुपनयनविधानात् । तथाच संवर्तः ॥ ब्रह्मचारी तु योश्चीयान्मधुमांसे कथंचन सकृत्वा प्राकृतं कृच्छ्रं मौंजी होमेन शुध्यतीति मांसस्य च शिष्टभोजनीयस्य भक्षणे एतत्

इसमें विशेष कहते हैं मध्विति ब्रह्मचारी मखीर मांस के भक्षण विषे कृच्छ्रव्रत करे फेर शेष व्रत करे और गुरुका अनादरा करेतां गुरुकी प्रसन्नता करके शुद्ध होता है एह मिताक्षरामे कहा है १ परंतु एह फेर ब्रह्मचर्य के प्रारंभ की शंका की निवृत्ति वास्ते विधि नहीं है अर्थात् इसी कृत्य करके एह शंका निवृत्त हो गई पुनर्ब्रह्मचर्य की आज्ञा का विषे फेर यज्ञोपवीत का विधान होणें सो इसमें नहीं है । तैसे ही संवर्त जी कहते हैं ब्रह्मचारीति जो ब्रह्मचारी मखीर और मांस का भक्षण करे सो प्राकृत कृच्छ्रव्रत करके और मौंजी होम करके शुद्ध होता है १ प्राकृत कृच्छ्र नाम सामान्य कृच्छ्र जो द्वादशाह साध्य है तिसका है यज्ञोपवीत विषे प्रतिपादन कीता जो होम तिस करके शुद्ध होता है परंतु शिष्टों के भोजन योग्य जो मांस तिसके भक्षण विषे एह जानणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ९३

जो वसिष्ठजीने कहा है सो कहते हैं ब्रह्मचारीति ब्रह्मचारी जेकर शिष्टोंके योग्य जो मांस तिसनू खावे तद वारां १२ रात्रीका कच्छू व्रत कर्के शेषव्रतनू समाप्त करे सोभी एह व्याधिरहितको जान एा और व्याधियुक्तकों मधु मांस भक्षणमें दोष नहिहै सोई वसिष्ठ एह कहता है कि सो जेकर व्याधियुक्तहोवे तद गुरुका जूठा मांस औषधीवास्ते सागही खालेवे क्योंकि मधुमांसादि जो हैं सो रोगिपुरुषको स्वीकार करणे योग्यहैं इसमें जो सर्वग्रहणहै सो मांसलशुनादि जो अभक्ष्य तिसके ग्रहण वास्तेहै गुरुका जूठा भोजनकर्के वा वचनकर्के जानणाहै ॥ इच्छातें विना प्राप्तहोया जो मधु तिसके भक्षणमें दोष नहिहै एह वसिष्ठजीने कहा है सो कहीदा है अकामेति इच्छातें विना प्राप्तहोयाक्या भक्षण कीता जो मखार वाजसनेयीशाखावाले ब्रह्मचारीकों तिसके भक्षणमें दोष नहिहै एहजाणीदा है ॥ इसकों स्पष्टकरते हैं कि वाजसनेयी यजुः शाखाका भेदहै ॥ अब ब्रह्मचर्यके अधिकारविषे पैठीनसिजीकहते हैं माध्विति ब्रह्मचारी मधुमांसके भक्षण विषे त्रयरात्रि

यदाहवसिष्ठः ब्रह्मचारीचेन्मांसमश्रीयाच्छिष्टभोजनीयंकृच्छ्रंद्वादशरात्रंच
रित्वाव्रतशेषंसमापयेदिति एतच्चाव्याधितस्य व्याधितस्यतुमधुमांसभक्ष
णेपि नदोष इत्याह सएव संचेद्व्याधीयतकामंगुरोरुच्छिष्टंभेपजार्थसर्वप्रा
श्रीयादिति मधुमांसाद्यप्रतिपिद्वम् सर्वग्रहणंमांसलशुनाद्यभक्ष्यमात्रग्र
हणार्थम् गुरोरुच्छिष्टमपिभोजनेनवचनेनवाज्ञेयम् अकामोपनतमधुभक्षणे
नदोष इत्याहसएव अकामोपपन्नंमधुवाजसनेयकेनदुप्यतीतिविज्ञायते ।
वाजसनेयंयजुःशाखान्तरम् ॥ ब्रह्मचर्याधिकारेपैठीनासिः मधुमांसप्राशने
त्रिरात्रंपुनरुपनयनंच प्राजापत्यासमर्थविषयमेतत् ॥ मनुः ॥ मासिकान्नं
तुयोश्रीयादसमावृत्तकोद्विजः सत्रीएयहान्युपरभेदकाहंचोदकेवसत् १ ॥
मासिकमत्रप्रतिमासंमृताहनियद्विहितंतद्राह्यम् नपुनरमानवम्याम् सूति
कान्ननवश्राद्धमासिकान्नंतथैवच ब्रह्मचारितुयोश्रीयात्त्रिरात्रेणसशुद्ध्य
तीति संवत्तवाक्येन नवश्राद्धसाहचर्यात् ॥ वौधाचनः ॥ संचेद्व्याधीयत
कामंगुरोरुच्छिष्टंभेपजार्थसर्वमश्रीयात्

उपवासकरे फेर यज्ञोपवीतपावे ॥ एह प्राजापत्य व्रत के असमर्थ विषयविषे जानणा अर्थीनू जिससे प्राजापत्यनाहि होसका सो इसव्रतको करे ॥ मनुजीकहते हैं मासिकेति जो ब्राह्मण ब्रह्म चारी मासिकान्न भक्षणकरे सो त्रयदिन उपवासकरे और एकदिनजलविषे बाप्त करे ता शुद्धहो ताहै १ इस विषे मासिक शब्दका अर्थ कहते हैं महीने महीने मृत होए पुरुषके दिन विषे जो विधान किया है सो ग्रहण करणा योग्यहै ॥ अबइसीमेंहेतु कहते हैं नेति फेर अमावास्या नवमीविषे जो श्राद्ध है तिसकोभी मासिक कहते हैं परंतुसो नहि ग्रहण करणा क्योंकि सृत्तिकान्न और नवश्राद्ध और मासिकान्न इनांको जो ब्रह्मचारीभक्षण करे सोत्रयरात्रि कर्के शुद्धहोनाहै एह संवत्तके वाक्य कर्के नव श्राद्धकी साहचर्यताहोणेतें वौधाचनजीकहते हैं सइति सोब्रह्मचारी जेकर पाडी कर्के युक्तहोवे तद अतिशय कर्के गुरुकाजूठा औषधीवास्ते संपूर्ण खालेवे

९४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

येनेति जिसककें इच्छाहोवेतिसीककें चिकित्सा करे सो जद रोगरहित होवे तदउठ ककें मूर्य का उपस्थान करे हंसः शुचिपत् इस ऋचाककें ॥ इसीमें वृद्धयाज्ञवल्क्य जी कहतेहैं ब्रह्मचारी ति ब्रह्मचारी व्रती और विधवा ब्राह्मणी एह मधु मांस भक्षण करें तद त्रयरात्रिके व्रत ककें शुद्ध होतेहैं ॥ यमजीभी कहतेहैं मध्विति जो ब्रह्मचारी मधु मांस भक्षण करे और श्राद्धका वा सूतक का अन्न खावे तद प्राजापत्य छच्छ्र व्रत ककें शेष व्रतनूं समाप्तकरे १ एह जेकर उलटी न होवे तिसमें जानणा और उलटीविषे लघुकृच्छ्र व्रतकरे १ शातातपजीकहतेहैं सूतकइतिजेकर सूतक

येनेच्छेत्तेनविचिकित्सेत् सयदाऽगदोभवति तदेत्थायादित्यमुपतिष्ठेदंसः शुचिपदित्येतयर्चा । अगदेरोगरहितः । वृद्धयाज्ञवल्क्यः । ब्रह्मचारीव्रतीचै वब्राह्मणीविधवाचया अशित्वामधुमांसानित्रिरात्रेणैवशुध्यतीति १ । यमः म धुमांसंचयोश्नीयाच्छ्राद्धंसूतकमेवच प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रव्रतशेषंसमापयेत् १ छर्दनाभावएतत् छर्दनेतुलघुकृच्छ्रम् । शातातपः । सूतकेतुयदाविप्रोब्रह्मचारी विशेषतः पिवेत्पानीयमज्ञानात्समश्नीयात्स्पृशेत्तवा १ पानीयपानेकुर्वीतपंचगव्यस्यभक्षणम् त्रिरात्रंभोजनेप्रोक्तंस्पृष्ट्वास्नानंविधीयतइति २ ॥ विष्णुः ब्रह्मचार्यामश्राद्धान्नंप्राशनीयाद्ज्ञानदुर्वलः पराकेनविशुद्धिःस्यान्निष्कृतिर्नान्यथाभवेत् १ उच्छिष्टंक्षत्रियविशोःशूद्रोच्छिष्टमथापिवा ब्रह्मचारीयदाश्नीयात्तस्यशुद्धिःकथंभवेत् २ स्नानंतथैवकृत्वातुगायत्र्यष्टशतंजपेत्

विषे ब्राह्मण ब्रह्मचारी विशेषतें पानी पीवे अज्ञानतें भोजनकरे वा स्पर्शकरे १ तद पानी पीने विषे पंचगव्य का भक्षण और भोजन विषे त्रयरात्रि उपवास करे और स्पर्श विषे स्नान करे तद शुद्ध होताहै १ अब विष्णुजी कहतेहैं ब्रह्मचारीति जो ज्ञान रहित ब्रह्मचारी श्राद्धका कच्चा अन्न खावे तद वागं १२ दिनका जो पराक व्रत तिस ककें शुद्धि होताहै और किसे ककें भी शुद्धि नाहैं होतीहै १ उच्छिष्टमिति क्षत्री वैश्य शूद्र इनका जूठा अन्न ब्रह्मचारी जेकर खावे तिसकी शुद्धि कैसे होवे ॥ २ ॥ उत्तर तिसीकालमें स्नान ककें अष्टोत्तर शत गायत्रीका जपकरे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ९६

उपोष्येति और वारां दिनका उपवास व्रत करे ऐसे पृथक् २ क्या जुदै जुदै तीनोंकी शुद्धि कही है इसी प्रकार गृहस्थीको पाद उन व्रत करणा योग्य है ३ इसको स्पष्ट करते हैं ब्राह्मणेति ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांको कमकर्के क्षत्री वैश्य शूद्र के उच्छिष्ट प्राशनमें एह जानणा अर्थात् ब्राह्मणको क्षत्रीके उच्छिष्ट भक्षणमें और क्षत्रीको वैश्यके और वैश्यको शूद्रके एह प्रा० और एही व्रत ब्राह्मणको क्षत्री वैश्य शूद्रके उच्छिष्ट भक्षणमें और क्षत्रीको वैश्य शूद्रके जूठा भक्षण करणेंमें और वैश्यको शूद्रका जूठा भक्षण करणें में कुछक अधिक करणा योग्य है ॥ देवलजी कहते हैं मध्विति मधुमांस और सूतकका अन्न जो व्रती भक्षण करे तद ग्रयरात्रि उपवासव्रत कर्के एकरात्रिजलविपें वास करे १ इसकर्के रात्रिविपें जलमें वास विधाना किया है ॥ और मनुनें दिनविपें जलवास किया है तिसमें विकल्प जानणा ॥ और जेकर

उपोष्यद्वादशदिनमेवंशुद्धिः पृथक् पृथक् एवमेव गृहस्थस्य पादो नमिति निश्चयः ३ ब्राह्मणक्षत्रियविशायथाक्रमं क्षत्रियवैश्यशूद्रोच्छिष्टप्राशने एतत् एतच्च ब्राह्मणस्य क्षत्रियवैश्यशूद्रोच्छिष्टं क्षत्रियस्य वैश्यशूद्रोच्छिष्टं वैश्यस्य शूद्रोच्छिष्टमश्नतः किंचिदधिकं कल्प्यम् । देवलः । मधुमांसं सूतकान्नं यश्चाश्नाति व्रती क्वचित् त्रिरात्रोपोषितः सम्यग्रात्रिमेकांजले वसेत् १ अनेन रात्रौ जलवासो विहितः मनुना त्वहनीत्युक्तं ततो विकल्पः दोषभूयस्त्वेतु समुच्चयः ब्रह्मचारिप्रसंगाद्गुरुविषयं किंचिदाह । कच्छूत्रयंगुरुः कुर्यात्प्रहितो म्रियते यदि । ब्रह्मचारी गुरुणा प्रहितः प्रेषितः शंक्यमानार्थं विषये यदि म्रियते तदा गुरुः प्राजापत्यसहितांस्त्रीन्कच्छूत्रानाचरेत् । शंक्यमानविषयस्तु चौरोगव्याघ्रादिना सांद्रतरांधकाराकुलितानि शीथावसरादिना भवति अत्र पूर्ववाक्ये

ब्रह्मचारीति शब्दोऽनुवर्तते

दोषवहुत होवे तां दिनरात्रि जलमें वास करणा ॥ अब ब्रह्मचारीके प्रसंगमें गुरुविषय कुछक प्रायश्चित्त कहते हैं कच्छूति जेकर ब्रह्मचारी गुरु कर्के प्रेरित कीता होया मृत हो जावे तद गुरु त्रयकच्छू व्रत करे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं ब्रह्मचारी गुरु कर्के भेजया होया शंक्यमान विषयविपें जेकर मृत होजावे तद गुरु प्राजापत्य सहित त्रय कच्छू व्रत करे (प्रण) शंक्यमानविषय कौणसा है ॥ (उत्तर) चोर सर्प व्याघ्रादिकर्के बडेगाडे अंधकार कर्के युक्त अंधरात्र में किसी स्थानमें जाणा इत्यादि करके होता है इसविषे पूर्ववाक्य तें ब्रह्मचारी एह शब्द अनुवर्त्तन करीदा है ॥

१६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अतइति इसीकारणतें ब्रह्मचारिकें प्रायश्चित्तके प्रसंगतें गुरुको दुःख देणे विषे भी याज्ञवल्क्यनैं प्रायश्चित्त दिखाईदाहै प्रतीति गुरु का प्रतिकूल कर्के गुरु को प्रसन्न करे तां शुद्ध होताहै अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं गुरुको प्रतिकूल क्या दुःख दे कर्के गुरुनूं प्रसन्न कर्के हि शुद्ध होताहै ॥ इसी में वसिष्ठ जी कहते हैं गुरुके साथ झूठ कह कर्के फेर उसी झूठ को सच्चा करे तिसमें सचैल स्नान कर्के और गुरु नूं प्रसन्न करे तद शुद्ध होताहै एह जाणीदाहै ॥ एह अज्ञानतें जो एक बार थोड़ा अपराध तिसविषे जानणा ॥ अतिशयतें हठ कर्के ज्ञान पूर्वक जो गुरुको दुःख देणा तिस विषे वारां १२ वर्ष का जो ब्रह्महत्याका व्रत तिसकी प्राप्ति वास्ते क याहै मनुनैं एह समग्र श्लोकहै (उक्त्वाचैवानृतंसाक्ष्येप्रतिरुध्यगुरुंतथा अपहृत्यचनिःक्षेपंकृत्वाच

अतएव ब्रह्मचारिप्रायश्चित्ते प्रकृते प्रसंगाद्गुरोःप्रातिकूल्येऽपि याज्ञ वल्क्येनप्रायश्चित्तमुपादिश्यते ॥ प्रतिकूलंगुरोःकृत्वाप्रसाद्यैवविशुद्ध्यतिगु रोःप्रतिकूलंदुःखकरं कृत्वा गुरुं प्रसाद्य व्यपगतकोपं कृत्वा विशुद्ध्यति विपापोभवति । अत्रवसिष्ठः ॥ गुरोश्चालीकनिर्वधेसचैलंस्नानतोगुरुंप्रसा दयेत्पूतोभवतीतिविज्ञायते । एतदमतिपूर्वकंसकृदल्पापराधविषयम् ॥ अ त्यंतसानुबंधमतिपूर्वकमहाऽपराधेतु गुरुप्रातिकूल्ये द्वादशवार्षिकब्रह्मह व्रतप्राप्त्यर्थमुक्तंमनुना प्रतिरुध्यगुरुंतथेति यद्वापितृविषयमानवं वासि ष्ठयाज्ञवल्क्यीयंचौपचारिकगुरुविषयम् ॥ मानवंब्रह्महत्याप्रकरणेद्रष्टव्य म् ॥ विष्णुः ॥ समुत्कर्षानृतेगुरोश्चालीकनिर्वधे तदाकारणेच मासंपयसा वर्तते तस्यगुरोराकारणेआव्हानेचेत्यर्थः स्वल्पाभ्यासविषयमिदम् ॥ इ

तिब्रह्मचारिव्रतलोपेप्रायश्चित्तम् ॥ १८ ॥ *

स्त्रीमुहद्वयम् १) कोइक कहते हैं एह जो मनुजीका कथन कीत्ता होया वारां वर्ष का व्रत सों पिना रूप जो गुरुहै तिसविषे जानणा बहुत प्रायश्चित्त होणेंतें । और वसिष्ठ याज्ञवल्क्यजीका वचन पिनातें पिना और गुरुविषे जानणा क्योंकि थोड़ा प्रायश्चित्तहोणेंतें ॥ मनु जीकावचन ब्रह्महत्या प्रकरण विषे देखणें योग्यहै ॥ अब विष्णुजीकहतेहैं समिति गुरुके साथ अपणी बड याई वास्ते झूठ बोलणें विषे और किसी बातका झूठाहठ करणेंविषे और गुरुके बुलाणे विषे अथवा गुरुके साथ कूलकामहोये तदआपगुरुपासनहिजाणा किंतु गुरुको अपने पास बुलाणा एह बडा दोरहै इसवास्ते प्रायश्चित्तहै कि महीना पर्यंत जल पान करे तद शुद्ध होताहै एह थोड़े अभ्यास विषे जानणा एह ब्रह्मचारिके व्रत लोपका प्रायश्चित्त समाप्तहुआ ॥ ८ ॥ *

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ ९७

सत्ते उपरंत तला वगीचा पुत्र स्त्री इनका वेचणा पोछे किहाहै तिस विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं
 वाँकि जो मनुजी का किहा होयाव्रत है(एतदेवव्रतं कुंभरूपपातकिनाद्विजा)इत्यादि और पाज्ञ
 लक्यका किहा होया जो है(उपपातकशुद्धिः स्यात्)इत्यादि उपपातकोंके जो सामान्य प्रायश्चित्त
 चांद्रायणादि व्रत सो जाति शक्ति गुणकी अपेक्षा कर्के देखेणें योग्यहैं अर्थात् जैसी जाति
 गृहणादि होवे वा जै भी सामर्थ्य होवे वा जैसा गुण होवे तैसाहि प्रायश्चित्त करणा ॥ आपत्ति
 गलमें इच्छातें विना वेचणेंविषे शंखजीकहतेहैं देवेति देवताका मंदिर और जिस घरविषे यज्ञ
 होवे तिसको वेच कर्के और वगीचा वा छोटी वगीची और सभा स्थान वा धर्मशाला तला
 और वनादि वा पुत्र पुत्र इनांको वेचकर्के तत कच्छव्रतकरे तद शुद्ध होताहै ॥ इसीमे पराशर
 भी कहतेहैं विक्रीयेति कन्या और गौको वेचकर्के कच्छ सांतपन व्रत करे ॥ इच्छातें वेचणें
 विषे चतुर्विंशतिमतेमें कहतेहैं नारीणामिति स्त्रीको वेच कर्के चांद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै
 और पुरुषके वेचण विषे दूणा व्रत बुद्धिमानोंने किहाहै १ अवइसमें जो पैठानसि जीनेकियाहै

अनंतरं तडागारामसुतदारविक्रयइत्युक्तं तत्र पूर्वोक्तमनुयोगीश्वरोक्तोप
 पातकसामान्यप्रायश्चित्तंचांद्रायणादि जातिशक्तिगुणापेक्षया द्रष्टव्यम्
 आपद्यकामतोविक्रये शंखः देवगृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपु
 ण्यसेतुसुतविक्रयंकृत्वातप्तकच्छंचरेदिति । पराशरोपि विक्रीयकन्यकांगां
 चकच्छंसांतपनंचरेदिति । कामतौविक्रये चतुर्विंशतिमते । नारीणांविक्रयंकृ
 त्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् द्विगुणंपुरुषस्यैवव्रतमाहुर्मनीषिण इति १ यत्तुपैठान
 सिः । आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृतसुतविक्रये त्रिपवणस्त्राय्यधःशा
 र्याचतुर्थकालाहारः संवत्सरेणपूतोभवतीति गुरु प्रायश्चित्तमुक्तवान् तदेक
 पुत्रविषयम् इतितडागारामादिप्रायश्चित्तम् २२* अथब्रात्यता । ब्रात्यइ
 तिब्रातशब्दादिवार्थयप्रत्ययेननिष्पन्नः यद्वा ब्रातमर्हतीति ब्रातनीचकर्म
 दंडादिभ्योयइति ब्रात्यःशरीरायासजीवी व्याधादिक अष्टाविंशतिसंस्का
 रहीनोभ्रष्टगायत्रीकः षोडशवर्षादूर्ध्वमप्यकृतव्रतबंधादानाचकर्त्ताद्विजो
 ब्रात्य इत्यमरटीकाराजमुकुटी ॥

सो कहतेहैं आरामेति वगीची तला झुवचा वाउली पुण्य पुत्र इनके वेचणें विषे बिकाल स्नान
 करे और पृथ्वी विषे शयन करे चौथे पहर भोजन करे तद वपेकर्के शुद्ध होताहै जो एह बहुत
 प्रायश्चित्तकियाहै सो एकपुत्रविषे जानणा । एह तलाआदि चारवस्तुके वेचणका प्रायश्चित्तसमान
 होया २२ * अब ब्रात्यताका प्रायश्चित्तकहणें वास्ते पहले तिसशब्दका अर्थकहतेहैं ब्रात्यइति
 ब्रातशब्दतें परे सादृश्य अर्थमें यप्रत्यय आया तद ब्रात्य सिद्ध होया १ दूसरा अर्थ कहतेहैं ब्रात
 जोहै नीचकर्म तिसके योग्यजोहोवे(दंडादिभ्योय)इससूत्रकर्के यप्रत्यय आया तद ब्रात्यसिद्ध होया
 सो किसका नामहै कि शरीरके आयासकर्के जीविका करेवाले जो भारवाहकहै अठार्ह २८
 संस्कारोंतेंहीन और गायत्रीभ्रष्ट और सोला १६ वर्षतेंउपरंतनहिहोया यज्ञोपवीत जिसकाऔरदा
 नादिके न करेवाला जो द्विजतिसकानामब्रात्यहै एह अमरकोशकी राजमुकुटीटीकामें किहाहै

१८ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

(ब्रातच्छजोरस्त्रियाम्) एह जो कौमुदीका सूत्र है इसविषे बहुत जानिवाले और नहिंहे नियमकर्के वृत्ति जिनांकी अर्थात् कदी भारका कम्मकरणा कदी लकड़ीका वा चर्मका कम्मकरणा और शरीरकर्के जीविका करणवाले इनका जो समूह है तिसको ब्रात कहते हैं ॥ तैसेहि ब्रातेन जीवति इससूत्रविषे ब्रात क्या शरीरके आयासकर्के जीविका करता है बुद्धिकर्के जीविका ना करे एह अर्थ है ॥ ब्रातेन जीवति इस सूत्र विषे महाभाष्य का भी प्रमाण कहते हैं कि ब्रातमित्यादिना । अब ब्रात्यां को मनु जी कहते हैं द्विजातय इति जो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांते समान जाति को स्त्री विषे व्रतग्रहित उत्पन्न होवें और गायत्रीसे भट होवें तिनका नाम ब्रात्य है १ ब्राह्मण तें तुल्यजातिकी स्त्री अर्थात् ब्राह्मणी तिस विषे जो उत्पन्न होवे तिसका नाम भूज कंटक है तैसे आवंत्य वाढधान पुष्पध शैख एह एककेहि देश भेद कर्के प्रसिद्ध नाम हैं १ झह

ब्रातच्छजोरस्त्रियामितिसूत्रे कौमुद्यांतु नानाजातीया अनियतवृत्तयः ॥ उत्सेधजीविनः संघा ब्राता इति । तथा ब्रातेन जीवतीति सूत्रे ब्रातेन शरीराया सेन जीवति न तु बुद्धिवैभवेनेति । ब्रातेन जीवतीति सूत्रे महाभाष्यम् किं ब्रातं नाम नानाजातीया अनियतवृत्तय उत्सेधजीविनः संघा ब्राता इति ॥ ब्रात्यानाहमनुः ॥ द्विजातयः सवर्णासु जनयंत्य व्रतांस्तु यान् तान् सावित्री परि भ्रष्टान् ब्रात्यानेति विनिर्दिशेत् १ ब्रात्या तु जायते विप्रात्पापात्मा भूर्जकंटकः आवंत्य वाढधानौ च पुष्पधः शैख एव च १ झह्लोमल्लश्च राजन्या द्रात्या निच्छि विरेव च नटश्च करणश्चैव खसो द्रविण एव च ॥ २ वैश्या तु जायते ब्रात्यात्सुध न्वाचार्य एव च कारुपश्च विजन्मा च मैत्रः सात्वत एव च ॥ ३ ॥ तपोवीजप्रभा वैस्तु ते गच्छति युगे युगे उत्कर्षं चापकर्षं च मनुष्ये प्विह जन्मतः ॥ ४ ॥ शन कैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥ ५ पौंड्रकाश्चौडद्रविडाः कां वोजायवनाः शकाः पारदाः पल्हवाश्चानाः

किराता दरदाः खसाः ६ ॥

इति ब्रात्य क्षत्रियते समानजातिकी स्त्रीविषे उत्पन्न होवे तिसके नाम झह्ल मल्ल निच्छि वि नट करण खस द्रविड हैं एहभी एककेहि नाम हैं २ वैश्यादिति ब्रात्यवैश्यते समान जातिकी स्त्री विषे जो उत्पन्न होवे तिसके नाम सुधन्वाचार्य कारूप विजन्म मैत्र सात्वत हैं एहभी एककेहि नाम हैं ३ तप इति तपके और वीजके प्रभाव कर्के पूर्वोक्त जो हैं सो इस जन्मते मनुष्यों विषे चौथी पीढ़ी मै जाकर उत्कर्ष और अपकर्ष नू प्राप्त होते हैं अर्थात् ब्रात्य ब्राह्मणादि सत्कर्म करते रहें तद चौथी पीढ़ीमें जाकर शुद्ध होते हैं और नीचकर्मकरें तद बहुत नीच होजाते हैं ४ अब इसीमे हेतु कहते हैं शन कैरिति मंद मंद क्रियाका लोप होणें और ब्राह्मणके अदर्शनसे एह क्षत्रियजाति लोक विषे शुद्ध भाव नू प्राप्त होगई अर्थात् क्षत्रिलोक शत्रुआदि के भयते देशांतर मे जाकर जाति भ्रष्ट होगए ५ पौंड्रक चौड द्रविड कां वोज यवन शक पारद पल्हव चीन किरात दरद खस ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ९९

खेति ब्राह्मणक्षत्रि वैश्य शूद्र इनांते उत्पन्नहोई जो बाहर लीयां जातियां कायस्थ कौलीमाली
त्यादि सो म्लेच्छ भाषाकर्के युक्त अथवा श्रेष्ठ भाषाकर्के युक्त एह संपूर्ण दस्यु कहातेहैं ७ अव
सीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें कहतेहैं ब्रात्येत्यादि ॥ २ ॥ ३ ॥ अव शूद्र कमला करविपे कह
हैं भूर्जकंटकादिति भूर्जकंटकर्के आवन्त्य होआ और आवन्त्यंत जो उत्पन्न होया सो
वाढधानहै और वाढधानते जो उत्पन्न होया सो पुष्पधहै इत्यादि जानणे ॥ इसीप्रकार
त्रि वैश्य ब्रात्य तें जो उत्पन्न होवें तिनां विपे भी क्रम कर्के नाम भेद जानणे योग्य हैं

मुखवाहूरुपजानांयालोकेजातयोवहिः म्लेच्छवाचश्चार्थवाचःसर्वेतेदस्यवः
स्मृताः ७ ब्रात्येत्यादि ॥ ब्रात्याद्ब्राह्मणात्सवर्णास्वित्यनुवृत्तेः ब्राह्मण्यां
पापस्वभावोभूर्जकंटकोजायते तथा आवन्त्यवाढधानपुष्पधशैखाजायंते
एकस्यचैतानिदेशभेदप्रसिद्धानिनामानि ॥ क्षत्रियाद्ब्रात्यात्सवर्णायांशुल्लम
ल्लनिच्छिविनटकरणखसद्रविडास्याजायंते एतान्यप्येकस्यैवनामानि २
वैश्यात्पुनर्ब्रात्यात्सवर्णायांसुधन्वाचार्यकारूपविजन्ममैत्रसात्वतास्याजा
यंते ॥ एकस्यचैतान्यपिनामानि ३ शूद्रकमलाकरेतु भूर्जकंटकादावन्त्यः
आवन्त्याद्वाढधानो वाढधानात्पुष्पधइत्यादि । एवमेवक्षत्रियवैश्यब्रात्यो
त्पन्नविषयेक्रमेणनामभेदएवोक्तः ॥ अथब्रात्यप्रायश्चित्तम् ॥ तत्रयाज्ञ
वल्क्यः ॥ उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचान्द्रायणेनवा ॥ पयसावापिमासे
नपराकेणाथवापुनरिति १ एवं मासंपंचगव्याशनेन चान्द्रायणेन मासं
ययोव्रतेन पराकेणवाशुद्धिरित्यर्थः ॥ एतच्चाकामकारेशक्त्यपेक्षयाविक
ल्पितं व्रतचतुष्टयं द्रष्टव्यमितिमिताक्षरा ॥ कामकारेचाहमनुः ॥ एतदेवव्र
तंकुर्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्जशुद्ध्यर्थंचान्द्रायणमथापिवेति १ ॥

अव ब्रात्यका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विपे याज्ञवल्क्यजीका वचन है उपेति इसतरां गोवध
विपे कहा जो व्रतप्रकार मास पंचगव्याशनादि तिस कर्के और जो ब्रात्यतादि उपपातक ति
नांकी शुद्धि कहीहै वा चान्द्रायण कर्के वा महीनेका जो पयोव्रत तिस कर्के वा पराक व्रत
कर्के शुद्धि कही है १ एह अज्ञानतें करण वाले विपे शक्तिकी अपेक्षा कर्के विकल्पित चार
व्रत जानणें योग्यहैं एह मिताक्षरामें कहाहै ॥ इच्छातें करण वाले विपे मनुजी कहतेहैं एतदिति
उपपातकी जो द्विज हैं सो अवकीर्णिकों त्यागकर्के अपना शुद्धिवागते इसी त्रैमासिक व्रतकों
करें अथवा चान्द्रायणकरें १

१०० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

इसी त्रयमहीनेके व्रतमें चौथे पहर विषे अक्षार लवण विना परिमित यवोंका पान^१ अक्षारलवण और स्मृतिमें कहते हैं ॥ गोक्षीरमिति गौकादुग्ध और गौका घृ मुंग तिल यव समुद्रकानल सिन्धुलूण इतने अक्षार लवण^२ १ एह अतिदेशते प्राप्त हो^३ । पंचक अर्थात् पीछे इसको कह चुकेहैं परन्तु इसमें भी इसका प्रयोजनथा इस वास्ते किहाहै इसीमें मनुजी विशेष कहतेहैं येषामिति जिनों द्विजोंने गायत्री यथाविधि कर्के गुरु पास नहि पढी तिनानूं त्रय कच्छू व्रत करवा कर्के फेर यथाविधि कर्के यज्ञोपवीत पावे १ असमर्थके अर्थ कहतेहैं प्रति प्राजापत्य त्रय विषे गौआं त्रय देणीयां परंतु एह जो प्राजापत्यत्रय रूप व्रतकिहाहै सो एह पिता रहित जो पुरुष है तिसके गायत्री पात विषे जानणा और जो आलस्यादि कर्के

एतदेवत्रिमासंचतुर्थकालेऽक्षारलवणमितयवपानरूपंकुर्युः ॥ अक्षारलवणं स्मृत्यंतरे ॥ गोक्षीरगोघृतंचैवधान्यमुद्गतिलायवाः सामुद्रसैन्धवंचैवमेते ह्यक्षारलवणकाइति ॥ १ ॥ एतच्चातिदेशप्राप्तं व्रतपंचकम् ॥ विशेषमप्याहमनुः ॥ येषां द्विजानां सावित्रीनानूच्येत यथाविधि तांश्चारयित्वा त्रीन्कृच्छ्रान्यथाविध्युपनाययेत् १ प्राजापत्यत्रयेधेनुत्रयम् एतत्पितृरहितस्य सावित्रीपातेज्ञेयम् आलस्यानवधानादिना सावित्रीपाते तु याज्ञवल्क्यः ॥ आपोऽष्टादशान्विंशच्चतुर्विंशच्च वत्सरात् ब्रह्मक्षत्रविशांकालौपनायनिकः परः १ अत्रयमः ॥ सावित्रीपतितायस्य दशवर्षाणि पंचच सशिखं वपनं कृत्वा व्रतं कुर्यात्समाहितः १ एकविंशतिरात्रं चपिवेत्प्रसृतियावकम् हविष्यं भोजयेच्चैव ब्राह्मणान्सप्तपंचवाततोयावकशुद्धस्य तस्यापनयनं स्मृतम् २

गायत्री न पढे तिस विषे याज्ञवल्क्य जी कहते हैं आपोऽष्टादशदिति सोलां १६ वर्ष तक और वाई २२ वर्ष तक और चौबी २४ वर्ष तक ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांका एह उपनयन काल है इसते उपरंत वात्य होताहै अर्थात् ब्राह्मणकों सोलां वर्ष तक और क्षत्रियों वाई २२ वर्ष तक और वैश्यकों २४ चौबी वर्ष तक यज्ञोपवीतका काल है १ इस विषे मनुजी कहतेहैं सावित्रीति जिस पुरुषकी गायत्री पंद्रां १५ वर्ष तक पतित होवे सो पुरुष सहित शिखाके मुंडन करवाकर समाधान होया २ व्रत नूं करे १ और ईकी २१ रात्रि तक यवोंका काढा लप्प मात्र प्रतिदिन पानकरे और सप्त ७ वा पंच ५ ब्राह्मणनूं हविष्य जो तिल मुंग यव तण्डुल इत्यादि इनांका भोजन क वांचे तिसते उपरंत यावक कर्के शुद्ध जो पुरुष तिसको यज्ञो पवीत किहाहै २ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १०१

वशिष्ठ जी भी कहतेहैं पतिनेति पतित है गायत्री जिस पुरुषकी सो उद्दालक व्रत क्या शि
शुचांद्रायण व्रतकरे दो २ महीने यवोंका काढापीवे वा महीना रोज जल पानकरे वा एक
पक्ष आमिक्षा क्या वित्तडयादा दुग्ध तिसकके रहे जो गर्म दुधविषें दहीपाके वणे सो आमिक्षा
है वा अठ ८ रात्रि घृत पान करे वा छे ६ रात्रि अयाचित क्या किससे भोजनकी याचना
न करे और प्रय रात्रि जल पान करे वा एक दिनरात्र उपवास करे वा अश्वमेध यज्ञ का जो
यज्ञांतस्नान तिसनूं करे अथवा ब्राह्मस्तोम नाम यज्ञकरे ॥ इसमें व्यवस्था कहतेहैं मिताक्षराविषें
यस्येति जिस पुरुषको यज्ञोपवीत विषें आपत्ति होणें कर्क पीछे जो काल कहेहैं तिनका उलंघन
होजावे तद तिसपुरुष को व्रतो विघ्नो एक व्रत शक्ति की अपेक्षा कर्क करणे योग्यहै ॥ और
आपत्ति विना जो कालका उलंघन तिसविषे मनुजी का कथन कीताहोया त्रयमहीने का व्रत

वशिष्ठोपि ॥ पतितसावित्रीकउद्दालकव्रतंचरेत् । द्वौमासौयावकेन मासंप
यसा पक्षमामिक्षया अष्टरात्रंघृतेन पट्प्रात्रमयाचितेन त्रिरात्रमब्भक्षाऽहो
रात्रमुपवसेदश्वमेधावभृथंगच्छेत् ब्राह्मस्तोमेनवायजेदिति अत्रव्यवस्था
मिताक्षरायाम् यस्योपनयनेआपद्भावेनतत्कालातिक्रमस्तस्यव्रतानामन्य
तमंशक्त्यपेक्षयाभवति ॥ अनापद्यतिक्रमेतुमानवत्रैमासिकम् पंचदशवर्षा
दूर्ध्वमपिकियत्कालातिक्रमेतूद्दालकव्रतं ब्राह्मस्तोमोवेति येषांतुपित्रादयो
प्यनुपनीतास्तेपामापस्तंवोक्तम् ॥ यस्यपितृपितामहावनुपनीतोस्यातां
तस्यसंवत्सरंत्रैविद्यकंब्रह्मचर्यम् ॥ यस्यप्रपितामहादेर्नानुस्मर्यते उपनयनं
तस्यद्वादशवर्षाणित्रैविद्यकंब्रह्मचर्यमिति ॥ तथाचापस्तम्बः ॥ अतिक्रां
तेसावित्र्याःकालेऋतुंत्रैविद्यकंब्रह्मचर्यंचरेदथोपनयनम्

जानणा और पंद्रां १५ वर्षते उपरंत भी कुलुक कालके उलंघन विषे भी उद्दालक व्रत करे वा ब्रा
ह्मस्तोम नाम यज्ञ करे । जिनांपुरुषोंके पिता पितामह प्रपितामह भी यज्ञोपवीतसे रहित होण
तिनांको आपस्तंव जीका कथन कीता होया प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ॥ यस्येति जिसके पिता
पितामह दोनो अनुपनीत होवे अर्थात् दोनोंका यज्ञोपवीत संस्कार नहि होया होवे तिसको
वर्षमात्र त्रैविद्यक ब्रह्मचर्यहै अर्थात् ब्रह्मचर्य धारकके ऋग्यजुःसाम एह जो वेदत्रय हैं इनको वर्ष
तक अध्ययनकरे ॥ जिसके और प्रपितामहादिकायज्ञोपवीत नहि होयाहोवे तिसको बारों वर्षका
त्रैविद्यक ब्रह्मचर्य है ॥ सोई आपस्तंव जी भी कहतेहैं अतिक्रांतइति गायत्रीकालके व्यतीत
होयां २ ऋतुया दो २ महीने का त्रैविद्यक ब्रह्मचर्य करे इसते उपरंत यज्ञोपवीत पावे

१०२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

तिसते उपरंत वष भर जलका स्पर्श करे इसका अर्थ अगेभी आवेगा फेर सों पढाणे योग्य है जिसके पिता पितामह यज्ञोपवीत से रहित हों सों तेनो पुत्र पिता पितामह ब्रह्महत्या करण वालेके तुल्य हैं तिनोका अभिगमन क्या सन्मुख आउना और भोजन विवाह अतिशय कर्के वर्जित है और जेकर ओही प्रायश्चित्तकी इच्छा करें तव वो प्रथम अतिक्रमविपेदो २ महीनेका ब्रह्मचर्य करे और वषमे यज्ञोपवीत करे फेर उदकोपस्पर्शकर्म करें और प्रतिपुरुष क्या पुरुषपुरुषप्रति संख्या कर्के जितने वष तक यज्ञोपवीत रहित हों (पवित्रणांतरसेन) इस मंत्र कर्के वा सत्ता व्याहृतियों कर्के पढाणे योग्य है और जिसके प्रपितामहादिका यज्ञोपवीत नहिं हाया सो श्मशानसंभूत कहें हैं अर्थात् श्मशानकी न्याई अपवित्र हैं और तिनका जो अभ्यागमन क्या संमुख आउना और भोजन विवाह इनका अतिशय कर्के त्यागे और जेकर सो प्रायश्चित्तकी इच्छा करें तद वागं १२ वष ब्रह्मचर्य

ततः संवत्सरमुदकोपस्पर्शनमथाध्याप्यः । अथ यस्य पितृपितामहावनुपनीतौ स्यातां ते ब्रह्महर्षस्तुताः तेषामभिगमनं भोजनं विवाहमिति वर्जयेत् ते पामिच्छतां प्रायश्चित्तम् ॥ यथा ॥ प्रथमेतिक्रमे ऋतुरेव संवत्सरे चोपनयनम् तत्रादकोपस्पर्शनम् ॥ प्रतिपुरुषं संख्याय संवत्सरान्यावतोऽनुपनीताः स्युः पवित्रेणांतरसेनेत्यनेन सप्तभिर्व्याहृतिभिरेव वाध्याप्यः । यस्य प्रपितामहादेर्नानुस्मर्यंत उपनयनम् ते श्मशानसंभूतास्तेषामभ्यागमनं भोजनं विवाहमिति वर्जयेत् तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तं द्वादशवर्षाणि ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनम् तत उदकोपस्पर्शनम् ॥ पावमान्यादिभिरथ गृहमेधोपदेशानाध्यापनम् ॥ ततोऽधोनिवर्तते तस्य संस्कारो यथा ॥ प्रथमेतिक्रमे तत ऊर्ध्वं प्रकृतिवत् ॥ अस्यार्थः ॥ अतिक्रान्ते सावित्र्याः काले उपनयनकाले विप्रादीनां षोडशद्वाविंशतिचतुर्विंशतिवर्षात्मके ऋतुमासद्वयं यावत्त्रैविद्यकं वेदत्रयसंबन्धि ब्रह्मचर्यं भैक्ष्याशनगुरुशुश्रूषादिकं चरेत् वेदत्रयार्थि ब्रह्मचर्यं चरेदिति

धारण कर्के फेर यज्ञोपवीत पावे तिसते उपरंत जलका स्पर्शन करे और पावमान्यादि जो मंत्र हैं तिनहों कर्के गृहस्थका उपदेश करे और इनको अजेतक पढाणा नहिं । तिसते उपरंत जो तिसका संस्कार गिहा है सो करे प्रथम अतिक्रमविपे तिसते उपरंत गायत्री पढाकर तिसके साथ व्यवहार करलेव मोई स्पर्शादिविवेक न करे ॥ अब इसीपूर्वोक्त स्मृतिका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं अतिक्रान्त इतिव्यतीत जो गायत्रीका काल तिसमें यज्ञोपवीत काल जो विप्रादियोंका ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनका साला १६ वाई २२ चौकी २४ वर्ष तक जिसका नहिं होया है सो ऋतु क्या दो २ महीने संपूर्ण त्रैविद्यक जो वेदत्रयसंबन्धि ब्रह्मचर्य तिसको करे और भैक्षाशन क्या भिक्षाका अन्न मांग कर्के भोजन करे और गुरु शुश्रूषादि क्या गुरुकी सेवा तिसको करे और वेदत्रय जो ऋग्यजुसाम इनके निमित्त ब्रह्मचर्य धारण करे तद शुद्ध हांता है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १०३

ब्रह्मचर्यमें उपरंत यज्ञोपवीतपावे तिसरें उपरंत एकवर्षपर्यंत उदकोपस्पर्शकर्म करे अर्थात् दिन दिनमें मंत्र सहित आपणें नूत्रोक्तविधिकके स्नानकरे तिसरें उपरंत पढाणेयोग्यहै इसमें कोई कहतेहैं कि उदकोपस्पर्शनकाहि अर्थहै प्रत्यहमित्यादि एभीध्यान रक्षणाचाहि ए । और जिसब्राह्मणके पिता पितामह ब्राह्मणहोवे सो तीनों ब्रह्महत्यां कर्णबालक तुल्यहैं तिनका मंगल स्थानमें जो आगमन और तिनके प्रति ज्ञानिकार्य सिद्धिके निमित्त जो गमनहै और भोजन विवाह तिनके वर्जितहैं जेकर एह शुद्धिकी इच्छा करे तां अगो कहणा जो प्रायश्चित्तहै सो करें । ऋतुकें स्थान एक वर्ष जानणा । तिसरें पुरुष पुरुष प्रति तीनवर्ष ब्रह्मचर्य करणे योग्यहै इसमें उपरंत यज्ञोपवीतपावे तिसरें उपरंत एकवर्षपूर्वोक्त उदकोपस्पर्शनकरे अब तिसमें जो मंत्रहैं सो कहतेहैं (यादंतियश्चदूरकेइति सप्तयेन देवाः पवित्रेणेति । यजुः पवित्रम् । कयानश्चित्राभुवदूतीसामपवित्रम् । हंसः शुचिपदित्यांगिरसम्)

अथ ब्रह्मचर्यान्तरमुपनयनम् ततः संवत्सरं यावदुदकोपस्पर्शनम् । प्रत्यहं समंत्रकं स्वगृहोक्तविधिना स्नानम् ॥ तदनंतरमध्याप्यः । यस्य तु ब्राह्मणस्य पितृपितामहौ ब्राह्मणौ स्यातां तत्र योऽपि ब्रह्महशब्दवाच्याः ॥ तेषामागमनम् । तान् प्रतिज्ञातिकार्यसिद्ध्यर्थं गमनं भोजनविवाहौ च वर्जयेत् । तेषां शुद्धिमिच्छतां वक्ष्यमाणं प्रायश्चित्तम् ऋतोः स्थाने संवत्सरः तेन प्रतिपुरुषं वत्सरत्रयं ब्रह्मचर्यकार्यम् ॥ ततः संवत्सरमुदकोपस्पर्शनम् तत्र मंत्राः यादंतियश्चदूरकेइति । सप्तयेन देवाः पवित्रेणेति ॥ यजुः पवित्रम् । कयानश्चित्राभुवदूतीसामपवित्रम् हंसः शुचिपदित्यांगिरसम् । एते च मंत्राः प्रायश्चित्तार्थमध्वेतव्याः । कृतप्रायश्चित्तो वाध्याप्यः ॥ यस्य तु प्रपितामहांदरुपनयनं न स्मर्यते तत्रार्थादेतेषामपि पुरुषाणामनुपनीतत्वम् तेषां श्मशानवदशुचयः तेष्वगतेष्वभ्युत्थानं भोजनं च वर्जयेत् आपद्यपि न कुर्यादित्यर्थः तेषां स्वयमेव शुद्धिमिच्छतां प्रायश्चित्तानंतरमुपनयनम् तदनंतरसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनं पूर्वोक्तैर्मन्त्रैस्ततो नाध्यापनं किंतु गृहस्थोपदेशनम्

सम्) उतमें मंत्र प्रायश्चित्तके निमित्त पढाणेयोग्यहैं परंतु जिससमय प्रायश्चित्त कर लेवे तब पढाणे योग्यहैं जिसके प्रपितामहादिका उपनयन नहिं स्मरणकीता अर्थात् एह बात श्रवणमें नहिं आई कि इनके प्रपितामहादिको यज्ञोपवीतया जिनके सो प्रपितामहादिये तिनपुरुषोंको भी अनुपनीतत्वहै सो संपूर्ण श्मशानकी न्याई अपवित्रा होतेहैं ॥ तिनके आगमनमें अभ्युत्थान जो है उठ खड़े होणा सो नहिं करे और भोजनभी तिसके साथ नहिं करे संपत्तिकी क्या बातहै आपत्तिमें भी भोजन अभ्युत्थानको नहिं करे ॥ सो जेकर आपहि शुद्धिकी इच्छा करें तब तिनको प्रायश्चित्त कर्णों उपरंत उपनयन करणें योग्यहै । तिसरें उपरंत वर्षभर जलका आचमन रूप जा वेदोक्त कर्म तिसको पूर्वोक्त मंत्रों कर्के करें और तिसते अनंतर तिसको नहिं पढाणा किंतु गृहस्थ धर्मका जो उपदेश तिसको करे ॥

१०४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और तिसरें उपरंत उपदिष्ट जो गायत्रीका काल तिसके अतिक्रम विषे वचनहै ततइति इस का अर्थ एह है कि तिसरें उपरंत प्रकृतिकी न्याई जानणा और नहि उलंघन होया जोगायत्री काल तिसकी न्याई व्यवहार करणें योग्य है अर्थात् उसकी निन्दा नहि करणी ॥ अब आग राजी कहतेहैं ब्राह्मस्तोमैरिति ब्राह्मस्तोम नाम जो यज्ञ तिसरें पूजन करवाककें संपूर्ण द्विजा तियानें एह प्रायश्चित्तके निमित्त कर्कें फेर यथा विधि कर्कें उपनयनको प्राप्त करणा १ अब इसी विषे शंखलिखित स्मृतिसें कहतेहैं ब्राह्मइति ब्राह्मपुरुष चांद्रायण व्रत करे चपुनः गोदान करे इस का और पूर्वोक्त उद्दालकके व्रतका प्रत्याम्नाय सवा नौ गौआं दानकरे अर्थात् इनका मुछदे देवे । देशके उपद्रवादि कर्कें पतितहै गायत्री जिसकी तिसविषे यमजी कहतेहैं पतितेति जि सकी गायत्री दश १० वर्ष वापंच ५ वर्ष पतितहोवे ब्राह्मणकी विशेष कर्कें तैसंहि राजन्य

ततउपदिष्टसावित्रीकालातिक्रमे ततऊर्ध्वप्रकृतिवदनतिक्रांतसावित्रीकाल वत्संव्यवहार्यता । अंगिराः । ब्राह्मस्तोमैर्याजयित्वा द्विजातीन्सर्वमेव हि नि ष्कृत्यर्थमिदंकृत्वा यथाविध्युपनाययेत् १ अत्र शंखलिखितौ ब्राह्मश्चान्द्राय एंचरेत् गोप्रदानंच कुर्यादिति । एतस्य च पूर्वोक्तोद्दालकव्रतस्य सपादनवधे नुरूपस्य तत्प्रत्याम्नायस्य तुल्यत्वम् देशोपल्लादिना पतितसावित्रीके यमः । पतितायस्य सावित्रीदशवर्षाणि पंचच ब्राह्मणस्य विशेषेणा तथा राजन्यवैश्य योः १ प्रायश्चित्तं भवेत्तेषां प्रोवाचवदतांवरः ॥ विवस्वतः सुतः श्रीमान् यमो धर्म्मार्थतत्त्वतः २ सशिखं वपनं कृत्वा व्रतं कुर्यात्समाहितः हविष्यं भोजयेदन्ये ब्राह्मणान्सप्तपंचवा ३ एकविंशतिरात्रं तु पिवेत्प्रसृतियावकं ततो यावकशुद्ध स्यतस्योपनयनं स्मृतम् ४ अत्रैकविंशतिरात्रयावकप्रसृतीपानेमासंपयः पानालपत्वात्सपादधेनुत्रयमेव

वैश्यकी पतित होवे १ तिनांको प्रायश्चित्तहोताहै कहण वालेयां विषे श्रेष्ठ और सूर्यजीका पुडा और शोभा वाला ऐसा जो यम सो धर्म्मार्थतत्त्वतें कहताहै २ सहित शिखाके मुंडन कर्कें समा धानहोया २ व्रतकों करे और कहतेहैं सात ७ वा पंच ५ ब्राह्मणकों हविष्य भोजन करवावे इसमें एह अभिप्रायहै कि महीनेका जो पयोव्रतहै सो २ प्राजापत्यसे दूणाहै इसककें तिसका प्रत्याम्नाय ५ धेनुहैं तिसके दसावसे ३ धेनु कहीहैं और इक्कीस २१ रात्रि प्रसृति क्या लप्प मात्र यर्वाका काढा पान करे तिसते उपरंत यावक कर्कें शुद्ध होया जो पुरुष तिसका उपनय न कहाहै ४ इसविषे इक्कीस २१ रात्रि यावक प्रसृति मात्र पान करणें विषे महीना रोज ज लपानतें इसको छोटा होणेतें इसके प्रत्याम्नाय वास्त सवा त्रय गौआं दान करदेवे अर्थात् इ नका मुठ कल्पना कर्कें देदेवे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ १०५

तथेति तैसैहि इसी पूर्वोक्त विषय विषे गायत्रीकालके व्यतीत होयां तिसमें ब्राह्मण के अधिकार विषे हारीत जी कहतेहैं तेषामिति तिनांको प्रायश्चित्त होयाहै क्या महीना रोज दुग्ध पान करे और गौ की सेवा करे और जो पुरुष प्रायश्चित्त कर चुकाहै तिसको वसिष्ठके कहेंहोए जो व्रत तिनां कर्के यज्ञोपवीत पावे जैसी प्रकृति क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अपणी अपणी जातीके अनुसार पावे और जैसी ऋतु जैसा छंद होवे तैसा हिकरे ब्राह्मणको वसंत ऋतु क्षत्रीको ग्रीष्म वैश्यको शरद ऋतु कहीहै और यथाछंदक्या अपण २ वेदकी विधि कर्के करे ॥ इसमें और विशेष कहतेहैं यद्यपीति इत्थं यम जीका कथन कीयाहोया इकीस २१ रात्रिका व्रत है। तांमी इसके विषे महीनेका जो व्रत किहाहै सो पृथक् जानणा परंतु इसमें क्षीर क्या दुग्ध पानके परिमाणको न कहेंतें जितनीक इच्छा होवे तितनाही पान करणा योग्यहै ॥ और यम जी के कथनमें यावक पान है प्रसूति क्या लप्प मात्र तितनाही परिमाणका किहाहै ति

तथास्मिन्नेवविषयेऽतिक्रांतकाले ब्राह्म्याधिकारे हारीतः तेषांप्रायश्चित्तमा संपयोभक्ष्यंगामनुगच्छेत् ॥ यश्चीर्णप्रायश्चित्तस्तं वसिष्ठव्रतैरुपनयेयुः यथाप्रकृतिऋतुछंदोविशंपात् । ऋतुर्वसंतग्रीष्मशरदादिकः छंदोवेदः स्ववेदोक्तविधिर्नित्यर्थः ॥ यद्यपियमोक्तमकविंशतिरात्रमत्रानुमासं पृथगपिक्षीरपरिमाणानुपदेशाद्यथेष्टमेवपानम् यावकपानंतु प्रसूतिपरिमितमल्पत्वाद्द्विकल्पः अत्रत्येतिकर्तव्यतायां किंचिद्गुरुत्वाद्यथोक्तमेवति इति ब्राह्म्यता प्रायश्चित्तं त्रयोविंशम् २३ * अथबंधुत्यागे प्रा० एतच्च प्राग्विदुतम् बंधुत्यागे त्रैमासिकं गोवधव्रतं कामतः अकामतस्त्यागे योगीश्वरोक्तं व्रतचतुष्टयं योज्यमिति मिताक्षरा इति बंधुत्यागे प्रा० २४ * अथ भृत्याध्यापनप्रा० ॥ एतल्लक्षणंतूक्तं प्राक् तच्चपिवेद्ब्रह्मसुवर्चलामित्यनुवृत्तौ विष्णुः भूतकाध्यापनं कृत्वा भूतकाध्यापितस्तथा अनुयोगप्रदानेन त्रीन्पक्षान्नियतः पियेत् १ पक्ष

त्रयं ब्रह्मसुवर्चलां पिवेदित्यर्थः

सको थोडा होणेंते विकल्प जानणा ॥ और इस कर्तव्यताविषे यम जीके कथन किये होए प्रायश्चित्तको गुरु क्या बडा होणेंतें यथोक्तहि प्रायश्चित्त करे अर्थात् महीने वालाही प्रायश्चित्त करे क्यों कि इसमें विकल्प नहिहै ॥ एह ब्राह्म्यतारूप जो उपपातक तिसके प्रायश्चित्तका प्रकरण पूगहोयाहै एहप्रकरण त्रयांही २३ * अब बंधुके त्याग विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं एतदिति इसका लक्षण पीछे किहाहै इच्छातें बंधुत्याग विषे त्रय ३ महीनेका गोवध व्रत करे ॥ अकामतें त्यागण विषे याज्ञवल्क्यके कथन कीते होये चार व्रत के एह मिताक्षरामें क्याहै एह यथाशक्तिकर्के जोडने योग्यहै एहबंधुके त्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया २४ ॥ * अब मजूरी लेकर्के जो पढाना तिसके विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं एतदिति इसका लक्षण पीछे क्याहै ब्रह्मसुवर्चला वृटी नूं पीवे इस प्रसंग विषे विष्णु स्मृतिमें विष्णु जी कहतेहैं ॥ मजूरीले कर्के जो पढावे और मजूरीदे कर्के जो पढे और अनुयोगके प्रदानकर्के त्रय पक्ष ब्रह्मसुवर्चला वृटीको पानकरे अनुयोगका अर्थअगैह १

१०६ श्रीरणवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अन्विति अनुयोग नाम यज्ञके अर्थवा द्रव्यके अर्थ अच्छीतरह पडन वालेको भीतुं नहिं अच्छीतरह पडताहै ऐसा गुरुने कहणेका नामहै और पडन वाला पडानेवालेको अपणी वडयाई वास्तं प्रण पूर्वखंडनकरे अर्थात् भक्तिसे न पडे तदभीएही प्रायश्चित्त कर्णयोग्यहै अब इसीमे उदाहरण कहतेहैं यथेति जैसे अहिंसा जो है सो परमधर्महै ऐसा गुरुने कहा तो शिष्य कहताहै कैसे यज्ञमे हिंसा होतीहै तो गुरु कहताहै कि यज्ञकी जो हिंसा है उसका नाम हिंसा नहिं है तो शिष्य कहताहै कि हिंसाशब्दका अर्थ प्राण वियोगहै सो यज्ञमें भी है सो किसप्रकार अहिंसाहै इत्यादिरूप जो खंडनहै इसप्रकार विवाद करदे होए मेरेको लोक अधिक विद्यावान् जाणगे एह शिष्यका अभिप्राय हैं और गुरुके पक्ष में स्पष्ट जानणा तैसेहि और स्मृतिमे कहतेहैं

अनुयोगोयशोर्थिद्रव्यार्थिवा सम्यगधीयानस्य न सम्यगधीपे इत्याक्षेपः

अध्येताऽध्यापयितारस्वात्कर्पार्थप्रणपूर्वमाक्षिपतिचेत्तदापीदंप्रायश्चित्तं कुर्यादित्यर्थः यथाऽहिंसा परमोधर्मइति गुरुणोक्ते कथंयागेहिंसा ततश्चयागीयाहिंसानहिंसेत्युक्तेहिंसाशब्दार्थोवाच्यः प्राणवियोगानुकूलव्यापारश्चेत्तदायागेपि सवर्तते सा कथमहिंसेत्यादिरूपआक्षेपः ॥ एवंविवदंतंमांलोकोऽधिकंविद्यावंतंजानीते इतिशिष्याभिप्रायः गुरुपक्षेस्पष्टम् तथा चस्मृत्यन्तरम् कृतानुयोगानध्येतुः पतितान्मनुरब्रवीदिति त्रीन्पक्षांस्तु पयःपिवेदितिहारीतीयपाठः ॥ उत्कर्षहेतोरधीयानस्यकिंपठसिनाशितं त्वेयत्वेवंपर्यनुयोगोऽनुयोगप्रदानमितिशेखरः अनुयोगप्रदानाभ्यासेपातित्वमिति ॥ शातातपः ॥ ब्रह्मविक्रयानुयोगनियोगपुचतुर्विंशतिब्रह्मरूपाणिदध्यादिभि ॥ ब्रह्मरूपंवेदपारायणम् ब्रह्मविक्रयामूलेयनवेदपाठोवेदाध्यापनंवा अनुयोगस्तिरस्कारार्थहेतुवादप्रणः नियोगोभयंकरस्था नादोशिष्यादेःप्रेरणम्

कृतेति पडाने वाले साथ जो अनुयोग करतेहैं सो मनु जीने पतित कहेहैं त्रय पक्ष दुग्ध पान करे एह हारीत जीका वचनहै ॥ अपणी वडयाई वास्ते अच्छीतरह पडनवाले शिष्यको कहणा कि तू क्यापडताहैतैनें नाशकियाहै इसप्रकार जो कथन करणा उसका नाम अनुयोगप्रदानहै एहशेखरका मतहै अनुयोगप्रदानविषे बहुतअभ्यास होवे तदपतित होताहै अब शातातपजी कहतेहैं ब्रह्मेति वेद वेचणेके विषे और अनुयोग नियोग विषे चौबीस २४ वेदके पारायण करे तद शुद्ध होताहै । ब्रह्मविक्रय क्या मुल्लेकर वेद पाठ करणा अथवा मुल्लेकर वेदका पढाणा ॥ और अनुयोगक्या अनादरकरणेवास्ते जो हेतुपूर्वक प्रणहै ॥ और नियोगक्या भयवाले स्थानविषे जो शिष्यादियोंका भेजणा ।

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १०७

अस्यैति इस प्रायश्चित्तका (एनदेवव्रतंकुर्गु रूपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णवर्जशुद्धयर्थं चांद्रायण मथापिवेति) एह मनुजीके कथन किये होए और (उपपातकशुद्धिः स्यादेवंचांद्रायणेनतु षयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनः) एहयाज्ञवल्क्यजीके कथन कीते होए प्रायश्चित्तों कर्के जात्यादियोंकी अपेक्षा कर्के इसमे विकल्प जानणे योग्यहै अर्थात् जैसीजाति ब्राह्मणा दिकी होवै वा जैसी शक्ति होवै तैसाहि प्रायश्चित्तकरे ॥ इस विषे प्रसंगमे जो आयाहै सो कुलक वसिष्ठजी कहतेहैं पतितेति पतित चण्डाल शवको वेद सुनाणेमे त्रयरात्रि वाणी रोकरकखे और भोजन न करे सहस्रपरमको अभ्यास करे तद पवित्र होताहै अब इसीका अर्थ स्पष्ट कक कहतेहैं शवश्रवण क्या मुडदे पास वेद पढना तिसका प्रा० इनप्रकारहै कि पतितादियोंके समीप जितनाकाल वेद पढे तितने हजार १००० मंत्रोंका अभ्यासकरे तद

अस्यप्रायश्चित्तस्यमनुयोगीश्वरोक्तसामान्यप्रायश्चित्तेर्जात्याद्यपेक्षयावि कल्पः ॥ अत्रप्रासंगिकं किंचिदिति वसिष्ठः ॥ पतितचण्डालशवश्रवणे त्रिरात्रंवाग्यताअनश्रंतआसीरन् ॥ सहस्रपरमंवाऽभ्यस्यन्तःपूताभवं तीतिविज्ञायते ॥ शवसमीपेऽध्ययनं शवश्रवणम् ॥ पतितादिसन्निधौ यावद्ब्रह्माधीतं तावद्ब्रह्मसहस्रपरमं सहस्रसंख्या यथाभवतितथाऽभ्य स्यन्तः पूयंतइत्यर्थः ॥ इदंचप्रकीर्णकेप्युक्तमिति इतिभृत्याध्यापनादिप्राय श्चित्तम् २५ २६ ॥ अथापण्यविक्रयेप्रा० । प्रदर्शितोऽस्यविषयः पू र्वम् ॥ हारीतः ॥ गुडतिलपुष्पमधुफलपक्वान्नविक्रये सोमायनम् (सोमकृ च्छूः) लाक्षालवणमधुमांसतैलक्षीरदधिघृतगंधतक्रचर्मवाससामान्यतमवि क्रयेचांद्रायणम् ॥

पवित्र होताहै एह प्रकीर्णक प्रकरणमें भी कहाहै परंतु अभ्यास इसजगा गायत्रीका अथवा जोमंत्रउसजगापढेये तिनकाजानणा एह मुल्लेकर पढानेका प्रायश्चित्तसमाप्तहोया २५ । २६ ॥ अब जिनोयस्तुथोके बेचणेमें पापहोताहै तिनका प्रायश्चित्तकहतेहैं इसकालक्षण पीलेकहाहै इ समं हारीत जीकावचनहै गुडेति गुड तिलपुष्प मूलकया कचालू आलू इत्यादि फल अंव कला आरु खरबूजा इत्यादि बहुत और पक्वान्न इन संपूर्ण वस्तुओंके बेचणेतें सोमायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥ इसीकानामसोमकृच्छूभीहै और लाख लूण मखीर मांस तेल दुग्ध दधि घृत गंध वालीवस्तु तक्र क्या छाह चर्म वस्त्र इनमेंसे एकके बेचणेमेभी चांद्रायण व्रत करे तद शुद्धहोताहै अर्थात् एक एकके बेचणेमे चान्द्रायणहि व्रत करणा योग्यहै और चांद्रायण सोमायन का विशेष देखणा होवे तां व्रत करणमे देखलेणा ॥

१०८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

तथेति तैसेही उन्न केश केसर पृथ्वीगौ बैल घर पत्थरशस्त्र इनके बेचणेविपे और मच्छीमांस आं
दर हड्डी शंख नख शिप्पी इनके बेचणे विपे तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तद शुद्ध होताहै ॥ तैसेहि ऊर्णि
केशि केसरी इसपाठ विपे ऊर्णि क्याभिड्डुतें आदलेकर और केशीक्या चमर मृगादि और के
सरि क्याघोडेनोआदलेकर जानणें ॥ पूर्व पाठ विपे केसर क्या मृग विशेष जानणा और हिंगु
गुगुल हडताल मनःशिलाक्या धातु विशेष सुरमा गेरी लाख लूण मणि मोंती मुंगा वैणव क्या
बंजकेपात्र और बंज मृत्तिकाकापात्र इनके बेचणे विपे तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥ और
वगीचा तलाआ झवच्चा वाउलो और सुकृत जो व्रत वा पुण्य इन संपूखीके बेचणे विपे
त्रिकाल स्नानकरे और पृथ्वीमे शयनकरे और चौथे पहर भोजन करे और दश तैअधिक हजार

तथोर्णिकेशकेसरभूधेन्वनुदुद्देशमशस्त्रविक्रये मत्स्यमांसस्नायवस्थिशंखशु
क्तिविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः। तथोर्णिकेशिकेसरीतिपाठांतरम् तत्रोर्णिनेमिपादयः
केशिनश्चमरादयःकेसरिणोऽश्वाद्याः । पूर्वपाठकेसरामृगविशेषाःहिंगुगु
गुगुलहरितालमनःशिलांजनगैरिकलाक्षालवणमणिमुक्ताप्रवालवैणववेणुमृ
एमयविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः ॥ आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृतविक्रये त्रि
पवणस्नाय्यधःशायीचतुर्थकालाहारोदशसहस्रंगायत्रीजपन् संवत्सरेण
पूतोभवति हीनमानोन्मानद्रव्यसंकीर्णविक्रयेचेति हीनमानंकूटप्रस्थादि
हीनोन्मानंकूटनुलादि ताभ्यांविक्रये अन्यवस्तुमिश्रितमन्यवस्तुद्रव्यसं
कीर्णं यथा जलमिश्रितंदुग्धम् यवमिश्रितोगोधूमस्तद्विक्रये विषमनुला
दिधारणे त्रिपवणेत्यादि इदमभ्यासे सकृद्विपयेतुकृच्छ्राद्धम्

१०९० गायत्रीका जपकरतारहे तद वर्ष गेज कर्के पवित्रहोताहै और हीनमान हीनोन्मान
और द्रव्यसंकीर्ण इनके बेचणे विपे भी एहि व्रतजानणा इनको स्पष्ट कर्के अग्रे कहबेहैं हीन
मानक्या झूठा सेगटुपे रखणे और हीनोन्मान क्या झूठी कंडीत्रकडी रखणी तिनां कर्के बेचणे
विपे और दूसरी वस्तु कर्के युक्त जो वस्तु सो द्रव्यसंकीर्ण किहाहै जैमें जलयुक्त दुग्धहै और
यवयुक्त कणरुहै तिसके बेचणे विपे और झूठे तोलकेधारण विपे अर्थात् सेर वेटे और डाकडी
खोटीनहि पंतु तोलणवालेकी क्रिया खोटाहै तिसविपे त्रिपवण इत्यादि पूर्वोक्त प्रायश्चित्त
करणा परंतु एह बहुत अभ्यास विपे जानणा एकवार विपे अद्वैकव्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भो० ॥ १०९

नोति रस्ते आदिके वेचणोविषे प्राजापत्य व्रतकरे अवशंख लिखितस्मृतिका वाक्य कहतेहें नेति नहिं वेचणे योग्य जो वस्तु तिनांको न वेचे ॥ तिल तेल दधि मखीर लूण लाख मदिरा मांस सुकृत क्या पुण्य अन्न स्त्री पुरुष हस्ति अश्व गंध पद्मस क्षौमक्या अलसीका कपडा काला चर्म सोमवल्लीका जल नील इन संपूर्णवस्तुओंके वेचणे कर्कें शीघ्र हि पुरुष पतित होताहै ब्राह्मणवेचे तद वर्षरोज तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तो शुद्ध होताहै ॥ तैसेहि शस्त्र रस्ते भूमि अश्ववादि इनके वेचणे विषे भी पूर्वोक्तप्रायश्चित्त करणा और घर यज्ञशाला वाग वगीचा सभा पानीकी धर्मशाला तलाओ खाता पुल इनांको वेचकर्कें तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥ उद्यानागम इस पाठ विषे आगम नाम वेद जानणा ॥ अव पराशर जी कहतेहें विक्रीयेति कन्या और गौकों वेच

निगडादिविक्रयेप्राजापत्यम् ॥ शंखलिखितौ नविक्रीणीयादविक्रेयाणि ॥ तिलतेलदधिक्षौद्रलवणलाक्षामद्यमांससुकृतान्नस्त्रीपुरुषहस्त्यश्वगंधरस क्षौमकृष्णाजिनसोमोदकनीलीविक्रयात्सद्यः पतति ॥ ब्राह्मणइत्युपक्रम्य संवत्सरंतप्तकृच्छ्रमाचरेदिति ॥ तथा शस्त्रबंधनभूम्येकशफविक्रयेचैतदेव गृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपूर्तसेतुविक्रयं कृत्वा तप्तकृच्छ्रमाचरेत् । बंधनं निगडादि उद्यानागमेतिपाठे आगमोवेदः । पराशरः ॥ विक्रीयकन्यकांगांचकृच्छ्रंसांतपनंचरेदिति । चतुर्विंशतिमते । सुरायाविक्रयं कृत्वाचरेत्सौम्यचतुष्टयम् लाक्षालवणमांसानांचरेच्चांद्रायणत्रयम् १ मध्वाज्यतिलसोमानांचरेच्चांद्रायणद्वयम् पयःपायसपूपानांचरेच्चांद्रायणव्रतम् २ ॥ दध्नश्चेक्षुरसस्यैवगुडखंडादिविक्रये सर्वेपांस्नेहपक्वानांपराकंतुसमाचरेत् ३ कदलीनारिकेरंचनारंगवीजपूरकम् एतेपांपादकृच्छ्रस्याज्जंवीरा देस्तथैवच ॥ ४ ॥ कस्तूरिकादिगंधानांविक्रयेकृच्छ्रमाचरेत्

कर्कें कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे तद शुद्ध होताहै । चतुर्विंशतिमतविषे कहतेहें सुगयाइति मदिरा को वेचकर्कें चार चांद्रायण करे और लाख लूण मांसकों वेचे तद तीन चांद्रायण व्रत करे १ और मखीर घृत तेल अमृतवल्लीका रस इनांको वेचकर्कें दो २ चांद्रायण व्रत करे और दुग्ध क्षीर पूडे इनांके वेचणेंविषे चांद्रायण व्रत करे २ और दधि गन्नेकारस गुड खंड इनांके वेचणें विषे और संपूर्ण स्नेहकर्कें पके होएके वेचणे विषे पराक व्रत करे ३ और केला नरेल नारंगी मौकडी और जंवीरी तें आद लेकर जो फल तिनांके वेचणे विषे कृच्छ्रका एक पाद व्रत करे तद शुद्ध होताहै ४ और कस्तूरिकादि सुगंधिके वेचणें विषे कृच्छ्र व्रत करे

१०८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

तथेति तैसेही उन्न केश केसर पृथ्वीगौ वैल घर पत्थरशस्त्र इनके बेचणेविपे और मच्छीमांस आं
दर हड्डी शंख नख शिप्पी इनके बेचणे विपे तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तद शुद्ध होताहै ॥ तैसेहि ऊर्णि
केशि केसरी इसपाठ विपे ऊर्णि क्याभिड्डुते आदलेकर और केशीक्या चमर मृगादि और के
सरि क्याघोडेनोआदलेकर जानणें ॥ पूर्व पाठ विपे केसर क्या मृग विशेष जानणा और हिंगु
गुगुल हडताल मनःशिलाक्या धातु विशेष सुरमा गेरी लाख लूण मणि मोती मुंगा वैणव क्या
बंजकेपात्र और बंज मृत्तिकाकापात्र इनके बेचणे विपे तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥ और
वगीचा तलाआ झवचा वाउली और सुकृत जो व्रत वा पुण्य इन संपूर्णोंके बेचणे विपे
त्रिकाल स्नानकरे और पृथ्वीमे शयनकरे और चौथे पहर भोजन करे और दश तेंअधिक हजार

तथोर्णिकेशकेसरभूधेन्वनुद्वेशमशस्त्रविक्रये मत्स्यमांसस्नायवस्थिशंखशु
क्तिविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः। तथोर्णिकेशिकेसरीतिपाठांतरम् तत्रोर्णिनेमिपादयः
केशिनश्चमरादयःकेसरिणोऽश्वाद्याः । पूर्वपाठिकेसरामृगविशेषाःहिंगुगु
गुलहरितालमनःशिलाजनगैरिकलाक्षालवणमाणिमुक्ताप्रवालवैणववेणुमृ
एमयविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः ॥ आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृतविक्रये त्रि
पवणस्नायवधःशायीचतुर्थकालाहारोदशसहस्रंगायत्रीजपन् संवत्सरेण
पूतोभवति हीनमानोन्मानद्रव्यसंकीर्णविक्रयेचेति हीनमानंकूटप्रस्थादि
हीनोन्मानंकूटनुलादि ताभ्यांविक्रये अन्यवस्तुमिश्रितमन्यवस्तुद्रव्यसं
कीर्णं यथा जलमिश्रितंदुग्धम् यवमिश्रितोगोधूमस्तद्विक्रये विषमनुला
दिधारणे त्रिपवणेत्यादि इदमभ्यासे सकृद्विपयेतुकृच्छ्राद्धम्

१०१० गायत्रीका जपकरतारहे तद वर्ष गेज कर्के पवित्रहोताहै और हीनमान हीनोन्मान
और द्रव्यसंकीर्ण इनके बेचणे विपे भी एहि व्रतजानणा इनको स्पष्ट कर्के अग्रे कहलेहैं हीन
मानक्या झूठा सेगटुपे रखणे और हीनोन्मान क्या झूठी कंड़ीत्रकडी रखणी तिनां कर्के बेचणे
विपे और दूसरी वस्तु कर्के युक्त जो वस्तु सो द्रव्यसंकीर्ण किहाहै जैसे जलयुक्त दुग्धहै और
यवयुक्त कणरुहै तिसके बेचणे विपे और झूठे तोलकेधारण विपे अर्थात् सेर बट्टे और डाकडी
खोटीनहि पंतु तोलणवालेको किया खाटाहै तिसविषे त्रिपवण इत्यादि पूर्वोक्त प्रायश्चित्त
करणा परंतु एह बहुत अभ्यास विपे जानणा एकवार विपे अद्वैकव्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥

॥ तिल एवम् कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भो० ॥ १०९

प्रायश्चित्त विधि आदिके वेचणे विषे प्राजापत्य व्रत करे अवशंख लिखितस्मृतिका वाक्य कहते हैं नेति
जाने वेचणे योग्य जो वस्तु तिनांको न वेचे ॥ तिल तेल दधि मखीर लूण लाख मदिरा मांस
सुकृत क्या पुण्य अन्न स्त्री पुरुष हस्ति अश्व गंध पट्टरस क्षौमक्या अलसीका कपडा काला
चर्म सोमवल्लीका जल नील इन संपूर्ण वस्तुओंके वेचणे कर्कें शीघ्र हि पुरुष पतित होता है
ब्राह्मणवेचे तद वर्षरोज तप्तकृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होता है ॥ तैसंहि शस्त्र रस्से भूमि अश्वदि इनके
वेचणे विषे भी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा और घर यज्ञशाला वाग वगीचा सभा पानीकी धर्मशाला
तलाओ खाता पुल इनांको वेचकर्कें तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होता है ॥ उद्यानागम इस पाठ
विषे आगम नाम वेद जानणा ॥ अव पराशर जी कहते हैं विक्रीयेति कन्या और गौकों वेच

निगडादिविक्रये प्राजापत्यम् ॥ शंखलिखितौ न विक्रीणीयादविक्रेयाणि ॥

तिल तेल दधिक्षौद्र लवण लाक्षामद्य मांस सुकृतान्न स्त्री पुरुष हस्त्यश्वगंघ्ररस
क्षौमकृष्णाजिनसोमोदक नीली विक्रयास्सद्यः पतति ॥ ब्राह्मण इत्युपक्रम्य
संवत्सरं तप्तकृच्छ्रमाचरेदिति ॥ तथा शस्त्रबंधनभूम्येकशफविक्रये चैतदेव
गृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपूर्तसेतुविक्रयं कृत्वा तप्तकृच्छ्रमा
चरेत् । बंधनं निगडादि उद्यानागमेति पाठे आगमो वेदः । पराशरः ॥ विक्री
यकन्यकांगांच कृच्छ्रं सांतपनं चरेदिति । चतुर्विंशतिमते । सुराया विक्रयं कृ
त्वा चरेत्सौम्यचतुष्टयम् लाक्षालवणमांसानांचरेच्चांद्रायणत्रयम् १ मध्वा
ज्यतिलसोमानांचरेच्चांद्रायणद्वयम् पयःपायसपूपानांचरेच्चांद्रायणव्रतम्
२ ॥ दध्नश्चेक्षुरसस्यैव गुडखंडादिविक्रये सर्वेषां स्नेहपक्वानां पराकंतु समाच
रेत् ३ कदलीनारिकेरंचनारंगवीजपूरकम् एतेषां पादकृच्छ्रस्याज्ज्वीरा
देस्तथैव च ॥ ४ ॥ कस्तूरिकादिगंधानां विक्रये कृच्छ्रमाचरेत्

कर्कें कृच्छ्र सांतपन व्रत करे तद शुद्ध होता है । चतुर्विंशतिमते विषे कहते हैं सुगन्धादिति मदिरा
इति वेचकर्कें चार चांद्रायण करे और लाख लूण मांसकों वेचे तद तीन चांद्रायण व्रत करे १
और मखीर घृत तेल अमृतवल्लीका रस इनांको वेचकर्कें दो २ चांद्रायण व्रत करे और दुग्ध
क्षीर पूडे इनांके वेचणें विषे चांद्रायण व्रत करे २ और दधि गन्नेकारस गुड खंड इनांके वेचणें
विषे और संपूर्ण स्नेहकर्कें पके होएके वेचणे विषे पराक व्रत करे ३ और केला नरेल नारंगी
भौकडी और ज्वीरी तै आदि लेकर जो फल तिनांके वेचणे विषे कृच्छ्रका एक पाद व्रत करे
तद शुद्ध होता है ४ और कस्तूरिकादि सुगंधिके वेचणें विषे कृच्छ्र व्रत करे

११० ॥ श्रीरणवीर कास्ति प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

केति कर्पूरादिके वेचणें विषे अर्द्ध रुच्छ्र व्रत करे और हिगते आद लेकर वेचणें विषे अर्द्ध रुच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होता है ५ और तिलां को वेचक के प्राजापत्य व्रत करे तद शुद्ध होता है ६ धर्मवास्ते इकठ्ठा कीता जो अन्नादि है सो कहिए धर्मार्थ ऐसे यज्ञार्थ भी जानूँ और क्रिमिजात जो हैं पशवस्त्रादि अथवा कीड़ों के समूह जिनमें वस्त्रवनते हैं तिनको वेचे और रक्त पीतादिवस्त्र काला चर्म धर्म के अर्थ वेचे तद त्रय दिनका व्रत करे एह गंगे जीफा बचन है ६ धनक के मोहि तहोया २ लाभ के वास्ते गौको वेचे तद प्राजापत्य व्रत करे और हस्तिके वेचणें चंद्रायण व्रत करे ७ और गधा श्व खचरा उष्ट्र इनके वेचणे विषे पराक व्रत करे और पुत्र के वेचणे विषे ए ही व्रत दूषा करणा ८ और स्त्रीयों के वेचणे विषे चंद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होता है और पुरुष के

कर्पूरादिस्तदर्थस्याद्विनं हिं ग्वादिविक्रये ५ दिनमेकदिनीयं रुच्छ्रम् । तिलानां विक्रयं कृत्वा प्राजापत्यं समाचरेदिति धर्मार्थं क्रिमिजातां श्रयज्ञार्थं विक्रयं नयेत् रक्तपीतादिवस्त्राणि कृष्णाजिनमथापि वा ॥ विक्रयेऽप्यहमेते पांगर्गस्य वचनं यथा ६ गोविक्रयं नरः कृत्वा लाभार्थं धनमोहितः प्राजापत्यं प्रकुर्वीत गजानां मैन्दवं स्मृतम् ७ खराश्वाश्च तराणां च करभाणां च विक्रये पराकं तत्र कुर्वीत सुतानां द्विगुणं चरेत् ८ करभाण्डपूः नारीणां विक्रयं कृत्वा चरेच्चंद्रायणव्रतम् द्विगुणं पुरुषस्यैव व्रतमाहुर्मनीषिणः ९ चंद्रायणं प्रकुर्वीत एकाहा द्वेद विक्रये श्रगानां तु पराकः स्यात् स्मृतीनां रुच्छ्रमाचरेत् १० इति हासपुराणानां चरेत् सां तपनं द्विजः । रहस्यं पंचरात्राणां रुच्छ्रमेव समाचरेत् ११ गाथानां नीतिशास्त्राणां प्राकृतानां तथैव च सर्वासामेव विद्यानां पाद रुच्छ्रं समाचरेत् १२

वेचणे विषे बुद्धिमानोंने एही व्रत दूषा किहा है ९ और एक दिन के वेद पाठ के वेचणे विषे चंद्रायण व्रत करे और वेद के अंग वेचणे विषे पराक व्रत करे और स्मृतियों के वेचणें रुच्छ्र व्रत करे १० और इतिहास पुगण के वेचणे विषे सांतपन व्रत करे और रहस्य शास्त्र और पंचरात्र जो तांत्रिक इनके वेचणे विषे रुच्छ्र व्रत करे ११ और गाथा नीतिशास्त्र जो साहित्य और प्राकृत जो प्रकृति पुरुष का कथन अर्थात् सांख्यशास्त्र इनके वेचणें भी रुच्छ्र व्रत करे और इनके अतिरिक्त विद्या के वेचणे में पाद रुच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होता है १२ परंतु वेचणा इस जगा ऐसे जानणा कि तिस तिस शास्त्र के अध्ययन का फल वेचणा अथवा तिनके पुस्तक वेचणें एह अर्थ

प्रायश्चित्त विष्णुजी कहते हैं ॥ दधीति दधि मधु पिष्ट क्या पीती होई श्रीपथादि वस्तु घृत पक्वान्न तेल छाह
जाय विष शस्त्र तिल अश्व नील रेशम के वस्त्र लाय कर्के रंगे होए वस्त्र लूण इनां के वेचणें विषे
प्राजापत्यव्रत करणे योग्य है ॥ अथ शातातपजी कहते हैं आमेति कच्चा मांस मदिरा अमृत वल्ली कारस
लाख लूण घृत और संपूर्ण पुण्य के वेचणें विषे द्विज चांद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होता है पिछे लाक्षारक्त
वि हाथा इसमें लाक्षा कहो है इतना विशेष है १ विष्णुजी कहते हैं ॥ रक्तेति लाल वस्त्र लाल रंग
गुड गंध मखीर रस उन्न इनां के वेचणें वाला पुरुष त्रय दिन का उपवास व्रत करे १ और पुरुषा
दिके विना प्राणी जो कुकुट मेपादि तिनां का वेचणें क्योंकि हिसाका संभव होणें ॥ और भू

ध्यवनः । दधिमधुपिष्टसर्पिः पक्वान्न तैल तक्रक्षीर रस सविष शस्त्र तिलाश्वनी
लीकौशेयवासो लाक्षारक्त लवण विक्रये प्राजापत्य चरेत् । शातातपः । आम
मांस मुरासो मलाक्षालवण सर्पिषाम् विक्रये सर्व पुण्यानां द्विजश्चांद्रायण चरेत्
१ ॥ विष्णुः ॥ रक्तवस्त्र रक्तरंग गुड गंध मधुरसोर्णा विक्रयी त्रिरात्रमुपवसेत् ॥
अणिभूपुण्यसोमविक्रयी तत्तत्कृच्छ्रं कुर्यात् ॥ तंचभूयश्चोपनयेत् ॥ शंखः ॥
धारयित्वा तुलां वक्रां विपमां कारयन्वाणिक् सुरालवणमद्यानां कृत्वा क्षीरस्य वि
क्रयम् १ लाक्षायाश्चैव मांसस्य कुर्यादेव महाव्रतम् विक्रेता प्राणिनामब्दं
तिलस्य च तथा चरेदिति २ ॥ महाव्रतं द्वादशाब्दम् एतत्तु बहुशोऽभ्यस्तेवो
ध्यमिति ॥

मि पुण्य सोम इनां को वेचण वाला तत्तत्कृच्छ्र व्रत करे फेर यज्ञोपवीत पावे तद शुद्ध होता है ॥ अथ
शंखजी कहते हैं ॥ धारयित्वेति तक्रडोको टेडा धारण कर्के जो बणियां विपम करे अर्थात् दोषों में
जिस कर्के थोडा जावे और लयणों में बहुत आवे ऐसी करे तिसको और मदिरा लवण मद्य
दुग्ध इनां को वेच कर्के १ और लाख मांस के वेचणें विषे महाव्रत करे अर्थात् वारां १२
वर्ष का व्रत करे तद शुद्ध होता है और प्राणी जो पुरुषादिके विना गौ हस्ति अश्व गर्दभ पाक्षि इ
त्यादियों के वेचणें में और तिल के वेचणें में भी वर्ष रोज का व्रत करे । एह प्रायश्चित्त पुरुष के बहुत
यास विषे जानणे योग्य है और अल्पापराध विषे पूर्वोक्त विष्णुजी का हि वचन देखणे योग्य है

११२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भू० भा० ॥

ब्राह्मेति ब्राह्मण लवण पक्वान्न मधु दुग्ध दधि घृत जल संपूर्ण गंध तिल रक्त वस्त्रगोविष शंस आं
ग्राम्यके पशुयांविचों घोडा गधा इत्यादि और संपूर्ण वनके पशु बकरी भेड़ इत्यादि
विद्या गौ शंख उन्न इनमेंसे एक एकके वेचणें में प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होता
है । शंख जी कहतेहैं आरामेति वगीचा तलाओ झवचा वाउली पुण्य सोम क्या अमृत
बछीका रस इनके वेचणे में त्रिकाल स्नान करे पृथ्वीमें शयन करे चौथे पहर भोजन करे
तो वर्ष रोज कर्के शुद्ध होता है ॥ सुमन्तुजी कहतेहैं देवर्षीति देवर्षि कर्के देवताकी और ऋषिको
प्रतिमा सोम और संपूर्णलोकोंके विश्राम स्थानकेवृक्ष और अपनी संतान और कूप झवचा दान
क्या दित्तीहोई वस्तु और अपने आपका वेचणा इनमें त्रयकृच्छ्र व्रत करे ॥ भविष्यत्पुराणविषे

ब्राह्मणस्यलवणपक्वान्नमधुक्षीरंदधिघृतमुदकंसर्वगंधास्तिलारक्तंवासोगुड
तैलानि ग्राम्यपशूनामेकशफाश्च सर्वचारण्याः पशवोविद्यागावःशंखश्चो
र्णश्चेति विक्रयेणैकैकस्मिन्प्राजापत्यंचरोदिति ॥ सएव ॥ आरामतडागोद
पानपुष्करिणीसुकृतसोमविक्रयेत्रिपवणस्त्राय्यधःशार्थचतुर्थकालाहारः ॥
संवत्सरेणपूतोभवतीति ॥ सुमन्तुः ॥ देवर्षिसोमचैत्यात्मापत्यकूपोदपानदा
नात्मनांविक्रयेकृच्छ्रत्रयंचरोदिति । देवर्षीतिप्रतिमाभिप्रायेण ॥ भविष्यत्पु
राणे गुडंतिलांस्तथानीलीकेशगोधूमशल्यकान् विक्रीयब्राह्मणोगांचकृच्छ्रं
सांतपनंचरोदिति १ ॥ गोविक्रयेनिदार्थवादमाह यमः ॥ गवांविक्रयकारी
तुगविरोमाणियानितु तावद्वर्षसहस्राणिगवांगोष्ठिकृमिर्भवेदिति १ एता सां
निलघुगुरुप्रायश्चित्तानि कामाकामसकृच्छ्रत्तयाद्यपेक्षया योजनीयानि ॥ गा
इदंचसर्वप्रायश्चित्तजातमापदि वैश्यवृत्त्याजीवतोब्राह्मणस्यैव इतरेपां
त्वापदिनदोषः ॥ वैश्यवृत्त्यात्चविक्रेयंब्राह्मणस्यपयोदधीतिनारदोक्तेः

लिखतेहैं ॥ गुडामिति गुड तिल नील केश कणक और शल्यक क्या मृगविशेष और गौ इनां
को वेचकरके कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे १ अवगौके वेचणविषे निदाकहतेहैं यमजी ॥ गवामिति गौ विषे
आंकां वेचण वाळा पुरुष जितने गौके रोमहैं तितने हजार वर्ष गोशाला विषे कीडारहताहै
एइ जो लघु गुरु प्रायश्चित्तहैं तो काम अकाम एकवार बहुत बार शक्त्यादियोंकी अपेक्षा कर्के
जोडने योग्यहैं परंतु इसमें ऐसाविचारहै कि एह संपूर्ण जो पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका समूहहै सो
एह आपत्ति विषे वैश्यवृत्ति कर्के जीविका करण वाले ब्राह्मणकोहि जानणा औरोंको आपत्ति
तिविषे दोष नहिहै इसमें प्रमाणकहतेहैं वैश्येति वैश्य वृत्तिविषे ब्राह्मणको पय दधि नर्गा असे
वेचणा चाहिए एह नारदजी का कथनहै ।

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ ११३

और मिताक्षर ॥ विषे कहा है यत्रेति जिसविषे निषेध है तिन विषे विधिभी है इसी कारणते किते कितेक प्रायश्चित्त विधि विषे ब्राह्मणका ग्रहण किया है और शूद्रकों आपत्ति विषेहि दोषका अभाव शूलपाणि जी कहो है सो अच्छानहि तैसँहि पगशरजी कहते हैं लवणमिति लवण मखीर मदिंग दधितक्रंघृत दुग्ध इसकर्के शूद्र शूद्रजातिकों दोष नहीं कहते हैं इनके बेचणे विषे सभनों विषे विक्रयकों करे १ और कालिकापुराण विषे भी कहा है विक्रयमिति संपूर्ण वस्तुयोंकों बेचता होया शूद्र दोष वाला नहि होता है मखीर चर्म मदिरा लाख मांस इनांका त्यागकर्के और संपूर्ण वस्तुको बेच लेवे १ तिसके विषे पराशर और कालिकापुराण इनके दोनों वाक्योंको आपत्ति विषयविषे प्रमाणका अभावहोणेतें अर्थात् आपत्तिमे हि दोषका अभाव है और आपत्ति बिना दोष है एह

मिताक्षरायाम् यत्रचनिषेधस्तत्रैवप्रायोविधेयः अतएव कचित्कचित्प्रायश्चित्तविधौ ब्राह्मणग्रहणंकृतम् ॥ शूद्रस्यापद्येवदोषाभावमाहशूलपाणिः ॥ तन्नसार्धीयः तथाचपराशरः।लवणंमधुमद्यंवा दधितक्रंघृतंपयः नदुप्येच्छूद्रजातीनांकुर्यात्सर्वेषुविक्रयम् १ कालिकापुराणेषि । विक्रयंसर्ववस्तुनांकुर्वन्शूद्रो नदोषभाक् मधुचर्भसुरांलाक्षांत्यक्त्वायांसंचपंचममिति १ ॥ तत्रानयोर्वाक्ययोरापद्विषयत्वेप्रमाणाभावात् अतश्चशूद्रस्यानापद्यपिमध्वादिपंचव्यतिरिक्तानिविक्रेयाणि क्षत्रियवैश्ययोस्त्वनापदिशूद्रवत्प्रतिप्रसवाभावात्सर्वाण्यविक्रेयाणि । आपदितुनदोषः ॥ निषेधानांप्रायश्चित्तानांचब्राह्मणमात्रविषयत्वोक्तेः ॥ ब्राह्मणानामेवत्वापदिवैश्यवृत्तिकर्के जीविकाकरणे पदतित्वार्पः ॥ इदंचप्रायश्चित्तंजातमपण्यविक्रयार्जितधनपरित्यागपूर्वकंकार्यमित्याह मनुः

निषेध नहि हुंदा इसी कारणते शूद्रको आपत्तिके बिनाभी मध्वादि पंचते अतिगिक वस्तु बेचणे योग्य हैं ॥ और क्षत्रिय वैश्यकों आपत्तिने बिना शूद्रको न्याउं प्रतिप्रसवके अभाव होणेतें (निषेधका जो निषेध है सो प्रतिप्रसव किहा है) संपूर्ण अविक्रेय क्या नहि बेचणे योग्य हैं ॥ और आपत्ति विषे दोष नहि है क्योंकि निषेधोंकों और प्रायश्चित्तोंको ब्राह्मण मात्रका विषय होणेतें ॥ और ब्राह्मणोंकोहि आपत्तिविषे वैश्य वृत्तिकर्के जीविकाकरणे से दोष है एह ऋषियोंका मत है ॥ एह संपूर्ण प्रायश्चित्तोंका जो समूह है इसको अपण्य क्या जोना है बेचणे योग्य वस्तु तिसका बेचणा तिसकर्के इकठा कीता जो धनतिसको त्याग कर्के पिच्छे करे । इह मनुजी कहते हैं

११४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भ

यदिति जो ब्राह्मण खोटे कर्म कर्केधन इकठा करतेहैं तिस के त्यागसे कर्के हि जप करणे कर्के वा तपकरणे कर्के शुद्ध होतेहैं १ इस विषे जप और तपस आं जानणा अर्थात् चाहे जप करे अथवा तप करे ॥ काममिति खेती करण वाला आपही खेती विषे कामनासे उत्पन्न कर्के थोड़ा काल स्थित रहण वाले जो शुद्ध तिल तिनांको धर्मके वास्ते बेचदेवे २ इसी विषे कृष्यादि ग्रहण नियम वास्ते जानणा और तिस कर्के खेदे जो तिल तिनांके बेचणे विषे दोषहोताहै इस विषे भी पूर्वोक्त मान्य उपपातक प्रायश्चित्तों कर्के विकल्प जानणा तिसविषे आपत्ति विना त्रयमहीने का मनुजीका व्रत जानणा और आपत्ति विषे याज्ञवल्क्यके चारव्रत जानणे एह व्यवस्थाहै एह नहि बेचणे योग्य जोवस्तु तिसके बेचणेके प्रायश्चित्तका प्रकरणपूराहोआ ॥ २७ ॥ * इससे उपरंत

यद्गृहितेनार्जयंतिकर्मणा ब्राह्मणा धनम् ॥ तस्योत्सर्गेण शुद्ध्यंति जप्येन तप सैव चेति ॥ १ ॥ अत्र जप तपसोर्विकल्प इति ॥ काममुत्पाद्य कृष्यां तु स्वयमेव कृषीवलः विक्रीणीत तिलान् शुद्धान् धर्मार्थमाचिरस्थितान् ॥ २ ॥ कृष्यादिग्रहणं नियमार्थम् ॥ तेन क्रीतानां तिलानां विक्रये दोष एव अत्रापि सामान्योपपातक प्रायश्चित्तैर्विकल्पः तत्रानापदि त्रैमासिकं मानवम् आपदि तु याज्ञवल्क्यीयव्रतचतुष्टयमिति व्यवस्था इत्यप्येयविक्रये प्रा० २७ * ए तदनंतरमाकराधिकार १ महायंत्रप्रवर्तनौ २ पधीहिंसा ३ स्त्रियाजीवना ४ भिचार ५ मूलकर्मणि ६ गणनायां व्याकृतानि । तत्र सामान्योपपातक प्रायश्चित्तानि मनुयाज्ञवल्क्योक्तानि अभ्यासे त्रैमासिकं मानवमनभ्यासे यो गीश्वरोक्तं व्रतचतुष्टयम् तत्रापि जातिशक्तिगुणापेक्षया तारतम्यं बोध्यम् अभिचारप्रायश्चित्तमयाज्ययाजनप्रसंगेऽपि प्रागुक्तम् ओषधीहिंसा प्रायश्चित्तमथ्रुमच्छेदोऽपि वक्ष्यते इत्याकराधिकारादि प्रा० १२८।२९।३०।३१।३२।३३

आकराधिकार १ महायंत्रप्रवर्तन २ ओषधीहिंसा ३ स्त्रियाजीवन ४ अभिचार ५ मूलकर्म ६ इनों के अर्थ पीछे गणना विषे कहेहैं तिनांविषे सामान्य उपपातक प्रायश्चित्त मनु याज्ञवल्क्यके कहे होए अभ्यास विषे त्रय ३ महीनेका मनुजीका व्रत जानणा और अनभ्यास विषे याज्ञ वल्क्यके कथन कीयेहोए चारव्रत जानणे तिनांविषेभी जाति शक्ति गुणकी अपेक्षा कर्के न्यूनाधिकता जानणी अर्थात् जैसी जाति शक्ति और गुणहोवे तैसाही प्रायश्चित्त करणे योग्यहै केवार इसका अर्थ पीछे होचुकाहै और अभिचारका प्रायश्चित्त अयाज्ययाजनके प्रसंग विषेभी पीछे कहाहै ओषधीहिंसाका प्रायश्चित्त अग्ने वृक्षच्छेद विषेभी कहेंगे एहखाणाजोहैं लूणलोहादिकी तिनके अधिकारका और महा यंत्रके प्रवर्तनादिका प्रायश्चित्त पूरा होया २८।२९।३०।३१।३२।३३)

॥ गिरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ११६

और मिताक्षर कटणे विषे प्रायश्चित्त मनुजी कहते हैं फलेति फलदेणे वाले वृक्षोंके कटणे विषे
प्रायश्चित्त नि ऋचाका सौं १०० जपकरे और गुल्म वल्ली लता पुष्प वाले वृक्ष वीरुध इनांके
विषे भी पूर्वोक्त जप करे ता शुद्ध होता है ॥ १ ॥ इसका अर्थ स्पष्ट कर्के दिखाते हैं फलदाना
मिलिने फल देणे वाले जो आम्र पनसादि वृक्ष हैं तिनांके कटणे विषे तैसेहि गुल्म जो हैं
करे से रहित जानणे चपुना कुजकादि जानणे और वलीलता जो हैं ग्लोते लेकर और
लता जो हैं वृक्षोंकी शाखामे सक्त और गुच्छे कर्के युक्त जो लता है सो वीरुध कही है सो
कूप्मांड्यादि अर्थात् पिठेदीवेलते आदिले कर जानणी और मत कहते हैं गुल्म मालत्यादि
जानणे और लता द्राक्षादि जानणी इनांके विषे बहुवचन आदि के अर्थ वास्ते है

अथ द्रुमच्छेदे प्रा० । मनुः । फलदानांतु वृक्षाणां छेदने जप्य मृक्षशतम् गुल्म
वल्लीलतानां च पुष्पितानां च वीरुधाम् १ फलदानामाम्रपनसादीनां वृक्षा
णां छेदने तथा गुल्माग्रप्रकांडाः कुब्जकादयश्च वृहल्लतावल्लयोगुडूच्याद
यः लता वृक्षशाखासक्ताः प्रतानिन्योलता वीरुधः कूप्मांड्यादयः ॥ गुल्मा
मालत्यादयः लता द्राक्षादयः बहुवचनमाद्यर्थं ततः क्षुपाः करवीरादयः प्र
तानाः सारिवादयः उपध्यः शाल्यादय इति शेखरः ॥ पुष्पितानामिति गु
ल्मादिभिः संबद्धत इत्यपराकः ॥ पुष्पितानामुक्तेतराणां पूजार्हाणां मुनिवृ
क्षाणामित्यन्ये ॥ एतच्छेदने च सावित्र्यादेर्ऋचः शतं जप्यम् इदं फलवृक्षादि
च्छेदने लघु प्रायश्चित्तं अज्ञानतः सकृद्विषयम् अपरिगृहीते पुवृक्षादिष्वेतत्

और क्षुप करीरते लेकर जानणे और प्रतान क्या सारिवा वृक्ष विशेषतें लेकर जानणे और
औपधियां धान्यतें आदिले कर जानणीयां एह शेखर कामत है और (पुष्पितानां) इस प्रकार
गुल्मादि साथ संबंध करणा एह अपराकम कहा है ॥ और पूजाके योग्य और पीछे कहे
जो वृक्ष उनांसें विना पुष्पवाले मुनियोंके वृक्ष इसविषे जानणे एह किसी आचार्यका म
त है । इनांके कटणे विषे सावित्र्यादि ऋचां का सौं १०० जप करे तद शुद्ध होता है ॥ एह
फल वाले वृक्षादिके कटणे विषे थोडा प्रायश्चित्त है सो अज्ञान कर्के एकवार करणे विषे जान
णा ठौर नहीं है किसेका स्वत्व जिनां वृक्षोंमे तिनां विषे एह प्रायश्चित्त जानणे योग्य है ॥

११६ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और स्वत्व है जिनां विषे तिनां प्रायश्चित्त कहते हैं ॥ तृणमिति तृण वा काष्ठ वा पु
इनांको न पुच्छकें ग्रहण करे तद उसके हाथ कटणें योग्य हैं १ इसमें दण्डको आर्द्रस आं
स्वत्व वालें विषे द्विगुण प्रायश्चित्त जानणा एह व्याख्याकरणेवालेओंका मत है और यज्ञां तिल
कटणेंमें दोष नहि है और खेतीके निमित्त हलादि वास्ते कटणेंमें भी दोष नहि है इस और
वसिष्ठजी कहते हैं पुष्पेति पुष्प और फलके देणे वाले वृक्षोंको न कटे और हलचलाणें वास्ते
कट लेंगे क्योंकि हलादि वास्ते कटणेंके दोषको यज्ञकें दूर होणें एह मिताक्षरामे
किहा है इसमें एह अभिप्राय है कि जो लोक खेती करते हैं उनको बीजणे के समय अथवा
दाणे घरल्याउणे के समय एक यज्ञकरणा होता है तिसकें उक्त दोष नहि है ॥ अब यमजी कथन

तृणवायदिवाकाष्ठपुष्पवायदिवाफलम् अपूट्वापरिगृहणीतहस्तच्छेदनम्
हर्ताविदण्डाधिक्यदर्शनात् परिगृह्णीतेपुद्गिगुणमिति व्याख्यातारः यज्ञा
र्थच्छेदने न दोषः तथा कर्पणांगभूतहलाद्यर्थत्वेपि न दोषः अत्र वसिष्ठः ॥ पुष्प
फलोपगान्पादपान्नाहिं स्यात् कर्पणकरणार्थं चोपहन्यादिति कर्पणार्थच्छेदन
दोषस्य यत्नेन परिहार्यत्वादिति मिताक्षरा यमः । वृक्षलतागुल्मतृणच्छेदने
पादकृच्छ्रकः फलवतां प्राजापत्यम् स एव त्रिरात्रं तु व्रतं कुर्याच्छित्वा वृक्षफ
लव्रतम् ॥ प्रसंगात्प्राणिवधप्रायश्चित्तावसरे वक्तव्यस्य फलाद्याश्रितानां
नस्पतिच्छेदेऽवश्यं मर्तव्यानां प्राणिनां वधस्य प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ अन्नादि
जानांसत्वानां रसजानांच सर्वशः फलपुष्पोद्भवानांच घृतप्राशो विशोधनम् १

कहते हैं वृक्षेति वृक्ष और लता और गुल्म गुच्छे तृण इनांके कटणे विषे लघुकृच्छ्र व्रत
करे तो शुद्ध होता है और फलवाले वृक्षोंके कटणेंविषे प्राजापत्य व्रतकरे और फल
देणे वाले वृक्षोंके कटकें भी त्रय रात्रि व्रत करणा चाहिए एह भी यमजीने कहा है ॥ और
प्रसंगतें प्राणिवधके प्रायश्चित्तके अवसरमें फलादियोंके आश्रय वृक्षोंके कटणे विषे अवश्य
कें मरणे योग्य जो प्राणी तिनांके मरणे विषे प्रायश्चित्तको मनुजी कहते हैं अर्थात् वृक्ष फ
लमें ग्रहण वाले जो जीव तिनांके मरण विषे प्रायश्चित्त कहते हैं ॥ अन्नादीति अन्नादितें उत्पन्न
जो जीव और रसतें उत्पन्न जो जीव और फल पुष्पतें उत्पन्न जो जीव इनांके मरणें वि
षे घृत प्राशन करे तद शुद्ध होता है १

और मिताक्षर

प्रायश्चित्त जो गुडादि इनांते उत्पन्न और खंवालादि फलाते उत्पन्न और मधुकादि उत्पन्न जो प्राणी तिनांके मारण विषे घृत प्राशन करे और भोजन न करे उसी मित्रिदिन पाप नष्ट होते हैं ॥ और औषधियां जो ग्राम्य वा वनकीयां तिनांके वृथाहि कटणें विषे एकदिन सारा गौआंकी सेवा वास्ते पीछे जावे तिसते उपरंत सायंकाल दुग्ध पान करे और भोजनका परित्याग कर देवे तो शुद्ध होता है ॥ तैसेहि याज्ञवल्क्य जी कहते हैं वृक्षेति वृक्ष गुल्म लता वीरुख इनांके कटणें विषे सा १०० ऋचा का जप करे और औषधीके वृथा कटणें विषे क्षीरभोजन करे और एकदिन गौकी सेवा करे तद शुद्ध होता है १ तैसेहि मनुजी कहते हैं वृष्टिजानामिति वृष्टिते उत्पन्न जो औषधियां वा आपही वनविषे उत्पन्न होइ

रसजानां गुडादिजातानामुदुंबरादिफलजातानां मधुकादिपुष्पोद्भवानां प्राणिनां वैधृतप्राशनं भोजनांतररहितं तद्दिनमेव पापनाशनम् औषधीनां तु ग्राम्यारण्यानां वृथैव छेदने दिनं कृत्स्नमहर्गवां परिचर्यार्थमनुगमनं तदंते क्षीरपाशनम् । आहारांतरपरित्यागः । तथा च याज्ञवल्क्यः । वृक्षगुल्मलतावीरुच्छेदने जप्यमृक्शतम् । स्यादौषधीवृथच्छेदे क्षीराशो गोनुगो दिनम् १ ॥ तथा च मनुः वृष्टिजानामौषधीनां जातानां च स्वयं वने वृथारंभे नुगच्छेद्वा दिनमेकं पयोव्रतम् १ वृथारंभे निष्प्रयोजनं छेदनम् कुत्रचित्स्थानविशेषवृक्षादिच्छेदे दंडाधिक्यं दृष्टं तत्र प्रायश्चित्तमपि तथा ॥ तदुक्तं ॥ चैत्यश्मशानसीमासु पुष्पस्थाने सुरालये जातद्रुमाणां द्विगुणोदमो वृक्षेषु विश्रुत इति १ ॥ अयं च ऋक्शतजपो द्विजातिविषयो न पुनः शूद्रादिविषयः तेषां जपेऽनाधिकारात् अतस्ते पादंडानुसारेण द्विरात्रादिकं कल्पनीयम् ॥

वां जो औषधियां तिनांके वृथारंभविषे गौके पीछे जावे एक दिन दुग्ध पान करे तो शुद्ध होता है ॥ १ ॥ वृथारंभ नाम निष्प्रयोजन कटणका है ॥ कुत्रचिदिति कितेक स्थान विशेष विषे वृक्षादिके कटणें दंडकी आधिक्यता जाणी दो है इस कर्के तिस विषे प्रायश्चित्त भी कहे हैं ॥ चैत्येति जो आश्रम श्मशान हट्ट पुष्पस्थान देवताका मंदिर इनां विषे उत्पन्न होए वृक्षको कट देवे तिसको पूर्वोक्त दूणा दंड जानणा १ परंतु एह जो ऋचाका शत जप है सो ब्राह्मण क्षत्री वैश्यमें जानणा और शूद्रादिविषे नहि जानणा क्योंकि तिनांको जपका अधिकार नहि है इस कारणते तिनांको दंडके अनुसार दो २ अथवा तीन रात्रिका व्रत कल्पना करणा चाहिए इस बातका भी इस जगा ध्यान रक्षणा

११८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

उपेति कि उपपातकविषे इस पाठकी अनर्थकता होगी क्योंकि पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका और गृजनक्या होणेतें तिस अनर्थकताके दूर करण वास्ते उपपातकोंका साधारण प्रायश्चित्त मनु याज्ञिकदिवास्ते का कथन किया होया इसविषे जानणा ॥ और इस सामान्य प्रायश्चित्तको गुरु है विषे अभ्यास विषयविषे कल्पना करणी योग्य है ॥ और बड़े फलोंके देण वाले जो नारिकेलादि वृक्ष तिनको इच्छातें कटणेंका जो अभ्यास तिस विषे वषे रोजका व्रत करे तो शुद्ध होना है और इच्छातें एक बार कटणें विषे पीछे किहा जो जप तिसीको दूणा कर लेवे ॥ एह वृक्षोंके कटणें विषे जो प्रायश्चित्त था तिसका प्रकरण पूरा होया ॥ ३४ ॥

अब आत्मारथ क्रियारंभका प्रायश्चित्त कहतेहैं इसका अर्थ पीछे प्रायश्चित्त गणनामें कि हा है अत्रेति इसविषेभी यथा योग्य उपपातकोंके मनु योगीश्वरके कथन कीत्ते होए सामा

उपपातकमध्ये ॥ विशेषतः पाठस्यानर्थक्यपरिहारार्थमुपपातकसाधारण प्रायश्चित्तमप्यत्र भवति । एतच्च गुरुत्वादभ्यासविषयंकल्प्यम् ॥ महाफल प्रदानानारिकेलादिवृक्षाणां कामतः छेदनात्यंताभ्याससंवत्सरव्रतम् ॥ स कृच्छेदेतु पूर्वोक्तजपोद्विगुणो विधेयः ॥ इति द्रुमच्छेदे प्रायश्चित्तम् ॥ ३४ ॥
॥ अथात्मारथक्रियारंभप्रा० ॥ अत्रापियथायोग्यमुपपातकसामान्यप्रायश्चित्तम् ॥ ३५ ॥ अथ निन्दितान्नादनप्रा० ॥ इदंच मनुने उपपातकमध्ये पाठितम् ॥ अनुपपातकनिदमितिविज्ञानेश्वरः ॥ निन्दितस्यान्नस्यादनमित्यन्नस्य निन्दितत्वं स्वभावकालसंपर्कक्रियाभावपरिग्रहरूपोपाधिषट्केन भवति तत्र स्वभावाल्लशुनादेः १ ग्रंथांतरे स्वभावदुष्टमेव जातिदुष्टम् ॥ कालतः शुकादेः ॥ २ ॥ संपर्कात् स्पर्शादेः ३ क्रियातो हरतदत्तव्यंजनादेः ४

न्य प्रायश्चित्त जानणें ॥ एह अपणे वास्तेहि भोजनादि क्रियाका आरंभ करणा इसका प्रायश्चित्त पूरा होया ३५ ॥ अब निन्दित अन्नके भक्षण में प्रायश्चित्त कहतेहैं इदमिति एह मनुने उपपातकोंके मध्य विषे पढ़या है और विज्ञानेश्वरने अनुपपातकोंके विषे पठित कीता है ॥ निन्दित अन्न का भक्षण करणा इस जगा अन्नको निन्दितत्व छे ६ प्रकारका ॥ स्वभाव १ काल २ संपर्क ३ क्रिया ४ भाव ५ परिग्रह ६ इनकके होता है तिसविषे स्वभावतें लशुनादियोंको निन्दित जानणा और ग्रंथांतरविषे स्वभाव दुष्टको ही जाति दुष्ट कहतेहैं ॥ १ ॥ और कालतें शुकादि निन्दित जानणे २ और संपर्कतें कुत्तेक साथ स्पर्शादि होणेतें अशुद्धि कही है ३ और क्रियातें हृत्थ कर्के दिते जो ध्यजन क्या लवणादि तिनकी अशुद्धि जानणी ४

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ ११९

अथ श्रीर भू भव कया और वस्तुमें और वस्तुका भ्रम होणा जैसे गन्धके रसविषे मदिराका
 ११३. तिसमें गन्धका रस प्रतीत होणा ५ परिग्रहमें क्या पतितके अन्नादितें ६ इस विषे भी
 ब्राह्मणादियोंकों संपूर्ण पादोन अर्द्धपाद इस व्यवस्थातें प्रायश्चित्त जो देणा सो पूर्वोक्त हि
 जानणा ॥ ब्राह्मणकों संपूर्ण क्षत्रीको पादोन वैश्यको अर्द्धपाद एह व्यवस्था जानणी
 अब जाति दुष्टका उदाहरण कहतेहैं लशुनमिति लस्सन गाजरां अथवा थोमका कोई भेदहै
 और कोई कहतेहैं कि विषवाले वाण कर्के मारे होए मृगके मांसकानाम गृजनहै गंडे छ
 त्रियां शाकविशेष नालिका नलीकाशाक अलावु क्या घीआ एह सब जातिदुष्ट कहेहैं १
 तिस विषे स्वभावतें अभक्ष्य भक्षणमें अर्थात् जातिदुष्टके भक्षणमें प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं

भावोह्यन्यवस्तुनोऽन्यत्रसंभावना यथेशुरसादौसुरेयमितिसंभावना ततो
 पीक्षुरसादेः ५ परिग्रहात्पतितान्नादेः ६ अत्रापिब्राह्मणादिभ्यः सकलपा
 दोनार्द्धपादशोऽव्यवस्थापनदिशा प्रायश्चित्तदानं पूर्वोक्तमेव बोध्यम् ॥
 जातिदुष्टोदाहरणम् ॥ लशुनं गृजनं चैव पलांडुः कवकानि च वर्तिका नालि
 १ कालावु उपेया जातिदूषितम् १ कवकं छत्राकम् । तत्र स्वभावतोऽभक्ष्य भक्ष
 णे प्रा. ॥ मनुः । छत्राकं विड्वराहं चलशुनं ग्रामकुक्कुटम् पलांडुं गृजनं चैव म
 त्याज गंध्यापतेन्नरः १ स्मृत्यंतरे ॥ पलांडुं विड्वराहं च छत्राकं ग्रामकुक्कुटम्
 लशुनं गृजनं चैव जगंध्याचांद्रायणं चरेत् १ पलाण्डुः कंदविशेषः विड्वराहो
 ग्रामसूकरः छत्राकं छत्रसदृशम् । ग्रामकुक्कुटलशुने प्रसिद्धे गृजनं कंदविशेषः
 गंत्रेन कइति उदीच्य प्रसिद्धः एतानि कामतः सकृद्रक्षयित्वा चांद्रायणं चरेत् ॥

छत्राकमिति छत्रियां विड्वराह लस्सन ग्राम कुक्कुट गंडा गाजरां इनांकोइच्छातें भक्षण करे तद
 द्विज पतित होताहै १ कुलक और भी स्मृत्यंतरमें कहतेहैं पलांडुमिति गंडा विड्वराह छत्रा
 क ग्रामकुक्कुट लस्सन गाजरा इनांको भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ पलांडु
 नाम कंदविशेषकाहै और विड्वराह नाम ग्रामसूकरकाहै और छत्राक छत्रीकीन्याई जो शाक
 विशेषहै तिसका नामहै और ग्राम कुक्कुट लशुन प्रसिद्धाहै और गृजन भी कंद विशेष जान
 णा गंत्रेनक इस नाम कर्के उत्तर दिशामें प्रसिद्धहै एह संपूर्ण जो पाछे कहे हैं इनांको इ
 च्छातें एकवार जो पुरुष भक्षण करता है सो चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥

१२२ श्रीरणवीर कारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब चतुर्विंशति मतसे कथन करते हैं लशुनमिति लस्सन गाजर तृणराज क्या तालवृक्ष तिसका फल और नीली क्या औषधिविशेष इनांको द्विजभक्षणकर्के चांद्रायणव्रतकरे तद शुद्ध होता है १ एह नउच्छाते बहुतवार वा इच्छाते एकवार भक्षणकरणमें पूर्वोक्तव्रतजानणा ॥ अलावुमिति और अलावु क्या घीआ और श्वेत भट्टे कंडेते रहित कुसुमा और नालिकासाग और शणकेपुष्प इका को भक्षणकरे तो एकदिनका उपवासव्रतकरे २ कंदेति और भ्रमवाले जो कंद मूल फलादि अर्थात् जिनका निर्णय धर्मशास्त्रसे नहि होया भक्ष्या भक्ष्यविचारमे इनांको भक्षणकरे तिसकेविषे उपवास होनाहै एह शातातपजीका वचनहै ॥ १ ॥ और इसीका अर्थ कहते हैं संभ्रांत क्या भक्ष्यहैं वा अभक्ष्यहैं इस संदेहवाले जानणे और शणका पुष्प सिंदूर और हस्तकर्के मथन

चतुर्विंशतिमतात् ॥ लशुनं गृजनं चैव तृणराजफलं तथा नीलं चैव द्विजोभुक्का चरेच्चान्द्रायणव्रतम् १ अकामतोऽभ्यासेकामतो वा सकृद्रक्षणे एतत् तृणराजस्तालः ॥ अलावुं शुभ्रं कंठकं कुसुमं कंदकं नालिकाशाणपुष्पं च जग्ध्वा दिनमभोजनम् २ कंदमूलफलादीनि संभ्रांतानि न भक्षयेत् उपवासो भवेत्तत्र शातातपवचो यथा ३ संभ्रांतानि भक्ष्या भक्ष्यत्वेन संदिग्धानि ॥ शणपुष्पं शाल्मलं च करनिर्मथितं दधि वह्निर्वेदिपुरोडाशजग्ध्वा नाद्यादहर्निशम् ४ लशुनादिपुये तुल्या गंधवर्णरसादिभिः अभक्ष्यास्ते द्विजातीनां भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत् ५ शंखः ॥ लशुनपलांडुगृजनच्छत्राकनालिंगविड्वराहग्रामकुक्कुटनखरोममांसभक्षणे चान्द्रायणं कुर्व्यात् ॥ गृजनमत्र लशुनानुकारि

कोताहोया दधि और वह्निर्वेदिका पुरोडाश इसका अर्थ पिच्छे कहचुके हैं इनांको भक्षण कर्के एक दिनरात्र भोजन न करे ॥ ४ ॥ और लस्सनादिके जो गंध वर्ण रसादि कर्के तुल्य हैं सो द्विजातियोंको अभक्ष्य हैं जेकर भक्षण करें तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होते हैं ॥ ५ ॥ अब शंखजीका मत कथन करते हैं लशुनमिति लस्सन गंडा गाजर छतडियां नालिंग क्या फलविशेष ग्राममूकर ग्रामकुक्कुट नख रोम मांस इनांके भक्षणाविषे चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होता है । और गृजनपद इस विषे लस्सनका अनुकारि क्या तुल्य जानणा

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १२३

विषेति विष कर्कें मिलित जो शस्त्र तिस कर्कें जो मृग मृन होवे तिसका मांस अभक्ष्य है ति सीका नाम गृजन है एह किसीका मत है १ अव'शातातपजी कथन करते हैं लशुनमितिलस्स म गंडे गाजरां और दुष्टगंधि वाले वस्तु जैसे लस्सनादि और ग्रामसूकर ग्रामकुक्कुट मनुष्यमांस गोमांस इनां संपूर्णके भक्षण विषे द्विजातियोंको प्रायश्चित्त उपरत संस्कार करणा उचित है इसमें ऐसा नहि जानणा कि पलांडु भक्षण में प्रायश्चित्त थोड़ा है और गोमांस भक्षण में बहुत प्रायश्चित्त है इनका कैसे सहचार है इसवास्ते कथन करते हैं कि प्रायश्चित्तके अंतमें संस्कार वास्ते पलांडु गोमांसका सहचार है अर्थात् सो दोनोंमें एक जैसाहि है ॥ सुमंतुजी कथन करते हैं लशुनामिति लस्सन गंडे गाजरां कुंभीक कथा शाकविशेष श्राद्धका अन्न सूतक

विषदिग्धेन शस्त्रेण यो मृगः परिहन्यते अभक्ष्यं तस्य तन्मांसं तद्विगृजनमिष्यते इतिकेचित्पठंति ॥ शातातपः ॥ लशुनपलांडुगृजनपिच्छगंधिविड्वरा हग्रामकुक्कुटनरगोमांसभक्षणे च सर्वेष्वेतेषु द्विजातीनां प्रायश्चित्तांते पुनः संस्कारं कुर्यात् । प्रायश्चित्तपार्थक्येऽपि प्रायश्चित्तांतसंस्कारार्थं पलांडुगोमांसयोः सहचारः ॥ सुमंतुः ॥ लशुनपलांडुगृजनकुंभीकश्राद्धसूतिकाभोज्यान्नमधुमांसमूत्ररेतोऽमेध्याभक्ष्यभक्षणे सावित्र्यष्टसहस्रमूर्धिसंपातानव नयेत् उपवासश्च । मूर्धिमस्तके संपातान् श्रवणयेत् उदकविन्दून् पातयेत् एतान्येव व्याधितस्य भिषक् क्रियायामप्रतिपिद्धानि भवन्ति यानि चैवं प्रकाराणितेष्वप्यदोषः । संपातावनयोपवासावनुपनीतवालविषये ॥ प्रचेताः

पीयूषं श्वेतलशुनं वृंताकफलं गृजनम्

का अन्न और अभोज्य अन्न मधु मांस मूत्र वीर्य विष्टा एह जो अभक्ष्य इनके भक्षणविषे एक हजार १००८ अष्ट गायत्री मंत्र कर्कें शिर विषे जल विन्दु पावे और उपवासभी करे एहि अर्थ स्पष्टकीता है मूर्ध्नि परंतु एह जो पूर्वोक्त हैं सो व्याधिवाले पुरुषको औषधि करणं विषे अप्रतिपिद्ध क्या स्वीकार करणे योग्य हैं पूर्वोक्तकी न्याई औरोंविषे दोष नहि जानणा और जल विन्दुका पाणा उपवास एह यज्ञोपवीत रहित बालक विषे जानणा ॥ और गायत्रीको पूर्वोक्तजपके साथ एह यज्ञोपवीत वालेको जानणा और शूद्रादि विषे इसका प्रायश्चित्तहि नहि मद्यादि मिलितवस्तुओं विषे औषधीके अर्थ अंसाविवेक करणा उचित है ॥ अब प्रचेताजी कथन करते हैं पीयूषमिति पीयूष श्वेत लस्सन भठे और गाजरां

१२४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

गंडे गुंद देवताका धन छतडिया १ ऊठणीका दुग्ध भेडीका दुग्ध इनको जो द्विजश्रजानतें पान करे सो तीनरात्रिका उपवासव्रतकरे और पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होता है २ पीयूष नवीन प्रसूता गौके दुग्धका नाम है और इसमें असमर्थपुरुषको दानकरणाहियोग्य है परंतु एभी जिसने पान कर्के उलटी कीती है तिसविषे जानणा और जिसने पान कर्के पचाया है सो दूणा प्रायश्चित्त करे ॥ अव यमजी कथन करते हैं तंडुलीयकें तंडुलीयक क्या शाकविशेष और कुंभीक शाकविशेष और एकवृक्षकों काट कर उसीपर दूसरा वृक्ष लगाणा अर्थात् पीउंदलगाणी तिसते उत्पन्नजी शाक अथवा व्रश्चनप्रभावनाम गुंदकाभी है परंतु प्रकरणशाकका है इसतें शाक विशेषहि समझणा उचित है और नालिकाशाक और नालिकेरी और लस्मूडेके फल १ और सुगंधि

पलांडुं वृक्षनिर्यासदेवस्वकवकानि च ॥ १ ॥ उष्ट्रीक्षीरमविक्षीरं यस्त्वज्ञाना
त्पिवेदद्विजः त्रिरात्रमुपवासश्च पंचगव्येन शुध्यति ॥ २ ॥ पीयूषं नवप्रसू
ताया गोः क्षीरम् ॥ असमर्थस्य तु दानमेव प्रच्छर्दितवत एतत् ॥ यमः ॥
तंडुलीयककुंभीकव्रश्चनप्रभवास्तथा नालिकानालिकेरीचश्लेष्मांतकफला
निच १ भूस्तृणं शिशुकं चैव खुखंडं क्षवकं तथा एते पांभक्षणं कृत्वा प्राजापत्यं च
रेद्व्रतम् ॥ २ ॥ नालिकेरीशाकविशेषः ॥ क्षवकराजरर्षपः ॥ खुखंडाख्य
शाकविशेषः ॥ आपस्तंबः ॥ भक्षयेद्यदि नीलीं तु प्रमादाद्वा ह्यणः कचित् चा
न्द्रायणेन शुद्धिः स्यादापस्तंबो ब्रवीन्मुनिः १ अथ स्वभावदुष्टदुग्धपाने प्रा०
॥ संवर्तः ॥

बाला तृण और सुभांजना खुखंड क्षवक इनांको पुरुष भक्षण करे तो प्राजापत्यव्रत करणें कर्के शुद्ध होता है २ और नालिकेरीभी शाकविशेष जानणा और क्षवक नाम राजसर्षप क्या राईका जानणा परंतु एह राई सभदेशकी निषिद्ध नहि किंतु यवनदेशकी निषिद्ध है और साभी किसेका समाधान है और खुखंड नाम कर्के भी शाकविशेष जानणा ॥ अव आपस्तंबजी कथन करते हैं भक्षयेदिति जेकर द्राह्मण प्रमादतें नीली क्या वसमेंका भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है एह आपस्तंब मुनिनें किहा है इसमें एह अभिप्राय है कि नीलीको शाकके वास्ते कोई भक्षण नहि करता परंतु कल्पकें वास्ते किसे भक्षण कीती होवे तिसमें जानणा १ अव स्वभावतें जो खोटे दुग्ध हैं तिनके पानविषे प्रायश्चित्त संवर्तजी कहते हैं

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १२५

अवत्सेति वत्स कर्के रहित गौका दुग्ध और गधीका दुग्ध स्त्रीका दुग्ध इनांकां ब्राह्मण पानकरे और नवीन प्रसूत गौका दुग्ध दश दिनके उरे पान करे तो त्रयरात्रि यवोंका काढा पानकरे तदशुद्ध होताहै १ परंतु इस विषे यावकका पानमात्र हि करे तिस कर्के तृप्त न होवे एह अर्थ सिद्धहै और तिस विषे इच्छाते विना एकवार पान विषे और स्मृतिका वचनहै अनिर्देशायाइति और नवीन प्रसूता गौका दश दिनके उरे दुग्ध ऊटनी गधी भेडीका और जिस गौके पीछे बैल लगाहै और वत्स रहित गौका दुग्ध १ और महिषीते विना संपूर्ण वनके मृगोंकी स्त्रीका दुग्ध एह संपूर्ण वर्जित हैं और संपूर्ण वस्तु जो दो २ चार दिनकीहै अर्थात् वासीहै सोभी वर्जित जानणी २ परंतु दो २ चार ४ दिनका दधि होवे

अवत्सैकशफास्त्रीणांक्षीरंप्राश्यद्विजोत्तमः अनिर्देशायागोश्चैवत्रिरात्रंयाव
कंपिवेत् १ यावकस्यचपानमात्रंकार्यं नतु तेनतृप्येत् तत्रचाकामतःसकृ
त्पानेस्मृत्यंतरम् अनिर्देशायागोःक्षीरमौष्ट्रमैकशफंतथा आविकंसंधिनीक्षा
रंविक्त्सायाश्चगोःपयः १ आरण्यानांचसर्वेषामृगाणामहिषींविना स्त्रीक्षी
रंचैववर्ज्यानिसर्वशुक्तानिचैवहीति २ दधिभक्ष्यंचशुक्तेषुसर्वचदधिसंभवमि
त्युक्त्वा शेषपूपवसेदहरितिमनूक्तउपवासोद्रष्टव्यः । कामतस्तुयोगीश्वरो
क्तस्त्रिरात्रोपवासोद्रष्टव्यः ॥ यत्तुपैथीनसिनोक्तम् ॥ अविस्वर्युष्टीमानुषी
क्षीरप्राशनेतत्तकृच्छ्रःपुनरुपनयनंच ॥ अनिर्देशाहगोमहिषीक्षीरप्राशने
पट्टात्रमभोजनम् ॥

सो भक्षण करणें योग्यहै और संपूर्ण दहीसें उत्पन्नहोएजो व्यंजनकडी और मंघरेसें आदलेकर
सो सभ शुक्लभी होवें तथापि भक्ष्यहैं इनकेभक्षणमे दोष नहि औरोंके भक्षण करणें विषे एक
दिनका उपवास व्रत करणाचाहिए एह मनुजीका कथन कीता होया उपवास देखणें
योग्यहै ॥ और इच्छाते भक्षण विषे याज्ञवल्क्यजीका कथन कीता होया त्रयरात्रिका उपवास
व्रत जानणा योग्यहै ॥ जो पैथीनासिजीने कथन कियाहै सो कहतेहैं अचीति भेडी गधी ऊटणी
स्त्री इनांके दुग्ध पानकरणें विषे तत्कृच्छ्र व्रत कर्के यज्ञोपवीत पावे तो शुद्ध होताहै
और नवीन प्रसूत गौका वा महिषीका दश दिनके उरे दुग्ध पान कर्के छे ६ रात्रिका
उपवासव्रत करे तो शुद्धहोताहै ॥

१२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

सर्वेति और संपूर्ण जो दोस्तनवालीयां पूर्वोक्त खरीते आदिलेकर कहिआहैं परंतु बकरीते विना तिनके दुग्ध पान विषे भी पूर्वोक्त व्रत जानणा ॥ जो शंखजी ने कथन कियाहै सो कहतेहैं क्षीराणीति जितने दुग्ध अभक्ष्य कहेहैं तिनके भक्षणविषे प्रायश्चित्तहै परंतु तिनके विकार जो हैं दाधे मावा इत्यादि तिनके भक्षणविषेभी बुद्धिमान् कहतेहैं जेकर भक्षणकरे सो सत्तरात्रिका व्रत समाधान होया २ करे तद शुद्धहुंदाहे १ एह यावक व्रत कथन कियाहै सो दोनो भी पैठीनसि और शंखजीके कहेहोए तत्त छच्छ और यावक व्रत इच्छाते अभ्यास विषय विषे जानणे ॥ और जो शंख जी कथन करतेहैं संधिनीति संधिनीगौ और विष्टाभक्षण करण वाली गौ इनके दुग्ध पान विषे एक पक्ष का व्रत कथन कियाहै ॥ तिसबचनको दखातेहैं संधि नीति संधिनी और विष्टाभक्षक गौ के दुग्ध पान करणमे पक्ष व्रत करे सो एह अभ्यास वि

सर्वासां द्विस्तनीनां क्षीरपानेऽप्यजावर्जमेतदेवेति ॥ यच्च शंखेनोक्तम् ॥
क्षीराण्यन्यभक्ष्याणितद्विकाराशनेऽनुधः ॥ सत्तरात्रं व्रतं कुर्यात्प्रयत्नेन स
माहित इति यावक व्रतमुक्तं तदुभयमपि कामतोभ्यासविषयम् ॥ यत्तु शंखेन
संधिन्यमेध्यभक्षकक्षीरप्राशने पक्षव्रतमुक्तम् ॥ संधिन्यमेध्यभक्ष्याया
भुक्त्वा पक्षव्रतं चरेदिति ॥ तदभ्यासविषयम् ॥ सकृत्पाने तु गोअजम
हिषीवर्जं सर्वाणिषयांसि प्राश्योपवसेत् अनिर्दशाहंतान्यपि ॥ संधिनीयम
सूयं दिनीविवत्साक्षीरं क्षामेध्यर्भुजश्च प्राश्योपवसेदिति विष्णुनेऽपवासस्यो
क्तत्वात् ॥ संधिनीवृषभेणोपजिगमिषुः ॥

षय विषे जानणा और एकवार दुग्ध पान करणमें विष्णुजीका वाक्यहै गविति गौ बकरी महिषी इनांते विना और संपूर्णोंके दुग्धको भक्षण करे तो उपवासव्रतकरणसें शुद्ध होनाहै और गौ अजमहिषीका दुग्ध जेकर दश दिनते उरे होंवे तद तिसके पानविषेभी उप वासकरणा चाहिए जेकर दशदिनते अगेहोवेतां दोषनहि इसमे वचन कहितेहैं ॥ संधिनीति संधिनी गौ और यमसू क्या जिस गौने दो २ बछे दिते होण और संधिनी क्या जिसका दुग्ध सदाहि चलतारहे और वच्छरहित गौके दुग्धपानमे और विष्टाभक्षण वाली गौके दुग्ध पान विषे विष्णु जीने उपवास ही कथन कियाहै और संधिनी नाम उसकाहै जो बैल साथ गमन करणेकी इच्छा वालीहै

॥ श्रीरणीव कस्ति प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १-२७

श्रीर स्यंदिनी नामदुग्ध वगाण वाली गौकाहै ॥ स्पष्टकर्के कहतेहैं गविति गौ वकरी महिषी इनां के बिना होरनेके दुग्ध पान विषे पूर्वोक्त प्रायश्चित्त है और दश दिनके उरे गौ अज महिषी इनांके दुग्ध पानमें भी उपवास करणा उचितहै ॥ श्रीर तैसंहि वर्णोंके निबंधमेंभी प्रतिषेध है सो कहतेहैं अर्थात् किसे वर्णने कोई दूधपीणा और किसेने नहिपीणा इसकी व्यवस्था करतेहैं ॥ क्षत्रियइति अपनी वृत्तिमें स्थित क्षत्रिय वा वैश्य वा शूद्र जो कपिला गौका दुग्ध पान करे तो इनांते परे पापों कोई नहिहै अर्थात् इनको बहुत पापहै केवल ब्राह्मणको ही अधिकारहै १ इस विषयकी प्रकरण साथ संगति करतेहैं एवमिति इत्यादिविषे यद्यपि प्राय

स्यंदिनीस्त्रवत्क्षीरा गोऽजमहिषीवर्जदुग्धपानेप्रायश्चित्तमिदम् ॥ दशा
हाभ्यंतरेतु ॥ गोऽजमहिषीदुग्धपानेप्युपवासइत्यर्थः ॥ तथावर्णनिबंध
नश्चप्रतिषेधः । क्षत्रियश्चापि वृत्तस्थो वैश्यः शूद्रोऽथवा पुनः यः पिवेत्कपि
लाक्षीरं न ततो न्योस्त्यपुण्यकृदिति । एवमादौ च यत्र प्रतिपदोक्तं प्रायश्चित्तं
दृश्यते तत्र शेषेषूपवसेदहरितिसाधारणप्रायश्चित्तं मनूक्तं द्रष्टव्यम् चतुर्विं
शतिमते स्त्रियाः क्षीरं द्विजः पीत्वा कथंचित् काममोहितः पुनः संस्कृत्य चात्मा
नं प्राजापत्यं चरेत्ततः १ स्मृत्यंतरम् ॥ त्वग्मांसमूर्णया सार्धमाविकं त्रितयं
शुचि पुरीषमूत्रे सक्षीरेऽपवित्रं त्रयं पुनः ॥ प्रमादादशने तस्य दिनमेकं व्र
तं चरेत् १ तस्यापवित्रत्रयस्य व्रतमभोजनम् ॥ पूर्वोक्तविषयमेतत् ॥

श्चित्त नहि किहा तथापि (शेषेषूपवसेदहः) एह साधारण प्रायश्चित्त मनुजीका कथन कीता होषा जानणा अब चतुर्विंशति मतविषे कहे होएका कथन करतेहैं स्त्रियाइति जो द्विज कामके वश होया २ स्त्रीका दुग्ध पान करे तो अपने आपका संस्कार कर्के प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ अब और स्मृतिसँ कथन करतेहैं त्वगिति चर्म मांस उक्त एह त्रय वस्तु भेडकी यां पवित्रहैं और विष्टा मूत्र दुग्ध एह त्रय भेडके अपवित्र कथन कियेहैं और तिसके प्रमाद ते भक्षणमें एक दिनका व्रत करणा योग्यहै १ एह भी पीछे कथन कीता जो विषय तिसविषे हि जानणे योग्यहै अर्थात् दुग्ध पानके विषयके प्रसंगमेहि एह कथनहै

१२८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०१२ ॥ टी०भा० ॥

अब शातातप जो कथन करते हैं उष्ट्रीति उटनीका दुग्ध और भेडीका दुग्ध और मृत होए सूतकका अन्न और चोरका अन्न और नव श्राद्धका अन्न इनांको पुरुष भक्षण करे तो चांद्रा यण व्रत कर्के शुद्ध होता है १ एह इच्छातें अभ्यास विषय विपे जानणा । अब पैठीनासि जो कहते हैं अवीति भेडी गधी उटनी स्त्री इनके दुग्ध पान विपे प्राजापत्य व्रत कर्के यज्ञोपवीत पावे तो शुद्ध होता है अब ॥ जावालजी कहते हैं दश दिनतें उरे गौका दुग्ध और स्त्रीका दुग्ध उटनीका दुग्ध मदिरा और नव श्राद्धका अन्न इनांको भक्षण कर्के सांतपन व्रत करे १ पशु एह इच्छातें विना एकवार भोजन विपे जानणा ॥ मदिरा नाम मद्यका है सो सुरातें अतिरि

॥ शातातपः ॥ उष्ट्रीक्षीरमाविक्षीरमन्नंमृतकसूतके ॥ चौरस्यान्नंनवश्राद्धं
भुक्त्वाचांद्रयणंचरेत् १ कामतोभ्यासविषयमेतत् ॥ पैठीनासिः ॥ अवि
खर्युष्ट्रामानुषीदुग्धप्राशनेपुनरुपनयनंप्राजापत्यंच ॥ जावालः ॥ अनिर्द
शयागोःक्षीरंमानुष्यंचौष्ट्रमेवच मदिरांचनवश्राद्धंभुक्त्वासांतपनंचरेत् १
अज्ञानतःसकृद्भोजनेएतत् ॥ मदिरामद्यम् सुराव्यातिरिक्तम् । द्रव्यांतर ॥
तिरोहितरसरूपम् ॥ अंगिराः माहिष्यगव्यमाजंचभक्ष्यंक्षीरेषुनिर्दिशेत्
भुक्त्वापरमतःक्षीरंकृच्छ्रपादंसमाचरेत् ॥ १ ॥ अथस्वभावदुष्टमांसादि
भक्षणेप्रा ० ॥ तत्रग्रामकुक्कुटविड्वराहयोःप्रायश्चित्तंपलांड्वादिप्रसंगे
प्रागुक्तमप्यत्रपुनःप्रासंगिकंनदोषाय ॥ अत्रमिताक्षरा ॥

क विषय विपे जानणा और जो द्रव्य तिनाते तिरोहित रसरूप है अर्थात् मदिरा और द्रव्य की होती है गुग्गु और द्रव्यकी होती है जिसकर्के एह प्रायश्चित्त थोड़ा है अब अंगिराजी कथन करते हैं माहिष्यमिति महिषीका दुग्ध गौकादुग्ध वकरीका दुग्ध एह त्रय भक्ष्य कहे हैं इनांते विना औरोंके दुग्ध पान विपे एकपाद कृच्छ्र व्रत करे १ अब स्वभावतेंहि दुष्ट मांसादिके भक्षण विपे प्रायश्चित्त कथन करते हैं तत्रेति तिसविपे ग्राम कुक्कुट विड्वराह इनका प्रायश्चित्त पलांड्वादि प्रसंग विपे पीछे कहा भी है इस विपे प्रकरण वास्ते फेर कथन कीता है सो दोष वास्ते नाहि जानणा इस विपे मिताक्षराकार कथन करते हैं

॥ श्रारणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ १२९

तत्रेति तिस विषे इच्छाते एक वार भक्षण विषे (शेषेषूपवसेदहः) एह मनु जी का कथन कीना होया साधारण प्रायश्चित्त देखेण योग्यहै ॥ और इच्छाते भक्षण विषे कहतेहैं चापानिति पिपीहा लालपादोंवाले सोन पक्षी और कसाईकी हट्टीकामांस और बझूर क्या सुकामांस और मच्छ इनांको पुरुष इच्छाते भक्षण करे तो त्रय दिन उपवास व्रतकर्के शुद्ध होताहै १ एह याज्ञवल्क्य जी का किहा होया देखेण योग्यहै ॥ और इच्छाते बहुत अभ्यास विषे अभक्ष्यमांसके भक्षण कर्के सत्तगात्रि जल पान करे एह मनुजीका कया होया जानणा पंतु एह विट् सूकरादि मांसते अतिरिक्त विषयविषे जानणा ॥ क्रव्येति और गृध्रादि सूकर उष्ट्र कुक्कुट मनुष्यकाक गधा

तत्र कामतः सकृद्भक्षणे शेषेषूपवसेदहरितिमनूक्तसाधारणप्रायश्चित्तद्रष्टव्यम् ॥ कामतस्तु चापानूरक्तपादांश्चसौनवल्लूरमेवच मत्स्यांश्चकामतोज गध्यासोपवासस्यहंवसेदितियोगीश्वरोक्तद्रष्टव्यम् ॥ कामतोभ्यासेतु ज गध्वामांसमभक्ष्यतुसप्तरात्रंपथःपिवेदितिमनूक्तद्रष्टव्यम् ॥ इदंविट्सूकरादिमांसव्यतिरिक्तविषयम् ॥ क्रव्याद्विट्सूकरोष्ट्राणांकुक्कुटानांचभक्षणे नरकाकखराणांचतप्तकृच्छ्रविशोधनमितिमनुनाजातिविशेषेणप्रायश्चित्तविशेषस्योक्तत्वात् ॥ एतन्मूत्रपुरीषप्राशनेप्येतदेव ॥ वराहैकशफानांतुकाक कुक्कुटयोस्तथा क्रव्यादानांचसर्वेषामभक्ष्यायेचकीर्तिताः १ मांसमूत्रपुरीषाणिप्राश्यगोमांसमेवच श्वगोमायुकपीनांचतप्तकृच्छ्रविधीयते ॥ २

इनांके भक्षण विषे तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ एह मनुने जाति विशेष कर्के प्रायश्चित्त विशेषको कथन करणेंते अर्थात् पिच्छे केवल अभक्ष्य मांस किहाथा अब सूकरादिजातिनि देश कर्के किहाहै एही प्रायश्चित्त पूर्वोक्तोंके मूत्र विष्टाके भक्षण विषे भी जानणा ॥ वराहेति और वराह क्या सूकर और एकशफ जो हैं गर्दभादि और काक कुक्कुट क्रव्याद जो व्याघ्रादि तिनां सभनांके मध्यविषे जो अभक्ष्य कथन कीतेहैं १ तिनका मांस मूत्र पुरीष क्या विष्टा और गौका मांस कुत्ता गोमायु क्या गिद्ध वानर इनांका मांस भक्षण जो पुरुष करता है सो तप्तकृच्छ्र नामक जो व्रत है तिसको करे तो शुद्ध होताहै ॥ २ ॥

१३० श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अथवा वागं १२ दिनका उपवास व्रत करे और पिठैकके घृतका हवन करे अथवा कूप्मांडसं
ज्ञकमंत्रोंकके घृतका हवन करे एह बृहद्यमस्मृतिमें क्याहै तिसके तिसविषे इच्छाते भक्षणमे तत्तच्छ्रु
व्रतकरे और अभ्यासविषे कूप्मांडहवनमहित पराकव्रतकरे एह व्यवस्था जानणो ॥ तैसेहि प्रचे
ता जी भी कहतेहैं रेवति कुत्ता गिहड काक कुकुट पार्षत क्या मृगविशेष वानर चित्रा पिपी
हा व्याघ्रादिका मांस गधा ऊट हाथी घोडा विट्शूकर गौ मनुष्य इनांके मांस भक्षण विषे
तत्तच्छ्रु व्रत करे और इनांके मूत्र विष्टा भक्षण विषे अतिच्छ्रु व्रत करे इसमे गोमांस कर्के
वनके गोपशुका मांस जानणा थोडा प्रायश्चित्तहोणेतें एह इच्छा कर्के भक्षणविषे जानणा । जो उश
नसाका वचनहै सो कहतेहैं नेरेति पुरुषका मांस और कुत्तेका मांस और गौका मांस घोडेका

उपोष्यवाद्वादशाहंकूप्मांडैर्जुहुयाद्घृतमिति बृहद्यमस्मरणात् तत्रकामत
स्तत्तच्छ्रुः ॥ अभ्यासेतुकूप्मांडसहितः पराक इति व्यवस्था ॥ तथा प्रचेत
स्याप्युक्तम् श्वसृगालकाकुकुटपार्षतवानरचित्रकचापक्रव्यादखरोष्ट्रगज
वाजिविड्वराहगोमानुषमांसभक्षणे तत्तच्छ्रुमादिशेदेषां मूत्रपुरीषभक्षणे
त्वतिकच्छ्रुमिति इदंचकामकारविषयम् । यत्तूशनसो वचनम् । नरमांसं श्व
मांसंच गोमांसं वा श्वमेव च भुत्का पंचनखानांच महासांतपनंचरेदिति १ ॥
तदकामविषयम् पंचनखानामविहितानामित्यर्थः ॥ यत्त्वं गिरो वचनम् ॥
वलाकाभासगृध्राखुखरवानरसूकराः ॥ दृष्ट्वा चैषाममेध्यानि स्पृष्ट्वा च मय
विशुद्ध्यति ॥ १ ॥

मांस और पंचनखोंके मांसको जो पुरुष भक्षण करे सो सांतपन व्रत करे १ सो एह नहि
इच्छाते भक्षण विषे जानणा ॥ भक्ष्यप्रकरण विषे अगे कहणेहैं गोधा कछपशव्यक खड्ग
शशक ५ इनते भिन्न पंचनख जो व्यघादि इसके भक्षण विषे एह प्रायश्चित्त जानणा परंतु
इसमे एह विचारहै कि इसश्लोकके उत्तराद्धमे जो प्रायश्चित्त किहाहै सो इस प्रकरणके योग्य
नहि तथापि प्रसंगसे किहाहै और दूसरे श्लोकमे प्रकरणोपयोगीहै इसकर्के दोषनहिहै । अत्र
जो अगिरा जी का वचनहै सो कथन करतेहैं वलाकेंति वलाका क्या वगुलीयां और भास
क्या पक्षिविशेष और गृध्र चूडा गर्दभ वानर सूकर इनोके विष्टाकों देखे अथवा स्पर्श करे
जो पुरुष सो आचमन करणे कर्के हिशुद्धहोताहै १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १३१

च्छेति एह जो पूर्वोक्त बलाकादि इनांके विष्टादियोंको इच्छाकर्के जो द्विजाति भक्षण करें सो सांतपनव्रत करें और इच्छाविना भक्षण करें तो प्राजापत्यव्रत कर्के शुद्ध होते हैं १ सो एह भक्षण कर्के जो उलटीकरे तिस विषे जानणा ॥ और इस जगा सांत' न शब्द कर्के महासांतपन जानणा क्योंकि अकामते भक्षणमें प्राजापत्यका विधान होएँत ॥ और जो फेर अंगिरा जीका वचन है सो । कहते हैं नरेति मनुष्य काक गधा घोडा हास्ति इनांके मांस भक्षण करनेमें और पाष्टा मूत्र भक्षणमें भी द्विज चांद्रायण व्रतकरे तो शुद्ध होता है १ और जो बृहद्यमने कथन किया

इच्छयैषामभ्यासविषयविषयः कुर्युः सांतपनं कृच्छ्रं प्राजापत्यमभि
च्छेति १ तद्वक्षितोद्धारितविषयम् सांतपनशब्देन चात्र महासांतपनमु
च्यते ॥ अकामतः प्राजापत्यविधानात् यत्पुनरंगिरो वचनम् नरकाकखरा
श्वानां जग्ध्वामांसं गजस्य च एषां मूत्रपुरीषाणि द्विजश्चांद्रायणं चरेदिति १ ॥
यच्च बृहद्यमेनोक्तम् ॥ शुष्कमांसांशने विप्रो व्रतं चांद्रायणं चरेदिति तदुभयम
पिकामतोऽभ्यासविषयम्यत्पुनः शंखेनोक्तम् ॥ भुक्त्वा चोभयतो दंतांस्तथा
चैकशफानपि औष्ट्रं गव्यं तथा जग्ध्वापणमासान् व्रतमाचरेदिति १ तत्काम
तोऽत्यंताभ्यासविषयम् ॥

सो कहते हैं शुष्केति शुष्क मांसको ब्राह्मण भक्षण करें तो चांद्रायणव्रतकरणे कर्के शुद्ध होता है । एह पूर्वोक्त अंगिरा और बृहद्यमजीका वचन दोनोंभी इच्छाते अभ्यास विषय विषे जान । । जो फेर शंखजीने कथन किया है सो कहते हैं भुक्त्वेति जिन पशुओंके दो एपासे दंत हैं और एक शफ जो घोडा गर्दभादि हैं तिनका मांस और ऊटका मांस गौका मांस इनांको रूप भक्षण करे तो छे ६ महीनेका व्रत करे तद शुद्ध होता है १ एह इच्छाते बहुत अभ्यास विषय विषे जानणा

१३२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

जो स्मृत्यंतरमे कथन कियाहै सो कहतेहैं जग्ध्वेति मनुष्य विड्वराह गदंभ गौ घोडा हस्ति ऊट संपूर्ण पंचनखोंवाले गोधा सल्लकी आदिते विना तिनका और क्रव्याद जो हैं कच्चा मांस खाणे वाले शृगालादि और ग्रामका कुकड़ इनांका मांस भक्षण कर्के वर्षरोजका व्रत करे १ सो एह अत्यंत कर्के बहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ इस प्रकरण विषे जो मूत्र पुरीषका ग्रहण है सो चरबी वीर्य मिंज इनका उपलक्षण जानणा और कर्णकामल विष्टा इत्यादि जो छे ६ मलहैं तिनां विषे अर्ध व्रत कल्पना करणा योग्यहै ॥ और केशादियोंके भक्षणमे फेर षट्त्रिंश न्मत विषे विशेष किहाहै । अजेति वकरी भंड महिषी मृग इनांके कच्चा मांस भक्षण विषे और

यत्तु स्मृत्यंतरोक्तम् ॥ जग्ध्वामांसंनराणांचविड्वराहंखरंतथा ॥ गवाश्व
कुंजरोष्ट्राणांसर्वपांचनखंतथा क्रव्यादंकुकुटग्राम्यंकुर्यात्संवत्सरं व्रतमिति
तदत्यंतानवच्छिन्नाभ्यासविषयम् ॥ अत्रप्रकरणेमूत्रपुरीषग्रहणं वसाशु
क्रासृङ्मज्जानामुपलक्षणम् ॥ कर्णविट्प्रभृतिमलपट्केत्वर्थकल्पनीयम्
केशादिषु पुनः षट्त्रिंशन्मतेविशेषउक्तः ॥ अजाविमहिषीमृगाणामाम
मांसभक्षणे केशनखरुधिरप्राशनेबुद्धिपूर्वेन्निरात्रमज्ञानादुपवासइति । यत्तु
प्रचेतसोक्तम् नखकेशमृल्लोष्टभक्षणेऽहोरात्रमभोजनाच्छुद्धिरितितदप्य
कामतःसकृत्प्राशनविषयम् ॥ केशकीटनखंप्राश्यमत्स्यकंटकमेवच हेमत
संवृतंपीत्वातत्क्षणादेवशुद्ध्यतीति स्मृत्यंतरोक्तंमुखमात्रप्रवेशेज्ञेयम्

केस नख रुधिर इनको इच्छाते भक्षण करे तो त्रय रात्रिका व्रत करे और अज्ञानतें भक्षण विषे एक उपवास व्रत करे तो शुद्धहोताहै जो प्रचेताजीने किहाहै सो कहतेहैं नखेति नखकेश मृत्तिका इनके भक्षण विषे एक दिन रात्रि भोजन न करे तो शुद्धहोताहै एहभी इच्छाते एकवार भक्षण विषे जानणा केशेति और केशकीडा नख मच्छीका कंटा इनांको भक्षणकरे तो सुवर्णको विचपाकर्के तत जो घृत तिसनूं पान कर्के शीघ्रहि शुद्धहोताहै १ एह जो स्मृत्यंतरका वचनहै सो मुखमात्र प्रवेश विषे जानणा पीणेविषे नहि

॥ श्रीरंणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १३३

यत्रेति जिस जगा भांडेमें स्थित जो अन्न सो केशादिकके दूषित होवे तिसमें प्रायश्चित्त कहतेहैं
अन्नमिति भोजन कालविषे अन्न मक्षिकके वा केशकके दूषित होवे तिनानु कड कर्के जलका
स्पर्श करे और अन्ननु भस्म साथ स्पर्श करे १ एह प्रचेतस ऋषिका कथन कीता होया जानणा
परंतु प्रकीर्णक प्रकरणमें एह श्लोकहै इसजगा प्रसंगसे किहाहै ॥ अब इसी विषे हारीत जी
कहतेहैं कृमीति कीडा कीडियां पीउलियां जलौका क्या जलजंतु और पतंग अस्थि इनांके
भक्षणमें गोमूत्र और गोमयको भक्षण करे तो त्रय रात्रिकके शुद्ध होताहै ॥ अब अपराकमे सं
वर्त्तजीका वचनहै गोमांसमिति गौका मांस मनुष्यका मांस और नवीन प्रसूत स्त्रीके हत्यसे
यद मिले तद बहुत दुष्ट हुंदाहै क्योंकि एह प्रथमहि अभक्ष्य हैं इनको भक्षण करे तो चांद्रायण

यत्रभाजनस्थापितमन्नकेशादिदूषितं तत्रापि अन्नंभोजनकालेतुमाक्षिकाके
शदूषितम् अनन्तरंस्पृशेदापस्तच्चान्नंभस्मनास्पृशेदिति प्रचेतः प्रोक्तंज्ञं
यम् । प्रकीर्णकविषयोयंश्लोकः प्रसंगेणात्रोक्तः । अत्रैवहारीतोपि कृमिकी
टपिपीलिकाजलौकःपतंगास्थिप्राशने गोमूत्रगोमयाहारस्त्रिरात्रेणविशुध्य
ति । अपराकैसंवर्त्तः । गोमांसमानुषंचैवसूतिहस्तात्समाहृतम् अभक्ष्यंतद्भवे
त्पूर्वभुक्काचांद्रायणंचरेत् १ पराशरः ॥ अगम्यागमनेमद्यगोमांसस्यचभ
क्षणे शुद्धैचांद्रायणंकुर्यान्निदींगत्वासमुद्रगाम् १ चांद्रायणततश्चीर्णेकुर्या
द्ब्राह्मणभोजनम् अनदुत्सहितांगांचदद्याद्विप्रेषुदक्षिणामिति २ विष्णुः ॥
ग्राम्यकुक्कुटनरगोमांसभक्षणेचसंवत्सरंद्विजातीनांप्रायश्चित्तम् ॥ संवत्सर
व्रतेपंचदशधेनवः अंतेपुनरुपनयनम् ॥

व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै १ अब पराशर जीकथन करतेहैं अगम्येति अगम्याके गमन विषे
मदिरा और गोमांसके भक्षणमें शुद्धिवास्ते चांद्रायण व्रत करे परंतु समुद्रमें गमन करणवाली
नदी मे जा कर्के १ और चांद्रायण व्रतके होयां ब्राह्मण भोजन करावे और वयल सहित मि
ली होई गौकी दक्षिणा ब्राह्मणको देवे २ अब विष्णुजी कथन करतेहैं ग्राम्येति ग्रामकुक्कुट म
नुष्य मांस गोमांस इनांके भक्षण विषे वर्षरोजका द्विजातियों को प्रायश्चित्त है और वर्ष रोज
के व्रत में पंद्रा १५ गौआं देवे अर्थात् व्रतका प्रत्याम्नाय पंद्रा गौआं है और तिसते उपरंत
यज्ञोपवीत पावे

१३४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अथ शंख लिखित स्मृतिसं कथन करतेहैं वकेति वगुला वगुली हंस जलकुक्कुट ममोला जलकाक चकवा चकवी डड्डू घरवाले कबूतर चिडावन कबूतर पाण्डु पक्षिविशेष तोता मैना सारस टिटोहरी उलू काकोल क्या वाज लाल पादजीव अर्थात् जालकी न्याई पाद वाले पक्षि वाग्गुदक्या खटक अर्थात् चमागिडद पिपोहा भास पक्षिविशेष काककोकिला शाद्वलि पक्षिविशेष कुक्कुट हारीत पक्षि इनांके भक्षणविषे दश रात्रि निराहार व्रतकरे वा गोमूत्रयुक्त यावक पान करे परंतु इनमेंसे एकके भक्षणमें बहुत अभ्यास होवे वाइनके समुदायके भक्षणमें एह प्रायश्चित्त जानना अथ शंखजो कहतेहैं मद्ग्विति जलकाक हंस वगुला काक कोकिला ममोला मच्छों

शंखलिखितौ ॥ वकवलाकाहंसप्लवखंजनकारंडवचक्रवाककटभरगृहकपोतचटकपारावतपाण्डुशुकसारिकासारसटिटिभोलूककाकोलरक्तपादजालपादवाग्गुदवापभासवायसकोकिलशाद्वलिकुक्कुटहारीतभक्षणे ॥ दश रात्रमनाहारः पिवेद्वागोमूत्रयावकम् ॥ काकोलः श्रेयनः ॥ एषामन्यतमस्यात्यंतभक्षणाभ्यासे ॥ प्रत्येकसमुदायभक्षणेवैतत् ॥ शंखः मद्गुहंसवकंकाकंकोकिलखंजरीटकम् मत्स्यादांश्च तथा मत्स्यान्वलाकाः शुकशारिके १ चक्रवाकं प्लवंचैव मंडूकं भुजगं तथा मासमेकं व्रतं कुर्याद्भूयश्चैव न भक्षयेत् २ मद्गुजलवायसः ॥ जलेचरांश्च स्थलजान् प्रतुदां न खविष्किरान् रक्तपादां जालपादान्सप्तरात्रं व्रतं चरेत् ३ प्रतुद्यप्राणिनां भक्षयन्तीति प्रतुदाः ॥ नखैर्विकीर्य भक्षयन्तीति नखविष्किराः ॥ जालाकारानखैर्विकीर्णाः पादाये पाते जालपादाः ॥ सर्वे एवरक्तवर्णाः पादाये पाते रक्तपादाः ॥

कै भक्षण करणवाले पक्षी मच्छ वगुली तोता मैना १ चकवा चकवी जल कुक्कुट मंडूक सर्प इनांके भक्षणमें एक महीना व्रत कर्के फेर भक्षण न करे २ इहां मद्गु नाम जल काकका जानना और जलचर जीव और स्थल वाले पक्षि प्रतुद और नखविष्किर रक्तपाद इनांके भक्षणमें सत्त ७ रात्रि व्रत करे तो शुद्ध होता है ३ अथ पूर्ण पदोंका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं प्रतुद्येति प्रतुद्य क्या तोड़ कर्के जीवोंको भक्षण करें सो प्रतुदहैं टाटुकुरुतो आदिलेकर हैं और जो नखों कर्के फरोलके भक्षण करें सो नखविष्किरहैं और जालाकार नखोंकर्के छिन्न रहैं पाद जिनांके सो जालपादहैं और संपूर्णहिहैं लालवर्णके पाद जिनांके सो रक्तपाद कहेंहैं ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १३६

भुक्तेति दोनोंपासे दंतो बाले जोहैं गृगालादि तिनको और तैसंहि एक खुरवाले अश्वदि और दंष्ट्रिजोहैं सिंहादि इनांको भक्षणकर्के छे ६ महीनेका व्रत करे १ और सुगकर्के मिलयाहोया जो मांसहै सो कहिए सुरामांस और सुक्का मांस और अपणें वास्ते कीता जो मांस तिसको भक्षणकर्के इंद्रियोकों रोक कर और समाहित चित्त वाला हुवा २ प्रयत्नकर्केव्रत करे २ और ऋभीसमें पक्का जो मांस तिसनू संपूर्ण यत्नकर्के त्यागदेवे और जेकर भक्षण करे तद वर्ष रोजका व्रतकरे एहि व्रत पिचले श्लोकमें जो व्रत आयहै तिसजगाभीजानणा परंतु एह प्रायश्चित्त तदजानणा कि जेकर जानकर्के भक्षणकरे १ और ऋभीस नाममांसकेपकानेवाले स्थानविशेषकाजानणा तिसविषे पक्काहोया सत्पुरुषोंके भोजन योग्यभी

भुक्त्वाचोभयतोदंतांस्तथाचैकशफानपि दंष्ट्रिणश्चतथाभुक्त्वापण्मासान् व्रतमाचरेत् १ सुरामांसंशुष्कमांसमात्मनोर्थतथाकृतम् भुक्त्वामांसं व्रतं कुर्यात्प्रयतः सुसमाहितः २ ऋभीसपक्वं मांसं च सर्वयत्नेन वर्जयेत् संवत्सरं व्रतं कुर्यात्संप्राश्यज्ञानतस्तु तत् ३ ऋभीसनाममांसपाकस्थानविशेषः तत्र पक्वं सर्वशिशुभोजनीयमपि मांसं न भक्षणीयम् तप्तकृच्छ्रत्रयंचांद्रायणंचरेदित्यनुवृत्तौ । मनुः । शुष्काणि भुक्त्वामांसानि भौमानिकवकानि च अज्ञातंचैव सूनास्थमासमेतद्व्रतंचरेत् १ यत्र फलके मांसं खंड्यते सा सूना कवकानि छत्राकाराणि तेषां भूमिरूढानां भक्षणे एतत्प्रायश्चित्तम् ॥ न वृक्षादिरूढानाम् ॥

मांसहै सोभी भक्षण नहिकरणा चाहिए और तप्तकृच्छ्राय और एक चांद्रायणकरे इसीप्रसंगविषे मनुजीकथनकरतेहैं ॥ शुष्काणांति सुक्कमांसनू भक्षणकरे और पृथ्वी विषे उत्पन्न हुए जो कवक और न जाणकर्के सूनामेंस्थित जो मांस इनकों भक्षणकर्के पूर्वोक्तहि व्रत करे तो शुद्धहोताहै १ जिसफलक क्या पटडेपर मांस टुकदेहैं तिसका नाम सूनाकथन कीताहै और कवक क्या छत ढोकी न्याईहैं सोछतडियां जेकर पृथ्वीतें उत्पन्न होवें तिनांके भक्षणमें एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा और वृक्षादियोंमें उत्पन्न जो छतडियांहैं तिनमें एह प्रायश्चित्त नहि अर्थात् पृथ्वीतें उत्पन्नमें दोषहै वृक्षादियोंमें उत्पन्न होण वालियोंमें दोष नहि है ॥

१३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

क्रव्यादिति क्रव्याद विष्टा सूकर ऊट कुकुट काक गधा इनांके मांस भक्षण विषे तप्त
कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होता है १ एभी एकवार न इच्छा कर्के भक्षण विषे व्रत
जानना ॥ कबे मांसको जो भक्षण करे सो क्रव्याद हैं सो व्याघ्रादि जानणे । अत्र
शंख लिखित स्मृति से कथन करते हैं श्वेति श्व क्या कुत्ता गिद्ध काक कुकुट दंष्ट्रि
सिंहभेद व्याघ्रादि मनुष्य गधा ऊट हस्ति घोडा इनके मांस भक्षण विषे चांद्रायण व्रत करे
तो शुद्ध होता है ॥ एह इच्छा कर्के भक्षण विषे जानना ॥ कुत्ता गिद्ध कुकुट ग्राम सूकर
कंक पाक्षि गिरज भास पक्षिविशेष कबूतर मनुष्य घरदे कबूतर इनांके मांस भक्षण विषे सत्त
७ रात्रि उपवास व्रत करे और निष्पुत्रीपीभाव रक्षे अर्थात् सुचेते न जावे घृत भक्षण करे और

क्रव्याद्विष्टसूकरोष्ट्राणांकुकुटानांचभक्षणे एतत्काकखराणांचतप्तकृच्छ्रं हि शो
धनम् २ ॥ सकृदमत्याभक्षणे एतत् ॥ क्रव्यमपक्वं मांसं तददंतीति क्रव्या
दाः व्याघ्रादयः ॥ शंखलिखितौ ॥ श्वसृगालकाकुकुटदंष्ट्रि क्रव्यादनर
खरोष्ट्रगजवाजिमांसभक्षणे चांद्रायणव्रतम् ॥ कामकार एतत् ॥ श्वकुकुट
ग्राम्यसूकरकंकगृध्रभासपारावतमानुपकपोतानां मांसादने सप्तरात्रमु
पवासो निष्पुत्रीपीभावो घृतप्राशनं संस्कारश्चेत्यादिविस्तरस्तु पृथक्कृतेऽभ
क्ष्यभक्षणप्रकरणे द्रष्टव्यः ॥ अत्रानुक्तमांसभक्षणप्रायश्चित्तं ॥ शेषेषूपव
सेदहरिति मानवं द्रष्टव्यमिति केचित् ॥ कचिन्मांसभक्षणमप्यनुजानाति
छागलेयः

यज्ञोपवीतादि संस्कार करे इत्यादि बहुत प्रकारके जानणे ॥ निष्पुत्रीपी भावका अर्थ अगे स्पष्ट
होवेगा और विस्तार जो है सो पृथक् कीतेहोये अभक्ष्य भक्षण प्रकरणविषे देखणे योग्य है
इसीविषे नहि कथन कीता जो मांस तिसके भक्षण विषे प्रायश्चित्त (शेषेषूपवसेदहः) एह
पूर्वोक्त मनु जीका कथन कीता होया जानना एह कईक ऋषियोंका मत है सो अच्छी
तरह जानणे योग्य है इसमें एह अभिप्राय है कि जिसजगा अभक्ष्यवस्तुके भक्षण में दोष किहा है
और प्रायश्चित्त नहि किहा उसजगा मनुजीका वचन प्रमाण कर्के एक उपवासहि प्रायश्चित्त देणा
एह शेषशब्दका अर्थ है और कितेक मांस भक्षणमें भी दोष नहि है इसमें छागलेयका वचन है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १३७

वृथेति वृथामांस नहि भक्षण करे अर्थात् जो देवताके ताँई नहि अर्पण कीता सो वृथा मांसहै तिसको न खावे और श्राद्ध कर्मविषे भक्षण कर लेवे और जगाविषे भक्षण करे ब्राह्मण तो प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्धहोताहै १ एह शिष्टपुरुषोंके भक्षण योग्य जो मांस तिस विषे जानणा इसमें ऐसाभी विचारहै कि श्राद्धविषे भी जो राजपुरोहित हैं उनकोहि मांसभक्ष्यहै और सभ ब्राह्मणको नहि एह देवीभागवतमें किहाहै जिस जगा सात्त्विकादि भेद कर्के तीन प्रकारके ब्राह्मण लिखेहैं इसमें और भी बहुत विचारहै सो ग्रंथकी बाहुल्यताके भय से नहि लिखया ॥ अब शंख जो कथन करतेहैं भक्ष्याइति पंचनख भक्ष्य कहेहैं सो कहतेहैं घो १ कच्छु २ सेहणी ३ गेंडा ४ सेहा ५ इनांकी भक्षण कर्के व्रत

वृथामांसंनभोक्तव्यंभोक्तव्यंश्राद्धकर्मणि अन्यथाभक्षयान्विप्रःप्राजापत्यंस
माचरेत् १ एतत्तुशिष्टभोजनीयमांसविषयम् शंखः ॥ भक्ष्याःपंचनखाश्चै
वगोधाकच्छपशाल्यकाः ॥ खड्गश्चशशकश्चैवतान्भुक्त्वानाचरेद्व्रतम् १
तथा तित्तिरिचमयूरंचलावकंचकपिंजलम् बाध्रीनसंवर्तकंचभक्ष्यानाहसदा
यमः २ बाध्रीनसोवृद्धछागः ॥ तथा ॥ माहिपत्वाजमौरभ्ररौरवंमार्गमेवच
भक्ष्यमांसंसमुद्दिष्टयश्चैवपार्षतोभवेत् १ रुरुर्वहुशाखशृंगोमृगः पार्षतःपू
र्वमभक्ष्येपिप्रतिपादितोऽतोविकल्पः ॥ विष्णुः ॥ शशशल्यकगोधाखड्
गकूर्मवर्जपंचनखमांसाशने सप्तरात्रमुपवसेत् ॥ विषयविवेकेनमांसमनु
जानातियाज्ञवल्क्यः ॥

न करे अर्थात् इनके भक्षणमें दोष नहि १ तैसेहि और कथन करतेहैं तित्तिरिमिति तित्तिर
भार लयडा कपिंजल क्या पक्षिविशेष बाध्रीनस नाम वृद्धछागका है और वर्तक क्या वटे
रा इनांको यमजीनें भक्ष्य किहाहै २ तैसेहि और कथन करतेहैं माहिपमिति माहिप बकरा भे
डा रुरु मृग पार्षत मृगविशेष इनांका मांस भक्ष्य कथन कियाहै १ रुरु नाम बहुत शाखा वा
ले शृंग जिसके तिसका है और पार्षत मृग विशेष पिच्छे अभक्ष्य विषे भी प्रतिपादन कीताहै
इसकारणतें इसमें विकल्प जानणा ॥ अब विष्णुजीकथन करतेहैं शशोति सेहा सेहणी घो गेंडा
कच्छु इनां पंचांको त्यागकर्के औरोंके मांस भक्षणविषे सत्त रात्रि उपवास व्रत करे तो शुद्ध होताहै
अब विषय विवेक कर्के मांसका भक्षण कथन करतेहैं याज्ञवल्क्यजी

१४० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

ग्रहणेति श्रीर ग्रहण निमित्त निषिद्ध जो काल तिस विषे श्रीर सेधि काल जो प्रात मध्यान्ह सायं
अर्द्धरात्र श्रीर बहुत प्रातः काल बहुत सायंकाल इनविषे भोजन कर्के श्रीर रात्रि विषे धाना
दधि सत्तु तिलयुक्त अन्नके भोजनविषे इनतों आद लेकर जो अनादिष्ट प्रायश्चित्त तिनांविषे भी
सौ १०० प्राणायाम करे तो शुद्धहोताहै ॥ श्रीर इच्छातेभक्षणविषे उपवासव्रतकरे श्रीर अज्ञानते
भक्षणमें उपवास करे एह किस्का मतहै ॥ श्रीर ग्रहणते अन्यत्रभी भोजनके निषिद्ध कालविषे
मार्कंडेय जो कहतेहैं चंद्रस्येति हे भार्गव चंद्रमा वा सूर्यका ग्रहण जिस दिनविषे होवे तिस
दिनसे प्रथम भोजन न करे श्रीर ग्रहणविषे भी न करे १ तैसेहि ग्रहण साथहि सूर्य वा चंद्रमा
अस्त होवे तो भी जितना काल तिसका उदय न होवे तितना काल भोजन न करे २ तैसेहि
श्रीर कहतेहैं ग्रहणमिति चंद्रमाका ग्रहण रात्रिके प्रथमपहरते अग्रेहोवे तो आवसंतते उरे भोजन
करलेवे अर्थात् दिनके प्रथमपहरमें भोजनकरे श्रीर रात्रिके प्रथमपहरमें ग्रहण होवे तो सूर्य उदयके

ग्रहणनिमित्तनिषिद्धकालेतिप्रातरतिसायंकालेचभुक्त्वारात्रौधानादधिसत्तु
तिलसंवद्धान्नभोजनेएवमादिष्वनादिष्टप्रायश्चित्तेपुप्राणायामशतम् मृत्यो
पवासः । अमृत्योपवासइत्यन्ये । ग्रहणादन्यत्रापिनिषिद्धकालेभोजनेमार्क
ंडेयः ॥ चंद्रस्ययदिवाभानोर्यस्मिन्नहनिभार्गव ग्रहणंतुभवेत्तस्मिन्नपूर्वभो
जनक्रियाम् १ नाचरेत्सग्रहेचैवतथैवास्तमुपागते यावत्स्यान्नोदयस्तस्यना
श्रीयात्तावेदेवतु २ तथा ॥ ग्रहणंतुभवेदिंदोःप्रथमादधियामतः भुजीताव
त्तेनात्पूर्वप्रथमेप्रथमादधः १ तथा अपराहूणेनमध्याह्नेसायाह्नेनतुसंगवे
भुजीतसंगवेचेत्स्यान्नपूर्वभोजनक्रियेति १ यच्चमनुनाक्तम् ॥ नाश्रीयात्सं
धिवेलायामिति नातिप्रगेनातिसायमित्येवमादि अत्रापिप्राणायामशतम्

प्रथम पहर विषे भोजन करे इसी तरह अग्रे भी जानना १ अब सूर्यग्रहणकी व्यवस्था कहतेहैं
अपेति अपराहूण काल में सूर्य ग्रहण होवे तो मध्यान्हमें भोजन न करे श्रीर सायंकाल में ग्रहण
होवे तो संगव काल में भोजन न करे संगव कालमें ग्रहण होवे तो ग्रहणके प्रथम भोजन न
करे किंतु ग्रहणते पिछे खावे अथवा संगवकाल जो प्रातकालते अग्रेहै तिसमें ग्रहण होवे तो
पूर्व दिनकी रात्रि में भोजन न करे क्यों कि ४ चार पहर पहले सूर्य ग्रहणते भोजनका निषे
धहै १ श्रीर जो मनुजीनें किहाहै सो कहतेहैं नेति संधिवेलाविषे भोजन न करे वचनांतर कह
तेहैं नातीति श्रीर अतिप्रातकाल विषे अतिसायंकाल विषे इस तो आद लेकर इनमें
भोजन करे तो सौ १०० प्राणायाम कर्के शुद्ध होताहै अति प्रातः सूर्योदयसे पहिले
मुहूर्त मात्र जानना श्रीर अतिसायं सूर्यास्तसे उपरंत मुहूर्त मात्रहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १४१

अब संसर्गते दुष्ट अन्नके भक्षण विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसका उदाहरण भविष्यत् पुण्य विषे किहाहै सुरेति मादिरा लस्सन इनां कर्के स्पृष्टहोवे और पीयूष क्या नवीन दुग्धादिकर्के युक्त होवे एह संसर्ग दुष्टकहेहैं शूद्रको जूठ न्याई जानण और शूद्रका जूठासो जानणा कि एह तेरे योग्य अन्नहै इस भावना कर्के किसेन शूद्रके ताई दखायाहै सो शूद्रो छिष्ट कहि है ॥ १ ॥ अब संवर्त जी कहतेहैं केशेति रोम कीडेकर्के युक्त जो अन्न और नाल लाक्षा कर्के जो स्पर्श कीता होया अन्न और आंदरां अस्थि चर्म इनां कर्के स्पर्श कीते होए अन्नको भक्षणकर्के एकदिनका उपवास व्रत करे तो शुद्ध होनाहै १ तैसेहि शातातपजी कथन करतेहैं केशोबि रोम कीटा कर्के युक्त अन्न और रुधिर मांस और नहि स्पर्श करणे योग्य जो वस्तु तिस कर्के स्पर्श कीता होया जो अन्न और गर्भ हत करणे वाले पुरुष कर्के देखया

अथसंपर्कदुष्टभक्षणेप्रायश्चित्तम् तदुदाहरणंभविष्यति । सुरालशुनसंस्पृष्टं पीयूषादिसमान्वितम् संसर्गाद्दुष्टमेतद्विशूद्रोच्छिष्टवदाचरेत् शूद्रोच्छिष्टं तु विज्ञेयं पूर्वशूद्रे प्रदर्शितम् १ इदं त्वद्योग्यमन्नमिति भावनया केनचिच्छूद्राय प्रदर्शितं तच्छूद्रोच्छिष्टं भवति संवर्तः केशकीटापपन्नंतु नीलीलाक्षोपघातितम् स्नाय्वस्थिचर्मसंस्पृष्टं भुक्त्वा तूपवसेद हरिति १ तथाह शातातपः केशकीटा वपन्नरुधिरमांसास्पृश्यस्पृष्टभ्रूणहावेक्षितपतत्र्यवलीढश्च सूकरगवाघ्रातशुष्कपर्युपितवृथापक्वदेवान्नहविषां भोजनेतूपवासः ॥ पंचगव्याशनंचेति एतच्चोभयमप्यकामविषयम् कामतस्तु मृद्वारिकुसुमार्दींश्च फलकंदेशु मूलकान् विष्णुमूत्रदूषितान् प्राश्य कृच्छ्रपादं समाचरेत् ॥ १ ॥

जो अन्न और पक्षि कर्क अवलीढ क्या आस्वादित जो अन्न और कुत्ता सूकर गौ इनां कर्के संगया होया जो अन्न और पकायाहोया शुका अन्न और वासी अन्न और वृथापकक्या जिस अन्नका नारायणको भोग नहि लगा है और देवताके निमित्त दित्ता जो है तिसको नैवेद्य लगाणेतें विदा जो भक्षण करे वा देवता निमित्त जो हविष घृतादि हैं तिनका हवन न करे और आपही भक्षण करे जो पुरुष सो एक उपवास और पंचगव्य भक्षणकरे एह संवर्त और शातातपका वचन अज्ञानतें भक्षण विषे जानणा ॥ अब कामतें भक्षण विषे कहतेहैं मृदिति मृत्तिका जल पुष्पादि फल कंद क्या सकरकंदि प्रभृति गन्ध मूलियां एह विष्टा मूत्र कर्के दूषित होवें तो इनको भक्षण कर्के कृच्छ्र पाद व्रत करे तद शुद्ध होताहै १

१४२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

और विष्टा मूत्र जिस अन्नके पास होवें तिसके भक्षण विषे अर्धव्रत करे और विष्टादिके स्पर्श कर्के अपवित्र जो भोजनतिसके भक्षणविषे कृच्छ्रव्रतकरे एह विष्णुकाकिहा होया जानणा और थोडे संसर्गविषे पादव्रतकरे और बहुत संसर्गविषे अर्धकृच्छ्र करे एहभी व्यवस्था जानणी जो व्यासजीने किहाहै सो कहतेहैं संसर्गेति संसर्गते दुष्ट जो अन्न और क्रियाते दुष्ट जो अन्न और स्वभाव दुष्ट जो अन्न इनको इच्छाते भक्षण कर्के तत्त कृच्छ्रव्रतको करे १ एह व्रत संसर्ग वाले जो अमेध्या दि तिनके रसकी प्राप्ति होवे जिस अन्नमें तिसके भक्षणविषे जानणा अर्थात् खंदेखंद तिसविष्टादिका स्वाद आगिआ होवे तद् एह प्रायश्चित्तजानणा ॥ रजस्वलादि स्त्रीके स्पर्शविषे शंखजी कहतेहैं अमेध्याति विष्टा पतितपुरुषचांडालपुष्कसक्या चांडालजातिविशेष रजस्वलास्त्री अवधूत

संनिकृष्टेर्धमेवस्यात्कृच्छ्रस्वशुचिभोजनइतिविष्णूक्तंवेदितव्यम्। अस्पृशंसं
र्गपादोमहासंसर्गोऽर्धकृच्छ्रइतिव्यवस्था। यत्तुव्यासेनोक्तम्। संसर्गदुष्टयच्चा
न्नक्रियादुष्टचकामतः भुक्त्वास्वभावदुष्टचतसकृच्छ्रं समाचरेत् १ एतच्चसं
स्पृष्टामेध्यादिरसोपलब्धौवेदितव्यम् रजस्वलादिस्पर्शेतुशंखोक्तम् अमेध्य
पतितचांडालपुष्कसरजस्वलाऽवधूतकुणिकुष्टिकुनखिसंस्पृष्टान्नानिभुक् ॥
त्वाकृच्छ्रचरेदिति कुणिर्हस्तविकलः। एतत्कामकारविषयम्। अकामतोऽ
र्धम्। भुक्त्वाऽस्पृश्यैस्तथाशौचिकेशकीटैश्चदूषितम् कुशोदुंवरविल्वाद्यैः
पनसांबुजपत्रकैः ॥ शंखपुष्पीसुवर्चादिंकाथपीत्वाविशुध्यतीतियद्विष्णुनो
क्तं तदशक्तविषयरजकादिस्पर्शविषयंवा अस्पृश्यैर्विण्मूत्रादिभिः ॥

क्या संन्यासी कुणिम्या खोटे हाथवाला(अर्थात्दुंडा) कुष्टि और खोटें नखोंवाला इनांकर्के स्पर्श कीता होया जो अन्न तिसको भक्षणकर्के कृच्छ्रव्रत करे ॥ एह इच्छा कर्के भक्षण करण विषे जानणा ॥ और अज्ञानतें भक्षणविषे अर्धव्रत करे ॥ भुक्त्वेति और अस्पृश्य जो विष्टा मूत्रादि इनांकर्के दूषित जो अन्न और अपवित्र अन्न और केशकीटकर्के दूषित जो अन्नइनांको भक्षण कर्के कुशा खंवल धिल्यादि पनस वृक्ष कमल इनांके पत्रोंका और शंखपुष्पी सुवर्चादि इनांके कायकों पान करे तो शुद्ध होताहै १ एह जो विष्णुजीने किहाहै सो असमर्थ विषय विषे वा रजकादि स्पर्श विषय विषे जानणा ॥

॥ श्रीगणेश्वर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १४३

अब शूद्रादियों कर्के स्पर्शवाला जो अन्न तिसके भक्षणविषे हारितका कथनकीता होया प्रायश्चित्त जानणा शूद्रेणेति शूद्र कर्के स्पर्शवाला अन्न वा विष्टा भक्षणकरणवाले कीडों कर्के स्पर्श वाला और जिस स्थानमे ब्राह्मण भोजन करतेहैं तिसमें शूद्र अन्न बरबावे १ अब इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं तिस शूद्रको अयोग्य होणेंतें पंक्ति विषे भोजन कर रहे जो ब्राह्मणादि तिनामें अन्न देवे अथवा जिस जगा उठ कर्के जूठा देदेवे वा प्रथम आचमन कर लेंवे वा निदा कर्के अन्न देवे तिसविषे प्रायश्चित्त एक दिनरात्रका उपवास करे तो शुद्ध होताहै और उच्छिष्ट पाकिके भोजन विषे भी एही व्रतजानणा ॥ यस्त्विति जो द्विज उच्छिष्ट पाकिके विषे कदाचित् भोजन करे तो एक दिनरात्रका उपवास व्रतकर्के पंचगव्य पानकरे तां शुद्ध होताहै १ एह क्रतुस्मृतिमें किहाहै वाम

शूद्राद्युपहतेतुहारीतोक्तंविज्ञेयम् शूद्रेणोपहतंभोज्यंकीटैर्वामेध्यसेविभिः भुं
जानेषुचवायत्रदद्याच्छूद्रउपस्पृशेत् १ अनर्हत्वात्सशूद्रःपंक्तौभुंजानेषुवाय
त्रोत्थायोच्छिष्टंप्रयच्छेदाचामेद्वाकुत्सित्वावायत्रान्नंदद्युस्तत्रप्रायश्चित्तमहो
रात्रमिति ॥ उच्छिष्टपंक्तिभोजनेप्येतदेव ॥ यस्तुभुंक्तेद्विजःपंक्त्यामुच्छिष्टा
यांकदाचन श्रहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यतीतिक्रतुस्मरणात् ॥ वाम
करनिर्मुक्तभुक्तामत्रभोजनेतु ॥ समुत्थितस्तुयोभुंक्तेयोभुंक्तेभुक्तभाजने एवंवे
वस्वतःप्राहभुक्तासांतपनंचरेदिति १ षट्त्रिंशन्मतोक्तंवेदितव्यम् ॥ एकपं
क्त्युपविष्टानांविप्राणांसहभोजने यद्येकोपित्यजत्पात्रंशेषमन्नंनभोजयेत् १
मोहार्जुनीतयस्तत्रपंक्त्यामुच्छिष्टभोजनः प्रायश्चित्तंचरेद्विप्रःकृच्छ्रंसांत
पनंचतदिति ॥ २ ॥

हस्त कर्के दित्तजों अन्नतिसविषे अथवा और जूठे पात्रविषे भोजन करणेंमें प्रायश्चित्त कहतेहैं समिति जो पुरुष उठकर्के भोजनकरताहै और जो जूठे पात्रविषे भोजन करताहै इहांभुक्तभाज नपद वामहस्तकर्के दितेहोएका उपलक्षण जानणा इसप्रकार यमजीने किहांहोके पूर्वोक्त प्रकार कर्केजों भोजनकरेसो सांतपन व्रतकरे १ एह षट्त्रिंशन्मतका कथनकीताहोया जानणा षट्त्रिंश न्मत ओहै कि जो १६ छत्री ऋषियोंने इकठे होकर्के बनायाहै ॥ तैसंहि पराशरजीनेंभी इस वि षे किहाहै एकेति एक पंक्तिमें स्थित जों ब्राह्मण तिनाको भोजन करदे होयां जेकर एक मनुष्य भी पात्रत्यागदेवे तदहोर कोई शेष जो अन्न तिसकाभक्षण न करे १ मोहर्ते जों तिसविषे भोजन करे सो उच्छिष्ट भोजी होताहै तिसविषे ब्राह्मणकृच्छ्रसांतपन नाम व्रतकीं करे तो शुद्धहोताहै २

१४४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अवमनुजी कथन करते हैं अभोज्येति जिनांका अन्न नहिं भक्षण करणा तिनांके अन्नको भक्षण कर्के और स्त्री शूद्रका जूठा भक्षण कर्के और अभक्ष्यमांसको भक्षण कर्के सत्तरात्रि जव पान करे १ अव इ सांका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं अभोज्येति अभोज्यान्न अग्ने कहने जो हैं तिनका अन्न और स्त्री शूद्रका जूठा मांस प्रकरणमें किहा जो अभक्ष्यमांस तिसको भक्षण कर्के जलयुक्त सत्तरूप कर्के वा यवागू रूप कर्के पान योग्य जो यव तिनांको पान करे तो शुद्ध होता है विडालेति विडाला का क चूड़ा नकुल इनांका जूठा भक्षण कर्के और केश कीड़ा इनां कर्के युक्त जो अन्न तिसनू भक्षण कर्के ब्राह्मी सुवर्चला वूटीका पान करे तिसका पान कोइ काथ कर्के कहते हैं और कोइ कहते हैं किरात्रिमेजलमंपारक्षे और प्रातःउसजलको पीवे २ अव विष्णुजी कथन करते हैं गोरिति गौका

मनुः अभोज्यानांतुभुक्तान्नस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेव च जग्ध्यामांसमभक्ष्यंच सप्त रात्र्यवान्पिवेत् १ अभोज्यान्नावक्ष्यमाणास्तदन्नस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमांसप्रकरणोक्तमभक्ष्यमांसंभुक्ताजलमिश्रितसत्तुरूपेण यवागूरूपेण वा पानयोग्यान्यवान्पिवेदित्यर्थः ॥ विडालकाकाखूच्छिष्टं जग्ध्याथनकुलस्य च केशकीटावपन्नंचपिवेद्ब्राह्मीसुवर्चलाम् २ आसुर्मूषकः ॥ विष्णुः ॥ गोरुच्छिष्टाशनेदिनमकमुपोषितः पंचगव्यंपिवेत् ॥ संवर्तः ॥ विष्णुमूत्रभक्षणे विप्रः प्राजापत्यं समाचरेत् श्वकाकगांभिरुच्छिष्टभक्षणे तु दिनत्रयम् १ वसिष्ठः ॥ श्वकाकावलीढशूद्राच्छेषणसंभोजनेष्वतिकृच्छ्रः ॥ कृच्छ्रइतरेष्वन्यत्र मधुमांसफलविकारेषु मतिपूर्वकाभ्यासे एतत्

जूठा भक्षण करणविषे एकदिन उपवास व्रत कर्के पंचगव्य पान करे ॥ अव संवर्तजी इसमें विशेष कहते हैं विडालेति विष्टामूत्रभक्षण करणवाला ब्राह्मण प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होता है और कुत्ता काक गो इनांके जूठा भक्षण करणविषे तीनदिनका व्रत करे तो शुद्ध होता है १ अव वसिष्ठजी कथन करते हैं श्वेति कुत्ता काक इनां कर्के जो आस्वादित अन्न और शूद्रका जूठा इनांके भक्षण करणविषे अतिकृच्छ्र नाम व्रत करे तो शुद्ध होता है ॥ औरोंके अर्थात् गवादिके जूठा भक्षण करणविषे कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होता है ॥ परंतु मखार मांस फल इनांका जो विकार एह जेकर काकादि कर्के जूठे होणतां इनके भक्षणमें एह व्रत है नहि किंतु एक उपवास है इच्छापूर्वक बहुत बार भक्षण करणमें पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १४५

अब शंख जी कथन करते हैं शुनेति कुत्तेके जूठे अन्न को भक्षण कर्के एक महीनेका व्रत करे तो शुद्ध होता है और काकका जूठा गौका सिंघया होया अन्न भक्षण कर्के एक पक्ष अर्थात् पंद्रांदिनका व्रत करे १ ६ १ कश कीट कर्के दूषित अन्न और जिसने मूषकादि भक्षण कीते हैं ऐसे बिलेका जूठा जो अन्न अथवा बिलेका जूठा और दूषकैः क्या नेत्रोंकी मलकर्के दूषित जो अन्न और मक्खी मछर कर्के दूषित जो अन्न तिसको भक्षण कर्के त्रय ३ रात्रि व्रत करे तो शुद्ध होता है २ और वृथा जो खिचड़ी कडाह क्षीर पूडे पुरियां इनांको भक्षण कर्के समाधान हो कर्के त्रय ३ रात्रिका व्रत करे ३ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं वृथे

शंखः । शुनोच्छिष्टंतुभुत्कान्नमासमेकंव्रतंचरेत् काकोच्छिष्टंगवाघ्रातंभुत्का पक्षव्रतीभवेत् १ दूषितंकेशकीटैश्चमार्जारैर्दूषकैस्तथा मक्षिकामशकैश्चैव त्रिरात्रंव्रतमाचरेत् २ कथंभूतैर्मार्जारैर्दूषकैःभुक्तमूषकादिभिरित्यर्थः। वृथा कृसरसंयावपायसापूपशष्कुलीः भुत्कात्रिरात्रंकुर्वीतव्रतमेतत्समाहितः ३ वृथेति विष्णवे विप्रायवा निवेदनं विना कृसरघृतपक्वगोधूमसारसितादि चूर्णम् ॥ अमतिपूर्वाभ्यासेएतत् ॥ श्वकाकगवाघ्रातभोजनेसाभ्यासेप्येतत् गोमूत्रयावकाशनमेवात्रव्रतम् ॥ कामतःसकृद्भोजने ॥ प्रचेताः ॥ मक्षीगो धाथस्वद्योतःशतरूपटोयलोष्टकृत् पड्विध्यन्मुरदुर्गश्चसप्तैतेदुष्टकीटकाः १

ति विष्णुजीके तांडे वा ब्राह्मणके तांडे निवेद लगाएँते विना कृसर और घृत कर्के पकाहोया कणकका सार स्वेतादि चूर्ण अर्थात् कडाह इनके अज्ञान पूर्वक बहुतवार भक्षणविषे पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा ॥ और कुत्ता काक गौ इनांका सिंघया जो अन्न तिसके बहुत वार भक्षण विषे भी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा गोमूत्रयुक्तयवोंका भक्षण करणा एहहि इसजगा व्रत जानणा और इच्छातें एकवार भक्षण कर्के विषे प्रचेतसा ऋषि जी कथन करतेहैं मक्षीति मक्खी १ गोह २ टटाणा ३ शतरूपट कीटविशेष ४ लोष्टकृत् कीटविशेष ५ पड्विध्यन् भी कोई कीट विशेष जानणा मुरदुर्ग भी कीटविशेष जानणा एह सप्त ७ दुष्ट कीडे कहेहैं १ ॥

१४६ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

इसका प्रयोजन करते हैं एतैरिति उन पूर्वोक्तों के वा काकादिकों जो अन्न दूषित है तिसको इच्छाते भक्षण करे तो छच्छू सांतपन कर्के शुद्ध होता है २ और अज्ञान पूर्वक एक बार भक्षण विषे कालदुष्ट भक्षण के प्रसंग विषे पिच्छे किहा है ॥ अब और कहते हैं केशेति केश कीट कर्के युक्त अन्न और स्त्रियों का जूठा अन्न कुता रजस्वला स्त्री शूद्र इनां कर्के स्पृष्ट जो अन्न तिसको भक्षण कर्के पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होता है १ कितेक क्षत्रि वैश्य के अन्न की न्याई घृतादि द्रव्य विशेष युक्त जो शूद्र का अन्न तिसके भक्षण विषे पराशर जो आज्ञा देते हैं घृतमिति घृत तैल क्षीर गुड और तेल कर्के पकी जा वस्तु और शूद्र का अन्न इनको नदी कनारे जा कर्के ब्राह्मण

एतैः काकादिभिश्चैव यदन्नं दूषितं भवेत् तदन्नं कामतो भुक्त्वा कृच्छ्रं सांतपनं चरेत् २ अबुद्धिपूर्वकं द्रक्षणे कालदुष्टाशन प्रसंगे प्रोक्तम् । केशकीटावपन्नं च स्त्रीभिः स्वातंत्यैव च श्वोदक्या शूद्रसंस्पृष्टं पंचगव्येन शुद्ध्यतीति १ एतदन्नं भुक्त्वा पंचगव्येन शुद्ध्यतीत्यर्थः । क्वचित् क्षत्रियाद्यन्नवत् शूद्रान्नस्यापि घृतादि द्रव्यविशेषरूपस्याभ्यनुज्ञा माह पराशरः ॥ घृतं तैलं तथा क्षीरं गुडं तैलनपाचि तं गत्वा नदीनटे विप्रो भुंजीयाच्छूद्रभोजनमिति १ तैलपाचितं पूरिकाशष्कु ल्यादि । भुज्यत इति भोजनं भोज्यद्रव्यं शूद्रस्य संवधिभोजनं शूद्रभोजनं तादृशं घृतादिकं यदा भोक्तव्यं भवति तदा क्षत्रियादिगृहेष्वेव न शूद्रगृहे किंतु हि तच्छूद्रान्नं यादृशं तादृशं वा गृहीत्वा गृहाद्वहिर्नदीतीरादौ वा भुंजीत

भक्षण करे १ तैलपाचित क्या पुरियां पराकडी तो आद लेकर जानणा ॥ इसका अर्थ करते हैं जो भक्षण करिए सो भोजन कहिए सो क्या भक्षण करण योग्य द्रव्य और शूद्र संवधि जो भोजन है सो शूद्र भोजन किहा है तादृश क्या शूद्र संवधि घृतादिके जेकर भक्षण करण मे इच्छा होवे तद क्षत्रियादियों के घर विषे भक्षण करे शूद्र के घर विषे भक्षण करण योग्य नहि है इसमे भी विशेष कहते हैं किमिति तद क्या सो शूद्र का अन्न जैसा तैसा होवे तिसको ग्रहण कर्के घरतें बाहर नदी के कनारे तो आद लेकर और किसी एकांत जल के कनारे जा कर्के भक्षण कर लेवे इसमें दोष नहि जानणा

॥ श्रीरणवीर करित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ १४७

एह पूर्वोक्तत्रियादि त्रयविषे भोजनकी आज्ञाहै सो मार्गके थकेहोयांविषे पूर्ववर्ण जो ब्राह्मण तिसके न मिलयां होयांजानणी वा आपत्तिकालके भक्षणविषे जानणी एह माधवजीने कहाहै और क्षुधायुक्तचाक्रायण ऋषिने हार्थावाणदाअन्नभक्षणकिया एह छांदोग्यके प्रथमाध्याय विषे देखेयोग्यहै । आपत्ति कालमें शूद्रकेगृहविषे भोजन करणमें पराशरजीकहतेहैं आपत्ति आपत्ति कालमें जेकर ब्राह्मण शूद्रके घर विषे भोजन करे तो मनमें पश्चात्ताप करण कर्के शुद्ध होताहै और(द्रुपदादिवमुत्तमानः)इस मंत्रका सौ जप करे १ अब दीपके जूठे भक्षणकरणमें षड्विंशन्मतविषे कहतेहैं दीपेति दीपका जूठा जो तेलहै और गली में डिगया जो ते

एतत्क्षत्रियादिवर्णत्रयभोजनाभ्यनुज्ञानं मार्गश्रान्तादौपूर्ववर्णत्रयासंभवे वेदितव्यमापदिवेतिमाधवः ॥ चाक्रायणर्षिणाक्षुधितेनहास्तपकान्नभुक्तमितिछांदोग्येप्रथमाध्यायेद्रष्टव्यम् ॥ आपदिशूद्रभोजनंपराशरः ॥ आपत्कालेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि मनस्तापेनशुद्ध्यंतुद्रुपदानांशतंजपेत् १ दीपोच्छिष्टभक्षणंषड्विंशन्मते ॥ दीपोच्छिष्टतुयत्तैलंरात्रौरध्याहतंचयत् । अभ्यंगाच्चैवयच्छिष्टंभुक्तवानक्तेनशुद्ध्यति १ तैलग्रहणाद्घृतं न दोषः शंखलिखितौ ॥ वृथाकृसरपायसापूपमांसभक्षणमाहिताग्निःकृत्वाप्राजापत्यंचरेत् यमः ॥ माक्षिकंफाणितंशाकंपायसंगोरसंचृतम् ॥ हस्तदत्तानिभुक्तवानुभोक्तासांतपनंचरेत् १ इदमभ्यासविषयम् ॥ फाणितमिक्षुविकारविशेषः ॥

ल और मालशते शेष जो तेल इनांको भक्षण करे तो एकव्रत कर्के शुद्ध होताहै १ इस जगा तेलका ग्रहण होणेतें घृतमें दोष नाहें जानणा ॥ शंखलिखित स्मृतिसे कहतेहैं पृथति ब्राह्मण वा विष्णु को निवेद लगाणेतें बिना खिचडी क्षीर पूडे मांस इनका भक्षण करे अग्निहोत्री तो प्राजापत्य व्रत करे ॥ अब यम जो कहतेहैं माक्षिकमिति मखीर फाणित साक क्षीर दूध घृत इनको हथ तें दिते होयांको भक्षण करे तो भक्षण करण वाला सांतपन व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ एह बहुत बार भक्षण करण विषे जानणा और फाणित नाम गन्नेके विकार विशेषका जानणा ॥

१४८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

अब यम जी कुछ और कथन करते हैं विप्रेति ब्राह्मणके साथ अन्न भक्षण करे तो प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होता है और राजा के साथ अन्न भक्षण करे तो तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है १ और वैश्यके साथ अन्न भक्षण करे तो अनिकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है और शूद्रके साथ अन्न भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है २ इस स्थान में साथ भोजन क्या एकपात्रविषे जो भोजन करणा सो जानणा ॥ एह इच्छातें बहुत बार भक्षणविषे जानणा अब शंखलिखित स्मृतिसें कहते हैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणके जूठा भक्षण करणे विषे महाव्याहृतियां जो(ओं भूः उँभुवः उँस्वः) इनां कर्के जलको मंत्रण करे फेर तिसका पान करे क्षत्रीके जूठा भक्षण करणे में ब्राह्मी वूटीके रसकर्के क्षीर बनावे तिसको त्रयदिन भक्षण करे और वैश्यके जूठा

किञ्च विप्रेणसहभुक्तवान्नप्राजापत्येनशुद्ध्यति भूभुजासहभुक्तवान्नतप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति १ ॥ वैश्येनसहभुक्तवान्नमतिकृच्छ्रेणशुद्ध्यति शूद्रेणसहभुक्तवान्नचांद्रायणमथाचरेत् २ सहभोजनमेकपात्रभोजनम् ॥ एतत्तु कामतो त्यंताभ्यासविषयम् ॥ शंखलिखितौ ॥ ब्राह्मणोच्छिष्टभोजनेमहाव्याहृतिभिरभिमंत्र्यापःपिवेत् ॥ क्षत्रियोच्छिष्टभोजनेब्राह्मीरसविपक्वेनत्र्यहंक्षीरेण वर्तयेत् ॥ वैश्योच्छिष्टभोजनेत्रिरात्रोपोषितः ब्रह्मसुवर्चलांपिवेत् ॥ शूद्रोच्छिष्टभोजनेसुराभांडोदकपानेचसप्तरात्रमभोजनम् ॥ चांद्रायणवेतिकचित्पुस्तकेपाठः ॥ एतदकामतः । अभ्यासेद्विगुणम् ॥ विष्णुः आमश्चाद्वाशने त्रिरात्रं पयसावर्नेत ब्राह्मणः शूद्रोच्छिष्टाशनेवमनंकृत्वासप्तरात्रम् ॥ वैश्योच्छिष्टाशनेपंचरात्रम् ॥ राजन्योच्छिष्टाशनेत्रिरात्रम्

भक्षण करणेंमें त्रयरात्रि उपवास व्रत कर्के ब्रह्मसुवर्चला वूटीको पान कर और शूद्रके जूठा भक्षण करणें में और मदिरा के भांडेमें जल पान करणें विषे सत् ७ रात्रि उपवास व्रत करे तो शुद्ध होता है वा चांद्रायणव्रत करे एह किसे पुस्तकमें पाठ है एह प्रायश्चित्त अज्ञानतें जूठे भक्षण विषे जानणा और बहुत अभ्यास होवे तिसमें दूणा जानणा ॥ अब विष्णुजी कथन करते हैं आमेति कच्चे अन्नका जो आद्ध तिसके भक्षण विषे ब्राह्मण त्रय रात्रि केवल जल पानही करणे कर्के शुद्ध होता है और शूद्रके जूठा भक्षण करणेंमें उलटी कर्के सत् ७ रात्रि व्रत करे और वैश्यके जूठा भक्षण करणेंमें पंच ९ रात्रि व्रत करे और क्षत्रीके जूठा भक्षण करणेंमें त्रय रात्रिका व्रत करे तो शुद्ध होता है

॥ श्रीरघुवीरकारित प्रायश्चित्त-संग्रहः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १४९

श्रीरक्षत्रोंको शूद्रके जूठा भक्षण करणीमें पंचरात्रिका व्रत करणे योग्यहै वैश्यके जूठा भक्षण में त्रय राशि व्रत करे और वैश्य शूद्रका जूठा भक्षण करे तो त्रय राशि व्रत करे ॥ श्रीरक्षत्रजी कहतेहैं शूद्रने शूद्रके जूठा भक्षण करणे में महीनेका व्रत करे ॥ तैत्तिरीय वैश्यके जूठा भक्षण करणे में पंद्रह दिन का व्रत करे ॥ और क्षत्रके जूठा भक्षणमें सप्त ७ दिनका व्रत करे और ब्राह्मणके जूठे भक्षणमें एक दिनका व्रत करे और कबे अन्नका जो श्राद्ध तिसके भक्षणमें विद्वान् महीनेका व्रत करे १ एह नवश्राद्ध विषे जानणा एह जो जूठा भक्षण का प्रायश्चित्त है सो पित्रादयोर्ते और विषय में जानणा ॥ पिता और बड़े भावा का जूठा

राजन्यः शूद्रोच्छिष्टाशीपंचरात्रम् ॥ वैश्योच्छिष्टाशीत्रिरात्रम् वैश्यः शूद्रोच्छिष्टाशाच । शंसः । शूद्रोच्छिष्टाशनेमासपक्षमेकतथाविशः क्षत्रियस्य तुलसाहं ब्राह्मणस्य तथादिनम् १ आमश्राद्धाशनेविद्वान्मासमेकं व्रती भवेत् ॥ एतन्नवश्राद्धेवोध्यम् ॥ एतदुच्छिष्टप्रायश्चित्तपित्राद्यतिरिक्तविषयम् ॥ पितृर्ज्यैष्ठ्यस्य च भ्रातुरुच्छिष्टं भाज्यामित्यापस्तंबस्मरणात् ॥ यत्तु दृढद्व्यासवचनम् ॥ मातावाभगिनीवापि भाय्यावान्याश्च योपितः न ताभिः सह भोक्तव्यं भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत् १ तत्सहभोजनविषयम् ॥ उच्छिष्टमात्रभोजने तु शूद्रोच्छिष्टभोजने सप्तरात्रमभोजनं स्त्रीणांचित्यापस्तंबोक्तं द्रष्टव्यम् ॥ शातातपः । उच्छिष्टमगुरोरभोज्यं स्वयमुच्छिष्टमुच्छिष्टोपदत्तं च तद्भोजने कृच्छ्रम्

जो भक्षण करणे योग्यहै एह आपस्तंब स्मृतिका वचनहै ॥ जो दृढद्व्यास जी का वचन है सो कहतेहैं मानेति माता वा भगिनी स्त्री और कोई स्त्री इनके साथ भोजन न करे जेकर करे सो चांद्रायण व्रत करे एह प्रायश्चित्त इनके साथ भोजनमें जानणा १ और इनके जूठा भक्षण भक्षण विषे कहतेहैं शूद्रने शूद्रके जूठा भक्षण करणेमें और स्त्रियों के जूठा भक्षण में सप्त ७ उपवास व्रत करे तां शूद्र होताहै अथ शातातप ऋषि जी कथा कहतेहैं उच्छिष्टेति जो गुरुज होवे तिसका जूठा नहि भक्षण करणा और अपणा जूठा और जूठे साथ जो लगा है एह भी नहि भक्षण करे जेकर भक्षण करे सो कृच्छ्र व्रत करणे कर्क शूद्र होताहै ॥

१५० ॥ श्रीरणीवीर कीर्ति प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

जो स्वगिराहा वचन है सो कहते हैं ब्राह्मणेयति ॥ ब्राह्मणों के साथ जो भोजन करे वा बि
सका जूठा भक्षण करे तिनविध विद्वान् पुरुष दीप नहीं मानते हैं १ एह तिसके विवाहमें वा आ
षाढि विषयमें जानणा ॥ अत्र नीचके जूठा भक्षणमें कहते हैं अत्येति नीचोंका जूठा दिजासि
ब्रह्म कर सो चांद्रायण कृच्छ्र व्रत और तदर्थ ब्रह्म क्षत्र वैश्य इनामें एह विधि आपस्तंब जीकी
कथन कीती हैं जिनको अर्थात् ब्राह्मण नीचका जूठा भक्षण करे सो चांद्रायण व्रत करे
तबो भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रत करे वैश्यकों भक्षण करणे में कृच्छ्रका अर्थ व्रत करणा याग्यदे
अब शेष जी कहते हैं अमेधोति अपवित्र वस्तु पतित पुरुष चांडाल पुष्कम कया चांडालाशे
परजस्वला खो कुण्ड कया टुंडा खोट नखा वाला इनां कर्कं स्पर्श वाला जो अत्र तिसकों

यस्वगिरीवचनम् ब्राह्मण्यासहयोश्नीयादुच्छिष्टैवाकदाचन तत्रदीपन
मन्यन्ते सर्वे एवमनीपिण्ड इति १ तद्विवाहविषयमापद्विषयवा । अत्र्याच्छिष्ट
भोजनेतु अत्र्यानां भुक्तशयंतुभक्षयित्वा द्विजातयः चांद्रं कृच्छ्रं तदर्थचत्रक्ष
क्षत्रविशां विधिरित्यापस्तंबोक्ते दृष्टव्यम् शश्वः । अमेध्वपातितचांडालपुष्क
सरजस्वलाकुणिकुटिकुनखिसंस्पृष्टं च भुक्तवाकृच्छ्रमाचरेत् कुण्ड हस्तावेक
लः । यमः । मसूरमांसमापाणिभुक्तवायोवमतिर्द्विज त्रिरात्रमुपवासोऽस्य प्रा
यश्चित्तं विधीयते प्राणायामैस्त्रिभिः स्नात्वा घृतप्राश्यविशुद्ध्यति १ विष्णुः
शूद्रोच्छिष्टं शूनावापिसंस्पृष्टं प्राश्य भोजनम् तत्तत्कृच्छ्रं शूद्रव्यतप्राजापत्ये
नवापुनः शक्त्या पराकोदातव्य इति धर्मस्य निश्चयः १

भक्षण कर्कें कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होता है अब यम जी कहते हैं मसूरेति मसर मांस मांस इनां
को जो द्विज भक्षण कर्कें उलटी कर देवे इसका प्रायश्चित्त त्रय रात्रिका उपवास व्रत जानना
और स्नान कर्कें त्रय प्राणायाम करे तो शुद्ध होता है १ अब विष्णु जी कहते हैं शूद्रेति शूद्रका जूठा
वा कुत्ते का जूठा इनां कर्कें स्पर्श वाला जो अन्न तिसको भक्षण करे तो तत्कृच्छ्र व्रत कर
के कर्कें शुद्ध होता है वा प्राजापत्य व्रत कर्कें शुद्ध होता है वा शक्ति कर्कें पराक व्रत जो
चारों १२ दिनका है सो देणे योग्य है एह धर्मशास्त्रका निश्चय जानना अर्थात् जैसी शक्ति
होवे तैसा हि व्रत देणे योग्य है १

॥ श्रीरामचरित कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १५१

ब्रूतेति क्षत्रि वैश्यादिकर्क भक्षण करणो गोपहिहा होया जो अन्न और गांभूसूतक के मुक्तशयजो अन्न तिसको द्विज भक्षणकर्क एकपादहीन रुच्छू १ करे और समर्थ होव तद संपूर्ण व्रत करे १ और शव क्या मुंडे आदि कर्क स्पृश बाला जो जल तिसके पानविषे प्रायश्चित्तादि प्रकीर्णक प्रकरणाविषे देखेण योग्य है ॥ ७ ॥ अव क्रियादुष्टके भक्षणविषे प्रायश्चित्त कहते हैं नेति क्रियादुष्ट जो अन्न तिसका न भक्षण करे जो पतित पुत्रों कर्क पृथक् देखया होवे इत्यादिकर्क निषिद्ध जो अन्न तिसको भी भक्षण न करे ॥ तेनेहि वस्तुपुण्यविषे कहते हैं हस्तोने हस्त्य कर्क दित्तो होई जो ओह बाली वस्तु क्या घृतादि और लवण व्यजन एह दाताको प्राप्त नाहें होते और उसको

स्तत्र यस्यादाभजुष्टगदभःसुकरस्तया पादहान्याभवकृच्छूशक्तयासवचर दाद्वजः १ जुष्टभुक्तशयम् शवाद्यपहनेजलपनिप्रायश्चित्तादिप्रकीर्णकप्रकर एद्रष्टव्यम् ॥ अथक्रियादुष्टाशनेप्रा० नभक्षयेक्रियादुष्टयदुष्टपतितैः पृथ गित्यादिनेतिनिषिद्धम् ॥ तथात्रयपुराणे । हस्तदत्ताश्रयस्नेहालवणव्यंजना निच दातारनोपतिष्ठतिभोक्ताभुंक्तेतुकिंल्विषम् १ तस्मादंतरितंदेयपणैनेव तृणनया प्रदद्यान्नतुहस्तेननायसेनकदाचन २ तथा । एकेनपाणिनादत्तं शूद्रदत्तनभक्षयेत् घृततैलेचलवणपानीयंपायसंतथा भिक्षाचहस्तदत्ता पिनग्राह्यायत्रकुत्रचिदिति १

भक्षण करण वालाभो पापको भक्षणकर्ता है १ तिस कारणते घृतादि वस्तु पत्रकर्क बा तुल्यकर्क देखे योग्यह हस्त्य कर्क न देवे और लोहेके पात्र कर्क भी न देवे २ तेनेहि और कथन करते हैं एकेति एक हस्त्य कर्क जो दित्त होया और शूद्र कर्क दित्त होया जो अन्नादि तिसको न भक्षण करे और घृत तेल लवण पानी दुग्ध भिक्षा एह संपूर्ण एक हस्त्य कर्क दित्त होयें तो किसी जगा ग्रहण करणे योग्य नहि हैं अर्थात् किसी स्थानविषे भी इनांका ग्रहण न कर जेकर करे तो दोषभागी होताहै इसका प्रायश्चित्त अगली स्मृतिसे जानणा १

१८२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

प्रायश्चित्त लिखित मति से कहते हैं नेति जलते विना अन्न को नहि भक्षण को क्योकि भोजनके पहले और पीछे आचमनका विधान है सो विना जलसे नहि होसका और वो भक्षण को पक्का होया तिसको भी नहि भक्षण करे और वासी अन्न को भी नहि भक्षण करे और राग कया रंगोदी मिठआई क्षीर खण्डकी वणी वस्तु दधि गुड कण्ठ यव पीठ इनोके विकारते विना पूर्वोक्तोंके भक्षण विषे सामान्य उपपातकका पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानण ॥ और वायुविन रागादिके भक्षण विषे दोष नहि है । अब मिताक्षरा विषे पराशरजीकावचन है माक्षिक मिश्रित मखीर फाणित शाक दुग्ध लवण घृत एह हृष्य कर्के दिते होयेको भक्षण करे तो एक दिनका उपवास व्रत करे १ और (भाकासांतपनचरेव) एह चतुर्थ पाद विषे पाठ पिच्छे शूल पाणित कया है और इस स्थान मे सांतपन व्रत त्रय दिनका जानण योग्य है इसका प्रत्याघ्राय

॥ शंखलिखितौ ॥ नापानीयमन्नमश्रीयात् ॥ नद्विपक्वं पथ्युपितमन्यत्र रागचरुखाण्डवदधिगुडगोधूमयवपिठविकारभ्यः ॥ एतद्रक्षणसामान्योपपातकप्रायश्चित्तं योध्यम् ॥ मिताक्षरायां तु पराशरः ॥ माक्षिकं फाणितं शाकं गोरसलवणघृतम् हस्तदत्तानि भुक्तवान् तु दिनमेकमभोजनमिति १ भाक्ता सांतपनं वरदिति चतुर्थपादे पाठः शूलपाणितं नाभिहितः ॥ अत्र सांतपनं च त्र्यहं साध्यम् ॥ पुराणमेकं प्रत्याघ्रायः ॥ एतदज्ञानतः ॥ अज्ञानतस्त्वर्द्धम् ॥ कामतस्तु हस्तदत्तभोजने अवाह्येण समीपे भोजने दुष्टपक्तिभोजने पक्ष्यग्रसे भोजनेऽभ्यक्तमूत्रपुरीषकरणे मृतसूतकशूद्रान्नभोजने शूद्रैः सह स्वप्ने विराट् भोजनमिति हारीतोक्तविज्ञेयम्

एक पुराण जानणा ॥ अर्थात् पुगण दान करे वा तिसका पाठ करा देवे और पुगण नाम सो का मांस १६ चांदोका है तिनका दान करणा एह अर्थयथा योग्य है परंतु एहज्ञानतें भक्षण करण विषे जानणा और अज्ञानतें भक्षण विषे अर्द्ध व्रत जानणा और इच्छातें हस्तकर्के दिते होएके भोजन विषे कहते हैं अवाह्येण समीपे विना भोजन करण विषे और दुष्ट पक्तिके विषे भोजन करण में और पक्तिसे प्राथम भोजन करण विषे और स्नान कर्के मूत्र विष्टा करण विषे और मृत होएके सूतक विषे वा शूद्रके अन्न भक्षण करण विषे और स्वप्न विषे शूद्र के साथ भोजन करण विषे त्रय रात्रि का उपवास व्रत करे एह हारीत जीका कथन कोचा हो आ जानणा

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १५३

पश्येति परस्पर दाननेजो दृष्ट अन्न है तिसके भक्षण विषे पगशरजी कहते हैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणको
अन्न शूद्र देवे और शूद्रका अन्न ब्राह्मण देवे एह दोनों अन्न अभिषय है जेकर भक्षण करे तो एक
दिनका उपवास व्रत करे एह बृद्धयाज्ञवल्क्यका कथन कीसाहोया जानणा ॥ १ ॥ अब शूद्रके
हस्तमें भोजन करणें में कहते हैं ॥ शूद्रेति शूद्रके हस्त कर्कें जो भोजन करता है वा जल पान
करता है सो एक उपवास कर्कें पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होता है एह मनुजीका कथन कीतो
होया जानणा १ अब फूकदेकर्कें जो दृष्ट अन्न तिसके भक्षण में कहते हैं आसनेति आसन पर
स्थित होके वा आसन पर पाद रख के वा अर्द्ध वस्त्र ऊपर लेकर कर्कें वा फूक मार कर्कें जो
भोजन करता है सो कच्छु सांतपनव्रत करे तो शुद्ध होता है १ इसमें आसन अपवित्र जानणा

पय्यायान्नदानदुष्टे तु ब्राह्मणान्नददच्छूद्रः शूद्रान्नब्राह्मणेददत् द्वयमेतदभो
न्यं स्याद्भुक्त्वातूपवसेदहरिति वृद्धयाज्ञवल्क्योक्तमवगंतव्यम् १ शूद्रह
स्तभोजने तु । शूद्रहस्तेन यो भुंक्ते पानीयं वापि वेत्ति क्वचित् अहोरात्रोपि तो भुक्त्वा
पंचमर्द्येन शुद्ध्यतीति मनूक्तं ज्ञेयम् १ धमनदुष्टेपि । आसनारूढपादो वाव
स्वार्धप्रावृत्तोपि वा मुखेन यमिति भुक्त्वा कच्छुं सांतपनं चरेदिति तेनैवाक्तम् १
पित्राद्युद्देशेन त्यक्त्वा न्नभोजने तु । भुंक्ते चेत्पार्ष्णश्राद्धे प्राणायामान् पडाचरेत्
उपवासस्त्रिमासादिवत्सरांतं प्रकीर्तितः १ प्राणायामत्रयं वृद्धावहोरात्रं सपि
त्रे अक्षरूपे स्मृतं नक्तं व्रतपारणके तथा २ अक्षरूपे द्विवापिक त्रिवापिक आ
द्धे व्रतपारणके व्रतं धृत्वा श्राद्धपारणाय व्रतकृता तद्भोजनेपि नक्तमेव

अब पित्रादिके निमित्त दितार्जो अन्न तिसके भक्षणविषे कहते हैं भुंक्तेति जो पुरुष पार्ष्णश्राद्ध
विषे भोजन करता है सो छे ६ प्राणायाम करे और मृत होए के त्रय महीने में लेकर वपंतक
भोजन करना है सो उपवास व्रत करे १ । और वृद्धि क्या नांदो श्राद्धविषे भोजन के तदत्रय प्राणा
याम करे और सपिंडी विषे भोजन करे तो एक उपवास व्रत करे २ और अक्षरूप विषे नक्त व्रत
करे तैसहि व्रत पारण विषे जानणा २ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्कें कहते हैं अक्षरूप इति अक्ष
रूप क्या दो २ वर्ष वा त्रय १ वर्ष के श्राद्ध विषे और व्रत पारणक क्या व्रत धारण कर्कें श्राद्ध
विषे पारणा करे तिस भोजन विषे भी नक्तव्रत करे अर्थात् रात्रिको भोजन करे तो शुद्ध होता है

१५४ भीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

एही पूर्वोक्त व्रत क्षत्रीके अन्नभक्षण करणमें दूणा करे और वैश्यके अन्न भक्षण करणमें त्रिगुण करे और शूद्रके अन्न भक्षण करणमें चागुण व्रत करे १ और विशेष कहतेहैं अतिष्ठाविति अस्या गत को देखवाजे विषे स्थित होया २ जो द्विज जल पान करे तो तो जल रुधिरको न्याई होताहै तिसके भक्षण करणे कर्के चांद्रायण व्रतकरे एह भारद्वाजका कथन कीत्ता होया जानणा २ श्रद्धागीत जो भी कथन करतेहैं एकेति मृत होएके ग्यारवें दिन विषे जो भोजन करे वा अस्थिसं चयन विषे भोजन करे तो त्रय दिन का उपवास व्रत कर्के विधि कर्के स्नान करे और कूष्मांड जो यदेवादेवहेडनमित्यादि मंत्र इनका कर्के घृत का हवन करे तद शुद्ध होताहै १ अथ विष्णुजी भी कथन कतेहैं प्राजापत्यमिति नवश्राद्ध विषे भोजन करे तो प्राजापत्य व्रत करे और प्रथम महीने में भोजन करणें तें एक पाद जन प्राजापत्य व्रत करे और त्रयपक्ष के श्राद्ध विषे भी

द्विगुणं भूतत्रियस्यैतत्त्रिगुणं वैश्यभोजने साक्षाच्चतुर्गुणं ह्येतत्समृतं शूद्रस्य भोजने १ ॥ अतियौति एतद्वारिह्यपः प्राशनं त्रिये द्विजाः रुधिरं तद्देवे द्वारिभुक्त्वा चांद्रायणं चरेदिति भारद्वाजोक्तमयं गंतव्यम् ॥ हारीतेनाप्युक्तम् । एका दशाहेतुस्य हं भुक्त्वा संचयने तथा ॥ उपोष्य विधिवत्स्नात्वा कूष्मांडैर्जुहुयाद् घृतमिति १ विष्णुनाप्युक्तम् । प्राजापत्यं नवश्राद्धेषु दोनं चाद्यमासिके ॥ अथैषाक्षिकेतद्वैतुपंचगव्यद्विमासिके इति चापद्विपयम् ॥ अनापदितु चांद्राय णं नवश्राद्धे प्राजापत्यं तु मिश्रके एकाहस्तु पुराणेषु प्राजापत्यं विधीयते १ ॥ इति हारीतोक्तं द्रष्टव्यम् । एकाहः प्राजापत्यं एकदिनीयं प्राजापत्यं पुराणश्रा द्देऽप्यित्यर्थः ॥ प्राजापत्यं तु मिश्रके इत्येतदाद्यमासिकविषयं द्रष्टव्यम्

जन करणें तें श्राद्ध प्राजापत्य व्रत करे और दूसरे महीनेमें भोजन करणें सें पंचगव्य पान करे एह आपत्ति कालविषे जानणा ॥ अथ आपत्ति जिसको नहि तिसके भक्षण करणेंमें कहतेहैं चा द्रायणमिति नवश्राद्ध विषे भोजन करणें तें चांद्रायण और मिश्रक विषे भोजन करणें तें प्राजाप त्य व्रत करे और पुगणें श्राद्ध विषे भोजन करणें एकदिन का प्राजापत्य व्रत करे एह हारीतजी का कथन कीत्ता होया जानणा १ एकाह प्राजापत्य क्या एक दिन का प्राजापत्य व्रत पुराणेश्रा द्द विषे जानणा (और प्राजापत्यं तु मिश्रके) एह जो पूर्वोक्त पद है सो मृत होए पुरुष के प्रथम महीनेका जो श्राद्ध तिसके विषे जेकर भोजन करे तो तिस विषय विषे जान णे योग्य हैं ॥

॥ श्रीरघुवीर कास्ति प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२॥ टी भा० ॥ १५५

अथ द्वितीयादि महीनेविषं कहतेहैं प्राजापत्यमिति नवश्राद्धविषं भोजन करणें प्राजापत्य व्रत करे और प्रथम महीने विषं भोजन करणें एक पाद उन प्राजापत्य व्रत करे ॥ और अथ पक्षके श्राद्ध विषं भोजन करणें अर्द्ध प्राजापत्य व्रत करे और दो २ महीनेके श्राद्धविषं भोजनकरणें एक पाद व्रत करे १ और छे ६ महीने के श्राद्धविषं वा वार्षिक श्राद्ध विषं भोजनकरे तो एकपाद उन रुच्छ व्रत करे और अन्य मान विषं अर्थात् १ २ ३ ४ ५ ७ ८ ९ १० ११ ॥ इनामहीनेके मासिक श्राद्ध विषं भोजन करणें तें त्रय रात्रि व्रत करे और निरप्य श्राद्ध विषं भोजन करणें एक दिन का उपवास व्रत करे एह पट्टत्रिंशन्मत का कथन कीता होया जानणा २ और क्षत्रियादियोंके श्राद्ध विषं आपात्तिविना भोजन करणें में विशेष कथन कीताहै २ नव श्राद्धविषं भोजन करणें चान्द्रायण व्रत करे और मा

द्वितीयादिपुनः ॥ प्राजापत्यनवश्राद्धादेनां चाद्यमासिके त्रैपक्षिके तदर्थं तु पादोद्वैमासिकेतथा १ पादोनकृच्छ्रनिर्दिष्टपूणमासे च तथा विदके त्रिरात्रे चान्यमासेषु प्रत्यहं चेदहः स्मृतमिति पट्टत्रिंशन्मतोक्तं द्रष्टव्यम् क्षत्रियादिश्राद्ध भोजने त्वनापादितत्रैयविशेष उक्तः । चान्द्रायणं नवश्राद्धे पराके मासिके स्मृतः त्रैपक्षिके सांतपनं कृच्छ्रो मासद्वये स्मृतः १ क्षत्रियस्य नवश्राद्धव्रतमेतदुदाहृतम् वैश्यस्यार्द्धाधिकं शोक्तं क्षत्रियानुमनीपिभिः २ शूद्रस्य तु नवश्राद्धे चरं चान्द्रायणद्वयम् सार्द्धं चान्द्रायणं मासि त्रिपक्षे त्वैदं व्रतम् मासद्वये पराकः स्यादूर्ध्वसांतपनं स्मृतम् ३

सिक श्राद्धविषं भोजन करणें पयक व्रत जो चारों १२ दिनकाहै तिसकों करे और त्रि पक्षिक श्राद्ध विषं भोजन करणें में सांतपन व्रत करे और दो महीने के श्राद्ध विषं भोजन करणें में रुच्छ व्रत करे १ एह पुर्याक व्रत-क्षत्री के नवश्राद्ध विषं जानणा और क्षत्रीतें वैश्यको अर्द्धतें अधिक अर्थात् पादोन कपियोंने कथन कीताहै २ और शूद्रके नव श्राद्ध विषं भोजनकरणें तें दो २ चान्द्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै और मासिक श्राद्ध विषं भोजन करणें में अर्द्ध और एक चान्द्रायण अर्थात् छेठ चान्द्रायण व्रत करे और त्रय पक्षके श्राद्ध विषं भोजन करणें में एक चान्द्रायण व्रत करे और दो महीनेके श्राद्ध विषं भोजन करणें में पयक व्रत जो चारों १२ दिनकाहै सो कण्ठा योग्यहै और उनति उपरंत जो श्राद्ध हैं तिनाविषं जो भोजन करताहै सो सांतपन व्रत करणें कर्कें शुद्ध होताहै ३

१५६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

अब जो शंख जी का वचन है सो कथन करते हैं ॥ चांद्रायणमिति मृत होर पुरुष के मृत
श्राद्ध विषे जो भोजन करता है सो चांद्रायण व्रत करे और मासिक श्राद्ध विषे भोजन करे
तो पराक व्रत करे शुद्ध होता है और व्रत पक्ष के श्राद्ध विषे भोजन करते अति छच्छू व्रत करे
और छे ६ महीने के श्राद्ध विषे भोजन करे ते छच्छू व्रत करे १ और वार्षिक श्राद्ध विषे
भोजन करे तो पाद छच्छू व्रत करे और द्विवार्षिक त्रिवार्षिक श्राद्ध विषे भोजन करे ते
एक उपवास व्रत करे इससे उपरंत विषे दोष नहीं है २ एह शंख का वचन है सो एह सर्पादि
यों करे मृत होए पुरुषाविषे जानना ॥ अथवा जो पतित नपुंसक इत्यादि पंक्ति रहित हैं इनके
विषय विष जानना । व्रत करने को असमर्थ वास्ते कहते हैं चांद्रेति चांद्रायण व्रतका
प्रत्याभवाय अष्ट ८ गौयां हैं और तत्तच्छू विषे चार ४ गौयां हैं ॥ सोई कहते हैं चांडालेति

यतुशंखवचनम् चांद्रायणं नवश्राद्धे पराकोमासिके स्मृतः ॥ पक्षत्रयेति छच्छूः
स्यात्पणमासे छच्छू एव तु १ आदि के पाद छच्छू स्यादिकाहः पुनरादिके ॥ अ
त ऊर्ध्व नदीपः स्याच्छंखस्य वचनं यथेति २ तत्सर्पादिहनविषयम् ॥ ये स्ते
नपतित कृवा इत्याद्यपान्क्तिविषयं वा चांद्रायणेऽष्टधेनवः ॥ तत्तच्छूनुधे
नुचनुटयम् ॥ चांडालादुदकात् सर्पा ब्राह्मणा द्वेद्युतादपि दंष्ट्रिभ्यश्च पशुभ्य
श्च मरणं पापकर्मणाम् १ पतनानाशकैश्च विषोद्वधनैस्तथा भुक्तवेषां
षोडशश्राद्धे कुर्यादिदुव्रतं द्विज इति २ तथा अपांक्तियान्नमुद्दिश्य श्राद्धमेका
देशे हनि ब्राह्मणस्तत्र भुक्त्वान्नं शिशुचांद्रायणं चरेदिति १ ॥ आमश्राद्धे त
था भुक्त्वा तत्तच्छूण शुध्यति संकल्पितं तथा भुक्त्वा विरात्रं क्षपणं भवेदिति
भरद्वाजेन गुरुप्रायश्चित्ताभिधानात् ॥

चांडाल जल सप ब्राह्मण विजली दंष्ट्रि जो शूकरादि पशु इनां करे मृत होवे १ और टोए
विषे डिगणे ते और अनाशक क्या नहीं भोजन करे और विष वधन वा इनां करे मृत होवे
इनां के षोडश श्राद्ध विषे जो द्विज भोजन करे सो चांद्रायण व्रत करे २ तैसेहि और कहते हैं
अपांक्तियेति पंक्ति रहित जो पुरुष मृत होया होवे तिसके निमित्त दत्ता होया जो अन्न और
प्यावे दिनका जो श्राद्ध तिसको जो ब्राह्मण भोजन करे सो शिशु चांद्रायण व्रत करे १ और
कच्चे अन्न का जो श्राद्ध है तिसको भक्षण करे तत्तच्छू व्रत करे और संकल्पित जो अन्न
तिसको भक्षण करे व्रत रात्रि उपवास करे २ एह भरद्वाज ने गुरु प्रायश्चित्त कथन कीता है अ
र्थात् पूर्वोक्त शंखजीके वचनका जो तात्पर्य किहा है सो इन्हाहि वचनान्तं किहा है

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १५७

अब ब्रह्मचारियों विषे बृहद्यम जो विशेष कथन करते हैं मांसिकेति नहि समाप्त होगा है व्रत जिस द्विज का सो ब्रह्मचारि मांसिकादि श्राद्ध विषे भोजन करे तो इसका प्रायश्चित्त त्रयश्रित्त उपवास व्रत किया है फेर त्रय प्राणायाम कर्के घृत का प्राशन करे तो शुद्ध होता है ॥ १ ॥ एह अज्ञान विषय विषे जानणा ॥ और इच्छा तें भक्षण विषे भी बृहद्यम जो कहते हैं मध्विति मदि रा मांसको जो भक्षण करे और श्राद्धका अन्न सूतकका अन्न भक्षण करे तो प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत कर्के ब्रह्मचारी शेष व्रत नूं समाप्त करे १ और कचे अन्न के श्राद्ध विषे भोजन करणें तें सबजगा श्राद्ध व्रत करे इसमें वचन कहते हैं आमेति ग्राम श्राद्ध विषे श्राद्ध व्रत करणा और सब

ब्रह्मचारिषु बृहद्यमो विशेषमाह मांसिकादिषु योऽश्रियादसमाप्तव्रतो द्विजः
त्रिरात्रमुपवासो वै प्रायश्चित्तं विधीयते १ प्राणायामत्रयं कृत्वा घृतं प्राश्य विशु
द्धयतीति १ इदमज्ञानविषयम् ॥ कामतोपि स एवाह ॥ मधुमांसचयोऽश्रि
यात् श्राद्धसूतकमेव वा प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं व्रतशेषं समापयेदिति ॥ २ ॥
ग्रामश्राद्धे तु सर्वत्राहम् ॥ ग्रामश्राद्धे तदर्थं तु प्राजापत्यं तु सर्वदेति षड्विंशन्
मते विधानात् यत्तूशनसोक्तम् ॥ दशकृत्वः पिवेच्चापो गायत्र्या श्राद्धभुग् द्विजः
ततः संध्यामुपासीत शुद्धयेत्तु तदनंतरमिति १ ॥ तदनुक्त प्रायश्चित्तश्राद्धवि
षयम् । संस्कारांगभूतश्राद्धभोजने तु व्यासेन विशेष उक्तः

जगा प्राजापत्यहि करणा इस वचन कों षड्विंशन्मत विषे कथन करणें तें ॥ और जो उशना जीने किहा है सो कथन करते हैं दशेति जो ब्राह्मण श्राद्ध विषे भोजन करता है सो गायत्रिकादश वार मंत्र पढ़ कर्के जल पान करे तिसमें अनंतर संध्या करे फेर शुद्ध होजाता है १ सो एह अनुक्त क्या पिछले नहि कथन कीता जो श्राद्ध तिसमें भोजन करणें का जो प्रायश्चित्त तिस विषय विषे जानणा अर्थात् तीर्थ श्राद्धादिकर्के जो पिछे घर आके श्राद्धकर्ते हैं तिस विषे जानणा और संस्कार जो जातकमादि तिनोंका अंगभूत जो श्राद्ध नांयादि तिसके विषे भोजन करणें में व्यासदेव जी का जो वचन है सो कथन करते हैं

१५८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

निवृत्त इति चूडाहोमके निवृत्त होंयां २ और नाम करणतें प्रथम जेकर भोजन करे तो सांतपन
व्रत करे और जातकर्ममें भोजनकरे तौभी सांतपन व्रत करे १ और होर संस्कारों विषे ब्राह्मण
भोजन करे तो इसीवचन तें उपवास व्रत कर्के शुद्ध होता है कैसा ब्राह्मण है निंदित अन्न के
भक्षण करणवाला है २ और सीमंत उन्नयनादि जो कर्म हैं तिनांविषे भोजन करणमें फेर योग्यजी
विशेष कहते हैं ब्रह्मैति ब्रह्मौदन विषे और सोम यज्ञविषे सीमंत उन्नयनादि कर्म और जातश्राद्ध
विषे नव श्राद्ध विषे ब्राह्मण भोजन करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है १ इस स्थानमें ब्रह्मौदन

नियुते चूडाहोमे तु प्राहुः नामकरणात्तथा ॥ चरेत्सांतपनं भुक्त्वा जातकर्मणि
चैव हि १ अतोऽन्येषु भुक्त्वा त्रिसंस्कारेषु द्विजोत्तमः नियोगादुपवासेन शु
द्ध्यते निंद्य भोजन इति २ सीमंतोन्नयनादिषु पुनर्धौम्यो विशेषमाह ॥ ब्रह्मौ
दने च सोमे च सीमंतोन्नयने तथा जातश्राद्धे नवश्राद्धे द्विजश्चांद्रायणं चरेदिति
१ अत्र ब्रह्मौदनाख्यं कर्म यज्ञांगभूतं सोमसाहचर्यात् ॥ दूषितफलादी
प्रायश्चित्तमाह लघुविष्णुः ॥ मृदारिकुसुमादींश्च फलकंदक्षुमूलकान्
त्रिण्मूत्रदूषितान् प्राश्य चरेत् कृच्छ्रं च पादतः ॥ सन्निकृष्टे ह्येव स्यात्कृच्छ्रं त्वशु
चिभोजने १ दूषितं संसर्गमात्रम् ॥ सन्निकृष्टत्वं तु महान्संसर्गः

नाम कर्म यज्ञका अंगभूत जानणा क्योंकि सोम यज्ञकी साहचर्यतातें ॥ अब दूषितजो फलादि
मिनके भक्षण में प्रायश्चित्त लघु विष्णु जी कहते हैं मृदिति मृत्तिका जल पुष्पादि फल कंद गन्ने
मूलिआ एह विष्टा मूत्र कर्के दूषित होवे तो इनके भक्षणकरणमें कृच्छ्रव्रतका एक पाद व्रत
करे जेकर विष्टा मूत्र समीप होवे तो अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे और अपवित्र भोजनके भक्षणविषे
कृच्छ्र व्रत करे १ और इस स्थानमें दूषित नाम समीप मात्रका जानणा ॥ और सन्निकृष्टत्वनाम
बहुत समीपना का इस जगा जानणा

॥ श्रीरणवीर कर्मरत प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १५९

अब आपस्तंबजी कथन करतेहैं ॥ याजकेति यज्ञ करवाणे वाले का अन्न और नव आदोंका और संग्रह क्या मेलका जो अन्न और स्त्रीके प्रथम गर्भ होय २ तिसके गृहका अन्न अथवा तिसके गर्भके संस्कारदा जो अन्न इनांको ब्राह्मण भक्षण कर्के चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ अब मनुजी कहतेहैं घृतेति जो पुरुष पंचग्रासी घृतते विना करताहै और पिच्छेतें घृत कर्के भोजन करताहै सो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होताहै १ अब वृथा पाक जो अन्न तिसके भक्षण विषे प्रायश्चित्त शातातपजी कहतेहैं तिसमेंभी प्रथम वृथापाकका लक्षण कहतेहैं यत्रेति जिस विषेदेबता और पितर भोजन नकरें सो वृथापाक किहाहै तिसको कदाचित् भी भक्षण नकरें १

आपस्तंबः ॥ याजकान्ननवश्राद्धसंग्रहेचैवभोजनम् स्त्रीणांप्रथमगर्भेचद्विज
श्राद्धायणंचरेत् १ मनुः । घृतहीनंतुर्योभुंक्तेनरस्त्वाहुतिपंचकम् पश्चादघृते
नयोभुंक्तेभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् १ वृथापाकान्नभक्षणे । शातातपः । यत्रना
श्रुतिदेवाश्चपितरश्चयथाविधि वृथापाकःसविज्ञेयस्तस्यनाद्यात्कथंचन १
वृथापाकस्यभुंजानःप्रायश्चित्तंचरेद्विजः प्राणायामंत्रिरभ्यस्यघृतंप्राशयि
शुध्यति २ लिखितोपि । यस्यचाग्रौनक्रियतेयस्यवाग्रंनदीयते नतद्भोज्यं
द्विजातीनांभुक्त्वातूपवसेदहारिति १ ॥ अथभावदुष्टवाग्दुष्टादिभक्षणे
प्रायश्चित्तम्

और वृथा पाक के भोजन करने वाला ब्राह्मण प्रायश्चित्त करे सो त्रय प्राणायाम कर्के घृतका प्राशन करे तो शुद्ध होताहै २ अब लिखित स्मृति सें भी कथन करतेहैं यस्येति जिस अन्नके अग्र भागका अग्निविषे हवन न करे और जिस अन्नके अग्र भागका दान न देवे अर्थात् जिस अन्नतें हंदा न देवे सो अन्न द्विजाति क्या ब्राह्मणको भोज्य नहि है अर्थात् भक्षण करने योग्य नहि है और जेकर भक्षण कर लेवे तां एक उपवास व्रत करने कर्के शुद्ध होताहै १
* अब भाव दुष्ट वाग्दुष्टादिजो अन्न तिनके भक्षणविषे प्रायश्चित्त कहतेहैं

१६० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

तत्रेति प्रथम भावदुष्टका लक्षण कहतेहैं तिस भावदुष्टादि विषेजो रंगें वा स्वरूपतें तुल्यता कर्के निदित जो शरीरके मलक्या विष्टादि तिनकी भावनाको उत्पन्न करे वा शत्रु प्रेरित बिषादि की जोशंकातूं उत्पन्न करे सो भावदुष्ट किहाहै भविष्यत्पुराणविषे किहाहै विचिकित्सेति जिस अन्न तें हृदय विषे संशय होजावे सो सुहृल्लेख क्या भावदुष्ट किहाहै और स्वभावतें शंका होजावे अर्थात् कितेके देणेसे शंका नहि होई किन्तु उसकी दुर्गाधि आदि स्वभाव ते हि शंकाहोईहेतो विष्टा तुल्य किहाहै १ और रसके विकारतें रस दुष्ट किहाहै वचनतें क्षीर दुग्ध पूडेतो आद लेकर यथा क्या यथावत् तिसी दिन विषे रहसे तें हुंदेहैं क्योंकि दूसरे दिन विषे उनका विकार हो वजाताहै ॥ २ ॥ अब इसी विषे पराशर जी कहते हैं वागिति वाणो दुष्ट और भाव दुष्ट जो अन्न और भावदूषित भाजन क्या मलादि शंका वाला जो भांडा तिसके विषे वा

तत्र यद्वर्णत आकारतोवाविसदृशतया जुगुप्सितशरीरमलादिभाव नांजनयति अरिप्रयुक्तगरादिशंकां वा जनयति तद्भावदुष्टम् ॥ भविष्यत्पुराणे ॥ विचिकित्सातुहृदये अन्नेयस्मिन्प्रजायते ॥ सुहृल्लेखंतु विज्ञेयंपुरीपंतुस्वभावतः ॥ १ ॥ रसदुष्टं विकारादिरसस्येति निदर्शनात् पायसापूपक्षीरादितस्मिन्नेव दिने यथा ॥ २ ॥ सुहृल्लेखं भावदुष्टं अत्र पराशरः ॥ वाग्दुष्टं भावदुष्टं च भाजने भावदूषिते भुक्तान्नं ब्राह्मणः पश्चात् त्रिरात्रेण विशुध्यतीति ॥ १ ॥ इदं पुरीपं भुंक्ष्वेत्याद्युक्त्वा दत्तमन्नं वाग्दुष्टं शंकायां सत्यांतु शंकास्थाने समुत्पन्ने अभोज्याभक्ष्यसंज्ञिते आहारशुद्धिं वक्ष्यामि तन्मे निगदतः शृणु १ ॥

क्षण अन्नको भक्षण कर्के पिच्छ त्रय रात्रिके उपवास व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ और वाग्दुष्ट का लक्षण कहतेहैं ॥ एह विष्टाहै इसको तूं भक्षण कर इत्यादि कथन कर्के दित्ता जो अन्न इसको वाग्दुष्ट कहतेहैं ॥ और जिसमें शंका हो जावे तिसमें अब कथन करते हैं शंकेति शंका स्थानके उत्पन्न होयां २ अभोज्य अभक्ष्य है संज्ञा जिसकी अर्थात् एह वस्तु अभोज्य क्या भक्षण करणे योग्य नाहिहै अर्थात् शूद्रादिके पकाए होए एह चणे आदि होणगे और अभक्ष्य जो वस्तु क्या एह वस्तु अभक्ष्यहै अर्थात् पतितादिके हाथके बनाए होए एह पूडे आदि होणगे इस प्रकार की जिस स्थानमे शंका होजावे तिसमे पराशरजी कहतेहैं कि तिसके भक्षण करणेकी शुद्धि कथन कर रिहा जो मैं हां सो तूं मेरे तें श्रवण कर १

॥ श्रीरण्वार कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १६१

अक्षारेति स्वारेलवणं विना और कस्की ब्राह्मीसुवर्चलाका वा त्रय रात्रि शंखपुपीकापान दुग्ध के साथ ब्राह्मण करे अर्थात् जितने दिन ब्राह्मी पीतारहे उतने दिन स्वारी बस्तु और लवण और मृत ना भक्षण करे १ ॥ पलाशेति पलाहके विलके पत्र कुशापत्र खल इनका काथकके जलपान करे तो त्रय रात्रि कर्के शुद्ध होता है २ एह वसिष्ठ जी का कथन कीताहोया जानणा ॥ और मनु जी ने भी अभक्ष्य के भक्षणकी शंकाविषे कथन किया है संवत्सरेति वर्षरोजमे एक कृच्छ्र कृतकों ब्राह्मण करे परंतु अज्ञान तें जो भक्षण कीता है तिसकी शुद्धि वास्ते और ज्ञान तें जो भक्षण कीताहै विशेष तें तिसकी शुद्धि वास्ते १ और शंख स्मृतिमें भी एही कथन कीताहै संवत्सरेति वर्षरोजमें जो अज्ञानतें भक्षण कीताहै तिसकी शुद्धि वास्ते बर्ष वर्ष श्रुति ब्राह्मण एक

अक्षारलवणां रुक्षां पिवेद् ब्राह्मीसुवर्चलां त्रिरात्रं शंखपुष्पीं वा ब्राह्मणः पयसा सह १ पलाशविल्वपत्राणिकुशान्पद्ममुदुंवरं अपः पिवेत् काथयित्वा त्रिरात्रेण विशुद्ध्यतीति वासिष्ठोक्तं द्रष्टव्यम् । मनुनाप्यभोज्यभोजनशंकायामुक्तम् ॥ संवत्सरस्यैकमपि चरेत् कृच्छ्रद्विजोत्तमः अज्ञातभुक्तशुद्धयर्थं ज्ञातस्य चाविशेषत इति १ शंखस्मरणेऽपीदम् ॥ संवत्सरस्याज्ञातभुक्तशुद्धयर्थं प्रतिवर्षं द्विजोत्तम एकं कृच्छ्रचरेदित्यर्थः । प्रायश्चित्तविवेके संवर्त्तः ॥ आपोशानमकृत्वा तु यो भुक्तेनापादिद्विजः भुजानस्तु यदा ब्रूयाद्वायत्र्यष्टशतं जपेत् १ अष्टशतमष्टोत्तरशतम् ॥ स्मृत्यन्तरे भोजनकाले मौनं विहितम् ॥ यस्त्वन्विच्छतिसर्वेषां पापानां च विनिष्कृतिम् मौनेनान्नं समश्नीयाद्गस्त्यशिरसात्त्वपेदिति १ ॥

कृच्छ्र कृत करे इसमें ज्ञातभुक्तशुद्धि वास्ते द्विगुणकरे एह अर्थ सिद्ध है १ अब प्रायश्चित्त विवेक विषे संवर्त्त कृषि जी कथन करतेहैं आपोशानमिति आपोशान मंत्र को न पढ़ कर्के जो ब्राह्मण आपोशानके विना भोजन करे और भोजन कदा होया जेकर वाच करे तद गायत्रीका अष्टशत जप करे अष्टशत क्या अष्टोत्तरशत अर्थात् एक माला जप करे १ और स्मृतिविषे भोजन काल में मौन विधान कीताहै तिसको कहतेहैं ॥ यस्त्वन्विच्छति सर्वेषां पापानां च विनिष्कृतिम् मौनेनान्नं समश्नीयाद्गस्त्यशिरसात्त्वपेदिति १ ॥ यस्त्वन्विच्छति जो पुरुष संपूर्ण पापोंके दूर करे सो पुरुष चुप कर्के भोजन करे और दक्षिण दिशा विषे शिर रखके शयन करे तो शीघ्र ही पापोंते रहित होताहै इसी वास्ते बिना मौनते भोजनमें प्रायश्चित्त है ॥ १

१६२ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

॥ सोई संवत जी फेर कथन करतेहैं अनेति जो पुरुष आचमन करणें विना जल पान करे वा कुछक भक्षण करे तो सो अष्ट ८००० हजार गायत्री का जप करे तद शुद्ध होताहै २ अथ लघुहारीत जी कथन करतेहैं रेतइति वीर्यं मूत्रा विष्टा इनांका त्याग कर्के जेकर प्रमाद तें कुछक भक्षण कर लेवे तों तिसके आद विषे एह करणे योग्यहै कि मृचिका जळ कर्के तिसकी शुद्धिहै और पिच्छे तें आचमन कर्के जल विषे अवमर्पण मंत्र जो कृतंचसत्यमि त्यादि इसका जप करे १ परंतु एह नाहैं निगलया जो ग्रस तिसविषें जानणा ॥ और एक बार ग्रसके निगलने बिषे आपस्तव जी कहतेहैं भुजानस्येति भोजनकरदे होए ब्राह्मण की गुदा बग जावे अर्थात् विष्टा हो जावे तो तिसको उच्छिष्टता और अपवित्रतादोए हैं १ तिसका प्रायश्चित्त

सएव ॥ अनाचांतःपिवेद्यस्तुभक्षयेद्वापि किंचन गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपंकृत्वा विशुध्यति २ लघुहारीतः ॥ रेतोमूत्रपुरीषाणामुत्सर्गश्चेत्प्रमादतः। तदादौतु प्रकर्तव्यातेन शुद्धिर्मृदं वुभिः पश्चादाचम्यतु जले जप्तव्यमथ मर्पणम् १ एतद निर्गीर्णं ग्रासं सकृन्निर्गीर्णं ग्रासेतु। आपस्तवं। भुजानस्यतु विप्रस्य कदाचित्स्त्रवते मुदम् उच्छिष्टमशुचित्वंच प्रायश्चित्तं कथं भवेत् १ आदौ कृत्वा तु वैशौचं ततः पश्चादुपरुष्टशेत् अहोरात्रोपितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति २ यत्तु शातातपः। मूत्रोच्चारसमुत्सर्गं मोहादुंकेथवापिवेत् त्रिरात्रं तत्र कुर्वीत इति शातातपो ध्रुवीत् १ तद्धूयो ग्रासाशने। आपस्तवं। मूत्रोच्चारं सकृत्कृत्वाऽकृत्वा शौचमात्मनः ॥ मोहाद्भुक्त्वा त्रिरात्रं तु यवान्पीत्वा विशुध्यतीति १ मूत्रपदं पुरीषादेरुपलक्षणम् ॥

त कैसें होये इसमें व्यवस्था करतेहैं कि तद पहिले शौच करे फेर आचमन करे और एक दिन रात्रका उपवास व्रत कर्के पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै २ अब इसीमें जो शातातप जीका वचनहैं सो कहतेहैं मूत्रेति मूत्र विष्टा के त्याग कीते होयां मोह कर्के जो पुरुष भोजन करे वा जल पान करे तद तिसविषें त्रय रात्रि व्रत करे एह शातातपजीनिं किहाहै १ सो एह बहुत प्रा सीं के भक्षणविषें जानणा ॥ अब इसीमें आपस्तवंजी कहतेहैं मूत्रेति मूत्र और विष्टाको एकवार कर्के और अपस्तं आपका शौच न कर्के मोहतें भोजन करे तो त्रय रात्रि यव पान कर्के शुद्ध होताहै १ इस जगा मूत्रपद विष्टादिका उपलक्षण जानणा

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०. १२ ॥ टी भा० ॥ १६३

अथ शातातप जी कथन करतेहैं अथेति जेकर भोजन काल विषे ब्राह्मण अपवित्र होजावे अ
र्थात् अधोबायु छोड़े तद तिस ग्रासकों पृथ्वी विषे सुटदेवे और स्नान करे तो शुद्ध होताहै १
और तिस ग्रासकों जेकर भक्षण करे तो एक दिनरात्रके उपवास व्रत कर्के शुद्ध होताहै और
संपूर्ण अन्न भक्षण कर लेवे तो त्रयरात्रिके व्रत कर्के शुद्ध होता है २ और तेल मर्दनादि कर्के
जो स्नान निमित्तहै तिसमें स्नान नहि करे तो उसमे संवर्त्त जी का वचनहै समिनि स्नाननिमित्त
के प्रात होयां २ जेकर ब्राह्मण स्नान बिना भोजन वा जल पान करे तो स्नान कर्के गायत्रीका
अष्टसहस्र जपकरे अष्ट सहस्र क्या अष्ट ८ तें अधिक दूजार जप करे १ एह एक बारके स्नान
विषे जानणा । और अभ्यास विषे शंख जी कथन करते हैं नीलमिति नीले वस्त्रको धारण

शातातपः। अथभोजनकालेचेदशुचिर्भवतिद्विजःभूमौनिक्षिप्यतंग्रासंस्नात्वा
विप्रोविशुध्यति १ भक्षयित्वातुतंग्रासमहोरात्रेणशुध्यति अशित्वासर्वमन्नंतु
त्रिरात्रेणविशुध्यतीति २ तैलाभ्यंगादिनास्नाननिमित्तेऽकृतस्नानस्य संवर्त्तः
समुत्पन्नेद्विजःस्नानेभुंजीताथपिवेतवा गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्स्नातःसमाहि
तः १ अष्टसहस्रमष्टाधिकसहस्रम् । एतच्चसकृत् ॥ अभ्यासेशंखः ॥ नीलंवस्त्रं
परीधायभुक्त्वास्नानार्हकोभवेत्त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्याच्छित्त्वागुल्मंलतांतथेति १
ऋतुः ॥ आसनारूढपादोवावस्त्रार्द्धप्राचृतोपिवा मुखेनधामितंभुक्त्वाकृच्छ्रं
सांतपनंचरदिति १ स्मृत्यंतरं एवमेवस्थितोगच्छन् व्यायामैरन्नभाजने
एवमेवेति एकाहादीन्यभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तानियोजनीयानि ॥

कर्के जो भोजन करता है सो स्नानके योग्य होताहै और त्रयरात्रि व्रत करे तो शुद्धहोताहै और
बिनाटाणेतें जो वृक्ष है तिसको और गुच्छे लता क्या वेल इनानूं कट कर्के भी एही पूर्वोक्त
व्रतकरे तो शुद्ध हुंदाहै १ अथ ऋतुस्मृति सें कथन करते हैं आसनेति आसनपर स्थित होके वा
आसन पर पैर रखके वा अर्द्ध वस्त्र ऊपर लेकर वा फुक मारकर्के जो भोजन करताहै सो कृच्छ्र
सांतपन व्रतकरे १ और स्मृतिसे कहतेहैं इसीप्रकार बैठाहोया वा चलताहोया वा कसरत करदा
होया भोजन करे तो तिसके अर्थ कहतेहैं एवमिति एकाहादि जो अभक्ष्य भक्षणके प्रायश्चित्त सो
जाडने योग्यहैं अर्थात् बैठाहोया भोजन करे तो एकदिनका व्रत करे और चलताहोया भोजन
करे तो दोदिनका व्रतकरे और कसरत करदा होया भोजनकरे तो त्रयदिनका व्रतकरे एह अर्थहै

१६४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

अब पराशरजी कथन करतेहैं । भुंजान इति जो ब्राह्मण भोजन करदा होया परानूं हत्यककें स्पर्श करे और जो जूठे भांडेविषे भोजन करताहै सो अपणा जूठा भक्षण करताहै ॥ १ ॥ और विशेष कहतेहैं ॥ पेटि खडावांमि स्थित होके और पलंग परस्थित होके भोजन न करे और कुबे और चांडालककें देखया जो भोजन तिसको त्यागदेवे जेकर उसका भक्षण करे तो पूर्वोक्त १००८ गायत्रीका जप करे तद शुद्धहुंदाहै ॥ २ ॥ एहकर्तृ दुष्टके भक्षणविषे प्रायश्चित्तहै ॥ ॥ अब वाणिककें दुष्ट भोजनके प्रायश्चित्तकों प्रसंगसे कहतेहैं तिसमे ब्रह्मपुराणका वचनहै भक्ष्यमिति जो पुरुष भक्षण करणे योग्य वस्तु को कोयतें अभक्ष्यवाणी ककें कहे अथात् एह वस्तुअभक्ष्य क्या विटाहैऐसा कह कर देवे तो गुरुका भी अब्र होवे तिसको भक्षण न करे

पराशरः ॥ भुंजानश्चैवयोविप्रःपदंहस्तेनसंस्पृशेत् स्वमुच्छिष्टमसौभुं
केयोभुंकेभुक्तभाजने १ पादुकास्थोनभुंजीतपर्यंकस्थःस्थितोपिवा श्वान
चांडालदृष्टचभोजनंपरिवर्जयदिति २ । इतिकर्तृदुष्टाशनेप्रायश्चित्तम् ॥
ब्रह्मपुराणे । भक्ष्यत्वभक्ष्यवाक्येनयोदद्याद्रोपधर्मतः गुरोरपिनभोक्तव्यं
वाग्दुष्टतन्महाघृदिति ॥ १ ॥ अकामतः सकृद्रक्षणेभावदुष्टादिप्रक्रम्य
गौतमः छर्दनेघृतप्राशनंचेति ॥ हारीतः । शंकितंप्रतिदत्तान्निविद्विष्टान्नमथा
पिच यदिभुंजीतविप्रोयःप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ एकरात्रोपवासश्चगाय
त्र्यष्टशतंजपेत् प्राशयेत्पंचभिर्भिन्नेःपंचगव्येष्टथक्पृथगिति २ अन्यस्मै
परिविष्यान्यस्मैदत्तंप्रतिदत्तान्नम् ॥

इंयंकि सो वाग्दुष्ट अतवडा पापदेणवालाहै १ और अज्ञानतें एकवार भक्षण विषे भावदुष्टादि
कों प्राभक्तकें गौतमजी कहते हैं छर्दनामेति भावदुष्टादिके भक्षणविषे जेकर उल्टी होजावे
तो पोछे घृत प्राशन ककें शुद्ध होगाहै ॥ अब हारीत जी कहतेहैं शंकितमिति शंकित क्या विषा
दिकी शंका वाला जो अन्न और प्रतिदत्तान्न और शत्रुकाअन्न इनकों जेकर ब्राह्मण भक्षण
करे सो तिसका प्रायश्चित्त ककेंहोवे १ सो कहतेहैं सो विप्र एकरात्र उपवासव्रत करे और गायत्री
का अठ सो जाकर और पंचगव्यके जो मंत्रहैं तिनका ककें पृथक् २ पंचगव्यका पान करे
तो शुद्धहोताहै २ प्रतिदत्तान्नका अर्थ कहतेहैं जो अन्न दूसरेके ताई परिवेषण ककें दूसरेको
दिताजावे तिसका नाम प्रतिदत्तान्न जानणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १६५

अथ गुण दुष्ट जो अन्न तिसके भक्षण विषे मनु जी कहते हैं शुक्तानीति शुक्त और कपाय एह पवित्र भी हैं परइनां द्विज पानकर्के तितना काल अपवित्र रहताहै जितना काल शौच नहि आवे १ इसविषे अज्ञानमें होवे तो (शेषपूषसेदहः) उस वचन में प्रतीत हुआ एह उपवास देखे योग्य है ॥ और इच्छा में पान करण विषे कहतेहैं केवलानीति केवल जो शुक्तहैं तैसंहि वासी जो अन्न और ऋजीप पक जो अन्न इनां नू भक्षण कर्के प्रय रात्रि घटी रहे एह शख स्मृति में किहाहै ॥ अथ पूर्व श्लोकका हि अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शुक्तानीति जो स्वभावमें मधुरादि रस कालयोग वया समय विपरीतता कर्के जल विकार में अम्लभाव नू प्राप्त होते हैं सो

अथगुणदुष्टाशनेमनुः ॥ शुक्तानिचकपायांश्चपीत्वामेध्यानपिष्टिजः ॥ तावद्भवत्यप्रयतोयावत्तन्नव्रजत्यधइति ॥ अत्राकामतः शेषपूषसेदहरियुपवासोद्रष्टव्यः ॥ कामतरतु ॥ केवलानिचशुक्तानितथापर्युषितंचयन् ऋजीपपकंभुक्त्वाचत्रिरात्रंतुव्रतीभवेदिति शंखस्मरणात् ॥ शुक्तानीति यानि स्वभावतांमधुरादिरसानिकालयोगेनादकपरिणामादिनाऽम्लभावंव्रजंति तानिशुक्तानि ॥ कपायान्विभीतकादीन्कथितानिअप्रतिपिष्टान्यपिपीत्वा यावन्नजीर्णीनिभवंतितावदशुचिःपुरुषोभवति ॥ ऋजीपपकमुद्धतरसंशाकादितत्पुनःपकंभुक्तेवेत्यर्थः । एतच्चामलकादिफलयुक्तकांजिकादिव्यतिरेकेणद्रष्टव्यम् । कुंडिकासफलायेपुग्गृहेपुस्थापिताभवत् तस्यास्तुकांजिकाग्राह्यानेतरस्याःकदाचनेतिस्मरणात् ॥

शुक्त कहेहैं और कपाय जो विभीतक वया बहेडे तो अम्ललेवर और कथित और अप्रतिपिष्ट भी हैं परंतु इनांका पानकर्के जितना काल सो जीर्ण न होवें तितना काल पुरुष अपवित्र रहताहै और ऋजीप पक क्या रमते रहित जो शाकादि तिसनू फेर पकावे तिसनू भक्षण कर्के एह आमलकादि फल युक्त जो कांजिकादि इनां ने भिन्न विषे जानणा ॥ और फल युक्त कुंडिका अर्थात् कांजी वासी कुंडी विषे फलविशेषको पाय कर्के जिसदे घर विषे स्थित है तिसका कांजि ग्रहण करणा योग्य है और किसीका ग्रहण नहि करणा एह स्मृतिमें किहा है ॥

१६६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०१२ ॥ टी०भा० ॥

उद्धृत स्नेहादि विषे कहते हैं उद्धृतेति उद्धृतस्नेह विलयन खल मथित वस्तु इनांते लेकर जो आ
सर्वांग्येह इनांको भक्षण न करे ऐसे कह कर्के पछे एह कियाहै कि (प्राक् पंचनखेभ्यः)
पंचनख जो हैं सहकी आदि इनके माणे ते पहले एह प्रायश्चित्त है कि छर्दन क्या
उलटी कर्के घृत प्राशन करे तो शुद्ध होता है एह गौत्तम जी का किहा होया जानणा
और विलयन नामघृतादि मलका जानणा ॥ और उद्धृत क्या दूर होयाहै स्नेह क्या सारांश जि
नांका सो जो हैं विलयनादि इसी कारणते आत्तवीर्य कहें हैं तिनांको न भक्षण करे और
जेकर इनांका भक्षण होवे तद उलटी कर्के घृत प्राशन करे एही प्रायश्चित्त (प्राक्पंचनखेभ्यः)
एह स्मृत्युक्त निमित्त की अवधि पर्यंत देखण योग्य है और जिस अन्नमेंसे हवनदि न हो
वे तिस अन्नके भक्षण विषे लिखित स्मृति सें कहंतहैं यस्येति जिस अन्नमेंसे हवन न होवे

उद्धृतस्नेहादिपुतु ॥ उद्धृतस्नेहविलयनपिण्याकमथितप्रभृतानिचात्तवीर्याणि
नाश्नीयादित्युक्त्वा प्राक्पंचनखेभ्यः छर्दनं घृतप्राशनं चेति गौत्तमाक्षं द्रष्टव्यम्
विलयनं घृतादिमलम् उद्धृतः स्नेहः सारांशो विभ्यस्तानि विलयनादीनि अतए
व आत्तवीर्याणिकथ्यंते तानि नाश्नीयात् ॥ एतस्मिन्भुक्ते छर्दनं घृतप्राशनं प्रा
यश्चित्तं प्राक्पंचनखेभ्य इति स्मृत्युक्त निमित्तावधिप्रदर्शनम् ॥ अहुतायन्नभो
जने तु लिखित आह यस्य चाग्नेनाक्षिपते यस्य चाग्रं न दीयते न तद्वाग्यं द्विजाती
नां भुक्त्वा तूपवसेदहः १ वृथा कृसर संयावपायसापूपशक्कुलीः आहिताग्नि
द्विजां भुक्त्वा प्राजापत्यं समाचरेत् २ अनाहिताग्नेस्तु शंपूपवसेदहरित्युपवा
सो द्रष्टव्यः ॥ भिन्नभाजनादिपुभोजने संवर्तते नोक्तम् ॥ शूद्राणां भाजने भुक्त्वा
भुक्त्वा वा भिन्नभाजने ॥ अहोरात्रेऽपि तां भुक्त्वा पंचगव्येन शुद्ध्यतीति ॥ १ ॥

और जिस मेंसे हवा न दित्ता जावे सी द्विजातियों को भक्षण करना योग्य नाहै है जेकर
भक्षण करे तो एक उपवास व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ और वृथा क्या विष्णुके तांड नैवेद्य लगा
णें तें दिना खिचडी कडाह क्षीर पूडे पगकडी उनानू आग्निहोत्री ब्राह्मण भक्षण कर्के प्राजा
पत्यव्रत करे और अग्निहोत्री न होवे और जेकर पूर्वोक्त को भक्षण करे तां तिसको (शंपूपवसे
दहः) एह उपवास देखणें योग्यहै ॥ अब भजे होए भांडादिमें भोजन करणें विषे संवर्त जी कहंतहैं
शूद्राते शूद्रांके भांडे विषे भोजन करणवाला और भजें होए भांडे विषे भोजन करणें
वाला पुरुष एक दिन रात्रके उपवास व्रत कर्के फेर पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १६७

जैसे स्मृत्यन्तरे विषे कथन किया है सो कहते हैं बटेति वोड अन्न पिप्पल कुंभी तेंदुक कोंगड कः व इनांके पत्रोंविषे भोजन करे तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होता है १ तैनेहे और कहे हैं पलेति पलाशके और पद्मके पत्रोंविषे गृहस्थी भोजन करे तो चांद्रायणव्रतकर्के और वानप्रस्थी और यति इनमे भोजन करे तो चांद्रायणव्रतके फल ही प्राप्त होता है १ ७ अथ किसेके लेणेकर्के जो अभाज्य वस्तु तिसके भोजन विषे प्रायश्चित्त कहते हैं यदिति जो वस्तु स्वरूपमें निषिद्ध नहिमी है और नाचादि पुरुषको स्वामि होणें अभाज्य किही जाये सो पारयइ कर्के अपांशव जावणो ति सविषे मनुजा कहते हैं नेति अश्रोत्रिय क्या जो वेदपाठी नाह तिसके यज्ञ और ग्राम विषे यज्ञ करवाणे वाले कर्के करवाया जो यज्ञ तिस विषे और स्त्रीकर्के कीता और नपुंसको कीता जो यज्ञ इनांविषे ब्राह्मण भोजन न करे १ मत्तति उत्तमत्त और काययुक्त पुण्यका और रोगीका

पथास्मृत्यन्तरेप्युक्तम् ॥ वटाकीवत्यपत्रेपुंभुतींदुकपत्रयोः ॥ कोविदार कदंबेपुंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ तथा पलाशपद्मपत्रेप गृहीभुक्तेंदियंचरेत् वानप्रस्थोयतिश्चैवलभतेचांद्रिकफलमिति १ ७ अथपरिश्रहाभाज्यभोजनप्रायश्चित्तम् ॥ यत्स्वरूपतां निषिद्धमपि विशिष्टपुरुषस्वानिकतयाऽभाज्यं भक्षयते तत्परिश्रहाशुचि ॥ तत्रमनुः ॥ नाश्रोत्रियतत्तत्तद्वैश्रानयाजिद्वे तथा स्त्रियाह्वीवेनचहुतेभुंजीतब्राह्मणः कचिन् १ ॥ मत्तक्रुद्धानुगणान्तुन भुंजीतकदाचन गणान्नंगणिकान्नंचविदुपाचजगुष्मितम् २ स्तनगायन योश्चान्नंतक्षणावाह्यपिकस्यच दीक्षितस्यकदर्यस्यवदस्यनिगडस्यच ३ ॥ अभिशस्तस्यपंडस्यपुंश्चल्यादांभिकस्यच ॥

अन्न भक्षण न करे और समलोकोके सखुडका और गणिका क्या वेश्याका और विद्वान् पुरुष कर्के निदित्र जो अन्न अथवा विद्वान् जिसको कहेकि एहअन्न भक्षण नहि करणा अथवा जो चांडालादि दृष्ट अन्न २ और चोरका और गायन करण वालेका और काष्ठके कण्ठे वालेका अथवा नग्याण का और बार्हपिक क्या जो वस्तु व्याज कर्के स्त्रीवेका करण वाला है तिनका और अश्रोत्रोभोय यजमें प्रथम जो दीक्षित है तिनका और कपण का और निगडस्य एह तृतीया केअवे विषे पटो है इन वाने वेदी जहविषे मनुआदि कक बढ़ा होना जो पुरुष तिसका अन्न एड अये है अथवा (वदस्य निगडस्यच) ऐसा पाठ भी जानना २ और अनियुक्त क्या महापाप कर्के उत्पन्न हैं लोहमे निद्रा जिसकी अन्न पोकियों वायना है तिसका और पंड क्या नपुंसक तिसका और व्याभचारिणो स्त्री का और दामिक पुरुष का

१६८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

श्रीर वेषका और मृगयु नाम व्याधका है अर्थात् शिकारीका और क्रूर पुरुष का और लूटा भक्षण करण वाले पुरुषका अन्न ४ और उग्र नाम वारुण कर्मका है जो दूसरे के दुःखके उपव्र करणमें चतुर होवे अर्थात् क्षत्रिय शूद्र को स्त्री विप्रे उपव्र होवे तिसका और मूनि बादि स्त्री कर्के स्पर्श कीता होया जो अन्न पर्याचान्तवया और एक पानके विप्रे स्थित होना का अनादर कर्के जिस अन्न को भक्षण कर रहे है तिसविप्रे क्रिमेने आचमन कीताहै तिस शेष अन्नके भक्षण करण में प्रायश्चित्त जानणा और जन्म उग्र मृग मृतकवाले का दश १० दिनमें उरे अन्न भक्षण करण में दोष जानणा और पूजा योग्य पुरुष को जो पूजा नहीं करताहै

चिकित्सकस्यमृगयोः क्रूरस्योच्छिष्टभोजिनः ॥ ४ ॥ उग्राग्रं सूतिकाग्रं च पर्याचान्तमनिर्देशम् अनर्चितं नृथामांसमवीरायाश्च योषितः ॥ ५ ॥ द्विपदत्रनंगर्घ्यन्नपतितान्नमयक्षुतम् ॥ पिशुनानृतिनां ऐव क्रतुविक्रयकस्य च ॥ ६ ॥ शैलूपतंतुवायात्रं कृतघ्नस्यान्नमेव च कर्मारस्य निपादस्य रंगायतरणस्य च ७ सुवर्णकर्तुर्वैणस्य शस्त्रविक्रयिणर तथा श्ववतां शौण्डिका नांच चैल निर्णेजकस्य च ८ रंजकस्य नृशस्य वस्य चोपपतिर्गृहे मृप्यंति ये चोपपतिं स्त्रीजितानांच सर्वशः ९ अनिर्देशं च त्रेता न्नमनुष्ठिकरमेव चेति १० गणान्नं शठब्राह्मणसंघान्नम् गणिकावश्या तस्या अन्नम् तक्षणः तक्षवृत्तिर्जीवनस्य ॥ वार्हपिकस्य वृद्ध्युपजीविनः ॥ दीक्षितस्य त्रागन्नीपोमीयात् कर्दपस्य रूपस्य ॥ निगडस्य तितृतीयार्थे पथी निगडेन वदस्येत्यर्थः

तिसका अन्न और देवतादिके उद्देश विना जो कीताहै सो नृथामांस है और पतिपुत्र र हित जो ४ तिसका अन्न ५ और राजा और नगर वाले लोकों में समूहमें दत्ता जो अन्न अर्थात् ६ ज्यमें दत्ता जो अन्न और पति पुरुष का और जिस अन्न पर छिद्र मारी है सो अन्न और पिशुन क्या सुगलातसका और सुउद्वोत्तने वाले पुरुष का और क्रतु क्या यज्ञ वेक्षण वाले पुरुष का अन्न ६ और नृप का जुलाव का और कृतघ्न पुरुष का और लुण्ठ का और मलाह का और लहारी का अन्न ७ और सुनारे का और वंज कर्के जो जीविका करण वाला है अर्थात् वरुड तिसका अन्न

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ १६९

अभीति और शस्त्र क्या लोहा तिसके बेचणे वालेका अन्न और खवत क्या शिकार वास्ते कुत्तियों केपालन वाले का अन्न और मादरा बेचणे वाले का अन्न और चैल निर्णेजक नाम धुंवेकाहे तिसका अन्न ८ और रंजक क्या लोबिका और नृगंस क्या कुर का और जिसके घर विषे उपपति रहे अथोत्त जार रहे तिसका और जो पुरुष घर विषे जागनूं जाण कर्के फेर कुछ नहि कहतेहैं तिनका और स्त्रीके वश जो पुरुष तिनका अन्न ९ और मृत होए पुरुषके

अभिशास्तस्यमहापातकित्वेनसंजातलोकविक्रोशस्य मृगयुर्व्याधः । उग्रो दारुणकर्मापरदुःखोत्पादनपटुः क्षत्रियाच्छूद्रायामुत्पन्नोवा तस्यान्नम् एक पंक्तिस्थानन्यानवमन्ययन्नेभुज्यमानेकेनचिदाचमनंक्रियतेतत्पर्याचांतम् अनिर्देशमितिमृतकान्नमेव अनर्चितमिति । अर्चाहंस्ययदवज्ञयादीयतेनत् तृथामांसंदेवतादिकमुद्दिश्ययन्नकृतम् तत् अवीरायाः । पतिपुत्ररहितायाः । द्विपदन्नमिति शत्रुनगरपतितानांच उपरिकृतक्षुतंचान्नंभुंजीत शैलूपोनटः कर्मारोखोहकारः । वैणस्यवेणुभेदनेनयोजीवयतिवरुडः तस्य शम्भ्रलोहं तद्विक्रयिणः ॥ श्ववतामाखेटकार्यंशुनःपोषकानाम् शौंडिकानांमद्यविक्रयिणाम् ॥ चैलनिर्णेजकोरजकस्तस्य नृशंसोद्यातुकः उपपतिजारः गेहेज्ञातं भार्याजारं ये सहंतं तेषामन्नं न भुंजीत

घरका दश १०दिनते उरें जो अन्न और जिस अन्न कर्के प्रसन्नता न होवे सो अन्न इन संपूर्ण अन्नोको भक्षण न करे जेकर भक्षण करे तो प्रायश्चित्त कर्के शुद्ध होताहै दशअन्नकते अगे जो लिखयाहै सो प्रायश्चित्तममीपहिअगेहैं उसजमाते (क्षयणं व्यहम्) एह जानणा १० इन पूर्वोक्त श्लोकोंका अर्थ मूलमेंभी स्पष्ट कर्के किहाहै सो जानणे योग्यहै गणान्नमित्यादि

१७० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

मृगेति और बाणके नहि चलाएँवाला जो व्याधतिसका अन्ननहि भक्षणकरणा और बाणचलाएँ वालेका भक्षण करणा योग्यहै इसमें विष्णुजी कहतेहैं नेति बाण चलाएँ वालेशिकारीका अन्न वर्जित नहिहै अर्थात् भक्षण कर लेणा और याज्ञ वल्क्यके कथन कीते हाए भी अभोज्यान्न कहतहैं दत्तात्रमिति अग्निहीन पुरुषकर्के दत्ता होया जो अन्न तिसको आपत्तिके बिना भक्षण न करे अर्थात् आपत्तिमें भक्षण कर लेवे अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं अग्नीति अग्निही न जो पुरुषक्या अग्निके अधिकार होया २ और स्मार्ताग्नि को ग्रहण न करे अथवा अनापत्तिमें अग्नितात्यागकरे तिसका अन्न न भक्षण करे। कदर्येति और कदर्यपुरुषका और बंदहोए पुरुष का और चोर और नपुंसक और ललरीका अन्न १ और बंज कर्के उपजीविका करण वाला और अभिशस्त और बार्हस्प्य और वैश्या और गणदीक्षित और वैद्य और आतुग और को

मृगयोरनिपुचारिणः । इपुचारिणस्तुभोज्यमित्याह विष्णुः ॥ नमृगयोरिपु चारिणोवर्ज्यमन्नमिति योगीश्वरोक्ताअप्यभोज्यान्नायथा दत्तात्रमग्निहीन स्यनचाश्नोयादनापदि । अग्निहीनस्यअधिकारे सत्यपि श्रौतस्मार्ताद्यग्निप रिग्रहमकुर्वतः उत्सृष्टाग्नेश्चानापदिअन्नं नभुंजीत ॥ कदर्यवद्वचौराणांछीव रङ्गावतारिणाम् १ वैणाभिशस्तवार्हस्प्यगणिकागणदीक्षिणाम् चिकित्सा तुरसंकुद्धपुंश्रलीमत्तविद्विषाम् २ क्रूरोग्रपतितत्रात्यदांभिकोच्छिष्टभोजि नाम् श्वीरस्त्रीस्वर्णकारस्त्रीजितग्रामयाजिनाम् ३ शस्त्रविक्रयिकर्मारत न्तुवायश्ववृत्तिनाम् नृशंसराजरजककृतघ्नवधजीविनाम् ४ चैलधावसु राजीवसहोपपतिवैश्मनाम् एषामन्नं नभोक्तव्यं सोमविक्रयिणस्तथा ५ ॥

धो और व्यभिचारिणी स्त्री और उन्मत्त और शत्रु २ और क्रूर और उग्र और पतित और सं स्कार हीन और दंभी और जूठा भक्षण करण वाला और पतिपुत्ररहित स्त्री और सु नयार और स्त्रीजित पुरुष और ग्राम विषे यज्ञ करवाएँ वाला १ और शस्त्र बेचण वाला और लुहार और जुलाह और कुत्तेकर्के उपजीविका करण वाला और नृशंस और राजा क्या धर्म शास्त्रसे बहिर्मुख जो राजा और रजक और रत्न और वध कर्के जीविका करण वाला ४ और धोवी और मादिरा बेचण वाला और स्त्रीके जार सहित घर रहण वाला इन संपूर्णोंका अन्न न भक्षण करे और तैसही सोम जो अमृतवली का रस तिसके बेचएँ वाले का भी अन्न न भक्षण करे और संपूर्णोंका अर्थ पीछे भी स्पष्ट कर्के कथन कीताहै ५

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १७१

कंदर्पका लक्षण कहतेहैं आत्मेतिजो धर्मकृत्यको त्यागदेवे अपने आपऔर पुत्रस्त्रीकों पीडादेवेऔर लोभतें पितर और नौकोंकों दुःखदेवे अर्थात् आद्धादिनकरे सो कंदर्प कहाहै १ और चिकित्सक पूर्वोक्त इमजगा अशास्त्रीय जानणा अर्थात् शास्त्र विना चिकित्साकरण वाला ॥ और तंतुवाय बस्त्र सीणे वाला अथवा फटे होए बस्त्रकों रफुकरणवाला इनसंपूर्णोंमें भी एकका अन्न अज्ञान तें भक्षण करेतो तीन दिनका उपवास व्रतकरे और इच्छातें भक्षण करणेंमें कृच्छ्र व्रतकरे तेंसंहि वीर्य विष्टा मूत्रकेभक्षणमें एहीव्रत जानणार और अभोज्यान्न पुरुषोंका और स्त्री शूद्रका जठा अन्न और अभक्ष्य जो गर्दभादि तिनका मांस भक्षणकरें सत् ७ रात्रि यव पानकरे तो शुद्ध होताहै १ अब इसीमें पैठीनसि ऋषि विशेष कहतेंहैं कुनस्त्रीति खोटे नखोंवाला और कालेद

आत्मानंधर्मकृत्यंचपुत्रदारांश्चपीडेयत् लोभाद्यःपितरौभृत्यान्सकंदर्प्य इतिस्मृतः १ ॥ चिकित्सकोऽशास्त्रीयःतंतुवायोवस्त्रस्यूतकर्ता पाटितवस्त्र संधायकोवा ॥ भुक्तवातान्यतमस्यान्नममत्याक्षपणंअहम् मत्याभुक्तवाचरे त्कृच्छ्रंरतोविष्मूत्रमेवच२ अभोज्यानांचभुक्त्वान्नंस्त्रीशूद्राच्छिष्टमेवच जग्ध्वा मांसमभक्ष्यचसतरात्रयवान्पिबत् ३ पैठीनसिः ॥ कुनस्त्रीश्यावदन्तःपित्रा विवदमानःस्त्रीजितःकुटीपिशुनःसोमविक्रयीवाणिजकोग्रामयाजकोभिश स्तोत्रपल्यामभिजातःपरिवित्तिः परिविविदानांदिधिपृपतिःपुनर्भूपुत्रश्चौ रः कांडपृष्ठःसेवकश्चैत्यभोज्यान्नाः ॥ अभोज्यान्नाअपांक्त्याअआद्धार्हाः ॥ एपांभुक्तवाचाविज्ञानात्त्रिरात्रम् ॥

नोंवाला और पिताके साथ लगउतें वाला और स्त्रीके बशीभूत पुरुष और कुष्ठवाला और चुगल और अमृतबलीका रस बेचणवाला और वणिग और ग्रामविपे, यज्ञकरणवाला और अभिशस्त इसका अर्थ पीछें कहचुकेहैं और ब्राह्मणतें जो शूद्रो विपे उत्पन्न होया और परिवि ति और परिविविदान इनका अर्थ नीछें किहाहैं और दोवार २ विवाही स्त्रीका पति और २ दोवार विवाही होईस्त्रीका पुत्र और चौर और कांडपृष्ठ क्या धनुष बनाण वाला और नौकर एह अभोज्यान्न कहेहैं अर्थात् इनका अन्न भक्षण नहि करणा अथवा अभोज्यान्न क्या पंक्ति तें बहार होतेहैं और आद्धके अधिकारी नहिहैं और इनसंपूर्णोंका अन्न अज्ञानतें भक्षण क रेतो त्रयरात्रिकें व्रतकरें शुद्ध होतेहैं ॥

१.७२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसमें शंखजी विशेष कहते हैं ॥ अभिशस्तेति अभिशस्त और रजक और पतित और घुनार और तैली और ग्राम याजक और शूद्र और सांवत्सरिक क्या नक्षत्रसूची और कुलिक अर्थात् पुत्र रो अर्थात् धनके अर्थ देवपूजन करणवाला और सुनार और कर्मकर क्या कारु और लुहार और विचित्रवृत्ति क्या संपूर्ण जो वृत्तियां व्यापारादि तिनों कर्के उपजीविका करणवाला और घोषक क्या जो मुल्ल कर्के पाठकरण वाला अथवा घडिआउल वजाण वाला और तंतुवाय और रंगावतारी और कूटमानरुत् और शौडिक और वधजीवी और क्रूर और आत्मविक्रयी इनका स्वरूप आत्मविक्रयप्रकरण विषे किहाहै और वार्द्धुपिक और तारिक क्या नद्यादिके तारण कर्के जीविका करण वाला और भगवृत्ति क्या स्त्रीकर्के उपजीवि का करण वाला और व्रात्यक्या संस्कारहीन और चोर और भास्कर क्या सुआंग बनाणवाला

॥ शंखः ॥ अभिशस्तरजकपतितचाक्रिकतैलिकग्रामयाजकशूद्रसांवत्सरिककुलिकसुवर्णकारकर्मकरकर्मारविचित्रवृत्तिघोषकृत् तंतुवायरंगावतारिकूटमानकृच्छ्रोंडिकवधजीविनृशंसात्मविक्रयिवार्द्धुपिकतारिकभगवृत्तिव्रात्यतस्करभास्करगणान्नभोजनप्रातिकृच्छ्रंकुर्यात् ॥ कुलिकोदेवलकः घोषकोमूलेनपाठकः ॥ तारिकोनद्यादिसंतारणजीवी अभ्यासविषयमेतत् ॥ विष्णुः ॥ गणगणिकास्तेनगायकान्नानिभुत्तवापयसावर्त्तेत ॥ सुमंतुः ॥ अभिशस्तपतितपौनर्भवभूणहपुंश्चल्यशुचिशस्त्रकारतैलिकचाक्रिकध्वजिकसुवर्णकारलेखकपंडकबन्धकीगणगणिकान्नानिचाभोज्यानि ॥ सौकरिकव्याधनिपादवरुडचर्मकाराश्रभोज्यान्नाप्रतिग्राह्याः ॥ तदशनप्रतिग्रहयोश्चांद्रायणंचरेत् ॥

और गणसमूह उनसंपूर्णोंके अन्न भक्षण करनेमें अतिकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोताहै ॥ एहप्रायश्चित्त अभ्यास विषय विषे ज्ञानणा ॥ अब विष्णुजी कहते हैं गणति गण गणिका चोर गायक इनां का अन्न भक्षणकर्के एकदिन जलपान करे ॥ अब इसीमें सुमन्तु जी कहते हैं अभिशस्तेति अभिशस्त पतित पौनर्भव और गर्भहत्या करणवाला और व्यभिचारिणी स्त्री और अपवित्र पुरुष और शस्त्रकार और तैलिक और चक्री और ध्वजिक और सुवर्णकार और लिखण वाला और नपुंसक और बन्धकी स्त्री और गण क्या समूह और वेश्या इनांका अन्न अभोज्यहै अर्थात् भक्षण करणयोग्य नहीं है ॥ और सौकरिक और शिकारि और भील और वरुड और चमयार इनांका अन्न ग्रहण करणा योग्य नहीं है तिनके अन्न भक्षणमें अथवा दानलेने में चांद्रायण व्रत करनेसे शुद्ध होताहै

॥ श्रीरणवीर कारिव प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १७३

सूकर कर्हे जो प्रकाशमान है अथवा जीवका करे और वरुड क्या जो वंज कर्हे जीवका करे निमका नाम सो करिकहे एह प्रायश्चित्त बुद्धि पूर्वक बहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ अब उसीमें और विंशप हारीत जी कहतेहैं चाक्रिकेति घमयार और लुहारके और अभोज्यान्नादियांके अन्न भक्षणमें त्रयरात्रि उपवासव्रतकरे । गोमूत्र और गोआ प्राशनकरे ॥ और ध्वजि वणिक किराटि वार्धुपिक इनका अर्थ पीछे किहाहै और इनांके अन्न भक्षणमें चांद्रायण व्रतकरे और मृतपुरुष के सूतकमें भोजन करणेंमे दशरात्रिव्रतकरे ॥ और विशेष कहतेहैं कि ब्राह्मणका जूठा अन्न और ब्राह्मण मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट आह विषे भोजन करणेंमे कृच्छ्र व्रत करे ॥ और क्षत्रीका जूठा अन्न और क्षात्रिके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट आह विषे भोजन करणेंमें अतिकृच्छ्र व्रत करे और

सूकरेण दीव्यति जीवति वेति वरुडो वेणुजीवी । बुद्धिपूर्वकभूयोभ्यासविषय मेतत् । हारीतः चाक्रिकलोहकाराभोज्यान्नभोजनेत्रिरात्रमुपवसेत् गोमूत्रं गोमयंच प्राप्नीयात् ॥ ध्वजिवणिककिराटिवार्धुपिकान्नभोजनेचांद्रायणम् मृतकसूतकेदशरात्रम् ब्राह्मणोच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजने कृच्छ्रम् क्षत्रियोच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजनेऽतिकृच्छ्रम् । वैश्योच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजनेचांद्रायणम् । शूद्रोच्छिष्टान्नमृतकसूतकैकोद्दिष्टभोजनेचांद्रायणद्वयम् ताम्रकांस्यसीसकारव्याधिततस्करान्नभोजनेतत्कृच्छ्रम् ब्राह्मणवृत्तिघ्नवधबंधोपघातवृत्त्यन्नभोजनेचपौनर्भवशौचसंकीर्णान्नभोजने च ॥ एकोद्दिष्टं नवश्राद्धादन्यत् किराटीवाणिग्विशेषः

वैश्यकाजूठा और वैश्यके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट आह विषे भोजन करणेंमें चांद्रायण व्रतकरे । और शूद्रका जूठा अन्न और शूद्रके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट आह विषे भोजन करणेंमें दो चांद्रायण व्रत करणें कर्के शुद्ध होताहै ॥ और ताम्र कांस्य सिका इनांके बनाए वाला और रोगी पुरुष और चोर इनांके अन्न भक्षण में तत् कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ और ब्राह्मणकी वृत्ति के दूर करणें वाला पुरुष और वध क्या कसाई और बंध क्या पेंछा पकड़ने वाले और राजाने जो मारण वास्ते स्थापित कीत्ते होए हैं तिनाका अन्न और दूसरी वागी विवाहित स्त्री का पुत्र और कुते रखणें वाला और समूह इनके अन्न भक्षण विषे भी पूर्वोक्त व्रत करे ॥ इहां एकोद्दिष्ट नव श्राद्धसेंभिन्न जानणा ॥

१७४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसीमें और विशेष अंगिरा जी कहतेहैं अभोज्येति अभोज्यान्न जो पिच्छे कहेहैं
 तिनोके पकावको भक्षण कर्के और नीच पुरुषके अन्नको भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रतका
 एक पाद व्रत करे १ परंतु एक बार अज्ञान पूर्वक और सामर्थ्यके अभाव विषे एह प्राय
 श्रित जानणा ॥ अब शातातपजी और विशेष कहतेहैं यत्रेति जिस अन्नको देवता और
 पिता तैमहि अभ्यागत न भक्षण करे सो अन्न वृथापाक किहाहै तिसको भक्षण न करे १
 और जो पुरुष अग्नि नूं ग्रहण कर्के फेर त्याग देवे और मे गृहस्थी हां ऐसे जाणे लां तिसका
 अन्न भक्षण नहि करणा सो अन्न वृथापाक किहाहै २ और वृथापाकके भोजन करण वाला
 ब्राह्मण व्रत प्राणायाम कर्के घृत प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ३ तैमहि और कहतेहैं
 येति परपाकते निवृत्त और परपाकमें प्रीति वाला और अपच नो पुरुष इनका अन्न

अंगिराः ॥ अभोज्यानांतु सर्वेषां भुक्त्वा चान्नमुपस्कृतम् अत्यावसायिनो भु
 क्त्वा कृच्छ्रपादेन शुद्ध्यति १ सकृदमतिपूर्वकसामर्थ्याभावचसत्येतत् । शाता
 तपः ॥ यत्र नाश्रंति देवाश्च पितरश्च तथा तिथिः वृथापाकः स विज्ञेयस्तस्य ना
 द्यात्कथंचन १ यां गृहीत्वा विहायाग्निं गृहस्थ इति मन्यते अन्नंतस्य न भोक्त
 व्यं वृथापाको हि स स्मृतः २ वृथापाकस्य भुंजानः प्रायश्चित्तं चरेद्द्विजः प्रा
 णायामं त्रिरभ्यस्य चृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ३ तथा परपाकनिवृत्तस्य परपाक
 रतस्य च अपचस्य च भुक्त्वा त्रिद्विजश्चांद्रायणं चरेत् १ अनिदितपाकादपि नि
 वृत्तः परपाकनिवृत्तः ॥ अपचो भिक्षुः ॥ एतच्चाभ्यासविषयम् ॥ अन्यत्
 परपाकादिलक्षणं शंखेनोक्तम् गृहीत्वाग्निं समारोप्य पंचयज्ञान्ननिर्वपेत्
 परपाकनिवृत्तौ सौमुनिभिः परिकीर्तितः १

भक्षण कर्के ब्राह्मण चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ और परपाकनिवृत्त नाम उ
 सकाहै एक जो नहि निदित पाक क्या अन्न तिसमें भी निवृत्त होवे ॥ इसमें एह अभिप्रायहै कि
 अनिदितपाकमें निवृत्त नहि होणाथा सो निवृत्त होया इसकर्के दोषहोया और अपच नाम
 भिक्षुकीका है एह प्रायश्चित्त अभ्यासविषय विषे जानणा ॥ अब एक उग्रभी परपाकादिका
 लक्षण शंखजीने किहाहै गृहीत्वेति जो अन्नको ग्रहण कर्के फेर स्थापन करदेवे तिसमें उपरंत
 पंचयज्ञ जो पाठ होम अभ्यागतका पूजन तर्पण क्या देवतर्पण और पितृतर्पण वालिवैश्वदेव
 इनांको न करे सो पुरुष मुनियोंने परपाक निवृत्त किहाहै १ और आगे परपाकरतका लक्षण
 कहते हैं

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १७५

पंचेति जो प्रातः काल उठ कर पंच यज्ञानु आप कर्के और दूसरे के अन्न में उपजीविका करे सो पुरुष परपाकृत जानणा २ और गृहस्थ धर्म में युक्त और दानमें रहित जो है सो धर्म के जानणें वाले ऋषियोंमें अपच कथन कीताहै ३ अब और प्रकारका पराशरजी कथनकरदे हैं आपदिति आपत्ति कालविषे ब्राह्मणनें जेकर शूद्रके घर विषे भोजन कीता होवे तद मन में पश्चात्ताप करणें कर्के शुद्ध होताहै और (द्रुपदादिवमुचानः) इस मंत्र का सो १०० जप करे १ अब ब्रह्मपुराण विषे और विशेष कहतेंहैं यज्ञेति जो पुरुष बहुतयांकों यज्ञोपवीत करवावे अयांस् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांको यज्ञोपवीत करवावे और बहुतयांको यज्ञ करवावे और यज्ञवास्ते अमृतबल्ली बेचने वाला और जो पुरुष बड़े यज्ञविषे दीक्षित १ और जहां अ

पंचयज्ञान्स्वयंकृत्वापरान्नानुपजीवति सततंप्रातरुत्थायपरपाकरतस्तुसः
२ गृहस्थधर्मवृत्तोयोददातिपरिवर्जितः ऋषिभिर्धर्मतत्त्वज्ञैरपचःसप्रकी
र्तितइति ३ पराशरः ॥ आपत्कालेनुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि मनस्तापेन
शुद्धयेत्तुद्रुपदानांशतंजपेत् १ ब्रह्मपुराणे यश्चोपनयनंचक्रेवहूनांवहुयाज
कः ॥ यज्ञार्थंक्रीतसोमस्यदीक्षितस्यमहाध्वरे १ यत्रचाश्रोत्रियस्त्वभ्यस्त्व
थवाग्रामयाजकः होताछ्वाथवानारीनाश्रीयात्तत्रहिकचित् २ तपोयज्ञफ
लानांचयःक्रेतायश्चविक्रयी पुरःपुरोहितंकालमुद्दिश्यनृपतेर्हितमित्याद्यप
राकैऽनुसंधेयम् ॥ वहूनामनुपनेयोपनेयानामुपनेता वहूनामयाज्यानांया
ज्यानांचयाजकोयज्ञस्यकारयिता यस्तदन्नं महाध्वरेदीक्षितम्यान्नेच यत्र
चश्रोत्रियेविद्यमाने अश्रोत्रियःअभ्यःपूज्योवाग्रामयाजकोभवेदित्याद्यन्नंच
नाश्रीयादित्यर्थः

श्रोत्रिय पूज्य होवे अथवा ग्राममें यज्ञ करवाणवाला पूज्य होवे तिमका और नृपसक अथवा स्त्री हवन करवाण वाली होवे इनांका अन्न भक्षण नहिं करणा २ और तपयज्ञके समादानवाला और बेचण वाला और पुरोहितंकाल इस अर्द्ध श्लोक का अर्थ आगे लिखेंगे अथ पूज्योक्त शब्दों का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेंहैं वहूनामितिवहुते जो यज्ञोपवीत रु अधिकारी नहिं है अर जो है अधि कारी तिनकों यज्ञोपवीत कर वाण वाला और बहुते जो यज्ञ करवाणे के अधिकारी नहिंहैं और यज्ञके अधिकारी तिनकों यज्ञ करवाण वाला तिनका और बड़े यज्ञ विषे दीक्षितका अन्न और जिस जगा श्रोत्रिय के विद्यमान होयां २ अश्रोत्रिय पूज्य होजावें और जो ग्रामया जक पूज्य होवे इसादियोंका अन्न भक्षण न करे एह अर्थ जानणा

१७६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

पुर इति पुरोहित का अग्ने होण वाला जो ऐश्वर्य्य तिसके अतिशयका उद्देश कर्के चपुनः राजाके हितका उद्देश कर्के जो तप यज्ञ के फलोंका बेचण वाला है तिसका अन्न न भक्षण करे । अब इसी का दूसरा अर्थ कहतेहैं राजाके अग्ने पुरोहितको साक्षि क्या उगाहिकर्के एह निश्चित अर्थ है और राजाके हितका उद्देश कर्के जो पुरुष तप और यज्ञके फलोंको बेचता है तिसका अन्नभी भक्षण न करे ॥ जो पुरुष बल तें भोजन करवाताहै तिसका विशेष कहतेहैं आपस्तंबजी बलादिति म्लेच्छ चांडालचोर इनोंने जो बलतें दासकीताहै और गवादि प्राणिका मारणा इत्यादि जो कर्म जिनसे करवायाहै १ और उच्छिष्टका मार्जन जिनसे करवायाहै और

पुरोहितं ॥ पुरःकालं पुरोहितस्याग्नेभाविनमैश्वर्यातिशयमुद्दिश्यनृपतेर्हि तंचोद्दिश्ययस्तपोयज्ञफलानांविक्रयीतदन्नचनाश्रीयादित्यर्थः यद्वा पुरोहितं पुरःकालं नृपतेरग्नेपुरोहितं साक्षिणं कृत्वेतियावत् नृपतेर्हितमुद्दिश्ययस्तपोयज्ञफलानांविक्रयीतदन्नचनाश्रीयादित्यर्थः ॥ यस्तुबलात्कारेणभोज्यतेतस्यविशेषमाहापस्तंबः ॥ बलादासीकृतायेतुम्लेच्छचांडालदस्युभिः ॥ अशुभंकारिताः कर्मगवादिप्राणिहिंसनम् ॥ १ ॥ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथोच्छिष्टस्यभोजनम् ॥ खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिपस्यचभक्षणम् २ ॥ तत्स्त्रीणांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् मासोपितेद्विजातौतुप्राजापत्यंविशोधनम् ॥ ३ ॥ चांद्रायणंत्वाहिताग्नेःपराकस्त्वथवाभवेत् चांद्रायणंपराकंचचरेत्संवत्सरोपितः ॥ ४ ॥

तैमोहि उच्छिष्ट क्या जूठे अन्नको भक्षण करण वाला और खर क्या गधा ऊट विड्वगह क्या सूकर इनको मांसभक्षण करणवाला २ और तिनको स्त्रियोंके साथभोग करणवाला और स्त्रियोंके साथ बैठ कर इकठे भोजनकरणवाला जेकर ब्राह्मण महीना रोज चांडालादिके घरविषे बसता रहे तो शुद्धि वास्ते एह सभपूर्वक प्राजापत्यव्रतकरे ३ और आहिताग्नि अर्थात् अग्नि होत्री एह पूर्वक करे तो चांद्रायण व्रत करे अथवा पराक व्रत जो वारां १२ दिनकाहै तिसको करे और जेकर वपरोज चांडालादिके घरविषे रहे तो चांद्रायण और पराक व्रतकरे तो शुद्ध होताहै ४

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १७७

और जेकर वपरोज शूद्र चांडालादिके घर विषे वासकरे तो अर्द्धा महीना अर्थात् पंदरां १५ दिन यवोंका काढा पीव और महीना गेज वाम करे तो छः व्रतके एक पाद ब्रत करे कर्कें शुद्ध होता है ॥ ५ ॥ और वर्ष रोजतें उपरंत वास करे तो ब्राह्मणोंने तिसका प्रायश्चित्त कल्पना करणी योग्य है अर्थात् वर्ष के प्रायश्चित्तको हि कुछ आवेक द्विगुणादि रीतितें करे और त्रय १ वर्ष चांडालादि के घर विषे वास करे तो तिनांके हि तुल्य हो जाता है ॥ ६ ॥ एह संसर्ग प्रकरण विषे भी पाठ है इसमें प्रसंगतें कथन कीता है ॥ इसने जेकर प्रायश्चित्त नहि कीता तद इसका अन्नभी नहि भक्षण करना चाहिए जेकर खादाहोवे तां पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करे एह अभिप्राय है ॥ अब अपवित्र पुरुषकर्कें ग्रहणकी जा जो अन्न तिसके भोजन विषे छागलेय जी कथन करतेहैं अज्ञानादिति अज्ञानतें ब्राह्मण सूतकमें अथवा मृतक सूतक विषे भोजन करे तो सौ १०० प्राणायाम कर्कें शुद्ध होता है एह शूद्रके सूतक विषे जानणा १ और वैश्यके सूतक में भोजन करे तो सठ ६०

संवत्सरोपितःशूद्रोमासार्द्धयावकंपिवेत् मासमात्रोपितःशूद्रःकृच्छ्रपादेन शुध्यति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वसंवत्सरात्कल्प्यंप्रायश्चित्तं द्विजोत्तमैः संवत्सरैस्त्रिभिश्चैव तद्भावं संनियच्छतीति ॥ ६ ॥ संसर्गप्रकरणेप्ययं पाठोऽत्र प्रसंगादुक्तः एतस्याप्रायश्चित्तिनोऽन्नं नाश्रीयादशित्तु तस्मिन् पूर्वोक्तमेवाचरोदित्यर्थः ॥ अशौचपरिगृहीतान्नभोजने तु छागलेय आह ॥ अज्ञानाद्भुजते विप्राः सूतके मृतके तथा प्राणायामशतं कृत्वा शुध्यन्ति शूद्रसूतके ॥ १ ॥ वैश्येष्टिर्भवेद्राजिर्विंशतिर्ब्राह्मणे दश एकाहं च त्र्यहं पंच सप्तरात्रमभोजनम् ॥ २ ॥ तथा शुद्धिर्भवत्येषां पंचगव्यं पिवेत्तत इति विप्रादिक्रमेणैकाहत्र्यहादिव्रतविधानम् ॥ अल्पत्वादिदमकामतः ॥ कामतो भोजने मार्कण्डेयः

प्राणायाम करे और राजाके सूतक विषे भोजन करे तो बीस २० प्राणायाम करे और ब्राह्मणके सूतक विषे भोजन करे तो दस १० प्राणायाम करे इन प्राणायामोंके साथ व्रतविधि भी है सो कहीदी है एक दिनका उपवास व्रत करे ब्राह्मणके सूतक में भोजन करणेतें और त्रय उपवास राजाके सूतक में जानणे और वैश्यके सूतकमें पंचरात्रि उपवास करे और शूद्रके सूतक में भोजन करणेतें सत्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे २ और तिस प्रकार तिनांको शुद्धि कही है तिसतें अनंतर पंचगव्य पान करे एह विप्रादि कम कर्कें एक दिन त्रय दिन आदि व्रतका विधान जानणा और इसको थोडा व्रत हाणेतें अज्ञानतें भोजन करणें विषे जानणा ॥ अब इच्छा ते ब्राह्मण शूद्रादिके घर विषे भोजन करे तो तिसमें प्रायश्चित्त-मार्कण्डेय जी कथन करते हैं

१७८ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

भुक्त्वाति ब्राह्मणके अशौच विषे भोजन करे तो ब्राह्मण सांतपन व्रत करे और क्षत्री के अशौच विषे भोजन करे तो वृद्धव्रत करे १ और वैश्यके अशौच विषे भोजन करे तो महासांतपन व्रत करे और तैसंहि शूद्रके अशौच विषे भोजन करे तो ब्राह्मण चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है २ और शंख जी ने किहा है सो कहते हैं शूद्रस्येति शूद्रके सूतक विषे भोजन करे तो छे ३ महीनेका व्रत करे और वैश्यके सूतक विषे भोजन करे तो त्रय १ महीने का व्रत करे ॥ १ ॥ और क्षत्रीके सूतक विषे भोजन करे तो दो २ महीनेका व्रत करे और तैसंहि ब्राह्मणके सूतक विषे भोजन करे तो महीने का

भुक्त्वातुब्राह्मणाशौचचरेत्सांतपनंद्विजःभुक्त्वातुक्षत्रियाशौचेतथाकृच्छ्रोविधीयते १ वैश्याशौचेतथाभुक्त्वामहासांतपनंचरेत् शूद्रस्यैवतथाभुक्त्वाद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति २ यच्चशंखेनोक्तम् शूद्रस्यसूतकेभुक्त्वापएमासान्व्रतमाचरेत् वैश्यस्यतुतथाभुक्त्वात्रिमासान्व्रतमाचरेत् १ क्षत्रियस्यतथाभुक्त्वा द्वेमासौव्रतमाचरेत् ब्राह्मणस्यतथाशौचिभुक्त्वामासव्रतंचरेदित्यभ्यासेवोध्यम् २ अशौचानंतरमिदंप्रायश्चित्तंकार्यम् । ब्राह्मणादीनामशौचेयःसकृदेवात्रमश्नातितस्यतावदेवाशौचम् । अशौचव्यपगमेतुप्रायश्चित्तंकुर्यादितिविष्णुस्मरणात् ॥ अपुत्राद्यन्नभोजनेतुलिखितश्चाह भुक्त्वावार्धुपिकस्यान्नमव्रतस्यासुतरस्यच शूद्रस्यचतथाभुक्त्वात्रिरात्रंस्यादभोजनमिति १

व्रत करे एह अभ्यास विषे जानणा ॥ २ ॥ अशौच ते उपरंत एह प्रायश्चित्त करे ॥ इसमे स्मृति वचन को दिखातेहैं ॥ ब्राह्मति ब्राह्मणादियों के अशौच विषे जो पुरुष एक बार अन्न भक्षण करे तिसको तिनता काल हि अशौच जानणा और अशौचके दूर होयां प्रायश्चित्त करणा योग्य है एह विष्णु स्मृति मे कथन कीताहै ॥ अब अपुत्रादि पुरुषोंके अन्न भोजन करणे मे लिखित स्मृति मे कहते हैं भुक्त्वाति और बहुत व्याज लेने कर्के जो उपजीविका करताहै तिसका अन्न और व्रत रहित पुरुषका अन्न और पुत्र हीन पुरुष का अन्न और तैसंहि शूद्रका अन्न इनांको जो पुरुष भक्षण करता है सो त्रय १ उपवास व्रत करणे कर्के शुद्ध होता है इसमे संशय नाहि जानणा चाहिए ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०. १२ ॥ टी भा० ॥ १७९

जो ब्रह्मचार्यादियोंके अन्न भक्षण में प्रायश्चित्त है सो बृहयाज्ञवल्क्य जी कथन करते हैं यतिश्च
ति यति और ब्रह्मचारी जिस अन्नके स्वामी हैं सो अन्न तिनका भक्षण न करे
क्योंकि उह आप पक्वान्नके स्वामी हैं अर्थात् उह जिसके घर भिक्षाकों जाए उसके घर पक्का
जो अन्न तिसके स्वामी हैं तिसके उसगृहस्थीने पहले उनको देकर भोजन करना चाहिए
इसके उसका अन्न नहि ग्रहण करना उह संग्रहदापके दुष्ट है तिसका भक्षण करे तो
चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है १ और जो पावेण आह्लादियोंके न करेण वालेके अन्न
भक्षण विषे भरद्वाज जी कहते हैं पक्षइति पक्षविषे अथवा महीं विषे जिस पुरुष का अन्न
देवता भक्षण न करे तिस खांटे आत्मा वाले पुरुषका अन्न ब्राह्मण भक्षण करे तो चांद्रायण

यनुब्रह्मचार्याद्यन्नभोजनेबृहयाज्ञवल्क्यआह ॥ यतिश्चब्रह्मचारीचपक्वान्न
स्यामिनावुभौ तयोरन्नंनभोक्तव्यंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ यच्चपार्व्यण
आह्लादयकर्तुरन्नभोजनेभरद्वाजआह ॥ पक्षेवायदिमासस्यनाश्रंतिदेवताः
भुक्त्वादुरात्मनस्तस्यद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति १ तदुभयमप्यभ्यासविष
यम्। पूर्वपरिगणितातिरिक्तायेनिपिद्वाचरणशीलास्तदन्नभोजनेतुनि राचा
रस्यविप्रस्यानिपिद्वाचरणस्यच ॥ अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्याद्दिनमेकमभोजन
मितिपड्त्रिंशन्मतोक्तंद्रष्टव्यम् १ अत्रैवसंवत्सराभ्यांसपड्त्रिंशन्मतएवो
क्तम् ॥ उपपातकयुक्तस्यअव्दमेकंनिरंतरम् अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्यात्परा
कंतुविशोधनमिति ॥ १

व्रत करे १ सोएह पूर्वोक्त दोनो व्रत अभ्यास विषयमे जानें और पूर्वोक्त परिगणनामें अधिक
जो निषिद्ध आचरण और निषिद्ध स्वभाव वाले पुरुष तिनके अन्न भक्षणमें कहते हैं निगचार
स्येति आचारहित ब्राह्मण और खांटे आचरणवाला ब्राह्मण अर्थात् संन्यादिकर्महीन मृणादि
रहित जो ब्राह्मण इनका अन्नभक्षणकरे ब्राह्मण तो एक दिनउपवास व्रतकरे एह पड्त्रिंशन्म
तका हि कथन कीता होया जानना योग्य है १ और इसी पूर्वोक्तमें वर्षरात्रके अभ्यास होणे
विषे पड्त्रिंशन्मतका हि कथन कीता होता कथन करते हैं उपनि एह पूर्वोक्त उपपातक कर्के
युक्त जो पुरुष तिसका अन्न ब्राह्मण वर्षरात्र निरंतर भक्षण करे तो पक्का व्रत कर्के शुद्ध
होता है १

१८० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

इदमिति एह अभक्ष्य भक्षण प्रायश्चित्त व्रतोंका समूह श्रेष्ठ ब्राह्मणकों हिसारा होता है और क्षत्रि
यादियों को पाद पादन्यून जानना अर्थात् क्षत्रीयों के एकपाद न्यून वैश्यको है और वैश्यों के पाद
ऊन शूद्रको जानना ॥ ब्राह्मण को संपूर्ण व्रत देवे और क्षत्री को पादऊन देवे इत्यादि वचन हैं एह
मिताक्षरा में लिखा है ॥ कुछक इसविषे और कहते हैं इसविषे किते किते इच्छाते अभ्यासविषे
भी प्रायश्चित्त प्रसंगते कथन कीता है ॥ और विचारते अनुपात कहि तिनोंका विषय है एह पीछे
देखाया है ॥ इसमें और विशेष जो हैं सो पृथक् संग्रह कीता जो अभक्ष्य भक्षणका प्रायश्चित्त
प्रकरण तिसविषे देखे योग्य है इसीमें कुछक और भी कथन करते हैं निंदितेति निंदितान्नोपजी

इदं त्वभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तव्रतकदंबकं द्विजाग्न्यस्यैव । भवति क्षत्रियादी
नां तु पादपादहानिर्बोधा ॥ विप्रेतु सकलं देयं पादो न क्षत्रिये स्मृतमित्यादि
वचनादिति मिताक्षरा । किंचात्र क्वचित् क्वचित् कामतोऽभ्यासेऽपि प्रायश्चित्तमु
क्तं प्रसंगात् वस्तुतोऽनुपातक एव तद्विषय इति प्राङ्निर्दिशितम् । विशेषस्तु
पृथक्संगृहीतेऽभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तप्रकरणे द्रष्टव्यः ॥ किञ्च ॥ निंदिता
न्नोपजीवनीमित्यस्य स्थाने याज्ञवल्क्येन निंदितार्थोपजीवनमित्युक्तम्
तच्च व्याख्यातंगणनायाम् तत्रापि ॥ सामान्यभोपपातकप्रायश्चित्तं जाति
शक्तिगुणायपेक्षया योज्यम् ॥ इत्यभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ ३६

बनं इसके स्थान विषे याज्ञवल्क्यजीने निंदितार्थोपजीवनं ऐसा पाठ कथन कीता है सो पीछे
गणना विषे निम्नका व्याख्यान कीता है निम्नो विषे भी सामान्यहि जो उपपातकों के प्रायश्चित्त
सो जाति शक्ति गुणादियों की अपेक्षा करे जोडने योग्य है अर्थात् जैसी जाति जैसी शक्ति
जैसा गुण होवे तैसा हि प्रायश्चित्त देणे योग्य है इसका विषय बहुत भी है परंतु बुद्धिमान
विचारसे सबको कहसका है जैसे पवित्रके स्पृष्ट अन्नके प्रायश्चित्तमें हिण्डो पाप बाढे को
उसी प्रायश्चित्त को थोडा करके कहसका है अंते और भी जानणे चाहिए एह अभक्ष्य भक्षणका
प्रायश्चित्त समाप्त भया है ॥ ३६ ॥ ॥

॥ श्रीरण्वर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १८१

अब पीछे विवरण कीता जो अनाहिताग्निता तिसका प्रायश्चित्त कहतेहैं अत्रेति इसके विषे सा मान्य जो उपपातकोंके चार व्रत सो आपत्ति विषे जानणे ॥ और वर्ष रोजते उपरंत तक अनाहिताग्नि रहे तो शक्तिकी अपेक्षा कर्के अधीन यथाशक्ति तिसको प्रायश्चित्त देणा योग्यहै और आपत्तिके बिना मनुजीका किहा होआ व्रत महीनेका व्रत करे ॥ और जेकर वर्ष पूर्णन होवे तिसमें काष्णाजिनिजी विशेष कहतेहैं काल उति जेकर ब्राह्मण समुचितकालविषे कर्माकों विधानतें स्थापनकर्के फेर बिना न करे और पीछे न करे सो महीने महीन व्रत रात्रि व्रत करे ॥ तो शुद्ध होताहै १ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं दारोति विवाहकालमें अथवा भ्रातृवि भाग काल विषे इत्यादि कथन कीता होए जो काल तिनो विषे ब्राह्मण आग्निको स्थापन कर्के

अथप्राग्वित्तनानाहिताग्निताप्रा० अत्रसामान्योपपातकव्रतचतुष्टयमापदि संवत्सरादूर्ध्वशक्त्यपक्षयायोज्यम् । अनापदितुमानवत्रैमासिकम् ॥ अपूर्णे वत्सरेकाष्णाजिनिर्विशेषमाह । कालेत्वाधायकर्माणिकुर्याद्विप्रोविधानतः तदूर्ध्वस्त्रिरात्रेणमासिमासिविशुध्यति १ दारकालेदायाधकालेवत्याद्युक्तेकालेविप्रोऽग्निमाधायनित्यादीनिकुर्यादिति विधिः तदग्न्याधानमकुर्वन्मासिमासित्रिरात्रव्रतेन शुध्यति । अनाहिताग्नीपित्रादौ यक्ष्यमाणः सुतो यदि सहि ब्राह्मेन विधिना यजेत्तन्निष्क्रियायन्विति १ एकाग्रपि विंशपस्तनैवाक्तः एकाग्रिरावसथ्याधाता ॥ कृतदारोगृहे ज्येष्ठे यांनादध्यादुपामनम् चांद्रायणं च रेहर्षप्रतिमासमहोपवा १ वर्षातिक्रमंचांद्रायणम् ॥ मासातिक्रमं हरुपवासः ॥ इत्यनाहिताग्निताप्रा० ॥ ३७ ॥ ॥

नित्यादि कर्म करे एह विधिहै तिस अग्न्याधाननू न करे तो महीने १ विषे व्रत रात्रि व्रत कर्के शुद्ध होताहै और पित्रादि अनाहिताग्नि होवे जेकर तिनोका पुत्र यज्ञ करणकी इच्छा वालाहै तो सोहि ब्राह्म विधि कर्के पितरोंके उद्धार वाम्ने यज्ञ करे १ और एकाग्रिकोभा विशेष तिसो नै किहाहै एकेति एकाग्नि जो आवसथ्य आग्निके धारण वाला हियाहै विवाह जिनमें और वर विषे ज्येष्ठ क्या बड़ाहै सो उपामना नाम आग्निको धारण न करे तो वर्ष तक महीने २ चांद्रायण व्रत करणमें शुद्ध होताहै ॥ १ अब उनमें व्यवस्था करतेहैं जेकर वर्षको लेव जाये तो चांद्रायण व्रत करे और महीनेको लेव जाये तो एक दिनका उपवास व्रत करे एह अनाहिताग्निका प्रायश्चित्त समाप्तभया ॥ १७ ॥ ॥

१८२ ॥ श्रीरएदीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब चौर कर्मका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसमें मनुजीका वाक्यहै धान्येति जो ब्राह्मण ॥ अथए वंधु यौकेघर्मे धान्य अन्न धन इनांको छुछाते चुगव सो वपनेजका छुछू व्रतकरे तो शुद्धहोताहै १ और क्षत्रियादियोंको क्रमकके पादपादनून जानणा ॥ एह देशकाल द्रव्य परिमाण स्वामिगुणा दियों की अपेक्षा कके महत्त्वके होया २ तिसमें जानणा अर्थात् जैसादेश जैसे कालादि योंको देखकके प्रायश्चित्त करणा ॥ तैरहि और कथन कतेहै द्रव्येति अल्पसार वाले जो द्रव्य इनांको दसके घर्मे चुगवके अपणा शुद्धि वास्ते सांतपन छुछू व्रतकरे १ अब इसीका अर्थ स्पष्टकके कहतेहै अल्पेति अल्पसाग क्या थोडाहै प्रयोजन जिनोंका लाख मिकादि और जो नहि कहे होए तिनका हरया जो द्रव्य तिसनू स्वामिकेताई देकके प्रायश्चित्तकरे ॥ अब इसीमें

अथरेतयम् तत्रमनुः धान्यान्नधनचौर्याणिकृत्वाकामाद्द्विजोत्तमः स्वजा
तीयगृहादेवकृच्छ्राब्देनविशुध्यति १ क्षत्रियादिस्तुक्रमणपादपादन्यूनेबोध्य
म् । एतच्चदेशकालद्रव्यपरिमाणस्वामिगुणाद्यपेक्षयामहत्वेसति बोद्धव्यम्
तथा द्रव्याणामल्पसाराणांस्तेयंकृत्वान्यवेश्मनः चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंनिर्या
त्यात्मविशुद्धये १ अल्पसाराणामल्पप्रयोजनानांत्रपुसीसकादीनामनुक्ता
नांचनिर्यात्याऽपहतद्रव्यंस्वार्मिनेदत्वेत्यर्थः । भक्ष्यभोज्यापहरणेयानशय्या
सनस्यच पुष्पमूलफलाभांचपंचगव्यंविशोधनम् ॥ १ तृणकाष्ठदुमाणांचशु
ष्कान्नस्थगुडस्यच चेलचर्मामिषाणांचत्रिरात्रस्यादभोजनम् २ एषांमध्ये
एकस्यापिहरणत्रिरात्रम् । मणिमुक्ताप्रवालानांताम्रस्यरजतस्यच अयःकां
स्थोपलानांचद्वादशाहंकणान्नता ३ एषांमध्येएकस्यापिहरणद्वादशाहंक
णान्नता तंडुलकणभक्षणम्

और कथनकतेहैं भक्षेति भक्ष्यभोज्यके हरणविषे और वाहन शय्या आसन पुष्प मूल फल इनांके हरण विषे अपना शुद्धिवास्ते पंचगव्यपानकरे १ और तृण काष्ठ वृक्ष और सुका अन्न और गुड बस्त्रचर्म भांग इनांके हरणविषे त्रयरात्रिका उपवास व्रतकरे तो शुद्ध होताहै २ इनांके मध्यविषे एकको चुगवे तो त्रयरात्रिव्रतकरे ॥ और मणि नीलमादि और मोती मुंगा और तांब्या रजतक्या चांदी और लाहा कांस उपल क्यापत्थर इनांके चुगणे विषे वारांदिन कणान्नतारहे इनांके मध्य विषे एकके भी हरण विषे वारां १२ दिन कणान्नता क्या तंडुल क्या चावलका दाना भक्षणकरे तो शुद्ध होता है ३

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १८३

कार्पासेनि कपाहके वस्त्र और कोडेंके वस्त्र पशमोनादि और उन्नदे वस्त्र और द्विशफ कपा
गवादि और मुकशफ कपा अथवादि और पक्षि गंध औषधि रम्भी इनांके हरण विषे त्रय दि
न जलपान करे ४ इसमें भी देश कालादिकी अपेक्षाते विषयमें तुल्यता जानणी ॥ जैसे उत्तम
देशकी कपाहकाजा वस्त्र और उत्तम कालका वणया होयाजावस्त्र तिसमें त्रयदिन जलपानकरे
और माडे देशका वस्त्र अथवा माडे कालका वणया होया वस्त्र होये तिसके हरण विषे दोदिन
जलपानकरे ॥ ऐसे ही ओ मेंभी जानणा ॥ अब इसीसा व्याख्यारूप और प्रकरण लिखींदाहें
अथेति अब स्तेयमें प्रायश्चित्त कहनेहें स्तेय नाम चोरोकाहें परगु सा एह ब्राह्मण है स्वामि जिसका
ऐसी वस्तु का हरण महापातकमें जानणा ॥ और स्वर्णका चुगणामी सोला १६ मसेने अधिक

कार्पासकीटजौर्णानां द्विशफैकशफस्यच पक्षिगंधौषधीनांचरज्ज्वाश्वेवत्र्य
हंसयः ४ प्रत्रापिदेशकालाद्यपेक्षयाविषयसमीकरणम् ॥ एतद्व्याख्यारूपं
प्रकरणान्तरं लिख्यते ॥ अथस्तेयप्रायश्चित्तम् ॥ स्तेयंचोद्यम् ॥ तच्चविप्र
स्वामिकस्वर्णतत्समव्यतिरिक्तमेवोपपातकम् ॥ धान्यहरणतिलापहरणचां
द्रम् ॥ धातुलोहापहारंपराकः ॥ विप्रस्यविप्रस्वामिकदशकुंभपरिमितधा
न्यतन्परिमिततण्डुलादितनुल्यताम्बरजताद्यपहारंसमव्याघ्रेमासिकम् ॥
मत्याभ्यासे वा कृच्छ्राब्दम् ॥

होये तद महापातक है और तिसके तुल्य जो पाप है सो अनुपातक है और तिसके व्यतिरिक्त
कपा पृथक् है सो उपपातकमें जानणा ॥ और धन्यके हरण विषे और तिलोंके हरण विषे
चांद्रायण व्रत करे और धातु लोहा उनके हरण विषे पराक व्रत जो वारा १२ दिनका है सो
करे तो शुद्ध होता है उस जगह लोह शब्द कहे गिहकेका भी ग्रहण होता है उसी भासे धा
तु लोह एह पद किहा है ॥ और ब्राह्मण है स्वामि जिसका ऐसे जो दश १० कुंभ परिमाण
वाले धान्य और इतने परिमाण वाले चावलयादि और तिसके तुल्य मुह वाले जो तांबा रज
तादि इनांक उल्ला ते बिना हरण विषे व्रत महीनेका व्रत करे और दृच्छते अथवा बहुत बार
चुरावे तो वर्षराजका कृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होता है ॥

१८४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और जेकर क्षत्रियादि हरण वाले होवें तो पूर्वोक्त व्रत पाद पाद उन कण्ठा अर्थात् क्षत्रीते वैश्यको एक पाद उन और वैश्यते शूद्रको एकपाद उन व्रत देणा ॥ अब पूर्वोक्त कुम्भका लक्षण कहतेहैं अष्टोत्तर अष्टां ८ मुठियां का १ किंचित् होताहै और अष्ट ८ किंचित्का १ पुष्कल होताहै और चार ४ पुष्कलका १ आठक होताहै ॥ १ ॥ और चार ४ आठकका १ द्रोण किहाहै और दश १० द्रोणको खानि हातोहै और बीस २० द्रोणका कुम्भ किहाहै । २ । और कुम्भ नाम पंज हजार परिमाण वाल पलका है एह स्मृत्यर्थमार विषे किहाहै ॥ ठाई ॥ २५० ॥ सो पंसा इसका मुठ है ॥ और कहतेहैं क्षत्री है स्वामि जिसका ऐसे जो क्षेत्र वाउ

क्षत्रियादेर्हर्तुः पादपादद्वाप्तः । अष्टमुष्टिभवेत्किंचित्किंचिदष्टौ च पुष्कलम्
पुष्कलानि च चत्वारि आठकं परिकीर्तितम् १ आठकानि च चत्वारि द्रोण इत्य
भिधायते दशद्रोणा भवेत्स्वारीकुम्भोपि द्रोणविंशतिः २ कुम्भपंचसहस्रपलप
रिमाण इति स्मृत्यर्थमार ॥ सार्द्धशतद्वयपणमूल्यः क्षत्रियस्वामिकक्षेत्रवा
पीकूपनडागगृहपानीयरमानांतस्वामिकस्यानिक्षेपस्य तावन्मूल्यरजतव
स्वरत्नादिश्च नारीनराश्वानामपहारिचांद्रम् वैश्यशूद्रस्वेतादृशेचांद्रार्धतत्पा
दौ ॥ विप्रस्वेतादृशेस्वर्णस्तयसमम् ॥ तेन पडब्दम् स्वर्णस्तयसमवदिति

ली खुआ तयाओ धर जल रत उतांके हरण विषे और मोई क्षत्री है स्वामि जिसका ऐसा जो अमानव क्या द्रव्य अथवा निजने ही मुठ के रजन क्या चादी और वस्त्र और रत्नादि और स्त्री पुष्प धाडा इनांके हरण विषे चांद्रायणव्रत करे ॥ और वैश्य और शूद्रां के धन हरण विषे चांद्रायणका आठ और चांद्रायणका पाद व्रत करे ॥ जैसे वैश्य के पूर्वोक्त तुल्य धन हरण में चांद्रायण का आठ व्रत करे और शूद्रके धन हरण विषे चांद्रायण का पाद व्रत करे ॥ और ब्राह्मणका हि जो पूर्वोक्त तुल्य धन है जिसका हरण ॥ स्वर्ण शुराण के तुल्य है जिस कर्के छे ६ वर्ष का प्रायश्चित्त करे क्योंकि स्वर्णस्त्रोय के तुल्य होपते ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १८५

इसी विषे मनु जी भी कथन करते हैं मनुष्येति मनुष्योंके हरण विषे और स्त्री क्षेत्र घर बाउली
खुआ जल इनाके हरण विषे पुरुष अपणा शुद्धि वास्त चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होता है १
इसजगामनुष्य स्त्री जाते सो दास दासी जानें उत्कृष्ट क्या उत्तम नहि जानें ॥ तिनाके हरण
विषे कहतेहै पुरुषेति कुलीन पुरुष और कुलीन नाने और तिनामें भी मुख्य जो स्त्रियां हैं तिनाके
हरण विषे हरण वाला पुरुष वधके योग्य है अर्थात् मारणे योग्य है १ इसमें बहुत बड़का मनुजी
का कथन होणें तिना जपस में जानणा अर्थात् पूर्वोक्त मनुष्य हरण का प्रायश्चित्त दास
दासी विषे ही जानणा ॥ अब उसीमें और कथन करतेहै निक्षेपेति निक्षेप जो अमानत
द्रव्य तिसके हरण विषे और पुरुष अथ रजत पृथ्वी हीरा मणी इनाका हरण स्वर्ण तुंगणके

अत्रमनुरपि मनुष्याणांचहरणेस्त्रीणांक्षेत्रगृहस्यच वापीकपजलानाचशु
द्धयेचांद्रायणंस्मृतम् १ मनुष्यस्त्रियोदासदास्योनतृकृष्टौ तद्वरणेन। पुरुषा
णांकुलीनानांनारीणांचविशेषतः मुख्यानांचैव नारीणांहरणवधमर्हति १ गु
रुदंडस्यमनूक्तत्वात्तद्विषयमेव। निक्षेपस्यापहरणंनराश्वरजतस्यच भूमिव
जमणीनांचस्वर्णमेतयसमंविदुरिति १ अनुपातकत्वाद्गुरुप्रायश्चित्तंज्ञयम्
स्मृत्यर्थमारं अत्रपठद्वंद्वन्यूनंकल्प्यम् अणुसीसलोहादिद्रव्याणामल्पप्र
योजनानांसद्विशतद्वयपणपंचदशांशमितानांहर्तुःसांतपनम् ॥ एकवारभ
क्ष्यभाज्यापहारित्सममूल्यापहारैवेतदेव

तुल्य किहा है १ इसको अनुपातक होणें बहुत प्रायश्चित्त जानणा सो अनुपातक प्रकार विषे भी
आवेगा अब स्मृत्यर्थमार विषे कहतेहै अर्थात् इस विषे छे ६ वर्ष का जो प्रायश्चित्त है सो
थाड़ा कल्पना करणा योग्य है और थाड़ा प्रयोजन तिनाका ऐसा जो कठि मिका लोह प्रभृति
द्रव्य इनाके हरण विषे और दारि २५० सो पैसा इनाका जो पंद्रवां १५ अंश (१६ (२)
(३)

तत्परिमितके हरण वाला पुरुष सांतपन व्रत करे तो शुद्ध होता है ॥ और एक बार भक्ष्य जो
अन्नादि और भोज्य जो मिठाई प्रभृति इनाके हरण विषे और तिनाके तुल्य मुठके हरण विषे
भी एही प्रायश्चित्त जानणा योग्य है ॥

१८६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अथ और कहते हैं यानेति वाहन रथादि शय्या आसन पुष्प फल मूल पत्र मृत्तिकाका भांडा मखार मांस इनांके हरण विषे पंचगव्य पानकरके एक दिन रात्रिका उपवास व्रत करे ॥ और एही पुष्प फलादि दो त्रय बार भोजनकी परिपूर्णताके तुल्य होंवे तिसके हरण विषे दो त्रय रात्रि व्रत कर अर्थात् दो बार हरणमें दो रात्रि व्रत करे और त्रय बार हरणविषे त्रय रात्रि व्रत करे ॥ सोई मधुमांसा दि ले ६ दिनके आहारिका परिपूर्ण ताके वास्ते होवे और भोज्य वस्तु अथवा तिसके तुल्य मुल्ल और तृण काष्ठ वृक्ष मुक्ता अन्न गुड तैल चर्म मांस इनांके हरण विषे त्रय रात्रि व्रत करे ॥ सोई एह गुड तैलादि त्रय बार भोजन तृप्तिके आहारका मुल्ल तिसके हरणविषे भी त्रय रात्रि

यानशय्यासनपुष्पफलमूलपर्णमृद्भांडमधुमांसापहारपंचगव्येनाहोरात्रम्
द्वित्रिवारभोजनपर्याप्ततदाहरणेद्वित्रिरात्रम् ततपट्टदिनाहारपर्याप्तभो
ज्यमूल्यतृणकाष्ठद्रुमशुष्कान्नगुडतैलचर्ममांसापहारे त्रिरात्रम् । तत्रत्रिवा
रभोजनपर्याप्ताहारमूल्यं हतेतदेवेति ॥ द्वादशाहारपर्याप्तिविप्रस्वामिकम
णिमुक्ताप्रवालताम्ररजतशंखशुक्तिलोहकांस्यापहारद्वादशाहंकणान्नता
त्रिभोजनपर्याप्ताहारमूल्यकार्पासकीटजर्जर्याद्विशफैकशफपशुरज्जुपक्षि
णामपहारैकउपवासःअहंपयःपानंवा । गजाश्वभूमिकन्याहरणपटुपवा
साः । अभ्यासेचांद्रायणम् पण्मासं गोमूत्रयावकाहारावा ॥

व्रत करे ॥ और बागं दिनकी तप्तिका आहार और ब्राह्मण है स्वामी जिनका ऐसे जो मणि मोती मुंगा तांबा चांदी शंख सिप्पा लोहा कांस इनांके हरण विषे बागं दिन चावलका विणका भक्षण करे ॥ और त्रय बार भोजन तृप्तिका आहार अथवा तिसके तुल्य मुल्ल और कपाहके वस्त्र कंडिके वस्त्र ग्रेष्मादि पुगणे वस्त्र और गवादि और घोडा प्रभृति पशु रस्मी पक्षि इनांके हरणविषे एक दिनका उपवास व्रत करे । अथवा त्रय दिन जल पानकरे ॥ और हाथी घोडा भूमि कन्या इनांके हरण विषे ले ६ दिनका उपवास व्रत करे । और जेकर बहुत इसमें अभ्यास होवे तो चांद्रायण व्रत करे अथवा ले ६ महीने गोमूत्र युक्त यवोंका भक्षण करे तो शुद्ध होता है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ १८७

तैमं ही प्रायश्चित्त विवेक विपे जावाल जी कहतें हैं अश्वेति घोडा गो पृथ्वी कन्या इनांके हरण विपे चांद्रायण व्रत करे और छोटे पशुओंको चुग करे प्राजापत्यव्रत करे १ उस जगा क न्यापद नीचकी कन्या पर जानणा और जगा कन्याके हरण वाला मागें योग्य है उसदेड के कथन कणें तें ॥ एउमी ब्राह्मण संबंधि जो चांदी भूमि अश्वदि तिनके विषय में जा नणा क्यों कि ब्राह्मणके रजतादि तिनके हरण को अनुपात रहोंणें अर्थात् सो अनुपातकोम कहाहे ॥ तैमंहि उमी में विष्णु जी कहतेहै ब्राह्मणेति ब्राह्मणकी भूमिका हरणा और अमानत द्रव्य का हरणा और सुवर्ण चुगणेंके तुल्य वस्तु का हरणा उनके और रजतके बहुत बार चुगणें विपे और गो भूमि कन्या इनां संपूर्णक एक बार चुगणेंविपे चांद्रायण व्रत करे ॥ और पृथीक जो छोटे पशु इनांति अतिरिक्त पशुओंके हरण विपे अथवा उनके बहुत बार चुगणेंविपे एह व्रत

तथाचप्रायश्चित्तविवेके जावालः। अश्वगंभूमिकन्याश्वहत्वाचांद्रायणंचरेत् क्षुद्रपशून्तपह्व्यप्राजापत्यं समाचरेत् १ कन्यापदमधमकन्यापरम् ॥ अन्य त्रकन्याहरणोवधइतिदंडस्याक्तत्वात् एतद्ब्राह्मणसंबंधिरजतभूम्यश्वदिविष यम् ॥ ब्राह्मणरजतादिहरणस्यानुपातकत्वात् तैमंविष्णुः। ब्राह्मणभूमि हरणनिक्षेपापहरणं सुवर्णस्तेयसमरजतहरणाभ्यामेगोभूमिकन्यानां सकृद्द रणेचांद्रायणम् ॥ उक्ततरक्षुद्रपश्वपहारेवाभ्यासे एवं पुस्तकादिचौर्येष्वपि ह्रियमाणालपत्ववहुत्वाभ्यांप्रायश्चिनादिकल्प्यम् ॥ देवद्रव्यापहारोऽवदम् यस्यवर्णस्यवृत्तियोंहरेत्सतद्वर्णवधप्रायश्चित्तं पादोनेकुर्यात् सूत्रमर्थत्रम कृद्भ्यासद्रव्याल्पत्वमहत्त्वदेशकालस्याभ्यपहर्तृगुणवैगुण्याद्यपेक्ष्यप्राय श्चित्तगुरुलघुताज्ञया ॥

जानणा ॥ उमी प्रकार पुस्तकादिके चुगणें विपे भी चांद्रायण व्रत करे ॥ और चुगई होई जो अल्प वस्तु अथवा बहुत वस्तु तिनका कर्के प्रायश्चित्तादि कल्पना कणें अर्थात् छोटीवस्तु हर ण में छोडा प्रायश्चित्त और बहुत वस्तु हरण में बहुत प्रायश्चित्त हरणा ॥ और देवताक द्रव्य हरण में वर्षे राजका व्रत करे ॥ और जो पुरुष जिस वर्णक्या ब्राह्मणादिकी वृत्तियोंहस्तहिं सो पुरुष तिस वर्णके वध का प्रायश्चित्त एक पाद उत करे तो शुद्ध होनाहे उयें सब जगा ए क बार अभ्यास द्रव्याल्पत्व महत्व देश काल स्यामि अपहर्ताके गुण वैगुण्यादिर्वा अपेक्षा कर्के प्रायश्चित्त गुरु लघु जानणा अर्थात् जैसा द्रव्य जैसे देशादि होय तैसाहि प्रायश्चित्त क रवाणा ॥

१८८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

एह प्रायश्चित्त द्रव्या है द्रव्य जिसका तिसको सो द्रव्य दफकें छि कण्ठा योग्यहै और विशेष कहतें वैदिकेनि वैदिक अग्नि क्या जिसमें हवन होता है । तब अग्नि के तांडे काट चुग कर देवे और गौको तृण क्या घास चुगकर देवे और स्त्रीमें चलतु वाले छिजको दो २ मात्र चुगणेका दोष नहि है ॥ और दा २ मूत्रियां चुगणे काभी दोष नहि है ॥ और छोटे धान्य कणक यव मुं। मास इनाको एक मुट्ठि क्षेत्रमें हंगुंर क्षेत्रके स्वामि कर्के अतिपिद्ध क्या नहि हटाया होया होवे और जेकर क्षेत्रका स्वामि कडे तो मुट्ठि में अधिक भाले लेवे तिसको चारीका दोष नहि है एह मूल्यमें क्रिडा है ॥ तैवेहि इत्तम शंखजी विंगप कहते हैं अस्तेयनिति अग्नि के वास्ते जो काट लेना तिसमें दोष नहि है और गौबास्ते जो

इदं च प्रायश्चित्तमपहतद्रव्यस्यामिनेतद्रव्यंदत्त्वेव कार्यम् । वैदिकाग्निभ्यः
काष्ठं गवेत्तृणं हर्तुः पांथद्विजस्येक्षुद्वयं मूलकद्वयम् चणकव्रीहिगोधूमयवमु
द्रमापाणां मुट्ठिक्षेत्राद्वरतः स्वाम्यनिपिद्वस्यस्तं यदोपेनिति मयूखे ॥ तथा च
शंखः । अस्तेयमज्ञयेकाष्ठमस्तेयंचतुष्पंगवे कन्याहरणमस्तेयं योहरत्यनृतं
कृतमिति १ यः पुरुषः कन्यां वाचादत्त्वापि न दत्तेयमित्यनृतं कृतं यथा स्यात्त
थावदति तत्कन्याहरणमस्तेयं स्तेयपापाजनकमित्यर्थः यद्वा अनृतं कृतं क
न्यादानमुकरीत्याऽनृतं कृतं हरति नाशयति अर्थात् तदेव वाक्यं वलात्कारे
ण नदीयकन्याहरणेन सत्यं करोति तत्कन्याहरणमस्तेयमित्यर्थः ॥

घास चुगणा तिसमें भी दोष नहि है ॥ और जो अनृत कर्के कन्याका चुगणा तिसमें भी दोष नहि है ॥ १ अथ उसी शंखके उक्तार्थका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतें हैं यदेति जो पुरुष कन्या की वाणी में दफकें भी एह कन्या में नहि दिखी उस प्रकार जैसे होवे तैसे कह तांडे तिस कन्याके चुगणे में दोष नहि जानना ॥ अथ दूसरा अर्थ कहतें हैं यदेति कथनकीता तांडे गति कर्के कन्या दानतुं अनृत क्या नाश करता है अर्थात् निसीवाक्यको बलकके तिस कन्या हरणने नाश करता है अर्थात् तिसके मुकणको हटाता है सोभी कन्या हरण पाप राजत होता है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १८९

और अर्थ कहते हैं जो झूठ करे सो अनृतंकृत है अर्थात् कन्या देकर कया वाक्य. दान देकर कहे कि मैंने कन्या नहिं दित्ता तिस कन्यादाताको हरति धातुको द्विकर्मक होणें जो कन्यागृहीता है सो अनृतंकृत कया कन्यादाताकी कन्याको हरता है तिसको. वो अर्थ है अर्थत् उसको कन्या हरणका पाप नहिं होता ॥ इसमें पंचमीके अर्थको अ मुख्य कर्मता है इसमें उदाहरण देते हैं जैसे वृक्षमिति कोई पुरुष वृक्षमें फलोंको उतागता है इहां वृक्ष जो है अमुख्यकर्म सो पंचमीके अर्थको देता है और गौ जो है अमुख्य कर्म सो पंच

यद्वाऽनृतंकरोतीत्यनृतंकृत् कन्यांदत्त्वा न दत्तेयमित्यपलापी कन्यादाता तमनृतंकृतं कन्यादातारं हरतेर्द्विकर्मकत्वात् ॥ यः कन्यागृहीता अनृतंकृतं कोर्थः कन्यादातुः कन्यामिति शेषः कन्यां हरति तस्य कन्याहरणमस्तंयस्ते यपापहीनमित्यर्थः ॥ अत्रामुख्यकर्मणः पंचम्यर्थत्वात् वृक्षमवचिनोति फलानि ॥ गांदोग्धिपय इति वत्सुष्टुक्तत्वात् ॥ शूलपाणौ अत्रापि मनुयांगी श्वरोक्तसामान्यप्रायश्चित्तचतुष्टयादिना विकल्पावोध्यः ॥ इति स्तेयप्रायश्चित्तमष्टात्रिंशत्कम् ॥ ३८ ॥ ॐ ॥

मीके अर्थको देता है इहां दोनोहि कर्म हैं वृक्षको अमुख्य कर्मता है और फलोंको मुख्य कर्मता है (गांदोग्धिपयः) इसकी न्याई जैसे कोई मनुष्य गोसे दूध दोहन करता है और शूलपाणिके वनाए हुए ग्रंथ विष ऐसा विचारकीता है कि अर्थात् शूलपाणि इसजगामनु और याज्ञवल्क्यकके कथित जो सामान्य व्रत चतुष्टय अर्थत् चार व्रत तिस करके विकल्प जानणा चाहे इस प्रायश्चित्त को करे चाहे दूसरेको करे एह चोरी करणका प्रायश्चित्त समाप्त होया ॥ ३८ ॥ ॐ ॥

११० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०१२ ॥ टी०भा० ॥

अथ ऋणके ना दूर करणेंमें प्रायश्चित्त कहतेहैं तत्रेति तिसमें एकऋण दूसरेके द्रव्यको ग्रहणकर्के तिसके ना देणेंमें उत्पन्नहोताहै एकप्रकारणहै और ब्राह्मणदेवता पितर और ऋषिइनोंतीनों ऋणों कर्के ऋणवालाहोताहै तिनमे यज्ञकर्के देवताका ऋण और दूसरापुत्रोत्पत्ति कर्के पितरोंका ऋण और ब्रह्मचर्यकर्के ऋषियोंका ऋणदूरहोताहै इस श्रुतिमें कहेहोए तीनऋणमिलाकर्के चारप्रकारका ऋणहोताहै इसके ना दूर करणेंविषे प्रायश्चित्तहै अपराकर्ममें कहतेहैं ऋणकेप्रसंगकर्के ऋणमिति यज्ञ प्रजा अध्ययन इनांके ना दूरकरणेंविषे तैसेही पुत्र और पौत्रनें ऋणदेणाचाहिए इत्यादि धर्म शास्त्रविहित जो ऋणदूर करणेंमें आज्ञाहै तिसऋणके ना दूरकरणेंविषे शक्तिके अनुसार गोवध

अथऋणानपाकरणेप्रा० तत्रपरद्रव्यंगृहीत्वाऽप्रदानात् जायमानोब्राह्म
णस्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवान्जायते यज्ञनदेवेभ्यः प्रजयापितृभ्योब्रह्मचर्येणऋ
षिभ्य इति श्रुतेश्चतुर्धर्णेभवति । एतस्यानपाकरणे अपराकृतं ऋणं प्रस्तु
त्य यज्ञप्रजाध्ययनानामकरणं तथापुत्रपौत्रैर्ऋणं देयमित्यादि धर्मशास्त्र
विहितमृणापाकरणं तस्यचानपाकरणे शक्त्यनुसारेण गोवधप्रायश्चित्त
चांद्रायणादीनां साधारणोपपातकप्रायश्चित्तानांचैकंकार्यम् । तत्रव्यतिक्रम
कालाल्पत्वभूयस्त्वाद्यपेक्षयातद्विशेषोध्यवसेयः प्रायश्चित्तांतरमप्यत्रम
नुतोक्तम् ॥ इष्टिवैश्वानरीचैवनिर्घपदब्दपर्यये कृतानांपशुयज्ञानांनिष्कृ
त्यर्थमसंभव इति १

प्रायश्चित्त चांद्रायणादि और साधारण जो उपपातकोंके प्रायश्चित्त तिनमेंसे एक प्रायश्चित्त
करण योग्यहै ॥ तिनविषे उल्लिखितकालकी अप्यवतां बहुवतादि जाणकर तिनकी अपेक्षा क
र्के तिनका विशय जानणे योग्यहै अर्थात् जिस ऋणको देणाथा तिसके ना देणेंमें थोड़ा काल
होवेता थोड़ा प्रायश्चित्त देणा और बहुतकाल होवे तो बहुतप्रायश्चित्तदेणा ॥ इस विषे और
प्रायश्चित्तभी मनुजीने किहाहै इष्टिमिति जेकर ऋणके ना देणेंमें वर्ष व्यतीत होजावे तो
वैश्वानरी नाम इष्टि क्या यज्ञ करे कृत क्या विहित जो पशु यज्ञ तिनकी निष्कृति बास्ते प्राय
श्चित्तके ना होणेंतें जेकर प्रायश्चित्तहोजावे तो इनांको ना करे १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १९१

अब पूर्व श्लोकका अर्थ कहते हैं अर्द्धपर्यये क्या वर्ष के अन्तविषे कृतानं क्या जिनायज्ञांका प्राग्भ किया है तिनांके ना करणे में वैश्वानरी इष्टि करे एह कैयोंका मत है परंतु जो निस्य यज्ञ है तिनांका ग्रहण करणा एह बात युक्त है असंभवे क्या जिनका अधिकार है कि वर्ष वर्ष में यज्ञ करणा तिसके ना करणे में और जान कर्के और नजान कर्के और किय जो पाप तिनके प्रायश्चित्तके अभाव में ॥ इस में प्रजापतिजी भी कहते हैं कि जद वर्ष के अंतमें सोम यज्ञ ना होवे तां चांद्रायण ब्रतकरे तैसेहि जैसाजैसा अधिकार होवे तैसें वर्ष गणना कर्के क्या इसन इतने वर्ष यज्ञ नहि किया इसकों इतनेहि चांद्रायण करणे चाहिए और

अर्द्धपर्ययेसंवत्सरांते कृतानांप्राग्भानामितिकेचित् नित्यतया कृतानामि
तितुयुक्तम् असंभवे ज्ञाताज्ञातपापानांप्रायश्चित्ताभावे । प्रजापतिः समां
तेसोमयज्ञानां हानौ चांद्रायणं चरेदिति । तथाचाधिकारोत्तरं वर्षगणनयाका
माकामयोस्त्रैमासिकचांद्रायणादीनियोज्यानि अतश्च प्रतिसंवत्सरंसोमः
पशुः प्रत्ययनंतथा कर्तव्याग्रयणेष्टिश्च चातुर्मास्यानि चैव हि १ एषामसंभ
वे कुर्यादिष्टिवैश्वानरी द्विज इति याज्ञवल्क्यीयमपिसोमाद्वितीयादिवर्षेष्व
ननुष्ठानं वेदितव्यम् इत्यृणानपाकरणे प्रायश्चित्तम् ३९ • ॥

इच्छासे करणेमें त्रैमासिक और न इच्छामें केवल चांद्रायण करणे योग्य है ऐसे और भी जानणा इस कारणमें वर्ष वर्षमें सोम यज्ञ पशुयाग प्रत्ययन क्या मकर कर्केटमें आग्रयणेष्टि क्या जद नवान्न भक्षण करणा तो प्रथम इष्टि करणी और चातुर्मास्ययाग करणा इनके ना करणेमें द्विज क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य वैश्वानरनामक जो इष्टि तिसकों करे १ एह जो याज्ञवल्क्य प्रोक्त है सो सोम यज्ञादियाके द्वितीयादि वर्षोंमें ना करणेमें जानणा एह ऋणके ना दूर करणेका प्रायश्चित्त समाप्त होया ३९

१९२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

इस में उपरंत गणना विषे असच्छास्त्राधिगमन विवरण कीताहै इस विषे भी सामान्य उपपातकोंके प्रायश्चित्तजानणे (उपपातकशुद्धिः स्यात्) इत्यादि मन्वादियों का कथन कीता होयाजा नशा एह अमत् शास्त्रके पढ़नेका प्रायश्चित्त समानहुआ ४० ॥ ७ ॥ इसमें उपरंत कौशिल्यस्यच क्रिया एहपड्याहै अर्थात् ब्रह्मणको कुशीलतापापहै तिसका प्रायश्चित्तहै तिसविषे प्रायश्चित्त कह तेहें यमजी नटंति नटुआ नचण वाला तरखाण चमयार सुनयार स्थाणुक इसका अर्थ अजे कहणाहै आर नपुंसक वेड्या एह अभोज्यान्न कहेहैं अर्थात् इनांका अन्न भक्षण नहि करणा १ और गायन करणवाला और लुहार सोची जुलाह तेली धोव्वा धूर्त चौर २ ध्वजी और माला कर्क जीविका करणवाला और दूद्रको पडाने वाला अथवा यज्ञकराणें वाला घमयार

एतदनंतरंगणनायामसच्छास्त्राधिगमनंवितृतम् अत्रापिसामान्योपपातक प्रायश्चित्तम् ॥ उपपातकशुद्धिः स्यादित्यादिमन्वाद्यभिहितंवोध्यम् ॥ इत्यसच्छा-प्रा-॥ ४० ॥ ७ ॥ अनंतरंकौशिल्यस्यचक्रियेतिपाठितं तत्रप्रा यश्चित्तमाहयमः ॥ नटनर्तकतक्षाणश्चर्मकारःसुवर्णकृत् स्थाणुकापंड गणिकाअभोज्यान्नाः प्रकीर्तिताः १ गांधर्वोलोहकारश्चसौचिकस्तनुवाय कः ॥ चक्रोपजीवीरजकः कितवस्तस्करस्तथा २ ध्वजीमालोपजीवीचशू द्राध्यापकयाजकौ ॥ कुलालश्चित्रकर्माचवार्दुपिश्चर्मविक्रयी ३ समर्धप ण्यमाहव्यमर्ध्वयः प्रयच्छति ॥ सर्वैवार्दुपिकोनामयश्चवृद्ध्याप्रयोजये त् ४ वृथाश्रमीवृथादाताआश्रमाणांचभेदकः ॥

चित्र कारी करण वाला और बहुतयाज कर्क उपजीविका करण वाला और चर्म के बेचणें वाला ३ वार्दुपिक शायका अर्थ कहनेहैं समर्धमिति और जो पुरुष सगते समय वि षे अन्नादि स्नान करे और तिसनूं मढंगे समय विषे बेचे सो पुरुष वार्दुपिक नाम कर्क किहाहै जो वृद्धि कर्क जीविका करे ४ और वृथा जो आश्रम धारण वाला अर्थात् वेदवाह्य जटादि धारण करण वाला और वृथा क्या पित्रादि विष्णु इनांके निमित्ततें ही विना जो पुरुष दान करण वाला और जो पुरुष आश्रम जो वानप्रस्थादि तिनांका भेद करण वाला अर्थात् विरोध करण वाला ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १९३

पुण्यस्थेने पुण्यको जो वेचनवाला पुण्य और योनिसंकरकया व्यभिचारी अथवा अन्वजातिमे विवाह करणवाला ५ और रंगकर्के उपजीविका करण वाला अर्थात् ललानी और पातके ना मृत होयां २ जो आगें उत्पसहेवे सो कुंड किहाहे तिसका अन्नभक्षण करणवाला और वीरह कया अग्नि के त्याग करण वाला और गुग्गुनिग कया दंडादिकर्के मुखको शासना करण वाला और दैव और गग्द कया विपदेण वाला और रूपकर्के जीविका करणवाला अर्थात् बहुरूपि या और चुगकी करणवाला ६ और मौनिक और पार्ष्णिग एह सभ निषादके कया नीचजा तिकेतुचवहे इनोंसंपूर्णोंक कर्मविषे जो ब्राह्मणमोहनें सदावर्त्तमानहोवे ७ तिसब्राह्मणनें प्रायश्चित्त भी कीताहे तां भी सो त्यागणें योग्यहें इनोंपूर्वोंक कर्मविषे युक्त जो ब्राह्मण सो संपूर्ण

पुण्यस्याविक्रयीषश्चयोनिसंकरकस्तथा ५ रंगोपजीवीकुंडाशवीरहागुरु गुप्तिगः भिक्कचगरदश्चैवरूपाजीवीचसूचकः ६ मौनिकः पार्ष्णिगश्चैवनि पांडेनसमाः स्मृताः कर्मस्वतेपुयोमोहाद्ब्राह्मणावर्त्ततेसदा ७ प्रायश्चित्तपि चरितं परिहार्यं भवेत्सहि एतंब्राह्मणचांडालाः सर्वे ब्रह्महणः किल ८ तस्मा द्वेषचपित्र्यचवार्जितास्तत्त्वदर्शिभिः एतन्नामवसर्वेषां प्रव्यापितुं मार्गतां भेक्ष्यान्नमुपभुंजानेद्विजश्रधांश्चायणंचरेत् ९ स्थाणुकाश्च भ्रातृमतीति मदनः वृथाश्रमविदवाह्यजटादिधारणकर्ता आश्रमाणां तु भेदकः तद्विरुद्धकारित्वा त् ॥ आश्रमधर्महिंसकइतिकल्पतरौ ॥

चांडालजानणें और ब्रह्महत्याकरणवालेके नृचवहे ८ तिसकारणनें एह ब्राह्मणपंडितोंने दैवकर्म जा वालवैश्वदेवादि और पित्रकर्म जो आत्मादि निर्णेमें जितकहेहें जेकर एहसंपूर्ण ब्राह्मण प्रायश्चित्तकी उल्लाकरें तो भिक्षाके अन्नको भक्षण करदा होया द्विज चांद्रायण व्रतकर तां शुद्धहोता ९ अब पूर्वोक्त श्लोकोंमे जो कछिन ० पढ़हे तिनोको अर्थ स्पष्टकर्के कहनेहें स्थाणुके ति स्थाणुका नाम भ्राता रहित स्त्रीकाहे एह मदननें किहाहे और वृथाश्रमी कया वेदवाह्य जो जटादि धारण करणवाला और आश्रमका भेद करण वाला अर्थात् तिनोके साथ विरोध करणवाला अथवा आश्रम जो वानप्रस्थादि तिनोका जो धर्म तिसका नाश करण वाला एह कल्प तरुनें किहाहे

१९४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र०१२ ॥ टी०भा० ॥

श्रीर योनिसंकरक नाम व्यभिचारीकाहै और कुंडाशी नामचौट ६४ पा अन्नके भक्षणकर
वालेकाहै एह शूलपाणिजीनें किहाहै ॥ अब कुंडका और लक्षणकहतेहैं पयाविनि पतिके जी
विवहोंयां जो जासैं उत्पन्न होवे सो कुंड किहाहै और पतिके मृत होयां जो जासैं उत्पन्न होवे
सो गोलक किहाहै जो दनां दोआंका अन्न भक्षण करे सो बुद्धिमानोंने कुंडाशी कियाहै
१ एह मनु जीका फिहाहोया जानणा ॥ और बोगहा नाम अग्नित्याग कर्ण वालेकाहै ॥ और
गुरुगुप्तिग नाम दंडादिकके गुरुको शासना कर्णवालेकाहै एह प्राचीनोंका मतहै अथवा गुरु
के साथ छल कर्ण वाला एह मदनका मत है ॥ और रूपजीवी नाम और वेश करणे वाले
का है ॥ अथवा ताम्रादियोंका स्वर्णादि तुल्य रूपकरणवाला ॥ और सूचक नाम चुगलका है

योनिसंकरकोव्यभिचारी । कुंडाशीचतुःपटिपलान्नभक्षकइतिशूलपाणिः
युक्तस्तु ॥ पय्यो जीवतिकुंडस्तुमृतेभर्त्तरिगोलकः यस्तयोरन्नमश्नातिसकुं
डाश्चुच्यतेदुधैरितिमनूक्तएव ॥ वीरहाऽग्नित्यागी ॥ गुरुगुप्तिगोदंडादिनागु
रुशास्तेतिप्राच्याः ॥ गुरुनिहवकारीतिमदनः ॥ रूपजीवीवेशकरः ॥ ता
म्रादीनांस्वर्णादिसदृशरूपकारीवा ॥ सूचकःपिशुनः ॥ सूना घातस्थानं
तेनजीवत्यसौसौनिकः ॥ अत्रापिकौशीलव्याद्यर्जितधनत्यागइत्यादयःप
रिग्रहदुष्टभोजनंप्रोक्ताअपिकुशीलवाबोध्याः ॥ अथगुरुद्विष्टपुविष्णुः ॥
समुत्कर्षान्तगुरोश्चाब्दीकर्त्तिर्वधेतदक्षारेणच मासंययसावर्त्ततेति ॥ इदंच
मतिपूर्वम् ॥ अक्षारणमभिशापः ॥

और सूना नाम माण वाला स्थान तिस कर्के जा जीविका करताहै सो सौनिक कियाहै इस
विषे भी कौशीलव्यादिकर्के अर्जित क्या उकठा कोता जो धन तिसका त्याग करणा इत्या
दि परिग्रहदुष्टभोजन विषे कहेभी हैं तोभी कुशीलव जानणे अर्थात् इनका नाम कुशीलवभीहै
अब गुरुके द्वेषी विषे प्रायश्चित्त विष्णु जी कहते हैं समिति गुरुके साथ बहुत झूठ कहणे वाला
और कपट करण वाला और तिसके अक्षारण विषे एक महीना जल पान करे तो शुद्धहोताहै
एह इच्छा पूर्व कर्ण वाले विषे जानणा ॥ और अक्षारण नाम अभिशापका है अर्थात् गुरु को
गाली देणे वाला पुरुष पूर्वोक्त व्रत करे ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १९६

अब इसीमें और विशेष शंखजी कहते हैं क्षिप्त्वेति जो पुरुष आग्निविषे अशुचिद्रव्य यथा मलमूत्रादिपावे और बिनीतुं जो जलविषे पावे तो एक महीना व्रतकरे और तैसेहि गुरुकी आज्ञा ठहरे व्रतकरे तो भी एही व्रतकरे तो शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अब और प्रकारका सुमंतुजी कहते हैं देवर्षिंति देवता ऋषि ब्राह्मण आचार्य माता पिता गजा इनांके उपर शुके अथवा इनांको गाली देवे तो अग्निकर्के अपना जिह्वाको दग्धकरे और सुवर्ण दानकरे ॥ और अज्ञान पूर्वक जो गुरुके साथ किसी बातका इठकरणा निमविष वसिष्ठजी कहते हैं गुरोर्गतिं जो पुरुष गुरुके साथ किसी बातका इठ करता है सो वानं १२ रात्रिका कच्छू व्रतकरे और सबस्र स्नान कर्के गुरुको हि प्रसन्न करे तो शुद्ध होता है ॥ अब इसीमें और विशेष ब्राह्मवल्क्यजी कहते हैं गुरुको तुं शब्द कर्के अ

॥ शंखः ॥ क्षिप्त्वाग्नावशुचिद्रव्यंतदेवांभसिमानवः ॥ मासमेकंव्रतंकुर्यादपाक्रम्य तथागुरुम् १ अशुचिमलमृत्रादि ॥ सुमंतुः ॥ देवर्षिब्राह्मणाचार्यमातृपितृनरेन्द्राणां प्रतिष्ठीयते आक्रोशनेचालमुकेन जिह्वां दहेद्विरप्यंदद्यात् ॥ अमतिपूर्वगुरोर्निर्वंधतु वसिष्ठः ॥ गुरोर्गलीकनिर्वंधकच्छूद्वादशरात्रकम् ॥ चरित्वासचैलं स्नातो गुरुप्रसादात्पुनो भवति ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गुरुंतुकृत्य हुंकृत्य विप्रं निर्जित्य वा दतः ॥ बध्वा वा वाससाक्षिप्रं प्रसाद्योपवसेद्विनम् १ रहस्यतिनातूनरार्थं ॥ ताडयित्वा तृणनाथप्रसाद्येव विशुद्ध्यतीति पठितम् ॥ इदं तु प्राग्ब्रह्मचारिप्रायश्चित्तप्रसंगेऽपि दर्शितम् ॥ इदमकामतः ॥ कामतस्तु शंखलिखितं ॥

यथा हुं शब्द कर्के कहे और ब्राह्मण नुं वादने क्या शास्त्रार्थीदि कर्के जीत लेवे अथवा शो घृहि वस्त्र कर्के वस्त्र लेवे तो उस ब्राह्मणको प्रसन्न करे और एक दिन उपवास व्रत करे तो शुद्ध होता है १ और बृहस्पतिजीने उस पूर्वोक्तश्लोकके उत्तरार्द्धविषे ऐसा पाठ किहा है ताडयित्वेति तृण कर्के जो पुष्प ब्राह्मणको ताडना करता है सो तिस को प्रसन्न करे तो शुद्ध होता है ॥ एह प्रायश्चित्त पीछे ब्रह्मचारिके प्रायश्चित्त विषे भी प्रसंग द्वारा दिखाया है ॥ एह अज्ञानपूर्वक करणें विषे जानणा ॥ और इच्छा पूर्वक कर्णें विषे शंख लिखत स्मृति में कहते हैं ॥

१९६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

आक्रोशति दुर्वचन कहेंमें और झूठ बोलें विषे एक रात्रि उपवास व्रत करे
अथवा दुर्वचन में एक रात्रि उपवास करे और झूठ बोलनेमें त्रय रात्रि उपवास व्रत करे ॥
और जो वसिष्ठ जीने कहाहै सो कहेंतेहें आचार्यइति आचार्य माना पिता इनांको जो दुःख
देषे वाला है सो इनांको प्रसन्नकरे सो पापते रहित होताहै सो एह अज्ञानते दुःखदेषे वाले
विषे जानणा और इहां हंतार इतपदमें अल्प दुःखदेषे वालोका ग्रहणकरणा ॥ जो आपस्तम्ब
जीनें कहाहै सो कहेंतेहें अनेति नाहें जो दुर्वचनके योग्य माता पिता गुरु इत्यादि इनांको दुर्व
चन कहण वाला त्रय रात्रि अक्षर लूणका भोजन करे और शूद्र अथवा स्त्री दुर्वचन कहे तो

आक्रोशानृतवादे एकरात्रं त्रिरात्रं चोपवासइति । यत्तु वसिष्ठः । आचार्यमातृपि
तु हंतारस्तत्प्रसादादस्तपापाइति तदप्यज्ञानतः हंतारोल्पतरदुःखकराः । य
त्वापस्तम्बः । अनाक्रोश्यमाक्रोश्यत्रिरात्रमक्षरलवणभोजनम् शूद्रस्य सप्तरा
त्रमभोजनं स्त्रीणां च तदपि ज्ञानतः । इति कौशिल्यप्रा-४१० एतदग्रे धान्य
कुप्यपशुन्तेयमिति पठितं विवृतं च तत्प्रायश्चित्तं पूर्वोक्तस्तेयप्रकरणे एव
प्रसंगतः प्राक्तम् अयं भावः स्तेयं हि स्वर्णमनुष्यधनादिस्वल्पधान्यादिरूपे
रुतमनव्यमाधमोपाधिभिस्त्रिधा विभक्तं त्रिधा प्रायश्चित्तयोग्यम् तत्राधमो
प्यमंतरोपाधिभिस्त्रिधा ज्ञेयः ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ इति धान्यादिस्तेयप्रा

सप्त ७ रात्रि भोजन ना करे सो एह ज्ञानते करण विषे जानणा ॥ एह कौशिल्यका प्राय
श्चित्त समाप्त भया ४१० इसके बादमें धान्य कुप्य पशु इनांका चुराणा एह पड्याहै और विवर
ण भी उभयथा कीताहै तिनका प्रायश्चित्त पूर्वोक्त स्तेय प्रकरण विषे हि प्रसंगते किहाहै इसमें
ऐसा विचारहै कि स्तेय जो है सो स्वर्ण १ मनुष्य धनादि २ स्वल्पधान्यादि ३ रूप कर्के उच
म माधम अधम उपाधि कर्के त्रय प्रकारका विभाग कीताहै सो एह त्रय प्रकारका हि प्रायश्चि
त्त करण योग्यहै तिन विषे भी अधम जो है सो अर्वांतर उपाधि कर्के त्रय प्रकारका जानणा
४२ ॥ ४३ ॥ ४४ एधान्यादि कौशिल्यका प्रायश्चित्त समाप्त भया ॥ ७ ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ १९७

इसमें उपरंत मद्यपस्त्रीनिषेवणं एह किहाहै तिस विषे उपपातकशुद्धिः स्यात् इत्यादि जो सामान्य प्रायश्चित्त है सो जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जानणे योग्य है । ४५ ० इसमें उपरंत पाँछे गणना विषे स्त्री शूद्र विट् क्षत्र वध एह किहाहै तिसका प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहै तुरीय इति क्षत्राके मारणं विषे ब्रह्महत्याका चौथा हेसा प्रायश्चित्त करे ॥ और वैश्यके मारणं विषे शूद्रमा हेसा ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करे । और शूद्रके मारणं विषे सोलवा १६ हेसा जानणा १ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहै तुरीय इति ब्रह्महत्याका चारों १२ वर्षका प्रायश्चित्त है तिसका चतुर्थ हेसा त्रय वर्षका प्रायश्चित्त जानणा इस प्रायश्चित्तको बड़ा होणेतें अपणी

अनंतरंमद्यपस्त्रीनिषेवणमित्युक्तम् । तत्रोपपातकशुद्धिःस्यादित्यादिसामान्यप्रायश्चित्तंजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षया व्यवस्थापनीयम् ॥ ४५ ० एतदनंतरंगणनायां स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध इतिपठितं तत्प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ तुरीयोब्रह्महत्यायाः क्षत्रियस्यबंधस्मृतः वैश्येऽष्टमांशोवृत्तस्थेशूद्रजैयस्तुषोडशः १ तुरीयोद्वादशवर्षिकस्य चतुर्थीशस्त्रिवर्षात्मकः ॥ इदंगुरुत्वाद्वृत्तस्थक्षत्रियस्यकामतोवधेबंध्यम् ॥ एवमेतादृशवैश्यबंधसार्धवर्षम् तादृक्शूद्रबंधनवमासिकम् ॥ १ ॥ अकामतस्तुराजन्यंविनिपात्यद्विजोत्तमः वृषभैकसहस्रागादद्यात्सुचारितव्रतः ॥ १ ॥ वृषभेणाधिकसहस्रयासांगवांता आत्मशुद्ध्यर्थं ब्राह्मणेभ्योदद्यात् ॥ १ ॥

वृत्तिमें स्थित जो क्षत्री तिसके डच्छाते मारण विषे जानणा ॥ ऐसा ही जो अपणी वृत्तिमें स्थित वैश्य तिसके मारण विषे डेढ़ वर्षका प्रायश्चित्त करे ॥ और ऐसेहि शूद्रके मारण विषे न व ९ महानेका प्रायश्चित्त करे १ ॥ और जो ब्राह्मण अज्ञानते क्षत्री को मारे सो एक बैल हजार गौका १००० दान करे पर प्रथम तिस मारणका पूर्वोक्त जो प्रायश्चित्त है तिसको कर्के ॥ १ ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के लिखतेहैं वृषेति वृष क्या बैल कर्के अधिकहै हजार १००० जिनां गौआं का तिनां गौआंको अपणी शुद्धि करण वास्तें सो ब्राह्मण ब्राह्मणोंके ताई दे देवे १ ॥

१९८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अयमिति त्रय वर्ष नियत होया २ और ग्राममें दूर वृक्ष मूल विषे वास करदा होया और जटा धारणकर्के ब्रह्महत्याकाव्रतकरे ॥ २ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यदेति इंद्रियों को गोकर्के जटा वाला होया २ ग्राममें दूर वृक्षके मूलविषे निवास करे ब्रह्महत्या वाले को जो किहाहै कि ब्रह्महत्या करण वाला पुरुष वागं १२ वर्ष व्रत करे इत्यादि कर्के सोई व्रत त्रय वर्ष को परंतु इसमें ऐसा (प्रण) है कि इस पूर्वोक्त श्लोकके पूर्वार्द्ध मेंहि किहाहै ब्रह्महत्याका व्रत करे उसी वागं ब्रह्महत्याकरण वालेको ग्राममें दूर रहना इत्यादि प्रकार सिद्ध हो गया क्यों पीछे किहाहै कि (वसन्तदूरतरे ग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः) ॥ इसके कहणें पुनरुक्ति दोषहै(उत्तर) ब्रह्महत्या वालेको शव शेरके ध्वजादि धारण भी कहेंहि इसके निषेध वास्ते एह वचनहै उसमें पुनरुक्ति दोष नहि है ॥ २ ॥ एतदिति इसीव्रतको वर्षरोजतक ब्राह्मण करे जेकर

अयमं चरेद्द्वानियतां जटी ब्रह्महणो व्रतम् वसन्तदूरतरे ग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः २ अयमिति यद्वा संयतां जटावान् ग्रामाद्विप्रकृष्टवृक्षमूले कृतनिवासो ब्रह्महणि यदुक्तं ब्रह्महाद्वादशसमा इत्यादि तद्वर्षत्रयंकुर्यात् ॥ अस्य शवशिरोध्वजधारणादिधर्मनिवृत्त्यर्थत्वात् पुनरुक्तिः ॥ २ ॥ एतदेव च रेदं प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमैः ॥ प्रमाप्य वैश्यं वृत्तस्थं दद्याच्चैकशतंगवाम् ३ एतदेव द्वादशवर्षिकव्रतमकामतः साध्याचारं वैश्यं निहत्य वर्षमेकं ब्राह्मणादिः कुर्यात् ॥ एकाधिकं वा गोशतं दद्यात् ॥ ३ ॥ एतदेव व्रतं कृत्स्नं पणमासान् शूद्रहाचरेत् वृषभैकादशावापि दद्याच्चिप्रायगाः सिताः ॥ ४ ॥ एतदप्यकामतः । इदमेव व्रतं शूद्रहापणमासांश्चरेत् ॥ वृषभैकादशोयासां गवां ता शुक्लवर्णा ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ४ ॥

वृत्तस्थ वैश्य को अर्पेत् अपने धर्म विषे स्थित होए वैश्यको मारे अथवा एक कर्के अधिक सौ गो दान करे ॥ २ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं एतदिति इसी वागं १२ वर्ष के व्रत को अज्ञान तें सुंदर आचार वाले वैश्य को मार कर्के एक वर्ष व्रत ब्राह्मणादि करे अथवा एकतें अधिक सौ गोका दान करे ॥ ३ ॥ एतदिति इसी व्रतको छेड़ महीने करे जो शूद्रकी हत्या करे अथवा वृषभ क्या बैलहै ग्यारवां जिनां विषे ऐसी यांश्चित गोआं ब्राह्मण के ताई दानकर्के देवे ॥ ४ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं इस व्रतको भी अज्ञानतें शूद्र हत्या करण विषे जानना ॥ इदमिति इसीपूर्वोक्त व्रत को शूद्र हत्या करण वाला पुरुष छेड़ महीने तक करे अथवा बैलहै ग्यारवां ११ जिनां विषे ऐसीयां चिटीयां दश गोआं ब्राह्मण के ताई देवे तो शुद्ध होताहै ४

॥ श्रीरणवीर करित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी भा० ॥ १९९

अब इसमें याज्ञवल्क्य जी भी कहते हैं ऋषभेति जो पुरुष क्षत्रियों मारता है सो एक बैल और हजार गौका दान करे अथवा ब्रह्महत्याका व्रत जो बागं १२ वर्षका है तिसकों ३५ वर्ष तक करे ॥ १ ॥ और वैश्यको हत करणवाला पुरुष एकसौ गौका दानकरे और इसी प्रकार शूद्रको हत करणवाला छे ६ महीनेका व्रतकरे अथवा दश १० गोआका दान करे ॥ २ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं एकमिति एक है अधिक जिन हजार विषे सां एक सहस्र किहा है और बैल है एक जितों गोआं के हजार विषे अधिक निहा गोआंको क्षत्रिके हत करे विषे देवे अर्थात् १ हजार गौ देवे और एक साथ बैल देवे अथवा ब्रह्महत्याका व्रत ३५ वर्ष करे ॥ और वैश्यको हत करणवाला ब्राह्मण ब्रह्महत्याका

याज्ञवल्क्योपि ॥ ऋषभैकमहस्त्रागादद्यात्क्षत्रवधेपुमान् ब्रह्महत्याव्रतंवा पितृत्सरत्रितयंचरेत् १ वैश्यहाऽब्दंघरेदेतद्ब्रह्माद्वैकशतंगवाम् पणमामा नूशूद्रहाप्येतद्वैतदूदद्याद्दशाथवा २ एकमधिकंयस्मिन्महस्त्रतद्वैकसहस्रम् तस्यपूरणे एकसहस्रः । ऋषभः एकमहस्त्रायासांगवांता ऋषभैकमहस्त्रा । क्षत्रवधदद्यात् । अथवा ब्रह्महत्याव्रतं वर्षत्रयंचरेत् । वैश्यहात्येतद्ब्रह्महत्या व्रतमेकमब्दंचरेत् । गवांरुपभैकशतंवादद्यात् ॥ शूद्रघातितु ब्रह्महत्याव्र तंपणमामांश्चरेत् ॥ यद्वा दशधेनूरचिरप्रसृताः सवत्सादद्यात् । इदमकाम तो जातिमात्रक्षत्रियादिवधविषयम् ॥ किंचास्मिन्नेवविषयस्मृत्यन्तरम् ॥ क्षत्रियस्यवधंकृत्वाचरेच्चान्द्रायणत्रयम् ॥ वैश्यस्यतुद्वयंकुर्याच्चशूद्रस्यै न्द्वयमवत्विति १ ॥

व्रत एक वर्ष तक करे अथवा एक बैल सो १०० गौका दान करे ॥ और शूद्रको मारण वाला पुरुष ब्रह्महत्याका व्रत जो बागं १२ वर्षका है तिसका छे ६ महीनेका व्रत करे अथवा थोड़े दिनकी सूई होई बले सहित दश १० गोआं दान करे तो शुद्ध होता है ॥ यह प्रायश्चित्त अज्ञानतः जातिमात्र क्षत्रिय वैश्य शूद्रको मारण विषे जानणा योग्य है ॥ कुलक और भी उसी विषय विषे किसी स्मृति से कहते हैं क्षत्रियस्येति जो पुरुष क्षत्रिको मारता है सो ३५ वर्ष चांद्रायण व्रत करे और वैश्यका मारण वाला दोर चांद्रायण व्रत करे और शूद्रको मारण वाला एक चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होता है १ ॥

२०० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

अब उसमें मिताक्षरकार भी लिखते हैं वृत्तस्थिति वृत्तस्थ क्षत्रिके वध करणें विषे साडे ४ चार वर्षका व्रत करे ॥ उस जगह वृत्तशब्द कके आत्मगुणादि जानणे ? अब और वृत्तशब्द का अर्थ कहते हैं गुर्विति गुरुही पूजा करणी और लज्जा करणी और पवित्रता मत्त कहणा और इन्द्रियोंको रोकणा और हितोंको प्रेरणा एह संपूर्ण वृत्त कहे हैं १ जो वृद्धहारीत जीका वचन है सो कहते हैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण क्षत्रिकों हत करे तो ले ६ वर्षका प्रायश्चित्त करे ॥ और वैश्यका वध करे तो इसी प्रकार त्रय वर्षका व्रत करे और ब्राह्मण शूद्रका वध करे तो एकवर्षका व्रत करे और एक बाल दश १० गोआंका दान करे तो शुद्ध होता है १ परंतु सो इह प्रायश्चित्त इच्छाते वधकरणेविषे जानणा ॥ और वेदपाठी क्षत्रिया दि के वध विषे कहते हैं

अत्रमिताक्षरा वृत्तस्थक्षत्रियेतुमार्धचातुर्वार्षिकंकल्प्यम् । वृत्तशब्देनचात्म गुणादिकमुच्यते । गुरुपूजापूणाशौचमत्यमिन्द्रियनिग्रहः प्रवर्तनंहितान चतसर्ववृत्तमुच्यते इतिस्मरणात् ॥ यत्तु वृद्धहारीतवचनम् ब्राह्मणः यंहत्वापड्यर्पाणिव्रतंचरेत् वैश्यंहत्वाचरंदेवव्रतंत्रेयार्पिकंद्विजः ॥ शूद्रंहत्वा चरेद्वर्षमृषभैकादशाश्रया इति १ तत्कामकारविषयम् श्रोत्रियक्षत्रादिव धेतु तुरीयानक्षत्रियस्यबंधब्रह्महणिव्रतम् अर्धवैश्यबंधकुर्यात्तुरीयवृषल स्यात्विषयविषय वृद्धहारीतनोक्तं द्रष्टव्यम् । यत्तु वसिष्ठवचनम् ब्राह्मणोराजन्यं हत्वाऽष्टौवर्षाणिव्रतंचरेत् ॥ पड्वैश्यम् ॥ त्रीणिशूद्रमिति ॥ तदपिहारीताये नसमानविषयम् ॥

तुगीति क्षत्रिके वध करणें विषे ब्रह्महाराके व्रतका चतुर्थ पाद न्यून करे अर्थात् १ नव वर्षका व्रत करे और वैश्यके वध विषे अर्धव्रतकरे और शूद्रके वध विषे चौथा हेसा व्रत करे १ एहभी वृद्ध हारीतका कथन कीता होया जानणा ॥ अब जो वसिष्ठ जी का वचन है सो कहते हैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण क्षत्रिका वध करे तो अष्ट ८ वर्षका व्रत करे ॥ और वैश्यके हत करणें में ले ६ वर्षका व्रत करे ॥ और शूद्रके वध करणें विषे त्रय वर्षका व्रतकरे तो शुद्ध होता है ॥ सो एह भी प्रायश्चित्त वसिष्ठका कथन कीता होया हारीतके कथन कीते होएके तुल्य विषय विषे जानणा अर्थात् कामनाकके विषय विषे हि है और इसमे अधिकताका विषय अंग है ॥

॥ भीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २०१

और हारीतके वचन में जो क्षत्रि पद है तिस विषे किंचित् गुण उन इतना हि विशेष है ॥ और जेकर वेदपाठी है और अपरा वृत्तिमें स्थित है तद पूर्व जो वर्ण ब्राह्मणादि कहे हैं तिनमें जो वेद पढ़ने वाला होवे तिसके वचन करेण विषे आपस्तम्बजी का कथन कीता होया वारां १२ वर्ष का व्रत जानबे योग्य है ॥ और जेकर आरम्भ कीता है यज्ञका जिसने ऐसा क्षत्रियादि और वेदरहित होवे तिसके मारणविषे वचन है यागेति यज्ञविषे स्थित जो क्षत्रिवंश्य तिनके मारणविषे ब्रह्महत्या का व्रत करणा योग्य है ॥ और जेकर फेर यज्ञविषे स्थित क्षत्रियादि वेदपाठी होव तिसके मारण विषे गौतम जी कहते हैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणको राजा के मारण विषे छे ६ वर्षका प्राकृत ब्रह्मच

क्षत्रियेत्वीपदगुणन्यूनइत्येतावान्विशेषः ॥ यदा तु श्रोत्रियो वृत्तस्थश्च भवति तदा पूर्ववर्णनोर्वेदाध्यायिनं हत्वेत्यापस्तम्बोक्तं द्वादशवार्षिकं द्रष्टव्यम् ॥ यदा प्रारब्धयागः क्षत्रियादिरश्रोत्रियो भवेत्तस्मिन् व्यापादिते यागस्थक्षत्रविद्धातीचरे ब्रह्महाणि व्रतमिति द्रष्टव्यम् ॥ यदा पुनर्यागस्थक्षत्रियादिः श्रोत्रियो भवेत् तत्र व्यापादिते गौतमः ॥ ब्राह्मणस्य राजवधे पड़वार्षिकं प्राकृत ब्रह्मचर्यमृषभैकसहस्राश्वगादद्याद्वैश्यवधे त्रैवार्षिकमृषभैकशताश्वगादद्याच्छूद्रवधे सांवत्सरिकमृषभैकादशाश्वगादद्यादिति दानतपसाः समुच्चयमाह एतच्चा मतिपूर्वविषयम् ॥

यं करे और एक बैल हजार १००० गौ दानकरे ॥ और वैश्यके मारण विषे त्रयवर्षका व्रतकरे और एक बैल सौ १०० गौ दानकरे ॥ और शूद्रके मारण विषे एक वर्षका ब्रह्मचर्य भागण करे और एक बैल दश १० गौ दानकरे एह दान और तपका समुच्चय क्या ब्रह्मके साथ अधिक दान तपभी किहा है क्यों कि दोषकी अधिकतासे प्रायश्चित्तकी अधिकता केलिये ॥ इहा प्राकृत ब्रह्मचर्यका अर्थ पिछोकिहा है प्रथम जो गुरुकुलमें वासादि नियम साथ जो ब्रह्मचर्य है सो प्राकृत ब्रह्मचर्य है और एह प्रायश्चित्त अज्ञान पूर्वक जो मारण है तिसविषे जानणा योग्य है

२०२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब गौतम स्मृति में विशेष कहते हैं पूर्वोक्ति पिछलेकी न्याई अज्ञान पूर्वक चार वर्णोंके मारण विषे वागं १२ छे ६ त्रय ३ एक १ वर्ष व्रत करणें योग्यहैं ॥ तिनके अत विषे हजार गौं तिसते अर्द्ध और तिसते अर्द्ध और तिसते अर्द्ध गौ दान करे अर्थात् ब्राह्मणको मारे तो वागं वर्षका व्रत करके हजार १००० गौ दान करे ब्राह्मण क्षत्रीको मारे तो छे ६ वर्षका व्रत करके पंच ५०० सौ गौ दान करे और वैश्यके मारण विषे त्रय ३ वर्षका व्रत करके ढाई २५० सौ गौ दान करे और शूद्रके मारण विषे एक वर्षका व्रत करके १२५ सवा सौ गौ दान करे सबनां विषे क्रमते बचा अनुलोम क्रम करके जानणा आगेभी क्षत्रिको मारे तो ६ वर्षका और वैश्यको मारे तो व्रतवर्ष इत्यादि जानणा ॥ और प्रातिलोम्य क्रम ब्रह्महत्या प्रकरण विषे जानणा एह शंखस्मृति में किहा है एह बारां १२ वर्षका व्रत गौतम विषय का ही है अर्थात् अज्ञात विषय है

पूर्ववदमतिपूर्व चतुर्षु वर्णेषु प्रमाप्य द्वादश पट त्रीन्संवत्सरंच व्रतान्यादि
शेत् तेषामंतं गोमहस्त्रंततैर्यं तस्यार्धमर्धंच दद्यात् ॥ सर्वेषामानुपूर्व्येण
तिशंखस्मरणात् ॥ इदंचद्वादशवार्षिकंगौतमीयविषयमेव ॥ किंचिन्पू
नगुणे क्षत्रिये गुणाधिकयेर्वैश्यशूद्रयोश्चद्रष्टव्यम् ॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध
इत्युपपातकमध्येविशेषतएवपीठतत्वेनात्सर्गापवादन्यायगाचरत्वाभावा
दुपपातकसामान्यप्राप्तान्यपिप्रायश्चित्तान्यत्र योजनीयानि ॥ तत्र दुर्वृ
त्तक्षत्रियादौ कामतोव्यापादिते मानवेत्रेमासिकंद्वेमासिक चांद्रायणंच वर्ण
क्रमेण योज्यम् ॥

और थोड़े गुण वाला क्षत्री अधिक गुण वाला जो वैश्य शूद्र तिनको मारे तां भी वागं १२ वर्षका व्रत करे परंतु इसमें (स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधः) इह उपपातकोंके मध्य विषे विशेषतहि पढ़नें करके उत्सर्गोपवाद न्यायके अभाव होनेसे अर्थात् उत्सर्ग विधिते अपवाद विधि बलवान् होतीहै इस वास्ते इसमें अपवाद विधि कोई नहींहै इसरुके उपपातकोंके सामान्य प्रायश्चित्त उपपातकगुह्यः स्यात् इत्यादि मनु याज्ञबल्क्य जीके कथन कीते होए भी जोड़नें योग्यहैं ति स विषे खाटो वृत्ति करण वाले जो क्षत्रियादि तिनके इच्छते मारण विषे मनु जी का कथन कीता होया त्रय महीनेका व्रत करे और वैश्यके मारणविषे दो २ महीनेका व्रत करे और शूद्रके मारण विषे चांद्रायण व्रत करके शुद्धहोताहै इसी प्रकार बरस क्रम करके जोड़ने योग्यहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २०३

अब इन्हींमें पराशर जी कहतेहैं वैश्यमिति विकर्ममें स्थित और शूद्र के कर्म करने वाले वैश्य को ब्राह्मण मार कर्के चांद्रायण व्रतकरे और वो ३० मौआं दक्षिणा देवे उस विषे ब्राह्मण अपनित जानणा अथवा क्षत्रियादि भी जानें एह माधव जीका मतहै ॥ एह कामना कर्के कीते होए पाप विषे जानणा और अकाम तें बध कर्णें विषे पाज्ञवल्क्य जी के कथन कीते होए त्रय १ रात्रि उपवास व्रत के सहित एक बैल दश गौ दान करे ॥ और महीना सेज पंचगव्य भक्षण करे ॥ अथवा महीना सेज जल पान करे ॥ एह यथा क्रम कर्के जाडने योग्य है ॥ एह जो पीछे किहाहै व्रतों का समूह सो ब्राह्मणहै कर्ता जिसका ऐसे क्षत्रियादिके बध विषे देखें योग्यहै इसमें वचन त्रय दिखानेहैं अकेंति ब्राह्मणस्येति ब्राह्मणइति और अज्ञानतें ब्राह्मण क्षत्री को मार कर्के और तेसे ही ब्राह्मण

पराशरः । वैश्यंशूद्रक्रियायुक्तं विकर्मस्थं द्विजोत्तमः हत्वाचांद्रायणं तस्य त्रिंशद्वाश्वेदक्षिणंति ॥ द्विजोत्तमोऽप्रापितो विप्रः क्षत्रियादिभ्यो तमाधवः इदं कामनाः कृते बोध्यम् ॥ अकामतस्तु योगीश्वरं प्रोक्तं त्रिरात्रोपवाससहितं सृपभैकादशगोदानं मासं पंचगव्याशनं मामिकं च पयोव्रतं यथाक्रमेण योज्यम् ॥ एतच्च प्रागुक्तं व्रतजातं ब्राह्मणकर्तृकं क्षत्रियादिवधे द्रष्टव्यम् ॥ अकामतस्तुराजन्यं विनिपात्या द्विजोत्तमः ॥ तथा ब्राह्मणस्य राजन्यवधे पडवार्षिकं तथा ब्राह्मणः क्षत्रियं हत्वेत्यादिषु मनुगोतमहारीतवाक्येषु ब्राह्मणग्रहणात् क्षत्रियादिकर्तृके तु क्षत्रियादिवधे पादन्यूनं द्रष्टव्यम् ॥ विप्रेतुः सकलं देयं पादो न क्षत्रिये स्मृतम् ॥ वैश्ये धेमेकपादस्तु शूद्रजातिपुंशस्य त इति वृद्धविष्णुस्मरणान् ॥

को क्षत्री के माण विषे ले ६ वर्षे का प्रायश्चित्त है ॥ तैसे ही और कहतेहैं ब्राह्मण जो है सो क्षत्री को मार कर्के इत्यादि जो मनु गोतम हारीतके वाक्य बिना विषे ब्राह्मण का ग्रहणहोणें तें ॥ क्षत्रियादिहै कर्ता जिसके ऐसे क्षत्रियादि बध विषे पाद पाद न्यून जानणा अर्थात् क्षत्रीतें वैश्यमें एक पाद न्यून करणा और वैश्य तें शूद्र विषे एक पाद न्यून व्रतकरणा इत्यादि जानणे उनमें वचनहै विप्रेति ब्राह्मणके ताई संपूर्ण व्रत देवे और क्षत्री को ब्राह्मण तें पाद उन व्रतदेवे और वैश्य को अर्द्ध व्रत देवे और एक पाद व्रत शूद्र जाति विषे कथन कीताहै एह वृद्ध विष्णु जी के वचन तें एह अर्थ पिच्छे आचुका है परंतु प्रसंगतें किहाहै

२०४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

इस विषे जो सभा ब्राह्मणों के प्रायश्चित्त विषे कहो है सो सभा राजों की दूणी जानणी इत्यादि व्यवस्था ब्रह्महत्या प्रकरण विषे कहो है सो इस जगो भी जानणी तिस विषे मूर्द्धावसिक्त जो ब्राह्मणों क्षत्रियाणी विषे उत्पन्न होवें तिनांको जैसा दंड अधिक है तैसेहि प्रायश्चित्त भी अधिक जानणा सो (दंडप्रणयनकार्यवर्णजात्युत्तमम्) इस याज्ञवल्क्यजी के वचनसे जानणा ॥ इस वृक्षोक्तका अतिदेश भी है धनेति धन हरण वालेको प्रेतक्रिया के न करण विषे शंख जी कहते हैं प्रेतस्येति प्रेतके जो प्रेतकार्य हैं तिनांको तिसका धन हरण बाला न करे तो जिस वर्णके वधविषे जो प्रायश्चित्त किहा है सो पुरुष तिस व्रत नूं यत्नतें करे ॥ और अज्ञान तें खोटी वृत्तिवाले क्षत्रिके वध विषे भी शंखजी कहते हैं निहस्येति मोहतें क्षत्रिको मारकके

अत्र पर्पद्या ब्राह्मणानामित्यादिव्यवस्था ब्रह्महप्रकरणे प्रोक्ता सात्राप्यनुसंधेया तत्र मूर्द्धावसिक्तादीनां दंडवत्प्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ एतस्यातिदेशोऽपि ॥ धनहर्तुः प्रेतक्रियायाश्चकरणे शंखः ॥ प्रेतस्य प्रेतकार्याणि श्रुत्वा धनहारकः वर्णानां द्वधे प्रोक्तं तद्रतं प्रयतश्चरेदिति १ अज्ञानादुत्तक्षत्रियवधेतु शंखः निहत्य क्षत्रियं मोहात् त्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुध्यति तथा कृच्छ्रातिकृच्छ्रैः कुर्वीत स नरो वैश्यघातकः कुर्याच्छूद्रवधे विप्रः कृच्छ्रं मांतपनंतथेति पराशरः ॥ शिल्पिनं कारुकं शूद्रं स्त्रियं वा यस्तु घातयेत् प्राजापत्यद्वयं कृत्वा तु पैकादशदक्षिणेति १ व्यभिचारोत्पन्नवधेतु याज्ञवल्क्यः ॥ चांद्रायणं चरेत् सर्वानवकृष्टान्निहत्य तु १ अवकृष्टा व्यभिचारजाः ॥

शाय ३ कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है ॥ तैसेहि वैश्यको मारण वाला पुरुष कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और तैसेहि शूद्रके मारण विषे ब्राह्मण कृच्छ्र सांतपन व्रत करे १ अव और विशेष पराशर जी कथन करते हैं शिल्पिनमिति चित्रकारी करण वाला और कारुक क्या कटको बनाण वाला और शूद्र स्त्री इनमेंस एकको भी जो पुरुष मारता है सो दो २ प्राजापत्य व्रत कर्के एक वैश्य और दश १० गोत्रों दाक्षिणा देवे १ अव व्यभिचार ते उत्पन्नका जो वध तिया विषे याज्ञवल्क्य जी कहते हैं चांद्रायणमिति संपूर्ण अवकृष्ट क्या व्यभिचारी तें उत्पन्न होए जो पुरुष तिनांका वध करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है १ ॥ अव कृष्ट नाम व्यभिचारोत्पन्नका है ॥

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २०५

अब इसीमें और विशेष हारीतजी कहतेहैं चांडालेति चांडाल वध की प्राप्ति जेकर ब्राह्मणको होवे तद सो बारां १२ दिनका छच्छू व्रतकरे बिसतें उपरंत तत्तच्छू करे ॥ १ ॥ अब अंगिरा जी कहतेहैं सर्वोते संपूर्ण अत्यज जो नीच तिनाके साथ गमन विषे अथवा भोजन विषे अथवा तिनाके मारणविषे पगक व्रतकरे शुद्धिहोतीहै ॥ १ ॥ एह अंगिराका किहाहोया अज्ञानते वधविषे जानणा ॥ और ज्ञानते वधविषे चांद्रायण व्रत करे एहविज्ञानेश्वरका मतहै ॥ और मा भवतीने किहाहै कि एह विपरीत जानणा अर्थात् ज्ञानते वधविषे पगक और अज्ञानतेवधविषे चान्द्रायण ॥ सोई लौगाक्षिजीकहतेहैं हननउति शूद्रते उत्पन्नहोए जो ब्राह्मणा क्षत्रियाणा वेश्या विषे तिनाके ज्ञान पूर्वक मारणविषे पगक व्रत करे और अज्ञानपूर्वक वधमें चांद्रायण व्रतकरे १

हारीतः ॥ चांडालवधसंप्राप्तिर्ब्राह्मणस्यभवेद्यदि ॥ कारयेद्द्वादशं कृच्छ्रं तत्तच्छूततो भवेदिति १ अंगिराः ॥ सर्वोत्यजानां गमने भोजने च प्रमापणे पराकेण विशुद्धिः स्यादित्यांगिरसभाषितमिति १ एतदज्ञानतो वधे । ज्ञानतस्तु चांद्रायणमिति विज्ञानेश्वरः ॥ विपरीतमिति तु माधवः ॥ तदा हलौगाक्षिः ॥ हनने प्रतिलोमानां शूद्रजानां कथं भवेत् ज्ञानपूर्वपराकः स्यादज्ञानदिदं वदन्त्येति १ ॥ चांद्रायणं द्विविधमष्टधेनुकं त्रिधेनुकं च ॥ पराकोपि द्विविधः पंचधेनुको द्विधेनुकश्चेति ॥ तत्र ज्ञानतो महतोश्चांद्रायणपराकयोर्निवेशः ॥ अज्ञानतस्त्वल्पयोरिति ग्रंथयोरविरोधः ॥ यत्तु मामा इत्यनुवृत्तौ ब्रह्मगर्भे अह ॥ अंतरप्रभवाणां तु सृतादीनां चतुर्द्विपडिति ॥ तत्कामतोभ्यासविषयम् ॥ तत्र सूतस्य वधाभ्यासपणमासाः ॥ वैदेहिकस्य चत्वारः ॥ चांडालस्य द्वौ ॥ मागधस्य चत्वारः ॥

चांद्रायण दो प्रकारकाहै एक अष्ट ८ गौआं वाला और दूसरा त्रय गौआं वाला ॥ और पगक व्रतभी दो प्रकारकाहै पंच ५ गौआं वाला और दो गौआं वाला ॥ इसी अर्थका स्पष्टकरे कहतेहैं तत्रेति निमविषे ज्ञानते वध विषे वडे चांद्रायणपगकका निवेशहै । और अज्ञानते वधविषे अल्प योः क्या छोटे योका निवेशहै इसकरे दोनों ग्रंथोका अविरोधहै ॥ और जो मामा क्या महीनेकी अनुवृत्तिविषे ब्रह्मगर्भजी कहतेहैं अंतर उति अंतरकरेहै जन्म जिनांका ऐसे सृतादिभोके वधविषे चार ४ दो २ छे ६ महीने व्रत करे ॥ सो एह उच्छाते बहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ निममें सूत वधके अभ्यास विषे छे ६ महीनेका व्रत करे और वैदेहिकके वध विषे चार ४ महीनेका व्रत करे और चांडालके वधविषे दो २ महीनेका व्रत करे और मागधके वधविषे चार ४ महीनेका व्रत करे

२०६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

क्षत्रुगिनि क्षता और आयोगवको दो महीनेका व्रत है और श्वपाक चांडाल चोर होवें तो इनके वधविषे देवलजी कहते हैं ॥ चौरउति श्वपाक और चांडाल चोरहोवें तो इनको जेकर ब्राह्मण मारे तद् एकदिन रात्रके उपवास व्रतकरके पंचगव्य पान करे तां शुद्ध होता है । १ । इनमें सूतादियोंकी उत्पत्ति उनक्रममें जानणासाधने ब्राह्मणी कन्यामें सूतजानिवाला होता है ॥ वैश्यमें क्षत्रिया कन्या में मागध और ब्राह्मणी कन्यामें वैदेह जातिवाला होता है ॥ और शूद्रमें वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण की कन्यामें क्रममें आयोगव क्षता अधम चांडाल जानिबाले होते हैं ॥ अब स्त्रीके वधविषे हारीतजी कहते हैं षडिति छे ६ वर्षे राजन्यके वधविषे व्रतकरे और प्राकृतब्रह्मचर्य करे प्राकृतब्रह्मचर्य उसको कहते हैं प्रथम जिस प्रकार ब्रह्मचर्य कीता है तैसाहि करे इसमें एह अभि प्राय है कि प्रथम ब्रह्मचर्यमें गुरुकुलवास गुरुसंवादि साथ होता है केवल स्त्रीसंभोगका परित्यागमात्र नहीं पीछे व्रतादि विषे जो ब्रह्मचर्यहै सो स्त्रीसंभोगका त्यागमात्र हि है ॥ ॥ और त्रय वर्षे वैश्यके वधविषे व्रतकरे और डेढ़ १॥ वर्षे शूद्रके वधविषे व्रत करे ऐसा प्रतिपादन किया है ॥ ऐसेहि जो क्ष

क्षत्रुरायोगवस्य च द्वाविति ॥ श्वपाकचांडालयोश्चोरयोर्विधेतु ॥ देवलकः ॥
चौरः श्वपाकश्चांडालो विप्रणनिहतो यदि अहं रारात्रोपितो भूत्वा घृतं प्राश्य वि
शुध्यतीति १ अथ स्त्रीवधे हारीतः । षड्वर्षाणिराजन्ये प्राकृतं ब्रह्मचर्यम् त्री
णिवैश्ये सार्द्धं शूद्रे इति प्रतिपाद्योक्तम् । क्षत्रियवद्ब्राह्मणीषु ॥ वैश्यवत्क्षत्रि
यासु ॥ शूद्रवद्वैश्यासु ॥ शूद्रार्धमितरासु । शूद्रार्धेनवमासिकम् ॥ इतरासु
शूद्रासु ॥ एतच्च श्रौत्रियपत्न्या गुणवत्याः कामतो वधविषयम् । मनुः । जी
नकार्मुकवस्तावीन्पृथग्दद्याद्विशुद्धये । चतुर्णामपि वर्णानां नारीर्हित्वाऽनव
स्थिताः १ अस्यार्थः ॥ ब्राह्मणादिवर्णस्त्रियैर्लोभादुत्कृष्टापकृष्टपुरुषव्य
भिचारिणीर्हित्वा ब्राह्मणादिः क्रमेण चर्मपुटधनुःलागमेपान् शुद्ध्यर्थं दद्यात् ॥

त्रिके वधविषे प्रायश्चित्त है सो ब्राह्मणोंके वध विषे जानणा ॥ और जो वैश्यके वधविषे त्रय वर्षे का व्रतहै सो क्षत्रियाणों के वध विषे जानणा ॥ और शूद्रके वधविषे जो व्रत है सो वैश्याणोंके वध विषे जानणा ॥ और इतरा जो शूद्रा तिसके वध विषे जो शूद्रवधमें प्रायश्चित्त है तिसका अर्थ अर्थात् नव १ महीनेका व्रतकरे ॥ एह चाण्वणकी स्त्रियोंका प्रायश्चित्तभी वेदपाठीकी जो गुणवाली स्त्री तिसके इच्छाते वध विषे जानणा ॥ जेकर वेदपाठीतें और जगा व्यभिचारवालि आं होण तां मनुजी कहते हैं ॥ जीतेति जीन कार्मुकवस्तु अवी इनानू पृथक् २ शुद्धिवास्ते चारों वर्णकी व्यभिचारणी स्त्रीको वधकरके देवे । १ । अब इसका अर्थ स्पष्टकरके कहते हैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणादि वर्ण की स्त्री लोभवें उच्चलाचपुरुष साथ व्यभिचार करणवालि जो हैं तिसको मारकरके ब्राह्मणादि क्रमकरके चर्मपुट धनुष लागमेप अपनी शुद्धि वास्ते देवे अर्थात् ब्राह्मण चर्मपुट कचा षोका देवे और क्षत्रि धनुष देवे और वैश्य लागकचा बकरा देवे और शूद्र में कचा भेडा दान करे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २०७

अब इसमें याज्ञवल्क्य जीभी कहते हैं दुर्वृत्तादिति खोटीवृत्ति वालियों जो ब्राह्मण वैश्य क्षत्रि शूद्र को स्त्रियांतिनांका वधकर्के दृतिधनुष वस्तुअवि अपनी शुद्धिवास्तेक्रमसेदेवे । १ । इसीका अर्थस्पष्ट कर्के कहते हैं ब्राह्मणादियोंकी स्त्री अपनी इच्छासेविचरणवालीहोवे तिसका वधकर्के क्रमतेदृति क्या जलका आधारचर्मकोश अर्थात् वोका धनुषवकरा मेपइतको शुद्धिवास्ते देवे इसविषे द. तिणामे तो सुवर्ण देणा चाहिए तिसका परिमाण अनुवांघादिकी अपेक्षाकर्के कल्पना करणा और अनुबंध नाम हठकर्के कीना जो अपगव तिसकाहै एह प्रातिलोम्यकर्के नोचके घर जो ब्राह्मणादि रहे तिसमें उत्पन्न जो स्त्री तिसके न इच्छाते वधविषे जानणा थोडाप्रायश्चित्त होशते और इच्छाते वध विषे ब्रह्मगर्भजी कहतेहै प्रतिलोमेति प्रतिलोम क्या शूद्रादितें उत्पन्न

याज्ञवल्क्योपि ॥ दुर्वृत्ताब्रह्मविटक्षत्रशूद्रयोषाःप्रमाप्यतु ॥ दृतिधनुर्व स्तमविक्रमादद्याद्विशुद्धये १ ब्राह्मणादिभार्यादुर्वृत्ताःस्वैरिणीःप्रमाप्य क्रमे णदृतिजलाधारचर्मकांशं धनुःकार्मुकं वस्तुलागंअविमपंचविशुद्धयेदद्यात् ॥ अत्र दक्षिणात्वेन सुवर्णमपिदेयम् ॥ तत्परिमाणंचानुबन्धाद्यपेक्षयाकल्प्य म् । अनुबंधश्चहठकृतापरांध । इदंचप्रातिलोम्यनांत्यजातिप्रसृतानां ब्राह्म ण्यादीनामकामतोवधविषयम् ॥ कामतस्तुब्रह्मगर्भआह ॥ प्रतिलोमप्र सूतानांस्त्रीणांमासावधिःस्मृतः अंतरप्रभवाणांचसृतादीनांचतुर्हिपडिति ब्राह्मण्यावधेपणमासाः ॥ क्षत्रियायाश्चत्वारोवैश्यायाद्वावित्वेवं यथार्हतया न्वयः ॥ यदातु वैश्यकर्मणाजीवन्ती व्यापादयति तदा किंचिदेवं वैश्यके नाकिंचिदितिगौतमस्मरणात् ॥ वैश्यकेन वैश्यकर्मणाजीवन्त्यांव्यापादिता यां किंचिदेदेयम् ॥

करण वालिआ स्त्रियोंको मासावधि कहीहै अंतर है प्रभव जितोंका अर्थात् प्रतिलोमनामें है जन्म जितोंका ऐसेसूतादियोंकोचार ४ दो २ छे ६ महीनेका व्रत करे ॥ ब्राह्मणोंके वध विषे छे ६ महीनेका व्रत करे ॥ और क्षत्रियाणोंके वध विषे चार ४ महीने व्रत करे वैश्याके वध विषे दो २ महीनेका व्रत करे इस प्रकार यथयोग्यता कर्के अन्यय जानणा ॥ और जेकर ब्राह्मणी वैश्यके कर्म कर्के जीविका करणे वालीहै तिसकी वधकर्के कुछक धनु देदेवे एह गौतमका वाक्य है एहि अर्थ स्पष्ट कीताहै वैश्यकेनेति ॥

२०८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा०

सो कहतेहैं जलेति जेकर ब्राह्मणिका वध करे तो जलकोश क्या चमपात्र तिसको खूएपर रखे और क्षत्रियाणीक वध विषे धनुष देवे और वैश्यकी स्त्रीके वध विषे बकरा देवे १ और शूद्र की स्त्रीके वधविषे भेडा देवे और वेश्या जो गणिका निमके वधविषे पुरुष जल देवे एह अंगिरसका वाक्यहै । १ । अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ब्राह्मणिक वध विषे चमका जलपात्र मृग विषे पंगपकार वास्ते देवे अथवा ब्राह्मणको देवे और वेश्या अर्थात् कंजरीके वध विषे कुलभी न देवे किंतु जलकी प्रपा करे अर्थात् धर्मशालावनत ए और जेकर फेर क्षत्रि यादि प्रातिलोम्य क्या शूद्रादिके साथ व्यभिचारवाली ब्राह्मण्यादिस्त्री मारीहै तद गोव ध प्रायश्चित्त यथायोग्य जांडने योग्यहै ॥ और थोडा व्यभिचार करणें वाली ब्रह्मण्यादिके वध

तच्च ॥ जलकोशंचकूपेचब्राह्मण्याःप्रतिपादयेत् वधधनुःक्षत्रियायावस्तो
वैश्यावधेस्मृतः ॥ १ ॥ शूद्रायामाविकंवैश्यांहत्वादद्याज्जलनरइत्यंगिरः
स्मरणात् ॥ अस्यार्थः । ब्राह्मण्यावधे कोशं चर्ममयंजलपात्रं कूपे परोप
काराय ब्राह्मणायवादद्यात् वैश्यायांवारयोपायांहतायांनकिंचिदद्यात् ॥
यदापुनःक्षत्रियादिःप्रातिलोम्येन व्यभिचारिता ब्राह्मण्याद्या व्यापाद
यति तदा गोवधप्रायश्चित्तानि यथार्हंयोज्यानि ॥ ईपद्व्यभिचरितब्राह्म
ण्यादिवधे विशेषमाह ॥ यदात्वप्रकर्षेणदुष्टामीपद्व्यभिचारिणीं ब्राह्मण्या
दिकां व्यापादयति तदा शूद्रहत्याव्रतंपाण्मासिकंकुर्यात् ॥ यद्वा द्वादशधे
नूदद्यात् ॥ इदंचपाण्मासिकमकामतोब्राह्मण्याव्यापादने ॥ क्षत्रियावधेतु
कामकृते द्रष्टव्यम् ॥ कामतोवैश्यावधेदशधेनूदद्यात् ॥ कामतःशूद्रावधेतु
पपातकमाधारणप्राप्तिमासंपंचगव्याशनंकार्यम् ॥

विषे विशेष कहतेहैं यदेति जेकर न अतिशय कर्के दुष्ट अर्थात् थोडा व्यभिचार करणें वाली ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या शूद्रीहैं इनांका वध करे तद जो शूद्र मारणका प्रायश्चित्त छे ६ मही नेंका है सो करे अथवा वागं १२ गौआं दानकरे ॥ एह जो छे ६ महीनेंका व्रत है सो अज्ञानमें ब्राह्मणोंके वधविषे जानणा ॥ और क्षत्रियाणी विषे इच्छाते कीता जो वध तिस विषे जानणा ॥ और इच्छाते वैश्याके वध विषे दश १० गौआं दानकरे ॥ और इच्छाते शूद्रकी स्त्री के वधविषे उपपातकोंके साधारण प्रायश्चित्त (उपपातकशुद्धिः स्यात्) इत्यादिते प्राप्त होया जो महीना दिन पंचगव्य भक्षण करणा तिसकों करे तो शीघ्रहि शुद्ध होताहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २०९

यदेति जे हर इच्छानें ब्राह्मणोका वध करे तइ वागं १२ महीनेका व्रत करे ॥ और क्षत्रियादि की स्त्रीके अज्ञानतें वध करणें विषें त्रय ३ महीनें डेढ १॥ महीना साढे वाई २२॥ दिनका व्रत करे अथवा क्षत्रियाणोके वधविषें त्रय ३ महीनेंका व्रत करे ॥ और वैश्यकी स्त्रीके वध विषें डेढ १॥ महीना व्रत करे ॥ और शूद्रकी स्त्रीके वध विषें २२॥ साढे वाई दिनका व्रत करे ॥ जैसे प्रचेता जो कहनेहैं रजस्वला नाहि जा ब्राह्मणो तिसके वध करणें विषें वषेगेज का कच्छ व्रत करे अथवा छे ६ महीनेका व्रत करे ॥ और क्षत्रियाणोके वधविषें छे ६ महीनें अथवा त्रय महीनेंका व्रत करे ॥ और वैश्याणोकावधकरे तो त्रय ३ महीने अथवा डेढ

यदा कामतो ब्राह्मणीं व्यापादयति तदा द्वादशमासिकम् ॥ क्षत्रियादीनां त्व
कामतो व्यापादने त्रैमासिकं सार्द्धमासं सार्द्धद्वाविंशत्यहानि ॥ यथाह प्र
चेताः ॥ अशुभमती ब्राह्मणीं हत्वा कृच्छ्राब्दं पणमासान्वेति ॥ क्षत्रियां ह
त्वा पणमासः त्रयमासान्वेति ॥ वैश्यां हत्वा मासत्रयं सार्द्धमासं वेति ॥ शूद्रां
हत्वा सार्द्धमासं सार्द्धद्वाविंशत्यहानि वेति कामाकामकृतो विकल्पः ॥ अका
मतस्तु सर्वत्रार्द्धकल्प्यम् ॥ विषयविशेषे व्रतातिरेकमाहांगिराः ॥ आ
हिताग्निर्द्विजाग्रयस्य हत्वा पत्नीमनिन्दिताम् ॥ ब्रह्महत्या व्रतं कुर्यादात्रे
यीघ्नस्तथैव चेति ॥ १ ॥

१॥ महीना व्रत करे ॥ और शूद्रकी स्त्रीके वध करणें विषें डेढ १॥ महीना अथवा साढे २२॥ वाई दिनका व्रत करे तो शुद्ध हे ताहै ॥ इस जगा इच्छा और न इच्छानें करणें विषें विकल्प जानणा ॥ और जेकर अज्ञानते इनका वध करे तो सब जगा अद्वा व्रत कल्पना करे योग्यहै ॥ और विषय विशेष विषे व्रतकी अधिकताकों अगिराजी कहनेहैं आहितेति श्रेष्ठ अग्निहोत्रो ब्राह्मणकी पतिव्रता स्त्रीका वध कर्के ब्रह्महत्याका व्रत करे और तेमहि अत्रिमात्र वाली स्त्री अथवा आत्रेयो नाम रजस्वला स्त्रीका है तिसके वध कर्के भी ब्रह्महत्याके उचित जो व्रत तिसको करे ॥ १ ॥

२१० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

उपेति उपपातकोंके प्रायश्चित्त विषयविषे स्त्रीके वधविशेषमे अंगिराजी कहतेहैं अनाहितेति नहीं जो अग्निहोत्री तिनांकी स्त्री तैसोहि वैश्य शूद्रको जो स्त्री और शूद्र जातिकी स्त्री इनांके वध करणें विषे जो गोवधमे व्रत किहाहै सो करे तो शुद्ध होताहै १ अब इसी में पैठानसीजी विशेष कहतेहैं त्रिवर्षमिति त्र्यर्षवर्ष स्थानासन दद्यादिनमें खड़ा रहे रात्रिमे स्थित होकरके और रात्रिमे भोजन करे तो स्त्रीवधकरणवाला पुरुष शुद्ध होताहै ॥ अथवा वर्षभोजके प्राजापत्य अनकरे ॥ अब शातातपजी और विशेष कहतेहैं पडिति ले ६ महीने स्त्रीके वधविषे प्राजापत्य व्रत करे और अज्ञान पूर्वक करे तो चांद्रायण व्रतकरके शुद्ध होताहै ॥ अब व्यास जी और प्र कार कहतेहैं अकामतइति अज्ञानमें ब्राह्मणोंका वध करके जो वैश्य वधमें प्रायश्चित्त है सो

उपपातकप्रायश्चित्तविषयेस्त्रीवधविशेषेसएवह ॥ अनाहिताग्निपत्नीनां तथाविद्शूद्रयोपितां गोघातकव्रतंकुर्याच्छूद्रायांचैवनित्यशः १ पैठानसिः त्रिवर्षस्थानासनाभ्यांनक्तमश्रायात् स्त्रीघातकःशुध्यतिसंवत्सरंप्राजापत्ये नवा । शातातपः ॥ पण्मासान्स्त्रीघातोप्राजापत्यंचरेत् ॥ अमतिपूर्वकंतुचां द्रायणम् ॥ व्यासः ॥ अकामतःस्त्रियंहत्वाब्राह्मणीवैश्यवच्चरेत् ॥ कामतो द्विगुणंप्रोक्तंप्रदुष्टायांनकिंचन १ ॥ पुण्यांलोकानवाप्रांतिशूद्रगांयस्तुपात पातयेत् ॥ पतिघ्नामथगर्भघ्नीताहिसंकरकारिकाः २ * उपपातकप्रकरणे स्त्रीहत्याप्रायश्चित्तंवहुधाप्रपांचितं तत्र कन्याहत्यायाअनिर्वार्य्यत्वं महा पातकांतर्गतत्वंवा बुध्वा नोक्तमतस्तत्स्वरूपाशुच्यते ॥

करे और उच्छालने वध करे तो एही व्रत दृष्टा करणा योग्य है और व्यभिचारिणी स्त्रीके वध विषे कुछ दोष नहीं जानना १ इसी अर्थको पुष्ट करतेहैं पुण्यानिनि और ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या एह शूद्र साथ गमन करण वालियां होण तां इनांका वध करणेंविषे पुरुष पवित्र जो भर्गादि लोक निनको प्राप्त होताहै और पतिके हन करणें वाली स्त्री तैसोहि गर्भके नाश करणें वाली स्त्री एह वर्णसंक्रमके उत्पन्न करण वालियां हैं इनांके वधकरणें विषे भी दोष नहीं है ॥ २ ॥ * और उपपातक प्रकरणविषे स्त्रीहत्याका प्रायश्चित्त बहुत प्रकारकरके कथन कीताहै तिसविषे कन्याहत्याके पापको अनिवार्य्य जान करके अथवा महापातकोंके मध्य विषे जान करके नहीं कथन कीता है इसकारणसे अब तिसके स्वरूपादि कथन करिदे हैं

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २११

स्त्रीको दश १० वर्ष तक कन्या जानणा तिसरें एह निश्चित होया कि कुमारियोंको (अष्ट ८ वर्ष तक गौरी कहा है) इत्यादि वचननं देवीके तुल्य होने कर्के तिसके वध विषे स्त्रीवधने भी अधिक प्रायश्चित्त कल्पना करणा योग्यहै ॥ और जन्म समय विषे ही कन्याके वध विषे ऐसा विचारहै कि पांचवष तक जो बालक है सो गर्भके तुल्य जानणा व्यक्तिमात्र दिखाया है इत्यादि वचन कर्के तिस कन्याको गर्भ के तुल्य होणें तो इसके वध विषे गर्भहत्याने अधिक प्रायश्चित्त कल्पना करणा चाहिए ॥ क्योंकि तिस को प्रगट होणें ॥ इसी प्रकार पुरुष वधा बालकविषे भी व्यवस्था जान-
णी ॥ और नासिकेतो ग्रंथ विषे स्त्री घात करणवाला और गर्भ घात करण वाला पुरुष तैल संव्र कर्के पीडित होताहै और बालक वृद्ध दुःखी इनके वध करण वाला पुरुष तैलपाक नरक

स्त्रियादशवर्षावधि कन्यात्वं ततश्च कुमारीणामष्टवर्षाभवेद्गौरीत्यादिवच
नाद्देवीतुल्यत्वेन तद्वधे स्त्रीवधतोऽधिकंप्रायश्चित्तंकल्प्यम् ॥ जन्मसमनंत
रमेवकन्यावधे सहिर्गर्भसमोज्ञेयोव्यक्तिमात्रंप्रदर्शित इत्यादिना तस्याग
र्भसमत्वेपि भूणहत्यातोऽधिकंकल्प्यं व्यक्तीभूतत्वात् ॥ पुरुषेष्वेवंव्यव
स्था नासिकेतोपाख्याने स्त्रीघातोर्गर्भघातीचतैलयंत्रेणपीडयते बालवृद्धा
त्तंघातीतुतैलपाकेपुपच्यते १ अत्र स्त्रीपदंकुमारीविवाहितासाधारणम् ॥
मासःषष्ठाऽष्टमपुंसांस्त्रीणांमासश्चपंचमइत्याद्यन्नप्राशनमुहूर्त्तादौ स्त्रीपदं
न कन्याग्रहणत् ॥ मनुः ॥ चतुर्णामपिवर्णानांनारीहत्याऽनवस्थिताः
निक्षेपंचापहत्याथविश्वासात्प्रतिहृत्यच १ अंधतामिस्त्रयातीतिमंबंधः

विषे पकाईदाहै ॥ १ ॥ इसविषे स्त्रीपद जो है सो कुमारी और विवाहिताका साधारण जानणा
इसमे संमति कहनेहैं मामइति ले ६ और अष्ट ८ से महीने विषे पुरुषको और स्त्रियोंको
पंचमे ५ महीनेमे अन्न प्राशन किहाहै इत्यादि जो अत्र प्राशनक मुहूर्त्तादि निर्वायपे स्त्री
पद कर्के कन्याका ग्रहण करणे नें ॥ अब इसीमे और प्रकार कर्के मनुजी कहते हैं चतु-
र्णामिति चारवर्णकी ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य शूद्रको व्यभिचारिणी स्त्रीका वध कर्के और निक्षे-
प क्या अमानत द्रव्यको हर कर्के अथवा विस्वासेन धनको हर कर्के अथतामिस्त्र नाम नरक
को प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

२१२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्रः १२ ॥ टी० भा० ॥

तैसाहि बालकोंके हत करण वाले अथनामिस्त्र नाम नरकका अजतनें भेम देह पर हैं तिननें बन्ध
प्राप्त होनेहैं ॥ इसविषे बालक और कन्याकों हत करणवाला बालघ्न होताहै एह अर्थ जानणा
क्योंकि लिंग जो पुल्लिंग स्त्रिलिंग तिसको अविवक्षित होणेतें ॥ अब इसी प्रकार काशीखण्ड
विष कहतहै स्त्रीघ्नमिति स्त्रीके हत करण वाला गौके हत करण वाला मित्रके हत करण वा
ला इनका कूटशाल्मलिवृक्ष विषे चिरकाल उपर पाद कर्के हेठ मुख कर्के इंद्रतो लमका
आ एह धमगजनें कहाहै १ इसविषे भी स्त्रीपद कन्यापर प्रतीत होताहै क्योंकि चिरं इस पद
कर्के तिस पापके फलका आधिक्यताके प्रतिपादन करणेतें ॥ कुलक और भी स्त्रीवध
प्रायश्चित्त विषे बहने हैं गुणेति गुणवाली में अधिक प्रायश्चित्त है और निर्गुण में थोडा
प्रायश्चित्त और प्रसून स्त्री में अधिक अप्रसून में थोडा और गर्भ वाली में अधिक गर्भ
तथा बालघ्नाश्र्याधतामिस्त्रयावल्लोमानिदेहिनइति अत्रवालानूवालाश्चघ्नं
तीतिबालघ्नाइत्यर्थोऽवसयः। लिंगस्याविवाक्षितत्वात्॥ काशीखण्डे ॥ स्त्रीघ्नं
गोघ्नं वमित्रघ्नं कूटशाल्मलिपादपे उल्लंघयचिरं कालमूर्ध्वपादमधोमुखम् १ अ
त्राप स्त्रीपदं कन्यापरमेव प्रतिभाति चिरमित्यादिना तत्पापफलस्याधि
क्यप्रतिपादनात् ॥ किंच ॥ स्त्रीवधप्रायश्चित्ते गुणागुणप्रसूताप्रसूतस गर्भा
गर्भसजातीयविजातीयब्राह्मण्यादिभिः तारतम्यमुक्तं नत्ववस्थया ॥ तत्र
पूर्वोक्तमेव व्यवस्थापकं ज्ञायते येतु कन्यादाने कुलधर्मेऽचितद्रव्यव्ययवा
हुल्यापक्षया कन्याबाहुल्यं पापफलमितिलोकोक्त्या दुःखजनकबुद्ध्या
स्वकीयदारिद्र्यबुद्ध्या वा कन्याघातयन्ति तेषां प्रायश्चित्तशेननापि
निष्कृतिर्नोद्भावनीया

रहित वाली में थोडा और सजाति स्त्री में अधिक विजातिमें थोडा और ब्राह्मणी में
अधिक क्षत्रियाणी में थोडा इनकोर्के न्यूनाधिकता कथन कीतीहै परंतु अवस्था जो
बाल वृद्धादि तिस कर्के नाहैं किहाहै तिस विषे पूर्वोक्ताहि व्यवस्था जानीदीहै ॥ और
जो पुरुष कन्या दान विषे कुल धर्मके उचित द्रव्य स्वरचके बाहुल्यताकी अपेक्षा
कर्के अर्थत् इसमें धन बहुत खर्च होताहै और कन्या बहुत होणीपां पापोंकाफल है इस
लोकोकिर्के भी दुःख जनक बुद्धि कर्के अथवा अपनी दारिद्र्य बुद्धि कर्के अर्थात् असी
दारिद्री होजावेंगे इस कारणसे कन्याका वध करतेहैं तिनं पुरुषों को सो १०० प्रायश्चित्त
करके भी निष्कृति नाम प्रायश्चित्त कर्के पापते रहित होणा सो नाहै होसकताहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २१३

क्योंकि तिमको इच्छाते करणेंते ॥ तिसके अनिवारणत्वको (प्रायश्चित्तरूपेणः) इत्यादि वचन कर्के प्रतिपादन होणेंते ॥ इस स्मृतिका अर्थ दूसरे प्रकरण विषे बहुत हो चुकाहै उसी जगा ते देखलयणा उससे प्रीत होवेगा कि एह पापदूरहाणवाला नहि ॥ एह बड़ा आश्चर्यहै कि कन्या घात करण वालों में दुर्बुद्धिहें श्येन क्या बाज व्याघ्रादे हिंसा करण वाले भी हैं परंतु अपणी संततिकी रक्षा करतेहैं श्रीओंका हिं बध करतेहैं एह लोक विषे देखीदाहै ॥ इस लोकके श्रीर परलोकके वृत्तांत जानण वाले पुरुषोंने इस प्रकारके कुकर्म क्या खोटे कर्म विषे किस बास्ते परिचय करीदाहै । इसी कारणते कन्या घात करण वाले पुरुषोंने प्रायश्चित्त कीताभी है

कामकृतत्वात् तस्याऽनिवार्यत्वस्य प्रायश्चित्तरूपैत्येनोपदज्ञानकृतं भवेत् कामतो व्यवहार्यस्तु वचनादिह जायत इत्यादिना प्रतिपादितत्वात् अहो कन्याघातकानां हि ज्ञेयम् श्येनव्याघ्रादयो हिंसा अपि स्वापत्यरक्षका लोके दृष्टाः ऐहिकामुष्मिकज्ञानिभिः पुरुषैरेवंभूते कुकर्मणि किमर्थं परिचीयते ॥ अतएव कन्याघातकैः कृतप्रायश्चित्तरपि व्यवहारो याज्ञवल्क्येन निषिद्धः । शरणागतवालस्त्री हिंसकान्संविशेन्न तु चीर्णव्रतानपि सतः कृतघ्नसहितानिमान् ॥ १ ॥ इमान् शरणागतादिव्यापादनकारिणः कृतघ्नसहितान् प्रायश्चित्तेन क्षीणपापानपि न संव्यवहरेदिति वाचनिकोयं प्रतिषेध इति

तथापि तिनके साथ व्यवहार याज्ञवल्क्यजीने निषिद्ध कीनाहै सो वचन दिखाइंदा है शरणेंते शरणागत पुरुषकी और बालक और स्त्रीकी हिंसा करण वालेने प्रायश्चित्त कीताभीहै तोभी इनके साथ व्यवहार न करे और कृतघ्न जो हैं किसेका उपकार नहि मन्नण वाले तिनके साथभी व्यवहार न करे ॥ १ ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेंहै एह शरणागतादियोंके बध करण वाला कृतघ्नके साथ सों एह प्रायश्चित्त कर्के पापतें रहित भी है तब भी इनके साथ व्यवहार न करे इस वचन कर्के प्रतिषेध जानणा ॥

२१४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

एव इसीमें मनु जीभी कहते हैं बालेति बालकों को हत करण वाला और कृतघ्न पुरुष एह धर्मतः क्या प्रायश्चित्तादिकके शुद्ध भी है और इसी प्रकार शरणागत पुरुषको हत करण वाला और स्त्रीके हतकरण वाला जो है इनके साथ व्यवहार न करे एह पूर्वोक्त ही अर्थ जानना ॥ एह महापातक प्रकरणके उचितभीह पण्डित स्त्रीहत्या प्रसंगमें इसी जगह स्थापन कीताह ॥ और हिंसाके प्रायश्चित्त प्रकरण विषे प्रसंगमें प्रकीर्णक पदाभिधेय अनुपपातक प्राणिके वध विषे भी प्रायश्चित्त कहतेहै मनुजी मार्जारने बिला नील इनको हत करके और पिपीहा डड्डू कुत्ता गाह उलू काक इनांको हतकरके जो शूद्र वध करणमें प्रायश्चित्तहै सो करणयोग्यहै ॥ १ ॥ (स्त्रीशूद्र

मनुरपि बालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धानपिधर्मतः शरणागतहंत्वंश्चस्त्रीहंत्वं
श्चनसंवमेदिति पूर्वोक्तएवार्थःइदंचमहापातकप्रकरणोचितमपिस्त्रीहत्या
प्रसंगादत्रैवनिहितम् ॥ हिंसाप्रायश्चित्तप्रकरणे प्रसंगात्प्रकीर्णकपदा
भिधेयानुपपातकप्राणिवधेपिप्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ मार्जारनकुलोहत्या
चापंभंडूकमेवच ॥ श्वगोधोलूककाकांश्चशूद्रहत्याव्रतंचरेत् १ स्त्रीशूद्रविट्
क्षत्रवधइत्युपपातकप्रायश्चित्तं गोवधव्रतंचांद्रायणंचरेत् नतुशूद्रेजेयस्तु
पोडशेत्यादिप्रायश्चित्तं पापस्यलघुत्वात् चांद्रायणमप्येतत् कामतोऽभ्या
सादिविषयेद्रष्टव्यम् ॥ १ ॥ पयःपिवेत्त्रिरात्रंवायोजनंवाऽध्वनोव्रजेत्
उपस्पृशेत् स्त्रवंत्यांवासूक्तंवाव्दैवतंजपेत् ॥ २ ॥

विट्क्षत्रवध) एह उपपातकोंके प्रायश्चित्त वास्ते जो पिच्छे गोवधका व्रतचांद्रायण दिखायाहै ति सका करे और शूद्र विषे मार्ग १२ वर्ष के व्रत का सोलवा १६ हेम्सा प्रायश्चित्त किहाहै सो इसमें नहिकरे क्यों कि पापके थोडा होणेत ॥ और एह चांद्रायण व्रतभी उल्लाते अभ्यासादि के विषय विषे जानना योग्यहै १ इतीकरके और प्रायश्चित्तकहतेहै पयःपि अथवा व्रतयात्रि दुग्ध पान करे अथवा योजन क्या चार ४ कोश मार्ग चले अथवा स्त्रवंत्यां क्या नदी विषे जल का स्पर्श करे क्या स्नान करे अथवा अपहै देवता जिस सूक्त का तिसका जप करण योग्यहै ॥ २ ॥ सो सूक्त मंत्र संग्रह प्रकरण विषे देखलेना ॥

॥ श्रीरक्षवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी०भा० ॥ ११५

अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं माजोगेति विडालादियोंको अज्ञान पूर्वक वध करणे विषे त्रय रात्रि दुग्ध पान करे अथवा मंदाग्नि कर्के इसमें समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि तक योजन क्या चार ४ कोस मार्ग चले और इसमें समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि नदी में स्नान करे जेकर इसके करणे में भी समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि आपोहिष्ठमयं भुव इत्यादि सूक्तका पाठ करे परंतु इसको और यथाक्रम लघु होणे ते एक ते दूसरे के करणे में ना समर्थ होवे तो उत्तरोत्तर क्या उसके आगे का ग्रहण करे और इसमें विकल्प नाह जानना अभिमिति जेकर ब्राह्मण सर्पको हत करे तो एह पूर्वोक्त व्रत करे और लोह दंड दान करे और

अर्थः ॥ माजारादीनामबुद्धिपूर्वकवधेत्रिरात्रंदुग्धंपिवेत् ॥ अथमं दानलत्वादिना न समर्थः त्रिरात्रंप्रतियोजनमध्वनोव्रजेत् ॥ अत्राशक्त स्त्रिरात्रंनद्यांम्नायात् ॥ तत्राप्यक्षमस्त्रिरात्रमापोहिष्ठ्यादिसूक्तंजपेत् ॥ यथोत्तरंलघुत्वात्पूर्वपूर्वासंभवं उत्तरोत्तरपरिग्रहः । ननुवैकल्पिकः ॥ अश्र्मिकाष्णायसीदद्यात्सर्पहत्वाद्विजोत्तमः ॥ पलालभारकपंडेसैसकं चैकमापकम् ॥ ३ ॥ अर्थः ॥ सर्पहत्वाब्राह्मणाय तीक्ष्णाग्रंलोहदंडं दद्यात् नपुंसकंचहत्वा पलालभारंसीसकंचमापकंब्राह्मणाय दद्यात् ३ ॥ घृतकुं भंवरहेतुतिलद्रोणंतुतित्तिरौ शुकेद्विहायनंदत्संक्रांचहत्वात्रिहायनम् ४ ॥

नपुंसक को हतकर्के पगली का भार और एकमासा सिका दानकरे ॥ ३ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं सर्पमिति सर्प को हतकर्के प्रथम प्रायश्चित्त करे और ब्राह्मणक ताई तीक्ष्ण अग्र वाला दक्षिणा वास्ते लोहदंड देवे और नपुंसक पुरुषको हत कर्के प्रथम प्रायश्चित्त कर लेवे फेर पगली का भार मासा सिका दान करे ब्राह्मणके ताई देवे ॥ ३ ॥ घृत इस सूक्त के हत करणे में घृतका घट दान करे और तित्तिके हत करणेमें तिलोंका द्रोणदान करे और तीक्ष्णके हत करणेमें दो २ वर्षका बछादेवे और कौच नाम पक्षियों हतकर्के त्रय ३ वर्षका बछा दान करे ॥ ४ ॥

२१६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं सूकर इति सूकरके हत कीत्ते होआं घृतका घट दान करे ॥ और नितिरि नाम पक्षिके हत कीत्ते होआंचार ४ आठक परिमाण तिलदान करे ॥ और तोतेके हत कीत्ते होआं दो २ वर्षका बच्छा दान करे ॥ और क्रौंच नामा पक्षिको हत कर्के व य ३ वर्षका बच्छा दान करे एह एक एकके वध विषयविषे जानणा ॥ और सो इनां सभनाके इकठे वधविषे मार्जार इत्यादि कथन कीत्ताहै सो जानणा ॥ और इच्छाते वांवार वध करण वि षे वासिष्ठ जी कहतेहैं देवति कुत्ता बिडाल नौल डड्डू सपंदहर नाम छोटा चूआ अथवा लुछुं

अर्थः सूकरे हते घृतकुंभं तितिरिसंज्ञिनि पक्षिणि हते चतुराटकपरिमाणं तिलं दद्यात् ॥ शुंके हते द्विवर्षवत्सं क्रौंचाख्यं पक्षिणं हत्वा त्रिवत्सं ब्राह्मणाय दद्यात् प्रत्येकवधाविषयमिदम् । समुदितवधेतु मार्जारित्याद्युक्तम् । कामतोत्यं ताभ्यासेव सिष्ठः । श्वमार्जारिनकुलमंडूकसर्पदहरमूपकान् हत्वा कृच्छ्रं द्वादश रात्रंचरेत् किंचिदद्यादिति । दहरोऽल्पमूपकः लुलुन्दरीवा । हत्वा हंसं वलाकां च वक्रं वर्हिणमेव च वानरं श्वेनभासौ च स्पर्शयेद्ब्राह्मणाय गाम् ५ स्पर्शयेद् दद्यात् ५ वासो दद्याद्वयं हत्वा पंचनीलान्वृषान् गजम् अजमे पावनं ड्वाहं स्वरं हत्वैकहायनम् ६

दर चूआ इनांका वध कर्के वागं १२ रात्रिका लुछुं व्रत करे और कुलक दान करे तो शु द्ध होताहै दान इसजगा पूर्वोक्ति जानणा ॥ और हंस वगुली वगुला मोर वानर वाज भास पक्षि विशेष इनांका वध कर्के ब्राह्मणके ताउ गौदान देवे तो शुद्ध होताहै ५ वास इति घोडे का वध कर्के वल्लदान करे और हस्तिका वध कर्के पांच ॥ ५ ॥ निले बैलों का दान करे और वरुग भेडा बैल गर्दभ इनां का वध कर्के एक वर्ष के बच्छेका दान करे तो शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २१७

और क्रव्याद नाम मृगोंके वधकर्के दुग्धदेणे वाली गौका दान करे और अक्रव्यादोंके वध विषे वच्छी देवे और टपूका वध कर्के कृष्णल दान करे ॥ ७ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं क्रव्याद नाम कच्चे मांसको भक्षण करणवाले व्याघ्रादि जानणे और अक्रव्याद नाम हणिणादियों का जानणा और कृष्णल नाम सुवर्णकी रत्ति दान करे ॥ ७ ॥ और पीछे कहा जो पंच ५ नीलवृषादिओंका दान निसमे सामर्थ्य न होणेंविषे प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं दानेनेति सप्पादियोंके वधका पाप दान कर्के दूर करणकों समर्थ न होवे तो एक एकके वध विषे ब्राह्मण पापके

क्रव्यादांस्तुमृगाहत्वाधेनुंदद्यात्पयस्विनीम् अक्रव्यादान्वत्सतरीमुद्रुह-
त्वातुकृष्णलम् ७ क्रव्यादान् आममांसभक्षकान् व्याघ्रादीन् ॥ अक्रव्यादा-
नूहरिणादीन् ॥ कृष्णलंसुवर्णरक्तिकाम् ७ नीलवृषपंचकादिदानाशक्तौ प्रा-
यश्चित्तमाहसएव वधदानेननिर्णेतुंसप्पादीनामशक्नुवन् एकैकशश्चरेत्कृ-
च्छ्रद्विजःपापापनुत्तये ८ अर्थः अभिप्रभृतीनामभावादानेन सर्वपापनि-
र्हरणं कर्तुमसमर्थो ब्राह्मणादिः प्रत्येकवधे कृच्छ्रं प्राथम्यात् प्राजापत्यं द्विजः
पापनिर्हरणार्थं चरेत् ॥ सप्पादयश्चाभिकाष्णीयसीदद्यादित्येवमारभ्येत
त्पर्यं तागृह्यते ॥ ८ ॥

दूर करणे वास्ते कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं
अधोति अभि आदियों का अभाव होणेने दान कर्के सपूर्ण पापके दूर करणकों समर्थ न
होवे तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र एक एकके वध विषे प्रथम तें कृच्छ्र व्रत करे इसीका अर्थ एहहै
कि प्रजापत्यव्रतकों ब्राह्मण पाप दूर करणे वास्ते करे ॥ और सप्पादियोंके ग्रहण करण
वास्ते अर्थात् कितने उह सप्पादिहैं उसगणना वास्ते (अभिकाष्णीयसीदद्यात्) इनाते आद
लेकर इस पर्यंत ग्रहण करणा योग्यहै ॥ ८ ॥

२१८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अस्थीति अस्थिवाले हजार जीवोंके मारण विषे और अस्थि विना एक गड्ढा भर पूर्णके वध विषे शूद्र हत्याका व्रत करे ॥ १ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं अस्थीति अस्थि यां वाले जा जीव किरले तों आदलेकर हजार १००० के वध विषे शूद्र वधका प्रायश्चित्त औपदेशिक करे अर्थात् जो शूद्र वधमें प्रायश्चित्त किहाहै सो करे ॥ और अस्थि रहित जो गड्ढा भर जीव हैं तिनके वधविषे भी एही प्रायश्चित्त करे ॥ १ ॥ तैसेहि इसीमें याज्ञवल्क्य जो कहते हैं अस्थीति अस्थिवाले जीवोंके हजार के वध विषे और अस्थिरहित तों के गड्ढा भरके वध विषे पूर्वोक्तव्रत करे । अस्थि रहित जो जूआं मत्त कुणादि इनमें एक

अस्थिमतांतुसत्त्वानांसहस्रस्यप्रमापणे ॥ पूर्णेचानस्यनस्थानांतुशूद्रहत्या व्रतंचरेत् ॥ १ ॥ अस्थिमतांप्राणिनांकुकलासादीनांसहस्रस्यवधेशूद्र वधप्रायश्चित्तमौपदेशिकंकुर्यात् ॥ अस्थिरहितानांच शकटपरिमितानां वधे तदेवप्रायश्चित्तंकुर्यात् ॥ १ ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ अस्थिमतांसहस्रंतुतथानस्थिमतामनइति ॥ अस्थिरहितानांयूकामत्कुणादीनांप्रतिप्राणि प्रायश्चित्तस्यानंत्यात्सामान्येनप्रायश्चित्तमाह ॥ मनुः ॥ किंचिदेवतुविप्रा यदद्यादास्थिमतांवधे अनस्थनांचैवर्हिसायांप्राणायामेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ किंचिदिति स्वल्पंधान्यहिरण्यादि ॥ तत्रयदाहिरण्यंदीयतेतदापणमात्रम् ॥ अनस्थिवधेत्वेकःप्राणायामः ॥

२ प्राणि वध के प्रायश्चित्त कों बहुत हीषेतें सामान्य कर्के प्राणियों का प्रायश्चित्त मनुजीभी कहते हैं किंचिदिति अस्थि वाले जीवों के वध विषे ब्राह्मणके ताई किंचित् देवे और अस्थि रहित जीवों के मारण विषे एक प्राणायाम कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ किंचित् नाम थोडे धान्य सुवर्णादि का जानना अथवा अष्ट ८ मुठ्ठी धान्य का नाम किसीने किहाहै । तिस विषे जो सुवर्ण दान किहाहै सो पण मात्र जानना पणका परिमाण व्रत प्रकरणकी मान परिभाषा विषे देख लेना ॥ और अस्थि रहित जीवों का वध करे तो एक प्राणायाम करणे कर्के शुद्ध होताहै ॥

॥ भीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २१९

अब प्राणायामका लक्षण कहते हैं सडति व्याहृतियां उँकार और शिर के साथ गायत्रीका प्राणों का रोक कर्के त्रय ३ बार पाठ करे सो प्राणायाम किहा है एह वसिष्ठ जी का किहा होया लक्षण ग्रहण करणा ॥ १ ॥ एड छोटे जीवोंके वध विषे जानणा । और अस्थिरहित बड़े जीवोंके वध विषे (कृमिकीटवयोहत्वा) इत्यादि मलिनिकरण पापों विषे (तपया होया ज वोंके काडेका त्रय ३ दिन पात कर) एह मनुजीका कथन कीता होया प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै । अब अपराकं विषे कतेहैं शूद्रेति शूद्रहत्याका व्रत ब्रह्महत्याके व्रतकी विधि कर्के छे ६ महीनेका व्रत करे अथवा दश १० दुग्धदेण वाली गीआं दान करे तो शुद्ध होताहै । और

सच ॥ सव्याहृतिकांसप्रणवांसावित्रीशिरसासह त्रिःपठेदायतप्राणः
प्राणायामःसुच्यते इतिवसिष्ठप्रोक्तलक्षणोग्राह्यः ॥ १ ॥ क्षोदिष्ठज
न्तुवधएतत् ॥ स्थविष्ठानस्थिजन्तुवधेतु कृमिकीटवयोहत्वेत्यादिमलिनी
करणीयेषु ततःस्याद्यावकस्यहमितिमनूक्तद्रष्टव्यम् । अपराकं शूद्रहत्या
व्रतंपाणमासिकं ब्रह्महव्रतं दशधेनुदानंवा ॥ अनस्थिकानांचकेपांचित्सह
स्रसंस्याकानांवधे शूद्रवधप्रायश्चित्तमाहयमः ॥ अत ऊर्ध्वं कृमिकीटपतंग
भ्रमरदंशमवक्रमक्षिकाणांसहस्रं हत्वा तथा कोकिलशुककपोतकर्पिजल
कुक्कुटटिटिभखर्जूरखंजरीटानां पुरुषभारवधेशूद्रवधप्रायश्चित्तमिति ॥

अस्थिरहित कोडेक जो हजारों १००० जीव तिनोंके वध करणें विषे शूद्रवधका जो प्रायश्चित्त
है तिसको यम जी कथन करते हैं अतः इति इतने उपरंत किमि क्या छोटे कीड़े और बड़े
कीड़े पतंग भ्रमर वनमक्षि मच्छर मक्षिआं इनके हजारोंका वध कर्के और कोकिला
तोता कबूतर कर्पिजल क्या चिडा कुक्कुट टिटिभ क्या टिटोहरो खर्जूर पक्षि विशेष
खंजरीट क्या ममोला इनके पुरुष भार वध विषे शूद्र हत्या का व्रत करे तो शुद्ध
होताहै अर्थात् एह संपूर्ण जीव पुरुष के भार दुःख होजायें तां इनके वध विषे पूरा
प्रायश्चित्त करे ॥

२२० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टौ० भा० ॥

फलं पुष्पादि तै उत्पन्न जो प्राणी तिनो के वध विषे मनुजी कहतेहैं अन्नेति अन्नादितै उत्पन्न जो जीव और रसने उत्पन्न जो जीव और फल पुष्पतै उत्पन्न जो जीव इनां संपूर्णो के वध विषे घृत प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इसी विषय विषे याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं ॥ फलेति फल पुष्प अन्न रस तै उत्पन्न जो जीव तिनो के वध विषे घृत प्राशन करे ॥ और अग्नि वाले जीवो के वध विषे कुलुक देवे अर्थात् अष्ट ८ मुष्टी अन्न देवे और अस्थिर हिन जीवो के वध विषे प्राणायाम करे ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट करे कहतेहैं रुंवला दिके फल विषे और महु आदि के पुष्पो विषे और चिरकालके स्थित जो भक्त सत्तु

फलपुष्पादिजातानांप्राणिनांवधे ॥ मनुः ॥ अन्नाद्यजानांसत्त्वानांरसजा नांचसर्वशः फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशो विशोधनम् १ अस्मिन्विष येच याज्ञवल्क्यः ॥ फलपुष्पान्नरसजसत्त्वघातेघृतप्राशनम् ॥ किंचि त्मास्थिमतांदेयंप्राणायामस्त्वनस्थिकेइति ॥ औदुंवरादौफलं मधूका दौच कुसुमं चिरस्थितभक्तसत्त्वाद्यन्नच रसेचगुडादौ यानिसत्त्वानि प्राणि नाजायंते तेषांघातेघृतप्राशनं शुद्धिसाधनम् ॥ इदंचघृतप्राशनंभोजन कार्यएवविधीयते नतु भोजनमपि ॥ प्रायश्चित्तानांतपोरूपत्वात् ॥ तदुक्तमंगिरसा ॥ प्रायेणामतपःप्रोक्तंचित्तंनिश्चयउच्यते ॥ तपोनिश्चय संयुक्तंप्रायश्चित्तंतदुच्यते १ एतच्चानुक्तनिष्कृतिप्राणिवधविषयम् ॥

आदि अन्न और रस गुडादि इनां विषे जो जीव उत्पन्न होतेहैं तिनो के मारण विषे घृतका प्राशन शुद्धि का साधनहै एह जो घृत प्राशन है सो भोजन कार्य विषे हि जानना और कुछ भोजन न करे अर्थात् घृतका भोजनका स्थान जाणे और भोजन भी साथ करे ऐसा नहि क्योकि प्रायश्चित्तो को तप रूप होणे तै ॥ सोई कहाहै अग्निजीने प्रायश्चित्त प्राय नाम तपका है और चित्तनाम निश्चयका है तप निश्चय करे युक्त प्रायश्चित्त किहाहै ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त नहि कथन कीतो निष्कृति जिनां जीवो को तिनो के वध विषे जानणा अर्थात् नहि किहै प्रायश्चित्तवाते जा तंतुआदि जीव तिनो के वध विषे जानणा ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी०भा० ॥ १२१

और जिस विषे प्रायश्चित्त विशेष श्रवण करीदाहै तिस विषे सोइ प्रायश्चित्त होताहै एह मिताक्षरा में किहाहै ॥ जैसे पराशर जो और विशेष कहते हैं हंसेति हंस सारस चक्र कौंच कुकुट इनांके वध करण वाला और मोर भेडा इनांका वध कर्के एकभक्त व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और मद्गु टिट्टीहरी तोता कबूतर आडो बगुला इनांके वध कर्के नक्त भोजन करे तो शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ एकभक्त और नक्तका अर्थ व्रत प्रकरणविषे जानणा ॥ और पिपीहा काक कबूतर सागे तिचिर इनांके वध करण वाला जलविषे डुब कर्के प्रातः काल और सायंकाल मे प्राणासाम कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ और गिरज बाज पक्षि डल्लू इनांके वध करणवाला दिनमे फला

यत्रतु प्रायश्चित्तविशेषः श्रूयते तत्र स एव भवतीति मिताक्षरा यथाह पराशरः
हंससारसचक्रावहकौंचकुक्कुटघातकः ॥ मयूरमेघौहत्वाच एकभक्तेन शुद्ध्यति १
मद्गुचटिदिभंचैवशुकंपारावतंतथा ॥ आडिकांचवकंहत्वाशुद्ध्यद्वैनक्तभोजनात् ॥ २ ॥
चापकाककपोतानांसारितित्तिरघातकः ॥ अंतर्जले उभेसंध्येप्राणायामेनशुद्ध्यति ३
गृध्रश्येनविहंगानामुलूकस्यचघातकः अपक्वाशीदिनंतिष्ठेद्द्वौकालौमारुताशनः ॥ ४ ॥
हत्वामूपकमार्जारसर्पा जगरहुंदुभान् ॥ प्रत्येकंभोजयेद्विप्रान् लोहदंडश्चदक्षिणा ५
सेधाकच्छप गोधानांशशशल्यकघातकः ॥ वृंताकफलगुंजाशीअहोरात्रेणशुद्ध्यति ६

दि भक्षण कर्के स्थित रहे और दो काल अर्थात् एकदिन क्योंकि दिनमे भोजनके दोनोहि काल हैं तिनोमे वायु भक्षण करता होया स्थित रहे ॥ ४ ॥ और चूआ बिल्ला सर्प अजगर जल सर्पइनां में एक २ के वध विषे ब्राह्मणांको भोजन करावे और लोहेका दंडा दक्षिणा देवे तो शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ और सेधा क्या जीव विशेष और कच्छू गोह सेहा शल्यक क्या सेहेका भेदहै इनांके वध करण वाला और भठेका फल और रचियां इनांके भक्षण करणवाला पुरुष एक दिन रात्र के व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥

१२२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और मृग रोहिमृग शूकर बकरी बकरा इनांके वधकरणे विषे और भगयाड गिदउ ऋच्छ
नरख इनांके वध करणवाला एकप्रस्थ तिलदान करे और त्रयद्विदिन वायुभक्षण कन्ता रहे ८ और
हस्ति भेडा घोडा ऊठ गवय इनांके वधविषे दिनगवका ब्रतकरे और त्रयकाल स्नानकरे ९
और गथा वानर मिठ चित्रा व्याघ्र इनांके वध करणवाला त्रयगत्रिव्रतकरे और ब्राह्मणांको
भोजनदेने करे शुद्धहोताहै १० उसी प्रकार और जो स्मृति वचनहैं तिनांकी देश कालादि
अपेक्षा करे विषय व्यवस्था कल्पना करणी अर्थात् ग्राममृगते वनके मृगभक्षणमें घोडा प्रा
यश्चित्त करे और जो श्रुत्यन्त में शाकादि उत्पन्न होवें तिनांके भक्षणमें अधिक प्रायश्चित्त करे इ
सी प्रकार और भी जानना ॥ अब इसीमे याज्ञवल्क्य जी विशेष कहतेहैं हंसैति हंस वाज

मृगरोहिवराहाणामविकावस्तघातने एकजंवुकऋक्षाणांतिरक्षाणांचघात
कः ॥ ७ ॥ तिलप्रस्थंत्वयसौंदर्याद्वायुभक्षोदिनत्रयम् ॥ ८ ॥ गजमेघतुरंगो
ष्ट्रगवयानांनिपातने प्रायश्चित्तमंहारात्रं त्रिसंध्यंचावगाहनम् ॥ ९ ॥ खरवा
नरसिंहानांचित्रकव्याघ्रघातकः शुद्धिमेतित्रिरात्रेण ब्राह्मणानांचभोजनैरि
ति १० एवमन्येषामपि स्मृतिवचसां देशकालाद्यपेक्षया विषयव्यवस्थाक
ल्पनीया ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ हंसश्चैतकपिकव्याजलस्थलशिखंडिनः भा
संहत्वाचदद्याद्वासक्रव्यादांस्तुवात्सिकाम् ॥ १ ॥ उरगेप्वायसोदंडःपंड
केत्रपुसीसकम् कोलेवृतघटादेयउष्ट्रगुंजाहयेंशुकम् ॥ २ ॥ तित्तिरौतु
तिलद्राणंगजादीनामशक्नुवन् दानंदातुंचरेत्कच्छ्रमेकैकस्यविशुद्ध्य इति ३

वानर और कबूतरी मांसके भक्षण करणवाला शृगालादि और जलस्थलके मोर भास पक्षि इनांका
वधकरे गोवान करे और नडि जो कन्ता मांस भक्षण करणवाला मृग तिसके वधमें वच्छीदान
करे १ और सभके वधविषे लोहेका देउदेवे और घंटक कोडे जीवविशेषहै तिसके वधमें कलि
मिका देवे और शूकरके वधविषे धुतका घट देवे और उष्ट्रकेवधमें सुलेकी रत्ति देवे घोडेके वध
में बस्त्र देवे २ और चित्तके वधमें द्रोण परिमित तिलदान करे द्रोणका परिमाणपीले काहाहै
आर गजादियोंके दानदेणें जो समर्थ न होवेंतो एक २ की शुद्धिवास्ते कच्छ्रव्रत करे ३ एहसंपूर्ण
दान प्रायश्चित्तनं पीडे करण योग्यहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २२३

इस विषे कृच्छ्र शब्द लक्षणा कर्के क्लेशसाध्य जो तपमात्र तिसविषे जानणा और तप जो है सो वर्ष रोज छे ६ महीने चार ४ त्रय ३ दो २ एक १ महीने अथवा चौबी २४ दिन वारा १२ दिन छे ६ दिन त्रय ३ दिन एक दिनगत्र इत्यादि गौतम जीका कथन कीता होश जानणा ॥ इस विषे दानके अनुसार कर्के व्रत कल्पना करणी ॥ जैसे हस्ति के वधविषे दो २ महीने यवोंका काडा पान करे और तोतेके वधविषे उपवास व्रत करे इत्यादि और भी जानणे ॥ और पराशरजीके वाक्चका ज्ञान अज्ञानादि कर्के विवरण नागेश जीने कीताहे जैसे स्मृत्यर्थ सार विषे कहते हैं गजेति हस्ति घोडा ऊट गधा श्वेत गवय ऋच्छ महिष भेड़ों

कृच्छ्रशब्दश्चात्र लक्षणया क्लेशसाध्यतपोमात्रेवाध्यः ॥ तपश्चसंवत्सरःपण्मासाश्चत्वारश्चयोद्वावकश्चतुर्विंशत्यहोद्वादशाहः षडहस्त्र्यहोहोरात्रइत्यादिगौतमेनोक्तम् ॥ अत्र दानानुसारेणव्रतकल्पना ॥ ततश्च गजवधद्विमासिकंयावकाशनं शुक्रवधतूपवामइत्यादि ॥ पराशरीयमेवज्ञानाज्ञानादिभिर्विदृतंनानेशेन यथास्मृत्यर्थसारं ॥ गजाश्वोष्ट्रखरगौरगवयऋक्षमहिषमेयादिष्वमत्याप्रत्येकवधेसार्द्धकृच्छ्रः ॥ समस्तवधेचांद्रम् ॥ मत्याप्रत्येकवधेपिचांद्रम् ॥ मत्यासमस्तवधेत्वावृत्तिश्चांद्रस्य ॥ हरिणसारंगरुवराहसिंहगंडकव्याघ्रमहामत्स्यग्राहशिशुमारदिष्वमत्याप्रायिकंकृच्छ्रः ॥ समस्तवधेकृच्छ्रद्वयम् ॥ मत्याप्रत्येकवधेचैवम् ॥ समस्तवधेचांद्रम् ॥

आदि लेकर उनामेंसे एक २ के अज्ञानते वधकरणे विषे डेढ़ कृच्छ्र व्रत करे ॥ और समता के वध विषे चांद्रायण व्रतकरे ॥ और डच्छाते एक २ के वध करणे विषमा चांद्रायण ले और डच्छाते समताके वध विषे चांद्रायणकी आवृत्ति करे ॥ और हरिण सारंग रु वराह व्याघ्र शूकर सिंह गेडा व्याघ्र वडामच्छ तंतुआ और शिशुमारतो आदिके कर जो जीयते उनामें अज्ञानते एक २ के वधविष कृच्छ्रव्रत करे ॥ और समताके वधविषे दो कृच्छ्र व्रत करे ॥ और डच्छाते एक २ के वध विषे भी षड्वि व्रत करे ॥ और डच्छाते संपुण्यके वध विषे चांद्रायण व्रत करे ॥

२२४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

श्वेति कुत्ता भगयाड वानर गिदड विष्टा भक्षक शूकर इनांमे से एक २ के अज्ञानतें वध विषे त्रय रात्रि व्रत करे । और सभनां के वध विषे कच्छुव्रतकरे ॥ और इच्छातें एक २ के वध विषे भी कच्छुव्रतकरे ॥ और इच्छातें सभनांके वधविषे दूणा व्रत करे ॥ और विष्ठा सपे अजगर जलस पं नौल डू चूआ कंकट सलयां सेही गोह कंडे वाली सेही कच्छु सेहा इनांमे से अज्ञानतें एक १ के वध विषे कच्छु व्रत का एक पाद व्रत करे ॥ और अज्ञान तें सभनांके वध विषे अद्धाकच्छु व्रत करे । और इच्छातें एक २ के वधविषे भी एही व्रत करे । और उच्छातें सभनां के वधविषे कच्छु व्रत करे ॥ और हंसादियोंमे से अज्ञानतें एक २ के वध विषे, कच्छु व्रत करे

श्वेतुकवानरजंयुकविड्वराहादिष्वमत्याप्रत्येकंत्रिरात्रम् । समस्तवधेकच्छुः
मत्याप्रत्येकवधेचैवम् । समस्तवधेद्विगुणम् । मार्जारसर्पाजगरडुडुभनकु
लमंडूकमूपककर्कटशलभंसधागोधाशल्यककूर्मशशादिष्वमत्याप्रत्येकव
धेपादकच्छुः । समस्तवधेत्वर्धकच्छुः । मत्याप्रत्येकवधेचैवम् । समस्तवधेक
च्छुः । हंसादिष्वमत्याप्रत्येकवधेकच्छुः । गृध्रादिपुपादन्यूनः ॥ शुकादिष्वर्ध
कच्छुः ॥ मत्याद्विगुणम् ॥ टिट्ठिभादिपुपादः ॥ समस्तवधेद्विगुणम् । हरिणा
दिपुहंसादिपुचहंतृवहुत्वप्रत्येकंत्रिरात्रम् ॥ श्वादिपुगृध्रादिपुचैवम् ॥ गजा
दिपुप्रतिपुरुषंकच्छुः ॥ मार्जारादिपुशुकादिपुच प्रत्येकमुपवासः ॥ टिट्ठि
भादिपु प्रतिपुरुषंनक्तम् ॥

और अज्ञानतें गृध्रादिके वधविषे एक पाद उन कच्छु व्रत करे ॥ और अज्ञानतें तोते आदिके वधविषे अर्द्ध कच्छुव्रतकरे ॥ और इच्छातें वधविषे दूणा व्रत करे ॥ और टिट्ठिभादिके वधविषे एकपाद व्रतकरे ॥ और सभनांके वधविषे दूणा व्रत करे ॥ और हरिणादि अथवा हंसादि विषे वध करणवाले बहुत होवें तो एक २ त्रयरात्रि व्रतकरे ॥ और कुत्तेआदि गृध्रादि विषे ऐसे जान एा ॥ और हासिआदिके वधविषे बहुत पुरुष होवें तो एक २ कच्छु व्रत करे ॥ और ऐसेहि विष्ठाआदि शुकादिके वध विषे एक २ उपवास व्रत करे ॥ और टिट्ठिभादिके वध विषे एक २ पुरुष नक्त व्रत करे

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २२७

अब नास्तिकताते उपगत पठन कीते होए जो शूद्रप्रेष्य १ हीनसख्य २ हीनयोनिनिवेवण ३ अनाश्रमवास ४ परपाकरतित्व ५ सामान्यव्रतलोप ६ भार्या त्याग ७ एह पीछे व्याख्यान कीते हैं इनांका प्रायश्चित्त (एतदेवव्रतं कुर्युः) (चांद्रायणमथापिवेति) एह मनु जी का कथन कीता होया शक्तिजातिगुणादिकी अपेक्षा कर्के जाडने योग्यहै और इस श्लोकका व्याख्यान पीछे कानाहै ॥ अब इसी का संबंधि और कथन करतेहै प्रायश्चित्तमिति ॥ जो ब्राह्मण कुकर्म मे स्थित हुए २ प्रायश्चित्त की इच्छा करें और ब्रह्म कर्के दूर होवें तिनका भी एही

अथनास्तिक्यान्तरंपठितानां शूद्रप्रेष्य हीनसख्य हीनयोनिनिवेवणाऽ
नाश्रमवास परपाकरतित्व सामान्यव्रतलोप भार्यात्यागानां प्राग्व्या
ख्यातानां प्रायश्चित्तं एतदेवव्रतंकुर्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णवर्जं
शुद्ध्यर्थंचांद्रायणमथापिवेतिमनुक्तंशक्त्याद्यपक्षया योज्यम् श्लोकः प्रा
ग्व्याख्यातः ॥ किंच ॥ प्रायश्चित्तंचिकीर्षन्तिविकर्मस्थास्तुयेद्विजाः ब्र
ह्मणाचपरित्यक्तास्तेषामप्येतदादिशेदिति ॥ १ शूद्रादिसेवकानां मनुना
प्रायश्चित्तमुक्तम् तच्च सामान्येनविकल्पार्थम् ॥ विकर्मस्थाः ॥ शूद्रा
दिसेवकाः ॥ ब्रह्मणापरित्यक्तावेदाध्ययनरहिताः ॥ एतत्प्राजापत्यादि
त्रयमित्यर्थः ॥

पूर्वोक्त प्रायश्चित्तदेणेंयोग्यहै ॥ १ ॥ और शूद्रादियोंकी सेवा करणें वालोंको मनु जीने एही प्राय
श्चित्त किहाहै सो एह सामान्य साथ विकल्पाचे जानणा अर्थात् उपपातकींका जो सामान्य
प्रायश्चित्त ४ हैं तिनके साथ विकल्प वाला जानणा ॥ अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्टक
र्के कहतेहैं विकर्मस्थाइति विकर्मस्था क्या शूद्रादिकी सेवा करण वाले और ब्रह्म क्या
वेद तिसर्थें गड़ित अर्थात् जिनेंने वेद नहीं पढा होवे तिनका भी एह प्राजापत्यादि त्रय
व्रत करणें योग्यहै

२२८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और अनाश्रम वासविषे विशेष हागेतजीने कथा कीताहै अनाश्रमीति आश्रम जो ब्रह्मचर्यादि
निसते रहित पुरुष प्राजापत्य कच्छ व्रतकर्त्त फेर आश्रमको प्राप्तहोवे ॥ १ ॥ और दो बार विषे
अर्थात् एक बार प्रायश्चित्तकर्त्त फेर भी आश्रम ग्रहण न करे तो अतिकच्छव्रतकरे और तीसरी
बार विषे कच्छानि कच्छ व्रत करे उसमें अधिक होजावे तो चांद्रायण व्रत करे परंतु एह प्रा
यश्चित्त आश्रम वासका संभव नहिथा क्या हो नहि सकाथा निस विषे जानणे योग्यहै ॥ और
आश्रम वासहो सकाथा परंतु कीता नहि निस ना होणे विषे सामान्य पूर्वोक्त व्रत जानणा ॥ और
निस विषे भी इच्छा और न इच्छाने करणमें लघु गुर्वादि व्यवस्था जानणी अर्थात् इच्छाने

अनाश्रमेवासंविशेषोहारीतेन प्रोक्तः। अनाश्रमीसंवत्सरंप्राजापत्यंकच्छंच
रित्वाऽऽश्रममुपयात् १ द्वितीयेऽतिकच्छंतृतीयेकच्छातिकच्छमत ऊर्ध्वं चां
द्रायणमिति । एतत्तु आश्रमवामासंभवेदितव्यम् । संभवेतु सामान्यप्रा
यश्चित्तम् । तत्रापि कामाकामतोलपुगुर्वादिका व्यवस्था बाध्या । अत्रा
यनाभिवायः ॥ ननुना शूद्रसेवनमपात्रीकरणविहितं तेनैव शूद्रप्रेष्यता
प्राप्तिप्रता योग्याश्वरेणतु सामीप्यदूरत्वोपाधिभ्यां शूद्रसेवन शूद्रप्रेष्य
त्वेष्ट्यगमिप्रते तयोःशूद्रप्रेष्यत्वमुपपातकमध्येपठितम् ॥ हीनयोनिनिषे
धोपधिविंशपःशातातपोक्तोऽवसेयः ॥

करणमें बहुत और न इच्छाने करणमे थोड़ा प्रायश्चित्त करणा ॥ इस विषे एह अभिप्रायहै की
मनु जीने शूद्र सेवाका प्रायश्चित्त अपात्री करण प्रकरण विषे विधान कीताहै निसीने शूद्र
प्रेष्यता भी कथा की गैहै ॥ और राजवल्क्यजीने सामीप्य दूरत्व उपाधि कर्त्त शूद्रकी सेवा
अथ शूद्र प्रेष्य एह दोनों पुरुष पुरुष कथन कीतेहै अर्थात् सामीप्य कर्त्त शूद्रसेवन
की प्रता उपाधि कर्त्त शूद्रप्रेष्य विधान कीताहै तिनो मे से शूद्रप्रेष्यत्व उपपातकोके
प्रकरणमे पाठित कीताहै ॥ और हीनयोनि निषेधविषे भी विशेष शातातप जीका
विधान कीता जानणा ॥

॥ श्रीरष्वोर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी०भा० ॥ २२५

और अग्नेहि जो रोगकर्के मरणे वाले गजादि तिनके अज्ञानेन बधविषे त्रय ३ रात्रि व्रत करे। और इसी प्रकार हरिणादिके बधविषे दो रात्रि व्रत करे। और गृध्रादिके बधविषे चौथे काल भोजन करे ॥ और बिहालादिके बधविषे उपवास व्रत करे ॥ और मृधादिके बधविषे नक्त व्रत करे ॥ और तोतेआदिके बधविषे एक भक्तव्रत करे ॥ और मृत प्राय जो टिट्ठिभादि तिनके बध विषे जल में प्राणायाम करे ॥ और नदि जाण जो संपूर्ण मृग पक्षि तिनके बधविषे त्रयरात्रि व्रत करे ॥ एह व्रत देश काल जाति शक्ति गुणादिकी अपेक्षाकर्के गुरु लघु विषयविषे जोडनेयोग्यहै ॥

मृतप्रायेपुगजादिष्वमत्याप्रत्येकवधेत्रिरात्रम् ॥ हरिणादिपुद्गिरात्रम् । ख
रादिपुचतुर्थकालाहारः॥ मारजारदिपूपवासः॥ गृध्रादिपुनक्तम् । शूकादिष्वे
कभक्तम् ॥ टिट्ठिभादिपुजलेप्राणायामः ॥ अविज्ञातसर्वमृगपक्षिषु त्रिरात्र
मिति इदं देशकालजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षया गुरुलघुविषयेयोग्यम् इतिस्त्री
शूद्रविद्वज्जत्रवधप्रायश्चित्तम् । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० ॥ अथ
गणनायांव्याख्यातस्यनास्तिक्यस्यप्रा० अत्रापिमामान्योपपातकप्राय
श्चिनयोजना जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयाज्ञेया तत्र नास्तिक्यशब्देन वेद
निंदा तेनजीवनंनास्तिक्यमितिव्युत्पत्तिं प्रदर्श्य वसिष्ठस्मरणमाह विज्ञा
नेश्वरोवथा ॥

इसका अर्थ पीछे स्पष्टकर्के किहाहै ॥ एह स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्रीके बधकाप्रा० समाप्त होया ४६ ॥
४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ अथ गणना विषे व्याख्यान कीत्ता जो नास्तिक्य तिसका प्रायश्चित्त कह
तेहै अत्रेति इस विषेभी सामान्य जो उपपातकोंकी प्रायश्चित्त योजना (उपपातकशुद्धिःस्यात्)
उत्पादि सो जातिशक्त गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जानणे योग्यहै ॥ तिस विषे नास्ति
क शब्द कर्के वेदकी निंदा जानणी ॥ तिस कर्के जो नास्तिक्य सो नास्तिक्य किहाहै
इस व्युत्पत्तिकी दिखी कर्के अर्थात् कह कर्के वसिष्ठ जीकी स्मृतिकी विज्ञानेश्वर जी
कथन करनेहैं जैसे ॥

२२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

नास्तिक इति नास्तिक क्या परलोक और ईश्वरको नहीं मानण वाला सो वारां १२ रात्रि का कृच्छ्र व्रत कर्के नास्तिक भावतें विश्राम करे और नास्तिककी कौटियां कर्के अर्थात् नास्तिक भावकी शुक्ति दिग्वाणे कर्के जो उपजाविका करताहै सो अतिकृच्छ्रव्रत करे ॥ एह प्रायश्चित्त एक वार करणें विषे जानणा ॥ और अभ्यासविषे उपपातको के प्रायश्चित्त चांद्रायणादि जानणें ॥ और अत्यंत अभिनिवेश कर्के अर्थात् एककांटीतें एक अधिक इसप्रकार बहुत कालके अभ्यासविषे शंखजी कहतेंहैं नास्तिकइति नास्तिक और नास्तिकभावकर्के जीविका करणवाला और कृतघ्न और कृतघ्न्यवहार करणें वाला और झूठा कथन करण वाला एह पंच ५ वर्ष रोज ब्राह्मणके घग्निषे भिक्षा करे तद शुद्ध हुंदेहैं ॥ इत्ये संवत्सर एह पद भिक्षा करणका काल कि

नास्तिकः कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा विरमेन्नास्तिक्यान्नास्तिक्यवृत्तिस्त्व
तिकृच्छ्रमिति । सकृद्विषयमेतत् ॥ अभ्यामेतुपपातकप्रायश्चित्तानिचांद्रा
यणादीनि ॥ अत्यन्ताभिनिवेशेन बहुकालाभ्यामेतु शंखः ॥ नास्तिकोना
स्तिकवृत्तिः कृतघ्नःकृतघ्न्यवहारी मिथ्याभिशासी इत्येतं पंचसंवत्सरं ब्राह्म
णगृहे भैक्ष्यंचरेयुरिति ॥ संवत्सरमितिभैक्ष्याचरणकालः ॥ अत्रैवहारीतः
नास्तिकोनास्तिक्यवृत्तिरितिप्रक्रम्य पंचतपोभ्रावकाशजलशयनान्यनु
तिष्ठेयुरिति ॥ ग्रीष्मवर्षाहमेतेष्विति ॥ नास्तिक्येनवृत्तिर्जीवनंयस्यसः ।
इतिनास्तिक्यप्रायश्चित्तम् ॥ ५० ॥ ॥

हाहै और किसे नियमवास्ते नहि । अब इसी विषे हारीतजी भी और प्रायश्चित्त कहतेंहैं नास्तिक
इति नास्तिक और नास्तिकतातें जीविका करणवाला इनांतें आद लेकरके पंचतप भ्रावकाश
जलशयन इनांको करे । ग्रीष्म वर्षा हेमंत ऋतु विषे अर्थात् ग्रीष्म ऋतु विषे पंचाग्नि तपना
रहे और वर्षा ऋतु विषे घग्ने बाहरहि रहे अर्थात् संपूर्ण जल अपणें शरीरपरहि बरसावे और
हेमंत ऋतु विषे जलमें शयन करेजद शुद्ध होताहै । नास्तिक पदका अर्थ कहतेंहैं नेति नास्तिक
क्या परलोक और ईश्वर नहींहै इत्यादि कर्के वृत्ति क्या जीविका जिस पुरुषकी सो कहिए
नास्तिक्यवृत्ति एह नास्तिकताका प्रायश्चित्त पूराहोया ॥ ५० ॥ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २२९

ब्राह्मणे ब्राह्मण प्रथम क्षत्रीकी कन्या विवाहे और ब्राह्मणकी कन्या फेर विवाहे तो वारां १२ रात्रिका कच्छ व्रत करके तिसरं अर्थात् ब्राह्मणकी कन्याको विवाहे ॥ और प्रथम वैश्यकी कन्या विवाहे तो तप्तकच्छ व्रत करके फेर ब्राह्मणा क्षत्रियाणांको विवाहे ॥ और शूद्रापूर्वीहोवे तो कच्छ और अतिकच्छ व्रत करके ब्राह्मण क्षत्रि वैश्यकी कन्या विवाहे । और जेकर क्षत्री वैश्यापूर्वी होवे तो वारां १२ रात्रिका कच्छ व्रत करके फेर क्षत्रीकी कन्या विवाहे । और शूद्रापूर्वीहोवे तो अतिकच्छ व्रत करके तिसरं विवाहे ॥ और जेकर वैश्य शूद्रकी कन्या विवाहे तो वारां १२ रात्रिका कच्छ व्रत करके फेर वैश्यकी कन्या विवाहे ॥ इसका अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं राजन्यामिति राजवं

ब्राह्मणो राजन्यापूर्वी कच्छं द्वादशरात्रं चरित्वा निविशेतां चोपयच्छेत् ॥
वैश्यापूर्वी तप्तकच्छम् । शूद्रापूर्वी तु कच्छं तिकच्छम् । राजन्यश्च वैश्यापूर्वी
कच्छं द्वादशरात्रं चरित्वा निविशेतां चोपयच्छेदिति । शूद्रापूर्वी त्वतिकच्छम्
वैश्यश्च शूद्रापूर्वी कच्छं द्वादशरात्रं चरित्वा तां चोपयच्छेदिति । राजन्यां राजवं
शीयां सवर्णां विवाहात् पूर्वमुद्गृहीतीति राजन्यापूर्वी एवमग्रेपि तत्र निविशेतां
चोपयच्छेदिति । कच्छं अनुष्ठानोत्तरकालं सवर्णापरिणयनादूर्ध्वं तां च राज
न्यादिकामुपयच्छेदित्यर्थः । उदंचाज्ञानविषयम् । ज्ञानतस्तूपपानकसामा
न्यप्रायश्चित्तं व्यवस्थितमेव द्रष्टव्यम् ॥ साधारणस्त्रीसंभोगश्च हीनस्त्री
निषेवणमित्युक्तम् ॥ तत्रापि पशुवैश्याभिगमने प्राजापत्यं विधीयत इति
संवर्तोक्तमकामतो द्रष्टव्यम् कामतस्तु यमोक्तम्

क्षत्री की कन्याको ब्राह्मणकी कन्यातें प्रथम विवाहे सो राजन्यापूर्वी कहिए इसी प्रकार अग्रे भी जानना ॥ कच्छ व्रत के करणें तें उपरंत और अपने वर्णकी कन्याकें विवाहणें तें उपरंत क्षत्रियादिकी कन्याको विवाह लेवे एह अर्थ है ॥ एह प्रायश्चित्त अज्ञानतें करणें विषे जा नना ॥ और ज्ञानतें करणें में उपपानकोंके सामान्य प्रायश्चित्त व्यवस्थित हि हैं सो जानणे ॥ और साधारण स्त्री संभोगभी हीनस्त्री निषेवण एह किहा है तिस विषे भी (पशु और वैश्याके गमन विषे प्राजापत्य व्रत करे) एह संवर्तजी का कथन कीता होया अज्ञान तें करणें विषे जानना ॥ और इच्छातें करणें विषे यम जीका किहा होया जानना

२३० ॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

और वेश्याके गमन विषे जो पाप है तिसनूँ ब्राह्मण दूर करें एक बार तपाये होए कुशाके जलको सत्त ७ रात्रि पानकरें १ इसमें अमा अभिप्राय है कि उपपातकोंके जो सामान्य प्रायश्चित्त (उपपातकशुद्धिः स्यात्) इत्यादि हैं सो इच्छा और न इच्छा और अभ्यासकी अपेक्षा करे जो हने योग्य है अर्थात् इच्छा करें करणें में व्रत महीने का व्रत करे और न इच्छा करें करणें में चाँद्रायण व्रत करे और अभ्यास विषे पराक व्रत करे इत्यादि व्यवस्था जानणी ॥ और तिस विषे अभ्यास के होयां २ निमित्त २ प्रति नैमित्तिककी आवृत्ति करणी ॥ इस जगा निमित्त पाप है नैमित्तिक प्रायश्चित्त है इस न्याय करे निमित्त प्रति नैमित्तिकानुवृत्तिके प्रसंग विषे लौगाक्षिने विशेष किहा है ॥ अभ्यास विषे दिनोंकी वृद्धि करणी अर्थात् एक बार करणें में सत्त ७ रात्रि जल पान किहा है दो दिन करे तो चौदां १४ रात्रि जल पान करे महीने तक

वेश्यागमनजं पापं व्यपोहंति द्विजातयः पीत्वा पीत्वासकृत्तप्तं सप्तरात्रं कुशोदकमिति १ उपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानि कामाकामाभ्यासापेक्षया योज्यानि ॥ तत्र सत्यभ्यासे तु प्रतिनिमित्तं नैमित्तिकमावर्त्तनीयमिति न्यायेन प्रतिनिमित्तं नैमित्तिकानुवृत्तौ प्रसक्तायां लौगाक्षिणा विशेष उक्तः ॥ अभ्यासेऽहर्गुणावृद्धिर्मासादवाग्विधीयते ततो मासगुणावृद्धिर्यावत्संवत्सरं भवेत् ततः संवत्सरगुणायावत्पापं समाचरेदिति १ इदं मतिपूर्वविषयम् ॥ अमतिपूर्वावृत्तौ चतुर्विंशतिमते विशेष उक्तः ॥ सकृत्कृते तु यत्प्रोक्तं त्रिगुणं तत्त्रिभिर्दिनैः सामातपंचगुणं प्रोक्तं पणमासादशधा भवेत् १ संवत्सरात्पंचदशं त्र्यव्दाद्विंशगुणं भवेत् ततोऽप्येवं प्रकल्प्यं स्यात्शातातपवचायथेति २ ॥

असौ दिनवृद्धि करे और महीनेतें अधिकमे महीनेकी वृद्धि करे वर्ष रोज तक अर्थात् एक महीने ते अधिक दो महीने पाप करे तो महीनेका व्रत दूणा करे वर्ष रोज तक ॥ और वर्ष रोजके अग भी पाप करे तो वर्षकी वृद्धि करे इसी तरह अग भी जानणा ॥ १ ॥ एह इच्छा पूर्वक करणें में जानणा और अज्ञान पूर्वक करणें में चतुर्विंशतिमते विषे विशेष किहा है सकृदिति एक बार के पाप विषे जो प्रायश्चित्त किहा है सो व्रत दिनके पापमें व्रत गुणा अधिक करे और महीना रोज करणें में पंचगुणा अधिक करे और छे ६ महीने करणें में दशगुणा करे ॥ १ ॥ और वर्ष रोज करणें में पंद्रा १५ गुणा वृद्धि करे और व्रत वर्ष करणें में बीस गुणा करे इस प्रकार कल्पना करणें योग्य है एह शातातप जी कावचन है २ ॥

॥ श्रीरघवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी०भा० ॥ २३१

जो फेर पहली विधि तें दूसरे विषे दूणा वत करे एह निमित्त प्रति आवृत्तिका विधान करणें वाला वचनहै सो महापातकविषें जानणा ॥ और इस पूर्वोक्त श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के पारदार्य्य प्रकरणविषेभी पीछे किहाहै ॥ एह शूद्र प्रेष्यादिका प्रायश्चित्त समाप्तभया ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ और भार्या त्याग ॥ ५७ ॥ ॥ अब खोटे दान के लेणे विषे प्रायश्चित्त कहते हैं तदिति सो दान इकठा कीत्ता जो धन तिसके त्याग पूर्वक है इसमें मनु जी कहतेहैं यदिति जो ब्राह्मण निदित कर्म कर्के धनको इकठा करता है सो तिस धनके त्याग कर्के शुद्ध होताहै अथवा जप तप कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहते

यत्पुनर्विधेः प्राथमिकादस्माद्द्वितीयेद्विगुणंचरेदिति प्रतिनिमित्तमावृत्ति
विधायकं तन्महापातकविषयम् ॥ पारदार्य्येपिप्रागुक्तमिदम् ॥ इतिशूद्र
प्रेष्यादिप्रा० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ भार्यात्यागः
॥ ५७ ॥ अथासत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ तच्चोपार्जितधनत्यागपूर्वकमि
त्याहमनुः ॥ यद्गर्हितेनार्जयंतिकर्मणाब्राह्मणाधनम् ॥ तस्योत्सर्गेणशु
द्धयतिजप्येनतपसैवच ॥ १ ॥ गर्हितेनकर्मणा निषिद्धदुष्प्रतिग्रहादिना
जप्येन तपसा वक्ष्यमाणेनशुद्धयति एतच्च धनत्यागादि बहुमूल्याल्पमू
ल्यकरिवस्त्रादिपरिग्रहे तुल्यप्रायश्चित्तार्थम् ॥ अविक्रेयविक्रयादावप्येवम्
जपित्वात्रीणिसावित्र्याःसहस्राणिसमाहितः ॥ मासंगोष्ठपयःपीत्वामुच्य
तेऽसत्प्रतिग्रहात् ॥ २

हैं निदित कर्म क्या निषिद्ध जो खोटे दान तिनाते अगे कहणा जो जप अथवा तप तिस कर्के शुद्ध होतेहैं एह जो धन त्याग किहाहै सो बहुत मुल थोडे मुल वाले हस्ति और वस्त्रादि तिनांके दान लेणे विषे तुल्य प्रायश्चित्त वास्तं जानणा अर्थात् जेमे बहुत मुल वाले हस्तिका त्यागहै तैसेहि थोडे मुल वाले वस्त्रादिका त्यागहै इस कारण ते पृथक् प्रायश्चित्त जानणा ॥ और नहि जो खरीदणे योग्य वस्तु तिसके खरीदणे विषे भी एही प्रायश्चित्त करणा ॥ और विशेष कहते हैं जपित्वेति समाधान होया २ गायत्रीका त्रय हजार १००० जप महीना रोज कर्के और गोशाला विषे दुग्ध पान कर्के खोटे दान के लेणे ते शुद्ध होताहै ॥ २ ॥

२३२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं त्रीणोति त्रय ३००० हजार गायत्री का जप करे अथवा गोशाला विपे महीना गोज दुग्ध पान करता रहे तो खोटे उत्कवक्ष्यमाण दान लेणेंते उत्पन्न जो पाप तिसमें सुद्ध होता है ॥ और शूद्र ते दान लेणें विपे भी एही प्रायश्चित्त जानणा क्योंकि द्रव्यके दोष कर्के और दाताके दोष कर्के भी दानको निन्दितत्वके अविशेष होणेंते अर्थात् कोई द्रव्यहि निन्दित है जैसे तुलादि और कोई देणवाला शूद्रादि निन्दित है २ ॥ इसविपे मासं एह पद (कालाध्वनोरत्यंतसंयोगेद्वितीया) इस सूत्र कर्के द्वितीया विभक्तिका विधान हाणें ते त्रयहजार जप प्रतिदिन का व्यापि जाणीदाहें अर्थात् ३००० जप प्रतिदिन करे अब इसी में याज्ञवल्क्यजी और प्रकार कहतेहैं गोष्ठइति ब्रह्मचर्य धारण कर्के गोशाला विपे वास करता होया महीना गोज दुग्ध पान करे और गायत्रीका जप करता रहे तो खोटे दान

त्रीणि सावित्रीसहस्राणि जपित्वा गोष्ठे वा मासं क्षीराहारोऽसत्प्रतिग्रहज नितात्पापान्मुक्तो भवति ॥ शूद्रप्रतिग्रहादावप्येतदेव प्रायश्चित्तं द्रव्यदोषेण च दातृदोषेणापि प्रतिग्रहस्य गर्हितत्वाविशेषादिति २ अत्र मासमिति कालाध्वनोरत्यंतसंयोगेद्वितीयाविधानात् त्रिसहस्रसंख्याकजपस्य प्रतिदिवसव्यापित्वंगम्यते ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गोष्ठे वसन् ब्रह्मचारी मासमेकं पयोव्रतः गायत्री जाप्यनिरतः शुध्यतेऽसत्प्रतिग्रहात् ॥ १ ॥ यस्त्वसत्प्रतिग्रहं कराति स ब्रह्मचर्ययुक्तो गोष्ठे वसन् गायत्री जपशीलो मासं पयोव्रतेन शुध्यतीति ॥ प्रतिग्रहस्य चासत्त्वं दातृजातिकर्मनिबन्धनं यथा चांडालादेः पतितादेश्च तथा देशकालनिबन्धनं च यथा कुरुक्षेत्रोपरागादौ तथा प्रतिग्राह्यद्रव्यनिबन्धनं च यथा सुरभिपीमृतशय्योभयतो मुख्यादेः ॥ यदा तु पतितादिर्मेष्यादिकं ग्रहणाति तदेदं गुरु प्रायश्चित्तं द्रष्टव्यम् ॥

कैलेणेंते उत्पन्न जो पाप तिसमें शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यस्त्विति जो पुरुष खोटा दान ग्रहण करे सो ब्रह्मचर्य कर्के युक्त गोशाला विपे वास करता होया और गायत्रीका जप करता रहे और महीना गोज दुग्ध पान करता रहे तो शुद्ध होता है ॥ प्रतीति प्रतिग्रहका दानको जो असत्त्वता है सो दाताको जाति और कर्मके निबन्धते जानणी जैसे जातिमें चांडालादिते और कर्ममें पतितादिते जो प्रतिग्रह है तैसेहि देशकालके निबन्धते जानणा जैसे देश कर्के कुरुक्षेत्रादि और काल कर्के ग्रहणादिविपे दान असत् है तैसेहि प्रतिग्राह्य जो द्रव्य तिसके निबन्धते जानणा जैसे मदिरा भेड़ी मृत पुरुषकी शय्या और उभयमुखी गौ इत्यादि जानणें ॥ और जेकर पतितादि पुरुषोंमें भेड़ी आदिका ग्रहण करे तिसमें एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त बड़ा देखणें योग्य है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २३३

क्योंकि दो ५ प्रकारके द्वेषणें कर्कें निमित्तको बडा होणे तें) और इस विषे जप संख्या पूर्ण कमनुजीकी कथन कीती होई जानणी ॥ और जेकर न्याय युक्त ब्राह्मणादि होवे तिसके पासते निषिद्ध मेषादिका ग्रहणकरे और पतितादियोंतें अनिषिद्ध जों भूम्यादि तिसका ग्रहण करे तिस में षड् त्रिंशन्मत विषे प्रायश्चित्त कहते हैं पवित्र इति पवित्रेष्टिनाम यज्ञ करणे कर्कें संपूणे जो घोदान तिनके लेंणें शुद्ध होतेहैं और चाद्रायण मृगारेष्टि मित्रविदा अथवा गायत्री के लक्ष जप कर्कें खोटे दानके लेंणें शुद्ध होतेहैं १ एह पवित्रेष्ट्यादि तीनों यज्ञ विशेष जानणे ॥ अथ राजाके दान लेणें विषे वृद्ध हारीनजी कहतेहैं राज्ञइति राजाका दान लेकर्कें महीना गे ज जल विषे वास करे और षट्काल विषे दुग्ध पान करता रहे तो पूर्ण महीने कर्कें शुद्ध हो

व्यतिक्रमद्वयदर्शनेन निमित्तस्यगुरुत्वात्) जपसंख्यातु मानवीयावोध्या ॥ यदान्यायवर्तिब्राह्मणादेः सकाशान्निषिद्धंमेपादिकंगृण्हाति पतिता देवाऽनिषिद्धंभूम्यादिकंगृण्हाति तदाषड्त्रिंशन्मतेप्रा० पवित्रेष्ट्याविशु द्यतिसर्वेघोराःप्रतिग्रहाः। ऐन्दवेनमृगारेष्ट्याकदाचिन्मित्रविन्दया ॥ देव्या लक्षजपेनैवशुध्यन्तेदुष्प्रतिग्रहात् ॥ १ ॥ राजप्रतिग्रहेष्टद्वहारीतः। राजः प्रतिग्रहंकृत्वामासमप्सुसदावसेत् षष्ठेकालेपयोभक्षःपूर्णमासेविशुध्यति ॥ १ ॥ तर्पयित्वाद्विजान्कामैः सततंनियतव्रत इति ॥ राज्ञोऽसच्छास्त्रा भिनिविष्टस्य ॥ अत्रशूलपाणिः ॥ राजपदमत्रोच्छास्त्रवर्तिनृपतिपरम् ॥ शूद्रनृपतिपरंच ॥ उभयप्रतिग्रहस्यैवमनुनानिषिद्धत्वात् ॥ यथाहमनुः ॥ नराज्ञःप्रतिगृण्हीयादराजन्यप्रसूतितः ॥ तथा ॥ योराज्ञः प्रतिगृण्ही तलुब्धस्योच्छास्त्रवर्तिनः सपर्यायेणयातीमान्नरकानेकविंशतिम् १ न्या यवर्तिक्षत्रियनृपतेः प्रतिग्रहस्य देवलेनाभ्यनुज्ञातत्वात् ॥

ताहि और षट् कालका अर्थ अग्रे कहेंगे ॥ और ब्राह्मणांको प्रसन्न कर्कें वनवाला होया २ मि रंतरहि शुद्ध होताहै १ इसमे राजा खोटे शास्त्र जानण वाला अर्थात् नास्तिक जानणा ॥ अथ इसी मे शूलपाणि जी कहते हैं राजेति इसमे राजपद असच्छास्त्र जो बौद्धादि तिनके जा नणें वाले राजा पर है अथवा शूद्र राजा पर है इन दोनोंके दानको मनुजी ने निषिद्ध कि हावे ॥ जैसे मनुजी कहतेहैं नेति जो क्षत्रीतें नहि उत्पन्न राजा तिसका दान ग्रहण नहि करणा ते सें हि और कहते हैं यइति जो लोभी अथवा खोटे शास्त्र जानण वाले राजाका दान ग्रहण करताहै सो पुरुष क्रम कर्कें इक्कीस २१ नरकोंको प्राप्तहोताहै १ और न्याय युक्त क्षत्रि राजाके दान को देवल जी कर्कें अभ्यनुज्ञात होणते अर्थात् तिसने आज्ञा दिची है

२३४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

ऐसे देवलजी कहते हैं धर्मज्ञ इति धर्मके जानण वाला और थोड़े और खोटे पुण्यों को दंड देण वाला ऐसा राजा तीक्ष्णभी होवे तिसका धन पवित्रहै सो ग्रहण करणे योग्यहै १ इसमें मुक्ति कहतेहैं आढ्यानामिति धनवानको बहुत भागवाला होणेत अथवा महात्मा पुरुषों को देणयोग्य होणेत राजा लोकोका दान थोड़ किहाहै श्रीगणेश ब्राह्मणोंके विना और किसीको दान नाहै ग्रहण करणेयोग्यहै २ राजा एह पद क्षत्रि राजा पढ़ै इसको मुख्यहोणेत अथवा ब्राह्मणके समोप होणेत इसविष पंद्रा १५ गोआं द्रव्यत्याग पूर्वक देणयोग्यहै ॥ और प्रथम दो २ दिन उपवासतें उपरंत तीसरे दिनमे जो सायंकालहै तिसका नाम पष्टकाल किहाहै तिसविषे देह धारणके उचित दुग्धपान करना रहे ॥ परंतु एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त अभ्यासविषे देखणे योग्यहै ॥ अथवा पतिता

यथाहदेवलः ॥ धर्मज्ञस्य कृतज्ञस्य रक्षार्थं शासतोऽशुचीन् ॥ मेध्यमे
वधनं प्राहुस्तीक्ष्णस्यापि मर्हापतेः १ आढ्यानां भूरिभाराच्च देयत्वाच्च महात्मनाम् ॥ श्रेयान् प्रतिग्रहो राज्ञां नान्येषां ब्राह्मणादृते २ राज्ञामिति
क्षत्रियन्तपतिपरम् ॥ अस्यैव मुख्यत्वात् ॥ ब्राह्मणसन्निधानाच्च अत्र
पंचदशधेनवो द्रव्यत्यागपूर्वकं दातव्याः ॥ दिनद्वयोपवासानंतरं तृतीये
हिसाधकालः पष्टकालः ॥ तत्र देहधारणोचितक्षीरपायी ॥ एतच्चा
भ्यासेद्रष्टव्यम् ॥ पतितादेः कुक्षेत्रोपरागादौ कृष्णाजिनादिप्रतिग्रहे वा
प्रतिग्राह्यद्रव्याल्पत्वे प्रायश्चित्तालपत्वमाह हारीतः ॥ मणिवासोगवादी
नां प्रतिग्रहणे सावित्र्यष्टसहस्रं जपेदिति ॥ षड्विंशन्मतेपि ॥ भिक्षामात्रे गृही
तेऽतिपुण्यमंत्रमुदीरयेत् ॥ प्रतिग्रहे पुनर्वपुषष्ठमंशं प्रकल्पयेदिति १ अति
पुण्यमंत्रो गायत्री ॥ प्रकल्पयेद्ब्राह्मणेभ्यो दद्यादित्यर्थः ॥ तथा जपहोमादि
कंकुर्याद् जप्त्वा यज्ञप्रतिग्रहौ पवित्रेष्वाविशुद्ध्यति मुच्यन्तेऽसत्प्रतिग्रहात् १

दि तें और कुक्षेत्र ग्रहणादि विषे काले चमोदि के दान लेणें विषे जानणा योग्य है ॥ और दान लेआ जो द्रव्य सो थोड़ा होवे तो तिसमे थोड़ाहि प्रायश्चित्त कहतेहैं हारीतजी मणोति मणि वस्त्र गवादियोंके दान लेणे विषे अष्ट ८००० हजार गायत्री का जपकरे तो शुद्ध होताहै इसीमे षड्विंशन्मत वालेभी कहते है भिक्षाति भिक्षामात्रक ग्रहण विषेभी प्रतिग्रहका दोषहै तिसमें अतिपुण्य जो गायत्री तिसका पाठ करणे ते शुद्ध होता है और संपूर्ण प्रतिग्रह विषे छे ६ मां हेसा ब्राह्मण को देदेवे तो शुद्ध होताहै १ तैतेहि और कहतेहैं जपेति यज्ञ और प्रतिग्रह को जाण करे जपहोमादि करे तो शुद्ध होताहै और पवित्रेष्टि नाम यज्ञ करे शुद्धहोते हैं

॥ और खोटे दान के लेणेतें भी मुक्त होते हैं १

॥ भीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २३५

अब इसीमें और भी कहतेहैं पवित्रउति पवित्रेष्टिकर्के अथवा गरिष्टि कर्के अथवा मित्र विंदा कर्के अथवा गायत्रीके लक्ष जप करण कर्क खोटे दानके लेणें तें शुद्ध होताहै १ अब और प्रहार उशनाजी कहतेहैं पतितादिति पतित पुत्रपतें ब्राह्मणद्रव्यग्रहण करे अथवा जकरभक्षण करे तो तिस द्रव्य का त्याग कर्के अतिकृच्छ्रव्रत करे तो शुद्ध होताहै १ अब कश्यपजीविशेष कहतेहैं असदिति पूर्वोक्त खोटे दानके लेणें विषे महीना रोज गोशालाविषे वाम करता हाया दुग्धपान करता रहे अथवा चांद्रायणव्रत करे अथवा गोहत्या का व्रत जोत्रय महीनेकाहें सो करे १ एह पूर्वोक्त व्रत अभ्यास विषय विषे जानणा ॥ अथवा इच्छातें एक बार करणें विषे जानणा ॥ हारीत जी कथन करतेहैं मणीति माणि वस्त्र गवादीके प्रतिग्रह विषे गायत्रीका एक १००० हजार जप करे माणि इसजगा थोड़े पुछवाली जानणी मध्यम द्रव्यके

अन्यत्र ॥ पवित्रेष्ट्यागरिष्ट्यावाकदाचिन्मित्रविंदया देव्यालक्षजपेनैवमुच्य तेदुप्प्रतिग्रहात् १ देवीश्रीगायत्री ॥ उशनाः ॥ पतिताद्रव्यमादत्तेभुं क्तेचब्राह्मणायदि कृत्वातस्यसमुत्सर्गमतिकृच्छ्रंचरेद्विजः १ कश्यपः । अ सप्रतिग्रहेमासंवसनूगोष्ठेपयःपिवेत् चांद्रायणंवागोघ्नस्ययथोक्तंव्रतमाचरे त् १ गोघ्नव्रतंत्रैमासिकम् ॥ अभ्यासविषयमिदम् ॥ कामकृतसकृद्विषयंवा हारीतः ॥ मणिवासोगवादीनांप्रतिग्रहे सावित्र्याःसहस्रं जपेत् ॥ पंच मध्यमे दशाधमे द्वादशरात्रंपयोव्रतःशतसहस्रमतिमतिग्रहंप्विति । उत्तम प्रतिग्रहेसहस्रम् ॥ मध्यमप्रतिग्रहेपंचसहस्राणिजपेत् ॥ प्रतिग्राह्यद्रव्य मध्यमत्वेन प्रतिग्रहस्य मध्यमत्वम्, ॥ एवमधमप्रतिग्रहे दशसहस्राणि

प्रतिग्रह विषे पंच ५००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और अधम दानके लेणें विषे दश १००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और बारां १२ रात्रि दुग्ध पानकरे ॥ और आ दान करे इसी अधमकेबहुत बार लेणें विषे सो १००००० हजार अथवा लक्ष गायत्री का जप करे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं उत्तमेति उत्तम दान लेणें विषे एक १०० हजार गायत्री का जप करे ॥ और मध्यम दान लेणें विषे पंच ५००० हजार जप करे ॥ अब मध्यमत्वादिका विवेक करतेहैं प्रतीति प्रतिग्रह करणें योग्य जो द्रव्य सो मध्यम होत तो प्रतिग्रहको भी मध्यमत्व है इस प्रकार अधम द्रव्यके प्रतिग्रह विषे दश १०००० हजार गायत्रीका जप करे इनका भेद अग्रे आवेगा ॥

२३६ ॥ भीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब इसीमे देवल जी कथन करते हैं नवेति नव दान उत्तम हैं और चार मध्यम हैं और संपूर्ण शेष रहे दान अधम कहे हैं एह बुद्धिमानों ने त्रय १ प्रकारके दान कहे हैं ॥ १ ॥ अन्नमिति अन्न दधि मखीर रक्षा करणी गौ भूमि सुवर्ण मार्गका रस्तावताना हरित एह नव १ उत्तम दान जानणें उत्तम द्रव्य के होणें तें ॥ २ ॥ और विद्यान्न क्या विद्या ग्रहण कर्के पिछे दिना जो अन्न और वस्त्र आवास क्या घर गोधन एह चार मध्यम दान हैं मध्यम द्रव्यके होणें तें १ उपेति जोडा भगूंडा ग्य छतडी पात्र आसन दीपक लकड़ो फलादि एह संपूर्ण चरम क्या अधम हैं परन्तु बहुत बर्ग लेता रहे तद ४ और ॥ अर्थ जातोंको बहुत होणेंते इनके नामकी संख्या नाहीं इच्छा करीदो है अर्थात् और वस्तु बहुत हैं इस वास्ते गिणनेमे नाहीं आते हैं

अन्नदेवलः ॥ नवह्युत्तमानिचत्वारिमध्यमानिविधानतः अधमानीतिशेषाणित्रिविधत्वमिदंविदुः ॥ १ ॥ अन्नं दधिमधुत्राणंगोभूरुक्माध्वहस्तिनः ॥ एतान्युत्तमदानानि उत्तमद्रव्यमानतः २ विद्यान्नाच्छादनावासाः परितोगोधनानिच ॥ दानानिमध्यमानीतिमध्यमद्रव्यमानतः ३ विद्यान्नंविद्याग्रहणेनदत्तमन्नम् । आवासो गृहम् । उपानत्प्रेखयानानिछत्रपात्रासनानिच ॥ दीपकाष्ठफलादीनिचरमंवहुवार्पिकम् ४ बहुत्वादर्थजातानांसंख्योद्देशेषुनेप्यते अधमान्यवाशिष्ठानिसर्वदानान्यतांविदुरितिछांदोग्येविहितम् ॥ तथा त्रीण्याहुरतिदानानिगावःपृथ्वीसरस्वतीत्यादिप्रपंचोदानग्रंथेऽवसेयः ॥ अत्रगावइतिवहुवचनमविवक्षितम् ॥ तेन तद्वहुत्वमुत्तमःप्रतिग्रहः । सुमंतुः शूद्रयाजकःसर्वद्रव्यपरित्यागात्पूतोभवति

इस कारणते शेष रहे जो संपूर्ण दान सो अधम जानणें ५ एह छांदोग्य विषे विधान कीताहै उसमें (संख्याशेषेषुनेप्यते) इह पाठ भी है ॥ तैसें हि और कथन करते हैं त्रीणीति त्रय १ अतिदान कहे हैं गौ पृथ्वी सरस्वती क्या विद्या इत्यादि प्रपंच दान ग्रंथ विषे जानणें योग्यहै इस विषे गाव एह जो बहुवचन है सो अविवक्षित जानणा अर्थात् इच्छातें नाहीं किया हो या जानणा तिस कारण कर्के एक भी गौ दान होवे सो उत्तम दान जानणा ॥ अब सुमंतु जी और प्रकार कथन करते हैं शूद्रेति शूद्रको यज्ञ कस्वाण्णे वाला पुरुष संपूर्ण द्रव्य जो शूद्र ते कहे हैं तिसका त्याग कर देवे तो शुद्ध होजाताहै ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २३७

अब इसीमें वौधायनजी और प्रकारकर्के कहतेहैं वहिहि बहुतोंके लेणे योग्य जो दान तिसको एकहि लेलेवे ॥ और जिसका अन्न नहिं भक्षण करणा तिसका अन्न भक्षणकरलेवे ॥ और जिसको यज्ञ नहिं कर वाणा तिसको यज्ञकरावे ॥ और जिसका दान लेणेयोग्यहै तिसका दान नहिं लेवे ॥ एह संपूर्ण तरत्समंदी नाम ऋचाका जप करें इस्यादि और भी स्मृतियां यथार्थ कर्के जोड़ने योग्यहैं ॥ अब कुछक और प्रकार कहतेहैं किंचेति अभक्ष्य भक्षण प्रकरण विषे जो अभोज्यान्न कहेहैं सो अप्रतिग्राह्यन्नभी कहेहैं तिनका अन्न नहिं ग्रहण करणेयोग्य परंतु तिस अन्न के दान लेणेविषे भी प्रायश्चित्त साईं क्या जो अभोज्यान्नके भक्षणमे प्रायश्चित्तहै सो इसमे भी

वौधायनः । बहुप्रतिग्राह्यस्यवाप्रतिगृह्य अनशनीयस्यवान्नमाशित्वाअयाज्यंयाजयित्वा प्रतिग्राह्यस्यवाअप्रतिगृह्य तरत्समंदीयंजपेदित्यादिस्मृत्यं तराणि यथायथंयोज्यानि ॥ किञ्चाभक्ष्यभक्षणेयेऽभोज्यान्नाः प्रोक्तास्तेऽप्रतिग्राह्यान्नाअपि तदन्नप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तंतदेवावगंतव्यम् ॥ अत्रेदंविचार्यम् ॥ मनुनानिंदितेभ्योधनादानमित्यपात्रीकरणेपठितम् ॥ अन्यैस्तु । प्रतिग्रहस्याऽसत्त्वंदेशकालकर्मणादिनिबंधनंबुह्वोपपातकमध्येपठितम् ॥ तत्रविकल्पएवशरणम् । अत्रबहुवक्तव्यपृथक्संगृहीतेऽसत्प्रतिग्रहप्रकरणद्रष्टव्यम् ॥ इत्यसत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ ५८ ॥ ॥

जानणा ॥ इसमे एह विचार करलेयोग्यहै क्योंकि मनु जीने निंदित पुरुषोंके धन का ग्रहण करणा एह अपात्री करण विषे विधान कीताहै ॥ आंगोंके मत विषे कहतेहैं प्रतीति प्रतिग्रहको जो असत्त्व है सो देश काल कर्मणादिके निबंधको जाण कर्के उपपातकोंके मध्य विषे पड़याहै तिस विषेविकल्प हि जानणा अर्थात् चाहे अपात्रीकरणमे जाणा चाहे उपपातकों मे जाणों ॥ इसविषे बहुत जां कहणाहै सो पृथक् संग्रह कीता जो असत्प्रतिग्रह प्रकरण तिसविषे देखे योग्यहै ॥ एह असत्प्रतिग्रह का प्रायश्चित्त समाप्त भयाहै ॥ ५८ ॥ ॥

२३८ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अथ मिथ्याभिशंसि और मिथ्याभिशस्तका प्रायश्चित्त कहते हैं इनका लक्षण पाँछे किहा है ॥ इसमें वाज्ञवल्क्यजी कहते हैं मिथ्येति मिथ्याभिशंसिकों मिथ्याभिशस्तसे दूणा दोष है और यथार्थव का को तुल्य दोष है और मिथ्याभिशस्त के दोषकों मिथ्याभिशंसि ग्रहण करता है १ अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं यदिति जो कोई पुरुष अन्तः करण से ईषा करण वाला है सो महापापी है ऐसे दूसरे को जूठ कहता है तिसको जिसको अभिशाप किया है तिससे दूणा प्रायश्चित्त होता है ॥ अब कुछक और कहते हैं यदिति जिस पुरुषमें दोष विद्यमान है परन्तु दूसरे कर्के नहीं जानवा है तिस दोषकों लोकोंके सन्मुख प्रकट करता है तिसको पातकि पु

अथमिथ्याभिशंसिमिथ्याभिशस्तयोः प्रा० ॥ योगीश्वरः ॥ मिथ्याभिशंसिनोदापोद्विः समोभूतवादिनः ॥ मिथ्याभिशस्तदोपंचसमादत्तेमृपावदन् १ यः कश्चिन्मात्सर्यकलुषितान्तः करणोऽसौ महापापीति परं मिथ्याभिशपति तस्य यस्याभिशापस्तद्विगुणं प्रायश्चित्तं भवति ॥ किंच ॥ यस्तु विद्यमानमेवदापं परैरज्ञातं लोकसमक्षं प्रकाशयति तस्य पातकिदोपसमदोषभाक् ॥ भूतंतत्त्वार्थवदतीति भूतवादी तस्य ॥ भूतंतत्त्वार्थमुद्दिष्टप्रमादाभिहितं छलमिति नारदस्मरणात् । इदमेवाहापस्तंवः । दोषंवुद्ध्यानपूर्वः परेभ्यः समारूपातास्यात् परिहरेच्चैनंधर्मेऽप्यिति ॥ किंच मिथ्याभिशंसिनो न केवलं प्रायश्चित्तद्वैगुण्यं किंतु अभिशस्तस्य यात्किं विदुर्हितजातं तद्भाक्मपीत्याह मिथ्याभिशस्तदोषमित्यादि

इसके तुल्यदोष है ॥ और भूतक्या तत्त्वार्थको जो कहे सो भूतवादी किहा है तिसको ॥ भूत नाम तत्त्वार्थका है और प्रमादतें जो कथन किया है सो छल किहा है एह नारद स्मृतिमें किहा है ॥ अब इसीको आपस्तव जी कहते हैं ॥ दोषको जान कर्के प्रथम आप न कहे जा तक दूसरा कथन न करे जेकर कहे तो धर्मोंके विषे इसको त्याग देवे ॥ अब कुछक और कथन करते हैं मिथ्येति मिथ्याभिशंसिकों केवल दूणा ही प्रायश्चित्त नहीं है परन्तु अभिशस्तकों जो कुछ पापोंका समूह है सो भी मिथ्याभिशंसिको प्राप्त होता है इस कर्के किहा है मिथ्याभिशस्तदोषम् इत्यादि

॥ श्रीरक्षवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी०भा० ॥ २३९

अत्रेति इसमिथ्याभि शंसीके विषय विषे पापकी द्विगुणा यथार्थ नहिहै परन्तु अर्थवादहिहै क्योंकि थोड़े प्रायश्चित्तके अंगे कहें कर्के निमित्त जो पापतिसको भी लघुत्व प्रतीत होणें । अथवा किएहुएकी नाश और न किएहुएकी प्राप्ति होणें भी थोड़ा प्रतीत हुं गहे ॥ जिसने कीताहै तिसको दंड न होआ और जिसने नहि कीता तिसको दंड होया ॥ अब कुछक और कहतेहैं उपपत्ति उपपातकोंकी गणना विषे अभिशंभि और अभिशस्त नहि पडेहैं ब्रह्मचारिकों गुरुके प्रातिकूलवाचरणमे अर्थात् गुरुको दुःख देणेके प्रसंग विषे एहदोनो जाणेहैं तिस कारणते भी निमित्त थोड़ा प्रतीतहोताहै तिसका प्रायश्चित्तकहेतहैं महेति महापाप और उपपापकर्के जा दूसरे को मिथ्या कहे सो जलपान करता होया और जप करता होया इन्द्रियोंको रोक कर्के मही

अत्रहि पापद्वैगुण्यमात्रं न विवक्षितं किन्त्वर्थवादएव लघुप्रायश्चित्तस्यवक्ष्यमाणत्वेन निमित्तस्यापि लघुत्वमानात् ॥ कृतनाशाकृताभ्यागमप्रसंगाच्च ॥ किञ्च उपपातकगणनायामभिशंभ्यभिशस्तौ न पठितौ ब्रह्मचारिणोगुरुप्रातिकूलवाचरणप्रसंगादिमौज्ञातौ ततोपि निमित्तं लघुप्रतिभाति तत्प्रायश्चित्तम् । महापापोपपापाभ्यां योभिशंसेन्मृपापरम् अवभक्षोमासमासीतसजपी नियतेन्द्रियः ॥ १ ॥ महापापं ब्रह्महत्यादि उपपापं गोवधादि मृपैव ताभ्यामभिशंसेत्सोऽभिशंसी मासपर्यन्तं जलाशने जपशीलश्च भवेत् जपश्च शुद्धवतीभिः कार्यः ॥ तथाच वसिष्ठः ॥ ब्राह्मणमनृतेनाभिशंस्य पतनीयना उपपातकेन वा मासमवभक्षः शुद्धवतीभिरावर्त्तयेदश्वत्थपावभृथं वा गच्छेदिति ॥ एतच्च महापापकशंसने सकृत्कृते उपपातकशंसने चासकृत्कृते प्रायश्चित्तं द्रष्टव्यमित्यपराकः ॥

नारोज स्थितरहे १ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं महेति महापाप जो ब्रह्महत्यादि उपपाप जो गोवधादि इनं कर्के सुपुर्हा दूसरे को कहे सो अभिशंसी महीना दिन जलपान करे अथवा जपकरे ॥ जप जो है सो शुद्धवती नाम ब्रह्माकर्के करे । तेनाहि दनिष्टजी कहतेहैं ब्राह्मणमिति ब्राह्मणको पूछ कहना है अथवा पतित कारण वाळे जो उपपातक गोवधादि तिस कर्के अभिशंसन करे सो महीना रोज जलपान करे और शुद्धवती ब्रह्मा कका स्नान करे अथवा अश्वत्थ पत्र नाम यज्ञविषे जाये ॥ एह प्रायश्चित्त जेकर महापातकोमेंसे एकवार पाप लगावे तो जानणा और उपपातकोमेंसे बहुत बार पाप लगाया होवे तिसविषे प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै इस अभिप्राय कर्के एह अपराकमें कथन कीता है ॥

२४० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अतिपातकादियोंकाभी एह अपराकं जीका कथन उपलक्षण है तिसके अभिशंसन विषे उक्त प्रायश्चित्तको घटा बघालैणा ॥ तिसविषे भी एह ब्राह्मणकके अभिशंसनकीता होवे तिस विषे जानणा ॥ और जेकर ब्राह्मण क्षत्रियादियोंको अभिशंसन करेऔर क्षत्री ब्राह्मणका अभिशंसन करे तिसमे कहतेहैं प्रतीति प्रतिलोमापवादविषे दूणात्रीणा दंडहै और वर्णाको अनुलोम क्रमकके तिसते अर्द्ध २ न्यून जानणा इस दंडानुसार कके न्यूनाधिकता जानणी अर्थात् जो ब्राह्मण को ब्राह्मणके अपगधमे दंडहै सो ब्राह्मणमे क्षत्रियाणी विषे उत्पन्नहोएकों अर्द्धा है ॥ और ब्राह्मणसे वैश्याणी विषे उत्पन्न होयेंको उससेभी अर्द्धा है ॥ असें शूद्रो पुत्रके वास्ते उससे भी अर्द्धा है

अतिपातकादीनामप्येतदुपलक्षणम् । तदभिशंसनेपिप्रायश्चित्ततारतम्यं बोध्यम् ॥ तत्रापीदंब्राह्मणकृतेऽभिशंसेद्रष्टव्यम् ॥ अदातु ब्राह्मणःक्षत्रियाद्यभिशंसी क्षत्रियश्चब्राह्मणाभिशंसीभवेत्तदा प्रतिलोमापवादपु द्विगुणस्त्रिगुणोदमः वर्णानामानुलोम्येनतस्मादर्द्धार्द्धहानितइतिदंडानुसारेणवृद्धिहासौकल्पनीयो यस्तुभूताभिशंसी तस्य त्वर्द्धं कल्पनीयम् ॥ अत्रेयंव्यवस्थायस्त्वतिपातकाभिशंसी तस्यैतदेवपादोनम् यस्तु महापातकाभिशंसी तस्यार्द्धम् उपपातकाभिशंसिनस्तुपादः ॥ तुरीयांब्रह्महत्यायाः क्षत्रत्रियस्य वधेस्मृतइत्यादिना योगीश्वरेणोपपातके महापापतुरीयांशस्योक्तत्वात् ॥ प्रकीर्णाभिशंसिनस्त्वितोपिकिंचिन्न्यूनंप्रकल्प्यम् ॥

और जो अपराधका दंड शूद्रको शूद्रके अपगधमेहै सो शूद्रसे वैश्याणी विषे उत्पन्न होएको दूणाहै इसी तहां अगेभी जानणा ॥ अब इसमे विशेष कहतेहैं यइति जो भूताभिशंसीहै अर्थात् यथार्थ हि कहताहै कि तुमने मद्य पान कीताहै इत्यादि तिसको पूर्वोक्त व्रत अर्द्धा करणे योग्यहै इसमे भी एह व्यवस्था है कि अतिपातकके अभिशंसन विषे पिच्छे किहे होये प्रायश्चित्तके तीन पाद करणे और महापातकके बराबर जो पाप हैं तिनके अभिशंसन विषे अर्द्धा और उपपातकके अभिशंसन विषे १ पाद व्रत जानणा एहि अर्थ विशद कके किहाहै ॥ तुरीयइति और प्रकीर्णपापके अभिशंसीको पादसे भी थोडा जानणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २४१

अत्रेति इस विषे भी शक्त्यादियोंकी अपेक्षाकर्म प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्यहै इसमें प्रमाण कहते हैं शक्तिमिति सामर्थ्यको अथवा पापको जान कर्म प्रायश्चित्त की कल्पना करे इस स्मृतितें ॥ इसविषे शंख लिखित स्मृतिने बहुत प्रायश्चित्त किहाहै जैसे नास्तिक पुरुष और कृतघ्न झूठा व्यवहार करण वाला और ब्राह्मणकी वृत्तिके नाश करण वाला मिथ्या कथन करण वाला एह संपूर्ण छे ६ वर्ष ब्राह्मणके घरमें भिक्षा करतेहैं और वर्ष रोज धोकर्म भिक्षाका अन्न भक्षण करें अथवा छे ६ महीने गौआं के पीछे फिस्तेहैं तो शुद्धहोतेहैं ॥ इसमें अस्मा समझणा कि प्रायश्चित्त एक हि है परंतु धोतीहोई भिक्षाकी जगा गोमेवाका विकल्पहै सो एह प्रायश्चित्त अभ्यास विषय विषे जानणा ॥ और बारं बार हठ कर्म उक्तपापका करणा

अत्रापि शक्त्याद्यपेक्षया प्रायश्चित्तकल्पना कर्तव्या शक्तिचावेक्ष्यपापंचप्रायश्चित्तप्रकल्पयेदितिस्मरणात्। अत्र शंखलिखिताभ्यां गुरुप्रायश्चित्तमुक्तम् यथा नास्तिकः कृतघ्नः कृतव्यवहारी ब्राह्मणवृत्तिघ्नो मिथ्याभिशंसीचेत्येते षड्वर्षाणि ब्राह्मणगृहेषु भैक्ष्यंचरेयुः संवत्सरं धौतभैक्ष्यमश्रीयुः पूर्णमासान्वागाश्रनुगच्छयुरिति तदभ्यासविषयम् ॥ सानुबंधे तदभिशंसननिमित्ते च ब्राह्मणस्यांकननिर्वासनादिदंडप्राप्तौ सत्यांवावेदितव्यम्। भार्याभिशंसनं प्रकीर्णकप्रोक्तमपि प्रसंगादत्राप्युच्यते ॥ यमः ॥ क्रोधादुक्तात्वगम्यात्वं भार्यायां हिनरः क्वचित् ॥ प्रायश्चित्तंचरेत्कच्छृतस्य पापस्य शुद्धये १ प्राजापत्यं चरेद्विप्रः क्षत्रियादिवसान्नव पट्टरात्रंतु चरेद्वैश्यस्त्रिरात्रं शूद्रश्चाचरेत् २ ॥

इस निमित्त विषे जानणा अथवा ब्राह्मण को किसे पाप निमित्त जो चिह्न करणा और निर्वास क्या निकाल देणा इत्यादि दंडकी प्रातिविषे जानणे योग्यहै अर्थात् उसकी जगा एहव्रतकरणा ॥ और भार्याको अभिशंसन क्या झूठा वक्ष्यमाण अपवादकरणा सो प्रकीर्णक प्रकरण विषे किहा भी है परंतु प्रसंगतें इसविषे भी कहदियाहै ॥ इसमें यम जो का वचनहै क्रोधादिति जो पुरुष अपनी स्त्रीको क्रोधतें तु अगम्या क्या भगिनी है वा माता है ऐसा कहे सो तिस पापकी शुद्धि वास्ते कच्छृत व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इन प्रकार ब्राह्मण कहे तो प्राजापत्य व्रत करे और क्षत्रि नव १ दिन व्रतकरे और वैश्य कहे तो छे ६ रात्रि व्रत करे और शूद्र कहे तो त्रय ३ रात्रि व्रत करे ॥ २ ॥

२४२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब सुवर्चलाके अधिकार विषे हारीत जी कहतेहैं अनृतेति झूठ कहणे मे ओर गाली देणे विषे और गुरुओंकी चुगली करणे विषे इकीम २१ रात्रि तिस सुवर्चलाका यत्नतें पान करे ॥ १ ॥ और देवतागुरु ब्राह्मण इनांके उल्लेघन विषे त्रय ३००० हजार जप गायत्रीका करे तो शुद्ध होताहै ॥ अब इसीमे आपस्तंब जी कहतेहैं अनाक्रोशमिति जो नहिं गाली देणे योग्य तिसको गाली देवे अथवा झूठ कहे तो त्रय १ रात्रि अक्षर लवणका भोजन करे और शूद्र इस प्रकार करे तो सत्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे ॥ और स्त्रियोंको भी एही प्रायश्चित्त जानणा ॥ अब विष्णुजी कहतेहैं विप्रस्येति ब्राह्मणके बध युक्त शपथको मिथ्या करे अर्थात् में मेरे साथ हरिदासको ना जामागा तो मेरेको ब्राह्मणमारणेका पाप लगे ऐसा कह कर पीछे

सुवर्चलाधिकारेहारीतः ॥ अनृताभिशंसनाक्रोशे गुरुणांपैशुनेषु च ॥ ए कविंशतिरात्रंतुपिवेत्तामेवयत्नतः । १ । तामेवसुवर्चलामित्यर्थः ॥ देवगुरुब्राह्मणातिक्रमेत्रिसाहस्रंजपोगायत्र्याः ॥ आपस्तंबः । अनाक्रोशमाक्रोशयानृतंचोक्तात्रिरात्रमक्षरलवणभोजनम् ॥ शूद्रस्यसप्तरात्रमभोजनम् ॥ स्त्रीणांचैतत् । विष्णुः । विप्रस्यवधसंयुक्तंकृत्वानुशपथंमृपा ब्राह्मणोयावकात्नेनतीव्रंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ क्षत्रियस्यपराकंस्यात् प्राजापत्यंतथाविशः वृषलस्यत्रिरात्रंतुव्रतंब्रह्महणश्चरेत् २ ॥ शंखः ॥ आक्रोशानृतवादेषुएक रात्रमुपवासः ॥ अथाभिशंसकप्रसंगादिभिशस्तस्थापि प्रायश्चित्तमाह याज्ञवल्क्यः ॥ अभिशस्तोमृषाकृच्छ्रंचरेदाग्नेयमेव च ॥ निर्वपेतुपुरोडाशंवायव्यपशुमेववा ॥ १ ॥

ना जावे तो ब्राह्मण यवोंके अन्न कर्के तीव्र चांद्रायण व्रत करे ॥ १ ॥ और क्षत्री मारणका पाप मेरेकोहोवे ऐसा कहे तो पगकव्रत करे और वैश्यमारणकेविषयमेकहे तो प्राजापत्यव्रतकरे और शूद्र मारण विषे कहे तो ब्रह्महत्याका व्रत त्रय १ रात्रि करे ॥ २ ॥ अब शंखजी कहतेहैं आक्रोशेति गाली देणे विषे और झूठ बोलणे में एक रात्रि उपवास व्रत करे ॥ अब अभिशंसकके प्रसंगतें अभिशस्तको भी प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं अभिशस्तइति मिथ्या जो अभिशस्त सो कृच्छ्र व्रत करे अथवा आग्नेय पुरोडाशका निर्वप करे अथवा वायव्य चरका निर्वप करे एह अर्थ पिच्छे स्पष्ट होचुकाहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥ २४३

अब इसी श्लोकका अर्थ प्रगट कर कहते हैं वसिष्ठ जिन पुरुषकों मिथ्या अभिशसन कीता है सो कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत करे और अग्नि है देवता जिसका तिस चरुका निर्वाप करे अर्थात् तिसकी पूजा करे ॥ अथवा वायु है देवता जिसका तिस चरुकी पूजा करे एह पूर्वोक्त जो चार पक्ष हैं सो अभिशस्त पापकी गौरव और लाघवकी अपेक्षाकके जोडने योग्य है अर्थात् अनुपातक पाप कर्के अभिशस्त होवे तो बहुत प्रायश्चित्त करे और उपपातक पाप कर्के अभिशस्त होवे तो थोडा प्रायश्चित्त करे अथवा शक्ति अनुबंधादिकर्के जोडने योग्य है ॥ अब जो वसिष्ठ जीने मिथ्याकहणका प्रायश्चित्त (महीना रोज जलपान करे और शुद्धवती ऋचा का जप करे ऐसा किहा है) इसी कर्के अभिशस्तका अभिशाप क्या अभिशसन किहा है

यस्तु मिथ्याभिशस्तः स तु कृच्छ्रं प्राजापत्यं चरेत् आग्नेयं पुरोडाशं च संनिर्वपेत् अग्निदैवत्येन यजेदित्यर्थः । वा वायव्यं च संपुरोडाशं निर्वपेत् । एते पक्षा अभिशस्तपापगौरवलाघवापेक्षया शक्त्यनुबंधादिना वा योज्याः यत्तु वसिष्ठेन मिथ्याभिशापेन मासं यावद्विभक्षः शुद्धवतीजपंच विधायोक्तमतेनाभिशस्तो व्याख्यात इति तन्महापापेनाभिशस्तविषयम् । इदं च वाचनिकमेव न त्वपराधनिबंधनं परिवर्तिरिव वचनाद्भवतीत्यपराधः । कृमिदुष्टानामिव पूर्वजन्मनिपापसंभावनयाऽभिशस्तस्यापि प्रायश्चित्तमिति मिताक्षरा बहुपातकाभिशस्ते पैठीनसिः अनृतेनाभिशस्यमानः कृच्छ्रचरेन्मासं पातकेषु द्विमासमतिपातकेषु महापातकेषु च

सो एह वचन महापाप कर्के अभिशस्तके विषयमें जानना ॥ एह वाचनिक हि है अपराध निबंधसे नाहै अर्थात् अपराध से नहि है पन्तु परिवर्तिकी न्यादे वचनमें होता है एह अपराध में किहा है ॥ जैसे परिवर्तिकी वचनमें दोषकोवेना भी प्रायश्चित्त है तैसेहि इसमें जानना ॥ और जो पुरुष कीडोंकके युक्त हैं तिन विषे जन्मांतरके पापकी संभावना कर्के प्रायश्चित्त है तैसेहि अभिशस्तकों भी प्रायश्चित्त है एह मिताक्षरमें किहा है ॥ अब बहुत पातकोंकके अभिशस्त जो है तिसविषे पैठीनसिजी कहते हैं अनृतेनति झूठ कर्के अभिशस्त जो है अर्थात् तू झूठ कहण वाला है ऐसे वचनका जो विषय है सो महीनका कृच्छ्र व्रत करे और जो महापातकों कर्के अभिशस्त होवे सो दो २ महीनका कृच्छ्र व्रत करे ॥

२४४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अब थोड़ा दोष कर्क जो अभिशस्त तिसविषे बौधायन जी कहतेहैं पातकेति पातक पापों कर्क अर्थात् अनुपातकों कर्क जो अभिशस्त करताहै सो रुच्छ्र व्रत करे ॥ और जिसको अभिशस्त कोताहै सो अर्द्ध रुच्छ्र व्रत करे ॥ इस विषे मिताक्षरा कार कहतेहैं यदिति जो व निष्ठ जीका किहा होया कि महीना रोज जल पान करे एह जो बड़ा प्रायश्चित्त है सो कुछ क काल नहिं कोताहै प्रायश्चित्त जिस अभिशस्तने तिसको देणे योग्यहै इसमे वचन है सं वत्सरंति वर्षे रोज तक जो अभिशस्त है और दुष्टहै तिसको दूणा दंड किहाहै एह दंडकी अधिकता देखें ॥ अब कुछक और कहतेहैं जो पंक्तियोग्य नहिं हैं तिनको मध्यमे अभिशस्त

अल्पतरदोषाभिशस्ते । बौधायनः । पातकाभिशसने रुच्छ्रः तदर्द्धमभिशस्त इति ॥ अत्र मिताक्षरा यद्वसिष्ठे क्तमासं यावत्पयोभक्षणे गुरु प्रायश्चित्तं तदभिशस्तस्यैव किंचित्कालमकृतप्रायश्चित्तस्य सतो द्रष्टव्यम् ॥ संवत्सराभिशस्तस्य दुष्टस्य द्विगुणोदम इति दंडातिरेकदर्शनादिति ॥ किञ्चापां क्तये मध्यमभिशस्तस्यापि पाठः ॥ तत्र मनुः ॥ पष्ठान्नकालतामासं संहिता जप एव वा होमाश्च शाकलानित्यमपां तद्यानां विशोधनमिति श्लोको व्याख्यातः प्राक् एवमन्यदपि व्यवस्थापनीयम् इत्यभिशस्यादि प्रा० । ६० ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाशमीरायने कदेशाधीशप्रभुवराज्ञस्तकविगंगारामसंगृहीते पंचविषयप्रतिरूपकं धर्मशास्त्रमहानिवंधे प्रायश्चित्तभागे उपपातकप्रकरणं द्वादशसंपूर्णम् ॥ १२ ॥

का भी पाठ है तिस विषे मनुजी कहतेहैं पष्ठेति पष्ठान्नकालता महीना रोज रहे अथवा संहिताका जप करे और शाकल मंत्रों कर्क नित्य हवन करे एह जो पंक्ति रहितहैं तिनकी शुद्धि बान्ते किहाहै १ इस श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्क पीछे व्याख्यान कोताहै इसीप्रकार और भा० ऐसी व्यवस्था करणे योग्यहै ॥ एह अभिशस्यादिका प्रायश्चित्त समाप्त भया ६० और उपपातक प्रकरणभी बाएवां पूरा होया १२ ॥ ७ ॥ दोहा ॥ धर्मराज धरमादिकी वृद्धि करे विशेष गंगकवी की प्रार्थना उपपातकनिःशेष ॥ सं ११ १५ ॥ वै- प्र० ३१

पृ- पं		पृ- पं-	
१	१ ॥ मंगलाचरणम् ॥	७	चेतनगर्भवतिप्रा.
५	उपपातकगणनायामनुवचः	१६	२ अनिवृद्धाहननेऽर्धप्रा.
२	९ गणितोपपातकानामर्थः	६	६ एकवर्षादिवत्सहननेप्रा-
५	७ अग्नेरनाधानमिताक्षरामतम्	८	८ काष्ठादिनाहननेप्रा-
	मनुप्राक्तेपपातकप्रदर्शयानंतरं	१७	१ मुष्णादिप्रहारणगोवधप्रा-
६	११ याज्ञवल्क्यीयाधिक्यकथनम्	२	२ हलादौदुर्वलयोजनेप्रा-
७	१० उपपातकानांपटिभेदाः ६०	६	६ अतिदाहादिनागोवधेप्रा-
७	११ गोघ्नप्रायश्चित्तमादौ	१८	१ घंटादिदोषेणगोवधेप्रा-
८	५ प्रदर्शितश्लोकव्याख्यामूले	६	६ अत्रप्रत्याम्नायः
९	९ अत्रैवव्रतांतरद्वयम्	१९	२ अस्थिभंगप्रा-
१०	४ मिताक्षरासम्मतिः	४	४ पापाणादिभेदेनपादभेदेप्रा-
	५ याज्ञवल्क्यीयश्लोकद्वयम्	२०	१ व्रणभंगपालनाज्ञा
११	४ एतद्व्याख्यानेनव्रतद्वयस्थापनम्.	४	४ मारितेगवादौतत्स्वामिनेराज्ञेच.
	६ अत्रैवजावालवाक्यम्		तन्मौल्यादिदानेमनुवचनम्
१२	१ वृषभैकादशशब्दार्थः	६	६ क्षत्रियादिहंतुःपादादिहानिकथ-
१२	५ व्रतद्वयस्यमानवनसमत्ववर्ण-		नम्
	नम्	२१	४ चतुर्विधमाहसकथनम्
१२	७ पूर्वपूर्वतउत्तरोत्तरस्याधिक्यकथ-	५	५ स्त्रीप्रायश्चित्तविधानम्
	नम्	७	७ अत्रैवमुंडनविधिः
१०	१० देवताद्रव्यस्योत्तमत्वकथनम्	८	८ पुरुषमुंडनविधिः
११	११ अनुग्राहकादीनांप्रा ०	२२	१ अपालननिमित्तगोवधेप्रा-
१३	१ गोमतीविद्यानिरूपणम्	२३	१ ब्राह्मणस्यविशेषणप्रा.
८	८ बहुकर्तृकएकगोहननेप्रायश्चि-	५	५ वृकव्याघ्रादिनागोवधेप्रा.
१४	४ एककर्तृबहुगोहननेप्रा-	२४	१ अथगोवधापवादः
७	७ बहुगोहननेप्रायश्चित्तद्वयम्	९	९ दंडप्रमाणम्
८	८ गोहननेप्रायश्चित्ताभावः	२५	५ उपकुर्वद्भिर्गोमरणेप्रायश्चित्ताभा-
१५	४ गर्भियादिहननेद्विगुणंप्रा-		वः

पृ० पं०		पृ० पं०	
११	स्वेच्छयौपधपानेनमरणेनदोषः	३५	८ इत्युपपातकगोवधप्रा. *
२६	१ शृंगभंगादौवज्रव्रतनिरूपणम् -	१	अथायाज्ययाजनम्
	७ अकनलक्ष्मशब्दार्थकथनम्	३६	५ अयाज्ययाजनप्रायश्चित्ते
२७	३ धेनुचतुष्टयमत्रप्रत्यास्नायः		याज्ञवल्क्यवचनम्
	४ घातेचातुर्विध्यम्	३७	१ अतिदेशवचनतोगोवधोक्तव्रता०
	७ प्राजापत्यादीनां पादादिनिदर्शनम्		त्किञ्चिन्न्यूनता
२८	१ राधादिस्वरूपकथनम्	४	कामकारिमानवंप्रा,
	८ मत्तादिशब्दार्थकथनम्	५	उपपातकसामान्यप्रायश्चित्तेमनुः
२९	३ वधनिमित्तानिषट्प्रदर्शितानि ॥	९	ब्राह्म्यतादौसामान्यप्रायश्चित्तेन
	५ नारकेलादिरज्ज्वागोवन्धननिषेधः		विकल्पः
३०	१ गवाशनादौगोविक्रयेदोषः	३८	४ अहीनयाजकादौप्रायश्चित्तविवे.
	१० उद्धृपभयज्ञादौगोमरणेप्रा.		केमानवम्
३१	६ कृपादौगोमरणेतन्निर्मातु.	५	अत्रैववसिष्ठवचनम्
	नैदोषः	६	अत्रैवम्यनवचनम्
	७ गृहखातादौगोमरणेप्रा.	८	इत्ययाजकप्रा. द्वितीयम्
३२	२ राजौवन्धनेनमरणेदोषाभावः	३९	१ अथपार्थिवम् *
	४ ग्रामघातादिनागवादिमरणेदोषाभावः	३	पारदार्यपगौतमवचनम्
	७ निथ्यौपधदानेनगोमरणेदोषः	९	गमनोक्तश्चित्ताद्गर्भद्विगुणं
३३	१ शक्तौसत्यामुपेक्षकस्यप्रा.		कार्यमित्ताः
	२ बहुभिर्मारणेमारकनिर्णयः	४०	१ अत्रैवसंवर्तनम्
	८ बहुभिस्सकगोमरणेप्रा.	४	प्रातिलोभ्य सि वधरूपप्रा०
	९ मृतपशुमरणनिमित्तज्ञानम्.	५	स्लेच्छीनट्यादिनेत्रापस्तंभः
३४	३ अभ्यन्तरावयवचिह्ननिरूपणम्		वहूनामेकधर्मवतयंप्रायश्चित्ते
	६ केशरक्षणेद्विगुणंप्रा.	९	तमित्युशनाः
	८ गोवधेस्त्रीकर्तव्यता	४१	१ रजकादिस्त्रीगमनेष्टवर्तः
		२	चांडालागर्भधारणे उगः
		८	बहुवारगमनंप्रायश्चित्तकथ्यव्यवस्था

पृ-	पं-		पृ-	पं-	
४२	१	अत्रैवपक्षांतरम्	७	१	पुष्कसीगमनेवृहस्पतिः
	५	श्रोत्रियपत्नीप्रभृतिगमनेप्राय -	९	१	अत्रपरभाष्यानिमित्तमुदक्यागम
४३	१	अत्रैवशूलपाणिमिताक्षरादिव्यव			नानिमित्तंचप्रा ० द्वयम्
		स्था	४९	३	कनिष्ठभ्रातृभार्यागमने चतुर्विंश
	२	क्षत्रियादिगुणवर्तीस्त्रीगमने			तिमते
	५	द्विवार्षिकादिप्रा ०	४	१	मातृस्वस्त्रादिगमनप्रा.
		एकपुरुषप्रभृतिगामिनीस्त्रीगमने	५०	५	अकामांकामतोऽंगतुःप्रा ०
		प्रा ०	८	१	शूद्रस्त्रीगमनेब्राह्मणप्रा ० ब्राह्म
४४	१	क्षत्रियादिगमनेधेनुदानादि	११	१	एनचातुर्वर्ण्यप्रसूतासुगमनेक्रम
	५	बंधक्यादिगमनेप्रवेताः			एप्रा ०
	९	विप्रादेक्षत्रियादिगमनेगौडमत	५१	२	विधवागमनेचतुर्विंशतिमतेप्रा-
		म		३	व्रतस्थागम मुखनेथुनेचप्रा.
	१०	बंधकीशब्दार्थः	६	१	महिषीखरीप्रभृतिगमनेप्रा-
४५	१	अनृतोजातमात्रब्राह्मणगमने	८	१	गोमंयुक्तशकटादियाहनेमैथुनेप्रा.
		ब्राह्मणस्यप्रायश्चित्तम्	५२	४	पर्वोक्तेपुसकृद्गमनेप्रा-
	३	गर्भोत्पत्तादिगुणम्	५३	१	मगोत्रापरिणयनेशातातपः
	५	अत्रैववासिष्ठस्मरणम्	२	१	मातुलकन्यास्वीकारप्रा-
	९	विप्रस्यवृपलीगमनेहारीतः	३	१	अथस्त्रीणांव्यभिचारप्रा-
४६	२	अत्रैवकण्ववचनम्	६	१	व्यभिचारिण्याः स्त्रियाः कार्येभ्यो
	५	रजक्यादिगमनेप्राजापत्यम्			निर्वर्त्यगृहेनिरोधः
	८	अनियोगेनभ्रातृजायागमनेप्रा-	९	१	ब्राह्मण्याःक्षत्रियादिगमनेप्रा.
४७	१	परिवित्तिपरिवेत्रोःप्रा.	५४	३	शूद्रंसवनेविंशपोवृहस्पतेचतसोक्तः
	४	स्वभाष्यारजस्वलागमनेप्रा ०	६	१	क्षत्रियादीनामानलोम्यगमनेप्रा;
	७	गोवर्जममानुपीपुगमनेवसिष्ठः	५५	२	ब्राह्मण्यांशूद्रगर्भप्रा-
४८	१	अनिच्छर्तीप्रतिगमनेवृहत्संवर्तः	८	१	गर्भशंकायांशमासान्प्रतीक्ष्य
	२	बंधक्यादिगमनेशंखलिखितौ	११	१	निर्णीतेगर्भप्रसवांतरंप्रा ०
	५	शूद्रहत्यापादमुदक्यागमनेप्रा.			

पृ.	पं.	पृ.	पं.
५६	१	४	इतिगुरुमातृपितृत्यागप्रा. *
	५	५	अथस्वाध्यायाग्निसुतत्यागेप्रा.
	८	७	अत्रवसिष्ठस्मरणम्
५७	५	६८	१ अग्नित्यागेमनुः
५८	१	३	अत्रश्रुतिः
	४	६	हारीतशंखवचनेवर्षोत्सादेप्रा-
	४	६९	१ अत्रवसिष्ठः
	६	१०	अत्रैवजातूकर्ण्यवाक्यम्
५९	६	७०	३ उशनोमतेनपयोव्रतम्
	९	९	प्रमादत्यागेभरद्वाजः
	९	७१	५ कामतस्त्यागेप्रा. *
	९	१०	इत्यग्नित्यागेप्रा. *
६०	२	७२	१ अथमुतत्यागेप्रा.
६१	१	५	इतिमुतत्यागेप्रा. *
	३	६	अथपरिवित्तितापरिवेदनेप्रा-
६२	२	७३	१ अत्रात्रिंशद्देनवःप्रत्याम्नायः
	प्रा. *	७५	१ अग्नेदिधिष्वादीनांप्रायश्चित्तमा-
६३	१		हवसिष्ठः
	८	७६	२ प्राकृतसंवत्सरार्थः
६४	१	७७	१ परिवित्यादेःप्रा. *
	२	३	कुब्जवामनादौपरिवेदनदोषाभावः
	७	६	आतृत्रयादौपरिवेदनादिविचारः
६५	४	११	इतिपरिवित्तिपरिवेदनादिप्रा. *
	८	७८	१ अथकन्वादूपणप्रा. *
६६	८	७९	३ अत्रहारीताविशेषमाह
६७	१	८०	२ इतिकन्यादूपणादिप्रा. *
			अथवार्हुप्यलवणक्रियाप्रा.

पृ-	पं-		पृ-	पं-	
८१	१	अथब्रह्मचारिणोव्रतलोपेप्रा०	७	७	अस्यदंडनाशेप्रा०
	३	निर्ऋतिदेवतायैहवनविधिः ।	११	१	अस्नात्वाभोजनेचास्यप्रा०
	११	अत्रैवतैत्तिरीयर्चा	११	२	ब्रह्मसूत्रंविनामूत्रादिसमुत्सर्गे
	११	अवकीर्णशब्दार्थः			प्रा०
८२	८	व्रतचारिणोऽवकीर्णिनोहिते-	४	४	ब्रह्मचारिणःसूर्योदयशयना
		जोमारुतादौगच्छतीतिकथ-			दोप्रा.
		नम्	१२	३	ब्रह्मचारिणोमधुमांसभक्षणे
८३	१	अत्रमनुः			प्रा ,
	७	क्षत्रियादाववकीर्णेप्रा-	१३	३	व्याधिग्रस्तस्यनदोषः
८४	१	अथातोऽवकीर्णिप्रायश्चित्तम्	८	८	ब्रह्मचारिणोमासिकान्नप्राशने
८५	५	स्वप्नस्कंदनेमनुः			प्रा-
	१०	वानप्रस्थादीनामप्येतदेववी	१४	३	ब्रह्मचारिप्रसंगाद्विधवायामां
		र्यस्खलने			सभक्षणेप्रा-
८६	४	त्यक्तसंन्यासिनःप्रा .			ब्रह्मचारिणःक्षत्रियाद्युच्छिष्ट
	११	जलाग्न्युद्वंघनभ्रष्टानांप्रा.	१	१	भोजनेप्रा ,
८७	११	यत्रनिमित्तेनिमित्तांतरंतत्र-	१५	२	ब्रह्मचारिप्रसंगाद्ब्राह्मणादी
		व्यवस्था			नामुच्छिष्टभक्षणप्रा ,
८८	७	अथब्रह्मचारिव्रतलोपप्रसंगा	७	७	ब्रह्मचारिमृतौतद्गुरोःप्रा.
		दन्यत्प्रायश्चित्तम्	१६	४	गुरुप्रतिकृलाचरणप्रा.
८९	२	ब्रह्मचारिणोऽग्न्युपस्थानार्थं	११	११	इतिब्रह्मचारिव्रतलोपप्रा ,
		कामेत्यादिमंत्रनिरूपणम्	१७	३	देवगृहाद्यानादीनांविक्रये
	१०	ब्रह्मचारिणोयज्ञोपवीतादिना			प्रा-
		शेप्रा.			इतितडागादिविक्रयेप्रा ,
९०	१	ब्रह्मचारिणोदिवास्वप्नादौ	१७	२	अथब्राह्म्यशब्दार्थः •
		प्रा०			

पृ०	पं०		पृ०	पं०	
९९	९	अथब्राह्म्यप्रा :	११०	८	इतिहासपुराणादिविक्रयेप्रा.
१००	८	अत्रैवयमवाक्यम्	१११	२	विष्णुमतेनाममांसादिविक्रये
१०१	१	अत्रवसिष्ठनोदालकव्रतमुक्तम्			प्रा.
	३	अत्रत्याव्यवस्थामिताक्षराया	११२	५	प्रतिमाविक्रयेप्रा.
		म्		८	गाविक्रयेप्रा-
१०२	१	यस्यपितृपितामहावनुपनतौ	११३	४	शूद्रस्यसर्ववस्तुविक्रयेदोषा
		तद्विषयेप्रा-			भावः
१०३	१	अत्रब्रह्मचर्यान्तरमुपनयन		१०	अपण्यविक्रयार्जितधनत्याग
		म्			पूर्वकंप्रायश्चित्तविधिः
	६	तत्रमंत्राः	११४	६	इत्यपण्यविक्रयेप्रा०
१०४	२	तत्रांगिरसाब्राह्म्यस्तोमःप्रोक्तः		७	अथाकराद्याधिकारेप्रा.
१०५	२	कृतप्रायश्चित्तस्यान्तरंविधिः	११५	१	इत्याकराद्याधिकारेप्रा-
	६	इतिब्राह्म्यताप्राय० *			
	७	अथबंधुत्यागप्रा०	११६	२	अथद्रुमच्छेदप्रा.
	९	अथभृत्याध्यापनप्रा०		८	परिगृहीतद्रुमच्छेदेद्विगुणंप्रा-
१०६	१	अनुयोगशब्दार्थः			प्रसंगात्फलमर्गव्यप्राणि
	१०	अत्रप्रायश्चित्तमाहशातातपः			वधेप्रा०
१०७	२	पतितादिश्रवणेवेदपाठप्रा-	११७	८	चैत्यश्मशानादौवृक्षच्छेदने
	७	अथापण्यविक्रयेप्रा-			प्रा०
१०८	१	मत्स्यमांसादिविक्रयेप्रा-	११८	४	इतिद्रुमच्छेदप्रा० •
	५	आरामतडागादिविक्रयेप्रा.		५	अथात्मार्थक्रियारंभप्रा,
१०९	१	शंखलिखितमतेनतिलतैला		६	अथनिंदितान्नादनप्रा-
		दिविक्रयेप्रा-	११९	६	पलांड्वादिभक्षणेप्रा-
	४	ब्राह्मणविषयेगृहोद्यानादिवि	१२०	५	छत्राकादिभक्षणे
		क्रयेप्रा.			प्रा-
			१२२	९	गृजनपदार्थकथनम्

पृ-	पं-	पृ-	पं-		
१२३	६	एतद्भक्षणेप्रा०	१२६	३	तत्रैवशंखालिखितप्रोक्तोविशेषः
१२४	८	अथस्वभावदुष्टदुग्धपानेप्रा०	१२७	१	मांसभक्षणकरणछागलेयवचः
१२५	१	अवत्सादिदुग्धपानेप्रा०	१२७	२	गांधादिपंचनखभक्षणे शंखवचनम्
	७	अविस्वरीप्रभातिक्षीरपानेप्रा०			
१२६	१	सर्वद्विस्तर्नाक्षीरपानेप्रा०	१२७	७	शशादिभक्षणेप्रा०
१२७	१	स्यदिनीशब्दार्थः	१२८	१	याज्ञवल्क्यमतमांसभक्षणेदोषाभावः
	२	वर्णभेदनदुग्धपाननिषेधः			
	७	आविकत्रितयंशुचीतिकथनम्	१२८	३	कालदुष्टभक्षणेप्रा०
१२८	७	अथस्वभावदुष्टमांसादिभक्षणे	१२८	४	तत्रैवमनुवचनम्
१२९	२	रक्तणदादिपक्षिभक्षणेप्रा०	१२९	१	अज्ञानतःकालदूषितादिभक्षणेप्रा०
१३०	३	श्वशृगालकाकादिभक्षणेप्रा०			
	६	पंचनखभक्षणविषयेप्रा०	१३९	५	शृगादिजनितपात्रजलपानेनवोदकपानेचप्रायश्चित्तम्
१३१	३	अगिरीवचनेननरादिमांसभक्षणेप्रा०	१३९	८	ग्रहणनवश्राद्धेयाचकान्नभोजनेचप्रा०
१३२	७	केशनखादिभक्षणेप्रा०			
१३३	३	तत्रैवहारीतवचनम्	१४०	१	रात्रौदधिसक्कादिभक्षणेप्रा०
१३३	५	गोमानुपमांससूतिहस्ताहृतान्नप्राशनप्रा०	१४०	३	ग्रहणादन्यत्रनिषिद्धकालभोजनप्रा०
१३३	६	तत्रैवपराशरवचनम्	१४१	१	संपर्कदुष्टान्नभक्षणेप्रा०
१३३	९	ग्राम्यकुक्कुटादिमांसभक्षणेप्रा०	१४१	४	केशकीटादियुक्तान्नभक्षणेप्रा०
१३४	१	वकादिमांसभक्षणेप्रा०	१४२	४	रजस्वलादिरुष्टान्नभक्षणेप्रा०
१३४	५	तत्रैवशंखवचनम्	१४३	१	शङ्खादिरुष्टान्नभक्षणेप्रा०
१३५	२	सुरायुक्तमांसभक्षणेप्रा०	१४३	४	उच्छिष्टपंक्तिभोजनप्रा०
१३५	६	शुष्कमांसभक्षणेछत्रभक्षणेचप्रा०	१४३	६	वामहस्तनिर्मुक्तमुक्तामन्नभोजनप्रा०
१३६	१	विट्सूकरादिमांसभक्षणेप्रा०			

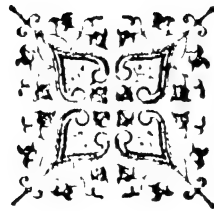
पृ.	प.		पृ.	प.	
१४३	७	एकपंक्त्युपविष्टानांसहभोजने प्रा-	१५१	४	तत्रैव ब्रह्मपुराणवचनम्
१४४	१	अभोज्यान्नभक्षणे प्रा.	१५१	६	एकहस्तदत्तवृत्तादिभक्षणे प्रा०
१४४	४	विडालाद्युच्छिष्टभक्षणे प्रा-	१५२	७	कामताहस्तदत्तादिभक्षणे प्रा०
१४४	६	विण्मूत्रभक्षणे प्रा.	१५३	१	परस्परदानदुष्टान्नभक्षणे प्रा०
१४५	१	श्वाद्युच्छिष्टभक्षणे प्रा.	१५३	३	शूद्रहस्तभोजने प्रा०
१४५	४	देवताद्यर्पणविनाऽपूपादिभक्षणे प्रा.	१५३	४	धमनदुष्टादिभक्षणे प्रा०
१४५	७	मक्षिकादिदूषितान्नभक्षणे प्रा०	१५३	६	पित्राद्युद्दशदत्तान्नादिभक्षणे प्रा-
१४६	५	शूद्रान्नभक्षणपराशरवचनम्	१५४	२	द्वारिस्थितौ स्वयंजलपाने प्रा०
१४७	३	आपत्कालशूद्रान्नभक्षणदोषाभावः	१५४	४	एकादशाहादिभोजने प्रा०
१४७	५	दीपाच्छिष्टभक्षणे प्रा०	१५५	१	द्वैमामिकादिश्राद्धभोजने प्रा०
१४७	७	वृथाऽपूपादिभक्षणेऽग्निहोत्रिणः प्रा०	१५५	४	तत्रैव विशेषः
१४७	८	हस्तदत्तमाक्षिकादिभक्षणे प्रा॥	१५६	५	चांडालादिहतानां षोडशश्राद्धभोजने प्रा०
१४८	१	विप्रादिसहभोजने प्रा०	१५६	८	आमश्राद्धान्नभक्षणे प्रा०
१४८	४	तत्रैव शंखलिखितप्रांक्तविशेषः	१५७	१	ब्रह्मचारिपुविशेषः
१४८	८	आमश्राद्दाशने क्षत्रियाद्युच्छिष्टाशने च ब्राह्मणस्य प्रा०	१५७	३	मधुमांसादिभक्षणे प्रा०
१४९	२	तत्रैव शंखप्रांक्तविशेषः	१५७	६	अत्रैवोशनोवचनम्
१४९	९	स्वयमुच्छिष्टादिभक्षणे प्रा०	१५८	१	जातकर्मादिपुभोजने प्रा०
१५१	१	क्षत्राद्युच्छिष्टभक्षणे प्रा०	१५८	३	सामंतोन्नयादिपुभोजने धौस्योक्तिः
१५१	३	क्रियादुष्टभक्षणे प्रा०	१५८	६	विण्मूत्रदूषितफलादिभक्षणे प्रा०
			१५९	१	याजकाद्यन्नभक्षणे प्रा०
			१५९	२	वृत्तहीनाहुतिपंचकभोजने प्रा०

पृ- प-	पृ- प-
१५९ ३ वृथापाकान्नभक्षणेप्रा.	१६७ १ वटार्काश्वत्थादिपत्रेऽन्नभोक्तुः प्रा-
१५९ ६ तत्रैवलिखितवचनम्	१६७ ३ परिग्रहाभोज्यभोजनेप्रा-
१५९ ७ भावदुष्टाद्यन्नभक्षणेप्रा.	१६७ ५ अश्रोत्रियादिकारितयज्ञेऽन्नभक्षणेप्रा-
१६० ४ रसदुष्टादिलक्षणम्	१६७ ६ कुट्टातुराद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६० ६ वाग्दुष्टान्नभक्षणेप्रा.	१६८ २ सूतिकाद्यन्नभक्षणेप्रा-
१६१ २ पलाशादिपत्रेभोजननिषेधः	१६८ ५ सुवर्णकाराद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६१ ३ अभोज्यभोजनेप्रा०	१७० ४ कदर्याद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६१ ५ तत्रापिशंखस्मृत्युक्तविशेषः	१७० ८ रजकाद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६१ ६ आपोशानमकृत्वाभोजनेप्रा.	१७१ १ कदर्यलक्षणम्
१६१ ८ भोजनकालेर्मौनकर्तुस्सर्वपापहानिः	१७१ ४ अभोज्यान्नभक्षणेप्रा-
१६२ १ भोजनसमयेऽनाचांतस्यप्रा.	१७१ ५ कुनरुयाद्यन्नभक्षणेप्रा-
१६२ २ प्रमादतोरेतोमूत्रादिभक्षणेप्रा.	१७२ १ अत्रैवशंखाक्तविशेषः
१६२ ८ तत्रैवापस्तंबवचनम्	१७२ ६ गणगणिकाद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६३ १ भोजनसमयेऽधोवायुत्यागेप्रा.	१७३ ४ ब्राह्मणाद्युच्छिष्टाशनेप्रा.
१६३ ३ तैलाभ्यक्तस्यस्नानाऽकरणेप्रा.	१७३ ६ मृतकसूतकैकादिभोजनेप्रा.
१६३ ५ नीलवस्त्रं परिधायभोजनेप्रा.	१७३ ७ कांस्यकाराद्यन्नभोजनेप्रा.
१६३ ७ आसनारूढपदोभोजनेप्रा.	१७४ ५ वृथापाकभोजनेप्रा.
१६३ ८ व्यायामैरन्नभोजनेप्रा.	१७४ ९ परपाकादिलक्षणम्
१६४ १ भोजनकालेहस्तेनपादस्पर्शे प्रा.	१७५ ४ बहुयाजकाद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६४ ६ शकिताद्यन्नभक्षणेप्रा०	१७५ ६ तपोयज्ञफलानांक्रितुरन्नभक्षणेप्रा०
१६५ १ गुणदुष्टान्नप्राशनेप्रा.	१७६ ५ वलात्कारेणदासीकृताद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६६ ५ अहुताद्यन्नभक्षणेप्रा०	१७७ ५ अशौचपरिगृहीतान्नभक्षणेप्रा.
१६६ ७ आहिताग्नेर्वृथासंयावादिभक्षणेप्रा-	१७८ ८ अपुत्राद्यन्नभक्षणेप्रा.
१६६ ९ भिन्नभाजनादिपुभोजनेप्रा-	

पृ. पं-		पृ. पं-	
१७९१	ब्रह्मचार्याद्यन्नभक्षणेप्रा-	१९५६	गुरोस्तुंहंकर्तुःप्रा.
१७९२	पार्वणश्राद्धाद्यकर्तुरन्नभक्षणे प्रा.	१९६१	आचार्यादिहंतुःप्रा-
१८११	अथानाहिताग्निताप्रा- •	१९७१	मद्यपस्त्रीनिषेवणेप्रायः-
१८१७	एकग्निरपिविशेषः	१९७२	अथस्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधेप्रा. •
१८२१	धान्यादिहरणेप्रा-	१९८५	वृत्तस्थवैश्यवधेगोशतदानम्
१८२७	तृणादिहरणेप्रा-	१९९१	अत्रैवयाज्ञवल्क्योक्तिः
१८२८	मणिमुक्तादिहरणेप्रा-	१९९८	अस्मिन्नेवविषयेस्मृत्यंतरम्
१८३१	कार्पासवस्त्रादिहरणेप्रा-	२००१	अत्रमिताक्षरा
१८४१	आढकलक्षणम्	२००३	वृद्धहारीतवचनम्
१८४२	कुंभपरिमाणलक्षणम्	२००७	वसिष्ठवचनम्
१८५१	मनुष्यादिहरणेप्रा-	२०११	वृत्तस्थश्रोत्रियक्षत्रियवधेप्रा.
१८५४	निक्षेपादिहरणेप्रा-	२०१४	यागस्थक्षत्रियादिवधेगौतमः
१८५६	लोहादिहरणेप्रा.	२०२६	दुर्वृत्तक्षत्रियादिवधेप्रा.
१८६५	मणिमुक्तादिहरणेप्रा,	२०३१	शूद्रक्रियायुक्तवैश्यवधेप्रा,
१८८३	क्षेत्रान्मुष्टिमात्रचणकादिहरणे दांपाभावः	२०३५	अकामताराजन्यबंधप्रा,
१८८५	वाचादत्त्वाऽदातुःकन्याहरणे प्रायश्चित्ताभावः	२०४३	धनहर्तुःप्रेतक्रियायाश्चकरणे प्रा.
१९०१	अथऋणानपाकरणेप्रा- •	२०४४	अज्ञानादुर्वृत्तक्षत्रियवधेप्रा.
१९१५	आग्रयणेध्यायकरणेप्रा-	२०४८	व्यभिचारेत्पन्नवधेप्रा.
१९२१	असच्छास्त्राधिगमनेप्रा.	२०५२	अत्यजानांगमनेभोजनेप्रमापणेचप्रा.
१९२३	अथस्वभावादिदुष्टताप्रा.	२०५५	शूद्रजप्रतिलोमानांवधेप्रा-
१९३१	रंगोपजीव्यादिकर्मणिप्रवृत्त ब्राह्मस्यप्रा.	२०६१	श्वपाकचांडालयोश्चोरयोर्वधे प्रा-
१९४२	कुंडगोलकलक्षणम्	२०६३	अथस्त्रीवधेप्रा. •
१९५१	अग्नीमलमूत्रादिकर्तुःप्रा.	२०७१	ब्राह्मणादिदुर्वृत्तभार्यावधेप्रा.

पृ- पं		पृ- पं-	
२०८१	ब्राह्मण्यादिवधेदानम्	२२७१	शूद्रप्रेण्यादिप्रा०
२०८६	ईषह्यभिचारितब्राह्मण्यादिवधेविशेषः	२२८१	अनाश्रमिणःप्रा०
२०८१०	कामतोवैश्यादिवधेदानम्	२२९१	प्रथमंस्ववर्णीत्यक्तेतरत्रविवाहे
२०९१	कामतोब्राह्मण्यादिवधेप्रा०	२३०१	द्विजातीनांवेश्यागमनेप्रा०
२१०१	स्त्रीवधेविशेषोक्तिः	२३१४	अथासत्प्रतिग्रहप्रा० •
२१०७	कन्याहननेसंक्षिप्तप्रा०	२३३५	राजप्रतिग्रहेप्रा०,
२११२	जन्मसमनंतरमेवकन्यावधेप्रा०	२३४१०	धर्मवर्तिनृपतिप्रतिग्रहस्वीकारः
२१२१	बालहननेप्रायश्चित्तम्	२३४१	सर्वप्रतिग्रहेतत्पदंशदानम्
२१४३	प्रकीर्णकपदाभिधेया.	२३७१	अभक्ष्यान्नादीनांप्रतिग्रहप्रा०
	नुपपातकप्राणिवधेप्रायश्चित्तम्	२३७८	इत्यसत्प्रतिग्रहेप्रा० •
२१५५	सर्पादिवधेप्रायश्चित्तम्	२३८१	मिथ्याभिशंस्यादिप्रा०
२१६५	हंसादिवधेदानम्	२४०२	क्षत्रियाद्यभिशंसिब्राह्मणस्यप्रा०
२१७१	क्रव्यादादिवधेदानम्	२४१३	कृतघ्नादिप्रा०
२१८१	अस्थिमत्तमत्त्वानांवधेप्रा०	२४१७	स्वभार्यायाऽगम्यात्वकथनेप्रा०
२१९३	स्थविष्ठानास्थिजन्तुवधेप्रा०	२४२३	ब्राह्मणाद्यतिक्रमेप्रा०
२१९७	कंकिलादिवधेप्रा०	२४२५	वधसंयुक्तशपथकरणेप्रा०
२२०१	फलपुष्पादिजप्राणिनांवधेप्रा०	२४४७	इत्यभिशंस्यादिप्रा० •
२२१२	हंसादिहननेप्रा०		द्वादशप्रकरणसूचीपत्रसमाप्तम्
२२१६	मूपकादिहननेप्रा०		
२२२२	गजादिहननेप्रा०		
२२२७	उरगादिहननेप्रा०		
२२५१	रोगाभिभूतगजादिहननेप्रा०		
२२६१	इतिनास्तिक्यस्यप्रा० •		

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१२४	७ मू.	ज्ञास्त्र	शास्त्र
चतुर्थप्रकरणशुद्धिपत्रम्			
पृ- पं.	अशुद्ध	शुद्ध	
१२ २	मयज्य मू-	मयाज्य	
४९ १	कमं टी.	कर्म	
४९ ६	सुनसैं टी-	सुननसैं	
४९ ७	सूयंके	सूर्यके	
४९ ६	स्यात्दा मू-	स्याद्वा	
५० ५	विचर टी-	विचार	
५० ६	पेह टी-	येह	
५१ ३	साय टी.	साथ	
५१ ४	तरक्षेति टी.	तरेति	
५१ ३	गयेसैं टी.	गधेसैं	
५१ ५	भागिनोके टी.	भागिनीके	



द्वादशप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्वार्थमंत्रसंग्रहोलिरूपते

पृ० पं० प्रतीक

८५ ६ पुनर्ममामिति पुनर्ममाविशताद्रयिः ॥

१० ४ मनोज्योतिरिति मनोजूतिर्जुपतामाज्यस्यवृहस्पतिर्धर्मज्ञमिमन्तनो
त्वरिष्टयज्ञं संमिमन्दधातुर्विश्वदेवासइहमादय
न्तामोई॥मप्रतिष्ठ ॥ वा- सं-अ- २ मं. १३ ॥

१० ५ त्वमग्नेव्रतपाऽअसीति त्वमग्नेव्रतपाऽअसिदेवऽआमर्त्येष्वात्वंयज्ञे
ष्वाडूडयः रास्स्वेयन्सोमाभूयोभरदेवोनःसवि
ताव्वसोर्दाताव्वस्वदात् । वाज- । अ-च. मं. १६

१० ८ इयदुरुक्तमिति ओंइयंदुरुक्तंपरिबाधमानावर्णपवित्रं पुनर्तामआगात्
प्राणापानाभ्यांवलमादधानास्वसादेवीसुभगामिखलेयंयुवासुवा
साः परिवीतआगात्सउश्रेयान्भवतिजायमानःतंधीरासः
कवयःउन्नयंतिस्वाध्योमनसादेवयंत इति ॥

१४ १ ह॒मःशुचिपदिति ह॒मःशुचिपद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिपदतिथि
र्हुरोणसत् । नृपद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जगोजाऽऋतजाऽअद्रि
जाऽऋतम् वृहत् । वाजसनेयीसंहितायाम् अध्याय १० मंत्र २४

१०३ ६ यदंतीति यदंतियश्चदूरकेभयंविंदतिमामिह पवमानवितञ्जहि ॥

१०३ ७ येनदेवाइति येनदेवाःपवित्रेणात्मानं पुनंतसदा ॥ तेनसहस्रधा
रेणपावमान्यः पुनातुमां ॥ ऋग्वे-सं- अष्टक ७ अध्या . २

१०३ ७ कयानइति कयानश्चित्रऽआभुवदृतीसदावृधःसखाकयाशान्नि
ष्ठ्यावृता । वासं. अ- ३६ मं - ४ ॥

द्वादशप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
 पृ० पं० प्रतीक

१०४ २ ब्रात्यस्तोमाश्चत्वारोद्वितीयउध्योब्रात्यगणस्येयसंपादेययुस्तप्रथमेनय
 जेरद्वितीयेननिर्दितानृशंसास्तृतीयेनकनिष्ठाज्येष्ठाश्चतुर्थेनायेतप्रजननास्थ
 विरासदारूयास्तेपांयोनृशंसास्तृतीयमःस्याद्द्रव्यवत्मोवानूचानतमेवातस्यगार्हप
 तेदीक्षेरंस्तस्यभक्ष्यमनुभक्षयंतआसीरन्ब्रात्यधनानि भवंति तिर्यङ्.नद्धमुष्णी
 पंप्रतादोज्याहोडोयोग्यंधनुस्तदारूयं वासः कृष्णशंकड्वपनं कृष्णदशंवात
 दारूयंफलकास्तीर्णो विपथोश्वाश्वतएभ्यांकंप्राभ्यांयुक्तःस्यादित्येके निष्को-
 राजितोजिने पार्श्वसहिते कृष्णवलक्षेत्राविकेतद्वहपतेरेवमेवाजिनानांतरंपां-
 दामतूपाणिवल्कांतानि द्विचूडान्याविकानिवासांस्तसि । लोहितांतानि कृष्णां
 तानिवातदारूयानिदामनीद्वेदउपानहौच कर्णिन्यौ कृष्णेस्यातामित्येकेमाग
 धदेशीयायब्रह्मबंधवेदक्षिणाकालेब्रात्यधनानि दद्युरविरतेभ्योवा ब्रात्यचर
 णांतेष्वेवमृजानायंतीतिश्रुतेस्त्रयास्त्रि६- शतं त्रयास्त्रि६-शतं दक्षिणादद्युर्द्विगु
 णागृहपतिरित्येके ब्रात्यस्तोमेनेष्ट्वा ब्रात्यभावाद्द्विरेमेयुर्व्यवहार्याभवंत्यग्नि
 पुद्ब्रह्मवर्चसर्वार्यान्नाद्यप्रतिष्ठाकामानां यश्चापूतइव मन्येतयज्ञविभ्रष्टस्यच
 यस्माद्वाविभ्र६.शरन ४ छांदोग्येविशेषोयथा ॥ काम६-सुब्रह्मण्याग्नेप्येवंय
 थास्रुत्सर्वमके पथोत्साहं दद्यादाग्रयानामनद्धद्विरण्याश्वाजानांत्रिवृतश्च
 त्वारोनिंरुक्तप्रातःसवनःप्रथमईशुयज्ञोग्रामकामस्य वा दक्षिणाश्वरथश्चतुर्यु
 क्ष्या चोन्यतमस्तेजोब्रह्मवर्चसपुरोधा कामस्य गृहस्पतिसवोदंवसूहवी६-पि
 निर्वयत्यतिग्राह्यवद्गृहं गृह्णाति गृहस्पतेःश्रुतिदर्यइत्युपालंभ्योवार्हस्पत्ये
 निहितेपुनाराशंस्तस्य प्रातःसवनेनयाकुर्वन्नेकादश दक्षिणाव्यादिशत्यश्व
 द्वादशा माध्यादिने पाकरोत्युभयीरेकादशतृतीयसवनेनूवंध्यवपाहोमांतेपा
 करणामतिक्रमणंच सर्वासामेकादशदशवा शतानिस्त्युःसहस्राणिवाश्वस्त्वे
 वमाध्यंदिनेधिकोवाजपेयवदाज्येनाभिपिच्यते कृष्याजिने शुक्रामंथिसंक्षुः

द्वादशप्रकरणेत्रययत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्व्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ० पं० प्रतीक

स्त्रेणवान्यतमस्त्वभिवाद्याप्रत्यवरोहोस्यात्स्थपतिरित्येनंब्रूयुः सराजा
नोत्राह्मणापंपुरस्कुवीरंत्यएतेनयजेतेपुःश्वेनवदसद्योमरणकामस्य

१३५ १ अथ मित्रविन्दाश्टिरुच्यते साच श्रीकामराष्ट्रकाममित्रकामायु
ष्कामाणां भवति । तत्र दशहवींषि भवन्ति अग्नेयोऽष्टाकपालः सौम्यश्वरुः
वारुणो दश कपालः यवमयश्वरुर्वा २) अथवा ब्रीहिमयश्वरुः मैत्रश्वरुः
ऐन्द्र एकादश कपालः । बार्हस्पत्यश्वरुः सावित्रो द्वादश कपालोऽष्टाक
पालो वा पूष्णश्वरुः सारस्वतश्वरुः त्वाष्ट्रो दश कपाल इत्येतानि दश
हवींषि उपांशु भवन्ति । तत्र उद्धरणे । मित्रविन्दार्थमिति । मित्रविन्दयाहं य
क्ष्यऽइति वरणे पात्रासादने शूर्पाग्निहोत्रहवणि स्फ्यः कपालान्येकपञ्चा
शत्सप्तचत्वारिंशद्वा ३) वारुणचरुपक्षे दशभिरूनानि चरुस्थाल्यः प
ञ्च पड्वा शम्याकृष्णाजिनमित्यादि । दक्षिणा दशगावः सहस्रं वा अ
ष्टादशेध्मकाष्ठानि शृतावदानानन्तरं मेक्षणम् पात्र्यः पञ्च चतस्रो वा
शेषं प्रकृतिवत् नानावीजधर्मा उक्ताः ग्रहणे अग्नये जुष्टम् सोमाय वरु
णाय मित्राय इन्द्राय बृहस्पतये सवित्रे पूष्णे सरस्वत्यै त्वष्ट्रे जुष्टमिति
प्रोक्षणे त्वा जुष्टमिति एकवीज पक्षे कणान्ते विभज्यालम्भः इदमग्नेर्व
रुणस्येन्द्रस्य सवितुः पूष्णस्त्वष्टुश्च इदं सोमस्य मित्रस्य बृहस्पतेः स
रस्वत्याश्च यथोक्तमग्नीधः कपालोपधानम् दशकपालेचत्वार्युपधाय
पट् समं विभज्य त्रीणि दक्षिणतस्त्रीणि चोत्तरत इति पिठानां तण्डु
लानां चेक्षणम् । ईक्षणान्ते पूष्णो विभागः इदमग्नेर्वरुणस्येन्द्रस्य सवितु
स्त्वष्टुश्च इदं पूष्णः चरूणामित्यादि कातीये श्रौतसूत्रे पंचमाऽध्याये

द्रष्टव्यः ॥

१६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

द्वादशप्रकरणयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्वार्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक

२१४ ९ पवित्रवत्यः ओंआपोऽअस्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्वः
पुनन्तु । विश्वं॥हिरिप्प्रं प्रवहंतिद्वारित्यादि ॥

२४४ ६ कनिक्रदज्जनुपंप्रब्रुवाणऽइयतिवाचमरितेवनावं ॥ सुमंगलश्च
शकुनेभवासिमात्वाकाचिदभिभाविश्व्याविदत् । मात्वाश्वेन
ऽउद्धधीन्मासुपर्णोमात्वाविददिपुमान्वीरोऽअस्ता ॥ पित्र्यामनु
प्रदिशंकनिक्रदत्सुमंगलोभद्रवादीवदेह ॥ अवक्रंददक्षिणतो
गृहाणांसुमंगलोभद्रवादीशकुंते ॥ मानस्तेनऽईशतमाघशं
सां वृहद्वदे० ॥ १ ॥ प्रदक्षिणिदभिगृणंतिकारवोवयोवदंतऽऋ
तुथाशकुंतयः ॥ उभेवाचौवदतिसामगाऽइव गायत्रंचत्रैष्टुभंचा
नुराजति ॥ उद्धातेवशकुनेसामगायासिब्रह्मपुत्रऽइवसवनेपुशं
ससि ॥ वृषेववाजीशिशुमतीरपीत्यासर्वतोःशकुनेभद्रमावद
विश्वतोःशकुनेपुण्यमावद ॥ आवदंस्त्वंशकुनेभद्रमावदतू
ष्णीमासीनःसुमतिंचिकिद्दिनः ॥ यदुत्पतन्वदसिकर्करिर्यथावृ
हद्वदे० ॥ २ ॥ ऋग्वेदसं -अष्टक २ अ- ३ शाकलमंत्राः

॥ उपपातकप्रकरणशुद्धिपत्रम् ॥

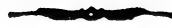
पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
६	मू-२	जका	जिका
८	१	७	८
८	१	कके	कर्के
९	११	अथ	अथे
९	म-९	दशका	दशा

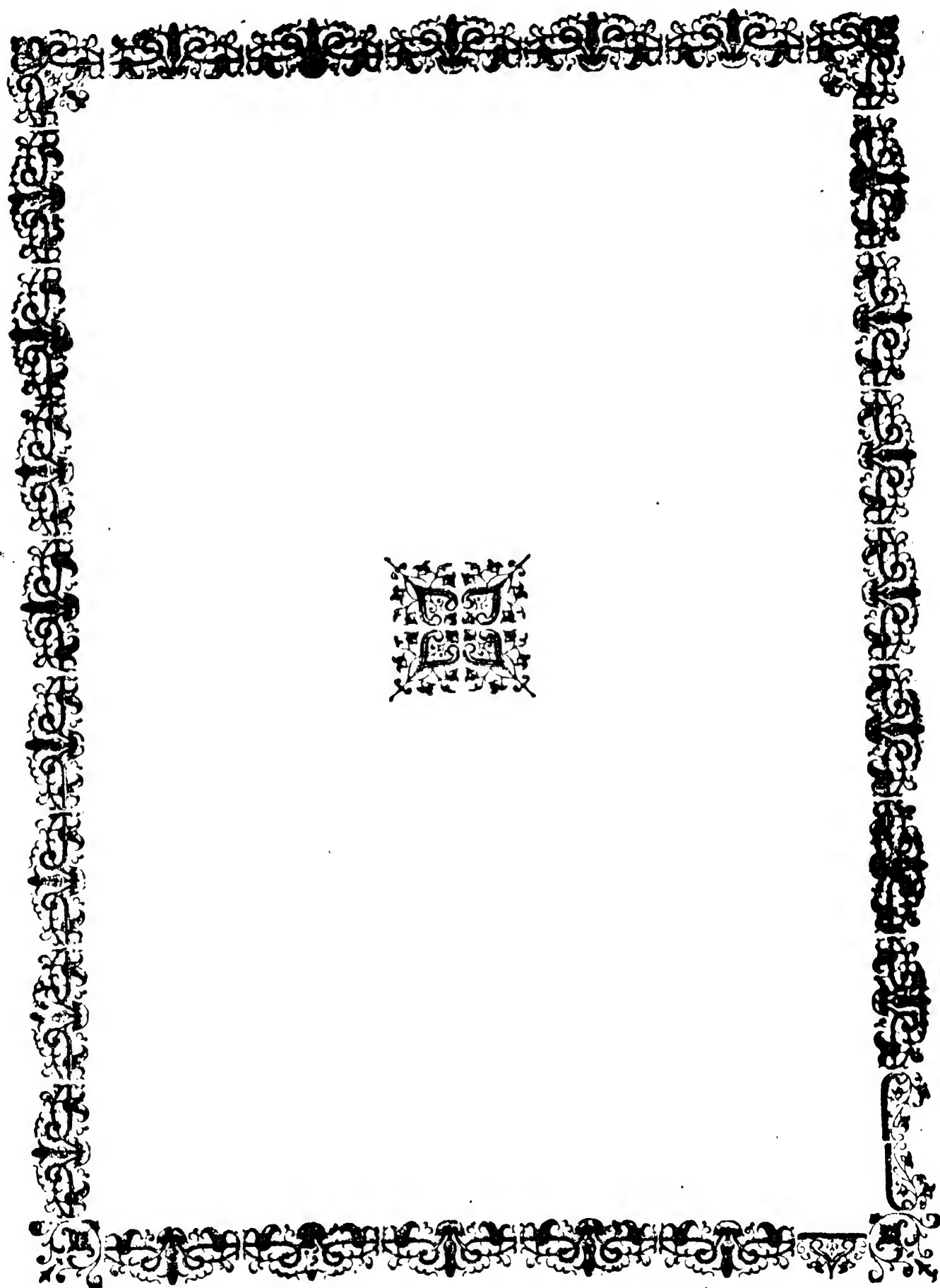
पृ०	प०	अशुद्ध	शुद्ध
११	मू- ४	व्रतम	व्रतम्
११	मू. ९	चरदि	चरेदि
१२	मू. २	ज्ञाति	जाति
१२	टी. ४	वध	वध
१६	मू. १	घा	द्या
१६	टी. २	गोवृष इस जगा वृष कर्के सामान्य वैल जानणा को ई धुरंधुर वैल नहिं क्योंकि उह दश १० गौके तुल्यहै और इस जगा गौके मुल्ल तें थोड़े मुल्ल वाला चाहिए	
२१	मू. ५ टी. १	प्रायश्चित्तमित्यादिश्लोकत्रयमाधिकमतोनिस्सारणीयम्	
२७	मू- ८	माधेव	माधवे
२९	टी- ५	अथ	अर्थ
३१	मू- ७	काय	कीय
३१	टी. २	कण	कर्ण
३८	टी- ७	परु	पुरु
३९	टी- १	यस्त्री	परस्त्री
५०	मू- ११	सतासु	सूतासु
५३	मू- ६	वर्त्य	वर्त्य
५५	टी- ७	मेतिः	मेति
५७	टी- २	तव	तक
५७	मू. ७	श्चा	पश्चा
५८	मू. ५	त्कृ	कृ
५८	मू. ८	कृति	कृति
६५	मू- २	रे	रेत्
७४	टी- ९	वा	व
७७	मू- ४	दोपं	दोपः
७७	टा: ३	घा	भ्रा

पृ०	पं	अशुद्ध	शुद्ध
७८	टी- १	पात	पात
७९	टी, ६	अवस्थामे	अवस्थाकीस्त्री कों
८२	टी- ५	चरी	चारी
८३	टी- ५	ब्रह्म	ब्राह्म
८७	मू- २	च्छ	च्छ
८७	मू- ७	व्यम	व्यम्
९०	मू. ६	य	या
९१	टी. ६	सूर्ये	सूर्यो
९२	टी- १	ब्रह्म	ब्रह्म
९२	टी- २	दरा	दर
९२	टी- ३	शंक	शंका
१०४	टी- ३	आगरा	आंगिरा
१११	मू. ६	घार	धार
१३४	मू- ११	षा	पां
१५३	मू- ८	वर्षि	वार्षि
१९७	मू- ६	ताटकशङ्ख	ताटक्शूङ्ख
२००	मू- ६	लस्या	लस्य
२०१	मू- ७	च्छ	च्छ
२०५	मू- ९	अह	आह
२०६	टी. ३	त्रके	रात्रके
२०७	टी, ५	वांधादि	बंधादि
२०८	टी; १	थोडा	थोडा
२१०	मू- ६	वह	वाह
२१०	मू- १	पातपातयेत्	पातयेत्
२१०	मू- ७	तिघ्ना	तिघ्नी
२१९	मू- ७	तथ	तथा
२२९	मू- ३	रत्रं	रात्रं

पृ० पं-	अशुद्ध	शुद्ध
२३० मू- ८	सामा	मासा
२३२ मू० ७	गाष्ट	गांष्ट

एह उपपातक प्रकरण श्रीसरकारजीकी आज्ञानुसार संस्कृतसे भाषा कर्के लोकोंके उपकारके लिये छपाया गयाहै अब इसके पठन पाठन कर्के जो अल्पबुद्धिभी लोकहैं सो भी प्रायश्चित्त सभतहींक कहेंगे जकर संस्कृतहि हुंदा तां पंडित लोक जो शास्त्रज्ञ हैं सोई कह सकेंथे परन्तु एह ग्रंथ संस्कृतके साथ रक्षणे कर्के तिनोंकोभी प्रिय है और संस्कृत के और ग्रंथ किसे २ जगा अशुद्ध होणगे इसकी शुद्धि अच्छी तर्ही होई हैऔर साथ शुद्धिपत्रभीहै और बहुत ग्रंथोंसे संग्रह होआहै इस कर्केभी प्रियहै इसकर्के सभलोकोंको एह अपूर्व ग्रंथ पडना विचारणा चाहिए और इसमे एह स्थापन कीया गयाहै कि जो कोई प्रायश्चित्त की इच्छा करें तिनां सभनांको प्रायश्चित्त कराया जावे गा





॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टा० भा० ॥

१

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अब महापातक प्रकरणका प्रारंभ है तिसमें आदिविषे मंगलके अर्थ रा जाधर्मका स्मरण कर्ते हैं ककुभिपति दिशापति जो इंद्रादि हैं तिनके मध्यविषे अति उत्तम है श्री र सभलोकोंके प्राप्त होनेका एकहि स्थान है और ब्रह्मा विष्णु शिव इनोने दीया है सभका स्वामित्व अधिकार जिसको और धैर्य गति बुद्धि इनका कारण ऐसा जो धर्ममूर्ति है तिसकामें स्मरण करता हूं कितवा स्ते पदपद विषे कठिन जो पातक हैं तिनके प्रगट करणे वास्ते और इसमें गति शब्द कर्के सामान्य ज्ञान और मतिशब्द करके विशेष ज्ञान जानना १ । अब प्रायश्चित्त कंदवादि के विषे (अकुर्वन्विहितं कर्म) इत्योदि तीनहेतु अर्थात् वेदविषे जो विहि

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ककुभिपतिपुरम्वंसर्वलोकैकगम्य विधिहरिह रदत्तस्वाम्यसर्वाधिकारस्य प्रतिपदकठिनानां पातकानां विवृत्यै धृतिगति मतिहेतुं धर्ममूर्तिस्मरामि ॥ १ ॥ अथ प्रायश्चित्तकंदवादौ अकुर्वन्विहितं कर्मत्याद्युक्तहेतुत्रयोत्पन्नपापपातकभेदानां जातिभ्रंशकरसंकराकर णापात्रीकरण मलावह प्रकीर्णकोपपातकानुपातक महापातकातिपातका नां प्राप्तावसरतया महापातकातिपातकेनिरूप्येते अत्रेयं नवविधत्वगण नाऽतिपातकपार्थक्यबुद्ध्या प्रायश्चित्तरत्नादावतिपातकस्य महापातकां तर्गतत्वेनाऽऽव्यात्वमेवोक्तम्

तहै तिसका नहि करणा १ और जो तिसमें निषिद्ध है तिसका करणा २ और इन्द्रियों को न रोकणा ३ इनसे उत्पन्न जो पाप और पातक भेद हैं तिनके मध्यविषे जातिभ्रंशक रौंदि नवविधपापके निरूपण करके पश्चात् अवसरको प्राप्त होकर महापातक और अतिप नके एह निरूपण करते हैं ॥ ३ ॥ इसविषे जातिभ्रंशकरादि नव प्रकारके तद होते हैं जेकर अति पातकको भिन्न करें नहि तो आठ हैं और प्रायश्चित्त रत्नादि विषे अतिपातकों महापातकके अंतर्गत लिखा है इससे आठहि प्रकार कहें अर्थात् महापातकका नामहि अतिपातक है

एतदिति एहिपक्ष बहुतयांकों सम्मतहोणितें असांकों प्रमाणहै ॥ प्रायश्चित्तेति प्रायश्चित्त प्रकरण विषे अतिपातकांकों कह करके कात्यायनजीने तो महापातकांके समान जो विष्णु प्रभृतियोंने अनुपातकता करके कहेहैं तिनकी पातक संज्ञा कहीहै महापापमिति महापाप और अतिपाप तैसेहि पातक और प्रासंगिक और उपपाप एह पंजा पापांका गण कहाहै इसमें पातक संज्ञा कहीहै इति १ पातयतीति वचा गिडादेवे सो कहिए पातक इसव्युत्पत्ति करके तो महापातकहि पातक होताहै और अभ्यास करके उपपातकभी पातकहै कै ऐसे क. हतेहैं ॥ और जातिभ्रंशकरादियांके लक्षणादि तो तिसतिस निरूपणके अवसर विषे लिखेहैं और बाकी रहे जो महापातकांके भेद और लक्षण जैसे मनुजीने कहे है तैसं दिखादेहां ब्रह्मे-

एतदेवबहुसम्मतत्वाद्युक्तं प्रतीमः प्रायश्चित्तप्रकरणेतिपातकान्युक्ताका
त्यायनस्तुमहापातकसमानांविष्णुप्रभृतिभिरनुपातकतयोक्तानांपातकसंज्ञा
माह महापापंचातिपापंतथापातकमेवच प्रासंगिकंचोपपापमित्येवंपंचको
गणइति पातयतीतिपातकमितिव्युत्पत्त्यातुमहापापमभ्यासेतूपपातकमपि
पातकमितिकेचित् १ जातिभ्रंशकरादीनांलक्षणादीनिततन्निरूपणावसरए
वल्लिखितानिअवशिष्टानिमहापातकभेदलक्षणानियथाहमनुः ब्रह्महत्यासु
रापानंस्तेयंगुर्वेगनागमःमहान्तिपातकान्याहुःसंसर्गश्चापितैःसह १ एतल्ल
क्षणान्यपि ततन्निरूपणावसरेवक्ष्यन्ते इमान्येवयाज्ञवल्क्यापरार्कप्रायश्चि
त्तप्रकरणप्रायश्चित्तमयूखप्रायश्चित्तरत्नावल्यादौ अतिपातकानितु जन
न्यांचभगिन्यांचस्वसुतायांतथैवच स्नुषायांगमनंचैवविज्ञेयमतिपातकम् १

ति ब्राह्मणको मारणा और मदिराका पीणा और स्त्रियोंकी चोरी करणी और गुरुकी स्त्रीसा
थ गमन करणा एह महापातक कहेहैं तिनके साथ जो संसर्गहैं सोभी महापातक क
हाहै ॥ १ ॥ लक्षणेति इनके लक्षणांकों तिस तिस निरूपणके अवसर विषे कहेंगे इमेति और
एहि महापातक याज्ञवल्क्य और अपरार्क और प्रायश्चित्त प्रकरण प्रायश्चित्त मयूख और प्रा
यश्चित्त रत्नावली आदि ग्रंथां विषे भी लिखेहैं ॥ अब अतिपातक कहतेहैं ॥ जेतिमाता और भगि
नी और कन्या और पुत्रकीस्त्री इनके साथ जो गमनहैं सो अतिपातक जानणा १ इसमें एभी
वातजानणी चाहिए जो माता और भगिनी और कन्या और पुत्रकी स्त्री बहुत प्रकारकीयां
होतियां हैं परंतु इसजगा माता पिताकी स्त्री और गुरुकी स्त्री जानणी ऐसं और भी जानो

इदमिति ॥ एही अतिपातकांके लक्षण प्रायश्चित्तेन्दुशेखर ग्रंथविषे लिखेहैं और महा पातकते कुछ रु जादै संभावना कर्के अतिपातक भिन्न किहाहैं ॥ महापातकेति ॥ बहुते ऋषियोंका एह मतहै कि जो महापातक है उसका पर्याय वाचक अतिपातक है इति ॥ शूलपाणिने ऐना कहाहै महेति महापातकते भी अतिपातक बडाहै किसकके विष्णुने पापों की गणनाविषे पहलें गिणयाहै इस कर्के बडाहै कुछ औरभी अतिपातक बडा होनेका कारण कहतेहैं जाणकर्के अथवा न जाणकर्के जो अतिपातकको करे सो मरजावे ऐसाप्रायश्चित्त सुणीदाहै जैसे स्मृतिवचन है अतीति मातादिविषे गमनकरणे वाले इतने अतिपातकी अग्नि विषे प्रवेश करें तां शुद्धहोतेहैं और किसी प्रकारकर्के कदाचित् भी शुद्धनहिं होते १ (कथंचन) इसका

इदमेवप्रायश्चित्तेन्दुशेखरे ॥ महापातकार्त्तिकिचिदाधिक्यसंभावनयापृथ गुक्तिः महापातकपर्यायमेवातिपातकमिति बहवः ॥ शूलपाणिना ॥ महापातकादप्यतिपातकंगरीयः विष्णुना प्रथममुद्दिष्टत्वादित्युक्तम् किंच ज्ञानतोऽज्ञानतश्चात्र मरणांतिकमेवप्रायश्चित्तं श्रूयते यथा ॥ अति पातकिनश्चेतेप्रविशेयुर्हुताशनम् अन्यथानिष्कृतिस्तेषां विद्यतेन क थंचनेति ॥ १ ॥ कथंचनेतिज्ञानतोऽज्ञानतश्चेत्यर्थः अन्यथा तदन र्थकं स्यात् ॥ भविष्ये ॥ अतिपातकयुक्तानां प्राणान्तिकमुदाहृतम् अत्र सकृद्गमनेऽपि प्राणांतिकम् यथापूयंत इत्यनुवृत्तो हारीतिन । सखांऽग्निं प्रविशेयुरतिपातकिन इति भणितम् ॥ बृहद्विष्णुना तु । उत्तरोत्तरं लघू यांसि पापानि गणितानि तत्र महापातकानंतरमेवातिपातकंगणितमनन्तम हापातकादतिपातकं लघीयः विज्ञानेश्वरमतेऽप्येवं सा स्मृतिः प्रथमप्रकर णे पापगणनायां द्रष्टव्या एषामवांतरभेदा अपि तत्रैवावगंतव्याः ॥

अर्थ एहहै कि अतिपातककों जाण कर्के अथवा न जाण कर्के करे जेकर ऐना न मानो तो कथंचन पद अनर्थक होजावेगा और भविष्य पुगण विषे भी लिखताहै आतीति अतिपातकियोंका मरजाणा ऐसाहि प्रायश्चित्तहै । इसविषे एकवार गमन करके कर्के भी मरणांत प्रायश्चित्तहै जैसे पवित्र होवें इसअनुवृत्तिविषे हारीतिने किहाहै अतिपातकी सतावी अग्नि विषे प्रवेश करें ॥ और बृहद्विष्णुने तो पहलेंथे दूसरा छोटा दूसरे ते तीसरा छोटा इसी प्रकार पापोंकी गिणती करीहै तिस विषे महापातकते पीछे हि अति पातक गिणयाहै इस कर्के महापातकते अतिपातक छोटाहै ॥ और विज्ञानेश्वरने भी अति पातककों छोटाहि कहाहै सो स्मृति पहलें प्ररुण विषे और पापोंकी गिणती विषे देख लैणी इनां अतिपातकांके अवांतरभेद भी तिसी प्रकरण विषे देख लैणे इति

४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी०भा० ॥

अथ ब्राह्मणवातिके लक्षण कथन करणवास्ते प्रथम ब्राह्मणका लक्षण कहतेहैं जन्मेति प्रथम जन्मकर्के शूद्रहोताहै फेरजातकर्म यज्ञोपवीत संस्कार होने कर्के द्विजसंज्ञा होतीहै और वेदका अभ्यास करण कर्के विप्रसंज्ञाहोतीहै और ब्रह्मको जाने तद ब्राह्मणहुंदाहै ॥ १ ॥ इसविषे संयोग पृथक् पृथक् न्यायकरके ब्राह्मणमें जन्महोना फेर संस्कार फेर वेदाभ्यास फेर ब्रह्मज्ञान एहसं पूर्ण यथासंभव कर्के भिन्न २ होवें अथवा एकवहोवेंतदभी ब्राह्मणत्व करदेतेहैं अर्थात् इनमेसे कौटे एकभी संस्कारहोवे तदभी ब्राह्मण हुंदाहै और जन्म उत्पत्तिसं और तपसेजानणा किस वारने कि वाल्मीकि ऋषि जन्मका भोल था सो तपकर्के ब्राह्मण होता भया इस कर्के विश्वा

ब्रह्मब्रह्मलक्षणमभिधातुं प्रथमंब्राह्मणलक्षणमुच्यते ॥ जन्मनाजायतेशूद्रः संस्काराच्चद्विजोत्तमः वेदाभ्यासीभवेद्विप्रोब्रह्मजानातिब्राह्मणः १ अत्र संयोगपृथक्त्वन्यायेन ब्राह्मणाजन्म संस्कारोवेदाभ्यासोब्रह्मज्ञानंचेमा निसमुद्गतानि यथासंभवं व्यस्तानि मिलितानि वाब्राह्मणत्वप्रयोजकानि जन्मतु येनेस्तपसोवाधोध्यम् वाल्मीक्यादेस्तथास्मरणात् एतेनविश्वा मित्रादावव्याप्तिर्व्याहता यद्वा विश्वामित्रोहिब्राह्मणीयमंत्राभिमंत्रितचरु भक्षणेषक्षत्रियोत्पन्नोपि ब्राह्मणएवेत्यभिध्येयम् ॥ क्षत्रियांतरब्राह्मणी भूताऽव्याप्तिस्तूक्तयुक्तेरेवार्थ्या क्षत्रियसंस्कारादौ किंचिद्भेदश्च वशात्तत्र नातिव्याप्तिः जन्मनाजायतेशूद्र इत्यत्र शूद्रसदृश इत्यर्थः

मित्रादि विषे अतिव्याप्ति दूर होजातीहै अथवा विश्वामित्र ब्राह्मण बनाने वाले मंत्रों कर्के मंत्रिन चरुको क्षत्रियाणी भक्षण करती भयी तिस क्षत्रियाणीते उत्पन्नभोसा तदभी ब्राह्मण भा वकों प्राप्त हुंदा भया एह भी जानणा ॥ क्षत्रीति औरभी क्षत्री ब्राह्मण होते भये इस विषे अव्याप्ति तपरूप जो पूर्व युक्ति तिसीसे दूर करनी और क्षत्रिय संस्कार विषे ब्राह्मण संस्कारते कुछभेदहै इसवास्ते तिस विषे दोष नहिहै और जो कियाहै जन्म कर्के शूद्र होताहै इस विषे शूद्र पद कर्के शूद्र समान जानना

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ टी०भा० ॥ ५

और सादृश्यविषे भी एह पुरुष सिंढहे इत्यादि प्रयोगभी होनेहै अर्थात् जैसे पुरुष सिंहसमान करता कर्के युक्तहै कुछ सिंहाहे नहिहै इसीप्रकार जन्म कर्के शूद्र समान जानना और वेदाभ्यास रहित जो ब्राह्मणहै सो जातिमात्र ब्राह्मण किहाहै १ इसी प्रकार जो वेदपाठीहै सो अनूचा न किहाहै २ और वेदपढ़ना पढ़ाना यज्ञ करणा और कराणा और दानदेना और दानलना इनां लेयां कर्मा कर्के युक्त जो ब्राह्मण सो पट्टकर्मा किहाहै ३ और जिसकी ब्रह्म विषे स्थितिहै उसका नाम ब्रह्मनिष्ठ है ४ और यज्ञ सभको जो करावे उह याजक होताहै ५ इत्यादि ब्राह्मण भेद जानत योग्य है और शूद्र द्विज विप्र ब्राह्मण एह संज्ञा पूर्व पूर्व संज्ञांत

सादृश्येपि सिंहोयमाणवकइत्यादौ प्रयोगदर्शनात् यत्र वेदाभ्यासादिविरहः स तु जातिमात्रो ब्राह्मणः १ एवमनूचानः २ पट्टकर्मा ३ ब्रह्मनिष्ठः ४ याजकः ५ इत्यादयो ब्राह्मणभेदाज्ञातव्याः ॥ शूद्रद्विजविप्रब्राह्मणसंज्ञास्तु पूर्वस्मादुत्तरोत्तरसंज्ञाप्रयुक्तगुणोत्कर्षाधायका न तु जात्यंतरप्रयोजकाः एवंविधब्राह्मणवधे गुणपेक्षया प्रायश्चित्ततारतम्यंवक्ष्यते अतएव सर्वोत्तमब्राह्मणलक्षणमाह वसिष्ठः योगस्तपोदमोदानं सत्यं शौचं दयाघृणा विद्याविज्ञानमास्तिक्यमेतद्ब्राह्मणलक्षणम् १ स्वार्थमनपेक्ष्य परदुःखप्रहरणेच्छा दया

आगे २ संज्ञाप्रयुक्त अधिक गुणका प्रति पादकहै कुछ और जाति प्रति पादक नहिहैं अर्थात् शूद्रते आगे द्विजमें बहुत गुणहै और ऐसेहि विप्रसे ब्राह्मणमें भी जानना और ऐसे ब्राह्मण वध विषे जैसे २ गुणहै तिनके अनुसार प्रयश्चित्त आगे कहेंगे और इसी कारणतें सभमें उत्तमजो ब्राह्मणहै तिसका लक्षण किहाहै वसिष्ठजीने सो जैसे योग इति प्राणांको रोक कर चित्तको स्थिर करणा एह योगहै और तपकरणा कि शीत और उष्णको सहारणा और इन्द्रियांको दुष्टविषयते रोकणा और अपने विमानुसार दीनको कुछ देना और सत्य बोलणा पवित्र रहना और सभ ऊपर दयाकरणोकि अपने अर्थको त्याग कर दूसरेके दुःख दूरकरणको इच्छा करणा

परेति जो दूसरे के धन वृद्धि की इच्छा करणी अथवा दूसरे के दुःख हो पाए आप को दुःख जानना अथवा निन्दित वस्तु में मन को हटाणा एह घृणा है और विद्या पठन करणी और ब्रह्मज्ञान होना और आत्मिकभाव होना ११ एह एकादश लक्षण जिसमें होवें सो उत्तम ब्राह्मण किहा है १ इति और एह योगादिगुण के करणित जो ब्राह्मण है सो गौण किहा है और ब्राह्मण कल्पका लक्षण चतुर्विंशति मत में लिखा है ब्रह्मेति ब्राह्मण वीर्यते उत्पन्न होवें और मंत्र संस्कार में हीन है केवल ब्राह्मण जाति करके जो उपजीवका करे सो ब्राह्मण समान किहा है १ इस कारण तें गुणभेद करके ब्राह्मण के भेद कहे हैं सो जैसे समामिति संस्कार हीन जो है सो अब्राह्मण किहा है उसको जो दान देणा है तिसका समान ही फल होता है अधिक फल नहि होता और जिसके केवल संस्कार हो एह उह ब्राह्मण ब्रुव किहा है उसको दान दिता हो

परसंपत्त्युदयेच्छा घृणा यद्वा परदुःखेपि दुःखित्वं घृणा जुगुप्सितेभ्यो म
नसोपसर्पणं वा एतदित्येकवचननिर्देशात्समुदितानां ब्राह्मणलक्षणत्वं त
दभविगौणो ब्राह्मण इति । ब्राह्मणकल्पलक्षणं चतुर्विंशतिमते ब्रह्मवीजस
मुत्पन्नो मंत्रसंस्कारवर्जितः जातिमात्रोपजीवी च स भवेद्ब्राह्मणः समः १
अतएव गुणभेदेन ब्राह्मणभेदा यथा सममब्राह्मणे दानं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवेष्व
धीतेशतसाहस्रमनंतं वेदपारगो १ अथ ब्रह्महलक्षणमपराकं ब्राह्मणप्राण
वियोगफलकव्यापारकर्ता स ब्रह्महा कर्त्ता च स्वतंत्रस्तत्प्रयोजकश्च त
स्वतंत्रेनाम द्वारभूतं कर्त्तृतरमनपेक्ष्य क्रियाप्रवर्त्तकः परंतु स्वतंत्रस्य क
रनुकूलमाचरंस्तत्साध्यां क्रियां साधयति सप्रयोजकः

या दुष्ट होता है और कुलपट्टा होवे सो अधीत किहा है उसको दिता होया दान हजार गुणा होता है और संपूर्ण वेद पट्टा होवे उह वेदपारग है उसमें दानका अनंत फल होता है ॥ १ ॥ अथ ब्राह्मण हतकरण वालें का लक्षण अपराक में लिखा है कि जो पुरुष ब्राह्मण के प्राणवियोग करण वाला व्यापार करे सो ब्रह्महा किहा है अर्थात् जिसकर्म करके ब्राह्मण मत हो जावे उस कर्म के करण वाला ब्रह्महा होता है सो कर्त्ता भी दो प्रकार का है एक स्वतंत्र दूसरा प्रयोजक और तिस विषे स्वतंत्र तिसका नाम है कि जो द्वारभूत दूसरे कर्त्ता को त्याग करे फल प्राप्त आ पहि कर्म में प्रवृत्त होवे अर्थात् दूसरे की सहायता ते बिना अकलाहि काम करे दूसरा प्रयोजक उसका नाम है कि जो स्वतंत्र कर्त्ता के अधीन होकर तिस करके सिद्ध करण वाले कायको सिद्ध करे अर्थात् कार्य करण वाले को अच्छी तंग प्रेरणा करे उसको प्रयोजक कर्त्ता कहते हैं

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ टी० भा० ॥ ७

(प्रश्न) इसविषे स्वतंत्रतासे ब्रह्मण्य वध करणवाले का ब्रह्महा शब्द अंतरंग होता है क्या साक्षात् तिसका वाचक है और प्रेरक वहिरंग कहाता है पूर्व २ जोहावे उसकानाम अंतरंग है और उसके पीछे २ जोहावे उसकानाम वहिरंग है पूर्वकार्यके सिद्ध होया वहिरंग असिद्ध होता है) उत्तर) एहनहि कहना किसवास्ते कि प्रयोजक का भी ब्रह्महा शब्द अंतरंग है । सोकिहा है आपस्तम्बजीने प्रयोजयितेति प्रेरणा करणवाला और कार्यमे प्रवृत्त को पीछे से प्रेरणा करण वाला और कार्य करण वाला एह मार्ग नरक फल वाले कर्म विषे फल भागो होते हैं अर्थात् शुभ कर्म विषे प्रेरक अनुमंता कर्ता एह स्वर्ग को प्राप्त होते हैं और अशुभ कर्म विषे एह नरक को प्राप्त होते हैं इसवास्ते इनको भी ब्रह्महा कहते हैं ॥ और जो बार बार शुभाऽशुभ कर्मका आरंभ करे तिस विषे अधिक फल होता है (प्रश्न) अनुमंता जो है सो आपता कुछ काम नहि क

तत्र स्वातंत्र्येण ब्रह्मवधकर्तारं ब्रह्महेति शब्दोऽंतरंगत्वादेवाचष्टे न तु प्रयोजकं वहिरंगत्वादिति न वाच्यं तस्यापि तद्वाच्यत्वात् ॥ यदाहापस्तम्बः ॥ प्रयोजयिताऽनुमंता कर्ता चेति स्वर्गनरकफलेषु कर्मसु फलभागिनः योभूय आरभते तस्मिन् फलविशेष इति ॥ न चानुमन्तुः कथं कर्तृत्वमकर्तुश्च कथं स्वर्गनरकफलयोग इति वाच्यम् प्रयोजकतया तस्यापि कर्तृत्वात् प्रवलेहिदण्डप्रणेतारि राजादौ तेनाननुमतः सत्यपि ब्रह्मवधरागे कश्चित्कर्तुं न शक्नुयात् अनुमतस्तु शक्नुवादिति वधादौ भवत्येवानुमन्तुः प्रयोजककर्तृत्वम् गोवलीवर्दन्यायेन प्रयोजककर्तुः पृथगनुमन्तोपात्तः

तो सोकर्ता कैसे होया और स्वर्ग नरक फल तिसको कैसे होगा ॥ (उत्तर) एह नहि कहना किसवास्ते कि प्रेरणा करणे करके हि तिसको कर्ताभाव होता है उससे अर्थात् जो पुरुष प्रेरकर किसीसे कुछ कार्य करावे उसविषे प्रेरक काहि नाम होता है इसवास्ते प्रयोजक भी कर्ता होता है । जैसे कि तेजस्वीदंड देनेवाले राजाके विद्यमान होयां यद्यपि अननुमंता को अर्थात् राजाज्ञाहीन को ब्रह्मवध करणकी इच्छा है भी तदभी कोई करणको समर्थ नहि होता और अनुमंता समर्थ होजाता है । और वधादि विषे अनुमंता को प्रयोजक कर्ताभाव है ॥ और इस स्थानमे गोवलीवर्दन्याय कर्के अनुमंताका भिन्न ग्रहण किया है ॥ गोवलीवर्दन्याय एह है कि गामानय वलीवर्दच इसमे गामानय कर्के वलीवर्दकाभी बोध था परंतु वलीवर्द शब्द भिन्न कहणे कर्के पूर्वला शब्दगोकाहि वाचक रहा ऐसे भी जाणो ॥

८. ॥ श्रीरणवीरकारितं प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और प्रयोजकका लक्षण प्रथम कि है ॥ और कार्य विषे प्रवृत्तकों जो उद्देश करे तिसका नाम अनुमंता है ॥ और उपदेष्टाभी उसीको कहते हैं ॥ एह केवल उदाहरण दिखानेवास्ते लिखे हैं ॥ और जिसते विना कर्ता अपने कार्य करेको समर्थ न हो सो सपूर्ण हननसिद्धिके वास्ते अनुरक्त घातक होता है और इसीकारणते हि हंताके साथहि चतुर्दश १४ पैठानासिनेकहे है हंतेति हन्ता १ मन्ता २ उपदेष्टा ३ संप्रतिपादक ४ प्रोत्साहक ५ सहाय ६ मार्गानुदेशक ७ आश्रय ८ शस्त्रदाता ९ भक्तदाता १० उपेक्षक ११ शक्तिमान् १२ दोषवक्ता १३ अनुमोदक १४ इनका अर्थ जो है सो दिखायीदा है साक्षात् जो मारे सो हंता कहा है १

प्रयोजकस्तूतः अनुमंता प्रवृत्तप्रवर्तकः उपदेष्टेतियावत् प्रदर्शनार्थंचैतत् ततश्चयेनविनाकर्तास्वाक्रियांकर्तुनशक्तुयात्सर्वोपिहननसिद्धयेव्याप्रियमाणोघातकोभवति ॥ अतएव हंत्रासहान्ये चतुर्दशोक्ताः पैठानासिना हन्ता मन्तोपदेष्टाच तथासंप्रतिपादकः प्रोत्साहकःसहायश्चतथामार्गानुदेशकः १ आश्रयःशस्त्रदाताच भक्तदाताविकर्मणाम् उपेक्षकःशक्तिमाश्च दोषवक्तानुमोदकः अकार्यकारिणस्तेषां प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेदिति २ हन्ता साक्षाद्धन्ता १ मन्ताऽनुमन्ता प्रवृत्तप्रवर्तकः २ उपदेष्टा मर्मोद्घाटनादिकृत् ३ संप्रतिपादकः ॥ पलायमानममित्रमुपसंधन् परेभ्यो हन्तारं परिरक्षंश्च हन्तुर्द्रष्टिमानमुपनयन्नुपकरोतिसः ४ प्रोत्साहकःस्तावकः ५ सहायः सहगन्ता ६ अनुमादको हन्तुर्हर्षमनुयोहण्यति ॥ भक्तपदमौषधादेरप्युपलक्षकम् ॥ अन्यत्स्पष्टम्

और जो पुरुष कार्यमे प्रवृत्तको प्रेरणाकरे सो मन्ता किहा है २ और जो बथार्थ आभिप्रायको प्रकटकरे उसका नाम उपदेष्टा है ३ और मारणे वालेते भयकरके आगे नसदा जो शत्रु है तिसको भी रोकलेवे और और पुरुषांते माने वालेकीभी रक्षाकरके फेर मारणमे उसको दृढ़करके उपकार करे तिसकानाम संप्रतिपादक है ४ और जो मारण घाटेकी स्तुतिकरे उसकानाम प्रोत्साहक है ५ और साथ जो गमन करे उसकानाम सहाय है ६ और हंताके हर्षको प्राप्त होयां २ हर्षको प्राप्तहोवे तिसकानाम अनुमोदक है ७ और हंताको भक्त कथा भोजन देवे उसकानाम भक्तदाता है इसमे भक्तशब्दकरके औषध इत्यादिकाभी ग्रहण करणा और सभ स्पष्ट है

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ॥ १३ ॥ टी० भा० ॥ ९

एह सभ पापी होते हैं इस वास्ते इनको भी प्रायश्चित्त देणे योग्य है और इनका प्रायश्चित्त अनुधिक भाव करके आगे किहा जावेगा इसमें अनुमता उसका नाम है कि जो अनुमति देवे सो अनुमति दो प्रकारकी है एक तो जिसको विरोध कर्के हत करणा होवे उस विषे अनुमताको भी कुछ विरोध होवे और सो अपने विरोधते मारण वाले काँ तिसके मारण विषे युक्ति कहे १ और दूसरा किसीने कहा है कि मैं श्रमक पुरुष काँ मारता हूँ इस प्रकार तिसके वाक्य को सुनकर तिसका वधते निषेध न करे ॥ इस प्रकार तिसके योगते अनुमता दो प्रकारका होता है ॥ और इसी प्रकार उपदेष्टा भी दो २

प्रायश्चित्ततारतम्यंवक्ष्यते अत्रानुमताऽनुमतिकर्त्ता सानुमतिर्द्विविधा यदि रोधाद्धननंसंभवति तत्रानुमतुरपि विरोधस्तत्प्रयुक्तिः १ अपरा एतं ह न्मीति वचने शक्तस्याप्रतिषेध एवेति तद्योगादनुमन्ता द्विविधः एवमुपदेष्टापि स्वभृत्यं वेतनदानादिना स्वतःप्रवृत्तमेव मंत्रोपायादिना प्रयोजकत्वादद्विविधः आभ्यांभेदाभ्यांसहानुमन्त्रादयश्चतुर्दश १४ हं तानु पंचदशकः १५ इतिशूलपाणिमतेनोक्तम् तत्र ये भक्तदाता विकर्मणामित्यादयस्ते तु परमरणमभिसंधाय यदि भक्तादि प्रयच्छन्ति तदा वधहेतवो न भक्तादिदानमात्रेण यदि तन्मात्रेणापि हेतुता स्यात्तदा पित्रोरपि पुत्रंजनयतोस्तत्कर्तृकासु कुशलाकुशल क्रियासु हेतुता स्यात्

प्रकारका है कि एक तो अपने भृत्यको धन दे करके वध करवाणा १ और दूसरा स्वतः प्र जो उद्यत है तिसको मंत्र और उपायादि कर्के वध विषे प्रवृत्त करणा २ इन भेदोंके साथ अनुमतादि १४ होते हैं और हंता १५ वां होता है एह शूलपाणिजी के मतमें कहा है तत्राति और तिसविषे दुष्टको जो अन्नदाता हैं सो जेकर किसीके मारण वास्ते दुष्टको अन्नादिदेवें तद उहभी वध विषे कारण होते हैं कुछ अन्नादि देने कर्के हि नहि पापीहोतें और जेकर अन्नमात्र देणे करके वधकी कारणता होवे तद पुत्रको उत्पन्न करते जो माता पिता हैं तिनको भी पुत्रकृत शुभाऽशुभ क्रिया विषे कारणता होनी चाहिए

इसविषे औरभी आपत्ति आवतीहै क्या कि किसी पुरुषने धर्मार्थ बनाया जो कूप अथवा तडाग है तिस विषे कोई ब्राह्मण प्रमादसे गिडकर मृत होजावे तद कूप वा तडाग बनाने वालों भी ब्राह्मण मारणे की कारणता प्राप्त होनी चाहिए इसवास्ते दुष्टकों केवल अन्न देणे करके पापका भागी नहि होता किंतु जेकर किसीके मारणवास्ते नीचको अन्न अथवा और कुछ वस्तु देकर अपने घरमे उस नीच पुरुष की रक्षा करे तद उह भी पापका भागी होताहै ॥ और जेकर भक्त देणे करके हि वध विषे कारणता कहो तद एउ नहि कहना किस वास्ते सो आगे हेतु लिखा है ॥ इस विषे एह हेतु है कि किसी कारणके कारण कर्के अकारण भाव होनेतें ॥ वधमि ति और भी हेतु लिखाहै किसी अन्य पुरुषने वधनिमित्तते विना भी किया जो कुछ कामहै उसकामकी जेकर वध कर्ताको कुछ लोड होवे तद दूसरेको भी वध निमित्त

धर्मार्थनिर्मितकूपादौच प्रमादपतितब्राह्मणमृत्युहेतुता कूपकर्तुरापद्येत नैवेयमस्ति कारणकारणत्वेनाकारणत्वात् ॥ वधमनुद्दिश्यापि परे णकृतो व्यापारो यदि वधमाचरता कर्तृविशेषविशिष्टत्वेनापेक्ष्यते तदा भवत्येव तस्य हेतुता यथाहमनेनाक्रुष्टस्ताडितोनिर्धनोवाकृत इत्यात्मानं हन्मीत्यभिसंधायात्मनि व्यापादने भवत्याक्रोशादिकर्तु स्तद्व्यापत्तौ हेतुता पुनःकूपादावेवं नहि तत्र भवति यस्माद्विवद तेनायंकूपोनिर्मितस्तस्मादहमत्र पतामीत्यभिसंधिः ॥ आक्रोशादिकर्तुर्व ह्यवधनिमित्तता माह विष्णुः

कार्य करणे कर्के वध विषे कारणता होतीहै और जेकर अन्यकृत कार्य वधमे कुछभी स हायता न करे तद दूसरे पुरुषको वध विषे कारणता नहि होती जैसे कि दूसरेको वधकारणता होतीहै सोलिखतहै । जैसेकि मेरा तिरस्कार इसने कीताहै अथवा मेरेको ताडन कीताहै अथवा मेरा सभ धन इसने लेलियाहै इसवास्ते मैं अपना देह त्याग करताहुं ऐसे कहकर जब ब्राह्मण किसीके ऊपर शरीरत्याग कर देवे तद अवमानादि करण वालियों को ब्राह्मण मारण विषे कारणता होतीहै और फेर कूपविषे गिडने करके ऐसी कारणता नहि होती और जिसका रणते अमुकपुरुषने एह कूप बनवायाहै इसवास्ते इसविषे मैं गिडताहूँ ऐसे गिडे तदभी कूप कर्ताको वधहेतुता नहि है । और तिरस्कारादि करणवालेको ब्राह्मणवधविषे कारणता के हतहै विष्णुजी ।

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ११

आकुटइति जो ब्राह्मण अवमानको प्राप्त होयार अथवा सोटोकरके ताडयाहोया अथवा धन करके हीन कियाहोया जिसके ऊपर प्रणांका त्याग करे महात्मा पु प तिसीको ब्रह्मघातक कहतेहैं और जो ब्राह्मण अन्याय करके ग्रहण कीयाहै और कहताहै कि मेरा न्यायकरो जेकर उसका न्याय न होवे तिसदुःख करके जिसके उद्देश करके मृत होजावे तिसको ब्रह्मघातक कहतेहैं पिछलेश्लोकदा उत्तरार्द्ध इसजगा जांडलेणा १ इसविषे और विशेषहै जिसविषे अनादर ताडनादि संबंधके बिना दूसरेक उद्देशसे अमादिकरके ब्राह्मण प्राणा कोत्याग देवे तद् मरण वालेको हि दोषहै और जिसके उद्देशसे मरे उसको कुछदोष नहिहोता सोलिखाहै सुमंतुने असंबंधेनेति कि संबंधसे बिना कोई ब्राह्मण किसी ऊपर मृत होजावे तद् तिसी मरण वालेको हि पापहोताहै और उइ जिसका नाम लेवे तिसको कुछ पाप नहिहोता १

आकुटस्ताडितोवापि धनैर्वा विप्रयोजितः यमुद्दिश्य त्यजेत् प्राणांस्तमाहुर्ब्रह्मघातकम् अन्यायेन गृहीतस्तु प्रार्थयन् न्यायदर्शनम् १ यत्र त्याक्रोशताडनादिसंबंधमन्तरेण भ्रात्यादिवशेन परमुद्दिश्य ब्राह्मण आत्मानं हन्ति तत्र हन्तुरेव दोषो नोद्दिश्यस्येत्याह सुमन्तुः असंबंधेन यः कश्चिद्द्विजः प्राणान्सुमुन्मृजेत् तस्यैव तद्भवेत्पापं न तु यं परिकीर्तयेत् १ अत्रापरोविशेषो भविष्यत्पुराणीयः प्रायश्चित्तविषये प्रकरणोपान्तेऽवसेयः आततायिनं तु ब्राह्मणमपि हतवतो न ब्रह्महत्वमिति व्यास आह आततायिनमायां तमपि वेदान्तगंगरणे जिघांसंतं जिघांसीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत् ॥ १ ॥ मनुः गुरुं वा वालवृद्धं वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम् आततायिनमायां न हन्यादेवा विचारयन् १

अत्रेति ॥ इसके प्रायश्चित्त विषे और विशेषहै भविष्यत्पुराणका सो प्रकरणके अंतके समोप देख लेणा ॥ इस विषे और विशेष कहतेहैं कि आततायि ब्राह्मण भी हो तिसको मारणे करके ब्रह्महत्या नहि है एइ व्यासदेवने किहाहै । आततायिनमिति । वेदान्तपारंग भीहो आततायी और संग्राममे आजावे उसको अंगसे शस्त्र प्रहार करनेको जेकर मार देवे तिसके मारणे करके ब्रह्महा नहि होता ॥ १ ॥ सोई मनु जो ने लिखाहै गुरुमिति गुरु होवे अथवा बालक वा वृद्ध हो अथवा पाण्डित ब्राह्मण हो वे तद् भी विचारतें बिना आवतें आततायीको मार देवे अर्थात् गुरु ब्राह्मण एइ विचार कुछ नहि करणे योग्य १

१२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

सोई वशिष्ठजी ने लिखा है स्वाध्यायिनामिति जो पुरुष वेदपाठियोंको कुल विषे है जन्म जिसका ऐसेभी आततायीको मार देवे तदभी तिसके मारण करके सो पुरुष भ्रूणहा नहिहोता अर्थात् ब्रह्महा नहि होता किसवास्ते कि क्रोधहि तिसके क्रोधको मारताहै और बृहस्पति जीने भी किहाहै आक्रुष्ट इति । कि जो कोई किसीको गाली देकर अवमान करे और आगेते उहभी उसको गाली देवे और अवमान करे और जो किसीको ताडना करे आगेते उहभी उसको ताडना करे और जो कोई अपने घात करण वास्ते शस्त्र पकड कर आवे उसको शस्त्र करक मार देवे तद कुछ अपराधको नहि प्राप्त होता १॥ एहि विष्णुने किहाहै परेति कि जो ब्राह्मण परस्त्रीविषे रत होवें और चौर होवें अथवा और किसी दोषको प्राप्त होवें ऐसे ब्राह्मण जेकर आपसमे जदयुद्ध विषे मृतहोजावें अर्थात्

॥ वशिष्ठः ॥ स्वाध्यायिनांकुलेजातं योहन्यादाततायिनम् नते नभ्रूणहाभवतिमन्युस्तन्मन्युमृच्छति ॥ १ ॥ भ्रूणहाब्रह्महा मन्युः क्रोधः स एव तन्मन्युं तत्क्रोधं ऋच्छति हन्ति ऋच्छगतीन्द्रियप्रलयमूर्त्तीभावेपु ॥ बृहस्पतिः । आक्रुष्टस्तुसमाक्रोशंस्ताडितःप्रतिताडयन् विनाशार्थिनमायातं घातयन्नापराधनुयात् १ येनाक्रुष्टःसोपितेनाक्रुष्टःयेनताडितः सोपितेनताडितश्चेत्तदा नापराधः विष्णुः । परदाररताश्चौरादोषप्राप्ताश्चयेद्विजाः अन्योन्यंवाहतायुद्धे नतेनब्रह्महाभवेत् १ मनुः॥शस्त्रंद्विजातिभिर्ग्राह्यंधर्मोयत्रोपरुध्यते आत्मनश्चपरित्राणेदक्षिणानांचरक्षणे १ दक्षिणारक्षणं यज्ञरक्षणेन भवतीति यज्ञरक्षण इत्यर्थः ॥ वौधायनः षट्स्वनाभिचरन् पतति षट्स्वाततायिषु तानाह ॥ वसिष्ठः । अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः क्षेत्रदारहरश्चैवपडेतेह्याततायिनः १

लडितपांढोंके एक जद मर जावे तदभी उह मारणे वाला ब्रह्महा नहि होता ॥ १ ॥ और जिस स्थानमे ब्राह्मण भी शस्त्र धारण करे सो मनुजीने किहाहै शस्त्रमिति कि जिस स्थानमे धर्मविषयका संकट होजावे अथवा अपनी रक्षा करण वारते अथवा यज्ञसामग्री की रक्षा वास्ते ब्राह्मणोने भी शस्त्र ग्रहणकरणे योग्य है ॥ १ ॥ और वौधायनने कहाहै षड्विधे छे प्रकारके जो आततायीहैं तिनकोंनमारे तदपापीहोताहै छे प्रकारकेही आततायी वसिष्ठजीने किहेहैं अग्निद इति अग्निलगाने वाला १ विषदेनेवाला २ शस्त्र पकडनेवाला ३ धनहरनेवाला ४ स्थान हरनेवाला ५ स्त्री हरणवाला ६ एह छे आततायी हैं ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० १३ टी भा० ॥ १३

और इस में एभी विचारहे क्षेत्र करके स्त्रीका भी घड़ण हो ताहै इसजगा भूमि वाचकहै । और मत्स्य पुगणमे लिखियाहै गृहेति कि घर अथवा क्षेत्र इत्यादि स्थानकीचोरी करणी और अपनी स्त्रीके साथ बलात्कारसे मैथुन करे और किसीके घरको बिना अपराधसे अग्नि लगावे और किसीको मारण वास्ते बाहों नेसेविपदेकर मार देवे और शस्त्र उठाकर शस्त्र रहत पुरुषको मारने के वास्ते आवे १ और किसीको मारण वास्ते मंत्र यंत्र तंत्र इत्यादि अभिचार करे और राजापास भले पुरुष के अनाद खास्ते चुगली करे एह सपूर्ण धर्म जानने वालें महात्मा पुरुषोंने संसार विषे आततायी कहेंहैं इति २ और व्यासदेव जीने किहा है उच्यतेति कि बल करके तलवारकोधारे और अग्नि लगावे और विपदेवे और छल करके किसी को मारदेवे और राजाविषे जाकरचुगली करे

गरदोविषदः ॥ मत्स्यपुराणे ॥ गृहक्षेत्रादिहत्तरं तथापत्न्यभिगामिनम्
अग्निदंगरदंचैव तथाचाभ्युद्यतायुधम् ॥ १ ॥ अभिचारंहिकुर्वाणं राजे
गामिचपैशुनम् एतेहिकथितालाके धर्मज्ञैराततायिनः ॥ २ ॥
व्यासः ॥ उच्यतासिं विशाग्निचशस्त्रोद्यतकरंतथा आथर्वणेनहंतारं
पिशुनंचैवराजनि॥भार्धापहारिणंचैव पडाहुराततायिनः १ तद्व्याभ्यनुज्ञा
॥ अत्रच वर्त्तमानाग्निदानादिव्यापारा आततायिनउच्यंते ॥ तद्व्यापारनि
वारणंच यत्रवधमंतरेण नसंभवति तत्रैव तद्व्यानुज्ञा यत्रतु दंडशस्त्रादि प्र
हारमात्रेणैव शक्योनिवारयितुं तत्रदोषनिमित्तमेव तद्वधोज्ञेयइति ॥ मिता
क्षरायांतु इदंसर्वमर्थशास्त्रमिति तत्रदण्डाल्पत्वमिति व्यवस्थापितम् अत
एव दण्डाल्पत्वेप्यनुबंधोपेक्षया लघ्वपिप्रायश्चित्तमुचितमेव

और स्त्रीकोहर करके कहींलेजावे एह छे आततायी कहेंहैं १ और आततायी किस समय विषे मारणा सोकिहाहै ॥ कि इस विषे जो वर्त्तमान अग्नि वा विपदेनेवास्ते कुछ व्यापारकरे सो आततायीकिहेहैं और उसकाव्यापार बिना मार देणसे निवारण नहि होता इसवास्ते तिसीकाल विषे आततायीको मारणा योग्यहै और जिस स्थानविषे आततायीको दंडवाशस्त्र प्रहार करकेहि हटा देनेको जो पुरुष समर्थ होवे तद उसके मारणे में दोष अवश्यहै परन्तुमि ताक्षरा विषे उनको अर्थ शास्त्र जाणकर थोडाही दंड किहाहै इसने प्रायश्चित्त भी उसकोथो डा कहणा चाहिए किउसमे पुना पुना विषादि देशे करके अथवा तिसकीशंका कर के उसको मारियाहै इस अभिप्रायने ॥

१४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और सुमन्तुने भी एह किहा है नाततायीति कि आततायी के मारणका कुछ दोषनहि पर गौब्राह्मणों विना अर्थात् जेकर ब्राह्मण अथवा गौ एह आततायी होवें तद इनके मारण का दोष है इति । और ऐसे भी जिस स्थानविषे गौ ब्राह्मणते विना अन्य आततायी कों भी प्रहारदि से हटाकर अपनी रक्षा करण को समर्थहो तिनस्थानमें आततायी कों मारण वाला पुरुष ब्रह्मज्ञ होताहै । इसवास्ते आततायी वधविषे दोष प्रतिपादक और प्रायश्चित्त प्रतिपादक जो स्मृतियां हैं तिनका एह अभिप्राय जानना ॥ और प्रायश्चित्त कंदवादिकंविषे एह लिखा है कि ब्राह्मणकों मारदेणा हि ब्रह्महत्या होती है और इस विषे प्राण निकालने वाला जो कार्य है सोइहंतिका अर्थहै अर्थात् जिस कार्य करके किसीके प्राण दूर होजावे उसका नाम मारणा है ॥ और जिस कार्यके पीछे भी पुरुष व्यापारते विनाहि मृत्युहो

सुमन्तुनापि ॥ नाततायिवधेदोषोऽन्यत्रगोब्राह्मणादित्येवमेवोक्तं एवंच यत्र गोब्राह्मणवधादृते तत्प्रहारमात्रादिना शक्य आत्मा त्रातुं तत्र तद्वधकर्त्ता ब्रह्महा भवत्येव ततश्चाततायिवधे दोषबोधकानां तत्प्रायश्चित्तप्रतिपादकानांच स्मृतीनामचभेदविषयोबोध्यः ॥ प्रायश्चित्त कंदवा दौतु ब्राह्मणस्यहननं ब्रह्महत्या अत्र प्राणवियोगानुकूलोव्यापारोहंतेरर्थः यदनंतरंपुरुषव्यापारं विनैव मरणं भवति तच्चाव्यवधानेन कालान्तरेवेत्यन्यदेतत् ॥ अशूलपाणिः पूर्वोक्तब्रह्महसामान्यलक्षणमुक्त्वा साक्षाद्वंता प्रयोजकोऽनुमंताऽनुग्राहकोनिमित्तो चेति पंचधानिर्दिश्य ॥ तत्र मरणंदिश्यकनरांतरव्यापाराव्यवहितप्राणवियोगफलकनिषिद्धव्यापारकर्त्ता साक्षाद्वंता १

जाना है और तिस विषे जेकर कुछ व्यवधान न हो और कालांतरमें यद्यपि मरे तदपि ऐसे हि जानना अर्थात् जैसे कि किसी ब्राह्मणको किसीने दंड प्रार कियाहै और उह ब्राह्मण उस चोटके क्लेश कके हि पीछे दशबोस दिनके मरजावे पर बीच चोटकी पीडा हटो न होवे तदभी चोट लगाने वाले को ब्रह्महत्या होती है इति । और इस विषे शूलपाणिजीने पूर्वोक्त ब्रह्महाका सामान्य लक्षण कह कर साक्षात् वंता इत्यादि कहेहैं सो जैसे ॥ साक्षात् वंता १ प्रयोजक २ अनुमंता ३ अनुग्राहक ४ निमित्तो ५ एह पांच हैं ॥ और इनका लक्षण किहा है जैसे । कि किसीके मारण वास्ते अन्य पुरुषके व्यापार ने विनाहि प्राणवियोग है फल जिसका ऐतन्निषिद्ध कर्मके करण वाला साक्षात् वंता होता है (१) ()

॥ श्रीरणावीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ टी० भा० ॥ १५

(प्रण)साक्षाद्व्यापार मनुष्यका तद् होवे जेकर खड्गदिवीच न होवें तिनांके होयां किसतर ह साक्षात् है (उत्तर) नरशब्द कक सो अर्थ सिद्ध होचुका अर्थात् खड्गका व्यापारभा मारणवाले काहै और जिसको प्रथमकिसीके मारणकी इच्छानहि है तिसको धनदेने ककें वधवास्ते उद्योग करावे । अथवा वधके वास्ते आपहि उद्योग जो पुरुष है तिसको सलाह देकर और उपदेश देकर वधविषे उतारा करवावे उसका नाम प्रयोजक किहा है २ और मारण वालेको अनुमति देने वाला अथवा किसोने किहा है कि तिसका मैं मारताहुं इस वाक्यविषे समर्थ पुरुषको वधकर एने जे जानहटावे उसका नाम अनुमंता है ३ और मरणके भयसे भागना जो पुरुष है तिसको आनि ते रोककरके मारण वालेको जो पुरुष पकडावे उसका नाम अनुग्राहक किहा है । और अनुग्राहक दो प्रकारका है एकता मारणे योग्य जहि तिसको आगे ते रोकनेवाला और दूसरा धडा प्रहार करणवाला ४ और मारणवालेको निमित्त केहोयांभी क्रोधको जो उत्पन्न करे तिसका

अत्र खड्गोद्वेयवधायकत्वं नरशब्देन निराक्रियते अप्रवृत्तस्य पदातेर्वेत नदानादिना वधार्थप्रवर्तयितास्वतः प्रवृत्तमेव वामंत्रोपायोपदेशादिनाः साहकोऽपरः २ अनुमतिदाताऽनुमंता सचतंहन्मीतिवचने शक्तस्याः तिरेद्धा ३ वध्यस्य पलायनादिविद्यतकोऽनुग्राहकः अयंचद्विविध एको वध्यप्रतिरोधकः अपरः स्वल्पप्रहर्ता ४ उद्देश्यत्वे सति हंतुर्मन्युत्पादको निमित्री ५ तत्र प्रयोजकस्य प्रयुक्तिद्वारा अनुमंतुर्हंतुर्निर्भयत्वेन दृढतरप्रहारांत्यत्तिद्वाराऽनुग्राहकस्य पलायनादिसंरोधनद्वारा निमित्तिनाहं तृमन्युत्पादनद्वारेति चतुर्णां व्यवहितकारणात्वं अवांतरप्रकारभेदादिषां भेद इत्याचरूपौ एषां प्रायश्चित्ततारतम्ये ग्रंथकारा एव प्रमाणं यथा साक्षादंतुः

सकलं संप्रतिपादकारूपानुग्राहकस्य व्यापारबाहुल्यान्मैलिकं मवपादोनम् नाम निमीतो किहा है ५ ॥ और इनको वधकारणता है सो जेसे इसविषे प्रयोजकको तो प्रहारा करणेके द्वारा और अनुमंताको निर्भयहोने ककें अनिशय दृढप्रहार करणेके द्वारा अथवा मारण वाला अनुमतिको प्राप्त होकर अनिशय ककें दृढप्रहार करेगा अनुग्राहक को भागने को रोकलेना तिसद्वारा । और निमित्तो को मारण वालेको क्रोधके उत्पन्नकरणके द्वारा इन चारोंको व्यवधान सहित वधविषे कारणता होती है और विचले प्रहाराके भेदने इनका भेद किहा है । और इनके संपूर्ण और न्यून प्रायश्चित्तविषे ग्रंथकार हि प्रमाण है । सो जेसे किहा है कि साक्षात् मारणवालेको संपूर्ण प्रायश्चित्त है अर्थात् ब्रह्महत्याका जितना प्रायश्चित्त निबंधों में लिखा है उसके करणे ककें शुद्ध होता है १ और प्रतिपादक जो अनुग्राहक है तिसको भी अधिक व्यापार होनेने मूलव्रतका पादोन करणें प्राय है २

श्रीर प्रयोजकको केवलआज्ञादेनी और कुलक प्रार्थनाकरणी इसवास्ते मूलव्रतका आधाव्रत करणा किहाहै ३ और आगेहि वधमे प्रवृत्तको प्रेरणा करण वाला जो अनुमताहै तिसको अल्प व्यापारहोनेमे मूल व्रतका डेड पाद प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ४ और आगेनिमित्तो वास्ते लिखाहै निमित्तउति कि निमित्तके होयां पाद प्रायश्चित्तकोर इस वाक्यते निमित्तोको केवल निमित्तमात्र होने कके मूलव्रतका पादहि करणायोग्यहै ५ ऐसेएहमंपूर्ण यथोक्तप्रायश्चित्त करणे कर्कशुद्धि को प्राप्तहोताहै इहसभ प्रायश्चित्त मयूखमे लिखाहै और जो बारं बार आरंभ करे तिसको विशेष फलहोताहै ॥ एह पूर्वलिख आयेहैं इति इसवास्ते इस प्रकारका ब्रह्महा होताहै ॥ अव तिसकाप्रायश्चित्त किहाहै ब्रह्महेति कि ब्राह्मणके मारणे वाला पुरुष वनविषे कुठिया बनाकर

आज्ञाप्राथनादिनाप्रयोजकस्यार्द्धम् ३ प्रवृत्तप्रवर्तकस्यानुमंतुःसार्द्धपादम् ४ निमित्तेपादमादध्यादित्युक्तेनिमित्तिनःपादः ५ इतिप्रायश्चित्तमयूखे योभूयआरभते तस्मिन्फलविशेषइति पूर्वोक्तस्मरणात्तस्मादेवंविधोब्रह्महा तत्प्रायश्चित्तमाह ॥ मनुः ॥ ब्रह्महाद्वादशाब्दानिकुटीं कृत्वावनेवसेत् भैक्ष्याशयात्मविशुद्ध्यर्थंकृत्वाशवशिरोध्वजम् १ अस्यार्थः ब्रह्महा ब्राह्मणवधकारी द्वादश वर्षाणि वनेकुटीं पर्णशालां कृत्वा ब्रह्महत्या निवृत्तये वसेत् भैक्ष्यंफलमूलःचलाभे चतुर्वर्णलभ्यंतदाशी तदशनशीलो वक्ष्यमाणवचनान्मितभुक् शवस्य स्वयंहतस्यब्राह्मणस्य तदलाभे यस्यकस्यचिद्वा शिरःकपालं ध्वजंकृत्वा शिरोऽस्थ्येकदेशारोपितशवनिर्हरणकाष्ठांगेन ध्वजंकृत्वेत्यर्थः

वारां १२ वर्षनिवासकरे और अपनी शुद्धिके वास्ते मुडदेके शिरके कपालकीध्वजा बनाकरहाथ मेलेवे और भिक्षामागकर भोजन करे १ ॥ और इसका एह अर्थहै कि निर्वृत्तवास्तेद्वादश वर्ष वासकरे और तिसको फलमूल भक्षण करणाचाहिये जेकर फलमूलन प्राप्तहोवे तद ग्राम विषे जाकर चार वर्णने भिक्षा मांग कर थोडा भोजन करणा और आप मारया जो ब्राह्मणथा तिसके शिरका कपाल लेकर ध्वजा बनाकरके हाथमे रकूखे और जेकर उसशवका शिर न प्राप्तहोवे तद और किसी शवका कपाल लेलेवे फेर शवके दाहकरण वास्ते एकपासे रकूखा जो लंबाकाष्टहै तिसको लेवे फेर उसकपालको उसी काष्ठ ऊपर बांधकर ध्वजारूप बनाकर हाथ मेरकूखे एह. इसका अर्थहै इति ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी०भा० ॥ १७

और सोई अपराक विषे लिखाहै शिर इति ब्राह्मणके वध करण वाला पुरुष शिरः कपाली होवे क्या शिरका कपाल अथवा और कोई शिरकी अस्थि धारण करे । और ध्वजाको धारण करे अथात् खट्वांगकोभी हाथ विषे धारण करे और नियम करके नित्यं प्राति भिक्षामांग कर खावे और अपना कर्म क्या जो ब्राह्मणका वध कीयाहै उस कर्मको लोको के आगे प्रकट करता हुआ विचरता रहे जेकर इस प्रकार वारां १२ वर्ष पर्यंत नियमकरे तद ब्रह्महत्याते उह मुक्त होताहै अथात् इस प्रकार प्रायश्चित्त करणे करके ब्रह्महत्याका पाप दूर होजाताहै इति १ और इस विषे आप हत कीया जो ब्राह्मणहै तिसीका कपाल धारणेयोग्यहै किस वास्ते कि शातापत जीने किहाहै ब्राह्मणको मारकरके तिसीका शिर कपाल ग्रहणकर

अपराकैविशेषः ॥ शिरःकपालीध्वजवान्भिक्षाशीकर्मवेदयन् ब्रह्म हाद्वादशाब्दानिमित्तभुक्शुद्धिमाप्नुयात् १ ब्रह्महा द्वादश वर्षाणि शिरःकपालीशिरोम्येकदेशधारी ध्वजवान् खट्वांगीभिक्षाशीभिक्षाभोजननियम वान् स्वकृतकर्मब्रह्मवधाख्यंलोकेभ्योवेदयन् शुद्धिमाप्नुयात् ब्रह्मवधपा पान्मुच्यतइत्यर्थः स्वयंहतस्यब्राह्मणस्यैव कपालंधार्यं ब्राह्मणघातयि त्वा तस्य शिरःकपालमादाय तीर्थान्यनुसंचरोदितिशातातपस्मरणात् ॥ तदभावेत्वन्यस्येति प्रायश्चित्तरत्नादौ तच्च पाणिनाधार्यम् यदाहगौत्तमः खट्वांगकपालपाणिरिति खट्वाचात्र शवनिर्हरणार्था तदंगमेव ध्वजशब्दे नविवक्षितंतेनचध्वजाग्ररोपितकपालेनभवितव्यम् भिक्षाशनेविशेषमाह संवर्तः

के तीर्थी विषे जाकर विचरता रहे इस वाक्य स्मरणते उसीका कपाल धारण करणाचाहिये और जेकर तिस मृत होये ब्राह्मणका कपाल न मिले तद और किसीका कपाल ग्रहण करणा एह प्रायश्चित्त रत्नादिकोमे लिखाहै । सो कपाल हाथमे धारण करणे योग्यहै सो किहाहै गौत्तमजीने खट्वांगेति खट्वांग और कपाल हाथमे धारण करके रहे और इस स्थान विषे खट्वा एह ग्रहण करणी क्या जिसके ऊपर रख करके शवको दाह करण वास्ते श्मशानको लेजातेहैं उसीके एक पासेका काष्ठ ग्रहण करणा और ध्वजा शब्द करके भी एही लिखाहै तिस करके ध्वजा ऊपर कपाल बांध कर हाथमे धारण करणा योग्यहै और भिक्षाशन विषे विशेष किहाहै संवर्तजीने

१८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

भिक्षेति भिक्षाशौका एह अर्थ ग्रहण करणा क्या वनविषे जाकर गौके पुच्छके वालाका वस्त्र धारे और शिरमे जटा और पूर्वोक्त ध्वजा हाथमे धार कर वनके फल भक्षण करता हुया और संपूर्ण कामनाते रहित वनमे इस प्रकार विचरे १ और जेकर वनके फलों करके उपजावका न होवे तद पुरुष कपाल ध्वजा धार कर और इंद्रिय रोक कर चार वणकी भिक्षा ग्रहण करे इसमे ऐसा विचार रक्षणा कि ब्राह्मणके घरते बाहरते भिक्षामांगे पर अंदर प्रवेश न करे औरोंके घरमे अंदरभी जावे एह अर्थ अगो आवेगा और इस प्रकार ग्रामते भिक्षा ग्रहण करके फेर वन विषे चला जावे ऐसे हि नित्यं प्रति वारां वरस करे वाल कर्के गोपुच्छ वार्त्ति केशलेणे ॥ और एहि अर्थ संक्षेपसे कहा है प्रायश्चित्तदुशेखर वि अज्ञानंति अज्ञानते क्या इच्छाते विनाकोया जो ब्राह्मण वध तिसविषे मृतब्राह्मणके कपाल

भिक्षाशौकतुवनंगत्वावालवासाजटीध्वजी ॥ वन्यान्वेवफलान्यश्नन् सर्व कामविवर्जितः ॥ १ ॥ भिक्षाशौविचरेदेववन्यैर्यदिनजीवति चार्तुवर्ण्यचरे द्रैक्ष्यंखट्वांगीसंयतःपुमान् भिक्षास्त्वेवंसमादायवनंगच्छेततःपुनरिति२ वालागोपुच्छवर्त्तिनःकेशाः अयमेवार्थःसंक्षेपेण प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञा नतोऽनिच्छया कृते ब्रह्मवधे हतविप्रशवशिरोध्वजहस्तस्तैर्कपालीलीमग्नी हीतान्यदीयकपालःस्वकर्मस्यापयन् ब्रह्मचारिधर्मवापन त्रैवर्णिकाचार्या दिदर्शने मार्गादिपक्रमन् त्रिपवणस्त्रायी अध्ययनाध्ययनादिपट्कर्मणि वर्जयन् समंत्रकंस्नानसंध्योपासनमात्रं कुर्वन् रात्रौ वीरासनीजटीमुंडीवा वन्यफलमात्राहारी तदभावेत्वसंकल्पितविधूमभुक्तवज्जनस्त्वपुष्पागारेष्वेव भे क्ष्यंमृत्पात्रेणचरन्

ध्वजाग्रहण कर्के वोनमिलेतो औरकी और अपना कर्म प्रकट करता होया और ब्रह्मचारी धर्मवाला और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य आचार्याको देखकर आगेते हट जावे और तीनकाल स्नान करे और पढ़ना पढ़ाना इत्यादि ले कर्मको वर्जित करे ॥ और समंत्रक स्नान संध्योपासनमात्रकरे ॥ और रात्रि विषे वीरासन स्थित होवे और जटा धारण करे अथवा मुंडित रहे और वनके फल मात्र भक्षण करे ॥ जेकर वन विषे फलादि न मिले तद एह काम करे क्या ग्राम विषे जाकर हाथ देवे जिस घरमे धूम न निकले और सभ घरके पुरुष भोजन कर चुके होवें और कुछ संकल्प भी न होकि एह मेरेको आवश्यक देवों ऐसे विचार छोड कर्के सात घरतें मृण्मय पात्रमें भिक्षा ग्रहण करे और इसका एह अभिप्राय है कि जितना अन्न सात घरसे मिले उसीसे निवाह करणा ॥

और क्रोध नहि करणा और इंद्रिय रोककर रहिणा और ऊणांदि वस्त्र विछाकर शयनकरे और लीरां अथवा भुजपत्रका वस्त्र धारे अथवा और किसीका पुराणा वस्त्र लेकर धारे और ग्राम तें बाहर देवताके मंदिरके समीप निवासकरे और तिसने ब्राह्मणके घरविषे नहि प्रवेश करणा और दरवाजेके बाहर खलोकर ब्राह्मणके घरोंको नमस्कार करणी और सो पुरुष एक कालहि भोजनकरे और जिसदिन भिक्षा कुछ न प्राप्त होवे उस दिन उपवास करण योग्यहै इस प्रकार वारां वर्ष व्यतीत करे तद ब्रह्महत्या दूर होंतेहै इसमें वशिष्ठ जीने विशेष किहाहै सप्तेति जिन घरोंमें अपनाकुछ संकल्प नहि है ऐसंहि सात घरतें भिक्षा ग्रहण करे और भिक्षा न मिले तद निराहार रहे इति ॥ यमजीने तो ऐसे किहाहै सप्तेति क्या अपूर्व सात घरतें जिनांतें आगे भिक्षा नहि लयी अथात् जिसघरतें एक वारी भिक्षा ग्रहण करी उसघर विषे दूसरी वारी न जावे और सातघर कैसे होण यहच्छा कर्के प्राप्त होण इसी घर विषे

क्षमीदान्ताचारः कंबलक्षौमशयानश्चीरवल्कलान्यतमवासावहिर्ग्रामाद्देवा लयादिसमीपवासी विप्रगृहाण्यऽप्रविशन्दूरादेव तत्तद्गृहान्नमस्कुर्व न्नैककालाशी भिक्षायाऽभिलाषे उपवसन द्वादश वर्षाणि क्षपयेत् अत्र विशेषमाहवशिष्टः सप्तागाराण्यसंकल्पितानिचरेद्वैक्ष्यमिति अलब्धो पवासइति यमस्तु सप्तागाराण्यपूर्वाणिन्यायसंकल्पितानिच एककालं चरेद्वैक्ष्यंतदलब्धोदकंपिवेदित्याह १ न्यायसंकल्पितानि यदृच्छाप्राप्तानि आपस्तम्बीयेऽपरोऽत्रविशेषः ॥ जटाधारणंचवपनादूर्ध्वं कार्यं कृतवापो वसेद्वैष्टेग्रामान्तेगोव्रजेपिवा आश्रमेवृक्षमूलेवा सर्वभूतहितेरतइति मा नवीयात् प्रायश्चित्तप्रकरणादौतुकृतवापोजटावेतिविकल्पोऽभिप्रेतः अत्र चारण्यकुट्यसंभवे निवासांतरविधिर्द्रष्टव्यः ग्रामांतोग्रामारण्ययोस्संधिः

जाणाहै औरते बिचार वाले नहोण और दिन विषे एकवारीहि भिक्षा लेवे और न मिले जिस दिन उस दिन केवल जलपान करेइति ॥ और आपस्तम्बीय विषे और विशेषहै क्या जटाको जोधारणकरे सोमुंडनते पीछे प्रथम मुंडन पीछे जटाधारणकरे ॥ सोई बातकहते हैं जैसे कृतेति प्रथम मुंडन कराकर्के गौके स्थान विषे अथवा ग्रामके समीप अथवा गोव्रजविषे अथवा किसी आश्रम विषे अथवा वृक्षमूलविषे संपूर्णजीवोंकेहितमे प्रीतिवाला होकर निवास करे इसीमनुजीके बाक्यते १ प्रायश्चित्त प्रकरणादिकोंविषे तो ऐसा लिखाहै क्या मुंडनकरे वाकर्के अथवा जटाकोधारकर आश्रम विषे निवासकरे एह विकल्पहि आश्रयकीताहै और इसविषे वनमे कुटिया न बनसके तद और स्थानमे निवासकरणकी विधिदिखायीहै और ग्रामा न्तशब्दकर्के ग्राम और वन इन दोनोंकी संधि ग्रहण करणी

२० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और आश्रम उस स्थानका नाम है जहां ऋषि निवास करते हैं ॥ अबके समय विषे तीर्थके एकपासे जो एकांतदेश है उसका नाम आश्रम जानना और इस स्थानीविषे स्मृतियोंमें कहे जो संपूर्णधर्म हैं तिनका आपसविषे कुछभी बिरोध नहि तदसर्वशाखाप्रत्यय एक कर्म है क्या भिन्न शाखावालोंके वास्ते एकहि कर्म करणा किहा है इसन्यायकर्के ग्रहण करणे योग्य हैं ॥ और विरुद्ध जो कर्म हैं सोसभ विकल्प कर्के ग्रहण करणे एह अपराकर्मेलिखिया है सोई जैसे शंखने कहे हैं नित्यमिति क्या वनविषे पत्तोंकी कुटिया बना कर्के नित्य प्रति तीन काल स्नानकर और भूमिऊपर शयनकर और जटाको धारणकर और पत्तर फल मूल इनका भक्षण करे और अपने कर्मकों प्रकट करता होया भिक्षावास्ते ग्रामविषे प्रवेशकरे और एककालविषे अन्पाहार करे इसी प्रकार करतियां जब द्वादश वर्ष व्यतीत हो जावें तद सुवर्णकी चोरी करण वाला और

आश्रमो महर्षीणां निवासः ॥ सचाधुना तीर्थप्रान्तविविक्तदेशो बोध्यः अत्र

स्मृत्यन्तरोक्ता विरुद्धास्सर्वेऽपि धर्माः सर्वशाखाप्रत्ययमेककर्मैति न्या

येन संग्रहीतव्याः विरुद्धास्तु विकल्पेनेत्यपरार्कः तद्यथा शंखः नित्यं त्रि

पवणस्त्रायी कृत्वा पर्णकुटीं वने अधः शार्थाजटाधारेण मूलफलाशनः १

ग्रामं विशेच्च भिक्षार्थी स्वकर्मपरिकीर्तयन् एककालं समभ्रानो वर्षे तु द्वादशे

गते रुक्मस्तेयी सुरापश्च ब्रह्महा गुरुतल्पगः व्रतेनानेन शुद्धैति महापात

किनस्त्विमे ३ गौतमः खट्वांग कपालपाणि द्वादश संवत्सरान् ब्रह्मचारी भै

क्षयाय ग्रामं प्रविशेत् कर्माचक्षाणः पथोऽपक्रामेत्संदर्शितादार्यस्य स्थाना

सनाभ्यां विहरन्सवनेषु दकोपस्पर्शीं विशुद्ध्येत् । ब्रह्मचारिपदं चात्र वर्जये

न्मधुमांसगन्धमाल्यदिवास्वप्राञ्जनाभ्यंजनोपानच्छत्रकामक्रोधलोभमो

हहर्षनृत्यगीतपरिवादभयानीत्यविरुद्धानां ब्रह्मचारिधर्माणां प्राप्त्यर्थम्

मदिरा पीनेवाला और ब्राह्मणके हतकरणवाला और गुरुकी स्त्रियाथ मैथुन करण वाला ए हसभमहापातकी इसव्रतकरण कर्के शुद्ध हो जाते हैं अर्थात् इस वारां वर्षके व्रतकरके सभमहापातक नष्ट होते हैं और गौतमजीने किहा है खट्वांगेति खट्वांग इसते लेकर विशुद्धयेत् इहां तक इसका अर्थ पूर्व हो चुका है और इसविषे ब्रह्मचारी कहनेका एह अभिप्राय है क्या मधु मांस सुगन्धि द्रव्य पुष्पादि दिनविषे सोणा नेत्रोंमें अंजनपाना बुटनामलनापैरोंविषे जोडा धारणा छतडी काम क्रोध लोभमोह हर्ष नृत्यकागिकों देखना गायन श्रवण करणा और दूसरेकी निंदा करणी और किसी जीवते भयकरण एह सब त्यागने चाहिए इत्यादि विरोध रहित जो ब्रह्मचारिके धर्म हैं तिनकी प्राप्तिवास्ते अर्थात् इन संपूर्ण धर्मोंका सेवन करे

॥ श्रीरण्वारकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी०भा० ॥ २१

श्रीर आगेते आवते महात्मा पुरुषको देखकर अथवा ब्राह्मणादि तीन वर्णों को देख कर मार्ग को त्याग देवे इति । और वशिष्ठजीने किहाहै कि द्वादश वर्ष अपने उद्देशकरके अर्थात् अपनी शुद्धि वास्ते ग्राम विषे और वन विषे न रहे अर्थात् ग्रामकी और वनकी जो संधिहै निसविषे बासकरे ॥ और खट्वांगो इत्यादि स्पष्टहै और मैं पापीहो मेरेको भिक्षादे वो इसप्रकार अपना पाप प्रकट करने करके पाप क्षीण होजाताहै इति और अपने बारते शास्त्रका अर्थ विचार करके प्रायश्चित्त बारते संकल्पित ग्राम विषे और संकल्पित वन विषे निवास न करे और ग्राम और वनको संधिविषे रहे और स्पष्टहै । और यमजीने किहाहै अथे ति अथवा ब्रह्महत्या विष गधेका चर्म ऊपर ओढ़ करके मृत्तिकाके कपाल विषे भिक्षा

आर्यस्य त्रैवर्णिकस्य सम्यग्दर्शने पथोमार्गादपक्रामेदित्यर्थः । वशिष्ठः
द्वादशवर्षाण्यात्मनोद्विश्यनग्रामेनारण्येवसेत् ॥ खट्वांगीकपालपाणिः
सप्तागाराण्यसंकल्पितानि चरेद्भिक्षुं भूणहनेभिक्षां देहीति स्वकर्मनिवे
दयमानो विज्ञायते हिनिरुक्तमेनः कनीयो भवतीति आत्मनोद्विष्यात्मना
शास्त्रार्थविचार्य प्रायश्चित्तमुद्विश्य संकल्प्य न ग्रामे नारण्ये वसेत्किन्तु
तयोः संधावसंकल्पितान्यत्र प्रवेष्टव्यमनेनेति भिक्षालोभेनासम्प्रधारिता
नि ॥ निरुक्तमेनः कनीयो भवति आरूपातं पापं क्षीणं भवतीत्यर्थः ॥ यमः
अथवा ब्रह्महत्यायां वसित्वा गर्दभाजिनम् मृण्मयेन कपालेन स्वकर्मरूपा
पयंश्चरेत् १ गोष्ठे वसेत्तपोयुक्तो ग्रामान्ते स्थंडिलेपि वा वृक्षमूलेश्मशाने वा
श्मश्रुलोमनखीजटी २ ॥ कुटीं कृत्वा वसेत्तत्र गोब्राह्मणहितेरतः श्रम्भसः
पतनादग्नेश्चौरव्याध्यादितो भयात् ३ गोब्राह्मणं मोचयित्वा ब्रह्महत्यां व्य
पोहति ब्राह्मणावस्थानं सर्वानग्न्यागारांश्च वर्जयेत् ॥ ४ ॥

ब्रह्मण करे और अपने ब्रह्मवध कर्मको विख्यात करता हुया विचरे ॥ १ ॥ और जिस स्थान विषे गौयां बैठतीयां हैं उसस्थानविषे स्थितहोकर तपकरे अथवा ग्राम वनकी सो मास्थानविषे अथवा चुरस्तेविषे पिप्पल वटवृक्ष इनके मूलविषे अथवा श्मशानविषे दाडो रोम नखजटा एह धार करके । २ । और कुटिया बनाकर निवासकरे केसा गौब्राह्मणके हितमे है प्रीति जिसको ऐसा । और गौ अथवा ब्राह्मण इनको जलके विषे पतनते और अग्निते और चौते और व्याधि इत्यादि भयते जेकर लुडा देवे तद ब्रह्महत्याको दूरकरताहै अर्थात् गौ ब्राह्मणको मृत्यु भयते जेकर लुडादेवे तदभी ब्रह्महत्या पापते मुक्त होजाताहै और ब्राह्मणोंके संपूर्ण घर और अग्नि स्थान क्या आग्नेहोत्रका स्थान इन विषे प्रवेश न करे ४ ॥

२२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और अपने आपको शोच करता हुआ अपनी निंदा करे और जिस ब्राह्मणको मारया है तिस ब्राह्मणका भी नित्य स्मरण करे। इसप्रकार दृढव्रतधारण करे और सत्य वाणी बोले जितेंद्रिय होकर ॥ ५ ॥ अपूर्व सात घरते भिक्षा ग्रहण करे और सप्तागागणि इत्यादि का अर्थ पीछे किया है इसवास्ते इहां नहि अर्थ लिखा ७ इसप्रकार ब्रह्महत्याको विख्यात करता हुआ विचरतारहे और जब द्वादश वर्ष व्यतीत होजायें तद उसको ब्रह्महत्या नष्टहोती है ८ और ब्राह्मणावसथान् वर्जयेत् इसका एह अर्थ है कि ब्राह्मणके घरमे प्रवेशन करे और दूर स्थित होकर भिक्षायाचन करे और देवताके मंदिर तें भी दूर स्थित होकर देवताको नमस्कार करे। इसते। चातुर्वर्ण्यचरेद्देक्ष्यं। इस वचन के साथ विरोध नहि आया इति ॥ विष्णुजीने किहा है वेति ब्रह्मचारी होवे अतिको

शोचन्निदंस्तथात्मानं संस्मरन् ब्राह्मणं च तं एवं दृढव्रतो नित्यं सत्यवादी जितेन्द्रियः ५ सप्तागाराण्यपूर्वाण्योन्यसंकल्पितानि च संसरेत्तानि शनकैर्विधूमेभुक्तवज्जने ६ भूणन्ने देहिमे भिक्षामेनो विरूपाप्यसंचरेत् एककालंचरे द्विक्षामलब्धा बुदकं पिवेत् ७ एवं संचरमाणस्तु ब्रह्महत्यां ब्रुवन्सदा पूर्णेतु द्वादशे वर्षे ब्रह्महत्यां व्यपोहति ८ ब्राह्मणावसथान् वर्जयेत् न प्रविशेद् दूरे स्थित्वा भिक्षां याचेत् देवांश्च तदागारेभ्यो दूरे स्थित्वानमस्कुर्यात्। विष्णुः ॥ ब्रह्मचारी मृदुर्दांतो धर्मरामः शुचिः क्षमी ॥ स्नानव्रतपरो नित्यं चौरवस्त्रो जिनीजटी १ कुतपक्षौ मशाण्यिबल्कवासामलाचितः ॥ कृशाङ्गोलो मशश्शान्तः सुखदुःखविवर्जितः २ मद्यतैलक्षरस्वादुसंगवज्यो जितेंद्रियः देवागारगुहाकुंजचैत्यवृक्षादिकेतनः ३ चरेद्ब्रह्महनः सर्वव्रतं द्वादशवर्षिकम् ॥ सनाप्ते तु शतं दद्याद्ब्रवामस्मिन्व्रतेशु मे ॥ ४ ॥

मल है स्वभाव जिसका रोकलैया हैं इंद्रियां जिसने धर्म विषे है आराम जिसको पवित्र और क्षमा करण वाला स्नानकरण व्रतकरण इसमे तत्पर नित्यप्रति धारण कीये हैं चौरवस्त्र जिसने अथवा धारया है चर्म जिसने और धारी है जटा जिसने १ और कंवल अलसीवस्त्र शणवस्त्र भुजपत्र एह हैं वस्त्र जिसके और मलयुक्त है शरीर जिसका और व्रत करके कृश है शरीर जिसका और लोमश्च क्या क्षीरहीन है और शांत है स्वभाव जिसका और सुखदुःखको सहारणवाला २ और मद्य तैल लवण स्वादु अन्न संग इनतें वर्जित और जितेंद्रिय होकर देवतामंदिर अथवा गुफा कुंजरमशानका वृक्ष इत्यादि हैं स्थान जिसके ३ ऐसा होकर ब्रह्महा वारां वर्षका संपूर्ण व्रत करे और जब एह शुभव्रत समाप्त होजाये तद सौ १०० गौदान करके ब्राह्मणको देवे ४ ॥

॥ श्रीरणबीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ टी० भा० ॥ २३

अथवा पचास गौआं देवे अथवा पचीस अथवा दश गौ देवे जो भिक्षा करके एकत्र करीहें और ब्राह्मणोंको अपनी शक्तिके अनुसार भोजन देवे और वस्त्र निवेदन करे ॥ ५ ॥ और मृदु इत्यादि पूर्वपाठ को व्याख्या है क्या मृदु क्या कठोर नहि और दान्त क्या शीत उष्णके सहारणे वाला और धर्मांगम क्या अपने प्रायश्चित्त कारणमेहै प्राप्ति जिसकी और चीर क्या वस्त्रका टुकड़ा और कुतप क्या कंवल और क्षुमा अलसी और शण इनदोनोंकी त्वचा ऐसे हैं वस्त्र जिसके इसमें भी एहविचार है कि इनके बीचसे कोई वस्त्र होवे सभका ग्रहण नहि है क्षर क्या लूण और कुंज गव्हर चैत्य श्मशान वृक्ष भेक्षा संभृत क्या भिक्षा करके प्राप्त । इसमें आदिक विहित जो धर्महैं सो सभ स्मृतियांतें जानणे

शतार्द्धवातदर्द्धवादशवाभैक्ष्यसंभृताः विप्राणांभोजनं वस्त्रं यथाशक्ति निवेदयेत् ५ मृदुरकठोरो दान्तः शीतादिसहिष्णुर्धर्मारामः स्वप्रायश्चित्तरतः चीरं वस्त्रं खण्डं कुतपः कंवलः क्षुमा अतसी शणः प्रसिद्धस्तयोर्वल्कोवल्कलं त्वगितियावत् । तन्मयवस्त्रं चीरादनिवस्त्राणिकल्प्यं ते क्षरोलवणं कुंजो गव्हरं चैत्य वृक्षः श्मशान वृक्षः ॥ भैक्ष्यलब्धा एव माया अविरोद्धधर्माः स्मृत्यन्तरेभ्यो बोद्धव्याः ॥ विरुद्धास्तु विषयव्यवस्थयानुष्ठेयाः ॥ द्वादशाब्दव्रतमिदं त्वकामतो ब्राह्मणवधे द्रष्टव्यं एतद्विषयकमेव मानवं वाशिष्ठं च । ते च विरुद्धधर्मा द्वादशाब्दव्रतातिरिक्ता मनूक्ता यथा लक्ष्यं शस्त्रभृतां वास्या द्विदुषामिच्छयात्मनः प्रास्थेदात्मानमग्नौ वा समिद्धे त्रिरवाक् शिराः १ ॥

योग्यहैं और विरुद्ध धर्म जोहैं सो सभ विषय व्यवस्था करके अनुष्ठान करणे योग्यहैं इति ॥ एह जो वारां १२ वर्षका व्रतकिहाहै सो कामनाते विना जो ब्राह्मणवधहै उसविषे जानना ॥ और मनुजीने और वाशिष्ठजीने जो व्रतकिहाहै सोभी कामनाते भिन्न ब्राह्मणवधविषे हि जानना । और मनुजीने जो व्रतकिहेहैं सो वारांवर्षके नहिहैं और इसव्रतते भिन्नहैं । सो जैसेहै तैसेहि जाइदेहैं । लक्ष्यमिति इस स्थानविषे इनश्लोकोंका सामान्य अर्थ करतेहैं । और व्याख्या इनकी प्रागेहोगी ॥ और ब्राह्मण मारण वाला पुरुष अपनी शुद्धिके वास्ते बहुत चतुर जो शस्त्र धारिहैं तिनका लक्ष्यरूप होकर आगेस्थित होवे ॥ अथवा अपने शरीरको अधःशिर करके जगिहोई अग्नि विषे तीनवारी प्रक्षेपकरे १ ॥

२४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ॥ १३ ॥ टी० भा० ॥

यजेतेति अथवा अश्वमेध करके यजन करे अथवा स्वर्जितयज्ञ करके यजन करे ॥ अथवा गोमेध करके यजनकरे ॥ अथवा अभिजित और विश्वजित इनकरके भिन्न २ यजन करे अथवा त्रिवृत यज्ञ और अग्निष्टोम इनकरके यजन करे ॥ २ ॥ अथवा चार वेद विषे एक वेदका जपकरदा २ सौ १०० योजन मार्ग गमनकरे अथवा नियतेन्द्रिय और मितभुक् होवे ब्रह्महत्या दूर करणके वास्ते ॥ ३ ॥ सर्वेति । वेदविद् ब्राह्मणके तार्थी अपना सर्वस्व दे देवे अथवा जीवनके वास्ते पूर्ण धन ब्राह्मणको देवे जिसको १०० वर्ष तक खंदा रहै ॥ अथवा सहित सामर्थ्यके घर ब्राह्मणके तार्थी देवे ॥ ४ ॥ अथवा हविष्य भुक् हुया २ प्रतिस्त्रोतःसरस्वतीको अनुसरणकरे ॥

यजेतवाश्वमेधेनस्वर्जितागोसवेनवा अभिजिद्विश्वजिद्व्यावात्रिवृताग्नि
पुतापिवा ॥ २ ॥ जपन्वाऽन्यतमवेदं योजनानांशतंत्रजेत् ब्रह्मह
त्यापनोदाय मितभुङ्नियतेन्द्रियः ॥ ३ ॥ सर्वस्ववेदविदुषे ब्राह्म
णायोपपादयेत् धनंवाजीवनायालं गृहंवासपरिच्छदम् ॥ ४ ॥ हविष्य
भुग्वानुसरेत्प्रतिस्त्रोतःसरस्वतीम् ॥ जपेद्वानियताहारस्त्रिवेदस्यसंहि
तामिति ॥ ५ ॥ अथैषामर्थः लक्ष्यमिति धनुः शराद्यायुधधारिणां
विदुषां ब्रह्मवधपापक्षयार्थमयंलक्ष्यंभूतइत्येवंजानतां स्वेच्छया वाण
लक्ष्यभूतोवावतिष्ठेदितिकुलूकभट्टः विदुषामिच्छयेत्यपरार्कः ॥ यावन्मृतो
मृतकल्पोवा विशुद्ध्यन् ॥

अथवा नियताहारहोकर तीनवार वेदकी संहिताको जपे ॥ ५ ॥ एह संक्षेपसे अर्थ किया है आगे
इनका व्याख्यान अर्थ होगा इति ॥ अब पूर्वोक्त श्लोकोंका अर्थ लिखते हैं लक्ष्यमिति लक्ष्यं
क्या धनुष वाण इत्यादि शस्त्रधारी जो पुरुष है कैसे है जब शस्त्रको चलाने लगे उस
काल विषे ब्राह्मण वधका पाप दूर करण वास्ते एह पापी सन्मुख नशानेके स्थानमे आ
कर स्थित होया है इस बातको जो जानते है उनके आगे वाणका नशाना बनकर अपनी
इच्छामें स्थितहोवे और वाणके लगने करके जब मृत होजावे अथवा मरणवाला होजा
वे तब शुद्ध होजाता है अर्थात् इस प्रकार करण से उसकी ब्रह्महत्या दूर होतीहै ॥

॥ श्रीरघुवीरकारितं प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी०भा० ॥ २५

सोईयाज्ञवल्क्यजीने किहाहै संग्रामइति ब्रह्महा पुरुष जेकर युद्धविषे मृतहोजावे अथवा नशा ना वणके स्थितहोया मृतहोजावे अथवा प्रहार करके अतिपीडाकां प्राप्त होकर जीवता रहे तद उह शुद्ध हुंदाहै अर्थात् ब्रह्महत्याते मुक्तहुंदाहै । एह एक प्रकारहै इति १ आगे दूसराप्रका रहै क्या ब्रह्महा पुरुष अतिप्रज्वलित अग्नि विषे हेठ मुख करके तीन बारी अपने शरीरको पा देवे जेकर मृत होजावे तद भी और जेकर वच रहे तदभी उह शुद्धहुंदाहै एह आपस्तवजी का वचनहै इसमेंभा ऐसे पतित होवे जिसने मरजावे इति और एह दोनो प्रायश्चित्त और आगे कहना जो है अश्वमेध करके पूजन करे एह जो तीन प्रकार प्रायश्चित्त है सो कामना ते क्षत्रीको ब्राह्मण वध विषे किहाहै अर्थात् जो क्षत्री जानकर ब्राह्मण वध करे उसके वास्ते एह तीन प्रकारका प्रायश्चित्त जानना । और मनुकाश्लोक लिख करके व्याख्यान कियाहै भविष्य पुराणविषे लक्ष्यमिति इसश्लोककी व्याख्या पूर्वकी न्याई जाननी १ यजेतेति ब्रह्मघातक जो

तदाहयाज्ञवल्क्यः ॥ संग्रामेवाहतोलक्ष्यभूतःशुद्धिमवाप्नुयात् मृतकल्पः प्रहारार्तोर्जीवन्नपिविशुध्यति १ इत्येकःप्रकारः ॥ अग्नौप्रदीप्तेवाऽधोमुखस्त्रीन् वारान् शरीरं प्रक्षिपेत् तथाप्रास्येतयथास्त्रियेतेत्यापस्तववचनात् एवंप्र क्षिपेत् एतत्प्रायश्चित्तद्वयमनन्तरेवलक्ष्यमाणंच यजेतवाश्वमेधेनेत्येवंप्रायश्चित्तत्रयमिदं कामतःक्षत्रियस्य ब्राह्मणवधविषयम् मनुश्लोकमेवलित्वायथाव्याख्यानंभविष्ये लक्ष्यंशस्त्रभृतांवास्याद्विदुषामिच्छयात्मनः ॥ प्रास्येदात्मानमग्नौवासामिद्वेत्रिरवाक्शिराः १ यजेतवाश्वमेधेनक्षत्रियोविप्रघातकः प्रायश्चित्तत्रयंहेतत्क्षत्रियस्यप्रकीर्तितम् २ क्षत्रियोनिर्गुणोधीरंब्राह्मणवेदपारंगं ॥ निहत्यकामतोर्वीरलक्ष्यःशस्त्रभृतांभवेत् ३ चतुर्वेदविदंधीरंब्राह्मणंचाग्निहोत्रिणम् निहत्यकामादात्मानंक्षिपेदग्नाववाक्शिराः ॥ ४ ॥

क्षत्रीहै सो अश्वमेध यज्ञ करके यजनकरे अर्थात् जोक्षत्री जानकर ब्राह्मणको मारदेवे सो अपनी शुद्धि वास्ते अश्वमेध यज्ञ करे एह तीन प्रकारका प्रायश्चित्त क्षत्रिकोहि किहाहै २ । इनां तिस्रा व्रतांकी व्यवस्था करके लिखतेहैं क्षत्रियइति और निर्गुण जो क्षत्रीहै जिसविषे कुछभी गुण नहि सो जेकर जिसने संपूर्ण वेद अध्ययन कीयाहै और धैर्य करके युक्तहै तिस ब्राह्मणको मार देवे जान करके सो क्षत्री शस्त्रधारी शूरवीरका लक्ष्य होकर स्थित होवे ३ (दूसरा) चार वेदके जानने वाला और धैर्यधारी और नित्यप्रति अग्निहोत्र करने वाला जो ब्राह्मणहै तिसको कामनाते मारकर क्षत्री हेठ शिर करके अपने शरीरका अग्निविषे प्रक्षेप करे अर्थात् जोक्षत्री ऐसे गुणी ब्राह्मणको जानकरके हतकरेसो अग्निविषे दग्धहोने करके पवित्र होताहै ॥ ४ ॥

२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागप्र० १३ ॥ अ० भा० ॥

नीति और जो महीपति क्या क्षत्रिराजा आप तो गुणवान् होवे हे स्वामिकार्तिक सो क्षत्रीगुण हीन ब्राह्मणको कामनाते मारकर अश्वमेधयज्ञ करे । अर्थात् जो क्षत्रीराजा आपगुणवान् हो कर निर्गुण ब्राह्मणको जानकर मार देवे सो अश्वमेध यज्ञ करणे कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ ५ ॥ और स्वर्जित जो यज्ञविशेष है जिस यज्ञ कर्के स्वर्गकी प्राप्ति होती है अथवा गो मेध जो यज्ञ है तिस कर्के अथवा अभिजित यज्ञ कर्के अथवा विश्व जित यज्ञ कर्के अथवा अग्निष्टोम यज्ञ कर्के यजनकरे अर्थात् इनमेसे कोई एक यज्ञ करे नारायणको प्रसन्नकरे और सभ देवताको नृत करे तदभी ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदा है ॥ एह जो ब्रह्मवध विषे प्रायश्चित्त किहेहैं यज्ञरूप सो सभ तीन वर्ण वास्ते कल्पना कीयेहैं ॥ सोई भविष्यपुराण विषे लिख या है स्वर्जितेति क्या अज्ञानकृत जो ब्राह्मण वध है तिसविषे हे वीर हे कार्तिकेय स्वर्जितादि

निर्गुणब्राह्मणहत्वाकामतो गुणवान्गुह यथावा अश्वमेधेन क्षत्रियो यो महीपतिः ५ ॥ यजेतेति यजेत वा अश्वमेधेनेत्यनंतरं व्याख्यातं स्वर्जितायागविशेषेण । गोसर्वेनवा अभिजिता विश्वजिता वा त्रिष्टुता अग्निष्टुता वा यजेत् ॥ एतानि चाज्ञानतो ब्रह्मवधे प्रायश्चित्तानि त्रैवर्णिकस्य विकल्पितानि ॥ तदुक्तं भविष्यपुराणे स्वर्जितादेश्वयद्गीर कर्मणां पृथनापते अनुष्ठानं द्विजातीनां वधे ह्यमतिपूर्वके १ जपन्निति वेदानां मध्यादेकं वेदं जपन् स्वल्पाहारः संयतेन्द्रियो ब्रह्महत्यापापनिर्हरणाय योजनानां शतं गच्छेत् ॥ एतदप्यज्ञानकृते जातिमात्रब्राह्मणवधे त्रैवर्णिकस्य प्रायश्चित्तम् तथाच भविष्यपुराणे अयमेव श्लोकः पठितो व्याख्यातश्च जातिमात्रं यदा विप्रहन्त्यादमतिपूर्वकम् वेदविघ्नाग्निहोत्री च तदा तस्य भवेदिदम् १

यज्ञका अनुष्ठान करणा योग्य है अर्थात् जो कोई पुरुष अज्ञानते ब्राह्मणका वध करे सो पूर्वोक्त जो स्वर्जितादि यज्ञ हैं तिनका अनुष्ठान करणे कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ जपन्निति चारवेदके मध्यमे एक वेद का पाठ करे और थोड़ा भोजन करता हुया इंद्रियांकों रोक कर ब्रह्महत्या दूर करण वास्ते सो १०० योजन प्रमाण मार्ग चले ॥ एह भी सभ अज्ञानसे कीया जो जाति मात्र ब्राह्मणवध है उस विषे तीन वर्णको प्रायश्चित्त जानना ॥ तैसेहि भविष्य पुराण विषे लिखया है एहि श्लोक पूर्व मूलमे भी लिखया है और व्याख्या भी इसकी होगी है ॥ जातिमात्रमिति जो ब्राह्मण वेदके जानने वाला और अग्निहोत्री जेकर अज्ञानते जातिमात्र ब्राह्मणको मार देवे तद उसवास्ते एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त किहा है इति १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ टी० भा० ॥ २७

सर्वस्वमिति ॥ अथवा संपूर्ण वेद पठन करनेवाले ब्राह्मणको अपना सर्वस्वदेवे ॥ अथवा जितना धन उमर भर विषे उपजीवका वास्ते बहुत होवे अर्थात् जितने धन कर्के सारी आयुषा ब्राह्मणकी उपजीवका होवे उतनाधन देवे ॥ अथवा संपूर्ण घरके उपयोगी धन अन्नादि सभ सामग्री कर्के युक्त घरकोहि देदेवे ॥ इसते लिखाहै सर्वस्वमित्यादि वाक्यते जीवनपर्याप्त सर्वस्व वा घर देना योग्यहै और इसते न्यून नहि देणा ॥ और इसका एह अभिप्राय है कि जेकर ब्रह्महा कुटुंबी न हो और धनी होवे तदता सर्वस्व ब्राह्मणको देवे और जेकर कुटुंबी होवे तद सभ सामग्री कर्के युक्त गृह देवे एह मिताक्षराविषे लिखाहै ॥ और एह प्रायश्चित्त जातिमात्र ब्राह्मण वध विषे ब्राह्मणको जानना अर्थात् जे

सर्वस्वमिति सर्वस्वं वा वेदविदे ब्राह्मणाय दद्यात् यावद्वनं जीवनाय समर्थं गृहं वा गृहोपयोगिधनधान्यादियुतम् अतः सर्वस्वं वा गृहं सपरिच्छदं दद्यात् जीवनायालमिति वचनात् जीवनपर्याप्तं सर्वस्वं गृहं वा दद्यान्न ततोऽल्पम् ब्रह्महानिष्कुटुंबी धनी चेत्तदा सर्वस्वं दद्यात् सकुटुंबी चेत्तदा सपरिच्छदं गृहं दद्यादिति मिताक्षरा ॥ एतच्च जातिमात्र ब्राह्मणवधे ब्राह्मणस्य प्रायश्चित्तम् ॥ तथाच भविष्यपुराणम् ॥ जातिमात्रं यदाहन्याद्ब्राह्मणं ब्राह्मणो गृहं वेदाभ्यासविहीनो वै धनवानग्निवर्जितः १ प्रायश्चित्तं तदा कुर्यादिदम्पापविशुद्धये धनं वा जीवनायालं गृहं वा सपरिच्छदम् २ जीवनपर्याप्तधनदानासमर्थो गृहं सपरिच्छदं तदसमर्थः सर्वं दद्यात् ॥ परिच्छदो गृहोपकरणजातम्

कर ब्राह्मण किसी जातिमात्र ब्राह्मणको मारदेवे उह ऐसा प्रायश्चित्त करणे कर्के शुद्ध होताहै इति ॥ तैसेहि भविष्य पुराण विषे लिखाहै जातिमात्र मिति हे स्वामिकार्तिक जे ब्राह्मण धनयुक्त होवे और वेदाभ्यासे रहित होवे और अग्निहोत्रनेभी रहित होवे १ सो जेकर जातिमात्र ब्राह्मणको मार देवे तद अपनी शुद्धि वास्ते एह प्रायश्चित्त करे कथा सो जैसे एक ब्राह्मणकी उमर भर उपजीवका वास्ते पूर्ण धन अथवा सभ सामग्री कर्के युक्त घरको देवे २ और जेकर उपजीवका वास्ते पूर्ण धन देनेको सामर्थ्य न हो तद सपरिच्छदगृह देवे और जेकर ऐसा घर देने की सामर्थ्य न हो तद फेर सर्वस्वदेना चाहिये सर्वस्वदानकी एह व्यवस्थाहै

२८ ॥ श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ॥ १३ ॥ टी० भा० ॥

और सर्वस्व किसका नाम है सो अंगिराने कहा है सेति एक हजार अस्सी १०८० बेसेते ऊपर धन हो तद सर्वस्व होतौ है ऐसा सर्वस्व देने कर्के राजन निर्धन ब्रह्महा शुद्ध हुंदा है अर्थात् जिस पास कुछ धन ना है सो सर्वस्व देने कर्के सुखात्मा शुद्ध हुंदा है इति हविष्येति नीवारादि जो मुनि अन्न है तिसका और हविष्य अन्नका भोजन करे ॥ और जिस स्थानते लेकर पश्चिम पासेते अक् स्रोतः क्या कनारे कनारे उतरादा होया समुद्र पर्यंत प्रतिसरस्वतीको जावे ॥ एह प्रायश्चित्त ज्ञान पूर्वक जातिमात्र ब्राह्मण वध विषे जानना अर्थात् जो कोई जातिमात्र ब्राह्मणको जाण कर मारे उह ऐसा प्रायश्चित्त करे कर्के शुद्ध हुंदा है इति ॥ तैसेहिलिखया है भविष्यपुराणविषे जातिमात्रे इति अज्ञानते जातिमात्र ब्राह्मणके मारयां हे देवेन्द्र मारने वाला जेकर वेदहीन होवे और धन कर्के युक्त होवे १ तद तिसको एह प्रायश्चित्त कल्पना करे सो

अत्रांगिराः ॥ साशीतिपणसाहस्रादूर्ध्वसर्वस्वमुच्यते ॥ निर्धनो ब्रह्महा शुद्धयेत्सुखाधिक्यान्नरेश्वर १ हविष्येति ॥ नीवारादिहविष्यान्नभोजी ॥ विख्यातप्रसरणादारभ्यपश्चिमादवस्त्रोतः प्रतिसरस्वतीयायात् ॥ एतच्च जातिमात्रब्राह्मणवधे ज्ञानपूर्वके ॥ तथा भविष्यपुराणे ॥ जातिमात्रेह तेविप्रेदेवेन्द्रमतिपूर्वकम् हन्तायदावेदहीनो धनेन च भवेद्भूतः १ तदैव कल्पयेत्तस्य प्रायश्चित्तं निबोधमे हविष्यभुक्तेरपि प्रतिस्रोतः सरस्वतीम् अथवा परिमिताहारस्त्रीन् वारान्वेदसंहिताम् २ संहिताग्रहणात्पदक्रमव्युदासः अत्रापि भविष्यपुराणीयो विशेषः जातिमात्रं तु यो हन्याद्विप्रन्त्वमतिपूर्वकम् ब्राह्मणोऽत्यन्तगुणवान् तेनेदं परिकल्पयेत् १ जपेद्वानियताहारस्त्रैर्वेदस्य संहिताम् ऋचो यजूंषि सामानि त्रैविद्याख्यं सुरोत्तम २

प्रायश्चित्त सुन क्या उह हविष्यान्न भोजन करे और प्रतिस्रोतः सरस्वतीको जावे ॥ अथवा अन्नभोजन करता हुया तीनवार वेदसंहिताका पाठ करे २ और इस स्थानमे वेदसंहिताग्रहण करके पदक्रमका ग्रहण नहि है (धनेन च भवेद्भूतः) इसमे कोई ऐसाभी अर्थो करदे है कि धनहीन होवे तद ऐसा प्रायश्चित्त करे एह अर्थ (ऋ) निन्दाविभूत्योः इसधा तुका है और इसविषे भविष्यपुराणीय विशेष है जातीति जो पुरुष जातिमात्र ब्राह्मणको अज्ञानते मारे और सो ब्राह्मण अत्यन्तगुणवान् हो तिस कारण करके एह प्रायश्चित्त करे १ क्या थोडा भोजन करता हुया तीन वारी वेदसंहिताका पाठ करे अथवा ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद एह जो त्रैविद्या है तिसका पाठ करे हे सुरोत्तम २

इसविषे स्वामिकार्तिकके प्रति महादेवका वाक्यहै पापानामितिहे वीर हे स्वामिकार्तिक ऋषि योने वडे पापोंके मध्यविषे प्रथमभाव किसका किहाहै सो लिखतेहैं क्या तिन संपूर्ण पापोंके मध्यविषे ब्राह्मणहत्याका प्रथम ग्रहण कीयाहै १ और तिसविषेभीहे सुव्रत ब्राह्मण वधविषे मनु जीने क्रम पूर्वक तेरां १३ प्रकारका प्रायश्चित्त किहाहै २ सो संपूर्ण विषय करके सर्वत्र यथायोग्य स्थापन कीयेहैं अर्थात् मनुजीने ब्रह्महत्याके प्रायश्चित्त तेरां १३ प्रकारके जो किहे हैं सो सभ जैसी ब्रह्महत्याहोवे उसके अनुसार जानने सोपिच्छेआगयेहैं और हे महाबल अन्यथा क्या इसव्य वस्थाके बिना जेकर पाप थोडाहो और उस अल्प पापके उपदेशते प्रायश्चित्त अधिक होजावे तद् अयोग्य होताहै अर्थात् पाप अल्पहो और प्रायश्चित्त अधिकदेना और अधिक पापहो जेकर

तत्रैवगुहंप्रतीश्वरकथनम् पापानामहतांवीरप्राथम्यमपिभिर्गु हतेषांच
ब्रह्महत्यायाःप्रथमंग्रहणंस्मृतम् ॥ १ तत्रापिब्राह्मणवधेप्रायश्चित्तानिसु
व्रत मनुनाकीर्तितानीहत्रयोदशयथाक्रमम् २ व्यवस्थाप्यानिसर्वाणिता
निवैविषयेणतु अन्यथाहिलघूनांतुउपदेशान्महाबल ३ गुरुणामुपदेशस्य
नयोग्यत्वंभवेदिह स्मृत्यन्तराण्यथालेच्यपुराणानिचकृत्स्नशः ४ एवंनि
रूप्योविषयोगुरुहत्याद्यपेक्षया तत्रसामान्यतोहत्वाब्राह्मणंसुरसत्तम ५
प्रायश्चित्तन्तुवैकृत्वाविधिवद्द्वादशाब्दिकम् प्राप्नोतिशुद्धिंजीवन्तेस्वर्गतिं
स्वजनैस्सहेति ६ ॥ अपरार्कविष्णुः अश्वमेधेनशुद्धयेयुर्महापातकिनस्त्वमे
ष्टथिव्यांसर्वतीर्थानांतथानुसरणेनवा १ ॥

उसको प्रायश्चित्त अल्पदेना तद् एह योग्य नहिहै और इस वास्ते संपूर्ण स्मृतियां और पुराण इनको देख कत्के ४ गुरुहत्यादिके अनुसार प्रायश्चित्त निरूपण करणा योग्यहै और तिसविषे लिखाहै क्या सामान्यते ब्राह्मणको मारकरके हे सुरसत्तम ५ एह वारां १२ वर्षाका प्रायश्चित्तकरे ऐसे करणे करके शुद्धिको प्राप्त होजाताहै और अंतविषे संबंधीयोंके साथ स्वर्गको प्राप्तहोताहै इति ६ अपरार्कविषे विष्णुजीने किहाहै अश्वमेधेन एह जो महापातको हैं सो संपूर्ण अश्वमेध यज्ञकरके शुद्ध होतेहैं अथवा पृथिवीविषे जितने तीर्थ हैं तिनको यात्रा करणे करके पवित्र होतेहैं अर्थात् जो पुरुष महापातक करे ब्रह्महत्या सुरापान इत्यादि सो पुरुष अश्वमेधयज्ञकरे संपूर्ण तीर्थ यात्रा करे तद् शुद्ध होताहै १

३० ॥ श्रीरणावीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी ० भा०

श्रीर महापातककी अनुवृत्तिविषे कश्यपजीने किहाहै ॥ जेकर कोई पुरुष महापातक करे सो अपनी शुद्धि वास्ते तीनवर्ष व्रत करे अथवा ब्राह्मणको प्रसन्नता वास्ते अपने शरीरके वरावर तोल कर सुवर्ण देवे तद शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ भविष्य पुराण विषे लिखयाहै मतिपूर्व मिति क्या जो कोई पुरुष जान कर्के जातिमात्र ब्राह्मणको मारे सो हजार गौ १००० अपनी शुद्धि वास्ते दान करे अथवा स्वर्जित नामा जो यज्ञविंशष है तिसको करे तद पवित्र हुंदाहै ॥ १ ॥ और अंगिरा जीने किहाहै परिषेति जो ब्राह्मणोंको परिषद् कहीहै सो क्षत्रियोंको दूना होतीहै और वैश्यांको त्रिगुण होतीहै और परिषदकी न्याई व्रतभी जानना अर्थात् जो व्रत ब्राह्मण वास्ते किहाहै उसते दूना क्षत्रिको करणा योग्यहै ॥ और वैश्यको त्रिगुण करणा ॥ १ ॥ इस विषे भविष्यपुराणमें लिखयाहै क्षत्रिय इ

महापातकानुवृत्तौ ॥ कश्यपः ॥ वत्सरत्रितयंकुर्यान्नरः कृच्छ्रं विशुद्ध्यै आत्मतुल्यं सुवर्णं वैदद्याद्वा विप्रतुष्टिदम् १ भविष्यपुराणम् ॥ मतिपूर्वयदाह न्याद्ब्राह्मणं जातिमात्रकम् गोसहस्रं तदा दद्यादथवा स्वर्जिताय जेत १ अत्रांगिराः ॥ परिषदा ब्राह्मणानां साराज्ञां द्विगुणा भवेत् ॥ वैश्यानां त्रिगुणा चैव पर्षद्वचनं स्मृतम् १ अत्र भविष्यपुराणम् ॥ क्षत्रियो ब्राह्मणं हत्वा प्रायश्चित्तद्वयं चरेत् ॥ यजेत वाश्वमेधेन क्षत्रियो विप्रघातकः १ प्रायश्चित्तद्वयं द्विर्द्वादशवार्षिकमित्यर्थः ॥ परिषदित्यांगिरसवचनं मिताक्षरायां व्याख्यातं यथा एवं च ब्राह्मणानां येन हन्तृहन्त्यमानगतगुणा विशेषेण यः प्रायश्चित्तविशेषो व्यवस्थितः स एव तद्गुणविशिष्टे क्षत्रियादौ हन्तरि द्विगुणस्त्रिगुणो वेदितव्यः ॥ अनयैव दिशा क्षत्रियवैश्यादावपि हानेनोत्कृष्टवधे दोषगौरवात् प्रायश्चित्तस्यापि द्वैगुण्यादि कल्पनीयम् ॥

ति क्षत्री ब्राह्मणको मार कर दूना प्रायश्चित्त करे अर्थात् २४ वर्षका व्रत करे अथवा इनां दोषोंकी जगा अश्वमेध करे तद शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ और परिषद् एह जो अंगिराका वचनहै इसकी व्याख्या मिताक्षरा विषे कीतीहै जैसे इसजगा ऐसीव्यवस्था है ब्राह्मणोंको जिस मारण वाले विषे और जो मृत होयाहै उसविषे जो गुणविशेषहै तिस कर्के जो प्रायश्चित्तविशेष स्थापन कीयाहै सोई प्रायश्चित्त क्षत्रियादि हंताविषे द्विगुण जानने योग्यहै अर्थात् ब्राह्मण ब्राह्मणको मारे तद पूर्वोक्त प्रायश्चित्तहै ॥ और क्षत्री ब्राह्मणको मारे तद दूना प्रायश्चित्त और वैश्यको त्रिगुण और शूद्रको चतुर्गुण ऐसीव्यवस्था जाननी ॥ और इसीरीतिकर्के क्षत्रिवैश्यादिकों विषे हान कर्के उत्कृष्टवधमे दोषगौरवते प्रायश्चित्तकीभी द्विगुणतादि कल्पना करणे योग्यहै

॥ श्रीरघुवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ टी० भा० ॥ ३१

और प्रायश्चित्तकी गौरवता दंड गौरवताते जानना अर्थात् जिस प्रायश्चित्तकी जैसा दंड किहाहै प्रायश्चित्तभी तैसाहि जानना सोई किहाहै प्रतिलोमेति प्रतिलोमापवादविषे द्विगुण त्रिगुण दंड किहाहै और वर्णोंके अनुलोम कर्के आधा २ घटानेते दंडहोताहै अर्थात् जेकर हीनजाति उत्तम जातीका अपमानकरे तद दूना शीशा इत्यादि दंड जानना और जेकर उत्तमजाति किसी हीनजातीका अपमान करे तद आधा २ घट दंड होताहै १ और जो चतुर्विंशति मतविषे वचन किहाहै क्या जो कुछ ऋषियोंने ब्राह्मणको प्रायश्चित्त निश्चय कीयाहै उसका पादोनादिक्षत्री आदि को जानना उसका पादोन क्षत्रीकरे और आधा वैश्यकरे और शूद्र एक पाद करे ऐसा प्रायश्चित्त सभ पापविषे जानना अर्थात् संपूर्ण पाप विषे प्रायश्चित्तका विभाग ऐसा कीयाहै ऋषियोंने क्या ब्राह्मणको संपूर्ण प्रायश्चित्तहै और क्षत्रियों तीनहिस्से और वैश्यको आधा और शूद्रको एक पाद इति १ एह जो प्रायश्चित्त लिखयाहै सो प्रतिलोम करके कीया जो चार प्रकारका साहस है तिसते भिन्न

दोषगौरवं दंडगौरवादवगम्यते ॥ यथोक्तम् ॥ प्रतिलोमापवादेषु द्विगुणस्त्रिगुणोदमः वर्णानामानुलोम्येन तस्मादर्धार्धहानित इति ॥ १ ॥ यत्तु चतुर्विंशतिमतवचनम् प्रायश्चित्तं यदास्मात् ब्राह्मणस्य महर्षिभिः पादोनक्षत्रियः कुर्यादर्धवैश्यः समाचरेत् शूद्रः समाचरेत् पादमशेषेऽपि पाप्मसु इति तत्प्रतिलोमानुष्ठितचतुर्विधसाहसव्यतिरिक्तविषयं प्रकीर्णकादावे तद्विषय इत्यर्थः ॥ शूलपाणिस्तु पादोनक्षत्रिय इत्येतद्विषयं सामान्यविशेषन्यायेन ब्रह्मवधेतरपरमभक्ष्यभक्षणपरंच संप्रयोगप्रकरणादिति तथामूर्धावसिक्तादीनामप्यनुलोमोत्पन्नानां दंडवत्प्रायश्चित्तमूहनीयम् ॥ दर्शितंच दंडतारतम्यम्

विषय जानना : जैसे क्षत्री ब्राह्मणको मारे तद उसको ब्राह्मणते दूना प्रायश्चित्त किहाहै ऐसेहि वैश्यको क्षत्रीके मारण विषे और शूद्रको वैश्यके मारण विषे दूना २ होताहै इस कारणते भिन्न विषय जानना । और प्रकीर्णकादि पापों विषे पाद २ हानि एहि विषयहै ॥ और शूलपाणिने तो पादोन क्षत्री करे एह इस अभिप्रायसे किहाहै क्या सामान्य विशेष न्याय करके ब्राह्मण वधते भिन्न पाप विषे जानना और अभक्ष्यभक्षणपर है ऐसे प्रकरणते युक्तकीयाहै । और तैसेहि मूर्धावसिक्त इत्यादि अनुलोमोत्पन्न जो चोट ६४ जातीहैं तिन सभको दंडकी न्याई प्रायश्चित्त भी कल्पना करणा योग्यहै । अर्थात् मूर्धाभिषिक्त उसका नामहै जो ब्राह्मणते क्षत्रियास्त्री विषे उत्पन्न होवे ऐसेहि और भी क्षत्रीते वैश्यविषे और वैश्यते शूद्रविषे उत्पन्न होवे । एह अनुलोम जात किहेहैं और इनको दंडकीभी तारतम्यता दिखाई है ॥

दंडप्रणयनामिति वर्ष चार ब्राह्मणदि और उत्तम अधम चौट ६४ जाति इनको यथायोग्य दंड देना योग्यहै सो क्रम लिखयाहै और ब्राह्मणकी चार स्त्री कहीहैं और क्षत्रीकी तीन स्त्री और वैश्यकी दो और शूद्रकी एक स्त्री ऐसेहि इनमेंसे जो उत्पन्न हैं सो भिन्न २ जाति कहीहैं आगे इनके संक्षेप कर्के मनुजीने चौट भेद लिखेहैं । और तैसेहि मूर्धावसिक्तको ब्राह्मण वध विषे ब्राह्मणते अधिक क्षत्रीते न्यून प्रायश्चित्त हुंदाहै ॥ इस कारणते अठारां वर्ष का प्रायश्चित्त हुंदाहै अर्थात् ब्राह्मणको ब्राह्मण वध विषे द्वादश वर्षका व्रतहै ॥ और क्षत्रीको ब्राह्मण वध विषे चौबीस २४ वर्ष हुंदाहै और इस वास्ते मूर्धावसिक्तको ब्राह्मणते अधिक क्षत्रीसे न्यून १८ वर्ष प्रायश्चित्त हुंदाहै इति और ऐसे अंनुलोमोत्पन्न जो हैं तिनको प्रायश्चित्त दिखायाहै और इसी रीति कर्के प्रतिलोमोत्पन्न जो हैं तिनकोभी अधिक प्रायश्चित्त जानने योग्यहै ॥ और तैसेहि आश्रमियोंकोभी अंगिराजीने विशेष दिखायाहै गृहस्थेति जो २

दंडप्रणयनं कार्यवर्णजात्युत्तराधरैरिति ततश्च मूर्धावसिक्तस्य ब्राह्मणवधे ब्राह्मणादतिरिक्तं क्षत्रियानन्यूनमप्यर्धं द्वादशवार्षिकं भवति १८ अनप्येवदिशाप्रतिलोमोत्पन्नानामपि प्रायश्चित्तगौरवमूहनीयम् तथाश्रमिणामपि विशेषांगिरसा प्रदर्शितः गृहस्थोक्तानिपापानि कुर्वत्याश्रमिणो यदि शौचवच्छोधनं कुर्युरवाग्रब्रह्मनिदर्शनादिति १ एतच्छौचं गृहस्थानां द्विगुणं ब्रह्मचारिणाम् त्रिगुणं वनस्थानां यतीनां तु चतुर्गुणमित्युक्तं शौचवदित्यर्थः ॥ यथाचार्यादीनां शौचं द्विगुणादिविधीयते तथा शोधनं प्रायश्चित्तमपि द्विगुणादि भवतीत्यर्थः

पाप गृहस्थियोंके किहेहैं ओही पाप जेकर आश्रमीकरे तद शौचकीन्याई प्रायश्चित्त करे ब्रह्मज्ञानते उरे १ जैसे गृहस्थीते आश्रमीको शौच करणी कहीहै तैसेहि प्रायश्चित्त करणी किहाहै जितना चिर ब्रह्मज्ञान नहि हुया और ब्रह्मज्ञानके होयां ज्ञानीको प्रायश्चित्तका अधिकार नहिहै आगे शौचप्रकार लिखयाहै १ एतदिति एह पूर्वोक्त शौच गृहस्थीको कहीहै और इसते दूनी ब्रह्मचारी की जाननी और वानप्रस्थीको त्रिगुण और संन्यासी को चतुर्गुण शौच करणी कहीहै इति । एह जो शौच कहीहै तैसेहि शौचकी न्याई प्रायश्चित्त भी आश्रमियोंको किहाहै ॥ और जैसे ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थी संन्यासी इनको दूनी त्रीणी चौगुणी शौच विधान करीहै तैसेहि प्रायश्चित्त भी दूना त्रीणी चौगुणा यथा क्रमकर्के हुंदाहै इसका एह अर्थहै

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ३३

और ब्रह्मचारीको जो दूना प्रायश्चित्त किहा है सो सोला १५ वर्षकी अवस्थाते उपरंत जानना अर्थात् जेकर ब्रह्मचारीकी अवस्था सोला वर्षके उरे होवे तद उसको दूना प्रायश्चित्त नहि किहा सो लिखया है क्या जो सोला वर्षते उरे अवस्थावाला बालक है सो आधि प्रायश्चित्तके योग्य हुंदा है इस वचनते इस कारणते बालकको आधा प्रायश्चित्त हुंदा है इति और पतितको अग्निहोत्रकी अग्निका त्याग नहि किसवास्ते कि पतितकोभी अश्वमेध यज्ञका विधान कीया है इसते जानीदा है ॥ सोई कात्यायनजीने किहा है महापातकोति सामि क जो ब्राह्मण है क्या अग्निहोत्री सो जेकर देव योगते पतित होजावे तद उसके जो पुत्रादि हैं सो उतना चिर अग्निकी रक्षा करें जितना चिर उसका पाप नाश नहि हो या और जब उह यथायोग्य प्रायश्चित्त करणे करके शुद्ध होजावे तद फेर पूर्वकी न्यायी वैतानकी अग्निकी धारण कर लेवे अर्थात् फेर अग्निहोत्र नित्य करे १ और जेकर उह प्राय

ब्रह्मचारिणोऽङ्गिगुणादितु षोडशवर्षानंतरमेव वालोवाप्यूनषोडशः ॥
प्रायश्चित्तार्द्धमर्हतीत्यादिवचनात् पतितस्य वैतानाग्नित्यागोनास्तीति
अश्वमेधादिकृताविधानाद्गम्यते अतश्चाह कात्यायनः । महापातकसंयुक्तो
दैवात्स्यादग्निमान्यदि पुत्रादिः पालयेदग्नीन्युक्तश्चादोषसंक्षयात् १ प्राय
श्चित्तं न कुर्याच्चेत्कुर्वन्वाघ्नियते यदि गृह्यं निर्वपयेत्सर्वमुदस्येत्सपरिच्छदम्
शमयेदुभयं वाद्भिरज्योभिरभवद्यतः पात्राणि दद्याद्विप्रायदहेदप्स्वथवाक्षि
पेत् २ आदोषसंक्षयादा प्रायश्चित्तापवर्गादित्यर्थः एवं च सति वैतानं प्राक्षिपे
दप्सु यज्ञपात्राणिसंदहेदित्यादिकं वचनं प्रायश्चित्तमकुर्वाणे द्रष्टव्यम् ॥

श्चित्त न करे अथवा प्रायश्चित्त करतियां मृत होजावे तद उसके पुत्रादि ऐसा कार्य करें क्या संपूर्ण अग्निकी ग्रहण करके बुझा दें अथवा अग्निहोत्रकी और भी जो सामग्री है तिस के साथ अग्निकी जल विषे प्रवाह दें अथवा अग्निकी और सामग्रीको ज्ञात कर दें २ कि सवास्ते कि जिस कारणते अग्नि जो है सो पूर्वकाल विषे जलातेहि उत्पन्न होता भया और पात्र जो हैं सो सभ ब्राह्मणके ताई दें दें अथवा सभ पात्रांको अग्नि विषेहि दग्ध कर दें अथवा जल विषे सभ पात्र प्रवाह दें और आदोष संक्षयात् इसका एह अर्थ है क्या जितना चिर प्रायश्चित्तका अपवर्ग नहि हुया अर्थात् प्रायश्चित्त यथायं नहि कीया एह अर्थ है और ऐसे होयां वैतानाग्निकी जल विषे प्रवाह दें और यज्ञपात्रांको दग्ध करे इत्यादि वाक्य प्रायश्चित्तके न करण विषे देने योग्य है अर्थात् प्रायश्चित्त जेकर न होवे तद अग्निकी जलमे पावे और पात्र दग्ध करे इति

३४ ॥ श्रीरघुवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ३० ॥ १२ ॥ श्री० भा० ॥

भविष्यत्पुराण विषे लिखयाहे प्रायश्चित्तेति हे सुराधिप वैश्य ब्राह्मणको मार करके तीन प्रकारका प्रायश्चित्त करे अपनी शुद्धि वास्ते एक वन विषे निवास करके भिक्षा मांग कर भोजन करणा ऐसेहि वारां १२ वर्ष व्रत करे ॥ १ ॥ और दूसरा एक किसी बेटका पाठ करे २ तीसरा किसी तीर्थके उद्देशसे सी १००० योजन प्रमाण मार्ग ग्रामन करे एह तीन प्रकार हैं और तिन्हां व्रतांकी साधारण विधि कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्महत्याके दूर करण वास्ते अल्प आहार करणा और सभ विषय वासना रोकनी २ ॥ और मुंडनकरवाकर ग्रामके बाहर अथवा गौकेस्थानविषे निवासकरे अथवा किसी आश्रम विषे वृक्षमूलविषे गौ और ब्राह्मण के हितमे रत हुया २ निवासकरे ऐसा प्रायश्चित्त करणे करकेवैश्य ब्रह्महत्या तेमुकहोताहै ३ ॥ और आगे शूद्र वास्ते लिखयाहे शूद्रइति शूद्र ब्राह्मणको मार क

भविष्यत्पुराणम् प्रायश्चित्तत्रयंवैश्यो हत्वा विप्रं सुराधिप चरित्वा द्वादशाब्दानि भिक्षाशीवनगोचरः १ जपेदन्यतमं वेदं योजनानां शतं व्रजेत् ब्रह्महत्यापनोदार्थमिदं भुङ्क्ते यत्तेन्द्रियः २ कृतवापनो वानिवसेद्ग्रामांते गोव्रजे पिवा आश्रमे वृक्षमूले वा गोब्राह्मणहितैरतः ३ शूद्रो वा ब्राह्मणं हत्वा प्रायश्चित्तचतुष्टयं कुर्यादात्मविशुद्ध्यर्थं यथावच्छृणु सुव्रत ४ दत्त्वा वेदविदेवि प्रेसर्वस्वं प्रथमं गुहं हविष्यभुक्चरेत्पश्चात्प्रतिस्त्रोतस्सरस्वतीम् ५ सेतुबंधं ततो गच्छेद्भिक्षाशीकृतवापनः गवार्थे ब्राह्मणार्थे वा सम्यक् प्राणान् पारित्यजेत् शंखः । अकामकृते ब्रह्महापरिपदो नुमते खट्वांगी गर्दभाजिनो मृगमयपात्री पतितशिष्टान्नभोजी कपालध्वजी स्वकर्म विरूपापयं शचरेद्भैक्षमेककालाहारः शून्यागारं पर्वतगुहानदीवृक्षमूलनिकेतनः स एवंगोसहस्रं दत्त्वा द्वादशवर्षं शुद्धिमाप्नोति

र चार प्रकारका प्रायश्चित्त अपनी शुद्धि वास्ते जैसे करे सो सुन हे सुव्रत ४ और हे गुह हेस्वामिकार्तिक प्रथम वेद जाननवाले ब्राह्मणको शूद्र अपना सर्वस्व दे करके हाविष्य अन्नका भोजन करताहुया प्रतिस्रोतः सरस्वतीको जाकर प्राप्तहोवे ५ और तिसते अनंतर मुंडन करवा कर भिक्षामांगताहुया सेतुबंधको जावे अथवा गौके अर्थ अथवा ब्राह्मण वास्ते प्राणांको त्याग देवे ६ ॥ शंखजीने किहाहै कि ब्रह्महा शूद्रभी पापदकी आज्ञाकरके अकामकृत पापविषे ऐसाकरे क्या खट्वांग धारे और गर्दभका चर्म और मृगमयपात्र और भिक्षाविषे भी गृहस्थीने भोजनके पीछे पृथ्वी उपपर स्थित कीया जो अन्नहै तिसको ग्रहण करके भोजन करे और कपालध्वजी इत्यादि कर्मकरके द्वादशवार्षिक व्रत करतियां शुद्ध हुंदाहै

और जेकर बीच ब्राह्मणको मृत्युते रक्षा करे अथवा १२ द्वादश गीकीरक्षा करेते अपवा
अन्यकृत अश्वमेधविषे यज्ञातत्तान करके पवित्र हुंदाहै और भविष्यपुराण विषे इसका विशेष
किहाहै सो जैसेहै तैसा दिखाईदाहै हेवीर महात्मा शंखने जो प्रायश्चित्त किहाहै सो सभ यज्ञ
विषे ब्राह्मण के मारण विषे जानना इति ॥

और कामनाते एक काल विषे अनेक ब्राह्मण वध विषे भी विशेष किहाहै भविष्यपुराण
विषे कहा है हरनंदन कोई पुरुष एक निमित्त को आश्रय करके एक काल विषे बहुत ब्रा
ह्मणों जेकर मार देवे और १ एकको मारे अथवा दोको अथवा बहुतको मारे तद हे
वीर एक समय विषे ऐसे मार करके उसने एक प्राणांतिक प्रायश्चित्तहि करणा योग्यहै अ

अन्तरावा ब्राह्मणं मरणान्मोचयित्वा गवां वा द्वादशानां परित्राणा
त्सद्यएव वान्यकृताश्वमेधावभूथे स्नात्वा पूतोभवति ॥ पतितंभूमौ
स्थापितं नतु हस्तेनदत्तं शिष्टंभुक्तावशिष्टंनत्वभुक्तेषुस्वकीयेषुप्रथमवेदत्तं
तदन्नभोजीत्यर्थः अस्यभविष्यत्पुराणेविषयउक्तः तद्यथा शंखोनोक्तंतुयद्दीर
प्रायश्चित्तं महात्मना तद्यज्ञगतविप्रस्य विनाशे परिकीर्तितमिति ॥
युगयत्कामतोवाऽनेकब्राह्मणवधेविशेषउक्तो भविष्यत्पुराणे । एककालंय
दाहन्याद्युगपद्धरनंदन निमित्तमेकमाश्रित्यहन्यतेवैकदाविभो १ ब्राह्म
णंब्राह्मणौवीरब्राह्मणांश्चवहूनपि निहत्ययुगपद्दीरएकंप्रणांतिकंचरेत् २
युग्मम् एककालंएककालावच्छेदेनयुगपत्त्वहून्विप्रान्हन्यात् अथवा ए
कनिमित्तमाश्रित्यैकस्मिन्कालेवहुभिरेकोहन्यतेइत्यर्थः ॥ किन्त्वत्रसुरशा
र्दूलविशेषंगदतोमम बुद्धिपूर्वाबुद्धिपूर्वविकल्पंशृणुपुत्रक ३ अकामतो
यदाहन्याद्ब्राह्मणान्मानवोगुह चरेद्वनेतदाघोरेयावत्प्राणपरिक्षयः ४

थात् एक पुरुष एक निमित्त वास्ते बहुत ब्राह्मणोंको अकंठेहि मारे अथवा एक निमित्तके
आश्रय होकर एकहि काल विषे बहुतियोंने एक ब्राह्मण मारीये तद एह सभ प्राणान प्राय
श्चित्त करके शुद्ध हुंदाहैं इति ॥ २ और हे देवता विषे सिंह इस विषे कुछ विशेष मे कहता
हुं सो तुम श्रवण करो क्या बुद्धि पूर्वक और अबुद्धि पूर्वक इनका विकल्पहै पुत्र श्रवण कर
अथात् ऐसे पाप विषे ज्ञान अज्ञान करके जो कुछ विशेषहै सो मेरेते तुम सुनो ॥ ३ अका
मेति हे स्वामिकार्तिक कोई पुरुष कामनाते विना जेकर बहुत ब्राह्मणोंको एक काल विषे
एकहि प्रयोजन वास्ते मारे तद उतना चिर अति भयानक वन विषे विचरे जितनाचिर
प्राण दूर नहि होये अथात् मृत्यु पर्यंत गन्हर वन विषे निवास करे इति ॥ ४ ॥

३६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और जानकरके हे सुरसत्तम कोई पुरुष कामनाते बहुत ब्राह्मणांको मारे तद सो पुरुष जिस विधिकरके अपने शरीरको अग्निमें दग्ध करें तिस प्रकारको श्रवण कर ५ ॥ क्या करे कि निष्कालक होकर क्या जीवनको आशा त्यागकर अर्थात् मृत्युका निश्चय करके अपने शरीर को बस्त्रसे लपेटे और कैसा उह बस्त्र है घृतेति घृत करके जो भिया है तिसको शरीरके ऊपर लपेट लेवे फेर अपना सर्वस्व ब्राह्मणके तायी देदेवे ॥ ६ ॥ और तिसते अनंतर करीष क्या शुष्क गोमयकी चिता जगा कर प्रथम पाद उस विषे रख करके आदरते अपने शरीरको दग्ध कर देवे और ऐसेहि भय न करे और सिर पर्यंत दग्ध हो जावे हे सुरसत्तम ॥ ७ ॥ और ऐसे पाप विषे हेमहाबाहो इस विधिसे शरीर दग्ध करणे कर के निर्दोष किहा है अर्थात् जो कोयी पुरुष बहुत ब्राह्मणांको मारे तद ऐसे विधि पूर्वक

कामतश्च यदाहन्या ब्राह्मणान्सुरसत्तम तदात्मानं दहेदग्नौ विधिनयितुं तच्छृणु भूत्वानिःकालको वीरवेष्टयित्वा च वाससा घृताक्तेन महाबाहो दत्त्वा सर्वस्वमेव हि ६ हित्वा पादौ करीषाग्नौ दहेदात्मानमादरात् आउत्तमाङ्गाद्विधिवदत्र स्थः सुरसत्तम ॥ ७ ॥ एवमत्र महाबाहो निर्दोषः परिकीर्तित इति ततश्चायमर्थः सिद्ध इति ॥ यद्यकामतो युगपदनेक ब्राह्मणवधस्तदायद्वा दशाविदकं तप उक्तं तदेव यावज्जीवकार्यम् यदितु कामतस्तदोक्त प्रकारेणाग्निप्रवेश इति मिताक्षरायामपि द्वित्रिब्राह्मणवधे प्रायश्चित्तस्य तन्त्रत्वं पूर्वपक्षीकृत्य विधेः प्राथमिकादस्माद्द्वितीये द्विगुणं चरेत् तृतीये त्रिगुणं प्रोक्तं चतुर्थेनास्ति निष्कृतिरित्यादिना प्रायश्चित्तावृत्तिरेव सिद्धांतिता

शरीर त्याग करणे करके सो पुरुष शुद्ध हो जादा है इति ॥ अकामत इत्यादि श्लोकते ऐहि अर्थ सिद्ध है इति जद कामनाते विना एककालविषे ब्राह्मणों का वध होजावे तद पूर्वजो द्वादश वर्षका तप किहा है सो सारी आयुषा करता रहे और जेकर कामनाते करे तद पूर्वोक्त प्रकार करके अग्निविषे प्रवेश करे इति । और मिताक्षरा विषे भी ऐसा लिखा है क्या दो तीन ब्राह्मण वध विषे प्रायश्चित्त तंत्रको पक्ष बना कर विधि को प्रथम होनेते प्रथम किहा है अर्थात् एक वध विषे पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानना और दोके वध विषे दून और तीनके वधविषे त्रिगुण और चारके वध विषे कुछ प्रायश्चित्त नहि है अर्थात् उसको कोयी भी शुद्ध नहि करता इस वास्ते बार बार आवृत्ति करे एहि सिद्धांत किया है

॥ श्रीरण्वरि कारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी ० भा ० ॥ ३७

किंच और सपं व्याघ्र इत्यादि जीव करके हन्यमान जो ब्राह्मण है तिसकी रक्षा करणेंते और ऐसेही गौकी रक्षा करणेंते अथवा अश्वमेध विषे यज्ञांत स्नान करणेंते ब्रह्महत्यातें शुद्ध हुंदा है अर्थात् व्रतके बीचभी ऐसा कार्य होजावे तद आगे व्रतकी समाप्ति कर देवे इति १ यज्ञस्नान विषे विशेष किहा है मनुजीने शीति भूमिदेव जो ब्राह्मण हैं तिनके और अभिषेकको प्राप्त जो क्षत्रा हैं तिनके समागम विषे अपने पापको अर्थात् ब्रह्महत्याको प्रकट कर्के यज्ञातस्नान करे तद पवित्र हुंदा है १ और इसका एह अभिप्राय जानना क्या सोपायीपुरुष प्रथम अश्व

॥ किंच ॥ ब्राह्मणस्य परित्राणाद् गवां द्वादशकस्य वा तथाश्वमेधावभृथ स्नानाद्वा शुद्धिमाप्नुयात् १ सर्षव्याघ्रादिना हन्यमानस्य ब्राह्मणस्य परिरक्षणं द्वादशकस्य वा शुद्धिमाप्नोति प्रक्रान्तं व्रतं कार्याभावात्तदैवोत्सृष्टव्यमथवा गवां द्वादशसंख्याकानां वधपरित्राणाच्च शुद्ध्यति यद्वाश्वमेधावभृथस्नानात् अश्वमेधावभृथे च विशेषमाह मनुः ॥ शिष्टवावा भूमिदेवानां नरदेवसमागमे स्वमेनोवभृथे स्नात्वा हयमेधो विमुच्यते १ भूमिदेवा ब्राह्मणा अभिषिक्तः क्षत्रियो नरदेवस्तेषामन्योन्यसमागमे स्वमेनो ब्रह्महत्यां शिष्टवा विख्याप्यावभृथ स्नातः शुद्ध्यतीत्यर्थः अश्वमेधे ब्राह्मणानामृत्विजां क्षत्रियस्य यजमानस्य समागमे ब्रह्महत्यापापं शिष्टवानि वेद्य तत्रैव तदाज्ञयाऽवभृथस्नातो ब्रह्महत्यापापान्मुच्यते इति व्याख्यानांतरम् ॥ एतच्च प्रक्रान्तद्वादशाब्दिकस्यैव यदाह शंखः अन्तरावा ब्राह्मणं मरणान्मोचयित्वा गवां द्वादशानां परित्राणां तस्यैवाश्वमेधस्नानेन पूतो भवति अन्तराद्वादशाब्दिकव्रतमध्ये इत्यर्थः ॥

मेध यज्ञ विषे जाकर ऋत्विजोंके क्षत्रि यजमानके समागम विषे ब्रह्महत्या पापको निवेदन कर्के तिसी स्थान विषे तिनकी आज्ञा कर्के यज्ञांत स्नान करे तद ब्रह्महत्या पापते मुक्त हुंदा है इति एह वारां वर्षके व्रतके बीचहि किहा है सोयी कहा है शंखजीने क्या व्रतके बीचहि ब्राह्मणको मृत्युतें छुड़ा कर्के अथवा द्वादशगौयांकी रक्षा करणेंते शीघ्र अश्वमेध विषे स्नान कर्के पवित्र हुंदा है ॥

३८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी ० भा ॥

और इस विषे गो ब्राह्मणकी रक्षा करणी और अश्वमेध यज्ञ विषे स्नान करणा एह पाप नाश करण के कारण विधान कीयेहैं और कुछ व्रत कर्त्ता का मरण नहि किहा और जेकर व्रत नहि समाप्त होया और व्रतके मध्य विषे जद उसका मरण होजा वे तदभी उसी समय विषे पाप क्षय हुंदाहै अर्थात् प्रायश्चित्तका आरंभकीतयां जेकर समाप्ति विनाहि उह पापी मृतहोजावे तदभी पवित्र हुंदाहै क्या उसका ब्रह्महत्याका पाप दूरहुंदा है इति ॥ तैसे यम जीने किहाहै प्रायश्चित्त इति प्रायश्चित्तके निश्चय कीतयां होयां कर्त्ता जद मृत होजावे तदभी उह उसीदिन विषे शुद्ध किहाहै इस लोक विषे भी और परलोक विषे भी अर्थात् जो पापी ऐसा निश्चयकरे कि अमुकव्रतकरताहुं जिस कर्के मैं शुद्ध होजावां इस प्रकार दृढ कर्के किसी व्रतका आरंभ करे फेर छोड़े कालमे जेहर मरभी जावे तदभी उह पवित्र किहाहै

अत्रचगोब्राह्मणपरित्राणमश्वमेधावभूथस्नानंच पापक्षयहेतुत्वेन विधी यतेन पुनर्व्रतकर्तुर्मरणमप्यश्रवणात्प्रक्रांतव्रतमध्येयदिमरणंस्यात्तदाता वतैवपापक्षयः यदाहयमः ॥ प्रायश्चित्तेव्यवसितेकर्त्तायदिविपद्यते शुद्ध स्तदहरेवासावत्रलोकेपरत्रचेति १ अंगिराः ॥ योयदर्थंचरेद्धर्ममप्राप्यस्यि यतेतुतम् सतत्युण्यफलंप्रेत्य प्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् १ सर्वधर्मविषयंचैतत् यत्तुभविष्यत्पुराणम् मातरंपितरंहत्वा सोदर्यभ्रातरंतथा गुरुंहत्वाश्रोत्रि यंवा आहिताग्निमथापिवा अनेन विधिना पापी कीर्तयेत्पापमात्मनः पृथिवमिटतसेवांशृणुष्वगदतोविधिमित्येतन्मातृपितृगुरुप्रभृतिवधवि षयमापस्तम्बीयमेवोक्तम् ॥

और परलोक विषे भी उसको कुछ दंड नहिहुंदाइति ॥ २ ॥ और अंगिराजीका वाक्यहै यइति जोपुरुष जिस अर्थवास्ते धर्मका आचरणकरे और तिसको न प्राप्तहोकरके जदमृतहोजावे तदभी परलोक विषे तिस पुण्य फल को प्राप्त हुंदाहै एह मनुजी कहते भये इति १ एहप्रकार सबधर्मके विषयजानना और जोभविष्यत्पुराणविषे लिखयाहै कि मातरमिति मातापिता को हतकरके और तैसेहि सके भ्राताको और गुरु श्रोत्रिय अग्नि होश्री इनको मार करके पापी इस विधि करके अपना पाप कीर्तन करे और संपूर्ण भूमिकी अटनकरे इस विधिको मेरेते श्रवण कर एह संपूर्ण विधि माता पिता गुरु इत्यादि जो हैं तिनके वधविषे कहीहै एह आपस्तम्बीय धर्म शास्त्र विषे किहाहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ३९

और इसविषे गुरु पद जोहै सो ब्रह्मचारी वानप्रस्थी यती इनका उपलक्षणहै इस वास्ते इनके वध विषे भी एहपूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानना इनकोभी गुरुहोनेते और फेर इसविषे जिस वणके ब्रह्मचारी वानप्रस्थाहोवें उसवर्णके अनुसार प्रायश्चित्त कल्पनाकरणीयोग्यहै और याते विषयावषे विशेष दूसरे प्रकरणविषे दिखायाहै ॥ सोयी विधि आपस्तंबजीने कहीहै क्या वाणीजित कर वनविषे कुटिया बनाकरके निवासकरे और शवशिरोध्वजी इत्यादि और शणके बस्त्रकरके नाभीके हेठ और जानुके ऊपर आछादनकरे और मार्गविषे किसीको देखकरके क्या तिसके मार्ग करके किसी का मार्ग मिले तद मै ब्रह्महत्यावाला हाँ ऐसा कहकर हट जावे अथवा

अत्रगुरुपदंब्रह्मचारिवानप्रस्थयतीनामुपलक्षणं तद्वधेप्येतदेव प्रायश्चित्तं गुरुत्वात् तत्रापि ब्रह्मचारिवानप्रस्थयोस्तत्तद्वर्णानुसारेण कल्प्यम्यतिविषये विशेषो द्वितीय प्रकरणे द्रष्टव्यः ॥ तदाहापस्तंबः ॥ अरण्ये कुटीकृत्या वाग्यतः शवशिरोध्वजोऽर्धशाणीपटमधेनाभ्युपरिजान्वा च्छाद्यतस्यपथाचान्तरा वर्त्मनिदृष्ट्वा न्यमुत्क्रामेत्स्वएडेन लाहितेन शरावेण ग्रामंप्रतिष्ठेत कोभिशस्तायभिक्षां ददातीति सप्तागाराणि चरेत्सावृत्ति रलब्धोपवासोऽनेनविधिना आउत्तमादुच्छ्वासाच्चरेत् नास्यास्मिं लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते कलुषं तु निहन्यत इति ॥ अभिशस्ताय ब्रह्मघ्राय कः पुरुषोभिक्षांददातीति कथयन् सप्तागाराणि चरेदित्यर्थः अलब्धोपवासः अलब्धायां भिक्षायामुपवासएवतस्येत्यर्थः सप्रायश्चित्ती आ उत्तमात् उच्छ्वासात् उत्तमोच्छ्वासपर्यंतं जीवनान्तं यावदनेनविधिनाचरेदिति अस्यव्यवहारो नसिद्ध्यति किन्तु नरकानुकूलाशक्तिर्नाश्यते ॥

आगेते हटादेवे और हाथमे मृत्तकापात्र अर्थात् लाल रंगदाखंडितठूठालेकर भिक्षावास्ते ग्राम में जावे और ऐसे कहे क्या कोयी ब्रह्मघ्नके तार्थी भिक्षादेवे ऐसे सातघर विषे फिरे और भिक्षा न मिले तद उपवास करे पर उत्तम स्वासपर्यंत अर्थात् जितना चिर जीवतारहे उतना चिर इसीविधि करके करता रहै और फेर इसलोक विषे तिसका आगमन नहि हुंदा और पापभी दूर हो जंदाहै और इसका व्यवहार नहि सिद्धहुंदा किन्तु नरकानुकूलशक्ति नाशहोदीहै पापकी दांश नहि होतीहै एक व्यवहार अनुरोधकरणवाली और दूसरी नरक देणे वाली और प्रायश्चित्तोमें यथोक्त प्रायश्चित्त करके दोनो शक्ति नष्ट होतीहै और इस विषे नरक देणे वालीहि दूर होनीहै इस कर्के जीवनपर्यंतव्रतकिहाहै

४० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० ॥ भा

तुपुना जो मनुजीने कहाहै ब्राह्मणेति कि ब्राह्मण के वास्ते और गौवास्ते प्राणांका परित्याग करदेवे तद गौ ब्राह्मणकी रक्षा करण वाला पुरुष ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदाहै एह पूर्वोक्त द्वादशाब्द विषय विषे जानना और इसका अर्थहै क्या द्वादश वार्षिकके प्रक्रांतहोयां क्या आरंभहोयां कि व्रतके मध्य विषे अग्नि जल हिंसक जो अन्य जीवहें तिनकरके पीडित जो ब्राह्मणहै वा गौहै तिनकी रक्षा वास्ते प्राण त्यागदेवे कि मृत होजावे तद ब्रह्महत्या पापते मुक्त हुंदाहै और इस विषे गौ ब्राह्मणकी रक्षाते विनाभी प्राण त्यागकर लेते शुद्धहुंदाहै अथवा गौ ब्राह्मणकी रक्षावास्ते जो मृत्यु पर्यंत यत्नकरे और मृत्युको नहिभी प्राप्तहोवे तदभी ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदाहै इति इसीको प्रकट करके अंगिराजीने कहाहै दीर्घेति दीर्घ क्या बहुत कालका जो अति भयानक रोगहै तिस रोगकरके ग्रस्त

यनुमनुनोक्तम् ब्राह्मणार्थेगवार्थेवासर्वान्प्राणान्परित्यजेत् मुच्यतेब्रह्म
हत्यायागोस्तागोब्राह्मणस्यचेति तत्पूर्वोक्तद्वादशाब्दविषयम् ब्राह्मणार्थइ
तिप्रक्रान्तेद्वादशवार्षिकेऽन्तराग्न्युदकहिंसकाद्याक्रांतब्राह्मणस्यगोर्वापरि
त्राणार्थप्राणान्परित्यजन् ब्रह्महृत्ययामुच्यते अत्रगोब्राह्मणाऽपरित्राणे
पिप्राणत्यागाच्छुद्ध्यति वा प्राणपरित्यागपर्यंतकृतप्रयत्नोगोब्राह्मणपरि
त्राणायामृतोपिमुच्यते एतत्प्रपंचयन्नाहांगिराः दीर्घतीव्रामयग्रस्तंब्राह्म
णंगामथापिवा दृष्ट्वापथिनिरातंकंकृत्वावाब्रह्महाशुचिःदीर्घोविहुकालीनः
तीव्रोऽत्युग्रश्रामयोयोव्याधिस्तेनग्रस्तंब्राह्मणं वेदशीर्गापथिमार्गेदृष्ट्वा
ततश्चैननिरातंकं निरुपद्रवंकृत्वाब्रह्महाशुचिरपापोभवति गामितिस्त्री
पुरुषसाधारणम् पथिदृष्ट्वेत्येतदनाथतासूचनार्थम्

क्या पीडित जो गौ वा ब्राह्मणहै तिसको मार्ग विषे देख करके निरातंक क्या दुःखही नकरे तदभी ब्रह्महा पवित्र हुंदाहै अर्थात् अति उग्ररोग कर्के ग्रस्त ब्राह्मण गौको देखकर उसकी औषधी देवे और विधि पूर्वक सेवाकरे ऐसे सेवा करतियां उनको राजी करे तद ब्रह्महत्यापापते मुक्त हुंदाहै इति क्या ब्रह्महत्या निवृत्ति वास्ते गौ ब्राह्मणका क्लेश दूर करणा योग्यहै इति और गां इस पदकरके गौका और बैलका ग्रहण हुंदाहै इस वास्ते गौकी न्यायीबैलकी रक्षाकरे तदभी पापते मुक्त हुंदाहै और मार्ग विषे देख करके इसका एह अभि प्रायहै कि अनाथ सूचन वास्ते अर्थात् जिसकी अन्यकोयीभी सेवा करण वाला नहिहै उसकी रक्षा करणी

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ४९

और ब्राह्मणस्य एह जो पूर्वोक्त भविष्य वचन विषे एक वचन कहा है सो अविवक्षित जानने योग्य है किसवास्ते कि दो तीन चार इत्यादिगौ ब्राह्मणकी रक्षा विषे तैसाहि फल प्राप्त हुंदा है इस कारणते और आमय इस शब्द करके जल विषे पतन होना अग्नि विषे दग्ध होना और पबंतते गिरना और अति भयानक रोग इन सभका ग्रहण हुंदा है और सोयी यमजीने कहा है अंभस इति ॥ जल विषे पतनते अग्निते और चौर व्याघ्र इत्यादि भयते गो ब्राह्मणको छुडादेवे तद ब्रह्महत्याको दूर करता है अर्थात् ऐसा पूर्वोक्त प्रकार करके जो पापी गो ब्राह्मणको मृत्युते रक्षा करे तद उसकी ब्रह्महत्या दूर होजदी है और इसीका अन्यप्रकारमनुजीने कहा है इयवरमिति तीनवारी ब्राह्मणके निमित्त युद्धमेजावे अ

अत्रगवांद्वादशकस्येति पूर्वोक्त भविष्यवचने समुदायबोधकं एकत्वमविवक्षितं तं बोध्यम् द्वित्र्यादिपरित्राणे पितृफलसम्भवात् आमयपदमत्र अंभसि पतनदिरूपलक्षणम् तथाहयमः ॥ अंभसः पतनादग्नेश्चौरव्याघ्रादितोभयात् गोब्राह्मणं मोचयित्वा ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ अस्यैव प्रकारान्तरमाहमनुः अवरं प्रतिरोद्धा वा सर्वस्वमवजित्य वा विप्रस्यतन्निमित्ते वा प्राणालाभे विमुच्यते १ अर्थः ॥ अवरं तीनवारान् यद्वा त्रयोऽवरान्युनायेभ्यश्चतुर्थदिभ्य इति अवरः तत्त्रयवरं क्रियाविशेषणम् ब्राह्मण सर्वस्वे चौराद्यैरपह्रियमाणे तदानयनार्थं निर्व्याजं यथाशक्ते प्रयत्नं कुर्वन् प्रतिरोद्धा युद्धे प्रवर्तमानस्सर्वस्वेऽलब्धेऽपि ब्रह्महत्यापापात् प्रमुच्यते

यवा चौरोंको जीतकर ब्राह्मणका सर्वस्व लेयादेवे अथवा ब्राह्मणके निमित्त मृतभी होजावे तदभी शुद्ध हुंदा है १ अर्थ इसकालिखया है कि इयवर कथा तीनवारी अथवा तीनहैं अवरक्या न्यून जिनचतुर्थादिते तिसकानामहै इयवर एहक्रिया विशेषणहै और इसवास्ते इयवरं यथास्यात् तथा ऐसा अर्थ होवेगा और इयवर इसके ऐसेहि दोअर्थहुये हैं एक तीनवारी दूसरा तीनहैं अल्पजिनते ॥ और ब्राह्मणका जो सर्वस्वहै तिस सभके चोगं करके हरयाहोयां अर्थात् ब्राह्मणका संपूर्णपदार्थ चौर चुराकरके जवलेजावे तद उस धनके ले आवने वास्ते कपटते रहित अपनीशक्तिके अनुसार यत्नको करताहुया प्रतिरोद्धाक्या युद्धविषे जाकर प्राप्तहोवे ऐसेकरण करके जेकर सर्वस्व नाभी मिले तदभी उह ब्रह्महत्यापापते मुक्त हुंदा है ॥

४२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भाग प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

अथवा प्रथम वारी क्या पहली वारी जाकर हरया जो सर्वस्व है तिसको चोरांते जी लकरके तिस ब्राह्मण के तांघी दे देवे तिस करके भी ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदा है अथवा चोरादिकोने अपहृतकीया है सर्वस्व जिसका ऐसा जो ब्राह्मण है सो जेकर आपहि मरण वास्ते अथवा चोरोके साथ युद्ध करण वास्ते उद्यमकरे तद उस ब्राह्मणको जो अपने पासते धन देने करके जीवदान देता है सोभी ब्रह्महत्या पापते मुक्त हुंदा है ॥ और अन्यकिसी प्रकार करके रक्षणविषे (गोप्तागोब्राह्मणस्यच) इसवचनका विषय जानना इस अभिप्राय करके याज्ञवल्क्यजीनेभी क्या है आनीयेति क्या चोराने हरया जो ब्राह्मण का सर्वस्व है तिसको ल्याकरके यद्यपि आपचोरो करके घातितभी है अथवा तिसके निमित्त शस्त्रों करके क्षतभी होवे अर्थात् विप्रके सर्वस्व वास्ते आपशस्त्रों करके फटिया जावे और जीव

अथवा प्रथमवार एव यदपहतं सर्वस्वं जित्वा चौरादेस्तत्तस्मै द्वि जायदत्वामुच्यते ॥ यद्वाचौराद्यपहतसर्वस्वो ब्राह्मणः स्वयं मरणाय चौरैर्वा युद्धे मारणाय प्रवर्तते तदा स्वकीय धनदानेन तं यो जीवयति सोऽपि ब्रह्महत्यायामुच्यते ॥ प्रकारांतरेण रक्षणे गोप्ता गोब्राह्मणस्येति विषयः याज्ञवल्क्यः आनीय विप्रसर्वस्वं हतं घातित एव वा तन्निमित्तं क्षतः शस्त्रैर्जीवन्नपि विशुध्यति १ यो ब्रह्महाचौरापहतं ब्राह्मणसर्वस्वं चौरादेरानयनाय प्रवृत्तः स्वयं चौरैर्घातितोऽप्यादाय ब्राह्मणाय प्रयच्छति १ यो वा तन्निमित्तं चौरैर्हन्यते व्यापाद्यते २ यश्चतद्वशाच्चौरैः शस्त्रैः क्षतो मृतकल्पः परित्यज्यते स सर्वोऽपि ब्रह्महत्यायामुच्यते ॥ ३ ॥

ता रहे तदभी पवित्र हुंदा है १ इसीका विशेषकें अर्थः ॥ जो ब्रह्महा चोर करके हरया जो ब्राह्मण सर्वस्व है तिस धनको चोरांतें ल्यावण वास्ते प्रवर्तत होवे क्या उद्यमकरे और आप चोरां करके घातित यद्यपि हो जावे तदभी सर्वस्व चोरांतें ग्रहण करके ब्राह्मणके तांघी दिंदा है १ अथवा जो तिस निमित्त करके चोराने हतकीया है २ अथवा जो तिस सर्वस्वके वश होनेते चोराने शस्त्रों करके क्षत कीता है क्या फटिया गिया है और मृत होये कीन्यार्यी चोराने त्याग दिया है सो सभ ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदा है ३ । अर्थात् जो पापी ब्राह्मण का सर्वस्व चोरांतें लेयावे तदभी और चोर उसको फट करके छोड़ जावे अथवा चोर शस्त्रों करके मार देवे तदभी ब्रह्महत्या पापते मुक्त हुंदा है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ टी० भा० ॥ ४३

शरीर शस्त्रे एह जो बहुवचनहै सो क्षत बहुत्व प्रकट करणे वास्ते जासणा यद्यपि एकहि शस्त्र करक शरीर विषे बहुत घा पड जावे तदभी पवित्र हुंदाहै इस अभिप्राय करके शस्त्रे एह बहु वचन दित्तहै और एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जो गुणवान् क्षत्रो कामनाते विना निर्गुण ब्राह्मणको अमति पूर्वक मारे तिस सत्रीको करणा योग्यहै इति ॥ और कामनाते ब्राह्मणवध विषे प्रायश्चित्त अपराक विषे लिखयाहै लोमभ्य इति ब्रह्महा पुरुष लोमभ्यःस्वाहा इत्यादि मंत्रों करके शरीर विषे रोमते आदि जो धातुहैं तिन करके समस्त देहका हवन करे लोमभ्यः स्वाहा इत्यादि मंत्रोंके साथ क्रमपूर्वक आग्निविषे हवनकरे आगे सोईमंत्र लिखहैं लोमभ्यःस्वाहा १ त्वचेस्वाहा २ लोहितायस्वाहा ३ मांसायस्वाहा ४ स्नायुभ्यःस्वाहा ५ मेदसेस्वाहा ६ अस्थिभ्यः स्वाहा ७ मज्जाभ्यःस्वाहा ८ औरक्रमपूर्वक इन्हामंत्रोंकरकेजैसे वाजिसनेय पाठका अतिक्रमन

शस्त्रैःक्षतोर्जीवन्नपिविशुद्धयतीत्यत्र शस्त्रैरिति बहुवचनं क्षतबहुत्वद्योतकम् एतच्चनिर्गुणं ब्राह्मणममतिपूर्वमकामतश्चहतवतः क्षत्रियस्यगुणवतोद्बृष्टव्यम् कामतोब्राह्मणवधेप्रायश्चित्त मपरार्कं । लोमभ्यःस्वाहेति हिवा लोमप्रभृतिवैतनंमज्जान्तंजुहुयाद्वापिमंत्रैरेभिर्यथाक्रमम् लोमभ्यःस्वाहा १ त्वचेस्वाहा २ लोहितायस्वाहा ३ मांसायस्वाहा ४ स्नायुभ्यःस्वाहा ५ मेदसे स्वाहा ६ अस्थिभ्यःस्वाहा ७ मज्जाभ्यःस्वाहा ८ इत्यादिभिर्मंत्रैर्यथाक्रमं वाजिसनेयपाठानतिक्रमेणलोमप्रभृतिमज्जान्तंयथाभवति तथा येनशरीरेणब्राह्मणोहतःतच्छरीरंजुहुयात् अत्रचलोमादीनां मंत्रसामर्थ्याद्देवतात्वम् तेषामपिचलोमप्रभृतिवैतनंजुहुयादिति वचनाद्देवतात्वमपिप्रथमोत्रवाशब्दो वासिष्ठादिशास्त्रोक्तैर्मंत्रैरेषामंत्राणांविकल्पार्थः द्वितीयस्तु द्वादशवार्षिकेण

तनुहोमस्य ॥ वासिष्ठादिमंत्रायथा

होवें ऐसे क्रमकरके लोमभ्यःस्वाहा इसते आदिलेकर और मज्जाभ्यःस्वाहा इहांपर्यंत जैसेहोवे तैसेहि जिसदेह करके ब्राह्मण मारयाहै उस शरीरकरके हवन करे और ऐसे करणे करकेभी ब्रह्महत्याते मुक्त होजंदाहै और इसस्थानविषे लोमादि शब्दोंको मंत्रसामर्थ्यहोनेते देवतास्वरूपकयाहै और तिनको भी (लोमप्रभृतिवैतनंजुहुयात्) इसवचनकी सामर्थ्यते स्वरूपहोना योग्यहै और प्रथमइसस्थान विषे जो वाशब्द लिखयाहै उसका एह अभिप्रायहै कि वासिष्ठादि शास्त्रोंविषे उक्त जोमंत्रहैं तिनके साथ इन पूर्वोक्त लोमादि मंत्रोंका विकल्पहै इस अर्थवास्ते वाशब्द पठा है और दूसरा द्वादश वार्षिक व्रतके साथ शरीर होमकाविकल्पहै इस अभिप्रायकरके कयाहै सोई वासिष्ठादि मंत्र मूलमें स्पष्ट लिखेहैं

४४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ॥ १३ ॥ टी० भा० ॥

और इसी विषे पूर्वोक्त मनुजी कर्के कथित विशेष है प्रायेदिति अति प्रज्वलित अग्नि विषे नीचे शिर कर्के अपने शरीर को तीन वारी सुट देवे इति । और एह प्रायश्चित्त कृतापवास ने करणा योग्य है अर्थात् जिसने एह प्रायश्चित्त करणा होवे उह पुरुष पहिले दिन नदी विषे स्नान करके निराहार व्रत करे फेर पूर्वोक्त रीति करके अग्नि विषे प्रवेश करे । और ब्रह्मघ्न को क्या ब्रह्महत्या करण वाले को अग्नि विषे जो प्रसक्ति है क्या तीनवारी अग्नि विषे पड़ना एहि प्रायश्चित्त क्या है और अब क्षुत क्या भूषा होवे तद अर्थात् निराहार व्रत कर्के अग्नि

भूणहाग्निमुपसमाधाय जुहुयाल्लोमानिमृत्योर्जुहोमि लोमभिर्मृत्युंवाशय इति प्रथमां त्वचंमृत्योर्जुहोमित्वचामृत्युंवाशय इति द्वितीयां लोहितंमृत्योर्जुहोमि लोहितेनमृत्युंवाशय इति तृतीयां मांसानिमृत्योर्जुहोमि मांसैर्मृत्युंवाशय इति चतुर्थी मेदोमृत्योर्जुहोमि मेदसामृत्युंवाशय इति पंचमी स्नायुं निमृत्योर्जुहोमि स्नायुभिर्मृत्युंवाशय इति षष्ठी अस्थानिमृत्योर्जुहोमि अस्थीभिर्मृत्युंवाशय इति सप्तमी मज्जांमृत्योर्जुहोमि मज्जाभिर्मृत्युंवाशय इत्यष्टमीमिति । अत्रैव पूर्वोक्तो मानवो विशेषः । प्रायेदात्मानमग्नौ वा समिद्धे त्रिरवाक्शिरा इति । इदं प्रायश्चित्तं तु कृतोपवासेन कार्यम् । तदा ह गौतमः । प्रायश्चित्तमग्नौ साक्तिर्ब्रह्मघ्नः त्रिरवक्षुतस्येति । ब्रह्मघ्ना ब्रह्महत्या कर्तुरग्नौ त्रीन्वारान् प्रसक्तिरेव प्रायश्चित्तम् । अवक्षुतस्य वभुक्षितस्येत्यर्थः ॥ तथा च काठकश्रुतिः ॥ अनशनेन कर्षितोऽग्निमारोहोदिति कामकारविषयमेवैतत् ॥ तथा च मध्यमांगिराः ॥ प्राणांतिकं च यत्प्राक्तं प्रायश्चित्तं मनीषिभिः ॥ तत्कामकारविषयं विज्ञेयं नाप्रसंशयः १ ॥

विषे प्रवेश करे ब्रह्महत्या करण वाला है जेकर तद उसके वास्ते एही प्रायश्चित्त क्या है । और तैसे हि काठक श्रुति कही है अनशन इति कि निराहार कर्के अति रुश होया अग्नि को आरोहण करे अर्थात् चिताके ऊपर चढ़े । एह प्रायश्चित्त कामना कर्के कीती होई यो ब्रह्महत्या तिस विषे जानणा । तैसे हि मध्यम अंगिरा जीने क्या है प्राणांतिक मिति जो प्रायश्चित्त ऋषियों ने प्राणांतिक क्या है सो कामना कृत पाप विषे जानणा इस विषे कुछ संशय नहि है । अर्थात् जो पाप जाण करके होवे उसका प्राणांतिक प्रायश्चित्त है इति ॥

॥ श्रीमद्भगवद्गीता (अष्टादशोऽध्यायः) भागः ३ • १३ गी टी • मा • १३

फेर अंगिराने क्याहै ॥ य इति जो कोयी पुरुषकामनाते महा पाप करे कदाचित् तद पर्व तते गिडना और अग्नि विषे दग्धहोणा इसतें बिना उसकी शुद्धि किसी तरां नहि दिखा यी अर्थात् जो कोयी पुरुष जाण करे महा पाप करे उह यद अग्नि विषे गिडे अथवा पर्वत के ऊपर गिडे तद शुद्ध हुंदाहै अन्य प्रायश्चित्त करे पवित्र नहि हुंदा इति । और एह जो पूर्वोक्त प्रायश्चित्त है सो स्वतंत्रहै क्या किसे व्रतकें अंतर्भूत नहि जैसे द्वादश वर्ष के व्रतका प्रारंभ करे पीछे गो ब्राह्मणकी रक्षा करणे से शुद्धिहै तैसा एह नहिहै । और ब्राह्मण को ब्रह्महत्या विषे मरणांत प्रायश्चित्त नहि किया किंतु मरणांत प्रायश्चित्त क्षत्री को हि कियाहै सोलिखयाहै हत्वेति क्षत्री गुण युक्त ब्राह्मण को कामना ते मार करके अपनी शुद्धि वास्ते विधि पूर्वक एह प्रायश्चित्त करे इति । और मनुजीका किया होआ शस्त्र धारीयों का लक्षहो

सएव ॥ यः कामतोमहापापं नरः ॥ कुर्यात्कथंचन नतस्यशुद्धिर्निर्दिष्टाभू
ग्वग्निपतनादृतइति ॥ एतच्चप्रायश्चित्तंस्वतंत्रमेव नब्राह्मणत्राणादि
वत् द्वादशवर्षांतर्भूतं मरणांतंप्रायश्चित्तंक्षत्रियस्य हत्वातुक्षत्रियोविप्रंगु
णाढ्यमपिकामतः प्रायश्चित्तंचरेद्दीरोविधिवत्त्वात्मशुद्धये १ ॥ लक्ष्यं
शस्त्रभृतांवास्यादित्यादिपूर्वोक्तंप्रायश्चित्तत्रयंक्षत्रियस्यैवविहितम् विप्रस्य
तुकामतोब्रह्मवधेद्विगुणंव्रतम् ॥ विहितंयदकामानां कामात्तद्विगुणंभवे
दितिदेवलस्मरणात् जातिमात्रब्राह्मणवधकर्तुर्विप्रस्यतु जातिमात्रंयदा
हन्यादिति पूर्वोक्तबोध्यम् भविष्येयद्वापराशरोक्तेनप्रायश्चित्तेनशुद्ध्यति

वे इत्यादि पूर्वोक्त तीन प्रकार का प्रायश्चित्तहै सो क्षत्री वास्ते हि विधान कीयाहै । और ब्राह्मण को कामनाते ब्राह्मण वध विषे दूणा व्रत करणा कियाहै ॥ सोई लिखया है विहितमिति जो प्रायश्चित्त कामनातेबिना कीतेहोए पाप विषे किया है सोई का मरुत पाप विषे दूना हुंदाहै एहदेवलजीका कहनाहै इसते और जातिमात्र ब्राह्मणका वध करण वाला जो ब्राह्मणहै तिसको (जातिमात्रंयदाहन्यात्) इत्यादि पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जाण एह अर्थात् ब्राह्मण जातिमात्र ब्राह्मणको मारकरके पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करके शुद्धहुंदाहै और भविष्यविषे ऐसालिखयाहै कि पराशरजी करके कथित जो प्रायश्चित्तहै तिसके करणे करके शुद्धहुंदाहै अर्थात् जातिमात्र ब्राह्मणको मार करके पराशरोक्त व्रत करे शुद्धिवास्ते

४६ श्रीगणेशोपनिषद्वाचिनी ब्राह्मणविधानं भाग्यं चतुर्विधं ॥ १ ॥

सीजिते लिखयाहे चातुर्विद्येति चारविधा करके तुक जो ब्राह्मणहै सो जेकर ब्रह्म घातक होवे
कथा ब्राह्मणको मारे तद उसके वास्ते एह विधान लिखयाहे कथा समुद्रसेतुको गमन करका
एह प्रायश्चित्त उसको उपदेश करे और उह ब्राह्मण कथाकरे कि समुद्रके बीचते लंकाका
मार्ग जो सेतुबंधस्थानहै तिसका दर्शन करे १ और उसका प्रमाण दश योजन चौडाहै
और सो योजनलंबाहै और जब सेतुबंधके दर्शन वास्ते घरते चलेतो मार्ग विषे चार वर्षोकी
भिक्षा ग्रहण करे और नीच कर्म करण वालेको त्याग करके और सभके घरते भिक्षा
लेलेवे और छतडी उपानह अर्थात् ययराकी रक्षाकरणबाला जोडा इनकोभी न धारण
करे और भिक्षाके समय ऐसा कहै किमै बडापापीहोई और मेने बडे महापतक करेहैं और
र भिक्षा वास्ते तुमारे द्वार विषे स्थितहां ऐसे ब्रह्म घातकको भिक्षा देवो इस प्रकार द्वार २

तद्यथा चातुर्विद्योपपन्नेतुविधानंब्रह्मघातके समुद्रसेतुगमनं प्रायश्चित्तं
विनिर्दिशेत् सेतुबंधंतुसंपश्येत्लंकामार्गमहोदधेः ॥ १ ॥ दशयोजनवि
स्तीर्णैशतयोजनमायतम् ॥ सेतुबंधपथेभिक्षांचातुर्वर्ण्यात्समाचरेत् वर्ज
यित्वाविकर्मस्थाञ्छत्रोपानद्विर्वाजितः अहंदुष्कृतकर्माच्च महापातक
कारकः वेश्मद्वारेषुतिष्ठामि भिक्षार्थीब्रह्मघातकः गोकुलेषुचगोष्ठिषुग्रामि
षुनगरेषुच तपोवनेषुतीर्थेषुनदीप्रस्त्रवणेषुच एतत्प्रख्याप्ययत्नेनपु
ण्यगत्वातुसागरं ब्रह्महाविप्रमुच्येतस्नात्वातत्रमहोदधौ तदापूतोऽगृ
हंप्राप्यदत्त्वाब्राह्मणभोजनम् जप्त्वाचसुपवित्राणिपूतात्माप्रविशे
दगृहं गवांचापिशतंदद्याच्चातुर्विद्यायदाक्षिणाम् ॥ एवंशुद्धिमवाप्नोति
चातुर्विद्यानुमादितः ॥

मेकहकर भिक्षाग्रहणकरे और फेरगौयांविषे अथवागौस्थानविषे ग्रामोंविषे नगरोंविषे तपोवन
विषे तीर्थोंविषे नदीयोंविषे प्रस्त्रवण योहैनाडे तिन्हाविषे इनमथानोंमें जाकर अपना पाप प्रग
ट करे और इस प्रकार फिरते २ बडेयत्नकरे अनिपवित्र जोसमुद्रहै तिसको प्राप्तहोवे ऐसे
तिसस्थान समुद्र विषे स्नानकरके ब्रह्महामुक्तहुंदाहै अर्थात् विधिपूर्व सेतुबंधका दर्शन करणे
करके और तहां समुद्रका स्नानकरणे करके ब्रह्महत्या पाप दूरहुंदाहै इति ॥ और इसप्रकार
करके तदपवित्र होयेया २ फेर अपने घरको प्राप्तहोकरके ब्राह्मण भोजन देवे और पवित्रजो
मंत्रहै तिनके जप करणे करके पवित्रात्मा होकर गृहविषे प्रवेश करे और शत १०० गौ चा
तुर्विद्या पठण करण वाले ब्राह्मणकेतांयों देवे और दक्षिणा देवे और इस विधि करके शुद्धहुं
दाहै चातुर्विद्याकरके अनुब्रह्मका विषय होआ होआ

विष्णुादिति जिसपुरुषकाविष्णुपत्रके उत्तरपासे निवास किहाई तिसको सेतुबंधका दर्शन करणायोग्यहै एइपराशरजीका मतहै अर्थात् जोपुरुषविष्णुचल पर्वतके उत्तरपासे निवास करताहै तिसते जेकर ब्रह्महत्याहोजावे तद उह पुरुष सेतुबंधरामेश्वरका दर्शन कर्के और समुद्रकालानकर्के शुद्ध हुंदाहै सेतुबंधकीप्रशंसाकदेहै रामेति जिसते रामचंद्रजीकी आज्ञाते अनेक वस्तुके संचय कर्के सो सेतु रचयाहै इसकर्के तिसको देखकर ब्रह्महत्याते पुरुष मुक्त हुंदाहै भविष्यत्पुराणविषे लिखयाहै जातिमात्रेति कि जातिमात्र ब्राह्मणके हत कांतयां होयां मारणवाला जेकर धनहीन होवे तदतिसको अंगिरा जीने तीन वर्षका व्रत प्रायश्चित्तकियाहै अर्थात् निर्धन पुरुष तीन वर्ष के व्रतकर्के शुद्धहो जंदाहै इति सोई जैसेअतइति अंगिराजी कहतेहै की इसतेअर्नंतर इंद्रादिपूजन जो व्रतहै तिसको कहताहां कि जिसको पडकर्के ओर सुन

विंध्यादुत्तरतोयस्यनिवासः परिकीर्तितः पराशरमतंतस्यसेतुबंधस्यदर्श
नम् ॥ रामभद्रसमादेशाल्लक्षसंचयसंचितम् ॥ सेतुदृष्ट्वामहापुण्यं ब्रह्महा
परिमुच्यते ॥ इति भविष्यत्पुराणे ॥ जातिमात्रेहतेविप्रहंतुर्वैनिर्धनस्यच
प्रायश्चित्तंत्वांगिरसंत्रैवार्पिकमुदाहृतम् ॥ तद्यथा ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि
कृच्छ्रं शक्रादिपूजितम् यदधीतं श्रुतं वापि पाधान्मोचयते नरम् १ युक्तस्त्रिप
वणस्त्रायास्त्रायान्मौनव्रतेस्थितः प्रातः स्नातः समारंभं कुर्याज्जप्यस्य यत्न
तः २ सावित्रीं व्याहृतीं स्तिम्रो जपेदष्टसहस्रकम् ओंकारमादितः कृत्वा रूप
रूपं तथा न्ततः ३ शल्पविद्धइवासीनः पिवेद्गव्यं पयः सकृत् गव्यस्य पय
सोलभिगव्यमेव परं दधि ४

कर्के पुरुष पापते मुक्तहुंदाहै अथवा जो व्रत पडयाहोया और सुनेयाहोया पुरुषको पापते मुक्तकरादेदाहै १ इति ऐसाप्रकार व्रतकाहै की पुरुष युक्त होकर तीन काल स्नान करणवालाहोवे और स्नानके समय विषे मौन व्रत धारकर स्नानकरे और प्राता काल विषे स्नान कर्के जपका आरंभ यत्नते करे २ जपमंत्र कहतेहां ओंकारमिति(ओंभूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवम्यधीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओम्)तीनव्याहृतियांके साथ आठहजारगायत्रिकाजपकरे और ओंकारको प्रथम उच्चारण कर्के फेर रूप २ विषे फेर अंतर २ विषेभी ओंकारका उच्चारणकगुणायोग्यहै ३ और वाणकर्केजोबिद्धहै तिसकी न्यायीं स्थित होकर जपकरे और एक काल विषे गौकादूधपना करे और जेकरगौ कादूधनप्राप्त होवे तद गौका दधि एक काल पानकरे ॥ ४

श्रीर जेकर दधिभीन प्राप्तहोवे तद गौकीछाहपानकरे और जेकर छाहभीन प्राप्तहोवें तद यावक भक्षणकरे ५ क्या कि गोमूत्रविषे जौभिगोकरभक्षणकरे और इनमें कोयीएकप्राप्तजो होजावे उसी के साथ दिन व्यतीत करलेवे और एहएकांतकछूहै और आप अंगिराजीने दिखायाहै ६ इति कैसाहै एह व्रत संपूर्ण पापके नाश करण वालाहै और बहुत उत्तमहै और इसव्रतका नाम वज्र इहकिहाहै ॥ और जैसे काल किहाहै तिसके कारण ब्राह्मण हि किहेहै अर्थात् इसव्रतका काल नहि दिखाया कि कितना चिर करण योग्यहै इस व्रतको ब्राह्मण पाप देखे कर्के जैसा जिसको योग्य होवे तैसाहि उप देश कर देवे इति ॥ औरतुपुना जोसुमं तुजीका वाक्यहै ब्रह्महेति ब्रह्महा जोपुरुष है सोसंवत्सर तथा एक वर्षव्रत करे और इस क्रम कर्के वर्ष व्यतीतकरे कि भूमी ऊपर शयन करण और तीन कालविषे स्नान करण

दध्रोभावेपिवेत्तक्रंतक्राभावेतुयावकम् एषामन्यतमं यद्यदुपपद्येत तद्भजेत् ५
गोमूत्रेणसमायुक्तं यावकं यः प्रयोजयेत् कृच्छ्रमेकांतिकमिदं दृष्टमंगिरसास्वय
म् ६ सर्वपापहरंदिव्यं नाम्नावज्जइति स्मृतम् । कालस्यतु यथोक्तस्य ब्राह्मण
एवकारणमिति अत्रवज्रकृच्छ्रे ऽनुक्तस्य कालस्यप्रयोगे पार्षदाब्रह्मणा एवस्था
पनहेतुरित्यर्थः यत्तुसुमंतुवचनम् ॥ ब्रह्महासंवत्सरंकृच्छ्रचरेदधः शार्यात्रिप
वणीकर्मवेदको भैक्षाहारोदिव्यनदीपुलिन संगमाश्रमगोष्ठपर्वतप्रस्त्रवण
तपोवनविहारीस्यात् । स्थानवीरासनेनसंवत्सरे पूर्णे हिरण्यमणिगोधान्यति
लभूमि सर्पाणि ब्राह्मणेभ्यो ददत्पूतो भवतीति ॥

और अपना ब्रह्म हत्या रूपजो कर्महै तिस को सभके आगे विख्यात करण और भिक्षामां गकर भोजनकरना और दिव्यनदी जो गंगा जीहै तिसके कनारे विषे अथवा गंगाजीके संगम विषे अथवा ऋषियों के आश्रम विषे अथवा गौयोंके स्थान विषे ॥ अथवा पर्वतकी गुफा विषे ॥ अथवा पर्वतकी नदी के कनारे ॥ अथवा तपो वन विषे विहारकरे अर्थात् इन स्थान विषे विचरता रहे ॥ और स्थान विरासन क्या दिन विषे खलाते रहणा और रात्रि विषे बैठ रहणा भजन पूर्वक इस विधि कर्के वर्षके समाप्तहोया सुवर्ण मणिगो अन्न तिल पृथिवीघृत एह सभ अपनी शक्ति अनुसार ब्राह्मणा केतार्यादेवे तदपवित्र हुंदाहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारितः प्रायश्चित्त भागः प्र . १३ ॥ टी . भा . ॥ ४९

और तदभी एह प्रायश्चित्तजातिमात्र ब्राह्मण वध विषे मूर्ख धन वाला जो हंता है तिसकोदि
स्वाया है इति और वशिष्ठजीका वचन है द्वादशेति कथावारा १२ दिन जल पान करे
और वारा १२ दिन उपवास करके रहना इति ॥ और एह प्रायश्चित्त
योमनविषे ब्रह्महत्या करणोहा प्रथम निश्चय कर्के पीछे आपहि विचार
करके दिसाते उपराम होजावे उसके वास्ते जानणे योग्य है ॥ और जो फेर किहा है पं
ढं त्विति कि नपुंसक ब्राह्मण को मार कर्के शूद्र हत्या का व्रत करे अथवा चांद्रायणव्र
त करे अथवा अपनी शुद्धि वास्ते दोपराक व्रत करे एह त्रिंशति मतका वाक्य है इति
और एह प्रायश्चित्तजिम के पुरुष भाव का ज्ञान नहि है उस के ज्ञात वध विषे जानना ॥
और इसीके विषयके अज्ञातवधविषे बृहस्पतिजीने किहा है अरुणेति जो पुरुष ज्ञानतो बिना

तदपिहन्तु मूर्खस्य धनवतो जातिमात्रविप्रव्यापादनेद्रष्टव्यम् ॥ यत्तु पु
नर्वसिष्टवचनम् । द्वादशरात्रमवभक्षो द्वादशरात्रमुपवसेदिति तन्मनसा
ध्यवसितब्रह्महृत्यस्य स्वतएवोपरब्रजिघांसस्य वेदितव्यम् ॥ यत्पुनः । पं
ढंतु ब्रह्मणंहत्वा शूद्रहत्याव्रतंचरेत् चांद्रायणं प्रकुर्वीत पराकद्वयमेव चेति
त्रिंशन्मतवचनम् ॥ तदप्रत्यानेयपुंस्त्वस्य सप्रत्ययवधे द्रष्टव्यम् ॥
अत्रैव विषये अप्रत्ययवधे बृहस्पतिराह अरुणायाः सरस्वत्याः संगमे लो
कविश्रुते श्रुद्धेयत्रिषवणस्त्रार्या त्रिरात्रोपोषितो द्विज इति ब्रह्महत्याव्रता
तिदेशमाह याज्ञवल्क्यः ॥ यागस्थक्षत्रविट्घातीचरे ब्रह्महाणिव्रतम् गर्भ
हाचयथावणं तथेत्रेयीनिषूदकः ॥ १ ॥

नपुंसक कोमारे उह संसारविषे बहुत प्रकट जो अरुणा नदीका और सरस्वतीका संगम है उ
सस्थान विषे जाकर तीन काल नित्य स्नान करे और तिस उपवास व्रत करे तद ब्राह्मण शुद्ध हुं
दा है इति ॥ और ब्रह्महत्या व्रतका अतिदेश याज्ञवल्क्य जीने किहा है अतिदेश नाम उसका
है कि अन्यत्र मै जो सिद्ध होवे उसको अन्यत्र जगामै स्थापन करणा ॥ यागस्थेति कि यज्ञवि
षे स्थित जो क्षत्री और वैश्य है तिनके मारण वाला पुरुष ब्रह्महत्या व्रत करे अर्थात् जो व्रत
ब्रह्महत्याविषे लिखया है उस व्रतके कर्णें कर्के पवित्र हुंदा है और तैसेहि गर्भके मारण वा
ला और तैसेहि आत्रेयीके मारण वाला जो वर्ण होवे उसी वर्णके अनुसार ब्रह्महत्या व्रत करे
तद शुद्ध हुंदा है और इसस्थानविषे आत्रेयी शब्द कर्के अत्रिगोत्रको स्थापयहण है इति ॥ १ ॥

५० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और इसका अर्थ अपराधविषे लिखयाहैं कियागस्थयोःक्या यज्ञविषे अधिकारपूर्वक कर्त्ताभावकर्त्ते जो स्थितहैं क्षत्री वैश्य तिनके मारण वाला पुरुष ब्राह्मणकी हत्याविषे नाना प्रकारके जो व्रतविधान कीयेहैं उनके मध्यमे एक व्रतको करे तद यज्ञ स्थित क्षत्री और वैश्यकी हत्याते मुक्तहुंदाहै इति ॥ और इसस्थान विषे यज्ञकर्त्ते सोमयागका ग्रहण कोताहै और इस वास्ते सो जो क्षत्रीहैं सोमयागविषे अपने शस्त्रोंकोस्थापनकर्त्ते ब्राह्मणोंके शस्त्र यो कुशाश्रु वा कमंडलु तिन्हांकेकहि ब्रह्माके स्वरूप कर्त्ते ब्राह्मणव्रतकर्त्ते यज्ञमे स्थित हुंदाहै अर्थात् यद्यपि क्षत्रीहै तद भी सोम यागविषे ब्राह्मण स्वरूप हुंदाहै इसकारणते तिसके मारणकर्त्ते ब्रह्महत्या व्रतकरणायोग्यहै और श्रुति वाक्य कर्त्ते यजमान क्षत्रीको सोमयज्ञविषे ब्राह्मणत्व

अस्यार्थोऽपराधे यागस्थयोर्यागाधिकारपूर्वकर्तृत्वेनस्थितयोः ॥ क्षत्रियवैश्ययोर्हीतायद्ब्रह्मघातिनोनानाप्रकारव्रतंविहितं तच्चरेत् यागोत्रसोमयागोविवाक्षितः तत्क्षत्रंनिधायस्वान्यायुधानिब्राह्मणएवायुधैर्ब्रह्मणोरूपेण ब्रह्मभूत्वायज्ञमुपावर्त्तत इति श्रुतिवाक्येनक्षत्रियस्ययजमानस्य सोमयागंप्रति ब्राह्मणत्वमित्यभिधानादेवंच दीक्षणीयायाऊर्द्धप्रागवभृथान्ताद्वर्त्तमानयोः क्षत्रियविशोर्हीतुर्व्रतंमतदतिदिश्यत इतिमंतव्यम् ॥ यदापिच वासिष्टेनोक्तम् ब्राह्मणंचित्रेयीस्त्रियंहत्वाभ्रूणहत्याप्रायश्चित्तं सवनगतौच राजन्यवैश्वाविति ॥ तत्रापिकृतदीक्षणीयावैवसवनगताविति विवक्षितम् ॥

प्रतिपादन कोताहै अर्थात् सोमयागविषे क्षत्रीभी ब्राह्मणका रूपहै इसकारणते दीक्षणीया विधिते उपरंत और अवभृथांत कि यज्ञांत स्नानते पूर्व वर्तमान जो क्षत्री वैश्यहैं तिनके मारण वालेको एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ऐसामन्त्रणा चाहिं इति और चपुना जो वाशिष्ठ जीने किहाहैं ब्राह्मणो मिति क्या ब्राह्मण की स्त्रीको अथवा अत्रिगोत्रकी जो स्त्रीहैं तिसको मारकर्त्ते गर्भहत्या प्रायश्चित्त किहाहै और तैसेहि यज्ञ विषे प्रात जो क्षत्री वैश्यहैं तिन का हत कर्त्ते गर्भहत्या प्रायश्चित्तजान्त्रणा और इसस्थानविषे भ्रूणहत्याशब्दकर्त्ते ब्रह्महत्याका ग्रहण हुंदाहै ॥ और तिस विषे भी दीक्षणीया विधि के उपरंतहि यज्ञ विषे प्रातक्षत्री वैश्यका ग्रहण कोताहै ॥

और जो पुरुष जिस वर्ण का गर्भ होवे और जिस वर्ण की आश्रयणी होवे उह मारण वाला पुरुष उसी वर्ण के वधका प्रायश्चित्त करे अर्थात् ब्राह्मण वर्णका जेकर गर्भ और आश्रयणी हावे ॥ तद ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करणेकके शुद्ध हुंदाहै ॥ और जेकर क्षत्रीका होवे तद क्षत्री वधका प्रायश्चित्त कर्के और वैश्य हावे तद वैश्य वधका ॥ और शूद्र होवे तद शूद्र वधका प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ॥ और जेकर अज्ञात होवें तदभी ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करणा योग्यहै इति ॥ और मनुजानेभी अन्य किसी निमित्तके होया ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त का अति देश कहाहै अर्थात् ब्रह्महत्याते भिन्नपाप विषे भी ब्रह्महत्या व्रत किहाहै ॥ सोयो लिखयाहै हत्वेति अविज्ञात गर्भ को मार कर्के एह जो पूर्वोक्त व्रतहै तिसकोकरे क्या जिस गर्भ विषे बालक कन्याका ज्ञान नहिहै ॥ उसको ॥ और ईजान क्या यजमान जो

यश्च यस्य वर्णस्य गर्भमाश्रयणी च हन्ता स तद्वर्णवधप्रायश्चित्तं कुर्यात् ॥ मनुस्तु निमित्तान्तरेष्वपि ब्रह्महत्या व्रतातिदेशमाह हत्वा गर्भमविज्ञातमेतदेव व्रतं चरेत् राजन्यवैश्यावीजानावाश्रयणीमेव च स्त्रियम् ॥ उक्ता च वानृतं साक्ष्ये प्रतिरभ्यगुरुतथा अपहृत्य च निःक्षेपं कृत्वा च स्त्रीसुहृद्वधमिति साक्ष्येऽनृतभाषणं तु यत्र व्यवहारेऽसत्यवचनेन वर्णिनां वधप्राप्तिस्तद्विषयमेतत् प्रायश्चित्तस्यातिगुरुत्वात् प्रतिरंभः क्रोधावेशः निःक्षेपश्च ब्राह्मणसंवंधी ईजानौ यजमानौ क्षत्रियवैश्यां गर्भमविज्ञातं स्त्रीपुरुषभावेनेत्यर्थः गर्भश्चायं ब्राह्मणस्यैव तथाचापस्तम्बः ॥ गर्भं च तस्याविज्ञातमिति ॥ तस्य ब्राह्मणस्येत्यर्थः ॥

क्षत्री वैश्यहैं तिनको मार कर्के अर्थात् यज्ञकरणवाले जो क्षत्री वैश्यहैं ॥ अथवा अत्रिगोत्र विषे उत्पन्न जो स्त्रीहै तिसको हत कर्के अथवा उगाही विषे झूठ बोल कर्के ॥ अथवा गुरुके साथ वैर करणे कर्के पूर्वोक्त व्रत करणा योग्यहै ॥ अथवा अमानत किसी की हरणे कर्के अथवा स्त्री को और संवंधी को मार कर्के भी एह पूर्वोक्त व्रत करणे कर्के पवित्र हुंदाहै परं तु साक्ष्य विषे यो झूठबोलणा तिसमै इतना विशेषहै कि जिस व्यवहार विषे असत्य बोलने कर्के वर्णको वधकी प्राप्ति होवे उसस्थान विषे एह व्रत जानना किसवास्ते कि उनको प्रायश्चित्त बहुत होनैते ॥ और चुराईहोई अमानत ब्राह्मण को जेकर होवे तद इसव्रत का ग्रहण हुंदाहै और जेकर एह गर्भ ब्राह्मण काहै ऐसा ज्ञान होवे और स्त्रीपुंभाव कर्के ज्ञानना होवे तदभी एही व्रत किहाहै ॥ तैसेहि आपस्तंबजीने किहाहै गर्भमिति ॥

५२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० ॥ भा०

और स्त्रीपुंभावसे गर्भका ज्ञान होवे तद जैसा चिन्ह होवे तैसाहि प्रायश्चित्त जानना और जेकर गर्भविषे कन्याका चिन्ह होवे उसके मारया उपपातक प्रायश्चित्त जानना और इससे विना अर्थात् पुरुषका गर्भहै उस स्थान विषे ब्राह्मण मारणे वालेको जो एह पूर्व व्रत किहा है सोयी व्रत किहाहै और इस विषे एह विचारहै कि एह जो पाप कहेहैं सो ब्रह्म हत्याके समानहैं इस वास्ते इन विषे नाना प्रकारके जो ब्रह्म हत्याके व्रतलिखेहैं तिनके मध्यमे विचार कर्के एक किसी व्रतको ग्रहण करणा और द्वादश वार्षिक का ग्रहण नहि करणा योग्य किस वास्ते कि इस विषे कोयी विशेष कारण नहिहै इस कारणसे अन्यका ग्रहण जानना ॥ और जो एह आपस्तम्ब जीने ब्राह्मणका गर्भ और अत्रिगोत्रकी जो स्त्रीहै तिनके मारण वाले पुरुषको वारां वर्षकाहि व्रत किहाहै सो केवल एक दिखाने वास्तेहै कुछ नियमवा

विज्ञातितुगर्भेयथालिंगप्रायश्चित्तं स्त्रीलिंगेहतेउपपातकप्रायश्चित्तमितर
व्रतुब्रह्मघ्नोव्रतमेतदेवव्रतम् इत्यनन्तरोक्तं नानाप्रकारंब्रह्महव्रतंपरामृश
तिनतुद्वादशाब्दिकमेवविशेषहेतुत्वाभावात् यत्त्वापस्तम्बेनब्राह्मणस्यग
र्भमात्रेयीघ्नतोद्वादशाब्दिकमुक्तं तत्प्रदर्शनार्थननियमार्थतथाहिसतिस
कृदभ्यासेनप्रत्ययाप्रत्ययानुबंधतारतम्यादिकृतहनेनद्वादशवार्षिकव्रतमे
वकार्यमिति विषयसमीकरणमन्यायमापद्येत व्रतग्रहणाच्चप्रायश्चित्त
त्तातिदेशः तेनातिदिष्टप्रायश्चित्तेऽपित्याद्विजातिकर्मभिरधिक्रियतएव

स्ते नहिहै इस अर्थको स्पष्ट कर्तेहैं ॥ तथाहीति ॥ और तैसाहि एकवार कर्के और अभ्यास कर्के प्रत्ययदि क्या ज्ञाताज्ञात कर्के वधके कीतयां होयां द्वादश वार्षिकहि व्रत करणेसे सम प्रायश्चित्तका विषय तुल्यहि होया तिस कर्के अन्याय प्राप्त हुंदाहै अर्थात् जो २ प्रायश्चित्त जिस २ पाप विषे लिखायाहै सो २ यथा योग्य स्थान विषे जानना और ऐसानहि करणा कि पाप औरहै और प्रायश्चित्त और कहणा और जेकर ऐसे विषय सभका एकत्र होजावे तद अपने को पाप हुंदाहै और इसस्थान विषे व्रत ग्रहणते प्रायश्चित्तका ग्रहण कायांहै और तिस कर्के प्रायश्चित्तके अतिदेश कीतयां पातित न होनेते ब्राह्मणके कर्माका अधिकार हुंदाहै अर्थात् एह पापों भोहै तथापि आपण निसकर्मोदि कर्के रहणा

॥ भीरपुवीस्कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ५३

और पूर्वजो लिखयाहै किस्त्री वधकर्के और सुहृदवध कर्के एही प्रायश्चित्तहै इस विषे केवल सामान्य स्त्रीका ग्रहणनहि कीता और जेकर सामान्य स्त्रीका ग्रहणहोवे तद अत्रीगोत्रकी स्त्री काजो ग्रहणहै सोव्यर्थ होजंदाहै किसवास्ते कि स्त्री शब्दकर्के आत्रेयीकाभी ग्रहणहुंदाहै । इस कारणते । अंगिराजीनेविशेष कहाहै आहिताग्नेरिति अग्निहोत्र करणवाला जो उत्तमब्राह्मणहै तिसकी पति व्रता स्त्रीको मारकर्के और तेसेहि आत्रेयीको मारकर्के ब्रह्म हत्याव्रतकरे अर्थात् जो कोयी पुरुष ऐसी स्त्रीकावधकरे सो पुरुषब्रह्महत्याविषे जो व्रतकहाहै उस व्रतकर्के शुद्धहुंदाहै और विशेष इस विषे पराशरजीने किहाहै सवनस्थामिति किसी व्रत विषे स्थित जौस्त्रीहै तिसको हतकर्के ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करे इति । और विष्णुजीने किहाहै एतदिति पुरुष ब्राह्मण को मार कर्के वागं वर्षं प्रमाण एह जो महा व्रत किहाहै तिसको करे अथवा अत्रिगो

कृत्वाचस्त्रीसुहृद्वधमित्यत्र नस्त्रीमात्रं विवक्षितम् आत्रेयीग्रहणस्यानर्थक्यप्रसंगात् ॥ अतएव तद्विशेषमाहांगिराः ॥ आहिताग्नेर्द्विजाश्रयस्य हत्वापत्नीमनिंदितां ब्रह्महत्याव्रतं कुर्यादत्रेयीघ्नस्तथैव च पराशरस्त्वन्यविशेषमाह ॥ सवनस्थांस्त्रियं हत्वा चरेद्ब्रह्महणिव्रतम् ॥ विष्णुः ॥ एतन्महाव्रतं ब्राह्मणं हत्वा द्वादश वत्सरान्कुर्यादत्रिगोत्रानार्षीं वा मित्रं वा अनेन चात्रिगोत्रेत्यात्रेयीत्युक्तं भवति ॥ वसिष्ठः पुनरन्यदप्याह ॥ रजस्वलामृतुस्नातामात्रेयीमाहुरिति वदन्न जो दर्शन प्रभृतिषोडशाहोरात्राणि यावदात्रेयी भवति इति गमयति अत्र ह्येकमपत्यं भवतीति व्युत्पत्तिप्रदर्शनं बंध्याव्युदासार्थं ॥ अन्यथानर्थकस्यादितिकेचित् ॥ व्युत्पत्तिमात्रपरमेतदित्यपरे

त्रकी स्त्रीको अथवा मित्रको मार कर्के द्वादश वर्ष करे अपनी पवित्रतावास्ते ॥ और इस कर्के अत्रिगोत्रकी जो स्त्रीहै उसका नाम आत्रेयी हुंदाहै ऐसे किहाहै इति । और वसिष्ठजी ने होर अर्थ आत्रेयीका कीताहै रजस्वलेति किन्तु स्नाता जो रजस्वलाहै तिसको भी आत्रेयी कहतेहैं ॥ और इस विषे रजो दर्शनते आद लेकर सोलां दिन रात्रि पर्यंत आत्रेयी हुंदाहै ऐसे भी जानना और इसकृतु विषे एकसंतान हुंदाहै एह जो व्युत्पत्ति दिखायीहै सो बंध्याके निषेदवास्तेहैं ॥ इस कारणते बंध्याजो आत्रेयीहै तिसका वध करणे कर्के एह पूर्वाक प्रायश्चित्त नहि जानना और जेकर ऐसे नहोवे तद अनर्थक हुंदाहै एह कैयांकामतहै । और अन्योंके मत विषे व्युत्पत्तिमात्रपरहै इसते बंध्याभी होंवे तद भी आत्रेयी हुंदाहै ।

५४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और अर्थ कीता है कि नहि है कार्यकरणों के योग्य तिस दिन जिसके तिसकानाम है अत्रेयी एभी जानना अर्थात् किसीके मतविषे अत्रेयी ऐसा नाम है ऐसी स्त्रीके वधकर्के पूर्वोक्त ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त जानना ॥ और जो पुरुष ऋतु स्नाता स्त्रीको हतकरे सो ब्रह्महत्या व्रत करने कर्के प बित्र हुंदा है ॥ और अब आत्रेयीतेभिन्न स्त्रीके वध विषे अन्य व्रत किहा है तिसोने क्या बिशिष्ट जीने अत्री गोत्रकी और ऋतु स्नाता इनते भिन्नस्त्रीके वध विषे और हि प्रायश्चित्त आगे कि हा है सो योजेसे आत्रेयीते भिन्नजेकर ब्राह्मणीस्त्री होवे तिसके मारण वाला पुरुष क्षत्री हिंसा वि षे जो व्रत किहा है तिस व्रत को करे ॥ और जेकर आत्रेयीते भिन्न क्षत्रीकी स्त्री होवे उसके मारण वाला पुरुष वैश्य हिंसा विषे जो प्रायश्चित्त किहा है तिसको करे ॥ और आत्रेयीभिन्नजे कर वैश्यकी स्त्री होवे उसके मारण वाला पुरुष शूद्र हिंसा विषे जो प्रायश्चित्त किहा है तिसप्रा यश्चित्त को करे ॥ और आत्रेयीभिन्न जेकर शूद्र की स्त्री होवे उसके मारण वालेने वर्षका जो

नसंतिकर्मयोग्यानि त्रीणि दिनानियस्याः सात्रेयीत्यपि ॥ अनत्रि
यीवधेव्रतांतरातिदेशमाहसएव ॥ अनत्रिरीराजन्यहिंसायां राजन्यां
वैश्यहिंसायां वैश्यां शूद्रहिंसायां शूद्राहत्वा संवत्सरमिति ॥ अयमर्थः
अनत्रेया ब्राह्मणीहत्वा राजन्यहिंसायां यद्गतमुक्तं तत्कुर्यादिति एवमुत्तरत्रा
पि ॥ शूद्राहत्वा संवत्सरं ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तकार्यम् यत्तु स्त्रीगर्भस्योपपात
कत्ववचनं तदभिव्यक्तस्त्रीगर्भस्यवधेद्रष्टव्यम् (स्त्रीरूपोगर्भः स्त्रीगर्भः)
विष्णुः समुत्कर्षानृते गुरोश्चालीकनिर्वन्धे तदाक्षरेणामासंपयसावर्त्तत अ
ल्पापराधविषयमेतन्महापराधे ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तमेव अतएव भगवान्

याज्ञवल्क्यो

ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त है सो करणा योग्य है अर्थात् आत्रेयी भिन्न शूद्रकी स्त्री को मार
कर्के इस प्रायश्चित्त करने कर्के पबित्रहुंदा है इति और स्त्रीरूपगर्भ की हिंसाको
उपपातक प्रतिपादन करण वाला जो वाक्य है सो प्रकट स्त्रीरूपगर्भके वधविषे
दिखाया है अर्थात् जिसस्थान विषे एहस्त्री है एहसभ प्रकट होवे उसगर्भ की जो हिंसा है
सो उपपातक हुंदा है और विष्णुजीने किहा है समुत्कर्षेति कि गुरुते अभिमान कर्के
बड़ा बणना और गुरुआगे झूठ वाक्य कहना और झूठी बात बनावना करणी इस प्राय
श्चित्त विषे क्षाराजल पान कर्के एकमहीमा व्यतीत करे अर्थात् एकमहीना केवल क्षाराजल
पीवे तदपबित्रहुंदा है और एहप्रायश्चित्त छोड़े अपराध विषे जानना और बहुत अपराधविषे
ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त करणा योग्य है और (इसी कारणतेहि भगवान् याज्ञवल्क्यजीने

॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ६६

ब्रह्महत्याके तुल्याके हे जो तिरस्कार करणा इत्यादि पाप हैं तिनका भिन्न २ प्रायश्चित्त नहि किहा है अब इसमें होरविशेष कहते हैं चरेदिति किजो पुरुष किसीके वध वास्ते आया है और जेकर उह नही भी मृत होवे तदभी उह वधे वधके अनुसार प्रायश्चित्त करे अर्थात् जिस वध की मारणी वास्ते उद्यम करे उस वध की हत्याका प्रायश्चित्त करणा योग्य है इति और यदकोई पुरुष ब्राह्मण वध विषे उद्यम करे और किसी विघ्न वशते नहत करे और नहि शास्त्र बलते अर्थात् कुछ शास्त्र विचार कर्के ब्रह्महत्याके दोषके भयते ना त्याग देवे किंतु विघ्न होया ब्राह्मणका वध नाकरे तदभी उह पुरुष ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त करे तद शुद्ध हुंदा है और इस कारणते ऐसा योग्य नहि क्या व

ब्रह्महत्यादिसमत्वेनाभिहितानां गुर्वधिक्षेपादीनां पृथक् प्रायश्चित्तं नोक्तवान् ॥ किंच ॥ चरेद्भूतमहत्वापि धातार्थं चेत्समागतः यथावर्णमित्यनुवर्तते यदि ब्रह्मवधे प्रवृत्तो विघ्नवशान्न हन्ति न तु शास्त्रबलात् तदापि ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तं चरेत् न च वधं कृतवतोऽकृतवतश्चैकमेव व्रतं युक्तं तेनाघ्नतः पादोनं कल्प्यम् एवं क्षत्रियादिवधेऽपि एवं केनचिद्ब्राह्मणपरावृत्तयेदण्डादिपातितं तेनैव दैवान्मृतश्चेत्तथापि मारणार्थसमुद्योगाभावादल्पमेव तस्य प्रायश्चित्तमित्यपि तुल्यन्यायात्कल्पन्ते केचित् यत्तु गौतमेनोक्तम् पृष्टश्चेद्ब्राह्मणवधेऽहत्वापीति तत्र ब्राह्मणग्रहणं प्रदर्शनार्थम् ॥ त्वं ब्राह्मणं हननाय गतोसि त्वया ब्राह्मणोहतो नवेति पृष्टो मयानहत इति कथयन्नपि तत्प्रवृत्तिवशात् प्रायश्चित्तीत्यर्थः

५ करणवाले को और जिसने वध नहि कीता उसको भी एक हिव्रत योग्य है इस वास्ते जो वध नाकरे तिसको पादोन प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्य है और इस प्रकार क्षत्रियादि वध विषे भी जानना और किसेने ब्राह्मण हटाणे वास्ते दंड चलाया परंतु सो उसी कर्के मर्गिया उस जगामी थोडा अर्थात् पादोन हि व्रत करवाणा जिस कर्के उसकी मारण विषे प्रवृत्ति नहि और गौतम जीने किहा है पृष्टेति ब्राह्मण वध विषे पुच्छिया होया क्या तुं ब्राह्मण मारण वास्ते गयाथा तैने ब्राह्मण को मारया है किनहि मारया उह मैने नहि मारया ऐसे भी कहे तद भी मारण वास्ते प्रवृत्त होनेते प्रायश्चित्त हुंदा है

५६ ॥ श्रीरणवीरकारेत प्रायाश्चित्त भाग प्र० १३ ॥ टा० भा० ॥

श्रीरं पृष्ठः इहां सृष्टः एह भी पाठहै इस कर्के ब्राह्मण वधते फिरयावे ऐसा अर्थ
करणा ॥ और इस विषे ब्राह्मण का ग्रहण केवल दृष्टांत मात्र है किंतु औरों वास्ते
भी ऐसा जानणा इसमें होर विशेष कहते है किंचद्विगुणमिति कि यज्ञ स्थित
ब्राह्मणके मारयां दूणा ब्रत करे क्या सोम यज्ञ विषे लयाहैदीक्षा जिसने ऐसे ब्राह्मण
के वध विषे दूणा ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करे और ऐसेहि यज्ञ स्थित ब्राह्मणके वध विषे प्रवृत्त
मात्र पुरुष को भी द्विगुण पादोन ब्रत किहाहै अर्थात् यज्ञ स्थित ब्राह्मणके मारण को उद्यत
होवे मारेनहि तद भी दूणा पादहीन ब्रतजानना ॥ एह ब्रतयाज्ञवल्क्यजीनेकहेहैं और
होर ऋषियोनेभीकहेहैं ॥ १६ ॥ तिस विषे जमदग्नि जीनेकिहाहै क्या अथवा

सृष्टश्चेतिवापाठः सृष्टः परावृत्तइत्यर्थः ॥ किंच द्विगुणं सवनस्थेचब्राह्मणे
व्रतमाचरेत् ॥ सोमयागायकृतदीक्षस्य ब्राह्मणस्यवधेब्रह्महत्याव्रतंद्विगु
णमाचरेत् एवंचतद्वधे प्रवृत्तस्याघ्नतोवापिद्विगुणमेवपादोनम् ॥ एवं
तावद्भगवतायाज्ञवल्क्येनकानिचिद्ब्रह्मवधे व्रतान्युक्तानि अन्यान्यपिका
निचिन्महर्षयआहुः ॥ तत्रजमदग्निः यदावाराणसीगच्छेत्सेतुंश्रीपर्वता
दिकं अन्यान्यपिचतीर्थानिगायत्रीचजपेत्तथा अत्रिः ब्रह्महावदत्रयंविप्रो
गायत्रीमभ्यसेत्तदा प्राणायामशतंकुर्यात्प्रत्यहंनियतःशुचिः १ एतदेवव्रतं
स्तेनः पादन्यूनंसमाचरेत् गत्वैतदेवकुर्वीतगुरुतल्यमकामतः २ ब्रह्महत्या
समेष्वेतत्प्रयोजककर्तृपुवाऽल्यत्वात् पटूभिर्वैः कृच्छ्रचारीब्रह्महापूयतेनरः

ब्रह्महापुरुष काशीको जावे अथवा सेतु और श्री पर्वत और भीजोतीर्थहै ति
न विषे स्नान करे और गायत्रीजप करे तद पवित्र हुंदाहै ॥ और तैसेहि अत्रिजीका वाक्यहै
क्याब्रह्महा ब्राह्मण तिन वर्ष गायत्रीअभ्यास करे और नित्यप्रतिपवित्रहोकरनियमसेसौ प्राणायाम
करे १ और सुवर्ण का चोर जोहोवे सो इसीव्रतको पादहीन करे और कामनातेबिनागुरु
की शय्या उपर गमन करे सोभीएही व्रत करे २ ब्रह्महत्यासमान पापों विषे प्रेरणा करण वा
ल्योको अल्यपाप होनेते एहि व्रत किहाहै ॥ और ब्रह्महा पुरुष व्रत करतारहे तद छे वर्ष कर्के
पवित्र हुंदाहै ॥

॥ श्रीरण्वारकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ५७

और जेकर महीने २ पराक ब्रतकरे तद तिन्ना वर्षी कर्के ब्रह्महत्या को दूर करता है और जेकर एक २ महीनेविषे एक २ वारी भोजन करे तद एक वर्ष कर्के पवित्रहुंदा है १ अथवा एकह जार गौ विधि पूर्वक पात्राब्राह्मणोंको जेकर देवे तद भी ब्रह्महा संपूर्ण पापते मुक्त हुंदा है २ मासाशी शब्दका अर्थ कहते हैं मास इति महीनेके व्यतीत होया जो भोजन करे उसका नाम मासाशी किहा है और देवल जीने किहा है कि ब्राह्मण पवित्रतीर्थी विषे देहत्याग कर देवे त दभीमहापातकते मुक्तहुंदा है और क्षत्री धर्मयुद्धविषे अथवा गौ मारणवास्ते ग्रहण कीतर्या गौके रक्षावास्ते प्राणत्याग करे तद शुद्धहुंदा है ॥ और कालिका पुराण में लिखया है वृत्रमिति

मासेमासे पराकेण त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति संवत्सरेण मासाशी पूजते नात्र संशयः १ गवांसहस्रं विधिवत्पात्रेभ्यः प्रतिपादयेत् ब्रह्महाविप्रमुच्येत सर्वपापेभ्य एव तु २ मासे व्यतीतेऽश्नातियः स भवेन्मासाशी देवलः तीर्थेषु पुण्यतमेषु यावद्देहसंन्यासाद्ब्राह्मणो महापातकात्प्रमुच्यते धर्मयुद्धे गोग्रहणघातादिषु प्राणत्यागात्पूयते क्षत्रियः कालिकापुराणे । वृत्रं हत्वा ततः शक्रो महेन्द्रे स्थाप्य शंकरं लिङ्गं मुक्तस्तया यो वै ततः स त्रिदिङ्गतः १ ॥ रावणं सूदयित्वा तु रामो दासरथिस्तदा विमुक्तो ब्रह्महत्यायाः स्थाप्य लिङ्गं सुतेजसम् ॥ २ ॥ अद्राविन्द्रे श्वरं दृष्ट्वा तथारामेश्वरं प्रभुं मुच्यते ब्रह्महत्यायानरो वै नात्र संशयः ३ यत्तु वसिष्ठः ॥ अथापरं भ्रूणहत्यायाद्वादशरात्रमब्भक्षौद्वादशरात्रमेवोपवसेत् अस्यापरो विषयो भविष्यत्पुराणे एवोक्तः

इंद्र वृजासुर को मार कर्के तिसकी ब्रह्महत्या दूरकरण वास्ते महेंद्र पर्वत विषे शंकरकालिंग स्थापन कर्के तिसब्रह्महत्याते मुक्तहोया २ तिसते अनंतर स्वर्गको जंदाभया इति १ और राम चंद्र रावणको मार कर्के तिसकी हत्याके दूरकरण वास्ते ज्योति लिङ्गको स्थापन कर्के ब्रह्महत्याते मुक्तहुंदा भये इति २ और ऐसेहि महेंद्र पर्वत विषे इंद्रेश्वर का दर्शन कर्के और तैसेहि रामेश्वर प्रभुका दर्शन कर्के पुरुष ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदा है इसमें कुछ संशय नहि है इति ३ और वसिष्ठजीने किहा है कि इसते उपरंत भ्रूणहत्याका एहजो प्रायश्चित्त किहा है कि द्वादशरात्रि जल भक्षण करे और द्वादशरात्रि उपवास करे इसका होरविषय भाविष्यत्पुराणविषे लिखया है

५६ ॥ श्रीरघवीर करित प्रायश्चित्त भागः १३ पटी ६ भागः ॥

यदेति अद असिश्य कर्के गुणहीन होवे और गायत्री भी वर्जित होवे ऐसे ब्राह्मण को कामनाते जो पुरुष मार देवे उसके वास्ते मेरेते प्रायश्चित्त सुन १ क्या मारण वाला पुरुष दान देने को समर्थ जेकर होवे तद इस प्रकार व्रत कल्पना करे क्या वशिष्ठ ने जो ब्रह्महत्या नाशक व्रत जो किहा है तिस व्रत को करे २ कि द्वादशरात्रि जल पान करे और द्वादशरात्रि उपवास करे एह अर्थ जानना और इसका अभिप्राय एह है कि पूर्वोक्त गोसहस्रदान विषे समर्थ होवे अर्थात् प्रथम हजार गौदान कर्के तिससे अनंतर द्वादशरात्र्यादि व्रत करे इति और इसमें मतांतर पूर्व किहा है और शंखलिखन जीने किहा है ॥ कि पतित शिष्टान्न भोजन करे अर्थात् पतित शिष्ट क्या पतित व्यति रिक्त जो ब्राह्मणादि हैं तिनते याचना कर्के जो अन्न लेया है तिस को भोजन कर्के

यदात्यर्थगुणैर्हीनो गायत्र्यापि विवर्जितः निहतः कामतश्चैव तदैव तन्निबोध मे १ हंतादानसमर्थश्चेत्तदैव परिकल्पयेत् वसिष्ठेन समाख्यातं ब्रह्महत्या व्यपोहनम् २ ॥ द्वादशरात्रमवभक्षो द्वादशरात्रमुपवसेदित्यर्थः शंखलिखितौ ॥ पतितशिष्टान्नभोजी द्वादशवर्षाणि गवांसहस्रं दत्त्वा द्वादशे वर्षे शुद्धिमाप्नोति । पतितशिष्टाः पतितव्यतिरिक्ताः । ब्राह्मणादयः याचनया तदन्नभोजी सन् द्वादशवर्षाणि चरित्वा गवांसहस्रं दत्त्वा च शुद्ध्यति । एतदपि सवनस्थ ब्राह्मणवधविषयम् । बृहस्पतिः । गंगायामुनयोर्वापि संगमेलोकविश्रुते । शुद्धे त्रिषवणस्नार्यात्रिरात्रोपोषितो द्विजः १ शुद्धे ब्रह्महा शुद्धयेदित्यर्थः । एवमादीनि गुरूणिलघूनि च प्रायश्चित्तानि संततिषां देशकालसामर्थ्यवयोजाति गुणायपेक्षया विषयव्यवस्था कल्याणीया । अन्यथा गुरुकल्पोपदेशोऽनर्थकः स्यात् ॥

वारां वर्ष व्यतीत करे और फेर हजार गौदे कर्के शुद्धि को प्राप्त हुंदा है । एह भी यज्ञ विषे स्थित जो ब्राह्मण है तिस के वध विषयक जानना ॥ और बृहस्पति जीने किहा है - गंगेति कि संसारमें विलयात जो गंगायामुना का संगम है तिस विषे ब्राह्मण तिसकाल स्नान करे और तिस उपवास करे तद पवित्र हुंदा है इति १ और ऐसेही पूर्वोक्त प्रकार कर्के इत्यादि थोड़े और बड़े प्रायश्चित्त हैं तिनकी व्यवस्था देश काल सामर्थ्य अवस्था गुण इनके अनुसार कल्पना करावे योग्य है । और इस के अनुसार व्यवस्था जेकर नाही तद अल्प पाप विषे बहुत प्रायश्चित्त कल्पना कर्के अनर्थ हुंदा है इति ॥

भविष्यत्पुराण विषे गुह्योक्ते पुच्छियार्हे ईश्वरके पासते यमिति कि कोयी ब्राह्मण जिसके ऊपर क्रोध कर्के अपने आत्मा को हत करे अर्थात् मृत हो जावे आपहि हे विभो जिसके ऊपर मृत होवे उस को कैसा प्रायश्चित्त करणा योग्यहै इति । आगेईश्वरजी कहतेहैं केश त्ति ॥ कि हे स्वामि कार्तिक जिसके ऊपर क्रोध वशते ब्राह्मण मृत हो जावे तिसको इस प्रकार करणा चाहिये क्या केश दांडा नख इनको कटा कर्के हेवीर ब्रह्म चर्य करे तद एक वर्ष कर्के शुद्ध हुंदाहै १ ॥ और एह जिसके निमित्त मृत होयाहै तिसके अल्प अपराधके विषय विषे जानना ॥ और ब्राह्मण गुण रहित होवे सो हे स्वामिकार्तिक जेकर घर वास्ते और क्षेत्र वास्ते होर किसी संबंध कर्के क्रोध वशते जिसके ऊपर प्राणत्याग करे २ सो पुरुष तिन वर्ष का व्रत करे और ब्रह्म चर्यधारण करे तद पवित्र हुंदाहै ॥ और

भविष्यत्पुराणे । गुह्युवाच । यमुदिश्याद्विजोहन्याद्ब्राह्मणंस्वयमेवहि ।
आत्मानंसहस्राक्रोधात्तस्याकिंनुभवेद्विभो । ईश्वरउवाच । केशश्मश्रुन
खादीनांकृत्वाचवपनंगुह । ब्रह्मचर्यचरेद्वरिर्वर्षेणैकेनतद्व्रतः १ यमुदिश्या
मृतः सर्वपेब्रह्मचर्यकुर्व्यादित्यर्थः इदमुद्देशुरल्पापराधविषयम् । ससंव
धोयदाविप्रोहत्वात्मानंमृतंगुह । निर्गुणःसहस्राक्रोधाद्ब्रह्मक्षेत्रादितो
विभो २ त्रैवार्षिकंव्रतंकुर्याद्ब्रह्मचर्यचरन्मुने । एवंशुद्धिमवाप्नोतिहत्वात्म
नमृतोयदि ३ ॥ ससंवधोभ्रात्रादिसंसृष्टा ॥ तिरस्कृतोयदा विप्रोनि
गुणोघ्रियतेनध । यन्निमित्तंतथापुत्रतदैवसविशुद्ध्यै ॥ ४ ॥
त्रैवार्षिकंब्रह्मचर्यकृत्वाशुद्धतविप्रहा प्रतिलोमचगच्छेद्वा नियताशीसर
स्वतीम् ५ । पूर्वसामान्य धननिमित्तमिदंतुतिरस्कारनिमित्तमितिभेदः ।

इस प्रकार सो पुरुष शुद्धि को प्राप्त हुंदाहै जिसके ऊपर ब्राह्मण मृत होवे । संवध क्या भ्रात्रादियों की सांज जाननी ३ । और निर्गुण ब्राह्मण अपमा नको प्राप्त होया जिसके निमित्त कर्के हे अनध मृत होजावे उसको शुद्धि वास्ते एह प्रायश्चित्त किहाहै ॥ ४ ॥ और उह ब्राह्मण तिन वर्ष ब्रह्मचर्यकर्के शुद्ध हुंदाहै अथवा नियम कर्के एक काल भोजन करता होया प्रतिलोमसर स्वती कोजावे अर्थात् जिसस्थानते सरस्वती प्रकट होयीहै उसस्थान ते लेकर जहां तक अंतहें उहां पर्यंत जावे और फिर अंत ते लेकर कनारे २ फेर जहां प्रकट होयीहै उस स्थान विषे आकर प्राप्तहोवे इस प्रकार स्नाना करणे कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ ५ ॥ पिचला सांझे धनदे निमित्तथा और एह प्रायश्चित्त तिरस्कारके निमित्तहै इतना भेदहै

६० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० ॥ १३ ॥ टी० भा० ॥

और अति निर्गुण जो ब्राह्मण है सो कारण तेविना अतिगुणवान् पुरुष कर्के अनादर को प्राप्त हो कर तिसगुण वानके उपर जेकर मृतहोजावे ६ । तद उह पुरुष अपनीशुद्धि वास्ते ऐसे प्रायश्चित्तकरे अर्थात् सो पुरुष अपनी शुद्धि वास्ते तिनवर्ष व्रतकरे ॥ ७ ॥ अथवा अपने शरीरके बराबर तोलकर सुवर्ण ब्राह्मण केतांयी देवे इसप्रकार प्रायश्चित्त कर्के पवित्रहुंदाहै । इसमे होर विशेष कहतेहैं कि जेकर किसी निमित्त ते ब्राह्मण एह वाक्य कहै किमै मरजाताहां तद ऐसी वाणी के किहां होयां उहपुरुष आगेते उस ब्राह्मण कौश स्रदेवे कि ले इस शस्त्र कर्के मृत हो और फेर शस्त्र कौ ग्रहण कर्के जेकर उसीशस्त्र का अपने ऊपर प्रहार कर्के ब्राह्मण मृतहोजावे ८ ॥ और उह पुरुषजिसने शस्त्र दीया है सोइ स प्रकार ब्राह्मण को मृतहोनेविषे उपेक्षाकर देवे अर्थात् ब्राह्मण ने अपने मरण वास्ते शस्त्रग्रह

अत्यर्थनिर्गुणोविप्रोह्यत्यर्थगुणिनोपरि सम्बन्धेनविनापुत्र म्रियतेपरिभ
त्सितः६ अतिनिर्गुणोविप्रोहि अतिगुणिना पुरुषेण निष्कारणं अनादृतस्त
स्यगुणिनउपरि म्रियतेचेत्तदातेनगुणिना इदंप्रायश्चित्तकर्तव्यमित्यर्थः प्रा
यश्चित्तंयथाकुर्यादिदंपापविशुद्ध्यै वत्सरत्रितयंकुर्यान्नरःकच्छंविशुद्ध्यै७
आत्मतुल्यंसुवर्णंवा दद्याद्विप्रायतुष्टिदम् ॥ वाचोक्ताचर्पितेशस्त्रहत्वाविप्रः
क्षयंगतः८। यएवम्रियमाणंतुब्रह्मणंसमुपेक्षते । तस्यतांनिष्कृतिंवच्मिनिर्गु
णस्यविशेषतः ९ सशिखंवपनंकृत्वा क्षुतोभ्यक्तस्तथागुह । आत्मानंनि
र्दहेदग्नावापादतलमस्तकम् १० ॥ क्षुतोऽनशनः ॥ यद्येवंबहवोविप्राग्रंति
विप्रमनागसम् ॥ तदैषानिष्कृतिंवच्मिशृणुष्वैकमनागुह ११

ण कीताहै तिस कोसन्मुख देख कर्के भी मृत्युते ना हटावे तिसकेवास्ते एह प्रायश्चित्त है और तिस निर्गुण पुरुषके वास्ते प्रायश्चित्त कहताहां विशेषते अर्थात् जिसने ब्राह्मणकोमरण वास्ते शस्त्रदीयाहै सोपुरुष जेकर गुणहीन होवे विशेषते उसके वास्ते एह प्रायश्चित्त जानना ९ सो लिखया है कि उह पुरुष प्रथम शिखाकेसाथ मुंडन करवाकर्के हे स्वामि कार्तिक फेर अनशनकरे अर्थात् अन्न जल सब त्याग करे फेर अपने शरीर को पयरांते लेकर मस्तक पर्थतअग्नि विषे दग्ध कर देवे इस प्रकार प्रायश्चित्त कर्के पवित्र हुंदाहै १० और इसी प्रकार बहुतब्राह्मण एकत्र हो कर अपराध तेविना जेकर एक ब्राह्मणको हतकरेंतद उन सब के वास्ते प्रायश्चित्त कथन करताहांतुम हेस्वामि कार्तिक एकाग्रचित्तकर्के श्रवणकरो ॥ ११ ॥

॥ श्रीरणबीरकारित प्रायश्चित्त भाग प्र • १३ ॥ टी • भा • ॥ ६३

और तिन सभके विषे जिसके प्रहार कर्के ब्राह्मण मृत्युको प्राप्तहोवे सो पुरुष अपनी शुद्धि वास्ते प्रतिस्रोता सरस्वतीकी यात्रा करे १२ और अन्यसंपूर्णहे पुत्र अपनी शुद्धि वास्ते एह प्रायश्चित्त करे कि हे गुह चतुर्विद्यामत विषे जो एकवर्षका व्रतहे तिसको करे अर्थात् वाकोके सभ एकवर्ष प्रमाण जेकर व्रत करे तद पवित्र हुंदेहैं १३ सो चारविद्या आन्वोक्षिकी इत्यादि कर्के कहाहै और एह प्रायश्चित्त निरपराध विषे अथवा थोडे अपराध विषेहैं और बहुते अपराध होवेतां सिंह इत्यादि श्लोक किहाहै और सिंहते आदलेकर हिंसा करणवा ले जावहैं और सर्प और राजा और ब्राह्मणोंका समूह एह सभ इन दोषों कर्के नहिलिखहो यद्यपि संपूर्ण जगतको हत करे तदपि सो प्रायश्चित्त इस प्रकार करणा चाहिये १४ कियद्य बहुत प्रायश्चित्त होवे अथवा अल्पहो जितना चिर आत्माकी प्रसन्नता नहि होयी

तेषांयस्यप्रहारेणसविप्रोनिधनंगतः सरस्वतीप्रतिस्त्रोतःसचरेत्पापशुद्धये
१२ अन्येकुर्युरिदंपुत्रप्रायश्चित्तंविशुद्धये कुर्युःकृच्छ्रंद्विषण्मासांश्चातुर्विद्या
मतंगुह १३ आन्वोक्षिकीत्रयीवार्तादंडनीतिरूपाणां चतसृणां विद्यानांमतं
तेनानुज्ञातमिदंकृच्छ्रमित्यर्थः इदमपिनिरपराधेअल्पापराधेवाज्ञेयं साप
राधेतुसिंहेत्यादि सिंहादयस्तथासर्पाराजाविप्रकदम्बकम् एतेदोषैर्न
लिप्यन्तेघ्नंतोपिसकलजगत् १४ गुरुलघुतांप्रतियद्यात्मतुष्टिर्नजायते
प्रतिपुराणंवैतत्रजपादिभिरुदाहृतम् १५ जपादीनांसर्वेषांधर्मशास्त्रेषुसर्वशः
प्रायश्चित्तंविशेषेणसर्वेषामिदमुच्यते १६ शोधनंदेवशार्दूलजपहोमादि
कमहत् जपस्तपस्तथाहोमउपवासोघमर्पणम् १७

अर्थात् सभ पाप विषे ऐसा प्रायश्चित्त करणा चाहिये कि जिसके करणे कर्के अपना आत्मा प्रसन्न होजावे और सभ पुराणां विषे जपादिको कर्के शुद्धि कहाहै १५ और संपूर्ण धर्म शास्त्र विषे संपूर्ण जपादिकोंको सभ प्रकारके पापोंका एह प्रायश्चित्त किहाहै किहे देवता विषे सिंह जपहोमादिजोहैं सो सभ पापके शोधन कहेहैं अर्थात् जप होम इत्यादि कर्म कर्के सभ पापनाश हुंदेहैं १६ सोयी जैसे जप क्या गायत्री मंत्र अन्य जो पवित्र मंत्रहैं तिनका अभ्यास करणा और व्रत शीत उष्ण इन कर्के शरीरको रुश करणा इसका नाम तपहै और मंत्रके साथ अग्नि विषे चरुकी आहुति करणी इसका नाम होमहै और उपवास व्रत करणा और जल विषे श्वास रोककर अघमर्पण करणा एह प्रायश्चित्त उनको जिनीने सा पराध ब्राह्मण मारयाहै १७

६२ ॥ श्रीरणावीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

एह सभ आतिशय कर्के संपूर्ण पापके नाश करणवाले कहैहैं और हेस्वामि कार्त्तिक औरभी जो प्रायश्चित्त शास्त्रों विषे कहैहैं उनकी व्यवस्थाभी पापके बहुत अल्प विषे जानणी और जिस बड़ेपाप विषे जो प्रायश्चित्त किहाहै सोयो अन्यगुरु पापके समीप वर्ति विषे जानणा और तैसेहि लघुपापविषे जो प्रायश्चित्त किहैहैं सोयो लघुपापके समीपवर्तिविषे जानणा और जेकर संशयते अपनी प्रसन्नताना होवे तद संपूर्ण पुराणविषे किहै जो जपादिहैं तिनकर्के निश्चयकीता जावे एह अर्थहै एहसंपूर्णब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त किहाहै इति ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणंसमाप्तम्

ज्ञानाऽज्ञानकृतानां तु पापानां शोधनं परम् १८ अन्यशास्त्रो

दितानां च निष्कृतीनां सुराधिप ॥ उत्प्रेक्ष्यो विषयो ह्येवं सततं

गुरुलाघवे १९ यत्र गुरुणि पापेऽन्यगुरुणः समीपवर्त

नितथा लघुनि पापेऽन्यलघुनः समीपवर्ति

निशंशया दात्मतुष्टिर्न स्याच्चैतदा प्र

तिपुराणं कोऽर्थः सर्वत्र पुराणे

षु प्रोक्तं जपादितेन नि

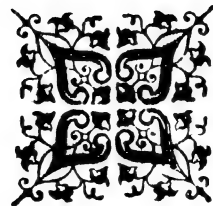
श्चितो भवेदित्यर्थः

प्रोक्तमिदं ब्रह्म

हत्याप्रा

याश्चि

त्तम्



अब ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तके निरूपणके अनंतर महापातकोंके मध्यगतजो सुरापानहै तिसकथ प्रायश्चित्त निरूपण करतेहैं सुरापदजोहै इसस्थानविषे सोमद्यका उपलक्षणहै सोकिहाहै निषं टुविषे पेयमिति क्या जोलोकोंने मदकरलवाला द्रव्यपीनेयोग्यहै उसका नाममद्य किहाहै अथात् जिसको लोकमदवास्ते पानकर उसकानाम मदिराहै और सोअरिष्ट सुरासीधुआसब इत्यादि अनेकभेदवालाहै इति और सुरापानविषे निषेध किहाहै मनुजीने गोडीति एक गोडी १ एकमाध्वी २ एकपैष्टी ३ यहतिषप्रकारकी सुरा जासणी और जैसे एकहै तैसेहि और संपूर्णहै एहसभ ब्राह्मणोंने नहि पानकरणयोग्य और जोगुडकर्क वनीहै उसकानाम

ओं श्रीगणेशाय नमः अथ महापातकान्तर्गत सुरापान प्रायश्चित्तं निरूप्यते ॥
सुरापदमत्रमद्योपलक्षणं तदुक्तं निघंटौ ॥ पेयं यन्मादकं लौकैस्तन्मद्यमाभि
धीयते तदरिष्टं सुरासीधुरासवाद्यमनेकधेति सुरापाननिषेधमाह मनुः गो
डीपैष्टीचमाध्वीचविज्ञेयात्रिविधा सुरा यथाचैका तथा सर्वानपातव्याद्विजो
त्तमैः गोडीगुडकृता १ पैष्टीयवादिपिष्टकृता २ मधुकवृक्षोद्भव पुष्पकृता मा
ध्वीद्विजोत्तमैर्ब्राह्मणैरित्यर्थः क्षत्रियादिसाधारण्ये तु सुराशब्देन पैष्ट्येवाभि
धीयते मनुना सुरावैमलमन्नानां पाप्माचमलमुच्यते तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौ
वैश्यश्च न सुरां पिबेदित्यत्रान्नविकारस्यैव सुरात्वनिर्देशादन्नशब्दस्य चान्नेन
व्यञ्जनमित्यादिषु ब्राह्म्यादिविकार एव प्रयोगदर्शनात्

गोडीहै और जोयब चाउल इनकी पीठीकी बनाइहै उसकानाम पैष्टी किहाहै और महुएके पुष्पोंकर्क जोवनायीहै तिसकानाम माध्वी किहाहै और द्विजोत्तमैः क्या ब्राह्मणोंने और क्षत्रियादि साधारणता विषे तोकहतेहै सुरेति सुराशब्द कर्क पैष्टीकाहि अभिधान करणा अथात् सुरानाम पैष्टीकाहि जासणा सोमनुजीने किहाहै सुरेति क्या सुराजोहै सोअन्नकी मद्य है और मलजोहै सोपाप रूप कहाहै तिसकारणते ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य एह सुराका पान नाकरे इस जगत् विषे अन्न विकार कोहि सुरात्व निर्देशहोएते चपुना अन्नशब्दको अन्नेन व्यजन इत्यादि वचन विषे धाम्यादि विकार कोहि प्रयोग दर्शनते

गुड और मधुको रसरूप होनेमें और सौत्रामणी यज्ञपात्रां विषे अन्न विकारकोहि सुरा शब्द सुणनेमें अन्न विकारकाहि नामहै सुरा एह निश्चय होआ और विस्तर जोहै सो मिताक्षरा विषे देषलेषा और तिस कारणते पैछी सुरापान द्विजातिकों विशेषते निषिद्धहै इसका अभिप्राय एहहै कि केवल ब्राह्मणकोहि पैछी सुराका नहि निषेध किंतु क्षत्रीवैश्यकोभी पैछी सुराका निषेधहै ऐसा जानना तैसेहि भविष्यत्पुराण विषे लिख्योहै गौडीतिकि गुडकी पीठी की दाखकी एह तिन प्रकारकी सुरा जानणी और जैसी एकहै तैसेहि संपूर्णहै इन विषे न्यूनता अधिकता नहिहै इस कारणते ब्राह्मणोंने नहि पान करणे योग्य किस वास्ते कि कुछ पैछी सुराहि मुख्य नहिहै किंतु गौडी माध्वी एहभी पैछी सुराके समान कहीहैं और इस स्थान विषे द्विजोत्तम शब्द विवक्षितहै अर्थात् द्विजोत्तम शब्द कर्के ब्राह्मणका ग्रहण कीताहै

गुडमधुनोश्चरसरूपत्वात्सौत्रामणीग्रहेषुचान्नविकार एवसुराशब्दस्य श्रुतत्वात्विस्तरस्तुमिताक्षरायांद्रष्टव्यः ततश्चपैछीपानंद्विजानांप्रतिषिद्धम् पैछ्याइतरयोश्चब्राह्मणस्योतिमन्तव्यम् तथाभविष्यत्पुराणम् गौडीपैछी चमाध्वीचविज्ञेयात्रिविधासुरा यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः सुराहिपैछीमुख्योक्तानतस्यास्त्वितरेसमेनेतरयोर्मुख्यः सुराशब्दइत्यर्थः अत्रद्विजोत्तमग्रहणांविवक्षितम् तेनक्षत्रियवैश्ययोःपैछेवप्रतिषिद्धानेतरं मद्यांतराणिब्राह्मणस्यैवप्रतिषिद्धानिनेतरयोः तत्रापियुद्धाद्यंतयोःक्षत्रियस्य सौत्रामण्यांवैश्यस्यपानंविहितंमितिज्ञेयं तदाहमनुः यक्षरक्षःपिशाचान्नमद्यमांसंसुरासवम् तद्ब्राह्मणेननात्तव्यंदेवानामश्रताहविः १

तिस कारण कर्के क्षत्री वैश्यको केवल पीठीकी सुराका निषेधहै औरका निषेध नहिहै किस वास्ते कि संपूर्ण मद्य ब्राह्मणकोहि निषेधहै इतरके वास्ते नहि अर्थात् क्षत्री वैश्य वास्ते सबका निषेध नहिहै क्योंकि ब्राह्मणको किसी प्रकारके मदिरा पानका अधिकार नहि और क्षत्री वैश्यको गौडी माध्वीका अधिकारहै इसमेंभी ऐसा विचार रक्षणाकि क्षत्री लोक युद्धके आद विषे अंत विषे और वैश्य सौत्रा मणि विषे मद्य पीवे सदा नहि और सौधी मनुजनेकिहाहै यक्षेति कि मद्य मांस सुरासव एह यक्ष राक्षस पिशाच इनका अन्नहै अर्थात् यक्षोंका मद्य और राक्षसोंका मांस और पिशाचोंका सुरासव एह भोजनहै इसकारणते देवताका दधि भोजन करण वाले ब्राह्मणने एह नहि भक्षण करणे योग्य १

॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी०भा० ॥ ६५

और इस विषे एहभीहेतुहै क्या ब्राह्मण जेकर मदिरापानकरे तद फेर मदमत्त होकर किसी अपवित्र स्थान विषे गिडपडे अथवा अपवित्रस्थान विषे वेद मंत्रका उच्चारण करदेवे अथवा और कुछ अनुचितकामकर देवे मद कर्के मोहित इस कारण कर्के ब्राह्मणको मदिरानिषे धहे । और जिस ब्राह्मणके देह विषे स्थित जो ब्रह्म मद कर्के विक्षेपको प्राप्त होवे उसका ब्राह्मण भाव दूर होजंदाहै और शूद्र भाव उसको प्राप्त होंदाहै । और एह सुरा ब्राह्मणोंने यज्ञोपवीतके और स्त्रीयोंने विवाहके प्रथम हित्याग करणे योग्यहै । और ब्राह्मणने तोगौडी माध्वी इत्यादि जो मयहै सभ त्याग करणे योग्यहैं । और क्षत्री वेश्य एह ब्रह्म चारी होवें तद इन मदिराका त्याग करें । इस मै होर विचारकहैहै कियो यज्ञोपवीतते पूर्व अपनी कामना

अमेधेवापतेन्मतेवैदिकंवाप्नुदाहरेत् अकार्यमन्यत्कुर्याद्वाब्राह्मणोमद मोहितः २ यस्यकायगतंब्रह्ममद्येनाह्लाव्यतेसकृत्तस्यव्यपैतिब्राह्मण्यं शूद्रत्वंचसगच्छतीति ३ इयंचसुराद्विजातिभिरुपनयनात्स्त्रीभिश्चाविवा हात्प्रागपिवर्ज्या ॥ ब्राह्मणेनतुगौडीमाध्वीमद्यान्यपि ॥ इमानिब्रह्मचारि भ्यांराजन्यवैश्याभ्यामपिवर्ज्याणि ॥ प्रागुपनयनात्कामचार कामबा दकामभक्षाइति गौतमीयंतूपविष्टेनाचम्यभक्षणीयमित्यादिनियमनिवृत्य र्थेनपुनरभक्ष्यभक्षणानुग्रहार्थ एतदेवाहजातूकर्ण्यः ॥ अनुपेतस्तुयोवालो मद्यंमोहात्पिवेद्यदि ॥ तस्यकच्छत्रयंकुर्यान्माताभ्रातातथापिता ॥ अतो गौतमस्यप्रागुपनयनादितिवचनंसुरादिव्यतिरिक्तशुष्कपर्युषितादिविषय मितिमिताक्षरा ॥

पूर्वक विचरणा और अपनी कामना पूर्वक बोलणा अपनी इच्छा अनुसार भोजनकरणा एह मौत्तम स्मृति विषे किहाहै । सो इस अभिप्रायसे किहाहै किएक स्थानमै स्थित होकर आच मन कर्के भोजन करणा इस नियम को निवृत्तिवास्तेहै कोई अभक्ष्य भक्षणके अनु ग्रह वास्ते नहिहै । और एहि जातूकर्ण्य जीने किहाहै अनुपेतेति कि जेकर यज्ञोप वीतसे विना बाल क अज्ञानतेमद्य पान करे तद उसकी माता अथवा उसका भ्राता पिता एह तिस कच्छत्र व्रत करें तद उह बालक पवित्र हुंदाहै । और इसी कारणते गौतम जीका जो प्रागुप नयनात् इत्यादि वचनहै तिसको सुरादियांतें भिन्न शुष्क और वेहा जो भोजनहै तिस विषय विषे जानणा एह मिताक्षरा विषे लिखयाहैं ॥

और अतिसुरापानविषे छेरुच्छूकल्पनाकरणे योग्यहै अर्थात् बालकका पितादिछेत्रतकरे इति और मद्यपानते अतिसुरापानका प्रायश्चित्त द्विगुण दिखायाहै अर्थात् जोसुरापानकरे सो सको मद्यपानते दूणाप्रायश्चित्त करणा चाहिये और पंचमवर्षते उपरंत जेकरब्राह्मणका बालक भीकदाचित्त सुरापानकरे तद उसकेमातापिताको अथवागुरुको प्रायश्चित्तकरणा योग्य है इसकारणते पंचम वर्षते आदिलेकर ब्राह्मणांको सुरापान विषे निषेधजाज्ञणा और बालक को कामनाते भी मरणांतिकनाहैहै अर्थात् जेकर बालक जाणकरके भी सुरापानकरे तदभी पर्वदने मरणांत प्रायश्चित्त नहि कहनायोग्य किंतुबालकजेकर व्युत्पन्नहो तदआप विचार करके प्राणांततेविना प्रायश्चित्तकरे प्राणांतप्रायश्चित्तनकरे और तदविषयक वाक्य अनुग्रहवास्ते मुनि योने किहेहै सोई अंगिरा जीने किहाहै ऊनेति एकादश वर्षते ऊनहोवे और पांचवर्षते उप

अतिसुरापानेतुषड्कृच्छ्राः कल्पाः मद्यपानादतिसुरापानप्रायश्चित्तस्यद्वै गुण्यदर्शनात् एतच्चपंचमादूर्ध्वमातापित्रोस्सुहृद्गुरोरिति एवंपंचमवर्ष प्रभृत्येवद्विजानांसुरापाने प्रतिषेधावेदितव्यः बालस्यचकामतोपिनमरणांतिकं॥मरणांदेकंप्रायश्चित्तंनपर्वदातिशयंकिंतुस्वयमेवविदित्वाकुर्याद्बालोपि व्युत्पन्नश्चेन्मरणांतिकव्यतिरिक्तमेव तद्विषयाणिचानुग्रहवचनानि॥अंगिराःऊनैकादशवर्षस्यपंचवर्षात्परस्यच चरेद्गुरुःसुहृदपिप्रायश्चित्तांविशुद्ध्ये तथाचाविष्णुः॥अशीतिर्यस्यवर्षाणिबालवान्यूनषोडशःप्रायश्चित्तार्धमर्हति स्त्रियोरंगिणएवचेति पुलस्त्येपि ॥ स्त्रीणामर्धप्रदातव्यंवृद्धानांरोगिणांतथापादंबालेषुदातव्यंसर्वपापेष्वयंविधिः ॥ १ ॥

रतहोवे उसबालककी शुद्धिवास्ते गुरु अथवा माता पिता प्रायश्चित्तकरे अर्थात् पांचवर्षते ऊपर और एकादश वर्षते न्यून जो बालकहै तिसको आप नहि प्रायश्चित्तकरणा योग्यहै और तैसेहि विष्णु जीने किहाहै अशीतिरिति कि जिस पुरुष कीआयुषा अस्सी वर्षते ऊपर होजावे अथवा सोलां वर्षते न्यून जो बालकहै और स्त्री और रोगीएहसभअर्धप्रायश्चित्त के अधिकारीहै अर्थात् वृद्धबालक स्त्रीरोगी इनको आधा प्रायश्चित्त करणा किहाहै इति पुलस्त्य जीनेभी किहाहै स्त्रीणामिति किस्त्रीयांको आधाप्रायश्चित्तदेणा योग्यहै और तैसेहि वृद्धों को और रोगीयांको भीआधाहिप्रायश्चित्त देणा योग्यहै और बालकांविषे चौथा हेस्ताप्रयश्चित्त देणा योग्यहै एहसंपूर्ण पाप विषे एह विधि कहीहै ॥ १ ॥

और तैसेहि असंस्कृतति किसंस्कार रहितजो पुरुषहै और उत्साहते जो रहितहै अथवा रोग युक्तजो पुरुषहै अथवा नवे १० वर्षकी जिसकी अवस्थाहै इनको शक्ति अनुसार प्रायश्चित्त देणा योग्यहै और इन विषे न्यूनभी ब्रतहोवे तदभीनहि लोप होदा और इनको प्राणांत प्रायश्चित्त कल्पना करणा नहि योग्य और मद्य गौड़ो पैष्टीमाध्वी इनते भिन्नहै मद्यभेद बृह स्यति जीने किहैहै माध्वीकमिति माध्वी १ ऐक्षव २ मैर ३ ताल ४ खजूर ५ पानस ६ मधूक ७ सैर ८ ऐरेय ९ नालिकेरज १० अर्थात् द्राक्षाकी मदिराका नाम माध्वीकहै १ और गन्नेके रसकी बनीहो उहऐक्षवहै और मिराकी बनीहो उहमैरहै ३ और इसी प्रकार ताड़ वृक्ष खजूर कावृक्षपनसवृक्षमौहा एरानरेलभिन्न २ इनकी मदिरा बनीहो उसका नाम पूवं जो लिखैहै

तथाअसंस्कृतोनिरुत्साहोरोगीनवतिजीवकः यथाशक्तिप्रयुंजीतव्रतस्तेषु नलुप्यते ॥ असंस्कृतोवालः निरुत्साहोवाताद्यभिभूतः रोगीक्षयादिरोगयुक्तः नवतिवर्षाणिजीवकमायुर्यस्यसः ॥ नात्रमरणांतिकस्यकल्याणायुज्यते ॥ मद्यंतुगौडीपैष्टीमाध्वीभ्योऽन्यदस्ति तद्भेदानाहवृहस्यतिः ॥ माध्वीकमैक्षवंमैरंतालखजूरपानसम् मधूकं सैरमारिष्टंमैरेयं नालिकेरजम् अमैध्यानिदशैतानिमद्यानिब्राह्मणस्यत् पुलस्त्यस्तुपुनरेकादशविधमाह पानसंद्राक्षमाधूकखजूरंतालमैक्षवं मधूकं सैरमारिष्टंमैरेयं नालिकेरजं माध्वीकंटांकमाध्वीकंमैरेयं नारिकेलज मित्युत्तरार्धपाठान्तरम् ॥ क्षौद्रजातमाधूकम् इक्षोः पक्वैरसैः सिद्धः सीधूरित्यैक्षवपर्यायः पक्वौषधाम्बुसिद्धं यन्मद्यं तत्स्यादरिष्टकं अरिष्टमद्यं द्राक्षारिष्टमिर्त्यादि ॥

सोयी जानणे एह दश प्रकार की मदिरा ब्राह्मणके वास्ते अपपित्र कहीहैं और पुलस्त्य जीने पारा भेदमद्यके कहैहै पानसका १ दाखका २ मौहाका ३ खजूरका ४ तालका ५ गन्नेका ६ मधूका ७ सैरका ८ अरिष्टका ९ ऐरेका १० नरेलका ११ एह एकादशभेद मद्यकेहैं और मखीर कर्के जीवने उसका नाम माधूकहै और मौहेके पुष्पांतेजो उत्पन्नहो उसका नाम मधूक ॥ और गन्नेके रसको पकाकर जो सिद्धहो उसका नाम सीधूहै और ऐक्षवहै ॥ और औषधी और जल इनके पकानेकरके जो मद्य सिद्धहो उसका नाम अरिष्टहै और ऐसे दाखकाभी अरिष्टमद्यं दाहै

६८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० ॥ भा०

और सोरनाम है अक के वृक्ष का तिसते जो वणे उसका नाम सैरमय किहा है और जो कबी औषधी और जल इन कर्के मद्य सिद्ध हो उसका नाम आसव किहा है और इसीका नाम ऐरेय भी किहा है और टंक नाम नीले कैथ का है उसते जो उत्पन्न हो उसका नाम टांक मद्य हुंदा है ॥ और एह जो यारा प्रकार के मद्य है उन संपूर्ण को समानहि जानना अर्थात् इन सबके पान करने कर्के समान प्रायश्चित्त हुंदा है और बारवां सुरामय है एह सभना विषे अधम किहा है ॥ १ ॥ और वारुणी भी एक सुरा का हि पर्याय है अर्थात् वारुणी भी सुरा का एक नाम है ॥ जिस कारणते सुराते भिन्न अनेक प्रकार का मद्य हुंदा है और सुरारूप जो मद्य है सो अतिशय कर्के निषिद्ध किहा है और कि सीकार स भी त्याग करणे योग्य है सो बीजैसे दाखगन्ना नीला कैथ खजूर पनस इत्यादि वृक्षों का शीघ्र उत्पन्न जोर स है तिसको पान कर्के ब्राह्मण तिस उपवास करे तद शुद्ध

सीरोऽर्कवृक्षस्तदुद्भवं सैरं यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यस आसवः इदमेव मैरेयं टंको नीलकपित्थस्तदुद्भवं टांकं समानानि विजानोयान्मद्यान्येकादशैव तु द्वादशतु सुरामद्यं सर्वेषामधमं स्मृतं ॥ १ ॥ वारुण्यपि सुरापर्ष्यायः यत एव सुराव्यतिरिक्तमनेकविधं विद्यते ॥ सुरात्मकं तु अत्यन्तं निकृष्टं क्वचित् सुरसोपिवर्ज्यः ॥ द्राक्षेक्षुटं काखार्जूरपनसादेस्तु योरसः । सद्यो जातं तु तत्पीत्वा त्र्यहोक्षुब्धे द्विजोत्तम इति ॥ अत एवाह वसिष्ठः । मद्यपाने त्वसुरायास्सुरायाश्च ज्ञाने कृच्छ्राति कृच्छ्रघृतप्राशः ॥ पुनः संस्कार इदमत्यन्ताशक्तस्य बालतरस्या विद्वमानपित्रादिकस्य प्रतिषिद्धमेतत्पानमित्यविदुषो हठात् क्वचित्पानस्य द्रष्टव्यम् ॥ पूर्वोक्तमप्येतत्प्रसंगादत्रापिलिखितम्

दा है अर्थात् जो ब्राह्मण इन वृक्षों का जेकर रस भी पान करे तद तिस उपवास करणे कर्के पवित्र हुंदा है इति और इसी कारणते वशिष्ठजीने किहा है कि जिसको सुरा का और सुराभिन्न जो मद्य है तिसका ज्ञान हो फेर जेकर मद्य पान करे तद उह कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रत करे जिस व्रत विषे केवल घृत हि भक्षण करणा किहा है और पुनः संस्कार करे ॥ और एह प्रायश्चित्त जो अत्यंत अशक्त है अथवा जो छोटा बालक है और माता पिता भी जिसका नहि तिसको जानना है और एह पान निषिद्ध है इसको नहि जानने वाला जो पुरुष है सो हठ कर्के पान कर लेवे कदाचिद् तद उसके वास्ते और यद्यपि एह प्रसंग पूर्व किहा भी है तद भी प्रसंग द्वारा दूसरी वारी लिखया है इस स्थान विषे इस कारणते पुनश्च दोष नहि जानना इति

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी०भा० ॥ ६९

इस सुरापान का प्रायश्चित्त मनुजीने कहा है सुरामिति कि ब्राह्मणमोहते सुरापानकर्त्ते फेर अग्निकेतुल्य है वणजिसका ऐसी सुरापान करे अर्थात् जो ब्राह्मण कदाचित् मोहते सुरापान कर लेवे तद अपनी शुद्धिवास्ते ऐसा करे कि सुरालेकर फेर ऐसीगमं करे कि अग्निके तुल्य होजावे उसको पीवे और तिस तप्त सुराकर्त्ते जब शरीर दग्ध होजावे तद ब्राह्मण पापते मुक्त होजंदा है १ और इसीका अर्थस्पष्ट कर्त्ते लिखते हैं मुख्य जो पैछी सुरा है तिस को मूढताकर्त्ते द्विज क्या ब्राह्मणादिति न्नवर्णपान कर्त्ते अग्निवर्णकी सुरा पानकरे तिसकर्त्ते शरीरके दग्धहोया तिस पापते मुक्तहुंदे है ॥ और इस प्रायश्चित्तको गुरु होनेते कामनाकृतसुरापानके विषयमे जानना अर्थात् जो ब्राह्मण कामनाकर्त्ते सुरापानकरे उसके वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्त है इति और तैसेहि

अथ सुरापान प्रायश्चित्तमाह मनुः सुरां पीत्वा द्विजो मोहादग्निवर्णं सुरां पिबेत् तथा स काये निर्दग्धे मुच्यते किल्बिषात्ततः १ मुख्यां सुरां पैछीं रागादि व्यामूढतया द्विजो ब्राह्मणादिश्च पीत्वा अग्निवर्णं सुरां पिबेत् तथा शरीरे निर्दग्धे सति द्विजस्तस्मात्पापान्मुच्यते एतच्च गुरुत्वात् कामकारकृतसुरापानविषयं तथा च बृहस्पतिः । सुरापानं कामकृते ज्वलतीं तां विनिःक्षिपेत् मुखे तथा स निर्दग्धो मृतः शुद्धिं मवाप्नुयात् कुर्याद्वाऽनशनं तावद्यावत्प्राणैर्विमुच्यते अपराकर्त्ते ॥ सुरां बृघ्न गोमूत्रपयसामग्निसन्निभं सुरापानं न्यतमं पीत्वा मरणाच्छुद्धिं मृच्छति

बृहस्पतिजीने किहा है सुरेति कि जो कामान कर्त्ते सुरापानकरे सो पुरुष तिस सुरा जलती को मुखविखें पावे और तिसकर्त्ते दग्धहोया जेकर मृत होजावे तद उह शुद्धिको प्राप्तहुंदा है अर्थात् ब्राह्मणको जानकर सुरापानकी तथा ऐसैहि प्राणांत प्रायश्चित्तकरणायोग्य है अथवा उतनाचिर ब्राह्मण कुछन खावे जितना चिर प्राणां कर्त्ते मुक्त नहि होया क्या अन्न जल त्यागकर्त्ते मृत हो जावे जेकर तदभी पवित्रहुंदा है इति । और अपराकर्त्ते लिखया है सुरामिति सुरापान करणे वाला अपनी शुद्धिवास्ते अग्निकेतुल्य तपी होया सुराहि पीवे अथवा अग्नितुल्य तपया होया जल अथवा ऐसाहि घृत अथवा ऐसाहि तपाकर गोमूत्र अथवा ऐसाहि तपाकर दूध पीवे इस प्रकार करणे कर्त्ते जेकर मरजावे तद शुद्धिको प्राप्त हुंदा है ॥

७० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा०

अर्थात् सुरा दि जो किहेहें इनके मध्य विषे एक चोजलेकर गरम करणी जब उह बहुल लाल होजावे क्या जैसे अग्नि स्पर्श कर्के साह देताहै ऐसेहि उह भी स्पर्श कर्के साह देवे तद अग्निके तुल्य हुंदाहै और इस स्थान विषे अग्नि सन्निभ इस शब्द काभी एहि अभिप्राय है कि उष्णता कर्के अग्निके तुल्य दग्धकरे । और ऐसा जलादि तप्तकरे कि जिसके पानकी तियां पीणे वाला पुरुष मृत होजावे । और सुराप तैसा हि तप्त सुरा पान कर्के मरणते शुद्ध हुं दाहै । और एह प्रायश्चित्त मतिपूर्वक सुरापान विषे है तैसेहि मनुजीने किहाहै मतीति कि मति पूर्वक सुरा पान विषे प्राणांत प्रायश्चित्त नहि पर्वदने उपदेश करणा ऐसे स्थितिहै ॥ क्याका मना कर्के सुरापानविषे जो प्राणांत प्रायश्चित्त पर्वदने नहि उपदेश कीता उसको शास्त्रते आपहि देख कर करणा योग्यहै अर्थात् ब्राह्मण जान कर्के सुरापान करे जेकर तद आपहि

सुरादीनामन्यतममेकं संतापनादग्निसान्निभमुष्णत्वेनाग्नितुल्यम् । यस्मि
नपीते पातुर्मृत्युर्भवति तथाविधं सुरापः पीत्वा मरणाच्छुद्धो मतिपूर्वकसु
रपानविषयमेतत् ॥ तथाचमनुः मतिपूर्वमनिर्देश्यं प्राणान्तिकामिति स्थि
तिरिति ॥ मतिपूर्वं कामपूर्वं अनिर्देश्यमिति ब्रुवन् प्राणांतिक प्रायश्चित्तं
पर्वदनुक्तं स्वयमेव शास्त्रतो विदित्वा कुर्यादिति गमयति ॥ अस्य विषयो भवि
ष्यत्पुराणे पैष्टीपाने तु चैतासां प्रायश्चित्तं निबोधमेमनुनोक्तं महावाहो समास
व्यासयोगतः १ एतासामिति सुराणामित्यर्थः एतासां प्रजानामिति वा सुरां पी
त्वेति पूर्वोक्तं ॥ गोमूत्रमग्निवर्णं वापिवेदुदकमेव वा ॥ पयोघृतं सुवर्णं वा गोश
कृद्रसमेव वा ॥ २ ॥

शास्त्र ते विचार कर्के प्राणांत प्रायश्चित्त करे और इसका विषय भविष्यत्पुराण विषे
लिखाहै पैष्टीति कि महादेव स्वामिकार्तिकको कहतेहै क्या हे गुह पैष्टीसुरा पान विषे
और इतर जो है तिनके पान विषे अथवा तिन्हां प्रजां का जो प्रायश्चित्त है सो मरेते श्रव
णकर और मनुजीने संक्षेपते एह किहाहै सोयी (सुरापीत्वा) इत्यादि पूर्वालिखयाहै १ क्या
सुरा पान कर्के अग्निके समान है वरुण जिसका ऐसा जोगो मूत्र है अथवा जल है तिस
को पीवे अथवा अति तप्त दूधघृत सुवर्ण गौके गोहेका रस एह अति तपाकर पान करे
अर्थात् इनके पीणे कर्के जेकर मृत होजावे तद उहपवित्र हुंदाहै अन्यथा नहि ॥ २ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ टी० भा० ॥ ७१

असकृदिति किजोब्राह्मणअनेकबारि जाणकर्के वारुणी मदिरा पानकरे सोपतित होजा ताहै इसकारणते उसके वास्तेप्राणांतहि प्रायश्चित्त विधानकिताहै अर्थात् ज्ञानते अनेकबारि वारुणीमदिरा पानविषे ब्राह्मणको जोपूर्व मरणांत प्रायश्चित्त किहाहै ओहि प्रायश्चित्तजा ब्रह्मा ३ ओर सोयीजैसे किवारुणीपीनेवाला ब्राह्मणलोहेके पात्रविषे वारुणीमदिरा कोतपाकर पूर्वकी न्यायी पान करे ॥ ओर कैसे होवे की आग्निके तुल्यहै वर्णजिसका ओर पापके हरणै वालो ऐसीको पानकरे तिसते अनंतरपापते मुकहुंदाहै ४ ओर एहविधिजोवते पुरुषको अंतका लके प्राप्तहोयां श्मशान विषे जाकर करणी कहीहै ॥ ओर एह प्रायश्चित्त गौडी ओर माध्वी के पान कोतयांब्राह्मणको जाणना इति । ओर उशनार्जने किहाहै गोवालेति के सुरा पान वाला ब्राह्मणगोके बालांकावस्त्र धारणकरे ओर अग्नि तुल्यतमसुरा पान कर्के पवित्र हुंदाहै

असकृद्ज्ञानतः पीत्वावारुणीपततिद्विजः मरणपूर्वनिर्दिष्टं प्रायश्चित्तं विधीयते ३ आयसेभाजनेतप्तांब्राह्मणोवारुणींपिवेत् अग्निवर्णीपापहरांततः पापा त्प्रमुच्यते ४ जीवितस्यांतकालेतुश्मशानेविहितोविधिः गौडीमाध्वीविषयमेतत् उशनाः । गोवालचीरवासासुरापस्सुरामग्निवर्णीपीत्वापूतोभवति ॥ देवलः सुरापानेब्राह्मणोरूप्यताम्रत्रपुसीसानामन्यतममग्निकल्पं पीत्वाशरीरपरित्यागात्पूयते हारीतः ॥ सुरापोअग्निर्णीसुरांपीत्वाघृतमपः पयोवापिहिरैर्यंवाविलाप्पमृत्युनापूतो भवति ॥ सुरापानंसकृत्कृत्येत्यनुवृत्तौ ॥ अगिराः ॥ भृगुप्रपातपतनंज्वलनंवासमाविशेत् ॥

इति । देवलजीने किहाहै सुरापानेति किब्राह्मण सुरापान विषे रूपाताम्र जसत सिका इनके मध्य विषे एक वस्तुको अग्नि तुल्यतपाकर पान कर्के शरीर त्यागते पवित्र हुंदाहै । ओर सो यो प्रकार हारीतजीने किहाहै कि सुरा पान करण वाला पुरुष अग्निवर्ण की जो सुराहै तिस को पान कर्के अथवा अग्नि वर्ण घृत अथवा जल अथवा दूध अथवा सुवर्णको गालकर पान करण कर्के मरजावे तद पवित्र हुंदाहै अर्थात् सुरापान कोतयां ब्राह्मणको शरीरत्याग करणा ए हि प्रायश्चित्त सर्वत्र दिखायाहै । ओर एक बारी पान करणे विषे अगिरा जीने किहाहै ॥ भृगु इतिकि जो पुरुष एकबारी सुरापानकरे सो अपनी शुद्धि वास्ते इसप्रकार करे क्या किसी पर्वत केऊपरचढ़करछालमारे अथवा अगाध जल विषे छाल मारे अथवा अतिप्रज्वलित अग्नि विषे प्रवेश करे ॥

७२ ॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः प्र० ॥ १३ ॥ टी० भा० ॥

अथवा महाप्रस्थान जो हिमालय है तिस विषे जाकर वरफमे प्रवेशकरे और इनमेसे एकविधि भीकरे तद संपूर्ण पापते मुक्त होजंदा है परंतु इसमें तिसके जीवनकी संभावना है इस कर्के पहिलेते न्यून एह प्रायश्चित्त है इति १ और इसते अन्य प्रायश्चित्त याज्ञबल्क्यजीने किहा है वालेति किसुरापीनवाला पुरुष वालों का वस्त्र और शिर विषे जटा धारके ब्रह्महत्या व्रत करे अथवा तिलांकी खल वाचा उलांकीयां कणियां इनको रात्रि विषे भक्षण करे एक वर्ष पर्यंत वातीन वर्ष पर्यंत कोई ऐसा कहते है ॥ और इसका विशेष अर्थ है कि वालधी योगोपुच्छति सके वाल उठाकर वस्त्रवनवालेवे और वाल कर्के ताड़पत्र भुज पत्र भीग्रहण करे और शिरमे जटाधारकर जो पूर्व किहा है द्वादश वर्ष व्रत उसव्रतको धारण करे और इसस्थानविषे वाल वासा इत्यादि का है जोग्रहण सो वारां १२ वर्षका जो ब्रह्महत्याव्रत है तिसकी प्राप्ति के निमित्त वास्ते है अर्थात् जो २ विधि वारां वर्षकी ब्रह्महत्या व्रत विषे कही है उसी विधि कर्के सुरापान

महाप्रस्थानमातिष्ठन्मुच्यते सर्वकिल्बिषैः १ प्रायश्चित्तान्तरमाह याज्ञबल्क्यः
वालवासाजटीवापि ब्रह्महत्याव्रतं चरेत् पिण्याकं वा कणान्वापि भक्षयेत्तु स
मानिषि १ वालधि स्थितकेशास्तन्मयं वसनं जटांश्च विभ्राणो ब्रह्महणियदु
क्तं द्वादशाब्दिकं व्रतं वाचरेत् वालिति चौरवलकलयोरुपलक्षणमिति मिताक्षरा
अत्र वालवासा इत्यादिग्रहं द्वादशाब्दिकं ब्रह्महत्याव्रतं तस्य नियमार्थं अन्यथा
व्रतान्तरमपि तदीयं स्यात् यदि तु बालवसनजटिलत्वरूपधर्मद्वयनियमा
र्थमिदं स्यात् न तर्हि मनुरत्राऽब्दादिग्रहं कुर्यात् कृतंचततेन कणान्वाभक्षये
दब्दं पिण्याकं वा सकृन्निषि सुरापानापनुत्यर्थं वालवासाजटीध्वजा ॥ पि
ण्याकमुद्धृतस्नेहं तिलकलकं कणांस्तंदुलान्वासकृद्रात्रौ वत्सरं यावदश्रीयात्

विषे भी प्रायश्चित्त करणा चाहिये और जे कर ऐसे ना हो तद ब्रह्महत्या का और भी कोई व्रत होना चाहिये और जेकर वालवासन और जटिल रूप एह जो धर्म है इस दोनो धर्मके नियम वास्ते इनका ग्रहण हुंदा तद मनुजी इस व्रत विषे वर्षादि ग्रहण ना करते और वर्ष संख्या का ग्रहण मनुजीने कीता है इसकारणते इसस्थान विषे भी द्वादश वर्ष व्रतका ग्रहण करणायो ग्य है सोयी जैसे कणानितिके एक वर्ष प्रमाण चावलकी कणियां भक्षण करे अथवा पिण्याक भक्षण करे एकवारी रात्रिविषे और सुरापान चापी की निवृत्ति वास्ते वालों का वस्त्र जटाध्वजा एह धारण करे और पिण्याक उसकानाम है की तेल निकालकर जो तिलांकी खल रहेजाति है और कणान् इसशब्द कर्के कणियां अथवा चावल इनको रात्रि विषे एकवारी भोजन करे वर्ष पर्यंत ॥

॥ श्रीरणीवीरकरित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी०भा० ॥ ७३

और इसविषे कीयी ऐसा कहते है कि समाशब्द बहुवचनांत है इस कर्के तिस वर्ष ग्रहण हुवे है एह नहि योग्य किसवास्ते कि जेकर तिस वर्षका ग्रहण होवे तद तिन्हाको कणान्वा भक्षये दब्द एहजो मनु जीकावाक्य है तिसके साथ विरोध आजंदा है इसवास्ते तिसवर्षका ग्रहण नहि हुंदा और (सुरापाना पनुत्यर्थ) इसवचनते ऐसाबोध हुंदा है कि जिसपुरुषने सुरापान कीसा है उसकी शुद्धि वास्ते एहवत है और जिसको तालु मात्र संयुक्त सुराहोई है तिसको एह व्रत नहि किहा अर्थात् जिस पुरुषके केवल तालुको सुराका संयोग होया है और पान नहि होया ॥ एह अच्छानहि इसविषे एह कारण है कि तालुका और सुराका संयोग है फल जिसका ऐसा जो व्यापार है उसव्यापार कर्के पान शब्दका प्रयोग हुंदा है अर्थात् जिस स्थान विषे तालुका और सुराका संयोग होवे उसीका नाम सुरापान जानना ॥ और मनुजीका जो एहवाक्य है कि

केचिदत्र समाशब्द बहुवचनांत वर्षत्रयपरत्वेन व्याचक्षते ॥ तेषां कणान्वा भक्षयेदब्दमिति मनुवाक्यविरोधः ॥ अस्मादेव च सुरापाना पनुत्यर्थमिति वचनात्कृतसुरापानस्यैतद्व्रतमिति गम्यते न पुनस्तालुमात्रसंयुक्तसुरस्येति नवरम् तादृशसुरासंयोगफलकव्यापारेण पानशब्दप्रयोगात् अज्ञानतः सकृत्यान विषयमेतदितिकेचित् मनुवचनमिदं तालुमात्रसंयोगे सुराया अबुद्धिपूर्वे द्रष्टव्यमिति मिताक्षरायां व्याख्यातम् (भक्षये त्रिसमानि शीतितत्समतः पाठः) तद्यथाननुद्रवद्रव्यस्याभ्यवहरणं पानमित्युच्यते अभ्यवहरणं च कंठस्याधो नयनं नतालवादि संयोगमात्रमतः कथं तत्र पाननिमित्तं प्रायश्चित्तमुच्यते येन तालवादि संयोगेन विना पानक्रियाननिवर्तते सोऽपि पानक्रियाप्रतिषेधेन प्रतिषिद्धः ॥

एह व्रत उसको जानना जिसको अज्ञानते सुराका और तालुमात्रका संयोग होवे इसवाक्य की व्याख्या मिताक्षरा विषे करी है ॥ सोयीजैसे ननु एह प्रण है क्या कि द्रव रूपजो द्रव्य है तिसका जो अभ्यवहरण है तिसका नाम पान किहा है और अभ्यवहरण उसको कहते है कि जो कंठते हेठा करण है अर्थात् पान उसकानाम है कि जो बहुत पतले द्रव्यको मुखविषे पाक रकंठते हेठा निगल लेना ॥ और तालुमात्र संयोगका नाम नहि हुंदा ॥ और तालुमात्र संयोगविषे पान निमित्त प्रायश्चित्त मनुजीने कैसे किहा है आगे उत्तरलिखते हैं कि जिस तालुसंयोगते विना पान क्रिया नहि निवृत्त होई सो भी पाना क्रियाकं निषेध कर्के निषिद्ध हो जंदा है ॥ अर्थात् जेकर पान क्रिया निषेध होगा तद तालुसंयोगका आप ही निषेध हो जंदा है

७४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र • १३॥ टी • भा •

इसकारणते यद्यपि सुरातालुमात्र संयोग विषे मुख्यपानके अभावते महापातक नहिहै इसका एह अभिप्रायहै किसुरा तालुसंयोगमुख्यपाननहिहै इसवास्ते महापातक भावभी इसको नहिहै तदभी मुख्यपानके निषेध होयां तिसका अंगजो सुरातालुसंयोगहै तिसकोभी निषेधहुंदाहै इसकारणते तालुसंयोग विषे दोषके विद्यमान होयां प्रायश्चित्त निश्चयकके हुंदाहै इसविषे एहहेतुहै चरेदिति कि जिसप्रकार कोई ब्राह्मणके मारण वास्तेजावे और मारे नहि उसको भी महाव्रत करणा योग्यहै अर्थात् द्वादश वर्ष व्रतकके पवित्र हुंदाहै और जैसे उसस्थान विषे मारण क्रियाके निषेध होणेकके तिसका अंगरूप जो अध्यवसाहै तिसका भी निषेध होनेते प्रायश्चित्त विधान कीताहै तैसे इसस्थान विषे भी तालुसंयोगसे भी प्रायश्चित्तहै अबइस मै होरविचार कईहै यत्त्विति योवौधायन स्मृतिविषे लिखयाहै किजेकर ज्ञानतेविना कोईसुरा

अतोयद्यपिमुख्यपानाभावान्नपातकत्वं तथापितत्प्रतिषेधेनतदंगभूताव्यभिचारिताल्वादिसंयोगस्यापिप्रतिषिद्धत्वेनदोषस्यविद्यमानत्वाद्भवत्येव प्रायश्चित्तं चरेद्भूतमहत्वापिघातार्थचेत्समागतइतियथाहननप्रतिषेधेनतदंगभूताध्यवसायादेरपिप्रतिषिद्धत्वात्प्रायश्चित्ताविधानं यत्तुवौधायनीयंत्रे मासिकममत्यासुरापानेकृच्छ्राब्दपादंचरित्वापुनरुपनयनमिति यच्चयाम्यसुरापीत्वाद्विजहत्वारुकंमहत्वाद्विजन्मनः संयोगपतितैर्गत्वाद्विजश्चान्द्रायणंचरेदिति यदपिबार्हस्पत्यंगौडीमाध्वीसुरापैष्टीपीत्वाविप्रःसमाचरेत् तत्तकृच्छ्रपराकंचचान्द्रायणमनुक्रमादिति

पानकरे सोतिन्न महीने व्रत करणे कर्के फेरयज्ञोपवीत संस्कार करे तदशुद्धहुंदाहै और यमजीने किहाहै सुरामिति क्यासुरापान कर्के और ब्रह्महत्याकर्के और ब्राह्मणका सुवर्ण हरकर्के और नीचकेसाथ संगकर्के ब्राह्मण चांद्रायणव्रतकरे अर्थात् ब्राह्मण इनमेसे एकभी कामकरेतो चांद्रायण करणेकर्के पवित्र हुंदाहै और बार्हस्पत्य विषे अर्थात् बृहस्पतिजीके बनायेहोए शास्त्र विषे यद्यपिएसा लिखयाहै किब्राह्मण जेकर गौडीमाध्वी पैष्टी इनका पानकरे तद क्रमपूर्वक कृच्छ्र और पराक और चांद्रायण करे अर्थात् गौडीपान कर्के तत्तकृच्छ्र करणा योग्यहै और माध्वी जेकर पानकरे तदपराक व्रत करणा चाहिये और पैष्टीसुरा जेकर पान करे तद चांद्रायण व्रत करणा किहाहै

तद भीएह जोतिन प्रकारका प्रायश्चित्त है सो जिसस्थान विषे रोग निवृत्ति वास्ते सुरा पान होवे उस स्थान विषे जानणे योग्यहै क्या यो रोग अन्य किसी ओषधी कर्के नदरहोवे और मदि रा पान कर्के दूर हो जंदाहै उसके नाश वास्ते जो मदि रा पान करे उसके वास्ते एह प्रायश्चित्त विधान कीताहै किस कारण तेकि प्रायश्चित्त को अल्प होनेते ॥ इस मे एह विशेष है कि सुगपान विषे ब्रह्महत्याके व्रतका यो अति देशहै सो अति देश विषे पिछे पादोन किहाथा तथा पिइहां पूराहि करणा तैसेहि शंखजीने किहाहै अध इति कि सुरा पान करण वाला इस विधि कर्के व्रत करे क्याकि पृथिवी ऊपर शयन करे और शिर विषे जटा धारण करे और पत्रमूल फल इनका एक काल विषे भोजन करे इस प्रकार करतियां यद वारां १२ वर्ष व्यतीत होजावेंतद इस व्रतके कर्णे कर्के एह जो ब्राह्मण मारण वाला और सुवर्ण कीचोरीकरण वाला और मदि रा पीने वाला और गुरुकी शय्या ऊपर गमन करण वाला सो संपूर्ण शुद्ध हो

तत्रितयमप्पनन्पौषध साध्यव्याध्युपशमार्थेपाने वेदितव्यं॥ प्रायश्चित्त स्याल्पत्वात् ब्रह्महव्रतमतिदिष्टमपिद्वादशाब्दिकसुरापःकुर्यात्॥ तथा च शंखिः अधःशार्याजाटाधरिपणमूलफलाशनः एककालंसमश्नानोर्वर्षेतुद्वादशे गते ॥ रुक्मस्तेयीसुरापश्च ब्रह्महागुरुतल्यगः व्रतेनानेन शुद्ध्यन्ति महापातकिनस्त्वमे । तदेवाह वृद्धहारीतः॥ द्वादशभिर्वर्षैर्महापातकिनः पूयंत इति पिएपाकादिभक्षणंचतपस्त्वाद्भोजनानंतरानिवर्तकं ब्रह्महत्याव्रतादेशश्चोदकवृद्ध्या सकृत्पीतायांसमनंतरमेव प्रच्छर्दितायां वेदितव्यः :

जंदाहै अर्थात् एह महापातकी द्वादश वर्ष विधि पूर्वक व्रत कर्ने कर्के महापातकने मुक्त होजंदाहै सोयी बृद्धहारीत जीने किहाहै कि वारां १२ वर्ष कर्के महापातकी पवित्र हो जंदा है ॥ और पिएपाक भक्षण करणा एह तप विषे अन्य भोजनकी निवृत्ति वास्ते किहाहै अर्थात् तप करतियां तिलां कीखलकाहि भोजन करणा चाहिये और कुछ नहि भक्षण करणा इस अभिप्रायसे किहाहै और सुरा पीण वाले को एह जो ब्रह्महत्या व्रतका उपदेश कीता है सो जिसने अज्ञानते एक वारी सुरा पान कर्के फेर वमन करदिताहो उसके वास्ते जाना अर्थात् जोकोयी पुरुष एकवारि ज्ञानते बिना सुरा पान कर्के फेर वमन द्वारा निकाल दे सो पुरुष द्वादश वर्ष व्रत कर्के शुद्ध होजंदाहै ॥ कोई कहतेहै जल बुद्धि कर्के एक वारी पीणे का एह प्रायश्चित्त है ॥

और इसी कारणते ब्रह्महत्याके प्रसंगविषे व्यासजीने किहाहै एतदिति कि एहि जो ब्रह्महत्याब्र
तहै इसीको मदिराके वमन कीतियां होयांकरे अर्थात् जेकर मदिराकोनिकाल देवे तद इत्स
ब्रह्महत्याव्रतकर्के शुद्धहुंदाहै और क्षरीर को पवित्रकरणवाला जोपंचगव्यहै सोनित्यप्रति तिस
को पीणाकिहाहै और खलभक्षणकरणेकरके उसकाव्यवहार शुद्धहुंदाहै और पापका नाशन
हि हुंदाहै अथवा द्वादशवार्षिकव्रतकरणेको जिसको सामर्थ्य नहिहै उसके वास्ते पिएयाक
भक्षणकाजो विधानकीताहै सोभीपापकोनाशकरण वाला हुंदाहै किसवास्तेकि एह (सुरापाना
पनुत्यर्थ) इसीसामान्यवचनते अर्थात् इन्हां दोयां वचनाको तुल्यहोणते कल्पना करणे
योग्यहै अर्थात् जोपुरुष वारांवषं व्रतकरणेको सामर्थ्य नहिहै उसकोपिएयाक भक्षण भी पा
पनाशकजान्ना ॥ और प्रायश्चित्त प्रकरणविषेकामनाते विना मद्यपानकीतियां बृहस्पतिजीने

अतएवब्रह्महत्यानुवृत्तौव्यासः । एतदेवव्रतंकुर्यान्मद्यप्रच्छर्दनेकृतेपंचगव्यं
चतस्योक्तंप्रत्यहंकायशोधनमिति पिएयाकादिभक्षणेनचसंव्यवहार्यताभ
वतिनपुनःपापक्षयःयद्वादशवार्षिकासमर्थप्रतिपिएयाकादिभक्षणंपापक्ष
यकरमपिभवतीति सुरापानापनुत्यर्थमित्यविशेषवचनाछक्यकल्पायितुं
प्रायश्चित्तप्रकरणेश्रकामतोमद्यपानेवृहस्पतिराह । पीत्वाप्रमादतोमद्यम
तिकृच्छूचरेद्धिजःकारयेत्तस्यसंस्कारंशक्त्याविप्रांस्तुभोजयेदिति यदेतन्म
द्यपानप्रायश्चित्तंब्राह्मणस्यैवनतुक्षात्रियविशोः ब्राह्मणस्यैवमद्यपानस्यनि
षिद्धत्वादित्याहुः ॥ वस्तुतस्तुनराश्वमेधौमद्यंचकलौवर्ज्यद्विजातिभिरिति
आचारकांडेमाधेवोदाहृतब्रह्मपुराणवचनेनकलौ सर्वान्प्रतितन्निषेधोरत्ये
वेत्यवधेयम् ॥

किहाहै पीत्वेति प्रमादते मद्यपानकर्के ब्राह्मणअतिरुच्छव्रतकरे और पुनासंस्कार कर्के आप
नी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणभोजन देवे तद शुद्धिको प्राप्तहुंदाहै और एहजो प्रायश्चित्त किहा
है सोब्राह्मणकोहि जान्ना और क्षत्रीवैश्य कोएहनहिहै किसवास्तेकि मदिरापीनेका निषेध
ब्राह्मणकोहि कीताहै ऐसे सभ ऋषिकहतेहैं तदभी इसमे सिद्धांत कहतेहैं वस्तुत इति वास्त
वते ऐसाहै नरोतीकि कलियुगविषे द्विजातियांने नरमेध अश्वमेध मदिरा इनकात्यागकरणा
योग्यहै ब्रह्मपुराणके आचारखंडविषे विष्णुजीकावाक्यहै तिसवाक्यकर्के कलियुगविषे ब्राह्म
णक्षत्रीवैश्य इनसभको मदिराकानिषेधजान्ना अर्थात् क्षत्रीवैश्यकोभी कलिविषे मदिराका
निषेधहै इति

श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ७७

और एकवागे सुरापानके प्रसंग विषे अंगिरा जोकावाक्यहै बृहस्पतीतिकि सुरापाने वाला ब्राह्मण बृहस्पति यज्ञकरणे कर्के ब्राह्मणोंकी समताको प्राप्त हुंदाहै एह वेदकी श्रुतिहै अर्थात् सुराप जो ब्राह्मणहै सो बृहस्पति यज्ञकर्के फेर अपनी जातीके समान हुंदाहै १ और जो उत्तम ब्राह्मण सुरापान कर्के भूमिदानकरे फेर जेकर ना पान करे तदभी संस्कारको प्राप्त होकर शुद्ध हुंदाहै और इसस्थान विषे संस्कार शब्दकर्के यज्ञोपवीतका ग्रहणकीताहै २ और सोयी विष्णुजी ने किहाहै सुरापानैरिति कि जो ब्राह्मण अज्ञानत अथवा प्रमादते किसीके संगते मदिरा पान करे सो अपनी शक्ति अनुसार दो प्राजापत्य व्रत करे अब इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कीताहै

सुरापानंसकृत्कृत्वेत्यनुवृत्तावंगिराः । बृहस्पतिसवेनेष्ट्वा सुरापोब्राह्मणः पुनःसमत्वं ब्राह्मणैर्गच्छेदित्येषावैदिकी श्रुतिः १ भूमिप्रदानं यः कुर्यात्सुरापित्वा द्विजोत्तमः पुनर्नैवपिवेज्जातु संस्कृतस्त्वपिशुभ्यति २ संस्कृतः उपनीतः विष्णुः सुरापानैर्ह्यविज्ञानात्प्रमादात्संगतोपिवा शक्त्या कृच्छ्रद्वयं कार्यं वत्सरं सम्मि तंतथा १ प्रथमे तप्तकृच्छ्रं तु पुनः संस्कारकर्म च द्वितीये जन्मतस्य स्यात्सम्मि तं तदनंतरं २ प्राजापत्यं ततः कार्यं पराकस्तु समापने चान्द्रायणं त्रिरभ्यस्पततो मुच्येत किल्बिषात् ३ शक्त्या हिरण्यं रजतं गाश्च भूमिं च दापयेत् अविज्ञानात्प्र मादाद्वायः संगस्ततो जातैः सुरापानैः कृत्वा पुरुषेण शक्तिश्चेत्तदा कृच्छ्रद्वयं कार्यं । वत्सरं यावच्च सम्मितं पुनः कदापि न पिबामीति परीक्षार्थं शुभाचार स्थितिमात्रं कार्यं न तु संव्यहारः

क्याकि अज्ञानते अथवा प्रमादते जो नीचोंके साथ संगकरणा तिस नीच संग कर्के जो पुरुष मदिरा पान करे तिस पुरुषने जेकर शरीर विषे शक्ति होवे तद दो प्राजापत्य व्रत करणे योग्यहै अर सभकी आज्ञाकर्के एक वर्ष पर्यंत समत क्या शर्त करणी चाहिये कि फेर कभी नहिमै मदिरा पान करीगा इस परीक्षाके वास्ते शुभ आचार स्थिति करे क्याकि जिस कर्के शुभ आचार नष्ट न होजावे ऐसा करणा योग्यहै और कुछ इसके साथ व्यवहार नहि करणा वर्ष पर्यंत अर्थात् वर्ष तक जेकर उह फेर पान नहि करेगातां पीछे व्यवहार करणा १

७८ श्रीराणावीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी ० भा०

जेकर वर्षके बीच फेर एक वारी सुरा पान विषे तत्त रुच्छादि और चकारते अग्ये वर्ष तक पूर्वोक्त सम्मित करणा और जेकर प्रमादते दूसरी वारी सुरापान करे तद पूर्वोक्त व्रतके साथ गो प्रसव करणा किहाहै अर्थात् उसका दूसरा जन्म संस्कार करवाणा और तिसते अनंतर भी वर्षका सम्मित पूर्वोक्त करणे कर्के शुद्ध हुंदाहै । २ और जेकर किसोके संग कर्के तीसरी वारी सुरापान करे तद तिसको पूर्वोक्त व्रत के साथ हि प्रा जापत्य व्रत करणा किहाहै और समाप्ति विषे पराक व्रत करणा किहाहै जेकर ऐसैहि संपूर्ण करे तद उह पवित्र जानणा । जेकर फेर भी पानकरे तद प्रायश्चित्त नहि एह वातां अर्थसे जानणी इति ३ और सुमंतु जीने किहाहै ब्राह्मणेति कि जो ब्राह्मण सुरा पान करे उसको छेमेहीने समुद्र विषे स्नान करणा योग्यहै परंतु समुद्रते बाहर जल ल्या कर्के नहि करणा किंतु समुद्रके बीचहि करणा । और उह गायत्री मंत्रके साथ नित्यं प्रति आठहजार आहुतिदेवे और तिसते अनंतर तिन्न उपवासकरे और फेर तत्त

ततः सकृत्पाने प्रथमे तत्त रुच्छादि चकारात्साम्मितं च द्वितीये पुनः पाने पूर्वोक्तेन सह गो प्रसवोपितदनन्तरमपि साम्मितं ततोपि पाने पूर्वोक्तेन सह प्राजापत्यं । समाप्तौ पराक इत्यादि सुमंतुः । ब्राह्मणस्य सुरापस्य षणमासानुद्धृत समुद्रोदकस्नानं । सावित्र्याष्टसहस्रं जुहुयात्प्रत्यहं त्रिरात्रमुपवासस्तत्त रुच्छेण पूतो भवन्त्यश्वमेधावभूथस्नानेन वा । प्रायश्चित्तप्रकरणे व्याघ्रः । सुरां मत्याह्यमत्यावापुनः पीत्वा द्विजोत्तमः ॥ ततोऽग्निवर्णीतां पीत्वा मृतः । शुद्धेत्स किल्विषात् इति । बृहस्पतिः ॥ गौडिमाध्वी सुरां पैठी पीत्वा विप्रः समाचरेत् ॥ तत्त रुच्छे पराकं च चांद्रायणमनुक्रमात् १

रुच्छ करे तद पवित्र हुंदाहै अथवा यज्ञ विषे अवभृथ स्नान कर्के पवित्र हुंदाहै अर्थात् अश्वमेध यज्ञ विषे यज्ञांत स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै इति और प्रायश्चित्त प्रकरण विषे व्याघ्रजीका बक्यहै सुरामिति जो द्विजोत्तम ज्ञान पूर्वक अथवा अज्ञान कर्के पुनः क्या पूर्वोक्त सम्मितके अनंतर अर्थात् सम्मितके पीछे चउधवार सुरापानकरे सो तिसते अनंतर अपनी शुद्धि वास्ते अग्निके तुल्यहै वर्ण जिसका ऐसी सुरा पीवे और तिसके पान करणे कर्के जेकर मृत हो जावे तद उह ब्राह्मण सुरा पानके पापते मुक्त हुंदाहै इति । और बृहस्पतिजीने किहाहै कि गौडीति कि जो ब्राह्मण गौडी माध्वी पैठी इनका पान करे तद उह इस क्रम कर्के प्रायश्चित्त करे क्या जेकर गुडकी मदिरा पानकरे तद तत्त रुच्छ व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर माध्वी मदिरा पान करे तद पराक व्रत कर्के पवित्र किहाहै और जेकर पैठी सुरा पान करे तद चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै इति १

और तिसकारण कर्के पैष्टी सुरापानविषे ब्राह्मण को चांद्रायण कहा है एहप्रायश्चित्त उसके वास्ते है कि जो ब्राह्मण अज्ञानते और एकवार सुरापानकरे और जेकर ज्ञानते पीबे तो फेर बमन कर देवे और अन्यव्रतकरणको भी सामर्थ्यनहो तिसकेवास्ते जानना योग्य है एवमिति इसप्रकार जोबड़े और थोड़े व्रत कहे है एह संपूर्ण अभ्यास और अनभ्यासके अनुसार कर्के कर्ताको शास्त्रविचार कर्के और देशकाल गुण जातिसामर्थ्य एह सभदेखकर परे द्म व्यस्था करणेयोग्य है अर्थात् एहजो पूर्व व्रत कहे हैं सो सभजो मदिरा पीनेवाला है उसकी जाति इत्यादि संपूर्ण देखकर शास्त्रके अनुसार दिखाणे योग्य है और लिखया है अज्ञानेति एह श्लोक पिच्छे भी आया है तथापि इसजगाम भी इसकी आवश्यकता है इस कर्के पुनरुक्ति नहीं सम

तेनपैष्टयामपिब्राह्मणस्यचांद्रायणमेवोक्तं तदेतत्सकृदमत्याकामतःपीतासु प्रच्छर्दितासुव्रतांतरासमर्थस्यैववेदितव्यं एवमादीनिगुरुलघूनिव्रतानिनिमित्तस्याभ्यासानभ्यासानुसारेणकर्तुरनुबंधतारताम्यवशेनदेशकालगुण जातिसामर्थ्यवशेनचपरिषदाव्यवस्थापनीयानि किंच अज्ञानात्सुरापीत्वा रेतोविष्मूत्रमेववापुनःसंस्कारमर्हतिप्रयोवर्णाद्विजातयः १ अज्ञानादकाम तस्तुसुरासकृत्पीत्वा रेतोविष्मूत्रंवाप्राश्यपुनः संस्कारमुपनयनं द्विजातयो ब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः कर्तुमर्हति अनेनचसुरापाननिमित्तंप्रायश्चित्तंकृत्वा पुनः संस्काराच्छुद्धिः ॥ नतुसंस्कारशुद्धिमात्रात्प्रायश्चित्तनिमित्त शुद्धि रित्युच्यते ॥ अनेनैवाभिप्रायेण मनुनाप्युक्तं अज्ञानाद्वारणा पीत्वापुनः संस्कारमर्हतिमतिपूर्वमनिर्देश्य प्राणांतिकमिति स्थितिः १

अणो कि जेकर ब्राह्मणक्षत्रिवैश्य एह तीनवर्ण ज्ञानते विना सुरापानकरे अथवा घोर्य विष्टा मूत्र इनकोभक्षणकरे तद पुनः संस्कार कर्के शुद्धहुंदा है और इसस्थान विषे ऐसा अभिप्राय है कि अज्ञानात् क्या कामनाते विना एकवारी सुरापानकर्के अथवा घोर्य विष्टा मूत्र इनकोभक्षणकर्के ब्राह्मणादि तिसवर्ण पुनः संस्कारकरे या यज्ञोपवीत संस्कार करणेके योग्यहोते हैं १ और इस कर्के इसमें एभी समझना चाहिये सुरापान निमित्त प्रायश्चित्त कर्के पश्चात् संस्कारकरणेते शुद्धहुंदा है और केवल संस्कार शुद्धिमात्रे प्रायश्चित्त निमित्त शुद्धि नहिं हुंदी इसी अभिप्राय कर्के मनुजानेकिहो है अज्ञानेति कि जोपुरुष ज्ञानतेविना वारुणीमदिराका पानकरे सो पुनः संस्कारके योग्य हुंदा है अर्थात् अज्ञानतेवारुणी पानकर्के पुनः संस्कार करणे कर्के शुद्धहुंदा है १

और जो पुरुष जाण कर्के वारणी पान करे सो अनिर्देश्य जो प्राणांत व्रतहै तिस कर्के पवित्र हुंदाहै क्यों कि जाण कर्के सुरा पान कीतियां होयां तिसके निमित्त सभाने जो प्राणांत प्रायश्चित्त नहि उपदेश कीता उसीको आपहि विचार कर्के प्राणांत प्रायश्चित्त करणा योग्यहै और जेकर ऐसान होवे तदपूर्वक प्रायश्चित्तका उपदेश व्यर्थहो जंदाहै ॥ और प्रायश्चित्तेन्दुशेषर विषे लिखयाहै कि जो पुरुष जल बुद्धि कर्के सुरा पान कर लेवे फेर उसी समय विषे वमनभी कर देवे तदभी उसको पूर्वोक्त धर्मके अनुसार तिन्न वर्ष प्रमान ऐसा प्रायश्चित्त करणा किहाहै कि एककाल रात्रि विषे तिलांकी खल अथवा चावलकी कणियां इन्हांदोआं विचों एकका भक्षण करणा इसते विना होर अन्न नहि भक्षण करणा और नित्य प्रति पंचगव्य पान करणा योग्यहै अथवा दोनो स्थान विषे भूमिदान पूर्वक पुनः संस्कारकरणा योग्यहै ऐसे प्रायश्चित्त करणे कर्के

मतिपूर्वसुरापानमनिर्देश्यप्रायश्चित्तपर्वदा अनिर्दिष्टमपिनिमित्तवतातत् स्वयमेवकार्यं अन्यथातदुपदेशोनर्थकस्यात् प्रायश्चित्तेन्दुशेषरे उदकवुद्ध्यापीतायाःसुरायास्तत्कालमेव वमनेतुपूर्वोक्तधर्मवतोवर्षत्रयंरात्रौसकृत्तिलकल्कतंदुलकणान्यतरमात्रभक्षणंनत्वन्नभक्षणं प्रत्यहंपंचगव्यपानंच अथवाभयत्रभूमिदानपूर्वकंपुनःसंस्कारःअनेनेहव्यवहार्यतैवद्वादशाब्दासमर्थस्यपापक्षयोपीतिमिताक्षरा तथाअज्ञानात्प्राश्यविमूत्रंसुरासंसृष्टमेवच पुनःसंस्कारमर्हत्तित्रयोवर्णाद्विजातयः सुरासंसृष्टंतिरोहितंसुरारसमिति विज्ञेयम् तथाशुष्कसुराभांडस्थितमुदकंइतरद्वातत्प्राशः सुरापानमेवतत्रापिचप्रायश्चित्तपूर्वकमेवपुनःसंस्कारः ॥

व्यवहार की योग्यता हुंदीहै कोई पापनाश नहि और जेकर द्वादशाब्द व्रत करणेकी सामर्थ्यने होवे तद इसकके पापका भी नाशहो जंदाहै एह मिताक्षरा विषे भी लिखयाहै सांयो ॥ जैसे अज्ञाना दिति कि ज्ञानते विना विष्टा मूत्र इनको भक्षण कर्के अथवा सुराके साथ जोस्पर्श हो या पदार्थहै उसको भक्षण कर्के ब्राह्मणादितिन्नवर्ण पुनः संस्कार के योग्य हुंदेहै और संस्पृष्ट इस शब्द कर्के सुरा रस बीच जो भिज्जाहो उसका ग्रहण कीताहै और तैसेहि सुकाहोया जो सुरा पावहे उस विषे स्थित जो जलहै अथवा अन्यकोई वस्तुहै तिसको भक्षण करणा एहभी सुरा पानके तुल्यहै और इस विषे भी प्रायश्चित्त पूर्वोक्त पुनः संस्कारहै करणा किहाहै अर्थविशेष वास्ते फेर एह श्लोक लिखाहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा ० ८१

तिसका प्रायश्चित्त शातातपजीने किहाहै सुराभांडेति कि जोपुरुष सुरावाले भांडेकाजल पानकरलेवे फेर उसको वमनभी जेकरदेवे तदभी उसको एकदिनरात्रि उपवास और घृत भक्षण करणा किहाहै। और सुरापात्रका वासीजल पीयेविषे वौधायण जीनेकिहाहै सुरा पानस्येति कि जिसपात्रकेसाथ सुरापानकरतेहैं उसभांडे विषे स्थितजो बेहा जल उसजलका जोपुरुष पीवे सोअपनी शुद्धिवास्ते शंखपुष्पा वूटीकेसाथ दुग्ध काड करके तिन्नदिन पानकरे तद शुद्धिको प्राप्तहुंदाहै और दूधभी एकवारी दिनविषे पानकरणे योग्यहै। और जेकर जाणकर्के एकवारी मदिराके भांडेका जलपानकरे और अज्ञानते बहुत वारी पानकरे उसस्थानविषे मनुजीने किहाहै अपद्रति किजोपुरुष सुरापात्र विषे स्थितजो जल तिसको जाण कर एक वारी जेकर पान करे और मद्यके भांडे विषे स्थित जोजलहै तिस

तत्प्रायश्चित्तमाहशातातपः ॥ सुराभांडोदकपानेछंदनघृतप्राशनमहोरात्रोपवासश्चेति। सुराभांडपर्युषितजलपानेवौधायनआह सुरापानस्ययोभांडेष्वपः पर्युषिताः पिवेत् शंखपुष्पीविपक्वंतुक्षीरंसतुपिवेद्भ्यम् क्षीरंचस्तो कमेवपातव्यं तपस्त्वात् सकृन्मतिपूर्वकेमद्यभांडोदकपानाभ्यासेचामति पूर्वकेमनुराह। अपः सुराभाजनस्था मद्यभांडस्थितास्तथापंचरात्रंपिवेत्पीत्वाशंखपुष्पीश्रितंपयः। पयोत्रक्षीरं सुराभाजनस्थाअपः ॥ सकृन्मतिपूर्वकंपीत्वामद्यभांडस्थाश्चामतिपूर्वाभ्यासेपीत्वापंचरात्रंशंखपुष्पीश्रितंपयः श्रवुद्धिपूर्वकेतुसुराभांडोदकपानेबिष्णुराह ॥ अपः सुराभाजनस्थाः पीत्वासत्तरात्रंशंखपुष्पीश्रितंपयः पिवेत् अस्मिन्नेवविषयेसाभ्यासे बृद्धयमआह सुराभांडस्थितंतोयंयदिकश्चित्पिवेद्द्विजः सद्वादशाहंक्षीरेणपिवेद्ब्राह्मीसुवर्चलां ॥ ब्राह्मीसुवर्चलालवणिकब्राह्मी ॥

को अज्ञानते जेकर बहुत वारीपान करे तद उह पुरुष शंखपुष्पावूटीके साथ दुग्धकाड कर्के पांच दिन रात्रि पान करे तद शुद्ध हुंदाहै ॥ और इस स्थान विषे पयः शब्द कर्के दुग्ध का हि ग्रहण करणा जल नहि ग्रहण करणा ॥ अज्ञान पूर्वक सुरापात्रके जल पान विषे विष्णु जीने किहाहै अप इति किसुराके पात्र विषे स्थितजोजलहै तिसको पान कर्के सात रात्रिशंख पुष्पी वूटीके साथ काडया होयादुग्ध पान करे ॥ और दूध विषयविषे बहुत बारमे बृद्धयम जीने किहाहै सुराभांडेति जो ब्राह्मण कदाचित सुराभांडस्थित जल पान कर लेवे तद सो ब्राह्मण दुग्ध के साथ ब्राह्मी सुवर्चला पान करे और ब्राह्मी सुवर्चला उसका नामहै कि जिसको लूणाककहतेहैं

८२ ॥ श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा०

और सुरापकेमुखके गंधकी घ्राणके प्रायश्चित्त विषेतो मनुजी का वाक्यहै ब्राह्मणस्येति कि सुरा पीण वालेब्राह्मणके मुखकी गंध को घ्राण कर्के सोमयाजियोहै सो जल विषे तिस्रप्राणायामक रेफेरआचमनकरे फेर घृत प्राशन करे तद शुद्धहुंदाहै इति १ एह प्रायश्चित्त सोमयाजिको अज्ञान विषे हि जाग्रणा और ज्ञान विषे तोदूणा करणा और नहिपीताहै सोमबल्लारस जिसने उस को जेकर साक्षात्सुराका घ्राणहोजावे तद(घ्राति रघेयमद्य योः) एह पिछे वचन किहाहै इसेत जाति भ्रंशकर होणेत जातिभ्रंश कर्म करण वाले विषे प्रायश्चित्त जाग्रणा अर्थात् महापाप करण वाले विषे प्रायश्चित्त नहिहै एह मनूक्तदेखलेणा अर्थात् मनु जीका किहाहोया देखणे योग्यहै इति ॥ जो सुराप्रसंग विषे गौतम जीने मद्यपानमे किहाहै किब्राह्मणमदिरापा न कर्के अपनीशुद्धि वास्ते दुग्ध घृत जल वायुः एह गरम कर्के तिस्र दिनपानकरे अर्थात् तिस्रदिन

सुरापस्यमुखगंधघ्राणेतुमानवं ॥ ब्राह्मणस्यसुरापस्यगंधमाघ्रायसोमपः प्राणानप्सुत्रिराचम्यघृतंप्राश्यविशुध्यतीति १ एतच्चसोमयाजिनोऽमति पूर्वैरेवमतिपूर्वेतुद्विगुणं अपीतसोमस्यतुसाक्षात्सुरागंधघ्राणस्यघ्रातिरघ्रे यमद्ययोरिति जातिभ्रंशकरत्वाज्जातिभ्रंशकरं कर्मेतिमनूक्तंद्रष्टव्यं॥यत्तु सुरानुवृत्तौगौतमेनमद्यपाने पयोघृतोदकंवायुः प्रतित्र्यहंतप्तानिसकृत्कृच्छ्रंततोस्यसंस्कारः सूत्रपुरीषरेतसांप्राशनेचेतितप्तकृच्छ्रपूर्वकत्वेनसंस्कारेविहितः तत्रापितप्तकृच्छ्रोऽल्यापराधविषयएवविषयांतरेतुप्रायश्चित्तांतरंद्रष्टव्यम् ॥

गरम दुग्ध और तिस्र दिन गरम घृत और तिस्र दिन गरम जल और तिस्र दिन गरम वायुहि पानकरे और एह सबएककाल विषे हि ग्रहण करणे योग्यहै तद एह तप्तकृच्छ्रहुंदाहै अर्थात् इसव्रतकानाम तप्तकृच्छ्र किहाहै और इस प्रकार तप्तकृच्छ्र कर्के तिसते अनंतर उसका संस्कार करणा चाहिये ऐसे करणे कर्के उह शुद्ध हुंदाहै और सूत्रविष्ठा वीर्य इनके भक्षण विषे भीएहि प्रायश्चित्त करणा किहाहै अर्थात् जो पुरुष कदाचित् सूत्रादि भक्षण करे उसको भी तप्त कृच्छ्र पूर्वक संस्कार करणा योग्यहै क्याकिप्रथम तप्त कृच्छ्र कर्के फेरयज्ञोपवीत संस्कार करणा चाहिये और इसस्थान विषे तप्त कृच्छ्र कर्के थोडे अपराधमे जाग्रणा और जि स्थान विषे और कोई विषयहो गा इसस्थान विषे प्रायश्चित्त भी और हि जाग्रणा

॥ श्रीरघुवीरकारित प्राथरिचत भागः प्र ० १३ टी० ॥ भा ० ८३

इसी कारणते बौधायन जीने किहाहै अज्ञानते जो पुरुष सुरापानकरे कच्छका वर्ष कच्छका चौथा हिसा व्रत कर्के फेर यज्ञोपवीत संस्कार करे तद शुद्धहुंदाहै और कच्छाब्दपादशब्दका एह अर्थ है कि वर्ष का पाद तिन्न महीने कच्छ करणा चाहिए ॥ और वशिष्ठजीने किहाहै मयेति किं जद कदे ब्राह्मण मयके भांडे विषे स्थित जो जल है तिसको पान करे तद कम ल रुवल वृक्ष और विल्व पलाश कुशा इनका जल निकाल कर तिन्न दिन एक काल विषे पान करे तद उह शुद्धहुंदाहै और तिसते अन्तर यज्ञोपवीत संस्कार करणा योग्यहै ॥ और पुनासंस्कारमें मुंडन की निवृत्तिविषे मनुजीका श्लोककिहाहै वपनमिति कि मुंडन करवाणा और मुंजीकी मेखला और पलाशकादंड धारणकरणा और भिक्षामागनी और ब्रह्मचारी को

अतएवाहबौधायनःअमत्यासुरापानेकच्छाब्दपादंचरित्वा पुनरुपनयनमि
तिकच्छाब्दपादंकच्छेणाब्दपादंत्रीन्मासानित्यर्थः वसिष्ठः॥मद्यभांडस्थितं
तोयंयदिकश्चिद्द्विजःपिवेत् पद्मोदुंबरविल्वपालाशकुशानामुदकंपीत्वात्रि
रात्रेणशुद्ध्यति ततःपुनरुपयनं वपनादीनांनिवृत्तौमानवंचात्रश्लोकमुदाहरं
ति वपनमेखलादंडोभिक्षचर्याव्रतानिच । निवर्त्ततेद्विजातीनांपुनःसंस्कार
कर्मणांति अपराकंभविष्यत्पुराणम् प्रायेणधर्मशास्त्रेषुसर्वेष्वेवसुराधिप
मतिपूर्वसुरापानेप्राणांतिकमुदाहृतम् पैष्टीपानेतुऋषिभिर्नैवतस्यकदाचन
ऋषिभिःपैष्टीपानेसतितस्यपानस्यप्रायश्चित्तनोक्तंप्रायश्चित्ताधिक्यात् अ
नुपदिष्टमपिस्वयंप्राणांतिकंकुर्यादित्यर्थः वसिष्ठनतथैवोक्तंप्रायश्चित्तंसुरा
धिप कामतोमद्यपानेतुनसुरायाःकदाचन॥ २ ॥

और जो व्रत कहेहैं एह संपूर्ण कर्म पुना संस्कार विषे ब्राह्मणको निवृत्त होजंदेहै अर्थात् जिसस्थान विषे ब्राह्मणको पुना संस्कार करणा किहाहै उस स्थान विषे मुंडनादि कर्मतेविना संस्कार करणा योग्यहै और अपराकं विषे भविष्यत्पुराणका वाक्यहै प्रायेणेति हे राजन् कि अतिशय कर्के संपूर्ण धर्म शास्त्र विषे ऐसा लिखाहै कि जो जानकर सुरापान करे उसके वास्ते प्राणांतिक प्रायश्चित्त किहाहै और पैष्टीसुरापान विषे ऋषियोंने प्रायश्चित्तनहि दिखाया किस वास्ते कि प्रायश्चित्त उसका बहुतहै इस कारणते प्रायश्चित्त नहिभी किहा तदभी आपहि प्राणांतिक करणा योग्यहैं । और हे राजन् वशिष्ठजी ने भी तैसे हि प्रायश्चित्त किहाहै कि कामनाते मदिरा पान विषे प्रायश्चित्तपूर्वोक्त किहा है और सुराका नाहि दिखाया २

८४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी ० भा०

पूर्वोक्तएहवासिष्ठहै कि ऐसा अभिप्रायहै किजो पुरुष सुराते भिन्न जोमदिराहै तिसका पान जेकर जाणकर करे और ज्ञानते बिना सुरापानकरे तदउह पुरुष अपनी पवित्रतावास्तेकच्छू अतिरुच्छू व्रतकरे और घृतभक्षणकरे और फेर यज्ञोपवीत संस्कारकरणा किहाहै अर्थात्सा मान्य मदिरा जेकरपीवे जानकर तदकच्छू करणे कर्के पवित्र हुंदाहै और अज्ञानते जेकर सुरा पानकरे तद अतिरुच्छू कर्के शुद्धहुंदाहै और और जोवहुतवारी सुरापानकरे सोऽग्निवर्णकी सुरापीवे एहप्रायश्चित्त उसस्थानमे जानना किजदकामनाते अथवा माध्वीका पानहो वे सोयी लिखयाहै हेसुराधिपकिजो पुरुषकामनाने एकवारी मदिरापानकरे सोपुरुषकच्छूति कच्छूकर्के फेर पुनासंस्कारते शुद्धहुंदाहै ३ और इसस्थान विषे भीमदिरा सुराते भिन्नहि ग्रह णकीता है और हेउत्तम कुलविषे श्रेष्ठ जेकर कामनाते पैष्ठी सुरापानकरे तदभी कच्छूतिक

पूर्वोक्तमिदंवासिष्ठं मद्यपानेतुअसुरायास्सुरायाश्चाज्ञानेकच्छूतिकच्छूघृतप्राशः पुनःसंस्कारश्चाभ्यासेतुसुरायाअग्निवर्णीसुरापिवेत् कामतोर्गौडी माध्वीपानेएतत् । कामतोमद्यपानंतुसकृत्कृत्वासुराधिप कच्छूतिकच्छूकृत्वा वैपुनःसंस्कारतःशुचिः ३ मद्यंसुराव्यतिरिक्तं अकामतःसुरापित्वापैष्ठींसत्कुलनन्दनकच्छूतिकच्छूकृत्वावैपुनःसंस्कारतःशुचिः ४ अत्यन्तासक्तवालातुर विषयमेतत् । चतुर्थकालंभुजानःसुरापोब्राह्मणोगृह वर्षत्रयंतुविधिनातिष्ठे दात्मविशुद्धये ५ पैष्ठीपानेकामतःसकृत्कामतोवाभ्यासेर्गौडीमाध्वीपानेएतत् प्रमादान्मद्यमसुरंसकृत्पीत्वाद्विजित्तमः गोमूत्रयावकाहारोदशरात्रेणशुद्धयति ६

कच्छूकर्के फेरपुनासंस्कारते पवित्र हुंदाहै ४ और एहप्रायश्चित्त उसस्थानविषे जानना जहांवाल क और रोमी अतिशयकर्के खचितहोवे और हेस्वामीकार्तिक सुरापीणेवाला ब्राह्मण अप नीशुद्धिवास्ते तिसवर्ष इस विधि कर्के स्थितहोवे क्यकि दिनके चौथे प्रहराविषेनेत्यप्रति एक काल भोजन करे और इसप्रकार तिसवर्ष कर्के पवित्रहुंदाहै ५ और एहप्रायश्चित्त अज्ञानतेएक वारी पैष्ठी पानविषे और कामनाते वहनवारी गौडीमाध्वीके पानविषे जानना और जोउत्त मब्राह्मणप्रमादते सुराभिन्नमदिराकोपीवे सोब्राह्मणगोमूत्रविषे यवोंका यावक बनाकर भोजनकर रतियां दशदिन कर्के शुद्धहुंदाहै औरयावक उसकोकहतेहै जवांकोगोमूत्रके साथपीस कर्के फेरकाडलेना ६ ॥

और जो ब्राह्मण अज्ञानते एक बारी मदिरा पान करे सो तप्त कच्छू घृत करे । और घृत भक्षण करे तद पवित्र हुंदाहै ७ और इस स्थान विषे भी सुराते भिन्न मद्यकिहाहै और गौतमादि ऋषियोंने ब्राह्मणों को सुरा पान विषे और मदिरा पान विषे निषेध किहाहै ८ और जो कि गौतमादि ऋषियोंने तप्त कच्छू का विधान किहाहै सो अज्ञानते गौडी माध्वीके पान विषे जानना ९ और ज्ञान पूर्वक तैसे हि गोडी माध्वीके पान विषे हे स्वामिकार्तिक संपूर्ण पाप हरणे वाला जो वासिष्ठ जीने शुभ व्रतकिहाहै सोयी जानने योग्यहै १० सो वचन पिछे किहाहै मद्य पाने इत्यादि ॥ और कामनाते सुरा भिन्न मदिरा पान कीतियां होया ब्राह्मण को अपनी शुद्धि वास्ते चांद्रायण व्रत का अभ्यास करणा योग्यहै अर्थात् जो ब्राह्मण कामनाते मदिरा पीवे सो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्धहुंदाहै ११ अथवा इसी विषय विषे मनुजीने जो व्रत

अज्ञानान्मद्यपानंतुसकृत्कृत्वा द्विजोत्तमः । तप्तकृच्छ्रसमातिष्ठेत् घृतप्राश्य ततः शुचिः ७ अत्रापिसुराव्यतिरिक्तमेवमद्यं विवाक्षितं प्रतिषेधः सुरापाने मद्यस्य च सुराधिप द्विजोत्तमानामेवोक्तं सततं गौतमादिभिः ८ तप्तकृच्छ्राभिधानं हियदुक्तं गौतमादिभिः अवुद्धिपूर्वपाने तु गौडी माध्वयोस्तदुच्यते ९ गौडी माध्वयोस्तथापाने मतिपूर्वक्षिते गुह वासिष्ठे तत्र विज्ञेयं सर्वपापहरं शुभम् १० वासिष्ठे च । मद्यपाने त्वमुराया इत्यादिकम् असुरामद्यपाने तु कृते विप्रस्तु कामतः चांद्रायणं समभ्यस्येच्छुद्धिकामः स्वशुद्धये ११ यद्वास्मिन्नेव विषये मानवीयं प्रकल्पयेत् कणान्वाभक्षयेददमित्यादिकं ॥ गौडी माध्वयोस्तथाभ्यासे प्राणांतिकमुदाहृतं माध्वी पीत्वा प्रमादेन सकृद्विप्रः सुराधिप १२ गोमूत्रयावकाहारोदशरात्रेण शुद्ध्यति ॥ सकृत्पीत्वा तथा गौडी मज्ञानात्सुरसत्तम कृच्छ्रातिरुच्छ्रौ विहितौ घृतपानकमेव च १३ गौडी मज्ञानतः पीत्वा ब्राह्मणो ब्राह्मणप्रियतप्तकृच्छ्रं नुवैकृत्वा पुनः संस्कारतः शुचिः १४ ॥

पूर्व लिखाहै सोयी कल्पना करे सोयी दिखायाहै कणान् इत्यादि और उसको टीका भी होचुकोहै । और तैसे हि गोडी माध्वीके बहुत बारी पानके अभ्यास विषे प्राणांत प्रायश्चित्त किहाहै । और हे स्वामिकार्तिक जो ब्राह्मण प्रमादते एक बारी माध्वी का पान करे सो गोमूत्र के साथ यावक भोजन करता होया दशदिन कर्के शुद्धि को प्राप्त हुंदाहै १२ और तैसे हि अज्ञानते एक बारी गुडकी मदिराको जो ब्राह्मण पान करे हे स्वामिकार्तिक तिसकी शुद्धि वास्ते कृच्छ्रातिरुच्छ्र विधान कीतेहै और घृत पान विधान कीताहै अर्थात् कच्छू अतिरुच्छ्र कर्के घृत पान करें तद पवित्र हुंदाहै १३ अथवा हे स्वामिकार्तिक जो ब्राह्मण अज्ञानते गौडी मदिरा पीवे सो तप्त कच्छू कर्के फेर यज्ञोपवीत संस्कार करणेत पवित्र पवित्र हुंदाहै १४

८६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी ० भा ०

और हेसुराधिप ॥ जो ब्राह्मण जाण कर्के गौडी पानकर सो प्रथम अपनी शुद्धिवास्ते चांद्रा यण करे फेर उत्तमब्राह्मण केतांयी गो दानकर देवे तदउहब्राह्मण शुद्धहुंदाहै १५ और प्राणांत प्रा यश्चित्तके प्रसंग विषे फेर भविष्यत्पुराणका वाक्यहै एतानीति कि एह जो संपूर्ण प्रायश्चित्त पूर्व कहैहै सोसभकामनातें पैछीसुरा पान विषे हि जान्छे और आगे गौडी पान विषे प्रायश्चित्त सुनो १ क्याकिगौडी मदिरा पीने वाला ब्राह्मण बृहस्पति यज्ञकर्के ब्राह्मणों की समताको प्राप्तहुं दाहै एह वेदकी श्रुतिहै २ और ब्राह्मणी स्त्री को भी मदिरा पानके निषेध विषे याज्ञवल्क्यजीका वा क्यहै पतिलोकमिति किजो ब्राह्मणी सुरा पान करतीहै सोमृब होकर पतिकेलोकविषे नहिजा ती ॥ और उहब्राह्मणी इसीलोक विषे कुत्तीकी योनी विषे और गिरझकी योनी विषे और शू

मतिपूर्वयदागौडंपिवेद्विप्रः सुराधिप तदाचान्द्रायणकुर्याद्वाचदद्याद्द्विजो तमे १५ मरणांतिकप्रायश्चित्तानुवृत्तौ पुनर्भविष्यत्पुराणं एतानिपैश्याः पानेतु कामतः संप्रवर्तते प्रायश्चित्तानिचोक्तानिगौडीपानेनिबोधमे १ बृहस्पतिस वेनेष्ट्वामयपोब्राह्मणः पुनः समत्वंब्राह्मणैर्गच्छेदित्येषावैदिकीश्रुतिः २ याज्ञ वल्क्यः किंच पतिलोकंनसायातिब्राह्मणीयासुरापिवेत् इहैवसाशुनीगृद्धीसू करीचोपजायते १ सत्कर्मार्जितमपिपतिलोकंस्वर्गादिकं सुरापीब्रह्मणीनया तिदंपत्योस्सहाधिकाराद्योगादिकारिणः पत्युर्लोकः सएवपत्न्याश्रपीत्य भिप्रायेणोक्तंपतिलोकंनसायातीति नकेवलंस्वर्गादिलोकंनयाति किंतु कुहिसतां श्वादियोनिं प्राप्नोति तस्माद्ब्राह्मण्यापिसुरानपेया पीताचेत्प्राय श्चित्तकार्यमितितात्पर्यार्थः अत्रमिताक्षरा ब्राह्मणीग्रहणं चात्रतिस्त्रोवर्णा नुपूर्वेणेतिन्यायेन यस्यद्विजातिर्यावत्योभार्यास्तासामुपलक्षणम् ॥

करी की योनी विषे जन्म धारण करतीहै १५ क्याकि श्रेष्ठ कर्म कर्के पति लोकमे जाणेका अ धिकारभी जेकर होवे तद भी सुरापीणे वाली ब्राह्मणी पतिलोक विषे नहि जाती ॥ किसवा स्ते कि पुरुषकी स्त्रीके साथ यज्ञविषे अधिकार होणेत यज्ञकरण वाले पति कोजोलोक प्राप्तहुं दाहै सोयोलोकस्त्रीकोभीप्राप्तहुंदाहै इसअभिप्राय कर्के किहाहै किपतिलोक को नहि जाती और केवल पति लोककाहि निषेध नहि किंतुनिदित जोश्वानयोनीहै तिसकोभी प्राप्तहुं दीहै ॥ इसवास्ते ब्राह्मणीनेंभी नहिसुरापानकरणा ॥ और ॥ जेकर पानकरलंवे तद उ सका प्रायश्चित्त करणा योग्यहै इसका एह तात्पर्यहै और इसस्थानविषे मिताक्षरा मे लिखया है किइत्ये ब्राह्मणी जो ग्रहणकीताहै सो ब्राह्मणकीयां जितनीयां स्त्रीयां होवें उनकाउपलक्षणहै अर्थात् ब्राह्मण की सभस्त्री मदिरापाननकरें

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा ० ८१७

इसी कारणते मनुजीने किहाई पततीति कि जिसकी स्त्री सुरा पान करे उसका आधा शरीर पतित होजंदा है ॥ और जिसका आधा शरीर पतित होजावे तिसकी कल्याण नहिहोंदी इति और धर्मार्थकार्य विषे स्त्री के साथ पतिको अधिकार है इसकारणते स्त्री पुरुष का शरीर एकहि किहा है ॥ इसते जिस ब्राह्मणकी स्त्री सुरा पान करती है तिसका स्त्री रूप आधा शरीर पतित होजंदा है ॥ और जिसका भार्या रूप आधा शरीर पतित होजावे तिसकी कल्याण नहिहोंदी और इसी कारणते ब्राह्मण की स्त्रीने सुरापान नहि करणा योग्य और ऐसायो लिखया है कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एह सुरापान नकरे इसनिषेध विधि विषे पुल्लिङ्गहि केवल नहि जानना किंतु स्त्रीका भी ग्रहण है इसकारणते ब्राह्मणकी तिसवर्णकी स्त्रियोंको भी सुरापान विषे निषेधके प्राप्त होय फेर ऐसा वाक्य लिखया है कि ब्राह्मण की शूद्रास्त्री को भी सुरा पान करणा निषेध है अर्थात्

अतएवमनुः पतत्यर्धशरीरस्य पस्य भार्यासुरांपिवेत् पतिता र्धशरीरस्य निष्कृतिर्न विधीयत इति धर्मार्थकामेषु सहाधिकाराद्वपत्योरेकशरीरत्वमेवा तोयस्य द्विजातिर्भार्यासुरांपिवतितस्य भार्यारूपमर्धशरीरं पतति ॥ पतित भार्यारूपार्धशरीरस्य निष्कृतिर्न विधीयते तस्माद्द्विजातिभार्यायासुरानपे या तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरांपिवेदिति निषेध विधौ लिंगस्या विवक्षितत्वेन वर्णत्रयभार्यानामपि निषेधे सिद्धे पुनर्वचनं द्विजातिभार्यायाः शूद्रा या अपि सुराप्रतिषेधप्राप्त्यर्थम् अतो द्विजातिभार्याभिः सुरापानप्रायश्चित्तस्यार्धकार्यं शूद्रभार्यायास्तु शूद्रायाः शूद्रवदेव न प्रतिषेधः अन्यायास्तु प्रतिषेध एव सुरापानसमेषु तु निषिद्धभक्षणादिषु सुरापानप्रायश्चित्तादर्धमिति अत्रापरार्कः ॥ मनुस्तु तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरांपिवेदिति वाच्यं गतं लिंगविवक्षितं मन्यमानः स्त्रीणां सुरापाननिषेधं पृथगाह ॥

शूद्राभी सुरा पान नकरे इसकारणते ब्राह्मणकी स्त्रियोंने सुरापान का प्रायश्चित्त आधा करणा योग्य है और शूद्रकी जोइस्त्री शूद्रा है तिसको शूद्रकी न्यांइ और शूद्रके घर होर वर्णकी स्त्री होवे तो उसको प्रायश्चित्त का नहिनिषेध कीता अथवा शूद्रकी स्त्री योशूद्रा है तिसको मद्यपानकानिषेध नहि योहोर है उसको निषेध जानना ॥ और सुरापान के समान जो निषिद्धवस्तुभक्षण है तिसविषेभी सुरापानका आधा प्रायश्चित्त करणा कि हा है ॥ और अपराके विषे और मनुजीने भीयो ऐसा लिखया है कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एह सुरापान नकरे इसस्थानविषे जो पुल्लिङ्गदिखाया है तिसको विवक्षित मानकर स्त्रियोंको सुरा पान कानिषेध भिन्न किहा है

८८ ॥ श्रीरएवीरकारित ॥ प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० १३ ॥ टी० भा०

और जो स्मृतियों के कण वाले हैं तिनों ने भी मनुजी के वाक्य विषे ऐसा ही निश्चाकिता है । इसी कारण ते ब्राह्मण नहि मारण योग्य कि जे से इस स्थान विषे ब्राह्मण वध का निषेध कीता है और ब्राह्मण वध विषय नहि होंदा अर्थात् एह जो पुंलिंग दिखाया है कि ब्राह्मण नहि मारणा इस वास्ते स्त्री लिंग वाची जो ब्राह्मणी है इसके वध का निषेध नहि जानना क्योंकि आत्रेयों के मारण बाले को ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त दिखाया है सो अति देश वाक्य होण ते थोड़ा है । और ऐसे ही ब्राह्मण के मुवर्ण हरण वाले को महापातक किहा है और ब्राह्मणों के सुवर्ण हरण करके महापातक नहि होंदा हेसा ही निश्चय सिद्ध हुंदा है । और इस स्थान विषे ब्राह्मणों का जो ग्रहण कीता है सो क्षत्रियादिकी निवृत्ति वास्त जानना और लिखा है कि विधेय विषे लिंग भेद करता है और और स्थान विषे कोयि नियम नहि है अर्थात् किसी स्थान विषे तो पुंलिंग

अन्ये स्मृतिकाराश्चानुपोदयस्यापि विशेषेण विवक्षितं मन्यन्ते अतएव ब्राह्मणो न हंतव्य इत्येष प्रतिषेधो ब्राह्मणीवधविषयो न भवति ॥ अतएवात्रेय्यादिवध करिणो ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तातिदेशः । एवं च सति ब्राह्मणमुवर्णहरणं महापातकमित्युक्तौ ब्राह्मणीसुवर्णहरणं न महापातकमिति सिद्धयति । अत्र ब्राह्मणीग्रहणक्षत्रियादिसत्रीणां व्यावृत्त्यर्थम् विधेये भेदकं तत्र मन्यतो नियमो न हीत्यादिवचनाद्विशेषणविवक्षाविवक्षेज्ञेये ॥ अतएव वसिष्ठः ॥ या ब्राह्मणी सुरापानता देवाः पतिलोकं नयन्ति इहैव सा भ्रमति क्षीणपुण्या ऽप्सु लुग्भवति जलौकासुक्तिकेति वा ब्राह्मणी स्त्रीत्युक्तवान् ॥ शंखोपिसुरालशुनपलांडुगृजनकमांसान्यभक्ष्याण्याह

म कहने के पुंलिंग का ही ग्रहण हुंदा है और किसी स्थान विषे पुंलिंग कर्के स्त्रीलिंग का और स्त्रीलिंग कर्के पुंलिंग का ग्रहण होजंदा है इत्यादि वाक्य त किसी स्थान विषे विशेषण का ग्रहण कीता है और किसी स्थान विषे नहि ग्रहण हुंदा ऐसा जानना और इसी कारण ते वसिष्ठ जी का वाक्य है कि जो ब्राह्मणी सुरापान करती है तिसको देवता पतिलोक को नहि ले जाते और सो ब्राह्मणी इसी स्थान विषे भ्रमण करती है ॥ अर्थात् मदिरा पीने वाला ब्राह्मणी पतिलोक विषे नहि जंदी किंतु तिसको इसी स्थान विषे अनेक नीच योनि प्राप्त हुंदा है और पुण्य के क्षीण होंया उह जल विषे लीन हुंदी है अथवा सिंघी रूप होजंदा है अथवा जलौका हुंदी है ॥ इस प्रकार वसिष्ठ जी कथन करते भये और शंख जी ने भी सुरालस्सन गंडा गाजर मांस एह सब अभक्ष कहे है ॥

श्रीर रसरूपशरीरहुंदाहै रसरूपहोंषेतेब्राह्मण वण संकर होजंदाहै किसवास्ते किजो कुछ माता खावे पीवे उसकर्के हिगर्भ स्थित हुंदाहै । इसी वास्ते सुरादि अभक्ष योंहै तिनको भक्षण करण वाली ब्राह्मणी का पुत्र भविष्य संकर हुंदाहै क्योंकि माताके खाने पीने कर्के गर्भकीवृद्धिहुंदोहै इसकारण तेइस स्थान विषे ब्राह्मणीको सुरा पान निषेध कीताहै एह संपूर्ण सुरा पान करणो का प्रायश्चित्त प्रकरण किहाहै

रसमयंहिशरीरंतन्मयत्वाद्ब्राह्मणः संकीर्यते मातुराशितपीतादिग

र्भस्संभवातिसुराद्यभक्ष्यभक्षकाया ब्राह्मण्याः

पुत्रः संकरो भवति मातृभुक्तपी

ताद्युपचितत्वात् अत्रा

पिब्राह्मण्याः सुरा

निषेधः इति सुरा

पानप्रायश्चि

तप्रकर

णम्



९० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग ० प्र ० १३ टी ० भा ०

ओंनमः अथमहापातकके मध्यविषे स्तेयप्रायश्चित्त लिखतेहैं और इसस्थान विषे स्तेयनामहै चोरीका और चोरीभी स्वर्णहरण परजातणी और सोयीजैसे कि सुवर्णकी चोरी करणवाला ब्राह्मण इसवाक्य कर्के प्रायश्चित्तों विषे मनुजीने सुवर्णकी चोरीविषेहि उपसंहारकीयाहै अर्थात् मनुजीने संपूर्ण प्रायश्चित्त विषे सुवर्ण कीचोरी कीहै महापातक निश्चयकीताहै ॥ और मनुजीने पूर्वऐसा जोलिखयाहै किस्तेय और गुरुकीस्त्री साथगमन करणा इस स्थान विषे स्तेय शब्द कर्के सुवर्णकी चोरीकाहि ग्रहण जानना और सुवर्णकी चोरीते बिना अन्य यो चोरीहै तिसका प्रायश्चित्त उपपातक प्रकरण विषे जानने योग्यहै इस कारणते सुवर्ण चुराणा महापातकहै और सुवर्ण तेबिना और चोरी उपपातकहै और चोरीका लक्षण

ओंनमःअथमहापातकान्तर्गतस्तेयप्रायश्चित्तं स्तेयमत्रस्वर्णपहरणपरं सुवर्णस्तेयकृद्विप्रइत्यनेनप्रायश्चित्तेषुमनुनासुवर्णविषयत्वेपनांसंहतत्वात् स्तेयंगुर्वगनागमइतिपूर्वमपिमानवीयंस्वर्णहरणपरमेवज्ञेयं तदपिवक्ष्यमाणस्मरणाद्ब्राह्मणीयमेव एतदतिरिक्तन्तूपपातकप्रकरणेबोध्यमस्तेयलक्षणंप्रायश्चित्तप्रकरणेपरद्रव्यापहरणमिति स्तेयसामान्यलक्षणमिदम् एवमेवापरार्कादौ॥अथैतत्प्रायश्चित्तं मनुः सुवर्णस्तेयकृद्विप्रोराजानमभिगम्यतु स्वकर्मस्यापयन्ब्रूयान्मांभवाननुशास्त्विति१अपहस्यसुवर्णेतुब्राह्मणस्य यतःस्वयामितिशातातपस्मृतेः विप्रसुवर्णचोरोब्राह्मणोऽनृपंप्राप्य द्विजसुवर्णपहाररूपंनिजंकर्मप्रकटयन्भवान्ममनिग्रहंकरोत्विति वदेत्

प्रायश्चित्त प्रकरणमें लिखयाहै किदूसरेका द्रव्यहरलेणा एह चोरीका सामान्यलक्षणहै और ऐसेहि अपराकादि ग्रंथोंविषेहै और अब तिसका प्रायश्चित्त मनुजीने किहाहै सुवर्णेति कि सुवर्णकी चोरीकरण वाला ब्राह्मण राजाके समीप जाकर्के अपने कर्मको प्रकट करताहो या ऐसे राजाको कहै क्या किहे राजन्तुसी मेरेको शासना करो अर्थात्तु दंडदेबोइति ॥ १ ॥ और ब्राह्मणका सुवर्ण चुराकर्के आपदि राजाको ऐसाकहे एहशातातपस्मृति विषे लिख याहै कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुराणे वाला ब्राह्मण राजाको प्राप्तहोकर अपना कर्म इसप्रकार प्रकट करे कि मेनेब्राह्मणका सुवर्ण चुरायाहै इसकारण तुसीमेरेको दंडदेवो ऐसे राजाके आगे प्रार्थना करे इति ॥

और इस स्थान विषे ब्राह्मणका जो ग्रहण कीताहै सो मनुष्य मात्रके दिखाणे वास्तेहै अर्थात् ब्राह्मण शब्दकर्के सामान्य मनुष्यका ग्रहण जानना क्योंकि प्रायश्चित्तीयते नर इस प्रसंगविषे भी नर शब्दकर्के मनुष्य मात्र काहि ग्रहण होणेते क्षत्रियादि कोभी प्रायश्चित्त विधान कीताहै इसकारणते सोयो अपराकं विषे लिखयाहै कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुराणे वाला पुरुष राजाके तायी मुशल अर्पण करे और अपना कर्म प्रकट करता होया सो सुवर्ण चोर राजा ने मुशलके प्रहार कर्के हत होया २ पवित्र हुंदाहै ॥ अथवा राजा छोड़ देवे तदभी उह शुद्धहोजेदाहै इसीका फेर विशेष अर्थ कहतेहै ब्राह्मणेति ब्राह्मणका जो सुवर्णहै तिसको जिसे किस प्रकार कर्के पोहरलेवे सो राज्यके अभिषेक वाले राजापास जाकर अपने कर्मको

ब्राह्मणग्रहणमत्रमनुष्यमात्रप्रदर्शनार्थं प्रायश्चित्तीयतेनरइतिप्रकृतत्वात् क्षत्रयादीनांचप्रायश्चित्ताभिधानात् अपारार्के । ब्राह्मणसुवर्णहारीराज्ञेमुशलमर्पयेत् स्वकर्मस्यापयस्तनहतेमुक्तोपिवाशुचिः ब्राह्मणस्वभूतंसुवर्णं हत्वायेनकेनापिप्रकारेणाछिद्याभिपिक्तायक्षत्रियाथस्व कीयंब्राह्मणसुवर्णं स्तेयाखण्डकर्मस्यापयन्मुशलमर्पयेत् तेनराज्ञातेनचमुशलेनहतःशुचिर्भवति यदिराजानहन्तिकिन्तुमुंचतितदासौतेनमुक्तः सन्नपिशुचिर्भवतियद्यपि सुवर्णशब्दोहेमजातिवचनएव तथाप्यत्रपरिमाणविशेषविशिष्टस्यैवहेमोऽपहारेप्रायश्चित्तमिदंद्रष्टव्यं ॥ द्वित्र्यादिमापात्मकहेमहरणंतुक्षत्रियादिहेमहरणवदुपपातकमेव ॥ मरणेतरप्रायश्चित्तेपदेशात् सुवर्णमानमाह याज्ञवल्क्यः । जालसूर्यमरीचिस्थंत्रसरेणुरजःस्मृतम् तेष्टौलिक्षानुतास्ति सोराजसर्षपउच्यते १

कहताहोआ मुसल देवे होर अर्थस्पष्टहै और यद्यपि सुवर्ण शब्द इस स्थान विषे सुवर्णका वाचिकहै तदभी परिमाण विशेष युक्त सुवर्ण चुराणे विषे एह प्रायश्चित्त जानना सो परिमाण विशेष आगे दिखाया जावेगा और दांतिन मामे सुवर्ण हरण विषे तो क्षत्रियादियोंके सुवर्ण हरणकी न्यायी उपपातक हिहै क्योंकि मरणते भिक्ष प्रायश्चित्तका उपदेश होणेने निश्चय कर्के उपपातकहै कुछ संशयनहि और सुवर्णका प्रमाण याज्ञवल्क्यजीने किहाहै जालेति कि झगेखे विषे स्थित जो सूर्यकीयां किरणहै उनमें जो बहुत सूप्रमरजके किरणके प्रतीत होतेहै उनके मध्य विषे एक किरणकेका नाम त्रसरेणु किहाहै और आठ किरणके होवें तद एक १ लिखहुंदीहै और तीन लिखाका एक १ रायो कादाणा हुंदाहै १

९२ ॥ श्रीरण्वारकारित प्रायश्चित्त भाग ० प्र ० १३ टी ० भा ०

श्रीर रायीके तीन ३ दाणे होवे तद एक १ श्वेतसरोका दाणा किहाहै ॥ और गौरी सरोके छे ६ दाणे होवे तद एक मध्यजौ १ हुंदाहै और तीन जौका एक १ कृष्णल हुंदाहै और पांच ५ कृष्णल होवे तद एक १ मासा किहाहै और सोला १६ मासेका एक १ सुवर्ण अथवा तोला किहाहै २ और चार ४ सुवर्ण होवे तद एक पल किहाहै अथवा पांच ५ सुवर्ण का एक पल किहाहै अवरूप्येकी मानपरिभाषा कहंतहै (द्वि इति) और दो कृष्णल हो १ रूप्ये का मासा जानना और १६ मासे १ धरण अथवा पुराण हुंदाहै ३ और १० पुराणका १ शत मान अथवा पल हुंदाहै और ४ सुवर्ण का रजतका निष्क किहाहै और ताम्रपण कार्षिक कार्षापणभी उसीका नामहै ४ और १ मासेका सुवर्ण बराह किहाहै और मध्यमशब्दका संबंध

गौरस्तुतेत्रयः षट्तेयवो मध्यस्तुतेत्रयः कृष्णलः पंचतेमापस्ते सुवर्णस्तु षोडश २ पलं सुवर्णाश्चत्वारः पंचवापि प्रकीर्तितम् द्वे कृष्णले रूप्यमाषो धरणं षोडशै वते ३ शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव तु निष्कं सुवर्णाश्चत्वारः कार्षिकस्ताम्र कः पण इति ४ जालान्तः प्रविष्टसूर्यमरीचिस्थितं यद्रजस्तत्र सरेणु इति तेषां लिक्षातिस्त्रैः लिक्षाराजसर्षपः तैराजिकास्त्रयोगौरसर्षपः गौरसर्षपाः षट् मध्ययवः तत्रयः कृष्णल इति कृष्णल पंचकं माषः षोडशमाषाः सुवर्णः चत्वारः सुवर्णाः पलमिति पक्षे पंचभिः सुवर्णैरपि पलं भवतीति द्वे कृष्णले रूप्यमाष इति षोडशमाषैर्धरणमिति अस्यैव संज्ञांतरं पुराणमिति दशभिर्धरणैः शतमानं पलं चेति चत्वारः सुवर्णाराजतं निष्कमिति ताम्रिकः पणः कार्षिकः कार्षापणश्च भवति नवमाषं सुवर्णं वराहः इति मध्यमशब्दः सर्वत्रानुसंधेयः इति प्रत्याम्नायप्रकरणे प्रोक्तमपि प्रसंगादुक्तं अतएवोक्तं षट्त्रिंशन्म ते सुवर्णस्यापहारे मापकेनापि पातकं निष्कमात्रापहारेण न विद्मः किं भविष्यति १ वालाग्रमात्रे पहते प्राणायामं समाचरेत् ॥

संबंध करणा योग्यहै और एह संपूर्ण प्रमाण प्रथम प्रत्याम्नाय प्रकरण विषेहैं और प्रसंग कर्के फेर इसस्थान विषे भी किहाहै इसवास्ते पुनश्च दोष नहि जानना और जे कर इसस्थानमे न लिखत तद कार्य नहि सी चलता इति इसी कारणते षट्त्रिंशतमत विषे लिखयाहै सुवर्णस्येति कि एक मासा प्रमाण जो पुरुष सुवर्ण चुरालेवे उसको पातक हुंदाहै और जे कर निष्क प्रमाण क्या एक पल प्रमाण सुवर्ण की चोरी करेगा उसको क्या होगा एह हम नहि जानते अर्थात् महापातक हुंदाहै १ और वालका जितना अग्रभाग हुंदाहै उतना मात्र सुवर्ण चुरालेवे तद पुरु प्राणायाम कर्के पवित्र हुंदाहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा० ९३

श्रीर जेकर लीख मात्र प्रमाण सुवर्ण की चोरी करे तद तैसेहि सो बुद्धि मान तीन प्राणायाम कर्के शुद्ध हुंदाहै और रायो प्रमाण सुवर्ण की चोरी जेकर करे तद चार प्राणायाम कर्के पवित्र हुंदाहै अथवा आठ हजार गायत्री मंत्रका विधि पूर्वक जप करे अपनी शुद्धि वास्ते ३ और सै तीसरोका जितना तोलहै उतना प्रमाण सुवर्ण जेकर कोई पुरुष ब्राह्मणका हरलेवे तद एकदिन गायत्री जप कर्के पवित्र हुंदाहै और जेकर यव प्रमाण सुवर्ण हरलेवे तद उसको दोदिन वरा वर प्रायश्चित्त करणा चाहिये अर्थात् गायत्री जप जितना दोदिनमे होजावे उतनेहि जप कर्के शुद्धिको प्राप्त हुंदाहै ४ और एक कृष्णल प्रमाण सुवर्ण चुरा कर्के उत्तम ब्राह्मण अपनी शुद्धि वास्ते सातपन व्रत करे तद सो पापते मुक्त होजंदाहै ५ और जो अधम ब्राह्मण एक मासा प्रमाण सुवर्ण चुरा लेवे सो गोमूत्रके साथ यावक बना कर भोजन करता होया तिनमहाने कर्के शुद्ध

लिक्षामात्रेपितथाप्राणायामत्रयंबुधः २ राजसर्पपमात्रेतुप्राणायामचतुष्टयं
गायत्र्यष्टसहस्रं तु जपेत्पापविशुद्धये ३ गौरसर्पपमात्रेतुगायत्रीवैदिनं जपेत्
यवमात्रे सुवर्णस्य प्रायश्चित्तं दिनद्वयम् ४ सुवर्णकृष्णलं ह्येकमपहत्य द्विजोत्तमः
कुर्यात्सातपनं कृच्छ्रं तत्रापस्यापनूतये ५ अपहत्य सुवर्णस्य मापमात्रं द्विजा
धमः गोमूत्रयावकाहारस्त्रिभिर्मसैर्विशुद्ध्यति ६ सुवर्णस्यापहरणे वत्सरं याव
कीर्भवेत् ऊर्ध्वप्राणांतिकज्ञेयमथवा ब्रह्महव्रतम् ७ इदं च वत्सरं यावकाशनं किं
चिन्न्यूनसुवर्णपहारविषयं सुवर्णपहारमन्वादिपुद्गादशवार्षिकविधानात् ॥
शंखः अधः शयी जटाधारी पर्णमूलफलाशनः एककालं समश्नानो वर्षे तु द्वा
दशगते ॥ १ ॥

हुंदाहै ६ और जेकर एक तोला प्रमाण सुवर्णको चुरा लेवे तद एक वर्ष प्रमाण यावक भोजन कर्के पवित्र हुंदाहै और इसते उपरंत सुवर्ण की चोरी विषे प्राणांत प्रायश्चित्त अथवा ब्रह्महत्या व्रत करणा किहाहै ७ इसमे सुवर्ण मात्रके हरणेमे यो प्रायश्चित्त किहाहै सो सुवर्णते कुल न्यूनकरण विषे समझणा पूरे सुवर्णके हरण विषे मनुजीने वारां १२ वर्षका प्रायश्चित्त किहाहै इसते कुल न्यून हरण विषेहि जानना सोलां मासे सुवर्णका नाम सुवर्णहै और शंखजीने भी ऐसा किहाहै अध इति कि भूमि ऊपर सौणा और शिर विषे जटाधारण करणी और फल मूल पत्तर इनका भोजन करणा एक काल विषे इस विधि कर्के वारां १२ वर्ष व्यतीत करणे एहदा दश १२ वर्षका व्रतहै ॥ १ ॥

९४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ४ १३ ॥ टी० भा०

श्रीर इसव्रत कर्के एह जो महापातकीहैं कि सुवर्णका चोर और सुरापीणे वाला और ब्रह्महत्या करण वाला और गुरुकी शय्या ऊपर गमन करणे वाला एहसभपवित्रताको प्राप्तहोजेंदहै २ और इसस्थान विषे क्षत्रीको दूणी सभाकरनी नहिहै और इसस्थान विषे अज्ञानने वारां वर्षकाव्रत और ज्ञानतेप्राणांत अथवा मृत्युकेतुल्य चौबीस २४ वर्षका व्रतहै अर्थात् जोक्षत्री ज्ञानते विना ब्राह्मणका तोला भर सुवर्ण चुरा लेवे सो वारां १२ वर्ष व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर जाण कर्के सुवर्णकी चोरी करे तद प्राणांत व्रत कर्के अथवा चौबीस २४ वर्ष व्रत कर्के पवित्र हुंदाहै और ब्राह्मण ब्राह्मणका सुवर्ण पूर्वोक्तपरिमाणवाला योहै तिसको चुरावेतो ज्ञानते वारां १२ वर्षका व्रत और अज्ञानते छे ६ वर्ष व्रत करण किहाहै और भविष्यत्पुराणविषे लिखयाहै अपहृत्येति किहेस्वामिकार्तिकजो पुरुष ब्राह्मणका पांच ५ तोले प्रमाण सुवर्ण चुरालेवे सोऐसे करे किक्षत्री राजा पास चला जावे १ और राजा तिसको एक

रुक्मस्तेयीसुरापश्चब्रह्महागुरुतल्पगःव्रतेनानेनशुद्धयतिमहापातकिनस्त्विमे २ परिपद्द्वैगुण्यादिकमत्रराजन्यानांनास्तिअत्राज्ञानतोद्वादशवार्षिकंज्ञानतोमरणवैकल्पितचतुर्विंशतिवार्षिकंवाब्राह्मणस्यद्वादशवार्षिकं अज्ञानतःपटुवार्षिकं भविष्ये अपहृत्यसुवर्णेतुब्राह्मणस्यसुराधिप पंचनिष्कप्रमाणतुराजानंक्षत्रियंव्रजेत् १ तस्मादौदुंबरंशस्त्रंप्राप्यात्मानंहनेद्रुह निमीलिताक्षौजठरेस्वशक्त्यामारणाच्छुचिः २ अल्पापहारेत्वल्पंप्रायश्चित्तंतद्वक्ष्यमाणगायत्रीजपादिनाकार्थ्यम् एतच्चसुमंतुस्मरणेनवक्ष्यते मनुःराजास्तेनेनगंतव्योमुक्तकेशेनधावता स्कंधेनादायमुशलंलगुडंवापिखादिरं १ अयंचोभयतस्तीक्ष्णमायसंदंढमेववा शासनाद्वापिमौक्षाद्वास्तेनःपापात्प्रमुच्यते २ अशासित्वातुंतराजास्तेनस्याप्रोतिकिल्विपं ॥

ग्रामेका शस्त्र लेकर नेत्र मीटकर तिसके उदर विषे अपनी शक्ति कर्के प्रहारकरे तद तिस के कारणते जीवे चाहे उहमरेडहशुद्धहोजेंदाहै २ और अल्पचोरी विषे प्रायश्चित्त भी अल्पहै सोयो प्रायश्चित्त आगे कहणा जो गायत्री जपादिकर्के करणयोग्यहै एह सुमंतुजीके स्मरणते कहेंगे और तेमहि मनुजीने किहाहै राजेति कि सुवर्णके चुराने वालेने राजाके समीप जाणे योग्यहै ॥ कैसे जाणा कि केशखोलकर स्कंध कर्के मुशलधारे अथवा खैर वृक्षका दंडालेकरमूं डे ऊपर धारण करे १ अथवा अतिभयानक और दोनोंपासेत अतितीक्ष्ण ऐसा लोहेका दंडा ग्रहण करे और भागता २ राजाके समीपप्राप्त होवे ॥ और ऐसेहि जेकर राजा उसको शासन देवे तदभी अथवा छोडदेवे तदभी उहचोर पापते मुक्त हुंदाहै २ और राजा भी जेकर चोरको दंड न देवे तद मापको प्राप्तहुंदाहै

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा ० ९५

श्रीर प्रायश्चित्तक्रियाविषे ब्राह्मणभी वध योग्यहुंदाहै ऐसामनुजीने लिखयाहै वधेनेति सोब्राह्मण सुवर्ण का चार वत कर्के अथवा तपकर्के शुद्धहुंदाहै एहदोनो पक्ष व्यवस्थाके अर्थहैं ऐसा कोईकहतेहैं सो नहि यथार्थसमझना किसवास्ते कि वाशब्दव्यर्थ होजाताहै इसकारणते आगे इनकी व्यवस्थाकरीहै श्रीर ब्राह्मणको कभी नहिमारणा सभपापविषे ऐसानिश्चयकीताहै अर्थात् कैसाहिपाप यद्यपि ब्राह्मण करे तदभी उसकोमारणानहि श्रीर ऐसाजो लिखया है सोजहां ब्राह्मणकोदंडविधानकीताहै उसविषयमे जानना कोई प्रायश्चित्तविषय नहि श्रीर प्रायश्चित्तक्रियायांतु इत्यादिवचन प्रायश्चित्तका विषयहै श्रीर इसीकारणते प्रायश्चित्त प्रकरणविषे मनुजीने ऐसालिखयाहै कि सुवर्णचुराकर्के ब्राह्मण मुसल हाथमे लेकर राजाके पास चलाजा

प्रायश्चित्तक्रियायांतु ब्राह्मणोपिवधमर्हतीत्याहसएव वधेन शुद्ध्यतिस्तेनो ब्राह्मणस्तपसैवेति व्यवस्थापनमेतद्वाक्यमिति व्यवस्थानयुज्यते वाशब्दा नर्थक्यप्रसंगात् नजातु ब्राह्मणं हन्यात्सर्वपापेष्ववस्थितमिति एतद्ब्राह्मणस्य दंडविषयम् प्रायश्चित्तविषयं त्विदम् अतएव प्रायश्चित्तप्रकरणे स एवाह सुवर्णस्तेयकृद्विप्रइत्यादि गृहीत्वामुशलं राजा सकृद्वन्यात्तु तं स्वयं अत्र च विप्रग्रहणं नवर्णांतरव्युदासार्थं किंतु ब्राह्मणो न हंतव्य इति निषेधनिरासार्थं ब्राह्मणो न हंतव्य इति निषेधो रागप्राप्तब्राह्मणवधविषयः सुवर्णपहर्तुस्तु ब्राह्मणस्य स्वघाताय राजानं प्रत्यागतस्य वधः गृहीत्वामुसलमित्यादिराज्ञो धर्मो विहितत्वादेतदकरणे च प्रत्यवायः

वे श्रीर राजाउसते मुसललेकर्के एकवारो तिसको प्रहारकरदेवे इति श्रीर इसस्थानविषे ब्राह्मण प्रहण जोकीताहै सो कुलक्षत्रियादिवर्णोंके निषेधवास्ते नहि जानना किंतु ब्राह्मण नहि मारणे योग्य इसनिषेधके दूरकरण वास्ते किहाहै श्रीर ऐसाजो निषेधहै कि ब्राह्मण नहि मारणे योग्य एह क्रीडाकर्के प्राप्तजो ब्राह्मणवधहै उसस्थान विषयक किहाहै श्रीर सुवर्ण चुराणे वाला जो ब्राह्मणहै कैसाहै कि आपमरण वास्ते मुसलग्रहणकर्के राजाके समीप प्राप्त होया तिसका मुसल प्रहार कर्के राजाने वधहि करणा योग्यहै क्योंकि उसको मारदणा एह राजाका धर्महै इसकारणते जेकर राजा ऐसा नकरे तदराजाकों पाप हुंदाहै

९६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा०

और इसी कारणते गौतम जीका वाक्यहै कि सुवर्ण चुराणे वाले को जेकर राजा नमारे तद पापी हुंदाहै इस वास्ते मार हि देवे एह राजा का धर्महै । और जेकर मुसल प्रहार के लगने से फेर भी ब्राह्मण जीवतारहे मरे नहि तदउसीसमय विषे शुद्ध हो जंदाहै । और सोयी संवत् ज न किहाहै । ते तिसी कारणते राजा मुसल लेकर एक वारी आपहि तिसको मार । जेकर उइ चोर जीवतारहे तद सुवर्ण चोरीके पापते मुक्त हो जंदाहै । और प्रायश्चित्तेश्वर विषे लिखयाहै कि उह चोर मरजावे जेकर तद भी और जेकर उसको राजा छोड देवे कि सी कारणते तद भी उह पवित्र हो जंदाहै और (प्रायश्चित्तेश्वरविषे)(हतोमुक्तोपिवा शुचिः) एह जो पूर्वोक्त मनुजी का वाक्यहै उसी को माधवजीने व्याख्यात कीताहै कि एक के मरणे कर्के उसके जो सभ संबंधीहैं स्त्री पुत्रादि एह संपूर्ण अनाथ होणे कर्के मरजावेंगे

अतएवगौतमः अघ्नन्नेनस्वीराजेतिसुवर्णचौरमघ्नन्नाजाप्रत्यवायीभवतिअतोहन्यादेवेति राज्ञोधर्मः यदातुमुशलहतोब्राह्मणोजीवति तदा तावतैवशुद्धोभवतीति अतएवाहसंवर्तः ततोमुसलमादायसकृद्वन्यातुतंस्वयं यदि जीवतिसस्तेनःस्वर्णस्तेयाद्विमुच्यते ॥ प्रायश्चित्तेश्वरे ॥ हतोमुक्तोपिवाशुचिरितिपूर्वोक्तमनुवचनंव्याख्यातं माधवस्तु एकस्यमरणेवहूनांत दीयमित्रकलत्रादीनामनाथतया मरणसंभाव्ययदिराजादययाधनदंडादि पुरस्सरंमुंचतितदापिशुद्ध्यतीति ॥ यदिराजादृढहंतुमसमर्थः तस्मैताम्रमयमायुधंदद्यात्तेनात्मानंघातयेत् मरणात्पूतोभवति वसिष्ठोप्येतदाहब्राह्मणसुवर्णहरणेप्रकीर्णकेशोराजानमभिधावेत्स्तेनोऽस्मिभोशास्तुमांभवानितितस्मैराजौदुवरंशस्त्रंदद्यात्तेनात्मानंप्रमापयेन्मरणात्पूतोभवति ॥

इस वार्ता को विचार कर्के जेकर राजा दया कर्के नमारे और धनका हि दंडलेकर छोड देवे तद भी उह चोर शुद्धि को प्राप्त हो जंदाहै ॥ और जेकर राजा आप दृढ प्रहार करणे को समर्थ न होवे तद तिसकोहि तांवेका एक शस्त्र देवे और फेर उह चोर शस्त्र कर्के अपने शरीरके ऊपर दृढ प्रहार करे जेकर मर जावे तद भी पवित्र हुंदाहै । और वसिष्ठ जीने भी ऐसाहि किहाहै कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुरायां होयां ऐसा करणा चाहिये कि केश खिलार करके भागते २ राजाके समीप जावे और ऐसे कहे मैं चोरहां हेराजन इस कारणते तुसी मेरेको दंड देवो जब इस प्रकार राजा को कहे तद राजा भी उसके तांयी त्रामेका एक शस्त्र आगेत देवे फेर उह चोर शस्त्र को ग्रहण कर्के अपने शरीर ऊपर प्रहार करे उह इस विधि कर्के मरणते पवित्र हो जंदाहै ॥

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भ० ॥ ९७

और जेकर राजा दठ प्रहार करणे को समर्थ नहोवे तद एह ब्राम्हिका शस्त्र उसीको देदेणा ऐ साजान्नयोग्य है ॥ और उँदुवरनाम ब्राम्हिकाहै और तैसे हि फेर वसिष्ठ जीने किहोहीक यद्यपि उँदु नहिभी मरणे वाला तदभी उह सारे शरीरविषे घृत मल कर्के गोडेकी अग्निमा धूपरोसे लेकरशिखा पर्यंत अपने शरीरको दग्ध करदवे तदभी मरणवे पवित्र हुंदाहै अर्थात् घृतके साथ ब्रह्मभिगा कर्के शरीर ऊपर लपेट लेवे और आग्रेलगा कर मृतहोजावे तदशुद्धहाजंदाहै ऐसेजाणीदाहै ॥ और निष्कालकका एह अर्थहै कि निकलहैं काले रंगकेकेशादिजिनके तिनका नाम है निष्कालक क्या कि सारे शरीर विशेषरोगडितहै अर्थात् जिसके शरीरमे कालारोग कायोनहि उत्पन्न होया ऐना अर्थ कीताहै ॥ इसप्रकार इत्यादिहोर

दठप्रहारासमर्थराजन्येतत् षोडश्वरताघमयमतथाचसएव निष्कालकोवा
यताक्तोगोमयाग्नेनापादप्रभृत्यात्मानंदाहयेन्मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञाय
तेनिर्गतंकालंकृष्णवर्णकेशादि यस्मात्सनिष्कालकः सकलशरीरलोमर
हितइत्यर्थः एवमादीनिमरणांतिकप्रायश्चित्तानि कामकारकते स्वयंवेदि
तत्त्वानि अनएवाहांगिराः मरणांतहियत्प्रोक्तंप्रायश्चित्तमनीषिभिः तत्तुका
मकृतेपापेविज्ञेयनात्रसंशयइति अत्रशूलपाणिःक्षत्रियादेः पादपादहानिरे
वद्वैगुण्यादिकंतुप्रकरणाद्विप्रवधावययमेवेति ॥ पर्यद्याब्राह्मणानांत्वातिवच
नव्याख्यावसरं ब्रह्मद्विप्रायश्चित्तप्रकरणे प्रागुक्तम्

जोमरणांतिक प्रायश्चित्त कहेहैंसो संपूर्ण आप जान कक सुबण चुगणेंविषे जासणे योग्यहै
अर्थात् योकीयी पुरुष कामनाते ब्राह्मणकासुवर्ण हरलेवे उह प्राणांत प्रायश्चित्त करणेकर्केशु
द्धहुंदाहै ॥ इसकारणते ऐसाहि अगिरा जीनेकिहा है मरणांतमिति कि ऋषियोनेत्रो मरणांत
प्रायश्चित्त किहाहै सो सभकामनाकनपापाविषे जान्ना इस विषे कुल संशयनहिहै और उँ
सविषे शूलपाणीजीने किहाहै किक्षत्र वैश्य शूद्रको सभप्रायश्चित्त विषे पाद २ हानि कहीहै
और दूष्ण दूष्ण करणा इत्यादिकभी प्रसंगते ब्राह्मण वध विषेहि किहाहै क्योंकि जोसभ ब्रा
ह्मणकोकहिहै उसने दूष्णो क्षत्रियादिकोकीहुंदीहै इसवाक्यके व्याख्यानसमयमे ब्रह्महत्या
प्रायश्चित्त के प्रसंग विषे पूर्व कह आये हैं ॥

९८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और प्रायश्चित्त अंगिराजीने इसस्थानविषे किहाहै अनिवेद्येति कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुराकरके जेकर राजाकांनहिभी कहे तद इसप्रकार शुद्धहुंदाहै कि जो व्रत सुरापानविषे लिखयाहै उसव तको विधिपूर्वककरे अथवा अपनी शुद्धि वास्ते शरीरके बराबर तोल करके सुवर्ण ब्राह्मणकी प्रसन्नता वास्ते देवे तद पवित्रहुंदाहै अर्थात् सुवर्ण चुराणे वाला जेकर बहुत धनकरके युक्तहोवे तद अपने शरीरके बराबर सुवर्ण तोलकर ब्राह्मणके तायी देवे और जेकर थोडाधनहोवे तदब्राह्मणको सारी उमर कुटुंबके निर्वाहयोग्य प्रसन्नता करणे वाला धनदेवे अर्थात् सारीआयुषापर र्जित धनकरके कुटुंब पालनाहोजावे उतनाधन देनेकरके पवित्रहुंदाहै पवित्रहोणेकेवास्तेएहि प्रकार कहेहैं अर्थात् और कोईप्रकार नहिहै १ और मनुजीने किहाहै तपसेति कि सुवर्णचोरे

प्रायश्चित्तांतरमाहसएव अनिवेद्यनृपे शुद्धेत्सुरापव्रतमाचरन् आत्मतुल्यं सुवर्णं वा दद्याद्वा विप्रतुष्टिकृन् १ स्वकीयं स्तेयाख्यं कर्मराज्ञेऽनिवेद्यापि सुरापव्रतं समाचरन् शुद्धेत्स्वर्णपहर्त्ता बहुधनश्चेत्तदा स्वशरीरगौरवतुल्यसुवर्णं विप्राय दद्यात् अल्पधनश्चेद्यावर्जावकुटुंबनिर्वाहक्षमतया तुष्टिकरं दद्यादित्यर्थः मनुः तपसापनुनुत्सुस्तु सुवर्णं स्तेयजं मलं चीरवासाद्विजोऽरण्ये चरेद्ब्रह्महणो व्रतम् १ स्वर्णं स्तेयोत्पन्नं पापाद्विजोऽपनंतुमिच्छन् चीरवासाः सन् ब्रह्महोण्यद्वतमुक्तं तत्कुर्यात् अरण्यग्रहणात्प्राथम्याच्च एतच्च दशवार्षिकं ॥ केशगौरवात् ॥ पंचकृष्णलकीमापस्ते सुवर्णं तु षोडशेति सुवर्णपरिमाणावच्छिन्नब्राह्मणसुवर्णपहारे द्रष्टव्यम् ॥

ते उत्पन्नजो पापहै तिस पापको जेकर तपकरके दूर करणेकीजिसकीइच्छा होवे सोब्राह्मणलीलांकावस्त्रधारणकरे औरवनविषे जाकरब्रह्महत्याव्रतकरे कथा जोब्रह्मण सुवर्ण स्तेयते उत्पन्न पापको दूरकरणकी इच्छाकरे सोपुराणे पाटेहोये वस्त्रधारकजो व्रत ब्रह्महत्याविषे किहाहै तिस व्रत करके शुद्धहुंदाहै १ और इसव्रतविषे अरण्यपदका ग्रहणहै इसते और प्रथम होनेते एह व्रतभीवारां १२ वर्षकाहिजासणा और इसव्रतविषे केशवहुतहै इसकारणते एह व्रत उसस्थान विषे जासणा कि जिनस्थानमे एक तोला प्रमाण सुवर्ण की चोरी होवे अर्थात् जोपुरुष तोला प्रमाण सुवर्णचुराकरलेवे उसको वास्ते यह व्रत दिखायाहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्राथश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ९९

और इसते जेकर न्यून होवे तद परिमाणकी अपेक्षा कर्के मनुजोने जो परिमाण किहा है सो ग्रहण करणा एह नीति है । और जो भविष्यत्पुण विषे अधिक प्रमाण श्रवण करी दाहै सो तैसेहि अनुबंध विशिष्टापहार विषे जानना क्या जो कोयी पुरुष किसी स्थानमे सुवर्ण चुरावे वास्ते जाये और मिले नहि फेर उसी स्थान विषे चोरी करण वास्ते जाये और एक पुरुष उसको मना करे कितुम ऐसा काम मत करो फेर भी उह सुवर्ण की चोरी करे इ सका नाम अनुबंध विशिष्टापहार किहा है एह तैसेहि प्रायश्चित्त का विषय भी ऊहां जानना अर्थात् तहां प्राणांत प्रायश्चित्त है । तैसेहि भविष्यत्पुराण विषे लिखया है कि क्षत्री वैश्य शूद्र एह तीन वर्ण गुण हीन होवें और पाप विषे तत्पर होवें । और एह गुणो ब्राह्मण का पांच १ निष्क प्रमाण जेकर सुवर्ण चुरा कर लेवें १ अथवा दश १० जारों ११ निष्क प्रमा

ततो न्यूनस्य परिमाणपेक्षया मनुक्त परिमाणस्य ग्रहीतुं न्याय्यत्वात् यत्त्वधिकपरिमाणं भविष्यत्पुराणेश्रूयते तत्तथानुबंधविशिष्टापहारे तथाविधप्रायश्चित्तविषयमेव तथा भविष्यपु- क्षत्रियाद्यास्त्रयो वर्णानिर्गुणा ह्यघतत्पराः गुणाढ्यस्य तु विप्रस्य पंच निष्कान्हरन्ति चेत् १ निष्कानेकादश तथा दग्ध्वात्मानं तु पावके शुद्धये मरणं दीरचरेद्ब्रह्मात्म शुद्धये २ ब्रह्मा ब्राह्मणः आत्म शुद्धये चरेत् तपः कुर्यादित्यर्थः इति क्षत्रियादीनां मरणान्तिद्वादशवार्षिकं वेति ज्ञानाज्ञानाभ्यां विकल्पोऽवसेयः ॥ अपरा कर्के ॥ अत्र च कपालधारणादिनिवर्तते अनेनैवाभिप्रायेण भगवता याज्ञवल्क्येनोक्तम् । सुरापानव्रतमाचरन्ति ॥

ए सुवर्ण हर लेवें तद उह ऐसा करें कि अपने शरीर को अग्नि विषे दग्ध करें तद पवित्र हो जं देहें ॥ जेकर ब्राह्मण ब्राह्मण का सुवर्ण चुरावे तद अपनी शुद्धि वास्ते तप करे २ और इस प्रकार क्षत्री वैश्य शूद्रको एक प्राणांत और एक द्वादश वार्षिक व्रत किहा है सो ज्ञान और अज्ञान कर्के निश्चय करणा योग्य है । अर्थात् क्षत्रियादि जेकर जान कर्के सुवर्ण की चोरी करें तद मरणांत प्रायश्चित्त करें और जेकर अज्ञानते करें तद वारां १२ वर्ष व्रत कर्के शुद्धि को प्राप्त हुं देहें । और अपरा कर्के विषे लिखया है कि इस स्थान विषे द्वादश वार्षिकव्रत मे कपाल धारणादि नहि करणा और इसी अभिप्राय कर्के भगवान् याज्ञवल्क्यजीने किहा है कि सुरा पान व्रत करतेहैं अर्थात् जो पुरुष ब्राह्मण का सुवर्ण चुरा लेवे सो सभ जो व्रत सुरा पान विषे किहा है उस व्रत कर्के शुद्ध हो देहें ॥

१०० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः २०१३ ॥ टी० भा० ॥

और एह प्रायश्चित्त ब्राह्मण संबंधी सुवर्ण चोरी विषे जानना परंतु चुराणवाले ब्राह्मणको आपत्ति होवे और गुणवान् होवे और कुटुंब पालन वास्ते सुवर्ण चुरालेवे उसके वास्ते दिखायाहै ॥ और जोपुरुष आपत्तो गुणहीन होवे और किसीगुणी का सुवर्ण चुरालेवे जूआ खेलनेवास्ते उसकोमरणांत प्रायश्चित्त देणा योग्यहै इसी प्रसंग विषे आपस्तंब जीने किहाहैकि सुवर्ण चुराणे वाला पुरुष अपनी शुद्धि वास्ते अग्नि विषे प्रवेश करे अथवा अति उग्रतप कर्के शरीर त्याग करे अथवा अन्नका त्यागकरणे कर्के शरीरका भी त्याग करे अथात् मृत होजावे तद पवित्र हुंदाहै अथवा एह वष प्रमाण व्रत करे तद पवित्र हुंदाहै और भक्षापचय उपवासकानामहै और सुमंतु जीकावाक्यहै कि सुवर्णका चोर गायत्री मंत्र कर्के घृत

एतच्चब्राह्मणसंबंधिनः सुवर्णं यापहारे आपत्कालिकुटुंबार्थगुणवद्ब्राह्मण कर्तृकेद्रष्टव्यम् निर्गुणस्यतुगुणवत्संबंधिवहुतरंद्यूताद्यर्थमपहरतः प्राणां तिकमेवप्रायश्चित्तम् स्तेनइत्यनुवृत्तावापस्तंबः अग्निंवाप्रविशेत्तीक्ष्णंवा तपआयच्छेद्भक्षापचयेनात्मानंवासमापयेत् कृच्छ्रं सवत्सरंवाचरेत्भक्षापचयोऽनशनम् सुमंतुः सुवर्णंस्तेयीमासंगायत्र्यष्टशतमाज्याहुतीर्जुहुयात् प्रत्यहंत्रिरात्रमुपवासः तप्तकृच्छ्रेणचपूतोभवति अश्वमेधावभूथस्नानेनवा इदंचपूर्वोक्तमापसुवर्णापहारप्रायश्चित्तेनविकल्प्यतेलघुविष्णुःस्तेयेब्रह्मस्वभूतेतुसुवर्णहरणंकृतेतस्मात्तेनैवदातव्यंतस्माएकादशाधिकम् १ ऋणसंशुद्धिभावायततश्चान्द्रायणत्रयमसंवत्सरेणकर्तव्यंनिपुणांशुद्धिमिच्छता २ अभावेकांचनस्यस्याद्वतमेतच्चतुर्गुणम् ॥

के साथ नित्यं प्रति आठसों ८०० आहुति हवन करे फेर तिस्रदिन उपवास करे तद पवित्र हुंदाहै अथवा तप्त कृच्छ्र कर्के पवित्र हुंदाहै अथवा यज्ञांतस्नान कर्के पवित्र हुंदाहैएह प्रायश्चित्त पिले किही जोमासे सुवर्ण की चोरी तिसके प्रायश्चित्तके साथ विकल्पवालाहै चाहे इसको करो चाहे उसको करो और लघु विष्णु जीने किहाहै स्तेयेति किजोपुरुष ब्राह्मणका सर्वस्वरूप सुवर्णको हरे फेर तिस चुराणे वालेने जितना प्रमाण सुवर्ण लीयाहै उसने जारां ११ गुणातिसको देणा योग्यहै १ क्योंकि जारां गुणा अधिक सुवर्ण उसको देकर्के फेर अपने ऋण की शुद्धि वास्ते तिस चान्द्रायण करे भलीप्रकार जिसकी शुद्धिकीइच्छा होवे तद सो पुरुष पवित्र हुंदाहै २ और जेकर जारांगुणांसुवर्ण प्राप्त न होवे तद एहि व्रत चारगुणाकरणा चाहिये

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १३ ॥ टी ० भा० ॥ १०१

क्योंकि आत्माको जीतकर और संगकोभी त्यागकर अपनी शुद्धि वास्ते पूर्णचारवर्ष एहि व्रत करणे योग्य है ॥ और जब इस प्रकार व्रत करतियां चार वर्ष समाप्तहोवें २ फेर अपनी समर्थोंके अनुसार ब्राह्मणके तार्यों सुवर्ण देवे ॥ और गौरजत देवे ॥ और पापके नाश वास्ते पवित्र अन्न उत्तम ब्राह्मण के तार्योंदेना योग्य है ॥ और इस स्थान विषे एकादशाधिकशब्द कर्के एकादशगुणां ग्रहण करणा ॥ और तिस पूर्वोक्त दानको ऋणकी शुद्धि वास्ते विधान होऐते पूर्व प्रायश्चित्त कल्पनाका शेषभूत जो चांद्रायण तिथिहैं सोयी इस स्थानमे ग्रहण करणे योग्य हैं ॥ इसकारणते यवमध्यपिपीलिकामध्ययति चांद्रायण इनका वर्षभर अभ्यासकरे तद पवित्रहुंदाहै अर्थात् इह तीन चांद्रायण कोई वक्रखराप्रायश्चित्त नहि किंतु एकादश गुण दानके साथ हि है ॥ और जेकर निर्धनता कर्के एकादश गुणा सुवर्ण देणे विषेश

चरेद्यतात्मानिःसंगः पूर्णवर्षचतुष्टयम् २ समाप्तिकांचनंगौश्वरजतंचापिशक्तिः। देयमन्नं द्विजाग्रेभ्यः शुभं पापापनुत्तये एकादशाधिकमेकादशगुणम् तद्दानस्य च ऋणसंशुद्धये विहितत्वात् पूर्वप्रायश्चित्तकल्पशेषभूतचांद्रायणत्रयं यवमध्यपिपीलिकामध्ययति चांद्रायणात्मकं तत्संवत्सरं यावदभ्यसेत् ॥ निर्धनतया त्वेकादशगुणादानासमर्थस्तदेव वर्षचतुष्टयमभ्यसेत् । प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे स्मृत्यर्थसारे तु ॥ सुवर्णस्तेर्याविप्रो व्रतमेवाचरेत् ॥ नदंडे नात्मानं घातेयेत् न च राजा विप्रं हन्यादित्युक्तम् ॥ अकामतोरजतादिबुद्ध्या पहारे सुरापोक्तं द्वादशवार्षिकम् कामतोरजतादिबुद्ध्या पहारे ण्येतदेव । शूलपाणिस्तु ॥ कामतोरजतादिबुद्ध्या पहारे एव द्वादशाब्दम्

समर्थ होवे तद चार वर्ष पर्यंत इन चांद्रायणका अभ्यासकरे अर्थात् चार ४ वर्षमियम पूर्वक चांद्रायण कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ और प्रायश्चित्तेन्दुशेखर विषे और स्मृत्यर्थसारमेभी लिख. याहै कि ब्राह्मण सुवर्ण चुराकरके प्रायश्चित्तहिकरे और दंडप्रहारकरके शरीरत्याग न करे और राजा भी ब्राह्मण को न हत करे ऐसा किहाहै ॥ परंतु एह निषेध जिस वास्ते है तिसको दिखातेहैं कि कामनाते विना जो पुरुष रजतबुद्धि कर्के सुवर्ण चुराकर लेवे उसको सुरापके वास्ते योद्दा दश वार्षिक व्रत किहाहै सोयी व्रत करणा योग्य है और जेकर कामनाते रजत बुद्धि कर्के सुवर्ण चुरालेवे तद भी एहि द्वादश वार्षिक व्रत करणा किहाहै ॥ और शूलपाणि जीने इसमें विशेष दिखायाहै कि कामनाते रजत बुद्धि कर्के सुवर्ण चोरी विषे हि द्वादशवार्षिक व्रत करना किहाहै

१०२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १३ ॥ टी ० भा ० ॥

और कामनाते विना जेकर रजत बुद्धि कर्के सुवर्ण हरे तदछे वर्षका व्रतकरणा किहाहै और द्वादश वार्षिक व्रतके विषय विषे सुवर्ण का चोर जेकर महा धन वाला होवे तद उसको अपने शरीरके साथ सुवर्ण बराबर तोलकर्के दानकरणा योग्यहै अर्थात् जिसचोरकोवारां १२ वर्षकाव्रतकरणा किहाहै उसके पास जेकर बहुतधनहो वे तदसुवर्णकी तुलाकरणे कर्के शुद्ध हुंदाहै और निर्गुण पुरुष के सुवर्ण चुराणे विषे गुण वाले पुरुषको नो ९ वर्षका व्रत किहाहै अर्थात् जोगुण युक्त पुरुष गुणहीन पुरुष का सुवर्ण हरलेवे सोनी ९ वर्ष व्रत कर्के पवित्रहुंदाहै और कोई पंडित पादोन सुवर्ण क्या १२ मासे सुवर्णके हरणविषे भीइसी ९ वर्ष के व्रतको कहताहै और जदकोयी गुणी ब्राह्मण क्षुधा कर्के पंडित कुटुंबकी पालनावास्ते गुणहीन पुरुष का सुवर्ण चुरालेवे तद उसकोछे ६ वर्षका

अकामतस्तद्ध्यापहरितुपाड्वार्षिकमित्याह द्वादशवार्षिकविषयेऽपहर्तुर्म
हाधनिकत्वेआत्मतुलितहेमदानम् ॥ निर्गुणस्वामिकहरणेसगुणस्यनववा
र्षिकम् कश्चित्पादोनसुवर्णहरणेष्येतदेवाह यदाक्षुत्क्षामःकुटुंबभरणार्थं
सगुणोपिविप्रोनिर्गुणस्वामिकमपहरतितदाषडब्दम् तीर्थयात्रासाहितं
पाड्वार्षिकमितिमाधवः कश्चिदर्धसुवर्णहरणेतदेवाह ब्राह्मणान्यस्वामि
कसुवर्णहरणेनमहापातकं किंतूपपातकमितिमिताक्षरा यदात्वपहारानंत
रमनुतप्यत्यजतिप्रत्यर्पयतिवातदाचतुर्थकालमिताशिनस्त्रिवर्षमवस्थानम्

व्रतकरणा किहाहै और माधवजीने एहछे वर्षका व्रत तीर्थयात्राके साथ किहाहै क्याकि ती
र्थयात्रा करतियां ऐसालेवर्षकाव्रतकरणा चाहिये और कैयाने पांच ५ मासे सुवर्ण हरणविषे
एहव्रतकिहाहै अर्थात् जोगुरुष ५ मासे किसीका सुवर्णचुरालेवे सोतीर्थयात्राविषे छे ६ वर्ष
प्रमाण व्रत कर्के पवित्रहुंदाहै और ब्राह्मणतेविना और किसीका सुवर्ण हरलेना एह महापात
क न हि है किंतु उपपातकहै ऐसामिताक्षराविषे लिखयाहै और जदकोयी पुरुष प्रथमतो
सुवर्णचुरालेवे फेर पश्चात्तापकर्के त्यागदेवे अथवा जिसका चुरायाहै उसीके अपने करदे
वे तद उसकोचौथेपहरविषे थोडाभोजन करणा इसप्रकारतीनवर्ष व्रतकरणायोग्यहै अर्थात्
चौथे पहरअल्पभोजन करणा ऐसेहि तीनवर्ष व्रतकर्के शुद्धहुंदाहै

॥ श्रीरण्वरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १३ ॥ टी ० भा ० ॥ १०३

श्रीर क्षत्री वैश्य शूद्रके सुवर्ण चुराणे विषे कैयोंने एहि व्रत करणा किहाहै अर्थात् क्षत्रि यादिका सुवर्ण चुरालेना उपपातकहै एहभी कैयोंकामतहै श्रीर ननु इस कर्के(प्रणहै) कि जिसने प्रथम सुवर्ण चुरायाहै फेर पश्चात्ताप कर्के उसीके अप्रण करदीया होवे इस क के हरणा एह धातुका अर्थ सिद्धहोणेतै कैसे उसको थोडा प्रायश्चित्त करणा किहाहै अथ वा जेकर उसको चोरी नहि सिद्ध होती तद उसको प्रायश्चित्तका अभावहोना चाहिये अल्प प्रायश्चित्त उसको योग्य नहिहै क्योंकि जेकर चोरी बनजावे तद पूर्ण प्रायश्चित्तयोग्य है श्रीर जेकर चोरी न बने तद उसको कुछ प्रायश्चित्त करणा योग्य नहिहै ऐसाप्रणहै (उत्तर किऐसे मत कहो क्योंकि अपहारको उपभोगफल पर्यंत होनेते उपभोगते प्रथमहि निवृत्त होयां बहुत अपहारका अभाव होनेते अल्प प्रायश्चित्त होना उसको योग्यहै अर्थात् चोरी का एह फलहै कि उसपदार्थको भोगलेना इस वास्ते इस स्थान विषे चोरी तो करी फेर

क्षत्रियादिमुवर्णापहारेप्येतदेवेतिकेचित् क्षत्रियादिस्वामिकहरणमुपपात कमित्यपरे ननुप्रत्यर्पणेत्यागेवापहारधात्वर्थस्यनिष्पन्नत्वात्कथंप्रायश्चित्तालपत्वम् । अथानिष्पन्नस्तदाप्रायश्चित्ताभावएवस्यान्नतुप्रायश्चित्तालपत्वम् ॥ मैवम् अपहारस्योपभोगादिफलपर्यंतत्वादुपभोगात्प्राड्निवृत्तौच पुष्कलस्यापहारार्थस्याभावाद्युक्तमेव प्रायश्चित्तालपत्वपीतवातइवापेयेद्रव्ये नन्वेवंसतिचौरहस्ताद्वलादाकृष्यग्रहणोपितस्योपभोगलक्षणफलाभावात्प्रायश्चित्तालपत्वप्रसंगः मैवं तस्य त्यागे स्वतःप्रवृत्त्यभावात्

भोगनेते पूर्वहि निवृत्तहोगयाहै क्या जिस वास्ते चोरी कीतीहै उह कार्य नहि कोया क्यों कि प्रथम जिसका सुवर्ण चुरायाहै फेर उसीको देदीयाहै अथवा त्याग दीयाहै इस वास्ते थोडा प्रायश्चित्तहि योग्यहै इस विषे दृष्टांतहै कि जैसे किसीने मदिरा पान कर्के वमनकर दीया होवे उसको अल्प प्रायश्चित्तहै पूर्ण नहिहै तेसेहि इस स्थान विषे जानना । फेरप्रणहै । कि जेकर ऐसा होवे कि चोरने उसको भोगा नहि इस कारणते अल्प प्रायश्चित्त है तद जिस स्थानमे बलकर्के चोरके हाथने पदार्थ खोसलीयाहै उस चोरको भोग लक्षण फलका अभावहै कि उसको कुछ नहि फल होया इस कारणते उसकोभी थोडा प्रायश्चित्तहोनाचाहिये (उत्तर) कि ऐसा नहिहै क्योंकि उसको चोरको त्याग विषे अपने आप प्रवृत्तिका अभावहोनेते

१०४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग ० प्र ० १३ टी ० भा ०

और चपुनः फलपर्यंत चोरी विषे उसको अपने आप प्रवृत्त होने से अर्थात् चोरने कुछ आपजान कर्के पदार्थका त्याग नहि किया और पदार्थका भोग रूप जो फल है उसके निमित्त चोरी कीति है इसको पूर्णहि प्रायश्चित्त करना योग्य है और जो रजत तांबा इनके साथ मिले होये सुवर्णकी चोरी होवे उसस्थान विषे भी एह अल्प प्रायश्चित्त नहि जानना किस वास्ते कि जिस कारणते रूपातांबा इन साथ मिले होयां भी सुवर्ण भाव नहि दूर होता किस तरां जैसे पृषदाज्य जो घृत युक्त चरु है उस विषे घृतभाव नहि दूर होता तेसेहि इस स्थान विषे जानना और इस कारणते तिस स्थान विषे द्वादशवार्षिक व्रतहि योग्य है ॥ असुवर्णके तुल्य और जो पदार्थ है तिसकी चोरी विषे थोडा प्रायश्चित्त कहते हैं कि कुछ तिस स्थान विषे तीन वर्षका अल्प प्रायश्चित्त नहि ग्रहण करना किंतु उपपातक

फलपर्यन्तेपहारेस्वतःप्रवृत्तत्वाच्च यस्तुरजतताम्रादिसंसृष्टसुवर्णापहारो नतत्रेदंलघुप्रायश्चित्तम् यतःसंसर्गेपिसुवर्णत्वंनापैति आज्यत्वमिवपृष दाज्येअतस्तत्रद्वादशवार्षिकमेवेतियुक्तम्। अथस्वर्णसदृशद्रव्यांतरमेवेति लघुप्रायश्चित्तम् उच्यतेनतर्हितत्रैवार्षिकादिलघुप्रायश्चित्तादिविषयता असुवर्णत्वादेवकिंतूपपातकप्रायश्चित्तमेवेतिमिताक्षरा अपरार्केब्रह्महत्या प्रायश्चित्तानुवृत्तौव्यासःएतदेवव्रतंस्तेनःपादन्यूनंसमाचरेत्एतदेववर्षच तुष्टयमेव अत्रिः षड्वदंवाचरेत्कृच्छ्रयजेद्वाक्रतुनाद्विजः तीर्थाणिचभ्रमन्वि द्वांस्ततःस्तेयाद्विमुच्यते क्रतुर्ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणेद्रष्टव्यः एकवच नंजास्यभिप्रायम्

प्रायश्चित्त करना एह मिताक्षरा विषे लिखा है अर्थात् जो सुवर्ण तुल्य पदार्थकी चोरी करे सो उपपातक प्रायश्चित्त कर्के पवित्र हुंदा है और अपरार्क विषे ब्रह्म हत्या प्रसंगमे व्यासदेवजी का वाक्य है एतदिति चोर जो है सो एहि व्रत एक पादहीन करे अर्थात् एह जो चार ४ वर्षका व्रत है सो पादहीन क्या तिन वर्ष अपनी शुद्धि वास्ते सुवर्ण चुराणे वाले को करेना योग्य है और चोरीके प्रसंगविषे अत्रिजीका वाक्य है षडिति कि सुवर्ण चुराणे वाला ब्राह्मण छे ६ वर्ष यर्यत कृच्छ्रकरे अथवा यज्ञकरे अथवा संपूर्ण तीर्थ यात्रा करे तब उह विद्वान् चोरीके पापते मुक्तहुंदा है और यज्ञ इसस्थानविषे उह ग्रहण करना कि जो यज्ञ ब्रह्महत्या प्रकरण विषे दिखाया है एकवचन भी जातिके अभिप्रायसे किहा है किसवास्ते कि ब्रह्महत्या प्रकरण विषे बहुत प्रकारके यज्ञकहे हैं उनसभका ग्रहण एक वचन कर्के होजदा है ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा० ॥ १०५

श्रीर सुमंतुजीनेकहाहै सुवर्णनि सुवर्ण चुराणे वाला वारां १२ दिन केवलव पुषक्षणकरणवाला होवे अर्थात् जोपुरुष सुवर्ण चोरीकरे सोवारां १२ दिननिराहार करणे कर्के पावेवताकोप्राप्तहो जंदाहै श्रीर इसीप्रकार वडे श्रीर थोडे प्रायश्चित्तहैं जो स्मृति शास्त्राविषे विधानकीतेहैं तिन कौविचारकर्के जैसा अपराध होवे उसके अनुसार सभाने व्यवस्थापनकरणयोग्यहै अर्थात् स भास्थित पुरुषाने जैसाअपराधहोवे तैसाहि विचार कर्के प्रायश्चित्तकहनायोग्यहै श्रीर सामा न्यवस्तुका जो प्रायश्चित्त विधानकीताहै सो स्त्रीबालक वृद्ध रोगी इनको आधा हि जा मणा श्रीर चतुर्विंशति मतविषे लिखयाहै इत्वेति किप्रथम जितना पदार्थ चुराकरलेवे उसतेद श १० गुणा उसको देकर्के पीछे प्रायश्चित्त विधिपूर्वककरणा योग्यहै श्रीर ब्राह्मणमोहते रू प्पाहरकर्के चांद्रायण व्रतकरे अर्थात् जोब्राह्मण अज्ञानते ब्राह्मणकी चांदी चुरालेवे सो चांद्रा

सुमंतुः ॥ सुवर्णस्तेर्याद्वादशरात्रं वायुभक्षोभवतीति एवं गुरुणिलघूनिचप्राय श्रित्तानि स्मृतिशास्त्रेषु विहितानि पर्यालोच्य यथापराधपरिषदाव्यवस्थाप नीयानि यत्सामान्यवस्तु प्रायश्चित्तं स्त्रीबालवृद्धातुराणां विहितं तदेषां चार्धमेव चतुर्विंशतिमते । इत्वादशगुणंदत्त्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत् रूप्यं इत्वा द्विजो मोहाच्चरेच्चान्द्रायणं व्रतम् १ वधानदशकादूर्ध्वमाशताद्विगुणं भवेत् आ सहस्रात्तु त्रिगुणमूर्ध्वमेव विधिः स्मृतः २ सर्वेषां धातुलोहानां पराकंतु समाचरेत् ३ निष्कापरपर्यायो वधानम् षड्विंशन्मतात् वलायेकामचारेण हरन्ति तु न राधमाः ॥ तेषां तु वलहर्षणं प्राणांतिकमिहोच्यते ॥ १ ॥

यस व्रतकर्के पवित्र हुंदाहै १ और दश १० निष्कपरिमाणते ऊपरसौ १०० निष्कपर्यंत दूणा प्रायश्चित्त हुंदाहै कांडे (वधान) इसकीजगा (गद्याण) एहपाठकहतेहैं सो ४८ अठता लीरतिरूपेका नामहै और सौते उपरंत हजार निष्क पर्यंत त्रिगुण प्रायश्चित्त जा मणा इसते अ गेरुप्पा हरण वाले वास्ते सुवर्णविधिकहीहै २ और सुवर्णते विना और जो संपूर्ण धातुहैं लोहा आदि तिनकी चोरी विषे पराक व्रत करणा किहाहै अर्थात् लोहादिधातुकी जो पुरुष चोरीकरे सो पराक व्रतकर्के पवित्र हुंदाहै और इसस्थानविषे वधानशब्द निष्ककापर्यायहै और षड्विंशत मतविषे लिखयाहै वलादिति किजो नराधम पुरुष कामनाकर्के बलते सुवर्णादि धातुकोहरलेतेहैं तिनकों प्राणांतहि प्रायश्चित्त इसस्थानविषे किहाहै अर्थात् जो कौयीनीच पुरुष बलकर्के किसीते सुवर्णादिधातुखोसलेवे उहप्राणांतप्रायश्चित्त कर्के शुद्धहुंदाहै

१०६ ॥ श्रीरणवीरकारिते प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

श्रीर भविष्यत्पुराण विषे लिखयाहै महापातकैति कि महापातक जहां दिखायाहै उसस्थान विषे तोसरा महापातक सुवर्ण आदि की चोरी हिहै तिसमै सुवर्ण की कहकर तिसके तुल्य रूपके अर्थ कहतेहै नचांत जेकर जाण कर कोई ऐसी चोरीकरे तद उसके वारंते पातकत्व ब्रह्महत्या के तुल्य मुनि कह तेहैं इसजगा चोरी ॥ १०० ॥ निष्कते अधिक डपेकी अथवा निष्क सुवर्ण की जानणी १ क्षत्रियेति क्षत्रियादि होवे चोर द्यूतके अर्थ करे चोरी और तिसमै भी अनुबंध क्याहठ होवे कदाचित् ऐसाकोयी करे तद अपनी शुद्धि वास्ते इस प्रकार प्राणांत प्रायश्चित्तकरे २ क्याकि प्रथम निष्कालक होवे किजितने शरीर विषे कालेरोमहैं तिनको उतार देवे फेर बहुतघु त शरीर को लगा कर्कें गोहेंकी अग्नि साथ पैरां तेलकर सभदेहदग्ध कर देवे तद मरणोत्पवित्र हुंदाहै ऐसेजानीदाहै ॥ इस विषे होर विशेष कहतेहैं ॥ और क्षत्रीअग्नि होत्री ब्राह्मणकासुवर्ण चुरा कर्कें रोम रहित होकर और घृतके साथ शरीरको भिगो कर्कें अग्नि विषे दग्धकरदे

भविष्यत्पुराणम् ॥ महापातकनिर्देशतृतीयंस्तेयमुच्यते ॥ नचाप्यबुद्धिपूर्वतत्क्रियतेकेनचित्कचित् ॥ पातकत्वंचाविशिष्टंवदंतिमुनयोगुह १ क्षत्रियादिर्यदाहर्ताद्यूताद्येनप्रयोजयन् ॥ सानुबंधोपहारश्चतदैवंशुद्धयेचरेत् २ निष्कालकोवाघृताक्तोगोमयाग्निनापद्ग्याप्रभृत्यात्मानंदहेन्मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञायत ॥ शत्रैवापरोविशेषः ॥ हत्वासुवर्णराजन्योब्राह्मणस्याग्निहोत्रिणः रोमहीनोघृताक्तस्तुआत्मानंपावकेदहेत् ॥ १ ॥ विशिष्टब्राह्मणद्रव्यहरणेष्टतनापते दोषोबहुतरःस्यादैक्षत्रियादिषुहर्तृषु ॥ २ ॥ इदमपिपूर्वसंबंधे ॥ तथास्मिन्निर्वायेपथेचौर्ययातिद्विजोत्तमः ॥ अल्पानुबंधे हिकृतेक्षत्रियेणैतरेणवा ॥ ३ ॥ मूर्धाभिषिक्तोराजास्याद्गुणवान्क्षत्रियस्तथा हतविप्रसुवर्णश्च प्रायश्चित्तमिदंचरेत् ॥ ४ ॥

वे अर्थात् जीक्षत्री पूर्वोक्त ब्राह्मणका सुवर्ण हरलेवे सो इस विधि कर्कें पवित्र हुंदाहै ॥ १ ॥ और हेस्वामिकांतिक वासिष्ठ गोत्री अथवा विशेष गुणवान् श्रीब्राह्मण तिसके द्रव्यकीचोरी विषे क्या दूसरेका प्रेरण कर्कें ब्राह्मणकी धन हरण विषे क्षत्रियादि हरणवालेको अतिशयक कें बहुत दोषहुंदाहै अर्थात् उहपूर्वोक्त मरणांतहि प्रायश्चित्तकरे ॥ २ ॥ और तैसेहि इसी प्रसंग विषे जद ब्राह्मण चोरीका प्राप्तहुंदाहै ॥ अर्थात् जेकर ब्राह्मण चोरीकर्म करे और क्षत्रीके साथ अथवा होरकितेसाथ अल्पानुबंधकरे अल्पानुबंध इसकानामहै कि दूसरेकेसंबंध कर्कें किसीकाधन हरणा तदभी इनको प्राणांत प्रायश्चित्तकहाहै ३ मूर्धेति और जोमूर्धाभिषिक्तहै अर्थात् ब्राह्मणते क्षत्रिया स्त्री विषे जो उत्पन्न होवे उसका नाम मूर्धाभिषिक्तहै अथवा राजाहोवे और तैसेहि गुणवान् क्षत्रीहोवे एहजेकर ब्राह्मणका सुवर्ण चुरालेवें तद सोभी एहि प्रायश्चित्त

करे ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीरकारिते प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा० ॥ १०९

जो आगे कहणा ब्राह्मणका सुवर्ण चुरायांहीयां केशांको खलार कर्के राजाके समीप प्राप्त होवे और ऐसेकहे हेराजन् मैचोरहां मेरेको तुसीशासनादेबो और राजा उसको ब्रामेका शस्त्र देवे और शस्त्रलेकर्के अपने शरीरको प्रहारकरे ऐसेमरजाणीते पवित्रहुंदाहै एहिअर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं तथेति ॥ और ब्राह्मणका सुवर्ण चुराणे विषे पुरुष केश खिलारकर्के राजाकेसन्मुख च लाजावे इत्यादि जो पूर्वकिहहै सोकामकरे ॥ और जेडासुवर्ण ब्रामे आदिका वणयाहोवे तिसके चुराणे विषे एहपूर्वोक्त प्रायश्चित्त नहिजाणना क्योंकि मुख्यसुवर्णकी जाति उहन

ब्राह्मणसुवर्णहरणेकेशान्प्रकीर्यराजानमभिगच्छेत् स्तेनोस्मिभोःशास्तुमां भवानिति तस्मैराजौदुवरंशस्त्रदद्यात्तेनात्मानं प्रमापयेत् मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञायते तथास्मिन्नेवविषयेइत्यादेरयमर्थः॥अग्निहोत्रिब्राह्मणसुवर्णापहारे ब्राह्मणोत्यंतसानुबंधयूतादिसिद्धयेहर्त्ताक्षत्रियादिर्वाअल्पानुबंधः तत्र यद्यभिषेकादिगुणवान्क्षत्रियानृपतिरस्तितदावासिष्ठोक्तम् ॥ब्राह्मणसुवर्णहरणेकेशान्प्रकीर्यराजानमभिगच्छेदित्याद्युक्तंकुर्यादिति यस्तुताम्रादि करसवेधाद्यापादितसुवर्णरूपस्यापहारो नतत्रेदं प्रायश्चित्तं मुख्यजातिसमवायाभावात् इतिमिताक्षरा॥पुनर्भविष्ये अपहत्यसुवर्णंचब्राह्मणस्यसुराधिप निष्कप्रमाणंपश्चात्तुराजानंक्षत्रियोव्रजेत् १ तस्मादौदुवरंशस्त्रंप्राप्यात्मानंहेनेद्रुह प्रयात्येवनसंदेहोयदिजीवतिसुव्रत २ यदिजीवतितदाप्रयात्येवशुद्धयत्येवेत्यर्थः॥यद्येतद्वचनंवीरब्राह्मणस्तपसैववा तत्रैवकारणाद्विद्वद्ब्राह्मणस्यसुराधिप ॥ ३ ॥

हिहै फेर भविष्यविषे लिखयाहै हेसेनापने तैसेहि क्षत्रीभी ब्राह्मणका एक निष्क प्रमाण कथा दश १६ मासे सुवर्ण चुराकर्के राजाके समीप चलाजावे १ और राजाते ब्रामेका शस्त्र ग्रहण कर्के अपने शरीरको तिस शस्त्रका प्रहारकरे अपनेबलके अनुसार और जेकर उह हेस्वामिकार्तिक जीवतारहे तदभीप वित्रहुंदाहै २ और हेस्वामिकार्तिक ऐसा जो वचनहै किब्राह्मण तपकर्के पवित्र हुंदाहै तिसस्थानविषे विद्वान् ब्राह्मणका ग्रहण कीताहै ३

१०८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी० भा०

इसकारण कर्के बुद्धिमान् ब्राह्मणको प्राणांत प्रायश्चित्तका निषेध जासणा और
ऐसे कर्मविषे मूर्ख ब्राह्मणको प्राणांतहि प्रायश्चित्त किहाहै और
जेकर इसप्रकार व्यवस्था न होवै तद (सुवर्णस्तेयकृत्विप्रः)
इत्यादि मनुवाक्य विषे विरोध हुंदाहै एह सुवर्णह
रणका प्रायश्चित्त प्रकरण पूरा होचुका ॥ ●

तपसैवेत्यनेन विदुषो ब्राह्मण
स्य प्राणांतिकं निषिध्यते अविदुष
स्तत्र विषये प्राणांतिकमेव अ
न्यथा सुवर्णस्तेयकृ
त्विप्र इत्यादि म
नुवाक्यविरो
धः स्यात्
इति सुवर्णहरण प्रायश्चित्त प्रकरणम्



॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ टी० भा० ॥ १०९

ओंनमः अवमहापातककेमध्यविषे चतुर्थे ४जो गुरुतल्पग महापातकहै तिसका प्रायश्चित्त लिखतेहैं तिसमै भी पहले गुरुतल्पशब्दका अर्थ लिखतेहैं अथेतिके तल्पशब्दअटारी विषे और स्त्री विषे और शय्या विषे किहाहै इसवाक्यते तल्पशब्द इसस्थान विषे स्त्री वाचकहै अर्थात् इहांतल्प नाम स्त्रीकाहि ग्रहण करणा और गुरुतल्पशब्दका एह अर्थहै कि गुरुकीजो तल्पक्या स्त्रीहैतिसके साथ जो गमन करे उहगुरुतल्पग हुंदाहै॥और इसस्थान विषे कौन गुरुहै और तिसकी स्त्री कौनहै इसमें कोयीऐसाकहतेहैं किपिताहि गुरुहै॥तैसेहि मनुजीने किहा हैनिषेकेति कि जो पुरुष गर्भाधानते आद लेकर जो संस्कारहैं तिनको विधि पूंवे करे और अन्न देणेकके पालनकरे सोब्राह्मणगुरु किहाहै १ और इस कारणतेपिताकोहि गुरुभाव

ओंनमः ॥ अथमहापातकांतर्गतगुरुतल्पगप्रायश्चित्तम् अद्वेदारेचशय्या यांतल्पशब्दोऽभिधीयत इतिवचनान्तल्पशब्दोऽत्रदारवचनः गुरोस्तल्पं स्त्रीतत्रगच्छतीतिगुरुतल्पगः तत्रकोगुरुः कावांगना पितैवगुरुरितिकश्चित् तथाचमनुः निषेकादीनिकर्माण्यःकरोतियथाविधि संभावयतिचान्नेनसविप्रोगुरुच्यते १ निषेकोगर्भाधानंतेनपितुरयंगुरुत्वोपदेशः गर्भाधानादीनि संस्कारकर्माणि पितुरुपदिष्टानि योयथाशास्त्रंकरोतिचपुनः अन्नेनसंवर्द्धयति सविप्रोगुरुःकथ्यतेइत्यर्थः॥यद्वानिषेकादिसंस्कारंकृत्वाऽन्नादिनायः पोषयतिसविप्रः पितागुरुरित्यर्थः विप्रइतिपितृमात्रोपलक्षणार्थम्॥याज्ञवल्क्यः॥सगुरुर्यःक्रियाःकृत्वावेदमरुमैप्रयच्छति उपनीयदद्वेदमाचार्यःसउदाहृतः १ अरुमैब्रह्मचारिणे यः क्रियागर्भाधानादिका उपनयनांताः कृत्वा वेदंप्रयच्छति सगुरुः यस्तूपनयनमात्रंकृत्वावेदंप्रयच्छतिसआचार्यइत्यर्थः ॥

प्रतीत हुंदाहै अर्थात् निषेक कर्के पिताहि गुरुहुंदाहै अथवा गर्भाधानादिकजो कर्महैं तिनको पिताके उपदेश कर्के शास्त्र विधिके अनुसार जो करे चपुना अन्न कर्के शरीरको जो पुष्टकरे सो ब्राह्मण गुरु कहीदाहै॥यदेति अथवा प्रथम निषेकादि कर्म कर्के फेर अन्न वस्त्र इत्यादि पदार्थ कर्के पालना करे सो ब्राह्मण पिता गुरुकिहाहै और इस स्थानविषे ब्राह्मण शब्दसवं पिताका उपलक्षणहै अर्थात् विप्र शब्द कर्के ब्राह्मणहोवे अथवा क्षत्रियादि होवे तथापि गुरुहै ऐसा अर्थ जानना॥और याज्ञवल्क्य जीने किहाहै सगुरुरिति इस ब्रह्मचारीके तार्थी जो गर्भाधानादि यज्ञोपवीत पर्यंत संपूर्ण संस्कार कर्के वेद पढा देवे सो गुरुहुंदाहै और जो पुरुष केवल यज्ञोपवीत मात्र कर्के वेद पढावे सो आचार्य हुंदाहै १

११० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ टी० ॥ भा०

श्रीर तिसकी जो स्त्री है और अपनी माता है अथवा उत्तम वर्णकी तिसकी साकणहो. वे और हीनवर्णकी नहो वे तिसके साथ मैथुन करणा महापातक हुंदा है और गुरुकी हीनवर्णकी स्त्री साथ जो गमन है सो गुरुतल्पके समान है एह आगे कहेंगे इसकारणते उह महापातक नहि है इति और गुरुकी हीनवर्ण स्त्री साथ जो मैथुन है सो महापातक नहि है एह अर्थ संगत नहि है किसवा- स्तेकि आचार्यादिका को भी गुरुभाव श्रवण करादा है इसकारणते और इतर जो माता पिता उन को भी अन्यनिषेधका अभाव होणते अर्थात् जहां माता पिताको गुरु किहा है तहां होर कोई गुरु नहि है ऐसे अर्थके नहि स्वीकार कर सेते ॥ तै से हिमनु जीने किहा है पितेति कि पिता जो है सो गार्हपत्य- अग्निरूप है और माता दक्षिण अग्निरूप है और गुरु आहवनीय अग्निरूप है एह तीन गुरु १ माता

तस्यांगनास्त्रीमातातत्सपत्नीचोत्तमवर्णा न हीनवर्णा तद्गमने गुरुतल्प समानत्वस्य वक्ष्यमाणत्वात् ॥ तद्गमनं न महापातकमिति तदसंगतम् ॥ आचार्यादेरपि गुरुत्वश्रवणादितरयोश्चान्यनिषेधार्थत्वाभावात् ॥ तथा च मनुः पिता वै गार्हपत्याग्निर्माता वै दक्षिणः स्मृतः गुरुराहवनीयस्तु साहित्रे ता गरीयसी १ इदं लोकं मातृभक्त्या पितृभक्त्या तु मध्यमम् गुरुशुश्रूषया त्वेवं ब्रह्मलोकं समश्नुते २ अनेन उत्पादक ब्रह्मदात्री रित्यादिवक्ष्यमाणेन च गुरो रेवाधिक्यश्रवणात् ॥ तत्स्त्रियां हीनवर्णायामपि गमने महापातकमेवेति सूचितम् ॥ अन्यच्च स्वल्पं वा बहु वा यस्य श्रुतस्योपकरोति यः तमपीह गुरुं विद्याच्छ्रुतोपक्रियया तथा १ यस्य पुरुषस्योपरियः स्वल्पं मसीलेखन्यादिवहु भोजनाच्छादनादिवा उपकरोति तमपि गुरुं जानीयात् ॥

२ पिता १ सभते वडे हैं १ और माता की भक्तिकर्के इस लोक को भोगता है और पिता की भक्तिकर्के मध्यलोक को भोगता है और गुरु की भक्तिकर्के ब्रह्मलोक को भोगता है इसकारण कर्के गुरु की कृपाते ब्रह्मलोक विषे प्राप्त हुंदा है २ इसते और उत्पादक जो माता पिता और ब्रह्मदाता गुरु इनां विषे ब्रह्मदाता हिवडा हैं एह आगे कहेंगे इसवास्ते गुरु को सभते वडा होने तै तिसकी हीनवर्ण स्त्री साथ भोगमन करणे विषे महापातक हुंदा है एह प्रकट कीता है ॥ अन्येति होर कहते हैं और जिसके ऊपर जो थोडा भी उपकार करे सो गुरु जानना क्या कि वेद पडनवाले की पुस्तक लिखन वास्ते श्याही लेखनी देवे एह थोडा उपकार है और भोजन वस्त्र दणे कर्के वेद पाठी के ऊपर बहुत उपकार करे तिस का भी जानना अर्थात् जो पुरुष वेद पाठी को भोजन कपडा देवे सो भी उसका गुरु हुंदा है ॥ १

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥प्र०१३ टी०भा० ॥ १११

श्रीर जो पुरुष वेद शास्त्रका उपकार करे क्याकि शास्त्र पढाना और अपने पासते पुस्तक देणा इत्यादि उपकार करण वाला जोहै सोभी गुरु किहाहै और तैसेहि गौतमजीने कि हाहै आचार्य इति कि संपूर्ण बड्योंके मध्य विष आचार्य श्रेष्ठहै और कैयोंके मतविषमाता समते उत्तमहै और जेकर कोयी ऐसे कहे कि गुरु शब्द पिता विषे हि संकेत कीताहै कि गुरु कहने कर्के पिताकाहि मुख्य ज्ञान हुंदाहै और आचार्य विषे गुरु पद गौणहै ऐसा नहि कहना क्योंकि आचार्यादिकों विषे भी गुरुपदका संकेत कीताहै अर्थात् गुरुपद कर्के आचार्यकाभी ज्ञान हुंदाहै इस कारणते ॥ और सोयी विष्णु जीने किहाहै त्रय इति पुरुषको एह ती न बडे हुंदेहैं कि माता १ पिता २ आचार्य ३ इति और तैसेहि देवलजीकावाक्यहै आचार्य इति कि पुरुषके एह सभ गुरु हुंदेहैं कि आचार्य १ दोषरहित पिता २ और बडाभाई ३ और राजा ४ और अपना मामा ५ और अपना सौरा ६ और प्राणांकी रक्षा करण वाला

तथाश्रुतोपक्रिययापाठनपुस्तकदानादिरूपयोपकारकः सोपिगुरुरित्यर्थः गौतमः आचार्यः श्रेष्ठो गुरुणां मातेत्येके ॥ पितर्येव संकेतितत्वादाचार्ये गौणं गुरुपदमिति चेन्न आचार्यादावपि संकेतदर्शनात् यथाह विष्णुः पुरुष स्यात्तु गुरवो भवन्ति मातापिता आचार्यश्चेति ॥ तथाह देवलः ॥ आचार्यश्च पिता श्रेष्ठो भ्राता चैव महीपतिः मातुलः श्वशुरस्त्राता मातामहापितामहौ १ वर्ण श्रेष्ठः पितृव्यश्च पुंसेते गुरवो मताः । भ्राता प्राणरक्षकः पिता श्रेष्ठोऽपि पितेत्यर्थः वर्णश्रेष्ठ क्षत्रियादीनां ब्राह्मणः अनेनैकादश गुरवो दर्शिताः ॥ अपराधार्कः ननु गुरुशब्दस्यान्यत्र प्रयोगोपि दृश्यते उपनीय गुरुः शिष्य मिथ्यादिनाचार्ये स्वल्पं वा बहु वा यस्य श्रुतस्योपकरोति यः तमपीह गुरुं विद्यादित्युपाध्याये व्यासेनान्यत्र प्रयोगोपि दर्शितः ॥ गुरवो मातृपितृपत्याचार्यविद्यादातृज्येष्ठभ्रातरः ऋत्विजो भयत्राता न्नदातृचेति ॥

७ और मातामाहानाना ८ पितामहादादा ९ और वर्णश्रेष्ठ ब्राह्मण १० और पितृव्य पिताका भ्राता चाचा ताया ११ एह संपूर्ण गुरु कहेहैं और इस कर्के देवलजीने एकादश गुरु दिखायेहैं १ और इसी प्रसंगमे अपराधार्क विषे लिखाहै कि नन्विति (प्रणहै) कि गुरु शब्दका और स्थान विषेभी प्रयोग देखादाहै और जिस स्थान विषे ऐसाहै कि गुरु शिष्य को यज्ञोपवीत पाकर्के वेद पढाये इस स्थान विषे गुरु शब्दका प्रयोग आचार्य विषे दिखायाहै और स्वल्प इत्यादि कर्के गुरु शब्दका प्रयोग उपाध्याय विषे दिखायाहै और व्यासदेव जीने औरहि स्थानमे गुरुपदका प्रयोग दिखायाहै कि इतने गुरुहैं माता पिता पति आचार्य विद्या देणे वाला बडा भ्राता यज्ञकराणे वाला भयते रक्षा करण वाला अन्न देणे वाला एह संपूर्ण पुरुषके गुरु कहेहैं इति

११२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

और इस स्थानविषे जो अन्न कर्के पालना करे इसपूर्वोक्त मनुवाक्य कर्के ॥ और अन्नदाताच इसव्यास जीके वाक्यते अन्न मात्रदेणे वाला जो पुरुष है सो स्वामी क्या राजा भी गुरु जानने योग्य है । और इनकी स्त्री साथ गमन करणा उह भी महा पातक हुंदा है । और इस स्थान विषे स्वा मीशब्द कर्के जातिका ग्रहण नहि कोता इसकारणते राजा कोयी जातिहो उसको गुरु जान णा ॥ और जो कोयी अन्नका उपकार करे सोयी स्वामी है ॥ और इसी कारणते पूर्व हरिश्चन्द्ररा जाने अन्नदेने वाले चांडालकी आज्ञा परमभक्ति कर्के ग्रहण करी है एह महाभारत विषे कथा प्रसंग है ॥ नचेति इसवास्ते गुरुशब्दके अनेक अर्थका कल्पना कुछ दोष नहि है क्योंकि गुरुशब्दकी जो प्रवृत्ति है तिसका निमित्तभूत पूजा योग्यताका सर्वत्र अनुस्यूत होनेते अर्थात् जिस स्थान विषे

अत्र संभावयति चान्नेनेति पूर्वोक्तमनुवचसा अन्नदाता चेति व्यासवचसा चान्नमात्रदाता स्वामी राजादिकोपि गुरुः संभावनीयः ॥ तत्स्त्रीगमनमपि महापातकम् । अत्र स्वामी जातिनिरपेक्ष एव बोध्यः योवाकोवाऽत्रोपकार को भवेत्स तु स्वाम्येव ॥ अतएव हरिश्चन्द्रेण राज्ञाऽन्नदातुश्चाण्डालस्य प्याज्ञा परमभक्त्या गृहीतेति महाभारते गाथा । नचानेकार्थकल्पना दोषः ॥ गुरुशब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तभूतायाः पूजा हित्वायाः सर्वत्रानुस्यूतत्वात् ॥ दर्शितं च तस्याः प्रवृत्तिनिमित्तत्वं योगीश्वरेण ॥ एते मान्या यथा पूर्वमेभ्यो माता गरीयसीति मान्या इत्युपक्रम्य गरीयसीत्युपसंहारं कुर्वता नचोपाध्यायादशाचार्य आचार्याणां शतं पितेत्युपाध्यायादधिकाचार्यात्पितुरति शयितत्वं वचनात्स एव मुख्य इति वाच्यम्

गुरुशब्दकी प्रवृत्ति होगी उस स्थान विषे पूजाकी योग्यता अवश्य होगी क्याकि जो गुरु होगा सो अवश्य पूजनीय होवेगा और तिसकी प्रवृत्तिकानिमित्त योगीश्वर जीने दिखाया है एतेति एह पूर्वोक्त संपूर्ण क्रमपूर्व मानने योग्य है अर्थात् इन सभकामान करणा उचित है और इन सभ तेमाता बडा है इसकारणते योगीश्वर जीने मान्याइसते प्रारंभ कर्के गरीयसी इहां समाप्ति करी है इसवास्ते माताते बडा कोयी नहि है और ऐसा कहना किदश १० उपाध्याय होवें तद एक आचार्य हुंदा है और सौ १०० आचार्यके तुल्य पिता कहा है इसक कर्के उपाध्यायते अधिक आचार्य हुआ और आचार्यते अधिक पिता कहा है और पिताको अतिशय वचनते सोयी मुख्य है एह यथार्थ नहि

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ११३

किस वास्ते कि आचार्यविषे भी ऐसा अतिशय वाक्ययुक्त है सोई जैसे उत्पन्न करणवाला जो है और जो वेद पढ़ाने वाला है इन दोनों विषे वेद पढ़ाने वाला पिता है इति और गौतमजीने भी किहा है संपूर्ण बड़यो के मध्यविषे आचार्य उत्तम है इति किंच जेकर अतिशय मात्र कर्के मुख्यता कहोगे तदपि तुः शतगुणं पुण्यं सहस्रं मातुरे बहि इत्यादि वाक्यने माताको सभते अधिक गुरुभाव होना चाहिये इसकारणने सभ गुरु है तिनको स्त्री साथगमन करणा गुरुगनागमन एह किहा है ॥ इसमे कहते हैं कि निषेकादीनि एहजो मनुवाक्य है इसविषे गर्भाधानादि कर्मकरणवाले पिताको गुरुभाव प्रतिपादन कोना है किमवास्ते निषेकादि कर्मविषे पिताते विना दूसरेका अधिकार नहि होता इसकारणने जोर व्यासदेवजीका और गोचमजीका वाक्य है सो पूजाविधिको विशेषता कर्के स्तुतिवास्ते

आचार्येऽप्यतिशयित्वस्याविशिष्टत्वात् उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान्ब्रह्म
दः पितेति गौतमेनाप्युक्तम् आचार्यः श्रेष्ठे गुरुणामिति ॥ किंच यद्यतिश
यित्वमात्रेण मुख्यत्वमुच्यते तर्हि सहस्रमिति वचनान्मातुरेव गुरुत्वं स्यात्
स्मात्सर्वे गुरवस्तस्य पत्नी गमनं गुरुगनागमनमिति युक्तम् ॥ अत्रोच्यते निषे
कादीनीति मनुवचनं निषेकादिकर्तुर्जनकस्य गुरुत्वप्रतिपादनपरम् अनन्य
परत्वात् ॥ यत्पुनर्व्यासगौतमवचनं तत्परिचर्यापूजादिविधिशेषतया स्तुत्य
र्थत्वेनान्यपरम् । अतो गुरुत्वप्रतिपादनपरान्निषेकादिमनुवचनात्पितुरेवमु
ख्यगुरुत्वमिति स्थितम् ॥ अतएव च वशिष्ठेनाचार्यपुत्रशिष्यभार्यासु चैव मि
त्याचार्यादिदारेष्वातिदेशकं गुरुतल्पगप्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ तथा जातूकर्ण्या
दिभिरप्युक्तम् आचार्यादेस्तुभार्यासु गुरुतल्पव्रतंचरेदित्यादि ॥

और के गुरुभावको प्रतिपादन करता है इसकारणने पिताविषे गुरुभाव प्रतिपादन करणने और निषेकादि मनुवाक्यने पिताको ही मुख्यगुरुभाव सिद्ध होया इति ॥ और इसी कारणने वशि ष्टजीने आचार्य पुत्र शिष्य इनकी स्त्रियोविषे अतिदेश गुरुतल्पग प्रायश्चित्त किहा है कि अतिदेश उसका नाम है कि जा और स्थानका प्रायश्चित्त और स्थानविषे दिखाणा जैसे कि इस स्थानमे गुरुतल्पग प्रायश्चित्तको आचार्य पुत्र शिष्य इनकी स्त्रीगमनविषे भी किहा है और तैसी ही जातूकर्ण्यादिक ऋषियोने किहा है आचार्येति जो पुरुष आचार्य पुत्र शिष्य इनकी स्त्री साथ गमनकरे तिसको गुरुतल्पग व्रतकरणा चाहिये इत्यादि दिखाया है

११४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र०१३ ॥ टी० भा०

और इसस्थानविषे आचार्यकोभीमुख्यगुरुभावहोया गुरुशब्दकके हि गुरुतल्पग प्रायश्चित्तकी प्राप्तिहुंदीहै तो अतिदेशव्यर्थहोजावे । इसकारणतेसंवर्त्तजीने प्रगटहिपिताकीस्त्रीकाग्रहणकीता है सोथी लिखयाहै पितृदागेति किमातातेविना और जोपिताकीस्त्रीयाहै उनके साथजोनीच पुरुषगमनकरे उसकोगुरुतल्पग व्रतकरणा योग्यहै । और षड्विंशतमतविषे भीलिखयाहै पितृ भायामिति । कि जो पुरुषापिताकीसवर्णास्त्रीको आणकके गमनवास्तेप्राप्तहोताहै इसवाक्यतेनिषे कादिकरणवाला जोपिताहै सोयीमुख्यगुरुहुंदाहै और पिताविषे जो गुरुभावहै सोचारवर्णविषे बराबरहै किसवास्तेकि संवत्स्थानमे निषेकादिकरणविषेपिताको अविशेषहोणेतै जैसे किक्षत्री काक्षत्रीपिता गुरुहोयावैश्यकावैश्य शूद्रका शूद्रापितागुरुहुंदाहै और जोऐसालिखयाहै कि सो

आचार्यादिमुख्यगुरुत्वेगुरूपदेशतएवव्रतप्राप्तेरतिदेशोनर्थकएवस्यात् किं चसंवर्त्तेनस्पष्टमेवपितृदारग्रहणंकृतम् पितृदारान्समारुह्यमातृवर्ज्यनरा धमइति ॥ षड्विंशन्मतेपि ॥ पितृभार्यातुविज्ञायसवर्णायोधिगच्छतीति अतोपिनिषेकादिकर्त्तापितैवमुख्योगुरुः॥तच्चगुरुस्ववर्णचतुष्टयेप्यविशिष्टे निषेकादिकर्त्तृत्वाविशेषात् अतःसविप्रोगुरुरुच्यत इतिविप्रग्रहणमुपलक्षणम् अतःपेतृपत्नीगमनमेवमहापातकम् ॥ गमनंचचरमधातुविसर्गपर्यंतकथ्यते अतस्ततोऽवाङ्निबृत्तौतु न महापातकित्वम् अथगुरुतल्प गमनप्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ गुरुतल्पोभिभाष्यैनस्तल्पेसुप्यादयोमये सू र्माज्वलन्तीवाश्लिष्येन्मृशुनासविशुद्ध्यति १ ॥

ब्राह्मणगुरुकिहाहै इसस्थानविषे विप्रशब्द पिताका वाचकहै इसकारणते पिताकी स्त्रीसाथ गमनकरणा महापातकहुंदाहै और गमनभी अत्यधातुकापात क्यावायेपातहोना तिसपर्यंतकिहा है इसते ऐसा जानना किवीर्यपातसे उरेहि निवृत्तिकैसेकारणतेहोजावे तदमहापातकनहिहै ॥ अब गुरुस्त्रीगमनप्रायश्चित्त मनुजीने किहाहै गुरुतल्पइति कि जोपुरुष गुरुकी स्त्रीसाथ मैथुन करे तिसकाऐसाकरणाचाहिये क्या कि गुरु स्त्रीगामी अपने गुरुस्त्री गमनपापको प्रकटकके लोहेकीजो अतितपीहांइं शय्याहै तिसके ऊपर शयनकरे अथवासूर्मा क्या लोहेकीवनायीहो या जोस्त्रीकी मूर्तहै तिसको जलतीको कटुकेसाथलगाकके शयनकरे तिसते मरणे कके शुद्ध हो जंदाहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरघुवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ ११५

अथवा आपहि अपनालिग और पताल काटकके अंजलि विषे ग्रहण कर्के सूधा नैऋतको
ण विषे चला जावे ऐसे चलते २ जब मृत हो जावे तदोपर श्राद्ध हुंदा है २ और दक्षिण पश्चिमके मध्य वि
षे जो कोण है तिसका नाम नैऋतकोण है और एह दो प्रायश्चित्त बहुत बडे हैं इस कारण ते सबणी गुरुस्त्री
के विषय विषे जानणे अर्थात् जो पुरुष ब्राह्मण गुरुकी ब्राह्मणी स्त्री साथ गमन करे अथवा शत्री गुरुकी क्ष
त्रिय स्त्री साथ गमन करे उसको एह प्राणांत प्रायश्चित्त करणा योग्य है और जान कर्के बीयं त्याग पर्यंत मैथु
न के विषयमें जानणा अर्थात् जिस स्थान विषे गुरुस्त्री साथ गमन करतियां बीयं पात हो जावे उसस्था
न विषे एह प्रायश्चित्त है ॥ २ ॥ और अपराकं विषे याज्ञवल्क्यजी का वाक्य है तस्येति कि जिसके

स्वयं वा शिश्रुषणौ व्युत्कृत्यादाय चांजलौ ॥ नैऋतं दिशं मातिष्ठेदानीं पाताद
जिह्मगः ॥ २ गुरुतल्पो गुरुस्त्री गामी स्वमेनो गुरुभार्या गमनपापं विरुप्य
अयोमये लोहमये तप्तशयने सूर्मिलोहमयी स्त्री प्रतिकृतिं कृत्वा तां ज्वलन्तीमा
लिङ्ग्य सुप्यात् ततश्च मृत्युना विशुद्धो भवति १ वालिङ्गवृषणौ स्वयं छित्वा अंज
लौ कृत्वा शरीरपातं यावदवक्रगतिः सन्नैऋतीं दक्षिणपश्चिमां दिशं गच्छेत् प्रा
यश्चित्तद्वयमिदं गुरुत्वात् सवर्णं गुरुभार्या विषयम् ॥ ज्ञानतोरेतो विसर्गपर्यन्त
मैथुनविषयं च बोध्यम् २ ॥ अपराकं याज्ञवल्क्यः ॥ तप्तशयने सुप्यादाय स्या
योषिता सह गृहीत्वोत्कृत्य वृषणौ नैऋत्यां चोत्सृजेत्तनुम् १ प्राजापत्यं चरेत् क
च्छुसमावा गुरुतल्पगः ॥ चांद्रायणं वा त्रीन्मासान् भ्यसन् वेदसंहिताम् ॥ २ ॥
उक्तलक्षणो गुरुतल्पगः तप्तेऽग्निवर्णलोहमये शयने मृत्यवे सुप्यात् संविशेत्
न केवलमेकाकी आस्य स्या योषितासहेति यावत् यद्वा स्वकीयौ वृषणौ स्वयमेव
उत्कृत्यांजलिना गृहीत्वानैऋत्यां दिशि गत्वा तत्र तनुं शरीरमोत्सृजेत् ॥ आ
शरीरनिपाताद्गच्छेदित्यर्थः

पुर्व लक्षण लिखे हैं ऐसा जो गुरुतल्पग है सो तप्तकया अग्निवर्णकी जो लोहेकी शय्या है तिसा वि
षे मरणवास्ते शयन करे और केवल एकलाहि न सोवे किंतु लोहेकी जो स्त्रीकी मूर्ती है तिसको
भीतपा कर्के तिसके साथ सोणा ये ग्य है अथवा अपने वृषण काट कर्के अंजलि विषे ग्रहण करे
कर नैऋतिदिशाको जा कर्के तिसमे अपना शरीर त्याग कर देवे ॥ १ ॥ और इस स्थान वि
षे ऐसा अभिप्राय जानणा कि जितना चिर देह पतित न होवे उतना चिर चलतार है एह अर्थ
कीता है अथवा प्राजापत्य इत्यादि मूलमें स्पष्ट है ॥ २ ॥

११६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥

इस प्रकारके जो प्रायश्चित्त हैं सो सब उसको जानने कि जो पुरुष कामनाते विनामाताके साथ गमनकरे । और नाहि है उत्तमवर्ण जिसका ऐसी जो माताकी सपत्नी है तिसमे गमनहोने विषे और तिसके विना और जो पिताकी स्त्री है तिसके साथ कामनाते गमनकरे एह सब उसके वास्ते प्रायश्चित्त दिखाये हैं और षट्त्रिंशन्मतविषे भी लिखया है कि जो पुरुष पिताकी स्त्रीको सवर्णजान कर्के गमन करता है अर्थात् जिसवर्णका पिता है उस वर्णकी अपनी मातातविना जो स्त्री है तिसके साथ जाणकर्के गमन करता है । और जो पुरुष न जाण कर्के माताके साथ गमन करता है सो पुरुष मृत हुया शुद्धिको प्राप्त हुंदा है १ और एह प्रायश्चित्त मुख्य पुत्रको हि जानना किस वास्ते कि होरणा पुत्रों को पुत्र संबंधि कार्य करणा किहा है और उनको पुत्र भाव नहि किहा । सोयी लिखया है कि जो क्षेत्रजते आद लेकर एकादश ११ प्रकारके पुत्र हैं तिनको बुद्धिमान क्रियालोपने पुत्रके तुल्य कहते हैं एह मनुवाक्य है । और अ

एवमादीनि प्रायश्चित्तान्येकैर्मतीमातरमनुत्तमवर्णाच्च तत्सपत्नीं तदन्यांतु कामंतोगच्छतो द्रष्टव्यानि २ षट्त्रिंशन्मतेपि पितृभार्यातु विज्ञाय सवर्णा योऽधिगच्छति जननीं वाप्यविज्ञाय नामृतः शुद्धिमाप्नुयादिति १ इदंच मुख्यस्यैव पुत्रस्य इतेरपां पुनः पुत्रकार्यं करत्वमेव न पुत्रत्वम् ॥ क्षेत्रजादी न्सुतानेतानेकादशयथोदितान् पुत्रप्रतिनिधीनाहुः क्रियालोपान्मनीषिण इति मनुवचनात् ॥ अमतिपूर्वासमानवर्णपुंश्चलीगुरुस्त्रीगमने प्रायेतां वि सर्गान्निवृत्तौ च समासं वत्सरमेकं वा प्राजापत्यं कृच्छ्रं चरेत् अभ्यसेत् आयद्वौक्त लक्षणंचान्द्रायणं स्वाध्यायसंहितामभ्यस्यन्मासत्रयं यावदाचरेत् ॥ मरणान्तिकंच प्रायश्चित्तत्रयं स्वकृतं गुरुतल्पगमनमभिभाष्य कार्यम् ॥ तथा चहारीतः । गुरुतल्पगोमृण्मयींचायसौंवास्त्रियाः प्रतिकृतिमग्निवर्णां कृत्वा तामालिङ्ग्य पूतो भवति । वसिष्ठः । निष्कालकोधृताभ्यक्तस्तप्तांसूर्मीपरिष्वज्य मरणात्पूतो भवतीति विज्ञायते निष्कालकोठ्याख्यातः

जानते नाहि है समान वर्ण जिसका ऐसी व्यभिचारिणी गुरुकी स्त्री साथ मैथुन कीतियां हो यां पूर्व वीर्य त्यागकी निवृत्ति विषे एक वर्ष प्राजापत्य कृच्छ्रकर अभ्यास करे ॥ अथवा अभी छे जिसके लक्षण कहे हैं तिस चान्द्रायणको करे और तीन महीने वेद संहिताका अभ्यास करे परंतु प्राणांतिक प्रायश्चित्त तीन प्रकारका है सो गुरुतल्प गमन पाप को प्रकाश कर्के करण योग्य है ॥ तैसेहि हरित जीने किहा है कि गुरु स्त्री गमन करण वाला पुरुष मृत्ति काकी अथवा लोहेकी अग्नि वर्ण की स्त्री साथ आलिंगन कर्के पवित्र हुंदा है ॥ और वसिष्ठ जीने किहा है कि निष्कालक हो कर्के क्या केश दाडी रोम इनका मुंडन कर वा कर्के और धृत मल कर्के तिस लोहेकी मूर्तीको आलिंगन कर्के मरणते पवित्र हुंदा है निष्काल शब्दका अर्थ पीछेभी होचुका है

॥ श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १३ ॥ टी ० भा ० ॥ ११७

श्रीर अंगिराजीने भी किहाहै गुरुतल्पीति कि जो पुरुष गुरुतल्पी होवे कि गुरुकी स्त्री साथ गमन करे सो पुरुष शिला तपा कर्के अथवा लोहेकी स्त्रीको तपा कर्के आपहि उस विषे प्रवेश करे । अथवा अपने वृषण काट कर्के आपहि अजलि विषे धारण करे १ अथवा मरण वास्ते पादो कर्के उत्तर दिशाको चला जावे इस प्रकार दे के त्याग करणे कर्के अशुभ कर्मते मुक्त हो जंदाहै २ अथवा महा व्रत करे क्या कि ब्रह्म हत्या विषे जो २४ वर्ष का व्रतहै सो महा व्रत जानने योग्यहै । अथवा अपना सर्वस्व दान कर देवे । अथवा गुरुके निमित्त युद्ध विषे मर जावे जेकर तद भी गुरुतल्पग मुक्त हुंदाहै अर्थात् इस प्रकार प्रायश्चित्त करणे कर्के गुरु स्त्री गमन करण वाला पवित्रताको प्राप्त हुंदाहै ३ और इस स्थान विषे प्राणान्त प्रायश्चित्त जानते माता विना सवर्ण अथवा अन्न वणकी गुरु स्त्री गमन विषे

अंगिराः । गुरुतल्पीशिलांतप्तामायसीवास्वयंविशेत् । उत्कृत्यवृषणौवा पिधारयेदंजलौस्वयं १ मरणायाथवापद्भ्यांप्रव्रजेदिशमुत्तराम् । शरीरस्य विमोक्षेणमुच्यतेकर्मणोऽशुभात् २ महाव्रतंवहेद्वापिदद्यात्सर्वस्वमेववागुर्वथवाहतोयुद्धेमुच्यतेगुरुतल्पगः ३ अत्रमरणान्तिकंज्ञानकृतेमातृव्यतिरिक्तसवर्णोत्तमवर्णगुरुदारगमनेबोद्धव्यम् ॥ महाव्रतंचरेद्वापीतिब्रह्महत्याव्रतंचतुर्विंशतिवार्षिकंबोधव्यम् प्राजापत्यकृच्छ्राभ्यासेविशेषमाहमनुःखट्वाङ्गी चरवासावाश्मश्रुलोविजनेबने प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रमब्दमेकंसमाहितः १ खट्वाङ्गीब्रह्मवधलाञ्छनः श्मश्रुलःकेशनखलोमश्मश्रुधारी ॥ समाहितः संयतमनाः निर्जनेबनेवर्षमेकंप्राजापत्यंचरेत् ॥ इदंचलघुत्वात्स्वभार्यादिभ्रमे ॥ गान्धानविषयंबोध्यम् ॥ चान्द्रायणंवात्रीन्मासानभ्यस्येन्नियतेन्द्रियः ॥

हविष्येणयवाग्वावागरुतल्यापनुत्तये २

जाहै । योग्यहै । और प्राजापत्य व्रतके अभ्यास विषे मनुजाने विशेष किहाहै खट्वाङ्गी कि स्त्रीको धारण करे और पुराणे ब्रह्म धारण करे । और जटाधारण कर्के पुरुष रहित वव विषे सावधान होकर एक वर्ष प्राजापत्य व्रत करे १ और खट्वाङ्गी क्या ब्राह्मण वध के चिह्न कर्के युक्त । श्मश्रुलक्या वाल नख रोम दाडी एह धारण करे इस विधि कर्के एक वर्ष प्राजापत्य करे ॥ १ ॥ और एह प्रायश्चित्त अल्पहै इस वास्ते अपने स्त्रीके भ्रम कर्के गुरुस्त्री गमन विषे जानने योग्यहै अर्थात् जो पुरुष अपनी स्त्री जाण कर गुरु स्त्री गमन करे सो इस प्रायश्चित्त कर्के पवित्र हुंदाहै । चान्द्रायण मिति कि अथवा इंद्रिय जीत कर तीन महीने चान्द्रायण का अभ्यास करे और इस व्रत विषे हविष्यान्न भोजन करे अथवा यवागु भोजन करे किहाहै गुरुतल्प पाप के दूर करण वास्ते २ ॥

अथवा गुरु स्त्री गमन पापके नाश वास्ते इंद्रिय रोक कर फल मूल भक्षण करे अथवा हविष्य अन्न खावे अथवा नौवार इत्यादि अन्नका यवागवना कर भोजनकर्ताहुया तीन महीने चांद्रायणका अभ्यास करे और एह पूर्वोक्तप्रायश्चित्तके अल्प प्रायश्चित्तहै इस वास्ते व्याभिचारिणी और असवर्णा गुरु स्त्री गमन करणे वाले पुरुषको जानना २ और यमजीने किहाहै अथेति कि अथवा लिंगके समेत वृषण उषाड कर्के हाथमे ग्रहण कर्के गुरुके सन्मुख जेकर स्थित हो जावे तद पापते मुक्तहो जंदाहै अर्थात् गुरुतल्यगएह प्रायश्चित्त करणे कर्के पवित्रहो जंदाहै १ अथवा दिनके अष्टम भाग विषे भोजनकरे और ब्रह्मन्त्र धारण कर्के सदैव ब्रतारहै

यद्वागुरुभर्षगम्नप्रणतिवृत्तयेनियतोन्द्रियः फलमलादिनाहविष्येणनी वारादिकृतयवाग्वावात्रीन्मासान्चांद्रायणान्यभ्यस्येत् एतच्चपूर्वोक्तादपि लघुत्वादसाध्यामसवर्णावागच्छतोज्ञेयम् २ यमः अथवाशिश्रुवृषणावुत्कृत्य प्रतिगृह्यच गुरोरभिमुखंतिष्ठन्पूतोभवतिकिलिषात् १ कालेष्टमेवाभुञ्जानोब्रह्मचारीसदाव्रतीस्थानासनाभ्यांविहरंस्त्रिरहोभ्युपयन्नपः २ अधःशायीत्रिभिर्वर्षैस्तदापोहेतपातकम् स्थानेति स्थानासनाभ्यांदिवारात्रिविभागेनविहरन् किंचत्रिरहःदिनस्यत्रोन्वारान् अपोजलानि अभ्युपयन् स्नानत्रयंकुर्वन्नित्यर्थः ॥ शंखेनाप्युक्तम् ॥ अधःशायीजटाधारीपर्णमूलफलाशनः ॥ एककालंसमश्नीयाद्वर्षेणतुद्वादशेगते १ स्वर्णस्तेयोसुरापश्च ब्रह्महागुरुतल्यगःव्रतेनानेनशुद्ध्यंतिमहापातकिनास्त्वमे २ इत्येतच्च मतिपूर्वसवर्णगुरुदारगमनाविषयम् यत्तुमनुनासपत्नींभगिनीमित्यादिना गुरुतल्पगव्रतमतिदिष्टत्वात्पादोनमुक्तम् ॥ तदसवर्णगुरुदारतल्पगविषयम् ॥

और दिनरात्रिके विभाग कर्के ईश्वर स्मरण करना होया तिन काल स्नान करे अर्थात् विषे तिन काल स्नान करे और पृथिवी ऊपर सोवे इस प्रकार तिन वर्ष करणे कर्के दूरकरताहै २ और तैसेहि शंख जीने किहाहै अध इति किभूमि ऊपर शयन करे और शिर विषे धारण करे और फल मूल भक्षण करे और एक काल भोजन करे इस तर्ही दादवर्ष १२व्यतीतहोयां १ सुवर्ण स्तेयी इत्यादि सभ पापों पवित्र होतेहैं एहस्मृतिपीछेभीआचुकी है २ और एह प्रायश्चित्त अज्ञान रत इन पापों विषे जज्ञणा और माताकी सौकनभगिनी इनके गमन विषे भोगुरु तल्पग व्रतका पादोन करणा किहाहै एह असवर्णा गुरु स्त्री गमन विषे किहाहै

॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ अ० १३ टी० भा० ॥ ११९

और उस विषे भी ब्राह्मणीका पुत्रजो है तिसको क्षत्रिया पिताकी स्त्रीगमन विषे वर्ष १ का प्रायश्चित्त किहा है और ऐसेहि वैश्यापिताकी स्त्रीगमन विषे ६ वर्ष और शूद्रागमनविषे ३ वर्ष गुरुतल्पग व्रत हुंदा है ऐसे एक ऋषि मानते हैं ॥ और अन्यइति होर ऋषिअसा कहते हैं अतिदेशक संपूर्णकरणा योग्य है कि अतिदेशकवाक्य विषे न्यूनत्वादिक कल्पना विषे कोयी प्रमाण नहि है इसवास्ते याज्ञवल्क्य और अंगिरा इनके वाक्योंका एकविषय है और इसकारण से तिसके समान प्रायश्चित्तांका भी न्यूनप्रायश्चित्त नहि जानना इसमें तुल्यविषे समशब्दका प्रयोगहि प्रमाण है और ब्रह्महत्या प्रसंग विषे व्यास देव जीने किहा है गत्वेति कि कामनाते विना

तत्रापि ब्राह्मणीपुत्रस्य क्षत्रियापितृभार्या गच्छतो नववार्षिकम् वैश्यां षाड्वार्षिकम् शूद्रायां त्रैवार्षिकम् गुरुतल्पग व्रतं भवतीत्येके मन्यन्ते अन्ये त्वातिदेशिकं सर्वसंपूर्णमेव कार्यमित्याहुरखंडपापकत्वादतिदेशस्य पादोनत्वादि कल्पनायांच प्रमाणाभावात् अतएव याज्ञवल्कीयांगिरसवाक्ययोः समान विषयतैव तत्समप्रायश्चित्तानां त्वन्यूनत्वे समशब्दप्रयोग एव प्रमाणम् राजसमो मंत्रीत्यादावन्यूनविषयस्य समशब्दस्य प्रयोगदर्शनात् ॥ ब्रह्महत्या नुवृत्तौ व्यासः । गत्वा तदेव कुर्वीत गुरुतल्पमकामतः कामतो द्विगुणं प्रोक्तं सर्वेषु च यदुच्यते सर्वेषु ब्रह्महत्यादिषु द्वादशवार्षिकं व्रतमुच्यते तदपि कामतः कृते पापे द्विगुणं भवतीत्यर्थः सुमंतुः । गुरुदारगामी संवत्सरं कंठकिशाखं परिष्वज्याधः शायी त्रिषवणी सुकर्माचक्षाणो भिक्षाहारः पूतो भवत्यश्वमेधावभूथ

स्नानेन वा

जाके
स्नाना

स्त्री गमनकर्के जो प्रायश्चित्त करणा किहा है सोयी दूना कामनाते किहा है सभ पाप विषे के सो विधि कहा है अर्थात् संपूर्ण ब्रह्महत्यादि पापोंमें द्वादशवार्षिक व्रत कहते हैं सोयी कामना कृत पाप विषे दूजे होते हैं और सुमंत ऋषि जीने किहा है कि गुरु स्त्रीगमन करण वाला पुरुष एक वर्ष प्रमाण कंडियावाले वृक्षके साथ आलिंगन कर्के पृथिवी ऊपर शयन करे और तीन काल स्नान करे और शुभकर्मको विचार करता होया भिक्षा मांगकर भोजन करे इस प्रकार पवित्र हुंदा है अथवा अश्वमेध यज्ञविषे अंत्य स्नान कर्के पवित्र हुंदा है ॥

१२० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ टी० ॥ भा०

और एहप्रायश्चित्त ब्राह्मणी पुत्रको वैश्यारूप गुरुस्त्री गमनविषे जानना तैसोहि आपस्तम्बजीका वाक्यहै किगुरुस्त्री साथ पापकरणवाला पुरुष गर्दभके चर्मकोऊपरलपासेरोमकके ऊपरअपने ओडलेवे और गुरुस्त्रीगमनकरण वालेको इसप्रकारसात ७घरतेभिक्षाएकवारप्रतिदिनग्रहणकरे ऐ सेहि छे ६ महीने कर्के पवित्रहंदाहै और एह प्रायश्चित्तभी ब्राह्मणी पुत्रको शूद्ररूपगुरुस्त्रीगमनविषे जानना ॥ विष्णुजीनेकिहाहै किमाताके साथ और कन्यकेसाथ और पुत्रकी स्त्रीसाथ गमनकरणा एह अतिपातककहेहै और ऐसेहि अतिपातककरणेवाले संपूर्ण अपनी शुद्धि वास्ते अग्नि विषे प्रवेश करे और मरणे तेविना तिसकी शुद्धि किसी प्रकार नहिहोगी और संवर्तजी

ब्राह्मणीपुत्रस्यवैश्यात्मकपुगुरुदारेष्वेतत् ॥ आपस्तम्बः ॥ गुरुदारव्यतिक्रा मीखराजिनंचवहिलोमपरिधायगुरुदारव्यतिक्रमिणेभिक्षादेहीतिसप्तागारा णिचरेदावृत्तिषण्मासान् प्रतिदिनमेकावृत्तिर्धास्मिन्कर्मणितद्यथास्यात्तेथेत्य र्थः ब्राह्मणीपुत्रस्यशूद्रात्मकेषुगुरुदारेष्वेतत् ॥ विष्णुः ॥ मातृगमनं दुहितृगमनंस्नुपागमनमित्यतिपातकानि ॥ अतिपातकिनस्त्वतेप्रविशे युहुताशनम् नान्यथानिष्कृतिस्तेषांविद्यतेहिकथंचन ॥ संवर्तः ॥ मातरं यदि गच्छेत्स्नुषांवापुरुषाधमःनतस्यनिष्कृतिर्विद्यात्कामादुहितरंतथा १ जीवतो निष्कृतिर्नास्तीत्यर्थः ॥ उशनाः ॥ गुरुतल्पाभिगामीसंवत्सरं ब्रह्महव्रतंषण्मा सान्वातसकृच्छूचरेत् एतच्चक्षत्रियापुत्रस्यशूद्रात्मिकांगुरुस्त्रियंगच्छतः ॥ बृद्ध मनुः गमनेगुरुभार्यायाः पितृभार्यागमेतथा ॥ अब्दत्रयमकामात्सकृच्छूनि त्यंसमाचरेत् ॥

कावाक्यहै मातृमिति कि जेकर माताके साथ अथवा स्नुषासाथ जो पुरुषाधमगमनकरताहो सकीकिसी प्रकार शुद्धिनहिहंदी और जोपुरुष कामनाते कन्याकेसाथ गमन करे उमकीभी वितियां शुद्धिनहिहो एहअर्थहै औरउशनाजीनेकिहाहै किगुरुस्त्री गमनकरण वाला पुरुषएव वष प्रमाण ब्रह्महत्याव्रतकरे अथवाछे ६ महीने तसकृच्छू करे औरएहप्रायश्चित्तक्षत्रयास्त्रीके पुत्र की शूद्रस्त्री गमन विषे जानना १ और सोयीबृद्धमनुजीने किहाहै गमनेतिकिगुरु स्त्रीगमन विषे और पिताकीस्त्रीगमनविषे कामनाते विनापुरुष तिसवर्ष पर्यंतनित्यप्रतिकृच्छू करे अर्थात् जेकर कामनाते विनागुरु औरपिताइनकीस्त्रीसाथमेषुनकरेतदातिसवर्ष व्रतकर्के पवित्रहंदाहै

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १३ ॥ टी ० भा ० ॥ १२१

और संवत्त जीका बाक्यहै किजो शूद्र ब्राह्मणकी स्त्री विषे गमन करे अज्ञानते तिसको अपनी शुद्धि वास्ते गुरु तल्प व्रत करणा किहाहै और जेकर जाणकर करे तद प्राणांतिकोह प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ऐसासर्वत्र निश्चय कीयाहै । और वसिष्ठजीने किहाहैकि जेकर कोयी शूद्र ब्राह्मणी गमन करे तद उसके शरीरमे तृणवेष्टन कर्के अग्नि विषे सुट देवे और उस ब्राह्मणी को शिर मुना कर्के उसके शरीर विषे घृत मर्दन कर्के और नम्र कर्के काले खोते ऊपरचडा कर्के बजारके मार्ग विषे ले जावे नगरते बाहर निकाल देवे तद उह ब्राह्मणी पवित्र होदीहै ऐसे जानना इस जगा (शिरसि) एह पद समग्र शिरके मुंडन वास्तेहै ऐसा नहि कहंदे तद अंगुलि द्वय काहि मुंडन पूर्वोक्त वचन से हुंदा और जे कर कोयीवैश्य ब्राह्मणी गमन करे तद

संवत्तः शूद्रस्तुविप्रागमनेगुरुतल्पव्रतंचरेत् अज्ञानादज्ञानतो गत्वा प्राणान्तिकमिति स्थितिः वसिष्ठः । शूद्रश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेद्द्वारुद्विर्वेष्टयित्वा शूद्रमग्नौ प्रास्येत् ब्राह्मणीशिरसि वपनं कारयित्वा सर्पिषाभ्यज्य नग्नां कृणा खरमारोप्य महापथं गमनं ब्राजयेत् पूता भवतीति विज्ञायते अनेकशिखा वपनप्राप्तये शिरसीत्युक्तम् वैश्यश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेच्छोहितदभैर्वेष्टयित्वा वैश्यमग्नौ प्रास्येद्ब्राह्मणीशिरसि वपनं कारयित्वा सर्पिषाभ्यज्य नग्नां गौरखरमारोप्य महापथं ब्राजयेत् पूता भवतीति विज्ञायते राजन्यश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेच्छरपत्रैर्वेष्टयित्वा राजन्यमग्नौ प्रास्येद्ब्राह्मण्याः शिरसि वपनं कारयित्वा सर्पिषाभ्यज्य नग्नां श्वेतखरमारोप्य महापथं गमनं ब्राजयेत् पूता भवतीति विज्ञायते महापथो राजपथः पूता भवति प्रायश्चित्तयोग्या भवतीत्यर्थः

वैश्यके शरीरमे लालरंगकी कुशा वेष्टन कर्के अग्नि विषे सुट देणा चाहिये और ब्राह्मणी शिर मुनवा कर्के और उसको घृत मर्दन कर्के और सभवस्त्र उतारके और श्वेत खोते विषे चडा कर्के नगरते बाहर निकाल देणा तद उह ब्राह्मणी पवित्र होजदीहै ऐसा निश्चय जा के और इसी प्रकार जेकर क्षत्री ब्राह्मणी गमन करे तद उस क्षत्रीको कानिके पत्र देह विषे लपेटके अग्नि विषे सुट देणा और उस ब्राह्मणी कोभी श्वेत खोते ऊपर चडा कर्के बजार विषे फेरके नगरते बाहर निकाल देणा किहाहै तद उह ब्राह्मणी पवित्र होदीहै और इस स्थान विषे महापथनाम राजमार्गकाहै और पूता भवति इस कर्के प्रायश्चित्त योग्यहोदीहै अर्थात् प्रथम उस ब्राह्मणी को ऐसै कर्के फेर प्रायश्चित्त उसतें करवाणा चाहिये ॥

१२२ ॥ श्रीरणवारीकीरित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ ॥ टी ० भा ० ॥

श्रीर कएव ऋषिजी का वाक्यहै कि जो ब्राह्मण क्षत्रय जातीकीं जो गुरुस्त्रीहै तिसके साथ गमन कदाचित् करे तद उह ब्राह्मण अपनी शुद्धि वास्ते चांद्रायण और तप्तकच्छ और अति कच्छ करे तद पवित्रहुंदाहै । और इसस्थान विषे ऐसा अभिप्रायहै कि जेकर दोनो कीइ छा होवे तद तप्त कच्छ करणा योग्यहै ॥ और जेकर तिसब्राह्मणो कर्के पुरुष उत्साहको प्राप्त होकर गमन करे तद तिसको अतिकच्छ करणा किहाहै ॥ और जेकर तिसपुरुषकी इच्छा कर्के ब्राह्मणो कोमैथुन कीइछा होवे तद तिस स्त्रीको चांद्रायण करणा योग्यहै श्री एह व्यवस्था माधव पराशरजीने कीतेहै और बारं बार करणविषे पूर्वोक्तहि प्रायश्चित्त जानन अर्थात् जेकर बहुतवारी ब्राह्मणो साथजोगमनकरे उसके वास्ते पूर्वोक्ता जो प्रायश्चित्तहै सो योजाजना और तैसेहि एगशर माधवजीने किहाहै ततेति कि ब्राह्मण जानते एकवारी वैश्याजो गुरुकी स्त्रीहै तिसके साथ गमन कर्के सो अपनी पवित्रता वांस्त एक महीना तप्तकच्छ अथवा पराक व्रत और तैसेहि सांतपनकरे तद उह ब्राह्मण पवित्रहुंदाहै । और इसस्थानविषे

कएवः चांद्रायणं तप्तकच्छं तप्तकच्छं तथैव च सकृद्रत्वा गुरोर्भाय्यामज्ञानात् क्षत्रियां द्विजः ॥ १ ॥ अत्रोभयोरिच्छातः प्रवृत्तौ तप्तकच्छः तथा प्रोत्साहितस्यातिकच्छः तेन प्रोत्साहितायाश्चांद्रायणं द्रष्टव्यमिति माधव पराशरः अभ्यासे तु पूर्वोक्तज्ञेयम् ॥ तथा स एव तप्तकच्छं पराकंच तथा सांतपनं गुरोर्भाय्यै वैश्यां सकृद्रत्वा नुद्धयामासंचरेद्विजः ॥ १ ॥ अत्राप्युभयोरिच्छातः प्रवृत्तौ तप्तकच्छं तथा प्रोत्साहितस्य सांतपनं आत्मना प्रोत्साहितायाः पराकः । अभ्यासे लिंगाग्रच्छेदः ॥ तथा चलौगाक्षिः ॥ गुरोर्वैश्यां पुनर्यस्तु गत्वा चापि पुनः पुनः लिंगाग्रच्छेदयित्वा तु ततः शुद्धे तर्कल्लिषादिति अस्मादेव प्रकादभ्यासे यदुक्तं तदेव प्रायश्चित्तं बहुशो अभ्यासेऽपि द्रष्टव्यम् अबुद्धिः सकृद्रमने

भा उनदोनोंकी इच्छाते गमन विषे प्रवृत्ति होयां तप्तकच्छ जानना और तिसस्त्रीकी इच्छाते के गमनमे इच्छाहोवे तद तिस पुरुषको सांतपन व्रत जानना और जेकर पुरुष लोभदेक के को उत्साहकरा देवे तद उसस्थान विषे पराक व्रत जानना और बहुत वारी ऐसे करणे उनके लिङ्गका अग्रभाग काट देणा किहाहै और इना स्त्रीयोंका प्रायश्चित्त स्त्री चारके प्रसंगविषे देखणा और तैसेहि लौगाक्षि ऋषि का वाक्यहै गुरो कि जो पुरुष एकवारी गुरु की वैश्यास्त्री के साथ गमन कर्के फेर दूसरी वारी गमन करे वा अपनी इच्छानुसार वाग्वार गमन करे सो पुरुष जेकर अपना लिङ्गकाटकर सुटदेवे तद उस पापते मुक्तहुंदाहै इति । और इसकारणतेहि जो प्रायश्चित्त अभ्यास विषे किहाहै सोयी प्रायश्चित्त बहुत अभ्यास विषे जानना अर्थात् जो थोडे अभ्यास विषे प्रायश्चित्त है सोयी बहुते अभ्यास विषे दिखायाहै एह सर्वत्र निश्चय कीताहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग० प्र० १३ ॥ टी० भा० ॥ १२३

और ज्ञानते विना एक वारी गमन विषे प्रजापति जीका वाक्यहै पंचेति कि ब्राह्मण ज्ञानते विना एक वारी वैश्याजो गुरुकी स्त्रीहै तिसके साथ गमन कर्के पांच ५ रात्रि भोजन नकरे अथवा सात ७ अथवा आठ ८ रात्रि कुछ भोजन करे अर्थात् जो ब्राह्मण अज्ञानते गुरु की वैश्या स्त्री गमन एक वार करे सो पांच ५ दिन सात ७ दिन आठ ८ दिन निरा हार कर्के पवित्र हंदाहे । १ । और तैसेहि इस स्थानविषे भी दोनोस्त्री पुरुषकी इछाते ऐसे व्यभिचार विषे सात ७ रात्रि उपवास करणा किहाहै और जेकर स्त्री की इछा कर्के पुरुषकी इछा होवे तद पांच ५ रात्रि निरा हार व्रत जानणा और जेकर पुरुषकी इछा कर्के स्त्रीकी भी इछा होजावे तद आठ ८ रात्रि उपवास करणा योग्यहै और जेकर अभ्यास करे तद मरणपर्यंत ब्रह्मचर्य करणा योग्यहै और यम जीने किहाहै रेत इति कि कुमारी कन्या विषे वांछे त्याग कीतियां और चांडाली जो स्त्रीहै तिनों विषे अथवा अंत्यजातिकी जो स्त्रीहैं अथवा अपने कुलकी जो स्त्रीहैं अथवा पुत्रकी जो स्त्रीहैं इनमे विषे पातकीतियां होयां प्राण त्यागहि क

प्रजापतिः॥ पंचरात्रंतुनाश्रियात्सप्ताष्टौवातथैवचदैत्याभार्यागुरोर्गत्वासकृदज्ञानतोद्विजः १ इत्यत्राप्युभयोरिच्छातःसप्तरात्रतयाप्रोत्साहितस्यपंचरात्रम् आत्मनाप्रोत्साहितायाश्चाष्टरात्रम् अभ्यासेत्वामरणाद्ब्रह्मचर्यरक्षणम् यमः।रेतःसेकेकुमारीषुचंडालीष्वंत्यजातिषु सपिंडापत्यदारेषुप्राणत्यागोविधीयते १ कुमार्यादिषुकामतोभ्यासे अपत्यदारेष्वकामतःसकृदमनेतत् यत्तुवृहद्यमेनोक्तम् चांडालींपुष्कसींगत्वास्तुपांचभगिनींसखीमातापित्रोःस्वसारंचनिक्षिप्तांशरणागताम् १ मातुलानींप्रव्रजितांस्वगोत्रान्तुपयोषितम् शिष्यभार्यागुरोर्भार्यांगत्वाचांद्रायणंचरेदिति ॥ २ ॥

किहाहै १ । अर्थात् जिसका विवाह नहि हूया उस कन्याके साथ और चांडालीके और नीचकी जो स्त्रीहै तिसके साथ और अपने गोत्रकी जो स्त्रीहै तिसके साथ और आकनी स्त्रियोंके साथ जो पुरुष गमन करे सो पुरुष मरण कर्केहि पवित्र हंदाहै और एह प्रायश्चित्त कामनातेकुमार्यादि गमनके अभ्यासविषे जानणा और कामनाते एकवार पुत्रस्त्री गमन की। एह प्रायश्चित्तजानणा औरवृहद्यमजीनेऐसे जोकिहाहै किचांडालीमिति कि चांडाल की स्त्री और पुष्कसीकी स्त्री इनकेसाथ गमनकर्के अथवा अपने पुत्रकी स्त्रीऔर अपनीभगिनी अथवा अपनी सेवाकरणवाली और माताकीभगिनी मास्सी और पिताकीभगिनीभूया और जो स्त्री अपने पास किसी और पुरुषने अमानत रूप धरीहो किसी कागणते और किसी भयते शरणको जो स्त्री प्राप्त होवे ॥ १ ॥ और अपने मामकी स्त्री औरजिसस्त्रीने संन्यासधारण कीताहोवे और अपने गोत्रकी जो स्त्रीहै और राजाकी स्त्री और अपने शिष्यकी स्त्री और अपने गुरुकी स्त्री इनके साथ गमन कर्के चांद्रायण व्रत करे एह वाक्य जोहै ॥ २ ॥

१२४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग ० प्र ० १३ टी ० भा ०

और एह जो अंगिराजीकावचनहै पवितामिति कि जो स्त्री पतित हो जावे । और नीचकी जो स्त्री है इनके साथ गमन करके अथवा इनके साथ एकत्र भोजन करके अथवा इनको अंगीकार करके एक महीना उपवास करे अथवा अपनी शुद्धि वास्ते चांद्रायण करे । और एह दोनोवा क्य गुरु तत्पग प्रायश्चित्त के अतिदेश विषय मे कामनाते गमन विषे प्रवृत्त पुरुष को वीर्य पातते पू र्वनिवृत्ति विषे जानने योग्य है अर्थात् जो पुरुष गमन करतियां वीर्य त्यागते विना पहिले हि हट जावे उस वास्ते एह प्रायश्चित्त जानना ॥ और अंत्यजा के सात ७ भेद अंगिराजीने दिखाये हैं कि एक १ चांडाल और २ श्वपच और ३ क्षता ४ सूत ५ वेदेह ६ शूरा ७ अश्विगव एह सात ७ अस्यज की कहि है और धोवो चमियार इत्यादि अंत्यजा की इस जगाना हि है किस वास्ते तिन रज का दि को प्रायश्चित्त पा ३०० २२ २३ कारणते और तैसेहि लिखा है चांडालाति कि चांडाल और

यत्वांगिरावचनम् ॥ पतितांत्यस्त्रियोगत्वाभुक्त्वाचप्रतिगृह्यचमासोपवासंकु र्वीतचांद्रायणमथापिवेति तदुभयमपि गुरुतल्पातिदेशविषयेषु कामतः प्रवृ त्तस्यरेतः सेकादर्वाङ्निवृत्तौ बोद्धव्यम् अंत्यस्त्रियोंऽत्यजास्ताश्च सप्तांगिर सादर्शितायथा । चांडालः श्वपचः क्षतासूतवैदेहिकस्तथा मागधायोगवौ चैव सप्तैतैर्यावसायिन इति नतुरजकश्चर्मकारश्चेत्यादिप्रतिपादिताः तेपुल घुप्रायश्चित्तस्योक्तत्वात् तथा चांडालांत्यस्त्रियंगत्वाभुक्त्वाचप्रतिगृह्यच पतत्यज्ञानतो विप्रोज्ञानात्साम्यंतुगच्छतीति चांडालादिसाम्यं प्रतिपादयता मनुनापि कामतोऽत्यंताभ्यासे मरणांतिकदर्शितम् ॥ तथा ह्यज्ञानतश्चांडाली ग मनाभ्यासे पतत्यतः पतितप्रायश्चित्तं द्वादशवर्षिकं कुर्यात् कामतोऽत्यंता भ्यासे चांडालैः साम्यंगच्छत्यतो द्वादशवर्षिकाधिकं मरणांतिकं कुर्यात् एतद् बहुकालाभ्यासविषयं एकरात्राभ्यासे तु वर्षत्रयम्

अस्यज इनकी स्त्री साथ गमन करके अथवा भोजन करके और अंगीकार करके पुरुष पतित हो जा जेकर अज्ञानते करे तद और जेकर ज्ञान करके करे तद चांडालादि के समान हो जाता है और सप्रकार चांडालादिक के समान प्रति पादन करते जो मनुजी हैं तिनोने भी कामनाते अस्यंत भ्यास विषे मरणांतिक प्रायश्चित्त दिखाया है ॥ और तैसेहि ज्ञानते विना चांडाली गमन के भ्यास विषे पतित हो जंदा है इस कारणते पतित को जो प्रायश्चित्त है वारां १२ वर्ष वत तिसको करे और कामनाते बहुत अभ्यास विषे जो पुरुष चांडालों के समान हो जावे सो पुरुष द्वादश वर्षते अ धिक जो मरणांतिक है तिसको करे ॥ और एह बहुत चिर काल अभ्यास विषय है अर्थात् जो चांडाली गमन का बहुत चिर अभ्यास करतार है । उसके वास्ते एह प्रायश्चित्त करणा किहा है । और एकरात्रे अभ्यास विषे तिस वर्ष का व्रत करणा किहा है ॥

और जैसे मनु जीने किहा है यदिति कि छेकर ब्राह्मण एक रात्रि भी वृषलीका सेवन कर तब उह ब्राह्मण भिक्षाका अन्न भोजन करता होया और नित्य प्रति गावत्री जप करता होया तिस ३ वर्ष कर्के पाप को दूर करता है ॥ १ ॥ और इस स्थान विषे वृषली चांडाली का नाम है ॥ सोयी लिखया है कि चांडाली और बंधकी क्या कि जिसकी कभी ऋतु दर्शन नहि होता २ और वेश्या ३ और जो कन्या भाध विषे ऋतु वाली होती है ४ और जो अपने गोत्रकी विवाही होवे एह ५ पांच वृषली कही हैं १ किस वास्ते कि स्मृत्यंतर विषे वृषली शब्दका प्रयोग दर्शनते ॥ और बंधकी व्यभिचारिणी भी नाम है । (प्रण) । पूर्वीक्तमनुवचनविषे एक रात्रपद कर्के किस तर्ही अभ्यासका अर्थ प्रतीत होया (उत्तर) एकरात्रेण इस जगा अन्त्य

यथाहमनुः । यत्करोत्येकरात्रेण वृषलीसेवनाद्विजः तद्वैक्ष्यभुञ्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहतीति १ एकरात्रेण एकरात्राभ्यासेनेत्यर्थः । अत्र वृषलीशब्दे न चांडाल्यभिधीयते । चांडाली बंधकी वेश्यारजः स्थाया च कन्यका ऊढाया च स गोत्रास्था द्वषण्यः पंचकोर्तिता इति स्मृत्यंतरे वृषलीशब्दप्रयोगदर्शनात् । बंधकी स्वैरिणी । कथं पुनरत्राभ्यासावगमः । उच्यते । यत्करोत्येकरात्रेणेत्यत्यंतसंयोगापवर्गवाचिन्यास्तृतीयायादर्शनात् । एकरात्रेण चात्यंतसंयोगोगमनस्याभ्यासं विनानुपपन्न इति गमनाभ्यासोवगम्यते । गुरुतल्पगप्रायश्चित्तानुवृत्तौ हारीतः । एवमेव गुरुपितृव्यस्त्रीगमः । कन्यास गोत्रास्वस्त्रेयागमने चान्द्रायणं वा ॥ साभ्यासे मातिपूर्वके पितृव्यादिस्त्रीगमे गुरुतल्पगप्रायश्चित्तमन्यथा चान्द्रायणम् ॥ गुरुतल्पगप्रायश्चित्तमभिधायाह वसिष्ठः ॥ आचार्यपुत्रशिष्यभार्यासु चैवम् ॥ ऋतुः रेतः सेकः सुप्तिर्नापुगोषु शिष्यांगनासु च सखिभार्यासु तस्त्रीषु गमनाद्गुरुतल्पगः १ शुभोभनाश्रयतायोनीयासां तासुकन्यासु इति गुरुतल्पगप्रायश्चित्तम् १३ •

आचार्य अर्थ विषे तृतीया विभक्ति है सो अर्थ विना अभ्याससे नहि हुंदा इस कर्के अभ्यास स्वद्वैषणं जानणा अर्थात् एक रात्र विषे बहुतवार गमन करणा ऐसा अर्थ है ॥ और गुरुतल्पग प्रायश्चित्त प्रसंग विषे हारीत जीने किहा है कि ऐसेहि गुरु पिता और तिसका यो आचार्य तिसकी स्त्री विषे गमनका प्रायश्चित्त है । और कन्या और अपने गोत्रकी स्त्री और भगिन की कन्या इनके गमन विषे चांद्रायण करणा किहा है । और गुरुतल्पग प्रायश्चित्त प्रसंग विषे वसिष्ठ जीने किहा है कि आचार्य पुत्र शिष्य इनकी स्त्री विषे भी ऐसेहि जानणा ॥ और ऋतु रेत सेक सुप्ति किहा है कि सुप्ति स्त्री कन्या है जिस विषे वीर्य लिखन करे और जो गीय विषे और शिष्य स्त्रियां विषे और भगिन की स्त्री विषे समान करे सो गुरुतल्पग होता है १ एह गुरुतल्पग प्रायश्चित्त समाप्त होया ॥ एह श्लोकश्रमा प्रकरण पूरा होया ॥ • ॥ १३

१२६ ॥ श्रीरघुवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १३ इ टी ० बी ० ॥

अब पतितसंसर्गियों प्रायश्चित्त विधान कीता है तिस विषे भी महापातकीका यो संसर्ग है तिसकोहि पापका कारण भाव होता है और पातकीके संसर्गको पापका कारण भाव नहि हो ता अर्थात् जो पुरुष महापातकीका सगर्ग करता है उसीकोहि महापातक हुंदा है। सोयी मनुजीने किहा है कि ब्रह्महत्या १ सुरापान २ स्तेय ३ गुरुस्त्रीगमन ४ एह महापातक हैं और पांच वां इनके साथ संसर्ग ५ है ॥ इस कारणते महापातकीकाहि संसर्ग महापातक किहा है इस वास्ते मनुजीने (तैःसह) इस प्रकार कथन करणते महापातकीके संसर्गकाहि प्रायश्चित्त दि खाया है। सोयी जैसे लिखया है एषामिति कि एह जो ब्रह्महत्यादि चार पाप करण वाले हैं तिन का तो प्रायश्चित्त पूर्व किहा है अब तिनोके साथ जो संसर्ग है तिनको एह प्रायश्चित्त श्रवण कर १

अथ पतितसंसर्गिणः प्रायश्चित्तविधानम् ॥ तत्र पापहेतुत्वं महापातकिसं स र्गस्यैव न पातक्यन्तरसंसर्गस्य तदाह मनुः । ब्रह्महत्यादिसंसर्गश्चापि तैःसहेतितैःसहेति निर्देशात् मनुना । प्रायश्चित्तमपि । महापातकिसंसर्गिण एव निर्दिष्टम् । यथा । एषां पापकृता मुक्ता चतुर्णां मपि निष्कृतिः पतितैः संप्रभु क्तानामिमाः शृणुत निष्कृतीः १ यो येन पतितं नैषां संसर्गं याति मानवः स त स्यैव व्रतं कुर्यात् तत्संसर्गविशुद्धये २ एषां ब्रह्महादि महापापिनां चतुर्णां मपि निष्कृतिः प्रायश्चित्तमुक्ता तैः सह व्यवहर्तुणामिमावक्ष्यमाणानिष्कृतीः प्रा यश्चित्तानि शृणुत १ एषां ब्रह्महादि महापापिनां मध्ये येन महापापिना ब्रह्महा द्यन्यतमेन पतितेन संसर्गं याति तस्यैव व्रतरूपं प्रायश्चित्तं कुर्यात् न मरणाति कमित्यर्थः ॥

और जो पुरुष इनके मध्य विषे जिसके साथ संसर्गको प्राप्त होवे सो पुरुष संसर्गकी वि वास्ते तिस पापीको जो व्रत किहा है ओहि व्रत करे जैसेहि जिस पुरुषने ब्रह्महत्या कीती उसको ब्रह्महत्या पाप दूरकरण वास्ते जो प्रायश्चित्त करणा किहा है सोयी जो पुरुष ब्र ह्महत्या करण वालेका संसर्ग करता है उसकोभी किहा है और इसी प्रकार सुरापान करणे वा का संसर्ग सुरापान प्रायश्चित्त करे २ और एह जो ब्रह्महादि पापी हैं तिनके मध्य विषे जिस महापातकीके साथ अथवा ब्रह्महादिते और किसी पतितके साथ संसर्गको प्राप्त होवे अर्थात् जिस पापीके साथ भोजनादि व्यवहार करे सो पुरुष तिस पापीको जो व्रतरूप प्रायश्चित्त कि हा है सो तिसी प्रायश्चित्तको करे और प्राणांत प्रायश्चित्त न करे एह अभिप्राय है

॥ श्रीरायचरितः प्रायश्चित्त भागः प्र ३ ॥ टी० भा० ॥ १२७ ॥

तदभी तिसके संसर्गको बारा १२ वर्षका जो ब्रह्महत्यादि व्रत है सोयी एक पादहीन करणा योग्य है ॥ इसमें प्रमाण कहते हैं यइति श्रीर जो पुरुष जिस पापीके साथ एक वर्ष संसर्ग करता है सोभी तिसकी समानताको प्राप्त होजंदा है जैसे कि जो पुरुष ब्रह्महत्या करण वा ले पुरुष साथ एक वर्ष भोजनादि व्यवहार करे सोभी ब्रह्महत्यारेके तुल्य जानना ॥ और इस कारणते संसर्ग तिस तिसका पादोन व्रत करे ऐसे व्यासदेव जीका वाक्य है तिसके स्मरण ते अथांत व्यास जीने किहा है कि जो पुरुष जिस पापीके साथ संसर्ग करता है तिसकोभी जो प्रायश्चित्त हुंदा है ओहि व्रत पादोन करणा योग्य है २ और इसस्थानविषे यद्यपि प्राणांत प्रायश्चित्त विषे पादोन नहि होसकता तद भी मरणांतके स्थान जो चवीस २४ वर्षका व्रत है तिसका पादोन कथा अठारां १८ वर्ष करणा योग्य है ॥ और ३६ प्रायश्चित्त महापातकी

तद्व्रतमपि संसर्गिणः क्रियमाणं ब्रह्महाद्वादशसमाइत्यादिकं पादहीनं कर्तव्यं योयेन संसृजेद्वर्षसोपितत्समतामियात् पादन्यूनं चरेत्सोपितस्य तस्य व्रतं द्विज इति व्यासस्मरणात् ॥ २ ॥ अत्र यद्यपि मरणे पादोनत्वं न संभवति तथापि मरणे वैकल्पिकं चतुर्विंशतिवार्षिकं व्रतं पादोनं कर्तव्यमिति महापातकिं व्यतिरिक्तेन यः संसृष्टस्तद्विषयमेतदित्यपरार्कः ॥ प्रायश्चित्तीयतां प्राप्य देवात् पूर्वकृतेन वा न संसर्गं व्रजेत्सद्भिः प्रायश्चित्तेऽकृते द्विजः १ द्विजो देवात् पूर्वकृतेन पापेन प्रायश्चित्तीयतां प्रायश्चित्तयोग्यतां प्राप्याऽकृते प्रायश्चित्ते सद्भिः सह संसर्गं न ब्रजेदित्यर्थः एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थकचित्समाचरेत् कृतनिर्णेजनार्थं च तिन जुगुप्सु ॥ २ ॥ चिदिति मनुना सामान्यतः पापिष्ठसंसर्गस्य निषिद्धत्वात् निषिद्धाचरणार्थं पापत्पत्तिः पापिष्ठसंसर्ग एव दर्शिता

संयोग के साथ जो पुरुष संसर्ग करे तिसके विषयमे है ऐसा अपराकं विषे लिखया है सका प्रायश्चित्त बोधक स्मृति कहते हैं प्रायइति और जो ब्राह्मण देव संयोगते अथवा पूर्व के पाप कर्के प्रायश्चित्ती भावको प्राप्त हुंदा है सो प्रायश्चित्त करणते विना महात्माके साथ ता संसर्गको नहि करे इस वचनते अवश्य ब्राह्मणके प्रायश्चित्त करणा चाहिये १ और भी लिखया है नस्विभिरिति कि जिनों पापयोंने पापका कुछ निर्णय नहि कीता तिनके साथ कुछ भी व्यवहार न करे और जिनोंने भलीप्रकार निर्णय कीता है तिनकी निंदा कदाचित् नहि करणयोग्य २ इस प्रकार मनुजीने सामान्य पापिष्ठका संसर्ग निषेध कीता है ॥ और निषिद्धकर्म करणते पापकी उत्पत्ति होती है इस कारणते भी सामान्य पापीका संसर्गहि दिखया है ॥

१२८ ॥ श्रीरघुवीरकारित प्रायश्चित्त भाग्य ॥ १२८ ॥

और जो पुरुष जिस पापीके साथ संसर्ग करता है इस सामान्य निर्देशते मनुजीने प्रायश्चित्त भी सामान्यता कर्के हि कथन कीता है । और (चतुर्णी) एह जो किहा है इसकर्के हिंसा करणी १ और अभक्ष्य वस्तुका भक्षण करणी २ और चोरी करणी ३ और अगम्या गमन करणी ४ एह जो चार प्रकार हैं इनका ग्रहण कीता है । अर्थात् पूर्व मनु जीने जो किहा है चारों का प्रायश्चित्त सो कथन कीता है । अब संसर्गका प्रायश्चित्त श्रवणकर १ ॥ इस स्थान विषे च तद्ब्रह्म कर्के ब्रह्महत्यादि ४ चारोंका नहि ग्रहण । और हिंसादि चारों का ग्रहण सामान्यता जानना ॥ और एह कुछ ब्रह्म हत्यादि विशेष अर्थ वास्ते ॥ किस वास्ते कि रूप भी एह है कि हिंसा अभक्ष्य भक्षण चोरी अगम्या गमन तथापि पूर्व मनु जीने कथन हुआ है ॥ और भी लिखा है कि जिस स्मृति

योयेनपतितेनेति सामान्यनिर्देशान्मनुनाप्रायश्चित्तमपिसामान्येनदर्शितम् ॥ चतुर्णामिति हिंसाभक्ष्यभक्षणस्तेयागम्यागमनाख्यप्रकारचतुष्टयपरं ॥ नतुब्रह्महत्यादिविशेषार्थम् ॥ लघीयसामपि हिंसाभक्ष्यभक्षणस्तेयागम्यागमनादीनामनुनापूर्वमुक्तत्वात् ॥ अपिच संसर्गपापस्मृत्याश्रुतिः कल्प्यमाना पापिष्ठसंसर्गपापमवतीतिसामान्यश्रुतिरेवकल्पनीया लाघवात् । होलिकाद्यधिकरणन्यायवाच्यजागर्ति ॥ रंगक्षेपणापशब्दलापादिहोलिकाचरणं हि सर्वसाधारणम् ॥ विष्णुनापि सामान्येनैवस्मृतम् ॥ यश्च येन पापात्मना सह संसृज्येत सतस्यैव प्रायश्चित्तं कुर्यात् ॥

ति विषे संसर्ग पाप कथन कीता है उस स्मृति कर्के श्रुति कल्पना कीता है ॥ क्या कि पापिष्ठ पुरुष के साथ संसर्ग करे वाला पुरुष भी पापी हो जाता है ॥ इस प्रकार सामान्य श्रुति हि कल्पना करणे योग्य है क्यों कि बहुत कल्पनाते अर्थ वाली थोड़ी कल्पना श्रेष्ठ होती है ॥ और इस सामान्य ग्रहण विषे होलिका अधिकरण न्याय मालूम होता है कि जैसे होलिका विषे रंग डारणा और गारि देना एह होलिका आचरण सब लोकों को साधारण है ॥ इस प्रकार इस स्थान विषे भी विशेष कल्पनाते सामान्य कल्पना श्रेष्ठ है और ऐसे ही विष्णु जीने भी सामान्यता कर्के हि किहा है कि जो पुरुष जिस पापी के साथ संसर्ग करे सो तिसका हि प्रायश्चित्त करे ॥

॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १४ ॥ टी० भा० ॥ १२९

और गौतम जीभी कहतेहैं कि ब्रह्महा १ सुरापीणवाला २ गुरुस्त्रीगमनकरणवाला और माता पिताके योनि संबंधविषे गमनकरणवाला और चोर और अभक्ष्यभक्षक और नास्तिक और निन्दित कर्मकरणवाला और पतितकेसाथसंबंधकरणवाला और जोपतित नाहैहै उसका त्याग करणवाला एह संपूर्ण पतितकहेहैं॥और जोपातकीकेसाथ सयोग कर्के एकवषे तिसके समान आचरण करतेहैं ॥ अत्रेति इसस्थानविषे भी पतितात्यागि इससामान्य वचनकर्के दिखातेहैं॥और तैश्चाब्दंसमाचरन् क्वा तिन पापीयोसाथ एकवषेसमान आचरणकरतियां भी इसवाक्यते दूसरे पातकीके संसर्गोकोभी पतितभाव किहाहै(प्रणः)कि एकग्रामविषे निवासियोकोभी पतित भाव होणाचाहिये(उत्तर)ऐसानहिहै कि एकग्राम निवास विषे विशेष संसर्गके अभावहोणेतै अ

गौतमोप्याह ब्रह्महसुरापगुरुतल्पगमातृपितृयोनि संवद्वागस्तेनाभक्ष्यभक्षकनास्तिक निन्दितकर्माभ्यासि पतितात्याग्यपतितत्यागिनः पतिताः पातकसंयोजकास्तैश्चाब्दंसमाचरन्॥अत्रपतितात्यागीतिसामान्येनैव दर्शयति तैश्चाब्दंसमाचरन्निति द्वितीयसंसर्गिणामपि पतितत्वंमुक्तम्॥नन्वैकग्रामनिवास्यादीनामपि पतितत्वं स्यादिति चेन्न संसर्गविशेषाणामेव निषेधात्। निषिद्धपतितसंसर्गात्पततीति श्रुतिः कल्प्येति शूलपाणिर्व्याचर्यौ॥ अत्रापरार्कः एभिस्तु संवसेद्यो वैवत्सरं सोपितत्समः॥ एषां ब्रह्महादीनां मध्ये एकेनापियः संवत्सरं यावत्संवसेत्संव्यवहरेत् सोपि प्रायश्चित्ततस्तत्समः यः प्रायश्चित्तविशेषस्तस्य पापिनः स एव तत्संसर्गोऽपि भवति न केवलं महापातकिसंयोगीतत्समः किं त्विति पातकिपातक्युपपातक्यादीनां मध्ये यो येन सह संसर्गं करोति सोपितत्सम इत्यर्थः ॥

मात्रे एकग्रामनिवासरूप संसर्गको नानिषिद्धहोनेते ॥ सो कहते हैं निषिद्धेति और निषिद्ध पतित भगते पतितहोजाताहै एह श्रुतिकल्पना करणे योग्यहै एह शूलपाणीजीने कथनकीताहै ॥ खट्वा अपरार्क ग्रंथविषे लिखयाहै एभिरिति कि एह जो पूर्वब्रह्महादिकहे तिनके मध्यविषे एक पापे जो पुरुष वर्षप्रमाणनिवासकरे कि व्यवहारकरताहै सोभी प्रायश्चित्तते तिसके समानहोजं संसर्ग और जो प्रायश्चित्तविशेष तिस पापीको किहाहै सोयी प्रायश्चित्त तिसके संसर्गको हुंदाहै और इसस्थानविषे केवल महापातकीका संसर्गहि महापातकी नाहिहुंदा किंतु अतिपातकी पात की उपपातकी इनके मध्यविषे भी जो पुरुष जिस पातकीके साथ संसर्ग करे सोभी तिसके समान किहाहै ॥

पातित्यमिति और पतितहोनेका कारण और तिसका समभाव एहपूर्वहिकथन कीताहै ॥ और तिसमेभी जानकके वपंप्रमाण अत्यंतसंसर्गविषे तिसी प्रायाश्चित्तकी प्राप्ति होतीहै सोयोदेवल जीनेभीकिहाहै पतितेति जोपुरुष एक वपे पतितके साथ निवासकरे जानातिया सो तिसके साथ मिलयाहोया वपके अंतविषे आपभी पतितहोजानाहै ॥ १ ॥ और संसर्गके कारण वृहस्पति जीनेकिहाहै एकंति एकशय्या ऊपर शयन १ एक आसनमेंस्थिति २ एकपक्तिमेंभोजन ३ एकपात्रविषे भिन्न भिन्न पकेहोये अन्नकाभोजन ४ भिन्न २ पकेहोये अन्नको एकपात्रविषे आपनमें एकठा करणा अथवा तिस अन्नका भक्षण करणा ५ पतितको यज्ञकरणा अथवा अर्पित कर्के अपनायज्ञकरणा ६ अध्यापनमिति पतितकोवेद पढ़ाअथवा पतितके आर्पवे

पातित्यंतुतत्समत्वं प्रागेवोक्तम् ॥ जानतश्च संवत्सरं यावदत्यंतसंसर्गं तत्प्रायश्चित्तप्राप्तिः ॥ देवलोप्याह पातितेन सहोपित्वा जानन्संवत्सरं नरः मिश्रितस्तेन सोऽदांते स्वयंच पतितो भवेत् १ संसर्गहेतून् वृहस्पतिराह एकशय्यासने पंक्तिर्भांडपक्वान् मिश्रणम् याजनाध्यापने यौनं तथा च सहभोजनम् नवधा संकरः प्रोक्तानकर्तव्योऽधमैस्सहेति १ एकस्यां शय्यायां सहावस्थानम् १ एकस्मिन्नेवासने २ तथा एकस्यां पंक्तिं भोजनादिना ३ एकस्मिन्नेव भांडे पृथक्पृथक् योरप्यन्नयोर्भोजनम् एकभांडपचनं वा ४ पृथक्पृथक् योरप्यन्नयोः परस्परं मिश्रता तदीयान्नभोजनं वा ५ याजनं पतितस्य स्वस्य वा तेन ६ अध्यापनं पतितस्य स्वस्य वा तेन ७ यौनं पतिताय कन्यादानं तस्माद्वा तत्परिग्रहः ८ सहभोजनमेकामत्र भोजनम् ९ ॥ देवलः ॥ संलापस्पर्शनिःश्वससहयानासनाशनात्

दण्डना ७ पतितको अपनी कन्यादिणी अथवा पतितकी कन्या आप ग्रहण करणी ८ यदि तके साथ एकपात्र विषे भोजन करणा ९ इसप्रकार एह नव १ काम पतितहोनेका कारण होवे अर्थात् जो पुरुष इनके मध्यविषे एकभी पतितके साथ करताहै सोभी पतितहोजानाहै ॥ इस पतितके साथ इनमेंसे कोयी काम नाहि करणा योग्य ॥ और देवल जीने किहाहै संलापेति कि तके साथ जो संलाप करणा क्या वाचीकरण और पापीके अंगका स्पर्श करणा और पतित का श्वास क्या मुखवायुका संयोग होणा और सहयान क्या पतितके साथ एक अश्ववादि असवारी ऊपर चडना और पतितके साथ एक आसन ऊपर स्थित होणा और पतितके साथ अश्व न क्या भोजन करणा क्या एकपात्र विषे एक आसन ऊपर स्थित होकर भोजन करणा ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १४ ॥ टी ० भा ० ॥ १३१

और पतितको यज्ञकराणा और याजनशब्द कर्के इस स्थान विषे सोम यज्ञ काहि ग्रहण की ताहे और पतितको वेद पडाना । और पतितके साथ योनि संबंध करणा क्या पतितको अपनी कन्या विवाह करदेणी अथवा पतितकी कन्या आपग्रहणकरणी ॥ इतने काम पतित के साथ करणते पुरुषों कोभी पाप प्राप्तहोताहै ॥ १ इसमै और विशेषकहतेहैं याजनमिति और यज्ञ कराणा और योनि संबंध करणा और पतितको विद्या पडाणी अथवा पतितते आपविद्या पडणी और पतितके साथ भोजन करणा और पतितकेसाथ इतने काम कर्के शीघ्र पतित होताहै इसमै कुछसंशय नहिहै ॥ २ और इसस्थान विषे याजनादि एकर पतित होनेका कारण है किसवास्ताकि इन विषे समास नहिकीताहै इसकारणते और संलापादि एह समासांत प

याजनाध्यापनाद्यौनात्पापसंक्रमतेनृणाम् १ याजनयोनि संबंधं स्वाध्यायं सहभोजनम् कृत्वा सद्यः पतित्येव पतितेन संशयः २ अत्र याजनाद्यैकैकं पातित्येहेतुः असमासनिर्देशात् । संलापादितु समुदितम् अतएव संलापरूप शनिः श्वाससहयानासनाशनादिति द्वंद्वनिर्देशः ॥ संलापः संभाषणं स्पर्शो गात्रसंमर्दः निःश्वासः पतितमुखवायुसंपर्कः सहयानमेकतुरगाद्यारेहणम् याजनमत्र सोमयागविषयं पतिताय कन्यादानंतस्माच्च कन्याया आदानं यो निसंबंधः ॥ स्वाध्यायग्रहणेन पतितस्याध्यापनत्वं स्वस्य वातेनाध्यापकत्वं चात्र विवक्षितम् । तथा सहभोजनमेकस्मिन् युगपद्वा जनम् एतत्प्रत्येकं सद्य एवं संसर्गिणः पातित्येहेतुः ॥ मनुः ॥ संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन् याजनाध्यापनाद्यौ नान्न तु यानासनाशनात् १ अस्यार्थः ॥ पतितेन सह संसर्गमाचरन् संवत्सरेण पतति संसर्गश्चैकयानगमनैकासनापवेशनैकपंक्तिभोजनरूपो बोध्यः

गान्धर्वे स कारणते संलाप स्पर्श निःश्वास एकर असवारी एकत्र भोजन इन विषे द्वंद्व समास दि बद्धांगमै है इसकारणते संलापादि सभ होवें तद पतित होनेके कारण होतेहैं ॥ और याजनादि संसर्ग २ पतित होनेका कारण है और एह एक २ संसर्गोंको शीघ्र पातित्य हेतु है अर्थात् संसर्ग पतितके साथ इतने काम करण कर्के पतित होजाताहै और मनु जीने किहा है संवत्सर ए कि पतितके साथ संसर्ग करतियां एक वर्ष कर्के पतिव हुंदाहै अर्थात् जो पुरुष पतितके साथ एक वर्ष संसर्ग करताहै सोभी पतित होजंदाहै और संसर्ग एह किहाहै कि पतितकेसाथ एक असवारी ऊपर चडना और पतितके साथ मागे विषे गमन करणा और एक आसन ऊपर स्थित होना और एक पांके विषे भोजन करणा एह संसर्ग जानणा १

१३२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १४ टी० ॥ भा०

और याजन अध्यापन योनिसंबंधरूप नहि संसर्ग जानना ॥ क्यों कि तिसको शीघ्र पातित्यका
रण होणेतै ॥ और याजन क्या पतितको यज्ञकराणा ॥ और अध्यापन क्या यज्ञोपवीतसंस्का
र कर्के गायत्रीमंत्रका श्रवण कराणा ॥ और योनिसंबंध क्या पतितको अपना कन्यादेणी ॥
अथवा पतितकी कन्या ग्रहण करणी ॥ और तैसेहि इनके शीघ्रपातित्य विषे विष्णु जीनेकि
हाहै कि एह वर्ष पर्यंत पतितके साथ यान आसन भोजन करदा होया पतितहोजंदाहै ॥ और
जेकर कन्याका लैना देणा ऐसा संसर्ग करे तद शीघ्रहि पतित होताहै ॥ १ ॥ और वौधा
यनजीनेभी किहाहै कि पतितके साथ आचार करतियां वर्ष कर्के पतित हुंदाहै और याजन
अध्यापन योनिसंबंध भोजन इनते शीघ्र पतित होजंदाहै १ ॥ और शयन आसन इनते शी

नतुयाजनध्यापनयानरूपः तस्य तु सद्यः पातित्यहेतुत्वात् ॥ याजनं यज्ञ
कारयितृत्वम् ॥ अध्यापनमुपनयनपूर्वकं सावित्रीश्रावणं ॥ यौनिकन्यादा
नादानादिरूपम् ॥ तथा चैषां सद्यः पातित्ये विष्णुः ॥ आसंवत्सरात्पतति
पतितेन सहाचरन् सहयानासनाभ्यासं यौनान्तु सद्य एव हि १ वौधायनोपि
संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन् याजनाध्यापनाद्यौनात्सद्यो नु शयनास
नादिति १ शनादित्यापि पाठः अत्र केचित् याजनादीनां त्रयाणां संवत्सरेण पा
तित्यहेतुत्वं सहासनादीनां लघुत्वात् न संवत्सरेण पातः किंतु तस्मादूर्ध्वम
भ्यासेन विष्णवादिस्मरणेषु सद्यः पदद्विवर्षाद्यपेक्षया लघुत्वात् संवत्सरपरमि
ति व्याचक्षते ॥ प्रायश्चित्तमयूखे त्वयं संसर्गस्त्रिविधः उत्तमो मध्यमः कनीयां
श्च ३ तत्रायश्चतुर्द्वयौ नस्त्रौ वमौ सैकपात्रभोजनभेदात् मध्योप्येकयानास
नशय्यैकपात्रभोजनभेदाच्चतुर्द्वौ

प्र नहि किंतु वर्ष कर्के हि पतित हुंदाहै ऐसा अर्थहै और इस विषे कोयो ऐसा कहतेहैं कि
याजनादि तीनकोहि पतितके साथ आचरणकरतियां एकवर्ष कर्के पतित हुंदाहै ॥ और पति
तके साथ आसनादिको अल्प होनेते वर्षकर्के नहि पतित हुंदाहै किंतु वर्षते अधिक अभ्या
स कर्के पतित हुंदाहै ॥ और विष्णु स्मृति विषे सद्यः शब्द दोवर्षादि अपेक्षा कर्के अल्प हो
नेते वर्षपरहै ॥ और प्रायश्चित्त मयूखविषे भी संसर्ग तीन ३ प्रकारका किहाहै ॥ एक उत्तम १
मध्यम २ अधम ३ तिसविषे भी उत्तम संसर्ग चार ४ प्रकारका है कि योनिसंबंध १ श्रु
बर्जंबंध २ अध्यापन ३ एकत्र भोजन ४ और मध्यम भी एकयान १ आसन
२ शय्या ३ एकपात्रभोजन ४ इसभेदते ४ प्रकारका है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १४ ॥ टी० भा० १३३

और अथमभीसहालाप १ स्पर्शरनिःश्वास २ एकपात्रसेभोजन ४ तिसकाश्रम भोजन ५ तिसकाप्रतिग्रह ६ तिसकर्के सिद्धकीये अन्नका भोजन ७ इत्यादिभेद कर्के अनेक प्रकारका है एह ग्रंथकारों का मत है ॥ संवत्सरेति और एकवर्ष प्रमाण पतितके साथ संसर्गकीतियां जो प्रायश्चित्त करणा किहा है उसी प्रायश्चित्तका उतना भाग घटा देणा जेकर वर्ष न समाप्त होवे तद ॥ अर्थात् जितने महीने वर्षते न्यून होवे उतनाहि क्रम कर्के प्रायश्चित्त भी न्यून करणा योग्य है तैसेहि बृहस्पति जीने किहा है कि पतितके साथ यज्ञकराणा पतितको पढाणा एक आसन एक शय्या इत्यादि कर्के छे ६ महीने संसर्गकीतियां आधा प्रायश्चित्त करे ॥ १ ॥ और इसी प्रकार निरंतर तीन महीने पतितके साथ संसर्ग कीतियां चौथा हिस्सा प्रायश्चित्त करणा इत्यादि और भी

अन्त्यस्तु सहालापस्पर्शनिःश्वासैकपंक्तिभांडभोजनतदीयान्नभोजनतत्प्रतिग्रहतत्सृष्टान्नभोजानादिभेदादनेकविधइतिनिबंधकृतः ॥ संवत्सरसंसर्गयत्प्रायश्चित्तमुक्तं संवत्सरासमाप्तौ भागहारः कर्तव्यः ॥ तथा च बृहस्पतिः ॥ षाण्मासिकेतुसंयोगे याजनाध्यापनादिना एकत्रासनशय्याभिः प्रायश्चित्तार्द्धमाचरेत् १ एवं निरंतरमासत्रयसंसर्गे प्रायश्चित्तपाद इत्याद्यूहनीयम् ॥ अमतिपूर्वक एव स्वल्पतरे पतितसंयोगे च ॥ वसिष्ठ आह ॥ पतितसंयोगेन ब्राह्मेण वा स्त्रौ वै ण्यौ नेन वा यास्तेभ्यः सकाशात्मात्रा उपलब्धास्तासांच परित्यागः तैश्च न संवसेत् ॥ उदीचीं दिशं गत्वा ऽनश्नन्संहिताध्ययनमधीयानः पूतो भवतीति विज्ञायते ॥ ब्राह्मोऽध्ययनाध्यापनात्मा ॥ स्त्रौ वो याजनं मात्राधनम् ॥ अमतिपूर्वकसंसर्गपराशर आह ॥ संसर्गवाचरन्विप्रः पतितादिष्वकामतः पंचाहं वा दशाहं वा द्वादशाहं मथापि वा ॥

ऐसेहि आगे विचारकरणा योग्य है और अज्ञान पूर्वक अतिथोड़े पतितसंसर्ग विषे वसिष्ठजीने किहा है कि जिस पुरुषने पतितके संयोग कर्के अथवा पतितको पढाने वा पडने कर्के अथवा यज्ञकराणे कर्के अथवा योनि संबंध कर्के पतितके पासों जो कुछ पदार्थ ग्रहण कीता है उस धनका तो त्याग कर देवे ॥ और तिनके साथ भी निवास नहि करे ॥ और उत्तर दिशा के जाक कर्के निराहार बन करे और संहिता पाठ करवाहुया पवित्र हुंदा है इस प्रकार जाणीदा है ॥ और अमति पूर्वक संसर्ग विषे पराशर जीने किहा है कियो पुरुष कामना तेविना पतितादि विषे संसर्ग करता है पांच ५ दिन वा दश १० दिन वा वारां १२ दिन

१३४ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १२ ॥ टी० भा० ॥

अथवा छे ६ महीने अथवा एक वर्ष और इसमें उपरंत तिसके समान हो जंदा है १ इस वास्ते पाहि ले पक्षविषे तीन दिन व्रत करे और दूसरे पक्षविषे छच्छकरे और तीसरे पक्षविषे सांतपन कृच्छकरे । २ । और ४ पक्षविषे दशरात्रि व्रत करे और ५ पक्षविषे पराक करे और ६ पक्षविषे चांद्रायण करे और ७ पक्षविषे दो चांद्रायण करे और ८ पक्षविषे छेमहीने छच्छकरे और ज्ञानपूर्व पतित संसर्ग विषे तो और स्मृतिविषे लिखया है । पंचेति कि पांच दिन पतित के साथ जाण करके संसर्ग की तियां कच्छकरे और दश दिन पतित के साथ संसर्ग की तियां तप्त कच्छकरणा किहा है और आध्यामहे नाक्या १५ दिन पतित संयोग की तियां पराक व्रत करके पवित्र हुंदा है और जेकर एक महीना पापी पुरु

अब्दाधमब्दमेकं वा भवेदूर्ध्वतु तत्समः १ त्रिरात्रं प्रथमे पक्षे द्वितीये कृच्छ्रमाचरेत् चरेत् सांतपनं कृच्छ्रं तृतीये पक्षे एव तु २ चतुर्थे दशरात्रं स्यात्पराकः पंचमे म तः षष्ठे चांद्रायणं कुर्यात्सप्तमे चैन्दवद्वयं अष्टमे तु तथापक्षे पणमासान् कृच्छ्रमाचरेत् ३ मतिपूर्वकं संसर्गविषये तु स्मृत्यंतरम् ॥ पंचाहेतुचरेत् कृच्छ्रं दशाहेतुस्त कृच्छ्रकम् पराकस्त्वर्धमासे स्यान्मासे चांद्रायणं चरेत् १ मासत्रयं तु कुर्वीत कृच्छ्रं चांद्रायणोत्तरम् पाणमासिके तु संसर्गे कृच्छ्रं त्वब्दार्धमाचरेत् २ संसर्गे त्वादि के कुर्यादब्दं चांद्रायणं बुधः संवर्तः । एभिः संसर्गमायातियः कश्चित्पापपुरुषः पणमासान् अद्भमेकं वा पूर्वोक्तानां व्रतं चरेत् ॥ एभिर्ब्राह्मणहंतृप्रभृतिभिर्गुरु तल्यगोतैर्मतिपूर्वकं पणमासान् संसर्गं यायाति ॥ यश्चामतिपूर्वमब्दमाया तिसतेषामेव व्रतं चरेदित्यर्थः ॥

५ के संसर्ग करे तद चांद्रायण करे १ और तीन महीने पतित संसर्ग की तियां चांद्रायण करके पाछे कच्छ करे और जेकर छे ६ महीने पतित संसर्ग होवे तद कच्छ भी छे महीने करे २ और जे कर एक वर्ष संसर्ग करे तद एक वर्ष प्रमाण उत्तरोत्तर क्रम करके बुद्धिमान पुरुष अपनी पवित्रता वास्ते चांद्रायण करे ॥ और संवर्त जीने किहा है ॥ एभिरिति कि जो कोयी पापी पुरुष एह जावे ल्हार्ते आदलेकर गुरु तल्यग पर्यंत पात कीहें इनके साथ जाण करके छे ६ महीने संसर्ग को प्राप्त हुंदा है ॥ अथवा जो पुरुष अज्ञानते इनके साथ एक वर्ष संसर्ग करे सो पुरुष इनका हिब्त करे अर्थात् इनके मध्यविषे जिसका संसर्ग करे जो व्रत उस पात की को करणा किहा है ३ सो व्रत करके पवित्र हुंदा है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १४ ॥ टी० भा० ॥ १३५

और बृहस्पति जीने किहा है कि तैसेहि एक वर्ष संसर्ग कीतियां और विशेषते पतितके साथ योनि संवध कीतियां पूर्वोक्त विधि कर्के पतितका जो बत है सोयो बत करे और योनि नाम है उत्पत्ति स्थान का तिन कर्के युक्त अर्थात् पतित पुरुष कर्के वापतित स्त्री साथ मैथुन युक्त एह अप्रभ है जैसे पुरुष पतित होवे स्त्री शुद्ध होवे अथवा स्त्री पतित होवे पुरुष शुद्ध होवे अैसे मैथुन विषे ॥ १ ॥ और जो एह सुमंतु जीने किहा है कि एक वर्ष संसर्ग करण विषे प्राजापत्यव्रत करे एह प्रायश्चित्त महापातको के तुल्य जो होवे तिसके साथ जो संसर्ग करे तिसको जानना और संवत्सर एह द्वितीया कालके अत्यंत संयोग विषे है और विष्णु जीने किहा है कि अन्न पानते रहित थोड़े भी पतित संसर्ग विषे ऐसा प्रायश्चित्त लिख्य है क्यातत

बृहस्पतिः । तथा वत्सरसंसर्गं योनियुक्ते विशेषतः पूर्वोक्तेन विधानेन पतितव्रतमाचरेत् १ योनिः प्रजननं तद्युक्ते पतितेन पतितया वामैथुनयुक्त इत्यर्थः यत्तु सुमंतुनोक्तम् साहचर्ये वा संवत्सरं प्राजापत्यं चरेदिति तन्महापातकिसमे न संस्पृष्टस्य वेदितव्यम् । साहचर्यं संसर्गः संवत्सरमिति कालात्यंत संयोगो द्वितीया विष्णुः ॥ स्तोकसंसर्गेष्वन्नपानादिवर्जितेषु विशोधनं तत्तत्कृच्छ्रं च रित्वा तु शिशुचांद्रायणं चरेत् १ स्तोकसंसर्गः संलापस्य शोदिरूपः ॥ शातातपः । पतितेन सहोपित्वा तत्तत्कृच्छ्रेण गुह्यति । एतदमतिपूर्वकालपतरसं सर्गविषयम् प्रचुरसंसर्गविषये तु शंख आह । पतितसंस्पृष्टो ह्यात्मानमुद्धरन् संवत्सरं तत्तत्कृच्छ्रं चरेत् तथा पतितसंव्यवहारी मित्रघृक् शरणागतघाती प्रतिरूपकवृत्तिर्जलशयनपंचतपोभ्रावकाशां नानातिष्ठे द्वे मंत्रग्रीष्मवर्षासु अत्र मार्गशीर्षादिमासचतुष्टयं हेमन्तः चैत्रादिमासचतुष्टयं ग्रीष्मः ॥

कृच्छ्र प्रयम कर्के फेर शिशु चांद्रायण करे । १ । और स्तोकसंसर्ग भाषण स्वशेषपश्चादि जानना और शातातप जीने किहा है कि पतित के साथ निवास कर्के तत्तत् कृच्छ्र करण कर्के शुद्ध हुंदा है एह प्रायश्चित्त अज्ञान पूर्वक अति थोड़े संसर्ग के विषयमें जानना और अति संसर्ग विषे शंख जीने किहा है कि पतित के साथ संसर्गकों प्राप्त होकर अपने आत्मा के उद्धार वास्तु एक वर्ष प्रमाण तत्तत् कृच्छ्र करे और तैसेहि पतित के साथ व्यवहार करण वाला और मित्र के साथ द्रोह करण वाला और प्रतिरूपकवृत्ति क्या आश्रम न होवे और आश्रमों की वृत्ति धारण कर्के एह हेमन्त विषे जलशय्या करे और हेमन्त मार्गादि चार ४ महीने का नाम है ॥ और ग्रीष्म विषे क्या चैत्रादि चार ४ महीने विषे पंचाग्नितपे ॥

१३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र०१४ ॥ टी० भा०

और वर्षां विषे कया श्रावणादिचार ४ महीने विषे श्रावणादिचार विषे कया वर्षाविषे नग्न शिर कर्के बाहर स्थित होवें अथवा गोमूत्रके साथ यावकवना कर पानकरे इस प्रकार कर्के शुद्धहुंदाहै । और पतित संसर्ग के निषेधकर्के निषिद्ध पुरुषका यो योनिसंबंधहै तिसको कि सीस्थान विषे स्वाकर याज्ञवल्क्य जीने किहाहै किंकन्यामिति कि एहजो ब्रह्म हादिक पति तहैं तिनां संबधी कन्याकों परकैसीहैंकन्या तिस पतितके धन कर्के रहित औरकीताहै उ पवास व्रत जिसने एसी कों विवाहलेवे किसवास्ते कि पतित कर्के उत्पन्नभी है तदभी सो कन्या पतित नहि हुदीं साथी वसिष्ठ जीने किहाहै कि पतित कर्के जो उत्पन्न है तिस कों बुद्धिमान् पतित कहतेहैं परंतु स्त्रीते विना अर्थात् कन्या तेविना पतित की और सभ संतान पतित कहीहै किसवास्ते कि कन्या परगामिनी हुंदीहै क्या दूसरे के घर जाणेवलीहै

श्रावणादिमासचतुष्टयंवर्षाः प्रतिरूपकवृत्तिरनाश्रमीसन्नाश्रमिलिंगधारी
तथामासंगोमूत्रयावकंपिवेत्एवंशुद्ध्यति । पतितसंसर्गप्रतिषेधन प्रतिषिद्ध
स्ययौनसंबधस्यक्वचित्प्रतिप्रसवमाह याज्ञवल्क्यः। कन्यांसमुद्रहेदेषांसो
पवासामकिंचनां एपांब्रह्महादीनांपतितानांसंबंधिनींकन्यांतदीयधनरहितां
कृतोपवासामुद्रहेत् विवहेत् पतितेनोत्पन्नापिसानपतिता तदाहवसिष्ठः प
तितेनोत्पन्नःपतितइत्याहुरन्यत्रस्त्रियाःसाहिपरगामिनी तामरिक्क्यामुपादे
यादितिवदंस्तेनादत्तांस्वयमुपनतांपरिणयेदितिगमयति तथाचहारीतः। प
तितस्यकुमारींविवस्त्रामहोरात्रमुपोपितांप्रातःशुक्लेनाहतेनवाससाच्छादि
तांनाहमेतेपांममनेतेइतित्रिरुच्चैरभिदधानांतीव्रसंकटहेतोरुद्रहेदिति क
न्यांसमुद्रहेदितिवदन्स्वयमेवकन्यांत्यक्तपतितसंसर्गांसमुद्रहेन्नपुनःपति
तहस्तात्प्रतिगृहणीयादितिदर्शयति ॥

इसवास्ते उह त्याग करणे योग्य नहिहै किंतु ग्रहण करणे योग्यहै इसकाणस्ते इसविषे एसा अनिप्राय मालूम हुंदाहै कि जो पतितने आपनहि दिती और तिनको त्याग कर्के आप हि प्राप्त होयी होवे उस कन्याके साथ विवाह करलेवे और तैसे हिहारीत जीने किहाहै कि पतित की जो कन्याहै कैसीहै बसने रहित और एकदिन रात्रि उपवास जिसने कीताहै एसी को प्रातःकालविषे नवीन वस्त्र कर्के आच्छादित होकर और नामे तिनांकीहां और न उहमे रहैं इस प्रकार तीनवारी उची जिसने किहाहै तिसकों अति कष्टके कारणतेविवाह लेवे इस स्थानविष त्याग दीयाहै पतित संसर्ग जिसने एसी कन्या कों आप हि विवाह लेवे फेर पतितके हाथते नग्रहण करे एसादिखायाहै

॥ श्रीरणवीर कास्ति प्रायश्चित्त भागः प्र० १४ ॥ टी० भा० १३७

और ऐसे होयां योनि संसर्गका निषेध दूर होजंदाहै एह मिताक्षरा में लिखयाहै॥और पतितते उत्पन्न जो कन्याहै तिसकोभी प्रायश्चित्त बौधायन जीने किहाहै कि अपवित्र बौर्यते जो उत्पन्न कन्याहै तिनको जेकर प्रायश्चित्त करणेको इच्छा होवे तद तिनकों पतित प्रायश्चित्त का तीसरा हेस्सा प्रायश्चित्त करणा किहाहै क्या कि पतित पिताके जितने पतित होनेवाले कर्महैं तिनकर्मोंका जो प्रायश्चित्त किहाहै तिसका तीसरा हेस्सा पतितते उत्पन्न जो पुरुषहै तिनकोहै और तिसका तीसरा हिस्सा स्त्रीयोंको हुंदाहै ॥ किंचेति और पतित पुरुषते अथवा पतित स्त्री तें जो उत्पन्न कन्याहै तिसको जानना॥किसवास्ते कि पुरुषकी न्यायी स्त्रीयांकोभी पातकी इत्यादिके संसर्गते पतित भाव हुंदाहै॥और जैसे शौनक जीने किहाहै कि पुरुषकों जितने पत

एवंचसतिपतितयौनसंसर्गप्रतिषेधोपिपरिहतोभवतीतिमिताक्षरा। कन्या याश्चपतितोत्पन्नायाः प्रायश्चित्तमाह बौधायनः॥अशुचिशुक्रोत्पन्नानामिच्छतां प्रायश्चित्तानि पतनीयानांतृतीयांशःस्त्रीणामंशात्तृतीयः॥ अयमर्थः जनकस्य पतितस्ययानि पतनीयानि कर्माणि तत्प्रायश्चित्तानांतृतीयांशः पतितोत्पन्नानांपुंसांप्रायश्चित्तम् तस्यापि तृतीयोभागःपतितोत्पन्नानांस्त्रीणामिति ॥ किंचपतितोत्पन्नायाः पतितात्पुरुषात् पतितायाःस्त्रियोवोत्पन्नायाइत्यर्थः॥ पुरुषवत्स्त्रीणामपि महापातक्यादिसंसर्गात्पातित्यमविशिष्टम्॥यथाहशौनकः॥पुरुषस्ययानिपतननिमित्तानिस्त्रीणामपितान्येव ब्राह्मणी हीनवर्णसेवायामधिकं पततीति॥अतस्तासामपिमहापातकिप्रभृतीनामध्ये येनसहसंसर्गस्तदीयमेव प्रायश्चित्तमर्धकृत्वा योजनीयम्॥एवं वालवृद्धातुराणामपिकामतोर्धमकामतःपादः॥तथानुपनीतस्यापिवालस्य कामतःपादोऽ कामतस्तर्धमित्येपादिक् ॥

न करण वाले कर्महैं ओहि स्त्रीयांकोभी पतित करणे वाले कहेहैं ॥ और ब्राह्मणी हीनवर्ण की सेवा कर्के अधिक पतित होतीहै इसकारणतें तिनकोंभी महापातकी अतिपातकी इत्यादिके मध्य विषे जिसके साथ संसर्ग होवे उसके प्रायश्चित्तका अर्ध करणा चाहिये ऐसी योजनाकरणी योग्यहै॥और इसी प्रकार वालक वृद्ध रोगी इनकोभी कामनाने आधा और कामनाते बिना चौथाहेस्सा प्रायश्चित्त जानना ॥ और तैसेहि यज्ञोपवीतते रहित जो वालकहै तिसको कामनाते चौथा हेस्सा और कामनाते बिना आठवां हेस्सा प्रायश्चित्तहै इति दिक् क्या इसी मार्गसे आगे विचार करणा ॥

१३८ ॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १४ ॥ टी० भा० ॥

और प्रायश्चित्तेंदु शेखर विषे माधव जोका वाक्यहै कि संसर्ग दोष कलियुग विषे पतित भावको नहि प्रतिपादन करता किंतु पापमात्रको प्रतिपादन करताहै किस वास्ते कि संसर्ग दोष कलि युग विषे त्यागकरणे योग्यहै इस वचन कर्के कलि वर्ज्य प्रकरण विषे गणना हो एते। और वास्तवते सत युग विषे पाप होवे उस देशकोहि त्याग देवे और त्रेता विषे उस ग्रामको त्याग देवे। और द्वापर युग विषे उस एक कुल को त्याग देवे। और कलि युग विषे पाप करण वालेको त्याग देवे १ इस पराशरजीके वचनते सत्य युग विषे देशका और त्रेता विषे ग्रामका और द्वापर विषे कुलका यो त्यागहै सो कलि युग विषे नहोवे इस कारणते संसर्ग की कलि वर्ज्या के मध्य विषे गिणती योग्यहै। और एह और कलि युग विषे विशेष किहा है कि जो सत्य युग विषे पापीके साथ संभाषण मात्र करणेतें पतित भाव होजाताथा। औ

प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेमाधवः॥संसर्गदोषः कलौपातित्यापादकोनकिंतुपाप मात्रापादकः।संसर्गदोषःपापेष्वितिकलिवर्ज्येपुगणनादित्याह॥वस्तुतस्तु न्नसेदेशकृतयुगेत्रेतायांग्राममुत्सृजेत् द्वापरेकुलमेकंतुकर्तारंतुकलौयुगइतिपराशरवचनात्॥कृतयुगादौदोषजनकत्वेनोक्तदेशादिसंसर्गस्यैवकलिवर्ज्येपुगणनंयुक्तम्॥ अयंचापरः कलौविशेषः।यत्कृतेसंभाषणमात्रादेवपातित्यम्॥त्रेतायांस्पर्शमात्राद् द्वापरेतत्स्वामिकान्नमात्रग्रहणात् तत्कलौस्नेहेन समुदितेनैव संभाषणादिकर्मणा नत्वेकेनेतिदिक्॥किंचसंसर्गिसंसर्गिणांपादपादहानिः ॥ तथाच मुख्यमहापापिनांसंसर्गवतीद्वादशाब्दम् ॥ तत्संसर्गिणोमुख्यात्ततीयस्यनवाब्दम् ॥

र त्रेता युग विषे पतितके साथ केवल स्पर्श मात्र करणेतें पतित भाव हो जाताथा और द्वापर विषे पतितका अन्नमात्र ग्रहण करणेतें होजाताथा। और सोयी पतित भाव कलि युग विषे पतितके साथ स्नेह कर्के होताहै क्या एकत्र संभाषणादि कर्म कर्केहै एक कर्के नहि अर्थात् कलि युग विषे पतित के साथ संभाषण स्पर्श अन्नग्रहण स्नेह इन संपूर्ण कर्मों कर्के पतित भाव होजाताहै। और किहाहै कि संसर्गोंके जो संसर्गोंहिं तिनको पाद पाद हानि कर्के प्रायश्चित्त करणा योग्यहै। तथेति और तैसेहि मुख्य जो महापापीहैं तिनके साथ संसर्ग करण वालेको वारां १२ वर्षका व्रत करणा किहाहै और तिसके संसर्गोंको मुख्यपापीतें तीसरेको नव १ वर्षका व्रत करणा किहाहै ॥

और तीसरे के साथ संसर्ग करण वाले को क्या मुख्य पापीतें चौथे को छे १ वर्ष व्रत कर
ना योग्य है ॥ और मुख्य पापीते पांचमे संसर्गको तीन वर्ष व्रत करणा किहा है । और मु
ख्य पातकीतें जो दूसरा है क्या मुख्य पापी का जो संसर्गी है तिसको हि पतित भाव होनेते
औत स्मार्त कर्म की हानि होती है अर्थात् पतितको वेद विहित कर्म और स्मृति विहित कर्म
नहि करणे योग्य है ॥ और तीसरेते आदिक जो हैं तिनको केवल प्रायश्चित्त मात्र होता है और
वेदोक्त कर्म की हानि नहि होती ऐसे मिताक्षरा विषे लिखया है । और प्राचीनों के मत विषे
पाद हानि क्रम कर्के तीसरेते संसर्गव्रत का आधा मात्र व्रत करणे योग्य है ॥ और चौथेको
आध व्रत जानना और पांचवेको कुछ प्रायश्चित्त नहि है अर्थात् मुख्यपापीको जो प्रायश्चि
त्त है तिसते आधा तिसके संसर्गको हुंदा है ॥ और संसर्गके संसर्गको तिसते आधा ॥ और
आगे तिसके संसर्गको चौथा हिस्सा ॥ और आगे तिसके संसर्गको पांचवे स्थान कु

तृतीयेन संसर्गवतो मुख्याच्चतुर्थस्य षडब्दम् । पंचमस्य त्रैवार्षिकम् ॥ मुख्य
संसर्गिणो द्वितीयस्यैव पातित्याच्छैतस्मार्तकर्महानिः तृतीयादेः प्रायश्चित्त
मात्रं ॥ नतु वैदिककर्महानिरिति मिताक्षरा ॥ प्रांचस्तु पादहानिक्रमेण
तृतीयेन संसर्गव्रतार्धमात्रकार्यम् ॥ चतुर्थस्य तु पादः मुख्यात्पंचमस्य नाकिं
चिदित्याहुः ॥ प्रायश्चित्तकदंबेतु व्यासः । येतदन्नाशिनो विप्राः कृच्छ्रतेषां
विधीयते तद्वाजिनेर्ह्वकृच्छ्रेण तदन्नादाश्च पादतः १ तथा चापस्तम्बः ॥ भु
क्तयैस्तत्र पक्वान्नं कृच्छ्रतेषां विधीयते ॥ तेषामपि च यैर्भुक्तमर्हतेषां विनिर्दिशेत्
तेषामपि च यैर्भुक्तं कृच्छ्रपादो विधीयते १ तथा च योऽयनेति मनुवचनं संसर्गि त्रि
तयपरमिति ध्येयम् ॥ मिताक्षरायां तु ॥ ब्रह्महामद्यपः स्तेनस्तथैव गुरुत
ल्पगः एते महापातकिनां यश्च तैः सह संविशेदिति ॥ १ ॥

छ व्रत नहि करणा किहा है ॥ और प्रायश्चित्त कदंब विषे व्यास देव जी का वाक्य है येदिति
कि जो जिस पातकीका अन्न भक्षण करण वाले ब्राह्मण हैं तिनको कृच्छ्र विधान कीया है
और आगे तिन ब्राह्मणोंका जो अन्नभक्षण करण वाले हैं तिनको अर्ध कृच्छ्र करणा किहा है
फेर आगे तिनका जो अन्न भक्षण करण वाले हैं तिनको चौथा हिस्सा प्रायश्चित्त करणा किहा है
॥ १ ॥ और तेमेहि आप स्तं व जीने किहा है भुक्तमिति कि जिनोने पातकीके घर विषे पक्वा
न्न भक्षण कीया है तिनके वास्ते प्रायश्चित्त कृच्छ्र विधान कीया है और आगे तिनके घर विषे
जिनोने अन्न भक्षण किया है तिनको आधा और आगे चौथा हिस्सा प्रायश्चित्त दिखाया है । १ ।
और योयेन इत्यादि जो मनुवचन है सो संसर्ग तीनका बोधक जानना योग्य है ॥ और मि
ताक्षरा विषे तो ऐसा लिखया है ॥ कि ब्रह्महा मदिरा पीने वाला स्तेन गुरुत्त्वग एह महा
पातकी हैं इनके साथ जो संसर्ग करे सो भी महापातकी होता है ॥ १ ॥

१४० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १४ ॥ टी० भा०

और (तैः) इस पदकर्म सर्वनामका परामर्श होता है इसका कारणते प्रकरण विषे ब्रह्महादि चारोंका जो संसर्गो है तिसकाहि बोध होता है और महापातकित्व इस वचनते महापात कीके संसर्गोको महापातकी भाव है औरोंको नहि आवता । प्रणुः कि महापातकीका जो संसर्गो है सोयी महापातकी भावका कारण है क्यों ब्रह्महादि विशेष संसर्ग नहि व्यभिचारहोनेते अर्थात् चारोंके बीचसे किसेका हि संसर्ग होवेगा कोई सभका नहि इस कारणते ब्रह्महादि संसर्गोके संसर्गोको भी महापातकी संसर्गोहि विद्यमान हुया ॥ इसते तिस महापातकीके संसर्गोके संसर्गोकोभी महापातकी भाव होजावे कुछ निषेध नहि है ॥ इसविषे कहतेहैं । उत्तर । कि जेकर ऐसा होवे तद संसर्गो संसर्गोके महापातकी भावमे औरभी कुछ प्रमाण होणा चाहिये किसवास्ते एक शब्द कर्म जिसका ज्ञानहो

तैरितिसर्वनामपरामृष्टप्रकृतब्रह्महादिचतुष्टयसंसर्गिणएवमहापातकित्व वचनात्तत्संसर्गिणोनमहापातकित्वम् ॥ ननुमहापातकिसंसर्गएवमहापात कित्वेहेतुःनब्रह्महादिविशेषसंसर्गस्तस्यव्यभिचारात् अतोब्रह्महादिसंसर्गिणोपिमहापातकिसंसर्गोविद्यतइतितस्यापिमहापातकित्वस्यान्नचप्रतिषेधः उच्यते स्यादेवंयदिप्रमाणांतरगम्यमहापातकित्वस्यात् शब्दैकसमधिगम्येतुतस्मिन्नैवभवितुमर्हतीति तैरितिप्रकृतविशेषपरामर्शेनासर्वनाम्नाब्रह्महादिविशेषसंसर्गस्यैवमहापातकित्वेहेतुत्वस्यावगमितत्वात् एवंचसति प्रतिषेधाभावोप्यहेतुःप्राप्तभावादेव ॥ अतःसंसर्गिसंसर्गिणां द्विजातिकर्मभ्योहानिर्नभवतिप्रायश्चित्तंनुभवत्येव ॥ नचसंसर्गिसंसर्गिणःपातित्याभावेकथंप्रायश्चित्तमितिवाच्यम एनास्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थीकंचित्समाचरेदिति सामान्येनैनास्विमात्रेसंसर्गप्रतिषेधेनमहापातकिसंसर्गिसंसर्गस्यापि प्रतिषिद्धत्वात्पातित्याभावेपि युक्तमेवप्रायश्चित्तम्

ताहै उस विषे ऐसाहोणा योग्यहै और (तैरिति) एह जो प्रसंग विषे विशेषका परामर्श करताहै इस सर्वनाम कर्म ब्रह्महादि विशेष संसर्गोको हि महापातकी भावका कारण जानणे योग्यहै ॥ इस कारणते और ऐसे होयां प्रतिषेधका अभाव हि कारण होजावे ऐसा नहि प्राप्तिके अभावते ॥ और इस कारणते संसर्गोके संसर्गियोंको द्विजाति कर्मते हानि नहि होती और प्रायश्चित्त होताहै ॥ कि ऐसा नहि कथन कारणा कि संसर्गोके संसर्गोको पतित भाव न होनेते कैसे प्रायश्चित्त हुया सोयी लिखयाहै कि जिन पापियोंने पापका प्रायश्चित्त नहि कीता तिनके साथ कुछ कार्य न करे इस सामान्य ग्रहण कर्म संपूर्ण पापी मात्र संसर्गोके निषेध कर्म महापातकी क संसर्गो संसर्गोके निषेध होनेते पतितभावके अभाव होयांभी प्रायश्चित्त करणा योग्यहै और सो प्रायश्चित्तभी पावहीन जानला

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १४ ॥ टी ० भा ० ॥ १४१

अर्थात् जो प्रायश्चित्त जिसको किहा है उसीका पादहीन तिसके संसर्गिको जानना और जो पुरुष जिस पापोंके साथ एक वर्ष निवास करे सोभी तिसके सामानहि होजाता है इस कारणते सो ब्राह्मणादितिसके वनको पाद हीन करे ऐसे जो व्यासदेव जोने कथन कीता है सो देखने योग्य है और इसी प्रकार चौथा पांचवा जो कामनातें संसर्गी होवें तिनको भी आधा और पाद प्रायश्चित्त जानने योग्य है ॥ इस कारणते साक्षात् ब्रह्महादि संसर्गिकोही ब्रह्महादि प्रायश्चित्त का अधिकार है और तिसके संसर्गिको नहि है ऐसा सिद्धहुया इस प्रकार मिताक्षरा विषे व्याख्यान किता है ॥ अविनिषिद्ध संसर्ग प्रसंगते निषिद्ध संसर्गते उत्पन्नजो प्रति लोम है तिनके वध विषे प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्य जीने किहा है चांद्रायण मिति किवर्णते जो अवकृष्ट है

तच्च पादहीनम् योयेन संवसेद्वर्षसोपितत्समतामियात् पादहीनं चरेत्सोपि तस्य तस्य व्रताद्विज इति व्यासोक्तेर्द्रष्टव्यम् एवं चतुर्थपंचमयोरपि कामतः संसर्गिणो र्धहीनं त्रिपादो न च द्रष्टव्यम् अतः साक्षाद्ब्रह्महादि संसर्गिण एव तदीय प्रायश्चित्ताधिकारो न तस्स संसर्गिण इति सिद्धमिति व्याख्यातम् ॥ निषिद्ध संसर्ग प्रसंगा निषिद्ध संसर्गोत्पन्न प्रति लोम वधे प्रायश्चित्तमाह याज्ञवल्क्यः चांद्रायणं चरेत्सर्वानवकृष्टानि हृत्य तु १ वर्षेभ्योऽवकृष्टान् वर्षे वाह्यान् त्यजा न्पुरुषान्सर्वानि हृत्य प्रत्येकं चांद्रायणं चरेत् मिताक्षरायां अवकृष्टाः सूतमागधादयः प्रतिलोमेत्पन्नाः तेषां प्रत्येकं हनने चांद्रायणम् तथा च शंखः सर्वेषामवकृष्टानां वधे प्रत्येकं चांद्रायणमिति यच्चांगिरसो वचनम् । सर्वान्यजानां गमने भोजने संप्रमापणे पराकेण विशुद्धिः स्यादित्थांगिरसभाषितमिति पराकं कुर्यात्

क्या वर्षे वाह्य हैं तिनको और संपूर्ण उत्पन्न पुरुषों को मार कर्के एक २ के वध करणे विषे चांद्रायण करे ॥ और मिताक्षरा विषे अव कृष्ट सूतमागध इत्यादि जो प्रति लोम कर्के उत्पन्न हैं तिनका नाम है अर्थात् शूद्रते वैश्या क्षत्रिया ब्राह्मणो इन विषे जो उत्पन्न होवें और वैश्यते क्षत्रिया ब्राह्मणो इन विषे जो उत्पन्न हैं और क्षत्रियते ब्राह्मणो विषे जो उत्पन्न होवे एह प्रतिलोम मज कह है और तैसेहि शंख जीने किहा है कि संपूर्ण अव कृष्टोंके वध कीतयां अपनी शुद्धिवास्ते चांद्रायण व्रत करे इति और जो एह अंगिराजीका वचन है कि संपूर्ण अस्य जातिका वध कीतियां और इन के साथ मैथुन कीतियां और इनके साथ भोजन कीतियां पराक व्रत करणे कर्के शुद्धि होती है यद्यपि इनके वधादि विषे पराक करे ॥

१४२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायाश्चत भागः प्र ० १४ ॥ टी ० भा ० ॥

तदभीतिसस्थानविषेकामनाते सूतादिविषेचांद्रायणकरणा किहाहै औरकामनातेविना सूतादिव धविषे पराकव्रतजान्ना ॥ औरवैदेहके वधविषे एकपादऊन पराककरणा और चांडालकेवध विषे आषापराककरणा औरमागधकेवधविषे भीपादऊन पाककिहाहै। और क्षत्र केवधकीतियां अद्वापराककरणे कर्के पवित्रहुंदाहै और अयोगवकावधकीतियांभी अद्वाहिपराककरणा योग्य है और इसी प्रकारकर्के चांद्रायण कीभीतारतम्यताकल्पना करणे योग्यहै अर्थात् अधिकार पू वंकसंपूर्ण अर्धएकपाद इत्यादि जान्ना ॥ और जोएहब्रह्मगर्भकावचनहै प्रतिलोमेति कि प्र तिलोम क्रमकर्के उत्पन्न योस्त्रीयाहै तिनको महीन्योंकी अवधीकर्के प्रायश्चित्त किहाहै और अंतर कर्के उत्पन्नजोसूतादिहै तिनको दोमहीने चारमहीनेछेमहीने भिन्न २ इसक्रम क र्के प्रायश्चित्त करणा किहाहै सोएहआवृत्ति के विषयमे जान्ना अर्थात् पुनःपुनः वधविषेजान्ना

तत्रकामतःसूतादिवधेचांद्रायणं ॥ अकामतस्तुतद्वधेपराकः वैदेहवधेपादो नः चांडालवधेद्विपादः मागधवधेपादोनः पराकः क्षत्तरिद्विपादः आयोगवे चपादद्वयम् अनयैवदिशाचांद्रायणस्यापितारतम्यंकल्प्यं॥यत्तुब्रह्मगर्भव चनम् प्रतिलोमप्रसूतानांस्त्रीणांमासावधिःस्मृतः अंतरप्रभवानांचसूतादी नांचतुर्द्विषडितितदावृत्तिविषयम् तत्रसूनवधेपणमासाः वैदेहकवधेचत्वारः चांडालवधेद्वाविति योग्यतयान्वयःतद्यामागधवधेचत्वारःक्षत्तरिद्वैमासिकं आयोगवेचद्वैमासिकमितिव्यवस्था ॥ अपरार्कः ननुचांद्रायणपराकादित पोगायत्र्यादिजपमंत्रयुक्तं कथंतत्रशूद्रादेरनधीतवेदस्याधिकारइत्याह

णा तिसस्थानविषेसूतकेवध विषे छेमहीने व्रतकरणे कर्के पवित्रता होताहै। और वैदेहके वधवि षे चारमहीनेव्रतकरणा और चांडालकेवधविषे दोमहीनेव्रतकरणायोग्यहै एह योग्यता कर्के ऐ सा संबंधलगायाहै और तैसे हि मागधकेवधकीतियां चारमहीने औरक्षत्राके वधकीतियां दोमहीने का व्रत और अयोगवके वधविषे भी दो महीने का व्रतकरणा योग्यहै ऐसीव्यवस्था लगायीहै ॥ और अपरार्क विषे लिखयाहै कि चांद्रायण और पराकइत्यादि संपूर्णव्रततपरूप है और गायत्री इत्यादि मंत्रोंके जपकर्के भीयुक्तहै क्या कि इनसभव्रतोंविषे गायत्री मंत्रका जप करणा किहाहै इसकारणते तिसचांद्रायणादि व्रतविषे नहिपढावेदजिसने ऐसे शूद्रकों के से अधिकार होताहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग० प्र० १४ ॥ टी० भा० ॥ १४३

(उत्तर) इसकाण्ठें किहाहैं कि यद्यपिशूद्र अधिकार रहिनभीहै क्याजपकरणा होमकरणा इस अधिकारत रहितभीहै तदभी सोजैसेकहहै तैसेहि शरीरकरके कर्मकर्ताहुया इतने काल कर्के क्या महीना वर्ष इत्यादि कालकर्के पवित्रहोताहै अर्थात् पापते मुक्तहोजाताहै (प्रणः) ऐसेहोयां लूलेको विष्णुकी परिक्रमा रहितकर्म विषे और शूद्रको मंत्रहीन दर्शपूर्णमासादि कर्मविषे भी अधिकारहोनाचाहिये (उत्तर) ऐसामतकहो किसवास्ते तिसस्थानविषे शूद्रकिसी बाक्यकरकेभी दर्शादि यज्ञकाकर्ताहोवे ऐसा नहिदिखाया जिसकर्के तिसशूद्रकोमंत्रादिराहिन दर्शादि कर्मविषे अधिकारकल्पनाहोवे क्योंमंत्रादि संपूर्ण अंगयुक्त कर्मप्रयोग विषे द्विजाति अधिकारीहोतेहैं इसकर्के (स्वर्गकामो यजेत्) इसश्रुतिते उपसंहारकीताहै ॥ और जैसेस्थपती

शूद्रोधिकारहीनोपिकालेनानेनशूद्र्यति। जपहोमाद्यधिकारहीनोपिशूद्रोयथोक्तशरीरकर्मकारिकालेनानेनोक्तेनमाससंवत्सरादिनाशुद्धयति। विपायो भवति नन्वेवंसतिपंगोर्विष्णुक्रमरहिते शूद्रस्यचमंत्रादिहीनदर्शपूर्णमासादिकर्मण्यधिकारः स्यात्॥ मैवंवादीः । नहितत्रसाक्षाच्छूद्रः कर्तृत्वेनकचिद्वाक्येनानिर्दिष्टोस्तियेनतस्यमंत्रादिरहितेदर्शादिकर्मण्यधिकारःपरिकल्पेत । संतिचमंत्रादिसकलांगोपेतकर्मप्रयोगसमर्थाद्विजातयोधिकारिणइति तत्रैवस्वर्गकामादिश्रुतेरुपसंहारः॥ प्रायश्चित्तेतुयथास्थपतीष्टोमंत्रादेरहितोपिसाक्षाच्छ्रुत्यानिपादःकर्तृतयागृहीतः ॥ तथाशूद्रः प्रायश्चित्तेषु॥ तथाचांगिराः। तस्माच्छूद्रंसमासाद्यसदाधर्मपथेस्थितम् । प्रायश्चित्तप्रदातव्यंजपहोमविवर्जितम् १ तथा । शूद्रः कालेनशुद्धयतुगोब्राह्मणहितेरतः ॥ दानैर्वाप्युपवासैर्वाद्विजशुश्रूषयातथा २ ॥ जावालोप्याह ॥ अकामकृतपापानांवदंतिब्राह्मणाव्रतं ॥

८ यज्ञविशेष मंत्रादिरहितभीहै तदभीमाक्षात् श्रुतिकर्के उसयज्ञविषे कर्ताभावकर्के सोभील ग्रहण कीताहैं तैसेहि प्रायश्चित्त विषे शूद्रहैं तैसेहि आंगिराजीने किहाहै कृतिसकारणते सदैवधर्ममार्गविषे स्थितजो शूद्रहै तिसको जपहोमादि रहित प्रायश्चित्त देणा योग्यहै ॥ १ ॥ और वचनकहतेहैं तथेति तैसेहि गौ और ब्राह्मण इनकेहितमें प्रतिवाला इतने कालकर्के पापते मुक्तहोताहै दान कर्के और उपवास करणे कर्के ब्राह्मणोंकी सेवाकरणे कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ २ ॥ शूद्रविषे और स्मृति कहतेहैं जावेति और जावाली भी कहताहै अकामेति कि अकामकृतपापोंका ब्राह्मण व्रतकहतेहैं

१४४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग ० प्र० १४ टी० भा० ॥

और कोई मुनि ब्राह्मणोंको और वृषल को क्या शूद्रको कामनाकृत पाप विषेभी प्रायश्चित्त कहतेहै ॥ १ ॥ आर कीयेह पाप जिसने और सदाहि धर्ममार्ग विषे योस्थितहै अमे शूद्रको वेद मंत्र वर्जित प्रायश्चित्त देणायोग्यहै ॥ २ ॥ योमार्कंडेय जीने किहाहै कृच्छेति किएह जो संपूर्ण कृच्छ्र कहेंहै सोब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनतीनों कोई सदैव करणे योग्यहै और इनो कृच्छ्राविषे शूद्रको अधिकार नाहिविधान कीया सो शूद्रकोमंत्रयुक्त कृच्छ्रका निषेध कीताहै ॥ १ इसकारणते मंत्ररहित कृच्छ्र करणाहि शूद्रकोयोग्यहै और जोएह मनुजीने किहाहै न शूद्रेति किशूद्रके तांया किसी कार्य वास्ते बुद्धिन देवे अथात् विद्यानपढावे और अपना उच्छिष्ट अ

कामकारकृतेप्येकेद्विजानांवृषलस्यच ॥ १ ॥ शूद्रकृतैनसंप्राप्यसदाधर्मपु
रस्सरम् प्रायश्चित्तप्रदातव्येवेदमंत्रविवर्जितम् ॥ २ ॥ यदुक्तमार्कंडेयेन
कृच्छ्राण्येतानिकार्याणिसदावर्णत्रयेणतु कृच्छ्रेष्वेतेपुशूद्रस्यनाधिकारोवि
धीयते १ तन्मंत्रविशिष्टकृच्छ्रप्रतिषेधकम् मंत्रवर्जकृच्छ्रकुर्यादेव यत्तुमनु
नोक्तम् नशूद्रायमतिदद्यान्नोच्छिष्टंनहविष्कृतम् नचास्योपदिशेद्धर्मनचा
स्यव्रतमादिशेदिति। तदंतराब्राह्मण मकुर्वतांप्रायश्चित्तात्मकव्रतातिदेश
निषेधपरम् ॥ अतएवशंखः अन्तराब्राह्मणंकृत्वाव्रतादेशः कार्यइत्याह ॥
न्यायतोमार्गतःक्षिप्रंक्षत्रियादेःकृतैनसःअंतराब्राह्मणंकृत्वाव्रतंसर्वसमादि
शेत् ॥ १ ॥ आयतोब्राह्मणानांयोवृत्तियश्चप्रयच्छति ब्राह्मणानांचयोभक्तः
सतार्यः सर्वयत्नतइति ॥ २ ॥

न्ननदेवे और यज्ञकाअन्नभीशूद्रके तांयो नदेवे और शूद्रके तांयोधर्म उपदेश भीनकरे और व्रत
कामोपदेश नकरे इति एहमध्यविषे ब्राह्मणको न साक्षी कर्के प्रायश्चित्त रूप व्रतकरण वाले
योशूद्रहैं उनके वास्तेव्रताति देशके निषेध पर जान्नाणाइसकारणते हि शंखजीकहतेहै कि ब्राह्म
ण को मध्य विषे साक्षीकर्के शूद्रकेतांयो प्रायश्चित्तका आदेश करणेयोग्यहै औरक्षत्रि वैश्यशू
द्र जेकर पाप करेंतद इनको नीतिमार्गते मध्यविषे ब्राह्मणको साक्षीकर्के संवधिलोक संपूर्णव
नउपदेशकरें १ औरजोपुरुष ब्राह्मणोंके अधीनहै औरजोब्राह्मणोंको उपजीवका देखेवाला
हैऔरब्राह्मणोंका जो भक्त है सो इन्होंने यत्नकर्के वारणेयोग्यहै इति २

इति श्रीमन्महाराजाधिराज जम्बू काश्मीराद्यने
कदेशाधीश प्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञातदेविकोप
कंठवासिसारस्वत पण्डितदेवीदत्तसुतपण्डितगंगा
राम संगृहीते पंचविपयात्मक प्रतिरूपके ध
र्मशास्त्रमहानिवन्धेप्रायश्चित्तभागे महापातकि
संसर्गि प्रकरणंचतुर्दशम् १४

एह श्रीमहाराजराजयोकेराजाकाश्मीरतिव्वतादिदेशोंकेअभि
पतिप्रभुवर रणवीर सिंह नाम कर्के तिनकी अज्ञासे देविका
के समीप निवास करेण वाले और पांचप्रकारके ब्राह्मणोंमें
सारस्वत जो पण्डित देवीदत्त तिसके पुत्र जो पण्डितगंगाराम
तिनोंने बनायायो धर्मशास्त्रमहानिवंध अर्थात् बड़ाग्रंथ उस
विषे प्रायश्चित्त भाग विषे महापातकीके संसर्गकरणवालेयोका
प्रकरण पूराहोआ चउदमा १४

१४६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १५ टी० ॥ भा०

अवदेवलस्मृति विषेसंसर्ग प्रायश्चित्तका विशेषदिखायाहै और सो प्रायश्चित्त इस समयमे यवना दिसंसर्ग कर्के जो दूषित होगें तिनके वारते अतिशय कर्के उपयोगी होगा देवलजीने किहाहै त्रिशंकुमिति कि प्रथम महानदी जो गंगाहै निसके उत्तर पासे और कीटक जो देशहै तिसके दक्षिणपासे संपूर्ण बारां १२ योजन प्रमाण विषे जो त्रिशंकु देशहै तिसको त्याग देवे अर्थात् त्रिशंकु देश विषे कभी निवास नहि करणे योग्य १ इसमे एह अभिप्रायहै कि इस देश विषे जावे विना तीर्थ यात्रा तद उह प्रायश्चित्त करे त्रिशंकु पद सभ म्लेच्छ देशोंका उपलक्षणहै चाहे किसे म्लेच्छ देशमे जावे तद प्रायश्चित्त हुंदाहै तिस प्रायश्चित्तको देवलजी कहतेहैं हे ऋषियों अवमै विस्तार कर्के प्रायश्चित्त कथन करताहुं तुम श्रवण करो क्या कि मृत सूतक विषे दासियोंको और भिक्षु वर्ण कीयां स्त्रीयांको और अनु लोमकम कर्के जो उत्पन्नहैं तिनको स्वामिके मृतहोयां स्वामि

देवलस्मृतौ तु संसर्ग प्रायश्चित्ते विशेषः स चाधुना यवनादिसंसर्गदूषितेषु प्राय उपयुज्यतंतत्र देवलः त्रिशंकुवर्जयेद्देशं सर्वद्वादशयोजनम् उत्तरेण महानद्यादक्षिणेन तु कीटकम् १ प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि विस्तरेण महर्षयः ॥ मृतसूते तु दासीनां पत्नीनां चानुलोमिनाम् २ स्वामितुल्यं भवेच्छौचं मृते स्वा मिनि सूतकम् अपेययेन संपीतमभक्ष्यं चापि भक्षितम् ३ म्लेच्छैर्नीतिन विप्रेण अगम्या गमनं कृतम् तस्य शुद्धिं प्रवक्ष्यामि यावदेकं तु वत्सरम् ॥४॥ चांद्रायणं तु विप्रस्य स पराकं प्रकीर्तितम् क्षत्रियस्य पराकैकं पादकृच्छ्रेण संयुतम् ५ पराकांक्षितु वैश्यस्य शूद्रस्य दिनपंचकम् नखलोमविहीनानां प्रा ॥ यश्चित्तं विधीयते ॥ ६ ॥

के समान शौच हुंदाहै अर्थात् जिस वर्णका पति होवे उस वर्णके अनुसार उतने दिनों कर्के इनका सूतक दूर होताहै २ और फेर कहतेहैं कि जिस पुरुषने पीने योग्य जो द्रव्य नहिहै मदि रादि तिसका पान कीताहो । और जो भक्षण करणे योग्य पदार्थ नहिहै निषिद्ध मांसादि तिसका भक्षण कीताहो ॥ ३ ॥ और म्लेच्छों कर्के ग्रहण कीताहो । और अगम्या गमन कीताहो तिसको शुद्धि कथन करताहुं एक वर्ष प्रमाण पूर्वोक्त पाप देहोयां होयां ४ चांद्रायणमिति ब्राह्मणको पराक व्रतके सहित चांद्रायण करणा कियाहै और क्षत्रीको पाद कृच्छ्र कर्के संयुक्त एक पराक क रणा योग्यहै ५ और वैश्यको आधा पराक करणा चाहिये और शूद्रको पांच दिन व्रत करणा योग्यहै ॥ एभीनखरोमते रहित हो कर्के प्रायश्चित्त करणा ॥ ६ ॥

॥ श्रौतणीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १५ ॥ टी० भा० ॥ १४७

श्रव नि मि द्विजके अर्थ कहतेहैं प्राय इति श्रौत द्विजातिकों प्रायश्चित्त विषे पवित्र करण वाला प्राजापत्य व्रत किहाहै ॥ अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एह पूर्वोक्त स्लेच्छाके संसर्गके प्रायश्चित्त विषे प्राजापत्य व्रत करणे कर्के पवित्र होतेहैं । श्रौत अग्निहोत्री कों चांद्रायण अथवा परा क पवित्र करण वाला होताहै ॥ १ ॥ श्रौत एक वर्ष निरंतर स्लेच्छके साथ निवास करणे कर्के चांद्रायण करे अथवा पगकव्रत करे तद पवित्र होताहै श्रौत शूद्र एक वर्ष निवास कर्के फेर आधा महीना दिन १५ अपनी शुद्धि वास्ते यावक पान करे २ श्रौत जेकर शूद्र एक महीना तिन्होके साथ निवास करे तद पाद कृच्छ कर्के शुद्ध होताहै श्रौत वर्ष ते उपरंत जे कर स्लेच्छ के साथ निवास करे तद ब्राह्मणोंने उसके वास्ते प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्यहै ३ अर्थात् दो वर्षके संसर्ग विषे दूणा श्रौत तीन वर्षके संसर्ग विषे त्रीणा कल्पना करणा चाहिये । संवेति श्रौत चार वर्ष कर्के स्लेच्छ भावको प्राप्त होजाताहै अर्थात् तिसका प्रायश्चित्त

अनग्निसाग्नित्वेनव्यवस्थापयतिप्रायइति प्रायश्चित्तेद्विजातौतुप्राजापत्यं विशोधनं । चांद्रायणंवाहिताग्नेः पराकस्त्वथवाभवेत् । १ । चांद्रायणंपरा कंचचरेत्संवत्सरोषितः । संवत्सरोषितः शूद्रोमासाद्वियावकंपिवेत् २ मा समात्रोषितःशूद्रः कृच्छपादेनशुद्ध्यतिउर्ध्वसंवत्सरात्कल्प्यंप्रायश्चित्तंद्विजो त्तमैः ॥ ३ ॥ संवत्सरादूर्ध्ववर्षद्वयंवर्षत्रयंयावत्स्लेच्छसंसर्गपूर्वोक्तमेवद्विगु णंत्रिगुणंकल्प्यमित्यर्थः॥ संवत्सरैश्चतुर्भिस्तुतद्वावमाधिगच्छति ॥ ४ ॥ स्पृष्टारजस्वलाम्योन्यंब्राह्मणाशूद्रजायदा ॥ चतूरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्य ति ॥ १ ॥ ब्राह्मण्यनशनंकुर्यात् क्षत्रियास्नानमाचरेत् ॥ सचैलंवैश्यजा तीनानक्तंशूद्रांविनिर्दिशेत् २स्लेच्छान्नंस्लेच्छसंस्पर्शोस्लेच्छेनसहसस्थि ति; वत्सरंवत्सरादूर्ध्वत्रिरात्रेणविशुद्ध्यति १ इदमज्ञातविषयम् ॥

नहिहै॥१॥श्रौत जेकर ब्राह्मणी श्रौत शूद्रा एह रजस्वला होकर्के आपसमें स्पर्श करे तद चार रात्रि निराहार करणे कर्के श्रौत पंचगव्य पान कर्के शुद्ध होतीहै । १ । श्रौत ब्राह्मणी रजस्वला क्षत्रिया रजस्वलाके साथ स्पर्श करे तद ब्राह्मणी एक निराहार करे क्षत्रिया स्नान मात्र करे तद पवित्र होतीहै । श्रौत वैश्य जातीकी रजस्वला सहित कपड़ोंके स्नान करे श्रौत शूद्र जातीकी रजस्वला नक्त व्रत कर्के पवित्र होतीहै ॥ २ ॥ श्रौत स्लेच्छति कि स्लेच्छका अन्न भक्षण करणा श्रौत स्लेच्छके साथ स्पर्श करणा श्रौत स्लेच्छके साथ एक आसन ऊपर स्थित होना जो कोयी पुरुष ऐसा करताहै सो वर्ष ते उपरंत तीन रात्रि निराहार कर्के शुद्ध होताहै अर्थात् स्लेच्छके साथ वर्षते अधिक इतने काम कर्के कर्के तीन उपवास कर्के कर्के पवित्र होताहै परंतु एह प्रायश्चित्त अज्ञात विषयमे जानना जिस कर्के थोडाहै ॥ १ ॥

और जो पुरुष म्लेछां कर्केवाचौरां कर्के अथवा वन विषे किसे लुटगेरे कर्के ताडित होया २ अथवा अतिभुधा कर्के पीडाको प्राप्त होया अभक्ष्यभक्षण कर लेवे अथवा किसीके भय कर्के अभक्ष्य भक्षण कर लेवे १ तद ब्राह्मणादिचार वर्णकी शुद्धि इस प्रकार होती है क्योंकि ओह पुरुष फेर अपने देश को प्राप्त होकर प्रायश्चित्त करे २ रुच्छ मिति ब्राह्मण होवेतो एक रुच्छ कर्के प विव्रहंदा है और क्षत्रो तिसते पौणा करे और वैश्य अपनी शुद्धि वास्ते आधा रुच्छ करे और शूद्र को एक पाद प्रायश्चित्त देवे तद पवित्र हंदा है १ और इस प्रायश्चित्तते बिना चारवर्णों की शुद्धि नहि होती २ और जिसने एसा प्रायश्चित्त कोता होवे तद उसके शरीर विषे मेख ला और दंड इनते रहित यज्ञोपवीत संस्कार करणा योग्य है ॥ इसी अर्थको स्पष्ट कर्के कहते है

म्लेच्छैर्हतो वाचैरैवाकातारे विप्रवासिभिः भुक्ता भक्ष्यमभोज्यं तु क्षुधा र्तेन भये न वा १ पुनः प्राप्य स्वकंदेशं चातुर्वर्ण्यस्य निष्कृतिः २ स्वकंदेशं प्राप्य प्रायश्चित्तार्थी भवेत्तदा चातुर्वर्ण्यस्यापि निष्कृतिरुच्यत इत्यर्थः ॥ रुच्छमेकचरे द्विप्रः पादो न क्षत्रियश्चरेत् तदर्द्धमाचरे द्वैश्यः शूद्रः पादं समाचरेत् १ चतुर्णामपि वर्णानामन्यथानैव निष्कृतिः २ प्रायश्चित्ते विनीते तु तदा ते पां कलं वरेकर्तव्यः सूत्रसंस्कारो मेखलादंडवर्जितः ३ म्लेच्छैर्नीतो यशूद्रैर्वाहारिते दंडमेखले संस्कारप्रमुखं तस्य सर्वकार्यं यथाविधि ४ अस्य संस्कारे दंडमेखले हारिते परित्याज्ये इत्यर्थः ॥ संस्कारांते च विप्राणां दानंधेनुश्च दक्षिणा दातव्यं शुद्धिमिच्छद्भिरश्वगोभूमिकांचनम् ५ तदा सौस्वकुटुंबानां पंक्तिं प्राप्नोति नान्यथा स्वभार्या गंतुमिच्छेद्द्वैगच्छेच्चैव विशुद्धितः ६

१ म्लेच्छैरिति म्लेछों कर्के जो ग्रहण कीता है अथवा शूद्रों कर्के ग्रहण कीता होवे तिमके संस्कार विषे मेखला दंड रहित विधि पूर्वक संपूर्ण यज्ञोपवीत संस्कार करणे योग्य है ४ फेर संस्कारके अंत विषे ब्राह्मणों को धेनु दक्षिणा देनी चाहिये और जिनको अपनी शुद्धि की इच्छा होवे उनोने ब्राह्मणोंके तांगों घोडागौ सुवर्ण पृथ्वी एह अपनी शक्ति अनुसार देणा योग्य है ५ तदेविति और जेकर इस प्रकार प्रायश्चित्त करे तद अपने कुटुंब की पंक्ति को प्राप्त होता है अन्यथा क्या जेकर एह प्रायश्चित्तन होवे उतना चिर अपनी पंक्ति विषे भोजन करणे योग्य नहि होता और जेकर अपनी स्त्री पास जाने की इच्छा होवे तदभी शुद्ध होकर जावे ६ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र० १५ ॥ टी० भा० १४९

अब होर पक्ष कहतेहैं अथेति और जिसको म्लेच्छोंने पकड़ियां होयां एक वर्षते ऊपर काल होजावे तद उह पुरुष प्रथम प्रायश्चित्त कीतियां होयां फेर गंगा स्नान करणे कर्के पवित्र होताहै ॥ ७ ॥ और सिंधु सौवीर सौराष्ट्र कांवोज शश कलिंग एह जो देशकहेहैं और इनके समीपके जो निवासी देशहैं इन विषे प्राप्त होकर फेर संस्कारके योग्य होताहै अर्थात् तीर्थ यात्राते विना जो पुरुष इनदेशों विषे चलाजावे सो फेर दूसरी वारी यज्ञोपवीता दि संस्कार कर्के पवित्र हुंदाहै और जो तीर्थ यात्राके अर्थजावे अथवा दिग्विजय के अर्थ राजाजावे तिनको कोई दोष नहि ॥ ८ ॥ बलादिति और जो पुरुष म्लेच्छोंने अथवा चांडालोंने अथवा चोरोंने बल कर्के अपना दासवनालेयाहोवे और तिसीते गौ इत्यादि जीवों

पक्षांतरंदर्शयति अथसंवत्सरादूर्ध्वम्लेच्छैर्नीतोयदाभवेत् प्रायश्चित्तेतुसं चीर्णेगंगांस्नात्वाविशुध्यति ॥ ७ ॥ सिंधुसौवीरसौराष्ट्रांस्तथाप्रत्यंतवासिनः कांवोजशशकलिंगानूगत्वासंस्कारमर्हति ८ अत्रायमभिप्रायः एषु म्लेच्छप्रायदेशेषुगतानाम्लेच्छसंसर्गभावनयाप्रायश्चित्तमुक्तम् यत्रतु दिग्विजयार्थगतानांरघुप्रभृतिवदूराक्षां तीर्थाटनार्थं गतानांसाधूनांनतत्संसर्गभावना नतत्रप्रायश्चित्ताभिधानमिति॥ बलाद्वासीकृतोम्लेच्छैश्चांडालाद्यैश्च दस्युभिः अशुभंकारितंकर्मगवादिप्राणिहिंसनम् ९ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथातस्यैवभक्षणम् तत्स्त्रीणांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् १० कृच्छ्रा न्संवत्सरंकृत्वासांतपनानूशुद्धिहेतवे ब्राह्मणः क्षत्रियस्त्वर्धंकृच्छ्रान्कृत्वाविशुध्यति ११ मासोपितश्चरेद्द्वैश्वः शूद्रः पादेनशुध्यति १२ अथस्त्रीविषये किंचिदुच्यते॥ गृहीत्वास्त्रीवलदेवम्लेच्छैर्गुर्वीकृतायदि गुर्वीनशुद्धिमाप्नोति त्रिरात्रेणेतराशुचिः १

की हिंसा करवायीहोवे ॥ ९ ॥ अथवा म्लेच्छोंकी जूठ हाथ कर्के मार्जन कीतीहोवे अथवा म्लेच्छादिकी जूठ भक्षण कीतीहोवे अथवा तिनकी स्त्रीसाथ मैथुन कीताहोवे अथवा तिनकी स्त्रियोंके साथ भोजन कीताहोवे ॥ १० ॥ तद ब्राह्मण अपनी शुद्धि वास्ते एक वर्षतक कृच्छ्रसांतपनकरे और क्षत्री ब्राह्मणते आधे कृच्छ्र करणे कर्के शुद्धिको प्राप्त होजंदाहै ११ और एक महीना उपवास कर्के पीछे वैश्यभी अर्ध कृच्छ्र कर्के शुद्धहोजंदाहै और शूद्र चाथा हेस्सा प्रायश्चित्त करणे कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ १२ ॥ अथस्त्री विषेभी कुछ कहतेहैं गृहीति और म्लेच्छोंने बलते ग्रहण कर्के जेकर किसीकी स्त्री गर्भ वाली कीतीहोवे तद गर्भ वाली स्त्री नहि पवित्र होती और इतराक्या गर्भ रहित जोस्त्रीहै सो तिनका रात्रां कर्के पवित्र होजातीहै । १ ।

१५० ॥ श्रीरघुवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १५ टी ० भा ० ॥

योषेति और जोस्त्री कामनाते अथवा कामनाते विना म्लेच्छ पुरुषते गर्भकों धारण करतीहै सो यद्यपि ब्राह्मणीहो अथवा क्षत्रिया वैश्या शूद्रा होवे २ और जोस्त्री अभक्ष्य वस्तुकों भक्षण करे तिसकी शुद्धि किसप्रकार होवेगो सो कहतेहैं कि सोस्त्री अपनी शुद्धि वास्ते सांतपन कृच्छ्र करे और शुद्ध घृत कर्के अपनी योनिको पका देवे अर्थात् घृत गर्भ कर्के अपनी योनि विषे पावे तद पवित्र होजातीहै ॥ १ ॥ और जो असवर्णी पुरुषते स्त्रीयोकी योनि विषे गर्भका निषेक होताहै उतना चिर सो स्त्री अपवित्र रहतीहै जितना चिर उसगर्भको नहि त्यागतीहै ४ और गर्भके निकलयां होयां और पीछे रजका दर्शन होयां अर्थात् जेकर गर्भ बाहर निकल जावे और रजका दर्शन होवे तद सो स्त्री पवित्र होतीहै जैसेकि शुद्ध सुवर्ण होवे उसकी न्या

योषागर्भविभर्तिया म्लेच्छात्कामादकामतः ब्राह्मणीक्षत्रियावैश्या तथावर्णे तरा अपि ॥ २ ॥ अभक्ष्यभक्षणं कुर्यात्तस्याः शुद्धिः कथं भवेत् कृच्छ्रं सांतपनं शुद्धघृतैर्योनिविपाचनम् ॥ ३ ॥ असवर्णा तु योगर्भः स्त्रीणां योनौ निषिच्यते अशुद्धा सा भवेन्नारीयावच्छल्यं न मुच्यते ॥ ४ ॥ विनिःसृतेन शल्येन रजसा वापि दर्शने तदा शुद्धये तसानारी विमलं कांचनं यथा ॥ ५ ॥ तद्गर्भदीयतेऽन्यस्मै स्वयं ग्राह्यं न कर्हिचित् स्वजातौ वर्जयेद्यस्मात्संकरः स्यादतो न्यथा ६ पुनरपि प्रकारान्तरेण पुरुषविषये प्रोच्यते ॥ गृहीतो वा वलान्म्लेच्छैः स्वयं वा मिलितस्तु वः वर्षाणि पंच सप्ताष्टौ शुद्धिस्तस्य कथं भवेत् १ प्राजापत्यद्वयं तस्य शुद्धिरेषा प्रकीर्तिता

यो शुद्ध है ॥ ५ ॥ और सो गर्भभी और किसेके तांई देणा चाहिये आपउस गर्भको कभीन हि ग्रहण करणा योग्य इस कारण ते अपनीजाति विषे उसका त्यागहि करणा योग्य है जेकर उसका त्याग नहोवे तद आगे उसते संकर उत्पन्नहोगा इसवास्ते उसका त्याग करणाहि योग्य है ॥ ६ ॥ अब होर प्रकार कर्के पुरुष विषे कुछ कहतेहैं गृहीत इति (प्रण) और जो पुरुष वलते म्लेच्छोंने ग्रहण कीताहो अथवा अपनी इच्छा कर्के म्लेच्छोंके साथ मिल गयां हांयां पंच वर्ष अथवा सातवर्ष अथवा आठ वर्ष अर्थात् जो पुरुष पांच ५ सात ७ आठ ८ वर्ष पर्यंत म्लेच्छोंके साथ रहे सो किसप्रकार पवित्र होताहै १ (उत्तर) तिसकी शुद्धि वास्ते दो प्राजापत्य कहें अर्थात् उह पुरुष दो २ प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होताहै

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः० प्र० १५ ॥ टी० भा० ॥ १५१

इसमें परे और कोई शुद्धि नहीं है ॥ और म्लेच्छके साथ निवासमात्र है और तिनके अन्नादिका भक्षण नहीं नद तिसके पवित्र करण वाला छच्छहि किहा है क्योंकि जो पुरुष म्लेच्छके साथ निवास करता है सो बिना छच्छते पवित्र नहीं होता २ और पांच वर्षते आदिलेकर बीस २० वर्ष पर्यंत जो पुरुष म्लेच्छके साथ निवास करता है तिसको एह प्रायश्चित्त किहा है क्या कि सो पुरुष दो ॥ २ ॥ चांद्रायण करणे कर्के पवित्र होता है ॥ ३ ॥ और प्रथम कछकेवाल और लिंग केवाल और शिखाके वाल श्मश्रुक्या मुछां इनको त्यागकर और संपूर्णरोम मुनादेवे और हाथोंके और पैरोंके सभनख कटा देणे तद तिस कारणे उह शुद्ध होजंदा है ॥ ४ चत्वेति और इसमें कोई पाठांतरते कहते हैं कि उक्त ४ चार जगाके भीरोम उतारदेवे ॥ और

अतः परं नास्ति शुद्धिः कृच्छ्रमेव सहोपिते । २ ॥ सहोपिते सहवासमात्रेन त्वन्नभक्षणादिसंसर्गे ॥ म्लेच्छैः सहोपितो यस्तु पंचप्रभृतिविंशतिं वर्षाणि शुद्धिरेषोक्ता तस्य चांद्रायणद्वयम् ३ ॥ कक्षागुह्यं शिखाश्मश्रुचत्वारिपरिवापयेत् पारिवर्जयेदिति काचित्पाठः ॥ प्रहृत्य पाणिपादां तान्नखान् स्नातस्ततः शुचिः ॥ ४ चत्वारिपरिवापयेत् चतुर्ष्वपि स्थानेषु वपनं कुर्यादित्यर्थः ॥ इदमपि समस्तदेहवपनोपलक्षणं बोध्यम् ॥ पाणिपादां तान्नखान् प्रहृत्य उत्तार्य स्नातः शुचिरिति प्रायश्चित्तांताविधिः ॥ यो यथानैव जानाति प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमः शुद्धिं ददाति चान्यस्मै तदशुद्धेः सभाजनम् ॥ ५ स ब्राह्मणः तस्य पापिनोऽशुद्धेर्भाजनमित्यर्थः ॥ संभाषणात् स्पर्शनाच्च म्लेच्छेन सह संगमात् कुर्यात्स्नानं सचैलं च दिनमेकमभोजनम् ॥ ६ ॥ माता म्लेच्छत्वमापन्ना पितरौ वा कथंचन श्राद्धं षोडशवर्षे तु देवलस्य वचो यथा ॥ ७ ॥

जो पुरुष यथार्थ प्रायश्चित्तको नहीं जानता और पुरुषको प्रायश्चित्त देता है सो तिसके पाप का भांडा है ॥ ५ ॥ और तिसके संगते भी सभामे स्थित पुरुष अपवित्र होता है । और म्लेच्छ के साथ बात करणे ते और तिसके साथ स्पर्श करणे ते और तिसके एक आसन ऊपर स्थित होणे ते पुरुष वस्त्र सहित स्नान करे और एक दिन उपवास करे तद पवित्र होता है ॥ ६ ॥ और जिसकी माता म्लेच्छनी होजावे अथवा माता पिता एह दोनो म्लेच्छ भावको प्राप्त होजावें सो पुरुष सोलां वर्ष विषे शुद्ध होता है क्या श्राद्ध करणेके योग्य होता है अथवा तिनां म्लेच्छोंका पुत्र श्राद्ध कीया चाहे तद १६ वर्षमें करे एह देवल जीका वाक्य है अर्थात् जिसके माता पिता म्लेच्छ होजावे सो १६ वर्ष प्रायश्चित्त करणे कर्के पवित्र होता है । ७ ।

१५२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १५॥ टी ० भा० ॥

और स्त्रियोंको और शूद्रोंको और पतित जोहैं तिनको पंचगव्य नहिदेणे योग्य और जेकर अवश्य देणाहो तद मंत्र रहित इनको पंचगव्य देणा ॥ १ ॥ अब पंचगव्यके देवता कहेहैं किगोमूत्रका वरुण देवताहै और गोमयका अग्नि देवता किहाहै और दुग्धका चंद्रमा देवता जानना और दधिका वायु देवता जानना और घृतका सूर्य देवता किहाहै ॥ २ ॥ और पंचगव्य विषे गोमूत्र ताम्र वर्णकी गौका ग्रहण करणा किहाहै और श्वेतवर्णकी गौका गोमयलेना चाहिये और सुवर्णकी न्यार्योहै वर्ण जिसका ऐसी जोगौहै अर्थात् पीत वर्ण गौका दूध ग्रहण करणा किहाहै और नील वर्णकी गौका दधि ग्रहण करणा ॥ ३ ॥ और कृष्णवर्णकी गौका घृत ग्रहण करणा इस वर्ण विभाग कर्के पंचगव्य एकत्र करणा योग्यहै और जेकर एह संपूर्ण वर्ण वर्णकी गौयां न प्राप्तहोवें तद कपिला गौका पंचगव्य वनालेना

स्त्रीणांचैवतुशूद्राणांपतितानांतथैवच पंचगव्यंनदातव्यंदातव्यंमंत्रवर्जितम्
१ वरुणोदेवतामूत्रगोमयेहव्यवाहनः सोमःक्षीरेदध्निवायुर्घृतेरविरुदाहृतः
२ गोमूत्रताम्रवर्णायाःश्वेतायाश्चैवगोमयं दुग्धंकांचनवर्णायांनीलिकाया
श्चवैदधि ३ घृतंवैकृष्णवर्णायाविभक्तिर्वर्णगोचरा उदकंसर्ववर्णेतुकस्यव
र्णोनगृह्यते ४ एकमात्रंतुगोमूत्रगोमयंतुद्विमात्रकम् त्रिमात्रकंघृतंक्षीरिंद
ध्नःस्यादर्धमात्रकम् ५ व्रतेपुसर्वकर्मेषुपंचगव्यस्यसंख्यया ६ अथप्राय
श्चित्तप्रकारंवक्तुंतावद्वक्तुःकर्त्तव्यतां दर्शयति॥प्रायश्चित्तंयथोक्तंहिदातव्यं
ब्राह्मणैःसह अन्यथादापयेद्यस्तुप्रायश्चित्तीभवेद्द्विजः १

एह पिछे कह आएहैं और जिस जगा पंचगव्य किसे गौकाभी नहि मिले उसजगा केवल जलहि पंचगव्योंके मंत्र कर्के ग्रहण करणा और तिसमे वर्णका विचार नहि करणा ॥ एह कहतेहैं उदक मिति उदक यो जल है सो सर्ववर्ण साधारणहै ४ ॥ औरइस विषे भी एक भाग गोमूत्र और दोभाग गोमय और तीन भाग घेउ और १ दूध और आधा भाग दधि इस क्रम कर्के एकत्र करणा किहाहै ॥ ५ ॥ और संपूर्ण व्रतों विषे और संपूर्ण कर्मों विषे इसी संख्या कर्के पंचगव्य एकत्र करणा योग्यहै ॥ ६ ॥ अब प्रायश्चित्त के प्रकारको कहनेनु पहिले कहणवालेकी कर्त्तव्यताको कहतेहैं प्रायश्चित्त और जैसा पापी को प्रायश्चित्त किहाहै सो ब्राह्मणोंके साथहि होकर देणा चाहिये और जो ब्राह्मणांते बिना आपहि पापीको प्रायश्चित्त देताहै सो आपहि प्रायश्चित्ती होताहै इस वास्ते ब्राह्मणोंको साक्षी रख कर्के यथार्थ प्रायश्चित्त देणा चाहिये ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग ० प्र० १५ ॥ टी० भा० ॥ १५३

और कपिला गौका दूध दोहन कर्के जो पुरुष गरम २ धारा दुग्ध पान करे एह व्यासदेव जी ने कृच्छ्र किहाहै कैसा एह कृच्छ्रहै चांडालको भी शुद्ध करताहै ॥ इसमै कितने दिन पीणाहै एह संख्या अपने चित्तसे विचार कर कहणी और दूधका प्रमाण भी आहारते चतुर्थांश जानना २ ॥ तिलांका हवण करणा और विष्णो रराट मसि इस मंत्र कर्के जप करणा सावधान हो कर तद प्रायश्चित्ती पवित्र होताहै ॥ ३ और इसी वास्ते बहुत क्या कहनाहै कि प्रायश्चित्त विषे तिल होम अवश्य विधान कीताहै किस वास्ते प्रायश्चित्ती पुरुष तिल दान कर्के और तिल भक्षण कर्के पापको निवारण करताहै ॥ ४ और ब्राह्मण जो कुछ तीर्थ विषे स्नान कर्के जिस फलको संपादन करताहै और जो फल तप कर्के प्राप्त होताहै उस फल कर्के सब पाप दूर होतेहैं ॥ ५ एह तृतीयादि प्रकरण विषे भीहै परंतु इत्ये प्रसंगते किहाहै ॥ प्रायश्चित्ति और जिस

कपिलापायसंदुग्ध्वाधारोष्णंयःपयःपिवेत् एषव्यासकृतःकृच्छ्रःश्वपाकमपिशोधयेत् ॥ २ ॥ तिलहोमंतु कुर्वीत जपं कुर्याद तद्रितः विष्णोरराटमंत्रेण प्रायश्चित्तीविशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ बहुनात्र किमुक्तेन तिलहोमोविधीयते तिलान्दत्त्वा तिलान्भुक्त्वा कुर्वीताद्यनिवारणम् ४ संपादयति यद्विप्रः स्नानं तीर्थफलं तपः समाक्रामयते पापं तस्य संपद्यते फलम् ॥ ५ ॥ प्रायश्चित्तं समाख्यातं यथोक्तं देवलेन तु इतरेषामृषीणां तु नान्यथा वाक्यमर्हति ॥ ६ ॥ सुवर्णदानं गोदानं भूमिदानं तथा हित्कं ॥ विप्रेभ्यः संप्रयच्छेत् प्रायश्चित्तीविशुद्ध्यति ७ ॥ अथ संसर्गविषये पंचगव्यप्रदानप्रकारः ॥ पंचद्वयहसहवासेन संभाषणसहासनैः ॥ संप्राश्य पंचगव्यं तु दानं दत्त्वा विशुद्ध्यति ॥ ८ ॥

प्रकार देवल जीने प्रायश्चित्त किहाहै सोयी प्रायश्चित्त इस स्थान विषे किहाहै इस वास्ते और ऋषियोंका वाक्य भी व्यर्थ होने योग्य नहिहै अर्थात् होरना ऋषियोंको भी एह प्रमाणहै इसमे समयानुसार व्यवस्था करणी चाहिए ॥ ६ और सुवर्ण दान करणा और गौदान कर्के ब्राह्मणों के तांथी देणा और भूमि दान कर्के ब्राह्मणों के तांथी देणी और नित्य प्रति संध्या वंदनादि कर्म करणे इनको विधि पूर्वक करणे कर्के प्रायश्चित्ती पुरुष पवित्रताको प्राप्त निश्चय कर्के होजाताहै ॥ ७ अवसंसर्ग विषयमै पंचगव्यके देणेका प्रकार कहतेहैं और जो पुरुष म्लेच्छके साथ पंच ५ दिन अथवा दो २ दिन एक स्थान विषे निवास करे अथवा संभाषण करे अथवा एक आसनके ऊपर स्थित होवे सो पुरुष पंचगव्य पान कर्के और ब्राह्मणके तांथी यथा शक्ति कुछ दान दे कर्के शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥

१५४ ॥ श्रीरणवीरकारितः श्रृंगारिचत भागः प्र ० १५ ॥ टी ० भा० ॥

और जो उत्तम ब्राह्मण म्लेच्छके साथ एक दिन दो २ दिन तीन ३ दिन चार ४ दिन पंच ५ दिन जेकर निवास करे तदक्रम कर्के पंच गव्यकी वस्तुओंका योग करे ॥ ९ ॥ सोई कहतेहैं एकेति एकदिन म्लेच्छके साथ निवास कर्के एक दिन गोमूत्र पान करे और जेकर दो दिन करे तद दोदिन गोमूत्र और गोमय एहदोनो एकत्र कर्के भक्षण करे और जेकर तीन दिन करे तद गोमूत्र गोमय दुग्ध एह एकत्र कर्के तीनदिन पान करे और चार दिन विषे संबधक तेतद इन केसाथ दधि मिलाकर चार दिनभक्षण करे । १० ॥ और पांच दिनके संबधविषे इनके साथ घृत मिला कर संपूर्ण पंचगव्यदेवे तद उह ब्राह्मण पांचदिन मे पवित्र होताहै ॥ ११ ॥ और जिस स्थान विषे पांच ५ दश १० पंदरह १५ बीसदिन २० म्लेच्छ के साथ निवास होवेति

एकद्वित्रिचतुःपंचवासरान्संवसेद्यदि म्लेच्छवासं द्विजश्रेष्ठः । क्रमात्तद्गव्ययोगतः १ एकाहेन तु गोमूत्रं ब्रह्मैव तु गोमयम् व्यहात्क्षीरेण संयुक्तं चतुर्थे दधिमिश्रितम् १० पंचमे घृतं संपूर्णं पंचगव्यं प्रदापयेत् ११ । पंचयत्र दशहानि पंचादश च विंशतिम् । संवासं तत्र वक्ष्यामि देहशुद्धिं द्विजन्मनम् १२ ॥ पंचाहेः पंचगव्यं स्यात्पादकृच्छ्रदशाहकैः पराकं पंचदशभिः विंशत्या कृच्छ्रमेव च १३ उदरं प्रविशेद्यस्य पंचगव्यं विधानतः यत्किंचिद्दुष्कृतं तस्य सर्वे नश्यन्ति देहतः ॥ १४ पंचसप्ताष्टदशवाद्वादशवाथ विंशतिः म्लेच्छत्वं तस्य विप्रस्य पंचगव्यं विशोधनम् । १५ अथ व्रतप्रकारः ॥ पंचगव्यं च गोक्षीरं दधिमूत्रशकृद्घृतं प्राश्यान्वेद्यमुपवसेत्कृच्छ्रं सातपनं चरेत् ॥ १

सम्धान विषे ब्राह्मणों किदेह शुद्धि कथन करताहुं १२ ॥ क्याकि पांच दिन कर्के पंचगव्य पान करणा । और दश दिन विषे पाद कृच्छ्र करणा और १५ दिन कर्के पराक करणा और २० बीसदिन कर्के एक कृच्छ्र करणा योग्यहै ॥ १३ ॥ किस वास्ते एह पंचगव्य विधि पूर्वक जिसके उदर विषे प्रवेश करे तिसके संपूर्ण पाप नाश हो जातेहैं । १४ ॥ और पांच ५ सात ७ आठ ८ दश १० बारों १२ बीस २० दिन जिस ब्राह्मणको म्लेच्छका संग होवे उसको पंचगव्य पवित्र करदेताहै ॥ एह प्रकार भी केवल ब्राह्मण वास्ते हिहै १५ अव्रत स्वरूप कहतेहैं पंचेति किपंच गव्य क्या गौका दूध दधि घृत गोमूत्र गोमय इनको एक २ दिन भक्षण कर्के फेर एक दिन उपवास करणा एह सातपन कृच्छ्रहै तिसको अपनी शुद्धि वास्ते करे ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भाग्यप्र १५ ॥ टी ० भा ० ॥ १५५

और एहसांतपनके द्रव्यों कर्के भिन्न २ छे दिनका व्रतहै उपवासकेसहित और एहिजेकरसा
त ७ दिनकरके होवेतद इसका नाम महासांतपन किहाहै सोछे दिन इस तहाँ कर्के हुंदेहैं
किपंचगव्यक्रियावस्तुभिन्न २ कर्के होए ५ छेवें दिन कठे ५ इसकर्के होए ६ और एकउ
पवास कर्के ॥ २ ॥ और खंडल पत्तर १ कमल २ विल्वपत्र ३ कुशाकाजल ४ इनको भिन्न २
एकरदिनभक्षणकरणा इसकानाम पर्ण कृच्छ्र किहाहै एहचारदिन कर्के होतहै ॥ ३ ॥ और गरम
पात्रविषे स्थित जो घृत एहपूर्वक पर्णादि ५ और घृतएहभिन्न २ कए २ दिनपान करे और एकदिन
उपवास करे इसकानाम तप्तकृच्छ्र किहाहै अथवाचार दिन खंडलके पत्रके साथ जितना घृत
आवे उतनाखावे तदतप्तकृच्छ्र व्रत हुंदाहै ॥ ४ ॥ और एकदिन एककाल भोजनकरणा और एक

दिनद्वयसाध्यमिदम्) पृथक्सान्तपनद्रव्यैः पडहः सोपवासकः सप्ताहेनतुकृ
च्छोयंमहासांतपनः स्मृतः २ पर्णोदुंवरराजीवविल्वपत्रकुशोदकैः प्रत्येकं
प्रत्यहंपीतेः पर्णकृच्छ्र उदाहृतः ॥ ३ ॥ चतुर्दिनसाध्यमिदम् । तप्तभांडघृतादि
र्णमैकैकंप्रत्यहंपिवेत् एकरात्रोपवासश्चतस्रकृच्छ्रस्तुपावनः ॥ ४ ॥ तप्त
भांडघृतादौदुंवरपर्णपूरयित्वाप्रत्यहंदिनचतुष्टयं यावत्पिबेदित्यर्थः । एकरात्र
भक्तननेनतथैवायाचितेनच उपवासेनचैकेनपादकृच्छ्र उदाहृतः ॥ ५ ॥
कृच्छ्रातिकृच्छ्रः पयसादिवसानेकविंशतिं द्वादशाहोपवासेनपराकः परा
गिकीर्तितः ॥ ६ ॥ पिण्याकशाकतक्रांवुसक्तूनांप्रतिवामरं एकरात्र ॥
सश्चकृच्छ्रमौम्यः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥ एपात्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्ययश्चक्र
मं तुलापुरुषमित्येपज्ञेयः पंचदशाहिकः ॥ ८ ॥ तिथितृद्वयाचरेत्पिंडाच्छलेः
शिर्यंडमम्मितान् एकैकं हामयेत्पिंडं कृष्णे चांद्रायणं चरन् ९

दिन रात्रिमे भोजनकरणा और एकदिनअयाचित और एकदिन उपवास इसकानाम पादकृच्छ्र
किहाहै ॥ ५ ॥ कृच्छ्रेति और उक्तीस २ १ दिनकेवल दूधपानकर्के व्यतीत करण इसकानाम कृ
च्छ्रातिकृच्छ्र किहाहै और वारां १२ दिनविषे उपवासकरणा इसकानाम पराक किहाहै ॥ ६ ॥ और
तिलोंकी खल १ शाक २ लाल ३ जल ४ सनू ५ एहएक २ दिनभक्षणकर्के एकरात्रोपवा
स इसकानाम सौम्य कृच्छ्र किहाहै ॥ ७ ॥ औरइनवस्तुमेहि एकवस्तु तीन २ दिनअभ्यास कर
गेते पंद्रहदिनका तुलापुरुषजातना ॥ ८ ॥ औरशुद्ध पक्षविषे मोरके अडेजितना एकरात्रिथिकमकी
वृद्धिकर्के भक्षण करे और कृष्ण पक्षविषे एक २ यास कमती करताजावे ॥ ९ ॥

१५६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १५ ॥ टी० भा० ॥

ऐसेहि २४० ग्रासमहीनेमे होतेहैं इसकानाम चांद्रायण किहाहैं और विशेष व्रत प्रकरण विषे देपना एह इहां प्रासंगिकहैं १० एह देवलजीकाधर्म शास्त्रहैं ॐ और इसप्रकार महापातकों कर्के पतित जो पुरुषहैं उसकेवास्तेजो प्रायश्चित्त किहाहैं और जो पुरुष अभिमानते प्रायश्चित्त करणे की इच्छा नाहिक रतिसको क्या करणायोग्यहै इसविषे मनुजीने किहाहैं पतितम्येति कि महापातकीके जीवतेहितिस केयोसपिंडहैं और समानोदकहैं तिनोंने एकत्र होकर इसरीतीसे प्रेतकी उदक क्रिया करणी चाहिये कथाकि ग्रामते बाहर कर्के अपनेसभजाती और ऋत्विज गुरु इनके समीप रिक्तातिथि जोन बमी तिथिहै तिसदिन सायं काल विषे जैसे मृत होयेकी उदक क्रिया होतीहै तैसोहि तिसप तितकी प्रेत संबंधी उदक क्रिया करणे योग्यहैं १ और तैसैहि याज्ञवल्क्यजीने किहाहैं दासी

यथाकथांचिपिंडानांचत्वारिंशच्छतद्वयम् १० इति देवलकृतं धर्मशास्त्रम् ॥ ४७
एवं महापातकादिभिः पतितस्य प्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ यस्त्वौद्धत्यान्नक्षीर्षं
तितस्य किं कार्यमित्याह मनुः ॥ पतितस्योदकं कार्यं सपिंडैर्विधायेत् ॥
निंदितेह निसायात्तेज्जात्यृत्विग्गुरुसन्निधौ ॥ १ पतितस्योत्तमहापातकेनो
जीवत एव प्रेतस्योदकक्रियावक्ष्यमाणरीत्या सपिंडैः समानोदकैः ग्रामाद्वा
हिः कृत्वा ज्ञातिः ऋत्विक् गुरुसन्निधानेरिक्तायां नवम्यां तिथौ दिनान्ते कर्त्तव्या
तथा च याज्ञवल्क्यः ॥ दासीकुंभं वहिर्ग्रामात्तिथिरन्स्ववांधवाः पतितस्य व
हिः कुर्युः सर्वकार्येषु चैव तामेति अत्र मितक्षरा एतच्च निजयनमुदकपिंडदाना
दिप्रेतक्रियोत्तरकालं द्रष्टव्यम् तस्य विधायोति गुरुसंबंधांश्च सन्निपात्य सर्वा
एषु दकादीनि प्रेतकर्माणि कुर्युः पात्रं चास्य विपर्यस्येयुः

कुंभ मिति कि पतित के जो संबंधीहैं सोसभ एकत्रस्थित होकर ग्रामते बाहर एकदासी कुंभकथा अपवित्र घड़ाजलसे पूर्णकरें फेर उस पतितकानाम ले कर्के पैरकेसाथ उसघड़ेको उलटा कर देवें फेर उसदिन तें आदिलकर तिसपतित को सभकार्यविषे बाहर निकालदेवें और ऐसातद करणा जेकर उहपतित किसीके वाक्यकर्केभी प्रायश्चित्तनकरे इति ॥ और मितक्षरामे ऐसा लि पयाहैं एह जोनियमहै क्याजलकुंभकाविपर्यय करणा सोसभ उदकपिंडदानादि प्रेतक्रियाहै ति सते उत्तरकाल विषे जानना अर्थात् प्रथम प्रेतक्रिया कर्के पीछेघटविपर्यय करणा चाहिये और तिसपतितकी विद्या जन्मगुरु संबंधी एहसभ कहेहोकरकेफेरसंपूर्ण उदकादि प्रेतक्रिया करें और फेर पात्रका विपर्ययभीकरें ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः० प्र० १५ ॥ टी०भा० ॥ १५७

और दाम अथवा और कोयी काम करने वाला चकारते ऐसाहै कि अपवित्र पात्र लिया कर्के दासी घटाको पूर्ण कर्के दक्षिण पासे मुखकर्के पैरके साथ उसघटको उलटा देवे और मुख ते एह संकल्प पड़े कि अमुक जो पतितहै तिसको जलक्रियाते रहित करताहुं ॥ फेर तिसके पीछे सभ तिसका नाम उच्चारण करें । और प्राचीनावीतिनोक्या अपसव्यहोकरके और शिखाको खोलकरके पतितकी प्रेतक्रिया कर्के फेर योनिसंवंधादि लोक उसको कुछ न देखे और जलको स्पर्श कर्के ग्राम विषे प्रवेश करें एह गौत्तम स्मृति विषे किहाहै इसतें ॥ अयमिति कि इस प्रकार त्याग तद करणा चाहिये जेकर संबंधियों कर्के प्रेरणाको प्राप्त हो कर्के भी अपनी शुद्धि वा स्ते प्रायश्चित्तनकरें ॥ और स्मृति कहतेहैं तस्येति तिस पापीके गुरु और संवंधि ऐसे करें कि राजाके सन्मुखदोष प्रकट कर्के उस पापीको इस प्रकार कथन करें कि तुम अपने आचार

दासः कर्मकरोवा चकारात् अमेध्यपात्रमानीय दासीघटान् पूरयित्वा दक्षिणाभिमुखः पदाविपर्यस्येदिदं अमुकमनुदकं करोमीति नामग्रहांतं सर्वेऽन्वालभेरन् प्राचीनावीतिनो मुक्तशिखाविद्यागुरवो येनिसंवंधाश्च न वीक्षेरन् अपः स्फुरत्यग्रामं प्रविशेयुः इति गौत्तमस्मरणात् ॥ अयंच त्यागो यदा बंधुभिः प्रेर्यमाणोऽपि प्रायश्चित्तं न करोति तदा द्रष्टव्यः तस्य गुरुबंधवाः राजसमक्षंदोषानभिरुप्याप्यानुभाष्य पुनः पुनराचारं लभस्वेति सपद्येवमप्यनवस्थितमतिः स्यात्ततोऽस्य पात्रं विपर्यस्येदिति शंखस्मरणात् । दासीघटमपां पूर्णपथ्यस्येत्प्रतवत्पदा अहोरात्रमुपासीरन्नशौचं बंधवैः सह ॥ १ ॥ दासीतिसपिंडसमानोदकप्रयुक्ता दासी उदकपूर्णघटं प्रेतवदिति दक्षिणाभिमुखी भूय पादौ नक्षिपेत् । यथा स निरुदको भवति तदनु तं सपिंडाः समानोदकैः

सहाहोरात्रमशौचमाचरेयुः

को प्राप्तहों और ऐसे तिनके वाक्य कर्के भी जेकर तिस पातकीकी मति स्थिर न होवे तद तिसका पात्र विपर्यय करणा योग्यहै एह शंखस्मृति विषे लिखयाहै इस कारणते ॥ और स्मृति कहतेहैं दासाति तिसके जो सपिंड क्या भाई बंधु और समानोदकहै तना सभसंबंधियों कर्के प्रयुक्त जो एकदासीहै सो ऐसे काम करें कि एकघडेको जलके साथ पूर्ण कर्के प्रेतकी न्यायी दक्षिण दिशामे मुख कर्के अपने पैरके साथ उस घटको उलटा कर देवे ॥ १ ॥ और जैसे सो पापी निरुदकहो जाताहै अर्थात् फेर तपण विषे आद्ध विषे सभसंबंधियोंको उसवास्ते जलदेणका अधिकार नहि रहिना कि फेर कोयी संबंधीभी उसके निमित्त जलनदेवे ॥ और तिसके पीछे सा सपूर्ण सपिंड समानोदकोंके साथ एक दिन रात्रि अशाच करें ॥

१५८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १५ ॥ टी० भा० ॥

और प्रेतवत् एह शब्द इस अभिप्राय कर्के किहाहै कि दाक्षिणाभि मुखहो कर्के और अपसव्य यज्ञोपवीत कर्के पूर्वोक्त कार्य करणा इसीकी प्राप्तिवास्तेहै एह मिताक्षरा विषे लिख्याहै ॥ निवर्तेत्यति कितिस पतितत्ते सपिंडादियों के मध्य विषे इतने कामनिवृत्त करणे चाहिये किफेर उस पतितके साथ संभाषण और एक आसन ऊपर स्थिति और तिसके तांथी हेम्मा देना और वार्षिक श्राद्धादि विषे और विवाह विषे निमंत्रण रूपजो लोकव्यवहारहैं सोंसंपूर्ण कार्य दूर करदेवें अर्थात् सभ संबंधि उस पतितत्ते सभ व्यवहारका त्याग करे ३ और जेकर हितकर्के तिसके साथ जो पुरुष संभाषण करे तद तिसने प्रायश्चित्त करणा योग्यहै सोथी गौतम जीने किहाहै अतइति इसते उपरंत कि इस प्रकार पतितका त्याग कीतियां होयां फेर जेकर ज्ञानत्ते विना उस पतितके साथ संभाषण करे सो एक रात्रिगाय

प्रेतवदिति दक्षिणामुखापसव्ययोः प्रात्प्यर्धमिति मिताक्षरा ॥ निवर्तेरंश्च तस्मात्संभाषणसहासने दायाद्यस्य प्रदानं च यात्रावैवाहलौकिकी ३ निवर्तेरन्नितितस्मात्पतितात् सपिंडादीनां संभाषणं मकासनोपवेशनं च तस्मै रिक्थप्रदानं सांवत्सरिकादौ निमंत्रणादिरूपो लोकव्यवहार एतानि निवर्तेरन् ३ यदि स्नेहादिना संभाषणं करोति तदा प्रायश्चित्तं कार्यम् गौतमः अत ऊर्ध्वतेन संभाष्यति षेदेकरात्रं जपन्सावित्रीमज्ञानपूर्वज्ञानपूर्वचेत्रिरात्रम् ॥ ज्येष्ठताच निवर्तेत ज्येष्ठावाप्यं च यद्धनं ज्येष्ठांशं प्राप्नुयाच्चास्य यवीयान् गुणतो अधिकः ॥ ४ ॥ ज्येष्ठेति ज्येष्ठस्य यत्प्रत्युत्थानादिकं कार्यं तत्तस्य न कार्यम् ज्येष्ठलभ्यं च तस्य विशत्युद्धारादिकं धनं न देयम् यद्यपि ऋकथ प्रदानप्रतिषेधादेवाप्युद्धारप्रतिषेधः सिद्धः ॥

त्री जप कर्के पवित्र होताहै और जेकर ज्ञान कर्के तिस पतितके साथ संभाषणादि व्यवहार करे तद तीनरात्रि गायत्री जप करणे कर्के शुद्धिको प्राप्तहोताहै ४ ज्येष्ठता इत्यादि योस्मृति है इसका अर्थ आपहि मूलविषे स्पष्ट करेंगे ॥ ज्येष्ठेति कि अपनेते वड को जो प्रत्युत्थानादिक करणा किहाहै सो तिस पतित को फेर नहि करणा योग्य । और ज्येष्ठ को जोधन अपने विभागते अधिक ग्रहण करणा किहाहै सोभी तिसको विशति उद्धारादिक रूप धन नहि देणा योग्य अर्थात् जितने भ्राताहैं उन सभ विषे ज्येष्ठको संपूर्ण पिता के धनका बीसवां हिस्सा अधिक देणा शास्त्रमे लिख्याहै सो उसको नहि देणा और यद्यपि दसस्थानविषे धनदानके निषेध तेहि उद्धार निषेध सिद्ध होजाताहै

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १५ ॥ टी० भा० ॥ १५९

तदपि तिसते छोटेकों तिसधनकीप्राप्ति वास्तेलिखाहै क्या कि तिसज्येष्ठ संबंधि जोधनहै उद्धा
रकेसहित सोसभधन तिसते जो अधिकगुणवालाकनिष्ठ भ्राताहै तिसने ग्रहणकरणा ४ । प्राय
श्चित्तेति कि फेर पतितने प्रायश्चिनकीतिथाहोयातिसके जो सपिंडसमानोदकहै सोसंपूर्णकीयाहै
प्रायश्चित्तजिमने तिसकेसाथ पवित्र जलाशय विषे स्नानकर्के जल पूर्णजो नवीन घटहै तिस'
का प्रक्षेपकरें ५ और इसस्थानविषे नवीनघट ग्रहणते दासीघटकाहि उपयोगकीयाहै ऐसाप्रती
तहोताहै अर्थात् तिसनवीन घटको पतितकेतायींदेणा और पीछेघरको ल्याउण इसकर्के दासी
घटका परिहारप्रतीतहुंदाहै ॥ और गौत्तमजीने इसविषे विशेषकिहाहै कि जोपुरुष प्रायश्चित्त

तथापियवीयसस्तत्प्रात्प्यथमनूयते तस्यैवज्येष्ठस्यसंबंधिधनं सोद्वारांशं
तदनुजोगुणाधिकोलभते ४ पुनः पतितसंग्रहायाह प्रायश्चित्तेतुचरितेपूर्ण
कुंभमपांनवम् तेनैवसार्द्धं प्रास्येयुः स्नात्वापुण्येजलाशये ५ प्रायश्चित्तंति
कृतेपुनः पतितेन प्रायश्चित्तेसपिंडसमानोदकास्तेनैवकृतप्रायश्चित्तेनस
हपवित्रेजलाधारेस्नात्वाजलपूर्णनवंघटं प्रक्षिपेयुः इहनवघटग्रहणा दासी
घट एव कृतोपयोगघटः प्रतीयते (प्रक्षिपेयुः पतितायदद्युः ततश्चगृहं
निनयेयुः) गौत्तमेनात्रविशेषउक्तः। यस्तुप्रायश्चित्तेनशुद्ध्येतस्मिन् शुद्धेशा
तर्कौभमयंपात्रं पुण्यतमाद्भदात्पूरयित्वा स्रवंतीभ्योवाततएनमुपस्पर्शये
युः अथास्मैतत्पात्रंदद्युः तत्संप्रतिगृह्यजपेत् शांताद्यौः शांताष्टाधिवीशां
तंशिवमंतरिक्षंयोरोचनस्तमिहगृह्णामीत्येतैर्यजुर्भिस्तरत्समंदीभिः पाव
मानोभिः कूष्मांडैश्चाज्यंजुहुयात् ब्राह्मणायवादद्यात् गांचार्याय ॥

कर्के शुद्धहोताहै तिसके शुद्धहोयां सुवर्णका पात्र पवित्र हूदतेपूर्ण कर्के तिसके जो सपिंडस
मानोदकहै सोसभस्रवंतीभ्यो वा क्या अथवा नदीते पूर्ण कर्के तिससुवर्णपात्रने इसको जल
कास्पर्श करवावे और इसते अनंतर फेर उसी तांयीं उह पात्र देदेवें सो पुरुष पात्रको ग्रहण
कर्के इसमंत्रका जपकरें सोमंत्र शांताद्यौः इत्यादि मूलविषे लिखाहै और इसीमंत्र कर्के और
यजुर्वेदके जो मंत्रहैं और तरत् समंदीभिःइत्यादि जो मंत्रहैं और पवमानादि जो ऋचाहैं
और कूष्मांडऋचाहैं तिन कर्के भिन्नभिन्न घृतका हवन करे फेर सुवर्णब्राह्मणके तांयींदेवे
आचार्यकेतांयीं गौदान देवे तद पवित्रहोताहै ॥

१६० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० १५ ॥ टी० भा० ॥

और जिसको प्राणांत प्रयश्चित्त किता है सो मरण कर्क हि शुद्ध होता है ॥ और तिसके संबंधीयो हैं सो तिसके मृत होयां तिसके निमित्त जलदानादि संपूर्ण प्रेत कर्म करें और एहिशांति जल सभ उपपातकों विषे भी जानना इति । सात्वति कि कोता है प्रायश्चित्त जिसने सो पुरुष तिस पूर्वोक्त घटकों जलके मध्य विषे गिराय कर्क फेर तिसते अनंतर अपने घर विषे प्रवेश कर्क जै से पूर्वकार्य करता हो तैसे अपने संबंधियों के साथ कार्यों को करे ॥ ६ ॥ और ऐसे हि विधिको पतित स्त्रीयों विषे करे अर्थात् जे हर स्त्री पतित हो जावे और संबंधियों के कहे से भी जो प्रायश्चित्त न करे उसके वास्ते भी इसी प्रकार पूर्वोक्त विधि करणी योग्य है । क्या कि पतितका उदक कार्य करणा योग्य है इत्यादि विधिकों तिस स्त्रीका पति और सपिंड समानोदक वर्ग जो है सो करे ॥ और उन पतित स्त्रीयोंका इस विधि कर्क त्याग कीतियां भी भोजन वस्त्र फेर भी

यस्य तु प्राणांतिकं प्रायश्चित्तं समृतः शुद्धेत् सर्वा एव मस्मिन्नुदकादीनि प्रेतकर्माणि कुर्युः एतदेव शांत्युदकं सर्वेषूपपातकेष्विति ॥ सत्त्वप्सु तं घटं प्राप्य प्रविश्य भवनं स्वकं सर्वाणि ज्ञातिकायां पितृणां पूर्वसमाचरेत् ६ सत्त्व तिस कृत प्रायश्चित्तः तं पूर्वोक्त घटं जलमध्ये क्षिप्त्वा ततः स्वकीय भवनं प्रविश्य यथा पूर्वं सर्वाणि ज्ञातिकायां कुर्यात् ॥ ६ ॥ एतमेव विधिकुर्यादयो पितृसु पतिता स्वपि वस्त्रान्नपानं देयं तु वसेयुश्च गृहांतिके ७ ॥ एतमिति स्त्रीष्वपि पतितासु एतमेव पतितस्योदकं कार्यमित्यादिविधिभर्त्रादिसापिंडसमानोदकवर्गः कुर्यात् ग्रासाच्छादनानि पुनराभ्योदयानि गृहसमोपेक्षासांवासार्यं कुटीर्द्वयः ॥ कारुणाः पतिता इति पतितगणनायां ज्ञेयम् ७ अकृत प्रायश्चित्तिना संवसतः कृत प्रायश्चित्तेना सहावसतो दोषमाह याज्ञवल्क्यः ॥ एनस्विभिर निर्णि कैर्नार्थकं चित् सहाचरेत् कृतनिर्णे जनांश्चैव न जुगुप्सेत कर्हि चित्

तिन के नांयो देने हि योग्य है । और उनके संबंधी अपने घर के समीप इनको निवास करणे वास्ते कुटिया बना दें और कौन सीयां पतिन हैं एह विचार पतिन की गिनती विषे जानने योग्य है इति ॥ ७ ॥ जिनेने प्रायश्चित्त नहि कीता तिन के साथ यो व्यवहार करण वाले हैं तिनको और जिनेने प्रायश्चित्त कीता है तिन के साथ जो व्यवहार नहि करदे तिनका दोष कहते हैं याज्ञवल्क्यजी एनस्विभिर निर्णि कैर्नार्थकं चित् सहाचरेत् प्रायश्चित्त जिनेने ऐसे पापीयों के साथ दान प्रतिग्रह आदिक अर्थ कुलभी न करे अर्थात् पापीको न दान देणा और न पापीत प्रतिग्रह ग्रहण करे इत्यादि और भी व्यवहार पापी के साथ कुल नहि करे और जिनेने अपनी शुद्धि वास्ते प्रायश्चित्त कीया हो तिनको कदाचित् भी पूर्वकृत पाप कर्क निदान न करे ॥ ९ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः० प्र० १५ ॥ टी० भा० ॥ १६१

किंतु पूर्वकी न्यायीं उसके साथ व्यवहार करे अर्थात् जिन पुरुषोंने पाप निवृत्ति वास्ते संबंधि योंके वाक्य कर्के अपनी जाति विषे भोजनादि व्यवहारके निमित्त प्रायश्चित्त कीयाहै तिनकों ऐसा निंदावाक्य कभी न कहे कि तुमने एह अमुक पाप कीताहै और जैसे आगे उनके साथ व्यवहार होताहो फेर भी तैसे हि कण्ठा योग्यहै ॥ ८ ॥ और कैयोंने प्रायश्चित्त कीता भी है तथापि तिनां साथ व्यवहार नहि करणा एह कहतेहैं वालघ्नानिति वालक मारणे वाला जो पुरुषहै और किसीके कृत उपकारको दुष्ट आचरण करणे कर्के जो पुरुष नाश करणे वाला और अपनी प्राण रक्षा वास्ते जो शरण को प्राप्त होवे तिसको जो मारण वालाहै और जो

एनस्वभिरिति पापकारिभिरकृतप्रायश्चित्तैः सह दानप्रतिग्रहादिकमर्थकिं चिन्नानुतिष्ठेत् कृतप्रायश्चित्तान्नैव कदाचिदपि पूर्वकृतपापत्वेन निंदेत् किंतु पूर्ववद्व्यवहेरत् ८ कृतप्रायश्चित्तिभिरपिकैश्चिन्नव्यवहार्यमित्याह स एव वालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च विशुद्धानपि धर्मतः शरणागतहं तद्वत्स्त्रीहं तद्वत्श्च न संवसेत् ९ वालघ्नानिति वालं योहतवान् कृतोपकारमपकाराचरणेन यो विनाशितवान् प्राणरक्षार्थमागतं योहतवान् स्त्रियंच यो व्यापादितवान् एतान् यथावत्कृत प्रायश्चित्तानपि संसर्गितया न परिवसेत् ९ चरितव्रतविधौ विशेषमाह मनुः उपवासकृतं तंतु गोब्रजात्पुनरागतं प्रणतं प्रतिपृच्छेयुः साम्यं सौम्येच्छसीति किं । १ । सत्यमुक्ता तु विप्रेषु विकरेद्यवसंगवाम् गोभिः प्रवर्तिते तीर्थे कुर्यस्तस्य परिग्रहम् २ केवलक्ष्मीराहारेणैतरभोजनव्यावृत्त्या कृशदेहं गोष्ठात्प्रत्यागतं प्रणतं न स्त्रीभूतं किमस्माभिः साम्यमिच्छसि पुनरसत्प्रतिग्रहं न करिष्यसीति एवं धर्मब्राह्मणाः परिपृच्छेयुः ॥

स्त्राके मारण वालाहै इनोंने विधि पूर्वक प्रायश्चित्त यद्यपि कीता भी होवे तदपि संसर्गि भाव कर्के इनके साथ न व्यवहार करे ॥ ९ ॥ प्रायश्चित्त कीतियां होयां फेर तिस विधि विषे मनु जीने विशेष किहाहै ॥ उपवासेति कि केवल दुग्ध पान करणे कर्के अतिरुश है शरीर जिस का और गोष्ठमें विधि पूर्वक निवास कर्के फेर आकर प्राप्त होयाहै और नमस्कार कर्के सन्मुख जो स्थितहै तिसको सभाके विद्वान् ऐसा कहे कि तुम असांके साथ साम्यताकी इच्छा करताहै और फेर दुष्ट प्रतिग्रह न करें गा इस प्रकार ब्राह्मण धर्मको पूछें ॥ १

१६२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १५ टी० भा०

और उह आगे ते ऐसा कहै कि मैसत्य कहताहुं फेर असत् प्रति ग्रहमें नहि करोंगा अर्थात् कुकर्मनाकरोंगा इस प्रकार ब्राह्मणोंके आगे प्रार्थना कर्के गौयांकों घास देवे ॥ और तिसके घासको गौयांके भक्षण कीतीयाहोयां सो पवित्र होजाताहै और इस प्रकार तिसके पवित्र होयांब्राह्मण तिसकोफेर व्यवहारविषे अंगीकार करलेवे २ असत्प्रतिग्रह इसजगा पापमात्रका उपलक्षणहै अर्थात् जिसने जैसा पाप कर्के प्रायश्चित्त कीताहै तैसे पापकेवास्ते निषेधवचन करावे एह अन्य प्रायश्चित्तका उपलक्षणहै और तैसेहि याज्ञवल्क्य जीने किहाहै घटे इति किघटकों किमीहृदते जलकेसाथ पूर्ण कवे फेर तिसघटके अपवर्जितकीतियाहोयां फेर कीयाहै प्रायश्चित्त जिसने सो अपने सपिडोंके मध्य विषे स्थितहांकर गौयांके तांयी घासदेवे

सत्यमेतत्पुनरसत् प्रतिग्रहं न करिष्यामीत्येवं ब्राह्मणेपूत्काघासंगवांदद्यात् तस्मिन् यवसंभक्ष्यमाणे गोभिः पवित्रीकृतत्वातीर्थीभूतब्राह्मणास्तस्य संव्यवहारे स्वीकारं कुर्युः २ एतच्च प्रायश्चित्तांतरोपलक्षणम् ॥ तथाच याज्ञवल्क्यः घटेपवर्जितज्ञातिमध्यस्थोयवसंगवाम् प्रदद्यात्प्रथमंगोभिः सत्कृतस्यहिसत्क्रिया १ अर्थः ॥ घटेपवर्जितेहृदादुद्धृत्यपूर्णकुंभेचनिनी तेऽसौचरितव्रतः सपिडादिमध्यस्थोगोभ्यो यवसंदद्यात् ताभिः प्रथमंसत्कृतस्यपूजितस्यपश्चाज्जात्यादिभिः सत्क्रियाकार्या गोभिश्चतस्यसत्कारस्तद्वत्तयवसंभक्षणमेव गावस्तद्वत्तमन्नंयवसंनगृह्णीयुः तर्हिपुनः प्रायश्चित्तमुपतिष्ठेन् यथाहहारीतः ॥ शिरसायवसमादायगोभ्योदद्याद्यदिताः प्रतिगृह्णीयुरथैनंप्रवर्तयेयुरिति इतरथानेत्यभिप्रेतम्इति श्रीमन्महाराज० साधारणसंसर्गिप्रा० १५

औरजेकर गौयां कर्के प्रथम उह सत्कारकों प्राप्तहोंवे अर्थात् गौयां उसकाघास ग्रहण कर लेवे तद फेर उसके संबंधियोंने भी उसका सत्कार करणा योग्यहै और जे कर तिस कर्के दीयाहोया घासगौयां न ग्रहण करें तद उह फेर प्रायश्चित्त करे १ सोयीहारीत जीने किहा है शिरसेति कि सिरके साथ घास उठा कर्के गौयांके तांयी देदेवे जेकर घासकों गौयां ग्रहण कर लेवे तद फेर संबंधि भी उसको व्यवहार विषे ग्रहण करें अन्यथा क्या जेकर घासकों गौयां न भक्षण करें तद उसके साथ कुछव्यवहारन करे एह अभिप्रायहै इति एह साधारण संसर्गका प्रायश्चित्त प्रकरण पूरा होया पंदरवां ॥ १५ ॥

सवैया ॥ प्रायश्चित्तीयहभापवनी सभपापिकिसं-
गममे विधगाई पंचदसीवुधमानवसी महाराजज-
मुपतआपजनाई पंडितविप्रदमोदरनेकरसाथनिधी
पतआनदखाई गंगकवीशविचारकरीशुधजानलई
पुनयंत्रछपाई ॥ १ ॥ दुष्टमहीधरमारनमैनितका
लकरालनकीधुनवाजैमित्रसमाजविकाशनमै जिन
केघरफूलनवारससाजै सज्जनमंजनकजनको यह
राजजमूपतकासुरराजै गंगकवीशसुधारनकोपुन
कल्पतरूकरुणासिधराजै ॥ २



१६४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र० १६ ॥ टी० भा० ० ॥

उत्तमः ॥ अब अपराक विषे संपूर्ण महापापके प्रायश्चित्त कहेहैं यद्यपि तिसतिस प्रकरणविषे पिछे कोई २ प्रायश्चित्त किहाभैहै तथापि सभ महापापोंके साधारण कहैके विवक्षा कर्के एह प्रकरण आरंभ कीताहै इसवास्ते पुनरुक्तिदोष नहि और तिस स्थानविषे विष्णुजीका वाक्यहै अश्वेति कि एहजो संपूर्ण महापातकीहैं ब्रह्महत्या करण वाला और सुरा पीणे वाला और सुवर्ण की चोरी करण वाला और गुरुकी स्त्री साथ गमन करण वाला और इनका संसर्ग एह अश्वमेध यज्ञ कर्के शुद्धिको प्राप्त होतेहैं अथवा पृथिवी ऊपर जितने तीर्थहैं तिनकी यात्रा कर्के पवित्र होतेहैं । १ । और इस स्थान विषे अश्वमेधरूप जो प्रायश्चित्त विधान कीताहै सो अग्नि होत्रीके वास्ते और जिसने प्रथम यज्ञ कीताहै उसके वास्ते विधान कीताहै किस वास्ते कि आधानादि जो कर्महैं सो ब्राह्मणोंको अवश्य करणे योग्यहै इस कारणते पापीकों भी करणे

उगणेशायनमः अथापरकैसर्वमहापापप्रायश्चित्तानि इमानितत्तत्प्रकरणे प्रोक्तान्यपि साधारणविवक्षया पुनः प्रोच्यन्तेऽतो न पुनरुक्तिर्विभाव्या ॥ तत्र विष्णुः ॥ अश्वमेधेन शुद्धयुर्महापातकिनस्त्वमे पृथिव्यां सर्वतीर्थानां तथानुसरणेन वा ॥ १ ॥ अश्वमेधादिक्रतुरूपं प्रायश्चित्तमाहिताग्निमिष्टप्रथमयज्ञं प्रतिविधीयत इति ॥ आधानाद्विजातिकर्मत्वेन पतितानामप्यनुष्ठेयत्वात् एवमर्धातवेदस्यैव संहितादिजपादिविधीयते ॥ अश्वमेधश्च राजक्रतुस्तेन यदिराजा कामतो गुणवन्तं ब्राह्मणं हंतितं तथैव पैष्टी सुरावापिवति गुणवतो ब्राह्मणस्य सुवर्णं वा पहरति कामत एव वा गुरुदारान् गच्छति तदा सौ प्राति महापातं कंयजेत् ॥ तत्र शंखः ॥ नित्यं त्रिपवणस्नार्या कृत्वा पर्णकुटीं नरः अधः शायी जटाधारी पर्णमूलफलाशनः ॥ १ ॥

योग्यहै इस हेतुते पिछे श्रौतस्मात्की हानि पतितोको कहिहै सो और स्थानविषे जान्नाणी ॥ और ऐसेहि जिस ब्राह्मणने वेद अध्ययन कीताहै उसको संहितका पाठ करण विधान कीताहै अश्वेति और इस स्थान विषे अश्वमेध कर्के राजक्रतुका ग्रहणहै जेकर राजा कामनाते गुणवान ब्राह्मणको मार देव और तैसेहि पैष्टी सुरा पान करे अथवा गुणवान ब्राह्मणका सुवर्ण हर लेव अथवा कामनाते गुरुकी स्त्री साथ गमन करे तद उह राजा एक २ महापातकके दूर करणे वास्ते तिस यज्ञ कर्के भिक्ष २ यजन करे ॥ और तिस विषे शंख जीने किहाहै निमित्येति कि नित्यं प्रति तीनकाल स्नान करण चाहिये वन विषे पचरां की कुटिया बना कर उसमें निवास करण और पृथिवी ऊपर शयन करण और शिरमें जटा धारण करणी और पचर फल मूल एह भक्षण करणे ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १३ टी० ॥ भा० १६५

और अपना पाप प्रकट करतियां होयां भिक्षा वास्ते ग्रामविषे प्रवेशकरणा और एक काल भोजन करणा इस प्रकार करतियां जद वारां १२ वर्ष व्यतीत होजावें ॥ २ ॥ तदइस व्रत कर्के स्वर्ण स्तेयी और महापातकी सभपवित्र होजातेहैं । ३ । और देवलजीने किहोहैं कि ब्राह्मण पवित्र तीर्थविषे विधिपूर्वक देह त्याग करणे ते महापातकते मुक्त होजाता है ॥ और क्षत्री धर्म युद्ध विषे अथवा गौब्राह्मणकी रक्षावास्ते अथवा ग्रामके नाशादिकों विषे तिसकी रक्षाके अर्थ शरीर त्याग ते पवित्र होजाताहै । अर्थात् महापातकी जो क्षत्रीहै सोध मंगुद्धादिकां विषे मरणेने शुद्ध होताहै ॥ और महापातक प्रसंग विषे शस्त्रोपजीवी पुरुषोंकी शुद्धि विषे च्यवन जीका वाक्यहै कि शस्त्रकर्के है उपजीविका जिसकी सो पुरुष जब महा

ग्रामविशेतुभिक्षार्थीस्वकर्मपरिकीर्तयन् एककालंसमश्नानोवर्षेचद्वादशे गते २ ॥ रुक्मस्तेर्यासुरापश्चब्रह्महागुरुतल्पगः व्रतेनानेनशुद्धयंतिमहापातकिनस्त्वमे॥३॥देवलः ॥ तीर्थेपुण्यतमेयथावद्देहसंन्याद्ब्राह्मणोमहापातकान्मुच्यतेधर्मयुद्धेगोगृहेग्रामघातादिपुत्राणत्यागात्पूयतेक्षत्रियः शस्त्रोपजीविनश्चमहापातकानुवृत्तौच्यवनः आसेतुदर्शनात्पूतोभवत्यश्वमेधावभृथस्नानात्पूतोभवतिउभयतःशिरसंप्रदायब्राह्मणेभ्यःपूतोभवति । उभयतः शिरसमुभयतोमुखीगाम् ॥ पराशरः ॥ चातुर्विद्यापसंपत्तौब्रह्महागुरुतल्पगः सेतुं पश्येत्समुद्रस्यप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् १ सेतुबंधतथा पश्येत्लंकामार्गमहोदधेः दशयोजनविस्तीर्णेशतयोजनमायतम् ॥ २ ॥

पातकी होजावे तद उह सेतुदर्शनपर्यंत तीर्थयात्राकर्के पवित्रहोताहै अथवा अश्वमेध यज्ञ विषे अवभृथस्नान करणेते पवित्र होताहै । अथवा उभयमुखी गौ ब्राह्मणके तीर्थदेणेत पवित्रहुंदाहै ॥ और पराशरजीका वाक्य है चातुरिति चार विद्याकी प्राप्ति होयां यो ब्राह्मणको हत करण वालाहै और गुरुस्त्रो गमन करण वाला है एह होर रहे जो त्रय महापापी तिसका भी बोधक है उसके वास्ते एह प्रायश्चित्त दिखायाहै ॥ किउह पुरुष अपने पाप नाश वास्तेसमुद्रका जो पुल है तिसका दर्शन करे॥१॥और तैसेहि समुद्रते जोलंका पुगीका मार्गहै सेतुबंध तिसका दर्शन करे । और कैसाहै सेतु दश१० योजन क्या चाली ४० कोश चांड़ाहै और सौ१०० योजन क्या चार सौ ४०० कोश लंबा है ॥२ ॥

रामेति और रामचंद्रजी की आज्ञाते महादेवकी स्तुति कर्के जो महादेव रामचंद्रजीने स्थापन कीताहै इसका एह अभिप्राय है कि प्रायश्चित्तको न करे तो सेतुका दर्शन करे ॥ १ ॥ और सोयी पद्म पुराण विषे लिखयाहै एवमिति कि इसप्रकार राम चंद्र कर्के स्तुतिको प्राप्तहुये महा देव भक्तिकर्के नम्र और सम्मुख स्थित जो राम चंद्रहै तिसको एहवाक्य कहते भये ॥ १ ॥ कि हे रघुनंदन एह जो तुमने मेरा स्थान बनायाहै इसस्थान विषे स्थित होकर और मेरा पूजन कर्के जो पुरुष समुद्रका दर्शनकरेंगे। सोजेकर महापातक कर्के भी युक्त होवें तदभी तिनका पा प नष्ट होजावेगा इसमे कुछ संशय नहिहै ॥ १ ॥ और आपस्तंबजीने किहाहै स्तयमिति कि गुणवान् ब्राह्मणका सुवर्ण चुरा कर्के और सुराका पान कर्के और गुरुकी स्त्रीसाथ गमन कर्के

रामभद्रसमादेशात्शिवस्तुत्वातुसंचितम्॥३॥ प्रायश्चित्तमकृत्वासेतुवंधप
श्येदित्यर्थः ॥ पद्मपुराणे । एवंवेस्तूयमानस्तुदेवेदेवोमहेश्वरः उवाचराघ
वंवाक्यंभक्तिनम्रंपुरंस्थितम् । १ ॥ स्वयाचेहकृतेस्थानेमदीयेरघुनंदनआरा
ध्यमानामारामपश्येयुरिहसागरम् ॥ २ ॥ महापातकयुक्तावैतेपांपापंवि
नक्षयति ॥ ३ ॥ आपस्तंबः ॥ स्तेयकृत्वासुरांपीत्वागुरुदारांश्चगत्वाब्रह्म
हत्यामकृत्वा चतुर्थकालमितभोजिनोपोभ्युपेयुः सवनानुकल्पं स्थानास
नाभ्यांविहरंत एतेत्रिभिर्वर्षैःपापंनुदंति ॥ पंचानांमहापातकानांमध्येब्रह्म
हत्यायानैतत्प्रायश्चित्तमिति वक्तुमुक्तंब्रह्महत्यामकृत्वेति । चतुर्थेभोजनका
लेमितंस्वलंपशरीररक्षणोपयोगिभोजनंयेषांचतुर्थकालमितभोजिनः ॥

अतृप्तिरन्नस्यव्रतयेषांचेतथाश्रपाऽभ्युपेयुः ॥

ब्रह्महत्याते विना चौथे कालविषे भोजन करना इत्यादि उक्तप्रायश्चित्त करतियां तीन वर्षकर्के पापको दूर करतेहैं । इसमे एह अभिप्रायहै कि ब्रह्महत्या वाला व्रतवर्षते अधिक व्रत कर्के शुद्ध होवेगा ॥ पंचाति और ब्रह्महत्या न कर्के एह प्रायश्चित्त करे । इसका एह अभिप्रायहै कि पांच महा पातकोंके मध्यविषे ब्रह्महत्याकाएह प्रायश्चित्त नहिहै एह कथन करणवास्ते ब्रह्महत्या अकृत्वा ऐसा लिखयाहै॥अब प्रायश्चित्तकी विधि दिखायीहै। कि चौथाजोभोजन कालहै उसका लविषे मितक्याथोडा भोजन करे कि जिस कर्के केवलप्राणमात्र रक्षाहोवे ऐसाभोजन करणार्थात् तृप्तिपूर्वक अन्न नखावे और अन्नकी तृप्तिनहोणी एहि तिनको व्रतहै ॥

॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १६ ॥ टी० भा० ॥ १६७

और पृथिवी ऊपर स्थित जो जलहैं तिनाविषें स्नानकरें परंतु सवनानुकल्पक्या प्रातःकाल म
ध्यान्हकाल सायं कालविषें और स्थान आसनइनकरें दिनमेंस्थितहोना और रात्रिविषें आस
न ऊपर सावधान होकर स्थितहोवें और विहरंतःक्या विहारकरें कि अपनी शक्ति के अनु
सार दिन २ विषें और किसी उत्तमस्थान विषें चलेजावें ऐसनियमकरतियां तीनवर्षकरें पा
पकानाश्चकरतेहैं और एह प्रायश्चित्त गुणवान् कर्ता कोनिगुण ब्राह्मणके सुवर्ण हरण विषें और
अज्ञान पूर्वक गोडीमाध्वीके एकवारी पानविषें और एह गुरु स्त्री है ऐसी प्रतीतिके नाहोयां
एक वारी गुरु स्त्रीगमन विषें जानणे योग्यहै ॥ और अंगिराजीने जोएह वज्राख्य व्रत किहाहै
युक्त इति कियुक्तक्या यत्नवाला होकर तीन काल स्नान करे और सभ इंद्रिय रोक करे मौ
न व्रत विषें स्थित होवे और प्रातः काल नदीमें स्नान करे और कुशाके आसन ऊपरस्थित

भूमिगत्वास्वप्सुस्नानमाचरेयुः सवनानुकल्पंप्रातर्मध्यंदिनेसायमिति स्था
नासनाभ्यांदिवास्थानंरात्रावासनेयुक्ताभवेयुः विरहंतोविहरेयुः यथाशक्त्य
हरहरन्यतमंदेशंगच्छेयुः एतद्गुणवतः कर्तुर्निर्गुणविप्रस्वर्णापहारंगौडीमा
ध्व्योश्चामतिपूर्वकेसकृत्पानेगुर्वङ्गनागमनप्रत्ययरहितेसकृद्गमनेचेवेदित
व्यम् ॥ यच्चांगिरसावज्राख्यव्रतमुक्तम् युक्तस्त्रिषवणस्नार्यासंयतोमौनमा
स्थितः प्रातःस्नात्वासमारंभंकुर्याज्जाप्यस्यानिश्चलः १ सावित्रींव्याहती
शैवजपेदंष्टसहस्रकृत् ओंकारमादितः कृत्वारूपेरूपेतथांततः २ भूमौवी
रासने युक्तः कुर्याज्जाप्यसुसंयतः तत्रासीनः कांस्यपात्रेपिवेद्व्यंपयः सकृत्
३ गव्यस्यपयसोलाभे गव्यमेवपिवेद्विधि दध्यभावेपिवेत्तक्रंतक्राभावेतुया
वकम् ॥ ४

होकर जपका आरंभकरे और फेर जपकर तियां आसनते न उठे ॥ १ ॥ और एकाग्रमन करे
व्याहृतिसहितगायत्रीका आठहजार ८००० जपकरे अथवा आठमे अधिक १००८ हजार
जपकरे और ऐसेविधि पूर्वकमंत्रका उच्चारणकरे कि आदि बिषे ओंकारका उच्चारण करे फेर
एक ॥ २ ॥ पद विषे फेर अंतविषे ओंकारका उच्चारण करेमंत्रः ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः
ओंतपः ओंसत्यं ओंतस्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमाहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओम् २ औरइसप्रकार
पृथिवी विषेवीरासनास्थितहोकर अथात् खलोकरसावधानतासे जपकरेजिसकरे अक्षरमात्रामंत्र
विषेभ्रष्टनहोवे और पीछे उसीआसनमें स्थितहोयां कांस्यकेपात्रविषे एकवारीगौकादूधपानकरे
॥ ३ ॥ और जेकरगौकादूधनप्राप्तहोवे तदगौकाहि दाधिपान करे और जेकर दाधिभी न मिले
तद गौ कीछाछ पीवे औरतक्रभीनमिले तद यावक वनाकर पान कर लेवे ॥ ४ ॥

१६८ ॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः प्र० १६ ॥ टी० भा०

और इतनी वस्तुमेसे जोमिले उसको पानकरे और गोमूत्रके साथ यवके आटेको मिलावे ५ एहजो यावकपानकरणाहै सोएकादिनकरके छूछहोजाताहै एह आंगिगजीने आप किहाहै और एहजो वज्रनामकरके ब्रतहै सोसंपूर्ण पापके नाशकरणवालाहै और बहुत श्रेष्ठहै ६ ए तदिति और एह ब्रत पातक योमहापातकांके तुल्यपतितनकरके युक्तजोहै और उपपातकयुक्तयोहैं और महापातक युक्तयोहैं तिनकोप्रायश्चित्तदखायाहै ७ और महापातक संयुक्तजोपुरुषहै सोतीन वर्षकरके शुद्धहोतेहैं औरपातकयुक्तजोहै तिनकोएकवर्षकाप्रयोगहै औरउपपातक युक्तको तीन महीनेका प्रयोग जान्ना ८ औरजावालकृषिकावाक्यहै अपहारेति किसुवर्णके चुरायाहोयां वर्षप्रमाण छूछकरके शुद्धहुंदाहै और तैसेहि गुरुस्त्री गमन कीतियां होयां और सुरापान की

एषामन्यतमं यत्तदुपपद्येत तत्पिवेत् गोमूत्रेण समायुक्तं यावकं वोपयोजयेत् ५ एकाहेनैव कृच्छ्रे यमुक्तस्त्वं गिरसा स्वयं ॥ सर्वपापहरो दिव्यानां भ्रातृवज्र इति स्मृतः ६ एतत्पातकयुक्तानामुपपातकिनां तथा महाद्भिश्चाभियुक्तानां प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ७ महापातकसंयुक्तावर्षैः शुद्ध्यति वैत्रिभिः ॥ इदमपि महापातकेष्वापस्तं वीयेन समानविषयं तुल्यप्रायश्चित्तेन ॥ पातकयुक्तेषु वार्षिकः प्रयोगः उपपातकेषु त्रैमासिकः ॥ जावालः अपहारे सुवर्णस्थ कृच्छ्राब्देन विशुद्ध्यति गुर्वगनागमे चैव सुरापाने तथैव च १ बहुधननिर्गुण हीनवर्णसुवर्णमल्पतरमापादिगुणवतोपहरतः ॥ गुरोश्च हीनवर्णामकामतः सकृदंगनां गच्छतः ॥ सुरां वामुख्यां सकृदमर्त्या पीत्वा छर्दितवतश्चेतत् ॥ यथा हांगिराः पट्भिर्वर्षैर्ब्रह्मचारी ब्रह्महापूयते नरः ॥ इति ब्राह्मणहननाय प्रवृत्तस्य केनचित्प्रकारेण परावृत्तस्यैतत्

तियां होयां जान्ना ॥ १ ॥ और एह प्रायश्चित्त उसकोहै कि जो विपदा विषे गुणवान् पुरुष बहुत धन जिनके पास और गुणहीनहै और हीनवर्ण तिस पुरुषना अतिथोडा सुवर्ण हरलेवे । और जो पुरुष हीनवर्णागुरुस्त्री साथ कामनाते विना एक वारी गमन करे ॥ और जो एकवारी अज्ञानते सुरापान करके फेर वमन कर देवे उसको जान्ना ॥ और तैसेहि अंगिरा जीने किहाहै पट्भिरिति कि ब्रह्महा पुरुष छे ६ वर्ष ब्रह्मचारी जेकर होवे तद पवित्र हुंदाहै और एह प्रायश्चित्त ब्राह्मणको मारण वास्ते प्रवृत्त होकर फेर किसी प्रकार से न मरे उसको जान्ना

श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्तभागः प्र० १६ ॥ टी० भा० ॥ १६९

और शक्तिवाले और अशक्तिवाले की व्यवस्था पूर्वकहि है तदभी प्रत्याम्नाय कर्के कहते हैं कि द्वादश वर्षका जो महाव्रत है १ तिसके स्थान विषे एकसौ अस्सी १८० प्राजापत्य कहें हैं २ अथवा एकसौ अस्सी २८० धेनुदान कहें हैं ३ अथवा तिसकामूलचाली ४० पुराण और पांचसौ ५० कार्षापणका दान एह चार कल्प क्या चार पक्ष जानने ॥ और (ननु) एहप्रश्न है कि एकसौ अस्सी गोदान इसस्थान विषे कैसहें (उत्तर) सोमुन कि जिसकारणते अंगिरा जीने ज्ञानतेविना ब्राह्मणकेवधविषे वारां १२ वर्ष व्यतीत होयां ब्राह्मण पवित्र होजाता है ऐसे कहकरके ज्ञानते इसते दूणा २४ वर्षकथन करणते योग्य होयां हजार १००० ब्राह्मणोंकेतापी १०००

अथ शक्ताशक्तव्रतव्यवस्था पूर्वोक्तापि प्रत्याम्नायेनोच्यते द्वादशवार्षिकं महाव्रतम् साशीतिशतंप्राजापत्यानि । साशीतिशतंपयस्विनीधेनुदानम् तन्मूल्यानि चत्वारिंशत्पुराणाधिकं पंचाशत्कार्षापणावा चत्वारः कल्पाः ननु साशीतिधेनुशतदानं कथमत्रेति चेत् यत्तौ गिरसाऽज्ञानकृते ब्रह्मवधे गते तु द्वादशवर्षे ब्रह्महापूयते नर इत्यभिधाय ज्ञानतौ द्वैगुण्येन तुर्विंशतिवार्षिकेव क्तव्ये गवांसहस्रं विधिवद्विभेभ्यः प्रतिपादयेत् ब्रह्महाविप्रमुच्येत सर्वपापेभ्य एव चेति गोसहस्रदानमुक्तम् तच्च तुर्विंशतिवार्षिकानुकल्पे सपष्टिपयस्विनीधेनुशतत्रयदानमूल्यस्य गोसहस्रदानमूल्येन तुल्यत्वाभिधानार्थमुते न धेनुमूल्यं सपाद कपर्दकत्रयाधिककाकिनीत्रयन्यूनपुराणत्रयम् गोमूल्यं तु किंचिदधिकं पुराणमेकम् अन्यथापयस्विनीधेनुमूल्यं यथाश्रुतं पुराणत्रयं गोमूल्यं चैकपणाधिकं पुराणं यदि स्यात्तदा वैषम्यं स्यात् ॥

गोप्रतिपादन करे कि देवे तद हेविप्र ब्रह्महा पुरुष संपूर्ण पापते मुक्त होता है ॥ इसस्थान विषे हजार गोदान किहा है सो चौबीस २४ वर्षके स्थान विषे तीन सौ साठ ३६० पयस्विनी गोंके मूल हजार गोदानके मूलके समान कहने वास्ते अर्थात् ३६० गोंका मूल हजार गोदानके मूलके समान किहा है और इसका अर्थात् १८० है ॥ और तिसकारणते गोंका मूल सवा दो की डी और तीन दमड़ी घट तीन पुराण होता है । और गोंका मूल यथार्थ कुछक अधिक एक पुराण किहा है और इसतेविना जेकर पयस्विनी धेनुका मुल्लवरावर तीन पुराण होवे और गोंका मूल एकपैसे ऊपर एक पुराण घट होवे तद विषमता होजावेगी ॥

१७० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १६ ॥ टी० भा० ॥

जिसकारणते तीनसौसाठ ३६० जो पयस्विनीधेनुका मूलहै सो एकहजार और अस्सी कार्षापण होजातेहैं और हजार गौका मूल एकहजार साठेवाट १०६२॥ कार्षापणहो जातेहैं सो इस तरां जानना कि १००० गौका १००० कार्षापण आया और १००० पणभी आयासो १६ पणका १ कार्षापणहै इसते १००० से १६ ॥ काभागदियातो आए६२॥ इसकारणते ३६० धेनुके मूल भी साठे सतरां १७॥ कार्षापणते अधिक होनेतें इनदोनो प्रकारमे विरोध आजाताहै इसकारणते शूलपाणीजी ने इन दोनो प्रकार विषे विषमताको विचार कर्के ऐसे व्यवस्था करीहै कि द्वादश वार्षिक महा

अतःसप्तपयस्विनीधेनुशतत्रयमूल्यंश्रीशतयुत्तरकार्षापणसहस्रंस्यात् गोसहस्रमूल्यंसार्द्धद्वयाधिकपष्टयुत्तरकार्षापणसहस्रंस्यात् अतःसप्तपिधेनुशतत्रयमूल्ये सार्द्धसप्तदशकार्षापणाधिक्यादिति शूलपाणिनाचानयोर्विषम्यमाकलय्यद्वादशवार्षिकमहाव्रते धेनुसंकलनेपयस्विनीधेनुमूल्यंकिं चिन्नयूनकार्षापणत्रयम् गोमूल्यंसप्तदशपणादितिलिखितम् तद्वन्निरणीय निरणीयकैःसुधीभिर्विभाव्यम् षोडशपणाश्चात्रकार्षापणःअस्यैवसंज्ञांतरं पुराणम् ॥ इतिश्रीमन्महासामान्यमहापातकप्रायश्चित्त प्रकरणषोडशकम् ॥ १६ ॥

व्रत विषे व्रतके स्थान पयस्विनी गौका मूल तीनकार्षापण कहेहैं ॥ और गौका मूल सतरापण क्या १७ पैसे होतेहैं ऐसा लिखाहै सो निर्णय कर्के निर्णय करण वाले पंडितलोक संभावना करलेवें और इसस्थान विषे सोला १६ पैसेका एक कार्षापण किहाहै और पुराणभी इसीका नामहै ॥ एह महाराजाधि राजा जम्बू काश्मीर तिब्बतादि अनेकदेशोंके अधिपति श्रीप्रभुवर रणवीरसिंहजी कर्के आज्ञातहोए सारस्वत पंडित वर देवीदत्तजीकेपुत्र कवि गंगा राम जीने आपवनाया होईभाषा विषे सभ महापतकोंका सांझा प्रायश्चित्त प्रकरण पूराहोआ ॥ १६ ॥ सोलमा शुभं भूयात्

सवैया ॥ प्रायश्चित्तो यह षोडशमोविध पांचमहाश्रधकीकृ-
तआई पंडितलोकविचारकरेनित भाषवनामनकीचतुराई
जम्मुमहोपतनेमुखपंकज आपरुपाकरकेसमुझाई ॥
गंगकवीकरशोधकरी पुनदेखधरीसभमैचित
लाई ॥ १ ॥



१७२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १७ ॥ टी० भा० ॥

उत्तमः अत्र ब्रह्म हत्याके समान जो अनु पातकहैं तिनका निरूपण करतेहैं तिस विषे मनु जीका वाक्यहै अनृतमिति कि एह संपूर्ण पाप ब्रह्म हत्याके समान जानने कथा अपनी जा तीकी बड़ा यी वास्ते झूठी बड़ायी कहनी जैसे कि आप तो ब्राह्मण नहिहै कोयी राजाकां जाकर कहदाहै मै ब्राह्मण हों । अथवा अन्य किसीके मार देणे वाला दोष झूठाहि राजाको कह देणा जैसे कि इसीने चोरी कीतीहै । इस कारणते राजगमी इस पदका दोनो के साथ संबंध होताहै ॥ और गुरुके आगे झूठी बात बना कर कहदेनी एह ब्रह्महत्याके बराबर है ॥ १ ॥ और गौत्तम जीने भी गुरुके आगे झूठ बोलना एह ब्रह्महत्याके समान कि हाहै ॥ और याज्ञवल्क्य जीने किहाहै गुरुणा मिति कि गुरुका निरादर करणा और

उंश्रीगणेशायनमः अथब्रह्महत्यादिसमानि।अनुपातकानि तत्रमनुःअनृतं चसमुत्कर्षैराजगामिचपैशुनम्।गुरोश्चालीकनिर्वधः। समानिब्रह्महत्यया १ एतानिब्रह्महत्यासमानिज्ञेयानिजात्युत्कर्षनिमित्तमनृतभाषणम् ॥ यथाअ ब्राह्मणः कश्चिद्राजनि ब्रवीतिब्राह्मणोहमिति ॥ वापरेषांस्तेयादीनांमरण फलकंदोषाभिधानम् ॥ राजगामीत्युभयतःसंबद्धम् गुरोश्चानृताभिर्शंस नम् ॥ गौत्तमेपि ॥ गुरोरनृताभिर्शंसनमिति ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गुरुणाम ध्यधिक्षेपोवेदनिन्दासुहृद्वधः ब्रह्महत्यासमंज्ञेयमधीतस्यचनाशनम् ॥ १ ॥ गुरुणामाधिक्येनाधिक्षेपः अनृताभिर्शंसनम् ॥ एतच्चलोकाविदितदोषाभि शंसनविषयम् । दोषंवुद्ध्वानपूर्वपरेषांसमारुयातास्यात्संव्यवहारेचैनंपरि हरेदित्यापस्तवस्मरणात् ॥ वेदनिन्दा ॥ वेदकुत्सनम् ॥ नास्तिक्याभिनि वेशेन ॥ असच्छास्त्रविनोदेनवा ॥ सुहन्मित्रतस्याब्राह्मणस्यापिवधः । आ लस्यादिनाअधीतवेदस्यनाशनम् विस्मरणम् ॥ एतानिप्रत्येकंब्रह्महत्या समानि ॥

वैदकी निन्दा करणी और किसे संबंधीको मार देणा एह संपूर्ण ब्रह्म हत्या समान जान ने और पढे होये वेदको भुला देणा १ एतदिनि एह लोकांकी अप्रासिद्ध जो दोषहै तिसका प्र कट करणा उस विषयमे जानना । किस वास्ते किसीका दोष जान कर्के भी और किसीको न कहै ॥ और व्यवहार विषे उस दोष युक्त पुरुषको त्याग देवे ऐ । आप स्तवजीका वाक्यहै तिसके स्मरणते । और नास्तिक मतको ग्रहण कर्के अथवा असत् शास्त्र पड कर्के वेदकी नि दा करणी ॥ और सुहृत् योहै मित्र तिसका ब्राह्मणका वा अब्राह्मणका मारणा एह अर्थहै और आलस कर्के पढे होये वेद को भुला देणा एह एक २ ब्रह्महत्याके समान जानने ।

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १७ ॥ टी ० भा० ॥ १७३

और ऐसा जो लिखा है कि पठित वेद और अग्नि और पुत्र इनका त्याग देना इस कर्के अधीत त्यागकी तो उपपातकमे गणना है इहां कैसे है (उत्तर) इस कारणते किसी प्रकार कुटुंबकी पालना करण विषे व्याकुलता कर्के अथवा शास्त्रके श्रवण विषे स्वचित्त होणे कर्के विस्मरण विषे उपपातक होता है ॥ और आलसते वेद पड कर्के भुला देना ब्रह्महत्याके समान है ॥ और प्रचेताजीने किहा है कि गौका वध करणा और गर्भ वाली स्त्रीका वध करणा और बालकका वध करणा एह भी सब ब्रह्महत्याके समान है ॥ इस जगा गौभी गर्भणी जानणी गोवधको उपपातक होणेत ॥ और गौतमजीने किहा है कि झूठा उगाती देणी और राजाके आगे किसी को मरवाणे वास्ते झूठबोलणा और चुगली करणी और गुरुके आगे मिथ्या वाक्य कहना एह भी सब ब्रह्महत्याके समान किहे है ॥ और प्रायश्चित्तन्दु शेखर ग्रंथ विषे लिखा है यह

यत्पुनः स्वाध्याग्निसुतत्यागइति अधीतत्यागस्योपपातकमध्येपरिगणनं तत्कथंचित्कुटुंबभरणकुलतया सच्छास्त्रश्रवणाव्यग्रतयावाविस्मरणेद्रष्टव्यम् ॥ प्रचेताः ॥ गौगर्भिणीबालवधो ब्रह्महत्यासमानि च ॥ गौतमः ॥ कुटसाक्षित्वं राजगामिपैशुन्यं गुरोरनृतं ॥ भिशंसनं ब्रह्महत्यासमानि च ॥ प्रायश्चित्तन्दु शेखरं यागस्थनृपवैश्यवधः १ शरणागतवधः २ रजस्वलागर्भिण्यत्रिगोत्रस्त्रीणां वधः ३ अविज्ञातगर्भरयसुहृदश्च वधः ४ गुरुविषयमिथ्या भिशंसनक्रोधात्पादनमधिक्षयोऽसकृन्मत्स्यालीकानिर्वधश्च ५ राजगामिपैशुन्यमृद्ध गुरौ महाद्वेषः ७ नारितकथोद्वेदानिंदा ८ कुशास्त्राध्ययनेन वितं डा वादेन चार्धातवेदानां नाशनम् ९ इति भेदाः ॥

विषे स्थित जो राजा है और वैश्य है तिसका वध करणा १ और शरणको जो पुरुष प्राप्त होवे उसका वध करणा २ और रजस्वलाका और गर्भ वाली स्त्री का और अविगोत्र विषे उत्पन्न जो स्त्री है इनका वध करणा ३ और जो गर्भ नहि जानया कि किसका है अथवा अज्ञेय तीत नहि हुंदा तिसका और किसी अपने सुहृदका वध करणा ४ और गुरुके विषय विषे मिथ्या दोष कहना और गुरुको किसी कारणते क्रोध उत्पन्न करणा और किसी कारणते गुरुका अनादर करणा और जान कर्के बारं बार गुरुके आगे झूठ बात बनावना कर कहनी ५ ॥ और राजाके पास जाकर किसी की झूठी चुगली करणी ६ और गुरु विषे अतिवैर करणा ७ और नास्तिक भाव होनते वेदनिंदा करणी ८ और खोटा शास्त्र पडने कर्के अथवा वितं डा वाद कर्के अधीत वेदका नाश करणा ९ इस प्रकार नव ९ भेद हैं ॥

१७४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥

और ब्रह्महत्या व्रतका अतिदेश दो प्रकारका है ॥ एक तो ब्रह्महत्या स्वरूप प्रति पादन कर्के और दूसरा ब्रह्महत्याके समान प्रति पादन कर्के और जो पाप ब्रह्महत्या रूप हैं उन विषे ब्रह्महत्या व्रत पादोन किहा है ॥ और ब्रह्महत्या समान विषे ब्रह्महत्याका आधा व्रत जानना ॥ तिस भेदके दिखाणे का एह फल है ॥ और तैसेहि याज्ञवल्क्य जीने किहा है यागेति कि यज्ञ विषे स्थित जो क्षत्री है अथवा यज्ञ स्थित वैश्य है तिनको मारण वाला ब्रह्महत्या व्रत करे । इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं कि दीक्षणीया विधिते आदिलेकर उदवसनीया विधि पर्यंत सोमयज्ञके प्रयोग विषे व्रत मान जो क्षत्री वैश्य हैं तिनको जो पुरुष मार देवे सो पुरुष ब्रह्महत्या विषे जो व्रत करणा उपदेश कीया है सोयी द्वादश वार्षिकादि व्रत करे तद पवित्र ताको प्राप्त होता है ॥ और तै

ब्रह्महत्याव्रतातिदेशविषयो द्विविधः तद्रूपताप्रतिपादनेन सादृश्यप्रतिपादनेन वा ॥ तत्राद्यविषये ब्रह्महव्रतं पादोनम् द्वितीयविषये त्वर्द्धम् ॥ तथा च याज्ञवल्क्यः ॥ यागस्थक्षत्रविद्व्यातीचरे ब्रह्महणि व्रतम् गर्भहाचयथा वर्णतथा त्रेयीनिपूदकः १ दीक्षणीयाद्युदवसनीयापर्यन्ते सोमयागप्रयोगे वर्तमानौ क्षत्रियवैश्यौ व्यापादयत्यसौ ब्रह्महणि पुरुषेय ब्रह्महत्याव्रतमुद्दिष्टं द्वादशवर्षिकदितच्चरेत् ॥ यद्यपि यागशब्दः सामान्यवचनस्तथाप्यत्र सोमयागमभिधत्ते ॥ सवनगतौ च राजन्यवैश्याविति वशिष्ठेन सवनत्रयसंपाद्यस्य सोमयागस्यैव विनिर्दिष्टत्वात् ॥ अत्र च गुरुलघुभूतानां द्वादशवर्षिकादि ब्रह्महत्याव्रतानां जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षया प्रागुक्तव्यवस्थावोदितव्या ॥ एवं गर्भवधादिष्वपि मरणांतिकं नूतिदिश्यते व्रतग्रहणात् ॥

सेहि गर्भ घाती और आत्रेयके मारणेवाला भी ब्रह्महत्या व्रतकरणे कर्के शुद्ध होता है । १॥ और यद्यपि यागशब्द सामान्य यज्ञका वाचक है तद भी इसस्थान विषे सोमयागहि किहा है ॥ किस वास्ते कि वशिष्ठ जीने भी जिसस्थान विषे यज्ञगत क्षत्री वैश्यके मारणका प्रायश्चित्त किहा है उसस्थान विषे यागशब्द कर्के सोमयज्ञकाहि ग्रहण किहा है इसकारणते ॥ और इसस्थान विषे भी गुरु लघु भूत जो द्वादश वार्षिकादि ब्रह्महत्या व्रत हैं तिनकी व्यवस्था जाति शक्ति गुण इनके अनुसार जैसे पूर्व कही है तैसेहि जानने योग्य है ॥ और इस प्रकार गर्भादि वध विषे भी मरणांतिक प्रायश्चित्त अतिदेश नहि है किसवास्ते कि गर्भादि वध विषे व्रत ग्रहण करणते ।

॥ श्रीरणवीरं कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥ १७५

और इस कारणते कामनाते यज्ञस्थित क्षत्री वैश्यके वध विषे दूणाहि व्रत करणा किहाहै। सो संपूर्ण व्रत करणा योग्यहै ॥ पूर्वयोरिति और पूर्व वर्णयोहैं ब्राह्मण और क्षत्री तिनो विज्ञोवेदाध्ययन वालेको मार कर्के ऐसा प्रसंग ल्या कर्के आपस्तंब जीने तिसका प्रायश्चित्त द्वादश वार्षिकहि किहाहै इस कारणते। इसमै स्मृति वचनहै गर्भमिति और जिस विषे प्राण नहि हुं ये ऐसे गर्भको नाश कर्के यथा वर्ण कथा जिस वर्णके पुरुषके वध विषे जो प्रायश्चित्त किहा है उस वर्णके गर्भके वध विषे भी ओहि प्रायश्चित्त करे ॥ और एह प्रायश्चित्त नहि जान या स्त्री पुरुष नपुंसकका चिन्ह जिसका तिस गर्भ के वध विषयहै किसवास्ते कि मनुजीने अज्ञात गर्भके मारण विषे विशेष दिखायाहै ॥ इस कारणते तिसविषे मनुजीकावाक्यहै हत्वे

अतः कामतोयागस्थक्षत्रियादिवधेव्रतस्यैवद्वैगुण्यम् ॥ तच्चव्रतंसंपूर्णमेव कर्तव्यम् पूर्वयोर्वर्णयोर्वेदाध्यायिनंहत्वेतिप्रक्रम्यापस्तंबेनद्वादशवार्षिकविधानात् (गर्भचविनासुसंभूतंहत्वा यथावर्णं) यद्वर्णपुरुषवधेयत्प्रायश्चित्तमुक्तंतद्वर्णगर्भवधेतच्चरेत् एतच्चानुपजातस्त्रीपुत्रपुंसकव्यंजनगर्भविषयम् हत्वागर्भमविज्ञातमितिमानवेविशेषदर्शनात् तथाचमनुः॥ हत्वागर्भमविज्ञातमेतदेवव्रतंचरेत् राजन्यवैश्यावीजानावात्रेयीमेवचस्त्रियम् ॥ १ ॥ यद्यपिब्राह्मणगर्भस्यब्राह्मणत्वादिवतद्वधनिमित्तव्रतप्राप्तिस्तथापि स्त्रीत्वस्यापिसंभवात् ॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधइत्युपपातकत्वेनतत्प्रायश्चित्तप्राप्तिरपिस्यादतः स्त्रीपुंनपुंसकत्वेनाविज्ञानेपि ब्राह्मणगर्भत्वमात्रप्रयुक्तं ब्रह्महत्याव्रतंकुर्यादित्यर्थवदतिदेशवचनम् ॥

ति कि अविज्ञात गर्भको मार कर्के एहि व्रतकरे ॥ और क्षत्री वैश्य इनके वीर्यका जो गर्भ है और अत्रिगोत्रकी स्त्रीको मार कर्के भी ब्रह्महत्या व्रतकरे ॥ १ ॥ इस विषे यद्यपि ब्राह्मणके गर्भ को ब्राह्मण होनेतें तिसके वध निमित्त ब्रह्महत्या व्रतकी प्राप्ति होतीहै तथापि स्त्री भाव का भी इस जगा संभव होणेतें और स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्री इनके वधविषे उपपातक भावकर्के उपपातक प्रायश्चित्तकी भी प्राप्तिहोतीहै ॥ इस कारणते स्त्री नपुंसकादित्वके अज्ञात गर्भविषे ब्राह्मण गर्भ मात्रका प्रयोगहै ॥ इस वास्ते इनके वधविषे ब्रह्महत्या व्रतकरे इस अर्थ वाला अति देश वचनहै ॥

१७६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः० प्र० १७ ॥ टी०भा० ॥

जेकर जन्मके होयांस्त्रीनपुंसका दिविशेष ज्ञानविषे जैसा होवेतैसाहि प्रायश्चित्त भी जानना ॥ और आत्रेयीके वधकरणवालाभी जिसवर्णकी आत्रेयीहोवे उसवर्णके वधके अनुसारव्रतकरे और आत्रेयीशब्दकर्के ऋतुवाली स्त्री कहीहै सोयी लिखयाहै ऋतुस्नानस्त्रीको आत्रेयीकहतेहै क्योंकि तिसकी संतान होतीहै ॥ सोयीवासि पृज्जिने किहाहै कि जो स्त्री रजस्वला होकर ऋतुस्नानकरे उसको आत्रेयी कहतेहैं ऐसे जिस दिनर जका दर्शनहोवे उसदिनते आदि लेकर सोला १६ रात्रि पर्यंत ओहस्त्री आत्रेयी होतीहै ऐसा निश्चय कीयाहै ॥ और इस आत्रेयी विषे संतान हो ताहै एह जो व्युत्पत्तिदिखायीहै सोबंध्याके निषेध वास्तेहै बंध्यास्त्री ऋतुस्नाताभीहै परंतुआत्रेयी नहि होती ॥ अन्येति और जेकर ऐसा न होवे तद अनर्थकहोजावेगा ऐसा कैयोंकामतहै और

उपजातेतु स्त्रीपुंसादिविशेषव्यंजनेयथायथमेवप्रायश्चित्तम् । यश्चात्रिध्या निपूदकोव्यापादकःसोपितथाव्रतंचरेत् हन्यमानात्रेयीवर्णानिरूपव्रतंचरेदित्यर्थःआत्रेयीशब्देनर्तुमतीत्युच्यते । रजस्वलामृतुस्नातामात्रेयीमाहुरब्रह्मेतदपत्यंभवतीतिवसिष्ठस्मरणात् अत्ररजस्वलामृतुस्नातामात्रेयीमाहुरितिवदब्रजेदर्शनप्रभृतिषोडशाहोरात्राणियावदात्रेयीभवतीतिगमयति अत्रहेतुतदपत्यंभवतीतिव्युत्पत्तिप्रदर्शनबंध्याव्युदासार्थम् अन्यथानर्थकस्यादितिकेचित् व्युत्पत्तिमात्रएवैतदित्यपरे ॥ यमस्तु जन्मप्रभृतिसंस्कारैः संस्कृता मंत्रवच्चया गर्भिणीत्वथवायास्यात्तामात्रेयीविदुर्बुधाः१ अत्रिगोत्रजाचअत्रिगोत्रांवा नारीमिति विष्णुः ॥ एतन्महाव्रतंब्राह्मणत्वाद्द्वादशवत्सरान्कुर्यात् यागस्थंक्षत्रियंवैश्यंगर्भिणीचरजस्वलाम् अत्रिगोत्रांनारीवामित्रं वा अनेनचात्रिगोत्रैवात्रेयीत्युक्तंभवति

और नोंकामतव्युत्पत्तिमात्रभीहै अर्थात् उसशब्दकाइकअर्थहै कीताहोआ कोईकिंस बंध्याआदिकानिषेधनहि । और यमजीका वाक्यहै जन्मेति स्त्रीजन्मते । कि जो आदिलेकर मंत्र संस्कारों कर्के संस्कारको प्राप्तहोयीहै मंत्रकी न्यायी अथवा जोस्त्री गर्भवतीहै तिसको बुद्धिमान पुरुष आत्रेयीकहतेहैं अथवा अत्रिगोत्रविषे जोउत्पन्न स्त्रीहै तिसका भीआत्रेयीकहतेहैं १ और विष्णुजीने भीकिहाहै कि एहजोमहा व्रतहै सो ब्राह्मण भावहांनेते द्वादश १२ वर्ष हि करें और यज्ञविषे जोक्षत्रीवैश्यहैं और गर्भवती जोस्त्रीहैं और रजस्वला स्त्री और अत्रिगोत्रकीजोस्त्रीहैं और अपना मित्र इस कर्के इसस्थानविषे अत्रिगोत्र विषे उत्पन्न स्त्रीकानाम आत्रेयी हातौहै

॥ श्रीरण्वारकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० १७ ॥ टी० भा० १७७

और ब्राह्मणके गर्भ वध विषे और ब्राह्मणी आत्रेयीके वधविषे ब्रह्महत्याव्रतहि किहाहै ॥ और क्षत्रके गर्भ मारण विषे और क्षत्रिया आत्रेयीके वधविषे क्षत्रिहत्याका व्रत करणा किहाहै और इसीप्रकार और स्थान विषेभी जानना ॥ जैसे वैश्यगर्भ और वैश्याणी आत्रेयी शूद्रगर्भ और शूद्री आत्रेयीके वध विषे इनकोहत्याका प्रायश्चित्तहै । और चशब्दते साक्षी भावविषे झूठवचनादिक विषेभी इसी प्रकार पूर्वकिहा जो व्रत तिसकी न्याईहै अर्थात् जिस वर्णकी उगाहीमे झूठ बोलेजो उसी वर्णकी हत्याका प्रायश्चित्तहै तिसको कर । और मनुजीने किहाहै उक्तेति कि साक्षी भावमे झूठ बोल कर्के और गरुको क्रोध उत्पन्नकरा कर्के ॥ और तैसेहि किसीकी अमानत अपहरण कर्के अथवा स्त्री वध कर्के और किसी संबंधीका वध कर्के ब्रह्महत्या व्रत करे ॥ १ ॥ और एह जो प्रायश्चित्तहै जिस स्थान विषे व्यवहार विषे साक्षिमे झूठे वचन कर्के

ब्राह्मणगर्भवधे ब्राह्मण्यात्रेयीवधे च ब्रह्महत्याव्रतमाक्षत्रगर्भवधे क्षत्रियात्रेयी वधे च क्षत्रहत्याव्रतमेव मन्यत्रापीति चशब्दात्साक्ष्ये अनृतवचनादिष्वपि यथाहमनुः । उक्तवाचैवानृतं साक्ष्ये प्रतिरभ्यगुरुंतथा अपहृत्यच निःक्षेपं कृत्वा च स्त्रीसुहृद्वधम् १ पूर्वोक्तव्रतंचरेदिति संबंधः । यत्र साक्ष्यव्यवहारे असत्यवचनेन वर्णिनां वधप्राप्तिस्तद्विषयमेतत्प्रायश्चित्तस्यातिगुरुत्वात् प्रतिरंभः क्रोधावेशः । निःक्षेपश्च ब्राह्मणसंबंधी । स्त्रीचाहिताग्निभार्या पतिव्रतत्वादिगुणयुक्ता च्यते सवनस्था च यथाहांगिराः । आहिताग्नेर्द्विजाभ्यस्य हत्वा पत्नीमनिदिताम् ब्रह्महत्याव्रतं कुर्यादात्रेयींचतथैव च १ पराशरस्त्वन्यविशेषमाह सक्मस्थां स्त्रियं हत्वा ब्रह्महत्याव्रतंचरेदिति याज्ञवल्क्यः । चरेद्भूतमहत्वापि घातार्थं चेत्समाहितः अहत्वापि यथावर्णं ब्रह्महत्याव्रतंचरेदिति १

ब्राह्मणादि वर्णोंको वधकी प्राप्ति होजावे उस स्थान विषे जानना अति बड़ा होनेतें ॥ और इस स्थान विषे अमानत ब्राह्मण संबंधी ग्रहण करणो ॥ और स्त्री शब्द कर्के अग्नि होत्री ब्राह्मणकी स्त्रीका ग्रहण करणा । अथवा पति व्रतादि गुणयुक्त स्त्रीका ग्रहण किहाहै । अथवा यज्ञ विषे जेकर स्थित होवे उसका ग्रहणहै । और तैसेहि अगिराजीने किहाहै आहितेति अग्नि होत्री उत्तम ब्राह्मणकी पतिव्रता स्त्रीको मार कर्के और तैसेहि आत्रेयीको मार कर्के ब्रह्महत्या व्रत करे ॥ १ ॥ और पराशरजीने और विशेष किहाहै सवनंति कि यज्ञ विषे स्थित स्त्रीको मार कर्के ब्रह्महत्या व्रत करे सोयो याज्ञवल्क्यजीने किहाहै चरेति कि जो पुरुष मारण वास्ते उद्यत होवे और किसी कारणतें नहि मारे और जिस प्रकार जिसवर्णके मारणकी उद्यत होवे तदभी ब्रह्महत्या व्रत करे इति ॥ १ ॥

१७८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥

और इस विषे एह अभिप्रायहै जेकर ब्राह्मण वधविषे उद्यत होकरकिसी बिघ्नवशतें नहिमारता कुछशास्त्र विचारतें नत्यागकरे तदभी ब्रह्महत्या व्रत करणे योग्यहै । नचंति और ऐसानहिहै कि वधकरणवाले को भी और जो वध नहि करे उसको भी एकहि प्रायश्चित्त योग्यहै ॥ इस कारणकें जो ना वधकरे उसको पादोन व्रत कल्पना करणे योग्यहै ॥ और इसप्रकार क्षत्रियादि वधविषे भीजान्ना ॥ और तैसेहि गौतमजीका वाक्यहै कि ब्राह्मणके वधविषे सृष्टःकया उद्योगकरे तद एहि ब्रह्महत्याव्रतकरे एहअर्थहै ॥ और भीहै कि सोमयज्ञ विषे स्थित जो ब्राह्मणहै अर्थतु सोमयाग विषे करीहै दोषा जिसने तिस ब्राह्मणके वध विषे ब्रह्महत्या व्रत टूणाकरणा योग्यहै

यदिब्राह्मणवधेप्रवृत्तोविप्रविघ्नवशान्नहन्ति नतु शास्त्रवलात्तदापि ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तंचरेत् । नचवधंकृतवतोऽकृतवतश्चैकमेवव्रतंयुक्तं तेनाघ्नतःपादोनंकल्प्यम् । एवंक्षत्रियादिवधेपि । तथाचगौतमः । सृष्टश्चेद्ब्राह्मणवधे एतदेव ब्रह्महव्रतमेवेत्यर्थः ॥ किंचद्विगुणंसवनस्थेचब्राह्मणेव्रतमादिशेत् सोमयागायकृतदीक्षस्य ब्राह्मणस्यवधेब्रह्महत्याव्रतंद्विगुणंसमाचरेत् । एवंचतद्वधेप्रवृत्तस्याघ्नतोवापिद्विगुणमेवपादोनम् ॥ एवतावद्भगवतायाज्ञवल्क्योक्तानि कानिचिद्भूतान्युक्तानि ॥ अन्यान्यपिकानिचिन्मयूखे तत्रजमदग्निः ॥ यद्वावाराणसीगच्छेत्सत्रंश्रीपर्वतादिकम् अन्यान्यपिचतीर्थानिगायत्रीमभ्यसेत्तदा १ प्राणायामशतं कुर्यात्प्रत्यहंनियतः शुचिः एवदेवव्रतंस्तेनःपदान्पुनंसमाचरेदिति २ पूर्वब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणेप्रसंगतः किंचित्समप्रायश्चित्तमप्युक्तमधुनाऽनुपातकसाकल्याभिप्रायेणपुनरुक्तमतः पुनरुक्तिर्नोद्भावनीया ॥ इतिब्रह्महत्यासमप्रायश्चित्तानि ॥ ❀

और इसी प्रकार जो उसके मारणका उद्यम करे औरकिसी बिघ्नवशतें नमारे तदभी टूणापादोन करणा चाहिये इसप्रकार भगवान् याज्ञवल्क्य जीने कुछक व्रत कहे हैं और भी कै व्रत मयूख विषे लिखेहैं तिस विषे जमदग्नि ऋषि कहतेहैं अथवा काशीको चलाजावे अथवा श्रीपर्वतको जावे अथवा संपूर्ण तीर्थयात्राकरे अथवा गायत्री जपका अभ्यासकरे । १। अथवा नित्यं प्रति पवित्र होकरके १०० सौ प्राणायाम करे । और स्वणका चौरभी इसी व्रतको प.दान करे ॥ २ ॥ और पूर्वब्रह्महत्या प्रकरणविषे ब्रह्महत्या समानप्रायश्चित्त कहेहैं तदभी अवश्रनुपात क साकल्यक अभि प्रायश्चित्त फेर कहेहैं इसवास्ते पुनरुक्ति दोष नहि भावना करणा इति ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥ १७९

ओंमः अब सुरापान के समान पापोंका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषेमनुजीका वाक्यहै ब्रह्मे
ति कि ब्राह्मण पढे हांये वेदको अभ्यासतें विना आलस कर्के भुला देवे १ और निदित शा
स्त्रके सुनने कर्के वेद की निंदा करणी कि वेद अच्छा नहि है और म्लेछोंका मत श्रेष्ठहै २
और साक्षिभाव विषे झूठबोलना ३ और ब्राह्मणते भिक्षु जो अपना मित्रहै तिसका वध करणा
४ और निषिद्ध जो लशुनादिहैं जो नहि भक्षण करणे योग्य तिनको भक्षण करणा ५ और
अनाद्य जो विष्टादि है जिनके स्पर्शते अपवित्रता होती है उनको भक्षण करणाएहछे ६
काम सुरा पानके समान कहेहैं । १ । और मेधा तिथि नेभी अनाद्यका ऐसा अर्थ कीयाहै कि
जिस पदार्थ विषे प्रथम एह संकल्प होजावे कि एह खाने योग्यनहिहै फेरउसपदार्थ को

अथसुरापानसमप्रायश्चित्तम् । तत्रमनुः । ब्रह्मोज्झतावेदनिंदाकौटसाक्ष्यं सु
हृद्वधः । गर्हितानाद्ययोजर्गधिः सुरापानसमानिषट् १ ब्रह्मणोधीतवेदस्या
नभ्यासेनविस्मरणम् असच्छास्त्रश्रवणेनवेदकुत्सनम् । साक्ष्येष्टपाभिधानं
मित्रस्याब्राह्मणस्यवधः । निषिद्धस्यलशुनादेर्भक्षणम् । अनाद्यस्यपुरीषादे
रदनम् मेधातिथिस्तु । नभोक्ष्यतइतिसंकल्पयद्भुज्यते तदनाद्यमित्याचष्टे
एतानिमनुनासुरापानसमान्यभिहितानि । याज्ञवल्क्यः ॥ निषिद्धभक्षणंजै
हम्यमुक्तैश्चवचोन्तम् रजस्वलामुखास्वादः सुरापानसमानितु १ निषिद्धं
लशुनादिकंतस्यमतिपूर्वभक्षणं अतएवमनुः । छत्राकंविड्वराहंचलशुनं ग्रा
मकुक्कुटम् । पलांडुगृजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेन्नरइति ॥ १ ॥ अमतिपूर्वेतुप्राय
श्चित्तान्तरम् अमत्येतानिपट्जग्ध्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥

भक्षण करलेना उसका नाम अनाद्यकिहाहै एह मनुजीने सुरापान केसमानकहेहैं । और
याज्ञवल्क्यजीने किहाहै निषिद्धेति कि निषिद्धजोलशुनादिहैं तिनको अभक्ष्य जान कर्के फेर
भक्षण करणा और सभके साथ कुटिलता करणीअपनीवडियायी वास्ते झूठ बोलना और
रजस्वला का उठ चुंबन करणा एहसभ सुरापानके समान होतेहैं १ और इसी कारणते मनु
जीने किहाहै छत्रेति किच्छत्राक १ और विष्टाभक्षण वाला शूकर २ और लशुन ३ ग्राम
कुक्कुट ४ पलांडु वण गंडा ५ गाजर ३ इनको जानकर भक्षण कर्के पुरुष पातित हो
जाताहै ॥ १ ॥ और अज्ञानते भक्षण विषे और प्रायश्चित्त किहाहै अमत्येति एह जो पूर्व ६
अभक्ष्य कहेहैं इनको भक्षण कर्के अपनीशादिवास्ते सांतपनकरूब्रतकरे

१८० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ०१७ टी भा ० ॥

अथवायति चांद्रायण व्रतकरे और अव शेषजो अभोज्यान्नादि उसके भक्षणविषे एकदिन उपवास करे ऐसे मनुजाके वाक्यते॥जैह्म्य शब्दकर्के कुटिलताका ग्रहणहै॥अथवा और किसीके संबंध कर्के और किसी साथ वृथा बैर करणा॥अथवा और कुछ करणा॥यद्यपि इसस्थान विषे जैह्म्य एह शब्द सामान्यता कर्के किहाहै तथापि प्रायश्चित्तके गुरु भावते जिस पापके निमित्त प्रायश्चित्त किहाहै उसकी भी गुरुता प्रतीत हुंदीहै सो जो जैह्म्यका प्रायश्चित्त गुरु देखयाहै उस कर्के एह जैह्म्यभी ऐसा जानना कि जिस कर्के किसेका प्राण वियोग होवे एह विचार सब जगाहै कि नैमित्तिककी आविश्यते निमित्तकी भी अधिकता प्रतीत हुंदीहै । जैसे यस्येति

यतिचांद्रायणवापिशेषेषूपवसेदहरितितेनैवोक्तत्वात् जैह्म्यंकौटिल्यम्
अन्याभिसंधानेनान्यवादित्वमन्यकर्तृत्वं च अत्रजैह्म्यमिति यद्यपिसा
मान्पेनोक्तं ॥ तथापिप्रायश्चित्तस्यगुरुत्वान्निमित्तस्यापि गौरवम
वगम्यते ॥ अस्तित्वनैमित्तपठ्यालोचनयानिमित्तस्यविशेषावगतिः ॥
यथायस्योभावग्रीअनुगतौस्यातामभिनिम्लोचेद्वापुनराधेयं तत्रप्रायश्चि
त्तिरित्यत्रोभावित्यस्यानिमित्तविशेषणत्वेनहविषोरुभयत्ववदविवक्षितत्वे
प्यग्निद्वयानिष्पादकपुनराधेयरूपे नैमित्तिकविधिवलादग्निद्वयानुगतिरेव
निमित्तमितिकल्प्यते ॥ तथात्रापीतियुक्तंनिमित्तगौरवकल्पनम्॥तथासमु
त्कर्षनिमित्तं राजकुलादावचतुर्वेदएवचतुर्वेदोहमित्यनृतभाषणम् ॥ रजस्व
लायामकामवशेनवक्रासवसेवनमेतानियाज्ञवल्क्योक्तानिसुरापानसमानि
॥ असत्यभाषणरजस्वलामुखास्वादाभ्यांसहमानवायानिषडष्टौभवंति ॥

इस जगा उभो एह निमित्तका विशेषणहै इसते नैमित्तिक यो हवनहै उसमैभो इस विशेषण का संबंधहै ऐसी कल्पना करादीहै॥तथेति तैसेहि इसस्थान निमित्तके गौरवकी कल्पना करणी योग्यहै और अपनी बडियापी वास्ते राजाके समीप इसने चार वेद नहिपडे मैने चार प डेहैं इस प्रकार झूठ वचन कहना॥और रजस्वलाका अर काम वशते ओष्ट चुंबन करणा एह संख्यो याज्ञवल्क्यजीने सुरापानके समान कहेहै ॥और इस प्रकार इनकी संख्या असत्य भाषण १ और रजस्वला के मुखका स्वाद लेना २ दोएह छे ६ जो मनुजीने कहेहैं सो ऐसे आठ ८ होजातेहैं

श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः० प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥ १८१.

और ज्ञानते २४ चौबीस वर्ष । और अज्ञानते तिसरे आधा १२ वर्ष ॥ ऐसे जेकर न होवे तद १८० धेनु दान करणा किहाहै । आर धेनुके अभावविषे ५४० कार्पापण देवे ॥ और तिसकी दक्षिणाभी १०० सोर्गदेणा । और तिरुके अभाव विषे १०० कार्पापण । और कार्पापणादि संज्ञा पूर्व कहाहै । और मिता क्षरा विषे देवल जीका वाक्यहै मृतामिति कि पहिली स्त्रीके जीवत मृत होयी जो दूसरी स्त्रीहै तिसको अग्नि होत्रकी अग्नि कर्के दग्ध करताहै सोभी सुरापानके समान किहाहै ॥ १ ॥ ॐ अव सुवर्णकी चोरीके समान पाप का प्रायश्चित्त कहनेहैं तिस विषे मनु जीका वाक्यहै निःक्षेपेति कि ब्राह्मणके सुवर्णते भिन्न किसीकी अमानत हरलेनी और तैसेहि मनुष्य घोडा रजत पृथिवी हीरा मणियां इनको

अज्ञानतो २४ वार्षिकमज्ञानतस्तदद्धम् १२तदभावे १८० धेनवःतदभावे ५४० कार्पापणाः । तदक्षिणाशतंगावः तदभावे १०० कार्पापणाः कार्पापणादिसंज्ञातूकापूर्वम् ॥ किंचमिताक्षरायां देवलः ॥ मृतां द्वितीयां यो भाग्यदिहे द्वैतानिकाग्निभिः जीवन्त्यां प्रथमायां तु सुरापानसमं हितत् १ अथ सुवर्णस्तेयसमप्रायश्चित्तम् ॥ तत्र मनुः निःक्षेपस्यापहरणं नराश्वरजतस्य च भूमिवज्रमणीनां च रुक्मस्तेयसमं स्मृतम् १ अस्यार्थः ब्राह्मणसुवर्णव्यतिरिक्त निःक्षेपस्य हरणम् ॥ तथा मनुष्यतुरगरूप्यभूमिहीरकमणीनां हरणं सुवर्णस्तेयतुल्यम् ॥ तथा च याज्ञवल्क्यः अश्वरत्नमनुष्यस्त्रीभूधनुहरणं तथा निःक्षेपस्य च सर्वे हि सुवर्णस्तेयसंमितम् १ अस्यार्थः अश्वादीनां ब्राह्मणसंबन्धिनां निःक्षेपस्य च सुवर्णव्यतिरिक्तस्यापहरणम् मनुष्यः पुरुषः स्त्री पुरुषीमनुष्यसाहचर्यात् । गोवलीवर्दन्यायेन पौनरुक्त्यपरिहारः । धर्नुनवप्रसूतागौः

हर लेना एह संपूर्ण सुवर्ण चोरीके समान किहाहै । १। और तैसेहि याज्ञवल्क्य जीने किहाहै अथ्वेति कि ब्राह्मण संबंधी जो अश्वहै क्या घोडा और रत्न पुरुष स्त्री पृथिवी गौ और अमानत इनकी चोरी सुवर्णही चोरीके समान होतीहै १ और इस स्थान विषे मनुष्य कर्के पुरुष और स्त्री इन दोनों का ज्ञान हो जानाहै फेर स्त्री शब्द किस वामने कहनाथा ॥ इस शब्द का की निवृत्ति वास्ते मनुष्य की साहचर्यताने गोवलीवर्दे न्यायनेहै जैसे (ग्रामानय) बली वर्दच इस जगा गौ कहने कर्के दोनों का ग्रहणया पीछे बली वर्द कहणने गा शब्द गवीका हि वाचक रिहा तैसे हि इस स्थान विषे पुनरुक्ति दोष नहि होता । और धेनु नवीन प्रसूता गौका नामहै ॥

१८२ ॥ श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र ० १७ टी० भा०

और इसी कारणते विष्णुजीने किहाहै कि ब्राह्मणकी पृथिवी खोसलेनी अर किसीकी विश्वास ते धरी होगी अमानत नहि देणी इह सुवर्ण स्तेयके समानहै और प्रायश्चित्तेन्दुशेखर विषे लि पाहे विप्रसंबंधेति एह ब्राह्मण संबधी घांटा हीरकादि रत्न पृथ्वी पुरुष स्त्री गौ अमानत इन का हरलेना पर दश मासे तोलते उरे इहभी सुवर्ण चोरिके समान होताहै अर एह जो सातव स्तुहै इन सबका हरलेना इह ब्राह्मणका अस्सी ८० रत्नी सुवर्ण चुरालेना तिसके समान क हेहें इस विषे भी ज्ञानते वारां १२ वर्षका व्रत अर अज्ञानते छे ६ वर्षका व्रत करणा योग्य है अर जेकर इतना व्रत न होसके तद इसके स्थान विषे १८० एकसौ अस्सी गोदान करणा अर जेकर गोदानभी न होसके तद पांचसौ चाली ५४० कार्पापण दान देणा तद इह पाप दूरहोताहै इति और इनकी दक्षिणा सौ १०० गौ और इसमे सामर्थ्य न होवेतां सौ १००

अतएवाह विष्णुः ब्राह्मणस्यभूमिहरणंनिक्षेपहरणंचसुवर्णस्तेयसमम् ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे विप्रसंबन्धश्चरत्नमनुष्यस्त्रीभूमिधेनुहरणंनिक्षेपह णंच अर्वाक्सुवर्णमानादितिस्वर्णस्तेयसमम् । एतानिसप्तब्राह्मणस्वामि काऽशीतिरक्तिकापरिमितसुवर्णस्तेयसमानि । अत्रज्ञानतोद्वादशवार्षिक व्रतमज्ञानतस्तदर्थं तदभावेऽशीत्यधिकैकशतधेनवःतदभावे ५४० चत्वारिंशदधिकपंचशतंकार्पापणाःतदक्षिणाशतंगावःतदभावे १०० शतंकार्पा पणाः० अथगुरुतल्पगसमप्रायश्चित्तम् तत्रमनुः । रेतःसेकःस्वयोनीपुकु मारीप्वंत्यजासुच सख्युःपुत्रस्यचस्त्रीपुगुरुतल्पसमंविदुरिति । अस्यार्थः सोदर्यभगिनीचडालीसखिपुत्रभार्यासुरेतःसेक स्तं गुरुभार्यागमनस मानमाहुः एतेषामेदेनसमीकरणयद्येनसमीकरणंतस्यतेनप्रायश्चित्तार्थम्

कार्पापण देणा अर्थात् सौ १०० रुपैयाहि देणा ॥ अथ गुरुस्त्री गमनके समान प्रायश्चि त्त कहतेहैं तिस विषे मनुजीका वाक्यहै रतइति कि अपनी सक्की भगिनी अर चांडाली अर अपने मित्रकी जो स्त्रीहै अर अपने पुत्रकी जो स्त्रीहै अर जिसका विवाह नहि होयाऐ सी जो कुमारी कन्याहै इन विषे जो वीर्यका त्यागहै अर्थात् इनके साथ जो मैथुनहै ति सका भी गुरुस्त्री गमनके समान बुद्धिपान् कहतेहैं क्याकि इन साथ गमन करण वालेको गुरुस्त्री गमनके बराबर प्रायश्चित्त होताहै १ और इह जो इनके भेद कर्के समीकरणहै सो जि सका जिसके साथ समीकरण क्या तुल्यता होजावे तिसको तिसकेहि प्रायश्चित्तके तुल्यता वासोहै अर्थात् जो पाप जिसके समान कहाहै उस पाप विषे उसी पापका प्रायश्चित्तभी करणा योग्यहै

॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥ १८३

और कूटसाक्षीअर संबंधीका वध एह दोनो सुरापान के समानकीयेहैं अर इन विषे प्रायश्चित्त ब्रह्महत्या का आगे कहेंगे सो विकल्पके वास्ते कहाहै और जा फिर गुरुके आगे झूठ वात बनाकर कहणी तिसको भी ब्रह्महत्या के समान कीयाहै अर इस विषे उपरते ब्रह्महत्याका हि प्रायश्चित्त दिखायाहै ॥ इह इस अभिप्राय वास्तेहै किसमान कियेजो पापहैं तिनका कुछ न्यून प्रायश्चित्त होनाहै ॥ इसके प्रकट करण वास्तेहै जैसे कि संसार विषे राजाके समान मंत्री है इस वाक्यते मंत्रीको राजाके तुल्य कोंइ नहि जानदा किंतु न्यूनहि जाणदाहैं राजा तुल्य कहणेने उसको प्रशंसाहै ॥ और याज्ञवल्क्य जीने भी गुरुतल्पग समान कहेहैं सखीति कि सखायो अपना मित्रहैं तिसकी स्त्री १ अर उत्तम वर्ण की जो कन्याहै २ और स्वयोनि क्या एक उदरतेहै जन्म जिसका ऐसी जो अपनी भगिनीहै ३ अर अत्यजा जो चांडालीहै ४ अर सगोत्रजाक्या समान गोत्रकी स्त्री अर्थात् जिसगोत्रका पुरुष होवे उसगोत्रकी जो स्त्रीहै

यत्कौटसाक्ष्यसुहृद्बन्धयोः सुरापानसमीकरणं ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तंवक्ष्यति तद्विकल्पार्थं यत्पुनर्गुरोरलीकनिर्वधस्यब्रह्महत्यासमीकृतस्यपुनरुपरिष्ठाद् ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तनिर्देशनंतत् समीकृतानां न्यूनप्रायश्चित्तंभवेतीतिज्ञापनार्थतथाच लोके राजसमः सचिवइत्यत्रसचिवस्यन्यूनतैवगम्यते याज्ञवल्क्यः॥सखिभार्याकुमारोपुस्वयोनिष्वत्यजासुच सगोत्रासुसुतस्त्रीषुगुरुतल्पसमंस्मृतम् १ सखामित्रंतस्यभार्या १ कुमार्युत्तमजातोया कन्यका सकामास्वनुलोमासुनदोपस्त्वन्यथादमः दूषणेतुकरच्छेदउत्तमायांवधस्तथेति तत्रैवदंडविशेषकथनात् प्रायश्चित्तगुरुत्वंयुक्तम् स्वयोनिर्भगिनी अत्यजाचांडालीसगोत्रासमानगोत्रा सुतस्त्रीस्नुपा एतासांगमनं प्रत्येकंगुरुतल्पसमम् ॥

५ अर अपने पुत्रकी जो स्त्रीहै ६ इनकाजोगमनहै सो एक १ गुरु स्त्री गमन के समान होताहै इस में कुछ विशेष कहतेहैं सेनि मित्रकी स्त्री अर उत्तम जाति की कन्या इह जेकरका मना कर्क युक्त होवें अथवा अनु लोमजातीहोवें तद इनके गमन विषे ऐसा दोष नहिहै अन्यथा क्या ऐसा जेकरन होवे तद राजाने उसको दंड देणा कहाहैं सांई लिखाहै दूषणिति कि उत्तम वर्णकी स्त्री विषे हाथ कर्के दूषण कीतियां होयां उनके हाथ काट देने और जे रक्त संभोग करे तद वध करणा अर्थात् पुरुष आपनो होनजातहो अर उत्तम जातीकी स्त्री को बलते मथुनादि कर्के अटकर देवे उसको राजाने ऐसा दंड देणा चाहिये कि पहिले उसके हाथ काट कर्के पीछे वध करणा इसकारणने इस स्थान विषे विशेष दंड कथन करणने प्रायश्चित्त का बहुत होना योग्यहै ॥

१८४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र० १७ ॥ टी० भा० ० ॥

अरएहप्रायश्चित्तवीर्यत्यागने उपरंतजानने योग्यहै अरबीर्यत्यागनेविना गमनकीनिवृत्तविषे गु
रुस्त्रीगमनके समान नहिहोता किंतुथोडाप्रायश्चित्त होताहै किसवास्ते किमनुजीनेपूर्वश्लोकवि
षे वीर्य त्याग इह विशेषकर्के प्रतिपादन कीआहै उसकारणते संगोत्रेति संगोत्राग्रहण कर्के हि
निद्वयोयां फरजापुत्रकी स्त्रीकाग्रहणहै सोभी प्रायश्चित्तकी गौरवताके प्रतिपादनवास्तेहैं अर्था
त्पुत्रस्त्रीके गमन विषे पाप अधिकहै और इसविषे एहभी विचार करणा किब्रह्महत्यादिकर्के
समान जो गुरुका अपमानादिहै सोभी तिसब्रह्महत्याके निमित्त प्रायश्चित्तके उपदेशवास्तेजा
बणा औरभी लिखाहै पितृगति किअपनेपिताकी भगिनी १ और माताकीभगनी २ और
मामेकीस्त्री ३ पुत्रकीस्त्री माताकी ४ सपत्नी ५ अपनीभगनी ६ आचार्यकीकन्या ७ आचा

एतच्चरेतःसेकादूर्ध्ववेदितव्यम् अर्वाङ्निवृत्तौतुनगुरुतल्पेनसमत्वम् किं
त्वल्पमेवप्रायश्चित्तम् मनुनापूर्वश्लोकेरेतःसेक इतिविशेषणोपादानात्
संगोत्राग्रहणेनैवसिद्धपुनः सतस्त्रीग्रहणंप्रायश्चित्तगौरवप्रतिपादनार्थम्
ब्रह्महत्यादिसमत्ववचनं गुर्वधिक्षेपादेस्तन्निमित्त प्रायश्चित्तोपदेशार्थम्
अन्यच्चपितुःस्वसारंमातुश्चमातुलानींस्नुपामापिमातुःसपत्नीभगिनीमाचा
र्यतनयांतथा १ आचार्यपत्नस्विसुतांगच्छेच्चगुरुतल्पगःलिंगंछित्वाव
धस्तस्यसकामायाःस्त्रियस्तथा २ पितृभगिन्यादीनामन्यतमांगच्छन् गुरु
तल्पगंभवतितस्यब्राह्मणव्यातिरिक्तस्यालिंगंतावच्छित्वापश्चाद्वधःकार्यो
राज्ञाउत्कटकामायाःस्त्रियोप्येपदंडः राजदंडेनापिपापक्षयस्मरणात् तथा
चवसिष्ठःराजभिर्धृतदंडाश्चकृत्वापापानिमानवाः निर्म्मलाःस्वर्गमायांति
संतःसुकृतिनोयंथति १ वधादन्यत्रापिराजदंडानंतरं स्वल्पंप्रायश्चित्तंप्र
कल्प्यमित्यपिवोध्यम्

र्यकीस्त्री ८ अपनीकन्या ९ इनके साथजोपुरुष गमनकरताहै सोगुरुतल्पगकिहाहै अर्थात्
इनके मध्याविषे किसी एकसाथ गमनकरणे कर्के गुरुतल्पग होनाहै इसवास्ते राजाने ब्राह्मण
तेभिन्नातिसगुरुतल्पगका प्रथमलिंगछेदनकर्के पीछेवधकण्णायोग्यहै और जिसस्त्रीकोकामचे
प्रायहृतहैं उसकोभी एहिदंडदेनाकिहाहै किसवास्ते किराजाके दंडकर्के भीपाप क्षयहोजा
त है इत्यादिस्मरणते २ औरतमेंहि वसिष्ठजीने कहाहैं राजभिराज कि जोपुरुष पापोंकोकर
के किराजाके दंडकोधारण करतेहैं सोपापते मुक्तहूये स्वर्ग कोप्राप्त होतेहै किजैसशुभकर्मक
रणवाके स्वर्गकोजानेहैं १ और वधतेविना और जगभिराजदंडा अनंतर स्वल्प प्रायश्चित्त
कल्पना करणे योग्यहै ऐसोभी जानना

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १७ टा० ॥ भा० १८५

श्रीर नारद जीका वाक्यहै मातेति कि माता १ माता की भगिनी २ अपनी स्त्रीकी माता ३ मासी ४ पिताकी भगिनी ५ पिताके भ्राताकी स्त्री ६ मित्रकी स्त्री ७ अपने शिष्यकी स्त्री ८ अपने पुत्रकी स्त्री ९ अपनी भगिनी १० भगिनी की सखी ११ अपनी कन्या १२ आचार्य की स्त्री १३ अपने गौत्रकी स्त्री १४ शरणको जो प्राप्त होयी होवे १५ और राजा की स्त्री १६ साधनी १७ अपनी दासी १८ पतिव्रता १९ अपनेते उत्तमवर्णकी स्त्री २० इन के मध्यमें किसीके साथ गमनकरे तदभी उह पुरुषगुरुतल्पग कहोदाहै ३ इसविषे मिताक्षरामें लिखयाहै कि(प्रण)ननुवेदनिंदादिके विषे दोषको अल्पहोनेते तिसविषे अतिबहुत ब्रह्महत्यादि प्रायश्चित्त नहियांग्य (उचर) ऐसेनहिहै क्योंकि गुरुप्रायश्चित्तके उपदेशवलते दोषमेंभीगुरु

नारदः । मातामातृष्वसाश्वश्रूर्मातुलानीपितृष्वसा पितृव्यसखिशिष्यस्त्री
भगिनीतत्सखीस्तुया १ दुहिताचार्यभार्याचसगोत्राशरणागता राज्ञीप्रव्र
जिताधात्रीसाध्वीवर्णोत्तमापिच २ आसामन्यतमंगच्छन्गुरुतल्पगउच्य
ते ३ अत्रमिताक्षरा ननुवेदनिंदादौदोषस्यलघुत्वाद्गुरुतरंब्रह्महत्यादिप्राय
श्चित्तनयुज्यते नैवम् गुरुप्रायश्चित्तापदेशवलादेव दोषगुरुत्वमवगम्यते
नच नब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तातिदेशार्थमेवेदंवचनंभवति॥किंतु दोषगौरव
मात्रप्रतिपादनपरमित्याशंकनीयम् ॥ यतस्तावन्मात्रप्रतिपादनपरत्वेव
ब्रह्महत्यासममिदं गुरुतल्पसममित्यादिभेदेन समत्वाभिधानंनोपपद्यते ॥
तच्च प्रायश्चित्तं समशब्देनोपदिश्यमानं ब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तेभ्यः किंचि
न्न्यूनमवोपदिश्यते लोके राजसमोमंत्रीत्यादिवक्त्रेषु समशब्दस्य किं
चिद्धीनेप्रयोगदर्शनात् महतः पातकस्येतरस्यचतुल्यत्वस्यायुक्तत्वात् ॥

भावजानयाजांदाहै (प्रण) इहवचन केवल ब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तके अतिदेश वारते नहि
है किंतु दोषकी गौरवतामात्रपरहै (उचर) ऐसे गंक्रानहि करणे योग्यहै कि जिसकार
णते दोषकी गौरवतामात्र प्रतिपादनपरभावके होयां २ ब्रह्महत्यासमानहि एहहै ॥ और गुरुत
ल्पसमानहै इत्यादि भेदकरकेतमानभाव नहि प्राप्तहोता और इसकारणने समानशब्द करके
जोप्रायश्चित्त विधानकीयाहै ॥ सो ब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तोंते किंचित् न्यून विधानकरेदाहै क्योंकि
लोकविषेभी राजाके समानमंत्रोहै इत्यादि वाक्यों विषे समानशब्दका कुलक होनविषे हिप्रयो
गदेखनेते और बडे पातकको अल्पपातकके तुल्य होना योग्य नहिहै इसकारणने ॥

१८६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥

अर ऐसेहोंयां २ याज्ञवल्क्यजीने ब्रह्महत्याके समानभावकरकेजोकहेहै ब्रह्मजिह्मादि तिनकोहि मनुजीने सुरापानसम कहाहै इहभो प्रायश्चित्तके विकल्प वास्तेजानना अर ऐसे हि और और वचनों विषे भी विरहिआ परिहारकरणा ॥ और जो वाशिष्ठजीने ऐसे कहाहै कि गुरुकेसाथ वृथा बैरकरण विषेवांग १२ रात्रीका रुच्छू करके फिर सचैलस्नान करे अर गुरुकी प्रसन्नतरते पवि त्र होताहै इह लघुप्रायश्चित्तकहाहै ॥ सोभी अज्ञानते एक वारीकरणे विषेजाननेयोग्यहै ॥ और अन्यग्रंथविषे अठायो २८ गुरुतल्पगसमानसहित प्रायश्चित्तकहेहैं सोयी जैसे लिखे है कि अपने सापडस्त्रीगमनविषे क्या सातपाडोके उरे किसीकीस्त्री साथगमनकरणा १ अर ब्राह्मणकी कन्या गमनविषे २ और चंडालादि स्त्रीगमनविषे ३ ज्ञानते महापातकके प्रकारकरके मरणहि उसका

एवंचसतियाज्ञवल्क्येन ब्रह्महत्यासमत्वेनोक्तानामपि ब्रह्मजिह्मवेदनिंदा सुहृदधानांमनुनायत्सुरापानसाम्यम् ब्रह्मोज्झतावेदनिंदाकौटसाक्ष्यं सु हृदधः ॥ गर्हिनान्नाद्ययोजर्गग्निः सुरापानसमानिषडित्युक्तं । तत्प्रायश्चित्त विकल्पार्थं ॥ एवमन्येष्वपिवचनेषुविरोधः परिहर्तव्यः ॥ यत्तुवासिष्टेन गुरोरलीकनिर्वधेकच्छूद्वादशरात्रंचरित्वासचैलस्नातोभवतीतिलघु प्रायश्चित्तमित्युक्तम् ॥ तदमतिपूर्वसकृदनुष्ठानेवेदितव्यम् ग्रंथान्तरेऽष्टाविंशतिका निगुरुतल्पसमानिसप्रायश्चित्तानि तानियथासपिंडस्त्रीगमने १ ब्राह्मण कुमारीगमने २ चंडालादिस्त्रीगमने ३ ज्ञानतोमहापातकोक्तप्रकारेणमरणम् । तद्वैकल्पिकं चतुर्विंशतिवार्षिकंवातदभावेऽशीत्यधिकैकसहस्रकार्पापणाः तदक्षिणाद्विशतेगावः तदभावेद्विशतेकार्पापणाः । सवर्णायां स्त्रियां असवर्णायांपुत्रस्त्रियां औरसेतरभार्यायांगमने चतुर्विंशति २४ ॥ वार्षिकं अज्ञानतोद्वादश १२ वार्षिकं ॥

प्रायश्चित्त कहाहै अर्थात् उनके साथगमनकीतियां होयां महापातकी होताहै इसकारणते प्राणां ताहि उसका प्रायश्चित्तहै अथवा इसके स्थान चौबीस २४ वर्षका व्रत धारण करणा । अर जेकर ऐसा न हो सके तद एक हजार अस्ती १०८० कार्पापण देवे अर तिसकी दक्षिणा दोसौ २०० गौदेणी अर तिसके अभाव विषे दोसौ २०० कार्पापण देणे कहेहै और अपनी वर्णकी जो मित्रकी स्त्रीहै तिस विषे अर असवर्ण पुत्रकी स्त्रीविषे और जो पुत्रवनाहै अर्थात् जो औरस नहिहै उसकी स्त्री विषे गमन कीतियां ज्ञानते चौबीस २४ वर्ष अर अज्ञानते वारां १२ वर्ष व्रत धारण करणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० १८७

अरतिसके अभावविषे एकसौअरसौ १८० धेनुदेणी अरतिसके भी अभावमें पांचसौ चाली स ५४० कार्पापणदेणे अर दाक्षिणा १०० सौगौदेणी अरतिसके अभावमें १०० कार्पापणदे णाचाहिण (४।५।६) अर माताकी भगिणी ७ पिताकी भगिनी ८ हीनवणापिताकी स्त्री ९ पांचपु रुषते अधिक गामिनी जो इहहै इनके साथ गमन कितियां होआं चांद्रायण करणा कहाहै इ सके अभावमें आठ ८ धेनुदेणी अर तिनके अभावविषे २२ कार्पापण अर दक्षिणा दो २ गौदेणी तिसके अभावविषे २ दो कार्पापण कहेहैं ॥ और पिताके आताकी स्त्री १० अर मा ताके पिताकी स्त्री ११ अर माताके आताकी स्त्री १२ सातपुरुषगामिनी जो इहहैं इनके साथ व्यभिचार करके एकवारी गमन कीतियां पगकवत करणा कहाहै अर जेकर आठ ८ पुरुषगा मिनी होवें तद तप्तकच्छु करणा कहाहै अर जेकरे ऐसान होसके तद पांच ५ धेनुदान करणा योग्यहै अर जेकर धेनु का भी अभाव होवे तद गौका मूल पंदरह १५ कार्पापण देणे कहाहै अर अपनी शक्ति

तदभावे १८० धेनवः तदभावे ५४० कार्पापणाः तद्वक्षिणाशतंगवः तदभावे १०० कार्पापणा (४।५।६) मातृत्वमृपितृत्वमृहीनव णापितृपत्नीनां ९ पंचपुरुषाधिकगामिनीनामासांगमने चांद्रायणं तदभा वेऽष्टौ ८ धेनवः तदभावे १२ कार्पापणाः तद्वक्षिणा २ गावौ तदभा वे २ कार्पापणौ ॥ पितृव्यपत्नी १० मातामहपत्नी ११ मातुलपत्नीनां १२ व्यभिचारित्वेन सप्तमपुरुषगामिनीनां सकृद्गमने पराकः अष्टमादि पुरुषगामिनीनां गमने तु तप्तकच्छुम् तदभावे पंचधेनवः तदभावे १५ कार्पापणाः तद्वक्षिणा यथाशक्ति श्वश्रू १३ स्वसृ १४ ज्येष्ठभ्रातृपत्नी १५ राजपत्नी १६ श्रोत्रियपत्नी १७ ऋत्विक् पत्नी १८ गमनेऽज्ञानादारोहणमात्रे संवधविप्रकर्षे वा पराक स्तप्तकच्छो वा तदभावे चतुर्थेनवः तदभावे ११ कार्पापणाः यथाशक्ति दक्षिणा १ उपाध्यायपत्नी १९ शिष्यपत्नी २० स्वसृसखी २१ अर्वाणां स्वस्त्री जातदुहित २२ गमने ज्ञानतो महापातकोक्तप्रकारेण मरणम् ॥

के अनुसार तिसकी दक्षिणा देणी ऐसे प्रयाश्चित्त करके शुद्धि होतीहै और अपनी स्त्रीकी माता १३ अपनी भगिनी १४ बड़े आताकी स्त्री १५ राजाकी स्त्री १६ आचार्यकी स्त्री १७ ऋत्विज की स्त्री १८ इनके साथ गमन कीतियां क्याकि अज्ञानतें इनके ऊपर आरोहण मात्र विषे अथवा संवधके विप्रकर्ष विषे अर्थात् थोड़े संवध विषे पराक व्रत अथवा तप्त कच्छु करके पवि त्रता कहीहै। अर जेकर व्रत करणेकी सामर्थ्य न होवे तद व्रतके स्थानमें चार ४ धेनु दान क रणा अर धेनुके भी अभावमें एकादश ११ कार्पापण देणे योग्यहै अर अपनी शक्ति अनुसार दक्षिणा देणी और उपाध्यायकी स्त्री १९ और शिष्यकी स्त्री २० अर भगिनीकी सखी २१ हीनवण स्त्रीविषे उत्पन्न जो कन्याहै २२ ज्ञानतें इनके साथ गमन कीतियां महापातक प्रकरण विषे जो प्रकार कहाहै उस प्रकार करके प्राण त्यागकरणा कहाहै ॥

१८८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० ११ ॥ टी ० भा ० ॥

अर तिसके बिकल्प विषे चत्तीस २४ वार्षिक व्रत जानना अर तिसके अभावविषे तीन सौ साठ ३६० गौदान करणा ॥ अर तिसके भीअभावविषे एकसौ अस्सी १८० कार्पापण ॥ अर इनके अभाव में सुवर्णादिदेणे अर तिनकी दक्षिणा २०० गौ अर गौके अभाव विषे २०० कार्पापण देणे योग्यहै ॥ और आचार्यकी स्त्रा २६ अर शरणको जो प्राप्तहोयीहो २४ अज्ञान ते उनकागमन कीतियां द्वादश १२ वर्ष काव्रत करणा कहाहै ॥ अर तिनके अभाव विषे एकसौ अस्सी १८० गौदान करणे योग्यहै अरगोके अभाव विषे पांचसौ चालि ५४० कार्पापण दान करणा कहाहै । अथवा उनके मूलका सुवर्णादिदेणा योग्यहै ॥ अरतिसकी दक्षिणासौ १०० गौदेणी अर तिसके अभावमे एकसौ १०० कार्पापण देणा ॥ और संन्यासनी जोस्त्री हैं २५ अर अपनीउपमाता २६ अर पतिव्रता २७ इह पांच पुरुषते अधिक गमन करणे वा

तद्वैकल्पिकं २४ वार्षिकव्रतंतदभावे ३६० धेनवःतदभावे १८० कार्पापणाः तल्लभ्यस्वर्णादिवातदक्षिणा २०० गावःतदभावे २०० कार्पापणाः ॥ आचर्यपत्नी २३ शरणागतागमने २४ अज्ञा १२ वार्षिकमृतदभावे १८० धेनवः तदभावे ५४० कार्पापणाः तल्लभ्यसुवर्णादिवातदक्षिणा १०० गावः तदभावे १०० कार्पापणाः प्रव्रजिता २५ धात्री २६ साध्वीनां २७ पंचपुरुषाधिकगामिनीनामासांगमनेचान्द्रायणम् तदभावेऽष्टौ धेनवः । तदभाव २२ कार्पापणः । यथाशक्तिदक्षिणा । सप्तमपुरुषगामिनीनिक्षिप्तान्तमसांगमने २८ पराकः तदभावे ५ धेनवस्तदभावे १५ कार्पापणाः वायथाशक्तिदक्षिणा ॥ अष्टमादिपुरुषगामिन्या अस्यागमनेतप्तकृच्छ्रं वा ४ ॥

लि होवें इनके गमन कीतियां चांद्रायण व्रत करणा कहाहै ॥ अर जेकर चांद्रायण की सामर्थी नहोवें तद आठ ८ गौदान करणा कहाहै ॥ अर गौके अभावविषे बासीस २२ कार्पापण देने अर अपाशक्तिके अनुसार दक्षिणा देणी योग्यहै ॥ और सात पुरुष गामिनी जो अमानतरूप उत्तम वर्ण कीस्त्री ह २८ तिसके साथ गमन कीतियां पराकव्रत करणा कहाहै अर जेकर पराक व्रत करणकी सामर्थ्य नहोवे तद पांच गौदान करणे योग्यहैं ॥ अर जेकर पांच गौदेण की भी सामर्थ्य नहोवे तदपंदर १५ कार्पापण देणेकहे अपनी शक्ति अनुसार दक्षिणा देनी ॥ अर आठ ८ पुरुष गामिनी जेकर उत्तम स्त्री होवे उनके साथगमन कितियां तप्त कृच्छ्र करणा कहा है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥ १८९

अर जेकर तत्तल्लूकी समर्था नहोवे तद ४ गौ देणी कहीहै ॥ अर तिनके अभाव विषे ग्यारह ११ कार्पापण अर अपनी शक्ति अनुसार दक्षिणा देणी योग्यहै ॥ अर उह सं पूर्ण गुरुतल्पग समान हैं अर सभ अनुपातक इस प्रकार मिल कर्के दो २ अर पचास अर्थात् ववंजा ५२ होतेहैं ॥ और सखिभार्या इत्यादि विषे पराशर जीने विशेष कहाहै कि चांडाली अर श्वपाकी इनसाथ जो ब्राह्मण गमन करताहै सो ब्राह्मण प्रथम तीन दिन उपवास कर्के फिर ब्राह्मणोंकी आज्ञाते इस प्रकार प्रायश्चित्त करे क्या कि शिखामहित मुंडन करे वा कर्के फेर दोप्राजापत्य करे अर दोगी दक्षिणा देवे तद पवित्र होताहै इस प्रकार उसकी शुद्धि पराशर जीने कहीहै २ और चांडाली शब्दकी व्याख्या कर्तेहैं चांडाली ओह होतीहै

धेनवो वा ११ कार्पापणाः यथाशक्ति दक्षिणा ॥ एतानिगुरुतल्प समानिमिलित्वा सर्वाण्यनुपातकानिद्विपंचाशन्मितानि ५२ सखिभार्याकुमारिपुस्वयेनिष्वंत्यजासुचेत्यत्रविशेषमाह पराशरः चांडालींवाश्वपाकींवाअनुगच्छतियोद्विजः त्रिरात्रमुपवासित्वाविप्राणामनुशासनात् १ सशिखंवपनंकृत्वाप्राजापत्यद्वयंचरेत् गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्धिंपाराशरो ब्रवीदिति २ व्याख्या । ब्राह्मण्यांशूद्राज्जाताचांडाली आरूढपतिताज्जाता वासगोत्राज्जातावा । आरूढपतितः संन्यासीस्त्रीसेवी तदेतत्रिविधं चंडालत्वंयमआह आरूढपतिताज्जाताब्राह्मण्यांशूद्रजश्चयः चंडालौतावुभौप्रोक्तौसगोत्राद्यश्चजायतइति १ एतत्रिविधचंडालसंततौ स्त्रीचंडालीक्षत्रयुग्रयोज्जाता श्वपाकी

जो ब्राह्मणी विषे शूद्रके वीर्यते उत्पन्नहोवे अथवा आरूढपतितते जो उत्पन्नहोवे क्या कि संन्यासीहोकर जो स्त्रीसेवा करताहै उसकानाम आरूढपतितकहाहै अर उसकी कन्याभी चांडाली कहीहै अथवा अपने सगोत्रीते जो उत्पन्नहोवे अर्थात् किसेने सगोत्री विवाही होवे तिसने उत्पन्न होवे उहभी चांडाली कहीहै ॥ उह इसप्रकार तीनप्रकारकी चांडाली होतीहै सोयी यमजीने कहाहै आरूढेति कि पतित संन्यासीने जो उत्पन्न होवे अर शूद्रने जो ब्राह्मणीविषे उत्पन्न होवे इहदोनो चांडालकहेहैं अर तीसरा अपने सगोत्रीतेजो उत्पन्न होव १ इह तीनप्रकारका चांडाल कहाहै अर ऐसी स्त्रीहोवे तद उह चांडाली कहीहै उर किसी उग्रजातिते क्षत्रिया विषे उत्पन्न होवे उह श्वपची कहीहै

१९० ॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥

सोयी मनु जीने कहा है कि किसी उग्रजातिते जो क्षत्रियाविषे उत्पन्न होवे सो श्वपच कहा है
अरस्त्री होवे श्वपची होती है ॥ अर इस स्थानविषे द्विजशब्द कर्के ब्राह्मणका हि ग्रहण है क्यों
कि क्षत्री वैश्य को आगे कहनेते ॥ उपवासित्वा शब्दका अर्थ कर्ते हैं उपवासीति ॥ और इस
शब्दकी सिद्धि कहते हैं आचारेति और क्षत्री वैश्यको दक्षिणा अधिक कहा है मनु जीने क्षत्रियद्विति
कि क्षत्री अथवा वैश्य जो पूर्वोक्त चांडालीके साथ गमन करता है सो अपनी शुद्धि वास्ते दो प्रा
जापत्य करे अर दो गोमिथुन दक्षिणा देवे क्या कि दो गौ और दो बैल इह दक्षिणा देणी १ और
शूद्रको वन थोड़ा अर दक्षिणा अधिक है ऐसा मनुने कहा है श्वपाकीमिति कि श्वपाकी अ
थवा चांडाली इनके साथ जो शूद्र गमन करता है सो अपनी शुद्धि वास्ते एक प्राजापत्य कर्के

तदाहमनुःउग्रात्तुजातःअत्रायांश्वपाकइतिकीर्तितइति॥द्विजशब्दोअब्राह्मणर.
रःक्षत्रियवैश्ययोर्वक्ष्यमाणत्वात् उपवासित्वोपवासचरेदित्यर्थः। आचारा
र्थवाचिकिवंताच्छब्दनिष्पत्तिः।क्षत्रिवैश्ययोर्दक्षिणाधिक्यमाह क्षत्रियोवाथ
वैश्योवाचांडालींगच्छतेयदि प्राजापत्यद्वयंकुर्याद्द्विधागोमिथुनद्वयमिति शूद्र
स्यत्वल्पं व्रतमधिकादक्षिणित्याहसएव ॥श्वपाकीवाथचांडालीशूद्रोवायदि
गच्छति प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रचतुर्गोमिथुनंददेदिति १ अत्रस्मृत्यन्तेरपुचां
डालीगमनेप्रायश्चित्तान्यन्यथास्मर्यते तत्र कानिचिदाचार्योक्तप्रायश्चित्ता
नि न्यूनाधिकानि तद्यथाहसुमंतुः॥ मातृष्वसृपितृष्वसृस्नुषाभगिनीभाणि
नेयीगांचांडालीनामपिगमनेतत्कृच्छ्रमिति ॥ तदेतदकामतःप्रवृत्तस्यरेतः
सेकात्प्राङ्निवृत्तौद्रष्टव्यम् ॥ यत्त्वांगिरसोक्तं पतितांत्यस्त्रियोगत्वाभुक्त्वा
चपरिगृह्यच मासोपवासंकुर्वीतचांद्रायणमथाश्रिवेति १

अर चार ४ गोमिथुन क्या ४ गौ ४ बैल दक्षिणा देके तद पवित्र होता है ॥ १ ॥ इस जग
और स्मृतियों विषे चांडाली गमन कीतियां और प्रायश्चित्त कहा है अर इस विषे कैयां आचा
र्योंने प्रायश्चित्त न्यून कहे हैं अर कैयांने अधिक कहे हैं । और सोयी जेसे सुमंतु जीने कहा है कि
माताकी भगिनी पिताकी भगिनी पुत्रकी स्त्री अपनी भगिनी अपनी भगिनीकी कन्या गौचां
डाली इनके साथ गमन कितियांनत कृच्छ्र करणा योग्य है इति । अर इह प्रायश्चित्त उनको है कि
जो कामनाते बिना मिथुनविषे प्रवृत्त होकर बौद्ध्य त्यागने पुनर्हि निवृत्तिकों प्राप्त होवे । और फेर
अंगिरस जीने कहा है पतितामिति कि पतित पुरुषकी स्त्री अर चांडालकी जो स्त्री है इनको
भोग कर्के अथवा इनको ग्रहण कर्के एक महीना उपवास करे अथवा चांद्रायण करे इति १

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ० ॥ १९१

तिस स्थान विषे चांद्रायण कामनाते मैथुन मे प्रवृत्त होकर वीर्य त्यागते पूर्व निवृत्त होके जानना ॥ अर सामर्थ्य वाले को एक महीना उपवास हि कहा है ॥ परंतु एह वचन श्लोकके अर्थ अर्थ कर्के दोहै असा भी कोई कहत है ॥ और मूल वचन कर्के महीने उक्त जोगोदयदक्षिणा युक्त दो प्राजापत्य है तिसका प्रत्याम्नाय कल्पना कर्के महीनेके उपवासके समान होनेते एहि विषय है ॥ कोई दूसरा नहि अर्थात् महीना उपवास और दक्षिणा दो गौ सहित जो प्राजापत्य है तिनके समान होता है ॥ और शंखेन भी जो कहा है ॥ अकामेति ॥ कामनाते विना जो ब्राह्मण चांडाली गमन करता है सो तत्कृच्छ्र कर्के शुद्ध होता है ॥ अथवा दो प्राजापत्य कर्के पवित्र होता है १ ॥ अर कामनाते जो ब्राह्मण चांडाली सेवा करता है सो चांद्रायण व्रत कर्के पवित्र होता है अथवा दो प्राजापत्य कर्के शुद्ध होता है ॥ २ ॥ इस वाक्यका अभिप्राय मूल वचनके समान है । और

तत्र चांद्रायणं कामतः प्रवृत्तस्य रेतः सेकात् प्राङ्निवृत्तस्यावगंतव्यम् शक्त
स्य तु मासोपवासः ॥ गोद्वयदक्षिणायुक्तप्राजापत्यद्वयस्य मूलवचनोक्त
स्य प्रत्याम्नायकल्पनाद्वारेण मासोपवाससमानत्वादयमेव विषयः ॥ यद्
पिशंखेनोक्तम् अकामतस्तु यो विप्रश्चांडालीयदिगच्छति तत्कृच्छ्रेण शुद्धं
तप्राजापत्यद्वयेन वा १ कामतस्तु यदा विप्रश्चांडालीयदिसेवते चांद्राय
णेन शुद्धयेतप्राजापत्यद्वयेन चेति २ एतन्मूलवचनेन समानविषयम् यम्
स्तु विषयव्यवस्थापूर्वकं पक्षद्वयमाह चांडालपुष्कसानां तु भुक्तवागवाचयो
पितृकृच्छ्राब्दमाचरेद्ज्ञानादज्ञानादिद्वयमिति १ एतच्चोभयं रेतः सेकप
र्यन्तसकृद्गमनविषयम् यत्तु गौतमेनोक्तम् अत्यावसायिनी गमने कृच्छ्राब्दोऽ
मत्याद्वादशरात्रमिति तत्राब्दकृच्छ्रो यमोक्तसमानविषयः द्वादशरात्रं तु
सुमंतुप्रोक्ततत्कृच्छ्रसमानविषयम् ॥

यमजी विषय व्यवस्थापूर्वक दो पक्ष कहते हैं चांडालेति कि चांडाल की जो स्त्री है अर पुष्कस की जो स्त्री है और इनका अन्न भक्षण कर्के अर इनके साथ गमन कर्के जकर जानने को न दएक वर्ष कृच्छ्र करे ॥ अर अज्ञानते दो चांद्रायण करे तद्पवित्र होता है १ ॥ उह दोनों प्रायश्चित्त वीर्य त्याग पर्यंत एकवार गमन के विषयमें जानने चाहिये ॥ और गौतम जीने ऐसा कह है ॥ अत्येति ॥ कि अत्यावसायिनी जो चांडाली है तिसके साथ गमन कतिपय जान कर्के तद् उह एक वर्ष कृच्छ्र करे ॥ अर अज्ञानते वारां १२ र'त्रि उपवास करे तद् पवित्र होता है ॥ अर इस विषे एक वर्ष का जो कृच्छ्र कहा है सो यमोक्तप्रायश्चित्तके समान विषय है ॥ अर द्वादश रात्रि जो है सो सुमंतु जीके कहे होये तत्कृच्छ्र के समान विषय जानना ॥

१९२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र० १७ टी० भा० ॥

यद्यपि अंगिरा जीने ऐसा कहा है अंत्येति कि अंत्यजा जो चांडाली हैं तिनके साथ गमन कीतियां अथवा इनके साथ भोजन कीतियां अथवा प्रमापण कीतियां क्यो इनके मारयां होयां पराककरणे कर्के शुद्धि होनी है इह भगवान् अंगिराजी कहते भये इति अर्थात् जो पुरुष चांडाली साथ में युनादिव्यवहार करे सो पुरुष पराक व्रत कर्के पवित्र होता है १ सो भी इह प्रायश्चित्त तत्कृच्छ्रके समान विषय है ॥ और जो वसिष्ठ जीने कहा है कि वारां १२ रात्रि केवल जलहि पान करणा अर वारां १२ रात्रि उपवास करणा अथवा अश्वमेध यज्ञ विषे यज्ञात स्नान करे इस प्रायश्चित्त कर्के ओरहि विषय है परंतु चांडाली मैथुन भी प्रकट कीया है ॥ तदभी इह बृहद् यमने जो प्रायश्चित्त कहा है चांद्रायण तिसके समान विषय है ॥ और जो इह संवर्तने कहा है यदिति कि जो ब्राह्मण काम कर्के पीड़ित होया किसी प्रकार चांडाल गमन करे सो वा

यद्यप्यंगिरसोक्तं अंत्यजानांतु गमने भोजने च प्रमापणे पराकेण विशुद्धिः स्याद्भगवानंगिरोऽब्रवीदिति तदपितत्कृच्छ्रसमानविषयम् । यदपि वसिष्ठे नोक्तं द्वादशरात्रमभ्यक्षोद्वादशरात्रमुपवसेदश्वमेधावभृथवागच्छेत् एतेनैव चांडालीव्यवायो व्याख्यात इति एतदपि बृहद् यमोक्तं चांद्रायणसमानविषयम् यच्च संवर्तने नोक्तम् यश्चांडालीं द्विजागच्छेत्कथंचित्काममोहितः त्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुद्ध्येत प्राजापत्यानुपूर्वकैरिति एतच्चांद्रायणद्वयेन समानविषयम् । यदपि मनुनोक्तं यः करोत्येकरात्रेण वृषलीसेवनं द्विजः स भैक्ष्यं भक्षयन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहतीति १ वृषली चांडाली स्मृत्यंतरम् चंडाली वंधकीवेश्या रजःस्थायी च कन्यका ॥ उदाचसम गोत्रेण वृषल्यः पंचकीर्तिता इति १ ॥

ह्यण क्रमपूर्वक प्राजापत्य करदियां होयां तीन वर्षे कर्के शुद्ध होता है क्योकि प्राजापत्य तत्कृच्छ्र अतिकृच्छ्र इह प्राजापत्यके आनुपूर्व कहें हैं अर्थात् पहिले प्राजापत्य पीछे होर दो एह भी दो चांद्रायणके समान विषय कहा है १ और जो इह मनु जीने कहा है कि जो पुरुष एकरात्रि कर्के भी चांडालीका सेवन करतहि सो नित्य प्रति भिक्षाका अन्न भक्षण करता हुया तीन वर्षे कर्के पापको दूर करता है १ इसजगा वृषली नाम चांडालीका है ॥ और स्मृतिविषे भी लिखा है कि चांडाली अर वंधकी क्यो जिसस्त्रीको कतु कभी नहि होती उसस्त्रीका नाम वंधकी है अरवेश्या अर जो कन्यादि कनुमती होवे अर समान गोत्र वाले पुरुषने विवाही होवे इह पांच वृषली कही हैं अर्थात् इह पांच स्त्री चांडालीके तुल्य होती हैं ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १७ ॥ टी० भा० ॥ १९३

अर एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त एक दिनके अभ्यास विषयहैं अर जो वीर्य त्याग पर्यंत मनुने कहा है अर सखिभायांसु इत्यादि जो याज्ञवल्क्यने कहा है सो एक पक्ष अभ्यासके विषयमेजा जना और रेतःसेकःकुमारीषु इत्यादिजो यमने कहा है सो एक वर्ष अभ्यासक विषयमे जाजना ॥ प्रश्न ॥ सखिभायांसु इत्यादि स्मृति वचनोमे चांडालीके गमनविषे और गुरुपत्नीके गमन विषे जेकर एकहिप्रायश्चित्तहै तदएह सहचार बहुतबुरा प्रतीत हुंदाहै पंडितलोकोंने काक और संतआपणे बगाने पुत्रोंको नहि जाणदे इत्यादि विषे दोषबास्ते किहाहै ॥ उत्तर ॥ एह दोष अ

तदेकदिनाभ्यासविषयम् यदपिरेतःसेकइत्यादिमानवीर्यसाखिभाय्येत्यादि याज्ञवल्क्यीयंच तत्पक्षाभ्यासाविषयंरेतःसिकाकुमारीषुचांडालीष्वंत्यजासु चर्सीपडापत्यदारेषुप्राणत्यागेविधीयतइतियमोक्तंतत्संवत्सराभ्यासविषयंननुसखिभाय्याकुमारीषुस्वयोनिष्वंत्यजासुचेत्यादियाज्ञवल्क्यादिवचने चांडालीगमनेगुरुपत्नीगमनेचैकमेवप्रायश्चित्तमितिचेत्तदासहचराचारुता स्यात्साचध्वाक्षाः संतश्चतनयंस्वंपरंवानजानते इत्यादौत्यक्तुमहैवविद्वद्भिर्घोषितेतिचेदेवंविचारोऽत्र तथासहचराचारुविरुद्धान्योन्यसंगतो इत्यादिदूषणानिप्रायश्चालंकारिकैरेवोन्नीतानि तानिचतत्तदलंकारव्यंग्यरसापकर्षावहत्वेनतत्रैववैरस्यमावहंतिनपुनर्धर्महेतूत्पादकनिबन्धेऽर्थशास्त्रनिबन्धेवा अतएवभिक्षुकोवालकश्चैवराजाभाय्यातथैवचेत्यादिचाणिक्यवाक्यंसद्भिः साध्वेवामृश्यते किंचचांडालीगमनंगुरुपत्नीगमनंचोभयमपिनरकहेतुरितितद्गणनायांयुक्तमेवश्वयुवमघोनामतदित इतिवत्तदुपादानमतश्चांडालीसदृशागुरुपत्नीतिमूढसंभावनानश्रद्धया

लंकारोंके जानणे वालयोंने दिखाएहै क्योकि रसको घटातेहैं इसकके उसीजगा जानणे और धर्मके कारण जित्थे दिखाएहै उसजगा और अर्थशास्त्रमे इनका दोषनहि इसीकके चाणिक्य ऋषिने (भिक्षुको) इत्यादि श्लोक विषे राजाका और भिक्षुका साथ कीताहै और चाणिनीजीने (श्वयुव) इत्यादि सूत्र विषे कुतेका और इंद्रका साथ कीताहै इस कारणते जो किसेने किहाकि चांडाली बराबर गुरुपत्नी इस जगा प्रतीतहुंदीहै एह बात सूखकीहै यथा यथाहि जानणी

इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बू
काशमीरतिब्बताद्यनेकदेशाधिपति
प्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्त श्रीदेवि
कोपकंठवासि सारस्वतपंडितदेवी
दत्तसुतकवि गंगाराम संगृहीतेषु
धर्मशास्त्रमहानिवंधे प्रायश्चित्त भा
गेऽनुपातकप्रकरणं सप्तदशम् १७

इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरणवीर
सिंह भूपाल तिनकी आज्ञासे
जो पंडितगंगारामने बनाया धर्म शास्त्र
महा निबंध तिसके प्रायश्चित्त भाग विषे
एह अनुपातक प्रकरण सतारमा पूरा
होया भाषा ॥ १७ ॥

महापातकसूचीपत्रमिदम् ॥ प्र० १३

पृ०	पं०	
१	१	मंगलाचरणम्
	३	प्रायश्चित्तकृद्व्यायुक्तपापगणना
२	९	अतिपातकगणना
३	१	महापातकातिपातकयोर्लाघवगौरवव्यवस्था
४	१	ब्राह्मणलक्षणम्
५	२	ब्राह्मणभेदाः
६	६	अथब्रह्मलक्षणमपराकै
७	३	अथप्रयाजकादीनांफलभागित्वकथनम्
८	१	अनुमंत्रादीनांलक्षणम्
९	५	शूद्रपाणिमतेनैषांपंचदशत्वम्
१०	१	कूपपातेनमृतेकूपकर्तुःप्रायश्चित्ताभावकथनम्
११	१	यमुद्दिश्यब्राह्मणोमृतःसोपिब्रह्महेतिकथनम्
१२	१	आततायिवधेनदोषः
	७	ब्राह्मणस्यापिशस्त्रग्रहणानुज्ञा
१३	१	आततायिविषयेशास्त्रार्थः
१४	८	शूलपाणिनावधकर्तारःपंचनिर्दिष्टाः
१५	१०	एषांप्रायश्चित्ततारतम्यम्
१६	४	ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तमाहमनुः
१७	१	अपराकैर्विशेषात्र
१८	१	पुनरत्रापिविशेषमाहसंवर्तः
१९	४	अत्रापिविशेषमाहवशिष्टः
२०	३	अत्रैवशंखवाक्यम्
	९	ब्रह्मचारिधर्मान्देशः
२१	१	पूर्योक्तस्यैवार्थस्यरूपद्वयार्थकथनम्
	७	कथितस्यपापस्यन्यूनत्वकथनम्
२२	६	ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तविषयेविष्णुः

पृ०	पं०	
२३	८	अत्रैवप्रायश्चिन्तानंतरंमनुनाप्रदर्शितम्
२४	६	एवमेवाध्यानांस्पष्टीकरणम्
२५	६	अत्रैवभविष्यवचनम्
२६	५	पुनरत्रभविष्यीयवचनांतरम्
२७	६	भविष्यस्यैववचनांतरम्
२८	१	सर्वशब्दार्थः
	४	जातिमात्रब्राह्मणबधेप्रायश्चित्तम्
२९	१	अत्रापिभविष्यपुराणीयोविशेषः
	८	अथमधादिप्रायश्चित्तविष्णुस्मरणे
३०	१	सुवर्णादानरूपप्रायश्चित्तकश्यपेनदर्शितम्
	१०	अत्रैवगुणवदगुणवद्विषयत्वेनप्राय०
३१	३	प्रायश्चित्तसकलपादौनादिव्यवस्था
३२	१	जातिभेदेनदंडतारतम्यकथनम्
	५	शौचेद्विगुणादिभेददृष्टांतकथनम्
३३	३	साग्नेर्महापापिनः प्रा० प्रसंगादद्भयोऽग्निर्जातइतिच ६
३४	१	ब्रह्महत्यायावैश्यस्यप्रायश्चित्तत्रयम्
३५	६	अत्रापिभविष्यवचनम्
३६	७	पापावृत्त्याप्रायश्चित्तावृत्तिकथनम्
३७	१	पूर्वोक्तभविष्यवचनव्याख्यानम्
३८	३	प्रायश्चित्तंरमेऽसमाप्तेतस्मिन्मृतेपिसकलफलमितिक०
३९	२	ब्रह्मचारिवानप्रस्थादिवधे प्रा०
४०	१	गोब्राह्मणरक्षणेनब्रह्महत्वानिवृत्तिकथनम्
४१	६	अवरंप्रतिरेदित्यस्यार्थः
४२	१	चौरादिभ्योद्भूतव्यगृहीत्वाब्राह्मणायदानमितिप्रा०
४३	२	गुणवत्क्षत्रियस्यागुणवद्ब्राह्मणहननेप्रा०
	३	लोमप्रभृतिमंत्रकथनम्

पृ०	पं०	
४४	१२	कामकृतपोपमेरणान्तप्रायाश्चित्तम्
४५	१	एतदेवावेशादकृतमांगिरसा
४६	१	सेतुबंधादिदर्शनरूपंप्रा०
४७	३	आतिमात्रब्राह्मणवधे त्रैवापिकम्
४८	१	वज्रकृच्छ्रकथनम्
४९	३	नपुंसकब्राह्मणवधशूद्रहत्याप्रा०
५०	८	यागस्थपञ्चिवादिवधे ब्रह्महत्याप्रा०
५१	७	ब्राह्मण्यात्रेयावधे ब्रह्महत्याप्रा०
५२	२	अज्ञातगर्भहनेन ब्रह्महत्याप्रा० साक्ष्येऽनृतादिभाषणोपि
५३	७	अतिदिष्टप्रायाश्चित्तैर्जातिकर्मणानिहानिः
५४	५	अत्रिगोत्रनारीहनने मिश्रहनने च प्रा०
५५	५	शूद्राहनने संवत्सरं ब्रह्महत्याप्रा०
५६	२	घातार्थसमुद्योगे तन्मारणाभावेऽपि प्रा०
५७	६	मारणार्थसमुद्योगाभावेऽपि मारणेऽल्पप्रा०
५८	२	सोमयागे कृतदोषरूपमारणे पर्वोक्तं द्विगुणम्
५९	५	अन्यान्यपि ब्रह्महत्याप्रायाश्चित्तानि जमदग्निना विहितानि
६०	६	तृप्तमुरहनने शक्रेण स्यापितं लिङ्गतत्पूजनरूपप्रा०
६१	४	शंखालाखतप्रोक्तं गोसहस्रदानमत्र
६२	१	कस्याचिदुद्देशेन ब्राह्मणः स्वयं मृतस्तत्प्रा०
६३	१	अतिनिर्गुणविप्रस्य स्वयं मरणे प्रा०
६४	५	सिंहविप्रसमूहं ज्ञात्वा हुहननेऽपि न दोषः
६५	१०	इति ब्रह्महत्याप्रायाश्चित्तानि
६६	१	अथ सुरापानप्रा०
६७	३	पैष्टीपानं द्विजानां निषिद्धं नेतरत्पानम्
६८	३	सुरापानमुपनयनात्प्रागपि निषिद्धम्
६९	३	बालस्य सुरापाने न मरणांतिकं प्रा०

पृ०	प०	
	८	स्त्रीणामर्धमित्यादिव्यवस्था
६७	७	एकादशविधमद्यनिरूपणम्
६८	७	प्रायश्चित्तानंतरंपुनःसंस्कारः
६९	१	अथसुरापानप्रायश्चित्तमानवे
७०	६	अस्यावेपयोभावेऽप्यत्पराणे
७१	६	हारतेनाप्यस्याःपानेप्रायश्चित्तमुक्तम्
७२	१	प्रायश्चित्तानंतरमाहयाज्ञवल्क्यः
७३	७	पानशब्दाद्यकथनम्
७४	१	अस्यैवविवरणम्
७५	३	अस्यविधिमाहशंखः
७६	१	ब्रह्महत्यानुवृत्तौव्यासः
	९	कलियुगेऽपिमद्यपाननिषेधः
७७	१	सकृत्सुरापानेप्राय०
७८	१	पुनःपानेगोप्रसवःसम्मतंचविधयम्
७९	२	देशकालगुणागुणाद्यवलोकनेनप्रायश्चित्तविधानाज्ञा
	५	अज्ञानतःसुरापानेऽप्येवमत्रप्राशनेचप्रा०
८०	१	ज्ञानतःसुरापानेऽप्येवमेवविचार्यकार्यम् ॥
८१	१	सुगन्धादौदकपानेप्रा०
८२	१	सुरापमृगगंधघ्राणेप्रा०
	६	मूत्रपुरीषादिप्राशनेपिप्रा०
८३	६	मतिपूर्वसुरापानेमरणांतंप्रा०
८४	३	सुराव्यतिरिक्तमद्यस्यकामतःपानेप्रा०
८५	४	ज्ञानपूर्वगौडीमाध्योःपानेप्रा०
८६	२	गौडीपानेऽप्येवमत्रपराणम्
८७	१	द्विजातिभार्यायाःसुरापाननिषेधः
	१०	वर्णत्रयविषयेऽपिसुरापाननिषेधः

सुरापानादिमहापातकप्रकरणसूची०

६

५०	५०	ब्राह्मण्याः सुरापाने प्राय०
८८	६	इति सुरापान प्रायश्चित्तानि० •
८९	४	अथ स्वर्णस्तेय प्रायश्चित्तम्
९०	१	स्वर्णमानमाहयाज्ञवल्क्यः
९१	१०	निष्कमात्रस्वर्णापहारे प्रा०
९२	१२	लिक्षामात्रादिस्वर्णापहारे प्रा०
९३	१	मनुप्रोक्तस्वर्णस्तेय प्रायश्चित्तम्
९४	७	प्रायश्चित्तक्रियायां ब्राह्मणोपिवधमहंतीतिकथ०
९५	१	पापिनं ब्राह्मणं ज्ञात्वा राज्ञो मारणाभावे पापम्
९६	१	नष्कालकशब्दार्थः
९७	३	क्षेत्रयादौ द्वैगुण्यादि व्रतविवर्धनहत्याविषयः
९८	७	अत्रैव व्रतान्तरमाह मनुः
९९	५	अत्रैव भविष्यपुराणवचनम्
१००	३	अत्रैव व्रतान्तरमाह लघुविष्णुः
१०१	७	प्रायश्चित्तन्दुशखरे स्मृत्यर्थसारे तु विशेषः
१०२	६	ब्राह्मणान्यमुवर्णापहारेन महापातकम्
१०३	२	अपहारशब्दार्थशास्त्रार्थः
१०४	७	अत्रैव विषयेऽत्रणा विशेषो दर्शितः
१०५	४	रूप्यादिहरणेऽपि प्रायश्चित्तम्
१०६	१	भविष्यपुराणे विशेषोऽत्र
१०७	३	अग्निहोत्रे ब्राह्मणस्वर्णापहारे प्राय०
१०८	८	इति स्वर्णस्तेय प्रायश्चित्तम् •
१०९	१	अथ गुरुतल्पगप्राय० तावद्गुरुशब्दार्थः
११०	८	स्वल्पोपकरणे गुरुतल्पे
१११	१	पुस्तकादिविद्योपयोगिता रिगुरुशब्दप्रयोगः
११२	१	अत्र दातव्यापगुरुशब्दापयोगः

पृ०	प०	
११३	१०	जातूकएर्यादिभिराचार्यपत्नीगमनेपिगुरुतल्पव्रतमुक्तम्
११४	८	अथगुरुतल्पगमनप्रायश्चित्तमाहमनुः
११५	७	अत्रैवयाज्ञवल्क्यवचनम्
११६	२	पितृभार्यागमनेमरणातिप्राय०
११७	१	अंगि० स० त्रविशेषउक्तः
११८	१०	मतिपूर्वसवर्णगुरुदारगमनेप्रायश्चि०
११९	१	असवर्णगुरुदारगमनेप्रायश्चि०
१२०	१	अत्रैवव्रतांतरमाहापस्त्यैः
१२१	१	शत्रुस्यविप्रागमनेगुरुतल्पव्रतमुक्तम्
१२२	१	क्षत्रियागुरुभार्यागमनेप्रायश्चि०
१२३	१	गुरुभार्यावैश्यागमनेप्रायश्चि०
	६	चांडालीपुष्कसीप्रभृतिगमनेप्राय०
१२४	१	पतितान्यस्त्रीगमनेगुरुतल्पातिदेशः
१२५	१	अत्रैववर्धत्रयरूपंप्रायश्चित्तमुक्तमनुना
	३	दृपत्यः पचदर्शितास्तेनैव
	१	इतिगुरुतल्पगप्रायश्चित्तविधानम् •
१२६	१	अथपाततसंसर्गिणःप्रायश्चित्तविधानम्
१२७	६	अकृतेप्रायश्चित्तेसद्भिःसहसंसर्गनिषेधः
१२८	६	होतृकाधिकरणन्यायार्थः
१२९	१	गौतमेनपतितादर्शिताः
	७	वत्सरंयावत्पतितेनसहवासेतत्समत्वम्
१३०	३	संसर्गहेतवोवृहस्पतिनादर्शिताः
१३१	१	पतितथाजकादीनांसद्यःपातित्यम्
१३२	४	योनिसंवधेनापिसद्यःपातित्यमुक्तंविष्णुना
	९	प्रायश्चित्तमयूखेत्रिविधःसंसर्गः
१३३	३	पाण्डुसिकादिसंसर्गवृहस्पतिः

पृ०	प०	
१३४	१	पातितसंसर्गिणः प्रायश्चित्तमाहवसिष्ठः
१३५	५	अल्पसंसर्गप्रायश्चित्तमाहविष्णुः
१३६	३	पातितानांकन्यागृहीतवैवातियाज्ञवल्क्ये
१३७	११	वालवृद्धाणामर्द्धप्राय०
१३८	१	कलौसंसर्गिदोषानपातित्यापादकः
१३९	१	संसर्गिसंसर्गिणः प्राय०
१४०	१	ब्रह्महादिसंसर्गिण एव महापातकित्वम्
१४१	६	प्रसंगादंत्यजपुरुषमरणप्रायश्च०
१४२	१	वैदहवधेपि प्रासंगिकप्राय०
१४३	१	शूद्रविषयेव्रताधिकथनम्
१४४	२	अथैवशास्त्रार्थो मार्कण्डेयादिवचसा
१४५	१	इतिसंसर्गिप्रायश्चित्तप्रकरणम् *
१४६	१	अथदेवलस्मृतिः
१४७	५	वर्षषण्येवावन्म्लेच्छसंसर्गप्रा०
१४८	२	स्वदेशप्राप्तस्यसर्वाधिवर्गेणसहमेलनाविधिः
१४९	१	संवत्सरदृढ्यम्लेच्छसंसर्गप्राय०
१५०	१	अथत्राविषयम्लेच्छसंसर्गप्राय०
१५१	२	विंशतिवर्षेयावन्म्लेच्छसंसर्गप्राय०
	७	शास्त्रज्ञानांविनाप्रायश्चित्तदानेब्राह्मणस्यप्राय०
१५२	१	पंचगव्यविधानविशेषः
१५३	१	व्यासकृतकृच्छ्रकथनम्
	८	संसर्गावर्षेपंचगव्यदानप्रकारः
१५४	८	अथव्रतप्रकारः
१५५	१	सांत्तपनकृच्छ्रादिविधिः
१५६	२	इतिदेवलस्मरणम् * अथप्रायश्चित्तानिच्छेदस्त्याग
१५७	१०	पाततस्यानंतरमहोरात्रनशौचम्

पृ०	प०	
१५८	४	त्यक्तपतितस्वदायभागनिषेधः
१५९	२	त्यक्तस्यापिपुनस्तत्संग्रहाणविधिः
१६०	५	पतितस्त्रीसंग्रहविधिः
१६१	३	कृतप्रायश्चित्तिभिरपिकैश्चिद्व्यवहारनिरोधः
१६२	५	कृतप्रायश्चित्तस्यपरीक्षार्थगोभ्योपवसदानम्
१६३	१	समाप्तसाधारणप्रकरणम् ॥
१६४	१	अथसर्वपापसाधारणप्रकरणम्
१६५	३	तीर्थादौगन्धासंन्यासधारणरूपप्राय०
१६६	१	श्रीरामस्थापितशिवलिंगपूजनरूपप्राय०
१६७	६	गायत्रीजपरूपप्रायश्चित्तम्
१६८	२	वज्राख्यकच्छप्रकारः
१६९	१	अशक्तौप्रत्याम्नायप्रकारः
१७०	७	इतिमहापातकसामान्यप्रायश्चित्तं ॥
१७१	१	अथानुपातकप्रायश्चित्तानि
१७३	४	ब्रह्महत्यासमानिप्रायश्चित्तेन्दुशेखरेल्लिखितानि
१७४	९	अत्रापिजातिशक्तिगुणायपेक्षयाप्राय०
१७५	५	वर्णभेदेनगर्भवधप्राय०
१७६	१	आत्रेयीवधेत्तच्छब्दार्थनिर्णयपूर्वप्रायश्चित्तं
१७७	१	ब्राह्मणगर्भवधेत्ब्राह्मणात्रेयीवधेत्तत्प्रायश्चित्तं
१७८	१	ब्राह्मणवधेत्प्रवृत्तस्यतन्मारणाभावेपिप्रायश्चित्तं
१७९	१	अथसुरापानसमप्रायश्चित्तानि ॥
१८०	४	निमित्तविशेषेणनैमित्तिकविशेषावगतिः
१८१	१	एतत्प्रत्याम्नायः
	४	अथस्वर्णस्तेयसमप्राय० ॥
१८२	४	एतत्प्रत्याम्नायः
	७	अथगुरुतल्पसमप्राय०

अनुपातकप्रकरणसूची०

९.

पृ०	पं०	
१८३	९	अंत्यजाचांडाल्यादिगमनेप्राय०
१८४	६	आचार्यपत्नीस्वसुतागमनेप्राय०
१८५	१	मातृष्वसृश्वश्रवादिगमनेप्राय०
१८६	८	एतत्प्रत्याम्नायः
१८७	३	पंचपुरुषाधिकगामिनीगमनेप्रा०प्रत्याम्नायः
१८८	७	सप्तपुरुषगामिनीनिक्षिप्तोत्तमस्त्रीगमनेप्राय०
१८९	४	विप्रस्यचांडाल्यादिगमनेप्रा०तच्छब्दार्थश्च
१९०	३	क्षत्रियवैश्ययोश्चांडाल्यादिगमनेप्राय०
१९१	४	कामाकामकृतचांडालीगमने प्रा०
१९२	९	वृपलीपंचकनिदर्शनम्
१९३	४	चांडालीगुरुपत्नीगमनप्रायश्चित्तैक्येशास्त्रार्थः
		इत्यनुपातकप्रकरणसूचीसमाप्ता * ॥

त्रयोदशादिप्रकरणशुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२	टी०६	तकहि	तकभी
४	मू०६	ऐच	ऐन
४	टी०५	मेस्ते	मेसे
५	टी०७	जानते	जानने
५	टी०३	प्रयाश्चि	प्रायाश्चि
६	टी०४	मत	हत
६	टी०९	काह	काहे
६	टी०९	प्रेया	प्रयो
७	टी०१	स्वनंत्र	स्वतंत्र
८	टी०४	चतुर्दश	चतुर्दश
९	टी०४	तत्रति	तत्रति
१०	टी०१	अथ	अथ

८०	प०	अशुद्ध	शुद्ध
१३	मू०३	लाके	लाके
१३	टी०३	अपनी	किसेकी
१४	मू०७	अशूल	अत्रशूल
१९	मू०३	वसन	वसन्
२१	टी०६	अर्थ	अर्थ
	टी०८	विष	विषे
२८	टी०३	भवेद्भूतः	भवेद्भूतः
	टी०४	दृष्ट	भृ
२९	मू०१	गुह	गुह
३५	मू०३	प्रथमवे	प्रथममेव
	मू०६	युगयत्	युगपत्
३६	मू०१	हन्या	हन्याद्
	टी०५	लपेट	लपेट
	टी०७	दून	दूना
३७	टी०३	वाचि	वाच
३८	मू०८	पृथिवमिटतसे	पृथिवीमटतस
४१	टी०८	आर	और
	टी०७	राद्धा	रोद्धा
४३	टी०१	शस्त्रे	शस्त्रैः
	टी०२	शस्त्रै	शस्त्रैः
४४	मू०९	ब्रह्मघ्ना	ब्रह्मघ्नो
	टी०२	कृताप	कृतोप
	टी०३	या	यो
४५	टी०८	रोत्क	रोक्त
४७	मू०८	शल्य	शल्य
		सकृत्	सकृत्
४८	टी०५	विरासन	वीरासन
४९	टी०१	नपुंसक	नपुंसक

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
५०	मू०३	ब्रह्मणो	ब्रह्मणो
५३	टी०९	रां	रा
५४	मू०३	शद्रा	शूद्रां
५४	मू०४	त्रेया	त्रेयां
५४	मू०५	शद्रां	शद्रां
५६	मू०९	कृच्छ	कृच्छ
५७	मू०१	पूजते	पूयते
५७	मू०३	मपु	मेपु
५८	मू०७	स्पतिः	स्पतिः
५८	टी०४	रात्रि	रात्रि
५८	टी०६	कराणे	करणे
५९	मू०१	मुदि	मुहि
५९	मू०१	द्वाह्य	द्वाह्य
५९	मू०८	नघ	नघ
६०	मू०६	चर्पिते	चार्षिते
६०	मू०७	ब्रह्म	ब्राह्म
६०	मू०७	भ्यक्त	भ्यक्तः श्रुतः कृतमर्दनोवा
६१	मू०४	मपिनिर	मपिहंतव्यानिर
६६	मू०४	णादेकं	णांतिकं
	मू०४	द्वपि	द्वापि
	मू०७	द	दश
६८	मू०८	विद्य	विद्य
		मेतत्	मेतत्
६९	टी०१	कामान	कामना
७०	टी०६	दूधधृत	दूधधृत

४०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
७१	मू०४	वासासु	वासासु
	टी०६	प्वान	पान
७२	टी०६	पापीकी	पापकी
७३	मू०३	दितिकेचित्	दित्यपिकेचित्
	मू०४	सकृत्या	सकृत्पा
७४	टी०७	साहै	सायहै
७५	मू०३	शंखः	शंखः
	टी०२	नदरहोवे	नदूरहोवे
	टी०१०	पीने	पीने
७६	मू०६	कच्छूचरे	कच्छूचरे
		यदेतत्	तदेतत्
	मू०९	धोरत्ये	धोरुत्ये
७८	मू०७	गौडिं	गौडीं
७९	मू०९	वारणीं	वारुणीं
८१	मू०३	त्र्यम्	त्र्यहम्
८२	मू०७	संस्कारे	संस्कारो
	टी०७	जिविपे	जिसविपे
८६	मू०६	ब्रह्मणी	ब्राह्मणी
८७	मू०१	पम्य	यस्य
	मू०६	वक्षत	वक्षित
८९	टी०१	रसरूप	रसरूप
९१	टी०३	राजाने	राजाके
९२	मू०२	पाडे	पोड
	टी०३	द्विडति	द्वेडति
९४	टी०४	तेसे	तेसे
९७	टी०६	केशादि	केशादि

पृ.	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
	टी०६	हाजंदा	होजंदा
	टी०३	अगिरा	अगिरा
	टी०५	जीन	जीने
		मिनि	मिति
९८	टी०८	चोरे	चोरो
	टी०२	ब्रह्मण	ब्राह्मण
९९	मू०४	निष्कान	निष्कान्
१०१	मू०८	शलपाणि	शलपाणि
१०२	मू०७	त्रिवर्ष	त्रिवर्ष
१०३	टी०८	उसकाचोरकी	उसचोरकी
१०४	टी०८	जोपदार्थहे अर्थात् जोरसायनकरकेवनायाहोआसुवर्णहे	
११७	मू०११	गुरुतल्या	गुरुतल्पा
११९	मू०२	शूद्रायां	शूद्रा
१२०	टी०२	उपरलपासे	उपरलेपासे
१२२	मू०४	पूर्वोक्त	पूर्वोक्त
१२४	मू०८	तिक	तिक
१२६	मू०४	चतुर्णां	चतुर्णां
	५	पतित	पतित
१२६	टी०३	समर्ग	संसर्ग
१२७	मू०८	कचिन्	कंचिन्
१२९	मू०९	समर्गा	संसर्गा
१३१	मू०९	एवंस	एवमं
१३२	मू०१	याजनध्या	याजनाध्या
	८	सद्यःपद	सद्यःपदं
१३४	मू०१०	दित्यर्थः	दित्यर्थः
	टी०६	महेना	महीना

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१४३	म०१	शब्दति	शुब्दति
१४४	टी०२	आर	आर
१४६	टी०३	निसके	तिसके
१४७	म०१	सस्व	सस्व
	टी०१	नि मि	निरमि
१४८	म०१	काता	कांता
१४९	टी०८	गभै	गभे
१५१	टी०१	पाप	पाप
	टी०३	ऐक	ऐके
१५२	टी०५	ग्रहणा	ग्रहण
	टी०९	ब्राह्मको	ब्राह्मणको
१५४	म०४	जन्मनम्	जन्मनाम्
	म०९	सात	सां
१५५	टी०६	कए	एक
		एकीद	एकदि
१५६	म०३	पिडा	पिंडा
	टी०७	कवं	कर्के
१५३	टी०१	प्रायश्चि	प्रायचि
१५४	टी०२	कति	कीता
		हितका	हिताका
	टी०१	निमित्येलि	नित्यमिति
१५७	टी०४	॥ २ ॥	२
१५८	म०७	बहध	बहुध
१७१	टी०१	प्रायश्चि	प्रायचि
१७२	म०११	मित्र	मित्रं
१७३	७	क्षयो	क्षपो
१७३	१	टी०मि	मि

प्रयौदशादिप्रकरणशुद्धिपत्रम्

१८

पृ०	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१७४	मू० ८	वार्षि	वार्षि
१७६	टी० १	और	०
१७७	मू० ९	बम	बन
	टी० ६	उत्क	उक्के
	टी० ७	गरु	गुरु
१७८	मू० ६	धनो	घनतो
	टी० २	भगवान्	गौत्तमने
	टी० २	जाने	जाके
	टी० ५	पदा	पादो
१७९	मू० ९	पला	पलां
१८०	मू० ११	नवा	नवी
१८१	मू० ११	धनुन	धनुर्न
१८४	मू० ३	सन	सुत
१८८	टी० ५	मर्थ	मर्थय
१८९	मू० १	नवोः	नवो
	मू० ८	जाना	जातो
१९०	मू० २	त्वोप	त्वोप
१९३	मू० ३	सोप	सोपि

॥ इति त्रयोदशप्रकरणप्रभृते सप्तदशप्रकरणं यावच्छुद्धिपत्रं संपूर्णम् ॥

टीका ॥ उ०नमः ॥ अनु पातक प्रकरण कह कर अव शुद्धि प्रकरण कहतेहैं अनु- पात क पाप ब्रह्महत्यादि पापोंके तुल्य होतेहैं तिनके प्रायश्चित्त कहणोंके प्रसंग से शुद्धिकी उप स्थिति होई तिस कारण ते शुद्धि प्रकरण कहतेहैं और तिसके आदमे ग्रंथकर्ता मंगला चार करतेहैं गोपेति । कि गोआं पालन वालाभीहै तद भी पृथ्वी के पालन वालाहै इसमें विरो धा लंकारहै क्या जो गोपालहै सो अचला पाल नहि होता ॥ और गोपीआं का स्वामी भीहै तदभी गोपां का प्यारा नहि जो गोपीश होताहै सो गोप बल्लभ होताहै और जलमें होण वाला भीहै तदभी जलमें उदासीनहै जो जल भू होताहै सो जल निर्वद नहि होता इन ने कहणे ते तीन जगाहि विरोध आया परंतु वास्तव अर्थ यहहै कि पालनके अधि कारते विष्णु अचला पालहै १ और अगोप क्या गोवर्द्धन के समीप स्थान तिनका प्याराहै २

उ० श्रीगणेशायनमः ॥ गोपालोप्यचलापालोगोपीशोऽगोपबल्लभः ॥ जल भूर्जलनिर्वदः शुद्धः शुद्धैर्मतोमहान् ॥ १ ॥ अगोपानांगोवर्द्धनोपाश्रि तानांबल्लभः तथामत्स्यावतारेजलभूः परशुरामावतारेचजलनिर्वदः समु द्रोत्सादित्वादितिवास्तवोर्थः ॥ अथशुद्धिप्रकरणमारभ्यते । अत्रेत्यप्रसं गसंगतिः ॥ अनुपात्यतेतत्सदृशत्वेनज्ञायतेतान्यनुपातकानि महापा पतुल्यानिपापानि अत्रतत्प्रायश्चित्तप्रसंगतस्तत् सादृश्यांपस्थित्याशु द्धेरुपस्थितिरिति शुद्धिस्तावदपवित्रसंसर्गाभावः ॥ साचदेशकालवस्तु स्वभावकृतत्वेनचतुर्धा देशकृताचांडालगृहादिनिवृत्त्या १ कालकृतासूत कादिनिवृत्त्या २ वस्तुकृताऽमेध्यादिनिवृत्त्या ३ स्वभावकृतास्वर्णा दिस्था ॥ ४ ॥

मत्स्या वमारमें जल भूया और परशुरामावतार विषे तिसते उदासीन है समुद्र के उठाणे करके यह तात्पर्यहै । और बडाहै और शुद्धहै सो ईश्वर शुद्धि के वास्ते मन्याहै ॥ १ ॥ इ समें प्रतिज्ञा करतेहैं ॥ अथेति । पहले शुद्धि शब्द का अर्थ कथन करतेहैं कि शुद्धि नाम उसकाहै जो अपवित्र वस्तु के साथ संग ना करणा ॥ और सो शुद्धि देश १ और काल २ और वस्तु ३ और स्वभाव ४ इन कर्के चार ४ प्रकार की है और जो चांडाल गृहादि और अवित्र स्थान इत्यादि तें निकल जाणा सो देश कृत शुद्धिहै १ सूतक और मरण इन की निवृत्ति करके जो शुद्धिहै सो काल कृत है २ और अपवित्र वस्तु जो मदिरादि तिसके लेप की भस्मादि करके निवृत्ति सो वस्तु कृत शुद्धिहै ३ और स्वर्णादियों में जो शुद्धि है सो स्वभाव कृत है ४

२ ॥ श्रौतण्वारकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

रुद्रधरजी कथन करतेहैं शुद्धिरिति किसंपूर्ण विधान किया जो कर्माधिकार तिसके सिद्ध करण वाला जो धर्म भेद तिसकानाम शुद्धिहै॥और कर्मोंका जो विरोधि धर्म भेद तिसका नाम अशुद्धिहै अर्थात् जिसमें संध्यादि कर्मोंका लोप होजावे॥सो कौणसाहै जो सपिंडी पुरुषका जन्म और मरण इत्यादिहैं और किसेस्थानमें अशुद्धिके निकलनके समय कथन करणे कर्के शुद्धिका विचार करीदाहैं और किसे स्थानमें तिसके विना भी शुद्धिहोतीहै॥जैसेवस्त्रादिकीशुद्धि कालते विनाहि होतीहै जेकर मलादि लिप्त बस्त्र तत्काल धोना जावे तद तत्काल शुद्ध होता है और जेकर दश अथवा बीस दिन पड़ा रहे तद तितनेही दिन अशुद्धहै॥तत्रेति तिनके मध्य में देश क्त शुद्धि प्रकीर्णकादियोंमें पहले दिखाईहै अब कालकृत शुद्धि दिखतिहैं तिसमें भी

रुद्रधरस्तु ॥ शुद्धिस्तावदखिलविहितकर्माधिकारापादकोधर्मविशेषः
अशुद्धिस्तुतद्विरोधीधर्मविशेषएवसपिंडजन्मादिकः साकचिदशुद्धिविग
मसमयकथनेनविविच्यते ॥ कचित्तुतद्विचाराविमर्शनेनेत्याह ॥ तत्रदेश
कृताशुद्धिःप्रकीर्णकादौदर्शिताप्राक् कालकृताप्रदर्श्यते तत्रापिमरणापेक्ष
याजननस्यैवप्रथमोपस्थितत्वात्तच्छुद्धिस्तावदभिधीयते ॥ मनुः ॥ यथेदं
शावमाशौचंसपिण्डेपुविधीयते जननप्येवमेवस्यान्निपुणांशुद्धिमिच्छताम्
॥ १ ॥ सर्वेषांशावमाशौचमातापित्रोस्तुसूतकम् मातुर्वासूतकंप्राहुरप
स्पृश्यापिताशुचिः २ यथासपिण्डेपुदशाहादिआशौचमुक्तंअत्रतुवक्ष्यमाणं
शावंमरणनिमित्तम् तथाजननेजन्मनिमित्तमप्येवमेवबोध्यम्

मरण को उपस्थितिते जन्मकोहि पड़ले उपस्थित होणेतें प्रथम जन्मकी शुद्धि कहतेहैं इसमें मनुजी कथन करतेहैं यथेति कि जिस तरहां यह शाव अशुद्धि सपिंडीयोंमें विधान करीदीहै तिसी तरहां निपुण शुद्धिकी जो इच्छा करतेहैं पुरुष तिनको जन्मविषे भीशुद्धि कथनकीतिहै ॥ १ ॥ इसमें कुछ भेद कहतेहैं सर्वेति किशाव अशुद्धि सबनोंको कथन कीतिहै ॥ और सूतक वाली माता पिताकोहि कहिहै अथवा माताकोहि सूतक कथन करतेहैं और पिता स्नान करके शुद्ध होजाताहै ॥ २ ॥ इसीका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं यथेति जिस तरहां सपिंडीयोंके विषे दश १० दिन पर्यंत (शावं) क्या मरण निमित्त अशुद्धि ग्रहण कीतीहै (जनने) क्या वालादि जन्मके विषे भी जन्म निमित्त अशुद्धि तिसी तरहां जानणी ॥

टीका ॥ (निपुणां) कर्त्ता अच्छी तरहों शुद्धि) इसमें यह भेद है कि मरण निमित्त अशुद्धि तिसके सब संबंधियोंको होती है और जन्म निमित्त अशुद्धि माता पिता को ही होती है अर्थात् माता पिताको ही अस्पृश्यता है ॥ तत्रेति ॥ तिसमें भी माता को ही दश दिन अस्पृश्यता है और पिता स्नान कर्के शुद्ध हो जाता है ॥ अब आशौच शब्दका अर्थ करते हैं कि अशुद्धि का जो होना उसको आशौच कथन करते हैं ॥ इस स्थानमें दुहां पदांको वृद्धि है ॥ अंगिराजी कथन करते हैं सूतेति कि जन्म निमित्त सूतकमें प्रसूता स्त्रीको छोड़ कर्के और संबंधियोंके साथ स्पर्श करणे कर्के दोष नहि होता है ॥ १ ॥ और जेकर पिता प्रसूता स्त्रीकी खट्टादिको स्पर्श करे तद दश दिन उभी अस्पृश्यता होता है सोई पराशरजी कथन करते हैं यदीति ॥ कि जेकर ब्राह्मण प्रसूता स्त्रीके साथ स्पर्श करे तद तिसको अस्पृश्यता होती है भावे ब्राह्मणपडंगके

निपुणांसमीचीनां अत्रायंविशेषः शावमाशौचं तद्वाग्निनां सर्वेषां भवतिसूतके सूतिनिमित्तं तनुमातापित्रोरेवास्पृश्यतापादकं भवति तत्रापि मातुरेवास्पृश्यतां दशाहव्यापिनी भवति पिता तु उपस्पृश्य स्नात्वा शुचिः शुद्धो भवति वा शब्दोत्रैवकारार्थः अशुचेर्भावः आशौचं पदद्वयस्यापि वृद्धिः अंगिराः सूतके सूतिकावर्जमंगस्पर्शो न दुष्यति संस्पर्शे सूतिकायास्तु स्नानमेव विधीयते ॥ १ ॥ पिता सूतिकायाः शयनादिभिः संस्पृष्टो दशाहमेवास्पृश्यो भवति यथाह पराशरः ॥ यदि पत्न्यां प्रसूतायां द्विजः संपर्कमिच्छति सूतकं तु भवेत्तस्य यदि विप्रः पडंगवित् ॥ १ ॥ पडंगवेदवेत्तापि ब्राह्मणः प्रसूतपत्नीं स्पृष्टः सकलसूतकभागं भवतीत्यर्थः ॥ अत्र संपर्कपदेन शयनासनादि संपर्क एव गृह्यत इति पराशरमाधवनिर्णयसिंधु विद्वन्मनोहरादिषु स्पृष्टम् केवल स्पर्शे तु स्नानमेव ॥ संवर्त्तापि ॥ जाते पुत्रे पितुः स्नानं सचैलस्याविधीयते माताशुद्ध्ये दशाहेन स्नात्वा तु स्पर्शनं पितुः १ स्नात्वा स्थितस्य पितुः स्पर्शनं न निषिद्धमित्यर्थः स्नानात्तु स्पर्शनं पितुरिति पाठांतरम्

जानणे वाला भी होवे ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट कर्के अर्थ करते हैं कि पडंग वेदके भी जानणे वाला होवे ब्राह्मण तदभी जेकर प्रसूता स्त्रीके साथ स्पर्श करे तद सारे सूतकके भजन वाला होता है ॥ इस स्थानमें संपर्क पद कर्के शयन और आसन इत्यादिका स्पर्श ग्रहण करणा यह पराशर माधव और निर्णय सिंधु और विद्वन्मनोहरा इत्यादियोंमें स्पष्ट है ॥ और केवल स्पर्शके विषे स्नानहि विधान कीया है ॥ इसमें संवर्त्तजी कथन करते हैं जातेति कि पुत्रके उत्पन्न होयां २ पिता को सहित वस्त्रोंके स्नान विधान कीया है और माता दश दिन कर्के शुद्ध होती है और स्नान कर्के पिताको स्पर्श विधान कीया है अर्थात् स्नान तें उपरंत पिताके साथ स्पर्श करणे का दोष नहि (स्नानात्तु स्पर्शनं पितुः) एभीकिते पाठ होता है १

४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी० भा० ॥

टी० ॥ ब्रह्मपुराणमें भी कहा है ॥ सूतेति किं सूतक के होयां २ अर्थात् पुत्र के उत्पन्न होयां २ पुत्रके मुख को देखकरके पिता अशुद्ध होता है ॥ पश्चात् सहित वस्त्रोंके स्नान करके तात् काल शुद्ध होता है (जनकः शुचिः) यह भी किते पाठ होता है ॥ १ ॥ अन्याइति किं और माता भी जेकर सूतक घर का न प्राप्त होण तद सपिंडीयों की न्याई सोभी स्पर्शके योग्य होती याहें ॥ और सपिंडी भी जेकर सूतक गृहको न प्राप्त होण तद ओभी संपूर्ण सर्वदा काल स्पर्श करणे योग्यहें ॥ २ ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहें ॥ किं अन्यामातरः कया माता कियां साकणा तद्देहं कया जद प्रसूता स्त्री के घरको प्राप्त होकर प्रसूता स्त्रीको न स्पर्श कर ण तद सपिंडीयोंकी न्याई शुद्धहें जेकर प्रसूताको स्पर्श करण तद सोभी दश १० दिन अ

ब्रह्मपुराणे सूतकेतुमुखं दृष्ट्वा जातस्य जनको शुचिः कृत्वा सचैलं स्नानं तु शुद्धो भवति तत्क्षणात् १ अन्याश्च मातरस्तद्वत्तद्देहं न व्रजंति चेत् सपिण्डाश्चापि संस्पृश्याः सति सर्वेपि नित्यशः २ अन्यामातरः सपत्नमातरः अत्र तद्देहगमनं सूतिकास्पर्शपरं सति गृहे गत्वा तांचेन्न स्पृशंति तदा सपिण्डवच्छुद्धा एव सूतिकास्पृष्टास्तु तत्तुल्या इत्यर्थः सपिण्डा अप्येवं तत्स्पृष्टा अशुद्धा भवंति ते पुनः स्नानेन शुद्ध्यन्ति पित्रा स्नानमपि पुत्रमुखदर्शनानंतरं कार्यमित्याह वसिष्ठः जातमात्र कुमारस्य मुखमस्यावलोकयेत् पिता ऋणाद्विमुच्येत पुत्रस्य मुखदर्शनादिति विधिमप्याह स एव श्रुत्वा जातं पिता पुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत् उत्तराभिमुखो भूत्वा नद्यां वा देवखातके १ इत्यादि ग्रंथांतरतोऽवसेयम् अत्र पुत्रजातमिति निर्देशात् कन्यां जातां दृष्ट्वा श्रुत्वा वा स्नानेन विनैव पिता शुद्धयतीति हारलतादयः

स्पृश्य होतीयां हैं और सपिंडी भी जेकर स्पर्श करण तद सोभी अस्पृश्य होतेहैं सो सपिंडी फेर स्नान करके शुद्ध होतेहैं और पितानें पुत्रके मुख देखनेतें उपरंत स्नान करणे योग्यहै यह वसिष्ठजीने कहा है जातेति किं पाहिले पिता उत्पन्न होए २ पुत्रके मुखको देखे पुत्रके मुख देखनेतें पिता पितरांके ऋणते रहित होजाताहै इह कहा है १ इसमें विधिको भी वसिष्ठजी कहतेहैं श्रुत्येति किं उत्पन्न होये पुत्रको सुण करके पिता सहित वस्त्रोंके और उत्तर दिशाके पासे मुख करके नदीमें अथवा देवखातमें स्नान करे इत्यादि और ग्रंथोंतें भी निश्चय करलैणा इसमें पुत्रजातं इसपदके दिखाणेतें कन्या उत्पन्न होइको देख करके अथवा सुण करके स्नान ते विना भी पिता शुद्ध होताहै यह हारलतादि ग्रंथोंमें कहा है ॥

इसमें कुछ और कथन करतेहैंकि (पौत्री माता महस्तेन) इस वाक्य कर्के कन्याके विषे भी पुत्र पदका प्रयोग होणेतें अर्थात् पुत्र शब्द कर्के कन्याका भी बोध होताहै इस कारणतें कन्याके भी उत्पन्न होयां २ स्नान कर्के हि पिताकी शुद्धि होतीहै यह निर्णयसिन्धुमें कथन कीयाहै ॥ योक्ताहै ॥ ब्राह्मेति कि ब्राह्मणी क्षत्रराणी और वैश्यकी स्त्री और शूद्रा यह प्रसूत होइयां २ दश १० दिन से उपरंत स्पर्शके योग्य होसोआहैं और शूद्रा तेहरा १६ दिन कर्के स्पर्शयोग्य होतीहै इसमें शूद्राके विषे जो तीन दिन अधिक कथन कीएहैं सो असत् शूद्रा यो है भीलणी तिसके विषे जानणा अथ शूद्राके विषे प्रचेता जो कथन करतेहैं सूतिकेति चतुर्वर्ण की स्त्री दश दिन कर्के शुद्ध होतीहै एह कहाहै॥प्रसूता स्त्रीके कर्मके योग्य कालको पैठीनसि जी कहतेहैं सूतीति कि पुत्रके उत्पन्न करण वाला स्त्रियों २० दिन ते उपरंत स्नान करवाके

पुत्रशब्दस्यपौत्रीमातामहस्तेनेतिकन्यायामपि प्रयोगात्कन्योत्पत्तावपि स्नानेनैवपितुःशुद्धिरितिनिर्णयसिंधुः यत्तुब्राह्मणीक्षत्रियावैश्याप्रसूतादशभिर्दिनैःगतैः शूद्राचमंस्पृश्यात्रयोदशभिरेवंचतिशूद्रायादिनत्रयाधिक्यप्रतिपादनमसच्छूद्राविषयम्॥सच्छूद्राविषयेतुप्रचेताः सूतिकासर्ववर्णानांदशरात्रेणशुद्ध्यतीति तस्याःकर्मयोग्यताकालमाह ॥ पैठीनसिः ॥ सूतिकां पुत्रजननींविंशतिरात्रेणस्नातांसर्वकर्ममाणिकारयेत् मासेनस्त्रीजननीम्॥पुत्रोत्पत्तौविंशतिरात्रेणपुनःकृतस्नानोपाकादियागादियाकर्मकारयेत् कन्योत्पत्तौ मासेनेति अत्र जननाशौचे मरणाशौचेच सूतकेकर्मणां त्यागःसंध्यादीनांविधीयते इत्यादिनियमआह्निकभागेविस्तरशःप्रतिपादितत्वात्पुनर्नप्रतिपाद्यते॥कानिचिद्वस्तूनिस्नतकादावपिशुद्धान्येवत्याह मरीचिः॥लवणेमधुमांसेचपुष्पमूलफलेपुच शाककाष्ठतृणेष्वेवं दधिसर्पिःपयस्सुच १ तैलौषध्याजिनचैवपक्वापक्केस्वयंग्रहे पुण्यपुचैवसर्वेपुनाशौचंमृतसूतके २

पयोदुग्धम्

कर्मोंको करवाणे और कन्याके उत्पन्न करण वालीको एक मासते उपरंत कर्मोंमें जोडे इस स्थानमें जन्म आशौचके विषे और मरण आशौचके विषे (सूतके कर्मणां त्यागः संध्यादीनां विधीयते ॥ इत्यादि वचनों कर्के जो नियम कीयाहै तिसको आह्निक भाग में विस्तार कर्के प्रति पादन करणेतें फेर इस स्थानमें नहिं प्रति पादन कीया॥ कोई वस्तु सूतकमेंभी शुद्ध हिर हतींआहैं इह मरीचिजी कहतेहैं लवेति कि लवण मक्षीर मांस और पुष्प और मूल और फल और शाक और काष्ठ और तृण और दधि और घृत और दुग्ध १ तैल और आपध और च. में और आपणे कर्के ग्रहण कोये पक्व और अपक्व और संपूर्ण पवित्र जो वस्तुहैं यह सभ वस्तु मरण और जन्म सूतकमेंभी अपवित्र नहिं हुंदीआहैं अर्थात् शुद्धही रहंदीआहैं ॥ २

६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी० भा० ॥

इसका अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं कि पक्ष इस पद करके सत्तुं और लड्डू इत्यादि ग्रहण करणे अपक्ष इस पद कर्के चावलादि ग्रहण करणा इन वस्तुं कों अपणे हस्त कर्के जद ग्रहण करे तद दोष नहि और जिसके घर सूत कहै तिसके हस्त करके जद ग्रहण करे तद दोष है तिसकी आ ज्ञाले कर्के ग्रहण करलेवे ॥ स्वयं ग्रहे इस पदका पक्षापक्षके साथ संबंध करणा और लवणादिके साथ संबंध नहि करणा तिस कारणे लवणादि सूतक वाले पुरुषके हस्त करके ग्रहण करलेवे यह रुद्रधर जीने कहा है ॥ इसमें उपरंत आशौचका भेद दक्ष जीने कहा है सद्य इति कि एक स्नान करके शुद्ध है इसी तरह एक दिन कर्के और तीन ३ दिन और चार दिन तिसी तरह छे दिन और दश दिन और वारां दिन और पंदरह दिन और एक मास ३० ॥ १ ॥ और तिसी तरह मरण पर्यंत यह दश पक्ष आशौचमें कथन कीये हैं इन संपूर्णोंको स्थिति क

पक्षसक्तुमोदकादि अपक्षंतण्डुलादि अस्मिन् हि स्वयं ग्रहे आत्मना गृह्यमा णे न तु स्वामिहस्तात् तदनुमतिरेव स्वीकारे हेतुरित्यर्थः । अत्र स्वयं ग्रहे इति पक्षापक्षसंबन्धे वनलवणादिसंबन्धि तेन लवणादिग्रहणमशौचिद्वारापि कार्यमिति रुद्रधरः । अथाशौचविशेषोदक्षप्रोक्तः । सद्यः शौचं तथैकाहस्य ह श्वतुरहस्तथा पट्टदशद्वादशाहश्च पक्षो मासस्तथैव च ॥ १ ॥ मरणांतं तथा चान्यदशपक्षाश्च सूतके उपन्यासक्रमेणैतान्वक्ष्याम्यहमशेषतः ॥ २ ॥ सू तके शौचे स्नानमात्रेण यत्र शुद्धिस्तत्सद्यः शौचम् १ एकाहोरात्रव्यापक मेकाहः २ एवमन्यत्रापि चतुरहादावहः पदं अहोरात्रपरम् रात्रिपदमप्येवं बोध्यम् रुद्रधरोप्येवं यदारात्रौ संधयोश्च मरणजन्मनीभिवतस्तदानीं तेन दिनेनैव सहाहोरात्रो ग्राह्यः यथा च कश्यपः ॥ रात्रावेव समुत्पन्ने मृते रजसिसूत के पूर्वमेव दिनं ग्राह्यं यावन्नाभ्युदितो रविरिति द्विगर्तादावेवायं पक्षः शिष्टपरि गृहीतः अन्यत्र तुरात्रिभिर्भागं कृत्वा आद्यभागद्वये चेज्जननमरणे पूर्वमेव दिनं तृतीयेतत्तरं दिनं ग्राह्यमिति मिताक्षरायुक्तेः मरणजनननिमित्तवि लक्षणमन्यत् दशममशौचमित्यर्थः ॥

म कर्के में कथन करता हूं ॥ २ ॥ इसी तरह रुद्रधरजी भी कहते हैं यदेति कि रात्री और सायं काल और प्रातः काल इनमें जद मरण और जन्म होवे तब पूर्वले दिन करके हि दिन रात्र ग्रहण करणा ॥ १ ॥ इसी प्रकार कश्यप जी भी कहते हैं रेति कि जद रात्रिके विषे जन्मे और मृत होवे और स्त्रीको ऋतु आवे तद पूर्वला दिन हि ग्रहण करणा जितना पर्यंत सूर्य न उदय होवे इह कहते हैं ॥ १ ॥ द्विगर्तादिदेशोंमें हि यह पक्ष अष्टौने ग्रहण कीया है और और देशोंमें यह विभाग कीया है वचा कि रात्रिके तीन भाग करणे और जेकर आदके दो २ भागोंमें जन्मे और मृत होवे तद पूर्वला दिन हि ग्रहण करणा ॥ और तीसरे भागमें जन्म मरण होवे तद अगला दिन ग्रहण करणा यह मिताक्षरादियों में कहा है ॥ मरण और जन्म निमित्त आशौचते दशवां आशौच विलक्षण हि है यह पूर्व श्लोक का अर्थ है ॥

तिसमें सद्यः शौचवाले पुरुष को कहतेहैं ॥ ग्रंथेति ॥ सहित कल्पके और सहित रहस्यके और छे अंगों करके युक्त जो वेद तिसको जो ब्राह्मण ग्रंथते और अर्थते जानताहै और कियावाला है तिसको सूतक नहि हुंदा ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट करके अर्थ कहतेहैं ॥ जो ब्राह्मण वेद को ग्रंथ ते क्या शब्दते और अर्थते अछोतरहां जानताहै कैसे वेदको ॥ ज्योतिष्ठोमादि जो यज्ञ और अनुष्ठानों के विधान यह रूप जो कल्पहैं और शिक्षादि यो और पंच अंगहैं और वेदांत और मीमांसादि जो रहस्य हैं इन करके जो युक्त है ॥ (कियावान्) क्या श्रुति और स्मृति प्रतिपाद्य जो किया तिसमें चतुर हो जद ब्राह्मण तद सूतकको नहि प्राप्त होताहै इसमें सूतकका नाश जोहै सोही सद्यः शौचहै क्योंकि प्राप्तिके होयां २ हिनिषेधको उचित होणें एक दिन और

तत्र सद्यः शौचवन्तमाह ग्रंथार्थतो विजानाति वेदमंगैः समन्वितम् संकल्पं सरहस्यं च क्रियावांश्चेन्न सूतकम् १ यो द्विजो वेदं ग्रंथतः शब्दतः अर्थतश्च समीचीनतया जानाति कीदृशं ज्योतिष्ठोमाद्यनुष्ठानपद्धतिस्वरूपैः कल्पैः शिक्षादिपंचभिरपरैरंगैरहस्यरूपैश्च ब्रह्ममीमांसादिभिर्युक्तं क्रियावान् श्रौतस्मार्तक्रियाकुशलः एवंभूतश्चेन्न सूतकी भवति अत्र सूतकाभावो हि सद्यः शौचं गमयति प्राप्तौ सत्यमेव निषेधोचित्यात् । न सूतकं एकाहाद्यशौचं न भवति तेन सद्यः शौचं भवतीति शुद्धिविवेकः ॥ तथा शुद्धिविवेके दक्षः । एकाहा ब्राह्मणः शुद्धयेद्योग्निवेदसमन्वितः हीनो हीनतरश्चैव त्र्यहश्चतुरहस्तथा १ यो द्विजो विहितक्रियाकर्त्ता अग्निना श्रौतेन स्मार्तेन च वेदेन सांगेन ज्ञानार्थेन समन्वितः तस्यैकाहमशौचं भवति यस्तु हीनः श्रौताग्निना विशेषणांतरवान् तस्य त्र्यहम् योवा अग्निद्वयहीनो विशेषणान्तरवांश्चेत्तदा तस्य चतुरहो

शौचम्

तीन दिन इत्यादि जो अशौचहै सो नहि हुंदा तिस कारणें सद्यः शौचहै यह शुद्धि विवेकमें कहाहै ॥ इसी विषेमें शुद्धि विवेकमें दक्षजीने कहाहै । एकेति कि जो ब्राह्मण अग्नि और वेद इन करके युक्तहै सो ब्राह्मण एक दिनतें शुद्ध होताहै और जो श्रौत अग्निमें रहितहै सो तीन दिन करके शुद्ध होताहै और जो श्रौत और स्मार्त अग्निमें रहितहै सो चार दिन करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं । जो ब्राह्मण संध्यादि कर्मके करण वाला और श्रौत और स्मार्त अग्नि और सहित अंगोंके जो वेद इन करके जो युक्तहै तिसको एक दिन और जो ब्राह्मण श्रौत अग्निमें रहितहै और स्मार्त अग्नि और वेद इन करके युक्तहै तिसको तीन दिन और जो दोनों अग्निमें रहितहै और वेद करके युक्तहै तिसका चार दिन अशौचहै

८ ॥ श्रौतवोरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी ० भा ० ॥

इस विषेमें बृहस्पति जीका वाक्य है विरेति किवेद और अग्नि करके युक्त जो ब्राह्मण है सो तीन रात्रि करके शुद्ध होता है और जो अग्नि तेरहित है और वेद करके युक्त है सो पांच दिन करके शुद्ध होता है और जो ब्राह्मण ब्रुव है सो दश दिन करके शुद्ध होता है ब्राह्मण ब्रुवका अर्थ आगे आवेगा १ इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ महित अगोंके वेद और स्मार्त अग्नि इन कर्के युक्त जो है और श्रौत अग्नि तेरहित है तिसको तीन ३ दिन अशौच है और जो दोनो अग्निते रहित है और केवल वेदके पढ़ने वाला है तिसको पांच दिन अशौच है । और जो वेद को भी नहि पढ़दा तिसको छे ६ दिन अशौच है ॥ इस वाक्य विषे । जो ब्राह्मण अग्नि द्वय करके अनुष्ठान करणे वाला है और वेदार्थ को सकलता करके नहि जानता और कुछ वेदार्थ जानता है और संध्यादि संपूर्ण कर्मों के करणे वाला है तिसको एक १ दिन अशौच है । क्यों

अत्रैव विषये बृहस्पतिः ॥ त्रिरात्रेण विशुद्धेत विप्रो वेदाग्निसंयुतः । पंचाहे नाग्निहीनस्तु दशाहं ब्राह्मणब्रुवः ॥ १ ॥ अत्रापि वेद ऋगादिः सांगः अग्निः स्मार्तः तद्युतस्य ब्रह्मम् अग्निद्वयरहितस्य निरंगवेदाध्यायिनः पञ्चाहः एतस्मादप्यपकृष्टवेदं तस्य पडहः ॥ अत्राग्निद्वयेनानुष्ठातुः वेदार्थसाकल्यज्ञानहीनस्य विहितमकलक्रियानुष्ठातुः पूर्ववाक्येन सहैक वाक्यत्वादेकाहमशौचमाव्यासेन ब्राह्मणब्रुवः प्रदर्शितः गर्भाधानादिभिर्युक्तस्तथोपनयनेन च न कर्म कृन्न चार्थति सभवे ब्राह्मणब्रुवः ॥ १ ॥ विहितक्रियाहीनो वेदाध्ययनशून्यः ब्राह्मणब्रुवः अस्य दशरात्रमशौचम् सूतके संपर्क एव हेतु रित्याह पराशरः ॥ संपर्कादुप्यत विप्रो जनने मरणे पुच संपर्क विनिवृत्तानां न प्रेतं नैव सूतकम् १ प्रेतं मरणनिमित्तमशौचमित्यर्थः इमे सद्यः शौचादयोऽल्पा शौचपक्षाः सर्वेऽपि सपिंडान्तराणामशौचभागिनां संपर्काभाविद्रष्टव्याः

तदभावे ते पामपि दशाहं बोध्यमिति विवेककारः ॥

कि इस वाक्य की पूर्वले वाक्य के साथ एकता होने तें ॥ ब्राह्मण ब्रुव व्यासजी ने कहा है ॥ गेति । गर्भाधानादि और उपनयन कर्म करके जो युक्त है ॥ और संध्यादि कर्मोंको नहि कर्ता और वेद भी नहि पढ़ाता सो ब्राह्मण ब्रुव होता है ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ विधान की तियां जो क्रिया हैं तिनते और वेदाध्ययन तेरहित सो ब्राह्मण ब्रुव होता है तिसको दश १० दिन अशौच है सूतक संगति कारण है ॥ इह पराशर जी कहते हैं समिति कि जन्म और मरण अशौच विषे संगति ब्राह्मण दोषको प्राप्त होता है ॥ और संगति रहित हैं तिनको मरण निमित्त और जन्म निमित्त अशौच नहि हुंदा ॥ १ ॥ यह सद्यः शौचादि थोड़े अशौचके पक्ष जो हैं सो संपूर्ण अशौचके भजन वाले जो सपिंडा हैं तिनको संगका अभाव जद होवे तद होते हैं और जेकर संग करण तद तिनको भी दश १० दिन अशौच जानरणा ॥ एह विवेक कार ने कहा है ॥

लोकमें भी श्रेष्ठ पुरुष संसर्गों कीहिं अशौच कथन करते हैं इसमें अकठा आसन और शयनादि करके संसर्ग भी नौ १ प्रकार कीहिं सो संसर्गों प्रकरणमें देख लेना ॥ माधवीय ग्रंथमें और कहा है कि आचार और स्वाध्याय इनको देखकरके सूतकका संकोच किया है इत्यादि वचनों का प्रारंभ करके कलियुगमें बुद्धिमान् इन धर्मों का त्याग कहते हैं यह और स्मृति में कथन करनेतें अर्थात् सूतक संकोच कलियुगमें ना करना चाहिये इसतें सपिंडी के मृत होयां होयां ब्राह्मण को दश १० दिन हिं अशौच कहा है ॥ इसीमें और भी प्रमाण है कि कलियुगमें अशौच के भेदोंको करदाहुआ पापी होता है इस हारीत के वचनतें भी दश १० दिन हिं अशौच है ॥ और चार ४ पढ़े हैं वेद जिनोंने इत्यादि वाक्य करके सूतक संकोच

लोकेपि संसर्गिणमेवाशौचिनं वदंति शिष्टाः संसर्गोऽप्यत्र एकासनशयना दिनवविधः संसर्गिप्रकरणे द्रष्टव्यः माधवीये तु वृत्तस्वाध्यायसापेक्षमघसंकोचनंतथेत्याद्युपक्रम्य कलौ युगे त्विमान् धर्मान् वर्ज्यानाहुर्मनीषिण इति स्मृत्यन्तरेऽभिधानात् दशाह एव विप्रस्य सपिण्डमरणे सति कल्पान्तराणि कुर्वाणः कलौ भवति किल्विपीति हारीतवचनाच्च चत्वार्यधीतवेदानामित्यादि नोक्तोऽघसंकोचो युगान्तरविषय इति व्यवस्थापितम् ॥ भार्याभेदे जनने विशेषपमाह मनुः । निरस्य तु पुमान् शुक्रमुपस्पृश्यैव शुद्ध्यति वैजिकादभिसंवंधादनुरुंध्यादघं त्र्यहम् १ अर्थः ॥ पुरुषः शुक्रं वीर्यं निरस्य त्यक्त्वा अकामः स्वप्नादिरितः सिक्कामूत्रवत् स उपस्पृश्य आचम्य स्नानं विनैव शुद्ध्यतीत्यर्थः कामतो रितः सैके मैथुने वा कृते स्नानमुक्तं वैजिकात् अभिसंवंधात् परपूर्वभार्यायामपत्योत्पत्तौ त्र्यहमशौचं भवति ॥

किं आ है ॥ सो और युगका विषय है यह स्थापन किया है ॥ मनुजी भार्या भेद करके जन्मके विषे अधिक कहते हैं । निरस्य पुरुष अकामतें वीर्यको त्याग करके आचमन करे तद शुद्ध होता है । वैजक संवंधतें संततीके उत्पन्न होयां होयां तीन दिन अपवित्र रहता है ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है कि पुरुष अकामतें अर्थात् स्वप्नादि में वीर्यको त्याग करके (मूत्रवत्) जिसतरहां मूत्रको करके आचमन करके स्नानते विनाही शुद्ध होता है तैसेहि यह भी शुद्ध हुंदा है ॥ कामते वीर्यके त्यागमें अथवा मैथुनके कोस्यां होयां स्नानकरके शुद्ध होता है ॥ वैजकात् अभिसंवंधात् क्या वगानी स्त्रीके विषे अर्थात् जो पहले वगानी थी विसविषे संतती उत्पन्न होयां २ तीन ३ दिन अशुची होता है

१० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

इसी विषेमें विष्णु जीका वाक्य है ॥ परेति । कि पराई यों स्त्रियों के विषे वीर्य को जो त्यागन वाला पुरुष है तिसको तीन ३ दिन अशौच है अर्थात् जिसकी स्त्री है और जिसने वीर्य सेक किया है इन दोनों को तिसको संततीमें तीन दिन अशौच है इति ॥ इस वाक्यमें जन्म और मरण नहि भी कथन कीये तदभी जन्म के प्रसंगमें जन्माशौच ग्रहण करणा यह कोई कहतेहैं ॥ और बहुत यह कहतेहैं । कि जन्म और मरणके विषे स्त्रीवाले कों और वीर्य के सेक करण वाले कों तीन दिन अशौच कथन किया है और जिस पुरुष की स्त्री है तिसके सपिंडियों को एक दिन अशौच है और जो वीर्यके स्थापन करण वाला है तिसके सपिंडियों को तीन ३ रात्र अशौच है । इति ॥ यह मरीच्यादिके वचनके अनुसार करके (वैजिकादभिसंबंधात्) यह वचन जन्म और मरण इन दोनोंमें है यह वार्ता

तथाचविष्णुः ॥ परपूर्वभाष्यासु रेतःपातिनस्त्रिरात्रमशौचमिति । जननमरणयोरनुक्तावपि जननप्रसंगाजननाशौचपरमिदमित्येके ॥ सूतकेमृतकेचैव त्रिरात्रपरपूर्वयोः । एकाहस्तु सपिण्डानां त्रिरात्रं यत्र वैपितुरिति मर्याचि प्रभृतिवचनानुरोधेन वैजिकादपि संबन्धादिति वचनस्य जननमरणोभयपरत्वमिति बहवः ॥ क्षत्रियवैश्ययोः साग्न्योर्विशेषमाह पराशरः ॥ क्षत्रियस्तु दशाहेन स्वकर्मनिरतः शुचिः तथैव द्वादशाहेन वैश्यः शुद्धिमवाप्नुयादिति जननमरणयोः साधारणमिदम् ॥ शूद्रे विशेषो याज्ञवल्क्येन प्रदर्शितः ॥ क्षत्रस्य द्वादशाहानि विशांपंचदशैव तु त्रिंशद्दिनानि शूद्रस्य तदूर्ध्वं न्यायवार्तिनः ॥ १ ॥ न्यायवार्तिन इति शूद्रसंबन्धेव न क्षत्रवैश्यसंबन्धि तदर्थस्य पूर्वप्रदर्शितत्वात् ॥ अत्रत्यक्षत्रवैश्यावन्यायवार्तिनौ बोध्यौ ॥

बहुत कहतेहैं ॥ अग्नि होतृ जो क्षत्री और वैश्य हैं तिनको विशेष कहते हैं पराशर जी ॥ कि अपने कर्मों के करण वाला क्षत्री जन्म और मरण के विषे दश १० दिन करके शुद्ध होता है ॥ तिसी प्रकार वारह दिन करके वैश्य शुद्धि को प्राप्त होता है । याज्ञवल्क्य जीने शूद्र के विषे विशेष करके दखाया है । क्षत्रेति । कि क्षत्रीको वारां १२ दिन अशौच और वैश्य कों पंदरां १५ दिन और शूद्र कों तीस ३० दिन और ब्राह्मणादि की सेवा करण वाले शूद्र कों पंदरां १५ दिन अशौच कहा है ॥ १ ॥ इस वाक्यमें (न्यायवार्तिनः) । इस पदका शूद्र पदके साथ संबंध करणा ॥ क्षत्र और वैश्य के साथ नहि संबंध करणा क्युंके तिसके अर्थको पूर्व दिखाएँगे ॥ इस वाक्य में क्षत्रि और वैश्य अन्याय वर्ति जानणे ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥ ११

इस वाक्यमें न्याय पद कर्के तीन वर्णों की सेवा करणी इत्यादि शूद्रका विहित कर्म ग्रहण करणा ॥ अर्द्ध कथा पंद्रह १५ दिन ॥ यह जो सूतक का संकोच है सो नियत जो होमादि हैं तिनके विषे हि जानणा ॥ और दान देणा और दान लेणा और भोजन खाणा और खुला णा इनके विषे नहि ग्रहण करणा ॥ इस विषे ब्राह्मणको दश १० दिन और क्षत्रियों १२ ॥ दिन वैश्यको १५ दिन और शूद्रको तीस ३० दिन यह संपूर्ण दश दिनादि अशौच जान णा ॥ यह रुद्रधर जीने कहा है ॥ कुल और कहते हैं ॥ कि संकोच भेद जो है सो सामान्य वाक्यके बा धने वाला है और विशेष वाक्यका बाधक नहि ॥ तिस प्रकार दखाते हैं ॥ कि दशदिन मरण नि मित्त अशौच है चतुर्वर्णके विषे यह विधान कीया है इस सामान्य वाक्यका बाधक है ॥ अग्नि और वेद कर्के युक्त जो है ब्राह्मण सो एक १ दिन कर्के शुद्ध होता है इत्यादिका संकोच है द्वाद शहादि अशौचका संकोच नहि अर्थात् अग्नि वेदके धारणवाले ब्राह्मणादि में संकोच है ॥ और

न्यायोऽत्र द्विजशुश्रूषादिशूद्रविहितक्रिया । अर्द्ध १५ पंचदशदिनानि सूत कसंकोचोऽयं नियतेष्वेव होमादिषु नदानान्नप्रतिग्रहादिषु तत्र ब्राह्मणादी नां १० । १२ । १५ । ३० ॥ संपूर्णमेव दशाहादीति रुद्रधरः ॥ किंच संको चो हि विशेषः स च सामान्य बाधक एव न तु विशेष बाधकः तथा च । दशाहं शाव माशौचं सर्ववर्णेष्वयं विधिरिति सामान्य बाधक एकाहाच्छुद्ध्यते विप्रो योऽग्निवे दसमन्वित इत्यादिसंकोचो न तु द्वादशाहाद्यात्मकस्य केचित्तु योऽग्निवेदस मन्वित इत्यादिसंकोचविधायिवाक्येषु यानि अग्निवेदादिविशेषणानि तद र्थमेव संकोचो न यावत्कर्मार्थकः । अतएव हारलतायां जावालयमस्मृती सं ध्यापंचमहायज्ञानैत्येकं स्मृतिकर्म च तन्मध्ये हापयेत्तेषां दशाहान्ते पुनः क्रि या १ उभयत्र दशाहानि कुलस्यान्नं न भुज्यते दानं प्रतिग्रहो होमः स्वाध्याय श्रनिवर्तते २ उभयत्र जनने मरणे चेति

जिनको द्वादशाहादि अशौच है उनमें संकोच नहि ॥ कैंड़े यह कथन करते हैं कि जो अग्नि और वेद कर्के युक्त है इत्यादि जो संकोच के विधान करने वाले वाक्य हैं उनके विषे जो अग्नि वेदादि विशेषण हैं तिनके वास्ते हि संकोच कीया है अर्थात् अग्नि और वेद इनमें ही संकोच है और कर्मोंके वास्ते संकोच नहि ॥ इस कारणते हि हारलताके विषे जावाल और यम स्मृ ति का वाक्य है ॥ समिति ॥ कि सूतक के मध्यमें संध्या और पंच महायज्ञ और नित्य क र्म और स्मृति कर्म इनका त्याग करवाये फेर दश दिनके अंतमें तिनके कर्म करवाये ॥ १ ॥ उभेति जिस कुलमें अशौच होवे तिस कुलका अन्न जन्म और मरण अशौचमें दश दिन न हि खाणा चाहिये और दान करणा और दान लेणा होम और वेदाध्ययन यह भी निवृत्त होजा ते हैं २ इससे प्रतीत होता है कि अग्नि वेद वाला इक्क दिन ते केवल स्पर्श योग्य हुंदा है और किसे कार्य योग्य नहि २ः

१२ ॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

टी० ० ॥ सदा अशौचको दक्षजी कहतेहैं व्येति रोगि और नाच और करजाई और जो उपनयनादि क्रियांतें रहित और मूर्ख और स्त्रीके अधीनहै १ और द्यूतादिमें लगाहैचिच जिसका और पराधीन और जो सर्वदाकालश्रद्धा और दान इनते रहित हैं इन सभको मरण पर्यंतसूत कहै ॥ २ इसीका स्पष्ट अर्थ (व्याधितस्य) क्या चिकित्साते रहित जो रोगहै तिस कर्के जो ग्रस्तहै अर्थात् असाध्यरोग कर्के जो ग्रस्तहै (कदर्यस्य) क्या अपने आपको और धर्म कृत्यको और पुत्र और स्त्री और कन्या इनको जो दुःखी करदा हुआ और लोभ कर्के युक्त जो धनादि को संचय करताहै सो कदर्य कथन किया जाताहै इस देवलकीके कथन कीये होये लक्षण कर्के युक्तहै (ऋणग्रस्तस्य) क्या धनवालोंकी सेवा करण वाला ॥ उपनयनादिक

सदातनमशौचमाहदक्षः व्याधितस्यकदर्यस्यऋणग्रस्तस्यसर्वदा क्रियाहीनस्यमूर्खस्यस्त्रीजितस्यविशेषतः ॥ १ ॥ व्यसनासक्तचित्तस्यपराधीनस्यानित्यशःश्रद्धात्यागविहीनस्यभस्मांतंसूतकंभवेदिति २ व्याधितस्याचिकित्सनीयव्याधिग्रस्तस्य कदर्यस्य आत्मानंधर्मकृत्यंचपुत्रदारांश्चपीडयन् लोभाद्यःप्रचिनोत्यर्थान्सकदर्यइतिस्मृतइतिदेवलोक्तलक्षणलक्षितस्य ऋणग्रस्तस्य धनिकसेवापरस्यक्रियाउपनयनादिका तद्रहितस्य गायत्रीरहितोमूर्खःतस्य स्त्रीजितोहिभार्याधीनतया गुरुजनतिरस्कर्तातस्य १ अत्रसर्वदेतिप्रत्येकमन्वयिभस्मांतंमरणांतम् ॥ व्यसनेति द्यूताद्यासक्त्यानित्यकर्मण्यपित्यक्तवतःपराधीनस्य श्रद्धाकालेपिअनायतचित्तस्यश्रद्धा गुरुवाक्यादौविश्वासःत्यागआवश्यकं दानंश्रद्धादि तद्रहितस्य अत्रापिनित्यश इतिप्रत्येकसंबंधि एषान्नित्यादावाधिकारः प्रायश्चित्तेत्वधिकारएव वचनादिति विवेककर्ता ॥

मौते जो रहितहै (मूर्ख) क्या गायत्रीतें जो रहितहै (स्त्रीजित) क्या स्त्रीकी अधीनता कर्के माता पिताका अनादर करताहै इसमें जो यह सर्वदा पदहै इसका सवनों पदोंके साथ संबंध करण (व्यसन) क्या द्यूतादि व्यसनमें जो आसक्ति तिस कर्के नित्य कर्मोंको भी त्यागने वालाहै (पराधीनस्य) क्या श्रद्धा कालमेंभी नहि रोक्या चित्त जिसने (श्रद्धा) क्या गुरुके वचनादिमें विश्वास (त्यागः) क्या जो आवश्यक दान करण क्या श्रद्धादि तिसतें रहितहै इसमें भी जो नित्यशः यह पदहै इसका सवनोके साथ संबंध करण ॥ इनका नित्यादि कर्मोंमें अधिकार नहि और प्रायश्चित्तमें अधिकारहै क्योंकि वचनतें यह विवेक कर्ताहै ॥

॥ श्रीरण्वार कारित प्रायश्चित्तभागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ १३

यह अशौच पूर्व कथन कीता जो गणना इसमें दशवां १० अशौच मरण पर्यंत है तद भीकों ई इसको दूरकरणेदी कामना वाला होया २ अशौच के सिद्ध करण वाले कर्मोंको त्याग करके और संपूर्ण प्रायश्चित्त विधि करके अशौचते रहित होता है ॥ सों विधि तृतीय प्रकरणमें दिखला दी है ॥ और ब्रह्मपुराणमें भी कथन कीया है ॥ अन्येति किजो स्त्री पहले किसीने विवाही हुई होवे पीछे और किसीके घरमें चली जाये उसको अन्य पूर्वा कहतेहैं सो अन्य पूर्वा स्त्री जिसके घरमें है तिसके घरमें संपूर्ण कार्योंके विषे अशौचता है और दान प्रतिग्रह हो म और और भी संपूर्ण तिसका वृथा है ॥ पूर्वले का स्पष्ट अर्थ कहतेहैं कि जिस स्त्री का पह ले और पति हो उसका नाम अन्य पूर्वा है ॥ अर्थात् दुहालहे ॥ एसी स्त्री जिस ब्राह्मणादिके घर में हो उसको सर्वदा काल अशौच है ॥ परंतु जेकर तिस स्त्रीको सब कर्म घरके सौपदेवे तद

इदं चाशौचपूर्वोक्तगणनायां दशमं मरणांतमप्येतत्तथापि कश्चिन्निर्मोक्तुका मस्तत्तदापादकं कर्मविहाय सर्वप्रायश्चित्तविधिना । निर्मुच्येत सविधिः तृतीयप्रकरणेद्रव्यः ब्रह्मपुराणेपि ॥ अन्यपूर्वागृह्यस्य भार्या भवति नित्यशः अशौचसर्वकार्येषु गृहे भवति सर्वदा दानं प्रतिग्रहो होमस्सर्वन्तस्य वृथा भवेत् ॥ अन्यः पतिः पूर्वस्य सा अन्यपूर्वा भार्या यस्य द्विजा तेः तस्याशौचं सदा भवति परन्तु तस्याः सर्वधुरंधरत्वे सदा तनं सूतकं नान्यथा गृहपदोपादानादिति विद्वांसः अयमेवार्थः शंखेनापि दर्शितः हीनवर्णा शूद्रसंगमादित्यादिना ॥ माधवीयेतु नामधारकविप्रस्तुदशाहं सूतकी भवेदिति वचनानुरोधेनैवावचनानां निन्दार्थवादत्वमाभिधाय यावज्जीवाशौचविधायकत्वं नास्तीत्येव निर्णीतम् ॥ अथ सामान्येन चातुर्वर्ण्यस्य मृतकाशौचम् ॥ तत्रादौ गर्भस्त्रावनिमित्तमशौचम् ॥

सर्वदा काल अशौच है ॥ और जेकर सब कर्म ना सौपये तद सर्वदा काल सूतक नहि क्यों कि गृह पदके रखणेंत यह विद्वान कहतेहैं ॥ और यही अर्थ शंखजीने भी दिखाया है ॥ कि हीन वर्णा जो शूद्रा है तिसके संगने सर्वदा काल अशौच होता है इत्यादि वचन करके ॥ माधवीय ग्रंथमें भी यह कहा है नामेंति कि नाम करके जो ब्राह्मण है अर्थात् ब्राह्मणोंके कर्मोंने रहित हो सो ब्राह्मण दश दिन सूतकी होता है इस वचन के अनुरोध करके यह जो पूर्वले वचन हैं इन्हों वचनों करके तिनकी निंदाही कीती है और मरण पर्यंत अशौच नहि हुंदा यह निर्णय कीया है ॥ ॐ ॥ जन्माशौचको कहकर अब सामान्यता करके चतुर्वर्णके मरण निमित्त अशौच को कथन करतेहैं और तिसमें भी पहले गर्भ स्त्राव अशौच कहतेहैं

१४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

याज्ञवल्क्यजीका वचनहै गेति किगर्भके पात होयां २ मासके वरौबर रात्रियां शुद्धिका कार
णहैं इस वाक्यमें निशाः यह जो बहुवचनहैं सो अविवक्षितहै तिस कारणतें एक महीनेका
जद गर्भ पात होवे तद एक रात्र और जद दोमहीनेका गर्भ पात होवे तद दोरात्र सूतक
होताहै इसी प्रकार छे६ महीने पर्यंत जानना यह सूतक स्त्रीकोहै और पुरुषको नहि गर्भके
पातमें मासोंके तुल्य रात्रियां स्त्रीयांको सूतकहै॥और पुरुषको स्नान मात्रहै अर्थात् स्नान करके
पुरुष शुद्ध होताहै॥गर्भके पातमें तीन ३ रात्र अशौचहै इत्यादि वाक्य कर्के जो गौतमजनि
कहाहै सोभी तीन मासतें उरे गर्भके पातहोयां २ जानना ॥ इसमें मरीचिजी विशेषकहेंतैं

याज्ञवल्क्यः गर्भस्त्रावेमासतुल्यानिशाःशुद्धेस्तुकारणम् अत्रनिशाइतिवहु
वचनमाविवक्षितम् तेनैकमासीयगर्भपातेएकाद्विमासीयगर्भपातेद्वेरात्रीसूत
कमेवंपणमासपर्यन्तंज्ञेयं एतच्चस्त्रियाएवपुरुषस्यगर्भस्त्रावेमासतुल्या
रात्रयः स्त्रीणां स्नानमात्रमेवपुरुषस्येतिवृद्धवसिष्ठस्मृतेः॥यद्रौतमेनगर्भस्त्रा
वेत्रिरात्रमुक्तं(अहंच)इत्यादिनातदपिमासत्रयादर्वाचीनेस्त्रावेवोध्यम्
अत्रमरीचिःसविशेषमाह गर्भस्त्रुत्यांयथामासमचिरेतूतमेत्रयःराजन्येतु
चतूरात्रवैश्येपंचाहमेवचअष्टाहेनतुशूद्रस्यशुद्धिरेपाप्रकीर्तितेति ॥अचिरेमा
सत्रयात्मकेउत्तमेब्राह्मणे त्रयइत्यत्रपुंस्त्वमार्पतिस्त्रोरात्रयइत्यर्थः यथामा
समितितुषणमासपर्यन्तमेवद्रष्टव्यम् तदनंतरंसंपूर्णमेवजननाशौचंभव
ति ॥ तत्रप्रसूतैस्सर्वांगपूर्णस्यदर्शनात् अतएवस्मृत्यंतरे

गेति कि तीन ३ मासके गर्भके पातहोयां २ ब्राह्मणको तीन दिन अशौच कहाहै और क्षत्रि
कों चार रात्र और वैश्यको पांच ५ रात्र और शूद्रको आठ ८ दिन अशौच कथन किहाहै
इसीका स्पष्ट अर्थ कहेंतैं (त्रय) इस पदमें पुल्लिङ्ग ऋषि कर्के कथन कीयाहै अर्थात् तीन
रात्रियां जाननीयां ।(अचिरे)। क्या तीन मासके गर्भ पातमें (उत्तमे । क्या ब्राह्मणके विषे यह
व्यवस्थाहै । यथामास । इसमें दिन पद कर्के और रात्रिपद कर्के अहो रात्र समझणा छे६
मास पर्यंत जाननी छे मासतें उपरंत संपूर्ण जन्माशौचहै॥क्योंकि तिस कालमें प्रसूतके
होयां २ सवना अंगोंको संपूर्ण होबोतैं इस कारणतेहि और स्मृतिमेंभी कथन कीयाहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी० भा० ॥ १५

वेति ॥ छे ६ मासके अंतर अर्थात् ६ मास पर्यंत जद गर्भ पात होवे तद मासोंके तुल्य दिनों कर्के स्त्रीयोंकी शुद्धि कथन कीतीहै॥१॥इसते उपरंत अर्थात् ६ मासते उपरंत स्त्रीयोंको अपनी जातिमें कहा जो अशौचहै सो होताहै और गर्भके पात होयां २ सपिंडियोंको सद्यः शौचकहाहै अर्थात् स्नान कर्के शुद्धहोतेहैं॥२॥गर्भ स्त्राव इस पद कर्के जलकी न्याइं वगदा गर्भहै तिसकापात ग्रहण करणा और कठिन अवयवों वाला जो गर्भहै तिसका पात नाहै ग्रहण करणा सो गर्भ पात पांचवें अथवा छेवें महीने कभी होताहै ॥ दो वर्षोंते न्यून जो बालकहै ति सके मृत होयां २ और गर्भ के पात होयां २ सपिंडियोंको तीन रात्र अशौचहै इस वशिष्टके वचन ते जनणा । इसी कारण तेही मरीचिजीने कहाहै चौथेमहीने तक गर्भ स्त्राव होताहै अर्थात्

पणमासाभ्यंतरेयावद्गर्भस्त्रावोभवेद्यदा तदामाससमैस्तासां दिवसैः शुद्धि रिष्यते१ अत ऊर्ध्वस्वजात्युक्तं तासामाशौचमिष्यते सद्यःशौचंसपिण्ड नांगर्भस्यपतनेसति २ गर्भस्त्रावोऽत्रद्रवीभूतगर्भपतनंनतु कठिनावयवि पतनं तस्मिन्सति सपिण्डानां त्रिरात्रमेव तच्चपंचमपष्टयोः कदाचिज्जायते ऊनद्विवार्षिकेप्रेते गर्भस्यपतनेसति सपिण्डानां त्रिरात्रं स्यादिति वशिष्टवच नात्।अतएवमरीचिः आचतुर्थाद्रवेत्स्त्रावःपातःपंचमपष्टयोःअत ऊर्ध्वप्रसू तिःस्यादशहंसूतकंभवेत् स्त्रावेमातुस्त्रिरात्रं स्यात्सपिण्डाशौचवर्जनम्पाते मातुर्यथामासं पित्रादीनां दिनत्रयमिति सप्तम मासानंतरं नालच्छेदात्पूर्वं जातमृते मृत जतिवा सपिण्डानां दशाहमिति सएवाह इदमशौचं सूतकवत् मरणनिमित्तोदकदानादिहीन मिति पारस्करः ॥

त् तीसरे अथवा चौथे महीने गर्भ पात होवे तद उसको स्त्राव कहतेहैं और जेकर पांचवें छेवें महीने होवें वद पात कथन करीदाहै और इसतें उपरंत प्रसूती होतीहै तिसका दश १० दिन सूतक होताहै और स्त्राव के होयां २ माता को तीन ३ रात्र अशौच कहाहै और सपिंडियों को सूतक नहिहोता और पातके होयां २ माता को मासके तुल्य दिन अशौचहै और पित्रा दिकोंको तीन ३ दिन अशौचहै और सप्तम ७ मासते उपरंत और नाल छेदनते उरें और उत्पन्न होकर मृत होवे अथवा मृत होया २ जन्मे तद सपिंडियोंको दश दिन अशौच होताहै यहभी मरीचिजीनेकहाहै यह अशौच सूतकवतूहै और मरण निमित्त जो तिलाज लि आदिक क्रिया तिसते रहितहै यह पार स्कर जी ने कहाहै ॥

१६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भगः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

हसी अर्थको बृहत्मानु जी कहतेहैं ॥ दशेति किदश १० दिनके अंतर वालकके मृत होयां
२ तिसके संबंधियोंने मरण निमित्त अशौच नहि करणा योग्यहै और तिनको जन्म निमित्त
अशौच विधान कीहाहै । १ ॥ तिसी प्रकार और स्मृतिमे भीकथन कीयाहै किदश दिनके
मध्यमे मृत हुआ जोवालकहै तिसका अशौच सूतक दिनों कर्क है अर्थात् मरण निमित्त
अशौच नहि है और जन्म निमित्त अशौच करणा इसमें जन्माशौचका संकोच नहि
यह विज्ञानेश्वरकहताहै क्योंकि (दशाहादि । इस वचनके वलते ॥ और उत्पन्न होकर वालक
मृत होवे अथवा मृत होया २ उत्पन्न होवे तद कुलकी तात्काल शुद्धि होतीहै अर्थात् स्नान
करके शुद्धि होतीहै और माता पिताकी दश दिन करके शुद्धि होतीहै ॥ यहजो बृहद्विष्णुजी
का वचन है सोवालकका मरण निमित्त जो स्नान तिसकरके जो शुद्धि तिस परायण है

इममेवार्थमाहबृहन्मनः॥ दशाहाभ्यंतरेवालेप्रमाते तस्यवान्धवैः शावाशौ
चनकर्त्तव्यं सूत्याशौचंविधीयते १ ॥ प्रमीतेमृते शावाशौचंमरणानिमित्तं
तथाअंतर्दशाहापरतस्य सूतकाहोभिरेवाशौचमितिस्मृत्यंतरम् । अंतरिति
दशाहाभ्यंतरेमृतस्य अत्रजननाशौचसंकोचोपिनास्तीतिविज्ञानेश्वरः उ
क्तवचनधलात् ॥ यत्तुजातेमृतेमृतजातेवा कुलस्यसद्यःशौचमितिबृहद्विष्णु
वचनम् तच्छिशुमरणानिमित्तस्नानशुद्धिपरम् प्रसवनिमित्तपरंनज्ञेयम् अ
तएवपारस्करः॥ गर्भेयदिविपत्तिः स्यादशौचंमृतकंभवेत् अत्रपूर्वोक्तवचना
त्सपिण्डानां प्रसवनिमित्तं ॥ जीवन्जातोयदिप्रेयात्सद्यएवविशुद्ध्यति ॥
प्रेयात् म्रियेत्विशुद्ध्यतीति कुलमितिशेषः । इदंचमरणाभिप्रायम् ॥ प्रा
ङ्नामकरणात्सद्यः शौचमितिशंखोक्तेः । वैष्णवसमानार्थमेवाह कात्या
यनः ॥ अनिरुतेदशाहेतुपंचत्वंयदिगच्छति सद्यएवविशुद्धिःस्यान्नप्रेतं
नोदकक्रिया॥ १ ॥

और प्रसूति निमित्त नहि जाननी ॥ इसी वास्ते पारस्कर जीने कहाहै गर्भ इ
ति किगर्भ के विषे जददुःख होवे अर्थात् मृत होजाये तद दश १० दिन सूतक कथन की
याहै इसमें पूर्वले वचनते सपिण्डीयांको प्रसूति निमित्त अशौचहै और जेकर जीवना उत्पन्न
होवे और पीछे मृत होजावे तद कुल तात्काल ही शुद्धहै अर्थात् स्नान कर्के शुद्ध होताहै ॥ इ
हवचन मरण विषेहै ॥ जेकर नाम करणते पहले वालक मृत होजाये तद सद्यःशुद्धिकथनकी
तीहै अर्थात् स्नानते हि शुद्धिहोती है इसशंखके वचनते ॥ कात्यायन भीविष्णुके तुल्य अर्थ
कोहि कहतेहैं ॥ अइतिकि जेकर दश दिन नानिवृत्तहोवे अर्थात् दश दिनके बीच वालक मृ
तहो जाए तदभी तात्काल शुद्धि होतीहै ॥ प्रेतकार्य और उदक क्रिया नहि करणी ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० १८ ॥ टी० भा० १७

इसीका स्पष्ट अर्थ है। प्रेत कार्य क्या पिंड दानादि क्रिया और उदक दान क्रिया अर्थात् तिलां जालि नहि देणी इसकी मरण निमित्त सद्यः शुद्धि कथन कीती है । इसमें यह अभिप्राय है कि जो जातमृत इत्यादि के निमित्त मरण अशौच निषेध करण वाले वचन हैं सो मरण निमित्त जो पिंड दानादि क्रिया तिनके निषेध करण वाले हैं ॥ और संपूर्ण जो अशौच तिसके निषेध करण वाले नहि ॥ इसमें क्या कारण कितिसमें जन्म और मरण निमित्त जो अशौच हैं तिनके एक व होयां २ अर्थात् दोनोंके प्राप्त होयां २ मरण निमित्त तात काल शुद्धि होती है और जन्म निमित्त दश १० दिन अशौच होता है इसअर्थ परायण जानणे ॥ जद मरण और जन्म निमित्त अशौच इकठे होवें तद मरण निमित्त अशौच बलवान् है अर्थात् शाव शुद्धि करके जन्म

प्रेतप्रेतकार्यैपिण्डदानादिनकार्यमुदकदानाक्रियाचनेत्यर्थः किन्तुशावाशौचनिमित्तसद्यःशौचमेव अत्रायंभावः जातमृतादिनिमित्तशावाशौचनिषेधवचनानि मरणनिमित्तपिंडदानादिनिषेधपराणि नतुसर्वाशौचनिषेधकानि किंतुतत्राशौचयोर्जननमरणनिमित्तकयोःसंपातेमरणनिमित्तसद्यःशौचजनननिमित्तदशाहमित्यर्थपराएवगंतव्यानि मरणोत्पत्तियोगेतुगरीयोमरणंभवेदित्यादिवचनानिजातमृतमृतजातनिमित्ततरविषयाणातिज्ञयम् ॥ अत्रविज्ञानेश्वरः॥ यदातुनप्रेतंनैवसूतकमितिपाठस्तदासूतकमस्पृश्यत्वंनैवभवतिपित्रादीनामित्यर्थः अथवायमर्थःअतर्द्दशाहेयादिशिशूपरमःतदानप्रेताशौचंयदितत्रसपिंडजननं तदासूतकमपिनभवति किंतुपूर्वाशौचेनैवशुद्ध्यतीत्यर्थइति ॥ नालच्छेदात्पूर्ववालमरणविशेषावृहन्मनुवृहत्प्रचेतसोः।

शुद्धि होती है इत्यादि जो वचन है सो जात मृत और मृत जात इनते जो भिन्न विषय है तिसमें जानने ॥ इसमें विज्ञानेश्वर जी कथन करते हैं ॥ किजद (नप्रेतं नैव सूतकं) यह पाठ होवे तद पित्रादि यो को अस्पृश्यता नहि होती है अर्थात् स्पर्श के योग्य होते हैं ॥ अथवा यह भी अर्थ है कि दश दिनके मध्यमें जदवालक मृत होजावे तद पिंडादि क्रिया और अशौच नहि होता ॥ और जेकर कोई सपिंडी उत्पन्न होवे तद सूतक नहि होना ॥ क्या होता है कि पूर्वले अशौच करके शुद्धि होती है । नाल छेदन ते पहले वालकके मरणके विषे वृहत्मनु और वृहत् प्रचेतस जी इसमें विशेष कथन करने हैं ॥

१८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

जीवेति । किजद वालक जीता उत्पन्न होवे और पीछे मृत होजाए तद सूतकनिमित्त अशौच होता है और मरणनिमित्त अशौच नहि होता १ ॥ इसमें व्यवस्था कहते हैं । किसारा सूतकमाता को होता है और पित्रादियों को तीन ३ रात्र अशौच होता है ॥ मुहूरिति ॥ दोघड़ी जीव कर्के पश्चात् जद मृत होजाए तद माता की शुद्धि दश दिन कर्के होती है और स्वर्गोत्री तातकाल शुद्ध होते हैं इसमें यह तातपर्य्य है ॥ कि पित्रादियों को जन्मनिमित्त अशौच है ३ दिन । और अगले वाक्यमें सद्यः शुद्धि कथन कीती है सो अग्नि होत्रके वास्ते कहे हैं । तिस प्रकार शंख जीने भी कहा है ॥ अग्नि होत्रके अर्थ वास्ते स्नान और आचमनते तात काल शुद्धि होती है ॥ नालछेद नते उपरंत वालकके मृत्युके विषे जैमनि जीका वाक्य है । कि जितना काल नालनाछेद न क

जीवन्जातो यदि ततो मृतः सूतक एव तु सूतकं सकलं मातुः पित्रादीनां त्रिरात्रक मिति ॥ १ ॥ सूतक एव न मरणनैमित्तकम् तत्र व्यवस्था सूतेति मुहूर्तं जीवि तोवालः पंचत्वं यदि गच्छति मातुः शुद्धिर्दशाहेन सद्यः शुद्धास्तु गोत्रिण इति । पित्रादीनां जनननिमित्तं दिनत्रयं उत्तरवाक्ये सद्यः शौचमग्निहोत्रानुष्ठानाद्यर्थः ॥ तथा च शंखः अग्निहोत्राद्यर्थं स्नानोपस्पर्शनात्तत्कालं शौचमिति त्राभिर्वर्द्धनानंतरं वालविपत्तौ तु जैमिनिः ॥ यावन्न छिद्यते नालं तावन्नाप्रोति सूतकम् छिन्ने नाले ततः पश्चात् सूतकं तु विधीयत इति ॥ नालच्छेदात्पूर्वं अल्पाशौचं पूर्वोक्तवाक्यात् ईपदर्थवाचकत्वान्नजः तदनंतरं संपूर्णाशौचमित्यर्थः मनुनेदं रजस्वलासप्रसंगमुक्तम् ॥ रात्रिभिर्मासतुल्याभिर्गर्भस्त्रावेविशुद्ध्यति रजस्युपरते साध्वी स्नानेन स्त्री रजस्वलेति रजसि दृष्टे शीघ्रमेवोपरते सा साध्वी स्नानेन विशुद्ध्यति दैवादिकर्मयोग्या भवति

रिये तितना काल सूतक नहि होता और नाल के छेदन कीतियां होयां तिसमें पश्चात् सूतक विधान कीती है ॥ यह कथन कीया है ॥ परंतु इसका ऐसा अर्थ है कि नाल छेदनते पहले थोडा अशौच कहा है । क्यों कि । अग्नि होत्राद्यर्थ मित्यादि वाक्यमें ॥ और नत्रु को थोडे अर्थका वाचक होणेतें और नाल छेदनते उपरंत सारा सूतक होता है ॥ और मनुजीनेयहर जस्वलाके साथ कथन कीया है रात्रीति ॥ गर्भ स्त्राव के होयां २ मासोंके तुल्यदिनोकरके माता शुद्ध होती है और ऋतुआकर तात काल जद दूर होजावे तद सो रजस्वलास्त्री स्नान करके शुद्ध होती है । इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ कि ऋतु के देस्यां होयां शीघ्रही दूर होजावे तद स्नान करके शुद्ध होती है अर्थात् देवतादि कर्मके योग्य होती है

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी ० भा ० ॥ १९

और ऋतु जेकर दूर नाहोवें तद चौथेदिन विषे स्नान करके शुद्ध होतीहै यह बृहन्मनुजाने कहाहै अर्थात् चौथे ४ दिन व्यवहारके योग्यहोतीहै तिस वचनको कहतेहैं ॥ चतुरिति चौथेदिनमें स्नान करके शुद्धहोतीहै (व्यावहारिकी) क्या व्यवहारमें विधान कीये जोक भैं तिन के योग्य होतीहै ॥ तिसी प्रकार और स्मृतिमें भी कथन कीयाहै ॥ शुद्धेति कि रज स्वला स्त्रीचौथे दिन स्नान करके शुद्ध होइहोइ भर्ताके योग्य होतीहै और पांचमें ५ दिनदेव कर्म और पितृ कर्म के योग्य होतीहै यह कहाहै इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ किचौथे दिनके विषे भर्ताके मैथुनके योग्य होतीहै ॥ और देव और पितृ कर्म के योग्य पांचमे दिन होतीहै (इ सश्लोकमें पंचमे) यह जोपदहै सोऋतु का जो निवृत्ति कालहै तिसका उपलक्षणहै उपलक्षण उसका नामहै जोसब्द अपने अर्थको कह कर और के अर्थ कोभी जनाये तिसकारणतें

रजस्यनुपरतेतु चतुर्थेहनिस्नानादितिबृहन्मनुः ॥ चतुर्थेहनिसंशुद्धाभवति व्यावहारिकीति ॥ चतुर्थेहनिसंशुद्ध्यास्नाताव्यावहारिकी व्यवहारोचितकर्मयोग्याभवतीत्यर्थः स्मृत्यंतरमपितथा शुद्धाभर्तुश्चतुर्थेहनिस्नानेनस्त्रीरजस्वलादैवेकर्मणिपित्र्येचपंचमेहनिशुद्ध्यतीति ॥ चतुर्थेहनिभर्तुर्मैथुनार्हा भवतिदैवादिकर्मार्हापंचमेहीत्यर्थः अत्रपंचमइति रजोनिवृत्तिसमयोपलक्षणम् तेनपष्टेसप्तमेवादिनेतत्संभवे तत्रैवदैवादिकर्मयोग्यताज्ञेया ॥ अत्ररजोदर्शनानंतरं पुनारजोदर्शनेविशेषमाहात्रिः रजस्वलायदास्नातापुनरेवरजस्वला अष्टादशदिनादर्वागशुचित्वंनविद्यते ॥१॥ एकोनविंशतेरर्वागेकाहंस्यात्ततोद्वहम् ॥ विंशत्प्रभृत्युत्तरेपुत्रिरात्रमशुचिर्भवेदिति ॥२॥ अयमर्थः ॥ १७ सप्तदशदिनपर्यंतं अशौचाभायः १ ततएकोनविंशतिदिनं

यावत् द्वहम् ततस्त्र्यहम्

छेवें ६ अथवा सातमें ७ दिन रज कि निवृत्ति होजाये तदहि देवतादि कर्म की योग्यता होतीहै ॥ इसके विषे ऋतु दर्शनते उपरंत फेर ऋतु दर्शनमें अत्रिजीने विशेष कहाहै ॥ रजोति कि रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान करके फेर जेकर अठारां १८ दिनाते उगे उगे रजस्वला होजाए तद अशुद्ध नहि होती ॥१॥ और जेकर उन्नीस १९ दिनमें होवे तद एक दिन अपवित्र रहतीहै ॥ और उन्नीस दिनतें उपरंत होवे तद दो २ दिन और बीसदिन तें उपरंत रजस्वला होवे तद तीन ३ दिन अपवित्र रहतीहै ॥२॥ इसमें यह तात्पर्यहै कि सत्तरह १७ दिन पर्यंत अशौच नहि होता ॥ तिसते उपरंत १९ दिन पर्यंत १ दिन फेर बीसतक २ दिन और तिसते उपरंत तीन ३ दिन अशौच होताहै ॥

२० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ० प्र० १८ टी० भा० ॥

और कैयोंने चौदा दिनते उरे अशौचका अभाव मन्याहै सो स्नानकेदिनते लेकर जनना॥१८
अठारा दिन वाला जो पक्षहै तिसमें रजो दर्शन दिनते लेकर जानना इसते विरोध नहिहै और
र जिस स्त्रीकी ऋतुनियमहै तिसमें एह नियम जानना और जिस स्त्रीकी कर्दें ऋतुका नियम
नहि तिसके विषे यह नहि जानना यह विज्ञाने श्वरजीने कथन कीयाहै॥और वसिष्ठजी रजस्व
ला स्त्रीके अशौचमें नियमाका कहतेहै रजेति किरजस्वलास्त्री ३ दिन अशुद्ध रहतीहै और
रजस्वला स्त्री अंजनना पावे और बुटणा नामले और जलमें स्नान नाकरे किंतु निकाल कर्के
बाहर स्नान करे और पृथ्वीमें शयन करे और दिनमे नाशयन करे और तारियोंको नादेखे
और अग्निको नास्पर्श करे और अन्न नाभक्षण करे किंतु थोडाखाये और रस्सीकोना बटे और

कैश्चित्तु चतुर्दशदिनादर्यागशौचाभावइत्युक्तं तत्स्नानदिनमारभ्यगणन
यावोध्यं पूर्वकंतुरजोदर्शनमारभ्योक्तमित्यविरोधः यस्याः प्रौढयौवना
याउक्तदिपयेनियतरजोदर्शनं तद्विपकमिदं नतुकादाचित्केपीतिविज्ञा
नेश्वरादयः रजस्वलायाअशौचेनियमानाह वशिष्ठः । रजस्वलात्रिरात्रमशु
चिर्भवति साचनांजीत नाभ्यंजीत नाप्सुस्नायादधः शयीतनदिवास्वप्या-
त् नग्रहान्बीक्षयेत् नाग्निंरुष्टशेत् नाश्नीयान्नरज्जुंसृजेत् नचदंतान्यावयेत्
नहसेन्नचकिंचिदाचरेत् अखर्वेणपात्रेणपिवेदंजलिनावा पात्रेणलोहिताय
सेनवेति ॥ नांजीत अंजनेननेत्रेनसंस्कुर्यात् नाभ्यंजीत तैलेनांगानि नम
र्दयेत् नरज्जुंसृजेत् रज्जुसर्ज्जनं तदुत्पादन विस्तारणत्रोटनादिरूपंतन्न
कुर्यादित्यर्थः॥अखर्वेण अधातुजेन विशेषआंगिरसे॥हस्तेश्रीयान्मृएमयेवा
ऽहविर्भुक्क्षितिशायिनी रजस्वलाचतुर्थेहिस्नात्वाशुद्धिमवाप्नुयादिति ॥

बोडोना करे हस्ते भीनहि और कुलकामभीना करे और तूंबीके पात्र कर्के अथवा हाथ कर्के
जलपीवे वा तांबेके पात्रमे अथवा लोहेके पात्रमें जलपीवे ॥ पूर्वश्लोकका स्पष्टअर्थहै(नांजीत)
क्यासुमें कर्के नेत्रोंको भूषित नाकरे(नाभ्यंजीत) क्यातैल करके शरीरको मर्दन नाकरे(नरज्जुंसृ
जेत्) क्यारस्सिको नाबटे और नातोडे (अखर्वेण) क्याकाष्ठके पात्र करके अथवा मृतकाके
पात्र कर जल पान करे अथवा खर्वनाम छोटे पात्र काहै तिस कर्के जल नापीवे और अंगि
रसाके शास्त्रमें विशेष कथन कीयाहै॥हस्तइति । किरजस्वला स्त्री हस्त कर्के अन्न खाये अथवा
मृतकाके पात्रमे खाये और घृतना खाये और पृथ्वीमें शयन करे और चौथे दिनमें स्नान कर्के
शुद्ध होतीहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० ॥ भा० २१.

और स्मृति का वाक्य है ॥ उदेति । कि रजस्वला स्त्री मांस और मखीर और सुगंधी वाली वस्तु और पुष्प और घृत इनको त्यागे और काष्ठ अथवा मृतकाके पात्रमें अन्न खाये और वृक्षसाथ जलपीवे ॥ १ प्रसूता अथवा रजस्वलास्त्री तारियोंका नादेखे और दिनमें निद्रा और सुपारि अथवा पान और पखे आदिका बांधना इनको त्याग देवे ॥ २ इसीमें स्कंदपुराणका वाक्य है स्त्री इति कि रजस्वला स्त्री तीन रात्र अपने मुखको न दिखावे और अपने वाक्यको न सुनावे रजस्वला जितना काल स्नान करके शुद्ध नहि होती तिसी प्रकार और कथन कीया है तस्मेति कि तिस कारणों रजस्वला स्त्री के साथ एक घरमें निवास न करे और दान और वातां और रजस्वला का अन्न इनको त्यागे ॥ १ ॥ स्मृति मंजरी ग्रंथमें निषिद्ध वस्तु के सेवन में खोटे फल दिखाए हैं ॥ रजेति ॥ कि रजस्वला स्त्री जेकर पतिको प्राप्त होंवे तद

स्मृत्यंतरे । उदक्यापललंक्षौद्रंगंधपुष्पघृतंत्यजेत् अखर्वपात्रिभुजीयात्तोय मंजलिनापिवेत् १ प्रसवासार्त्तवानारीग्रहाणामीक्षणंत्यजेत् दिवानिद्रांच तावूलंतालवृत्तादिवंधनम् २ स्कांदे । स्त्रीधर्मिणीत्रिरात्रंतुस्वमुखंनैवदर्शयेत् स्ववाक्यंश्रावयेन्नापियावत्स्नानेन शुध्यति १ तथा ॥ तस्मादुदक्या साद्धिमेकगेहेन संवसत् प्रतिग्रहंच संवादमस्याश्चान्नं विवर्जयेत् १ निषिद्धसेवने दुःफलान्यपि दार्शितानि स्मृतिमंजरीयाम् ॥ रजस्वलापतिंगच्छच्चांडालो जायते सुतः आलवालल्लवस्नाता जातस्त्वप्सु मरिष्यति ॥ १ ॥ तैलेनाभ्यंजनं कुर्यात् कुष्ठरोगी प्रजायते आर्त्तवेचेत्स्वनेद्भूमि मल्पायुर्जायते नरः ॥ २ ॥ नेत्रयोरंजनं कुर्यात्काणश्चांधश्च जायते पुष्पिणी दंतधात्री स्यान्नायतेश्यावदंतकः ॥ ३ ॥ नखानां कृतनं कुर्यात्कुनखी जायत सुतः ऋतोरज्ज्वादिकच्छेदं कुर्यात्क्लीवः प्रजायते ॥ ४ ॥ इत्यादि संस्कार भागे बोध्यम् ॥

तिसका पुत्र चांडाल होता है और जेकर क्यारेके जलमें स्नान करे तद उसका पुत्र जल में डूब के मरता है ॥ १ ॥ तैलेति ॥ जेकर तेल शरीरमें मले तद कुष्ठ रोग वाला होता है ॥ और ऋतु समयमें पृथिवीको पुछे तद थोड़ी आयुषा वाला पैदा होता है २ और जेकर नेत्रोंमें सुरमा पावे तद काणा अथवा अंधा होता है ॥ और जेकर रजस्वला स्त्री बीडी करे तद श्याम दंढों वाला होता है ॥ ३ ॥ नखेति ॥ जेकर नखां को कटे तद खोटे नखां वाला होता है ॥ और जेकर ऋतु समय में रज्ज्वादिका छेदन करे तद नपुंसक उत्पन्न होता है ४ ॥ इत्यादि संस्कार भागमें जाणलैणा ॥

२२ ॥ श्रीरण्वीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

और विशेष कथन कोयाहै पाराशर के ग्रंथमें ॥ स्नेति ॥ जद कदाचित् नैमित्तिक स्नान प्राप्त होवे ॥ अर्थात् सूर्यादि ग्रहण आजावे तद रजस्वला स्त्री और पात्रमें स्थित जो जलहै तिस जल कर्के स्नान करे और व्रत करे ॥ १ ॥ सिकेति । और जल कर्के जद सांगोपांग गिले शरीर वाली होवे तद वस्त्रोंको न निचोड़े और और वस्त्रको भी न धारण करे अर्थात् ओहि गिला वस्त्र ऊपर रखे यह कथन कियाहै ॥ २ ॥ शुक्रके ग्रंथमें और भी विशेष कहाहै ॥ ज्वरेति (प्रश्न) कि जो स्त्री ज्वर वाली जद रजस्वला होजाये तिस स्त्रीकी पवित्रता किसप्रकार होवेगी और किस कर्म कर्के तिसकी शुद्धि होवेगी ॥ १ ॥ चतुरिति ॥ उत्तर ॥ चौथे दिनके प्रातः होयां होयां और स्त्री तिस रजस्वला स्त्रीको स्पर्श करे ॥ और पश्चात् सो स्त्री सहित वस्त्रों के स्नान करे फेर रजस्वलाको स्पर्श करे इसी प्रकार पुनः पुनः स्नान कर्के स्पर्श करे ॥ २ ॥

अन्योविशेषः पराशरीये स्नानेनैमित्तिके प्राप्तेनारीयदिरजस्वला पात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेत् १ सिकगात्राभवेदग्निः सांगोपांगाकथंचन नवस्त्रपीडनंकुर्व्यान्नान्यद्वासश्चधारयेदिति २ अन्योपिविशेषउशनसे ज्वराभिभूतायानारीरजसाचपरिल्लुता कथंतस्याभवेच्छौचंशुद्धिः स्यात्केनकर्मणा १ चतुर्थेहनिसंप्राप्तेरुष्टशेदन्यातुतांस्त्रियम् सासचैलावगा ह्यापः स्नात्वास्नात्वापुनः रुष्टशेत् २ दशद्वादशकृत्वोवात्राचामेच्चपुनः पुनः अत्रेचवाससांत्यागस्ततः शुद्धाभवेच्चसा दद्याच्छक्त्याततोदानं पुन्या हेनविशुद्ध्यतीति २ अन्यारजस्वलंतराशुद्धा तारजस्वलां पुनः पुनः स्नात्वा चम्यरुष्टशेत्तदासाशुद्ध्यति प्रकारोयमातुरमात्रेज्ञेयः । रजस्वलासूतिकयोर्मृतौविशेषमाह पराशरमाधवः सूतकायामृतायांतुकथंकुर्वितियाज्ञिकाः कुंभे सलिलमादायपंचगव्यंक्षिपेत्ततः ॥ १ ॥

दशेति ॥ दश १० वार अथवा वारां १२ वार फेर फेर आचमन करे । और अंतमें वस्त्रोंका त्याग करदेवे । तिसते उपरंत शुद्ध होतीहै ॥ ३ ॥ दयेति ॥ तिसते उपरंत शक्ति कर्के दान करे । पश्चात् पुनःवाह वाचन कर्के शुद्ध होतीहै यह कथन कोयाहै ॥ पूर्व श्लोकका स्पष्ट अर्थहै ॥ कि रजस्वला स्त्रीति इतर और कोई शुद्ध स्त्री वारं वार स्नान कर्के और आचमन कर्के तिस रजस्वला स्त्रीको स्पर्श करे तद सो रजस्वला स्त्री शुद्ध होतीहै ॥ परंतु जद रोग कर्के स्त्री बहुत दुःखी होवे तद यह प्रकार करणा योग्यहै ॥ रजस्वला और प्रसूता स्त्री बहुत दुःखी होवे तद यह प्रकार करणा योग्यहै ॥ रजस्वला और प्रसूता स्त्रीकी मृत्युमें पराशर माधव जी विशेष कहतेहैं ॥ सूतेति कि प्रसूता स्त्रीके मृतहोयां २ ब्राह्मण किस प्रकार करतेहैं ॥ (प्रकार) ॥ घटमें जलपायकर पश्चात् पंचगव्य पाय देवे ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः० प्र० १८ ॥ टी०भा० ॥ २३

पुण्येति ॥ पवित्र ऋचों करके जलोंको मंत्र करके और ब्राह्मणकी वाणी करके शुद्ध होतेहैं तिसै जल करके स्नान कर वाके पश्चात् विधिसे दाह करे ॥ २ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ कि आपोहिष्ठा और उपपातक प्रकरणमें लिखीयां जो पावमान्यादि ऋचां तिन कर्के जलको मंत्र कर पश्चात् यह मृतहोई २ स्त्री शुद्ध होगैहै इस ब्राह्मणकी वाणी करके शुद्धिको प्राप्त होतीहै ॥ सोई कथन कीयाहै त्रीति ॥ कि लोकोकी कृत्यके वास्ते देववा ब्राह्मणोंके वास्ते तीन १ पवित्र कल्पन करते भये ॥ क्या दानादि करके जो रोगादिका दूर करवा देणा

पुण्यर्गिभरभिमंत्र्यापोवाचाशुद्धिलभेत्ततः तेनैवस्नापयित्वातुदाहंकुर्व्याद्य
थोवाध पुण्यर्गिभः आपोहिष्ठापावमान्यादिभिः अपोजलानि अभिमंत्र्यततः
वाचाब्राह्मणोक्तया इयंमृताशुद्धा इत्येवंरूपया शुद्धिलभेदित्यर्थः तदुक्तं त्री
णिदेवाः पवित्राणि ब्राह्मणानामकल्पयन् अष्टमद्भिर्निर्णयित्येववाचाप्रश
स्यते इति अष्टपुण्यं १ मंत्रेण जलसेकः २ शुद्धिवचने चति रजस्वलायास्तु वृद्ध
शातातपः पंचभिः स्नापयित्वा तु गव्यैः प्रेतारजस्वलां वस्त्रांतरावृतां कृत्वा
दाहयेद्विधिपूर्वकमिति प्रेतां मृतां पंचगव्यस्नानानंतरं सामान्यविधिना दा
हयेदित्यर्थः निर्णयसिंधौ तु विशेषः अब्रह्मलिंगाभिर्मंत्रिताभिर्वामदेव्याभिरे
वच अन्यैश्च वारुणैर्मंत्रैः संस्नाप्यविधिना तद्देहं १

अथवा मंत्रेहोए जल कर्के शुद्ध करणा और वाणी करके जिसको अष्ट कथन करण ॥ ३ ॥
रजस्वलाके विषे वृद्ध शातातपजीने विशेष कथन कीयाहै ॥ पंचेति ॥ कि मृत रजस्वलाको
पंच गव्य करके स्नान कराके और और वस्त्र करके आच्छादन करे पश्चात् विधि करके दाह
करे ॥ यह मिताक्षरामें कहाहै ॥ १ ॥ निर्णयसिंधुमें विशेषहै ॥ आवेति ॥ आपोहिष्ठादि और
मंत्रित और वामदेवी सहस्रशीर्षा इनमंत्रों कर स्नान कर वाये पीछे विधिसे दाह करे ॥ १

२४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी० भा० ॥

गृह्य कारिकामे प्रसूता होई स्त्रीके मरण विषे विधि कहीहै ॥ सूतिकाके मृत होयां सवौषधी कर्के तिसको लेपन करे परंतु जिसको सूतक नहि सो लेपन करे और पिच्छे तिसके स्पर्शके दोष दूर करणे वास्ते एक १०० सउ छज्ज मिट्टिका जलाशयतें बाहर निकाले ॥ १ ॥ और सूतिका मरणके प्रायश्चित्त विषे विशेष किहाहै तिसी स्थान विषे । जद सूतिका स्त्री विना स्नानतें मरजाये तद तिसकी क्रियाका अधिकारी तिस वर्ष तक कृच्छ्र करदारहे ॥ २ ॥ यह प्रा० प्रसूति होया त्रय दिनके अंदर मरणे का है ॥ और अगले वेदिन के अंदर मरे तां दो वर्ष कृच्छ्र करणा चाहिये ॥ ३ ॥ और छे दिन के आगे १ दिनके अंदर मरे तद एक वर्ष का कृच्छ्र करणा चाहिये ॥ ४ ॥ जेकर इसमें असमर्थ होवेतो भी तिसमें कहतेहैं ॥ कि पूर्वोक्त पक्ष त्रय

गृह्यकारिकायां । सूतिकामरणेप्राप्तेसवौषध्यनुलेपनं असूतकीतुसंस्पृष्टः शूर्पाणांतुशतांक्षिपेत् १ प्रायश्चित्ते विशेषस्तत्रैव सूतिकातुयदासाध्वीविस्नातामरणंगता त्रिवर्षपूर्णपर्यंतं शुद्ध्यत्कृच्छ्रेण सर्वदा २ इदंचाद्यत्र्यहोसूतिकातुयदानारीरजसानुपरिष्कृता स्त्रियतंचेतुसानारीद्विवर्षकृच्छ्रमाचरेत् ३ इदं द्वितीयत्र्यहः । सूतिकातुयदासाध्वीविस्नातामरणंगता अब्दकृच्छ्रेण शुद्धेतव्यासस्यवचनं यथा ४ इदं तृतीयत्र्यहः अत्राशक्तौपक्षांतरमुक्तं तत्रैव सूतिकातुयदानारीविस्नातामरणंगता त्रिपणवदिनादर्वागेकाब्देन विशुद्ध्यति ५ ऊर्ध्वतुसूतिकातुयदानारीप्राणांश्चैव परित्यजेत् मासमेकावर्धियाव त्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति ६ रजस्वलामरणेतुचांद्रायणत्रयमेव प्रायश्चित्तं तत्प्रत्यास्नायोवाकार्यः ॥ अत्र रजोजननमरणानांगणनोपयोगितया दिनप्राथम्येविकल्पमाह कश्यपः ॥ उदितेतुयदासूर्येनारीणां दृश्यते रजः जननं वा विपत्तिर्वा यस्याहस्तस्य शर्वरी १ यस्य वारस्याहः प्रवृत्तं तस्यैव शर्वरी रात्रिसूर्योदयमारभ्याष्टपंचशहंडपर्यंतं पूर्वमेवाहो ज्ञातव्यम् ॥ अर्धरात्रावधिः कालः सूतकादौ विधीयते ॥

विषे भी एक वर्ष काहि प्रायश्चित्त करणा ॥ ५ ॥ और ९ दिनके आगे महीने तक सूतिका मृत होवे तद त्रे कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ ६ ॥ और रजस्वलाके मरणमें त्रे चांद्रायण व्रत करणे कहेहैं अथवा प्रत्यास्नाय जो व्रत प्रकरणमें है सो करणा ॥ और ऋतु ॥ और जन्म । मरण इनका क्रम कर्के दिनको प्रथमतामें कश्यपजीने विशेष कहाहै ॥ उदीति ॥ सूर्यके उदय होयां २ स्त्रीयांको ऋतु । बालकका जन्म और मरण जद देखे तद ओही दिन ग्रहण करणा । कर्को जिसका दिनहै उसीकी रात्रिहै १ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ जिस वारका दिनहो उसीकी रात्री होताहै सूर्योदयतें लेकर ५८ घड़ी तक पूर्वला दिनही जानणा ॥ इसमें भेद कहतेहैं । अर्थेति । कि । जन्म । मरण और ऋतु इनमें आधिरात तक काल विधान कीयाहै ॥

इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ अर्द्धरात्रि में पहले जद रजहोवे अथवा जन्म और मृत्यु होवे तद पूर्व लादिन ग्रहण करणा और जद अर्द्ध रात्रि में उपरंत होवे तद अगलादिन ग्रहण करणा ॥ २ ॥ और भेद कथन करते हैं ॥ रेति ॥ कि रात्रिके तीन भाग करणे पहले दो भाग पूर्व दिन साथ जोडने ॥ और पिछलाभाग प्रातःकालसाथ लगाणा ऋतु और सूतकमें यह व्यवस्था कीती है ३ और व्यवस्था कहते हैं ॥ रात्रिविषे जद मृत होवे और ऋतु होवे और जन्म होवे तद जितना काल सूर्य उदे ना होवे तितना काल पूर्वला दिनहि ग्रहण करणा ॥ ४ ॥ पूर्वला यह पक्ष विषय भेद करके कथन कीयो है ॥ इनमै देशाचार में व्यवस्था जाननी ॥ और द्विगतादिदेशोंमें पूर्वला हि प्रवृत्त है ॥ रजस्वलास्त्रिके स्पर्शका शुद्धि विस्तार प्रकीर्ण प्रकरणमें देखलेणा ॥ असामान्य

अर्द्धरात्रात्प्रागुत्पन्ने रजः आदौ पूर्वतदनंतरं परमहः प्रथमं ग्राह्यम् ॥ २ ॥ रात्रिकुर्व्यात्रिभागां तु द्वौ भागौ पूर्व एव तु उत्तरोऽंशं प्रभातेन युज्यते ऋतुसूतके ३ रात्रिः पूर्वभागद्वयं यावत् पूर्वतदनंतरं परमहः प्रथमम् ॥ रात्राविवसमुत्पन्ने मृते रजसिसूतके पूर्वमेवादिनं ग्राह्यं यावन्नाभ्युदितोरविः ४ पूर्व एवायं कल्पो विषय भेदोक्तः ॥ देशाचारतो व्यवस्था द्विगतादौ पूर्व एव पक्षः प्रवर्तते ॥ रजस्वला स्पर्शादिशुद्धिप्रपंचस्तु प्रकीर्णकप्रकरणे द्रष्टव्यः ॥ सामान्यतो मृतकाशौचमाहमनुः शुद्धे द्विप्रोदशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः वैश्यः पंचदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति ॥ १ वर्णसंकरविषये ब्रह्मपुराणम् । शौचाशौचे प्रकुर्वीरन् शूद्रवद्वर्णसंकराः हीनवर्णेन उत्तमवर्णासु स्त्रीपुजाताः वर्णसंकराः ॥ वृहस्पतिना विशेषोऽभिहितः ॥ दशाहेन सपिण्डास्तु शुद्धांतिप्रेतसूतके त्रिरात्रेण सकुल्यास्तु

स्नात्वा शुद्ध्यन्ति गोत्रजाः १

तै मनुजी मृतके अशौच को कथन करते हैं ॥ कि प्रेताशौचमें ब्राह्मण दश १० दिन करके और क्षत्रीयारां १२ दिन करके । वैश्य पंदरां १५ दिन करके । और शूद्र एकमास ३० दिन करके शुद्ध होता है ॥ १ ॥ वर्णसंकरके विषे ब्रह्मपुराण का वाक्य है ॥ शौचेति ॥ वर्णसंकर शूद्र कीन्याईं शौच और अशौच करण ॥ वर्णसंकरबोह होते हैं जो हीन वर्ण पुरुषोंमें श्रेष्ठ वर्ण की स्त्रियोंमें उत्पन्न होवें ॥ इसमें वृहस्पतिजी विशेष कहते हैं ॥ दशेति कि प्रेतसूतकमें सपिंडी पुरुष दश १० दिन करके शुद्ध होते हैं ॥ और तीन ३ रात्रिकरके सकुल्य शुद्ध होते हैं और गो ब्रज स्नान करके शुद्ध होते हैं ॥ १ ॥

२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

इसश्लोकमें(दशाह)यहजोपदहै सो अपने २ वर्णमें कथनकीयाजो अशौचहै तिसको कहताहै ।
अर्थात् क्षत्री १२ वारां दिन करके और वैश्यपंदरा दिन करके और शूद्र तीस ३० दिनकरके
शुद्धहोतेहैं । और सप्त ७ पींडीयां पर्यंत सपिंडीहोतीहैं ॥ तिसते उपरंत दशपींडा पर्यंत सकुल्य
होतेहैं ॥ और तिसते उपरंत जाताहै नाम और जन्मजिनका ऐसे जो कुलज इसप्रकारज्ञानका
विपेंहे ॥ तिसते उपरंतसगोत्र और सजातीय यहतीनसंज्ञावालेहैं । इसमें यहव्यवस्थाहै । किवाह्मण
के सपिंडी ब्राह्मणके मृत होयां २ दश १०दिन करके शुद्धि होतीहैं ॥ और सकुल्यकेमृतहोयां
२ तीन दिन ३ करके शुद्धिहोतीहै ॥ और तिसते उपरंतजाताहै जन्म और नाम जिसका ऐसे
कुलजके मृतहोयां २ वारां १२ पहर करके ॥ और गोत्रजके मृतहोयांहोयां स्नानकरके शुद्धिहोती

अत्रदशाहपदंस्वस्ववर्णोचिताशौचोपलक्षणम् । सप्तपुरुषाविधिःसपिण्डाः
ततोदशमपुरुषपर्यंतस्ववंश्याःसकुल्याः तदूर्ध्वज्ञातजन्मनामानःकुलजा
इत्येवज्ञानविषयाः तदूर्ध्वसगोत्राः १ गोत्रजाः २सजातीयाइतिसंज्ञात्रय
संज्ञिनः॥ अत्रेयव्यवस्था॥ ब्राह्मणस्य सपिंडे ब्राह्मणेमृतेदशरात्रेणशुद्धिः
सकुल्येमृते त्रिरात्रेण ॥ तदूर्ध्वज्ञायमानजन्मनामकेकुलजेमृतेपक्षिण्या
गोत्रजेमृतेस्नानेन ॥ एवंक्षत्रियस्यसपिण्डमरणेद्वादशाहेन ॥ सकुल्येत्रिरा
त्रेण तदूर्ध्वज्ञातनामादिकेपक्षिण्या गोत्रजेस्नानमात्रेण एवंवैश्यसपिण्डेवै
श्यस्य १५ पंचदशभिःअन्यत्समानम् । शूद्रस्यसपिण्डेशूद्रेमृतेमासेनशु
द्धिरन्यत्समानम्

है ॥ इसी प्रकार क्षत्रीके सपिंडी के मृत होयां २ वारा १२ दिन करके और सकुल्यकेमृतहो
यां २ तीन ३दिन करके और ज्ञात नामके मृतहोयां २ वारा पहर १२ करके । और गोत्रजके
मृत होयां २ स्नान करके शुद्धि होतीहै ॥ इसी प्रकार वैश्यके सपिंडी मृतहोयां २ वैश्यकीशु
द्धि १५ दिन करके ॥ और सकुल्यके मृतहोयां २ तीन दिनकरके और ज्ञात नामादिके मृतहो
यां २ वारां १२ पहर करके और गोत्रजके मृतहोयां २ स्नानकरके शुद्धिहोतीहै । इसीप्रकार शूद्र
के सपिंडीके मृत होयां २ एकमास करके और सकुल्यके मृत होयां २ तीन दिन करके और
ज्ञातनामादिके मृतहोयां २ वारां २१ पहर करके शुद्धि होतीहै

॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ २७

निर्णयसिंधुमें यह कहाहै कि सप्त पिंडी पर्यंत दश १० दिन और चौदह पिंडी पर्यंत तीन ३ दिन और तिसते उपरंत स्नान मात्र ही सूतक होताहै । सपिंडी समानोदक और सगोत्र इस भेद कर्के तीन प्रकार का निर्णय कीयाहै॥स्पर्शके विषे अंगिराजीने विशेष कहाहै ॥चेति कि ब्राह्मणके मृतहोयां २ ब्राह्मणको चौथे ४ दिन स्पर्श करणा कहाहै ॥ और क्षत्रीकोपांच मेदिन और वैश्यको सप्तम ७ दिन और शूद्रको दश १० दिन बुद्धिमानोंने स्पर्श करणा कहाहै॥इसमें यह बात पर्यहै॥कि अशौचके होयां होयांभी अशौचके तीसरे भागके व्यतीत होयां २ अंगस्पर्श करणेयोग्यहैं॥क्योंकि अशौच दिनतें लेकर तीसरे भागके व्यतीतहोयां २

निर्णयासिंधौतु सप्तपुरुषपर्यंतदशरात्रंततश्चाचतुर्दशत्रिरात्रंततःस्नानमिति । सपिण्डसमानोदकसगोत्रेतिभेदेनत्रिविधं निर्णीतम् ॥ स्पर्शविशेषमाहंगिराः ॥ चतुर्थेहनिकर्तव्यःसंस्पर्शोब्राह्मणस्यतु पंचमेहनिविज्ञेयःसंस्पर्शःक्षत्रियस्यतु १ सप्तमेहनिवैश्यस्यविज्ञेयंस्पर्शनंबुधैःदशमेहनिशूद्रस्यकार्यंसंस्पर्शनंबुधैरिति २ अयंभावः अशौचेविद्यमानेपितृतीयभागेऽतीतेऽङ्गस्पर्शःकर्तव्यः॥अशौचकालाद्विज्ञेयंस्पर्शनंतुत्रिभागतः शूद्रविद्वक्षत्रविप्राणांयथाशास्त्रप्रदर्शनादितिदेवलस्मरणात्॥अत्रमनूक्तेब्राह्मणाद्याशौचविषये ऋष्यंतरवचसा क्वचित्तरतम्यमुपलभ्येततदागुणवदगुणवद्विषयं ॥ ध्यम् सूतकालपतापक्षोगुणवद्विषयः तदितरोऽल्पगुणविषय इतिव्यवस्था निर्णयासिंधौत्वियमङ्गस्पर्शव्यवस्थापि युगांतरविषयिण्येवेत्युक्तम्॥

शूद्र और वैश्य और क्षत्री और ब्राह्मण इनको स्पर्शकरणा कहाहै॥क्योंकि यथायोग्य शास्त्रके देखणेंते १ इमदेवलके बचनते इसमें मनुजीने कहाहै॥ कि ब्राह्मणादिके अशौचमें किसे ऋषि के वचन कर्के किसी स्थानमें जद न्यूनाधिक अशौच देखिए तद सो न्यून और अधिकता गुण वालेमें और निर्गुणमें जाननी अर्थात् गुणवालेको अशौच थोडा और निर्गुणको बहुत होताहै यह व्यवस्था मनुस्मृतिमें कथन कीतीहै ॥निर्णय सिंधुविषे यह अंगस्पर्शकी व्यवस्था और युगोंमेंहैं कलि युगमें नहि ऐसा लिखाहै ॥

२८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

अब अशौचोंका मिश्रीभाव कथन करते हैं ॥ कूर्मपुराण का वाक्य है कि अथेति जद बहुते अशौच होवे तद जो बहुते दिनावाला अशौच है तिसकरके शुद्धि होती है ॥ और जिस स्थानमें मरणा शौच और जानना शौच दोनो होवे तद तिनमें मरणाशौच बली होता है ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है (अघानां) क्या एक अशौच बहुत काल होण वाला है और एक अशौच थोड़े काल का है उहूनोंकी योगपद्यता ग्रहण करणी ॥ क्यों कि (आद्यभागे) इत्यादि वाक्यते (यौगपद्यं) क्या एक अशौचमें जो और अशौच पडजावे उसका नाम यौगपद्य है (गरीयसा) क्या बहुते दिन होण वाला जो अशौच है तिसके निकलने करके दूसरे की भांति शुद्धि होती है ॥ अद्वैतश्लोककरके (अघानां) इसका अपवाद कहते हैं ॥ कि मरणा शौच और जन्माशौचके एकत्र होयां होयां २ मरणाशौच थोड़े काल का भी होवे तदभी मरणाशौच बली होता है ॥ और जन्माशौच बहुते दिन होण

अथाशौचसंकरः ॥ कूर्मपुराणे अघानां यौगपद्येतु ज्ञेया शुद्धिर्गरीयसा मरणोत्पत्तियोगतु गरीयो मरणं भवेदिति अत्राघानामशौचानां यौगपद्यं विपमकालव्यापिनां बोध्यमुत्तर वाक्यात् एकस्मिन्नपरोपनिपतनं यौगपद्यं गरीयसाऽधिकदिवसव्यापिनाऽशौचेन निर्गतेन शुद्धिर्भवति उत्तरार्द्धेनास्यापवादमाह मरणजनननिमित्तयोः सन्निपाते मरणनिमित्तमल्पकालव्याप्यपि गरीयो बलवत् तेन जननाशौचमधिकमपि निवर्त्यत इत्यर्थः समानदिनव्यापकसजातीयाशौचव्यवस्था ब्रह्मपुराणे ॥ आद्यभागद्वयं यावत् सूतकस्य तु सूतके द्वितीये पतिते त्वाद्यात् सूतकाच्छुद्धिरिष्यते १ । अत उर्ध्वं द्वितीयात् सूतकान्त्याच्छुचिः स्मृतः एवमेव विचार्य स्थान्मृतके मृतकान्तरे २ अत्राशौचकाले चतुर्धा विभक्ते प्रथमभागद्वयपर्यंतं समानदिनव्यापि सजातीयाशौ

चांतरसन्तिपाते तदाद्याशौचव्यपगमनेन शुद्धिः ॥

वाला भी होवे तदभी तिसकरके निवृत्तक्या दूर होजाता है ॥ अर्थात् मरणाशौचकरके शुद्धि होती है ॥ तुल्यदिनमें होण वाले जो सजातीय अशौच हैं तिनकी व्यवस्था ब्रह्मपुराणमें कथन कीती है ॥ अथेति कि सूतक के दो भाग पर्यंत अर्थात् साडेचार दिन तक जद तुल्यदिन वाला और सूतक पडजावे तद आदले सूतक करके शुद्धि होती है ॥ ॥ अत इति । दो भागते उपरंत जद सूतकमें सूतक पडजाये तदपि छले सूतक करके शुद्धि होती है और मरणा शौच में मरणाशौच जद पडजाये तदभी इसीतरा विचारलेणा । २ । इसमें यह तात्पर्य है कि अशौच काल के चार भाग करणे पहले दो भाग तक तुल्यदिनो वाला जद और अशौच पडजाये तद आदले अशौच को निकाल करके शुद्धि होती है

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ २९

और दो भागते उपरंत जद तैसा और अशौच पडजावे तद पिछले अशौच करके शुद्धि होती है ॥ इसमें भी विशेष कहते हैं कि जद अशौच के अंतले दिनमें अर्थात् १ दिनमें और अशौच पडजाये तद और दो दिन करके शुद्धि होती है क्योंकि शेष रिया जो दिन रात्रे तिसमें अधिक दो दिन करके शुद्धि होती है इसवचनते जानणा और अशौचके अंतले दि के साथ न हिंदो दिन ग्रहण करणे ॥ जेकर उसके साथ ग्रहण करणा हुंदा तद एक दिनहि कथन करणे योग्य है इसमें इसी प्रकार रुद्रधरजीने कहा है कि अशौचके अंतले दिन रात्रेमें और पूर्ण अशौच पडजाये तद पूर्वले अशौचके अंतलेते अधिक दो दिन करके शुद्धि होती है और जद प्रभातकालमें और अशौचांतका एक दिन रात्र शेष रहे और सूर्योदयते पहलें और पूर्वदिशाके प्रका

तदूर्ध्वतादृगाशौचान्तरसन्निपातस्तदा द्वितीयान्तादेव शुद्धिः । तत्राप्यशौचांतिमेहि अशौचांतरपातस्तदाधिकेन दिनद्वयेन शुद्धिः अवशिष्टादहोत्रादधिकेन तृदिनद्वयमिति वचनात् तत्राशौचान्तदिनेन सहा दिनद्वयमिति नार्थः तथा सति एकमित्येव ब्रूयात् अत्रेत्यरुद्रधरो व्याख्याति अशौचान्तिमेऽहोरात्रेयद्यपरं संपूर्णाशौचमापतति तदा पूर्वाशौचांतादधिकेन दिनद्वयेन शुद्धिः ॥ यदा प्रभातेऽशौचांताहोरात्रशेषसूर्योदयात् प्राक् प्राचीप्रकाशेवृत्ते संपूर्णाशौचांतरोपनिपतति तदा सूर्योदयानंतरं दिनत्रयेण शुद्धिः अत्रच यदि दशरात्राः सन्निपतेयुराद्यं दशरात्रमशौचमित्यादिवाक्येन परिशेषेण च संपूर्णमा नसजातीयशौचापनिपाते व्यवस्थाविज्ञायते ॥ तथाहि गरीयसाऽल्पदिनव्यापकानां सजातीयनां वाध्यत्वविज्ञानात् विजातीयानां जननाशौचाणा मल्पदिनव्यापकेनापि मरणाशौचेन वाध्यत्वविधानात् ॥

शहोयां २ तुल्यदिन वाला और अशौच पडजाए तद सूर्योदयते पीछे तीन ३ दिन करके शुद्धि होती है ॥ इसमें विशेष कहते हैं कि जद दश दिन दशरात्रके बहुते अशौच पडजाये तद आदले दशरात्रका अशौच होता है इत्यादिवाक्य करके और परिशेष करके भी संपूर्ण तुल्यदिनोंवाला सजातीय अर्थात् दशदिनके मरणाशौचमें दशदिनका मरणाशौच पडजाये तिसमें यह व्यवस्था जाननी योग्य है क्या सोदिखाते हैं बलवान् अशौच करके थोड़े दिन होणवाले और सजातीय अशौचोंकी बाधा जाननेते और औरजातीवाले जो जन्माशौच हैं तिनकी थोड़े दिन होणवाले भी मरणाशौच करके बाधा विधान करणेंते अर्थात् मरणाशौच करके जन्माशौच बाधा जाता है ॥

३० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

और परिशेषतः बाधक रहित तुल्य दिन होन वाले और एक जातीवाले दो अशौच जहां पड़ जायें तिस स्थानमें यह व्यवस्था जाननी ॥ और विषम दिनमें होणवाले जो भिन्न जातीके दो अशौच हैं अर्थात् जन्माशौचके दो अथवा तीन ३ दिनसे पीछे मरणाशौच पड़े और विषम दिनमें होण वाले जो एक जातीके अशौच हैं अर्थात् जन्माशौचके दो तीन दिनसे पीछे और जन्माशौच पड़जाये अथवा मरणाशौचके दो तीन दिन पीछे और मरणाशौच पड़जावे तिनकी यह व्यवस्था नहि जानणी ॥ और इसको संपूर्ण शौच परत्व कर्के और एक कालमें होन वाले जो असंपूर्ण अशौच हैं तिनकी शुद्धि अगलेंत ही होती है ॥ कुछ और कहते हैं ॥ कि दोदिनका अथवा तीन दिनका अशौच पड़ा हुआ होवे तिसमें पश्चात् संपूर्णशौच अर्थात् दश दिनका अशौच जद पड़जाये तद दो और तीन दिनके अशौचको थोड़ा

परिशेषेणावाध्यं समकालव्यापकं सजातीयं यत्राशौचद्वयं निपतति तत्रेयं व्यवस्था । विषमदिनव्यापकविजातीययोर्विषमकालव्यापक सजातीय योश्चनेयं व्यवस्था तत्रगरीयसैव व्यवस्थेति एतस्याः । संपूर्णशौचपरत्वेन असंपूर्णशौचानां समकालव्यापकानामुत्तरेणैव शुद्धिः । किंच ब्रह्माशौचेऽप्यहाशौचे वावर्द्धिते तत्र पुनः संपूर्णशौचांतरपातश्चेत्तदा ब्रह्महत्यायां लघुत्वाद्गुरुतराग्निमाशौचापगमेनैव शुद्धिरिति तथा च देवलः ॥ परतः परतः शुद्धिरघट्टद्वौ विधीयते स्याच्चैत्पंचतमादहः पूर्वेणाप्यनुशिष्यते १ एकस्मिन्नाशौचे अशौचांतरपातस्तदसमाप्तौ पुनरशौचांतरं चेत्तदा पूर्वाशौचपंचमदिनादग्रे परेणैव शुद्धिर्ज्ञेया ॥

होएँत और बहुत दिनका जो अगला अशौच है तिसके निर्गम कर्के शुद्धि होती है ॥ तिसी प्रकार देवलजीने भी कहा है ॥ परेति ॥ कि अशौचोंकी वृद्धिमें अर्थात् एक पूर्ण अशौचमें और पूर्ण अशौच पड़जाये और ओह अशौच अजे ना निकले होन तो और अशौच पड़ जाये तद परले परले कर्के शुद्धि होती है ॥ इह व्यवस्था पंचम दिनतें परे परे जानणी ॥ और जेकर पंचम दिनते पहले अशौचमें अशौच पड़ जाये तद पूर्वले अशौच कर्के शुद्धि होती है ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ कि एक अशौचमें और अशौच पड़जाये और वोह अशौच अजे निकले आभी न होवे तो पश्चात् पूर्वले अशौच के पंचम दिनतें आगे जद और अशौच पड़जायें तद पिछले अशौच कर्के शुद्धि जानणी ॥

और परतम् । इस पद कर्के पूर्ण अशौच जानना ॥ और पंचम दिनते पहले जद पूर्ण अशौच में और पूर्ण अशौच पड जाये तद पूर्वले अशौचके निकलने कर्के शुद्धि होतीहै ॥ एह वचन (आद्यभागद्वयमित्यादि) इस वचन के तुल्यहै ॥ अर्थात् जो उसका अर्थहै सोइं अर्थ इसका है ॥ कूर्म पुराणमेंभी कथन कियाहै ॥ अर्घेति ॥ कि अशौचके वधाने वाला जो अशौचहै सो जद पहले अशौचमें पड जाये ॥ अर्थात् एक अशौच पहले पिया होवे और उपरसे एक और अशौच पडजावे तद पूर्वले अशौच कर्के शुद्धि होतीहै ॥ जेकर पंचमी रात्रितें उपरंत पडे तद पिछले कर्के शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ अशौचके वधाने वाला अ

परमशौचमत्रसंपूर्णाशौचपरंज्ञेयम् पंचमादहः पूर्वेण तादृगशौचान्तरपा
तेपूर्वेणैवाशौचनिरासेनशुद्धिः आद्यभागद्वयमित्यादिब्रह्मवचनतुल्यमिदम्
कूर्मपुराणेषु अघट्टद्धिमदाशौचमूर्ध्वचेत्तेनशुध्यति अथचेत्पंचमीरात्रि
मतीत्यपरतोभवेत् १ अघट्टद्धिमत् अशौचवर्द्धकमशौचंऊर्ध्वप्रथमाशौचोत्त
रंचेत्पततितदातेनप्रथमेनैवोत्तरमपिशुद्ध्यति । प्रथमाशौचपञ्चमीरात्र्यनं
तरं द्वितीयंपततितदापरतोद्वितीयेनैवेत्यर्थः विष्णुपुराणमप्येतद्विषयंयथा
जननाशौचमध्ये यद्यपरं जननंस्थात्तदापूर्वाशौचव्यपगमेनशुद्धिः रात्रिशे
षेदिनद्वयेन प्रभाते दिनत्रयेण मरणाशौचमध्येज्ञातिमरणेप्येवमिति ॥ रा
त्रिशेषपदव्याख्यातूक्ताप्राक् ॥

शौच पहले अशौचमें जद पवे तद पूर्वले अशौच कर्के पिछले अशौचकी भी शुद्धि होती है ॥ और पूर्वले अशौचकी पंचमी रात्रितें उपरंत दूसरा अशौच पावे तद पिछले अशौच कर्के शुद्धि होतीहै ॥ विष्णुपुराणमें भी कथन कियाहै ॥ सो दिखानेहैं । जन्माशौचके मध्य में जद और जन्माशौच पवे तद पूर्वले अशौच कर्के शुद्धि होतीहै ॥ और एक रात्रि शेष रहे तद अशौचांतमें दो दिन अधिक कर्के शुद्धि होतीहै ॥ जेकर प्रभात कालमें अशौचमें अशौच पडे तद तीन दिन कर्के शुद्धि होतीहै ॥ इसी प्रकार मरणाशौचके मध्यमें सजातिके मरणमें जानना ॥ और रात्रि शेष पदकी पूर्व व्याख्या कीतीहै ॥

३२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥

इसमें यद्यपि बौधायनीय ग्रंथमें कथन किया है कि नवम दिन तक जद अशौचमें अशौच पड़े तद पूर्वले अशौच करके अशौचकी समाप्ति होती है । यथा । जन्मा अशौचमें जद और जन्माशौच पड़े तद दश १० दिन अशौच होता है इससे उपरंत दशरात्रके अशौचमें नव दिन तक जद दश रात्रका अशौच पड़े तद आदले अशौच करके शुद्धि होती है इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ जन्माशौचमें जन्माशौच पड़े और मरणाशौचमें मरणाशौच पड़े तद दश दिन ही अशौच होता है इसमें न्यूनाधिक कल्पना नहि करणी ॥ और दिनाके छिडेमें नवम दिन तक पूर्व कथन किया है तदपि पूर्वलाहि दश रात्र अशौच होता है यह बौधायन जीने कहा है तदपि इह वचन सामान्य है और पंचम ५ दिनकी अवधिको जनाने वाला जो ब्राह्मका व

अत्रयद्यपिबौधायनीये नवमदिनपर्यंतमशौचांतरपातेप्रथमेनैवसमाप्ति रुक्ता॥यथाजननमरणयोःसन्निपातेसमानेदशरात्रः॥ अथदशरात्रायदिसन्निपतेयुराद्यंदशरात्रमशौचमानवमाद्विवसादिति॥अर्थः जननेजननान्तरस्यमरणेमरणांतरस्यचसन्निपाते दशरात्रमेवाशौचनात्रन्यूनाधिकभावकल्पनादिनान्तरे आनवमात्पूर्वोक्तंतदापिप्रथममेवदशरात्रमिति । तथापि सामान्यमिदंपंचमावधिवोधकब्राह्मवचसावाध्यते ॥बौधानीयंतच्छाखापरं वावचनांतरमप्येवमेवसमाधेयं । अत्रपूर्वोक्तवचनेपुपंचमपदंसंपूर्णाशौचार्द्धपरंतनक्षत्रियादिः पट्सार्द्धसप्तपंचदशदिनानिपूर्वपरवोधकानिज्ञेयानि॥एवं नवमपदंसंपूर्णाशौचोपान्त्यदिनपरम् दशरात्रपदंसंपूर्णाशौचोपलक्षकमितिबोध्यम् असंपूर्णाशौचसन्निपातेयमः

चन है तिस करके बाध्या जाता है अर्थात् यह वचन सामान्य है और ब्राह्म वचन विशेष है ॥ और विशेष करके सामान्यकी बाधा होती है अथवा बौधायनजीका वचन तिनकी शाखाकोहि विषय करदा है ॥ और वचनभी इसी प्रकार समाधान करणा इसमें पूर्वले वचनमें जो पंचम इह पद है सो संपूर्ण अशौचके अर्द्धपर है अर्थात् पंच दिन करके अर्द्धा अशौच ग्रहण करणा ॥ तिस कारणतें क्षत्रिके सूतकमें छे १ दिन और वैश्यके सूतकमें साडे सात ७ ॥ दिन और शूद्रके सूतकमें, पंदरा १५ दिन पूर्वके और पण्डितके जनाने वाले जानने ॥ इसी प्रकार नवम पद करके संपूर्ण अशौचांतरके आदला दिन ग्रहण करणा और दश रात्र इस पद करके संपूर्ण अशौच लेणा ॥ थोड़े अशौचके सन्निपातमें यमजी कथन करते हैं

अथेति ॥ अशौचोंकी वृद्धिमें पिछले अशौचकरके अशौच समाप्त होता है ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ किंदों अथवा तीनदिनके अशौचके पिछ्रां होयां जेकर तैसा और अशौच पडे तद पिछले अशौचकरके शुद्धि होती है ॥ यही शुद्धिविवेकमें स्पष्ट करके कहा है ॥ कि दश १० दिनों के अशौचमें पांचमें दिनतक जेकर दूसरा सजातीय दश १० दिनका अशौच पड जाये तद पहले अशौचके निकलने करके शुद्धि होती है ॥ और जेकर पंचमदिनते उपरंत नवमदिन तक दूसरा अशौच पड जाये तद अगले अशौच करके शुद्धि होती है ॥ और जेकर दशदिनमें पूर्ण अशौच होर पड जाये तद दशदिनते उपरंत दोदिनकरके शुद्धि होती है ॥ और जेकर दशमदिनकीशेष रात्रिमें और सूर्यके उदेकालमें पूर्ण अशौच पवे तद सूर्योदयते उपरंत तीनरात्रकरके शुद्धि

अथ वृद्धावशौचंतु पाश्चिमेन समापयेदिति । एकास्मिन् बृहस्पत्यादि के अशौचे तादृगशौचांतरपातयेत्तदा पश्चिमेनैव शुद्धिः । इदमेव विशदीकृतं शुद्धिविवेके दशाहाशौचपंचमादिनपर्यंतं यदि द्वितीय सजातीयं दशाहाशौचमापतति तदा पूर्वाशौचव्यपगमेन शुद्धिः । पंचमदिनानंतरं नवमादिनपर्यंतं द्वितीयाशौचे सत्यग्निमाशौचव्यपगमेन शुद्धिः । दशमदिने संपूर्णाशौचसतितद्दिनानंतरं दिनद्वयेन शुद्धिः । दशमदिनरात्रिशेषे अरुणोदयबलायां संपूर्णाशौचापनिपाते सूर्योदयानंतरं त्रिरात्रेण शुद्धिः । एवं क्षत्रियवैश्यशूद्राणां संपूर्णस्वस्वाशौचानिज्ञेयानि पूर्वाह्ने समानदिनव्यापकमशौचांतरं यदि भवति तदा पूर्वाशौचव्यपगमेन शुद्धिः । अग्निमाह्नेऽग्निमाशौचव्यपगमेन शुद्धिः । अशौचान्तदिनप्रभातकालेऽशौचांतरेऽधिकनदिनत्रयेण शुद्धिः ॥ व्यहाद्यसंपूर्णाशौचे समानकालाशौचांतरोपनिपातेऽग्निमाशौचव्यपगमेन शुद्धिरिति ॥

होती है ॥ इसीप्रकारक्षत्री वैश्य और शूद्र इनकेभी संपूर्णअशौचमें अपने अपने अशौच जानने और पहले अर्द्धमें तुल्यदिनदो ग बाला अशौच जद अशौचमें पड जाये तदपूर्वले अशौच करके शुद्धि होती है ॥ और जेकर अगले अर्द्धमें पडे तद अगले अशौच करके शुद्धि होती है ॥ और जेकर अशौचके अंतदिनके प्रभात कालमें और अशौच पवे तह और तीनदिनों करके शुद्धि होती है और जद दो तीन दिनका जो असंपूर्ण अशौच है तिसमें तैसा और अशौच पड जाये तद अगले अशौच करके शुद्धि होती है ॥

३४ ॥ श्रीरणवोरकारेत प्रायाश्चत भागः प्र० १८ टा० भा० ॥

विजातीय अशौच के मिथी भावमें लघु हारीत जी कहतेहैं ॥ सूतेति ॥ जन्म निमित्त अशौचमें जद मरण निमित्त अशौच पडे और तैसे जन्म निमित्त अशौचमें मरण निमित्त अशौच पडे ॥ तद मरण निमित्त अशौच करके जन्म निमित्त अशौच निकल जाताहै ॥ और जन्मनिमित्त अशौच करके मरण निमित्त अशौच दूर नहि होता और मरणोत्पत्ति ॥ इस वाक्य करके मरण अशौच की समाप्तिमें अधिक भी होवे जन्माशौच तद भी मरणाशौच करके शुद्धा होतीहै ॥ और जेकर मरणा शौच जन्माशौचकी समाप्तिमें अधिक होवे तद भी जन्माशौच करके शुद्धि नहि होतीहै । क्या होताहै कि मरणाशौच अपने दिनों कभूके निकलताहै ॥ अर्थात् मरणा शौच करके शुद्धि होतीहै ॥ एह सभ एक कुलके अशौच का निर्णयहै और भिन्न कुल जो गुरु शिष्य स्वामि सेवकादिका अशौच तिस विषे नहि ॥ इहां दोआं वचना का एकही विषयहै ऐसा भी कई कहतेहैं ॥ इसमें कुछ और कहतेहैं ॥ कि अशौच

विजातीयसंकरेलघुहारीतः ॥ सूतकेमृतकंचेत्स्यान्मृतकेसूतकंतथा मृतेन सूतकंगच्छेत्रेतरत्सूतकेनतु॥मरणोत्पत्तियोगेतुगरीयोमरणंभवेदित्यादिना मृतेनस्वसमाप्त्यधिकमपिसूतकंगच्छेत् । इतरन्मृतकंसूतकसमाप्त्यधिकंसूतकेननगच्छतिकितु स्वकालेनैव यातीत्यर्थः ॥ कुलप्रयुक्तोयमशौचनिर्णयः ॥ अशौचसंपातेयोयंनिर्णयः ससर्वोपि शुद्धिविवेकानुसारीति यत्रदेशशुद्धिविवेकानुसार्याशौचनिर्णय एवशिष्टपरिगृहीतस्तत्रैतान्निर्णयानुसारिणाशौचपरिग्रहव्यवस्थाऽऽस्थेया ॥ अन्यत्रतुपडशीतिनिर्णयसिंधुपराशरमाधवत्रिंशच्छ्रुलोकीव्याख्याकरादिकृतैवव्यवस्थातत्तदग्रंथभ्योऽदगन्तव्या ॥ अतःस्त्रीणांस्वप्रसवनिमित्तमशौचंप्रतिव्यक्तिविश्रांतत्वादन्याशौचेन न बाध्यते॥

के मध्यमें और अशौच पडनेमें जो यह निर्णय कियाहै सो संपूर्ण शुद्धि विवेक के अनुसा रहै इसी कारणसे जिस देशमें श्रेष्ठोंने शुद्धिविवेककेअनुसार अशौच का निर्णय ग्रहण कियाहै तिस देशमें इस निर्णय के अनुसार अशौच की व्यवस्था स्थित करणे योग्यहै ॥ और और देशमें पडशीति और निर्णयसिंधु और पराशर माधव और त्रिंशच्छ्रुलोकी इनकी व्याख्या के करण वाले जो हैं तिन करके कीती हुई व्यवस्था जानणी ॥ और सो व्यवस्था तिस तिस ग्रंथमें जाण लैणी ॥ इसी कारणसे स्त्रियों का जन्म निमित्त जो अशौचहै सो और अशौच करके नहि बाध्या जाता कंचुके एक २ के प्रति कथन करणे में ॥ अर्थात् सूतक के बाधनेमें और संवाधियों की शुद्धि होतीहै और प्रसूता स्त्रियोंकी शुद्धि नहि होती ॥

तिसी कारण तें पुत्र के उत्पन्न होयां २ बीस दिन २० और कन्या के उत्पन्न होयां २ एकमास ३० दिन उपरंत स्त्रीको श्राद्धके अन्न पाकादिमें अधिकार होता है ॥ जेकर सूतकमें पतिकी मृत्यु होजाये तदपि कथन कीया जो काल है तिसी कालमें सूतक का अंत जानना ॥ कुछ और कहते हैं ॥ मातेति कि पहले माताके मृत होयां २ जेकर अशौचमें पिता मृत होजाये तदपि पिताके अशौच के शेष दिनों कर्के शुद्धि होती है और जेकर पिताके मृत होयां २ पश्चात् माता मृत होजाये तदपि पिताके अशौचमें आगे एक रात्रि कर्के शुद्धि होती है ॥ यह शंखजीने कहा है ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ कितीन पादोंका अर्थ स्पष्ट है ॥ और चौथे पादका यह अर्थ है कि पिताके अशौचके मध्यमें माता मृत होजाये तदपि पिताके अशौचांतमें अधिक माताके अशौच की एक रात्रि अधिक करे तिसमें (अशुद्धों) इस पदमें क्या कि जेकर पिता अपने आपको मारण वाला होवे अर्थात्

ततश्च पुत्रे जाते विंशतिदिनात् कन्यायांजातायांमासादूर्ध्वं श्राद्धपाकादाधिकारः अत्रांतरापतिमरणेप्युक्तकालएवसूतकांतोबोध्यः ॥ किंच ॥ मातव्यग्रेप्रमीतायामशुद्धौम्रियतेपिता पितुःशेषेणशुद्धिःस्यान्मातुःकुर्व्यात्तुपक्षिणीमिति ॥ शंखस्मरणे पादत्रयंस्पष्टंचतुर्थेत्वयमर्थः ॥ पित्राशौचमध्येमातृमृतौपित्राशौचांतेमातुः पक्षिणीमधिकांकुर्व्यादिति ॥ तत्राशुद्धावित्युक्तेः यदिपितात्महत्यादिमान् तदा तदाशौचाभावात्तत्रमातृमरणेनपक्षिणीवृद्धिःकिंतुसंपूर्णमेवमात्रशौचकार्य्यमितिनिर्णयसिंधुः ॥ पक्षिणीवृद्धिरपि तृतीयदिनादौ प्रथमदिनद्वयेन विधेयेत्यपितत्रैवाक्तं किंच सर्पिंडाशौचनमातापित्रोरशौचं नापयति एवंभर्तुरपिवोध्यं इयंपक्षिणीवृद्धिरपि दशमदिनात्प्राङ्मातृमरणेज्ञेया दशम्यांरात्रौतत्प्रभातेवामातृमरणेदिनद्वयेनसहवर्द्धनीयेतिकेचित् ॥

फांसी विषादि कर्के आप मृत होजाये ॥ और ब्रह्म इत्यादि वाला होवे तद उसका अशौच नहि होता ॥ तिसमें माताके मरणके विषे एक रात्रि नहि बधाणी क्या करणा कि माताकाहि संपूर्ण अशौच करणा इह निर्णयसिंधुमें कथन कीया है ॥ एक रात्रि की जो वृद्धि है सो भी तीनदिनने लेकर के जानणी और जेकर प्रथम दो दिनमें मृत होवे तद नहि एक रात्रि की वृद्धि करणा यह भी निर्णय सिंधुमें कहा है ॥ कुछ और कहते हैं कि सर्पिंडाके अशौच कर्के माता और पिताका अशौच नहि दूरहोता ॥ इसीतरां स्त्रीको औरके अशौचकर्के पतिका अशौच दूर नहिहोता और जेकर दशदिनतें पूर्व माता मृत होवे तद पक्षिणी वृद्धि जानणी ॥ और जेकर दशमी रात्रिमें अथवा तिसके प्रभात में माता मृत होवे तद और तीन दिनोंकरके शुद्धि होती है ॥

३६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी ० भा ० ॥

पडशीति मतमें स्त्रीकोपति साथजानमें विशेष कहाहै ॥ मृतमिति ॥ किमृतहोये पतिकेपीछे जा करस्त्री जदअग्निमें प्रवेश करे अर्थात् साथ अथवाकैसे दिनपीछे दग्ध हो जाये तद तिसमें एकगत्रि अधिक नहिकरणी ॥ और पिताके अशौच दिनोंकी समाप्तिकेहि शुद्धिहोताहै १ ॥ पुत्रेति । तिसमें स्त्रीकोपुत्र अथवा औरकोई अग्निकोदेवे सोतावनमात्र अपवित्रहोताहै ॥ अर्थात् स्नानकरके शुद्धहोताहै तिनदोनोंका आद्ध और पिंड भिन्न नाकें अर्थात् डकठाहिकरे २ ॥ अथविदेश मृतका अशौच कथन करतहै । तिसमें मनुजीकावचनहै ॥ विगतेति विदेशमें मृत होये संवधि को जोदश दिन के मध्यमें श्रवण करे तो दशदिनके मध्यमें जितने दिनशेपरहण तिनने दिन अशुचिहोताहै ॥ १ ॥ अतिइति जेकर दशदिन वातजान तद तीन दिन अशौच

सहगमनेविशेषः पडशीतिमते ॥ मृतपतिमनुव्रज्यपत्नीचदनलंगता नतत्रपक्षिणोकार्य्योपेतृकोदेवशुद्ध्यति ॥ १ ॥ पुत्रोऽन्योवाग्निदस्तस्या स्तावदेवाशुचिस्तयोः नश्राद्धंनचपिंडचयुगपत्तुसमापयेत् ॥ २ ॥ न श्राद्धंनपृथक्पिंडमिति पाठान्तरम् ॥ तावदेवअग्निदानपर्य्यंतमेवसद्यः शौचमित्यर्थः ॥ ३ ॥ अथविदेशस्थाशौचं ॥ मनुः ॥ विगतंतुविदेशस्थशृणुयाद्योह्यनिर्देशम् ॥ यच्छेपदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवत् १ ॥ अतिक्रान्तदशाहेतुत्रिरात्रमशुचिर्भवत् सम्वत्सरे व्यतीतंतुस्पृष्ट्वैवापौविशद्ध्यति २ ॥ एकेनदिनेनयतोमृतस्यवार्त्तानश्रूयते सीहीविदेशः तत्रस्थं अनिर्देशमनतिक्रान्तदशाहंविगतंमृतंपित्रादिकंयःपुत्रादिःशृणुयात् सदशरात्रशेपयावदशुचिर्भवति । विगतमिति जन्मनोप्युपलक्षणम् तथाचवृहस्पतिः अन्यदेशमृतंज्ञातिं श्रुत्वावापुत्रजन्मच ॥ अनिर्गतं दशाहेतुशेपाहंभिर्विशुद्ध्यति ॥ १ ॥

होताहै ॥ जेकर वर्षवीतजाये तद जलको स्पर्शकरके अर्थात् आचमनकरके शुद्धिहोतीहै २ ॥ इसीका स्पष्टअर्थहै एकदिन करके जिसमें मृतहोयेकी वार्त्तान सुणीजाये सो विदेश होताहै ॥ तिसमें सूाहोये पिता आदिको जो पुत्रादि दशदिन के मध्यमें श्रवणकरे सोपुत्रादि शेष दिन अशुचि रहताहै ॥ विगत इस पद करके बालकादिका जन्म भीग्रहण करणा ॥ तिसीप्रकार वृहस्पतिजीने भी कथन किया है ॥ अन्येति कि और देशमें मृतहोये सापिंडीको अथवा पुत्रके जन्मको श्रवण करके और दशदिनके नाव्यनीत होयां होयां शेष दिनो करकेशुद्ध होताहै ॥ १ ॥

और दश दिनके व्यतीत होयां होयां मृत सपिंडीके श्रवणमें तीन रात्र अशौच है और वर्षके व्यतीत होयां होयां मृत सपिंडीके श्रवणमें स्नान करके शुद्ध होती है। यह शुद्धि भेदते गहित कथन करनेमें चतुर्वर्णोंमें जाननी। और दश दिनके व्यतीत होयां होयां जन्म निमित्त अशौच नहि होता क्योंकि दश दिनके व्यतीत होयां होयां जन्मका अशौच नहि होता। इस देवल जीके वचनमें दश दिनके उपरंत प्राप्त हुआ जो तीन ३ दिनका अशौच है तिसमें मनुजी विशेष कहते हैं। निरिनि। कि दश दिनके व्यतीत होयां २ सपिंडीके मरणको और पुत्रके जन्मको श्रवण करके। सहित वस्त्रोंके स्नान करे तो शुद्ध होता है। और बृहस्पतीजीका वचन सपिंड मरण पर था और यह सजाति पर है ऐसा विवेक है। और दशाहाशौचके व्यतीत होयां २ कर्माकी

दशाहेऽतिक्रांते व्यतीते सपिण्डमरणश्रुतौ त्रिरात्रमशौचं भवति सम्बत्सरानंत रं सपिण्डमरणश्रवणस्नानमात्रेण शुद्धिः एतच्चाविशेषेणाभिधानाद्वर्णचतुष्टयविषयम् जन्मनिमित्तमशौचं दशाहातीतेनास्ति। नाशौचं प्रसवस्यास्ति व्यतीते पुद्गले प्वपीति देवलस्मरणात्। दशाहानंतरं प्राप्ते त्र्यहाशौचेऽपि विशेषमाह मनुः निर्देशं ज्ञातिमरणं श्रुत्वा पुत्रस्य जन्मचसवासाजलमाप्नुत्य शुद्धो भवति मानवः १ दशाहाशौचव्यपगमे कर्मानिर्हृत्य लक्षणस्य त्र्यहाशौचस्योक्तत्वात् तदंगस्पर्शविषयम् निर्गतं दशाहे सपिण्डमरणे पुत्रजन्मनिचसचैलस्नानानंतरं स्पृश्यता भवतीति भावः ॥ देशान्तरस्थवालादिमरणेऽप्येव मित्याह स एवा। वाले देशान्तरस्थे च पृथक् सपिण्डे च संस्थिते सवासाजलमाप्नुत्य सद्य एवावशुद्ध्यति ॥ वाले जातदन्ते मृते, जातदन्ते नृणामकृतचूडानामित्येकाहोरात्रविधानाद्देशान्तरस्थसपिण्डमरणाशौचविषयमिदम्

योग्यता है। जिसमें ऐसा जो तीन दिनका अशौच है तिसका उक्त होनेमें तीन दिनके अशौचमें अंग स्पर्शता होती है। यह भाव है कि दश दिनके व्यतीत होयां २ और सपिंडीके मरणमें और पुत्रके जन्ममें समेत वस्त्रोंके स्नान करनेमें उपरंत अंग स्पर्शता होता है ॥ और देशमें वालादि के मरण विषे मनुजी कहते हैं। कि और देशमें सपिंडीवालकके अथवा भिन्नपिंडी वालकके मरणमें सहित वस्त्रोंके स्नान करके तात्काल शुद्ध होता है। वालक इहां जात दंता वाला ग्रहण करणा (जातदंत इत्यादि) यह स्मृतिका सारा वाक्य नहि। इस श्लोक करके एक दिन रात्र विधान करनेमें और देशमें सपिंडीके मरणके अशौचके विषयमें है ॥

३८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

यह आशय है कि जिस में दशदिन अशौच है तिसमें दश दिन ते उपरंत श्रवण हो तोती न दिन अशौच है ॥ जहां भिन्न पिंडो और समानोदको हो उसमें तीन रात्र अशौच कहा है ॥ और तिसमें तीन रात्र के व्यतीत होयां श्रवण हो तो सहित वस्त्रों के स्नान करके शुद्ध होता है ॥ इसमें कुलविष्णुजी भी कथन करते हैं ॥ अइति ॥ किनीन पक्षतें उरे अर्थात् पंचताली ४५ दिनतें उरे विदेशमें मृतहोये सपिंडीको श्रवण करे तदतीनरात्र ॥ और तीनपक्षतें उपरंत और छे महीनेते उरे एकरात्र और छेमासते उपरंत वर्षतें उरे एकादिनही अशौच कथन कीया है १ और विदेशमें मृतहोये सपिंडी और सोदकां के श्रवण में स्नान मात्र अशौच कहा है ॥ देशांतरका लक्षण बृहस्पती जीने कथन कीया है ॥ मेति ॥ कि जिसमें महानदी का

अयंभावः यत्रदशाहा शौचं तत्रदशाहानंतरं श्रवणे अहमशौचं यत्रष्टथक्पिंडेसमानोदेकत्रिरात्रमुक्तं तत्रत्रिरात्रेऽतीतेश्रवणेसचैलस्नानेनशुद्धिरिति॥ किंच विष्णुः॥ अर्वाक्रिपक्षात्रिनिशं पणमासाच्चदिवानिशम् अहःसंवत्सरादर्वाकूदेशांतरमृतेष्वपीति सपिण्डानां सोदकानां देशांतरमृतानां श्रवणे स्नानमेव ॥ देशांतरलक्षणंबृहस्पतिना प्रोक्तम्॥ महानद्यंतरं यत्रगिरिर्वाव्यवधायकः वाचोयत्रविभिद्यंत तद्देशांतरमुच्यते ॥ १॥ देशांतरंवदंत्येकंपटि योजनमापनं चत्वारिंशद्वदंत्यन्योत्रिशदन्येतथैवचेति ॥ २॥ सर्वमिदमातापितृभिन्नपरम् । तयोस्तु पितरौ चेन्मृतौ स्यातांदूरस्थेऽपि हि पुत्रकः श्रुत्वा तद्दिनमारभ्य दशाहंसूतकंचरेदिति पैठीनसि वचनात्सदा दशाहादि पूर्णमेवाशौचं भवति ॥

व्यवधान हो अथवा किसी पर्यंत का व्यवधान है ॥ और जिसमें वाणीका व्यवधान हो जाये सो देशांतर कथन करेगा ॥ १ ॥ देशेति कई पांडित साठ ६० योजन के अंतर्गलमें अर्थात् दो सौ चालीस २४० कोशके छिड़ें को देशांतर कथन करते हैं ॥ और और मुनिः चालीस ४० योजनके छिड़ें में और और कई तीस ३० योजनके छिड़ें में देशांतर कथन करते हैं ॥ २ ॥ यह सब मातापितातें भिन्नविषयमें जानना ॥ और माता पिताके विषयमें ॥ पितेति माता और पिता मृत हो जाये तद दूरमें भी स्थित होवें पुत्र तद भी श्रवण करके श्रवण दिनतें लेकर दशदिन सूतक करेगा ॥ इस पैठीनसि के वचनतें सदा दशादिनादि संपूर्ण अशौच होता है ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र ० १८ ॥ टी० भा० ॥ ३९

एहि वार्तास्मृत्यर्थसार में कथन कीतीहै ॥ मातेति किमाता और पिता दूरदेशमें भी मृत हो न और वर्ष भी व्यतीत होजाए तदभी पुत्र दशाहादि सूतककरे ॥ इसी प्रकार स्त्री और पुरुष को भी योग्यहै अर्थात् स्त्री मृतको श्रवण करके पति और पति मृत होयेको श्रवण करके स्त्री दशाहादि अशौच को करेऔर तुल्य वर्णकीयोंमें अथवा उत्तम वर्णकीयों सपत्नीयोंमें भी इसी प्रकार जानना अर्थात् तुल्य वर्ण वाली अथवा उत्तम वर्णकी साकण मृत होई कोश्रवण करके साकण दशाहादि अशौचकरे यहनिर्णय सिंधुमें कथन कीआहै ॥ माताकी साकणके विषयमें दक्षजी कथन करतेहैं ॥ पित्रिति ॥ माताके बिना पिताकी स्त्री को विदेशमें मृतहोयां होयां और वर्षके व्यतीत होयां होयां भी पुत्र तीन रात्र अशौच करे ॥ इसी प्रकार हीन वर्णकी मातामें और हीनवर्ण कीयां साकणमें जानना यह स्मृत्यर्थसारमें कथन की

इदमेवस्मृत्यर्थसारे ॥ मातापितृमरणेतुदूरदेशेपि संवत्सरोर्ध्वमपिपुत्रोदशाहादिकंकुर्यात् ॥ स्त्रापुंसयोः परस्परसवर्णात्तमवर्णसपत्नीपुत्रैवमिति निर्णयसिंधुः ॥ सपत्नमातृविषयेदक्षः ॥ पितृपत्न्यामपेतायां मातृवज्ज्ये द्विजोत्तमः संवत्सरेव्यतीतेपित्रिरात्रमशुचिर्भवदिति ॥ अपेतायां देशांतरे मृतायाम् ॥ हीनवर्णमातृपुत्रीनवर्णसपत्नीपुत्रैवमितिस्मृत्यर्थसारे ॥ और सपुत्रप्येवमिति केचित् । तथाचब्राह्म्यम् ॥ पितृपत्न्यांप्रमीतायामौरसेत नयेतथेति एतच्चसर्ववर्णसाधारणम् ॥ तुल्यवयसि सर्वेषामतिक्रान्तेतथैव चेति व्याघ्रस्मरणात् ॥ वयसिवालविषयेअतिक्रान्ते देशांतरवशादशौचकालव्यतीते सर्वेषांवर्णानांतदुक्तमशौचतुल्यमेव इतिविदेशस्थाशौचम् ॥

याहै ॥ इसी प्रकार अपनी स्त्रीमें उत्पन्न होयाजो पुत्रहै तिसके मृतहोयां भी इसी प्रकार करणा यह भी कैड़े कथन करतेहैं॥तिसी प्रकार ब्राह्म्यमें क्या ब्रह्मपुराणमें भी कथन कीयाहै॥ पित्रिति कि पिताकी स्त्री और अपना पुत्र इनके मृतहोयां होयां दशाहादि अशौच करे इति और यह सब वर्णोंको तुल्य जानना ॥ क्युंके बालकमें और दशाहादि मरणा शौचके व्यतीत होयां २ सभना वर्णोंको) बगवरहि अशौच हुंदाहै उस व्याघ्रजीके वचनते ॥ इसका स्पष्ट अर्थहै ॥ (वयसि) क्या बाल्याबस्था विषे (अतिक्रान्ते) क्यादेशांतरके वशते अशौच कालके व्यतीत होयां २ सर्ववर्णोंको पूरे कथन कीआजो अशौचहै सो तुल्य होताहै ॥ यहविदेशीका अशौच समाप्त हुआ ॥

४० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा०

संकर अशौचमे जहांपूर्वले अशौच करके शुद्धि कथन कीतीहै तिसका अपवाद पडशीतिमेक हाहैं ॥ पूर्वति॥किपूर्वले अशौच करके जो शुद्धि सूतकमे और मरणमें कहीहै सो प्रसूतास्त्री और शवके दाहकरण वाले और मृतपुरुषके पुत्र इन्हाको त्याग करके जाननी अर्थात् पूर्वलेअशौच करके होरणा संबंधीआंकीशुद्धि होतीहै ॥ और इनकी शुद्धि नहि होती ॥ १ यह स्मृतिसंग्रहमें कथन कीयाहै । इयमिति ॥ प्रसूता स्त्री और शवके दाह करण वाला इनते विनायह शुद्धि कथन कीतीहै (अग्निदः) किजोपुरुष मजूरी लेकर शवको दाह करे ॥ और मातुलादि संबंध करके दाह करनेमें तीन रात्र अशौच होताहै॥यही अशौच वृद्धात्रि जीने कहाहै ॥ सूतेति॥जन्म निमित्त अशौचते मरणाशौच दूणा होताहै और शावते दूणा ऋतुसंबंधी होताहै और ऋतुते दूणा प्रसूता स्त्री का होताहै और सूतिते दूणा शवके दाह करण वाले को होताहै ॥ कुछ और क

पडशीत्यांपूर्वाशौचापवादउक्तः ॥ पूर्वाशौचेनयाशुद्धिः सूतकेमृतकेचसासूतिकाग्निदंहित्वाप्रेतस्यचसुतानपि ॥ १ ॥ स्मृतिसंग्रहे इयंविशुद्धिरुदितासूतिकाग्निदंविना अग्निदंमूल्येनशवदाहकः मातुलादिसंबंधेनदाहकरणेत्रिरात्रम् एतदशौचमाहवृद्धात्रिः सूतकाद्विगुणंशावंशावाद्द्विगुणमात्तवमृत्प्राप्तवाद्द्विगुणासूतिस्ततोपिशवदाहकः किंचाशौचसंपातेपिनतान्निमित्तंकचित्प्रतिबन्धः अशौचेतुसमुत्पन्ने पुत्रजन्मयदाभवेत्कृत्तुस्तात्कालीशुद्धिः पूर्वाशौचेनशुद्ध्यतीति शातातपः॥ अतर्दशाहेजननात्पश्चात्स्यान्मरणंयदि प्रेतमृदिश्यकर्त्तव्यंपिंडदानंयथाविधि १ प्रारब्धप्रेतापिंडेतुमध्येचेजननंभवेत् तथैवाशौचपिंडास्तुशेषान्दद्याद्यथाविधि ॥ २ ॥

थन करतेहैं । क्या किसी स्थानमें अशौच के संकरमें भी तिस निमित्त प्रतिबंधक नहि होता ॥ अशौच इति ॥ शावाशौच के होयां २ जेकर पुत्रका जन्म होवे तद कर्म के करण वाले को तिसकालमें शुद्धि होतीहै । अर्थात् तिसकालमेंकर्माका अधिकार होताहै और सो शुद्धिपूर्वले अशौच करके हांतीहै अर्थात् पुत्र जन्म निमित्तदानादि करणे॥ शाता तपजी कहतेहैं अत्ररिति ॥ कि दश दिनके मध्यमें सूतकके विषे पश्चात् जेकर कोई मृतहोजाये तद विधि पूर्वक प्रेतके निमित्त पिंडदान करणे योग्यहै ॥१॥ प्रारेति॥ प्रेतपिंडके आरंभमें अर्थात् किसेके मृतहोयांहोयां जेकर जन्मनिमित्त अशौच पड जाये अर्थात् कोई उत्पन्न होपवे तदजिस प्रकार पहले पिंड देताथा तिसी प्रकार बाकीके पिंड विधि पूर्वक देतारहें तिनको ॥ २ ॥

यह जो कथन किया है कि पिताके मृत होयां २ दश दिन में जेकर माता मृत होजाये तद ए क रात्रि अशौच करे ॥ इसमें कथन करते हैं ॥ माताकि एक रात्रिमें भी पिताके एकादशाह को करे । क्युंके यारमे ११ दिनमें अशौच भी होवे तदपि आदले आदको करे ॥ इस वचन तें । यह वचन क्षत्रि आदिमें जानना ॥ यह कोई कथन करते हैं । दशेति । दशमे दिन १० पिंडको दे करके रात्रि शेषमें शुद्ध होता है । इस विज्ञाने श्वर के वचनतें ब्राह्मणको अशौच के अंतर्हि एकादश ११ दिन है ॥ कुछ और कथन करते हैं कूर्म पुराण में लिखा है ॥ नैष्ठिक नैष्ठिक ब्रह्मचारी वोह होता है कि जो जीवन पर्यंत गुरुके कुलमें व्रत करके निवास करे ॥ वान प्रस्थी सन्यासी और ब्रह्मचारी इनको किसे संबंधीके मृत होयां २ और पतित होयां २ पति

मातुः पक्षिणीमध्येपितुरेकादशाहंकुर्यात् आद्यश्राद्धमशुद्धोपिकुर्यादका दशेहनीतिस्मरणात् क्षत्रियादिपरमिदमितिकेचित् दशमपिंडमसृज्यरा त्रिशेषशुचिर्भवेदिति विज्ञानेश्वरवचनाद्विप्रस्याशौचांतएवैकादशाहः॥ किं चकौर्मै नैष्ठिकानां वनस्थानां यतीनां ब्रह्मचारिणाम् नाशौचं कीर्तितमाह्निक तितेचमृतेतथेति अत्यपादेशावेवापितथैवचेति स्मृत्यंतरपाठः ॥ अत्राशौ चपदं अत्यकर्मोपलक्षणम् ॥ ब्रह्मचारी न कुर्यात् शवदाहादिकां क्रियां यदि कुर्याच्चरेत्कच्छुं पुनः संस्कारमेव चेति देवलवचनात् पित्रादिभिन्नपर मिदम् तथाचमनुः आचार्यस्वमुपाध्यायं मातरं पितरं गुरुं निर्वृत्य तु व्रती प्रेतं न व्रतेन वियुज्यते ॥ १ ॥

त वोह होता है यो अपने धर्मते विचल होजाये ॥ इन कस्नेष्ठोंनें अशौच कथन नहि कीआ ॥ (पति तेचमृते तथा) इस स्थानमें (शवेवापितथैवच) यह भी पाठ होता है ॥ इस श्लोकमें) अशौ च) इस पद करके सपिंडी क्रिया काभी ग्रहण करणा ॥ क्युंके ब्रह्मति । ब्रह्मचारी शवकी दह हादि क्रिया ना करे और जेकर दाहादि क्रिया करे तद कच्छु व्रत का करके पाछे संस्का को फेर करे । इस देवल जीके वचनतें ॥ यह वचन पिता माता इत्यादिमें नहि जानना ॥ तिसी प्रकार मनु जीभी कथन करते हैं ॥ आचेति ॥ पुरोहित और विद्यागुरु और माता पि ता और गुरु इन प्रेतोंको उठाणे और सपिंडी कर्म करने करके ब्रह्मचारी व्रततें रहित नहि हो ता अर्थात् तिस ब्रह्मचारी का व्रत दूर नहि होता है ॥

४२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० ॥ भा०

इसी प्रकार मृत नाने के उठाणे में भी भविष्य पुराण का वचन है ॥ यथेति ॥ कि जिस प्रकार ब्रह्मचारी भी पुत्र पिता की क्रिया करे ॥ तिसप्रकार है राजन् नानेकी क्रिया करने को दौ हित्र योग्य है ॥ १ ॥ काला दर्शमें भी ऐसा लिखा है ॥ इसमें दाह क्रिया निमित्त जो अस्पृश्य ताहै सो दश दिन पर्यन्त जाननी ॥ क्युंके ॥ सइति ॥ हेमित्र सगोत्री वा भिन्न गोत्री जो पुरुष शवको दाह करें सोभी शुद्ध दश दिनमें होता है और नव ९ श्राद्धां कोभी करे ॥ इस दिवो दास के वचनतें ॥ और कहते हैं । नित्येति पित्रादिको दाह करके ब्रह्मचारीके नित्य कर्मका भी लोप नहि होता अर्थात् नित्य कर्मों को छोड़ न देवे किंतु करता रहे ॥ यह छांदोग परिशिष्ट उप निषदमें कथन कीया है ॥ और स्थानमें भी कहा है ॥ नेति । कि ब्रह्मचारी सूतकमें अपने

व्रती ब्रह्मचारी ॥ निर्हरणमत्रान्त्यकर्मणोप्युपलक्षणम् ॥ एवंमातामहनिर्हरणेपि भविष्यवचनम् । यथाव्रतस्थोपिसुतःपितुःकुर्यात्क्रियानृप तथामातामहस्यापिदौहित्रः कर्तुमर्हतीति कालादर्शेप्येवं अत्रान्त्यकर्मनिमित्तमस्पृश्यत्वं दशाहावध्येव सगोत्रोवाऽसगोत्रोवायोऽग्निदद्यात्सखेनरःसोपिकुर्यान्नवश्राद्धान् शुद्धेतुदशमेहनीतिदिवोदासवचनात् ॥ अपिच नित्यकर्मलोपेपिन ब्रह्मचारिण इति छांदोग परिशिष्टे ॥ यथा नित्यजेत्सूतके कर्म ब्रह्मचारी स्वयं कचिदिति । संवत्तः पित्रोर्गुरोर्विपत्तौ तृब्रह्मचार्यपियः सुतः सव्रतश्चापिकुर्वति अग्निपिंडोदकक्रियाम् १ ॥ तेनाशौचं न कर्त्तव्यं संध्या चैव न लुप्यते अग्निकार्यं च कर्त्तव्यं सायं प्रातश्च नित्यशः २ ॥ इति अत्रायमशौचाभावः कर्म्मधिकारपरो न स्पृश्यतापरः पूर्वोक्तवचनात् केचित्त्वेकाहमशौचमाहुः ॥

कर्मांके कदेभी त्याग ना करे ॥ इस वचनतें ॥ इसीमें संवत्तजीभा कहते हैं ॥ माता और पिता और गुरु इनके मृत होयां २ ब्रह्मचारी भी जो पुत्र है सो सहित व्रत के अग्नि और पिंडोंदक क्रियाका करे ॥ १ ॥ तेनेति ॥ और तिस पुत्र ने अशौच नहि करने योग्य है ॥ और तिसके संध्या कर्मका लोप नहि होता अर्थात् संध्या को करे ॥ और सायंकाल और प्रातः काल में नित्य ही अग्निमें हवन करे ॥ २ ॥ इति इस वाक्यमें यह जो अशौचाभाव है सो कर्माधिकार पर जानना और अस्पृश्यता पर नहि जानना अर्थात् कर्मों के करणे में उसको अधिकार है और अस्पृश्य उसकी नहि दूर होती है ॥ क्योंकि पूर्वले वचनतें ॥ कोई एकदिन तिसको अशौच कहते हैं ॥

आचेति ॥ पुरोहित और विद्याके पढाणे वाला और गुरु पिता और माता इनको ब्रह्मचारी दाह करके और तिसस्थानमें भोजनखाय करके॥१॥ व्रतते पतित नहि होता और तिसस्थानमें हि प्रेतके अन्न को खाये परंतु वखेर भोजनको करे और तिनके साथ निवास नाकरे ॥ २ ॥ और एकदिन अशुचिहोताहे दूसरेदिन शुद्धहोजाताहै ॥ इस ब्राह्म्यके वचनते ॥ यहसंक्षेपकर के कहाहै और विस्तार निर्णय सिंधु आदिमें कहाहै ॥ अव सूतकमें यह कर्मत्याग करने और यह कर्मत्याग नहि करने यहव्यवस्था याज्ञवल्क्यजीने कथनकरीहै ॥ वैतेति वैतान और उपासना और किया यहसूतकमें भी करणा योग्यहैं श्रुतिके विधानते॥ श्रुतिमें जो कहाहै कि यह

आचार्यैवाप्युपाध्यायंगुरुवापितरंचवा मातरंवास्वयंदग्ध्वाव्रतस्थस्तत्र भोजनं १ कृत्वापततिनोतस्मात्प्रेतान्नतत्रभक्षयेत् अन्यत्रभोजनंकुर्यान्नच तैःसहसंवसेत् २ एकाहमशुचिर्भूत्वाद्वितीयेहनिशुद्ध्यतीति ब्राह्म्यवचना द्विस्तरस्तुनिर्णयसिंध्वादौ ॥ सूतकेत्याज्यात्याज्यकर्मव्यवस्थापितं याज्ञवल्क्येन । वैतानोपासनाः कार्याः क्रियाश्च श्रुतिचोदनात् वैतानाः त्रेताग्नि साध्याः अग्निहोत्रदर्शपूर्णमासाद्याः क्रियाः उपासनाः सायंप्रातर्होमा क्रियाः इमा वैदिक्यः सर्वा अपि सूतके मृतकेपि कार्याः श्रुतिचोदनात् श्रुतिप्रतिपादितत्वात् ॥ श्रुतिश्च यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात् अहरहः स्वाहा कुर्यादित्यादिका । अत्र श्रौतेकर्मणि विधानानुज्ञानात् स्मार्तकर्मविधानं गम्यते तथा च व्याघ्रपादः ॥ स्मार्तकर्मपरित्यागो राहोरन्यत्र सूतके श्रौतेकर्मणि तत्का

लंस्नातः शुद्धिमवाप्नुयादिति

कर्म करना चाहिये इसते ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है (वैतानाः) कि अग्नि त्रय करके साध्य अग्नि होत्र और दर्श पूर्ण मासादि क्रिया ॥ (उपासनाः) कि सायंकालमें और प्रातःकालमें हवन क्रिया यह वैदिक सब क्रियासूतकमें और मृतकमें भी करणे योग्यहैं ॥ क्युं श्रुतिके प्रतिपादनते श्रुतिभी कहतेहैं ॥ कि जितना पर्यंत जीवें उतना पर्यंत अग्निहोत्रको करे ॥ और दिन २ में हवन करे इत्यादिक श्रुतिहैं ॥ इसमें श्रौत कर्मके विषे विधानके ज्ञानते स्मार्त कर्मका अविधान जाणीदाहै ॥ तैसे व्याघ्र पादकहताहै ॥ स्मार्तेति । कि ग्रहणते बिना और सूतकमें स्मार्त कर्म नहि करणा चाहिये ॥ और श्रौत कर्मके विषे स्नान करके तात्काल शुद्धिको प्राप्त होताहै ॥

४४ ॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

पिंड और पितृ यज्ञादि यह स्मार्त कर्म है श्रौतनित्य और नैमित्तिक यह पूर्व कथन कीये है ॥ पैठीनासि जी का वाक्य है ॥ वैतान कर्म में विना शालाग्रि में नित्य कर्म नहीं करणे अर्थात् वैतान कर्म करलेणा यह एक कहते हैं ॥ इति ॥ इसमें अवश्य करणे योग्य जो अग्नि त्रयसाध्य कर्म हैं सो करने चाहिये क्योंकि तिनमें अशौच के अभाव में इसी कारण से संवत्त कहता है ॥ होम मिति ॥ जन्माशौच में और मरणाशौच में शुष्क अन्न करके अथवा फल करके हवन को करे और पंचयज्ञ विधिको ना करे इति ॥ इसमें कुछ और कहते हैं क्या के ब्राह्मण वैश्वदेव कर्म में विना

स्मार्तपिंडापितृयज्ञादि श्रौतचोक्ततच्चनित्यंनैमित्तिकंच पैठीनासिः । नित्यानिविनिवर्त्तेरनूवैतानवज्ज्यंशालाग्नौचैक इति अत्रावश्यकानि अग्नि त्रयसाध्यानि पूर्वोक्तवचनात्कार्याण्येव तत्राशौचाभावात् अतएवसं वर्त्तः ॥ होमं तत्र प्रकुर्वीत शुष्कान्नेन फलेन वा पंचयज्ञविधानं तु न कुर्व्यान्मृत्युजन्मनोरिति किंचात्राविप्रोदशाहमासीत वैश्वदेवविवर्जित इत्यादिवचनेन वैश्वदेवो निषिद्ध एव न न्वहरहः संध्यामुपासीतेत्यादिना संध्याया अपि श्रौतत्वेन विहितत्वं सूतके कर्मणा त्यागः संध्यादीनां विधीयत इत्यादिना निषिद्धत्वचोक्तमतो विरोध इति चेदेवं व्यवस्थाः सूतकेऽप्यंजलिप्रक्षेपादिकं विहितम् तथा च पैठीनासिः ॥ सूतके सावित्र्याचांजलिं प्रक्षिप्य प्रदक्षिणं कृत्वा सूर्यं ध्यायन्नमस्कुर्यादिति ॥

दशादिन स्थित होवे इत्यादि वाक्य करके वैश्वदेव कर्म निषिद्ध है (प्रण) दिन दिन में संध्या को उपासे इत्यादि वाक्य करके संध्या को भी श्रौत धर्म करके विधान किया है ॥ और सूतक में संध्यादि कर्मों का त्याग करे ॥ इत्यादि वाक्य करके निषेध कहा है ॥ इस कारण से विरोध पड़ा (उत्तर) जेकर ऐसे कथन करें तदयह व्यवस्था है ॥ और सूतक में भी अंजलि दानादि देणा कहा है ॥ तैसे पैठीनासि जी का वाक्य है सूतेति ॥ सूतक में भी गायत्री करके जल की अंजलि को देकरके और प्रदक्षिणा को करके सूर्य को ध्यान करदाहुआ नमस्कार करे ॥ इति ॥

कुछ और कथन करतेहैं ॥ कि वैतानोपासना भी और पुरुष करके करवाणे योग्यहै ॥ क्यों कि और पुरुष इन कर्मों को करण यह तिस करके हि उक्त होणेंते ॥ और बृहस्पतिजीने भी यही अर्थ दिखायाहै ॥ सूतेति । कि सूतकमें और शावाशौचमें और अशक्तिमें और आह्न भोजनमें और यात्रादि निमित्तोंमें कर्मों को और पुरुषतें करवाये । और कर्मों का त्याग न करे ॥ इति । कुछ और कहतेहैं ॥ स्मार्त कर्म भी और पुरुष करके करवाणे योग्यहैं ॥ सूतेति । सूतक के उत्पन्न होयां होयां स्मार्त कर्म कैसे होवे ॥ पिंड और पंच यज्ञ चरू और हवन यह असगोत्री पुरुष करके करवाये और इन कर्मों का त्याग न करे । इति ॥ इसमें और पुरुष करके करवायां होयां भी दक्षिणा दान और हवन का द्रव्य देणा यह काम आप

किंच ॥ वैतानोपासनाप्यन्येनकारयितव्या । अन्यएतानिकुर्युरितितैने
वोक्तत्वात् ॥ बृहस्पतिनाप्ययमेवार्थोदाशितः ॥ सूतकेमृतकेचैवअशक्तै
आह्नभोजने प्रवासादिनिमित्तेपुहावयेन्नतुहापयेदिति ॥ किंच । स्मार्तम
पिकिचित्कर्मन्येनकारयितव्यमित्याह जातूकर्णः ॥ सूतकेतुस
मुत्पन्नेस्मार्तकर्मकथंभवेत् पिंडयज्ञचरुहोममगोत्रेणचकारयेदिति ॥ अ
त्रान्येन कारयितव्येपि स्वद्रव्यत्यागात्मकंप्रधानं कर्म स्वयमेवकुर्यात्
तस्यान्येनकारयितुमशक्यत्वात् एतदर्थमाह श्रौतिकर्मणितत्कालंस्ना
त्वाशुद्धिमवाप्नुयादिति यस्तुदानंप्रतिग्रहोहोमःस्वाध्यायश्चनिवर्त्तत इति
निषेधः संहि काम्यकर्मपरः वैश्वदेवपरोवाद्रष्टव्यः ॥ विस्तरस्तुनिर्णय
सिंध्वादिनिबंधेषु द्रष्टव्यः ॥ किंच । सूतकेतुकुलस्यान्नमदोपमनुरब्रवीत्

ही करे ॥ क्योंकि तिस कर्म को और पुरुष करके करणे को न समर्थ होणेंतें । इस वास्ते
हि कथन करतेहैं ॥ श्रौत इति । श्रौत कर्म के निमित्त स्नान करके तात्काल शुद्धि को प्राप्त
होताहै ॥ और यह जो कथन किया कि दान देणा और दान लेणा हवन और वेद पाठ
दण्डा यह कर्म अशौचमें नहि करणे यह जो निषेधहै सो काम्य कर्म पर जानना ॥ और जो
ईश्वर निमित्तहैं तिनका दोष नहि ॥ अथवा वैश्वदेव पर जानना । यह संक्षेप करके कथन
कियाहै ॥ और विस्तार निर्णयसिंध्वादिमें कथन कियाहै ॥ कुछ और कथन करतेहैं । सूतेति
कि सूतकमें कुलको अन्नका भक्षण करण इसमें दोष नहिहै यह मनु जीका वचनहै ॥

४६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

इस वचन तें सूतक वाली कुलतें इतर जो हैं तिन्होंने सूतकका अन्न भक्षण करना नहिं चाहिये ॥ यह दाता और भक्षण करणे वाला इनके मध्यमें एकको अथवा दोनोको खबर होवे तां जानना ॥ एकको भी सूतकका ज्ञान होवे तद भक्षण करणे वाले को दोष होता है ॥ इस षट्त्रिंशत् के मतसें दोनो को ज्ञान न होवे तद दोष नहि ॥ विवाहादिमें पूर्व संकल्प कीया जो है तिसमें भी दोष नहि ॥ क्युंके विवाह और उत्सव और यज्ञ इनके विषे मरण और सूतक जे कर पड जाये तद पूर्वसंकल्पितों में दोष नहि ॥ इस बृहस्पति के वचन तें ॥ तिसमें भी सूतक वाली पुरुषों ने परोसना नहि चाहिये ॥ विवेति ॥ विवाह उत्सव और यज्ञ इनके मध्यमें मरण और

इति वचनात्कुल्येतैः सूतकेऽन्नं न भोक्तव्यम् एतच्च दातृभोक्त्रोरन्यतरेणो
भाभ्यां वा ज्ञाते ज्ञेयम् ॥ एकेनापि परिज्ञाते भोक्तृदोषमुपावहेदिति षट्त्रिंशन्मता
त् उभाभ्यामपि परिज्ञाते तु न दोषः ॥ विवाहादिषु पूर्वसंकल्पितेऽपि न दोषः ॥ विवाहो
त्सवयज्ञेषु त्वंतरामृतसूतके पूर्वसंकल्पितार्थे पुन दोषः परिकीर्तित इति बृह
स्पतिस्मरणात् ॥ तत्रापि सूतकिभिः परिवेषणं न विधेयम् ॥ विवाहोत्सवयज्ञे
षु त्वंतरामृतसूतके परैरन्नं प्रदातव्यं भोक्तव्यं च द्विजोत्तमैः ॥ १ ॥ भुंजानेषु तु
विषेऽपि त्वंतरामृतसूतके अन्यगेहोदकाचांताः सर्वे ते शुचयः स्मृताः ॥ २ ॥ इ
ति षट्त्रिंशन्मतात् । लवणादिद्रव्याविशेषे न सूतकदोष इति प्रागभिहितम्
अगिराः ॥ अन्नसत्रप्रवृत्तानामाममन्नमगर्हितम् भुक्त्वा पक्वान्नमेतेषां त्रिरात्रं तु
पयःपिवेत् १

रसूतकके पडेआं होयां और पुरुषोंने अन्न परोसने योग्य हैं और उत्तम ब्राह्मणों ने भक्षण क
रणा योग्य हैं ॥ १ ॥ भुंजेति ॥ ब्राह्मणोंको भोजन करवेयां होयां जेकर मरण और सूतक होजाये
तद और घरके जल करके आचमन करें तद सो ब्राह्मण शुद्ध होते हैं ॥ २ ॥ इस षट्त्रिंशत्के मत
तें ॥ सूतकमे लवणादि द्रव्यका दोष नहि यह पूर्व कथन किया है ॥ अगिरा जीका वक्य है ॥
अन्नेति अन्न यज्ञमें प्रवृत्त होये जो पुरुष हैं अर्थात् सदा व्रत वाले जो पुरुष है तिनके कच्चे अ
न्नके ग्रहण करण का दोष नहि और इनके पके होये अन्न को भक्षण करके तीन रात्र जल
को पान करे ॥ १ ॥

अन्न सत्रनाम सदावर्त्तका है और तिसदिनमेंहि दिंदाजो अन्न है तिसके ग्रहण करणका दोषहि है । और गरुड पुराणमें लिखा है भीति । गृहस्थोंके मृतहोयां होयां याचक भिक्षाको न ग्रहण करे इति और सर्वदाकाल देइंदा जो पका होया अन्न यह तिसके ग्रहणकरणमें भी दोष है शवके संसर्ग निमित्त अशौचके विषे अंगिराजी विशेष कहते हैं ॥ अशाविति ॥ जिस गृहस्थी पुरुषको संसर्गते अशौच प्राप्त हुआ है तिसकीयां संपूर्ण क्रियां लोप होजातीयां हैं अर्थात् तिसकोकर्मोंमें अधिकार नहि होता ॥ और तिसके गृहमें होने वाले जो पुत्रादि हैं तिनको अशौच नहि इति ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है । जिस गृहस्थी पुरुषको शवके संसर्गते अशौच उत्पन्न हुआ है

अन्नसत्रं हि सदा तनदीयमानान्ननिबन्धः तद्दिनीयान्नग्रहणे तु दोष एव भिक्षुर्भिक्षानं गृह्णीयान्मृते च गृहमेधिनीति गरुडोक्तेः ॥ पक्वान्ने सदा तननिबन्धेऽपि दोषः शवसंसर्गनिमित्ताशौचे विशेषमाहांगिराः अशौचं यस्य संसर्गादापतेद्गृहमेधिनः क्रियास्तस्य विलुप्यन्ते गृह्याणां च न तद्भवेदिति ॥ यस्य गृहमेधिनः शवसंसर्गादशौचजातं तस्यैव श्रौतस्मार्तक्रियाः पूर्वोक्तलुप्यन्ते ॥ गृह्याणां तद्गृहे भवानां भार्यादीनां तद्द्रव्याणां च नेत्यर्थः ॥ स्मृत्यन्तरे अतिक्रान्ताशौचेऽपीदमेव व्यवस्थापितम् ॥ अतिक्रान्तिदशाहेतु पश्चाज्जानाति चेद्गृही त्रिरात्रं शूतकं तस्य न तद्द्रव्यस्य कर्हिचिदिति ॥ अथ स्त्री शूद्र निपयोर्केचिद्भ्रूयते शंखः अनूढानां तु कन्यानां तथा वै शूद्र जन्मनामित्यत्र तथापि दंध्यहवाचकम् ॥

तिसकीयां हि पूर्व कथन कीया जौ श्रौत और स्मार्त क्रियां हैं सो दूर होजाती हैं (गृह्याणां) क्या कि तिसके गृहमें होने वाले जो स्त्री और पुत्रादि और द्रव्य इनको अशौच नहि होता यह अर्थ है ॥ स्मृत्यन्तरमें भी अशौचके व्यतीत होयां २ यही कथन कीया है अर्थात् दशदिनके व्यतीत होयां होयां पीछे जेकर गृहस्थी अवण करे तद तीन रात्र तिसको सूतक होता है और तिनके द्रव्यको अशौच नहि होता ॥ ॥ इसमें उपरंत स्त्री और शूद्र इनके विषे कुछ कथन करते हैं शंखजीका वाक्य है अनूढति विवाहिता कन्या और शूद्रा इनके मृत होयां भी तीनदिन अशौच होता है

५८ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्तभागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

एहि मत्स्य सूक्तमें कहा है ॥ त्रिरिति ॥ छेमासके शूद्रके वालकको मृत होयां २ तीनरात्र अशौच होता है ॥ इति ॥ यह अजातदंत शूद्रमें जानना ॥ और जिसके दंत उत्पन्न होये हों तिसके मृतमें पांच ५ दिन अशौच होता है यह केई कथन करते हैं ॥ इसी तर्ही अजात दंत कन्याके मृत होयां २ माता पिताको एकरात्र अशौच होता है यह माधवजीने कहा है ॥ और चौलकर्मते पर्व कन्याके मृतमें स्नान मात्र अशौच है । क्युंके चौल कर्मते रहित जो कन्या है इसके मृत होयां २ स्नान मात्र अशौच है इस आपस्तंबके वचनते ॥ और कुडमाईते उपरंत कन्याके मृतमें ती नपीडी तक अशौच है ॥ और कुडमाईते पूर्व कन्याके मृतमें सात पीडी तक अशौच है और

मत्स्यसूक्तेपि ॥ त्रिरात्रंतु भवेच्छूद्रेष एमासेपिशिशौ मृत इति इदमजातदंत शूद्रविषयम् जातदंते शूद्रे मृते पंचाह इति केचित् एवं कन्यासु जातदंतासु पित्रो रेकरात्रमिति माधवः कन्यायाश्चौलात्प्राङ्मृतौ स्नानमेव अचूडायांतु कन्यायांसद्यः शौचं विधीयते इत्यापस्तंबवचनात् कन्यायावाग्दानोत्तरं त्रिपुरुष मध्ये अशौचं ततः प्राक् साप्तपौरुषम् अप्रत्तानां तथा स्त्रीणां त्रिपुरुषां विज्ञायते इति विशिष्टोक्तेः ॥ अप्रत्तानां तथा स्त्रीणां सापिंड्यं साप्तपौरुषमिति स्मृत्यं रात्र ॥ एकत्राप्रत्ताशब्देन संस्काराभावोऽन्यत्र वाग्दानाभावो वक्ष्यमाणवचनात् ॥ अंगिरसा तु त्रिरात्रस्थानेऽहोविहितम् ॥ अविशेषेण वर्णानामर्वा कसंस्कारकर्मणः त्रिरात्रांतु भवेच्छुद्धिः कन्यास्वह्णाविधीयत इति ॥ याज्ञवल्क्यमतेपि ॥

संस्कार रहित और वाग्दान जिनका होया २ है तिन कन्याके मृतमें तीन पुरुष पर्यंत अशौच होता है इस वासिष्ठके वचनते ॥ और वाग्दानते रहित जो कन्या है तिनके मृत होआं २ सप्त पुरुष पर्यंत अशौच होता है ॥ यह और स्मृतिमें कथन कीया है ॥ एक स्थानमें अप्रत्त शब्दकरके संस्कारका अभाव ग्रहण करणा और दूसरे स्थानमें वाग्दानका अभाव ग्रहण करणा अगले याज्ञवल्क्यके वचनते ॥ और अंगिराने तीन रात्रके स्थानमें एक दिन कहा है ॥ अवीति ॥ यज्ञोपवीतते पूर्व संपूर्ण वर्णोंके वालक के मृत होयां २ तीन रात्रते उपरंत शुद्धि होती है और कन्योंके मृत होयां २ एक दिन करके शुद्धि होती है ॥ एह याज्ञवल्क्य जीने भी कहा है

और भी कथन करते हैं । कि दत्त कन्या और बालक इनके मृतहोंयां २ एकदिन अशौच कथन कीया है ॥ इति ॥ इसमें देशाचार करके व्यवस्था जाननी ॥ शूद्र को उपनयन के स्थानहिवाह ग्रहण करणा और जेकर शूद्र विवाहते पूर्व मृतहोवे तो तीन रात्र अशौच होता है ॥ इसमें विवाह काल १६ वर्ष तक जानना यह अपगर्कजी कहते हैं ॥ और सोलहवर्षते उपरंत विवाहना भी होवे तदभी संपूर्ण अशौच है ॥ तैसे शंखजी कहते हैं । अनूडनि ॥ जद सोलह वर्षते उपरंत विवाह ना भी होवे अर्थात् कारा शूद्र मृत होजाये तद एक मासमें उपरंत तिसके संबंधि शुद्धि को प्राप्त होते हैं । इसमें कारण नहि विचारणा ॥ यह गुण वाले शूद्रमें जानना और निर्गुण में तीन वर्षते उपरंत पंच ५ दिन और छे वर्षते उपरंत विवाह के नाभी होयां २ वारा दिन ॥ और तिसते उपरंत संपूर्ण अशौच होता है । यह कदे कथन करते हैं ॥ और कुड

अहस्तुदत्तकन्यासुवालेपुचविशोधनमिति अत्रदेशाचारएवव्यवस्थापकः ।
शूद्रस्योपनयनस्थानीयविवाहात्पूर्वत्रिरात्रम् अत्रविवाहकालः षोडशाब्द
परइत्यपरार्कः षोडशाब्दोत्तरं विवाहाभावेपिपूर्णाशौचम् ॥ तथाचशंखः ॥
अनूठभार्यः शूद्रस्तुषोडशाब्दत्सरात्परम् मृत्युसमधिगच्छेच्चैन्मासात्तस्या
पिवांधवाः ॥ शुद्धिसमधिगच्छंतिनात्रकार्याविचारणेति ॥ इदं सगुणशूद्रप
रम् निर्गुणशूद्रे त्र्यब्दोर्ध्वपंचाहः षडब्दोर्ध्वविवाहाभावेद्वादशाहस्ततउर्ध्व
पूर्णाशौचमतिकेचित् । वाग्दानोत्तरं विवाहात्प्राक्कन्यामृतौपितृकुलेभर्तृकुले
चसप्तपुरुषावधित्रिरात्रमिति मरीचिः ॥ अवारिपूर्वप्रत्तातुयानैवप्रतिपादिता
असंस्कृतानुज्ञेयात्रिरात्रमुभयोः स्मृतमिति शुद्धितत्त्वशंखः ॥ पितृवेश्म
नियानारीरजः पश्यत्यसंस्कृतात्स्यामृतायां नाशौचं कदाचिदपिशाम्यति १

॥ यावज्जीवमशौचमित्यर्थः ॥

माईते उपरंत विवाहते पूर्व कन्याके मृतमें पिताके कुलमें और भर्ताकी कुलमें सप्त पीढ़ी तक तीन रात्र अशौच होता है ॥ यह मरीचिजी कथन करते हैं ॥ अवेति । जो कन्या याणी करके दिती है और अच्छी तरा जिसका संबंधनहि कीया अर्थात् विवाह नहि होया ॥ सो कन्या असंस्कृता कहि दी है ॥ और तिसके मृतहोयां २ पितृकुलको और भर्तृकुलको तीन रात्र अशौच कथन कीया है यह शुद्धि तत्त्वग्रंथमें शंखजीने कथन कीया है ॥ पितृ इति ॥ पिताके घरमें जो कारी कन्या ऋतुको देखे अर्थात् कारी कन्या को पिताके घरमें ऋतु आवैतो तिसकन्याके मृत होयां होयां पिताका अशौच कदे भी दूर नहि होता अर्थात् जीवन पर्यंत अशौच रहता है ॥ १ ॥

५० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥

स्त्री और शूद्रको विवाहमें उपरंत संपूर्ण जातीका अशौच होता है। स्त्रियोंकी विवाह विधी उपनयन होता है अर्थात् स्त्रीका विवाह यज्ञोपवीतके स्थान है ॥ इस वचनमें औरभी कहते हैं स्त्री और शूद्रतुल्य धर्मवाले होते हैं इसवचन तेंभी जानना ॥ विवाही होई स्त्रीका अशौच भर्ता के कुलविषे ही होता है ॥ विवाहिता स्त्रीका अशौच भर्ताको ही होता है। इस वचनमें विष्णुजी कथन करते हैं ॥ समिति विवाहिता स्त्रियोंका अशौच पिताके कुलमें नहीं होता ॥ विवाहिता स्त्री पिताके गृहमें प्रसूत होवे और मृत होवे तदएकरात्र और तीनरात्र अशौच होता है अर्थात् प्रसूत होवे तो एक रात्र और मृत होवें तो तीन रात्र अशौच होता है ॥ यही विज्ञानेश्वरजीका वा

स्त्रीशूद्रयोस्तुविवाहोर्ध्वं जात्याशौचम् वैवाहिकोविधिः स्त्रीणामौपनायनि
कः स्मृत इत्युक्तेः स्त्रीशूद्राश्चसधर्माण इतिवचनाच्च ॥ तदशौचं भर्तृकुल एव द
त्तानां भर्तुरेव हीतिवचनात् ॥ विष्णुः संस्कृतासु स्त्रीपुनाशौचं पितृपक्षे तत्प्रसव
मरणे चेत्पितृगृहे स्यातां तदैकरात्रं त्रिरात्रं चेति ॥ प्रसवे एकरात्रं मरणे त्रिरा
त्रमिति विज्ञानेश्वरः ॥ प्रसवेऽपि पित्रोस्त्रिरात्रं भ्रातृवर्गस्य त्वेकरात्रमिति माध
वः तथा च ब्राह्म्यम् दत्तानारीपितुर्गृहे सूयेताथ म्रियेत वा तद्वधुवर्गस्त्वेकेन शु
चिस्तज्जनकस्त्रिभिरिति ॥ कल्पतरुस्तु ॥ दत्तानारीपितुर्गृहे प्रधाने सूयते यदा
म्रियेत वा तदा तस्याः पिताशुद्धे त्रिभिर्दिनैरिति प्रधानगृहपरत्वेनाह गृहांत
रेत्वेकरात्रं पृथग्विद्वम् ॥

कथ है ॥ पितृगृहमें प्रसूत होवें तदमाता पिताको तीन ३ रात्र और भाईयोके आद जों हैं तिन
को एकरात्र अशौच होता है यही माधवजी कथन करते हैं ॥ और यही वार्ता ब्राह्म्यपुराणमें कही है
दत्तेति विवाही होई स्त्रीपिताके गृहमें प्रसूत अथवा मृत होवे तो तिसकन्याके भ्रातादि संब
धी एक दिन करके और तिसका पुत्र तीन दिन करके शुद्ध होता है ॥ कल्पतरुमें और कहा है
दत्तेति ॥ कि विवाहिता स्त्रीपिताके निवास गृहमें प्रसूत होवे अथवा मृत होवे तद तिसका
पिता तीन दिन करके शुद्धको प्राप्त होता है और जेकर और गृहमें प्रसूत और मृत होवे तद
एकरात्र अशौच होता है यह अर्थ करके हि विद्व होता है ॥

कुछ और कहतेहैं ॥ पतीति पतिके घरमें प्रसूनाहोवे तदपित्रादिकों अशौच नहिहोता ॥ अर पति गृहमें मृत होवे तद तीन ३ रात्र अशौच होताहै ॥ प्रतेति ॥ जिनका वाग्दानकीयाहै अथवा नहि कीया और विवाहिता अथवा नाविवाहिता स्त्रियोंके मृत होयां २ माता पिताको तीन रात्र अशौचहोताहै औरनोंमें यथाविधि जानना ॥ तिसमेंभी माधवके मतमें और कहाहै ॥ जातेति ॥ कि उत्पन्नहोयेहैं दंत जिसकन्याके तिसके मृत होयां २ तीन रात्र अशौचहोताहै ॥ और नहि उत्पन्न होय दंत जिनके एसी कन्याके मृत होयां २ एक रात्र अशौचहोताहै ॥ और कहतेहैं सेति नहि कीया चौल कर्म जिसका तिस कन्याके मृत होयां स्नान मात्र करके शुद्धि होतीहै । और कीया चौलकर्म जिसका तिसके मृतहोयां २ एकदिन अशौच होताहै । और नहि कीया वाक दान जिसका सो अदत्ता होतीहै ॥ तिस के मृतमें तीन रात्र करके शुद्धि

किंच पतिगृहेप्रसवेपित्रादीनामशौचाभावः मरणेत्रिरात्रमस्त्येव प्रत्ताप्रत्ता सुयोपित्सुसंस्कृतासंस्कृतासुच मातापित्रोस्त्रिरात्रस्यादितरेपुयथाविधीति तत्रापिमाधवमेव ॥ जातदंतायांत्रिरात्रमजातदंतायामेकरात्रम् ॥ सद्यस्त्व प्रौढकन्यायांप्रौढायांवासराच्छुचिःअदत्तायांत्रिरात्रेणदत्तायांपक्षिणीभवेदितिपुलस्त्यस्मृतेः॥ अयमर्थःअप्रौढाकन्याअकृतचौलापूर्वाक्तवचनात् प्रौढाऽदत्ताचेतदातन्मृतौत्रिरात्रदत्ताचेत्पक्षिणीदत्तानांभर्तुरेवहीतिवचनात् ॥ पडशीतिमतंतुपितृगेहादतोऽन्यत्र यदि पुत्री प्रमीयते पक्षिणीतत्रपित्रोः स्यान्नान्येषामितिनिश्चयः। भगिन्यामृतायांभ्रातुःपक्षिणीतिवृहस्पतिः।श्वशुरयोर्भगिन्यांचमातुलान्यांचमातुलेपित्रोःस्वसरितद्वयपक्षिणीक्षपयेन्निशामिति । पित्रोःस्वसरिपितृभगिन्यांमातृभगिन्यांचमृतायामित्यर्थः ॥

होतीहै । और वाग्दान जिसका होगया सो दत्ता होतीहै ॥ तिसके मृतमें एक रात्र अशौच होताहै ॥ यह पुलस्त्य स्मृतिमें जानना ॥ इसका यह अर्थहै । के प्रौढा और अदत्ता जो कन्या है तिसके मृतमें तीनरात्र ॥ जेकर अदत्ता मृतहो तो एक रात्र अशौचहै क्योंकि दत्ता स्त्रियों का अशौच भर्ताकोहोताहै ॥ इस वचनमें ॥ पडशीति मतमें और कहाहै ॥ पितृइति ॥ पिताके घरमें और किसे घरमें जद कन्या मृत होवे तद माता पिताको एकरात्र अशौचहोताहै ॥ और ओरोंको नहिहोताहै ॥ यहनिश्चयहै ॥ भयणके मृतमें भ्राताको एकरात्र अशौचहोताहै ॥ अवृहस्पति जी कहतेहैं ॥ श्वेति ॥ सस्स और सौहरा भैण मामी मामा और पिताकि भैण और माताकी भैण इनके मृत होयां एक रात्र अशौच होताहै ॥ इति ॥

५२ ॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः० प्र० १८ ॥ टी०भा० ॥

माता और पिताके मृतमें स्त्रियोंको तीनरात्र अशौच होताहै ॥ पित्रोरिति ॥ माता पिताकेमृत होयान् विवाहिता स्त्रियोंकी शुद्धि किमप्रकार होवे ॥ उत्तर ॥ तीनरात्रकर्के शुद्धि होतीहै यहभगवान् यम कथन करतेहैं ॥ १ ॥ और भ्राताके घरमें भगिनी अथवा भगिनीके घरमें भ्राता मृत होवे तद तीन रात्र अशौच होताहै ॥ जेकर घरमें मृत ही नहि होवे तद एक रात्र अशौच होताहै ॥ परेति ॥ अर्धश्लोकका पूर्वलाहि अर्थहै ॥ जितनापुरुषको मामका अशौचहै तितनाहि कन्याको समीप होयां २ अपने चाचेका अशौचहै इसब्राह्मवचनते । वर्ण शंकरकेविषे ब्राह्म्यका वचनहे॥शौचेति ॥ शुद्धि और अशौचवर्ण शंकरशूद्रकी न्याई करन अर्थात् जैसे शूद्र शुद्धि और अशौच को करण तैसे वर्ण शंकर शुद्धि और अशौच करे ॥ दत्तेति ॥ किसे कर्के दत्ता होया और मुन्य लिया होया और बनाया होया इत्यादि पुत्रके मृतहोयां २ पहले पिताका और पिछले पिताको तीनरात्र अशौच होताहै ॥ और उत्तम वर्णकीयों स्त्रियोंके

पित्रोर्मृतौस्त्रीणां त्रिरात्रमाशौचम् पित्रोरुपरमेस्त्रीणामूढानांतुकथं भवेत् त्रिरात्रेणैव शुद्धिः स्यादित्याह भगवान्यमः ॥ १ ॥ भ्रातृभगिनीगृहे अस्यावा भ्रातृगृहे मृतौ त्रिरात्रमन्यत्र पक्षिणी ॥ परस्परं मृतौ भ्रातृ भगिन्योः पक्षिणी भवेत् मातुलाशौचवत्पुत्र्याः पितृव्याशौचमिष्यत इति ब्राह्मणम् ॥ वर्णसंकरविषये ॥ ब्राह्म्यम् ॥ शौचाशौचे प्रकुर्वीरन् शूद्रवद्वर्णसंकरा इति वर्णसंकराः पुत्रादुहितरोवा दत्तक्रीतकृत्रिमादपुत्रपुत्रहीनवर्णगासु स्त्रीपुंसपिंडत्वेऽपि प्रसवे मरणे च पूर्वापरपित्रोर्भर्तृश्च त्रिरात्रमवन दशाहाद्यशौचम् ॥ तथा च विष्णुः अनौरसे पुपुत्रे पुजाते पुच मृते पुच परपूर्वासु भाय्यासु प्रसूतासु मृतासु चेति त्रिरात्रानवृत्तावाह ॥ अत्र सपिंडानामंकाहमाह । हारीतः ॥ परपूर्वासु भाय्यासु पुत्रे पुकृतके पुच भर्तृपित्रोस्त्रिरात्रस्यादेकाहस्तु सपिंडत इति १

प्रसूत होयां २ अथवा मृत होयां २ पहले और पिछले भर्ताको तीनरात्राहि अशौच होताहै ॥ और दश दिनादि नहि होता ॥ तैसे विष्णुजी कहतेहैं ॥ अनौरस पुत्रोंके उत्पन्न होयां २ अथवा मृत होयां २ पिताको तीनरात्र अशौचहै ॥ धर्म पत्नीते रहित जो स्त्री तिसमें जो उत्पन्न होवे सो अनौरस होताहै ॥ और दुहाल स्त्रियोंके मृतमें और प्रसूत में पहले और पिछले पतिको तीनरात्र अशौच होताहै ॥ और सपिंडियों को एक दिन होताहै ॥ इसमें हारीत जी कहतेहैं ॥ परेति ॥ दुलाहस्त्रियों के मृत और प्रसूत में पतिको तीनरात्र अशौच होताहै और सपिंडियोंको एक दिन अशौचहै ॥ और कृत्रिम पुत्रोंके मृत और उत्पन्न होयां पिताको तीनरात्र अशौचहै और सपिंडियोंको एक दिन अशौच होताहै ॥ इसमें कृत्रिमादियोंकी उत्पत्ति तिनके जन्मते पहले कृत्रिमादि संकेतके होयां जाग्रणी और प्रकारसे नहिहै ॥ १ ॥

अब शंख और लिखित कथन करते हैं॥ परेति दुहाल स्त्री और कृत्रिम पुत्र इनके मृति और प्रसूति उत्पन्नमें अनध्याय और अशौच और तिलांजली यह पति और पिता ना करण १ ॥ यह अर्थ असवर्ण और हीन वर्णकीया स्त्रियोंमें जानना ॥ परंतु यह निकटतामें है और दरमें याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं ॥ कि अनावृति ॥ अनोरसपुत्र और दुहाल स्त्रियोंके मृतमें एक दिन अशौच कहते भवे जहां पिताको एकदिन अशौच है तहांसपिंडीयोंको स्नानमात्र अशौचहै अभ्येति ॥ अर्ध श्लोक का बोहि अर्थ है ॥ और सगोत्री स्नान करके शुद्ध होतेहैं पति और पिताको तीन रात्र अशौच होताहै १ दत्तादि पुत्रोंको पिताके मरणे में तीन रात्र अशौच कहा है ब्राह्म्यमें सूनेति सूतकमें और मरण में तीनदिन अशौचके भागी होतेहैं इस वचनमें ॥ ॐ ॥

परपूर्वापुनर्भूः ॥ शंखलिखितौ परपूर्वासुभार्यासुपुत्रेपुकृतकेपुच नानध्यायो भवेत्तस्यनाशौचनोदकक्रिया १ इदमसवर्णाहीनवर्णभार्याविषयम् एतच्च सन्निधावसेत्तिथौतुयाज्ञवल्क्यः अनोरसेपुपुत्रेपुभार्यास्वन्यगतासुचेत्ये काहानुवृत्तावाह यत्रपितुरेकाहस्तत्रसपिंडानांस्नानमन्यश्रितेपुदारेपुप रपत्नीसुतेपुच गोत्रिणः स्नानशुद्धाःस्युस्त्रिरात्रैवतत्पितेति १ पितृतिवोदु रप्युपलक्षकः दत्तकादीनांपितृमरणेरिरात्रमुक्तंब्राह्मं सूतकेमृतकेचैवत्र्यहा शौचस्यभागिन इतिवचनात् ॥ अथानुपनीतविषयोकिंचिदुच्यते मनुः ॥ नात्रिवर्षस्यकर्तव्यावांधवैरुदकक्रिया जातदंतस्यवाकुर्युर्नाम्नियापिकृतेस तीति ॥ अत्रोदकक्रियाकरणेऽकरणेचानुज्ञानादाद्येप्रेतोपकारोद्वितीये प्रत्य वायाभाव इतिबोध्यम् ॥ इदमपिजातदंतकृतनाम्नोरवनेतरस्येत्यपिवोध्यम् आत्रिवर्षवर्षत्रयात्प्राक् उदकक्रियासाहचर्याद्वाहश्च न कर्तव्यः ॥

अवयज्ञोपवीतते रहित जोहैं तिनमें कुछ कहतेहैं ॥ प्रथम मनु जीका वचन है ॥ नेति तीन वर्ष तक बालक के मृत होयां २ संवंधियोंनें उदक क्रिया नहि करणी चाहिये ॥ इसमें पक्षांतर कहतेहैं जात दंत बालकके होयां २ अथवानामके कीतयां होयां उदक क्रिया कर लेणी इसमें उदक क्रिया करणी और न करणी यह आज्ञा होई इसमें यह व्यवस्था है कि करणमें प्रेतका उपकार होता है और न करणे में कोई पाप नहि यह जानना ॥ यहभी जातदंत कृत नाम इ समें ही जानना और इतरमें नहि जानना ॥ और उदक क्रियाकी साहचर्यतातें दाह भी नहि करणा ॥

५४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ख० भा ० ॥

शिश्वादि के विषे विशेष कहाहे । निर्णयसिंधु के विषे देव याज्ञिक निबन्धमें ॥ शिशुरिति ॥ दंत जन्म तक । शिशु । और शिखा स्थापन तक बाल । और मौंजी बंधन तक कौमार यह संज्ञा संपूर्ण शास्त्रोंमें कथन करीदाहैं १ आइति ॥ पंचम वर्ष तक कौमार और नौ १ वर्ष तक पौगंड इत्यादि करके संज्ञा दिखाईहै ॥ गेति ॥ गर्भ के पातादिमें उदक दानादि क्रिया कोई नहि करणी । और शिशुके मृतमें शिशु के निमित्त दुग्ध देवे और बालक के मृतमें तस्मै और दुग्ध देवे ॥ १ ॥ एकेति एकादशाह और द्वादशाह वृषोत्सर्ग विधिते विना करण ॥ तैसै । यत्रेति ॥ जिस कालमें बालक मृत होवे तिस कालमें सत्कार करके तुल्य आयुः वाल्यों बालकों को कुछ अन्न विधि के साथ देवे ॥ १ ॥ भेति ॥ और तिस कालमें

शिश्वादौविशेषो निर्णयसिंधौ देवयाज्ञिकनिबन्धे । शिशुरादंतजननाद्बालः स्यादावदाशिखम् कथ्यते सर्वशास्त्रेषु कौमारमौंजिवंधनात् १ संधिरार्षः आशिखं शिखा स्थापनं यावत् । आपंचवर्षात्कौमारं पौगंडो नवहायनद्रव्यादिना संज्ञाः प्रदर्श्य ॥ गर्भे नष्टे क्रियानास्ति दुग्धं देयं शिशौ मृते परंचपायसंक्षीरंदद्याद्बालविपत्तितः ॥ १ ॥ एकादशद्वादशाहं वृषोत्सर्गविधिविना तथा यत्र प्रमीयते बालस्तत्र प्रायः प्रदीयते किंचित्समानवयसां सत्कृत्यान्नं यथाविधि । १ । भक्ष्यं भोज्यं च दातव्यं तथा च सुखभक्षिकाः तद्वस्त्राणि प्रदेयानि सोपानत्कानितत्समे । २ ॥ कुमारानांच बालानां भोजनं वस्त्रवेष्टनम् यच्चोपजीवते बालस्तत्तद्विप्रायदीयते ३ ॥ तथा ॥ भूमिनिःक्षेपणं बाले आवर्षद्वयमाशिखम् ततः परं खगश्चेष्टदेहदाहो यथाविधि ॥ ४ ॥ अचूडेऽप्यूर्ध्वं खननं निवृत्त्यर्थमावर्षद्वयमिति । प्रागपि चूडस्य तन्निवृत्त्यर्थमाशिखमिति ॥

भक्ष्य और भोज्य और और भी सुंदर भक्ष्य वस्तु देवे और बालक के वस्त्र सहित उपानत् को देवे अर्थात् पैरों वास्ते जोडा देवे ॥ २ ॥ कुमेति । कुमारों को और बालकों को भोजन और वस्त्र और पगडी और और भी जिस वस्तु करके बालक उपजीवका करे सो ब्राह्मण को देवे ॥ ३ ॥ तैसै । भूमीति ॥ दोवर्ष २ तक शिखा स्थापन तक बालके मृतमें भूमीमें दवादे ॥ तिसतें पर हेगरुड विधि साथ दाह करे इसमें एह अभिप्रायहै कि दो वर्षते पहले भी चूडा कर्म हो जावे तांभी दोवर्ष पर्यंत दाह नहिहै और जेकर दोवर्षते अगे चूडत कर्म होण वाला होवे तांभी दोवर्षते अगे भूमिनिःक्षेपण करे वा नहि प्रागपीति चूडा कर्मो पहले पृथ्वीमें रक्षणेकी प्राप्ति के दूर करणे वास्ते आशिखं एह किहाहै ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ५५

याज्ञवल्क्यजी भीकहतेहैं, उनेति दोरवर्षते पूर्व मृतहोया जो बाल है तिसकोभूमिमें दवादे और उदक क्रियाको नकरे और अंत्य कर्मभी नकरे इसमें यमजीका वाक्यहै उनेति धर्म राजकी गाथागायन करदाहुआ और धर्मराजके सूक्तको स्मरण करताहुआ दोवर्षतें न्यून मृतहोये बालकको घृतमलके भूमिमें दवादेवे १ और तीनवर्षते उपरंत जोमृतहोयाहै तिसको चुप्पकरके तिलांजलिदेवे तिलांजलि और संस्कार चुप्पकरके करे यह लौगाक्षि वचनतें जानणा असामिति असंस्कृतोंका भूमिमें पिंड देवे और संस्कृतोंका कुशामें पिंडदेवे इसप्रचेतसके वचनतें पिंडदानभी करे॥देवल जीकहतेहैं द्वादशवर्षतें पूर्व पौगंडकेमृतहोया सपिंडी और एकोद्दिष्टश्राद्ध नकरे इसवाक्यतें उदक दान और प्रेत पिंड दशान्हिक यहकरे प्रेतेति

याज्ञवल्क्योपि ॥ ऊनद्विवर्षनिखनेन्नकुर्व्यादुदकंततइति उदकमत्रांत्यकर्मपरमित्यपरार्कः॥ यमः ॥ ऊनद्विवर्षिकंप्रेतंघृताक्तंनिखनेद्भुवि यमगाथांगायमानोयमसूक्तमनुस्मरन्॥१॥वर्षत्रयोर्ध्वतूष्णीमेवोदकदानमातूष्णीमेवोदकंकुर्व्यातूष्णींसंस्कारमेवचेति लौगाक्षिवचसः ॥ असंस्कृतानांभूमौ पिंडं दद्यात्संस्कृतानांकुशेष्वितिप्रचेतोवचनात्पिंडदानमपिकार्यम्॥देवलः द्वादशाद्वत्सरादर्वाकूपौगंडमरणेसति।सपिण्डीकरणंनस्यान्नैकोद्दिष्टानिका रयेदित्युक्तेरुदकदानंप्रेतपिंडाश्चदशाह्निकाः कार्य्याः ॥प्रेतपिण्डंवहिर्दद्याद्दर्भमंत्रविवर्जितमितिमरीचिस्मृतेः।द्वादशाद्वत्सरादित्यनुपनीतद्विजानूदशूद्रविषयम्॥ अहाशौचेपिण्डदानविधिः पारस्करेणोक्तः।प्रथमेदिवसेदेयास्त्रयःपिंडाःसमाहृतैः द्वितीयेचतुरोदद्यादस्थिसंचयनंतथा त्रींस्तुदद्यात्तृतीयेहूनिवस्त्रादिक्षालयत्ततइति ॥

कुशा और मंत्रते रहित और घरतें बाहर मृतबालके पिंडकोदेवे यह मरीचिस्मृतिने जानणा पांचवर्षतक कौमार और दशम वर्षतक पौगंड और पंद्रह वर्षतक केशोर औरतिसते उपरंतसत्तर ७० वर्षतक यौवन तिसते उपरंत वृद्धावस्थाहोतीहै(द्वादशाद्वत्सरात्)इसपदकरके यज्ञोपवीतते रहित जोब्राह्मण और विवाहतेंरहितजो शूद्र इनके विषे जानना तीनदिनके अशौच मे भी पिंड दान विधिः पारस्करजीने कहाहै प्रथेति प्रथम दिनमें तीन ३ पिंड समाहितोंने देणे योग्यहै औरदूसरेदिनमें चारदेवे औरअस्थिसंचय भीकरे औरतीसरेदिनमें तीनपिंड देवे पश्चात् वस्त्रादि को प्रक्षालन करे इति ॥

५६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ० ॥

इस विषे ऐसा व्यवस्था है कि (नात्रि वर्षस्य) इत्यादि मनुजीके पूर्वोक्तवचन विषे त्रय वर्ष तक भी अग्नि दान क्या दाह और जल देणा एह होवेतां मृत होएवाला बालक का उपकार है और जेकर न होवे तां कोई दोष नहि यह श्लोकके पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्धका तात्पर्य निकाला है कुलूक भट्टजीने तथापि यह विकल्प दो वर्षतें अगे श्रेष्ठ प्रतीत हुंदा है ॥ क्योंकि दो वर्षतें उर मृत बालकों यमकी कथा करदा होया पृथ्वीमें रखे इस यमजीके वाक्यतें ॥ और जो गरुड पुरा

अत्रैतत् व्यवस्थापनम् नात्रिवर्षस्य कर्तव्येत्यादि पूर्वोक्तमनुवचने आत्रि वर्षमग्न्युदकक्रियाकरणे मृतबालोपकारस्तदकरणेन कोपि प्रत्यवाय इति पूर्वार्द्धोत्तरार्द्धतात्पर्यावगतिर्दर्शिता तथापि वर्षद्वयानंतरमेवाग्न्युदकदानादिविकल्पोऽयं साधीयान्प्रतिभाति ऊनद्विवार्षिकंप्रेतमित्यादियमवाक्यात् यत्तु गरुडेवाक्यान्तरं गंगातीरे मृतबालं तस्यामेव निपातयेत् अन्यदेशे क्षिपेद्भूमौ सप्तविंशतिमासजमित्यपि वर्षद्वयेतीते अग्न्युदकदानादिक्रियाविकल्पार्थमानवेन समानम् ॥ एवमेव भूमिनिःक्षेपणमित्यादि वृषोत्सर्गोपि पंचवर्षोर्ध्वमितिकेचित् ॥

एमें होर वचन है ॥ गंगेति ॥ कि गंगाके तीरविषे मृत होये बालक को गंगा विषे ही पायदे वे और जेकर होर देश विषे मृत होवे तां २७ सताई महीने तक पृथिवीमें रखे इसमें भी दो वर्ष तें अगे दाहादि का विकल्प मनुजी के वचनके तुल्य है ॥ इसी तर्ही (भूमिनिःक्षेपण) इसमें भी अर्थ है ॥ वृषोत्सर्ग भी पांच वर्ष ते आगे करणा यह कैद मुनि कहते हैं ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० ॥ भा० ५७

चूडेतिचूडा कर्मके कीत्या होयां जदवालक मृत होजाये तद सूतकके अंतमें वृषोत्सर्ग करो॥१॥ तिसमें दाह और उदकक्रिया करणी ॥ और सपिंडी कर्ममें विना षोडश १६ आदमी करे इसवचनमें । २ । तैसे और भी कहतेहैं ॥ किजन्मेति ॥ जिस कारणमें जन्मते लेकर पांचवर्ष वालक असंस्कृत अन्नको भक्षण करताहै । तिस कारणमें मंत्रोंने विना उदकादिक देणा १ जेकर पांच वर्षमें उयरंत वालक मृत होवे तद ॥ वृषेति ॥ वृषोत्सर्ग और उदक कर्म करणे योग्य है॥२॥इत्यादि श्लोक करके दिवोदासीयमें लिखाहै और कहतेहैं ॥ अब्रैति ॥ यज्ञोपवीतते रहि त जेकर वाल मृत होवे तद ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनमें सपिंडी कर्ममें विना शूद्रकी

चूडाकर्मणिसंजतिविपत्तिस्तुयदाभवेत् सूतकांतेप्रकर्तव्यंवृषस्योत्सर्ग
नंतथा ॥ १ ॥ तत्रदाहः प्रकर्तव्यउदकंतत्रनिश्चितम् आद्वानिषोडशापि
स्युः सपिंडीकरणविनेतिवचनात् ॥ २ ॥ तथा ॥ जन्मनःपंचवर्षाणिभुक्ते
दत्तमसंस्कृतम् पंचवर्षाधिकेवालेविपत्तिर्यदिजायते १ । वृषोत्सर्गादिकंक
र्मकर्तव्यमुदकंतत ! इत्यादिना ॥ दिवोदासीये अब्रैतिनिधनंप्राप्तेविप्रा
दौशूद्रजातिवत् क्रियाःसर्वाःसमुद्दिष्टाःसपिंडीकरणविना उदकपिंडदा
नंचकृतचूडेविधीयत इति एतद्वयोनिमित्तंसर्ववर्णसाधारणम् ॥ तुल्यंवयसि
सर्वेषामतिक्रांतेतथैवचेति व्याघ्रपादोक्तेः अत्रमलंचिन्त्यमितिनिर्णयसिंधौ
किंच जात्याशौचं द्विजपुंसामुपनयादूर्ध्वप्रवर्तते याज्ञ ० त्रिरात्रमात्रता
देशादशरात्रमतःपरम् क्षत्रस्यद्वादशाहानिविशःपंचदशैवतु त्रिंशद्दिना
निशूद्रस्यतर्धन्यायवर्तिन इति न्यायवर्तिन उचिताचारिणः शूद्रस्यार्धपं
चदशाहमाशौचमित्यर्थः

क्रियाकी न्याई क्रिया करणे योग्यहैं ॥ और कृतचूडमें उदक और पिंडदान करणा ॥ इति ॥ एह आयुषा निमित्त अशौच संपूर्ण वर्णोंको तुल्य जानना ॥ १ । वंयुके (तुल्यंवयसि) इत्यादि व्याघ्रजीके वचनते ॥ इसमें मूलविचारणा चाहिये एह निर्णय सिंधुमें लिखाहै ॥ कुल और कहतेहैं ॥ जेति ॥ जातिका अशौच ब्राह्मणादिको यज्ञोपवीतते उपरंत प्रवृत्त होताहै ॥ याज्ञवल्क्यजीकहतेहैं ॥ उपनयनतक तीनरात्र अशौच होताहै ॥ और उपनयन उपरंत ब्राह्मणको दश रात्र और क्षत्रीको वारां रात्र और वैश्यको पंदरांरात्र और शूद्रको ३० दिन और जो आचार शूद्रको किहाहै तिसके करण वाला जो शूद्रहै तिसको पंदरां दिन अशौच होताहै

५८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥

जिस स्थानमें त्रिरात्र अथवा दश रात्र शाव अशौच इच्छा करीदाहै यह दो पक्षहैं तिस स्था
नमें दशाह अशौच के विषे तीन रात्र अस्पृश्यताका कारणहै यह अर्थ जानना ॥ औरजिस
स्थानमें ब्राह्मण दश दिन कर्के शुद्धहोताहै इत्यादि वाक्य कर्के दश दिन अस्पृश्यता कहीहै
तिसस्थानमें एक दिनमे और एक कालमें उत्पन्न होए जो दो अशौचहैं तिनमें जानना क्युंकि
मरेति कदाचित् मरण कर्के जद मरण तुल्य होवे अर्थात् एक कालमें जद शावाशौच दो होवें
तद सहित संबंधियोंके सपिंडीयों कों दश दिन अस्पृश्याताहोतीहै॥इस अंगिराके वचनतें ॐ
अवशवाहकादियोंका अर्थात् उठाकर लेजाने वालेका अशौच कथन करतेहै ॥ प्रथम कूर्म
पुराण का वाक्यहै ॥ यदीति ॥ जद लोभ कर्के अर्थात् मजूरी लेकरके शव को दाहके वास्ते

यत्रतु त्रिरात्रंदशरात्रंवाशावमाशौचमिष्यते इति पक्षद्वयंतत्र त्रिरात्रंदशा
हेऽस्पृश्यताहेतुरित्यर्थोऽवसेयो न तु विकल्पः॥यत्रतु शुद्ध्यद्विप्रोदशाहेनेत्पा
दिनादशाहव्यापकमस्पृश्यत्वं तत्रैकदिनोत्पन्ने समानकालिकेऽशौचद्वये
सतिबोध्यमा मरणंयदितुल्यंस्यान्मरणेन कथंचन अस्पृश्यंतु भवेद्गोत्रं सर्वमे
वसबांधवमित्यंगिरोवचनात् ॐ अथशववाहकाद्याशौचम्॥ कूर्मपुराणे ॥
यदिनिर्हरति प्रेतं प्रलोभाक्रांतमानसः दशाहेन द्विजः शुद्धं द्वादशाहेन भूमि
पः मासर्द्धेन तु वैश्यस्तु शूद्रो मासेन शुद्ध्यति १ प्रेतं मृतं निर्हरति वहति ॥ नि
र्णयसिंधो विशेषः ॥ स्नेहेन सर्ववर्णशवनिर्हारे तदन्नाशने तद्गृहवासे च द
शाहः तदन्नानशने तद्गृहवासे अहः गृहावासेऽन्नभक्षणे चैकाहः । भृतिग्र
हणेन निर्हारे दाहे च जात्याशौचमिति ॥

चुक्क ले जाये तद ब्राह्मण दश दिन कर्के और क्षत्री द्वादश १२ दिन कर्के और वैश्य पंदरां
दिन कर्के और शूद्र एक मास कर्के शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ और निर्णयसिंधुमें विशेष कहाहै ॥
कि प्राति कर्के संपूर्ण वर्णके शवके चुक्कणमें और तिसके अन्न भक्षणमें और तिसके घर नि
वास करणमें दश दिन अशौच होताहै॥ और जेकर तिसको चुक्क लेजाये और तिसके घरमें
निवास करे और अन्न न भक्षण करे तद तीन दिन अशौच होताहै॥और जेकर घरमें निवास
न होवे और अन्नको भी भक्षण न करे और शवको चुक्क लेजाये तद एक दिन अशौच
होताहै॥और मजूरी ग्रहण कर्के चुक्कणमें और दाहमें ज तिका अशौच होताहै ॥

टी- । यदिनिर्हरतीति । इस पूर्वोक्त कूर्म पुराणके वाक्यमें ॥ और विजातीय शवके निर्हरणमें क्या मुडदेके उठाणेमें शवकी जातीका अशौच होताहै ॥ इसमें मजूरीको ग्रहण करके चुक्कणमें पूर्वला दूणा होताहै तैसे व्याघ्र पादजी कहतेहैं ॥ अवेति । कि जेकर न्यून वर्णका पुरुष श्रेष्ठ वर्णके मुडदेको अथवा श्रेष्ठ वर्ण वाला पुरुष हीन वर्णके मुडदेका चुके तद शवकी जातीका अशौच होताहै और जेकर मुख्य ग्रहण करके चुके अथवा दाह करे तद दूणा अशौच होताहै । १ । आपदके विषे कूर्म पुराणमें विशेष कहाहै ॥ यदिति ॥ जो पुरुष न्यून वर्णके शवको मजूरी ग्रहण करके लेजाय करके दाहकरे तिस पुरुषके शवकी जातिके तुल्य अशौच होताहै ॥ हेराजन्

यदिनिर्हरतीतिपूर्वोक्तकूर्मपुराणवाक्यात् विजातीयशवनिर्हारेशवजातीय माशौचम् ॥ अत्रभृतिगृहीत्वानिर्हारेपूर्वोक्तद्विगुणम् ॥ तथाचव्याघ्रपादः अवरश्चद्वरवर्णवरोवाप्यवरं यदिवहेच्छवंतदाशौचं द्विव्यर्थे द्विगुणं भवेदिति १ अवरो ब्राह्मणादिभ्यः क्षत्रियादिः वरः शूद्रादिभ्यो वैश्यादिः । दाहस्याप्युपलक्षकमिदम् आपदिविशेषः कौर्म्ये ॥ योऽसवर्णतु मूलेन नीत्वा चैव दहेन्नरः आशौचतु भवेत्तस्य प्रेतजातिसमं नृपेति सोदकनिर्हारितुं दशाह एवेत्यापदनापत्समम् ॥ अत्रापि विशेषमाह शंखः ॥ कच्छपादोऽसपिंडस्य प्रतालंकरणे कृतं अजानादुपवासः स्यादशक्तौ स्नानमिष्यत इति अत्रानाथसवर्णप्रेतनिर्हारे दाहे क्रियाकरणे चानंतफलमुक्तं गारुडादौ ॥ अनाथप्रेतसंस्कारे कौटिल्यज्ञफलं लभेदित्यादिना स्नानप्राणायामाग्निस्पर्शा एवात्र विधेयाः

और सोदकके चुक्कणमें दशदिन अशौच होताहै यह आपदमें और अनापदमें तुल्यहै और सोदकका अर्थ पीछे कह चुकेहैं इसमें भी शंखजी विशेष कहतेहैं ॥ कच्छेति ॥ असपिंडी प्रेतके भूषण करणमें कच्छ व्रतका एक पाद करे और कच्छ व्रत पूर्व प्रकरणोंमें कहाहै ॥ और जेकर अज्ञानतें अलंकार करे तद एक उपवास कर्ण कहाहै ॥ और जेकर उपवासके करणकी शक्तिना होवे तद स्नान करके शुद्ध होताहै ॥ और इसमें अनाथ सवर्ण प्रेतके चुक्कणमें और दाहमें और क्रिया करणमें अनंत फल कहाहै गारुडादि पुराणमें ॥ अनेति ॥ अनाथ प्रेतके संस्कार करणमें क्रोड यज्ञके फलको प्राप्त होताहै इत्यादि ॥ ऐसे प्रेतको संस्कार करके स्नान और प्राणायाम और अग्निका स्पर्श इन करके शुद्ध होताहै ॥

६० ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥

माधवीयमें यमजीने कहा है॥प्रेतेति॥प्रेतके स्पर्श और संस्कारों करके ब्राह्मण दोषको नहि प्राप्त होता और चुकणे वाला और अग्निके देने वाला अर्थात् दाह करने वाला स्नान करके तात कालशुद्ध होता है ॥ एह अनाथ प्रेत संस्कारमें है ॥ वृद्धात्रिजी कथन करते हैं ॥ सूतेति सूतकर्ते क्या जन्म सूतकर्ते दूणा शव और शवर्ते द्विगुण आर्त्तव क्या स्त्री की ऋतुनिमित्त अशौच और आर्त्तवर्ते द्विगुण सूति और सृतिर्ते द्विगुण शव दाह होता है परंतु यह अनाथप्रेतकी जगा नहि जानना पीछे भी यह श्लोक आया है ॥ १ ॥ विष्णुजी कथन करते हैं॥मृतमिति॥मृत होये ब्राह्मणको शूद्र करके और शूद्रको ब्राह्मण करके चुकवाये नहि इति शवके स्पर्शमें हारीतजी कथन करते हैं ॥ शवेति ॥ जददिनहोवे तद शवको स्पर्श करण वाला

माधवीयेयमः॥ प्रेतसंस्पर्शसंस्कारैर्ब्राह्मणो नैव दुप्यतिवोढा चैवाग्निदाता च सद्यः स्नात्वा विशुध्यतीति । वृद्धात्रिः । सूतकाद् द्विगुणं शवशावाद् द्विगुणमार्त्तवम् आर्त्तवाद् द्विगुणा सृतिस्ततोऽपि शवदाहकः ॥ १ ॥ सपिंडे सूतकं जनन्यां सृतिः ॥ शवदाहकोऽत्र स्वार्थेकः ॥ अनाथप्रेतसंस्कारातिरिक्तविषयमिदम् विष्णुः ॥ मृतं द्विजं न शूद्रेण हारयेन्न शूद्रं द्विजेनेति । शवस्पर्शे हारीतः । शवस्पृशो ग्रामं न प्रविशेत्पुरानक्षत्रदर्शनाद्वा त्रौचेदादित्यस्येति ॥ सपिंडनिर्हरणे सपिंडानां न दोष इत्याह देवलः ॥ विहितं हि सपिंडानां प्रेतनिर्हरणादिकं मृतपां करोति यः कश्चित्तस्याधिक्यं न विद्यत इति ॥ समोत्कृष्टवर्णनिर्हारे प्रायश्चित्तं क एवोक्तं । माधवीये ॥ अनुगम्य शवं बुद्ध्या स्नात्वा स्पृष्ट्वा हुताशनम् ॥ सपिः प्राश्य पुनः स्नात्वा प्राणायामैर्विशुध्यति हीनवर्णानुगमने क्रमेण शुद्धिमाह विज्ञानेश्वरः

पुरुष नक्षत्रदर्शनते पहले ग्राम प्रवेश ना करे जेकर रात्रि होवे तद सूर्यका दर्शन करके प्रवेश करे इति ॥ सपिंड प्रेतके निर्हरणमें सपिंडीयोंको दोष नहि यह देवलजी कथन करते हैं॥विहीति सपिंडीयोंको सपिंडी प्रेतका निर्हरणदिविधान कीया है॥सपिंडीयोंके मध्यमें जो पुरुष सपिंडीप्रेतका निर्हरणादि करता है तिसको सपिंडीयोंने अधिक कुछ करणा उचित नहि है॥और सम और उत्तम वर्णके निर्हरणमें प्रायश्चित्त करणा कहा है॥कएवजीने माधवीयमें क्या माधवजीके वना ए होऐ ग्रंथमें ॥ अइति ॥ जानते शवके पीछे जा करके और स्नान कर्के और अग्निको स्पर्श कर्के और घृतको भक्षण कर्के फेर स्नान कर्के प्राणयामोंको कर्के शुद्ध होता है ॥हीनवर्णके शवके पीछे गमन कणोंमें कम करके विज्ञानेश्वरजी शुद्धिको कहते हैं ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ ६१

वेति ॥ ब्राह्मणको क्षत्रिय शवके पीछे गमनमें एक दिन अशौच और वैश्य शवके पीछे गमनमें दोदिन और एकरात्र और शूद्र शवके पीछे गमनमें तीनरात्र अशौच होता है ॥ और क्षत्रीको वैश्यशवके पीछे गमनमें एकदिन और शूद्रके पीछे गमनमें दोदिन और एकरात्र अशौच होता है । और वैश्यको शूद्रके पीछे जानेमें एक दिन अशौच होता है स्नान और अग्नि स्पर्श और घृतभक्ष एह सबशवके पीछे जानेमें करणा चाहिये एहमाधवजीका कथन है ॥ और वृद्ध मनुने विशेष कहा है ॥ दहेति ॥ हेभार्गव अन्यप्रेतका दाह और मुंडनकरे और माता पिता इनदो नोंका दाह और मुंडन सर्वदा काल करवाये ॥ १ ॥ और संततीतिरहित ज्येष्ठ भ्राता और मामा इनका भी दाह और मुंडनकरे ॥ २ ॥ और मनुजीनेभी हीनवर्णके उदकादि क्रियाकरण में निषेध कहा है अर्थात् हीनवर्णकी दाहादि क्रिया नहि करणी । वात्येति संस्कारतें रहित जो पुरुष

ब्राह्मणेन क्षत्रियशवानुगतावह आशौचम् वैश्ये पक्षिणी शूद्रे त्रिरात्रम् ॥ क्षत्रियस्य वैश्येहः । शूद्रे पक्षिणी । वैश्यस्य शूद्रेऽहरिति स्नानाग्निस्पर्शघृताशनानि सर्वत्रेति माधवः ॥ वृद्धमनो विशेषः ॥ दहनं वपनं चैव प्रेतस्यान्यस्य भार्गव न कुर्व्यादुभयं मातुः कुर्व्यादेव पितुः सदा १ ॥ ज्येष्ठस्य वानपत्यस्य मातुलस्यासुतस्य च २ मनुनापि हीनवर्णौर्ध्वदैहिकानि विद्धम् ॥ वात्यानां याजनं कृत्वा परेषामंत्यकर्म च अभिचारमहीनं च त्रिभिः कृच्छ्रैर्व्यपोहति १ त्रिभिः कृच्छ्रैः पापं व्यपोहति शुद्धो भवतीत्यर्थः ॥ अथ समोत्तमवर्णयोरोदने आशौचं ब्राह्म्ये ॥ अस्थिसंचयने विप्रो रौति चेत्क्षत्रवैश्ययोः तदा स्नानं सचैलंतु द्वितीये हनि शुद्ध्यति ॥ १ ॥ कृते तु संचये विप्रः स्नानेनैव शुचिर्भवेत् ॥

हैं तिनको यज्ञ करवाके माता पिता और गुरुइत्यादितें भिन्न पुरुषोंके दाहादि कर्मको करके और अभिचार कर्मको करके अर्थात् जादू को कर्के सो अभिचार कर्म छे प्रकारका है यथा मारण १ मोहन २ स्तम्भन ३ विद्वेषण ४ उच्चाटन ५ और वशीकरण ६ इति एह सब उपपातक पापके भेद हैं और अहीन यज्ञको करके अहीन पदका अर्थ उपपातक प्रकरणमें किया है अथवा अहीन शब्द अभिचारका विशेषण जानना ॥ तीन कृच्छ्र कर्के शुद्ध होता है १ इनको कर्के अवसमान और उचम वर्णके मृत होयां २ रोदनकरणमें अशौच कहा है ब्राह्म्यमें अइति क्षत्री और वैश्यके अस्थिसंचयनके विषे जद ब्राह्मण रोदनकरे तद समेत वस्त्रोंके स्नानकरे और दू सरेदिनमें शुद्ध होता है ॥ १ ॥ कृतइति और अस्थिसंचयतें उपरंत जेकर ब्राह्मण रोदनकरे तद

६२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

इसमें कमलाकर ग्रंथकार कहता है ॥ इसीतरा क्षत्रीको वैश्यके अस्थिसंचयनमें जानना और शूद्रके अस्थिसंचयनमें पूर्वरोदनकरणमें ब्राह्मणको तीनरात्र । क्षत्री और वैश्यको दोरात्रअशौच होता है ॥ और शूद्रके अस्थिसंचयनमें उपरंत रोदनमें ब्राह्मणक्षत्री वैश्यको एकदिनअशौच होता है और शूद्रको शूद्रके अस्थिसंचयनमें पूर्व रोदन और स्पर्शमें विना सूर्यास्त पर्यंत अशौच होता है ॥ यह ऐसा ज्योतिःपदका अर्थ है ऐसास्थापनकर्ताभया और सज्योति और पक्षिणीका अर्थ अगे मूलमें आवेगा ॥ अब आचार्यादिके मृतमें अशौच कथन करते हैं ॥ दादेति ॥ महा गुरुओं के मृत होयां २ दान और अध्ययनको द्वादश १२ दिनत्यागे दान और अध्ययनमें विना और कर्मों को करे ॥ यह आश्वलायन जीका वाक्य वेदाध्यापकादि पर है ॥ अब महागुरुओंको कथन करते हैं विष्णुजी । वेति पुरुष के तीन महागुरु होते हैं सो कौन हैं एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य ॥ इति ॥ और स्त्रीकागुरु पति होता है और माता पिता नहि

अत्रकमलाकरः ॥ क्षत्रस्यवैश्येप्येवं शूद्रेतुसंचयात्प्राक्विप्रस्यत्रिरात्रंक्षत्रवैश्ययोर्द्विरात्रम् ॥ ऊर्ध्वतुद्विजानामेकाहःशूद्रस्यशूद्रेस्पर्शविनासंचयात्पूर्वमेकाहःऊर्ध्वसज्योतिरिति व्यवस्थापयामास ॥ समानंज्योतिरस्येत्यर्थात्सूर्यास्तपर्यंतं सूतकामित्यर्थः अहःपदमहोरात्रपरम् ॥ अथाचार्याद्याशौचम् द्वादशरात्रंमहागुरुपुदानाध्ययनेवर्जैरत्रिति अत्रोक्तेतरकर्मस्वधिकार एव इदं चाश्वलायनीयं वेदाध्यापकादिपरम् ॥ तानाह विष्णुः त्रयः पुरुषस्यातिगुरवो भवंति माता पिता आचार्यश्चेति स्त्रियास्तु पतिरेव न पितरौ ॥ अत्र शातातपः ॥ पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुरिति ॥ त्रिंशच्छ्लोकियाम् प्रेतैश्वाचार्यमातामहदुहितृसुतश्रोत्रियैर्विकृत्स्वयाज्य स्वस्त्रियेषु त्रिरात्रे त्रिदिवसमशुचिः सोदकस्तुभयत्र पक्षियाशौचमृत्विग्दुहितृसुतसहाध्व्यायि वंधुत्रयांतवासि श्वश्रूसुमित्रश्वशुरभगिनिका भागिनेयप्रयाणे ॥ १ ॥ माता मह्यांच पित्रोः स्वसरिचविरते मातुले मातुलान्यां चाथो सज्योतिरेव स्वविषय नृपतौ ग्रामनाथे च नष्टे

गुरु होते । इसमें शातातप जी कथन करते हैं ॥ पति एक ही स्त्रियोंका गुरु होता है और अभ्यागत समनोंका गुरु होता है ॥ अब त्रिंशच्छ्लोकीका वाक्य कथन करते हैं ॥ प्रेत इति ॥ गुरु और नात्ता और दोहित और पंडित और पुरोहित और यजमान और भनेया इनके मृत होयां तीन रात्र अशौच होता है और सोदकका दो रात्र और एक दिन अशौच होता है (उभयत्र) इसका अर्थ अगे आवेगा ॥ पुरोहित और दोहतरा और साध्यायी अर्थात् साथ पठन वाला और वंधु त्रय और विद्यार्थी और सस्त और सुंदर मित्र और सौहरा और और भानजा ॥ १ ॥ और नानी और पिताकी भागिनी और माताकी भगिनी और मामा और मामी इनके मृत होयां २ एक रात्र अशौच होता है ॥ और अपने देशका राजा और मुकदम के मृत होयां २ संध्या काल तक अशौच होता है ॥ इनका स्पष्ट अगे होना है ॥

शिष्येति । शिष्य और उपाध्याय और बंधु त्रय और गुरुका पुत्र और गुरुकी स्त्री और सगोत्र और सहित ऋग्वेदके अध्ययन करण वाला और पंडित इनके मृत होयां २ भी संवत्सरा कालतक अशौच होता है ॥ और अपने गृहमें परके गृहमें मामके मृतहोयां और साथ जो ब्रह्मचारी इनके मृतहोयां २ एक रात्र अशौच होता है ॥ २ ॥ और थोड़े संबंध कर्के युक्त जो पुरुष है क्या लैणेदेणेका जो प्रतिदिन व्यवहार है इत्यादि जो संबंध है तिसके मृत होयां २ सहित स्नान करणे कर्के शुद्ध होता है यह संपूर्ण सब वर्णोंमें तुल्य जानना ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ कि उपनीत दौहित्र के मरण में तीन रात्र और अनुपनीतके मरणमें एकरात्र अशौच होता है उपनीत यज्ञोपवीत वाले का नाम है ॥ इसीप्रकार कर्ममें प्रवृत्त जो ऋत्विक् है तिसके मृतमें

शिष्योपाध्यायबंधुत्रयगुरुतनयाचार्यभाष्यासगोत्रानूचानश्रोत्रियेपुस्वगृहपरमृतौमातुलेचैकरात्रम् २ रात्रिसत्रह्यचारिण्यद्यतुकथमपिस्वल्पसंबंधयुक्ते स्नानंवासोयुतंस्यादिदमपिसकलंसर्ववर्णेषुतुल्यम् ॥ अत्रोपनीतदौहित्रमरणेत्रिरात्रमनुपनीतमृतौपक्षिणीएवमृत्त्विकशब्दस्यादिरुपादानात्कर्मणिप्रवृत्तेऋत्विजिमृतेत्रिरात्रंततोनिवृत्तेपक्षिणीदूरस्थे त्वेकाह इत्यपि प्रतिभाति अत्रोभयत्रपदोपादानाद्यस्मिन्मृतेयावद्यस्याशौचमुक्तंतस्यापि मरणेतावदस्मिन्नाशौचम् । यथा मातामहमरणेदौहित्रस्यत्रिरात्रंतथादौहित्रमरणेमातामहस्यापित्रिरात्रमित्यर्थो बोध्यः ॥ बंधुवर्गेविशेषोवक्ष्यते । किं चात्रसर्वत्रदूरस्थसमीपस्थयो रुपनीतानुपनीतयोर्वा उपकारकानुपकारकयोश्चत्रिरात्रपक्षिण्यौज्ञातव्ये सोदकउक्तलक्षणः त्रिदिवसमशुचिः रात्रिद्वयसहितंदिवसमित्यर्थः अन्यथात्रिरात्रेणसमानतास्यात् ॥

मजमानको तीन रात्र ॥ और कर्ममें प्रवृत्त जो नहि है तिसके मृतमें एक रात्र ॥ और विदेश स्थितमें एक दिन एभी जाणादा है ॥ और (उभयत्र) क्या कि जिसके मृत होयां २ जितना अशौच जिसको कहा है तिसके मृतमें तिसको भी तितना अशौच कहा है ॥ जैसे नानेके मृत होयां दौहित्रे को तीन रात्र है ॥ तेसे दौहित्रे के मरणमें भी नानेको तीन रात्र अशौच होता है ॥ यह अर्थ जानना ॥ अब संबंधी समूहमें विशेष कहते हैं ॥ इसमें सबनोंमें समीपस्थ और उपनीत और उपकारक इनमें तीन रात्र और दूरस्थ और अनुपनीत और अनुपकारक इनमें एक रात्र जानना ॥ और सोदक का पूर्व लक्षण करा है ॥ (त्रिदिवसमशुचिः) इसका अर्थ कहते हैं । कि दोरात्रिके साथ १ एक दिन है ऐसा न कहिये तां त्रिरात्र काहि अर्थ आवेगा ॥

६४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

विष्णुजी कथन करतेहैं असेति जद असपिंडी अपने घरमें मृतहोवे तद एकरात्र अशौच हो ताहै (अत्रांतःशवेच) इस आपस्तंबके सूत्रका हरदत्तने एहव्याख्यान कीयाहै कि जदग्रामके मध्यमें शवस्थित होवे और सौ १०० धनुष प्रमाणें उरे होवे तद जब तक निकालया नहि तब तक अन्न नहि भक्षणकरणा ॥ और जेकर घर साथ घर न मिलयाहोया होवे तद दीप और जलका कुंभमध्यमें स्थापनकरके अन्नभक्षण करलेवे ॥ और सूतिमें भी इसी प्रकार जानना ॥ इति ॥ और गृहकेमध्यमें शव स्थित होवे तद एक रात्र अशौच होताहै ॥ एह अर्थ युक्तहै क्युंकि पूर्वोक्तविष्णुजीकेवचनके अनुरोध होनेतें ॥ अर हरदत्तका व्याख्यान और किसे वचन का विषयहै एहप्रतीत होताहै ॥ और निवासगृहमें किसीके मृत होयां २ तीन रात्र अशौच

विष्णुः ॥ असपिंडेस्ववेश्मनिमृतेएकरात्रम् ॥ अत्रांतःशवेचेत्यापस्तंबसूत्रं
हरदत्तेन ग्राममध्यास्थितेशवेधनुःशतादर्वाङ्गनभोक्तव्यंयदिसमानकाष्टंगृ
हंनास्ति तदादीपमुदकुंभचोपनिधायतुभुंजीत सूत्यामप्येवमिति व्याख्या
तम् । अतःशवेगृहाभ्यंतरस्थितेशवेएकरात्रमितितुयुक्तोर्थःवैष्णवानुरोधि
त्वात् हरदत्तव्याख्यानंतुवचनान्तरविषयंप्रतिभाति ॥ प्रधानगृहमृतौत्रि
रात्रमुक्तमंगिरसा ॥ गृहेयस्यमृतःकश्चिदसपिंडःकथंचन तस्याप्यशौचं
विज्ञेयंत्रिरात्रंनान्नसंशयइति ॥ कूर्मैपि । त्रिरात्रमसपिंडेपुस्वगृहेसांस्थिते
पुचेति ॥ मृतद्विजपरमिदम् । अन्यत्रशुद्धितत्वेमनुः ॥ श्वशूद्रपतिताश्चांत्या
मृताश्चद्विजमंदिरे अशौचंतत्रवक्ष्यामिमनुनाभापितंयथा १ दशरात्राच्छु
निमृतेमासाच्छूद्रेभवेच्छुचिः ॥ द्वाभ्यांतुपतितेगेहमंत्येमासचतुष्टयात्
अत्यंत्येवर्जयेद्देहमित्येवंमनुरवर्वात् २ ॥

कहाहै अंगिराजीने ॥ गृहइति ॥ जिसके घरमें कोई असपिंडी कदे मृतहोजावे तिसका भी अशौच तीनरात्र कथन कीयाहै इसमें संशयनहि करणा १ ॥ और कूर्मपुराणमेंभी लिखाहै ॥ त्रिति अपने घरमें असपिंडीमृतहोजावे तदतीन रात्र अशौच होताहै यहवचन ब्राह्मणादिपर जानना ॥ और औरोंमें शुद्धितत्त्वविषे मनुजी कथन करतेहैं ॥ श्वेति ॥ कुत्ता और शूद्र और पतित और स्लेच्छ जदब्राह्मणादिके घरमें मृत होजान तिसमें अशौच कथन करताहां जैसा मनुजीने कहाहै ॥ १ ॥ दशेति कुत्तेके मृत होयां दशरात्रकरके और शूद्रकेमृतहोयां एकमासकरके और पतितके मृत होयां दोमासकरके और स्लेच्छके मृत होयां चार ४ मास करके गृह शुद्ध होता है १ और चांडाल के मृत होयां गृह को त्यागदेवे यह मनुजी कथन करते भये ॥ २ ॥

अत्य नाम इसजगा मुसलमान काहे और अत्यंत्य चांडाल जानना ॥ अव शव दूषित गृह .
की शुद्धि संवर्तजी कथन करतेहैं ॥ गृहेति ॥ अंतरस्थ शव कर्के गृहके दूषित हो
॥ २ ॥ गृहकी शुद्धि को कथन करताहां ॥ मृतका का पात्र और पके होये अन्न को प्रोन्मृज्य
क्या घरतें बाहर करके ॥ १ ॥ और गृहको गोहेके साथ लेप करके पश्चात् बकरे को घ
रकीयां सभ वस्तु सिंघा देवे ॥ फिर पीछे वेदपाठी ब्राह्मणों कर्के सुवर्ण और कुशाके जल कर्के
सारे घरको सिंचन करवादेवे तो पश्चात् शुद्ध होताहै ॥ इसमें शंशय नहि करणा ॥ २ ॥ घर
में गौ और कुत्तेआदि के मृत होयां २ जितना काल घरमें शव टिकारहे तितनाकाल अ
शौच होताहै ॥ ३ ॥ ग्रामेति ॥ जिस ग्राम के मध्यमें जितना काल शव स्थित रहेतितना

अत्योम्लेच्छः यस्तुविरुद्धभापीगोमांसभक्षकः ॥ अत्यंत्यः श्वपाकइतिसिं
धुव्याख्या ॥ शवदूषितगृहशुद्धिमाहसंवर्तः ॥ गृहशुद्धिप्रवक्ष्यामिअंतरस्थश
वदूषिते प्रोन्मृज्यमृण्मयंभांडंसिद्धमन्नं तथैवच १ ॥ गोमयेनोपलिप्याथ
छागेनघ्रापयेत्ततः ब्राह्मणैर्मन्त्रपूतैश्चहिरण्यकुशवारिभिः ॥ २ ॥ सर्वमभ्यु
क्षयेद्वेश्मततः शुद्धयत्यसंशयः ३ ॥ गृहगोश्वादिमृतेयावच्छवनिर्गमनमशौ
चम् ॥ ग्राममध्यस्थितोयावच्छवस्तिष्ठतिकस्यचित् ग्रामस्यतावदाशौचंनि
र्गतेशुचितामियादितिवृहद्विष्णुवचनस्यतुल्यन्यायत्वात् भगिन्यांसंस्कृता
यांतुभ्रातर्यपिचसंस्कृते मित्रजामातरिप्रंतदौहित्रभगिनीसुतेश्यालकंत
त्सुतेचैवसद्यः शौचेनशुद्ध्यर्ताति वृहन्मानवंदेशांतरमृत भ्रात्रादौज्ञेयम् स
मीपस्थेत्वेकाहः स्वगृहेत्रिरात्रम् ॥ श्यालकसुतजामात्राः स्वदेशेसंस्थिते
ज्ञेयम् ॥ देशांतरेअशौचाभावात् ॥ श्यालकेस्वदेशेमृतेप्येकाहइतिसिंधुः
क्रियाकर्तुस्तुसर्वत्रदशाह इतिमनुः ॥

काल ग्राम को अशौच होताहै और जद शव ग्रामतें बाहर जाए तद ग्राम शुद्ध होताहै ॥ इस
वृहद्विष्णुके वचन को तुल्य न्याय होनेतें ॥ भेति ॥ विवाही होई भगिनी और उपनीत भ्राता
और मित्र जुवाई और दौहित्रा और भनेया और साला और साले का पुत्र इनको देशांतरमें
मृत होयां स्नान करणे करके शुद्ध होतीहै ॥ एह वृहन्मनुका वाक्यहै ॥ और जेकर समीप मृत
होवें तद एक दिन और जेकर अपने घरमें मृत होवे तद तीन रात्र अशौच होताहै और शा
लेका पुत्र और जुवाई इनके अपने देशमें मृत होयां एह अशौच जानना और एह दोनों जे
कर देशांतरमें मृत होयें तद अशौच नहि होताहै यही सिंधुमें कहाहै ॥ और क्रियाके करणे
बालेको संपूर्ण स्थानमें दश दिनहि अशौच होताहै ॥

६६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ० ॥

अब गुरुमें विशेष कथन कोयाहै ॥ गुरोरिति ॥ शिष्य मृत होये गुरुमें पिताकी न्याई बुद्धि रखे अर्थात् पिता कीन्याई क्रियाकरे ॥ और प्रेतके चुकण वाल्यों के साथ तिसस्थानमें दश दिनकरके शुद्ध होताहै । अर्थात् प्रेतको उठाने वाले जोहें सोदश दिन करके शुद्धहोतेहैं ॥ शिष्य यह पद निर्वश मृत हुआजो सपिंडीहै तिसकी क्रिया करणे वाले कोभीजनाताहै ॥ इसी कारण तें लिखाहै निरेति ॥ किं संततीतें रहित सपिंडी के मृत होयां २ दया करके युक्त होया २ तिसके अशौच कोआचरण करके पिता के तुल्य क्रिया को करे इति ॥ एह ब्राह्म पुराणते जानना ॥ बंधुत्रय का विभाग निर्णयसिंधुमे कहाहै ॥ वमिति बंधुत्रय पद करके आत्मवंधु त्रय और पितृबंधु त्रय और मातृबंधुत्रय यह नवबंधु ग्रहण करणे ॥ यथा आत्मेति अपने पि

गुरोः प्रेतस्यशिष्यस्तुपितृमेधंसमाचरेत् प्रेतहारैः समंतत्रदशरात्रेणशुद्धयतीति ॥ शिष्यइतिनिर्वशमृत सपिंडक्रियाकर्तुरप्युपलक्षकम् ॥ निरन्वये सपिंडेतुमृतेसतिदयान्वितः तदाशौचंपुराचीर्त्वाकुर्यात्तुपितृवत्क्रिया मितिब्राह्मात् ॥ अत्रनिर्णयसिंधुः ॥ बंधुत्रयपदेनात्मबंधुत्रयं पितृ बंधुत्रयं मातृबंधुत्रयमिति नवबंधवोग्राह्याः तद्यथा ॥ आत्मपितृस्वसुः पुत्रा आत्म मातृस्वसुःसुताः । पितृर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेया आत्मवांधवाः ॥ १ ॥ पितृःपितृस्वसुःपुत्राःपितृर्मातृस्वसुःसुताः पितृर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेयाः पितृवांधवाः ॥ २ ॥ मातुःपितृस्वसुपुत्राःमातृर्मातृस्वसुःसुताःमातृर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेया मातृवांधवाइति । पितृस्वस्त्रादिकन्यानांतुविवाहितानांमरणे तद्वंधुवर्गास्त्वेकेनेतिवचनबलादेकाहोऽनूढानांमरणेस्नानमात्रमितिनिर्णयसिंध्वाशयः ॥

ताकी भगिनीके पुत्र और अपनी माताकी भगिनी का पुत्र और अपनेमामेके पुत्र यह आत्म बांधव जानने१पितुरिति॥और पितामह कीभगिनीके पुत्र और पितामही कीभगिनी केपुत्र और पिताके मामेके पुत्र यह पितृबांधव जानने२मातुरिति और नाने कीभगनी केपुत्र और नानी की भगिनी केपुत्र और माता के मामेके पुत्र यह मातृ बांधव जानने॥३॥और कथन करतेहैं॥विवाहित जोपिता कीभगनी आदिक कन्याहैं तिनके मृत होयां तिनके संबंधियोंका समूह एक दिन करके शुद्ध होताहै ॥ इस वचनके बलतें एकदिन अशौच भया ॥ और विवाहितोंके मरणमें स्नान मात्र अशौच होताहै यह निर्णयसिंधुका आशयहै ॥

॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः० प्र० १८ ॥ टी०भा० ॥ ६७

बंधुत्रय वाक्यमें पुत्र जोहै कन्याको भी कथन करताहै यह नागोजी भट्ट कहतेहैं ॥ तिनके मत में पिताकी भगिनी आदिक जो विवाहित कन्याहै तिनके मरणमें दो दिन एक रात्र और अस्निवाहिताके मरणमें एक दिन अशौच होताहै इत्यादि । और पिताकी भगिनी आदिक कन्योंने बंधु त्रय के मरणमें स्नान मात्र अशौच करणे योग्यहै ॥ यह सिंधुके आशय करके सिद्ध होताहै ॥ और भट्टके मतमें पुत्र पदकी न्याई तिस वाक्यमें जो आत्म पदहै तिसको भी कन्या परत्वापत्ति करके कन्योंने भी बंधु त्रय का अशौच करणा चाहिये ॥ तिस विषे बहुशिष्टा चारों करके यह अर्थ त्यक्तहै ॥ यह सिंधुका आशय युक्तहै ॥ अर्थात् बंधु त्रयके मरणमें देवदत्तको और देवदत्तके मरणमें बंधु त्रयको अशौच होताहै ॥ इसमें यह तत्त्वहै क्या यथार्थ अर्थहै

नागोजीभट्टास्तुबंधुत्रयवाक्येपुत्रपदंकन्योपलक्षकमित्याहुः तन्मतेपितृष्वस्त्रादिकन्यानामूढानामरणेपक्षिणीअनूढानामेकाहइत्यादिपितृष्वस्त्रादिकन्याभिस्तुबंधुत्रयमरणेस्नानमात्रंकार्यमिति सिंध्वाशयेनसिद्ध्यतिभट्टमतेतुपुत्रपदवत्तद्वाक्यस्थआत्मपदस्यापिकन्यापरत्वापत्त्याकन्याभिरपिवंधुत्रयाशौचंकार्यमित्यापतति । तत्रचबहुशिष्टाचारविगानमिति सिंध्वाशयोयुक्तोभातिअत्रेदंतत्त्वम् ॥ देवदत्तीयबंधुनवकमध्येआत्मबंधुत्रयेसंबंधसाम्यात्परस्परमाशौचम् अवाशिष्टबंधुपट्केतुबंधुपट्कमरणेदेवदत्तस्याशौचंदेवदत्तस्यमरणेतुबंधुपट्कस्यनाशौचंसंबंधाभावादितिसुधीभिरूह्यम् । दत्तकस्यमरणेपूर्वापरपित्रोस्त्रिरात्रंसपिंडानामेकाहमाशौचम् । नीलकंठीयेदत्तकनिर्णयेतूपनीतदत्तकमरणादौपालकपित्रादि सपिंडानांदशाहादिकमेवाशौचमित्युक्तम् ॥

कि देवदत्तके बंधु नवके मध्यमें आत्म बंधु त्रय के विषे संबंध तुल्य होनेमें आपसमें अशौच होताहै ॥ और वाकी के जो बंधु छेहैं तिनके मरणमें देवदत्तको अशौचहै और देवदत्त के मरणमें बंधु छेको अशौच नहि क्युंके संबंध के अभावसे यह बुद्धि मानोंने जानना चाहिये ॥ अब दत्तक पुत्रका अशौच कथन करतेहैं ॥ देति । दत्त पुत्र के मरणमें पहले और पिल्ले पिता को तीन रात्र और सपिंडियों को एक दिन अशौच होताहै ॥ और नीलकंठकग्रंथमें दत्त पुत्रके निर्णय विषे । उपनीतदत्त पुत्रके मरण और जन्ममें पालन वाले पिताको और सपिंडियोंको दशदिन अशौचहै ॥

और दत्त पुत्रनेभी पूर्वले और पालने वाले पिताके मरणमें तीनरात्र और पूर्वापर सपिंडियोंके मरणमें एकदिन अशौच करणे योग्यहै ॥ और पूर्वापर माता पिताके कर्मोंके करणमें कर्मोंगं दश दिन अशौच होताहै अर्थात् दत्तपुत्र जद कर्मोंको करे तद दश दिन अशौच होताहै और जेकर कर्मोंको होर कोई करे तदतीन रात्र अशौच होताहै ॥ और दत्तकके पुत्र और पौत्रादिके जन्म और मरणमें पूर्वापर सपिंडियों को एक दिन अशौच होताहै । इसीप्रकार पूर्वापर सपिंडियों के जन्म और मरणमें दत्तकके ॥ पुत्र और पौत्रादिको भी एकदिन अशौच होताहै ॥ इसीप्रकार सपिंड और समानो दक इनते भिन्नजो बनायाहोया दत्तपुत्रहै तिसमें भी जानना ॥ और सगौत्र सपिंडकाहिवनाये होए दत्तपुत्रमें दश दिन और सोदक दत्त पुत्रमे तीनरात्रअशौच जानना और अब और कहतेहैं ॥ कि आचार्य के मृत होयातीन रात्र अशौच होताहै और जेरक ओहिआ

दत्तकेनापिपूर्वापरपित्रोर्मृतये ॥ स्त्रिरात्रपूर्वापरसपिंडानांमरणएकाहः ॥ पित्रो रौर्ध्वदैहिककरणेतुकर्म्मगंदशाहमेव ॥ दत्तकस्यपुत्रपौत्रादेर्जननेमरणेवा पूर्वापरसपिण्डानामेकाहः ॥ एवंपूर्वापरसपिण्डमरणादावपि दत्तकपुत्रपौत्रादेरप्येकाहः ॥ एवंसपिंडसमानोदकभिन्नेदत्तीकृतेज्ञेयम् ॥ सगौत्रसपिण्डे सोदकेचदत्तीकृते यथाक्रमंदशाहंत्रिरात्रंच ॥ यथाप्राप्तंभवत्येव आचार्य्य मृत्त्रिरात्रम् ग्रामांतरेमृतेपक्षिणी ॥ उपनीयवेदाध्यापकआचार्य्यःस्मार्त कर्मनिर्वाहकोप्याचार्य्यः आचार्य्यभार्यासुतयोर्मरणेप्येकाहः ॥ मंत्रोपदेश कगुरुमरणेत्रिरात्रम् । ग्रामांतरे पक्षिणी ॥ शास्त्राध्यापकोव्याकरणज्योतिः शास्त्राद्यंगाध्यापकश्चानूचानसंज्ञकस्तन्मरणेएकाहः ॥ शिष्यस्योपनीयाध्यापितस्यमरणेत्रिरात्रम् ॥ निवृत्ताध्ययनस्यमृतौपक्षिणी ॥

चार्य किसी और ग्राममें मृत होवे तददोदिन और एकरात्र अशौच होताहै ॥ और आचार्य्य वोह होताहै जोउपनयन को करवाके वेद कोपढावे और स्मार्त कर्मके निरवाहकरण वालाभी आचार्य्य होताहै ॥ और आचार्य्य की स्त्री और तिसके पुत्रके मृतमें भी एकदिन अशौच होताहै और मंत्रोपदेश करण वाले गुरुके मृतमें तीन रात्र अशौच और और ग्रामके बिपे मृतमें पक्षिणी अशौच होताहै ॥ और शास्त्रके अध्ययन करवाणे और व्याकरण और ज्योतिःशास्त्रादि अंगके अध्ययन करवाणे वाला अनूचान होताहै ॥ तिसके मृतमें एकदिन अशौच होताहै । अबगुरुको अशौच कहतेहैं ॥ उपनयन करके पढाया जो शिष्यहै तिसके मृतमें तीन रात्र गुरुको अशौच होताहै । और अध्ययन करके चलागया जोशिष्यहै तिसके मृतमें पक्षिणी मात्रहि अशौचहै ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ ६९

अर और किसीने कीयाहै उपनयन जिसका और बहुत काल पढाहै जो शिष्य तिसके मृतमें गुरुको एकादिन अशौचहोताहै और साध्यायोके मरणमें पक्षिणी अशौचहोताहै ॥ इसीप्रकार यजमानके मरणमें गुरुको पक्षिणीअशौच होताहै । अर्थके सहित वेदको पढनवाला और श्रोतस्मार्त कर्ममें चतुर्जोश्रोत्रिय है तिनदोनोके मृतमें तीनरात्र अशौचहोताहै । और जेकर तीन संबंधहोवें तदक्याके पूर्वोक्तश्रोतादि और मैत्राँ और अपने एकगृहमें तिनके साथ निवास होवे तां तीन रात्री और जेकर तिनके विच्छाँ एकही संबंध होवे तद तिनके मृतमें पक्षिणी और जेकर तिनके साथ संबंध न होवे तद एक दिन अशौचहोताहै ॥ और समान वर्णके मित्रके मृतमें एक दिन अशौच होताहै और संबंधिसंन्यासिके मृतमें संपूर्ण सपिंडीयोंको स्नानमात्र अशौचहै और अपने घरमें उदासीन सपिंडीके मरणमें एक दिन अशौच होताहै और अपने करके आश्रित जोगृहहै तिसके विषे असपिंडीके मृतमें तीनदिन अशौचहोताहै यह

परोपनीतस्य बहुकालमध्यापितस्य मरणे एकाहः ॥ सहाध्यायि मृतौ पक्षिणी एवं याज्य मरणेऽपि सार्थवेदाध्याय्या श्रोतस्मार्तकर्मनिष्ठश्च श्रोत्रियः तयोर्मरणे मैत्रो गृहानंतर्ग्यादिसंबंधे त्रिरात्रम् ॥ एकतरसंबंधे पक्षिणीसंबंधाभावे एकाहः सवर्णमित्रमरणे एकाहः यतिमरणे सर्वसपिंडानां स्नानमात्रम् स्वगृहे उदासीना सपिंडमरणे एकाहः स्वाधिष्ठितस्वगृहेऽसपिंडमरणे अहमिति केचित् ॥ आशौचप्रयोजकसंबंधिनिस्वगृहे मृते त्रिरात्रम् ग्रामाधिपदेशाधिपादे मृतौ सज्योतिः दिवामरणे रात्रौ स्नानाच्छुद्धिः ॥ रात्रिमरणे दिवा स्नानाच्छुद्धिरिति सज्योतिः पदार्थः । पक्षिणीपदार्थस्तु दिवामरणे सदिवसः सारात्रिर्द्वितीयदिने नक्षत्रदर्शनपर्यन्तमिति आगामिवर्तमाना हर्युता मध्यगता रात्रिः रात्रिमरणे सारात्रिस्तदुत्तरमहोरात्रिश्चेति पक्षिणी ॥

कईकथन करतेहैं ॥ अब और कथन करतेहैं अशौचके प्रेरणवाला अर्थात् जिसके साथ अशौच का संबंधहै ऐसा जो कोई संबंधी अपने गृहमें मृतहो जावे तद तीन रात्र अशौच होताहै और ग्रामका स्वामी और देशका स्वामी इनके मृतहोयां सज्योति अशौचहोताहै अर्थात् दिनमें मृत होवे तद रात्रिके विषे स्नानकरके शुद्धिहोतीहै जेकर रात्रिमें मृतहोवे तद दिनमें शुद्धिहोतीहै ॥ अब पक्षिणीपदका अर्थ करतेहैं जेकर दिने मृत होवे तद निम्न दिनके सहित रात्रि और द्वितीयदिनके विषे तोर देखन तक पक्षिणीहोतीहै सोई कहतेहैं । आगेति आउणा जो दिन और वर्तमान जो दिन है तिनदोनो करके युक्त जो रात्रि सो पक्षिणी होतीहै । और जेकर रात्रिमें मृतहोवे तद सो रात्रि और अगला दिन और रात्रि एह पक्षिणीहोतीहै ॥

७० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी भा० ॥

कैं एहकथन करतेहैं कि रात्रिमरणमें भी मरणदिनते लेकर द्वितीय दिनविषें नक्षत्र दर्शनतक पक्षिणी होतेहैं॥इसीप्रकार व्यतीत अशौच विषें भीदिने अथवा रात्रिविषें मरणज्ञानके अनुसार पक्षिणीकी व्यवस्था जाननी॥अब और कथन करतेहैं शिष्यादिके अंत्यकर्मकरणमें दशाहादि अशौचहोताहै॥और जेकर अंतकर्म नकरे तदपूर्व कहा जो अशौच सोहोताहै औरघरमें उत्पन्नहुआ और मूल्य साथ ग्रहण कीआ हुआ और गिरवी रखाहुआ और किसेस्थानते लब्ध हुआ इत्यादि जोदासहैं तिनको स्वामीके मरणमें स्वामी जातीका अशौच होताहै॥अब और कथन करतेहैं युद्धविषेशस्त्रके प्रहार करके तात्काल मृतहोवे तिसका स्नानमात्र भी, अशौच और तिसका दशाहादि अंत्यकर्मभी तात्कालकरणे योग्यहै और युद्ध में शस्त्रके प्रहार करके

केचित्पुरात्रिमरणेपिमरणदिनाद्द्वितीयदिनस्थनक्षत्रदर्शनपर्यंतमेवपक्षिणीपदार्थमाहुः॥एवमतिक्रान्तविषयेदिवारात्रौवामरणज्ञानानुसारिणपक्षिणीव्यवस्थायोज्या॥शिष्यादीनामंत्यकर्मकर्तृत्वेतुदशाहाद्याशौचमन्यथापूर्वोक्तम्॥दासानांगृहजातक्रीतऋणमोक्षितलब्धत्वादिप्रकाराणां स्वामिमरणेस्वामिजातीयाशौचम् ॥ युद्धेशस्त्रघातेनसद्योमृतेस्नानमात्रमाशौचमंत्यकर्मपिदशाहादिकंसद्यैवकर्तव्यम् ॥ युद्धक्षतेनकालांतरेमरणेएकाहःअथादूर्ध्वयुद्धक्षतेन मरणे पराङ्मुखहते युद्धेकपटेनहतेच त्रिरात्रम्॥ युद्धक्षतेनमत्तरात्रादूर्ध्वमृतौदशाह इत्याहुः॥ शिष्टास्तुयुद्धेहतस्य सद्यःशौचादिकं लोकविद्विगृत्वान्नवदंति ॥प्रयागादौकाम्यमरणेस्नानमात्रम् प्रायश्चित्तार्थमग्न्यादिमरणे एकाहः

घायल हुआ २ कुछकालकरके मृतहोवे तिसका एकदिन अशौच कथन करतेहैं ॥ और युद्धमे घायल हुआ २ तीन दिनते उपरंत मृतहोवे और और युद्धमें पराङ्मुखहोकेमरे और युद्धमें छलकरके किसीने जो हतकीयाहै इनसभका तीनदिन अशौच होताहै॥और जोयुद्धमेफटा हुआ सातदिनतें उपरंत मृतहोवे तिसका दश दिन अशौच कथन कीयाहै और श्रेष्ठजन युद्धमें मृतकी तात्काल शुद्धि नहि कथन करते क्योंकि लोकमें विरुद्ध होनेतें अर्थात् दशदिन हीकहतेहैं ॥ अब और कथन करतेहैं ॥ प्रयागादि तीर्थ में कामना करके मरणके विषें स्नान मात्र और प्रायश्चित्तके अर्थ अग्नि और पर्वतादि करके मरणमें एकदिन अशौच होता है ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥ ७१

और जो कोई महारोगपीडाको नहिसहारदे और जलमे डुबके अथवा फाहलेकरके मृपहो
वै-तिनका तीन रात्र अशौच होताहै॥इसमे भी शिष्टा चारोंकी सम्मति नहि अर्थात् शिष्ट जो
यथार्थज्ञान वाले सो इसको नहि जानते किंतु दश दिन १० तक अशौच होताहै॥यह क्रमको
त्याग करके त्रिंशत् श्लोकीके कथनके अढाई २॥श्लोकहैं तिनकी व्याख्या पूरी होई ॐ (प्रण)
पक्षिणीआद लेकर वाक्य त्रिंशत् श्लोकीमें कहाहै और इसमें कमलाकर आदियोंने व्यवस्था
कीतीहै कि कर्ममें प्रवृत्त जो ऋत्विजहै तिसके मृतहोयां २ जिनके कार्यमें सो लगाया तिनको ३
यदिन करके शुद्धि कहीहै और कर्ममें निवृत्त जो ऋत्विजहै तिसकी मृत्युमें पक्षिणी कालते पीछे

महारोगपीडाऽक्षमाणां जलादिप्रवेशे त्रिरात्रम् अत्रापि नशिष्टाचारसम्म
तिः एवं कारागृहे मृतस्य करात्रमपीति। क्रमनिरपेक्ष त्रिंशच्छ्लोकयुक्तसार्धश्लो
कद्वयव्याख्या॥ ननु पक्षिण्याशौचमृत्विग्दुहित्रित्यादि त्रिंशच्छ्लोक्यां कर्म
णि प्रवृत्ते ऋत्विजिमृते त्रिरात्रं ततो निवृत्ते पक्षिणीति व्यवस्थापितं कमलाकरा
दिभिः॥ तत्रोच्यते आगामिवर्तमाना हर्युक्तायां निशि पक्षिणीत्यभिधानात् प
क्षौ पूर्वापरा हरूपौ विद्येते यस्यां सा रात्रिः पक्षिणी द्वादशयामात्मकः काल
इत्यर्थः ॥ अत्र यदि मध्याह्ने रात्रावर्द्धरात्रे वा तस्मिन्मृते तमारभ्याशौचपाते
तदा तत्कालसंकोच एवैष्टोवारात्र्यंतरसंमेलनेन तावानेवावधार्यः॥ उभयत्रा
पि वचनादिनाभाव्यं तदभावात्कथं निश्चेतव्यमिति ।

शुद्धि कहीहै॥इसमे कुछ और विचार करतेहैं आगामाति अगला जो दिन और वर्तमान दिन
तिसकरयुक्त जो रात्रिहै इतने कालका नाम पक्षिणी कहाहै॥इस पदकी व्युत्पत्ति एहहैं कि पूर्व औ
र पर दिनरूप पक्ष विद्य मान होन जिस रात्रिमें तिसका नाम पक्षिणीहै सो वारां १२ पहर का
काल होया एह अर्थहै॥और इसमें होर विचार करतेहैं मध्यान्हमें वा रात्रिमें अथवा अथ रात्रि
में तिस ऋत्विजके मृतहोयां २ तिस कालतें लेकर सूनकादि प्राप्त होन ता तिस कालका सं
कोच हि योग्यहै॥वा दूसर रात्रिके मेलने करके वारां १२ पहरका हि काल ग्रहण करणा ॥ इन
दोनोंमें निश्चय वचनादि करके हुंदाहै तिसके अभावतें कैसे निश्चय करणा एह पूर्व पक्षहोआ ॥

७२ ॥ श्रीरणवीरकारित्त प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

इसमें कैङ्क विचार करतेहैं ॥ दिवापक्षिणी रूप अशौच सो दिनांतर करके पूर्ण करणा और रात्रिका अशौच दूसरी रात्रि करके समाप्त करणा इति॥इसमतमें पक्ष पूर्व और पर दिन रूप होण जिसमें वा पूर्व और पर रात्रि रूप होण जिसमें तिस का नाम पक्षिणीहै ॥ और मध्यान्ह और अर्द्ध रात्रि आदिकमें अशौच के होयां २ संकोच करणाहि योग्यहै॥तिसमें कथन क करतेहां कि देशांतरमें जो मृत होयाहै तिसका श्रवण दश दिन के अंदर होवे तांदश दिन में जो शेष दिनहै तिसी करके शुद्धि कहाहै और श्रवणतें दश दिन करके नहि ॥ इसकी न्याई इसमें भी जानणा और मेरेमत में पूर्व कहा जो यह दृष्टांत तिस कर्के और कोश वा

अत्रकेचित् ॥ दिवापक्षिण्यात्मकाशौचपातेदिनांतरेणसमापनीयं रात्रौतत्पाते रात्र्यंतरेणसमापनीयमिति। तन्मते पक्षौ पूर्वापराहरूपौपूर्वापररात्रिरूपौवायस्यावेलायामित्यर्थः। मध्याह्नार्द्धरात्रादौतत्पातेयच्छेपंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवेदिति देशांतरमरणनिमित्ताशौचवत्संकोचएवेष्टइति। मन्मतेतु पूर्वाक्तदृष्टांतेनाभिधानवाक्यानुरोधेनच प्रथमव्युत्पत्त्यावगतार्थसंकोचएव साधीयान् प्रतिभाति तद्वर्धकवचनांतराद्यदर्शनात् संकोचेतु दृष्टांतस्यसत्त्वात् दृश्यतेहिचातुर्मास्यव्रतादौ केनचित्कारणेनभाद्रपदाद्यारंभेप्यवशिष्टेन कार्तिकीपर्यंतनैवतत्समाप्तिः किंचनैतावतामध्याह्नाद्यारंभेपितादृशकालहानिः प्रातरारभ्यैवतत्प्रवृत्तेरिति विद्वद्भिराकलनीयम् ॥

क्यके अनुसार करके प्रथम व्युत्पत्ति कर्के प्राप्त होया जोअर्थ तिसमें संकोचहि साधुहै क्योंकि तिसके वधानेवाले अन्य वचनके न देखेणें और संकोचमें दृष्टांतके देखेणें ॥ इसमें ॥ और भी कथन करतेहां कि चातुर्मास्य व्रतमें किसे कारणतें विघ्नके होयां २ भाद्रपदमासके विषे भी प्रारंभके होयां २ शेष जो कार्तिक पूर्णमासीतक कालहै तिसीमें समाप्तिहै तिससे अधिकन हि करीदाहे तैसेहि इसमें भीजानणा ॥ किंच मध्याह्नादि प्रारंभमें तिस पक्षिणीके कालकीइत नै करके हानि नही क्योंकि तिसकी प्रातः कालतें हि प्रारंभ की प्रवृत्तिसें ऐसे बुद्धिमानोंनै विचारणे योग्यहै

अव अशौचापवादमे सिंधुके विषे मनुजी कथन करतेहैं ॥ उद्येति ॥ युद्धमें शस्त्रों करके और क्षत्रधर्म करके जोमृत हुआहै तिसका दशाहादिकर्म और शुद्धि तात्काल कथन कीहै १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ (यज्ञ) क्या अस्यकर्म तात्काल करणे योग्यहै ॥ और अशौचभी तात्काल सिद्ध करदेणा ॥ और कर्म सदैव करणा अर्थात् विश्वे देवके साथ आद्व करणा ॥ और कथन करतेहैं ॥ अइति ॥ युद्धमें हतहुआ जो सूरमा सो शोक करणे योग्य नहि और सोईसूरमा स्वर्गमें पूजादाहै ॥ और तिसको अन्न दान और तिलांजलि और स्नान और अशौच नहि करणा ॥ १ ॥ यहमहाभारतके वचनमें संपूर्ण क्रियाकाजो निषेधहै सो पुत्रादिके अभावमें जा

अथाशौचापवादेसिंधोमनुः ॥ उद्यतैराहवेशस्त्रैःक्षत्रधर्महतस्यच सद्यःसंतिष्ठतेयज्ञस्तथाशौचमितिस्थितिः ॥ १ ॥ अस्ययज्ञोत्पत्तिकर्मसद्यःसंतिष्ठते सद्यएवसंपादनीयअशौचमपिसद्यएवसंपादनीयमित्यर्थः ॥ कर्म्मपिसदैवविधेयम् ॥ अशौच्योहिहतःशूरःस्वर्गलोकेमहीयते नह्यन्नमुदकंतस्य नस्नानंनाप्यशौचकमिति १ सर्वथाक्रियानिषेधपर भारतीयवचनं पुत्राद्यभावाविषयबोध्यम् युद्धक्षतेनकालांतरमरणेतुपराशरः आहंवपिहतानांचएकरात्रमशौचकमिति तत्कालमरणेतुपूर्वोक्तमेवानुसंधेयम् शस्त्रविनापि स्वाम्यर्थमरणे अग्निपुराणे

नना अर्थात् पुत्रन होवे ता तिनकी क्रियादि न करे और जेकर पुत्र अथवा भ्राता होवेतां क्रिया करे एहपिच्छेभी किहाहै ॥ और युद्धमेंफटा हुआजो पुरुषहै तिसके कालांतर करके मरणमें पराशरजी कथन करतेहैं ॥ आहिति युद्धमें हत हुआ जो पुरुषहै तिसकाभी एक रात्र अशौच होताहै ॥ और जो युद्धविषे प्रहार कर्दाहोआ उसी कालमें मृत होवेक्या जिसदिनमें युद्धलगा था तिसदिनकी समाप्ति तक जो मृत होआहै तिसके वास्ते पिच्छे किहाजो मनुजीका वचनहै सो जानना ॥ और कथन करतेहैं शस्त्रों विना भी स्वामीके अर्थ मरणमें अग्निपुराणमें, कथन कीयाहै

दंष्ट्रीति ॥ सिंहादि और महिषादि और स्लेछ और चोर इन्हो करके जो स्वामीके अर्थ हत होयें हैं हेराजन् सो हत हुए २ स्वर्ग को प्राप्त होते हैं इसमें संशय नहि यह सभ वर्णों को कथन किया है और क्षत्रिको विशेष कहा है इति ॥ १ ॥ अब और कथन करते हैं जिस पुरुषने जीवन्दिषां होयां अपनी क्रिया करदिती है तिस पुरुषने किसी का कुछभी अशौच कर्ण योग्य नहि है एह हेमाद्रिमें कहा है ॥ कूर्मपुराणका वचन है ॥ सेति दुर्भिक्ष विषे और उपद्रव विषे विजली करके और पाषाणादि करके और पक्षियों करके और राजातें रहित जो युद्ध तिस में हत हुए २ और राज्यों कर्के और ब्राह्मणों कर्के जो मृत होए हैं ॥ १ ॥ उपेति और उपद्रवमें और महावायु करके और रोगकी पीडाके होयां २ जो मृत हुये अथवा महारोग क

दंष्ट्रिभिः शृंगिभिर्वीपिहताम्लेच्छैश्चतस्करैः ये स्वाम्यर्थे हतायांति राजन्स्वर्गे न संशयः ॥ १ ॥ सर्वे पामेव वर्णानां क्षत्रियस्य विशेषत इति ॥ हेमाद्रौ कृत जीवच्छादनेन किमप्याशौचनकार्यमित्युक्तम् ॥ कूर्मपुराणे सद्यः शौचं समाख्यातं दुर्भिक्षे चाप्युपद्रवे दिवाहवाहतानां च विद्युतापार्थिवैर्द्विजैः ॥ १ उपद्रवेऽत्यंत मरके व्याधिपीडा प्रवर्तने उपसर्ग मृतैश्च सद्यः शौचं विधीयते २ नृपतिशून्यं युद्धं दिग्मवाहवम् ॥ अत्यंत मरको महावायु प्रचारः ॥ मरीचिः आपद्य पिचकट्यां सद्यः शौचं विधीयत इति अतएव मरणसमयपि नाशौचम् ततश्चातुरसंन्यासः सर्वदा विधेय एव दक्षः ॥ स्वस्थकाले त्विदं सर्वसूतकं परिकीर्तितम् आपद्रतस्य सर्वस्य सूतकेऽपि न सूतकम् १ नाशौचमित्युपक्रम्य त्रि

शच्छ्लोक्याम्

रके जो मृत हुये हैं इनका तत्काल शौच विधान किया है ॥ २ ॥ इसमें मरीचिजी कथन करते हैं ॥ आपेति बड़ी आपदमें तत्काल शौच विधान किया है ॥ इसी कारणते मरण समयमें भी अशौच नहि होता है अर्थात् जो कोई संबंधि वर्गके मरण निमित्त अशौच बाला है आप मरण लगा है तद तिसको तिसकालमें अशौच नहि इस कारणते आतुर पुरुष को संन्यास सर्वदा काल विधान किया है ॥ अब दक्षजी कथन करते हैं स्वस्थेति ॥ स्वस्थ कालमें क्या सुखकालमें यह संपूर्ण अशौच कथन किया है और आपद को जो प्राप्त होता है तिसको सूतकमें भी सूतक नहि होता है ॥ १ ॥ अशौच नहि होता इसको प्रारंभ करके त्रिशत् श्लोकीमें लिखा है।

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥ ७५

तत्तेति यज्ञ करण वाला और अनंतादि व्रतवाला और राजा और राजाका भृत्य और यज्ञकी दीक्षा वाला और ऋत्विक् और अपने देशते निकलया होया विपदावाला और अनेक भुति योंके पढ़न वाला और वैद्य वोढी और धोवा और रोगकर्के आतुर इनको तिस तिस कार्यमें अशौच नहि अर्थात् सत्रीको यज्ञ कर्ममें और व्रतीको व्रतमें अशौच नहि और होरकर्ममें अशौच है और देशभ्रंश और आपदमें भी अशौच नहि और दान और उपनयन और जन्म और श्राद्ध और बुद्ध और प्रतिष्ठा और चूडाकर्म और तीर्थयात्रा जप और विवाह इत्यादि उत्सवोंके आरंभ कीयां होयां इनकार्योंके अर्थ अशौच नहि होता है ॥ १ ॥ इतीति

तत्तत्कार्येषु सत्रि व्रति नृप नृपवद्दीक्षितर्त्विक् स्वदेशभ्रंशापत्स्वप्यनेकश्रुतिपठनभिपक्कारुशिल्पातुराणाम् संप्रारब्धपुदानोपनयनजननश्राद्धयुद्धप्रतिष्ठा चूडातीर्थार्थयात्राजपपरिणयनाद्युत्सवेष्वेतदर्थे ॥ १ ॥ इतिकर्म तत्राशौचाभावउक्तः सत्रीसत्रवान् मुख्यसत्रस्य दीक्षितपदात्सिद्धेः । व्रती अनंतव्रतादिनियमवानिति सिंधुः ॥ प्रचेताः ॥ कारयः शिल्पिनो वैद्यादामीदामास्तथैव च ॥ राजानो राजभृत्याश्च सद्यः शौचाः प्रकीर्त्तिताः १ कारुपदेन सूपकारादयः शिल्पिपदेन चैलनिर्णेजकादयो विवक्षिताः

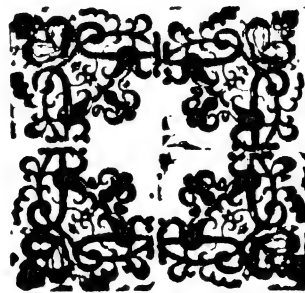
एह कर्म करणे विषे आशौचका निषेध किहा है इसमें सत्रीपद कर्के सत्रकर्म वाला जानना मुख्य सत्रवालेका क्या यज्ञकरवाणलेका नाम दीक्षित पद कर्के कथन हांणते और व्रतीपद कर्के अनंतादि व्रतके नियम वाला जानना एह निर्णयसिंधु कारका मत है इसी में प्रचेताजी कथन करत हैं ॥ कारेति वोढी आदिक और धोवे आदिक अथवा (कारु । कि डे बनानेवाला और शिल्पी चित्रकारी करनेवाला और राजा और राजाका भृत्य एह नात्काल पवित्र कथन कीए हैं ॥ १ ॥

७६ ॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा०

प्रारंभके कीत्यां होयां भी सूतक नहि एह लघुविष्णुजी कथन करते हैं ॥ व्रतेति व्रत और यज्ञ और विवाह और श्राद्ध और हवन और पूजा और जप इनके आरंभके कीत्यां होयां सूतक नहि होता अरु न आरंभके कीत्यां होयां सूतक होता है १ अव प्रारंभका अर्थ करते हैं । प्रेति ॥ यज्ञका प्रारंभ वरणी और व्रत और सत्र इनका प्रारंभ संकल्प और विवाहका आरंभ नान्दीमुख श्राद्ध ॥ और श्राद्धका प्रारंभ पाकक्रिया है ॥ इति ॥ सदांति मंत्रके जपको त्यागकरें जद पुरुष अपवित्र होजाए अर्थात् जप करणवाला थोड़ा हि जप करे वीचमें मूत्रा

आरब्धेऽपि सूतकं नास्तीति लघुविष्णुः व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे आरब्धे सूतकं न स्यादना रब्धेतु सूतकमिति तथा प्रारंभो वरणं यज्ञसंकल्पो व्रतसत्रयोः नान्दीमुखविवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रियेति सदांति मंत्रजपमुक्त्वा यद्विस्मयाद्गुणचिर्नरः मनसा विहितस्तत्र स्मरेन्मन्त्रं न तूच्चरेदिति नृसिंहस्मरणं मूत्राद्यशौचपरम् ॥ श्रौतस्मार्तविषये तु प्रागुक्तम् विस्तरस्तु ग्रंथांतरादवसेयः ॥ इति श्री शुद्धिप्रकरणे सूतक, सामान्य निर्णयः समाप्तः । शुभं भूयात् ॥

दिको चला जाये तद पीछे पवित्र होकर तद मनकरें मंत्रको स्मरण करे अरु उच्चारण न करे इति ॥ नृसिंहका स्मरण क्या नृसिंहजीकी स्मृतिका वचन मूत्रादि अशौच पर जानना ॥ और श्रौत स्मार्त कर्मविषे पूर्वकथन कीयांहे इसमें संक्षेप कथन करे कथन कीयांहे ॥ और विस्तार और ग्रंथोते देख लेना इति श्री इत्यादि प्रायश्चित्त भागमें शुद्धि प्रकरणके विषे सूतक सामान्यकानिर्णय समाप्त कीयांहे



॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥ ७७

अव द्रव्य शुद्धि कहने की इच्छा करके वर्ण और आश्रम शुद्धि कथन करणे योग्य थी परंतु तिसको आन्तिक भागमें कथन करणें अर्थात् पूर्व कथन करलेसे और स्त्रीपुरुषोंकी सामान्य शुद्धि निरूपण पूर्वक अव वस्त्रादियोंकी शुद्धि कथन करते हैं प्रथम विष्णुधर्मोत्तरेमें कहते हैं जब शयन में संचादि-के उपर स्थित जो स्त्री और पुरुष हैं उससमय दोनों अपवित्र होते हैं जब शयनमें उठीजो स्त्री सो पवित्र होती है और शयनमें उठया होया जो पुरुष सो अपवित्र होता है १ गरुड पुराण में कहा है अपुष्टा इति अपुष्टजो हैं व्रतोंके करणे वाले और संतति त्याग जो हैं वानप्रस्थ और वायुकरके उडेजोरेण हैं स्त्रियां जो हैं और बालक जो हैं और वृद्ध जो हैं एह कदाचित् भी अपवित्र नहीं होते १ उदक इति जलमें स्थितजो हैं सो जलमें तर्पणादिको करे और जो स्थलमें स्थित है सो स्थलमें तर्पणादिको करे और पैरोंके धोणे करके दोनों अव

अथ द्रव्यशुद्धिविवक्षया दौवर्णाश्रमशुद्धेर्वक्तव्यतायामपि तस्या आह्निकभागे प्रकीर्णकादौ च कथितत्वात् स्त्रीपुरुषसामान्यशुद्धि निरूपण पूर्वकं वस्त्रादिशुद्धिरुच्यते विष्णुधर्मोत्तरे ॥ उभावप्यशुची स्यातां दंपती शयने गतौ शयनादुत्थितानारी शुचिरस्यादशुचिः पुमान् १ गरुडो अपुष्टाः संततित्यागावार्ता भूताश्चरेणवः स्त्रियो वृद्धाश्च बालाश्च न दुष्यंतिकदाचन १ अपुष्टाः व्रतिनः संततित्यागावानप्रस्था इत्यर्थः १ उदके चोदकस्थस्तु स्थलस्थश्च स्थले शुचिः पादौ प्रक्षाल्योभयं स्यादाचान्तः शुचितामियात् २ जलस्थेन जले स्थलस्थेन स्थले तर्पणादिविधेयमिति भावः पादप्रक्षालनेन उभयं अवयवानां शौचमशौचं च नाभेरधः शौचं तदूर्ध्वमशौचमित्यर्थः आचान्तः पादप्रक्षालनानन्तरं कृताचमनः शुचितां सकलदेहशौचं प्राप्नुयादित्यर्थः ॥ यद्वा उदकस्थो यावज्जानुदघ्नादिके तस्मिन् वर्तमानः शुचिः समस्तः शुचिर्न तु जलनिमग्नावयवमात्रः स्थलस्थस्तु स्थले गौरमृदाद्युपल्लिप्तभूप्रदेशे शुचिर्न तृप्तो न्यत्र पादप्रक्षालनेन तु उभयं जलीयस्थलीयशौचद्वयं भवति कृताचमनोऽशुचिरपिशुचिर्भवतीत्यर्थः ॥

यवजो हैं तिसके शौच और अशौच हांते हैं नाभिके हेठ पवित्र होजाता है और नाभिके ऊपर अपवित्र रहता है और पाद प्रक्षालन क्या पैरोंको धोय करके पीछे आचमन करलेवे सो पवित्रताको प्राप्त होता है अर्थात् संपूर्ण देहकी शुद्धिको प्राप्त होजाता है ॥ २ ॥ यदेति अथवा जलमें स्थित क्या जानुप्रमाणादि जलमें स्थित जो मनुष्य है सो संपूर्ण क्या समग्रही पवित्र होजाता है इसमें यह बात नहि है जो जितना अंग जलमें स्थित है उतना ही पवित्र होता है ॥ और स्थलमें स्थित जो मनुष्य है सो स्थलमें सुपेद मृत्तिकादि करके लेपन करि जो पृथिवी तिसमें बैठ करके पवित्र होता है तिसते लेपनादिते बाहर नहि पवित्र होता ॥ और पैरोंके धोणे तें दोनों स्थलोंमें क्या जल निमित्त और स्थल निमित्त पवित्र होता है और जिसने आचमन करलीये हैं सो मनुष्य अपवित्र भी है तदभी पवित्र होजाता है

७८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥

सूक्ष्म वस्त्रांकी शुद्धि दाडिम आदि फलां करके कहीहै ॥ और क्षौम क्या अलसीके वस्त्रांकी शुद्धि सेती सरीं करके कहीहै और मृगां के रोमा करके बने जो वस्त्र तिनां की शुद्धि पद्म बीज करके युक्त जो जलहै तिस करके कहीहै । और पुष्पों और फलोंके जलके सिंचणें संपूर्ण शुद्धि कहिहै ॥ और सामान्य शुद्धि कहतेहैं कि सभ वस्तुकी शुद्धि अर्थात् जिस जगा शुद्धि का प्रकार नहिहै उस जगा सर्वत्र जल करके शुद्धि जानणी ॥ १ ॥ अग्नि पुराण विष्णु धर्मोत्तर विषे भी अयसे कहाहै ॥ ब्रह्म पुराण विषे भी कहाहै ॥ संख और पाखाण और सुवर्ण और (कुप्य) क्या सुवर्णने रूप्येतें जो होर धातुहैं तिनांकी और रंग संयुक्त वस्त्रां कि और शाक और मूल आद्रक और फल और विदल क्या वंझके जो पात्र और अजा आदिके चर्म तिनांकी ॥ १ ॥ और मणि और वस्त्र और प्रवाल क्या मुंग तैसे मुका फल और पात्रांकी और धान्य इनां संपूर्ण की जल करके शुद्धि कहिहै ॥ २ ॥ तैसे वृक्ष और

सुफलैरंशुपट्टानांक्षौमानांगौरसर्पपैः।शुद्धिःपद्माक्षतोयेनमृगलोम्नांचकीर्त्तिता १ पुष्पानांचफलानांचप्रोक्षणाजलतोखिलम् ।अग्निपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोरप्येवम्॥ब्रह्मपुराणेपि।शंखाश्मस्वर्णकुप्याणारंजितानांचवाससाम् शाकमूलफलानांचतथाविदलचर्मणाम् १ मणिवस्त्रप्रवालानांतथामुक्ताफलस्यचपात्राणांचैवसस्यानामंबुनाशौचमिष्यते २ तथाद्रुमाश्मकानांचमुशूलूलखलस्यच संहतानांचवस्त्राणांप्रोक्षणात् संचयस्यच ३ कल्कानामप्यशेषाणामम्बुमृच्छौचमिष्यते ॥कल्काउद्धृततैलास्तिलादयः ॥ विष्णुधर्मोत्तरेपि ससर्जिकेनतोयेनवाससांशुद्धिरिष्यतेवहूनांप्रोक्षणाच्छुद्धिर्धान्यानांचविनिर्दिशेत् १ अग्निपुराणेपि।क्षरेणकांस्यलोहानांमुक्तादेःक्षालनेनतु शाकरज्जमूलफलदेवतानांतथैवच १ शोधनाभ्युक्षणाद्वस्त्रमृत्तिकादिविशोधनम् बहुवस्त्रेप्रोक्षणाच्चदारवाणांचतक्षणात् २ देवतानांदेवमूर्तिनामित्यर्थः शोधनंकेशकीटाद्यपसारणम् ॥

पापाण और मुसल और उखल और बहुत जो वस्त्रहैं और जो वस्तु का समूह तिनांकी भी शुद्धि जल के सिंचनेतें होतीहै ॥ ३ ॥ और निकालयाहै तेल जिन्हां तिलातें ऐसे जो तिलादिक तिन्हांकी शुद्धि जलकी और मृत्तका कीन्याई कहीहै । अथवा जल और मृत्तिका करके कहीहै ॥ विष्णु धर्मोत्तर विषे भी कहाहै ॥ सहित सर्ज्ज के जो जलहै तिस जल करके वस्त्रांकी शुद्धि कहिहै ॥ और बहुत अस्त्रां के समूह की भी जलके सिंचणें होतीहै ॥ १ अव अग्नि पुराणविषेभी कहाहै ॥ क्षार करके कांस्य और लोहेकी शुद्धि होतीहै । और मोती आदि की शुद्धि जलके धोणें ते होतीहै और शाक और मुंजआदि करके रचीजो रज्जुहै और मूलक्या आद्रक और आम्रादि फल और विष्णु आदि मूर्तिआं इनांकी शुद्धिजलके सिंचणें होतीहै ॥ १ और वस्त्रांकी शुद्धि जल करके शोधनेतें होतीहै।और सिंचणेंते मृत्तका आदि की शुद्धि होतीहै ॥ और बहुत वस्त्रां की सिंचणेंतें होतीहै । और काष्ठके पात्रांकी भी शुद्धि प्रोक्षणेंते होतीहै । शोधन क्या केश कीटादि का दूर करणा ॥ २ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ ७९

वामनपुराणमें भी कहा है ॥ मणि और रत्न और मुंग जैसे मोति पाषाण पात्र और काष्ठका पात्र और तृण और गुल्मशर इक्षु प्रभृति और ओषधि और पत्थरा ॥ १ ॥ और छज्जा और धान्य और और मृगचर्म और ताम्र और भिक्षुका वासादि रचित भिक्षा पात्रभोजन पात्रादि संपूर्ण तिनकां संपूर्णकी शुद्धि जल करके होती है ॥ २ ॥ और थिंदे जो कुप्प आदि पात्र तिनकी शुद्धि अग्निसे तपाना और तिलांकीखल इन्हांकरके मलनेसे होती है और कार्पासिक जो वस्त्र हैं तिनकी शुद्धि भस्मके साथ जलकरके होती है ॥ ३ ॥ वैष्णवधर्म शास्त्र विषे भी कहा है ॥ शयन वस्त्र और यान और आसन और बहुत धान्य और अजिन नंतु रचित रज्जु और वंशपत्र और सूत्र और कार्पास और वस्त्र और शाक और मूल और फल और पुष्प और तृ

वामनपुराणे। मणिरत्नप्रवालानांतद्वन्मुक्ताफलस्य च शैलदारुमयानांच तृ
णगुल्मौषधाश्मनाम् १ सूर्पधान्याजिनानांच रक्तवैदलवाससाम् वल्कला
नामशेषाणामम्बुना शुद्धिरिष्यते २ सस्नेहानामथोष्णेन तिलकल्केन च
पितृ कार्पासिकानां वस्त्राणां शुद्धिः स्यात्सहभस्मना ३ वैष्णवधर्मशास्त्रे
पि शयनयानासनानां वट्टानां धान्याजिनतांतवरज्जुवैदलसूत्रकार्पासवाससां
च शाकमूलफलपुष्पाणां च तृणकाष्ठपलालानां च एतेषां प्रक्षालनेनाल्पानां
ऊपैः कौशेयाविकयोः आरिष्टकैः कुतपानां श्रीफलैः अशुपट्टानां गौरसर्पपैः
स्यादूषः क्षारमृत्तिकेत्यमरः ॥ याज्ञवल्क्यस्मृतावपि सौवर्णराजतावृज
नामूर्धपात्रगृहाश्मनाम् शाकरज्जुमूलफलवासोविदलचर्मणाम् पात्राणां
च मसानां च वारिणां शुद्धिरिष्यते १ सौवर्णसुवर्णपात्रम् तथाराजतम्
अवृजं जलजम् मुक्ताफलशंखादि ऊर्ध्वपात्रं यज्ञोपयोगि मुसलोलखलादि
ग्रहाः षोडशिप्रभृतयः अश्मशिलादि शाकं सर्पपवास्तुकादि

ण और काष्ठ पराली इन्हांकी शुद्धि जलके प्रक्षालन करने से होती है ॥ और अल्पजो वस्त्रादि ति
नकी शुद्धि क्षारमृत्तिका के सहित जल करके होती है ॥ और पट वस्त्र इन्हां की शुद्धि रेत्यां
करके होती है ॥ और कुतप जो दुशाले तिनकी शुद्धि विलां के फलां करके होती है ॥ और
अशु पट क्या सूक्ष्म वस्त्रांकी शुद्धि सेती सरों करके होती है ॥ याज्ञवल्क्य स्मृति विषे कहा
है ॥ कि सुवर्ण वस्त्र और रूप्य के पात्र और जलमें जो उत्पन्न है मुक्ता फल शंखादि और
ऊर्ध्व पात्र क्या यज्ञ पात्र और मुसल और उखलू आदि और सोम रसके स्थापन करण
आदि पात्र और शिला आदि और शाक सरों आदि और वायू आदि ॥

और रज्जु मुंजादि रचित और मूलआद्रकादि और फल आम्र पनस आदि और विदलवंश पात्र और चर्म अजादिका इन्हांविकारांते उत्पन्नहोये जो छत्र आदि और पात्र प्रोक्षणी आदि और चमस यज्ञविपें सोमका पानपात्र आदि और चरु शब्दककैचरुस्थाली पात्र प्रकरणते जानणी एहसंपूर्ण दुष्टतैल आदि करके स्निग्धहोन तां गरम जल करके शुद्ध होतेहैं ॥ तिसविपें भी निर्लेप जो स्थानहैं जिसविपे लेपण नहि वापात्र और सुवर्णपात्र और मुक्ता फल आदि और पाषाणमय पात्रादि और रूप्यके पात्रादि एह जलां करके शुद्धहोतेहैं ॥ और अनुपस्कृत क्या घुमारके हत्थतें नवीन जो लिआहै घटआदि तिसकी शुद्धि भी जल करके होतीहै ॥ मनुजोंके स्मरणते अलिप्त जो स्थानहै वापात्रहै सो जलां करके शुद्धहोतेहैं ॥ और लि

रज्जुमुंजादिरचिता ॥ मूलमार्द्रकादि ॥ फलमाघपनसादि ॥ विदलवंशज पात्रम् ॥ चर्मअजमैपादि ॥ एतद्विकारजानि छत्रादीनि ॥ पात्राणांप्रोक्षण्यादीनां ॥ चमसानां होतृचमसप्रभृतीनां ॥ चरुशब्देन चरुस्थाली पात्रप्रकरणात् । एतानि दुष्टतैलादिनास्निग्धानि च तदोष्णेन जलेन शुद्ध्यन्ति तत्रापि निर्लेपं कांचन भांडमद्भिरेव विशुद्ध्यति ॥ अब्रजमश्ममयंचैव राजतंचानुपस्कृतमिति मानवीयस्मरणादलिप्तान्येव जलेन शुद्ध्यन्ति ॥ लिप्तानि तु ॥ तैजसानां मणानांच सर्वस्याश्ममयस्य च ॥ भस्मनाद्भिर्मृदाचैव शुद्धिरुक्ता मनीषिभिरिति ॥ तदुक्तादिशुद्ध्यन्ति । मार्जारद्युच्छिष्टपात्रंतु शुच्येव ॥ मार्जारश्चैव दर्वीच मारुतश्च सदा शुचिरिति मानवात् ॥ काकाद्युच्छिष्टपात्रे स्मृत्येतरम् ॥ कृष्णशकुनिमुखा वट्टपात्रं निर्लिखेत् ॥ श्वापदमुखा वट्टपात्रं न प्रयुजीतेति अनुपस्कृतं तद्घटकहस्तादेव गृहीतं न तु प्रवर्तितम् निर्लेखनं घटनासाधनादिना घर्षणम् न प्रयुजीतेति अतैजसपात्रविषयम् ॥

सजो किसेनिंद वस्तु करकेहैं तिन्हांके अर्थ कहतेहैं । तैजसपात्र और मणियां और संपूर्ण जो पाषाण पात्र इनकी शुद्धि बुद्धि मानों ने भस्म जलों करके और मृत्तिका करके कहीहै ॥ तिस तैआद लय के क्याहोर भी शुद्ध होतीहै । एह मनुजोंके कहेहोए प्रकार तेहै ॥ और विडाल आदि करके उच्छिष्ट जो पात्रहैं सो शुद्ध कहाहै विडाल और डोई और वायु एह सदा पवित्रहैं ॥ मनुवाक्यते काक आदि उच्छिष्ट पात्र विपें अन्य स्मृतिहै ॥ कृष्ण पक्षिके मुखकरके घर्षण होया जो पात्रहै सो छिलणे करके शुद्ध होताहै ॥ और श्वान मुख करके अर्थात् श्वापद मृगविशेष के मुखकरके युक्त जो पात्रहै तिसको ना ग्रहण करे जेकर मृत्तिका होवे तां पूर्वोक्त रीतिसें ग्रहण करणा कहाहै

और इसविषे वैधायनऋषिका वाक्यहै ॥ तैजस जो पात्रहैं मूत्र और पुगेष और रुधिर और मिज्ज और मद्य इन्हांकर्के चिरकालयुक्त होनतां अग्निविषे फेर घडनेतें शुद्धहैं ॥ थोडे संसर्ग विषे छिलणे कर्के शुद्धिहै और स्पर्श विषे भस्म कर्के इकी वार २१ मांजणेतें शुद्धिहै और जो तैजस पात्र नहिहैं तिनका त्याग कहाहै ॥ अब पराशर जीका वाक्यहै ॥ कटाह आदि पात्रां की शुद्धि लोह साधन कर्के घर्षणतें होतीहै ॥ एह मार्कण्डेय पुराण विषे भस्म कर्के भी शुद्धि कहीहै ॥ और हस्ति दंत कर्के रचे जो पात्रहैं ॥ और अस्थियां कर्के रचित शृंग और रूप्ये

अत्रवौधायनः । तैजसानांमूत्रपुरीपासृक्कणमद्यैरत्यंतमाहतानामावर्त्तनम् ।
अल्पसंसर्गेतुपरिलेखनम् स्पर्शमात्रेपघातेतुत्रिःसप्तकृत्वोभस्मनापरि
मार्जनमतैजसानामिवंभूतानामुत्सर्गइति आवर्त्तनंपुनरग्नितापेनघटनम् ॥
पराशरः ॥ आयसेष्वायसानांचसीसस्याग्नौविशोधनम् दंतमस्थितथाशृंगं
रौप्यंसौवर्णभाजनम् ॥१॥ मणिपात्राणिशंखश्चेत्येतान् प्रक्षालयेज्जलैः पा
पाणेतुपुनर्घर्षः शुद्धिरेपाह्यदाहतेति आयसानांकटाहादीनांआयसेपुत्रयो
मयेपुघर्षणसाधनेपुशोधनंघर्षणम् । मार्कण्डेयपुराणेतुभस्मघर्षणमप्युक्त
म् ॥ गात्राणांचमनुष्याणामवुनाशौचमिष्यते ॥ तथायसानांतोयेनभस्मसं
घर्षणेनचेति अत्यजादिस्पर्शतोयेन अमेध्याद्युपहतेभस्मसंघर्षणेनेतिवि
वेकः दंतंहस्तिदंतमयंकंरंडादिपात्रमेवमग्रेपि १ मणिपात्राणिप्रवालस्फा
टिकादिघटितानि पापाणपात्रस्यतुतोयंपापाणघर्षणेचत्युभयमपिशुद्धि
हेतुः ॥ २॥ पुनरपिसएव चरुस्त्रुक्स्त्रुवसस्नेहपात्राण्युष्णेनवारिणा स्फसू
र्पाजिनधान्यानामुसलोलूखलानसाम् प्रोक्षणंसंहतानांचवहूनांधान्यवा
ससाम् ॥

कापात्र सुवर्ण पात्र १ और मणिपात्र और शंख इनको जलकरके शुद्धकरे जेकर चांडालादि करके स्पर्श होन और अमेध्यवस्तु करके उपलिप्त होन तां भस्म करके घसाणेतें शुद्धि होतीहै और पाषाणकी शुद्धि जल करके वा भस्मकरके होतीहै ॥ और मनुष्यादिके अंगोंकी और पुं रुषांकी शुद्धि जल करके होतीहै एह यथायोग्यतासे अर्थ करणा ॥ फेर पराशर जीका बचनहै चरुस्थाली और स्त्रुक् और स्त्रुव आदिजो थिंदेपात्रहैं तिन्हांकी शुद्धि गरम जल करके होतीहै

८२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टीभा ० ॥

और स्फःक्या वज्र यज्ञका अंग और सूँप और मृगचर्म और धान्य और मूसल और उखल और गडा इनकी भी गरम जलकरके शुद्धि कहिहै और जो अजिन कहाहै सो यज्ञके योग्यजा नणा पुनरुक्तिते ॥ जो बहुत धान्यहैं और बहुत जोमिले होये वस्त्रहैं ॥ अमेध्यविष्टा आदिकरके युक्तहैं तिनविषे मूत्र पुरीष आदि युक्तहैं तिनकीधोणे करके शुद्धि होतीहै ॥ और जो अमेध्यकरके नहि उपलित अर्थात् स्पर्श वालेहैं तिनकी शुद्धि जलकरके सिंचणे तेहोतीहै एह विचार एक जो समूहहै धान्यका वावस्त्रांका तिन्हावस्त्रां बहुतेयांविषे कुलमूत्रपुरीषकरके स्पर्शहै तिन्हा की शुद्धि धोणे करके और दूसरेयां दी सिंचणेतें होतीहै एह व्यवस्था ऐसे जानणी कि स्पष्ट थोडे होण और अस्पष्ट बहुत होण ॥ और जो चांडाल आदि करके स्पर्श वाले बहुत होण

स्फोवज्जोयज्ञांगम् ॥ अनःशकटम् एषामप्युष्णेन जलेन शुद्धिः अत्राजिनं यज्ञोचितं बोध्यम् । पुनरुक्तत्वात् यानि वहूनि धान्यानि वासांसि संहितानि अमेध्याद्युपहतानि तत्रोपलितानां क्षालनेन अवशिष्टानां प्रोक्षणेनेत्येकस्यां राशौ विवेकोयं स्पृष्टानामल्पत्वेऽस्पृष्टानां बहुत्वे ज्ञेयः यत्र चांडालादिस्पृष्टानां बहुत्वमितरेषामल्पत्वं तदा तेषां क्षालनमेवोचितम् स्पृष्टास्पृष्टसमत्वेऽपि प्रोक्षणमेव अल्पानां क्षालनमिति बहुत्वप्रतिशेषितया ज्ञेयम् तथा च मनुः ॥ अद्विस्तु प्रोक्षणं शौचं वहूनां धान्यवाससाम् प्रक्षालनेन त्वल्पानामद्विः शौचं विधीयत इति ॥ अथ वस्त्रादिशुद्धिः तत्र याज्ञवल्क्यः ॥ सोपैरुदकगोमूत्रैः शुद्ध्यत्याविककौशिकम् सश्रीफलैरशुपट्सारिष्ठैः कुतपंतथा १ अस्यार्थः ऊपाक्षारमृत्तिकास्यादूपा क्षारमृत्तिकेत्यमरात् तत्सहितैः सोपैरुदकैर्गोमूत्रैर्वा आविकं अविजातोर्णादिभवं कौशिकं कृमिकोशोत्पन्नपटपदवाच्यनिर्मितम् शुद्ध्यति बल्कलतन्तुकृतं वस्त्रं अशुपटं तत्श्रीफलैर्विल्वफलसहितैरुदकगोमूत्रैः शुद्ध्यति

और स्पर्शतें रहित थोडे होणनासंपूर्णकी शुद्धि धोणेकरके हीहोतीहै ॥ और चांडालादिकरके स्पृष्टा स्पृष्ट बराबर होणतां सिंचणे करके दुहवां की शुद्धिहै ॥ और थोडेयां की धोणे करके शुद्धिहै यह बहुतेयांते शेष होणेतें जानणां ॥ तैसें मनुजीकावाक्यहै ॥ बहुत जो धान्यहैं और वस्त्र है तिनकी शुद्धि जलसिंचणेतें होतीहै ॥ और थोडेयां की जल करके धोणेतें होतीहैं इसतेअनंतर वस्त्रांआदिकी शुद्धि कहेतें ॥ तिसविषे याज्ञवल्क्यजीकावाक्यहै क्षारमृत्तिका करके युक्त जो जलवागोमूत्र तिस करके ऊणवस्त्र और कीडेतें उत्पन्नहोये वस्त्र शुद्धहोतेहैं ॥ और वृक्षांकी त्वचातें तनुवां करके बने जो वस्त्रहै अशु पट नाम करके ख्यात ॥ सोविल्व फल करके युक्त जो जल वा गोमूत्र तिस करके शुद्ध होताहै ॥

और ने पालदेशते रचयाजो कंवल तिसको शुद्धिरेठयांकके युक्त जो जल वा गोमूत्र तिसकर्के होताहै एह शुद्धि बहुत निंदत जो थिंदयाई आदिक तिस कर्के युक्त जो वस्त्र तिन्हांविषे जानणी ॥१॥ और थौडी थिंदयाईकर्के युक्त जो वस्त्रतिन्हांवास्ते देवलजोका वाक्यहै ॥ ऊर्ण वस्त्र और पट वस्त्र और दुशाला और पट और अलसी कीयांततुते उत्पन्नहोये जो वस्त्र तिन्हां विषे थोडा अशुद्धि होवेतां सुकाणे कर्के और जलके सिंचेते शुद्धि हीतीहै ॥ इसजगा कौशेय शब्द कर्के कुशाके बनाए होए आसनादि जानणे क्योंकि पट पदसे जुदे होणेत और निंदत जो महा अपवित्र विष्टा आदि तिस कर्के युक्त होण वस्त्र तिनां दी शुद्धि नूं देवल ऋषि ही क हताहै ॥ सो पूर्व कहे जो वस्त्रादि अपवित्र वस्तु कर्के युक्त होनतां तिनां वस्त्रां की जिस जिस के जोजो वस्तुहैं क्या धान्नाते कडे होए जो तोह और फलांकेजो रसहैं और क्षारवस्तु तिन्हां

कुतपंकवलो नैपालादिजन्यः सारिष्ठैः अरिष्ठः फेनिलः रेष्ठा इति भाषितः तत्सहितैरेवोदकगोमूत्रैः शुद्ध्यति इदं दृष्टस्नेहादिदृढतरोपघाते द्रष्टव्यम् अल्पोपघाते देवलः ऊर्णा कौशेयकुतपपटक्षौमदुकूलजाः अल्पाशौचाभवंत्ये तेषोपणप्रोक्षणादिभिरित्याह । अत्र कौशेयं कुशनिर्मितमामनादिबोध्यं पृथग्गुणादानात् अमेध्याद्युपघातेऽपि स एवाह तान्यवामेध्ययुक्तानि क्षालयेच्छो धनैः स्वकैः धान्यकल्कैस्तु फलजैरसैः क्षारानुगैरपीति १ अत्र क्षौमपदं शाणाद्युपलक्षकं ज्ञेयम् तूलकादीनामपि क्षालनासत्वात् प्रोक्षणमेवेत्याह स एव तूलिकामुपधानंच पुष्परक्ताम्बरंतथा शोषयित्वा तपे किंचित्करैः सम्मार्जयन्मुहुः १ पश्चाच्च वारिणा प्राक्षय विनियुज्जीतकर्मणीति । अतिमलीनत्वे तु तथैवेत्याह तान्यप्यतिमलिष्ठानि यथावत्परिशोधयेदिति पुष्पंकौसुंभादिहरिद्रोपलक्षकम् मांजिष्ठकंतुक्षालनसहत्वात्तादृक्कर्मणैव शोधनीयम् ॥

कर्के शुद्ध करे ॥ १ ॥ इस विषे क्षौम पदकर्के शणके वस्त्रकोभी जानणा । और रजाई और सिगाणा आदिकों धोणेके अभाव होणेतें क्या नहि सहारणेतें सिंचणा ही कहाहै ॥ और रजाई सिगाणा आदि और पुष्प क्या कुसुंभा आदि हरदल कोभी इनमे जानणा ॥ और रक्त वस्त्र इन्हां कोभी थोडा काल आतप विषे सुकायके हथां कर्के बारं बार मले ॥ १ ॥ और पीछे जल कर्के सिंचे ऐसै शुद्ध कर्के अंगो कार कर लेवे ॥ जेकर अनिशय कर्के मलीन होनतां कहतेहैं ॥ सो अनिशय कर्के मलीन होनतां तिन्हां को यथावत् पूर्वोक्त गीतीमे शुद्ध करे ॥ और मंजिठ कर्के रंजित जो वस्त्रहै अति मलीन सो धोणे को सहारतेहैं इस कर्के धोणे कर्के शुद्ध होताहै ॥

८४ ॥ श्रीरणवीरकारित्त प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

पराशरजी विशेषकहतेहैं । वेणु और वल्कल जो चीरहैण क्या ताडवृक्षके त्वचा पत्रादि और क्षौम और कार्पासजो वस्त्रहैं और ऊर्ण और नेत्र पट जो वनवासियांनैं धारीदेहैं वस्त्र विशेष तिनकी शुद्धि जलके सिंचणें होतीहै ॥ सगौर इति । अलसीके वस्त्र की शुद्धि सेती सरो करके युक्त जो जल वा गोमूत्र तिस करके होतीहै । और पृथ्वी पात्र क्या घटा शरावादि क्या ठूठा तिसकी शुद्धि फेर अग्नि विषे पकाणें होतीहै । जेकर उच्छिष्ट घृतादि कर्के क्या जूठे घेठ कर्के दूषित होवे तां अग्नि कर्के शुद्ध करे ॥ और कारी गिर का हत्थ शुद्धहै और हठी विषे घृतादि वस्तु शुद्धहै ॥ और भिक्षा का अन्न शुद्धहै और स्त्रीका मुख शुद्धहै ॥ १ ॥ अपवित्रता करके युक्त विषे तुपुनः देवल जोका वाक्यहै । मद्य और मूत्र और पुरीष और श्लेष्म और पूय रक्त विकार अश्रु और रुधिर इनां करके स्पृष्ट जो मृमय घट शगव आदि सो और किसे करके नहि शुद्ध होते । किंतु फेर पकाणें शुद्ध होतेहैं ॥ १ ॥ पराशर

विशेषमाहपराशरः ॥ वेणुवल्कलचीराणांक्षौमकार्पासवाससाम् ठौर्णनेत्र पटानांचप्रोक्षणाच्छुद्धिरिष्यतइति । सगौरसर्पपैःक्षौमपुनःपाकान्महीम यम् । कारुहस्तःशुचिःपण्यंभैक्ष्यंयोपिन्मुखंतथा ॥ १ ॥ क्षुमाअतसीत दीयंवस्त्रक्षौमंतत्तुसगौरसर्पपैरुदकगोमूत्रैः शुद्ध्यतीतिपूर्वेणैवसंबन्धः ॥ म हीमयंघटशरावादिउच्छिष्टघृतादिदूषितंपाकावृत्त्याशुद्धंभवति अमेध्याद्यु पलिप्तेतुदेवलः मद्यमूत्रपुरीषैश्चश्लेष्मपूयाश्रुशोणितैः संस्पृष्टंनैवशुद्ध्येत पुनःपाकेनमृमयामिति ॥ १ ॥ पाराशर्य्यविशेषः चाण्डालाद्यैस्तुसं स्पृष्टंधान्यंवस्त्रमथापिवा प्रक्षालनेनशुद्ध्येतपरित्यागान्महीमयम् ॥ १ ॥ परित्यागात्परित्यजेदित्यर्थः यद्वापरित्यागादेवशुद्ध्यतितादृशघटादिपरि त्यक्तंवर्त्तनविहीनंकालान्तरेशुद्धंभवतीत्यर्थः वाक्प्रशस्तंचिरातीतमिति व क्ष्यमाणवाक्यान् ॥ १ ॥ उत्तरार्द्धमग्रेव्याख्यातवामनीयसदृशम् ॥ वि णुधर्मन्तरेप्येवम् ॥ अथाग्निपुराणोक्तमृमयादिपात्रशुद्धिः ॥ मृमयं भाजनंसर्वपुनःपाकेनशुद्ध्यति ॥ मद्यैर्मूत्रपुरीषैर्वाष्ठीवणैः पूयशोणितैः संस्पृष्टंनैवशुद्ध्येतपुनःपाकेनमृमयम् ॥ १ ॥

जांके वाक्य विषे विशेष कहाहै ॥ चांडाल आदि कां करके स्पर्श होये जो धान्य वा वस्त्र सो धोणें करके शुद्धि को प्राप्त होतेहैं । और घट आदि का त्याग कहाहै ॥ अथवा तिस घट को वर्त्तन क्या व्यवहार विषे ना वर्त्ते सो त्यागिया होआ चिर काल करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ विष्णु धर्मोत्तर विषे भी ऐसे कहाहे इसंतं अनंतर अग्नि पुराण विषे कहाहै ॥ मृमय पात्र आदि शुद्धि ॥ मृमय जो संपूर्ण घट आदि पात्र उच्छिष्टादि दोष करके नि दत होवेतां फेर अग्नि विषे पकाणें करके शुद्ध होताहै ॥ और मद्यमूत्र और पुरीष और घी वन क्या धुक इन्हां करके स्पर्श होवे तां फेर अग्नि विषे पकाणें करके भी नहि शुद्ध हो ताहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥ ८९

और मदरा मूत्र आदि करके स्पर्श वाला ताँवे का पात्र और सुवर्ण पात्र और रुपयेके पात्र हो
एतां फेर भन्नकरके घडेतां अग्नि विषे शुद्ध होते हैं और जेकर मदिरा आदि करके न स्पर्श होवे
ताँकेवल जल करके शुद्ध होते हैं ॥ २ ॥ और ताँवेका पात्र खटयाई करके युक्त जल करके शुद्ध होता
है और तैसँहि सिकेका पात्र और जस्तका पात्र शुद्ध होता है और कांस्यपात्र और लोहेका पात्र
इनकी शुद्धि क्षार करके होती है ॥ ३ ॥ मोती और मणिया और मुँगे इनांकी शुद्धि धोणे क
रके होती है और अन्य जो होर भाँडे और संपूर्ण जो पाषाण पात्र और शाक और रज्जु और मूल
और फल और वेदल क्या भिक्षुका भिक्षा पात्र ४ ॥ और यज्ञ भाँडे इनकी शुद्धि जलसें धो

एतैरेव तथा स्पृष्टं ताम्रसौवर्णराजतम् शुद्धयत्यावर्तितं पश्चादन्यथा केवलांभ
सा २ ॥ आम्लोदकेन ताम्रस्य सीसस्य त्रपुणस्तथा क्षारेण शुद्धिः कांस्य
स्य लोहस्य च विनिर्दिशेत् ३ ॥ सीसस्य सिंक्रतिरुच्यतस्य त्रपुणः जिस्तेति
रुच्यतस्य ॥ मुक्तामणिप्रवालानां शुद्धिः प्रक्षालनेन तु अन्येषां चैव भांडानां
सर्वस्याश्ममयस्य च शाकरज्जुमूलफलवैदलानां तथैव च ४ ॥ मार्जनाद्यज्ञभां
डानां पाणिनामाग्निकर्मणि ५ पाणिनां वाद्यभांडानामाग्निकर्मणि प्रतापे सति
शुद्धिरित्यर्थः ॥ यद्वा पाणिना ह्यग्निकर्मणीति पाठस्तत्र पाणिना हस्तेन दाक्षि
णेन इदं वस्त्रदशादर्भपवित्राणामुपलक्षणम् उष्णांभसा तथा शुद्धिः सस्नेहा
नां विनिर्दिशेत् शुद्धिर्द्रुमाणां विज्ञेयानित्यमुत्पवनेन तु ॥ ६ ॥ प्रोक्षणात्संहता
नांतु दारवाणां च तक्षणात् सिद्धार्थकानां कल्केन शृंगदंतमयस्य च ७ ॥ शुद्धि
श्च काचभांडानां केवलेन तथांभसा ॥ ८ ॥ विष्णुधर्मात्तरप्येवम् । ॥

ए करके होती है और पाणि क्या छेणे आदि बाजेयांकी शुद्धि अग्नि विषे तपाणे करके होती है
यद्वा पाणि क्या दक्षिण हत्थ करके अग्नि कर्मविषे शुद्धि है और वस्त्रकीयां दसीयां और दर्भ पवि
त्रभी दक्षिण हाथ विषे छेणे करके शुद्धि होती है ५ ॥ और गरम जल करके शुद्धि होती है धि
दयाई वाले पत्रांकी और वृक्षांकी शुद्धि नित्य वायु करके होती है ६ ॥ और आपसविषे मिलयां
होयां पात्रांकी सिंचणेंतें शुद्धि है और काष्ठ पात्रांकी शुद्धि छिलणेंतें होती है और तेलघृत आदि
पात्रांकी और शृंग पात्र और हस्तिदंत पात्रकी तिलांकी खलकरके होती है ७ ॥ और कच्चे जे पात्र
हैं तेन्हांकी शुद्धि केवल जल करके होती है ८ ॥ और विष्णुधर्मोत्तर विषे भी ऐसे जानणा

८६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० • ॥

(प्रश्न) जो प्रकीर्णक प्रकरणमें भविष्यपुराण का वचन है ॥ नीलीति नीलकरके रंगी होई धोती आदि वस्त्र को जेकर कोई ब्राह्मण अंग विषे धारे तां दिनरात्र वतके पीछे पंचगव्यके पीणे करके शुद्ध हुंदा है ॥ इस जग केवल नील करके हिरंगया होया जानना अथवा जिसमें नीलका लेश भी होवे सो भी त्यागना । जेकर नील लेश वालका भी त्याग है तो जिसमें थो डिंयांतदु नीलीयां हैं ऐसे धोती आदि वस्त्रां को लोक क्यो धारदे हैं । थोड़े मदिरा वाले जलका भी पीणेमें निषेध है (उत्तर) इसमें ऐसा विचार है कि जिसतरां योग करके विष अमृत होजां दा है और केवस्तुके योगते अमृत भी विष हुंदा है इसन्यायते और खोटे योग जो मृत्यु आदि

ननु प्रकीर्णकप्रकरणे भविष्यम् । नीलीरक्तं यदा वस्त्रं कश्चिद्विप्रस्तुधारयेत्
अहोरात्रोपितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यतीत्यत्र । केवल नीलीरक्तमेवाशुद्धं वा
नीलीलेशाक्तमपि द्वितीयपक्षे नीलतंतुसंवलितं शाट्यादि लोकैः कथंगृ
ह्यते नहि मद्यविन्दुमिलितं घटमितमपि जलगृह्यते ॥ अत्रोच्यते । यथा
हियोगादमृतायते विषं विषायते वाप्यमृतं हियोगत इत्यादिन्यायेन अयो
गे सुयोगोपि चेत्स्यात्तदानीमयोगनिहत्यैष सिद्धिं नोतीत्यादिन्यायेन च
शुभयोगवाहुल्येऽशुभयोगाल्पत्वेषु भवेव वस्तु जायते तथा च ॥ हरितादिर
कोर्णादिवस्त्रे नीलीलेशोपि दाडिमादिफलशुभरससंयोगात् देवपूजादौ तद्गृ
हणेन दोषः तथा ॥ नीलतंतुसंवलितं कार्पासशाट्यादि न दोषावहम् जले म
द्यविन्दुसंयोगदृष्टांतस्तु विषम एव तद्ग्रहणे दोषप्रतिपादकस्य सुरापान
स्य यो भांडेष्वपः पर्युपिताः पिबेत् शंखपुष्पाविपकं तु क्षीरं सतुपिवेत्त्र्यहमि
त्यादिबौधायनादिवचनस्य सद्भावात् अत्र तु तादृशवचनस्यानुपलंभादिति
प्रतिभाति परंतु रागांतराधिक्ये नीलीलेशाल्पत्व एवेदमिति ज्ञेयम् नीलप
ट्टं जलंतक्रे गोशालाम्लेच्छमंदिरमित्यादि विशेषस्तत्रैव बोध्यः ॥

तिनोंमे जेकर अमृत सिद्धयोगादि होण तां खोटायां को दूर करके शुभ योग सिद्धि दिंदे हैं ॥
इस न्यायते भी जानी दा है । कि शुभ वस्तु ज्यादा होवे और अशुभ थोड़ी होवे तो सो शुभ हि
जानणी । तैसा हि जेडे हरेजंगाली रंगके वस्त्र हैं तिनमें नील का संयोग थोड़ा है । और दाडि
मादिके शुभफलका संयोग बहुत है इसकके इना ऊर्ण वस्त्रांका पूजादि विषे धारणे का नि
षेध नहि जानना ॥ तैसेही कोई नीलतंदू वाली धोती आदिका भी धारणेमे दो
ष नहि ॥ और जो दृष्टांत किहा है मदिरा वालां सो इसके बराबर नहि क्योंकि उसमें वचन है
और इसमें नहि सो मूलमें लिखया है ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥ ८७

वामन पुराण विषे भी कहा है कि थिदयाई कर्के युक्त जो अशुद्ध पात्रादि तिनकी शुद्धि गरम जलकर्के वा बहुत गरम खल कर्के होती है और हस्तिदंतादि की तक्षणते होती है ॥ १ इसविषे भस्मयुक्त जल और मृत्तिका जल इनांका भी ग्रहण है जिनना पर्यंतमल और दुर्गधि न दूर हो वे तावत् काल पर्यंत संपूर्ण द्रव्य शुद्धि विषे मृत्तिका और जल देणे योग्य है पात्र विषे एह सा मान्य शुद्धि और ही स्मृति का वाक्य है २ । हस्ति दंत और अस्थि और शृंग इनकी शुद्धि जितने स्थान विषे अशुद्धता होवे तावन्मात्रके छिलणे कर्के कही है ॥ तैसे कहा है । मृण्मय जो पात्र है तिनकी शुद्धि फेर अग्नि विषे पकाणे कर्के कही है ॥ और तावेके पात्र और कलिके पात्र

वामनपुराणे सस्नेहानामथोष्णेनतिलकल्केनचापितत् नागदंतास्थिशृ
गानांतक्षणाच्छुद्धिरिष्यते १ सस्नेहानामुच्छिष्टस्नेहाद्युपलिप्तानामुष्णेनवा
रिणा तिलकल्केनवाशुद्धिः ॥ इदमपि भस्मोदकमृद्वाय्याद्युपलक्षणम् ॥ याव
न्नापैत्यमेध्याक्तोगन्धोलेपश्चतत्कृतः तावन्मृद्धारिचादेयं सर्वासुद्रव्यशुद्धि
प्सिविति २ सामान्यशुद्धौ स्मृत्यन्तरम् ॥ तक्षणं तावन्मात्रावयवापनयन
म् ॥ तथाच पुनः पाकेन भांडानां मृण्मयानां च मेध्यता औदम्बराणां चाम्लेन क्षा
रेण त्रपुसीसयोः १ भस्मांवाभिश्च कांस्यानां शुद्धिः प्लावोद्रवस्य च अमेध्या
कस्य मृतोयैः शुद्धिर्गन्धापकर्पणात् २ याज्ञवल्क्यः ॥ त्रपुसीसकताघ्राणां
क्षाराम्लोदकवारिभिः भस्माद्भिः कांस्थलोहानां शुद्धिः प्लावोद्रवस्य तु ॥ १ ॥
अर्थः क्षारोदकेन अम्लोदकेन वारिणाऽत्राप्युपघाततारतम्येन समस्ते
न व्यस्तेन वेति व्यवस्थापनीयम् ॥

और मिकेके पात्र तिनकी शुद्धि खटयाई वाले जलकर्के और ग्वारे जल कर्के कही है ॥ १ और कांस्य पात्रांकी शुद्धि भस्म संयुक्त जल कर्के कही है ॥ और द्रव जो हैं घृत तैलादि वस्तु तिनकी शुद्धि जितने तक दूर हो सकें उपरसे बगाएते तितनेते मलादिके दूर करणे कर्के होती है और अमेध्यता कर्के युक्त जो पात्र आदि तिनकी शुद्धि मृत्तिका और जल कर्के दुर्गधिके दूर करणते होती है २ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीका वचन है कली और सिका और ताम्रइनांके पात्रांकी शुद्धि क्षारे जल कर्के और खटयाई युक्त जल कर्के और कांस्य और लोहेके पात्रांकी भस्म और जल करके हो ती है ॥ १ इसविषे भी मलके बहुत थोड़ा होणेंते संपूर्ण क्षार आदि जलकर्के वा एक कर्के शुद्धिकी व्यवस्था जाननी ॥

८८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

ताम्रेति ताम्रपदतै एकजगा उत्पत्ति होणेतें पितल वालीवरतु और लोहेकाभी उपलक्षण जानणा जिसताम्रादि पात्रांविषें मलकासंयोग जिसवस्तुकरके दूरहोवे सोईतिसका शोधन कहाहै इत्यादि कसामान्य द्रव्य शुद्धिके करणे वालाहै॥इसकरके ताम्रआदि पात्रकी सामान्य शुद्धि मृत्तिका आदि करकेभी कहीहै नियमके अभाव होणेतें क्यापूर्वोक्तताम्रादि शुद्धि विषें कोईनियम नहि है॥तैसेमनुजीका वाक्यहै ताम्रऔर लोह औरकांस्य और पितल औरकालि औरसिका इनकी शुद्धि जैसेयोग्य होवे तैसे क्षार युक्त जल और खटयाई युक्त जल औरजल इनांकरके कहीहै १॥शुद्धिः स्थावइति द्रवजो द्रव्यहै घृतआदिसोकुता औरकाक आदि कर्के उच्छिष्टहोवे तिसकी शुद्धि सजातीय द्रव्य घृत आदि करके पात्रकों अतिपूर्ण करणा फेर बाहर घृतआदिके निरसणे ते जानणी यह शुद्धि प्रस्थपरिमाणते अधिककी होतीहै ॥औरतिसतें अल्पकात्यागकहा

ताम्रपदमत्रैकयोनित्वाद्गीतिकावृत्तलोहयोरुपलक्षणम् ॥ मलसंयोगजंत
जंयस्ययेनोपहन्यते तस्थतच्छोधनं प्रोक्तं सामान्यद्रव्यशुद्धिकृदित्यादिसा
मान्यशुद्धिरपिताम्रादिमृदादिकृताग्राह्या नियमाभावात्तथाचमनुःताम्रा
यःकांस्यरैत्यानां त्रपुणःसीसकस्यतु शौचं यथार्हं कर्तव्यं क्षाराम्लोदकवारि
भिरिति ॥ शुद्धिः स्थावइति ॥द्रवद्रव्यस्य घृतादेः श्वकाकाद्युपहतस्य स्थावः
स्थावनम् ॥संजार्तायेनद्रवद्रव्येणभांडस्यातिपूरणायावन्निरुसरणंशुद्धिः॥ए
तच्च प्रस्थपरिमाणधिकस्यैवतदल्पस्यतुत्यागएवंतिविज्ञानेश्वरः॥वह्नल्प
त्वव्यवस्थापिदेशकालादिनिबंधेनेति॥वौधायनोयथा ॥ देशकालंतथात्मा
नंद्रव्यंद्रव्यप्रयोजनम् उपपत्तिमवस्थांचज्ञात्वाशौचंप्रकल्पयेदिति ॥ १ ॥

है॥अवविज्ञानेश्वरकावाक्यहै बहुत औरथोडा तिसकी व्यवस्था देशकाल आदि निबंधनते जानणी अर्थात् जिसतरां बहुत शीत वाला देशजोहै अथवा माघमासादि काल इनुहांकी विषेनाहिं भी कहा होवे तथापि गरम जल करकेहि प्रक्षलनादि करणे औरहोर देश कालविषें गरम जलकी जगा भी ठंडे जलकरके ही पूर्वोक्त व्यवहार करणा औरथोडे धनवालेको बहुत द्रव्यका परित्याग नहि होसक्ता इसकरके उसने स्थावादि करके द्रव्य शुद्ध करलेणा औरबहुत धन वालेको थोडे द्रव्यके त्यागमें कोई कष्ट नहि तद उसने उसका त्यागहीकरणा यहआदि पदकांअर्थहै॥जैसेवौधायन ऋषिका वाक्यहै देश औरकाल औरआत्माकी स्वस्थता और द्रव्य औरद्रव्यका प्रयोजन औरसिद्धि औरअवस्था इनांको जाण करके शुद्धिकों कल्पनाकरे १

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० ॥ भा० ८९

जो द्रव क्या बगणे वाला द्रव्य जेकर कीट आदि करके युक्त होवे तां वस्त्र करके पात्र विषे पुणनेते शुद्ध होनाहै ॥ तेमे मनु जीका वाक्यहै ॥ कि संपूर्ण द्रव्योंकी शुद्धि वस्त्र करके पुणनेते कहीहै ॥ और अशुद्धपात्र स्थित जो मधु घृत आदि तिसकी शुद्धि और ही पात्र विषे स्थापन करणेत होतीहै ॥ और शूद्र आदि के हत्यने ग्रहण कीतेजो पुडे आदि तिनाकी शुद्धि फेर अग्निविषे पकाणेत होतीहै ॥ वौधायन और शंख जी कहंतहैं ॥ मधु जल क्या शर्वत और दुग्ध और तिना के विकार यह संपूर्ण पात्रते होगही पात्र विषे स्थापन करके करके शुद्ध कहंतहैं ॥ घृत करके तले होये जो पदार्थ अशुद्ध होण तिन्हाका फेर पकाणा ही शुद्धि है ॥ ऐसे ही स्नेहोंकी क्या तैलादि की जानणी और रसांकी शुद्धि स्नेहकी न्यई जानणी ॥ ब्रह्मपुराण विषे भी ऐसे हि किहाहै अब विष्णुस्मृति विषे भी कहंतहै ॥ अतिशय करके अशु

द्रवद्रव्यंकीटाद्युपहतंचेतदावस्त्रांतरितपात्रप्रक्षेपेणशोध्यम् । तथाचमनुः । द्रवाणांचैवसर्वेषांशुद्धिरुत्पवनंरुमृतामिति ॥ उत्पवनंपुणनाइति भाषितम् । अधमपात्रस्थमधुघृतादेः पात्रांतरस्थापनेन शूद्रादिहस्तादूगृहीतानामपूपादानांपुनःपाकेनशुद्धिरिति ॥ वौधायनशंखौयथा मधूदकंपयस्तद्विकारश्चपात्रावपात्रांतरानयनेनशुद्धाइति ॥ अभ्यवहार्याणांघृतेनाभिघारितानांपुनःपचनमेवंस्नेहानांस्नेहवद्रसानामितिच ॥ अभ्यवहार्याणांभक्ष्याणाम्ब्रह्मपुराणेष्वेवम् ॥ विष्णुरुमृतावपि अत्यंतोपहतसर्वलोहभाण्डंवह्नीप्रक्षिप्तंशुद्धेत् । मणिमयमव्जंसप्तरात्रंमहीप्निखननेन शृंगदंतास्थिमयंसंतक्षणेनदारवंमृण्मयंजह्यात् । सोवर्णराजताव्जमणिमयानांनिर्लेपानामग्निः शुद्धिः ॥ अश्ममयानांचमसानांग्रहाणांचदारुस्रक्स्रवानामुष्णेनांभसा ॥

इ जो संपूर्ण लोह पात्र सो अग्नि विषे पाणे करके शुद्ध होताहै ॥ मणि मय और जलते उत्पन्न हुंदे जो कौडी आदि सो सत्तगात्र पृथ्वी विषे दबणे करके शुद्ध होतेहैं ॥ शृंग और दंत और अस्थि विकार इनकी शुद्धि छिलणे करके है और काष्ठ पात्र और मृत् पात्रकों त्यागे ॥ सोवर्ण और रूप्या और शंख आदि और मणि मय एह मलते रहित होणतों तिनकी शुद्धि जलकर्के कहीहै ॥ और पाषाण पात्र और यज्ञविषे चमस पात्र और ग्रह और दारु और स्रक् और स्रवा इनकी शुद्धि गरम जल कर्के कहीहै

१० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

और यज्ञ कर्म विषे यज्ञपात्रांकी शुद्धि हथ्य कर्के मलनेतैहै और क्षौम वस्त्र और शृंग और अस्थि दंत इन पात्रों की शुद्धि कौल डोडैयां को पीसके मलने ते वाजलके साथ मलनेतैहै॥और मृगांके रोमां कर्के जो वस्त्रहै और ताम्र और कालि और सिका इनकी शुद्धिखटयाई वालि जल कर्केहै॥और कांस्यलोहपात्रकी शुद्धि भस्मकर्के कहीहै और काष्ठपात्रकी शुद्धिलिलणेकर्के कहीहै और मृण्मयपात्रांकी क्या मिट्टीके पात्रांकीशुद्धि फेर अग्निविषे पकाणेकरके कहीहै।अब गारुडपुराण विषे विशेष कहाहै॥ जो कांस्य पात्र मदिराकरके नहि युक्त होवेतिसकी शुद्धिभस्म कर्केहै ॥ और मूत्र मदिरा कर्के स्पर्श होवे तांताप कर्के लेप कर्केहै॥ अर्थात् पहले मृत्तिका का लेपन करणा पीछे तपाणा ऐसातीन बार करणसे होतीहै ॥ १ ॥ और जो कांस्य पात्र गौकर्के

यज्ञपात्राणांयज्ञकर्मणिपाणिनासंमार्जनेन क्षौमाणांशृंगास्थिदंतमयानां चपद्माक्षैः मृगलोमिकानांताम्रत्रपुसीसानामम्लोदकेन भस्मनाकांस्यलो हयोःतक्षणेनदारवाणांपुनः पाकेनमृण्मयानाम्पद्माक्षैः पिष्ट्वासंमार्दि तैःसजलैर्वा॥गारुडेविशेषः॥भस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यसुरयायन्नलिप्यते॥मूत्रेण सुरयारुष्टोमुच्यतेतापलेपनैः ॥१॥ गवाघ्रातानिकांस्यानिशूद्रोच्छिष्टानि यानिच काकश्चानहृतान्येवशुद्ध्यतेदशमासकैरिति॥याज्ञवल्क्यस्मृतावापि सौवर्णराजतावृजानामूर्ध्वपत्रग्रहाश्मनाम् ॥ शाकरज्जुमूलफलवासोविदल चर्मणाम् १ तक्षणैर्दारुशृंगास्थ्नांगोवालैः फलसंभवाम् ॥ मार्जनंयज्ञपा त्राणांपाणिनायज्ञकर्मणि २ अमेध्याक्तस्यस्मृतोयैः शुचिर्गंधापकर्पणात् वाकूशस्तमम्बुनिर्णिक्तमज्ञातंचसदाशुचि ॥ ३ ॥

सिंघे होये और शूद्र कर्के उच्छिष्ट होवे और काक और कुत्ता इन कर्के उच्छिष्ट होवे तोदशमा सके पीछे भस्म कर्के शुद्धि कहीहै ॥ २ ॥ याज्ञवल्क्यस्मृति विषे कहाहै॥सुवर्ण और रजित औ र शंख और ऊपरलेजो वृक्षांके पत्र और ग्रह और अश्म शाकं रज्जु मूल फल वंशपत्र और चर्म इनकी शुद्धिजलकर्के कहीहै ॥ १ ॥ दारु शृंगअस्थि इनकी छिलणेसे होतीहै॥और जो फलते उ त्पन्नहे तिन की शुद्धि गोवालां कर्के और यज्ञ विषे यज्ञपात्रांकी शुद्धि हथ्य कर्के शुद्धकरनेते क हीहै ॥ २ ॥ अमेध्यकर्के क्या विष्टादिकर्के युक्तजो वस्तुतिसकी शुद्धि मृत्तिका और जलकर्के दुर्गाधिके दूर करणेतै कहीहै और वाणि कर्के शुद्धि और जल कर्के और अज्ञात कर्के सभकी शुद्धि कहीहै अर्थात् यह वस्तु शुद्धहे ऐसे ब्राह्मणसे कहा करवाणासे शुद्धि होतीहै ॥ ३ ॥

देहते उत्पन्न होयेजो मिज और वीर्य आदि मलां सोअमेध्यकहीयांहे ॥ तिसविषे मनुजी कहते है ॥ चर्वी और वीर्य और रुधिर ॥ और मिज और मूत्र और विष्टा और कर्णमल और नख और श्लेष्म और अश्रु और नेत्रमल स्वेदएह वारां मलांकहीयांहे ॥ १ ॥ तेसे देवलजीकावाक्यहै ॥ मानुष अस्थिक्या मनुष्यकोहड्डी और शव और विष्टा और वीर्य और मूत्र और ऋतु और मिज और स्वेद और अश्रु और नेत्रमल और श्लेष्म और मद्य एहअमेध्यकहीहै ॥ २ ॥ इनकरके युक्त होण जेकर सुवर्ण रजतादि तांमृतिका जल करके दुर्गधिके दूर करणें शुद्ध होतेहै । गौतम जीकावाक्यहै ॥ अमेध्य लिप्त की शुद्धि लेपगंधके दूरकरणे करके कहीहै नाभितें ऊपर परपुरुष की अमेध्य केस्पर्श विषे स्नान कोदेवल ऋषि कहताहै ॥ मनुष्यकी अस्थि और चर्वी और विष्टा

देहोद्भवावसाशुक्रादयोमलाअमेध्यशब्देनव्यवह्रियंते ॥ तत्रमनुः ॥ वसा शुक्रमसृङ्मज्जामूत्रविट्कर्णविड्मखाः ॥ श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेमलाःस्मृताः ॥ १ ॥ तथाहिदेवलः ॥ मानुपास्थिशवंविष्टारितोमूत्रार्तवंवसा । स्वेदाश्रुदूषिकाश्लेष्ममद्यंचामेध्यमुच्यते ॥ २ ॥ एतदुपहितंस्वर्णरजतादिमृदातोयेन गंधापकर्पणादितिलेपोपलक्षणं॥तदपनयनेनशुद्धिः । गौतमः । लेपगन्धापकर्पणैः शौचममेध्यलितस्येतिनाभेरुर्ध्वं ॥ परामेध्यस्पर्शस्नानमाहदेवलः । मानुपास्थिवसांविष्टामार्तवंमूत्रैरतसी । मज्जानंशाणितंस्पृष्टापरस्यस्नानमाचरेदिति ॥ स्वकीयामेध्यस्पर्शैस्तुसएव तान्येवस्वानिर्गम्यप्रक्षाल्याचम्यशुद्ध्यतीति ॥ स्मृत्यंतरे ॥ ऊर्ध्वनाभेःकरौमुक्तायदंगमुपहन्यते ॥ तत्रस्नानमधस्तात्तुप्रक्ष्याल्पाचम्यशुद्ध्यतीति ॥ पूर्वोक्तप्रकारेणशोधितमपिवस्तुशुद्धमिदंनवेति कस्यचचित्संशये वाक्शस्तं शुद्धमस्त्विदमिति ॥ ब्राह्मणवाचा राजवाचावाशस्तं शुद्धंभवतीत्यर्थः ॥

और ऋतु और मूत्रवीर्य और मिज और रुधिर एह परपुरुषके स्पर्श करे तांस्नान करके शुद्धि कहीहै इति ॥ आपणी अमेध्यके स्पर्श विषे देवल हा कहताहै सो पूर्वोक्त आपणे होण तिनको स्पर्श करे तद जलके साथ धो करके जलको स्पर्श करे और आचमन करे तांशुद्ध होताहै ॥ और हीस्मृति विषे कहाहै ॥ नाभि ऊपर हत्थातें विना होर अंग अमेध्य करके युक्त होवें तां स्नान करे और जेकर नाभितें हेठां होवे तांधोएकर आचमन करके शुद्ध होताहै ॥ पूर्वोक्तप्रकारकरके शुद्ध भी वस्तुहै ॥ एह शुद्धहै वानहि ऐसे संसयके होयां होयां जेकर ब्राह्मणकी वाणी करके अथवा राजाकी वाणी कर्के शुभकही होवेतां शुद्ध होतीहै ॥

९२ ॥ श्रीरणवीरकारित्त प्रायाश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० ० भा०

पूर्वजो जलकरके धोणेतें शुद्धिकहीहै । सो शुद्धि जेकर धोणेको सहारे और जेकर नामहारे तां मिचणे करकेहि जानणी । कुत्तेआदि करके स्पर्श होयारजेकर अज्ञातहै तां कर्म विषे तिसके अंगीकारविषे दोषनहि ॥ विष्णुधर्मोत्तरविषे फलपत्र आदिकां कीशुद्धिकहीहै गोवाला करके फल पत्राकी शुद्धि और आस्थियां कीशुद्धि शृंग कीन्याउ ॥ गूद और गुड और लवण और कुरुंभा और केसर और ऊर्ण और कपोस इनांकीझुणकणेतें शुद्धि कहीहै ॥ गरुडपुगण विषे किहाहै । कि आमंति । कच्चा मांस और घृत और क्षौद्र मखीर और तैलादि स्नेह एउ जेकर नीचके हाथसे बनाए होएभीहै परंतु जद उनके पात्रमें अपने पात्रमें स्थापन करीये तांशुद्धजा

अम्बुनिर्णिक्तं उक्तादन्यत्सर्वम् ॥ अम्बुना जलेन निर्णिक्तं सत् शुद्धयति एतच्च क्षालनसहस्यैव । तदसहस्यतु प्रोक्षणेन शुद्धिः । त्वादिस्पृष्टमपि अज्ञातंचेत दाकर्मणि तस्वीकारेन दोषः । विष्णुधर्मोत्तरे फलपत्रादीनां शुद्धिः गोवालैः फलपत्राणामस्थानां स्याच्छृंगवत् तथा निर्यासानां गुडानां चलवणानां तथैव च कुसुंभककुमाणां च उर्णा कर्पासयोस्तथा छंपातुकथिता शुद्धिरित्याह भगवान्यमः छोपात् झुणकणा इति भाषितात् । गरुडं आममांसं घृतक्षौद्रं स्नेहाश्चान्तकसंभवाः अन्यभांडस्थिताः सर्वे निष्क्रांताः शुचयः स्मृताः ॥ १ ॥ तैलादिघृतमाध्वीकं पण्यद्रव्यद्रवस्तथा ॥ अंतकसंभवा अंतकैः संपादिताः तथा शुचय इत्यर्थः । विष्णुधर्मोत्तरे भूमिष्ठमुदकं शुद्धं तथैव च शिलागतं वर्णगंधरसैर्दुर्गैर्वा र्जितं यदि तद्भवत् ॥ १ ॥ शुद्धं नदीगतं तोयं सर्व एव तथाऽऽकराः ॥ शुद्धं प्रसारितं पण्यं शुद्धावश्वौजयोन्मुखौ ॥ २ ॥ अग्निपराणेष्वेवम् । विष्णुस्मृता अपि तक्षणेन पारवाणां गोवालैः फलसंभवानां प्रोक्षणेन संहतानामुत्थयनेन द्रवद्रव्याणाम् ॥ पाराशर्ये रोमचर्म तथा मांसमाविकर्त्रितयं शुचिततोऽन्यदशुचिज्ञेयं न ग्राह्यं शुभकर्मसु १

नणे ॥ १ ॥ तैलादीति पूर्ववत् जानणा । और विष्णुधर्मोत्तर पुगणमेंभो कहाहै । किजो जलपृथ्वी विषे स्थितहै सो सभ शुद्ध जानणा और जोशिला विषे होवे सोभी शुद्धहै । परंतु दुष्ट रंग और गंध और रस इनां करके रहित होवे वा इन करके यक होवे तद जब तक अपनी प्रकृतिमें नहि आवे तब तक शुद्ध नहि जानणा ॥ १ ॥ और नदी विषे जो जलहै सो सभ शुद्धहै और खाना कीयां वस्तु सभ शुद्धहैं ॥ होर पूर्ववत् जानणा ॥ २ ॥ अग्नि पुगण विषे भी ऐसा लिखाहै । और विष्णु स्मृति विषेभी एही प्रसंग है ॥ पराशरजी के धर्म शास्त्रमें किहाहै कि भेडकीआं त्रय वस्तु शुभ हैं सो मूलमें स्पष्टहैं ॥

कि गुडादि जो गन्नेयां दे विकार बहुत धरके अंदर रक्खे होये होन और अशुद्ध हो जान तां दरवा जेबिच अग्नि जलाकर तापदेणे ते शुद्ध हुंदेहैं । इसी तर्ही मधु लवणादिकी वार्ता जानणी नि त्यक्या दो चार वारी रोज रोज मलको हटा कर अग्निदेणे करके शुद्ध हुंदेहैं होर विषय सुग महिहै ॥ फेर भी विष्णु जी कहतहैं ॥ भूमीति । पृथ्वी विषे स्थित जो जलहै सो शुद्धहै जिस जगा गौकी तृषा दूर होसके सो जल कैसाहै कि विष्टादि करके युक्त भी होवे और शिलाग तक्या शिलाविषे स्थित जो जलहै सो भी गोतृप्ति योग्य होवे तां शुद्ध जानणा । १॥ मृतेति । जिस खूँमें श्वानादि मृतहोवैं और सो खूँआ अत्यंत करके उपहतहै क्या मुडदेदे अंग जि

गुडादीनामिक्षुविकाराणां प्रभूतानां गृहनिहितानां द्वार्यग्निदानेन वा सर्वमधु लवणानां च (शौचं नित्यमनद्रतः) अतद्रतो महतः प्रयत्नात् । अमेध्याद्यप नयनपूर्वनित्यं बहुवारमग्निदानादेरित्यर्थः ॥ पुनः स एवाहा भूमिष्ठमुदकं शु द्धं वै तृण्यं यत्र गां भवेत् अवाप्तचेदमेध्याद्येन तद्वदेव शिलागतम् ॥ १ मृतपंच नखात्कूपादत्यंतोपहता तथा अपः समुद्धरेत् सर्वाः शेषं शस्त्रेण शोधयेत् २ वह्निप्रज्वालनं कुर्यात्कूपे पक्वेष्टकान्विते ॥ पंचगव्यं न्यसेत्पश्चान्नवतायस मुद्गवे ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ शुचिगोतृप्तिकृत्तायं प्रकृतिस्थं महीगतम् ॥ तथा मांसं च चांडालक्रव्यादादिनिपातितम् ॥ १ ॥ एकस्यागोस्तृप्तिजन कंजलं शुचि आचमनादियोग्यम् । प्रकृतिस्थं दुर्गंधादिसंपर्कशून्यं मही गतमिति अमेध्याद्युपहितभूमिस्थमपिशुचीत्यर्थः । कूपादेरुद्धृतं पयः शुद्धमे वेत्याह । १ ।

समें डिगेदेहैं तिसते सारा जल निकाल देवे और पीछे शस्त्र जो कही आदि तिस करके शो धे क्या कुछ मृत्तिकाभी बाहर निकाले ॥ २ ॥ और जेकर पक्षियां इटांका बणया होवेतां अ ग्नि भी तिसमें जगावे और पीछे नवीन जलके होयां होयां पंचगव्य पावे ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं ॥ शुचीति गो तृप्तिके करणे वाला जल पवित्रहै परंतु जो निर्मल होवे और पृ थ्वी विषे स्थित होवे तैसेहि मांस चांडालके हाथसे डिगेया होवे कुत्तेसे लुडायया होया पृथ्वी विषे स्थित होवे और दुर्गंधादिसैं रहित होवे सो शुद्धहै ॥ १ ॥

१४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥

देवल जी कहते हैं ॥ जेडे जल शुद्ध पात्र करके दिकाले होण सो खूयेते बाहर आए भी शुद्ध जानणे॥जो जल गूणसे निकाले हाये एक रात्र पात्रविषे ही रहण सो पहले शुद्ध ही थे त आपि अशुद्ध जानणे अर्थात् स्नानादि क्रियाके योग्यवो नहिहैं १ ॥ चांडालादिकके वनोया जो कूप तिस विषे जल शुद्ध है तैसेशातातपकावाक्यहै ॥ चांडालांकरके कीत्ता जोकूप और मेनु नाडा वापी आदिक तिस विषे स्नान और जल पान करणे करके प्रायश्चित्त नहि कहा॥१॥ और जो कहाहे कि प्राजापत्यव्रत करके शुद्ध होताहै सो चांडालादि आपणधन करके वनवाये तां प्राजापत्य व्रत कहाहै १ ॥चांडालपदकरके औरभीनीच जातीका ग्रहण करणा और कुत्ते आदि मुख करके स्पर्श होया मृगमांसादि सो नहि उच्छिष्ट किंतु शुद्ध हीहैं ॥ अब

देवलः उद्धृताश्चापिशुद्ध्यंतिशुद्धैः पात्रैः समुद्धृताः ॥ एकरात्रोपिता आप स्त्याज्याः शुद्धा अपि स्वयम् १ चांडालादिकारितेपिकूपादौ तच्छुद्धम् ॥ तथा च शातातपः ॥ अथैरपि कृते कूपे सेतौ वाप्यादिके तथा ॥ तत्र स्नात्वा च पीत्वा च प्रायश्चित्तं न विद्यते इति ॥ १ ॥ यत्तु अन्त्यजैः स्वनिताः कूपास्तडागावाप्येव च ॥ अपुस्नात्वा च पीत्वा च प्राजापत्येन शुद्ध्यतीति १ तत्स्वद्रव्यादिभिश्चांडालादिकृतं बोध्यम् ॥ चांडालपदमत्र पुष्कसाद्युपलक्षणम् ॥ क्रव्यादः श्वादिः निपातितं एतद्वस्तरुष्टं न तूच्छिष्टम् ॥ जलाशयेष्वथाल्पे पुरुषावरं पुंसंधरे कूपवत्कथिता शुद्धिर्महत्सु च न दूषणम् २ नित्यं शुद्धैः कारुहस्तः पण्यवच्च प्रसारितम् ॥ जलशुद्धिप्रपंचस्तु प्रकीर्णकप्रकरणे ज्ञेयः ॥ विष्णुधर्मोत्तरप्राणिशुद्धिः ॥ शुद्धं प्रसारितं पण्यं शुद्धावश्वौ जयोन्मुखौ ॥ मुखवर्जितृगौः शुद्धा मार्जाराश्चाशुगाच्छुचिः ॥ १ ॥ जयोन्मुखौ अश्वौ युद्धाद्योगं चालयमानौ च र्मरज्ज्यादिमंवीतावपितदारूढानां जलपानादौ न निषिद्धावित्यर्थः ॥ आशुगादिवचनादित्यर्थः ॥

और कहते हैं कि लाटे जां जलाशय तिनो विषे और वृक्षांविषे अथवा जो जलाशय स्थिर है तिनो विषे हे पृथिवी कूपकीन्याई शुद्धि कहीहै और महाजलाशयांविषे नहि दूषण सो नित्य शुद्ध है ॥ २ ॥ कारीगरका हस्त और वेचण वास्ते प्रसारित जो वस्तु सो शुद्ध है और विपश्ये करके जल की शुद्धि प्रकीर्णकप्रकरणविषे जानणी ॥ विष्णुधर्मोत्तरविषे प्राणि शुद्धि कहीदीहै ॥ पण्य वस्तु जो वेचण योग्य हठी विषे खलरीहै वेचण वास्ते सो शुद्ध है और जयंक मन्मुख अश्वशुद्ध है अर्थात् चर्म रज्जु करके युक्तभा होत तदभातिन्हां ऊपर आरूढ जो मनुष्य तिनोके जलादि पीणे आदि विषे दोषनहि और विष्णुवायुके स्पर्शने शुद्ध है ॥ १ ॥

शय्येति शय्या और भार्या और शिशु और वस्त्र और यज्ञोपवीत और गडबा यह जिसके होण तिसकोंहि शुद्ध कहने और यज्ञोपवीत आपणे कर्के बनाया होवे तां शुद्ध है होर कर्के वणाए होन तां नहि ॥ २ ॥ नारीणामिति ॥ स्त्रियांका मुख विषय भोग विषे शुद्ध है और दुग्ध के चोणे विषे व च्छेयांका मुख शुद्ध है और वृक्ष के फल विषे पक्षिका मुख शुद्ध है और सकार विषे कुत्तेका मुख शुद्ध है ॥ ३ ॥ अवयाज्ञवल्क्यजीका वाक्य है सूर्यकीयां किरणा वा वागां और अग्नि और गृह आदि स्थान विषे रजकया धूलि है और वृक्ष आदि लाया और पृथ्वी और वायु और विप्रुपः क्या वेद के उच्चारण करणे विषे जो मुखने विदुहैं वा कुहीड विषे जो विदु एह चांडालादि स्पर्शकों प्राप्त होण तदभी शुद्ध हैं और स्पर्श विषे मक्षिका और चोणे विषे वच्छा एह संपूर्ण शुद्ध कह

शय्याभार्याशिशुर्वस्त्रमुपवीतकमंडलु स्वात्मनः कथितं शुद्धं न परस्य कथं चन ॥ २ ॥ नारीणांचैव वत्सानां शकुनीनां शूनां मुखम् रतौ प्रस्त्रवणे वृक्षे मृगयायांसदा शुचि ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यः रश्मिरग्नीरजश्छायागौरश्चावमु धानिलः विप्रो गोमाक्षिकास्पर्शे वत्सः प्रस्त्रवणेशुचिः ॥ १ ॥ रश्मयः सूर्यादिः रजोगृहादिसम्मार्जनभवं । नाजादिसंभवम् । तथा च स्मृत्यन्तरं । श्वकाको पृथ्वरोल्लूकसूकरग्राम्यपक्षिणाम् अजाविरेणुसंस्पर्शादायुर्लक्ष्मीश्च हीयत इति ॥ विप्रो नाहारजाः एते चांडादिरुष्टा अपि सूर्यशुद्धा एव ननु वृक्ष च्छायायाः शुचित्वे एकच्छायां समाश्रित्येत्यादिना कथंचाण्डालेन सह च्छा या समाश्रयणे दोष इति चेत् महावस्थानमेव दृपकंगृहाण प्रस्त्रवणे उधोगत दुग्धत्याजतम् वत्सपदेन वालादयोऽपि बाध्य इति व्याख्यातारः वालैरनुपरि क्रांतं स्त्रीभिराचरितं च यत् अविज्ञातं च यात्किंचिन्नित्यं शुद्धमिति स्थिति रिति देवलवचनात् ॥ अनुपरिक्रांतं परि वष्टभोजनादेः स्पर्शनम् ॥

ण ॥ १ ॥ और अजा क्या बकरी आदिकी धूलि अणुदह १ तमें कहा है अन्य स्मृति विषे कृत्ता और काक और उष्ट्र और गर्दभ और उल्लू और सूकर और ग्राम पक्षि इनके स्पर्शने और व कर्ग और भेड इनकी धूलिके स्पर्शने आयु और लक्ष्मी नष्ट होना है १ नन्विनि शंकायां वृक्षला यांके शुद्ध होयां होयां कैसे कहा है एक लाया विषे चांडालादिके साथ स्थित होणने दापहे जे कर ऐसे कहें (उत्तर) तां वृक्ष के हेटां साथ मिल कर्के स्थित होणें विषे दोषका अगोकार है औ र वच्छे कर्के वाल आदि भी जानणे और वालकां कर्के जो भोजन आदि स्पर्श है और स्त्रियां कर्के आचरित है और अविज्ञात जो नहि देखया सों संपूर्ण शुद्ध है देवलजीके वाक्यने ॥

१६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥

मूत्र पुरीषके त्यागकों करके लेप गंध को दूर करके बुद्धिमान । उद्धत जल करके शौच करे और मृत्ति का करके शौचकरे ॥ २ ॥ मलके त्याग विषे नखांकी शुद्धि कों कर्के त्रय वार मृत्ति का करके लिंगकी शुद्धि कहीहै ॥ और शुद्धि कामना वाला पादों विषे क्रम करके त्रय त्रय वार मृत्ति का लावे रोज रोज ॥ ३ ॥ और मूत्र पुरीषके त्याग कों करके और स्नान कों करके और जेकर भोजन की करने की इच्छा वाला होवे और भोजन खाकरके और निच्छां करके क्या छिकां मार कर्के और शयन करणेत उठकर और जल को पीणेत पीछे और जलके प्रवाह को लंघके और रथेत उत्तर के और वस्त्रांनू धारके इन संपूर्ण विषे आचमन करे अर्थात् दसां १० स्थानोंमे आचम करे तां परम शुद्धि कहीहै ॥ यह शुद्धि गृहस्थीयां को कहीहै ॥ और इससे दूणा शौच ब्रह्मचारि को कहाहै ॥ और वानप्रस्थीयांको

कृत्वामूत्रपुरीषंचलेपगंधापहंबुधः उद्धृतेनाम्भसाशौचंमृदाशौचंसमाचरेत् ॥ २ ॥ मेहनेमृत्तिकाज्ञेयाःकृत्वातृनखशोधनम् । तिस्रास्तिस्रःपादयोश्चशौचकामस्तुनित्यदा ॥ ३ ॥ कृत्वामूत्रपुरीषंवास्त्रात्वाभोक्तुमनास्तथा भुक्त्वाक्षुत्वातथासुप्त्वापीत्वाचाम्भोवगाह्यच रथमाक्रम्यवाचामेद्वासोविपरिधायच ॥ ४ ॥ शौचमेतद्गृहस्थानांद्विगुणंब्रह्मचारिणाम् ॥ ॥ त्रिगुणंतुवनस्थानां यतीनांचचतुर्गुणम् ॥ ५ ॥ सिद्धार्थकैःशुद्धिमृदाहरंतिलोम्नांतथाभार्गववंशमुख्य । सर्वस्यजीवस्यविशुद्धिरुक्तामृदाचतायनविगन्धलेपात् ॥ ६ ॥ अग्निपुराणोप्येवम् ॥ वामनपुराणे ॥ शुचिर्भिक्षंकारुहस्तःपण्यंयोपिन्मुखंतथा रथ्यागतमविज्ञातंदासवर्गेणयत्कृतम् ॥ १ ॥ भिक्षाणांसमूहोभैक्षम्ब्रह्मचार्यादिसगृहीतंअनाचांतस्त्रिपुरुषहस्तग्रहणेनमलिनप्रदेशपर्यटनादिना वाऽशुद्धंनभवति ॥ केशकीटावपन्नंतुतावन्याज्यमेवेति । कारुहस्तसहचारादज्ञातम् ॥

त्रयगुणा कहाहै । और यतीयांकी चार गुणा अधिक गृहस्थीयों कहाहै ॥ ५ ॥ हे भृगुवंश विषे मुख्य रोमांकी शुद्धि सेति सरो करके कही ॥ और संपूर्ण पुरुषांकी शुद्धि जल कर्के कही और मृत्तिका करके दुर्गंधिके दूर करणेतें ॥ ६ ॥ अग्नि पुराण विषे भी ऐसे कहाहै ॥ अब वामन पुराण विषे कहतेहैं ॥ भिक्षा अन्न का जो समूहहै । ब्रह्मचारि आदिकने जोग्रहण कीताहै । सो अन्न आचमनसे रहित जां पुरुष और स्त्री पुरुषहैं इनके हत्यसे पकडने करके और मलिन देश विषे जाणे करके अशुद्ध नाहिं होता ॥ होर अर्थ स्पष्टहै ॥ १ ॥ जितना अन्न केशकीटादि करके युक्त होवे तावत् अन्न त्यागणे योग्यहै ॥ एह कारुहस्तकी सहचर्य ताते जानणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥ ९७

कारिगर जो रंग कारक धोवा वस्त्र धोणे वाला और रसोईआ और तरखाण इनका हथ्य सूत क आदि विषे भी वस्त्र शोधन आदि आपणे आपणे कर्म विषे शुद्ध कहाहै ॥ और पण्य क्या जो वेचणै योग्य यव गोधूमादि सों नीचां कर्के इधर उदर ले जाणे कर्के स्पर्श होया २ भी शुद्धहै ॥ और स्त्रीका मुख और गलीयां विषे स्थित जो कर्दम आदि और जो परोक्षहैं स्त्रीवर आदिके कर्म एह संपूर्ण शुद्ध कहेहै पू० प० टी० ॥ वाक् इति व्यभिचारादि कर्के होये जो दोष सो बहुत वर्षके व्यवधान होयां २ सभाविये बुद्धिमाना पुरुषांके वचन कर्के शुद्ध कहेहैं ॥ और अनेक तृण आदि कर्के युक्त जो तृण आदिसो श्लेष्म आदि कर्के युक्त होबे स्थान तिसके मध्य विषे स्थित जो वस्तु वा पुरुष सोभी शुद्ध कहेहैं ॥ और बाल वृद्ध आदि

कारूणां रजकचैलधावकसूपकारतक्षकादीनांहस्तः सुतकादावपि वस्त्रशो धनादितत्साध्यकर्मणि सदा शुचिरेव ज्ञेयः । पण्यपणार्हयवगोधूमादिविक्रयार्थमितस्ततो नीचैर्नीयमानम् । वाक्प्रशस्तंचिरातीतमनेकांतरितं लघु चेष्टितं बालवृद्धानां बालस्य तु मुखं शुचि २ चिरातीतं बहुवर्षव्यवहितं व्यभिचारजादिदूषणम् ॥ वाक्प्रशस्तं सभ्यविद्वज्जनादिवाचा वचनेन प्रशस्तं शुद्धं भवति लघुश्लेष्मादिदुष्टं तृणादि अनेकैस्तृणादिभिरंतरितं तन्मध्यपाति शुद्धमित्यर्थः ॥ कर्मण्यागारशालासुस्तनं धयसुताः स्त्रियः वाग्विप्रपोद्भिर्जेन्द्राणां संतत्याश्चाम्बुविन्दवः ३ संतत्याः स्वपुत्रादेः स्नानशौचोद्भवा जलकाणिकाः कर्मणिवर्तमानस्य लघ्ना अपि शुद्धा एव भवन्तीत्यर्थः ॥ अमेध्याक्तस्य मृत्तोयैः शुद्धिर्गन्धापकर्षणात् ॥ अन्येषामपि द्रव्याणां शुद्धिर्गन्धापहारतः ४ अमेध्येति चिरातीतस्यापि अमेध्याक्तस्योपहतितारतम्येन मृदा तोयेन समस्ते न व्यस्तेन वा शुद्धिः बहुवचनमाद्यर्थे तेन भस्मादिग्रहणम् ॥

की कर्म क्या चेष्टा शुद्ध कहीहै और बालक का मुख शुद्ध कहाहै २ ॥ कर्मणीति ॥ स्नानांके विषे दुग्ध पीणे वालेहैं पुत्र जिन्हांके ऐसीयां स्त्रीयां गृहांके कार्या विषे शुद्धहैं ॥ और ब्राह्मणा के मुखतें वेदके उच्चारण विषे जो बिंदुहैं सोभी शुद्ध कहेहैं और संतती जो पुत्रादि तिसके स्नान विषे शौचादिते होये जो बिंदु सों कर्मविषे युक्त जो पुरुषहे तिसको स्पर्श विषे शुद्ध कहायाहैं ॥ ३ ॥ और जो पवित्रता कर्के युक्तहै और बहुत दिन की अमेध्यता कर्के जो युक्तहै तिसकी शुद्धि जेते दुर्गंधि दूर होवे तैसेही मृत्तिका और जल कर्के कहिहै ४ ॥ और मृत्तिका जल के रञ्जणे कर्के पंतु दूषणके बाधे घाटे को जाण कर जल मृत्तिकाके दोनोका वा एक का प्रचार जानणा और (तोयैः) इस बहुवचनतें भस्मआदिका ग्रहणहै ॥ और अन्यजों द्रव्यहैं स्निग्धकी शुद्धि दुर्गंधि के दूरकरणतें होतीहै ॥

काकेति काक और कुत्ता इनां कर्के उच्छिष्टजो अन्न तिसकों त्यागे क्या नग्रहण करे और जे कर घृत इनां कर्के उच्छिष्ट होवे तां तिसकों सुवर्णके साथ जलकों स्पर्श कर्के सिंचे और पीछे अग्नि विषे तप्त कर्के ग्रहण करे किंतु न त्यागे ॥ ५ ॥ गौके चोण विषे वच्छा शुद्ध है और फलके पातन विषे पक्षि शुद्ध है और भारके वाहन विषे गर्दभ श्रेष्ठ है और मृगके ग्रहण करण विषे कुन्नेका मुख शुद्ध है ॥ ६ ॥ और रजस्वला स्त्री और कुत्ता और नगपुरुष और पुजारी और अश्वे वसायी क्या चांडाल और शवके चुकने वाला इनको स्पर्श करे तां शुद्धिके वास्ते स्नान को करे पूजक इस जगा वाम मार्ग कर्के भैवारदिका पूजक जाणना अथवा क्षुद्र देवता जो काली वीरादि तिनका तिनका पूजक जाणना ॥ ७ ॥ और रुधिर आदि कर्के युक्त जो आस्थियांतिनांको स्पर्श करे तां सहित वस्त्रांके स्नानतें शुद्ध होता है और शुष्क अस्थियांको स्पर्श करे

काकश्चानोपलीढंतुअन्नमाज्यन्तुनत्यजेत् सुवर्णाद्भिःसमभ्युक्ष्यहुताशेनु प्रतापयेत् ५ तेनकाकाद्युच्छिष्टमन्नंत्यजेत् आज्यघृतमेतादृशंनत्यजेत् किं तुसुवर्णाद्भिःसुवर्णजलैःसमभ्युक्ष्यसंप्रोक्ष्यहुताशेऽग्नौतापयेदित्यर्थः मातुः प्रस्रवणेवत्सःशकुनिःफलपातने गर्दभोभारवाहित्वेश्वामृगग्रहणेशुचिः६ उदक्याःश्वाननग्रांश्चपूजकांत्यावसायिनः स्पृष्ट्वास्त्रार्थातशौचार्थातथैव मृतहारिणः ॥ ७ ॥ सस्नेहमस्थिसंस्पृश्यसवासाःस्नानमाचरेत् आचम्ये वतुनिःस्नेहंगामालभ्यार्कमीक्ष्यच ॥ ८ ॥ नलंघयेत्पुरीषासृक्संकीर्णोद मनानिच संकीर्णममेध्यादिलिततृणादि ॥ गृहादुच्छिष्टविष्मूत्रेपादांभां सिक्षिपेद्वहिः ॥ ९ ॥पंचपिंडाननुद्धृत्यनस्त्रायात्परवारिणि स्त्रार्थातदेवखा तेपुसरोद्दसर्त्तिसुच ॥ १० ॥ देवतापितृसच्छास्त्रयज्ञवेदादिनिंदकैः कृत्वातुस्पर्शमालापंशुद्व्यतेर्कविलोकनात् ॥ ११ ॥

तां आचमन कर्के गौकों स्पर्श करे सूर्यका दर्शन करे तां शुद्ध होता है ॥ ८ ॥ और पुरीष और रुधिर और पुरीषादि कर्के दुष्ट जो तृण आदि और मुखतें जो उगलाछया है तिनको उलंघन नाकरे और उच्छिष्ट और विष्टा और मूत्र और पादांके शौचका जलइनांको गृहतें बाहर त्यागे और पर पुरुष कर्के बनायाहोया जो तला आदि तिस विषे पंच मृतकाके पिंडाको बाहर निकालनेतें विना स्नान नाकरे और देव खात जो तीर्थहैं और सरोवर और हृद और नदीइनां विषे स्नान करे तां पंच पिंडके निकालनेतें विनाभी स्नानमै दोषनहि ॥ १० ॥ देवता और पितृ और श्रेष्ठशास्त्र और यज्ञ और वेद आदि इनां की निंदा करते जो पुरुष तिनका साथ जो स्पर्श करता है और संभाषण कतांहे सो सूर्य के दर्शन करके शुद्ध होता है ॥ ११ ॥

और अभक्ष्य भक्षण प्रलक्षण विषे कहाहै लक्षण जिनका ऐसे जो अभोज्यहैं और सूतिका स्त्री और नपुंसक और विला और चूहा और कुत्ता और कुकुर और पतित कथा पापी और जिसके माता पिता की खबर नहि होवे और नग्न और चांडालादि जो नीचे हैं तिनके साथ स्पर्श संभाषणा दिकरे तां सूर्य के दर्शन करके शुद्ध होताहै॥ यह पूर्व श्लोक करके संबंध करणा १२ ॥ इसमें इतना विचारहै कि चांडालादिके स्पर्श का यह प्रायश्चित्त नहि किंतु दर्शन और संभाषण काहै॥ और स्पर्श विषे पूर्वोक्त सम झण्णा॥ अथवा (दर्शमालापं) ऐसा पाठ इस जगा जानणा अथवा स्पर्श और दर्श यथा योग्य लगाणा यदिति ॥ जां पुरुष नित्य कर्म संध्या और नैमित्तिक श्राद्धादि को त्यागताहै तिसके अन्नको जो भक्षण करताहै सो त्रय दिनके उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै १३ और ज्योतिषी जो सिद्धांतों नहि और मलाह और वेश्या और वैद्य और जो मरण

अभोज्याः सूतिकापंडमार्जाराखुश्वकुकुटाः पतितापविद्धनग्नाश्च चाण्डालाद्यधमाश्च ये ॥ १२ ॥ अभोज्यलक्षणान्यभक्ष्यभक्षणप्रकरणे प्रोक्तानिततएवानुसंधेयानि ये अभोज्या ये च सूतिकाद्यास्तत्स्पर्शनादौ सत्यर्कविलोकनाच्छुद्धिरिति पूर्वैरेव संबन्धः ॥ यो नित्यकर्महानिचकुर्व्यान्नैमित्तिकस्य च भुक्त्वा त्रितस्य शुद्धये तत्रिरात्रोपोषितो नरः ॥ १३ ॥ गणकस्य निपादस्य गणिकाभिपजस्य च कदर्यस्यापिशुद्धये तत्रिरात्रोपोषितो नरः ॥ १४ ॥ एकैनान्नं फलं द्वाभ्यां त्रिभिः कंदो न दुष्यति ॥ १५ ॥ ब्रह्मपुराणेऽपि सिद्धार्थकानां कल्केन घर्षणेनापि वा पुनः साधूनां चैव जपत उपघातं च संसदा १६ उपघातं स्निग्धास्थ्यादिविघटितं वस्त्रादिसिद्धार्थकल्केन ॥ पात्रं चैतु घर्षणेन स्थाने चैत्साधुजपतः साधुसंसदा च शुद्धयतीत्यर्थः ॥ शुद्धद्रव्यं कारुदत्तं पण्यं योऽपि न्मुखं तथा स्थ्यागतमविज्ञातं दासवर्गेऽपु सत्क्रिया ॥ १७ ॥

समयविषे भोकिसे तांड नहि देता तिनके अन्नको जो भक्षण करताहै सो त्रय दिनके उपवास करके शुद्ध होताहै १४ ॥ जल १ अग्नि २ लवण ३ एह त्रय वस्तु चौंका करण वालीयां हैं इना विघों इक करके अन्न नहि दूषित होताहै । और दो करके फल और तिन्ना करके कंद कचालु आदि दूषित नाहि हुंदा ॥ १५ ॥ अब ब्रह्म पुराण विषे कहाहै स्निग्ध अस्थि करके स्पर्श वस्त्र आदि होवे तां सरो कीखल करके शुद्ध होताहै और जेकर पात्र होवे तां घसाणे करके शुद्ध होताहै और स्थान होवे तां महात्मा पुरुषों के जप करणे करके शुद्ध होताहै ॥ और महात्मा की सभा करके शुद्ध होताहै १६ शुद्धमिति । इसका अर्थ पूर्व कहाहै वामन पुराण जी के वाक्य विषे ॥ १७ ॥

१०० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

वाद्य जो नगारा आदि अन्न करके युक्त और अंदरूँ बहुत बाल जिसके और बंधने कर के अंदरूँ अशुद्धि जिसके सो चिरकालके व्यवधान करके शुद्ध है ॥ १८ ॥ और कर्मके अंत विषे गृहशाला शुद्ध है । और स्त्रीके दोनो स्तन शुद्ध है और बकरी और भेड़ यह दोनोंमुखते शुद्ध है और गौके बछेका मुख शुद्ध है ॥ १९ ॥ और माताका मलीन वस्त्र आदि अशुद्ध है तथापि सो शुद्ध कहा है और पक्षीके मुख करके ढिगयानो फल सो भी शुद्ध है और जो पुरुष इच्छाते विना दृष्ट भिक्षा को भक्षण करता है सो त्रय

वाद्यंशस्तंचिरातीतमन्नेनाम्लचितंलघु अंतः प्रभूतवालंचवद्वांतराविचेष्टितम् १८ अंतरित्यदिविशेषणद्वयंवाद्यस्य अन्नेनाम्लचितंचूर्णादिनासंसक्तमपिशुद्धंभवतीत्यर्थः इदंचवद्धपुस्तकाद्युपलक्षणंतुल्यन्यायात् । कर्मान्तागारशालाचस्तनद्वयंशुचिस्त्रियः अजाश्वौमुखतोमेध्यौगोवत्सस्यतथाननम् ॥ १९ मातुः प्रच्छादितंमेध्यंशकुनेःफलपातनम् ॥ उपवासास्त्रिरात्रंतुदुष्टभिक्षाशिनोभवेत् ॥ २० ॥ मातुः प्रच्छादितंमलिनवस्त्रादिमेध्यंशुद्धमित्यर्थः अज्ञानादज्ञानपूर्वतुतदोपापगमेनच २१ तदोपापगमेनेति अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तेन उदक्यामपिनग्नांचसूतकांत्यावसायिनः स्पृष्टवास्त्रायास्तुशौचार्यतथैवमृतहारिणः २२ ॥ सर्वस्पृष्टवास्थिसस्त्रेहंस्नानाच्छुध्यतिमानवः । आचम्यैवतुनिः स्नेहंगामालभ्यार्कमीक्ष्याच ॥ २३ नलंघयेत्पुंरापासृक्संकीर्णोद्धमनानिच नोयानादौविकालेषु प्राप्तंनिन्देत्कदाचन २४ नोद्धहेज्जनविद्विष्टंवारहीनास्तथास्त्रियः ॥ विकालेषुयात्रादिभिन्नकालेषुदेशोपद्रवादिनिमित्तेयानादौगर्दभःदौप्राप्तंननिन्देदित्यर्थः जनविद्विष्टंपुरुषं व्याघ्रादिकं यापतिपुत्रहीनाःस्त्रियश्चस्कंधोपरिनोद्धहेत् नोयानादिविकालेष्वतिनुसाधीयान्

दिन उपवास व्रत करे ॥ २० ॥ और जेकर उच्छा करके भक्षण करेतां अभक्ष भक्षण प्रायश्चित्त करके शुद्ध होता है ॥ २१ उदक्या इति इसका अर्थ पीछे वामन पुराणके वाक्य वि कहा है २२ २३ नोयानादाविति यात्रा आदिते भिन्न कालविषे देशविषे उपद्रव आदि निमित्त होयां जा गर्दभ आदि यान विषे जो आटा आदि वस्तु प्राप्त है तिसको कदीभी ननिन्दे और पुरुषोंके साथ जो द्वेष करणे वाला पुरुष वा व्याघ्रादि तिसनू और तैसे पति पुत्रते रहि जो स्त्रियां हैं तिनानूं रूंदो परिक्या मोंढे उपर नचुके ॥ २४ ॥

रजरवला स्त्री को देखकरके और संबंधियां करके जो त्याग्य है और जो पतित है ॥ २५ ॥ और शठ और जो अधर्म विषे स्थित है ॥ अर्थात् स्वकीयधर्म जा पूजनादि तिनका त्याग्य है ॥ और निंदन कर्म विषे स्थित है ॥ अर्थात् मदिरा पानादि विषे जा स्थित है और त्याग्ये जो यह है और चुमा आदि और शवके वाहक कच्चा चूकण वाला और जो पर स्त्री विषे गत है ॥ २६ ॥ तिनका अपराधि पापके दूकरण वास्ते बुद्धि नानों नेस्त्रानों करवाक सूर्य का दर्शन करवाणे योग्य है ॥ और विधर्मरथादियों का प्रायश्चित्त साधारण एक ण विषे अथवा प्रकीर्ण विषे देखना ॥ जा अभक्ष भक्षण करता है और पापंडो और पिडाल और चूना और कुता और कुत्ता ॥ २७ ॥ और पतिन और जिसके माता पिता को खबर नाहे और चांडाल और शवके चूकणवाला तिनको जो स्पर्श करता है और ते रजरवला स्त्री और मांसूकर इनको जो स्पर्श करता है सांसाहितवस्त्रांके स्नान करके सूर्यका दर्शन करे तां पुद्बधेता है ॥

अब लोकवतथोदक्यां संस्कारके गते तं शठं २५ विधर्मस्थ विकर्मस्थावज्यां अन्त्यावसायिनः ॥ मृतनिर्यातकाश्चैव परदाररताश्च ये ॥ २६ ॥ विधर्मस्थादीनां तु साधारणादौ शुद्धिर्ना ॥ एतदेव हि कर्तव्यं प्राज्ञैः शोधनमात्मनः ॥ अभोज्यभिक्षुपापपुण्यमार्जितं शुद्धं कृत्वा ॥ २७ ॥ पतिनापविद्धचण्डालं मृतहारां च धर्मपितु संस्पृश्य शुद्धिं प्रोक्ष्य तादृश्यं यमसूकरान् ॥ २८ ॥ एतदेव सूर्यदर्शनमेव न दंडं च मूषिकाशे च दपितान्पुण्यांश्चैव ॥ यस्य चानुदिनं हानिर्गृहे निवस्य कर्मणः ॥ २९ ॥ स तु द्वापरांतं यत्नः कालवशाशो न राधमः नित्यस्य कर्मणो हानिं न कर्तुं शक्यं ॥ ३० ॥ तस्मात्पुनरप्येव करणेन च केवलं बंधो भवति ॥ तस्मात् नित्यकर्मणोऽकरणेन च न संसारमद्वयं चैव केवलं बंधो भवति ॥ अतस्तद्विनिर्मुक्तयेति ॥ ३१ ॥ तस्मात्पुनरप्येव करणेन च केवलं बंधो भवति ॥ तस्मात् नित्यकर्मणोऽकरणेन च न संसारमद्वयं चैव केवलं बंधो भवति ॥ अतस्तद्विनिर्मुक्तयेति ॥ ३१ ॥

२८ और केदा को और चूहा और अशौच तिस करके दूत जो पुष्ट है और घर विषे दिन दिन प्रति जो नित्यकर्म को त्यागता है तिनको स्पर्श करेतां सूर्य का दर्शन करके शुद्ध होता है ॥ २९ ॥ सो पुरुष ब्रह्मकर्मनेष्ट है ॥ और पाप को भक्षण करता है पुरुषां विषे अधम है तिसकारणों नित्यकर्म की हानी कदाचित् ना करे ॥ ३० ॥ तिन नित्य कर्म को त्यागे तां केवल मरण और जन्म करके युक्त जो पुरुष संसार है तिस विषे केवल बंधन रूप है तिस कारणों नित्यकर्म मंही हानी को कभी ना करे ॥ अश्विषु धर्मांतर विषे भी कहा है ॥ कि ओवदरिवन भूगुपा त विषे मरते हैं और अग्नि विषे और कुक्षत्र विषे अनशन करके और गंगा विषे जलकरके जिनोने आत्म घात कीता है और जो पतित है और पिजला करके और शस्त्र बरते जो मृत हो ये है ॥ इनका अशौच नहि करणा ॥ १ ॥

१०२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा ० ॥

और यज्ञ विषे और वनविषे जो युक्त है और ब्रह्मचारि और राजा के पाठ विषे जो दीक्षित हैं ॥ और जो राजा को आज्ञा करण गले है सो अशौच भागि रहि कहो ॥ इसमें यह अभिप्राय है कि जो अने पुण्यात्मा होवे और अति पापी होवे इनका अशौच नहि हुंदा और जो यज्ञादि विषे स्थित हैं तिनको क्रिमिके मरणे निमित्त अशौच नहि हुंदा यह स्पर्श के प्रसंगसे अशौच का प्रसंग है ॥ ऐ से मृत्यु को प्राप्त होया जो स्वजातीका वापर जातिका मनुष्य तिसको इच्छा करके जो स्पर्श करता है सो पुरुष सहित वस्त्रांके स्नान को करे और घृतको भक्षण करे तां शुद्ध होता है ॥ ३ ॥ मैथुन इति ॥ स्त्रीके साथ चतुर्थ दिनके स्नान विषे जो मैथुन करता है सो तात्काल स्नान करके शुद्ध कहा है ॥ और चौथे दिने आगे मैथुन करतां शौचकर्के हि शुद्धि होता है और चिपाके धूमको जो सिंहता है ॥ सो तात्काल स्नान करके शुद्ध होता है ॥ सूतकमें और विशेष कहत हैं ॥ जन

सत्रिब्रतिब्रह्मचरिनुपपाठकदीक्षिताः ॥ नाशौचभाजः कथिताराजाज्ञाकारिणश्च ये ॥ २ ॥ अनुगम्येच्छया प्रेतं ज्ञातिमज्ञातिमेव वा । सवासाजलमासुत्य घृतं प्राशय विशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ मैथुने कटधूमे च मद्यः स्नानं विधीयते ॥ मैथुनमत्र स्नातायां चतुर्थ्यादिदिनीयमन्यत्र मलोत्सर्गवच्छौचं विधेयमित्यर्थः कटधूमे चिताधूमं आघ्राते सतीति शेषः ॥ जननमरणयोरनिर्दशाहे न भवति शौचविधिर्न विप्रयोज्यम् ॥ न भवति च प्रतिग्रहे पुदोषो द्विपदचतुष्पदधान्यदक्षणासु ॥ ४ ॥ सूतकी ब्राह्मणो यजमानेनासावा शौचीति बुद्धान्त्याज्यः ॥ भोजनं विना प्रतिग्रहे न दोष इति तात्पर्यार्थः ॥ न विप्रयोज्यं प्रतिपेयेनेत्यर्थः ॥ विष्णुस्मृतावपि ॥ सर्वणस्याशौचे द्विजो भुक्तः स्ववंतीमासाद्य तन्निमग्नस्त्रिरधमर्षं जप्त्वा तीर्थं गायत्र्यष्टशतं जपेत् ॥ १ ॥

नेति ॥ जन्म मरणके होयां १० दश दिनते उं कितने कार्यमें शौच विधि और निषेध नहि और प्रतिग्रह जो दान लेणा है तिसका भी दोष नहि सो कार्य दिखाई दे है द्विपदेति द्विपदजों मनुष्य तिनकी चिकित्सा विषे और चतुष्पदजो पशु तिनके लेणे देणे विषे और धान्यके दक्षिणाके लेणे देणे विषे अथवा द्विपददासादि और चतुष्पद गवादि और धान्य और दक्षिणा इनां विषे सूतकका निषेधादि नहि ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट करके कीता है कि सूतको ब्राह्मणको भोजनादिव्यवहार में नहि ल्याइणा ॥ और प्रतिग्रहादिमें दोष नहि जानणा ॥ ४ ॥ विष्णुस्मृतिमें कहा है ॥ तुल्य वर्ण के अशौचमें ब्राह्मण भोजन करता नदीमें जाके जलमें निमग्न होकर त्रय बार अघमर्षण सूतको जप कर पीछे कनारे बैठ कर १०८ एक माला गायत्रीकी जपें ॥ १ ॥

और क्षत्रियके अशौचमें इसीको उपवासके साथकरे और वैश्यके अशौचमें इसीको वनत्रयके साथ करे और ब्राह्मण के अशौचमें राजा और वैश्य भोजनकरे तांनदीमें जाके ५०० पजरुउ गायत्रीका जपकरे शुद्धिकेवास्ते वैश्यजोहे क्षत्रिकेअशौचविषे भोजनकरे तांएकसौआठ १८८ बारगायत्रीकाजपकरे औरशूद्रके अशौच विषे ब्राह्मण आदिवर्ण अन्न भक्षण करेतां राजा पत्य वनकरे और द्विजके अशौचविषे शूद्रअन्नको भक्षण करेतां स्नान करके शुद्धहोनाह ओरशूद्रके अशौचविषे शूद्र जेकर अन्नभक्षणकरे तांस्नानकरके पंचगव्यभक्षणकरे॥भूमि न बदरे वनविषे भृगुपात अर्थात् टोणविच छालमारणा ओरअग्नि ओरकुल नभक्षण करणा तुरुन्त

क्षत्रियाशौचेब्राह्मणस्वेतदेवोपोषितः कृत्वाविशुद्ध्यति॥ वैश्याशौचेब्राह्मणस्त्रिरात्रोपोषितश्च। ब्राह्मणाशौचेराजन्योवैश्यश्चस्रवन्ती मासाद्यगायत्रोशतपंचकंजपेत्॥ वैश्यश्चक्षत्रियाशौचेगायत्र्यष्टशतंजपेत्। शूद्राशौचेद्विजोभुक्ताप्राजापत्यंसमाचरेत् शूद्रश्चद्विजाशौचेस्नानमाचरेत् शूद्रश्चशूद्राशौचेस्नानपंचगव्यंपिवेत् भृगवग्न्यनशनांबुसंग्रामविद्युन्नृपहतानांशौचम् नराज्ञांराजकर्मणि नव्रतिनांब्रेत नसत्रिणांसत्रे नकारूणांकारुकर्मणि नराज्ञाज्ञाकारिणां तदिच्छायाम् नदंयप्रतिष्ठाविवाहयोः नदेशविभ्रमे आपद्यपिचकट्यायां आत्मत्यागिनःपतिताश्च नाशौचोदकभाजः पतितस्य दासीमृताह्नियदाघटमपवर्जयेत् ॥ उद्वंधनमृतस्य यः पाशच्छिद्यात्सतप्तः

च्छेणशुद्ध्यति ॥

विषे ओरजल प्रवाह ओरपुद्ध ओरविजली ओरराजातिनाकरके जोमृत्युको प्राप्तहोये तिनको अशौचता नहिकहीहे और राजयांको राजकर्मविषे अशौच नहि औरवनके कर्मण वालोकोव्रतविषे औरयज्ञके करणवालोंको यज्ञविषे और कर्मिणको स्वकर्मविषे औरराजाको आज्ञा करण वालेको तिसकी आज्ञाविषे और देवप्रतिष्ठा विवाहविषे और पर्वविषे औरसामग्री जो उनें और देशके भ्रमन विषे ओर आपदाविषे कष्टदशाविषे और जो आत्मघाति ओरजो पतितहैं सोसंपूर्ण अशुद्धिके भागि नहि कहे औरजो शुभस्थानोंमे मृत्युहोयेहैं तिनकी सुगति हो णेतें औरदुष्ट स्थानोंविषे जोमृत्युहोयेहैं तिनकोअशौच नहि दुर्गति होणेतें

१०२ ॥ श्रीरणवीरकौरित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भ० ॥

अर्थात् जेकर यह मृत होणां इनके मरण निमित्त अशोच नहि रह्यवणा और जो पतिनहे और प्रायश्चित्त को नहि इच्छा करे । तब दासी उसको मृत तुल्य बणणिके लिये घड़ेको फोड़े और जो कियेका सगोत्र मृत होयाहे तां तिसके निमित्त दूरस्तेमें घड़ेको फोड़े और जो फांसी लगाहै उसकी फाईं को कटे यह स्नान तप्त कछल कर्के शुद्ध होतेहैं ॥ द्विज जेकर शूद्र प्रेत के पीछे जाय शशानमें तां नदी को प्राप्त होके आठ हजार ८००० गायत्री का अथवा एक हजार आठ १००८ से अधिक गायत्री का जप करे और द्विज जेकर द्विज प्रेतके पीछे जावे तब आठ सौ गायत्री अथवा आठ १०८ से अधिक १०८ सौ गायत्री जपे और शूद्र जेकर प्रेतके पीछे शशानविषे जावे तां स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहे और चिता धूमके सेवन विषे सब

पतितस्य प्रायश्चित्तानिच्छेत्थिदादासीघटमपवर्जयेत् मृततुल्यतापादनाय घटस्फोट प्रकारेण घटस्फोटयेत् यश्च मृतदिने सगोत्रोघटमपवर्जयेत् ॥ उद्धेत् अन्यत्स्पृष्टम् ॥ द्विजः शूद्रप्रेतस्यानुगमनं कृत्वा स्वयंतीमासाद्यगा यत्यष्टनहस्रं जपेत् ॥ द्विजप्रेतस्याष्टशतम् ॥ शूद्रः प्रेतानुगमनं कृत्वा स्नानमाचरेत् ॥ चिताधूमसेवने सर्वे वर्णाः स्नानमाचरेयुः ॥ मैथुने वपने दुःस्वप्ने वमनविरेकयोश्चरनश्चुक्रम्नीषि हते च शयनस्थो स्फुट्वा रजस्वला चंडाल धूमांश्च भक्षवर्जं पंचनखं शयं तदस्थि सखं सर्वेपेतेषु स्नात्वा पूर्णवस्त्रं नाप्रक्षालितं विभृयात् क्षुत्वा स्नात्वा भुत्वा अपः पीत्वा नव्यवासोवि परिधाय रथ्यामाक्रम्य च मूत्रपूरीपं कृत्वा नश्वरं च स्फुट्वा चामेत् चांडालम्लेच्छसंभाषणे च नाभेरधस्तात्प्रवाहपुत्र कायिकैर्मलैः ॥

दणं स्नानकर्के शुद्ध होतेहैं ॥ और कहतेहे मैथुनउति ॥ मैथुनके बीतयां और मुंडन के होयां और दुःस्वप्न के होयां और वमनके होयां और दस्तों के होयां और दण्डा क खत बनायां और शवके स्पर्श होयां और रजस्वला के चांडालके धूमके स्पर्श होयां ओ सह सल्लकीते लेकर जो पंचनख भक्षहैं इनते बिना जो पंचनख श्वानादि तिनका मुडदा वा गिल्लीहड्डी इनका स्पर्श होयां सहित वस्त्रोंके स्नानकर्के ॥ और छिक मारके स्नानकरे भोजन कर्के जल पीके नवीन वस्त्र पहनके मलीनगलीमें जाके मूत्र बिष्टा रागके पुरुषकी सुकोहड्डी को स्पर्श कर्के और चांडाल म्लेच्छ के साथ वातां कर्के आचमन करे और नाभिके हेठ और वाहु विषे देहकी मलके स्पर्श होयां होयां ॥

॥ श्रीरसवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी०भा० ॥ १०५

और सुरामय कर्के स्पर्श होयां तिनां अंगाको मृत्तिका जल साथ धोके पीछे स्नान कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ और पूर्वोक्त वस्तुओंका नेत्रों विषे स्पर्श हावेतां उपवास कर्के स्नान करे पंचगव्य पान कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ आचार्य और आपणे पढाणे वाला और माता पिता और गुरु इन प्रेतों को ब्रतों जेकर दाह करे तां ब्रतें भ्रष्ट नहिं हुंदा ॥ १ ॥ और ब्रह्मचारी तिलांजलि को नदेंवे ब्रत को समाप्ति पर्यंत और ब्रत को समाप्ति तें पीछे तिलांजलि को देकर ३५ दिनके ब्रत कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ २ ॥ ज्ञानमिति ॥ ज्ञान और तप और अग्नि और निराहार और मृत्तिका और मन और जल इनांका सेवणा ॥ और वायु और कर्म और सूर्य और काल एह सब

सुराभिर्मयैश्चोपहतो मृत्तयैः प्रक्षाल्य तदंगं स्नानेन च क्षुप्युपहतस्तूपोष्य स्नात्वा पंचगव्येन शुद्ध्यतीति ॥ पुनः स एव । आचार्यस्वमुपाध्यायं पितरं मातरं गुरुम् निर्हृत्य तु ब्रती त्रेतास्रवतेन वियुज्यते १ आदिष्टी नोदकं कुर्यादा ब्रतस्य समापनात् । समाप्ते रुदकं कृत्वा त्रिरात्रेणैव शुद्ध्यति २ आदिष्टी ब्रह्मचारी उदकं तिलांजलि न कुर्यात् । ब्रत समाप्ति पर्यन्तमिदं ब्रत समाप्त्यनंतरं तिलांजलि दत्त्वा त्रिरात्र ब्रतं कृत्वा शुद्ध्यति ॥ ज्ञानं तपो गिराहारो मृन्मनो वार्यु पार्जनम् वायु कर्म कालाच शुद्धेः कर्त्तृणि देहिनाम् ३ सर्वे पामेव शौचा नामर्थ शौचं परस्मृताम् ॥ यथैशुचिः सहिशुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः ४ ॥ अर्थ शौचं न्यायोपार्जनेन भवतीति भावः ॥ क्षांत्या शुद्ध्यन्ति विद्वांसो ज्ञानेनाकार्यकारिणः ॥ प्रच्छन्नपापा जप्येन तपसा वेदवित्तमाः ५ मृत्तयैः शुद्ध्यन्ते शौच्यनदीवेगेन शुद्ध्यन्ति रजसास्त्रीमनोदुष्टाः सन्यसेन हि ज्योत्तमः ॥ ६ ॥

पुरुषों की शुद्धि करण वाले कहे हैं ॥ ३ ॥ और संपूर्ण शुद्धियां विषे अर्थ शुद्धि श्रेष्ठ है । जो अर्थ विषे नीति कर्के द्रव्यके उपार्जन विषे शुद्ध है सोहि शुद्ध कहा है ॥ और नहि मृत्तिका जल कर्के शुद्ध शुद्ध कहा है ॥ ४ ॥ क्षयति । सहिष्णुता कर्के विद्वान् शुद्ध होते हैं ॥ और जो नहि कर्म को कर्के सो ज्ञान कर्के शुद्ध होते हैं ॥ और उपया होया है पाप जिनांका सो जप कर्के शुद्ध होते हैं ॥ और वेद केवेला तप कर्के शुद्ध होते हैं ॥ ५ ॥ शुद्धकरणे योग्य जो वस्तु हैं सो मृत्तिका और जल कर्के शुद्ध होती हैं ॥ और नदी प्रवाह केवेग कर्के शुद्ध होती है और मन कर्के दुष्ट जो स्त्री है सो क्रतु कर्के शुद्ध होती है ॥ और धारण त्याग कर्के शुद्ध है ॥ ६ ॥

१०६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी०भा०

और शरीर के अंग जल करके शुद्ध होते हैं । और सत्य वाक्य करके मन और वाणी शुद्ध होती है । और भूतात्मा जो चित है सो विद्या और तप करके शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान करके शुद्ध होती है । एह अशौच विधि देह धारियों को निर्णय करके कही है ॥ ७ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीका वचन है ॥ वक्री और अश्वका मुख शुद्ध है ॥ और गौका मुख शुद्ध नहि कहा और पुरुषते होये जो वसादि मलां सो भी शुद्ध नहि और पंथा जो मार्ग हैं सो रात्रि विषे चंद्रमा कियों किरणा और वायु करके और दिन विषे सूर्य कियों किरणा और वायु करके शुद्ध होते हैं ॥ १ ॥ और मुख कियों विंदु और आचमन के विंदु शुद्ध हैं ॥ मुख और दंता विषे प्राप्त होये जो श्मश्रु तिसकों मुखतें बाहर कडणेतें हि शुद्ध है ॥ २ ॥ और मुख के विंदु और श्लेष्म और अश्रु विंदु इन करके पुरुष अशुद्ध नहि हुंदा जेकर अंग विषे नहि डिगण ॥ और यह अंग विषे डिगण तां अंग अंग अशुद्ध कहते हैं ॥ तैसे गौतम जीका

अद्विर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति ॥ विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ॥ ७ ॥ एष शौचविधिः प्रोक्तः शरीरस्य विनिर्णयः ॥ याज्ञवल्क्यः
अजाश्वयोर्मुखं मेध्यं न गोर्न न रजामलाः ॥ पन्थानश्च विशुद्ध्यन्ति सोमसूर्यांशुमारुतैः ॥ १ ॥ नरजावसादयो मलाः रात्रौ सोमांशुमारुताभ्यां दिवा सूर्यांशुमारुताभ्यां मार्गाः शुद्ध्यन्ति मुखजाविप्रुपो मेध्यास्तथाचमनविन्दवः श्मश्रुचास्यगतं दंतसक्तं त्यक्त्वा ततः शुचिः ॥ २ ॥ मुखजाविप्रुपः श्लेष्माश्रुविन्दवस्तैरुच्छिष्टो न भवति एतच्चांगे निपतनाभावो बोध्यम् ॥ तथा च गौतमः न मुखे विप्रुपः उच्छिष्टं कुर्वन्ति न चेदंगे निपतन्तीति ॥ आचमनविन्दवः पादादौ पतिता अपि नोच्छिष्टं कुर्वन्ति आस्यगतं मुखे प्रविष्टमपि श्मश्रुदन्तलग्नमन्नादि च स्वयंगलितं त्यक्त्वा शुचिनोच्छिष्टं करोति दंतसक्तं तु दन्तवदेव ज्ञेयम् ॥ दन्ताश्लिष्टं तु दंतवदन्यत्र जिह्वाभिमर्शनादिति गौतमस्मृतेः

वाक्य है जेकर मुख के विंदु शरीर के अंग विषे न डिगण तां अशुद्ध नहि करतीयां ॥ पूर्व लाही अर्थ स्पष्ट करके कहीदा है ॥ आचमेति ॥ आचमन के विंदु आदि अंग विषे पतित होन तां अशुद्धि को नहि करतीयां ॥ और मुख विषे प्रवेश होइ श्मश्रु तथा दाढी और दंता विषे स्थित जो अन्नादि सो आपहि अंदर लगें बाहर त्यागिये तां अशुद्धि को नहि करते क्योंकि जो दंता विषे लगा है सो दंता की न्याई जाणना ॥ सो कहते ॥ गौतमस्मृति ॥ जो दंता विषे स्थित है ॥ सो दंता की न्याई जानना बिना जिह्वा के साथ स्पर्शते ॥ अर्थात् जिह्वा कर्के स्पष्ट होण तां मुख को जूठे कर दीया है ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ १०७

कैसा कहतेहैं । कि दंतातें भिन्न होया जो अन्न तिसको अंदर निगले तां आचमन कर्के शुद्ध होताहै । तांबूल भक्षण विषे विशेषकहतेहैं । शातातपःशुषिर्जा । तांबूल और फल तिनाको भक्षण कर्के जेकर शेषरहे तां दंता विषे स्थित होयके स्पर्श विषे अशुद्धता नहिं कहो ॥ १ ॥ ऊर्ध्व मिति नाभिते ऊपर सब इंद्रिया पवित्र कहियाहैं सो अशुद्धिको नहिं कर्तिया । और जो नाभिते हेठहैं इंद्रियां सो अपवित्रहैं और देहते दूर होया जो संपूर्ण मैल सो अशुद्ध कहाहै ॥ २ ॥ मक्षिका इति मक्षिका और विंदू और छाया और गौ और अश्व और सूर्य कीयां किरणा ॥ और धूलि और पृथ्वी और वायु और अग्नि और विडाल यह सदा शुद्ध कहेहैं ॥ ३ ॥ और द्रव्यहै हृत्थ विषे जिसके सो कदाचित् अपवित्र कर्के स्पर्श होवे तां तिस द्रव्यको त्यागके आ

दंतच्युतमन्नादिनिगलित्वाचमेदितिकेचित् ॥ तांबूलेविशेषमाहशातातपः तांबूलेचफलेचैवभुक्तास्नेहावशिष्टके दंतलग्नस्यसंस्पर्शेनोच्छिष्टोभवतिद्विजः १ ऊर्ध्वनाभेर्यानिखानितानिमेध्यानिनिर्दिशेत् ॥ यान्यधस्तादमेध्यानिदेहाच्चैवच्युतामलाः २ मक्षिकाविप्रुषःछायागौरश्वःसूर्यरश्मयः ॥ ३ ॥ रजोभूर्वायुरग्निश्चमार्जारश्चसदाशुचिः ॥ ३ ॥ उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टोद्रव्यहस्तःकथंचन ॥ अनिधायैवतद्द्रव्यमाचांतःशुचितामियात् ४ याज्ञवल्क्यः ॥ स्नात्वापीत्वाक्षुतेसुप्तेभुक्कारथ्योपसर्पणे । आचान्तापुनराचामेद्वासेविपरिधायच १ आचान्तःपुनराचामेत्द्विराचामेदित्यर्थः ॥ अत्रचकारोरोदनाध्ययनारंभाल्पानृतभाषणादिसमुच्चायकः ॥ वसिष्ठोपि ॥ सुप्त्वाभुक्ताक्षुत्वास्नात्वापीत्वारुदित्वाचाचांतःपुनराचामेदिति ॥ तथाचमनः ॥ सुप्त्वाक्षुत्वाचभुक्ताचष्टीवित्त्वोक्त्वाचानृतवचः पीत्वापोध्येष्यमाणस्यआचामेत्प्रयतोपिसन्निति ॥ भोक्ष्यमाणस्तुप्रयतोपिद्विशचामेत् ॥

चमनकों कर्के शुद्धिको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ अवयाज्ञवल्क्यजीका वाक्यहै । स्नानकर्के और जल पान कर्के और छिकांमार कर्के और शयन कर्के और भोजन खाके और गलिया विषे भ्रमण कर्के और ब्रह्मांको धारण कर्के दोवार आचमनकरे इस वाक्य विषे चकारतें जानना रोदन और अध्ययन का आरंभ और थोड़ा अनृत वाक्य तिन विषे भी दोवार आचमन करे १ । इसमें वसिष्ठजीका वाक्यहै । शयनकर्के और अन्न भक्षण कर्के और निच्छामारके और स्नान कर्के और जलपान कर्के और रूदन कर्के दोवार आचमनकरे । तैसे मनुजीका वाक्यहै । सुप्त्वेति शयन और निच्छ और भोजन और मुखतें थुकका त्याग और असत्यवाक्य और जल पान और पठनका आरंभ इनको कर्के पीछे दोवार आचमन करे ॥

१०८ ॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० १८ टी ० भा०

श्रीर आपस्तम्बके वचनते भोजन के आद विषे और अंत विषे दोवार आचमन करे और स्नान पान विषे एक वार आचमन करे ॥ इस विषे कै इक ज्ञानी योगीश्वरके वचनते त्रयवार आचमन कर्के और ओष्टके अंतकों दोवार हत्थ कर्के शुद्ध करे और जल कर्के नेत्र आदि इंद्रियां को स्पर्श करे एह पुरुष की शुद्धि कहै है ॥ इस अर्थ के अनुमारते ब्राह्मणादि त्रय वर्णों को आचमन त्रय कहै हैं अन्य वचनते शूद्रको एक आचमन कहा है ऐसे कहते हैं ॥ कै ज्ञानी ऐसे कहते हैं । कि गोकर्णकीन्याई हत्थ कर्के जलको ग्रहण करे जितने विषे माष छप जाये इस प्रकार त्रय वार जलपान करणे कर्के एक आचमन कहा है ॥ शूद्रको ऐसे एक आचमन

इत्यापस्तम्बवचनाद्भोजनादावपिद्विराचमनंस्नानपानयोः सकृदिति अत्र केचित्त्रिःप्राश्यापोद्विरुन्मृज्यस्नान्याद्विः समुपस्पृशेदितियोगीश्वरवचनं अपोजलानि त्रिस्त्रीन्वारान्प्राश्याद्विद्वौवारौ श्रोत्रावुन्मृज्य आद्विः स्नाने नेत्रादीनि समुपस्पृशेदित्यर्थकमनुसृत्यद्विजतिराचमनत्रयं शूद्रस्यवचनान्तरादेकमिति वदन्ति केचित्तु गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमग्नं पिवेजलमित्याद्युक्तप्रकारेणवारत्रयजलपानेनैकमाचमनं शूद्रस्यत्वाचमनैकदेश इति मन्यन्ते अतएवाद्विराचामेदित्यत्रपट्वारान् पिवन्तीति तन्न विचारसहं सकृद्विरित्यादीनां क्रियावृत्तिवाचकत्वात्तस्याश्वैकवारपानेनापिगतार्थत्वात् सकृद्विस्त्रिरित्यादीनां क्रियाभ्यावृत्तिवाचकत्वेन समानार्थत्वेऽपिद्विरित्यत्र विशेषविवक्षाहेतोरनुपलम्भात् किंच सकृदितिपदं मयूखेव्याख्यातम् ॥

का एक देश कहा है ॥ इस प्रकार तें (द्विराचमे) इस विषे छे वार जल पान करे । यह इनका अर्थ विचार को नहि सहारदा क्योंकि (सकृत् (द्विः) इत्यादि शब्दों को क्रियाकी आवृत्ति क्या पुनः पुनः करण इसके वाचक होणेतें इनके अर्थको एकवार दोवार करणे कर्के भी यथार्थ अर्थ वाले होणेतें और (सकृत्) द्विः) त्रिः) इत्यादि शब्दों को क्रिया वृत्ति मात्र जनानेतें तुल्यार्थ होखे कर्के (द्विः) इस जगा अधिकार्थ जो छेवार जलपान तिस अर्थके नालम्भसेते ॥ होर भी युक्ति कहते हैं ॥ किञ्चेति ॥ (सकृत्) इस पदका अर्थ आचार मयूष विषे किहा है ॥

॥ श्रीरत्नवीरंकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ ॥ टी० भा० ॥ १०९

सकृत्) यहतिष्ठवारकरणे कानिषेधहै सोजी (द्विः) एभीतिन्नवारजल पीणेका अपवादक्यों नहि आवेगा कुछऔरहै कि तिष्ठवार चारवारजल पीवे एहगौत्तमजीका वचनहै इसतेंतुसांदि रीतिसे ११ नौवार अथवा १२ वारां वार जलपान का प्रसंगहोवेगा जेकर कहो किहोवे इसमें दोषनहितो ऐसामतकहो इसमें सदाचार काविरोधहै इसते एह नहि होसकता और बाह्यवत्क्य जीकी कही होई सामान्य विधिकरके भी तुल्यार्थता नहिहोवेगी सोआपकोअपेक्षितहीहै और विचार कहतेहैं किजो आचारादर्श विषे किहाहै ॥ द्विशचामेत् इसजगा त्रिरभ्यस्तावृत्ति क्याछे वारजलपानकरणा चाहिए सोएहअर्थ बहुत अशुद्धि कीशंका करके अथवा गौत्तम जीकी

सकृदिति त्रित्वापवादइतितथाचतत्तद्वद्विरितिकथनत्रित्वापवादः॥अपिच त्रिचतुर्वा अपत्राचामेदितिगौत्तमीयवचनान्नववारान्द्वादशवारान्वातत्प्रसंगःस्यात्।इष्टापत्तिरितिचेदाचारविरोध योगीश्वरीयसामान्यविधिनापिस मानार्थतानस्यात्॥ यत्तुआचारादर्शः॥ द्विशचामेदित्यत्रत्रिरभ्यस्तावृत्ति नंतुत्रित्वापवादइति तदशुचित्वबाहुल्यशंकयागौत्तमस्मरणास्मरणेनवाफलभूमार्थकाम्ययाववोध्यम् तथाच श्राद्धविवाहादिसामान्यविधानेत्रित्वापवादएवसमुचितः आकाशवायुर्दिनयौवनोत्थानाचामतिस्वेदलवान्मुखेतइत्यादौवारत्रयादिविवक्षाभाववदिति॥ कूर्मपुराणेद्वादशाध्याये व्यासःभुक्ता पीत्वाचसुत्वाच स्नात्वा रथ्योपसर्पणे ओष्टौ चलोमकौ स्पृष्ट्वा वासादि परिधायच ॥ १ ॥

स्मृतिकीविस्मृति करके अथवा बहुतफलकी आकांक्षा करके जानना तथाच एहनिश्चय होया किश्राद्ध विवाहादिविषे सामान्यता करके जिस जगा (द्विः) ऐसा पद आवेतिस जगा दोवार ही जल पान करणा चाहिये ॥और आकाशोति ।एहरघुवंशका श्लोकहै ।इसविषेभी)आचाम ति)एहपदहै इसमेंभीत्रय वारजल पानकी विवक्षा नहि इसी तर्ही और जगामो जानणा कूर्म पुराण के १२ वारवेंअध्यायमें व्यासजी कथन करतेहैं किभोजन कर्के औरपान कर्के औरशयनकर्के औरस्नान कर्के औरगालियांमे फिरकरके औरओंकारो स्पर्श करणा औररोमको स्पर्श करणा औरबन्धनोंको धारकरकेभी१

और वीर्य और मल मूत्र का त्याग और अयुक्त वचन कथन करणा और धुक सटणा और पठनके प्रारंभके आद और कास श्वासोंके आवणमें ॥ २ ॥ चुरस्तेमें फिरणा और श्मशानमें जाणा और प्रात और सायं संध्यामें इनां कर्म्मामें ब्राह्मण पूर्व आचांत होया होया फेर आचमन करे ॥ ३ ॥ और चांडाल और म्लेच्छके साथ संभाषण करणमें और स्त्री और शूद्र और अपवित्र के साथ संभाषण करणमें और अपवित्रपुरुषके साथ स्पर्शमें और तैसे उच्छिष्ट अन्नके साथ स्पर्श करणमें ॥ ४ ॥ पीछे आचमन करे और तैसे अभ्युपात और रुधिरके निकलनेमें और भोजनमें प्रातःसायं संध्यामें और स्नानकर्के पान कर्के मूत्र मलको त्यागकरके ॥ ५ ॥ आचांत होया फेर आचमन करे और छिकके त्यागमें एकवार वा बहुतवार और

रेतोमूत्रपुरीषाणामुत्सर्गेयुक्तभाषणे णीवित्वाध्ययनारंभकाशस्वासागमेत
था ॥ चत्वरंवाश्मशानंवासमाक्रम्यद्विजोत्तमः संध्ययोरुभयोस्तद्वदाचांतो
प्याचमेत्पुनः ॥ ३ ॥ चांडालम्लेच्छसंभाषेस्त्रीशूद्रोच्छिष्टभाषणे उच्छि
ष्टंपुरुषंरुष्ट्र्वाभोज्यंचापितथाविधं ॥ ४ ॥ आचमेदश्रुपातवालोहितस्य
तथैवच भोजनेसंध्ययोःस्नात्वापीत्वामूत्रपुरीषयोः ॥ ५ ॥ आचांतोवाचमेत्क्षु
त्वासकृत्सकृदथान्यतःअग्नेर्गवामथालंभेरुष्ट्र्वाप्रयतमेवचा ६ ॥ स्त्रीणामथा
त्मसंस्पर्शनीवींवापरिधायच उपरुष्ट्र्वाजलंचार्द्रं तृणंवाभूमिमेववा ॥ ७ ॥
केशानां चात्मनःस्पर्शवाससोऽक्षालितस्यच अनुष्णाभिरफेनाभिरदुष्टा
भिरचधर्मतः ॥ ८ ॥ शौचेतुसर्वदाचामेदासीनः प्रागुदङ्मुखः शिरःप्रमृज्यकं
ठंवा मुक्तकेशशिखोपिवा ॥ ९ ॥ अकृत्वापादयोःशौचमाचांतोनशुचिर्भवत्
सोपानत्कोजलस्थोवानोष्णीपीचाचमेद्बुधः ॥ १० ॥

बहुत आग्नि और गोत्रांके स्पर्शमें ॥ ६ ॥ और स्त्रियोंके साथ स्पर्शमें और अधोवस्त्रका धारणा
आचमनकरे जलकों अथवा सिजेहोय घासकों और पृथ्वीको स्पर्श करके ७ ॥ और अपने
केशों के स्पर्श और नाधोते होये नवीन वस्त्रके स्पर्शमें ब्राह्मण धर्मके अर्थवास्ते नहिजो गर्म
और झगते रहित शुद्ध जल तिनाकरके आचमन करे ॥ ८ ॥ और शौचमें सदाहि पूर्ववा उ
त्तर मुख होया होया आचमन करे शिर और कंठको जल साथ धोकरके नहि खुलेहैं केशवा
शिखाजिसकी ऐसा होया होया ॥ ९ ॥ और विशेष कहतेहैं ॥ अकृत्वेति पैरोंके शौचको ना
करके जोआचमन करताहै सोशुद्ध नहि हुंदा बुद्धिमान् खडावां पाकर और जलमें और
पगडीको धारकर आचमन न करे ॥ १० ॥

॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी०भा० ॥ १११

और नावर्षा कीयां धाग करके और कढकर जलकों खडो करके नाकरे॥और अनेक जगा पृथ
वीमें स्थित जो जल तिस करके नाकरे॥और यज्ञोपवीतते विना नकरे११ और जोडे परस्थित
होकर और गोडियांके बाहर हट्य करके और नवोलदा होया और नहसदा होया और किसेके
देखदा होया ॥ लेटया होया नमस्कार कदा होया ॥ १२ ॥ और प्राप्त होये जोहै झगके साथ
हृथमें तिनके नदेख्यां होयां जलां कर्के आचमन नकरे ॥ ब्राह्मण हृदयमें आचमन जाणे
करणे शुद्ध हुंदाहै ॥ अर्थात् इतने जल साथ ब्राह्मण आचमन करे जो हृदय तक पहुंचे और
क्षत्रि कंठमें जाणे करके ॥ १३ ॥ और वैश्य तालु पर्यंत पीणे करके और स्त्री और शूद्र ओ
ष्टां के स्पर्श वाले जल करके शुद्ध हुंदेहैं ॥ और अंगुष्ठ के मूलतें उत्तर पासे ब्राह्म तीर्थ कहा
है ॥ १४ ॥ और अंगूठतें तर्जनीके मध्यमें पितृ तीर्थहै और छोटि अंगुल मूल पास पिछले

नचैववर्षधाराभिर्नतिष्ठन्नोद्धृतोदकैः नैकभूस्थापितजलैर्विनासूत्रेणवापुनः
॥ ११ ॥ नपादुकासनस्थोवावहिर्जानुरथोपिवानजल्पन्नहसन्प्रेक्षन्शया
नः प्रवहएवच ॥ १२ ॥ नावीक्षिताभिः केनाभिरुपेताभिरथापिवा हृद्गाभिः
पूयतेविप्रःकंठाद्भिः क्षत्रियःशुचिः ॥ १३ ॥ प्राशिताभिस्तथावैश्यः स्त्रीशू
द्रौस्पर्शतोततः अंगुष्ठ मूलात्तरतोरेखायाब्राह्ममुच्यते १४ अंतरांगुष्ठदे
शिन्योःपितृणांतीर्थमुत्तमं कनिष्ठामूलतः पश्चात्प्राजापत्यंप्रचक्षते १५ अं
गुल्यग्रेस्मृतं देवतं देवापि प्रकीर्तितं मूलेवादेवमार्घ्यस्यादग्नेयमध्यतःस्मृ
तम् १६ तदेवसौमिकंतीर्थमेतज्ज्ञात्वानमुह्यति ब्राह्मणैवतुतीर्थेनद्विजोनि
त्यमुपस्पृशेत् १७ कायेनवाथदेवेनतुपित्र्येणवैद्विजः त्रिःप्राश्नीयादपः
पूर्वब्राह्मणः प्रयतस्ततः १८ संमृज्यांगुष्टमूलेनमुखंवैसमुपस्पृशेत् अंगु
ष्ठानामिकाभ्यांतुस्पृशेन्नेत्रद्वयं ततः १९ तर्जन्यांगुष्टयोगेनस्पृशन्नासा
पृष्ठद्वयम् कनिष्ठांगुष्टयोगेनश्रवणेषमुपस्पृशेत् ॥ २०

पासे प्राजापत्यतीर्थहै ॥ १५ ॥ और अंगुलीयांके आगे देवता तीर्थहै ॥ सोई ऋषियोंकाहै अ
र्थात् आपे तीर्थहै ॥ अथवा जो अंगुलीयांके मूलमें होवे सोई देवतीर्थ और आर्घ्य किहाहै
और अंगुलांके मध्यमें आग्नेय कहाहै ॥ १६ ॥ सोई सौमतीर्थ भीहै इसकोजाणकर पुरुष
मोंहको प्राप्तनहि हुंदे॥ब्राह्मणादि वर्ण नित्यब्राह्मतीर्थ करके ही आचमनकरें १७ वा प्राजापत्य
तीर्थ करके वादेवतीर्थ करके करे परंतु पितृ तीर्थ करके आचमनना करे हेब्राह्मणो तुसीसुणो
ब्राह्मण पूर्व निश्चयमनहोयारत्रय वारजलकों आचमन करे॥ १८॥ अब और विधि इसमेंक
हतेहै समिति अंगूठके मूलकरमुखकों पूजकर । फेर अंगूठ और अनामिका अंगुल कर मुख
कोंस्पर्श करे और दोनों नेत्रों को स्पर्श करे ॥ १९ ॥ और तर्जनी अंगूठ करके नासांको और
चाँची अंगुल और अंगूठ कर्के कर्णों को स्पर्श करे ॥ २० ॥

११२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १८ टी० भा० ॥

और संपूर्ण अंगुली कर्के वा हृत्थकी तली कर्के हृदयकों और शिरकों स्पर्श करे वा अंगुष्ठ कर्के हृदय और शिरकों स्पर्श करे ॥ २१ ॥ त्रयवार आचमन को ग्रहण करे तिस कर्के ब्रह्मा-विष्णु और शिव प्रसन्न होतेहैं । एह असी सुणदे होए ॥ २२ ॥ और ओंष्टां के मांजनतें गंगा और यमुना प्रसन्न होतीहै ॥ नेत्रांके स्पर्शते चंद्रमा और सूर्य प्रसन्न होतेहैं ॥ २३ ॥ और नासाके स्पर्श कर्के अश्वनी कुमार और कर्णाके स्पर्श ते वायु और अग्नि प्रसन्न होतेहैं ॥ २४ ॥ और हृदय के स्पर्श कीतयां होयां सभ देवता प्रसन्न होतेहैं । और शिरके स्पर्श करणेतें एक पुरुष पुरुषोत्तम प्रसन्न होताहै ॥ २५ ॥ और विशेष कहतेहैं ॥ नइति ॥ मुख कर्के विंदु पतत होयां होयां उच्छिष्ट नहि करदे और दंताके अंदर और दंतामें उच्छिष्टके लगयां होयां जिह्वा

सर्वेपामथयोगेनहृदयंतुतलेनवा संस्पृष्टशेद्वाशिरस्तद्वदंगुष्ठेनाथवाह्वयम् २१
त्रिः प्राणीयादथांभस्तुप्रीतास्तेनास्यदेवताः ब्रह्माविष्णुर्महेशश्चभवंती
त्यनुशुश्रुमः २२ ॥ गंगाचयमुनाचैवप्रीयेतेपरिमार्जनात् संस्पृष्टयोर्लोचन
योः प्रीयेतेशशिभास्करो २३ ॥ नासत्यदस्त्रौप्रीयेतेस्पृष्टेनासापुटद्वये कर्ण
योः स्पृष्टयोस्तद्वत्प्रीयेतेचानिलानलौ ॥ २४ ॥ संस्पृष्टेहृदयेचास्यप्रीयंतेसर्व
देवताः मूर्धनिसंस्पर्शनादेकः प्रीतः सपुरुषोभवेत् २५ ॥ नोच्छिष्टंकुर्वतेमु
र्याविष्णुषोवैपतंतियाः दंतांतर्दतलन्नेपुजिह्वाउोष्ठं शुचिर्भवेत् २६ ॥
स्पृष्टशंतिविन्दवः पादौयत्राचमयतः परान् भूमिगास्तेसमाज्ञेयानतैरप्रय
तोभवेत् २७ ॥ मधुपर्केचसोमेचतांबूलस्यचभक्षणं फलमूलैश्चेक्षुदंडेनदो
षंप्राहवैमनुः २८ ॥ प्रचरंश्चान्नपानेषुद्रव्यहस्तोभवेन्नरः भूमौनिक्षिप्यतद्र
व्यमाचम्याभ्युक्षयेत्तुतत् २९

और ओंष्ट शुद्धहैं अर्थात् अशुद्ध नहि हुंदे ॥ २६ ॥ और जो विंदु आचमन करदेयां होयां पुरुषां के पैरों को स्पर्श करण और दूसरके आचमन करदेयां होयां जेडे विंदु पृथ्वी में प्राप्ताजाण सो होरना जलाके तुल्य जानणे तिनां कर्के अपवित्र नहि हुंदा ॥ २७ ॥ मधुपर्क और सोमवल्ली का रस और तांबूल और फल मूल और गन्ने इनाके भक्षण कीतयां होयां दोष नहि अर्थात् जूठे नहि हुंदे ऐसे मनूजी कहतेहैं ॥ २८ ॥ कुच्छ द्रव्य छावडी आदिकों हृत्थमें लेकर अन्न पानादि स्थानमें विचरे पुरुष तां तिस द्रव्यकों पृथ्वी पर रखकर और आचमनकोले कर द्रव्यकों जलके साथ सिंचन करे ॥ २९ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी० भा० ॥ ११३

वातेजस धातु आदि को लेके जेकर द्विज उच्छिष्ट होवे वा जिसद्रव्य को लेकर उच्छिष्ट कर्के युक्त होवे ॥ ३० ॥ तिसद्रव्य को पृथ्वी पर रख कर आचमन करणें शुद्ध हुंदाहे ॥ ३१ ॥ और विशेष कहतेहैं । अरण्यइति ॥ वनमें और निर्जन स्थानमें और रात्रिमें और चोर बिं बयाउ आदिकां करके जो युक्त देश तिनस्थानोंमें मल मूत्रके त्यागते द्रव्यहै हृत्पमें जिसके सो अपवित्र नहीं हुदा अर्थात् तिस करके वचनेमें शंका नहि करणी ॥ ३२ ॥ याज्ञवल्क्यजी का वचनहै गलीयां विषे जो कर्दम और जल एह अंशज और कुत्ता और काक इनां कर के स्पर्श होण तां वायु करके तिनकी शुद्धि कहीहै॥तेसेहिं पक्कीयां इटां करके रचियां जो कं झां गृह आदिक सो वायु करके शुद्ध होतहैं ॥ (नावःपंथास्तृणानिच) ॥ एह दूसरे पाद

तैजसंवासमादाययद्युच्छिष्टोभवेद्विजः यद्यद्रव्यंसमादायभवेदुच्छेपणा न्वितः ३० ॥ भूमौनिधायतद्रव्यमाचांतःशुचितामियात् ३१ ॥ अरण्ये नुदकेरात्रौचौरव्याघ्राकुलेपथि । कृत्वामूत्रपुरीषंवाद्रव्यहस्तानदुप्यति ॥ ३२ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ रथ्याकर्दमतोयानिरुपृष्टान्यत्यश्ववायसैः मारु तेनैवशुद्ध्यन्तिपक्वेष्टकाचितानिच ॥ १ ॥ नावःपंथास्तृणानिचेति द्वितीय पादेपाराशरीयःपाठः॥रथ्यामार्गमात्रोपलक्षिकातत्स्थानिपंकादीनिचांडा लदिरुपृष्टानिपछेष्टिकादिनिर्मितानिगृहादीनिचमारुतेनवायुनैवशुद्ध्य न्ति । बहुवचनेनरथ्यादिगतानिगोमयपाषाणादीनिबोध्यानि । प्रोक्षणंसं हितानामत्यादिवचनान्नप्रोक्षणार्हाणीत्यर्थः तृणकाष्ठपर्णादीनांप्रोक्षणं युक्तमेव ॥ स्मृत्यंतरे श्वमृगालल्लवंगाद्यैर्मानुषैश्चरतिविना स्मृतःस्ना त्वाशुचिःसद्योदिवासंध्यासुराश्रिपु ॥ १ ॥

विषे पराशर जीका पाठहै ॥ इसमें नौका और पंथा और तृणादि वायु करके शुद्ध कहेहैं ॥ रथ्या कहणेंते रस्ते विषे जो चिक्कड आदि सो चांडालादि करके स्पृष्ट होण तां वायु कर्के शुद्धि कहीहै॥और बहु वचनते गलियां आदि विषे स्थित जो गोमय पाषाण आदि तिनकी भी शुद्धि जानणी अर्थात् इस वचनते एह रथ्याकर्दम आदि जल करके नहि सिंचणे योग्या ॥ और तृण काष्ठ और पत्र आदि इनको सिंचणा योग्यहै ॥ १ ॥ और स्मृति विषे किहाहै ॥ श्वेति ॥ मनुष्यां करके पालित जो श्वक्या कुत्ता और गिधड और वानर इन कर्के लाडते विना पुरुष स्पर्श होवें तां स्नान करके तात्काल शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

११४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १८ टी०भा ० ॥

और जेकर लाड करके स्पर्श करे तां उपवासादि व्रत करके शुद्धि कहीहै ॥ तिस विषे भी दिने स्पर्श करेतां स्नान करके शुद्धि और संध्या विषे स्पर्श होयांभी स्नान करके हिशुद्धिहै ॥ और जेकर रात्रिका व्यवधान होवे तां अधिक प्रायश्चित्त कहाहै ॥ अर्थात् व्रत भी साथ करे अवभृती आदिकां की शुद्धि को याज्ञवल्क्य जी कहतेहै ॥ पृथ्वी की शुद्धि मार्जनते कहीहै क्या काष्ठ तृणादिके दूर करणें ॥ और तिस स्थान विषे काष्ठ आदिके उद्दीपनते क्या दाहादिकरणें और जिस करके गन्धलेपादि दूर होवें तिस महीने आदिके कालते और गोआं कीस्थितिमें और शुद्ध जल और गोमूत्रआदि के सिंचणें और पृथ्वी को कही आदि केखरोतणे

मानुषैः मनुष्यपालितैः श्वादिभिः सृष्ट्योद्विजः क्रीडार्थस्पर्शनं विनास्त्रात्वा शुद्ध्यति ॥ क्रीडार्थस्पर्शनेन उपवासाद्यधिकं कल्प्यम् ॥ तत्रापि दिवा स्पर्शं दिवा स्नानेन संध्या स्वपि स्नानेन शुद्धिः रात्र्यादिव्यवधानेन त्वाधिकमेव मग्रेऽपि ॥ भूम्यादीनां शुद्धिमाह याज्ञवल्क्यः ॥ भूशुद्धिर्मार्जनादाहात्कालाद्गोक्रमणात्तथा ॥ सेकादुल्लेखनाल्लेपाद्गृहं मार्जनलेपनात् ॥ १ ॥ मार्जनाद्दुष्टतृणाद्युत्थापनात् ॥ दाहात्तत्रत्यकाष्ठाद्युद्दीपनात् ॥ कालात्गन्धलेपादिक्षयकरणं समर्थान्मासादिमितात् ॥ गोक्रमणात् गोस्थित्यादिनोपहृतात् सेकात् शुद्धाम्बुगोमूत्रादिवहनात् ॥ उल्लेखनात् लघुकृद्दालादिना कर्पणात् लेपाद्गौरमृदादिजात् ॥ एते सप्त समस्ता व्यस्ता वा दीपतारतम्येन भूशुद्धिहेतवो बोध्यः ॥ गृहं तु मार्जनलेपाभ्यामेव शुद्ध्यति ॥ तत्रापि प्रतिदिनमिदमिति पृथगुक्तम् ॥ भूदोष्यापादकानि देवलेनोक्तानि ॥ यत्र प्रसूयंत नारी श्रियते दह्यतेऽपि वा ॥ चांडालाद्युपितं यत्र यत्र विष्टादिसंगतिः ॥ १ ॥ एवं कश्मलभूयिष्ठाभूरमेध्याप्रकीर्तिताश्च शूकरखरोष्ट्रादिसंस्पृष्टा दुष्टां व्रजेत् ॥ २ ॥ अंगारतुपकेशास्थिभस्माद्यैर्मलिना भवेदिति

तें और श्वेत मृत्तिकाके लेपणें १ ॥ जेकर बहुत अशुद्ध होवेतां पूर्वांकहेतुसत ॥ सब ग्रहण करे ॥ और दोष कम होवेतां थोड़े करके शुद्धि कहीहै ॥ और होरना गृहादिकांकी मार्जन और लेपकरके शुद्धि कहीहै ॥ तिस विषे भी दिन दिन विषे पूर्वांक होतु भिन्न जानणा ॥ भूइति पृथ्वीको अशुद्धि करण वालीयां जे वस्तु सो देवलऋषि करके कहियाहैं जिस स्थान विषे स्त्री प्रसूत होतीहै वा मृत्युहोवे वा दाह को प्राप्तहोवे वा चांडालादि कर्के दूषित होवे वा विष्टा कर्के युक्त होवे ऐसे दोषकी अधिकतातें अशुद्धिकहीहै १ कुत्ता और सूर और खर उष्ट्र इन कर्के युक्त होवे तां पृथ्वी अशुद्धिको प्राप्तहोतीहै २ और अंगार तोह केश अस्थि भस्म आदि इनां कर्के मलीन होतीहै अर्थात् थोड़ी अशुद्धहोतीहै ॥

पूर्वोक्त याज्ञवल्क्यजीका वचन स्पष्ट करके दिखाइदाहै भुवइति अशुद्ध पृथ्वीकीसंज्ञा त्रय १ कहीपाहै अमेध्या १ दुष्टा २ मलिना ३ इनकी शुद्धिके हेतुभी त्रय १ हिहैं सो कहतेहैं । पंचोत इसश्लोककाविवेकार्थ एहहै कि जेडी अमेध्यासंज्ञा वालीहै क्या मनुष्य दाहसंज्ञावाली । और चांडालादिके निवास वाला । सोपूर्वोक्त पंजाहेतुआं करके शुद्धहुंदीहै । मार्जन करणेतें क्याअ शुद्धवस्तुके हटाणेतें १ औरतिसजगा तृणादिके दाहकरणेतें २ औरमलके दूरकरणे योग्यनहीं नेआदिकालतें ३ औरउसजगा गौआंके निवास होणेतें ४ औरशुद्धजलके सिंचनतें ५ यहपं जहेतुजानणे । औरजेकर सोभूमि मनुष्यजन्म करके औरमनुष्योंके मरण करके और अत्यंत विष्टादिके वा मदिरा के लेप करके दूषित होवे तांनिह्नापंजाते दाहको छोडकर बाकीकचा

भुवोऽमेध्यादुष्टामलिनेतिसंज्ञात्रयंप्रदर्श्य तच्छुद्धिहेतुत्रयंदर्शयति पंचधा वाचतुर्द्धावाभूरमेध्याविशुद्ध्यति दुष्टान्वितात्रिधाद्वेधाशुद्ध्यतेमलिनैकधेति अत्रायंविवेकः मनुष्यदारुचांडाला ध्युपितादुष्टाभूमर्मार्जनानंतर्वर्तिपंचभिः मनुष्यजननमरणान्त्यन्तविष्टादिनादूषिता पूर्वोक्तेरेवदाहर्हीनैश्चतुर्भिः ॥ श्वशूकराध्युपिता गोक्रमणसेकेल्लेखनैस्त्रिभिः ॥ मार्जनानुलपनयोस्सर्वत्र संवन्धइति मिताक्षरा ॥ विष्णुस्मृतावप्येवम् ॥ ब्रह्मपुराणे ॥ भूमिर्विद्वद्य तेकालेवातवर्षणगोकुलैः । लेखादुल्लेखनात्संगाहेशमानांभर्जनादिना ॥ १ ॥

रहेतुआं करके शुद्धहुंदीहै ॥ औरकुत्तेके औरसूकरके जोवासवालीहै सोगौआंके फिरनेतुरनेसैं १ और सिंचनसैं २ और उल्लेखनजो खोतरना तिसते ३ शुद्धहुंदीहै । इसकी शुद्धिके हेतुत्रयकोहैं परंतु मार्जन और अनुलेपकासभजगा अन्वयहै ॥ और जोपृथ्वीमलीनहै सोमार्जन और अनुलेपसेहिशुद्धहोतीहै । एहमिताक्षराकाअर्थहै । विष्णुस्मृतिविषे भीएसाहीकहाहै । ब्रह्मपुराण विषे भीकहाहै । पृथ्वी कालतें शुद्धहुंदीहैं और वातकरके और वर्षा करके और गौआंकेआ क्रमणादि करके और खोतरनेते वाहनेते और श्रेष्ठवस्तु केसंगते और घरांकी मार्जनादि ते शुद्धहुंदीहै ॥ १ ॥

केशकीटादि करके पुक्त होवे अन्नतां अथवा गौ करके सिंघया होवें अथवामृतहोईं मक्षी वाला होवे तदमृतिका १ जल २ भस्म ३ क्षार ४ यह तिसकी शुद्धि वास्ते कहे है ॥ २॥ वामन पुराण विषे विष्णुधर्मोत्तर विषे भी ऐसा ही लिखया है ॥ पराशर जीका वाक्य है निरंतर जल कियां धारां और वायुते उत्पन्न होये रेणु और स्त्रीयां और वृद्ध और बाल यह कदाचित् अशुद्ध नहि होते १ छिक्कविषे और थुक्क और दंतोच्छिष्ट और अनृत और पतित के साथ संभाषण होवे तां तिसकी शुद्धि वास्ते सजे कर्ण कों स्पर्श करे २ इसविषे हेतु है अग्नि और जल

केशकीटावपन्नान्ने गोघ्राते मक्षिकान्विते मृदम्बुभस्मक्षाराणि प्रक्षेप्तव्या निविशुद्ध्ये ॥ २॥ वामनपुराणे विष्णुधर्मोत्तरे चाप्येवम् ॥ पाराशरीयेऽप्यदुष्टासंतताधारावातोद्धूताश्चरेणवः स्त्रियो वृद्धाश्च बालाश्च न दुष्यान्तिकदाचन ॥ १॥ क्षुते निषीवने चैव दंतोच्छिष्टे तथा नृते पतितानां च संभाषे दक्षिणे श्रवणं स्पृशेत् ॥ २॥ अग्निरापश्च वेदाश्च सोमसूर्या निलास्तथा एते सर्वेऽपि विप्राणां श्रोत्रे तिष्ठन्ति दक्षिणे ॥ ३॥ प्रभासादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा विप्रस्य दक्षिणे कर्णे सान्निध्यं मनुरब्रवीत् ॥ ४॥ देशभंगे प्रभासे वा व्याधिपुण्यसंनैष्वपि रक्षदेवस्वदेहादि पश्चाद्धर्मं समाचरेत् ॥ ५॥ येन केन च धर्मेण मृदुना दारुणेन वा उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो धर्ममाचरेत् ॥ ६॥ आपत्काले तु निस्तीर्णेऽशौचाचारं न चिन्तयेत् शुद्धिसमुद्धरेत् पश्चात्स्वस्थो धर्मं समाचरेदिति ॥ ७॥

और वेद और सोम सूर्यवायु एह ब्राह्मणों के सजें कर्णविषे है ॥ ३॥ और प्रभासादि तीर्थ गंगादि सरित क्या नदियां एह भी सब ब्राह्मणों के सजें कर्ण विषे स्थित है ॥ ऐसे मनु कहता है ॥ ४॥ देशभंगविषे और प्रवास और रोग विषे और व्यसन विषे प्रथम अपने देहकी रक्षा करे पीछे धर्म कों करे ॥ ५॥ जिस किते उपाय करके बाधर्म करके वा अधीनता कर्के बाबल करके आपणी रक्षा करे और समर्थ होवें तां धर्म करे ॥ ६॥ और विपदा को प्राप्त होयां होयां अशुद्ध कर्मका न चिंतन करे और समर्थ होकर शुद्धि का और धर्म का आचरण करे ७

॥ श्रीरणवीरकारित प्राश्चित्त गागः प्र० १८ टी० भा० ॥ १७

पूर्वोक्त अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ संततेति जलके पानकरणे वास्ते पात्रको उच्चाकर्के मुख विषे जो धारा प्राप्त होतीहै सो शुद्ध कहीहै तिस पात्र विषे स्थित जो लज और मुख यह दोनो उच्छिष्ट नहिहोते । और दंतेति । दंदाविषे आसक्त जो अन्नआदि तिसके बाहर त्यागणेतें दक्षिण कर्णके स्पर्श करणे कर्के शुद्धि कहीहै । अग्निरिति अग्निआदिक देवताकि ब्राह्मणके सज्जकरणे विषे सान्निध्यता भावनाकरणी और स्वरूपते सान्निध्यताका अभावहै इति । इसप्रकार श्रीमत्

तताधाराजलपानार्थपात्रमुत्थाय मुखेयाधारापात्यतेसाधाराअदुष्टापात्रस्थजलमुखचनोच्छिष्टंकरांतित्यर्थः ॥ दन्तोच्छिष्टदन्तसत्तादादेरुत्क्षेपणनवहिरुत्क्षेपेणोच्छिष्टेसतित्यर्थः ॥ अग्निरिति अग्न्यादिदेवतागतविप्रस्यदक्षिणकर्णेसान्निध्यंभावनीयमितिभावः स्वरूपतस्तत्सान्निध्यस्याभावादिति ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीरतिव्यतायनकदेशाधीशप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपण्डितवरदेवीदत्तभुतकविगंगाराममंग्रहीते धर्मशास्त्रमहानिवन्धेप्रायश्चित्तभागेशुद्धिसंक्षेपवर्णनेनामाष्टदशकं

प्रकरणम् ॥ १८ ॥ ❀ ❀

जो महाराजयांके अधिराज और जम्बूकाश्मीरतें आदलेके जो अनेक देश तिनके स्वामि प्रभुवर रणवीरसिंह तिनकी आज्ञा कर्के कविगंगा गमने संग्रहकीयाजो धर्म शास्त्रमहा निबन्ध तिसके प्रायश्चित्त भाग विषे शुद्धिकहि संक्षेप कर्के वर्णन जिस विषे ऐसा अठारवां १८ प्रकरण

समाप्तहुआ ॥ ❀

❀

॥ १८ ॥

सर्वैया ॥ देशविदेशनरेशनमै शुभभेषनमै
एहलायकभाषा ॥ पारवतीसुरवाकवतीसभ
भागवती सुरवृक्षकीशाखा वालगुपालसम्हा
लपढे जवके झटवोधमैदेखतमासा ॥ वामदेव
अरवांकाबरामण काशिवरामनअक्षरराषा ॥

॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ रामनाममधुमिस्सरीविनामोल
मिलजाय वेसुयादनहिहोतहैपलपलछिन
छिनखाय ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ ११९

अब उनीये = १९ = रहस्य प्रायश्चित्त प्रकरणके व्याख्यानकों कर्त्ता हैं। रहस्य प्रायश्चित्तके विचारके वास्ते॥आदि विषय तिसके प्रायश्चित्तकी अल्पता होणी तिस विषय विचार प्रणोत्तर कर्के कहीदाहै १ (प्रणः) कीतेहोये पापके प्रकट करणे कर्के और पश्चात्ताप कर्के और तप कर्के और वेदके पडने कर्के पापके करणे वाला पापतें रहित होताहै तयसे हि विषदा विषे दान कर्के पापतें रहित होताहै॥१॥कुछ और भी है कि । पुरुष आप पापकों कर्के जयसे जय से विस्तारतें पापकों प्रकट कर्ताहै क्या मेरेथीं एह पापहोया अयसे कहताहै तयसे तयसे हि पापतें रहत होताहै जयसे सपे अपने पुरातन चर्मतें रहित होताहै॥२॥इत्यादिक मनु वचनातें ए ह सिद्ध होया क्या पापके प्रकट करणेतें पापकी अल्पता होणी इस कहणेतें प्रकाशमे प्रायश्चित्त थोडा होणा चाहिए और रहस्यमे अधिक होणा चाहिए ॥ किस कर्के मुनियोने विपरीत कीताहै कि रहस्य मे थोडा और प्रकाशमे बहुत सोई देखीदाहै कि प्रकाशमे जितना प्राय

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ रहस्यमेवयदज्ञानकरणैरहस्यकम् रहस्योऽनुग्रहोयस्यतरुमैसरहसेनमः १ अथप्रकाशवलेनैवरहस्यान्वेपणेप्रवृत्तेः प्रकाशप्रायश्चित्तानंतरं रहस्यप्रायश्चित्तविवेकार्थतावत्तदल्पत्वविषयविवेकः पूर्वपक्षासेद्धांताभ्यामुच्यते १ ननु स्यापनेनानुतापेनवेदार्थाध्ययनेनच पापकृन्मुच्यते पापात्तथादानेनचापदि १ यथायथानरोऽधर्मस्वयंकृत्वानुभापते तथातथात्वचेवाहिस्तेनाधर्मेणमुच्यते २ इत्यादि मनुवचनेभ्यः पापस्यापनेनापिपापह्रासस्योक्तत्वात्प्रकाशप्रायश्चित्तेच तदावश्यकत्वात्प्रकाशोप्रायश्चित्तालपतायुक्ता नतुरहस्येदृश्यतेहि प्रकाश उक्तं यत्किंचिद्विशभागोरहस्यके इत्यादि तथाच किमभिप्रेतमत्रस्मर्त्तभिरितिचेदुच्यते स्यापनेनतरेपामनुतापादीनांतत्रविद्यमानत्वाद्युक्तं रहस्येऽल्पत्वम् यस्तुरहस्यप्रायश्चित्तमिच्छति सत्ववश्यं पूर्वमनुतप्तोभवति प्रकाशस्यप्रायोऽन्यकृतत्वान्नतादृशोऽनुतापस्तपोवालोकापवादभीत्या सजातिपरित्यागभीत्याचतत्रप्रवृत्तेः

श्चित्तहै तिसतें वीमा हिस्सा रहस्यमे करणा इत्यादि (तथेति तातें ऋषियोंनैं इस विषे क्या श्रीगोकार कीताहै जेकर अयसे कहो तां इस विषे (उत्तर) ख्यापनेति इस कर्के कहीदाहै तिस रहस्य विषे प्रकट करणेतें विना होर जो पश्चात्तापादिकहैं तिन्हांकों विद्यमान होणेतें रहस्य विषे प्रायश्चित्तकी अल्पता युक्तहै इस विषे प्रत्यक्षजानीदाहै क्या जो पुरुष गुप्तहि पापके दूर करणे वास्ते प्रायश्चित्तकी इच्छा करनाहै सो निश्चयहि प्रथम पश्चात्ताप कर्ताहै क्या मेरेथीं महान् होष होया क्या करीं अयसे ॥ इस विषे कुछ होरभी कहतेहां प्रकाश प्रायश्चित्तकों अन्य पुरुषों कर्के करावाणेतें तिस विषे तयसा पश्चात्ताप और तप नहि होता क्यों सो पुरुष प्रायश्चित्त विषे लोकादी निंदाके भयतें प्रवृत्त होताहै और संवधी मुझकों त्यागदेणगे इस भयतें कर्ताहै नहि चित्त कर्के कर्ता ॥

१२० ॥ श्रीरणवीरकरित्त प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

किंचेति कुछ औरभी कहतेहां अयसे असी भी मनतेहां क्या आप पापके प्रकट करणे कर्के पापकी हानि हुंदीहै परंतु प्रकट करणे विषेभी तिस प्रकाशका प्रथम अनुतापहि कागणहै ना-
पश्चात्तापहि होया क्यों पश्चात्तापतें विना प्रकाशकी प्रवृत्तिकोंभी नहोणेंतें ॥ कुछक इस वि-
षे होरभी कहतेहां रहस्येति गुप्त तप आदिक करणे विषे चित्तकी स्थिरताकों भी
निस्संशयहोणेंतें (स्थिरमन होकर प्रायश्चित्तकों करे शीघ्रहि सिद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ इत्यादि
वचनां कर्के प्रायश्चित्त की अल्पता युक्तहै ॥ इस विषे वाक्यहै उत्तमेति मनकर्के जपका करणा
उत्तमहै और जो जिह्वा कर्के उच्चारण कीतियां आपणै कर्णीविषे जो शब्दका प्राप्त होणा अ-
यसा निरुष्ट कहाहै इत्यादिवचनांतें रहस्यहि अतिशय कर्के पापका नाशक जानणा तांतें तिस
पापके प्रकाश विषे उत्तम जो मनकी स्थिरता आदिक तिसके अभाव होणेंतें तांपूर्वक

किंचस्वयंरूपापनेनपापहानिरस्तीतिमन्यतेपरंतुतत्राप्यनुतापएवतत्कारण
तथा पापनाशकोज्ञायते तस्मैरूपापनाप्रवृत्तेः रहस्यीयतपश्चादौतुचित्तस्थै-
र्यस्यासंदिग्धत्वात्तस्यचासमाहितमनोवृत्तिः कुर्यात्तत्सिद्धिमाप्नुयादित्यादिना
उत्तममानसंजाप्यमुपांशुत्वधर्मस्मृतमित्यादिनाचातिशयेनपापनाशकत्वा-
वगमात्तस्यप्रकाशेतदभावादुचितं रहस्यप्रायश्चित्तेमुनि लोकप्रोक्तमल्पत्व-
म् तर्हिसर्वेषांरहस्यएवप्रवृत्तिः स्यादिति नोद्भावनीयम् प्रकाशस्यगोपयितु-
मशक्यत्वात्स्वयंरूपापयितुकामस्यतूचितमेवरहस्यमसंतापस्यपापनाश-
कत्वेऽर्थतोमुख्यत्वमाह मनुः यथायथामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हति तथात-
द्याशरीरंतत्तेनार्धमेणमुच्यते १ कृत्वापापंहिसंतप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते
नैवकुर्यापुनरिति निवृत्त्यापूयतेतुसः २

रहस्य प्रायश्चित्त विषे मुनि लोकां कर्के कही जो अल्पता सोइ युक्तहै॥जेकर अयसे कहतेहो-
तांसत्र पुरुषां की रहस्य विषेहि प्रवृत्ति होवे एह नहि भावना करणी क्यों रहस्यकी न्यांइ प्रका-
श होये काछपाण। अशक्यहै और जो आप प्रकाश करणे की इच्छावालाहै तिसकों गुप्त क-
रणाहि युक्तहिहै॥पश्चात्तापकों पापके दूर करणे विषे वास्तवतें मुख्यता कहीहै मनुजीने यथेति-
जिउं जिउं पुरुषका मन पाप कर्मकी निंदा कर्चाहै तिउं तिउं तिसका शरीर पापतें रहित
होताहै॥१॥पाप करणेंते पीछे पश्चात्ताप कर्के पापतें रहित होताहै फेरमें अयसे न करांगा इस-
निवृत्ति कर्के सो पवित्र होताहै ॥ २ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित्त प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥ १२१

इत्यादि कर्के किहाहै और व्याख्यान इस विषे कुलूक भट्टने कीताहै पापमिति इसमनुजीके वाक्य का अर्थपूर्व कथन कीताहै जद अयसे पश्चात्तापहै कि फेर अैसे नकरागा ऐसाहै स्वरूप जिसका ऐसाजो निषेध स्वरूप संकल्प सो है प्रयोजन जिसका अैसापश्चात्ताप जिस्कोहोवे सो निरंतर पापतें शुद्धहै तिसते क्या सिद्ध होया सो कहते हां आपजो पापका प्रत्यक्ष करणाहै तिम कौंभी अनुतापकाहि कार्यहोणेंते तांते संतापकोहि पापके दूर करणविषे मुख्यताहै और स्याप नकी गोणता प्रतीत हेतेहै कार्यतें कारणका जानणा इसन्याय कर्के स्यापन कार्यकाभी पा ठविषे प्रथम अंगीकार कीताहै॥पश्चात्ताप शुद्धिका कारणहै सो याज्ञवल्क्य विषेभी कहाहै पश्चात्ताप और उपवास व्रत सब शुद्धिके कारणहैं एह किहाहै ॥ अब इस विषे वौधायन कह

इत्यादिनाव्याख्यातंचात्रकुलूकभट्टेन पापंकृत्वापश्चात्संतप्यतस्मात्पापा न्मुच्यतेइत्युक्तमपिनैवंकुर्यापुनरित्येवमनूदितम् यदातुपश्चात्तापोनैवंपुनः करिष्यामीत्येवंरूपनिवृत्तिरूपसंकल्पफलकः स्यात्तदा सुतरांतस्मात्पा पात्पूतोभवतीति ततश्चस्वयंस्यापनस्याप्यनुतापकार्यत्वात्संतापस्यैवपा पहानौमुख्यतास्यापनस्यानुकल्पतैवप्रतिभाति कार्यात्कारणमनुमेयम् इ ति न्यायेन स्यापनस्यप्रथमोपादानं॥मनस्तापस्य शुद्धिहेतुत्वम् याज्ञव ल्क्ये पश्चात्तापोनिराहारः सर्वेते शुद्धिहेतवइति ॥वौधायनः परित्यागस्त पोदानमनुतापोऽनुकीर्त्तनमित्यादि केचित्तुद्वेशकीपापस्यनरकानुकूलाव्यव हारनिरोधिकाचेति प्रतिपादितंप्राक् तत्ररहस्यव्यवहारनिरोधिकायाअभा वादल्पत्वं पापस्येत्यतोऽल्पंप्रायश्चित्तमपि प्रकाशे द्वयोरपिशक्तयोर्विद्य मानत्वादाधिक्यंपापस्येत्यत प्रायश्चित्तमप्यधिकंतत्र तर्हिस्यापनेनेत्या दिवैयर्थ्यस्यादितिचेच्छ्रूयताम्

तेहेण पापका त्याग और तप और दान और पश्चात्ताप और प्रकाश एह सब शुद्धिके हेतुहेण इत्यादिक भी किहाहै तिस विषे होरभी कहतेहैं किपापकीयां दो २ शक्तियां हैण एक नरक केदेणेवाली और दूसरी व्यवहारके दूरकरणेवाली एह कथन कीताहै पूर्वा॥कैयांका ऐसा अभिप्रायहै तत्रेति तिस रहस्य विषे व्यवहारके दूरकरणे वाली शक्तिके अभाव होणेंते पापके प्रायश्चित्तकी अल्पताहै पापकीभी अल्पताहै और प्रकाशविषे दुषां शक्तियांको विद्यमान होणेंते पापकीभी अधिकताहै और प्रायश्चित्तकीभी अधिकताहै॥कुलूक होरभी कहतेहां तां प्रकाश करणे कर्के म नुजीमे पापकी जो अल्पता कहीहै सो व्यर्थहोई जेकर ऐसे कहें तां अवणकर

१२२ ॥ श्रीरणवीरकारिते प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

जिसने प्रकाश कीता है सो अवश्यहि प्रायश्चित्तकों करेगा इस अभि प्राय कर्के पापकी अल्पता कही है ॥ अयसे मन्त्रो और जो आप प्रकाश कर्ता है सो अवश्य प्रायश्चित्त कों करता है अयसे समाधानकर देहें । रहस्यविवेकर्ते पीछे रहस्य प्रायश्चित्त कों कहतेहां तिस विषे याज्ञवल्क्यजीका वाक्य है होरनां पुरुषां कर्के प्रकट होया है पाप जिसका सो पुरुष सभा कर्के उपदेश कीते होये प्रायश्चित्तनूं करे ॥ यद्यपि आप सब शास्त्र विषे चतुर होवे तदभी सभा विषे प्राप्त होकर बुद्धि मानोंके साथ विचार कर तिनां कर्के कीते होये उपदेश व्रतकों करे ॥ अत्रेति इस विषे दोष प्रकाश करणे का प्रकार और सभाके उपदेशका प्रकार एह दूसरे २ सभा प्रकरण विषे देष लेना ॥ अब अविख्यापित दोषकों कहतेहां अन्य पुरुषां ताई नहि प्रकट कीता

अवश्यं भावि प्रायश्चित्तेन तन्नाशकत्वाभिप्रायं तदित्यनुमन्यतां स्वयं स्यापयित्वाऽवश्यं करोत्येव प्रायश्चित्तमिति समादधते ॥ अथ रहस्य प्रायश्चित्तं तत्र याज्ञवल्क्यः विख्यातदोषः कुर्वीत पर्षदोऽनुमतं व्रतम् अनभिज्ञातदोषस्तुरहस्यं व्रतमाचरेत् १ ॥ यद्दोषो यावत्कर्तृसंपाद्यस्ततोऽन्यैर्विख्यातो दोषो यस्य सौपर्षदुपदिष्टं व्रतं कुर्यात् यद्यपि स्वयं सकलशास्त्रार्थविचारचतुरस्तथापि पर्षत्समीपमुपगम्य तया सह विचार्य तदुपदिष्टं कुर्यात् ॥ अत्र दोषविख्यापनप्रकारः पर्षदुपदेशप्रकारश्च द्वितीये पर्षत्प्रकरणे द्रष्टव्यः अथाविख्यापितदोषः अन्येभ्यो न विख्यापितो न प्रकाशितः स्वदोषो येन सोऽविख्यापितदोषः स स्वयमेव विदित्यारहस्यं रहस्य प्रायश्चित्ताधिकारविहितं व्रतं स्वकीयपापोचितं बुद्ध्याचरेत् अतोऽत्र परिषदुपसत्तिर्नोद्भावनीया विख्यापितदोषपरत्वेन तस्या विहितत्वात् अविख्यापितत्वं च दोषोत्पादकसामग्रीवहिर्भूतापारिचितत्वम् ॥

अपना दोष जिसने सो अविख्यापित दोष कहा है ॥ सो अविख्यापित दोष पुरुष आपहि बुद्धि कर्के प्रकाश करणें विना रहस्य प्रायश्चित्तके अधिकार कर्के विधान कीता जो व्रत अपने पाप दूर कर्के योग्य जान कर्के करे इस कारणतें इस रहस्य विषे सभा विषे जाने की भावना नहि करणी क्योंकि परिषद विषे जानेकों प्रकाशित दोष विषे होणें और तिस अविख्यापित दोष कों सभा विषे जानेका न विधान होणें ॥ इसी कारणतें परिषदुपसत्ति नहि १ अब अविख्यापितत्वके लक्षणनूं कहते हैं पापके उत्पन्न करणे वाली जो सामग्री क्या इस तरा होया अयसे न जान दे जो वहिर्भूत लोक तिनां विषे न खबर होणी इति ॥

इसी कारणते परस्त्रीके संयोगादि विषे दुहाँको स्त्री पुरुष को आपस विषे पापका ज्ञान हो
 षोंते, और स्वर्ण कौशरीआदि विषे एकस्वर्णके चोर कौहिज्ञान होषोंते तिनानें इतर पुरुषाँकोन
 ज्ञान होषोंते क्षण लगगिया॥अब कुछक होर कहतेहैं अत्रेति जेकर पापके करणे वाला आ
 पधर्म शास्त्र विषे कुशल होवे तां आपहि यथा योग्य जाण कर्के करे और जेकर धर्म शास्त्र
 विषे आप चतुर नहोवे तां किसेन ब्रह्महत्या दिक पाप कीताहै तां तिस विषे क्या रहस्यप्रा
 यश्चित्तहै ऐसे अन्य पुरुष के वहाँनें जाण कर करे ॥ इसते स्त्री शूद्रा दिकां कों भी इसी
 प्रकार कर्के रहस्य व्रतके जानणे की सिद्धिका अधिकारहै ॥ इस विषे शंकाहै नचेति रहस्य
 व्रताँके करवाणे विषे जप आदि कों प्रधानहोणेंते स्त्रीशूद्र कों जप कानहि अधि कारहोणेंते
 तारहस्य विषे नहि अधि कार ऐसे कहणे योग्य नहिहै क्योंकि यत इति जिस कारणते नहि

अतः परस्त्रासंभोगादौ द्वयोः स्वर्णापहारादवेकस्यैव ज्ञानसत्त्वात्तदितराज्ञा
 नाल्लक्षणसमन्वयः अत्र यदि पापकर्ता स्वयं धर्मशास्त्रकुशलस्ततो यथोचि
 तं व्रतं ज्ञात्वा कुर्यात् तत्राऽकुशलश्चेत्तदा केनचिदहो ब्रह्महत्यादिकं कृतम् ॥
 तत्र किं रहस्यप्रायश्चित्तमित्यन्यव्याजेन बुद्ध्या कुर्यात् । अतश्च स्त्रीशूद्रयो
 रप्यमुनैव यथारहस्यव्रतज्ञानोपपत्तेरधिकारः ॥ न च रहस्यव्रतानां जपादि प्र
 धानत्वादविद्ययोश्च स्त्रीशूद्रयोस्तदनधिकार एवेति वाच्यं । यतो नैकांतो रह
 स्यव्रतानां जपादि प्रधानत्वं दानादेरप्युपदेशात् गौतमोक्तप्राणायामादिसं
 भवाच्च चतुर्विंशतिमते तु आहिताग्नेर्विनीतस्य वृद्धस्य विदुषोऽपि वा प्रायश्चि
 त्तरहस्योक्तं पूर्वोक्तमितरस्य त्विति १ अत्राप्याहारविशेषानुक्तौ पयः प्रभृतयः
 कालविशेषानुक्तौ संवत्सरादयः देशविशेषानुक्तौ शिलोच्चयादयो गौतमाद्य
 भिहिताः प्रकाशप्रायश्चित्ते न्वेपणीयाः

रहस्य व्रताँको के बल जप आदि की प्रधानता किंतु दानादि काभि विधान होणेंते और च
 पुनः गौतम कर्के कहे होये प्राणायामादि का विधान होणेंते स्त्री शूद्रकों भी अधि कार सिद्ध
 होया॥इस विषे चतुर्विंशति मत विषे विशेष कहाहै कि विनातस्य क्याशिसित सामिक ब्रा
 ह्मण कों और नम्र और वृद्ध और बुद्धि मान इनको रहस्य प्रायश्चित्त का अधि कारहै इन्हांते
 जो इतरहैं तिन्हां को पूर्वोक्त क्या प्रकाश प्रायश्चित्त किहाहै १ इस विषे आहार विशेष न
 हि कहा तिस वास्ते दुग्धादि जानणे और काल विशेषकी अनुक्ति विषे यथोचित वषं आ
 दि जानणे और देश विशेषकी अनुक्ति विषे शिलोच्चयादि गौतम जी कर्के कहे होये
 प्रकाश प्रायश्चित्त विषे देखलैणें ॥ सो (सर्वाः समुद्रगाः पुण्याः सर्वे पुण्याः शिलोच्चयाः ॥)
 इत्यादि कर्के पंचम प्रकरण विषे कहेहैं ॥

१२४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ ॥ टी० भा० ॥

कुछकहोरभीकहोदाहै जेमरणेतकप्रायश्चित्तकहाहै सोतिसरहस्य विषेभीमरणांत हि जानणा मरणांतविषे अल्पहोणोंका अभावहोनेतें क्यामरण कासंकोचनहिहोसका औरप्रकाशविषे योव्रत आदिकहेहैं सोब्राह्मणादि जातिकेऽनुसारतें रहस्य व्रतविषे वीवां २० हिस्सा करवाणे जयसे विश्वामित्रने कहाहै प्रकाश इति प्रकाश प्रायश्चित्त विषे जो व्रत आदि कहाहै सो रहस्य विषे जाति ब्राह्मणादि और आदिकहोणकके सामर्थ्यता और गुण सतों गुणादि और एकवारकके और जाणकके कीतियाहोयां इनांकाग्रहणहै वीवां २० हिस्सा और वीहवां ३० हिस्सा और सठवां हिस्सा करवाणांजयसे प्रकाशविषे नहीअयुत २०००० जपहोवेतारहस्यविषेएक अयुत१००००करवाणा इत्यादि।१।अथवेति वा आपणोइच्छाते महापापके रहस्यविषेएकवर्ष

किंचयत्रमरणांतिकं प्रायश्चित्तमुक्तं तत्र रहस्येपिमरणमेव कर्त्तव्यं मरणेह्रा सासंभवात् अन्यत्र प्रकाशेयद्गतादिकमुक्तं जात्यपेक्षया तस्य विंशभागादि कं कार्यं यथाह विश्वामित्रः प्रकाश उक्तं यत्किंचिद्विंशभागोरहस्यके त्रिंशद्भागः षष्टिभागः कल्प्यो जात्याद्यपेक्षया १ आदिशब्दात् जातिशक्तिगुणापेक्षं सकृद्बुद्धिकृतं तथा इत्यादेरुपसंग्रहः ॥ अथ वामहापातके रहस्यकृतैकामतः अबुदिकं करणीयं तदशक्तौ पंचदशधेनवोदातव्याः अन्यत्र याज्ञवल्क्योक्तं प्राणायामशतं करणीयं यथा प्राणायामशतं कार्यं सर्वपापपनुत्तये उपपातकजानामनादिष्टेषु चैव हीति अत्र मिताक्षरा गोवधादिषट्पंचाशदुपपातकजानामनादिष्टरहस्यव्रतानां च जातिभ्रंशकरादीनामपनुत्तये प्राणायामशतं कार्यं तथा सर्वेषां महापातकादीनां प्रकीर्णकां तानामप्यपनुत्तये प्राणायामाः कार्याः तत्र च महापातकेषु चतुःशतमतिपातकेषु त्रिशतम् ॥

का व्रत करवाणे योग्यहै जेकर वर्षके व्रतकी न सामर्थ्यहोवे तांपंदरां १५ गोवां दानकरे औरमहापापतें अन्यपाप विषे याज्ञवाल्क्य जीनेकहाहै सो १०० प्राणायाम करणा जयसे वाक्यहै प्राणेति सबपापके दूरकरणे वास्ते सउ १०० प्राणायामकरणा और उपपातक जो इच्छातें विनापापहै तिसविषे भोसउ १०० प्राणायाम कहाहै।१।इसविषे मिताक्षराहै गोहत्यातें आद लेक रच्छिपुंजाह ५६ जोउपपातक और नहिकहा रहस्यव्रत जिनांका औरस्वजातितें दूरकरणेवाले योपाप हैण तिहनांके दूरकरणेवास्ते प्राणायाम सउकरणे योग्यकहाहै तयसे संपूर्ण जोमहापापप्रकीर्णपर्यंततिन्हांके भी दूरकरणेवास्ते प्राणायामहि करणे योग्यहैण तांमहापापविषे चारसउ ४०० अतिपातकविषे त्रयसउ ३०० प्राणायामकहने

॥ श्रीरणवैरकारित प्राश्रित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥ १२६

श्रीर अनुपातकाविषेदो २०० सउऐमे संख्याजानसी श्रीर विशेषकहतेहैं प्रकाशप्रायश्चित्तों विषे महापातक प्रायश्चित्तके चौथेअंशके। उपपातकाविषे विधानहोएते ऐसेप्रकीर्णविषे अल्पताजान सी अर्थात् उपपातकाविषे १०० प्रकीर्णीविषे ५० ॥ २५ इसीकारणते यमजीने कहाहै दश वार उंकार उच्चारणहै जिसविषे अयसे चार सउप्राणायामके करणे कर्के ब्रह्महत्यातिरहितहोता है अन्यपापांका क्याकहणा नहिदूरहोते अर्थात् सुगमहि दूरहोएगे इति १ बौधायनजीने भीइ स विषे विशेषकहौह अपि इति कोमलवाणीविषे वाक् कया विष्णुकानाम उच्चारण करणा और नेत्रा कर्के विष्णु मूर्तिका दर्शन औरकन्या कर्के यशका श्रवणकरणा औरनासा कर्के विष्णु शेषका सिंहना और मनकर्के ध्यानकरणा एहनांके अतिक्रमाविषेक्या नाकरणे विषे त्रय ३ प्रा

अनुपातकेपुद्दिशतमितिसंख्यावृत्तिः कल्पनीया प्रकाशप्रायश्चित्तेषुमहापा तकप्रायश्चित्ततुरीयांशस्योपपातकेपुविधानात् प्रकीर्णकेषुचह्रासःकल्प्यःअ तएवोक्तं यमे७ दशप्रणवसंयुक्तैः प्राणायामैश्चतुःशतैः मुच्यतेब्रह्महत्यायाः किंपुनः शेषपातकैरिति१ बौधायनेनाप्यत्रविशेषउक्तःअपिवाक्चक्षुःश्रोत्रत्व गूघ्राणमनोव्यतिक्रमेपुत्रिभिः प्राणायामैः शुद्ध्यति शूद्रस्त्रीगमनान्नभोजने पुष्टकृष्टकसप्ताहंसप्तसप्तप्राणायामान्धारयेत्। अभक्ष्याभोज्यामिध्यप्राश नेषुतथावापयविक्रयेषु मधुमांसघृततैललाक्षालवणरसान्नवर्जेषुप्यन्य देवयुक्तंद्वादशाहंद्वादशद्वादशप्राणायामान्धारयेदित्यादि ॥ अत्रलाघवाद्यपे क्षयाप्राणायामशतमेवैकाहद्वयह्र्यहादिक्रमेण मासंपण्मासं संवत्संवा ऽभ्यासनीयमिति ॥

या यामां कर्के शुद्धहोताहै और शूद्रस्त्रीके साथ गमन क्या मिलकर सीणा और शूद्रके अन्न काभक्षणकरणा इनांविषे भिन्नभिन्नसत्तसत्त७ प्राणायामकरणे सत्तदिनतकतां शुद्धहुंदाहै अवकुल होरभी कहतेहां अभक्ष्य और अभोज्य और अशुद्ध जो अन्नादि तिनांके खानेविषे तयसे वा नाहे वेचनेके योग्य जोद्रव्यतिनांके वेचने विषे परंतु मषीर और मांस औरघृत और तैलऔर लाष औरलवण और रस और अन्न इनांते वर्जित जोवस्तु हैंण तिनांविषे और जोहोरभी अ यसे दोषहैं युक्ततिनांविषे वारां १२ वारां १२ प्राणायामांकोकरे वारांदिन तक परंतु इसविषे थोडे की अपेक्षाकर्के जानणा और जैसे प्राणायाम सउ १०० कहाहै और एकदिन दोदिन त्रय दिन आदिक्रमकर्के एकमास छे मास ६वाएकवर्ष प्राणायामका अभ्यासकरणे योग्यहैइति

१२६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

इस विषे व्रतकरणेकी सामर्थ्य वालेने भी जप होमादि करणें योग्यहैण (इनां पूर्वोक्तां कर्के ब्राह्मणादि शुद्धहोतेहैं) इत्यादि मनुकेकहनेतें अयसें शूलपाणिका वचनहै॥ अब याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं संपूर्ण महापापोंके दूरकरणेवाले मंत्रानू शुक्रियं इत्यादिमंत्रसवपापोंके दूरकरणेवालेकहे हैं१ इसका अर्थ कहतेहैं शुक्रियहैनाम जिसका ऐसे अरएयक विशेषहै विश्वानिदेव सवितः इत्यादि वाजसनेयकविषेपडीदीहै और अरण्यकनामऋचा(ऋचंवाचंप्रपद्येमनोयज्ञःप्रपद्ये) इत्यादिभी तिसीवाजसनेयकविषे पडीदीहै तिनानुपापोंका जप संपूर्ण महापापकेनाशकरणेवाला है इसजगा जप संख्या कही नहि तथापि १००० हजार तक जानणी तैसेगायत्रीका जपम हांपापके दूरकरणे विषे एकलक्ष जप कहाहै और पातक अनुपातक विषे दश हजार और

अत्रव्रतकरणशक्तेनापिजपहोमादयःकार्याः एतौर्द्विजातयःशोध्याइत्यादि मनुक्तेरितिशूलपाणिः ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ शुक्रियारएयकजपोगायत्र्याश्रवि शेषतः सर्वपापहराहेतेरुद्रैकादाशिनीतथा १ ॥ अस्यार्थःसकलमहापात कादिसाधारणान् पवित्रमंत्रानाह शुक्रियंनामअरएयकविशेषःविश्वानिदे वसवितरित्यादिवाजसनेयकैपठ्यतेअरएयकंचऋचंवाचंप्रपद्येमनोयजुः प्र पद्येइत्यादितत्रचपठ्येततयोर्जपःसकलमहापातकादिहरः तथागायत्र्याश्र महापातकेषु लक्षमिति पातकानुपातकयोर्दशसहस्रं उपपातकेषुसहस्रं प्रकीर्णकेषुशतमित्येवंविशेषतोजपःसर्वपापहरः तथाचगायत्रीमधिकृत्य श्लोकःशंखेनोक्तः ॥ शतंजप्तातुसावित्रीस्बलपपातकनाशिनी सहस्रजप्तातु तथापातकेभ्यःप्रमोचनी १ दशसाहस्रजाप्येनसर्वकिल्विपनाशिनी लक्षं जप्तातुसादेवीमहापातकनाशिनी २ सुवर्णस्तयकृद्विप्रोब्रह्महागुरुतल्पगः सुरापश्चविशुध्यंतिलक्षजप्त्वानसंशयइति ॥ चतुर्विंशतिमतेनोक्तम्

उपपातक विषे एकहजार और प्रकीर्ण विषे एकसउ १०० अयसेविशेषतें जप सव पापकेदूर करणेवालाहै १ तयसे गायत्रीको अंगीकारकर्के शंखजीने श्लोककहाहै एकसउ १०० बारजपी होई गायत्री थोडेपापके दूरकरणेवालीकहीहै॥ एह एकहजारजपीहोई पातकातें शुद्धकर्तीहै ॥ १ और दशहजार १००० जप सभ पापको दूरकर्तीहै इसजगासभपापओहजानणा कि जेडाइस जगा नहि किहा और एकलक्षजपीहोई महापापके दूरकरणेवालीहै २ और सुवर्णके चुराखे वालाब्राह्मण और ब्रह्महत्याके करणवाला और गुरांकीशय्याविषे जो शयनकर्ताहै और मदि रात्राजो पानकर्ताहै सोगायत्रीकेलक्ष १००००० जपकर्के शुद्धहोतेहैं इसविषेसंशयनहि अब चतुर्विंशतिमतकर्के कहतेहैं ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ १२७

और एक कोड १०००००० गायत्रीके जप कर्णे कर्के ब्रह्महत्याकों दूकतीहै। और अशालक्ष ८००००० जप कर्के मदिराके पानतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै। और सत्तरलक्ष ७०००००० गायत्रीका जप स्वर्णस्तेर्याकों पवित्र कर्ताहै। और सठ लक्ष जपके करणे कर्के गुरांकी शय्याविषे जाणेवाला शुद्ध होताहै इति २। एह बहुत प्रायश्चित्त होणेंतें प्रकाश विषे जानणा। तयसे रुद्रैकादशिनी याग ११ रुद्रानुवाकांका जोसमूहहै सोरुद्रैकादशिनी कहीहै सो जपीहोई विशेष कर्केसव पापांके दूर करणे वाली कहीहै। और इसमे संमति कहतेहै। एकेति। रुद्रानुवाकां कों यागवार पडने कर्के धर्मवेता पुरुष महं पापांतें रहित होताहै इसविषे संशयनहि व्यवस्था कहतेहैं। महापातकां विषे याग अवृत्तिके दखाणेतें अतिपातकां विषे चौथे चौथे हिस्मेकी अल्पता जानणी।

गायत्र्यास्तु जपेत्कोटिब्रह्महत्यां व्यपोहति लक्षाशीतिजपेद्यस्तु सुरापाना द्विमुच्यते ॥ १ ॥ पुनतिहेमहर्तारं गायत्र्या लक्षसप्ततिः गायत्र्या लक्षपद्या तु मुच्यते गुरुतल्पग इति २ तद्गुरुत्वात् प्रकाशविषयम् । तथारुद्रैकादशिनी एकादशाना रुद्रानुवाकानां समाहारो रुद्रैकादशिनी सा च विशेषतो जप्ता सर्वपापहरा एकाशगुणान्वापि रुद्रानावर्त्य धर्मवित् महद्भ्यः स तु पापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय इति महापातके प्वेकादशगुणावृत्तिदर्शनात् । अतिपातकादिषु चतुर्थचतुर्थी शह्रासौ योजनीयः च शब्दोऽघमर्पणादि समुच्चयार्थः यथाह वसिष्ठः । सर्वदेवपवित्राणि वक्ष्याम्यहमतः परं येषां जपैश्च हंमैश्च पूयंते नात्र संशयः १ ॥ अघमर्पणं देवकृतं शुद्धवत्यस्तरत्समाः कूप्मांडूयः पावमान्यश्च दुर्गासावित्र्यथैव च २ ॥ अभिपंगाः पदस्तोमाः सामानि व्याहृतिस्तथा भारुंडानि च सामानि गायत्ररैव तंतथा ॥ ३ ॥

और इस विषे जो चशब्दहै सो अघमर्पणादिकें ग्रहण वास्ते जानणा। जयसे वसिष्ठजी कहतेहैं। संपूर्ण ॥ वेदां विषे पवित्र जो मंत्रहै। तिनको कहतेहैं। जिनको जप और होम कर्णे कर्के पुरुष शुद्धहोतेहैं। ॥ १ ॥ सवपापांके हरणे वालियां मंत्रांकी गिणती करतेहैं। अघेति अघमर्पणहै (कृतंचसत्यं) इत्यादि इसतिहीं (देवकृत) मंत्रहै और (शुद्धवत्यः) इनकानिरूपण अगे होवेगा और (तरत्समाः) इसप्रतीक बालियां क्रुचः और कूप्मांड संज्ञा बालियां और पावमानी नामते जो प्रसिद्धहैं ॥ और दुर्गासावित्री मंत्र ॥ २ ॥ अभिपंग नामपद स्तोम जो सामवेद और व्याहृतियां और भारुंडनाम वाला सामवेद वैसेहि गायत्र और रैवत नामकर्के प्रसिद्ध जो सामवेद ॥ ३ ॥

१२८ ॥ ॥ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा ० ॥

और पुरुषव्रतजो अरण्यगायनमेहै और भासभीउसीस्थातमेहै और देवव्रतभीसामवेदहिहै और जलकाचिन्ह जिन्हांको ऐसे मंत्रआपोहिष्ठाइत्यादि और ऊहगायनविषेवार्हस्यत्य तैसेहि वाक्सूक्त और मधुमत् जो अधर्ववेदमेहै ॥४॥ और शतरुद्र और अथर्वशिरउपनिषद् और त्रिसुपर्ण और महाव्रत साम और गोसूक्तसाम और अश्वसूक्तसाम तैसेहि इन्द्रसाम और शुद्धसाम ॥५॥ और आज्यदोहसाम और रथंतर अग्निव्रत नामकर्के प्रसिद्धजो वामदेव्यनामसाम और बृहत् साम एह गायनकीतेहोए पापि पुरुषांको पवित्र कर्तेहैं । और इनके पाठकरणेवाला पुरुष जन्मांतरके ज्ञानवालाहुंदाहै । ६ । तिसविषे रहस्य प्रायश्चित्तनूं मनुजीकहतेहैं दिनदिनविषेवेदका

पुरुषव्रतंचभासंचतथादेवव्रतानिच अब्लिंगावार्हस्यत्यंवावाक्सूक्तंमधुमत् तथा ४ ॥ शतरुद्राथर्वशिरस्त्रिसुपर्णमहाव्रतं गोसूक्तंचाश्वसूक्तंचइंद्रशुद्धेतु सामनी ॥ ५ ॥ त्रीण्याज्यदोहानिरथंतरंचअग्निव्रतंवामदेव्यंवृहच्च एतानिगीतानिपुनंतिजंतून् जातिस्मरत्वंलभतेयदीच्छेदिति ६ ॥ तत्र रहस्यप्रायश्चित्तमाह ॥ मनुः ॥ वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा नाशयत्याशुपापानिमहापातकजान्यपि ॥ १ ॥ यथाशक्तिप्रत्यहंवेदाध्ययनं पंचमहायज्ञानुष्ठानमपराधसहिष्णुत्वमित्येतानिमहापातकजनितान्यपिपापानिशीघ्रनाशयंतिकिमुतान्यानि ॥ यथैधस्तेजसावह्निः प्राप्तनिर्दहतिक्षणात् तथाज्ञानाग्निनापापं सर्वदहतिवेदवित् ॥ २ ॥ यथाग्निःकाष्ठान्यासन्नानिक्षणैर्नैवतेजसानिः शपंकरांति तथाज्ञानाग्निनापापंसर्ववेदार्थज्ञो ब्राह्मणोनाशयति ॥ (इत्येतत्परमार्थज्ञानस्यैतत्) पापक्षयोत्कर्षज्ञापनार्थमे

तत्

अभ्यास करणा जयमे समथीहै तैसे और महायज्ञांका करणा और क्षमा क्या अपराधकासहाराणा एहतात्कालहि महापातकजो पापहेन तिनाकों नाशकरणेवालेहैं ॥१॥ अन्यपापांकाक्याकहणा नहि दूर करसकते अर्थात् सबको दूरकर्तेहैं । जैसे काष्ठसमीप प्राप्तहोयेहोवेनू अग्निक्षण तेंदाहकर्ताहै तैसेवेदार्थके जानणेवाला ब्राह्मणज्ञानरूपी अग्निकर्के पापकोनाशकर्ताहै ॥२॥ परमार्थज्ञानकोपापके नाशकरणेकी अतिशक्तिके दिखानेबास्ते एहकिहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि जैसीकैसी अग्नि जैसे कैसे काष्ठादिको लगीहोई दग्धकरदेतीहै तैसेहिजैसाकैसावेदके अर्थ काज्ञान जैसेकैसे पापको दूर कर्ताहै ॥

॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ १२९

अब याज्ञवल्क्य जी विशेष कर्के कहते हैं वेदाभ्यासरतं इसका एह अर्थ है ॥ पहिले वेदका पढ़ना १ फेर विचारणा २ फेर बारंवार देखणा ३ फेर तप करणा ४ फेर शिष्यांतांइ तिसका दान करणा ५ एह पंच प्रकारका वेदाभ्यास कहा है ॥ तिसविषे इसां कम कर्के युक्त होणा और नहि सहारणे योग्य जो शीत गर्मी तिसको सहारणा परमेश्वरकी परिचर्याके अर्थ और पंचायज्ञ कर्मी विषे और पंच देवतां विषों किसे देवताका पूजन करणा और बल वैश्व देवनित्य श्राद्ध करणा पाठ करणा और हवन करणा और अतिथिको क्या जिसके नामादिकाज्ञान नहि तिसकी पूजा करणी मनवाणीदेह कर्के रहोणा अर्थात् एहनां विषे युक्त होणा अयसे पूर्व गुणा कर्के युक्तनू महा पातक पाप स्पृशेभी नहि कर्के और अपि कहणें प्रकीर्ण पापांका क्या कहणा क्या सब दूर होते हैं १ वसिष्ठ जीने भी कहा है प्रकीर्णक पापांके नाश करणे के अभि प्राय कर्के एह कहा है ॥ क्या तिसको भी दूर कर्ते हैं ॥ जैसे कहते हैं जद कुछ अधिक-

याज्ञवल्क्यः वेदाभ्यासरतं क्षांतं पंचयज्ञक्रियापरं नरुष्टं तीह पापानि महापातकान्यपि १ अर्थः वेदस्वीकरणं पूर्वं विचारोऽभ्यसनंतपः तद्दानं चैव शिष्येभ्यो वेदाभ्यासो हि पंचधेतुः क्रमेण वेदाभ्यासनिर्गतं क्षांतं तितिक्षायुक्तं पंचयज्ञक्रियासु पाठो होमश्चातिथीनां सपर्यत्याद्युक्तासु निरतं ॥ महापातकान्यपि नरुष्टं किंपुनः प्रकीर्णजान्युपपातकारिचेत्येपरर्थः ॥ वसिष्ठेन च प्रकीर्णकपापनाशमभिप्रायेणेदमुक्तं यथा यदाऽकार्यशतं साग्रकृतं वेदश्च धार्यते सर्वतत्तस्य वेदाग्निर्देहव्यग्निरिव धनमिति १ तथा न वेदबलमाश्रित्य पापकर्मरतिर्भवेत् अज्ञानाच्च प्रमादाच्च दह्यते कर्मनेतरदिति १ किंच वायुभक्षो दिवा तिष्ठन् रात्रिं नीत्वाप्सु सूर्यदृक् जप्त्वा सहस्रं गायत्र्याः शुद्धये ब्रह्मवधाद् १ ते सूर्यदृक् सूर्योदयानंतरं गायत्रिं जप्त्वा ब्रह्मवधेतरमहापापाभ्यस्तपि पात

कानेक पापसमुच्चयेभ्यो मुच्यते ॥

मउ १०० अशुभ कर्म कीता और वेदका भी धारणा कीता पर वेद का जो धारणा है सो वेद अग्नि रूप तिस अशुभ कर्म की तिस संपूर्ण अशुभता नू दूर कर्ता है इस विषे अनुरूपक दृष्टांत है अग्निकाष्ठनू जैसे दाह कर्ता है ईहां वेदके स्थान अग्नि और पापके स्थान ईंधन है ॥ १ ॥ और कहते हैं तथेति तैसे आजा है वेदके बलको प्राप्त होकर पाप कर्म विषे प्रीति न करे जेकर अज्ञान तें वा प्रमाद तें होवेता वेद कर्के दाह होता है जेकर उच्छ्रा कर्के और विषयक बल कर्के होवेता नहि दूर होता ॥ १ ॥ कुछक होरभी कहीदा है दिन विषे वायुके आहार कों करे स्थित होया-होया और रात्रि नू जल विषे स्थित होकर व्यतीत करे और सूर्योदयते पीछे गायत्रीकों जपकर ब्रह्महत्या तें इतर जो महापाप और बारं बार कीजे जो उपपातक और अनेक पापांके समूह-तिनांते रहित होता है ॥ १ ॥

१३० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

अब वृद्ध वासिष्ठ जीका वचनहै यवांकी मुष्टि वा बुक्कनूं और गर्भ कीतायो घृत तिस नूं चपुनः अभि मंत्रण करे मंत्रः ॥यवो सीति हेयव इसका अध्याहार क रणा हेयव तुंयवहै क्या पुण्यके देणे वाला और अन्नां का राजाहैं और वरुण तुझका देवताहै ऐसातूं मषीर कर्के युक्त होयां२ सब पापां के दूर करणे वालाहैं इसी कारणतें ऋषियां कर्के तुं पवित्र कहैं इति और दूसरे मंत्र को कहतेहां घृत मिति इस कर्के भीयवां को अभि मंत्रण करे । अब संपूर्ण पापांके दूर करणे वाले मंत्रां नूं कहतेहैं सहित व्याहृति यांके ओंकारके गायत्री शिरके साथ सोलां १६ प्राणायाम दिन दिन विषे कीते होये एक मास कर्के गर्भ हत्याके पापको भी दूर कर्तेहैं इनमंत्रकके डक्क २ प्रति तीनवारपढ़े पहले पूरक फेर कुंभक फेर रेचक विधिसें अपि कहणे कर्के ब्रह्महत्या पाप को भी दूर कर्तेहैं ॥३॥ अब इसीको विस्तार कर्के कहतेहां सव्याहृति व्याहृतियां और ओंकार और शिर कर्के)आपा ज्यो तीर सो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम)एह सो

वृद्धवाशिष्ठः ॥ यवानांप्रसूतिमंजलिंवाश्रप्यमाणंघृतंचाभिमंत्रयेत् यवोसि धान्यराजस्त्ववारुणोमधुसंयुतः निर्णोदःसर्वपापानांपवित्रमृपिभिःस्मृत इत्यनेन घृतंयवामधुयवाःपवित्रमित्यादिनाचसर्वपापनाशमाह । सव्याहृतिप्रणवकाःप्राणायामांस्तुषोडश अपिभूणहनमासात्पुनंत्यहरहःकृताः ३ सव्याहृतिसप्रणवाः सावित्रीशिरोयुक्ताः पूरककुंभकरेचकादिविधिनाप्रत्य हंपोडशप्राणायामाःकृतामासाद् ब्रह्मघ्नमपिनिष्पापंकुर्यति अपिशब्दादतिदेशिकब्रह्महत्याप्रायश्चित्ताधिकृतमपि एतच्चप्रायश्चित्तंद्विजातीनामेव न स्त्रीशूद्रादेर्भंत्रानधिकारात् ३कौत्संजप्त्वापइत्येतद्वासिष्ठचप्रतीत्यृचं माहि त्रंशुद्धवत्पथश्चसुरापेपिविशुद्ध्यति४ ॥कौत्सेनऋषिणाअपनःशोशुचदघमिति एतत्सूक्तंवसिष्ठेनऋषिणादृष्टचंप्रतिस्तोमेतिहयमनुशिष्यइत्येवंऋचं

ली अक्षर गायत्रीका शिर किहाहै इनां कर्के युक्त जो गायत्री तिसके पूरक कुंभक रेचक विधि कर्के सोलां प्राणायाम दिन दिन विषे मासपर्यंत कीते होये ब्रह्म हत्यारकों भी पापतें शुद्ध कर्ते हेण अपि शब्दतें ब्रह्म हत्याके तुल्य जो पाप तिनांकों भी शुद्ध कर्तेहैं एह प्रायश्चित्त ब्राह्मण क्षत्रि वेश्य विपे जानणा क्यों स्त्री शूद्रांकों मंत्रका न अधि कार होणेंतें ३ और कौत्सं क्या कौत्स ऋषि कर्के देखया जो सूक्त सो कौत्स सूक्तहैजो वासिष्ठ की प्रती ऋचाहै और माहित्रं शुद्ध वत्पथ इस कर्के मदिरा पीने वाला भी शुद्धहोताहै४और इनका अर्थ लिखतेहैं कौत्सेनेति कौत्सेन ऋषिणा ॥ (अपनशोशुचदघं इति) । और वासिष्ठ ऋषिनंदेखी जो सूक्त सो कहो वासिष्ठ सूक्तहै और प्रति स्तोमेति हयमनुशिष्य इति अयसी ऋचा (प्रतीत्यृचा) कहीहि ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥ १३१

और माहित्रंमाहित्रीणा मेवोस्त्विति एहसूक्त और शुद्धवत्य एतोत्विद्रंस्तवाम शुद्धइति। एहशयऋचः और प्रसंग विषे मासादि कहणेमें एकमासपर्यंत दिनदिनविषे सोलांवार जपकर्णे कर्केमादि राके पीणेवाला भीशुद्धहोताहै॥अपिशब्दतें मदिरापानपापके तुल्यजोपाप होरहैण तिनानेप्रायश्चित्तविषे भीकहाहै॥ एहश्लोक केइक साधारण प्रायश्चित्त विषे भी लिखेहैण सोइपुनः प्रसंगतें इसरहस्य विषेभीलिखेहैण॥पुनरुक्तिनहिसमझणी॥अवयाज्ञवल्क्यजो कावाक्यहै॥ तिरात्रविति इस काअर्थकहतेहां सुरापश्चत्वारशद्घृताहुतीइसपदका अनुवर्त्तनकरणा अर्थात् इसके अर्थकोप हलैरक्षकर इसवचनकाअर्थ करणा मदिराके पीणेवाला त्रयदिनउपवास व्रतको धारकर कूप्मांडी भि क्या यद्देवादेव हेडन इत्यादिक जोऋचाहैण कूप्मांडिकें दिग्यायांहोईआं॥ और अनुष्टु

माहित्रंमाहित्रीणामेवोस्त्वित्यतस्सूक्तं शुद्धवत्य एतोत्विद्रंस्तवामशुद्धमित्ये तास्तिस्त्रऋचः प्रकृतंमासमहरहः षोडशकृत्वोपिजपित्वासुरापेपिविशुद्धयति अपिशब्दात् आतिदेशिकसुरापानप्रायश्चित्ताधिकृतोपि॥४॥इमंश्लोकाः केचित्साधारणप्रकरणेपिलिखिताः पुनः प्रसंगतोऽत्राप्युक्ताः॥याज्ञवल्क्यः॥तिरात्रोपोपितोहुत्वाकूप्मांडीभिर्घृतंशुचिः॥अस्यार्थःसुरापश्चत्वारिंशद्घृताहुतीरित्यनुवर्त्तते सुरापश्चिरात्रमुपोपितःकूप्मांडीभिःयद्देवादेवहेडनमित्याद्याभिःकूप्मांडदृष्टाभिरनुष्टुभमंत्रलिंगदेवताभिर्ऋग्भिश्चत्वारिंशद्घृताहुतीर्हुत्वाशुचिर्भवेत्॥कूप्मांडहोमाशक्तस्यपूर्वाक्तंमानवंद्रष्टव्यम्॥इदमकामतःपैष्ट्याःसकृत्पाने।गौडीमाध्व्यास्तुपानावृत्तौवदितव्यं कामतस्तु।मंत्रैःशाकलहोमाद्यैरित्यादिमानवंज्ञेयमायत्तमहापातकसंयुक्तोऽनुगच्छेद्वाःसमाहितः अभ्यस्याब्दपावमानीर्भौक्षाहारंविशुद्धयतीति॥१॥

पुछंद और मंत्रलिंग देवता जिनांका तिनानेऋचांकके चालीघृतकीयां आहुतीयांकर्णे कर्के मदि राके पीणे वाला शुद्धहोताहै॥इसविषे कुछहांभी प्रकार कहतेहां॥कूप्मांड हवनविषे जोमास थ्यतें रहितहै तिसविषे पूर्वकहाजो मनुकावाक्यसो देखणे योग्यहै॥एहउछातें विना पैष्ट्यामदिरा के एकवार पानकर्णे विषे जानणा । औरगौडीमाध्वी मदिराके पीणेकी बारंवार आवृत्तिविषे जानणे योग्यहै॥और उच्छा कर्के पाण कर्णेविषे मंत्रैः शाकलहोमाद्यः इत्यादि मनुकर्के कहेहो ये जानणे॥और स्मृतिमेंजो कहाहै यत्त्विति तुपुनः जोपुरुष महापापकर्के संयुक्तहै सोइंद्रियांको रोककर गोवांके पीछेजावे ॥ औरपावमानी ऋचांका एकवर्ष पर्यंतअभ्यासकरे क्यापडे और भिक्षाको मांगकरआहार करे तांशुद्ध होताहै ।

१३२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९टी० भा०

एहवारंवारजोमहापापविषेयुक्तहै तिसविषेजानणा ॐ औरवा हछोतरांजिसनेइछाकके महापापकी ताहै तिसविषेजानणा ॐ अवसुवर्णस्तेयीके प्रायश्चित्तनूकहतेहैं । सकृदिति अस्येति इसकाअर्थः (अस्यवामस्यपलितस्यएतत्सूक्तम्) और शिवसंकल्पंययाज्याग्रतोदूरं इति एहजोवाजसेनयकीविषे कहाहै इनांकोएकमासपर्यंतदिनदिनविषे एकवारजपकणैकके सुवर्णकेचुराणेवालाशोघ्रहि पापतेंर हितहोताहै ५ इसमें(क्षिप्रमेव)इसका अर्थऐसाहै किअवश्यककेनिर्मलहुंदाहै । अवगुरुतलूपगप्रा यश्चित्तनूकहतेहां हविष्येति इसकके ६ हविष्यांगमजिरं स्वर्विदांइत्यादि उंझीं १५ ऋचा और नतमंहोनदुरितं इसीथीं आदलेकर अठ ८ ऋचा और वा शब्दसेइतिमेमनः शिवसंकल्पंइति

तदभ्यासविषयम्समुचितमहापापविषयंवा सकृज्जत्त्वास्यवामीयंशिवसं कल्पमेवच अपहत्यसुवर्णतुक्षणाद्भवतिनिर्मलः ५ ब्राह्मणसुवर्णमपहत्यअ स्यवामस्यपलितस्यएतत्सूक्तंप्रकृतत्वात् मासमेकंप्रत्यहमेकवारंजपित्वा शिवसंकल्पंचयज्याग्रतोदूरमित्येतद्वाजसनेयकेयत् पाठितंतज्जपित्वासुवर्ण मपहत्पक्षिप्रमेवानिष्पापोभवति ॥ ५ ॥ हविष्यंतीयमभ्यस्यनतमंहइती तिच जपित्वापौरुषंसूक्तंमुच्यतेगुरुतलपगः ॥ ६ ॥ हविष्यांगमजिरंस्वर्वि दामेकोनविंशतिऋचः नतमंहोनदुरितमित्यष्टौइतिवाइतिमेमनः शिवसं कल्पं इतिचसूक्तंसहस्रशीर्षापुरुषइतिएतच्चपोडशर्चसूक्तं मासमेकंप्रत्यह मभ्यस्येतिश्रवणात् प्रकृतत्वात्पोडशाभ्यासात् जपित्वागुरुदारगःतस्मा त्पापान्मुच्यते ६ याज्ञवल्क्यः॥ ब्राह्मणस्वर्णहारीतुरुद्रजापीजलेस्थितः॥ अस्यार्थः ब्राह्मणस्वर्णहारीपुनस्त्रिरात्रोपोषितः जलमध्यस्थोनमस्तेरुद्र मन्यवइतिशतरुद्रीयजपयुक्तः शुद्ध्यतीति ॥ शातातपेनात्रविशेषउक्तः ॥

चपुनःएहसूक्त और सहस्रशीर्षापुरुष इति एहसोलां ऋचांकासूक्त इनांको एकमासपर्यंतप्रसंगते दिनदिनविषेसोलां १६ वारपडनेकके गुरांकीशय्याविषे जाणेवाला पापतें शुद्धहोताहै ६ अब याज्ञवल्क्यजीकावाक्यहै ॥ ब्राह्मण स्वर्णस्तेयी प्रायश्चित्तविषेब्राह्मणेति ॥ इसककेब्राह्मणकेस्वर्ण को जो चुराताहै सो त्रयदिन उपवास व्रतकोंकरे और जलकेमध्यविषे स्थितहोवे और नमस्ते रुद्रमन्यव इति एह शत रुद्रीविषे जो जप तिसकके युक्तहोयाहोयापापते शुद्धहोताहै ॥ अबशा तातपजीनेइसविषे विशेषकहाहै ॥

मदिराको पान कर्के और गुरां की श्या विषे विषय भोगणे कर्के और सुवर्ण के चुराणे कर्के और ब्रह्म हत्याके कर्के कर्के यो पापहैण तिनके दूर करणे वास्ते शरीरके उपर भस्मकोमले और भस्मकी शय्या विषे शयनकरे और रुद्राध्यायीका पाठ करे तां सबपापांते रहित होताहै ॥ याज्ञवल्क्यजीने तुपुनः गुरु तल्पग विषे विशेष कहाहै सो कहतेहां गुरांकी शय्या विषे जाणे वाला पुरुष अनुष्टुप् और त्रिष्टुप्है छंद जिसका और पुरुष क्या ईश्वरहै देवता जिसका और नारायण कर्के जो कहाहै अथसे सोलां ऋचांकी सूक्त सहस्र शीर्षांते आदलेकरहै तिस को जपदा होया तिस पापते रहित होताहै और इस कर्मके अंत विषे एभिः इस कहणेते गुरांकी शय्या विषे जाणे वाला और सुवर्ण के चुराणे वाला और मदिराके पीने वाला तिनानिज्ञाने गोदान करणे योग्यहै एह अर्थ सिद्ध होया दुग्धके देने वाली गौका दान करे

मद्यपीत्वागुरुदारांश्चगत्वास्तेयंकृत्वाब्रह्महत्यांचकृत्वा भस्माच्छत्रोभस्म शय्यांशयानोरुद्राध्यायीमुच्यतेसर्वपापैरिति याज्ञवल्क्येनतुगुरुतल्पविषये विशेषउक्तःतद्यथा सहस्रशीर्षाजापीतुमुच्यतेगुरुतल्पगःगौर्देयाकर्मणोस्यां तेपृथगेभिःपयम्बिनी १ अस्यार्थः गुरुतल्पगस्तुसहस्रशीर्षेतिषोडशसूक्तं नारायणदृष्टंपुरुषदेवत्यमानुष्टुभंत्रिष्टुवंतजपंस्तस्मात्पापान्मुच्यते १ अत एवयमेनोक्तं पौरुषसूक्तमावर्त्यमुच्यतेसर्वकिल्बिषादिति आरुतौचसंख्या पेक्षया श्लोकांतरप्रोक्ताचत्वारिंशत्संख्यानुमीयते अत्रापि त्रिरात्रोपोपित इति संवध्यते अतएवबृहद्विष्णुःत्रिरात्रोपोपितःपुरुषसूक्तजपहोमाभ्यांगुरुतल्पगःशुद्धेदिति एभिश्चसुरापसुवर्णस्तेयिगुरुतल्पगैस्त्रिभिःपृथक्पृथगस्यत्रिरात्रव्रतस्यांतेबहुक्षीरागौर्देया इदमकामविषयम् यत्तुहविष्यंतीय मभ्यस्येत्यादिनामनुक्तं तदप्यकामविषयम्

१ इसी कारणते इसी विषे यमजीने भी कहाहै पौरुष मिति सहस्रशीर्षाके जप करणे कर्के सं पूर्ण पापांते शुद्ध होताहै ईहां कितने बार पुरुष सूक्त की आवृत्ति कहणी तिस वास्ते होरी श्लोक विषे कही जो चाली बार ४० जप की आवृत्ति सो संख्या ग्रहण करणी ॥ इस विषे भी त्रय दिनका उपवास व्रत संबंध कल्पना करणी इसी विषे बृहद्विष्णु जीका वाक्य है गुरांकी शय्या विषे जाणे वाला त्रयदिन उपवास व्रतको करे और सहस्र शीर्षाके जप हो म कर्के शुद्ध होताहै ॥ और जो मदिराका पान करताहै और सुवर्ण को चुराताहै और गुरांकी शय्या विषे जाताहै तिनाने भिन्न २ त्रय दिनके उपवास व्रतके अंत विषे बहुत दुग्धके देने वाली गौदान करणे योग्यहै एह पिचला किहाहोया अर्थ कामनाते विना के विषय विषे जानणा ॥ और जो तुपुना मनुजीने कहाहै कि हविष्यंतीय जो उन्नी ऋचाहैं तिनका अभ्यास करे एभी अकामना विषेहै ॥

१३४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

और जो इच्छा करके पापकर्म करे निसविषे मनु जीने कहे जो शाकल होमीय मंत्र सो देखे योग्य हैं ॥ अब और कहते हैं ॥ एनसा मिति ॥ स्थूलक्या महापाप और सूक्ष्म उपपातकातिनां के दूर करने की इच्छा वाला पुरुषा अवते इति ॥ इस ऋचांनु और यत्किंचेदमिति ॥ इस ऋचांनु और इति वा इति मे मनः ॥ इस ऋचांनु एकवर्ष पर्यंत एकवार दिनदिनविषे जपे तां शुद्ध होता है ॥ ७ ॥ और कहते हैं प्रतिगृह्येति ॥ इसका अर्थ कहते हैं स्वरूपते तुला आदि और महापापिका धन आदि जो नहि ग्रहण करे योग्य निसकों ग्रहण करके और चपुनः स्वभाव करके मसर आदि और काल करके वासी और प्र तिग्रह करके दुष्ट जो सुनयारे आदिके प्रतिग्रह और स्पर्श करके दुष्ट जो अन्न निसके भक्षण करे

कामतस्तुमंत्रैः शाकलहोमीयैरिति मनुक्तं द्रष्टव्यं एनसां स्थूलसूक्ष्माणां चि कीर्पन्नपनोदनं अवेत्यृचं जपेद्बुद्धं यत्किंचेदमिति ति वा ७ स्थूलानां पापानां म हापातकानां सूक्ष्माणां च उपपातकादीनां निर्हरणं कर्तुमिच्छन् अवते हेलावरु णनमेभिर्भिरत्येतामृचं यत्किंचेद्वरुणदैव्ये जने इत्येतां च ऋचं इति वा इति मे मन इत्येतत्सूक्तं संवत्सरं एकवारं प्रत्यहं जपत् ७ प्रतिगृह्या प्रतिग्राह्यं भुक्त्वा चान्नं विगर्हितं जपं स्तरत्समं दीयं पूयते मानवस्य हात् ॥ ८ ॥ स्वरूपतो महापात कि धनव्यादिना वा प्रतिग्राह्यं प्रतिगृह्य चान्नं स्वभावकाल प्रतिग्रहसंसर्गदुष्टं भुक्त्वा तरत्समं दीयावतीत्येतां ऋचश्च तस्त्रोजपित्वा त्र्यहं तस्मात्पापान्मनु ष्यः पूतां भवति स्नानमयमूणा मिति ऋक् त्र्यचं वा ८ सप्तविधा भक्ष्यभक्षण म्योपलक्षणमिदं ॥ तथा च याज्ञवल्क्यः ॥ ओंकाराभिष्टुतः सोमसलिलं पावनं पि वेत् कृत्वा तुरेतो वि एमूत्रप्राशनं तद्विजोत्तमः १ उपपातकसामान्यप्रायश्चित्तं प्राणायामशतमुक्तं तदपवादो यस् रेतो वि एमूत्रप्राशनं कृत्वा सोमलतारस मोकारेणाभिमंत्रितं शुद्धिसाधनं पिवेत् ॥ एतत्कामनाभावे कामतस्तुसुमंतूक्तम्

करके जो पाप है निसपापने शुद्ध होता है ॥ त्रयदिन पर्यंत (तरत्समं) इससे लेकर चौहत्तर ऋचांके जपने क रके वा एह ऋचा पडनी स्नान मयमूणा मिति वाच्य ऋचा पडणीया पूर्वीक एहसत्त प्रकारके अभक्ष भक्षणका जनावणा है ८ तसे याज्ञवल्क्य जी का वाक्य है ॥ ओंकारेति ॥ ओंकार मंत्र करके अभिमंत्रित जो सों मजल है पवित्र तिसनु पीवे विष्टामूत्रकों भक्षण कनो जो पुरुष है तिसपापके दूरकरणे वास्ते और उपपातकका जो सामान्य प्रायश्चित्त निसविषे कहा जो गोप्राणायाम निसका अपवाद है अर्थात् तिसकी जगा एह सोमजल पान है सोमो (ओंकाराय नमः) इस मंत्र करके मंत्रित होयेको पीवे एह वाक्य कामनाके अभावविषे जानणा इच्छाते विष्टामूत्र के भक्षण विषे सुमंतु जीने कहा है ॥

॥ श्रीरुणवीस्कारित प्रायश्चित्त भागः प्र०१९ टी० भा० ॥ १३५

रेतइति वीर्य और मल और मूत्र इनांके भक्षण करणें और धोंम और गंडा और गाजर - और कुंभिक इनहीं लेकर और जो अभक्ष्यहैण तिनांका भक्षण करणें और हंस और ग्राम कुकुट और कुत्ता और गिदड इनांका मांस भक्षण करणें जो पाप है ॥ तिनके दूर करणे वास्ते कंठ पर्यंत जल विषे स्थित होकर शुद्ध जो ब्रह्मव्याहृतियां हैंण तिनां कर्के प्राणायामकरे ब्रह्म गायत्रीके आदि विषे उँभूःइत्यादि सप्त मंत्र निन्हांका नाम ब्रह्म व्याहृतिहै ॥ और हृदय विषे जितने कर्के जल प्राप्त हो सके तितना पीवे तिस पापें शुद्ध होताहै ॥ अब सबपापके दूर करणे वास्ते और प्रायश्चित्तनू कहतेहां (सोमारौद्रमिति) इसें लेकर चारऋचा और

रेतोविएमूत्रप्राशनंकृत्वा लशुनपलांडुगृजनकुंभिकादीनामन्येषांचाभक्ष्यादीनां भक्षणंकृत्वा हंसग्रामकुकुट श्वसृगालादिमांसभक्षणंकृत्वा ततः कंठमात्रमुदकमवतीर्य शुद्धवतीभिः प्राणायामंकृत्वा ब्रह्मव्याहृतिभिरुरोगमुदकं पीत्वा तदेतस्मात्पूतो भवतीति । सोमारौद्रं तु वह्वेना मासमभ्यस्य शुद्धयति स्त्रवंत्या माचरन् स्नानमर्यमूणामिति च द्वयम् ९ सोमारुद्राधारयेश्यामस्वयमिति च तस्रः अर्यमावरुणमित्रचेति ऋग्द्वयं नद्यांच स्नानंकृत्वा मासमेकप्रत्येकमभ्यस्य बहुपापो विशुद्धयति बहुष्वपि पापेषु तत्रैकं प्रायश्चित्तकार्यमिति ज्ञापकमिदं ९ अब्दार्द्धमिन्द्रमित्येतदेन स्वीसप्तकं जपेत् अप्रशस्तं तु कृत्वा प्सु मासमासीत भैक्षभुक् १० एनस्वीत्यविशेषात् सर्वेष्वेव पापेषु इन्द्रमित्रवरुणमग्नित्रय इति एताः सप्तऋचोः पणमासान् जपेत् ॥ अप्रशस्तं मूत्रपुरीषोत्सर्गादिकं जलकृत्वा मासं भैक्षभोजी भवेत् १० मंत्रैः शाकलहोमीयैरब्दं हुत्वा घृतं द्विजः सगुर्वभ्यपहंत्येनो जप्त्वा वानमइत्यृचं ॥ ११ ॥

(अर्यमावरुणमित्रचेति) और एह दो ऋचा इनांको जपे भिन्न भिन्न कर्के एकमास पर्यंत नदीविषे स्नान कर्के तां बहुतपापांतें शुद्ध होताहै ९ अब कुल और भी कहतेहां अब्देति इसीका अर्थ रूप-एक कर्के है एक तंत्र कर्के भी सबपाप दूर होते हैं ॥ अर्थात् सभना पापांका एकभी प्रायश्चित्त होताहै ९ अब्दार्द्धमिति एनस्वीति इस कहणें सवपापांके करणेवाला सामान्य कर्के (इन्द्र मित्र वरुण मग्नि त्रय) इति इनांच डनू और अगे त्रय ऋचांनू छेमास पर्यंत जपे और एकमास भिक्षा मांग कर भक्षण करे जल विषे मल मूत्र का जो त्यागणा तिस पापके दूर करणेवास्ते एह प्रायश्चित्त कहाहै १०

१३६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

जोगुरुएनःअपिः क्यामहापापभीहोवे परंतुतिसकोदूर करणेकीइच्छावालाजो पुरुषहै सोदेवईत तस्येम इसतेंलेकर जो शाकलहोकेमंत्रां कर्के एकवर्षपर्यंत घृतहवणकर्के अथवा नमईद्रश्चइस ऋचाकाजप कर्के वर्षपर्यंतकरणेते तिसपापते शुद्धहोताहै ॥ ११ ॥ महापातर्केति ब्रह्महत्यादि महापापकर्के युक्त जो पुरुषहै सोपापके दूर करणेवारते इंद्रियांको रोक्कर भिक्षामंगकरखावें और गौयांके पीछेदुरे और पावमानीविद्यादिऋचांको दिनदिनविषे जपे एकवर्षपर्यंत ऐसेकरे तां शुद्धहोताहै १२ अरण्ये इति त्रयपराकव्रत कर्के शुद्धहोयाहोया पुरुष मंत्रब्राह्मणरूपवेदसंहिताको वनविषे त्रयवारपढे परंतु निरंतर वाह्यशुद्धि मृत्तिका जलकर्के करे और अंतःकरणकी शुद्धि

देवकृतस्येत्यादिभिः शाकलहोमैः संवत्सरं घृतहोमं कृत्वा नमईद्रश्चइत्येतां वा ऋचं संवत्सरं जपित्वा महापातकमपि पापं द्विजातिरपहंति ॥ ११ ॥ महापातकसंयुक्तोऽनुगच्छेद्वाः समाहितः त्र्यभ्यस्याब्दं पावमानीर्भिक्षाहारो विशुद्ध्यति । १२ । ब्रह्महत्यादिमहापातकयुक्तो भिक्षालब्धाहारो वर्षमेकं संयतेंद्रियोगवामनुगमनं कुर्वन् यः पावमानीविद्यादिऋचोऽन्वहमभ्यासेन जपित्वा तस्मात्पापाद्विशुद्धो भवति १२ अरण्ये वा त्रिरभ्यस्य प्रयतो वेदसंहितां मुच्यते पातकैः सर्वैः पराकैः शोधितस्त्रिभिः १३ त्रिभिः पराकैः पूतो मंत्रब्राह्मणात्मिकां वेदसंहितां अरण्ये बारत्रयं त्र्यभ्यस्य वा प्रयतो वा ह्याभ्यंतरशौचयुक्तः सर्वैर्महापातकैर्मुच्यते १३ त्र्यहंतूपवसेद्युक्तस्त्रिरन्होऽभ्युपपन्नपः मुच्यते पातकैः सर्वैस्त्रिजपित्वा घर्मर्षणम् १४ त्रिरात्रमुपवसन् संयतः प्रत्यहं प्रातर्मध्याह्नसायंकालेषु स्नानं कुर्वन् त्रिपवणस्नानकालेव जले निमज्ज्य ऋतं च सत्यं चेति सूक्तमघर्मर्षणं त्रिरावृतं जपित्वा सर्वैः पापैर्मुच्यते तत्र गुरुलघुपापपिक्षया पुरुषशक्त्याद्यपेक्षया चावर्तनीयम् १४ यथाश्वमेधः क्रतुराट्सर्वपापापनोदनः

विष्णुकेमंत्र कर्के करे तां संपूर्णमहापापानें शुद्धहोताहै ॥ १३ ॥ और कहतेहैं ज्यहमिति त्रय दिनउपवास व्रतकरे और इंद्रियांकोरोके और दिनविषे प्रातःकाल औरमध्याह्नकाल और सायंकाल विषे स्नानकरे और त्रयकालके स्नान विषे अघर्मर्षण जो ऋतंचसत्यं सूक्तहै तिसको जलविषे चुलोवी मारिकरित्रयवारि जपे तांसंपूर्ण पापानें रहितहोताहै तिसविषेभी पापकी न्यूनता अधिकताको देखकर और पुरुषकी सामर्थको देखकर आवृत्ति करणीजयसे होसके १४ यथेति जयसे अश्वमेध यज्ञ संपूर्णयज्ञांविषे श्रेष्ठ सबपापकेदूरकरणका कारणहै ॥

तयसे अघमर्षण सूक्त संपूर्ण पापके दूरकरणका कारण है। एह अघमर्षण सूक्तको स्तुति है १५ ॥ हत्वेति । भूलोकमें आदलेकर त्रयलोकके मारणेका जो पाप है और महांपापीयांके अघ भक्षण करणेंत जो पाप है सोसभ ऋग्वेदके धारण करणे वाले पुरुषको कोइभी नहि प्राप्त होता रहस्यपापके दूरकरणेवास्ते ऋग्वेदसंहिताकही है । कहा है कि रहस्यपापके कोतियां होयां मंत्र ब्राह्मणरूप ऋक् संहिताका अभ्यास करे । इसविषे वाक्य कहते हैं ॥ ऋगिति अथवा ऋग्वेदकी संहिताको त्रय वारि पढ़ने कर्के वामन लोककर स्थित होया होया अथवा यजुर्वेदसंहिता वा सामवेदसंहिता जो रहस्यपाप दूरकरणेवा लियां हैं तिनके पाठ कर्के संपूर्ण पापान्तरहित होता है १६ इहां ऋक्संहिता मंत्र

तथा अघमर्षणं सूक्तं सर्वपापानोदनम् १५ यथाऽश्वमेधयागः सर्वयागश्रेष्ठः
सर्वपापक्षयहेतुस्तथाऽघमर्षणसूक्तमपि सर्वपापक्षयहेतुरिति अघमर्षणसू-
क्तोत्कर्षः १५ हत्वा लोकानपीमांस्त्रीनश्नन्नपियतस्ततः ऋग्वेदं धारयन् वि-
प्रो नैनः प्राप्नोति किंचन १६ भूरादिलोक त्रयमपि हत्वा महापातक्यादीनाम-
प्यन्नमश्नन् ऋग्वेदं धारयन् विप्रादिः न किंचित्पापं प्राप्नोति ऋग्वेदं रहस्यप्रा-
यश्चित्तार्थमुक्तम् रहस्यपापे कृते ऋक्संहितां मंत्र ब्राह्मणात्मिकामभ्यसेत्तदा
ह १६ ऋक्संहितां त्रिरभ्यस्य यजुषां वा समाहितः साम्नां वा सरहस्यानां सर्वपा-
पैः प्रमुच्यते १७ ऋक्संहितां मंत्र ब्राह्मणात्मिकां न तु मंत्रात्मिकां अनंतरं वेदे त्रि-
वृतीति प्रत्यवमर्षात् यजुषां वा मंत्र ब्राह्मणानां संहितां साम्नां वा ब्राह्मणोपनिष-
त्संहितां वा त्रयमभ्यस्य सर्वपापैः प्रमुक्तो भवति १७ यथा महाहूदं प्राप्य
क्षिप्तं लोषं विनश्यति तथा दुश्चरितं सर्ववेदे त्रिवृतिमज्जाति १८ ऋचऋद्धमंत्राः
यजुषि यजुर्मंत्राः सामानि बृहद्रथंतरादीनि नाना प्रकाराण्यन्यान्येषां त्रया-
णां पृथक् पृथक् मंत्र ब्राह्मणानि एष त्रिवृद्धे दोज्ञातव्येय एनं वेदसवेदविद्भव-
ति १८

ब्राह्मणात्मिका जानणी मंत्रात्मिका नहि जानणी और यजुर्वेद की भी मंत्र ब्राह्मणा की संहिता और सामवेद की भी ब्राह्मणोपनिषत्संहिता इनां विद्यो एकके पाठ करणे त्रय वारतां सब पाप तें शुद्ध हो ता है १७ यथेति जैसे महाजल को प्राप्त होकर मृत्तिका का पिंड नष्ट होता है तैसे त्रिवृत वेद विषे जाकर सब पाप नष्ट होता है १८ इस अर्थ को स्पष्ट कर कहते हैं ऋच इति ऋचः क्या ऋग्वेदक मंत्र और यजुर्मंत्र और सामक कर्के बृहद्रथंतरा आदि जानणे होर भी इनां के भिन्न भिन्न मंत्र ब्राह्मण हैं तिनके यथार्थ पाठ कर्के सब पाप तें दूर हुंदा है । अवेदविदशब्द का अर्थ कहते हैं एषति एह त्रिवृद्धेदनाम कर्के जो कहता है इसको जो जानता है सो वे दवेता है ॥

१३८ ॥ श्रीरण्वार कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

फेर भी इसी अर्थ को कहतेहैं आद्यामिति संपूर्ण वेदांका आद जो ब्रह्म वेदका सारहै अकार उकार मकार इनांतीनां अक्षरां कर्के जो स्थितहै जिस विषे त्रय वेद स्थितहैं सो एह ओं कारहै नाम जिसका सो गुप्त जानणे योग्यहै वेद मंत्रों विषे श्रेष्ठ होणेतैं और सत गतिके दैणे वाला होणेतैं और धारणा कर्के और जप कर्के मुक्तिका कारण होणेतैं जो पुरुष तिसनूं स्वरूपतैं और अर्थ कर्के जानताहै सो वेदवित् कहोदाहै ॥ १९ ॥ साम विधान नाम वाले ब्राह्मण विषे किहाहै अथेति इसते अनंतर काम्य कर्मके अनादेश विषे अर्थात् नैमित्तिक कर्म जो प्रायश्चित्तादि तिसके विषय विषे तिस रात्र उपवास करणा अर्थात् रहस्य प्रायश्चित्त जो पूर्वोक्त पाप विषे किहाहै तिस विषे तिस रातां उपवास करे तिसका आरंभ पुण्य विषे करे

आद्यं यत्र यक्षरं ब्रह्म त्रयीयस्मिन् प्रतिष्ठिता सगुह्योऽन्यस्त्रिवृद्धे दोयस्तं वेदसवे दवित् १९ सर्ववेदानामाद्यं ब्रह्म वेदसारं अकारोकारमकारात्मकत्वेन त्र्यक्षरं यत्र त्रयो वेदाः स्थिताः सोऽन्यस्त्रिवृद्धेदः प्रणवाख्यो गुह्यो गोपनीयो वेदमंत्र श्रेष्ठत्वात् परमार्थाभिधायकत्वात् परमार्थकत्वेन धारणजपाभ्यां मोक्षहेतुत्वाच्च यस्तं स्वरूपतोऽर्थतश्च जानाति स वेदवित् १९ सामविधानाख्ये ब्राह्मणे अथातः काम्यानामनादेशे त्रिरात्रमुपवासः पुण्येणारंभ आयुष्या एषेव प्रथममवोध्यग्निर्महित्रीणामिति द्वेतावत्तद्वद्वेदं नरो ग्रामे गेयमायुरिति चास्य निधनं कुर्यात् यमपुद्धे त्रातारमिंद्रं हविरित्येतस्य स्थाने स्वास्ति न इति सोमः पुनांत्याङ्सुसुप्रथमं विश्वतो दावन्निति पूर्वङ्ग्रहस्य उदुत्तमं वरुणपाशमित्येषोरिष्टवर्ग एते पां एकमनेकं वा सर्वाणि वा प्रयुं जानः शतं वर्षाणि जीवति जरयैव विस्त्रंसते भ्राजा भ्राजेशु क्रचन्द्रे राजन रौहिणे केशु क्रियाद्येहा उस्वरता दीनि च त्वारि सेतु पामचैप पारिवर्ग एते पामेकमनेकं वा प्रयुं जानः पूतो भवति ॥ १ ॥

एह आयुके देणेवालेहैं दो ऋचा (इन्द्र) इसते आदलेकरहैं और ॥ (अस्निधन) ॥ इसते आदि लेकर जो मंत्र भागहै इसमे भी दो ऋचाहैं और ॥ (त्रातारं) ॥ इत्यादि के स्थान विषे ॥ (स्वस्तिनः) ॥ इत्यादि ऋचाका प्रयोग ॥ (और (सोमः) ॥ इसके अगे जो मंत्र भागहै अरिष्ट वर्ग पर्यंत इन्हां विचोँइकका अथवा बहुत का अभ्यास करे अथवा जितने कहेहैं तिन्हां समना का अभ्यास करे तां १०० सउ वर्ष तक जीवताहै और वृद्धावस्था ते रहित होताहै और ॥ (भ्राजाभ्राजि) ॥ इत्यादि ४ चार ऋचाहैं और ॥ (सेतुषा) ॥ इत्यादि जोहैं इन्हां विचोँइकका अथवा बहुतेओंका प्रयोग करदा होया पवित्र हुंदाहै अर्थात् पापांते छुट जांदाहै ॥ १ ॥

॥ श्रीरूपवीरकारितः प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ ॥ टी० भा० ॥ १३९

अथात इति अथवा तिसका अर्थस्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ प्रायश्चित्त प्रयोगके विधानतें पीछे अत इति ॥ इसका अर्थ जिस कारणतें कामनाके देणे वाले कर्मकी इच्छाहै इसी कारणतें काम्य जो सुंदर आयु आदिकफल तिनाके प्रयोग कहीदेहैं उसका अध्याहार करणा अवसामान्य कुछक कहीदाहै ॥ अनादेशेति ॥ रुच्छु ब्रतनूकरे इसते आदलेकर विशेष कर्के उपदेश ति नातें रहित जो कर्म सो सामान्य कहाहै ॥ तां आद विषे त्रयदिनका उपवास ब्रतकरण योग्यहै पुण्येणेति ॥ जिस कामनाके तिथिवार आदि विषे करणे का समानहि कहा तिस कामनाका आरंभ पुण्य नक्षत्र विषे करणा ॥ इति अव कहणे जो कामनाके देणे वाले कर्म तिनाकों आयु के अधीन होनेतें तां आयुके साधन जो अध्ययन तिनाकों पहले कहतेहां ऐसे प्रतिज्ञाहै ॥ आ

अथातः अथप्रायश्चित्तप्रयोगविधानानंतरं अतः यतः काम्यानां प्रयोगापेक्षा अतः काम्यानां कमनीयानामायुरादिकलानां प्रयोगा उच्यन्ते इति शेषः । अथ सामान्यं किंचित्परिभाष्यते अनादेश अनादेशे रुच्छुं चरित्वेत्यादिविशेषोपदेशरहिते प्रदेशे आदौ त्रिरात्रमुपवासः कार्यः पुण्येण यत्काम्यमस्मिन्काले कर्तव्यमिति नोक्तं तस्य सर्वस्य पुण्येण पुण्ययुक्ते चंद्रमसि आरंभः कर्तव्य इति अथवक्ष्यमाण काम्यानामायुष्याधीनत्वादायुष्या एव अध्ययनानि प्रथमं विधास्याम इति प्रतिजानीते । आयुष्यायतः सर्वकामानामायुष्यापेक्षास्तीति यतश्चायुष्यं सर्वैरप्याशास्यं अतस्तान्यायुष्या एवायुः साधनान्यध्ययनानि प्रथममुच्यन्ते इति शेषः । आयुः साधनप्रयोगमाह अबोधयग्नि अथ शुद्धिक्रियायाः प्रयोगमाह भ्राजा भ्रानो भ्राजार्दीनिसामानि रूपष्टान्येव उक्तप्रतीकसमुदायात्मकः पवित्रवर्गः सर्वपापशोधकसामसमूह इत्यर्थः एतेषां सामान्यमध्य एकमेववा अनेकं द्वे त्रीणीत्यादिवा यथाशक्ति वा सर्वाणि वा विहितानि सर्वाण्यपि वैतेषु पक्षेष्वेकं सर्वदा प्रयुजानः पूतो भवति दैनंदिनैः पापैः शुद्धो भवतीत्यर्थः ॥ १ ॥

युष्याइति जिसकारणतें संपूर्ण कामना की प्राप्ति आयुषाके अधीनहै ॥ और संपूर्णकी आशा आयुके विषेहै इस कारणतें आयुके साधन जो अध्ययन हैं सो पहले कहीदे हैं इसका अध्याहार करणा अव आयुः प्राप्तिके साधनका प्रयोग कहतेहां अबोधय ग्निरिति ॥ अथ शुद्धिके प्रयोगनूं कहतेहां भ्राजाइति एह सामवेद स्पष्टहैं और किहाजो प्रतीक समुदाय रूप पवित्र वर्ग तिसका संपूर्ण पापके शुद्ध करणे वाला सामका समूह इत्यर्थः एह अर्थ करणा इनां सभ मांके मध्य विषे एकवा बहुत वा दो त्रय आदि जपसे सामर्थ्यहै संपूर्ण जो विधान करणेके योग्यहै वा तिनां पक्षों विषे एकनूं सदा कदा होया दिन दिनके पापांते शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

१४० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी ० भा ० ॥

अथ वसिष्ठ जी कहते हैं नहि प्रकट होये जो पाप और तैसे महा पाप और संपूर्ण जो उप पात कहें तिनकी शुद्धि न संपूर्णता कर्के कहते हैं १ प्राणैति प्राणायाम और पवित्र कहें कर्के सूक्त और व्याहती और ओंकार एह जानणे और दान और होम और जप तिनके करणे कर्के निश्चयहि पापाति रहित होते हैं ॥२॥ इसीके अर्थ वालीयां और दोस्मृतिआं को कहते हैं पवित्रैति पवित्रयांको हथ विषे धारकर स्थित होवे और नित्य काल ब्रह्मका अभ्यास करे ॥१॥ और बार बार प्राणायामां को करे युक्त होकर जो पुरुष करे सो उत्तम तपको कर्ता है जिस विषे रोम उर नख बहुत बढ़ते हैं एसे नून जो तपता है सो उत्तम तप स्वी है १ इसी विषे वौधायन जीका वाक्य है विधीति शास्त्र कर्के दखाई जो विधि है तिस कर्के प्राणायामांको

वसिष्ठः अविख्यापितदोषाणां पापानां महतां तथा सर्वेषां चोपपापानां शुद्धिं वक्ष्याम्यशेषतः १ प्राणायामैः पवित्रैश्च दानैर्होमैर्जपैस्तथा विनियुक्तैः प्रमुच्यन्ते पातकेभ्यो न संशयः २ पवित्राणि सूक्तानि ॥ प्राणायामः पवित्राणि व्याहतीः प्रणवं तथा पवित्रपाणिशसीनो ह्यभ्यसेद्ब्रह्मनैत्यकं १ आवर्तयेत्स दायुक्तः प्राणायामान् पुनः पुनः आलोमाग्रात्रखाग्रांश्च तपस्तप्यत उत्तमम् २ वौधायनः ॥ विधिना शास्त्रदृष्टेन प्राणायामान्समाचरेत् यदुपस्थकृतं पापं पद्मांवायकृतं भवेत् १ बाहुभ्यां मनसा वाचा श्रोत्रत्वग्घ्राणचक्षुषा तत्सर्वं नाशयेदिति शेषः तथा श्रोत्रत्वग्घ्राणमनोव्यतिक्रमेषु त्रिभिः प्राणायामैः शुद्ध्यति शूद्रात्रस्त्रीगमनभोजनेषु केवलेषु पृथक् पृथक् सप्ताहं सप्तसप्त प्राणायामान्धारयेत् ॥

करे तां लिंग कर्के कीता जो पाप और पादां कर्के जो पाप कीता है ॥१॥ और बाहु कहणे ते हथां कर्के जो पाप कीता है और मन कर्के और वाणी कर्के और कर्ण और त्वचा और नामा और नेत्र कर्के जो पाप कीता है सो संपूर्ण नष्ट होता है एह उपरो लाना और प्राणायामा की संख्या पिचले वचनते १६ । १६ प्रति दिन विषे जानणी ॥ तैसे हि और कहते हैं श्रोत्रैति एह स्मृति पिले भी आई थी परंतु औरके वाक्यसे दूसरी बार आई है ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियके व्यतिक्रम विषे अर्थात् इन कर्के जो करण है परमेश्वर संबंधि गुणा नुवादादि तिसके न करणे विषे त्रय प्राणायाम करे तां शुद्ध हुंदा है और शूद्रात्रादिके भक्षण विषे एक एक पापके दूर करण करे ७ । ७ सप्त सप्त प्राणायामांको करे ॥

४ श्रीरणवीरकरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ १४१

तैसंहि अभक्ष्यादिकेभक्षणे और अपण्यजोनाहिवेचने योग्यवस्तुतिसके वेचनविषे परंतुमध्वादि के विना इसपापके दूरकरणे वास्तेवारादिनातक इकइकदिनप्रति १२।१२ वारांवारा प्राणायामकरे और सो लांप्राणायामावाली विधि जिधे नहिसंख्याकीतो उसजगा समझणी॥सर्वेति॥एहपूर्वोक्त प्रायश्चित्तसभनापापके दूरकरणके वास्तेहै॥इसविषे न्यायक्या युक्ति दिखातेहैं ॥अत्रेति जोकार्य जिसते वणदाहै सोतिसके धर्मवालाहुंदाहै ॥ तांते रहस्यप्रायश्चित्तप्रकाश प्रायश्चित्तसेहि ऋषियों ने कल्पनाकीताहै॥तोतिसके धर्मब्रह्मचर्य रक्षणा १ और सत्य कहणा २ और भूमि विषेश यनकरणा ३ हविष्य भोजन ४ इत्यादि जो त्रिकाल स्नानादि हैं सोसभ इसरहस्यमे भीजानणे चाहिये और कहतेहैं ॥ याज्ञवल्क्यजी॥यत्रेति॥जिसजिसजगा अपने आपको द्विजक्या ब्राह्मण

तथाभक्ष्याभोज्यापेयानाशयप्राशनेषु तथापण्यविक्रयेषुमधुमांसघृततैलला क्षालवणरसान्नवर्जनीयेषु यच्चान्यदप्येवंस्यात् द्वादशाहं द्वादशद्वादशप्राणायामान्धारयेत् प्रत्यहंमासं यावत्षोडशषोडशप्राणायामधारणंमनुक्तं पूर्वश्लोकेद्रष्टव्यम् सर्वपातकापनोदनमेतत् अत्रचतत्कार्यापत्यातत्तद्धर्मलाभइति न्यायात्प्रकाशधर्माः ब्रह्मचर्यसत्यवचनाधःशयनहविष्याशनादयः प्राप्नुवन्ति याज्ञवल्क्यः॥यत्रयत्रचसंकीर्णमात्मानंमन्यतेद्विजः तत्रतत्रतिलैर्होमोगायत्र्यावाचनंद्विजः ॥१॥अस्यार्थः॥यत्रयत्रब्रह्मवधादौतज्जनितदोषजातेनात्मानंसंकीर्णमभिभूतंद्विजोमन्यते कार्यः तत्र तत्रमहापातकेषुगायत्र्या गायत्र्यालक्षहोमेतुमुच्यतेसर्वपातकैरितिलक्षहोमःकायःयमस्मरणात् अतिपातकादिपुपादहासः कल्पनीयः तथातिलैर्वाचनंकार्यमतथारहस्याधिकारैर्वसिष्ठः । वैशाखापौर्णमास्यांचब्राह्मणान्पंच सप्तचाक्षौद्रयुक्तैस्तिलैः कृष्णैर्वाचयेदथवेतरैः ॥ १ ॥

दि संकीर्ण मने अर्थात् ब्रह्महत्यादि पाप वालेको जाणे तिसतिम जगा गायत्री कर्क होम करणा चाहिये १ गायत्रीके लक्षहोमकर्के सभपापते मुक्तहुंदाहै एहयमजीकावचनहै तिसते और अतिपातकादि विषे १ पादकाहास क्याघाटा कल्पनाकरणी योग्यहै अर्थात् एहहवन ७५ पञ्चतर हजार करणा योग्यहै ॥ तयसे रहस्य प्रायश्चित्तके अधि कार विषे वसिष्ठजी कहतेहैं वैशाखामिति वैशाखा पूर्ण मासी विसे पंदरां १५ ब्राह्मणा करके मक्षीर कर्क युक्तजो कृष्ण तिल तिहुनां कर्के वाचनकरे यथवा इतरां कर्के क्या स्वेत तिलांकर्के वाचन करावे १ इसमे एह अभिप्रायहै कि तिलांको ब्राह्मणांको देकरस्वस्ति वाचन पुण्याह वाचनादि करावे एह अर्थहै ॥

१४२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

अयसे कहे मरेपरधर्मराज प्रसन्नहोवे एहमनविषे धारताहै (तांदानकरे यद्वाकहणेतें दानकील
धीहोई तांजो जन्मतेलकर पापहैसो कर्मकर्णेके सन्मयहि नष्टहोताहै॥२॥ अनियतेति वसिष्ठजीनें
हिंदानके देणेका समानहि नियतकीतासो किसेकाल विषे देवे सोकहिदाहै॥कृष्णेति॥कृष्णहरि
णके मृगानविषे तिलानूं स्वर्ण और मखोर घृतक्षकर ब्राह्मणताई जोदेताहै सोसंपूर्ण पापतें
रहतहोताहै॥१॥ तयमे वसिष्ठ जीनें भीकहाहै मनकोरोककर ब्राह्मणताई तिलधेनूं जोदेताहै
सोपूरुष निश्चयहि ब्रह्महत्यादिकपापतेंरहितहुंदाहै इसमें संशयनहि ॥१॥ इसनें आदलेकर दा
नकाजानणा रहस्य प्रायश्चित्त के प्रकरणविषे कहा होया विद्यातें रहितजोब्राह्मणआदि और
स्त्रीशूद्रतिनांकोभीकरणयोग्यहै॥जोतुपुनः धर्मराज जीनें कहाहै ॥तिलेति॥ जोपुरुष प्रातंकालवि

प्रीयतांधर्मराजेतियद्वामनसिवर्त्तते यावज्जीवकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यती
ति॥२॥ अनियतकालमपि दानं तेनैवाकृतं॥कृष्णाजिनेतिलान्कृत्वा हिरण्यमधुस
र्पिणी ददाति यस्तु विप्राय सर्वतरति दुष्कृतमिति॥ तथा व्यासेनाप्युक्तम् तिल
धेनुचयो दद्यात्संयतात्मा द्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशय इ
ति॥ एवमादि दानज्ञानं रहस्यकांडोक्तमविदुषां द्विजातीनां स्त्रीशूद्रयोश्च वेदि
तव्यम्॥ यतुयमेनोक्तम् तिलान्ददाति यः प्रातस्ति लान्स्पृशति स्वादति तिल
स्नायी॥ तिलान् जुह्वन् सर्वतरति दुष्कृतम्॥ १॥ तथा द्वेचाष्टम्यौ तु मासस्य
चतुर्दश्यांतथैव च अमावास्या पूर्णमासी सप्तमी द्वादशी द्वयम् ॥ १ ॥ संवत्स
रमभुंजानः सततं विजितेन्द्रियः मुच्यते पातकैः सर्वैः स्वर्गलोकं च गच्छतीति
॥ २ ॥ यच्चात्रिणोक्तम्॥ क्षीराब्धौ शेषपर्यं के आपाड्यां संविशे द्वारिः निद्रां त्यज
ति कार्तिक्यांतयोः संपूजयेद्भरिम् ॥ १ ॥

बेतिलानूं देताहै औरस्पर्श कर्ताहै और खाताहै और तिलांकर्के स्नान कर्ताहै औरहवन कर्ता
है सोसंपूर्ण पापतें रहित होताहै॥ अवविशेष कहतेहां॥ तथेति॥ जोपुरुष दो॥२॥ अष्टमीयां एकम
हीने विषे और दोचतुर्दशीयां और अमावस्या और पूर्णमासी दोसप्तमी और दोद्वाद
शी ॥१॥ निराहार रहताहै इनांतिथिआविषे जो एकवर्ष पर्यंत और निरंतरइंद्रिय जिसनेरो
केहैं विषयांतें सोसंपूर्ण पापांतें रहत होयाहोया स्वर्गलोककोप्राप्त हुंदाहै ॥२॥ जोअत्रि
जीनें विशेष कहाहै आपाडकी एकादशी दिन क्षीरसमुद्र विषे शेषनाग रूप शय्या विषे ज
वहारे शयनकर्तेहैं और कार्तिककीएकादशी दिन निद्रा को त्यागतेहैं तांतिन्हांदिनांविषे विष्णु
कोपूजनाकरे ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीस्कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥ १४३

तिसते पूजा करणें वालेके शीघ्राहि ब्रह्महत्यादिकपाप नष्ट हुंदेहैं एह संपूर्ण कथन कीता हो योयमजीका और अत्रिजीका वचन विद्यातेरहितजो पुरुषहैं तिनविषे और इच्छातें वाइच्छातें बिनाएकवार बहुतवारजो पापकीताहैं तिस विपजानणा । त्रिगवेति इसका अर्थइसप्रकारहैं संपूर्ण रहस्य प्रायश्चित्तके साधारणधर्मनूं कहकर प्रकाश प्रायश्चित्तकी न्याई ब्रह्महत्यादि पापों केदूर करणे वाले रहस्य प्रायश्चित्तों नूं कहताहां त्रयदिन उपवास व्रतकों धारकर महर्षिकरके दखायीजो अघमर्पण सूक्तऋतमिति इसते आदलेकरहे और अनुष्टुप्हे छंदजिसका और भावभूतहैं देवता जिसका इसनूं जलविषे चलोवालाकर त्रयदिन विप त्रयत्रय वार जप पीछे दु-

ब्रह्महत्यादिकंपापक्षिप्रमेवव्यपोहतीत्यादि तत्सर्वविद्याविरहिणांकामाकाम सकृदभ्यासविषयतयाव्यवस्थापनीयम् त्रिरात्रोपापितांजप्त्वाब्रह्महात्वघमर्पणम् अंतर्जलेविशुद्ध्येतदत्वागांचपयस्विनीम् १ अस्यार्थः एवंसकलरहस्य साधारणधर्ममाभिधायप्रकाशप्रायश्चित्तवद्ब्रह्महत्यादिक्रमेणैवरहस्यप्रायश्चित्तान्याह त्रिरात्रमुपापितांतर्जलेऽघमर्पणेनमहर्षिणादृष्टंसूक्तअघमर्पणंऋतंचसत्यंचेत्यृचाभानुष्टुभभावभूतदेवताकंजप्त्वात्रिरात्रांपयस्विनींगां दत्त्वाब्रह्महाविशुद्ध्यति । जपश्चांतर्जलेनिमग्नेनत्रिरावर्त्तनीयः । यथाहसुमंतुः देवद्विजगुरुहंताप्सुनिमग्नाघमर्पणंसूक्तंत्रिरावर्त्तयत् मातरंभगिनीगत्वामातृप्वसारंपितृप्वसारंस्नुपांसखीचान्यद्वागम्यागमनंकृत्वाघमर्पणमेवांतर्जलेत्रिरावर्त्तयत्तदेतस्मात्पूतोभवतीतिकामकारविषयमेतत् सव्याहनीत्यादि गोदानाशक्तस्यवेदितव्यम् ॥

गंधके देणे वाली गोसंकल्पकरे तां ब्रह्महत्या पापतें शुद्धहोताहै १ जेसकहतेंह सुमंतुजी देवेति देवताकी प्रतिमाकों जोबोडताहैं और ब्राह्मण और गुरुकों जो मागताहैं और माना और भेण औरमासी और वूया और स्नुषाक्या पुत्रकीस्त्री और मित्रकीस्त्री होंरजोनहिगमनकरणेके योग्य चांडाली आदिस्त्री तिन्हांके साथजो गमनकर्त्ताहैं क्याविषय भोगताहैं सोपुरुष जलविषे चलोवा लाकर अघमर्पण जो ॥ ऋतंचसत्यं ॥ इसका त्रय वार पठन करणे कर्केपूर्व कहे होये पापतें शुद्ध होलाहै ॥ कामनाके विषय एह जानणा और सहितव्याहृतियोंके इत्यादिक गोदानमें असामर्थ्य कों जानणा

१४४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

जो तुपुनःगोप्तमजीने छतीदिनरात्रकेव्रतकोंकहकरकिहाहै ॥ तिसीमेंब्रह्महत्या और मदिरा पान और सुवर्ण स्तेय औरगुरांकीशय्यामेंजाणाइनांपापामेंप्राणायामां कर्के और स्नानकर्के अघमर्षणकोंजपे एहकिहाहै एहकामनाते विनावारवार विषयमेंजानणा ॥ जो तुपुनःवौधायनजीनेक हीदाहोया ग्राममें पूर्वदिशामें वा उत्तर दिशामें जाकर और स्नान कर्के शुद्धवस्त्रधारकर जल के समीपमें स्थंडिलकों लिंबकर और एक सिंजेहोये वस्त्रकोंधारे और एकवार २ हथांको शुद्धकरे फेर किसे वस्तुकों नस्पर्श करे और सूर्यके सन्मुख होया होया अघमर्षण वेदका अध्ययनकरे सोउ १०० वारप्रातःकाल और तैसेहि मध्यान्हमें और अपरान्हमें पढे और सायंकाल बहुत वार पढे नक्षत्रांके उदय होयाहों यां प्रसृतियावककों भक्षणकरे ॥ इछा तें और इछातें विना कीते जो उपपातक तिन्हांतें सत दिनके ७ पूर्वोक्त अनुष्ठान कर्के शुद्ध

यत्तुगौत्तमेनषट्त्रिंशदहोरात्रव्रतमुक्तीकृतम् तत्रैवब्रह्महत्यासुरापानसुवर्ण स्तेयगुरुतल्पेपुप्राणायामैःस्नातोऽघमर्षणंजपेदिति तदकामतोऽसकृद्विषयम् यत्तुवौधायनेनोक्तम् ग्रामात्प्राचींचोदीचींदिशमुपनिष्क्रम्यस्नातः शुचिवासा उदकांतिस्थंडिलमुपलिप्यसकृत्क्षिन्नवासाःसकृत्पूतेनपाणिनाऽऽदित्याभिमुखोऽघमर्षणंस्वाध्यायमधीयीत प्रातःशतमध्याह्नेशतमपराह्नेशतमपरिमितंचोदितेपुनक्षत्रेषुप्रसृतियावकंप्राश्नीयात् ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतेभ्यश्चोपपातकेभ्यःसप्तरात्रात्प्रमुच्यते द्वादशरात्रान्महापातकेभ्योब्रह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयानि वर्जयित्वा एकविंशतिरात्रेणतान्यापितरतीतितत्कामकारविषयम् । अकामतःश्रोत्रियाचार्यसवनस्थवधविषयंवा लोमभ्यःस्वाहेत्यथवादिवसंमारुताशनः जलेस्थित्वाग्निंजुहुयाच्चत्वारिंशद्घृताहुतीः अस्यार्थः प्रायश्चित्तांतरम् ॥ अथवाहोरात्रमुपोषितोरात्रानुदवासं कृत्वाप्रातर्जलादुत्तीर्यलोमभ्यःस्वाहेत्याद्यैरष्टभिर्मंत्रैरेकैकेनपंचपंचाहुतयइत्येवं चत्वारिंशद्घृताहुतीर्जुहुयात् ॥

होताहै और वारां १२ दिनके अनुष्ठानकर्के ब्रह्महत्या और मदिरापान और सुवर्ण स्तेय इन्हां तेंविना होरणा महापापांते शुद्धहोताहै । और इकीदिन २१ अनुष्ठानपूर्वोक्त अघमर्षणादिकेकरणे कर्केतिन्हां ब्रह्महत्यादि महा पापांते भी शुद्धहोताहै एहमहापापकाप्रायश्चित्तकामनाविषे जानणा अकामेति और इच्छातेंविनापापविषे वेदपाठी और आचार्य और वानप्रस्थीके मा रणे विषेवा जानणा ॥ अवहोर प्रायश्चित्त कहतेहां लोमेति दिनरात्र उपवासव्रतकरे और रात्रि विषे जलमें स्थितहोवे और प्रातःकालविषे जलते बाहर स्थित होकर लोमभ्यः स्वाहा इत्यादि अठां ८ मंत्रांकर्के हवनकरे एक एक मंत्र कर्के पंच ५ पंच ५ आहुतीयांकरे इस प्रकार चाली ४० आहुतीयां करे घृत कीयां ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी०भा ० ॥ १४६

अथ पूर्व कहे होयेके समान विषय जानणा और जल विषे स्थित होणा ऐसे तपकों बहुतहो
 जेंते महा पापांके नाशकरणे वालाहो। और भी विशेष अपराकं विषे कहाहै ॥ जिसविषे बोधा
 यन जी कहतेहैं। इसतें अनंतर पवित्र ते पवित्र जो अध मर्षण तिसके करणे का व्याख्यान क-
 रेंहां ॥ ग्रामतें पूर्व दिशावा उत्तर दिशा विषे प्राप्तहोकर स्नान करे और पवित्र होयाहोया एकवार
 सिज्जे होये वस्त्र को धारे और एक हथांको धोवे अर्थात् होरी कि से वस्तु कौन स्पर्श करे एक-
 वार हि शुद्धहोके बैठे और जलके समीप विषे स्थंडिलको लेपण देकर सूर्यके सन्मुख प्रपम-
 र्षण जो वेद मंत्र तिसको जपे सौ १०० वार प्रातःकाल और सौ १०० वार मध्याह्नविषे और
 सौ १०० वार तीसरे पहर और सायं काल अपरिमित क्या गिनती तें विना जपे एकप्रसूतिज

इदंचपूर्वोक्तसमानविषयम् उदवासस्यतपोवाहुल्यात् ॥ अन्योपिविशे
 षोऽपराकं तत्र बोधायनः अथातः पवित्रातिपवित्रस्याधमर्षणस्यक
 लपंव्याख्यास्यामः ग्रामात्प्राचीवोदीचीदिशमुपनिष्क्रम्यस्नात्वाशुचिः
 शुचिवासाउदकांतेस्थंडिलमुपलिप्यसकृत्क्षिन्नेनवाससासकृत्पूतेनपाणि
 नादित्याभिमुखोधमर्षणंस्वाध्यायमधीर्यात् प्रातः शतमध्याह्नेशतमप
 राह्णेशतमपरिमितंचोदितेपुनक्षत्रेषुप्रसृतियावकंप्राश्रीयत् अज्ञानकृते
 भ्योज्ञानकृतेभ्यश्चोपपातकेभ्यःसप्तरात्रात्प्रमुच्यते द्वादशरात्राद्गूणहननं
 गुरुतल्पं सुवर्णस्तेयं सुरापानमिति वर्जयित्वा एकविंशतिरात्रान्तान्यपि
 तरतिसर्वजयतिसर्वकृतुफलमाप्नोतिसर्वपुत्रवेदपुत्रीर्णव्रतोभवतिसर्वतीर्थेषु
 स्नातोभवति सर्वदेशेषुज्ञातोभवति आचक्षुषःपंक्तिपुनाति ॥

वां का भक्षण करे ॥ अज्ञानेति इसका अर्थ कथन कीताहै ॥ पीछे और द्वादशेति इसका अर्थ
 पूर्व कहनेतें कु छ विलक्षण है सो कहने हां ग्रामेति इसकर्के कहा जो अनुष्ठान तिसके वारा १२
 दिनपर्यंत करणेतें गर्भका हनन करणा और गुरांकी शय्या विषे जाणा और सुवर्णका चुराणा
 और मदिराका पान इन्हां ते विना अन्य महा पापांतें शुद्ध होताहै और इकी दिनके अनुष्ठा
 न कर्के गर्भ हत्यादि पापतें भीरहित होताहै ॥ और सवपापको दूर कर्ताहै संपूर्ण यज्ञफलको प्राप्त हुं
 दाहै तिसने संपूर्ण वेदां विषे व्रत कीताहै और संपूर्ण तीर्थांविषे स्नान कीताहै और संपूर्ण दे
 शांविषे प्रकट हुंदाहै और नेत्रांके देखणे कर्के पंक्तिको पवित्र कर्ताहै

१४६ ॥ श्रीरत्नवीकारित प्राग्रश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

और संपूर्ण कर्मोंके आरंभ तिसके सिद्धहोंदेहेन ॥ अब अंगिरसजी कहतेहैं धर्मके जानणोंका ला यारां वार ११ रुद्रान इति इन्हांमंत्रोंके पढने कर्के महापापों कर्केभी युक्त होयाहोंया शुद्धहोंदाहे इसविषे संशयनहि ॥ १ ॥ मदिराके पीनेवाला और सुवर्णस्तेयी और गर्भघाती और गुराकीअध्याविषे जाणेंवालाभी संपूर्ण पापोंते रहतहोंदाहे तांनिरंतर रुद्रान् इन्हां मंत्रानुं जपे अर्थात् ११ जारां पाठ रुद्राके जारां दिनकर्त्तारहे ॥ २ ॥ अब यमजीकहतेहैं ॥ उपवासव्रतकों एक पक्ष पर्यंत करदा होया मंडलंपावमानच इसनूजपे तां ब्रह्महत्याके पापकों दूरकर्त्तारहे जयमेवाशिष्टजीने भी वाक्यकहाहे ॥ ३ ॥ इंद्रमित्यादिके जपकरणेते मदिरापानके महापापते

कर्मारंभात्प्रस्यसिद्ध्यतिइति तथा उपपातकेभ्योयानिमहांतिमहापातके भ्यश्चयानिन्यूनानितानिसर्वाण्यपिद्वादशरात्रादपोहति एकविंशतिरात्रा न्महापातकानि । अंगिराः एकादशगुणान्वापिरुद्रानावर्त्यधर्मवित् महापापैरुपस्पृष्टोमुच्यतेनात्रसंशयः १ सुरापोयदिवाचौरेभ्रूणहागुरुतल्पगः मुच्यतेसर्वपापैस्तुरुद्रास्तुसततंजपेत् २ यमः । मंडलंपावमानंजपन्पक्षमुपोषितः नाशयेद्ब्रह्महत्यांचवसिष्ठवचनंयथा १ इंद्रमिंद्रमिदंसृक्तंसुमित्रंमधुच्छंदमं सुरापानात्प्रमुच्येतपावमानजपेनवा २ अग्निमीडेपुरोहितामित्याद्यं इंद्रविश्वाअवीवधन्नित्येतद्वर्गसहितंसप्तर्चमधुच्छंदमं । शौनःशेफोनंसदस्यं कौत्स्यंस्तयविनाशनम् जपेद्वाप्यस्यवामीयंपावमानमथापिवा १ कुंतापं वालाखिल्यांश्चत्रिवित्पूपाट्टपाकपान् होत्तन्नुद्रांस्तथाजप्त्वामुच्यतेसर्वपातकैः २ दशलक्षप्रमाणावागायत्रीशोधनंपरं अपिवालक्षहोमेनमुच्यते सर्वपातकैः ३ घृतंतिलान्वासमिधोहुत्वादेवकृदादिभिः अप्सुयानियतो जप्त्वातदैहैवविशुद्ध्यति ४

हित हुंदाहे अथवा पावमानके जपकर्के अग्निमीडे पुरोहित इत्यादि और इंद्रविश्वाइत्यादि सत ७ ऋचामधुच्छंदसि कहतेहैं और शौनः इत्यादिवा अस्यवामीयं वा पावमानं और कुंतापं इत्यादिके जपकरणेकर्के संपूर्ण पापोंते शुद्धहोंदाहे ॥ २ ॥ गायत्रीति दशलक्ष १०००००० गायत्रीके जपकर्के परमश्रेष्ठशुद्धिकहीहे और लक्षहवनकर्के संपूर्ण पापोंतेशुद्धहोताहे ३ और भी कहतेहां देवकृदादि मंत्रोंकर्के घृत और तिल और समिधांकर्के हवन करे वा जलविषे स्थित होकर जप करे तां तिसदिनविषेही शुद्धहोंदाहे ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ १४७

और जलविषे स्थित होके यत्करोति इसते आदलेर वारुणी क्या वरुणदेवताकी ऋचाको जपेतां संपूर्ण पापांतें शुद्ध होता है ॥ अब इसीमै मनुजीका वाक्य है ॥ अद्वितीयमिति ॥ इसका अर्थ पूर्व इसी प्रकार विषे कहा है १ अवशिष्टजीका वाक्य है ॥ संपूर्ण पापांके समुदायकों दश हजार १०००० गायत्रीका जप शुद्धकर्ता है १ अब गायत्री पदकी अनुवृत्ति विषे सुखजीविशेष कहते हैं ॥ सुवर्णका चौर और ब्रह्महत्याः और गुरांकी शय्याविषे जानेवाला और मदिराके पीनेवाला लक्ष १०००० जपकर्के शुद्ध होंदा है और गायत्री केवल जपकर्के हिनहि किंतु हवन कर्के संपूर्ण पापकों नाशकर्दा है ॥ १ ॥ और संपूर्ण कामनाके देणेवाली है और वरके देनेवाली और भक्तांकी प्यारी है देवी ऐसी गायत्रीकर्के जो पुरुष मनकों रोककर धृतसंयुक्त तिलांकके हवन कर्ता है ॥ २ ॥

यत्करोति वारुणीमंतर्जलजपन् सर्वपापैः प्रमुच्यते मनुः ॥ अद्वितीयमिति द्रमित्येतदे नस्वी सप्तकं जपेत् अप्रशस्तं तु कृत्वाप्सु मासमासीत भैक्ष्यभुक् वसिष्ठः ॥ सर्वे पापमेव पापानां संकरे समुपस्थिते अभ्यासे दशसाहस्रो गायत्र्याः शोधनं परम् १ गायत्र्यनुवृत्तौ शंखः ॥ सुवर्णस्तेयकृद्विप्रो ब्रह्महा गुरुतल्पगः सुरापश्च वि शुद्धयंतिलक्षजापान्नसंशयः हुतादेवीविशेषेण सर्वकल्मषनाशिनी ॥ १ ॥ सर्वकामप्रदा देवी वरदा भक्तवत्सला धृतयुक्तैस्तिरैर्वह्निहुत्वा तु सुसमाहितः ॥ २ ॥ पापत्मा लक्षहोमेन पातकेभ्यः प्रमुच्यते अभीष्टलोकमाप्नोति तथा पपाविवर्जितः ३ मनुः ॥ सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य वहिरेतत्रिकद्विजः महतोप्ये न सोमासात्त्वचेवाहि विमुच्यते ॥ १ वहिर्ग्रामात्त्रिकं सव्याहति सावित्र्यात्म कम् ॥ हारीतस्तु प्रणवो व्याहृतयः सवित्रीचेति त्रिकमिवाह ॥ सावित्रं पवि

त्रयेन सर्वपापेभ्यो मुच्यते ॥

सोपापात्माभी होवतांभी लक्षहवनकर्के पापांतें रहित होंदा है और अष्टलोककों प्राप्त होंदा है ॥ ३ अब इसीविषे मनुजी कहते हैं ॥ नगते वाहर उत्तम म्यान विषे सहित व्याहृतीके तिन्हाकों जो हजार १००० बार जपदा है सो महा पापांतें रहत होंदा है जयसे सपे कुंचको त्यागता है ॥ १ ॥ त्रिकशब्दका अर्थ कहते हैं त्रिकमिति ॥ सहित व्याहृतियोंके जो गायत्री है इसका नाम त्रिक है इसमें व्याहृतियोंके भेद दो हैं महाव्याहति ३ और व्याहति ४ इसीका अर्थ अब हारीतजी कहते हैं ॥ ओंकार और व्याहति और सावित्री और कोई कहते हैं किं सावित्र १ पवित्र २ एहि त्रिक है सावित्रमै दो भेद है इन्हांके जपकर्के संपूर्ण पापांतें रहत होता है ॥

१४८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

और एक सो १०० जप कर्के मानसी पापते रहत होताहै और दशहजार जप कर्के संपूर्ण पापाते रहत हुंदाहै ॥ तयसेहंसः शुचिपदिति एह शुद्ध पवित्र जिसकर्के संपूर्ण पापाते रहित होताहै इसको जलमें जप करे और घृत तिल समिधांका हवन करे और तयसे आरुष्णेन इस मंत्र कर्के सूर्यजीके उपस्थानते शुद्ध हुंदाहै अब यमजी कह तेंहैं ॥ आरुष्णेन इसका आंकार युक्तका अथवा १००००० ओंकारका जप करे तां तिसीदिनमें शुद्ध हुंदाहै और स हस्तशीपांके जप कर्के तिसीदिनमें शुद्धहोंदाहै तथेति इसते उपरंत चांडालकी कुलमें और नटकी कुलमें और शूद्रकी कुलमें और दंभी और मिथ्या जो दोषा रोपन कर्तीहै और पतित

शतंजप्त्वामानसात्पूतोभवति दशसहस्राणिजप्त्वासर्वः पूतात्माभवती
त्याहुः तथाहंसः शुचिपदिति विमलंपवित्रंयेनसर्वपापेभ्यः प्रमुच्यते
यदाप्सुजपेत् घृतंतिलान्समिधोवाजुहुयात् तथाआरुष्णेनेत्यादित्य
मुपतिष्ठन्सर्वपूतात्माभवति ॥ यमः ॥ ओंकारायुतमभ्यस्यतदहैवविशु
द्ध्यति पौरुषंसूक्तमावर्त्यतदहैवविशुद्ध्यति तथा अथचांडालकुलेनटकुले
पौष्टिककुलेदांभिकाभिशस्तपतितकुले अन्यस्मिन्वाभोज्यपापकर्मिकुले
प्रतिगृह्यक्षुधितोभुक्त्वाग्रामात्प्राचीमुदीचींवादिशमभिनिष्क्रम्य पृथिव्यां
शुचौदिशेऽप्सुपरिप्लवमानस्तरत्समंदीर्जपेत् ॥ ओंकारपूर्विकाव्याहतीर्वा
जपेत् तस्मात्पापात्पूतोभवति मातरंभगिनींगत्वामातृस्वसारंस्नुपांसखीं
अन्यद्वाऽगम्यागमनंकृत्वाऽघमर्पणमंतर्जलेत्रिरावर्त्य तदेतस्मात्पापा
त्पूतोभवति गोहत्यांस्त्रीहत्यांराजन्यवैश्यहत्यान्यासापहारं ॥

इन्हांकी कुलमें और अन्यजोहैं जिन्हांके गृहमेंभोजननहिपाणे योग्य और पापांके कर्णे वाले तिन्हांकी कुलमें दानकों ग्रहण कर्के क्षुधित होया होया जो भक्षण करदाहै सोपुरुष नगरंतें पूर्व दिशा वा उत्तरदिशामें प्राप्तहोकर शुद्धदेशमें जलमें स्थित होया होया ॥ तरत्समंदीरिति इसका जप करे ॥ ओंकारेति ओंकारके साथ व्याहृतियांके जपते तिसपापते शुद्धहुंदाहै ॥ मातरमिति माता और मासी और नूह और होरजो अगम्यास्त्री तिनांके साथ गमन करणका पाप दूरहुंदाहै जलमें त्रयवार अघमर्पण मंत्रके जपते ॥ गोहत्यामिति गोहत्या और स्त्रीहत्या और क्षत्रीवैश्यकी हत्या और न्यासका न देणा अर्थात् किसेकी अमानत रक्षकर द्रव्यको न देणा ॥

और कन्यामें दूषण करणा इहनां पापांके दूर करणे वास्ते ग्रामतें बाहरपूर्व दिशा वा उत्तर दि
शामें प्राप्त होकर काष्ठ कर्के अग्निको जगा कर व्याहृतियां कर्के गो घृतके साथ हजार ॥ १
००० ॥ आहुति करे और अठ हजार ॥ ८००० ॥ गायत्रीके जपकों कर्के सूर्यके सन्मुख हो
कर हिरण्य वर्णाभिरिति इहनां चार ४ ऋचां कर्के आपणे आपको मार्जन करे और त्रयवार
३ वामदेव्य मंत्रकों पडे तां इस पापतें शुद्ध होताहै चांडालीमिति चंडाली और पुक्क सजाति
और मित्रकी स्त्री इहनांके साथ गमन करेतां वामदेव्येनेति इस मंत्र कर्के अर्थात् वामदेवजीके
मंत्र कर्के त्रय प्राणायाम करे तां तिस पापतें रहत हुंदाहै । रेतइति वीर्य और मूत्रा और मल
इहनांके भक्षणका पाप और थोम और गंडा और गाजरां और कुंभीकादिजो अभक्ष्य साग इह

कन्यादूषणं कृत्वा ग्रामात्प्राचीं वोदीचीं वादिशमभिनिष्क्रम्य प्रस्तुतें धनेना
ग्निं प्रज्वाल्य गव्येन घृतेन व्याहृतिभिराहुतिसहस्रं जुहुयात् गायत्र्यष्टसहस्र
मावर्त्यादित्यं प्रक्षमाणश्च तसूभिर्हिरण्यवर्णाभिरात्मानं प्रोक्ष्य वामदेव्यं त्रि
रावर्त्य तदेतस्मात्पापात्पूतो भवति ॥ चांडालीं पुक्कसीं मित्रकलत्रं वा गत्वोप
रुष्ट्य वामदेव्येन वाग्नीन् प्राणायामान् कृत्वा तदेतस्मात्पापात्पूतो भवति रेतो
मूत्रपुरीषप्राशनं कृत्वा लशुनपलांडुगृजकं कुंभीकादीनामभक्ष्याणां भक्षणं कृ
त्वा हंसग्रामकुक्कुटसूकरसृगालमांसभक्षणं कृत्वा ततः कंठमात्रमुदकमवती
र्यशुद्धवतीभिः प्राणायामत्रयं कृत्वा व्याहृतिभिरुदकं पीत्वा तदेतस्मा
त्पापात्पूतो भवति ॥ ग्रामपदं त्र्येध्यभक्षणपरम् ॥ अत्रिः ॥ रजनीपादंध्या
नमेव समाचरेत् तत्पूर्वं तदपरं ब्रह्मसवितुः अभक्ष्यभक्षणादपेयपानादकार्य
करणादेशपतो मुच्यते

नांके भक्षण कर्णेका दोष और हंस और ग्राम कुक्कुट और सूकर और गिदड इनांके मांस भक्ष
णका पाप इहनां संपूर्ण पापांके दूर कर्णे वास्ते कंठ मात्रा जलमें स्थित होकर शुद्धवतीभिरि
ति इहनां मंत्रां कर्के त्रय प्राणायाम करे और व्याहृतियां कर्के हृदयमें प्राप्त होने वाला आ
चमन करेतां तिसपापतें शुद्ध हुंदाहै ॥ इहां ग्रामपद अपवित्र भक्षणमें जानना अर्थात् विष्टाभक्ष
ण कर्णे वाला कुक्कुट उसमें एह अर्थ करणा ॥ अब अत्रिजी कहतेहैं रजनीपाद मिति इस
ध्यानकों पडे और (तत्पूर्वं तदपरं ब्रह्म सवितुरिति) इसकों पडे इसका एह अर्थहै कि १ एक
पहर पहला रात्रिका गायत्री मंत्रके अर्थके ध्यानमें लगाणा और तिसतें पहले सागदिन और
तिसके पिच्छे रात्रिके तिस पहर ब्रह्म गायत्रीका जप करणा तां अशुद्ध भक्षण और अभक्ष्यका
जोपीना और नहि करणे योग्ययो परसेवनादि तिसका करणा इहनां संपूर्ण पापांके शुद्ध हुंदाहै

१५० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

वामदेव्यमिति वामदेव्य इसके त्रयवार पडनेकके ब्रह्महत्यापापते शुद्धहुंदाहै अयंतेति इसके जप कर्णेकके कन्याके साथगमनके पापते शुद्धहुंदाहै और सोमामिति इसके जप कर्णेकके विषके देणे वाला और गृहमें अग्नि लाने वाला शुद्ध हुंदाहै और उदुत्यामिति इसके कर्णेक महीनेतक प्रति दिन सत्तवार सूर्यके उपस्थानतें इस जन्ममें और पूर्वजन्ममें कीने जो पापतिन्हांते शुद्ध हुंदाहै । अवयमजी कहतेहैं ऋषभ साम विशेष तिस कर्के त्रय त्रवार प्राणायाम करणा और गायत्रीके एक सो आठ १०८ बार पडने कर्के नहि पीणयोग्य जो मदिरादि तिसके पीणेका पाप और अभक्ष्य वस्तुके भक्षण करणेका पाप दूरहुंदाहै ॥ अब चतुर्विंशति मतमें कहतेहां तिलांके साथ महा व्याहृतियां कर्के एक हजार संख्या वाला १००० होम उपपातकों दूर कर्ताहै ॥ १

वामदेव्यंत्रिरावर्त्यमुच्येत ब्रह्महत्याया अयंतरुद्रसोमेति जपित्वा कन्यादृषी च शुध्यति सोमराजानंवरुणमिति जपित्वा गरदोऽग्निदशचविमुच्यते उदु त्यजातवेदसमिति सप्तकृत्व आदित्योपस्थानादिह कृतैः पूर्वकृतैश्च पापैर्मुच्य ते यमः अपेयं पीत्वाऽभक्ष्यं भक्षित्वा स्नात्वाऽपस्पृश्य ऋषभेण त्रीन्प्राणा यामान्कृत्वा गायत्र्यष्टशतमावर्त्य तदेतस्मात्पापात्पूतो भवति ऋषभः साम विशेषः ॥ चतुर्विंशतिमतात् महाव्याहृतिभिर्होमस्ति लैः कार्यो द्विजन्मना उपपातकशुद्ध्यर्थं सहस्रपरिसंख्यया १ न तथैव विदजापेन पापानि दहति द्वि जः यथासावित्रजापेन सर्वपापात्प्रमुच्यते २ ॥ ऐहिकामुष्मिकं पापं सर्वानि रवशेषतः पंचरात्रेण गायत्रीजपमानोऽपपोहति ३ गायत्रीजपविधौ प्रत्य क्षरलक्षविधानरूपया युक्त्यानुष्ठानमेवंविधमपि ज्ञातव्यम् तद्यथा अत्यल्पे पापे चतुर्विंशतिमंत्रजपः २४ अल्पे तु २४० वा ४८० किंचिदधिके २४०० महति २४००० अतिपातके २४०००००० के पाचिन्मतेऽतिपातकान्महा

पातकमाधिकं तत्रेदं विपरीतम् ॥

न तथेति ब्राह्मण पापांको तयसे वेदके जप कर्के नहि दूर कर्ता तयसे गायत्रीके जप कर्के संपूर्ण पापांको नाश कर्ताहै ॥ २ ॥ इस जन्म का कीर्ता होया और आगे होण वाला पाप सो संपूर्ण पांचदिन पर्यंत गायत्रीके जप कर्के दूर हुंदाहै ३ गायत्रीति गायत्रीके अनुष्ठानमें एक एक अक्षर की संख्या कर्के चवी अक्षर होणेंतें चवी २४००००० लक्षजप विधि रूप युक्ति कर्के कहाहै सो कहतेहां अति अल्प पापमें चवी २४ और अल्पमें चार सो अस्सी ४८० और कुछ अधिकमें दो हजार चारसौ २४०० और बडेमें चवी हजार २४००० और अति पातकमें चवी लक्ष २४००००० जप कहाहै और कैयोंके मतमें अति पातकमें महापात क अधिकहै इहां विपरीत जानणा ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥ १५१

एतदिति एह पूर्वोक्त जपकी संख्या पापके वारंवार अभ्यासमें दूणी जानणी और अत्यंत अभ्यासमें त्रय गुणा अधिक जानणी और ब्राह्मण द्वारा चार गुणा अधिक किहीहै और परम अधि चवी २४०००० गुणा कहीहै॥सामर्थ्य और पापकीन्यूनता अधिकताको देखकर जानणी अब वसिष्ठजीकहेतैंहैं सर्ववेदपवित्राणिइति अर्थः॥पापके दूर करेणवाले और पुण्यके देने वाले अधमर्षणतें आदलेकर सूकाहैं तिह्नां कहतेहां जिनांके जप और होम कर्के पुरुष शुद्धि को प्राप्तहुंदेहे ॥ १ ॥ अधमर्षण और देवकृततें आदलेकर और महं दोषांके नाश करणे वाली दुर्गा इति॥इस पर्यंतहै॥अब प्रकटजो विशेष कर्के प्रायश्चित्त पापांके दूर करेण वाले तिह्नां

एतदेवाभ्यासादिसंभावनयादिगुणमत्यंताभ्यासे त्रिगुणमन्यद्वारातुचतुर्गुणम् चतुर्विंशतिलक्षगुणंतुपरमावधि शक्त्याद्यपेक्षया पापापेक्षया वा योज्यम् वासिष्ठः॥ सर्ववेदपवित्राणिवक्ष्याम्यहमतःपरम् येपांजपैश्चहोमैश्चपूयंतेना त्रसंशयः॥१॥अधमर्षणंदेवकृतंशुद्धवत्यस्तरत्समाः कृष्मांडयः पावमान्यो पिविराजंमृत्युलांगलम् २ रुद्राव्याहतयोदुर्गामहादोषविनाशिनीप्रायश्चित्तानिवक्ष्यामोविरूपातानिविशेषतः ३ समाहितानांयुक्तानांप्रमादपुकथंभवेत् ४ सर्ववेदपवित्राणिदोषविनाशाभ्युदयकारणान्यधमर्षणादीनि कथितानीदानींप्रायश्चित्तत्वेन पापशोधकत्वेनप्रसिद्धानि वक्ष्यामोऽत्रबहुवचनं प्रतिपादकमुन्यंतराभिप्रायं पूर्वमेकवचनंस्वकीयसम्मतत्वाभिप्रायंसमाहितानां प्रमादरहितानामपि युक्तानांकथंचित्प्रमादेपुसत्सु यत्प्रायश्चित्तंभवेत्तच्छोधकंभवेदित्यर्थः॥ ऋतंचसत्यंचेत्यधमर्षणंत्रिरंतर्जलेजपन्सर्वस्मात्पापात्प्रमुच्यतेहंसः शुचिपदित्येतामृचंत्रिरंतर्जलेपठन्सर्वस्मात्पापात्प्रमुच्यते ॥

मुच्यते ॥

कहतेहां एहजो (वक्ष्यामः) इसमें बहुवचनहै सो कथन करणे वाले जां होर मुनि तिस अभिप्राय कर्के कहाहै पूर्व(वक्ष्यामि)जो एकवचनहै सो आपनी संमतिके अभिप्राय वास्तेहे ३ और समाहितानामिति ॥क्या प्रमाद रहतजोहैं और कदीक प्रमादांके होयां होयां पापमें युक्त होण तांतिह्नां पापांके दूर करणे वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्त कहेहैं इत्यर्थः॥ ऋतमिति॥ऋतंच इस सूक्तको त्रय बार जलमें चलोवी लाकर पडे तां संपूर्ण पापांवं शुद्धहुंदाहै औरभी इसी विषयमें कहतेहां हंस इति इसऋचाको जलमें चलोवी लाकर पडे तां संपूर्ण पापतें शुद्धहुंदाहै ॥॥

१५२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी ० भा ० ॥

विष्णु जी कहते हैं । अथात इति ॥ इसमें उपरंत संपूर्ण वेदों विषे जो पवित्र हैं जिन्हां के जप और हवन कर्के ब्राह्मण क्षत्री वैश्य पापांतें शुद्ध हुंदा है ॥ अथ मर्पणें आद लेकर उनत्री २९ एह मंत्र पुरुष को पवित्र कर्ते हैं ॥ और जेकर इच्छा करे तां पूर्व जन्मकी स्मृति को प्राप्त हुंदा है १ अव हागीत जी विशेष कहते हैं ॥ इन्हां त्रय ३ लोकांकी हत्याके पापनू दूर कर्ता है त्रय बार अथ मर्पण मंत्र कर्के आचमन लेणें जयसे अश्वमेध यज्ञ शुद्ध कर्ता है तयसे तिस पापके दूर करणे वास्ते त्रि एह शब्द कहा है ॥ अथात् त्रयवार अथ मर्पण सूक्त कर्के मंत्रया होया जल तिसका पीणा अश्वमेध यज्ञके स्नानके फलको देता है और १ (रुद्रैका

विष्णुः अथातः सर्ववेदपवित्राणि भवन्ति येषां जपैश्च होमैश्च द्विजातयः पापेभ्यो मुच्यन्ते अथ मर्पणं देवकृतं तत्समं दीधावतिकूपमांडयः पावमान्यः दुर्गासावित्री अभिपंगाः पादस्तोमा व्याहृतयो भारंडानि चेंद्रसामपुरुषव्रतं वासामविद्वावार्हस्पत्यं वाक्सूक्तं मध्वसूक्तं मध्वचः सामनी चेंद्रशुद्धेशतरुद्रियमथर्वशिरः त्रिसुपर्णमहाव्रतं नारायणीयं पुरुषसूक्तं ॥ त्रीण्याज्यदोहानिरथंतरं च अग्निव्रतं वामदेव्यं वृहच्च एतानि गीतानि पुनंति जंतुं जातिस्मरत्वं लभते य इच्छेत् १ हारीतः हत्वा लोकान् पीमां स्त्रीं स्त्रिः पिवेद घमर्पणं यथाश्वमेधावभूयस्तथा तस्मै त्रिब्रवीत् ॥ १ ॥ रुद्रैकादशिनी जप्त्वा तदह्नैव विशुद्ध्यति घृतं तिलान्समिधो वा जुह्याद्देवकृतस्य वै ॥ २ ॥ अप्सुवानियतो जप्त्वा तदह्नैव विशुद्ध्यति विराजं विमलं शुद्धं त्रिमधुज्येष्टसाम च ॥ ३ ॥ अप्रतिरथं स्तोमीयं मनोभासं कृतमेव च त्रिसुपर्णं सुवर्णं च प्रत्यंगं भृत्युलंगलं ॥ ४ ॥ अथर्वशिरोथभौमं वा वामदेव्यमथापि वा आदित्यसूक्तं वाक्सूक्तं श्रीसूक्तं सर्वसंमितं ५ ॥ वाक्सूक्तं विविधं चैव सर्वपापप्रणाशनम् । अथ शरीरं पवित्रम् । यद्द्वारा त्र्यावापद्भ्यां पापमकार्षि प्रजापतिर्मातृस्मादेन सो विश्वान्मुचत्व हसः ॥

दशिनी) के जप करणें क्या ११ जारां रुद्रियें के पाठ करणें तिसी दिनमें पापतें रहत हुंदा है ॥ और घृत और तिल और समिधा इन्हांका हवन करे ॥ (देवकृतस्य वै) इस मंत्र कर्के वाजलमें स्थित हो कर पढ़े तां तिसी दिन शुद्ध हुंदा है १ और विशेष कहते हैं विराजमिति इत्यादि मंत्र संपूर्ण पापांको नाश कर्दे हैं । ३ । ४ । ५ अव शरीरकी शुद्धि करण वाले मंत्रको कहते हैं ॥ यदेति जो पाप दिन और रात्रिमें पादां कर्के में कर्दा होया तिस संपूर्ण पापतें मैं नू प्रजापति शुद्ध करें और दिन रात्रिका सब मंत्रांमें संबंध करणा ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ १५३

जो पाप लिंग कर्के कदा होया तिस पापतें मैनुं विष्णु शुद्ध करे। और दिनरात्रिमे गुदा कर्के कीते होयें संपूर्ण पापतें मित्र देवता शुद्ध करे। और हथां कर्के कीते होये पापतें इंद्र शुद्ध करे और वाणी कर्के कीते होये पापतें अग्नि देवता शुद्ध करे ॥ और जिह्वा कर्के कीते होये संपूर्ण पापतें जल शुद्ध करण ॥ जो पापमें दिनमें और रात्रिमें श्वासां कर्के कर्ताहो तिस संपूर्ण पापतें पृथिवी शुद्ध करे ॥ और जो नेत्रां कर्के पाप होयाहै तिन्हें संपूर्ण पापानूं सूर्य जी दूर करण ॥ और जो कर्णा कर्के पाप होयाहै तिस संपूर्णनूं मेघ दूर करे ॥ और जो पाप त्वचा कर्के कीताहै तिसनूं वायु दूर करे और जो मन कर्के पाप कीताहै तिस संपूर्ण पापनूं चंद्रमा

यदह्नावोपस्थेनपापमकार्षेविष्णुर्मातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावापायुनापापमकार्षेमित्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावापाणिभ्यांपापमकार्षेमिंद्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यद
ह्नारात्र्यावावाचापापमकार्षेमग्निर्मातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावाजिह्वयापापमकार्षेमापोमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावाप्राणेनपापमकार्षेपृथिवीमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावाचक्षुषापापमकार्षेसूर्योमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावाश्रोत्राभ्यांपापमकार्षेपर्जन्योमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यद
ह्नारात्र्यावात्वचापापमकार्षेवायुर्मातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावामनसापापमकार्षेचंद्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावाबुद्ध्यापापमकार्षेब्रह्मामातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यदह्ना
रात्र्यावाहंकरेणपापमकार्षेरुद्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुचत्वंहसः॥यन्मेकेशेषु
दौर्भाग्यंसीमंतेश्चमूर्धनि ललाटकर्णयोरेक्ष्णोरग्निस्तन्मेव्यपोहतु१यउद
गान्महतोऽर्णवादिभ्राजमानः सलिलस्यमध्यात् समानमृषभोरोहिताक्षः
सूर्योदिपश्चिन् मनसापुनतुअवधूतोवालंविताप्सुजपत्पूतोभवति शुचिम
र्धमादायोदितमात्रायनमस्तेस्वशीतरश्मेतमोनुदेजहिमेदौर्भाग्यंसौभाग्या
योदयस्वमेइति

दूर करे ॥ और जो बुद्धि कर्के पाप कीताहै तिस संपूर्ण पापतें ब्रह्मा जी शुद्ध करे ॥ और जो अहं कार कर्के पापहै तिस संपूर्ण नूं रुद्र दूर करे ॥ अब विशेष कहंतहां यन्मे इति जो पाप मेरे केशां विषे और शीर्षमें और मस्तकमें और ललाटमें और कर्णोंमें और नेत्रोंमें दौर्भाग्य पापहै तिसनूं अग्नि दूर करे१यइति एह सूर्य जीका मंत्रहै ॥ (भवति) ॥ इस पर्यंत और कहें तेहें शुचिमिति पवित्र अर्थकों ले कर्के सूर्यके उदय होणके वेले ॥ (नम) इस मंत्रको पढ़े

१५४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र०१९ टी० भा० ॥

उदित्यामिति(उदित्य)और(चित्रदेवानां)इनामंत्रां कर्के दोहयकर्के सूर्य ताई अर्घ्यदेवे ॥ और हं सः शुचिपदिति ॥ इसकर्के सूर्यके उपस्थानकोकरे सोएह व्रतसंपूर्ण कामनाके देने वालाहै॥और जेकर होर दिनकी कृप्य ना कीतीहोवे तांगोंआके ताईयासदेवे॥और भद्राभ्योइति । इसमंत्रको पडे जेकर गांकों दंडेकरके नवाडे और दुर्वचन नकहे वानत्यागे परिवारइति क्या दोषका प्रकट करणा तिसकोनकर और आक्रोशक्यारे इत्यादिक नीच संबोधनकर्के न बुलावे वा न झिडकेपुहवाक्य ब्राह्मणमेभी जानणा क्या ब्राह्मणकों भीऐसे शब्दनकहे और तात्कालप्राप्तहो याजोब्राह्मण तिसताई म्दिकीता होया अन्नदेवे और नमो इसमंत्र का उच्चारण करे तांसंपूर्ण

उदुत्यंचित्रदेवानामित्येताभ्यांहस्ताभ्यामवनीयाध्याजलिहंसः शुचिपदि त्यादित्यमुपतिष्ठत तद्व्रतंसर्वकामिकं अकृताह्निकोगवेयवसंदद्यात् भद्राभ्योनमो बहुलाभ्योनमो धेनुभ्योनमः सर्वलोकदेवमातृभ्योनमः यदिगानविं देन्नपरिवदेन्ना क्रोशेत्तत्रतंसर्वकामिकम् उपहतमशनंसहसागतायब्राह्मणा यदद्यात् नमोब्रह्मभ्योब्रह्मविद्भ्योब्राह्मणेभ्योनमइति।यदिब्राह्मणं नार्चयेन्न परिवदेन्नाक्रोशेत्तद्व्रतंसर्वकामिकमिति॥विन्दनंदंडादिचालनमात्सर्येणवर्त्त नंवात्यागोवापरिवादेदोषाविष्करण आक्रोशः रेडत्यादिनीचसंबोधनादि नाह्वानंधर्षणवागोब्राह्मणयोरितद्वयापारपरावृत्तिः सर्वफलदंव्रतंभवतीत्य र्थः॥अत्रिः नवेदवलमाश्रित्यपापकर्मरतिर्भवेत् अज्ञानाच्चप्रमादाच्चदह्यंतक र्मनेतरत्१हरिः।सुवर्णं दानंगोदानेष्टार्थिर्वादानमेवच एतत्प्रयच्छमानोवैस र्वपापैःप्रमुच्येत१ पुराणाच्च।अतिपापमहापापोपपापादीन्यशेषतःमोहा द्विधाय वितरेत्स्वर्णेतदनुसारतः ॥१॥

फलके देणे वाला व्रतकिहाहे ॥अर्थात् गोब्राह्मणकी सेवातें सभफल प्राप्तहुंदाहै ॥अवअत्रिजी कहतेहै॥वेदके बलकों आश्रय होकर पाप कर्ममें प्रीति नकरे और अज्ञानतें चपुनाः प्रमादतें पापकर्मकरे तांदाहहोताहे अर्थात् अज्ञानादिते कीता होयाजोपाप प्रायश्चित्तसे दूरहोताहै इतरपाप नहि दूरहोता १ अव हरिजी कहतेहै जोपुरुष सुवर्ण और गो और पृथिवी दाना कों कर्ताहै सोसंपूर्ण पापते रहतहोताहै १ अवपुराणते इसीकों कहताहै अतिपाप और महा पाप और उपपाप आदिजोपापहै इनांनू मोहतें जो कर्ताहै सोपापकी न्यून अधिकताको दे खकर तिसके अनुसार सुवर्ण दानकरे १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥ १५५

वेदके जानणे वाले ब्राह्मणनू पुष्प और वस्त्रांकके आदविषे पूजे ॥ २ ॥ और अर्जितामिति इसमें
त्रकके सुवर्ण का दान देवे कैंसा सुवर्ण है किसवें दैवत्य क्या सभनां देवताकों प्रसन्न करदा है और
हुताशन क्या अग्निका स्वरूप है और जो आज्य क्या घृत है सो शरण्य है क्या आयुकी वृद्धि करदा
है और पितर इसके देवता हैं और देवता का तेज है ॥ ३ ॥ तिलानिति महर्षि कश्यपजी के देहतेति
लपैदे होए हैं इसकके पवित्र हैं ॥ ४ ॥ और हे सुव्रते महर्षे इति इस डेड श्लोकके मंत्रकके विधि
तैं ब्राह्मणनू पूजकर तिलांका दान करे तांति न्हा तिलाके दान कके पापके समूह का जो पिंजरः है
सोनष्ट हुंदा है जैसे मृत्तिका का कच्चा पात्र जलमें नष्ट होता है ॥ ५ ॥ और तयसे विधि कके ब्राह्मणतां
ईमषीर और घृतका दान करे तां संपूर्ण पितरां नू और आपनू पापतें तारदा है हे राजन् ६ ॥

ब्राह्मणप्रार्थयित्वा दौश्रोत्रिये वेदपारगम् संपूज्य पुष्पवस्त्राद्यैर्मन्त्रेणानेन दाप
येत् ॥ २ ॥ अर्जितं सर्वदैवत्यं सुवर्णं च हुताशनः शरण्यं पितृदैवत्यमाज्यं ते जो
दिवौकसां ॥ ३ ॥ तिलांश्च दद्याद्विधिवन्मन्त्रेणानेन सुव्रते महर्षेर्गात्रत स्मृ
ष्टाः कश्यपस्या तिलाः स्मृताः ॥ ४ ॥ तस्मात्तेषां प्रदानेन पापसंघातपंजरं वि
लयं यातुमे सर्वमामपात्रमिवाभासि ॥ ५ ॥ तथा दद्याद्विधानेन द्विजाय मधुसर्पि
षी तारयत्यखिलान्पूर्वानात्मानं च नराधिप ॥ ६ ॥ गोभिश्च तसृभिर्युक्तं तथा भू
मिसमन्वितम् प्रतिग्रहसमर्थाय विदुषे त्वाहिताग्नये ७ दत्त्वा जिनंतु कार्त्ति
क्यां वैशाख्यां वा विशेषतः विपुवत्ययने चैव ग्रहणे च द्रसूर्ययोः ८ कृच्छ्रात्तु
तमसो घोरान्मुच्यते सर्वतोभयात् अतीतान्सप्तपुरुषांस्तथा चान्याननागता
न् ॥ ९ ॥ उद्धृत्य सनरोयाति ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥ वसिष्ठवृहस्पती यत्किंचि
त्कुरुते पापं पुरुषो लोभमोहितः सर्वतद्भूमिदानेन क्षिप्रमेव प्रणाशयेत् १
आदित्यपुराणे यस्तु गोचर्ममात्रां वै प्रयच्छति वसुंधराम् विमुक्तः सर्वपापेभ्यो
विष्णुलोकं सगच्छति ॥ १ ॥

अब विशेष कहते हैं गोभिरिति ॥ चार गौवां ४ और पृथिवी कके युक्त मृगचर्मक दाननू वि
शेषकके कार्तिककी और वेशाषकी पूर्णमासीमें बुद्धिमान् अग्निहोत्रके करणवाले पात्र ब्राह्म
णतां देवे वा विपुवत् क्या मेपतुलकी संक्रांति और चपुनः चंद्रसूर्यके ग्रहण विषे देवे ८ तां
संपूर्ण कष्टके देनेवाले घोर अंधकारके भयतें पिछलीयां सतां कुलानू तयसे अगलीयां उद्धार
क्या तारकके सनातन ब्रह्मलोककों प्राप्त हुंदा है ९ अब वसिष्ठ और वृहस्पतिजी विशेष कहते हैं
लोभमेलगा होया पुरुष जो कुछ पाप कर्दा है सो संपूर्ण पापनू पृथिवी दान कके दूर कर्दा है ॥ १ ॥ सो स
म्यं पुराण विषे भी कहा है जो पुरुष गाँके मृगानके प्रमाणमात्र पृथिवी दान कर्दा है सो संपूर्ण
पापते शुद्ध होया होया बैकुण्ठमे प्राप्त हुंदा है १ ॥

१५६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

अब बृहवसिष्ठजी कहें हैं जिस स्थानमें सो १०० गो और एक बलद स्थित होवे तिस स्थान नू धर्म वेत्ता पुरुष गो चर्म मात्र कहें हैं ॥ इसीमें बृहस्पति जी कहते हैं दश १० हत्थका १ कंश हुंदा है । और पंदरा वंशांदा गोचर्म हुंदा है ॥ और मत्स्यपुराणमें भी लिखिया है ॥ दंडेनेति सत् १ हत्थांदा १ दंड है और १० त्रियांदां दानिवर्त्तन कहिंदा है और एहि त्रिभाग हीन होवेतां गो चर्म का प्रमाण है अर्थात् २० बीस दंडका गोचर्म हुंदा है एह त्रयपक्ष यथा कथंचित् आपसमें मिल देहैन ॥ अब वासिष्ठजी और प्रकार कहते हैं अथेति आपणैक कर्क कीते होए कर्मों कर्क आप णे आपको वडा मन्त्रे तो आपणै वास्ते एक हत्थ कर्क जितने यव आउण तितने आंको

बृहवसिष्ठः॥ गवांशतं वृषश्चैको यत्र तिष्ठेदयं त्रितः एतद्गोचर्ममात्रं तु प्राहुर्धर्मवि
दो जनाः ॥ बृहस्पतिः ॥ दशहस्तेन वंशेन दशवंशाः समंततः पंचचाम्यधि
कास्तस्मादेतद्गोचर्मलक्षणम् ॥ मात्स्ये ॥ दंडेन सप्तहस्तेन त्रिशद्वंडानिवर्त्तनम्
त्रिभागहीनं गोचर्ममात्रमाह प्रजापतिः ॥ वासिष्ठः ॥ अथ कर्मभिरात्मकृतैर्गुरुमा
त्मानं मन्येत आत्मार्ये प्रसृतियावकं श्रपयेत् ॥ न ततो ग्नौ जुहुयात् न चात्र बलि
कर्म अशृतं श्रप्यमाणं ऋतं वा भिमंत्रयेत् यवोसि धान्यराजोसि वारुणो मधु
संयुतः निर्णोदः सर्वपापानां पवित्रमृषिभिर्भुष्टम् ॥ १ ॥ घृतं यवामधुयवा आ
पो वा अमृतं यवाः सर्वपुनीतमे पापं यन्मे किंचन दुष्कृतम् ॥ २ ॥ वाचा कृतं कर्म
कृतं दुःस्वप्नं दुर्विचिंतितम् अलक्ष्मीनां शतयवाः सर्वपुनीतमे यवाः ३ श्व
सूकरावलीढं वा उच्छिष्टोपहतं च यत् मातुर्गुरोरशुश्रूषा सर्वपुनीतमे यवाः ४

पकावे परंतु तिस विच्छों अग्निमें हवन नहिकरे और इसविषे बलिवैश्वदेव कर्मभी नाकरे और जिसबेले पकाण लगे तिसबेले (कृतंचसयं) इसमंत्र कर्के मंत्रण करलेवे और (यवोसि) इ सते आदिले कर मंत्रपढ़े इसका अर्थ पिल्ले होचुकाहे ॥ १ ॥ २ ॥ वाणी कर्के वा जो कर्म की ताहे और दुष्टस्वप्न और दुष्टमन कर्के जो चिंतन कीताहे और अलक्ष्मी इनांतुं हेयवां हो नाशकरो और संपूर्णको पवित्रकरो ॥ ३ ॥ श्वेति कुता और सूकर कर्के जो उच्छिष्ट है और जो उच्छिष्ट कर्के उपहतकथा युक्त है और माता और गुरुकी नहि सेवा कीती तिसको पवित्रकरो ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीरकरित्त प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ १५७

और बहुतयांका अन्न और वेश्या का अन्न और शूद्रका अन्न खाणा और शूद्रको यज्ञ कर वाणा और चौरका अन्न और मृत्पु दिनते नों आद्ध तिस का अन्न खाणा उनां कर्मके कर ऐसे जो पापहै तिसनूं हेयवां हो पवित्रकरो ॥ ५॥ और वालकोंमें जो अधर्म कर्ण का पाप और राजद्वारमेंजो झूठ कहणा आदिपापहै और सुवर्णचोरीकापाप और अवाय्यक्य जिसकानोह यज्ञोपवीतादि संस्कार और नहि जो यज्ञ करणके योग्य तिसकों यज्ञ करवाणे का पाप और ब्राह्मणोंमें दोष देणका जो पापहै तिनां संपूर्ण पापानूं हेयवाहो दूरकरो ॥ ६ ॥ इति श्रप्यमाण होया होया रक्षाकरे ॥ अर्थात् यव पकाणदे समय अपनी रक्षाकरे ब्रह्मेति इस मंत्र क के पकाए होएको हौलीहौली खावे परंतु यत्नते पात्रमे पाकर तिसका मंत्र एह है

गणान्नंगणिकान्नचशुद्रान्नशूद्रयाजनं चौरस्यान्ननवश्राद्धंसर्वपुनीतमेयवाः ५

वालवृत्तमधर्म्ययद्राजद्वारकृतंचयत् सुवर्णस्तेयमव्रात्यमयाज्यस्यचयाज नम् ६ ब्राह्मणानांपरिवादंसर्वपुनीतमेयवाः इतिश्रप्यमाणोरक्षांकुर्यात् ब्रह्मादिवानांपदवीकवीनामितिशृतंचलध्वश्नीयात् प्रयतःपात्रेनिषिच्यये देवामनोजातामनोयुजःसुदक्षादक्षपितरस्तेनः पातुतेनावंतुतेभ्योनमःस्वा हाइत्यात्मनिजुहुयात् ॥ अथनाभिमालभेत ॥ शांताःपीताभवतयूयमापो ऽस्माकमन्तरुदेरसुदेवाः तायुष्मभ्यमयक्ष्माअनमीवाअनागसस्त्वंदंत देवीरमृताऋतावृध इति त्रिरात्रंमेधार्थीपडरात्रंपापकृतं सप्तरात्रंपीत्वाब्र ह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयगुरुतल्पगान्पुनातिएकादशरात्रंपीत्वा पूर्वपुरु

पकृतमपिपापंन्निर्णदति ॥

देवा इति जो देवता मनते उत्पन्न होयेंहैं और मनके जोडने वाले और सहित दक्षके और दक्षपितर सो असांकों रक्षा करण और सो असांकों शुद्ध करण तिनां तुमांताई नमस्कार होवे स्वाहा इस मंत्र कर्के आपणे आपमें हवनकरे अर्थात् तिनां पकाए होएयवांका खावे ॥ अथेति इसते अनंतर नाभिकों आलिभनकरे और इस मंत्रको पडे शांता इति इस मंत्र को त्रय दिन पर्यंत पडकर पीवे यज्ञके फलकी और बुद्धिकी उच्छा वाला और पापकर्के की ते होये दोषनूं छे दिन पर्यंत पीने कर्के दूर कर्त्ताहै और सत दिन पर्यंत पीने कर्के ब्रह्महत्या और मदिरा पान और सुवर्ण स्तेय और गुरांकी शय्यामें जाणा एह सब पाप दूर हुंदेंहैं और यारां दिन पर्यंत पीणे कर्के पूर्व पिता आदि पापकों दूर कर्त्ताहै ॥

१५८ ॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

और वारांदिन पर्यंत पीएँतें ताड़ना दंड देणा उद्घाटन क्या प्रकट करदेणा और प्रीतिकरणी और वशकरणा इनांकर्माकों कर्ताहै और गौवांते शेष रहे जो यवतिनां यवांकोजो इक्कीस २१ दिनपर्यंत पीएँककें विद्याकों देखताहै और विद्याके स्वामियांकों और गणांकों देखताहै और गणांके पतीयांकां देखताहै ऐसे भगवानुवसिष्ठजी कहते होये ॥ इसीमें बृद्धवसिष्ठक के कहा होया विशेषहै यवेति इसमें पूर्वोक्त हि अर्थहै अग्नीति इसप्रकयवकके अग्निकार्य्य जो अग्निहोत्रादि तिसकोनकरे और भूतबलि जो वैश्वदेवादि तिसकोभी न करे और जो किहाहै कि जिसका भोजन करणा होवे तिसका अग्रभाग देलेणा इसका सोभागभी न देणा और भि

द्वादशरात्रंपत्वा ताडनोद्घाटनारंजनवशीकरणानिकरांतिगोभिराहार मुक्तानांयवानामेकविंशतिरात्रंपीत्वाविद्याः पश्यति विद्याधिपतीन्पश्यतिगणान्पश्यतिगणपतीन्पश्यति इत्याह भगवानुवसिष्ठः अत्रैव बृद्धवसिष्ठो कोविशेषः यवानांप्रसूतिमंजलिं श्रप्यमाणश्रुतंवाभिमंत्रयेत यवोसिधान्य राजोसिवारुणोमधुसंयुतः निर्णोदः सर्वपापानांपवित्रमृषिभिः स्मृतं इत्यनेन तथा घृतंयवामधुयवाः पवित्रममृतंयवाः सर्वपुनंतुमेपापंवाङ्मनः कायसं भवमित्यनेनवा ॥ अग्निकार्य्येन कुरुते तेन भूतबलितथा नाग्रं न भिक्षां नातिथ्यं न चोच्छिष्टं परित्यजेत् १ ये देवामनोजाता मनोयुजः सुदक्षा दक्षक्रतवस्तेनो वंतु तेनः पांतु तेभ्यः स्वाहेति आत्मनि जुहुयात् त्रिरात्रं मेधावृद्धये पापकृत् पट्टरात्रं सप्तरात्रं ब्रह्महत्यादिषु द्वादशरात्रं वधनोत्पन्न इति अश्लीयाद्यावकंप कंगोमूत्रेण शकृद्रसे सक्षीरदाधिसर्पिष्कं मुच्यते किल्विपात् क्षणात् १

क्षामी इसते नहि देणी और आए अभ्यागतका आतिथ्यभी इसते नहि करणा और शेषरिहा उच्छिष्ट क्या जूठा भी नहि इसका त्यागणा किंतु संपूर्ण भक्षण हिकरणा ॥ १ ॥ और ये देवाइ समंत्रकके आत्मा में हवण करे एह पूर्वोक्त हि अर्थहै एह मंत्रापिछे भी आयाहै परंतु मतभेदसे दूसरी वार लिखयाहै ॥ और कुछ विशेष कहतेहैं अश्लीतिपके होये यावकको खावे परंतु गो मूत्रा विषे अथवा गोमयके रस विषे और दधि १ घृत २ दुग्ध ३ गोसे लेकर साथमि लाके खावे तां पापतें मुक्तहुंदाहै शीघ्रहि इसमे पापका नाम नहि किहा तथापि जिसपापको मनमें धारकर करे सो पाप दूरहुंदाहै १

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥ १५९

और लौगाक्षिजीविशेष कहतेहैं जो पुरुष आपणेआपको अपवित्रजाणेतांपूर्वोक्तकूष्मांड मंत्राके कैं हवन करे तदभ्रूण हत्याते उरले पापते सभते मुक्त होताहै इसीका अर्थ स्पष्टकर किहाहै ॥ यदेति ॥ और व्रत कहतेहैं अयाविति अयोनि विषे क्या वालक गवादि विषे (रेतः) वीर्यको सिंचन कर्के स्वप्नते विना अर्थात् स्वप्नमै वीर्य पात होवेतां दोष नहि इसके पापके दूर करणे की इच्छावाला पूर्ण मासीमै अथवा अमावास्याकेदिन अथवा शुक्लपक्षकी रोहिणी नक्षत्र विषे स्नान करे शुचिक्या पवित्र होवे और पवित्र वस्त्रको धार करे अथवा काले हरणकाच र्म धार कर जो ब्रह्म चारिके कल्पमै लिखया धर्महै तिस विधि कर्के व्रत धारे ॥ धारणेका कालदिखातेहैं॥संवत्सर १ महीना १ वारां दिन १२ दश दिन १० छेदिन६ इस व्रतके धारणे की मर्यादाहै इसमे मांस नहि खाणा १ और स्त्रीपास नहि जाणा २ उपरले छत नहि बैठणा

लौगाक्षिः॥कूष्मांडैर्जुहुयाद्योऽपूतइवमन्येत यदर्वाचीनमेनोभ्रूणहत्याया स्तस्मान्मुच्यते ॥ यदाऽहमपूतइवेत्यात्मानंमन्येत तदाकूष्मांडैर्मंत्रैर्जुहुया दित्यर्थः । अयोनौवारेतः सिल्कान्यत्रस्वप्नादेरणवापवित्रकामः पौर्णिमास्या ममावास्यायांवाशुद्धपक्षस्यरोहिण्यांवास्नातः शुचिःशुचिवासाःकृष्णाजिन वासावाब्रह्मचारिकलेपनव्रतमुपैति संवत्सरंमांसद्वादशरात्रं दशरात्रंपट्टा त्रंवाननांसमश्नायात् नस्त्रियमुपेयात् नोपर्ह्यासीत् जुगुप्सेतान्पयोभक्षइ तिप्रधानकल्पोयावकंचोपयुंजानः कृच्छ्रंद्वादशरात्रंपक्षंवातद्विधेषुपयोब्राह्म णस्यव्रतम् । यवागूराजन्यस्यआमिक्षावैश्यस्यपूर्वाह्णेऽग्निमुपसमाधायचरु श्रपयित्वा॥ यदेवादेवहेडनंयददीव्यनृणमकं आयुस्तेविश्वतोदधादित्येतैः सृक्तैःप्रत्यूचमाज्यंजुहुयात् यदेवादेवहेडनमितिचतसृभिः भद्रंकर्णेभि रितिचतसृभिःपुनंतुमापितरइतिनवभिः पुनर्मांसैस्त्विद्रियामितिचतसृभिः अग्नयेवायवेसूर्यायब्रह्मणे प्रजापतयेकूष्मांडर्षिभ्यइतिव्रतहोमः॥

नासउणा ३ किसेकी निंदा नहि करणी ४ जलवा किंचित् दुग्ध भक्षण करणा १ पशुं जे कर प्रधान कल्पकी विधि करणेकी इच्छा होवेतो पूर्वोक्त यावक व्रतको करे १२ ॥ वारांदि न का व्रत करे अथवा भैक्ष्य व्रत करे असे स्थानोमे ब्राह्मणको पयो व्रत १ राजाको यवागू २ वैश्यको आमिक्षा ३ पूर्वाह्न समयमे अग्निको जगाकर चरुको पकाकर ॥ यदेवा १ यद दी व्य- २ आयुस्ते- ३ इनां तिष्ठा सूकां कर्के इक इक ऋचाको पड कर उस चरु कर्के अथवा घृत कर्के हवन करे ॥ आहुतिकी संख्या कहतेहैं यदेवाइत्यादि चार ४ भद्रंकर्णेभिःइत्यादि चार ४ पुनंतुमा पितर इत्यादि १ नव पुनर्मांसैः इत्यादि ३ और अग्नयेस्वाहा ॥ वायवेस्वाहा सूर्यायस्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा प्रजापतयेस्वाहा कूष्मांडर्षिभ्यःस्वाहा इतना तिस व्रतका होमहै ॥

१६० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥

और (अग्नेत्वंपारयम्वाहा) एह पीछेते हवन करे इसका नाम स्विष्ट कृतूहै और वैश्वानरजीके सूक्त कर्के पूर्व मुख वाला होया २ उपस्थान कर पीछे (परांचि) इस संज्ञावाले सूक्तोंको जपे और वैश्वानर सूक्तकोभी जपे॥अब वसिष्ठजीकहतेहैं॥स्नान कर्के गायत्रीको सौ १०० बार जपे और सोवार जलमे जपे और सौ १०० बार गायत्रीके साथ जलको अभि मंत्रण कर्के पी वेतां संपूर्ण पापांतें शुद्धहुंदाहै ॥इसमेंभी पापकी अधिकता और न्यूनताको देखकर प्रायश्चित्त की अधिकता और न्यूनता करणी अनादिष्ट प्रायश्चित्तमें आपहि विचारणा ॥ अब प्रायश्चित्तें दुशेखरमें विशेष कहाहै॥पापको प्रकट करणा और पश्चात्ताप करणा और वेदका पडना एह पा पाके नाश करणे वाले कहेहैं॥प्रकट करणा सभामें और पुण्य क्षेत्र जो देवस्थान तीर्थादिमें पा पको कह कर्के आपणी निंदा कणी और पापको स्मरण कर्के शोक करणा उसका नाम

अग्नेत्वंपारयेतिस्विष्टकृतं वैश्वानरीयेन सूक्तेन प्राङ्मुखः प्रांजलिरुपतिष्ठ
तेजपेत्सूक्तानि परांचिवैश्वानरीयंच जपेत् ॥ वसिष्ठः ॥ स्नात्वा शतेन गायत्र्याः
शतमंतर्जले जपेत् अपः शतेन वैपीत्वामुच्यते सर्वपातकै रिति ॥ अत्रापि गुरु
लघुपापापेक्षया गुरुलघु प्रायश्चित्तकल्पोऽनादिष्टस्थले च स्वयमूहनीयः । प्रा
यश्चित्ते दुशेखरे ॥ ख्यापनानुतापनाध्ययनान्यपि पापनाशकानि ॥ तत्र
ख्यापनं सभासु पुण्यस्थानेषु च स्वपापकथनपूर्वकमात्मानिंदनं अनुताप
नं पापस्मरणपूर्वकं शोकः ॥ अध्ययनं वेदान्तादेः उपदिष्ट प्रायश्चित्तेष्वे
तदंगम् रहस्ये ख्यापनेतरदेव न स्वतंत्रम् अन्यथा तद्विधिरफलः स्या
त् ॥ विष्णुपुराणे । कृते पापेनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते प्रायश्चित्तंतु तस्यै
कं हरिं संस्मरं परम् ॥ १ ॥ प्रातर्निशितथा संध्यामध्याह्नादिपुसंस्म
रन् नारायणमवाप्नोति सद्यः पापक्षये नर इति ॥ २ ॥ अत्र केचिदनेन
सर्वविधसर्वपापप्रणाशो भवत्येव इह व्यवर्हायता सिद्धयेतदुपदेश इति प्राहुः ॥

अनुताप कहाहै और वेदान्त शास्त्रका पडना उसका नाम अध्ययनहै एह त्रय प्रकार उपदेशकीते
होये प्रायश्चित्तोंमें अंगहै और रहस्यमें प्रकाशते विना होर संपूर्ण करणा न स्वतंत्र एह त्रयहि हेतु
सभजगा नहि जकर ऐसेन करे तां रहस्यकी विधि निष्फल हुंदीहै॥विष्णुपुराणमेंभी कहाहै॥पाप
कर्णेंते पीछे पश्चात्ताप होणा जिस पुरुषको तिसको एक नारायणका स्मरण रूपहि प्रायश्चित्त
कहाहै ॥ १ ॥ प्रातरिति॥प्रातः समय और तयसे संध्या समयमे और मध्याह्न समयमें नाराय
णस्मरणको करताहै सो तात्काल पापके क्षय होयां होयां नारायको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ इस
में केइक ऋषिकहतेहैं॥यद्यपि॥इसी कर्के संपूर्ण विधिका पाप नाश हुंदाहै तथापि एह व्यवहार
कीमिद्धि वास्ते उपदेश जानणा ऐसे कहतेहैं इति ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० १९ टी० भा० ॥ १६१

और विशेष कहतेहैं गंगामें स्नान संपूर्ण तर्हीके पापकों नाश कर्ताहै॥ श्रीगंगाजलकी महिमा कहतेहैं॥ चांद्रेति॥ और देहके शुद्ध करणेवाला चांद्रायण हजार व्रत करणा और गंगाका जलपीणा एह दोवेंसम होंए परंतु सम नहि गंगाजलका पीणा तिसर्तें उत्तमहै ॥ १ ॥ जयसे गरुडके दर्शनतेंहि सर्पविषतें रहित होजादेहें तयसे गंगाके दर्शनकरणेतेंहि संपूर्ण पापांतें रहित हुंदाहै २ ॥ इत्यादिक महाभारत आदिके वाक्यांतें गंगाकास्नान परम शुद्धिके देणेवालाहै ॥ एहश्र्धवाद नहि अर्थात् केवल स्तुतिहिनहि किंतु यथार्थहै॥ एह कहतेहैं स्नानमिति॥ गंगामें स्नानमात्र कर्के न दरहोणे वाला ब्रह्महत्या का पाप कैसे दूरहुंदाहै ऐसे जो पुरुष मन कर्के चिंतनकर्ताहै और वाणी कर्के केहताहै और इनको स्तुति वाद केवल मनदाहै ॥ १ ॥ तिस पुरुषकों

गंगास्नानंचसर्वविधसर्वपापप्रणाशनम् चांद्रायणसहस्रतुयश्चरेत्कायशोधनम् पिवेद्यश्चापिगंगांभः समौस्यातांनवासमौ १ भवतिनिर्विपाःसर्पायथातक्षिर्यस्यदर्शनात् गंगायादर्शनात्तद्वत्सर्वपापैःप्रमुच्यते । २ । इत्यादिमहाभारतादिवचनेभ्यःगंगास्नानंपरमशोधनम् । नचैतान्यर्थवादाः स्नानमात्रेणगंगायांपापं ब्रह्मवधोद्भवं दुराधर्पकथयातिचिंतयेद्योवदेदपि ॥ १ ॥ तस्याहंप्रवदेपापं ब्रह्मकोटिवधोद्भवम् स्तुतिवादमिमंमत्वाकुंभीपाकेपुजायते २ आकल्पंनरकंभुक्ताततो जायेतगर्दभइति भविष्यकौर्म्यादिवचनात् ॥ पापानांतथाहं ब्रह्मस्वर्गमोक्षैकहेतुता स्वभावएवगंगायाः शैत्यंशीतरुचर्यथा १ ॥ नगंगासदृशतीर्थंनदेवःकेशवात्परःब्राह्मणेभ्यःपरंनास्तीत्येवमाहपितामहः ॥ २ ॥ सर्वकृतयुगेतीर्थंत्रेतायांपुष्करंस्मृतं द्वापरेतुकुरुती

र्थकलौगंगैवकवलम् ॥ ३ ॥ गंगाकलियुगेस्मृतेतिपाठांतरम्

कोड १००००००० ब्रह्महत्याका पाप हुंदाहै और सो कुंभीपाक नरकमें कल्पपर्यंतनरकों भोगके पीछें गर्दभयोनिकों प्राप्तहोंदाहै॥ एह भविष्यत् और कूर्म पुराणके वचनानें कहाहै और कहतेहैं तथेति गंगाका स्वभावहिहै पापोंकानाश करणा और स्वर्ग और मोक्षकों देणा जैसे चंद्रमाका स्वभावहिशीतलहै कोई कहण कर्के नहि ॥ १ ॥ और कहतेहैं गंगाकेतुल्यकोई तीर्थनहि और विष्णुने श्रेष्ठ कोईदेवतानहि और ब्राह्मणानें श्रेष्ठ होरमनुष्य कोई भी नहि ऐसे ब्रह्मार्जीकहतेहैं ॥ २ ॥ सत युग विषे संपूर्ण नदी क्षेत्र तीर्थ रूपहैं और त्रेतायुगविषे पुष्करतीर्थ कहाहै और द्वापर युगविषे कुरुक्षेत्र तीर्थ कहाहैं और कलियुग विषे एक गंगाहि तीर्थहै ॥ ऐसेभी पाठांतरहै कलियुगविषे गंगाहि तीर्थ कथन कीताहै ॥ ३ ॥

१६२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० १९ टी० भा० ॥

येनेति जिसने अकार्य क्या न कर्णे योग्यजो कार्य तिनांको कीर्त्तहि और पीछे गंगाकासे वन कीर्त्तहि सो गंगा जल का सेवना तिसके संपूर्ण पापकों नष्ट कर्त्ताहै जैसे अग्नि काष्ठकों दाह कर्त्ताहै इत्यादि वचन जानणे ॥४॥ कलि युग विषे पापोंके दूर करणे वास्ते ऐसा माहात्म्य गंगाजीका हि कहाहै नहिपुष्करादिकांका और त्रेता दि युग विषे पापकों अल्प होणे तें पुष्करादिकांको भी तिस पाप के दूर करणे की सामर्थ्यहै॥और सतयुग विषे पापकों अतिअल्प होणेतें तिसके नाश वास्ते सब तीर्थ एह तात्पर्यहै ॥ कुछ होर भी मनु जीने क

येनाकार्यशतंकृत्वाकृतंगंगांसेवनंतत्सर्वतस्यगंगांभोदहत्यग्निरिवेधन ४

मित्यादिवचनान्यनुसंधेयानि कालियुगे इत्थंपापनाशसामर्थ्यगंगायाएव नतुपुष्करादीना त्रेतादौतुपापस्याल्पत्वात्तन्नाशसामर्थ्यं तेषामपीति

सर्वकृतयुगइत्यस्यतात्पर्यम् किंचस्यापनेनापिनाशकत्वमुक्तंमनुना ।

स्यापनेनानुतापेनतपसाध्ययनेनच पापकृन्मुच्यतेपापात्तथादानेनचाप

दि॥१॥यथायथानरोऽधर्मस्वयंकृत्वानुभाषते तथातथात्वंचवाहिस्तेनाधर्मे

णमुच्यते ॥ २ ॥ यथायथामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हति तथातथाशरीरंतत्ते

नाऽधर्मेणमुच्यते ॥ ३ ॥ कृत्वापापंहिसंतप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते नैवकु

र्यापुनरितिनिवृत्त्यापूयतेतुसः ॥ ४ ॥ एवंसंचित्यमनसाप्रेत्यकर्मफलोदय

म् मनोवाङ्मूर्तिभिर्नित्यंशुभंकर्मसमाचरेत् ॥५॥अज्ञानाद्यदिवाज्ञानात्कृ

त्वाकर्मविगर्हितम् तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन्द्वितीयंनसमाचरेत् ६॥इतिश्री

मन्महाराजाधिराजजम्बूकाशमीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहाज्ञत

सारस्वत पंडितदेवीदत्तसुतपंडितगंगारामसंगृहीतपंचविषयात्मकप्रतिरू

पकेधर्मशास्त्रमहानिवंधे प्रायश्चित्तभागेरहस्यप्रायश्चित्तप्रकरणमेकोनविं

शतिकम् ॥ १९ ॥

हाहै ॥ पाप प्रकट कर्णे कर्के भी पाप नाश होंदाहै सो कहतेहां॥स्यापनेति ॥पापके प्रकट कर्णे कर्के और पश्चात्ताप कर्के और तप कर्के और वेदके पडने कर्के और और तैसे आपदा विषे दान करणे कर्के पाप नाश हुंदाहै॥यथेति इत्यादि पूर्व इसी प्रकरण विषे अर्थ कथन की ताहै ॥६॥ एह श्रीमहाराज रणबीर सिंह जीका बनाया जो धर्म शास्त्र का बडा ग्रंथ तिस विषे पंडित गंगाराम जीने तिनकी आज्ञाते बनाया जेडा प्रायश्चित्त भागहै तिस विषे उन्नीसवां प्रकरण १९ रहस्य प्रकरण पूराहोया ॥ ७

अब पतित प्रायश्चित्त करके पतित जाँ हैं सो भली प्रकार ग्रहण कीये हैं तिनके प्रसंगते कृतक पुत्रके ग्रहण करणे वास्ते और तिसके संस्कार वास्ते तिनकी जातीअोंका निर्णय करीदा है । किंकृतक पुत्र दो प्रकारका होता है एकतो माता पिताके ज्ञान पूर्वक है और दूसरा माता पिताके अज्ञान पूर्वक है अर्थात् जिसके माताका ज्ञान न होवे सो और इन विषे आद्यजो है सो सुसंग्रह है अर्थात् जिसके ग्रहण विषे कोई यत्न नहि और संशयसे रहित है ॥ और दूसरा कृत्रिम और अपविद्ध इत्यादि इसके पर्याय हैं आपसविषे और सो जिनसे लभिया होये और जिसने उसकी पालना करीहोये सो तिसकी जात्यादि करके व्यवहार योग्य होता है ॥ सोइ किहा है महाभारतके शांति पर्व विषे अठनाली ४८ अध्यायमें । कचिदिति ॥ किसी स्थान

अथ पतितोचित प्रायश्चित्तेन पतिताः संगृहीतारतत्प्रसंगात्कृतकपुत्रसंग्रहाय तत्संस्काराद्यर्थं तज्जात्यादिनिर्णयिते ॥ कृतकपुत्रा हि द्विविधौ माता पितृज्ञानपूर्वकस्तदज्ञानपूर्वकश्च अत्राद्यः सुग्रहोऽसदिग्धश्च द्वितीयः कृत्रिमापविद्धादिपर्यायः सतुयेनलब्धः पालितोवा तस्यैवजात्यादिना व्यवहार्यः ॥ तदुक्तं महाभारते दानधर्मोत्तरे शांतिपर्वण्यष्टचत्वारिंशदध्याये कचिच्चकृतकः पुत्रः संग्रहादेवलभ्यते नतत्ररेतः क्षेत्रवायत्रलक्ष्येतभा । त १ शुक्रक्षेत्रयोरन्यतरदपि यत्रामुत्रत्वे प्रमाणं नलक्ष्यं भवति सकृतकः पुत्रः कीदृशः कथंवास्यसंस्कारः कर्तव्य इति युधिष्ठिरप्रश्ने भीष्मवाक्यम् गाता पितृभ्यामत्यक्तः कृतकं तं प्रकल्पयेत् न च स्य मातापितरौ ज्ञायेतां सहिकृत्रिमः १ अस्वामिकस्य स्वामित्वं यस्मिन्संप्रतिलक्षयेत् यो वर्णः पोषयेत् हितद्वर्णस्तस्य जायते २

विषे कृतक जो पुत्र है सो भली प्रकार ग्रहण करणेंते हि लभता है अरतिस विषे है युधिष्ठिर वीर्यं अर क्षेत्र यह नहि लक्षित होता क्यकि जिस विषे पिता और माता इनमें कोई भी लक्षित नहोवे सो कृतक पुत्र होता है १ सो कैसा है और तिसका संस्कार किस प्रकार करणा योग्य है इस युधिष्ठिरके प्रश्न विषे भीष्मपितामहजीका वाक्य है ॥ मातेति कि जो माता पिता करके त्याग दिया होवे उस बालकको कृतक पुत्र कल्पना करणे योग्य है और तिस बालकके माता पिता का कुछ ज्ञान नहि है कि किसका यह पुत्र है सो कृत्रिम पुत्र कहा है ॥ १ ॥ और जिसका कोई स्वामी नहि है और जिस विषे जिसका स्वामी भाव लक्षित होवे उसीका यह पुत्र हो ता है ॥ अथवा जिस वर्णका पुरुष मिस बालक की पालना करे तिस बालकका भी सोई वर्ण हो ता है अर्थात् जो ब्राह्मणादि वर्ण उसकी पालना करे सोई वर्ण कृतकका भी जानना ॥ २ ॥

१६४ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २० टी० भा० ॥

और जोपुरुष कृतक पुत्रका स्वामी होवे सो अपने वर्ण के अनुसार तिसके संस्कारादि करे और तैसेहिजो माता पिता करके त्यागदिया हों सो संस्कार करण वाले पिताके वर्ण को प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ अथवा जिसकाजो सगोत्रहै और संबंधीहै ॥ सो तिसका संस्कार करे यह बात माता पिताके ज्ञानकी जगाहै । जिस जगा तिनका ज्ञान नहि उसजगा ॥ हेयुधिष्ठिर ॥ तिस कृतक को पालना करण वाला पुरुष अपनी रीती करके संस्कारादिकरे ॥ किस वास्ते किबोह वालक अन्यगोत्र का भी होवे तदभी संस्कारकी शक्ति करके पोषकके हि गोत्रादि युक्तहोताहै ॥ और तिसको तिसी वर्णके अनुसार योग्य जो कन्याहै सोभी देने योग्यहै अर्थात् तिसका विवाह भी पोषक की जातिके अनुसार हिकरणा चाहिए ४ और

योवर्णस्तंकृतकंपोषयेत्तस्यसएववर्णोभवतीत्यर्थः ॥ आत्मवत्तस्यकुर्वीतसंस्कारस्वामिकस्तथा ॥ त्यक्तोमातापितृभ्यांयः सवर्णप्रतिपद्यते ॥ ३॥ तद्गोत्रबंधुजंतस्यकुर्व्यात्संस्कारमप्युत अथदेयातुकन्यास्मैतद्वर्णस्ययुधिष्ठिर ४॥ पोषकआत्मवत्तस्यसंस्कारंकुर्व्यात्॥संस्कारशक्त्याऽन्यगोत्रादिकोपि पोषकस्यैवगोत्रादिमान्भवतितद्वर्णोयैवकन्यातद्योग्यादेया॥मिताक्षरायामपि अपविद्धोनाम मातापितृभ्यामुत्सृष्टोऽगृह्यतेसगृहीतुः पुत्रः सर्वत्रसवर्ण इत्येवा॥किंचपुत्रप्रस्तावेमनु॥मातापितृभ्यामुत्सृष्टतयोरन्यतेरेणवा यंपुत्रं प्रतिगृहणीयादपविद्धस्तुसरुमृत इत्यादिना उत्सृष्टोऽगृह्यतेयेनसोपविद्धो भवेत्सुत इत्यादिनाच येनगृहीतस्तस्यैवपुत्रस्तज्जातीयस्तेनैवस्वधर्मानुसारेण संस्कार्य इतिबोधितवान्

मिताक्षरा विषे लिखाहै किअपविद्ध उसका नामहै जोबालक माता पिता करके त्यागयाहोया ग्रहण करीदाहै ॥ और सो ग्रहण करणे वालेकाहि पुत्रहोताहै ॥ और सभस्थान विषे । तिसी पिता काहि सवर्णी कहाहै ॥ और भी पुत्रके प्रसंग विषे मनुजीने कहाहै मानेति किमाता पिता ने जो त्यागदीयाहै अथवा किसी संबंधी करके भीत्यकहै उसको जो पुत्र भाव करके ग्रहण करणाहै उसका नाम अपविद्ध कथन कीयाहै इत्यादि वाक्यों करके जिसने वोह ग्रहण कीया है सो तिसीका पुत्रहै और तिसीकी जाती काहै और तिसने हि अपनेधर्म के अनुसार तिसका संस्कार करणा योग्यहै ॥एभी पितृले अर्थके तुल्यहै सम्मतिके अर्थ किहाहै ॥

और इस विषे ऐसा प्रतीत होता है कि जेकर उत्तम जाति का बालक नीचने ग्रहण कर ली या होवे और नीच जाती का बालक श्रेष्ठने ग्रहण करलीया होवे तद और काल करके भी तिसकी जातीका ओह होजाता है किस वास्ते कि कर्ण जो है कुंतीका पुत्र तिसकी न्याई माता पिताके ज्ञान के होयां पिताकी जातीका ज्ञान मात्र हि किहा जाता है कि अमुक का एह पुत्र है और अमुक इसकी जाती है ॥ और पालन वाले की पुत्रता दूर नहि होई ॥ जेकर पिता का ज्ञान न होवे तद पालन पोषण संस्कार की सामर्थ्यते पालन कर्ताकी जाती समान ही है । इस कारणते नीचादि शंका करके तिसका परित्याग नहि करणा चाहिए ॥ किंतु मनु इत्यादि ऋषियों के वाक्यों करके पालना करण वाले को बहुत फल प्राप्त होता

अत्रेदं प्रतिभाति श्रेष्ठजातीयो नीचन गृहीतो नीचजातीयो वा श्रेष्ठन गृहीतश्चेत्त दातजातीयभवनं कालांतरेपि कर्णवत्तन्मातृपितृज्ञाने पितृसमानजाति ज्ञानमात्रमेव ननु पालकजातिपरावृत्तिः पित्राद्यज्ञाने पालनपोषणसंस्कारसामर्थ्यात्पालयितृजातिसमानमतो न नीचादिशंकया तत्परित्यागः किंतु मन्वादिप्रणीतत्वेन तत्पालनस्य महाफलजनकत्वात्पालितव्यएव सः ॥ गृहोत्पन्नेष्वेवमेव निर्णीतं शुद्धिविवेके ॥ पोषकबहुत्वे तु संस्कारकारयितुरैव जात्यादिस्थापनीयम् ॥ ननु अज्ञातोपि स बालश्चंडालादिज एव तदा तत्पालनादावुत्कृष्टसंबन्धादोषः कथं न स्यादिति चेदुक्तोपि विषयो विशदीक्रियते चंडालघटितेष्टकादि वह्नितापादिरूपसंस्कारेण संशुद्धमेव यथासद्भिः स्वीक्रियते

है । इस वास्ते सो पालना करणे योग्य है ॥ और गूढ जो उत्पन्न है उस विषे भी ऐसा ही जानना । एह शुद्धि विवेक विषे लिखा है ॥ विशेष कहते हैं पोषकेति ॥ जिस स्थानमें पालना करण वाले बहुत होवें उस स्थानमें संस्कार करण वाले की जात्यादि स्थापन करणे योग्य है ॥ (प्रण) ॥ नहि भी जाणया है सो बालक परंतु चांडालका ही पुत्र होवे तद तिस के पालनादि विषे संबंध बहुत है क्यों दोष नहि होबेगा जेकर ऐसा कहो तो किहा भी है पिछे विषय तथापि सो प्रगट करीदा है ॥ (उत्तर) ॥ जिसतरां चांडालके बनाए होए इष्टा आदि वस्तु अग्नि आदि संस्कार करके शुद्धि जाणकर भले लोकों ने ग्रहण करीदा है ॥

१६६ ॥ श्रीरणवीकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २० टी० भा०, ॥

तिस तर्ही तिस चांडालते उत्पन्न होया वालक गिह्ले मृत्तिका दे पिंड के तुल्यहैं और ब्राह्मणादिने अ्रपण संस्कार करू जद शुद्ध कीता तद पीछे कालांतर विषे उसके पिताका ज्ञान होवे भी तथापि पांडु पुत्र कर्ण की न्याई पालन वाले के पुत्र त्व करके हि उसको जाने और ऐसानहि जानणा कि जाणकरकेअथवा नजाणकरके जिसतन्हीअग्निकादाहैतिसी तरहां एभी जाणया न जाणया दोषजनकहै॥क्योंकि दृष्टांतविषमहदृष्टांतमेंशाकि और दाष्टांति कमें संस्कारहै किंतु जिस तर्ही मजीठ का रंग एक बार वस्त्रमें लगजाये तो फेर नहि उन्नर दा तैसे जिसके संस्कारसे संस्कृत होजावे तो वो संस्कार दृढ हिहै और साग इटां इत्यादि चीज ग्रहण करीदीहै चंडालके घरकी लोकोंने इसते तिसके ग्रहण काभी दोष नहिहै किंतु

तथात्रापितदुत्पन्नोवालश्राद्रमृत्पिंडसदृशएव ब्राह्मणादिनास्वकीयसंस्कारेण शोधितः पश्चात्कालांतरेपितृज्ञानेपिकर्णवत्पालयितृपुत्रत्वेनैवव्यवहार्यः नतुज्ञाताज्ञातवाह्निदाहवच्छकनीयोदृष्टांतवैषम्यात् किंतुमांजिष्टरक्तपटवत्पालयितृसंस्कारसत्कृतएवज्ञेयः गृह्यतएवचांडालादिगृह्यंशाकेष्टकादि सद्भिः॥किंचसमुत्पत्तिरेवपुरुषादेर्जातित्वेप्रमाणमितिचेत्तदायवनायसंस्कारेण संस्कृतोब्राह्मणोपिब्राह्मणएवकथंतेननव्यवह्रियते प्रसिद्धमितिलोके रसायनयोगात्ताम्रादिस्वर्णरवणमेवपुनःताम्रकेनापिनोच्यतेनन्वेतादृशः संस्कारमहिमाचेत्तदाज्ञातोपिचांडालपुत्रः पुत्रार्थिनाग्राह्यः

पालना का पुण्य अधिकहे॥ कुछ और भी विचार करतेहैं ॥ कि जेकर जिसका जिसते जन्म है सोई तिसीकी जातिहै एही प्रमाण मानो तद मुसलमानोंके संस्कार वाला ब्राह्मण भी ब्राह्मण हि जानणा चाहिये किस कर्के तिसके साथ लोक व्यवहार नहिकर्के इसते यह पक्ष शिथिलता कोहि दिखाताहै और एभी जगत्में प्रसिद्धहै कि रसायन करके सुन्ना होया जेडा तामाहै सो सुन्नाहि जगत्में प्रसिद्धहै उसको तामा कोई नहि कहता॥इसी तर्ही एभी जाणो ॥ (प्रश्न) जेकर तुम्हारे संस्कारकी महीमा ऐसीहै तो जाणया होया चंडाल का पुत्र भी संस्कार कर्के शुद्ध होजावे और पुत्रार्थी उसको ग्रहण करे ऐसा कहो तो कहीदाहै ॥

(उत्तर) शिष्ट पुरुषों का आचार इसतही काहे कि वचनते प्रवृत्ति और वचन ते हि लोकों कीनिवृत्ति होतीहै सो जी कोई ऐसा वचन नहि मिलदा कि जाणे होये काभी चंडालादिका संस्कार होवे जिसकरके आपके कहे होये पदार्थ का प्रवेश होवे॥इसते यहि बात सिद्ध होई कि जोसंशय की जगाहै तिसीका संस्कार होसकाहै और का नहि ऐसामन्त्रणा चाहिये ॥ अब कृतक पुत्रके प्रसंगते उपरंत प्रसंगते माताके ज्ञान दे होयां २ भी जारकी शंकाकरके कि सका एह पुत्रहै ऐसे पिताका निर्णय कथन करते हैं॥कितेक श्लोक देखीदाहै॥उभयेति कि दोने केविषे स्त्रीके संचार के होयां २ माता करके गर्भका निर्णय होताहै॥और एकके विषे स्त्री संचार के होयां २ एक करके हि गर्भका निर्णय हांताहै एह श्रुति सनातनीहै॥१॥इस्से श्लोकका

इतिचेदेवंशिष्टाचारः॥वचनात्प्रवृत्तिर्वचनान्निवृत्तिःनहिज्ञातेपिकिमप्यार्पवच
नमुपलभामहेयेनभवदुक्तप्रवेशःस्यात् ततश्चसंदिग्धबोक्तवचनोपलभेन
तद्वचनसनाथस्यैवसंस्कारस्योक्तव्यवस्थासंपादकत्वमितिमन्यताम्॥अथप्र
संगान्मातृज्ञानेपि जारजशंकया कस्यायंपुत्र इतिपितृनिर्णयःप्रोच्यते ॥
कुत्रचित् श्लोकउपलभ्यते ॥ उभयत्रापिसंचारेमात्रागर्भस्यनिर्णयः एकत्रै
केनाविज्ञेयःश्रुतिरेषासनातनी॥१॥उभयत्र पत्यौ जारेच स्त्रीसंचारेमात्रैव
गर्भनिर्णयोविधेयः एतस्यायंपुत्र इतिमातृवचनात्तन्निर्णयोविधेयइत्यर्थः
एकत्रजारे पत्यौवास्त्रीसंचारे तस्मिन्निश्चिते एतस्यांमायिगते महान् कालो
व्यतीतोनजाने कुतोयंगर्भ इतिवचनात्सत्यप्रतीतौ पितृवचननजारवचने
नचतन्निर्णयइत्यर्थः ॥

खोल करके अर्थकहतेहैं कि(उभयत्र)क्या पति और जार इन दोनोंविषे स्त्रीकी प्रवृत्तीके होया
२ माता करके ही गर्भका निर्णय होताहै क्योंकि माता जद कथन करदे इसका एहग
र्भहै इसवचनते गर्भकानिर्णय विधान करणा(एकत्र)क्याकिजारके विषे अथवा पतिके विषे
स्त्रीकीप्रवृत्ति के होयां २ और तिसविषे निश्चयदे कीतिया होयां और पिता कहे कि इस स्त्री
के पास मेरे गियां होयां बहुत काल बीतगयाहैमैं नहिंजाणदाइसको किसकागर्भहै इस वच
नते सत्य प्रतीतीतें पिता के वचन करके अथवा जारके वचन करके गर्भका निर्णयकरणा अ
र्थात् पिता कहे कि मेनहिंजाणदा तद जारका पुत्र जाणे और जारकहे कि मेरे गियां बहुत
दिन होएमेंनहि इसके गर्भको जाणदा तद पिता का पुत्र जाणे ॥

१६८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २० टी० भा० ॥

इसमें निर्णयके वास्ते विद्वानों पुरुषों कायहविचारहै॥क्याकिपहले समानप्राकृति और माताका स्वभाव और पिताका स्वभाव और दो अथवा तीन स्त्रीयांहैं इसमें एह विचारणा चाहिये ॥इसी का अर्थ खोलके करतेहैं ॥ कि तिसकी माता का पति और जार इनके मध्यमें किसके साथ तिस बालक की प्राकृति मिलतीहै ॥ १ ॥ और तिसकी माता पतिव्रता अथवा व्यभिचारिणीहै यह तिसकीयां सखियां ते जानना चाहिये ॥ २ ॥ और तिस बालक का पिता पर

अत्रायंविनिगमनार्थविद्वज्जनविमर्शः ॥ समानाकृतिर्मातृशीलं पितृशीलं स्त्रीद्वैतंचविचारणीयमत्र तन्मातृपतिजारयोः केन समानाकृतिः ॥ १ त दीया माता शीलवती व्यभिचारिणीवेति तत्सहचारिण्यादिभ्योबोध्यम् २ ॥ तत्पिताशीलवान् व्यभिचारीवाक्रोधादिनावृथादूषणदानशालीवेत्यादि तत्सहचारिभ्योज्ञेयम् ॥३॥ किंचतद्गृहेस्त्रीद्वयं स्त्रीत्रयंवावर्त्ततेनवावर्त्ततेचेत्तदाकुत्राधिकाप्रीतिरित्यादिना निर्णेतव्यमित्यपिशब्दार्थः॥इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाशमीरायनेकदेशाधीशप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञाससारस्वतपंडितदेवीदत्तसुत पंडितगंगाराम संगृहीतेपंचविषयात्मकप्रतिरूपके धर्मशास्त्रमहानिवंधे प्रायश्चित्तभागे अपविद्धसुताख्यानकनामविंशतिकंप्रकरणम् ॥ २० ॥

स्त्रीते रहित है कि परस्त्रीगामी है अथवा क्रोधादि कर्के वृथा दूषण लगाताहै वानहि यह सभ तिसके जारोंसे जानना चाहिये ॥ ३ ॥ और तिसके गृहमे दो वा तीन स्त्रीयांहैं अथवा नहि जेकर होण तद किसमे अधिक प्रीतिहै अथवा किसमें न्यून प्रीतिहै ॥इत्यादिसब निर्णय करणा चाहिए एह अपि शब्द का अर्थहै ॥ इतिश्री इत्यादि अपविद्ध प्रकरण बीसवां २० समाप्त होता भया ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

रामनामहिरदेजपो छोडविहारीका जगीधगयोवैकुं
ठको रामचंद्रकेकाज १ रामनामचिंतामणी लियो
गांठमेवांध दारददुःखधघेलदैहायदयाकरकांध २

॥ श्रीरणवीरकारित्त प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १७१

ॐ श्रीगणेशायनमः श्रीमच्छ्रीरणवीरसिंह महाराजजीकाजोवचन रूपश्रमृत तिसकों कणोंके द्वारा पान कर्के आनंदके समूह कर्के युक्त भये जो गंगारामादि पंडित लोकतिनोंने बहुत पुराणों का समूह देख कर्के परिशिष्ट प्रकरण किबाहै॥पुराणोंका मत लिखने कर्के और स्मृतियों से किसी किसी स्थानमें विलक्षण होणेतें परिशिष्ट इस प्रकरणका नाम कीया॥१॥प्रथम विष्णु धर्मोत्तरमें भार्गवजीपुष्करकों कहते भये । प्रायश्चित्तकों नहि कर्ते जो पापी तिनकों राजा दंड करे तिस कारणतें हे पुष्करमेरेकों प्रायश्चित्तविधान कथनकरो १ पुष्करकहिताहै हेभार्गव पंडित लोकजोहैं विनाकामनाकर किया जो पाप तिसका प्रायश्चित्त कहितेहैं ॥ और कामनाकर किया जो पाप तिसकावी प्रायश्चित्तकहितेहैं एह मेरेकों श्रुति प्रमाणहोंएसे अनुमतहै २ प्रायश्चित्तैरिति मनुष्योंने कियाजोपापहै सो प्रायश्चित्तोंकर्केदूरहो जाताहै इसवातमें संशयनहिहै । और योमनुष्य

ॐ श्रीगणेशायनमः रणवीरसुभूपतिवाक्यसुधाचमनादनुसंभृतमोदभरैः

अवलोक्यपुराणचयंबहुधाक्रियतेपरिशिष्टमिदंविबुधैः॥१॥परिशिष्टत्वंचा
स्यकेवलपौराणिकत्वं संक्षिप्तत्वंवा । विष्णुधर्मेत्तरेत्रिसप्ततितमेऽध्याये
प्रायश्चित्तविधिःभार्गवउवाच कुर्यादण्डप्रणयनंप्रायश्चित्तमकुर्वताम् नृणां
राजाततोब्रूहिप्रायश्चित्तविधिंमम १ पुष्करउवाच अकामतःकृतेपापे प्राय
श्चित्तंविदुर्वुधाः ॥२॥ कामचारकृतेप्येतन्मतंमेश्रुतिदर्शनात् । प्रायश्चित्तैः
शमंयातिपापंकृतमसंशयं ॥३॥ राजदण्डात्क्षयंयातिप्रायश्चित्तमकुर्वताम्
प्रायश्चित्तविहीनायेराजभिश्चाप्यवासिताः॥४॥राजभिश्चाप्यवाधिताइति
पाठांतरम् तत्रअवाधिताअदंडिताइत्यर्थः नरकंप्रतिपद्यंतैर्यग्योनिंतथै
वच मानुष्यमपिचासाद्यभवतीहतथांकिंताः ५ अंकितास्तत्तमुद्रादिचिह्नि
ताः ॥ सशूद्रवद्वहिःकार्यःसर्वस्माद्द्विजकर्मणइत्यादिनातदाचारस्यानिपि
द्वत्वादितिकेचित्अंकिताःश्यावदंतत्वादिनालक्षिता इत्यन्ये ॥ ५ ॥

प्रायश्चित्तोंकों नहि कर्ते । तिनका पाप राजकेदंडदेणेतें दूरहोताहै॥३॥और योमनुष्य प्रायश्चित्तो
कर्के रहितहैं अर्थात् पापकोंकर्के प्रायश्चित्तको नहि करते सोराजाकर्के बाहर निकासदीये जातेहैं ४
तवभी मरकर्के नरककों प्राप्तहोतेहैं और जिसवखत नरककों भोगरहितेहैं तवतियंकू योनि यो
है पशु • और पक्षी इनकों प्राप्तहोतेहैं और मनुष्य योनिकोंभी प्राप्त होय कर्के अंकितकथा
श्यामदंतादि कर्के लक्षित होतेंहैं अथवा अंकितकथातत्तमुद्रादियोंहैं तिनों कर्के चिन्हितहोतेहैं ५इ
समेंकितनेऋषि इसप्रकारकहितेहैं जोमनुष्य तत्तमुद्रादेहमेंधारताहै सो संपूर्ण जो द्विजकर्महै ति
सतें शूद्रकी न्याइ वहिः कार्यहै॥अर्थात् दूरकरदेणे योग्यहै इत्यादि कर्के तिनके तत्तमुद्रा धारण
बालयोंकेआचारकों निषिद्ध होणेतें एह कितने कहितेहैं ॥ ५ ॥

१७२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

इसमें पापके दूर करने के निमित्त प्रायश्चित्तकरणे योग्य है ॥ एहहि प्रायश्चित्त विधान कूर्म पुराणके उक्तरीये २१ अध्यायमें किहा है ॥ अब इसमें उपरंत प्रायश्चित्तकी सुंदरयो विधि सोमें कहताहां संपूर्ण ब्राह्मणोंके हितके वास्ते और दोषयोहें पाप तिनके दूर करणे वास्ते ॥ १ ॥ अकृत्वेति विहित यो कर्म है कथा यो यो कर्म जिसको करणा किहा है तिस २ को नाहें करणे कर्के ओर निंदित यो कर्महें तिनके करणे करके मनुष्य दोषको प्रा त होता है तिस दोषके शुद्ध करणे वाला प्रायश्चित्त है २ प्रायश्चित्तमिति पापको करके प्रायश्चित्त किये विना ब्राह्मण किसीस्थानमें भी नाहें स्थित होवे और ब्राह्मणयोहें शांत चित्त और पंडित एहयो कहें सोकरे ३ साग्निक और अच्छा प्रकार वेदार्थके जानणे वाला और शांत चित्त और

प्रायश्चित्तमतः कार्य्यकल्मषस्यापनुत्तये ॥ कूर्मपुराणेऊनात्रिंशत्तमेध्याये अ तः परंप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तविधिं शुभं हिताय सर्वविप्राणां दोषाणामपनु त्तये ॥ १ ॥ अकृत्वा विहितं कर्म कृत्वा निंदितमेव च दोषमाप्नोति पुरुषः प्रायश्चित्तं विशोधनम् ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तमकृत्वा तु न तिष्ठेद्ब्राह्मणः क्वचित् यद्ब्रूयुर्ब्राह्मणाः शांता विद्वांसस्तत्समाचरेत् ॥ ३ ॥ वेदार्थवित्तमः शांतो धर्मकामाग्निमान् द्विजः स एव स्यात्परो धर्मो यमेकोपिव्यवस्यति । ४ । अ नाहिताग्नेयो विप्रास्त्रयो वेदार्थपारगाः यद्ब्रूयुर्धर्मकामास्ते तद्ज्ञेयं धर्मशो धनम् ५ अनेकधर्मशास्त्रज्ञा ऊहापोहविशारदाः वेदाध्ययनसंपन्नाः सप्तैते परिकीर्त्तिताः ६ मीमांसान्यायतत्त्वज्ञा वेदांतकुशला द्विजाः एकविंशति सं रूपाः प्रायश्चित्तवदंति वै इति ७

धर्ममें इच्छा जिसकी ऐसा एकभी ब्राह्मण योनिश्चयकर कहे सो यो परम धर्म है ४ अनाहि ताग्नि योहें निरग्नि तीन ब्राह्मण और वेदके अर्थों को जानने वाले और धर्मकामाः एह यो प्रायश्चित्त कहें सो सुंदर धर्म जानणे योग्य है ५ अनेकेति अनेक कथा बहुत धर्मशास्त्रके ग्रंथोंको जानणे वाले योहें और ऊहापोह योहें शास्त्रका विचार इसमें चतुर यो ब्राह्मण और वेदों का यो पडना उसकर्के यो पूर्णहें सो प्रायश्चित्तके कहणे वाले सात ७ कहेहें ६ मीमांसेति मीमांसा और न्याय तत्त्वके जानणे वाले और वेदांतमें चतुर यो ब्राह्मणहें सो ऐसे इकी २१ ब्राह्मण प्रायश्चित्तके कहने वाले कहेहें ॥ ७ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी ० भा० ॥ १७३

नारदीयपुराणके तीसमे ३० अध्यायमें सनत्कुमारजी नारदकों कहितेहैं हेनारद अवतेरेकों प्रायश्चित्तका विधान कहितेहैं सोतूश्रवणकर प्रायश्चित्तकरणकर विशुद्धमन जिसका ऐसा योमनुष्य सोसंपूर्ण कर्मफलकोप्राप्तहोताहै १ और हेनारद प्रायश्चित्तों कर्के रहितयोंहैं तिनोंने यो कर्म किया सोसंपूर्ण निष्फल किहाहै सोकर्मराक्षसों कर्के परिसेवितहोताहै २ कामेति इसतेका म अक्रोधकर्के हीनयोहैं और धर्मशास्त्रमें चतुरयोहैं और संपूर्णधर्मफलकी इच्छावाले योमनुष्यतिनोंने धर्मकों ब्राह्मणपूछने योग्यहैं किक्या करणे कर्के पाप दूरहोताहै और कैसेधर्महोताहै ३ प्रायश्चित्तानीति नारायणते पराङ्मुखयोहै मनुष्य तिसनेकिये योप्रायश्चित्तहैंसोतिसकों पवित्र नहिकर्ते कैसें जिसप्रकार नदिआं सरावके पात्रकों नहिपवित्रकरसकतियां ४ और प्राय

नारदीयपुराणोत्रिंशत्तमेध्याये ॥ सनकउवाच प्रायश्चित्तविधिवक्ष्ये शृणु नारद सांप्रतम् प्रायश्चित्तविशुद्धात्मा सर्वकर्मफलं लभेत् १ प्रायश्चित्तविहीनैस्तु यत्कर्म क्रियते मुने तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं राक्षसैः परिसेवितम् २ कामक्रोधविहीनैश्च धर्मशास्त्रविशारदैः प्रष्टव्या ब्राह्मणाधर्मसर्वधर्मफलेप्सुभिः ३ प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायणपराङ्मुखं न निष्पुनन्ति विप्रैर्द्रसुराभांडमिवापगाः ४ प्रायश्चित्तमापि धर्मशास्त्रावलोकनपूर्वकथितव्यमन्यथादोषस्तत्रैव श्रौतस्मार्तविहितं प्रायश्चित्तं वदंतियेतान् धर्मविघ्नकर्तृश्च राजा दंडेन पीडयेत् १ न चैतान् पीडयेद्राजा कथंचित् काममोहितः तत्पापं शतधा भूत्वा तमेव परिसर्पति २ प्रायश्चित्ते ततश्चोर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् विंशतिर्गावृषं चैकं दद्यात्ते पांचदाक्षिणाम् ३ प्रायश्चित्तमत्र पापिनेदातव्यं यत्तदेव कार्यं विप्रभोजनमधिकं दक्षिणाचप्रत्येकं दातव्या ॥

श्चित्तयो धर्मशास्त्र देखकर्के कहनेयोग्यहै और योमनुष्य धर्मशास्त्रके जानणे बिना प्रायश्चित्त कहितेहैं तिनकों प्रायश्चित्त तिसीस्थानमें किहाहै ॥ अश्रौतेति वेद और स्मृतियां इनों कर्के नहि किहा यो धर्म उसकों यो कहितेहैं सो यो धर्म हंताहै तिनकों राजा दंडदेवे १ यो कदाचित् उनकों राजा दंडनदेवे कामकर्के मोहितहुआ २ तबउनका पापशत १०० प्रकारक्यासी १०० प्रकार होयकर्के राजाको प्राप्तहोताहै २ और प्रायश्चित्तकर्के पीछे ब्राह्मणोंकों भोजनदेवे और बीस २० गौआं और एकवृषभ दक्षिणादेवे ३ इसमें प्रायश्चित्त पापीके ताई यो कहाहै सोई करखे योग्यहै परंतु ब्राह्मण भोजन और दक्षिणा एह अधिक एक एक ब्राह्मणके ताई देणे योग्यहै ॥

१७४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥

इसप्रकरणमें प्राथमिकपापगणनाकी अपेक्षाकर्के क्रमकी विलक्षणताहै सोई कहितेहैं उपपातक १ महापातक २ जाति भ्रंशकरादि प्रकीर्णकांत ५ और रहस्य एह क्रमकर्के लिखेहैं तिनमें भी संपूर्ण कार्योंमें भोजनको प्रथमोपस्थितहोणेतें अर्थात् भोजनके अधीनहिं संपूर्ण कार्यहैं तिसके व्यवस्थापनकेवास्ते पाहिले अभोज्यान्नयोहैं जिनकाअन्न नाहि भोजनकरणे योग्य सोदिखाईदेहैं ॥ इसमे इसप्रकारआकांक्षाकापूरणहै बहुतवाराकिये योउपपातकसोमहापातको के वरावरहैं इसते महापातकोतें पाहिले उपपातककहेहैं फेरतिसतें उपरंत महापापियोंको जाति वाह्यता स्मरणकर्के महापापियोंका वर्णनहै पुनःतिसतें उपरंत लघूनांस्मरणं पश्चादिति न्यायेन छोटे योपापहैं तिनका स्मरण पीछे होताहै इसन्यायकर्के प्रकीर्णकपापकहेहैं फेर रहस्य योपाप

अत्रप्रकरणेप्राथमिकपापगणनापेक्षयाक्रमवैलक्षण्यम तथाच उपपातक महापातक जातिभ्रंशकरादिप्रकीर्णकरहस्यानिक्रमतोलिखितानि तत्रापि सर्वकार्येषुभोजनस्यप्रथमोपस्थितत्वात्तद्व्यवस्थापनायप्रथममभोज्यान्नाः प्रदर्श्यन्ते अत्रेत्यमाकांक्षापूरणं अभ्यस्तान्युपपातकानिमहापातकतुल्या निजायन्तेऽतस्तेभ्यःप्राक्तदुपक्षेपः ततश्चमहापापिनांजातिवाह्यतास्मरणे न तदनन्तरंतदुपक्षेपस्तदनंतरं लघूनांस्मरणंपश्चादितिन्यायेनप्रकीर्णकं ततोऽरहस्यस्यसर्वशेषित्वेननिबंधइति विद्वद्विज्ञप्तिप्रपंचः ॥ अभोज्यान्नाविष्णुधर्मोत्तरे मत्तक्रुद्धातुराणांचनभुंजीतकदाचन तथैवाहूवयकस्यान्नपदा स्पृष्टंचकामतः १ आहूवयकस्याह्वानवृत्त्याजीवतः। महापातकिनास्पृष्टम वलीढंपतत्रिणा ऋजीपपक्वयच्चान्नस्पृष्टयच्चाप्युदक्यया २ गणान्नगणि कान्नंचविदुषाचजुगुप्सितं स्तेनस्यचैवक्षीणस्यवाधुपेर्गायनस्यच ३ अभिशस्तस्यशठस्यपुंश्चल्यादांभिकस्यच चिकित्सकस्यमृगयोःक्रूरस्यो

च्छिष्टभोजिनः ४

हैं तिनको संपूर्णोंके पीछे किहाहै एहइसप्रकरणमें विद्वानोंकी विज्ञप्तिका प्रपंचहै विष्णुधर्ममें किहाहै मत्तेति ॥ मत्तयेहैं उन्मत्त और क्रोधी और आव्हानके करनेवाले तिनका और पैरकर्के स्पर्श किया इच्छाकर्के यो अन्नहै तिसकोनाहिं भोजनकरे १ महेति महापातकीकर्के स्पर्शकिया योअन्न और पक्षीकर्के जूठाकियायो अन्न और केवल तवे कर्के भुजा जो अन्न रजस्वला कर्के स्पर्श कियायो अन्न २ और सभकासांझा अन्न और वेश्याका अन्न और विद्वान् कर्के निंदित जोअन्न और चोरकायोअन्न और क्षीण क्या अतिदरिद्रो अन्यायकर्के जीविका करण वाला व्याजलैणे वाला और गायनकर्के जीविका कर्णे वाला ३ और शापित और नपुंसक और व्यभिचारिणी और दांभिक और वैद्य और मृगोंके मारणवाला लुब्धक और क्रूर और जूठा खाणे वाला ४ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥ १७५

और अनर्चित वृथामांस और जिसस्त्रीका स्वामि और पुत्र नहिहै तिसका अन्न और शत्रुका अन्न दासका अन्न और उग्रका अन्न और खोटे नेत्रोंवालेका अन्न ५ और चुगल और झूठवाला णेवाला और अस्त्र शस्त्रोंके बेचनेवाला और धोवा और नृशंस और जिसके घरमें उपपतिहै तिसका अन्न ६ नटका अन्न बाचकका अन्न कृतघ्नका अन्न परि वित्तीका अन्न और दुष्ट का अन्न और बंदीका अन्न और धूर्तका अन्न ७ कुंडेति पिताके जीवते जारते जन्मया जो पुत्र तिसका नाम कुंडहै और पिताके मरे पीछे जन्मयायोहै तिसका नाम गोलकहै ॥ तिनका अन्न और स्त्री जितजोहै स्त्रीके वश वर्त्ती तिसका अन्न और कर्मारयोहै जाति विशेष अथवा लोहकार तिसका अन्न और निषादका अन्न और नटुएका ललारीका अन्न ८ और स्वर्ण कार का अन्न और वैद्यका अन्न और धोवेका अन्न झूठा संन्यास धाग जिसने तिसका अन्न और

अनर्चितवृथामांसमवीरायाश्रयोपितः द्विपदन्नंचदासान्नमुग्रान्नंचाप्यचाक्षु
पम् ५ पिशुनानृतिनोश्चान्नमस्त्रविक्रयकस्यच रजकस्यनृशंसस्ययस्यचो
पपतिर्गृहे ६ शैलूपान्नयाचकान्नकृतघ्नस्यान्नमेवच परिवित्तेश्चदुष्टस्यवंदि
नः कितवस्यच ७ कुंडगोलकयोश्चैवस्त्रीजितस्यतथैवच कमीरस्यनिपाद
स्यरंगावतरणस्यच ८ सुवर्णकर्तुर्वैद्यस्यचैलनिर्णेजकस्यच मिथ्याप्रव्रजि
तस्यान्नंतैलिकस्यतथैवच ९ तथैववृपलस्यान्नं ब्राह्मणेनानिमंत्रितम् एषा
मन्यतमस्यान्नंसमशित्वात्र्यहंक्षिपेत् १० मत्याभुक्काचरेत्कृच्छ्रेतोविमू
त्रमेवच महापातकयुक्तस्यसूतिकस्यतथैवच ११ भुक्कान्नंचर्मकारस्यम
त्याकृच्छ्रचरेद्द्विजः चांडालश्चपचान्नंचभुक्काचांद्रायणंचरेत् १२ अंतश्चतु
र्थीप्रेतान्नं गवाघ्रातंतथैवच शूद्रोच्छिष्टं गुरुच्छिष्टं सूतिकान्नंतथैवच १३

तेलोका अन्न १ और शूद्रका अन्न और ब्राह्मण कर्के नहि निमात्रिण कियायो अन्न एहयो संपूर्ण
कहेहैं इनके बीचमे एककाभी अन्न भोजन कर्के तीन दिन निरा हार व्रत करे १० और जाणकर्के
बुद्धि पूर्वक वीध्य विष्टा मूत्र इनको भोजन कर प्राजापत्य व्रत करे और जाण कर्के महापातक
कर्के युक्तयोहै और सूनकोयोहै ११ और चर्म कार जोहै इनके अन्नको द्विज भोजनकरे तब
छूत्र व्रतको करे चांडाल और श्वपच क्या कुत्तेको भोजन करे वाला इनके अन्नको भोजन
कर्के चांद्रायण व्रतको करे १२ अंतश्चतुर्थी योप्रेतान्नहै अर्थात् मृतके चार दिनके अंदर जो
अन्न और गवा घ्रातक्या गोकर्के सिगआयो अन्न और शूद्रका उच्छिष्टयो अन्न और गुरोंका
उच्छिष्ट यो अन्न और तिसी प्रकार सूतिका स्त्रीका यो अन्न ॥ ११ ॥

१७६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी ०भा/०

इनको भोजनकर्के तिसपापके दूरकर्के निमित्त तप्तकृच्छ्रव्रत कोंकरे और ब्राह्मणके सूतकमें द्विजभोजनकरे तद सांतपनव्रतकोंकरे १४ और जब क्षत्रियोंके सूतकमें भोजनकरे तब कृच्छ्रव्रत योप्राजापत्य तिसकोंकरे और वैश्योंके सूतकमें ब्राह्मण भोजनकरे तब तप्त कृच्छ्रव्रतकरे ॥ १५ और शूद्रके सूतकमें ब्राह्मणभोजनकरे तब चांद्रायण व्रतको करे योजिसके सूतकमें भोजनकर्ता है जितना पर्यंत उसको सूतकहै इतना काल भोजन करनेवाला अपवित्रहोताहै । हेराम इत नाचिर उसको सूतक कहाहै ॥ १६ ॥ तस्येति ॥ योजिसके सूतकमें भोजनकरे जब उसका सूतक दूरहोजावे अर्थात् वितीत जावे तब ओहो भोजन करने वाला प्रायश्चित्तकोंकरे आप णेतं श्रेष्ठके सूतकमें भोजन करे तब एक दिन भोजन नहिकरे अर्थात् प्रायश्चित्तके निमित्त एक

यानितु गुरुवद्गुरुपुत्रः स्यादन्यत्रोच्छिष्टभोजनात् उच्छिष्टमगुरोरभोज्यमि त्यादीनितानिपित्रादिमुख्यगुरुविषयाणिज्ञेयानि ॥ तप्तकृच्छ्रंतु कुर्वीत त स्यपापस्य शांतये भुक्तातु ब्राह्मणाशौचेचरेत्सांतपनं द्विजः ॥ १४ ॥ भुक्ता तु क्षत्रियाशौचे तथा कृच्छ्रं विधीयते वैश्याशौचे तथा भुक्ता तप्तकृच्छ्रं समाचरेत् ॥ १५ ॥ शूद्राशौचे द्विजो भुक्ता तथा चांद्रायणं चरेत् अशौचे यस्य यो भुंक्ते सोऽप्यशुद्धस्तथा भवेत् १६ तावद्यावदशौचं तु तस्य रामप्रकीर्तितम् ॥ १६ ॥ त स्याशौचव्यपगमे प्रायश्चित्तं समाचरेत् भुक्तोत्तमस्य चाशौचे क्षपेत दिवसं तथा इति १७ तथा च कूर्मपुराणे ॥ भुक्ता चैव नवश्राद्धे सूतके मृतकेऽपि वा चांद्रायणेन शुद्धेत ब्राह्मणः सुसमाहितः १ अभोज्यानां तु सर्वेषां भुक्ता चान्नमुपस्कृतं अन्तेवसायिनां चैव तप्तकृच्छ्रेण शुद्ध्यति २ चांडालानां द्विजो भुक्ता सम्यक् चांद्रायणं चरेत् बुद्धिपूर्वतु कृच्छ्राद्धं पुनः संस्कार एव च ३ असुरामद्यपानेन कुर्याच्चान्द्रायणं व्रतम् ॥ अभोज्यान्निहि भुक्ता च प्राजापत्येन शुद्ध्यति ४

दिनव्रतकरे १७ तैसंहिकूर्म पुराणमें कहाहै भुक्त्वेति । नव श्राद्धमें भोजनकर्के और सूतकमें और मृतकमें भोजन करनेकर ब्राह्मण सावधान चित्त हुआ चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ अभोज्येति संपूर्ण यो अभोज्यहैं जिनका अन्न भोजन कर्णानाहैं किहा तिनका अन्न भोजन कर्के और अन्तेवसायियोहैं चांडालादि तिनका अन्न भोजन कर्के तप्त कृच्छ्र यो व्रत तिसकर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ चांडालानामिति और द्विज चांडालोंका अन्न भोजन कर्के अच्छी प्रकार चांद्रायण व्रतकोंकरे और जो बुद्धि पूर्व क्या जान कर्के भोजन करे तब आधा कृच्छ्रकरे और फेर संस्कार करे तब शुद्धहोताहै ॥ ३ ॥ और सुराभिन्नयो मद्यपान तिसके करनेकर चांद्रायण व्रतकोंकरे नहिभोजन करनेयोग्ययो अन्नतिसकी भोजनकर्के प्राजापत्यव्रत कर्के शुद्धहोताहै ४

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१टी० भा० ॥ १७७

और शूद्रके जूठकों ब्राह्मण भोजन कर्के चांद्रायण व्रतकों करे और कुत्तेका जूठा ब्राह्मण भोजन कर्के तीन रात्र व्रत करणे कर शुद्ध होता है ॥ ५ ॥ महापातकीति महापातकीयेहि ब्रह्म हत्यादिके करणे वाले तिनके संसर्गमें मूढ बुद्धि जान कर्के भोजन करणे कर स्नान कर्के त म कृच्छ्र व्रतकों करे तव शुद्ध होता है ॥ ६ ॥ स्पृष्ट्वेति महापातकी येहि तिसकों स्पर्शकर्के और चांडालकों स्पर्श कर्के और रजस्वलास्त्रीकों स्पर्श कर्के प्रमादतें भोजन करणे कर तीनरात्र कर्के शुद्ध होता है अर्थात् तीन रात्र व्रत करे ॥ ७ ॥ और जो बुद्धि पूर्व क्या जाए कर्के इन के साथ स्पर्श कर्के भोजन करे सो कृच्छ्र व्रत जोहि प्राजापत्य तिस कर्के शुद्ध होता है एह भगवान् ब्रह्माजीका वचन है शुष्केति शुष्क और वासी और गवादिघातयो अन्न है तिसकों भोजन कर्के निराहार व्रतकों करे अथवा प्राजापत्य व्रतका चतुर्थांश करे ॥ ८ ॥ और वर्षके अंत

शूद्रोच्छिष्टद्विजोभुक्ताकुर्याच्चांद्रायणव्रतं शुनोच्छिष्टद्विजोभुक्तात्रिरात्रेण विशुद्ध्यति ॥ ५ ॥ महापातकिसंसर्गेभुक्तास्नात्वाद्विजोयदि बुद्धिपूर्वं तुमूढात्मातप्तकृच्छ्रसमाचरेत् ॥ ६ ॥ स्पृष्ट्वामहापातकिनंचांडालं वा रजस्वलां प्रमादाद्भोजनं कृत्वा त्रिरात्रेण विशुद्ध्यति ॥ ७ ॥ बुद्धिपूर्वं तु कृच्छ्रेण भगवानाह पद्मजः ॥ शुष्कपर्युषितादीनि गवादिप्रतिदूषितं भुक्त्वा पवासंकुर्वीत कृच्छ्रपादमयापि वा ८ संवत्सरं ते कृच्छ्रं तु चरन्विप्रः पुनः पुनः अज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थं ज्ञातस्य तु विशेषत इति ९ विष्णुधर्मोत्तरे अपात्कथानां तु यः पंक्त्यां भुंक्ते कश्चिद्द्विजोत्तमः अहोरात्रोपितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति चंद्रार्कग्रहणे भुक्त्वा द्विजश्चांद्रायणं चरेत् इति १ वाराहपुराणे चतुर्विंशत्यधिक शताध्याये विष्णुपूजाविहीनानां राज्ञा मन्त्रभक्षणे प्रायश्चित्तकथनम् ॥ वाराह उवाच शुद्धा भागवता भूत्वा मम कर्म परायणाः ये तु भुंजन्ति राजानं लोभेन च भयेन च ॥ १ ॥

में ब्राह्मण बारंबार अज्ञान कर्के यो भोजन किया अथवा विशेष कर्के जान कर्के यो भोजन किया तिसीकी शुद्धिके निमित्त कृच्छ्रयो प्राजापत्य व्रत तिसको करे ॥ ९ विष्णुधर्मोत्तरमें कि हा है जिनकी पंक्तिमें भोजन करणा नहियोग्य उनकी पंक्तिमें जो द्विजात्तम भोजन कर्ता है सो दिन रात्र निराहार व्रतकर्के और पंचगव्य पान कर्के शुद्ध होता है और चंद्रमा और सूर्यके ग्रहणमें भोजन कर्के द्विज चांद्रायण व्रतको करे १ अथ वाराह पुराणके एक शत चौविषे १२४ अध्यायमें विष्णु पूजा कर्के रहित यो राजा है तिनके अन्न भोजन करणमें प्रायश्चित्त वाराह भगवान् पृथ्वीकों कहते हैं हे पृथ्वि शुद्ध भागवत होय कर्के और मेरे पूजादिमें तत्पर यो है और लोभ कर्के और भय कर्के १

१७८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

राजान्नकों योभोजन कर्तेहैं आपदाकों प्राप्त होय कर्के वी योराजाके अन्नकों भोजन कर्तेहैं सो मनुष्य दश १०००० हजार वर्ष नरकोंमें पचतेहैं २ जवएहभगवान्जीका वचन सुना तव सुनकर्के पृथिवी कांपिती भयी अर्थात् वडेभय कर्के युक्त होतीभई दीनानीति तव नारायणका वचन सुनकर सात ७ दिन चपुनः दशदिन १० पृथ्वीको वडाभय होता भया ३ ॥ तिसर्ते उपरतं दीन मना होय कर्के पृथ्वी धारयाहै व्रत जिसनें सो संपूर्ण लोकों कों हितके करणे वाला योमधुर वचन सो कहिती भयी ४ ॥ पृथ्वी कहितीहै हेभगवन् तुमयथार्थ कर्के मेरा वचन सुनों योतुमनें किहाहै राजाका अन्न नहि भोजन करणा तव राज योंकों क्या दोषहै सो तुममेरे को कथन करणे योग्यहै ५ । तव भूमिका वचन सुनकर्के संपूर्ण

आपद्गताहिभुंजीरनुराजान्नंतुवसुंधरे दशवर्षसहस्राणिपच्यंतेनरकेनराः २
भगवद्वचनं श्रुत्वा कं पिताचवसुंधर दिनानि सप्तदशचभयंतीव्रं प्रजायते ३ त
तो दीनमना भूत्वा सामहीसांशितव्रता उवाच मधुरं वाक्यं सर्वलोकसुखावहम् ४
धरण्युवाच शृणु तत्त्वेन मे देवयत्नया हृदि वर्तते कोनुदोषो हिराज्ञांतु तन्मेत्वं
वक्तुमर्हसि ५ ततो भूमिवचः श्रुत्वा सर्वधर्मविदां वरः प्राह नारायणो वाक्यं
धर्मकामां वसुंधराम् ६ वाराह उवाच शृणु सुंदरितत्त्वेन गुह्यमेतदनिंदिते रा
जान्नंतु न भोक्तव्यं शुभैर्भागवतैः सदा ७ यद्यप्येवमसांशेन राजालोके प्रवर्त
ते राजसंतामसं वापि कुर्वन्कर्म सुदारुणम् ८ अपिवागर्हितं तेन राजान्नंतु व
सुंधरे धर्मसंधारणार्थाय न तु मेरोचंते भुवि ९ ततो न्यत्संप्रवक्ष्यामि तच्छृणो
षिवसुंधरे यथाराज्ञांतु भोज्यं वै शुद्धैर्भागवतैः शुभैः १०

धर्मोंके जाणनें वालयोमें श्रेष्ठ यो नारायण भगवान् सो धर्म कामा यो पृथ्वी तिसकों क
हतेहैं ६ । वाराहः हेसुंदरि हेअनिंदिते गुह्ययो धर्म सोतूं यथार्थ कर्के मेरेतें श्रवण कर हेभूमि
सुंदर जो भगवान् जीके भक्तहैन तिनोंनें राजाका अन्ननहि भोजन करणे योग्यहै ७ । जद्यपिराजा
समांश कर्के वर्तताहै क्यासंपूर्णमें तुल्यवर्तताहै तवभी राजस और तामस योदारुण कर्म तिनकों
कर्ताहुआ वर्तताहै ८ । इसकर्के हेवसुंधरे राजाका अन्ननिंदितहै धर्मके अछी प्रकारधारणके वा
स्ते मेरेकों पृथ्वीमें राजान्नका भक्षणनहिरुचताहै अर्थात् अछा नहि लगताहै ९ । तिसर्ते ऊँ
में तेरे कों कहिता हां हेपृथ्वि सोतूं श्रवण कर जैसे शुद्ध भगवान्के भक्तों को जिनों राज्यों
का अन्न भोजन करणे योग्यहै ॥ १० ॥

॥ श्रीरणीकारिते प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १७९

हेदेवि विधि दृष्टयो कर्म तिस कर्के मेरेकों स्थापन कर्के धन और धान्य इनो कर्के समृद्ध ये हैं तिनकों दान कर्के भगवान् के योभक्त हैं तिनो नैवी ॥१३॥ भागवत यो हैं भक्त तिनो कर्के सिद्ध यो अन्न मेरे नैवेद्य का शेष हेवरारोहे हे पृथ्वि उस अन्न को यो भोजन कर्ता है सो पाप कर्के नहि लिप्त होता ॥१२॥ प्रापणनाम नैवेद्य का है एवमिति ॥ इस प्रकार विष्णु का वचन सुण कर्के धारया है व्रत जिसने सां पृथ्वी वारा हरूपी यो भगवान् तिनको फेर कहती भई ॥१३॥ पृथ्वी कहती है ॥ हे भगवन् हे जनार्दन शुद्ध योभक्त हैं और पवित्र सो राजा का अन्न भोजन कर्के किस कर्म कर्के शुद्ध होता है सो तुम मेरेकों कहो ॥१४॥ वागह जो कहते है ॥ हेदेवि हे भीरू यो तू मेरेकों कहती है सो यथार्थ कर्के सुण जिस कर्के राजा का अन्न भोजन करणे वाले पुरुष तरते हैं अर्थात् पापते शुद्ध होते है ॥१५॥ एक चांद्रायण व्रत कर्के और बड़ा पुष्कल तप्त रुच्छ

स्थापयित्वा तु मां देवि विधि दृष्टेन वर्मणा धनधान्यसमृद्धानि दत्त्वा भागवतैरपि ११ सिद्धं भागवतैश्चान्नं मम प्रापणशेषं भुंजानस्तु वरारोहेन स पापेनालिप्यते १२ प्रापणशेषं नैवेद्यांशः ॥ एवं विष्णुवचः श्रुत्वा धरणी संशितव्रता वारा हरूपिणं देवं त्र्युवाच वरानना १३ धरण्युवाच राजानं तनुततो भुक्त्वा शुद्धो भागवतः शुचिः कर्मणा केन शुद्धयेत तन्मे ब्रूहि जनार्दन १४ वाराह उवाच शृणु तत्त्वेन मे देवि यन्मां त्वं भीरुभापसे तरंति मनुजा येन राजान्नमुपभुंजताम् १५ एकं चाद्रयणं कृत्वा तप्त रुच्छं च पुष्कलं कुर्यात्सांतपनं चैकं शीघ्रं मुंचति किल्विपात १६ भुक्त्वा वै राजसान्नानि इमं कर्म समा रभेत् न तस्यैवापराधोऽस्ति वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १७ ॥ एवमेव न भोक्तव्यं राजानं तु कदाचन समार्त्रा प्रयकामाययदीच्छेत्परमां गतिमिति ॥ १८ ॥ विष्णु धर्मोत्तरे लशुनं गृजनं चैव पलांडुं मयमेव च लशुनादिसमं चैव गन्धनमनुजोत्तम ॥ १ ॥

व्रत कर्के और एक सांतपन व्रत करे तब शीघ्र राजा के अन्न भोजन करणे का यो पाप तिसते दूर होता है ॥१६॥ अर हे वसुधे राजा के अन्नोको भोजन कर्के एह जो कर्म किहा चांद्रायण तप्त रुच्छ सांतपन इनको करे तब उसको अपराध क्या पाप नहि है एह मेरा वचन है १७ इसी प्रकार राजा का अन्न किसीने मेरे भक्तों कदाचित् नहि भोजन करणे योग्य यो मेरे मेरे प्रेमके करणे वाला और परम गति को यो चाहता है ॥ तिसने राजा का अन्न नहि भोजन करणा ॥१८॥ विष्णु धर्मोत्तरमें किहा लशुन मिति ॥ लशुन क्या धोम और गृजन क्या गोगलू गाजरा पलांडु क्या गंडा और मय एह यो हैं लशुनके वाग वर हैं सुगंध कर्के हेमनुष्योमि अष्ट इन लशुनादियोंको भोजन कर्के चांद्रायण व्रत को करे ॥ १ ॥

१८० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

और तिसी प्रकार कच्चा मांस खाणे वाले योमृगादिहैं तिनका मांस स्वाय कर्के वी चांद्रायणव्रतक रे॥लोहीति लाल वर्णके यो वृक्षोंके गूदहैं और व्रश्चन प्रभव योवृक्ष अर्थात् पीडंडी करेहुये संगतेर इत्यादि॥२॥और लसूडे बहुवारकफल और गव्यपी यूप नवीन प्रसूता योगौ दश पुत्र के मध्य उसके दूधका पीना और विषयो दुर्गंधिरस और श्लेष्मांतक और मृत्तिका और विना नेवैयादि रुसर क्या खिचडी और संयाव क्या यवोंके आटेका घृत खंड मिश्रित भक्ष्य विशेष और पायस और पूडे और सुच्चियां इनको ब्राह्मणादिके भोजन करवाये विना भोजन करे तबभी चांद्रायण व्रतको करे ॥३॥कूर्म पुराणमें किहाहै वार्त्ताकमिति॥वार्त्ताकक्या कंटकारी शाक और भूस्तृण क्या शाक विशेष रोहिकर्णीति और सुहांजना और कूष्मांड क्या पेठा और करक लड्वा नाम पक्षि विशेष और शंख क्या अस्थि और कुम्भिकादि शाक विशेष

भुक्ताचांद्रायणं कुर्यान्मांसं क्रव्यं भुजस्तथा लोहितान्वृक्षनिर्यासान् व्रश्चनप्रभवांस्तथा॥२॥शेलुंगव्यंचपीयूषं विपंश्लेष्मांतकं मृदम् तथा कृसरसंयावपायसापूपशष्कुली इति पीयूषो भिनवंपय इत्यमरः॥विपंदुर्गन्धिरसः वृथेति अत्र निवेदितं संयावो यवपिष्टविकारो भक्ष्यविशेषः स्पष्टमन्यत्॥कूर्मपुराणे॥वार्त्ताकं भूस्तृणं शिशुं कूष्मांडं करकं तथा प्राजापत्यं च रेजग्ध्वांशं खंकुम्भिकमेव च॥१॥पलांडुलशुनंचैव भुक्ताचांद्रायणंचरेत् नालिकांतंडुलीयंच प्राजापत्येन शुद्ध्यति॥२॥तथा कृसरसंयावंपायसापूपशष्कुलीः भुक्ताचैवं विधत्वं तन्न त्रिरात्रेण विशुद्ध्यति॥३॥वार्त्ताकं कंटकारी शाकं॥भूस्तृणं करकं लड्वा नाम पक्षिविशेषः शंखोऽस्थि कुम्भिकादि शाकविशेषः स्पष्टमन्यत्॥चक्रवाकादि मांसभक्षणप्रायश्चित्तं विष्णुध ०

इनको भोजन कर्के प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होता है॥१॥गंडे और लसुन इनको भोजन कर्के चांद्रायण व्रतको करे नालिकायो शाक विशेष है और तंडुलीययो शाक विशेष इनको भक्षण कर्के प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होता है॥२॥और ब्राह्मणादिके पूजनते विना योमनुष्य रुसर और संयाव और पायस और अपूप और शष्कुली इस प्रकारके अन्नको भोजन कर्ता है सो त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्ध होता है रुसरदिका अर्थ पहले कथन कर दिया है॥३॥अब चक्र वाकादि पोषकी हैं तिनके मांस भक्षणका प्रायश्चित्त विष्णु धर्मोत्तरमें कहिते हैं ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० १८१

चक्रवाकमिति चक्रवाक योहै चकोर पक्षी ब्रुव नाम योपक्षीविशेष जलचर पक्षि मात्र और हंस टिहिननाम पक्षी टिट्टीउरी और महुनाम पक्षि विशेष और काक और उल्लूक और तोता और भासनाम पक्षी और दात्यूह यो विवीहा और शारिका क्या मैना ॥ १ ॥ और वकक्या वगुला और वाज और वगुलेकी स्त्री इनकों भोजन कर्के षट्परात्र व्रतकों करे और कसाईके मांसकों यो भोजन करे तब वी तिसीप्रकार षट्परात्र व्रतकरे ॥ २ ॥ अज क्यावक्करा और भेड और सूकर और फोग और महिष और रुह नामक मृग विशेष और न्यंकु नामक मृग विशेष और हरिण और गवययोहै इनकों भक्षण कर्के और जो मृगहैं तिनकों भक्षण कर्के तीन दिन निराहार व्रतकों करे ॥ ३ ॥ क्रव्यादयोहैं कच्चा मांसखाने वाले मृगादि और ग्राम्य

चक्रवाकंल्लवंहंसंटिट्ठिमंमद्भुमेवच काकोलूकंशुकंभासंदात्यूहंकारिकांतथा
१ वकश्येनवलाकांश्चभुक्तापट्टरात्रमाचरेत् उपवासस्तथाकार्यः सूनामा
साशनेभवेत् २ अजाविकान्वराहांश्चपृपतान्माहिषांस्तथा रुस्यंकुंतथै
णांश्चगवयांश्चैवभक्षयेत् ३ भुक्तमांसमतोन्यस्यत्र्यहंतिष्ठे द्भुक्षितः क्रव्या
दशूकरोष्ट्राणांगोमायोः कपिकाकयोः ४ गोनराश्वखराणांचनोक्ताःप्रच
नखाश्चये मांसंचकौजरंभुक्तातप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति ५ ग्रामकुक्कुट छत्राकौभु
क्ताचांद्रायणंचरेत् केशकीटविपन्नेपि पिवेद्वाह्मीसुवर्चलामिति ६ शूकरो
ऽत्रग्राम्यः॥कूर्मपुराणेनरादिमांसभक्षणप्रा०नरमांसाशनंकृत्वाचांद्रायणम
थाचरेत् काकंचैवतथाश्वानंजग्ध्याहस्तिनमेवच १ वराहंकुक्कुटचाथ तप्तकृ
च्छ्रेणशुद्ध्यति

शूकरयोहैं और ऊठ और गिद्ध और वानर और काक ५ और गौः और मनुष्य और घोडा और खोता और नहिकहेयो पंचनखभक्ष और हाथीकामांसइनकों भोजनकर्के तप्तकृच्छ्र यो व्रत तिस कर्के शुद्धहोताहै ॥ ५ ॥ ग्रामकुक्कुट और छत्राकक्या छतडीयां इनकों भोजन कर्के चांद्रायण व्रतकों करे और केशयोहैं शिरकेवाल और कीटयोहैं कीड़े इनों कर्के युक्त वी जो अन्न तिस अन्नके भोजनमें ब्राह्मीसुवर्चलायोवूटी तिसकों पानकरे ६ कूर्मपुराणमें नरादिमांस भक्षणका प्रायश्चित्त कहतेहैं नरेति मनुष्यके मांसकी भक्षण कर्के चांद्रायण व्रतकों करे काक और कुत्ता और हाथी ॥ १ ॥ और विद्ध वराह और ग्राम्य कुक्कुट इनकों भक्षण कर्के तप्तकृच्छ्र यो व्रत तिस कर्के शुद्धहोताहै ॥

१८२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥

ऋत्यादयोहैं कच्चा मांस खाणे वाले तिनके मांसको खायककें विष्टा और मूत्र॥२॥और गौ क्या गौके सदृशपशु गवयादि और गीदड और कबूतर इनके मांसको खाय कर्के वीपूर्वकिहायो तप्त छच्छु व्रत तिसीकों करे । और वारां दिन निराहार व्रत कर्के कूष्मांड योमंत्र हैं तिनो कर्के धृतकों हवन करे ॥३॥नकुल और उलूक और मार्जार इनकों भोजन कर्के सांतपन व्रतको करे श्वापदयो मृग विशेषहैं कुत्तेकीन्याई पैर जिसके और ऊठ और खोता इनकों खाये कर्के तप्त छच्छु व्रत कर्के शुद्ध होताहै॥४॥और व्रतकीन्याई पूर्व कथन करीयो विधि तिस कर्के संस्कारकों करे वकीयोहैं बलाका और हंस और कारंडव पक्षिविशेष बगलेकाभेद॥५॥ और चकोर और छुव कर्के जलके पक्षी इनकों भोजन कर्के वारां दिन भोजनकों नहिं करे कबूतर और टिट्ठिभ नाम पक्षि विशेष और तोता और सारसपक्षी और उलू और जालपा

ऋत्यादानांचमांसानिपुरीषंमूत्रमेवच २ गोगामायुकपोतानांतदेवव्रतमाचरेत् अत्रगोपदंगोसदृशपशुपरं प्रायश्चित्तस्याल्पत्वात् उपोष्यद्वादशाहंतु कूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतं ३ नकुलालूकमार्जारंजग्ध्वासांतपनंचरेत् श्वापदोष्ट्रखरंजग्ध्वातप्तकच्छेणशुद्ध्यति ४ व्रतवच्चैवसंस्कारंपूर्वेणविधिनैवतु वकीचैववलांकांचहंसकारंडवंतथा ५ चक्रवाकंलवंगग्ध्वाद्वादशाहमभोजनं कपोतंटिट्ठिभंचैवशुकंसारसमेववा ६ उलूकंजालपादंचजग्ध्वाप्येतद्व्रतंचरेत् ६ शिशुमारंतथावीरमत्स्यमांसंतथैवच जग्ध्वाचैवकठाहाकमेतदेवव्रतंचरेत् ७ वीरंतंत्रोक्तकुलाचारलब्धं कठाहाकोदात्यूहः पक्षी॥मृतपंचनखादिदूषितकूपादिजलपानेप्रायः मृतपंचनखात्कूपादमेध्येनसकृद्युतात् अपः पोत्वात्र्यहंतिष्ठेत्सोपवासोद्विजोत्तमः १ द्विदिनंक्षत्रियस्तिष्ठेदकाहंवैश्य एवचनक्ताशीचतथाशूद्रः पंचगव्येनशुद्ध्यति २ ॥

द जालकीन्याई पैर जिसके इनको खाय कर्के वी पूर्वकिहायो व्रत तिस व्रतकों करे श्वापद शिशु मारजो जल चरजीव और वीर क्या तंत्रोक्त कुलाचारकर्के लब्ध यो अन्नादि और तिसीप्रकार मत्स्य मांस और कठाहाक क्या दात्यूह पक्षी इनकों खाय कर्के वी पूर्वोक्त व्रतकों करे ॥ ७ अवमृत पंचनखादि कर्के दूषित यो कूपादि तिसके जलपीनेमें प्रायश्चित्त कहितेहैं मृतहोयाहै पंच नखादि जिसकूपमें और अमेध्य यो विष्टादि तिनों कर्के युक्त यो कूपादि तिसमें एकवार जलपीनेकर तीनदिन निराहार व्रतकरे ब्राह्मण तब शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ क्षत्री दोदिन व्रतकरे और वैश्य एक व्रतकरे और शूद्र उसकूपका जलपीयके नक्त भोजन करे और पंचगव्य पान करे तब शुद्धहोताहै ॥ २ ॥

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १८३

और शुक्र योहें अम्ल काजिकादि और कषाययोहें तिनकों पानकरके और अमेध्य योहें अपवित्र वस्तु तिनकों पान करके द्विज इतना पर्यंत पाष युक्त होता है जितना पर्यंत ओहि अत्रा दिहै ठ नहि भया अर्थात् पचयानाहीं ॥ एह शुक्र और कषाय बहुत दिनों के लिये अवविष्णुधर्मोत्तर मे कहिते हैं सरावके भांडे में प्राप्त योजल उसको योवाह्यण मोहकरके पानकरे तब शंखपुष्पी बू टोकरके काडयायो दूध उसकों तीनादिन पानकरे ॥ और सगावके भांडे में पडा योजल तिसकों पायकरके तैसेहि सातरात्र पर्यंत पानकरे और शूद्रके जूठे योजलहें तिनकों पानकरके पांचरात्र शंखपुष्पी करके काडयायो दूध तिसकों पानकरे ॥ फेर विष्णु धर्मोत्तर में हिकिहा है गौआं और म

शुक्तान्यपिकपायांश्चपीत्वामेध्यान्यापिद्विजः तावद्भवत्यप्रयतोयावत्त्वन्नं व्रजत्यधइति ३ बहुदिनीयानि विष्णुधर्मोत्तरे मद्यभांडगतामाहात्पीत्वाचापो द्विजोत्तमः शंखपुष्पीशृतंक्षीरं पिवेत्तुदिवसत्रयम् १ सुराभांडगताः पीत्वा सप्तरात्रं तथापिवेत् शूद्रोच्छिष्टास्तथापीत्वापंचरात्रं तथापिवेदिति २ पुनस्तत्रैव गवांचमहिषीणांचवर्जयित्वा तथाप्यजां सर्वक्षीराणिवर्ज्यानि तेपांचैवाप्यानिर्दिशम् १ स्यंदन्यमध्यमक्षायविवत्सायाश्चवर्जयेत् दधिवर्जंच शुक्तानि सर्वाणि परिवर्जयेत् २ शुभैः पुष्पफलैर्यानि भक्ष्यैरभिपुतानि तु इति ॥ शुभपुष्पफलादिकृतानि अभिपुतानि काजिकानि शुक्तान्यपि न परिवर्जनीयानि इति तु शब्दार्थः ॥ भक्ष्यैरभिपुतानि नो इति पाठान्तरम् ॥ शुक्तत्वं च बहुदिनातिक्रमणेनाम्लत्वाद्याश्रयत्वम् उपपातकप्राश्चित्तं विष्णुधर्मोत्तरे उपपातकसंयुक्तो गोघ्नो मांसयवान्पिवेत् कृतवापनो वापिवसं चर्मणा तेन संवृतः १

हिषीयां और वक्करियां इनके दूधकों छोडकरके संपूर्ण दूध वर्जहें और तिनकाभी दूध दश दिन पर्यंत वर्जित है २ और स्पंदिनी क्या गर्भकी डच्छावाली योगीः और अमेध्य भक्षा योगी और विवत्सा योगी तिनके दूधको त्यागे और दधितें विना संपूर्ण योशुक्र अम्ल वस्तु तिनकों नहि भोजन करे २ शुभयोपुष्प और फल तिनों करके यो काजिक है सो भक्ष्यहें तिनकों हित्यागे इनांते जो कोई होरहोवे सो त्यागने योग्य है उपपातक प्रायश्चित्त विष्णुधर्मोत्तर में कि हा है गौकीहत्या यो है सो उपपातक है गौकीहत्याके करणे वाला एकमहीना यवजोहें तिनकों काडकरके पानकरे और मुंडन करायकरके गौके चर्मकों ऊपरधार करके वासकरे १

१८४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

और चतुर्थकाल योहै तिसमें क्षार और लवण योहै तिनोतें विनाथोडे प्रमाणका भोज नकरें और जितेंद्रीहोयकरें दोमहीने गोमूत्रकरें स्नानकरें॥२॥और दिनमें गौआं जववनकोया वें तव उनके पीछे जावे खडाहोयकर ऊपर कीयो धूडहै आकाशकी तिसकोपान करे॥इसप्र कार गौआंकीमेवाकरें और नमस्कार करें रात्रिमें वीरासन योहै खडेहोये करें गौआंकीर क्षाकरणी तिसको करे॥३॥और जब गौआं खडिआंहोजामें तव आप भीखडा होवे और जब गौआं चलें तव उनके पीछे चले और जबवैठें गौआं तवआपभी नियमकरें दूर हो यामत्सर जिसका सोवैठे॥४॥ और रोगिनी योगी और अभिकाक्या चोर व्याघ्रादि भयोंक के भीताहै अथवा गोघातीयोहै तिनो कर्के ग्रहण करे योगीः अथवा गिडपडी योगीः अथवा चिकड में गिडी योगी तिसको संपूर्णप्राणों कर्के रक्षाकरे अर्थात् इनोंउपद्रवोंसे गौ

चतुर्थकालमश्रीयादक्षारलवणमितं गोमूत्रेणाचरेत्स्नानंद्वौमासौनियतेंद्रि यः॥२॥दिवानुगच्छेत्तागाश्चातिष्ठेन्नृद्धैरजःपिवेत् शुश्रूषित्वानमस्कृत्वारात्रौ वीरासनंचरेत्॥३॥तिष्ठेत्ताप्यनुतिष्ठेत्तुव्रजंतीप्यप्यनुव्रजेत् आसीनासुतथासी तनियतोवीतमत्सरः॥४॥आतुरामभिक्षांचचोरव्याघ्रादिभिर्भयैः पतितांप कमग्नांवासर्वप्राणैर्विमोक्षयेत् ५अभिमिक्षांचौरादिजैर्भयैर्भीतांगोघातीभि र्गृहीतांवा॥उष्णवर्षातिशेतिवामारुतेयातिवाभृशम् नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगो रकृत्वातु शक्तिः६आत्मनोयदिवान्यपांगृहेक्षेत्रेयवाखले खादमानानंशंसे त पिवंतंचैववत्सकम्॥७॥रूपभैकादशागास्तुदद्याद्विचरितव्रतः अविद्यमा नेसर्वस्वेदविद्योनिवेदयेत्॥८॥बंधनेरोधनेवापियोजनचगवांरुजा भवेद्वा मरणयत्रनिमित्तेतत्रलिप्यते॥९॥ पादमेकंचरद्रेधिद्वौपादौबंधनेचरेत्

कोलुडावे ॥५॥और दूधमें और वर्षामें और शीतमें और बहुतपवनके चलते हुये शक्तिकर्के गौकी रक्षाकिये विना आपणी रक्षाकोनहिकरे ॥६॥और आपणेवा ओरोंके घर अथवाक्षेत्रअथवाखलाडे स्वामीयोगी तिसको नहिहटावे और दूधपान कर्त्तियोवच्छा तिसको नाहटावे॥७॥ और इसप्रकार धार्गह व्रतजिसने सोतिस गोहत्याके पापके दूरकरणके निमित्त दशगौआं और एकवृषभ दानकरे अथवाएहनहि होयसके तव वेदोंको जानेणवालायोहैं तिनोके तांई संबंधनस्व दानकरदेवे॥ ८ ॥बांधवामें और गोकुलमें और योजनमें जिस निमि तमेंरोगकर्के गौआंका मरण होवे तहां बंध नादिके करणे वाला पाप कर्केयुक्त होताहै। सोकहितेहैं गौआं को रोकणेमें एक पाद पूर्वोक्त व्रतको करे और बांधन मेंगोः मृत होजावे तव दोपाद पूर्वोक्त व्रत को करे ॥ अर्थात्

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २० टी० भा० ॥ १८५

आधा पूर्वोक्त व्रत करे) और हलादिमें योजनमें योमृतहोजावे तब पादोन व्रतकों करे और इनो निमित्तोंमें विना गौके निपातनमें संपूर्ण व्रतकों करे क्या योपूर्व किहा सो संपूर्णकर १० वनोमें और काठेन स्थानोंमें और विषम भोजनमें जोगो मृतहोजावे तब पूर्वोक्त व्रतका एक पाद प्रायश्चित्त करणा ११ घंटा योगोके गलमें पाणा तिस दोष कर्के मृतहोजावे तब आधा प्रायश्चित्तकरे और दमनमें और वाहनमें और रोधमें और गड्डेमें योडनेमें और नासिकामें रस्सी पाणेमें पूर्वकिहायो व्रत सो पादोनकरे १२ और बंधनमें और रोकणेमें बहुतिश्रों गोश्रोंके मरणमें और मिथ्या औषधके करणमें पूर्वोक्त यो गौहत्याके निमित्त व्रत सो द्विगुण करे अर्थात् दूणा प्रायश्चित्त करे १३ शृंग भंगमें और अस्थि भंगमें और पुच्छके छेदनमें जितना पर्यंत गौ

योजनेपादहीनस्याच्चरेत्सर्वनिपातने १० कांतारेष्वथदुर्गेषुविषमेखादने पिच यदितत्रविपत्तिः स्यादेकपादोविधीयते ११ घंटाभरणदोषेतुतथैवार्ध विनिर्दिशेत् दमनेवाहनेरोधिशकटस्यचयोक्रणे १२ नस्तः शकलपाशेषुमृते पादोनमाचरेत् १२ नस्तः शकलपाशोनासारजुपातः व्यापन्नानांवहूनांतुबंध नेरोधनेपिवाभिपड्मिथ्याचरंश्चहद्विगुणं गोव्रतंचरेत् १३ शृंगभंगेस्थिभंगेवालांगूलच्छेदनेपिवा यावकंतुपिवेत्तावद्यावत्स्वस्थातुर्गौर्भवेत् १४ एका चेद्बहुभिर्देवाद्यत्रव्यापादिताभवेत् पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथक् १५ यंत्रणेगोचिकित्सायामूढगर्भविमोक्षणे यदितत्रविपत्तिः स्यात्तत्रदोषोनाविद्यते १६ औषधंस्नेहमाहारदंद्याद्वैवाह्यणादिषु दीयमानेविपत्तिः स्यादातुर्दोषोनाविद्यते १७ एतदेवव्रतंकुर्युपपातकिनस्तथेति

न राजी होवे इतना पर्यंत यावक यो हे यवोंका काडा तिसकों पानकरे १४ जब देवयोगें जिस स्थानमें एक गो बहुत मनुष्यों कर्के मारी होवे तब उस हत्याका सो मनुष्य भिन्न भिन्न पूर्वोक्त पादपाद प्रायश्चित्त करें १५ गौके राजी करणे के निमित्त यो औषधकरणी उसके निमित्त यो गौका बांधना और मूढ गर्भ योहै योगर्भमें मृतहोगया यो वच्छा वावच्छी उसकावाहनकासना उसमें योगो मरजावे तब उसका दोष नहीं १६ औषध वास्नेह वा भोजन योवाह्यणादियोंमें देवे और उस औषधादिके दितें हि गौमरजावे तब औषधादिके देणे वाले को दोष नहींहै १७ एहहि व्रत होर उपपातकके करणे वाले भी मनुष्यकरें ॥

१८६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा०

ज्ञत्रियादिके वधमें भी प्रायश्चित्त तहांहि किहाहै ब्रह्म हत्याका चतुर्थांश क्षत्रिके मारणमें किहाहै और आपणे धर्ममें स्थित यो वैश्य तिसके मारणमें ब्रह्महत्याका अष्टमांश पाप किहा और शूद्रके मारणमें ब्रह्महत्या का षोडशांश १६ क्या सोलहआंहिस्सा प्रायश्चित्त होताहै १ और कामना तें विना यो ब्राह्मण क्षत्रीकोंमारे तब एक १ वृषभ और हजार १००० गौआपणी शुद्धिके निमित्त दान करे ॥ २ ॥ अथवा नियम कर्के और शिरमें जटाधार कर्के तीन ३ वर्ष ब्रह्महत्या के व्रतकों करे और ग्रामतें दूर वृक्षके हेठ स्थान बना कर्के वासकरे ॥ ३ ॥ और ब्राह्मण एह हि व्रत वर्ष पर्यंत १ वैश्यके मारणमेंकरे प्रमाप्येति ॥ आपणे वृत्तमें स्थित योवैश्य तिसकों मार कर्के ब्राह्मण शत १०० गौका दान करे २ और एहि संपूर्ण व्रत छेमहीनें शूद्रके मारणे वा लाकरे और श्वेत वर्ण कियां दशगौआं और एक वृषभ ब्राह्मण के ताई दान कर देवे शूद्र

क्षत्रियादिवधेप्रायश्चित्तत्रैवम् तुरीयंब्रह्महत्यायाःक्षत्रियस्यवधेरुत्तमं वैश्येऽष्टमोऽंशोवृत्तस्थेशूद्रेज्ञेयस्तुषोडश १ अकामतस्तुराजन्यांविनिपात्य द्विजान्तमः वृषभैकसहस्रागादद्यात्शुद्धयर्थमात्मनः २ त्र्यहंचरेद्वानियतो जटीब्रह्महणोव्रतम् वसन्दूरतरेग्रामादृक्षमूलानिकेतनः ३ एतदेवाचरेदब्दंप्रायश्चित्तद्विजान्तमःप्रमाप्यवैश्यंवृत्तस्थेदद्याद्द्वौह्रकशतंगवाम् ४ एतदेवव्रतंकृत्स्नंपणमासान्शूद्रहाचरेत् वृषभैकादशावापिदद्याद्विप्रायगाःसिताइति ५ कूर्मपुराणेषि॥हत्वातुक्षात्रियांविप्रःकुर्याद्ब्रह्महणोव्रतम् अकामतोपिपणमासान्दद्यात्पंचशतंगवाम् १ कामतस्तु त्र्यब्दंचरेतनियतोवनवासीसमाहितः प्राजापत्यंसांतपनंतप्तकृच्छ्रं तुवात्रयम् २ प्रमाप्यकामतैवैश्यंकुर्यात्संवत्सरद्वयम् गोसहस्रस्यपादंचदद्याद्ब्राह्मणोव्रते ३ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौवाकुर्यात्तृचां द्रायणमथापिवा संवत्सरंव्रतंकुर्याच्छूद्रंहत्वाप्रमादतः ॥ ४ ॥

की हत्याके दूर करणके निमित्त ॥ ५ ॥ कूर्म पुराणमें भी कहितेहैं सो तहां विशेषहै ज्ञत्रीकों कामनाकर ब्राह्मण मार कर्के ब्रह्म हत्याके व्रतकोंकरे और कामनातें विनावी मारकर्के छेमहीने व्रत कों करे और पांचशत ५०० गौदानकरे १ और यो कामनातेंमारे सोनियम कर्के तीन वर्ष पर्यंत वनवा सीहोय कर्के और सावधान चित्त होय कर्के प्राजापत्य और सांतपन अथवा तप्त कृच्छ्र व्रतकरे अथवातिन्नाकोहिकरे २ और यो ब्राह्मण कामना कर्के वैश्यकोंमारे सोदो वर्ष पर्यंत प्रायश्चित्त कों करे और ढाईसौ २५० उस प्रायश्चित्तके निमित्त ब्राह्मण गौआं दानकरे ३ और कृच्छ्र व्रत अथवा अति कृच्छ्र व्रत अथवा चांद्रायणकरे और यो ब्राह्मण प्रमाद कर्के शूद्र कोंमारे तब वर्ष पर्यंत व्रतकरे ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १८७

और सहस्रार्द्ध गौका पाद क्या सपाद शत १२५ गौओं को दान करे उस पाप के दूर करने वास्ते। अब पहले में कुछ विशेष कहते हैं कि चेति और ब्राह्मण क्षत्रियों वैश्य कों और शूद्रों को मारे तब यथा क्रम कर्के आठ वर्ष और छे वर्ष और तीन वर्ष ब्रह्म हत्या के व्रतकों करे अर्थात् क्षत्रियों को मार कर्के ब्राह्मण आठ वर्ष और वैश्य कों मार कर्के छे वर्ष और शूद्रों को मार कर्के तीन वर्ष व्रतकों करे। और योगर्भवती ब्राह्मणी को मारे तब उसके निमित्त आठ वर्ष व्रतकों करे राजन्यामिति और क्षत्रीकी स्त्री योगर्भवती उसको यो मारे सो छे ६ वर्ष पूर्वोक्त व्रतकों करे। और वैश्यायो है वैश्यकी स्त्री उसको गर्भवतीको यो मारे सो मारणे वाला तीन वर्ष पर्यंत पूर्वोक्त व्रतकों करे ॥ और ऐसी शूद्रा को मार कर्के ब्राह्मण १ वर्ष व्रतकर्के शुद्ध होता है ॥ ७ और यो प्रमाद कर्के वैश्या को मारे तब ब्राह्मण के ताँई कुछ थोड़ा दान कर देवे। और अन्यज ये हैं चांडालादि तिनको मार

गोसहस्रार्द्धपादं च दद्यात्तत्पापशान्तये किंच अष्टौ वर्षाणि पट्टत्रीणि कुर्याद्ब्रह्म हणो व्रतम् ५ हत्वा तु क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं चैव यथाक्रमम् गर्भिणीं ब्राह्मणीं वि स्येत्त्वष्टवर्षं व्रतं चरेत् ६ विस्येत्तु हिंस्यात् ॥ राजन्यां वर्षं पट्टकं तु वैश्यां संवत्सरत्रयम् वत्सरेण विशुष्येत् शूद्रां हत्वा द्विजोत्तमः ७ वैश्यां हत्वा प्रमादेन किंचिद् दद्याद् द्विजातये अत्यजानां वधे चैव कुर्याच्चांद्रायणव्रतम् पराकेणाथवा शुद्धिरि त्याह भगवानज इति ८ विष्णुधर्मोत्तरे चतुर्णामपि वर्णानां नारीं हत्वा नरः स्थितः वर्णानामानुपूर्वेण त्रयाणामविशेषतः ९ अस्य श्लोकस्य व्यवस्था प्राय शिचत्तेन्दु शेखरे कामतां गुणवत्तर ब्राह्मणी वधे विप्रस्य पाट्टवार्पिकं ब्रह्म हत्या व्रतम् ॥ क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं जातिस्त्री वधे तदर्थं तदर्थं तदर्थं प्रायश्चित्तं अर्थात् ब्राह्मणी वधे तदर्थम् ॥ अभोष्यैव प्रमाप्य स्त्री शूद्र हत्या व्रतं चरेदिति ॥ नारदीयेपि ब्राह्मणीनां वधे त्वर्द्धपादः स्यात्कन्यका वधे हत्वा त्वनुपनीतां च तथा पादव्रतं चरेत् ॥ १ ॥ अनुपनीतामविवाहिताम्

कर्के चांद्रायण व्रतकों करे। अथवा पगाक व्रत करे एह भगवान ब्रह्माजीका वचन है ॥ ८ ॥ विष्णु धर्मोत्तरमें किहा है कामनाते गुणवत्तर ब्राह्मणी के मारणमें ब्राह्मणों छे वर्ष का ब्रह्म हत्या व्रत किहा ॥ और क्षत्री और वैश्य और शूद्र इनकी स्त्रियों के मारणमें तदर्थं तदर्थं तदर्थं प्रायश्चित्त है अर्थात् ब्राह्मणी ने आधा प्रायश्चित्त क्षत्रिया के मारणमें और तिसमें आधा वैश्या के मारणमें है। और तिसमें आधा शूद्रा के मारणमें है ॥ १ ॥ और बिना बुला ये स्त्रियों को मारे तब शूद्र के मारण का योवन सो करे नारदीय पुराणमें भी किहा है। ब्राह्मणी के मारणमें आधा प्रायश्चित्त है ॥ और कन्यका मार णमें पाद क्या चतुर्थांश व्रत किहा। और तिस प्रकार अविवाहिता यो स्त्री तिसको मार कर्के पाद व्रत करे ॥ १ ॥ परंतु इस जगा अर्द्धपादादिव्यवस्था ब्रह्म हत्या के व्रतकी जाननी

१८८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥

और क्षत्रियाकों मार कर्के छे वर्ष व्रत करे ब्राह्मण और वैश्याकों मार कर्के तीन वर्ष व्रत करे ॥ और शूद्राकों मार कर्के वर्ष पर्यंत व्रत करे ॥ २ ॥ और दीक्षित ब्राह्मणकी स्त्रीकों मार कर्के आठ वर्ष व्रत करे इतना काल ब्रह्महत्याके व्रतकों कर्के निश्चयकर्के शुद्ध होता है ॥ ३ ॥ और हेमुनिसत्तम मुनियोंमें श्रेष्ठ बृद्ध और रोगिणी और वाला एह योस्त्रियाहैं इनकों मुनियों नें आधा प्रायश्चित्त किहा है सर्वत्र ॥ ४ ॥ अब विष्णु धर्म्मोत्तरमें मार्जारादि वधमें प्रायश्चित्त क हितेहैं मार्जार और नकुल और विवीहा और डिडुं और कुत्ता और गोधा और उलू और काक इनकों मार कर्के शूद्रके मारणकायो व्रत तिसकों करे १ अथवा तीन रात्र दुग्ध पान करे अथवा रामनाम जपता होया योजन मात्र क्या चार कोश मार्ग जावे अथवा नदीमें जाय कर्के स्नानाचमन करे अथवा वरुणहै देवता जिनका तिनों मंत्रोंका जपकरे ॥ २ ॥ इसमें

हत्वा तु क्षत्रियां विप्रः पडब्दं कृच्छ्रमाचरेत् संवत्सरत्रयं वैश्यां शूद्रां हत्वा तु वत्सरम् ॥ २ ॥ दीक्षितस्य स्त्रियं हत्वा ब्राह्मणीं चाष्टवत्सरान् ब्रह्महत्याव्रतं कृत्वा शुद्धो भवति निश्चितम् । ३ प्रायश्चित्तविधानंतु सर्वत्र मुनिसत्तम वृद्धा तुरस्त्री बालानामर्धमुक्तं मनीषिभिरिति ॥ ४ ॥ विष्णुधर्म्मोत्तरे मार्जारादिव धेप्रा० मार्जारनकुलाहत्वा चापमंडूकमेव वा श्वगोधोलूककाकांश्च शूद्रहत्या व्रतं चरेत् ॥ १ ॥ पयः पिवेत्रिरात्रं वा योजनं वा ध्वनो ब्रजेत् उपस्पृशेत् स्रवं त्यां वा सूक्तं वा ब्रह्मदेवतं जपेत् २ अत्र शूद्रहत्याव्रताचरणमात्रं विवक्षितं न तु तन्मानं तेनैकादिनं शूद्रहत्याव्रतं चरोदिति तात्पर्यार्थः । अर्ध्याकार्णायसींदद्यात्सर्पहत्याद्विजोत्तमः पलालभारकं पंडं सैसकं चैकमापकम् ३ घृतकुंभं वराहे तु तिलद्रोणं तु तित्तिरे शुके द्विहायनं वत्सं कौचं हत्वा द्विहायनम् ४ हत्वा हंसं वलाकां वायकं वर्हिणं ववा वानरं श्येनं भासौ वा स्पृशयेद्ब्राह्मणाय गाम् ५ स्पृशेद्दद्यादित्यर्थः ॥ वासोदद्याद्वयं हत्वा पंचनीलान् वृषान् गजम्

शूद्रहत्या व्रत आचरण मात्र विवक्षित है तूपुनः शूद्रहत्याके व्रतका प्रमाण नहीं किहा तिस कर्के एक दिन शूद्रहत्याके व्रतकों करे एह तात्पर्य है ॥ ब्राह्मण जब सर्पकों मारे तब लोहेको कहे दान करे और जब नपुंसकों मारे तब पगलीया घास तिसका भार दान करे वा एक १ मासा सिका दान करे ॥ ३ ॥ और शूकरके मारणमें घृतका कुम्भ दान करे तित्तिर पक्षीकों मार कर्के द्रोण मात्र तिल दान करे और तोतेकों मार कर्के दो वर्षके बच्छेका दान करे और कौच पक्षीकों मार कर्के दो वर्षके बच्छेकों दान करे ४ हंस और वलाका और वगुला और मोर और वानर और वाज और भासपक्षी इनकों मार कर्के ब्राह्मणके ताई गोदान कर देवे ५ घोडेकों मार कर्के वस्त्रदान करे और हाथीकों मार कर्के नील वर्णके पांचवृषभ दान करे

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १८९

वकरा और भेड़ और बलीबह और खोता एह यो एक वर्षके हैं और कच्चा मांस खाणे वाले मृग यो हैं तिनकों मारकरके दूधवाली गौकों दान करे ॥ ६ ॥ कच्चा मांस खाणेवाला यो मृग तिसकों मार करके बच्छीकों दान करे और ऊठकों मारकरके रत्ती मात्र सुवर्ण दान करे और जीवक जो पक्षी विशेष और आपणा यो वकरा और भेड़ इनकों मारकरके बी एक एकके निमित्त रत्ती रत्ती सुवर्ण दान करे ॥ ७ ॥ कामना करके बहुत बार मंडूकादि के मारणका प्रायश्चित्त कूर्म पुराणमें लिखा है मंडूक और नकुल और काक और सर्प और मूषक और कुत्ता इनकों मारकरके द्विज ब्रह्महत्याका षोडशांश क्या १६ सोलमांहेसा व्रत करे ॥ १ ॥ और कुत्तेकों मार करके मैत धारकरके तीन रात्र दूधको पान करे मार्जार और नकुल इनकों मारकरके योजन मात्र मार्ग चले ॥ २ ॥ और घोड़ेके मारणेमें द्विज द्वादश रात्र क्या वारां राती व्रत करे और सर्पकों मार

अजमेपमनड्वाहंखरंहत्वैकहायनम् क्रव्यादांस्तुमृगान्हत्वाधेनुंदद्यात्पय
स्विनीम् ६ क्रव्यादंवत्सरीचैवमुग्रहत्वातुकृष्णलं जीवकात्मकवस्तावीः पृथ
ग्दद्याद्विशुद्धयइति ७ कामतोऽभ्यासे कूर्मपुराणे मंडूकंनकुलंकाकंदंशू
कंचमूषकं श्वानंहत्वाद्विजःकुर्यात्षोडशांशव्रतंतथा १ पयःपिवेत्रिरात्रंतु
श्वानंहत्वातुयंत्रितः मार्जारंवाथनकुलयोजनंवाध्यनोव्रजेत् २ कृच्छ्रंद्वाद
शरात्रंतुकुर्यादश्ववधेद्विजः अश्वीकाण्णीयमीदद्यात्मर्षंहत्वाद्विजोत्तमः ३
अग्नेविष्णुधर्मोक्तवत्पाठः। अकामतोऽभ्यासेनारदीये मंडूकंनकुलंकाकंवरा
हंमूषकंतथा मार्जारंजाविकंश्वानंहत्वाकुकुटकंतथा कृच्छ्रार्धमाचरेद्वि
प्रोऽतिकृच्छ्रं चाश्वहाचरेत् १ तप्तकृच्छ्रंकारेवंधपशुकंगोवधेस्मृतम् काम
तो गोवधेनैव शुद्धिर्दृष्टामतीपिभिः २ यानशय्यासनेष्वेवंपुष्पमूलफलेषु च
भक्ष्यभोज्यापहारिषु पंचगव्यंविशोधनम् ३

करके ब्राह्मण लोहेकी कहीका दान कर देवे ॥ ३ ॥ आगे विष्णुधर्मके वरावर हि पाठ है ॥ काम नांत विना बहुत बार मंडूकादिके मारणमें नारदीयमें विशेष है मंडूक और नकुल और काक और वराह और मूषक और मार्जार और वकरा और भेड़ और कुत्ता और कुकुट इनकों मार करके ब्राह्मण आधा प्राजापत्य व्रत करे और घोड़ों मारणे वाला अतिकृच्छ्रव्रत करे ॥ १ ॥ और हाथीके मारणेमें तप्तकृच्छ्र व्रत किहा है और गौके मारणेमें पशुकनामक व्रत किहा और कामनाकरके गौके मारणमें बुद्धिमान यो हैं तिनोंने शुद्धि नहीं देखी अर्थात् कामनांत गोवध कर णेका मरणान्त प्रायश्चित्त है ॥ २ ॥ वाहन और शय्या और आसन इनके चुराणेमें और पुष्पमूल फल इनके चुराणेमें और भक्ष्य और भोज्य इनके चुराणेमें पंचगव्य पान करणे कर शुद्धि होती है ॥ ३ ॥

१९० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० ० भा० ॥

शुष्ककाष्ठ और तृण और वृक्ष और गुड और चर्म और वस्त्र और मांस इनके चुराणेमें तीन रात्र भोजन नहीं करे अर्थात् तीन रात्र भोजनकों त्यागे ॥ ४ ॥ टिट्ठिमिति टिट्ठिम चकोरहं स कारंडव उल्लूक सारस कबूतर जालपादक ५ ॥ तोता विवोहा बलाक और शिशुमार यो जलचर जीव है और कच्छप इनके मध्यमें एककोंवी मार कर्के वारां दिन भोजन नहीं करे ६ वीर्य और विष्टा और मूत्र इनके भोजनमें प्राजापत्य व्रत करे और शूद्रका जूठा भोजन करणे मे तीन चांद्रायण व्रत कहे हैं ॥ ७ ॥ अस्थियों वाले क्या हड्डियों वाले योजीव हैं तिनका हजार १००० मारणमें और विना हड्डियों योजीव हैं तिनका गड्डा भरा हुआ मारणमें इक दिन शूद्रके मारणका योव्रत तिसकों करे ॥ ८ ॥ और अस्थियों वाले जीवोंके मारणमें किंचित् योहै

शुष्ककाष्ठतृणानांचद्रुमाणांचगुडस्यच चर्मवस्त्रामिपाणांचत्रिरात्रंस्यादभोजनम् ॥ ४ ॥ टिट्ठिभंचक्रवाकंचहंसंकारंडवंतथा उल्लूकंसारसंचैवकपोतंजालपादकम् ५ शुकंचापंवलाकंचशिशुमारंचकच्छपं एतेष्वन्यतमंहत्वाद्वादशाहमभोजनम् ६ प्राजापत्यव्रतंकुर्याद्रितोविमूत्रभोजने चांद्रायणत्रयंप्रोक्तं शूद्रोच्छिष्टस्यभोजने ७ पुनस्तत्रैव अस्थिमतांतुसत्त्वानांसहस्रस्यप्रमाणे पूर्णेचानस्यनस्थानांतुशूद्रहत्याव्रतंचरेत् ८ अनासिशकटेपूर्णेहतेसतीत्यर्थः ॥ किंचिदेवतुविप्रायदद्यादस्थिमतांवधे अष्टमुष्टिमितंधान्यंकिंचित् अनस्थानांचैवहिंसायांप्राणायामेनशुद्ध्यति ९ अन्नाद्यजानांसत्त्वानांसजा नांचसर्वशः फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशोविशोधनम् १० कृष्टजानामोषधी नांजातानांचस्वयंदने वृथारंभेनुगच्छेद्गांदिनमेकंपयोव्रतः एतैर्व्रतैरपो हंस्यादिनोहिंसासमुद्भवम् ११ वृथारंभोवृथाछेदः

सो ब्राह्मणके ताईदेवे किंचित्का प्रमाणकहिते हैं आठ मुष्टि ८ प्रमाण योधान्य है उसका नाम किंचित् है और विना अस्थियों योजीव हैं तिनके मारणमें प्राणायामकर्के शुद्ध होता है एह एकके मारणका प्रायश्चित्त है ९, और अन्नादिते और रसते और फलपुष्पते उत्पन्न भये योजीव तिनों संपूर्णोंके मारणमें घृतको प्राशनकर्के क्या घृत खाय कर्के शुद्ध होता है १० ॥ हलवाह कर्के उत्पन्न भयी यो औषधी और स्वयं क्या अपने आप वनमें उत्पन्न भयी यो औषधी तिनके प्रयोजनते विना कटणेमें एक दिन गोंके पीछे अमे और दूध पान करे एह यो व्रत कहे हैं इन कर्के हिंसाते, उत्पन्न भयी यो पाप सो दूर करणे योग्य है ॥ ११ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १९१

कूर्मपुराणमें भीकिहाहै फलेति फलोंको देणे वाले योबृक्षहैं उनके छेदनमें सौ १०० वारवेद मंत्रका जपकरे और गुल्मयोहैं गुल्ले और वलिआंयोहैं आच्छादनकरणे वालिआं वेलां और लतायोहैं वेष्टनकरणा स्वभाव जिनका और वीरुध योहैं शाखा पत्रोंके समूह वालिआंवेलां १ और अज्ञातयोजीवहैं नाहिं जाणैयोजीव गंडूपदीकीटप्रभृति योहैं और पत्रोंते उत्पन्न भये योजीव और फल और पुष्प इनोते उत्पन्न भयेयोजीव तिनो संपूर्णोंके मारणमें घृतकायो प्राशन है घृतखाणा सोशोधनहै २ और कामनाते विना हाथीके मारणमें तप्तकृच्छ्र व्रत शोधन है और कामनाकर्के हाथीके मारणमें प्रायश्चित्तनाहिंहे अर्थात् मरणांत प्रायश्चित्तहै ३ और अज्ञानकर्के गौको मारकर चांद्रायण अथवापराकव्रतकरे ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें भी इनका इसी

कूर्मपुराणे फलदानांतुवृक्षाणांछेदनेजाप्यमृक्शतम् गुल्मवल्लीलतानांचपुष्पितानांचवीरुधाम् १ गुल्माप्रकांडावृक्षावल्ल्यश्चाच्छादनस्वभावालतावेष्टनस्वभावावीरुधःशाखापत्रप्रचयवत्यःअज्ञातानांचसत्त्वानांपत्रजानांचसर्वशःफलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशोविशोधनम् २ अज्ञातानांगंडूपदीकीटप्रभृतीनाम् हस्तिनश्रवधेदृष्टतप्तकृच्छ्रविशोधनम् मतिपूर्ववधैचैवप्रायश्चित्तन विद्यते ३ ॥ चांद्रायणंपराकंचगांहत्वातुप्रमादत इति विष्णुधर्मोत्तरंप्येवम् कूर्मपुराणेमनुष्यादिहरणेप्रायःमनुष्याणांतुहरणंकृत्वास्त्रीणांवधस्यतु वापीकूपजलानांचशुद्धयेचांद्रायणेनतु १ स्त्रीणांवधस्यवधंकृत्वाजलपदंजलाशयोपलक्षकंतद्वधंतद्रघ्नंकृत्वेत्यर्थः ॥ द्रव्याणामल्पसाराणांस्तेयंकृत्वा न्यवंशमतः चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंनियमादात्मशुद्धये ॥ २ ॥ धान्यान्नधनचौर्यंचकृत्वाकामाद्विजित्तमः सजातीयगृहादेवकृच्छ्राद्धेनविशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ भक्ष्यभोज्यापहरणयानशय्यासनस्यच पुष्पमूलफलानांचपंचगव्यंविशोधनम् ॥ ४ ॥

प्रकार प्रायश्चित्तहै ॥ अबकूर्मपुराणमें मनुष्यादियोंके हरणका प्रायश्चित्त कहितेहैं मनुष्ययोहैं तिनको चुरायकर्के और स्त्रियोंको मार करके और वाउलिआं और सूहे और जलाशय तडागादि इनको तोडकर्के मनुष्य चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोताहै १ और दूसरेके घरते थोडेमूल्यवाले द्रव्ययोहैं पात्रादि तिनकोचुरायकर्के नियमते आपणी शुद्धिकेताई सांतपनकृच्छ्रकोकरे २ और ब्राह्मण कामनाते धान्य अन्नधनइनकी चोरी ब्राह्मणकेघरतेकर्के आधाप्राजापत्य व्रतकरणेते शुद्धहोताहै ३ और भक्ष्य भोज्यवाहन शय्याआसन पुष्प मूल फल इनके मध्यमें एकके चुपणमें भी पंचगव्य विशोधनहै अर्थात् इनकेमध्यमें एककोभी चुरायकर्के पंचगव्यपानकरे ४

१९२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

तृण और काष्ठवृक्ष शुष्कान्नगुड वस्त्र चर्म मांस एह योहैं इनके मध्यमें एककेभी चुराणमें तीनरात्रि निराहार व्रतकरे ॥ ५॥ औरमाण्डिआ मोती मुंगा ताम्र रजत लोहाकांभ्य पाषाण इनके मध्यमें एककोभी चुरायकरके वारांदिन अन्नके कणोंको वाहरतें चुणकर भोजन करे ॥ ६॥ कर्पास और कीडियोंकी योनियोहैं पट और दिशफ योहैं गवादि और एकशफ योहैं अश्वदि और पक्षी और गंधकया सुगंधवस्तु और औषध इनके मध्यमें एककेभी चुराणमें और रस्सी के चुराणमें तीनरात्रि दूधको पीवे ७॥ विष्णुधर्मेत्तरमें भीड़सीप्रकारहै ॥ और तहांहि अस्पृश्यके स्पर्शमें प्रायश्चित्तहै बंधनकरके मृतदोगया योप्रेत उसको कदाचित् ब्राह्मणस्पर्श करे तब उस

तृणकाष्ठद्रुमाणांतुशुष्कान्नस्यगुडस्यच चैलचर्मामिपाणांचत्रिरात्रस्याद भोजनम् ॥ ५॥ मणिमुक्ताप्रवालांतांताम्रस्यरजतस्यच अयःकांस्योपला नांचद्वादशाहंकणाशनम् ६ कर्पासकीटयोनीनांदिशफैकशफस्यच पक्षिगंधापधीनांचरज्ज्वाश्चैवअहंपय इति ॥ ७॥ अत्रसर्वत्रपष्ठ्यन्तानांचौर्ध्वकृत्वेत्यनेनान्वयः विष्णुधर्मेत्तरेप्येवम् तत्रैवास्पृश्यस्पर्शनेप्रा० उद्वंधमृतकंप्रतयः स्पृशेद्ब्राह्मणः कचित् तस्यशुद्धिविजानीयात्तत्तकृच्छ्रेणनित्यशः ॥ १॥ आत्मानंघातयेद्यस्तुरज्ज्वादिभिरुपक्रमैः तस्यप्रेतक्रियांकृत्वातत्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति ॥ २॥ इंद्रियेषुप्रविष्टस्यादमेध्यंयस्यकस्यचित् अहोरात्रेपि तः स्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ३ इंद्रियेषुनेत्रादिषु । एतद्विजातयःशोध्याव्रतैराविष्कृतैःनसः अनाविष्कृतपापाश्चमंत्रैर्होमैश्चशोधयेत् ॥ ४॥ आविष्कृतैःनसःप्रकाशितपापाद्विजातयःशुद्रवर्जिताएभिर्व्रतैःपूर्वोक्तैःशोध्याइत्यर्थः

ब्राह्मणकी शुद्धि नित्यप्रति तब कच्छ व्रतकरके जाने ॥ १॥ और योमनुष्य रस्सी थी आदिलेक र योमायन हैं उनोंकरके आपण को मारेउसकी प्रेतक्रिया को करके क्रियाके करणे वाला तब कच्छव्रत करके शुद्ध होताहै ॥ २॥ और जिसाकिसे मनुष्यके इंद्रिय योहैं नेत्रादि उनमें प्रवेश कि पापा अमेध्य विष्टादि अर्थात् जिसके नेत्रों में विष्टापड जावे सोमनुष्य दिनरात्र निराहार व्रतकर और स्नानकरके पंचगव्य पान करे तब शुद्धहोताहै ॥ ३॥ एहयो द्विजातिहैं वा ० क्ष ० वै ० शुद्रांकरके रहित और प्रकट करहैं पापजिनोंने सोपूर्वोक्त व्रतों करके शोधने योग्यहैं अर्थात् शुद्ध करणयोग्यहैं ॥ औरनहिं प्रकट किये पापजिनोंने तिनको मंत्रों करके और हवनों करकेशुद्ध करे ४

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १९३

विष्णु धर्मोत्तरे किहा कदाचित् रजस्वला स्त्री जूटे मनुष्यके साथ स्पर्श करे तब जितना पर्यन्त शुद्धि को नहीं प्राप्त होती इतना पर्यन्त भोजन को नहीं करे ॥ १ ॥ चांडाल और श्वपच योही कुत्ते को खाने वाला और पूय क्या पाक और मूतिका स्त्री और शव और शव को स्पर्श करने वाला और कुत्ता इनको स्पर्श करे स्त्री योही सो सद्यः स्नान करके शुद्ध होती है ॥ नारी एह योपदहे इसका पूर्व श्लोक में अन्वय जानना ॥ २ ॥ और ब्राह्मण मस्त्रेह अस्थि योही गिल्ली हड्डी तिसको स्पर्श करे स्नान करे शुद्ध होता है और निःस्त्रेह अस्थि योही सुकी हड्डी उस को स्पर्श करे आचमन करे और गौ के देह में स्पर्श करे अथवा सूर्य को देखे तब शुद्ध होता है ३ ॥ गलीका यो चिकड और जल इस करे नाभिके हेठ स्पर्श भयायो पुरुष सो मूतिका

विष्णुधर्मोत्तरे उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टा कदाचित् स्त्री रजस्वला या वन्न शुद्धिमाप्नोति नाश्नीयात्तावदेव तु ॥ १ ॥ चांडालश्च पचौ स्पृष्टवा तथा पूयं च मूतिकां शवं तत्स्पृष्टेन श्वानं सद्यः स्नानेन शुद्ध्यति २ ॥ नारी स्पृष्टवा स्थि सस्त्रेहं स्नात्वा विप्रो विशुद्ध्यति आचम्यैव तु निःस्त्रेहं गामालभ्यार्कमोक्षयवा ॥ ३ ॥ अत्र नारीति पूर्वान्वयि । रथ्या कर्दमतो येन नाभिस्पृष्टो भवेदधः मृत्तयैः शोधयेदंगं ततः शुद्धिमवाप्नुयात् ४ ॥ नापुरुषः अधः रथ्या कर्दमतो येन नाभिस्पृष्टो भवेदिति संवधः वांति विविक्तः स्नात्वा तु घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति क्षुरकर्म ततः कृत्वा स्नानेनैव विशुद्ध्यतीति ५ ॥ अन्यच्च ब्रह्मचारी शुनादृष्टस्य हंसायं पयः पिवेत् गृहस्थो वा त्रिगत्रंतु एकाहं त्वाग्निहोत्रवान् ॥ ६ ॥ नाभेरुर्ध्वं तु दृष्टस्य तदेव द्विगुणं भवेत् वा वहोश्च त्रिगुणं ज्ञेयं मूर्धनि स्याच्चतुर्गुणम् ॥ ७ ॥

और जलों करे अंग को धोय करे शुद्धि को प्राप्त होता है ॥ ४ ॥ और यो मनुष्य वांत क्या उलटी करे भोजन कगहुआ मुख के हागत्यागे सो स्नान करे और घृत को प्राशन करे शुद्ध होता है और क्षुर कर्म योही मुंडन तिसको करे स्नान करे शुद्ध होता है ॥ ५ ॥ विष्णु धर्मोत्तरे किहा है ब्रह्मचारी को जब कुत्ता काटे तब तीन दिन सायं काल में दूध पीवे और गृहस्थों को कुत्ता काटे तब त्रिगत्र व्रत को करे अर्थात् त्रिगत्र दूध पीवे और अग्निहोत्री को कुत्ता काटे तब एक दिन व्रत को करे ॥ ६ ॥ और नाभिके ऊपर यो कदाचित् कुत्ता काटे तब दूणा व्रत करे और यो बाहुओं में कुत्ता काटे तब तीन गुणा व्रत करे और यो शिर में कुत्ता काटे तब चार गुणा व्रत करे ॥ ७ ॥

१९४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

अन्यदिति अव और कहितेहैं ब्रह्मचारीयो द्विज सो कामनातें विना स्वप्नमें वीर्यकों त्यागे अर्थात् खलित वीर्य होजावे तब स्नानकरे और सूर्यकों पूजे और पुनर्मा एह यो मंत्रहै इस का तीन बार जपकरे ॥ ८ ॥ और अग्निहोत्रमें अपवित्रहोया अग्नि जिसका अर्थात् केशकीटा दियोहैं तिनोकें दूषितभयाअग्नि जिसका सोब्राह्मणआपनी इच्छाकरेहि १ महीना चान्द्रायण व्रतकरे किसीके उपदेशतें विना और वीरासन क्या खडोते रहणा सो उसकों किहा ॥ ९ ॥ अवकीर्णी व्रत विष्णु धर्म्मोत्तरमें किहा अवकीर्णी यो ब्रह्मचारी यो आप स्त्री संगकों करे तब ओहो ब्रह्मचारी आपनी शुद्धिके निमित्तचान्द्रायण व्रतकरे ॥ और कहतेहैं॥अवकीर्णी यो

अन्यच्च स्वप्नेसिक्ताब्रह्मचारीद्विजःशुक्रमकामतःस्नात्वार्कमर्चयित्वात्रिःपुन
र्मामित्यृचंजपेत् ॥ ८ ॥ अग्निहोत्रेऽपवित्राग्निर्ब्राह्मणःकामकारतः चान्द्राय
णंचरेन्मासंवीरमध्यासनंहितम्॥९॥कामकारतःस्वच्छैवचान्द्रायणंकुर्व्या
न्नतृकस्यचिदुपदेशेनेत्यर्थः॥ अपवित्रःकेशकीटादिदूषितोऽग्निर्यस्य॥अपवि
त्राणिअस्पृश्यस्पर्शनादीनिप्रकीर्णकसंज्ञानीतिकंचित् तद्वानग्निर्यस्येति॥
अवकीर्णिव्रतमुक्तं विष्णुधर्म्मोत्तरे अवकीर्णीविशुद्ध्यर्थंचान्द्रायणमथा
पिवा अवकीर्णीतृकाणनगर्दभेनचतुष्पथे ॥ १ ॥ पाकयज्ञविधानेनयजेत
निर्ऋतिनिशि हुत्वाग्नौविधिवद्देमानिर्ऋतेस्तुसमित्यृचम् ॥२॥ वातेन्द्रगु
रुवह्नीनांजुहुयात्सर्पिपाहुतीःकामतोरेतसरस्सेकेव्रतस्थस्यद्विजन्मनःआक्र
मंचव्रतस्यादुर्ध्मज्ञाःसत्यवादिनः ।३।व्रतस्याक्रमंच्रतांतरानुष्ठानंतत्प्रका
रमाहएतस्मिन्नित्यादिना एतस्मिन्नेवसिद्धान्तेवासित्वागर्दभाजिनम् सप्ता
गारंचरन्भैक्षंस्वकर्मपरिवेदयन् ॥ ४

ब्रह्मचारी सो काणे खोते कर्कें चुरस्तेमें पाकयज्ञ विधान कर्कें रात्रिमें निर्ऋतिकों पूजे ॥ १ ॥
और अग्निमें विधिवत् होमकों करे निर्ऋतेस्तुमं इस ऋचा कर्कें ॥ २ ॥ पवन उर इंद्र और
गुरु और अग्नि इनकों घृतकर्कें आहुति देवे और ब्रह्म चर्य्य व्रतमें स्थित यो ब्राह्मण तिसकों
कामनातें रेतस्सेकमें धर्म्मके जानणे वालें और सत्यबोलने वाले व्रतका आक्रम कहतेहैं ॥३॥
आक्रमक्या और व्रत करणा । तिसका प्रकार एतस्मिन्नित्यादि कर्कें कहितेहैं ॥ अवकीर्णीका
जब सिद्धांत होवे तब खोते का चर्म ऊपर लेकें सात घरों की भिक्षा करे और आपणा क
र्म संपूर्णों सुनावे ॥ ४ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० १९५

तिनोंतें प्राप्तभया योभिक्षाका अन्न तिस कर्के एकवार भोजन करे और प्रातः मध्यान्ह सायं का ल स्नान करे इसप्रकार करणे कर्के सो अवकीर्णी वर्ष कर्के शुद्धहोताहै ५ ॥ अयाज्य याजनका प्रायश्चित्त कूर्म पुराणमे किहा ब्रात्यानामिति यज्ञोपवीत संस्कारहीनयोहैं जिससमयमें यज्ञोपवीत संस्कार करणाकिहा उस समय नहिं भया संस्कार जिनकासोयोहैं ब्रात्य तिनकों यज्ञकरायकर्के और हीनवर्ण योहैंतिनका अंत्यकर्म योहै अंत्येष्टि तिसकों कर्के और उत्कट यो अभिचार अथाम् किसेके मारणेका यत्न तिसकोंकर्के तीन रुच्छों कर्के शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ और यो ब्राह्मणादि कर्के मतहोयेहैं उनकियां योदाहादिकाक्रियाहैं उनकों कर्के गोमूत्र और यावक इसकों भोजन करे और प्राजापत्य कर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और यो मनुष्य तैलाभ्यंग कर्के कदाचित् मू

तेभ्योलब्धेनभैक्ष्येणवर्तयन्नेककालिकम् उपस्पृशंस्त्रिपवणमब्देनसविशुद्ध्य ति५सोऽवकीर्णीत्यर्थः । अयाज्ययाजने प्रायश्चित्तमुक्तं कूर्मपुराणे ब्रात्या नांयाजनंकृत्वापरेषामंत्यकर्मच अभिचारमहीनंचत्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति १ ब्राह्मणादिहतानांतुकृत्वादाहादिकाःक्रियाःगोमूत्रयावकाहारःप्राजापत्येन शुद्ध्यति ॥ २ ॥ तैलाभ्यक्तोथवाकुर्व्याद्यदिमूत्रपूरीपके अहोरात्रेणशुद्ध्ये तश्मश्रुकर्मचमैथुनम् ॥ ३ ॥ एकाहेनविवाहाग्निपरिहार्यद्विजोत्तमः त्रिरात्रे णविशुद्ध्येतत्रिरात्रात्पडहंपुनः ॥ ४ ॥ दशाहंद्वादशाहंवापरिहार्यप्रमाद तः कृच्छ्रचान्द्रायणंकुर्व्यात्तत्पापस्यापनुत्तये ॥ ५ ॥ पतिताद्द्रव्यमादायत दुत्सर्गेणशुद्ध्यति चरेत्सांतपनंकृच्छ्रमित्याहभगवान्प्रभुः ॥ ६ ॥ अनाश कान्निवृत्तस्तुप्रब्रज्यावसितस्तथा चरेत्त्रीण्यतिकृच्छ्राणित्रीणिचान्द्रायणा नितु ॥ ७ ॥

३ और विष्टा त्यागे और श्मश्रु कर्म और स्त्रीसंगकों करे तब अहारात्र क्या दिनरात्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और यो ब्राह्मण एक दिन विवाहके अग्निकों त्यागे तब तीनरात्रिकर्के शुद्धहोताहै और तीनरात्रि विवाहकी अग्निकों त्यागे सोपडह क्या छे दिन कर्के शुद्ध होताहै ४ ॥ और जो ब्राह्मण प्रमाद कर्के दश दिन वा वारांदिन विवाहाग्निकों त्याग सो तिस पापके दूर करणे वास्ते कृच्छ्र चान्द्रायण व्रत करे अर्थात् चान्द्रायणव्रतकरे ५ ॥ और यो पतितने धन लेताहै सो तिस धनकों त्याग कर्के सांतपन कृच्छ्र करे एह भगवान् प्रभु कहंतहैं ॥ ६ ॥ और जिस मनुष्यने निरशन व्रत धाराहै और जिसने सन्न्यास धाराहै और फेर तिनकों त्याग दिआ सो मनुष्य तीन अति कृच्छ्र व्रत करे और तीन चान्द्रायण व्रत करे ॥ ७ ॥

१९६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा

और फेर जातकर्मोंदिसंस्कारों कर्के संस्कृतयोहैं द्विजसो शुद्धहोतेहैं फेर हेधर्मवर्धनाःतिन काधन अच्छा प्रकार ग्रहणकरे ओहो शुद्धहिहैं ८ अगम्यामनका प्रायश्चित्त विष्णु धर्मोत्तरमे कि हा अगम्या यो स्त्रियाहैं जिनमेसंग नहिंकरणा योकदाचित् उनों स्त्रियोमें संगहोजावे तवएह आगे कथनकरणेयोव्रतहैं तिनोंव्रतोंकर्के तिसपापकों दूरकरे तिनको कहतेहैं गुर्विति । आप ने गोत्रते उत्पन्नहोईआं योस्त्रियां तिनोंमें वीर्यपात कर्के गुरुतल्प योव्रतहै सोकरे सो गुरुतल्प व्रत महापातक प्रकरणमेंहै ॥१॥और मित्रकी स्त्री पुत्रकी स्त्री अविवाहिता स्त्री अमृत्यजा योस्त्रियाहैं चर्मकारी थी आदिलेकर और पिताकी भगिनीकीकन्या और आपनी भगिनी और माताकी भगिनीकी कन्या ॥ २ ॥ एहयो ब्रानहैंइनमें भार्याके निमित्त बुद्धिमान् संगको नहिंकरे यो कदाचित् संगकरे तव चांद्रायण व्रतकरे ३ और माताके भाई योहैं तिनकी संततिमें भी गमन कर्के चांद्रायण व्रतकों करे॥इसीको कहितेहैं सोयोमातुलहैं॥ज्ञातित्व कर्के तुल्यहैं तिनमेंविवा

पुनश्चजातकर्मोंदिसंस्कारैःसंस्कृताद्विजाः शुष्ययुस्तद्वनंसम्यक्चरेयुर्धर्मवर्धनाः ८ अगम्यागमने प्रायश्चित्तमुक्तं विष्णुधर्मोत्तरे॥अगम्यागमनीयंतुव्रतैरेभिरपानुदेत् गुरुतल्पव्रतंकुर्याद्रितस्सिक्कास्वयोनिपु॥१॥सूर्युः पुत्रस्यचस्त्रीषुकुमारीष्वंत्यजासुच पैतृष्वस्त्रेयींभगिनींस्वस्त्रीयांमातुरेवच२ एतास्तिस्त्रस्तुभार्याथेनोपगच्छेत्तुबुद्धिमान् ॥ ३ ॥ मातुश्चभ्रातरस्तेपांगत्वाचान्द्रायणचरेत्॥येमातृभ्रातरोमातृलास्तेपांसंततिगत्वेत्यर्थः ॥ एतदेव विशदीकरोति ज्ञांतयेनानुमेयास्तपतित्युपयन्नधः॥४॥ तेमातृलाज्ञांतयेन ज्ञातित्वेनैवानुमेयाज्ञातिसदृशाज्ञेयाइत्यर्थः तत्रोपयन् विवाहंकुर्वन्पुरुषोऽधःपततिनरकंप्राप्नोतीत्यर्थः । अमानुषीषुपुरुषउदकघायामयोनिपु रेतःसिक्काजलेचैवकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ ५ ॥ मैथुनंतुसमासेव्यपुंसियोपितिवाद्विजः गोयानेप्सुर्दिवाचैवमवासाः स्नानमाचरेत् ॥ ६ ॥ चंडालांत्यस्त्रियोगत्वाभुक्वाचप्रतिगृह्यच पतत्यज्ञानतोविप्रोज्ञानात्साम्यंतुगच्छति७

ह कर्के पुरुष नरककों प्राप्तहोताहै ॥ ४ और पशुयोनि योहैं रजम्वलायोहैं और अयोनियो हैं मुष्टिप्रहार करणा इनोंमें वीर्यत्याग कर्के और जलमें वीर्य त्याग कर्के सांतपन कृच्छ्रकों पुरुष करे ॥ ५ ॥ और द्विज योहै सोपुरुषमें अथवा स्त्रीमें दिनमें मैथुनकों कर्के और गोया नमें इच्छावाला समेतवस्त्रों कर्के स्नानकरे तवशुद्धहोताहै ॥ ६ चंडालऔर अंत्य क्या रजका दि इनकी स्त्रियोमें संग कर्के और भोजन कर्के और इनोंते दानलेकर ब्राह्मण अज्ञान कर्के वर्तेतवपतितहोताहै और योजानकर्के इनके साथवर्ते सोइनकी तुल्यता कों प्राप्तहोताहै ॥ ७

श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥ १९७

और व्यभिचारिणी स्त्रीकों उसका स्वामी एकघरमें रोकदेवे और योपुरुषकों पर स्त्रीसंगमें व्रत किहा है सो व्रत तिस स्त्रीकों करावे ८ ॥ सो जेकर फेर सजातीयके साथ भोगकरणसे दोषकों प्राप्त होवे तो कृच्छ्रचांद्रायण व्रतके करणसे तिसकी शुद्धि होता है इसमें यत् एह पद कृच्छ्र चान्द्रायणादिनामपर है कृच्छ्रचान्द्रायणका योप्रमाण तिसपर नहि है स्त्रीणामर्द्ध प्रदातव्य इत्यादि कर्के प्रमाणमें तिसको थोड़ा विधानकरणसे ९ ॥ यदिति द्विज यो है ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एकरात्र शूद्रोंके सेवनते जिस पापकों कर्ता है तिस पापकों भिक्षाका अन्न भोजन कर्ता हुआ और नित्यप्रति जपकों कर्ता हुआ तीनवर्षों कर्के दूर कर्ता है एह पापोंके करणवाले योचारवर्ण हैं तिनकी निष्कृति क्या पापदूरकरणका उपाय कहा है १० ॥ कूर्मपुराणमें भी किहा है यो ब्राह्मण अपनी इच्छापूर्वक कन्यामें संगकरे अथवा भगिनीमें संगकरे अथवा

विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्तानिरुंध्यादेकवेशमनि यत्पुंसः परदारेपुतञ्चैनां कारयेद्भतम्
८॥ साचेत्पुनः प्रदुष्येत सदृशेनोपयंत्रिता कृच्छ्रचांद्रायणैश्चैव तदस्याः पावनं
स्मृतम् ९ अत्र यादिति कृच्छ्रचान्द्रायणादिनामपरं नतन्मानपरम् ॥ स्त्रीणामर्द्धप्रदातव्यमित्यादिनामानेतदल्पत्वाविधानात् ॥ यत्करोत्येकरात्रेण वृषलीसे
वनाद्द्विजः तद्वैक्षभुर्गजपन्नित्यंत्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति एषा पापकृता मुक्ता चतु
र्णामपि निष्कृतिः १० कूर्मपुराणेपि गत्वा दुहितरं विप्रः स्वसारं वा स्नुषाम
पि प्रविश्य ज्वलनदीं क्षमति पूर्वमिति स्थितिः १ मातुः स्वसां मातुलानां तथै
व च पितृस्वसां भागिनेर्यासमारुह्य कुर्यात्कृच्छ्रातिकृच्छ्रकौ ॥ २ ॥ चान्द्राय
णं वा कुर्वीत तस्य पापस्य शान्तये ध्यायन् देवं जगद्यानि मनादिनिधनं परम् ३
भ्रातृभार्यासमारुह्य कुर्यात्तत्पापशान्तये चान्द्रायणानि चत्वारि पंच वा सुसमा
हितः ४ पैतृस्वमेर्यां गत्वा तु स्वमेर्यां मातुरेव च मातुलस्य सुतां वापि गत्वा चा
न्द्रायणं चरेत् ॥ ५ ॥

स्नुषामें संगकरे सो बलता यो अग्निनिममें प्रवेश करे अर्थात् बलते अग्निमें दग्ध हो जावे तब पाप दूर होता है १ माताकी भगिनी और मामेकी स्त्री और पिताकी भगिनी और भगिनीकी कन्या इनमें संगकर्के कृच्छ्रातिकृच्छ्र यो व्रत है तिनकों करे २ अथवा तिस पापकी शान्तिके वास्तवचांद्रायण व्रतकों करे जगत्के कारण यो परमेश्वर अनादिनिधन क्या नहि है जन्म और मरण जिनका तिनकों ध्यान कर्ता हुआ प्रायश्चित्तकों करे ॥ ३ ॥ और भाईकी स्त्रीमें संगकर्के तिस पापकी शान्तिके निमित्त चार चान्द्रायण अथवा पांच चांद्रायण व्रत करे ४ पिताकी भगिनीकी कन्या और माताकी भगिनीकी कन्या और मामेकी कन्या इनमें संगकर्के चांद्रायण व्रत करे ॥ ५ ॥

१९८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥

मित्रकीस्त्री के साथ संग कर्के और सालीके साथ संगकर्के दिन रात्र निराहार व्रत कर्के तप्त कृच्छ्र व्रत कों करे ॥ ६ ॥ और ब्राह्मण रजस्वला स्त्रीमें संग करे तब तीन रात्र कर्के शुद्ध हो ताहें और चांडालीके संगमें तीनतप्त कृच्छ्र व्रत प्रायश्चित्त कहितेहैं ॥ ७ ॥ महेति एहयोहै चांडाली गमनके करणे वाला इसकी महासांतपन व्रत कर्के शुद्धि होतीहै अन्यथा पूर्वोक्त व्रतों विना इसकी निष्कृति नहिहै ७ माताके गोत्रकी योस्त्रीहै तिसके साथसंग कर्के और स मान प्रवरा योस्त्रीहै आपने वरावर प्रवर जिसका तिसके साथ संग कर्के रोकआहै चित्त जिसने और साभधान होय कर्के सोमनुष्य चान्द्रायण कर्के शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥ ब्राह्मण इति ब्राह्मणयोहै सो ब्राह्मणोंमें संग कर्के एक कृच्छ्र क्या एक प्राजापत्य व्रतकों करे और यो कन्या के साथ संग करे सो चान्द्रायण व्रतकों करे इसमें एह अभिप्रायहै कि एह प्रायश्चित्त कन्या दूषणकाहै सो दूषण अंगुल्यादि कर्के योनिका विदारण करण रूपहै और संगका प्रा

सखिभार्यासमारुह्यगत्वाश्यालीतथैवच श्रहंरात्रोपितोभूत्वातप्तकृच्छ्रं समाचरेत् ६ उदकयागमनेविप्रस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति चांडालीगमनेचैवतप्तकृच्छ्रत्रयंविदुः ७ महासांतपनेनास्यनान्यथानिष्कृतिः स्मृता मातृगोत्रा समासाद्यसमानप्रवरांतथा चान्द्रायणेनशुद्ध्येतप्रयतात्मासमाहितः ८ ब्राह्मणोब्राह्मणीगत्वाकृच्छ्रमेकं समाचरेत् कन्यकादूषयित्वातुचरेच्चान्द्रायणं व्रतम् ९ अमानुषीपुपुरुषउदकयायामयोनिषु रेतस्सिक्ताजलेचैवकृच्छ्रं सांतपनेचरेत् १० वंधकीगमनेविप्रस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति गविमैथुनमासेव्यचरेच्चान्द्रायणं व्रतम् ११ अजावमैथुनंकृत्वाप्राजापत्यं चरेद्द्विजः पतितांच स्त्रियंगत्वात्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति १२ पुष्कसीगमनेचैवकृच्छ्रंचान्द्रायणं चरेत् १३ नटीशैलूपिकांचैवरजकीवेणुजीविनीम् गत्वाचान्द्रायणंकुर्यात् तथाचर्मोपजीविनीम् १४

याश्चित्त पीछे आगयाहै ॥ ९ ॥ अमेति अमानुषिआ योहैं पशुयोनि कियों स्त्रियों और रजस्वला योस्त्रियाहैं और अयोनियाहैं मुष्टि प्रहारादि तिनोंमें वीर्य त्याग कर्के और जलमें वीर्य त्याग कर्के मनुष्य सांतपन कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १० ॥ वंधकीति हेविप्रा एह संबोधनहै व्यभिचारिणी स्त्रीमें संग कर्के तीन रात्रि कर्के शुद्ध होताहै और गोमें संगको कर्के मनुष्य चान्द्रायण व्रतकों करे ॥ ११ ॥ बकरी और भेड़ इनमें संग कर्के द्विज योहैं ब्रा० क्ष० वै० सो प्राजापत्य व्रतकों करे और पतिता योस्त्रीहै तिसमें संग कर्के तीन यो कृच्छ्रहै अर्थात् तीन प्राजापत्य व्रतों कर्के शुद्ध होताहै १२ और पुष्कसी यो स्त्रीहै तिसमें संग कर्के चान्द्रायण व्रतकों करे १३ और नटीकी योस्त्रीहै और शैलूपीकी यो स्त्रीहै और रजकी और वेणुजीविनी और चर्मकारी इनमें संग कर्के चान्द्रायण व्रतकों करे ॥ १४ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ १९९

श्रीरं यो कदाचित् कामकर्कमोहित भया ब्रह्मचारी स्त्रीसंगकरे तव आर्द्रश्रया गिह्यायो हरण काखलडातिसकों देहमें धारकर्क सातघरांतें भिक्षामांगकर्क भोजनकरे ॥ १५॥ और तीनकाल स्नानकरे और आपणे पापकों आपणोवाणी कर्क कहे तब इस प्रकार वर्त्तनेकर एकवर्ष कर्क सो ब्रह्मचारी तिसपापतें रहित होताहै॥१६॥अथवाछेमहीने ब्रह्महत्याकेव्रतकों करे सो अवकी र्णी रोकआहै मनजिसने सोब्राह्मणोंके अनुसार वर्त्तता उसपापतें रहित होताहै॥ १७ ॥ सप्तेति सोयो ब्रह्मचारी सातरात्रि भिक्षामांग कर्क अग्निकेपूजनकोंकरे निश्चितार्थ कों कहतेहां कि ब्रह्म चारी वीर्यकेत्यागमें इसप्रायश्चित्तकोंकरे॥१८॥और ओंकारहै पूर्व जिनकेअसिआयोमहाव्याह आहैं महाव्याहतिमंत्रातिनोकर्क हवनकरे और वर्ष पर्यन्त क्षुधाकर्क दीन होगयाहै देह जिस का सोमनुष्यपवित्रहोयकर्क रात्रिसमयमें भिक्षाके अन्नकोंकर्त्ताहुआ और क्रोध कर्क रहितहू

ब्रह्मचारीस्त्रियंगच्छेत्कथंचित्काममोहितः सप्तागारंचरेद्वैक्ष्यंसंवसित्वार्द्र माजिनम् १५ उपरुष्टशेत्त्रिपवणंस्वपापंपरिकीर्तयन् संवत्सरेणचैकेनत स्मात्पापात्प्रमुच्यते १६ ब्रह्महत्याव्रतंवापिपण्मासानाचोद्यती मुच्यते ह्यवकीर्णीतुब्राह्मणानुमतेस्थितः १७ सप्तरात्रंसकृत्वातुभैक्ष्यचर्याग्निपूज नम् रेतसश्चसमुत्सर्गेप्रायश्चित्तं समापयेत् १८ ओंकारपूर्विकाभिस्तुमहा व्याहतिभिर्हुनत् संवत्सरंतुक्षुत्क्षामोनक्तंभिक्षाशनःशुचिः १९ सावित्रींच जपेच्चैवनित्यंक्रोधविवर्जितः नदीतीरेषुतीर्थेषुतस्मात्पापाद्विमुच्यते २० अत्रावशिष्टानि आत्माविक्रयसुतत्यागपरिवेतृत्ववार्द्ध्यव्रतलोपनादीन्यु पपातकानि पूर्वोक्तोपपातकसामान्यप्रायश्चित्तेनापनेयानि इत्युपपातक प्रायश्चित्तानि* विष्णुधर्मोत्तरे पंचमहापातककथनम् ब्रह्महत्यासुरापानं स्तेयंगुर्वगनागमःमहातिपातकान्याहुः संयोगश्चैवतैःसह १ ॥अनृतंचस मुत्कपैराजगामिचपैशुनम् गुरोश्चालीकनिर्वधःसमानिब्रह्महत्यया २ ब्रह्मज्ञवेदनिन्दाचकूटसाक्ष्यसुहृद्वधः गार्हितानाद्ययोजगिधस्सुरापानसमा निषट् ३ निक्षेपस्यापहरणंनराश्वरजतस्यच भूमिवज्रमणीनांचरुक्मस्ते यसमंस्मृतम् ४ रेतःसेकःस्वयोर्नापुकुमारीप्वंत्यजासुच सस्युःपुत्रस्यच स्त्रीपुगुरुतल्पसमंविदुः ५ विवृतार्मिदंमहापातकादिप्रकरणे ॥

आ नित्यंप्रति गायत्री मंत्रके जपकोंकरे१९॥नदिओंके कनारयोंमें और तीर्थोंमें जपकेकरणेतें तिसपापतेंरहितहोताहै२० इसउपपातक प्रायश्चित्तोंके प्रसंगमें अवशिष्टयो अत्मविक्रयःसुतत्याग परिवेतृत्व वार्द्ध्यव्रतलोपादियोउपपातकहैं सोपूर्वकिहायो उपपातकसामान्यप्रायश्चित्ततिसकर्क जानणयोग्यहैं इति॥एहउपपातकोंके प्रायश्चित्तकहेहैं ॥ अवविष्णुधर्मोत्तरमें महापातककहि तेहैं ब्रह्महत्येति ब्रह्महत्या १ सुरापान२स्तेयकया सोलां १६ मासेसेजादेस्वर्णकीचोरी३औरगुरो कीस्त्रीमेंगमन ४ इनकोंमहापातककहिहेतेहैं और एहयोहैं महापातकोंके करणेवाले तिनके साथ संयोगकेकरणेवालायोहैं सोवीमनुष्यमहामहापातकी होताहै५अनृतमिति एहयोचारश्लोकहैं इन

२०० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ० भा० ॥

अवब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त कहितेहैं ब्रह्महत्या करणवाला मनुष्य वारांवर्ष वनमेंकुटिश्रां वना यककें वासकरे और ब्रह्महत्याकी शुद्धिके निमित्त शवका योंशिरहैतिसकी ध्वज वनायककें भिक्षाका योअन्नहै तिसककें वर्तेवशुद्धहोताहै ॥१॥ अथवाशस्त्र धारीयोहैंतिनका निसानांहो वेविद्वानोंके कहेतेवाआपणी इच्छाककें अथवावलता योअग्निहै प्रज्वालित तिसमें तीनवारनी मांशिर ककें आपने आपकों अग्निमें दग्धकरे॥२॥यजेतेति ॥ अथवा ब्रह्महत्याके दूरकरणकेनि मित्त अश्वमेध यज्ञककें पूजे अथवा स्वर्जित अथवा गोसव अथवा अभिजित् अथवा विश्व जित् वा त्रिवृत् वाअग्निष्टुत् एह योजहैं इनके मध्यमें एकयज्ञकों करे॥ ३ ॥अथवा ऋक्य जुःसाम एह योवेदहैं इनके मध्यमें एकवेदकापाठकरे अथवाशत १०० योजन तीर्थनिमित्त यात्राकरे ब्रह्महत्याके दूरकरणेनिमित्त प्रमाणका भोजन कर्त्ताहुआ और जीतिश्राहैं इन्द्रियां जिसनैं इसप्रकार करे॥४॥अथवा वेदोंकेजाणनेवाला योब्राह्मण तिसकेताई आपनासर्वस्व

तत्रैवब्रह्महप्रायश्चित्तम् ब्रह्महाद्वादशवृद्धानिकुटिकृत्वावनेवसेत् भिक्षेताथैवि शुद्धयर्थकृत्वाशवशिरोध्वजम् १ लक्ष्यंशस्त्रभृतांवास्याद्विदुपामिच्छयात्मनः प्रास्येदात्मानमग्नौवासामिद्वेत्रिरवाक्शिराः २ यजेतवाश्वमेधेनस्वर्जिता गोसवेनवा अभिजिद्विश्वजिद्भ्यांवात्रिवृताग्निष्टुतापिवा ३ जपन्वान्यत मंवेदंयोजनानांशतंब्रजेत् ब्रह्महत्यापनुत्त्यर्थमित्तभुङ्नियतेन्द्रियः ४ सर्वस्वं वावेदविदेब्राह्मणायोपपादयेत् धनंवाजीवनायालगृहेवासपरिच्छदम् ५ ब्र तैरेतैरपाहंतेमहापातकिनोद्विज कूर्मपुराणमहापातककथनम् ब्रह्महामय पःस्तेनोगुरुतल्पगएवच महापातकिनस्त्वेतेयश्चैतैः सहसंवसेत् १ संव त्सरंतुपतितैः संसर्गकुरुतेतुयः ॥ यानशय्यासनैर्नित्यंजानन्वैपतितोभवेत् २ याजनंयोनिसंबंधंतथैवाध्यापनंद्विजः संवत्सरेणपतितिसहाध्यापनमेव

च ३ प्रायश्चित्तमपि तत्रैव

दानकरदेवे अथवाबहुतधनजीविका करणे निमित्त दानकरदेवे अथवा संपूर्ण योघर्कीसामग्री उसककें सहित घरकों दानकरदेवे ॥५॥हेब्राह्मण एहजोव्रतकहेहैं इनों ककें महापातकीयोहैंसो पापोंकों दूरकरदेहे॥अवकूर्मपुराणमें योमहापातकोंका कथन सोकहितेहैं॥ब्राह्मणोंके मारणवा ला और सरावक पीणेवाला और चोरीके करणे वाला और गुरोंकी स्त्रीमें संगकरणे वाला एहयो चार महापातकीहै इनके साथ संग करणेवाला क्या वर्त्तने वाला एहपंच महापातकी कहेहैं॥१॥योमनुष्य एहयोपतितहैं इनके साथ वर्षपर्यन्तनित्यंप्रति संसर्ग कर्त्ताहै॥वाहन शय्या आसन इनोंककें जाणतावीहै सोपतितहोताहै॥२॥याजन क्या यज्ञकराणा और योनि संबंधक्या विवाहादि काप्रसंगकरणा और पडाना और इकठेपडणा एहयो पातिकियोंके साथ नित्यंप्रति करे तबएक वर्ष ककें पतितहोताहै॥३॥इनकाप्रायश्चित्त भीकूर्मपुराणमें हिं लिखाहै सोकहितेहैं

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २०१

ब्रह्महेति ब्रह्म हत्याके करणेवाला कुटिआ वनायकर्के वारां १ २ वर्षपर्यन्त वनमें वासकरे । और शव योहै मृतक उसके शिरकी ध्वजा वनायकर्के आपणी शुद्धिके निमित्त भिक्षा के अन्नको भोजनकरे १॥ ब्राह्मणोंके घरयोहै और देवतयोके मंदरयोहै इनोसंपूर्णोंको त्यागकर्के औरघरों मेंभिक्षामांगे भिक्षाकासमय दिखातेहैं जिसवखत धूआंसोई ओमें दूरहोजावे और रसोई ओ मेंअग्निनहिरहे और संपूर्ण जन भोजनकरलैमें उसवखत भिक्षामांगे २॥ और एककाल भिक्षा मांगे आपणा योदोषहै पाप सो संपूर्ण मनुष्योंकोसुनावे ॥ अथवा योभिक्षानहि मांगे सोवनके योमूल वा पत्र वाफल-तिनों कर्के वर्ते अर्थात् तिनकोभोजन करे और धर्ममें स्थितहोवे ३ ॥ और कपाल हाथमें धारकर्के और खट्वांगयोशस्त्र विशेष तिसकों धारकर्के औरब्रह्मचर्य

ब्रह्महाद्वादशाब्दानिकुटीकृत्वावनेवसेत् भैक्ष्येणात्मविशुद्ध्यर्थकृत्वाश्व शिरोध्वजम् १ ब्राह्मणावसथान्सर्वान् देवागारान्विवर्जयेत् विधूमेश नकैर्नित्यं व्यंगारिभुक्तवज्जने २ एककालंचरेद्रैक्ष्यं दोषं विख्यापयन्तृणाम् वन्यमूलफलैर्वापिवर्तयेद्धर्ममाश्रितः ३ कपालपाणिः खट्वांगी ब्रह्मचर्यपरा यणः पूर्णेतुद्वादशे वर्षे ब्रह्महत्यां त्यजति ४ अकामतः कृते पापे प्रायश्चित्त मिदं शुभम् कामतो मरणाच्छुद्धिर्ज्ञेयानान्येन केनचित् ५ कुर्यादनशनं वाथ भृगोः पतनमेव वा ज्वलंतं वा विशेदग्निं जलं वा प्राविशेत्स्वयम् ६ ब्राह्मणार्थं ग वार्थे वा सम्यक् प्राणान्परित्यजेत् ब्रह्महत्यापनोदार्थं मंतरा वा मृतस्य तु ७ ब्राह्मणार्थं प्राणान्परित्यजेत् तदर्थं निवेदयेत् निवेदने मति मृतस्यांतरा

मरणं विनापिशुद्धिरित्यर्थः

व्रतके धारणमें तत्पर योहै सोवारा वर्षोंके पूर्णहोआ ब्रह्म हत्याको दूरकर्ताहै ४ ॥ विनाकामना नें किया योपाप तिसपापके दूरकरणे केनिमित्त एह सुंदर प्रायश्चित्तेहै अर्थात् येष्ट प्रायश्चित्तहै और कामनाते कियायोपाप तिसकी मरणतेंहि शुद्धिहै और किसी उपाय कर्के शुद्धि नहिहै ॥ ५ ॥ अथवाअनशन व्रतयोहै भोजनकुलनहि करणा तिसकोंकरे अथवा गतेमें पडकर्के प्राणों को त्यागे ॥ अथवावलती अग्निमें प्रवेशकर्के प्राणोंको त्यागे ॥ अथवा ब्राह्मणोंके निमित्त वा गौओंके निमित्त अच्छीप्रकारप्राणोंको त्यागे ६ ॥ अथवा ब्राह्मण वागौआंइनके निमित्त आप णों आपके निवेदन करे आंहोआं योप्राण वचजायें तबमरणतें विनाभिशुद्ध होजाताहै ॥ ७॥

२०२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

दीर्घेति अथवा दीर्घरोगीयो ब्राह्मण तिसका रोग दूर करे अथवा दुर्भि क्षयोहै उसमें अन्न दा नकरे इनो कर्केभी ब्रह्महत्याको दूर कर्ताहै ॥ ८ ॥ अथवा अश्वमेध यज्ञको कर्के और यज्ञांत स्नान कर्के द्विज योहै ब्रा- क्ष- वै- सो शुद्ध होताहै । अथवा वेदोंके जाणने वाला यो ब्राह्मण तिसके ताई सर्वस्व दान कर देणे कर शुद्ध होताहै ॥ ९ ॥ अथवा सरस्वती और अरुणा न दीका यो संगमहै लोकमें प्रसिद्ध तिसमें तीन काल स्नान कर्के और तीनरात्रि निराहार व्रत कर्के ब्रह्महत्याके करणे वाला मनुष्य शुद्ध होताहै ॥ १० ॥ अथवा रामेश्वर जीयोहै पुण्य क्या तीर्थ रूप तिनमें जाय कर्के और समुद्रमें स्नान कर्के और ब्रह्मचर्यादि यो धर्महै तिनो कर्के युक्त योहै सो मनुष्य रामेश्वर महादेवजीका दर्शन कर्के ब्रह्महत्याके पापते रहित होता

दीर्घामयाविनविप्रकृत्वानामयमेवतु दत्वाचात्रंसुदुर्भिक्षेब्रह्महत्यांव्यपोह ति ८ अश्वमेधावभृथकेस्नात्वावाशुद्ध्यतेद्विजः सर्वस्ववावेदविदेवब्राह्मणा यप्रदायतु ९ सरस्वत्यास्त्वरुणयासंगमेलोकविश्रुते शुद्ध्योत्रिपवणस्ना नात्रिरात्रोपोषितानरः १० गत्वारामेश्वरपुण्यंस्नात्वाचैवमहोदधौ ब्रह्म चर्यादिभिर्युक्तोदृष्ट्वारुद्रंविमुच्यते ११ कपालमोचननामतीर्थदेवस्यशूलि नःस्नात्वाभ्यर्च्यपितृन्भक्त्याब्रह्महत्यांव्यपोहति १२ यत्रदेवादिदेवेन भैरवेणामितौजसा कपालंस्थापितंपूर्वब्रह्मणःपरमेष्ठिनः १३ समभ्यर्च्य महादेवंतत्रभैरवरूपिणम् तर्पयित्वापितृन्स्नात्वामुच्यतेब्रह्महत्याया १४ नारदायपुराणेमहापतिककथनम् ब्रह्महाचसुरापश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः महापाताकिनस्त्वतेतत्संसर्गाचपंचमः १ ॥

है ॥ ११ ॥ और कपाल मोचन नाम यो महादेवजीका तीर्थहै जिस स्थानमें महादेवजीने कपालमोचन किया उस तीर्थमें स्नान कर्के और पितरोंके ताई भक्ति कर्के पूज कर्के ब्रह्महत्या को दूर कर्ताहै ॥ १२ ॥ और जिस जगामें देवाधि देवयोहै भैरवजी अमित तेज जिनका उ नोंने ब्रह्माजीका कपाल स्थापन किया ॥ १३ ॥ उस जगामें भैरवरूपयो महादेव उनको पू ज कर्के और स्नान कर्के और पितरोंको तर्पण कर्के ब्रह्महत्या कर्के रहित होताहै ॥ १४ ॥ अब नारदाय पुराणमें महापातक कहितेहैं ॥ ब्राह्मणके मारणे वाला अर सरावके पीणे वाला अर पूर्वोक्त स्वर्णकी चोरीके करणे वाला और गुरोंकी स्त्रीमें संग करणे वाला एह इतने म हापातकीहैं और इनका यो संसर्ग करणे वाला सो पांचमा ५ महापातकीहै ॥ १ ॥

योमनुष्य एहयो महापातकीहैं चार इनके साथ एकशय्यामें शयन करना और एक आसनमें इकठ्ठे बैठना और इकठ्ठे बैठकरें भोजन करना इस प्रकार वर्ते तिसमनुष्यको संपूर्ण कर्मोंमें पतित जाणे २ ॥ नारदीयपुगणमेंहि ब्राह्मणके मारणका प्रायश्चित्त किहाहै योमनुष्य अज्ञानतैं ब्राह्मणको मारे सोदेहमें चौरवस्त्र धारे और शिरमें जटाधारे और आपमारआयो ब्राह्मण तिसका कपालवीहायमेंधारे ३ ॥ हेमुनिआमें श्रेष्ठयो उसकाकपाल नहिं मिलेतव और कपाल ध्वजाकेदंडमें धारकरें और वनमें विचरे ४ ॥ और तहांवनमें वनकेयो फलहैं तिनको एकवार प्रमाण करें भोजनकरे और अच्छोप्रकार संध्याकोकरे तीनकाल स्नानकरे ५ ॥ और पड़नां

यस्तुसंवत्सरं ह्येतैः शयनासनभोजनैः संवसेत्सहर्तं विद्यात्पतितं सर्वकर्म सु २ तत्र ब्रह्महप्रायश्चित्तम् ॥ अज्ञानाद्ब्राह्मणं हत्वा चीरवासाजटीभवेत् स्वेनैवहतविप्रस्य कपालमपि धारयेत् ३ तदभावे मुनिश्रेष्ठकपालं चान्यमेव वाधर्तव्यं ध्वजदंडेतु धृत्वा वनचरो भवेत् ४ वन्याहारो वसेत्तत्र वारमेकं मिताशनः सम्यक् संध्यामुपासीत त्रिकालं स्नानमाचरेत् ५ अध्यपनाध्यायनादीन् वर्जयेत्संस्मरेद्द्वारिं ब्रह्मचारी भवेन्नित्यं गंधमाल्यादिवर्जयेत् ६ तीर्थान्यनुवसेच्चैव पुण्याश्चैवाश्रमांस्तथा यदिवन्यैर्न जीवेत् ग्रामे भिक्षां समाचरेत् ७ द्वादशाष्ट्रतं कुर्यादेवं हरिपरायणः ब्रह्महाशुद्धिमाप्नोति कर्मार्हश्चैव जायते ८ इदमज्ञानतो विप्रमात्रवधे द्रष्टव्यम् इदं च राजवधोपलक्षणम् । तथाहि श्रीवाल्मीकिरामायणे किष्किं धाकांडे सप्तदशाध्याये बालिवचनम् ॥ राजहाब्रह्महागोघ्नश्चौरः प्राणिवधेरतः ॥ नास्तिकः परिवेत्ता च सर्वे निरयगाभि न इति अस्यैव कल्पान्तरं ब्रूतेति

और पडाणेंछे आदिलेकर और योधर्महैं तिनको त्यागे और भगवानका स्मरण करे और गंध पुष्पोंके हार इत्यादिकयोद्रव्यहैं तिनोकरें रहितहोवे और ब्रह्मचर्यकोधारे ६ ॥ तीर्थयोहैं और पवित्रयो आश्रमहैं तिनमें वासकरे जब वनमें वनके फलों करें नहिं निर्वाह होवे तब ग्राममें भिक्षाको मांग करें देह निर्वाहको करे ७ द्वादशाष्टेति वारांयो प्राजापत्यव्रत तिनोकरें गुणित योआठहैं अर्थात् छ्यानुयें १६ प्राजापत्यव्रत तिनकोकरे और नारायण परायण होवे इसप्रकार ब्राह्मणके मारणवालाशुद्धिको प्राप्तहोताहै और कर्मोंके योग्यहोताहै ८ ॥ एह अज्ञानतैं ब्राह्मण मात्रके मारणमें प्रायश्चित्तहै एह राजाके मारणेमेभी जानणा इसीका कल्पान्तर कहितेहैं ब्रूतेति

ब्रतेति इसप्रकार ब्रतकों कर्त्ताजब ब्रतके मध्यमें मृगोंककेअथवारोगोंकके मृतहोजावे अथवा गौकें निमित्तवा ब्राह्मणके निमित्त प्राणोंकोत्यागे ९ ॥ वाश्रेष्ठयोब्राह्मणहैं तिनकेतायींदशसहस्र१०००० अष्टगोदानकरदेवे एहयो प्रकार कहेहैं इनमें एक उपायकोंभी कर्के ब्राह्मणके मारणेवाला शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ १० ॥ दीक्षितक्या यज्ञका आरंभ किया जिसने तिसक्षत्रीकों मारकके ब्रह्महत्या के ब्रतकों करेअथवा अग्निमें प्रवेशकर्के दग्धहोवे वा बढायो ऊचा स्थान पर्वतादि तिसते गिंड कर्के प्राणोंको त्यागे ॥ ११ ॥ और दीक्षित यो ब्राह्मण तिसकों मारकके द्विगुण क्या दूणा ब्रतकरे और आचार्यादियोहैं तिनके मारणमें चतुर्गुणा ब्रतकरें ॥ १२ ॥ और केवल ब्राह्मण मात्रकों मारकके एक वर्षपर्यंतब्रतकोंकरे हेदिज एहब्राह्मणकों प्रायश्चित्तकी विधिकहीहै ॥ १३

ब्रतमध्येमृगैर्वापिरोगैर्वापिनिषूदितः गोनिमित्तं द्विजार्थं वा प्राणान्वापि परित्यजेत् ॥ ९ ॥ यद्वा दद्याद् द्विजेन्द्राणां गवामयुतमुत्तमं एतेष्वन्यतमं कृत्वा ब्रह्महाशुद्धिमाप्नुयात् ॥ १० ॥ दीक्षितं क्षत्रियं हत्वा चरेद्ब्रह्महणो ब्रतं अग्नि प्रवेशनं वापि महत्प्रपतनं तथा ॥ ११ ॥ दीक्षितं ब्राह्मणं हत्वा द्विगुणं ब्रतमाचरेत् आचार्यादिवधे चैव ब्रतमुक्तं चतुर्गुणम् १२ हत्वा तु विप्रमात्रं च चरेत्सं वत्सरं ब्रतं एष विप्रस्य गदितः प्रायश्चित्तविधिर्दिज ॥ १३ ॥ द्विगुणं क्षत्रियस्योक्तं त्रिगुणं तु विशस्मृतम् । ब्राह्मणं हंतियः शूद्रस्तमशल्यं विदुर्बुधाः १४ अशल्यं प्रायश्चित्तैरपि शुद्धिहीनम् । राज्ञैवाशिक्षा कर्त्तव्या इति शास्त्रे पुनिश्च यः ब्राह्मणीनां वधे त्वर्धं पादः स्यात्कन्यकावधे ॥ १५ ॥ पाद इति अज्ञातकन्यावधविषयं ज्ञात्वा वधे उपपातकप्रकरणे स्त्रीवधप्रसंगे बोध्यम् ॥

यो ब्राह्मणको ब्राह्मणके मारणका प्रायश्चित्तकिहाहै उसने दूणा क्षत्रीकों ब्राह्मणके मारणका प्रायश्चित्तहै और वैश्यकों तीनगुणाहै और यो शूद्रब्राह्मणकों मारताहै तिसकों बुद्धिमान अशल्यक हतेहैं अशल्यक्या प्रायश्चित्तों कर्केबो शुद्धिकर्के रहित होताहै ॥ १४ ॥ और राजानें हि शिक्षा करणे योग्यहै एह शास्त्रोंमें निश्चयहै ब्राह्मणीनामिति॥ब्राह्मणों कियां यो स्त्रीयाहैं तिनके मारणे में आधा प्रायश्चित्त किहाहै और कन्याके मारणमें पादक्या चतुर्थांश ब्रत करे पाद एह योहै सो अज्ञात कन्या वधमें प्रायश्चित्तहै॥जाणकर्के कन्याके मारणमें उपपात प्रकरणमें स्त्रीवध प्रसंगमें देखलेणा ॥ १५ ॥

और अनुपनीतयेहैं यज्ञोपवीत संस्कार सहित तिनकों मार कर्के पादमात्र व्रत करे॥और क्षत्रों
कों मार कर्के ब्राह्मण छेवर्ष व्रतकों करे ॥ १६ और वैश्यकोंमारकर्के ब्राह्मण तीनवर्ष व्रतकरे
और शूद्रकों मारकर्के ब्राह्मण एकवर्ष व्रतकरे॥और दीक्षित ब्राह्मणकीस्त्रीकों मार कर्के आठ
वर्ष व्रतकरे ॥ १७ इसप्रकार ब्रह्महत्याके व्रतकोंकरणेकर निश्चय कर्के शुद्धहोताहै॥हेमुनिसत्तम
१८ ॥ एह योप्रायश्चित्त विधान है सोसंपूर्ण स्थानोंमें वृद्ध आतुर स्त्रियांवालक इनकोंबुद्धि
मानोंने आधाप्रायश्चित्त किहाहै॥स्मृत्यंतरमे कहितेहैं॥यामेनुष्य मारणके निमित्त उद्यत होयाहै
सोबिनामारे वीपादोन व्रतकोंकरे ॥ और इसीप्रकारनहिं मारणकों उद्यत यो मनुष्य ओहोजब

हत्वात्वनुपनीतांश्चतथापादव्रतंचरेत् हत्वातुक्षत्रियंविप्रःषड्वदंकृच्छ्रमाच
रेत् १६ संवत्सरत्रयंवैश्यंशूद्रंहत्वातुवत्सरं दीक्षितस्यस्त्रियंहत्वाब्राह्मणीं
चाष्टवत्सरान् १७ ब्रह्महत्याव्रतंकृत्वा शुद्धोभवतिनिश्चितं प्रायश्चित्तवि
धानंतुसर्वत्रमुनिसत्तम १८ वृद्धातुरस्त्रीवालानामर्द्धमुक्तंमनीषिभिः । स्मृत्यं
तरेतु चरेद्रतमहत्वातुघातार्थचेत्समुद्यतइत्यत्र मारणंविनापिव्रतमुक्तंतत्पा
दोनंवोध्यं तत्सदृशत्वात् तथाचघातार्थसमुद्यत इचेत्तदा अहत्वापिपादो
नंअघातार्थसमुद्यतस्तदाहत्वापिपादोनंचरेदितितात्पर्यार्थः *सुरापानप्रा
यश्चित्तंविष्णुधर्म्मोत्तरे । सुरांपीत्वाद्विजोमोहादग्निवर्णीसुरांपिवेत् तयास
कायेनिर्दग्धेमुच्यतेकिल्बिपान्ततः १ गोमूत्रमग्निवर्णीवापिवेदुदकमेववा प
योवृतंवामरणाद्गोशकृद्रसमेववा २ कणान्वाभक्षयेद्वदंपिण्याकंवामकृ
न्निशि सुरापानापनुत्यर्थंजलवासाजटीध्वजी ३

किसीकों माग्देवे तबभी पादोन व्रतकोंकरे॥सुरापानका प्रायश्चित्त विष्णुधर्म्मोत्तरमें किहा॥अज्ञा
ननें द्विज सरावकोंपीकर्के अग्निकी न्याईभया वर्णजिसका असा लाल तथायाया सरावति
सकों पीवे॥तिभकर्के देहके दग्धहोआं तिसपापनें गहितहोताहै १ । वाअग्नि वर्णयो गोमूत्रनपा
याहुआ वाजल योहै अग्निवर्ण वादुग्ध वाघृत गोहेकारम अग्नि कर्के लालकियाहुआ उनकों
पानकरे २ । बावर्ष पर्यन्त कणयोहै अन्नके तिनकों चुणकर्के भोजन करे वाएकवार रात्रिमें
खलयोहै तिलोंकाफोग तिसकों भोजनकरे सरावपीणे का योपाप तिसके दूर करणे वास्नेज
लमें वासकरे और जटांशिरमें धारे और ध्वजाहाथमें धारे ३ ॥

२०६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

सुरेति अन्नोका जो मल सो सुराहै मल नाम पापका है तिसकारणतें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सुरा को नहि पानकरे ४ ॥ सुरातीन प्रकारकीहै सो प्रकार कहितेहैं एक गौडी सुराहै सो गुडकी होतीहै और एक पैठी सुराहै सो आटेकी होतीहै और एकमाधवी सुरा सो मखीरकी होतीहै जैसी एकहै सुरा तैमिआं हि संपूर्णहैं एह द्विजोत्तमोंन नहि पान करणे योग्य ५ ॥ मद्यमांस सुराएह योहैं यक्ष और राक्षस और पिशाचोंका का भक्ष्यहैं एह ब्राह्मणन नहि भोजन करणे योग्य यो ब्राह्मण देवताके नैवेद्यकों खाणे वाला सो मद्य मांस सरावकों कदाचित् नहि भक्षणकरे ॥ ६ दश प्रकारके मद्यकहेहैं सो कहितेहैं एकमाधूक नाम मद्यहै सो मखीरका होताहै १ और एक ऐक्षव नामकहै सो गन्धोंके रसका होताहै २ और एक सैरक नामहै सो मद्यविशेषहै ३ और एक तालनामक है सो ताड़ वृक्षके फलके रसका होताहै ४ और एक खार्जूर नामक है सो खजूर वृक्षका होताहै ५ और एक पानसमय होताहै सोकठहडका होताहै ६ मृद्रीका

सुरावैमलमन्नानांपापमाचमलमुच्यते तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौवैश्यश्चनंसुरां पिवेत् ४ गौडीपैठीचमाध्वीचविज्ञेयात्रिविधासुरा यथैवैकातथासर्वानपा तव्याद्विजोत्तमैः ५ यक्षरक्षःपिशानांमद्यमांसंसुरासवम् तद्ब्राह्मणेननात्त व्यंदेवानामश्रताहविः ६ देवानांहविरश्रताब्राह्मणेनेतिसंवंधः ॥ माधूकमैक्षवंसैरंतालंखार्जूरपानसममृद्रीकारसमाध्वीकेमैरेयंनारिकेरजम् ७ असे व्यानिदशैतानिमद्यानिब्राह्मणस्यतु यस्यकायगतं ब्रह्ममद्येनाह्लाव्यतेसकृत् ८ तस्यव्यपैतिब्राह्मण्यंशूद्रत्वंचसगच्छति ९ कूर्मपुराणेप्येवमेव ॥ नारदीयपुराणे गौडीपैठीचमाध्वीचविज्ञेयात्रिविधासुरा चातुवर्णैरपेया स्यात्तथास्त्रीभिश्चनारद १

दाक्षाका नामहै एक तिसका मद्य होताहै ७ और एक महुयेका मद्य होताहै ८ और एक मैरेय नामक मद्यहै सो धाईके पुष्प गुड धाना अम्ल इनकों मिलकर्के होताहै ९ और एक नालिकेलज मद्यहै सो नालिकेरका होताहै १० ॥ ७ ॥ अब इनमें माधवका वचनहै (सीधुरिक्षु रसेः पक्कैरपक्कै रासवो भवेत् मैरेयं धातकी पुष्प गुडधानाम्ल संहित मिति) १ ब्राह्मणकों एह दशहिमद्य नहि सेवनेयोग्य ८ ॥ और जिसके देहमें प्राप्तयो ब्रह्महै सो एक वास्वीमद्यकर्के ह्ला वन क्या भिग्ना होवे तिसका ब्राह्मण भावदूर होजाताहै और सो शूद्रभावकों प्राप्त होताहै ९ ॥ कूर्म पुराणमें भी इसी प्रकारहै । नारदीय पुराण में कहितेहैं गौडी और पैठी और माधवी एह तीन प्रकारकी सुरा जानणे योग्यहै हे नारद सो तीन प्रकार की सुरा चार वर्ण योहैं ब्राह्मणादि और स्त्रीयां तिनकों अपेयाहै अर्थात् नहि पान करणे योग्य ॥ १ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २०७

योकदाचित् एहतीन प्रकारकी सुराकोपानकरे तवदूध, घृत, गोमूत्र एहयोतीनहैं इनकेमध्यमें एककोअग्निकर्के तपायकर अग्निवर्ण क्या लाल कर्के पानकरे और स्नानकर्के गीले वस्त्र धारकर्के नारायणकारमरण करे २ ॥ पक्कति आग्निकर्के लेहि की न्याई लाल वर्णकीया यो जल तिसको पान करे ॥ सो यो है दूध, घृत-गोमूत्र, जल, अग्नि कर्के लाल वर्ण किये हुये तिनके मध्यमें एकको सुवर्ण पात्र कर्के वालोह पात्रकर्के पानकरे ॥ इहालोह नाम सुवर्णकाहै इसने कित ना दुग्धादिपानकरणा इसआकांक्षामें जितने कर्के तृप्तिहोतीहै उतनापीवे ॥ अथवा जितनाए कदिनमें सराव पीया इतनापीवे इसमें योथोडापीवे तव क्लेश थोडा हांताहै और जब बहुत पीवे तव पीणेको अशक्तहोताहै इसकर्के जितना इकदिन सराव पीआहै उतनाहिं पीवे ॥ ३ वा ताम्र केपात्र कर्के तपाये दुग्धादिको पानकर्के मृत्युको प्राप्तहोजावे ॥ इसप्रकार सरावकेपी

क्षारंघृतंवागोमूत्रमेतेष्वन्यतमंमुने स्नात्वाद्रवासानियतो नारायणमनुस्मर
नू २ पक्कायःसन्निभंकृत्वापिवेच्चैवोदकंततःतत्तलोहंनपात्रेणआयसेनाथवा
पिवेत् ३ लाहमत्रस्वर्णम् अत्रकियत्पातव्यमित्याकांक्षायांतृप्तिक्षममितंत
दीयपीतैकाहिकमितंवादेयं न्यूनस्याल्पक्लेशदायित्वादधिकस्यपाययितम
शक्यत्वादितिध्येयम् । ताम्रेणवाथपात्रेणतत्पीत्वामरणं व्रजेत् सुरापीशुद्धि
माप्नोतिनान्यथाशुद्धिरिष्यते ४ अज्ञानाज्जडयाबुद्ध्यासुरापीत्वाद्विजश्चरंतु ब्र
ह्महत्याव्रतंसम्यक्त्वच्छिह्नपरिवर्जितः ५ यदिरोगानिवृत्त्यर्थमौषधार्थसुरापि
वेत् तस्योपनयनंभूयस्तथाचान्द्रायणद्वयम् ६ सुरासंस्पृष्टपात्रंतसुराभांडोद
कंतथा सुरापानसमंप्राहुस्तथातद्रसमक्षणम् ७ तालंचपानसंचैवद्राक्षंस्का
र्जूरसंभवम् माधुकंशैलमारिष्टंमैरेयनालिकेरजम् ८ गौडीमाध्वीसुरामद्यमे
वमेकादशस्मृताः एतेष्वन्यतमंविप्रोनपिवेद्वेकदाचन ९

नेवाला शुद्धिकोप्राप्तहोताहै इसमें विना शुद्धिको नहिं प्राप्त होताहै ४ ॥ और जब अज्ञानमें और जडबुद्धि कर्के द्विजब्राह्मण क्ष, वै सरावको पिये तब अच्छी प्रकार ब्रह्महत्या काव्रतकरे परंतु ब्रह्महत्याके योचिह्नहै तिनी कर्के रहितहांवे ५ ॥ और योरोग दृक्करणनिमित्त आपधिके निमित्त सरावपीवे तब उसका फेर यज्ञोपवीत संस्कार कण्ठा और ओह दो चान्द्रायण व्रत करे ६ ॥ और सराव कर्के संस्पृष्ट योपात्र और सराव केभांडेकाजल और तिसके रसकायाम क्षण तिसको सुरापान केवरावर कहितेहै ७ ॥ और ताल पानस द्राक्ष खार्जूरमाधुक शैलआ रिष्ट, मैरेय, नारिकेलज ८ ॥ और गौडी, माध्वी सुराएहएकादश ११ मद्यकहेहै इनका अग्रपूर्वपृष्ठमें लिखेआयेहां इनके मध्यमेंब्राह्मण एककोभीनहि पानकरे ९ ॥

२०८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥

योद्विज अज्ञानकर्के इनकेमध्यमें एकमद्यकों भोषोवे तिसका पुनः यज्ञोपवीतसंस्कारकरे और ओह पीणेवाला तप्तकच्छत्रनकोकरे । और मद्यएहयोहै सोविशेषनिर्देशहै और शैलमारिष्ठ एह एकहिनामहै मद्यविशेषका १० ॥ अवविष्णुधर्मोत्तरमें सुवर्णकीचोरिकाप्रायश्चित्तकहितेहैं अतइति अवइसतैं उपरंत सुवर्णकी चोरिका निर्णयक्याप्रायश्चित्तकहितेहैं सुवर्णकेचुराणे वाला ब्राह्मण राजाकेपासजायकर्के १ ॥ आपणे कर्मकोराजाके ताई सुनाउताहुआ इसप्रकार कहे हेराजन् तुमेमेरेकों शिक्षाकरो तवरजा मुसललैकर्के आपतिसुवर्णकेचुराणेवाले ब्राह्मणकों मुशलका प्रहारकरे २ ॥ उसप्रहारकर्के मरणेकर्के चोरयोब्राह्मण सो शुद्धहोजाताहै अथवातपकर्के शुद्धहोताहै तपकर्केसुवर्णकी चोरिकापापदूरकरणेकी इच्छावालाब्राह्मण ३ ॥ चौरवस्त्र धारकर्के वनमें

एतेष्वन्यतमं यस्तुपिवेदज्ञानतोद्विजः तस्योपनयनं भूयस्तप्तकच्छत्रे तथा
१० मद्यमितिविशेष्यनिर्देशः शैलमारिष्ठमित्येकं नाम मद्यविशेषस्य • वि
ष्णुधर्मोत्तरे सुवर्णस्तेयप्रायश्चित्तम् । अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि सुवर्णस्तेयनिर्ण
यम् सुवर्णस्तेयकृद्दिप्रोराजानमभिशस्यतु १ स्वकर्मरूपापयन्ब्रूयान्मां भवा
ननुशास्त्विति गृहीत्वामुशलं राजासकृद्वन्यात्तु तं स्वयम् २ वधेन शुद्ध्यति स्तेनो
ब्राह्मणस्तपसैव वा तपसापननुत्सुस्तु सुवर्णस्तेयजं मलम् ३ चौरवासादि
जोरण्येचरेद्ब्रह्महणो व्रतम् ४ कूर्मपुराणेषु । सुवर्णस्तेयकृद्दिप्रोराजानमभि
गम्यतु स्वकर्मरूपापयन्ब्रूयान्मां भवाननुशास्त्विति १ गृहीत्वामुशलं राजास
कृद्वन्यात्ततः स्वयं वधेन शुद्ध्यति स्तेनो ब्राह्मणस्तपसैव वा २ स्कंधेनादाय
मुशलं लगुडं खादिरं तथा शक्तिं चोभयतस्तदीक्षणमायसं दंडमेव च ३ राजा च
तेन वक्तव्यो मुक्तकेशेन धावता आचक्षणेन तत्पापमेव कर्मास्मि शाधि माम् ४

जायकर ब्रह्महत्याकेव्रतकोकरे ४ ॥ कूर्मपुराणमेंभीकहितेहैं सुवर्णचुराणेवालाब्राह्मणराजके पा
सजायकर आपणे कर्मकों प्रसिद्धकरे और इसप्रकार कहे हेराजन् मेरेकों तुम दंड करो १ । तव उस ब्राह्म
णके कथनतैं राजा आप मुसल लेकर तिसकों एकवारमोर चोरयो ब्राह्मणहे यो मर जाये उसप्रहार क
र शुद्ध होजाताहै अथवा तपकर्के शुद्धहोताहै २ । ब्राह्मण आपणे मूंडे कर्के मुशलकों उठायल्या
वे अथवा लाठी अथवा खदिरकामुशल अथवा दोनों तरफतीक्ष्णहैं जिसकेऐसी वरछीलैकर अ
थवा लोहेकादंडलेकर ३ । दौडता और खुलेहुये शिरकेवाला जिसके ऐसायो ब्राह्मण तिसनैं राजा
कों कथनकरणा और उस आपणे पापका कथनकरणा हेराजन् इसप्रकार कर्मकरणेवाला मैं हूं मेरेकों
शिक्षाकरो ४ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २०९

शासनादिति शासनात् क्या दंड करणे तैं अथवा छोंडदेणेंतैं चोर पापेंतें रहित होताहै॥ और योगजा शिक्षा नांकरे तांतिसके नाहें करणेंतैं राजापापकों प्राप्तहोताहै॥५॥ और तप कर्के सुवर्ण कीचोरीकें पापकों दूर करणेकी इच्छा वालाये द्विजहै सो वनमें जाय कर्के और चोर वस्त्रयोंहै तिनकों धार कर्के ब्रह्महत्याके व्रतकों करे ॥६॥ अथवा अश्वमेधयज्ञ कर्के यज्ञकीसमाप्ती में स्नान कर्के द्विज उसपातकतैं पवित्र होतायै॥अथवा आपणे तोलके बराबर सुवर्ण ब्राह्मणोंके ताई देवे उसके देणे कर शुद्ध होताहै॥७॥अथवा वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्यकों धार कर्के प्राजापत्य व्रतकों करे॥ब्राह्मणके सुवर्णकों चुराणे वाला तिससुवर्णकी चोरीकापाप दूर कर्केके निमित्त इ सप्रकार करे॥८॥अब नारदीय पुराणमें कहितेंहे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष बलतैं अथवा चोरी कर्के

शासनाद्वाविमोक्षाद्वास्तेनः पापात्प्रमुच्यते अशिक्षितातुयोराजातेनप्राप्नोति किल्बिषम् ५ तपसापनुनुत्सुस्तुसुवर्णस्तेयजमलम् चीरवासाद्विजोरण्येचरेद्ब्रह्महणोव्रतम् ६ स्नात्वाश्वमेधावभूथेपूतः स्यादथवाद्विजः॥प्रदद्याद्वाथविप्रेभ्यस्त्वात्मतुल्यंहिरण्यकम् ७ चरेद्वावत्सरंकच्छ्रब्रह्मचर्यपरायणः ब्राह्मणस्वर्णहारीतुतत्पापस्यापनुत्तये ८ नारदीयपुराणे समक्षवापरोक्षंवावलाञ्छौर्येणवातथा परस्वानामुपादानंस्तेयमित्युच्यतेबुधैः ९ सुवर्णस्यप्रमाणंतुमन्वाद्यैः परिभाषितम् वक्ष्येशूण्ष्वविप्रेन्द्रप्रायश्चित्तोक्तिसाधनम् १० गवाक्षागतमार्तण्डरश्मिमध्येप्रदृश्यते त्रसरेणुप्रमाणंतुरजइत्युच्यतेबुधैः ३ त्रसरेण्वष्टकंलिक्षातत्रयंराजसर्पपः गौरसर्पपस्तत्रयंतत्पट्टकंयवउच्यते ४

पराये धनोंकायो ग्रहण करणा उसकों पंडित लोक चोरी कहितेहैं॥१॥अब सुवर्ण प्रमाण मन्वा दियों कर्के कथन कराहुया प्रायश्चित्तोक्तिका साधन हे विप्रेन्द्र मैतेरेकों कहिताहां उसकोंतुं अब एण कर ॥२॥ झरोखा योहै तिसमें प्राप्त भई यो सूर्य की किरण तिसके मध्य यो रज उडता है सो रज वृद्धिमानोंनैं त्रसरेणु प्रमाणके हाहे अर्थात् इस धूडके किणकें को त्रसरेणु कहितेहैं॥ ३ ॥त्रसरेण्वष्टक मिति आठ यो त्रसरेणुहैं उसका नाम लिखाहै और तीनयो लिक्षाहैं उनका नाम राजसर्पपहै जिसकों श्रीहर कहितेहैं तीनयोराजसर्पपहैं उसका नाम गौरसर्पपहै जिसकों सेती सरिआं कहितेहैं और छे योगौरसर्पपहैं उसकों यवकहितेहैं ४ ॥

२१० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

और तीनयोयवहै सोरतीहोतीहै और पंच ५ योरतिआहैंसोएकमासहोताहैऔर सोलां योमा सेहैंउसकानामसुवर्णहै॥हेनारद इहसंवोधनहै ५ ॥ और अज्ञानतेब्राह्मणकाधनचुरायकर्के पूर्वकी न्याई कपालऔर ध्वजतिनोकेधारणकर्के रहितवारांबर्षपर्यंतब्रह्महत्याकाव्रतकरे ६ ॥ गुरयोहैं और यज्ञोंकेकरणेवालेयोहैं और धर्मात्मायोहैं और वेदोंकोजाननेवालेयोद्विजहैं तिनकासुवर्ण चुरायकर्केइसप्रकारकरेजोआगेकहणाहै ७ ॥ प्रथम संपूर्ण देहमें घृतको लावे फेर उसमें सुके गोहेका चूर्ण लगावे और फेर घृतको लेपनकरे और करीष क्या गोटेआँकी अभिमेंदेहको दग्ध करे तब इस चोरीके पापतैं रहित होताहै ८ ॥ और यो कदाचित् ब्राह्मणके धनकोक्षत्री

यवत्रयंकृष्णलास्यान्मापस्तत्पंचकंस्मृतः मापपोडशमानंस्यात्सुवर्णमिति नारद ५ हत्वाब्रह्मस्वमज्ञानादद्वादशाब्दंतुपूर्ववत् कपालध्वजहीनंतुब्रह्म हत्याव्रतंचरेत् ६ गुरुणांयज्ञकर्तृणांधर्मिष्ठानांतथैवच श्रोत्रियाणांद्वि जानांतुहत्वाहेमैवमाचरेत् ७ घृताक्तदेहसम्पूर्णैचूर्णयेल्लेपयेद्घृतम् करी पाच्छादितोदग्धःस्तेयपापाद्विमुच्यते ८ ब्रह्मस्वक्षत्रियोहत्वापश्चात्ताप मवाप्यच पुनर्ददातितत्रैवतद्विधानंशृणुष्वमेतत्रसांतपनंकृत्वाद्वादशाहोप वासतः शुद्धिमाप्नोतिदेवर्षेह्यन्यथापतितोभवेत् १० रत्नयानमनुष्यस्त्रीधे नुभूम्यादिकेपुच सुवर्णसदृशेष्वेपुप्रायश्चित्तार्द्धमुच्यते ११ त्रसरेणुसमं हेमहत्वाकुर्यात्समाहितः प्राणायामद्वयंसम्यक्तेनशुद्ध्यतिमानवः १२

चुरावे और पीछेतैं पश्चात्तापको प्राप्तहोयकर्के फेर ब्राह्मणके ताँई धन देदेवे तब उसकाविधान तूं मेरेतैं सुण १ ॥ तिसमें सांतपन व्रतकोंकर्के वारां दिन निराहार व्रत करे हेनारद सोब्राह्मणके धनको चुराणे वाला क्षत्री शुद्ध होताहै ॥ अन्यथा यो इस प्रकार नाहैं करे सोपतित होताहै॥१०॥रत्न और वाहन- और मनुष्य- और स्त्री- और धेनु- और भूम्यादि एह योहै सु वर्णके बराबरहैं इनके चुराणे वाला आधि प्रायश्चित्तके योग्य होताहै॥अर्थात् सुवर्णकी चोरीका यो प्रायश्चित्ततिसतैं आधा प्रायश्चित्तकरे ११ ॥ त्रसरेणिवति त्रसरेणुके समान सुवर्णको चुराय क र्के साधंधान चित्त होय कर अच्छी प्रकार मनुष्य दो प्राणा याम करे तब शुद्ध होताहै १२ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० २११

और लिखा प्रमाण सुवर्ण चुरायकके तीन प्राणायाम करे और राज सर्पपयोहै राई तिसकेवरा
 वर सुवर्ण चुरायकके चार प्राणायाम करे १३ ॥ गौरसर्प योहै सेतीसरीआं उसकेवरावर सुवर्ण
 चुरायकके बुद्धिमान् स्नानकके गायत्रीमंत्रका आठ हजार ८००० जप करे १४ ॥ और जब मात्र
 सुवर्णकी चोरीकरणमें मनुष्य प्रातः कालतें लेकर सायंकाल पर्यंत गायत्रीमंत्रका जप करे तब
 उस यवमात्रसुवर्णकी चोरीतें शुद्ध होता है १५ ॥ और योमनुष्य स्नीमाहु सुवर्णकी चुराये सोसा
 तपनव्रतको करे ॥ अबमासाप्रमाणसुवर्णके चुराणेका प्रायश्चित्त कहिदा है १६ ॥ योमनुष्य १ मासा
 सुवर्ण चुराये सोगोमूत्रकके पकाये योयवहैं वर्ष मात्र उनकी भोजन करे तब शुद्ध होता है और
 हेनारद संपूर्ण योसुवर्णहै सोलामासे उसकी चोरी कके सावधान चित्त होयकर बागंवर्ष १२ ५

प्राणायामत्रयंकुर्याद्धृत्वालिक्षाप्रमाणकम् प्राणायामाश्च चत्वारो राजसर्प
 मात्रके १३ गौरसर्पमाणांतु हत्वा हेमविचक्षणः स्नात्वा च विधिवज्जप्या
 द्वायत्र्यष्टसहस्रकम् १४ यवमात्रसुवर्णस्य स्तेयाच्छुद्धो भवेद्विजः आसायं
 प्रातरारभ्य जप्त्वा वैवेदमातरम् १५ हेमकृष्णलमात्रं तु हत्वा सातपनं चरेत्
 मापप्रमाणहेमस्तु प्रायश्चित्तं निगद्यते १६ गोमूत्रपक्वयवभुग्वर्षेणैकेन शुद्ध्य
 ति संपूर्णस्य सुवर्णस्य स्तेयंकृत्वा मुनीश्वर १७ ब्रह्महत्याव्रतंकुर्याद् द्वादशा
 ष्दंसमाहितः सुवर्णमानान्यत्वे तु रजतस्तेयकर्मणि १८ कुर्यात्सातपनं सम्य
 गन्यथापतितो भवेत् दशानिष्कांतपर्यंतमूर्ध्वनिष्कचतुष्टयात् हत्वा च रजतं वि
 द्वाङ्कुर्याच्चान्द्रायणं मुने १९ दशादिशतनिष्कान्तं च स्तेयी रजतस्य तु चान्द्रा
 यणद्वयंतस्य प्रोक्तं पापविशोधनम् २० शतादूर्ध्वसहस्रांतं प्रोक्तं चान्द्रायण
 त्रयम् सहस्रादधिकस्तेये ब्रह्महत्याव्रतं चरेत् २१

यै ब्रह्महत्याके व्रतको करे १७ ॥ और कहितेहैं सोलामासे चांदीकी चोरीकरणमें मनुष्य अच्छी
 कार सातपन व्रतको करे तब शुद्ध होता है योमनुष्य इस प्रकार नहीं करे सोपतित होता है ॥ १८
 दशेति चार योनिष्कहैं अर्थात् बीसठमासे ६४ तिनोते उपरंत और दश १० निष्कपर्यंत रजतके
 चुराणेमें हेनारद बुद्धिमान् चांद्रायणव्रतको करे तब शुद्ध होता है १९ ॥ दशानिष्कतें लेकर शत १००
 निष्कपर्यंत रजतके चुराणेवाला योमनुष्यहै तिसके पापकाशोधनदो चांद्रायण व्रत कहें २० ॥ और
 शत १०० निष्कतें उपरंत हजार १००० निष्कपर्यंत रजतके चुराणेमें तीन चांद्रायण व्रत कहें और
 जब योमनुष्य हजार निष्कतें अधिक रजतकी चुराये सो ब्रह्महत्याके व्रतको करे क्योंकि उद्वेगवर्षाते
 यके तुल्य है २१ ॥

२१२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा०

कांस्य और पित्तल इनो धातुओं पीलेकर और लोहे पर्यंत हजार निष्क १००० प्रमाणयो धातुओं को चुरावे सो पराक व्रतकों करे ॥ २२ ॥ और स्नों की चोरी करणे में रजत की न्याई प्रायश्चित्त किहा है ॥ २३ ॥ अब गुरु तल्पग प्रायश्चित्त विष्णु धर्मोत्तर में कहिते हैं गुरों की स्त्री में संग करणे वाला मनुष्य आपणे मुख कर्के कहें में गुरु तल्पग पाप किया है इस प्रकार कहिकर पीले अग्नि कर्के बलती यो लोहे की स्त्री के आकार की मूर्ति तिसको कंठ साथ मिलाय कर तप्त लाइ समय यो स्थान तिसमें शयन करे उसमें जव मर जावे तब शुद्ध होता है ॥ १ ॥ अथवा उम गुरु तल्पग पाप में आप पाप के करणे वाला लिंग और वृषण इनको कट कर्के और अंजलियो है तिसमें स्थापन करे अर्थात् दोनों हाथों में लेकर और निःश्रुति यो दिशा है दक्षिण और पश्चिम के मध्य में तहां जाय कर और निष्क पट हांय कर सीधा हि चलतारहे गिडने पर्यंत स्थित होवे

कांस्यपित्तलमुख्येषु अयस्कान्ते तथैव च सहस्रनिष्कमानेतु पराकं परिकीर्तितम् २२ प्रायश्चित्तं तुरन्तानां स्तेयराजतवत्स्मृतम् २३ गुरुतल्पग प्रायश्चित्तं विष्णुधर्मोत्तरे । गुरुतल्पगोभिर्भाष्ये तत्ते स्वप्यादयोगये सू र्मिं ज्वलन्ती माश्लिष्य मृत्युना सविशुद्ध्यति १ स्वयं वा शिश्रुषणा वृत्त व्याधाय चांजलौ नैर्ऋतीं देशमातिष्ठेदनिपातादजिह्मगः २ खट्वांगीची गवासावाश्मश्रुलो विजने वने प्राजापत्यं चरेत्कच्छूमब्दमेकं समाहितः ३ चान्द्रायणं वा त्रीन्मासानभ्यसेन्नियतं त्रिदिवः हविष्येण वा गूवा गुरुतल्पापनुत्तये ४ कूर्मपुराणेपि । गुरुभार्या समाहृत्य ब्राह्मणः काममोहितः ॥ अथ स्त्रियं वैगूह ततसां काष्णायसीकृतम् १

जव गिड जावे तब शुद्ध होता है ॥ २ ॥ खट्वांगीनि अथवा खट्वांगयो शस्त्र विशेष है इसको धारे और चार वस्त्र धारे और दाड़ी कया मुल में रोमों को धारे निर्जन वन में सावधान होय कर एक वर्ष पर्यंत प्राजापत्य व्रतको करे तब शुद्ध होता है ॥ ३ ॥ अथवा तीन महीने इंद्रियों को रोक कर्के चान्द्रायण व्रतको करे अथवा हविष्य भोजन करे वायवागूयो है यवों का कांटा तिसको भोजन करे गुरों की स्त्री में संग करणे का यो पाप तिस पाप के दूर करणे के निमित्त ॥ ४ ॥ कूर्म पुराण में भी कहिते हैं ब्राह्मण काम कर्के मोहित हुआ जव गुरों की स्त्री में संग करे तब अग्नि कर्के लाल वण तपाई यो लोहे की स्त्री की मूर्ति तिसको कंठ साथ लगावे तब उस पाप न शुद्ध होता है ॥ १ ॥

श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥ २१३

अथवा आपहि आपना लिंग और वृषण तिनको काट कर्के अंजलीमें लेकर और निष्कप
ट हुआ सीधा चलता होय अनिपातात् क्या गिडनेपर्यंत दक्षिणदिशामै स्थित होवे तब शुद्ध
होताहै ॥ २ ॥ अथवा गुरों के निमित्त प्राणोंको त्यागे तब शुद्धहोताहै अथवा ब्राह्मणके मारण
कायो व्रत किहा तिसकोकरे तब शुद्धहोताहै अथवा कंडेआं वाली यो वृक्षकी शाखाहै तिसको
वर्ष पर्यंत कंठके साथ लगायकर नियम कर्के पृथ्वीमें शयनकरे तब उसपापतें रहितहोताहै । ३
अथवा सावधान चित्त हुआ और चौर वस्त्रधार कर्के वर्ष पर्यंत कूलू क्या प्राजापत्य व्रतकोकरे
। ४ । अथवा अश्वमेध यज्ञमें यज्ञांत स्नानकर्के मनुष्य शुद्धहोताहै अथवा ब्रह्मचारीहोयकर सदाव
तीहोयकर अष्टम काल योहै उसमें भोजन करे ॥ ५ ॥ स्थान, और आसन योहै तिनो कर्के वि

स्वयंवाशिश्नवृषणावुत्कृत्याधायचांजली आतिष्ठेदक्षिणामाशामानिपाता
दजिह्मगः । २ । गुर्वर्थवाहतः शुद्धचेच्चरेद्वाब्रह्महव्रतम् शाखांवाकंठकोपतांप
रिष्वज्याथवत्सरम् ॥ ३ ॥ अथःशयतिनियतोमुच्यतंगुरुतरूपगः कृच्छ्रंवा
ब्दंचरेद्विप्रश्चरिवासाः समाहितः । ४ । अश्वमेधावभृथकेस्नानाद्वाशुद्धयतेनरः
कालेष्टमेवाभुंजानोब्रह्मचारीसदाव्रती । ५ । स्थानासनाभ्यांविहरंस्त्रिरहो
भ्युरयत्रपः । अथः शयीत्रिभिर्वर्षैस्तद्व्यपोहतिपातकम् । ६ । चांद्रायणाभि
वाकुर्यात्पंचचत्वारिवापुनः ६ । नारदीयपुराणेषु । गुरुतरूपगतानांचप्राय
श्चित्तमुदीर्यते अज्ञानान्मातरंगत्वात्सपत्नीमथापिवा ॥ ७ ॥ स्वयमेव
स्वमुष्कतुल्लियात्पापमुदीरयन् सवर्णोत्तमवर्णस्त्रीगमनेत्वविचारतः
ब्रह्महत्याव्रतं कुर्याद्द्वादशाब्दंसमाहितः ॥ ८ ॥

हार कर्ता और दिनमें तीन वखत स्नान कर्ता हुआ और पृथ्वीमें शयन करे इस प्रकार
व्रतंताहुआ तीन वर्षों कर पापको दूर कर्ताहै ॥ ६ ॥ अथवा पांच ५ चांद्रायण अथवा पुन
चार ४ चांद्रायण व्रत करे तब शुद्धहोताहै । ६ । नारदीय पुराणमें किहाहै गुरुतरूपेति । गुरोंकी
स्त्रीमें संग करणे बाले योहै तिनका प्रायश्चित्त कहितेहैं जिस मनुष्यने अज्ञानतें माताके साथ
संग किया होवे और माताकी यो सपत्नी तिसके साथ संग किया होवे । १ । सो मनुष्य आप
हि आपणे पापको प्रकट कर्ताहुआ आपणेयो वृषणहै उनको कट देवे और पूर्वोक्त विधिकर
॥ और आपणे वर्णकीयो स्त्रीहै और उत्तमवर्णकीयो स्त्रीहै अज्ञानतें इनके साथ संग करणमें
सावधान चित्त होय कर वारां १२ वर्ष पर्यंत ब्रह्महत्याके व्रतको करे ॥ ८ ॥

२१४ ॥ श्रीरणवीरकारितप्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

और योमनुष्य अज्ञानतः बहुतवार सवर्णा स्त्रीमें और उत्तम वर्णकी स्त्रीमेंसंगकरे तब ओहो मनुष्य मांठ ओंकी अग्नि कर दग्धहुया शुद्धिकों प्राप्तहोताहै॥३॥और योमनुष्य माताके साथ संग करके वीर्यके त्यागते पहिलेहि हट जावे तब ओहो ब्रह्महत्याकाव्रतकरे अर्थात् ब्रह्महत्यामें योव्रत किहा सो प्रायश्चित्तकरे और यो वीर्य कों त्यागे तब अग्निकेसाथ आपणी आपको दग्धकरे तब शुद्ध होताहै ॥४॥ और योमनुष्य सवर्णा स्त्री और उत्तम वर्णा स्त्री इनके साथ संग करके वीर्यके त्यागते प्रथमहि हट जावे तब ओहो मनुष्य नारायण पण्यणहुआ उसपापके हटानेके निमित्त नव वर्ष पर्यंत १ ब्रह्महत्याके व्रतकों करे ५ ॥ और वैश्या योहै वैश्यजातिकी पिताकी स्त्री तिसमें संग कर छेवषं व्रतकोंकरे और शूद्रा योहै गुरोंकीस्त्री ३

अमत्याभ्यासतोगच्छेत्सवर्णांचोत्तमांतथाकरापवहिनादग्धः शुद्धियातिद्विजोत्तम ३ रेतस्सेकात्पूर्वमेवनिवृत्तोयदिमातरि ब्रह्महत्याव्रतंकुर्याद्व्रतस्सेकेभिदाहनम् ४ सवर्णोत्तमवर्णाभ्यांनिवृत्तोवीर्यसेचनात् ब्रह्महत्याव्रतंकुर्यान्नवाब्दान्विष्णुतत्परः ५ वैश्यायापितृपत्न्यांतुषडब्दंव्रतमाचरेत् गत्वाशूद्रांगुरोर्भाय्यैत्रिवर्षव्रतमाचरेत् ६ मातृस्वसारंचपितृस्वसारमर्चयिभार्यीश्वशुरस्यपत्नीम् पितृव्यभार्यमथमातुलानीपुत्रीचगच्छेद्यदि काममुग्धः ७ दिनद्वयेब्रह्महत्याव्रतंकुर्याद्यथाविधि एकस्मिन्नेवदिवसे बहुवारत्रिवार्षिकम् ८ एकवारंगतेह्यब्दंव्रतंकृत्वाविशुद्ध्यति दिनत्रयगमे वह्निदग्धः शुद्धेतनान्यथा ९ ॥

पके साथ संग करके तीनवर्ष व्रत करे॥३॥और माता की भगिनी और पिताकी भगिनी और आचार्यकी स्त्री और श्वशुरकी स्त्री और पिताके भाई कीस्त्री और मामेकी स्त्री और कन्या आपणी इनमें जब काम करके मोहकों प्राप्तहुआ गमनकरे॥७॥दिनेति एहयो स्त्रियांकहि पाहिं इनमें दोदिनयो मनुष्य संग करे सो यथा विधि ब्रह्महत्या के व्रतकों करे और इनो स्त्रियो मेंहि योमनुष्य एक दिनमें बहुतवार संग करे तब तीन वर्ष ब्रह्महत्या का व्रत करे॥ ८ ॥और यो एक बार संग करे सो वर्ष पर्यंत व्रत करके शुद्ध होताहै और योमनुष्य मातृ भगिनी याआदि लेकर योस्त्रियांहि इनमें तीन दिन संग करे तब अग्निमें दग्धहोजावे तब शुद्धहोताहै दग्धहोये बिना उसकी शुद्धि नहिहै ॥ ९ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २१५

चांडाली और पुष्कसी और स्नुषा और भगिनी और मित्रकी स्त्री और शिष्यकी स्त्री इनमें योमनुष्य कामकर मोहित हो आसंग करे १० ॥ तब हे नारद छे वर्ष पर्यन्त ब्रह्महत्या का व्रत करे और योमनुष्य का मतार्थ विना इनमें संग करे सो वर्ष पर्यन्त प्राजापत्य व्रत को करे ११ ॥ अव ब्रह्महादियो पतित हैं तिन के साथ संसर्ग करणे का प्रायश्चित्त कूर्म पुराणमें कहिते हैं अव पतितों के संयुक्त योमनुष्य हैं अर्थात् पतितों के संसर्गों तिनकी निष्कृति क्या तिनका प्रायश्चित्त कहिता है यो द्विज जिस पतित के संसर्ग को कर्ता है सो तिस संसर्ग के पाप दूर करणे के निमित्त तिसी पाप करणे वाले का यो व्रत है तिस को करे । १ अथवा आलस्य को त्याग करे वर्ष पर्यन्त तप्त कच्छ व्रत को करे और षाण्मासिक क्या छे महिने के संगमें आधा प्रायश्चित्त करे । २ इनो व्रतों के महापापों के करणे वाले पाप को दूर करे हैं अथवा पृथिवीमें

चांडाली पुष्कसी चैव स्नुषांच भगिनी तथा मित्रस्त्रियं शिष्यपत्नीयस्तु वै काम
तौ व्रजेत् १० ब्रह्महत्या व्रतं कुर्यात्स पडब्दं मुनीश्वर अकामतो व्रजेद्यस्तु सो
ब्दं कच्छं समाचरेत् ११ ब्रह्महादि पतित संसर्ग प्रायश्चित्तं कूर्म पुराणे । पतितैः
संप्रयुक्तानामथ वक्ष्यामि निष्कृतिं पतितेन तु संसर्गयोगेन कुरुते द्विजः सत्त्वा
पापनोदार्थं तस्यैव व्रतमाचरेत् १ तप्त कच्छं चरेद्वाथ संवत्सरमतं व्रितः षाण्मा
सिकेतु संसर्गं प्रायश्चित्तादमर्हति २ एभिर्व्रतैरपोहान्ति महापाता किनोमलं पु
ण्यतीर्थं भिगमनात् पृथिव्यां वाथ निष्कृतिः ३ ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्विग
नागमः कृत्वैतैश्चापि संसर्गं ब्राह्मणः कामकारतः ४ कुर्यादनशनं विप्रः पु
ण्यतीर्थे समाहितः ज्वलन्तं वा विशेषाग्निं ध्यात्वा देवं कर्पादिनम् ५ न ह्यन्यानि
ष्कृतिर्दृष्टा मुनिभिर्ब्रह्मवादिभिः तस्मात्तत्पुण्यतीर्थेषु सदहेद्वा स्वदेहकम् ६

यो पवित्र तीर्थ हैं तिन सभमें जाणे कर्के तिनका पाप दूर होता है । १ ब्रह्महत्येति ब्रह्महत्या क्या ब्राह्मण
कामारणा और सुरापान क्या सराव का पोणा और स्तेय क्या चोरी करणी और गुर्विगनागम क्या
गुरों की स्त्रीमें संग करणा एहयो चार महापात की हैं इनो कर्के यो ब्राह्मण इच्छा कर्के संग करे ४ ॥ तब से
ब्राह्मण सावधान चित्त होय कर पवित्र तीर्थमें निरशन व्रत क्या भोजन को त्याग कर्के प्राणों को त्या
गे अथवा कर्पादि क्या जटों का समूह जिनको शिरके ऊपर ऐसे यो महादेव हैं उनको ध्यान कर्के
जलतायो अग्नि उसमें प्रवेश करे तब शुद्ध होता है ५ इसंत विना ब्रह्मवादि यो मुनि हैं तिनो नै नि
ष्कृति नहि देखी है अथवा तिस कारणते पवित्र तीर्थोंमें जाय कर सोमनुष्य आपणे देह को दग्ध करे ६

२१६ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

नारदीयपुराणमें कहितेहैं महापातकियों का यो संसर्गहै तिसका प्रायश्चित्त कहितेहैं प्रायश्चित्त करणेकर शुद्धहुआहै अंतः करण जिसका सो संपूर्ण कर्मोंके फलको प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ ब्राह्मणहादि यो चारहैं इनके मध्यमें जिस मनुष्य का जिस पाप करणे वालेकर संग होवे तिस तिस पाप करणे वाले का यो व्रत तिस व्रतको कर्के सो मनुष्य शुद्धिको प्राप्त होताहै इसमें संशयनहिं २ और यो मनुष्य अज्ञानतैं पांचराती ५ इनके साथ संग कर्ताहै सो मनुष्य अछी प्रकार प्राजापत्य व्रतकोकरे यो प्राजापत्यव्रत को नहिं करे तव पतित होताहै ॥ ३ ॥ और एह यो महापातकीहैं इनके साथ वारां १२ दिनोंके संसर्गमें महा सांतपन व्रत किहा और अर्द्ध मासक्या पंदरां १५ दिन संसर्ग कर्के वारां १२ दिन निराहार व्रतकरे तव शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥

नारदीयपुराणेषु महापातकिसंसर्गप्रायश्चित्तनिगद्यते प्रायश्चित्तविशुद्धात्मासर्वकर्मफलंलभेत् ॥ १ ॥ यस्ययेनभवेत्संगोब्रह्महादिचतुर्ष्वपि तच्च द्रुतंसनिर्वर्त्यशुद्धिमाप्नोत्यसंशयम् ॥ २ ॥ अज्ञानात्पंचरात्रतुसंगमेभिः करोतियः कायकृच्छ्रचरेत्सम्यगन्यथापतितोभवेत् ॥ ३ ॥ द्वादशाहंतुसंसर्गमहासांतपनंस्मृतम् संगकृत्वार्द्धमासंतुद्वादशाहमुपावसेत् ॥ ४ ॥ पञ्चरात्रमाससंसर्गचान्द्रमासत्रयेस्मृतम् कृत्वासंगंतुषण्मासांश्चरेच्चान्द्रायणद्वयम् ॥ ५ ॥ किंचिन्न्यूनाब्दसंगेतुषण्मासव्रतमाचरेत् एतच्च त्रिगुणं प्रोक्तंज्ञानात्संगेयथाक्रमम् ॥ ६ ॥ जातिभ्रंशादिपातकानिविष्णुधर्म्मोत्तरे तद्यथा ॥ ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वाघ्रातिरघ्रेयमद्ययोः जैह्वत्वंमैथुनपुंसिजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १ ॥

पराक इति और एह यो पूर्वोक्त ब्रह्महादि महापातकीहैं महीना मात्र इनके साथ संसर्गकरे क्या बर्त्से तव पराक व्रत करणे कर शुद्ध होताहै और तीन महीने के संसर्गमें चान्द्रायण व्रत किहा और छेमहीने संसर्ग कर्के दोचान्द्रायण व्रतकरे ॥ ५ ॥ और कुछ न्यून वर्ष के संगमें छे महीने व्रत करे तव शुद्ध होताहै और जब जाण कर्के इनके साथ संग करे तव यथाक्रम कर्के त्रिगुण क्या तीन गुणा प्रायश्चित्तकरे ॥ ६ ॥ जाति भ्रंशादिपातक विष्णु धर्म्मोत्तरमें कहेहैं ॥ ब्राह्मणको रोग योहैं तिनानूं दंडादिके साथ करणा और अघ्रेय योहै नहिंघ्राण करणे योग्य मद्य योहैं सराव इनको सुगंध लयणी और कुटिलना करणी और पुरुषमें मैथुन करणा एह जातिभ्रंशकर पातक किहा ॥ १ ॥

॥ श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी ० भा० ॥ २१७

खोता घोडा उष्ट्रमृगहस्ति वक्रा भेड मत्स्य सर्प नकुल इनकायोमारणासो संकरो करणपात कहोताहै १ ॥ और निदित योहेंतिनोंतें धनलैणा और व्यापारकरणा और शूद्रकी चाकरीकरणी और झूठबोलनाएहअपात्रीकरणपातकहें १ ॥ कृमि और कीट और पक्षीइनकों मारककें और सराव कर्कें स्पृष्ट योवस्तुतिसका भोजनकरणा फल समिधांपुष्प इनका चुराणापरंतुदेवताकेअर्थ चुराणेका दोषनहि और धैर्यकों त्यागणाएहमलिनीकरण पातकहें एहयोजाति अंशादिपातकइनकाप्रायश्चित्तसप्तमादिप्रकरणमेंजानणे योग्यहै ४ ॥ अथप्रकीर्णकपातककहितेहैं तत्रेति तहां संध्यादिके नहिकरणें में प्रायश्चित्त कूर्मपुराणमें किहा अनुपासितसंध्यायोहै नहिकरी

स्वराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाव्योश्चैवमारणम् संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिनकुलस्यच ॥२॥ निदितभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम्अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषणम् ॥ ३ ॥ कृमिकीटवयोहत्वामद्यानुगतभोजनम् फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्यंचमलावहामिति ४ एपांप्रायश्चित्तंसप्तमादिप्रकरणंज्ञेयम् अथप्रकीर्णकानि तत्रसंध्याद्यकरणेप्रायश्चित्तंकूर्मपुराणे अनुपासितसन्ध्यस्तुतदहर्जपतोवसेत् अनश्नन्संयतमनारात्रौचेद्रात्रिमेवहि ॥ १ ॥ अकृत्वासमिदाधानंशुचिःस्नात्वासमाहितःगायत्र्यष्टसहस्रस्यजपंकुर्याद्विशुद्ध्यति ॥ २ ॥ उपासीतनचेत्संध्यांगृहस्थोपिप्रमादतः स्नात्वाविशुद्ध्यतेसद्यःपरिश्रान्तस्तुसंयमात् ॥ ३ ॥ वेदोदितानिनित्यानिकर्माणिचविलोप्यतुस्नातकोवतलोपंतुकृत्वाचोपवसेद्दिनम् ॥ ४ ॥

सन्ध्याजिसनै सोमनुष्यजिसदिनमें सन्ध्यानहिकरे तिसादिनमें जपकरदाहोया भोजन नहिकरे और मनकोरोके और यो रात्रिमेंसंध्यानहिकरे तवरात्रिमेंभी इसीप्रकारस्थित होवे ॥ १ और योमनुष्यसमिदाधानकोंनहिं कर्ता पवित्रहोयाहोयास्नानकर्के सावधानाचित्तहोयकर्के सोआठहजार ८००० गायत्रीमंत्रकाजपकरेतवशुद्धहोताहै २ ॥ औरयोगृहस्थाप्रमादतें संध्यानहिकरे सोस्नानकर्के शुद्धहोताहै और योमनुष्य परिश्रान्तक्याथकाहुयासन्ध्याकोंनहिकरे सोसंयमयोहै प्राणोंका रोकणा तिसतें शुद्धहोताहै ३ ॥ और वेदोदितयोक्र्महैं वेदमें कथन किपेयो कर्म और नित्यकर्म योहैं स्नान संध्यादिइनकोंदूरकर्के औरस्नातकयोहै सोव्रतलोपकोंकर्के तब एकदिननिराहारव्रतकरे ४ ॥

२१८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

अपरे यो सामिक अग्निमें हवन नहीं करे तब वर्ष पर्यन्त प्राजापत्य व्रत करे हे द्विजोत्तम एह संबोधन पदहे॥अथवा चान्द्रायण व्रत करे और धान्य दान और गोदान कर्के शुद्ध होताहे ॥ ५ ॥ षष्ठांशेति छेमें कालमें अन्न भोजन करे अर्थात् तीसरे दिनम भोजन करे और मौन धारे अथवा संहितायो वेद संहिता तिसका पाठ करे॥अथवा नित्यं प्रति शाकल हवन करे एह प्रायश्चित्त अयाज्ययोहें तिनका विशोधनहे अर्थात् जिनसे नहि यज्ञ कराणा पतितादिते तिन से जो यज्ञ करावणा तिनका विशोधनहे एह पिछे उपपातक प्रकरण विषेभी किहाहे ॥ ६ ॥ नील वस्त्रके धारणका प्रायश्चित्त कूर्म पुराणमें कहितेहें नील वस्त्रकों धार कर्के ब्राह्मण अव स्रहि होताहे अर्थात् नम्र होताहै ॥ उस पापके दूर करणके निमित्त स्नान कर्के दिन रात्र नि

संवत्सरंचरेत्कच्छूमग्न्यहोमेद्विजोत्तम चान्द्रायणंचरेद्धान्यगोप्रदानेन शु
द्ध्यति ५ षष्ठान्नकालतामौनसंहिताजपएवच होमश्चशाकलो नित्यम
याज्यानां विशोधनम् अयाज्यानामयाज्ययाजकानामुत्तरपदलोपात्
अन्यथाऽसंभवात् ६ नीलवस्त्रपरिधाने प्रायश्चित्तकूर्मपुराणे नीलवस्त्रं व
सित्वा तु ब्राह्मणो वस्त्र एवाहि अहोरात्रोषितः स्नात्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति १ वा
राहपुराणेऽपि भूषितो नीलवस्त्रेण यो हि मामुपपद्यते वर्षाणां च शतं पंचक्रि
मिभूत्वा सतिष्ठति १ तस्य वक्ष्यामि सुश्रोणि अपराधविशोधनम् प्राय
श्चित्तं विशालाक्षियेन मुच्येत किल्बिषात् २ व्रतं चान्द्रायणं कृत्वा विधिदृष्टेन
कर्मणा मुच्येत किल्बिषाद्भूमे एवमेतन्न संशयः ॥ ३ ॥

राहार व्रत करे और पंचगव्य पीवे तब शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ वाराह पुराणमेंभी कहितेहें॥भग
वान् वाराहजी पृथिवीकों कहतेहें हे पृथिवीयो मनुष्य नील वस्त्र धार कर्के मेरेकों स्पर्श कर्ताहै
सो मनुष्य पांचसौ ५०० वर्ष रुमिहोय कर्के स्थित होताहै अर्थात् रुमि योनिकों प्राप्त
होताहै ॥ १ ॥ हे सुश्रोणि तिस अपराधके शुद्ध करणे वाला प्रायश्चित्तमें कहिताहां हे विशालाक्षि
जिम प्रायश्चित्तके करणे कर पापतें रहित होताहै ॥ २ ॥ हे भूमे विधिदृष्टयो कर्म अर्थात्
शास्त्र कर्के दिखायोयो विधि तिस विधि कर्के चान्द्रायण व्रत कर्के पापतें रहित होताहै इस
में संशय नहींहै ॥ ३ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २१९

उष्ट्रादियानके चडनेमें प्रायश्चित्त कूर्मपुराणमें कहितेहैं। आपणी इच्छातें ऊठके रथमें चड कर्के और खेतिके रथमें चड कर्के तीनरात्रतें शुद्ध होताहै। अथवा यो मनुष्य नम्र जलमें प्रवेश करे सोबी तीन रात्री कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ चांडालकों वेद धर्म शास्त्र और पुराणोंके भाषणमें प्रायश्चित्त तहांहिं किहाहै। वेद और धर्म शास्त्र और पुराण इनके चांडालके कथनमें चांद्रायण व्रत कर्के शुद्धि होतीहै। कथन करेण वाले मनुष्यों और सुनणे वालेकोभी। अथवा प्राजापत्य व्रतकरे तब शुद्ध होताहै इहांचांडालको जो चांद्रायणादिके जगा प्रायश्चित्तहै सो ११ प्रकरणके अंतमें देखना २ ॥ उच्छिष्ट जो द्विजातिहै यो प्रमादतें चांडालादिकर्के स्पर्श करे तब उसका प्रायश्चित्त कहितेहैं कूर्म पु० यो द्विजाति उच्छिष्टहै और जलके साथ चुलिक

उष्ट्रादियानारोहणे प्रायश्चित्तकूर्म पु० उष्ट्र यानंसमारुह्य खरयानंच कामतः त्रिरात्रेण विशुद्ध्यत्तु नम्रोवाप्रविशेज्जलम् १ चांडालस्यवेदधर्मपुराणभाषणेप्रायश्चित्तमात्रैववेदधर्मपुराणानांचांडालस्यचभाषणे चांद्रायणे नशुद्धिः स्यात्प्राजापत्येनवापुनः २ उच्छिष्टस्यद्विजातेः प्रमादाच्चांडालादिस्पर्शे प्रा० कौ० ३ उच्छिष्टोयद्यनाचांतश्चांडालादौ यदारुपृथेत् प्रमादाद्विजपे त्स्नात्वा गायत्र्यष्टसहस्रकम् १ द्रुपदानां शतं वापि ब्रह्मचारी समाहितः त्रिरात्रोपोषितः सम्यक्पंचगव्येन शुद्ध्यति २ द्विजस्य कामतश्चांडालादि स्पर्शे प्रा० कौ० ॥ चांडालपतितादींस्तुकामाद्यः संस्पृशेद्द्विजः उच्छिष्टस्तत्र कुर्वीत प्राजापत्यं विशुद्ध्यते । १ ।

और आचमन किये बिना प्रमादतें चांडालादिके साथ स्पर्श करे तब स्नान कर्के आठ ८००० ॥ हजार गायत्री मंत्रका जपकरे तब शुद्ध होताहै। इस जगा आठसे अधिक हजार जप करे एह अर्थभीहै सो स्पर्शके न्यूनतादिसे जानणा ॥ १ ॥ और अथवा सावधान चित्तहुआ ब्रह्म चर्यकों धार कर्के द्रुपदा एह यो मंत्रहै इसका सो १०० मंत्र जप करे और तीन रात्रि निराहार व्रत करे और पंचगव्यपान करे तब शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ द्विजकों इच्छा कर्के चांडालादिके साथ स्पर्शमें प्रा० कू०। यो ब्राह्मण क्ष० वै० आपणी इच्छातें चांडाल और पतितादियोहैं तिनकों उच्छिष्ट क्या जूठा होकर स्पर्श करे तब शुद्धिके निमित्त प्राजापत्य व्रतकों करे ॥ १ ॥

२२० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

चांडालेति चांडाल और सूतकी इनका यो शवहै उसकों स्पर्शकरणे वाला और तिसीप्रकार पतितकों स्पर्श करणेवाला योमनुष्य तिसस्पर्श करणे वालेका योस्पर्शीहै तिसकों स्पर्शकर्के ज्ञानपूर्वक हे द्विजोत्तमाःएहसंवोधन पदहै आपणी शुद्धिके निमित्त आचमनोंकोंकरे एह ब्रह्मा जीकाकथनहै २ ॥ चांडालांत्येति चांडाल और अंत्ययोहैं रजकादि इनकेशवकों स्पर्शकर्के शुद्धिके निमित्त प्राजापत्य व्रतकोंकरे और जिसमनुष्यनें उनकेशवसाथ स्पर्शकिया उसकोंस्पर्शकर्तकों देखकर फेर उसके साथ स्पर्शकरे तब दिनरात्रि कर्के शुद्धहोताहै अर्थात् एकदिनरात्रि उपवासकरे ३ अवभोजनकर्तायो ब्राह्मण उसकों गुदस्त्रावमें प्रायश्चित्तकहितेहैं भोजनक

चाण्डालसूतकिशवंतस्सृष्टृपतितंतथा तत्सृष्टृस्पर्शिनंस्सृष्टृवावुद्धिपूर्वद्विजोत्तमाः२आचामेत्तद्विशुद्ध्यर्थंप्राहदेवःपितामहः२तदित्यनेनचांडालादिशवंस्पर्शवंतंतथापतितंस्पर्शवंतंस्सृष्टृआचमेदिति तृतीयपरंपरास्पर्शप्रायश्चित्तंनतुसाक्षात् साक्षात्स्पर्शत्वग्रे॥चाण्डालान्त्यशवंस्सृष्टृवाकृच्छंकुर्याद्विशुद्ध्ये सृष्टृष्टृवातु संसृष्टृयेदहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ भुंजानस्यविप्रस्यगुदस्त्रावेप्रा.कौर्मे भुंजानस्यतुविप्रस्यकदाचित्स्त्रवतेगुदं कृत्वाशौचं तःस्नायादुपोष्यजृहुयाद्घृतम्॥१॥द्विजस्यसुरास्पर्शंप्रा-तत्रैवासुरांसृष्टृवा द्विजः कुर्यात्प्राणायामत्रयंशुचिः ॥१॥ शुनादष्टस्यब्राह्मणस्यप्रा.कौर्मै॥ ब्राह्मणस्तुशुनादष्टस्यहंसायंपयःपिवेत् नाभेरूर्ध्वतुदष्टस्यतदेवाद्विगुणंभवेत् ॥१॥ स्यादेतन्निगुणंवाह्वोर्मूर्धनिस्याच्चतुर्गुणं स्नात्वाजपेद्वागायत्रींश्वभिर्दष्टोद्विजोत्तमः ॥२॥

ती योब्राह्मण जबकदाचित् उसकोंगुदस्त्रावहोजावे तबशौचकर्के पाँछस्नानकरे और निराहार व्रतकर्के अग्निमें घृतका हवन करे तब शुद्ध होताहै १ द्विजकोंसुराके स्पर्शमें प्रा, सरावकों स्पर्श कर्के द्विज तीन प्राणायाम करे तबशुद्धहोताहै १ कुत्तेकर्के काटआ यो ब्राह्मण तिसका प्रा-॥ कुत्तेने काटआजा ब्राह्मण सोतीन दिन सायंकाल में दुग्धपीवे और नाभितें ऊपर यो कदाचित् काटआहोवे तब दूणा प्रायश्चित्त करे अर्थात् छेदिनसायंकालमें दूध पीवे १ और योबाहुओंमें काटआहोवे तबतीनगुणा प्रायश्चित्त करे और योमस्तक में काटआहोवे कुत्तेकर्के तांचतुर्गुणा प्रायश्चित्तकरे और कहतेहैं स्नात्वेति कुत्तेने काटआ योब्राह्मण सोस्नान कर्के गायत्रीके मंत्रके जपकोंकरे २ ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २२१

पर्वणीति पर्वमें साग्निकों अग्न्याधानके नहिं करणेंमें अर्घात् अग्निमें नहिं हवन करणेंमें और ऋतु स्नान समय भार्याके साथ नहिं संग करणेंमें प्रायश्चित्त कहितेहैं । साग्निक योहैं सोपर्वमें अग्न्याधानके करे हुये अग्निमें हवननहिं करे और ऋतु समय योमनुष्य भार्यामें संगनहिं करे सोवी आधाप्राजापत्य व्रतकरे । १ । मृतहोआयोशूद्र उसके साथ दग्ध करणे निमित्त जावेयो ब्राह्मण तिसकों प्रायश्चित्त कहितेहैं मृतहोगया यो शूद्र तिसके साथ आपणी इच्छा कर्के च लाजावे योब्राह्मण सो आठ हजार ८००० गायत्री मंत्रका जपकरे तब दोष काभागी नहिं हो ताहै इसमेंभी १००८ असेसाभीसमझणा ॥ १॥ झूठी सुगंध करणका प्रायश्चित्त कहितेहैं झूठी सुगंध

पर्वणिआहिताग्नेरुपस्थानाकरणेतथाऋतौभार्याऽगमनेप्रा.कौर्मै।आहिताग्नि
रुपस्थानंनकुर्याद्यस्तुपर्वणिऋतौनगच्छेद्भार्यावासोपिकृच्छाद्धमाचरेत् १
द्विजस्यप्रेतीभूतशूद्रानुगमनेप्रा. कौर्मै।अनुगम्येच्छयाशूद्रंप्रेतीभूतंद्विजोत्त
मः गायत्र्यष्टसहस्रस्यजपंकुर्यान्नदोषभाक् ॥१॥ मृपाशपथकरणेप्रा.कौ
र्मै।कृत्वातुशपथंविप्रोविप्रस्यवधसंमतं मृपैवयावकन्निनकुर्याच्चान्द्रायणंव्रतं
॥१॥ पंत्यांविपमदानेश्वपाकछायायांचप्रा-कौर्मै- पंत्यांविपमदानंतुकृत्वा
कृच्छ्रेणशुद्ध्यति छायांश्वपाकस्यामृह्यस्नात्वासंप्राशयेद्घृतम् १ ॥ म्लेच्छा
न्नदर्शनेमानुपास्थिरुपशेषप्रा- तत्रैव ईक्षेतादित्यमशुचिर्हृष्ट्वाम्लेच्छान्नमे
वच मानुपंचास्थिसंस्पृश्यस्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥ १ ॥

कर्ता योब्राह्मण सोब्रह्महत्या केपाप केबरावरहे तब उसपापके दूरकरणे वास्ते यावकास योहे
यवोंका कोटातिसकर्के चान्द्रायण व्रतकरे १ पंक्तिमें विपम देणका और चांडाल कोछाया
में बैठणेका।प्रायश्चित्त कहितेहैं पंक्तिमें विपम देणकर प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्धहोताहै।और
चांडाल की छाया योहैं तिसमें आरुढहोयकर स्नानकर्के घृतकों प्राशनकरे॥ १॥ म्लेच्छकेअ
न्नके देखणेमें और मनुष्यकी अस्थिके स्पर्श में प्रायश्चित्त कहितेहैं म्लेच्छके अन्नकों देख
कर्के उदय होताहै योसूर्य तिसकेदर्शन कोंकरे और मनुष्यकी अस्थिकों स्पर्श कर्के स्नान क
र्के शुद्धहोताहै ॥ १ ॥

२२२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

ब्राह्मण कोंहुंकारादिककरणमें प्रायश्चित्त कहितेहैं॥हुंकारमिति॥वृद्धयो ब्राह्मण तिसकों हुंकार कर
णाऔर त्वंकार कथन करणा इसपापके दूरकरणेनिमित्त स्नानकर्के संपूर्ण दिनका यो शेष उस
मेंभोजन नहिकरे अर्थात् सायंकाल तकभोजन नाकरे और ब्राह्मणकों प्रणामकर्के प्रसन्न कराये
॥ १ ॥ और ब्राह्मणकों तृणकर्केवी प्रहार कर्के और वस्त्रके साथकंठमें बन्धकर्के वी और विवा
दमें ब्राह्मणकों जीतकर्के वीप्रणामकर्के प्रसन्नकरे ॥ २ ॥ और ब्राह्मणकों दंडादिकर्के अवगूरण
करे तब कृच्छ्रव्रतयोहै प्राजापत्य व्रततिसकोंकरे॥और ब्राह्मणके निपातन क्यागिडादेनेमें अतिकृच्छ्र
व्रतकरे और ब्राह्मणकों रुधिर निकासकर्के कृच्छ्रातिकृच्छ्रयो व्रतहैं तिनकोंकरे ॥ ३ ॥ गुरों की

ब्राह्मणस्यहुंकारादिकरणेप्रा० तत्रैव॥हुंकारंब्राह्मणस्योक्तात्वंकारंचगरीय
सः स्नात्वानश्रन्नहःशेषंप्रणिपत्यप्रसादयेत् ॥ १ ॥ताडयित्वातृणेनापि
कंठेवध्वापिवाससा विवादेषापिनिर्जित्य प्रणिपत्यप्रसादयेत् २ अवगूर्य
चरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रंनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रं कुर्वीतविप्रस्योत्याद्यशोणितम्
॥३॥गुरोराक्रोशादौप्रा०तत्रैव गुरोराक्रोशमनृतं कृत्वाकुर्याद्विशोधनं एक
रात्रंत्रिरात्रंवातत्पापस्यापनुत्तये ॥ १ ॥ देवर्षीणामभिमुखंषीवनेप्रा०देव
र्षीणामभिमुखंषीवनाक्रोशनेकृते ॥उल्मुकेनदहेजिह्वांदातव्यंचहिरण्यक
म्॥१॥देवोद्यानेमूत्रपुरीषोत्सर्गेप्रा० देवोद्यानेतुयःकुर्यान्मूत्रोच्चारंसकृद्द्वि
जःछिंद्याच्छिन्नंतुशुद्ध्यर्थंचरेच्चांद्रायणंतुवा ॥ १ ॥

निंदादिमें प्रायश्चित्त कहितेहैं गुरोंकायो आक्रोशन क्यानिंदा तिसकों कर्के और झूठबोल
कर उसपापके दूरकरणे निमित्त एकरात्र वात्रिरात्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ देवता और ऋषि इनके
सन्मुख धूकणेकाप्रा० देवता•और ऋषि इनके सन्मुख धूकणेमें और इनकी निंदाके करणेमें
उल्मुकयोहै बलती लकड़ी तिसकर्के जिह्वां को दग्धकरेऔर सुवर्ण दानकरे ॥ १ ॥ देवताके
वागमें मूत्र और विष्टा इनके करणे का प्रायश्चित्त यो द्विजवा० क्ष० वै० देवताके वागमें मूत्र
और विष्टाकों एकवार करे सो शुद्धिकेनिमित्त लिंगकों कटदेवे अथवा चांद्रायण व्रतकोंकरे॥१॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २२३

देवतेति यो ब्राह्मण अज्ञानतः देवताके स्थानमें मूत्रकों करे सो लिंगकों कट कर्के शुद्ध होताहै
अथवा चांद्रायणव्रतकों करे ॥ २ ॥ देवता० ऋषि० वेद० इनकी निंदा करणेमें प्रा० ॥ देवता और
ऋषि और वेद इनकी निंदा कर्के ब्राह्मण अच्छी प्रकार प्राजापत्य व्रतकों करे ॥ १ ॥ और सो
योहैं देवता ऋषिवेदोंके निंदक तिनकेसाथ संभाषण कर्के स्नानकर्के देवतायोहैं तिनकों पूजे
और एह यो निंदक कहेहैं इनका दर्शन कर्के सूर्यकों देखे और इनके साथ स्पर्श कर्के स्नान

देवतायतनेमूत्रकृत्वामोहाद्द्विजोत्तमः । शिश्रस्योत्कर्तनंकृत्वाचांद्रायणम

थाचरेत् २ ॥ देवर्षिवेदनिंदायांप्रा० तत्रैव ॥ देवतानामृषीणांचवेदानांचैवकु

त्सनं कृत्वासम्यक्प्रकुर्वीतप्राजापत्यंहिजोत्तमः १ ॥ तैस्तुसंभाषणंकृत्वा

स्नात्वादेवान्समर्चयेत् दृष्ट्वावीक्षितभास्वंतस्नात्वाविश्वेश्वरंस्मरेत् ॥ २ ॥

स्पृष्ट्वाविश्वेश्वरंस्मरेदितिवापाठः । विश्वेशाननिंदनेप्रा० तत्रैव यः सर्वभूता

धिपतिविश्वेशानंविनिंदति नतस्यनिष्कृतिः शक्याकर्तुर्वपशतैरपि ॥ १ ॥

चांद्रायणंचरेत्पूर्वकृच्छ्रंचैवातिकृच्छ्रकं प्रपद्येच्छरणंदेवंतस्मात्पापात्प्रमुच्यते२

किंचायोध्याकांडे ७५ पंचसप्ततितमंध्याये श्रीरामवनवासेस्वर्कायसंमतौ

पापानुरूपाः श्रीभरतकृताः पंचचत्वारिंशच्छपथाः ॥ कृतशाम्भानुगाद्युद्धिर्माभू

त्तस्यकदाचन सत्यसंधः सतांश्रेष्ठोयस्याय्योनुमतेगतइत्यादयोयथापरमा

र्थशास्त्रानुगतबुद्धयभावः १ पापीयः प्रेष्यम् २ सृष्ट्याभिमुखमेहनम् ३ सुप्तगोः

पादेनहननम् ४ भृत्यादेः कर्मकारयित्वा वेतनाऽदानम् ५ राज्ञः प्रजासुद्रोहः ६

तथापड्भागादधिकादानं प्रजाया अरक्षणंच ७ यज्ञेश्रोत्रियादिभ्यः प्रतिज्ञा

यदक्षिणायाश्चदानम् ८ अधर्मेणराज्ञांयुद्धम् ९ सदुपदेशविस्मरणम् १० पाय

सकसरछागानांवृथाभोजनम् ११ गुर्वाज्ञाऽपालनम् १२ गुरौप्रतिवादः १३

कर्के विश्वेश्वर जीको पूजे ॥ २ ॥ विश्वेशानकी निंदामें प्रायश्चित्तहै । योमनुष्य सर्वभूतोंके अधि

पतियो विश्वेशान क्या जगत्के स्वामीहैं तिनकी निंदाकर्ताहै तिसकी निष्कृति क्या शुद्धिसेकडे

वर्षों कर्केवी करणे कानहिशक्य क्या नहिं होसकती ॥ १ ॥ उसपापके दूरकरणे निमित्त प्रथम

चांद्रायणव्रतकरे फेरकृच्छ्र और अतिकृच्छ्रयोव्रतहैं तिनकोंकरे औरदेवकी शरणकों प्राप्तहोवे तब

तिसपापतैं रहितहोताहै ॥ २ ॥ इसमें कुछ और कहतेहैं कि अयोध्याकांडजों वाल्मीकिरामा

यणकाहै तिसमें ७५ अध्यामै भरतजीने पापाणिहै सोह करणे वास्ते सो दिखाईदेंहैं रुतेति

२२४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा०

मित्रद्रोहः १४ विश्वासान्मित्रेण कथिते तत्प्रकाशनम् १५ भृत्येन स्वाम्यु-
क्ताऽपालनम् १६ कृतघ्नता १७ लज्जाऽभावः १८ बहुभिर्विद्वेषः १९ पुत्रा-
दिसत्त्वे केवलं न मिष्टभक्षणम् २० स्वानुरूपस्त्रीलाभाऽभावे पुत्रोत्पत्त्यभावे
च भरणम् २१ स्वकीयानां मृतानां मृत्येष्ट्याद्यभावः २२ राजस्त्रीवालवृद्धवधः
२३ बहुकालभृतभृत्यस्य कारणं विना त्यागः २४ लाक्षामधुमांसविपविक्र-
यः २५ संग्रामात् क्षत्रियाणां पलायनम् २६ स्वेच्छया कपालादिधारणम्
२७ मद्यप्रसक्तिः २८ द्यूतादिप्रसक्तिः २९ कामक्रोधादिदृढिः ३०
अपात्रेदानम् ३१ उभयत्रसंध्ययोः शयनम् ३२ देवतामातृपितृशुश्रूषाऽ-
भावः ३३ धनितोर्थिने किमपि दानाभावः ३४ पैशुन्यम् ३५ ऋतुस्नात-
भार्यात्यागः ३६ पुत्रवतीस्त्रीत्यागः ३७ ब्राह्मणाय दातुमुद्यतस्य निषेधः ३८
वालवत्सागोर्दोहनम् ३९ धर्मस्त्रीपरित्यागपूर्वपरस्त्रीसेवा ४० शुद्धजलस्य
विष्टादिना दूषणम् ४१ तथाविपदानम् ४२ तृपार्त्तयपानीयदानाभावः
४३ शिवविष्णवादिभक्तानां स्वस्वमतस्थापनपूर्वकं परमतानिन्दनम् ४४ तादृ-
शविवादश्रवणप्रीतिः ४५ अत्रपूर्वाक्तान्यपि पापानि प्रसंगतो लिखितानि
एतत्प्रायश्चित्तं यथाचितं प्रकीर्णकादौ बोध्यम् ॥ अतः परं वाराहपुराणो-
क्तप्रायश्चित्तानि दंतकाष्ठाभक्षणे कृते विष्णुपूजने प्रायश्चित्तम् ॥ वाराह उ-
वाच ॥ दंतकाष्ठमखादिन्वायां हि मासु पसर्पति पूर्वकालकृतं कर्म तेन चै-
केन नश्यति ॥ १ ॥ नारायणवचः श्रुत्वा पृथिवीधर्मसंस्थिता विष्णुभक्त-
मुखाया यह पीकेशमुवाच ह ॥ २ ॥

इसमें पूर्वकहेमी जो पाप सो प्रसंगसे लिखेहैं इनका प्रायश्चित्त जैसे उचितहै तैसे प्रकीर्णका-
दिकोमे जानणा ॥ अब इसतेपरं वाराह पुराणोक्त प्रायश्चित्तहैं । दातनके किये विना
विष्णुके पूजनकरणेमें प्रायश्चित्तहै सो भूमिकोंवागहजी कहितेहैं । हेभूमे दंतधावनके किये विनायो
मनुष्य मेरेको प्राप्तहोताहै उसनें जितनां पूर्व कियायो शुभकर्म सो संपूर्ण एकदातनके नहिं कर
ऐकर नाशहोजाताहै ॥ १ ॥ एह योनागयणका वचन इसको सुणकरके धर्ममे स्थितयो पृथ्वीसो
विष्णु भक्तोंके सुखके निमित्त नारायण जीको कहितेहैं ॥ २ ॥

श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥ २२५

धरणिः हेभगवन् बडे केश कर्के संपूर्ण कालमें किया यो। कर्म सो कैसे एक अपराध कर्के न
ष्ट होता है ॥ ३ ॥ वाराहः वाराहजी कहिते हैं हेसुंदरि हेनिष्पापे कहिता योमेहां उसकों तूं त
त्वकर्के सुण जिस एक अपराध कर्के संपूर्ण पूरे कृत कर्म नाश होता है ॥ ४ ॥ हेभद्रे मनु
ष्य पापीहे कफ पित्त कर्के युक्त है और पाक रुधिर कर्के संपूर्ण है उसी कर्के इसका मुखदु
र्गंधवाला है ॥ ५ ॥ सो मुख दंतकाष्ठके भक्षणमें यो भागवती शुद्धि है तिसकों नहिं सहारता इ
सीते आचार कर्के रहित होता है ॥ ६ ॥ धरणिः पृथ्वी कहिते हैं हेभगवन् दंतकाष्ठके ग्वाये वि
ना यो मनुष्य तुमारे कर्मकों कती है अथवा तुमारे प्राप्ति होता है उसका प्रायश्चित्त मेरेको

धरणिः सर्वकालकृतकर्मकेशनमहतामह कथमेकापराधिनसर्वमेव प्र
णश्यति ॥ ३ ॥ वाराहः ॥ शृणु सुंदरितत्वेन कथ्यमानं मया नद्ये ॥ येन चैकापराधि
नसर्वमेव प्रणश्यति ॥ ४ ॥ मनुष्यः ॥ किल्विपाभद्रे कफपित्तसमान्वितः पूय
शोणितसंपूर्ण दुर्गंधिमुखमस्यतत् ५ नसहेदुचितं देवि दंतकाष्ठस्य भक्षणम्
शुद्धिर्भागवती चैव आचारेण विवर्जितम् ६ यः पुरुष उचितं दंतकाष्ठस्य भक्षणं
सहेत् न कुर्व्यात् एनमाचारविवर्जितं भागवती शुद्धिर्न सहेत् नांगी कुर्व्या
दतोऽवश्यं दंतकाष्ठभक्षणं कार्यमिति भावः ॥ ६ ॥ धरणिः ॥ दंतकाष्ठमखा
दित्यायः कर्माणि करान्ति ते प्रायश्चित्तं चेमेव ब्रूहि येन धर्मन नश्यति ॥ ७ ॥
वाराहः ॥ एवमेतन्महाभागे यन्मां विपाटच्छसि कथयिष्यामि ते देवि यथा
शुद्ध्यन्ति मानवाः ८ आकाशशयनं कृत्वा दिनानि द्वे च पंच च अभुत्का दंतका
ष्ठस्य एवं शुद्ध्यन्ति मानवाः ॥ ९ ॥ आकाशशयनं वटादिशाखावलंबनेन जा
यते एतत्ते कथितं भद्रे दंतकाष्ठस्य भक्षणं यत्तेन विधानेन प्रायश्चित्तं समाच
रेत् न तस्यैवापराधोऽस्ति एवमेव न संशयः ॥ १० ॥

कहो जिस कर्के धर्म नहिं नाश होता ॥ ७ ॥ वाराह इति वाराहजी कहिते हैं हेभूमे यो तूं
मेरेकों पूछती है एह तेरा प्रण इसी प्रकार है हेभद्रे जेमें मनुष्य शुद्धि को प्राप्त होते हैं सोमें तेरे
कों कहिता है ॥ ८ ॥ सो मनुष्य उस पापके दूर करे वास्ते मान ७ दिन आकाश शयन
करे आकाश शयन क्या बांड थी आदिले कर यो वृक्ष है तिनकी शाखाये हैं तिनके साथ लट
कणा इस प्रकार करे कर दंतकाष्ठका यो नहिं भक्षण करे पाप ते मनुष्य शुद्ध होता है
॥ ९ ॥ हेपृथ्वि एह तेरेकों दंतकाष्ठका भक्षण किं है यो मनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्त
को करे तिसकों अपराध नहिं है इसमें संशय नहिं है ॥ १० ॥

२२४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० २१ टी ० ॥ भा०

मित्रद्रोहः १४ विश्वासान्मित्रेण कथिते तत्प्रकाशनम् १५ भृत्येन स्वाभ्यु-
क्ताऽपालनम् १६ कृतघ्नता १७ लज्जाऽभावः १८ बहुभिर्विद्वेषः १९ पुत्रा-
दिसत्त्वे केवलं न मिष्टभक्षणम् २० स्वानुरूपस्त्रीलाभाऽभावे पुत्रोत्पत्त्यभावे
चमरणम् २१ स्वकीयानां मृतानां मृत्येष्वाद्यभावः २२ राजस्त्रीवालवृद्धवधः
२३ बहुकालभृतभृत्यस्य कारणं विना त्यागः २४ लाक्षामधुमांसविपविक्र-
यः २५ संग्रामात्क्षत्रियाणां पलायनम् २६ स्वेच्छया कपालादिधारणम्
२७ मद्यप्रसक्तिः २८ द्यूतादिप्रसक्तिः २९ कामक्रोधादिदृढिः ३०
अपात्रेदानम् ३१ उभयत्रसंध्ययोः शयनम् ३२ देवतामातृपितृशुश्रूषाऽ-
भावः ३३ धनितोर्थिने किमपि दानाभावः ३४ पैशुन्यम् ३५ ऋतुस्नात-
भार्यात्यागः ३६ पुत्रवतीस्त्रीत्यागः ३७ ब्राह्मणाय दातुं मुद्यतस्य निषेधः ३८
बालवत्सागोर्दोहनम् ३९ धर्मस्त्रीपरित्यागपूर्वपरस्त्रीमेवा ४० शुद्धजलस्य
विष्टादिना दूषणम् ४१ तथाविपदानम् ४२ तृपार्त्तयपानीयदानाभावः
४३ शिवविष्णवादिभक्तानां स्वस्वमतस्थापनपूर्वकं परमतानिन्दनम् ४४ तादृ-
शविवादश्रवणप्रीतिः ४५ अत्र पूर्वोक्तान्यपि पापानि प्रसंगतो लिखितानि
एतत्प्रायश्चित्तं यथाचितं प्रकीर्णकादौ बोध्यम् ॥ अतः परं वाराहपुराणो-
क्तप्रायश्चित्तानि दंतकाष्ठाभक्षणे कृते विष्णुपूजने प्रायश्चित्तम् ॥ वाराह उ-
वाच ॥ दंतकाष्ठमखादिन्वायो हि मासुपसर्पति पूर्वकालकृतं कर्म तेन चै-
केन नश्यति ॥ १ ॥ नारायणवचः श्रुत्वा पृथिवीधर्मसंस्थिता विष्णुभक्त-
मुस्वार्थाय हर्षिकेशमुवाच ॥ २ ॥

इसमें पूर्वकहे भी जो पाप सो प्रसंगसे लिखे हैं इनका प्रायश्चित्त जैसे उचित है तैसे प्रकीर्णका-
दिको मे जानना ॥ अब इसमें परं वाराह पुराणोक्त प्रायश्चित्त हैं । दातनके किये विना
विष्णुके पूजनकरणमें प्रायश्चित्त है सो भूमिकों वाराहजी कहिते हैं । हे भूमे दंतधावनके किये विनायो
मनुष्य मेरेको प्राप्त होता है उसने जितना पूर्व कियायो शुभकर्म सो सपूर्ण एक दातनके नहिं कर
ऐकर नाश होजाता है ॥ १ ॥ एह यो नारायणका वचन इसको सुणकर धर्ममे स्थितयो पृथ्वीसो
विष्णु भक्तोंके सुखके निमित्त नारायण जीको कहिते हैं ॥ २ ॥

श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥ २२५

धरणिः हेभगवन् वडे क्लेश कर्के संपूर्ण कालमें किया यो। कर्म सो कैसे एक अपराध कर्के नष्ट होता है ॥ ३ ॥ वाराहः वाराहजी कहितेहैं हेसुंदरि हेनिष्पापे कहिता योमेहां उसकों तूं तत्त्वकर्के सुण जिस एक अपराध कर्के संपूर्ण पूरे कृत कर्म नाश होता है ॥ ४ ॥ हेभद्रे मनुष्य पापीहै कफ पित्त कर्के युक्तहै और पाक रुधिर कर्के संपूर्णहै उसी कर्के इसका मुखदुर्गंधवालाहै ॥ ५ ॥ सो मुख दंतकाष्ठके नभक्षणेंतें यो भागवती शुद्धिहै तिसकों नहिं महारता इसीतें आचार कर्के रहित होता है ॥ ६ ॥ धरणिः पृथ्वी कहितोहै हेभगवन् दंतकाष्ठके खाये विना यो मनुष्य तुमारे कर्मकों कसीहै अर्थात् तुमारेकों प्राप्त होता है उसका प्रायश्चित्त मेरेको

धरणिः सर्वकालकृतकर्मक्लेशनमहतासह कथमेकापराधिनसर्वमेव प्रणश्यति ॥ ३ ॥ वाराहः ॥ शृणु सुंदरितत्त्वेन कथ्यमानं मयानघे ॥ येन चैकापराधिनसर्वमेव प्रणश्यति ॥ ४ ॥ मनुष्यः ॥ किल्विषाभद्रे कफपित्तसमन्वितः पूयशोणितसंपूर्णदुर्गंधिसुखमस्यतत् ५ नसहेदुचितं देवि दंतकाष्ठस्य भक्षणम् शुद्धिर्भागवती चैव आचारेण विवर्जितम् ६ यः पुरुष उचितं दंतकाष्ठस्य भक्षणं न सहेत् न कुर्व्यात् एनमाचारविवर्जितं भागवती शुद्धिर्न सहेत् नांगी कुर्व्यादतोऽवश्यं दंतकाष्ठभक्षणं कार्यमिति भावः ॥ ६ ॥ धरणिः ॥ दंतकाष्ठमखादित्यायः कर्माणि करोति ते प्रायश्चित्तं चेन्मर्त्रहियेन धर्मन नश्यति ॥ ७ ॥ वाराहः ॥ एवमेतन्महाभागेयन्मां विपारपृच्छसि कथयिष्यामि ते देवि यथा शुद्ध्यन्ति मानवाः ८ आकाशशयनं कृत्वा दिनानि द्वचपंचच अभुत्कादंतकाष्ठस्य एवं शुद्ध्यन्ति मानवाः ॥ ९ ॥ आकाशशयनं वटादिशाखावलंबनेन जायते एतत्ते कथितभद्रे दंतकाष्ठस्य भक्षणं यण्तेन विधानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत् न तस्यैवापराधोऽस्ति एवमेव न संशयः ॥ १० ॥

कहो जिस कर्के धर्म नहिं नाश होता ॥ ७ ॥ वाराह इति वाराहजी कहितेहैं हेभूमे यो नूं मेरेकों पूछतीहैं एह तेरा प्रण इसी प्रकारहै हेभद्रे जैम मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होतेहैं सोमैं तेरेकों कहिताहां ॥ ८ ॥ सो मनुष्य उस पापके दूर करणे वास्ते सात ७ दिन आकाश शयन करे आकाश शयन क्या बांडयी आदिलेकर यो वृक्षहै तिनकी शाखायोहैं तिनके साथ लटकणा इस प्रकार करणे कर दंतकाष्ठका यो नहिं भक्षण करणा इस पापतें मनुष्य शुद्ध होता है ॥ ९ ॥ हेपृथ्वि एह तेरेकों दंतकाष्ठका भक्षण किहाहै यो मनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्त कों करे तिसकों अपराध नहिंहै इसमें संशय नहिंहै ॥ १० ॥

स्त्रीके साथ संगकर्के स्नान कियेविनाविष्णुकेस्पर्शमें प्रायश्चित्तहै (वाराहः) वाराहजीकहितेहैं हेभू मे स्त्रीसंगकर्के योमनुष्यस्नान किये विना मेरेको स्पर्श करे सोदुर्वृद्धिः चोदां १४ हजार वर्षनर कमें पडकर्के वीर्यकोंपीताहे ॥ १ ॥ तिसते नारायणतैं सुण कर्के सोयोपृथ्वीहै धारआहे ब्रत जिसने तिससमय दीनमनहोयकर भगवान्जीकोकहितीहै ॥ २ ॥ हेभगवन् एह भयकेकरणेवा ला कष्टरूपधर्म तुमक्याकहितेहो हे भगवन् पुरुषयोहेसो किसप्रकार वीर्यक पीणेमें रत हो ताहै एहतुमारावचन सुनकर्के मेरेको परमदुःखहै सोतुममेरेको कहिणे योग्यहो ३ (वाराहः) वारा हजोकहितेहैं हे देवि यथार्थ कर्के मेरेतैंएहयोग्यहै गुणधर्म केसा संपूर्णतैं श्रेष्ठ उसको तू अ

मैथुनं कृत्वाऽस्नातेन विष्णुस्पर्शने प्राय ० वाराहः कृत्वा तु मैथुनं भद्रे अस्ना तो योममस्पृशेत् रेतः पिवति दुर्वृद्धिः सहस्रं नवपंचच ॥ १ ततो नारायणा च श्रुत्वा सामही संशितव्रता तत्र दैन्यमना भूत्वा उवाच मधुसूदन मूर्त्तिमिदं भाषसे देवधर्मभीषणसंकटं कथं देवपुमान्यो वै रेतः पानपरो भवेत् एतन्मे पर मंदुःखं तद्भवान्वक्तुमर्हसि ३ वाराहः। शुणु तत्त्वेन मे देवि इदं गुह्यमनुत्तमं चि ह्मेतद्वररोहे व्याधिदोषविनिश्चयम् ४ पुरुषस्त्रीपुं कर्माणि ये च कुर्वन्ति नि र्घृणाः दोषस्तस्यापराधस्य फलं प्राप्नोति मानवः ५ दोषो भुजस्येत्यर्थः ॥ ए वमेतद्वररोहेयत्त्वया परिपृच्छितं अपराधस्य दोषेण विशुद्धिश्च न जायते ६ प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि रोगदोषेण दूषितं ॥ रोगदोषेण दूषितं प्रति प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामीति संबन्धः ॥ गृहस्थः पुरुषो भद्रे मम कर्म परायणः ७ ॥

वणकर हे वगरोहे एहयोचिन्हहे व्याधिकके दोषका निश्चयकरणा ४ ॥ योनिदंयमनुष्यहैं पुरुष और स्त्रियोंमें और मेरेकर्मोंकोकर्ताहैं तिसनिर्दयहोकर भुजाकर्के कर्मकरणके अपराधका फल मनुष्यभुजाको प्राप्तहोताहै अर्थात् उसकी भुजाको रोगहोताहै ५ ॥ हेपृथ्वीएह बात इसीप्रकारहै योतैने मेरेकोपूछिआहे इस अपराधके दोषकर्के विशुद्धिनिहिं होती ॥ ६ ॥ रोगदोषकर्के दूषितयो पुरुषहै तिसकोमें प्रायश्चित्तकहिताहां हे भद्रे गृहस्थ पुरुषयोहै मेरेकर्ममें परायण मेरीपूजादिमै तत्पर ॥ ७

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० २२७

सो मनुष्य तीन दिन यवोंका कोटा भोजन करे और तीन दिन तिलोंकी खल भोजन करे और एक दिन वायु भक्ष्य क्या निराहार व्रत करे तब पापों रहित होता है ॥ ८ ॥ और हेभूमे शास्त्र कर्के दिखाया यो कर्म तिस कर्म कर्के पगक व्रत कों करे तद कर्म का अपराध जान कर्के कर्ता यो पुरुष सो पाप कर्के नहीं लिप्त होता है ॥ ९ ॥ हेभूमे एह में तेरे ताई कि हा है यो मनुष्य स्त्रीके साथ संग कर्के स्नान किये बिना मंर कों स्पर्श कर्ता है उसका एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त किहा है कैना एह प्रायश्चित्त इसके करणे कर मेरे लोकमें सुख कर्के प्राप्त होता है ॥ १० ॥ शवके देपणेमें प्रायश्चित्त कहिते हैं वराहजी दृष्ट्वेति हेभद्रे पतित यो नर है यो पंचत्व

यावकेन दिन त्रीणिपिण्याकेन पुनरुच्यहं वायुभक्षो दिन त्वेकं ततो मुंचति किल्विपात् ॥ ८ ॥ पराकंकुस्तेभूमविधिदृष्टेन कर्मणा ज्ञात्वा कर्मापराधं तु न स पापं न लिप्यते ॥ ९ ॥ एतन्तं कथितं भद्रे मेथुनं यांभिर्मच्छति प्रायश्चित्तं महाभागं मम लोदः सुखावहम् ॥ १० ॥ शवदर्शने प्रायश्चित्तम् दृष्ट्वा तु पति तं भद्रे नरं पंचत्वमागतं मम शास्त्रं वहिः कृत्वा इमं शानं यः प्रपद्यते ॥ १ ॥ पितरस्तस्य सुश्राणि आत्मना च पितामहाः श्मशानं जंबुका भूत्वा भक्षयंतः शवं तथा ॥ २ ॥ ततो हरेर्वचः श्रुत्वा धर्मकामावसुंधरा उवाच मधुरं वाक्यं सर्वलोकहिताय वै ॥ ३ ॥ धरणिः । शवदर्शनं जं पापं नाशमेति कथं हरं किमिदं भापसे देव धर्मनाशकमेव च ॥ ४ ॥

कों प्राप्त हो गया है उसका देख कर्के और मंर शास्त्र कों त्याग कर्के यो मनुष्य श्मशान कों जाता है अर्थात् शूद्रादि यो हैं तिनके मृतकके साथ श्मशान कों जाता है ॥ १ ॥ उस मनुष्य के पितर और सो मनुष्य और उसके पिता मह श्मशानमें गिदड की योनिकां प्राप्त हो कर शव यो है मृतक तिसको भोजन कर्ते हैं ॥ २ ॥ तिसने नागयण का वचन सुणकर धर्म का मा यो भूमि है सो संपूर्ण लोकों के हित के वास्ते श्रीनागयण जीकों मधुर वचन कहितो भई । ३ धरणिः । पृथ्वी कहितो है शवयो मृतक तिसके दर्शनने उत्पन्न भयायो पाप सो किस प्रकार नाश होता है हे भगवन् एहयो तु मारा वचन सो धर्म के नाश करणे वाला है एह तुम क्या कहिते हो ॥ ४ ॥

हेनाथ तुमारी शरण कों प्राप्त योहैं याउनको वोभयहै शवदर्शनका तवमेरेकों प्रायश्चित्त कहो जिसप्रायश्चित्तके करणे कर्कें पापतैं रहित होताहै ॥ ५ ॥ वाराहः वाराहजी कहितेहैं हेसुंदरि योमेरेकों पूछतीहैं सो तूंयथार्थ कर्कें सुणतेरेकों एहयो शव दर्शनका पाप इसकें दूर करणे वाला यो प्रायश्चित्तमोमें कहितांहां ॥ ६ ॥ सात दिन ७ पर्यंत एकवार भोजन करे और फेर तीन रात्री निराहार व्रतकरे तिसतैं उपरंत पंचगव्य पान कर्कें शीघ्र पापतैं रहित होताहै ॥ ७ ॥ शवके देखणेके अपराधमें एहतेरेकोंमेंनै विधि किहाहै भगवान् जीके भक्तनैं सर्वथा मृत त्याग ने योग्यहै ॥ ८ ॥ योमनुष्य इस विधान कर्कें प्रायश्चित्तकों करे सो संपूर्ण पापतैं रहित होताहै उसकों अपराधनहिं होताहै ॥ ९ ॥ वाराहः स्पृष्टवन्ति हेभूमे योमनुष्यमृतककों स्पर्श कर्कें पवित्र

तवनाथप्रपन्नानां किंचापिविद्यते प्रभो प्रायश्चित्तंचमेव ब्रूहि येन मुच्यति किल्विपात् ५ वाराहः ॥ शृणु सुंदरितत्वेन यन्मां त्वं परिपृच्छासि कथायिष्यामि ते हृदिं शोभनं पापनाशनम् ६ एकाहारो दिनान्मत्ता त्रिरात्रं चाप्युपोषितः पंचगव्यं ततः पीत्वा शीघ्रं मुच्यति किल्विपात् ७ शवेदृष्टेऽपराधस्य एतदेकथितो विधिः सर्वथा वर्जनीयं वा शवं भागवतेन तु ८ य एतेन विधानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत् विमुक्तः सर्वपापेभ्यो ह्यपराधो न विद्यते ९ मृतकस्पर्शने प्रायश्चित्तम् वाराहः ॥ स्पृष्ट्वा तु मृतकं देवियोगक्षेत्रेषु तिष्ठति शतं वर्षं सहस्राणि गर्भेषु परिवर्तते १ दशवर्षं सहस्राणि चांडालश्चैव जायते अन्धः वर्षं सहस्राणि मंडूकश्च शतं समाः २ मक्षिका त्रीणि वर्षाणि टिट्ठिभैकादशं समाः दशो वै सप्तचावदानिकृकला सो भवेत्समा ३

स्थानोंमें बैठताहै अर्थात् नागायणकों स्पर्शकर्त्ताहै सोमनुष्य लक्षवर्ष १००००० पर्यंत गर्भवासोंमें वर्तताहै अर्थात् लक्षवर्ष पर्यंत वारं वार जन्म मरणकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इसीका विवेक दिखाई दाहै दशेति पहिले जन्मोंको किहाहै फेर दश हजार वर्ष १०००० चांडाल होताहै और सात हजार वर्ष ७००० अंध क्या नेत्रोंतें होन होताहै और फेर सौ वर्ष १०० मंडूक यो डिडु तिसकी योनि कों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ और फेर तीन वर्ष ३ मक्षिकाकी योनिमें प्राप्त होताहै और फेर एका दशवर्ष ११ टिट्ठिभ योपक्षि विशेष तिसकी योनिकों प्राप्त होताहै और फेर सात वर्ष मछर होताहै फेर एक वर्ष किरला होताहै ॥ ३ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी ० भा० ॥ २२९

और सो वर्ष १०० हस्ती होता है और फेर वत्तरी वर्ष ३२ खोता होता है और फेर नोवर्ष ९ बिछा होता है और फेर पंदरी वर्ष १५ वानर होता है ४ ॥ इस प्रकार संप्राप्त दोष कर्क मे रेकर्ममें परायण क्या तत्पर यो मनुष्य है हे देवि सो बडे दुःखकों प्राप्त होता है इसमें संशय नहि है ५ ॥ तिसरें नारायणका वचन सुण कर्क दुःख कर्क संपूर्ण संसारके मोक्षके निमित्त पृथि वी भगवानकों कहिते हैं ६ ॥ हे भगवन् एहतुमक्या कहिते हो मनुष्यों कों दुः सह वचन और भयंकर और मेरेकर्म का प्रभेदक ७ । आचारतें अष्टयो हैं और तुमारायो कर्म पूजनादि ओ हि हे आश्रय जिनका जिसके करण कर्क दुःखोंको तरते हैं सो प्रायश्चित्त मेरे कों कहो ८ । जब

हस्तीवर्षशतंचैव खरोद्वात्रिंशको भवेत् मार्जारो नववर्षाणि वानरो दशपंचच
४ एवं संप्राप्तदोषेण मम कर्म परायणः प्राप्नोति सुमहद्दुःखं देवि एवं संशयः
५ ॥ ततो हरेर्वचः श्रुत्वा दुःखेन परिपृच्छति सर्वसंसारमोक्षाय प्रत्युवाच व
सुंधरा ६ किमिदं भाषसे देवमानुषाणां दुरासदम् वाक्यं तु भीषणं चैव मम क
र्म प्रभेदकम् ७ ॥ आचाराच्च परिभ्रष्टाः तव कर्म परायणाः तरंतियेन दुर्गाणि
प्रायश्चित्तं च मे वद ॥ ८ ॥ श्रुत्वा पृथ्व्यास्ततो वाक्यं लोकनाथो जनार्दनः ध
र्मसंक्षणार्थाय प्रत्युवाच वसुंधराम् ९ स्पृष्ट्वा तु मृतकं भूमे मम कर्म परायणः
एकाहारस्ततस्तिष्ठद्दिनानि दशपंचच १ तत एवं विधिकृत्वा पंचगव्यं तु
प्राशयेत् शुद्धभावं विशुद्धात्मा कर्मणा च न लिप्यते ॥ २ ॥ एतत्तत्कथितं देवि स्पृ
ष्ट्वा मृतकमेव च दोषत्रैव विशुद्धाय यत्त्वया पूर्वपृच्छितम् ॥ ३ ॥ य एतेन
विधानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत् अपराधविनिर्मुक्तो मम लोकं स गच्छति ॥ ४ ॥

ऐसा पृथ्वीका वचन सुणा तव संपूर्ण लोकोंके स्वामी जनार्दन भगवान धर्मकी रक्षाके वास्ते पृथ्वीकों कहिते हैं १ । हे भूमे मेरेकर्ममें परायणयो है सो मृतकको स्पर्श कर्क पंदरी दिन १५ एकवार भोजन करे ॥ १ ॥ फेर पंचगव्यपीवे दत शुद्धभावकों प्राप्त भयायो है सो उस कर्म कर्क नहि लिप्त होता है २ ॥ हे देवि मृतकों स्पर्श कर्क एह तेरेकों मेंने प्रायश्चित्त किहा है इस प्रकार दोषतें शुद्ध होता है ॥ यो ते ने मेरेकों पहिलें पूछा है ॥ ३ ॥ यो मनुष्य इस विधान कर्क प्रा यश्चित्त करे सो मनुष्य अपराध कर्क रहित हुआ मेरे लोककों प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

२३० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥

रजस्वला स्त्रीके स्पर्शमे प्रायश्चित्त कहितेहै वाराह इति वाराहजी कहितेहैं हेभूमे योमनुष्य रजस्वला स्त्रीको स्पर्श कर्के निर्भय होआ राग मोह कर्के युक्त और काम कर्के बश करा हुआ मेरेको स्पर्श कर्ताहै १ सोमनुष्य एक हजार वर्ष निर्दय होया रजयोहै स्त्रीकी यौनिका रुधिर तिसको पीताहै और हेदेवि अधहोताहै निर्धनहोताहै और अज्ञान कर्के मूर्खहोताहै ॥२॥ औरआपणे आपको नहि जानता जेमे कोई नरकमे पडा हुआ होवे ऐसें हांताहै इस अपराधकों कर्के नरकमें बाम होताहै इसमें संशयनहि ॥३॥ धराणिः पृथ्वी कहितोहै हेदेव तुमारी शरण को प्राप्त योमनुष्यहै और अपराध कर्के युक्त योहै और तुमारे कर्ममें तत्परहै तिसका संसार

रजस्वलास्पर्शप्रा.वाराहः । नारीरजस्वलांस्फुट्ट्वाममस्फुट्टशतिनिर्भयः रागमोहेनसंयुक्तः कामनचवशीकृतः ॥१॥ वर्षाणांतुसहस्रैकं रजःपिबतिनिर्वृणः अधश्चजायते देविदरिद्रो ज्ञानमूर्खवान् ॥२॥ ज्ञानेशास्त्रीयज्ञाने सत्यपि नास्ति क्यरूपं मूर्खत्वं विद्यते यत्र स भावप्रधानो निर्देश इत्यनेन मूर्खशब्दो मूर्खत्ववाचकोऽत्र ॥ न च विन्दति चात्मानं पतितो नरके यथा अपराधमिमं कृत्वा तत्रैव नास्ति संशयः ॥३॥ धराणिः तव देव प्रपन्नानां मोक्षं संसारसागरात् अपराधसमायुक्तस्तव कर्मपरायणः ॥४॥ कर्मणा येन शुद्ध्येत तन्मे ब्रूहि जनार्दन ५॥ वाराहः ॥ स्फुट्ट्वारजस्वलां नारीं नरो मद्भक्ति तत्परः तपः कृत्वा त्रिरात्रं तु आकाशशयने वसेत् ॥ ६ ॥ शुद्धो भागवतो भूत्वाममकर्मपरायणः एवं कृत्वामहाभागे प्रायश्चित्तं ममाप्रियम् ॥ ७ ॥ मुच्यते किल विपादे विआचारेण वहिष्कृतः एतत्ते कथितं भद्रे यत्स्फुट्ट्वा तु जरस्वलाम् ॥ ८ ॥

रूपी समुद्रते किस प्रकार मोक्ष होवे ॥४॥ सोमनुष्य जिस कर्म कर्के शुद्ध होताहै हे जनार्दन न सोनुम मेरेको कहो ॥५॥ वाराहः वाराहजी कहितेहैं हेभूमे मेरी भक्तिमें तत्परयो मनुष्य सो रजस्वला स्त्रीको स्पर्श कर्के तीन रात्र तपकरे और आकाश शयन योहै वृक्षकी शाखोंमें शयन सो करे ॥६॥ सो भगवान्का भक्त शुद्ध होय कर्के मेरे कर्ममें परायण होताहै हे महाभागे इस प्रकार मेरेको प्यारा यो प्रायश्चित्त तिसको करे ॥७॥ हेदेवि आचार कर्के वहिष्कृत योहै बाहर करा हुआ सो पापतें रहित होताहै हे भद्रे रजस्वला स्त्रीको स्पर्श कर्के यो मेरे को स्पर्श कर्ताहै उसका प्रायश्चित्त मैंने तेरेको किहाहै ॥ ८ ॥

विष्णुं कौंस्पर्शं कर्त्ता यो अधोवायु त्याग कर्त्ता मनुष्य तिसका प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराहजी कहि तेहैं हे भूमे मेरेकों स्पर्श कर्के यो मनुष्य अधोवायु त्यागताहै कैसा वायु विष्टाके तुल्य दुर्गधि और वायु कर्के पीडित भया मन जिसका ॥ १ ॥ सो मनुष्य तीन वर्ष मक्षिका होताहै और फेर तीन वर्ष चूहा होता और पंचवर्ष कुत्ता होताहै और नववर्ष कूर्म क्या कछू होताहै ॥ २ ॥ यो मनुष्य शास्त्रकों जानता और मेरे कर्ममें तत्परहै हे देवि उसका योतापनहै दुःस्वसो मेरेकों मोहन कर्त्ताहै ३ । इसवचनकों सुनकर हृषीकेशयो भगवान् तिसका परत कर्के पृथ्वी कहतीहै ४ ॥ धराणिः पृथ्वी कहितीहैं हे भगवन् तुमारे कर्ममें पूजनादिमें तत्पर यो मनुष्य सो पूर्वाक्त दोषतें अतुल पापकों प्राप्त हो

विष्णुं स्पृशतोऽधोवायुप्रमोचने प्रायश्चित्तम् वाराहः । स्पृश्यमानेन भूमे वा
तकर्म प्रमुंचति पुरीषसदृशं वायुं वायुपीडितमानसः १ मक्षिका पंचवर्षाणि
त्रीणि वर्षाणि मूषकः श्वाच्चैव पंचवर्षाणि कूर्मो वै जायते नव २ एष वै तापनं देवि मो
हनं मम शंसति यो वै शास्त्रविजानाति मम कर्म परायणः ३ श्रुत्वा वाक्यं हृषीके
शंप्रत्युवाच वसुंधरा ४ धराणिः अतुलं लभते पापं तव कर्म परायणः तस्य देव
सुखार्थाय विशुद्धिं वक्तुमर्हसि ५ वाराहः शृणु कात्स्न्येन मे देविकथ्यमानं मया
नद्ये अपराधमिमं कृत्वा संतरेद्यन कर्मणा द्यावकेन दिन त्रीणि नक्तेन च पुन
स्त्रयः कर्म चैवं ततः कृत्वा स च मेनापराध्यति ७ सर्वसंगं परित्यज्य मम लोका
यगच्छति एतत्ते कथितं भद्रे महत्कर्मापराधिनः दोषं चैव गुणं चैव यत्त्वया प
रिपृच्छ्यते ॥ ८ ॥

ताहै हे देव तिसके सुखके निमित्त विशुद्धियोहै सो तुम कथन करणे योग्यहो ५ ॥ (वाराहः) वाराहजी कहितेहैं हे देवि कहिना यो मैंहां उसकों तू संपूर्णता कर्के श्रवण कर इस अपराधकों कर्के जि स कर्म कर्के तरताहै ॥ ६ ॥ तीन दिन यवोका कोटा भोजन करे और तीन दिवस नक्त क रे क्या रात्रिमें एकवार भोजन करे इस प्रकार प्रायश्चित्त करणे कर मेरे अपराधकों नहि प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ संपूर्ण संगोंकों त्याग कर्के वैकुण्ठकों प्राप्त होताहै हे भद्रे हैं भूमे म हत्कर्मापराधि योहै क्या नारायणकों स्पर्श कर्के अधोवायु त्यागता यो पुरुषहै उस अपराधि के दोष तथा गुण सो संपूर्ण यो तैनै मेरेकों पूछाहै सो मैंने कथन कर दिआहै ॥ ८ ॥

२३२ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥

विष्णु कर्मको कर्ता योहै मनुष्य उसके विष्टायागनमें प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराह जीहै भूमेमेरे कर्के कथ्य मान योहे अर्थात् योमें कहिताहां उसकों तू तत्त्वकर्के सुण योमनुष्य मेरे कर्मकोंक ताहुआ विष्टाकों त्यागताहै ॥ १ ॥ सोदिव्य हजार वर्ष १००० गैव नरकमें वसताहै तहां उसरौवनरकमें बडेदुःख कर्के युक्त हुआ विष्टाकों खाताहै ॥ २ ॥ इसअपराधमें मैतेरेकों प्रायश्चित्त कहिताहां जिस प्रायश्चित्तके करणे कर्के पापतें रहित होताहै मेरेकर्मते अष्ट भया योमनुष्य सो व्याकुलयोमन उसकर्के ॥ ३ ॥ एक जलमयीशय्या करे क्या एकरात्र जलमेंवास करे और एकरात्र आकाश शयनकरे क्यावृक्षकी शाखाउपर शयन करे ऐसे विधान कर्केसो मनुष्य अपराधतें रहित होताहै ॥ ४ ॥ हेभद्रे योमनुष्य मेरेकर्मकों कर्ता हुआ विष्टाकरदेवे

विष्णुकर्मकुर्वतःपुरीपमोचनेप्रा० वाराहः शृणुतत्त्वेनमेभूमेकथ्यमानंमया नघे पुरीर्षमुंचतेयस्तुममकर्मसमाचरन् ॥ १ ॥ दिव्यंवर्षसहस्रंतुरौर वेनरकेवसेत् पुरीर्षमक्षयेत्तत्रमहादुःखसमन्वितः ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तं व दाम्यत्रयेनमुच्येतकिल्बिपात् ममकर्मपरिश्रष्टेविवृहलेनांतरात्मना ३ एकांजलमयींशय्यामेकामाकाशशायनीं एवंकृत्वाविधानंतुसोपराधात्प्रमु च्यते ४ एतत्तेकथितंभद्रेपुरीर्षयःसमुत्सृजेत् मद्भक्तेषुविशालाक्षिश्रप राधविनिश्चयः ५ विष्णुपूजयतोमौनत्यागेप्रायश्चित्तम् वाराहः। मुक्तातुम ममंत्राणिममकर्मपरायणःप्रायश्चित्तविधिंदेवियस्तुवाक्यंप्रभापते सूर्खो भवतिसुश्रोणिजात्यविसप्तपंचच १ ॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणिममकर्मपरा यणः प्रायश्चित्तविधिंदेवियेनमुच्येतकिल्बिपात् ॥ २ ॥ आकाशशयनं कृत्वादिनानिदशपंचच मुच्येतंकिल्बिपात्तत्रदेविचैवनसंशयः ॥ ३ ॥

उसपापका प्रायश्चित्त किहा है विशालाक्षि मेरेभक्तोंमें अपराधका एहविशेष कर्के निश्चय है ॥ ५ ॥ विष्णु कों पूजता यो मौनका त्यागकर्ताहै तिसकों प्रायश्चित्त वाराह जी कहितेहैं हेभू मे मेरेपूजनकों कर्ता योमनुष्य सो मेरे मंत्रोंकों त्याग कर्के यो और वाक्य बोलता- है अर्थात् पूजनमें वातां कर्ताहै सो मनुष्य सात जन्म अथवा पांच जन्म सूखंहोता- है ॥ १ ॥ हेसुश्रोणि यो मेरे कर्ममें तत्परहै तिसकों उसपापका प्रायश्चित्तमें कहिताहां जिसके करणे कर्के पापतें रहितहोताहै । २। सोमनुष्य उस अपराधके दूरकरणेवास्ते पंदरा १५ दिनआकाशशयन करे हेदेविइसप्रायश्चित्त करणेकर्के पापतेरहितहोताहै इसमें संशयनहिहै १

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २३३

नीलवस्त्र कोंधागर्के विष्णुके स्पर्शमें प्रायश्चित्त वाराहजीकहितेहैं हेपृथ्वी नीलवस्त्र धार कर्के योमेरे कों स्पर्शकर्ताहै सो मनुष्य पांचसौ वर्ष ५०० कीडाहोय कर्के स्थितहोताहै ॥ १ ॥ हेसुश्रोणि तिस अपराधका विशोधन यो प्रायश्चित्तहै अर्थात् तिस पापके दूरकरणे वाला सोमें कहिताहूं हेविशालाक्षि जिसप्रायश्चित्त केकरणे कर्के मनुष्य पापतैरहित होताहै ॥ २ ॥ हेभू प्रे विधिदृष्टयो कर्महै अर्थात् शास्त्र कर्के दिखायायोमार्ग उसमार्ग कर्के चांद्रायण व्रतकों करणे कर्के पापतैरहित होताहै इसमें संशय नहिहै ॥ ३ ॥ बिधान विना नारायणके स्पर्शमें प्रायश्चित्तकहितेहैं वाराह भगवान्जी हेभूमें अभिधानेन कोर्थः कोई यो अशुद्ध वस्तुहै उसकों स्पर्श

नीलवस्त्रधृत्वाविष्णुस्पर्शप्रा० वाराहः ॥ भूपितोनीलवस्त्रेणयोहिमामुपपद्य तेवर्षाणांचशतपंचक्रिमिभूत्वासतिष्ठति १ ॥ तस्यवक्ष्यामिमुश्रोणिअपराधविशोधनं प्रायश्चित्तंविशालाक्षियेनमुच्येतकिल्विपात् ॥ २ ॥ व्रतंचांद्रायणंकृत्वाविधिदृष्टेनकर्मणा मुच्यतेकिल्विपाद्रूमेएवमेतन्नसंशयः ३ अविधानेनविष्णुस्पर्शने प्रायश्चित्तम् वाराहः अविधानेनसंस्पृश्ययोहिमामुपसर्पति समूर्खः पापकर्माचमविप्रियकारकः १ ॥ अविधानेनकिमप्यशुद्धंसंस्पृश्य ममाभियउपसर्पतीतिसंबधः ॥ तेनदत्तंवराहोहे गंधमाल्यसुगंधिनः प्रापनंचनगृह्णामिसृष्टंचापिकदाचन २ ॥ ततो नारायणवचः श्रुत्वासासंशितव्रता उवाचमधुरंवाक्यंधर्मकामावमुंधरा ॥ ३ ॥ धरणिः यन्मातृभाषसेनाथ आचारस्यव्यतिक्रमं उपस्पृष्टुःसमाचारंरहस्वंबक्तुमर्हसि ॥ ४ ॥ केनकर्मविधानेनभूत्वाभगवताभुवि उपस्पृश्योपसर्पति तवकर्मपरायणाः ॥ ५ ॥

कर्के यो मनुष्य मेरेकों स्पर्श कर्ताहै सो मूर्ख पाप कर्म के करणे वाला मेरेकोंदुःखदेणेवाला है ॥ १ ॥ हेवरारोहे तिसमनुष्यने दियेयां गंध और पुष्प और सुगंधद्रव्य और नेवेद्य तिनकोंमें कदाचित् बीनहिं ग्रहण कर्ताहां ॥ २ ॥ तिसनें वाराहजीका वचन सुणकर्के सो पृथ्वी धारयाहै व्रत जिसनें और धर्म कामा मधुर यो वचनहे सो कहिताहै ॥ ३ ॥ धरणिः । पृथ्वी कहिताहै हेस्वामिन् योमेरेकों तुम आचारका व्यतिक्रम कहितेही सो स्पर्शकरणेवालेके समाचार यो रहस्य सोतुमकहिने योग्यहौ ॥ ४ ॥ किस कर्मके करणे कर्के पृथ्वीमें भगवान् केभक्त होणेकर आचमनोंकों कर्के तुमारे कर्मोंमें परायणयोहैं सो तुमारे समीप प्राप्तहोतेहैं ॥ ५ ॥

२३४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

एतन्निति हेदेव एहमेरेको संशयहे औरमेरे मनमें परम कौतुकहे तुमारे भक्तोंके सुखके वारंत निष्कलयो प्रायश्चित्तहे सांतुमकथन करेण योग्यही ॥ ६ ॥ वाराहजी कहितेहे हे देवि तिस कर्के योतुंमेरे कोंकहिनीहे सांतुं श्रवण करमेरायोएह गुह्य कथनहे उसकोतुं यथार्थ कर्के श्रवण कर ॥ ७ ॥ यामनुष्यसर्वे कर्म्मोंको त्यागकर्के मेरेको प्राप्तहोताहे हेसुश्रोणितिसमनुष्योंको आचमन कर्के योक्रियाहे उसकोतुं सुण ॥ ८ ॥ सोमनुष्यपूर्वमुख होय कर्के जलोंकर्के पैरोंको धोवे और जिसप्रकार शास्त्रमें लिखाहेतेसंहि आचमनकर्के तीनमृत्तिकायोहे तिनको ग्रहणकरे अर्थात् तिन्नावार मृत्तिका हाथोंकोलगावे ॥९॥ तिसते उपरंत जलकर्के हाथोंकोधोवे फेर सात

एतन्मेसंशयंदेवपरंकौतुहलंहिमे तवभक्तसुखार्थायनिष्कलंवक्तुमर्हसि ६ वाराहः। शृणुष्वेतनमेदेवियन्मांत्वंभीरुभापसे कथितंममतत्वेनगुह्यमेतत्परंमहत् ७ विमुच्यसर्वकर्म्माणियोहिमामुपसर्पति तस्यवैशृणुसुश्रोणि उपस्पृश्यचयत्क्रिया ८ भूत्वापूर्वमुखस्तत्रपादौप्रक्ष्याल्यचांबुभिः उपस्पृश्यथान्यायंतिस्त्रांवैगृह्यमृत्तिकाः ९ ततःप्रक्षालितंहस्तंजलेनतदनंतरं सप्तकोशंततोऽगृह्यमुखंप्रक्षालयेत्तथा १० कोशशब्दोऽत्रजलप्रसृतिपरः सत्तुशपथानुक्तातरूपः॥पादमेकैकशस्तद्वत्पंचपंचन्यसेत्ततः करैःसंमृज्यतां तत्रयदीच्छेतममप्रियम् ११ त्रीणिकोशान्पिबेत्तत्रसर्वकार्यविशोधनंकराभ्यांमुखमार्ज्येतसर्वमिंद्रियनिग्रहम् १२ प्राणायामंततः कृत्वाममचिंता परायणः कर्म्मणाविधिदृष्टेनभवेत्संसारमोक्षणम् १३ त्रीणिवारान्स्पृशेत्तत्रशिरोब्रह्मणिसंस्थितः त्रीणिवारान्पुनस्तत्रउभौतौकर्णनासिके १४

चुलिआं जलले कर्के मुखकोधोवे॥१०॥ और फेर एक एकपादकोपांच पांच चुलिआं कम ते जल किआं स्थापन करे अर्थात् पैरोंको धोवे और हाथ योहे उनको धोवेयोंमेरे प्रियको इच्छाकरे॥ ११ ॥ फेर तीनचुलिआं जल किया पीवे उस जलके पीणे कर्के संपूर्ण देहकी शुद्धिहोती है और हथों कर्के मुखको धोवे और संपूर्ण इंद्रियोंको रोके॥१२॥ और तिसते उपरंतमेरे ध्यानमें तत्पर होयकर प्राणायामको करे ऐसे विधि दृष्ट्योकर्म्महे तिसकर्म्म कर्के संसारकामोक्षहोताहे ॥ १३ ॥ और तीनवार शिरको स्पर्श करे और ब्रह्मध्यानमें स्थितहोवे और फेर तीन वार दोनो कर्ण और नासिका इनकोस्पर्श करे ॥ १४ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २३५

स्पृशेतेति तव निष्पाप हुश्रा मनुष्य योयोदेवता जिस जिस स्थानमें प्रतिष्ठित है उसउस देवता को स्पर्शकरे और तीन बार श्रेष्ठयो जलहै उसका अर्घदेवे १५ इसप्रकार मेरे अभिगमनमें मेरी प्रणिमामें कर्त्तव्यहै अथवा हे पृथ्वि तेरायोदेहहै नारायणकायो स्थान वणा हुश्रा तिसको स्पर्श कर्के यो मनुष्य मेरी प्रसन्नताको इच्छाकरे ॥ १६ ॥ इस प्रकार कर्त्तव्यहै और मेरे कर्ममें विशेष कर्के स्थितहै तिसमनुष्यको हे देवि अपराध नहिंहे इसमें संशय नहिं ॥ १७ ॥ तिस कारणतें नारायणकावचन पृथ्वी सुण कर्के मीठायो वचनहे संपूणे भक्तोंको प्यारासो वचन वाराह भगवान् जी को कहितीभई ॥ १८ ॥ पृथ्विकहितीहै हे भगवन् विधानतें विना तुमारेको स्पर्श कर्के यो

स्पृशेतनिष्कलस्तत्रयोयोयत्रप्रतिष्ठितः क्षिपच्च त्रीणि वाराणिसलिलं प्रवरं त्रयम् १५ एवमुक्तस्य कर्त्तव्यं ममाभिगमने पुच उपस्पृश्य तनुं वा ते यदीच्छे तप्रियं मम १६ एवं च कुर्वतस्तस्य मम कर्मव्यवस्थितः अपराधं न विदे तदेवि एवं न संशयः १७ ततो नारायणवचः श्रुत्वा देवी वसुंधरा उवाच मधुरं वाक्यं सर्वभागवतप्रियम् १८ धरणिः ॥ उपस्पृश्या विधानेन यस्तु कर्म्मणि चा प्रयात् तापनं शोधनं चैव तद्भवान्वक्तुमर्हसि १९ वाराहः ॥ शृणु तत्त्वेन मे भूमे इदं गुह्यमनिदितं यां गतिं च प्रपद्यंते मम शास्त्रवहिष्कृताः २० व्यभिचारं च मे कृत्वा यो नुमा मुपसर्पति दशवर्ष सहस्राणि दशवर्षशतानि च २१ भूत्वा क्रिमिर्यथान्यायं तिष्ठते नात्र संशयः प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि तस्य मूर्खस्य माधवि २२ यच्च कृत्वा महाभागे कृतकृत्यः पुनर्भवेत् २३

मनुष्य कर्मोंको कर्त्ताहै उसको तापनयोहै और शोधनयोहै प्रायश्चित्त सो तुम कथन करणे योग्यहैं ॥ १९ ॥ वाराह जी कहितेहै हे भूमे हे अनिदिते एहयो गुह्यहै सो तूं मेरेनें यथार्थ कर्के सुण मेरे शास्त्र कर्के वहिष्कृतयोहैं मनुष्य अर्थात् शास्त्रयें वारह वर्त्तने वाले जिस गतिकों प्राप्त होतें हैं सो तूं सुण ॥ २० ॥ यो मनुष्य मेरा व्यभिचार कर्के अर्थात् मेरा अपराध कर्के मेरे को स्पर्श कर्त्ताहै सो मनुष्य जाराहजार वर्ष ११००० विष्टाका कोडा होताहै २१ इसमें संशय नहिंहे हे पृथ्वी सो यो मूर्ख मनुष्य उसका प्रायश्चित्त मैं कहिनाहां ॥ २२ ॥ हे महाभागे जिस प्रायश्चित्तको कर्के मनुष्य फेर कृतकृत्य होताहै ॥ २३ ॥

२३६ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥

महेति महासांतपन यो ब्रत तिसकों कर्के फेर तप्तकच्छुयो ब्रत तिसकों ब्राह्मण क्षत्री वैश्ययोमेरे मतमें स्थितहैं सो प्रायश्चित्त करे॥२४॥हे यशस्विनि भूमे इस विधान कर्के योमनुष्य प्रायश्चित्त कों कर्तेहैं सो मनुष्य पापते रहितहोय कर्के परम गतिकों प्राप्तहोतेहैं॥२५॥*अब क्रोधयुक्त यो मनुष्य तिसकों विष्णुके पूजनमें और विष्णुके स्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराहजी॥ वाराह भगवान् कहितेहैं हे यशस्विनि हे भूमे योमनुष्य क्रोध कर्के युक्त होय कर मेरेकर्ममें परायणहै अर्थात् मेरे कर्मोंको कर्ताहै और चित्तको चला चल कर्के अर्थात् मनके रोके विना मेरे अंगोंको स्पर्श कर्ताहै॥३॥सो हे देवि मैं तिसके साथ रागको नहीं इच्छा कर्ता और क्रोधयुक्तयोहै उसकों वीमें नहीं इच्छा कर्ताहां मैयोहां सर्वदाकालसेकहैं इंद्रियजिसने और शुभ भगवान्जी

महासांतपनंकृत्वा तप्तकच्छुं तु निष्कलं ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या ममथे च मते स्थिताः २४ अनेन विधिना कृत्वा प्रायश्चित्तं यशस्विनि किल्विपाद्विप्रमुक्ता स्ते गच्छति च परांगतिम् २५ त्वयि विधानेनोपस्पृश्या पराधप्रायश्चित्तम् ॥* क्रोध युक्तस्य विष्णुपूजने स्पर्शे च प्रा० वाराहः ॥ यस्तु क्रोधसमाविष्टो मम कर्म परायणः स्पृशेत् मम गात्राणि कृत्वा चित्तं चलाचलम् १ न चाहं रागमिच्छामि क्रुद्धमेव यशस्विनि इच्छामि च सदादांतं शुभं भागवतं शुचिम् २ पंचेन्द्रियसमायुक्तं लाभालाभविर्जितं अहंकारविनिर्मुक्तं कर्मण्यभिरतं मम ३ अन्यच्च ते प्रवक्ष्यामि तच्छृणु त्वं वरानने सयथालभते क्रुद्धः शुभो भागवतः शुचिः ४ चिल्ली जातो वर्षशतं श्येनो वर्षशतं पुनः मंडूकः शतवर्षाणि यातुधानः पुनर्दश ५

काभक्त॥२॥और पवित्र और पांचयों इंद्रियहैं इनों कर्के युक्त है अर्थात् सभ इंद्रियको मेरे विषे हियो लगाता है और लाभालाभ कर्के रहित और अहंकार कर्के रहित और मेरे कर्ममें प्रीति युक्त ऐसा यो मनुष्य उसको मैं इच्छा कर्ताहां॥३॥और हे वरानने हे भूमे और मैतेरेकों कहिताहां सो तूं सुणसों भगवान्का भक्त और पवित्र भी है प रंतु क्रोधीयोहै सो जेमें फलकों प्राप्त होता सो तूं सुण॥४॥सो मनुष्य सौवर्ष १०० चीलकी योनिकों प्राप्तहोताहै और फेर सौ वर्ष १०० वाजपक्षी होताहै और फेर सौ वर्ष १०० मंडूकक्या डिंडु होताहै और फेर हजार वर्ष १००० राक्षस यो निमै प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २३७

मूषक इति और सोमनुष्य सठ वर्ष ६० मूषक होता है और फेर वीर्यके भोजन करने वाला जीव विशेष होता है ॥ हे सुश्रोणि फेर पांच ५ सात ७ नव ९ वर्ष अर्थात् ९७५ वर्ष नेत्रों कर्करहि त क्या अन्ध होता है ॥ ६ ॥ और फेर सोमनुष्य वत्तरी वर्ष २ इल्लड होता है और फेर दश वर्ष १० चक्रवाक पक्षी होता है और पुनः सवाड यो है जलके बीच जाला तिसकों खाणे वाला जीव होता है और पुनः आकाशमें गमन करने वाला होता है ॥ ७ ॥ हे भूमे इस प्रकार क्रोधके मार्गमें वर्त्त तायो मनुष्य सो इतनिआं पूर्वोक्त योनिआं भोग कर्के आपणे कर्मके अपराधकर्के संसार रूपी समुद्रमें फेर ब्राह्मणयोनिमें प्राप्त होता है ८ ॥ पृथ्वी कहिती है हे देव अहो इत्याश्रय्ये यो तुमने परम गूढ धर्म प्रथम मेरे को किहा तिसकों सुन कर्के मेरा चित्त व्याकुल होगया है सो किसी म्यानमें भी

मूषकः पाष्टिवर्षाणिरेतो भक्षस्तु जायते अन्धो जायेत सुश्रोणि पंचसप्तनवं तथा ॥ ६ ॥ गृध्रो द्वात्रिंशवर्षाणि चक्रवाको दशैव च शैवाल भक्षिता चैव ह्याकाशगमनस्तथा ॥ ७ ॥ ब्राह्मणो जायते भूमे क्रोधस्य च पथे स्थितः आत्मकर्मपराधे न प्राप्तः संसारसागरे ॥ ८ ॥ धरणिः ॥ अहं वै परमं गुह्यं यत्त्वया पूर्वभाषितं जातं मे विह्वलं चित्तं नास्थिरं जायतं क्वचित् ९ यत्त्वया भाषितं ह्रीं भक्तानां च दुरासदं श्रुत्वा सुदुस्तरं सारं भीताः स्मि परिदेविता ॥ १० ॥ नाहमाज्ञापयामि त्वां देव देव जगत्पते मम चैव प्रियार्थाय सर्वलोकसुखाय हम् ॥ ११ ॥ येन मुच्यंति संक्रुद्धालुब्धाः कर्मपरायणाः अल्पसत्त्वागतभयारागलोभसमन्विताः ॥ १२ ॥ तरंतियेन दुःखानि प्रायश्चित्तं च मे वद ततः कमलपत्राक्षो वाराहमुखसंस्थितः न शकुमारभद्रतन्ध्याममनारायणो ब्रवीत् १३

स्थिर नहीं होता है ॥ ९ ॥ यो तुमने निश्चय कर्के एह धर्म मेरे को किहा भक्तों को दुरासद और अतिशय कर्के दुस्तर और सार उसको सुणकर मैं डरी हूँ और परिदेविता क्या विलाप करती हूँ और कांपती हूँ ॥ १० ॥ हे देव देव हे जगत्के स्वामिन् मैं तुमारे को नहि कहती तुमारे प्रियके निमित्त और संपूर्ण लोकों को सुखके देणे वाला यो धर्म सो कहो ॥ ११ ॥ जिस कर्के क्रोधी और लोभियो मनुष्य कर्मोंमें तत्पर हैं और थोड़ा है धैर्य जिनका और दूर होगया भय जिनका राग लोभ कर्के युक्त है ॥ १२ ॥ जिस कर्के दुःखों को तरते हैं ऐसा प्रायश्चित्त मेरे को कहो तिस समय कमल पत्रकी न्याई नेत्र जिनके सो वाराह मुखमें स्थित यो भगवन् सो आप कथन करणों समर्थ नहीं होते भये कहिते भये मेरे को नारायण जी कहिते भये ॥ १३ ॥

२३८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्राथश्रित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

ततइति यदवराहजीने उत्तर नहिकीता तद तिसजगावैठेथेमुनितिनकावचनहे तिसतें उपरंत पृ
थ्वीकावचन सुण कर्के ब्रह्माजीका पुत्र सनत्कुमारमुनि योगके जाणने वाला पृथ्वीकों कहितो
भया ॥ १४ ॥ हेभूमेतंधन्यहैं और वडेभाग्यों वालीहैं तैनेपूछेयो हरिहैं वाराहरूपीभगवान् संपूर्ण
या मायाहौतिनके करंडक क्या पिटारहैं ॥ १५ ॥ हेदेवि तैने क्या कथन कियाहैं और श्रीवा
राह भगवान्‌योहैं संपूर्ण योगोंके अंग और योगके जाणनेवाले नारायणदेव और संपूर्ण धर्मों
के जाननेवालेआमैं श्रेष्ठतरेकर्के पूछेहुयेक्याकहितेभये सोकहो ॥ १६ ॥ ऐसे सनत्कुमार जी
कावचनसुणकर्के सोपृथ्वीसनत्कुमारकों परत कर्केकहितोहै हेब्रह्मन् योतैने पूछयाहे सो पृथार्थ

ततोभूम्यावचः श्रुत्वाब्रह्मणश्चसुतोमुनिः सनत्कुमारोयोगज्ञःप्रत्युवाचव
सुधराम् १४ धन्याचैवसभाग्याचयत्त्वयापृष्टवान्हरिः वाराहरूपीभगवा
न्सर्वमायाकरंडकः १५ किंत्वयाभापितंदेविसर्वयोगांगयोगवित् देवाना
रायणस्तत्रसर्वधर्मविदांवरः १६ हेदेवितस्मैत्वयाकिंभापितंससर्वयो
गांगयोगविदेवः किमवददितिसंवन्धः॥कुमारवचनंश्रुत्वासामर्हाप्रत्यभाष
तशृणुतत्त्वेनमेब्रह्मन्यत्त्वयापरिपृच्छ्यते १७ कार्यक्रियांचयोगचअध्यात्मं
पार्थिवस्थितिं एतन्मेपृच्छतोब्रह्मन्देवोनारायणःप्रभुः १८ पृच्छतः पृच्छं
त्याइत्यर्थः ततोमांभापतेब्रह्मन्विष्णुर्मायाकरंडकः क्रुद्धाद्भगवतोब्रह्मन्येन
शुध्यतिकिल्बिपात् १९ कृत्वातेनव्रतंचैवममकर्मपरायणः पष्टेकालेतुभुंजी
तगृहभिक्षामनिंदिते २० अष्टौभिक्षायथान्यायंशुद्धाभगावतागृहे यएतेन
विधानेनब्रह्मकर्माणिकारयेत् २१ ॥

कर्के मेरेतें सुण ॥ १७ कार्य क्रिया योग अध्यात्म पार्थिवस्थिति एह पांचप्रश्नइनकों पूछतो
योमैं ही मेरेकोंहैसनत्कुमारनारायणभगवान् १८ ॥ प्रभु देवविष्णु और संपूर्ण मायाके पिटार
तिसतें उपरंत मेरेकों कहितेहैं हेब्रह्मन् कोधकों प्राप्तभये योभगवान् तिनोंथें जिसकर्के पापतें शु
द्ध होताहै ॥ १९ ॥ तिसीप्रकार कर्के मेराभक्त व्रतकों कर्के छेमां योभोजनकाकालहै अर्थात्
तीसरे दिनरात्रिमे हे अनिंदिते भिक्षाकेअन्नकों घरमें भोजनकरे॥ २०॥ अष्टाविति यथान्यायक
र्के आठभिक्षा योहै अर्थात् अष्टांघ रांकी भिक्षा शुद्धभगवान् जीकेनिमित्त घरमें ले आवे यो
मनुष्य इस विधानकर्के ब्रह्म कर्मोंकों कर्ताहै तिसके करणसे पापतें रहित होताहै ऐसे
जनार्दन भगवान् कहिते भये ॥ २१ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी ० भा० ॥ २३९

हे सनत्कुमार यो परमसिद्धि को तू डच्छा कर्ता है और विष्णुलोक को चाहता है तब द्विजों में मुख्य तू शीघ्र विष्णु भगवान् जी का आराधन कर इसमें संशय नहि है ॥ २२ ॥ तिसते उपरंत भूमिका वचन सुण कर्के ब्रह्मा का पुत्र सनत्कुमार मुनि विशाल है नेत्र जिसके और धर्म में कामना जि सकी औसीयो पृथ्वी तिसको परत कर्के कहिता भया ॥ २३ ॥ हे देवि यो तेने किहा है अहो इत्या श्रय्ये सो गूढ रहस्य है और तिस भगवान् जी के मुख ते निकसे यो धर्म है सो धर्म तू मेरे ताई कहिणे को योग्य है ॥ २४ ॥ पृथ्वी कहिती है हैं सनत्कुमार तिसते उपरंत पुंडरीकाक्ष शंखचक्रगदा एह धारे हैं जिसने सो वाराहरूपी भगवान् और लोकनाथ और जगत्के पति ॥ २५ ॥ और

मुच्यते किल्विपातत्र एवमाह जनार्दनः यदीच्छसि परां सिद्धिं विष्णुलोकं द्वि
जोत्तम शीघ्रमाराधाये द्विष्णुं द्विजमुख्यो न संशयः २२ ततो भूम्यावचः श्रु
त्वा ब्रह्मणश्च सुतो मुनिः प्रत्युवाच विशालाक्षी धर्मकामां वसुंधराम् २३ ॥
अहो गूढं रहस्यं च त्वया देवि भाषितं तस्य ये मुखनिष्क्रांता धर्मास्तान्व
क्तुमर्हसि २४ धरणिः ततः सपुंडरीकाक्षः शंखचक्रगदाधरः वाराहरूपी
भगवान् लोकनाथो जनार्दनः ॥ २५ ॥ उवाच मधुरं वाक्यं मेघदुंदुभिनिस्व
नः भक्तकर्मसुखार्थाय गुणविन्नसमन्वितम् २६ अनेनैव विधानेन स्वाचा
रेण समन्वितः देविकारयते कर्मममलोकाय गच्छति २७ ॥ क्रुद्धेन न च कर्त्त
व्यं लोभेन त्वरया न च मत्पूजनं विशालाक्षियदाच्छेत्परमांगतिम् ॥ २८ ॥
ये मां देविय जिष्यन्ति क्रोधं त्यक्त्वा जितेन्द्रियाः संसारं तेन गच्छन्ति अपराधविव
र्जिताः ॥ १९ ॥ इति क्रुद्धापराधप्रयश्चित्तम् ॥

मेघ की न्याई शब्द जिसका सो मधुर वचन कहिता भया भक्तों का यो कर्म तिसके सुख के निमित्त गुण और धन कर्के युक्त ॥ २६ ॥ इसी विधान कर्के और आपणे आचार कर्के युक्त हे देवि यो मनुष्य कर्म को करता है सो मेरे लोक को जाता है ॥ २७ ॥ हे देवि क्रोध कर्के और लोभ कर्के और शीघ्रता कर्के हे विशालाक्ष मेरा पूजन नहि करणे योग्य यो मनुष्य परम गतिको डच्छा करे ॥ २८ ॥ हे देवि यो मनुष्य क्रोध को त्याग कर्के और इंद्रियों को जीत कर्के मेरे को पूजते हैं सो मनुष्य अपराधों कर्के रहित हुये संसार को नहि प्राप्त होते अर्थात् सो मनुष्य जन्म मरण ते रहित होते हैं ॥ २९ ॥

२४० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥

अकर्मण्य योपुष्पहैं योभगवान्केपूजनकेयोग्यनाहैं तिनों ककें विष्णुपूजनमें प्रायश्चित्तवाराहजी कहितेहैं हेभूमे अकर्मण्ययो पुष्पहैं योनहिनारायणकेपूजनयोग्य उमों पुष्पोंककें योमनुष्यपृथ्वी में मेरेको पूजताहै तिसकों योपापहै सोमैंतेरेकों कहिताहां हेपृथ्वि सोतूं श्रवणकर ॥ १ ॥ सो योहैं मूर्खभक्तमें विप्रियके करणवाले तिनोंका दिआ योहै सोमैं नहिं ग्रहण कर्ता और ओहों भक्तमें प्यार नहिंहैं ॥ २ ॥ जेडे पुष्पनहि पूजा योग्य सो विष्णुधर्मांतमें लिखेहैं सो मूलमें अर्थ स्पष्टहै ओहोयोपुष्पहैं उनके साथ पूजन करणें थोर नरकमें पडतेहैं और अज्ञानके दोषककें दुःखोंकों भोगतेहैं ॥ ३ ॥ सोमनुष्य उसदोषककें दश वर्ष वानर होताहै और तेरा वर्ष १२ मार्जार होताहै और पांच वर्ष ५ मूपक होताहै और वारां वर्ष १२ बल

अकर्मण्यपुष्पविष्णुपूजनप्रा०वाराहः ॥ अकर्मण्येनपुष्पेणयामामर्च
यतेभुवि पातनंतस्यवक्ष्यामितच्छृणुत्वंवसुंधरे ॥ १ ॥ नाहंतत्प्रतिगृह्णा
मिनचतेवैममाप्रियाः सखैर्भागवतैर्दत्तंममविप्रियकारिणः ॥ २ ॥ अकर्मण्य
पुष्पाणिविष्णुधर्मांतरे ॥ उग्रगंधीन्यगंधीनिकुसुमानिनदापयेत् अन्यायत
नजातानिकंटकीनितथैवच ॥ १ ॥ रक्ताण्यकालजातानिचैत्यवृक्षोद्भवानि
च कृष्णचकटजचार्कनैवदेयंजनार्दनइति २ पतंतिनरकेघोरैरौरवेतदनंतरं
अज्ञानस्यचदोषेणदुःखान्यनुभवन्तिच ॥ ३ ॥ वानरोदशवर्षाणिमार्जारश्च
त्रयोदश मूपकःपंचवर्षाणिवलीवर्दश्चद्वादश ॥ ४ ॥ छागश्चैवाष्टवर्षाणि
मासंयैग्रामकुक्कुटः त्रीणिवर्षाणिमहिषाभवत्येवनसंशयः ॥ ५ ॥ एतत्तेक
थितंभद्रेपुष्पंयन्मेनरोचते अकर्मण्यंविशालाक्षिपुष्पंयेचददंतिवै ॥ ६ ॥
धरण्युवाच ॥ भगवन्यदितुष्टोसिविशुद्धेनांतरात्मना येनशुद्ध्यंतितेभक्तास्तव
कर्मपरायणाः ७ ॥ वाराहः ॥ शृणुतत्त्वेनमेदेवियन्मात्वंपरिपृच्छसि प्राय
श्चित्तमहाभागेयेनशुद्ध्यंतमानवाः ॥ ८ ॥

द होताहै ॥ ४ ॥ और आठवर्षवकराहोताहै और महीना मात्र ग्राम कुक्कुट होताहै और तीनव
र्ष महिष होताहै इसमें संशयनहिहै ॥ ५ ॥ हे भद्रे एहमैंने तेरेको किहाहै यो पुष्प मेरेकों
नहिं अछेलगते और योनहिं पूजन योग्य ओहोपुष्प योमनुष्य मेरेकों देतेहैं उनकों एह पूर्वोक्त
फलहोताहै ॥ ६ ॥ पृथ्वी कहितोहै हे भगवन् येतुममेरे ऊपर अंतः करण कर्के प्रसन्न
हौ तव जिस कर्के तुमारे भक्त तुमारे कों पूजने वाले शुद्ध होतेहैं सो तुमकहो ॥ ७ ॥
वाराहजीकहितेहैं हेदेवि योतूंमेरेकों पूछतोहैं सो यथार्थकर्केसुण हेमहाभागे प्रायश्चित्तमें तेरेकों
कहिनाहां जिसकर्के मनुष्य शुद्धहोतेहैं ॥ ८ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० २४१

हेपृथ्वि तिसरें उपरंत महीनाभर एकवार भोजनकरे और महीना भर वीरासन स्थित होवे और महीनामें सातमें सातमें दिनमें चतुर्थ काल एक बार भोजन करे अथवा सप्त सप्त क्या उणुज॥दिन वीरासनकरे १॥और एक महीना चौथेपहर भोजनकरे और महीना भर घृत और पायस भोजन करे और तीन दिन यावकान्न भोजन करे यवोंका कोटा और तीन दिन पवन भोजन करे अर्थात् निराहार स्थित हावे १०॥ हेदेवियो मनुष्य इस प्रकार कर्के कर्मोंको कर्ताहै सोसंपूर्ण पापोंकर रहित हुयामे लोकों प्राप्त होताहै ११ ॥ लाल वस्त्र धार कर्के ना रायणके पूजनमें प्रायश्चित्त वाराह जी कहितेहैं हेपृथ्वि लाल वस्त्र धार कर्के योमनुष्य मेरेको स्पर्श कर्ताहै अर्थात् मेरेको पूजताहै हे सुश्रोणि तिसको वीयो प्रायश्चित्त किहाहे संपूर्ण संसार

एकाहारंततः कृत्वामासमेकंवसुंधरे वीरासनविधिचैवकारयेत्सप्तसप्तच९
चतुर्थमक्षयमेकंचमासनघृतपायसम् यावकान्नंदिनत्रिणिवायुभक्षोदिनत्र
यम् ॥ १० ॥ यएनेनविधानेनदेविकर्माणिकारयेत् सर्वपापप्रमुक्तश्चमम
लोकंसगच्छति ११ ॥ रक्तवस्त्रधृत्वाविष्णुपूजनेप्रा० वाराहः॥रक्तवस्त्रेण
संयुक्तोयोहिमामुपसर्पति ॥ तस्यापिशृणुमुश्रोणिकर्मसंसारमोक्षणम् १
रजस्वलासुनारीपुरजायतत्प्रवर्तते तेनासौरजमास्पृष्टोकर्मदोषेणजानतः
॥ २ ॥ वर्षाणिदशपंचैवतस्येततत्रनिश्चयः ॥ तस्यतेकोर्थःतत्रापक्षिप्यते
तसुउपक्षेपेइत्यस्यधातोःप्रयोगः ॥ रजोभूत्वामहाभगिरक्तवस्त्रपरायणः ३
प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामितस्यकायविशोधनंयोनशुद्ध्यतिवभूमेपुरुषाः शास्त्र
निश्चिताः ॥ ४ ॥ एकाहारंततःकृत्वादिनानिदशमस्तच वायुभक्षोदिनत्रि
णिदिनमेकंजलाशनः ॥ ५ ॥

का मोक्ष करणे वाला सोतुं श्रवण कर ॥ १ ॥ हेमहाभागे लाल वस्त्रके धारण वाला योमनुष्यहे सोरजस्वला योस्त्रियाहैं उनमें योरजउत्पन्न होताहै उस रज कर्के सो मनुष्य जान कर्के कर्मोंके दोष कर्के स्पृष्ट होताहै और पंदरां वर्ष उस रजमें उसका उपक्षेपकरीदाहे अर्थात् निश्चय कर्के रजमें उसका वास होताहै ॥ २ ॥ हेमहाभागे लाल वस्त्रोंके धारण वाला रजहो य कर्के स्थित होताहै ॥ ३ ॥ उसके देहका विशोधन प्रायश्चित्तमें कहिताहां हेभूमि जिस प्रायश्चित्तके करणे कर पुरुष शास्त्र विषे निश्चय वाले शुद्ध होतेहैं ॥ ४ ॥ और तिसरें उपरंत दश दिन वा सात दिन एक बार भोजन करे और तीन दिन पवन भोजन करे और एक दिन जलको भोजन करे ॥ ५ ॥

एवमिति हेभूमे इसप्रकार मैंने किहा है मेरे अपराध के करणे वाला मनुष्य प्रायश्चित्तकों करलेवे त
व मेरेकों प्यार लगता है ॥ ६ ॥ हेभूमे एह मैंने तेरेकों किहा है लालवस्त्र धारक के यो मनुष्य मेरेकों
स्पर्श कर्ता है उसका प्रायश्चित्त हेमहाभागे संपूर्ण संसारका मोक्ष करणे वाला ॥ ७ ॥ ॥ अथ दीपवि
ना अन्धकारमें नारायण के स्पर्शमें प्रायश्चित्त कहिते हैं वाराहजी ॥ हेसुंदरि यो मनुष्य दीपते विना
अज्ञान कर्के मोहकों प्राप्त हुआ अन्धकारमें शीघ्र मेरेको स्पर्श कर्ता है ॥ १ ॥ उसका पतन यो है क्लेश
सो मैं कहिता हूं हे पृथिवी तू सुण तिस पाप कर्के क्लेशकों प्राप्त होय कर मनुष्योंमें अधम यो है सो दुः
खी होता है हेमहाभागे ॥ २ ॥ एकजन्म सो मनुष्य तमोमय अन्ध होता है और फेर सर्वाशी और

एवं समुच्यते भूमे मम विप्रियकारकः प्रायश्चित्तततः कृत्वाममासौ रश्चतसदा
६ एतत्ते कथितं भूमे रक्तवस्त्रविभूषिते प्रायश्चित्तं महाभागे सर्वसंसारमोक्ष
णम् ॥ ७ ॥ ॥ अन्धकारं पुदीपं विना विष्णुस्पर्शने प्रा० वाराहः ॥ यस्तु मामन्ध
कारे पुविना दीपेन सुंदरि स्पृशते मां विनाशास्त्रं त्वरमाणां विमोहितः १ ॥
पतनं तस्य वक्ष्यामि तच्छृणु त्वं वसुंधरे तेन क्लेशसमासाद्य क्लिश्यते च न राधमः
२ अन्धो भूत्वामहाभागे एकजन्म तमोमयः सर्वाशी सर्वभक्ष्यश्च मानवश्चै
व जायते ३ अनन्यमानसो भूत्वा भूमे ह्येतत्प्रसाधयेत् प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्या
मि अन्धकारे तु यः स्पृशेत् ४ संसारे येन तरति मम लोकाय गच्छति त्रक्ष्णो रा
च्छादनं कृत्वा दिनानि दशपंचच ५ एकाहारं ततः कृत्वा दिनविंशत् समाहितः
यस्य कस्यापि मासस्य एकमेव च द्वादशीम् एकाहारस्ततो भूत्वा तिष्ठेच्च
पि जलासनः ॥ ६ ॥

सर्वभक्ष्यक्या सभकुलखाय लैणे वाला मनुष्य होता है ॥ ३ ॥ हेभूमे एकचित्त होय कर्के इस प्राय
श्चित्तकों करे यो मनुष्य अन्ध कारोंमें मेरेकों स्पर्श कर्ता है उसको प्रायश्चित्तमें कहिता हूं ॥ ४
जिस प्रायश्चित्त के करणे कर संसारकों तरता है और मेरे लोकों प्राप्त होता है और सो मनुष्य ने
त्रोंको बांध कर्के पंद्रह दिन स्थित होवे और सावधान चित्त होय कर ॥ ५ ॥ इकी दिन एकवार
भोजन करे और जिस किस महीने की एकयो द्वादशी है उस दिनमें एकवार भोजन कर्के
जलासन हुआ अर्थात् केवल जलमें स्थित होवे ॥ ६ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २४३

तत इति तिसरें उपरंत गौके मूत्र कर्के पकाये योग्यवहैं तिनकों भोजन करे एहयो प्रायश्चित्तहै इस कर्के तिसपापतें रहित होताहै ७ ॥ अवरुण वस्त्र धार कर्के विष्णु कर्ममें तत्पर योहै तिसका प्रायश्चित्त वाराह जी कहितेहैं हेभूमे यो मनुष्यरुण वस्त्र धार कर्के मेरे कर्ममें तत्परहै और हेदेवि मेरे कर्म कों कर्ताहै तिसका यो पतनहै तिसको तूसुण ॥ १ ॥ सो मनुष्य पांच वर्षकाष्ठके भक्षण करणे वाला घुण होताहै और तिसमें उपरंत दशवर्ष मत्स्य होताहै और तीन वर्ष लावक नामापक्षा होताहै ॥ २ ॥ पांच वर्ष नकुल होताहै और दश वर्ष कच्छप होताहै और तीन वर्ष मच्छर होताहै और तीन वर्ष वा पंच वर्ष दंशक्या डंग वाली मक्षी होता है ॥ ३ ॥ मेरे कर्ममें तत्पर योमनुष्य सो इस प्रकार संसारकों प्राप्त होताहै और सो मनुष्य नव

ततोयवान्नभुंजीतगोमूत्रेणप्रपाचितं प्रायश्चित्तेनचैतेनमुच्यतेपातकात्ततः ७
कृष्णवस्त्रधृत्वाविष्णुकर्मपरायणस्य प्रा० वाराहः ॥ यः पुनः कृष्णवस्त्रेणमम
कर्मपरायणः देविकर्माणिकुर्वीततस्यैवपतनंशृणु १ घुणोवैपंचवर्षाणि
काष्ठभक्षश्चजायते मत्स्योवैदशवर्षाणिलावकस्तुसमास्त्रयः २ पंचवर्षा
णिनकुलोदशवर्षाणिकच्छपः मशकस्त्रीणिवर्षाणिदंशस्त्रीणिचपंचच ३ एवं
गच्छतिसंसारंममकर्मपरायणः पारावतश्चजायेतनववर्षाणिपंचच ४ ति
ष्ठतेममपार्श्वेपुत्रैवाहंप्रतिष्ठितःप्रायश्चित्तप्रवक्ष्यामि तस्यसंसारमोक्षणे
५ येनासौलभतेसिद्धिकृष्णवस्त्रापराधतः सप्ताहंयावकंभुक्तात्रिरात्रसक्तु
पिंडिकाः ६ पिंडत्रयंत्रिरात्रंतुएवंमुच्येतकिल्बिपात् यएतेनविधानेनदे
विकर्माणिकारयेत् ७ शुचिर्भागवतोभूत्वामममार्गानुसारकः नसगच्छ
तिसंसारंममलोकायगच्छति ८

वर्ष वा पंच वर्ष कबूतर होताहै ४ जहां मेरा स्थापनहै उसजगा मेरेसमीप वास कर्ताहै जंकर प्रायश्चित्त करे इसवास्तेमें तिसकों संसारके मोक्षणमें प्रायश्चित्त कहिताहां ५ जिस प्रायश्चित्तके करणे कर रुण वस्त्रके अपराधतें दूरहुआ सिद्धिकों प्राप्त होताहै और सात दिन यवोंका कोटा खाय कर्के और तीन रात्रि सत्तूकी पिंडिका क्या सत्तूयोंके गोले भोजन करे ॥ ६ ॥ और त्रिरात्र तीन पिंड भोजन करे इस प्रकार करणे कर पापतें रहित होताहै हेदेवि यो मनुष्य इस विधान कर्के कर्मों कों कर्ताहै ॥ ७ ॥ पवित्र और भगवान् जीका भक्त होय कर्के और मेरे मार्गके अनुसार व्रत ताहै सो मनुष्य संसारकों नहि प्राप्त होता मेरे लोककों प्राप्त होताहै ॥ ८ ॥

२४४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्तभागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

● नहिं धोआ यो वस्त्र उसकों धारकके विष्णुकर्ममें तत्परयो मनुष्य तिसकों प्रायश्चित्त कहिते हैं वाराहजी ॥ हे भूमे यो मनुष्य धोये विना वस्त्रधारकके पवित्र और भक्त होय कर्के और मेरे मार्गके अनुसार वर्तने वाला कर्मोंको कर्ता है ॥ १ ॥ तिसका दोष और अपराध हे पृथ्वीमें तेरेको कहिताहां जिसने विना धोये वस्त्रके धारणते संसार को पतित होते हैं ॥ २ ॥ हे देवि सांमनुष्य एकजन्म उन्मत्त गज होता है इसमें संशय नहिं और एक जन्म ऊट होता है और एकजन्म फेर खाता होता है ॥ ३ ॥ और फेर एकजन्म गिद्ध होता है और फेर एकजन्म घोड़ा होता है और फेर एकजन्म सारंग होता है और फेर एकजन्म हरिण होता है ॥ ४ ॥ इसप्रकार सात जन्म भोग कर्के फेर पोछते मनुष्य होता है केसामेरा भक्त और गुणोंको जानने वाला और मेरी भक्तिमें तत्पर और

● अधौतवस्त्रं धृत्या विष्णुकर्मपरायणस्य प्रा० ॥ वाराहः ॥ वाससान च धौतेन यो मे कर्माणि कारयेत् शुचिर्भागवतो भूत्वामममार्गानुसारकः १ तस्य दोषप्रवक्ष्यामि अपराधं वसुंधरे पतंति येन संसारं वाससोच्छिष्टकारिणः ॥ २ ॥ देवि भूत्वा गजोन्मत्तो जन्मचैकं न संशयः उष्ट्रैवैकं भवेजन्मचैकं चरासमस्तथा ३ गोमायुरेकजन्मा वैजन्मचैकं हयस्तथा सारंगस्त्वैकजन्मा वैमृगो भवति ततः ४ सप्तजन्मांतरं पश्चात्ततो भवति मानुषः स द्रक्तश्च गुणज्ञश्च मम कर्मपरायणः निरापराधो दक्षश्च अहंकारविवर्जितः ५ धरणिः ॥ श्रुते मतस्त्रयत्नेन यत्स्वया समुदाहृतं संसारं वाससोच्छिष्टं येन गच्छंति मानवाः ६ प्रायश्चित्तं च मे ब्रूहि सर्वकर्मसुखावहं किलिप्याद्येन मुच्यंते तव कर्मपरायणाः ७ वाराहः ॥ शृणु तच्चेन मे द्रविकथ्यमानं मयानघे प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि मम भक्तिपरायणः ८ यावकेन दिनत्रोणिपि एवाकेन दिनत्रयं कणभक्ष्यो दिनत्रोणिपायं स न दिनत्रयम् ॥ ९ ॥

र निरपराध और चतुर और अहंकार कर रहित होता है ॥ ५ ॥ पृथ्वी कहिती है हे भगवन् यो तुमने किहा सोमने गुणा है जिसने अधौतवस्त्र धारणते मनुष्य संसार को प्राप्त होते हैं ॥ ६ ॥ इसका प्रायश्चित्त मेरेको कहो केसा प्रायश्चित्त संपूर्ण कर्मोंके सुखके प्राप्त करणवाला तुमारे भक्त जिस प्रायश्चित्त के करणते पापते मुक्त होते हैं ॥ ७ ॥ वाराहजी कहिते हैं हे देवि मेरे कर्के किहायो हे उसको तू यद्यार्थ कर्के सुण प्रायश्चित्त में तेरेको कहिताहां ॥ ८ ॥ मेरा भक्त यो है तीन दिन यवोंका कोटा भोजन करे और तीन दिन खल भोजन करे और तीन दिन कण भोजन करे और तीन दिन पायस भोजन करे ॥ ९ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २४५

हेमहाभागे उच्छिष्ट वस्त्र धारणे वाला ऐसे प्रायश्चित्तके करणे कर अपराधकों नहीं प्राप्त होता है और संसारकों नहीं प्राप्त होता है ॥१०॥ * विष्णुके ताँई कुत्तेका जूठा देणें प्रायश्चित्त बाराह जी कहते हैं यो मनुष्य मेरे कर्ममें तत्पर है और मेरे कों कुत्तेका जूठा देता है उस मनुष्यका पाप मैं कहिता हों तिस पापकों सुण कर संसारकों अर्थात् लोकोंको बड़ा भय होता है ॥१॥ उत पाप कर्के सात जन्म कुता होता है और सात जन्म गिद्ध होता है और सात जन्म उलू होता है तिसमें पीछे मनुष्य होता है ॥ २ ॥ फेर कैसा होता है शुद्ध मन जिसका वेदके जाणने वाला और मेरा भक्त होता है नागयणके भक्तोंके अष्ट घरमें उत्पन्न होता है और अपराधों कर्के रहित होता है ॥३॥ हे वसुधे प्रायश्चित्तवां है बड़े तेजवाला मोतुं मेरे तें श्रवण कर जिस

एवं कृत्वा महाभागे वाससोच्छिष्टकारिणः अपराधनविदेत संसारं च न गच्छ

ति १० * विष्णवे श्वानोच्छिष्टदाने प्रा० वाराहः श्वानोच्छिष्टं तु यो दद्यान्मम क

र्मपरायणः पापं तस्य प्रवक्ष्यामि संसारस्य महद्भयम् ॥१॥ श्वानो वै सप्तज

न्मानि गोमायुः सप्त वै तथा उलूकः सप्त वर्षाणि पश्चाज्जायेत मानुषः ॥ २ ॥

विशुद्धात्मा श्रुतिज्ञश्च मद्भक्तश्चैव जायते गृहे भागवतोत्कृष्टे अपराधविवर्जितः ॥३॥ शृणु तत्त्वेन वसुधे प्रायश्चित्तं महौजसं तरंति मानुषां यनत्यक्ता संसार

सागरम् ४ मूलभक्षो दिनत्राणि फलाहारो दिनत्रयम् शाकभक्षो दिनत्राणि

पयोभक्षो दिनत्रयम् ॥ ५ ॥ दध्नाहारो दिनत्राणि पायसेन त्रयं पुनः वाय्वा

हारो दिनत्राणि स्नानं कृत्वा दृढव्रतः ॥ ६ ॥ एवं दिनान्येकविंशं कृत्वा वै शुभ

लक्षणं अपराधनविदेत मम लोकाय गच्छति ॥७॥ * वाराहमांसं भुक्त्वा विष्णु

स्पर्शे प्रा० वाराहः भुक्त्वा वाराहमांसं तु यो हिमासु पसर्पति पतनं तस्य वक्ष्या

मि यथा भवति सुन्दरि ॥ १ ॥

प्रायश्चित्तके करणे कर्के संसार समुद्र कों लोड कर्के मनुष्य तरते हैं ॥ ४ ॥ तीन दिन मूलयो हैं

तिनकों भोजन करे और तीन दिन फलोंको भोजन करे और तीन दिन शाककों भोजन करे

और तीन दिन दूधकों भक्षण करे ॥ ५ ॥ और तीन दिन दधि भोजन करे और तीन

दिन पायस भोजन करे और तीन दिन वायुभक्ष होवे स्नान कर्के दृढव्रत होता है अ

र्थात् पूरे व्रत वाला होता है ॥६॥ इस प्रकार इकी दिन शुभ लक्षण जिसका उस प्रायश्चित्तके करणे

कर अपराधकों नहीं प्राप्त होता है ७ * शूकरका मांस खाय कर्के विष्णुके स्पर्शमें प्रायश्चित्त

वाराहजी कहिते हैं हे सुन्दरि वाराह मांसकों खाय कर्के यो मनुष्य मेरे कों स्पर्श कर्ता है जैसे उस

का पतन होता है सो मैं तेरे कों कहिता हों ॥ १ ॥

२४६ ॥ श्रीणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

हेपृथ्वि सो मनुष्य वाराह होय कर्के दशवर्ष पर्यंत वनमें विचारताहै॥और सातवर्ष व्याध होताहै (सप्त सप्त) इसका अर्थ एहहे कि जितने सूकरों कामांसखायाहै तितने वार सात जन्मका फल समझना॥२॥और सात वर्ष अंत्ययोहैं चर्मकारादि तिनके धर्म उत्पन्न होताहै पुनःचोदां वर्ष चूहाहोताहै ॥ ३ ॥ और उन्नी वर्ष राक्षसहोताहै और आठ वर्ष शल्यक क्या सेहका भेद होताहै वनमें बहुवार जन्म कों प्राप्तहोताहै ॥ ४ ॥ और त्रिंशति वर्ष मांस खाणे वाला व्याघ्रहोताहै इस प्रकार वाराह के मांस कों खाणे वाला संसारता कों प्राप्तहोय कर्के फेर निर्मल शुद्ध कुलमें भगवान् का भक्तहोताहै ॥ ५ ॥ एसामंपूर्ण लक्षण नारायण जी

वाराहोदशवर्षाणिभूत्वातुचरतेवने व्याधोभूत्वामहाभागिसमाःसप्तचसप्त च २ सप्तसप्तेतिवीप्सा वराहमांसभक्षकाणांप्रत्येकसंबंधार्था भूमेभूत्वा समाःसप्ततिष्ठेत्यस्यपुष्कले अंत्यस्यपुष्कलेहंतकारविशेषेतिष्ठते नीचानांहंतकारंभोक्ष्ये इत्यभिप्रायेण सप्तवर्षाणिस्थितोभवतीत्यर्थः स्वाभिप्रायाविष्करणेआत्॥अथवैमूपकोभूत्वावर्षाणांचचतुर्दश ३ एकोनविंशवर्षाणियातुधानश्चजायते शल्यकंचाष्टवर्षाणिजायतेसवनेवहु ४ व्याघ्रस्त्रिंशतिवर्षाणिजायतेपिशिताशनः एवंसंसारतांगत्वावाराहामिपभक्षकः ५ जायतेविपुलेसिद्धकुलेभागवतस्तथा हृपकिंशवचःश्रुत्वा सर्वसंपूर्णलक्षणं शिरसाप्रांजलिकृत्वावाक्यंचदमुवाचह६ एतन्मेपरमंगुह्यंतवभक्तसुखावहं वराहमांसभक्षास्तुयेनमुच्यतिकिल्बिपात् ७ वाराहःतरंतिमानवायेन तिर्यक्संसारसागरात् गोमयेनदिनंपंचकणाहारेणसप्तवै ८ पानीयंतुततो भुक्तातिष्ठेत्सप्तादिनंततः अक्षारलवणंसप्तसक्तुभिश्चतथात्रयः ॥ ९ ॥

का वचनमुणकर शिर कर्के हाथबांध कर्के एहवचनपृथ्वी कहितीहै ॥ ६ ॥ एहमेंरे कों परम गुह्य योहै तुमारेभक्तोंको सुखके देनेवाला प्रायश्चित्त सोकहो जिसकर्के वाराह मांस खाय कर्के पापसे रहित होतेहैं ॥ ७ ॥ वाराहः वाराहजी कहितेहैं जिस प्रायश्चित्तके करणे कर्के तिर्यक्यो निके देने वाला योसंसार सागरहै तिसते मनुष्य तरतेहै॥पांचदिन गोमय भोजन करे औरसातदिन कण योहै अन्नके किणके तिनकों भोजनकरे ॥ ८ ॥ पानीयमिति तिसते उपरंत या नीयकों भोजनकर्के सातदिन स्थितहोवे और सातदिन क्षार और लवणकों नहिं भक्षण करे इनोतैरहित भोजन करे और तीनदिनसत्तु भोजनकरे ॥ ९ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० २४७

और सात दिन तिल भोजनकरे उपरंत सात दिन पाषाण भक्षणकरे अर्थात् पाषाण चट कर्के हि दिन व्यतीतकरे तिसरेंभी कुछ आधार होताहै उपरंत सात दिन दूध भोजन कर्के आप णी शुद्धिकों करे ॥ १० ॥ क्षांत- दांत क्या इन्द्रियां और मन इनकों रोक कर्के अहंकार क र्के रहित होवे इस प्रकार एकोन पंचाशत् क्या उनुंजादिन ४९ विश्वय धार कर्के व्रतकों करे ॥ ११ ॥ सो मनुष्य संपूर्ण पापोंतें रहित हुआ और सम अवस्थामें स्थित और दूरहुआ ज्वर जिसका ऐसा होताहै और मेरे कर्मोंकों कर्के मेरेलोक ताई जाताहै ॥ १२ ॥ जाल पादयो पक्ष विशेषहै तिसकों भक्षण कर्के विष्णु स्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराहजी हे भूमे जालपादकों खाय कर्के योमनुष्य मेरेकों स्पर्श कर्ताहै सो मनुष्य पदरां वर्ष जाल पाद होताहै

तिलभक्षोदिनंसप्तसप्तपाषाणभक्षकः पयोभुक्कादिनंसप्तकारयेच्छुद्धिमात्म नः १० क्षांतंदांतंतथाकृत्वाअहंकारविवर्जितः दिनान्येकोनपंचाशच्चरे त्कृतविनिरचयः ११ प्रमुक्तः सर्वपापेभ्यःसमस्थोविगतज्वरः कृत्वातुमम कर्माणिममलोकायगच्छति १२ * जालपादंभक्षयित्वाविष्णुस्पर्शंप्रा० वाराहः ॥ जालपादंभक्षयित्वायस्तुनामुपसर्पति जालपादस्ततोभूत्वाव र्पाणिदशपंचच १ कुम्भीरोदशवर्पाणिवर्पाणांपंचशूकरः तावद्व्रमतिसं सारेममचैवापराधतः २ कृत्वातुदुष्करंकर्मजायतेविपुलेकुले शुद्धोभाग वतःश्रेष्ठस्त्वपराधविवर्जितः ३ सर्वधर्मान्परित्यज्यममलोकायगच्छति प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामिजालपादस्यभक्षणे तरंतिमनुजायेनजन्मसंसारसा गरात् ४ यावकान्नंदिनत्रीणिवायुभक्षोदिनत्रयम् फलभक्षोदिनत्राणि तिलभक्षोदिनत्रयम् ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ और दशवर्ष कुंभार नाम पक्षी होताहै और पांच वर्ष शूकर होताहै इतना पर्यंत मे रेअपराध कर्के संसारमें भ्रमताहै ॥ २ ॥ दुष्कर कर्मकों कर्के । तिसरें उपरंत अपराध कर्के रहित हुआ शुद्ध भगवान्का भक्त श्रेष्ठ निर्मल कुलमें जन्मताहै ॥ ३ ॥ और संपूर्ण धर्मोंकों त्याग कर्के मेरेलोक ताई जाताहै । अब जाल पादके भक्षणमें प्रायश्चित्त कहितेहैं जिस प्राय श्चित्तके करणों कर जन्मसंसार सागरतें मनुष्य तरतेहैं ॥ ४ ॥ यावकान्नमिति तीन दिन यवों का कोटा भक्षण करे उपरंत तीन दिन पवनकों भोजन करे और तीन दिन फलोंकों खा वे उपरंत तीन दिन तिलोंकों भक्षण करे ॥ ५ ॥

२४८ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः प्र० २१ टी० भा० ॥

फेर तीन दिन अम्ल और लवण कर्के रहित भोजन करे इसप्रकार पंदरां दिन प्रायश्चित्तकों करे ॥६॥ योमनुष्य नम्र और पवित्रहोय कर्के जालपादयो पक्षि विशेष उसकों भक्षण कर्के इसप्रकार प्रायश्चित्तकर्ताहे सो सुंदरगतिकों प्राप्तहोताहे ॥ ७ ॥ अवदीपकों स्पर्श कर्के विष्णु कर्मकों योक्तोंहे तिसका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं हेदेवि योमनुष्यदीपकों स्पर्श कर्केमेरे कर्मकों कर्ताहे सोमनुष्य तिस अपराधते पापकों प्राप्त होताहे ॥ १ ॥ हेमहाभागे तिसअपराधकाफल मेरे कर्के कथन करा हुआ तूं श्रवण कर सोमनुष्य सठ वर्ष ६० कुष्ठा गात्रयोहै कुष्ठीदेह तिसकर्के युक्त होताहे २॥ फेर तहांहि इसप्रकार चंडाल केगृहमे उत्पन्न होताहे इस

अक्षारलवणंकृत्वापुनस्तत्रादिनत्रयं पंचदशदिनान्येवंप्रायश्चित्तंसमाचरे, त ६ जालपादापराधस्य एवंकुर्वतिशोधनं विनीतात्माशुचिर्भूत्वायदीच्छे तसुंदरांगतिम् ७ इतिजालपादभक्षणापराधप्र० दीपंस्पृष्टविष्णुकर्म कुर्वतः प्रा०वाराहः । दीपंस्पृष्टातुयोदेविममकर्मणि कारयेत् तस्यापराधाद्वैभूमेपापंप्राप्नोतिमानवः ॥ १ ॥ तच्छृणुष्वमहाभागेकथ्यमानंमयानघे जायतेपष्टिवर्षाणिकुष्ठीगात्रपरिष्ठुनः ॥ २ ॥ चंडालस्यगृहेतत्रैवमेवनसंशयः एंचरित्वातत्कर्मममक्षेत्रेमृतोयदि ॥ ३ ॥ मद्भक्तश्चैवजायेतशुद्धो भागवतगृहे प्रायश्चित्तंत्रवक्ष्यामिदीपस्यस्पर्शनाद्भवे ॥ ४ ॥ तरंतिमनुजयिनकष्टचांडालयोनिषु यस्यकस्यापिमासस्यशुक्लपक्षेचतुर्दशी ॥ ५ चतुर्थभक्तमाहारीह्याकाशशयनेस्वपेत् दीपंदत्त्वापराधद्वैतरंतिमनुजाभुवि ॥ ६ शुचिर्भूत्वायथान्यायंममकर्मपथेस्थितः एतत्तेकथितंदेविरुपर्शनादौ पकस्यत् संसारशोधनंचैवयत्कृत्वालभतेशुभम् ॥ ७ ॥

में संशय नहिहै इसप्रकार तिसकर्म कों कर्के जधमेरे क्षेत्रमे मरताहै ॥ ३ ॥ तव शुद्धमेरे भक्तके घरमे मेराभक्तहोताहै । अव दीपके स्पर्शते पृथ्वीमे योप्रायश्चित्तहेसांमें कहिताहां ॥४॥ जिसप्रायश्चित्त कर्के मनुष्य कष्टरूपयो चंडाल योनिआहैं उनसेतरतेहैं जिस किसे महीनेकी शुक्ल पक्षकीयो चतुर्दशीहै ५॥ उसदिनमे चतुर्थकाल भोजन करे और आकाशशयनयोहै वृक्षोंकिआं शाखा तिनमे शयन करे और उसअपराधते दानकर्के पृथ्वीमे मनुष्यतरतेहैं६॥और पवित्रहोयकर्के यथान्यायमेरे कर्ममार्गमें स्थितहोतेहैं हेदेवि एह तेरेकोंदीपकं स्पर्शका प्रायश्चित्त किहा एह योप्रायश्चित्तहै सो संसारका शोधनहै जिस प्रायश्चित्तकों कर्के शुभमें प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० २४९

श्मशानमिति श्मशान कों जाय कर्के स्नान किये विना नारायण के स्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहैं
 वाराहजी हे भूने श्मशान कों जाय कर्के यो मनुष्य विना स्नानहि मेरेकों स्पर्श कर्ताहै ओहो
 यो मेरे दोषका अपराध उसका यो फलहै उसकों तूयथार्थ कर्के सुण ॥ १ ॥ हे भूमे चौदा
 वर्ष गिहड होताहै और सात वर्ष इल्लड होताहै पक्षियोंका राजा ॥ २ ॥ ओहो दोनो इल्लड
 और गिहड मनुष्यके मांसकों भोजन कर्तेहैं उपरंत चौदावर्ष १४ पिशाचहोताहै ॥ ३ ॥ ति
 सते उपरंत त्रिंशद्वर्ष ३० उच्छिष्ट यो मृतकहै अर्थात् बहुत दिनोंकामुडदा तिसकों भक्षण कर्ताहै
 इह नारायणते वचन सुण कर पृथ्वी वचन कों कहितीभई ॥ ४ ॥ हे लोकनाथ हे जनार्दन एह

श्मशानं गत्वा स्नानं विना विष्णुस्पर्शे प्रायश्चित्तम् वाराहः श्मशानं योनरोग
 त्वाश्च स्नानं त्वैव तु मां स्पृशेत् मम दोषापराधस्य शृणु तत्त्वेन यत्फलम् १ जंबुको
 जायते भूमे वर्षाणां नवपंचच गृध्रस्तु सप्तवर्षाणि जायते खचरेश्वरः २ खचरे
 श्वरो गृध्रेश्वर इत्यर्थः खचरेश्वरपदेन गरुडोपस्थानात् खचरपदं गृध्रपरमत्र
 चरंतौ मानुषं मांसमुभौतौ गृध्रजंबुको पिशाचौ जायते तत्र वर्षाणि नवपंचच ३ त
 तस्तु कुणपोच्छिष्टं त्रिंशद्वर्षाणि खादति इति नारायणात् श्रुत्वा धरणीवाक्यम
 ब्रवीत् ४ एतन्मे परमं गुह्यं लोकनाथ जनार्दन परं कैतहले देवनिखिलं वक्तु
 मर्हसि ५ श्मशानं पुंडरीकक्षेत्रेण प्रशंसितं किंचित्त्वं विगुणं देवनिखि
 लं वक्तु मर्हसि ६ सतत्र मते नित्यं भगवांस्तु महाश्रुतिः कपालं गृह्यदेवोत्र
 दीप्तिमंतं महौजसं ७ तं प्रशंसति रुद्रेण भयता किं नु निन्दितम् श्मशानं प
 त्रपत्राक्षरुद्रस्य च निशि प्रियम् ८ रुद्रेणेति द्वितीयार्थे तृतीयांतरुद्रंबुधाः
 प्रशंसतीत्यर्थः ॥

मेरेकों परमगुह्यहै हे देव एहमेरेको परमकोतु रुहे संपूर्ण तुम कहिने योग्यहौ ॥ ५ ॥ हे पुंडरीकाक्ष
 श्मशानयोहै सो महादेव कर्के सरायाहोयाहै और हे देव तुम माडा कहितेहौ एह संपूर्ण तुम कथन
 करणे योग्यहौ । ६ । सो भगवान् महा देवजीवडा प्रकाश जिनका सो कपाल हाथमें लेकर
 श्मशान में नित्य प्रतिरमतेहै ॥ ७ ॥ तिस महादेव जीकों संपूर्ण पंडित श्रुति कर्तेहैं हे कम
 लनेत्र तुमने किस प्रकार निन्दित किया रुद्र यो महादेव जीहैं उनको रात्रिमें भी श्मशान प्रिय

है ॥ ८ ॥

२५० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

वाराह इति वाराह जीकहितेहैं हेभूमे एहयो श्रेष्ठ आख्यानक है सोतू मेरेतैं यथार्थ कर्के सुख हे अनघे निष्पापे सोयो मनुष्यहैं धारयाहै ब्रत जिनोंनैं सोइस आख्यानकों अव तलकवी न हि जाणते ॥ ९ ॥ दुष्कर यो कर्महैं तिसकों कर्के संपूर्ण भूतोंके स्वामीयो महादेवहैं सोत्रि पुर योहैं तीनपुर तिनोमें वालक और . बृद्ध . और सुंदर रूप वालिअं योस्त्रियाहैं तिनकोंमा रकर्के ॥ १० ॥ तिस पाप कर्के संवद्ध होये विचरणेकों नहिं समर्थ हांतेभये तब सो महादेव विवर्ण वदन कयामाडा मुख कर्के उसी स्थानमें स्थित होतेभये ॥ ११ ॥ हेभूमे तिमस्थानमें शि वजी संपूर्ण गणों कर्के युक्त स्थित होतेभये तब हेवसुंधरे नष्टहोगई माया जिसकी ऐसा योमहा देव तिसकोंमें ध्यान कर्ताहां ॥ १२ ॥ हेदेवि तब मेरेकर्के ध्यान किया ईश्वर क्या महादेव

वाराहः ० शृणु तत्त्वेन मे देवि इदं आख्यानमुत्तमं अद्यापि तेन जानंति अनघेशं सितव्रताः ॥ ९ ॥ कृत्वा सुदुष्करं कर्म सर्वभूतपतिर्हरः हत्वा च वालवृद्धा नित्रिपुरेरूपिणीः स्त्रियः १० तेन पापेन संवद्धो न शक्नोति विचेष्टितुं विवर्ण वदनो भूत्वा तिष्ठते समहेश्वरः ॥ ११ ॥ तत्र स्थाने शिवो भूमे गणैस्सर्वैः समा वृतः नष्टमायं ततो देवि चिंतयामि वसुंधरे ॥ १२ ॥ ततो ध्यातो मया देवि ईश्व रः पुनरेष्यते यावत्पश्यामि तं देवं देवि दिव्येन चक्षुषा ॥ १३ ॥ नष्टमाया वलं रुद्रं सर्वभूतमहेश्वरं ततो हंतं त्रगत्वा तु यष्टुकामश्च त्र्यंबकम् ॥ १४ ॥ नष्टसंज्ञो गतज्ञानो नष्टयोगवलो वलः तत ईशो मया चोक्तो वाक्येन तत्सुखा वहम् ॥ १५ ॥ किमिदं तिष्ठसे रुद्र कश्मलेन समावृतः त्वं कर्त्ता च विकर्त्ता च विकाराकार एव च ॥ १६ ॥ त्वं वै साख्यं च योगं च त्वं योनिस्त्वं परायणः त्वमुग्रदेवदेवादिस्त्वं सो मस्त्वं च वायवः ॥ १७ ॥

फेर आवता भया हेदेवि तब जितना पर्यंत दिव्य दृष्टि कर्केमें महादेवकों देखताहां ॥ १३ ॥ न ष्टहोय गया माया वल जिसका ऐसायो रुद्रहैं संपूर्ण भूतोंका ईश्वर तिसतैं उपरंत तहां जायक र्के त्र्यंबक योमहादेव उसके पूजनकी इच्छा जिसकी ॥ १४ ॥ नष्ट होई संज्ञा जिसकी और दूर होय गया ज्ञान . और नष्ट होगया योग वल जिसका ऐसा निर्वल योईश्वर तिसकों मैंने एह सुखके प्राप्त करणे वाला वाक्य किहा ॥ १५ ॥ हेरुद्र मोहकर्के समा वृत होय कर कयोंस्थित होयेहौ तुम इस संसारके कर्ताहौ और विकर्ता क्या प्रलयके करणे वालेहौ और निराकार हौ और साकारही ॥ १६ ॥ और तुमसाख्य और सभकीयोनि और पालनादिमे परायणहौ और उग्रदेवदेवादितुम होऔर सोम तुमहौ और पवन भीतुमहौ ॥ १७ ॥

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २५१

किनेति हे महादेव तुमगणों कर्के परिवारे होंएक्यों नहि ज्ञानको प्राप्तहोतेहौ हे देव देवे शइहक्याहै सोतुमपृथुलोचन क्या विशाल नेत्र विवर्ण होगये हौ १८॥ हेनिष्पाप जिसतें मेरे कर पूछेतुमबथार्थ कर्के मेरे कों कहो और विष्णुयोहैं महात्मा उनकी माया और योग उस कारमरण करो १९॥ तुमारोगियके निमित्त जिसकर्के मैं इहां आया हां हेभूमे तिसतें मेरावचन सुणकर्के महा देव जीकों संज्ञा प्राप्तहोजाती भई अर्थात् सुध आय जातो भई २०॥ तब सो महादेव पापकर्के तपेहैं नेत्रजिसके सो मधुर वचन कहिताभया हेदेवितुं यथार्थ कर्के सुण कौ न पुरुष इसप्रकारकरेगा २१॥ देवयोहैं नारायण एकसंपूर्ण लोकोंकों वरके देणे वाले और शुभ उनकों महादेव कहितेहैं २१॥ हे विष्णो हे लक्ष्मी के स्वामिन् तुमारी कृपा कर्के देव

किंनवुध्यासिचात्मानंगणैःपरिवृतोभव किमिदं देवदेवेशविवर्णः पृथुलोचनः १८ तन्ममाचक्ष्वतत्त्वेन यत्पृष्ठोसिमयानघ स्मरयोगंचमायांचपश्य विष्णोर्महान्मनः १९ तवचैवप्रियार्थाययेनाहमिहआगतः तनोममवचः श्रुत्वालब्धसंज्ञोमहेश्वरः २० उवाचमधुरंवाक्यं पापसंतप्तलोचनः शृणु तत्त्वेनमेदेविकोन्योप्येवंकरिष्यति २१ देवंनारायणंचैकसर्वलोकवरं शुभम् २१ हेविष्णोत्वत्प्रसादेनदेवत्वंचैवमाधव लब्धयोगंचसांख्यंचजातोस्मि विगतज्वरः २२ त्वत्प्रसादेनजातोस्मिपूर्णेन्दुरिवनिर्मलः अहंत्वां तुविजानामिसर्वदेवजगत्पते २३ अत्रकश्चिन्नजानातितमेचैवमनंतरम् ब्रह्माणंतुविजानाति तत्रमामेववान्तरम् २४ कश्चिदल्पज्ञः तेमेतवममअनंतरमभेदंविद्यमानमपिनजानाति ब्रह्माणंतुब्रह्माणमपिमामेवमासिवअनंतरं भिन्नत्वद्व्यतिरिक्तंजानातितन्नसमीचीनमितिभावः साधुविष्णोमहाभागसर्वमायाकरंडकः एवंह्यघकरोवाक्यमुक्ताभूतमहेश्वरः मुहूर्तध्यानमादायपुनर्वाक्यमुवाचतम् २५ अघंकरः पापापादकोमहेश्वर इतिसंबंधः ॥

त्व और योग और सांख्य एह मेरेकों प्राप्त होये और मेरादुःख दूरहोगयाहै २२॥ और तुमारी कृपा कर्के पूर्णमासीके चन्द्रमाकीन्याई मैं निर्मलहोगयाहां और मैं तुमारे कों जाणताहं हे सर्व देव हेजगत्के स्वामिन् २३॥ इसमें कोईयो थोडी बुद्धि वाला मनुष्य तेरा मेरा यो अभेद विद्यमानवीहै इसकों नहि जानता और ब्रह्मा कौवी अंतर भिन्न क्या तुमारे तेंभिन्न जाणताहै सो अच्छानहिहै २४॥ हेविष्णो हेमहाभाग तुमसंपूर्ण मायाके करंडकक्या पिटारहौ इसप्रकार अघंकर क्या पापके करणे वाला योमहा देव सो विष्णुकों कथन कर्के और मुहूर्त मात्र ध्यानकों प्राप्तहोय कर्के फेर तिस विष्णुको कहिताहै ॥ २५ ॥

२५२ ॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा० ॥:

तवेति हे विष्णो तुमारी कृपा कर्के मैंने सो त्रिपुर हत कियाहै अर्थात् मारयाहै तिस त्रिपुर में दानव योहैं सो मारेहैं और गर्भवतिआं योस्त्रियाहैं सो मारिआहैं ॥ २६ ॥ और दश दिशांमें विद्यमान यो बाल० और वृद्ध सो तहांमारेहैं तिस पापके दोष कर्के चेष्टा करणे कौंमें समर्थ नहिहां ॥ २७ ॥ इसी कर्के मेरा योग० और माया नष्ट होय गये और मैंवी इसी भाव कर्के प्रणष्टहोय गयाहां हे विष्णो हे माधव अवमेनैं सावधान चित्त होय कर्के क्या करणे योग्यहै ॥ २८ ॥ हेविष्णो सोयो शोधनहै प्रायश्चित्त पापकों नाश करणे वाला सो यथार्थ कर्के तुम मरेकों कहो जिस प्रायश्चित्त के करणे मात्र कर्के शीघ्रपापतें रहित होवें ॥ २९ ॥ विष्णुजी कहितेहैं हेभूमे इस प्रकार चिंतात्मा योंमहादेव तिसकों मैंने किहा हे शंकर कपा

तवविष्णोप्रसदिनमयातत्रिपुरहतं निहतादानवास्तत्रगर्भिएयश्चनिपाति
ताः । २६ ॥ बालवृद्धाहतास्तत्रविस्फुरंतोदिशोदश तस्यपापस्यदोषेण
शक्नोमिविचेष्टितुम् २७ ॥ नष्टयोगचमायांचप्रणष्टास्यभावतः विष्णोम
याकिंकर्तव्यमनोवस्थेनमाधव ॥ २८ ॥ मनोऽवस्थेन समाहितमनसेत्यर्थः
विष्णोतत्त्वेनमेवूहिशोधनंपापनाशनं येनवैकृतमात्रेणशीघ्रमुच्येताकींल्वि
पात् ॥ २९ ॥ एवंचिंतात्मकस्तत्रमयामृद्रश्चभापितःकपालमालांगृहीत्वा
समलेगच्छशंकर ३० ममैववचनंश्रुत्वाभगवान्परमेश्वरः कीदृशःसमलो
विष्णोयत्रगच्छामहेवयम् ३१ ततस्तस्यवचःश्रुत्वाशंकरस्ययशस्विनि
तत्पापशोधनार्थायमयावाक्यंप्रभापितम् ३२ इमंशानंसमलोमृद्रपूतिको
ब्रणगंधिकः स्वयंतिष्ठतिवैतत्रमनुजाविगतरुष्टहाः ॥ ३३ ॥ तत्रगृह्य
कपालानिरमतत्रैवशंकर तत्रवर्षसहस्राणिदिव्यान्येवदृढव्रतः ॥ ३४ ॥

ल माला कों लेकर्के तुम श्मशानमें जावो ॥ ३० ॥ मेरा एह वचन सुण कर्के भगवान् परमे
श्वर महादेव मेरे कों पूछताभया हेविष्णो कैसा ओहो श्मशानहै जहां हमजावें ॥ ३१ ॥ त
व हेपृथ्वि तिस शंकर का वचन सुण कर्के तिस शंकर कों पाप के दूर करणे निमित्त मैंने
वचन किहा ॥ ३२ ॥ हे रुद्र समलनाम श्मशानकाहै कैसाहै पूतिकक्या दुर्गंधिहै ओर ब्रण
योहैं घा तिनकी गंधिवाला है मनुष्य योहैं दूर होगई इच्छा जिनकी सो तिस श्मशानमें
स्थित होतेहैं अर्थात् उस जगा जाणेकी कोई इच्छा नहि करदा ॥ ३३ ॥ हे शंकर कपा
लों कों लेकर्के तिस श्मशानमें दृढ व्रत धारकर्के दिव्य हजार वर्ष १००० तुमकीडा करो
अर्थात् श्मशानमें वासकरो ॥ ३४ ॥

॥ श्रीरत्नवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २५३

ततइति भोर्दू पापके दूर करणेकी इच्छा वाले योंतुमही तिसतें मांसोको भक्षण करो और हिंसमान यो भोज्यहैं और यो भोजन तुमारेको प्यारहैं तिनको तुम भोजन करो इसमेएह अभिप्रायहे कि शिवजीका पापश्मशानमें स्थितहै उस जगाजाणे वालोको लगेगा एह आगे जाके प्रकटहोवेगा ॥ ३५ ॥ इस प्रकार तिस श्मशानमें निश्चय कर्के गणोंके सहित वास कर फेरतूं हजार वर्ष १००० के पूर्ण होये जेकर तहा स्थित होयकर्के अपणेंको समल जाणो तद ॥ ३६ ॥ हे शिव फेर गौतम यो महा ऋषिहैं उनके पवित्र आश्रममें जावो विधि कर्के गौतमजीके आश्रमको सेव कर्के अपने आपका तुम जाणेंगे ॥ ३७ ॥ गौतम ऋषिकी कृपातें तुमारा पाप दूर होजावेगा और निरंतर पाप कर्के संप

ततोभक्ष्यमांसानिपापक्षयचिकीर्षया हिंसमानानिभोज्यानिचैवभोज्यास्त
वप्रियाः ॥ ३८ ॥ एवंसर्वगणैःसर्द्धैवसतत्रसुनिश्चितः पूर्णवर्षमहेश्वरतु
स्थित्वात्वंसमलः पुनः॥ ३९ ॥ गच्छशिवाश्रमपुण्यगौतमस्यमहामुनेः। त
त्रज्ञास्यासिंचात्मानमाश्रमेविधिनाश्रिते ॥ ४० ॥ प्रासादाद्गौतमात्तस्यभ
विताचनकिलिपः सततंपापसंपन्नंकपालशिरमिस्थितम् ॥ ४१ ॥ ऋषिः
पावयितुशक्तस्त्वत्प्रसादान्नसंशयः एवंतस्यवरंदत्त्वात्त्रैवतरधीयत ३९
रुद्रोपिभ्रमतेतत्रश्मशानेपापसंवृते एवंतराचतेभूमेश्मशानंमंकदाचन४०
यत्ररुद्रकृतंपापंतिष्ठतेचयशस्विनि एतत्तेकथितंभद्रश्मशानंमंजुगुप्सितम्
४१ विनापिकृतसंस्कारोममकर्मपरायणः प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामियनशुध्य
तिकिलिपात् ४२ कृत्वाचतुर्थभक्ष्यंतुदिनानिदशपंचच आकाशशयने
कुर्यादकवस्त्रःकुशास्तेर ४३

न योकपाल तुमारे शिरमें स्थितहै उसको पवित्र करणेको गौतम समर्थहैं ॥ ३८ ॥ तिसकी कृपातें पवित्र होजावेगा इसमें संशय नहिहै इस प्रकार तिस रुद्रको वरदे कर्के विष्णु तहांहि छप जाते भये ॥ ३९ ॥ सो रुद्र तहां पाप कर्के संवृत योश्मशानहै तिसमें भ्रमनामया तिस कर्के हेभूमे श्मशानमेरेको कदाचित् नहि रुचताहै ॥ ४० ॥ हेयशस्विनि जिस श्मशानमें शिव जीका किया पाप स्थित होताहै हेदेवि एहतेरे ताईमेंनै किहा उस कर्के मेरेको श्मशान निदि तहै ॥ ४१ ॥ योमनुष्य श्मशानमें जाय कर्के स्नान किये विना मेरे कर्मको कर्ताहै उसको प्रायश्चित्त कहिताहां जिसके करणे कर पापतें शुद्ध होताहै ॥ ४२ ॥ सो मनुष्य पंद्रह दिन चतुर्थ काल भोजन करे और एकवस्त्र धारण करे और आकाश शयन करे और कुशाके आसनमें स्थित होवे ॥ ४३ ॥

२५४ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

और प्रातःकालमें पंचगव्यपान करे इसप्रकार प्रायश्चित्तके करणकर संपूर्ण पापोंतैरहित हुआ मेरे लोककों प्राप्त होता है ॥ ४४ ॥ एहिप्रायश्चित्त जेडी अग्नि चांडालने अपनेवास्ते जगा ईदीहै जेडा ब्राह्मणादि उसकोंसेके तिसवास्ते भीजानणा * पिण्याक योहै खलतिसकों स्वाय कर्के नारायण केस्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहै वाराहजी हेसुश्रोणि पिण्याकको स्वायकर्के योम नुष्य मेरेकों स्पर्शकर्ताहै उसकों बडाअपराध क्याप्रायश्चित्तकी योग्यताहै ॥ १ ॥ सोमनुष्य दशवर्ष उलूक होताहै उपरंत तीनवर्ष कछोपड होताहै इनोंतै उपरंत मनुष्यहोताहै मेरे कर्ममें तत्पर होताहै ॥ २ ॥ हेसुश्रोणि तिसमनुष्योंकों बडे प्रकाशवाला प्रायश्चित्तमें कहिताहा जिसप्रायश्चित्तके करणकर्के पापतै रहित होताहै और संसारके अंतकों क्यामोक्ष

प्रभातपंचगव्यंतुपातव्यंकर्मकारणात् प्रमुक्तः सर्वपापेभ्यो ममलोकाय गच्छति ४४ ॥ इति श्मशानप्रवेशापराधप्रायश्चित्तम् प्रायश्चित्तामर्दचांडालेन स्वकीयतापाद्यपनोदायप्रज्वलितो योऽग्निस्तत्तापेपि ज्ञेयम् * पिण्याकं भक्षयित्वा विष्णुस्पर्शं प्रायश्चित्तम् वाराहः ॥ पिण्याकं भक्षयित्वा तु यो वै मामुपसर्पति तं तु वै शृणु सुश्रोणि ह्यपराधं महौजसम् ॥ १ ॥ उल्लूको दशवर्षाणि कच्छपस्तु समाम्त्रयः जायंत मानवस्तत्र मम कर्म परायणः ॥ २ ॥ तस्य वक्ष्यामि सुश्रोणि प्रायश्चित्तं महौजसम् किल्विपाद्येन मुच्येत संसारांतं च गच्छति ॥ ३ ॥ यावकेन दिनैकं तु गोमूत्रेण च कारयेत् रात्रौ वीरासनं कुर्यादाकाशशयनं वसेत् ४ ॥ न स गच्छति संसारं ममलोकाय गच्छति ॥ ५ ॥ वाराहमांसेन प्रापणकरणे प्रा० वाराहः वाराहमांसेन ननु यो मम कुर्वीत प्रापणं मूर्खः स पापकर्माचममकर्म परायणः १ ॥ यांस्तु दोषान् प्रपद्येत संसारं च वसुंधरे यावद्रोमवराहस्य मम गात्रेषु संस्थितम् २ तावद्वर्षसहस्राणि नरके पच्यते भुवि अन्यच्च ते प्रवक्ष्यामि तच्छृणुष्व वसुंधरे ३ ॥

कों प्राप्त होता है ॥ ३ इक्कादिनयावक कर्के क्यायवोंके कोटे कर्के और गोमूत्र कर्के व्यतीतकर और रात्रिमें वीरासनकरे योपिच्छेकिहाहै आकाशशयन तिसको करे ४ ॥ तदसंसारकों नही प्राप्त होता और मोक्षकांभी प्राप्त होता है ॥ ५ वाराह मांसकर्के विष्णुकों नैवेद्य लगाणेमें प्रायश्चित्त कहितेहै वाराहजी हे भूमे या मनुष्य मूर्ख और पापोंके करण वाला और मेरे कर्मोंमें परायण वाराह मांस कर्के मेरेकों नैवेद्य लगावता है ॥ १ ॥ उस कर्के जिनों दोषोंको और संसारकों प्राप्त होता है सो तूं सुण जितने रोम वाराहके अंगोंमें स्थित हैण ॥ २ इतने हजार वर्ष पृथ्वीमें नरकमें पचता है हे वसुंधरे और मैं तेरेकों कहिताहां सो तूं श्रवण कर ॥ ३ ॥

॥ श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २५५

यांगति मिति और मेरे कर्ममें परायण मनुष्य जिसगतिकों प्राप्त होता है सो तू सुण ॥ हे देवि एक जन्म सो मनुष्य अन्धा होता है ॥ ४ इस प्रकार वाराह मांसके नैवेद्य लगावणों से संसारको प्राप्त होता है ॥ उपरंत निर्मल यो भक्तों का कुल उसमें पवित्र हुआ आह मनुष्य जन्मता है ॥ ५ और कैसा होता कि नम्र और किये हैं संस्कार जिसके- और मेरे कर्मों में तत्पर होता है द्रव्यवान् • गुणवान् • रूपवान् • शिल्पवान् • शुचिः क्या पवित्र होता है ॥ ६ ॥ तिस मनुष्यकों- देहका विशोधन प्रायश्चित्तमें कहिताहां जिस प्रायश्चित्तके कर्ण कर्के मेरे कर्ममें परायण होता है और सो मनुष्यपापों रहित होता है ॥ ७ ॥ सात दिन फलोंका भोजन करे और सात दिन मूलोंका भोजन करे और सात दिन खडा होवे और सात दिन पायस भोजन करे ॥ ८

यांगतिसंप्रपद्येतममकर्मपरायणः अन्धोभूत्वा ततो देवि जन्म चैव प्रतिष्ठितम्

४ एवंगत्वा तु संसारं वाराहमांसप्रापणात् जायते विपुलेशु द्वेकुले भागवते

शुचिः ५ विनीतः कृतसंस्कारो ममकर्मपरायणः द्रव्यवान् गुणवांश्चैव रूपवान् शिल्पवान् शुचिः ॥ ६ ॥ प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि तस्य कायविशोधनं किं

ल्विषाद्येन मुच्येत ममकर्मपरायणः ॥ ७ ॥ फलाहारो दिनान्सप्तसप्तमूला

शनस्तथा दिनानि सप्ततिष्ठतस्तवैवापायसे न च ॥ ८ ॥ तक्रेण सप्तदिवसा

न्सप्तयावकभोजनः । प्रायश्चित्तान्महाभागे ममलोकाय गच्छति ९ • मद्य

पीत्वा विष्णुस्पर्शे प्रा० वाराहः । मद्यपीत्वा वरारोहे यस्तु मामुपसर्पति

तत्र दोषं प्रवक्ष्यामि शृणु सुंदरितत्त्वतः १ दशवर्षसहस्राणि दारिद्र्यो जा

यते पुनः पावनश्च भवेत्तत्र मद्भक्तश्च न संशयः २ यस्तु भागवतो भूत्वा

कामरागेण मोहितः दीक्षितः पिवते मद्यं प्रायश्चित्तं न विद्यते ३

॥ और सात दिन तक्रों भोजन करे और सात दिन यवों का कोटा भोजन करे हमहाभागे

इस प्रकार प्रायश्चित्त करणों से मेरे लोककों प्राप्त होता है ॥ ९ ॥ मद्य पान कर्के विष्णुस्पर्शमें प्राय

श्चित्त-वाराहजी कहिते हैं हे भूमे मद्य पान कर्के यो मनुष्य मेरे को प्राप्त होता है तिसमें यां दोष तिसदो

षकों में निश्चयतें कहिताहां हे सुंदरि तू सुण ॥ १ ॥ फेर सा मनुष्य दशहजार वर्ष दारिद्र्य

क्या निर्वर्त होता है फेरतहां पवित्र होता है और मेरा भक्त होता है इसमें संशय नहीं है ॥ २ ॥ यस्त्विति

यां मनुष्य भागवत होय काम-और राग कर्के मोहित होयकर और दीक्षित हुआ सगर्वकों पी

ता है तिसकों प्रायश्चित्त नहीं देखीदा अर्थात् सो मनुष्य पतित होजाता है ॥ ३ ॥

२५६ ॥ श्रीणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा०

हेवसुंधरे और मैं तेरेको कहिताहों सोतू सुण अग्निवर्णा यो सुराहै अग्निकी न्याई लाल वर्ण जिसका ऐसी सुराको पी कर्के तिस पापतें रहित होताहै ॥ ४ ॥ यो मनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्तको कर्ताहै सो पापकर्के नाहि लिप्त होता और संसारको नहि प्राप्त होता अर्थात् मोक्षको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ * अब कौसुभशाकके भक्षणका अपराध वाराहजी कहितेहैं हेभूमे योमनुष्यमेरी पूजाके करणे वाला कुसुंभके शाकको खाताहै सो घोरनरकमें पचताहै और पंदरां वर्ष १५ सूकर होताहै ॥ १ ॥ तिसतें उपरंत तीन वर्ष कुत्तेकी योनिमें प्राप्त होताहै तिसतें उपरंत एक वर्ष गिद्ध होताहै तिसतें उपरंत मेरेकर्ममें नत्पर हुआ शुद्ध होताहै ॥ २

अन्यच्चतेप्रवक्ष्यामितच्छृणुष्ववसुंधरे अग्निवर्णासुरांपीत्वायेनमुच्यतिके
ल्विपात् ॥४॥यएतेनविधानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत् नसालिप्यतिपापेन
संसारचनगच्छति ॥ ५ ॥ * कौसुभशाकभक्षणाऽपराध प्रायश्चित्तमावारा
हः।कौसुभंचैवयःशाकं भक्षयेन्ममपूजकः नरकेपच्यतेघोरेदशपंचचसूक
रः ॥ १ ततो गच्छेत्श्वयोनौचत्रीणिवर्पाणिजंबुकः॥वर्षमेकंततःशुद्धेन्मत्क
र्मनिरतः शुचिः ॥ २ ॥ ममलोकमवाप्नोति शुद्धोभूत्वावसुंधरे ततोभूमिर्व
चः श्रुत्वा प्रत्युवाचपुनर्ह रिम् ॥ ३ ॥ कुसुभशाकनैवेद्यप्रापणेनचकिल्वि
पात् कथमुच्येतदेवेशप्रायश्चित्तंवदप्रभो ॥ ४ ॥ वाराहः ॥ योमेकुसुभशा
केनप्रापणंकुरुतेनरः दशवर्षसहस्राणिनरकेपरिपच्यते ॥ ५ ॥ प्रायश्चि
त्तंप्रवक्ष्यामितत्रमेवदतःशृणु भक्षणेत्तुकृतेकुर्याच्चांद्रायणमतंद्रितः ॥ ६ ॥

हेवसुंधरे सो मनुष्य शुद्ध होय कर्के मेरेलोकको प्राप्त होताहै एह भगवान् जीका वचन सुण कर पृथ्वी कहिताहै ॥ ३ ॥ हे भगवन् कुसुंभशाकके नैवेद्य लगाणे कर्के हेदेवेश कैसे पापतें रहित होताहै उसका प्रायश्चित्त मेरेको कहो ॥ ४ ॥ वाराहजी कहितेहैं हेभू मे योमनुष्य कुसुंभके शाकका मेरेको नैवेद्य लगाताहै सो दशहजार वर्ष १०००० नरकमें पचताहै ॥ ५ ॥ प्रायश्चित्तमिति हेपृथ्वि उसके प्रायश्चित्तको कहिता योमैंहां सोतू श्रवण कर जब मनुष्य कुसुंभके शाकको भक्षणकरे तद् तव आलस्यको त्यागकर्के चांद्रायण व्रत करे ६ ।

॥ श्रीरणवीस्कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २५७

और जवकुसुमेकाशाक नारायण कों नैवेद्य लगावे तबवारां दिन पयोव्रतकरे अर्थात् वारांदिन दूधपीवे ॥ ७ ॥ योमनुष्य इसविधान कर्के प्रायश्चित्त करे सोपाप कर्के नहीं लिप्त होताहै औरमिरेलोककों प्राप्तहोताहै ॥ ८ ॥ * अब दूसरे मनुष्यके वस्त्रधारणे कर्के पूजनका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं ॥ हेमाधवि पराया योवस्त्रहें नवीनभीहो उसकों धार कर्के मूर्खयो पुरुष मे रे कर्ममें तत्पर होताहै ॥ १ ॥ और मेरे कर्मों कों कर्ताहै अज्ञानमें स्थितहुआ मेरेकों स्पर्श कर्ताहै हेसुश्रोणि सोमनुष्यइकीवपर १ मृगहोताहै॥२॥औरहेवसुंधरे एकजन्म सोमनुष्य हीनपादहोताहै अर्थात् पैरोंकर्के रहित होताहै तिसमें उपरंत मूर्खहोताहै और कोधि होताहै फेर

प्रापणेतुकृतेकुर्याद्द्वादशाहंपयोव्रतम् ७ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् नसलिप्येतपापेनममलोकंचगच्छति । ८ * परकीयवस्त्रधारणापराध प्रायाश्चित्तम् वाराहः । पार्श्वेनचवस्त्रेणनवभूतेनमाधवि प्रायश्चित्तीपुमान्मूर्खो ममकर्मपरायणः १ करोतिममकर्माणिरूपशतेमांतमःस्थितः मृगो जायेतसुश्रोणिवर्पाणित्रीणिसप्तच २ हीनपादेनजायेतचैकंजन्मवसुंधरे मूर्खश्चक्रोधनश्चैवममभक्तश्चजायते ॥ ३ ॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणि प्रायश्चित्तंमहोजसं येनगच्छतिसंसारोममभक्तोव्यवस्थितः ॥ ४ ॥ अष्टभक्षंततः कृत्वाममकर्मपरायणः प्रभातायांचशर्वर्ग्यामुदितेचदिवाकरे पंचगव्यं ततःपीत्वांशीघ्रमुच्येतकिल्विपात् ॥ ५ ॥ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् सर्वपापविनिर्मुक्तोममलोकायगच्छति ६ * विष्णवे श्रद्धावानवा न्नभक्षणे. प्रा० वाराहः ॥

मेराभक्तहोताहै । ३ । हंसुश्रोणि तिसमनुष्यको बडे प्रकाशवाला प्रायश्चित्तमें कहिताहो जिसप्रायश्चित्तके करणे कर्के मेराभक्त होताहै और संसारदूरहोताहै । ४ । और व्यवस्थित होयकर्के मेरेकर्ममें तत्पर हुआअष्टम कालमें भोजनकरे अर्थात् चतुर्थदिनमें सायंकालभोजनकरे औरजदरात्रिव्यतीतहोजावे औरसूर्यके उदय होआं पंचगव्यको पीवे इसप्रकारकरणकर्केशाघ्रपापमें रहितहोताहै ॥५॥ यइति योमनुष्यइसविधानकर्के प्रायश्चित्तकोंकरे सोसंपूर्णपापोंकर्के रहित हुआ मेरे लोककों प्राप्तहोताहै ॥ ६ ॥ विष्णुकेताई दीये विना यो मनुष्यनवीनअन्नकोंखाताहै तिसका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं ॥

२५८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० :

हेभूमे योमनुष्य मेरेकर्मोंमें तत्पर और मेरेकों नवीन अन्नदीये विना आप नवीन अन्नकों भोजन कर्त्ताहैं तिसके पितर पंदरा वर्ष नहिं भोजनकर्त्ते १॥ योमनुष्य नवीन अन्न दीये विना कदाचित् आप भक्षण करे तिसका धर्मनहिं रहित। इसमें संशय नहिंहै ॥२॥ हेपृथ्वि और मै तेरे कों कहिताहां प्रायश्चित्त जिसके करणे कर तिस पापतें रहित होताहै और मेरेभक्तोंकों सुखके देणे वाला प्रायश्चित्तहे ३॥ सो मनुष्य त्रिरात्र निराहार व्रतकों करे और एक रात्र आकाश शयन कर्के चतुर्थ दिनमें शुद्ध होताहै ४॥ इसप्रकार तिस प्रायश्चित्तमें विधानकर्के और सूर्यके उ

अदत्त्वायोनवान्नानिममकर्मपरायणः पितरस्तस्यनाश्रंतिवर्षाणिदशपंचच १ अदत्त्वायस्तुभुंजातनवान्नानिकदाचन नतस्यधर्मोविद्येतएवमेतन्न संशयः २ अन्यच्चतेप्रवक्ष्यामियेनतस्मत्प्रमुच्यते प्रायश्चित्तमहाभागे ममभक्तसुखावहम् ३ उपवासंत्रिरात्रंतुततएकेनवापुनः आकाशशयनंकृत्वाचतुर्थेऽहनिशुष्यति ४ एवंचविधिंकृत्वाउदितेचदिवाकरे पंचगव्यंततः पीत्वाशीघ्रमुच्येताकिल्विषात् ५ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् सर्वसंगपरित्यज्यममलोकायगच्छति ॥ ६ ॥ गंधमाल्यमदत्त्वाधूपदानापराधप्रायश्चित्तम् वाराहः॥अदत्त्वागन्धमाल्यानियोमेधूपंप्रयच्छति कुणपो जायतेभूमेयातुधानोनसंशयः ॥ १ ॥ कुणपोदुर्गन्धिरितिमेदिनीकोशः वर्षाणिचैकविंशानिअयस्कारनिवासकःतिष्ठतेत्रमहाभागेएवमेतन्नसंशयः

॥ २ ॥

दय होआ पंचगव्यकों पीवे तिस पापतें रहित होताहै ॥ ५ ॥ योमनुष्य इस विधानकर्के प्रायश्चित्तको करे सो संपूर्ण संगकों त्याग कर्के मेरे लोककों जाताहै ६॥ गंधेति नारायणादिकों गंध और पुष्प देणे विना योमनुष्य प्रथम धूपदेताहै तिस अपराधका प्रायश्चित्त वाराह जी कहितेहैं हेभूमे गंध और पुष्प दिये विना योमनुष्य मेरेकों धूपदेताहै सोमनुष्य दुर्गंधि होताहै और राक्षस होताहै इसमें संशय नहिंहै ॥ १ ॥ और इक्की वर्ष लोहकारके घरमें निवासकरणे वाला होताहै हेमहाभागे इस प्रकार स्थित होताहै इसमें संशय नहिंहै २ ॥

॥ श्रीराणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २५९

हे वसुंधरे और मैं तेरे को कहिता हूँ सो तू सुण प्रायश्चित्त मैं तेरे को कहिता हूँ जिसके करणे कर्के पाप तें रहित होता है ॥ ३ ॥ जिस किस महीने की शुक्ल पक्ष की योद्वादशी है उसको निराहार व्रत कर्के अष्टभक्त त्याग कर्के इसमें एह अर्थ है कि एक दिन के दो भोजन होते हैं इस हिसाब ॥ १० ॥ ११ पापके अनुसार भोजन त्यागे ॥ ४ ॥ रात्रि के व्यतीत हो आं प्रातः काल मैं सूर्य भगवान् जी के उदय हो आं पंच गव्य को पीय कर्के तिस पाप तें रहित होता है ॥ ५ ॥ यो मनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्त को करे तिसके यो पितर हैं जिनो जिनो दुःखों में हैं तिनो तिनो दुःखों को संपूर्ण तर जाते हैं ॥ ६ ॥

● अब उपानद्वारण के अपराध का प्रायश्चित्त कहिते हैं वाराह जी यो मनुष्य पेरों में जो डाल गाय कर्के अन्यच्च ते प्रवक्ष्यामि तच्छृणुष्व वसुंधरे प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि येन मुच्येत किलिविषात् ॥ ३ ॥ यस्य कस्यचिन्मासस्य शुक्लपक्षे तु द्वादशाम् उपोष्य चाष्टभक्तं तु दशैकादशमेव च ॥ ४ ॥ प्रभातायां तु शर्वर्यामुदिते च दिवा करे पंचगव्यं ततः पीत्वा शीघ्रं मुच्यति किलिविषात् ॥ ५ ॥ य एतेन विधानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत् ता नितानितरं त्येव सर्व एव पितामहाः ॥ ६ ॥ उपानद्वारणा पराध प्रा० * वाराहः वहन्नुपानहौ पट्भ्यां यस्तु मामुपचक्रमे चर्मकारस्तु जायेत वर्षाणां तु त्रयोदश ॥ १ ॥ तत्र जन्म परिभ्रष्टः शूकरो जायते पुनः शूकराच्च परिभ्रष्टः श्वानस्तत्रैव जायते ॥ २ ॥ ततः श्वानात् परिभ्रष्टो मानुषश्चैव जायते मद्भक्तश्च विनीतश्च अपराधविवर्जितः ३ ॥ मुक्तस्तु सर्वसंसारान्ममलोकाय गच्छति ४ य एतेन विधानेन वसुधे कर्मकारयेत् न स लिप्यति पापेन एवमेतन्न संशयः ५ ॥ विष्णुप्रबोधे श्रीभरीताडना पराध प्रायश्चित्तमाह वाराहः ॥

मेरे को स्पर्श कर्ता है सो मनुष्य तेरा वर्ष १३ चर्मकार होता है ॥ १ ॥ तिस जन्म तें मरण कर्के फेर शूकर होता है और शूकर जन्म तें मरण कर्के फेर उसी जगामें कुत्ता होता है ॥ २ ॥ तत इति तिस कुत्ते के जन्म तें मरण कर्के फेर मनुष्य जन्म होता है और मेरा भक्त होता है और नष्ट होता है और अपराधों कर्के रहित होता है ॥ ३ ॥ और संपूर्ण संसार तें मुक्त होय कइ मेरे लोकों प्राप्त होता है ॥ ४ ॥ हे वसुधे यो मनुष्य इस विधान कर्के कर्म कर्ता है सो मनुष्य पाप कर्के नहीं लिप्त होता है इसमें संशय नहीं है ॥ ५ ॥ विष्णु के प्रबोध में नगरे का यो नहीं बजाणा तिस अपराधक प्रायश्चित्त वाराह जी कहिते हैं ॥

२६० ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी०भा०

हेभूमे नगारावजाये विना योमनुष्य मेरेकों जगावताहै सो मनुष्य एकजन्म बोला होताहैइसमें संशय नहिहै ॥ १ ॥ हेसुश्रोणि हेप्रिये तिसमनुष्यों प्रायश्चित्त में कहिताहां जिसके करणें न गारेके नहिं वजावणे के अपराधतें रहित होताहै ॥ २ ॥ जिस किस महीनेकी शुक्ल पक्षकी द्वादशीको आकाश शयन योहै वटादि वृक्षांकी शाखामें शयन करणा तिसको कर्के शीघ्रपा पतें रहित होताहै ॥ ३ ॥ हेवसुधे योमनुष्य इस विधान कर्के कर्मकों कर्ताहै सो अपराध कों नहिं प्राप्त होता मर कर्के मेरेलोक कों प्राप्तहोताहै ॥४॥ * अथ बहुत अन्न भक्षण कर्के पूजनमें जाणेके अपराधका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं हेभूमे योमनुष्य बहुत अन्नकों खा

भेरीशवूदमकृत्वातुयस्तुमांप्रतिबोधयेत् वधिरोजायतेभूमेएकजन्मन्यसंशयः ॥ १॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणिप्रायश्चित्तममप्रिये किल्विपाद्येनमुच्येत भेरीताडनमोहितः ॥ २॥ यस्यकस्यचिन्मासस्यशुक्लपक्षेतुद्वादशी आकाशशयनकृत्वाशीघ्रमुच्यतिकिल्विपात् ॥३॥ यएतेनविधानेन वसुधेकर्म कारयेत् अपराधनगच्छेतममलोकायगच्छति॥४॥इतिभेरीताडनं विनाविष्णुप्रबोधनेप्रा० * अथवहूवन्नभक्षणापराधप्रायश्चित्तम् ॥ वाराहः ॥ अन्नं बहु तरंभुक्त्वा स्वर्जाणैर्नपरिप्लुतः ॥ उद्गारेणसमायुक्तश्चास्नात् उपसर्पति॥१॥ एकजन्मनिश्वाचैववानरश्चैवजायते शृगालएकजन्मैवछागश्चैवैकजन्मनि ॥ २ ॥ एकजन्मभवेद्धोमूपकोजायतेपुनः तरित्वानरकादेषजायतेविपुलेकुले ॥ ३ ॥ शुद्धोभागवतश्रेष्ठः अपराधविवर्जितः प्रायश्चित्तप्रवक्ष्यामिममभक्तसुखावहम् ४

यकर्के और अजीर्ण कर्के व्याप्त और उद्गारयोहैं डकार मारणें तिनों कर्के युक्त और विना स्नान कियेहि मेरेकों स्पर्श कर्ताहै ॥ १ ॥ एक जन्मनीति एक जन्ममें सो मनुष्य कुत्ता होताहै और एक जन्म वानर होताहै इसी प्रकार फेर एक जन्ममें गिदड होताहै और एक जन्म बकरा होताहै ॥ २ ॥ और एक जन्म अंध होताहै और एक जन्म मूषक होताहै इस प्रकार नरकतें तर कर्के फेर सो मनुष्य शुद्ध कुलमें जन्मताहै ॥ ३ ॥ शुद्ध और भगवान् के भक्तोंमें श्रेष्ठ होताहै और अपराधों कर्के रहित होताहै ॥ अथ प्रायश्चित्तमें कहिताहां मेरे भक्तों को सुखके देने वाला ॥ ४ ॥

॥ श्रीरत्नवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ २६१

जिस प्रायश्चित्तके करणे कर्के मेरे कर्मों में परायण योमनुष्यहै सो पापतें रहितहोताहै तीनदिन यवोंका कोटा भक्षणकरे और तिसतें उपरंत तीनदिन मूलयोहें तिनकोभक्षणकरे ५ तिसतें उपरंततीन दिनफलोंको भक्षणकरे और तिसते उपरंत तीनदिन अक्षारलवणकया क्षार और लवणतेंबिना भोजनकरे और तीनदिनपायसभोजनकरे और तीनदिनसत्तू भोजनकरे ६॥और तीनदिन वायुभक्ष होवे अर्थात् पवनको भोजनकरे और तीनदिनआकाशशयनकरे इसप्रकार चौबीसदिन २४ व्रतकरे ॥ ७ ॥ और फेर रात्रिके व्यतीत होयां दंतधाकनको कर्के और बोधितः स नूवोधित हुआ पंचगव्यको पानकरे इस प्रकार देहको शुद्धकरे ॥ ८ योमनुष्य इसविधानकर्के प्रायश्चित्तको करे सोमनुष्य पाप कर्के नहिलिप्तहोता और मेरे लोककोंक्या वैकुण्ठको प्राप्तहोताहै

किल्विषाद्येनमुच्येतममकर्मपरायणः ॥ यावकेनदिनत्राणि मूलकेनदिनत्रयम् ॥ ५ ॥ फलाहारोदिनत्राणिअक्षारलवणत्रयः पायसेनदिनत्राणिसाक्तवेनदिनत्रयम् ६ वायुभक्षोदिनत्राणि आकाशशयनत्रयः ७ प्रभातायांतुशर्वर्या दंतधावनबोधितः पंचगव्यपिवेच्चैवशरीरमपिशोधनम् ८ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् नसलिप्येतपापेनममलोकायगच्छति ९ इतिवाराहपुराणेववहन्नभक्षणापराधप्रायश्चित्तम् ॥ गुरोराक्रोशमनृतंकृत्वाप्रायश्चित्तंकौर्मै गुरोराक्रोशमनृतं कृत्वाकुर्याद्विशोधनम् एकरात्रं त्रिरात्रं वा तत्पापस्यापनुत्तये १ देवर्षीणामभिमुखं षीवनाक्रोशने प्रा० देवर्षीणामभिमुखं षीवनाक्रोशने कृते उल्मुकेन दहेज्जिह्वां दातव्यं च हिरण्यकम् १ देवोद्याने देवतायतने च सकृद्विष्मूत्रत्यागे प्रा० कू०

॥ १ ॥ और अब प्रकीर्णक पापोंका प्रायश्चित्त कहितेहैं कूर्म पुराणमें गुरोरिति ॥ गुरोंकी निंदा कर्के और गुरोंके आगे झूठबोल कर्के प्रायश्चित्तको करे एकरात्र वातीनरात्र तिसपापके दूरकर एकेनिमित्त व्रतको करे ॥ १ ॥ अब देवता और ऋषि इनके सन्मुख छूकणेका- और इनकी निंदा करणेका प्रायश्चित्त कहितेहैं ॥ देवता और ऋषियो हैं इनके सन्मुख छूकणा और इनकी निंदा करणेमें उल्मुक योहै बलताअंगार उसकर्के जिह्वाको दग्धकरे और सुवर्ण दानकरे तब शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब देवताके वागमें और देवताके घरमें एकवार विष्टा और मूत्रके करणे का प्रायश्चित्त कहितेहैं कूर्मपुराणसे

२६२

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥ ० :

योद्विजवा • क्षत्रिवैश्य देवताके वागमें विष्टा और मूत्रकोंकरे सोशुद्धिके निमित्त लिंगकों कटदे वे अथवा चांद्रायण व्रतकोंकरे ॥ १ ॥ और योवाह्यण अज्ञानतें देवताके घरमें मूत्रकों करे सोलिंगकों कटदेवे अथवा चांद्रायण व्रतकोंकरे ॥ २ ॥ अवदेवता ऋषिवेद इनकी निंदा मे प्रा • देवता ऋषि • वेद • इनकी निंदाकों कर्के ब्राह्मण अच्छी प्रकार प्राजापत्य व्रतकों करे ॥ १ ॥ और योइनकी निंदाकरणेवालेहे तिनके साथ वातां कर्के देवतायोहै तिनको पूजे और तिनके साथ स्पर्शकर्के सूर्यको देखे और स्नानकर्के विश्वेश्वर जोका स्मरणकरे ॥ २ ॥ अव संपूर्ण भूतोके अधिपति योहैं ईश्वर तिनकी निंदामें प्रायश्चित्त कहितेहै ॥ योमनुष्य संपूर्णभूतों

देवोद्यानेतुयः कुर्यान्मूत्रोच्चारं सकृद्द्विजः छिद्याच्छिभंतु शुद्धयर्थं चरेच्चांद्रायणं तु वा ॥ १ ॥ देवतायतने मूत्रं कृत्वा मोहाद् द्विजोत्तमः शिश्रस्योत्कर्तनं कृत्वा चांद्रायणमथाचरेत् ॥ २ ॥ देवर्षिवेदानिंदायां प्रा० कौर्मे देवतानामृषीणांच वेदानांचैव कुत्सनम् कृत्वा सम्यक् प्रकुर्वीत प्राजापत्यं द्विजोत्तमः १ तैस्तु संभाषणं कृत्वा स्नात्वा देवान्समर्चयेत् स्पृष्ट्वा वीक्षितभास्वं तं स्नात्वा विश्वेश्वरं स्मरेत् २ सर्वभूताधिपतिनिंदायां प्रा० कौर्मे ॥ यः सर्वभूताधिपतिं विश्वेशानं विनिंदति न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥ १ ॥ चांद्रायणं चरेत्पूर्वं कृच्छ्रं चैवातिकृच्छ्रकम् प्रपन्नशरणं देवं तस्मात्पापात्प्रमुच्यते २ इति प्रकीर्णकपापप्रायः * अथ समस्तपातकघ्न प्रायश्चित्तम् कौर्मे सर्वस्वदानं विधिवत्सर्वपापविशोधनम् चांद्रायणं तु विधिना कृच्छ्रं चैवातिकृच्छ्रकम् १

केईश्वर विश्वेशान इनको निंदा कर्ताहै उसमनुष्यकी सैकडेवेषों कर्केवा निष्कृति करणेको नहिं शक्या कथानहिं समर्थहोती ॥ १ ॥ सोमनुष्य उसपापके दूरकरणेके निमित्त प्रथम चांद्रायण व्रतकरे फेरकृच्छ्र और अति कृच्छ्र व्रतोंकोकरे और संपूर्ण भूतोंके ईश्वर यो देवहैं तिनकी शरणको प्राप्तहूआ तिस पापते रहित होताहै ॥ २ ॥ एहकूर्म पुराणमे प्रकीर्णक पापों का प्रायश्चित्त किहाहै ॥ * अव संपूर्ण पापों के दूर करणे वाला प्रायश्चित्त कूर्म पुराण मैकहिनेहैं विधि कर्के संयुक्त यो सर्व स्वं दान करणा सो संपूर्ण पापों का विशोधनहै और विधिकर्के चांद्रायण व्रत और कृच्छ्र और अति कृच्छ्र एह यो व्रतहैं ॥ १

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० ॥ भा० २६३

श्रीरं पवित्र तीर्थमें यो अभिगमन है सो संपूर्ण पापोंका नाशन है श्रीरं देवताका यो पूज नहै सो मनुष्योंके संपूर्ण पापोंके नाश करणें वाला है ॥ २ ॥ और अमावास्या तिथिको प्राप्त होय कर्के यो मनुष्य शिवजीका आगधन करे और ब्राह्मणोंको पूज कर्के सो मनुष्य संपूर्ण पापों कर्के रहित होता है ॥ ३ ॥ और कृष्ण पक्षकी अष्टमीके दिनमें और कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको महादेव जीको ब्राह्मण मुखमें पूज कर्के अर्थात् ब्राह्मणोंको भोजन देकरके संपूर्ण पापों कर्के रहित होता है ॥ ४ ॥ और त्रयोदशीकी रात्रिमें सोपहार त्रिलोचन यो महादेवजी हैं तिनका दर्शन कर्के संपूर्ण पापोंकर्के रहित होता है एह रात्रिके प्रथम पहरके पूजनका फल है ॥ ५ ॥ और यो मनुष्य कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके दिनमें सावधान चित्त होय कर्के पूर्वान्हमें नदीमें स्ना

पुण्यक्षेत्राभिगमनं सर्वपापविनाशनं देवताभ्यर्चनं नृणामशेषाघविनाशनम् २ अमावास्या तिथिं प्राप्य यः समाराधयेच्छिवम् ब्राह्मणान् पूजयित्वा तु सर्वपापैः प्रमुच्यते ३ कृष्णाष्टम्यां महादेवं तथा कृष्णचतुर्दशीं संपूज्य ब्राह्मणमुखे सर्वपापैः प्रमुच्यते ४ त्रयोदश्यां तथारात्रौ सोपहारं त्रिलोचनम् दृष्ट्वेशं प्रथमेयामिमुच्यते सर्वपातकैः ५ उपोषितश्चतुर्दश्यां कृष्णपक्षे समाहितः यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चांतकाय च ६ वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च उद्वराय दध्राय नीलाय परमेष्ठिने ७ वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वैनमः प्रत्येकं तिलसंमिश्रान् दद्यात्सप्तोदकांजलीन् ८ स्नात्वा नद्यात्तु पूर्वाह्णे मुच्यते सर्वपातकैः ९ ब्रह्मचर्यमधः शय्यामुपवासं द्विजार्चनं व्रतेष्वेतेषु कुर्वीत शांतः संयतमानसः १० अमावास्यां च ब्रह्माणं समुद्दिश्य पितामहम् ब्राह्मणां स्त्रान्समभ्यर्च्य मुच्यते सर्वपातकैः ११

न कर्के और निराहार व्रत धार कर्के यमाय, धर्मराजाय- मृत्यवे- अंतकाय- ६ वैवस्वताय- कालाय- सर्वभूतक्षयाय- उद्वराय, दध्राय, नीलाय, परमेष्ठिने ७ वृकोदराय, चित्राय, चित्रगुप्ताय वैनमः १४ एह यो चतुर्दश नाम है इनके मध्यमें एक एकको तिलो कर्के मिश्रित सात जलकी या अंजलि आं देवे तब संपूर्ण पापोंते रहित होता है ॥ १ ॥ ब्रह्मेति ब्रह्मचर्य धारणा, और पृथ्वीमें शयन करणा और निराहार व्रत करणा और ब्राह्मणोंका पूजन करणा- एहयो व्रत हैं इनके विषे यो मनुष्य शांत चित्त जिसका और रोक आहै मन जिसने ॥ १० ॥ सो मनुष्य अमावास्याको और वेदको और ब्रह्माको निमित्त कर्के तीन ब्राह्मणोंको पूज कर्के संपूर्ण पापों कर्के रहित होता है ॥ ११ ॥

२६४ भीरणवीरकारितः प्रायश्चित्त भागः अ० २१ टी० भा० ॥

और यो मनुष्य शुक्ल पक्षकी पष्टिके दिनमें निराहार व्रतकों धारकों और सावधान चित हुआ
यो मनुष्य सप्तमीके दिनमें भानु देव योहैं सूर्य भगवान इनकों पूजे सो मनुष्य संपूर्ण पापों
ककैं रहित होताहै ॥ १२ ॥ और यो मनुष्य भरणीनक्षत्रमें तुपुनः चतुर्थी तिथिमें और सनि
वारमें यम यो धर्मराज तिसकों पूजे सो मनुष्य सात जन्मोंके किये यो पापहैं तिनोंतें रहि
त होताहै ॥ १३ ॥ और यो मनुष्य एकादशी के दिनमें निराहार व्रत धारे और शुक्ला प
क्षकी द्वादशीमें जनार्दन भगवान जीकों पूजताहैं सो महा पापों ककैं रहित होताहै ॥ १४
तप योहै और जप • तीर्थ सेवा • देव और ब्राह्मणोंका पूजन ग्रहणा दियो कालहैं इनमें यो
मनुष्य कर्त्ताहै सो महापातकों को दूर कर्त्ताहै ॥ १५ ॥ और यो मनुष्य महा पातको ककैं
मुक्त बीहै और पवित्र तीर्थोंमें जाय ककैं नियम ककैं प्राणोंको त्यागे संपूर्ण पातकों ककैं रहि

पष्ठयामुपोषितोदेवंशुक्लपक्षेसमाहितः सप्तम्यामर्चयेद्भानुमुच्यतेसर्वपातकैः
॥ १२ ॥ भरण्यांतुचतुर्थ्यायःशनैश्चरदिनेयमं पूजयेत्सप्तजन्मोत्थैर्मुच्यते
पातकैर्नरः ॥ १३ ॥ एकादश्यांनिराहारःसमभ्यर्च्यजनार्दनम् द्वादश्यांशु
क्लपक्षस्यमहापापैःप्रमुच्यते ॥ १४ ॥ तपोजपस्तीर्थसेवादेवब्राह्मणपूज
नम् ग्रहणादिषुकालेषुमहापातकशोधनम् ॥ १५ ॥ यःसर्वपापयुक्तोपि
पुण्यतीर्थेषुमानवःनियमेनत्यजेत्प्राणान्समुच्येत्सर्वपातकैः ॥ १६ ॥ ब्र
ह्मघ्नंवाकृतघ्नंमहापातककारकंभर्तारमुदरेन्नारीभर्तुःशुश्रूषणोत्सुका नत
स्याविद्यतेपापमिहलोकेपरत्रच ॥ १७ ॥ पतिव्रताधर्मरतारुद्राण्येव न
संशयः नास्याःपराभवंकर्तुंशक्नोतीहजनःकचित् ॥ १८ ॥ इतिसाधारणप्रा
यश्चित्तम् * अथरहस्यप्रायश्चित्तंविष्णुधर्मोत्तरेपुष्करवचनम् अत ऊर्ध्व
रहस्यानांप्रायश्चित्तंनिबोधमे पौरुषेणतुसूक्तेनजप्यहोमैर्द्विजोत्तमाः ॥ १ ॥

त होताहै ॥ १६ ॥ और जिस स्त्रीका स्वामी ब्रह्म हत्या करणे वाला और कृतघ्न० और महा
पातको के करणे वाला और ऐसेभी स्वामी की सेवामें तत्पर यो स्त्री सो भर्त्ताको नरकादि
योंमें उद्धार कर्त्ताहै और तिस स्त्रीको इस लोक पर लोकके विषे पाप नहिहै ॥ १७ ॥ सो पति
व्रता, ऐसे धर्ममें प्रीति जिसकी सो साक्षात्पावतीहै इसमें संशय नहिहै इसस्त्रीका तिरस्कार
करणे को कोई बी मनुष्य समर्थ नहिं होताहै ॥ १८ ॥ * अब रहस्य पापों का प्रायश्चित्त विष्णु
धर्मोत्तरसे कहितेहैं तिनोंमें पुष्कर जीका कथनहै पुष्कर कहिताहै डेराम अवतुं रहस्य पा
पों का प्रायश्चित्त मेरेते श्रवण कर पुरुष सूक्त योहै सहस्रशीर्षा • और गायत्री आदि मंत्रका
जप और होम इनके करणे ककैं ॥ १ ॥

॥ श्रीरघुवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र ० २३ टी ० भा ० २६५

ब्राह्मण योहें जीतिआहै इद्रिआं जिनोंनेसो एकमहीने कर्कें संपूर्ण पापों तें रहित होतेहैं और व्याहृतियों कर्कें सहित यो ओंकारहैं इनों कर्कें यो सोलां १६ प्राणायाम दिन दिन में महीना मात्र करे हुये गर्भ घाति यो मनुष्य तिसकों वी पवित्र कर्तेहैं और कौत्स इत्यादि यो मंत्र इसका जप कर्कें और वासिष्ठ प्रति इत्यादि मंत्रकों और महेश- और शुद्धवत्या, इत्यादि यो मंत्र हैं इनकों तीन दिन जपकर्कें सराव के पीणेवाला मनुष्यवी शुद्ध हो जाताहै ॥ ३ ॥ श्रीर वामीयं इत्यादि यो मंत्रहै, और शिवसंकल्प एहयो मंत्र है इन कों एक बार जप कर्कें सुबर्णों कों चुराय कर्कें वी तिसीक्षण तें निर्मल क्या शुद्ध होजाताहै ॥ ४ ॥ हविष्यंतीय इत्या

मासेनैकेनमुच्यन्तेपातकैः संयतेन्द्रियाःसव्याहृतिकप्रणवाःप्राणायामास्तु षोडश अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यहरहःकृताः २ ॥ कौत्संज्ञप्त्वातुइत्येतद्वासिष्ठंप्रतिचय्यहम् महेशशुद्धवत्यश्चसुरापोपिविशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ सकृज्ज्ञप्त्वास्ववामीयंशिवसंकल्पमेवच अपहत्यसुवर्णेतुक्षणाद्भवतिनिर्मलः ४ ॥ हविष्यंतीयमभ्यस्यनतमहइतीतिच जप्त्वाचपौरुषंसूक्तमुच्यतेगुरुतल्पगः ॥ ५ ॥ एनसांस्थूलसूक्ष्माणांचिकीर्षन्नपनोदनम् अवेत्यृचंनपेदब्दंयत्किंचेदमितीति ॥ ६ ॥ प्रतिगृह्याप्रतिगृह्यंभुक्काचान्नविगर्हितं जपंस्तत्समंदीयंप्रथतोमानवस्यहम् ॥ ७ ॥ सौमारीद्रुतुवह्नीनांनासत्यस्यचशुध्यति स्रवंत्पामाचरेत्स्नानं पर्यस्यपितिचाप्यृचम् ॥ ८ ॥

दि यो मंत्रहै और नतमंह इति इत्यादि यो मंत्र और सहस्र शीर्षा इनकाजपकर्कें गुरुतल्पग यो मनुष्यहै गुरोंकी शय्या में प्राप्तहोणे वाला सो शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ और छोटे बड़े यों पापहैं उन के दूर करणोंको यो इच्छा कर्ताहै सो अवेत्यृचं इत्यादि मंत्रकों और यत्किंच दपतो त्यादि मंत्र कों एक वर्ष जप करे ॥ ६ ॥ और नहिं दान लेणे योग्य यो दान उस दान कों ले कर्कें और निदित यो अन्न तिसकों खाय कर्कें साव धान चितहोय कर्कें नरत्समंदीय इत्यादि मंत्रकों तीन दिन जप कर्कें शुद्ध होताहै ॥ ७ ॥ सौमेति सौमा. रोद्र - वृन्हि ' नासत्य, पर्यस्य मित्यादि, क चांका जप करे और नदीमें स्नान करे ॥ ८ ॥

२६६ ॥ श्रीरणवीरकैरित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥

और पापमे अन्दारसानमित्येतत् एहयो सप्तकहै इसका जप करे और महीना मात्र भिक्षा केअन्नको भोजनकरे रहस्यकिआ योपाप इसकके तिसपापको दूरकर्ताहै मनुष्य ॥ ९ ॥ और रशाकल होमीय योमंत्रहैं इनोमंत्रो कर्के वषमात्र द्विज घृतको हवनकर्के और वामन इष्यते इत्यादिमंत्रको जप कर्के आपणा बडावी योपापहै तिसको दूरकर्ताहै ॥ १० ॥ और द्रुपदानामक के योदेवी यजुर्वेदमें प्रतिष्ठितहै उसको जलके मध्यमें तीनवार पड कर्के संपूर्ण पापी कर्के रहित होताहै ॥ ११ ॥ और योमनुष्य महापातको कर्के युक्तहै सोसावधान चित्त होयेकर्के गोओ के पीछेजावे और पावमानीय योमंत्रहैं इनको अछाप्रकार पड कर्के और भिक्षाके अन्नको भोज

अन्दारसानमित्येतदेनसिसप्तकजपेत् अप्रकाशतुकृत्वैनोमासमासीतभै क्षयभुक्९मंत्रैःशाकलहोमीयैरब्दहुत्वाघृतंद्विजः स्वगुर्वप्यपहंत्येनोजप्त्वा वामनइष्यते १० द्रुपदानामसादेवी यजुर्वेदेप्रतिष्ठिता अंतर्जलेत्रिरावर्त्य मुच्यतेसर्वाकिल्विपैः ११ महापातकसंयुक्तोनुगच्छेद्वाः समाहितः स्वभ्यस्यपावमानीयंभैक्ष्याहारोविशुध्यति१२ अरण्येवात्रिरभ्यस्यप्रयतोवेदसंहिताम् मुच्यतेपातकैः सर्वैःपराकैः शोधितस्त्रिभिः ॥१३॥ त्र्यहंतूपवसेद् युक्तस्त्रिरहोभ्युपयन्नपःमुच्यतेपातकैःसर्वैर्जप्त्वात्रिरघमर्षणम् १४ यथाश्वमेधःक्रतुराट्सर्वपापापनोदनः तथाघमर्षणंसूक्तं सर्वपापापनोदनम् १५ हत्वालोकानपीमांस्त्रिभ्यन्नपियतस्ततः ऋग्वेदधारयन्विप्रो नैनः प्राप्नोति किंचन ॥ १६ ॥

न कर्के शुद्धहोताहै ॥ १२ ॥ अथवा वेदसंहिता को वनमे जाय कर्के तीनवारपाठकरे तब संपूर्णपापों कर्के रहित होताहै और तीनयो पराक वतहैं तिनके करणे कर्के शुद्ध होताहै ॥ १३ ॥ और तीन दिन निगहार वतकरे और तीन दिन जलको पीवे और तीन वार अघ मर्षण मंत्र को जपकर्के संपूर्णपापों कर्के रहित होताहै ॥ १४ ॥ और जैसे अश्वमेध यो यज्ञसंपूर्ण यज्ञों का राजासंपूर्ण पापोंको दूरकरणे वाला तिसी प्रकार अघमर्षण सूक्तयोहै सोसंपूर्ण पापों केदूरकरणे वालाहै ॥ १५ ॥ और एहयो तीनलोकहैन इनकोमार कर्के वीओर जिसकिस स्थानमें भोजन कर्केवी ऋग्वेदको धारतायो वाह्यणहै सोकिंचनमात्र पापकोवा नहिप्राप्तहोताहै १६

॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी भा० २६७

ऋग्वेद कीयो संहिता है तिसको अभ्यास करें अर्थात् तिनका पाठ करें अथवा सावधान चित्त होय करें यजुर्वेद कीयो संहिता है तिसका पाठ करें अथवा रहस्यों करें सहित योसाम वेदके मंत्र तिनका पाठ करें संपूर्ण पापोंतें रहित होता है ॥ १७ ॥ जेतें बडा बोहूद है जलस्थान तडागादि तिसको घात होय करें शीघ्र ही लोट योहे मृत्तिकाकी ठीम सो नटहोजाती है तिसी प्रकार संपूर्ण पाप त्रिवृत् योवेद है ऋग्यजुः साम इनके पाठ करणेंतें दूरहोजाता है ॥ १८ ॥ ऋग्वेद और यजुर्वेद एह जो आय है अर्थात् शुक्ल यजुः ओर अनेक प्रकारके यो साम हैं एह योतीनो वेद हैं इनका नाम त्रिवेद है योमनुष्य निश्चय करें जाणता है सोवेदके जानने वाला

ऋक्संहितांसमभ्यस्य यजुषां वासमाहितः सान्नां वासरहस्यानां सर्वपापैः प्रमुच्यते १७ यथामहाहूदं प्राप्य क्षिप्रं लोष्टो विनश्यति तथा दुश्चरितं सर्ववेदे त्रिवृत्तिमज्जति १८ ऋचो यजुं पिचाद्यानि सामानि विविधानि च एष ज्ञेयस्त्रिवृद्वेदो यो वै वेदसवेदवित् १९ आयं यज्यक्षरं ब्रह्म त्रयीयस्मिन् प्रतिष्ठिता सगुह्यो न्यास्त्रिवृद्वेदो यो वै वेदेनं सवेदवित् २० वेदाभ्यासे न्वहं शक्त्या महायज्ञा क्रियाक्षमा नाशयंत्याशु पापानि महापातकजान्यपि २१ यथैवांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुते क्षणान् तथा ज्ञानाग्निना पापं क्षिप्रं दहति वेदवित् २२

हे ॥ १३ ॥ आय योहे व्यक्षर ब्रह्म अक्षर उकार मकार रूप जिनमें वेदत्रयो प्रतिष्ठित है सोगुह्य अन्य का उर त्रिवृद्वे है योमनुष्य इसको जानता है सोवेदवित् है ॥ २० ॥ और दिन दिनमें शक्ति करें वेदाभ्यास करणा और महायज्ञ यो है अथमेधादि उकार क्रियानें सामर्थ्य होणी एहयों हैं शीघ्र महापातकोंतें उत्पन्न भये वी यो पाप हैं तिनको नाश करें ॥ २१ ॥ ओर निसप्रकार समिद्ध योऽग्नि है बलता अग्नि सोक्षणें समिद्धोंको भस्मसात् करदेता है तिसी प्रकार वेदके जानने वाला ज्ञानाग्नि कें पापकों शीघ्र दग्ध कर्ता है ॥ २२ ॥

२६८ ॥ श्रीरणवीरकारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भा० ॥:

और योमनुष्य वासुदेवजीयोंहैं जगतोंके स्वामी और संपूर्ण जगत्में प्रधान भक्ति करें तिन
को प्राप्त भये योंहैं सो मनुष्य लोकमें शीघ्र पापोंको दूर करें चंद्रमा. और सूर्य इनके वरामर
प्रभाव वाले होतेहैं॥ २३ ॥ एहजो राज्योंके राजा श्रीरणवीरसिंहजी तिनकी आज्ञाके अनुसार
सारस्वत जिनकी संज्ञाऔर पंडितदेवीदत्त जीके पुत्र पंडित गंगारामजीने संग्रहहोए धर्मशास्त्र

येवासुदेवंजगतामधीशंभक्त्यागताःसर्वजगत्प्रधानम् ॥ तेषातकान्याशुवि
धूयलोकेभवतिचन्द्रार्कसमप्रभावाः २३ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजज
म्बूकाशनीरतिव्यताद्यनेकदेशाधिपतिप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्त श्रीदेविको
पकंठवासिपण्डितोपनाम सारस्वतदेवीदत्तमुतपण्डितगंगाराम संगृहीते
धर्मशास्त्रमहानिवन्धे प्रायश्चित्तभागे पारिशिष्टप्रकरणंसंपूर्णम् २१

केमहानिवन्धविषे जो प्रायश्चित्तभागहै तिसमें इकैसमा प्रकरण पारिशिष्ट नामवाला संपूर्णही
आ और एह ग्रंथभीपूराहोया इसमें जो मंत्रों कियोंप्रतीकाहैं सोकितनीयांक पूर्ण मंत्रों वालीयाहैं
सो मंत्र संग्रहमें देखलैयनीयां और पीछेभी रहस्य प्रकरणआयाहै परंतु इसमें संक्षेपहै और कुछ
विशेषभीहै इस कर्कें लिखपाहै ॥

॥ श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित्त भागः ॥ प्र० २१ टी० भ० ॥ २६९

यतोसौवालघ्नोवृजिनबहुलासंहातिरिव तथाभौभोभूम्याश्रितसकलसत्संध
कल्पः॥मृतःकंसःकेशीवकनकुलचाणूरदितिजाः ससेव्यःश्रीकृष्णोदुरितद
नुहत्यैप्रतिपदम् १ वसन्वृन्दारण्येऽगमयदपिगोपालनिवहं रसनरासक्री
डांरसनयवतीगोपयुवतीः बहन्गोत्रंनन्दादिकममलवेदान्तहृदयं भवन्भूया
द्रुत्यैभ्रमनिहितवाक्यैकशरणः २ जम्बूपुरीविस्तृतनराजधानीराजाधिराजो
रणवीरसिंहः धर्मस्यवृद्धैवृजिनस्यशुद्धैवाज्ञापितोहंकविगांगरामः ३
एतद्विपीयावहवोपिसन्तिप्राचीननव्यादिकृतानिवन्धाः तथापिकिञ्चित्सग
मोदृपायःपूर्वापरामर्शवतांप्रतीयात् ४ यद्वस्तुयादृग्गुणकंततोऽन्यदुच्यते
हीतंशुभतामुपैति कुल्यागतंवार्षिकवारिवृन्दंगंगाप्रवाहैर्मिलितंशुभात् ५
स्वभावतः सज्जनदुर्जनौतौगुणैकदोषैकदृशौहिकामम् एकत्रतीर्थैसुकृतैक
हेतौ हंसाश्रकाकाः स्वमतेष्टभाजः ६ अनूद्यविद्वान्यादिकोपिवाक्यं वदेत्तदा
नव्यमिवावभाति अर्थप्रयोगेपिकविप्रयोगेह्यचित्तनीयोवचनप्रभावः ७ अ
नेकदेशात्समुद्रागतायेगणेशमुख्याः शुकदेववर्य्याः विद्वक्षिणाःमूर्तिरनुत्तमो
येविद्वांस्तथास्याद्रजवासिशर्मा ८ गोविन्दाचारिणोविज्ञ बुधानैयायिका
वराः श्रीगोकुलचन्द्राख्यावैयाकरणमानिताः ९ विश्वेश्वरबुधश्चान्येधर्म
शास्त्रकृतश्रमाः सर्वैरेभिस्तस्मादृष्टोग्रन्थोयंनिर्मितःशुभः १० श्रीमज्जम्बूम
हीपालरणवीराख्यवर्माभिः समाज्ञप्ताबुधाःसर्वेधर्मकार्य्यसमुद्यताः ११
यावत्पृथ्वीजनावासायावद्व्यौश्चन्द्रसूर्य्यधा जगत्सरसितावाह्यग्रन्थहंसो
भिरम्यताम् १२ जम्बूनिवासीदिनमध्यशाखी देवाद्यदत्ताख्यसुतेतिभापी
कुलंभरद्वाजमुनेरुपासी श्रीदेविकायेनभूतवकाशी १३ तेनात्रसन्धायकृतोहि
दर्शस्ततःपुनर्गांगविदाविमर्शः पापाभितप्तस्यसुधादिवर्षा धर्मस्यवृत्तेवि
मुखस्यधर्षः १४ श्रीविक्रमादित्यनृपेशराज्याद्द्वित्र्यंकरा त्रीशमितेगतेवृदे
१५ ३२ तपस्यमासेबुधवारयुक्तेहोलाष्टकेपूर्तिमगान्निवन्धः १५ समाप्तश्चा
यंगंगारामेणस्वयंसंगृहीतः स्वयमेवमुद्रापितोधर्मशास्त्रायप्रायश्चित्तभा
गोलेखकपाठकयोः शुभजनकोभूयात् •

समुन्नीतस्तावद्भिरितटभुवागांगविदुपाततो
धःसस्थानैर्वरकविजनैर्दृष्टसुजवः गनःका
श्यांपश्चात्तदनुविधयासिधुतटतःप्रवाहोगंगा
यानृपवरसमाज्ञप्तद्वयः१ ग्रंथपक्षेदृष्टः सु
ष्टुजवःपापनाशकशक्तिरूपःप्रभावोयस्यसः
एहग्रंथमतवेविद्याविलासजम्बूमै सिवाम
लकेअधिकारसेसमाप्तहुआ

॥ शोधितोयंनिधिपातेना ॥

पृ०	प०	
१	७	शुद्धिशब्दार्थः
२	५	जन्मसूतकेमनुः
३	५	सूतकेरुपर्शनिर्णयः
४	७	सूतकेबालमुखदर्शनेनपितुःशुद्धिः
५	२	ब्राह्मण्यादिसूतिकासपर्शादिनानि
५	५	विंशतिरात्रेणसूतिकाशुद्धिः
५	१०	मृतसूतकेलवणादिशुद्धिः
६	४	सद्यःशौचादिभेदादक्षेणोक्ताः
६	१०	रात्रौसूतकपातेदिननिर्णयः
७	१	सद्यःशौचवानुक्तस्तत्रैव
७	७	अग्निवेदसमन्वितस्यएकाहाद्याशौचम्
८	६	ब्राह्मणब्रुवसंज्ञार्थः
९	१०	परपूर्वाभार्यासुरेतःपातिनःसूतकनिर्णयः
१०	५	क्षत्रियादीनामशौचदिनानि
११	४	सर्ववर्णेषु दशाहमेवाशौचम्
११	८	सूतकेवर्ज्यावर्ज्यनिर्णयः
१२	२	सदातनमशौचमाहदक्षः
१३	३	अन्यपूर्वाभार्यावतः सदाशौचम्
१३	१०	अथसामान्येनचातुर्वर्ण्यस्यमृतिकासौचम्
१४	१	गर्भस्त्रावेविशेषोयाज्ञवल्क्यप्रोक्तः
१५	६	स्त्रावपातादिसंज्ञानिर्णयः
१६	१	दशाभ्यन्तरेबालमरणेनिर्णयः
१६	७	गर्भयदिविपात्तिरितिनिर्णयः
१७	२	जननमरणनिमित्ताशौचसंपातेनिर्णयः
१७	१०	मुहूर्त्तमात्रजीवनानंतरंबालमरणेनि०
१८	६	नालच्छेदनपर्यंतसूतकाभावः

पृ०	प०	
१९	८	अष्टादशदिनात्प्रागूरजस्वलायांजातायांनि०
२०	४	रजस्वलायावर्ज्यावर्ज्यानि
२१	३	रजस्वलास्वमुखं कस्मैचिन्नदर्शयेदित्यादिनि०
२१	५	रजस्वलायानिपिहसेवनफलनिर्देशः
२२	१	रजस्वलायानैमित्तिकस्त्रानेनि०
२२	१०	सूतिकायामरणेनिर्णयः
२४	११	सूर्योदयेरजस्वलाचिदित्यादिनि०
२५	६	सामान्यतोमृतकाशौचमाहमनुः
२६	१	सर्पिडसकुल्यस्ववंश्यादिसंज्ञा
२६	४	ब्राह्मणक्षत्रियादिसर्पिडादिव्यवस्था॥
२७	३	चतुर्थेहनिब्राह्मणस्यस्पर्शइत्यादिनिर्णयः
२७	१०	अंगस्पर्शव्यवस्थायुगांतरविषयेतिनिर्णयसिंधुः
२८	१	अथाशौचसंकरः
	८	अशौचांतरदिनेयद्यपरमशौचमित्यादिनि०
२९	२	अशौचांतरदिनेदशरात्राशौचांतरपातेनि०
३०	६	सूतकवृद्धौनिर्णयः
३१	३	अघवृद्धिमदाशौचमित्यादीनि०
३२	१	नवमदिनपर्यंतमशौचांतरपातेनि०
	१०	असंपूर्णाशौचसंनिपातेयमः
३३	४	पंचमदिनपर्यंतद्वितीयसजातीयाशौचसंनिपातेनि०
३४	१	विजातीयाशौचसंकरेलघुहारीतः
३५	३	अग्नेमातरिमृतायांपश्चात्पितृमरणेनि०
३६	१	सहगमनेविशेषः
	५	अथविदेशस्थाशौचम्
३७	५	अन्यदेशमृतज्ञातिश्रवणेनि०
	८	देशांतरस्थेवालमरणेनि०

४०	पं०	
३८	५	देशांतरलक्षणम्
३९	३	सपत्नमातृविषयेदक्षः
	९	इतिविदेशस्थाशौचम् •
४०	७	जननाशौचेतर्दशाहेमरणेनि०
४१	६	ब्रह्मचारिणःशवदाहादिक्रियानिषेधः
४२	७	ब्रह्मचारिणापि पित्रोःक्रियाकार्यं
४३	४	सूतकेत्याज्यात्याज्यव्यवस्था
४४	४	होमादिकरणानुज्ञा
४४	९	सूर्यायांजलिप्रक्षेपः सूतकेकार्यः
४६	७	भुंजानेषुब्राह्मणेष्वंतरा मृतसूतकेनि०
४७	८	स्त्रीशूद्रविषयेकिंचिद्वचनम्
४८	६	दत्तादत्तकन्याविषयेनि०
४९	९	असंस्कृतकन्यालक्षणम्
५०	३	संस्कृतासुस्त्रीपुमृतासुनाशौचेपितृपक्षे
५१	३	जाताजातदंतानांमरणेनि०
५१	६	अत्रैवपडशीतिमतम्
५२	८	वर्षसंकराणांशौचाशौचव्यवस्था
५३	७	अथानुपनीतविषयेकिंचिदुच्यते
५४	१	शिश्वादिसंज्ञाप्रदर्शनंतदनुसारिणीक्रियाश्च
	११	चूडाकर्मानंतरंबालमरणेनि०
५५	४	असंस्कृतानांभूमौदद्यादित्यादिनि०
५६	१	पूर्वाक्तस्यैवव्यवस्था
५७	९	त्रिरात्रमात्रादेशादित्यादिनि०
५८	५	अथशववाहकाद्याशौचम्
५९	१	असवर्णीप्रेतस्यमूलेननयनेनि०
	८	अनाथप्रेतसंस्कारफलम्

पृ०	पं०	
६०	२	सूतकाद्द्विगुणंशावमित्यादिनि०
	७	श्मशानेसपिंडानां प्रेतनयनेफलम्
६१	५	मनुनाहीनवर्णस्यैर्ध्वदैहिकं निषिद्धम्
	७	समोत्तमवर्णयोरोदने आशौचम्
६२	६	पुरुषस्य कतिगुरवो भवन्तीति नि०
	८	गुर्वादिमरणे त्रिंशच्छूलोक्त्यानि०
६३	३	पूर्वश्लोकव्याख्या
६४	१	असपिंडस्य गृहे मरणे नि०
६५	२	गृहे चांडालमरणे गृहशुद्धिनि०
	५	गृहे गवाश्वादिमृतौ निर्णयः
		भगिन्या भ्रातुश्च मरणे नि०
६६	४	बंधुत्रयोत्कृष्टाधर्मसिंधुमतेन
६७	१	अत्रैव नागोजिभट्टमतम्
६८	१	दत्तकेन पूर्वापरपितृमरणे किं कर्तव्यमिति नि०
६८	५	आचार्यादिमरणे नि०
६९	६	ग्रामाधिपदेशाधिपयोर्मरणे नि०
७०	५	युद्धादिनामरणे सूतकनिर्णयः
७०	९	प्रयागादिमरणे नि०
७१	३	पक्षिणीशब्दार्थः
७३	१	अथाशौचापवादः
७४	१	शस्त्रविनापि स्वाम्यर्थमरणे नि०
	६	आपत्तौ सूतकाभावकथनम्
७५	१	आरब्धे व्रतयज्ञादौ सूतकाभावकथनम्
७६	६	इति सूतकनिर्णयसूची
७७	१	अथ द्रव्यशुद्धिनिर्णयसूची
	३	शय्यास्थितदंपतीशुद्धिनि
	५	व्रतिबालवृद्धस्त्रीणां सदाशुद्धिः

पृ०	पं०	
७७	७	जलस्थेनजलएवतर्पणादिविधेयम्
	१३	कृताचमनोऽशुचिरपिशुचिः
७८	१	अंशुपट्टादिवस्त्रशुद्धिः
	३	शंखाश्मस्वर्णादिशुद्धिः
	४	माणिरत्नादीनांशुद्धिः
	६	बहूनां वस्त्राणां संघाते प्रोक्षणाच्छुद्धिः
	९	कांस्यलोहादिशुद्धिः
७९	१०	सवर्णरजतादीनांशुद्धिः
८०	५	तैजसपापाणपात्राणांशुद्धिः
	९	काकमुखावघृष्टपात्रशुद्धिः
८१	४	दंतास्थिशृंगादिपात्रशुद्धिः
	१३	चरुस्रक्स्त्रुवसस्नेहपात्रशुद्धिः
८२	२	बहुधान्यवस्त्राणां जलेन शुद्धिः
८२	८	अथ वस्त्रादिशुद्धिर्याज्ञवल्क्ये
८३	५	अमंध्ययुक्तवस्त्रादिशुद्धिः
८४	१२	पुनःपाकनमृएमयानांशुद्धिः
८५	८	स्नेहयुक्तानामुष्णजलेन शुद्धिः
८६	१	नीलालेशाक्तवस्त्रशुद्धिः
८७	८	त्राुमीसकताश्वाणां क्षाराम्लादिनांशुद्धिः
८८	३	ताम्रायः कांस्यरैत्यानांशुद्धिः
	८	देशकालादिज्ञानपूर्वकमाशौचं कथनीयम्
८९	२	उत्पवनेन द्रव्यदिशुद्धिर्भृगुपृतादेः पात्रां निरुत्थापनेन शु०
	९	सौवर्णादिपात्रशुद्धिः
९०	९	गवाघ्रातकांस्यादिशुद्धिः
९१	१	वसादिमलानां गणना

पृ०	पं०	
	६	परस्यमलस्पर्शप्राय०
	९	ऊर्ध्वकायेऽधःकायेमलस्पर्शप्रा०
९२	४	गोवालैःफलपात्राणां शुद्धिः
	९	भूमिस्थोदकशुद्धिः
	१२	काष्ठमयानांतक्षणेनशुद्धिः
९३	४	दूषितकूपादीनामपिप्रसंगतःशुद्धिः
९४	१	शुद्धपात्रेणोद्धृतंजलंशुद्धम्
९४	८	कारुहस्तादीनांशुद्धिः
	१०	मुखंविनागोःशुद्धिः
९५	२	नाट्यादीनारस्यादौशुद्धिः
	६	अजाविरेणुनाऽऽयुरादिह्रासः
	११	अविज्ञातंवस्तुशुद्धम्
९६	२	मेहनादौमृत्तिकादानेसंख्या
	६	सिद्धार्थकादीनांलोमादिनाशुद्धिः
९७	१	रजकादिहस्तशुद्धिः
	४	वहुवर्षव्यवाहितंवस्तुशुद्धमेव
	७	द्विजेन्द्राणांवाग्विप्रुषःशुद्धाः
९८	१	काकाद्युपहतमाज्यंनस्याज्यम्
	४	गर्दभादिभारवाहिस्वेगुचित्वादिकथनम्
	८	उच्छिष्टजलादीनांबहिःप्रक्षेपः
	९	पंचपिंडीद्वारणंविनास्नाननिषेधः
९९	४	नित्यादिकर्मणोहानिकुर्वतोऽगृहेभोजननिषेधः
	११	दासवर्गेणकृतंकर्मशुद्धम्
१००	३	काम्मान्तागारशालादिशुद्धम्
	९	सस्नेहास्नेहास्थिशुद्धिनि०

पृ०	पं०	
१०१	४	पतितापविद्धादिस्पर्शप्रा०
१०२	१०	भृग्वग्न्यनशनजलादिनामृतानां शुद्धिः
१०२	२	ज्ञातिमज्ञातिंप्रेतमनुगम्यसचैलस्नानम्
१०३	७	सूतकिब्राह्मणस्ययजमानेनत्यागेदोषः
१०३	१	विजातीयाशौचभोजनेप्रा०
१०४	३	द्विजस्यशूद्रप्रेतानुगमनेप्रा०
१०४	८	क्षुतादौजातेऽप्राचमनेनशुद्धिः
१०५	१	सुरादिभिरुपघातेमृत्तोयेनशु०
१०५	८	सर्वेषामर्थशौचेऽशुभानुज्ञा
१०६	११	रजसास्त्रीशुद्धिः
१०६	१	सत्यादिनामनश्चादिशु०
१०७	८	अप्राचमनविदवःपादादौपतिताःशुद्धाः
१०७	१	दंतश्लिष्टंतुनिगिलनीयमित्यादिनि०
१०८	७	स्नानादौजातेद्विराचमनविधिः
१०८	१	द्विराचामेदित्यत्रशास्त्रार्थः
११०	८	अप्राचमनयोग्यजलादिकथनम्
१११	५	ब्राह्मतीर्थादिनिर्देशः
११२	१	अप्राचमनानंतरंन्यासाविधिः
११३	१	द्रव्यहस्तस्योच्छिष्टत्वेनिः
११३	४	रथ्याकर्हमादिशुद्धिः
११४	१	मनुष्यपालितादिश्वेदिस्पर्शनि०
११५	१	भूशुद्धिप्रकारः
११६	७	आपत्कालधर्मसंकोचः
११७	१	पात्रमुत्थाप्यजलधारायामुखेपातेऽशुद्धिनि०
११७	४	विप्रस्यदक्षिणोर्णेऽग्न्यादिदेवतासंभावना
११७	६	इतिशुद्धिप्रकरणसूचिसंक्षेपः ॥ १८ ॥

पृ०	पं०	
११९	४	किमर्थैरहस्ये प्रायश्चित्तालपताऽस्मिन्विषयेशास्त्रार्थः
११९	९	अत्रात्तम्
१२०	१	पश्चात्तापादीनां शुद्धिहेतुत्वकथनम्
१२१	८	पापस्य शक्तिद्वयस्य कथनम्
१२२	२	अथ रहस्यप्रायश्चित्तम्
१२३	४	अविदुषा व्याजेन रहस्यज्ञेयम्
	८	रहस्यप्रायश्चित्तानुज्ञाने चतुर्विंशतिमतम्
	१०	अत्र कालाद्यनुक्तौ व्यवस्था
१२४	६	अशक्तौ धेनुदानम्
१२५	१	पापपनोदायप्राणायामविधानम्
	४	बोधायनेनात्र विशेष उक्तः
	६	अभक्ष्यादिप्राशने प्रायश्चित्तम्
१२६	२	सर्वपापहरप्रायश्चित्तविधानम्
	९	गायत्रीजपरूपप्रायश्चित्तम्
१२७	३	रुद्रैकादशिनीजपरूपप्रायश्चित्तम्
	८	सर्ववेदपवित्रतानिरूपणम्
१२८	४	एते पाजपेन जातिस्मरन्वलाभः
	६	प्रतिदिनं वेदाभ्यासादिरूपप्रायश्चित्तम्
१२९	७	वेदाग्निना सर्वपापदाहकथनम्
१३०	६	मासपर्यन्तं प्रतिदिनं षोडशप्राणायामविधानम्
	९	कौत्ससामादिजपविधानम्
१३१	५	सुरापानप्रायश्चित्तम्
	११	वर्षपर्यन्तं पावनान्यभ्यासरूपप्रायश्चित्तम्
१३२	२	ब्राह्मणस्वर्णहारिणः प्रायश्चित्तम्
१३३	१	मद्यपानादौ रुद्राध्यायपाठरूपप्रायश्चित्तम्
	६	पौरुषसूक्तपाठेन सर्वपापनाशकथनम्
१३४	१	स्थूलसूक्ष्मपापनाशकप्रायश्चित्तम्

पृ.	पं.	
१३४	७	दुष्टप्रतिग्रहेसूक्तजपरूपंप्राय ०
१३५	१	विमूत्रप्राशनेप्राय ०
	८	जलेविमूत्रत्यागेपिसूक्तजपरूपंप्राय ०
१३६	२	महापापनाशायऋग्जपरूपंप्राय ०
	६	अरण्येवेदसंहितापाठेनसर्वपापनाशः
	११	अंतर्जलेत्रिरघर्मणजपेनसर्वपापनाशः
१३७	३	ऋग्वेदधारणेनसर्वपापनाशः
	७	यजुःसामसंहितापाठेनसर्वपापनाशः
१३८	५	सामविधानारूप्येब्राह्मणेप्रायश्चित्तरंभाविधिः
१३९	१	अथप्रायश्चित्तविधिः
	९	प्रायःसाधनप्रयोगः
१४०	१	अविरूपापितदोषादिप्राय ०
	३	प्राणायामविधिः
	९	शूद्रान्नादिभोजनेषुप्रायाश्चि ०
१४१	६	गायत्रीहवनादिरूपंप्राय ०
	११	वैशारूपादौस्वास्तिवाचनरूपंप्राय ०
१४२	४	तिलधनुदानरूपंप्राय ०
	६	षड्विधतिलक्रियाफलम्
१४३	१	ब्रह्महत्यादिपापप्राय ०
	५	रहस्यप्रायश्चित्तानि
१४४	३	अत्रवौधासनेनोक्तप्राय ०
	११	प्रायश्चित्तांतरम्
१४५	१	अत्रविशेषोऽपराकै
१४६	३	महापातकादिप्रायश्चित्तम्
	५	एकादशरुद्रपाठेनसर्वपापनाशः
	११	गायत्रीजपरूपंप्राय ०

पृ०	पं०	
१४७	८	सावित्रीत्रिकजपमाहात्म्यम्
१४८	८	तरत्समंदीजपेनसर्वपापनाशः
	१०	मातृभगिन्यादिगमनेजलेऽघमर्षणजपरूपंप्रा०
१४९	४	चांडालीप्रभृतिगमनेप्राणायामरूपंप्राय०
	६	रेनोमूत्रादिलशुनपलांडुवादिहंसग्रामकुक्कुटादिभक्षणे
		शुद्धवतीभिःप्राणायामः
	९	रात्रौप्रहरमात्रध्यानरूपंप्राय०
१५०	४	अपेयपानेप्राणायामरूपंप्राय०
	६	महाव्याहृतिहोमेनोपपातकनाशः
	९	पुनर्गायत्रीजपरूपंप्राय०
१५१	३	सर्ववेदपवित्रताकथनम्
	११	जलेत्रिरघमर्षणजपेनसर्वपापनाशःहंसःशुचिपदित्यस्याजपेनापि
१५२	१	विष्णुमतेसर्ववेदपवित्राणि-
	७	लांकत्रयहत्यायामपित्रिरघमर्षणजपोतर्जलेकार्थः
	११	अथशरीरपवित्रम्
१५४	१	उदुःयनित्यादिनोपस्थानम्
	८	सर्वफलप्रदं व्रतमिदम्
	१०	सुवर्णदानादरूपंप्राय०
१५५	३	तिलदानरूपंप्राय०
	७	कार्तिकस्यामजिनदानंभूमिदानमपि
१५६	४	गोचर्मपृथिवीलक्षणम्
	६	यावकश्रपणविधिः
१५७	९	ब्रह्महत्यादिविनाशार्थमेकादशशरांत्रयावकपानम्
१५८	३	अब्रववसिष्ठोक्तोविशेषः
१५९	१	भूणहत्यापनोदायकूष्माण्डैर्हवनम्

पृ०	पं	
१५९	४	ब्रह्मचारिकल्पेन व्रतम्
१६०	१०	पद्ववादेवहेडनमित्य॥दिनाहवनम्
१६१	२	अंतर्जलगायत्रीजपः
१६२	९	अनुतापेसतिविष्णुस्मरणंविधेयम्
१६३	१	गंगास्नानमाहात्म्यम्
१६४	६	गंगामाहात्म्येस्तुतवादानिषेधः
१६५	११	कालियुगेविशेषतो गंगामाहात्म्यम्
१६६	४	रूपापनानुतापादिनापापनाशः
		इतिरहस्यप्रकरणसूची ॥
१६७	२	अथापविद्धप्रकरणसूची० प्र० २०
१६८	८	कृतकपुत्रसंग्रहप्रकारः
१६९	१	कृतकपुत्रसंस्कारेप्रवृत्तिः
१७०	३	एतदुत्तरम्
१७१	६	कृतकपुत्रायकन्यादानप्रकारः अस्यैवापविद्धेतिनामांतरम्
१७२	१	अत्रशुद्धिविवेकसंमतिः पोषकवहुस्वनिर्णयश्च
१७३	१	अत्रमृतपिण्डद्वयः
१७४	३	अथप्रसंगानुमातृज्ञानेपिजारजशंकयापुत्रनिर्णयः
१७५	९	इतिविंशतिप्रकरणसूची
१७६	५	अथैकविंशतिकपाराशिष्टप्रकरणसूची
१७७	७	अकामादिनापापकरणेप्रायः०
१७८	१	राजदंडादिनापापक्षयकथनम्
१७९	५	कर्मपुराणायप्रायश्चित्तविधिः
१८०	१	प्रायश्चित्तप्रवक्तारोब्राह्मणाः
१८१	१	नारदीयपुराणोक्तप्रायश्चित्तविधिः
१८२	७	धर्मशास्त्रज्ञानंविनाप्रायश्चित्तकथनेदोषः
१८३	८	मत्तकृद्वातुराद्यन्नभोजननिषेधपूर्वप्रायः०
१८४	३	अशौचान्नादिभोजनेप्रायः०

पृ०	पं	
१७६	९	अभोज्यानामन्नप्राशनेप्राय०
१७७	७	अपांक्त्यपंक्तिभोजनेप्राय०
	११	राजान्नभक्षणेदोषः
१७९	१०	लशुनादिभक्षणेप्राय०
१८०	९	चक्रवाकादिमांसभक्षणेप्राय०
१८१	५	नरादिमांसभक्षणेप्रा०
१८२	९	मृतपंचनखादिदूषितकूपादिजलपानेप्रा०
१८३	५	दशाहाभ्यंतरेगवादिदुग्धपानेप्रा०
	११	गोहत्यादिप्रा०
१८५	२	घंटाभरणादिनागोमरणेप्रा०
१८६	१	क्षत्रियादिवधेप्रा०
१८७	२	विप्रस्यक्षत्रियादिवधेप्रा०
	६	स्त्रीवधेप्रा०
१८८	५	मार्जारनकुलादिवधेप्रा०
१८९	३	मंडूकनकुलादिवधेकर्मपुराणेप्रा०
१९०	५	आस्थिमदनस्थिमद्वधेप्रा०
१९१	१	फलवद्भक्षणेदनप्राय०
	७	मनुष्यहरणस्त्रीवधयोःप्राय०
१९२	५	उद्धंघनेनमृतस्यस्पर्शेप्राय०
१९३	१	उच्छिष्टस्यरजस्वलास्पर्शेप्राय०
	८	शुनादष्टव्रह्मचारिणःप्राय०
१९४	१	स्वप्नेस्खलितस्यव्रह्मचारिणःप्राय०
	६	अवकार्णव्रतविष्णुधर्मोत्तरे
१९५	२	अयाज्ययाजनेप्राय०
१९६	२	अगम्यागमनेप्राय०

पृ०	पं०	
१९७	६	दुहितृस्वसृगमनेप्राय०
१९८	५	कन्यादूषणादिपापप्राय०
१९९	१०	पंचमहापातकस्वरूपकथनम्
२००	१	तत्रैवब्रह्महत्याप्राय०
	७	कूर्मपुराणोक्तमहापातकानि
२०१	१	ब्रह्मघ्नप्रायश्चित्तानि
	६	अस्थैवव्रतांतरम्
२०२	९	नारदीयपुराणोक्तानिमहापातकानितत्प्रायश्चित्तंच
२०३	९	अभिषिक्तराजवधेप्रा०
२०४	३	दीक्षितब्राह्मणहननेद्विगुणंप्रा०
२०५	७	विष्णुधर्मोत्तरेसुरापानप्राय०
२०६	८	नारदीयपुराणोक्तसुरापानप्रा०
२०७	९	मद्यविशेषनिर्णयः
२०८	२	विष्णुधर्मोत्तरेसुवर्णस्तेयप्राय०
२०९	५	स्तेयशब्दार्थोनारदीयपुराणे
२१०	१	स्वर्णमानकथनम्
२११	१	लिक्षामात्रस्वर्णापहारेप्राय०
२१२	३	गुरुतल्पप्रायश्चित्तंविष्णुधर्मोत्तरे
	८	कूर्मपुराणेपितृ
२१३	७	नारदीयपुराणोक्तगुरुतल्पगप्राय०
२१५	८	ब्रह्महत्यादिपतितसंसर्गप्राय०
२१६	१	नारदीयपुराणोक्तमहापातकिसंसर्गप्राय०
	८	जातिभ्रंशकरादिपातकानिविष्णुधर्मो
२१७	५	प्रकीर्णकप्राय० कूर्मपुराणे

पृ०	पं०	
२१८	४	नीलवस्त्रपरिधानेप्राय०
२१९	१	उष्णदियानारोहणेप्राय०
२२०	५	भुजतोब्राह्मणस्यगुदस्त्रावेप्राय०
२२१	३	द्विजस्यप्रेतीभूतशूद्रानुगमनेप्राय०
२२२	१	ब्राह्मणस्यहुंकारादिकरणेप्राय०
	६	देवर्षीणामभिमुखेष्टीवनेप्रा०
२२३	२	देवर्षिवेदनिंदायांप्राय०
	११	वालमीक्युक्तपापगणना
२२५	४	दंतकाष्ठाभक्षणेप्राय०
	१०	विष्णुपूजापराधप्रा०आकाशशयनम्
२२६	१	मैथुनानंतरंविष्णुरूपशेषप्राय०
२२७	४	शवदर्शनानंतरंविष्णुपूजनेप्रा०
२३०	१	रजस्वलारूपशानंतरंविष्णुपूजनेप्रा०
२३१	१	अधोवायुत्यागसमकालेविष्णुपूजनेप्राय०
२३२	१	पूजनसमयेपुरीषत्यागेप्राय०
	७	मौनंविनाविष्णुपूजनेप्राय०
२३३	१	नीलवस्त्रधृत्वाविष्णुपूजनेप्राय०
	५	विधिविनाविष्णुरूपशेषप्राय०वाराहवाक्यम्
२३४	२	घरणिप्रणानंतरंवाराहेणतत्त्वकथनम्
२३६	३	क्रोधयुक्तस्यविष्णुपूजनेप्राय०
२३७	४	गुह्यवार्तायांघरणिप्रणः
२३८	९	क्रुद्धस्यषष्ठकालभोजनरूपंप्राय०
२३९	११	इतिक्रुद्धापराधप्रायश्चित्तम्
२४०	१	अकस्मैपुष्पेणाविष्णुपूजनेप्रा०
२४१	४	रक्तवस्त्रधृत्वापूजनेप्राय०
२४२	३	अधकारेषुविष्णुपूजनेप्राय०

पृ०	पं०	
२४३	२	कृष्णवस्त्रधृत्वाविष्णुपूजनेप्राय०
२४४	१	अधौतवस्त्रधृत्वाविष्णुपूजनेप्राय०
२४५	२	विष्णवेश्वानोच्छिष्टदानेप्राय०
	१०	वाराहमांसभुक्काविष्णुस्पर्शेप्राय०
२४७	४	जालपादभक्षयित्वाविष्णुस्पर्शेप्रा०
२४८	३	दीपंस्पृष्ट्वाविष्णुपूजनेप्राय०
२४९	१	श्मशानंगत्वास्नानंविनाविष्णुस्पर्शेप्राय०
	८	श्मशानापवित्रताकथा
२५४	२	इतिश्मशानप्रवेशप्राय०
	३	पिण्याकंभक्षयित्वाविष्णुस्पर्शेप्रा०
	१०	वाराहमांसेनप्रापणकरणेप्राय०
२५५	७	मद्यपीत्वाविष्णुस्पर्शेप्राय०
२५६	३	कौसुंभशाकभक्षणानंतरंविष्णुपूजनेप्रा०
२५७	२	परकीयवस्त्रधारणापराधप्राय०
	१०	विष्णवेऽदत्त्वा नवान्नभक्षणेप्राय०
२५८	७	गंधमाल्यमदत्त्वाधूपदानापराधप्राय०
५१९	५	उपानद्धारणापराधप्रा०
	१०	विष्णुप्रबोधिभेरीताडनाकरणेप्राय०
२६०	६	वहवन्नभक्षणानंतरंविष्णुस्पर्शेप्रा०
२६१	६	इतिवाशहपुराणवहवन्नभक्षणप्राय०
	७	गुराराक्रांशमनुतचकृत्वाप्राय०
२६२	६	सर्वभूताधिपतिनिंदायांप्रा०
	९	अथसमस्तपालकघ्नप्राय०
२६४	१	अथरहस्यप्रायश्चित्तम्
२६८	२	इतिपरिशिष्टसूचीसमाप्ता० २१

पृ०	पं०	अशुद्ध०	शुद्ध०
५	३	शब्दा	शब्दा
६	२	रहेतु	रहेतु
१६	१२	क्रिय	क्रिया
१७	४	निमित्त	निमित्त
२१	५	वसत्	वसेत्
२२	११	मादाय	माधाय
३२	२	थोवोध	थाविधे
३४	१३	त्रिस	त्रिःसू
३३	६	पंचश	पंचाश
३७	१०	अरु	अरु
३८	७	वलोयां	वेलायां
३९	७	शुद्धाति	शुद्धति
४४	३	त्रिश	त्रिश
५७	५	तुल्ये	तुल्यं
५८	११	शोचा	शौचा
७९	३	वादो	वोदा
८२	७	शब्द	शूद्र
८६	११	दिनो	दिनां
८८	७	मासर्द्ध	मासार्द्धे
९४	११	ज्ञोष	ज्ञोष
	७	मद्भिः	मद्भिः
	११	वेत्	वेत्
	८	वर्ह	वर्ह
	१३	शुद्धः	शुद्धं
		त्यव	त्यव

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
९५	४	विफ्र	विप्रु
९५	७	विफ	विप्रु
९८	३	एाद्रिः	एाद्रिः
९८	५	चार्या	चार्ये
१००	२	रित्प	रित्या
	१०	मीक्ष्या	मीक्ष्य
१०४	५	वर्णाः	वर्णाः
१०९	९	मुत्वा	मुप्त्वा
	९	वाधे	एवा
११०	१०	दयो	दयोः
१११	७	माप्ये	माप्ये
११३	१	वे	वेद्
११३	७	पछे	पक्ते
	१०	स्सृ	स्मृ
११४	१	रुष्टो	रुष्टो
११५	६	वि	विशु
	७	हेशमा	देशम
	७	मर्ज	मार्ज
११७	१	त	संत
	१	त्थाय	त्थाप्य
११८	२	त्कप	त्कर्प

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अ०	शु०
				१५७	१	शु	शू
				१५९	२	कू	कू
	१	अंक१८		११८			
१२१	११	त	तः	१५९	१२	वा	वा
१२३	७	ना	ना	१६०	१३	हार्थ	हार्थ
१२४	६	अ	आ	१६२	३	ना	नां
१२४	७	य	या	१६२		इतिरहरुयप्रकरणम्	
१२७	५	श	दश	१६३	८	ष्टि	ष्टि
१३१	११	भौ	भै	१६८		इतिविंशतिकप्रकरणम्	
१३५	१०	चोः	चः	१७२	१	भै	भै
१३७	११	छं	छं	१७६	८	द्रा	न्द्रा
१३७	११	ड	डू	१७६	१०	द्वि	द्वि
१४१	१	ब	व	१७७	६	या	या
१४१	९	यः	र्यः	१७७	७	पा	पां
१४१	१०	म	म	१७८	२	र	रा
१४२	८	श्यां	शयौ	१७९	१	त्वा	त्वा
१४७	८	पपा	पाप	१७९	५	त्वे	त्वे
१४७			कं	१७९	७	व्र	न्द्रा
१४८			पू	१७९	८	मं	दं
१४९			लू	१८०	३	इ	रि
१५०			त	१८१	१	हु	कू
१५०	१२	पां	पां	१८२	४	को	क
१५२	११	मृ	मृ	१८२	७	व	व
१५४				१८२	१०	वृ	वृ
१५४							

पृ०	पं०	अ	शु	पृ०	पं०	अशु	शु
१८३	१	प्र	प्र				
१८३	२	मो	मो				
१८३	५	तेषां	तासां	२१८	८	यन	येन
१८३	६	दि	दं	२२२	४	त्याद्य	त्याद्य
१८३	१०	प्रा		२२५	८	दित्या	दित्या
१८४	२	ई	ई	२२६	५	वक्तु	वक्तु
१८४	४	भि	भिषि	२२८	२	तत्वे	तत्वे
१८४	६	या	वा	२२८	५	रेत	रेत
१८५	४	जु	जु	२२८	८	मंड	मंड
१८५	८	म	म	२३०	११	जर	रज
१८५	९			२३३	१	वस्त्र	वस्त्र
१८५	१०			२३३	८	पनं	पण
१८५	११			२३४	१	तुह	तुह
१८५	१२			२३४	१	उभोता	उभते
१८५	१३			२३४	२	तत्वे	तत्वे
१८५	१४			२३४	८	कार्य	काय
१८५	१५			२३६	३	त्य	इत्य
१८५	१६	पय		२३६	६	चन्द्रय	पृच्छय
१८५	१७	हिं	हि	२३८	१०	भग	भग
१८५	१८	बा	वा	२३८	२	राधा	राध
१८५	१९	भं	म	२५२	४	प्रासा	प्रसा
१८५	२०	व	व	२५३	६	त्रेवा	त्रेवां
१८५	२१	रा	रां	२५४	५	उल्ल	उल्ल
१८५	२२	द	द	२५४	१०	ननु	तु
१८५	२३	सा	सां	२५६	७	शु	शु

पृ०	पं०	अ०	शु०
२५७	३	याश्चि	याश्चि
२५७	८	गव्यं	गव्यं
२५८	३	तस्म	तस्मा
२५९	२	दशा	दशी
२६०	७	स्वर्जा	ह्यर्जा
२६०	१०	श्रेष्ठः	श्रेष्ठः
२६२	६	य०	यः
२६२	२	चाद्रां	चाद्रा
२६३	८	नद्या	नद्या
२६६	१	सकै	सकै
२६७	२	मुच्य	मुच्य

इतिपरिशिष्टप्रकरणस्यशुद्धिपत्रं समाप्तम् २१

